CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

33

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आरक्षीत नं २२८

भावप्रकाश पूर्वखण्ड सटीक

श्री ५ को सरकार
वाल्मीकि संस्कृत महाविद्यालय

जिसमें

वैद्यक विद्याके लक्षण, निरुक्ति, दक्ष अश्विनीकुमार चरक और धन्वन्तारि आदिकी प्रकटता, सृष्टिका क्रम, सम्पूर्ण औषधों के लक्षण गुण, मांस, मछली, सम्पूर्ण अन्न, जल, दूध, दही, घी इत्यादि के गुण, पारा, रसकपूर, हरताल, मैनसिल और विषोंके शोधने की विधि इत्यादि अनेकों विषय वर्णित हैं ॥

जिसको

भाव मिश्र ने ललित श्लोकोंमें रचना किया था

उसीको

भार्गव वंशावतंस मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) ने अपने खर्च से आगरा पुर पीपलमंडीनिवासि चौरासिया गौडवंशावतंस लखनऊ केनिङ्गकालेज के संस्कृताध्यापक स्वर्गवासिपण्डित कालीचरण जी से प्रत्यक्षर का भाषा टीका रचना कराया ॥

दूसरीबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा दिसम्बर सन् १९०२ ई० ॥

इस पुस्तककी रजिस्ट्री नं० ३७४ ता० ९ अप्रैल सन् १८६५ई० में हुईहै इसलिये कोई छापै नहीं॥

३१ जुन ५ वर्क

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस मतबे में जितने प्रकारकी वैद्यककी पुस्तकें छपी हैं उनमेंसे कुछ नीचे लिखीहैं जिस किसी अवलोकन करनेवालेकी कांक्षाहोवे छापेखानेके पुस्तकालयसे अपनी दरख्वास्त भेजके फेहरिस्त किताबोंकी मँगाकर अवलोकन करसक्ते हैं॥

सुश्रुतसंहिता भाषा क़ी० २॥) पु० ॥

जिसमें वैद्यक विद्याकी विस्तारसे उत्पत्ति, शिष्योंको जनेऊ और शिक्षादेनेकी विधि, शिष्यों के पढ़ानेकी विधि और ग्रन्थके सब अध्यायों की सूची, गुरुदेवजीका विद्यार्थी को अच्छी विधिसे पढ़ाना यह उचित धर्म है तिसका वर्णन, फोड़ाके चीरनेके पीछे वैद्यका रोगीकी रक्षा पढ़ना, ऋतुचर्या अर्थात् जिसऋतुमें जिस प्रकारसे उपाय करना चाहिये तिसका वर्णन, चीरने फाड़नेके हथियारों का वर्णन, चीरने फाड़नेके हथियारों के भेद, और उनके ग्रहण करनेका उपाय और शस्त्रोंकी रक्षा का उपाय वर्णन, वैद्यका शिष्यको चीरना फारना सिखाना, शिष्यका गुरुदेवजीसे वैद्यक विद्या पढ़के राजाके यहां परीक्षा देकर राजाकी आज्ञासे शुद्धचित्तहोकर चिकित्सा करना, क्षारपाकविधि और अग्निकर्म विधिका वर्णन, जोंक, सींगी और तुम्बीलगानेकी विधि रक्तकीविधि और यत्नसे रक्षा दोष धातु मलके क्षय और वृद्धिके जाननेका वर्णन, बालकके कान छेदने की विधि, फोड़ा आदिके चीरने का वर्णन, घावके लेपन और बन्धकी विधि, घाववाले पुरुषको जिसप्रकार से रहना चाहिये तिसका वर्णन, पथ्यापथ्य वस्तुओं का वर्णन, घावके प्रश्न विषयके अध्याय का वर्णन, घावके स्थानोंका वर्णन कृत्य और अकृत्य और व्याधिभेद का विषय, आठप्रकारके शस्त्र कर्म करनेवाले अध्यायका व्याख्यान, प्रणष्टशल्यनाम फोड़े के जानने का लक्षण, शल्यनामक फोड़े के निकालने का वर्णन, विपरीताविपरीत नामक घावके जाननेका वर्णन, दूतको वैद्यके बुलानेके समय में और वैद्य कोभी रोगी के यहां जानेमें शुभ अशुभ शकुन और रोगीके शुभ अशुभ स्वप्नों के द्वारा शुभ अशुभ फलका वर्णन, रोगीको अपनीही छाया जिसप्रकार की दिखलाई दे उसके शुभाशुभका फल, रोगी के स्वभावके उलटा होजानेका फल, रोगीको जिसजिस लक्षणवाले रोग मार डालते हैं उनका वर्णन, सेनायुक्त और शत्रुओं को जीतने की इच्छावाले राजाकी वैद्यको रक्षाकरनी योग्य है वैद्यको, रोगी के आयुकी परीक्षा, फोड़ों के लेपइत्यादि औषधों का वर्णन, वैद्यका औषधके योग्य भूमिकी परीक्षाकरना, औषधों के समूहों के गुणवर्णन, जो औषध वमन और जो जुलाब से रोगोंको हरनेवाली हैं उनका वर्णन, औषध और रसोंके गुणवीर्य और विपाक के जाननेका वर्णन, रसविशेषों के जानने का वर्णन, वमनद्रव्यों और जुलाब की द्रव्यों का वर्णन, जलवर्ग, दूधवर्ग, दहीवर्ग, माठावर्ग, तैलवर्ग, शहदवर्ग, ईखवर्ग, मदिराकांजी और मूत्रवर्ग का वर्णन, अन्नपान विधिका वर्णन, वातव्याधि बवासीर, पथरी, भगंदर, कुष्ठ, प्रमेह, उदररोग, मूढ़गर्भ, विद्रधिरोग, विसर्प, नाड़ीरोग, स्तनरोग, ग्रंथि, अपची, अर्बुद, गलगंड, वृद्धि, आतशक, फीलपांव, छोटे २ रोग, शूकदोष, भग्नरोग, और मुख रोगों के निदान का वर्णन, सर्वभूत चिंता शारीर, शुक्रशोणित शुद्धि शारीर, गर्भावक्रांति शारीर, गर्भव्याकरण शारीर, शरीर संख्या व्याकरण शारीर, प्रत्येक कर्म निर्देश शारीर, सिरावर्णन विभक्ति शारीर, सिराव्यध विधि शारीर, धमनी व्याकरण शारीर, गर्भिणी व्याकरण शारीर का वर्णन, द्विव्रणीय, सद्योव्रण, भग्नरोग, वात व्याधि, महावातव्याधि, बवासीर, पथरी, भगंदर, कुष्ठ, महाकुष्ठ, प्रमेह, मधुप्रमेह, पेटरोग, मूढ़ गर्भ, विद्रधि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भावप्रकाश सटीक पूर्वखण्ड की भूमिका ॥

इस संसार में धर्म्म, अर्थ, काम, मोक्ष यही चारों मनुष्य जन्मके मुख्य फल हैं और शरीरही इन चारोंका मुख्यसाधन है क्योंकि कहा है कि (धर्मार्थकाममोक्षाणां शरीरंसाधनंयतः) इत्यादि वाक्यसे शरीरकी रक्षा करना और शरीरको स्वस्थरखना मनुष्यमात्र का मुख्यकर्त्तव्य है क्योंकि जब मनुष्यका शरीर सावधान नहीं होताहै तब ऐहिक और पारलौकिक कोईभी कार्य्य नहीं सधता इसी से हमारे प्राचीन महर्षियों ने चिकित्सा शास्त्र के अनेक ग्रन्थ बनाये और अनेक विद्वान् मनुष्योंने भी अपनी २ बुद्धिके अनुसार वैद्यकशास्त्र के अनेक ग्रन्थ बनाये यह बात सर्वसाधारणहै कि एक मनुष्य की बुद्धि प्रायः एकही विषय में बहुत तीव्र होती है इससे इन ग्रन्थों में किसीका निदान किसी की चिकित्सा किसी का शारीरक किसी का सूत्रस्थान बहुत उत्तम समझाजाता है इस कारण जो मनुष्य वैद्यकशास्त्र के सीखने की इच्छा करे उसे इन सब ग्रन्थों के पढ़ने की आवश्यकता होती है और जो मनुष्य सम्पूर्ण ग्रन्थों को नहीं देखते हैं वह पूरालाभ नहीं उठासक्के परन्तु जिनको थोड़ा अवकाश है और थोड़ाही श्रम करसक्के हैं वह विचारे इन अनेक बहुत बृहत् ग्रन्थों को पढ़कर कैसे वैद्यक शास्त्रको भलीभांति जानसकें इसबात को विचारकर श्रीमान् भावमिश्रने सम्पूर्ण ऋषिप्रणीत बृहत् ग्रन्थों से जिसका जौनसाभाग अत्युत्तम और अति उपकारी था वह लेकर भावप्रकाशनाम संग्रहका ग्रंथ बनाया इसग्रंथ में वैद्यककी उत्पत्ति से लेकर सम्पूर्ण शारीरक, औषधियों के गुण दोष, रोगों की उत्पत्ति लक्षण यत्न और वाजीकरण आदिक अनेक विषयों का विस्तारपूर्व्वक वर्णन है इसीसे इस देशमें इस ग्रंथका बड़ा मान होकर बड़ाही प्रचारहुआ अनेकगुणों से पूर्ण यह ग्रंथरत्न संस्कृत वाणीमें है और आजकल समय के प्रभाव से अन्यलोगों की तो कौन कहै प्रायः वैद्यलोगभी संस्कृत नहीं जानते इस कारण से उन लोगों को इतनी शक्तिभी नहीं होती है कि इस एकही ग्रंथको

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पढ़कर चिकित्सा शास्त्र के सम्पूर्ण विषयों को अच्छे प्रकारसे जानसकें इससे विना जानेबूझे वह लोग अपने पेटके पालने के लिये औषध तो करतेही हैं और रोगी भी रोगों से व्याकुलहोके लाचारी से उनके पास आराम होनेके लिये आतेहैं और वैद्यलोगभी उनके अच्छे होनेके लिये औषधदेते हैं परंतु प्रायः उसका फल इसके विपरीत होता है इस दुर्दशाको देखकर परमकारुणिक धर्म्मधुरीण गुणग्राही भार्गव वंशावतंस मुन्शीनवलकिशोर (सी,आई,ई,) की आज्ञासे आगरानिवासि लखनऊ केनिंगकालेजके संस्कृत अध्यापक गौड़वंशावतंस चौरासिया पण्डित कालीचरणशर्म्मा ने लखनऊ के निवासी वाजपेयि क्षमापतिजी की सहायता से परम उपकारी भावप्रकाशनाम इस वैद्यक ग्रन्थका भाषानुवाद किया इसग्रंथकी भाषा करने में उक्त महाशयोंने बहुतसी छपीहुई तथा लिखीहुई भावप्रकाशकी पुस्तकों को देखकरके और जिन ग्रन्थोंके प्रमाण इस ग्रन्थमें हैं उनमें से जहांतक मिलसके उनकोभी इकट्ठाकरके और अनेक कोषोंकोभी एकत्रित करके इसके पाठ भेदों के दूर करने में औषधियोंके भाषानाम जानने में और मूल प्रति के शुद्ध करनेमें बड़ा श्रम कियाहै अब कोई महानुभाव यह सन्देह न करें कि इसका भाषानुवाद तो बम्बई आदि नगरों में छपही चुकाथा फिर इस पिष्टपेषणका क्या प्रयोजनहै ? यह श्रम इसलिये कियागया है कि अबतक जो कोई अनुवाद मुद्रित हुएहैं वह एकतो बहुमूल्य हैं और दूसरे उनकी भाषाभी सर्व साधारणको लाभदायी नहीं है इससे अत्यन्त मनोहर सरल और शुद्ध भाषा में यह अनुवाद करके मूलसहित मुद्रित कराया है अब सम्पूर्ण गुणग्राही सज्जनों से यह प्रार्थनाहै कि इस बृहत् ग्रंथके अनुवाद करने में जहा कहीं जो कुछ बिगड़गयाहो उसे यह समझकर क्षमाकरें कि भूलना मनुष्योंका स्वाभाविक धर्म्म है ॥

इति ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भावप्रकाश सटीकपूर्वखण्डके प्रथमभागका सूचीपत्र ॥

विषय	पृष्ठ
मङ्गलाचरणआदि	१
आयुर्वेदका लक्षण	१
आयुर्वेद की निरुक्ति	१
दक्षप्रादुर्भाव	२
अश्विनीकुमार प्रा०	२
इन्द्र प्रा०	३
आत्रेय प्रा०	३
भारद्वाज प्रा०	५
चरक प्रा०	८
धन्वन्तरि प्रा०	९
सुश्रुत प्रा०	१०
ग्रन्थका आरम्भ	१२
सृष्टिक्रम	१३
प्रकृतिका स्वरूप वि०	१३
प्रकृति पुरुषोंका साधर्म्य	१४
उनका वैधर्म्य	१४
प्रकृतिके नाम	१५
गुण	१५
सत्त्वादियुक्त मनके गुण	१५
रजोगुणयुक्त मनके गुण	१५
तमोगुणयुक्त मनके गुण	१६
अहंकार अभिमान	१७
व्यापार लक्षण	१७
उसके तीनप्रकारके कारण	१७
उसमें इन्द्रियोंके विषय	१७
महाभूतोंके गुण	१८
प्रकृति सात	१९
विकार सोलह	२०
मनके योगमें गुणभेद	२०
गर्भोत्पत्ति क्रम	२१
रजस्वलाका लक्षण	२१
उसके नियम	२१
इनके न करने में दोष	२२
रजस्वलाका कृत्य	२२
पतिकृत्य उसगर्भाधान में	
निषिद्ध और विहितकाल	२३
और उनका फल	२३
तन्त्रान्तरोक्त	२३
युग्म और अयुग्म रात्रि	
का फल	२३
उसमें योग्य आर अयोग्य	
पुरुष	२४
योग्य, अयोग्य स्त्री	२४
गर्भके उत्पन्नहोनेका क्रम	२४
गर्भाशयका स्वरूप	२५
गर्भ चौबीसतत्त्व	२६
तन्त्रान्तर	२७
परिहारके अर्थ तत्काल	
गृहीत गर्भवालीकालक्षण	२७
उसीकाउत्तरकालीन	
लक्षण	२७
उसमेंपुत्रगर्भवतीकालक्षण	२८
पेशी दीर्घ आकार	२८
उन नपुंसक आदियों का	
लक्षण	२८
औरभी गर्भका प्रकृति	
लक्षण	२९
पुत्रोंके आहार आचारों	
की चेष्टा भेदकारण	३०
गर्भलक्षण	३०
वृद्ध वाग्भटका कथन	३२
शरीरकी उत्पत्ति समवायि	
कारणान्तर	३३
तन्त्रान्तर में दोषस्वरूप	३३
दोष शब्दकी निरुक्ति	३३
वायुका स्वरूप	३४
उनवायुके नाम	३४
उदानादिक के स्थान	३४
उनके कर्म	३५
पित्तका स्वरूप	३६
पित्तों के नाम	३६
पाचकादि पित्तोंके स्थान	३६
उनके कर्म	३६
कफका स्वरूप	३९
कफों के नाम	३९
क्लेदनादिकों के स्थान	३९
उन २ स्थानोंमें गत कफ	
के कर्म्म	४०
धातुशब्दकी निरुक्ति	४१
धातुओं के कर्म्म	४१
रसशब्दकी निरुक्ति	४१
रसका स्वरूप	४१
रसके स्थान	४१
उसके कर्म्म	४१
रक्तका स्वरूप	४२
उसका स्थान	४२
मांसका स्वरूप	४२
उसके पेशी	४३
मांस पेशियोंकी संख्या	४३
उनमें शाखागत	४३
कोष्ठगत	४३
गलेके ऊपरकी	४४
मांस पेशियों के कर्म्म	४४
मेदःस्वरूप	४५
उसका स्थान	४५
हड्डीका स्वरूप	४५
अस्थियों की संख्या	४५
शाखागत अस्थि	४५
पसलीआदिमें प्राप्त अस्थि	४६
गलेके ऊपरकी अस्थि	४६
अस्थियोंका प्रयोजन	४७
मज्जाका स्वरूप	४७
मज्जाका स्थान	४७
शुक्रकी उत्पत्ति	४७
आमाशय स्वरूप	४८
श्लेष्मस्वरूप	४८
ग्रहणीके लक्षण	४९
आहार के पाक विषय में	
विशेषता	५०
रस तीनप्रकारसे विभागको	
प्राप्त होता है	५१
ओजरूपका लक्षण	५५
शुक्रका स्वरूप	५८
जीवकी सर्वत्र स्थिति	५९
गर्भ को उत्पन्न करनेवाले	
शुक्रका लक्षण	५९
शुक्रका स्थान	५९
उसके निकलनेका प्रा०	६०
शुक्रके निकलनेका का०	६०
आर्तवका स्वरूप	६०
गर्भग्रहण योग्य आर्तव का	
लक्षण	६०
धातुवों के अलगगुण	६१
धातुवों के मल	६१
उपधातु	६१
आशय	६१
कलाका स्वरूप	६२
वोसात	६२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय	पृष्ठ
मर्म्म	६२
शृङ्गाटक	६३
छातीके मर्म्म	६४
सन्धि दोमकारकी	७१
चेष्टावाली और स्थिर	७१
कोष्ठमें मास	७१
ग्रीवाके ऊपर मास	७१
शिराओंका व०	७२
स्नायुओंके वर्णन में प्रथम स्नायुका स्वरूप वर्णन	७४
हाथपैरोंकीस्नायुओंका वर्णन	७५
कोष्ठकी स्नायुओंका वर्णन	७५
धमनियोंका वर्णन	७५
उनमें ऊपरकी	७५
कण्डरा	७७
उनमें हस्तपादगत	७७
कण्डराओंकीविशेष उत्पत्ति	७७
रन्ध्र	७७
स्रोत	७८
जाल	७-
कूर्च	७८
रज्जु	७८
सीवन	७९
संघात	७९
सीमन्त	७९
त्वचा	७९
अवभासिनी	७९
लोम और लोमकूप	८०
गर्भका मासिक क्रम	८०
दौहृदका विशेष फल	८१
गर्भका प्रथम अङ्ग	८२
गर्भका जीवनोपायान्तर	८४
गर्भवृद्धि का कारण और उपाय	८५
दृष्टि और रोमकूपों की अवृद्धि	८५
नख केशोंकी सदावृद्धि	८५
अचेतन अङ्ग	८५
गर्भकावात मलमूत्र न होने म कारण	८५
गर्भवती कृत्य	८६
प्रसवमास	८६
सूतिका घरकी आकृ०	८७
अनकरीब बालकहोने वाली का लक्षण	८७
उसका उपचार	८७
दाईका लक्षण	८७
दाईका कृत्य	८७
पीड़ारहित के प्रवाहण से वैगुण्य	८८
बालककीजन्मोत्तर वि०	८८
जच्चा के नियम	८८
उसके नियम समयकी अवधि	८८
दुग्धका लक्षण	८९
उसकी प्रवृत्ति	८९
उसके अल्पहोनेका हेतु	८९
उसके बढ़नेका कारण	८९
कलम धानका लक्षण	८९
दुग्धके बिगड़नेका कारण	९०
बिगड़ेहुये दुग्धका लक्षण	९०
उसकी शोधनविधि	९०
शुद्ध दुग्धका लक्षण	९१
धायका लक्षण	९१
निषिद्ध धायका लक्षण	९१
बालककेदुग्धपानकीविधि	९१
अन्यथा बिगाड़	९२
अभिमन्त्रण	९२
माताके दूध न होने ” और धायके न मिलने में प्रकार	९२
बालकका अन्नप्राशन समय	९२
उसकी परिचर्य्यादि	९२
बालकको स्वभावसेहि०	९३
उसके कवलादिकास०	९३
बालक आदिकीअ०	९३
प्रकृति लक्षण	९४
अनन्तरदेश	९८
आनूप देश लक्षण	९८
जाङ्गल लक्षण	९८
साधारणदेश लक्षण	९८
उनमें वाग्भटका मत	९९
दिनादिचर्या	९९
उसमें स्वस्थका लक्षण	९९
दिनचर्य्या	९९
दातूनकी विधि	१००
शीतलगरमजलकीकु०	१०१
और शीतलजलकीकु०	१०१
मुखकाधोना	१०१
कटुतैलादि नास	१०१
अञ्जन	१०१
बालोंका साफकरना	१०२
शीशेका देखना	१०२
कसरत	१०२
अभ्यंग	१०३
सुगन्धतैल	१०३
उबटनेके गुण	१०४
स्नानके गुण	१०४
बदनका पूछना	१०५
वस्त्रधारण	१०५
चन्दन लगाने के गुण	१०५
पुष्पादिधारण	१०६
आभूषण का धारण	१०६
रत्नादि धारण	१०६
खड़ाऊंकापहरना	१०७
भोजनादिके गुण	१०७
रसादियोंके पाकका ज्ञान	१०८
भोजन पात्र के गुण	१०८
भोजनक प्रथमलवण	१०९
अद्रकका भक्षण	१०९
दृष्टिदोषदूरहोने के वास्ते ब्रह्माआदिका स्मरण	१०९
भोजनादि क्रम	१०९
मधुर अन्नका गुण	११०
गुरुत्रिविध निवारण	११०
भोज्यका भोजन परि०	१११
शुष्कअन्नादिकोंकावि०	१११
विषमाशनका लक्षण	११२
अकालमें भोजनकिये का दोषभुक्तमात्रसे उत्पन्न हुये	११२
कफका इलाज	११५
ताम्बूल गुण	११६
भोजनके अनन्तर की क्रिया	११७
वायुके गुण	११८
दिनके शयनका गुण	११९
औरभी अन्न के संस्थापन कारण	११९
अन्नका उदरमें अस्थिति हेतु	१२०
और भी वर्जनीय	१२०
अजीर्णके कारण	१२०
अध्यशनका लक्षण	१२०
उसका इलाज	१२०
सायंकालके भोजनसे अजीर्ण होनेमें भोजनका उपाय	१२१
दिनमें मैथुनका निषेध	१२१
चंक्रमण के गुण	१२१
पगड़ीधारणके गुण	१२१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय	पृष्ठ
पादत्राण धारण गुण	१२१
छत्रधारण गुण	१२१
दण्डधारण गुण	१२२
पालकीकी सवारीके गुण	१२२
नावकी सवारी के गुण	१२२
हाथीकी सवारी के गुण	१२२
घोड़ेकी सवारीके गुण	१२२
धूपके गुण	१२२
बारिश के गुण	१२२
कुहरा के गुण	१२२
अग्निके गुण	१२२
धूमका गुण	१२२
आचार	१२२
रात्रिचर्य्या	१२४
व्यासोक्त पुंसवनान्तर ऋतुचर्य्या	१२९
सुश्रुतोक्तसंचयलक्षण	१३१
अंशूदकका लक्षण	१३२
रोगका लक्षण	१३३
कर्म्मजरोग	१३४
दोषजरोग	१३४
कर्म्म दोषज	१३४
साध्यअसाध्य याप्य	१३५
उपद्रवका लक्षण	१३६
अरिष्टका लक्षण	१३६
चिकित्साका लक्षण	१३६
चिकित्साकीविधि	१३६
रोगको न जानकर इलाज करने में दोष	१३७
रोगको जानकर औषध न जाननेमें दोष	१३७
रोग और औषध के ज्ञानमें गुण	१३७
चिकित्साका फल	१३९
चिकित्सा के अङ्ग	१३९
रोगीका लक्षण	१३९
चिकित्साकेयोग्य	१३९
चिकित्साके अयोग्य	१४०
दूतका लक्षण	१४०
उसकीयात्रामेंशकुन विचार	१४१
वैद्यका लक्षण	१४१
निषिद्धवैद्य	१४१
वैद्यका कर्म्म	१४१
वेदभेदमें आयुर्वेद	१४३
आगन्तुकहेतु	१४३
आयुका विचार	१४३
दीर्घ आयुका लक्षण	१४३
अल्प आयुका लक्षण	१४४
चिकित्सा विधान फल	१४६
परिचारकका लक्षण	१४७
द्रव्य	१४७
औषधग्रहण परिभाषा	१४७
द्रव्योंकी परीक्षा	१४९
स्वभावसे हित	१५०
स्वभावसे अहित	१५१
संयोग विरुद्ध	१५१
औषध ग्रहणसंकेत	१५१
प्रतिनिधि	१५२
द्रव्यगत पञ्चपदार्थों के कर्म्म	१५४
मधुररसका गुण	१५४
अतियुक्तमधुर रसगुण	१५५
अम्लका गुण	१५५
अतियुक्त अम्लका गुण	१५५
लवणका गुण	१५५
अतियुक्तलवणका गुण	१५५
कटु गुण	१५६
अतियुक्त कटुरसकागुण	१५६
तिक्तरसका गुण	१५६
अतितिक्त रसका गुण	१५६
कषाय गुण	१५७
अतियुक्त कषायका गुण	१५७
गुण	१५८
लघुआदि गुणवालों के गुण	१५८
आमपाक	१५९
वीर्य्य	१६३
विपाक	१६३
विपाकोंके गुण	१६४
प्रभाव	१६४
हड़के नाम लक्षण गुण	१६५
बहेड़े के नाम गुण	१६७
आँवलेके नाम गुण	१६८
त्रिफलाके नाम लक्षण गुण	१६८
सोंठके नाम गुण	१६८
अद्रक के नाम गुण	१६९
पीपलके नाम गुण	१६९
मिरच के नाम गुण	१७०
त्रिकटु के नाम गुण	१७०
पीपलामूल नाम गुण	१७०
चतुरूषणकालक्षणगुण	१७०
चव्यके गुण	१७०
गजपीपलके नाम गुण	१७१
चित्रकके नाम गुण	१७१
पञ्चकोलका लक्षण गुण	१७१
षडूषणका लक्षण गुण	१७१
अजवाइन के नाम गुण	१७१
अजमोद के नाम गुण	१७२
खुरासानी अजवाइन के गुण	१७२
स्याह और सफेदजीरे के नाम गुण	१७२
धनियाँके नाम गुण	१७३
सौंफ सोयाके नाम गुण	१७३
मेथी वनमेथी नामगुण	१७३
चारदाना नाम गुण	१७४
हिंगुके नाम गुण	१७४
वचनाम गुण	१७४
खुरासानी वचनाम गुण	१७४
कुलिञ्जन नाम गुण	१७४
चोबचीनी गुण	१७५
दोनोंहाऊबेरकेनामगुण	१७५
बायविडंगके नामगुण	१७५
तुम्बरूफलके नाम गुण	१७६
बंशलोचनके नाम गुण	१७६
समुद्रफेन	१७६
अष्टवर्गका लक्षण गुण	१७६
जीवक ऋषभककी उत्पत्ति नाम लक्षण गुण	१७७
मेदा महामेदाकी उत्पत्ति लक्षण नाम गुण	१७७
काकोली क्षीरकाकोली की उत्पत्ति लक्षण गुण	१७७
ऋद्धिवृद्धि की उत्पत्ति लक्षण नाम गुण	१७८
इनकी प्रतिनिधि	१७८
मुलहठी के नाम गुण	१७९
कम्बीलाके नाम गुण	१७९
अमलतासके नामगुण	१७९
कुटकी के नामगुण	१७९
चिरायते के नाम गुण	१८०
इन्द्रयवके नाम गुण	१८०
मयनफलके नाम गुण	१८०
दोनोंरासनाके नामगुण	१८१
तेजवती के नाम गुण	१८१
मालकंगुनी के नामगुण	१८२
कूटके नाम गुण	१८२
पुष्करमूलके नामगुण	१८२
चोकके नाम गुण	१८२
काकड़ाशींगीकेनामगुण	१८३
कायफल के नाम गुण	१८३
भारंगी के नाम गुण	१८३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

विषय	पृष्ठ
पाषाण भेद के नामगुण	१८३
धवई के नाम गुण	१८३
मजीठके नामगुण	१८४
कुसुम्भ के नाम गुण	१८४
लाहीके नाम गुण	१८४
हल्दी के नाम गुण	१८४
कपूरहल्दी नाम गुण	१८५
वनहल्दी नाम गुण	१८५
दारुहल्दी नाम गुण	१८५
रसौत नाम गुण	१८५
बावचीनाम गुण	१८५
चकोड़ नाम गुण	१८६
अतीसनाम गुण	१८६
लोधनाम गुण	१८६
लहसन नाम गुण	१८७
प्याज नाम गुण	१८७
भिलावां नाम गुण	१८७
भांग नाम गुण	१८८
पोस्त नाम गुण	१८८
अफीम नाम गुण	१८८
पोस्तदाना नाम गुण	१८९
सैंधव नाम गुण	१८९
सांभर नाम गुण	१८९
पांगा नाम गुण	१८९
विड़लवण नाम गुण	१८९
सौंचल नाम गुण	१९०
चनाखार नाम गुण	१९०
जवाखार नाम गुण	१९०
सज्जीखार नाम गुण	१९०
सुहागा नाम गुण	१९१
क्षारद्वय क्षारत्रय क्षाराष्टक लक्षण	१९१
चूक नाम गुण	१९१
कपूरआदि वर्ग	१९२
कपूरके नाम गुण	१९२
चीनियांकपूर नाम गुण	१९२
कस्तूरी नाम गुण	१९२
मुसकदाना नाम गुण	१९३
गौरासाखभेद नाम गुण	१९३
चन्दन नाम गुण	१९३
पीतचन्दन नाम गुण	१९३
रक्तचन्दन नाम गुण	१९३
पतङ्गनाम गुण	१९४
अगर नाम गुण	१९४
देवदारु नाम गुण	१९४
धूप नाम गुण	१९४
तगर नाम गुण	१९५
पद्मकाष्ठनाम गुण	१९५
गूगल नाम गुण	१९५
धूप नाम गुण	१९६
राल नाम गुण	१९६
सलईकी रालनाम गुण	१९७
शिलारस नाम गुण	१९७
जायफल नाम गुण	१९७
जावित्री नाम गुण	१९७
लवंग नाम गुण	१९८
इलायचीपूरबीनामगुण	१९८
इलायची गुजराती नाम गुण	१९८
तजनाम गुण	१९८
दारचीनी नाम गुण	१९९
तेजपात नाम गुण	१९९
नागकेसर नाम गुण	१९९
त्रिजात और चतुरजात का लक्षण गुण	१९९
केसर नाम गुण	१९९
गोलोचन नाम गुण	२००
नखनखीगन्धद्रव्य नाम गुण	२००
सुगन्धवाला नाम गुण	२००
वीरण नाम गुण	२०१
खस नाम गुण	२०१
जटामांसी नाम गुण	२०१
बालछड़ नाम गुण	२०१
मोथा नागरमोथा नाम गुण	२०१
कचूर नाम गुण	२०२
मरोड़फली नाम गुण	२०२
गन्धपलाशी नाम गुण	२०२
प्रियंगु नाम गुण	२०२
रेणुका नाम गुण	२०३
भटोराके नाम गुण	२०३
थनेर नाम गुण	२०३
उसीका भेद भटेउर नाम गुण	२०३
तालीसपत्र नाम गुण	२०४
शीतलचीनी नाम गुण	२०४
गन्धकोकिला नाम गुण	२०४
पीलीखस नाम गुण	२०४
एलवालुक नाम गुण	२०४
जलमोथा नाम गुण	२०५
पीड़ितकशाकनामगुण	२०५
चक्रवत् के नाम गुण	२०५
पवाड़ नाम गुण	२०६
थलकमल के नाम गुण	२०६
इति कर्पूरादि वर्गः	२०६
अथ गुडूच्यादि वर्गः	२०६
गिलोयउत्पत्तिनामगुण	२०६
पान नाम गुण	२०७
बेलके नाम गुण	२०७
कुड़ा नाम गुण	२०७
पाटलाकाष्ठपाटला नाम गुण	२०८
अरनी नाम गुण	२०८
सोनापाठा नाम गुण	२०८
बृहत् पञ्चमूलका लक्षण गुण	२०९
सरिवन नाम गुण	२०९
पिठवन नाम गुण	२०९
वनभांटा नाम गुण	२०९
दोनोंकटेली नाम गुण	२०९
सफेदकटेली नाम गुण	२१०
गोखरू नाम गुण	२१०
लघुपञ्चमूलका लक्षण गुण	२१०
दशमूलका लक्षण गुण	२११
जीवन्ती नाम गुण	२११
वनमूंग नाम गुण	२११
वनउड़द नाम गुण	२११
जीवनीयगणका लक्षण गुण	२११
सफेद और लाल अण्डी नाम गुण	२१२
सफेद लालआकका नाम गुण	२१२
सेहुंड़ नाम गुण	२१३
सीकाकाई नाम गुण	२१३
करिहारी नाम गुण	२१३
सफेद लाल कनेर	२१४
धतूरेके नाम गुण	२१४
बांसके नाम गुण	२१४
पित्तपापड़ा नाम गुण	२१४
नीम नाम गुण	२१५
बकाइन नाम गुण	२१५
जलनीम नाम गुण	२१५
दोनोंकचनार नाम गुण	२१६
दोनोंसहिंजनानामगुण	२२६
सफेद और नीलेफूलकी विष्णुक्रान्ता नाम गुण	२१६
भेउड़ी नाम गुण	२१७
कोरैआ नाम गुण	२१७
दोनों करंजना नामगुण	२१७
डारकरंजना नाम गुण	२१७
सफेदलालगुंजानामगुण	२१८

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय	पृष्ठ
किवाच नाम गुण	२१८
रोहिणी नाम गुण	२१८
चीलके नाम गुण	२१९
टङ्कारी के नाम गुण	२१९
वेत नाम गुण	२१९
जलवेत नाम गुण	२१९
समुन्दरफल नाम गुण	२१९
अंखोट नाम गुण	२१९
चारोंवरिआरा नामगुण	२२०
लक्ष्मणा नाम गुण	२२०
सोनावेल नाम गुण	२२०
कपास नाम गुण	२२१
बांस नाम गुण	२२१
नरकट नाम गुण	२२१
सरपत नाम गुण	२२१
मुञ्ज नाम गुण	२२२
काश नाम गुण	२२२
गन्धपटेर नाम गुण	२२२
मेथीतृण नाम गुण	२२२
कुश नाम गुण	२२२
कत्तृण नाम गुण	२२३
भूतृण नाम गुण	२२३
दूबके नाम गुण	२२३
सफेद दूबके नाम गुण	२२३
गांडर नाम गुण	२२३
बिदारीकन्द नाम गुण	२२४
वाराहीकन्द नाम गुण	२२४
मूसली नाम गुण	२२४
दोनों शतावरिके नामगुण	२२४
असगन्ध नाम गुण	२२५
पाठा नाम गुण	२२५
सफेद निसोत नाम गुण	२२५
कालानिसोत नाम गुण	२२५
दोनोंदन्ती नाम गुण	२२६
जमालगोटा नाम गुण	२२६
इन्द्रायण नाम गुण	२२६
नील नाम गुण	२२७
सरफोंका नाम गुण	२२७
जवासा और धमासे के नाम गुण	२२७
मुण्डी नाम गुण	२२७
दोनों ऊंगे के नाम गुण	२२८
तालमखाना नाम गुण	२२८
हारसिंगार नाम गुण	२२८
घीकुआर नाम गुण	२२९
दोनों पुनर्नवा नाम गुण	२२९
गन्धप्रसारणी नाम गुण	२२९
दोनों सारिवा नाम गुण	२३०
भांगरा नाम गुण	२३०
हुली के नाम गुण	२३०
त्रायमाणा नाम गुण	२३०
मरोड़फली नाम गुण	२३१
किंवाच नाम गुण	२३१
कौवाठोढी नाम गुण	२३१
काकजंघा नाम गुण	२३१
नागपुष्पी के नाम गुण	२३२
मेढ़ासींगी नाम गुण	२३२
हंसपदी नाम गुण	२३२
सोमवल्ली नाम गुण	२३२
अमरवेल नाम गुण	२३२
पातालगरुड़ी नाम गुण	२३३
बन्दाल नाम गुण	२३३
वटपत्री नाम गुण	२३३
मछेछी नाम गुण	२३३
सर्पाक्षी नाम गुण	२३४
शङ्खपुष्पी नाम गुण	२३४
अर्कपुष्पी नाम गुण	२३४
लजालू के नाम गुण	२३४
दूसरेलजालूके नाम गुण	२३५
दूधी के नाम गुण	२३५
भूमि आंवलेके नाम गुण	२३५
ब्राह्मीके नाम गुण	२३५
गूमा के नाम गुण	२३६
हुरहुर नाम गुण	२३६
दोनों खेखसे नाम गुण	२३६
सोनैआ नाम गुण	२३७
जलपीपल नाम गुण	२३७
गोभी नाम गुण	२३७
नागदौन नाम गुण	२३७
वरवेल नाम गुण	२३८
नकछिकनी नाम गुण	२३८
ककरौन्दा नाम गुण	२३८
सुदर्शन नाम गुण	२३८
मूसाकर्णी नाम गुण	२३८
मोरशिखा नाम गुण	२३९
इति गुडूच्यादिवर्गः॥	२३९
अथ पुष्पवर्गः॥	२३९
कमलके नाम गुण	२३९
पद्मनी नाम गुण	२३९
नवीनपत्रआदि नाम गुण	२४०
स्थलकमल नाम गुण	२४०
कुमुद नाम गुण	२४०
सेवार नाम गुण	२४१
सेवती नाम गुण	२४१
नेवारि नाम गुण	२४१
बर्सातीबेल के नाम गुण	२४१
दोनों चमेली नाम गुण	२४१
दोनों जुही नाम गुण	२४२
चम्पा नाम गुण	२४२
मौलसरी नाम गुण	२४२
बड़ीमौलसरी नाम गुण	२४२
कदम्ब नाम गुण	२४२
कूजा नाम गुण	२४३
मालती नाम गुण	२४३
माधवी नाम गुण	२४३
दोनों केवड़े के नाम गुण	२४३
किंकिरात नाम गुण	२४३
कर्णिकार नाम गुण	२४४
अशोकपुष्प नाम गुण	२४४
बाणपुष्प नाम गुण	२४४
चारोंकटसरैया के नाम	२४४
कुन्द नाम गुण	२४४
मुचकुन्द नाम गुण	२४५
तिलकपुष्प नाम गुण	२४५
दुपहरिया नाम गुण	२४५
जवापुष्प नाम गुण	२४५
सेन्दुरिया नाम गुण	२४५
अगस्तिपुष्प नाम गुण	२४५
दोनों तुलसी नाम गुण	२४६
मरुआ नाम गुण	२४६
दवना नाम गुण	२४६
बावरी नाम गुण	२४६
इति पुष्पादिवर्गः॥	२४६
अथ वटआदिवर्गः॥	२४७
वट के नाम गुण	२४७
पपिल के नाम गुण	२४७
पारसपीपल नाम गुण	२४७
वेलियापीपल नाम गुण	२४७
गूलर नाम गुण	२४८
कठियागूलर नाम गुण	२४८
पाकर नाम गुण	२४८
सिरिस नाम गुण	२४८
क्षीरवृक्ष पञ्चवल्कल का लक्षण गुण	२४९
साल नाम गुण	२४९
सालभेद नाम गुण	२४९
सलई नाम गुण	२४९
शीसम नाम गुण	२४९
अर्जुननाम गुण	२५०
विजयसार नाम गुण	२५०
खैर नाम गुण	२५०
सफेदखैर नाम गुण	२५०
दुर्गन्धखदिर नाम गुण	२५१
रोहितक के नाम गुण	२५१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय	पृष्ठ
कीकर नाम गुण	२५१
रीठा नाम गुण	२५१
पतौंजिया नाम गुण	२५१
हिंगोटनाम गुण	२५१
जिङ्गिनी नाम गुण	२५२
सुन के नाम गुण	२५२
भोजपत्र नाम गुण	२५२
पलाश नाम गुण	२५२
सेमल नाम गुण	२५३
मोचरस नाम गुण	२५३
कठियासेमल नाम गुण	२५३
धव नाम गुण	२५३
धामिन नाम गुण	२५३
करीर नाम गुण	२५४
साखु नाम गुण	२५४
बरना नाम गुण	२५४
कटभी नाम गुण	२५४
घण्टापाटला नाम गुण	२५४
जलसिरीष नाम गुण	२५५
शमी नाम गुण	२५५
छितवन नाम गुण	२५५
तिनिस नाम गुण	२५५
भुईसड़ा नाम गुण	२५५
इति वटादिवर्गः ॥	२५५
आमआदिफलवर्गः ॥	२५६
आम के नाम गुण	२५६
अमवटका लक्षण गुण	२५७
आमकीगुठली के गुण	२५७
नवीनपत्र के गुण	२५७
अम्बाड़ा नाम गुण	२५७
राजाम्र नाम गुण	२५७
कोशाम्र नाम गुण	२५८
कटहल नाम गुण	२५८
बड़हल नाम गुण	२५८
केला नाम गुण	२५८
भुकुर नाम गुण	२५९
नारियल नाम गुण	२५९
तरबूज नाम गुण	२५९
खर्बूजा नाम गुण	२६०
खीरा नाम गुण	२६०
सुपारी नाम गुण	२६०
ताड़ नाम गुण	२६०
ताड़ी नाम गुण	२६१
बेलफल नाम गुण	२६१
कच्चेबेल के नाम गुण	२६१
कैथ नाम गुण	२६१
नारंगी नाम गुण	२६१
तेन्दु नाम गुण	२६२
कुचला नाम गुण	२६२
बड़जामन नाम गुण	२६२
छोटे और नदी के जामन नाम गुण	२६२
बेर नामगुण	२६२
और बेरके लक्षण गुण	२६३
पानी आंवला नाम गुण	२६३
हरफारेवड़ी नाम गुण	२६३
दोनों करोन्दा नाम गुण	२६३
चिरौंजी नाम गुण	२६४
खिरनी नाम गुण	२६४
कंटाई नाम गुण	२६४
कमलगट्टा नाम गुण	२६४
सिंघाड़ा नाम गुण	२६५
भेंट नाम गुण	२६५
दोनोंमहुवोंके नामगुण	२६५
फालसा नाम गुण	२६५
शहतूत नाम गुण	२६५
अनार नाम गुण	२६६
बहुवार नाम गुण	२६६
निर्मली नाम गुण	२६६
दाख नामगुण	२६६
खजूर नाम गुण	२६७
छोहारा नाम गुण	२६७
पिण्डखजूरी नाम गुण	२६७
बादाम नाम गुण	२६८
सेब नाम गुण	२६८
अमृतफल नाम गुण	२६८
पीलू नाम गुण	२६८
अखरोट नाम गुण	२६८
बिजौरा नाम गुण	२६८
मधुकर्कड़ी नाम गुण	२६९
दोनों जम्बीरी नाम गुण	२६९
नीम्बू नाम गुण	२६९
मीठा नीम्बू नाम गुण	२६९
कमरख नाम गुण	२७०
इमली नाम गुण	२७०
अमलवेत नाम गुण	२७०
विषामिल नाम गुण	२७०
चतुरम्ल पञ्चाम्ल का लक्षण गुण	२७१
परिभाषा	२७१
इति फलवर्गः ॥	२७१
धातुआदिका वर्ग ॥	२७१
धातुवों के लक्षण गुण	२७१
सोने की उत्पत्ति नाम लक्षण गुण	२७१
चांदीकी उत्पत्ति नाम लक्षण गुण	२७२
ताम्रकी उत्पत्ति नाम लक्षण गुण	२७३
रांग नाम लक्षण गुण	२७४
यसद नाम लक्षण गुण	२७४
सीसे की उत्पत्ति नाम गुण लक्षण	२७४
लोहकी उत्पत्ति नाम लक्षण गुण	२७५
सारलोहका लक्षण गुण	२७५
कान्तलोहकालक्षण गुण	२७५
मण्डूर के लक्षण गुण	२७६
अथ उपधातु	२७६
सोनामाखी नाम गुण	२७६
रूपामाखी नाम गुण	२७७
लीलाथोथा नाम गुण	२७७
खपरिआ गुण	२७७
कांसा नाम गुण	२७७
दोनों पीतल के नाम गुण	२७८
सिन्दूर नाम गुण	२७८
शिलाजीत नाम गुण	२७८
पारे की उत्पत्ति लक्षण नाम गुण	२७९
उपरसों के लक्षण गुण	२८०
शिंगरिफ नाम लक्षण गुण	२८०
गन्धक की उत्पत्ति नाम लक्षण गुण	२८१
अभ्रक की उत्पत्ति नाम लक्षण गुण	२८१
हरतालके नाम ल० गुण	२८२
मैनसिल नाम गुण	२८३
सुरमे के नाम गुण	२८३
सोहागा नाम गुण	२८३
रेह नाम गुण	२८४
लोहचुम्बक नाम गुण	२८४
गेरू व सुनहरीगेरू नाम गुण	२८४
खड़िआ नाम गुण	२८४
बालूनाम गुण	२८५
खपरिया नाम गुण	२८५
कसीस नाम गुण	२८५
सोरठी नाम गुण	२८५
कांदो नाम गुण	२८५
पहाड़ी माटी उत्पत्ति लक्षण नाम गुण	२८६
रत्नकी निरुक्ति	२८६
रत्नोंका निरूपण	२८६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
हीरेके नाम लक्षण गुण	२८७	शूकधान्य	२९३	अथ शाकवर्गः ॥	३०१	कड़वीलौकी नाम गुण	३०८
हीरे के भस्म का गुण	२८७	उनके नाम गुण	२९३	शाकनिरूपण	३०१	घियातोरई नाम गुण	३०८
पन्ने के नाम	२८८	गेहूंके नाम गुण लक्षण	२९४	शाकों के गु	३०१	तोरी नाम गुण	३०८
माणिक के नाम	२८८	अथ शिम्बीधान्य	२९४	दोनों बथुवोंके नाम गुण	३०१	पटोल नाम गुण	३०९
पुखराज के नाम	२८८	और उसके पर्याय	२९४	पोय नामगुण	३०१	कुन्दरू नाम गुण	३०९
नीलम के नाम	२८८	उनके गुण	२९४	दोनों मरसेके नाम गुण	३०२	सेमसेमा नाम गुण	३०९
गोमेद नाम	२८८	मूंगके गुण	२९५	चौराई नाम गुण	३०२	सहिंजना नाम गुण	३१०
वैदूर्य नाम	२८८	उड़द के गुण	२९५	जलचौराई नाम गुण	३०२	बैंगन छोटा बड़ा	३१०
मोती नाम गुण	२८८	लोबिया नाम गुण	२९५	पलकी नाम गुण	३०२	सफ़ेद नाम गुण	३१०
मूंगे के नाम	२८८	पावय नाम गुण	२९६	नरिचानाम गुण	३०३	टिंडा नाम गुण	३१०
रत्नों के गुण	२८८	मोठ नाम गुण	२९६	पटुआ नाम गुण	३०३	खेखसा नाम गुण	३१०
कौनसा रत्न किस ग्रहको		मसूर नाम गुण	२९६	कलम्बीसाग नाम गुण	३०३	करेरुआ नाम गुण	३११
हित होताहै	२८८	चनेके नाम गुण	२९७	नोनिया नामगुण	३०३	कटलीफल नाम गुण	३११
उपरत्नों का निरूपण	२८८	मटर नाम गुण	२९७	दोनों चूकके नाम गुण	३०३	नालीका साग नाम गुण	३११
विषके नाम लक्षण गुण	२८९	खेसारी नाम गुण	२९७	चेबुना नाम गुण	३०४	अथ कंदशाक	३११
वचनाकका लक्षण गुण	२८९	कुलथी नाम गुण	२९७	हुरहुर नाम गुण	३०४	सूरणके नाम गुण	३११
हारिद्रकका लक्षण गुण	२८९	तिल नाम गुण	२९७	शिरिआरि नाम गुण	३०४	आलू नाम गुण	३११
सौराष्ट्रिककालक्षण गुण	२८९	अलसी नाम गुण	२९८	मुईपत्र नाम गुण	३०४	कठिआआलूके नामगुण	३११
सींगियाका लक्षण	२८९	तोरी नाम गुण	२९८	अजवाइन साग नाम गुण	३०५	पिड़ालू नाम गुण	३११
कालकूटका लक्षण	२८९	दोनों सरसोंकेनाम गुण	२९८	चकवड़ नाम गुण	३०५	अरुई नाम गुण	३१२
हालाहलका लक्षण	२९०	दोनों राईके नाम गुण	२९८	सेहुंड़ नाम गुण	३०५	दोनोंमूली नाम गुण	३१२
ब्रह्मपुत्रका लक्षण	२९०	अथ क्षुद्रधान्य	२९८	पित्तपापड़ा नाम गुण	३०५	गाजर नाम गुण	३१२
उपविषोंका निरूपण	२९१	कंगुनी नाम गुण	२९९	गिलोयपत्र नाम गुण	३०५	कदली नाम गुण	३१२
इति धात्वादिवर्गः ॥	२९१	चीना नाम गुण	२९९	कसौन्दी नाम गुण	३०६	मानकेचू नाम गुण	३१३
———		सांवा नाम गुण	२९९	चनेकासाग नाम गुण	३०६	सुथनी नाम गुण	३१३
अथ धान्यवर्गः ॥	२९१	कोदो नाम गुण	२९९	केराव नाम गुण	३०६	हस्तिकर्ण नाम गुण	३१३
धान्यों के भेद	२९१	सरबीज नाम गुण	२९९	सरसोंसाग नाम गुण	३०६	केमुआ नाम गुण	३१३
शालिधान्यकालक्षणगुण	२९१	बांसबीज नाम गुण	२९९	अथ पुष्पशाक	३०६	कसेरू नाम गुण	३१३
धानों के नाम	२९१	कुसुम्भबीज नाम गुण	३००	अगस्ती फूलके गुण	३०६	परमआदि कन्दोंके नाम	
उन के गुण	२९१	देवधान नाम गुण	३००	केलेकेफूलका गुण	३०६	गुण	३१४
लालधान के गुण	२९२	तिनी नाम गुण	३००	सहिंजनके फूलका गुण	३०७	खेदज शाक नाम गुण	३१४
व्रीहीधान्यके लक्षण गुण	२९२	पुनेरा नाम गुण	३००	सेमलके फूलका गुण	३०७	इति शाकवर्गः ॥	
साठी के लक्षण गुण	२९३	इनकेनयेपुरानेकागुणदोष	३००	अथ फलशाक	३०७	—०—	
साठी के नाम	२९३	इति धान्यवर्गः ॥	३००	दोनों पेठेके नाम गुण	३०७		
उनके गुण	२९३	—०—		लौकी नाम गुण	३०७		

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भावप्रकाशके पूर्वखण्डका सूचीपत्र ॥

द्वितीयोभागः

अथ मांसवर्गः

विषय	पृष्ठ
उसमेंमांसकेनाम	३१५
जाङ्गलकेलक्षण और गुण	३१५
ग्राम्यआठ जाङ्गलजाति	३१५
आनूपका लक्षण गुण	३१५
जाङ्गलोंकी गणना विशिष्ट गुण	३१६
बिलेशयोंकी गणना गुण	३१६
गुहाशयोंकी गणना गुण	३१६
पर्णमृगोंकी गणना गुण	३१६
विष्किरोंकी गणना गुण	३१७
प्रतुदोंकी गणना गुण	३१७
प्रसहोंकी गणना गुण	३१७
कूलेचरोंकी गणना गुण	३१८
प्लवोंकी गणना गुण	३१८
कोशस्थोंकीगणना गुण	३१८
पादियोंकी गणना गुण	३१८
मछलियों के नाम गुण	३१६
जाङ्गलादियोंकेनामगुण	३१६
पक्षियों के नाम गुण	३१९
उनविष्किरोंमें बटेर आ०	३२१
प्रतुदों में हरीत आदि	३२२
पक्षिअण्डके गुण	३२३
ग्राम्यों में छागका गुण	३२३
मेढ़ेके गुण	३२३
दुम्बा क गुण	३२३
बर्दगाय	३२४
घोड़े के नाम गुण	३२४
कूलेचरोंमें भैंसका नामगुण	३२४
मण्डूक नाम गुण	३२४
पादियों में कछुआ	३२४
तत्काल हतके मांसका नाम गुण	३२५
स्वयंमृतकेमांसकागुणदोष	३२५
वृद्धबालके मांसकादोषगु.	३२५
विषादि से मृतके मांसका दोष	३२५
मछलियों में रोहूके गुण	३२५
सिलन्धा गुण	३२६
भाकुर गुण	३२६
मोचिका गुण	३२६
सींगी गुण	३२६
हीलसा गुण	३२६
सौरी गुण	३२७
गर्गरा गुण	३२७
कवई गुण	३२७
वाम्बी गुण	३२७
दण्डेरी गुण	३२७
अरंगी गुण	३२७
पपता गुण	३२७
गरई गुण	३२७
मंगुरी गुण	३२७
टेंगरा गुण	३२७
शफरीपाठी गुण	३२८
छोटीमछलियों के गुण	३२८
बहुतछोटी मछलियों के गुण	३२८
मछलियोंकेअण्डे के गुण	३२८
सूखी मछलियों के गुण	३२८
दग्धमत्स्य के गुण	३२८
कूपआदि के मछलियों का गुण	३२८
ऋतुविशेषमें मत्स्यविशेष गुण	३२९
अनन्तर कृतान्नवर्गः	३२९
उसमें अन्नका साधन प्रकार	३२९
और सिद्धहुओंका गुण	३२९
परिभाषा	३२९
भातके नाम और साधन गुण	३२९
दाल के नाम गुण	३२९
खिचड़ी नाम गुण	३३०
खीर के नाम गुण	३३०
सेंवई नाम गुण	३३१
मण्डा नाम गुण	३३१
लोई नाम गुण	३३१
दुन्नौरी नाम गुण	३३१
लपसी नाम गुण	३३१
रोटी नाम गुण	३३२
अंगाकडी गुण	३३२
जवरोटी	३३२
उड़दकी रोटी गुण	३३२
चनेकी रोटी गुण	३३३
पिट्ठी गुण	३३३
बेढ़ई गुण	३३३
पापड़ गुण	३३३
पूरी गुण	३३३
बड़ा नाम गुण	३३४
कांजीबड़ा नाम गुण	३३४
ऊरीबड़ा गुण	३३४
मूंगकी बड़ियां	३३५
उड़दकी बड़ियां	३३५
कोहडोरी गुण	३३५
मूंगवटी गुण	३३५
पानके सेढ़ेकी विधि	३३५
क्षारिकवच्छ गुण	३३५
कढ़ी नाम गुण	३३५
अद्रकवटिका	३३६
पकोड़ियां गुण	३३६
गरममसाला गुण	३३६
अनन्तर मांस प्रकार	३३६
सेहुड़ गुण	३३७
अखनी गुण	३३७
शोरुआ गुण	३३७
तलेहुऐ मांसका गुण	३३८
सीख गुण	३३८
मांसशृंगाट गुण	३३८
मांसरस गुण	३३८
शाकपाकविधि	३३९
माँठके गुण	३३९
सम्पावपराक गुण	३३९
कर्पूरनालि गुण	३४०
फेनी गुण	३४०
सोहाली गुण	३४०
सेवकालाडू गुण	३४०
मोतीलाडू गुण	३४१
भर्भरी गुण	३४१
सेवकेलड्डू गुण	३४१
दूधकूपिका गुण	३४१
जलेबी गुण	३४१
सिखरन गुण	३४२
शर्बत गुण	३४२
पन्नाके गुण	३४३
इमलीका गुण	३४३
नींबूकापन्ना गुण	३४३
धनियांकापन्ना गुण	३४३
कांजी का गुण	३४३
जारी गुण	३४४
तक्र गुण	३४४
दुग्ध गुण	३४४
सत्तूके गुण	३४४
जवकेसत्तूका गुण	३४४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय	पृष्ठ
चनेके सत्तका गुण	३४५
चांवलों के सत्तूका गुण	३४५
बहुरी गुण	३४५
खीलों का गुण	३४५
चिड़वा गुण	३४५
होला गुण	३४६
ऊंवी गुण	३४६
घुघुरी गुण	३४६
तिलकुट गुण	३४६
खल नाम गुण	३४७
चांवल गुण	३४८
(इति कृतान्नवर्गः)	३४८
अथ वारिवर्गः ॥	३४८
पानी के नाम और गुण	३४८
उनके भेद	३४८
उनमें धाराका लक्षण और गुण	३४८
अनन्तरधारा जलके भेद	३४८
उनमें गङ्गा और समुद्रके जलका गुण लक्षण	३४८
बेऋतुके जलका गुण	३४८
ओलोंके जलकाल० गुण	३४८
पालाका लक्षण गुण	३४९
बरफके पानीका ल० गुण	३४९
भूमिके जलका भेद	३४९
और उनके ल० गुण	३४९
नदी आदिके जलकालक्षण गुण	३५०
औद्भिदका ल० गुण	३५०
झरनेके जलकाल०गुण	३५१
सारसजलकाल० गुण	३५१
तालाबके ज० ल० गुण	३५१
बावड़ी के ज० ल० गुण	३५१
कुयेंके पानीका ल० गुण	३५१
चौण्ड्यका ल० गुण	३५२
गढ़ेके पानीका ल० गुण	३५२

विषय	पृष्ठ
चिफिर जल ल० गुण	३५२
केदारके ज० ल० गुण	३५२
वर्षा ज० के ल० गुण	३५२
अनन्तर हेमन्तादिकाल विरोधमें विहित जल विशेष	३५३
जल ग्रहणका ल०	३५३
जलकी पानविधि	३५४
शीतलजलपानका विषय	३५४
जलपानकीआवश्यकता	३५४
प्रशस्त जल	३५५
निन्दित जल	३५५
दुष्टजलका निर्दोष करनेका उपाय	३५५
पीयेहुयेजलकीपाकविधि	३५५
(इति वारिवर्गः)	३५५
अथ दुग्धवर्गः ॥	३५६
दूधके नाम गुण	३५६
गायके दूधका गुण	३५६
वर्णविशेषमें गुणविशेष	३५६
वे बछड़ेवाली गायके दूधका गुण	३५७
बाखड़ीगायकेदूधकागुण	३५७
देशविशेषमें गुणविशेष	३५७
भोजन विशेष में गुण विशेष	३५७
भैंसकेदूधकागु०	३५७
बकरीके दूधका गु०	३५७
मृगआदिके दूधका गु०	३५७
भेड़ी के दूधका गु०	३५८
घोड़ीके दूधका गु०	३५८
ऊंटनीके दूध का गु०	३५८
हथिनीके दूधकागु०	३५८
स्त्रीदुग्ध गु०	३५८
धारोष्णदुग्धकागु०	३५८
पीयूषकिलाटक्षीर	

विषय	पृष्ठ
शाकतक्रपिण्डमोरट	
इनकाल०गु०	३५९
मलाईके गु०	३५९
मीठेदूधकागु०	३५९
सबेरेकेदूधका गु०	३६०
दुग्धसेवनसमयविशेष और गु०	३६०
बिलोयेहुये दूधकागुण	३६०
गायकेदूधका गु०	३६०
निन्दित दुग्ध गु०	३६१
इति दुग्ध गु०	३६१
अनन्तरदहीकागु०	३६१
दधिभेद	३६१
मन्दआदि दधिके ल० गुण	३६१
गायके दहीकागुण	३६२
दोषविशेष और रोगविशेष में तक्रविशेष	३६२
भसके दहीकागुण	३६२
बकरीकेदहीकागुण	३६२
पकायेहुये दूधके दहीका गुण	३६२
बेमलाईके दूधके दहीका गुण	३६२
निचोड़े दहीकागुण	३६२
शक्करा आदि मिलेहुयेदही कागुण	३६३
रातमें दधिभोजननिषेध	३६३
अनन्तर ऋतुविशेषसे विधिनिषेध	३६३
सरमस्तुकाल०गुण	३६३
(इति दधिवर्गः)	३६४
अथ तक्रवर्गः	३६४
तक्रसेवन के निमित्त तक्र विषय	३६५

विषय	पृष्ठ
गौ आदिके तक्र का गु०	३६६
(इति तक्रवर्गः)	३६६
अथ माखन वर्गः	३६६
माखनके ना०गु०	३६६
भैंसके माखनका गु०	३६६
दूधके माखन का गु०	३६६
ताजेमाखनका गु०	३६६
बासी माखनका गु०	३६६
(इति माखनवर्गः)	३६७
अथ घृतवर्गः	३६७
उसमें घृतके ना० गु०	३६७
गायके घृतका गु०	३६७
भैंसके घृतका गु०	३६७
बकरीके घृतका गु०	३६८
ऊंटनी के घृतका गु०	३६८
भेड़के घृतका गु०	३६८
स्त्री घृतगुण	३६८
घोड़ीके घृतका गु०	३६८
दूधके घृतका गुण	३६८
हथिनीके घृतका गुण	३६८
पुराने घृतका गुण	३६९
नवीन घृतका गुण	३६९
जिसमें घृत न देनाचाहिये उस का विषय	३६९
(इति घृतवर्गः)	३६९
अथ मूत्रवर्गः	३६९
गोमूत्रगुण	३६९
मानुषमूत्रगुण	३७०
(इति मूत्रवर्गः)	३७०
अथ तैलवर्गः	३७०
तैलका स्वरूपनिरूपण	३७०
तिल तेल गुण	३७०
सरसों राई तेलगुण	३७१
तोरी तेल गुण	३७१
अलसी तेल गुण	३७२
कुसुम्भतेल गुण	३७२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय	पृष्ठ
पोस्तके तेलका गुण	३७२
अण्डी तेल गुण	३७२
रालतेल गुण	३७२
सर्व तेल गुण	३७३
(इति तैलवर्गः)	३७३
अथ सन्धानवर्गः	३७३
उनमें कांजीका ल० गु०	३७३
तुषोदकका ल०गु०	३७३
सौवीरका ल० गुण	३७३
आरनालका ल०गुण	३७४
धान्याम्लका ल०गुण	३७४
शिण्डाकी का ल०गुण	३७४
शुक्तका ल० गुण	३७४
सन्धानका ल० गुण	३७४
मद्यका ना० ल० गुण	३७४
अरिष्टका ना०ल०गुण	३७५
सुरापानकाल०गुण	३७५
वारुणीका ल० गुण	३७५
दोनोंसीधूका ल०गुण	३७५
आसवका ल० गुण	३७६
नवपुराण मद्य गुण	३७६
मद्यों के गन्ध दूरहोने का उपाय	३७७
(इति सन्धानवर्गः)	३७७
अथ मधुवर्गः	३७७
मधुके ना०गुण	३७७
मधुके भेद	३७७
उनके ल० गुण	३७७
माक्षिक का गुण	३७७
भ्रामर का ल० गुण	३७८
क्षौद्र का ल० गुण	३७८
पौतिक का ल० गुण	३७८
छात्रका ल० गुण	३७८
आर्घ्यका ल० गुण	३७९
औद्दालका ल० गुण	३७९
दाल का ल० गुण	३७९

विषय	पृष्ठ
नवपुराण मधु गुण	३७९
शीतलमधुका गुणाधिक्य और उष्ण का निषेध	३७९
मोम गुण	३८०
(इति मधुवर्गः)	३८०
अथ ईखवर्गः	३८०
ईखके ना० गुण	३८०
ईखके भेद	३८०
श्वेत पौंडा आदिके गुण	३८०
ईखकेरसकेपदार्थका गुण	३८१
राब का लक्षण गुण	३८२
खांड़का ल० गुण	३८३
गुड़का ल० गुण	३८३
पुराने गुड़का ल० गुण	३८३
नये गुड़का ल० गुण	३८३
चीनीका ल० गुण	३८४
गुड़शक्करका गुण	३८४
मधुखण्ड का गुण	३८४
(इति ईखगुण)	३८४
अथ अनेकार्थ नामवर्गः	३८४
उनमें दो अर्थवाले नाम	३८४
तीन अर्थवाले नाम	३८६
बहुत अर्थवाले नाम	३८८
अथ मानपरिभाषा	३८९
मागधमान	३८९
कालिङ्गमान	३९०
(इति मानपरिभाषा)	३९१
औषधियों का विधान	३९१
स्वरसविधि	३९१
तण्डुलजलविधि	३९२
हिमविधि	३९२
मन्थविधि	३९२
फाण्टविधि	३९२
कल्कविधि	३९२
चूर्णविधि	३९२
भवनाविधि	३९३

विषय	पृष्ठ
पुटपाकविधि	३९३
उष्णोदकविधि	३९३
क्षीरपाकविधि	३९४
क्राथविधि	३९४
काढ़ेकीमानमात्रा	३९४
तन्त्रान्तरोक्त अवलेह विधि	३९५
वटकाविधि	३९५
घृततैलकीविधि	३९६
व्यवहारमात्रा	३९७
पुनर्विशेष	३९७
सन्धानविधि	३९७
आसवअरिष्टका ल०	३९८
सामान्यसे अरिष्टविधि	३९८
अथ धातुवोंकी शोधन मारणविधि	३९९
उसमेंमारणयोग्यसुवर्ण	३९९
अशुद्धसुवर्ण का दोष	३९९
सुवर्ण की मारणविधि	३९९
इसमेंदूसराप्रकार	४००
सुवर्णभस्मका गुण	४०१
तन्त्रभेदमें पुटप्रकार	४०१
महापुट	४०१
तन्त्रभेदमें यन्त्रप्रकार	४०२
वालुकायन्त्र	४०२
दोलायन्त्र	४०२
स्वेदनयन्त्र	४०२
विद्याधरयन्त्र	४०२
भूधरयन्त्र	४०३
डमरूयन्त्र	४०३
मारणयोग्यरूप्य	४०३
उसमें अयोग्य	४०३
शोधनविधि	४०३
अशुद्ध चांदीका दोष	४०३
उसमें दूसरा प्रकार	४०३
चांदीके भस्मकागु०	४०४

विषय	पृष्ठ
मारणयोग्य ताम्र	४०४
अयोग्यताम्रम्	४०४
शोधनविधि	४०४
ताम्रकी मारणविधि	४०४
तांबेकी भस्म का गु०	४०५
रांगका स्वरूपनिरूपण	४०५
अशुद्ध उसकादोष	४०६
रांगकी मारणविधि	४०६
रांगके भस्मकागुण	४०६
सीसेका शोधन	४०७
सीसेकी मारणविधि	४०७
नागभस्मका गु०	४०७
अशुद्धलोहका दोष	४०७
लोहेकी मारणविधि	४०८
लोहभस्मका गु०	४०९
उपधातुवों के मारण प्रकार	४०९
अशुद्धसोनामाखीकादोष	४०९
मारणविधि	४१०
रूपामाखीकाशोधन	४१०
मारणविधि	४१०
उनके विशेषगु०	४१०
लीलेथोथेका शोधन	४१०
शुद्धका गुण	४१०
मारणविधि	४११
सिन्दूरकाशोधन	४११
अथ गुण	४११
शिलाजीतशोधन	४११
शोधन योग्य	४११
दूसराप्रकार	४१२
हारीतका कहाहुआ प्रकार	४१२
शुद्धशिलाजीतकागु०	४१३
पारेकी शोधनविधि	४१३
मूर्च्छनम्	४१४
ऊर्ध्वपातन	४१४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय	पृष्ठ
अधःपातन	४१४
मुख्यदोषहरशोधनविधि	४१५
सर्वदोषहरसे क्षिप्रशोधनविधि	४१५
पारेकीमारणविधि	४१५
दूसराप्रकार	४१६
रसकपूरकीविधि	४१७
सिन्दूररस	४१७
मूर्च्छितपारेकीविधि	४१८
उपरसोंकीशोधनविधि	४१८
उसमेंहिंगुलकीशोधनविधि	४१८
शुद्ध हिंगुल के गुण	४१८
हिंगुलसे पारा निकालनेकी विधि	४१८
अशुद्धगन्धककादोष	४१८
शोधनविधि	४१६
शुद्धगन्धकके गुण	४१६
अशुद्धअभ्रक का दोष	४१९
उसकी शोधनविधि	४१६
उसका मारण	४१९
धान्याभ्रककी विधि	४२०
अभ्रकभस्मके गुण	४२०
अशुद्ध हरताल का दोष	४२०
उसकीमारण विधि	४२०
शुद्धहरतालभस्मके गुण	४२१
अशुद्धमैनशिलके दोष	४२१
उसकीशोधनविधि	४२१
खपरियाकीशोधनविधि	४२२
उसकागुण	४२२
सब उपरसों की साधारण शोधनविधि	४२२
उसमें विशेष	४२२
शुद्धउपरसोंके अलगगुण	४२२
रत्नोंकी शोधन मारण विधि	४२३
हीरेकेदोष	४२३
हीरेकीशोधनविधि	४२३
हीरेकीमारणविधि	४२३
भस्मकरनेकीदूसरीविधि	४२३
हीरेकेभस्मकागुण	४२३
बाकीरत्नोंकीशोधनमारण विधि	४२३
विषोंकीशोधनविधि	४२४
वचनाभका लक्षण	४२४
विषकी शोधनविधि	४२४
विषके गुण	४२४
उपविषोंके लक्षण	४२४
गुणवालेद्रव्योंकीअवधि	४२४
घृततैलमें विशेष	४२५
स्नेहपानविधि	४२६
पञ्चकर्म	४२८
वमनविधि	४२८
विरेचनविधि	४३१
स्नेहबस्तिविधि	४३४
अष्टादशदिवसमें अधिक बस्ति	४३६
निरूहबस्तिविधि	४३९
उत्तरबस्तिविधि	४४२
फलवर्तिविधि	४४३
नासलेनेकीविधि	४४४
विरेचननास	४४५
बृंहणनास	४४६
धूम्रपाननास	४४९
गराराकवल और मज्जन विधि	४५१
उसमें उनके भेद	४५१
गरारा	४५१
कवल	४५१
गंजन	४५२
स्वेदविधि	४५२
तापस्वेद	४५३
ऊष्मस्वेद	४५३
उपनाहस्वेद	४५४
द्रव्यस्वेद	४५५
पक्षान्तर	४५६
मूर्धतैलविधि	४५६
कर्णविधि	४५६
लेपविधि	४५७
आलेप	४५७
रक्तस्रावविधि	४५८
प्रसादनकर्म्म	४६१
कल्पविधि	४६२
सेकविधि	४६२
आश्चोतनविधि	४६२
पिण्डीविधि	४६३
बिडालकविधि	४६३
तर्पणविधि	४६३
पुटपाकविधि	४६४
तिक्तकद्रव्य	४६५
अञ्जनविधि	४६५
लेखनीवर्त्ती	४६६
चन्द्रोदयावर्तिलेखनी	४६७
रोपणीवर्ति	४६७
स्नेहनीवर्ति	४६७
रसक्रियालेखनी	४६७
रोपणीरसक्रिया	४६७
स्नेहनीरसक्रिया	४६८
लेखनीचूर्ण	४६८
रोपणचूर्ण	४६८
स्नेहनचूर्ण	४६८
प्रत्यञ्जनविधि	४६८
दृष्टिप्रसादनीशलाका	४६९
औषधसेवनकाल०	४६९
प्रथमकाल	४६९
द्वितीयकाल	४६९
तृतीयकाल	४७०
चतुर्थकाल	४७०
पञ्चमकाल	४७०
निरन्नऔषधकागुण	४७०
सान्न औषधकागुण	४७०
चरकोक्त औषधलक्षण विधि	४७१
चिकित्सार्थरोगीकी परीक्षा	४७१
तन्त्रान्तरादिमें नेत्र परीक्षा	४७२
जिह्वापरीक्षा	४७२
मूत्रपरीक्षा	४७२
नाड़ीपरीक्षा	४७३
रोगज्ञानलक्षणादिहेतुका लक्षण	४७४
उसमेंहेतु व्याधियों के ज्ञानार्थ संप्राप्तिकाल०	४७४
उसकेऔपाधिकभेद	४७४
संप्राप्तिव्याधिकेज्ञानार्थ हेतु	४७५
लक्षणकालक्षण	४७६
उपशयका लक्षण	४७६
वातकाउपशय	४७६
पित्तकाउपशय	४७७
कफकाउपशय	४७७
पित्तकेप्रकोपका कारण	४७९
विदाही लक्षण	४७९
कफप्रकोप का कारण	४७९
रोगकेहेतुरोगका वैचित्र्य	४८०
क्षीणदोषधातुमलों की चिकित्सा	४८०
स्वस्थकाल०	४८०
दोषधातुमलोंकीवृद्धिका निदान	४८२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
बहुत बढ़ेहुये उनके		क्षीण उनके ल०	४८३	वर्धन	४८५	बलवृद्धिनिदान	४८७
लक्षण	४८२	ओजक्षयकानिदान	४८४	क्षीणहोनेमेंकारण	४८५	बलाबललक्षण	४८७
अतिवृद्धदोषमलोंका		क्षीणओजवालेका		सुश्रुतमतमेंबलल-		इति	४८७
कर्षण	४८३	लक्षण	४८४	क्षण	४८७		
दोषधातुमलके क्षयका		उदरसंकोच	४८४	बलक्षयनिदान	४८७		
कारण	४८३	क्षीणदोषधातुमलोंका		बलक्षयका लक्ष०	४८७		

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥

भावप्रकाश पूर्वखण्ड भाषाटीकासहित

गजमुखममरप्रवरंसिद्धिकरंविघ्नहर्तारम् ।
गुरुमवगमनयनप्रदमिष्टकरीमिष्टदेवतांवन्दे ॥ १ ॥

स्फुरन्नूतनद्योतवाह्लीकरागैः ककुप्कामिनीवक्त्रपद्मानिलिम्पन् । महानन्दमन्दारपुष्पायितश्रीःसमु द्यन्विवस्वान्रुजंवोनिहन्तु १ चौरासियागोकुलचन्द्रसूरिसूनुःसकालीचरणाभिधानः । तत्तत्क्रिया काण्डविकाशसिद्ध्यैभावप्रकाशंविवरीवरीति २ जागर्तुसौजन्यसुधासमुद्रप्रवाहनिर्णिक्ततरात्मवृत्तिः । क्षमापतिर्येनविदाव्यधायिभावप्रकाशस्फुरणेप्रयासः ॥ ३ ॥

सब देवताओं में श्रेष्ठ अणिमादि अष्ट सिद्धियों के देनेवाले तथा विघ्नों के हरनेवाले श्रीगणेश और ज्ञानरूप नेत्रोंके देनेवाले गुरु तथा वांछित फलोंके देनेवाले इष्टदेवताको नमस्कार करताहूं १॥

आयुर्वेदागमनंक्रमेणयेनाभवद्भूमौ ।
प्रथमंलिखामितमहंनानातंत्राणिसंदृश्य ॥ २ ॥

आयुर्वेद अर्थात् वैद्यकशास्त्रका जिसभांति पृथ्वी में आगमन हुआ उसको मैं अनेक शास्त्रों को देखकर प्रथम लिखताहूं ॥ २ ॥ आयुर्वेदस्यलक्षणमाह ॥

आयुर्हिताहितं व्याधेर्निदानं शमनं तथा ।
विद्यतेयत्रविद्वद्भिः सआयुर्वेदउच्यते ॥ ३ ॥

आयुर्वेदकालक्षणकहते हैं ॥ जिसमें जीवन के हिताहित अर्थात् बढ़ाने घटानेवाली वस्तु तथा रोगों का निदान अर्थात् प्रथमोत्पत्ति का कारण और रोगों के नाश का उपाय कहाहो वह पण्डितों करके आयुर्वेद कहा जाता है ॥ ३ ॥ आयुर्वेदस्यनिरुक्तिमाह ॥

अनेनपुरुषोयस्मादायुर्विन्दति वेत्ति च ।
तस्मान्मुनिवरैरेष आयुर्वेदइति स्मृतः ॥ ४ ॥

शरीरजीवयोर्योगोजीवनम् तेनावच्छिन्नःकालआयुः, आयुर्वेदद्वारापुण्यापुण्यनापुण्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

णिच द्रव्यगुणकर्म्माणिज्ञात्वा तेषांसेवनत्यागाभ्यामारोग्येणायुर्विंन्दति, तेनैवहेतुनापर स्याप्यायुर्वेत्तिच ॥

जिसकेद्वारा पुरुष आयुको पाता और जानताभी है उसे मुनियोंने आयुर्वेद कहा है, शरीर और जीव इन दोनोंका योग जीवन है और उससे घिराहुआ काल आयु कहाताहै, इस आयुके हिताहित द्रव्य गुण कर्मों को आयुर्वेद के द्वारा जानकर उनके सेवन तथा त्याग से अर्थात् हितके सेवन और अहित के त्यागसे पुरुष आरोग्यपूर्वक उत्तम आयुको पाता है, और ऐसेही दूसरों की भी आयुको जानता है ॥ ४ ॥

आयुर्वेदप्रादुर्भावक्रममाह, तत्रादौब्रह्मणःप्रादुर्भावः ॥

विधाताथर्वसर्वस्वमायुर्वेदंप्रकाशयन् ।
स्वनाम्नासंहितांचक्रेलक्षश्लोकमयीमृजुम् ॥ ५ ॥

अब आयुर्वेद की उत्पत्तिका क्रम कहते हैं तिसमें प्रथम ब्रह्माकी उत्पत्ति ॥ ब्रह्माजी अथर्ववेद के सारार्थरूप आयुर्वेदको प्रकटकरतेहुये अपने नामसे एकलक्षश्लोकोंकी सरलसंहिता बनातेभये ५ ॥

ततःप्रजापतिंदक्षंदक्षंसकलकर्म्मसु ।
विधिर्धीनीरधिंसांगमायुर्वेदमुपादिशत् ॥ ६ ॥

तदनन्तर ब्रह्मा जी वही सांग आयुर्वेद सब कामों में चतुर बुद्धिकेसागर दक्ष प्रजापति को पढ़ाते भये ॥ ६ ॥

अथदक्षप्रादुर्भावः ॥

अथदक्षःक्रियादक्षःस्ववैद्यौवेदमायुषः ।
वेदयामास विद्वांसौ सूर्य्यांशौ सुरसत्तमौ ॥ ७ ॥

अथदक्षसे आयुर्वेद की उत्पत्ति ॥ तदनन्तर क्रियामें चतुर दक्षजी सूर्य्य के पुत्र देवोंके वैद्य विद्वान् अश्विनीकुमारों को आयुर्वेद पढ़ाते भये ॥ ७ ॥

अथाश्विनीकुमारप्रादुर्भावः ॥

दक्षादधीत्यदस्रौविसन्तनुतःसंहितांस्वीयाम् ।
सकलचिकित्सकलोकप्रतिपत्तिविवृद्धयेधन्याम् ॥ ८ ॥

अथ अश्विनीकुमारों से आयुर्वेदकी उत्पत्ति ॥ तदनन्तर दक्षसे पढ़कर सम्पूर्ण वैद्योंकी चतुरता बढ़ाने के लिये अश्विनीकुमार अपनी उत्तम संहिता बनाते भये ॥ ८ ॥

स्वयम्भुवःशिरश्छिन्नंभैरवेणरुषाथतत् ।
अश्विभ्यांसंहितंतस्मात्तोयातौयज्ञभागिनौ ॥ ६ ॥

यही अश्विनीकुमार क्रोधसे भैरवके काटेहुये ब्रह्माके शिरको जबसे जोड़ते भये तबसे यज्ञमें भाग पानेलगे ॥ ६ ॥

देवासुररणे देवादैत्यैर्यैःसक्षताःकृताः ।
अक्षतास्तेकृताःसद्योदस्राभ्यामद्भुतंमहत् ॥ १० ॥

और यह उनका अति अद्भुत कर्म्म हुआ जो कि उन्होंने देवासुरसंग्राम में घायलहुये देवताओं को अच्छा किया ॥ १० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वज्रिणोऽभूद्भुजस्तम्भःसदस्राभ्यांचिकित्सितः।
सोमाग्निपतितश्चन्द्रस्ताभ्यामेवसुखीकृतः ॥ ११ ॥

और इन्हीं अश्विनीकुमारों ने इन्द्रके जकड़ेहुये हाथको सुधारा औ किसी समय चन्द्रमा अमृत से रहित हुआ था उसे भी इन्होंनेही सुखी किया ॥ ११ ॥

विशीर्णदशनाःपूष्णो नेत्रेनष्टेभगस्य च।
शशिनोराजयक्ष्माभूदश्विभ्यान्तेचिकित्सिताः ॥ १२ ॥

और किसी समय दक्षके यज्ञमें पूषा नाम देवताके टूटेहुये दांत व भग नाम देवता के फूटेहुये नेत्र तथा चन्द्रमाके जो राजयक्ष्मा रोग हुआ था यह सब भी इन्हीं अश्विनीकुमारों करके अच्छे किये गये ॥ १२ ॥

भार्गवश्च्यवनःकामीवृद्धःसन्विकृतिंगतः।
वीर्य्यवर्णस्वरोपेतःकृतोऽश्विभ्यांपुनर्युवा ॥ १३ ॥

और भृगुवंशी च्यवन वृद्धहोनेके कारण कुरूपताको प्राप्त होगये थे उन्हें भी कामिजान इन्हीं अश्विनीकुमारों ने फिर स्वरवर्ण पराक्रमयुक्त तरुण बनाया ॥ १३ ॥

एतैश्चान्यैश्चबहुभिःकर्म्मभिर्भिषजांवरौ।
बभूवतुर्भृशंपूज्याविन्द्रादीनांदिवौकसाम् ॥ १४ ॥

इन सब कर्म्मों से तथा अन्य भी बहुत से कर्म्मोंकरके ये दोनों वैद्यों में श्रेष्ठ तथा इन्द्रादि देवताओं के अतिशय पूज्य होतेभये ॥ १४ ॥

अथेन्द्रप्रादुर्भावः ॥

संदृश्यदस्रयोरिन्द्रःकर्म्माण्येतानियत्नवान्।
आयुर्वेदंनिरुद्वेगंतौययाचेशचीपतिः ॥ १५ ॥

अथ इन्द्रसे आयुर्वेदकी उत्पत्ति ॥ अश्विनीकुमारों के ऐसे अद्भुत कर्म्मोंको देखकर उद्योगी इन्द्रने यत्नपूर्वक उनसे इस चमत्कारी आयुर्वेदको मांगा ॥ १५ ॥

नासत्यौसत्यसन्धेनशक्रेणकिलयाचितौ।
आयुर्वेदंयथाधीतंददतुःशतमन्यवे ॥ १६ ॥

तबइन्द्रसे प्रार्थना कियेहुये अश्विनीकुमारों ने जैसापढ़ाथा वैसाही आयुर्वेद इन्द्रको पढ़ाया ॥ १६ ॥

नासत्याभ्यामधीत्यैषआयुर्वेदंशतक्रतुः।
अध्यापयामासबहूनात्रेयप्रमुखान्मुनीन् ॥ १७ ॥

तदनन्तर अश्विनीकुमारोंसे पढ़कर इंद्रने वहीआयुर्वेद आत्रेयादि बहुतसे मुनियोंकोपढ़ाया ॥ १७ ॥

अथात्रेयप्रादुर्भावः ॥

एकदाजगदालोक्यगदाकुलमितस्ततः।
चिन्तयामासभगवानात्रेयोमुनिपुंगवः ॥ १८ ॥

एक समय मुनिश्रेष्ठ भगवान् आत्रेय जी सब जगत्को रोगग्रस्त देखकर चिन्ता करतेभये ॥ १८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किङ्करोमिक्वगच्छामिकथंलोकानिरामयाः ।
भवन्तिसामयानेतान्नशक्नोमिनिरीक्षितुम् ॥ १९ ॥

कि क्या करूं कहां जाऊं ये लोग कैसे नीरोग हों मैं इन रोगी लोगोंको देख नहीं सकाहूं॥१९॥

दयालुरहमत्यर्थंस्वभावोदुरतिक्रमः ।
एतेषांदुःखतोदुःखंममापिहृदयेऽधिकम् ॥ २० ॥

क्योंकि मैं अत्यन्त दयालु स्वभाववाला हूं और स्वभाव बदल नहीं सका इस कारण इनरोगी लोगोंके दुःख से मेरे हृदयमें अधिक दुःख होरहा है ॥ २० ॥

आयुर्वेदंपठिष्यामिनैरुज्यायशरीरिणाम् ।
इतिनिश्चित्यगतवानात्रेयस्त्रिदशालयम् ॥ २१ ॥

इसी हेतु प्राणियों के नीरोग होने के लिये मैं अवश्य आयुर्वेद पढूंगा ऐसा निश्चय करके आत्रेयजी स्वर्ग को गये ॥ २१ ॥

तत्रमन्दिरमिन्द्रस्यगत्वाशक्रंददर्शसः ।
सिंहासनसमासीनं स्तूयमानंसुरर्षिभिः ॥ २२ ॥
भासयन्तंदिशोभासा भास्करप्रतिमंत्विषा ॥
आयुर्वेदमहाचार्य्यंशिरोधार्य्यंदिवौकसाम् ॥ २३ ॥

और वहां इन्द्रके मन्दिरमें जाकर सूर्य्य के समान अपनी कांतिसे दिशाओं को प्रकाशित करते हुये सुरर्षियों करके स्तूयमान आयुर्वेद के महानाचार्य देवताओं के पूज्य इन्द्रको सिंहासनपर बैठे हुये देखा ॥ २२ । २३ ॥

शक्रस्तुतंनिरीक्ष्यैवत्यक्तसिंहासनोययौ ।
तदग्रेपूजयामासभृशंभूरितपःकृशम् ॥ २४ ॥
कुशलंपरिपप्रच्छतथागमनकारणम् ।
समुनिर्वक्तुमारेभेनिजागमनकारणम् ॥ २५ ॥

तदनन्तर इन्द्रने भी तपस्यासे अति दुर्बल आतेहुये आत्रेयजीको देख सिंहासनसे उठ आगे जाकर कुशलपूर्वक आगमनका कारण पूँछ उनका पूजन किया तब आत्रेयमुनि भी अपने आगमन का कारण कहनेलगे ॥ २४ । २५ ॥

देवराजनराजासिदिवएवयतोभवान् ।
विधात्राविहितोयत्नात्त्रिलोकीलोकपालकः ॥ २६ ॥

कि हे देवराज आप केवल स्वर्गही के राजा नहीं हैं किन्तु ब्रह्माजीने आपको त्रिलोकीका रक्षक बनाया है ॥ २६ ॥

व्याधिभिर्व्यथितालोकाः शोकाकुलितचेतसः ।
भूतलेसन्तिसन्तापंतेषांहन्तुंकृपांकुरु ॥ २७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसकारण आपसे हमारी यह प्रार्थना है कि पृथ्वी में जो लोग रोगों से व्यथित होकर शोक से आकुल चित्तवाले होरहे हैं उनके सन्तापको दूर करनेके लिये कृपाकीजिये ॥ २७ ॥

आयुर्वेदोपदेशंमेकुरुकारुण्यतोनृणाम् ।
तथेत्युक्त्वासहस्राक्षोऽध्यापयामासतंमुनिम् ॥ २८ ॥

और हमें आयुर्वेदका उपदेश कीजिये यह सुन दयालु इन्द्र तथास्तु कहकर उन आत्रये मुनीश्वर को आयुर्वेद पढ़ाते भये ॥ २८ ॥

मुनीन्द्रइन्द्रतःसांगमायुर्वेदमधीत्यसः ।
अभिनन्द्यतमाशीर्भिराजगामपुनर्महीम् ॥ २९ ॥

इसप्रकार इन्द्रसे सांग आयुर्वेद पढ़कर तथा अपने आशिषों से इन्द्रको प्रसन्नकर मुनिश्रेष्ठ आत्रेयजी फिर पृथ्वी को आये ॥ २९ ॥

अथात्रेयोमुनिश्रेष्ठोभगवान्करुणाकरः ।
स्वनाम्नासंहितांचक्रेनरचक्रानुकम्पया ॥ ३० ॥
ततोऽग्निवेशंभेडञ्चजातूकर्णम्पराशरम् ।
क्षीरपाणिंचहारीतमायुर्वेदमपाठयत् ॥ ३१ ॥

तदनन्तर मुनियों में श्रेष्ठ आत्रेयजी मनुष्योंके ऊपर दयायुक्तहो आत्रेयनाम संहिताबनातेभये ३० ॥ और उसे अग्निवेश भेड जातूकर्ण पराशर क्षीरपाणि और हारीत इनसबशिष्योंको पढ़ातेभये ३१ ॥

तन्त्रस्यकर्त्ताप्रथममग्निवेशोभवत्पुरा ।
ततोभेडादयश्चक्रुःस्वंस्वंतन्त्रंकृतानि च ॥ ३२ ॥
श्रावयामासुरात्रेयंमुनिवृन्देनवन्दितम् ।
श्रुत्वा च तानितन्त्राणिहृष्टोभूदत्रिनन्दनः ॥ ३३ ॥

इन शिष्योंमें से प्रथम अग्निवेश तन्त्रके कर्त्ता हुये तदनन्तर भेडादि आचार्य्यों ने भी अपने २ तन्त्रबनाये और अपने २ बनाये हुये तन्त्र मुनिश्रेष्ठ आत्रेय जी को सुनाये उन तन्त्रों को सुनकर आत्रेय जी बहुत प्रसन्न हुये ॥ ३२ । ३३ ॥

यथावत्सूत्रितंतस्मात्प्रहृष्टामुनयोऽभवन् ।
दिविदेवर्षयोदेवाःश्रुत्वासाध्वितितेऽब्रुवन् ॥ ३४ ॥

और वे तन्त्र बहुत अच्छे बनेथे इसकारण वहांपर सुननेवाले अन्यमुनिलोग तथा स्वर्गके देवर्षि समेत देवता लोग भी प्रसन्न होकर साधु साधु कहते भये ॥ ३४ ॥

अथभरद्वाजप्रादुर्भावः ॥

एकदाहिमवत्पार्श्वेदैवादागत्यसंगताः ।
मुनयोबहवस्तेषांनामभिःकथयाम्यहम् ॥ ३५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भरद्वाजोमुनिवरःप्रथमंसमुपागतः ।
ततोङ्गिरास्ततोगर्गोमरीचिर्भृगुभार्गवौ ३६ ॥
पुलस्त्योगास्तिरसितोवशिष्ठःसपराशरः ।
हारीतोगौतमःसांख्योमैत्रेयश्चयवनोऽपिच ॥ ३७ ॥
जमदग्निश्चगार्ग्यश्चकाश्यपःकश्यपोऽपिच ।
नारदोवामदेवश्चमार्कण्डेयःकपिञ्जलः ॥ ३८ ॥
शांडिल्यःसहकौण्डिन्यःशाकुनेयश्चशौनकः ।
आश्वलायनसांकृत्यौविश्वामित्रःपरीक्षितः ॥ ३९ ॥
देवलोगालवोधौम्यःकाम्यकात्यायनावुभौ ।
काङ्कायनोवैजपायःकुशिकोवादरायणः ॥ ४० ॥
हिरण्याक्षश्चलौगाक्षिःशरलोमाचगोभिलः ।
वैखानसाबालखिल्यास्तथैवान्येमहर्षयः ॥ ४१ ॥
ब्रह्मज्ञानस्यनिधयोयमस्यनियमस्यच ।
तपसस्तेजसादीप्ताहूयमानाइवाग्नयः ४२ ॥

अथ भरद्वाज से आयुर्वेद की उत्पत्ति ॥ एक समय हिमालय के समीप दैवयोग से भरद्वाज, अंगिरा, गर्ग, मरीचि, भृगु, भार्गव, पुलस्त्य, अगस्ति, असित, वशिष्ठ, पराशर, हारीत, गौतम, सांख्य, मैत्रेय, च्यवन, जमदग्नि, गार्ग्य, काश्यप, कश्यप, नारद, बामदेव, मार्कण्डेय, कपिञ्जल, शाण्डिल्य, कौण्डिन्य, शाकुनेय, शौनक, आश्वलायन, सांकृत्य, विश्वामित्र, परीक्षित, देवल, गालव, धौम्य काम्य, कात्यायन, कांकायन, वैजपाय, कुशिक, बादरायण, हिरण्याक्ष, लौगाक्षि, शरलोमा, गोभिल वैखानसगण, बालखिल्यगण ये सब तथा ऐसेही ब्रह्मज्ञान और यमनियम के खानि तपके तेजसे प्रज्वलित अग्निके समान प्रकाशमान अन्य महर्षि लोग भी आकर इकट्ठे हुये ॥ ३५ । ३६ । ३७ । ३८ । ३९ । ४० । ४१ । ४२ ॥

सोपविष्टास्तुतेतत्रसर्वेचक्रुःकथामिमाम् ।
धर्म्मार्थकाममोक्षाणांमूलमुक्तंकलेवरम् ॥ ४३ ॥

और वहां बैठकर यहकहते भये कि धर्म अर्थ काम मोक्ष इनचारोंकामूल शरीरही कहागयाहै ४३ ॥

तपःस्वाध्यायधर्म्माणांब्रह्मचर्य्यव्रतायुषाम् ।
हर्त्तारःप्रसृतारोगायत्रतत्रचसर्वतः ॥ ४४ ॥
रोगाःकार्श्यकरावलक्षयकरादेहस्यचेष्टाहरा
दृष्टाइन्द्रियशक्तिसंक्षयकराःसर्वाङ्गपीडाकराः ।
धर्म्मार्थाऽखिलकाममुक्तिषुमहाविघ्नस्वरूपावलात्
प्राणानाशुहरन्तिसन्तियदितेक्षेमंकुतःप्राणिनाम् ॥ ४५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परन्तु तप, वेद पाठादि, धर्म्म, ब्रह्मचर्य्यादिव्रत, आयु इनके हरनेवाले और शरीर को बल चेष्टा रहित तथा कृश करनेवाले और इन्द्रियोंकी शक्ति के नाशक सर्वांगमें पीड़ाकरनेवाले धर्मादि चतुर्वर्ग में विघ्न स्वरूपहोकर प्राणों के हरनेवाले रोग यदि पृथ्वी में फैले हुये हैं तो प्राणियों को सुख कहां से होसक्ता है ॥ ४४ । ४५ ॥

तत्तेषांप्रशमायकश्चनविधिःश्चिन्त्योभवद्भिर्बुधैः
योग्यैरित्यभिधायसंसदिभरद्वाजंमुनिंतेऽब्रुवन् ।
त्वंयोग्योभगवन्सहस्रनयनंयाचस्वलब्धंक्रमात्
आयुर्वेदमधीत्ययंगदभयान्मुक्ताभवामोवयम् ॥ ४६ ॥

इस कारण उनरोगों की शान्ति का कोई उपाय आप लोगोंको विचारना चाहिये क्योंकि आप लोग सर्वथा योग्य हैं ऐसा सभा में कहकर सब मुनीश्वर भरद्वाज मुनि से बोले कि हे भगवन् आप हम सबों में श्रेष्ठहैं इस हेतु आपही इन्द्रसे उस आयुर्वेद को मांगिये जिसे हम लोग क्रम से पढ़कर रोगों के भयसे छूट जावें ॥ ४६ ॥

इत्थंसमुनिभिर्योग्यैःप्रार्थितोविनयान्वितैः ।
भरद्वाजोमुनिश्रेष्ठोजगामत्रिदशालयम् ॥ ४७ ॥

इस प्रकार विनययुक्त उन सब मुनीश्वरों करके प्रार्थना किये हुये मुनिश्रेष्ठ भरद्वाज जी स्वर्ग को जातेभये ॥ ४७ ॥

तत्रेन्द्रभवनंगत्वासुरर्षिगणमध्यगम् ।
ददृष्वान्वृत्रहन्तारंदीप्यमानमिवानलम् ॥ ४८ ॥

और वहां इन्द्रके भवनमें जाकर देव ऋषिगणके मध्य बैठेहुये अग्निके समान प्रकाशमान इन्द्र को देखते भये ॥ ४८ ॥

दृष्ट्वैवसमुनिंप्राहभगवान्मघवामुदा ।
धर्मज्ञ स्वागतन्तेऽथमुनिंतंसमपूजयत् ॥ ४९ ॥

और भगवान् इन्द्रने भी मुनिको देख हर्ष पूर्वक (आपका आगमन शुभहुआहै) यहकहकर उनका पूजन किया ॥ ४९ ॥

सोऽभिगम्यजयाशीर्भिरभिनन्द्यसुरेश्वरम् ।
ऋषीणांवचनंसम्यक्श्रावयन्मुनिसत्तमः ॥ ५० ॥

तदनन्तर भरद्वाज मुनि भी इन्द्रसे मिल उन्हें अपने आशीर्वादोंसे प्रसन्नकर ऋषियों के वचनों को सुनातेहुये बोले ॥ ५० ॥

व्याधयोहिसमुत्पन्नाःसर्वप्राणिभयंकराः ।
तेषांप्रशमनोपायंयथावद्वक्तुमर्हसि ॥ ५१ ॥

कि हे इन्द्र सब प्राणियोंको भय देनेवाली बहुतसी व्याधियां उत्पन्नहुईहैं उनकी शान्तिका कोई यथार्थ उपाय कहो ॥ ५१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तमुवाचमुनिंसांगमायुर्वेदंशतक्रतुः।
जीवेद्वर्षसहस्राणिदेहीनीरुङ्गनिशम्ययम् ॥ ५२ ॥

ऐसे वचन सुन इन्द्रजी भरद्वाज मुनिसे उस सांग आयुर्वेदको कहतेभये जिसको सुनकर प्राणी नीरोग होकर हजार वर्षतक जीता रहताहै ॥ ५२ ॥

सोऽनंतपारस्त्रिस्कन्धमायुर्वेदंमहामुनिः।
यथावदचिरात्सर्वंबुबुधेतन्मनाःशुचिः ॥ ५३ ॥

और महामुनि भरद्वाजजी एकाग्रचित्त होकर उस अपार तीन काण्डवाले आयुर्वेदको थोड़ेही कालमें यथार्थ जानतेभये ॥ ५३ ॥

तेनायुःसुचिरंलेभेभरद्वाजोनिरामयम्।
अन्यानपिमुनींश्चक्रेनिरुजःसुचिरायुषः ॥ ५४ ॥

जिससे आप नीरोगतापूर्वक दीर्घायु होकर अन्यमुनियोंको भी रोगरहित दीर्घायु करतेभये ॥ ५४ ॥

तत्तन्त्रजनितज्ञानचक्षुषाऋषयोऽखिलाः।
गुणान्द्रव्याणिकर्म्माणिदृष्ट्वातद्विधिमाश्रिताः ॥ ५५ ॥
आरोग्यंलेभिरेदीर्घमायुश्चसुखसंयुतम्।
आयुर्वेदोक्तविधिनाऽन्येऽपिस्युर्मुनयोयथा ॥ ५६ ॥

तदनन्तर भरद्वाजजी ने वह शास्त्र बनाया जिससे उत्पन्न ज्ञानरूप नेत्रके द्वारा सम्पूर्ण ऋषिलोग भी गुण द्रव्य कर्मोंको देख तथा उस शास्त्रमें कहीहुई विधिका आश्रय करके उस प्रकार आरोग्य और सुखयुक्त दीर्घायुको पातेभये जैसे कि आगे आयुर्वेदमें कहीहुई विधिसे प्राचीन मुनिलोग नीरोगता पूर्वक सुखयुक्त दीर्घायुवाले होगये हैं ॥ ५५ । ५६ ॥

अथचरकप्रादुर्भावः ॥

यदामत्स्यावतारेणहरिणावेदउद्धृतः।
तदाशेषश्चतत्रैववेदसांगमवाप्तवान् ॥ ५७ ॥
अथर्वान्तर्गतंसम्यगायुर्वेदञ्चलब्धवान्।
एकदासमहीवृत्तंद्रष्टुंचरइवागतः ॥ ५८ ॥

अथ चरक से आयुर्वेद की उत्पत्ति जब मत्स्यावतार धरकर विष्णु ने वेद का उद्धार किया तब वहांहीं शेषजी ने मत्स्यभगवान् से अंगों सहित सम्पूर्ण वेद पढ़ा उसी में से अथर्वणवेद के अन्तर्गत आयुर्वेद को पाया और एकसमय वही शेष जी पृथ्वीका वृत्तान्त जाननेके लिये (चर) अर्थात् जासूसके समान हो इस लोक को आये ॥ ५७ । ५८ ॥

तत्रलोकान्गदैर्ग्रस्तान्व्यथयापरिपीडितान्।
स्थलेषुबहुषुव्यग्रान्म्रियमाणांश्चदृष्टवान् ॥ ५९ ॥

और वहां पर बहुत से स्थलों में रोगग्रस्त व्यथासे पीडित बिकल तथा बहुत से मरते हुये मनुष्यों को देखा ॥ ५९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तान्दृष्ट्वातिदयायुक्तस्तेषांदुःखेनदुःखितः ।
अनन्तश्चिन्तयामास रोगोपशमकारणम् ॥ ६० ॥

अतिदयायुक्त शेषजी उनके दुःखसे दुःखी होकर रोगोंकी शान्तिके उपाय का विचार करतेभये॥६०॥

संचिन्त्यसस्वयंतत्रमुनेःपुत्रोबभूवह ।
प्रसिद्धस्यविशुद्धस्यवेदवेदाङ्गवेदिनः ॥ ६१ ॥

ऐसा विचारकर आपही वेदवेदाङ्गके जाननेवाले शुद्ध तथा विख्यात किसीमुनिके पुत्र होतेभये॥६१॥

यतश्चरइवायातोनज्ञातःकेनचिद्यतः ।
तस्माच्चरकनाम्नासौविख्यातःक्षितिमण्डले ॥ ६२ ॥

जो वह चरके समान होकर आयेथे और उनको किसी ने नहीं जाना इस कारण चरक नाम से पृथ्वी में विख्यात हुए ॥ ६२ ॥

सभातिचरकाचार्य्योवेदाचार्य्योयथादिवि ।
सहस्रवदनस्यांशोयेनध्वंसोरुजांकृतः ॥ ६३ ॥
आत्रेयस्यमुनेःशिष्याअग्निवेशादयोऽभवन् ।
मुनयोबहवस्तैश्चकृतंतन्त्रंस्वकंस्वकम् ॥ ६४ ॥
तेषांतन्त्राणिसंस्कृत्यसमाहृत्यविपश्चिता ।
चरकेनात्मनोनाम्नाग्रन्थोऽयंचरकःकृतः ॥ ६५ ॥

यह वही साक्षात् शेषजीका अंश भगवान् चरकाचार्य्य बृहस्पति के समान प्रसिद्धहैं जिन्हों ने रोगों का नाश किया और पूर्वोक्त आत्रेय मुनिके शिष्य अग्निवेशादि मुनियोंके बनाये हुए शास्त्रोंको शुद्धतापूर्वक इकट्ठा करके चरकनाम ग्रन्थ बनाया ॥ ६३ । ६४ । ६५ ॥

अथ धन्वन्तरिप्रादुर्भावः ॥

एकदादेवराजस्यदृष्टिर्निपतिताभुवि ।
तत्रतेननराद्दृष्टाव्याधिभिर्भृशपीडिताः ॥ ६६ ॥
तान्दृष्ट्वाहृदयंतस्यदययापरिपीडितम् ।
दयार्द्रहृदयःशक्रोधन्वन्तरिमुवाचह ॥ ६७ ॥

अब धन्वन्तरिसे आयुर्वेदकी उत्पत्ति, एकसमय इन्द्रकी दृष्टि पृथ्वीपर पडी तब देखा कि मनुष्य व्याधियों से पीडित होरहे हैं इसप्रकार उन्हें देख इन्द्रका हृदय दया से पीडित हुआ तब दयार्द्रहोकर इन्द्र धन्वन्तरिसे बोले ॥ ६६ । ६७ ॥

धन्वन्तरेसुरश्रेष्ठभगवन्किञ्चिदुच्यते ।
योग्योभवसिभूतानामुपकारपरोभव ॥ ६८ ॥

कि हे सुरश्रेष्ठ भगवन् । धन्वन्तरि मैं आपसे कुछ कहताहूं वह यहहै कि आप समर्थ हैं इसकारण प्राणियों के उपकार में तत्पर हूजिये ॥ ६८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपकारायलोकानांकेनकिन्नकृतंपुरा ।
त्रैलोक्याधिपतिर्विष्णुर्भून्मत्स्यादिरूपवान् ॥ ६९ ॥

क्योंकि लोगों के उपकारके लिये किसने क्या नहीं किया पूर्वकाल में त्रैलोक्यके स्वामी विष्णु मत्स्यादि रूपवाले हुये ॥ ६९ ॥

तस्मात्त्वंपृथिवींयाहिकाशीमध्येनृपोभव ।
प्रतीकारायरोगाणामायुर्वेदंप्रकाशय ॥ ७० ॥

इसकारण तुम पृथ्वीको जाओ और वहां काशीके राजाहोकर रोगोंके हटाने के लिये आयुर्वेदका प्रकाश करो ॥ ७० ॥

इत्युक्त्वासुरशार्दूलःसर्वभूतहितेप्सया ।
समस्तमायुषोवेदंधन्वन्तरिमुपादिशत् ॥ ७१ ॥

यह कहकर सुरश्रेष्ठ इन्द्र सब प्राणियों के हितकी इच्छा से सम्पूर्ण आयुर्वेद धन्वन्तरि को पढ़ाते भये ॥ ७१ ॥

अधीत्यचायुषोवेदमिन्द्राद्धन्वन्तरिःपुरा ।
आगत्यपृथिवींकाश्यांजातोबाहुजवेश्मनि ॥ ७२ ॥

इस प्रकार धन्वन्तरि पूर्वकालमें इन्द्र से आयुर्वेद पढ़ पृथ्वी में आकर काशिके राजा बाहुज के घरमें उत्पन्न हुये ॥ ७२ ॥

नाम्नातुमोऽभवत्ख्यातोदिवोदासइतिक्षितौ ।
बालएवविरक्तोऽभूच्चचारसुमहत्तपः ॥ ७३ ॥

जो पृथ्वी में दिवोदास इसनामसे प्रसिद्धहुये वह बालही विरक्तहोकर अति उग्रतप करतेभये॥७३॥

यत्नेनमहताब्रह्मातंकाश्यामकरोन्नृपम् ।
ततोधन्वन्तरिर्लोकैःकशीराजोऽभिधीयते ॥ ७४ ॥

जब बहुतयत्न करके ब्रह्माजी उनको काशीका राजा बनातेभये तबसे वही धन्वन्तरि लोगों करके काशीराज कहे जाने लगे ॥ ७४ ॥

हितायदेहिनांस्वीयासंहिताविहितामुना ।
अयंविद्यार्थिनोलोकान्संहितांतामपाठयत् ॥ ७५ ॥

वही काशीराज धन्वन्तरिजी सब प्राणियोंके हितकेलिये अपनी संहिता बनाकर विद्यार्थी लोगों को पढ़ाते भये ॥ ७५ ॥

अथ सुश्रुतप्रादुर्भावः ॥

अथज्ञानदृशाविश्वामित्रप्रभृतयोऽविदन् ।
अयंधन्वन्तरिःकाश्यांकाशिराजोऽयमुच्यते ॥ ७६ ॥

अब सुश्रुतसे आयुर्वेद की उत्पत्ति ॥ तदनन्तर विश्वामित्रादि ऋषियों ने ज्ञानदृष्टि से जाना कि यह धन्वन्तरिही हैं जो लोगों करके काशीराज कहे जाते हैं ॥ ७६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विश्वामित्रोमुनिस्तेषुपुत्रंसुश्रुतमुक्तवान् ॥
वत्सवाराणसींगच्छत्वंविश्वेश्वरवल्लभाम् ॥ ७७ ॥

तब तो उन मुनियों में से विश्वामित्रजी अपने पुत्र सुश्रुतसे कहतेभये कि हे पुत्र! तुम विश्वेश्वर की प्रिय काशीको जाओ ॥ ७७ ॥

तत्रनाम्नादिवोदासः काशिराजोस्तिबाहुजः ।
सहिधन्वन्तरिःसाक्षादायुर्वेदविदांवरः ॥ ७८ ॥

और वहां जो सुबाहुके पुत्र दिवोदास नामसे प्रसिद्ध काशिराज हैं वह आयुर्वेदके जाननेवालोंमें श्रेष्ठ साक्षात् धन्वन्तरिही हैं ॥ ७८ ॥

आयुर्वेदंततोऽधीष्व लोकोपकृतिहेतवे ।
सर्वप्राणिदयातीर्थमुपकारोमहामखः ॥ ७९ ॥

इसकारण लोगोंके उपकारके लिये उन्हीं से आयुर्वेदको पढ़ो क्योंकि सब प्राणियों पर दया करना यही तीर्थ और उपकार महायज्ञ गिनाजाता है ॥ ७९ ॥

पितुर्वचनमाकर्ण्य सुश्रुतःकाशिकांगतः ।
तेनसार्द्धंसमध्येतुं मुनिसूनुशतंययौ ॥ ८० ॥

ऐसे पिताके वचन सुन सुश्रुतजी काशीको गये और उनके साथ पढ़ने के लिये सैकड़ों मुनिपुत्रभी जाते भये ॥ ८० ॥

अथधन्वन्तरिंसर्वेवानप्रस्थाश्रमेस्थितम् ।
भगवन्तंसुरश्रेष्ठं मुनिभिर्बहुभिःस्तुतम् ॥ ८१ ॥
काशिराजंदिवोदासंतेपश्यन्विनयान्विताः ।
स्वागतञ्चइतिस्माहदिवोदासोयशोधनः ॥ ८२ ॥
कुशलंपरिपप्रच्छतथागमनकारणम् ।
ततस्तेसुश्रुतद्वाराकथयामासुरुत्तरम् ॥ ८३ ॥

तदनन्तर वहां जाकर उन बिनय युक्त मुनिपुत्रोंने वानप्रस्थाश्रम में स्थित देवताओं में श्रेष्ठ मुनियोंकरके स्तुति किये हुये काशिराज दिवोदास नामसे प्रसिद्ध भगवान् धन्वन्तरिजी को देखा और वे भी इन्हें देख कुशलपूर्वक शुभागमन पूंछ आगमन का कारण पूंछते भये तब वे मुनिपुत्र भी सुश्रुतजी के द्वारा यह उत्तर देते भये ॥ ८१ । ८२ । ८३ ॥

भगवन्मानवान्दृष्ट्वाव्याधिभिःपरिपीडितान् ।
क्रन्दतोम्रियमाणांश्चजातास्माकंहृदिव्यथा ॥ ८४ ॥

कि हे भगवन्! व्याधियों से पीडित रोते तथा मरते हुये मनुष्यों को देखकर हमलोगों के हृदयमें बड़ीही व्यथा उत्पन्न हुई है ॥ ८४ ॥

आमयानांशमोपायं विज्ञातुंवयमागताः ।
आयुर्वेदंभवानस्मानध्यापयतुयत्नतः ॥ ८५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसकारण हमलोग आपके पास उन रोगोंकी शान्तिका उपाय जाननेके लिये आये हैं आप यत्न-पूर्वक हम लोगोंको आयुर्वेद पढ़ाइये ॥ ८५ ॥

अङ्गीकृत्यवचस्तेषां नृपतिस्तानुपादिशत् ।
व्याख्याततंतेनतेयत्नाज्जगृहुर्मुनयोमुदा ॥ ८६ ॥

तब उन मुनिपुत्रों के वचनोंको स्वीकारकर काशिराज उनको पढ़ातेभये और वेभी उनके उस पढ़ायेहुये पाठको आनन्ददपूर्वक अच्छीतरह ग्रहण करते भये ॥ ८६ ॥

काशिराजंजयाशीर्भिरभिनन्द्यमुदान्विताः ।
सुश्रुताद्याःसुसिद्धार्था जग्मुर्गेहंस्वकंस्वकम् ॥ ८७ ॥

तदनन्तर जयाशीर्वादों से काशीराजको प्रसन्न कर तथा अपने प्रयोजनको सिद्ध करके हर्षपूर्वक वे सुश्रुतादि मुनिपुत्र अपने २ घरोंको जातेभये ॥ ८७ ॥

प्रथमंसुश्रुतस्तेषु स्वतन्त्रंकृतवान्स्फुटम् ।
सुश्रुतस्यसखायोऽपि पृथक्तन्त्राणितेनिरे ॥ ८८ ॥

उनमें से सुश्रुतजी पहिले अपना तन्त्रबनातेभये तदनन्तर उनके मित्रोंनेभीअपने २ तन्त्रबनाये॥८८॥

सुश्रुतेनकृतंतन्त्रं सुश्रुतंबहुभिर्यतः ।
तस्मात्तत्सुश्रुतंनाम्ना विख्यातंक्षितिमण्डले ॥ ८९ ॥

उन तन्त्रोंमेंसे सुश्रुतजीके बनायेहुये तन्त्रको बहुतों ने सुना इसकारण वह पृथ्वी में सुश्रुत नाम से विख्यात हुआ ॥ ८९ ॥

इत्यायुर्वेदप्रवक्तॄणां प्रादुर्भावः ॥

आयुर्वेदाब्धिमध्यादतिमतिमुनयोयोगरत्नानियत्ना-
ल्लब्ध्वास्वेस्वेनिबन्धेदधुरखिलजनव्याधिविध्वंसनाय ।
तत्तद्ग्रन्थाद्गृहीतैःसुवचनमणिभिर्भावमिश्रश्चिकित्सा-
शास्त्रेजाड्यान्धकारंप्रशमयितुमिमंसंविधत्तेप्रकाशम् ॥ ९० ॥

अति बुद्धिमान् मुनियोंने सब प्राणियों के रोगनाश होने के लिये आयुर्वेदरूप समुद्र के मध्य से यत्नपूर्वक जिन २ औषधियोंके योगरूप रत्नोंको लेकर अपने २ ग्रन्थोंमें स्थापन किया उन २ ग्रन्थों से ग्रहण कियेहुये उन्हीं वचनरूप मणियों करके वैद्यकशास्त्रमें अज्ञानरूपी अंधकार दूरकरनेके लिये भावमिश्रजी इस ग्रन्थरूपी प्रकाशको करते हैं ॥ ९० ॥

श्रीपतिपदप्रसादादाशीर्भिर्भूमिदेवानाम् ॥
भावप्रकाशनाम्नाग्रन्थोयंपठ्यतांसर्वैः ॥ ९१ ॥

लक्ष्मीपतिके चरणोंके प्रसाद तथा ब्राह्मणोंके आशीर्वादसे यह भावप्रकाश नाम ग्रन्थ सब लोगों करके पढ़ने के योग्य होवे ॥ ९१ ॥

एतस्यनिबन्धस्यफलं चिकित्साचिकित्साचपुरुषस्य
पुरुषस्तुचतुर्विंशतितत्त्वजीवात्मसमवायस्तस्मात्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चतुर्विंशतितत्त्वानांजीवात्मनश्च स्वरूपनिरूपणायसृष्टिक्रममाह ॥ ९२ ॥

चिकित्सा अर्थात् व्याधि दूरकरना इस ग्रन्थका मुख्यप्रयोजन है और चिकित्सा पुरुषकी होती है वह पुरुष महदादि चौबीस तत्त्व व जीवात्मा इन सबोंका समुदाय है इस कारण उन चौबीस तत्त्वोंका तथा जीवात्माका स्वरूप कहने के लिये पहिले सृष्टिका क्रम कहते हैं ९२॥

आत्माज्योतिश्चिदानन्दरूपोनित्यश्चनिस्पृहः ।
निर्गुणःप्रकृतेर्योगात्सगुणःकुरुतेजगत् ॥ सगुणइच्छादियुक्तः ॥ ९३ ॥

अथ आत्मा ॥ यथार्थ में आत्मा प्रकाश चैतन्य आनन्दरूप नित्य इच्छा व गुणरहित है परन्तु वही प्रकृतिके योगसे सगुण अर्थात् इच्छादियुक्त होकर जगत्को करताहै ॥ ९३ ॥

सत्त्वंरजस्तमश्चेतिगुणास्तेप्रकृतेःसमाः ।
साजडापिजगत्कर्त्रीपरमात्मचिदव्ययात् ॥
सतःसाधोर्भावःसत्त्वंप्रकाशकंज्ञानसुखहेतुः,रजो
रागात्मकंदुःखहेतुः, ताम्यतिग्लानिंप्राप्नोतिअ
नेनेतितमःआवरकंमोहहेतुः तेगुणाः समाःप्रकृ
तिरित्यर्थःतथासतिन्यूनाधिकगुणाः विकृतिः ९४ ॥

सत्त्व रज और तम यह प्रकृतिके समगुणहैं जड़भी वह प्रकृति चैतन्य अविनाशी परमात्मा के आभाससे संसारकी उत्पन्नकरनेवाली है ॥

सत्त्व-साधुकाभाव-प्रकाशक, ज्ञान और सुखका कारणहै- रज अनुरागमय और दुःखकाकारण है जिस्से ग्लानिको प्राप्तहो वह तम बुद्धिका आच्छादनकरनेवाला और मोहका कारणहै सम यह गुण प्रकृति कहलाती हैं और ऐसा होनेसे न्यून और अधिक गुण विकृति कहलाते हैं ॥ ९४ ॥

अथ सुश्रुतमुपदिशन् धन्वन्तरिः प्रकृतेःस्वरूपविशेषणमाह ॥

सर्वभूतानांकारणमकारणं सत्त्वरजस्तमोलक्षणमष्ट
रूपमखिलस्य जगतस्सम्भवहेतुरव्यक्तं नामेति ॥
अस्यायमर्थः । अव्यक्तंनव्यज्यतेऽस्मिन्निति अव्यक्तं
मूलप्रकृत्यपरपर्य्यायंतत् सर्वभूतानां कारणंसमवा
यिकारणम् । अकारणं न विद्यतेकारणंयस्यतत् ।
सत्त्वरजस्तमोलक्षणंसमसत्त्वरजस्तमःस्वरूपं । अष्ट
रूपमव्यक्तं महानहङ्कारः पञ्चतन्मात्राणीत्यष्टौरू
पाणियस्यतत् यतइन्द्रियाणांमहाभूतानांचकारणा
तयामहदादयोऽपिसप्तप्रकृतयःएवमखिलस्यजगतः
संभवहेतुरव्यक्तमित्युपसंहारः ॥ ९५ ॥

अब सुश्रुतको उपदेश करते हुए धन्वन्तरि जी प्रकृतिका स्वरूपविशेष कहते हैं ॥

अब सुश्रुतको उपदेश करते हुए धन्वन्तरि जी प्रकृतिका स्वरूपविशेष कहते हैं ॥ सम्पूर्ण भूतोंका कारण अकारण अर्थात् स्वयंकारण से रहित सत्त्व रज और तमोगुणरूपी आठ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रूपवाला सम्पूर्ण संसारकी उत्पत्तिका कारण अव्यक्त है इसका यह तात्पर्य्य है कि अव्यक्त नहीं प्रकट होनेवाला, यह मूलप्रकृति का दूसरानाम है, सम्पूर्ण भूतोंका कारणहै अर्थात् द्रव्योंका संबन्ध-रूपी समवायिकारणहै अकारण अर्थात् जिसका कारण न हो सत्त्व रजस्तमोलक्षण अर्थात् समता को प्राप्तहैं सत्त्व रज और तम जिसमें ऐसा अष्टरूप अर्थात् अव्यक्त महत्तत्त्व अहङ्कार और पञ्च-तन्मात्रा यह आठों हैं रूप जिसके जिस कारणसे इन्द्रिय और महाभूतों के कारण होने से महत्त-त्त्वादिक भी सात प्रकृति कहलाते हैं इसी प्रकार सम्पूर्ण संसारकी उत्पत्तिका कारण अव्यक्त है यह सारांश है ॥ ९५ ॥

प्रकृतिपुरुषयोःसाधर्म्यमाह ॥

उभावप्यनादीउभावप्यनन्तौउभावप्यलिंगावुभावपिनित्यावुभावप्यपरावुभावपिस र्वगतौ इति उभावप्यनित्यौलयंक्कचिदपिनयातः उभावप्यपरौनविद्यतेपरोऽपरोयाभ्यां तावपरौ ॥ ९६ ॥

अब प्रकृति और पुरुषका साधर्म्य कहते हैं ॥

दोनों अनादि दोनों अनन्त दोनों लक्षणरहित दोनों नित्य दोनों अपर और दोनों सर्वव्यापक हैं दोनों नित्यहैं अर्थात् कहीं कभी नाशको नहीं प्राप्तहोते हैं–दोनों अपर हैं अर्थात् जिनसे परे दूसरा नहीं है ९६ ॥

अथ तयोर्वैधर्म्यमाह ॥

एकातुप्रकृतिरचेतना त्रिगुणा बीजधर्मिणी प्रसवधर्मिण्य मध्यस्थधर्मिणी चेति अचेतनाजडा त्रिगुणातुल्यगुणत्रयात्मिका बीजधर्मिणी सर्वेषां महदादीनां विकाराणां बीजत्वेनावस्थिताप्रसवधर्मिणी पुरुषेणाक्रान्ता क्षोभंप्राप्य साम्यमतिक्रम्य महद हङ्कारादिक्रमेणजगतः प्रसवित्री अमध्यस्थधर्म्मिणीसुखदुःखभोगभोगिनीनतुसुख दुःखभोगादुदासीनापुरुषस्तुचेतनावान् निर्गुणोऽप्रसवधर्माबीजधर्मा मध्यस्थधर्म्मा चेतिनिर्गुणः अविद्यमानसत्त्वादिगुणः अबीजधर्मामहाप्रलयेमहदादीनांविकाराणांप्रकृ ताविवतस्मिन्ननवस्थानान्मध्यस्थधर्मीसुखदुःखेच्छाद्वेषादिभ्यउदासीनः ९७ ॥

अब उन दोनोंके विपरीत धर्म कहते हैं प्रकृति तो एक अचेतना त्रिगुणा बीजधर्म्मवाली प्रसवधर्मवाली और अमध्यस्थधर्म्मवाली है अचेतन अर्थात् जड त्रिगुणा अर्थात् समसत्त्वादि तीनों गुणमय बीजधर्मवाली अर्थात् सम्पूर्ण महत्तत्त्वादि विकारोंके बीजरूपसे स्थित होनेवाली प्रसव धर्मवाली अर्थात् पुरुषसे आक्रान्त हुई क्षोभको प्राप्त होकर समताको छोड महत्तत्त्व और अहङ्का-रादिकोंके क्रमसे संसारकी उत्पत्ति करनेवाली और अमध्यस्थ धर्म्मवाली अर्थात् सुख और दुःखों की भोगनेवाली न कि सुख दुःखके भोगसे उदासीन और पुरुष तो चैतन्य निर्गुण अप्रसवधर्म्म वाला-अबीजधर्मवाला और मध्यस्थधर्मवाला है- निर्गुण अर्थात् सत्त्वादि गुणोंसे रहित- अप्रसव धर्म्मवाला अर्थात् संसारके उत्पन्न करनेकी शक्तिसे रहित- अबीजधर्म्मवाला अर्थात् महाप्रलय में महत्तत्त्वादिक विकारोंका अपने में नहीं स्थित रखनेवाला- मध्यस्थधर्म्मवाला सुख दुःख इच्छा द्वेष आदिसे उदासीन ॥ ९७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकृतेर्नामान्याह ॥

प्रधानंप्रकृतिःशक्तिर्नित्याचाविकृतिस्तथा ।
एतानितस्यानामानि पुरुषंयासमाश्रिता ॥ ९८ ॥

प्रकृतिके नाम ॥

प्रधान-प्रकृति-शक्ति-नित्या और अविकृति यह पुरुषके आश्रयसे रहनेवाली प्रकृतिके नामहैं ॥ ९८॥

प्रकृतेर्गुणानाह ॥

सत्त्वंरजस्तमस्त्रीणि विज्ञेयाःप्रकृतेर्गुणाः ॥
तैश्चयुक्तस्यचित्तस्य कथयाम्यखिलान्गुणान् ॥ ९९ ॥

अब प्रकृतिके गुण कहते हैं ॥

सत्त्व रज तम यह तीन प्रकृतिके गुण जानने चाहिये और इनसे मिलेहुये चित्तके सम्पूर्ण गुण अब कहते हैं ॥ ९९ ॥

अथ सत्त्वयुक्तस्यमनसोगुणानाह ॥

आस्तिक्यंप्रविभज्यभोजनमनुत्तापश्चतथ्यंवचो-
मेधाबुद्धिधृतिक्षमाश्चकरुणाज्ञानंचनिर्दम्भता ।
कर्मानिन्दितमस्पृहंचविनयोधर्मस्सदैवादरा-
देतेसत्त्वगुणान्वितस्यमनसोगीतागुणाज्ञानिभिः ॥

अस्तिधर्ममोक्षपरलोकादिकमितिबुद्ध्या चरतीत्यास्तिकस्तस्यभावआस्तिक्यं । अनुत्तापोऽक्रोधोधृतिः भूतप्रेतस्मरक्रोधलोभाद्यावेशराहित्यं ज्ञानमात्मज्ञानं निर्दम्भताकपटाभावः कर्मानिन्दितमस्पृहं निष्कामं च ॥ १०० ॥

अब सत्त्वगुणयुक्तमनके गुणकहते हैं ॥

आस्तिक्य-अच्छे प्रकार विभाग करके भोजन अनुत्ताप- सत्यवचन- मेधा- बुद्धि- धृति क्षमा- करुणा ज्ञान निर्दम्भता- अनिन्दित और अस्पृहकर्म- विनय--आदरपूर्वक सदैवधर्म करना यह सत्त्व-गुणसेयुक्त मनकेगुण ज्ञानियोंने कहे हैं आस्तिक्य (धर्म्म मोक्ष और परलोकादिक हैं इस बुद्धि से जो कर्म्म करता है वह आस्तिकहै और उसके धर्म्म को आस्तिक्य कहते हैं-) अनुत्ताप (क्रोध न होना) मेधा- (धारणाशक्तिवाली बुद्धि) धृति (भूत प्रेत काम क्रोध और लोभादिकों के आवेशसे रहित होना) ज्ञान (आत्माका ज्ञान) निर्दम्भता (कपटरहित होना) अनिन्दित और अस्पृह कर्म्म (निन्दा और इच्छासे रहित कर्म्म) १०० ॥

रजोगुणयुक्तमनसोलक्षणम् ॥

क्रोधस्ताडनशीलताचबहुलं दुःखंसुखेच्छाधिका
दम्भःकामुकताप्यलीकवचनं चाधीरताऽहंकृतिः ।
ऐश्वर्य्यादभिमानितातिशयितानन्दोऽधिकश्चाटनं
प्रख्याताहिरजोगुणेनसहितस्यैतेगुणाश्चेतसः ॥
अलीकवचनं मिथ्याकथनं अटनंपृथ्वीपरिभ्रमणं ॥ १०१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रजोगुणसे युक्त मनके लक्षण ॥

क्रोध मारपीट का स्वभाव-बहुत दुःख-सुखकी बहुत इच्छा कपट-संभोग करनेकी इच्छा अलीक वचन- धैर्य्यका न होना-अहंकार- ऐश्वर्य्यसे अभिमान होना-बहुत आनन्द होना- और बहुत घूमना यह रजोगुणसे युक्त चित्तके गुण प्रसिद्ध हैं अलीकवचन (मिथ्या बोलना) अटन (पृथ्वी पर घूमना)॥ १०१ ॥ अथ तमोयुक्तमनसोलक्षणम् ॥

नास्तिक्यंसुविषण्णतातिशयितालस्यं च दुष्टामतिः
प्रीतिर्निन्दितकर्म्मशर्म्मणिसदा निद्रालुताऽहर्निशम् ।
अज्ञानं किलसर्वतोपि सततं क्रोधान्धता मूढता
प्रख्याताहितमोगुणेनसहितस्यैतेगुणाश्चेतसः ॥
तत्रप्रभूतसत्त्वस्तु सात्त्विकः पुरुषः स्मृतः ।
राजसस्तामसश्चैव त्रिविधस्तेनमानवः ॥ १०२ ॥

अब तमोगुणयुक्त मनके लक्षण कहते हैं ॥

नास्तिकता-बहुत दुःखित होना बहुत आलस्य होना दुष्टबुद्धि बुरेकार्य्य और आनन्दमें प्रीति रात्रिदिन सोना-सब ओरसे अज्ञान- सदैव क्रोधसे अन्धा होना- और मूर्खता यह तमोगुण से युक्त मनके गुण प्रसिद्धहैं—इनमें अधिक सत्त्वगुणवाला पुरुष सात्त्विक—अधिक रजोगुणवाला राजस और अधिक तमोगुणवाला तामस कहाताहै—इस रीतिसे तीनप्रकार के पुरुष होते हैं ॥ १०२ ॥

ततोभवन्महत्तत्त्वंबुद्धितत्त्वापराभिधम् । त्रिगुणंसत्त्वबहुलंनिर्म्मलंस्फटिकोपमम् ॥ चिच्छायाप्राप्तचैतन्यंतदिच्छामयमीरितम् । ततःप्रकृतेस्त्रिगुणंत्रयोगुणायत्रततत्चसत्त्वबहुलं—अत्रायमभिप्रायो यथा निश्चलेह्रदादौबहुद्रव्यपातात्तदीयंजलंवर्द्धते तथा चिद्रूपपुरुषेणाक्रमणात्तुल्यगुणत्रयात्मिकायाः प्रकृतेर्ज्ञानहेतुप्रकाशः सत्त्वगुणोवृद्धःप्रवृद्धसत्त्वतः प्रकृतेस्सत्त्वबहुलंबुद्धितत्त्वमभवत् ॥ १०३ ॥

उस प्रकृतिसे महत्तत्त्व उत्पन्न हुआ जिसका कि दूसरानाम बुद्धितत्त्वहै और वह त्रिगुण अधिक सत्त्वगुणवाला स्फटिक के समान निर्म्मल चैतन्यकी छाया से प्राप्तहुये चैतन्यवाला इच्छामय कहागयाहै—त्रिगुण अर्थात् तीनों गुणहैं जिस में और वह अधिक सत्त्वगुणवालाहै यहां यह अभिप्रायहै कि जैसे निश्चल तड़ागादिकों में बहुत वस्तुओं के गेरने से उसकाजल बढ़ताहै उसी प्रकार चैतन्यरूप पुरुषके द्वारा व्याप्त होने से समान तीनों गुणवाली प्रकृति के ज्ञानका कारण प्रकाशरूप सत्त्वगुण बढ़ता है और बढ़ेहुये सत्त्वगुणवाली प्रकृति से अधिक सत्त्वगुणवाला महत्तत्त्व उत्पन्न होताहै ॥ १०३ ॥

महतस्त्रिगुणाज्जातोऽहङ्कारस्त्रिगुणान्वितः । सात्त्विकोराजसश्चापितामसश्चेतिसत्रिधा ॥ महतःबुद्धितत्त्वात्त्रिगुणात्त्रयोगुणा यत्र ततः ननुमहत्तत्त्वंत्रिगुणमुक्तमेतत्किमर्थंमहतस्त्रिगुणादितिविशेषणंसत्यं त्रिगुणादितिपुनर्विशेषणादुक्तं सत्त्वबहुलमितिविशेषणमत्रनानुवर्त्तते तेनाऽहङ्कारोत्पादकंमहत्तत्त्वंत्रिगुणमपिरजोबहुलंबोद्धव्यम्-अहङ्कारस्यरजोगुणान्वितस्यमनोधर्म्मत्वादहङ्कारोभिमानव्यापारलक्षणः ॥ १०४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रिगुण महत्से उत्पन्न हुआ अहंकार तीनों गुणोंसे युक्तहै और इसीकारण से वह तीन प्रकार काहै सात्त्विक राजस और तामस महत् अर्थात् बुद्धितत्त्वसे त्रिगुणसे अर्थात् तीनोंगुण वाले से अब यह सन्देह होताहै कि महत्तत्त्व तो तीनोंगुणवाला कहाही गयाहै फिर त्रिगुण यह विशेषण क्यों दिया, ठीकहै त्रिगुण इस विशेषणके फिर देनेसे यह प्रकट होताहै कि सत्त्वबहुल अर्थात् अधिक सत्त्वगुणवाला यह विशेषण यहां नहीं लियाजाता इससे यह जानना चाहिये कि अहंकारका उत्पन्न करनेवाला महत्तत्त्व तीनों गुण से युक्त होने परभी अधिक रजोगुणवालाहै क्योंकि रजोगुण से युक्तही अहंकार मनका धर्म्म है और अहंकार अभिमानरूपी व्यापारके लक्षणवालाहै १०४॥

अहङ्कारस्त्रिविधस्तानाह सात्त्विकइत्यादि तस्य त्रिविधस्य कार्य्यमाह॥

जातानिसात्त्विकात्तस्मादिन्द्रियाणिसराजसात् । तानिश्रोत्रंत्वचोनेत्रंरसनानासिकातथा॥ वाग्घस्तचरणोपस्थंगुदान्येकादशंमनः । पञ्चबुद्धीन्द्रियाण्याहुःप्राक्तनानीतराणिच॥ कर्मेन्द्रियाणिपञ्चैवकथयन्तिविपश्चितः । बुद्धीन्द्रियाणिबुद्धेराश्रयत्वात्कर्मेन्द्रियाणिकर्माश्रयत्वात्–सात्त्विकाऽहंकारजातत्वादिन्द्रियाणिप्रकाशलक्षणानि सत्त्वस्यप्रकाशकत्वात्-मनोबुद्धीन्द्रियंविज्ञैःकर्मेन्द्रियमपिस्मृतम् । मनोऽधिष्ठितमेवेदमिन्द्रियंयत्प्रवर्त्तते॥ १०५॥

अहङ्कार तीनप्रकारकाहै यह तो सात्त्विक इत्यादि श्लोक से कहागया
अब तीनप्रकारवाले अहङ्कार के कार्य्य कहे जाते हैं॥

उस रजोगुणयुक्त सात्त्विक अहङ्कार से इन्द्रियां उत्पन्न हुई वह यह हैं कान-त्वचा-नेत्र-जिह्वा नासिका-वाणी-हाथ-पैर-लिङ्ग-गुदा और ग्यारहवां मन-पण्डितलोग पहली पांचको बुद्धीन्द्रिय कहते हैं और पिछली वाणी आदि पांचको कर्मेन्द्रिय वर्णन करते हैं-बुद्धिके आश्रय होने से बुद्धीन्द्रिय और कर्मके आश्रय होने से कर्मेन्द्रिय कहलाती हैं सतोगुणके प्रकाशक होने से सात्त्विक अहङ्कार से उत्पन्न हुई इन्द्रियां प्रकाश लक्षणवाली होती हैं बुद्धिमान् लोग मनको बुद्धीन्द्रिय और कर्मेन्द्रिय भी कहते हैं क्योंकि इन्द्रियां मनके संयोगही से अपने २ कर्म में प्रवृत्त होती हैं॥ १०५॥

तत्रेन्द्रियाणां विषयानाह॥

शब्दस्पर्शरूपंच रसोगन्धोह्यनुक्रमात् । बुद्धीन्द्रियाणांविषयाः समाख्यातामहर्षिभिः॥ वाच्यंग्राह्यं च गंतव्यमानन्दंत्याज्यमेवच । कर्मेन्द्रियाणांविषया ज्ञातव्याविषयाहृदः॥हृदोमनसः ॥ तामसादप्यहंकारात्तन्मात्राणिसराजसात् । पञ्चाल्पसत्त्वसम्बन्धात्ताल्लिंगानि भवन्तिहि॥ शब्दतन्मात्रकं-स्पर्शतन्मात्रकं-रूपतन्मात्रकं-रसतन्मात्रकं-गंधतन्मात्रकमिति॥ १०६॥

अब इन्द्रियों के विषय कहते हैं॥

महर्षियोंने क्रमपूर्वक शब्द स्पर्श रूप रस और गंध यह बुद्धीन्द्रियोंके विषय कहे हैं-बोलना ग्रहण करना गमन करना आनन्द करना और मलका त्याग यह कर्मेन्द्रियोंके विषय जानने चाहिये और यही सम्पूर्ण शब्दादिविषय हृदयकेभी जानने चाहिये हृदयके अर्थात् मनके–रजोगुणयुक्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

थोडे सतोगुणवाले तामस अहंकारसे उनके लक्षणोंसे युक्त पांच तन्मात्रा उत्पन्न होती हैं वह यह हैं कि शब्दतन्मात्रा, स्पर्शतन्मात्रा, रूपतन्मात्रा, रसतन्मात्रा और गंधतन्मात्रा ॥ १०६ ॥

तानितुतल्लिंगानिमोहादिलिंगानितान्यद्भुतस्वभावानिबाह्येन्द्रियग्राह्याणिसासामात्रायस्मिंस्तत्तन्मात्रकं। तन्मात्रेभ्यो वियद्वायुवह्निवारिवसुन्धरा। एतानिपञ्चजायन्तेमहाभूतानितत्क्रमात् ॥ एकोत्तरपरिवृद्ध्यावियदादयोजायन्तइत्यर्थः-तद्यथाशब्दतन्मात्राच्छब्दगुणंवियज्जायते शब्दतन्मात्रसहितात्स्पर्शतन्मात्राच्छब्दस्पर्शगुणोवायुर्ज्जायते शब्दतन्मात्रस्पर्शतन्मात्रसहिताद्रूपतन्मात्राच्छब्दस्पर्शरूपगुणोवह्निर्ज्जायते शब्दतन्मात्रस्पर्शतन्मात्ररूपतन्मात्रसहिताद्रसतन्मात्राच्छब्दस्पर्शरूपरसगुणंवारिजायते शब्दतन्मात्रस्पर्शतन्मात्ररूपतन्मात्ररसतन्मात्रसहितात् गन्धतन्मात्राच्छब्दस्पर्शरूपरसगन्धगुणावसुन्धराजायते ॥ १०७ ॥

और वह तल्लिगानि अर्थात् मोहादिकों के चिह्नों से युक्त विलक्षण स्वभाववाली बाह्येन्द्रिय अर्थात् नेत्रादिकों से ग्रहण करनेके योग्य हैं वह वह मात्रा जिसमें हैं वह तन्मात्रक हैं तन्मात्राओं से आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी यह पांच महाभूत क्रमसे उत्पन्न होते हैं एक एकके उत्तरोत्तर बढ़ने से आकाशादिक उत्पन्न होते हैं वह जैसे शब्द तन्मात्रासे शब्दगुणवाला आकाश उत्पन्न होता है शब्दतन्मात्रायुक्त स्पर्शतन्मात्रा से शब्द स्पर्शगुणवाला वायु उत्पन्न होताहै शब्दतन्मात्रा स्पर्शतन्मात्रायुक्त रूपतन्मात्रा से शब्दस्पर्शरूप गुणवाला अग्नि उत्पन्न होताहै शब्दतन्मात्रा स्पर्शतन्मात्रा रूपतन्मात्रायुक्त रसतन्मात्रासे शब्द स्पर्शरूपरस गुणवाला जल उत्पन्न होता है शब्दतन्मात्रा स्पर्शतन्मात्रा रूपतन्मात्रा रसतन्मात्रायुक्त गन्धतन्मात्रासे शब्द स्पर्शरूपरसगन्धगुणवाली पृथ्वी उत्पन्न होती है ॥ १०७ ॥

अथ महाभूतानां गुणानाह ॥

शब्दश्श्रोत्रेन्द्रियंवापिच्छिद्राणिचविविक्तता।
वियतःकथिताएते गुणागुणविचारिभिः ॥

विविक्तताशरीराणांभावानांशिरास्नाय्वस्थिपेशी-प्रभृतीनांजातिव्यक्तिभ्यांमिथःपृथक्त्वम् ॥ १०८ ॥

अथ महाभूतोंके गुणकहते हैं ॥

शब्द-कर्णेन्द्रिय-छिद्र और विविक्तता यह गुणज्ञलोगोंने आकाशके गुण कहे हैं विविक्तता अर्थात् शरीरों के शिरा (छोटीनसें) स्नायु (मोटीनसें) हड्डी पेशी (मांसकी थैली) आदिक भावोंकी जाति और व्यक्तिसे परस्पर अलग होना (जैसेछोटीनस और बडीनसका अलग होना जातिका अलग होनाहै और बडी २ या छोटी २ नसोंका अलग होना व्यक्तिका पृथक्पनाहै) ॥ १०८ ॥

स्पर्शस्त्वगिन्द्रियञ्चापिलघुनास्यन्दनंतनोः।
चेष्टाःसर्वशरीरस्यवायोरेतेगुणाःस्मृताः ॥ १०९ ॥

स्पर्श-त्वचा इन्द्रिय-शरीरका हलकापन-हिलना झुलना और सम्पूर्ण शरीर की चेष्टा यह वायुके गुण कहे हैं ॥ १०९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रूपंनेत्रेन्द्रियंपाकःसन्तापस्तीक्ष्णतातथा ।
वर्णोभ्राजिष्णुतामर्षः शौर्य्यंवह्नेर्गुणाअमी ॥

रूपं-लावण्यं,पाकः-उदराग्निनाहारपाकः,सन्ताप-औष्ण्यं,तीक्ष्णता,आशुकारिता, वर्णोगौरादिःभ्राजिष्णुता,दीप्तिः,अमर्षःक्रोधः ॥ २१० ॥

रूप-नेत्रेन्द्रिय पाक-सन्ताप तीक्ष्णता वर्ण भ्राजिष्णुता अमर्ष शूरता यह अग्नि के गुण हैं रूप (लावण्य) पाक (उदरकी अग्निसे भोजनका परिपाक) सन्ताप (उष्णता) तीक्ष्णता (शीघ्रता) वर्ण (श्वेतरक्तादि) भ्राजिष्णुता (दीप्ति) अमर्ष (क्रोध) २१० ॥

रसारसेन्द्रियंशैत्यं स्नेहश्चगुरुतातथा ।
सर्वद्रवसमूहश्च शुक्रंवारिगुणाःस्मृताः ॥ २११ ॥

रस रसनेन्द्रिय (जिह्वा) शीतता स्नेह (चिकनापन) गुरुता (भारीपन) सम्पूर्ण बहनेवाली वस्तु और वीर्य्य यह जलके गुण कहे हैं ॥ २११ ॥

गन्धोघ्राणेन्द्रियंचापि काठिन्यंगौरवंतथा ।
वसुंधरागुणाएते गदितागुणवेदिभिः ॥ २१२ ॥

गन्ध घ्राणेन्द्रिय (नासिका) कठिनता और भारीपन यह गुणज्ञ पुरुषोंने पृथ्वीके गुण कहे हैं॥२१२॥

शब्दःस्पर्शश्चरूपंच रसोगन्धश्चतत्क्रमात् ।
तन्मात्राणांविशेषाःस्युः स्थूलभावमुपागताः ॥

तत्क्रमाच्छब्दतन्मात्रादिक्रमात् विशेषा अनुभवयोग्यैस्सुखदुःखमोहरूपैर्धर्म्मै र्विशिष्यन्त इतिविशेषाः अत्रकर्मणि घञ् प्रत्ययः तन्मात्राणि त्वविशेषाणि यतस्तान्य नुभवयोग्यैस्सुखादिभिर्विशेष्टुंन शक्यन्ते सूक्ष्मत्वात् ॥ २१३ ॥

शब्द स्पर्श रूप रस और गन्ध यह क्रमसे स्थूलताको प्राप्तहोकर तन्मात्राओंके विशेषहैं (तत्क्रमात्) अर्थात् शब्दतन्मात्रादिकोंके क्रमसे–अनुभवके योग्य सुख दुःख और मोहरूपी धर्म्मों से जो भेदको प्राप्तहों वह विशेषहैं यहां (विशेषशब्दमें) कर्ममें घञ्प्रत्ययहै और तन्मात्रा विशेष नहीं हैं क्योंकि वह सूक्ष्मताके कारणसे अनुभवके योग्य सुखादिकों से भिन्न नहीं की जासक्ती हैं ॥ २१३ ॥

प्रकृतेःकारणायोगान्मताप्रकृतिरेवसा ।
महत्तत्त्वादयस्सप्तशक्तेर्विकृतयःस्मृताः ॥

प्रकृतिरेवकारणमेवनतुकस्यचित्कार्यमित्यर्थः, महत्तत्त्वादयस्सप्तमहानहङ्कारःपञ्च तन्मात्राणीति–शक्तेःप्रकृतेर्विकृतयःकार्य्याणि ॥ २१४ ॥

प्रकृतिका कारण न होने से वह कारणही है अर्थात् किसीका कार्य्य नहीं है सातों महत्तत्त्वादिक प्रकृतिके कार्य्य कहेगये हैं प्रकृतिरेव-अर्थात् कारणही है किसीका कार्य्य नहीं है सात महत्तत्त्वादिक अर्थात् महत्तत्त्व अहङ्कार और पञ्चतन्मात्रा शक्तेः (प्रकृतिके) विकृतयः (कार्य्य) ॥ २१४ ॥

इन्द्रियाणांचभूतानांकारणत्वान्महर्षिभिः ।
महत्तत्त्वादयस्सप्तप्रोक्ताःप्रकृतयोपिच ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तथासति प्रकृतिर्महानहङ्कारः पञ्चतन्मात्राणिचेत्यष्टौप्रकृतयः ॥ २१५ ॥

महर्षियोंने सातमहत्तत्त्वादिकों को इन्द्रिय और भूतोंके कारण होनेसे प्रकृति भी कहाहै ऐसा होने से प्रकृति महत्तत्त्व अहङ्कार और पञ्चतन्मात्रा यह आठ प्रकृतिहैं ॥ २१५ ॥

दशेन्द्रियाणिचित्तंचमहाभूतानिपञ्चच । एतानिसृष्टिंजानद्भिर्विकाराःषोडशस्मृताः॥२१६॥विकाराःकार्याणि एवंचतुर्विंशतिभिस्तत्त्वसिद्धेवपुर्गृहे । जीवात्मानियतेर्निघ्नो वसतिस्वान्तदूतवान् ॥ अत्रशब्दादीनांवियदादिमहाभूतगुणानांधर्मिभ्योभिन्नतयापृथक्त्वंनिरस्यनुक्तानान्तत्त्वानामुपसंहारमाह चतुर्विंशतिभिरितितानिचप्रकृतयोऽष्टौविकाराःषोडशेति-महत्तत्त्वादीनिप्रकृत्यादीनां भावाः नियतेश्शुभाशुभकर्म्मणः-निघ्नआयत्तः स्वान्तदूतवान्मनोदूतियुक्तः सदेहीकथ्यतेपापपुण्यदुःखसुखादिभिर्व्याप्तोबद्धश्चमनसाकृत्रिमैःकर्मबन्धनैःसजीवात्मातस्यदेहिनः शरीरजीवात्मनोःसंयोगकारकेणमनसासंयोगेयेयेगुणाउत्पद्यन्तेतानाह ॥ २१७ ॥

सृष्टिके जाननेवालों ने दशइन्द्रिय चित्त पंचमहाभूत यह सोलह विकार कहे हैं विकाराः (कार्य्य) इसप्रकार चौवीस तत्त्वों से शरीररूपी गृहके बनजाने पर शुभ और अशुभकर्म्मों के वशीभूत जीवात्मा मनरूपी दूतकेसाथ रहताहै यहां आकाशादि महाभूतों के गुण शब्दादिकों का आकाशादिकों से भिन्नता न होनेके कारण भेदको हटातेहुए चतुर्विंशतिभिः इत्यादि श्लोक से कहेभये तत्त्वों का उपसंहार अर्थात् निचोड़ कहतेहैं और वह आठप्रकृति और सोलह विकार मिलकर चौबीसहैं—महत्तत्त्वादिक अर्थात् प्रकृत्यादिकोंके भाग नियतेः अर्थात् शुभाशुभकर्म्मोंके-निघ्न अर्थात् आधीन-स्वान्तदूतवान् अर्थात् मनरूपी दूतयुक्त वह देही कहलाताहै- पापपुण्य और सुख दुःखादिकोंसे व्याप्त और मनके द्वारा कृत्रिमकर्म्म के बन्धनों से बंधाहुआ वह जीवात्माहै-उसदेही के शरीर और जीवात्माके संयोग करानेवाले मनसे संयोग होने पर जो जो गुण उत्पन्न होते हैं उनको कहते हैं॥ २१६ । २१७॥

इच्छाद्वेषसुखानिदुःखविषयज्ञानंप्रयत्नोमनःसंकल्पश्चविचारणास्मृतिरथोबुद्धिःकलाविज्ञता । प्राणस्योपरियापनंगुदवशाद्वायोरधःप्रेरणं नेत्रोन्मेषनिमेषकृत्यकर्णोत्साहाश्च जीवेगुणाः॥ इच्छासुखहेतुरभिलाषो द्वेषोदुःखहेतुर्मनःप्रवृत्तिःसुखंप्रीतिः दुःखमप्रीतिः विषयज्ञानं शब्दादिज्ञानंप्रयत्नःकार्य्येतात्पर्य्यंमनः संशयात्मकंतस्यकर्मसंकल्पः विचारणा ऊहापोहाभ्यांवस्तुविमर्षः स्मृतिः पूर्वानुभूतस्यार्थस्यस्मरणंबुद्धिः निश्चयात्मिका कलाविज्ञता शिल्पशास्त्रादिबोधः प्राणस्यहृदयस्थितस्यवायोः उपरियापनंमुखादिप्रतिनयनं गुदवशाद्वायोरधःप्रेरणमपानस्याधःप्रेरणंनेत्रोन्मेषनिमेषौनेत्रयोरुन्मीलननिमीलनेकृत्यकर्णोत्साहः कार्य्यारम्भेसामर्थ्येनोत्साहः जीवेमनोयुक्तस्यजीवात्मनोमी इच्छादयोगुणाः ॥ २१८ ॥

इति श्रीमिश्रलटकनतनयश्रीमन्मिश्रभावविरचितेभावप्रकाशेसृष्टिप्रकरणं प्रथमंसमाप्तम् ॥ १ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इच्छा द्वेष सुख दुःख विषयज्ञान प्रयत्न मन संकल्प विचारणा स्मृति बुद्धि कलाओं का जानना प्राणका ऊपरसे निकालना गुदा से वायुको नीचे निकालना नेत्रों का बन्द करना और खोलना कार्य्य करने में उत्साह यह जीवके गुणहैं इच्छा (सुखके लिये अभिलाष) द्वेष (दुःखके लिये मन की प्रवृत्ति) सुख (प्रीति) दुःख (प्रीतिका न होना) विषयज्ञानं (शब्दादि विषयों का जानना) प्रयत्न (कार्य्य में तत्पर होना) मन (यह पदार्थ है या नहीं इसप्रकारके सन्देहवाला) संकल्प(मानस-कर्म) विचारणा (तर्क वितर्क से वस्तुका निश्चय करना) स्मृति (पहिले अनुभव की हुई वस्तुका स्मरण करना) बुद्धि (निश्चयरूप) कलाविज्ञता (शिल्पआदि शास्त्रोंका जानना) प्राणस्योपरि यापनं (हृदय में स्थित वायुका मुखादिकों में लेजाना) गुदवशाद्वायोरधःप्रेरणं (अपानवायु का गुदाके द्वारा नीचे से निकालना) नेत्रोन्मेषनिमेषौ (नेत्रोंका बन्द करना और खोलना) कृत्यकर्णो-त्साहः (कार्य्य के प्रारम्भमें सामर्थ्य के अनुसार उत्साह) जीवमें मनके द्वारा युक्त जीवात्माके यह इच्छादिक गुणहैं २६ ॥

इति श्रीमिश्रलटकनतनयश्रीमन्मिश्रभावविरचितस्य भावप्रकाशस्य भाषाटीकायां सृष्टिप्रकरणं प्रथमं समाप्तम् ॥ १ ॥

चिकित्सायांशरीरी ह्यधिकृतःसशरीरीयथोत्पद्यते तद्बोधयितुंगर्भोत्पत्तिक्रममाह ॥ गर्भोत्पत्तिभूमिस्तुरजस्वलास्त्री । (ततोरजस्वलास्वरूपमाह) ॥ १ ॥ द्वादशाद्वत्सरादू र्ध्वमापञ्चाशत्समाःस्त्रियः । मासि मासिभगद्वारा प्रकृत्यैवार्त्तवंस्रवेत् ॥ आर्त्तवस्रावदिव साहतुःषोडशरात्रयः । गर्भग्रहणयोग्यस्तु सएव समयःस्मृतः ॥ २ ॥

वैद्यकशास्त्रमें शरीरधारीही मुख्य किया गयाहै इसकारण से वह शरीरधारी जिस प्रकार उत्पन्न होताहै उसे प्रकट करनेको गर्भोत्पत्ति के क्रमको कहते हैं और गर्भोत्पत्तिका स्थान रजस्वला स्त्री है इससे (रजस्वला का स्वरूप कहते हैं) १ बारह वर्ष से ऊपर पचास वर्षतक स्त्रियों का स्वभावही से महीने २ में योनिके द्वारा रुधिर बाहर निकलताहै रुधिर निकलने के दिन से १६ रात्रि ऋतु कहलाती हैं और वही समय गर्भ धारण करने के योग्य कहा गयाहै ॥ २ ॥

सर्व्वासामेवचतुर्वर्णस्त्रीणांसर्ववादिसम्मतः । पूर्व्वोक्तःसमयःग्रन्थान्तरेतुविशेषः ॥ तद्यथा स्नानदिवसादूर्ध्वंद्वादशरात्रावधि ब्राह्मण्याः दशरात्रावधि क्षत्रियायाः अष्टरा त्रावधि वैश्यायाःषड्रात्रावधि शूद्रायाः गर्भधारणे शक्तिः ॥ ३ ॥

सम्पूर्ण चारों वर्णोंकी स्त्रियोंका पहले कहा गया समय सम्पूर्ण वादियों ने मानाहै परन्तु अन्य ग्रन्थों में विशेषताहै जैसे कि स्नान के दिनसे बारह रात्रितक ब्राह्मणी की दश रात्रितक क्षत्रियाणी की आठ रात्रितक वैश्याकी और छः रात्रितक शूद्राकी गर्भधारण करनेमें शक्तिहै ॥ ३ ॥

अथ रजस्वलायानियमानाह ॥

आर्त्तवस्रावदिवसादहिंसाब्रह्मचारिणी । शयीतदर्भशय्यायांपश्येदपिपतिन्नच ॥ करेशरावेपर्णेवा हविष्यंत्र्यहमाहरेत् । अश्रुपातंनखच्छेदमभ्यङ्गमनुलेपनम् ॥ नेत्रयो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रञ्जनंस्नानं दिवास्वापंप्रधावनम्। अत्युच्चशब्दश्रवणं हसनंबहुभाषणम् ॥ आयास भूमिखननंप्रवातञ्चाविवर्ज्जयेत् ॥ ४ ॥

अथ रजस्वलाके नियम कहते हैं ॥

रजस्वला स्त्री ऋतुकालके प्रथमदिनसे हिंसारहित ब्रह्मचर्य्ययुक्त कुशकी शय्यापर सोवे और पति को भी न देखे हाथ में सकोरे में अथवा पत्तलमें तीन दिनतक हविष्यान्न भोजनकरे अश्रुपात नखोंका काटना—तेललगाना—चन्दनादि सुगन्धितवस्तु धारण करना—नेत्रों में अंजन लगाना-स्नान करना—दिनका सोना दौड़ना बहुत ऊंचे शब्द का सुनना—हंसना- बहुत बोलना—परिश्रमकरना पृथ्वीकाखोदना—हवाखाना इनसब बातोंको छोड़दे ॥ ४ ॥

अथैतस्या नियमकरणेदोषानाह ॥

अज्ञानाद्वाप्रमादाद्वा लोभाद्वादैवतश्चवा। साचेतुकुर्य्यान्निषिद्धानि गर्भोदोषांस्त दाप्नुयात् ॥ एतस्यारोदनाद्गर्भोभवेद्विकृतलोचनः। नखच्छेदेनकुनखी कुष्ठीत्वभ्यङ्गतो भवेत् ॥ अनुलेपात्तथास्नानाद्दुःखशीलोऽञ्जनाददृक्। स्वापशीलोदिवास्वापाच्चञ्चलः स्यात्प्रधावनात् ॥ अत्युच्चशब्दश्रवणाद्बधिरःखलुजायते। तालुदन्तौष्ठजिह्वासुश्यावो हसनतोभवेत् ॥ प्रलापी भूरिकथनादुन्मत्तस्तुपरिश्रमात्। स्खलतेभूमिखननादुन्मत्तो वातसेवनात् ॥ ५ ॥

इन नियमों के न करने में दोष कहते हैं ॥

अज्ञान से असावधानी से लोभ से अथवा दैवयोग से जो रजस्वला स्त्री निषिद्ध कार्य्यों को करे तो गर्भ दोषोंको प्राप्त होताहै जो रजस्वला स्त्री रोवे तो गर्भ के नेत्र विकारको प्राप्तहोते हैं—नखों के काटने से बिगड़े नखोंवाला गर्भ होता है और तैल लगाने से गर्भ कुष्ठी होताहै—चन्दनादिकों के लगाने से और स्नानसे गर्भ दुःखी होताहै—अञ्जनलगानेसे गर्भ अन्धाहोताहै दिनके सोनेसे गर्भबहुत सोनेवाला होताहै दौड़नेसे चंचल होताहै—बहुत ऊंचे शब्दके सुननेसे बहरा होताहै—हसने से गर्भ के तालु दांत ओष्ठ—और जिह्वामें श्यामता होती है—बहुत बोलने से गर्भ बकवादी होताहै परिश्रमकरने से मतवाला होताहै पृथ्वी के खोदने से गिरताहै हवाखाने से उन्मत्त होताहै ॥ ५ ॥

अथ रजस्वलाकृत्यमाह ॥

पूर्वंपश्येदृतुस्नाता यादृशंनरमंगना। तादृशंजनयेत्पुत्रं ततःपश्येत्पतिंप्रियम् ॥ प्रियमितिभर्त्तुर्य्यनासन्ने पुत्रादिकमपि पश्येत् चतुर्थदिवसेऽपिरजोनिवृत्तौस्त्री पतिना संगच्छेन्नतुरजोऽनुवृत्तौ। यत आह ॥ प्रवहत्सलिलेक्षिप्तं द्रव्यंगच्छत्यधोयथा ॥ तथा वहतिरक्तेतु क्षिप्तंवीर्य्यमधोव्रजेत् ॥ ६ ॥

अथ रजस्वलाकी कृत्य कहते हैं ॥

ऋतुकाल में स्नानकरनेवाली स्त्री जैसे पुरुषको देखती है वैसेही पुत्रको उत्पन्न करती है इस कारणसे पहले अपने पतिको अथवा किसी प्रिय पुरुषको देखे-प्रियशब्द से यह तात्पर्य्य है कि पति के उपस्थित न होनेपर पुत्रादिकों को भी देखे-ऋतुकालके चौथे दिनभी जो रुधिर निवृत्त होगयाहो तो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्त्री पतिके संगभोगकरे और जो न निवृत्तहुआ हो तो न करे क्योंकि कहाहै कि जैसे बहतेहुए पानी में डालीहुई वस्तु नीचे को चलीजाती है वैसेही वीर्य्यभी बहतेहुए रुधिर में डालाहुआ नीचे को चलाजाताहै ॥ ६ ॥

अथ भर्तृकृत्यमाह ॥

तत्रगर्भाधानेनिषिद्धं विहितंचकालंतयोःफलञ्चाह । आयुक्षयभयाद्भर्त्ताप्रथमेदिवसेस्त्रियम् ॥ द्वितीयेऽपिदिनेरत्यैत्यजेदृतुमतींतथा ॥ तत्रयश्चाहितोगर्भोजायमानो न जीवति । आहितोयस्तृतीयेऽह्निस्वल्पायुर्विकलाङ्गकः ॥ अतश्चतुर्थीषष्ठीस्यादष्टमी दशमीतथा ॥ द्वादशीवापियारात्रिस्तस्यान्तांविधिनाभजेत् ॥ विधिना गर्भाधानोक्तविधिना अत्रोत्तरोत्तरं विद्यादायुरारोग्यमेवच (तत्रान्तरे) प्रजासौभाग्यमैश्वर्य्यंबलञ्चाभिगमात्फलम् ॥ ७ ॥ अब पतिके कृत्य कहते हैं ॥

उस गर्भाधान में निषेध किये हुये और विधान कियेहुए दोनों समयोंका फल कहते हैं-पतिको उचितहै कि प्रथम तथा द्वितीयदिन में भी ऋतुमती स्त्रीसे संभोग न करे क्योंकि आयुका क्षयहोताहै-उन पहले और दूसरे दिनों में रहाहुआ गर्भ उत्पन्न होकर नहीं जीताहै और तीसरेदिन का रहाहुआ गर्भ थोड़ी उमरवाला और शिथिलअंगयुक्त होताहै इसकारणसे चौथी छठी आठवीं दशवीं तथा बारहवीं रात्रिमें विधिपूर्वक उसका सेवनकरे अर्थात् संभोगकरे विधिपूर्वक अर्थात् गर्भाधान में कहीहुई विधिसे- इन रात्रियोंमें उत्तरोत्तर अवस्था और आरोग्यकी वृद्धि होती है दूसरे तन्त्रमें ऐसा कहाहै कि संभोग करने से सन्तान सौभाग्य बल और ऐश्वर्य्य प्राप्तहोताहै ॥ ७ ॥

मनोभवागारमुखेऽबलानांतिस्रोभवन्तिप्रमदाजनानाम् । समीरणाचन्द्रमुखीचगौरी विशेषमासामुपवर्णयामि ॥ प्रधानभूतामदनातपत्रेसमीरणानामविशेषनाडी । तस्यामुखेयत्पतितंतुवीर्य्यं तन्निष्फलंस्यादितिचन्द्रमौलिः ॥ याचापराचान्द्रमसीचनाडी कंदर्पगेहे भवतिप्रधाना । सासुन्दरीयोषितमेवसूते साध्याभवेदल्परतोत्सवेषु ॥ गौरीतिनाडीयदुपस्थगर्भे प्रधानभूताभवतिस्वभावात् । पुत्रंप्रसूते बहुधाङ्गनासा कष्टोपभोग्यासुरतोपविष्टा ॥ ८ ॥

स्त्रियोंकी योनिके मुखमें तीन नाडियां होतीहैं समीरणा चन्द्रमुखी और गौरी अब इनकी विशेषता का वर्णन करतेहैं योनिमें समीरणा नाम विशेषनाडी प्रधानहै उसके मुखमें पड़ाहुआ वीर्य व्यर्थ होता है अर्थात् गर्भको नहीं उत्पन्न करताहै यह चन्द्रमौलिका मतहै और जो दूसरी चन्द्रमुखी नाडी योनिमें प्रधानहै वह कन्याही को उत्पन्न करतीहै और थोड़ेसे संभोगमें साध्य होतीहै अर्थात् गर्भ धारण करतीहै और गर्भ में स्वभावही से प्रधानभूत जो गौरी नाडीहै वह सुरत में प्राप्त कष्टसे भोग करने के योग्य बहुधा पुत्रही उत्पन्न करती है ॥ ८ ॥

अथ युग्मायुग्मरात्रीणां फलमाह ॥

युग्मासुपुत्राजायंतेस्त्रियोऽयुग्मासुरात्रिषु । तत्रदम्पत्योःसम्भोगेयादृक् पुमान्युक्तस्तादृगुच्यते ॥ स्नातश्चन्दनलिप्ताङ्गःसुगन्धसुमनोऽर्चितः ॥ भुक्तवृष्यःसुवसनःसुवेषः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समलंकृतः ॥ ताम्बूलवदनस्तस्यामनुरक्तोऽधिकःस्मरः। पुत्रार्थी पुरुषोनारीमुपेयाच्छयने शुभे ॥ ९ ॥

अथ सम और विषम रात्रियों का फल वर्णन करते हैं॥

समरात्रियों में पुत्र और विषमरात्रियों में कन्या उत्पन्न होती है तहां स्त्री और पुरुषके संभोग में जैसा पुरुष होना चाहिये उसे कहते हैं-स्नान कियाहुआ-चन्दनादि सुगन्धित वस्तुओंको धारण कियेहुआ सुगन्धित पुष्पोंसे युक्त कामके बढ़ानेवाले दुग्धादि पदार्थोंको खाये हुआ अच्छे वस्त्र सुन्दर वेष और श्रेष्ठ आभूषणधारी मुखमें तांबूल खायेहुआ उस स्त्रीमें अधिक प्रेम करनेवाला कामदेव के अधिक वेगवाला पुत्रार्थी पुरुष उत्तम शय्यापर स्त्रीसे संभोग करे॥ ९॥

अथ तत्राऽयोग्यं पुरुषमाह ॥

अत्याशितोऽधृतिःक्षुद्वान् सव्यथाङ्गःपिपासितः ॥ बालोवृद्धोऽन्यवेगार्त्तस्त्यजेद्रोगी च मैथुनम् ॥ १० ॥ (तत्रस्त्री यादृशी योग्या तादृश्युच्यते।) पुरुषस्य गुणैर्युक्ता विहितान्यूनभोजना ॥ नारीऋतुमती पुंसां सागच्छेत्तु सुतार्थिनी ॥ ११ ॥

इसमें अयोग्य पुरुषको कहते हैं ॥

बहुत भोजन कियाहुआ-धैर्य्यरहित क्षुधासे व्याकुल शरीर में पीड़ायुक्त- तृषित-बालक-वृद्ध मलमूत्रादिके वेगोंसे व्याकुल और रोगी पुरुष मैथुन न करे १० (अब योग्य स्त्रीका वर्णन करते हैं) पहले कहेहुये पुरुषके गुणों से युक्त योग्य और स्वल्प भोजन करनेवाली ऋतुमती पुत्रकी चाहने वाली स्त्री पुरुषसे संगम करे॥ ११ ॥

अथ तत्राऽयोग्यां स्त्रियमाह ॥

रजस्वलाव्याधिमतीविशेषाद्योनिरोगिणी। वयोऽधिकाचनिष्कामामलिनागर्भिणी तथा ॥ एतासांसङ्गमात्पुंसांवैगुण्यानिभवन्तिहि। तत्ररजस्वलादिनत्रयंयावद्वतौनिषिद्धायतउक्तम् ॥ प्रथमेऽहनिचाण्डालीद्वितीयेब्रह्मघातिनी। तृतीयेरजकीपुंसांयथावर्ज्या तथाङ्गना ॥ व्याधिमतीचवर्ज्यातत्रस्त्रीणांव्याधयः। प्रदरादयउक्तानिषिद्धातत्रापिविशेषाद्योनिरोगिणी ॥ १२ ॥

अथ अयोग्यस्त्रीको कहते हैं॥

रजस्वला–रोगवाली–और विशेष करके योनिके रोगवाली- अधिक अवस्थावाली कामके वेगसे रहित मैली और गर्भिणी ऐसी स्त्रियोंके संग भोगकरने से पुरुषके रोगउत्पन्न होते हैं इन में रजस्वला ऋतुकाल से तीनदिनतक निषिद्ध है क्योंकि ऐसा कहाहुआहै कि पहिले दिन चाण्डाली दूसरेदिन ब्रह्मघातिनी और तीसरेदिन धोबिनके समान रजस्वला स्त्रियोंका त्याग पुरुषों को उचित है- रोगवाली स्त्री त्याग करने के योग्यहै अर्थात् प्रदरादिक रोगवाली स्त्रियां निषिद्ध हैं इसमें भी विशेष करके योनि रोगवाली वर्जित हैं ॥ १२ ॥

अथ गर्भावतरणक्रममाह ॥

कामान्मिथुनसंयोगेशुद्धशोणितशुक्रजः। गर्भःसंजायतेनार्य्यांःसजातोबालउच्यते॥ गर्भःशुद्धःअशुद्धस्तुगर्भोऽशुद्धःशुक्रशोणितयोरपिदम्पत्योर्भवतियतआह। दम्पत्योः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुष्ठबाहुल्याद्दुष्टशोणितशुक्रयोः ॥ यदपत्यन्तयोर्जातंज्ञेयंतदपिकुष्ठितमिति । कुष्ठंसंजातंयस्यतत्कुष्ठितम्,अत्रतारकादित्वादितच्प्रत्ययः ॥ यत्तुवातादिदुष्टरेतसःप्रजोत्पादनेनसमर्थाइतिसुश्रुतः । तत्रशुद्धप्रजोत्पादने नसमर्थाइतिबोद्धव्यम् ॥ रोगादिनाशुद्धास्तुप्रजांवातादिदुष्टशुक्राः । अपिजनयन्तिजन्मान्धबधिरपङ्ग्वादिसम्भवात् ॥ १३ ॥ ऋतौस्त्रीपुंसयोर्योगेमकरध्वजवेगतः । पुंसःसर्व्वशरीरस्थोरेतोद्रावयतेऽथतत् ॥ वायुर्मेहनमार्गेणपातयत्यङ्गनाभगे । तत्संश्रुत्यव्यात्तमुखंयातिगर्भाश्रयंप्रति ॥ तत्र शुक्रवदायातेनार्त्तवेनयुतंभवेत् ॥ १४ ॥

अब गर्भकी उत्पत्तिका क्रम कहते हैं ॥

कामसे दोनोंके संयोगमें शुद्ध रुधिर और वीर्य्यकेद्वारा स्त्रीके गर्भस्थिति होती है वहीउत्पन्नहोकर बालक कहाताहै- गर्भ शुद्ध होताहै परन्तु बिगडेहुये रुधिर और वीर्य्यवाले स्त्री पुरुषों का अशुद्ध होताहै क्योंकि कहाहै कि कुष्ठकी अधिकतासे जिनका रुधिर वीर्य्य बिगडाहुआ है उन स्त्री पुरुषों की सन्तान भी कुष्ठित होती है कुष्ठ जिसकेहो वह कुष्ठित कहलाताहै इस कुष्ठित शब्दमें तारकादित्वसे इतच्प्रत्ययहोताहै जोकि वातादिकों से बिगडे हुए वीर्य्यवाले प्रजाके उत्पन्न करने में नहीं समर्थ होते हैं ऐसा सुश्रुतने कहाहै वहां शुद्ध सन्तान नहीं उत्पन्न करसक्ते हैं ऐसा समझना चाहिये क्योंकि रोगादिकोंसे शुद्ध और वातादिकोंसे बिगडे हुए वीर्यवालेभी प्रजाको उत्पन्न करते हैं परन्तु जन्महीसे अन्धे- बहिरे - लंगडे आदि उत्पन्नहोने का संभवहै १३ ऋतुकालमें कामदेवके वेगसे स्त्री और पुरुषके संयोगहोनेपर पुरुषके सम्पूर्ण शरीरमें स्थित वीर्य्य पिघलताहै इसके उपरान्त वायु उस वीर्य्यको लिंग के मार्ग द्वारा स्त्रीकी योनिमें गेरताहै वह वीर्य्य बहकर फैलेहुए मुखवाले गर्भाशयमें प्राप्त होताहै उस गर्भाशयमें वीर्य्यके समान आये हुये रज (हैज़) से मिलताहै ॥ १४ ॥

गर्भाशयस्य स्वरूपमाह ॥

शङ्खनाभ्याकृतिर्योनिस्त्र्यावर्त्तासाचकीर्त्तिता । तस्यास्तृतीयेत्वावर्तेगर्भशय्याप्रतिष्ठिता ॥ यथारोहितमत्स्यस्यमुखंभवतिरूपतः । तत्संस्थानातथारूपांगर्भशय्यांविदुर्बुधाः ॥ अयमर्थः । गर्भशय्यामुखंरोहितमत्स्येवभवतियथा च रोहितमत्स्यस्यस्थितिर्जलेभवतितथापित्ताशयपक्काशयमध्येगर्भशय्यायाः स्थितिर्भवतिरूपमपितस्येवभवतियथारोहितस्य मुखंस्वल्पमाशयस्तुमहानित्यर्थः ॥ १५ ॥

अब गर्भाशय का स्वरूप कहते हैं ॥

शङ्खकी नाभिके समान आकारवाली योनिमें तीनचक्र कहेगये हैं इसके तीसरे चक्रमें गर्भकी शय्या स्थितहै-पण्डितलोग रोहू मछली के मुखके रूपके समान स्थिति और रूपवाली गर्भशय्या कहते हैं इसका यह तात्पर्य्य है कि गर्भशय्याका मुख रोहूमछलीके समान होताहै और जैसे जल में रोहूमछली की स्थितिहै उसी प्रकार पित्ताशय और पक्वाशयके बीचमें गर्भशय्याकी स्थिति है और उस का रूपभी उसीके समान होताहै जैसे रोहू मछलीका मुख छोटा और भीतरकी ओर बडा होता है उसीप्रकार गर्भशय्याभी होती है ॥ १५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुक्रार्त्तवसमाश्लेषोयदैवखलुजायते । जीवस्तदैवविशतियुक्तशुक्रार्त्तवान्तरम् ॥ सूर्य्यांशोःसूर्य्यमणितोह्युभयस्माद्युताद्यथा । वह्निःसञ्जायतेजीवस्तथाशुक्रार्त्तवाद्युतात् ॥ आत्मानादिरनन्तश्चाऽव्यक्तोवक्तुंनशक्यते । चिदानन्दैकरूपोऽयंमनसापिनगम्यते ॥ एवंभूतोऽपिजगतोभाविनीबलवत्तया । अविद्यास्वीकृतेकर्म्मवशोगर्भेविशत्यसौ ॥ (गर्भेचतुर्विंशतितत्त्वमयम्) सएववेत्तारसनोद्रष्टाघ्रातास्पृशत्यसौ । श्रोतावक्ताच कर्त्ताचगन्तोरन्तोत्सृजत्यपि॥१६॥दिनेऽव्यतीतेनियतंसंकुचत्यम्बुजंयथा ।ऋतौऽव्यतीते नार्य्यास्तुयोनिःसंव्रियतेयथा ॥ ऋतौरजोदर्शनात् । षोडशनिशात्मकेकाले ॥ १७ ॥

जिससमय वीर्य्य और रजका संयोग होताहै उसीसमय मिलेहुये वीर्य्य और रजमें जीव प्रवेश करताहै-सूर्यकी किरण और सूर्य्यकान्तिमणि इन दोनों के मिलने से जैसे अग्नि उत्पन्न होती हैं उसीप्रकार वीर्य्य और रजके मिलने से जीव उत्पन्न होताहै यह आत्मा अनादि अनन्त अव्यक्त वाणीसे परे आनन्दरूप मनसे भी जाना नहीं जासक्ताहै ऐसा होनेपरभी संसारके होनहारकी प्रबलतासे कर्म्मके वशीभूत होकर अविद्याके द्वारा ग्रहण कियेहुये गर्भ में यह प्रवेश करताहै- गर्भ में अर्थात् चौबीस तत्त्वोंसे बनेहुये गर्भमें-वही आत्मा जानता है स्वाद लेताहै देखता है सूंघता है स्पर्श करताहै सुनताहै बोलता है करता है चलताहै रमण करताहै और त्यागभी करता है १६ जैसे दिन के व्यतीत होनेपर कमल सिकुर जाताहै उसीप्रकार ऋतुकाल के व्यतीत होजानेपर स्त्रीकी योनि सिकुर जाती है- ऋतुकालमें अर्थात् ऋतुकालके प्रथम दिनसे सोलह रात्रि पर्यंत ॥ १७ ॥

बीजेऽन्तर्वायुनाभिन्नेद्वौजीवौकुक्षिमागतौ । यमावित्यभिधीयेतेधर्मेतरपुरःसरौ । धर्म्मस्तदितरोऽधर्म्मस्तौपुरःसरौययोःतेनयमौधर्म्माधर्म्माभ्यांभवतइत्यर्थः ॥ १८ ॥ आधिक्येरेतसःपुत्रः कन्यास्यादार्त्तवेऽधिके । नपुंसकंतयोःसाम्येयथेच्छापरमेश्वरी ॥ नन्वेवंसतिकथंपुत्रोत्पत्तिःसदैवार्त्तवस्यैवबाहुल्यात् । यतउक्तम् ॥ आर्त्तवंचतुरञ्जलि प्रमाणंशुक्रंप्रसृतिमात्रमिति ॥ १९ ॥

भीतरकी वायुसे वीर्य्यके छिन्न भिन्न होजाने से धर्म्म और अधर्म्महै आगे जिनके ऐसे दो जीव कुक्षिमें प्राप्तहोकर यम कहलाते हैं धर्म्म और उससे दूसरा अधर्म्म यह दोनों हैं आगे जिन के वह धर्मोत्तर पुरस्सरौ कहलाते हैं इससे यम (जुड़िया) धर्म और अधर्मके द्वारा होते हैं यह तात्पर्य है१८॥ वीर्य्यकी अधिकतासे पुत्र उत्पन्न होताहै और रजकी अधिकता से कन्या उत्पन्न होती है और रज तथा वीर्य्यकी समता से नपुंसक उत्पन्न होताहै आगे ईश्वरकी इच्छा-अब यहांपर यह शंका होतीहै कि ऐसा होनेपर सदैव रजकी अधिकता से पुत्रकी उत्पत्ति कैसे होसक्ती है क्योंकि कहाभी हैं कि रजका प्रमाण चार अञ्जली है और वीर्य्य का प्रमाण एक चुल्लू अर्थात् रजका अष्टमांश वीर्य्य होताहै ॥ १९ ॥

वाग्भट्टेऽप्युक्तमात्रेयादिभिः ॥

मज्जामेदोवसामूत्रपित्तश्लेष्मशकृत्प्रसृक् । रसोजलंचदेहेऽस्मिंस्त्वेकैकाञ्जलिवर्द्धितम् ॥ पृथक्चप्रसृतंप्रोक्तमोजोमस्तिष्करेतसाम् । द्वावञ्जलीतुदुग्धस्य चत्वारोरजस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्तुते ॥ समधातोरिदंमानं विद्याद्वृद्धिक्षयावतः । इति ॥ नैवं, यतोगर्भाशयस्थमेव शुक्रमार्त्तवंचगर्भोत्पत्तिहेतुः शुक्रंकदाचिदत्यन्तहर्षवशाद्दुग्धादिशुक्रलत्वद्रव्यसेवनात् शुक्रबाहुल्याद्गर्भाशयेबहुस्रवतिकदाचिद्दौर्मनस्यादिना शुक्राल्पत्वात्त्वल्पमिति एवमार्त्तवमपीतिनदोषः (सुश्रुतःपुनराह) वैलक्षण्याच्छरीराणामस्थायित्वात्तथैवच । दोषधातुमलानांतुपरिमाणं न विद्यते ॥ वैलक्षण्यात्दीर्घह्रस्वकृशादिभेदेनसादृश्याभावादस्थायित्वाद्वयोऽहर्निशर्त्तुभुक्तेष्वेकमात्रानवस्थानात् एवंतामभिसंगम्यपुनर्मासाद्भजेदसौमासादूर्ध्वमितिशेषः । अर्वाग्गमनेनगर्भद्वारविघट्टनात् गर्भच्युतिप्रसंगः स्यात्केचित्तु, पुनः पुष्पदर्शनेनगर्भालाभनिश्चयेमासादूर्ध्वंगच्छेत्-लब्धगर्भेनैवगच्छेदितिवदन्ति ॥ २० ॥

वाग्भट्ट में आत्रेयादिकों ने भी कहाहै कि मज्जा-मेद-चरबी-मूत्र-पित्त-श्लेष्मा-विष्ठा-रुधिर-रस-और जल यह पदार्थ इस देहमें एक २ अञ्जली के प्रमाण से अधिक हैं और कहागया है कि ओज (पराक्रम) मस्तिष्क (भेजा) और वीर्य्य एक २ चुल्लूहैं और दूध दो अञ्जली रज चार अञ्जली यह समधातुवाले का प्रमाणहै इससे अधिकता और न्यूनतामें वृद्धि और क्षय जाननी चाहिये ऐसा नहीं क्योंकि गर्भाशयमें स्थितही वीर्य्य और रज गर्भ की उत्पत्तिका कारण है कदाचित् अत्यन्त प्रसन्नताके कारण अथवा वीर्य्य के बढ़ानेवाले दुग्धादि पदार्थों के सेवन के कारण वीर्य्य की वृद्धि से गर्भाशयमें बहुत वीर्य्य गिरताहै और कदाचित् दुःखादिक के कारण वीर्य्य की न्यूनतासे थोडावीर्य्य गिरताहै ऐसेही रजभी न्यूनाधिक होताहै इस प्रकार से कोई दोष नहीं है फिर सुश्रुतभी कहते हैं कि शरीरोंकी विलक्षणता और अस्थायित्व दोष से धातु और मल इनका प्रमाण नहीं है विलक्षणता अर्थात् दीर्घ ह्रस्व और दुर्बल आदि भेदों से सदृशता का न होना अस्थायित्व अर्थात् अवस्था का दिन रात्रि ऋतु और भोजनमें एक प्रकार स्थित न रहना इस प्रकार उससे संभोगकरके फिर महीने के उपरान्त संभोगकरै क्योंकि जो महीने के भीतर गमनकरे तो गर्भद्वारके रगडने से गर्भपात होनेका भयहै कोई तो फिर ऋतु धर्म के होने से गर्भ के न होनेका निश्चय होजानेपर महीने के उपरान्त संगम करे और जो गर्भ होवे तो न करे ऐसा कहते हैं ॥ २० ॥

तत्रपरिहार्य्यपरिहारार्थंसद्योगृहीतगर्भायालक्षणमाह ॥

शुक्रशोणिततयोर्योनेरस्रावोर्थश्रमोद्भवः ॥ सक्थिसादःपिपासाचग्लानिःस्फूर्त्तिभगेभवेत् ॥ २१ ॥

त्याग करनेके योग्य पदार्थों का त्याग करने के लिये उसी समय गर्भ के धारण करनेवाली स्त्रीका लक्षण कहते हैं ॥

वीर्य्य और रुधिरका योनिसे न बहना कार्य्य में परिश्रम होना—जंघामें पीडा—तृषाका लगना-ग्लानि और योनिका फड़कना यह लक्षण शीघ्र गर्भ धारण करनेवाली स्त्रीके होते हैं ॥ २१ ॥

अथतस्याएवोत्तरकालीनंलक्षणमाह ॥

स्तनयोर्मुखकार्ष्ण्यंस्याद्रोमराज्युद्गमस्तथा ॥ अक्षिपक्ष्माणिचाप्यस्याः संमील्यन्ते विशेषतः ॥ छर्दयेत्पथ्यभुक्चापिगन्धादुद्विजतेशुभात् । प्रसेकःसदनंचैतद्गर्भिण्यालिंग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुच्यते॥ २२ ॥ (तत्रपुत्रगर्भवत्यालक्षणम्) पुत्रगर्भयुतायास्तुनार्य्यामासिद्वितीयके। गर्भोगर्भाशयेलक्ष्यःपिण्डाकारोऽपरंशृणु ॥ पिण्डोवर्त्तुलाकृतिः मासिद्वितीयकइत्यस्य गर्भःपिण्डाकारोलक्ष्यः इत्यनेनैवान्वयो नत्वग्निमम्लोकेऽपि ॥ दक्षिणाक्षिमहत्त्वंस्यात् प्राक्क्षीरंदक्षिणेस्तने। दक्षिणोरुःसुपुष्टःस्यात्प्रसन्नमुखवर्णता ॥ पुन्नामधेयद्रव्येषुस्व प्नेष्वपिमनोरथः। आम्रादिफलमाप्नोतिस्वप्नेषुकमलादि च॥ २३ ॥

अब उसीके पीछे होनेवाले लक्षण कहते हैं॥

स्तनों के मुखकी श्यामता-रोमांचहोना विशेषकरके नेत्रोंका बन्दहोना-पथ्य भोजनका भी वमन होना-उत्तम गन्धिसे क्लेशहोना-पसीना आना पीड़ाहोना यह गर्भिणी स्त्रीके लक्षण कहेगये हैं॥ २२॥

अब पुत्र गर्भवाली स्त्रीके लक्षण कहते हैं॥

पुत्र गर्भवाली स्त्रीके गर्भाशयमें दूसरे महीने पिण्डके समान आकारवाला गर्भ लक्षित होताहै और दूसरे लक्षण आगे कहते हैं पिण्ड अर्थात् गोल आकारवाला दूसरे महीने इसका संबन्ध पिण्डाकार-हीके साथमें है न कि आगेवाले श्लोकसे दक्षिण नेत्र बड़ाहो और दक्षिणही स्तनमें प्रथम दूध उत्पन्न हो दक्षिण जंघाभारी हो मुखका वर्ण उत्तमहो स्वप्नमें भी पुरुषवाची पदार्थों की इच्छाहो और स्वप्नमें आम्रादिक फल और कमल आदिक पुष्प प्राप्तहों इनलक्षणोंवाली स्त्रीके गर्भ में पुत्रजानना॥ २३॥

अथ कन्यागर्भवत्या लक्षणमाह॥

कन्यागर्भवतीगर्भेपेशीमासिद्वितीयके। पुत्रीगर्भस्यलिंगानिविपरीतानिचेक्षते ॥ पेशीदीर्घाकृतिः॥ २४॥ नपुंसकंयदागर्भे भवेद्गर्भोऽर्बुदाकृतिः॥ उन्नतेभवतःपार्श्वे पुरस्तादुदरंमहत् ॥ अर्बुदंवर्त्तुलंफलार्द्धतुल्यम्॥ २५॥ (नपुंसकविशेषमाह) आसेकश्चसुगन्धी च कुम्भीकश्चेर्ष्यकस्तथा। अमीसशुक्राबोद्धव्याअशुक्रःषण्ढसंज्ञकः॥ २६॥

अब कन्या गर्भवाली स्त्रीके लक्षण कहते हैं॥

कन्या गर्भवाली स्त्रीके गर्भ में दूसरे महीने पेशी होती है और पुत्र गर्भवाली स्त्रीसे उलटे लक्षण होते हैं पेशी (दीर्घाकार)॥ २४॥ (नपुंसकगर्भवाली के लक्षण) जो गर्भ में नपुंसकहो तो गर्भ का आकार अर्बुदके समानहोताहै कोखें ऊंची होती हैं और पेट आगेको बड़ा होताहै अर्बुद (किसीगोल पदार्थ का आधा)॥ २५॥ (अब नपुंसकों के प्रकारकहते हैं) आसेक्य-सुगन्धी कुंभीक और ईर्षक यह चारों वीर्य्य सहित नपुंसक कहे जाते हैं और जिसके वीर्य्य न हो वह षण्ढ कहलाताहै॥ २६॥

अथैतेषांलक्षणमाह॥

पित्रोस्तुस्वल्पवीर्यत्वादासेक्यःपुरुषोभवेत्। सशुक्रंप्राश्यलभतेध्वजोन्नतिमसंशयम्॥ पित्रोर्मातापित्रोः स्वल्पवीर्यत्वात् स्वल्पशुक्रार्त्तवत्वात् आसेक्यनामा मुखयोनीति नामान्तरः स शुक्रं प्राश्येति सपुरुषोऽन्य पुरुषेण स्वमुखे मैथुनं कारयित्वा तस्य शुक्रं प्राश्यमेहनोत्थानं लभत इत्यर्थः॥ यःपूतियोनौजायेत सहिसौगन्धिकोभवेत्। सयोनिशेफसौगन्धमाघ्रायलभतेबलम्॥ सौगन्धिकः सौगन्धिकनामा नासायोनीति नामान्तरं बलं मैथुने शक्तिं॥ २७॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अब इनके लक्षण कहते हैं ॥

माता पिताके रज और वीर्य्य के थोड़े होनेसे पुरुष आसेक्यनाम नपुंसक कहलाता है और वह वीर्य्यको खाकर निस्सन्देह लिङ्ग की उन्नति अर्थात् भोगकरने की सामर्थ्य को प्राप्त होताहै वीर्य्य को खाकर (वह नपुंसक पुरुष अन्य पुरुषसे अपने मुखमें मैथुन कराकर वीर्य्यको चखकर भोगकरनेकी सामर्थ्य को प्राप्त होताहै) और इस नपुंसक का दूसरा नाम मुखयोनिभी है जो दुर्गन्धित योनि में उत्पन्न होताहै वह सुगन्धी नपुंसक कहलाताहै और वह योनि तथा दूसरे के लिङ्गको सूंघकर मैथुन करने की सामर्थ्य को प्राप्त होताहै इस नपुंसकका दूसरानाम नासायोनि भी है ॥ २७ ॥

स्वेगुदेब्रह्मचर्य्याद्यः स्त्रीषुपुंवत् प्रवर्त्तते ॥ सकुम्भीक इतिज्ञेयो गुदयोनिस्तु स स्मृतः ॥ अब्रह्मचर्य्यात् ब्रह्मचर्य्यम् मैथुनं अब्रह्मचर्य्यंमैथुनं यत्स्यात् ॥ २८ ॥

जो पुरुष अपनी गुदामें मैथुन कराने से स्त्रियों से संभोग करनेकी सामर्थ्य को प्राप्त होताहै वह कुम्भीक कहलाताहै और इसका दूसरानाम गुदयोनि भी है ॥ २८ ॥

दृष्ट्वाव्यवायमन्येषां व्यवायेयः प्रवर्त्तते ॥ ईर्ष्यकः सतु विज्ञेयो दृष्टियोनिस्तुसस्मृतः २६ योभार्य्यायामृतौमोहादङ्गनेवप्रवर्त्तते। तत्रस्त्रीचेष्टिताकारो जायतेषण्ढसंज्ञकः ॥ स्त्रीचेष्टिताकारः स्त्र्याकारःश्मश्रुरहितः। स्त्रीचेष्टितः समेहनोऽपि पुरुषशक्तिरहितः ॥ किन्तु स्त्रीवदधो भूतःस्वेगुदे पुरुषान्तरेण मैथुनम् ॥ ३०

जो पुरुष दूसरेके मैथुनको देखकर मैथुनमें प्रवृत्त होताहै वह ईर्षक कहलाताहै इसका दूसरानाम दृष्टियोनिभी है २६ जो पुरुष ऋतुकालमें अज्ञानतासे स्त्रीके समान नीचे लेटकर स्त्रीको ऊपरकरके स्त्रीसे संभोग करताहै उसके जो पुत्र उत्पन्न होताहै वह स्त्रीके समान चेष्टा और आकारवाला अर्थात् दाढ़ी आदिसे रहित और लिङ्ग के होनेपरभी पुरुषार्थ से रहित षण्ढनामवाला होताहै और यह षण्ढ पुरुष स्त्रीके समान नीचे लेटकर अपनी गुदामें अन्य पुरुषसे मैथुन कराता है ॥ ३० ॥

ऋतावृतौपुरुषवत् प्रवर्त्तेताङ्गनायदि। तत्रकन्यायदिभवेत् साभवेन्नरचेष्टिता ॥ पुरुषवत् स्त्रियमारुह्यसा तस्यायोनौ स्वयोनिघर्षणं करोति ॥ ३१ ॥

ऋतुकालमें जो स्त्री पुरुषके समान आप ऊपर होकर पुरुषसे मैथुनकरे उससे जो कन्या उत्पन्न होगी वह पुरुषके समान चेष्टावाली होगी वहकन्या पुरुषके समान स्त्रीके ऊपर चढ़कर उसकी योनि में अपनी योनिको रगड़ती हैं ॥ ३१ ॥

अपराअपि गर्भप्रकृतीराह ॥

यदानार्य्यावुपेयातां वृषस्यन्त्यौ कथञ्चन । मुञ्चन्त्यौशुक्रमन्योन्यमनस्थिस्तत्र जायते ॥ अनस्थिः अत्रेषदर्थे नञ् तेनाल्पकोमलास्थिरित्यर्थः ॥ ऋतुस्नातातुयानारी स्वप्नेमैथुनमाचरेत्। आर्त्तवंवायुरादाय कुक्षौगर्भंकरोतिहि ॥ मासिमासिप्रवर्द्धेत स गर्भोगर्भलक्षणः। कललंजायतेतस्य वर्जितंपैतृकैर्गुणैः ॥ गर्भलक्षणः प्रकृतगर्भलक्षणः। पैतृकैर्गुणैः केशश्मश्रुलोमनखदन्तशिरास्नायुधमनीरेतः प्रभृतिभिः ॥ ३२ ॥

और भी गर्भकी प्रकृति कहते हैं ॥

जब कामसे अत्यन्त पीड़ित दोस्त्री परस्पर संभोग करें तब परस्पर किसीप्रकार वीर्य्य छोड़ती हैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उससे जो सन्तान उत्पन्न होती है वह अल्प और कोमल हड्डीवाली होती है ऋतुकालमें स्नानकरने वाली जो स्त्री स्वप्न में मैथुन करे उसकी कुक्षिमें वायु रुधिरको लेकर गर्भ उत्पन्न करती है और गर्भ के समान लक्षण वाला वह गर्भ पिताके गुणों (केशदाढ़ीरोमनखदन्त नाड़ी आदिकों) से रहित कज्जलनाम उत्पन्न होताहै ॥ ३२ ॥

सर्पवृश्चिककूष्माण्डाकृतयो विकृताश्चये । गर्भास्तेयोषितस्ताश्च ज्ञेयाःपापकृतोभृसम् ३३ गर्भोवातप्रकोपेन दोहदेचापमानिते । भवेत्कुब्जःकुणिःपंगुर्मूकोमिन्मिनएवच ॥ ३४ ॥

सर्प वृश्चिक कूष्माण्ड आदिकों के आकार वाले विकारयुक्त जो गर्भ होते हैं वह गर्भ अत्यन्त पाप करनेवाली स्त्रियों के वायु के कोपसे और गर्भिणी स्त्रीकी इच्छाके न पूरेहोनेसे कुबड़ा कुणि लंगड़ा गूंगा और मिनामिनो आदि उत्पन्न होते हैं ३३ । ३४ ॥

पुत्राणामाहाराचारचेष्टाभेदस्य हेतुमाह ॥

आहाराचारचेष्टाभिर्य्यादृशीभिःसमन्वितौ । स्त्रीपुंसौसमुपेयातां तयोःपुत्रोऽपितादृशः ॥ समुपेयातां संयोगं गच्छेताम् ॥ ३५ ॥

पुत्रों के आहार आचार और चेष्टाओं के भेदका कारण कहते हैं ॥

स्त्री और पुरुष जिस प्रकारके आहार आचार और चेष्टाओं से युक्त होकर संभोग करते हैं उनका पुत्रभी वैसाही उत्पन्न होताहै ॥ ३५ ॥

अथ गर्भलक्षणमाह ॥

गर्भाशयगतंशुक्रमार्तवंजीवसंज्ञकः । प्रकृतिःसविकाराच तत्सर्वंगर्भसंज्ञकम् ॥ कालेनवर्द्धितोगर्भो यदाङ्गोपाङ्गसंयुतः । भवेत्तदासमुनिभिः शरीरीतिनिगद्यते ॥ अङ्गोपाङ्ग संयुक्तः व्यक्ताङ्गोपाङ्गः ॥ ३६ ॥

गर्भके लक्षण लिखते हैं ॥

गर्भाशयमें प्राप्त हुए वीर्य्य और रजको जीव कहते हैं यह आठ प्रकृति और सोलह विकार सब मिलकर गर्भ कहलाते हैं समय पाकर बढ़ेहुए गर्भ के जब अङ्ग और उपाङ्ग प्रकट होते हैं तब मुनि लोग उसको शरीरी कहते हैं ॥ ३६ ॥

तस्यत्वङ्गान्युपाङ्गानि ज्ञात्वासुश्रुतशास्त्रतः । मस्तकादभिधीयन्ते शिष्या शृणुतयत्नतः ॥ आद्यमङ्गंशिरःप्रोक्तं तदुपाङ्गानिकुन्तलाः । तस्यान्तर्मस्तुलुङ्गंच ललाटंभ्रूयुगन्तथा ॥ नेत्रद्वयंतयोरन्तर्वर्त्तेतेद्वेकनीनिके । दृष्टिद्वयंकृष्णगोलौ श्वेतभागौचवर्त्मनी ॥ पक्ष्माण्यपाङ्गाशङ्खौच कर्णौतच्छष्कुलीद्वयम् । पालिद्वयंकपोलौच नासिकाचप्रकीर्त्तिता ॥ ओष्ठाधरौचसृक्किण्यो मुखंतालुहनुद्वयम् । दन्ताश्चदन्तवेष्टश्च रसनाचिवुकंगलः ॥ द्वितीयमङ्गंग्रीवातु ययामूर्द्धाविधार्यते । तृतीयंबाहुयुगलं तदुपाङ्गान्यथब्रुवे ॥ तत्रोपरिमितौस्कन्धौ प्रगण्डौभवतस्त्वधः । कफोनियुतंतदधः प्रकोष्ठयुगलन्तथा ॥ मणिबन्धौतलेहस्तौ तयोश्चांगुलयोदश । नखाश्चदशतेस्थाप्या दशच्छेद्याःप्रकीर्त्तिताः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चतुर्थमङ्गंवक्षस्तु तदुपाङ्गान्यथब्रुवे। स्तनौपुंसस्तथानार्य्या विशेषउभयोरयम् ॥ यौव नागमनेनार्याः पीवरौभवतःस्तनौ । गर्भवत्याःप्रसूनायास्तावेवक्षीरपूरितौ ॥ हृदयंपु ण्डरीकेण सदृशंस्यादधोमुखम् । जाग्रतस्ताद्विकसति स्वपतस्तुनिमीलति ॥ आशय स्तत्तुजीवस्य चेतनास्थानमुत्तमम् । अतस्तस्मिंस्तमोव्याप्ते प्राणिनःप्रस्वपन्तिहि॥ चेतनास्थान मुत्तममिति अयमभिप्रायः ॥ चेतनानामधिष्ठानं मनोदेहश्चसेन्द्रियः। केशलोमनखाग्रंच मलंद्रव्यगुणैर्विना ॥ इत्युक्तवता चरकेण सकलं शरीरं चेतनास्था नमुक्तं। तदपेक्षयाहृदयं विशेषतश्चेतना स्थानमिति ॥ कक्षयोर्वक्षसः सन्धी जत्रुणी समुदाहृते। कक्षेउभेसमाख्याते तयोस्यातांचवङ्क्षणौ ॥ उदरंपञ्चपञ्चांगं षष्ठंपार्श्वं द्वयंमतम् सपृष्ठवंशंपृष्ठंतु समस्तंसप्तमंस्मृतम् ॥ उपाङ्गानि च कथ्यन्ते तानि जानीहि यत्नतः। शोणिताज्जायतेप्लीहावामतोहृदयादधः ॥ रक्तवाहिशिराणांसमूलंख्यातोमह र्षिभिः। हृदयाद्वामतोऽधश्चफुप्फुसोरक्तफेनजः ॥ अधोदक्षिणतश्चापिहृदयात्यकृतः स्थितिः। तत्तुरञ्जकपित्तस्यस्थानंशोणितजंमतम् ॥ अधस्तुदक्षिणेभागेहृदयात्क्लोमतिष्ठ ति॥ जलवाहिशिरामूलंतृष्णाच्छादनकृन्मतम् ॥ क्लोमतिलकम्एतत्तुवातरक्तजम् ॥ ३७॥

उसके अङ्ग और उपाङ्गों को सुश्रुतजी के शास्त्रसे जानकर मस्तकसे लेकर सम्पूर्ण कहेजाते हैं हे शिष्य लोगो तुम यत्नपूर्वक सुनो पहलाअङ्ग शिरहै और उसके उपाङ्ग केश हैं और उसके भीतर भेजा ललाट दोनों भृकुटी दोनों नेत्र और उनदोनोंके बीचमें दो तारे दो दृष्टि दो काले गोलक और उनके श्रोत्रभाग पलकें और नेत्रोंके कोने माथेकी दोनों शङ्ख नाम हड्डियां कान कानों के छिद्र और नोंकें गाल नाक ऊपर नीचेके ओष्ठ ओष्ठोंके किनारे मुख तालु दोनों जाबड़े दांत मसूड़े जिह्वा ठोढ़ी गला दूसरा अङ्ग ग्रीवाहै जिससे कि शिर धारण किया जाताहै तीसरा अङ्ग दोनों भुजा और उनके उपाङ्गों को कहते हैं इसमें ऊपर दो कन्धे उसके नीचे दो भुजदण्ड उसके नीचे कुहनी से युक्त दो पहुंचे उसके नीचे मणिबन्ध उसके नीचे हस्ततल और हस्त और उनकी दशों उंगलियां दश नख रखनेके योग्य और उनके दश अंश काटने के योग्य कहेगये हैं चौथा अङ्ग छाती और उसके उपाङ्गों को कहते हैं स्तन स्त्री और पुरुषके स्तनों की विशेषता यहहै कि युवावस्थाके आनेपर स्त्रीके स्तन स्थूल होजाते हैं फिर गर्भवती स्त्रीके सन्तान उत्पन्न होनेपर वही स्तन दुग्धसे भरजाते हैं और पुरुष के वैसे नहीं होते हृदय कमलके समान अधोमुख होताहै वह जागतेहुए पुरुष का प्रफुल्लित होताहै और सोवतेहुए का बन्द होजाता है और यही हृदयजीव की चेतनाका उत्तम स्थानहै इसी कारण से उसके तमोगुण से व्याप्त होनेपर प्राणी सोते हैं हृदय चेतनाका उत्तम स्थानहै इसका यह अ-भिप्राय है कि मन इन्द्रियों समेत शरीर बाल रोम नखों के अग्रभाग और मल यह द्रव्य गुणों की सहायता के बिनाही चेतनाका स्थानहै इस प्रकार कहनेवाले चरकमुनिने सम्पूर्ण शरीरही को चेतनाका स्थान कहाहै और उन सबकी अपेक्षा हृदय अधिक चेतनाका स्थानहै कांख और छाती की सन्धिको जत्रु कहते हैं दो कांखें और वंक्षण (जंघाओंकी सन्धि) यह उपाङ्गहै पांचवां अङ्ग उदर है और छठा अङ्ग दोनों पसलियां हैं और पीठके बांस समेत सब पीठ सातवां अङ्ग कहावैहै अब उस के उपाङ्गों को कहते हैं बाईं ओर हृदयके नीचे रुधिरसे उत्पन्नहुई प्लीहाहै जिसको तिल्ली कहते हैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महर्षिलोग उसे रक्तवाहिनी नाडियोंका मूल कहते हैं हृदयके बाईं ओर और नीचे फुप्फुस है वह रुधिरके फेनोंसे उत्पन्न होताहै हृदयके दक्षिण ओर नीचेको यकृत् अर्थात् वह रुधिरसे उत्पन्न हुआ रञ्जक नाम पित्तका स्थानहै हृदयके दक्षिण भागसे नीचे क्लोम अर्थात् मांस पिण्ड विशेषहै वह जल वाहिनी नाडियों का मूल तृषा का रोकनेवाला वातरक्तसे उत्पन्न होताहै ॥ ३७॥

अथ वृद्धवाग्भटः॥

रक्तादनिलसंयुक्तात्कालीयकसमुद्भवइति । मेदःशोणितयोसाराद्वृष्कयोर्युगलंभवेत् ॥ तौतुपुष्टिकरौप्रोक्तौजठरस्थस्यमेदसः । उक्ताःसार्द्धास्त्रयोव्यामाःपुंसामन्त्राणिसूरिभिः॥ अर्द्धव्यासेनहीनानियोषितोऽन्त्राणिनिर्दिशेत् । उन्दुकश्चकटीचापित्रिकंवस्तिश्चवङ्क्षणौ॥ कण्डराणांप्ररोहःस्यात्स्थानंतद्वीर्य्यमूत्रयोः । सएवगर्भस्याधानंकुर्य्याद्गर्भाशयेस्त्रियाः ॥ शङ्खनाभ्याकृतिर्य्योनिस्त्र्यावर्त्तासाचकीर्त्तिता । तस्यास्तृतीयेत्वावर्त्तेगर्भशय्याप्रतिष्ठिता ॥ ३८॥

वृद्धवाग्भट्ट कहते हैं॥

वायु संयुक्त रुधिरसे कालीयक उत्पन्न होताहै मेद और रुधिरके सारांशसे दो वृष्क उत्पन्न होते हैं उन दोनोंसे उदरमें रहनेवाला मेद पुष्ट होताहै पण्डितोंने पुरुषोंकी आंतें साढ़े तीन व्याम (दोनों भुजाओं की लम्बाई) कही हैं और स्त्रियोंकी आंतें तीन व्यामकी होती हैं उन्दुक कटि त्रिक (पीठके बांसके नीचेकी तीन हड्डी वस्ति (मूत्राशय) वंक्षण कण्डरों का मूल यह वीर्य्य और मूत्रके स्थान हैं और वही स्त्रियोंके गर्भाशयमें गर्भ की स्थिति करताहै शङ्खकी नाभिके समान आकारवाली योनि कही गई है और उसमें तीनचक्र होते हैं उसके तीसरे चक्र में गर्भकी शय्याहै ॥ ३८॥

वृषणौभवतःसारात्कफासृग्भ्यांचमेदसाम् । वीर्य्यवाहिशिराधारौतौमतौपौरुषावहौ॥ गुदस्यमानंसर्वस्यसार्द्धस्याच्चतुरंगुलम् ॥ तत्रस्युर्व्वलयस्तिस्रःशङ्खावर्त्तनिभास्तुताः ॥ प्रवाहिनीभवेत्पूर्वासार्द्धांगुलमितामता । उत्सर्जनीतुतदधःसासार्द्धांगुलसम्मिता॥ तस्याधःसञ्चरणीस्यादेकांगुलसमामता । अर्द्धांगुलप्रमाणंतुबुधैर्गुदमुखंस्मृतम् ॥ मलोत्सर्गस्यमार्गोऽयंपायुर्देहेविनिर्मितः ॥ ३९॥

अण्डकोश-मेद कफ और रुधिरके सारांशसे उत्पन्न होते हैं और वह वीर्य्यवाहिनी नसोंके आधार और पुरुषार्थके धारण करनेवाले कहेगये हैं—सम्पूर्ण गुदाका प्रमाण साढ़े चार अंगुलहै और उसमें शङ्खके चक्रोंके समान तीन बलि अर्थात् चक्रहैं उनमें से डेढ़ अंगुल के प्रमाण वाली पहली बलिका नाम प्रवाहिनी है दूसरी बलिका प्रमाण डेढ़ अंगुल और नाम उत्सर्जनी है उसके नीचे संचारिणी नामवाली बलिका प्रमाण एक अंगुल है और पण्डितों ने गुदाके मुखका प्रमाण आधेअंगुल का कहाहै यह गुदा शरीरमें मलके निकलने का मार्ग बनायागयाहै ३९॥

पुंसःप्रोथौस्मृतौयौतुतौनितम्बौचयोषितः । तयोष्ककुन्दरेस्यातांसक्थिनीत्वङ्गमष्टमम्॥ तदुपाङ्गानिचन्द्रमोजानुनीपिण्डिकाद्वयम् । जङ्घेद्वेघुण्टिकेपार्ष्णीतलेचप्रपदेतथा॥ पादावंगुलयस्तत्रदशतासांनखादश ४०॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो पुरुषोंके प्रोथकहेगयेहैं वही स्त्रियोंकेनितम्बहैं उनके दो ककुन्दर (चूतड़ोंके ऊपर दो गढ़े)हैं जांघ आठवां अंगहै उनके उपांग कहते हैं घुटने-पिंडली-टकने गट्टे एड़ी-तलुए पैरोंके अग्रभाग पैर दशो उंगली और उनके दशोंनख ॥ ४० ॥

अथेदंशरीरमपरेणापियेनयेनसमवायिकारणेनोत्पद्यतेतानिसर्वाण्याह ॥

अथ दोषाःप्रवक्ष्यन्तेधातवस्तदनन्तरम्। आहारादेर्गतिस्तस्यपरिणामश्चवक्ष्यते॥ आर्त्तवंचाथधातूनांमलास्तदुपधातवः। आशयाश्चकलाश्चापिमर्माण्यथचसन्धयः॥ शिराश्चस्नायवश्चापिधमन्यःकण्डरास्तथा । रन्ध्राणिभूरिस्रोतांसिजालैःकूर्च्चाश्चरज्जवः ॥ सेवन्यश्चाथसंघाताःसीमन्ताश्चतथात्वचः । लोमानिलोमकूपाश्चदेहएतन्मयोमतः ॥ ४१ ॥

जिन २ सामवायि कारणों से यह शरीर उत्पन्न होताहै वह सब वर्णन किये जाते हैं दोष-धातु-आहारादिकों की गति और परिणाम-रजधातुओं के मल-उनके उपधातु-आशय कला मर्म्म सन्धि शिरा स्नायु धमनी कण्डराछिद्र बहुतसे सोते जालकूर्च रज्जु सेवनी संघात सीमन्त त्वचा रोम और रोमकूप इन सबले समवाय अर्थात् संयोग को शरीर कहतेहैं ॥ ४१ ॥

तत्र दोषस्वरूपमाहवाग्भटः ॥

वायुःपित्तंकफश्चेति त्रयोदोषाःसमासतः। विकृताऽविकृतादेहं घ्नन्तितेवर्द्धयन्तिच ॥ तेव्यापिनोऽपिहृन्नाभ्योरधोमध्योर्ध्वसंश्रयाः । वयोऽहोरात्रिभुक्तानामन्तमध्यादिगाःक्रमात् ॥ ४२ ॥

इनमेंसे दोषोंके स्वरूप को वाग्भट जी कहतेहैं ॥

वायु-पित्त और कफ यह संक्षेपसे तीनदोष कहेगये हैं यह विकारको प्राप्तहोकर शरीरको नष्टकरते हैं और विकाररहित होकर शरीर को पुष्ट करते हैं यह व्यापक होनेपर भी क्रमसे हृदय और नाभि के नीचे बीच में और ऊपर स्थितहैं और अवस्था दिन रात्रि-भोजन इनके अन्त मध्य और आदि में क्रम से स्थित रहते हैं ॥ ४२ ॥

दोषशब्दस्यनिरुक्तिमाह ॥

धातवश्चमलाश्चापिदुष्यन्त्येभिर्यतस्ततः । वातपित्तकफाएतेत्रयोदोषाइतिस्मृताः॥ दोषाइत्यत्रदुषवैकृत्यइतिदुषधातोः । दुष्यन्त्येभिरितिवाक्ये ॥ अकर्त्तरिचकारकेसंज्ञायामित्यनेनसूत्रेणकरणेऽर्थेघञ्प्रत्ययःतेधातवोऽपिविद्धद्भिर्गदितादेहधारणात्॥ (यतआहसुश्रुतः) विसर्गादानविक्षेपैःसोमसूर्यानिलायथा । धारयन्तिजगद्देहंकफपित्तानिलास्तथेति ॥ अत्रयथासंख्येनान्वयोबोद्धव्यः । विसर्गादानंवातस्यैव ॥ विक्षेपः शीतोष्णादीनांविविधप्रकारेणप्रेरणम्। मलाश्चरेतसादीनांमलिनीकरणान्मताः॥४३॥

दोषशब्दकी निरुक्तिकहते हैं ॥

जोकि धातु और मल इनसे दोषको प्राप्त होते हैं इस कारण से यह वात पित्त कफ तीनों दोष कहेजाते हैं दोष इस शब्द में (दुष वैकृत्ये) इस धातुसे (अकर्त्तरि च कारके संज्ञायाम्) इससूत्रकेद्वारा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करण अर्थ में घञ् प्रत्यय होताहै-विद्वानों ने देहके धारण करने से इन वातादिकों को धातु भी कहा है जैसा कि सुश्रुत जी कहते हैं कि जैसे चन्द्रमा सूर्य्य और वायु देने से ग्रहण करने से और विक्षेप अर्थात् शीत उष्णादिकों के अनेक प्रकार धारण करने से जगत्को धारण करते हैं उसी प्रकार कफ पित्त और वायु शरीर को धारण करते हैं और यह रेतसादिकों के मलिन करनेसे मलभी कहलाते हैं॥४३॥

तत्रवायोःस्वरूपमाह ॥

दोषधातुमलादीनांनेताशीघ्रःसमीरणः । रजोगुणमयःसूक्ष्मोरूक्षःशीतोलघुश्चलः॥ नेतास्थानान्तरंप्रापयिता । शीघ्रःआशुकारी ॥ ४४ ॥

वायुका स्वरूप कहते हैं ॥

दोष धातु और मलादिकों का स्थानान्तरमें लेजानेवाला,शीघ्रताकरनेवाला, रजोगुणमय, सूक्ष्म, रूखा, शीतल, हलका और चलनेवाला वायुहोताहै ॥ ४४ ॥

अन्यच्च, उत्साहोच्छ्वासनिःश्वासचेष्टावेगप्रवर्त्तनैः । सम्यग्गत्याचधातूनामिन्द्रियाणाञ्चपाटवैः॥ अनुगृह्णात्यविकृतोहृदयेन्द्रियचित्तधृक् । रजोगुणमयःसूक्ष्मःशीतोरूक्षोलघुश्चलः॥ खरोमृदुर्योगवाहीसंयोगादुभयार्थकृत् । दाहकृत्तेजसायुक्तःशीतकृत्सोमसंश्रयात् ॥ विभागकरणाद्वायुः प्रधानंदोषसंग्रहे । पक्वाशयकटीसक्थिस्त्रोतोस्थिस्पर्शनेन्द्रियम् ॥ स्थानंवातस्यतत्रापिपक्वाधानंविशेषतः । एकोवायुःपित्तवन्नामस्थानकर्म्मभेदैःपञ्चविधः ॥ ४५ ॥

अन्यग्रन्थों में कहेहुये वायुके लक्षण ॥

विकाररहित वायु हृदय इन्द्रिय और चित्तको धारण करताहुआ उत्साह श्वासलेना श्वासका छोड़ना चेष्टा मूत्रादि वेगों की प्रवृत्ति-रुधिर आदि धातुओं की अच्छे प्रकार गति और इन्द्रियों की समर्थतासे शरीरको धारण करताहै यह वायु रजोगुणमय, सूक्ष्म, शीतल-रूखी-हलकी-चलनेवाली, तीक्ष्ण-कोमल-योगवाही अर्थात् जिसके साथ मिले उसके गुणों की बढ़ानेवाली संयोग से दोनों प्रयोजनोंकी करनेवाली जैसे तेजसे मिली हुई दाहकी करनेवाली और चन्द्रमासे मिलीहुई शीतलताकी करनेवाली है और विभागकरने से वायु सम्पूर्ण दोषों में प्रधानहै पक्वाशय-कटि-जंघा-सोते हड्डी-त्वचा यह सम्पूर्ण वायुके स्थानहैं इनमें से पक्वाशय प्रधानस्थानहै एक वायु पित्त के समान नाम स्थान और कर्म्म के भेदों से पांच प्रकार की है ॥ ४५ ॥

तेषां वायूनां नामान्याह ॥

उदानस्तदनुप्राणःसमानोऽपानएवच।व्यानश्चैतानिनामानिवायोःस्थानप्रभेदतः॥४६॥

अब वायुके नाम कहते हैं ॥

उदान-प्राण-समान-अपान-और व्यान यह वायु के नाम स्थानभेद से होते हैं ॥ ४६ ॥

अथोदानादीनां स्थानान्याह ॥

कण्ठेहृदितथाधस्तात्कोष्ठवह्नेर्मलाशये। सकलेऽपिशरीरेऽसौक्रमेणपवनोवसेत् ॥ ४७॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अब उदानादिकके स्थान कहते हैं ॥

कंठमें उदान हृदयमें प्राण जठराग्निके नीचे समान मलाशय में अपान सम्पूर्ण शरीरमें व्यान इस क्रमसे यह वायु रहती है ॥ ४७ ॥

अथ तेषां कर्म्माण्याह ॥

उदानोनामयस्तूर्ध्वमुपैतिपवनोत्तमः । तेनभाषितगीतादिप्रवृत्तिःकुपितस्तुसः ॥ ऊर्ध्वजत्रुगतानूरोगान्विदधातिविशेषतः । योवायुःप्राणनामासौमुखंगच्छतिदेहधृक् ॥ सोऽन्नंप्रवेशयत्यन्तः प्राणांश्चाप्यवलम्बते । प्रायशःकुरुतेदुष्टोहिक्काश्वासादिकानूगदान् ॥ ४८ ॥

अब उनके कार्य्य लिखते हैं ॥

पवनोंमें उत्तम उदान नाम वायु जो ऊपरको जाताहै उस्से भाषण और गीतादिकों में प्रवृत्ति होती है और वह कुपित होकर छाती और बगलकी सन्धियोंके ऊपरके रोगोंको अधिकतासे करती है शरीरका धारण करनेवाली मुख में जानेवाली प्राणनाम वायु अन्नको भीतर लेजाती है और प्राणों को भी रखती है और कुपित हुई वह वायु हिचकी और खांसी आदि रोगोंको करती है ॥ ४८ ॥

आमपक्वाशयचरःसमानोवह्निसंगतः ॥ सोऽन्नंपचतितज्जांश्चविशेषान्विविनक्ति हि ॥ तज्जानीत्यादि। अन्नगतानूरसमलमूत्रादीनूपृथक्करोतीत्यर्थः ॥ सदुष्टोवह्निमान्द्यातिसारगुल्मानूकरोतिहि । पक्वाशयालयोऽपानःकालेकर्षतिचाप्ययम् ॥ समीरणःशकृन्मूत्रशुक्रगर्भार्तवान्यधः । क्रुद्धस्तुकुरुतेरोगानूघोरानूवस्तिगुदाश्रयान् ॥ शुक्रदोषप्रमेहांश्चव्यानापानप्रकोपजान् ॥ ४९ ॥ कृत्स्नदेहचरोव्यानोरससंवाहनोद्यतः । स्वेदाऽसृक्स्रावणश्चापिपञ्चधाचेष्टयत्यपि ॥ गत्यपक्षेपणोत्क्षेपनिमेषोन्मेषणादिकाः । प्रायःसर्व्वाःक्रियास्तस्मिनूप्रतिबद्धाःशरीरिणाम् ॥ प्रस्यन्दनश्चोद्वहनंपूरणञ्चविरेचनम् । धारणश्चेतिपञ्चैताश्चेष्टाःप्रोक्तानभस्वतः ॥ क्रुद्धःसन्कुरुतेरोगानूप्रायशःसर्वदेहगान् । युगपतूकुपिताएतेदेहंभिन्द्युरसंशयम् ॥ देहंभिन्नंकुर्य्युर्म्मारयेयुरित्यर्थः ॥ ५० ॥

आमाशय और पक्वाशयमें विचरनेवाली समान नाम वायु अग्निसे मिलकर अन्नको पकाती है और अन्नसे उत्पन्न हुए मल मूत्रादिकों को अलग २ करती है और कुपित होकर यह वायु मन्दाग्नि अतीसार और गुल्म आदि रोगोंको करती है गुल्म (वायु गोला) पक्वाशयमें रहनेवाली अपान नाम वायु उचित समयमें मल मूत्र वीर्य्य गर्भ और रज इनको नीचेकी ओर खैंचतीहै और कुपित होकर वह वायु मूत्राशय और गुदाके रोग वीर्यके दोष प्रमेह व्यान तथा अपान वायुके कोपसे उत्पन्न होने वाले बड़ेभारी रोगोंको उत्पन्न करतीहै ४९ सम्पूर्ण देह में रहनेवाली व्यान नाम वायु रसोंको ले जानेवाला स्वेद और रुधिर की बहानेवाली चलना ऊपर होना नीचे होना नेत्रों का बन्द करना और खोलना इन पांच चेष्टाओंकी करनेवाली है मनुष्योंकी प्रायः सम्पूर्ण क्रिया उसी के आधीनहैं चलना ऊपर लेजाना पूर्ण करना निकालना और धारण करना यह वायुकी पांच चेष्टा कही गई हैं और कुपित होकर व्यान वायु प्रायः सम्पूर्ण शरीरके रोगोंको उत्पन्न करती है और जो पहले कही हुई पांचों वायु एक संगही कोपको प्राप्त होयँ तो निस्सन्देह शरीरको नष्ट करती हैं ॥ ५० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ पित्तस्य स्वरूपमाह ॥

पित्तमुष्णंद्रवंपीतंनीलंसत्त्वगुणोत्तरम् । सरंकटुलघुस्निग्धंतीक्ष्णमम्लन्तुपाकतः ॥ पीतन्निरामम् । नीलंसामम् ॥ एकंपित्तंवातवन्नामस्थानकर्म्मभेदैःपञ्चविधम् ॥ ५१ ॥

अब पित्तके स्वरूपको कहते हैं ॥

पित्त उष्ण पिघलनेवाला पीत (आमसे रहित पित्त पीला होताहै) नील (आमसे मिलाहुआ नीला होताहै) अधिक सतोगुणवाला दस्तावर कडुवा हलका चिकना तीक्ष्ण और पाकमें खट्टा होताहै एक भी पित्त वायुके समान नाम स्थान और क्रियाओंके भेदसे पांच प्रकारकाहै ॥ ५१ ॥

तेषां पित्तानां नामान्याह ॥

पाचकंरञ्जकञ्चापिसाधकालोचकेतथा।भ्राजकश्चेतिपित्तस्यनामानिस्थानभेदतः ॥ ५२ ॥

अब पित्तोंके नाम कहते हैं ॥

पाचक रञ्जक साधक आलोचक और भ्राजक यह स्थानभेद से पित्तके पांच नामहैं ॥ ५२ ॥

अथ पाचकादीनां स्थानान्याह ॥

अग्न्याशयेयकृत्प्लीहोहृदयेलोचनद्वये।त्वचिसर्व्वशरीरेषुपित्तंनिवसतिक्रमात् ॥ ५३ ॥

अब इनके स्थान कहते हैं ॥

अग्न्याशयमें पाचक यकृत् और पिलहीमें रञ्जक हृदयमें साधक दोनों नेत्रों में आलोचक त्वचा में भ्राजक इस क्रमसे पित्त सम्पूर्ण शरीरमें रहताहै ॥ ५३ ॥

अथ तेषां कर्म्माण्याह ॥

पाचकंपचतेभुक्तंशेषाग्निबलवर्द्धनम् । रसमूत्रपुरीषाणि विवेचयतिनित्यशः ॥ पाचकंपित्तमामपक्वाशयमध्यस्थं षड्विधमाहारंभोज्यंभक्ष्यंचर्व्यंलेह्यंचूष्यंपेयंपचतिदोषरसमूत्रपुरीषाणि पृथक्करोतिच ॥ तदग्न्याशयस्थमेवस्वशक्त्यारसरञ्जनहृदयस्थकफतमोपनोदनरूपग्रहणप्रभाप्रकाशनाभ्यंगलेपादिपाचनाद्यग्निकर्म्मणां विशेषाणांपित्तस्थानानामनुग्रहंकरोति ॥ शेषाण्यपिपित्तस्थानानियकृत्प्लीहादीनि भागेनगत्वातत्रतत्ररसरञ्जनादिकर्म्मभिरुपकरोतीत्यर्थः ॥ कथम्भूतंपाचकंपित्तशेषाग्निबलवर्द्धनम् ॥ शेषा अग्नयःपृथिव्यादिमहाभूतगणाः (यतउक्तंचरकेण ।) भौमाप्याग्नेयवायव्याः पञ्चोष्माणःसनाभसा इति ॥ ऊष्माणःअग्नयः । (यतउक्तंवाग्भटे ।) दोषधातुमलादीनामूष्मेत्यात्रेयशासनमिति ॥ दोषधातुमलादीनामूष्मैवाग्निरित्यर्थः । रसादिधातुगताःसप्तैतेपांबलवर्द्धनम् ॥ यथागृहेस्थापितानि रत्नानिखद्योतवद्दूरभास्वराणि तान्यपिदीपज्योतिषादूरप्रकाशकानि भवन्ति । तथाअग्न्याशयस्थपाचकाग्नितेजसा सर्वे अग्नयोबलवन्तोभवन्ति ॥ (तथा च वाग्भटः ।) अन्नस्यपक्तासर्वेषांपक्तॄणामधिकोमतः ॥ तन्मूलास्तेहितद्वृद्धिक्षयवृद्धिक्षयात्मिकाइति । ननुपित्तादन्योऽग्निराहोस्वित्पित्तमेवाग्निरितिसन्देहः॥उच्यते॥पित्तस्योष्णादिगुणद्वाराहारपाचनरञ्जनदर्शनादिकर्म्मणश्च

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नखलु पित्तव्यतिरेकेणान्योऽग्निः । तस्मादग्निरूपस्यैव पित्तस्य स्थानभेदात्पाचक रञ्जकसाधकालोचकभ्राजकसंज्ञाः ॥ (तथा च वाग्भटः) पाचकंतिलमानंस्यात् काठिन्यान्नास्यदोषता । अनुगृह्णात्यविकृतं पित्तंपाकोष्मदर्शनैः ॥ क्षुत्तृड्रुचिप्रभा मेधा धीशौर्य्यतनुमार्दवैः । पित्तंपञ्चात्मकंतच्च पक्कामाशयमध्यगम् ॥ पञ्चभूतात्मकत्वेऽपि यत्तैजसगुणोदयम् । त्यक्तद्रवत्वंपाकादि कर्म्मणानलशब्दितम् ॥ पचत्यन्नंविभजते सारकिट्टौपृथक्तथा । तत्रस्थमेवपित्तानां शेषाणामप्यनुग्रहम् ॥ करोतिबलदानेन पाचकंनामतत्स्मृतम् । ननुयदि पित्ताग्न्योरभेदस्तदा कथं घृतं पित्तस्य शमकमग्नेर्दीपकमिति । तथामत्स्याः पित्तंकुर्वन्ति न च तेऽग्निदीप्तिकरा इति । तथा पित्ताधिक्यात्तीक्ष्णोऽग्निरित्यपि । कथंस्यात् । तथा समदोषः समाग्निश्चेत्यपि वक्तुं न युज्यते । तथा द्रवं स्निग्धमधोगञ्च पित्तं वह्निरतोऽन्यथेति ॥ अत्रोच्यते । पित्तमग्नेः संततधिष्ठानम् ॥ (तथाचोक्तं तन्त्रान्तरे) अग्निर्भिन्नगुणैर्युक्तः पित्तंभिन्नगुणैस्तथा । द्रवं स्निग्धमधोगंच पित्तंवह्निरतोऽन्यथा ॥ तस्मात्तेजोमयंपित्तंपित्तोष्मायः सशक्तिमान् । ससञ्चरतिकुक्षिस्थः सर्वतोधमनीमुखैः ॥ सकायाग्निःसकायोष्मा सपक्तासचजीवनम् । अनन्यगतिरित्येवं देहेकायाग्निरुच्यते ॥ (अन्यच्च) वामपार्श्वाश्रितंनाभेः किञ्चित्सोमस्यमण्डलम् । तन्मध्येमण्डलंसौर्य्यं तन्मध्येऽग्निर्व्यवस्थितः ॥ जरायुमात्रप्रच्छन्नःकाचकोशस्थदीपवत् ॥ (तथाच मधुकोषे) द्रवतेजःसमुदायात्मकस्यापि पित्तस्यतेजोभागोऽग्निरिति । तेनपित्तमप्यग्निवन्मन्यते । अतितापितायोगोलकवत् । परमार्थतस्तु अग्निःपित्ताद्भिन्न एवेति सिद्धान्तः ॥ (अतएवाह रसप्रदीपे) जाठरोभगवानग्निरीश्वरोऽन्नस्यपाचकः । सौक्ष्माद्रसानाऽऽददानो विवक्तुंनैवशक्यते॥ नाभिमध्येशरीरस्य विशेषात्सोममण्डलम् । सोममण्डलमध्यस्थं विद्यात्सूर्य्यस्यमण्डलम् ॥ प्रदीपवत्तत्रनृणां स्थितोमध्येहुताशनः । सूर्य्योदिवियथातिष्ठंस्तेजोयुक्तैर्गभस्तिभिः ॥ विशोषयतिसर्वाणि पल्वलानिसरांसिच । तद्वच्छरीरिणांभुक्तं ज्वलनोनाभिमाश्रितः ॥ मयूखैःपचतेक्षिप्रन्नानाव्यञ्जनसंस्कृतम् । स्थूलकायेषुसत्त्वेषुयवमात्रःप्रमाणतः । ह्रस्वकायेषुसत्त्वेषुतिलमात्रःप्रमाणतः । कृमिकीटपतङ्गेषुवालमात्रोऽवतिष्ठतइति॥ ५४॥

अब उनके कार्य्य कहते हैं ॥

पाचक पित्त खायेहुये पदार्थको परिपाक करता है शेष अग्नि (महाभूताग्नि और धात्वग्नि) के बलको बढ़ाता है और रस मूत्र तथा मलको अलग२ करता है यह पाचक नाम पित्त आमाशय और पक्वाशयमें स्थित भोज्य भक्ष्य चर्व्य लेह्य चूष्य और पेय इन छःप्रकारोंके भोजनोंको पकाता है और रस मलमूत्र तथा दोषोंको अलग २ करता है अग्न्याशयमें रहनेवाला वह पित्त अपनी शक्तिसे रसका रंगना-हृदयमें स्थित कफ और तमोगुणको हटाना-रूपको ग्रहण करना प्रभाका प्रकाश करना शरीरके चन्दनादि लेपोंका परिपाक करना आदिक अग्निके कर्मोंके द्वारा विशेष२पित्तके स्थानों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की सहायता करता है अर्थात् शेष यकृत् पिलही आदि पित्तके स्थानोंको प्राप्तहोकर उन २ स्थानोंमें रसका रंगना आदिककर्मोंसे उपकार करता है और शेष अर्थात् महाभूताग्नि और धात्वग्निके बल को बढ़ाता है क्योंकि चरकमुनिने कहा है कि पृथ्वीसंबन्धी-जलसंबन्धी अग्निसंबन्धी वायुसंबन्धी और आकाशसंबन्धी यह पांच ऊष्मा अर्थात् अग्नि हैं-जिस कारणसे वाग्भटमें कहागया है कि दोष धातु और मलादिकों की ऊष्माही अग्निहै यह आत्रेयमुनिका मतहै और पाचक पित्त रसादि सप्त धातुओं में प्राप्त अग्नियोंके बलका बढ़ाने वाला है-जैसे घरमें रक्खे हुए रत्न जुगनूके समान दूरसे चमकते हैं और वहभी दीपककी ज्योतिसे दूरतक प्रकाश करने वाले होते हैं उसी प्रकार अग्न्याशय में स्थित पाचक नाम अग्निके तेजसे संपूर्ण अग्नि बलवान् होते हैं-अन्नका परिपाक करने वाला पाचक नाम अग्नि संपूर्ण अग्नियोंमें अधिक समझा गयाहै क्योंकि उन सबका वही आधारहै और उसीकी वृद्धि और क्षयसे संपूर्ण अग्नि वृद्धि और क्षयवाले होते हैं अब यह सन्देह उत्पन्न होता है कि पित्तसे अलग अग्नि कोई दूसरा पदार्थ है अथवा पित्तही अग्नि है पित्तके उष्णादि गुणोंसे आहारका परिपाक-रसका रंगना और दर्शन आदि कर्मोंके द्वारा निश्चय होताहै कि पित्तके सिवाय दूसरा अग्नि नहींहै इस कारणसे अग्निरूप पित्तकेही स्थानभेदसे पाचक–रञ्जक–साधक–आलोचक और भ्राजकनाम हैं और ऐसाही वाग्भट ने कहाहै कि पाचक पित्त तिलके प्रमाणहै और कठिनताके कारणसे इसको दोषपना नहींहै-विकारसे रहित पाचक पित्तपरिपाक ऊष्मा और दर्शन इनके द्वारा उपकार करता है क्षुधा,तृषा, रुचि, प्रभा, मेधा, बुद्धि, शूरता और शरीर की कोमलता इनसे उपकारकरनेवाला पक्काशय और आमाशय में रहनेवाला वही पित्त पांच प्रकारका है पंचमहाभूतात्मक होने परभी जो अधिक तैजसगुणवाला है पिघलने से रहित परिपाक आदिकर्म्मोंसे अग्नि कहलानेवाला अन्नका परिपाक करनेवाला मल और सारांशका अलग २ करनेवाला जो पित्त आमाशय और पक्काशय में स्थित भी शेष पित्तों को बलके देने से उपकार करता है वह पाचक नाम पित्त है अब यह संदेह उत्पन्न होता है कि जो पित्त और अग्निमें भेद नहीं है तो घी पित्तका शान्त करनेवाला और अग्नि का प्रज्वलित करनेवाला कैसेहोसक्ताहै और मछली पित्तको उत्पन्न करती हैं परन्तु अग्निको नहीं उत्पन्न करतीं यह भी कैसे होसक्ता है?और पित्त की अधिकतासे अग्नि तीक्ष्ण होतीहै यह कैसे?और कफ वात और पित्तकी समता होने से समाग्नि होती है यहभी नहीं कह-सकेहैं और पित्त पिघलनेवाला–चिकना और नीचे जानेवाला होता है परन्तु अग्नि इसके विपरीतहै- इसके उत्तरमें यह कहा जाताहै कि पित्त अग्निके निरन्तर रहनेका स्थानहै और ऐसाही ग्रन्थान्तर में कहाभी है कि अग्निके और गुण हैं और पित्तके और गुण हैं पिघलनेवाला-चिकना और नीचे जानेवाला पित्तहै परन्तु अग्नि इस्से विपरीतहै इस कारणसे पित्ततेजसरूपहै और पित्तकी जो ऊष्मा है–वह शक्तिवाली है और वह कोषमें स्थित होकर नाडियोंके मुखोंसे सम्पूर्ण शरीरमें फैलती है और वह शरीरकी अग्नि है शरीरकी ऊष्मा है परिपाक करनेवाली औरजीवनरूपहै एक गतिवाली है इसप्रकार शरीरमें शरीरकी अग्नि कहीगई है और भी कहागयाहै कि नाभिके वामकुक्षिमें रहने वाला छोटासा चन्द्रमाका मण्डल है उसके बीचमें सूर्य्यका मण्डल है उसमें काचके पात्रमें स्थितदी-पकके समान केवल जरायुसे ढकीहुई अग्निवर्त्तमान है और ऐसाही मधुकोषमें भी कहा है कि द्रव और तेजके समुदायरूपवाले पित्तका तेजोभाग अग्नि है इस कारणसे अत्यन्त तपाये हुए लोहेके गोलेके समान पित्तभी अग्निके तुल्य मानाजाता है परन्तु ठीक २ तो पित्तसे अग्निभिन्न है यही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिद्धान्त है इसीसे रसप्रदीपमेंभी कहा है कि उदरमें रहनेवाला अन्नका परिपाक करनेवाला भगवान् ईश्वर अग्नि सूक्ष्मतासे रसोंकोलेताहुआ विभाग नहीं किया जासक्ताहै शरीरकी नाभिमें चन्द्र-मण्डल उसके बीचमें सूर्य्यका मण्डलहै और उसमें दीपकके समान मनुष्योंकी जठराग्नि स्थित है जिस प्रकार आकाशमें रहनेवाले सूर्य्य अपनी तेजयुक्त किरणोंसे सम्पूर्ण तड़ागादिकोंको सुखाते हैं उसीप्रकार नाभिमें रहनेवाला अग्नि अपनी किरणोंसे मनुष्यों के अनेक प्रकारके व्यञ्जनयुक्त भोजनको शीघ्र पचाताहै वह अग्नि स्थूल शरीरवाले जीवों में यव बराबर छोटेशरीरवाले जीवों में तिल बराबर और कीड़े पतंगे आदिकों में बाल बराबर रहता है ॥ ५४ ॥

पुनः प्रकृतमनुसरति ।

रञ्जकंनामयत्पित्तं तद्रसंशोणितंनयेत् । यत्तुसाधककसंज्ञं तत्कुर्य्याद् बुद्धिंधृतिंस्मृतिम् ॥ धृतिंमेधाम् । यदालोचकसंज्ञंतद्रूपग्रहणकारकम् । भ्राजकंकान्तिकारिस्याल्लेपाभ्यङ्गादिपाचकम् ॥ ५५ ॥

अब फिर प्रकृतविषय (असली विषय) कहाजाताहै ॥

रञ्जक नाम पित्त रसको रुधिर बनाताहै साधक नाम पित्त बुद्धि मेधा और स्मृतिको उत्पन्नकरताहै जिस पित्त के द्वारा रूपका ग्रहण कियाजाताहै उसका नाम आलोचकहै और भ्राजकनाम पित्त शरीरकी शोभाकाकरनेवाला तथा लेप और शरीरमें लगायेहुए तैलादिकोंका परिपाक करनेवालाहै ॥ ५५ ॥

अथ श्लेष्मस्वरूपमाह ।

श्लेष्माश्वेतोगुरुःस्निग्धः पिच्छिलःशीतलस्तथा । तमोगुणाऽधिकःस्वादुर्विदग्धोलवणोभवेत् ५६ एकःश्लेष्मा वातपित्ताविव नामस्थानकर्म्मभेदैःपञ्चविधः ॥ ५७ ॥

अब श्लेष्माका स्वरूप कहते हैं ॥

श्वेत भारी चिकना फिसलनेवाला शीतल अधिक तमोगुणवाला मधुर और विकारयुक्तहोकर लवणरसवाला श्लेष्मा होताहै ५६ एक भी श्लेष्मा वायु और पित्तके समान नाम, स्थान और कार्य्यके भेदों से पांच प्रकारका है ॥५७॥

अथ श्लेष्मणांनामान्याह ।

कफस्यैतानिनामानि क्लेदनश्चावलम्बनः । रसनःस्नेहनश्चापि श्लेष्मणःस्थानभेदतः ॥ ५८ ॥

अब श्लेष्मा के नाम कहते हैं ॥

क्लेदन-अवलम्बन-रसन-स्नेहन औरश्लेष्मण यहपांच नाम श्लेष्माके स्थानभेदसे होतेहैं ॥ ५८ ॥

अथ क्लेदनादीनां स्थानान्याह ।

आमाशयेऽथहृदये कण्ठेशिरसिसन्धिषु । स्थानेष्वेषुमनुष्याणां श्लेष्मातिष्ठत्यनुक्रमात् ॥ ५९ ॥ दोषाणां सकलशरीरव्यापिनामपि पञ्च पञ्च स्थानानीति बाहुल्याभिप्रायेणो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्तानि ॥ (तथाच वाग्भटः) इति प्रायेण दोषाणां स्थानान्यैकीकृतात्मनाम् । व्यापि नामपिजानीयात् कर्माणि च पृथक्पृथक् (इति) चरकश्च । तेऽव्यापिनोऽपि हृन्नाभ्योर धैमध्योर्ध्वसंश्रया इति ॥ ६० ॥

अब उनके स्थान कहते हैं ॥

आमाशय में क्लेदन हृदयमें अवलम्बन कण्ठमें रसन शिरमें स्नेहन और सन्धियोंमें श्लेष्मण नाम श्लेष्मा रहता है ५६ सम्पूर्ण शरीरमें व्याप्त होनेवाले भी वात पित्त और कफोंके पांच २ स्थान अधिकताके अभिप्रायसे कहेगये हैं और यही वाग्भटने भी कहा है कि इस प्रकार सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त होनेवाले भी विकाररहित वायु पित्त और कफोंके विशेषस्थान और अलग २ कार्य्य जानने चाहिये चरकने भी कहाहै कि सम्पूर्ण शरीरमें व्याप्त होनेवाले भी यह वातादिक हृदय और नाभिके अधोभाग मध्य और ऊर्ध्वभागमें रहते हैं ॥ ६० ॥

अथ तत्तत्स्थानगतस्यश्लेष्मणःकर्म्माण्याह ॥

क्लेदनःक्लेदयत्यन्नमात्मशक्त्याऽपराण्यपि । अनुगृह्णातिचश्लेष्मस्थानान्युदक कर्म्मणा ॥ अयमर्थः क्लेदनोऽन्नं क्लेदयति तेनसंहतमन्नं भेदं प्राप्नोति । अपराण्यपि श्लेष्मस्थानानि हृदयादीनि ॥ मार्गेण गत्वा तत्र तत्र हृदयावलम्बनसंधारणरसग्रह णसमस्तेन्द्रियतर्पणसन्धिसंश्लेषणाद्युदककर्मभिरनुगृह्णाति उपकरोति ॥ ६१ ॥

अब उन २ स्थानोंमें रहनेवाले श्लेष्माके कार्य्य कहते हैं ॥

क्लेदन नाम श्लेष्मा अन्नको गीला करता है और अपनी शक्तिसे श्लेष्माकेदूसरेस्थानोंको भी जलकेकर्मके द्वारा सहायता करता है इसका यहतात्पर्य्य है कि क्लेदननाम श्लेष्मा अन्नको गीलाकरता है इससे इकट्ठा हुआ अन्न भिन्न २ होजाता है श्लेष्माके हृदयादि दूसरे स्थानोंमें भी जाकर उन २ स्थानोंमें हृदयका अवलम्बन करना शिर और भुजाओंकी सन्धिको धारणकरना रसका ग्रहणकरना सम्पूर्ण इन्द्रियोंको तृप्त करना सन्धियोंको जोड़ना इत्यादि जलकर्मोंसे उपकार करताहै ॥ ६१ ॥

तथाच रसयुक्तात्मवीर्येणहृदयस्यावलम्बनम् । त्रिकसंधारणंचापि विदधात्यवल म्बनः ॥ (त्रिकंशिरोबाहुद्वयसन्धिः) ॥ ६२ ॥

हृदयमें रहनेवाला अवलम्बन नाम श्लेष्मा हृदय का अवलम्बन और शिर तथा दोनों भुजाओं की सन्धिको धारण करताहै ॥ ६२ ॥

उभावपिततःसौम्यौ तिष्ठतश्चान्तिकेयतः । रसान्वितौहिजानीतो रसनारसनौस मौ ॥ (रसनारसनेन्द्रियं रसनःकण्ठस्थकफः) ॥ ६३ ॥

रसयुक्त जिह्वा और कण्ठमें स्थित रसन नाम श्लेष्मा यह दोनोंही चन्द्रगुणयुक्त निकटरहनेवाले समान जानने चाहिये ॥ ६३ ॥

स्नेहनःस्नेहदानेन समस्तेन्द्रियतर्पणः । श्लेष्मणःसर्वसन्धीनां संश्लेषंविदधा त्यसौ ॥ ६४ ॥

स्नेहन नाम श्लेष्मा स्नेहके देनेसे सम्पूर्ण इन्द्रियोंको तृप्त करता है और श्लेष्मानाम श्लेष्मा सम्पूर्ण सन्धियोंको जोड़ताहै ॥ ६४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ धातुशब्दस्य निरुक्तिमाह ॥

एतेसप्तस्वयंस्थित्वा देहन्दधतियन्नृणाम् । रसासृङ्मांसमेदोस्थिमज्जाशुक्राणिधातवः ॥ धातवइतिधाधातोस्तुप्रत्ययः ॥ ६५ ॥

अब धातुशब्द की निरुक्ति कहते हैं ॥

रस रुधिर मांस मेद हड्डी मज्जा वीर्य्य यह सातों आपस्थित होकर मनुष्योंके शरीरको धारण करतेहैं इसी से धातु कहलातेहैं धातुशब्दमें धा धातुसे तु प्रत्ययहै ॥६५॥

अथ धातूनां कर्म्माण्याह ॥

प्रीणनंजीवनंलेपःस्नेहोधारणपूरणे । गर्भोत्पादश्चकर्माणिधातूनांकथितानिहि॥६६॥

अब धातुओं के कार्य्य कहतेहैं ॥

प्रीति उत्पन्न करना-जीवका धारण करना-लेपकरना- चिकनाकरना-धारण करना- पूर्ण करना-गर्भ उत्पन्न करना-यह धातुओं के कार्य्य हैं॥ ६६ ॥

तत्ररसशब्दस्यनिरुक्तिमाह ॥

गत्यर्थोरसधातुर्यस्ततोऽभवदयंरसः । सदैवसकलंदेहंरसतीतिरसःस्मृतः ॥ ६७ ॥

अब रसशब्दकी निरुक्ति कहते हैं ॥

गत्यर्थक रसधातुसे रस शब्द बना है इस कारण से सदैव संपूर्ण शरीरमें फैलनेवाला यह रस कहलाताहै और यह जलसे उत्पन्न हुआ है ॥ ६७॥

अथ रसस्यस्वरूपमाह ॥

सम्यक्पक्वस्यभुक्तस्यसारोनिगदितोरसः । सतुद्रवःसितःशीतःस्वादुःस्निग्धश्चलोभवेत् ॥ सारोयथागुडमधूकपुष्पबब्बूलत्वग्बदरीमूलादिभवःसारोमदिरा ॥ ६८ ॥

अब रसका स्वरूप कहतेहैं ॥

अच्छे प्रकारसे परिपाक हुए भोजन का सारांश रस कहलाताहै और वह बहनेवाला,श्वेत,शीतल,मधुर,चिकना और चञ्चल होता है-सार शब्दका यह आशयहै कि जैसे गुड-महुएके फूल-बबूलकी छाल- बेरकी जड आदिकों से उत्पन्न हुआ सारांश मदिरा कहलाता है उसी प्रकार अच्छी रीतिसे परिपक्व अन्नका सारांश रस कहाता है॥६८॥

अथ रसस्य स्थानमाह ॥

सर्व्वदेहचरस्यापिरसस्यहृदयंस्थलम् । समानमरुतापूर्व्वंयदयंहृदयेधृतः ॥ ६९ ॥

अब रसका स्थान कहते हैं॥

क्योंकि समान वायुके द्वारा यह पहले हृदयमें स्थापन कियागया है इसकारण से संपूर्ण शरीरमें घूमनेवालेभी रसका स्थान हृदय हैं॥ ६९॥

अथ रसस्यकर्म्माण्याह ॥

आरुह्यधमनीर्गत्वाधातून्सर्वानयंरसः । पुष्णातितदनुस्वीयैर्व्याप्नोतिचतनुंगुणैः ॥ गुणैःशीतस्निग्धपोषकत्वगुणैः ॥ मन्दवह्निविदग्धस्तुकटुर्वाम्लोभवेद्रसः । सकुर्य्याद्बहुलान्रोगान्विषकृत्यंकरोत्यपि ॥७०॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अब रसके कार्य्य कहते हैं ॥

यह रस चढ़कर नाड़ियोंमें प्राप्त होकर संपूर्ण धातुओंको पुष्ट करता है इसके उपरान्त अपने शीत- चिकनाई और पुष्ट करना इन गुणोंसे शरीरको व्याप्त करता है मन्दाग्निसे विकारयुक्तहुआ रस कडुआ अथवा खट्टा होताहै वह रस बहुतसे रोग और विषके कार्य्यको भी करता है ॥ ७० ॥

अथ रक्तस्यस्वरूपमाह ॥

यदारसोयकृद्यातितत्ररञ्जकपित्ततः। रागंपाकंचसंप्राप्यसभवेद्रक्तसंज्ञकः ॥ रक्तंसर्वशरीरस्थंजीवस्याधारमुत्तमम् । स्निग्धंगुरुचलंस्वादुविदग्धंपित्तवद्भवेत् ॥ (जीवस्याधारमुत्तममिति) यतआह। जीवोवसतिसर्वस्मिन्देहेतत्रविशेषतः ॥ वीर्येरक्तेमलेयस्मिन्क्षीणेयातिक्षयंक्षणादिति ॥ वीर्येरक्तेमलेचशरीरारम्भकेवाग्भटोक्तपरिमाणमितेशुद्धेजीवोवसतिनतुदुष्टेप्रवृद्धेरक्तस्रावणोपदेशस्यवैयर्थ्यप्रसंगात्पित्तवद्भवेत् । अम्लंभवेदित्यर्थः ॥७१ ॥

अब रुधिरकास्वरूप कहते हैं ॥

जब रस यकृत्में प्राप्त होताहै तो वहां रञ्जक नाम पित्तसे रङ्ग और परिपाकको प्राप्त होकर रुधिर नामको प्राप्त होता है- रुधिर संपूर्ण शरीरमें रहनेवाला-जीवका उत्तम आधार- चिकना- भारी चञ्चल और मधुर होताहै परन्तु विकारको प्राप्तहुआ रुधिर पित्तके समान खट्टा होता है-जीवका उत्तम आधार रुधिर है ऐसा कहा गयाहै संपूर्ण शरीरमें जीव रहताहै परन्तु शरीरके आरम्भ करने वाले शुद्ध वाग्भटमें कहेहुए प्रमाणयुक्त वीर्य्य रुधिर और मलमें विशेषतासे रहता है क्योंकि इनके क्षीण होनेसे क्षणभरमें क्षयको प्राप्त होता है न कि दोषको प्राप्त और बढ़ेहुए रुधिरादिकों में जीव रहता है और जो ऐसा न हो तो रुधिरमोक्षण (फस्त) का उपदेश व्यर्थ हो जाय ॥ ७१ ॥

अथ रक्तस्यस्थानमाह ॥

यकृत्प्लीहौचरक्तस्यमुख्यस्थानन्तयोः स्थितम् । अन्यत्रसंस्थितवतांरक्तानांपोषकंभवेत् ॥ ७२ ॥

अब रुधिरका स्थान कहते हैं ॥

यकृत् और प्लीहा रुधिर का मुख्य स्थानहैं उनमें स्थित रुधिर अन्यस्थान में रहनेवाले रुधिर को पुष्ट करता है ॥७२॥

अथ मांसस्यस्वरूपमाह ॥

शोणितंस्वाग्निनापक्वंवायुनाचघनीकृतम् । तदेवमांसंजानीयात्तस्यभेदानपि ब्रुवे ॥ शोणितसंज्ञांलभते ॥ एवमग्रेरसस्यैवमांसादिव्यपदेशः ॥ ७३ ॥

अब मांसका स्वरूप कहतेहैं ॥

अपनी अग्निसे पकाहुआ और वायुसे गाढ़ा कियागया रुधिर मांस कहलाताहै अब उसके भेदोंको भी कहतेहैं-रुधिरके स्थानमें जानेसे रसभी रुधिर कहलाताहै इसीप्रकार आगेभी रसही मांसादिक नामोंको प्राप्त होताहै ॥ ७३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ मांसस्यपेशीमाह ॥

यथार्थमूष्मणायुक्तोवायुःस्रोतांसिदारयेत्। अनुप्रविश्यपिशितंपेशीर्विभजतेतथा ॥ यथार्थंयथाप्रयोजनम् ॥ ७४ ॥ अब मांसकी पेशी कहतेहैं ॥

ऊष्मासे युक्त वायु सोतोंको फाडता हुआ मांसमें प्रवेश करके प्रयोजनके अनुसार पेशियों (मांसपिण्डों)का विभाग करताहै ॥ ७४ ॥

मांसपेशीनांसंख्यामाह ॥

मांसपेश्यःसमाख्यातानृणांपञ्चशतानिहि। तासांशतानिचत्वारिशाखासुकथितान्यथा ॥ कोष्ठेषडुत्तराषष्टिःकथितामुनिपुङ्गवैः। ग्रीवायाऊर्ध्वगास्तास्तुचतुस्त्रिंशत्प्रकीर्तिताः ॥ ७५ ॥ अब पेशियोंकी संख्या कहतेहैं ॥

मनुष्योंके ५०० मांसकी पेशी होतीहैं बडे २ मुनियोंने ४०० मांसकी पेशी शाखाओंमें(हाथ पैरोंमें) रहतीहैं कोष्ठमें ६६ और ग्रीवाके ऊपर ३४ रहतीहैं ऐसा कहा है ॥ ७५ ॥

ताःशाखागताः प्राह ॥

एकैकस्यान्तुपादाङ्गुल्यांतिस्रस्तिस्रस्ताःपञ्चदश १५ पादाग्रेदश १० पादोपरिकूर्चसन्निविष्टादश १० गुल्फतलयोर्दश १० गुल्फजानुनोरन्तरेविंशतिः २० जानुनिपञ्च ५ ऊरौविंशतिः २० वंक्षणेदश १० एवमेकस्मिन्सक्थिनिशतंभवन्ति एतेनेतरसक्थिबाहूचव्याख्यातौ ॥ ७६ ॥

अब शाखाओंमें रहनेवाली मांसपेशियोंका वर्णन करते हैं ॥

पैरकी एक २ उंगलीमें तीन २ पेशी होतीहैं इस प्रकार पांचों उंगलियों में १५ हुईं पैरके ऊपर १० और पैरके ऊपर कूर्चसे मिली हुई १० गट्टोंके नीचे १० गट्टे और घुटनों के बीचमें २० घुटनों में ५ जङ्घामें २० जङ्घा की सन्धि में १० इसप्रकार पञ्जे से लेकर जङ्घातक पूरे पैरमें १०० होतीहैं इसी रीतिसे दूसरी जङ्घा और दोनों भुजा जाननी चाहिये ॥ ७६ ॥

अथ कोष्ठगताःप्राह ॥

गुदेतिस्रः ३ शेफस्यैका १ सेवन्यामेका १ वृषणयोर्द्वे २ स्फिजोःपञ्च ५ पञ्च ५ वस्तिमूर्द्धनिद्वे २ उदरेपञ्च ५ नाभ्यामेका १ पृष्ठोर्ध्वसन्निविष्टाउभयतःपञ्च ५ पञ्चदीर्घा ५ पार्श्वयोःषट् ६ वक्षसिदश १० अक्षकांसौप्रतिसमन्तात्सप्त ७ आक्षकोआपुआइतिलोकेअंसौस्कन्धौ १ हृदिद्वे २ यकृति २ प्लीहिद्वे २ नासायांद्वे २ नेत्रयोर्द्वे २ गण्डयोश्चतस्रः ४ तुण्डकेद्वे २ ॥ ७७ ॥

अब कोष्ठमें रहनेवाली पेशियोंका वर्णनकरतेहैं ॥

गुदामें तीन ३ लिङ्गमें १ लिङ्गकेनीचे सीवनमें १ अण्डकोशोंमें २ दोनों नितम्बोंमें पांच २ मूत्राशयके ऊपर २ उदरमें ५ नाभिमें १ पीठके ऊपर दोनों तरफ फैली हुईं ५ और ५ लम्बी पसलियों में ६ हृदयमें १० हसली और कन्धोंके आस पास ७ छातीमें २ यकृत्में २ पिलहीमें २ तुण्डक (कन्धे के पासकी नली) में २ इस प्रकारसे ६६ हैं ॥ ७७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ ग्रीवोर्ध्वगाःप्राह ॥

ग्रीवायाञ्चतस्रः ४ हन्वोरष्टौ ८ कण्ठमणौएकाघण्टिकायामितियावत् । गलेएका १ तालुनिद्वे २ जिह्वायामेका १ ओष्ठयोर्द्वे २ नासायांद्वे २ नेत्रयोर्द्वे २ गण्डयोश्चतस्रः ४ कर्णयोर्द्वे २ ललाटेचतस्रः ४ शिरस्येका १ एवंमांसपेश्यःपञ्चशतानि भवन्ति ॥ ७८ ॥

अब ग्रीवाके ऊपर रहनेवाली पेशियोंका वर्णन करते हैं ॥

ग्रीवामें ४ दोनों जाबड़ों में ८ गांठीमें १ गलेमें १ तालुमें २ जिह्वामें १ दोनों ओष्ठों में २ नासिकामें २ नेत्रोंके ऊपर २ कपोलोंमें ४ कानोंमें २ माथेमें ४ शिर में १ इस प्रकारसे चौंतीस हुई इस रीतिसे सब मिलकर ५०० मांसकी पेशी होतीहैं॥ ७८ ॥

स्त्रीणामपिभवन्त्येताःकिन्तुविंशतिरुत्तराः । गर्भाशयेगर्भमार्गेयोनौचस्तनयोरपि ॥ एताःपञ्चशतानिमांसपेश्यः ॥ अधिकाविंशतिर्यथा । गर्भाशयेतिस्रः ३ गर्भच्छिद्रसंस्थिताशुक्रार्त्तवप्रवेशिन्यस्तिस्रः ३ योनावभ्यन्तरतोमुखाश्रितेप्राश्रितेद्वे २ योनावेव बहिर्निर्गते स्रोतःपार्श्वद्वयस्थितेवर्त्तुलेयोनिकर्णिकेतियावत् । द्वे२स्तनयोःपञ्च ५ पञ्च ५ यौवने । वृद्धिर्भवति ॥ ७९ ॥

स्त्रियोंकेभी यही ५०० पेशी होतीहैं परन्तु गर्भाशय गर्भमार्गयोनि और स्तनोंमें२०अधिक होती हैं वह बीस अधिक ऐसे होतीहैं कि गर्भाशयमें ३ गर्भकेछिद्रमें स्थित वीर्य्य और रजकी प्रवेशकराने वाली ३ योनिके भीतर मुखकी ओर फैली हुई २ योनिके बाहरकी ओर छिद्र दोनों पार्श्वोंमें स्थित गोल योनिकर्णिकानामसे २ और दोनों स्तनोंमें पांच २ और युवावस्थामें इनकीवृद्धि होतीहै ॥ ७९ ॥

पुंसांपेश्यःपुरस्ताद्याःप्रोक्तामेहनमुष्कजाः । स्त्रीणामावृत्यतिष्ठन्तिफलमन्तर्गताहिताः ॥ अस्यायमर्थः। पुंसांमेहनमुष्कयोश्चयास्तिस्रोमांसपेश्यः ॥ पूर्वमुक्तास्ताःस्त्रीणांमेहनमुष्काभावात्फलंगर्भंशमार्थं आवृत्यातिष्ठन्ति (गयदासस्त्वाह) स्त्रीणांमांसपेश्यस्त्रिभिर्हीनानिपञ्चशतानि । (तथाचभोजः) पञ्चपेशीशतान्येव स्त्रीवर्ज्जंविद्धिभूमिप ! । अतश्चतिस्रोहीयन्तेस्त्रीणांशेफासिमुष्कयोः ॥ ८० ॥

पुरुषों के लिङ्ग और अण्डकोशों में जो मांसकी पेशी पहले कहीगई हैं वहस्त्रियोंके गर्भाशयको आच्छादन करके रहती हैं इसका यह अर्थ है कि जो तीन मांसकी पेशी पुरुषोंके लिङ्ग और अण्डकोशोंमें पहले कहीगई हैं वह स्त्रियोंके लिङ्ग और अण्डकोशोंके न होने से गर्भको आच्छादन करकेरहती हैं (गयदास कहते हैं) कि स्त्रियोंके मांसपेशी तीन कम पांचसौ होतीहैं और वैसाही (भोजने भी कहा है)कि हेराजन! पांच सौ पेशी स्त्रियोंको छोडकर जाननी चाहिये स्त्रियों के लिङ्ग और अण्डकोशों के न होनेसे तीन कम होती हैं ॥ ८० ॥

अथ मांसपेशीनांकर्माण्याह ॥

शिरास्नाय्वस्थिपर्वाणि सन्धयश्चशरीरिणाम्। पेशीभिःसंवृतान्येव बलवन्ति भवन्तिहि ॥ ८१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अब मांसकीपेशियोंके कार्य्य कहतेहैं ॥

मनुष्योंकी शिरा-स्नायु-हड्डी-गांठें-और सन्धि यह पेशियोंसे लिपटी हुईही बलवान् होती हैं ॥ ८१॥

अथ मेदसःस्वरूपमाह ॥

यन्मांसंस्वाग्निनापक्वंतन्मेदइतिकथ्यते। तदतीवगुरुस्निग्धंबलकार्य्यतिबृंहणम्॥८२॥

अब मेदकास्वरूप कहते हैं ॥

अपनी अग्निसे पकाहुआ मांस मेद कहलाताहै और वह बहुत भारी- चिकना- बलकारी और अत्यन्त शरीरकी वृद्धि करने वाला होता है ॥ ८२ ॥

अथ मेदसःस्थानमाह ॥

मेदोहिसर्व्वभूतानामुदरेष्वस्तिसंस्थितम्।अतएवोदरेवृद्धिःप्रायोमेदस्विनोभवेत्॥८३॥

अब मेदकास्थान कहते हैं ॥

सब प्राणियोंके उदरमें मेद रहताहै इसीसे मेदवालों के उदरमें बहुधा वृद्धि होती है ॥ ८३ ॥

अथास्थ्नःस्वरूपमाह ॥

मेदोयत्स्वाग्निनापक्वंवायुनाचातिशोषितम्। तदस्थिसंज्ञांलभतेससारःसर्वविग्रहे॥ अभ्यन्तरगतैःसारैर्य्यथातिष्ठन्तिभूरुहाः। अस्थिसारैस्तथादेहाध्रियंतेदेहिनोध्रुवम्॥ तस्माच्चिरविनष्टेषुत्वङ्मांसेषुशरीरिणाम्।अस्थीनिनविनश्यन्तिसाराएतानिसर्वथा॥८४॥

अब हड्डियोंका स्वरूप कहते हैं ॥

अपनी अग्नि से पकाहुआ जो मेद वह वायुसे अत्यन्त सुखाया हुआ हड्डी कहलाताहै और वही संपूर्ण शरीर में सारांश है- जिस प्रकार वृक्ष भीतर रहनेवाले सारांश से स्थित रहतेहैं उसी प्रकार प्राणियोंके शरीर हड्डी रूपी सारांश से धारण किये जातेहैं इस कारण से त्वचा और मांसादिकों के नष्ट होजाने परभी हड्डी नष्ट नहीं होती हैं इसीसे यह सब प्रकारसे सारांश हैं ॥ ८४ ॥

अथास्थ्नांसंख्यामाह ॥

शल्यतन्त्रेऽस्थिखण्डानांशतंत्रयमुदाहृतम्।तान्येवात्रनिगद्यन्तेतेषांस्थानानियानिच॥ सार्विंशतिशतंत्वस्थ्नांशाखासुकथितंबुधैः। पार्श्वयोःश्रोणिफलकेवक्षःपृष्ठोदरेषुच ॥ जानीयाद्भिषगेतेषुशतंसप्तदशोत्तरम्। ग्रीवायामूर्द्ध्वगांविद्यादस्थ्नांषष्टिंत्रिसंयुताम्॥ ८५ ॥

अब हड्डियों की संख्या कहतेहैं ॥

शल्यतन्त्रमें तीनसौ हड्डियोंके खण्ड कहेगयेहैं वही यहां भी कहेजातेहैं और उनके स्थान भी कहे जातेहैं- पण्डितोंने शाखा अर्थात् हाथपैरों में-१२० पसलियोंमें-नितम्बोंमें-छातीमें-पीठमें और उदर में ११७ ग्रीवामें ऊपरकी तरफ ६३ हड्डियां कही हैं ॥ ८५ ॥

तानिशाखागतान्याह ॥

एकैकस्यांपादाङ्गुल्यांत्रीणित्रीणितानिपञ्चदश १५ पादतलेपञ्चास्थिशलाकास्तदाधारभूतमेकमस्थि १ एवंषट् ६ कूर्चेद्वे २ गुल्फेद्वे २ पार्ष्णावेकम् १ जङ्घयोर्द्वे २

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जानुन्येकम् १ ऊरावेकंएवंत्रिंशदेकस्मिन्सक्थिनिभवन्ति । एतेनेतरसक्थिबाहूचव्या ख्यातौ ॥ ८६ ॥

अब शाखाओंमें रहनेवाली हड्डियां कहते हैं ॥

पैर की एक२उंगली में तीन २हड्डियां इस प्रकार पन्द्रह हुईं पैरके तलुए में पांच हड्डियोंकी शलाका और उनके आधारभूत एक हड्डी इस प्रकार छः हुईं कूर्च (गाईं) में दो गट्टोंमें दो एड़ी में एक पिण्डलीमें दो घुटने में एक- जङ्घामें एक- इस प्रकार पैरसे लेकर जङ्घातक तीस ३० हुईं इसीरीति से दूसरी जङ्घा और दोनों बाहुभी जाननी चाहिये ॥ ८६ ॥

अथ पार्श्वादिगतान्याह ॥

पार्श्वयोःषट्त्रिंशत् ३६ शिश्नेभगेचएकम् १ नितम्बयोरेकैकम् २ त्रिकेएकम् १ वक्षस्यष्टौ ८ पृष्ठेत्रिंशत् ३० अक्षकसंज्ञेद्वे २ ॥ ८७ ॥

अब पार्श्वादिकों में स्थितहोनेवाली हड्डियोंका वर्णन करतेहैं ॥

दोनों पसलियों में ७२ लिङ्ग और योनि में एक २नितम्बों में एक२रीढ़के नीचे त्रिकमें १ छाती में आठ पीठमें ३० हसलीमें २ ॥ ८७ ॥

अथ ग्रीवोर्द्ध्वगतान्याह ॥

ग्रीवायां नव ९ कण्ठनाड्यांचत्वारि ४ हन्वोरेकैकम् २ दन्तेषुद्वात्रिंशत् ३२ नासायांत्रीणि ३ तालुन्येकं १ गण्डयोरेकैकं २ कर्णयोरेकैकम् २ भ्रुवोरेकैकम् २ शिरसि षट् ६ ॥ ८८ ॥

अब ग्रीवाके ऊपर रहनेवाली हड्डियोंको कहतेहैं ॥

ग्रीवामें९कण्ठनाड़ीमें ४ जावड़ोंमें एक२ और ३२ दांतोंमें नासिका में ३ तालुमें१गालों में एक२ कानोंमें एक२ भृकुटियोंमें एक२ शिरमें ६ ॥ ८८ ॥

एतान्यस्थीनिपञ्चविधानिभवन्ति ॥ तानियथा ॥

तरुणानिकपालानिरुचकानिभवन्तिहि । वलयानीतितानिस्युर्नलकानिचकानिचित् ॥ अक्षिकोशश्रुतिघ्राणग्रीवासुतरुणानिच । शिरःशङ्खकपोलेषुताल्वंसंप्रोथजानुनि ॥ कपालानिभवन्त्येषुदन्तेषुरुचिकानिच। पाण्योःपार्श्वयुगेपृष्ठे वक्षेजठरपायुषु ॥ जानुनितम्बांसगण्डतालुशङ्खशिरःसुकपालानि । दशनस्तुरुचकाःशिरःशंखकपालेषु ताल्वंशपोथकादिषु ॥ पादयोर्वलयानिस्युर्नलकानिब्रुवेऽधुना । हस्तपादांगुलितलेकूर्चेचमणिवन्धयोः ॥ बाहुजङ्घाद्वयेचापिजानीयान्नालकानितु ॥ ८९ ॥

यह हड्डियां पांचप्रकारकी होती हैं उन्हें कहतेहैं ॥

तरुण कपाल रुचक वलय और नलक ये पांचप्रकार की होती हैं-नेत्र-कर्ण- नासिका और ग्रीवा इनमें तरुण नाम हड्डियां होती हैं मस्तक शङ्ख (माथेकी हड्डी) गाल तालु कन्धे नितम्ब और घुटनों में कपालनाम हड्डियां रहती हैं और दांतोंमें रुचक नाम हड्डियां होतीहैं हाथों में पसलियों में पीठमें छातीमें उदरमें गुदामें पैरोंमें वलय नाम हड्डियां होती हैं हाथ व पैरकी उंगलियों और तलुओं में कूर्च में पहुंचेमें दोनों बाहु और जङ्घाओं में नलक नाम हड्डियां होतीहैं ॥ ८९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथास्थ्नांप्रयोजनमाह ॥

मांसान्यन्त्राणिबद्धानिशिराभिःस्नायुभिस्तथा । अस्थीन्यालम्बनंकृत्वानशीर्य्यन्ति पतन्तिच ॥ ६० ॥

अब हड्डियोंका प्रयोजन कहते हैं ॥

स्नायु और शिराओंसेबँधेहुये मांस और आंतें हड्डियोंकाअवलम्बनकरके न क्षीणहोते हैं न गिरतेहैं६०॥

अथ मज्जास्वरूपमाह ॥

अस्थियत्स्वाग्निनापक्वंतस्यसारोभवेद्घनः । यःस्वेदवत्पृथग्भूतःसमज्जेत्यभिधीयते ॥ ६१ ॥

अब मज्जाकास्वरूप कहते हैं ॥

अपनी अग्निसे पकीहुई हड्डीका जो सारांश है वह गाढ़ाहुआ स्वेद के समान अलगहुआ मज्जा कहलाताहै ॥ ६१ ॥

अथ मज्जास्थानमाह ॥

स्थूलास्थिषुविशेषेणमज्जात्वभ्यन्तरेस्थितः ॥ ६२ ॥ अथ शुक्रस्योत्पत्तिमाह ॥ रसाद्रक्तंततोमांसंमांसान्मेदःप्रजायते । मेदसोऽस्थिततोमज्जामज्ज्ञःशुक्रस्यसम्भवः ॥ शुक्रस्येतिवचनेनशुक्रसम्भवमुक्तम् । ननुमासेनरसःशुक्रोभवतिस्त्रीणांचार्त्तवंभवतीति॥सुश्रुतस्यैववचनेनरसादेवशुक्रस्योत्पत्तिरुच्यते।तदेतत्कथंसङ्गच्छते॥ ६३ ॥

अब मज्जा का स्थान कहते हैं ॥

मज्जा बडी हड्डियों में विशेषकरके रहती है ॥ ६२ ॥ अब वीर्यकी उत्पत्ति कहते हैं ॥ रससे रुधिर रुधिरसे मांस मांस से मेद मेद से हड्डी हड्डी से मज्जा और मज्जा से वीर्य्य उत्पन्न होताहै अब यह सन्देह उत्पन्न होताहै कि रस महीने भरमें वीर्य्य और स्त्रियोंका रज होजाताहै इस सुश्रुतके वचन से रसहीके द्वारा वीर्य्यकी उत्पत्ति कही जाती है तो यह कथन (मज्जासे वीर्यका उत्पन्नहोना) कैसे ठीक होसक्ताहै ॥ ६३ ॥

इदमेव सन्देहंदूरीकर्त्तुमाहारादेर्गतिंपरिणामंचाह ॥

यात्यामाशयमाहारःपूर्वंप्राणानिलेरितः। माधुर्य्यंफेनभावंचषड्रसोऽपिलभेतसः॥ आहारइत्यत्रआह्रियतेइत्याहारः।अकर्त्तरिचकारकेसंज्ञायामितिसूत्रेणकर्म्मणिघञ् ॥ ६४ ॥

इसी सन्देह के दूर करने के लिये आहारादि की गति और परिणाम कहाजाताहै ॥

आहार पहले प्राण वायुसे प्रेरणा किया गया आमाशय में प्राप्त होताहै और छओंरससे युक्त भी आहार मधुरता और फेनके भावको प्राप्त होताहै (जो लेजायाजाय उसको आहार कहते हैं) आहार शब्दमें (अकर्त्तरिचकारके संज्ञायाम्) इससूत्रसे कर्म्म में घञ्प्रत्यय होताहै ॥ ६४ ॥

सचषड्विधस्तथाच ॥

आहार्य्यंषड्विधंभोज्यंभक्ष्यंचर्व्यन्तथैवच । लेह्यंचूष्यंतथापेयंतदुदाहरणानितु ॥ भोज्यमोदनसूपादिभक्ष्यंमोदकमण्डकम् । चर्व्यंचिपिटधान्यादिरसालादितुलेह्यके ॥ चूष्यमाम्रफलेक्षवादिपीयतेपानकंपयः ॥ ६५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वह आहार छःप्रकारकाहै ॥

आहार छः प्रकारका इसक्रम से है कि भोज्य-भक्ष्य-चर्व्य–लेह्य--चूष्य–पेय–और इनके उदाहरण यहहैं जैसे कि भोज्य, दालचावल आदि-भक्ष्य, मोदकादि–चर्व्य, चिड़वे आदि–लेह्य शिखरन आदि–चूष्य, आम्रादि पेय, पना और दूधआदि ॥ ९५ ॥

आमाशयमाह चरकः ॥

नाभिस्तनान्तरेजन्तोराहुरामाशयंबुधाइति ॥ ९६ ॥ अत्र विशेषमाह ॥ नाभेर्वितस्तिमात्रंचकण्ठेदेशात्षडंगुलम् । उरसस्ताद्विजानीयाच्छेषंतुहृदयंमतम् ॥ उरोरक्ताशयस्तस्मादधःश्लेष्माशयःस्मृतः ॥ आमाशयस्तुतदधस्तदधोदहनाशयइति॥प्राणानिलेरितइति॥हृदयाधिष्ठानेनप्राणनाम्नावायुनामुखंगतेनान्तःप्रवेशितः॥९७॥

अब चरकमुनि का कहाहुआ आमाशयका वर्णन करते हैं ॥

पण्डितलोग जीवोंके नाभि और स्तनोंके बीचमें आमाशयको कहते हैं ९६(अब इसमें विशेषता कहते हैं) नाभिसे बिलस्त भर ऊपर और कण्ठसे छः अंगुल नीचे उर कहलाताहै और बाकी हृदय जानना चाहिये और उरही रक्ताशय कहलाताहै–उसके नीचे श्लेष्माशय है–श्लेष्माशयके नीचे आमाशयहै और आमाशयके नीचे दहनाशयहै ॥ ९७ ॥

तथा च सुश्रुतः ॥

योवायुःप्राणनामासौमुखंगच्छतिदेहधृक् । सोऽन्नंप्रवेशत्यन्तःप्राणांचाप्यवलम्बते क्लेदननामाकफःक्लेदयतिक्लेदनात्संहतंभिनत्तिच (उक्तं च सुश्रुते) क्लेदनःक्लेदयत्यन्नंसंहतंचभिनत्त्यतइति ॥ ९८ ॥

और सुश्रुतजी कहते हैं कि,शरीरका धारणकरनेवाला प्राणनाम वायु जो मुखमें जाताहै वह अन्नको भीतर लेजाताहै और प्राणोंका भी अवलम्बन करताहै. क्लेदन नाम कफ अन्नको गीलाकरता है और इकट्ठे हुये अन्नको भिन्न २ भी करताहै और सुश्रुतने कहाभी है कि क्लेदननाम कफ अन्नको गीलाकरताहै और इकट्ठे हुये अन्नको पृथक् २ भी करताहै ॥ ९८ ॥

सआहारःषड्रसोऽप्यामाशयेमाधुर्य्यंलभते । आमाशयस्थस्य मधुरस्य कफस्य योगात् ॥ ९९ ॥

आमाशय में स्थित मधुर कफ के योग से वह आहार छः रसवाला भी आमाशय में मधुरताको प्राप्त होताहै ॥ ९९ ॥

उक्तञ्च श्लेष्मस्वरूपम् ॥

श्लेष्माश्वेतोगुरुःस्निग्धःपिच्छिलःशीतलस्तथा । तमोगुणाधिकःस्वादुर्विदग्धोलवणोभवेदिति ॥ फेनभावञ्चलभतेजठरानलतेजसा ॥ १०० ॥

और श्लेष्माका स्वरूप कहा गयाहै कि श्लेष्मा श्वेतवर्ण,भारी, चिकना, फिसलाहटवाला,शीतल, अधिक तमोगुणवाला और मधुर होताहै परन्तु विकारयुक्त श्लेष्मा लवणके स्वादु होताहै और उदरकी अग्निको तेजसे फेनके भावको प्राप्त होताहै ॥ १०० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एतआह वाग्भटः ॥

सन्धुक्षितःसमानेन पचत्यामाशयस्थितम् । औदर्य्योऽग्निर्यथाबाह्यःस्थालीस्थंतोय तण्डुलमिति ॥ १०१ ॥

जैसा कि वाग्भटने कहाहै कि जैसे लौकिक अग्नि बटुएमें स्थित जलसंयुक्त चावलोंको पकाती है उसी प्रकार समानवायुसे तेजकिया हुआ उदरकी अग्नि आमाशयमें स्थित अन्नको पकाती है॥ १०१ ॥

अथ सएवाहारःप्राणवायुनाप्रेरितस्ततःकिञ्चित् स्खलितःपाचकाख्यपित्तोष्मणा यत्पक्कोऽम्लरसोभवति ॥ १०२ ॥

इसके उपरान्त (आमाशयके जानेके पीछे) वही आहार प्राणवायुसे प्रेरणा किया हुआ और उस्से कुछ गिराहुआ पाचकनाम पित्तकी ऊष्मासे पकाहुआ खट्टा होजाताहै ॥ १०२ ॥

उक्तंच अथ पाचकपित्तेनविदग्धंचाम्लतांव्रजेत् । पाचकपित्तेन पाचकपित्त स्योष्मणा १०३ ततः सएवाहारोनाभिमण्डलाधिष्ठानेनसमाननाम्नावायुनाप्रेरितो ग्रहणीमभिनीयते ॥ १०४ ॥

और जैसा कहागयाहै कि पाचकनाम पित्तकी अग्नि से पकाहुआ आहार खट्टा होजाताहै १०३ इसके उपरान्त नाभिमण्डल में रहनेवाला समान नाम वायु उसी आहारको प्रेरणा करके ग्रहणी नाम नाड़ी में लेजाताहै ॥ १०४ ॥

ग्रहणीलक्षणमाह ॥

षष्ठीपित्तधरानामयाकलापरिकीर्त्तिता। आमपक्काशयान्तस्थाग्रहणीसाऽभिधीयते ॥ पित्तधरापाचकाख्यंपित्तंयदग्न्याधिष्ठानं तद्धारयतितत्रग्रहण्यामामाशयपक्काशयमध्यव र्त्तिपाचकाख्यपित्ताधिष्ठानेनाग्निनाहारःपच्यतेसकटूष्मभवति । तथा च ग्रहण्यां पच्यतेकोष्ठे वह्निनाजायतेकटुरिति अयमर्थः आहारोग्रहण्यां कोष्ठवह्निना ग्रहणी स्थितपाचकपित्तेन वह्निना पच्यते पच्यमानः सग्रहणी स्थितस्य कटुरसस्य योगात् कटुर्भवति ॥ १०५ ॥

अब ग्रहणीका लक्षण कहते हैं ॥

पित्तधरा नाम जो छठी कला कही गई है वही आमाशय और पक्काशयके बीचमें ग्रहणी कहलाती है पित्तधराकला–अग्निके स्थान रूप पाचकनाम पित्तको धारण करती है आहार जोहै सो आमाशय और पक्काशयके बीचमें रहनेवाला जो पाचकनाम पित्त उसमें रहनेवाली अग्नि से पकाया गया कड़ुआ होजाताहै–जैसा कहागयाहै कि कोष्ठकी अग्नि से ग्रहणी में पकाया हुआ अन्न कड़ुआ होताहै इसका यहअर्थ है कि ग्रहणी में स्थित पाचकनाम पित्तकी अग्निसे पकाहुआ आहार ग्रहणीमें स्थित रहनेवाले कटुरसयुक्त पित्तके योगसे कड़ुआ होजाताहै ॥ १०५ ॥

एतदाहारपाकेविशेषमाह ॥

शरीरंपाञ्चभौतिकम् । तत्रपञ्चसुभूतेषुपञ्चाग्नयस्तिष्ठन्ति ॥ उक्तंचरकेणभौमाप्या ग्नेयवायव्याःपञ्चोष्माणःसनाभसाः। पञ्चाहारगुणान्स्वान्स्वान्पार्थिवादीन्पचन्त्यनु ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अत्रोष्मपदेनाग्निरुच्यते ॥ आहारोऽपिपाञ्चभौतिकः, तत्रपाचकपित्तस्थेनाग्निनोत्तेजितेनशरीरवर्त्तिनाभूभागाग्निनाहारवर्त्तिभूभागःपच्यते। पक्कोभूभागःस्वकीयान्गुणानाभिवर्द्धयति एवंजलादिभागाअपिपच्यन्ते ॥ १०६ ॥

इस आहारके पाकविषयमें विशेषता कहतेहैं ॥

शरीर पांचभौतिकहै उन पांचमहाभूतों में पांचअग्नि हैं और चरकनेभीकहाहै कि पृथ्वीसम्बन्धी, जलसंबन्धी, अग्निसंबन्धी, वायुसंबन्धी और आकाश संबन्धी यह पांचअग्निहैं यहअग्नियां आहार के पृथ्वीसंबन्धी आदिक अपने २ पांचों गुणोंको परिपाक करती हैं आहारभी पांचभौतिके होते हैं उनमें से पाचक पित्तमें स्थित अग्निके द्वारा तेजकीगई शरीरमें रहनेवाली पृथ्वी भागकी अग्निसे भोजन में रहनेवाला पृथ्वी का भाग परिपाकको प्राप्त होताहै और पकाहुआ पृथ्वी का भाग अपने गुणोंको बढ़ाताहै इसी प्रकार जलादिकों के भी भाग परिपाक को प्राप्त होते हैं ॥ १०६ ॥

तथा च सुश्रुते ॥

पञ्चभूतात्मकेदेहेआहारःपाञ्चभौतिकः । विपक्कःपञ्चधासम्यग्गुणान्स्वानभिवर्द्धयेदिति ॥ गुणशब्देनात्रगुणिनःपृथिव्यादयउच्यन्ते। तेनगुणान्शरीरवर्त्तिनःपार्थिवादीन्भागानभिवर्द्धयेदित्यर्थः ॥ एवमहोरात्रेणपक्कआहारोमिष्टःपटुश्चमधुरोभवति । अम्लस्त्वम्लोभवति कटुतिक्तः कषायश्चकटुर्भवति उक्तञ्च, मिष्टः पटुश्चमधुरमम्लोऽम्लंपच्यतेरसः । कटुतिक्तकषायाणांविपाकोजायतेकटुरिति ॥ १०७ ॥

वैसाही सुश्रुतमें कहाहै कि पञ्चभूतात्मक शरीरमें पञ्चभूतात्मक आहार परिपाकको प्राप्तहुआ पांच प्रकारसे शरीरमें स्थित अपने२ पृथिव्यादि भागों को बढ़ाताहै इस प्रकार रात्रि दिनमें परिपाक हुआ मधुर लवण युक्त आहार मीठा होजाताहै खट्टा आहार खट्टाही होजाताहै और कडुआ तीता तथा कषैला यह सब कटु होजाते हैं और कहाहै कि मधुर और लवण रस विपाकमें मधुर होते हैं। खट्टा रस विपाकमेंभी खट्टा होताहै कडुआ तिक्त तथा कषैला यह सब विपाकमें कटु होजाते हैं ॥ १०७ ॥

एवंविपक्कस्याहारस्यसारोनिगदितोरसः। शेषोग्रहणीस्थोमलद्रवःमलद्रवस्यजलभागःशिराभिर्वस्तिंनीतोमूत्रंभवति । उक्तञ्च। आहारस्यरसःसारःसारहीनोमलद्रवः।शिराभिस्तज्जलंनीतंवस्तिंमूत्रत्वमाप्नुयात् ॥ शेषंकिट्टञ्चयत्तस्यतत्पुरीषंनिगद्यते । समानवायुनानीतन्तात्तिष्ठतिमलाशये ॥ तत्रमलाशयेनापानवायुनाप्रेरितंमूत्रंमेढ्रभगमार्गेण। पुरीषंगुदमार्गेणशरीराद्बहिर्यांति। उक्तञ्चमूत्रञ्चोपस्थमार्गेणपुरीषंगुदमार्गतः। अपानवायुनाक्षिप्तंबहिर्यातिशरीरतः ॥ उपस्थःशिश्नो भगञ्च ॥ १०८ ॥

इस प्रकार परिपाकको प्राप्त हुआ आहारका सारांश रस कहलाताहै और शेष ग्रहणी में स्थित द्रवरूप पिघला हुआ मल होताहै ॥ द्रवरूप मलका जल भाग नाड़ियोंसे मूत्राशयमें पहुंचा हुआ मूत्र होताहै और कहाहै कि आहारका सारांश रसहै और सारांशसे रहित द्रवरूप मल होताहै और उसका जल नाड़ियोंके द्वारा मूत्राशयमें गयाहुआ मूत्र कहा जाताहै और उस मलका फोक विष्टा कहलाताहै वह समानवायुके द्वारा जाकर मलाशयमें रहताहै उस मलाशयमें अपानवायु के द्वारा प्रेरणाकिया हुआ मूत्र लिङ्ग और योनिके द्वारा और पुरीष गुदाके द्वारा शरीरसे बाहर जाताहै और कहाहै कि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपान वायुके द्वारा फेंका हुआ मूत्र लिङ्ग और योनिके मार्गसे और पुरीष गुदाके मार्ग से शरीर के बाहर जाताहै ॥ १०८ ॥

रसस्तु समानवायुना प्रेरितो धमनीमार्गेण शरीरारम्भकस्य रसस्य स्थानं हृदयं गत्वा तेनसह मिश्रितो भवति । उक्तञ्च । रसस्तु हृदयं याति समानमरुतेरितः ॥ स तुव्यानेन विक्षिप्तः सर्वान् धातून् विवर्द्धयेत् ॥ केदारेषुयथाकुल्याः पुष्णन्तिविविधौषधीः । तथाकलेवरेधातून् सर्वान्वर्द्धयतेरसः ॥ १०६ ॥

और रस समान वायुके द्वारा प्रेरणा किया गया नाड़ियों के मार्ग से शरीरके आरम्भ करने वाले रसके स्थानरूप हृदयमें जाकर उसके साथ मिलताहै और कहाहै कि समान वायुके द्वारा प्रेरणा किया हुआ रस हृदय में जाताहै और वह रस व्यानवायु के द्वारा फेंका हुआ संपूर्ण धातुओं को बढ़ाताहै जैसे खेतों में छोटी२ नदियां अनेक प्रकारकी औषधियोंको पुष्ट करती हैं उसीप्रकार शरीर में रस सम्पूर्ण धातुओं को बढ़ाताहै ॥ १०६ ॥

रसस्तु तत्र तत्र त्रिधा विभज्यते उक्तञ्च चरके ॥

स्थूलः सूक्ष्मस्तन्मलश्च तत्र तत्र त्रिधारसः ॥ स्वंस्थूलोंशःपरंसूक्ष्मस्तन्मलोयाति तन्मलम् ॥ अयमर्थः।स्थूलोंऽशः स्वंयाति यथास्थितस्तिष्ठति सूक्ष्मस्त्वंशःपरं द्वितीयं धातुं यातितन्मलः रसादिमलःतन्मलं शरीरारम्भकं तत्तद्धातुमलं यातीत्यर्थः ॥ ११० ॥

रस इन२ स्थानों में तीनप्रकारसे विभागको प्राप्त होताहै और चरकमें कहाहै ॥

स्थूल-सूक्ष्म और उसका मल यह तीन प्रकारसे रसकाविभाग होताहै- स्थूल अंश अपनेही स्वरूपमें रहताहै सूक्ष्म अंश दूसरे धातुमें प्राप्त होताहै और उन रसादिकों के मल अपने २ मलमें प्राप्त होते हैं इसका यह अर्थ है कि स्थूल अंश तो यथास्थित रहताहै और सूक्ष्म अंश दूसरे रुधिरादि धातुओं में प्राप्त होता है और उन रसादिकों का मल शरीरके आरम्भ करने वाले उन २ धातुओं के मल में प्राप्त होताहै ॥ ११० ॥

यथा लौकिकाग्निनेक्षुरसः पच्यते तथा शरीरारम्भकस्य रसस्याग्निनाहाररसः पच्यते पच्यमानः स पञ्चाहोरात्रात् सार्द्धदण्डमेकञ्च यावत् प्राक्तनरसधातावेव तिष्ठति ॥ १११ ॥

जिस प्रकार लौकिक अग्निसे ऊखका रस पकताहै उसी प्रकार शरीरके आरम्भ करनेवाले रसकी अग्निसे आहारका रस परिपाकको प्राप्तहोताहै और वह पकाहुआ रस पांच दिन पांच रात्रि और डेढ़ घड़ी तक प्राक्तन रस धातु (शरीरके आरम्भ करने वाले रस) में रहताहै ॥ १११ ॥

(उक्तंच सुश्रुते) सखलुरसः त्रीणित्रीणि कलासहस्राणि पञ्चदश कला एकैकस्मिन्धातावुपतिष्ठते । अत्रकलानां विंशतिः मुहूर्त्तः सचदण्डद्वयात्मकः । तथाच भोजः । धातौरसादौमज्जांते प्रत्येकंक्रमतोरसः । अहोरात्रात्स्वयंपञ्च सार्द्धदण्डंचतिष्ठति ॥ प्रत्येकमेकैकस्मिन्नित्यर्थः । ततो यथापच्यमानादिक्षुरसान्मलो निर्गच्छति । तथा पच्यमानादाहाररसान्मलो निर्गच्छति सः कफः ॥ ११२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और सुश्रुतमें कहाहै कि वह रस तीनहज़ार कला और पन्द्रहकला पर्य्यन्त एक एक धातु में रहताहै यहां बीस कलाका एक मुहूर्त्त और मुहूर्त्त दोघडी का होताहै और ऐसाही भोजभी कहते हैं रस पांचदिन पांच रात्रि और डेढ़घडी पर्य्यन्त रस से लेकर मज्जा पर्य्यन्त एक एक धातु में रहता है तब जैसे पकेहुये ऊखके रससे मल निकलताहै उसीप्रकार पके हुये आहार के रस से मल निकलताहै और वह कफ कहलाताहै ॥ ११२ ॥

उक्तंच सुश्रुते ॥

कफःपित्तंमलःस्त्रेषु प्रस्वेदोनखरोमच । नेत्रविट्त्वक्षुचस्नेहो धातूनांक्रमशोमलाः ॥ स्वेतुमलःकर्णादि श्रोतोमलःसचकफःप्राणानिलप्रेरितो धमनीमार्गेण शरीरारम्भकं क्ले दनाख्यं कफं गत्वा पुष्णाति ॥ ११३ ॥

और सुश्रुतमें कहा है कि कफ- पित्त और कर्णादि स्रोतोंको मल स्वेद-नख-रोम-नेत्रकामल और त्वचाका स्नेह यहक्रमसे धातुओंके मलहैं और वह कफ और प्राणवायुके द्वारा प्रेरण कियागया नाड़ियों के मार्ग से शरीरके आरम्भ करनेवाले क्लेदननाम कफके स्थानमें प्राप्तहोकर उसको पुष्ट करता है ॥११३॥

ततःसारभूतस्याहाररसस्य द्वौ भागौ भवतःस्थूलःसूक्ष्मश्च तत्रसूक्ष्मोभागःशरीरा रम्भकं रसं पोषयति सकलशरीराधिष्ठानेन व्यानवायुना प्रेरितो धमनीभिः सञ्चरन् पोषणस्नेहन जठरानलोष्मकृतसंतापनिवारणादिभिर्गुणैः सकलशरीरं पुष्णाति ततः स्थूलोभागः प्राणवायुना प्रेरितो धमनीमार्गेण शरीरारम्भकस्य रक्तस्य स्थानं गत्वा यकृत्प्लीहरूपं गत्वा तेन सह मिलितो भवति ॥ ११४ ॥

इसके उपरान्त आहारके सारांशरूप रसके स्थूल और सूक्ष्म दोभाग होते हैं उनमें से सूक्ष्मभाग शरीरके आरम्भ करनेवाले रसको पुष्टकरताहै इसके उपरान्त संपूर्ण शरीरमें रहनेवाले व्यान वायुसे प्रेरणा किया गया नाड़ियों में घूमता हुआ पुष्ट करना चिकना करना जठराग्निकी ऊष्मा से उत्पन्न हुए सन्ताप का निवारण करना आदिक गुणोंसे संपूर्ण शरीर को पुष्ट करताहै इसके उपरान्त स्थूलभाग प्राणवायुके द्वारा प्रेरणा किया गया नाड़ियों के मार्ग से शरीर के आरम्भ करनेवाले यकृत् और प्लीहारूप रुधिरके स्थानमें जाकर उस्से मिलताहै ॥ ११४॥

ततःप्राक्तनस्य रक्तस्याग्निना पुनः पच्यमानः पञ्चाहोरात्रात्सार्द्धदण्डञ्च यावत् प्राक्तनरक्तधातावेव तिष्ठति । ततो यथाग्निना पुनः पुनः पच्यमानादिक्षुविकारं वारं वारं मलं निर्गच्छति । तथा पुनः पुनः पच्यमानादाहाररसात् प्रतिवारं मलं निर्गच्छ ति । तत्र रक्ताग्निना पच्यमानान्मलं पित्तं निर्गच्छति। तच्च पित्तं समानवायुना प्रेरितं धमनीमार्गेण शरीरारम्भकं पाचकाख्यं गत्वा पुष्णाति । ततःसारभूतस्याहाररसस्य द्वौभागौ भवतः स्थूलः सूक्ष्मश्च तत्र सूक्ष्मोभागो रञ्जकाग्निना पित्तेन स रक्तीकृतः । शरीरारम्भकं रक्तं व्यानवायुना प्रेरितो धमनीभिः सञ्चरन् सकलशरीरगतानि रुधि राणि पुष्णाति । ततः स्थूलोभागः व्यानवायुना प्रेरितो धमनीभिः शिराभिश्च शरी रारम्भकानि मांसानि याति ॥ ११५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस के उपरान्त प्राक्तन (पूर्वके) रुधिर की अग्निसे फिर परिपाकको प्राप्तहुआ पांच दिन रात्रि और डेढ़ घडी पर्यन्त प्राचीन॰रुधिरही में रहताहै इसके पीछे जैसे कि लौकिक अग्नि के द्वारा वारंवार पकाये हुए ऊखके रससे वारंवार मल निकलताहै उसी प्रकार वारंवार परिपाकको प्राप्तहुए आहार के रससे वारंवार मल निकलताहै वहां रुधिरकी अग्निसे पकेहुए रससे पित्तरूप मल निकलताहै और वह पित्त समानवायुसे प्रेरणा कियाहुआ नाडियों के मार्गसे शरीरके आरम्भ करने वाले पाचकनाम पित्तको प्राप्तहोकर उसे पुष्ट करताहै इसके उपरान्त सारभूत आहारके रसके दोभाग होतेहैं एक स्थूल और दूसरा सूक्ष्म उनमेंसे सूक्ष्मभाग रञ्जकनाम पित्तसे रंगाहुआ शरीरके आरम्भकरनेवाले रुधिर को पुष्टकरता हुआ व्यानवायुके द्वारा प्रेरणा कियागया नाडियों में घूमता हुआ संपूर्ण शरीरमें रहनेवाले रुधिरको पुष्टकरताहै इसके उपरान्त स्थूलभाग व्यानवायुके द्वारा प्रेरणा कियाहुआ धमनी और शिराओंके द्वारा शरीरके आरम्भ करनेवाले मांसमें प्रवेश करताहै ॥ ११५ ॥

ततो मांसाग्निना पुनः पच्यमानः पञ्चाहोरात्रात् सार्द्धदण्डश्च यावन्मांसेष्वेवतिष्ठति । ततः पच्यमानात्तस्मान्मलं निर्गच्छति । तद्व्यानवायुना क्षिप्रं कर्णावागत्यकर्णविड् भवति ॥ ११६ ॥

इसके अनन्तर मांसकी अग्निसे फिर परिपाकको प्राप्तहुआ पांच रात्रि दिन और डेढ़घडी पर्य्यन्त मांसहीमें रहताहै फिर पकेहुए उस मांससे मल निकलताहै और वह मल व्यानवायुके द्वारा शीघ्र कानोंमें आकर कानोंका मैल होजाताहै ॥ ११६ ॥

ततःसारभूतस्य रसस्य द्वौभागौ भवतः। स्थूलः सूक्ष्मश्च ततः सूक्ष्मो भागो मांसानि पुष्णाति । ततः स्थूलोभागो व्यानवायुना प्रेरितो धमनीभिः शरीरारम्भकस्य मेदसः स्थानमुदरं याति ॥ ११७ ॥

फिर सारभूत रसके स्थूल और सूक्ष्म दोभाग होतेहैं उनमेंसे स्थूलभाग मांसको पुष्ट करताहै फिर सूक्ष्मभाग व्यानवायुके द्वारा प्रेरणा कियागया नाडियोंके मार्गसे शरीरके आरम्भकरनेवाले मेदके स्थानरूप उदरमें प्राप्त होताहै ॥ ११७ ॥

ततो मेदसोऽग्निना पुनः पच्यमानः पञ्चाहोरात्रात् सार्द्धदण्डंच यावन्मेदस्येव तिष्ठति । ततः पच्यमानात्तस्मान्मलो निर्गच्छति प्रस्वेदरूपः । स च शीतः स्रोतस्येव तिष्ठति शरीरोष्मणा तप्तश्चेत्तदा व्यानवायुना प्रेरितः शिरामार्गैर्लोमकूपेभ्यो बहिर्याति ॥ जिह्वादन्तकक्षामेढ्रादिमलञ्च मेदोमलमित्येके ॥ ११८ ॥

इसके पीछे मेदकी अग्निसे फिर परिपाक को प्राप्तहुआ पांच दिन रात्रि और डेढ़ घडी पर्य्यन्त मेदहीमें रहताहै फिर परिपाकको प्राप्तहोनेवाले उससे प्रस्वेदरूप मल निकलताहै और वह शीतल प्रस्वेद स्रोतों मेंही रहताहै और जो शरीरकी ऊष्मासे तप्त हो तो व्यानवायुके द्वारा प्रेरणा कियागया शिरारूपी मार्गमें होताहुआ रोमकूपोंसे बाहर जाताहै और कोई आचार्य्य यह कहतेहैं कि जिह्वा, दन्त, बगल, लिङ्ग आदिकों का मल मेदका मल है ॥ ११८ ॥

ततः सारभूतरसस्य द्वौभागौ भवतः स्थूलः सूक्ष्मश्च तत्र सूक्ष्मोभागः मेदः पुष्णा-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ति उदरे तिष्ठन् व्यानवायुना प्रेरितोधमनीभिः शिराभिश्च शरीरारम्भकाण्यस्थीनि याति ११९॥

इसके उपरान्त सारभूत रसके स्थूल और सूक्ष्म दोभाग होतेहैं उनमेंसे स्थूलभाग मेदको पुष्टकरताहै और उदर में रहताहुआ व्यानवायुके द्वारा प्रेरण। कियागया स्रोतरूपी मार्गोंसे जाकर सूक्ष्म हड्डियों में रहनेवाले मेदको पुष्ट करताहै और सूक्ष्मभाग धमनी और शिराओं के द्वारा शरीरके आरम्भ करनेवाली हड्डियोंमें प्राप्त होताहै॥ ११९॥

ततोऽस्थ्यग्निना पुनः पच्यमानं पञ्चाहोरात्रात्सार्द्धदण्डश्च यावदस्थिष्वेव तिष्ठति। ततः पच्यमानात्तस्मान्मलो निर्गच्छति। स च व्यानवायुना प्रेरितः शिराभिः मार्गेणागत्यांगुलिषु नखः स्तनौ लोमानि भवन्ति॥ १२०॥

फिर हड्डियोंकी अग्निसे परिपाकको प्राप्त हुआ पांच दिन रात्रि और डेढ़ घड़ीतक हड्डियों में रहताहै इसके उपरान्त उस पकेहुएसे मल निकलता है और वह मल व्यानवायुके द्वारा प्रेरणाकिया गया नसोंके मार्गसे आकर अंगुलियोंमें नख और शरीरमें रोम होताहै॥ १२०॥

ततः सारभूतस्य रसस्य द्वौभागौ भवतः स्थूलः सूक्ष्मश्च तत्र सूक्ष्मभागो अस्थीनि पुष्णाति ततः स्थूलभागो व्यानवायुना प्रेरितः स्रोतोमार्गैर्मज्जास्थानानि स्थूलास्थ्यभ्यन्तराणि याति॥ १२१॥

तदनन्तर सारभूत रसके स्थूल और सूक्ष्म दोभाग होते हैं उनमें से स्थूलभाग हड्डियोंको पुष्ट करताहै और सूक्ष्मभाग व्यानवायुके द्वारा प्रेरणा कियागया स्रोतोंके मार्गसे मज्जाके स्थानरूप बड़ी हड्डियोंके भीतर जाताहै॥ १२१॥

ततो मज्जाग्निना पुनः पच्यमानः पञ्चाहोरात्रात् सार्द्धदण्डश्च यावन्मज्जन्येव तिष्ठति ततः पच्यमानात्तस्मान्मलं निर्गच्छति। तच्च व्यानवायुना प्रेरितं शिरामार्गैर्नयनयोरागत्य नेत्रविट्चक्षुः स्नेहश्च भवति॥ १२२॥

इसके अनन्तर मज्जाकी अग्निसे फिर परिपाक हुआ पांच दिन रात्रि और डेढ़ घड़ी पर्य्यन्त मज्जाहीमें रहताहै फिर उस परिपाकको प्राप्त होनेवाले से मल निकलता है और वह मल व्यानवायुकेद्वारा प्रेरणा कियागया नाड़ियोंके मार्गसे नेत्रोंमें आकर नेत्रोंका मल और स्नेह होताहै१२२॥

ततः सारभूतस्य रसस्य द्वौभागौ भवतः। स्थूलः सूक्ष्मश्च तत्र सूक्ष्मभागो मज्जानं पुष्णाति ततः स्थूलोभागो व्यानवायुना प्रेरितः धमनीभिः शिराभिश्च शुक्रस्य स्थानं सकलं शरीरंगत्वा शरीराम्भकेण शुक्रेण सह मिश्रितो भवति॥ १२३॥

इसके उपरान्त सारभूत रसके स्थूल और सूक्ष्म दोभाग होतेहैं उनमें से स्थूलभाग मज्जा को पुष्ट करताहै और सूक्ष्मभाग व्यानवायुके द्वारा प्रेरणा कियागया धमनी और शिराओंके मार्ग से वीर्य्यके स्थानरूप सम्पूर्ण शरीरमें जाकर शरीरके आरम्भ करनेवाले वीर्य्यसे मिल जाताहै॥ १२३॥

ततः शुक्राग्निना पुनः पच्यते पच्यमाने तस्मिन्मलं नास्ति। सहि सहस्रधाध्मात सुवर्णवत्॥ १२४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसके पीछे वीर्य्यकी अग्निसे फिर परिपाक को प्राप्तहोताहै और हज़ारबार तपायेहुए सुवर्ण के समान उस पकेहुए वीर्य्यमें मल नहीं होताहै॥ १२४॥

उक्तञ्च। स्वाग्निभिःपच्यमानेषु मलःषट्सुरसादिषु। षट्सुधातुषुजायन्ते मलानिमुनयोजगुः॥ यथासहस्रधाध्माते नमलंकिलकाञ्चने। तथारसेमुहुःपक्वे नमलंशुक्रतांगते॥ १२५॥

अपनी २ अग्निसे परिपाकको प्राप्त हुए रसको आदि लेकर मज्जा पर्य्यन्त छः धातुओं में मल होताहै जैसे कि हज़ारबार परिपाकको प्राप्त हुए सुवर्ण में मल नहीं होताहै उसीप्रकार वारंवार पके हुए वीर्य्यरूपको प्राप्तहुए रसमें मल नहीं होताहै॥ १२५॥

ततःसारभूतस्य रसस्य द्वौभागौ भवतः स्थूलः सूक्ष्मश्च। तत्र सूक्ष्मः स्नेहभागः ओजस्तस्य लक्षणमाह। ओजःसर्वशरीरस्थं स्निग्धंशीतंस्थिरंसितम्। सोमात्मकंशरीरस्य बलपुष्टिकरंमतम्॥ (बलंचेष्टापाटवम्) तथाच। चेष्टासु पाटवं यत्तु बलंतदभिधीयते। यत्तुसुश्रुते रसादीनां शुक्रान्तानां धातूनां यत्परं तेजस्तत् खल्वत्तदोजस्तदेवबलमिति तेजस्तेजद्रवः। अत्रायमभिप्रायः, यस्माद्रसादोजो भवति स-रसः सर्वधातुस्थानगतत्वात्तत्तद्धातुवन्मन्यत इति सर्वधातूनां स्नेहमोजः। क्षीरे घृतमिव तदेव बलमिति॥ तत्कार्यकारणयोरभेदोपचारात्॥अभेदकथनञ्च चिकित्सैक्यार्थम्॥१२६॥

इसके अनन्तर सारभूतरसके स्थूल और सूक्ष्म दोभाग होतेहैं उनमें से स्थूलभाग शरीरके आरम्भ करनेवाले वीर्य्य में प्राप्त होताहै और सूक्ष्म स्नेहभाग ओज कहलाताहै उसका लक्षण कहतेहैं सम्पूर्ण शरीरमें रहनेवाला ओज चिकना शीतल स्थिर श्वेत सोमात्मक और शरीरको बल तथा पुष्टि देनेवाला कहागयाहै यहां बल शब्दका अर्थ चेष्टाओं में समर्थ होना लियागयाहै और वैसाही कहाहै कि चेष्टाओं में समर्थ होनेको बल कहते हैं और जो सुश्रुतमें कहाहै कि रसको आदि लेकर शुक्रपर्य्यन्त जो धातुओंका द्रवरूप तेज है उसको ओज कहते हैं और वही बल कहलाताहै इसका यह अभिप्राय है कि जिस रससे ओज उत्पन्न होताहै वह रस सम्पूर्ण धातुओं में जानेसे उन २ धातुओं के समान माना जाताहै इस कारणसे सम्पूर्ण धातुओं का स्नेहभाग ओजहै कार्य्य और कारण के अभेद मानलेने से दूधमें घृतके समान वह ओजही बल है और अभेदका कथन चिकित्साकी एकताके लिये है॥ १२६॥

अन्यच्च। गुरुशीतंमृदुस्निग्धं सान्द्रंस्वादुस्थिरंतथा। प्रसन्नंपिच्छिलंसूक्ष्ममोजोदशगुणंस्मृतम्॥ १२७॥

और भी कहागयाहै कि ओजमें दशगुणहैं भारी शीतल कोमल चिकना गाढ़ा मधुर स्थिर निर्मल फिसलाहटवाला और सूक्ष्म॥ १२७॥

चरकेतु। अष्टबिन्दुप्रमाणं तदीषद्रक्तं सपीतकम्। अग्निसोमात्मकत्वेन द्विरूपंवर्णितन्तुतत्॥ १२८॥

और चरकमें तो ऐसा कहागया है कि ओज आठ बिन्दुओंके प्रमाण कुछ पीतवर्ण और कुछ रक्तवर्ण अग्नि सोमात्मक होनेसे दोरूपवाला कहागयाहै॥ १२८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाग्भटश्च। ओजश्चतेजोधातूनां शुक्रान्तानांपरंस्मृतनम्। हृदयस्थमपिव्यापि देहस्थितिनिबन्धनम्॥ यस्यप्रवृद्धौदेहस्य तुष्टिपुष्टिबलोदयाः। यन्नाशेनियतोनाशो यस्मिंस्तिष्ठतिजीवनम्॥ निष्पद्यन्तेयतोभावा विविधादेहसंश्रयाः। उत्साहप्रतिभाधैर्य्यलावण्यसुकुमारताः॥ १२९॥

और वाग्भट कहते हैं कि वीर्य्यपर्य्यन्त सम्पूर्ण धातुओंका उत्कृष्ट तेज ओज कहलाताहै वह हृदयमें स्थितभी व्यापक होकर शरीर की स्थितिका कारणहै और जिसकी वृद्धिहोने से शरीर की तुष्टता पुष्टता और बलका उदय होता है–जिसके नाशहोनेसे अवश्य मृत्युहोती है स्थित रहने से मनुष्य जीताहै और जिसके द्वारा देहमें स्थित अनेक प्रकारके पदार्थ उत्साह-प्रतिभा-धैर्य्य-लावण्य और सुकुमारता यह सब उत्पन्न होते हैं-॥ १२९॥

ततःस्थूलोभागोरसो मासेन पुंसां शुक्रंस्त्रीणान्त्वार्त्तवं शुक्रञ्च भवति। उक्तं च सुश्रुते। एवं मासेन रसः शुक्रो भवति। स्त्रीणांचेति चकारात् स्त्रीणामपि शुक्रं भवति। अतएवोक्तं सुश्रुते। योषितोऽपिस्रवत्येव शुक्रंपुंसःसमागमे। तत्रगर्भस्यकिंचित्तु करोतीतिनचिन्त्यते॥ गर्भस्यशुद्धस्य विकृतस्यतु गर्भस्यकारणं तदपि भवति। (यतउक्तम्) यदानार्य्यावुपेयातां वृषस्यन्त्यौकथञ्चन। मुञ्चन्त्यौशुक्रमन्योऽन्यमनस्थिस्तत्रजायत इति॥ एतेन स्त्रीणां सप्तमो धातुरार्त्तवं शुक्रमष्टममिति बोधितम्। आशयाधिक्यवत्॥ १३०॥

इसके उपरान्त रसका स्थूलभाग महीनेभर में पुरुषोंका वीर्य्य और स्त्रियोंका रज तथा वीर्य्य होताहै और सुश्रुतने भी कहाहै कि इस प्रकार मासभर में रसवीर्य्य होजाताहै स्त्रियों के भी वीर्य्य होताहै इसीसे सुश्रुत में कहाहै कि पुरुषके संगमें स्त्रियां भी वीर्य्य को छोड़ती हैं परन्तु वह वीर्य्य गर्भका कुछभी उपकार नहीं करताहै अर्थात् इस वीर्य्य से शुद्ध गर्भ नहीं होता परन्तु विकारयुक्त गर्भका यह वीर्य्य भी कारण होताहै क्योंकि कहागयाहै कि जब काम से अत्यन्त पीड़ित दो स्त्रियां परस्पर मैथुन करती हैं तो किसी प्रकार उनदोनोंका वीर्य्यपात होताहै उस्से हड्डीरहित गर्भ उत्पन्न होता है इस्से यह प्रकट किया गयाहै कि स्त्रियोंकी सातवीं धातु रज और आठवीं वीर्य्यहै जैसे कि उनके एक आशयभी अधिकहै-॥ १३०॥

स्त्रीणांगर्भोपयोगि स्यादार्त्तवंसर्वसम्मतम्। तासामपिबलंवर्णं शुक्रंपुष्टिंकरोतिहि॥ एवंरस एव केदारकुल्यान्यायेन सर्वान् धातून् पूरयन् मासेन नवदण्डोत्तरेण शुक्रमार्त्तवं भवतीति सिद्धान्तः। एवंसति रसाद्रक्तमिति संगतमेव॥ १३१॥

स्त्रियोंका रज गर्भका उपयोगी होताहै यह सर्वसम्मतहै और उनका वीर्य्य तो बल-वर्ण तथा पुष्टताको करताहै-इस प्रकार रसही केदारकुल्या न्याय (नालियां खेतों में जाकर औषधियों को पुष्ट करती हैं इसकानाम केदारकुल्यान्यायहै) से सम्पूर्ण धातुओं को पूर्ण करताहुआ एक महीने और नौघड़ी में वीर्य्य और रज बनताहै यह सिद्धान्तहै ऐसा होने से रस से रुधिर उत्पन्न होताहै यह ठीकही है-॥ १३१॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ततोमांसन्ततोरक्तोत्पत्तेरनन्तरंमांसंजायतेरसादेवेत्यर्थः। मांसान्मेदःप्रजायतइति॥ मांसादनंतरं मेदः प्रजायते रसादेवेत्यर्थः। मेदसोऽस्थिजायतेरसादेवेत्यर्थः॥ एवं ततोमज्जाअग्रे शुद्धशुक्रं सम्भवतीत्यर्थः॥ १३२॥

रुधिर उत्पन्न होने के उपरान्त उस रसही से मांस उत्पन्न होता है फिर मांसरूप रससे मेद मेद रूप रससे अस्थि और अस्थिरूप रस से मज्जा उत्पन्न होतीहै फिर शुद्धवीर्य्य उत्पन्न होताहै॥ १३२॥

रसःशरीरेत्रिधासञ्चरति। तथाचोक्तम्। रसःशरीरेशब्दार्चिर्जलसन्तानवत्त्रिधा॥ सञ्चरत्यनुरूपोऽयंनित्यमेवहिदेहिनाम्। अस्यायमभिप्रायः। पुरुषास्तीक्ष्णाग्नयोमध्यमाग्नयोमन्दाग्नयश्चभवन्ति। तत्रतीक्ष्णाग्नीनांसरसःशब्दसन्तानवत्शीघ्रंसञ्चरति॥ मध्यमाग्नीनामर्चिःसन्तानवन्मध्यवेगेनचरतिमन्दाग्नीनांजलसंतानवन्मन्दंचरति। तेनमासेनरसाच्छुक्रंभवतीति॥ यदुक्तम्। तन्मध्यवेगेनचरति॥ मन्दाग्नीनांजलसंतानवन्मन्दंचरतितेनमासेनरसः शुक्रंभवतीतियदुक्तंतन्मध्यमाग्नीनधिकृत्योक्तम्। दीप्ताग्नीनांतुरसःकिंचिन्न्यूनेनमासेनशुक्रंभवति॥ मन्दाग्नेःकिंचिदधिकेन मासेनेतिसिद्धान्तः॥ १३३॥

रस मनुष्यों के शरीरमें तीनप्रकारसे घूमताहै और ऐसा कहाभीहै कि रस मनुष्यों के शरीर में सदैव शब्द—अग्नि की ज्वाला और जलके प्रवाहकी समान तीन प्रकारसे घूमताहै इसका यह आशयहै कि पुरुष तीक्ष्णाग्नि, मध्यमाग्नि और मन्दाग्नि होतेहैं उनमेंसे तीक्ष्णाग्निवाले पुरुषों का रस शब्दके वेगके समान शीघ्र चलताहै मध्यम अग्निवालोंका रस अग्निकी ज्वालाके समान मध्यम वेग से चलताहै और मन्दाग्निवालोंका रस जलके प्रवाहके समान मन्द २ चलताहै इस्से महीने भरमें रससे वीर्य्य होताहै यह जो कहागयाहै वह मध्यम वेगसे चलताहै— मन्दाग्निवालोंका रस जल केप्रवाहके समान धीरे धीरे चलताहै इस्से महीने में रसवीर्य्य होताहै यह जो कहागया वह मध्यम अग्निवालोंको लेकर कहागयाहै और तीक्ष्ण अग्निवालोंका रस तो कुछ कम महीने में वीर्य्य होजाताहै और मन्दाग्निवालेका रस महीने से कुछ दिन अधिक में वीर्य्य होताहै॥ १३३॥

तर्हिवाजीकरणानामौषधीनांकिंप्रयोजनमित्याह। वाजीकरिण्यऔषध्यःस्वप्रभावगुणोच्छ्रयात्॥ विरेचयन्तिताःशुक्रंविरेकिद्रव्यवन्नृणाम्। वाजीकरिण्यःयाभिरोषधीभिःपुरुषः शुक्राधिक्यात्स्त्रीषुवाजीवत्सामर्थ्यंप्राप्नोतिताःवाजीकरिण्यःस्वप्रभावगुणोच्छ्रयात्तत्रकाश्चिदौषध्यःस्वप्रभावाधिक्यात्॥ काश्चित्स्वगुणाधिक्यात्। काश्चित्स्वप्रभावगुणाधिक्यात्॥ तत्रसङ्कल्पपादलेपविशिष्टकान्तास्पर्शादयःस्वप्रभावाधिक्याच्छुक्रंविरेचयन्ति। घृतक्षीरादयःस्वगुणाधिक्यात्। स्निग्धत्वादाधिक्यान्माषादयः स्वप्रभावस्निग्धत्वादिगुणाधिक्यात्॥ १३४॥

यदि ऐसाहै तो वाजीकरण औषधियों का क्या प्रयोजन है? इसलिये कहते हैं कि वाजीकरण औषधि रेचक द्रव्यके समान मनुष्योंका वीर्य्य निकालती हैं जिन औषधियोंके द्वारा पुरुष वीर्य्य की अधिकतासे स्त्रियोंमें घोड़ेके समान सामर्थ्यको प्राप्त होताहै वह वाजीकरण कहलाती हैं उनमें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से कुछ औषधि अपने प्रभावकी अधिकतासे कुछ अपने गुणकी अधिकतासे और कुछ अपने प्रभाव और गुण दोनोंकी अधिकतासे वीर्य्यको निकालती हैं जैसे कि संकल्प (विषयोंकाध्यान) पैरोंकालेप– उत्तम स्त्रियोंका आलिङ्गन आदिक अपने प्रभावकी अधिकतासे घृत दुग्धादिक अपने गुणकी अधिकतासे और चिकनेपन आदि गुणोंके द्वारा उर्द आदिक अपने प्रभाव तथा स्निग्धता (लसीलेपन) आदि गुणोंकी अधिकता से वीर्य्यको निकालती हैं ॥ १३४ ॥

वाजीकरिण्यइतिबहुवचनमाद्यर्थानुवर्त्तनम्। बल्यंबृंहणंजीवनीयगणादयस्तद्वद्बोद्धव्याः ॥ विरेचयन्तिस्वप्रभावगुणाधिक्यात् । शीघ्रमेवरसाद्युत्पादनपूर्वकंशुक्रंजनयित्वाप्रवर्त्तयन्ति ॥ यतआह । दुग्धंमाषाश्चभल्लातःफलमज्जामलानिच ॥ जनकानिनिगद्यन्तेरेचनानिचरेतसः ॥ १३५ ॥

(वाजीकरिण्यः) इस बहुवचनान्त पदसे आदिक अर्थका ग्रहण किया जाताहै इस्से बलकारक बृंहण– जीवनीयगण आदिकभी इसी प्रकार जानने चाहिये वीर्य्य को निकालती हैं इसका यह तात्पर्य्य है कि शीघ्रही रसादिकोंकी उत्पत्तिपूर्व्वक वीर्य्यको उत्पन्न करके निकालती हैं जैसा कहा भी है कि दुग्ध–उर्द– भिलावाँ– मज्जावाले बादाम आदिक फल और आमले यह वीर्य्यके उत्पन्न करनेवाले और निकालनेवालेभी कहेजाते हैं ॥ १३५ ॥

ननुबालानांकथंशुक्रंनदृश्यतइत्याह बालानांशुक्रमस्त्येवकिन्तुसौक्ष्म्यान्नदृश्यते । पुष्पाणांमुकुलेगन्धोयथासन्नपिनाप्यते। तेषांतदेवतारुण्येपुष्टित्वाद्व्यक्तिमेतिहि। कुसुमानांप्रफुल्लानांगंधः प्रादुर्भवेद्यथा ॥ रोमराज्यादयःपुंसांनारीणामपियौवने । जायतेऽत्रचयोमेदोज्ञेयोव्याख्यानतःसच ॥ व्याख्यानंयथापुंसांरोमराजीश्मश्रुप्रभृतयः । नारीणांतुरोमराजीस्तनस्तन्यार्त्तवप्रभृतयः ॥ १३६ ॥

अब इस सन्देहका उत्तर लिखते हैं कि बालकोंके वीर्य्य क्यों नहीं उत्पन्न होताहै ॥ जैसे कि पुष्पोंकी कलीमें सुगन्ध होने पर भी सुगन्धि नहीं मालूम होती है उसीप्रकार बालकोंके वीर्य्य होता तो अवश्य है परन्तु सूक्ष्मताके कारणसे दिखाई नहीं देता और जैसे प्रफुल्लित पुष्पों की सुगन्धि प्रकट होतीहै उसी प्रकार युवावस्थामें पुष्टताके कारण वह वीर्य्य प्रकट होताहै–पुरुषों के तथा स्त्रियोंके भी युवावस्था में रोमादिक उत्पन्न होतेहैं और इनमें जो भेदहै वह व्याख्यानसे जानना चाहिये जैसे कि पुरुषोंके रोम तथा डाढ़ी मूछ आदि होते हैं और स्त्रियोंके रोम स्तन दुग्ध और रजादिक होतेहैं ॥ १३६ ॥

ननु,अन्नरसोवृद्धस्यधातुवृद्धिंकथं न करोतीत्याह। वार्द्धकेवर्द्धमानेनवायुनारसशोषणात् ॥ नतथाधातुवृद्धिःस्यात्ततस्तत्रानिलंजयेत् ॥ १३७॥

अब यह सन्देह कियाजासक्ताहै कि वृद्धोंके धातुओंकी वृद्धि क्यों नहीं होती ? इसका उत्तर कहतेहैं ॥ वृद्धावस्थामें बढ़ा हुआ वायु आहारके रसको सुखा देताहै इसी से धातु की वृद्धि नहीं होती इसकारण उस अवस्था में वायुकी नाशक औषधी सेवनकरनी चाहिये ॥ १३७ ॥

अथ शुक्रस्यस्वरूपमाह ॥

शुक्रंसौम्यंसितंस्निग्धंबलपुष्टिकरंस्मृतम्।गर्भवीजंवपुःसारोजीवस्याश्रयउत्तमः १३८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अब वीर्य्य का स्वरूप कहतेहैं ॥

वीर्य्य सोमात्मक श्वेतवर्ण-चिकना-बलपुष्टि का करनेवाला-गर्भकाबीज-शरीर का सारांश और जीव का उत्तम स्थान कहागयाहै ॥ १३८ ॥

जीवस्याश्रयउत्तमइतिआह । जीवोवसतिसर्वस्मिन्देहेतत्रविशेषतः ॥ वीर्य्येरक्ते मलेयस्मिन्क्षीणेयातिक्षयंक्षणात् ॥ १३९ ॥

अबजीवका उत्तमस्थानहै इसके विषयमें कहते हैं ॥

जीवसंपूर्ण शरीरमें रहताहै परन्तु वीर्य्य-रुधिर और मलमें विशेष करके रहताहै क्योंकि जिनके क्षीणहोनेसे जीव क्षणभरमें नाशको प्राप्त होताहै ॥ १३९ ॥

अथ गर्भसञ्जननशुक्रस्यलक्षणमाह ॥

स्फटिकाभंद्रवंस्निग्धंमधुरंमधुगन्धिच॥शुक्रमिच्छंतिकेचित्तुतैलक्षौद्रनिभंचतत्॥१४०॥

अब गर्भकेउत्पन्नकरनेवाले वीर्य्यका लक्षण कहते हैं ॥

स्फटिकके समान निर्मलवर्णवाला द्रव-सचिक्कण मधुर सहतके समान गन्धवाला वीर्य्य शुद्ध होताहै और. कोई ऐसा कहते हैं कि तेल अथवा सहतके समान वीर्य्य गर्भका उत्पन्न करनेवाला होताहै ॥ १४० ॥

अथ शुक्रस्य स्थानमाह ॥

यथापयसिसर्पिस्तुगूढश्चेक्षुरसोयथा । एवंहिसकलेकायेशुक्रंतिष्ठतिदेहिनाम् ॥ अत्र सर्पिर्दृष्टान्तोबहुशुक्रेऽल्पमथनेनसर्पिःशुक्रयोर्लाभात्। इक्षुरसदृष्टान्तस्तुस्वल्पशुक्रे पुंसिअतिपीडनेक्षुरसस्यशुक्रयोर्लाभात् ॥ १४१ ॥

अब वीर्य्यका स्थान कहतेहैं ॥

जैसे दूधमें घृत और ऊखमें रस छिपाहुआ रहताहै उसीप्रकार मनुष्यों के संपूर्ण शरीरमें वीर्य्य रहताहै यहां घृतका दृष्टान्त बहुत वीर्य्यवाले पुरुष के लिये दियागयाहै जैसे थोडेही मथनेसे घृत प्राप्त होताहै उसी प्रकार बहुत वीर्य्यवाले पुरुषके वीर्य्य शीघ्र निकलताहै और ऊखका दृष्टान्त थोडे वीर्य्यवाले के लियेहै क्योंकि जैसे ऊखका रस बहुत दबाने से निकलताहै उसी प्रकार थोडे वीर्य्य वाले पुरुषके वीर्य्य देरमें निकलताहै ॥ १४१ ॥

अथ शुक्रस्यक्षरणमार्गमाह ॥

द्व्यंगुलेदक्षिणेपार्श्वेवस्तिद्वारस्यचाप्यधः । मूत्रस्रोतःपथेशुक्रंपुरुषस्यप्रवर्त्तते । वृद्धवाग्भटोऽप्याह ॥ सप्तमीशुक्रधराद्व्यंगुलेदक्षिणेपार्श्वेवस्तिद्वारस्यचाप्यधोमूत्रमार्गमाश्रिता सकलशरीरव्यापिनीशुक्रंप्रवर्त्तयतीति ॥ सप्तमीकला ॥ १४२ ॥

अब वीर्य्य के निकलनेका मार्ग कहते हैं ॥

वस्ति द्वार के नीचे दाहिनी ओर दो अंगुलकी मूत्र नाली के मार्ग से पुरुषका वीर्य्य निकलताहै और वृद्धवाग्भटने भी कहाहै कि मूत्राशयके द्वारके नीचे दाहिनी ओर दोउंगलपर मूत्रके मार्ग का आश्रय करनेवाली संपूर्ण शरीरमें व्याप्त वीर्य के धारण करनेवाली सातवीं कला वीर्य्य को निकालती है ॥ १४२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ शुक्रक्षरणकारणमाह ॥

कृत्स्नदेहस्थितंशुक्रंप्रसन्नमनसस्तथा। स्त्रीषुव्यायच्छतश्चापिहर्षात्तत्सम्प्रवर्त्तते॥ स्त्रीषुव्यायच्छतःस्त्रीषुरतरूपंव्यायामंकुर्वतः । अन्यच्च ॥ शुक्रंकामेनकामिन्यादर्शनात् स्पर्शनादपि। शब्दसंश्रवणाद्ध्यानात्संयोगाच्चप्रवर्त्तते ॥ १४३ ॥

अब वीर्य्य के निकलने का कारण कहते हैं ॥

प्रसन्न मन और स्त्रियों के साथ संभोगरूपी व्यायाम करनेवाले पुरुषके संपूर्ण शरीरमें रहनेवाला वीर्य्य हर्षसे निकलताहै और भी कहागया है कि कामदेवसे पीडित होकर स्त्रीके देखनेसे आलिङ्गन करनेसे-शब्द सुननेसे-ध्यान करने से और संयोग से वीर्य्य निकलताहै ॥ १४३ ॥

अथार्त्तवस्यस्वरूपमाह ॥

स्त्रीणांरसएवमासेनार्त्तवंभवतीत्युक्त्वापुनराहशुक्रतएव। रसादेवरजःस्त्रीणांमासिमासित्र्यहंस्रवेत् ॥ तद्वर्षाद्द्वादशादूर्ध्वंयातिपञ्चाशतःक्षयम् । मासेनोपचितंकालेधमनीभ्यस्तदार्त्तवम् ॥ ईषद्विवर्णंकृष्णञ्चवायुर्योनिमुखंनयेत् ॥ १४४ ॥

अब रजका स्वरूप कहतेहैं ॥

स्त्रियोंका रसही महीनेमें रज होजाताहै यह कहकर फिर कहतेहैं कि रज वीर्य्यसेही उत्पन्न होता है स्त्रियोंके रससेही उत्पन्न हुआ रज प्रतिमास तीन दिनतक बहताहै वह बारहवर्ष से प्रवृत्त होकर पचास वर्षमें नाशको प्राप्त होताहै और महीने भरमें इकट्ठे हुए कुछ विकृति वर्ण और कुछ कृष्ण वर्णवाले उस रजको समयमें वायु नाडियोंके द्वारा योनिके मुखमें लाताहै ॥ १४४ ॥

गर्भग्रहणयोग्यस्यार्त्तवस्यलक्षणमाह ॥

शशासृक्प्रतिमंयच्चयद्वालाक्षारसोपमम् । तदार्त्तवंप्रशंसन्तियद्वासोनविरञ्जयेत् ॥ आर्त्तवस्यवर्णद्वयाभिधानम् । वातादिप्रकृतिभेदेनवर्णभेदात् ॥ यद्वासोनविरञ्जयेत् । यद्वासोलग्नंप्रक्षालितंतद्वासस्त्यजतिनतुविकृतरक्तंकुर्यात् । ऋतुस्त्रीणांरजोदर्शनात् षोडशनिशाः तत्रभवमार्त्तवंगृहीतगर्भाणां स्त्रीणामार्त्तववहानांस्रोतसांगर्भेणावरोधादार्त्तवंनस्रवति ॥ किन्तुतदेवाधःप्रतिहतमूर्ध्वमागतमुपचीयमानमपराभवति । अपरातुश्रीवरइतिलोके ॥ शेषंचोर्ध्वतरमागतंपयोधरोयातितस्माद्गर्भिण्याःपीवरपयोधराभवन्ति ॥ १४५ ॥

अब गर्भग्रहण करनेके योग्य रजका लक्षण कहतेहैं ॥

जो रज खरगोशके रुधिरके समान अथवा लाखके रसके समान और जो वस्त्रमें लगाहुआ धोने से छुटजाय वह रज गर्भधारण करने के योग्य होताहै यहां रजके दो वर्ण इसलिये कहेगये हैं कि वातादि प्रकृतियोंके भेदसे वर्णोंका भी भेद होताहै स्त्रियोंके रजोदर्शन के प्रथम दिनसे सोलहरात्रि पर्य्यन्त ऋतु कहलातीहै उस ऋतुकालमें जो उत्पन्न होताहै (रुधिर उत्पन्न होताहै) वह आर्त्तव कहलाताहै गर्भवती स्त्रियोंकी रजके बहानेवाली नाडियोंका गर्भके द्वारा अवरोध होनेसे रज नहीं बहताहै किन्तु वही नीचेसे रुकाहुआ ऊपर आकर इकट्ठा होके जरायु (गर्भाशय) होजाताहै और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शेष अधिक ऊपर आया हुआ स्तनोंमें प्राप्त होताहै इसीसे गर्भिणीस्त्रीके स्तन बडेहोजातेहैं॥ १४५॥

अथ धातुष्वतिरिक्तानूगुणानाह ॥

अतिरिक्तागुणारक्तेवह्नेर्मांसेतुपार्थिवाः । मेदस्यपांभुवस्त्वस्थ्निपृथिव्यनिलतेजसाम् ॥ मज्ज्ञिशुक्रेचसोमस्यमूत्रेचशिखिनोगुणाः। भुवस्तथार्त्तवेत्वग्नेरसेक्षीरे तथाम्भसः॥ १४६॥

अब धातुओं के पृथक् २ गुण कहतेहैं ॥

रुधिरमें २ अग्निके १ मांसमें २ पृथ्वीके १ मेदमें २ जल २ और पृथ्वी के १ हड्डीमें २ पृथ्वी वायु और तेजके १ मज्जा और वीर्य्य में २ सोमके १ मूत्रमें २ अग्निके १ रजमें २ पृथ्वी और अग्निके १ और रस तथा दुग्ध में २ जलके १ गुण अधिक हैं॥ १४६ ॥

अथ धातूनांमलाः॥

कफःपित्तंमलःखेषुप्रस्वेदोनखलोमच । नेत्रविट्चत्वचःस्नेहोधातूनांक्रमशोमलाः ॥ नेत्रजिह्वाकपोलानांजलञ्चरसजंमलमित्येके ॥ कर्णादिश्रोतःसुमलःरसनादन्तकक्षामेढ्रादिमलमपिमेदोमलमित्येके । नेत्रविट्त्वचांस्नेहश्चमज्जामलः शुक्रस्यमलमेवनास्ति सहस्रधाध्मातसुवर्णस्येव ॥ १४७॥

अब धातुओं के मल कहते हैं ॥

कफ, पित्त, कान आदिक छिद्रोंका मैल, स्वेद नख, रोम, नेत्रका मल और त्वचा का चिकनापन यह क्रमसे रसादि धातुओं के मलहैं—कोई आचार्य्य ऐसा कहते हैं कि नेत्र जिह्वा और कपोलों का जल रसका मलहै और कोई यह भी कहते हैं कि जिह्वा दांत बगल और लिङ्गादिकों का मल भी मेदका मलहै नेत्रका मैल और त्वचा का चिकनापन मज्जाका मैल है और हजारबार तपाये हुये सुवर्ण के समान वीर्य्य में मल नहीं होता है ॥ १४७ ॥

अथोपधातवः॥

वनितानांप्रसूतानांधमनीभ्यांस्तनौगतात् । रसादेवहिजायेतस्तन्यंस्तनयुगाशयम् ॥ शुद्धमांसस्ययःस्नेहःसावसापरिकीर्त्तिता । मेदसःस्रवमाणस्यस्नेहोवाकथितःवसा ॥ शार्ङ्गधरेतु ॥ स्तन्यंरजोवसास्वेदोदन्ताःकेशास्तथैवच । ओजश्चसप्तधातूनांक्रमात्सप्तोपधातवः॥ १४८॥

अब उपधातुओंका वर्णन करते हैं ॥

प्रसूता स्त्रियों के नाडियों के द्वारा स्तनों में लायेगये रससे दोनों स्तनों में रहनेवाला दुग्ध उत्पन्न होताहै और शुद्ध मांसका स्नेह वसा कहलाताहै अथवा बहतेहुए मेदका स्नेह वसा कहलाताहै और शार्ङ्गधरमें तो ऐसा कहागया है कि स्तनोंसे उत्पन्नहुआ दूध रज वसा स्वेद दन्तकेश और ओज यह सातों क्रमसे रसादि सातों धातुओं के उपधातु हैं॥ १४८ ॥

अथाशयाः॥

उरोरक्ताशयस्तस्मादधःश्लेष्माशयःस्मृतः। आमाशयस्तुतदधस्तत्त्रिकञ्चरकोऽवदत् ॥ तद्यथा ॥ नाभिस्तनान्तरेजन्तोराहुरामाशयंबुधाइति । आमाशयादधःपक्वाशयादू

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ध्वन्तुयाकला ॥ ग्रहणीनामकासैवकथितःपाचकाशयः । ऊर्ध्वमग्न्याशयोनाभेर्मध्यभागेऽव्यवस्थिता ॥ तस्योपरितिलंज्ञेयंतदधःपवनाशयः । पक्वाशयस्तुतदधःसएवतुमलाशयः ॥ तदधःकथितोवस्तिःसहिमूत्राशयोमतः ॥ १४९ ॥

अब आशयों का वर्णन करते हैं ॥

छाती रक्ताशयहै उसके नीचे श्लेष्माशयहै उसके नीचे आमाशयहै और उसका लक्षण चरकमुनि ने कहाहै प्राणियों के नाभि और स्तनों के बीच में आमाशय कहागया है आमाशय के नीचे और पक्वाशय के ऊपर ग्रहणी नाम जो कला कही गई है वही पाचकाशय है नाभिके ऊपर वामभाग में अग्न्याशयहै उसके ऊपर तिलहै और तिलके नीचे पवनाशय उसके नीचे पक्वाशयहै वही मलाशय कहाताहै उसके नीचे वस्तिहै और उसीको मूत्राशय कहते हैं ॥ १४९ ॥

आशयानुक्रमस्तुवाग्भटेनोक्तःसयथा ॥

कफाऽऽमपित्तवातानामाशयामलमूत्रयोः।पुरुषेभ्योऽधिकाश्चान्येनारीणामाशयास्त्रयः॥ धरागर्भाशयःप्रोक्तःपित्तपक्वाशयान्तरे। स्तनौप्रवृद्धौतावेवबुधैस्तन्याशयौमतौ॥१५०॥

अब वाग्भटके कहेहुए आशयों के क्रम कहते हैं ॥

कफ, आम, पित्त, वात, मल और मूत्र इनके आशय क्रमसे एक २ के नीचे स्थितहैं–स्त्रियों के पुरुषों से विशेष तीन आशय और होते हैं वह यहहैं कि पित्ताशय और पक्वाशयके बीचमें धरानाम गर्भाशयहै और बढ़ेहुए दोनों स्तनोंको पण्डितलोग दो स्तन्याशय अर्थात् दुग्धाशय कहते हैं ॥ १५० ॥

अथ कलास्वरूपमाह ॥

स्नायुभिश्चप्रतिच्छन्नान्सन्ततांश्चजरायुणा । श्लेष्मणावेष्टितांश्चापिकलाभागांस्तुतान्विदुः ॥ धात्वाशयान्तरेधातोर्यःक्लेदस्त्वधितिष्ठति । देहोष्मणाभिपक्वश्चसाकलेत्यभिधीयते ॥ १५१ ॥

अब कलाओंका स्वरूप कहते हैं ॥

स्नायु के द्वारा आच्छादित गर्भाशय से व्याप्त श्लेष्मा से वेष्टित शरीर के भाग कला कहलाते हैं, धात्वाशयके बीचमें देहकी ऊष्मासे पकाहुआ जो धातुका मल रहताहै वह कला कहाजाताहै१५१॥

ताःसप्त ॥ आद्यामांसधराप्रोक्ताद्वितीयारक्तधारिणी । मेदोधरातृतीयातुचतुर्थीश्लेष्मधारिणी ॥ पञ्चमीतुमलंधत्तेषष्ठीपित्तधरामता । रेतोधरासप्तमीस्यादितिसप्तकलाःस्मृताः ॥ १५२ ॥

वह कला सातहैं पहली मांसकी धारणकरनेवाली, दूसरी रुधिर की धारणकरनेवाली, तीसरी मेद की धारणकरनेवाली, चौथी श्लेष्मा की धारणकरनेवाली, पांचवीं मलकी धारणकरनेवाली छठी पित्तकीधारणकरनेवाली और सातवीं बीजकी धारणकरनेवाली कही गई है १५२ ॥

अथ मर्म्माणि ॥

सन्निपातःशिरास्नायुसन्धिमांसास्थिसम्भवः । मर्म्माणितेषुतिष्ठन्ति प्राणाःखलुविशेषतः ॥ सप्तोत्तरशतंसंति देहेमर्म्माणिदेहिनाम् । तान्येकादशमांसेस्युरष्टावस्थिषु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सन्तिहि॥ संधीनांविंशातिस्तानि स्नायूनांसप्तविंशतिः। चत्वारिंशत्तथैकञ्च शिरामर्म्मा णितत्रतु॥ द्वाविंशतिःसंक्थियुगे तावन्त्येवभुजद्वये। द्वादशोरसिकुक्षौ च पृष्ठदेशेचतुर्दश॥ ग्रीवायामूर्ध्वभागेतु सप्तत्रिंशच्चतानिहि। शरीरेतानिमर्म्माणि पञ्चधा च भवन्तितु॥ (तान्याह) सद्यःप्राणहराणिस्युर्मर्म्माण्येकोनविंशतिः। मर्म्मदेशास्त्रयस्त्रिंशत् स्युःकालांतरमारकाः॥ चत्वारिंशच्चचत्वारि वैकल्यंजनयन्तिहि। मर्म्माष्टकंरुजाकारि विशल्यघ्नंत्रिकंमतम्॥ १५३॥

अब मर्मोंका वर्णन करते हैं॥

शिरा–स्नायु–सन्धि–मांस और अस्थि इनके एकस्थानपर मिलनेको मर्म कहते हैं इन में विशेष करके प्राण रहताहै (अब उनकी संख्या कहते हैं) प्राणियों के शरीर में एकसौ सात १०७ मर्म हैं वह मांसमें ११ हड्डियों में ८ सन्धियों में २० स्नायुमें २७ शिराओंमें ४१ इस क्रमसे १०७ हुये और यही १०७ मर्म सब देहमें इस क्रम से हैं कि दोनों जङ्घाओं में २२ दोनों भुजाओं में २२ हृदय और कोखमें १२ पीठमें १४ और ग्रीवाके ऊर्ध्वभागमें ३७ और शरीरमें यह मर्म पांच प्रकार से रहतेहैं शीघ्रही प्राणके नाशक १९ कालान्तरमें मारनेवाले ३३ विकलता करनेवाले ४४ रोग के उत्पन्न करनेवाले ८ और विशल्यघ्न (कांटेआदि के निकालने से मारने वाले) हैं॥ १५३॥

शृङ्गाटकान्यधिपतिः शङ्खौकण्ठशिरागुदम्। हृदयंवस्तिनाभीच सद्योघ्नन्तिहतानिचेत्॥ १५४॥

अब शीघ्र प्राणके नाशकरनेवाले मर्मोंका वर्णन करते हैं॥

शृङ्गाटक, अधिपति, शङ्ख, कण्ठ, शिरा, गुदा, हृदय, वस्ति और नाभि इन मर्मों में चोट लगने से शीघ्र प्राण निकल जाते हैं॥ १५४॥

शृङ्गाटकानि॥

घ्राणश्रोतोक्षिजिह्वा सन्तर्पकाणां शिरामुखानां शिरसो मध्ये संयोगस्थानन्तानि चत्वारि शिरामर्म्माणिचतुरंगुलप्रमाणानिहतानि घ्नन्तिसद्योमारकाणिभवन्ति॥ १५५॥

शृङ्गाटक का वर्णन॥

नासिका, कर्ण, नेत्र, जिह्वा इनके तृप्तकरनेवाली नाड़ियों का शिरके मध्य में जो संयोग का स्थानहै उसमें चार अंगुल के प्रमाण चार नाड़ियों के मर्मोंको शृङ्गाटक कहते हैं वह शीघ्र प्राण के नाश करनेवाले होते हैं॥ १५५॥

अधिपतिर्मस्तकस्याभ्यन्तरे सन्धिशिरसोः सन्निपातः उपरिष्टाद्रोमावर्त्तः सएकः संधि मर्म्मेदमर्द्धांगुलप्रमाणं सद्योमारकम्॥ १५६॥

अधिपति का वर्णन॥

मस्तक के भीतर नाड़ियोंकी जो सन्धि जिसके ऊपर रोमावर्त्त होताहै वह आधे अंगुलका सन्धि मर्म अधिपति कहलाताहै इसमें चोट लगने से शीघ्रही प्राण निकलते हैं॥ १५६॥

शङ्खाभ्रुवोरधोपरिकर्णललाटमध्ये तौद्वौ अस्थिमर्मणी सार्द्धांगुलेमारके॥ १५७॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शङ्खका वर्णन ॥

भृकुटियों के अन्तके ऊपर कान और मस्तकके ऊपर डेढ़ अंगुलके दो अस्थिमर्म हैं उनमें चोट लगने से शीघ्रही प्राण निकलते हैं ॥ १५७ ॥

कण्ठशिरामातृकाः ग्रीवायामुभयपार्श्वयोश्चतस्रः शिरास्ता अष्टौशिरा मर्म्माणि चतुरंगुलानि सद्यो मारकाणि ॥ १५८ ॥

अब कण्ठका वर्णन करते हैं ॥

ग्रीवाके दोनोंओर चार २ नाड़ियां कण्ठशिरा या शिरामातृका कहलाती हैं चारअंगुलके प्रमाण यह आठशिरामर्म हैं इनमें चोट लगनेसे शीघ्रही प्राण निकलते हैं ॥ १५८ ॥

गुदम्प्रसिद्धं। वातवर्चो निरसनं स्थूलान्त्रप्रतिबद्धं गुदंनाम ॥ एकम्मांसमर्म्म चतुरंगुलं सद्यो मारकम् ॥ १५९ ॥

गुदाके मर्मका वर्णन ॥

वायु और मलकी निकालनेवाली मोटी आंतों से बँधीहुई गुदा तो प्रसिद्धहै वह चारअंगुल के प्रमाण मांसका एक मर्म है इसमें चोट लगने से शीघ्रही प्राण निकलते हैं ॥ १५९ ॥

स्तनयोर्मध्यमधिष्ठायोरस्यामाशयद्वारं सत्त्वरजस्तमसामधिष्ठानं हृदयं नाम शिरामर्म्मचतुरंगुलं सद्यो मारकम् ॥ १६० ॥

हृदय के मर्म का वर्णन ॥

दोनोस्तनोंका मध्य आमाशयका द्वार सत्त्व रज और तमोगुणका स्थान हृदयहै वह चारअंगुलके प्रमाणका चोटलगनेसे शीघ्रही प्राणोंका नाशकरनेवाला शिराओंका एक मर्म है ॥ १६० ॥

वस्तिर्नाभिःपृष्ठकटी गुदवङ्क्षणशेफसाम् । मध्येवस्तितनुत्वक्च एकद्वारोह्यधोमुखः । स्नायुमर्मेदञ्चतुरंगुलं सद्यो मारकम् १६१ ॥

वस्तिके मर्मका वर्णन ॥

नाभि पीठ कटि गुदा वङ्क्षण और लिङ्ग इनके मध्यमें सूक्ष्म त्वचावाली एकद्वारवाली अधोमुख वस्ति नामहै यह चार अंगुलके प्रमाणका चोटलगनेसे शीघ्रही प्राणका नाशकरने वाला स्नायु का एकमर्म है ॥ १६१ ॥

नाभिः प्रसिद्धा पक्वामाशयोर्मध्ये शिराप्रभवा नाभिर्नाम शिरा मर्म्मेदंचतुरंगुलं सद्यो मारकम् ॥ १६२ ॥

नाभिके मर्मका वर्णन ॥

पक्वाशय और आमाशयके मध्यमें शिराओंसे उत्पन्न नाभि नामसे प्रसिद्ध चारअंगुल के प्रमाण का चोटलगने से शीघ्रही प्राणका नाशकरनेवाला शिराओंका एक मर्म है ॥ १६२ ॥

वक्षोमर्म्माणिसीमन्तस्तलक्षिप्रेन्द्रवस्तयः । वृहत्यौपार्श्वयोःसंधी कटीकतरुणेच ये ॥ नितम्बावितिचैतानि कालन्तरहराणितु ॥ १६३ ॥

अब कालान्तर में मारनेवाले मर्मों का वर्णन करते हैं ॥

वक्षमर्म सीमन्त तल क्षिप्र इन्द्रवस्ति वृहती पार्श्वसन्धि कटीक तरुण नितम्ब यह कालान्तरमें प्राणोंके नाशकरनेवाले मर्म हैं ॥ १६३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वक्षोमर्म्माणि ॥

स्तनमूलेस्तनरोहितापलापापस्तम्भाः। उरसःस्तनमूलस्य नरोहिस्तनराहिते॥ १६४॥

अब वक्षमर्मोंके नाम कहते हैं॥

स्तनमूल, स्तनरोहित, अपलाप और अपस्तम्भ यह वक्षमर्म हैं॥ १६४॥

स्तनयोरधरस्ताद्द्व्यंगुलमुभयतः स्तनमूले नाम शिरामर्म्मणी द्व्यंगुले कफ पूर्णकोष्ठतयाकासश्वासाभ्यांचकालान्तरमारके॥ १६५॥

स्तनमूलका वर्णन॥

स्तनों के नीचे दोनों ओर दो अंगुल प्रमाणवाले दो शिरामर्म हैं वह चोटलगनेसे कफ से परिपूर्ण होनेके कारण कास और श्वास के द्वारा कालान्तरमें प्राणोंको हरते हैं॥ १६५॥

स्तनयोरुपर्य्युभयतो द्व्यंगुलं यावत्। स्तनरोहिते नाम द्वे मांसमर्म्मणी रक्तपूरितकोष्ठतया कालान्तरमारके॥ १६६॥

स्तनरोहित का वर्णन॥

स्तनों के ऊपर दो अंगुलपर्य्यन्त स्तनरोहित नामवाले दो मांसके मर्म रुधिरसे पूर्ण होनेके कारण चोटलगनेसे कालान्तरमें प्राणोंको हरते हैं॥ १६६॥

अपलापौ अंसकूटयोरधस्तात् पार्श्वयोरुपरि द्वेशिरामर्म्मणी। अर्द्धांगुलेरक्तेन पूयतांगतेन कालान्तरमारके॥ १६७॥

अपलापीका वर्णन॥

कन्धों के नीचे और पसलियों के ऊपर अर्द्धअंगुलके प्रमाणवाले दो शिराओं के मर्म चोटलगनेसे रुधिर के पीपहोजाने पर कालान्तरमें प्राणोंको हरते हैं॥ १६७॥

अपस्तम्भौ उरस उभयोर्नाड्योः वातवहे शिरामर्मणी। अर्द्धांगुले वातपूर्णकोष्ठतया कासश्वासाभ्यांच कालान्तरमारके॥ १६८॥

अपस्तम्भका वर्णन॥

छाती के दोनों ओर नाडियों में वायुके ले चलनेवाले अपस्तम्भ नाम अर्द्धांगुल प्रमाणवाले दो शिराओं के मर्म हैं वह वायुके द्वारा भरेरहने के कारण चोटलगने से खांसी और श्वासके द्वारा कालान्तरमें प्राणोंको हरते हैं॥ १६८॥

सीमन्ताः शिरसि पञ्च संधयः संधिमर्माणि चतुरंगुलानि। उन्मादभयचित्तविनाशैः कालान्तरमारकाणि॥ १६९॥

सीमन्तमर्मका वर्णन॥

शिरकी पांच सन्धियों में चार अंगुल प्रमाणवाले पांच संधियोंके मर्म हैं वह चोट लगनेसे उन्माद भय और चित्तके बिगडजाने के द्वारा कालान्तर में प्राणोंको हरते हैं॥ १६९॥

तलानि मध्यांगुलिमनुक्रम्य हस्तस्य मध्यन्तलमेवमपरस्य हस्तस्य। पादयोश्चत्वारि तलानि मांसमर्माणि द्व्यंगुलानि रुजाभिः कालान्तरमारकाणि॥ १७०॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तलमर्मका वर्णन ॥

बीचकी उंगलीसे लेकर दोनों हाथ और दोनों पैरोंके तलुओं में दो अंगुलके प्रमाणवाले तल नाम मांसके चार मर्म चोट लगनेसे रोगोंके द्वारा कालान्तरमें प्राणोंको हरते हैं ॥ १७० ॥

क्षिप्राण्यङ्गुष्ठांगुल्योर्मध्यंक्षिप्रम् । तच्चहस्तद्वयोर्द्वेतथापादयोः एवंचत्वारिस्नायुमर्माण्यर्द्धांगुलान्याक्षेपकेणकालान्तरमारकाणि ॥ १७१ ॥

क्षिप्रमर्मका वर्णन ॥

अंगूठे और उसके पासकी तर्जनी नाम उंगलीके बीचको क्षिप्र कहतेहैं दोनों हाथ और पैरों के क्षिप्रोंमें आधेअंगुलके प्रमाणवाले स्नायुके चार मर्म चोट लगने से आक्षेप (रोगविशेष) कालान्तरमें प्राणोंको हरते हैं ॥ १७१ ॥

इन्द्रवस्तयःप्रकोष्ठयोर्मध्येद्वौजङ्घयोर्मध्येद्वौ। एवंचत्वारिमांसमर्माणिद्व्यंगुलानिशोणितक्षयेणकालान्तरमारकाः ॥ १७२ ॥

इन्द्रवस्तिमर्मका वर्णन ॥

दोनों पहुंचे और दोनों पिंडलियोंमें दो अंगुलके प्रमाणवाले मांसके चार मर्म चोट लगनेसे रुधिरके नाशके द्वारा कालान्तरमें प्राणोंको हरते हैं ॥ १७२ ॥

बृहत्यौ। स्तनमूलादुभयतःसपृष्ठवंशंयावत् । शिरामर्मणी । अर्द्धांगुलेशोणितातिप्रवृत्तैरुपद्रवैःकालान्तरमारके ॥ १७३ ॥

बृहतीमर्मका वर्णन ॥

स्तनोंके मूलसे दोनों ओर पीठकी रीढ़तक आधे अंगुलके प्रमाणवाले शिराओंके दो मर्म चोटलगने से रुधिर के बहुत निकलजाने के कारण कालान्तरमें प्राणोंको हरते हैं ॥ १७३ ॥

पार्श्वसंधीजघनपार्श्वयोः संधीशिरामर्मण्यर्द्धांगुले शोणितपूर्णकोष्ठतयाकालान्तरमारके ॥ १७४ ॥

पार्श्वसन्धिमर्मका वर्णन॥

जङ्घा और पसलियोंकी सन्धिमें आधे अंगुलके प्रमाणवाले शिराओंके दो मर्म रुधिरसे भरे रहने के कारण चोट लगने से कालान्तरमें प्राणोंको हरते हैं ॥ १७४ ॥

कटीकतरुणेत्रिकसन्निधानेउभयतः श्रोणिकाण्डेलक्षीकृत्यास्थिस्थितेअस्थिमर्मणी अर्द्धांगुलेशोणितक्षयात्पाण्डुविवर्णरूपंकृत्वाकालान्तरमारके ॥ १७५ ॥

कटीकतरुणनाममर्मोंकावर्णन ॥

त्रिक (रीढ़केनीचेकीतीनहड्डी) के निकट दोनों ओर नितम्बोंमें हड्डियोंके बीच में रहनेवाले आधे अंगुलके प्रमाणवाले कटीकतरुणनाम हड्डियों के दो मर्म चोट लगनेसे रुधिरके नाशहोने के कारण पांडु और विकारयुक्त रूपको धारण करके कालान्तर में प्राणोंको हरतेहैं ॥ १७५ ॥

नितम्बौप्रसिद्धौद्वावुभयतःश्रोणीकाण्डयोरुपर्य्याशयाच्छादनौपार्श्वान्तरप्रतिबद्धौनितम्बौनामअस्थिमर्मण्यर्द्धांगुलावधःकायशोषेणदौर्बल्येनचकालान्तरमारकौ ॥ १७६ ॥

नितम्बमर्मका वर्णन ॥

नितम्ब प्रसिद्धहैं उनके दोनों ओर ऊपर आशयके आच्छादन करनेवाले पसलियों में बँधेहुये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नितम्बनाम आधे अंगुल के प्रमाणवाले हड्डियों के दोमर्म चोटलगने से शरीर के सूखजाने के कारण उत्पन्न हुई दुर्बलता के द्वारा कालान्तर में प्राणों को हरते हैं ॥ १७६ ॥

लोहिताक्षाणिजानूर्वीकूर्चाविटपकूर्पराः । कुकुन्दरेकक्षधरेविधुरेसकृकाटिके ॥ अंसांसफलकापाङ्गौनीलेमन्येफणेतथा ॥ १७७ ॥

व्याकुल करनेवाले मर्मोंका वर्णन ॥

लोहिताक्ष, आणि, जानु, ऊर्व्वी, कूर्च, विटप, कूर्पर, कुकुन्दर, कक्षधर, विधुर, सकृकाटिक, अंस, अंसफलक, अपांग, नील, मन्य, हनु और आवर्त्त इन सम्पूर्ण मर्मों में चोटलगने से विकलता उत्पन्न होती है ॥ १७७ ॥

वैकल्यकरणान्याहुरावर्त्तौद्वौतथैवच । ऊर्व्वोरूर्ध्वमधोवङ्क्षणसन्धेर्लोहिताक्षंतच्चद्वे बाह्वोर्द्वेऊर्वोरेवन्तानिचत्वारिशिरामर्म्माण्यर्द्धांगुलानिवैकल्यकराणि ॥ तत्रशोणितक्षये नपक्षघातःसक्थिसादोवा ॥ १७८ ॥

लोहिताक्षमर्मों का वर्णन ॥

जङ्घाओंके ऊपर और वङ्क्षण सन्धिके नीचे तथा दोनों भुजाओं के मूल में लोहिताक्षनाम आधे अंगुल के प्रमाणवाले शिराओं के चार मर्म विकलता के करनेवाले हैं इनमें चोटलगने से रुधिर के नाश होनेके कारण पक्षाघात अथवा जङ्घाओं में पीड़ा होती है ॥ १७८ ॥

आण्यन्यः । जानुनःऊर्ध्वमुभयोःपार्श्वयोस्त्र्यंगुलाएकस्मिन्जानुनिद्वेअपरस्मिन्द्वेएवं चतस्रःस्नायुमर्माण्यर्द्धांगुलानिवैकल्यकराणितत्रशोथाभिवृद्धिःसक्थिस्तम्भश्च १७९

आणि नाम मर्मों का वर्णन ॥

दोनों घुटनोंके तीनअंगुल ऊपर दोनों ओर आधे अंगुलके प्रमाणवाले स्नायु के आणिनाम चार मर्म विकलता के उत्पन्न करनेवाले हैं उनमें चोट के लगने से शोथकी वृद्धि और जङ्घाओं में स्तम्भ (जकड़ना) होताहै ॥ १७९ ॥

जानुजङ्घयोःसंधौसंधिमर्मणीद्वयंगुलेवैकल्यकरेतत्रखञ्जता ॥ १८० ॥

जानुमर्म का वर्णन ॥

पिंडली और जङ्घाओंकी सन्धि में दो अंगुल के प्रमाणवाले जानुनाम सन्धियों के दो मर्म विकलताके उत्पन्न करनेवाले होते हैं उनमें चोट लगने से मनुष्य लँगड़ा होजाताहै ॥ १८० ॥

ऊर्व्व्यौद्वेऊर्व्वोर्मध्येद्वेप्रगण्डयोर्मध्येद्वेएवंचतस्रः शिरामर्माणिएकांगुल्यःवैकल्यकर्यस्तत्रशोणितक्षयात्सक्थिशोषः ॥ १८१ ॥

ऊर्व्विनाम मर्मोंका वर्णन ॥

जङ्घाओं में दो और भुजदण्डों में दो इसप्रकार शिराओं के एक अंगुलके प्रमाणवाले ऊर्व्विनाम चार मर्म विकलताके करनेवाले होते हैं इनमें चोटलगने से रुधिरके नाशके द्वारा जङ्घा और भुजा सूख जाती हैं ॥ १८१ ॥

कूर्चाःपादयोरंगुष्ठांगुल्योर्मध्येतयोरूर्ध्वमधश्चएवंचत्वारिस्नायुमर्म्माणिवैकल्यकराणितत्रपादयोर्भ्रमणवेपनेभवतः ॥ १८२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कूर्चमर्मोंका वर्णन ॥

दोनों पैरों के अंगूठे और अंगूठे के पासकी उंगली के बीच में नीचे और ऊपर स्नायुके चार मर्म विकलताको करते हैं उनमें चोट लगने से पैरों में भ्रमण और कम्प होता है ॥ १८२ ॥

विटपेद्वेवङ्क्षणवृषणयोर्मध्येस्नायुमर्माण्येकांगुल्यवैकल्यकरेचतत्राल्पशुक्रताच १८३॥

विटपनाम मर्मोंका वर्णन ॥

वङ्क्षण और अण्डकोशोंके बीचमें स्नायुके विटपनाम एक अंगुल प्रमाणवाले दो मर्म विकलता करनेवाले होते हैं उनमें चोटलगने से नपुंसकता और वीर्य्यकी स्वल्पता होती है ॥ १८३ ॥

कूर्परौ। कफोणिजौद्वौसंधिमर्मणीद्व्यंगुलौवैकल्यकरौतत्रबाहुमध्येसङ्कोचः॥ १८४ ॥

कूर्परमर्मों का वर्णन ॥

कुहनियों में दो अंगुल के प्रमाणवाले कूर्परनाम सन्धियों के दो मर्म विकलता करनेवाले होते हैं उनमें चोट लगनेसे भुजा संकुचित होजाती हैं ॥ १८४ ॥

कुकुन्दरेपार्श्वजघनबहिर्भागेपृष्ठवंशस्योभयतोनातिनिम्नेकुकुन्दरेनाममर्म्मणी। तत्र स्पर्शाज्ञानमधःकाये । चेष्टोपघातश्च । मर्मण्यर्द्धांगुलेवैकल्यकरेतत्रस्पर्शाज्ञानमधःकायस्यचेष्टोपघातश्च ॥ १८५ ॥

कुकुन्दरमर्मोंका वर्णन ॥

नितम्बों के गढ्ढों में आधे अंगुल के प्रमाणवाले सन्धि के दो मर्म विकलता करनेवाले होते हैं उनमें चोट लगने से नीचे के अंग में स्पर्श का ज्ञान नहीं होता और क्रियाओं के करनेकी शक्ति नहीं रहती ॥ १८५ ॥

कक्षधरे। वक्षःकक्षयोर्मध्येद्वेस्नायुमर्मण्येकांगुलेवैकल्यकरेतत्रपक्षाघातः॥ १८६ ॥

कक्षधरमर्मोंका वर्णन ॥

छाती और बगलोंके बीचमें एक अंगुलके प्रमाणवाले स्नायुके दो मर्म विकलता करनेवाले होते हैं इनमें चोट लगने से पक्षाघात होताहै ॥ १८६ ॥

विधुरेकर्णपृष्ठतोऽधःसंश्रितेकिञ्चिन्निम्नाकारेद्वेस्नायुमर्म्मण्यर्द्धांगुलेवैकल्यकरेतत्रबाधिर्य्यम् ॥ १८७॥

विधुरनाममर्मों का वर्णन ॥

कानों के पीछे नीचेकी ओर स्थित कुछ गहरे आधे अंगुलके प्रमाणवाले विधुरनाम स्नायु के दो मर्म होते हैं इनमें चोट लगनेसे बधिरता होती है ॥ १८७ ॥

कृकाटिकेशिरोग्रीवयोरुभयतः । सन्धिद्वे । सन्धिमर्मण्यर्द्धांगुलेवैकल्यकरेशिरःकम्पः ॥ १८८ ॥

कृकाटिकमर्मोंका वर्णन ॥

शिर और ग्रीवाके दोनों ओर सन्धियोंके दो मर्म आधे अंगुलके प्रमाणवाले विकलता करनेवाले होते हैं उनमें चोट लगनेसे मस्तक कंपायमान होताहै ॥ १८८ ॥

अंसौस्कन्धौबाहुमूर्द्धग्रीवामध्ये अंसपीठस्कन्धनिबन्धनावंसौनाम । स्नायुमर्मण्यर्द्धांगुलेवैकल्यकरेतत्रबाहुस्तम्भः ॥ १८९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंस नाम मर्मोका वर्णन ॥

बाहु ग्रीवा और मस्तक इनके बीचमें अंस नाम आधे अंगुलके प्रमाणवाले स्नायुके दो मर्म विकलता करनेवाले होते हैं उनमें चोट लगने से भुजा जकड जाती हैं ॥ १८९ ॥

अंसफलकेपृष्ठोपरिपृष्ठवंशमुभयतस्त्रिकसम्बद्धे ग्रीवायामंसद्वयस्यचसंयोगोयत्रत त्रिकम् । अस्थिमर्मण्यर्द्धांगुलेवैकल्यकरेतत्रबाह्वोःशून्यताशोषश्च ॥ १९० ॥

अंसफलकनाम मर्मोंका वर्णन ॥

पीठके ऊपर रीढके दोनों ओर त्रिक (गर्दन और कन्धों का जोड) से लगे हुए आधे अंगुल के प्रमाणवाले अंसफलक नाम हड्डियों के दो मर्म विकलता करने वाले होते हैं उनमें चोट लगने से भुजा सुन्न होजाती हैं और सूख जाती हैं ॥ १९० ॥

अपांगौनेत्रयोरंतौशिरामर्मण्यर्द्धांगुलौवैकल्यकरौतत्रान्ध्यंदृष्ट्युपघातोवा॥ १९१ ॥

अपाङ्गनाम मर्मोंका वर्णन ॥

नेत्रों के अन्तमें अपाङ्गनाम शिराओं के दो मर्म आधे अंगुलके प्रमाण वाले विकलता करनेवाले होते हैं उनमें चोट लगने से मनुष्य अन्धा अथवा मन्ददृष्टि होजाताहै ॥ १९१ ॥

नीलेमन्येचकण्ठनाडीमुभयतश्चतस्रोधमन्योद्वेनीलेद्वेमन्ये । तत्रैकामन्या एका नीला॥ एकस्मिन्पार्श्वेमन्यानीलाः अपरस्मिन्पार्श्वेद्वेद्वेशिरामर्मणीद्व्यंगुलेवैकल्यकरे तत्रमूकताविकृतिस्वरताऽरसग्राहिता च ॥ १९२ ॥

नीला और मन्यानाम मर्मोंका वर्णन ॥

कण्ठकी नाडी के दोनोंओर चार नाडी हैं उनमेंसे दो नीलानाम और दो मन्या नामहैं और एक २ ओर एक नीला और एक मन्या नाम नाडी है इसप्रकार दोनों ओर दो अंगुल के प्रमाणवाले दो २ शिराओं के मर्म विकलताकरनेवाले होते हैं उनमें चोट लगने से गूंगापन-स्वरभङ्ग और मधुरादि रसोंकी अज्ञता होती है ॥ १९२ ॥

फणेघ्राणमार्गमुभयतोमांसमर्मण्यर्द्धांगुलेवैकल्यकरेतत्रगन्धाज्ञानम् ॥ १९३ ॥

फणनाम मर्मोंका वर्णन ॥

नासिका के दोनों ओर आधे अंगुलके प्रमाणवाले फणनाम शिराओं के दो मर्म विकलता करने वाले होते हैं इनमें चोट लगने से गन्धका ज्ञान नहीं होता ॥ १९३ ॥

आवर्तौभ्रुवोरुपरिनिम्नयोःसंधिमर्मण्यर्द्धांगुलेवैकल्यकरेतत्रान्ध्यंदृष्ट्युपघातः॥ १९४॥

आवर्त्तनाम मर्मोंका वर्णन ॥

भृकुटियों के ऊपर कुछ खाली आधे अंगुल के प्रमाणवाले आवर्त्तनाम सन्धियों के दो मर्म्म विकलता करने वाले होते हैं इनमें चोट लगने से अन्धता और दृष्टिकी मन्दता होती है ॥ १९४॥

गुल्फौद्वौमणिबन्धौद्वौतथाकूर्च्चशिरांसिच । रुजाकराणिजानीयादृष्टौचैतानिबुद्धिमान् ॥ १९५ ॥

रोगके उत्पन्न करनेवाले मर्मोंका वर्णन ॥

दो पैरके गट्टे दो कलाई और चार कूर्च के शिर बुद्धिमान् लोगों को रोगों के उत्पन्न करने वाले यह आठ मर्म जानने चाहिये ॥ १९५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुल्फौघुण्टिकेसंधिमर्मणीद्व्यंगुलौरुजाकरौतत्ररुजापादस्तम्भःखञ्जताच १९६॥

गुल्फनाम मर्मोंका वर्णन ॥

पैरों के घुटने में दो अंगुल के प्रमाणवाले सन्धिके गुल्फ नाम दो मर्म रोगके करनेवाले होते हैं उनमें चोट लगने से मनुष्य लंगडा होजाताहै अथवा पैर जकड जाते हैं ॥ १९६ ॥

मणिबन्धौहस्तप्रकोष्ठसन्धीसन्धिमर्म्मणीद्व्यंगुलौरुजाकरौ। तत्रहस्तयोःक्रियारा हित्यम् ॥ १९७ ॥

मणिबन्धमर्मोंका वर्णन ॥

पहुँचे और पञ्जेकी सन्धि में दो अंगुलके प्रमाणवाले मणिबन्धनाम सन्धियोंके दो मर्म्म रोगके करनेवाले होते हैं इनमें चोट लगने से हाथों में काम करनेकी शक्ति नहीं रहती है ॥ १९७ ॥

कूर्च्चशिरांसि। पादसन्धेरधउभयतएकस्मिन्पादेद्वेचद्वितीये ॥ एवंचत्वारिस्नायु मर्म्माण्येकांगुलानिरुजाकराणितत्ररुजाशोफश्च ॥ १९८ ॥

कूर्चशिरमर्मोंका वर्णन ॥

दोनों पैरोंके चारों गट्टोंके नीचे एक अंगुलके प्रमाणवाले कूर्चशिरनाम चार स्नायुके मर्म पीडा करनेवाले होते हैं उनमें चोट लगने से पीडा और सूजन उत्पन्न होती है ॥ १९८ ॥

उत्क्षेपौस्थापिनीचैवविशल्यघ्नंत्रिकम्मतम् १९९ उत्क्षेपौशङ्खयोरुपरिकेशाया वत्। स्नायुमर्म्मण्यर्द्धांगुलेतयोर्विद्धयोःसशल्योजीवेत्पाकात्पततिशल्योवाउद्धृतशल्य स्तुम्रियेतअतएव विशल्यमुद्धृतंशल्यंहंतिविशल्यघ्नंमर्म्मस्थापनी। एकाभ्रुवोर्मध्येशिरा मर्म्मैदमर्द्धांगुलंविशल्यघ्नम् ॥ २०० ॥

विशल्यघ्न मर्मोंका वर्णन ॥

दो उत्क्षेप और एक स्थापिनी यह तीन मर्म विशल्यघ्न कहलाते हैं १९९ (उत्क्षेप मर्मका वर्णन) मस्तक की दोनों हड्डियों के ऊपर बालोंतक उत्क्षेप नाम आधे अंगुल के प्रमाणवाले दो स्नायु के मर्म होते हैं इनमें कांटा आदि लगने से जो वह लगारहे अथवा पककर गिरपडे तो मनुष्य जीतारहताहै और उसके निकाललेने से मरजाताहै इसीसे विशल्यघ्न (जिसका कांटा निकाललिया जाय उसका मारनेवाला) नामहै भृकुटियों के मध्यमें आधे अंगुलके प्रमाणवाला स्थापिनी नाम शिरा का मर्म विशल्यघ्नहै ॥ २०० ॥

सप्तरात्रान्तरेहन्युः सद्यःप्राणहराणिहि। कालान्तरप्राणहरंपक्षे मासे च मारकम्॥ सद्यःप्राणहरंचान्तेविद्धंकालेनमारयेत्। कालान्तरेप्राणहरमन्तेविद्धन्तुदुःखदम् (अन्ते मर्म्मसमीपे) मर्म्माण्यधिष्ठायहियेविकारा मूर्च्छन्तिकायेविविधानराणाम्। प्रायेणते कृच्छ्रतमाभवन्ति वैद्येनयत्नैरपिसाध्यमानाः ॥ २०१ ॥

शीघ्र प्राणों के हरनेवाले मर्मों में चोट लगनेसे सात रात्रिके भीतर प्राण निकल जाते हैं और कालान्तरमें प्राणोंके हरनेवाले मर्म एकपक्ष अथवा एक मासमें प्राणोंको हरते हैं शीघ्र प्राण हरने वाले मर्म समीप में चोट लगने से कालान्तरमें प्राणोंको हरते हैं और कालान्तर में प्राण हरनेवाले मर्म पीडा उत्पन्न करते हैं मनुष्यों के शरीरमें जो रोग मर्मोंके ऊपर उत्पन्न होते हैं वह वैद्यों से यत्न पूर्वक चिकित्सा किये जाने परभी अत्यन्त कष्टसाध्य होते हैं ॥ २०१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ सन्धयः ॥

तेद्विविधाश्चेष्टावन्तःस्थिराश्च ॥ शाखासुहन्वोःकट्यांच चेष्टावन्तोभवन्तिहि । शेषास्तुसन्धयःसर्वेस्थिरास्तज्ज्ञैरुदाहृताः ॥ कथितादेहिनांदेहेसन्धयोद्वेशतेदश । शाखासुतेऽष्टषष्टिश्चकोष्ठेत्वेकोनषष्टिकाः॥ग्रीवायामूर्ध्वदेशेतुत्र्यशीतिस्तेप्रकीर्त्तिताः॥२०२॥

सन्धियोंका वर्णन ॥

सन्धि चेष्टायुक्त और निश्चल इन दोप्रकारों की होती हैं हाथ पैर जाबड़े तथा कमरमें चेष्टायुक्त और शेष स्थिर होती हैं मनुष्योंके शरीर में २१० सन्धियां कहीगई हैं हाथ पैरोंमें ६८ कोष्ठमें ५६ और ग्रीवा तथा ग्रीवा के ऊर्ध्वभाग में ८३ कहीगई हैं ॥ २०२ ॥

प्रथमंपरिगणयन्तेतेषुशाखागताइह । एकैकस्यांपादांगुल्यांत्रयस्त्रयोद्वावंगुष्ठेतेचतुर्दश ॥ गुल्फजानुवङ्क्षणेष्वेकैकमेवंसप्तदश एकस्मिन्सक्थिनिभवन्ति। एतेनेतरसक्थिबाहूचव्याख्यातौ ॥ एवमष्टषष्टिशाखासु ॥ २०३ ॥

उन में से पहले हाथपैरोंकी सन्धियों का वर्णन किया जाताहै पैरकी एक२उंगलीमें तीन२ अंगूठेमें२ गट्टे घुटने और वङ्क्षणमें एक२ इस प्रकार एक जङ्घामें१७ हुईं इसीरीति से दूसरी जङ्घा और दोनों भुजाओंमें जाननी चाहिये इस क्रम से सब ६८ हुईं ॥ २०३ ॥

अथ कोष्ठगतानाह ॥

त्रयःकटीकपालेषुचतुर्विंशतिः पृष्ठवंशे तावन्तएवपार्श्वयोरष्टावुरसिएवमेकोनषष्टिः कोष्ठे ॥ २०४ ॥

कोष्ठकी सन्धियोंका वर्णन ॥

कमर में ३ पीठकीरीढमें २४ दोनों पसलियों में २४ और छातीमें ८ इस प्रकार ५६ हुईं ॥२०४॥

अथ ग्रीवोर्ध्वगतानाह ॥

अष्टौग्रीवायांत्रयःकण्ठनाडीषुहृदयक्लोमफुप्फुसनिबद्धास्त्वष्टादश ।द्वात्रिंशद्दन्तमूलेषु एकःकण्ठमणौनासायांचएकैकःद्वौद्वौ वर्त्ममण्डलगण्डकर्णशङ्खेषुद्वौहनुसन्धौद्वावुपरिष्टाद् भ्रुवोःशङ्खयोश्चोपरिष्टात् पञ्चशीर्षकपालेष्वेकोमूर्द्धनीतिकण्ठमणौघण्टिकेति प्रसिद्धे ॥ २०५ ॥

ग्रीवाके ऊपरकी सन्धियोंका वर्णन ॥

ग्रीवामें ८ कण्ठ में ३ हृदय -क्लोम और फुप्फुस और फुप्फससे बंधीहुई नाडियोंमें १८ दांतों के मूल में ३२ घांटी में १ नासिका में १ नेत्रों के ऊपर के चर्ममें २ कपोलों में २ कानों में २ कनपटी की हड्डियोंमें २ जाबडों में २ भृकुटियोंके ऊपर २ कनपटी की हड्डियों के ऊपर २ मस्तक की हड्डियोंमें ५ मस्तकमें १ इसप्रकार ८३ हुईं ॥ २०५ ॥

एतेसन्धयोऽष्टविधाभवन्ति (तेयथा) कोरोदूखलसामुद्गाःप्रतरस्तूनसेविनी । काकतुण्डंमण्डलंचशङ्खावर्त्तोऽष्टसन्धयः ॥ कोरोगर्त्तः ॥ नलिकेत्यन्येउदूखलःप्रसिद्धःसमुद्गःसम्पुटःसमुद्गएवसामुद्गः अत्रस्वार्थेअण् । प्रतरन्त्यनेनेतिप्रतरोवेलकः तूनस्येवतूनीर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्य सेविनीस्तूनसेविनी ॥ काकतुण्डंकाकमुखं । मण्डलंप्रसिद्धंशङ्खस्यावर्त्तःशङ्खावर्त्तः ॥ एतेयथानामप्रकृतयःसन्धयोभवन्तीत्यर्थः। एषामंगुलिमणिबन्धगुल्फजानुकूर्परेषु कोराःसन्धयः ॥ कक्षावङ्क्षणदन्तेषूदूखलाःअंसपीठगुदाभगनितम्बेषुसामुद्गाः। ग्रीवापृष्ठवंशयोस्तुप्रतराःशिरःकटीकपालेषु तूनसेविन्यः । हन्वोरुभयतःकाकतुण्डाख्याःकण्ठहृदयक्लोमनाडीषुमण्डलाख्याः ॥ शिरःश्रोत्रशृङ्गाटकेषुशंखावर्त्ताः अस्थ्नांतु सन्धयोह्येतेकेवलाःसमुदाहृताः। पेशीस्नायुशिराणान्तुसन्धिसंख्या न विद्यते ॥ २०६ ॥

यह सन्धियां आठप्रकार की होती हैं ॥

कोर (गर्त्त और कोई नलिकाभी कहते हैं) उदूखल (उलूखल) सामुद्ग (संपुट) प्रतर (जिससे कोई वस्तु जासके) तूनसेविनी (तरकस) काकतुण्ड (काककी चोंच) मण्डल- शंखावर्त्त (शंखकाचक्र) यह सन्धियां नामके अनुसार प्रकृतिवाली होती हैं इनमें से उंगली कलाई गट्टे घुटने और भुजदंडोंमें कोर -बगल वंङ्क्षण और दांतोंमें उदूखल कन्धे गुदा योनि और नितम्बोमें सामुद्ग ग्रीवा और रीढमें प्रतर शिर, कटि और शिरकी हड्डीमें तूनसेविनी, जाबड़ों में दोनों ओर काकतुण्ड, कण्ठ, हृदय, क्लोम और नाडियों में मंडल और शिर, कान तथा शृंगाटकों में शंखावर्त्तनाम सन्धियां होतीहैं यह सब सन्धियां, केवल हड्डियों की कहीगई हैं– पेशी, स्नायु और शिराओंकी सन्धियों की संख्या नहीं है ॥ २०६ ॥

अथ शिरामाह ॥

सन्धिबन्धनकारिण्योदोषधातुवहाःशिराः । नाभ्यांसर्वानिबद्धास्ताःप्रतन्वन्तिसमंततः ॥ शरीरंसकलंचैतच्छिराभिःपोष्यतेसदा । प्रणालीभिरिवारामाःकुल्याभिःक्षेत्रधान्यवत् ॥ अत्रप्रणालीभिःकुल्याभिरिति दृष्टान्तद्वयंस्थूलसूक्ष्मशिराभेदात् ॥ २०७ ॥

शिराओंका वर्णन ॥

सन्धियोंको बांधनेवाली और दोष तथा धातुओं को लेचलनेवाली शिरा होती हैं वह सम्पूर्ण शिरा नाभि में बंधीहुई सब ओर को फैलती हैं जैसे नालियों से बगीचे और छोटी नदियों से खेत के धान्य पुष्ट होते हैं उसी प्रकार यह सम्पूर्ण शरीर शिराओंसे सदैव पुष्ट होताहै यहां नाली और छोटी नदियोंके दो दृष्टान्त स्थूल और सूक्ष्म दोप्रकार की शिराओं के भेद प्रकट करने के लियेहैं ॥ २०७ ॥

प्रसारणाकुञ्चनादिक्रियाभिःसततंतनौ । शिराएवोपकुर्वन्तिताःस्युस्सप्तशतानितु ॥ यथाद्रुमदलेसाक्षाद्दृश्यन्तेप्रतताशिराः । तथैवदेहिनोदेहे वर्त्तन्तेसकलेशिराः ॥ नाभिस्थाःप्राणिनांप्राणाःप्राणान्नाभिरुपाश्रिता । शिराभिरावृतानाभिश्चक्रनाभिरिवारकैः ॥ तद्यथा ॥ तासांखलुमूलशिराचत्वारिंशत् । तासांदशवातवहाः,दशपित्तवहाः,दशश्लेष्मवहाः,दशरक्तवहाः–तासांखलुवातवहानांवातस्थानगतानांसपंचसप्ततिशतानिभवन्ति। तावन्त्यएवपित्तवहाःपित्तस्थानगताः॥श्लेष्मावहास्ताःश्लेष्मस्थानगताःरक्तवहायकृत्प्लीहगताः एवंशिरासप्तशतानिभवन्ति ॥ २०८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिरा फैलाना और सकोड़ना आदि क्रियाओंसे शरीरका उपकार करती हैं और वह संख्यामें ७०० हैं जैसे कि वृक्षके पत्तेमें साक्षात् फैलीहुई नसें दिखाई देती हैं उसीप्रकार मनुष्य के संपूर्ण शरीरमें शिरा रहती हैं जीवोंकेप्राण नाभिमें स्थितहैं और वह प्राणोंकी आशय भूतनाभि शिराओंसे ऐसे घिरी हुई हैं जैसे कि पहियेकी नाह आरोंसे घिरीहुई होतीहै उनमें से मुख्य शिरा चालीस हैं दश वायुकी दश पित्तकी दश कफकी और दश रुधिरकी लेचलनेवाली हैं वातके स्थानमें प्राप्त वातकी लेचलने वाली शिरा १७५ होती हैं इसी प्रकार पित्तके स्थानमें प्राप्त पित्तकी लेचलनेवाली भी शिरा १७५ ही हैं श्लेष्मा के स्थानमें प्राप्त श्लेष्माकी लेचलनेवालीभी १७५ हैं और यकृत् और प्लीह में प्राप्त रुधिर की लेचलनेवाली भी १७५ ही हैं इस क्रमसे सब सातसौ ७०० हैं (२०८)

तत्रवातवहाःएकस्मिन्सक्थिनिपञ्चविंशतिएतेनेतरसक्थिबाहूचव्याख्यातौ । विशेषतःकोष्ठेचतुस्त्रिंशत्तासांश्रोण्यांगुदमेढ्राश्रिताअष्टौ ॥ द्वेद्वेपार्श्वयोः । षट्पृष्ठे ६ तावन्त्य एवोदरे ६ दशवक्षसि १० एकचत्वारिंशद्जत्रुणः ऊर्ध्वन्तासांचतुर्दश १४ ग्रीवायां ४ चतस्रः कर्णयोः ९ नव जिह्वायां ६ षट् नासिकायां ८ अष्टौ नेत्रयोः ॥ एवंवातवहानां सपञ्चसप्ततिशतं भवन्ति । एवंविभागः पित्तवहानामपि विशेषस्तु पित्तवहा नेत्रयोर्दश १० कर्णयोर्द्वे २ एवं रक्तवहाःश्लेष्मवहास्तु (षोडश १६ ग्रीवायां कर्णयोर्द्वे २)एवं शिराणां सप्तशतानि व्याख्यातानि ॥ क्रियाणामप्रतीघातममोहंबुद्धिकर्मणाम् । करोत्यन्यान्गुणांश्चापि स्वाःशिराःपवनश्चरन् ॥ क्रियाणां प्रसारणाकुञ्चनादीनाम् । अमोहंबुद्धिकर्म्मणाम् । बुद्धीन्द्रियाणां मनसो बुद्धेश्च स्वेस्वे विषयज्ञानं करोतीत्यर्थः । अन्यान् गुणान् रसादिव्यापनद्वारा शरीरपोषणादीन् । यदा तु कुपितो वायुःस्वाःशिराःप्रतिपद्यते । तदास्यविविधारोगा जायन्तेवातसम्भवाः ॥ २०९ ॥

वायुकी लेचलनेवाली शिरा दोनों भुजा और दोनों जंघाओं में पच्चीस २ होती हैं कोष्ठमें विशेष करके चौंतीस होती हैं उनमें से नितम्ब गुदा और लिंगमें ८ दोनों पसलियों में दो २ पीठमें ६ उदर में ६ छातीमें १० इसप्रकार चौंतीस होती हैं जत्रु (कन्धेकी सन्धि) के ऊपर ४१ उनमें से ग्रीवा में १४ कानोंमें ४ जिह्वामें ९ नासिकामें ६ नेत्रोंमें ८ इस प्रकार ४१ हुई इस रीतिसे वायुके लेचलने वाली शिरा १७५ होती हैं इसी प्रकार से पित्तकी लेचलनेवाली शिराओंकाभी विभाग जानना चाहिये परन्तु विशेषता इतनी है कि वे नेत्रों में १० और कानोंमें २ होती हैं इसीप्रकारसे रुधिरकी भी लेचलनेवाली होती हैं और श्लेष्माकी लेचलनेवाली भी होती हैं परन्तु ग्रीवामें १६ और कानों में दो होती हैं इस क्रमसे सातसौ ७०० शिराओंका वर्णनहै अपनी शिराओं में विचरताहुआ वायु फैलाना और सकोड़ना आदि क्रियाओं का नष्ट न होना बुद्धीन्द्रिय मन और बुद्धिका अपने २ विषय में ज्ञान तथा रसादिकोंको व्याप्त करने से शरीरके पुष्टता आदि अन्य २ गुणोंको भी करती हैं परन्तु जब विकारयुक्त होकर वायु अपनी शिराओं में प्राप्त होती है तब अनेक वातकेरोग उत्पन्न होजाते हैं २०९॥

भ्राजिष्णुतामन्नरुचिमग्निदीप्तिमरोगताम् । करोत्यन्यान्गुणांश्चापि पित्तमात्मा शिराश्चरन् ॥ अरोगतां पैत्तिकरोगानुत्पत्तिं करोति । अन्यान् गुणान् मेधाबुद्धिदर्शन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शक्त्यादीन् ॥ यदातुकुपितंपित्तं सेवतेस्ववहाःशिराःतदास्यविविधारोगा जायन्ते पित्तसम्भवाः ॥ स्नेहमंगेषुसंधीनां स्थैर्य्यंबलमरोगताम् । करोत्यन्यान्गुणांश्चापि ब लासःस्वाःशिराश्चरन् ॥ अरोगतांश्लैष्मिकरोगानुत्पत्तिम् । अन्यान् गुणान् बलपुष्ट्या दीन् ॥ यदातुकुपितःश्लेष्मा स्वाःशिराःप्रतिपद्यते । तदास्यविविधारोगा जायन्तेश्ले ष्मसम्भवाः ॥ २१० ॥

अपनी शिराओं में विचरता हुआ पित्त कान्ति—अन्नमें रुचि—अग्निकी दीप्ति—पित्तके रोगोंका अभाव और मेधा—बुद्धि—दर्शनशक्ति आदि अन्य गुणोंको भी करताहै परन्तु विकारको प्राप्त हुआ पित्त अपनी शिराओं में विचरताहै तब अनेक पित्तके रोग उत्पन्न होते हैं अपनी शिराओं में विचरता हुआ श्लेष्मा शरीर में चिकनाई—सन्धियोंकी स्थिरता—बल—कफके रोगोंका अभाव और पुष्टता आदि अन्यगुणों को भी करताहै परन्तु विकार को प्राप्त हुआ श्लेष्मा जब अपनी शिराओं में प्राप्त होताहै तब अनेक श्लेष्मा के रोग उत्पन्न होते हैं ॥ २१० ॥

धातूनांपूर्णांवर्णंस्पर्शज्ञानमसंशयम् । स्वाशिरासुचरद्रक्तं कुर्य्याच्चान्यान्गुणानपि ॥ (अन्यान् गुणान् बलपुष्ट्यादीन्) यदातु कुपितंरक्तं सेवतेस्ववहाःशिराः । तदास्यवि विधारोगा जायन्तेरक्तसम्भवाः ॥ २११ ॥

अपनी शिराओं में चलता हुआ रुधिर धातुओं की पूर्णता—वर्ण—स्पर्शका ज्ञान और बल तथा पुष्टता आदि अन्यगुणों को भी करताहै परन्तु विकारको प्राप्तहुआ रुधिर जब अपनी शिराओं में प्राप्त होताहै तब रुधिरके अनेकरोग उत्पन्न होते हैं ॥ २११ ॥

तत्रारुणावातवहाः पूर्य्यन्तेवायुनाशिराः । पित्तादुष्णाश्चनीलाश्च शीतागौर्य्यःस्थि राःकफात् ॥ असृग्धरास्तुतारक्ताःस्युश्चनात्युष्णशीतलाः ॥ २१२ ॥

जो शिरा वायु से पूर्ण रहती हैं उनका रक्तवर्ण होताहै पित्त से पूर्णहुई शिरा नीलवर्ण और उ- ष्ण कफसे पूर्णहुई शीतल और गौरवर्ण और रुधिरधारण करनेवाली शिरा न बहुत उष्ण न शी- तल रक्तवर्ण होती हैं ॥ २१२ ॥

अथ स्नायुस्तत्रस्नायोः स्वरूपमाह ॥

मेदसःस्नेहमादाय शिरास्नायुत्वमाप्नुयात् । शिराणांहिमृदुःपाकः स्नायूनान्तुततः खरः ॥ स्नायवोबन्धनानिस्युर्देहमांसास्थिमेदसाम् । संधीनामपियत्तास्तु शिराभ्यःसु दृढाःस्मृताः ॥ नौर्यथाफलकास्तीर्णा बंधनैर्बहुभिर्युता । नियुक्ताऽगाधसलिले भवेद्भार सहाभृशम् ॥ एवमेवशरीरेऽस्मिन् यावन्तःसंधयःस्मृताः । स्नायुभिर्बहुभिर्बद्धास्तेन भारसहानराः ॥ (फलकैःकाष्ठपट्टैः आस्तीर्णाव्याप्ताः) शतानिनवजायन्ते शरीरेस्नाय वोनृणाम् । तासांविवरणंक्रमः शिष्याःशृणुत एतत ॥ शाखासुषट्शतानिस्युः कोष्ठेत्रिंश च्चतद्वयम् । ग्रीवायामूर्ध्वदेशेतु स्नायूनांसप्ततिःस्मृता ॥ २१३ ॥

स्नायुओं के वर्णन में प्रथम स्नायुका स्वरूप वर्णन करते हैं ॥

शिरा मेदके स्नेहको लेकर स्नायु कहलाती हैं शिराओंका पाक मृदु और स्नायुकाउनकी अपेक्षा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कठोर होताहै स्नायुके द्वारा शरीरके मांस अस्थि–मेद और संधियोंका बन्धन होताहै इस कारण वह शिराओंकी अपेक्षा दृढ होती हैं जिस प्रकार काष्ठके टुकडोंसे व्याप्त बहुत बंधनोंसे युक्त नौका अथाह जल में छोडी गई बहुत भारकी,सहनेवाली होजाती है इसी प्रकार इस शरीर में सम्पूर्ण सन्धियां स्नायुसे बंधी हुई हैं इसीसे मनुष्य भारके सहनेवाले होते हैं मनुष्य के शरीरमें नौसै ९०० स्नायु होती हैं उनका विवर्ण कहते हैं हे शिष्य लोगो! तुम इसको यत्नसे श्रवणकरो हाथ पैरोंमें ६०० कोष्ठ में २३० और ग्रीवाके ऊपर ७० होती हैं ॥ २१३ ॥

तत्र शाखागताः प्राह ॥

एकैकस्यां पादांगुल्यां षट्षट्तास्त्रिंशत् । तावन्त्यएवतलकूर्चगुल्फेषु । तावन्त्य एव जंघायां दशजानुनि । चत्वारिंशदूरौ । दशवंक्षणे । एवंसार्द्धशतमेकस्मिन् सक्थि नि भवन्ति । एतेनेतरसक्थिबाहू च व्याख्यातौ ॥ २१४ ॥

हाथ पैरों की स्नायुओंका वर्णन ॥

पैरकी एक२ उंगलीमें छः छः इस प्रकार सब तीसहुई तलुए, कूर्च और टकनोंमें ३० पिंडली में ३० घुटने में १० जंघामें ४० वंक्षण में १० इसप्रकार सब पैरसे जंघातक में १५० हुई इसी रीति से दूसरी जंघा और दोनों भुजाओं में भी समझना चाहिये ॥ २१४ ॥

अथ कोष्ठागताः प्राह ॥

षष्टिःकट्यां तावन्त्यएवपार्श्वयोः। अशीतिःपृष्ठे त्रिंशदुरसि २१५ अथ ग्रीवोर्ध्वगताः प्राह ॥ षट्त्रिंशद् ग्रीवायाम्। चतुस्त्रिंशन्मूर्ध्नि एवंस्नायूनांनवशतानिभवन्ति ॥ २१६ ॥

कोष्ठकी स्नायुओंका वर्णन ॥

कमरमें ६० दोनों पसलियोंमें ६० पीठमें ८० छाती में ३० हैं २१५ ग्रीवाके ऊपरकी स्नायुओंका वर्णन ॥ ग्रीवामें ३६ शिरमें ३४ इस प्रकार सब ९०० हुई ॥ २१६ ॥

अथ धमन्यः ॥

धमन्योनाभितोजाताश्चतुर्विंशतिसंख्यया । दशोर्ध्वगादशाऽधोगाःशेषास्तिर्य्यग्ग ताःस्मृताः ॥ २१७ ॥

धमनियों का वर्णन ॥

नाभि से उत्पन्न हुई चौबीस २४ धमनी होती हैं उनमें से दश ऊपरको जानेवाली दश नीचे की जानेवाली और बाकी तिरछी जानेवाली होती हैं ॥ २१७ ॥

तत्रोर्ध्वगाः । शब्दस्पर्शरूपरसगंधप्रश्वासोच्छ्वासजृम्भितक्षुतहसितकम्पितरुदित गीतादिविशेषानभिवहन्त्यः शरीरं धारयन्ति। प्रश्वासः अंतः प्रविष्टो वायुः । उ च्छ्वासः ऊर्ध्वगच्छद्वायुः । तास्तु हृदयंगतास्त्रिधा जायन्ते । तास्त्रिंशत्तासां मध्ये द्वे द्वे वातपित्तकफशोणितरसान्वहतः । तादश अष्टाभिः शब्दरसरूपगंधान् गृह्णाति पुरुषः ॥ द्वाभ्यां भाषते द्वाभ्यां घोषंकरोति द्वाभ्यां स्वपिति द्वाभ्यां जागर्त्ति द्वेचाश्रु वाहिन्यौ द्वेस्तन्यंस्त्रिया वहतः स्तन संश्रिते तेएवशुक्रं नरस्य स्तनाभ्यामभिवहतःएता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्त्रिशत् । एताभिरुदरपार्श्वपृष्ठोरुस्कन्धग्रीवाशिरोबाहवोधार्य्यन्तेचाल्यन्ते च॥२१८॥

उनमें ऊपर जानेवाली धमनी शब्द, स्पर्श,रूप,रस,गंध,श्वासलेना औ छोड़ना-जंभाई-क्षुधा-हँसना कांपना-रोना और गाना आदि कार्य्योंके द्वारा शरीर को धारण करती हैं और वह हृदय में जाकर तीन प्रकार की होजाती हैं उन तीसमें से दो २ करके दश वात पित्त कफ रुधिर और रसको लेजाती हैं आठ से पुरुष शब्द, रस रूप और गन्ध को ग्रहण करताहै दोसे भाषण करताहै दोसे शब्द करताहै दोसे सोताहै दोसे जागताहै और दोसे अश्रु बहाताहै और दोस्तनोंमें स्थितहोकर स्त्रीके दुग्धको धारण करती हैं और वेही मनुष्यके स्तनों से वीर्य्य को लेजाती हैं इस प्रकार तीस हुईं इनके द्वारा उदर पसली पीठ छाती कन्धे ग्रीवा शिर और बाहुधारणकिये जाते हैं और हिलाये झुलाये जातेहैं २१८॥

अधोगतास्तु।वातमूत्रपुरीषशुक्रार्त्तवादीनधोबहन्ति। तास्तुपित्ताशयंगतास्त्रिधाजायन्तेतास्त्रिंशत् ॥ तासाम्मध्यद्वेद्वेवातपित्तकफशोणितरसान्वहतः । तादशद्वेअन्त्रबद्धे अन्त्राश्रितेद्वेतोयवहेद्वेवस्तिगतेमूत्रवहेद्वेशुक्रस्यप्रादुर्भावायद्वेतद्विसर्गाय तेएवनारीणामार्त्तवप्रादुर्भावायतेऽधिसृजतश्च ॥ द्वेस्थूलांत्रप्रतिबद्धेपुरीषंविसृजतः । अष्टावन्यास्तिर्य्यग्गताःस्वेदमर्पयन्ति ॥ एतास्त्रिंशदेताभिरधोनाभेःपक्वाशयकटीमूत्रपुरीषवस्तिगुदमेढ्रसक्थीनिधार्य्यन्तेचाल्यन्ते च ॥ २१९ ॥

नीचे जानेवाली धमनी वात मूत्र विष्ठा वीर्य्य और रजादिकोंको नीचे लेजातीहैं और वह पित्ताशयमें गई हुई तीनप्रकार की होकर तीस होती हैं उनमेंसे दो२ करके दश वात पित्त कफ और रुधिर को लेजातीहैं आंतोंके आश्रित अन्नकी लेजानेवाली दो जलकी लेजानेवाली दो वस्ति में प्राप्त मूत्र की लेजानेवाली दो वीर्य्य के उत्पन्न होनेके लिये और उसके त्यागकरने के लिये दो २ और वही स्त्रियोंके रजके उत्पन्न करने और त्याग करने के लिये होती हैं और दो स्थूल आंतों से बंधीहुई मल को छोड़ती हैं और शेष आठ तिरछी गईहुई पसीने को छोड़ती हैं इस प्रकार तीसहुई यह नाभि के नीचे पक्वाशय कटि मूत्र विष्ठा वस्ति गुदा लिंग और सन्धि (पूरीटांग) को धारण करती हैं और चेष्टा युक्त करतीहैं ॥ २१९ ॥

तिर्य्यग्गतानांतुचतसृणामेकैकंशतधासहस्रधाचोत्तरोत्तरंविभज्यन्ते। तास्त्वसंख्येयास्ताभिरिदंशरीरंगवाक्षितंनिबद्धमाततंगवाक्षवत् निबद्धमायतंगवाक्षो वातायनंयथा गवाक्षेबहूनिछिद्राणिभवंति तथा अस्मिन्देहेयावत्शिराः व्याप्यतिष्ठंतीतिभावःनिबद्धमायतंगवाक्षितम् । गवाक्षाकारांत्रनिकरयुक्तंकृतमित्यर्थः॥ तासांमुखानिरोमलग्नानि यैर्मुखैःस्वेदःस्रवतिरसञ्चाभिसंतर्पयंत्यंतर्बहिश्च । तैरेवाभ्यङ्गपरिषेकावगाहनालेपनवीर्य्याणित्वचिपक्वान्यन्तःप्रवेशयन्ति॥ तैरेवस्पर्शंशुभमशुभंवागृह्णन्ति यथा स्वभावतःखानिमृणालेषुविसेषुच । धमनीनांतथाखानिरसोयैरभितश्चरेत् ॥ २२० ॥

तिरछी गईहुई चार धमनियों मेंसे एक२ सैकड़ों और हज़ारों प्रकारसे क्रमपूर्वक विभाग को प्राप्त होती हैं इससे उनकी संख्या नहींहै और उनके द्वारा यह शरीर जाली के समान अनेक छिद्रों से युक्तहै अर्थात् जैसे जाली में अनेक छिद्र होतेहैं उसीप्रकार इस शरीरमें जाल के समान शिरा व्याप्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होकर स्थितहैं उनके मुखै रोमों में लगे होते हैं जिनमुखोंसे स्वेद वहताहै और भीतर तथा बाहर रस सींचा जाताहै उन्हीं से अभ्यंग(तैलमर्दन)स्नान सिंचन और आलेपन(चन्दनादिलगाना) के साराश त्वचामें प्रविष्ट होते हैं और इन्हींसे अच्छे बुरे स्पर्शका ग्रहण होताहै जैसे कमलदंडों में स्वभावही से छिद्र होते हैं उसी प्रकार नाड़ियों में भी छिद्र होते हैं जिनसे रस सबओरको घूमताहै ॥ २२० ॥

पञ्चाभिभूतास्त्वथपञ्चकृत्वःपञ्चेन्द्रियम्पञ्चसुभावयन्ति । पञ्चेन्द्रियं पञ्चसुभावयि त्वापञ्चत्वमायान्तिविनाशकाले । धमन्यः कथंभूताः पञ्चाभिभूताःपञ्चभ्यः आकाशा दिमहाभूतेभ्यः अभिसमंतातभूताःउभयात्मकंमनश्चयस्यतंपञ्चेन्द्रियं जीवात्मानंपंच सुइन्द्रियाधिष्ठानेषुश्रोत्रादिषुपंचकृत्वःपञ्चवारान् ॥ पर्यायेणत्वेकदैवभावयन्तिप्रापय न्तिपञ्चेन्द्रियंपञ्चानामिंद्रियाणांसमाहारः पञ्चेन्द्रियंश्रोत्रादितदुपलक्षितंकर्म्मेंद्रियम्मन श्च । पञ्चसुपृथिव्यादिषु । बुद्धींद्रियविषयेषु । तदुपलक्षितेषु हस्तादिषुकर्मेन्द्रिय विषयेषु मंतव्येमनोविषयेचभावयित्वाप्राप्यसंयोज्येतियावत् ॥ विनाशकालेपञ्चत्वमा काशादिभावमायान्तिप्राप्नुवंतीत्यर्थः ॥ २२१ ॥

पांच आकाशादि महाभूतों से सबओर व्याप्त धमनी पंचेन्द्रिय अर्थात् जीवात्माको श्रोत्र आदिक पांच इन्द्रियों में पांच बार प्राप्त करती हैं और पंचज्ञानेन्द्रिय पंचकर्मेन्द्रिय और मनको बुद्धीन्द्रियके पृथ्वीआदिक पांचविषय वा कर्मेन्द्रियोंके हस्तादि पांचविषय और मनन करनेके योग्य मनके विषय में प्राप्तकरके विनाशकाल में पञ्चत्व अर्थात् आकाशादि भावको प्राप्त होजाती हैं ॥ २२१ ॥

अथ कण्डराः ॥

महत्यःस्नायवःप्रोक्ताःकण्डरास्तास्तुषोडश । प्रसारणाकुञ्चनयोर्दृष्टंतासांप्रयोजन म् ॥ चतस्रोहस्तयोस्तासांतावन्त्यःपादयोःस्मृताः । ग्रीवायामपितावंत्यस्तावंत्यःपृष्ठ संगताः ॥ तत्रपादहस्तगतानांकण्डराणांनखाःप्ररोहाःग्रीवानिबन्धनानामधोभागगता नांप्ररोहोमेढ्रःपृष्ठनिबन्धानांप्ररोहोनितम्बमूर्द्धोरुवक्षोऽक्षस्तनपिण्डाः ॥ २२२ ॥

कण्डराओंका वर्णन ॥

बड़ी स्नायु कंडरा कहलाती हैं वह सोलह होती हैं और उनका प्रयोजन फैलाने और सकोड़ने में देखा जाताहै उनमें से दोनों हाथोंमें दोनों पैरोंमें ग्रीवामें और पीठमें चार २ होती हैं उनमें से और पैर हाथों में रहनेवाली कंडराओं से नख उत्पन्न होतेहैं ग्रीवा में रहनेवाली नीचेकी ओर गई हुई कंडराओं से लिंग उत्पन्न होताहै पीठमें रहनेवाली कंडराओं से नितम्ब-मस्तक-उर-छाती-नेत्र और स्तन पिण्ड उत्पन्न होते हैं ॥ २२२ ॥

अथ रन्ध्राणि ॥

नेत्रश्रवणनासानांद्वेद्वेरंध्रेप्रकीर्त्तिते । मुखमेहनपायूनामेकैकंरंध्रमुच्यते ॥ दशमंम स्तकेप्रोक्तंरंध्राणीतिनृणांविदुः । स्त्रीणामन्यानिचत्रीणिस्तनयोगर्भवर्त्मनि ॥ २२३ ॥

रन्ध्रोंका वर्णन ॥

नेत्र श्रवण और नासिकामें दो २ रन्ध्र होते हैं मुख लिंग तथा गुदामें एक २ रन्ध्र होताहै और एक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मस्तकमें होताहै इसप्रकार पुरुषों के दशरन्ध्र होते हैं पर स्त्रियोंके तीन और होते हैं स्तनों में दो और गर्भाशय में एक ॥ २२३ ॥

अथ स्रोतांसि ॥

मनःप्राणान्नपानीयदोषधातूपधातवः ॥ धातूनाञ्चमलामूत्रंमलमित्यादयः स्त नौ ॥ सञ्चरान्तिहियैर्मार्गैस्तानिस्रोतांसिसञ्जगुः । बहूनितानिसंख्यायशक्यंतेनैव भाषितुम् ॥ २२४ ॥

स्रोतोंका वर्णन ॥

मन,प्राण,अन्न,जल,दोष (कफादि) धातु,उपधातु,धातुओंके मल,मूत्र, विष्टाइत्यादिक शरीर में जिन मार्गोंसे घूमते हैं वह स्रोत कहलाते हैं उनके बहुतहोनेके कारण संख्या नहींकीजासक्ती है२२४॥

अथ जालानि ॥

निरंतररंध्रानिकरकलितानिसमाहितानि च जालानीवजालानि । जालानि तु शिरा स्नायुमांसास्थ्नामुद्भवन्तिहि ॥ तानिचत्वारिचत्वारि सर्वाण्येवचषोडश ॥ तानिमणिबंधगुदसंस्तृतानि परस्परनिबद्धानि परस्परसंश्लिष्टानि परस्परगवाक्षितानि चेति यैर्गवाक्षितमिदंशरीरम् ॥ अयमर्थः । एकस्मिन्मणिबंधे ॥ एकञ्जालंशिरायाः । अपरंस्नायोस्तृतीयंमांसस्यचतुर्थमस्थ्नः एवञ्चत्वारिजालानिएतेनेतरमणिबंधौगुल्फौचव्याख्यातौ ॥ गवाक्षितंविरचितंनिरंतरजालाकाररंध्रनिकरपरिकल्पितमित्यर्थः ॥ २२५ ॥

जालोंका वर्णन ॥

जाल के समान निरन्तर अनेक छिद्रों से युक्त और परस्पर मिलेहुये जाल होते हैं शिरा-स्नायु मांस और अस्थिसे चार चार जाल उत्पन्न होते हैं इसप्रकार सब सोलह होते हैं और वह मणिबंध (कलाई) और गुल्फ (गट्टा) में स्थित परस्पर बँधेहुये मिलेहुये और छिद्रमय होते हैं जिनसे कि यह शरीर छिद्रमय होताहै इसका यह तात्पर्य्य है कि एक मणिबंध में शिरा स्नायु-मांस और हड्डियों का एक एक जाल होताहै इसीप्रकार दूसरे मणिबंध और दोनों गुल्फों में भी होते हैं ॥ २२५ ॥

अथ कूर्चाः ॥

कूर्चास्तुहस्तयोर्द्वौतुतावन्तौपादयोरपि । ग्रीवायामेकएकस्तुमेढ्रेऽप्येवंषट्स्मृताः ॥ कूर्चाअपिशिरास्नायुमांसास्थिप्रभवाःस्मृताः ॥ २२६ ॥

कूर्चोंका वर्णन ॥

दोनों हाथों में दो दोनों पैरों में दो ग्रीवामें १ और लिङ्गमें एक इस प्रकार सब छः कूर्च होते हैं कूर्च भी शिरा—स्नायु-मांस और हड्डियों से उत्पन्न होते हैं ॥ २२६ ॥

अथ रज्जवः ॥

पृष्ठवंशस्योभयत्रमहत्योमांसरज्जवः । चतस्रोमांसपेशीनांबंधनंतत्प्रयोजनम् २२७॥

रज्जुओं का वर्णन ॥

रीढ़के दोनों ओर बड़ी २ मांसकी चार रज्जु होती हैं उनसे मांसकी पेशीबंधी रहती हैं ॥ २२७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ सेवन्यः ॥

सेवन्यःसप्ततासांतुभवेयुःपंचमस्तके। एकाशेफसिजिह्वयामेकाविद्धयेन्नताःक्वचित् २२८॥

सीवनों का वर्णन ॥

सेवनी सात होती हैं उनमें से मस्तकमें ५ लिंग में १ और जिह्वा में १ होती है इनको चतुर वैद्य कभी बिधने न दे ॥ २२८ ॥

अथ संघातः ॥

चतुर्दशास्थ्नांसंघातास्तेषान्त्रयोगुल्फजानुवंक्षणेषु । एतेनेतरसक्थिबाहूचव्याख्या तौ ॥ त्रिकशिरसोरेकैकम् ॥ अत्रतुत्रिकपदेनबाहूग्रीवास्थिसंघातउच्यते ॥ २२९ ॥

संघातों का वर्णन ॥

हड्डियों के चौदह १४ संघात होते हैं उनमें से गुल्फ घुटना और वंक्षणमें एक २ होते हैं इसी प्रकार दूसरे पैर और दोनों हाथों में जानने चाहिये-यहां त्रिकपदसे (बाहु और ग्रीवाकी हड्डियों का समूह कहाजाताहै) उसमें और शिर में एक २ ॥ २२९ ॥

अथ सीमंताः ॥

चतुर्दशैवसीमंताःकथितामुनिपुंगवैः। संघाताःक्षोभितायैस्तुसीमन्तास्तेप्रकीर्तिताः ॥ यैरस्थिभिः ॥ २३० ॥

सीमन्तोंका वर्णन ॥

मुनिगणों ने चौदह सीमन्त कहे हैं जिन अस्थियों के द्वारा संघात सिंवे रहते हैं वह सीमन्त कहाते हैं ॥ २३० ॥

अथ त्वचः ॥

क्षीरस्यपच्यमानस्ययथासन्तानिकाभवेत्। पच्यमानस्यशुक्रस्यरजसश्चतथात्वचः ॥ पूर्वावभासिनीतासांसिध्मस्थानंचसास्मृता ॥ २३१ ॥

त्वचाओं का वर्णन ॥

जैसे औटे हुए दूधपर मलाई पडजाती है उसी प्रकार पकेहुए वीर्य्य और रजसे त्वचा उत्पन्न होती है उनमें से पहली अवभासिनी है वह श्वेत कुष्ठका स्थान कही गई है ॥ २३१ ॥

अथावभासिनी ॥

भ्राजकेनपित्तेनावभासनात् । परिणाहेनविस्तारितस्यव्रीहेर्विंशतिभागेऽष्टादशभागःप्रमाणन्तस्याः ॥ व्रीहिरत्रयवः । सासिध्मपद्मकण्टकयोरधिष्ठाना ॥ द्वितीयालोहिताज्ञेया तिलकालकजन्मभूः । सा यव षोडशभागप्रमाणा तिलकालकन्यच्छव्यंगानामधिष्ठानम् । तृतीयातुभवेच्छ्वेता स्थानञ्चर्म्मदलस्यसा । सा यव द्वादशभागप्रमाणा चर्म्मदला जगल्लिका मशकानामधिष्ठानम् । ताम्राचतुर्थीविज्ञेया किलासश्वित्रभूमिका ॥ (यवाष्टभागप्रमाणा ॥) पञ्चमीवेदिनीनामा पञ्चभागप्रमाणिका । विसर्पकुष्ठाधिष्ठाना ज्ञेयाषष्ठीतुलोहिता ॥ विख्यातारोहिणीषष्ठी ग्रन्थिगण्डापचीस्थितिः । व्रीहिमात्रप्रमाणासाग्रन्थिगण्डापचीस्थितिः ॥ व्रीहिप्रमाणाग्रन्थ्यपचीगलमाण्डमालार्बुद

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्लीपदानामधिष्ठानम्। स्थूलात्वक्सप्तमीख्याताविद्रध्यादेःस्थितिश्चसा॥ साव्रीहिद्वय प्रमाणा। तदेवोक्तंशार्ङ्गधरेणस्थूलाव्रीहिद्विमात्रयेति सप्तापित्वचःसमुदिताविंशतितम भागोनषट्यवप्रमाणा॥ षट्यवप्रमाणन्तुअंगुष्ठोदरतुल्यम्। यतउक्तम्। उदरेष्वंगुष्ठ प्रमाणंगाढ़मवविध्येदिति॥ एतत्प्रमाणंमांसलेषुस्थूलेषुबोद्धव्यम्। नतुललाटसूक्ष्मां गुल्यादिषु॥ २३२॥ अवभासिनीका वर्णन॥

भ्राजक नाम पित्तके द्वारा प्रकाशित होनेसे अवभासिनी कहलाती है उसका प्रमाण जौकी लंबाई के $\frac{1}{18}$ भागहै और वह श्वेत कुष्ठ और पद्मकंकट रोगका स्थानहै दूसरी जौके सोलहवें भागकी प्रमाण वाली होती है और वह तिलकालक न्यच्छ और व्यंगोंका स्थानहै तीसरी जौके बारहवें भागकी प्रमाणवाली श्वेताहै वह चर्मदल जगल्लिका और मस्सोंका स्थानहै चौथी जौके आठवें भागकी प्रमाण वाली ताम्राहै वह किलास और श्वित्र नाम कुष्ठका स्थानहै वेदिनीनाम पांचवीं जौके पांचवें भाग की प्रमाणवाली विसर्प और कुष्ठका स्थानहै छठी रोहिणी नाम एकजौके प्रमाण वाली है यह ग्रंथि अपची गलगण्ड गण्डमाला अर्बुद और श्लीपदका स्थानहै सातवीं स्थूलाहै यह दो जौके प्रमाणवाली और विद्रधि आदि रोगोंका स्थानहै और शार्ङ्गधरने भी कहाहै कि स्थूलनाम त्वचा दो जौके प्रमाण वाली है यह कहीहुई सातों त्वचा सब मिलकर बीसवें भागरहित छःजौके प्रमाणहैं इनका प्रमाण अंगूठे के मध्यभागके समानहै क्योंकि कहाहुआहै कि उदरमें अंगूठे के समान बेध करना चाहिये परन्तु यह प्रमाण स्थूल और मांसयुक्त स्थानोंही में जानना चाहिये क्योंकि ललाट और छोटी अंगुलियों में यह होही नहीं सक्ता॥ २३२॥

अथ लोमानिलोमकूपाश्च॥

अस्थ्नांमलानिलोमानिअसंख्यानिभवन्तिहि। सन्तियावन्तिलोमानितावन्तोल्लोमकूपकाः॥ अंगप्रत्यंगनिर्वृत्तिःस्वभावादेवजायते। सन्निवेशश्चगात्राणांनात्रास्तेकारणान्तरम्॥ निर्वृत्तिःसिद्धिःस्वभावादीश्वरात्। सन्निवेशोरचनाविशेषः॥ अंगप्रत्यंग निर्वृत्तौयेभवन्त्यगुणागुणाः। तेतेगर्भस्यविज्ञेयाधर्म्माधर्म्मनिमित्तजाः॥ दंतानांपतनं जन्मपुनःपातेत्वसम्भवः। तलेष्वनुद्भवोलोम्नामेतत्सर्वंस्वभावतः॥ २३३॥

रोम और रोमकूपोंका वर्णन॥

रोम हड्डियोंके मलहैं वह असंख्य होते हैं और जितने रोम होते हैं उतनेही रोमकूप होते हैं अंग और प्रत्यंगों की उत्पत्ति और शरीरकी रचना विशेष में ईश्वरीय स्वभावही कारणहै और कोई कारण नहीं है-गर्भस्थ सन्तानकी उत्पत्ति के समय जो अंग और प्रत्यंगोंके दोष गुण होते हैं उनमें धर्म और अधर्म्मही कारणहै-दांतों का गिरकर फिर उत्पन्न होना और फिर गिरकर उत्पन्न न होना और तलुओं में रोमोंका उत्पन्न न होना यह सब स्वभावही से होताहै॥ २३३॥

गर्भेमासिमासियद्भवति तदाह॥

गर्भाशयेनिपतितेयादृक्शुक्रंतथार्त्तवम्। तादृगेवद्रवीभूतंप्रथमेमासितिष्ठति॥ मरुत्पित्तकफैस्तत्रस्थैःपच्यमानोद्वितीयके। कललस्थंमहाभूतंसमुदायोघनोभवेत्॥ अन्नमरुत्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कफयोरपिपाकहेतुत्वेतयोरत्यूष्मणेऽनधिकरत्वात् । यत्तूक्तंचरके । भौमाप्याग्नेयवायव्याःपंचोष्माणःसनाभसाः ॥ २३४ ॥

गर्भमें जो मास २ में होताहै उसका वर्णन ॥

गर्भाशयमें जिसप्रकारका वीर्य्य और रज गिरताहै प्रथम मासमें उसीप्रकार द्रवरूप रहताहै दूसरे मासमें गर्भाशयमें रहनेवाले वात पित्त और कफकी ऊष्मा के द्वारा परिपाकको प्राप्तहोकर जरायुमें प्राप्त पंचमहाभूतात्मक वीर्य्य और रज गाढ़ा होजाता है यहां परिपाकमें वायु और कफभी कारणहैं क्योंकि उनमेंभी ऊष्मा रहती है क्योंकि चरकमें कहाहै कि पृथ्वीसंबन्धी जलसम्बन्धी अग्निसंबंधी वायुसंबंधी और आकाशसंबंधी पांच ऊष्मा होती हैं ॥ २३४ ॥

तृतीयेमासिशिरसोहस्तयोःपादयोस्तथा । पिण्डकाःपंचसिध्यंतिसूक्ष्माश्चावयवास्तनोः ॥ सर्व्वाण्यंगान्युपांगानिचतुर्थेस्युःस्फुटानिहि । हृदयेव्यक्तभावेनव्यजतेचेतनापिच ॥ तस्माच्चतुर्थगर्भस्तुनानावस्तूनिवाञ्छति। ततोद्विहृदयायत्स्यान्नारीदौहृदिनीमता ॥ दौहृदावज्ञयाकुब्जंकुणिंखञ्जंचवामनम् । विकृताक्षमनक्षंवापुत्रंनारीप्रसूयते ॥ यतःस्त्रीदौहृदंप्राप्यवीर्य्यवन्तंचिरायुषम् । पुत्रंप्रसूयतेतस्मात्तस्मैवाञ्छितमर्प्पयेत् ॥ इंद्रियार्थांस्तुयान्यान्साभोक्तुमिच्छतिगर्भिणी । गर्भबाधाभयात्तांस्तान्भिषगाहृत्यदापयेत् । भोक्तुमुपभोक्तुमित्यर्थः ॥ साप्राप्तदौहृदापुत्रंजनयेत्तुगुणान्वितम् । अलब्धदौहृदागर्भेलभेतात्मनिवाभयम् ॥ येषुयेष्विंद्रियार्थेषुदौहृदेसावमानिता । प्रसूयतेसुतंसार्त्तिंतस्मिंस्तस्मिंस्तदिंद्रिये ॥ सार्त्तिसव्यथाम् ॥ २३५ ॥

तृतीयमासमें मस्तक दो हाथ और दो पैरोंके सूक्ष्मअंग प्रत्यंगवाले पांच पिण्ड उत्पन्न होते हैं- चौथेमासमें संपूर्ण अंग और प्रत्यंग प्रकाशित होते हैं और हृदयके उत्पन्न होनेसे चैतन्यताभी होतीहै इसी कारणसे चौथेमासमें गर्भ नानाप्रकारकी वांछा करता है इसीसे दो हृदयवाली स्त्री दौहृदिनी कहलाती है- दौहृद (गर्भिणी स्त्रीका अभिलाष) के अनादरसे स्त्री कुबडा- पंगुला- लूला- बौना- विगडेनेत्रवाला अथवा अंधा पुत्र उत्पन्न करती है- गर्भिणी दौहृदको पाकर बलवान् और बड़ी आयुवाली सन्तानको उत्पन्न करती है इसहेतु से उसका अभिलाष पूरा करनाचाहिये- गर्भिणी स्त्री जिस २ इन्द्रिय के विषयकी अभिलाषाकरे वह संपूर्ण गर्भकी बाधाके भयसे लाय २ कर वैद्यको दिलवाना उचितहै गर्भिणी दौहृदको पाकर गुणवान् पुत्र उत्पन्न करती है और दौहृदको न पाकर अपने में अथवा गर्भ में कुछ भयको प्राप्तहोती है-गर्भिणी जिस २ इन्द्रिय के विषय में अपमानको प्राप्तहोती है उसी २ इन्द्रियसे पीड़ायुक्त पुत्रको उत्पन्न करती है ॥ २३५ ॥

दौहृदस्य विशेषफलमाह ॥

राजसंदर्शनेयस्यादौहृदंजायतेस्त्रियाः । अर्थवंतंमहाभागंकुमारंसाप्रसूयते ॥ दुकूलपट्टकौशेयभूषणादिषुदौहृदात् । अलङ्कारैषिणंपुत्रंललितंसाप्रसूयते ॥ आश्रमेसंयतात्मानंधर्म्मशीलंप्रसूयते । देवताप्रतिमायांतुप्रसूतेपार्षदोपमम् ॥ आश्रमेतपस्विनामा दर्शनेव्यालजातीनांहिंसाशीलंप्रसूयते । रक्ताश्रमेदौहृदात्पार्षदोपमम् प्रमथोपमम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्षेत्रलोमशंशूरंमहिषामिषदौहृदात् ॥ वाराहमांसेस्वप्नालुंशूरंसंजनयेत्सुतम् । मृगमांसे तुतच्छीलंविक्रांतंवनचारिणम् ॥ अतोऽनुक्तेषुयानारीदौहृदंविदधातिहि । शरीराचार शीलैःसासमानंजनयिष्यति ॥ २३६ ॥

जो गर्भिणी को राजाके दर्शन की इच्छाहो तो धनवान् और महाभाग्यवान् पुत्र उत्पन्न होता है-रेशमी वस्त्र और भूषणादिकों के अभिलाषसे मनोहर आभूषण की इच्छावाला पुत्र उत्पन्न होता है-आश्रम की अभिलाषासे धर्मवान् और जितेन्द्रियपुत्र उत्पन्न होता है-देवताओं की प्रतिमाओं के अभिलाषासे प्रमथ (शिवजीकेपार्षद) के समान पुत्र उत्पन्न होता है-सर्पादिकों के दर्शन की अभिलाप से हिंसक पुत्र उत्पन्न होताहै- भैंसेके मांसकी इच्छासे शूरवीर रक्तनेत्र और रोमयुक्त सन्तान उत्पन्न होती है-शूकरके मांसकी इच्छासे बहुतसोनेवाला और शूरवीर पुत्र उत्पन्न होता है मृगके मांस की इच्छासे शीघ्रगामी पराक्रमी और वनमें घूमनेवाली सन्तान उत्पन्न होती है इनके सिवाय और मांसादिकोंके अभिलाष से उसीप्रकार के शरीर आचार और स्वभाववाली सन्तान उत्पन्न होती है ॥ २३६ ॥

पंचमेमानसंषष्ठेबुद्धिश्चातिप्रबुध्यते । सर्व्वाण्यंगान्युपांगानिभृशंव्यक्तानिसप्तमे ॥ ओजोऽष्टमेसंचरतिमातापुत्रौमुहुःक्रमात् । तेनतौम्लानमुदितौस्यातांजातोनजीवति ॥ नजीवत्यष्टमेजातस्तत्रौजोनस्थिरंयतः । तथानैर्ऋत्यभागत्वाद्दापयेत्तद्बलिंततः ॥ नैर्ऋत्यायभागश्चबालेषुरुद्रेणदत्तः । यतूउक्तंकुमारतंत्रे । अष्टमेमासिनैर्ऋत्यायमांसौदनं बलिंदापयेदिति ॥ २३७ ॥

पांचवें महीने में मन छठे में बुद्धि सातवें में संपूर्ण अंग और उपांग अत्यन्त प्रकाशित होते हैं और आठवें महीने में माता और पुत्रका ओजनामधातु एकका दूसरे में वारंवार घूमता रहता है इसीसे वह दोनों म्लान और प्रसन्न हुआ करते हैं इसकारण से अष्टम महीने में उत्पन्नहुई सन्तान नहींजीती क्योंकि ओजधातु स्थिर नहीं रहता-आठवें महीने में नैर्ऋत्य दिशाके देवता को बलि देना चाहिये क्योंकि वह उसके अंशका भागीहै और शिवजी ने भी बालकोंकी रक्षा के लिये उस को भाग दियाहै- कुमारतंत्रमें भी कहा है कि आठवें महीने में नैर्ऋत्यके अधिष्ठाता को मांस और भातकी बलि देनी चाहिये ॥ २३७ ॥

नवमेदशमेमासिनारीबालंप्रसूयते । एकादशेद्वादशेवाततोऽन्यत्रविकारतः॥२३८॥

नवम--दशम--एकादश अथवा द्वादश मासमें भी गर्भिणी पुत्रको उत्पन्न करती है और इससे आगे विकार से उत्पन्न हुआ जानों ॥ २३८ ॥

गर्भेयदंगंप्रथमंभवतितदाह ॥

शिरोभवतिचांगस्यपूर्वमित्याहशौनकः । शिरस्येवोपजायंतेप्रधानानीन्द्रियाणियत् । हृदयंजायतेपूर्वंकृतवीर्योऽवदन्मुनिः । बुद्धेश्चमनसश्चापियतस्तत्स्थानमीरितम ॥ पाराशर्य्यइतिप्राहपूर्वंनाभिसमुद्भवः । प्राणोयत्रस्थितोदेहंवर्द्धयत्यूष्मसंयुतः ॥ पाणिपादंभवेत्पूर्वंमार्कण्डेयमुनेर्मतम्। देहिनःसक्र्लाश्चेष्टाःपाणिपादाश्रयायतः॥प्रथमं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जायतेकोष्ठंततःसर्व्वाङ्गसम्भवः । एतत्तुकथयामासगौतमोमुनिपुंगवः ॥ सर्व्वाण्यं गान्युपाङ्गानियुगपत्सम्भवन्तिहि । सूक्ष्मत्वान्नोपलभ्यंतेमतंधन्वंतरेरिदम् ॥ आम्र स्याणुफलेभवंतियुगपन्मांसास्थिमज्जादयो लक्ष्यन्तेनपृथक्पृथक्तनुतयापुष्टास्तएव स्फुटाः । एवंगर्भसमुद्भवेत्ववयवाःसर्वेंभवन्त्येकदा लक्ष्याःसूक्ष्मतयानतेप्रकटतामायां तिवृद्धिंगताः ॥ मज्जादयःइत्यादिशब्देनत्वक्केशरमज्जत्वगंकुरवृत्तानिगृह्यन्ते ॥२३९॥

शरीर में जो अंग पहले उत्पन्न होताहै उसका वर्णन ॥

गर्भ में प्रथम शिर उत्पन्न होताहै क्योंकि शिरसेही प्रधान इन्द्रिय उत्पन्न होती हैं यह शौनक का मतहै प्रथम हृदय उत्पन्न होताहै क्योंकि वह बुद्धि और मनका स्थानहै यह कृतवीर्यमुनिका मतहै- प्रथम नाभि उत्पन्न होती है क्योंकि उसमें स्थित ऊष्मायुक्त प्राण देहको बढ़ाते हैं यह व्यासजीका मतहै- प्रथम हाथ और पैर उत्पन्न होते हैं क्योंकि देहीकी सब चेष्टा हाथ और पैरोंके आधीनहै यहमार्कण्डेयमुनिका मतहै-प्रथम कोष्ठ उत्पन्न होताहै इसके पीछे सब अंग उत्पन्न होते हैं यह मुनियों में श्रेष्ठ गौतमजी का मतहै-परन्तु यह सब ठीक नहीं है कि संपूर्ण अंग और उपांग इकट्ठे उत्पन्न होते हैं परन्तु सूक्ष्मतासे मालूम नहीं पडते यह धन्वन्तरिजीका मतहै जैसे आमके छोटे से छोटेबडे सूक्ष्म फल में गूदा, गुठली और बिजली आदि इकट्ठेही उत्पन्न होते हैं परन्तु अतिसूक्ष्मता से अलग २ नहीं मालूम होते हैं और पुष्टहोनेपर वही प्रकट होजाते हैं इसीप्रकार गर्भ के उत्पन्न होने के समय सम्पूर्णअंग इकट्ठेही उत्पन्न होते हैं परन्तु वह सूक्ष्मता से मालूम नहीं पडते और बढ़ने पर प्रकट होजाते हैं ॥ २३९ ॥

अथ शरीरेपितृजमातृजरसजात्मजाभागाउच्यन्ते ॥

तत्र। केशाःश्मश्रुचलोमानिनखादंताःशिरास्तथा। धमन्यःस्नायवःशुक्रमेतानिपितृजानिहि ॥ मांसासृङ्मज्जमेदांसियकृत्प्लीहांत्रनाभयः । हृदयञ्चगुदञ्चापिभवन्त्येतानिमातृतः ॥ शरीरोपचयोवर्णोबलंदेहस्थितिस्तथा । रसादेतानिजायन्ते भिषजोमुनयोजगुः ॥ ज्ञानंविज्ञानमायुश्चसुखदुःखादिकन्तथा। इन्द्रियाणिचसर्वाणिभवन्त्येतानिचात्मनः ॥ दुःखादिकमित्यादिशब्देननानायोनिजन्मादिकमुच्यते ॥ आत्मनःआत्मसन्निकर्षान्नत्वात्मनोजायन्तेआत्मनोनिर्विकारात्प्रकृतिभावानुपेतः २४० ॥

शरीरमें पिता, माता, रस और आत्मासे उत्पन्नहुये भागोंको कहते हैं ॥

केश, दाढ़ी, रोम, नख, दन्त, शिरा, धमनी, स्नायु और वीर्य यह पितासे उत्पन्न होते हैं मांस, रुधिर, मज्जा, मेद, यकृत्, प्लीहा, आंत, नाभि, हृदय और गुदा यह सब मातासे उत्पन्न होते हैं शरीरकी वृद्धि वर्ण, बल और देहकी स्थिति यह रससे उत्पन्न होते हैं ऐसा वैद्यमुनियोंने कहाहै ज्ञान, विज्ञान, आयु, सम्पूर्णइन्द्रिय, सुख, दुःख (नानायोनिजन्मादि) आदि यह सब आत्मा से उत्पन्न होते हैं अर्थात् आत्मा के संयोगसे उत्पन्न होते हैं क्योंकि आत्मा निर्विकार और प्रकृतिके भावोंसे रहितहै ॥ २४० ॥

गर्भस्यकिंकिंविशिष्टोपकारकन्तत्तदाह ॥

अग्नीषोमौमहीवायुर्नभःसत्त्वंरजस्तमः । पञ्चेन्द्रियाणिभूतात्मागर्भसञ्जीवयन्तिहि॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अग्निरत्रपाचकालोचकरञ्जकभ्राजकसाधकानाम् तथा पाञ्चभौतिकानां तथासप्तधातुगतानामग्नीनाम्। शक्तिरूपतयावस्थितोवाचोधिदेवत्वंप्राप्तोबोद्धव्यः ॥ पाचकादिकर्मणाजीवयतिसोमश्चपञ्चात्मकश्लेष्मरसशुक्रादीनां सोमात्मकानांभावानांरसेन्द्रियस्य चशक्तिरूपतयावस्थितोमनसश्चाधिदैवत्वंप्राप्तोबोद्धव्यः। सचसौम्यधातोरोजःप्रभृतेः पोषणेनपवनपावकसंशुष्कभागस्यार्द्रताविधानेनजीवयतीतिशेषःमहीचजलेन क्लिन्नस्यापिकठिनविधानेनवायुर्दोषधातुमलांगोपांगादीनां सञ्चारणेनोच्छ्वासनिःश्वासाभ्यां मनोरूपतयापरिणतंजीवात्मनःशरीरान्तरेजीवनग्रहणमोक्षणेहेतुरितितदपिजीवयतिपञ्चेन्द्रियाणिश्रोत्रत्वङ्नेत्रजिह्वाघ्राणानिशब्दादिग्रहणकर्म्मणा ॥ भूतात्माकर्म्मपुरुषःसचाशेषस्यैवराशेश्चैतन्यहेतुर्जीवयतीति ॥ २४१ ॥

गर्भके विशेष उपकारियों का वर्णन ॥

अग्नि,सोम,पृथ्वी,वायु,आकाश,सत्त्व,रज,तम, पांचइन्द्रिय और भूतात्मा इनके द्वारा गर्भ जीताहै यहां पाचक,आलोचक,रंजक,भ्राजक,साधक नाम पित्तोंकी पंचमहाभूतसंबंधी अग्नियोंकी और सातों धातुओं में प्राप्त अग्नियोंकी शक्तिरूप से स्थित वाणी के अधिदेवत्व को प्राप्त अग्नि जाननी चाहिये और वह पाचक आदि कार्यांसे गर्भको जिलावती है और सोम (जल) पांच श्लेष्मा रस और वीर्यादि संबंधी सोमात्मकभावों के और रसना इन्द्रियकी शक्तिरूपसे स्थित मनके अधिदेवत्वको प्राप्त जानना चाहिये वह सोमसंबंधी ओजादिक धातुओं के पोषण से और वायु तथा अग्नि के द्वारा सूखेहुये भागके आर्द्र करने से गर्भको जिलाताहै और पृथ्वी जल के द्वारा आर्द्रहुये भागको कठिन करने से गर्भको जिलाती है और वायु दोष धातु मल अंग और उपांगादि के चलाने से और श्वास के भीतर लेने और छोड़ने से गर्भको जिलाती है और आकाश वायु तथा अग्नि के द्वारा विदीर्णहुये स्रोतों को ऊपर नीचे और तिरछे अवकाश देने से गर्भको जिलाता है सत्त्व रज और तम मनरूपसे बदलकर जीवात्माके शरीरान्तर में जीवके ग्रहण और त्यागमें हेतु होने के कारण से गर्भको जिलाते हैं और कान, त्वचा, नेत्र, जिह्वा और नासिका यह पांचों इन्द्रिय शब्दादिकों के ग्रहण करने से गर्भको जिलाती हैं जीवात्मा अर्थात् कर्मपुरुष सम्पूर्णजगत् को चैतन्य करके गर्भको जिलाताहै ॥ २४१ ॥

अपरंगर्भस्यजीवनोपायमाह ॥

गर्भस्यनाभिनाड्यातुनाडीरसवहास्त्रियाः। संलग्नातेनगर्भस्यवृद्धिर्भवतिनित्यशः॥ निःश्वासोच्छ्वाससंक्षोभस्वप्नांशान्सोऽधिगच्छति । मातुर्निश्वसितोच्छ्वाससंक्षोभः स्वप्नसम्भवात् ॥ संक्षोभःसञ्चलनम्मातानिश्वासादिकायाश्चेष्टाःकरोतितास्तागर्भोऽपिकरोतीत्यर्थः ॥ २४२ ॥

गर्भके जीने का दूसरा उपाय ॥

स्त्रीकी रसकी लेजानेवाली नाडी गर्भकी नाभिकी नाड़ीसे लगी होती है इससे गर्भकी नित्यवृद्धि होती है माता के श्वास लेने और छोड़ने चलने और सोने से गर्भभी श्वास लेता और छोड़ताहै चलता और सोताहै अर्थात् जो २ चेष्टा माता करती है वह सब गर्भभी करता है ॥ २४२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ गर्भवृद्धेर्हेतुमुपायमाह ॥

गर्भस्यनाभिमध्येतुज्योतिःस्थानंध्रुवंस्मृतम् । तदाधमतिवातश्चदेहस्तेनास्यवर्द्धते ॥ उष्णेनासहितश्चापिदारयत्यस्यमारुतः । ऊर्ध्वन्तिर्य्यगधस्ताच्चस्रोतांसितुयथा तथा ॥ यथादारयतिविस्तारयति । तथातथादेहींवर्द्धयति इतिपूर्वेणान्वयः॥ २४३ ॥

गर्भ की वृद्धिके हेतुरूप उपाय को कहते हैं ॥

गर्भकी नाभिके मध्यमें तेजका स्थान होताहै और वायु उसको धोंकती है इससे उसका शरीर बढ़ताहै ऊष्मासहित वायु ऊपर नीचे और तिरछे तथा स्रोतोंको जैसे २ विस्तारित करताहै वैसेही वैसे वह बढ़ता है ॥ २४३ ॥

दृष्टिरोमकूपानामवृद्धिमाह ॥

दृष्टिश्चरोमकूपाश्चनवर्द्धन्तेकदाचन।ध्रुवाण्येतानिमर्त्यानामितिधन्वन्तरेर्मतम्॥२४४॥

दृष्टि और रोमकूपों के न बढ़नेका वर्णन ॥

दृष्टि और रोमकूप कभी नहीं बढ़ते हैं क्योंकि वह मनुष्यों के सदैव एकरूप से रहते हैं यह धन्वन्तरिजीका मतहै ॥ २४४ ॥

नखकेशानांसदावृद्धिमाह ॥

शरीरेक्षीयमाणेऽपिवर्द्धेतेद्वाविमौसदा । स्वभावंप्रकृतिंकृत्वानखकेशावितिस्थितिः ॥ प्रकृतिंकृत्वाकारणंकृत्वास्थितिर्मर्य्यादा ॥ २४५ ॥

नख और केशोंकी सदैव वृद्धिका वर्णन ॥

शरीरके क्षीणहोनेपरभी यह नख और केश दोनों स्वभावके कारण सदैव बढ़ते हैं यह मर्य्यादाहै॥२४५॥

अचेतनान्यंगान्याह ॥

चेतनानामधिष्ठानंमनोदेहश्चसेन्द्रियः । केशलोमनखाग्रांतर्मलद्रव्यगुणैर्विना ॥२४६॥

चेतनारहित अंगों का वर्णन ॥

मन और इन्द्रियों करके सहित देह चेतनाका स्थान है और केश- रोम, नखाग्र, भीतरका मल द्रव्य और गुण अचेतनहैं ॥ २४६ ॥

गर्भस्य वातविण्मूत्रोत्सर्गाकरणे कारणमाह ॥

वाताल्पत्वादयोगाच्च वायोःपक्वाशयस्यच । वातमूत्रपुरीषाणि गर्भस्थोनविमुञ्चति ॥ (अयोगात् । ईषद्योगात्) ॥ २४७ ॥

गर्भके वायु विष्ठा और मूत्र के त्याग न करनेका वर्णन ॥

वायुकी अल्पता और पक्वाशयमें गये हुये वायुके अल्पयोग होने से गर्भमें स्थित जीव वायु मूत्र और विष्ठाको नहीं करताहै ॥ २४७ ॥

गर्भारोदने कारणमाह ॥

जरायुणामुखेच्छन्नेकण्ठेचकफवेष्टिते।वायोर्मार्गनिरोधाच्च नगर्भस्थःप्ररोदिति ॥ २४८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गर्भके न रोनेका कारण ॥

जरायुके द्वारा मुख के ढकेरहने कफके द्वारा कण्ठ के घिरेहोने और वायुके मार्गके न होनेसे गर्भ का जीव नहीं रोता है॥ २४८ ॥

अथ गर्भवतीकृत्याकृत्यानि ॥

गुर्विणीप्रथमादह्नः प्रहृष्टाभूषिताशुचिः । भवेच्छुक्लाम्बरधरा गुरुविप्रार्चनेरता ॥ भोज्यन्तुमधुरप्रायं स्निग्धंहृद्यन्द्रवंलघु । संस्कृतंदीपनीयन्तु नित्यमेवोपयोजयेत् ॥ गुर्विणीनतुकुर्वीत व्यायाममपतर्पणम् । व्यवायञ्चनसेवेत नकुर्यादतितर्पणम् ॥ रात्रौजागरणंशोकं यानस्यारोहणंतथा । रक्तमोक्षंवेगरोधं नकुर्य्यादुत्कटासनम् ॥ दोषाभिघातैर्गर्भिण्या योयोभागःप्रपीड्यते । ससभागःशिशोस्तस्य गर्भस्थस्यप्रपीड्यते ॥ मलिनांविकृताकारां हीनांगीन्नस्पृशेत्स्त्रियम् । नजिघ्रेदपिदुर्गन्धं नपश्येन्नयनाप्रियम् ॥ वचांसिनापिशृणुयात्कर्णयोरप्रियाणिच । नान्नंपर्य्युषितंशुष्कं भुञ्जीतक्वथितंनच ॥ चैत्यश्मशानवृक्षांश्च भावांश्चाप्ययशस्करान् । बहिर्निष्क्रमणंक्रोधं शून्यागारञ्चवर्ज्जयेत् ॥ नोच्चैर्ब्रूयान्नतत्कुर्य्याद् येनगर्भोविनश्यति । तैलाभ्यंगोद्वर्तनञ्च नात्यर्थंकारयेदपि ॥ नामृद्वास्तरणं कुर्य्यान्नात्युच्चंशयनासनम् । एतांस्तुनियमान्सर्वान् यत्नात्कुर्वीतगुर्विणी ॥ २४९ ॥

गर्भवती की कृत्य और अकृत्य ॥

गर्भवती स्त्री पहले दिनसे प्रसन्न आभूषण युक्त, पवित्र, श्वेत वस्त्रोंकी धारण करनेवाली और गुरु तथा ब्राह्मण के पूजन में रतहोवे और नित्य मधुर सचिक्कण हृदयकी रुचि योग्यतर हलका संस्कारयुक्त और अग्निका बढ़ानेवाला भोजनकरे और गर्भवती स्त्री व्यायाम, लंघन, मैथुन बहुत भोजन, रात्रि में जागरण, शोक, सवारी पर चढ़ना फस्त लेना मूत्रादि वेगोंका रोकना और उकडू बैठना इन सब बातों को छोड़देवे दोष और चोटलगने से गर्भिणी स्त्रीका जो २ भाग पीड़ित होताहै वह वह भाग गर्भ में स्थितहोने वाले बालक का भी पीड़ित होता है गर्भिणी स्त्री मलिन विकारयुक्त चेष्टावाली और हीन अंगवाली किसी स्त्रीको न स्पर्श करे, दुर्गन्धि न सूंघे नेत्रों के अप्रियको न देखे कानोंके अप्रिय वचनोंको न सुने, बासी और सूखे और क्वाथ किये हुये अन्न को न खाय और चैत्य जिन वृक्षोंपर भूतादि रहतेहैं और श्मशान वृक्ष अपयश करनेवाले कार्य्य, बाहरजाना क्रोध और शून्यघरको त्यागकरदे और जोरसे न बोले ऐसा कोई काम न करे जिससे गर्भ नष्ट होवे और बहुत तेललगाना तथा उबटन न करावे- कठोर बिछौने तथा ऊंची शय्यापर न सोवे गर्भिणी स्त्री इन नियमों को यत्नपूर्व्वक करे ॥ २४६ ॥

अथ प्रसवमासानाह ॥

नवमेदशमेमासि नारीगर्भंप्रसूयते । एकादशेद्वादशेवा ततोऽन्यत्रविकारतः ॥२५०॥

प्रसवमासों का वर्णन ॥

स्त्री नवे दशवें ग्यारहवें अथवा बारहवें महीने में संतान को उत्पन्न करती है इससे भिन्न विकार युक्त जानना चाहिये ॥ २५० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ सूतिकागृहाकृतिः ॥

अष्टहस्तायतञ्चारु चतुर्हस्तविशालकम् । प्राचीद्वारमुदग्द्वारं विदध्यात्सूतिकागृहम् ॥ २५१ ॥

सूतिकागृहकी आकृतिका वर्णन ॥

आठ हाथ लंबा चारहाथ चौड़ा पूर्व अथवा उत्तरकी ओर द्वारवाला सुन्दर सूतिका गृह बनावै॥२५१॥

आसन्नप्रसवाया लक्षणमाह ॥

जातेहिशिथिलेकुक्षौ मुक्तेहृदयबन्धने । सशूलेजघनेनारी विज्ञेयाप्रसवोन्मुखा॥ आसन्नप्रसवायास्तु कटीपृष्ठन्तुसव्यथम्। भवेन्मुहुःप्रवृत्तिश्च मूत्रस्यचमलस्यच॥ २५२॥

शीघ्रप्रसवहोनेवालीके लक्षण ॥

कोखके शिथिल होजाने पर हृदयबंधन के छूटजाने पर और कटिके आगेकी ओर वेदना होनेपर स्त्री शीघ्र प्रसव उत्पन्न करनेवाली जाननी चाहिये शीघ्रप्रसव होनेवाली स्त्री के कटि तथा पीठ में पीडा और मल और मूत्रकी बारंबार प्रवृत्ति होती है ॥ २५२ ॥

अथासन्नप्रसवाया उपचारः ॥

तैलेनाभ्यक्तगात्राणां संस्नातामुष्णवारिणा । यवागूम्पाययेत्कोष्णां मात्रयाघृतसंयुताम् ॥ कृतोपधानेमृदुभिर्विस्तीर्णेशयनेशनैः । आभुग्नसक्थिचोत्ताना नारीतिष्ठेद्व्यथान्विता ॥ (आभुग्नसक्थि आसङ्कोचितोरू) ॥ २५३ ॥

शीघ्रप्रसव न होनेवाली के उपचार ॥

शरीरमें तेल लगाकर गरमजलसे स्नानकरवाके शीघ्रप्रसवहोनेवाली स्त्री को कुछ उष्ण मात्रा के अनुसार घृतसंयुक्त यवागू (छःगुनेपानीमें पकेहुये चामल) पिलावे तकिआ और कोमल बिछौने से युक्त शयनपर घुटनोंको फैलाकर उतानी व्यथावाली स्त्री सोवे ॥ २५३ ॥

अथ जनयित्री ॥

चतस्रोऽशङ्कनीयाश्च स्रावणेकुशलाहिताः । वृद्धाःपरिचरेयुस्ताः सम्यक्छिन्ननखाः स्त्रियः ॥ २५४ ॥

दाइयोंका वर्णन ॥

विश्वासित सन्तान उत्पन्न कराने में प्रवीण हितकी चाहनेवाली वृद्ध अच्छे प्रकारसे कटे हुए नखवाली चार स्त्रियां सेवा करैं ॥ २५४ ॥

अथ जनयित्रीकृत्यम् ।

अपत्यमार्गंतैलेन समभ्यज्यसमन्ततः । एकातुतासुसुभगे प्रवाहस्वेतितांवदेत् ॥ अव्यथामाप्रवाहिष्ठाः प्रवाहेथाव्यथायदि । प्रवाहेथाःशनैःपूर्वं प्रगाढञ्चततःपरम् ॥ ततोगाढतरेगर्भे योनिद्वारमुपागते । अपरासहितोगर्भो यावत्पततिभूतले ॥ २५५ ॥

दाइयों का काम ॥

गर्भके मार्गको तेलसे अच्छेप्रकार सब ओर चुपड़कर एकदाई हे सुभगे ! प्रवाह करो ऐसा कहे-व्यथारहित स्त्री प्रवाहन (गर्भके निकालनेके लिये कांखकर बलकरना) न करे और व्यथा होय तो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करे प्रथम धीरे २ करे फिर जोरसे करे फिर गर्भको योनिके द्वारपर आजानेपर जबतक नालस-हित गर्भ पृथ्वीपर नहीं गिरे तबतक बहुत जोरसे प्रवाहन करे ॥ २५५ ॥

व्यथारहितायाः प्रवाहणाद्दैगुण्यमाह ॥

मूकंवाबधिरंकुब्जंश्वासकासक्षयान्वितम्।सूतेस्रस्ततनुंबालमकालेतुप्रवाहणात्॥२५६॥

इति श्रीमिश्रलटकनतनयश्रीमन्मिश्रभावविरचितेभावप्रकाशे गर्भप्रकरणंद्वितीयम्॥ २ ॥

व्यथारहित स्त्रीके प्रवाहन करने में दोष ॥

समय के विना प्रवाहन करने से गूंगा- बहिरा- कुबड़ा- श्वास, खांसी तथा क्षयसे युक्त शिथिल अंगवाला बालक उत्पन्न होता है॥ २५६ ॥

इति श्रीमिश्रलटकनतनयश्रीमन्मिश्रभावविरचितभावप्रकाशस्य भाषानुवादे गर्भप्रकरणं द्वितीयम् ॥ २ ॥

अथ बालस्यजन्मोत्तरविधिः ॥

अथ बालेसमुत्पन्ने विदधीतविधिंततः। यथैवकुलवृद्धास्त्री व्यवहारपरम्परा ॥ १ ॥

बालक के जन्म होने के उपरान्त की विधि ॥

बालक के उत्पन्नहोने के उपरान्त कुलकी वृद्ध स्त्रियों के व्यवहार की परम्परा के अनुसार विधिकरे ॥ १ ॥

अथ प्रसूताया नियमानाह ॥

प्रसूताहितमाहारं विहारंचसमाचरेत्। व्यायाममैथुनंक्रोधं शीतसेवांविवर्जयेत् ॥ मिथ्या चारात्सूतिकायायोव्याधिरुपजायते। सकृच्छ्रसाध्योऽसाध्योवाभवेत्तत्पथ्यमाचरेत्॥२॥

प्रसूता स्त्रीके नियम ॥

प्रसूता स्त्री हित आहार और विहार करे और व्यायाम मैथुन- क्रोध- सर्दी खाना आदि न करे विरुद्ध आहार से उसको जो व्याधि उत्पन्न होती है वह कष्टसाध्य अथवा असाध्य होती है इससे पथ्य करना चाहिये ॥ २ ॥

प्रसूतायानियमसमयाऽवधिमाह ॥

सर्वतःपरिशुद्धास्यात्स्निग्धपथ्याऽल्पभोजना । स्वेदाभ्यंगपरानित्यंभवेन्मासमत न्द्रिता ॥ ४ ॥ सर्वतःपरिशुद्धातुअवसृष्टदुष्टरुधिराअतन्द्रितासावधाना ॥ ३ ॥

प्रसूता स्त्रीके नियमों के समय की अवधि ॥

महीने भरतक बिगडे हुये रुधिर का त्यागकरे चिकना पथ्य वा थोड़ा भोजन करे प्रतिदिन स्वेद निकालने के लिये तैलमर्दन करे और सावधान रहै ॥ ३ ॥

प्रसूतासार्द्धमासान्तेदृष्टेवापुनरार्त्तवे । सूतिकानामहीनास्यादितिधन्वन्तरेर्मतम् ॥ व्युपद्रवांविशुद्धाञ्चविज्ञायवरवर्णिनीम् । ऊर्ध्वंचतुर्भ्योमासेभ्योनियमंपरिहारयेत् ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रसूता स्त्री डेढ़ महीने में अथवा फिर ऋतुके होनेतक सूतिकापने से रहित होजातीहै यह धन्वन्तरिजी का मतहै उपद्रवोंसे रहित और शुद्ध शरीरवाली जानकर चारमहीने के उपरान्त प्रसूता स्त्री को नियमों का त्याग करावे ॥ ४ ॥

अथ स्तन्यस्वरूपमाह ॥

रसप्रसादोमधुरःपक्काहारनिमित्तजः। कृत्स्नाद्देहात्स्तनौप्राप्तःस्तन्यमित्यभिधीयते रसप्रसादोरसस्यसारः ॥ ५ ॥

दुग्धका स्वरूप ॥

रसका उत्तम भाग परिपाकको प्राप्तहुए आहार से उत्पन्नहुआ मधुरताको प्राप्त संपूर्ण देह से स्तनों में प्राप्तहुआ स्तन्य अर्थात् दुग्ध कहलाताहै ॥ ५ ॥

स्तन्यस्यप्रवृत्तिमाह ॥

स्तन्यंत्रिरात्रात्स्त्रीणांवाचतूरात्रादनन्तरम्।प्रवर्त्तयन्तिविवृताधमन्योहृदयेस्थिताः॥६॥

दुग्धका निकलना ॥

हृदयमें स्थित फैलीहुई धमनी तीन अथवा चार रात्रिके उपरान्त स्त्रियोंके दूधको निकालतीहैं॥६॥

अथ स्तन्यप्रवृत्तिमाह ॥

पयःपुत्रस्यसंस्पर्शाद्दर्शनात्स्पर्शनादपि। ग्रहणादप्युरोजस्यशुक्रवत्संप्रवर्त्तते ॥ स्नेहोनिरन्तरस्तस्यप्रवाहेहेतुरुच्यते ॥ ७ ॥

दुग्धकी प्रवृत्ति ॥

दूधपुत्रके स्पर्शकरने से देखने से स्मरण करने से और ग्रहण करनेसेभी वीर्य्य के समान स्तनों से प्रवृत्त होताहै इससे निरन्तर स्नेहही दुग्धके प्रवाह में कारण होता है ॥ ७ ॥

अथ स्तन्यस्याल्पतायांहेतुमाह ॥

अवात्सल्याद्भयाच्छोकात्क्रोधादत्यपतर्पणात् । स्त्रीणांस्तन्यंभवेत्स्वल्पंगर्भान्तरविधारणात् ॥ ८ ॥

दुग्धकेथोड़ेहोनेका कारण ॥

स्नेहका न होना- भय- शोक-क्रोध-लंघन और दूसरे गर्भके धारण करने से स्त्रियोंका दूध थोड़ा होजाता है ॥ ८ ॥

अथ स्तन्यस्यवृद्धिहेतुमाह ॥

शालिषष्टिकगोधूमान्मांसक्षुद्रयवानपि। कालशाकमलाबूञ्चनारिकेरंकसेरुकम्॥शृंगाटकंवरींचापिविदारींकन्दमेवच। लशुनंदुग्धवृद्ध्यैस्त्रीसेवेतसुमनाभवेत् ॥ कमलस्यतण्डुलानांकल्कंयाक्षीरेपेषितंपिबति। साभवतिभृशंतरुणीक्षीरभरेणैवतुङ्गकुचयुगला ॥ काश्मीरकलमोधान्यविशेषस्तस्यलक्षणमाह। कलमःकलिविरयातोजायतेसब्रहद्वने। काश्मीरदेशएवोक्तोमहातण्डुलसंज्ञकः ॥ विदारिकन्दस्यरसंपिबेत्स्तन्यस्यवृद्धये। तच्चूर्णंतस्यवृद्ध्यर्थंपिबेद्वाक्षीरसंयुतम् ॥ ६ ॥

दुग्धकी वृद्धिका कारण ॥

शालि- साठीके चावल- गेंहू- मांस- छोटी मछली- नारीकासाग-लौकी- नारियल - कसेरू-सिंघा-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ड़ा-सतावरि- विदारीकन्द-लहसन- इन वस्तुओं को सती दूध बढ़नेके लिये प्रसन्नचित्तहोकर सेवन करे जो स्त्री कलमके चावलोंको दूधके साथ पीसकर पीती है वह दूधके भारसे उन्नत दोनों स्तनवाली होती है कलम धान्य विशेषको कहतेहैं उसका यह लक्षणहै कि कलम कलिनामसे विख्यात बहुत जलमें उत्पन्न होताहै वही काश्मीरदेशमें महातंडुल नामसे विख्यातहै- दूधके बढ़ने के लिये विदारीकन्दकारस अथवा दूधसमेत उसका चूर्ण पिये ॥ ६ ॥

अथ स्तन्यस्यदुष्टहेतुमाह ॥

धात्र्यागुरुभिराहारैर्विहारैर्दोषलैस्तथा । देहेदोषाःप्रकुप्यंतिततःस्तन्यंप्रदुष्यति मिथ्याहारविहारिण्यादुष्टावातादयःस्त्रियाःदूषयंतिपयस्तेनशरीरेव्याधयःशिशोः॥१०॥

दूधके दुष्ट होनेकाकारण ॥

धायके गरिष्ठ और दोषयुक्त आहार विहारोंसे देहमें कोपको प्राप्त हुए दोष दूधको बिगाड़ते हैं- विरुद्ध आहार विहार करनेवाली स्त्री के वात आदिक बिगड़कर दूधको बिगाड़ते हैं इससे बालक के शरीरमें रोग उत्पन्न होते हैं ॥ १० ॥

अथ दुष्टस्तन्यस्य लक्षणमाह ॥

कषायंसलिलप्लाविस्तन्यंमारुतदूषितम् । पित्तादम्लञ्चकटुकंराज्योऽम्भसितुपीतिका ॥ कफदुष्टंतुयत्तोयेनिमज्जतिचपिच्छिलम् । द्वंद्वजंतुद्विलिंगंस्यात्त्रिलिंगंसान्निपातिकम् ॥ ११ ॥

बिगड़ेहुए दूधके लक्षण ॥

वायुसे बिगड़ा हुआ दूध कसैला और पानी में तिरनेवाला- पित्त से बिगड़ा हुआ खट्टा कडुआ और पानीमें डालनेसे पीली रेखावाला और कफसे बिगड़ाहुआ दूध चिकना और पानी में डालने से डूबनेवाला होताहै और दो दोषोंसे बिगड़ा हुआ दोनोंके लक्षणोंसे युक्त और तीनों दोषोंसे बिगड़ा हुआ तीनों लक्षणोंवाला होताहै ॥ ११ ॥

अथ दुष्टस्तन्यस्य शोधनविधिमाह ॥

धात्रीक्षीरविशुद्ध्यर्थंमुद्गयूषरसाशिनी । भार्ङ्गीदारुवचापिष्ट्वापिबेत्सातिविषास्तथा॥ पाठामूर्वाब्दभूनिम्बैर्दारुशुण्ठीकलिंगकैः । सारिवामत्स्यपित्ताख्यैः क्वाथःस्तन्यविशोधनः॥ मतस्यपित्ताकटुकी ॥ पटोलनिम्बासनदारुपाठा मूर्वागुडूचीकटुरोहिणीच । सनागरञ्चकथितञ्चतोयेधात्रीपिबेत्स्तन्यविशुद्धिहेतोः ॥ १२ ॥

बिगड़ेहुए दूध के शोधनकी विधि ॥

धाय दूध के शुद्ध करने के लिये भारंगी- देवदारु- वच और अतीस को पीसकर पिये और मूंग का पानी अथवा मांसका रस पिये और पाठा (पाढ़र) चिनार- नागरमोथा- चिरायता- देवदारु सोंठ- इन्द्रजौ- सारिवा (अनन्तमूल) और कुटकी इन सबका क्वाथदूध का शुद्ध करनेवाला होता है परवल- नींब- पीतशालि- देवदारु- पाढ़र- चिनार गिलोय- कुटकी और सोंठ इनके क्वाथ को धाय दूधके शुद्ध करने के निमित्त पिये ॥ १२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ शुद्धस्यलक्षणमाह ॥

नीरेस्तन्यंयदेकीस्यादविवर्णमतन्तुमत्। पाण्डुरंतनुशीतञ्चतद्दुग्धंशुद्धमादिशेत् ॥१३॥

शुद्धदूधके लक्षण ॥

जो दूध पानी में छोडने से मिलजाय कहेहुए वातादिविकारों से रहितहो जिसमें रेखा न पड- तीहों श्वेतवर्ण पतला और शीतल हो वह दूध शुद्ध जानना चाहिये ॥ १३ ॥

धात्रीलक्षणमाह ॥

पीतायदिबालस्यविदध्यादुपमातरम् । सुविचार्य्यगुणान्दोषान्कुर्य्याद्धात्रींतदे दृशीम् ॥ सवर्णांमध्यवयसां सच्छीलांमुदितांसदा । शुद्धदुग्धाम्बहुक्षीरांसवत्सामति वत्सलाम्। स्वाधीनामल्पसन्तुष्टांकुलीनांसज्जनात्मजाम् ॥ कैतवेनापरित्यक्तां निज पुत्रदृशंशिशौ ॥ १४ ॥

धाय के लक्षण ॥

जो बालक के दूध पिलाने के लिये धायरक्खे तो गुणदोषों को विचार करके इस प्रकार की रक्खे कि अपनी जातिकी, मध्य अवस्थावाली, अच्छेस्वभाववाली, सदैव प्रसन्न, शुद्ध और बहुत दूधवाली, सन्तानयुक्त, बहुतप्रेमकरनेवाली, अपने आधीन, थोडे में सन्तोष करनेवाली, कुलीन, सज्जन की कन्या, कपटरहित और बालक को अपने पुत्र के समान जाननेवाली ऐसी स्त्री को धाय बनावे ॥ १४ ॥

अथ निषिद्धांधात्रीमाह ॥

शोकाकुलाक्षुधार्त्ताच श्रान्ताव्याधिमतीसदा । अत्युच्चानितरांनीचास्थूलातीवभृशं कृशा ॥ गर्भिणीज्वरिणीचापिलम्बोन्नतपयोधरा । अजीर्णभोजिनीचापि तथापथ्यविव र्जिता ॥ आसक्ताक्षुद्रकार्य्येतु दुःखार्त्ताचञ्चलापिच । एतासांस्तन्यपानेन शिशुर्भव तिसामयः ॥ १५ ॥

निषिद्ध धाय के लक्षण ॥

शोकसेव्याकुल, भूखी, थकीहुई, सदैवरोगिणी, बहुत बडी या बहुत छोटी, बहुत मोटी या दुबली, गर्भिणी, ज्वरयुक्त, लंबे और ऊंचे स्तनवाली, अजीर्ण में भोजन करनेवाली, पथ्यरहित, शुद्रकाम करनेवाली, दुःखित और चंचल ऐसी स्त्रियोंके दूधपीनेसे बालक रोगी होजाताहै ॥ १५ ॥

अथ बालस्यस्तन्यपानविधिः ॥

तत्रमाताप्रशस्तांगी चारुवस्त्रापुरोमुखी । उपविश्यासनेसम्यग्दक्षिणंस्तनमम्बु ना ॥ प्रक्षाल्येषत्परिस्राव्य मन्त्राभ्यामभिमन्त्रितम् । उदङ्मुखंशिशुंक्रोडेशनैःसन्धार्य पाययेत् ॥ मातेत्युपलक्षणम् धात्रीच ॥ १६ ॥ ईषत्परिस्राव्य ॥

बालक के दूध पिलाने की विधि ॥

सुन्दर अंगवाली बालककी माता अथवा धाय सुन्दर वस्त्रोंको पहनकर पूर्वाभिमुख आसन पर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बैठकर दक्षिणस्तनको जल से धोकर कुछ दूध निचोड़कर और मंत्रोंसे अभिमंत्रित करके उत्तरकी ओर मुखवाले बालकको गोदी में धीरेसे लुटाकर दूध पिलावे ॥ १६ ॥

अन्यथावैगुण्यमाह । सुश्रुतः । अस्राविर्तस्तनंबालः पिबन्स्तन्येनभूयसा । पूर्णश्रोतावमीकासश्वासैर्भवतिपीडितः ॥ १७ ॥

विनानिचोड़े दूधपिलाने का दोष सुश्रुतजी लिखतेहैं ॥

विनानिचोड़े हुए स्तनको पीनेवाला बालक बहुत दूधसे गलेकी नाड़ीके पूर्ण होजाने के कारण छर्दि खांसी और श्वास से पीड़ित होताहै ॥ १७ ॥

अभिमंत्रणमाह ॥

क्षीरनीरनिधिस्तेतुस्तनयोःक्षीरपूरकः । सदैवशुभगोबालो भवत्येषमहाबलः॥ पयोऽमृतसमम्पीत्वाकुमारस्तेशुभानने । दीर्घमायुरवाप्नोतिदेवाःप्राप्यामृतंयथा ॥ मन्त्रौचपित्रान्येनब्राह्मणेनपठनीयौ यावन्मन्त्रपाठस्तावन्मात्रा धात्र्यादक्षिणहस्तेनस्पर्शःकार्य्यः॥ १८ ॥

अभिमंत्रण ॥

हे सुन्दर नेत्रवाली ! क्षीरसमुद्र और जलसमुद्र तुम्हारे स्तनोंको दूधसे पूर्ण करे यह बालक सदैव सुन्दर और महाबलवान्हो जैसे देवतालोग अमृतको पीकर अमरहुएहैं उसी प्रकार अमृत के समान तुम्हारे दूधको पीकर यह बालक दीर्घायु होवे इनमंत्रोंको पिता या अन्य कोई ब्राह्मण पढ़े जबतक मंत्र पढ़ाजाय तबतक माता अथवा धाय दक्षिण हाथ से दक्षिणस्तनको पकड़ेरहे ॥ १८ ॥

अथ जनन्याक्षीराभावेधात्र्याश्चालाभेप्रकारमाह ॥

क्षीरसात्म्यतयाक्षीरमाजंगव्यमथापिवा।दद्यादास्तन्यपर्य्याप्तेर्बालेभ्योवीक्ष्यमात्रया॥ क्षीरसात्म्यतयेतियतः शिशोः क्षीरमेवासात्म्यम्भवति नत्वन्नादिकम् । स्तन्यपर्य्याप्तेरितियावत्स्त्रियाःस्तन्यस्यसन्ततोभावेनप्राप्तिर्भवति ॥ अथ यावत्स्तन्यपानस्य योग्यतातावदित्यर्थः ॥ १९ ॥

माताके दूध न होने में और धायके न मिलने में उपाय ॥

माता अथवा धायके दूध न मिलने पर जबतक स्त्री के दूधहो आवे अथवा जबतक दूधपीने के लायकहो तबतक बकरी अथवा गौका दूधही मात्राके अनुसार बालक को पिलावे क्योंकि बालक को दूधही सात्म्य होताहै न कि अन्नादिक ॥ १६ ॥

अथ बालस्यान्नप्राशनसमयः ॥

यथोक्तविधिनाबालंमासिषष्ठेऽष्टमेऽपिच । अन्नंसम्प्राशयेत्किञ्चित्ततस्तद्वर्द्धयन्क्रमात् ॥ २० ॥

बालक के अन्नप्राशनका समय ॥

छठे अथवा आठवें महीने में बालक को कुछ अन्न चटावे फिर क्रम २ से बढ़ावे ॥ २० ॥

अथ बालस्य परिचर्य्याविधिः ॥

बालमङ्केसुखन्दद्यान्नचैनन्तर्ज्जयेत्क्वचित् । सहसाबोधयेन्नैवनायोग्यमुपवेशयेत् ॥ अयोग्यंउपवेशनासमर्थम् । नाकृष्यस्थापयेत्क्रोडेनक्षिप्रंशयनेक्षिपेत् । रोदयेन्नक्वचित्कार्ये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विधिमावश्यकंविना ॥ आवश्यकोविधिःभेषजदानतैलाभ्यंगोद्वर्त्तनादिभिः । तच्चित्तमनुवर्त्तेततंसदैवानुमोदयेत् ॥ निम्नोच्चस्थानतश्चापिरक्षेद्बालं प्रयत्नतः ॥ २१ ॥

बालककी परिचर्य्या की विधि ॥

बालकको सुखपूर्वक गोदी में रखकर सुखी करे और कभी ललकारे नहीं एकीएका न जगावे बैठने की सामर्थ्य विना कभी न बैठावे खेंचकर गोदी में न बैठावे जल्दीसे बिछौने पर न डालदे आवश्यकविधि (औषधिदेना तेललगाना आदि) के विना कभी न रुलावे उसके चित्तके अनुकूल कामकरे सदैव उसको प्रसन्न रक्खे और नीचे ऊंचे स्थान से बालककी यत्नपूर्वक रक्षाकरे ॥ २१ ॥

बालस्य स्वभावाद्धितान्याह ॥

अभ्यंगोद्वर्त्तनंस्नानंनेत्रयोरञ्जनन्तथा । वसनंमृदुयत्तच्चतथामृद्वनुलेपनम् ॥ जन्मप्रभृतिपथ्यानिबालस्यैतानिसर्व्वथा ॥ २२ ॥

बालककी स्वाभाविक हितकारी वस्तु ॥

तेल लगाना, उबटन, स्नान, नेत्रों में अञ्जन, कोमल वस्त्र और कोमललेप यह सब बालकको जन्म सेही लेकर हितकारी हैं ॥ २२ ॥

बालस्य कवलादेःसमयमाह ॥

कवलःपञ्चमाद्वर्षादष्टमान्नस्यकर्मच । विरेकःषोड़शाद्वर्षाद्विंशतेश्चैवमैथुनम् ॥२३॥

बालकको ग्रास आदि देनेका समय ॥

बालक को पांचवें वर्ष से ग्रास आठवें से हुलास सोलहवें से विरेचन और बीसवें वर्षसे मैथुन उचितहै ॥२३॥

बालादेरवधिमाह सुश्रुतः ॥

वयस्तुत्रिविधम्बाल्यं मध्यमंवार्द्धकन्तथा । ऊनषोड़शवर्षस्तु नरोबालोनिगद्यते ॥ त्रिविधःसोऽपिदुग्धाशी दुग्धान्नाशीतथान्नभुक् । दुग्धाशीवर्षपर्य्यन्तंदुग्धान्नाशीशरद्द्वयम् । तदुत्तरंस्यादन्नाशी एवंबालस्त्रिधामतः ॥ २४ ॥

सुश्रुतकी कहीहुई बाल्यावस्था आदिकी अवधि ॥

तीनप्रकारकी अवस्था होती हैं बाल्य मध्यम और वृद्धता सोलह वर्षसे कमका बालक कहावता है वह तीनप्रकारका होताहै दूध पीनेवाला दूध और अन्न खानेवाला और केवल अन्न खानेवाला एक वर्षतक दूध पीनेवाला दो वर्षतक दूध और अन्न खानेवाला इसके उपरान्त सुन्दर अन्न खानेवाला यह तीन प्रकारके बालक होते हैं ॥ २४ ॥

मध्येषोड़शसप्तत्योर्मध्यमःकथितोबुधैः । चतुर्द्धामध्यमोवृद्धियुवापूर्णक्षयान्वितः ॥ भवेदाविंशतेर्वृद्धिःयुवाद्यात्रिंशतोमतः । चत्वारिंशत्समायावत्तिष्ठेद्वीर्य्यादिपूरितः ॥ ततःक्रमेणक्षीणःस्याद्यावद्भवतिसप्ततिः ॥ वीर्य्यादित्यादि शब्देन रसादिसर्व्वधात्विन्द्रियबलोत्साहा उच्यन्ते । क्षीणःसर्व्वधात्विन्द्रियबलोत्साहैर्हीनः ॥ ततस्तुसप्ततेरूर्ध्वं क्षीणधातुरसादिकः । क्षीयमाणेन्द्रियबलःक्षीणरेतादिनेदिने ॥ वलीपलितखालित्ययुक्तः कर्मसुचाक्षमः । कासश्वासादिभिःक्लिष्टो वृद्धोभवतिमानवः ॥ २५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सोलह और सत्तर वर्षके बीच में मध्यम कहलाताहै वह चारप्रकारका होताहै वृद्धि युवा पूर्ण और क्षययुक्त बीसवर्षतक वृद्धि होती है बत्तीस वर्षतक युवा रहताहै चालीस वर्षतक वीर्य्यादिकों से पूर्ण रहताहै फिर क्रमसे सम्पूर्णधातु इन्द्रिय बल और उत्साहसे सत्तर वर्ष पर्यन्त क्षीण होताहै और सत्तर वर्षके उपरान्त क्षीणहुये धातु और रसवाला क्षीण इन्द्रिय और बलवाला प्रतिदिन क्षीणहुये वीर्य्यवाला झुरीं बालोंका पकना खालित्य (बांयटे आदि) से युक्त कार्य्यों में असमर्थ खांसी और श्वासादिकों से पीडित मनुष्य वृद्ध कहलाताहै ॥ २५ ॥

बाल्येविवर्द्धतेश्लेष्मा पित्तंस्यान्मध्यमेधिकम् । वार्द्धकेवर्द्धतेवायुर्विचार्य्यैं तदुपक्रमेत् ॥ उपक्रमेत् चिकित्सेत् तंत्रांतरेतु । बाल्यंवृद्धिश्छविर्मेधा त्वग्दृष्टिःशुक्रविक्रमौ ॥ बुद्धिःकर्मेन्द्रियञ्चेतो जीवितन्दशतोह्रसेत् ॥ २६ ॥

बाल्यावस्थामें श्लेष्मा बढ़ताहै मध्यममें पित्त अधिक होताहै और वृद्धावस्थामें वायु बढ़ती है ऐसा विचारकर चिकित्साकरे शास्त्रान्तर में कहाहुआहै कि बाल्य वृद्धि छवि मेधा त्वचा दृष्टि वीर्य बल बुद्धि कर्मेन्द्रिय चित्त और जीव यह जन्म से लेकर क्रम से दश २ वर्ष में घटते जाते हैं ॥ २६ ॥

अथ प्रकृतिलक्षणानि ॥

सप्तप्रकृतयोनॄणांवातात्पित्तात्कफात्तथा । संसर्गात्सन्निपाताच्च भवन्तिभिषजाम्मते ॥ शुक्रशोणितसंयोगो योदोषस्तूत्कटोभवेत् । प्रकृतिर्जायतेतेन तस्यालक्षणमुच्यते ॥ २७ ॥

प्रकृतियों के लक्षण ॥

मनुष्योंकी सात प्रकृति होती हैं वातसे पित्तसे कफसे तीनोंके अलग२ संसर्गसे और तीनोंके मिलनेसे वीर्य और रजके संयोगके समय जौनसा दोष अधिक होताहै उसीसे प्रकृति होती है उसका लक्षण कहते हैं ॥ २७ ॥

वाग्भटेत्वात्रेयादयः । शुक्रासृग्गर्भिणीभोज्यचेष्टागर्भाशयान्तरे । यःस्याद्दोषोऽधिकस्तेन प्रकृतिःसर्व्वथोदिता ॥ सोऽपिदोषःस्वभावावस्थितो नतुदुष्टःदुष्टेनतु शुक्रशोणितयोर्दुष्टाशुद्धगर्भसम्भवात् ॥ २८ ॥

वाग्भटमें आत्रेयादिकोंने कहाहै कि वीर्य और रजमें तथा गर्भिणीके आहार विहारके द्वारा गर्भाशयमें जिस दोषकी अधिकता होती है उसीके अनुसार सात प्रकारकी प्रकृति होती हैं वह दोष भी स्वाभाविक लियाजाताहै नकि विकारयुक्त क्योंकि विकारको प्राप्तहुयेसे तो बिगड़ेहुये वीर्य और रजसे गर्भका होनाही असम्भवहै ॥ २८ ॥

जागरूकोऽल्पकेशश्च स्फुटितांघ्रिकरःकृशः । शीघ्रगोबहुवाग्रूक्षः स्वप्नेवियतिगच्छति ॥ एवंविधःसविज्ञेयो वातप्रकृतिकोनरः ॥ २९ ॥

वातप्रकृति के लक्षण ॥

बहुत जागनेवाला, थोड़े बालवाला, फटेहुये हाथ पैर वाला, दुर्बल, शीघ्रगामी, बहुत बोलनेवाला, रूखा और स्वप्न में आकाशमें चलनेवाला मनुष्य वातप्रकृतिवाला होताहै ॥ २९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पित्तप्रकृतिकोलोको यादृशोऽथनिगद्यते । अकालपलितोगौरः क्रोधीस्वेदीचबुद्धिमान् ॥ बहुभुक्ताघ्रनेत्रश्च स्वप्नेज्योतींषिपश्यति । एवंविधोभवेद्यस्तु पित्तप्रकृतिको नरः ॥ ३० ॥

पित्तप्रकृतिके लक्षण ॥

विना समयके श्वेतबालवाला- गौरवर्ण- क्रोधी- बहुतपसीनेवाला- बुद्धिमान्- बहुतभोजन करनेवाला और स्वप्नमें तेजोंका देखनेवाला मनुष्य पित्तप्रकृतिवाला होता है ॥ ३० ॥

श्यामकेशःक्षमीस्थूलो बहुवीर्य्योमहाबलः । स्वप्नेजलाशयालोकी श्लेष्मप्रकृतिको नरः॥दृश्यतेप्रकृतौयत्र रूपंदोषद्वयस्यतु।द्विसंसर्गेणजानीयात्सर्वैर्लिंगैस्त्रिदोषजम्॥३१॥

कफप्रकृतिके लक्षण ॥

श्यामकेशवाला- क्षमाकरनेवाला- स्थूल- बहुतवीर्य्यवाला- महाबलवान् और स्वप्नमें जलाशयोंका देखनेवाला मनुष्य कफप्रकृति होताहै- जिस प्रकृतिमें दो दोषोंका रूपदिखाईदे वह संसर्गज और जिसमें सबके चिह्न दिखाई देवें वह त्रिदोषज जानना चाहिये ॥ ३१ ॥

वाग्भटेतु। विभुत्वादाशुकारित्वाद्बलित्वादल्पकोपनात् । स्वातन्त्र्याद्बहुरोगत्वाद्दोषाणांप्रबलोनलः ॥ ३२ ॥

वाग्भटमें तो ऐसा कहाहै कि सर्वव्यापक होना-शीघ्रकारी होना-बलवान्होना-कोपकमकरना-स्वतन्त्रता और बहुत रोगोंको उत्पन्नकरना इनगुणों से वायु सब दोषोंमें प्रबलहै ॥३२॥

शीत प्रायस्तएव पवनाध्युषिता मनुष्या दोषात्मकाः स्फुटितधूसर केशगात्राः ॥ शीतद्विषश्चलधृतिस्मृतिबुद्धिचेष्टाः । सौहार्ददुष्टगतयोऽतिबहुप्रलापाः ॥ अल्पपित्तकफजीवितनिद्रासन्नशक्तबहुजर्ज्जरवाचः । नास्तिकाबहुभुजःसविलासा गीतहास्यमृगयाकलिलोलाः ॥ मधुराम्लकटूष्णसात्म्यकांक्षाः कृशदीर्घाकृतयः सशब्दयानाः। नदृढ़ा न जितेन्द्रिया नवीर्य्याः नच कान्तादयिताबहुप्रजावा ॥ अक्षीणि चैवं खरधूसराणि वृत्तान्यचारूणि मृतोपमानि । उन्मीलितानीव भवन्ति सुप्ते शैलद्रुमान्ते गगनंप्रयाति॥ अधन्यामत्सराध्मानास्तेनाः प्रोद्धतपिण्डिकाः ॥ स्वप्नेश्रृगालोष्ट्रगृध्राखुकाकोलूकाश्च वातिकाः ॥ ३३ ॥

वाग्भटमें कहेहुए वातप्रकृतिके लक्षण ॥

वातप्रकृति मनुष्य प्रायः दोषयुक्त होतेहैं फटेगात्रवाले, धूसरकेशवाले, शीतसे द्वेष करनेवाले, चंचल, धैर्य्य, स्मृति, बुद्धि और चेष्टावाले मित्रतामें दुष्टता करनेवाले, बहुत बोलनेवाले, थोड़े पित्त कफ जीवन और निद्रासे युक्त, बहुत जर्जरबाणी वाले, नास्तिक, बहुत भोजन करनेवाले, विलास से युक्त, गाने, हंसने और शिकार खेलनेमें तत्पर, मधुर- अम्ल,कटु और उष्ण भोजनके अभ्यासमें रुचि रखने वाले, दुर्बल और लम्बे आकारवाले शब्द सहित गमन करनेवाले, दृढ़तासे रहित, इन्द्रियों के नहीं जीतनेवाले,हीन वीर्य्य,स्त्रियोंके अप्रिय,बहुत सन्तानोंसे रहित,रूखे, धूसर, गोल सुन्दरतारहित और मृतकोंके समान नेत्रवाले, सोनेमें खुलेसे नेत्रवाले स्वप्नमें पर्व्वत वृक्ष तथा आकाशमें जाने-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाले, यशरहित, ईर्षायुक्त, चोर और उठी हुई पिंडलीवाले वातप्रकृति होतेहैं कुत्ता शृगाल ऊंट गृध्र मूसा काग और उलूक यहभी वातप्रकृति होतेहैं ॥ ३३ ॥

पित्तंवह्निर्वह्निजंवैतदस्मात् पित्तोद्रिक्तस्तीव्रतृष्णोबुभुक्षुः ॥ गौरोष्णांगस्ताम्रहस्तांघ्रियुग्मः शूरोमानी पिंगकेशोऽल्परोमा ॥ दयितमाल्यविलेपनमण्डनः सुरचितः शुचिराश्रितवत्सलः । विभवसाहसबुद्धिबलान्वितो भवति भीष्मगतिर्द्विषतामपि ॥ मेधावी प्रशिथिलितसन्धिबन्धमांसो नारीणामनभिमतोऽल्प शुक्रकामः ॥ आवासश्चलिततरंगनीरकेषु । भुंक्तेऽन्नं मधुरकषायतिक्तशीतम् ॥ धर्मद्वेषी स्वेदनः पूतिगन्धिर्भूर्य्युच्चारक्रोधपानाशनेर्ष्यः । सुप्तःपश्येत् कर्णिकारान् पलाशान् दिग्दाहोल्का विद्युदर्कानलांश्च ॥ तनूनिपिंगानि चलानिचैषां तन्वल्प पक्ष्माणि हिमप्रियाणि । क्रोधेन मद्येनरवेश्च भासा रागं व्रजन्त्याशु विलोचनानि ॥ मध्यायुषोमध्यबलाःपण्डिताःक्लेशभीरवः । व्याघ्रर्क्षकपिमार्जारयक्षाभूताश्चपैत्तिकाः ॥ ३४ ॥

पित्तप्रकृतिके लक्षण ॥

पित्त अग्निस्वरूप और अग्निसे उत्पन्न हुआहै इससे पित्तप्रकृतिवाला पुरुष तीव्र तृषा और क्षुधावाला गौरवर्ण उष्ण अंग लाल हाथ पैर और नेत्रवाला शूर अभिमानी पिंगलकेश और थोड़े रोमवाला प्रिय पुष्पादिकोंकी माला और सुगन्धादि द्रव्योंके लेपोंसे आभूषित सत् चरित्र पवित्र आश्रितोंका प्रतिपालक ऐश्वर्य्य साहस बुद्धि और बल करके युक्त शत्रुओंका भी भयमें रक्षाकरनेवाला बुद्धिमान् शिथिल सन्धि बन्धन और मांसवाला स्त्रियोंको अप्रिय थोड़े वीर्य्य और कामदेववाला चंचलतरंगवाले जलमें बास करनेवाला मधुर कषैला तिक्त और शीतल भोजन करनेवाला धर्मद्वेषी वहुत पसीनेवाला शरीरमें दुर्गन्धि युक्त मल क्रोध पान भोजन और ईर्षाकी अधिकतासे युक्त स्वप्नमें कनेर टेसूके फूल दिग्दाह उल्का बिजली सूर्य्य और अग्निका देखनेवाला सूक्ष्म पिंगल वर्ण चंचल थोड़े पलकवाले शीतलताके चाहनेवाले क्रोध मद्य और सूर्य्यके तेजसे रक्तवर्णहोनेवाले नेत्रोंसे युक्त मध्यम अवस्था और वलवाले पण्डित और क्लेशसे डरनेवाले होतेहैं व्याघ्र रीछ वन्दर बिल्ली भेड़िया और भूत यह पित्तप्रकृतिहैं ॥ ३४ ॥

श्लेष्मासोमः श्लेष्मलस्तेनसौम्यो गूढ़स्निग्ध श्लिष्टसन्ध्यास्थिमांसः । क्षुत्तृड्दुःखक्लेशधर्मैरतप्तोबुद्ध्यायुक्तः सात्विकः सत्यसन्धः ॥ प्रियंगुदूर्वाःशरकाण्ड दर्भ गोरोचना पद्मसुवर्णवर्णः ॥ प्रलम्बबाहुः पृथुपीनवक्षाः महाललाटो घननीलकेशः ॥ मृदंगः समसुविभक्त चारुदेहो बह्वोजा रतिरसयुक्तसपुत्रभृत्यः ॥ धर्मात्मा वदति न निष्ठुरंचजातु प्रच्छन्नं वहतिदृढं चिरञ्च वैरम् ॥समदद्विरदेन्द्र तुल्ययानो जलदाम्भोधिमृदंग शंखघोषः । स्मृतिमानभियोगवान्विनीतो नच बाल्येऽप्यति रोदनो न लोलः ॥ तिक्तंकषायंकटुकोष्णरूक्षमल्पञ्चभुंक्तेबलवांस्तथापि ॥ रक्तान्तसुस्निग्धविशालदीर्घसुव्यक्तशुक्लासितपद्मलाक्षः॥ अल्पाहार क्रोधपानाशनेर्ष्यः प्रज्ञावित्तोदीर्घसूत्रीवदान्यः हदूगम्भीरः स्थूलवक्षाः क्षमावान्निद्रालुश्चालुब्धवृत्तःकृतज्ञः ॥ ऋजुविपश्चित्सुभग,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सलज्जोभक्तो गुरूणांस्थिरसौहृदश्च ॥ स्वप्नेसपद्मान्सविहंगमालास्तोयाशया नूपश्यतितोयदांश्च ॥ विष्णुरुद्रेन्द्रवरुणतार्क्ष्यहंसगजाधिपैः । श्लेष्मप्रकृतयस्तुल्या स्तथासिंहाश्वगोवृषैः ॥ ३५

श्लेष्मप्रकृतिके लक्षण ॥

श्लेष्मा सोमस्वरूप होताहै इसी से कफप्रकृति मनुष्य सौम्य होताहै उसकी सन्धि और हड्डी दिखाई नहीं देतीहैं और मांस चिकना होताहै वह क्षुधा तृषा और मानसिक तथा बाह्य दुःखोंसे संतप्त नहीं होता बुद्धिमान् सात्त्विक और सत्य बोलनेवाला होताहै कांगनी दूब शर्कण्डा कुश गोरोचन कमल और सुवर्णके समान वर्णवाला होताहै उसकी भुजा लम्बी छाती मोटी और चौडी बडाललाट और बाल नीले और घने होतेहैं उसका शरीर कोमलअंग सुडौल सुन्दरदेह और ओज मैथुन शक्ति रस वीर्य्य और पुत्र अधिक होतेहैं और भृत्यभी अधिक होते हैं वह धर्मात्मा और कभी कटोरवचन नहीं कहताहै द्वेष को चित्तमें छिपाहुआ और दृढ रखताहै उसका गमन मतवाले हाथी के समान और स्वर मेघ समुद्र मृदंग तथा शंखके समान गंभीर होताहै वह स्मरण शक्ति और उद्योग युक्त होकर बहुत सुशील होताहै और बाल्यअवस्था में भी बहुत रोनेवाला और चंचल नहीं होता है तिक्त कषैला कटु उष्ण रूखा और थोडा भोजन करनेपर भी बलवान् रहताहै उसके नेत्र भीतर कोनेकी ओर लाल चिकने बडे और लम्बे श्वेत और कृष्ण भाग अच्छी रीतिसे प्रकाशित और मोटे पलकवाले होतेहैं आहार क्रोध तृषा वचन और ईर्षा यह स्वल्प होते हैं दूरदर्शी दीर्घसूत्री उदार गंभीर हृदय चौडी छाती क्षमायुक्त अधिक निद्रालु लोभरहित कृतज्ञ सीधा पण्डित सुन्दर लज्जावान् गुरुभक्त और अचल प्रेमवाला होताहै और स्वप्नमें कमल और जलजीवों से युक्त तडागोंको तथा मेघों को देखताहै विष्णु रुद्र इन्द्र वरुण गरुड हंस ऐरावत सिंह घोडा गौ और बैल यह भी कफप्रकृति होते हैं ॥ ३५ ॥

ननुप्रकृतिहेतूनां मध्येयोऽधिकःसस्वव्याधीन्कथं नकरोतीत्याशङ्कामाह ॥ विषजातोयथाकीटो नविषेणप्रबाध्यते । तद्वत्प्रकृतयोमर्त्यंशक्नुवन्तिनबाधितुम् ॥ एतौद्वौनत्रावपीषदर्थैतेन विशेषेणविषजदाहादिना । ईषत्प्रबाध्यते नतुभृशं तथाचप्रकृतयःप्रकृतिहेतवोदोषाः बाधितुंनशक्नुवन्तिकरचरणस्फुटितत्वंस्वेदनिद्राधिक्यादिनाईषद्बाधितुंशक्नुवन्त्येव॥ नतुज्वरादिभिः। प्रकोपोवान्यभावोवाक्षयोवानोपजायते। प्रकृतीनांस्वभावेन जायतेतुगतायुषः ॥ ३६ ॥

इति श्रीमिश्रलटकनतनयश्रीमन्मिश्रभावविरचिते
भावप्रकाशेबालप्रकरणंतृतीयम् ॥ ३ ॥

यह सन्देह उत्पन्न होसकाहै कि प्रकृतियोंके कारणोंमें से जो अधिक होताहै वह अपने २ रोगों को क्यों नहीं उत्पन्न करताहै इसके उत्तरमें कहतेहैं कि जैसे विष से उत्पन्नहुआ कीट विषसे बहुत पीडित नहीं होताहै उसी प्रकार प्रकृति के कारण वातादिक भी मनुष्यको बहुत पीडित नहीं करते हैं अर्थात् हाथपैरोंका फटना अधिक श्वेत होना और निद्राकी अधिकता आदि से कुछ पीडिततो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करतेहीहैं परन्तु ज्वर आदि रोगोंसे अत्यन्त पीडित नहीं करतेहैं प्रकृतियोंकेद्वारा वातादिकोंका कोप नहीं होता प्रकृतियोंका भेद नहीं होता और क्षय नहीं होता और जो यह बातें होयँ तो मनुष्यको गत आयु जानना चाहिये ॥ ३६ ॥

इति श्रीमिश्रलटकनतनयश्रीमन्मिश्रभावविरचितभावप्रकाश
स्यभाषानुवादे बालप्रकरणं तृतीयम् ॥ ३ ॥

अथदेशाः ॥

भूमिदेशस्त्रिधानूपो जांगलोमिश्रलक्षणः । तत्रानूपलक्षणम् ॥ नदीपल्वलशैलाढ्यः फुल्लोत्पलकुलैर्युतः ॥ हंससारसकारण्डचक्रवाकादिसेवितः । शशवाराहमहिषरुरुरोहिकुलाकुलः ॥ प्रभूतद्रुमपुष्पाढ्यो नीलशस्यफलान्वितः । अनेकशालिकेदारकदलीक्षविभूषितः ॥ अनूपदेशोज्ञातव्यो वातश्लेष्मामयार्त्तिमान् ॥ २ ॥

देशोंका वर्णन ॥

भूमिदेश तीनप्रकारकेहैं अनूप-जांगल और साधारण १ (अनूपदेशका लक्षण) जिस देशमें नदी छोटे २ तडाग- पर्व्वत- प्रफुल्लित कमल, हंस, सारस, कारंड (बत्तक) चकवा चकवी आदि पक्षी खरगोश; शूकर, भैंस, भैंसा, रुरुमृग आदि पशु बहुत वृक्ष और पुष्प, नीलेधान फल अनेक प्रकार के चावलोंसे युक्त खेत, केला और ऊख यह सब शोभायमानहों वह अनूपदेश जानना चाहिये और ऐसे देशमें वात और कफकी पीडा अधिकहोती है ॥ २ ॥

अथ जांगललक्षणम् ॥

आकाशशुभ्रउच्चश्चस्वल्पपानीयपादपः । शमीकरीरबिल्वार्कपीलुकर्कन्धुसंकुलः ॥ हरिणैणर्क्षपृषत गोकर्णखरसंकुलः ॥ सुस्वादुफलवान्देशोवातलोजांगलःस्मृतः ॥ ३ ॥

जांगलदेशके लक्षण ॥

जो देश आकाशके समान निर्मल तथा ऊंचाहो और जिसमें जलाशय और वृक्ष न्यूनहों, शमी, करील, बेल आक और बेर, यह सबवृक्ष बहुत उत्पन्नहों और जिसमें हरिण, एणनाममृग, रीछ पृषत (मृगविशेष) गोकर्ण (मृगभेद) और गर्दभ यह बहुतरहें वह देश अच्छे फलों से युक्त जांगल कहाताहै और देशवादी होतीहै ॥ ३ ॥

तत्रान्तरे । बहूदकनगोऽनूपःकफमारुतरोगवान् । जांगलोऽल्पाङ्गशाखीचपित्तासृङ्मारुतोत्तरः ॥ ४ ॥

शास्त्रान्तरमें तो बहुत जल और पर्वतोंसे युक्त देश अनूप कहलाताहै इसमें कफ और वायु के रोग बहुत होतेहैं और थोडे जल और वृक्षवाला जांगलदेशहै इसमें पित्त रुधिर और वायुकी अधिकता होतीहै ॥ ४ ॥

साधारणलक्षणम् ॥

संसृष्टलक्षणोयस्तुदेशःसाधारणोमतः । समास्साधारणेयस्माच्छीतवर्षोष्णमारुताः ॥ समतातेनदोषाणां तस्मात्साधारणोवरः ॥ ५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

साधारण देशके लक्षण ॥

जिस में अनूप और जांगल इनदोनों देशोंके लक्षण मिलें वह साधारण देशहै और उसमें शीत वर्षा गर्मी तथा वायु समहोते हैं दोषों के समहोने के कारण साधारण देश उत्तम है ॥ ५ ॥

(सुश्रुतात्) उचितेवर्त्तमानस्या नास्तिदुर्देशजंभयम्। आहारस्वप्नचेष्टादौ तद्देशस्य कृतेसति (वृद्धवाग्भटः) यस्यदेशस्ययोजन्तुस्तज्जन्तस्यौषधंहितम् । देशादन्यत्र वसतस्तत्तुल्यगुणमौषधम् ॥ स्वेदेशेनिचितादोषा अन्यस्मिन्कोपमागताः । बलव न्तस्तथानस्युर्जलजास्थानजास्तथा ॥ ६ ॥

जो उचितदेश में रहकर आहार, स्वप्न और चेष्टादिकों में उसी देशके अनुकूल आचरण करे उस को दुष्टदेशका भय नहीं होताहै यह सुश्रुतमें लिखाहै वृद्धवाग्भट में कहा है कि जिसका जिसदेशमें जन्म और बासहो उसको उसी देशकी औषधि उपकारीहै और उसदेशको त्यागकरके दूसरे देशमें रहनेवाले को जिसदेशमें रहताहो उसी की औषधि गुणकारीहै क्योंकि जलज अथवा स्थलजदेश में इकट्ठे हुये दोष अन्य देश में जाकर कुपित हुये विशेष बलवान् नहीं होसक्ते ॥ ६ ॥

अथ दिनादिचर्य्या ॥

मानवोयेनविधिनास्वस्थस्तिष्ठतिसर्वदा । तमेवकारयेद्वैद्योयतःस्वास्थ्यंसदेप्सितम् दिनचर्य्यांनिशाचर्य्यामृतुचर्य्यांयथोदिताम् । आचरन्पुरुषःस्वस्थःसदातिष्ठति नान्यथा ॥ ७ ॥

दिनचर्य्या ॥

मनुष्य जिस विधि (आहार विहारादि) से सदैव प्रसन्नरहै वैद्यको उचितहै कि उसी रीतिको करवाये क्योंकि प्रसन्नता सदैव सब को प्रियहै कही हुई विधि से दिनचर्य्या रात्रिचर्य्या और ऋतु-चर्य्याको करताहुआ पुरुष स्वस्थ रहताहै अन्यथा नहीं रहता ॥ ७ ॥

तत्र स्वस्थस्यलक्षणमाह ॥

(सुश्रुतः)समदोषःसमाग्निश्चसमधातुमलक्रियः। प्रसन्नात्मेंद्रियमनाःस्वस्थ इत्यभि धीयते ॥ क्रियात्रकर्मतेनसमक्रियः। शरीरानुरूपकर्मा ॥ ८ ॥

स्वस्थका लक्षण ॥

वातादि दोष अग्निमल और रसादि धातुओं की समताहो—शरीर के अनुसार कार्य्य में शक्तिहो आत्माइन्द्रिय और मन प्रसन्नहो तो स्वस्थ कहलाता है ॥ ८ ॥

तत्र दिनचर्य्यामाह ॥

ब्राह्मेमुहूर्तेबुद्ध्येत स्वस्थोरक्षार्थमायुषः। तत्रदुःखस्यशान्त्यर्थस्मरेद्धिमधुसूदनम् ॥ दध्याज्यादर्शसिद्धार्थबिल्वगोरोचनास्रजाम् । दर्शनंस्पर्शनंकार्य्यंप्रबुद्धेनशुभावहम् ॥ स्वमाननंघृतेपश्येद्यदीच्छेच्चिरजीवितम् । आयुष्यमुषसिप्रोक्तंमलादीनांविसर्जनम् ॥ तदत्रकूजनाध्मानोदरगौरववारणम् । आदिशब्देनवातमूत्रादीनांग्रहणम् ॥ आटोप शूलौपरिकर्त्तिकाच संगःपुरीषस्यतथोर्ध्ववातः। पुरीषमास्यादथवानिरेति पुरीषवेगेऽभि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हतेनरस्य ॥ परिकर्त्तिका। गुदेपरिकर्त्तनवत्पीडा । पुरीषस्य संगोनिरोधः । ऊर्ध्ववातः उद्गाढवाहुल्यम् ॥ वातमूत्रपुरीषाणां संगोऽध्मानं क्लमोरुजा । जठरे वातजाश्चान्ये रोगाःस्युर्वातनिग्रहात् ॥ वस्तिमेहनयोःशूलं मूत्रकृच्छ्रंशिरोरुजा । विनामोवङ्क्षणाना हःस्याल्लिङ्गंमूत्रनिग्रहे ॥ विनामःशरीरस्य नम्रतावङ्क्षणानाहः । वंक्षणस्याकर्षण व त्पीडा ॥ नवेगितोऽन्यकार्यःस्यान्नवेगानीरयेद्बलात् । कामशोकभयक्रोधान् मनो वेगान्विधारयेत् ॥ गुदादि मलमार्गाणां शौचं कान्तिबलप्रदम् । पवित्रकरमाख्यातम लक्ष्मीकलिपापहृत् ॥ प्रक्षालनंमतंपाण्योः पादयोःशुद्धिकारणम् । मलश्रमहरंवृष्यं च क्षुष्यंराजसापहम् ॥ ६ ॥

दिनचर्य्या ॥

स्वस्थ मनुष्य स्वस्थताकी रक्षाके लिये ब्राह्ममुहूर्त्तमें उठकर दुःखकी शांतिके लिये मधुसूदनजी का स्मरण करे फिर दही घृत सरसों बेल–गोरोचन-इनका सुखदायी दर्शन तथा स्पर्शकरे-और जो बड़ी आयुकी इच्छाकरे तो घृत में अपने मुख को देखे–प्रातःकाल मल मूत्रादि का त्यागकरना भी आयुका बढ़ानेवालाहै क्योंकि उससे उदरका गडगड़ाना–अफरा और भारीपन दूरहोताहै मल के वेग रोकनेसे मनुष्य के उदर में गड़ २ शब्दपीड़ा गुदामें कैंची से काटने कीसी पीड़ा कब्ज बहुत डकारें और मुख से मल निकलना यह सब बातें होतीहैं, वायुके रोकने से वायुमल मूत्रका निरोध उदर में अफरा ग्लानि पीड़ा और उदरमेंवायुके अनेकरोग उत्पन्न होतेहैं, मूत्रका वेगरोकनेसे पेडू और लिंगमें पीड़ा मूत्रकृच्छ्र शिर में पीड़ा शरीरकी नम्रता और वंक्षण में खेंचने के समान पीड़ा होती है मलादिकों का वेग उपस्थित होने पर अन्यकार्य्य न करे और बलकरके मलको निकाले नहीं परन्तु काम शोकभय और मनके वेगोंकोरोके गुदादि मलोंके मार्गका शौच कान्ति और बलकादेनेवाला पवित्र आयुवर्द्धक और दुर्भाग्य तथा कलिके पापका नाश करनेवाला कहागयाहै, हाथ और पैरों का धोना शुद्ध करनेवाला मल तथा श्रमका नाशक वीर्य्यवर्द्धक नेत्रों को हितकारी और रजोगुण का नाश करनेवाला होताहै ॥ ६ ॥

दन्तकाष्ठ विधिः।

भक्षयेद्दन्तपवनं द्वादशांगुलमायतम् । कनिष्ठिकाग्रवत्स्थूलमृज्वग्रन्थितथाऽव्रण म् ॥ एकैकंघर्षयेद्दन्तं मृदुनाकूर्चकेणतु । दन्तशोधनचूर्णेन दन्तमांसान्यबाधयन् ॥ क्षौ द्रत्रिकटुकाक्तेन तैलसिन्धुभवेनवा । चूर्णेनतेजोवत्याश्च दन्तान्नित्यंविशोधयेत् ॥ तेजो वती तेजवल्कल इतिलोकेप्रसिद्धा । मधूकोमधुरेश्रेष्ठः करञ्जःकटुकेतथा ॥ निम्बस्स्या त्तिक्तकेश्रेष्ठः कषायेखदिरस्तथा समयन्तुसमालोक्यदोषञ्चप्रकृतितथा ॥ यथोचितैर सैर्वीर्य्यैर्युक्तंद्रव्यंप्रयोजयेत् । तेनास्यमुखवैरस्यदन्ताजिह्वास्यजागदाः ॥रुचिवैशद्यलघु तानभवन्तिभवन्तिच । अर्केवीर्य्यंवटेदीप्तिः करञ्जेविजयोभवेत् ॥ प्लक्षेचैवार्थस म्पत्ति र्वदर्य्यांमधुराशनम् । खदिरेमुखसौगन्ध्यं बिल्वेतुविपुलंधनम् ॥ उदम्बरेतुवाक् सिद्धिराम्रेत्वारोग्यमेवच । कदम्बेतुधृतिर्मेधा चम्पकेदृढवाक्श्रुतिः ॥ शिरीषेकीर्त्ति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सौभाग्यमायुरारोग्यमेवच । अपामार्गेधृतिर्मेधाप्रज्ञाशक्तिस्तथाशने ॥ दाडिम्यांसुन्दराकारः ककुभेकुटजेतथा । जातीतगरमन्दारैर्दुःस्वप्नञ्चविनश्यति ॥ गुवाकतालहिन्तालं केतकश्चबृहद्वरः । खर्जूरंनारिकेरञ्च सप्तैतेतृणराजकाः ॥ तृणराजसमुत्पन्नं यःकुर्याद्दन्तधावनम् । नरश्चाण्डालयोनिःस्याद्यावद्गंगान्नपश्यति ॥ नखादेद्गलताल्वोष्ठजिह्वादन्तगदेषुतत् । मुखस्यपाकेशोथेच श्वासकासवमीषुच ॥ दुर्बलोजीर्णभुक्तश्च हिक्कामूर्च्छामदान्वितः । शिरोरुजार्त्तस्तृषितःश्रान्तःपानक्लमान्वितः ॥ अर्दितः कर्णशूलीच नेत्ररोगीनवज्वरी । वर्ज्जयेद्दन्तकाष्ठन्तु हृदामययुतोऽपिच ॥ अजीर्णभुक्तः नजीर्णं भुक्तं यस्यसः । जिह्वानिर्लेखनंहैमं राजतंताम्रजंतथा ॥ पाटितंमृदुतत्काष्ठं मृदुपत्रमयंतथा । (तत्काष्ठंदन्तशोधनयोग्यंकाष्ठम्) दशांगुलंमृदुस्निग्धं तेनजिह्वांलिखेत्सुखम् । तज्जिह्वामलवैरस्यदुर्गन्धजडताहरम् ॥ गंडूषमपिकुर्व्वीत शीतेनपयसामुहुः । कफतृष्णामलहरं मुखांतःशुद्धिकारकम् ॥ सुखोष्णोदकगण्डूषः कफारुचिमलापहः । दन्तजाड्यहरश्चापि मुखलाघवकारकः ॥ विषमूर्च्छामदार्त्तानां शोषिणांरक्तपित्तिनाम् । कुपिताक्षिमलक्षीणरूक्षाणांसनशस्यते ॥ सुखोष्णोदकगण्डूषः । मुखप्रक्षालनंशीतपयसारक्तपित्तजित् ॥ मुखस्यपीडिकाशोषनीलिकाव्यंगनाशनम् । कुर्य्याद्वापिकदुष्णेन पयसास्यविशोधनम् ॥ कफवातहरंस्निग्धं मुखशोषविनाशनम् । कटुतैलादिनस्यार्थं नित्याभ्यासेनयोजयेत् ॥ प्रातःश्लेष्मणिमध्याह्ने पित्तेसायंसमीरणे । सुगन्धवदनाःस्निग्धानिःस्वनाविमलेन्द्रियाः ॥ निर्वलीपलितव्यंगा भवेयुर्नस्यशीलिनः । सौवीरमञ्जनंनित्यं हितमक्ष्णोस्ततोभजेत् ॥ लोचनेभवतस्तेन मनोज्ञेसूक्ष्मदर्शने । सौवीरं श्वेतसुरमा इति लोके प्रसिद्धम् ॥ स्रोतोऽञ्जनंमतंश्रेष्ठं विशुद्धंसिन्धुसम्भवम् । दृष्टेःकण्डूमलहरं दाहक्लेदरुजापहम् ॥ अक्ष्णोरूपावहञ्चैव सहतेमारुतातपौ । नेत्ररोगानजायन्ते तस्मादञ्जनमाचरेत् ॥ स्रोतोऽञ्जनंकृष्णसुरमा इति लोके । विशुद्धंशोधनं विनापि सिन्धुसम्भवम् । सिंधुनाम पर्वतः तत्रसम्भवम् ॥ रात्रौजागरितःश्रान्तश्छर्दितोभुक्तवांस्तथा । ज्वरातुरःशिरःस्नातो नाक्ष्णोरञ्जनमाचरेत् ॥ १० ॥

दन्तधावनविधि ॥

बारह अंगुल लंबी कनिष्ठिका (छगुनी उंगली) के समान मोटी कोमल ग्रन्थि दाग आदि से रहित दांतन करे–मंजन को लगाकर कोमल कूंचीसे दांतोंके मांसको पीडा न देताहुआ एक २ दांतरगडे सहत और त्रिकुटा से अथवा सरसों के तेल और सेंधोनोनसे अथवा तेजवल्कलके चूर्ण से दांतोंको नित्य शुद्धकरे–मधुर काष्ठों में महुआ–कडुओंमें करंज–तिक्तों में नींब और कषैलों में खैर श्रेष्ठ है-समय दोष और प्रकृतिको देखकर यथायोग्य रस और वीर्य्य से युक्त काष्ठसे दंतधावन करे इससे मनुष्यके मुखकी विरसता–दन्त जिह्वा और मुखके अन्यरोग नहीं होतेहैं और रुचि स्वच्छता और हलकापन होताहै आकसे वीर्य्य-वटसे दीप्ति-करंजसे विजय-पकरिया से अर्थ सम्पत्ति–बेरसे मधुर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भोजन-खैरसे मुखकी सुगन्धि-बेलसे विपुलधन-गूलर से वाक्सिद्धि-आमसे नीरोग्य-कदम्बसे धैर्य और मेधा-चंपासे दृढबुद्धि-शिरससे कीर्त्ति सौभाग्य आयु और आरोग्य-लटजीरे से धैर्य्य-मेधा बुद्धि और उत्तम कण्ठ-अनार अर्जुन और कुटज से सुन्दर आकार और जायफल तगर तथा मंदारकी दतौन से दुस्स्वप्नका नाशहोताहै चिरमिटी-ताल-हिंताल-केतकी-बृहत्तृण-खजूर और नारियल यह सात तृणराज कहलातेहैं इनकी दतौन करने से मनुष्य जबतक गंगाजीके दर्शन न करे तबतक चांडाल रहता है गला-तालु-ओष्ठ-जिह्वा और दांतोंमें रोगवाला पकेहुए तथा सूजे मुखवाला श्वासकास और छर्दिके रोगसे युक्त दुर्बल-अजीर्णयुक्त हुचकी मूर्च्छा-तथा मदयुक्त शिरकी पीडा से व्याकुल-प्यासा-थका-मद्यपीने की ग्लानि से युक्त अर्दित रोगी कानमें शूलवाला नेत्ररोगी नवीन ज्वरवाला और हृदय के रोगसे युक्त मनुष्य दतौन न करे-सोना चांदी अथवा तांबे की या चिरेहुए कोमल दतौन के काष्ठकी वा कोमल पत्तेकी दश उंगलकी लंबी और कोमल चिकनी जीभीसे जिह्वाको शुद्धकरे इससे जिह्वा का मल विरसता-दुर्गन्धि और जडताका नाश होताहै शीतल जल से कफ तृषा और मल के नाशक मुखके भीतर शुद्ध करनेवाले वारंवार कुल्लेकरे कुछ गरमजल के द्वारा कुल्ले करने से कफ अरुचि-मल तथा दांतोंकी जडता का नाश और मुखमें हलकापन होताहै परन्तु विष मूर्च्छा मद राजयक्ष्मा रक्तपित्त नेत्ररोग कुपितमल क्षीणता और रूक्षता इन रोगोंसे युक्त मनुष्यको गरम जल से कुल्ले करना उचित नहींहै शीतल जल के द्वारा मुख धोनेसे रक्तपित्त मुखकी पिडिका (फुंसी) खुशकी नीलिका और व्यंगका नाश होताहै कुछ गरमजल के द्वारा मुखधोनेसे कफ वात और मुखकी खुशकी तथा चिकनाई का नाश होताहै प्रतिदिन कडुए तेल आदि की नास का अभ्यास करनाचाहिये प्रातःकाल श्लेष्मा मध्याह्नमें पित्त और सायंकाल में वायुकी शान्ति के लिये कडुए तेलकी नासलेनी चाहिये नासके अभ्यासी पुरुषके मुखमें सुगन्धि होतीहै स्वर उत्तम होताहै इन्द्रियां निर्मल होतीहैं झुर्रीबालोंका पकना और व्यंग यह नहीं होतेहैं नेत्रोंका हितकारी श्वेत सुरमा नित्य लगावे इससे नेत्र सुन्दर सूक्ष्म देखनेवाले होतेहैं सिन्धु नाम पर्व्वतसे उत्पन्न शुद्ध काला सुरमा श्रेष्ठ कहागयाहै इसके लगाने से नेत्रोंकी खुजली मल दाह क्लेद और रोगनाश होतेहैं और नेत्रसुन्दर होतेहैं वायु धूपको सहते हैं और नेत्रोंमें कोई रोग नहीं उत्पन्न होताहै इससे अंजन लगाना उचित है ज्वर से पीडित और शिरसे स्नान किया हुआ रात्रि में जागाहुआ-थका-वमनकरनेवाला और भोजन कियाहुआ पुरुष नेत्रों में अंजन नहीं लगावे ॥ १० ॥

पञ्चरात्रान्नखश्मश्रुकेशरोमाणिकर्त्तयेत् । केशश्मश्रुनखादीनांकर्त्तनंसम्प्रसाधनम् ॥ पौष्टिकंधनमायुष्यंशौचकान्तिकरंपरम् । सम्प्रसाधनम् शोभाजनकम् ॥ उत्पाटयेत्तु लोमानिनासायां नकदाचन । तदुत्पाटनतोदृष्टेर्दौर्बल्यंत्वरयाभवेत् ॥ केशपाशेप्रकुर्व्वीत प्रसाधन्याप्रसाधनम् । केशप्रसाधनंकेश्यंरजोजन्तुमलापहम् ॥ आदर्शालोकनंप्रोक्तं मांगल्यंकांतिकारकम् । पौष्टिकंबल्यमायुष्यंपापालक्ष्मीविनाशनम् ॥ लाघवंकर्मसामर्थ्यं विभक्तघनगात्रता । दोषक्षयोऽग्निवृद्धिश्चव्यायामादुपजायते ॥ व्यायामदृढगात्रस्य व्याधिर्नास्तिकदाचन । विरुद्धंवाविदग्धंवाभुक्तंशीघ्रंविपच्यते ॥ भवन्तिशीघ्रंनैतस्य देहेशिथिलतादयः । नचैनंसहसाऽऽक्रम्य जरासमधिरोहति ॥ नचास्तिसदृशन्तेनकि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ञ्चित्स्थौल्यापकर्षकम् ॥ ससदागुणमाधत्तेबलिनांस्निग्धभोजिनाम् ॥ वसन्ते शीतसमयेसुतरांसहितोमतः । अन्यदापिचकर्त्तव्योबलार्द्धेनयथाबलम् ॥ हृदय स्थोयदावायुर्वक्त्रंशीघ्रंप्रपद्यते । मुखञ्चशोषंलभतेतद्बलार्द्धस्यलक्षणम् ॥ किंवा ललाटेनासायांगात्रसन्धिषुकक्षयोः । यदासञ्जायतेस्वेदोबलार्द्धन्तुतदादिशेत् ॥ भुक्तवान्कृतसम्भोगः कासीश्वासीकृशःक्षयी । रक्तपित्तीक्षतीशोषीनतंकुर्य्यात्कदाच न ॥ अतिव्यायामतःकासोज्वरश्छर्दिःश्रमःक्लमः । तृष्णाक्षयःप्रतमकोरक्तपित्तञ्चजा यते ॥ अभ्यंगंकारयेन्नित्यंसर्वेष्वंगेषुपुष्टिदम् । शिरःश्रवणपादेषुतंविशेषेणशीलयेत् ॥ सार्षपंगन्धतैलञ्चयत्तैलंपुष्पवासितम् । अन्यद्द्रव्ययुतंतैलंनदुष्यतिकदाचन ॥ गन्ध तैलम् गन्धद्रव्याणाम् गुर्वादीनामग्नियोगेननिष्काशितःस्नेहः । अभ्यंगोवातकफ हृच्छ्रमशान्तिबलंसुखम्।निद्रावर्णमृदुत्वायुष्कुरुतेदेहपुष्टिकृत् ॥ अभ्यंगःशीलितोमूर्ध्नि सकलेन्द्रियतर्पकः । दृष्टिपुष्टिकरोहन्तिशिरोभूमिगतान्गदान् ॥ केशानांबहुतांदार्ढ्यं मृदुतांदीर्घतांतथा । कृष्णतांकुरुतेकुर्य्याच्छिरसं पूर्णतामपि ॥ नकर्णरोगानमलंनच मन्याहनुग्रहः । नोच्चैःश्रुतिर्नबाधिर्य्यंस्यान्नित्यंकर्णपूरणात् ॥ रसाद्यैःपूरणंकर्णेभोजनात् प्राक्प्रशस्यते । तैलाद्यैःपूरणंकर्णेभास्करेऽस्तमुपागते ॥ पादाभ्यंगश्चतत्स्थैर्य्यंनिद्रा दृष्टिप्रसादकृत् । पादसुप्तिश्रमस्तम्भसङ्कोचस्फुटनप्रणुत् ॥ ११ ॥

पांचदिन में नख, डाढ़ी, केश और रोमोंको कटवावे इससे शोभा पुष्टता धन आयु शौच और कान्ति होती है नासिका के रोम कभी न उखाडे इससे दृष्टि बडी शीघ्रन्यून होजातीहै कंघीसे केशों को बहावे इससे केशों की उत्तमता और धूल जुआं तथा मलका नाशहोताहै दर्पणका देखना मंगल, कान्ति, पुष्टि, बल, आयुकाबढ़ानेवाला और पाप दुर्भाग्यका नाश करनेवाला कहागयाहै व्याया-मसे हलकापन काया में सामर्थ्य शरीरका सुडौलहोना दोषोंका नाश और जठराग्निकी वृद्धिहोती है व्यायामसे दृढशरीरवाले पुरुषको कोई रोग नहीं होताहै विरुद्ध और कठोर भोजन भी शीघ्र पच जाताहै शरीरमें शिथिलताआदिक शीघ्र नहीं होती. एकाएकी वृद्धावस्था नहीं दबातीहै व्यायामके सदृश स्थूलता का नाश करनेवाला दूसरा कोई उपाय नहीं है बलवान्पुरुष और चिकने भोजनकर-नेवालोंको व्यायाम सदैव गुण करता है वसन्त और शीत समय में अत्यन्त हितकारी होताहै अन्य ऋतुओं में भी अपने२ बलके अनुसार बलार्द्ध (हृदयमें स्थित वायु शीघ्र मुखमें आने लगे मुख सूख-नेलगे अथवा मस्तक, नासिका, शरीरकी सन्धि और बगलोंमें स्वेद आजाय वह बलार्द्ध कहाताहै) से करे भोजन तथा मैथुन कियाहुआ दुर्बल खांसी श्वास राजयक्ष्मा रक्तपित्त. क्षत और शोष रोग से युक्त पुरुष कदापि भी व्यायाम न करे बहुत व्यायाम करने से खांसी, ज्वर, छर्दि, श्रम, ग्लानि, तृषा, क्षय, प्रतमक और रक्तपित्त उत्पन्न होताहै सम्पूर्ण अंगोंमें पुष्टि के लिये नित्य तैलमर्दन करा-वे परन्तु मस्तक कान और पैरों में विशेष करावे सरसों का तेल अगरादि सुगन्धित वस्तुओं से अग्नि के द्वारा निकालाहुआ तैल पुष्पों से बसायाहुआ तेल अथवा अन्य किसी हितकारी वस्तुओं से युक्त तेल कभी दोष नहीं करता है-तेल लगाने से कफ, वायु, श्रमकानाश, शान्ति, बल, सुख,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निद्रा, वर्णकोमलता, आयु और शरीरकी पुष्टता होती है और शिरमें तेल लगानेसे सम्पूर्ण इन्द्रियोंकी तृप्ति, दृष्टिपुष्टता, शिरके रोगोंका नाश, केशोंकी वृद्धि, दृढ़ता, कोमलता, दीर्घता, श्यामता और शिरकी पुष्टता होतीहै प्रतिदिन कानोंमें तेल छोड़ने से कानों के रोग, मल, मन्या (गले के पीछेकी नस) का स्तंभ हनुग्रह बहुत जोर से शब्दका सुनाई देना और बधिरता नहीं होती है कानमें रसादिकों को छोड़ना भोजन से पूर्व और तेलका छोडना सूर्य्यास्त के उपरान्त उचित है पैरोंमें तेल लगानेसे पैरोंकी स्थिरता निद्रा और दृष्टिकी प्रकाशता होती है पैरोंका सोजाना श्रम-स्तंभ संकोच और फटना यह नहीं होते हैं ॥ ११ ॥

व्यायामक्षुण्णवपुषंपद्भ्यांसंमर्दितंतथा । व्याधयोनोपसर्पन्तिवैनतेयमिवोरगाः ॥लोमकूपंशिराजालंधमनीभिःकलेवरे । तर्पयेद्बलमाधत्तेस्नेहयुक्तोऽवगाहने ॥ अद्भिःसंसिक्तमूलानांतरूणाम्पल्लवादयः । वर्द्धन्तेहितथानृणांस्नेहसंसिक्तधातवः ॥ १२ ॥

व्यायाम करनेवाले और पैर मलवानेवाले पुरुषको रोग ऐसे नहीं प्राप्तहोते जैसे कि गरुड़ को सर्प नहीं प्राप्तहोते हैं, शरीर में तेललगा स्नान करके रोमकूप, शिराजाल और धमनियों के द्वारा शरीर को पुष्टकरने से ऐसे बल बढ़ता है जैसे कि जल से सिंचेहुए मूलवाले वृक्षों के पल्लवादिक बढ़ते हैं उसी प्रकार स्नेहसे सिंचीहुई मनुष्योंकी धातुभी बढ़ती हैं ॥ १२ ॥

नवज्वरीअजीर्णीचनाभ्यक्तव्यःकथञ्चन । तथाविरिक्तोवान्तश्चनिरूढोयश्चमानवः॥ निरूढःदत्तोनिरूहवस्तिश्चयस्मैसः । पूर्व्वयोःकृच्छ्रताव्याधेरसाध्यत्वमथापिवा । शेषाणांनत्विहप्रोक्तावह्निसादादयोगदाः ॥ पूर्व्वयोःतरुणज्वरिणोऽजीर्णिनोश्च ॥ १३ ॥

नवीनज्वर और अजीर्णवाला तेल नहीं लगावे क्योंकि इससे कृच्छ्रसाध्य अथवा असाध्य होजाता है और विरेचनवाला, वमन करनेवाला और जिसको निरूहवस्ति दीगई हो ऐसा मनुष्य भी तेल नहीं लगावे क्योंकि इससे अग्निमन्दता आदि रोग उत्पन्न होते हैं ॥ १३ ॥

उद्वर्त्तनङ्कफहरंमेदोघ्नंशुक्रदम्परम् । बल्यंशोणितकृच्चापित्वक्प्रसादमृदुत्वकृत् ॥ मुखलेपाद्दृढंचक्षुःपीनोगण्डस्तथाननम् । कान्तमव्यंगपिडकंभवेत्कमलसन्निभम् ॥ दीपनंवृष्यमायुष्यंस्नानमोजोबलप्रदम् । कण्डूमलश्रमस्वेदतन्द्रातृड्दाहपाकनुत् ॥ वाह्यैश्चसेकैःशीतायैरूष्मान्तर्यातिपीडितः । नरस्यस्नातमात्रस्यदीप्यतेतेनपावकः ॥ शीतेनपयसास्नानंरक्तपित्तप्रशांतिकृत् ॥ तदेवोष्णेनतोयेनबल्यंवातकफापहम् ॥ शिरःस्नानमचक्षुष्यमत्युष्णेनाम्बुनासदा ॥ वातश्लेष्मप्रकोपेतुहितन्तच्चप्रकीर्त्तितम् ॥१४॥

उबटन कफ और मेदका नाशक वीर्य, बल, रुधिर, त्वचाकी कोमलता और उत्तमता का करनेवाला होताहै, और मुख के लेप करने से नेत्र दृढ़ होते हैं कपोल मोटे और मुख सुन्दर व्यंगपिडिकारहित कमल के समान होताहै स्नान, अग्निदीपक, वीर्य, आयु, ओज और बलका बढ़ानेवाला होकर, खुजली, मल, कामस्वेद, तन्द्रा, तृषा, दाह और पाकका नाश करनेवाला होता है, शीतल जलादिकों के सिंचनसे बाहरकी ऊष्मा दबकर शरीरके भीतर जाती है इसीसे केवल स्नानहीमात्रके द्वारा मनुष्यकी जठराग्नि दीप्त होती है, शीतल जलके स्नान करनेसे रक्त पित्तकी शांति होती है, उष्णजल के द्वारा स्नान करने से बलकी वृद्धि और वातकफका नाश होताहै, बहुत गरम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जलके द्वारा शिरसे स्नानकरना नेत्रोंको अहितहै परन्तु वात पित्तके कोपमें हितकहागयाहै ॥ १४॥

अशीतेनाम्भसास्नानंपयःपानन्नवास्त्रियः । एतद्वोमानवाःपथ्यं स्निग्धमल्पञ्च भोजनम् ॥ १५ ॥

हेमनुष्यगण! मन्दोष्ण जल से स्नान दुग्धपान नवीन स्त्री स्निग्ध स्वल्प भोजन यह तुम्हारा पथ्यहै ॥ १५ ॥

हरिश्चंद्रस्यैतत् ॥

यःसदामलकैस्स्नानंकरोतिसविनिश्चितम् । वलीपलितनिर्मुक्तोजीवेद्वर्षशतन्नरः १६॥ स्नानंज्वरेऽतिसारेचनेत्रकर्णानिलार्तिषु।आध्मानपीनसाजीर्णभुक्तवत्सुचगर्हितम्॥ स्नानस्यानन्तरंसम्यग्वस्त्रेणांगस्यमार्ज्जनम्।कान्तिप्रदंशरीरस्यकण्डूत्वग्दोषनाशनम् १७

हरिश्चन्द्रका कहाहुआ ॥

जो मनुष्य सदैव आमलोंका शरीरमें लेप करके स्नान करताहै वह झुर्री और बालोंके पकने से रहित सौ वर्ष तक जीता है स्नानकरना ज्वर अतीसार नेत्र कान और वायुकी पीडा, अफरा पीनस अजीर्ण इनरोगोंसे युक्त और भोजन किये हुये मनुष्यों को वर्जित है स्नानके उपरान्त अच्छे प्रकार वस्त्रसे शरीर का पोंछना कान्तिका देनेवाला शरीरकी खुजली और त्वचाके दोषोंका नाशकरनेवालाहोताहै १६। १७॥

कौशेयौर्णिकवस्त्रञ्चरक्तवस्त्रन्तथैवच । वातश्लेष्महरन्तत्तुशीतकालेविधारयेत् ॥ कौशेयंपट्टाम्बरंटसरवस्त्रञ्च । मेध्यंसुशीतम्पित्तघ्नंकषायंवस्त्रमुच्यते।तद्धारयेदुष्णकाले तत्रापिलघुशस्यते ॥ कषायङ्कोकमौइतिलोकेकषायरागरक्तंवा। शुक्लन्तुशुभदंवस्त्रंशीतातपनिवारणम् । नचोष्णन्नचवाशीतन्तत्तुवर्षासुधारयेत् ॥ १८ ॥

रेशमी, ऊनी और रक्त वस्त्र वात और श्लेष्मा को दूर करेहैं उसको शीतकालमें धारणकरना चाहिये कषाय पवित्र शीतल वस्त्र पित्तका नाशकरनेवाला होताहै वह उष्णकालमें धारनकरना चाहिये उसमेंभी हलका उत्तम है शुक्लवस्त्र कल्याण का देनेवाला शीत और आतपका दूर करनेवाला न अति उष्ण न शीतल होताहै उसको वर्षा में धारणकरे ॥ १८ ॥

यशस्यङ्काम्यमायुष्यंश्रीमदानंदवर्द्धनम् । त्वच्यंवशीकरंरुच्यंनवनिर्मलमम्बरम् ॥ कदापिनजनैःसद्भिर्धार्य्यम्मलिनमम्बरम् । तत्तुकण्डूकृमिकरं ग्लान्यलक्ष्मीकरम्परम् ॥ अलक्ष्मीअशोभादारिद्र्यञ्च ॥ १९ ॥

नवीन और निर्मलवस्त्र यशकारी कामका उद्दीपक आयु और लक्ष्मीका बढ़ानेवाला त्वचाका हित वश करनेवाला और रुचि उत्पन्न करनेवाला होताहै सज्जन पुरुषोंको मलिन वस्त्र कभी न धारण करना चाहिये क्योंकि वह खुजली कीडे ग्लानि अशोभा और दरिद्रका करनेवाला होताहै ॥ १९ ॥

कुंकुमञ्चन्दनञ्चापि कृष्णागुरुचमिश्रितम् । उष्णंवातकफध्वंसि शीतकालेतदिष्येत ॥ चन्दनंघनसारेण वालकेनचमिश्रितम् । सुगंधिपरमंशीतमुष्णकालेप्रशस्यते॥ (घनसारः कर्पूरः, वालंह्रीवेरम्) चन्दनंघुसृणोपेतं मृगनाभिसमायुतम् । नचोष्णंनच

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाशीतं वर्षाकालेतदिष्यते॥ (घुसृणंकुंकुमम् । मृगनाभिः कस्तूरी) अनुलेपस्तृषामूर्च्छा दुर्गन्धस्वेददाहजित्। सौभाग्यतेजस्त्वग्वर्णप्रीत्यौजोबलवर्द्धनः॥ सस्नानानर्हलोकानामनुलेपोऽपिनोहितः॥ २०॥

केशर चन्दन और कालाअगर यह मिलेहुए उष्ण और वात कफके नाशकरनेवाले होतेहैं इनका लेप शीतकालमें करना चाहिये चन्दन कपूर सुगन्धबाला यह सब मिलेहुए सुगन्धित अत्यन्त शीतल होतेहैं इनका लेप शीतकाल में करना चाहिये चन्दन केशर और कस्तूरी यह मिलेहुए न शीतल न उष्ण होतेहैं इनका लेप वर्षाऋतुमें करना चाहिये अनुलेप तृषा, मूर्च्छा, दुर्गन्धि, स्वेद, दाहका नाशक और सौभाग्य, तेज, त्वचा का वर्ण, प्रीति, ओज और बलका वर्द्धक होताहै जिन पुरुषोंको स्नान का निषेध है उनको लेपभी न करना चाहिये॥ २०॥

सुगंधिपुष्पपत्राणां धारणङ्कान्तिकारकम्। पापरक्षोग्रहहरं कामदंश्रीविवर्द्धनम् २१॥

सुगन्धित पुष्प और पत्रोंका धारण, कान्ति, काम लक्ष्मी का वर्द्धक और पाप राक्षस ग्रह इन्हों का नाशक होता है॥ २१॥

भूषणैर्भूषयेदङ्गं यथायोग्यंविधानतः। शुचिसौभाग्यसन्तोष दायकंकाञ्चनंस्मृतम्॥ग्रहदृष्टिहरम्पुष्टिकरंदुःस्वप्ननाशनम्। पापदौर्भाग्यशमनं रत्नाभरणधारणम्॥ माणिक्यन्तरणेःसुजातममलं मुक्ताफलंशीतगोर्माहेयस्यचविद्रुमोनिगदितः सौम्यस्य गारुत्मकम्। देवेज्यस्यचपुष्परागमसुराचार्यस्यवज्रंशनेर्नीलन्निर्मलमन्ययोश्चगदिते गोमेदवैदूर्य्यके॥ २२॥

विधिपूर्व्वक यथायोग्य आभूषणों से अंगोंको शोभित करे, सुवर्ण के आभूषण पवित्रता सौभाग्य और सन्तोषके देनेवाले होते हैं, रत्नोंके आभूषणोंका धारण ग्रहोंकी दृष्टि, दुस्स्वप्न, पाप और दौर्भाग्य का नाशक और पुष्टता करनेवाला होता है सूर्य्यका माणिक्य, चन्द्रमाका सुन्दरमोती, मंगल का मूंगा, बुधका पन्ना, शुक्रका हीरा- शनैश्चरकी नीलम, बृहस्पति का पुखराज राहुका गोमेद और केतुका वैदूर्य्य यह सबग्रहोंके जुदे २ रत्न हैं॥ २२॥

वासःसुगन्धरत्नानांधारणम्प्रीतिवर्द्धनम्। रक्षोघ्नमर्थ्यमोजस्यं सौभाग्यकरमुत्तमम्॥ २३॥

सुन्दर वस्त्र पुष्पमाला, चन्दन, अतर आदि और रत्नों का धारण प्रीति धन ओज और सौभाग्य का बढ़ानेवाला होकर राक्षसों का नाशक होताहै॥ २३॥

सततंसिद्धमन्त्रस्य महौषध्यास्तथैवच। रोचनासर्षपादीनां मांगल्यानाञ्चधारणम्॥ आयुर्लक्ष्मीकरंरक्षोहरंमंगलदंशुभम्। हिंस्रादिभयविध्वंसि वशीकरणकारणम्॥ २४॥

सिद्ध मन्त्र- महौषधि- मंगलीकगोरोचन और सरसों आदि इनका धारण आयु- लक्ष्मी- सहित मंगल का देनेवाला और राक्षस तथा व्याघ्रादि हिंसकोंके भयका नाश करनेवाला वशीकरण का कारण और शुभ होता है॥ २४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ततोभोजनवेलायां कुर्य्यान्मांगलयदर्शनम् । तस्यप्रदर्शनन्नित्यमायुर्धर्मविवर्द्ध नम् ॥ लोकेऽस्मिन्मंगलान्यष्टौ ब्राह्मणोगौर्हुताशनः। पुष्पस्रक्सर्पिरादित्यआपोराजा तथाष्टमः ॥ २५ ॥

भोजन के समय मंगल पदार्थोंका दर्शनकरे उनके दर्शन से नित्य आयु और धर्म की वृद्धिहोतीहै- इसलोक में ब्राह्मण-गौ-अग्नि-पुष्पोंकी माला—घृत—सूर्य्य—जल और राजा यह आठ मंगलहैं ॥ २५॥

पादुकारोहणंकुर्य्यात् पूर्व्वंभोजनतःपरम्। पादरोगहरंवृष्यं चक्षुष्यञ्चायुषोहितम् ॥ शरीरेजायतेनित्यंवाञ्छानृणाञ्चतुर्विधा । बुभुक्षाचपिपासाच सुषुप्साचरतिस्पृहा । भोजनेच्छाबिघातात्स्यादंगमर्दोऽरुचिःश्रमः ॥ तंद्रालोचनदौर्बल्यं धातुदाहोबलक्षयः । बिघातेनपिपासाया शोषःकण्ठास्ययोर्भवेत् ॥ श्रवणस्यावरोधश्च रक्तशोषोहृदिव्यथा। निद्राविघाततोजृम्भा शिरोलोचनगौरवम् ॥ अंगमर्दस्तथातंद्रास्यादन्नापाकएवच २६ ॥

भोजन के पूर्व्व और पश्चात् खडाउओंपर चढ़े इससे पैरके रोगोंका नाश वीर्य्य की वृद्धि और नेत्र तथा आयुको हित होता है -मनुष्योंके शरीर में चारप्रकार की सदैव इच्छा होती है क्षुधा-तृषा, निद्रा और मैथुन की इच्छा इनमें भोजनकी इच्छाके रोकने से अंगमें हड़फूटन, अरुचि, काम तन्द्रा, नेत्रोंकी दुर्बलता धातुओंकी जीर्णता और बलकी हानि होती है- प्यास के रोकने से गले और मुखका सूखना, कानोंका रुकना, रुधिरका सूखना और हृदय में पीड़ा होती है, निद्राके रोकने से जंभाई, शिर और नेत्रोंका भारीपन, हड़फूटन, तन्द्रा और अजीर्ण होता हैं ॥ २६ ॥

बुभुक्षितोनयोऽश्नाति तस्याहारेन्धनक्षयात् । मन्दीभवतिकायाग्निर्यथाचाग्निर्निरिंधनः॥ आहारं पचति शिखीदोषानाहार वर्ज्जितः। पचति दोषक्षये धातून् प्राणान्धातुक्षयेऽपिच ॥ २७ ॥

जो क्षुधातुर भोजनको नहीं करता है उसके आहाररूपी इन्धन के नाशसे इन्धनरहित अग्नि के समान जठराग्नि मन्द होजाती है यह जठराग्नि पहिले आहार को पचाती है आहार के न होंने पर दोषोंको और दोषोंके नाशहोजाने पर धातुओंको और धातुओंके नाश होजाने पर प्राणोंको विनाश करती है ॥ २७ ॥

आहारःप्रीणनःसद्योबलकृद्देहधारणः । स्मृत्यायुःशक्तिवर्णौजःसत्त्वशोभाविवर्द्धनः २८॥

आहार तृप्त करनेवाला शीघ्रबलकारी, शरीर को धारण करनेवाला, स्मृति,आयु, शक्ति,वर्ण, ओज,सत्त्व और शोभाका बढ़ानेवाला होता है ॥ २८ ॥

यथोक्तगुणसम्पन्नं नरःसेवेतभोजनम् ॥ विचार्य्यदोषकालादीन् कालयोरुभयोरपि ॥ उभयोः कालयोः प्रातः सायञ्च। तथाच सायं प्रातर्मनुष्याणामशनं श्रुतिबोधितम्॥ नान्तराभोजनंकुर्य्यादग्निहोत्रसमोविधिः। प्रातः,प्रथमयामादुपरिद्वितीययामादर्वाक्॥ तथाच ॥ याममध्येनभोक्तव्यंयामयुग्मंनलंघयेत् । याममध्येरसोत्पत्तिर्यामयुग्माद्बलक्षयः ॥ अन्यच्च। क्षुत्सम्भवति पथ्येषुरसदोषमलेषुच । कालेवायदिवाकालेसोऽन्नकालउदाहृतः ॥ २९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यथोक्त गुणोंसे युक्त भोजन दोष और समयादि को विचारकर प्रातःकाल और सायंकाल के बीचमें न करे क्योंकि यह विधि अग्निहोत्र के समान है प्रथम प्रहरके उपरान्त और दूसरे प्रहरके पहिले भोजन करे क्योंकि पहिले पहर में रसकी उत्पत्ति होतीहै और दूसरे पहर के उपरान्त बल का नाश हो जाताहै, कोई कहतेहैंकि समय में अथवा असमय में रस दोष और मलके परिपाक होजाने पर जब क्षुधा उत्पन्नहो तब भोजन करे ॥ २९ ॥

रसादीनां पाकज्ञानमाह ॥

उद्गारशुद्धिरुत्साहोवेगोत्सर्गोयथोदितः।लघुताक्षुत्पिपासाचजीर्णाहारस्यलक्षणम् ३०॥

रसादिकोंके पाककालक्षण ॥

डकार की शुद्धि, उत्साह, यथायोग्य मलमूत्रादि वेगोंका त्याग, शरीर का हलकापन, क्षुधा और पिपासा काहोना यह परिपाक हुए भोजन के लक्षण हैं ॥ ३० ॥

स्थानमाह ॥

आहारन्तुरहःकुर्य्यान्निर्हारमपिसर्वदा । उभाभ्यांलक्ष्म्युपेतःस्यात्प्रकाशेहीयतेश्रिया ॥ निर्हारोमलमूत्रोत्सर्गः। अन्यच्च । आहारनिर्हारविहारयोगाः सदैवसद्भिर्विजनेविधेयाः ॥ ३१ ॥

भोजन का स्थान ॥

मनुष्य भोजन और मल मूत्रादिका त्याग सदैव निर्जन स्थानमें करे इससे शरीर की श्री बढ़ती है और सबके आगे करने से श्रीका नाश होताहै और कहाभीहै कि आहार-मलमूत्रका त्याग और विहार यह सज्जन लोगोंको सदैव निर्जन स्थानों में करने उचितहैं ॥ ३१ ॥

भोजनपात्रमाह ॥

दोषहृद्दृष्टिदंपथ्यंहैमंभोजनभाजनम्। रौप्यंभवतिचाक्षुष्यंपित्तहृत्कफवातकृत् ॥ कांस्यंबुद्धिप्रदंरुच्यंरक्तपित्तप्रसादनम्। पैत्तलंवातकृद्रूक्षमुष्णंकृमिकफप्रणुत् ॥ आयसेकाचपात्रेचभोजनंसिद्धिकारकम् ॥ शोथपाण्डुहरंबल्यं कामलापहमुत्तमम्॥शैलेयेमृन्मयेपात्रेभोजनंश्रीनिवारणम् ॥ दारूद्भवेविशेषेणरुचिदंश्लेष्मकारितु । पात्रंपत्रमयंरुच्यं दीपनंविषपापनुत् ॥ जलपात्रन्तुताम्रस्यतदभावेमृदोहितम् । पवित्रंशीतलंपात्रंरचितं स्फटिकेनयत् ॥ काचेनरचितन्तद्वत्तथावैदूर्य्यसम्भवम् ॥ ३२ ॥

भोजनके पात्र ॥

सुवर्णका भोजनपात्र–दोषोंका नाशक, दृष्टिवर्द्धक और पथ्यहै, चांदीका पात्र-नेत्रोंको हित, पित्तनाशक और कफवातका करनेवालाहै, कांसेका पात्र-बुद्धिका उत्पन्नकरनेवाला, रुचिकारक और रक्त पित्तको उत्पन्न करताहै, पीतलका पात्र-वात करनेवाला, रूखा, उष्ण और कृमि तथा कफका नाशक होताहै लोहे और काचकापात्र-सिद्धिदायक, बलकारक सूजन पांडु और कामला रोगकानाशक होताहै-पाषाण और मृत्तिका का पात्र-श्री नाशक होताहै- काष्ठका पात्र विशेष करके रुचि करनेवाला और कफको उत्पन्न करताहै पत्तों का पात्र रुचिकारक जठराग्नि दीपक और विष तथा पाप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कानाशक होताहै जल पान करने के लिये ताम्रका पात्र उचितहै उसके अभाव में मृत्तिकाका पात्र श्रेठहै स्फटिक कांच और वैदूर्य्य से बनाहुआ पात्र पवित्र और शीतल होता है ॥ ३२ ॥

भोजनाग्रेसदापथ्यंलवणार्द्रकभक्षणम् । अग्निसन्दीपनंरुच्यंजिह्वाकण्ठविशोधनम् ॥ ननुलवणस्यपित्तजनकत्वादार्द्रकस्यकटुकत्वेन पित्तलत्वाद्बुभुक्षितस्यवृद्धपित्तस्यकथम्प्रथमं लवणार्द्रकमुचितम् । उच्यते । लवणंसैन्धवंज्ञेयंचन्दनंरक्तचन्दनमिति वचनाल्लवणमत्रसैन्धवंतत्त्रिदोषघ्नं ॥ यतआह । गुणग्रन्थे । सैन्धवंलवणंस्वादुदीपनम्पाचनंलघु ॥ स्निग्धंरुच्यंहितंवृष्यंसूक्ष्मंनेत्र्यंत्रिदोषहृत् । आर्द्रकन्तुकटुकमपिनपित्तविरोधिमधुरपाकित्वात् । यतआह । तत्रैव ॥ आर्द्रिकाभेदिनीगुर्वीतीक्ष्णोष्णादीपनीचसा । कटुकामधुरापाकेसूक्ष्मावातकफापहा ॥ अथचान्यदपिलवणमार्द्रकञ्चनात्रपित्तविरोधिसंयोगस्वभावात् ॥ संयोगस्वभावे चैतादृशम् । भोजनस्यपूर्व्वंलवणार्द्रकभक्षणबोधकवचनमेवप्रमाणयति ॥ ३३ ॥

भोजन के पूर्व्व लवणयुक्त अदरकका भोजन सदैव पथ्यहै इस्से अग्निकी दीप्ति रुचि और जिह्वा तथा कण्ठकी शुद्धता होती है अब यह सन्देह उत्पन्न होताहै कि लवण पित्तकारक होताहै और अदरक भी कटुताके कारण पित्तकारकहै तो बढ़ेहुए पित्तवाले क्षुधित पुरुष को लवण युक्त अदरकका भोजन कैसे उचितहै? इसका उत्तर यहहै कि लवण कहनेसे सैंधव लवण चन्दन कहनेसे रक्तचन्दन इस वचन के द्वारा यहां सैंधव लवण लियाजाताहै और वह त्रिदोषनाशक है जैसा कि गुण ग्रंथ में कहा गयाहै सैंधव लवण मधुर रस-दीपन-पाचक-हलका-स्निग्ध-रुचिकारक-वीर्य्य में शीतल-वीर्य्यवर्द्धक सूक्ष्म नेत्रोंका हितकारी और त्रिदोष नाशक है और अदरक कटुरस होनेपर भी पित्तवर्द्धक नहीं है क्योंकि पाकमें मधुरहै जैसा कि द्रव्य गुण ग्रंथमें कहागया है कि अदरक मलभेदक भारी तीक्ष्ण वीर्य्य में उष्ण दीपनी कटुरस पाकमें मधुर सूक्ष्म और वायु तथा कफ की नाश करनेवाली होतीहै और भी कहाहुआहै कि संयोगके स्वभावसे लवण और अदरक पित्तकारक नहींहै और भोजन के पूर्व्व लवण और अदरक के भक्षण का विधायक वचनही इसमें प्रमाणहै ॥ ३२ ॥

भोजनादौदृष्टिदोषविनाशाय ब्रह्मादीन स्मरेत् । तद्यथा अन्नं ब्रह्मा रसो विष्णुर्भोक्ता देवो महेश्वरः ॥ इतिसञ्चिन्त्यभुञ्जानं दृष्टिदोषोनबाधते । अञ्जनीगर्भसम्भूतं कुमारंब्रह्मचारिणम् ॥ दृष्टिदोषविनाशाय हनुमन्तंस्मराम्यहम् । अश्नीयात्तन्मना भूत्वापूर्व्वंतुमधुरंरसम् ॥ मध्येऽम्ललवणौपश्चात् कटुतिक्तकषायकान् । फलान्यादौ समश्नीयाद्दाडिमादीनिबुद्धिमान् ॥ विनामोचफलन्तद्वद्वर्ज्जनीयाचकर्कटी । मृणालविसशालूककन्देक्षुप्रभृतीनपि । पूर्व्वमेवहिभोज्यानि नतुभुक्त्वाकदाचन ॥ मृणालं पद्मनालंविशम्भिशण्डकम्शालूककन्दप्रसिद्धम् । गुरुपिष्टमयंद्रव्यंतण्डुलान्पृथुकानपि ॥ नजातुभुक्तवान्खादेन्मात्रांखादेद्बुभुक्षितः ॥ घृतपूर्व्वंसमश्नीयात्कठिनंप्राक्ततोमृदु । अंतेपुनर्द्रवाशीतुबलाद्रोगेणमुञ्चति ॥ मृणालविसशालूककंदेक्षुप्रभृतीनपि । पूर्व्वमेवहिभोज्यानिनतुभुक्त्वाकदाचन । अयमर्थः ॥ प्राक्घृतपूर्व्वंकठिनंसम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्नीयात् । यथाकाश्यादिवासिनः ॥ प्रथमंसव्यञ्जनां घृतपूर्व्वरोटिकाम्भुञ्जते। ततोमृदुससूपादिमोदनम्भुञ्जते ॥ अंतेपुनर्द्रवाशी । भोजनांतेदधितक्रदुग्धादिभुञ्जते ॥ ३४ ॥

भोजनके पूर्व दृष्टिके दोषकी शान्तिके लिये ब्रह्मादिकोंका स्मरणकरे ब्रह्मा अन्न विष्णुरस महादेव जी भोजन करनेवाले ऐसा विचार कर भोजन करनेवाले को दृष्टि का दोष बाधा नहीं करता है और दृष्टिदोषकी शान्ति के लिये अंजनी के गर्भ से उत्पन्न कुमार ब्रह्मचारी हनुमान्जीको स्मरण करताहूं इस प्रकार विचारता हुआ प्रथम मधुर रस भोजन करे मध्यमें खट्टा और निमकीन पीछे कटु तिक्त और कषाय खाय बुद्धिमान् पुरुष प्रथम अनार आदिफल ककडी और केलेको छोड़कर भोजन करे कमल की डंडी भिषंडक जड कन्द ईख आदिको भी प्रथमही भोजन करे और भोजनके पीछे कभी न करे और भारी पिट्ठीकी वस्तु चावल और चिड़वे को भी भोजनके उपरान्त कदापि न खाय और क्षुधा लगने परभी थोड़ाही खाय भोजन के पहले घृत और कठिन द्रव्य खाय बीचमें कोमल और अन्तमें द्रवद्रव्य पानकरे इस प्रकार भोजन करनेसे बल और स्वस्थता होती है प्रथम घृतयुक्त कठिन द्रव्य खानेका यह तात्पर्य्यहै कि जैसे काशी आदिके वासी पुरुष प्रथम घृतयुक्त व्यंजन के द्वारा रोटी खातेहैं फिर कोमल दाल भात खाते हैं और अन्तमें दही मट्ठा और दूध आदिक पीते हैं ॥ ३४ ॥

यद्यत्स्वादुतरंतद्धिनदद्यादुत्तरोत्तरम्॥भुक्त्वायत्प्रार्थ्यतेभूयस्तदुक्तंस्वादुभोजनम् ३५

जो २ वस्तु अधिक स्वादुसे युक्त हो वह उत्तरोत्तर देनी चाहिये- भोजन करके जिसको फिर मांगे वह स्वाद अन्न कहलाता है ॥ ३५ ॥

स्वाद्वन्नस्यगुणमाह ॥

सौमनस्यंबलम्पुष्टिमुत्साहंवृद्धिमायुषः । स्वादुसञ्जनयत्यन्नमस्वादुचविपर्य्ययम् ॥ अत्युष्णान्नंबलंहंतिशीतशुष्कञ्चदुर्ज्जरम् ॥ अतिक्लिन्नंग्लानिकरंयुक्त्यायुक्तंहिभोजनम् ॥ अतिद्रुताशिताहारेगुणान्दोषान्नविन्दति । भोज्यंशीतमहद्यञ्चस्याद्विलम्बितमश्नतः ॥ ३६ ॥

स्वादु अन्नके गुण ॥

स्वादुयुक्त अन्न मनकी प्रफुल्लता-बल-पुष्टता-और आयुकी वृद्धि करता है और स्वादरहित अन्न इस्से विपरीत गुणकरता है अत्यन्त उष्ण अन्न बलनाशक, अत्यन्त शीतल शुष्क अन्न दुर्जर कठिनता से पचनेवाला और अत्यन्त गलाहुआ अन्न ग्लानिकारक होताहै इस्से युक्तिपूर्वक भोजन करना चाहिये, बहुत शीघ्र भोजन करने से गुण और दोष नहीं मालूम होतेहैं, बहुतदेर में भोजन करने से भोजन शीतल और स्वादु रहित होजाता है ॥ ३६ ॥

गुरुत्रिविधन्तन्निवारयन्नाह ॥

मंदानलोनरोद्रव्यंमात्रागुरु विवर्ज्जयेत् । स्वभावतश्चगुरुयत्तथासंस्कारतोगुरु ॥ मात्रागुरुस्तमुद्गादिर्माषादिःप्रकृतेर्गुरुः॥संस्कारगुरुपिष्टान्नंप्रोक्तमित्युपलक्षणम्॥३७॥

तीनप्रकार के भारी अन्न होते हैं इनका निवारण करते हैं ॥

मंदाग्नि पुरुष मात्रा स्वभाव और संस्कारसे भारी पदार्थोंको भोजन न करे मात्रागुरु, मूंग आदि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वभावसे गुरु उडद आदि और संस्कार से गुरु पीठी आदि यह नमूनेके लिये कहागयाहै ॥ ३७॥

आहारंषड्विधञ्चूष्यंपेयंलेह्यंतथैवच । भोज्यम्भक्ष्यन्तथाचर्व्यंगुरुविद्यात्‌यथोत्तरम् ॥ (चूष्यमिक्षुदाडिमादि) पेयंपानकशर्करोदकादि, लेह्यंरसाला,क्वथितादिक्कथिताकढ़ीइतिलोके। भोज्यंभक्तसूपादि।भक्ष्यंलडुकंमण्डुकादि चर्व्यञ्चिपिटश्चणकादि ॥ ३८॥

आहार छः प्रकारका है ॥

चूष्य, पेय, लेह्य, भोज्य, भक्ष्य और चर्व्य यह उत्तरोत्तर गुरु हैं, चूष्य ईख और अनार आदि,पेय पना और शर्बत आदि, लेह्य शिखरन और कढ़ी आदि, भोज्य दाल चावल आदि भक्ष्य लड्डू और मट्टे ठौर आदि- चर्व्य चिड़वे चने आदि ॥ ३८॥

स्वभावगुरुसंस्कारगुरुणोःस्वभावलघुत्वाद्‌भक्ष्यस्यभोजनपरिमाणमाह ॥

गुरूणामर्द्धसौहित्यंलघूनांतृप्तिरिष्यते। अयमर्थःमाषपिष्टान्नादिभिरर्द्धसौहित्यंकर्त्तव्यंमुद्गादिभिः स्वभावादेवलघुभिर्मात्रयातृप्तिःकर्तव्येत्यर्थः ॥ द्रवोद्रवोत्तरश्चापिनमात्रागुरुरिष्यते।द्रवःपेयादिःद्रवोत्तरःतक्राद्यधिकओदनादिः॥ मात्रातोऽधिकोऽपिमात्रागुरुर्नमंतव्यः ॥ पेयस्यसर्व्वतोलघुत्वात्‌ ॥ ३९ ॥

स्वभाव गुरु, संस्कारगुरु और स्वभाव लघु, भक्ष्य के भोजन का प्रमाण कहते हैं ॥

गुरुपदार्थों की आधी तृप्ति और लघुपदार्थोंकी पूरीतृप्ति करनी चाहिये इसका यह तात्पर्य्य है कि उडद और पीठी आदिक आधीमात्रा से और स्वभाव से लघु मूंग आदि पूरीमात्रासे खानाचाहिये द्रव अर्थात् पेय पदार्थ और द्रवोत्तर अर्थात् मट्ठे आदिसे तरकिये हुये चावल आदि मात्रासे अधिक भी गुरु नहीं मानेजाते हैं क्योंकि पेय सबसे लघु होता है ॥ ३९ ॥

उक्तञ्चसुश्रुतेन। पेयलेह्यादिभक्ष्याणांगुरुर्विद्याद्यथोत्तरमितिपेयम्पेयादि। लेह्यंरसालादि। आदिशब्दाद्‌भोज्यमोदनसूपादि ॥ भक्ष्यम्मोदकादिः । द्रव्याढ्यमपिशुष्कन्तु सम्यगेवोपपद्यते। विशुष्कमन्नमभ्यस्तंनपाकंसाधुगच्छति ॥ अयमर्थःशुष्कमपिस्रोतोरोधकमपिद्रव्याढ्यंसम्यक्‌पाकंयाति। केवलस्यशुष्कान्नस्यदोषमाह ॥ विशुष्कमन्नमित्यादि। (अपक्कंतत्किम्भवतीत्यपेक्षायामाह) पिण्डीकृतमसंक्लिन्नंविदाहमुपगच्छति । पिण्डीकृतमष्ठीलावदुद्भूतम् ॥ असंक्लिन्नंनसम्यगार्द्रं । विदाहमुपगच्छतिविदग्धंभवतीत्यर्थः॥ ४०॥

और सुश्रुतने भी कहाहै ॥

कि पेय और लेह्य आदि भोजन उत्तरोत्तर गुरुहैं इस अधिक द्रवद्रव्यसे मिलाहुआ शुष्क अर्थात् स्रोतों का रोकनेवाला पदार्थ भी अच्छे प्रकार से परिपाकको प्राप्त होता है और केवल शुष्कअन्न भोजन कियाहुआ अच्छे प्रकार से परिपाकको नहीं प्राप्तहोता है क्योंकि वह आर्द्रताके न होने से घुटने के समान पिण्डाकार होकर विदग्ध होजाता है ॥ ४०॥

शुष्कादीनां वैगुण्यमाह ॥

शुष्कंविरुद्धंविष्टम्भि वह्निव्यापदकृद्भवेत्। शुष्कञ्चिपिटकादि ॥ विरुद्धंक्षीरमत्स्यादि। विष्टम्भि चणकमसुरादि वह्निमान्द्यं कुर्यात् ॥ ४१॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुष्कादि अन्नोंके दोष ॥

शुष्क चिड़वे आदि विरुद्ध मिलेहुए दूध और मछली आदि विष्टंभी चने और मसूर आदि यह जठराग्नि को मन्दकर देते हैं ॥ ४१ ॥

नभुक्त्वानरदैश्छित्त्वाननिशायांनवाबहून् । नजलान्तरितानद्भिःसक्तूनद्यान्नकेवलान् ॥ पुनर्दानंपृथक्पानंसामिषम्पयसानिशि । दन्तच्छेदनमुष्णञ्चसप्तसक्तुषुवर्ज्जयेत् ॥ सुश्रुतः सक्तूनामाशुजीर्य्येत मृदुतादवलेहिका ॥ ४२ ॥

भोजन के उपरान्त अथवा दांतों से काटकर या रात्रि को अथवा अधिकमात्रासे या जल पी२कर अथवा केवल जलहीसे सत्तू न खाय और केवल सत्तूही न खाय, सत्तुओंमें सातबातें छोड़दे वह यहहैं कि पुनर्दान (एकबारखाकर फिर दिये हुये सत्तू) अलग जलपीना- मांसके साथ खाना- दूध में मिलाके खाना- रात्रिकोखाना- दांतों से काट २ करखाना (पिंडीबनाकरखाना) और उष्ण करके खाना सुश्रुतने कहाहै कि सत्तुओंका अवलेह लघुता के कारण शीघ्रही परिपाकको प्राप्त होताहै ४२॥

विषमाशनस्य लक्षणमाह ॥

यथाकालेतिमात्रंयत्तद्भवेद्विषमाशनम् । बहुस्तोकमकालेवाज्ञेयंतद्विषमाशनम् ॥ ४३ ॥

विषमभोजनकालक्षण ॥

समय पर अधिक मात्रासे भोजन करना अथवा असमय में अधिक या अल्पमात्रासे भोजन करना विषम भोजन कहलाताहै ॥ ४३ ॥

बहुनाल्पस्यभक्षितस्यदोषमाह ॥

आलस्यगौरवाटोपशब्दांश्चकुरुतेऽधिकम् । हीनमात्रंतनोःकार्श्यंकरोतिचबलक्षयम् । अधिकमन्नम् ॥ ४४ ॥

बहुत और थोड़ेभोजन के दोष ॥

अधिक अन्न भोजन करनेसे आलस्य- शरीरमें भारीपन, उदरमें अफरा और गड़ २ शब्द उत्पन्न होताहै अल्प अन्न भोजन करनेसे शरीरकी दुर्बलता और बलका नाश होताहै ॥ ४४ ॥

अकालेभुक्तस्यदोषमाह ॥

अप्राप्तकालेभुञ्जानोह्यसमर्थतनुर्नरः । तांस्तान्व्याधीनवाप्नोतिमरणञ्चाधिगच्छति ॥ अप्राप्तकालःकालादतिप्राक्भुञ्जानःअसमर्थशरीरोभवति । तथासतितांस्तान् व्याधीन्शिरोव्यथाविसूचिकालसकविलम्बिकादीन्प्राप्नोति ॥ तेषामाधिक्ये मरणमपि प्राप्नोतीत्यर्थः । कालेऽतीतेऽश्नतोजन्तोर्वायुनोपहतेऽनले ॥ कृच्छ्राद्विपच्यतेभुक्तंन स्याद्भोक्तुंपुनःस्पृहा ॥ ४५ ॥

अकाल में भोजन करनेके दोष ॥

भोजनके समयसे बहुत पहिले भोजन करनेसे शरीर असमर्थ होजाताहै इस्से शिरकी पीड़ा विसूचिका अलसक और विलम्बिका आदि रोग उत्पन्न होते हैं, और इनरोगों की अधिकता से मरणभी होजाताहै और भोजनके समयसे उपरान्त भोजन करनेसे वायुके द्वारा जठराग्निकेनष्ट होजानेपर भोजन बहुत देर में पचताहै और फिर भोजन करने की इच्छा नहीं होतीहै ॥ ४५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुक्षेर्भागद्वयंभोज्यैस्तृतीयेवारिपूरयेत् । वायोःसञ्चारणार्थाय चतुर्थमवशेषयेत् ॥ रसेनान्नस्यरसना प्रथमेनोपतर्पिता । नतथास्वादुमाप्नोति ततःशोध्याम्बुनान्तरा ॥ अत्यम्बुपानान्नविपच्यतेऽन्नमनम्बुपानाच्च सएव दोषः ॥ तस्मान्नरोवह्निविवर्द्धनाय मुहुर्मुहुर्वारिपिबेदभूरि ॥ ४६ ॥

कोखके दोभाग भोजन से और तीसरा भाग जल से पूर्णकरे और चौथा भाग वायु के आने जाने को छोड़दे, भोजनके रस से पहिले तृप्तहुई जिह्वामें फिर दूसरा स्वादुनहीं प्राप्तहोता इस लिये बीच २ में जलपीकर जिह्वाका शोधन करना चाहिये बहुत जलपीने से और जल के न पीने से भी भोजन नहीं पचता इस कारण भोजन के समय अग्नि की वृद्धि के लिये मनुष्यको बारंबार थोड़ा २ जलपीना चाहिये ॥ ४६ ॥

भुक्तस्यादौजलम्पीतंकार्श्यमन्दाग्निदोषकृत् । मध्येऽग्निदीपनंश्रेष्ठमन्तेस्थौल्यकफप्रदम्॥अन्यच्च समस्थूलकृशाभुक्तमध्यान्तःप्रथमाम्बुपा। इतिवाग्भटः। भुक्तंभोजनम्॥तृषितस्तुनचाश्नीयात्क्षुधितोनपिबेज्जलम्॥तृषितस्तुभवेद्गुल्मीक्षुधितस्तुजलोदरी॥४७॥

भोजन के आदिमें जलपीने से दुर्बलता और मंदाग्नि मध्यमें पीने से अग्निकी दीप्ति और अन्तमें जलपीने से स्थूलता तथा कफकी उत्पत्ति होतीहै इस्से मध्यमें जलपीना श्रेष्ठहै और वाग्भटमें भी कहाहै कि भोजन के मध्य में जलपीने से समता अन्तमें स्थूलता और आदि में कृशता होती है प्यासा भोजन न करे भूखा जल न पिये क्योंकि प्यासमें भोजन करने से गुल्मरोग और भूख में जलपीने से जलोदर होताहै ॥ ४७ ॥

ननुशिष्टा भोजनान्ते दुग्धं पिबन्ति तत्कथमुचितम् । यतस्त्रिधा विभक्तस्य भोजन
कालस्य प्रथमो भागो वातस्य द्वितीयः पित्तस्य तृतीयः कफस्य अतएवाह। अश्नीया
त् तन्मना भूत्वा पूर्वन्तु मधुरं रसम् ॥ मध्येऽम्ललवणौ पश्चात् कटुतिक्तकषायका
न्। (अस्यायमभिप्रायः) भोजने पूर्व्वभुक्तो मधुरो रसो बुभुक्षितस्य वातपित्तयोः श
मको भवति भोजनमध्ये भुक्तावम्ललवणौ पित्ताशयेच वह्निवृद्धिं कुरुतः। भोजनांत
समये भुक्ताःकटुतिक्तकषायरसाः कफं शमयन्तीति। अथ भोजनावसानसमयस्य क
फकालत्वात् तत्रकथं श्लेष्मजनकं दुग्धं पातुमुचितम्भवति। यत उक्तम् ॥ दुग्धं
स्वादुरसांस्निग्धमोजस्यधातुवर्द्धनम् । वातपित्तहरंवृष्यंश्लेष्मलंगुरुशीतलम् ॥ इ
तिउच्यते। विदाहीन्यन्नपानानियानिभुंक्तेहिमानवः ॥ तत्विदाहप्रशान्त्यर्थंभोजनांते
पयःपिबेत्। (तथाचब्रह्मपुराणे) कुर्य्यात्क्षीरांतमाहारंनदध्यन्तंकदाचनेति । लवणा
म्लकटूष्णानिविदाहीन्यतियानितु ॥ तद्दोषंहर्त्तुमाहारंमधुरेणसमापयेत् ॥ भोजनावसा
नसमयेदुग्धादिमधुरभोजनेनैववर्द्धितः कफोलवणाम्लकटुभोजनजाननपित्तस्यवृद्धिंवि
नाशयतिपित्तवृद्धिनाशनेनकफस्यापिवृद्धिस्तुक्षीणाभवति। क्षीणाकफवृद्धिरग्निमान्द्या
दीन्व्याधीनुत्पादयितुंनशक्नोति॥ ननुशत्रोर्नाशनेनशत्रुहन्तुर्वृद्धिर्दृश्यतेनतुक्षीणताततः
कथंकफःक्षीणइति। उच्यते॥ बलवच्छत्रुविनाशनेनशत्रुहन्तुःदृश्यते। तथाच॥ नाश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नात् प्रत्यनीकस्य स्वयं वाक्षीयतेयथा ॥ वह्निसन्तप्तलोहस्य तप्तता नाशयेज्जलम् ॥ ननुभोजनावसानसमये भुक्ताः कटुतिक्तकषायाः रसाः कफं शमयिष्यन्ति वातस्य वृद्धिं विधास्यन्ति इति चेत्। तन्न कट्वादीनां क्षीणशक्तिकत्वात् (तथाच) यदेकंनाशयेद्दोषं तन्नान्यंवर्द्धयेत्कुतः। नाशनेह्येकदोषस्य यतस्तत् क्षीणशक्तिकमिति ॥ वस्तुतो य एवरसः प्राचुर्य्येण भुक्तस्तस्यैव सर्वेरसावशा भवन्ति। (यतआह सुश्रुतः) जग्धाः सर्वेऽपिगच्छन्ति बलिनोवश्यतांरसाः। यथाप्रकुपितादोषा वशंयान्तिबलीयसः ॥ (बलिनः रसस्य बलीयसः दोषस्य) ॥ ४८ ॥

अब यह सन्देह होताहै कि शिष्टलोग भोजन के अन्त में दुग्ध पीते हैं यह कैसे उचितहै ? क्योंकि भोजन के समय के तीन भागहैं उनमेंसे पहिला वायुका दूसरा पित्तका और तीसरा कफकाहै इसी से कहागयाहै कि भोजन के पहिले मधुर रस मध्य में अम्ल और लवण और पीछे कटु तिक्त और कषाय भोजनकरे इसका यह अभिप्रायहै कि भोजन के आदि में खायाहुआ मधुर रस भूखे पुरुषके वात और पित्तको शान्तकरताहै भोजन के मध्य में खाये हुये अम्ल और लवण पित्ताशयमें अग्नि की वृद्धि करते हैं, और भोजन के अन्त में खायेहुए कटु तिक्त और कषाय कफको शान्त करते हैं तो भोजन के अन्तका समय कफका है उस में कफके बढ़ानेवाले दूधका पीना कैसे उचितहै ? क्योंकि कहाहुआ है कि दुग्ध, मधुर स्निग्ध–ओज और रसादि धातुओं का वर्द्धक वात पित्त नाशक वीर्य जनक कफकारक गुरु और शीतल होताहै, इसका समाधान करते हैं कि मनुष्य जो संपूर्ण दाहकारी अन्न और पेय पदार्थका भोजन करते हैं उन के दाह की शान्ति के अर्थ भोजन के अन्त में दूधपीना उचितहै और ऐसाही ब्रह्मपुराणमें लिखाहै कि भोजन के अन्त में दूधपीना चाहिये और दधि उससमय कभी न खाय, लवण अम्ल, कटु, उष्ण और दाहकारी पदार्थों के दोष दूरकरने के लिये भोजन के अन्त में मधुर रसखाय भोजन के अन्त में दूधआदिक मधुर रस भोजन से बढ़ाहुआ कफ लवण अम्ल और कटु भोजन से बढ़ेहुए पित्तको नाशकरताहै फिर पित्तकी वृद्धिके नाशकरने से कफकी वृद्धि भी क्षीण होजातीहै और उसके क्षीण होनेसे अग्निकी मन्दता आदि रोग नहीं उत्पन्न होसक्ते हैं अब यह कहा जासक्ता है कि शत्रुके मारने से उस मारनेवाले की वृद्धि होतीः है नकि क्षीणता तो कफ कैसे क्षीण होजाता है ? इसका उत्तर यह है कि बलवान् शत्रुके नाशकरने से मारनेवाले की भी क्षीणता होती है इसी के दृष्टान्त में कहागयाहै कि जैसे अग्नि से तपे हुये लोहे की उष्णता के नाशकरने में जल स्वयं भी नष्ट होजाताहै इसी प्रकार शत्रुके नाशकरनेसे मारनेवाला आपभी क्षीणहोजाताहै यदि ऐसा कहाजाय कि खायेहुये कटु तिक्त और कषाय रस भोजन के अन्त में उत्पन्नहुये कफ को तो शान्त करेंगे परन्तु वायुकी वृद्धि करेंगे सो ऐसा नहीं होसक्ता क्योंकि कफके नाशकरने से कटुआदिरसों की शक्ति क्षीणहोजायगी और ऐसाही कहाहै कि जिस वस्तु से एकदोषका नाश होताहै उस्से दूसरा दोष नहीं बढ़सक्ताहै क्योंकि एकदोषके नाशकरनेही से उसकी शक्ति क्षीणहोजाती है ठीक २ तो जौनसा रस भोजन में बहुत खायाजाताहै उसीके वशीभूत और रसभी होजाते हैं और सुश्रुतनेभी ऐसाही कहाहै कि जैसे कोप को प्राप्त हुये दोषोंमें से जो बलवान् होताहै उसीके सब वशहोते हैं इसी प्रकार खाये हुये रसों में से जो रस बलवान् होताहै उसी के वशीभूत और रस होजाते हैं ४८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एवंभुक्त्वासमाचामेद्रूक्षग्रहणपूर्व्वकम् । भोजनेदन्तलग्नानि निर्हृत्याचमनंचरेत् ॥ दन्तांतरगतंचान्नं शोधनेनाहरेच्छनैः । कुर्य्यादनिर्हृतंतद्धि मुखस्यानिष्टगंधताम् ॥ दन्तलग्नमनिर्हार्य्यं लेपंमन्येतदंतवत् । नतत्रबहुशःकुर्य्याद् यत्नंनिर्हरणंप्रति ॥ ४९ ॥

इसप्रकार भोजनकरके किसी रूखी वस्तुसे हाथ धोवै भोजन के समय दांत में लगी हुई वस्तु को निकालकर आचमन करै और दांतोंके भीतर प्रविष्ट हुये अन्नको खरकेसे धीरे २ निकाले क्योंकि उस के विनानिकाले मुख में दुर्गन्ध उत्पन्न होती है और दांतों में जमेहुये लेपको दांतों के समान जानकर उसके निकालने में बहुत यत्नकरै ॥ ४९ ॥

आचम्यजलयुक्ताभ्यां पाणिभ्यांचक्षुषीस्पृशेत् । भुक्त्वापाणितलंघृष्ट्वा चक्षुषोर्दीयतेयदि ॥ अचिरेणैवतद्वारितिमिराण्यपोहति ॥ ५० ॥

हाथ धोकर जलसे युक्त हाथोंके द्वारा नेत्रोंका स्पर्शकरै क्योंकि वह जल शीघ्रही नेत्रोंके अन्धकार को दूर करताहै ॥ ५० ॥

भुक्त्वाचसंस्मरेन्नित्यमगस्त्यादीन्सुखावहान् । विष्णुरात्मातथाचान्नं परिणामश्चवै यथा ॥ सत्येनतेनमद्भुक्तं जीर्य्यत्वन्नमिदंतथा । अगस्तिरग्निर्वडवानलश्च भुक्तंममान्नं जरयंत्वशेषम् ॥ सुखञ्चमेतत्परिणामसम्भवं यच्छन्त्वरोगं ममचास्तुदेहम् ॥ अंगारकमगस्तिञ्च पावकंसूर्य्यमश्विनौ । पञ्चैतान्संस्मरेन्नित्यं भुक्तंतस्याशुजीर्य्यति ॥ इत्युच्चार्यस्वहस्तेन परिमार्ज्यतथोदरम् । अनायासप्रदायीनि कुर्य्यात्कर्म्माण्यतंद्रितः ॥ अतंद्रितः निरंतरं जाग्रतस्तिष्ठेन्नतु स्वप्यात् । भुक्तमात्रस्यतु स्वप्नाद्धन्त्यग्निं कुपितः कफ इति वचनात् । जीर्णेऽन्नेवर्द्धतेवायुर्विदग्धेपित्तमेधते ॥ भुक्तमात्रेकफश्चापिक्रमोऽयंभोजनोपरि । विदग्धेकिंचित्पक्के किंचिदपक्के ॥ ५१ ॥

भोजनके उपरान्त करने के कार्य ॥

भोजन के उपरान्त सुखदेने वाले अगस्त्य आदिकों का स्मरणकरै विष्णु आत्मा विष्णु अन्न और विष्णुही परिपाकहै इसी सत्यसे मेरा भोजन किया हुआ अन्न शीघ्र परिपाक को प्राप्त होवै अगस्ति और वडवानल अति मेरे भोजन किये हुए सम्पूर्ण अन्न को परिपाक करैं और उसके परिपाक से भए सुखको भी दें और मेरे शरीरको नीरोगकरैं मंगल अगस्ति अग्नि सूर्य अश्विनीकुमार इन पांचोंके स्मरणकरने से भोजन शीघ्र परिपाकको प्राप्त होताहै यह कहकर उदरपर हाथ फेरै इसके उपरान्त परिश्रमरहित कार्यौंको करै और उसी समय शयन न करै क्योंकि ऐसा कहागयाहै कि भोजन के उपरान्त सोने से जठराग्नि मन्दहोकर कफ उत्पन्नहोताहै भोजन के परिपाकहोजाने पर वायु बढ़तीहै कुछ परिपाकहोजाने पर पित्त बढ़ता है और भोजन के उपरान्तही कफ बढ़ताहै ॥ ५१ ॥

भुक्तमात्रे सञ्जातस्य कफस्य प्रतीकारमाह ॥

फलैर्क धूमेनापोह्यहृद्यैर्वा कषायकटुतिक्तकैः । पूगकर्पूरकस्तूरीलवंगसुमनःफलैः ॥ फलैर्क धूमेनापोह्यहृद्यैर्वा ... ॥ धूमेन अगुर्वाटुकषायैर्वा मुखवैशद्यकारिभिः । ताम्बूलपत्रसहितैःसुगंधैर्वाविचक्षणः ॥ धूमेन अगुर्वा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दि धूमेन । अपोह्य कफं दूरीकृत्य कषाय कटुतिक्तकैः फलैः कर्पूरकस्तूरीलवंगादिभिः । पूगैः क्रमुकैः सुमनः फलैः जातीफलैः एला हरीतक्यादि फलैः ॥ ५२ ॥

भोजन के उपरान्त बढ़ेहुये कफका प्रतीकार ॥

भोजनके उपरान्त अगर आदि के धूमसे कफको दूरकरके हृदय को हित वा कटु तिक्त कषाय रस युक्त फलोंको चबाकर मुखको निर्मल करै अथवा सुपारी कपूर कस्तूरी लवंग जायफल अथवा मुखके निर्मल करनेवाले कटु तिक्त और कषाय रसयुक्त फलसहित और सुगन्धितवस्तु युक्त ताम्बूल भक्षण करै ॥ ५२ ॥

रतौसुप्तोत्थितेस्नाते भुक्तेवांतेचसंगरे।सभायांविदुषांराज्ञां कुर्यात्ताम्बूलचर्वणम्५३॥

मैथुनके समयमें निद्रा के अन्तमें स्नान और भोजन के उपरान्त वमन के अन्तमें परिश्रम के उपरान्त तथा पण्डितों की और राजाओंकी सभामें ताम्बूल भक्षण करै ॥ ५३ ॥

ताम्बूलमुक्तंतीक्ष्णोष्णं रोचनंतुवरंसरम् । तिक्तंक्षारोषणंकाम रक्तपित्तकरंलघु ॥ वश्यंश्लेष्मास्यदौर्गन्ध्यं मलवातश्रमापहम् । मुखवैशद्यसौगंध्यकांतिसौष्ठवकारकम् ॥ हनूदन्तमलध्वंसि जिह्वेंद्रियविशोधनम् । मुखप्रसेकशमनं गलामयविनाशनम् ॥ नवंत देवमधुरं कषायानुरसंगुरु । बलासजननंप्रायः पत्रशाकगुणंस्मृतम् ॥ वंगदेशोद्भवंपर्णं परंकटुरसंसरम् । पाचनंपित्तजनकमुष्णंकफहरंस्मृतम् ॥ पर्णंपुराणमकटुक्षुल्लकंतनु पांडुरम् । विशेषादगुणवद्धेयमन्यद्धीनगुणंस्मृतम् (ताम्बूलगुणम्) ॥ ५४ ॥

ताम्बूलके गुण ॥

ताम्बूल तीक्ष्ण उष्ण रुचिकारक कषैला—सारक, तिक्तक्षार कटु काम तथा रक्त पित्तका करनेवाला लघुवशकरनेवाला कफ मुखकी दुर्गन्धता मल वायु और श्रमका नाशक मुखकी स्वच्छता सुगंधकान्ति और सुन्दरता करनेवाला जबड़े तथा दांतों के मलका नाशक जिह्वा इन्द्रियकाशुद्ध करनेवाला और मुखकी लारका तथा गलेके रोगोंका नाशकरनेवाला होताहै नवीन ताम्बूल कुछ कषैला मधुर गुरु कफकारक और पत्रशाकके समानगुण वाला होताहै वंगदेशमें उत्पन्नहुआ ताम्बूल अत्यन्त कटु सारक पाचक पित्तवर्द्धक उष्ण और कफनाशक होताहै पुराना ताम्बूल कटु रसरहित लघु अत्यन्त कोमल पाण्डुवर्ण और अत्यन्त गुणकारी होताहै अन्यताम्बूल इसकी अपेक्षा गुणमें न्यून होते हैं ॥ ५४ ॥

पूगंगुरुहिमंरूक्षंकषायंकफपित्तनुत् । मोहनंदीपनंरुच्यमास्यवैरस्यनाशनम् ॥ पूगं स्याद्दृढमध्यंयत्स्विन्नंवापित्रिदोषनुत् । सरसंगुर्वभिष्यन्दितद्भृशंवह्निनाशनम् ॥ खदिरःकफपित्तघ्नश्चूर्णंवातबलासनुत् । संयोगतस्त्रिदोषघ्नंसौमनस्यंकरोतिच॥ मुखवैशद्यसौगन्ध्यकान्तिसौष्ठवकारकम् । प्रभातेपूगमधिकं मध्याह्नेखदिरंतथा ॥ निशासुचूर्णमधिकं ताम्बूलंभक्षयेत्सदा । आयुरग्रेयशोमूलेलक्ष्मीमध्येऽवस्थिता ॥ तस्मादग्रं तथामूलंमध्यं पर्णस्यवर्जयेत् । पर्णमूलेभवेद्व्याधिःपर्णाग्रेपापसम्भवः ॥ मध्यंपर्णंहरत्यायुः शिरावुद्धिविनाशिनी । आद्यंविषोपमंपीतं द्वितीयंभेदिदुर्जरम्॥तृतीयादनुपातव्यं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुधातुल्यंरसायनम् । ताम्बूलंनातिसेवेत नविरिक्तोबुभुक्षितः ॥ देहदृक्केशदन्ताग्नि श्रोत्रवर्णबलक्षयः । शोषःपित्तानिलास्त्रंस्याद्दितिताम्बूलचर्व्वणात् ॥ ताम्बूलंनहितंदंत दुर्बलेक्षणरोगिणाम् । विषमूर्च्छामदार्त्तानां क्षयिणांरक्तपित्तिनाम् ॥ ५५ ॥

सुपारी गुड शीतल रूखी कषैली कफ और पित्तनाशक मदकारक अग्निदीपक रुचिकारक और मुखकी बिरसता की नाश करनेवाली होती है मध्य में दूध अथवा उबाली हुई सुपारी त्रिदोष को नाशकरती है कच्ची सुपारी गुरु अभिष्यन्दी और जठराग्नि की अत्यन्त मन्द करने वाली होती है खदिर, कफ और पित्त का नाश करनेवाला होता है चूना वायु और कफ का नाश करनेवाला होता है पान सुपारी कत्था चूना यह सब मिले हुए त्रिदोषों का नाश मन की प्रसन्नता मुख की निर्मलता तथा सुगन्धि कान्ति और सुन्दरता को करते हैं प्रातःकाल ताम्बूल भक्षण करने में सुपारी मध्याह्न में खदिर और रात्रि में चूना अधिक होना चाहिये ताम्बूल के अग्र भाग में आयु मूल में यश और मध्य में लक्ष्मी वास करती है इस कारण से ताम्बूल का अग्रभाग मध्य और मूल त्यागकर देना चाहिये ताम्बूल का मूल भक्षण करने से रोग उत्पन्न होते हैं अग्रभाग भक्षण करने से पातक होता है केवल ताम्बूल और चूना खाने से आयुका नाश होताहै और पान की नस खाने से बुद्धिका नाश होता है सुपारी आदि से युक्त पानकी पहली पीक विष तुल्य दूसरी बार की पीक भेदक और कठिनतासे पचनेवाली होती है इससे अमृत तुल्य गुणदायक और रसायनरूप पीक तीसरी बारसे पीनी चाहिये विरेचन लेनेवाला और क्षुधित पुरुष ताम्बूल को बहुत सेवन न करै ताम्बूल के बहुत खाने से शरीर दृष्टि केश दंत अग्नि श्रवणेन्द्रिय वर्ण तथा बलका नाश होताहै और शोष पित्त तथा वायु की वृद्धि होती है दुर्बल दांतवालों को तथा नेत्ररोग विष मूर्च्छा मदात्यय क्षय और रक्त पित्तसे युक्त पुरुषों को ताम्बूल हित नहीं है ॥ ५५ ॥

भुक्त्वाशतपदंगच्छेच्छनैस्तेनतुजायते। अंगसङ्घातशैथिल्यंग्रीवाजानुकटीमुखम् ॥ भुक्तोपविशतस्तंद्रा शयानस्यतुपुष्टता । आयुश्चंक्रममाणस्य मृत्युर्धावतिधावतः ॥ चंक्रममाणस्य पदशतंशनैर्गच्छतः श्वासानष्टौसमुत्तानस्तान्द्विःपार्श्वेतुदक्षिणे। ततस्त द्विगुणान्वामेपश्चात् स्वप्याद्यथासुखम् ॥ वामदिशायामनलोनाभेरूर्ध्वेऽस्तिजन्तूनाम् । तस्मात्तुवामपार्श्वेशयीतभुक्तप्रपाकार्थम् ॥ ५६ ॥

भोजनके उपरान्त धीरे २ सौपद (कदम) चले इस्से अंगोंकी सघनता तथा ग्रीवाघुटने कटि और मुख में शिथिलता होतीहै अर्थात् यह सम्पूर्ण शिथिल होकर अच्छीतरहसे घुमानेके योग्य होजाते हैं भोजनके उपरान्त बैठनेवाले को तन्द्रा सोनेवाले को पुष्टता धीरे२शतपद गमन करनेवालेको आयु और दौडने वालेको मृत्यु प्राप्त होती है उताने होकर आठ श्वास इसके द्विगुण दक्षिण करवट से और इस्के भी द्विगुण श्वास वाम पार्श्व से भोजनके उपरान्त शयन करने के समयमें ग्रहण करने चाहिये इसके उपरान्त जिसरीतिसे इच्छाहो उस रीतिसे शयनकरै मनुष्योंकी बाईं कोखमें नाभि के ऊपर अग्निके रहनेकास्थानहै इस कारण से भोजनके परिपाकके लिये बाईं करवट शयनकरै ५६॥

त्रिदोषशमनीखट्वा तूलीवातकफापहा । भूशय्याबृंहणीवृष्याकाष्ठपट्टीतुवातला ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अन्यःपुनराह भूशय्यावातलातीवरूक्षापित्तास्रनाशिनी । भूशय्याशयनंहृष्यंपुष्टिनिद्रा धृतिप्रदम् ॥ श्रमानिलहरंवृष्यंविपरीतमतोऽन्यथा ॥ ५७ ॥

खट्वा की शय्या त्रिदोषनाशक तोशक वात तथा कफकी नाश करने वाली होती है पृथ्वी पर सोनेसे शरीर की वृद्धि और पुष्टि होती है और तखतपर सोनेसे वायुकी वृद्धि होतीहै–किसी दूसरेका यहमत है कि पृथ्वीपर सोनेसे वायुकी वृद्धि और कफ तथा रक्त पित्तका नाश होताहै–उत्तम शय्यापर सोनेसे मनकी प्रसन्नता पुष्टता निद्रा तथा धारणा शक्तिकी वृद्धि होतीहै श्रम तथा वायुका नाश होताहै और वीर्य बढ़ताहै निकृष्ट शय्यापर सोनेसे इसके विपरीत गुण होते हैं ॥ ५७ ॥

सम्बाहनंमांसरक्तत्वक्प्रसादकरंपरम्॥प्रीतिनिद्राकरंवृष्यंकफवातश्रमापहम् ५८॥

संबाहन (अंगमलवाना) मांस रुधिर और त्वचाका प्रसन्न करनेवाला प्रीति निद्रा तथा वीर्य का बढ़ानेवाला और कफ वात तथा श्रमका नाश करनेवाला होता है ॥ ५८ ॥

प्रवातंरौक्ष्यवैवर्ण्यस्तम्भकृद्दाहपित्तनुत्॥स्वेदमूर्च्छापिपासाघ्नमप्रवातमतोऽन्यथा सुखंप्रवातंसेवेतग्रीष्मेशरदिचान्तरा ॥ निर्वातमायुषेसेव्यमारोग्यायचसर्वदा । पूर्वोनिलोगुरुःसोष्णःस्निग्धः पित्तास्रदूषकः । विदाहीवातलःश्रांतिकफशोषवतांहितः।स्वादुः पटुरभिष्यन्दीत्वग्दोषार्शोविषक्रमीन् ॥ सन्निपातंज्वरं श्वासमामवातञ्चकोपयेत् । (स्वादुर्भक्ष्यद्रव्येषुबाहुल्येनमधुररसजनकः) दक्षिणः पवनः स्वादुःपित्तरक्तहरोलघुः। वीर्य्येणशीतलोबल्यश्चक्षुष्योनतुवातलः ॥ पश्चिमःपवनस्तीक्ष्णःशोषणोबलहल्लघुः। मेदः पित्तकफध्वंसी प्रभञ्जनविवर्द्धनः ॥ उत्तरोमारुतःशीतःस्निग्धोदोषप्रकोपकृत् । क्लेदनःप्रकृतिस्थानांबलदोमधुरोमृदुः ॥ दोषप्रकोपकृत् आतुराणाम् । आग्नेयोदाहकृद्रूक्षोनैर्ऋतोनविदाहकृत् । वायव्यस्तुभवेत्तिक्त ऐशानः कटुकः स्मृतः ॥ विष्वग्वायुरनायुष्यःप्राणिनांबहुरोगकृत् । अतस्तंनैवसेवेतसेवितः स्यान्नशर्म्मणे ॥ व्यजनस्यानिलोदाहस्वेदमूर्च्छाश्रमापहः ॥ तालवृन्तभवोवातस्त्रिदोषशमकोमतः ॥ वंशव्यजनजस्तूष्णोरक्तपित्तप्रकोपनः । चामरोवस्त्रसंभूतोमायुरोवेत्रजस्तथा ॥ एतेदोषजितावाताः स्निग्धाहृद्याःसुपूजिताः ॥ ५९ ॥

अधिक वायुयुक्त स्थान रूक्षता विवर्णता तथा स्तंभकारक और दाह पित्त स्वेद मूर्च्छा तथा पिपासा नाशक होताहै और वायु रहित स्थान इससे विपरीत गुणवाला होताहै, ग्रीष्मऋतुसे शरत्काल पर्यन्त थोड़ी २ सुखदायक वायुका सेवन करै, आयु और आरोग्य के निमित्त वायु रहित स्थानका सेवन करै, पूर्वदिशा की वायु गुरु उष्ण स्निग्ध पित्त तथा रुधिरकी दूषक विदाही बादी थकेहुए तथा कफ रहित पुरुषोंको हितकारी स्वादु अर्थात् भोजन की वस्तुको मधुर करने वाली लवण रस युक्त अभिष्यन्दी और त्वचाके दोष बवासीर, विष, कृमि, सन्निपात, ज्वर, श्वास तथा आमवात उत्पन्न करनेवाली होती है, दक्षिणदिशा की वायु स्वादु रक्त पित्तनाशक लघु वीर्य में शीतल बलकारक और नेत्रोंको हितहोतीहै और बादी नहीं होती है, पश्चिम की वायु तीक्ष्ण सुखानेवाली बलनाशक लघु बादी और मेद कफ तथा पित्तकी नाश करनेवाली होती है, उत्तर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिशाकी वायु शीतल स्निग्ध रोगियों के दोषकी बढ़ानेवाली क्लेदन स्वस्थ पुरुषों के बलकी बढ़ानेवाली मधुर और कोमल होती है, अग्निकोण की वायु दाह करनेवाली और रूक्ष होतीहै, नैर्ऋत्य कोण की वायु दाहकारक नहीं होती है, वायुकोण की वायु तिक्तरस होती है, ईशानकोण की वायु कटुरस होती है. चौवाई वायु आयुको हानिकारक और प्राणियों के अनेक रोगों की करनेवाली होतीहै इसकारण से उसका सेवन नहीं करना चाहिये क्योंकि इससे दुःख होताहै,पंखेकी वायु दाह स्वेद मूर्च्छा और श्रमनाशक होती है, ताडके पंखे की वायु त्रिदोषनाशक होती है, बांसके पंखे की वायु उष्ण और रक्तपित्त करनेवाली होतीहै, चामर वस्त्र मोरपंख और वेत के पंखे की वायु त्रिदोष की नाश करनेवाली स्निग्ध और हृदयको हितकारी होतीहै और चामर आदि इनकी वायु सबसे श्रेष्ठ कहीगई है ॥ ५६ ॥

दिवास्वापंनकुर्व्वीतयतोऽसौस्यात्कफावहः ॥ ग्रीष्मवर्ज्येषुकालेषु दिवास्वप्नोनिषिध्यते। उचितोहिदिवास्वप्नो नित्यंयेषांशरीरिणाम् ॥ वातादयःप्रकुप्यन्ति तेषामस्वपतांदिवा। व्यायामप्रमदाध्ववाहनरतान्क्लान्तानतीसारिणः शूलश्वासवतस्तृषापरिगतान्हिक्कामरुत्पीडितान् ॥ क्षीणान्क्षीणकफान्शिशून्मदहतान्वृद्धान्रसाजीर्णिनो। रात्रौजागरितान्नरान्निरशनान्कामंदिवास्वापयेत् ॥ दिवावायदिवारात्रौनिद्रासात्मीकृतातुयैः ॥ नतेषांस्वपतांदोषोजाग्रतांचोपजायते ॥ स्वपतांदिवाजाग्रतांरात्रौ। भोजनानंतरं निद्रावातंहरतिपित्तहृत्। कफंकरोतिवपुषःपुष्टिसौख्यन्तनोतिहि ॥ शयनंपित्तनाशाय वातनाशायमर्द्दनम्। वमनंकफनाशायज्वरनाशाय लङ्घनम् ॥ आसीनंघूर्णितंयत्तुनाभिष्यन्दिनरूक्षणम् ॥ ६० ॥

दिनको न सोवे क्योंकि इससे कफ उत्पन्न होताहै परन्तु ग्रीष्मऋतु में दिनका सोना वर्जित नहीं है-और जिन मनुष्योंको सदैव दिनके सोने का अभ्यासहै उनके दिनमें न सोने से वातादिक कोप करते हैं-व्यायाम मैथुन तथा मार्गचलने से व्याकुल अतीसार शूल श्वास तृषा हिचकी तथा वायुसे पीड़ित क्षीण अल्पकफवाले बालक मदसे पीड़ित वृद्ध अजीर्णयुक्त रात्रि में जगेहुये और लङ्घन करनेवाले पुरुषों को दिनमें सोना उचितहै-जिन पुरुषों ने दिन में सोनेका और रात्रिमें जागने का अभ्यास करलिया है उनको इससे कोई दोष नहीं होताहै-भोजनके अन्तमें सोनेसे वातपित्तकानाश कफकी वृद्धि और शरीरमें पुष्टता तथा सुख होताहै-पित्त के नाशके लिये शयन वायुके नाशके निमित्त अङ्गमर्द्दन कफके नाशके लिये वमन और ज्वरके नाशके लिये लङ्घन करना चाहिये-बैठकर अङ्गमर्द्दन करवाना अभिष्यन्दी और रूक्ष नहीं होताहै ॥ ६० ॥

अपरानप्युदरेऽन्नस्य संस्थापनहेतूनाह ॥

शब्दान्स्पर्शांश्चरूपाणिरसान्गन्धान्मनःप्रियान्। भुक्तवानपि सेवेततेनान्नंसाधुतिष्ठति ॥ उदरेइतिविशेषः ॥ ६१ ॥

उदरमें अन्नस्थापन करनेके दूसरे कारण ॥

भोजनके उपरान्त मनके प्रिय शब्द स्पर्श रूप रस और गन्धका सेवनकरै इससे अन्न उदरमें अच्छे प्रकार स्थित होजाताहै ॥ ६१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अन्नस्योदरेऽस्थितिहेतूनाह ॥

शब्दःस्पर्शस्तथारूपं रसोगन्धोजुगुप्सितः। भुक्तमप्रयतञ्चान्नमतिहास्यञ्चवामयेत्॥ अप्रयतमपवित्रम् ॥ ६२ ॥

अन्नके उदरमें न ठहरनेके कारण ॥

भोजन के उपरान्त मनके अप्रिय शब्द स्पर्श रूप रस और गन्धके सेवनसे अपवित्र अन्नखानेसे और बहुत हँसने से वमन होजाताहै ॥ ६२ ॥

अन्यदपि वर्ज्जनीयमाह ॥

शयनंचासनञ्चाति नभजेन्नद्रवाधिकम् । नाग्न्यातपौनप्लवनंनयानंनापिवाहनम् ॥ प्लवनंबाहुभ्यांजलप्रतरणम्। यानंमार्गेचलनम् ॥ वाहनमश्वादि । व्यायामञ्च व्यवायञ्च धावनंयानमेवच ॥ युद्धंगीतञ्चपाठञ्चमुहूर्तंभुक्तवांस्त्यजेत् ॥ ६३ ॥

भोजनके उपरान्तत्यागकरनेके योग्यदूसरी बातैं ॥

भोजनके उपरान्त सोना बैठना अत्यन्त पतली वस्तुका पीना अग्नि धूप तैरना मार्ग में चलना घोडे आदिकों पर चढ़ना व्यायाम मैथुन दौड़ना युद्ध गान करना और पढ़ना यह सब मुहूर्त भर त्यागकरदे ॥ ६३ ॥

परिवर्जनार्थमजीर्णस्यहेतूनाह ॥

अत्यम्बुपानाद्विषमाशनाच्चसन्धारणात्स्वप्नविपर्य्ययाच्च ॥ कालेऽपिसात्म्यं लघुचापिभुक्तमन्नंनपाकं भजतेनरस्य। ईर्ष्याभयक्रोधसमन्वितेनलुब्धेनरुग्दैन्यनिपीडितेन॥ विद्वेषयुक्तेनचसेव्यमानमन्नंनसम्यक्परिपाकमेति ॥ सन्धारणात् । अधोवातमलमूत्रादीनाम् ॥ ६४ ॥

त्याग करदेनेके निमित्त अजीर्ण के कारणोंका वर्णन ॥

बहुतजल पीना विषम भोजन करना मलमूत्रादि वेगोंकारोकना और दिनमें सोना इनकारणों से मनुष्यका समय अनुसारभी सात्म्य और लघुभोजन कियागया अन्न परिपाकको नहीं प्राप्त होता है-ईर्ष्या भय क्रोध तथा लोभयुक्त रोग तथा दीनतासे पीडित और द्वेषयुक्त पुरुषका भोजन कियाहुआ अन्न अच्छे प्रकारसे परिपाक को नहीं प्राप्त होताहै ॥ ६४ ॥

अध्यशनलक्षणमाह ॥

अजीर्णेभुज्यतेयत्तुतदध्यशनमुच्यते। तन्निवारयन्नाह। प्राग्भुक्ते चानलेमन्देद्विरह्नोन समाहरेत् ॥ अस्यायमर्थः प्रातर्भुक्तेऽजीर्णे सति । अहन्येवपुनर्नभुञ्जीतइत्यर्थः। रात्रौ पुनस्तथापिसति भुञ्जीतैव ॥ यतआहसुश्रुतएव । प्रातराशेत्वजीर्णेतुसायमाशेनदुष्यतीति ॥ पूर्वभुक्ते विदग्धेऽन्नेभुञ्जानोहन्तिपावकान् । अस्यत्वयमर्थः। पूर्वभुक्तेरात्रिभुक्तेअन्नेविदग्धेकिञ्चिदपक्वेप्रातर्भुञ्जानः पावकंहन्तीत्यर्थःयतआह सायमाशेत्वजीर्णेतुप्रातर्भुक्तंविषोपममिति ॥ ६५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अध्यशन का लक्षण ॥

अजीर्ण में भोजन करनेको अध्यशन कहते हैं (अब उसका निवारण करते हैं) कि प्रातःकाल भोजन करनेसे जो अजीर्णहोय तो दिनको फिर न खाय और रात्रि में भोजनकरनेसे कोई दोष नहींहै क्योंकि सुश्रुतने कहाहै कि प्रातःकाल कियेहुये भोजनके परिपाक न होनेपर सायङ्काल को भोजन करै और रात्रिका किया भोजन यदि अच्छीरीतिसे परिपाकको न प्राप्त होय तो दूसरेदिन प्रातःकाल भोजनकरने से अग्नि नष्ट होजाती है क्योंकि कहागयाहै कि रात्रि के कियेहुये भोजन के अजीर्ण होनेपर दूसरे दिन प्रातःकाल को भोजन विषतुल्यहै ॥ ६५ ॥

सायमाशाजीर्णे भोजनोपायमाह ॥

भवेद्यदिप्रातरजीर्णशङ्का तदाभयांनागरसैन्धवाभ्याम् । विचूर्णितांशीतजलेनभुक्त्वा भुञ्जीतचान्नंमितमन्नकाले ॥ ६६ ॥

रात्रिके भोजनसे हुये अजीर्ण में भोजनका उपाय ॥

यदि प्रातःकाल अजीर्णका सन्देह होय तो सोंठ सेंधानोन और हड़ इनके चूर्णको शीतलजलके साथ भक्षण करके भोजन के समयपर थोडासा भोजन करै ॥ ६६ ॥

आयुःक्षयभयाद्विद्वान्नाह्निसेवेतकामिनीम् । अवशोयदिसेवेततदाग्रीष्मवसन्तयोः ॥ अवशः अजितेन्द्रियः ॥ ६७ ॥

पण्डित दिनमें स्त्रीसंसर्ग (मैथुन) न करै और यदि इन्द्रिय के वशीभूत होकर करै तो केवल ग्रीष्म और वसन्तऋतुमेंही करै ॥ ६७ ॥

आस्यावर्णकफस्थौल्यसौकुमार्य्यसुखप्रदा । अध्वा वर्णकफस्थौल्यसौकुमार्य्यविनाशनः ॥ यत्तुचंक्रमणंनाति देहपीडाकरंभवेत् । तदायुर्बलमेधाग्निप्रदमिन्द्रियबोधनम् ॥ ६८ ॥

बैठेरहने से कफ स्थूलता सुकुमारता और सुख होताहै मार्गमें चलने से कफ स्थूलता और सुकुमारताका नाशहोताहै, शरीर को विना बहुत पीडादिये धीरे २ चलनेसे आयु बल मेधा तथा अग्नि की वृद्धि और इन्द्रियों में चैतन्यता होती है ॥ ६८ ॥

उष्णीषंकान्तिकृत्केश्यं रजोवातकफापहम् । लघुतच्छस्यतेयस्माद्गुरुपित्ताक्षिरोगकृत् ॥ ६९ ॥

पगडी कान्तिवर्द्धक केशोंको हितकारी धूलि वायु और कफकी नाशकरनेवाली होती है परन्तु हलकी पगडी धारण करनी चाहिये क्योंकि भारीपगडी पित्त और नेत्रके रोगोंको उत्पन्नकरती है ६९॥

उपानद्धारणंनेत्र्यमायुष्यंपादरोगहृत् ।सुखप्रचारमोजस्यंवृष्यञ्चपरिकीर्त्तितम् ॥पादाभ्यामनुपानद्भ्यां सदाचंक्रमणंनृणाम् । अनारोग्यमनायुष्यमिन्द्रियघ्नमदृष्टिदम् ॥ ७० ॥

जूतोंके पहिरनेसे नेत्रोंको हित आयुकी वृद्धि पैरोंके रोगोंकानाश सुखकी प्राप्ति और ओज तथा वीर्यकी वृद्धि होती है ॥ ७० ॥

छत्रस्यधारणंवर्षातपवातरजोऽपहम् ।हिमघ्नंहितमक्ष्णोश्चमांगल्यमपिकीर्त्तितम् ॥ ७१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छत्रधारण वर्षा धूप धूलि तथा हिमका नाशक नेत्रोंको हित और मंगलकारी होता है ॥ ७१ ॥

सत्त्वोत्साहबलस्थैर्य्यधैर्य्यतेजोविवर्द्धनम् । अवष्टम्भकरञ्चापि भयघ्नं दण्ड धारणम् ॥ ७२ ॥

दंडका धारण सत्त्व, उत्साह, बल, स्थिरता, शूरता, तेजकीवृद्धि, अवलम्ब देनेवाला और भयका नाशक होताहै ॥ ७२ ॥

ऊर्ध्वाच्छादनसंयुक्ताशिबिकासर्ववल्लभा । तस्यामारोहणंनृणांत्रिदोषशमकंमतम् ॥ वातश्लेष्मसदार्त्तानामहिताश्रमकृत्तरिः । पित्तानिलकरोहस्ती लक्ष्म्यायुःपुष्टिवर्द्धनः ॥ घोटकारोहणंवातपित्ताग्निश्रमकृन्मतम् । मेदोवर्णकफघ्नञ्चहितंतद्बलिनांपरम् ॥ ७३ ॥

घटाटोप पालकी सबको प्रिय होतीहै और इसपर चढ़ने से मनुष्यों के त्रिदोष नाश होतेहैं वात श्लेष्मा के रोगोंसे व्याकुल मनुष्यों को नाव का चढ़ना हानिकारक होताहै और इससे श्रमभी होताहै हाथीपर चढ़नेसे पित्त वायु लक्ष्मी आयु और पुष्टताकी वृद्धि होती है घोडेपर चढ़ना वात पित्त अग्नि और श्रम करनेवाला और मेद वर्ण तथा कफका नाशक होताहै और यह बलवान् पुरुषों को अत्यन्तहित होताहै ॥ ७३ ॥

आतपस्वेदमूर्च्छास्रपित्ततृष्णाक्लमश्रमान् । दाहंविवर्णतांकुर्य्यादेतान्छायाव्यपोहति ॥ वृष्टिर्वृष्याहिमाबल्यानिद्रालस्यविधायिनी । भयावहामोहकरीकुहतिःकफवातला ॥ कुहतिःकुहराइतिलोके अग्निर्वातकफस्तम्भशीतवेपथुनाशनः । आमाभिष्यन्दिशमनोरक्तपित्तप्रकोपनः ॥ सद्यःश्लेष्मकरोधूमोनेत्रयोरहितोभृशम् । शिरोगौरवकृच्चापि वातपित्तञ्चकोपयेत् ॥ ७४ ॥

आतप (धूप) से स्वेद मूर्च्छा रक्त पित्त ग्लानि श्रम दाह और विवर्णता उत्पन्न होती है और छायासे इनसबका नाश होताहै वृष्टिसे वीर्य्य शीतलता बल निद्रा और आलस्य होताहै कोहरे से भय मोह और कफ तथा वायुकी वृद्धि होतीहै अग्निसे वायु कफ स्तम्भ शीत और कंपका नाश आम तथा अभिष्यन्द की शान्ति और रक्त पित्तका कोप होताहै धूमसे शीघ्र कफ की उत्पत्ति नेत्रों को अत्यन्तअहित शिरमें भारीपन और वायु पित्तका कोप होताहै ॥ ७४ ॥

अथ सदाचारः ॥

मैत्रींसद्भिःसमंकुर्यात् स्नेहंसत्सुतुसर्वथा । संसर्गंसाधुभिःकुर्यादसत्संगंपरित्यजेत् ॥ सत्सुसर्वथासज्जनेषुमनोवाक्कर्मभिः । सेवेतदेवभूदेववृद्धवैद्यनृपातिथीन् ॥ विमुखान्नार्थिनः कुर्य्यान्नावमन्येतकानपि । गुरूणांसन्निधौतिष्ठेत्सदैवविनयान्वितः ॥ पादप्रसारणादीनितत्रनैवसमाचरेत् । अपकारपरेऽपिस्यादुपकारपरःपुमान् ॥ आत्मवत्सकलान्पश्येद्वैरिणोदूरतोवसेत् । नकिञ्चिदात्मनः शत्रुन्नात्मानंकस्यचिद्रिपुम् ॥ प्रकाशयेन्नापमानंनचनिस्नेहतांप्रभोः । नात्मानमुदकेपश्येन्ननग्नः प्रविशेज्जलम् ॥ तथानाज्ञातगाम्भीर्य्यं नहिंस्रप्राणिसेवितम् । कालेहितंमितंसत्यं संवादिमधुरंवदेत् ॥ भुञ्जीतमधुरप्रायं स्निग्धंकालेहितंमितम् । नरात्रौदधिभुञ्जीत नचनिर्लवणंतथा ॥ नामुद्गसूप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

न्ना क्षौद्रंनचाप्यघृतशर्करम्॥जनस्याशयमालक्ष्य योयथापरितुष्यति। तन्तथैवानुवर्त्तेत पराराधनपण्डितः ॥ नैकःसुखीनसर्वत्र विश्वस्तोनचशंकितः । नोद्यमेविरमेत्क्वापि हेतावीर्षेत्फलेनतु ॥ (हेतौफलहेतौ । उद्यमेफले धनादौ) वेगान्नधारयेज्जातु मनोवेगान्विधारयेत् । नपीडयेदिंद्रियाणि नचैताननतिलालयेत् ॥ वर्षातपादिषुच्छत्री दण्डीरात्रौभयेषुच । सोपानत्कस्तनुंरक्षेद् विचरेद्युगमात्रदृक् ॥ युगमात्रदृक् अग्रतो हस्तचतुष्टयमितां भूमिंपश्यन् । नदीन्तरेन्नबाहुभ्यान्नाग्निस्कन्धमभिव्रजेत् ॥ संदिग्धनावंवृक्षञ्च नारोहेद्दुष्टयानवत् । दुष्टयानं दुष्टगजघोटकादि ॥ ७५ ॥

आचारका वर्णन ॥

मित्रता सज्जन तथा असज्जन दोनोंके साथकरै परन्तु सज्जनोंके साथ मन वचन कर्मसे मित्रता करनी उचितहै साधुओंका संसर्ग करै और असत्संग छोडदे देवता ब्राह्मण वृद्ध वैद्य राजा और अतिथियों की सेवा करै याचकोंको विमुख और किसीका अनादर न करै गुरुओं के समीप सदैव विनय पूर्वक रहना चाहिये और उनके निकट पैर फैलाना आदि उद्दण्डता न करै अपकार करनेवाले सेभी उपकार करै सबको अपने समानदेखै और शत्रुसे दूररहै किसीको अपना शत्रु तथा अपने को किसीका शत्रु अपमान और स्वामी की अप्रीति (नाराजी) को प्रकट न करे जलमें अपनी छाया न देखै नग्नहोकर जलमें प्रवेश न करै और जिसकी गहराई न मालूम तथा जिसमें हिंसकजीव रहते हों ऐसे जलमें प्रवेश न करै, समय के अनुसार हितकारी थोडा सत्य सङ्गत और मधुर भाषण करै, भोजनके समयमें प्रायः मधुर स्निग्ध हित और थोडा भोजन करै, रात्रिमें दही न खाय और यदि खाय तो लवण मूंगकी दाल सहत घृत और शर्करा मिलाकर खाय दूसरेके प्रसन्न करनेसे चतुरपुरुष लोगोंके आशय को जानकर जो जिससे प्रसन्न होता हो उसके साथ वैसाही वर्ताव करै, आपही अकेला सुखी न होवै सब लोगोंपर विश्वास और सबपर सन्देह न करै, उद्यम से कभी विरत न होय हेतुमें ईर्षाकरै परन्तु फलमें कदापि न करै अर्थात् किसी पुरुषको ऐश्वर्य्यवान् देखकर ऐश्वर्य्य में ईर्षा न करे परन्तु जिन विद्यादि कारणोंसे ऐश्वर्यहुआहै उनमें यह ईर्षा करनीचाहिये कि वहीकाम मैंभी करूं जिससे ऐश्वर्यवान् होजाऊं मलमूत्रादि वेगोंको न धारण करे और मनके वेगको रोके इन्द्रियोंको न बहुतकष्टदे और अत्यन्त उनका लालन न करे वर्षा और गरमीकी ऋतु में छत्र और रात्रि तथा भयके स्थानमें दंड धारणकरे जूतेसे चरणोंकी रक्षाकरे मार्ग चलनेके समय चार हाथ आगेकी पृथ्वी देखकर चले भुजाओंसे पैरकर नदी के पार न जाय जहां अग्नि लगीहो उसके सम्मुख न जाय, जिस नौकाके टूटनेका सन्देहहो उसपर वृक्षपर और दुष्ट हाथी घोडे आदि सवारियोंपर न चढे७५॥

नासंवृतमुखंकुर्य्यात्सभायाञ्चविचक्षणः । कासंश्वासंतथोद्गारंजृम्भणंक्षवथुन्त था॥नासिकांनविकुष्णीयान्नासीतोत्कटुकःक्वचित्। नोर्ध्वजानुश्चिरंतिष्ठेन्ननखेनलिखेद्भुवम् ॥ सम्मार्ज्जनीरजोनैव देहेदद्यात्कदाचन । ननखेनतृणंछिन्द्यान्नोच्छिष्टोब्राह्मणं स्पृशेत् ॥ नोपरक्तंनचोद्यन्तं नास्तंयान्तंदिवाकरम् । सर्वथानसमीक्ष्येत नजलेप्रतिबिम्बितम् ॥ नेक्षेतसततंसूक्ष्मं दीप्तामेध्याप्रियाणिच । पौरंदरंधनुर्नैव दर्शयेत्कस्यपिक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चित् ॥ नेच्छेद्बलवतायुद्धं नभारंशिरसावहेत्। गात्रंनवादयेत्केशान् हस्तेनधुनुयान्न च ॥ नगच्छेत्पूज्ययोर्मध्ये दम्पत्योरन्तरेणच । रिपोरन्नंनभुञ्जीत गणिकान्नमपिक्वचित् । प्रतिभूर्नभवेत्क्वापि नचसाक्षीवृथाभवेत् ।(प्रतिभूः जामिनः) स्थागीन्नधारयेज्जातुद्यूतंदूरात्परित्यजेत् । (स्थागीथाती) विश्वासंनाचरेत् स्त्रीणां ताः स्वतन्त्राश्च नाचरेत् । रक्षणीयाःसदायत्नाद्यौवनेतुविशेषतः ॥ नभिन्नेशयनेसुप्यान्नानेकविवरेऽपि च । नैकोदेवालयेनैव रात्रौतरुतलेऽपिच ॥ एवंदिनानिगमयेत् सदाचारपरःसदा । ततोरात्रिप्रयुक्तानि कुर्य्यात्कर्म्माणिमानवः ॥ इत्याचारंसमासेन भाषितंयःसमाचरेत् । सविन्दत्यायुरारोग्यं प्रीतिंधर्म्मंधनंयशः ७६ ॥

बुद्धिमान्पुरुष सभामें मुखको विना बन्द किये खांसी श्वास डकार जंभाई और छींक यह न करै नाकको न कुरेदे उकडू न बैठे,बहुत देरतक घुटनेको ऊपर करके न बैठे नखोंसे पृथ्वीपर न लिखै बुहारी और बुहारीकी धूलका स्पर्श न करे नखों से तिनके न तोडे न काटे जूँठे मुख से ब्राह्मण को न छुए ग्रहणके समय उदय और अस्त के समय सूर्य को कभी न देखे और जल में दिखाई देनेवाले सूर्य्य के प्रतिबिम्ब को न देखे सूक्ष्म जलतीहुई अपवित्र और अप्रियवस्तु को लगातार न देखे किसी को इन्द्रका धनुष न दिखावे बलवान्शत्रु से युद्ध न करे शिरपर बोझा न लेचले अङ्गोंको न बजावे हाथ से बालोंको न बहावे दोपूज्य पुरुष और स्त्री पुरुषोंके मध्यमें न जाय शत्रु और वेश्याके अन्नको कभी न खाय किसीकी जमानत न करे और व्यर्थ किसी का साक्षी भी न हो किसीकी धरोहड न रक्खे जुआंको दूरसे छोडदे स्त्रियोंका विश्वास न करे और उनको स्वतन्त्र न करे स्त्रियोंकी सदैव रक्षाकरे और युवावस्था में विशेष करे स्त्रीसे पृथक् शय्यापर न सोवे बहुत पुरुषों से युक्त स्थान में स्त्री को न रक्खे रात्रिके समय अकेला देवता के स्थान में और वृक्षके नीचे न जाय इसप्रकार सदाचार में प्रवृत्त होकर दिनोंको व्यतीत करे इसके उपरान्त रात्रिके योग्य कार्य्यों को करे इस संक्षेप से कहे-हुये आचार को जो मनुष्य करता है वह आयु आरोग्य धन यश धर्म और प्रीतिको प्राप्तहोताहै ७६॥

अथ सन्ध्यायां निषिद्धानि कर्माण्याह ।

एतानिपञ्चकर्म्माणि सन्ध्यायांवर्ज्जयेद्बुधः । आहारंमैथुनंनिद्रां सम्पाठंगतिमध्वनि ॥ भोजनाज्जायतेव्याधिर्मैथुनाद्गर्भवैकृतिम् । निद्रायानिःस्वतापाठादायुर्हानिर्गतेर्भयम् ॥ ७७ ॥ सन्ध्यामें निषिद्धकर्म्म ॥

आहार,मैथुन, निद्रा, पढना, मार्गगमन-यह पांच कार्य सन्ध्याके समय पंडितोंको त्यागने योग्य हैं क्योंकि भोजन करने से व्याधि, मैथुनले गर्भमें विकार, निद्रासे दरिद्रता, पढनेसे आयु की हानि और गमन करने से भय उत्पन्न होताहै ॥ ७७ ॥

अथ रात्रिचर्य्यामाह ।

ज्योत्स्नाशीतास्मरानन्दप्रदातृट्पित्तदाहहृत् । ततोहीनगुणःकुर्य्याद्वश्यायोऽनिलङ्कफम् ॥ ७८ ॥ रात्रिचर्य्या ॥

चांदनी शीतल कामोद्दीपक और पित्त तृषा तथा दाहकी नाशकरनेवाली होती है-पाला इससे गुणों में न्यून होताहै और वायु कफके दोषोंको बढ़ाताहै ॥ ७८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तमोभयावहंमोहदिङ्मोहजनकम्भवेत् । पित्तहृत्कफहृत्कामवर्द्धनंक्लमकृच्चतत् ॥ ७९ ॥

अंधकारसे भय मोह दिग्भ्रम पित्त तथा कफकानाश कामकी वृद्धि और शरीरमें ग्लानि होती है ७९॥

रात्रौचभोजनंकुर्य्यात् प्रथमप्रहरान्तरे । किंचिदूनंसमश्नीयाद् दुर्ज्जरन्तत्रवर्ज्जयेत् ॥ अजीर्णेभोजनंयच्चयच्चजीर्णेनभुज्यते । रात्रौनभुज्यतेयच्चतेनजीर्य्यन्तिमानवाः ॥ शरीरे जायतेनित्यं देहिनःसुरतस्पृहा । अव्यवायान्मेहमेदोवृद्धिःशिथिलताततनोः ॥ बालेति गीयतेनारी यावद्वर्षाणिषोडश । ततस्तुतरुणीज्ञेया द्वात्रिंशद्वत्सरावधि ॥ तदूर्ध्वमधिरूढास्यात् पञ्चाशद्वत्सरावधि । वृद्धातत्परतोज्ञेयासुरतोत्सववर्ज्जिता ॥ (अधिरूढाप्रौढा) निदाघशरदोर्बालाहिताविषयिणांमता । तरुणीशीतसमयेप्रौढावर्षावसन्तयोः ॥ ८० ॥

रात्रिके समय प्रथम पहरमेंही कुछ न्यून भोजन करे और कठिनतासे पचने के योग्य भोजन न करे अजीर्ण में भोजन करे और जब अन्नपचजावे तब भोजन नहीं करे इसी प्रकार जो रात्रिमें भोजन (व्यारू) नहीं करते हैं उसीसे वे मनुष्य बूढ़े होजाते हैं और मनुष्यों के शरीरमें नित्य मैथुन* की इच्छा होती है इसके रोकने से प्रमेह मेद वृद्धि और शरीरकी शिथिलता होती है सोलह वर्ष की स्त्री बाला सोलह से बत्तीसतक तरुणी बत्तीस से पचास तक प्रौढ़ा और इसके उपरान्त वृद्धा कही जाती हैं यह वृद्धास्त्री मैथुन में वर्जितहै ग्रीष्म और शरत्कालमें बालास्त्री शीतकालमें तरुणी और वर्षा तथा वसन्तऋतुमें प्रौढ़ा स्त्री मैथुनके लिये श्रेष्ठ है ॥ ८० ॥

नित्यम्बालासेव्यमाना नित्यंवर्द्धयतेबलम् । तरुणीह्रासयेच्छक्तिं प्रौढोद्भावयते जराम् ॥ ८१ ॥

बालास्त्री के नित्य सेवनकरने से बलकी वृद्धि होती है तरुणी स्त्रीके साथ मैथुन करने से शक्ति की हानि होती है और प्रौढ़ा स्त्रीके साथ मैथुन करने से शरीर रोगग्रस्त होताहै ॥ ८१ ॥

सद्योमांसन्नवञ्चान्नं बालास्त्रीक्षीरभोजनम् । घृतमुष्णोदकेस्नानं सद्यःप्राणकराणिषट् ॥ ८२ ॥

ताजा मांस नवीनअन्न बाला स्त्री घृत दुग्धका भोजन और गरम जल से स्नान इन छःबातों से शीघ्र बल उत्पन्न होताहै ॥ ८२ ॥

पूतिमांसंस्त्रियोवृद्धा बालार्कस्तरुणोदधि । प्रभातेमैथुनंनिद्रा सद्यःप्राणहराणिषट् ॥ प्राणशब्दोऽत्र बलवाचकःबालार्कःकन्यार्कः ॥ ८३ ॥

सड़ा मांस, वृद्धा स्त्री, कन्याके सूर्य्य, ताजादही, प्रातःकालमैथुन और निद्रा यह छः शीघ्र बलके नाश करनेवाले हैं ॥ ८३ ॥

वृद्धोऽपितरुणींगत्वा तरुणत्वमवाप्नुयात् । वयोऽधिकांस्त्रियंगत्वा तरुणःस्थविरायते ॥ आयुष्मन्तोमन्दजरावपुर्वर्णबलान्विताः । स्थिरोपचितमांसाश्च भवन्तिस्त्रीषु संयताः ॥ ८४ ॥

---

* विनोपदेशांसद्धोहिकामोऽनाख्यातशिक्षितः । स्वकान्तारमणोपायेकोगुरुर्मृगपक्षिणाम् ॥ मुमुक्षवोपिसिद्ध्यन्ति विरागाद्रागपूर्वकात् । विषयेच्छातुयन्धिन्यो निसर्गात्प्राणिनांधियः ॥ तृणानामिवहिव्यर्थंनृणांजन्मसुखद्विषाम् । दोषास्तुपरिहर्तव्या इत्याचार्य्यैः स्थिरीकृतम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वृद्धपुरुषभी तरुणी स्त्रीके साथ संगकरनेसे तरुण होजाताहै और अपनी अवस्थासे अधिक अवस्थावाली स्त्री से भोगकरने से तरुणभी वृद्ध होजाताहै-नियमपूर्व्वक स्त्रियों के साथ गमन करने से आयुकी वृद्धि वृद्धावस्थाकी कमी पुष्टता—वर्णकी उत्तमता बलकी वृद्धि और मांसकी स्थिरता होती है ॥ ८४ ॥

सेवेतकामतःकामं बलाद्वाजीकृतोहिमे । प्रकामन्तुनिषेवेत मैथुनंशिशिरागमे ॥ त्र्यहाद्वसंतशरदोः पक्षाद्वृष्टिनिदाघयोः। (सुश्रुतस्तु) त्रिभिस्त्रिभिरहोभिर्हिसमेयात्प्रमदान्नरः ॥ सर्वेष्वृतुषुघर्मेषु पक्षात्पक्षाद्व्रजेद्बुधः । समेयात् संगच्छेत् घर्मे ग्रीष्मे ॥ ८५ ॥

हेमन्तऋतु में वाजीकरण औषधियोंका सेवन करके कामके वेग के अनुसार संभोगकरे-शिशिर ऋतु में इच्छा के अनुसार मैथुन करना चाहिये—वसन्त और शरद्ऋतु में तीन २ दिनका अन्तर देकर मैथुन करना चाहिये—वर्षा और ग्रीष्मऋतुमें पंद्रह २ दिन के उपरान्त मैथुन करना चाहिये सुश्रुतने तो कहाहै कि बुद्धिमान् पुरुषका सम्पूर्णऋतुओं में तीन२ दिनके अन्तरसे और ग्रीष्मऋतु में पन्द्रह २ दिनके अन्तरसे मैथुन करना चाहिये ॥ ८५ ॥

शीतंरात्रौदिवाग्रीष्मेवसन्तेतुदिवानिशि । वर्षासुवारिदध्वानेशरत्सुस्वरसःस्मरः ८६ ॥

शीतऋतुमें रात्रिके समय ग्रीष्ममें दिनको वसन्त में दिन और रात्रि दोनों समय पर वर्षा में मेघोंके गर्जनेपर और शरद्ऋतुमें अपनी इच्छाके अनुसार मैथुन कियाजाताहै ॥ ८६ ॥

उपेयात्पुरुषोनारीं सन्ध्ययोर्नचपर्व्वसु । गोसर्गेचार्द्धरात्रेच तथामध्यदिनेऽपिच ॥ विहारम्भार्ययाकुर्य्याद्देशेऽतिशयसंवृते । रम्येश्राव्यांगनागाने सुगन्धेसुखमारुते ॥ देशेगुरुजनासन्ने विकृतेऽतित्रपाकरे । श्रूयमाणेऽयथाहेतुवचनेनरमेतना ॥ ८७ ॥

सन्ध्याकालमें पर्वके दिनों में प्रातःकालमें आधीरात में और दोपहरमें पुरुषोंको मैथुन करना उचित नहीं है-बहुत गुप्तमनोहर सुन्दर स्त्रियोंके गानसे युक्त सुगन्धित और सुखदायक वायुवाले स्थान में पुरुषों को स्त्रियोंसे सम्भोग करना उचितहै-खुलेहुए लज्जाके योग्य और जिसमें गुरुलोग निकटहों तथा दुःखदायीवचन सुनाई पड़तेहों ऐसे स्थानमें संभोग करना उचित नहींहै ॥ ८७ ॥

स्नातश्चन्दनलिप्तांगः सुगंधसुमनोऽन्वितः । भुक्तवृष्यःसुवसनः सुवेषःसमलंकृतः ॥ ताम्बूलवदनःपत्न्यामनुरक्तोधिकस्मरः । पुत्रार्थीपुरुषोनारीमुपेयाच्छयनेशुभे ८८ ॥

स्नान कियेहुए शरीरमें चन्दनको लगायेहुए सुगन्धित पुष्पोंको धारण कियेहुए वीर्यके बढ़ानेवाली वस्तुओंको खायेहुये अच्छे वस्त्रपहनेहुये सुन्दर वेषधारण कियेहुए आभूषणों से युक्त ताम्बूल खायेहुए स्त्री में प्रेमयुक्त अधिक कामके वेगवाले और पुत्रकी अभिलाषा करनेवाले पुरुषको सुन्दर शय्यामें स्त्रीकेसाथ सम्भोग करना उचितहै ॥ ८८ ॥

अत्याशितोऽधृतिःक्षुद्वान् सव्यथांगःपिपासितः । बालोवृद्धोऽन्यवेगार्त्तस्त्यजेद्रोगीचमैथुनम् ॥ रोगीमैथुनसंवर्द्धनीयरोगयुक्तः ॥ ८९ ॥

बहुत भोजन कियाहुआ धैर्यरहित भूखा प्यासा पीड़ायुक्त शरीरवाला बालक वृद्ध मल मूत्रादि वेगयुक्त और रोगयुक्त (मैथुनकरनेसे जो रोग बढ़ताहो उससे युक्त) पुरुष मैथुन न करे॥ ८९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भार्य्यांरूपगुणोपेतां तुल्यशीलांकुलोद्भवाम्। अतिकामोऽभिकामान्तु हृष्टोहृष्टामलंकृताम्॥ सेवेतप्रमदांयुक्त्या वाजीकरणबृंहितः॥ ९०॥

अधिक कामके वेगवाला प्रसन्न और वाजीकरण औषधियों से बढ़े वीर्यवाला पुरुष रूप तथा गुणोंसे युक्त अपने समान स्वभाववाली कुलीन कामके अधिक वेगसे युक्त प्रसन्न और आभूषणों से युक्त युवती स्त्रीके साथ विधिपूर्वक सम्भोग करै॥ ९०॥

रजस्वलामकामाञ्च मलिनामप्रियान्तथा। वर्णवृद्धांवयोवृद्धां तथाव्याधिप्रपीडिताम्॥ हीनांगींगर्भिणींद्वेष्यां योनिरोगसमन्विताम्। सगोत्रांगुरुपत्नीञ्च तथाप्रव्रजितामपि॥ नाभिगच्छेत्पुमान्नारीं भूरिवैगुण्यशंकया॥ ९१॥

रजस्वला कामके वेगसेरहित मलिन अप्रिय वर्ण तथा अवस्थामेंवृद्ध रोगसे व्याकुल गर्भिणी द्वेष युक्त योनिमें रोगवाली समानगोत्रवाली गुरुपत्नी और संन्यास युक्त इनसम्पूर्ण स्त्रियों के साथ सम्भोगकरना अनुचितहै क्योंकि इससे बड़ी हानिकी शंकाहै॥ ९१॥

रजस्वलांगतवतो नरस्यासंयतात्मनः। दृष्ट्यायुस्तेजसांहानिरधर्मश्चततोभवेत् ९२॥

इन्द्रियों के वशीभूतहोकर रजस्वला स्त्री के साथ गमन करनेवाले पुरुषों की दृष्टि आयु तथा तेजकी हानि और अधर्मकी वृद्धि होतीहै॥ ९२॥

लिंगिनींगुरुपत्नीञ्च सगोत्रामथपर्व्वसु। वृद्धाञ्चसन्ध्ययोश्चापि गच्छतोजीवनक्षयः॥ (लिंगिनीं। प्रव्रजिताम्) गर्भिण्यांगर्भपीडास्याद्व्याधितायांबलक्षयः। हीनांगींमलिनांद्वेष्यां क्षामाम्बन्ध्यामसंवृते॥ देशेऽभिगच्छतोरेतः क्षीणंग्लानंमनोभवेत्। गर्भिणी गर्भवासदिवसात् द्वितीयेमासि गर्भस्थितेरनिश्चिते यथोक्तनक्षत्रादिलाभाभावे वा तृतीये मासि पुंसवने कृते नाभिगच्छेत्। (यथापुंसवनानन्तरमाह व्यासः) ततस्त्यजेन्नदीतीरं देवखातोदकंतथा। भर्त्तुःशय्यांमृतापत्यां तथैवामिषभोजनम्॥ अन्यच्च॥ आमिषस्याशनंयत्नात्प्रमदापरिवर्ज्जयेत्। देवारामनदीयानं प्रयोगंपुरुषस्यचेति॥ ९३॥

संन्यासिनी, गुरुपत्नी, समानगोत्रवाली और वृद्धस्त्री के साथ भोगकरने से और पर्व दिन तथा संध्याकाल में भोगकरने से जीवका नाश होताहै और गर्भिणी स्त्रीसे भोगकरनेसे गर्भ में बाधाहोती है व्याधिसे पीडित स्त्रीसे भोगकरनेमें बलकी हानिहोतीहै—हीन अंगवाली मलिन द्वेषयुक्त—दुर्बल और बंध्याके साथ भोगकरने से अथवा बेपर्दे के स्थानमें भोगकरने से-वीर्य्य की क्षीणता और मन की अप्रसन्नता होतीहै यहां गर्भिणी स्त्रीसे यह तात्पर्य्यहै कि गर्भस्थिति के दिनसे दूसरे महीने में अथवा गर्भस्थिति के न होने में या यथोक्त नक्षत्रादिकों के न मिलने से तीसरे महीने में पुंसवन कर्मके होजाने पर संभोग नहीं करना चाहिये और ऐसाही व्यासजीने भी कहाहै कि पुंसवन के पीछे स्त्री नदीका तट, देवताओं के कुंडों का जल, पति के साथ शयन, मृतवत्सास्त्रीका दर्शन और मांस भोजन त्यागकरदे और भी कहाहुआहै कि गर्भिणी स्त्री मांस भोजन, देवस्थान, बाग, नदी, यान पर चढ़ना और मैथुन यत्नपूर्वक छोड़दे॥ ९३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्षुधितःक्षुब्धचित्तश्च मध्याह्नेतृषितोऽबलः । स्थितस्यहानिंशुक्रस्यवायोःकोपञ्च विन्दति॥ व्याधितस्यरुजाप्लीहा मूर्च्छामृत्युश्चजायते । प्रत्यूषेचार्द्धरात्रेचवातपित्ते प्रकुप्यतः॥ तिर्य्यग्योनावयोनौवादुष्टयोनौतथैवच । उपदंशास्तथावायोः कोपःशुक्र सुखक्षयः॥ ९४॥

क्षुधित, घबराया हुआ, तृषायुक्त और दुर्बल मैथुनकरने से वीर्य्यकी हानि और वायु के कोप को प्राप्तहोताहै और मध्याह्न में भी मैथुनकरने से यही दोष उत्पन्नहोतेहैं और व्याधियुक्त पुरुष मैथुन करने से प्लीहा मूर्च्छा आदि अनेक रोग और मृत्यु को भी प्राप्त होताहै प्रातःकाल अथवा अर्द्ध रात्रि में मैथुन करने से वात और पित्तका कोप होताहै पशु आदिकी योनि अयोनि (छोटी अवस्था के कारण भोगके अयोग्य) और दोषयुक्त योनिमें मैथुन करने से आतशक वायुका कोप और वीर्य्य तथा सुखकी हानि होतीहै॥ ९४॥

उच्चारितेमूत्रितेचरेतसश्चविधारणे । उत्तानेचभवेच्छीघ्रंशुक्राश्मर्य्यास्तुसम्भवः॥ सर्वमेतत्त्यजेत्तस्माद्यतोलोकद्वयाऽहितम्। शुक्रन्तूपस्थितम्मोहान्नसन्धार्य्यंकदाचन॥ स्नानंसशर्करंक्षीरंभक्ष्यमैक्षवसंस्कृतम्।वातोमांसरसःस्वप्नोसुरतान्तेहिताअमी॥शूलका सज्वरश्वासकार्श्यपाण्ड्वामयक्षयाः।अतिव्यवायाज्जायन्तेरोगाश्चाक्षेपकादयः॥९५॥

मैथुन करनेके समय मल मूत्र और वीर्यके वेगको रोकनेसे अथवा चित्त सोनेसे शीघ्रही शुक्राश्मरी (वीर्यकीपथरी) उत्पन्न होतीहै इसी कारणसे उचितहै कि इन दोनों लोकोंकी हानिकारक बातोंका त्यागकरदे और मोहसे गिरतेहुए वीर्य्य को कदापि न रोके स्नान शर्करा युक्त दुग्ध मिष्ट भोजन वायुका सेवन मांसका रस और निद्रा यह संपूर्ण भोगके अन्तमें अत्यन्तहितकारी हैं बहुतमैथुनकरने से शूल कास ज्वर श्वास दुर्बलता पांडु क्षय और आक्षेप आदि रोग उत्पन्न होते हैं॥ ९५॥

रात्रौजागरणंरूक्षंकफदोषविषार्तिजित्। निद्रातुसेविताकालेधातुसाम्यमतन्द्रिताम्॥ पुष्टिंवर्णंबलोत्साहंवह्निदीप्तिंकरोतिहि। योलेढिशयनसमयेमधुमिश्रंबीजपूरदलचूर्णम्। सतुलज्जाकरवातप्रसरनिरोधात्सुखंस्वपिति॥ ९६॥

रात्रिमें जागनेसे शरीरकी रूक्षता होती है और कफके दोष तथा विषकी पीडा शान्ति होती है समयके अनुसार शयन करने से धातुओंकी समता आलस्यका नाश शरीरकी पुष्टता–बल–वर्ण-उत्साह और जठराग्नि की दीप्ति होती है जो मनुष्य शयन के समय बिजौरे नींबू के पत्तेके चूर्णको सहत के साथ चाटताहै वह अपानवायुकी वृद्धि के रुकनेसे सुखपूर्वक सोताहै॥ ९६॥

सवितुःसमुदयकालेप्रसृतीःसलिलस्यपिबेदष्टौ। रोगजरापरिमुक्तोजीवेद्वत्सरशतं साग्रम्॥ अस्यजलपानस्योपक्रमकालेरात्रेश्चतुर्थप्रहरेप्रवेशः॥ तथाचभोजः पिबति पर्य्युषितंजलमन्वहन्तिमिरणीचरमेप्रहरेयदि। एतज्जलपानकालमर्य्यादासूर्य्योदयाति सन्निहितप्रातःकालः तथाच तन्त्रान्तरे अम्भसःप्रसृतीरष्टौरवावनुदितेपिबेत्। वातपित्तकफान्जित्वाजीवेद्वर्षशतंसुखीइति॥ सलिलस्यात्रपर्य्युषितग्रहणंभोजवचनानुरोधात्। अर्शःशोथग्रहण्योज्वरजठरजराकुष्ठमेदोविकारः मूत्राघातास्रपित्तश्रवणगल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिरःश्रोणिशूलाक्षिरोगाः ॥ येचान्येवातपित्तक्षतजकफकृता व्याधयःसन्तिजन्तोस्तां स्तान्नभ्यासयोगादपहरतिपयःपीतमन्तेनिशायाः ॥ ९७ ॥

सूर्य्य के उदयके समयमें आठ चुल्लू जल पीनेसे संपूर्ण रोग और वृद्धावस्थासे छूटकर एक सौ वर्षकी आयुहोतीहै इस जलके पीनेके प्रारम्भ का समय रात्रिके चौथे प्रहरका प्रवेश कहागयाहै और ऐसाही भोजनमें कहाहै रात्रिके चौथे प्रहरमें जो बासीजल पीताहै इत्यादि वचनके अनुसार सूर्य्यो-दयके कुछ पूर्वकाल में जल पीना उत्तमहै शास्त्रान्तरमें भी कहागयाहै कि सूर्योदय के पूर्व आठ चुल्लू जल पिये क्योंकि इससे वायु पित्त और कफ के दोषदूर होकर सुखपूर्व्वक सौवर्षतक जीताहै यहां बासी जल का पीना भोजके वचनके अनुसार लिया गयाहै रात्रि के अन्तमें जल पीनेसे बवासीर सूजन संग्रहणी ज्वर उदररोग और वृद्धावस्था कुष्ठ मेदरोग मूत्राघात रक्तपित्त कान गला शिर तथा नितंबोंकी पीड़ा नेत्ररोग और मनुष्यों के वातपित्त कफ और घाव से उत्पन्न हुए संपूर्ण रोग नाशको प्राप्त होते हैं ॥ ९७ ॥

विगतघननिशीथेप्रातरुत्थायनित्यं पिबतिखलुनरोयोघ्राणरन्ध्रेणवारि ॥ सभ वतिमतिपूर्णश्चक्षुषाताक्ष्र्यतुल्यो वलिपलितविहीनःसर्वरोगैर्विमुक्तः ॥ निशीथोऽत्रनि शान्धकारःपातव्यंनासयानीरं प्रसृतित्रयमात्रया।व्यंगवलीपलितघ्नंपीनसवैस्वर्यकास शोथहरम् ॥ रजनीक्षयेम्बुनस्यंरसायनंदृष्टिसञ्जननम् ॥ स्नेहेपीतेक्षतेशुद्धावाध्मानेस्ति मितोदरे। हिक्कायांकफवातोत्थे व्याधौतद्वारिवारयेत् ॥ तद्वारिनासापेयम् ॥ ९८ ॥

रात्रिके अन्तमें अंधकारके दूर होजाने पर प्रातः काल उठकर जो मनुष्य नासिका के छिद्र से जल पीताहै वह अधिक बुद्धिवाला और गरुडके समान दृष्टिवाला होताहै झुर्री बालोंकी श्वेतता और संपूर्ण रोगों से छूटजाताहै नासिका के द्वारा जल पीने की मात्रा तीन चुल्लूहै रात्रिके अन्तमें नासिका के द्वारा जलपीने से व्यंग झुर्री बालों की श्वेतता पीनस स्वरभंग खांसी तथा सूजन यह सब नाश होतेहैं और यह रसायन और दृष्टि का अत्यन्त उपकारक है स्नेहपीने में क्षतरोग में वमन और विरेचन करने में अफरा में पेटके भारीपने में हिचकी में और कफ वात से उत्पन्न हुए रोगों में नासिका से जल न पीवे ॥ ९८ ॥

अथर्तुचर्य्या ॥

चयकोपशमायस्मिन्दोषाणांसम्भवन्तिहि। ऋतुषट्कंतदाख्यातंरवेराशिषुसंक्रमात्॥ ग्रीष्मोमेषवृषौप्रोक्तःप्रावृण्मिथुनकर्कटौ। सिंहकन्येस्मृतावर्षातुलावृश्चिकयोःशरत् ॥ धनुर्ग्राहौचहेमन्तोवसन्तःकुम्भमीनयोः। मेषवृषौरविणासंक्रान्तौ। एवंमिथुनकर्कटावि त्यादि(अन्येतु)शिशिरःपुष्पसमयोग्रीष्मोवर्षाशरद्धिमाः।माघादिमासयुग्मैःस्युर्ऋतवः षट्क्रमादमी॥गंगायादक्षिणेदेशे वृष्टेर्बहुलभावतः। उभौमुनिभिराख्यातौ प्रावृड्वर्षाभि धावृतू ॥ ९९ ॥

ऋतुचर्य्या ॥

वातादिक दोषोंका संचय कोप और शान्ति जिनमें होतेहैं वह छः ऋतु सूर्य्यके राशियोंमेंबदलने से होती हैं मेष और वृषके सूर्य्य में ग्रीष्म मिथुन और कर्कके सूर्य्य में प्रावृट् सिंह और कन्याके सूर्य्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में वर्षा तुला और वृश्चिकमें शरद् धन और मकरमें हेमन्त और कुंभ और मीनके सूर्य में वसन्त ऋतु होती है और किसी का मत यह है कि माघको आदि लेकर दो२ महीने के क्रमसे शिशिर वसन्त ग्रीष्म वर्षा शरद् और हेमन्त यह छः ऋतु होती हैं गंगाजीके दक्षिण देशमें वृष्टिके बहुतहोने के कारण मुनि लोगोंने प्रावृट् और वर्षा दो ऋतु कहीं हैं गंगाजी के उत्तरके देश में शीत के बहुत होने के कारण हेमन्त और शिशिर नाम दो ऋतु कही गई हैं ॥ ९९ ॥

उत्तरायणमाद्यैस्तैः परैः स्याद्दक्षिणायनम्। आद्यमुष्णंबलहरंततोऽन्यद्बलदंहिमम् १००

पहली तीन ऋतुओं में उत्तरायण और पिछली तीन ऋतुओं में दक्षिणायन उत्तरायण उष्ण और बलका नाशक होताहै और दक्षिणायन बलका देनेवाला और शीतल होताहै ॥ १०० ॥

हेमन्तःशीतलःस्निग्धःस्वादुर्जठरवह्निकृत् । शिशिरःशीतलोऽतीवरूक्षोवाताग्निवर्द्धनः॥ हेमन्तःस्वादुःप्रायेणद्रव्येषुस्वादूरसजनकः। एवमन्यत्रापिबोद्धव्यम् ॥ वसन्तो मधुरःस्निग्धःश्लेष्मवृद्धिकरश्चसः । ग्रीष्मोरूक्षोऽतिकटुकःपित्तकृत्कफनाशनः ॥ वर्षा शीताविदाहिन्यो वह्निमान्द्यानिलप्रदाः।शरदुष्णापित्तकर्त्रीनृणांमध्यबलावहा ॥१०१॥

हेमन्तऋतु स्निग्ध—शीतल प्रायः संपूर्ण वस्तुओंमें मधुरताकी उत्पन्न करनेवाली और जठराग्नि की दीप्ति करनेवाली होती है शिशिरऋतु शीतल अत्यन्त रूखी और वायु तथा अग्निकी बढ़ानेवाली होती है, वसन्तऋतु प्रायः संपूर्ण वस्तुओं में मधुरता उत्पन्न करनेवाली स्निग्ध और कफवर्द्धक होती है—ग्रीष्मऋतु रूखी प्रायः संपूर्ण वस्तुओं में अत्यन्त कटुता उत्पन्न करनेवाली पित्तवर्द्धक और कफ नाशक होती है, वर्षाऋतु शीतल विदाह (अन्नका कच्चा पक्का पकना) तथा मंदाग्नि करनेवाली और वायुवर्द्धक होती है शरद्ऋतु उष्ण पित्तवर्द्धक और मनुष्योंको कुछबलदेनेवाली होती है ॥ १०१ ॥

चयप्रकोपोपशमा वायोर्ग्रीष्मादिषुत्रिषु। वर्षादिषुचपित्तस्यश्लेष्मणःशिशिरादिषु॥ चीयतेलघुरूक्षाभिरोषधीभिः समीरणः । तद्विधस्तद्विधेदेहेकालस्योष्णान्नकुप्यति ॥ तुल्येऽपिकालेस्निग्धेतद्विधेरूक्षोलघुश्चतद्विधेरूक्षेलघौच । अद्भिरम्लविपाकाभिरोषधीभिश्चतादृशम् । पित्तंयातिचयंकोपंनतुकालस्यशैत्यतः ॥ तादृशम्,अम्लविपाकम् ॥ चीयतेस्निग्धशीताभिरुदकौषधिभिःकफः । तुल्येचकालेदेहेचस्कन्नत्वान्नप्रकुप्यतितुल्येऽपिकालेस्निग्धेशीतलेचस्कन्नत्वाद् देहेशुष्कत्वात् । हिमेयातिशमंपित्तंवायुःश्लेष्माचचीयते। सवायुःशिशिरेकोपंयात्येवोपहतःकफः ॥ हेमन्तेसञ्चितःश्लेष्माशिशिरेत्वतिचीयते। शीतस्निग्धगुरुद्रव्यैःशैत्यस्कन्नोनकुप्यति ॥ स्कन्नःकठिनीभूतः। इतिकालस्वभावोऽयमाहारादिवशात्पुनः। चयादीन्यान्तिसद्योऽपिदोषाःकालेविशेषतः ॥ १०२ ॥

ग्रीष्मादिक तीनऋतुओं में वायुका संचय, कोप तथा शान्ति क्रमसे होती है वर्षा आदिक तीन ऋतुओं में पित्तका संचय कोप तथा शान्ति क्रमसे होती है और शिशिर आदिक तीन ऋतुओं में कफका संचय कोप तथा शान्ति क्रमसे होती है लघु और रूक्ष औषधियोंके सेवन से वायुका संचय होताहै लघु और रूक्ष गुणयुक वायु लघु और रूखे शरीर में कालकी उष्णता से कोप को नहीं प्राप्तहोती है, खट्टे पाकवाले जल और औषधियों से खट्टे पाकवाला पित्त इकट्ठा होजाता है और समयकी शीतलता से कोप को प्राप्त नहींहोता, स्निग्ध और शीतल जल तथा औषधियों से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कफका संचय होता है वह कफ स्निग्ध और शीतल समय तथा शरीर में शुष्क होजाने के कारण से कोप को नहीं प्राप्त होताहै हेमन्तऋतुमें पित्तकी शान्ति और वायु तथा श्लेष्माका संचय होताहै शिशिरऋतुमें वह वायु कोपको प्राप्तहोता है और कफ संचित रहताहै हेमन्तऋतुमें संचयको प्राप्त हुआ श्लेष्मा शीतल स्निग्ध और भारी द्रव्योंके सेवनसे शीतलता के कारण शिशिरऋतु में अत्यन्त संचित हुआ सूखजाने से अत्यन्त कोपको नहीं प्राप्त होताहै यह तो समयका स्वभाव है फिर आहारादिकों के कारण से वातादिक दोष तत्काल संचयादिकों को प्राप्त होते हैं परन्तु अपने २ समय में विशेष करके संचयादि को प्राप्त होते हैं ॥ १०२ ॥

चयकोपसमाःपूर्व्वाह्णे वसन्तस्य लिंगं मध्याह्ने ग्रीष्मस्य अपराह्णे प्रावृषःप्रदोषे वार्षिकम् ॥ शरदमर्द्धरात्रे प्रत्यूषसि हेमन्तमुपलक्षयेत् । एवमहोरात्रमपि वर्षामिव शीतोष्णवर्षादोषोपचयप्रकोपोपशमाः जानीयादितिसुश्रुतः ॥ चयकोपशमादोषाविहाराहारसेवनैः । समानैर्य्यान्त्यकालेऽपि विपरीतैर्विपर्य्ययम् ॥ समानैस्तुल्यैश्चयादियोग्यैरितियावत् । विपर्य्ययंकालेपि वैपरीत्यं बोध्यम् ॥ १०३ ॥

सुश्रुतने कहा है कि दिनरात्रि में भी संवत्सरके समान वसन्तादि ऋतुओं के लक्षण प्रकट होते हैं यह दोषों के संचय कोप और शान्तिसे जानेजाते हैं अर्थात् प्रातःकाल वसन्तका लक्षण मध्याह्न में ग्रीष्मका लक्षण तीसरे पहर प्रावृट्का लक्षण सायंकाल में वर्षाका लक्षण अर्द्धरात्रि में शरद्का लक्षण और पिछली रात्रि में हेमन्तका लक्षण जानना चाहिये संचय कोप और समता करनेवाले आहार विहारों के सेवनसे समय के विनाभी वातादिक दोष संचय कोप और समताको प्राप्तहोते हैं परन्तु विपरीत आहार विहारोंके सेवनसे समय होनेपरभी विपरीत फल होताहै॥१०३॥

एवंचयलक्षणमाहसुश्रुतः ॥

स्वस्थानस्थस्यदोषस्य वृद्धिःस्याच्छ्वासकोष्ठता । पीतावभासतावह्निमन्दताचांगगौरवम् ॥ आलस्यञ्चयहेतौतु द्वेषश्चचयलक्षणम् । सञ्चयोपहतादोषालभन्तेनोत्तरांगतिम् ॥ तेतूत्तरासुगतिषु भवन्तिबलवत्तराः । वर्षासुप्रबलोवायुस्तस्मान्मिष्टादयस्त्रयः॥ रसाःसेव्याविशेषेण पवनस्योपशान्तये । (मिष्टादयस्त्रयोमधुराम्ललवणाः) भवेद्वर्षासु वपुषः क्लिन्नत्वं यद्विशेषतः । तत्क्लेदशान्तयेसेव्या अपिकट्वादयस्त्रयः ॥ (कट्वादयस्त्रयःकटुतिक्तकषायाः) ॥ १०४ ॥

सुश्रुतका कहाहुआ संचयका लक्षण ॥

यदि अपने स्थानमें स्थित हुआ दोष वृद्धिको प्राप्त होजाय तो कोष्ठबद्धता-शरीरका पीलापन-मंदाग्नि-शरीरमें भारीपना और आलस्य होताहै और दोषके संचय होनेपर औषधि करने से कोप नहीं होता और कोप होनेपर वह अत्यन्त बलवान् होजातेहैं वर्षाऋतुमें वायुप्रबल होता है इसकारण से मधुर खट्टा और लवण द्रव्योंका अधिकसेवन करनाचाहिये इनसे वायुकी शांतिहोतीहै और उसी ऋतुमें शरीरमें गीलापन होताहै उसकी शान्ति के लिये कटु तिक्त और कषाय रसका सेवन करना चाहिये ॥ १०४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वेदनंमर्दनंसेव्यंदध्युष्णंजांगलामिषम् । गोधूमाःशालयोमाषाजलंकौपंजलंच्युतम् ॥ नभजेत्पूर्वपवनं वृष्टिंघर्मंहिमंश्रमम्। नदीतीरंदिवास्वप्नं रूक्षंनित्यञ्चमैथुनम्॥ सर्पिःस्वादुकषायतिक्तकरसा यच्छीतलंयल्लघु । क्षीरंस्वच्छसितेक्षवःपटुरसःस्वल्पंपलंजांगलम् ॥ गोधूमायवमुद्गशालिसहिता नादेयमंशूदकम् । चन्द्रश्चन्दनमिन्दुराजिरजनीमाल्यंपटोनिर्मलः ॥ विश्रामःसुहृदांगणेषुमधुरा वाचःसरःक्रीडनम् । पित्तानांचविरेचनंबलवतो युक्तंशिरामोक्षणम् ॥ एतान्यत्रघनावसानसमये पथ्यानिमुञ्चेद्दधि। व्यायामाम्लकटूष्णतीक्ष्णदिवसस्वप्नंहिमञ्चातपम् ॥ १०५ ॥

पसीने के उत्पन्न करनेवाली वस्तु अंगमर्दन दधि–उष्णवस्तु और जांगलजीवों का मांस गेहूं चावल–उर्द–कूपका जल और टपकायाहुआ जल–यह पदार्थ वर्षाऋतुमें सेवनकरने चाहिये पूर्व की वायु–वृष्टि, धूप, शीत, श्रम, नदीका तट, दिनका सोना–रूखीवस्तु और नित्य मैथुन इन सब को वर्षा में सेवन न करै–घृत, मधुर–कषाय तथा तिक्त रसयुक्त द्रव्य, शीतल और हलकी वस्तुदुग्ध स्वच्छ श्वेत वर्णयुक्त शर्करादिक लवण, थोडा जांगल जीवोंका मांस, गेहूं, जौ, मूंग, चावल, नदीका जल, अंशूदक, कपूर, रक्तचन्दन, रात्रि में चन्द्रमाकी किरणें, मालाका धारण, निर्मल वस्त्र विश्राम, मित्रोंके साथ मधुर भाषण, तडागों में क्रीडा, अधिक पित्तवालों को विरेचन और बलवान् पुरुषोंको फस्त लेना यह सम्पूर्ण वर्षाके अन्त में हितकारकहैं और दही, व्यायाम, खट्टी, कटु, उष्ण तथा तीक्ष्ण वस्तु दिन में सोना, शीत और धूप यह वर्षाके अन्त में त्यागदेना चाहिये ॥ १०५ ॥

अंशूदकलक्षणमाह ॥

दिवसेऽर्ककरैर्जुष्टं निशिशीतकरांशुभिः। ज्ञेयमंशूदकंनाम स्निग्धंदोषत्रयापहम्॥ अत्रसमग्रप्राप्त्यर्थं दिवसदिवापादद्वये निशापादंच। चन्द्रः कर्पूरः॥ १०६ ॥

अंशूदकका लक्षण ॥

जो जल दिनभर में सूर्य्यकी किरणों से और रात्रिभर में चन्द्रमाकी किरणों से संयुक्त होताहै वह अंशूदक कहलाताहै यह अंशूदक स्निग्ध और त्रिदोषनाशक होताहै ॥ १०६ ॥

इक्षवःशालयोमुद्गाः सरोऽम्भःक्वथितंपयः। शरद्येतानिपथ्यानि प्रदोषेचेंदुरश्मयः१०७॥

ईख, चावल, मूंग, तलावका जल, औटादूध और सायंकाल के समय चन्द्रमाकी किरणें यह सब शरदृऋतुमें सेवन करने चाहिये ॥ १०७॥

प्रातर्भोजनमम्लमिष्टलवणानभ्यंगघर्म्मश्रमांन् । गोधूमैक्षवशालिमाषपिशितं पिष्टंनवान्नंतिलान् ॥ कस्तूरीवरकुंकुमागुरुयुतामुष्णाम्बुशौचंतथा । स्निग्धंस्त्रीषुसुखंगुरूष्णवसनं सेवेतहेमन्तके॥ १०८॥

हेमन्तऋतु में प्रातःकाल भोजन खट्टी, मधुर और लवण रसयुक्त वस्तु तैलादिका मर्दन, धूप व्यायाम गेहूं, शर्करादि इक्षुसंबंधी वस्तु, चावल उरद मांस पिट्ठीकी वस्तु, नवीन अन्न, तिल, कस्तूरी गुग्गुल केशर, अगर, उष्ण जलसे शौच चिकनी वस्तु, स्त्री संभोग और भारी तथा उष्ण वस्त्र सेवन करने चाहिये ॥ १०८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिशिरेशीतमधिकंरौक्ष्यंचादानकालजम्।विशेषतस्ततस्तत्रहेमंतस्यमतोविधिः१०९॥

शिशिरऋतुमें हेमन्तकी अपेक्षा शीत अधिक होताहै और कालके स्वभावसे रूक्षता अधिकहोती है इस कारण इस ऋतु में हेमन्तऋतु की कही हुई विधि अधिकतासे करे ॥ १०९ ॥

वान्तिनस्यमथाभयाञ्चमधुना व्यायाममुद्वर्त्तनम् । संसेवेतमधौकफघ्नकवलं शूल्यं पलंजांगलम् ॥ गोधूमान्बहुशालिभेदसहितान्मुद्गानयवान्षष्टिकान् । लेपश्चन्दनकुंकुमागुरुकृतं रूक्षंकटूष्णंलघु ॥ मिष्टमम्लंदधिस्निग्धं दिवास्वप्नञ्चदुर्ज्जरम् । अवश्यायमपिप्राज्ञो वसन्तेपरिवर्ज्जयेत् ॥ स्वादुस्निग्धहिमंलघुद्रवमयन्द्रव्यंरसालांसिताम् । सक्तुक्षीरमजागलानिसितया शालिंरसंमांसजम् ॥ शीतांशुंशयनन्दिवामलयजं शीतम्पयःपानकम् । सेवेतोष्णदिनेत्यजेत्तुकटुकक्षाराम्लघर्म्मश्रमान् ॥ ऋतुष्वेषुयएतैस्तु विधिभिर्वर्त्ततेनरः । दोषान्नृतुकृताँश्चैव लभते स कदाचन ॥ ११० ॥

इति श्रीलटकनमिश्रतनयश्रीमन्मिश्रभावविरचितेभावप्रकाशे
दिनचर्य्यर्त्तुप्रकरणञ्चतुर्थम् ॥ ४ ॥

वमन- हुलास- सहतसंयुक्तहड- व्यायाम- उबटन- कफनाशकग्रास लोहकी सलाकासे सेकाहुआ जांगलजीवोंका मांस (कबाब) गेहूं- बहुतप्रकारके चावल मूंग- जौ- साठी चन्दन केशर तथा अगरका लेप- और रूखी- कडवी- उष्ण तथा हलकी वस्तु यह सब वसन्तऋतु में हितकारी हैं और मधुर तथा खट्टी वस्तु दही- चिकनीवस्तु–दिनका सोना–कठिनतासे पचनेवाली वस्तु और शीत यह सब वसन्तऋतु में त्यागदेना चाहिये–मधुर–चिकनी–शीतल–हल्की तथा पिघली हुई वस्तु शिखरन–शक्कर–सत्तू–दुग्ध ग्रामके जीवोंकामांस शक्करके साथ शाली चावल–मांसका रस–कपूर दिनकासोना- चन्दन शीतल जल और पना यह सब ग्रीष्मऋतु में सेवन करना चाहिये–कटुखार तथा खट्टी वस्तु धूप और श्रम यह सब ग्रीष्मऋतु में त्याग देना चाहिये और जो मनुष्य इनऋतुओं में उक्त विधियोंका बर्त्ताव करताहै उसको ऋतुओंके दोष कभी नहीं होते हैं ॥ ११० ॥

इति श्रीमिश्रलटकनतनयश्रीमन्मिश्रभावविरचितभावप्रकाशस्यभाषानुवादे
दिनचर्य्यर्त्तुचर्य्याप्रकरणंचतुर्थम् ॥ ४ ॥

अथ व्याधेर्लक्षणम् । तत्रवाग्भटः ॥

रोगस्तुदोषवैषम्यं दोषसाम्यमरोगता । रोगादुःखस्यदातारो ज्वरप्रभृतयोहिते ॥ तेचस्वाभाविकाःकेचित्केचिदागन्तवःस्मृताः । मानसाःकेचिदाख्याताः कथिताःकेऽपि कायिकाः ॥ (तत्रस्वाभाविकाः शरीरस्वभावादेवजाताः) क्षुत्पिपासासुषुप्त्याच जरामृत्युप्रभृतयः अथवा स्व स्व भाविकादुत्पत्तेर्जाताः स्वाभाविकाः सहजा इति यावत् । तेच जन्मान्धत्वादयः आगन्तवोऽभिघातादिजनिताः । अथवा जन्मोत्तरभाविनः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कामक्रोधलोभमोहभयाभिमानदैन्यपैशुन्यशोकविषादेर्ष्यासूयामात्सर्य्यप्रभृतयः अथवा उन्मादापस्मारमूर्च्छाभ्रममोहतमःसंन्यासप्रभृतयः। कायिकाःपाण्डुरोगप्रभृतयः॥ १॥

वाग्भटकाकहाहुआ व्याधिका लक्षण॥

दोषोंकी विषमता रोगहै और समता रोगका न होनाहै मनुष्यों को दुःख देनेवाले ज्वर आदिक रोगकहाते हैं- वह रोग स्वाभाविक- आगन्तुक-मानसिक और कायिक इननामोंसे चारप्रकारके हैं- इनमें से जोरोग स्वभावसे उत्पन्न होते हैं वह स्वाभाविकहैं जैसे क्षुधापिपासा—निद्रा—वृद्धता और मृत्यु आदिक अथवा जो रोग जन्महीसे उत्पन्न होतेहैं वह स्वाभाविक अर्थात् सहजरोग कहलाते हैं जैसे जन्मांधतादिक होते हैं-चोट लगनेसे उत्पन्न अथवा जन्मान्तरमें होनेवाले आगन्तुक कहलाते हैं काम—क्रोध—लोभ—मोह—भय—अभिमान—दीनता—चुगली—शोक—विषाद ईर्ष्या, असूया (गुणोंमें दोषलगाना)और मत्सरता(पराई सम्पत्तिका न सहना)आदि अथवा उन्माद-मृगी मूर्च्छा—भ्रम मोह अन्धकार और अचेतता आदिक मानसिक रोगहैं और पांडु आदिक रोगोंको कायिकरोग कहतेहैं॥१॥

कर्म्मजाःकथिताः केचिद्दोषजाः सन्तिचापरे। कर्म्मदोषोद्भवाश्चान्ये व्याधयस्त्रिविधाःस्मृताः॥ तत्र कर्म्मजाः व्याधयः। यत्प्राक्तनन्दुष्कर्मप्रबलंकेवलभोगनाश्यम्। प्रायश्चित्तनाश्यं वा ततोजाताःनतु दुष्टवातादिदोषेण जनितास्तथा॥ यथा शास्त्रन्तु निर्णीतो यथाव्याधिचिकित्सितः। नशमंयातियोव्याधिः सज्ञेयःकर्म्मजोबुधैः॥ (दोषजाः। मिथ्याहारविहारप्रकुपितवातपित्तकफजाः)॥ २॥

और वह रोग कर्मज दोषज और कर्मदोषज इसक्रमसे तीनप्रकारके होते हैं पूर्वजन्म में किये हुए दुष्कर्मों के द्वारा उत्पन्न हुए रोग केवल भोगकरनेसे अथवा प्रायश्चित्तके द्वारा नाश होतेहैं यही कर्मजरोग कहलाते हैं यह वातादिक की दुष्टतासे नहीं उत्पन्न होतेहैं और कहा भी है कि शास्त्रके अनुसार निर्णयकरके विधिपूर्व्वक चिकित्सा करने पर भी जो रोग शान्त नहीं होताहै उसको पण्डित लोग कर्म्मज कहतेहैं- नियमके विना आहार विहारादिकों के द्वारा कोपको प्राप्त होनेवाले वायु पित्त और कफसे जो रोग उत्पन्न होतेहैं वह दोषज कहलातेहैं॥ २॥

ननुमिथ्याहारविहारिणामपि प्राक्तनसुकृतेन नैरुज्यं दृश्यतएव। ततो दोषजेष्वपि प्राक्तनं दुष्कर्म्मैव कारणं तत्कथं दोषजाइत्युच्यते। दोषजेष्वपि वस्तुतः। आदि कारणंदुष्कर्म वर्त्ततएव किन्तु तत्र मिथ्याहारविहारदूषिता दोषा हेतवो दृश्यन्त इति दोषजा इत्युच्यन्त इति समाधिः॥ ३॥

अब यह सन्देह होताहै कि नियमके विना आहार विहार करनेवालों को भी पूर्व्वजन्म के पुण्य के द्वारा नीरोगता देखतेहैं तो दोषोंसे भी उत्पन्न हुए रोगों में पूर्वजन्मका पापही कारणहै तब दोषज रोग कैसे हो सक्तेहैं इसका समाधान यहहै कि दोषसे उत्पन्न हुए भी रोगोंमें ठीक २ तो मूलकारण पापहीहै परन्तु नियम के विना आहार विहारसे कोप को प्राप्त हुए दोष भी उनमें कारण देखेजातेहैं इसलिये दोषज कहने में कोई हानि नहींहै॥ ३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर्मदोषोद्भवाः। स्वल्पदोषागरीयांसस्तेज्ञेयाःकर्म्मदोषजाः ॥ अत्र कारणं दुष्कर्म प्रबलंयतो दोषाल्पत्वेऽपि व्याधेर्गरीयस्त्वन्तत्कर्म्मक्षयादेव क्षीणं भवति। दोषाःस्वल्पा अपि निदानत्वे नोक्ता दृश्यन्त एवेति दोषाणां कारणता मन्यन्त इति। कर्म्मक्षयात् कर्म्मकृता दोषजाः स्वस्वभेषजैः। कर्म्मदोषोद्भवायान्ति कर्म्मदोषक्षयाक्षयम् ॥ दोषजाः स्वस्वभेषजैरिति दोषजेष्वादिकारणं। दुष्कर्म्म तद्भेषजार्थं द्रव्यक्षयादिजनित दुःखभोगेन कटुतिक्तकषायाद्यहृद्यभक्षणादिजनितदुःखभोगे न च क्षयंयांति। शेषादुष्टा हेतवो दोषास्ते स्वस्वभेषजैः क्षयं यान्तीत्यर्थः ॥ ४ ॥

जो दोष थोड़े विकारको प्राप्तहोवें और रोग अत्यन्त प्रबलहोवें तो कर्मदोषजरोग जानना चाहिये इनका कारणतो प्रबल पापही है क्योंकि दोषोंके थोड़े होनेपर भी रोगकी प्रबलता होती है और वह कर्मके नाशसेही नाशको प्राप्तहोताहै थोड़े दोषभी रोगकी उत्पत्तिके कारण कहेगये देखेजाते हैं इससे दोषों को भी कारण मानते हैं और इसी हेतुसे यह कर्मदोषजरोग कहाते हैं कर्मके नाशसे कर्म्मजरोग, अपनी २ औषधियोंसे दोषजरोग और कर्म तथा दोषके नाशसे कर्मदोषजरोग नाशको पाते हैं यहां अपनी २औषधियोंसे दोषजरोग शान्तहोते हैं इसका यह तात्पर्य्य है कि दोषजरोगों का मूलकारण दुष्कर्म है वह औषधिके निमित्त खर्च होनेवाले धनके दुःख भोगनेसे और कडवे तिक्त तथा कषाय आदिक मनके न रुचनेवाले पदार्थों के भोजनके द्वारा उत्पन्नहुये दुःखके भोगने से नाशको प्राप्तहोताहै फिर अपनी२ औषधियों के द्वारा विकारको प्राप्त रोगोंके प्रत्यक्ष कारण दोषभी नाशको प्राप्त होते हैं ॥ ४ ॥

साध्यायाप्याअसाध्याश्च व्याधयस्त्रिविधाःस्मृताः। सुखसाध्यःकष्टसाध्योद्विविधः साध्यउच्यते ॥ ५ ॥

साध्य, याप्य और असाध्य यह तीन प्रकारके रोग होते हैं इनमें से सुखसाध्य और कष्टसाध्य इन दो भेदोंसे साध्य दोप्रकारका होताहै ॥ ५ ॥

याप्यलक्षणमाह।

यापनीयन्तुतंविद्यात् क्रियाधारयतेहियम्। क्रियायांतुनिवृत्तायां सद्योयश्चविनश्यति ॥ प्राप्ताक्रियाधारयति सुखिनंयाप्यमातुरम्। प्रपतिष्यदिवागारं स्तम्भोयत्नेन योजितः ॥ साध्यायाप्यत्वमायान्ति याप्यश्चासाध्यतान्तथा। घ्नन्तिप्राणानसाध्यास्तु नराणामक्रियावताम् ॥ अक्रियावतां चिकित्सारहितानाम् ॥ ६ ॥

याप्यका लक्षण ॥

जो रोग चिकित्साके द्वारा रुकताहै और विना चिकित्सा के प्राणों को नाशक रहताहै वह याप्य है जैसे यत्नपूर्वक अडवार के लगानेसे गिरताहुआ घर रुकजाताहै इसी प्रकार योग्य दवाके द्वारा इलाज करनेसे याप्यरोगी भी सुखपूर्वक शरीर को धारण करताहै इलाज के विना मनुष्यों के साध्यरोग याप्य होजातेहैं याप्यअसाध्यहोजाते हैं और असाध्यरोग प्राणों को नाश करते हैं ॥ ६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथोपद्रवस्य लक्षणम् ॥

रोगारम्भकदोषस्य प्रकोपादुपजायते। योऽन्योविकारःसबुधैरुपद्रवइहोदितः ॥ ७ ॥

उपद्रवका लक्षण ॥

रोग के उत्पन्न करनेवाले दोषके कोपसे जो अन्य विकार उत्पन्न होते हैं उनको पण्डितलोग उपद्रव कहते हैं ॥ ७ ॥

अथारिष्टस्य लक्षणमाह ॥

रोगिणोमरणंयस्माद्वश्यम्भाविलक्ष्यते । तल्लक्षणमरिष्टंस्याद्रिष्टंचापितदुच्यते ॥ ८ ।

अरिष्टका लक्षण ॥

जिन लक्षणों से रोगी की मृत्युका निश्चय होताहै उनको अरिष्ट वा रिष्ट भी कहतेहैं ॥ ८॥

अथ चिकित्सायाः लक्षणमाह ॥

याक्रियाव्याधिहरणी साचिकित्सानिगद्यते । दोषधातुमलानांया साम्यकृत्सैवरोगहृत् ॥ क्रियात्रकर्म्मव्याधिर्हन्यतेऽनयेति व्याधिहरणी करणाधिकरणयोश्चेति सूत्रेण करणार्थेल्युट् तथाच । याभिःक्रियाभिर्जायन्ते शरीरेधातवःसमाः ॥ साचिकित्साविकाराणां कर्म्मतद्भिषजाम्मतम् । याह्युदीर्णंशमयति नान्यंव्याधिंकरोतिच ॥ साक्रियानतुयाव्याधिं हरत्यन्यमुदीरयेत् । (क्रियात्र चिकित्सा) तथा चामरसिंहः । आरम्भोनिष्कृतिःशिक्षा पूजनं सम्प्रधारणम् । उपायःकर्म्मचेष्टाच चिकित्साचनवक्रिया इति ॥ ९ ॥

चिकित्साका लक्षण ॥

जो क्रिया रोगकी नाशकरनेवाली और दोष धातु तथा मलोंकी समता करनेवाली होती है उसीको चिकित्सा (इलाज) कहते हैं जिस क्रियाके द्वारा शरीर की सब धातु समताको प्राप्तहोवें उसी क्रियाको रोगोंकी चिकित्सा कहतेहैं और यही चिकित्सा वैद्यलोगोंको पसन्द है जिस क्रियाके द्वारा उत्पन्न हुआ रोग शान्त होताहै और दूसरा कोई रोग नहीं उत्पन्न होताहै उसीको चिकित्सा (मालजा) कहतेहैं और जिससे रोगकी कमीहो और दूसरा पैदाहो उसको चिकित्सा नहीं कहते हैं यहां क्रिया शब्दका अर्थ चिकित्सा (इलाज) है जैसा कि अमरसिंह ने कहाहै कि आरंभ, निष्कृति–शिक्षा, पूजन, संप्रधारण, उपाय, कर्म, चेष्टा और चिकित्सा यह नौ क्रियाशब्द के अर्थ हैं ॥ ९ ॥

अथ चिकित्साविध्युपदेशः ॥

जातमात्रश्चिकित्स्यःस्यान्नोपेक्ष्योऽल्पतयागदः । वह्निशत्रुविषैस्तुल्यःस्वल्पोऽपिविकरोत्यसौ ॥ रोगमादौ परीक्षेत ततोऽनन्तरमौषधम् । ततःकर्म्मभिषक्पश्चाज्ज्ञानपूर्वंसमाचरेत् ॥ अयमर्थः भिषक्आदौरोगं परीक्षेतविचारयेत् । ततःपश्चाद्रोगौषधविचारानन्तरं ज्ञानपूर्वंसावधानोनत्ववज्ञायकर्म्म चिकित्सामौषधदानादिरूपं समाचरेदित्यर्थः ॥ १० ॥

चिकित्साविधि का उपदेश ॥

रोगके उत्पन्न होतेही चिकित्सा करनी योग्य है थोडा समझकर उसकी उपेक्षा (लापरवाही) न

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करना चाहिये क्योंकि अग्नि शत्रु और विषके समान थोड़ा भी रोग दुःखदायी होजाता है वैद्य प्रथम रोगकी परीक्षाकरे इसके पीछे औषधको विचारे तदनन्तर सावधानीसे चिकित्साका प्रारंभकरे॥१०॥

रोगाज्ञानेन चिकित्साकरणेदोषमाह ॥

यस्तुरोगमविज्ञायकर्म्माण्यारभतेभिषक्। अप्यौषधविधानज्ञस्तस्य सिद्धिर्यदृच्छया ॥ स्वैरतया सिद्धिर्भवति नापिभवतीत्यर्थः (अन्यच्च) भेषजंकेवलंकर्त्तुंयोजानातिन चामयम् ॥ वैद्यकर्म्मसचेत्कुर्य्याद्वधमर्हतिराजतः ॥ ११ ॥

रोगके विना जाने चिकित्सा करने में दोष ॥

जो वैद्य रोगको विना जाने, चिकित्साका प्रारंभ करता है वह चाहे औषधियों के विधानको जानताभी हो परन्तु आराम होने और न होने का निश्चय नहीं होता और भी कहा हुआ है कि जो केवल औषधि करना जानता है और रोग को नहीं पहचान सका है वह जो चिकित्सा करे तो राजा को उचित है कि उसका वधकरे ॥ ११ ॥

रोगज्ञाने भेषजाज्ञाने दोषमाह ॥

यस्तुकेवलरोगज्ञो भेषजेष्वविचक्षणः। तंवैद्यंप्राप्यरोगीस्याद्यथा नौर्नाविकंविना॥ नाविकं कर्णधारंविनायथानौःसङ्कटेपततितथारोगीत्यर्थः (अन्यच्च) यस्तुकेवलशास्त्रज्ञः क्रियास्वकुशलोभिषक्। समुह्यत्यातुरंप्राप्ययथाभीरुरिवाहवम् ॥ १२ ॥

रोगको जानकरके भी औषधि के न जानने में दोष ॥

जो केवल रोगों को जानता है और औषधियों को नहीं जानता उसकी औषधि करने से रोगी मल्लाहरहित नौकाके समान विपत्ति में पड़ता है और भी कहाहुआ है कि जो वैद्य केवल शास्त्र जानता है और क्रिया में चतुर नहीं है वह युद्ध में डरपोक के समान रोगी को पाकर मोहको प्राप्त होता है ॥ १२ ॥

रोगौषधयोर्ज्ञाने गुणमाह ॥

यस्तुरोगविशेषज्ञःसर्वभैषज्यकोविदः। देशकालविभागज्ञस्तस्य सिद्धिर्नसंशयः ॥ आदावन्तेरुजांज्ञाने प्रयतेतचिकित्सकः। भेषजानांविधानेन ततःकुर्य्याच्चिकित्सितम्॥ चिकित्सितमित्यत्रभावेक्तः ॥ १३ ॥

रोग और औषधि दोनों के जानने में गुण ॥

जो संपूर्ण रोग तथा औषधियों को जानता है और देश तथा कालके विभागको भी जानता है उसकी औषधि निस्सन्देह सफल होतीहै, वैद्य प्रथम आदि से अन्ततक रोगके जाननेमें यत्नकरे फिर औषधियोंके विधानपूर्वक चिकित्सा करे ॥ १३ ॥

विकारनामाकुशलोनजिह्रीयात्कदाचन।नहिसर्वविकाराणांनामतोऽस्तिध्रुवास्थितिः॥ नजिह्रीयात् नलज्जेत्। ध्रुवानियता ॥ नास्तिरोगोविनादोषैर्यस्मात्तस्माच्चिकित्सकः। अनुक्तानामपिदोषाणांलिंगैर्व्याधिमुपाचरेत् ॥ येनकुर्वन्त्यसाध्यानांचिकित्सातेभिषग्वराः। अतोवैद्यैःश्रमःकार्य्यःसाध्यासाध्यपरीक्षणे ॥ रोगज्ञानोपायाअग्रेवक्ष्यन्ते ॥ १४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संपूर्ण रोगोंका नामके जाने विना निश्चयकरने में वैद्यको लज्जा नहीं करनी चाहिये क्योंकि सम्पूर्ण रोगों के नाम निश्चित नहीं हैं दोषों के कोपके विना रोगकी उत्पत्ति नहीं होती इसलिये रोगके नामको विनाजाने भी वातादि दोषोंके लक्षणसे चिकित्सा करनी चाहिये जो वैद्य असाध्य रोगोंकी चिकित्सा नहीं करते हैं वह श्रेष्ठहैं इससे वैद्योंको साध्यासाध्य जाननेमें श्रमकरना चाहिये, रोगों के जानने के उपाय आगे कहे हैं ॥ १४ ॥

शीतेशीतप्रतीकारमुष्णेतूष्णनिवारणम् । कृत्वाकुर्य्यात्क्रिया प्राप्तांक्रियाकालंनहापयेत् ॥ अप्राप्तेवाक्रियाकाले प्राप्तेवानक्रियाकृता । क्रियाहीनातिरिक्ताच साध्येष्वपिनसिद्ध्यति (अयमर्थः) कालेचिकित्साऽवसरे । अप्राप्तेऽनागते ॥ याक्रियाचिकित्सा यथाज्वरेजीर्णतामप्राप्ते तरुणएवकषायदानक्रियानासिद्ध्यति।याचक्रियाचिकित्सावसरे प्राप्तेनकृत्वा । अर्थात्पश्चात्कृता यथादाहेकथञ्चिच्छान्तेपश्चाच्छीतलानुलेपनादिक्रिया। तथाहीनातिरिक्ताचक्रियासाध्येष्वपि न सिद्ध्यति ॥ १५ ॥

शीत में शीतलताका निवारण और उष्णरोगमें उष्णता का निवारण करके चिकित्साका समय प्राप्त होनेपर चिकित्सा करे उसके समय को न जाने दे चिकित्सा के समय के पहले अथवा पीछे चिकित्सा करनेसे और थोड़े रोगमें बहुत चिकित्सा तथा बड़े रोगमें थोड़ी चिकित्सा करने से साध्य रोग भी नहीं आराम होते ॥ १५ ॥

अतिरिक्तांहीनांचक्रियावर्ज्जयन्नाह ॥

विकारेऽल्पेमहत्कर्म्मक्रियालघ्वीगरीयसी । द्वयमेतदकौशल्यंकौशल्यंयुक्तकर्म्मत ॥ क्रियायास्तुगुणालाभे क्रियामन्यांप्रयोजयेत् । पूर्वस्यांशान्तवेगायांनक्रियासङ्करोहितः ॥ भिन्नरूपाभिस्तुक्रियाभिः साङ्कर्य्यमपिनदोषाय (यतआह) क्रियाभिस्तुल्यरूपाभिर्न्न क्रियासङ्करोहितः । ताभिस्तुभिन्नरूपाभिःसाङ्कर्य्यन्नैवदुष्यति (अतएवोक्तम्) लङ्घनं वालुकास्वेदो नस्यंनिष्ठीवनंतथा । अवलेहोऽञ्जनञ्चापि प्राक्प्रयोज्यंत्रिदोषजे ॥ ज्वर इतिशेषः ॥ १६ ॥

अधिक और न्यून चिकित्सा का निषेध ॥

थोड़ेरोग में बड़ीक्रिया और बड़ेरोग में थोड़ीक्रिया वह दोनों निषिद्ध हैं और युक्तिपूर्वक योग्य क्रियाकरना हितकारी है—एक क्रियाके करनेपर जो उसका कुछ उपकार न हो तो उसके वेगके शान्त होने पर दूसरी क्रिया करे क्योंकि क्रियासंकर (मेल) हितकारी नहीं होता कहा है कि तुल्यरूप वाली क्रियाओंका संकर हितकारी नहीं होता परन्तु भिन्न रूपवाली क्रियाओं का संकर दोषकारी नहीं होता इसीसे कहागयाहै कि त्रिदोषज ज्वरमें लंघन वालुकास्वेद (एकप्रकारकापसीना) हुल्लास, वमन, अवलेह और अंजन का प्रयोग (इस्तैमाल) करना चाहिये ॥ १६ ॥

नचैकान्तेननिर्दिष्टेशास्त्रेनिविशतेबुधः । स्वयमप्यत्रभिषजातर्कणीयं चिकित्सता ॥ (यतआह)उत्पद्यतेचसावस्थादोषकालबलम्प्रति । यस्यांकार्य्यमकार्य्यंस्यात्कर्मकार्य्यं विवर्ज्जितम् ॥ विवर्जितंकर्म्मकर्त्तव्यंभवतीत्यर्थः ॥ १७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पंडित वैद्य केवल शास्त्र में कहीहुई विधि के अनुसार क्रिया नहीं करते औषधि करने के समय वैद्य को अपनी बुद्धि के अनुसार आपभी विचार करलेना चाहिये क्योंकि कहाहुआ है कि दोषकाल और बलकी अवस्थाके अनुसार शास्त्रमें भी कहीहुई विधि हितकारी नहीं होती है और निषेध की हुई भी विधि हितकारी होजाती है ॥ १७ ॥

अथ चिकित्सायां फलमाह ॥

क्वचिदर्थःक्वचिन्मैत्री क्वचिद्धर्म्मःक्वचिद्यशः । कर्म्माभ्यासःक्वचिच्चेति चिकित्साना स्तिनिष्फला ॥ आयुर्व्वेदोदितांयुक्तिं कुर्व्वाणाविहिताश्चये । पुण्यायुर्वृद्धिसंयुक्ता निरोगाश्चभवन्तिते ॥ नैवकुर्व्वीतलोभेन चिकित्सापुण्यविक्रियम् । ईश्वराणांवसुमतां लिप्सेतार्थन्तुवृत्तये ॥ चिकित्सितंशरीरंयोननिष्क्रीणातिदुर्म्मतिः । सयत्करोतिसुकृतं सर्व्वंतद्भिषगश्नुते ॥ नदेशोमनुजैर्हीनो नमनुष्यानिरामयाःततःसर्व्वत्रवैद्यानां सुसिद्धा एववृत्तयः ॥ १८ ॥

चिकित्साका फल ॥

चिकित्सा कभी व्यर्थ नहीं होती कहीं धन लाभ कहीं मित्रता–कहीं धर्म, कहीं यश और कहीं अपने कार्य्य में अभ्यासही होताहै, जो वैद्य आयुर्वेद शास्त्र में कहीहुई विधिके अनुसार चिकित्सा करतेहैं उनके पुण्य तथा आयुकी वृद्धि होतीहै और शरीर नीरोग होता है वैद्य लोभसे चिकित्सा रूपी पुण्यको न बेचे और जीविका के निमित्त राजा और धनवानों से धन प्राप्त करे, जो दुर्बुद्धि पुरुष चिकित्सा किये हुये शरीर को क्रय (मोललेने की वस्तु) के समान धन देकर नहीं मोल लेता है उसके सम्पूर्ण पुण्य वैद्यको प्राप्तहोतेहैं–मनुष्यों से रहित देश नहीं होता और रोगरहित मनुष्य नहीं होता इससे वैद्योंकी जीविका सर्वत्र होसक्ती है ॥ १८ ॥

अस्यचिकित्साया अंगानि ॥

रोगीदूतोभिषग्दीर्घमायुर्द्रव्यंसुसेवकःसदौषधंचिकित्सायामित्यंगानिबुधाजगुः॥१९॥

चिकित्साके अंग ॥

रोगी, दूत, वैद्य, दीर्घायु, द्रव्य, अच्छा सेवक और उत्तम औषधि यह पण्डितलोगोंने चिकित्सा के अंग कहे हैं ॥ १९ ॥

तत्ररोगिणोलक्षणमाह ॥

रोगोयस्यास्तिरोगीससचिकित्स्यस्तुयादृशः । यादृशश्चाचिकित्स्योऽपि वक्ष्यमाणो निशम्यताम् ॥ २० ॥

रोगीका लक्षण ॥

जिसके रोगहो वह रोगी कहावताहै वह चिकित्साके योग्य और अयोग्य दोप्रकार का होताहै ॥२०॥

तत्रचिकित्स्यः ॥

निजप्रकृतिवर्णाभ्यां युक्तःसत्त्वेनचक्षुषा । चिकित्स्योभिषजारोगी वैद्यभक्तोजिते न्द्रियः ॥ सत्त्वं व्यसनाभ्युदयक्रियादिष्वविक्लताकरं तेनयुक्तः । चक्षुषा चक्षुरुपल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संपूर्ण रोगोंका नामके जाने विना निश्चयकरने में वैद्यको लज्जा नहीं करनी चाहिये क्योंकि सम्पूर्ण रोगों के नाम निश्चित नहीं हैं दोषों के कोपके विना रोगकी उत्पत्ति नहीं होती इसलिये रोगके नामको विनाजाने भी वातादि दोषोंके लक्षणसे चिकित्सा करनी चाहियें जो वैद्य असाध्य रोगोंकी चिकित्सा नहीं करते हैं वह श्रेष्ठहैं इससे वैद्योंको साध्यासाध्य जाननेमें श्रमकरना चाहिये, रोगों के जानने के उपाय आगे कहे हैं ॥ १४ ॥

शीतेशीतप्रतीकारमुष्णेतूष्णनिवारणम्। कृत्वाकुर्य्यात्क्रिया प्राप्तांक्रियाकालंनहापयेत् ॥ अप्राप्तेवाक्रियाकाले प्राप्तेवानक्रियाकृता। क्रियाहीनातिरिक्ताच साध्येष्वपिन सिद्ध्यति (अयमर्थः) कालेचिकित्साऽवसरे। अप्राप्तेऽनागते ॥ याक्रियाचिकित्सा यथाज्वरेजीर्णतामप्राप्ते तरुणएवकषायदानक्रियानासिद्ध्यति। याचक्रियाचिकित्सावसरे प्राप्तेनकृत्वा। अर्थात्पश्चात्कृता यथादाहेकथञ्चिच्छान्तेपश्चाच्छीतलानुलेपनादि क्रिया। तथाहीनातिरिक्ताचक्रियासाध्येष्वपि न सिद्ध्यति ॥ १५ ॥

शीत में शीतलताका निवारण और उष्णरोगमें उष्णता का निवारण करके चिकित्साका समय प्राप्त होनेपर चिकित्सा करे उसके समय को न जाने दे चिकित्सा के समय के पहले अथवा पीछे चिकित्सा करनेसे और थोडे रोगमें बहुत चिकित्सा तथा बडे रोगमें थोडी चिकित्सा करने से साध्य रोग भी नहीं आराम होते ॥ १५ ॥

अतिरिक्तांहीनांचक्रियावर्ज्जयन्नाह ॥

विकारेऽल्पेमहत्कर्म्मक्रियालघ्वीगरीयसी। द्वयमेतदकौशल्यंकौशल्यंयुक्तकर्म्मता॥ क्रियायास्तुगुणालाभे क्रियामन्यांप्रयोजयेत्। पूर्वस्यांशान्तवेगायांनक्रियासङ्करोहितः॥ भिन्नरूपाभिस्तुक्रियाभिः साङ्कर्य्यमपिनदोषाय (यतआह) क्रियाभिस्तुल्यरूपाभिर्न्न क्रियासङ्करोहितः। ताभिस्तुभिन्नरूपाभिःसाङ्कर्य्यंन्नैवदुष्यति (अतएवोक्तम्) लङ्घनं वालुकास्वेदो नस्यंनिष्ठीवनंतथा। अवलेहोऽञ्जनञ्चापि प्राक्प्रयोज्यंत्रिदोषजे ॥ ज्वर इतिशेषः ॥ १६ ॥

अधिक और न्यून चिकित्सा का निषेध ॥

थोडेरोग में बडीक्रिया और बडेरोग में थोडीक्रिया वह दोनों निषिद्ध हैं और युक्तिपूर्व्वक योग्य क्रियाकरना हितकारी है—एक क्रियाके करनेपर जो उसका कुछ उपकार न हो तो उसके वेगके शान्त होने पर दूसरी क्रिया करे क्योंकि क्रियासंकर (मेल) हितकारी नहीं होता कहा है कि तुल्यरूप वाली क्रियाओंका संकर हितकारी नहीं होता परन्तु भिन्न रूपवाली क्रियाओं का संकर दोषकारी नहीं होता इसीसे कहागयाहै कि त्रिदोषज ज्वरमें लंघन वालुकास्वेद (एकप्रकारकापसीना) हुलास, वमन, अवलेह और अंजन का प्रयोग (इस्तैमाल) करना चाहिये ॥ १६ ॥

नचैकान्तेननिर्दिष्टेशास्त्रेनिविशतेबुधः। स्वयमप्यत्रभिषजातर्कणीयं चिकित्सता ॥ (यतआह) उत्पद्यतेचसावस्थादेशकालबलम्प्रति। यस्यांकार्य्यमकार्य्यंस्यात्कर्मकार्य्यं विवर्ज्जितम्॥ विवर्जितंकर्म्मकर्त्तव्यंभवतीत्यर्थः ॥ १७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पंडित वैद्य केवल शास्त्र में कहीहुई विधि के अनुसार क्रिया नहीं करते औषधि करने के समय वैद्य को अपनी बुद्धि के अनुसार आपभी विचार करलेना चाहिये क्योंकि कहाहुआ है कि दोषकाल और बलकी अवस्थाके अनुसार शास्त्रमें भी कहीहुई विधि हितकारी नहीं होती है और निषेध की हुई भी विधि हितकारी होजाती है ॥ १७ ॥

अथ चिकित्सायां फलमाह ॥

क्वचिदर्थःक्वचिन्मैत्री क्वचिद्धर्म्मःक्वचिद्यशः । कर्म्माभ्यासःक्वचिच्चेति चिकित्सानास्तिनिष्फला ॥ आयुर्व्वेदोदितांयुक्तिं कुर्व्वाणाविहिताश्चये । पुण्यायुर्वृद्धिसंयुक्ता निरोगाश्चभवन्तिते ॥ नैवकुर्व्वीतलोभेन चिकित्सापुण्यविक्रियम् । ईश्वराणांवसुमतां लिप्सेतार्थन्तुवृत्तये ॥ चिकित्सितंशरीरंयोननिष्क्रीणातिदुर्म्मतिः । सयत्करोतिसुकृतं सर्व्वंतद्भिषगश्नुते ॥ नदेशोमनुजैर्हीनो नमनुष्यानिरामयाः।ततःसर्व्वत्रवैद्यानां सुसिद्धा एववृत्तयः ॥ १८ ॥

चिकित्साका फल ॥

चिकित्सा कभी व्यर्थ नहीं होती कहीं धन लाभ कहीं मित्रता—कहीं धर्म, कहीं यश और कहीं अपने कार्य्य में अभ्यासही होताहै, जो वैद्य आयुर्वेद शास्त्र में कहीहुई विधिके अनुसार चिकित्सा करतेहैं उनके पुण्य तथा आयुकी वृद्धि होतीहै और शरीर नीरोग होता हैं वैद्य लोभसे चिकित्सा रूपी पुण्यको न बेचे और जीविका के निमित्त राजा और धनवानों से धन प्राप्त करे, जो दुर्बुद्धि पुरुष चिकित्सा किये हुये शरीर को क्रय (मोललेने की वस्तु) के समान धन देकर नहीं मोल लेता है उसके सम्पूर्ण पुण्य वैद्यको प्राप्तहोतेहैं—मनुष्यों से रहित देश नहीं होता और रोगरहित मनुष्य नहीं होता इससे वैद्योंकी जीविका सर्वत्र होसक्ती है ॥ १८ ॥

अस्यचिकित्साया अंगानि ॥

रोगीदूतोभिषग्दीर्घमायुर्द्रव्यंसुसेवकः।सदौषधंचिकित्सायामित्यंगानिबुधाजगुः॥१९॥

चिकित्साके अंग ॥

रोगी, दूत, वैद्य, दीर्घायु, द्रव्य, अच्छा सेवक और उत्तम औषधि यह पण्डितलोगोंने चिकित्सा के अंग कहे हैं ॥ १९ ॥

तत्ररोगिणोलक्षणमाह ॥

रोगोयस्यास्तिरोगीससचिकित्स्यस्तुयादृशः।यादृशश्चाचिकित्स्योऽपि वक्ष्यमाणो निशम्यताम् ॥ २० ॥

रोगीका लक्षण ॥

जिसके रोगहो वह रोगी कहावताहै वह चिकित्साके योग्य और अयोग्य दोप्रकार का होताहै ॥२०॥

तत्रचिकित्स्यः ॥

निजप्रकृतिवर्णाभ्यां युक्तःसत्त्वेनचक्षुषा । चिकित्स्योभिषजारोगी वैद्यभक्तोजितेन्द्रियः ॥ सत्त्वं व्यसनाभ्युदयक्रियादिष्वविक्लताकरं तेनयुक्तः । चक्षुषा चक्षुरुपल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्षितेन । ततोऽन्येनापीन्द्रियेण चिकित्स्यः रोगान्मोचयितव्यः ॥ (अन्यत्र) आयुष्मान् सत्त्ववान् साध्यो द्रव्यवान् मित्रवानपि । चिकित्स्योभिषजारोगी वैद्यवाक्यकृदास्तिकः ॥ आयुर्वेदोऽस्तीति मतिर्यस्य आस्तिकः ॥ २१ ॥

अब इनके लक्षण कहते हैं वहां चिकित्सा करने योग्य के लक्षण ॥

जो रोगी प्रकृति, वर्ण, बल तथा नेत्रादि इन्द्रियों से युक्त और वैद्यका भक्त तथा जितेन्द्रिय हो उसकी चिकित्सा करनी चाहिये और भी कहाहै कि जो रोगी आयुवाला बलवान्, साध्य, द्रव्यवान्, मित्रवान् और वैद्यक शास्त्र में विश्वासयुक्त तथा वैद्यका कहना माननेवाला हो उसकी चिकित्सा करनी चाहिये ॥ २१ ॥

अथाचिकित्स्यः ॥

चण्डःसाहसिको भीरुः कृतघ्नोव्यग्रएवच । शोकाकुलोमुमूर्षुश्च विहीनःकरणैश्च यः ॥ वैरीवैद्यविदग्धश्च श्रद्धाहीनश्चशंकितः । भिषजामविधेयाःस्युर्नोपक्रम्याःभिषग्विधाः ॥ एतानुपाचरन्वैद्योबहून्दोषानवाप्नुयात् । चण्डोऽत्यन्तक्रोधशीलः ॥ साहसिकःअविचार्य्यकारीभीरुर्भयशीलः । कृतघ्नोवैद्यकृतोपकारलोपकः ॥ व्यग्रोव्याकुलः । विहीनःकरणैश्चयः जितेन्द्रियशक्तिरहितः ॥ वैरी न चिकित्स्यःकदाचिद्रोगोद्रेकेअपवाद भयात् । वैद्यविदग्धोवैद्यधूर्त्तः ॥ तथाचसुश्रुतः । सनसिद्ध्यतिवैद्यस्तुगृहेयस्यनपूज्यते॥ शङ्कितोवैद्यविश्वासरहितः । भिषजामविधेयाः ॥ वैद्यवचनाभिधायिनः । भिषग्विधाः वैद्यतुल्याः एतेनोपक्रम्याः न चिकित्स्याः ॥ २२ ॥

चिकित्सा के अयोग्यवाले के लक्षण ॥

जो रोगी अत्यन्तक्रोधी विना विचारे कार्य्य करनेवाला भीरु, वैद्य के उपकार को न माननेवाला, व्याकुल, इन्द्रियों की शक्ति से रहित शोकयुक्त, आसन्नमृत्यु, द्वेषी, (रोगके बिगड़ने में कलंक देनेवाला) वैद्यसे धूर्तता करनेवाला, वैद्यमें विश्वास से रहित, वैद्यके वचन का न माननेवाला और आपको भी वैद्यके तुल्य चिकित्सा जाननेवाला होवे वह चिकित्सा करने के अयोग्यहै क्योंकि उसका इलाज करने से अनेकप्रकार के दोष उत्पन्न होते हैं सुश्रुतने कहाहै कि जिस रोगी के घरमें वैद्यका सत्कार नहीं होताहै उसका कार्य्यसिद्ध नहीं होता ॥ २२ ॥

अथ दूतस्यलक्षणम् ॥

यश्चिकित्सकमानेतुंयातिदूतःसकथ्यते । सचयादृक्समुचितस्तादृगत्रनिगद्यते ॥ दूताःस्वजातयोव्यंगाः पटवोनिर्मलाम्बराः । सुखिनोऽश्ववृषारूढाःशुभ्रपुष्पफलैर्युताः ॥ सजातयःसुचेष्टाश्चसजीवदिशिसंगताः । भिषजंसमयेप्राप्तारोगिणःसुखहेतवे ॥ सजातयःरोगिसमानजातयः । यस्यांप्राणमरुद्वातिसानाडीजीवसंज्ञिता ॥ २३ ॥

दूत के लक्षण ॥

जो वैद्यके बुलानेको जाताहै वह दूत कहाताहै वह जैसा उचित है उसको कहतेहैं अच्छीजातिवाला सबअंगयुक्त चतुर निर्मलवस्त्रधारी प्रसन्न घोड़े तथा बैलकी सवारीपरचढ़ाहुआ श्वेतपुष्प तथा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फलों से युक्त रोगी का सजाती सुन्दर चेष्टावाला वैद्यकी जिस नाड़ी में प्राण वायु चलता हो उस ओर गयाहुआ और समय पर वैद्यको प्राप्त हुआ दूत रोगीको सुखदायक होताहै ॥ २३ ॥

अथदूतस्ययात्रायाशकुनविचारः ॥

वैद्याह्वानायदूतस्यगच्छतोरोगिणः कृते । नशुभंसौम्यशकुनंप्रदीप्तन्तुसुखावहम् ॥ प्रदीप्तमग्निः दूतोरोगीचरिक्तहस्तोवैद्यंनपश्येत् (अथच) रिक्तहस्तोनपश्येत्तुराजानं भिषजंगुरुम् । दैवज्ञं देवतांमित्रंफलेनफलमादिशेदिति ॥ २४ ॥

दूतकी यात्रा में शकुन का विचार ॥

रोगी के निमित्त वैद्यको बुलानेको जातेहुये दूत के सन्मुख जो सौम्य (सुन्दर) शकुन होय तो शुभ नहीं है और जलतीहुई अग्नि शुभदायकहै दूत और रोगी खाली हाथ वैद्यका दर्शन न करे क्योंकि कहाहुआ है कि राजा, वैद्य, गुरु, ज्योतिषी, देवता और मित्र इनको खाली हाथ न देखे किन्तु फलको लेकर देखै क्योंकि फलसेही उत्तम फलकी प्राप्तिहोती है ॥ २४ ॥

अथ वैद्यस्यलक्षणम् ॥

चिकित्सांकुरुतेयस्तुसचिकित्सकउच्यते । सचयादृक्समीचीनस्तादृशोऽपिनिगद्यते ॥ तत्त्वाधिगतशास्त्रार्थोदृष्टकर्मास्वयंकृती । लघुहस्तःशुचिः शूरः सज्जोपस्करभेषजः ॥ प्रत्युत्पन्नमतिर्धीमान्व्यवसायीप्रियंवदः । सत्यधर्मपरोयश्चवैद्यईदृक्प्रशस्यते ॥ दृष्टकर्म्मादृष्टपरेणकृताचिकित्सायेनसः स्वयंकृतीस्वयंचिकित्साकुशलः । लघुहस्तः सिद्धिमद्धस्तः ॥ २५ ॥

वैद्यके लक्षण ॥

जो चिकित्सा (इलाज) करे वह वैद्य कहलाताहै और जिसप्रकारका वैद्य उत्तम होताहै उसे कहते हैं शास्त्रों के तत्त्वों का जाननेवाला दूसरेसे की हुई चिकित्साका देखनेवाला आपभी चिकित्सा में प्रवीण सिद्धयुक्त हाथवाला (दस्तसफा) पवित्र शूर अच्छी औषधि और शास्त्रादिकों से युक्त कार्यके समय झटित उत्पन्न होनेवाली बुद्धिवाला बुद्धिमान् उद्योगी मधुरभाषी सत्यवादी और धर्म्मात्मा वैद्य प्रशंसा के योग्यहै ॥ २५ ॥

अथ निषिद्धोवैद्यः ॥

कुचैलः कर्कशःस्तब्धोग्रामीणःस्वयमागतः । पंचवैद्यानपूज्यन्तेधन्वन्तरिसमायदि ॥ कर्कशः अप्रियवादी स्तब्धःसाभिमानः । ग्रामीणः व्यवहाराचतुरः ॥ २६ ॥

निषिद्धवैद्य के लक्षण ॥

मैले वस्त्र धारण करनेवाला—अप्रिय बोलनेवाला—अभिमानी—व्यवहारका न जाननेवाला और अपनेआप आयाहुआ यह पांच प्रकारके वैद्य जो धन्वन्तरिकेभी समान होयँ तौभी प्रशंसा के योग्य नहीं हैं ॥ २६ ॥

अथ वैद्यस्य कर्म्माह ।

व्याधेस्तत्त्वपरिज्ञानंवेदनायाश्चनिग्रहः । एतद्वैद्यस्यवैद्यत्वंनवैद्यःप्रभुरायुषः(अस्यायमर्थः) व्याधेः सम्यक्परिचयोव्यथाशांतिकरणंवैद्यस्यकर्म्मनतुवैद्यआयुषःप्रभुरित्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

र्थः । अपरेत्वेवंव्याचक्षते ॥ व्याधेस्तत्त्वतः परिचयोवेदनायाः शांतिकरणञ्च । एतदेव वैद्यस्यवैद्यत्वंकिन्तुवैद्यआयुषःप्रभुः आगन्तुमृत्युशतहरणात् ॥ तथाचसुश्रुतेधन्वन्तरिः । एकोत्तरंमृत्युशतमथर्वाणः प्रचक्षते ॥ तत्रैकः कालसंयुक्तः शेषास्त्वागन्तवःस्मृताः (अयमर्थः) अथर्वाणः अर्थतत्त्वज्ञत्वेनाथर्वतुल्याः । मृत्युमेकोत्तरंशतंप्रचक्षते ॥ तत्रैकोमृत्युःकालसंयुक्तः । कालआयुषोऽन्तेशरीरिणामवश्यंसंहर्त्ता ॥ सर्वैरुपायैर्निवारयितुमशक्यः । सब्रह्मादीनायुषोऽन्तेसंहरति ॥ यतआह्लिङ्गपुराणे । कार्त्तिकेयंप्रतिमहादेवः ॥ ममायुर्ग्रसतेकालःकुतःपुत्ररसायनमिति ॥ तेनकालेनसंयुक्ता संहारायनियुक्तः सोऽवश्यंभावी ॥ शेषाःशतंमृत्यवःआगन्तवः । आगन्तुरूपहेतुजन्मानःकार्य्यकारणयोरभेदोपचारात् ॥ आगन्तवोहेतवोयथा । विषभक्षणमजीर्णोऽत्यन्तभोजनञ्चदुर्देशजलपानम् ॥ तथाऽतिबलवैरिव्याघ्रवनमहिषमत्तमातंगादिभिर्युद्धम् । दन्दशूकेनक्रीडनमत्युच्चवृक्षाग्रारोहणं बाहुभ्याम् । महातरङ्गिणीतरणमेकाकिनो रात्रौदुर्गमार्गेगमनमित्यादि । आगन्तुहेतुजामृत्यवोदुर्निमित्ता भाविभावनाबलवत्त्वादायुषि सत्यपि मारयन्ति । यथामल्लिकातैलवर्त्तिवह्निषुविद्यमानेषुवायुनादीपंनाशयति ॥ तथाच । तथा सत्यपि तैलादौदीपंनिर्वापयेन्मरुत् ॥ एवमायुष्यहीनेऽपिहिंसन्त्यागन्तुमृत्यवः । किन्तुआगन्तुनिमित्तानिनिवारयितुंचशक्यन्ते (यतआहसुश्रुतेधन्वन्तरिः) दोषागन्तुनिमित्तेभ्योरसमन्त्रविशारदौ।रक्षेतांनृपतिंनित्यंयत्नाद्वैद्यपुरोहितौ॥ वैद्यमन्त्रिणौनृपतिंनित्यंयत्नाद्रक्षेताम्।कुतः दोषागन्तुनिमित्तेभ्यःदोषानिषिद्धाहारविहारभूषितावातपित्तकफरोगोत्पादकाः ॥ आगन्तवःनिषिद्धाविहाराअतिबलवैरि विग्रहादयः । तेनिमित्तानियेषान्तेभ्यःशतमृत्युभ्यः ॥ ननुवैद्यपुरोहितौकथंशतंमृत्युंनिवारयितुंशक्तौतत्राह । यतस्तौरसमन्त्रविशारदौप्रथमंवैद्यो दिनचर्य्यांरात्रिचर्य्यंर्तुचर्य्योक्ताहाराविहाराभ्यांवातपित्तकफधातुमलान्समानेवरक्षति ॥ ततोरसज्ञत्वाद्रसैर्मृत्युंजयादिभिर्निषिद्धाहारविहारदूषितदोषजनितान्विकारान्मृत्युहेतूनपहरति । मंत्रीचसद्बुद्धिदानेनमृत्युहेतुभ्योनृपतिंनिवारयति ॥ ततआगन्तुमृत्यवोनिवारयितुंशक्यानत्ववश्यम्भाविनः ॥ २७ ॥

वैद्यका कर्म्म (काम) ॥

रोगका अच्छे प्रकारसे जानना और उसका दूरकरना यह वैद्यका कर्म अर्थात् कामहै वैद्यआयु देनेवाला नहीं है और कोई कोई यह अर्थ करते हैं कि रोगका अच्छी रीति से जानना और उसका शान्तकरना केवल यही वैद्यका कर्म नहीं है किन्तु वैद्य आगन्तुक (आनेवाली) सौ मृत्यु के निवारण करने से आयुका स्वामी है सुश्रुत में धन्वन्तरिजीने कहा है कि अथर्वण वेदके जानने वाले एकसौ एक मृत्यु कहते हैं उनमें से एक कालसंयुक्त और बाक़ी आगन्तुक कहलाती हैं कालसंयुक्त मृत्यु आयु के अन्त में प्राणियों को अवश्य संहार करती है उसका निवारण किसी उपाय से नहीं होसक्ता वह आयु के अन्त में ब्रह्मादिकोंको भी संहार करती है क्योंकि लिङ्गपुराण में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वामिकार्तिकेय से महादेवजी का वचन है कि हे पुत्र ! मुझे भी कालसंहार करता है तो रसायन क्या वस्तु है इससे कालसंयुक्त मृत्यु प्राणियों के संहार के लिये अवश्य होगी और शेष एक सौ मृत्यु आगन्तुक कहलाती हैं कार्य्य और कारण के अभेद मानने से आगन्तुक हेतुओं से होनेवाली मृत्यु आगन्तुक कहलाती हैं, आगन्तुक हेतु यह हैं कि विष खाना—अजीर्ण में अत्यन्त भोजन करना बुरे देश का जलपीना—अत्यन्त बलवान् शत्रु—व्याघ्र—बनका भैंसा तथा मतवाले हाथी आदिकों से लड़ना—सर्पकेसाथ क्रीड़ाकरना—बहुत ऊंचे वृक्षकी चोटीपर चढ़ना—हाथों से बड़ी नदियों में तैरना और रात्रिके समय दुर्घट मार्गों में चलना इत्यादि, जैसे दीपक में बत्ती तेल और अग्निके होते हुए भी वायु के द्वारा दीपक बुझजाता है उसीप्रकार आगन्तुक हेतुओंके द्वारा होनेवाली मृत्यु दुष्टकर्मों से होनहार की प्रबलता के द्वारा आयुके होनेपर भी मारडालती हैं कहा भी है कि जैसे तैलादिकों के होनेपर भी वायुसे दीपक बुझजाता है उसीप्रकार आगन्तुक मृत्यु भी प्राणोंको नाशकरती है आगन्तुक मृत्युओंका निवारण होसक्ता है क्योंकि ऐसाही सुश्रुत में धन्वन्तरि जी ने कहा है कि रस और मन्त्रके जाननेवाले वैद्य और पुरोहित यत्नपूर्वक दोष और आगन्तुक हेतुओं से राजाकी सर्वदा रक्षा करें, दोष अर्थात् निषिद्ध आहार विहारसे विकारको प्राप्त रोगके उत्पन्न करनेवाले वात पित्त और कफ और आगन्तुक अर्थात् अत्यन्त बलवान् शत्रु आदिसे युद्धादिक—अब यह प्रश्न करते हैं कि वैद्य और पुरोहित किस प्रकार से सौ आगन्तुक मृत्युओंको निवारण करसक्ते हैं इसका उत्तर यहहै कि वैद्य रसक्रिया में चतुर और पुरोहित मंत्रमें चतुर होते हैं पहिले वैद्य दिनचर्य्या रात्रिचर्य्या और ऋतुचर्य्या में कहेहुए आहार विहारोंसे वात पित्त कफ धातु और मलोंकी समता रखताहै फिर रस के जानने से मृत्युंजयादिक रसोंके द्वारा निषिद्ध आहार विहार से कोपको प्राप्त दोषों से उत्पन्नहुए मृत्यु के कारणरूप विकारों को नाश करता है और पुरोहित या मंत्री अच्छी बुद्धि देनेके द्वारा मृत्यु के कारणरूप निषिद्ध व्यवहारों से राजा को निवारण करता है इससे आगन्तुक मृत्युओं का तो निवारण होसक्ता है परन्तु अवश्य होनेवाली कालसंयुक्त मृत्युका निवारण नहीं होसक्ताहै ॥ २७ ॥

अथायुर्विचारः ॥

भिषगादौपरीक्षेतरुग्णस्यायुःप्रयत्नतः।ततआयुषिविस्तीर्णेचिकित्सासफलाभवेत्॥२८॥

आयुका विचार ॥

वैद्य पहले रोगीकी आयुकी परीक्षा यत्नपूर्वक करे क्योंकि आयुके दीर्घ होनेही में चिकित्सा सफल होती है ॥ २८ ॥

तत्रदीर्घायुषोलक्षणानि ॥

सौम्यादृष्टिर्भवेद्यस्यश्रोत्रंवक्त्रन्तथैवच । स्वादुङ्गन्धंविजानातिससाध्योनात्रसं शयः ॥ पाणिपादौचयस्योष्णौदाहःस्वल्पतरोभवेत् । जिह्वातुकोमलायस्यसरोगीनविन श्यति ॥ स्वेदहीनोज्वरोयस्यश्वासोनासिकयाचरेत् । कण्ठश्चकफहीनःस्यात्सरोगी जीवतिध्रुवम् ॥ यस्यनिद्रासुखेनस्यात् शरीरंद्युतिमद्भवेत् । इन्द्रियाणिप्रसन्नानिसरो गीनैवनश्यति ॥ २९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दीर्घायुके लक्षण ॥

जिसके दृष्टि कान तथा मुख में कोई विकार न होय और जो अच्छी बुरी गंधका ज्ञान करसक्ता हो वह निस्सन्देह साध्यहै जिसरोगी के हाथ पैर उष्णहों थोडा दाहहो और जिह्वा कोमलहो वह अवश्य जीताहै जिस रोगी के स्वेदरहित ज्वरहो नासिकाके द्वारा श्वास ले और कण्ठमें कफ न हो वह अवश्य जीताहै जिस रोगीको सुखपूर्वक निद्रा आवै शरीर में कान्तिहो और संपूर्ण इन्द्रिय प्रसन्नहों वह नहीं मरता है ॥ २६ ॥

अथस्वल्पायुषोलक्षणानि ॥

शरीरशीलयोर्यस्यप्रकृतेर्विकृतिर्भवेत्। तदरिष्टंसमासेनव्यासतश्चनिबोधमे ॥ शृणोतिविविधान्शब्दान्विपरीतान्शृणोतिच। योनशृणोतिचाकस्मात्तंवदन्तिगतायुषम् ॥ यस्तूष्णमिवगृह्णातिशीतमुष्णञ्चशीतवत्। उष्णगात्रोऽतिमात्रंयोभृशंशीतेनकम्पते ॥ (तमपिगतायुषंवदन्तीत्यन्वयः) प्रहारंनैवजानातियोगच्छेदन्यथापिवा। पांशुनेवावकीर्णानियश्चगात्राणिमन्यते॥ वर्णान्यभावोराज्योवायस्यगात्रेभवंतिहि। स्नातानुलिप्तंयञ्चापिभजंतेनीलमक्षिकाः ॥ विपरीतेनगृह्णातिरसान्यश्चोपयोजितान् । योवारसान्नसंवेत्तितंगतासुम्प्रचक्षते ॥ सुगंधंवेत्तिदुर्गंधंदुर्गंधञ्चसुगंधवत्। गृह्णातियोऽन्यथागंधंशांतेदीपेनिरामयः ॥ रात्रौसूर्यंज्वलंतंवादिवावाचंद्रवर्चसम्। दिवाज्योतींषियश्चापिज्वलितानीवपश्यति ॥ दिवावाचंद्रवर्चसम् । सूर्य्यमित्यन्वयः ॥ ज्योतींषिनक्षत्राणि। विद्युत्वतोऽसितान्मेघान्गगनेनिर्घनेघनान् ॥ विमानयानप्रासादैर्यश्चसंकुलमम्बरम् ॥ यश्चानिलंमूर्त्तिमंतमंतरिक्षेऽवलोकते। धूमनीहारवासोभिरावृतामिवमेदिनीम् ॥ प्रदीप्तमिवयोलोकंयोवास्तुतमिवाम्भसा। भूमिमष्टापदाकारांलेखाभिर्यश्चपश्यति ॥ योनपश्यतिऋक्षाणियश्चदेवीमरुंधतीम् । ध्रुवमाकाशगङ्गाञ्चतंवदंतिगतायुषम् ॥ आदर्शेऽम्बुनिघर्मेवाछायांयश्चनपश्यति । पश्यत्येकांगहीनांवाविकृतांवान्यसत्त्वजाम् ॥ श्वकाककङ्कगृध्राणांप्रेतानांयक्षरक्षसाम्। आतुरोलभतेमृत्युंस्वस्थोव्याधिमवाप्नुयात् ॥ ह्रीश्रियौनश्यतोयस्यतेजओजःस्मृतिप्रभा (प्रतिभा) अकस्माद्भजंतेयंसगतासुरसंशयम्। यस्याधरौष्ठौपतितौक्षिप्तश्चोर्ध्वंतथोत्तरः ॥ उभौवाजाम्बवाभासौदुर्लभंतस्यजीवितम्। आरक्तादशनायस्यश्यावावास्युःपतंतिवा ॥ खञ्जनप्रतिभावापितंगतायुषमादिशेत् । कृष्णातथानुलिप्ताचजिह्वाशूनाचयस्यवै ॥ कर्कशावाभवेद्यस्यसोऽचिराद्विजहात्यसून्।कुटिलास्फुटितावापिशुष्कावायस्यनासिका।अवस्फूर्ज्जतिभग्नावासनजीवतिमानवः ॥ (स्फूर्ज्जतिश्वासवेगेनोच्चैःशब्दंकरोतीत्यर्थः) संक्षिप्तेविषमेस्तब्धेरूक्षेसास्रेचलोचने। स्यातांपरिस्रुतेयस्यसगतायुर्नरोध्रुवम् ॥ केशाःसीमंतिनोयस्यसंक्षिप्तेविनतेभ्रुवौ। लुठंतिचाक्षिपक्ष्माणिसोऽचिराद्यातिमृत्यवे ॥ (लुठंतिपतंति) नाहरत्यन्नमास्यस्थंनधारयतियःशिरः। एकाग्रदृष्टिर्मूढात्मासद्यःप्राणान्विमुञ्चति ॥ उत्था

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्यमानोबहुशःसंमोहंयोधिगच्छति । बलवानूदुर्बलोवापितंयाप्यंभिषगादिशेत् ॥ निद्रानिरंतरंयस्ययोजागर्तिचसर्व्वदा । मुह्येद्वावक्तुकामश्चप्रत्याख्येयःसजानता ॥ उत्तरौष्ठञ्चयोलिह्यादुत्कारांश्चकरोतियः । प्रेतैर्वाभाषतेसायंप्रेतरूपंतमादिशेत् (उत्कारानूहस्तपादादिविक्षेपान्)खेभ्यश्चरोमकूपेभ्योयस्यरक्तंप्रवर्त्तते॥ पुरुषस्यात्रिषार्त्तस्य ससद्योजीवितंत्यजेत् । सम्यक्चिकित्स्यमानस्यविकारोयोऽभिवर्द्धते ॥ प्रक्षीणबलमांसस्यलक्षणंतद्गतायुषः ॥ ३० ॥

अल्पायु के लक्षण ॥

जिसके शरीर और स्वभावकी प्रकृति बदल जाय यह संक्षेपसे अरिष्टहै और इसका विस्तारपूर्वक वर्णन करतेहैं कि जो शब्दके न होने परभी अनेक प्रकार के शब्द सुने अथवा विपरीत शब्दोंको सुने अथवा शब्दोंके होनेपरभी एकाएकी न सुने उसको गतायु(शीघ्रमरनेवाला)कहते हैं जो उष्णको शीत के समान तथा शीतको उष्ण के समान ग्रहण करे और जो अत्यन्त उष्णशरीरवाला भी शीतसे कांपे उसको भी गतायु कहते हैं जिसके चोटलगनेसे भी पीडा न हो जो स्वभावके विपरीत कार्य्य करे अपने शरीरको धूल से लिपटा हुआ जाने जिसके अंगोंका वर्ण बदल जाय अथवा रेखा सी पड जायँ स्नानकरने और चन्दनादिक के लगानेपरभी जिसके शरीर पर नीलीमक्खी बैठै और जो दिये हुए रसोंको विपरीत जाने अथवा रसोंका ज्ञान न हो उसको गतायु कहतेहैं जो वातादि दोषों के शान्त होजाने से रोग रहित हुआ सुगंध को दुर्गन्ध और दुर्गन्धको सुगन्धजाने रात्रि में ज्वलित सूर्य्य को तथा दिन में चन्द्रमा की किरणको अथवा जलते हुए नक्षत्रों को देखै निर्मल आकाशमें बिजली सहित काले मेघोंको देखे विमानकी सवारी और महलोंसे परिपूर्ण आकाश देखे आकाशमें मूर्तिमान् वायुका दर्शन करे धुआं पाला तथा वस्त्रों से ढकीहुईके समान पृथ्वी को देखे जगत्को जलता हुआ अथवा पानीसे बहता हुआ सा देखे लकीरों से चौपडसी बिछीहुई पृथ्वी को देखे और नक्षत्र अरुन्धती देवी ध्रुव तथा आकाशगंगा को न देखे उसको गतायु कहते हैं जो दर्पणमें जल में अथवा धूपमें छाया को नहीं देखताहै और जो देखताहै तो एक अंगसे रहित विकारयुक्त अथवा कुत्ता काक कंक (उजली चील) गृध्र प्रेत यक्ष राक्षस आदिक अन्य जीवोंके समान अपनी छायाको देखताहै वह जो रोगी होय तो मृत्यु को प्राप्त होताहै और अच्छा हो तो रोगी होजाता है जिस की लज्जा श्री तेज ओज स्मृति और प्रतिभा (सूझबूझवाली बुद्धि) अकस्मात् नष्ट होजावे और लज्जादि रहित पुरुषको अकस्मात् लज्जादिक प्राप्त होजायँ उसको निस्सन्देह गतायु जानना चाहिये जिसके दोनों ओष्ठ लटक पडते हैं अथवा ऊपरका ओष्ठ ऊंचेको उठजाता है या दोनों ओष्ठ जामन के रंग के समान रंगवाले होजाते हैं उसका जीना दुर्लभ है जिसके दांत रक्तवर्ण श्यामवर्ण अथवा खंजन के समान वर्णवाले होजायँ या एकाएकी गिरपडें उसको गतायु जानना चाहिये जिस की जिह्वा काली जकडी हुई लिपीहुई सूजन युक्त अथवा कठोर होजाय वह भी शीघ्र प्राणों को त्याग करताहै जिसकी नाक टेढ़ी फटी हुई सूखी टूटी अथवा श्वासके वेगसे उच्चशब्द करती हो वह मनुष्य नहीं जीताहै जिसके नेत्र भीतर को धसेहुए विषम (एक बडा एकछोटा) कठोर रूखे और रुधिर करके सहितहों अथवा बहतेहों उसको निस्सन्देह गतायु जानना चाहिये जिसके बालबंधेहुएसे होजायँ भौंह छोटी तथा झुकी हुई होजायँ और नेत्रोंके पलक गिरपडें वह शीघ्रही प्राणों को त्याग करताहै

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो मुखमें रक्खीहुई चीज़को निगल न सके शिरको अच्छे प्रकारसे धारण न करसके और जिसकी दृष्टि एकाग्रहो चैतन्य शक्ति जातीरहै वह शीघ्रही प्राणों को त्याग करताहै जो उठाने से बारम्बार मूर्च्छा को प्राप्त होताहै वह रोगी बलवान् हो चाहै निर्बल हो बुद्धिमान् वैद्य उसका त्याग करदे जो वह बराबर सोवे अथवा जागे और कुछ कहने की इच्छासे मोहको प्राप्तहो उस रोगी को बुद्धिमान् वैद्य शीघ्र त्यागे जो ऊपर के ओष्ठको चाटे हाथ पैरोंको फेंके और सायंकाल में प्रेतोंसे बातेंकरे उस रोगीको प्रेतरूप जानना चाहिये विषकी पीडाके विना जिस रोगीके रोमोंसे रुधिर बहे वह शीघ्रही प्राणोंको त्याग करताहै बल और मांस की क्षीणतावाले रोगीकी अच्छेप्रकार चिकित्सा करनेपर भी जो विकार बढ़ताही जाय तो गतायुका लक्षण जानना चाहिये ॥ ३० ॥

भूताःप्रेताःपिशाचाश्चरक्षांसिविविधानिचामरणाभिमुखंजन्तुमुपसृत्यचनित्यशः॥तानि भेषजवीर्य्याणिप्रतीच्छन्तिजिघांसया॥तस्मात्मोघाःक्रियाःसर्वाभवन्त्येवगतायुषः ३१॥

भूत-प्रेत-पिशाच और अनेक प्रकारके राक्षस आकर मारने की इच्छा से गतायुपुरुषकी औषधियोंके वीर्य्यको हरलेते हैं इससे सम्पूर्ण क्रिया व्यर्थ होजाती हैं ॥ ३१ ॥

नन्वायुषिसतिचिकित्सायाःसाफल्यमुक्तम् । आयुश्चेदस्तितदातदेवजीवनहेतुः॥किं चिकित्साविधानंतत्रोच्यते । आयुषिसतिचिकित्सायाःफलंवेदनानिग्रहः ॥ (उक्तञ्च) आयुष्मान्पुरुषोजीवेत्सव्यथोभेषजंविना । भेषजेनपुनर्ज्जीवेत्सएवहिनिरामयः ॥ किञ्च । आयुषिसत्यपिरोगीचिकित्सांविनाउत्थातुंनशक्नोति (यतआहचरकः) सतिचायुषिनोपायंविनोत्थातुंक्षमोरुजो ॥ दर्शितश्चात्रदृष्टान्तःपङ्कलग्नोयथागजः । किञ्च ॥ चिकित्सांविनायुष्मानप्यवसीदति । यतआहसएव ॥ सतिचायुषिनष्टःस्यादामयैश्चाचिकित्सितः । यथासत्यपितैलादौदीपोनिर्व्वातिवात्यया ॥ अतएवोक्तम् । साध्यायाप्यत्वमायान्तियाप्यागच्छन्त्यसाध्यताम्॥घ्नन्तिप्राणानसाध्यास्तुनराणामक्रियावतामिति। चिकित्सातुअनिश्चितायुषोऽपिकर्त्तव्या (यतआह) तावत्प्रतिक्रियाकार्य्यायावच्छ्वसितिमानवः ॥ कदाचिद्दैवयोगेनदृष्टाऽरिष्टोऽपिजीवति । इतितुयस्यासाध्यत्वंसन्दिग्धंतंप्रत्युक्तम्॥येषुत्वसाध्यताशास्त्रेणानुभवेनविनिश्चितास्तेपुनर्न्नचिकित्स्याः। यतउक्तम् ॥ सद्वैद्यास्तेनयेसाध्यानारभन्तेचिकित्सितुमिति ॥ ३२ ॥

अब यह सन्देह होताहै कि आयुके होनेपर चिकित्साकी सफलता कही तब जो आयुहै तो वही जीवनका कारण होजायगी फिर औषधि करनेसे क्या इसका उत्तर यहहै कि आयुके होनेपरभी चिकित्साका फल पीडाका रोकना है और कहाभी गयाहै कि आयुके होनेपरभी औषधिके विना शरीर पीडायुक्त होकर सजीव रहताहै और औषधि करनेसे नीरोगी होकर जीता है किन्तु आयुके होनेपरभी रोगी पुरुष चिकित्सा के विना उठ नहीं सक्ता और ऐसाही चरकने कहाहै कि जिसप्रकार कीचड़में फँसाहुआ हाथी विना किसी सहारेके उठ नहीं सक्ता है उसीप्रकार आयुके होनेपरभी विना किसी उपाय रूप औषधीके रोगसे नहीं उठ सक्ता है और आयुके होनेपरभी चिकित्सा या औषधिके विना मृत्यु होजाती है क्योंकि चरकने कहाहै कि जिसप्रकार तैलादिकों के होनेपरभी वायुके द्वारा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दीपक बुझजाताहै इसीप्रकार आयुके होनेपर भी चिकित्साके विना रोगोंसे प्राण नष्ट होजातेहैं इसी से कहागया है कि औषधि न करने से साध्य याप्य होजाते हैं याप्य असाध्य होजाते हैं और असाध्य रोगोंसे मृत्युको प्राप्त होजाते हैं जिसकी आयुका निश्चय न हो उसकी भी चिकित्सा करनी चाहिये क्योंकि कहागया है कि जबतक मनुष्यका श्वासरहै तबतक चिकित्सा करनी चाहिये कदाचित् दैव- योगसे अरिष्टके लक्षणोंके होनेपर भी प्राण बचजायँ परन्तु यह तो जिसके असाध्य होने में सन्देह है उसके लिये कहागया है और जिनकी असाध्यता शास्त्र और अनुभवके द्वारा निश्चय करलीहो उन की चिकित्सा नहीं करनी चाहिये ऐसाही कहा भी गयाहै कि जो असाध्यों की चिकित्सा करते हैं वह सद्वैद्य नहीं है ॥ ३२ ॥

अथ द्रव्यम् ॥

सर्वेद्रव्यमपेक्षन्तेरोगिप्रभृतयोयतः। विनावित्तंनभैषज्यंचिकित्साङ्गंततोधनम्॥३३॥

द्रव्यका वर्णन ॥

रोगी आदिक सब द्रव्यकी अपेक्षा करते हैं क्योंकि धनके विना औषधि नहीं होसक्ती इससे धन भी चिकित्सा का अंग है ॥ ३३ ॥

अथ परिचारकस्य लक्षणम् ॥

स्निग्धोऽजुगुप्सुर्बलवान्युक्तोव्याधितरक्षणे । वैद्यवाक्यकृदश्रान्तोयुज्यतेपरिचार कः॥स्निग्धःप्रीतःअजुगुप्सुःअनिन्दकः ॥ ३४ ॥

सेवकका लक्षण ॥

प्रीतियुक्त अनिन्दक—बलवान्—रोगीकी रक्षाकरने में युक्त—वैद्यके वाक्यके अनुसार कार्य्य करने वाला और परिश्रमी ऐसा पुरुष रोगीका सेवक होना चाहिये ॥ ३४ ॥

अथ भेषजस्यलक्षणम् ॥

वैद्योव्याधिंहरेद्येनतद्द्रव्यंप्रोक्तमौषधम्। तद्यादृशमवश्यंस्याद्रोगघ्नन्तादृशंब्रुवे॥३५॥

औषधि का लक्षण ॥

वैद्य जिस वस्तु से रोगको नाश करता है उस वस्तुको औषधि कहते हैं जिस प्रकारकी औषधि से निस्सन्देह रोग नाश होताहै उसको कहते हैं ॥ ३५ ॥

तत्रौषधग्रहणपरिभाषा ॥

प्रशस्तदेशेसञ्जातंप्रशस्तेऽहनिचोद्धृतम् । अल्पमात्रंबहुगुणंगन्धवर्णरसान्वित म् ॥ दोषघ्नमग्लानिकरमधिकंनविकारियत् । समीक्ष्यकालेदत्तञ्चभेषजंस्याद्गुणा वहम् ॥ ३६ ॥

औषधिके ग्रहण करनेकी परिभाषा ॥

अच्छे देशमें उत्पन्न हुई—अच्छे समय में उखाडीगई थोडी मात्रासे बहुत गुण देनेवाली गन्ध वर्ण तथा रसकरके युक्त दोषकी नाशक ग्लानिरहित और अधिक खाने से भी दोष की नहीं करनेवाली औषधि विचारपूर्वक समयपर दीगई गुणकारी होतीहै ॥ ३६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आग्नेयाविन्ध्यशैलाद्याःसौम्योहिमगिरिःस्मृतः। अतस्तदौषधानिस्युरनुरूपाणिहेतुभिः॥ आग्नेयाःअधिकाग्न्यांशाःसौम्यःअधिकसोमांशः। औषधयएवौषधानि॥ अत्रस्वार्थेअण्। अनुरूपाणि सदृशानि॥ अन्येष्वपिप्ररोहन्तिवनेषूपवनेषुच। गृह्णीयात्तानिसुमनाःशुचिःप्रातःसुवासरे॥ आदित्यसम्मुखोमौनीनमस्कृत्यशिवंहृदि। साधारणधराद्रव्यंगृह्णीयादुत्तराश्रितम्॥ साधारणधराद्रव्यं सर्वभूमिभवन्द्रव्यम्॥ उत्तराश्रितंस्वस्मात्उत्तरदिग्भवम्। वल्मीककुत्सितानूपश्मशानोषरमार्गजाः॥ जन्तुवह्निहिमव्याप्तानौषध्यःकार्य्यसाधिकाः॥ ३७॥

विन्ध्यादिक पर्वत अधिक अग्निके गुणसेयुक्त और हिमालयादि पर्वत अधिक जल के गुणवाले होते हैं इससे उनमें उत्पन्न हुई औषधि भी उन्हींके समान गुणवाली होती हैं और भी बाग तथा जंगलोंमें औषधि उत्पन्न होतीहैं उनको प्रसन्नचित्त पवित्र सूर्य्यके सन्मुख अच्छे दिन में शिवजीको हृदयमें प्रणाम करके प्रातःकाल के समय मौन होकर उखाडे अपने से उत्तरकी ओर सम्पूर्ण पृथ्वी में उत्पन्न हुई वस्तुको ग्रहण करे सर्पकी बामी अपवित्र स्थान बहुत जल युक्त स्थान श्मशान ऊषर तथा मार्ग में उत्पन्न हुई और कीडे अग्नि तथा पाले से व्याप्त औषधियों से कार्य्य सिद्ध नहीं होता॥ ३७॥

शरद्यखिलकार्य्यार्थंग्राह्यंसरसमौषधम्। विरेकवमनार्थन्तुवसन्तान्तेसमाहरेत्॥ वसन्तान्तेवसन्तमध्येसमाहरेत्संगृह्णीयात्। अतिस्थूलजटायास्स्युस्तासांग्राह्यास्त्वचोध्रुवम्॥ गृह्णीयात्सूक्ष्ममूलानिसकलान्यपिबुद्धिमान्। अन्यच्च॥ महान्तियेषांमूलानिकाष्ठगर्भाणिसर्व्वतः। तेषान्तुवल्कलंग्राह्यंह्रस्वमूलानिसर्व्वशः॥ न्यग्रोधादेस्त्वचोग्राह्याःसारःस्याद्बीजकादितः। तालीसादेश्चपत्राणिफलंस्यात्त्रिफलादितः॥क्वचिन्मूलंक्वचित्कन्दःक्वचित्पत्रंक्वचित्फलम्।क्वचित्पुष्पंक्वचित्सर्व्वंक्वचित्सारःक्वचित्त्वचः॥ चित्रकंसूरणंनिम्बोवासाचत्रिफलाक्रमात्। धातकीकण्टकारीचखदिरःक्षीरपादपः३८॥

शरदृतु में सम्पूर्ण कार्य्यों के लिये सरस औषधि लेनी चाहिये वमन और विरेचन के लिये औषधि वसन्तऋतु में लेनी चाहिये जिन वृक्षोंकी जड बहुतमोटीहो उनकी छाल लेनीचाहिये और छोटी जडवाले वृक्षों का सर्वांग लेना चाहिये और भी कहाहै कि जिन वृक्षों की जड मोटी और काष्ठसे भरीहो उनकी छाल लेनी चाहिये और छोटी जडवाले वृक्षों की जड लेनी चाहिये बर्गद आदि वृक्षोंकी त्वचा विजयसारआदिक वृक्षों के सारांश तालीस आदिक वृक्षों के पत्र और त्रिफला आदिकों से फल लेना चाहिये किसीकी जड किसी का कन्द किसीका पत्र किसीका फल किसीका पुष्प किसीका सर्वांग किसीका सारांश और किसीकी छाल लेनी चाहिये जैसे चीतेकी छाल सूरन का कन्द (ज़िमींकन्द) नींव और अडूसे के पत्ते त्रिफलाके फल धवई के फूल भटकटैयाका सर्वांग कत्थेका सारांश और बर्गद आदिकों की छाल लेनी चाहिये॥ ३८॥

क्वचिन्निम्बस्यगृह्णीयात्पत्राभावेत्वचामपि। बालंफलन्तुबिल्वस्यपक्कमारग्वधस्यच॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अङ्गेऽनुक्तेजटाग्राह्याभागेऽनुक्तेऽखिलंसमम् । पात्रेऽनुक्तेमृदःपात्रंकालेऽनुक्तेत्वह मुखम् ॥ ३६ ॥

कहीं २ नींब के पत्तों के अभावमें छालभी ग्रहण की जाती है-बेलका कच्चाफल लेना चाहिये और अमलतास का पक्काफल लेना चाहिये जहांपर औषधिका अंग न कहाहो वहां उसकी जडलेनी चाहिये और जहां औषधियों के भाग न कहेहों वहां समभाग लेना चाहिये पात्र न कहाहो तो मृत्तिका का पात्र लेना चाहिये समय न कहाहोवे तो प्रातःकाल लेना चाहिये ॥ ३६ ॥

नवान्येवहियोज्यानिद्रव्याण्यखिलकर्मसु । विनाविडङ्गकृष्णाभ्यांगुडधान्याज्यमाक्षिकैः॥ (धान्यमन्नम्) पुराणन्तुप्रशस्तंस्यात्ताम्बूलङ्काञ्जिकंतथा । शुष्कन्नवीनद्रव्यन्तुयोज्यंसकलकर्म्मसु ॥ आर्द्रन्तुद्विगुणंयुञ्ज्यादेषसर्व्वत्रनिश्चयः ॥ ४० ॥

सम्पूर्ण कार्यों में वायविडंग-पीपल-गुड अन्न घृत तथा मदको छोडकर सब वस्तु नवीन लेनी चाहिये और ताम्बूल तथा कांजी भी प्राचीनही श्रेष्ठ होती है सम्पूर्ण कार्य्यों में नवीन और सूखी वस्तु लेनी चाहिये और जो गीली लेतो दूनी मात्रा लेनी चाहिये यह सर्वत्र निश्चयहै ॥ ४० ॥

गुडूचीकुटजोवासाकूष्माण्डश्चशतावरी ॥ अश्वगन्धासहचरः शतपुष्पाप्रसारिणी। प्रयोक्तव्यास्सदैवार्द्रा द्विगुणंनैवकारयेत् ॥ सहचरःकुरण्टकःकटसरैआ इति लोके । वासानिम्बपटोलकेतकबलाकूष्माण्डकेंदीवरी वर्षाभूःकुटजाश्चकन्दसहितास्सापूतिगन्धास्मृता । ऐन्द्रीनागबलाकुरण्टकपुरच्छत्रामृतासर्व्वदा सार्द्राएवतुतत्क्वचिद् द्विगुणिताकार्यैषुयोज्याबुधैः ॥ ऐन्द्री इन्द्रवारुणी । वरी शतावरी । पूतिगन्धा गन्धप्रसारणी। नागबलागुलशकरी । कुरण्टकः पीतपुष्पकटसरैआ । पुरो गुग्गुलः ॥ ४१ ॥

गिलोय-कुरैया-अडूसा-पेठा-सतावर-असगन्ध-कटसरैया-सौंफ और आकाशबेल यह सब गीली लेनी चाहिये और इनकी मात्रा दूनी नहीं होती- अडूसा- नींब- परवल- केतकी-बरियारा- पेठा इन्द्रायन-सतावर- गदहपूरना-कुरैया- कन्दशाक- गन्धप्रसारणी- इन्द्रवारुणी- गुलशकरी- कटसरैया गूगल, सौंफ और गिलोय यह भी संपूर्ण गीली लेनी चाहिये और इनकी मात्रा कहीं २ दूनीभी करदेनी चाहिये ॥ ४१ ॥

घृतन्तैलञ्चपानीयं कषायंव्यञ्जनादिकम् । पक्वाशीतीकृतंचोष्णं तत्सर्व्वंस्याद्विषोपमम् ॥ ४२ ॥

घृत, तेल- जल- कषाय- और व्यंजनादिक एकवार परिपाक करके शीतलहुये फिर उष्णकरनेसे विषके तुल्य होजाते हैं ॥ ४२ ॥ अथ द्रव्याणांपरीक्षा ॥

सूक्ष्मास्थिमांसलापथ्यासर्व्वकर्म्मणिपूजिता । क्षिप्ताम्भसि निमज्जेद्याभल्लातकस्तथोत्तमाः॥ वराहमूर्द्धवत्कन्दोवाराहीकन्दसंज्ञकः । सौवर्चलन्तुकाचाभंसैन्धवंस्फटिकप्रभम् ॥ सुवर्णच्छविकंज्ञेयंस्वर्णमाक्षिकमुत्तमम् । इन्द्रपुष्पप्रतीकाशामनोज्ञाचोत्तमामता ॥ श्रेष्ठंशिलाजतुज्ञेयंप्रक्षिप्तंनविशीर्यते । तोयपूर्णेकांस्यपात्रे प्रतानेनविवर्द्धते ॥ कर्पू

(१) सर्वाणिचार्द्राणिनवौषधानितुवीर्यवन्तीतिवदन्तिधीराः । सर्वाणिशुष्काणितुमध्यमानिशुष्काणिजीर्णानिचनिष्फलानि ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रःस्तुवरःस्निग्धः एलासूक्ष्मफलावरा॥ श्वेतचन्दनमत्यन्तंसुगन्धिगुरुपूजितम् । रक्तचन्दनमत्यन्तं लोहितम्प्रवरंमतम् ॥ काकतुण्डनिभःस्निग्धोगुरुःश्रेष्ठोऽगुरुर्मतः ॥ सुगंधिलघुरूक्षञ्चसुरदारुवरंमतम् । सरलंस्निग्धमत्यर्थं सुगंधिचगुणावहम् ॥ अतिपीताप्रशस्तातुज्ञेयादारुनिशाबुधैः । जातीफलंगुरुस्निग्धं समंशुभ्रान्तरंवरम् । मृद्वीकासोत्तमाज्ञेयायास्याद्गोस्तनसन्निभा ॥ करमर्द्दफलाकारामध्यमासाप्रकीर्त्तिता ॥ गोस्तनसन्निभा मुनक्का इतिलोके । करमर्द्दफलाकारा करौंदीदाख इतिलोके । खण्डन्तुविमलंश्रेष्ठंचंद्रकान्तिसमप्रभम् ॥ गव्याज्यसदृशंरुच्यंगंधंमधुतरम्मतम् ॥ ४३ ॥

द्रव्योंकी परीक्षा ॥

छोटी गुठलीवाली गूदेदार पानी में डालने से डूबजानेवाली हड़ सब कामों में श्रेष्ठ होती है और इसीप्रकार का भिलावां भी उत्तम होताहै शूकरके शिरके समान जो कन्द होताहै उसको वाराहीकन्द कहतेहैं काचके समान सौवर्चल (कालानोन) श्रेष्ठहै स्फटिकके समान सेंधानोन श्रेष्ठ है सुवर्ण के समान कान्तिवाली सोनामक्खी श्रेष्ठहै इन्द्रपुष्प के समान मैनसिल श्रेष्ठहै जो शिलाजीत जलसे भरेहुये पात्रमें छोडने से क्रमसे सूतके समान बढ़े और बिखरे नहीं वह उत्तम है चिकना कपूर श्रेष्ठ है इलाचियों में छोटी इलायची श्रेष्ठहै अत्यन्त सुगन्धित और भारी श्वेत चन्दन श्रेष्ठ है बहुत लाल रंगका रक्तचन्दन श्रेष्ठ है काक की टोंटके समान कान्तिवाला चिकना और भारी अगर श्रेष्ठ है सुगंधियुक्त हलका और रूखा देवदारु श्रेष्ठ है अत्यन्त सुगन्धित और चिकना सरल (एकतरहकादेवदारु) श्रेष्ठहै अत्यन्त पीले रंगवाली दारुहल्दी श्रेष्ठहै भारी चिकना भीतर से सफा जायफल श्रेष्ठहै गौके थन के समान मुनक्का श्रेष्ठ करौंदे के फल के समान मुनक्का मध्यम है निर्मल और चन्द्रकान्ति मणि के समान खांड श्रेष्ठहै गौके घृतके समान वर्णवाला रुचिकारक और सुगन्धियुक्त सहत श्रेष्ठहै ॥ ४३ ॥

अथ स्वभावतोहितानि॥

शालीनांलोहितःशालिःषष्टिकेषुचषष्टिकः। शूकधान्येष्वपियवोगोधूमःप्रवरोमतः ॥ शिम्बीधान्येष्वरोमुद्गोमसूरश्चाढकीतथा । रसेषुमधुरःश्रेष्ठोलवणेषुचसैंधवः ॥ दाडिमामलकंद्राक्षाखर्ज्जूरंचपरूषकम् । राजादनंमातुलुङ्गंफलवर्गेषुशस्यते ॥ परूषकंफालसा इतिलोके। राजादनं खिरणी इतिलोके ॥ मातुलुङ्गं बिजउरा इतिलोके । पत्रशाकेषु वास्तूकंजीवन्तीपोतिकवरा ॥ पटोलंफलशाकेषुकन्दशाकेषुसूरणम् । एणःकुरङ्गोहरिणोजांगलेपुप्रशस्यते ॥ पक्षिणांतित्तिरिर्लावोवरोमत्स्येषुरोहितः ॥ हरिणस्ताम्रवर्णःस्यादेणःकृष्णतयामतः। कुरंगस्ताम्रउद्दिष्टोहरिणाकृत्तिकोमहान् ॥ जलेषुदिव्यंदुग्धेषु गव्यमाज्येषुगोभवम् । तैलेषुतिलजंतैलमैक्षवेषुसिताहिता ॥ ४४ ॥

स्वभावसे हितकारी वस्तु ॥

धानों में लालधान श्रेष्ठहै और षष्टिकधान्यों में साठीके चावल श्रेष्ठहैं शूक धान्यों (तुषयुक्तधान्यों)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में जो गेहूं श्रेष्ठहैं फलीवाले धान्यों में मूंग मसूड और अरहड श्रेष्ठहै रसोंमें मधुर रस श्रेष्ठहै लवणों में सैंधव श्रेष्ठहै फलोंमें अनार आंवला मुनक्का खजूर फालसा खिन्नी और बिजौरा नींबू श्रेष्ठहैं पत्रशाकोंमें बथुआ जीवन्ती और पोई श्रेष्ठहै फल शाकोंमें परवल श्रेष्ठहै कन्द शाकोंमें जिमीकन्द श्रेष्ठहै जंगली जीवोंके मांसमें एण कुरंग और हरिण श्रेष्ठहै पक्षियोंमें तीतर और बटेर श्रेष्ठ है और मछलियों में रोहू श्रेष्ठहै ताम्रवर्णवाले मृगको हरिण कृष्णवर्णवाले को एण और ताम्रवर्ण वाले मृगकी आकृतिके समान और उससे कुछ बड़े मृगको कुरंग कहतेहैं जलोंमें वर्षाका जल श्रेष्ठहै दुग्धोंमें गौका दूध श्रेष्ठहै घृतोंमें गौकाघृत श्रेष्ठहै तेलोंमें तिलका तेल श्रेष्ठहै ईषकी वस्तुओंमें चीनी श्रेष्ठहै ॥ ४४ ॥

अथ स्वभावादहितानि ॥

शिम्बीषुमाषान्ग्रीष्मर्तौलवणेष्वौषरंत्यजेत्। फलेषुलकुचंशाकेसार्षपंनहितम्मतम्॥
गोमांसंग्राम्यमांसेषुनहितंमहिषीवसा। मेषीपयःकुसुम्भस्य तैलन्त्याज्यञ्चफाणितम्॥
इक्षुरसःपरिपक्वोयोऽर्द्धघनफाणितम्। तद्धिज्ञोयाराब इतिलोके॥ ४५ ॥

स्वभावसे अहितकारी ॥

शिम्बी धान्यों में उर्द ग्रीष्मऋतु में अहित हैं, लवणों में पांगात्यागने के योग्य है, फलों में बड़हर और सागों में सरसों का साग अहित है- गांवके पशुओं के मांसमें गोमांस और भैंसकी चरबी अहित है, भेडीका दूध कुसुमका तेल, ईख की वस्तुओं में फाणित (ईखकापकाया हुआ रस आधा गाढ़ाहुआ फाणित अर्थात् राब कहाता है) अहित है ॥ ४५ ॥

अथ संयोगविरुद्धानि ॥

मत्स्यमानूपमांसञ्चदुग्धयुक्तंविवर्ज्जयेत्। कपोतंसर्षपस्नेहंभर्ज्जितम्परिवर्ज्जयेत्॥
मत्स्यानिक्षोर्विकारेणतथाक्षौद्रेणवर्ज्जयेत्। सक्तूनुमांसपयोयुक्तानुष्णैर्दधिविवर्ज्जयेत् ॥
उष्णैर्नभोऽम्बुनाक्षौद्रंपायसंकृशरान्वितम् । रम्भाफलंत्यजेत्तक्रंदधिबिल्वफलान्वितम्॥ दशाहमुषितंसर्पिःकांस्येमधुघृतंसमम्। कृतान्नञ्चकषायञ्चपुनरुष्णीकृतंत्यजेत्॥
एकत्रबहुमांसानि विरुध्यन्तेपरस्परम्। मधुसर्पिर्वसातैलंपानीयंवापयस्तथा ॥ ४६ ॥

संयोग से अहित करनेवाली वस्तु ॥

मत्स्य और अनूप मांस दूधके साथ न भोजन करे, सरसों के तेल से भुनेहुए कबूतर के मांस को त्याग करदे, गुड आदिक ईखके पदार्थ अथवा सहत के साथ मछली न खाय–मांस और दूधके साथ सत्तू–और गरम चीजों के साथ दही न खाय–गरम वस्तुओं के साथ वर्षाका जल और सहत न खाय–खिचड़ी के साथ दूधकी वस्तु और केलेका फल न खाय–बेलके साथ दही और मठा न खाय–दशदिन तक कांसेके पात्र में धराहुआ घी अथवा सहत के समभाग न खाय–पका अन्न और क्काथ फिर पकाकर न खाय–बहुत प्रकार के मांस एकही में मिलाकर न खाय–सहत–घृत चरबी-तेल–जल और दूध एक में मिलाकर न खाय ॥ ४६ ॥

अथ भेषजग्रहणसङ्केतः ॥

लवणंसैन्धवंप्रोक्तंचन्दनंरक्तचन्दनम्। चूर्णलेहासवस्नेहाःसाध्याधवलचन्दनैः ॥
कषायलेपयोःप्रायोयुज्यतेरक्तचन्दनम् । अंतःसम्मार्ज्जनेज्ञेयाह्यजमोदायवानिका ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बहिःसम्मार्ज्जनेसैववविज्ञातव्याजमोदिका ॥ पयःसर्पिःप्रयोगेषुगव्यमेवहिगृह्यते । स कृद्रसोगोमयकंमूत्रंगोमूत्रमुच्यते ॥ ४७ ॥

औषधि के ग्रहण का संकेत ॥

लवण कहने से सैंधानोन–चन्दन कहने से रक्तचन्दन–परन्तु चूर्ण–अवलेह–आसव और स्नेह में श्वेतचन्दन कषाय तथा लेप में प्रायः रक्तचन्दन डालाजाता है–खाने पीनेके विषय में अजमोद कहने से अजवाइन लेनी चाहिये और लेपादिकोंमें वही अजमोद लेनाचाहिये–दूध और घी कहने से गौकादूध और घी लेना चाहिये–मलकारस और मूत्र लिखाहो तो गौके गोबर का रस और गौका मूत्र लेना चाहिये ॥ ४७ ॥

प्रतिनिधिः ॥

चित्रकाभावतोदन्तीक्षारःशिखरिजोऽथवा । अभावेधन्वयासस्यप्रक्षेप्यातुदुरालभा ॥ (शिखरीअपामार्गः ।) तगरस्याप्यभावेतुकुष्ठंदद्याद्भिषग्वरः । मूर्वाभावेत्वचोग्राह्याजिगिनीप्रभवाबुधैः ॥ अहिंस्रायाअभावेतुमानकन्दःप्रकीर्त्तितः । लक्ष्मणायाअभावेतु नीलकण्ठशिखामता ॥ वकुलाभावतोदेयंकह्लारोत्पलपङ्कजम् । नीलोत्पलस्याभावेतु कुमुदंदेयमिष्यते ॥ जातीपुष्पंनयत्रास्तिलवङ्गंतत्रदीयते । अर्कपर्णादिपयसोह्यभावे तद्रसोमतः ॥ पौष्कराभावतःकुष्ठंतथालांगल्यभावतः । स्थौणेयकस्याभावेतुभिषग्भिर्दीयतेगदः ॥ चविकागजपिप्पल्यौपिप्पलीमूलवत्स्मृतौ । अभावेसोमराज्यास्तुप्रपुन्नाटफलंमतम् ॥ यदिनस्याद्दारुनिशातदादेयानिशाबुधैः । सोमराजीवाकुची ॥ प्रपुन्नाटफलं चक्रमर्द्दनफलम् । दारुनिशादारुहरिद्रा । निशाहरिद्रा । रसाञ्जनस्याभावेतुसम्यग्दार्वीप्रयुज्यते ॥ सौराष्ट्र्यभावतोदेयास्फटिकातद्गुणाजनैः । सौराष्ट्रीसोरटीमाटीइतिलोके ॥ स्फटिकाफटिकरीइतिलोके । तालीशपत्रकाभावे स्वर्णतालीप्रशस्यते ॥ भार्ग्यभावेतुतालीशंकण्टकारीजटाथवा । रुचकाभावतोदद्याल्लवणंपांशुपूर्वकम् । अभावेमधुयष्ट्यास्तुधातकीञ्चप्रयोजयेत् ॥ रुचकंचौहारइतिलोके । पांशुलवणंखारीअथवा रेहइतिलोके । अम्लवेतसकाभावे चुक्रंदातव्यमिष्यते । द्राक्षायदिनलभ्येत प्रदेयंकाश्मरीफलम् ॥ तयोरभावेकुसुमं बन्धूकस्यमतंबुधैः । लवंगकुसुमंदेयं नखस्याभावतःपुनः ॥ कस्तूर्य्यभावेकङ्कोलं क्षेपणीयंविदुर्बुधाः । कङ्कोलस्याप्यभावेतु जातीपुष्पंप्रदीयते ॥ सुगन्धिमुस्तकंदेयं कर्पूराभावतोबुधैः । कर्पूराभावतोदेयंग्रन्थिपर्णंविशेषतः ॥ कुंकुमाभावतोदद्यात् कुसुम्भकुसुमंनवम् । श्रीखण्डचन्दनाभावे कर्पूरंदेयमिष्यते ॥ अभावेत्वेतयोर्वैद्यः प्रक्षिपेद्रक्तचंदनम् । रक्तचंदनकाभावे नवोशीरंविदुर्बुधाः ॥ मुस्ताचातिविषाभावे शिवाभावेशिवामता । अभावेनागपुष्पस्य पद्मकेसरमिष्यते ॥ मेदाजीवककाकोली ऋद्धिवृद्धेऽपिवासति । वरीविदार्य्यश्वगंधावाराहीश्चक्रमात्क्षिपेत् ॥ (वरीशतावरी) वाराह्याश्चतथाभावेचर्मकारालुकोमतःवाराहीकंदसंज्ञस्तु पश्चिमेगृष्टिसंज्ञकः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाराहीकंदएवान्यश्चर्म्मकारालुकोमतः । अनूपसम्भवेदेशे वराहइवलोमवान् ॥
भल्लातकासहत्वेतु रक्तचंदनमिष्यत । भल्लातभावतश्चित्रं नलश्चेक्षोरभावतः ॥ सुव
र्णाभावतःस्वर्णमाक्षिकंप्रक्षिपेत्बुधः । श्वेतंतुमाक्षिकंज्ञेयं बुधैःरजतवद्ध्रुवम् ॥ माक्षि
कस्याप्यभावेतु प्रदद्यात्स्वर्णगैरिकम् । सुवर्णमथवारौप्यं मृतंयत्रनलभ्यते ॥ तत्रकांते
नकर्म्माणि भिषक्कुर्य्याद्विचक्षणः । कांताभावेतीक्ष्णलोहं योजयेद्वैद्यसत्तमः ॥ अभावेमौ
क्तिकस्यापि मुक्ताशुक्तिंप्रयोजयेत् । मधुयत्रनलभ्येत तत्रजीर्णगुडोमतः ॥ मत्स्यण्ड्य
भावतोदद्युर्भिषजःसितशर्कराम् । असम्भवेसितायास्तु बुधैःखण्डंप्रयुज्यते ॥ क्षीराभा
वेरसोमौद्गो मासूरोवाप्रदीयते । अत्रप्रोक्तानिवस्तूनि यानितेषुचतेषुच ॥ योज्यमेकत
राभावे परंवैद्येनजानता । रसवीर्य्यविपाकाद्यैः समंद्रव्यंविचिन्त्यच ॥ युञ्ज्याद्विविधमन्य
द्वा द्रव्यानांतुरसादिवित् । योगेयदप्रधानंस्यात्तस्यप्रतिनिधिर्म्मतः ॥ यत्तुप्रधानंतस्या
पि सदृशंनैवगृह्यते । व्याधेरयुक्तंयत्द्रव्यं गणोक्तमपितत्यजेत् ॥ अनुक्तमपियुक्तंयत्
योजयेत्तद्रसादिवित् ॥ ४८ ॥

एकके बदले दूसरी वस्तु देना ॥

चीते की छालके अभाव में जमालगोटा अथवा ओंगे का खार लेना चाहिये, धमासे के अभाव में जवासा—अगर के अभाव में कूट, मरोडफली के अभाव में मजीठ की छाल, बालछड के अभाव में मानकेचू, लक्ष्मणाके अभावमें मोरशिखा, मोमलिरी के अभावमें श्वेत वा नील कमल लेना चाहिये, नीलकमल के अभाव में कुमुद, चमेली के अभाव में लौंग, आक और ढाक आदि के दूधके अभाव में उनका रस, पुष्करमूल कलहारी और कुकरौंधा इनके अभाव में कूट, चाव और गजपीपल के अभाव में पीपलामूल, बकुची के अभाव में चकोडके बीज—दारुहल्दी के अभाव में हल्दी—रसौत के अभाव में दारुहल्दी सोरठी मट्टी के अभाव में फिटकरी तालीसपत्र के अभाव में स्वर्णताली भारंगी के अभाव में तालीस अथवा भटकटैयाकी जड काले निमक के अभाव में खारी निमक मुलहठी के अभाव में धव अमलवेत के अभावमें चूक सुनक्का के अभाव में खंभारी और इन दोनों के अभाव में दुपहरिया का फूल नख के अभाव में लौंग कस्तूरी के अभाव में कंकोल और कंकोल भी न मिले तो चँवेली कपूर के अभाव में नागरमोथा और कुकरौंधा भी केसर के अभाव में नवीन कुसुम के फूल श्रीखण्ड चन्दन के अभाव में कपूर इन दोनों के अभाव में रक्त-चन्दन रक्तचन्दन के अभाव में नवीन खस अतीस के अभाव में नागरमोथा हड के अभाव में आं-वला नागकेसरके अभावमें पद्मकेसर मेदा जीवक काकोली ऋद्धि और वृद्धि के अभावमें क्रम से शतावरि विदारीकन्द असगन्ध और वाराहीकन्द वाराहीकन्द पश्चिमदेशमें गृष्टिकहाताहै और उसी को चर्मकार आलू भी कहते हैं यह अनूपदेश में उत्पन्नहोता है और इसमें सूअर केसे रोयें होते हैं भिलावे के अभावमें लालचन्दन अथवा चीता—ईखके अभाव में नरकट—सोने के अभाव में सोना-मक्खी—चांदीके अभाव में रूपामक्खी—रूपामक्खी के अभाव में सुनहरी गेरू सोने और चांदी की भस्म के अभाव में कांतीसार कान्तीसारके अभाव में फोलाद मोतीके अभाव में मोतीकीसीप सहत के अभाव में पुरानागुड मिश्रीके अभाव में चीनी और चीनी के अभावमें शक्कर और दूधके अभावमें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मूंग अथवा मसूरकारस देना चाहिये यहांपर जो वस्तु जिसके स्थानपर कही हैं उनके अभावही में वह वस्तु लेनीचाहिये—रस—वीर्य और विपाक आदिकों से द्रव्यकी समताको विचारकर अनेक प्रकारकी अन्य वस्तुभीलेवे औषधियों के संयोग में जो द्रव्य प्रधान नहीं है उस के बदले में दूसरी वस्तुलीजाती है परन्तु जो प्रधानहै उसके सदृश अन्य नहीं लीजातीहै जो द्रव्य रोगमें हितकारी न हो और समूह में कही भी होय उसका त्याग करदेना चाहिये और विना कही हुई भी रोग में हितकारी वस्तुको रसादिकोंका जाननेवाला वैद्य ग्रहण करै॥ ४८॥

इतस्तुद्रव्यगतपञ्चपदार्थकर्म्माण्याह ॥

द्रव्येरसोगुणोवीर्य्यं विपाकःशक्तिरेवच। पदार्थःपञ्चतिष्ठन्ति स्वंस्वंकुर्वंतिकर्म्मच॥ (तत्र वाग्भटः) रसाःस्वाद्वम्ललवणतिक्तोषणकषायकाः। षट्द्रव्यमाश्रितास्ते च यथा पूर्व्वंबलावहाः॥ (ऊषणः कटुः) तत्राद्यामारुतंघ्नंति त्रयस्तिक्तादयःकफम्। कषाय तिक्तमधुराः पित्तमन्येतुकुर्व्वते॥ येरसावातशमना भवंतियदितेषुवै। रौक्ष्यलाघवशै त्यानि नतेहन्युःसमीरणम्॥ येरसाःपित्तशमना भवंतियदितेषुवै। तीक्ष्णोष्णलघुताचै व नतेतत्कर्म्मकारिणः॥ येरसाःश्लेष्मशमना भवंतियदितेषुवै। स्नेहगौरवशैत्यानि नते हन्युःकफंतदा॥ ४९॥

द्रव्य में रहनेवाले पांचपदार्थों के कर्म॥

द्रव्यमें रस, गुण, वीर्य, विपाक और शक्ति यह पांच पदार्थ रहतेहैं और अपना २ कार्य्य करतेहैं वाग्भटने कहाहै कि मधुर अम्ल लवण तिक्त कटु और कषाय यह छःरस द्रव्यमें रहते हैं यह एक से एक पूर्वके क्रमसे अधिक बलके देनेवाले हैं इनमें से पहले तीन वायुको शान्तकरते हैं और तिक्तादिक तीन कफको शान्तकरते हैं और कषाय तिक्त तथा मधुर पित्तको शान्त करते हैं और बाकी तीन २ बढ़ाते हैं वातके शान्त करनेवाले रसों में जो रूखापन हलकापन और शीतलता होवे तो वह वायु को नहीं शान्त करताहै पित्तके शान्त करनेवाले रसों में जो तीक्ष्णता उष्णता और लघुता होवे तो वह पित्तको नहीं शान्त करते हैं कफ के शान्त करनेवाले रसों में जो भारी शीतल और चिकनापन होय तो वह कफको नहीं शान्त करता है॥ ४९॥

तत्रमधुररसस्य गुणाः॥

मधुरोहिरसःशीतो धातुस्तन्यबलप्रदः। चक्षुष्योवातपित्तघ्नः कुर्य्यात्स्थौल्यमल क्रमीन्॥ रसेषुप्रवरश्चापि स्निग्धःप्रीत्यायुषोर्हितः। बालवृद्धक्षतक्षीणवर्णकेशेन्द्रियौ जसाम्॥ प्रशस्तोबृंहणःकण्ठ्यो गुरुःसंधानकृन्मतः। विषघ्नःपिच्छिलश्चापि स्निग्धः प्रीत्यायुषोर्हितः॥ ५०॥

मधुररसके गुण॥

मधुररस शीतल धातु दुग्ध तथा बल करनेवाला नेत्रोंको हित वात पित्तका नाशक स्थूलता मल तथा कृमियोंका उत्पन्न करनेवाला बालक वृद्ध घायल क्षीण वर्ण केश इन्द्रिय और ओजको हितकारी है धातुओंका बढ़ानेवाला कंठको हित भारी टूटेको जोड़नेवाला विषनाशक चिकना और फिसलाहटवाला और प्रीति तथा आयु को हितकारी होता है॥ ५०॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथातियुक्तस्य मधुररसस्यगुणाः ॥

सोऽतियुक्तोज्वरश्वासगलगण्डार्बुदक्रमीन्। स्थौल्याग्निमान्द्यमेहांश्च कुर्यान्मेदःकफामयान् ॥ ५१ ॥

मधुररसके बहुत सेवन करनेके गुण ॥

बहुत सेवन कियाहुआ मधुररस ज्वर- श्वास- गलगण्ड- अर्बुद- कृमि- स्थूलता- अग्निकी मन्दता- प्रमेह- मेद और कफके रोगोंको करता है ॥ ५१ ॥

अथाम्लस्य गुणाः ॥

रसोऽम्लःपाचनोरुच्यःपित्तश्लेष्मास्रदोलघुः। लेखितोष्णोबहिःशीतःक्लेदनःपवनापहः ॥ स्निग्धस्तीक्ष्णःसरःशुक्रविबन्धानाहदृष्टिहा । हर्षणोरोमदन्तानामक्षिभ्रूविनिकोचनः ॥ लेखितःलेखनःबहिःशीतःस्पर्शेशीतः विनिकोचनःसङ्कोचनः ॥ ५२ ॥

अम्लरस के गुण ॥

अम्लरस पाचन- रुचि करनेवाला- पित्त श्लेष्मा तथा रुधिर का बढ़ानेवाला- हलका- लेखन- स्पर्श में शीतल. उष्ण- क्लेदन- वायुनाशक- चिकना- तीक्ष्ण- रेचक (दस्तावर) वीर्य्य- विबन्ध- अफरा तथा दृष्टिकानाशक-रोम तथा दांतोंको खट्टा करनेवाला और नेत्र तथा भृकुटियोंका संकोच करनेवाला होता है ॥ ५२ ॥

अथातियुक्तस्याम्लस्यगुणाः ॥

सोऽतियुक्तोभ्रमंकुर्य्यात्तृड्दाहतिमिरज्वरान् । कण्डुपाण्डुत्ववीसर्पशोथविस्फोटकुष्ठकृत् ॥ ५३ ॥

बहुत सेवन कियेहुए अम्लरसके अवगुण ॥

बहुत सेवन कियागया अम्लरस भ्रम- तृषा- दाह- तिमिर- ज्वर- खुजली, पांडु, विसर्प, सूजन विस्फोटक और कुष्ठरोगको उत्पन्न करता है ॥ ५३ ॥

अथ लवणस्यगुणाः ॥

लवणःशोधनोरुच्यःपाचनःकफपित्तदः । पुंस्त्ववातहरःकायशैथिल्यमृदुताकरः ॥ चक्षुर्नासास्यजलदःकपोलगलदाहकृत् ॥ ५४ ॥

लवणरसके गुण ॥

लवणरस संशोधन करनेवाला-रुचिकारक-पाचन-कफपित्तकरनेवाला-पुरुषार्थ तथा वात का नाशक-शरीरमें शिथिलता तथा कोमलता करनेवाला-नेत्र-नासिका तथा मुखमें जलका बढ़ानेवाला और कपोल तथा गलेमें दाह करनेवाला होता है ॥ ५४ ॥

अतियुक्तस्य लवणस्यगुणाः ॥

सोऽतियुक्तोऽक्षिपाकास्रपित्तकोठक्षतादिकृत् । बलीपलितखालित्यंकुष्ठवीसर्पतृट्प्रदः ॥ कोठोवरटाकृतदंशशोथवत् पलितंकेशशुक्लता । खालित्यंशिरसिकेशनाशः ५५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बहुत सेवन किये हुए लवण के अवगुण ॥

बहुत सेवन कियाहुआ लवण रस नेत्रोंका पकना रक्तपित्त- चकत्ते- घाव- झुर्री- बालोंकी सफेदी गंजापन- कुष्ठ- वीसर्प और तृषा इनको करता है ॥ ५५ ॥

अथ कटुगुणाः ॥

कटुरुष्णश्चतीक्ष्णश्चविशदोवातपित्तकृत्।श्लेष्महल्लघुराग्नेयःकृमिकण्डूविषापहः ॥ रूक्षस्तन्यहरश्चापिमेदःस्थौल्यापकर्षणः। अश्रुदोनासिकास्याक्षिजिह्वाग्रोद्वेजकोमतः ॥ दीपनःपाचनोरुच्यो नासिकाशोषणोभृशम् । क्लेदमेदोवसामज्जाशकृन्मूत्रोपशोषणः ॥ स्रोतःप्रकाशकोरूक्षो मेध्योवर्चोविबन्धकृत् । आग्नेयःअधिकाग्न्याशः मेध्योमेधायै हितः । वर्चोविबन्धकृत् मलवद्धंकरोति ॥ ५६ ॥

कटुरसके गुण ॥

कटुरस- उष्ण- तीक्ष्ण- विशद- वात पित्त करनेवाला- कफनाशक- हलका- अधिक अग्निके गुण वाला कृमि खुजली तथा विषकानाशक- रूखा—दूधका नाशक- मेद तथा स्थूलता का घटानेवाला आंशू बहानेवाला- नासिका- मुख-नेत्र तथा जिह्वाके अग्रभागको दुःखदेनेवाला दीपन- पाचन- रुचि- कारक- नाकका सुखानेवाला क्लेद, मेद, चर्वी, मज्जा, मल तथा मूत्रका सुखानेवाला, स्रोतों का खोलनेवाला- रूखा, मेधाका बढ़ानेवाला और मलका रोकनेवाला होता है ॥ ५६ ॥

अतियुक्तस्यकटुरसस्यगुणाः ॥

सोऽतियुक्तोभ्रान्तिदाहमुखताल्वोष्ठशोषकृत् । कण्ठादिपीडामूर्च्छान्तर्दाहृदोबलका न्तिहृत् ॥ ५७॥

बहुत सेवन कियेहुए कटुरसके अवगुण ॥

बहुत सेवन कियागया कटुरस भ्रम, दाह, मुख तालु तथा ओठोंका सूखना, कंठादिकों में पीड़ा मूर्च्छा शरीरके भीतर दाह और बल तथा कान्तिका नाश इनसबको करता है ॥ ५७॥

अथ तिक्तरसस्यगुणाः ॥

तिक्तःशीतस्तृषामूर्च्छाज्वरपित्तकफान्जयेत्। कृमिकुष्ठविषोत्क्लेददाहरक्तगदापहः॥ रुच्यःस्वयमरोचिष्णुःकण्ठस्तन्यविशोधनः । वातलोऽग्निकरोनासाशोषणोरूक्षणोल घुः ॥ रुच्यःअन्येषुवस्तुषुरुचिमुत्पादयति । स्वयमरोचिष्णुःयथानिम्बःस्वयन्नरोचते ॥ अन्येषुवस्तुषुरुचिंकरोति ॥ ५८ ॥

तिक्तरस के गुण ॥

तिक्त, शीतल, तृषा, मूर्च्छा, ज्वर, पित्त तथा कफका जीतनेवाला, कृमि, कुष्ठ, विष, क्लेद, दाह तथा रुधिर के रोगोंका नाशक, रुचिकर्ता, आप रुचिसे रहित, कंठ तथा दूध का शोधक, वायुवर्द्धक, अग्निकारक, नाकका सुखानेवाला, रूखा और हलका होताहै ॥ ५८॥

अतियुक्तस्य तिक्तस्यगुणाः ॥

सोऽतियुक्तःशिरःशूलमन्यास्तम्भश्रमार्तिकृत्। कम्पमूर्च्छातृषाकारीबलशुक्रक्षयप्रदः ५९

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बहुत सेवन कियेहुए तिक्तरसके अवगुण ॥

बहुत सेवन कियागया तिक्तरस शिरमें पीडा, गलेकी पीछेकी नसका जकडना, श्रम, कम्प मूर्च्छा, तृषा और बल तथा वीर्य्यका नाश इन सबको उत्पन्न करता है ॥ ५६ ॥

अथ कषायगुणाः ॥

कषायोरोपणोग्राहीस्तम्भनःशोधनस्तथा। लेखनःपीडनःसौम्यःशोषणोवातकोपनः॥ कफशोणितपित्तघ्नोरूक्षःशीतोलघुर्मतः । त्वक्प्रसाधनमामस्यस्तम्भनोविशदोमतः॥ जिह्वायाजाड्यकृत्कण्ठस्रोतसाञ्चविबन्धकृत् । रोपणःव्रणस्यस्तम्भनोगात्राणांशोधनोव्रणस्यलेखनोव्रणाद्युतसन्नमांसस्यशोषणोव्रणमज्जादीनामूपीडनो हृदयस्यवातकारित्वात्सौम्यःसोमादुत्पन्नः ॥ ६० ॥

कषायरसके गुण ॥

कषायरस घावका भरनेवाला, कब्जकरनेवाला, अंगोंको जकडनेवाला, घावका शुद्ध करनेवाला व्रणपर उठेहुए मांसादिकों का घटानेवाला, हृदयमें पीड़ा करनेवाला, सौम्य, घाव तथा मज्जादिकों का सुखानेवाला, वायुवर्द्धक, कफ तथा रक्त पित्तनाशक, रूखा, शीतल, हलका त्वचा को उत्तम करनेवाला, आंवका रोकनेवाला, विशद जिह्वाको जड़करनेवाला और कंठ तथा स्रोतों को रोकनेवाला होताहै ॥ ६० ॥

अतियुक्तस्य कषायस्यगुणाः ॥

सोऽतियुक्तोगृहाध्मानहृत्पीडाक्षेपणादिकृत् ॥ ६१ ॥

बहुत सेवनकियेहुए कषायरस के अवगुण ॥

कषायरसके बहुत सेवन करने से कंठादिकों का जकड़ना, अफरा, हृदयमें पीड़ा और आक्षेप आदिरोग उत्पन्न होतेहैं ॥ ६१ ॥

मधुरादीनामपरेविशेषाः ॥

मधुरंश्लेष्मणंप्रायोजीर्णशालियवाद्दते । मुद्गाद्गोधूमतःक्षौद्रात् सितायाजाङ्गलामिषात् ॥ अम्लंपित्तकरंप्रायोविनाधात्रीञ्चदाडिमीम् । लवणंप्रायशोद्वेषिनेत्रयोःसैन्धवंविना ॥ प्रायःकटुतथातिक्तमवृष्यंवातकोपनम् । शुण्ठीकृष्णारसोनानिपटोलममृतंविना ॥ (चरकेऽपि) पिप्पलीनागरंवृष्यंकटुचावृष्यमुच्यते । प्रायशःस्तम्भनंप्रोक्तंकषायमभयांविना ॥ सामान्येनात्रनिर्दिष्टागुणाःषड्रससम्भवाः । रसानांयोगतस्तुस्यादन्यएवगुणोदयः ॥ संयोगाद्विषतांयातिसममाज्येनमाक्षिकम् । अमृतत्वंविषंयातिसर्पदष्टस्यवैयथा ॥ ६२ ॥

मधुरादिरसों की और विशेषता ॥

पुराने चावल, जौ, मूंग, गेहूं, सहत, चीनी और जांगली जीवोंका मांस इनके सिवाय प्रायः मधुररस कफकारक होताहै, आंवला और अनार के सिवाय प्रायः अम्लरस पित्तकारक होताहै सेंधोनोनके सिवाय प्रायः लवण नेत्रोंको अहित होते हैं, सोंठ, पीपल, लहसन, परवल और गिलोय के सिवाय प्रायः कटु और तिक्तरस वीर्य्यको अहित और वातके बढ़ानेवाले होते हैं, चरकमें भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कहाहै कि पीपल और सोंठ वीर्य्यकोहित और कटुरस अहित होतेहैं, हड़केसिवास प्रायः कषाय रस स्तंभन करतेहैं, यहां संक्षेपसे छओंरसोंके गुण कहेगये हैं परन्तु रसोंके संयोगहोनेसे औरके और गुणहोजाते हैं, जैसे बराबर मिलेहुए सहत और घृत विष के तुल्य होजाते हैं और सांपके काटेहुएको विष अमृतके तुल्य होजाताहै॥ ६२॥

अथ गुणाः॥

लघुर्गुरुस्तथास्निग्धोरूक्षस्तीक्ष्णइतिक्रमात् । नभोभूवारिवातानांवह्नेरेतेगुणाः स्मृताः॥ ६३॥

गुणोंका वर्णन॥

आकाशका हलकापन, पृथ्वीकी गुरुता, जलकी सचिक्कणता, वायुका रूखापन और अग्निकी तीक्ष्णता गुणहै॥ ६३॥

अथ लघ्वादिगुणवतांगुणाः॥

लघुपथ्यंपरंप्रोक्तं कफघ्नंशीघ्रपाकिच। लघुद्रव्यम्॥ एवंगुर्वादितथाचोक्तम्॥ गुर्वादयोगुणाद्रव्ये पृथिव्यादौरसाश्रये। रसेषुव्यपदिश्यन्ते साहचार्य्योपचारतः॥ गुरुवातहरंपुष्टिश्लेष्मकृच्चिरपाकिच। स्निग्धंवातहरंश्लेष्मकारिवृष्यंबलावहम्॥ रूक्षंसमीरणकरं परंकफहरंमतम्। तीक्ष्णंपित्तकरंप्रायो लेखनंकफवातहृत्॥ सुश्रुतेतुगुणाएते विंशतिस्तान्ब्रुवेश्शृणु। गुरुर्लघुःस्निग्धरूक्षौ तीक्ष्णःश्लक्ष्णःस्थिरःसरः॥ पिच्छिलोविशदःशीतउष्णश्चमृदुकर्कशौ। स्थूलःसूक्ष्मोद्रवःशुष्कआशुर्मन्दःस्मृतागुणाः। तत्र गुरुलघुस्निग्धरूक्षतीक्ष्णागुणाउक्ताएव॥ श्लक्ष्णःस्नेहंविनापिस्यात्कठिनोऽपिहिचिक्कणः। स्थिरोवातमलस्तम्भी सरस्तेषांप्रवर्त्तकः॥ पिच्छिलस्तन्तुलोबल्यःसन्धानःश्लेष्मलोगुरुः॥ सन्धानोभग्नस्य। छेदच्छेदकरःख्यातोविशदोव्रणरोपणः। शीतस्तुह्लादनःस्तम्भीमूर्च्छातृट्स्वेददाहनुत्॥ उष्णोभवतिशीतस्यविपरीतश्चपाचनः। ह्लादनः सुखजनकःस्तम्भीरक्तातिप्रवृत्त्यादीनाम् उष्णः॥ शीतस्यविपरीतस्तेनअसुखजनकः रक्तातिप्रवृत्त्यादीनामस्तम्भनः। मूर्च्छातृट्स्वेददाहकृत् पाचनोव्रणादीनाम्॥ मृदुकर्कशौप्रसिद्धौस्थूलःस्थौल्यकरौदेहे स्रोतसामवरोधकृत्। देहस्यसूक्ष्मच्छिद्रेषुविशेत्यत सूक्ष्ममुच्यते॥ द्रवःक्लेदकरोव्यापी शुष्कस्तदविपरीतकः। आशुराशुकरोदेहेधावत्यम्भसितैलवत्॥ मन्दः सकलकार्येषुशिथिलोऽल्पोऽपिकथ्यते॥ ६४॥

लघुआदिगुणयुक्तद्रव्योंके गुण॥

लघुद्रव्य अत्यन्तहितकारी, कफनाशक और शीघ्र परिपाक होनेवाला होताहै यहां लघु शब्द का अर्थ लघुगुणयुक्तद्रव्य है इसीप्रकार गुरुआदिकों मेंभी जानना चाहिये ऐसाही कहागयाहै कि गुरु आदिक गुण रसके आश्रयभूत पृथिवी आदिक द्रव्योंमें होते हैं और पृथिवी आदिकोंके एकसाथ होने के माननेसे रसों में कहे जाते हैं, गुरुगुणयुक्तद्रव्य वातनाशक, पुष्टता तथा कफकारक और देरमें पकनेवाली होती है, स्निग्धद्रव्य वातनाशक कफकारक वीर्यवर्द्धक और बलकारक होता है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रूखीद्रव्य वायुवर्द्धक और अत्यन्त कफनाशक होतीहै, तीक्ष्णद्रव्य पित्तकारक, लेखन और कफ वातनाशक होती है, और सुश्रुतमें यह गुण संख्यामें बीस कहेगयेहैं उनको कहते हैं, गुरु, लघु, स्निग्ध, रूक्ष, तीक्ष्ण, श्लक्ष्ण, स्थिर, सर, पिच्छिल, विशद, शीत, उष्ण, मृदु, कर्कश, स्थूल, सूक्ष्म, द्रव, शुष्क, आशु और मन्द इनमें से गुरु, लघु, स्निग्ध, रूक्ष और तीक्ष्ण इनका वर्णन तो होचुकाहै और शेषोंका वर्णन करते हैं श्लक्ष्णद्रव्य स्नेहरहित कठिन होकर भी चिकनी होती है, स्थिरद्रव्य वात और मलको रोकतीहै, सरद्रव्य वायु और मलको प्रवृत्त करतीहै, पिच्छिल गुणयुक्त द्रव्य तन्तुयुक्त बलकारक, टूटेको जोड़नेवाली, कफवर्धक और गुरु होती है, विशदगुणयुक्त द्रव्य क्लेदनाशक और घावकी भरनेवाली होतीहै, शीतगुणयुक्त द्रव्य सुखदायी और रुधिरके बहने आदिको रोकने वाली होती है, उष्णगुणयुक्त द्रव्य शीतसे विपरीत अर्थात् दुःखदायी तथा रुधिर आदिके बहनेको नहीं रोकनेवाली मूर्च्छा, तृषा, स्वेद तथा दाह करनेवाली और व्रणादिकों की पकानेवाली होतीहै। मृदु और कर्कश प्रसिद्ध हैं, स्थूलगुणयुक्त द्रव्य शरीरकी स्थूल करनेवाली और स्रोतों की रोकने वाली होती है, सूक्ष्मगुणयुक्त द्रव्य शरीरके सूक्ष्मछिद्रोंमें प्रवेश करती है, द्रवगुणयुक्त द्रव्य क्लेदकारक और व्यापी होती है, शुष्कगुणयुक्त द्रव्य क्लेदशोषक और अव्यापी होती है, आशुगुणयुक्त द्रव्य जलमें तेलके समान शीघ्र शरीरमें फैलजाती है, मन्दगुणयुक्त द्रव्य संपूर्ण कार्यों में शिथिल और अल्पता करनेवाली होती है ॥ ६४ ॥

अथ गुणप्रस्तावेदीपनादयोगुणाःसलक्षणालिख्यन्ते ॥

पचेन्नामंवह्निकृद्यद्दीपनं तद्यथामिसिः। वह्निकृद्वह्निदीप्तिकृत्। ननुयद्वह्निंप्रदीपयति ॥ तदामंकथंनपचेदित्याशंकायामुच्यतेदीपनद्रव्यंतावन्तंवह्निंप्रदीपयतितथाअन्नेभोक्तुमिच्छामुत्पादयतिनत्वामंपक्तुंक्षमः यथासूक्ष्मदीपाग्निस्तथातंकरोतिनतुबृहत्स्थालीस्थानूतण्डुलानोदनंकर्तुंक्षमः ॥ ६५ ॥

अब गुणोंकेवर्णनमें दीपनआदिकगुणलक्षणसहित लिखेजाते हैं ॥

जिसकेद्वारा आमका परिपाक न होय और अग्निकी दीप्तिहो वह दीपन कहलातीहै जैसे सौंफ अब यह सन्देह उत्पन्न होताहै कि जो अग्निको दीप्तकरताहै वह आपको क्यों नहीं पचाता? इसका उत्तर यहहै कि जैसे सूक्ष्म दीपककी अग्नि प्रकाशकरती है परन्तु बड़ीडेगचीमें स्थितहुए चावलोंको नहीं पकासक्ती है इसी प्रकार दीपन वस्तु उतनीही अग्निको प्रकाशित करती है जिससे अन्नमें भोजनकी रुचिहोतीहै परन्तु आमको परिपक्क नहीं करसक्ती ॥ ६५ ॥

पचत्यामन्नवह्निञ्चकुर्य्याद्यत्तद्धिपाचनम् ! नागकेशरवद्विद्याच्चित्रोदीपनपाचनः ॥ ननुयद्वह्निंनदीपयतितदामंकथंपचतीत्याशङ्कायामाह। पाचनवह्निदीप्तिमकुर्वाणमप्याममपचति। यथाग्न्याधानीस्थोऽगारसमूहोऽन्नम्पचति। नतुदीपवत्सर्व्वतःप्रदीपयति ६६

जिसके द्वारा आमका परिपाकहो और अग्निकी दीप्ति न होय वह पाचन जैसे नागकेशर और चीते में दीपन और पाचन दोनों गुण हैं अब यह सन्देह होता है कि जो अग्नि को दीपन नहीं करता है वह आमको कैसे पचासक्ता है? इसका उत्तर यहहै कि जैसे अग्निके स्थानमें रक्खा हुआ अंगारोंका समूह अन्नको पकाताहै परन्तु दीपकके समान सब ओर प्रकाश नहीं करता इसी प्रकार पाचनवस्तु अग्निको विना दीप्ति किये अन्नको पचाती है ॥ ६६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नशोधयतियत्दोषान्समान्नोदीरयत्यपि।समीकरोतिविषमान्शमनन्तद्यथामृता॥ यत्द्रव्यन्दोषत्रयंन शोधयतिनोर्ध्वाधोमार्गाभ्यामानयति। समान्दोषान्नोदीरयतिनव र्द्धयतिशमनंतत्॥ ६७॥

जिसके द्वारा वातादिक दोष ऊर्ध्व, वा अधोमार्गसे न निकाले जायँ तथा समदोष अपने स्थान से न हटाये जायँ और अपने प्रमाण से न्यून अथवा अधिकभाव में स्थित दोष समता को प्राप्त किये जायँ वह शमन कहलाताहै जैसे गिलोय॥ ६७॥

कृत्वापाकम्मलानाञ्चभित्त्वाबन्धमधोनयेत्। तच्चानुलोमनंज्ञेयं यथाप्रोक्ताहरीतकी मलानाम्। अपक्वानांवातपित्तश्लेष्मणांबन्धंवायुबन्धंभित्त्वाअधोनयेत् मलानधःपात यति॥ पक्तव्यंयदपक्वैवश्लिष्टंकोष्ठेमलादिकम्। नयत्यधःस्रंसनन्तद्यथास्यात्कृत मालकम्॥ मलादिकम् आदिशब्दात्कफपित्ते। कृतमालःधनबहेराइतिलोके॥ ६८॥

जो द्रव्य विना परिपाक हुए वात पित्त और कफको परिपाक करके वायुके बंधन को तोडके मलोंको नीचेलेजाती है उसको अनुलोमन कहते हैं जैसे हड ओ द्रव्यकोष्ठ में लिपटे हुए पाक करने के योग्य मल कफ और पित्तको नीचे गिराती है उसको स्रंसन कहते हैं जैसे अमलतास॥ ६८॥

मलादिकमबद्धंयद्बद्धंवापिण्डितंमलैः।भित्त्वाधःपातयतियद्भेदनंकटुकीयथा॥ अबद्धं शिथिलम्बद्धंगाढंमलैःदोषैःतत्रापिवातैः। बहुत्वमाधिक्यबोधनार्थन्तैःपिण्डितम्। गुट कीकृतम्॥विपक्वंयदपक्वंवामलादिंद्रवतांनयेत्। रेचयत्यपितज्ज्ञेयंरेचनन्त्रिवृतायथा॥ रेचत्यपिअधःपातयतिचत्रिवृतापनिलरा॥ ६९॥

जो द्रव्य बंधेहुए नहीं बंधेहुए अथवा अधिक वायुके द्वारा गांठके समान होजानेवाले मलको तोडकर नीचे गिराती है वह भेदन कहलाती है, जैसे कुटकी, जोद्रव्य पकेहुए अथवा विना पकेहुए अथवा विनापकेहुए मलादिको पतला करके नीचेसे निकालती है वह रेचनहै जैसे निसोत॥६९॥

अपक्वंपित्तश्लेष्माणंबलादूर्ध्वंनयेत्तुयत्। वमनन्तद्धिविज्ञेयंमदनस्यफलंयथा॥ ऊर्ध्वंनयेत्तुमुखमार्गेणबहिष्कुर्य्यात्। मदनस्यफलंमयनफलमितिलोके॥ ७०॥

जो द्रव्य विनापकेहुए पित्त कफ और भोजन कियेहुए पदार्थ को जबरदस्ती मुखके मार्ग से बाहर निकालती है वह वमन कहलाती है जैसे मैनफल॥ ७०॥

स्थानाद्बहिर्नयेदूर्ध्वमधोवामलसञ्चयम्। देहसंशोधनन्ततस्याद्देवदालीफलंयथा॥ देवदालीसोनैआइतिलोके॥ ७१॥

जो द्रव्य शरीरमें इकट्ठेहुए मलको अपने स्थान से बाहर नीचे अथवा ऊपर लेजाय इसको संशोधन कहते हैं जैसे देवदाली अर्थात् सुनैया॥ ७१॥

दीपनम्पाचनंयत्स्यादुष्णत्वाद्द्रवशोषकृत्।ग्राहीतच्चयथाशुण्ठीजीरकंगजपिप्पली॥७२॥

जो द्रव्य दीपन पाचन दोनों गुणों से युक्त और उष्णताके कारण द्रवको सुखानेवालीहो उसको ग्राही कहते हैं जैसे सोंठ, जीरा और गजपीपल॥ ७२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रौक्ष्याच्छैत्यात्कषायत्वाल्लघुपाकाच्चयद्भवेत् । वातकृत्स्तम्भनन्तत्स्याद्यथावत्सकटुएटुकौ ॥ वातकृत् प्रतिलोमवातकृत् । स्तम्भनमधोगामिमलादीनाम् । वत्सकंकुरैआ । टुएटुकःसोनापाठा ॥ ७३ ॥

जो द्रव्य रूखापन, शीतलता, कषैलापन और जल्दी परिपाक होनेसे वायुको उलटी करके नीचे जानेवाले मलादिकों को रोके वह स्तंभन कहलाती है जैसे कुरैया और सोनापाठा ॥ ७३ ॥

शिलष्टान्कफादिकान्दोषानुन्मूलयतियद्बलात् । छेदनन्तत्यथाक्षारमरिचानिशिलाजतु ॥ क्षारायवक्षारादयः ॥ ७४ ॥

जो द्रव्य लिपटे हुए कफादि दोषों को बलपूर्व्वक उखाड़ती है वह छेदन कहलाती है, जैसे जवाखार आदिकखार मिरच और शिलाजीत ॥ ७४ ॥

धातून्मलान्वादेहस्यविशोष्योल्लेखयेच्चयत् । लेखनन्तद्यथाक्षौद्रंनीरमुष्णंवचायवाः ॥ उल्लेखयेत्कृशीकुर्य्यात् । लेखनं कृशीकारकम् । क्षौद्रंमधुयवाइन्द्रयवाः ॥ ७५ ॥

जो द्रव्य शरीर के धातु और मलों को सुखाकर दुर्बल करे उसको लेखन कहते हैं जैसे सहत गरम जल वच और इन्द्रयव ॥ ७५ ॥

यस्माद्द्रव्याद्भवेत्स्त्रीषुहर्षोवाजिकरंहितत् । यथाश्वगन्धामुशलीशर्क्कराचशतावरी ॥ हर्षोरन्तुंसमुत्साहः ॥ ७६ ॥

जो द्रव्य स्त्रियों के संभोग करने में उत्साह उत्पन्न करे उसको वाजीकरण कहते हैं जैसे असगंध मुशली, शक्कर और सतावर ॥ ७६ ॥

यस्माच्छुक्रस्यवृद्धिःस्याच्छुक्लंहितदुच्यते । यथानागबलाद्याःस्युर्बीजञ्चकपिकच्छुजम् ॥ नागबलागुलशकरी ॥ ७७ ॥

जिस द्रव्यके द्वारा वीर्य्यकी वृद्धिहोय उसे शुक्ल कहतेहैं जैसे गुलशकरी और कवांचके बीज ७७॥

दुग्धंमाषाश्चभल्लातफलमज्जामलानिच । एतानिजनकानिस्यूरेचकानिचरेतसः ॥ जनकानिप्रभावाच्छीघ्रमेवरसाद्युत्पादनपूर्व्वकंशुक्रञ्जनयन्ति । रेचकाणिआधिक्यात् प्रवर्त्तयन्तिच ॥ ७८ ॥

दूध, उर्द, भिलावें का फल तथा मज्जा और आमला यह संपूर्ण पदार्थ अपनेप्रभावसे शीघ्र रसादिकों को उत्पन्न करके वीर्य्यको उत्पन्न करते हैं और अधिकताकेकारण निकालते भी हैं ॥ ७८ ॥

प्रवर्त्तनीस्त्रीशुक्रस्यरेचकंबृहतीफलम्जातीफलंस्तम्भकंस्यात्कालिंगंक्षयकारिच ॥ स्त्रीस्मरणकीर्त्तनदर्शनसम्भाषणस्पर्शनचुम्बनालिङ्गननिधुवनैः समस्तैर्व्यस्तैश्चशुक्रस्यप्रवर्तिनी । प्रवर्तिनीप्रवृत्तिकारिणी । रेचकम्बृहतीफलम् । बृहत्कण्टकारीफलमपिशुक्रस्यरेचकम् प्रवर्त्तकम् । कालिंगंकलिन्दफलम् ॥ ७९ ॥

स्त्रीस्मरण, कीर्त्तन, दर्शन, भाषण, स्पर्श, चुम्बन, आलिंगन और मैथुन इन सबसे और प्रत्येक से भी वीर्य्य को प्रवृत्तकरातीहै और भटकटैयाका फलभी वीर्य्यको निकालताहै, जायफल वीर्य्य का स्तंभन करता है और तरबूज वीर्य्य का नाशक है ॥ ७९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रसायनन्तुतज्ज्ञेयंयज्जराव्याधिनाशनम्। यथा हरीतकीरुद्रवन्तीचगुग्गुलुश्चशिलाजतु ॥ ८० ॥

जो द्रव्य वृद्धावस्था और रोगोंको नाशकरे उसको रसायन कहते हैं जैसे हड, रुद्रवंती अथवा दन्ती,गुग्गुल और शिलाजीत ॥ ८० ॥

पूर्वंव्याप्याखिलंकायंततःपाकञ्चगच्छति । व्यवायितद्यथाभंगाफेनञ्चाहिसमुद्भवम् ॥ अन्यद्रव्यंपक्वन्तद्गुणंकरोतिव्यवायितुअपक्वमेवस्वगुणैःसकलशरीरंव्याप्यपाकंयाति। अहिसमुद्भवफेनम् अफीम ॥ ८१ ॥

जो द्रव्य अपने गुणसे सब शरीरको व्याप्तकरके पीछे परिपाकको प्राप्त होती है उसको व्यवायि कहते हैं जैसे भंग और अफीम- अन्यद्रव्य परिपाकको प्राप्तहोकर गुणकरती हैं परन्तु व्यवायि द्रव्य विना परिपाकको प्राप्तहुए अपनेगुणोंसे संपूर्णशरीरको व्याप्तकरके पीछे परिपाकको प्राप्त होतीहै ८१॥

सन्धिबन्धांस्तुशिथिलान्यत्करोतिविकाशितत् । विशोष्यौजश्चधातुभ्योयथाक्रमुककोद्रवौ ॥ धातुभ्यःसकलशरीरस्थेभ्योवीर्य्येभ्यः। ओजःउपधातुविशेषम् विशोष्याक्रमुकम्पूगफलम् ॥ ८२ ॥

जो द्रव्य संपूर्ण शरीरमें स्थित वीर्य्योंसे ओजनामवाली उपधातुको सुखाकर संधिके बन्धनोंको शिथिल करतीहै उसको विकाशी कहते हैं जैसे सुपारी और कोदों ॥ ८२ ॥

बुद्धिंलुम्पतियद्द्रव्यं मदकारितदुच्यते। तमोगुणप्रधानञ्च यथामद्यंसुरादिकम्॥ मदकारि मादकम् ॥ ८३ ॥

जो द्रव्य अधिक तमोगुणयुक्त और बुद्धिका लोपकरनेवाली होतीहै उसको मादक कहते हैं जैसे सुरा आदिक मद्य ॥ ८३ ॥

व्यवायिचविकाशिस्यात् श्लेष्मच्छेदिमदावहम्।आग्नेयंजीवितहरं योगवाहिस्मृतंविषम्॥ व्यवायि सकलकायगुणव्यापनपूर्वकपाकगमनशीलम्। विकाशिओजः शोषणपूर्वकसंधिबंधशिथिलीकरणशीलम् । मदावहम् तमोगुणाधिक्येन बुद्धिविध्वंसकम्। आग्नेयं अधिकाग्निगुणम्। योगवाहिसंसर्गिगुणग्राहकम्। विषंलक्ष्यं दृष्टान्तो वत्सनाभशक्तुकादिभिः ॥ ८४ ॥

व्यवायि अर्थात् संपूर्ण शरीरमें अपने गुणको व्याप्तकरके परिपक्व होनेवाला विकाशि अर्थात् ओजको सुखाकर संधिके बंधनोंको शिथिल करनेवाला कफनाशक, मदावह अर्थात् तमोगुण की अधिकतासे बुद्धिनाशक अधिक अग्निके गुणोंसे युक्त, प्राणनाशक और संसर्गी के गुणोंका लेनेवाला द्रव्य विष कहलाताहै, जैसे वत्सनाभ और शक्तुक आदि ॥ ८४ ॥

निजवीर्य्येणयद्द्रव्यं स्रोतोभ्योदोषसञ्चयम्। निरस्यतिप्रमाथिस्यात्तद्यथामरिचंवचा ॥ (दोषावातादयः) ॥ ८५ ॥

जो द्रव्य अपने वीर्यके द्वारा स्रोतों से इकट्ठेहुए वातादि दोषोंको निकालती है उसको प्रमाथी कहते हैं जैसे कालीमिर्च और वच ॥ ८५ ॥

१ यथा हरीतकी दन्ती-यथामृतारुदन्ती चेति पाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पैच्छिल्याद्गौरवाद्द्रव्यं रुध्वारसवहाःशिराः । धत्तेयद्गौरवन्तत्स्यादभिष्यन्दियथा दधि ॥ (गौरवंशरीरे) ॥ ८६ ॥

जो द्रव्य पिच्छिलता और गौरवताके कारण रसके लेजानेवाली शिराओंको रोककर शरीरमें भारीपन उत्पन्न करतीहै उसको अभिष्यन्दी कहतेहैं जैसे दही ॥ ८६ ॥

विदाहिद्रव्यमुद्गारमम्लंकुर्य्यात्तथातृषाम् । हृदिदाहञ्चजनयेत्पाकंगच्छतितच्चिरात् ॥ ८७ ॥

जिस द्रव्य के भोजन करने से डकार खट्टी आवे प्यास और दाह उत्पन्नहो और परिपाक बहुत देरमें हो उसको विदाही कहते हैं ॥ ८७ ॥

गृह्णातियोगवाहिद्रव्यंसंसर्गिवस्तुगुणान् । पच्यमानंतथैतन्मधुजलतैलाज्यसूतलोहादि ॥ ८८ ॥

जो द्रव्य संसर्गी वस्तुके गुणोंको ग्रहण करे उसको योगवाही कहते हैं जैसे सहत जल तेल घृत पारा और लोहा आदिक यह सब पाक होनेपर जिस वस्तु के साथ होते हैं उस वस्तुके गुणको ग्रहण करलेतेहैं ॥ ८८ ॥

अथ वीर्यन्तत्रवाग्भटः ॥

उष्णशीतगुणोत्कर्षात् बुधैर्वीर्य्यन्द्विधास्मृतम् । यत्सर्वमग्निसोमीयं दृश्यतेभुवनत्रयम् ॥ ८९ ॥

वाग्भटके मतसे वीर्य का वर्णन ॥

बुद्धिमान् लोगोंने उष्ण और शीत गुणोंकी अधिकतासे दो प्रकार का वीर्य कहाहै क्योंकि संपूर्ण संसार अग्नि और जलमय दिखाई देताहै ॥ ८९ ॥

अथ तद्गुणः ॥

उष्णंवातकफौहन्याच्छीतन्तुतनुतेजराम् । शीतंवातकफातङ्कान् कुरुतेपित्तहृत्परम् ॥ अन्यच्च तत्रोष्णंभ्रमतृड्ग्लानिस्वेददाहाशुपाकताम् । समञ्चवातकफयोः करोतिशिशिरम्पुनः । ह्लादनंजीवनंस्तम्भं प्रसादंरक्तपित्तयोः ॥ ९० ॥

वीर्य के गुण ॥

उष्ण वीर्य वायु कफनाशक और पित्त तथा जीर्णताका बढ़ानेवाला होताहै औरभी कहाहुआहै कि उष्णवीर्य भ्रम तृषा ग्लानि स्वेद दाह और शीघ्र परिपाक को करताहै और इससे वात कफकी शांतिभी होती है शीतलवीर्य हर्ष जीवन मलका स्तंभ और रक्तपित्तकी प्रसन्नता को करता है ॥ ९० ॥

अथ विपाकः ॥

जाठरेणाग्निनायोगाद्यदुदेतिरसान्तरम् । रसानांपरिणामांते सविपाकइतिस्मृतः ॥ मिष्टःपटुश्चमधुरमम्लोऽम्लंपच्यतेरसः । कटुतिक्तकषायाणां पाकःस्यात्प्रायशःकटुः ॥ (तथाचवाग्भटः) त्रिधारसानांपाकःस्यात् स्वाद्वम्लकटुकात्मकः ॥ प्रायःपदेनत्रीहिः स्यात्स्वाद्वम्लरविपाकतः । शिवाकषायामधुरापाकेशुण्ठीकटुकामधुरपाकेत्यादि ९१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विपाक का वर्णन ॥

जठराग्निके संयोगसे भोजनके जो रस उत्पन्न होते हैं उनके परिणाम में जो एक दूसरारस उत्पन्न होताहै उसको विपाक कहते हैं मधुर और लवणरस का विपाक मधुर अम्लका विपाक अम्ल और तिक्त कटु तथा कषायरस का विपाक प्रायः कटु होताहै ऐसाही वाग्भटने कहाहै कि मधुर अम्ल और कटु इनभेदों से रसोंका विपाक तीन प्रकारका होताहै यहां प्रायः शब्दसे यह तात्पर्य्य है कि यह नियम सब कहीं नहींहै क्योंकि चावलका रस मधुर और विपाक खट्टा होताहै हड़ कषैली है इसका विपाक मधुर होताहै और सोंठि कटु है इसका विपाक मधुर होताहै ॥ ६१ ॥

अथ विपाकानांगुणाः ॥

श्लेष्मकृन्मधुरःपाकोवातपित्तहरोमतः । अम्लस्तुकुरुतेपित्तंवातश्लेष्मगदापहः ॥ कटुःकरोतिपवनंकफंपित्तञ्चनाशयेत् । विशेषएवरसतोविपाकानांनिदर्शितः ॥ ६२ ॥

विपाकों के गुण ॥

मधुर विपाक कफकारक और वात पित्तनाशक, अम्लविपाक पित्तवर्द्धक और वायुकफके रोगों का नाशक और कटुविपाक वायुवर्द्धक और कफ पित्तनाशक होताहै यह रसोंसे विपाकोंकी विशेषता कही गई है ॥ ६२ ॥

अथ प्रभावः ॥

रसादिसाम्येयत्कर्म्म विशिष्टंतत्प्रभावजम् । दन्तीरसाद्यैस्तुल्यापिचित्रकस्यविरेचनी ॥ मधूकस्यचमृद्वीकाघृतंक्षीरस्यदीपनम् । प्रभावस्तुयथाधात्री लकुचस्यरसादिभिः ॥ समापिकुरुतेदोषत्रितयस्यविनाशनम् । क्वचित्तुकेवलंद्रव्यं कर्म्मकुर्य्यात्प्रभावतः ॥ ज्वरंहन्तिशिरोबद्धासहदेवीजटायथा ॥ ६३ ॥

प्रभावका वर्णन ॥

रसादिकोंके तुल्य होनेपर भी जो विशेषक्रिया उत्पन्न होती है उसे प्रभाव कहते हैं जैसे चीता और जमालगोटा रसादिकों में तुल्यहैं परन्तु जमालगोटा रेचकहै मुनक्का महुए से और घृत दुग्ध से रसादिकों में तुल्य होनेपर भी दीपनहैं आमला रसादिकों में बड़हलके समान होनेपर भी त्रिदोष नाशक है कोई २ द्रव्य केवल प्रभावही से कार्य्य सिद्ध करती हैं जैसे सहदेईकी जटा शिरमें बांधनेसे ज्वर नष्ट होताहै ॥ ६३ ॥

तथानानौषधियोगेषुफलंप्रतिस्वभावएवाश्रयणीयो नतुतत्ररसादिरूपहेतुविचारःकर्त्तव्यः । (यतआहसुश्रुतः) अमीमांस्यान्यचिंत्यानिप्रसिद्धानिस्वभावतः ॥ आगमेनोपयोज्यानिभेषजानिविचक्षणैः ॥ प्रत्यक्षलक्षणफलाः प्रसिद्धाश्चस्वभावतः । नौषधीर्हेतुभिर्विद्वान्परीक्षेतकदाचन । सहस्रेणापिहेतूनां नाम्बष्ठादिर्विरेचयेत् । तस्मात्तिष्ठेत्तुमतिमानागमेनतुहेतुभिरिति ॥ विरुद्धगुणसंयोगे भूयसाल्पंहिजायते । रसंविपाकस्तौवीर्य्यम्प्रभावस्तान्व्यपोहति ॥ इतिरसगुणवीर्य्यविपाकप्रभावाणांस्वरूपाण्यभिधाय कुत्रद्रव्येकेरसगुणवीर्य्यविपाकप्रभावाः संतीतिबोधयितुंद्रव्यगतान्रसगुणवीर्य्यविपाकप्रभावानाह ॥ ९४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनेक प्रकारकी औषधियोंके योग में फल के लिये स्वभावही का आश्रय करना चाहिये और उसमें रसादि रूप कारणों का विचार न करना चाहिये क्योंकि सुश्रुतने भी कहा है कि जो संपूर्ण औषधि स्वभाव से प्रसिद्ध हैं उनमें विचार और चिन्ता का कोई प्रयोजन नहीं है बुद्धिमान् वैद्य संपूर्ण प्रसिद्ध औषधियों का व्यवहार शास्त्र की रीति से करें जो संपूर्ण औषधि स्वभाव से प्रसिद्ध और प्रत्यक्ष फलवाली हैं उन औषधियों की बुद्धिमान् लोग हेतुओं से कभी परीक्षा न करें जैसे हजारों हेतु दिखाने पर भी अम्बष्ठादि गणमें विरेचन शक्ति नहीं उपस्थित होगी इसीसे बुद्धिमान् वैद्य हेतु वाद को त्याग कर शास्त्रोक्त विधि का अनुवर्तन करें क्योंकि विरुद्ध गुणके संयोग से दोषों की अधिकता और न्यूनता होजाती है रसको विपाक और रसविपाक को वीर्य्य और सबको प्रभाव नाश करता है इस प्रकार रसगुण वीर्य विपाक और प्रभाव के स्वरूपोंको कहकर किस द्रव्य में कौन से रस गुण वीर्य विपाक और प्रभाव होते हैं यह जनानेके लिये द्रव्यों में स्थित रसगुण वीर्य्य विपाक और प्रभावों का वर्णन करते हैं॥ ९४॥

तत्रप्रथमंहरीतक्याउत्पत्तिनामलक्षणगुणानाह॥

दक्षंप्रजापतिंस्वस्थमश्विनौवाक्यमूचतुः । कुतोहरीतकीजातातस्यास्तुकतिजातयः॥ रसाःकतिसमाख्याताःकतिचोपरसाःस्मृताः । नामानिकतिचोक्तानिकिंवातासाञ्चलक्षणम्॥ केचवर्णागुणाःकेचकाचकुत्रप्रयुज्यते । केनद्रव्येणसंयुक्ताकांश्चरोगान्व्यपोहति॥ प्रश्नमेतद्यथापृष्टंभगवन्वक्तुमर्हसि । अश्विनोर्वचनंश्रुत्वादक्षोवचनमब्रवीत्॥ पपातबिन्दुर्म्मेदिन्यांशक्रस्यपिबतोऽमृतम् । ततोदिव्यात्समुत्पन्नासप्तजातिर्हरीतकी॥ हरीतक्यभयापथ्या कायस्थापूतनामृता। हेमवत्यव्यथाचापि चेतकीश्रेयसीशिवा॥ वयस्थाविजयाचापि जीवन्तीरोहिणीतिच॥ ९५॥

इनमें से प्रथम हडकी उत्पत्ति नाम लक्षण और गुण कहे जाते हैं॥

एक समय स्वस्थ चित्त बैठेहुए दक्ष प्रजापति से अश्विनीकुमार पूछते भये कि हे भगवन्! हड कहां से उत्पन्न हुई कितनी उसकी जातिहैं उनके रस उपरस नाम लक्षण वर्ण और गुण कितने हैं किस जातिकी हड किस काम में लाई जाती है और किस द्रव्य के साथ कौन से रोगोंको नाश करतीहै आप इस प्रश्नका उत्तर अनुग्रह पूर्वक दीजिये अश्विनी कुमार के वचनको सुनकर दक्ष प्रजापति बोले कि एकसमय इन्द्र अमृत पी रहे थे उसका एक बिन्दु पृथ्वी पर गिर पडा उससे सात–प्रकारकी हड उत्पन्न हुई हरीतकी–अभया–पथ्या–कायस्था–पूतना अमृता–हैमवती–चेतकी श्रेयसी–शिवा–वयस्था–विजया–जीवन्ती और रोहिणी यह हडके नाम हैं॥ ९५॥

विजयारोहिणीचैव पूतनाचामृताभया। जीवन्तीचेतकीचेति विज्ञेयाःसप्तजातयः॥ अलाबुवृत्ताविजया वृत्तासारोहिणीस्मृता। पूतनास्थिमतीसूक्ष्मा कथितामांसलामृता॥ पञ्चरेखाभयाप्रोक्ता जीवन्तीस्वर्णवर्णिनी। त्रिरेखाचेतकीज्ञेया सप्तानामियमाकृतिः॥ विजयासर्वरोगेषु रोहिणीव्रणरोहिणी। प्रलेपेपूतनायोज्या शोधनार्थेऽमृताहिता॥ अक्षि

*विंध्याद्रौविजयाहिमाचलभवास्याच्चेतकीपत्तना सिन्धौस्याद्थरोहिणीतुविजयाजाताप्रतिष्ठानके। पम्पायाममृताभयाचजनिता देशेसुराष्ट्राह्वयेजीवन्तीतिहरीतकीनिगदितासप्तप्रभेदाबुधैः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रोगेऽभयाशस्ता जीवन्तीसर्वरोगहृत् । चूर्णार्थेचेतकीशस्ता य[illegible]युक्तंप्रयोजयेत् ॥ चेतकीद्विविधाप्रोक्ता श्वेताकृष्णाचवर्णतः।षडंगुलायताशुक्ला कृष्[illegible]त्वेकांगुलास्मृता ॥ काचिदास्वादमात्रेण काचिद्गन्धेनभेदयेत् । काचित्स्पर्शेनदृष्ट्यान्या चतुर्द्धाभेदयच्छिवा ॥ चेतकीपादपच्छायामुपसर्प्पन्तियेनराः भिद्यन्तेतत्क्षणादेव पशुपक्षिमृगादयः ॥ चेतकीतुधृताहस्ते यावत्तिष्ठतिदेहिनः । तावद्भिद्येतवेगैस्तु प्रभावान्नात्रसंशयः ॥ नधार्यं सुकुमाराणां कृशानांभेषजद्विषाम् ॥ चेतकीपरमाशस्ता हितासुखविरेचनी ॥ सप्तानामपिजातीनां प्रधानंविजयास्मृता । सुखप्रयोगासुलभा सर्वरोगेषुशस्यते ॥ हरीतकीपञ्चरसा लवणातुवरापरम् । रूक्षोष्णादीपनीमेध्या स्वादुपाकारसायनी ॥ चक्षुष्यालघुरायुष्या बृंहणीचानुलोमिनी । श्वासकासप्रमेहार्श कुष्ठशोथोदरकृमीन् ॥ वैस्वर्य्यग्रहणीरोग विबन्धविषमज्वरान् । गुल्माध्मानतृषाच्छर्दि हिक्काकण्डूहृदामयान् ॥ कामलांशूलमानाहं प्लीहानञ्चयकृत्तथा । अश्मरीमूत्रकृच्छ्रञ्च मूत्राघातञ्चनाशयेत् ॥ स्वादुतिक्तकषायत्वात्पित्तहृत्कफहृत्त्वसा । कटुतिक्तकषायत्वादम्लत्वाद्वातहृच्छिवा ॥ पित्तकृत्कटुकाम्लत्वाद्वातकृन्नकथंशिवा । प्रभावाद्दोषहन्तृत्वं सिद्धंयत्तत्प्रकाश्यते ॥ हेतुभिःशिष्यबोधार्थं नपूर्व्वंकथ्यतेऽधुना । कर्म्मान्यत्वंगुणैःसाम्यं दृष्टमाश्रयभेदतः ॥ यतस्ततोनेति चिन्त्यं धात्रीलकुचयोर्यथा ।पथ्यायामज्जनिस्वादुःस्नाय्वावम्लोऽव्यवस्थितः ॥ वृन्तेतिक्तस्त्वचिकटुरस्थिस्थस्तुवरोरसः । नवास्निग्धाघनावृत्ता गुर्वीक्षिप्ताचयाम्भसि ॥ निमज्जेत्साप्रशस्ताच कथितातिगुणप्रदा । नवादिगुणयुक्तत्वं तथैकत्रद्विकर्षता ॥ हरीतक्याः फलेयत्र द्वयंतच्छ्रेष्ठमुच्यते । चर्विताबर्द्धयत्यग्निं पेषितामलशोधिनी ॥ स्विन्नासंग्राहिणीपथ्या भृष्टाप्रोक्तात्रिदोषनुत् । उन्मीलिनीबुद्धिबलेन्द्रियाणां निर्मूलिनीपित्तकफानिलानाम् ॥ विस्रंसिनीमूत्रशकृन्मलानां हरीतकीस्यात्सहभोजनेन । अन्नपानकृतान्दोषान् वातपित्तकफोद्भवान् ॥ हरीतकीहरत्याशु भुक्तस्योपरियोजिता । लवणेनकफंहन्ति पित्तंहन्तिसशर्करा ॥ घृतेनवातजान्रोगान् सर्वरोगान्गुडान्विता । सिंधूत्थशर्कराशुण्ठीकणामधुगुडैःक्रमात् । वर्षादिष्वभयाप्राश्या रसायनगुणैषिणा ॥ अध्वातिखिन्नोबलवर्जितश्च रूक्षकृशो लंघनकर्षितश्च । पित्ताधिकोगर्भवतीचनारी विमुक्तरक्तस्त्वभयान्नखादेत् ॥ ९६ ॥

विजया रोहिणी पूतना अमृता अभया जीवन्ती और चेतकी यह सात जाति हैं तोंबीके समान गोल विजया होती है गोल रोहिणी छोटी गुठलीवाली पूतना गूदेदार अमृता पांच रेखावाली अभया सुवर्णके समान वर्णवाली जीवन्ती और तीन रेखावाली चेतकी यह सातोंके स्वरूप हैं सब रोगोंमें विजया घावोंके भरनेमें रोहिणी लेपमें पूतना शोधनमें अमृता नेत्र रोगोंमें अभया सवरोगों के नाशके लिये जीवन्ती और चूर्णमें चेतकी श्रेष्ठ है इनको यथायोग्य काममें लाना चाहिये चेतकी श्वेत और कृष्ण दोप्रकारकी होती है छः अंगुलकी लम्बी श्वेत और १ अंगुल की कृष्ण जानो कोई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खाने से कोई सूंघनेसे कोई छूने से और कोई देखने से इस प्रकार चार रीतिसे हडदस्त लाती है मनुष्य पशु पक्षी और मृगादिक जो कोई चेतकीके वृक्षकी छायामें जातेहैं उनको उसी समय दस्त आते हैं चेतकी नाम हडको जबतक हाथमें लिये रहौ तबतक उसके प्रभावसे बडेबेगकेदस्तआतेहैं इस्से प्यासे सुकुमार दुर्बल और औषधि से शत्रुता करने वाले पुरुषोंको चेतकी सुखपूर्वक दस्तोंके लिये अत्यन्त श्रेष्ठ है सात प्रकारकी हडोंमेंसे विजया श्रेष्ठहै यह सुखसे व्यवहार करनेके योग्य सुलभ और सम्पूर्ण रोगोंमें सुखकारीहै हडमें लवणके सिवाय पांच रस होते हैं उनमें से कषाय रस अधिक है हड रूखी उष्ण दीपनी मेधा करनेवाली विपाक में मधुर रसायन नेत्रोंको हित हलकी आयु को हित मांस बढ़ानेवाली वायु आदिकको नीचे लेजाने वाली श्वास खांसी प्रमेह बवासीर कुष्ठ सूजन उदर कृमि स्वरभंग संग्रहणी विबन्ध विषमज्वर गुल्म अफरा तृषा छर्दि हुचकी खुजली हृदयकेरोग कामला शूल आनाह प्लीहा यकृत् पथरी मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघात इन सब रोगोंको नाश करती है हड मधुर तिक्त और कषाय रससे पित्तको कटु तिक्त और कषाय रस से कफको और अम्ल रस से वायुको नष्ट करतीहै परन्तु कटु और अम्ल रसके द्वारा पित्तकी बढ़ानेवाली हड वायुको क्यों नहीं बढ़ातीहै ? इसमें जो कुछ कारण प्रसिद्धहै उसको कहतेहैं कि प्रभावहीसे दोषोंका निवारणहोताहै इसमें क्या कारणहै यह कहना असंभवहै इस्से इससमय शिष्योंके समझानेके लिये इतनाही कहा जाताहै कि गुणों की समानता होनेपर भी आश्रय के भेदसे क्रियाओंका भेद देखाजाता है जैसे बड़-हर और आमला (इनकी रसादिकों में समानता होनेपर भी गुणोंमें बड़ाअन्तर है) इस हेतु से इसमें और कुछ सन्देह न करना चाहिये हडकी मज्जा में मधुररस नसमें अम्लरस परदे में तिक्त त्वचामें कटु और गुठली में कषायरस होताहै नवीन स्निग्ध कठोर गोल भारी और पानी में फेंकने या डालने में डुबनेवाली हड अत्यन्त गुणकारी और श्रेष्ठ कहीगई है जो हड पहले कहे हुए नवीन आदिक गुणों से युक्त और दो कर्षके प्रमाणवाली होतीहै वह सब में श्रेष्ठ कहीगई है हड चबाने से अग्नि बढ़ानेवाली पीसकर सेवन करनेसे मलको शुद्ध करनेवाली सिझायकर सेवन करने से मल को रोकनेवाली और भूनकर सेवनसे त्रिदोषनाशक कहीगईहै भोजनके साथ हडका सेवन करने से बुद्धि बल और इन्द्रियों का प्रकाश पित्त कफ वायुका नाश और विष्ठा मूत्र तथा शरीर के मलों का नीचे गिरना होताहै भोजन के उपरान्त हड खानेसे अन्न और पानके किये हुए दोष और वात पित्त कफके दोष शान्त होते हैं लवणके साथ कफ शक्करके साथ पित्त घृतके साथ वातके रोग और गुड़के साथ हड़ सब रोगों को नाश करती है रसायनके गुणका चाहनेवाला पुरुष वर्षादिक छओं ऋतुओंमें क्रमसे सेंधानोन शर्करा सोंठ पीपल सहत और गुड़के साथ हडको खाय मार्गसे थकाहुआ बलहीन रूखा दुर्बल लंघनकरनेवाला अधिक पित्तवाला गर्भवती स्त्री और फस्त लियाहुआ पुरुष यह सबलोग हडको न खायँ ॥ ९६॥

अथ बिभीतकस्यनामानिगुणाश्च ॥

बिभीतकस्त्रीलिङ्गःस्यान्नाक्षःकर्षफलस्तुसः। कलिद्रुमोभूतवासस्तथाकलियुगालयः॥ बिभीतकंस्वादुपाकंकषायंकफपित्तनुत्। उष्णवीर्यंहिमस्पर्शंभेदनंकासनाशनम्॥ रूक्षं नेत्रहितंकेश्यंकृमिवैस्वर्यनाशनम् ॥ बिभीतमज्जातृट्छर्दिकफवातहरोलघुः । कषायो मदकृच्चाथधात्रीमज्जापितद्गुणः॥९७॥

बहेडेकेनाम और गुण ॥

बिभीतक शब्द त्रिलिङ्गी है अक्ष—कर्षफल—तुष—कलिद्रुम—भूतवास और कलियुगालय यह बहे-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ड़ेके नामहैं-बहेड़ा पाक में मधुर कषैला-कफ पित्तनाशक वीर्य्यमें उष्ण स्पर्शमें शीतल-दस्तावर खांसीका नाशक-रूखा, नेत्र और बालोंको हित और स्वरभंग तथा कृमि को दूर करनेवाला होताहै, बहेड़ेकी मींगी तृषा, छर्दि कफ और वातको नाश करनेवाली और हलकी होती है इसके सिवाय यह कषैली और मद करनेवाली भी होतीहै, आमलेकी मींगीमें भी इसीके समान गुण होते हैं ॥९७॥

अथामलक्यानामानिगुणाश्च ॥

त्रिष्वामलकमाख्यातंधात्रीतिष्यफलामृता ॥ हरीतकीसमन्धात्रीफलंकिन्तुविशेषतः । रक्तपित्तप्रमेहघ्नंपरंवृष्यंरसायनम् ॥ हन्तिवातंतदम्लत्वात्पित्तंमाधुर्य्यशैत्यतः । कफंरूक्षकषायत्वात्फलंधात्र्यास्त्रिदोषजित् ॥ यस्ययस्यफलस्येहवीर्य्यंभवति यादृशम् ॥ तस्यतस्यैववीर्येणमज्जानमपिनिर्दिशेत् ॥ ९८ ॥

आमलेकेनाम और गुण ॥

आमलक शब्द त्रिलिंगी है धात्री, तिष्यफला और अमृता यह आमलेके नामहैं, आमला हड़के समानहै परन्तु विशेषता यहहै कि रक्तपित्त तथा प्रमेह का नाशक और अत्यन्त पुष्टकारक तथा रसायनहै यह अम्लरस से वायु मधुर तथा शीतलता से पित्त और रूक्षता और कषैलेपन से कफको दूर करताहै इस प्रकार यह त्रिदोषनाशक है, यहां जिस २ फलका वीर्य्य जैसा कहागयाहै उसी के अनुसार उसकी मींगी भी जानलेनी चाहिये ॥ ९८ ॥

अथ त्रिफलायालक्षणनामगुणाः ॥

पथ्याबिभीतधात्रीणांफलैःस्यात्त्रिफलासमैः । फलत्रिकञ्चत्रिफलासावराचप्रकीर्तिता ॥ त्रिफलाकफपित्तघ्नीमेहकुष्ठहरासरा। चक्षुष्यादीपनीरुच्याविषमज्वरनाशिनी९९॥

त्रिफलाके लक्षण समेत नाम और गुण ॥

हड़-बहेड़ा और आमला इनतीनों के समभाग संयोग से त्रिफला कहाजाताहै-फलत्रिक-त्रिफला और वरा यह इसके नामहैं-त्रिफला कफ पित्त प्रमेह तथा कुष्टका नाशक, दस्तावर नेत्रों को हित-दीपन-रुचिकारक और विषमज्वर का नाश करनेवाला होताहै ॥ ९९ ॥

अथ शुण्ठ्यानामानिगुणाश्च ॥

शुण्ठीविश्वाचविश्वञ्चनागरंविश्वभेषजम् । ऊषणंकटुभद्रञ्चशृङ्गवेरंमहौषधम् ॥ शुण्ठीरुच्यामवातघ्नीपाचनीकटुकालघुः । स्निग्धोष्णमधुरापाकेकफवातविबन्धनुत् ॥ वृष्यास्वर्य्यावमिश्वासशूलकासहृदामयान् । हन्तिश्लीपदशोथार्शआनाहोदरमारुतान् ॥ आग्नेयगुणभूयिष्ठंतोयांशम्परिशोषियत् । संगृह्णातिमलंतत्तुग्राहिशुण्ठ्यादयोयथा ॥ विबन्धभेदनीयातुसाकथंग्राहिणीभवेत्।शक्तिर्विबन्धभेदेस्यात्यतोनमलपातने॥१००॥

सोंठके नाम और गुण ॥

शुंठी-विश्वा-विश्व-नागर-विश्वभेषज-ऊषण,कटुभद्र, शृंगवेर और महौषधि यह सोंठके नाम हैं सोंठ रुचिकारक, पाचक, रसमेंकटु, हलकी, स्निग्ध उष्ण, पाकमें मधुर, पुष्टिकारक-स्वरको हित और आमवात कफ वायु विबन्ध, छर्दि,श्वास, शूल, खांसी-हृदयके रोग, श्लीपद, सूजन, बवासीर, आनाह, उदर तथा वायुके रोगोंकी नाश करनेवाली होती है, अग्निके गुणकी अधिकतासे भीतरके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जलको सुखाकर मलको [illegible] वह ग्राही कहातीहै जैसे शुंठीआदिक,अब यह सन्देह होताहै कि जो वस्तु विबन्धको नाशकरती है [illegible] विबन्ध कैसे होसक्ती है ? इसका उत्तर यह है कि उसकी शक्ति विबन्ध के नाशकरने में है (ज[illegible] मलको तोड़ती है) परन्तु मलके गिराने में नहीं है ॥ १०० ॥

अथार्द्रकस्यनामानिगुणाश्च ॥

आर्द्रकंशृंगवेरंस्यात्कटुभद्रंतथार्द्रिका । आर्द्रिकाभेदिनीगुर्वीतीक्ष्णोष्णादीपनीमता ॥ कटुकामधुरापाकेरूक्षावातकफापहा । येगुणाःकथिताःशुंठ्यास्तेऽपिसंत्यार्द्रकेऽखिलाः ॥ भोजनाग्रेसदापथ्यंलवणार्द्रकभक्षणम् । अग्निसन्दीपनंरुच्यंजिह्वाकण्ठविशोधनम् ॥ कुष्ठपाण्ड्वामयेकृच्छ्रेरक्तपित्तेव्रणेज्वरे । दाहेनिदाघशरदोर्नैवपूजितमार्द्रकम् १०१ ॥

अदरकके नाम और गुण ॥

आर्द्रक–शृंगवेर–कटुभद्र और आर्द्रिका यह अदरक के नाम हैं–अदरक भेदक, भारी, तीक्ष्ण उष्ण, दीपन कटु, पाक में मधुर, रूखी और वात तथा कफकी नाशकहै जो गुण सोंठ के कहेगयेहैं वह संपूर्ण अदरक में भी हैं। भोजनके आदिमें सदैव सेंधानोन और अदरक पथ्य है इससे अग्निकी दीप्ति, रुचि और जिह्वासमेत कण्ठका शोधन होता है, कुष्ठ, पांडु, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त घाव, ज्वर और दाह इनरोगों में और ग्रीष्म तथा शरदृऋतु में अदरक हितकारी नहीं है ॥ १०१ ॥

अथ पिप्पल्यानामानिगुणाश्च ॥

पिप्पलीमागधीकृष्णावैदेहीचपलाकणा । उपकुल्योषणाशौण्डीकोलास्यात्तीक्ष्णतण्डुला ॥ पिप्पलीदीपनीवृष्यास्वादुपाकारसायनी । अनुष्णाकटुकास्निग्धावातश्लेष्महरीलघुः ॥ पिप्पलीरेचनीहन्तिश्वासकासोदरज्वरान् । कुष्ठप्रमेहगुल्मार्शःप्लीहशूलाममारुतान् ॥ आर्द्राकफप्रदास्निग्धाशीतलामधुरागुरुः । पित्तप्रशमनीसातुशुष्कापित्तप्रकोपिणी ॥ पिप्पलीमधुसंयुक्ता मेदःकफविनाशिनी । श्वासकासज्वरहरावृष्यामेध्याग्निवर्द्धिनी ॥ जीर्णज्वरेऽग्निमान्द्येचशस्यतेगुडपिप्पली । कासाजीर्णारुचिश्वासहृत्पाण्डुकृमिरोगनुत् ॥ द्विगुणःपिप्पलीचूर्णाद्गुडोऽत्रभिषजांमतः ॥ १०२ ॥

पीपल के नाम और गुण ॥

पिप्पली, मागधी, कृष्णा, वैदेही, चपला कणा, उपकुल्या, ऊषणा, शौण्डी, कोला और तीक्ष्ण तंडुला यह पीपल के नाम हैं, पीपल. दीपन, पुष्टिकारक, विपाक में मधुर, रसायन, कुछ उष्ण, कटु,स्निग्ध, हलकी, दस्तावर और वायु, कफ, श्वास, खांसी, उदर, ज्वर, कुष्ठ, प्रेमह, गुल्म, बवासीर, प्लीहा, शूल तथा आमवात की नाशक होती है, कच्ची पीपल. कफकारक, स्निग्ध, शीतल, मधुर,भारी और पित्तनाशक होती है परन्तु सूखने से पित्तको कुपित करती है, पीपल सहत के साथ मेद कफ, श्वास, खांसी तथा ज्वरकी नाशकारी वीर्यवर्द्धक मेधा तथा अग्निकी वृद्धि करने वाली होती है गुड़ के साथ पीपलका सेवन करने से जीर्णज्वर, अग्निकी मन्दता, खांसी,अजीर्ण अरुचि, श्वास, हृदय के रोग, पांडु और कृमि इन सबरोगोंका नाश होताहै यहां पीपल के चूर्ण से दूना गुड़ मिलाना यह वैद्योंकी संमति है ॥ १०२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ मरिचस्यनामानिगुणाश्च ॥

मरिचंवेल्लजंकृष्णमूषणंधर्मपत्तनम् । मरिचंकटुकंतीक्ष्णंदीप्नं कफवातजित् ॥ उष्णं पित्तकरंरूक्षंश्वासशूलकृमीन्हरेत् । तदार्द्रमधुरंपाकेनात्युष्णंकटुकंगुरुः ॥ किञ्चित्तीक्ष्णगुणश्लेष्मप्रसेकिस्यादपित्तलम् ॥ १०३ ॥

मिर्चकेनाम और गुण ॥

मरिच, वेल्लज, कृष्ण, ऊषण–और धर्मपत्तन यह मिर्चके नामहैं–मिरच, कटु, तीक्ष्ण दीपन कफ, वातनाशक, उष्ण, पित्तकारक, रूक्ष और श्वास शूल तथा कृमिरोग की नाशक होती है, गीली मिरच पाक में मधुर कुछ उष्ण, कटु, भारी, कुछतीक्ष्ग और कफ की निकालनेवाली तथा कुछ पित्त करनेवाली होती है ॥ १०३ ॥

अथ त्रिकटुकनामलक्षणगुणाः ॥

विश्वोपकुल्यामरिचंत्रयंत्रिकटुकथ्यते । कटुत्रिकन्तुत्रिकटुत्र्यूषणंव्योषउच्यते॥त्र्यूषणंदीपनंहन्तिश्वासकासत्वगामयान् ।गुल्ममेहकफस्थौल्यमेदःश्लीपदपीनसान् १०४।

त्रिकटु के नाम लक्षण और गुण ॥

सोंठ, पीपल और मिर्च इनको त्रिकटु कहते हैं कटुत्रिक, त्रिकटु, त्र्यूषण और व्योष यह इसके नाम हैं, त्रिकटु अग्निदीपक और श्वास खांसी, त्वचाके रोग, गुल्म, प्रमेह, कफ, स्थूलता, मेद, श्लीपद तथा पीनस का नाशक होता है॥ १०४ ॥

अथ पिप्पलीमूलस्यनामानिगुणाश्च ॥

ग्रन्थिकंपिप्पलीमूलमूषणंचटकाशिरः । दीपनंपिप्पलीमूलंकटूष्णंपाचनंलघु ॥ रूक्षं पित्तकरंभेदिकफवातोदरापहम् । आनाहप्लीहगुल्मघ्नंकृमिश्वासक्षयापहम् ॥ १०५ ॥

पीपलामूल के नाम और गुण ॥

ग्रंथिक, पिप्पलीमूल, ऊषण और चटका शिर यह पीपलामूलके नामहैं पीपलामूल दीपन, कटु, उष्ण, पाचक, हलका, रूखा, पित्तवर्द्धक, भेदक, कफ, वायुनाशक और उदर आनाह, प्लीहा, गुल्म कृमि, श्वास और क्षयरोगनाशक होताहै॥ १०५॥

अथ चतुरूषणस्यलक्षणगुणाः ॥

त्र्यूषणंसकणामूलंकथितंचतुरूषणम्॥व्योषस्यैवगुणाःप्रोक्ताअधिकाश्चतुरूषणे १०६॥

चतुरूषण के लक्षण और गुण ॥

त्रिकटु और पीपलामूल यह चारों मिलकर चतुरूषण कहाते हैं इसमें त्रिकटु के कलु अधिक गुण होते हैं ॥ १०६ ॥

चव्यगुणः ॥

भवेच्चव्यन्तुचविकाकथितासातथोषणा॥कणामूलगुणंचव्यंविशेषाद्गुदजापहम्१०७॥

चव्यके नाम और गुण ॥

चव्य, चविका और ऊषणा यह चव्यके नाम हैं, चव्य में पीपलामूल के समान गुणहैं परन्तु यह गुदाके रोगोंको विशेष करके नाश करती है ॥ १०७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ गजपिप्पल्या नामानिगुणाः ॥

चविकायाःफलंप्राहुःकथितागजपिप्पली । कपिवल्लीकोलवल्लीश्रेयसीवशिरश्च सा ॥ गजकृष्णाकटुर्वातश्लेष्महृद्वह्निवर्द्धिनी । उष्णानिहन्त्यतीसारं श्वासकण्ठामय कृमीन् ॥ १०८ ॥

गजपीपलके नाम और गुण ॥

पण्डितलोग चव्यके फलको गजपीपल कहते हैं, कपिवल्ली, कोलवल्ली, श्रेयसी और वशिर यह गजपीपल के नामहैं गजपीपल. कटु, वातकफनाशक अग्निवर्द्धक, उष्ण और अतीसार, श्वास कंठरोग तथा कृमिनाशक होतीहै ॥ १०८ ॥

अथ चित्रकस्य नामानि गुणाश्च ॥

चित्रकोऽनलनामाच पीठोव्यालस्तथोषणः । चित्रकःकटुकःपाके वह्निकृत्पाचनोल घुः ॥ रूक्षोष्णग्रहणीकुष्ठशोथार्शःकृमिकासनुत् । वातश्लेष्महरोग्राहीवातार्शःश्ले ष्मपित्तहृत् ॥ १०९ ॥

चीतेके नाम और गुण ॥

चित्रक, अनल, पीठ, व्याल और ऊषण यह चीतेके नामहैं चीता. पाकमें कटु अग्निवर्द्धक पाचक हलका रूखा उष्ण,ग्राही और संग्रहणी कुष्ठ सूजन बवासीर कृमि खांसी मिलेहुए वात कफवात कफ तथा।पित्तका नाशक होताहै ॥ १०९ ॥

अथ पञ्चकोलस्यलक्षणगुणाः ॥

पिप्पलीपिप्पलीमूलंचव्यचित्रकनागरैः । पञ्चभिःकोलमात्रंयत्पञ्चकोलं तदुच्यते ॥ पञ्चकोलंरसेपाकेकटुकंरुचिकृन्मतम् । तीक्ष्णोष्णंपाचनं श्रेष्ठं दीपनं कफवातनुत् ॥ गु ल्मप्लीहोदरानाहशूलघ्नंपित्तकोपनम् ॥ ११० ॥

पंचकोलके लक्षण और गुण ॥

पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता और सोंठ यहसब आठ २ माशे मिलकर पंचकोल कहलाता है, पंचकोल. रस तथा पाकमें कटु, रुचिकारक, तीक्ष्ण, उष्ण, अत्यन्त पाचक, दीपन, पित्तके कोपका करनेवाला और कफ वात गुल्म प्लीहा उदर आनाह तथा शूलनाशक होताहै ॥ ११० ॥

अथ षडूषणस्यलक्षणगुणाः ॥

पञ्चकोलंसमरिचंषडूषणमुदाहृतम् । पञ्चकोलगुणंतत्तुरूक्षमुष्णंविषापहम् ॥ १११ ॥

षडूषण के लक्षण और गुण ॥

मिर्च समेत पंचकोलको षडूषण कहतेहैं षडूषण पंचकोलके समान गुणवाला होताहै परन्तु वह विशेष करके रूखा उष्ण और विषदोषनाशक होताहै ॥ १११ ॥

अथ यवान्यानामानिगुणाः ॥

यवानिकोग्रगंधाचब्रह्मदर्भाऽजमोदिका । सैवोक्तादीप्यकादीप्या तथास्याद्यवसाह्व

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

या ॥ यवानीपाचनीरुच्यातीक्ष्णोष्णा कटुकालघुः। दीपनीच तिक्तापित्तलाशुक्रशूल हृत् ॥ वातश्लेष्मोदरानाहगुल्मप्लीहकृमिप्रणुत् ॥ ११२ ॥

अजवाइन के नाम और गुण ॥

यवानी, उग्रगंधा, ब्रह्मदर्भा, अजमोदिका, दीप्यका, दीप्या और यवसाह्वा यह अजवाइनके नाम हैं अजवाइन. पाचक रुचिकारक तीक्ष्ण उष्ण और कटु हलकी दीपन तिक्त पित्तवर्द्धक वीर्यनाशक और शूल वात कफ उदर आनाह गुल्म प्लीहा तथा कृमिनाशक होती है ॥ ११२ ॥

अथाजमोदायाः नामानि गुणाश्च ॥

अजमोदाखराश्वाच मयूरोदीप्यकस्तथा। तथाब्रह्मकुशाप्रोक्ता कारवीलोचमस्तका ॥ अजमोदाकटुस्तीक्ष्णा दीपनीकफवातनुत्। उष्णाविदाहिनीहृद्या वृष्याबलकरी लघुः ॥ नेत्रामयकफच्छर्दिहिक्कावस्तिरुजोहरेत् ॥ ११३ ॥

अजमोदके नाम और गुण ॥

अजमोदा, खराश्वा, मयूर, दीप्यक, ब्रह्मकुशा, कारवी और लोचमस्तका यह अजमोदके नामहैं, अजमोद. कटु, तीक्ष्ण, दीपन, कफ वातनाशक, उष्ण, विदाही, हृदयकोहित, वीर्यवर्द्धक, बलकारी, लघु और नेत्ररोग, कृमि, छर्दि, हिचकी तथा वस्तिकी पीडाका नाशक होती है ॥ ११३ ॥

अथ खुरासानीयवानीगुणाः ॥

पारसीकयवानीतुयवानीसदृशीगुणैः। विशेषात्पाचनीरुच्याग्राहिणीमादिनीगुरुः ११४

खुरासानी अजवाइनकेगुण ॥

खुरासानीअजवाइन अजवाइनके समान गुणवाली होतीहै परन्तु यह विशेष करके पाचक रुचि-कारक ग्राही, मदकारी और भारी होती है ॥ ११४ ॥

अथ शुक्लजीरा कृष्णजीरा कलौंजी एषां नामानि गुणाश्च ॥

जीरकोजरणोजाजी कणास्याद्दीर्घजीरकः। कृष्णजीरःसुगन्धश्च तथैवोद्गारशोधनः ॥ कालाजाजीतुसुषवी कालिकाचोपकालिका। पृथ्वीकाकारवीपृथ्वी पृथुकृष्णोपकुञ्चिका ॥ उपकुञ्चीचकुञ्चीचबृहज्जीरकइत्यपि। जीरकत्रितयंरूक्षंकटूष्णंदीपनंलघु ॥ संग्राहिपित्तलंमेध्यं गर्भाशयविशुद्धिकृत्। ज्वरघ्नंपाचनंवृष्यंबल्यंरुच्यंकफापहम् ॥ चक्षुष्यंपवनाध्मानगुल्मछर्द्यतिसारहृत् ॥ ११५ ॥

श्वेतजीरा कालाजीरा और कलौंजीके नाम और गुण ॥

सफेदजीरेको जीरक, जरण, अजाजी, कणा और दीर्घजीरक कहते हैं, कालेजीरेको सुगन्ध, उद्गार, शोधन, कालाजाजी, सुषवी, कालिका, उपकालिका, पृथ्वीका, कारवी, पृथ्वी, पृथु, कृष्णा और उपकुंचिका कहते हैं और कलौंजीका कुंची उपकुंची और बृहज्जीरक कहते हैं यहतीनों प्रकारके जीरे. रूखे, कटु, उष्ण, दीपन, लघु, ग्राही, पित्तवर्द्धक, मेधाको हित, गर्भाशयके शुद्धकरनेवाले, ज्वर-नाशक, पाचक, वीर्यवर्द्धक, रुचि तथा बलकारक, कफनाशक, नेत्रोंको हित और वायु, उदर, आ-ध्मान, गुल्म, छर्दि और अतीसारनाशक होते हैं ॥ ११५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ धान्यकस्य नामानि गुणाश्च ॥

धान्यकंधानकंधा[illegible]धानेयकंतथा । कुनटीधेनुकाछत्राकुस्तुम्बुरुवितुन्नकम् ॥ धान्यकंतुवरंस्निग्धम[illegible]यंमूत्रलंलघु। तिक्तंकटूष्णवीर्य्यञ्चदीपनंपाचनंस्मृतम्॥ ज्वरघ्नं रोचकंग्राहिस्वादुपाकि[illegible]दोषनुत् । तृष्णादाहवमिश्वासकासकार्श्यक्रिमिप्रणुत् ॥ आर्द्रन्तुतद्गुणंस्वादुविशेषात्पित्तनाशितत् ॥ ११६ ॥

धनियें के नाम और गुण ॥

धान्यक–धानक–धान्य–धाना-धानेयक-कुनटी धेनुका–छत्रा-कुस्तुम्बुरु और वितुन्नक यह धनियें के नामहैं धनियां. तिक्त,कटु,कषाय, रसयुक्त, स्निग्ध, वीर्यको अहित, मूत्रकारक, हलका, वीर्य में उष्ण, दीपन, पाचक, ज्वरनाशक, रुचिकारक, ग्राही, पाकमें मधुर,त्रिदोषनाशक और तृषा, दाह,छर्दि,श्वास खांसी, कृशता तथा क्रिमिका दूर करनेवाला होताहै गीले धनियेंमें भी यहीगुण होतेहैं परन्तु विशेष करके पित्तका नाशक होताहै ॥ ११६ ॥

अथ सौंफिसोआतयोर्नामानिगुणाश्च ॥

शतपुष्पाशताह्वाचमधुराकारवीमिसिः।अतिलम्बीसितच्छत्रासंहिताछत्रिकापिच॥ छत्राशालेयशालीनोमिश्रेयामधुरामिसिः । शतपुष्पालघुस्तीक्ष्णापित्तकृद्दीपनीकटुः ॥ उष्णाज्वरानिलश्लेष्मव्रणशूलाक्षिरोगहृत् । मिश्रेयातद्गुणाप्रोक्ताविशेषाद्योनिशूलनुत् ॥ अग्निमान्द्यहरीहृद्याबद्धविट्क्रिमिशूलहृत् । रूक्षोष्णापाचनीकासवमिश्लेष्मानिलान् हरेत् ॥ ११७ ॥

सौंफ और सोवा के नाम और गुण ॥

शतपुष्पा,शताह्वा,मधुरा,कारवी,मिसि, अतिलम्बी, सितच्छत्रा, संहिता, और छत्रिका यह सौंफ के नामहैं छत्रा, शालेय, शालीना मिश्रेया, मधुरा और मिसि यह सोवाके नामहैं सौंफ. लघु,तीक्ष्ण, पित्तवर्द्धक, दीपन, कटु, उष्ण और ज्वर, वायु कफ, घाव शूल तथा नेत्ररोगकी नाशक होतीहै सोवा. सौंफ के समान गुणवाला, विशेष करके योनिकी पीड़ा मन्दाग्नि हृदयको हित मलकी बद्धता, क्रिमि शूल नाशक रूखा, उष्ण, पाचक, खांसी छर्दि कफ तथा वायुका नाशक होताहै ॥ ११७ ॥

अथ मेथीवनमेथी नामगुणाः ॥

मेथिकामेथिनीमेथीदीपनीबहुपत्रिका । बोधिनीबहुबीजाचजातिगन्धफलातथा ॥ वल्लरीचन्द्रिकामन्थामिश्रपुष्पाचकैरवी । कुञ्चिकाबहुपर्णीचपीतबीजामुनिच्छदा ॥ मेथिकावातशमनीश्लेष्मघ्नीज्वरनाशिनी।ततःस्वल्पगुणाबल्यावाजिनांसातुपूजिता ॥११८॥

मेथी और वनमेथीके नाम व गुण ॥

मेथिका, मेथिनी, मेथी, दीपनी, बहुपत्रिका, बोधिनी, बहुबीजा, जाति, गन्धफला, वल्लरीचन्द्रिका, मन्था, मिश्रपुष्पा, कैरवी, कुंचिका, बहुपर्णी, पीतबीजा और मुनिच्छदा यह मेथीके नामहैं मेथी. वायु कफ और ज्वरकी नाश करनेवाली होती है और वनमेथी इस्से गुणों में न्यून होती है परन्तु यह घोड़ोंको हितकारक होती है ॥ ११८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ चन्द्रशूरगुणाः ॥

चन्द्रिकाचर्महन्त्रीचपशुमेहनकारिका। नन्दिनीकारवीभद्रा[illegible]पासुवासरा॥ चन्द्रशूरंहितंहिक्कावातश्लेष्मातिसारिणाम्। असृग्वातगदद्वेषिबल[illegible]विवर्द्धनम्॥११९॥

चन्द्रशूर के नाम और गुण॥

चन्द्रिका, चर्म्महन्त्री, पशुमेहनकारिका, नन्दिनी, कारवी, भद्रा वासपु[illegible] और सुवासरा यह चन्द्रशूरके नामहैं चन्द्रशूर. वातरक्त रोगमें अहित बल तथा पुष्टिकारक हिचकी वात श्लेष्मा तथा अतीसार में हित होताहै॥ ११९॥

अथ चारदाना॥

मेथिकाचन्द्रशूरश्चकालाजाजीयवानिका। एतच्चतुष्टयंयुक्तंचतुर्बीजमितिस्मृतम्॥तच्चूर्णंभक्षितंनित्यंनिहन्तिपवनामयम्।अजीर्णंशूलमाध्मानंपार्श्वशूलंकटिव्यथाम्।१२०॥

चारदाने के लक्षण और गुण॥

मेथिका, चन्द्रशूर, कालाजीरा और अजवाइन यह सब मिलेहुए चतुर्बीज अर्थात् चारदाना कहलातेहैं इनका चूर्ण नित्य खानेसे वायुरोग, अजीर्ण, शूल, उदर, आध्मान, पशलियों का दर्द और कमरका दर्द नष्ट होताहै॥ १२०॥

अथ हिंगुः॥

सहस्रवेधिजतुकंवाह्लीकंहिंगुरामठम्। हिंगूष्णंपाचनंरुच्यंतीक्ष्णंवातबलासहृत्॥ शूलगुल्मोदरानाहक्रिमिघ्नंपित्तवर्द्धनम्। स्त्रीपुष्पजननंबल्यंमूर्च्छापस्मारहृत्परम्॥१२१॥

हींगके नाम और गुण॥

सहस्रवेधि, जतुक, वाह्लीक, हिंगु और रामठ यह हींगके नामहैं हींग. उष्ण, पाचक, रुचिकारक, तीक्ष्ण, पित्तवर्द्धक और वायु कफ शूल गुल्म उदर आनाह और क्रिमि नाशक रज प्रवर्त्तक, बलकारक, मूर्च्छा और अपस्मार (मृगी) नाशक होतीहै॥ १२१॥

अथ वचनामानिगुणाश्च॥

वचोग्रगन्धाषड्ग्रन्थागोलोमीशतपर्विका।क्षुद्रपत्रीचमङ्गल्याजटिलोग्राचलोमशा॥ वचोग्रगन्धाकटुकातिक्तोष्णावान्तिवह्निकृत्। विबन्धाध्मानशूलघ्नीशकृन्मूत्रविशोधिनी॥ अपस्मारकफोन्मादभूतजन्त्वनिलान्हरेत्॥ १२२॥

वचके नाम और गुण॥

वचा उग्रगन्धा षड्ग्रन्था गोलोमी शतपर्विका क्षुद्रपत्री मंगल्या जटिला उग्रा और लोमशा यह वच के नामहैं वच. उग्रगन्धवाली, कटु, तिक्त रससे युक्त, उष्ण, छर्दि करानेवाली, अग्निवर्द्धक, विबन्ध, आध्मान, शूलमलमूत्र शोधक, मृगी, कफ, उन्माद, भूतदोष तथा वायुनाशक होतीहै॥ १२२॥

अथ खुरासानीवचा॥

पारसीकवचाशुक्लाप्रोक्ताहैमवतीतिसा। हैमवत्युदितातद्वद्वातंहन्तिविशेषतः॥१२३॥

खुरासानी वच॥

पारसीकवचा हैमवती यह खुरासानी वचके नामहैं इसका रंग श्वेत होताहै इसमें वचके समान गुण होते हैं परन्तु यह वायुको विशेष करके नाश करती है॥ १२३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथमहाभरीवचा ॥

यस्यालोकेकुलि[illegible]नामान्तरम् । सुगन्धाप्युग्रगन्धाचविशेषात्कफकासनुत्॥ सुस्वरत्वकरीरुच्या[illegible]ण्ठमुखशोधिनी । अपरासुगन्धा ॥ स्थूलग्रन्थिःयस्यालोकेमहाभरीइतिनाम । स्थूल[illegible]न्थिःसुगन्धास्यात्ततोहीनगुणास्मृता ॥ १२४ ॥

महाभरीवचा अर्थात् कुलींजन के नाम और गुण ॥

सुगन्धा और उग्रगंधा यह कुलींजनके नाम हैं यह विशेष करके कफ तथा खांसीको नाशकरता है स्वरको उत्तम करता है रुचिकारकहै और हृदय कंठ तथा मुखको शुद्ध करता है और मोटी गांठवाला दूसरा कुलींजन जिसको लोकमें महाभरी कहते हैं यह पहले कुलींजन से गुणोंमें हीन है ॥१२४॥

अथचोवचीनीतिलोकेतुप्रसिद्धातस्यागुणाः ॥

द्वीपान्तरवचाकिञ्चित्तिक्तोष्णावह्निदीप्तिकृत् । विबन्धाध्मानशूलघ्नी शकृन्मूत्रविशोधिनी ॥ वातव्याधीनपस्मारमुन्मादंतनुवेदनाम् । व्यपोहतिविशेषेण फिरंगामयनाशिनी ॥ १२५ ॥

चोपचीनीके गुण ॥

द्वीपान्तर वचा अर्थात् चोपचीनी कुछ तिक्त उष्ण अग्निदीपक और विबन्ध, आध्मान, शूल मलमूत्रकी शुद्धि करने वाली वातव्याधि मृगी उन्माद और शरीर की पीडाकी नाशक होतीहै और यह फिरंग रोगको विशेष करके नाश करती है ॥ १२५ ॥

अथ हौहवेरद्वयम् ॥

तन्मध्येप्रथमंफलंमत्स्यसदृशंविस्रगन्धंद्वितीयमश्वत्थफलसदृशंमत्स्यगन्धंतयोर्नामानिगुणाश्च । हवुषाहपुषाविस्रापराश्वत्थफलामता। मत्स्यगंधाप्लीहहंत्रीविषघ्नीध्वांक्षनाशिनी॥हवुषादीपनीतिक्ताम्रदूष्णातुवरागुरुः।पित्तोदरसमीरार्शोग्रहणीगुल्मशूलहृत्। पराप्येतद्गुणाप्रोक्तारूपभेदोद्वयोरपि ॥ १२६ ॥

दोनों हाऊबेर ॥

उनमें से पहला फल मछली के समान कच्चे मांसकी दुर्गन्धिवाला और दूसरा पीपलकेफल के समान और मछली के समान दुर्गन्धिवाला होताहै उनदोनोंके नाम और गुण कहे जाते हैं हवुषा हपुषा और विस्रा यह पहले के नाम हैं अश्वत्थफला मत्स्यगन्धा प्लीहहन्त्री विषघ्नी और ध्वांक्षनाशिनी यह दूसरी के नामहैं हवुषा अग्नि दीप्ति कारक तिक्त कषाय रस युक्त कोमल उष्ण भारी और पित्त उदर वायु बवासीर ग्रहणी गुल्म और शूल रोगकी नाशक होतीहै दूसरी में भी इसीके समान गुण होते हैं केवल सूरतमें भेद है ॥ १२६ ॥

अथ वायुभृंगइतिलोके ॥

पुंसिक्लीवेविडंगःस्यात्क्रिमिघ्नोजन्तुनाशनः । तण्डुलश्चतथावेल्लममोघाचित्रतण्डुला ॥ विडंगंकटुतीक्ष्णोष्णंरूक्षंवह्निकरंलघु । शूलाध्मानोदरश्लेष्मक्रिमिवातविबन्धनुत्॥ १२७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वायविडङ्ग के नाम और गुण ।

विडङ्ग शब्द पुल्लिंग और नपुंसक लिंगहै क्रिमिघ्न जन्तुनाशक तंडुल अमोघा और चित्रतंडुला यह वायविडंगके नामहैं वायविडंग. कटु, तीक्ष्ण ,उष्ण, रूखी, अग्निवर्द्धक लघु और शूल आध्मान उदर रोग कफ क्रिमि वायु तथा विबन्धका नाशक होताहै ॥ १२७ ॥

अथ तुम्बुरुफलम् ॥

तुम्बुरुःसौरभःसौरोवनजःसानुजोन्धकः । तुम्बुरुप्रथितंतिक्तंकटुपाकेऽपितत्कटु ॥ रूक्षोष्णंदीपनंतीक्ष्णंरुच्यंलघुविदाहिच । वातश्लेष्माक्षिकर्णोष्ठशिरोरुग्गुरुताक्रिमीन् ॥ कुष्ठशूलारुचिश्वासप्लीहकृच्छ्राणिनाशयेत् ॥ १२८ ॥

तुम्बुरु (मिर्चके आकार फटे मुखवाला फल)के नाम और गुण ॥

तुम्बुरु,सौरभ,सौर,वनज,सानुज और अन्धक यह तुम्बुरु के नामहैं तुम्बुरु. तिक्त कटुरसयुक्त,विपाकमें कटु, रूखा, उष्ण, दीपन, तीक्ष्ण, रुचिकारक, लघु, बिदाही और वात कफके रोग नेत्र कर्ण ओष्ठ तथा शिरके रोग, शरीरका भारीपन, क्रिमि, कुष्ठ,शूल, अरुचि, श्वास, प्लीहा, तथा मूत्रकृच्छ्रका नाशक होताहै ॥ १२८ ॥

अथ वंशलोचननामगुणाः ॥

स्याद्वंशरोचनावांशीतुगाक्षीरातुगाशुभा । त्वक्क्षीरीवंशजाशुभ्रावंशक्षीरीचवैणवी ॥ वंशजाबृंहणीवृष्याबल्यास्वाद्वीचशीतला । तृष्णाकासज्वरश्वासक्षयपित्तास्रकामलाः ॥ हरेत्कुष्ठंव्रणंपाण्डुंकषायंवातकृच्छ्रजित् ॥ १२९ ॥

बंशलोचन के नाम और गुण ॥

बंशरोचना, बांशी, तुगाक्षीरी, तुगा, शुभा, त्वक्क्षीरी, बंशजा, शुभ्रा, बंशक्षीरी और बैणवी यह बंशलोचन के नामहैं बंशलोचन धातुओं का बढ़ानेवाला वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, मधुर, कषाय रस युक्त, शीतल और तृषा खांसी, ज्वर, श्वास, क्षय, रक्तपित्त, कामला, कुष्ठ, व्रण, पांडु तथा वात रोग नाशक होताहै ॥ १२९ ॥

अथ समुद्रफेन ॥

समुद्रफेनःफेनश्चडिण्डीरोऽब्धिकफस्त था । समुद्रफेनश्चक्षुष्योलेखनःशीतलश्च सः ॥ कषायोविषपित्तघ्नःकर्णरुक्कफहल्लघुः ॥ १३० ॥

समुद्र फेन के नाम और गुण ॥

समुद्रफेन,फेन,डिंडीर और अब्धिकफ यह समुद्रफेनके नामहैं, समुद्रफेन नेत्रोंकोहित. दुर्बलता करने वाला, शीतल, दस्तावर, कषैला और विषदोष, पित्त, कानके रोग, तथा कफका नाशक और हलका होताहै ॥ १३० ॥

अथाष्टकवर्गस्यलक्षणंगुणाः ॥

जीवकर्षभकौमेदकाकोल्यौऋद्धिवृद्धिके। अष्टवर्गोऽष्टभिर्द्रव्यैःकथितश्चरकादिभिः ॥ अष्टवर्गोहिमःस्वादुःबृंहणःशुक्रलोगुरुः । भग्नसन्धानकृत्कामबलासबलवर्द्धनः ॥ वातपित्तास्रतृड्दाहज्वरमेहक्षयापहः ॥ १३१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अष्टकवर्गके लक्षण और गुण ॥

जीवक, ऋषभक, मे[illegible]महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धि और वृद्धि इनसबके योगको चरक आदिकोंने अष्टव[illegible]है, अष्टवर्ग शीतल, स्वादु, धातुओंका वर्द्धक, वीर्यवर्द्धक, भारी, टूटेको जोडनेवाला, काम, बल[illegible] कफका वर्द्धक और वात, रक्तपित्त, तृषा, दाह, ज्वर, प्रमेह तथा क्षयरोग का नाशक होता है ॥ १[illegible] ॥

तत्रजीवकर्षभकयोरुत्पत्तिलक्षणनामगुणाः ॥

जीवकर्षभकौज्ञेयौ हिमाद्रिशिखरोद्भवौ । रसोनकन्दवत्कन्दी निःसारौसूक्ष्मपत्रकौ ॥ जीवकःकूर्चकाकार ऋषभोवृषशृंगवत् । जीवकोमधुरःशृंगो ह्रस्वांगःकूर्चशीर्षकः ॥ ऋषभोवृषभोधीरो विषाणीन्द्राक्षइत्यपि । जीवकर्षभकौबल्यौ शीतौशुक्रकफप्रदौ ॥ मधुरौपित्तदाहास्त्रकार्श्यवातक्षयापहौ ॥ १३२ ॥

जीवक ऋषभक की उत्पत्ति लक्षण नाम और गुण ॥

जीवक और ऋषभक हिमालयपर्व्वतके शिखरपर उत्पन्नहोते हैं इनका कन्द लहसनके समान पत्ते छोटे तथा निस्सार होते हैं, जीवकका आकार कूचीके समान और ऋषभकका आकार बैलके सींगके समान होताहै, मधुर शृंग, ह्रस्वांग और कूर्चशीर्षक यह जीवकके नामहैं, ऋषभ, वृषभ, धीर, विषाणी और इन्द्राक्ष यह ऋषभकके नामहैं, जीवक और ऋषभक बलकारक, शीतल, वीर्य्य तथा कफके वर्द्धक, मधुर और पित्त, दाह, रुधिरदोष, दुर्बलता, वात तथा क्षयरोगके नाशकहैं ॥ १३२ ॥

अथ मेदामहामेदयोरुत्पत्तिलक्षणनामगुणाः ॥

महामेदाभिधःकंदो मोरंगादौप्रजायते । महामेदाखनौमेदा स्यादित्युक्तंमुनीश्वरैः ॥ शुक्लार्द्रकनिभःकंदो लताजातःसुपाण्डुरः । महामेदाभिदोज्ञेयो मेदोलक्षणमुच्यते ॥ शुक्लकंदोनखच्छेद्यो मेदोधातुमिवस्रवेत् । यःसमेदेतिविज्ञेयो जिज्ञासातत्परैर्जनैः ॥ स्वल्पपर्णीमणिच्छिद्रा मेदामेदोभवाध्वरा । महामेदावसुच्छिद्रा त्रिदंतीदेवतामणिः ॥ मेदायुगंगुरुस्वादु वृष्यंस्तन्यकफावहम् । बृंहणंशीतलंपित्तरक्तवातज्वरप्रणुत् ॥ १३३ ॥

मेदामहामेदाके उत्पत्ति लक्षण नाम और गुण ॥

महामेदा नामक कन्द मोरंग आदि स्थानों में उत्पन्न होताहै, मुनिलोगोंने इसको खनोमेदानाम सेभी कहाहै, यह कन्द लतासे उत्पन्न होताहै और श्वेत अदरकके समान रंगमें श्वेत होताहै, मेदा नामक कन्द श्वेतवर्णहोताहै इसको नखोंसे फाडने में मेदधातुके समान रस निकलताहै स्वल्पपर्णी मणिच्छिद्रा, मेदा, मेदोभवा और अध्वरा यह मेदाके नामहैं, महामेदा, वसुच्छिद्रा, त्रिदन्ती और देवतामणि यह महामेदाके नामहैं, मेदा और महामेदा भारी, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, दुग्ध तथा कफ-कारक, शरीरपोषक, शीतल और रक्तपित्त वात तथा ज्वरनाशक होती हैं ॥ १३३ ॥

अथ काकोलीक्षीरकाकोल्योरुत्पत्तिलक्षणनामगुणाः ॥

जायतेक्षीरकाकोली महामेदोद्भवस्थले । यत्रस्यात्क्षीरकाकोली काकोलीतत्रजायते ॥ पीवरीसदृशःकंदः क्षीरंस्रवतिगंधवान् । सप्रोक्तःक्षीरकाकोली काकोलीलिंगमुच्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ते ॥ यथास्यात्क्षीरकाकोली काकोल्यपितथाभवेत् । एषाकिं[illegible]वेत्कृष्णा भेदोऽयमुभयोरपि ॥ काकोलीवायसोलीच वीराकायस्थिकातथा । सा[illegible]क्षीरकाकोली वयस्था क्षीरवल्लिका ॥ कथिताक्षीरिणीधारा क्षीरशुक्लापयस्विनी । [illegible]युगलंशीतं शुक्लंमधुरंगुरु ॥ बृंहणंवातदाहास्रपित्तशोषज्वरापहम् ॥ १३४ ॥

काकोली और क्षीरकाकोलीकी उत्पत्ति लक्षण नाम [illegible] गुण ॥

जहां महामेदा उत्पन्न होतीहै वहां काकोली और क्षीरकाकोलीभी उत्पन्न होतीहै, क्षीरकाकोली का कन्द सतावरिके समान होताहै उसमें दूध और उत्तम सुगन्धि होती है यह क्षीरकाकोली कहीगई अब काकोलीका लक्षण कहते हैं-क्षीरकाकोली और काकोली समान होती हैं भेद इतनाहै कि काकोली कुछकाली होती है, काकोली, वायसोली, वीरा और कायस्थिका यह काकोली के नाम हैं वयस्था, क्षीरवल्लिका, क्षीरिणी, धारा,क्षीरशुक्ला और पयस्विनी यह क्षीरकाकोली के नामहैं, काकोली और क्षीरकाकोली शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, मधुर, भारी, मांसवर्द्धक और वात, दाह, रक्तपित्त, शोष तथा ज्वरकी नाशक होती हैं ॥ १३४ ॥

अथर्द्धिवृद्ध्योरुत्पत्तिलक्षणनामगुणाः ॥

ऋद्धिर्वृद्धिश्चकंदौद्वौ भवतःकोशयामले । श्वेतलोमान्वितःकंदो लताजातःसुरन्ध्रकः ॥ सएवऋद्धिर्वृद्धिश्च भेदमप्येतयोर्ब्रुवे । तूलग्रन्थिसमाऋद्धिर्वामावर्त्तफलाच सा ॥ वृद्धिस्तुदक्षिणावर्त्तफलाप्रोक्तामहर्षिभिः । ऋद्धिर्योग्यंसिद्धिलक्ष्म्यौ वृद्धेरप्याह्वयाइमे ॥ ऋद्धिर्बल्यात्रिदोषघ्नी शुक्रलामधुरागुरुः । प्राणैश्वर्य्यकरीमूर्च्छा रक्तपित्तविनाशिनी ॥ वृद्धिर्गर्भप्रदाशीता बृंहणीमधुरास्मृता । वृष्यापित्तास्रशमनी क्षतकासक्षयापहा ॥ राज्ञामप्यष्टवर्गास्तु यतोऽयमतिदुर्लभः। तस्मादस्यप्रतिनिधिंगृह्णीयात्तद्गुणं भिषक् ॥ (मुख्यः सदृशः प्रतिनिधिः) एतस्य प्रतिनिधिमाह ॥ मेदाजीवककाकोली ऋद्धिवृद्धेऽपिचासती । वरीविदार्य्यश्वगन्धा वाराहीश्चक्रमात्क्षिपेत् ॥ मेदामहामेदा स्थाने शतावरीमूलम् । जीवकर्षभकस्थानेविदारीमूलम् । काकोली क्षीरकाकोलीस्थाने अश्वगन्धामूलम् । ऋद्धिवृद्धिस्थाने वाराहीकंदंगुणैस्तत्तुल्यं क्षिपेत् ॥ १३५ ॥

ऋद्धिवृद्धिकी उत्पत्ति लक्षण नाम और गुण ॥

ऋद्धि वृद्धि यह दोनों कन्द कोशयामलनाम देशमें उत्पन्न होते हैं यह दोनों कन्द श्वेतरंग रोमयुक्त छिद्र संयुक्त और लतासे उत्पन्न होते हैं-अब इनका भेद कहते हैं-ऋद्धि रुईके डोंडेके समान होती है उसका फल बाईं ओरको घूमाहुआ होताहै और वृद्धिका फल दाहिनी ओरको घूमाहुआ होताहै-योग्य सिद्धि और लक्ष्मी यह ऋद्धि और वृद्धि इनदोनोंके नामहैं- ऋद्धि बलकारक, त्रिदोषनाशक, वीर्यवर्द्धक, मधुर, भारी, आयु तथा ऐश्वर्य्य की देनेवाली और मूर्च्छा तथा रक्तपित्तकी नाशक होती है वृद्धि, गर्भदायक, शीतल, मांसवर्द्धक, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक और रक्तपित्त, घाव, खांसी तथा क्षयरोग की नाशक होती है वैद्य प्रायः इनके बदलेमें इनके ही समान औषधियों को ग्रहणकरें क्योंकि यह अष्टवर्ग राजालोगोंको भी दुर्लभहै, मेदा और महामेदाके बदले में सतावरि, जीवक ऋषभकके बदले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में विदारीकन्द काकोली क्षीरकाकोली के अभावमें असगन्ध और ऋद्धि तथा वृद्धि के अभाव में वाराहीकन्द ग्रहणकरे क्योंकि यह गुणमें समानहैं॥ १३५॥

अथ जेठीमधु॥

यष्टीमधुतथायष्टी मधुकंक्लीतकंतथा। अन्यत्क्लीतनकन्तत्तु भवत्युपमधूलिका॥ यष्टीहिमागुरुःस्वाद्वी चक्षुष्याबलवर्णकृत्। सुस्निग्धाशुक्रलाकेश्या स्वर्य्यापित्तानिलास्रजित्॥ व्रणशोथविषच्छर्दितृष्णाग्लानिक्षयापहा॥ १३६॥

मुलहटी के नाम और गुण॥

यष्टीमधु, यष्टी, मधूक और क्लीतक यह मुलहटी के नाम हैं, एक दूसरे प्रकार की जो मुलहटी उसको क्लीतनक और मधूलिका कहते हैं—मुलहटी. शीतल, भारी, मधुर, नेत्रोंको हित, बल तथा वर्ण करनेवाली, स्निग्ध, वीर्य्यवर्द्धक, केशोंको हित, स्वर को उपकारी और पित्त वायु, रुधिरदोष, घाव, सूजन, विषदोष, छर्दि, तृषा, शरीर की ग्लानि तथा क्षयकी नाशक होती है॥ १३६॥

अथ कम्बीला॥

काम्पिल्लःकर्क्कशश्चन्द्रो रक्तांगोरोचनोऽपिच। काम्पिल्लःकफपित्तास्रकृमिगुल्मोदरव्रणान्॥ हन्तिरेचीकटूष्णश्च मेहानाहविषाश्मनुत्॥ १३७॥

कबीले के नाम और गुण॥

कांपिल्ल, कर्कश, चन्द्र, रक्तांग और रोचन यह कबीले के नाम हैं, कबीला. कफ पित्त रुधिर दोष, कृमि, गुल्म, उदर, व्रण, प्रमेह, आनाह, विष तथा पथरीका नाशक, रेचक, कटु और उष्ण होता है॥ १३७॥

अथ आरग्वधः॥

आरग्वधोराजवृक्षःसम्पाकश्चतुरङ्गुलः। आरवेतोव्याधिघातःकृतमालःसुवर्णकः॥ कर्णिकारोदीर्घफलःस्वर्णाङ्गःस्वर्णभूषणः। आरग्वधोगुरुःस्वादुःशीतलःस्रंसनोमृदुः॥ ज्वरहृद्रोगपित्तास्रवातोदावर्त्तशूलनुत्। तत्फलंस्रंसनंरुच्यं कुष्ठपित्तकफापहम्॥ ज्वरेतु सततंपथ्यंकोष्ठशुद्धिकरंपरम्॥ १३८॥

अमलतास के नाम और गुण॥

आरग्वध, राजवृक्ष, संपाक, चतुरंगुल, आरवेत, व्याधिघात, कृतमाल, सुवर्णक, कर्णिकार, दीर्घफल, स्वर्णांग और स्वर्णभूषण यह अमलतास के नाम हैं, अमलतास. भारी, मधुर, शीतल, स्रंसन और ज्वर, हृदय के रोग, रक्तपित्त, वात, उदावर्त तथा शूलरोगनाशक होता है, अमलतास का फल स्रंसन, रुचिकारक, कुष्ठ, पित्त तथा कफनाशक, ज्वरमें सदैव पथ्य और कोष्ठका अत्यन्त शोधक होता है॥ १३८॥

अथ कटुकी॥

कट्वीतुकटुकातिक्ताकृष्णभेदाकटुम्भरा। अशोकामत्स्यशकलाचक्राङ्गीशकुलादनी॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मत्स्यपित्ताकाण्डरुहारोहिणीकटुरोहिणी । कटूवीतुकटुकापा[illegible]क्तारूक्षाहिमालघुः ॥ भेदिनीदीपनीहृद्याकफपित्तज्वरापहा । प्रमेहश्वासकासास्र[illegible]ष्ठक्रिमिप्रणुत् ॥ १३९ ॥

कुटकी के नाम और गुण ॥

कट्वी, कटुका, तिक्ता, कृष्णभेदा, कटुम्भरा, अशोका, मत्स्यशकला, [illegible]ांगी, शकुलादिनी, मत्स्यपित्ता, काण्डरुहा, रोहिणी और कटुरोहिणी यह कुटकी के नाम हैं, [illegible]की. विपाक में कटुतिक्त, रूखी, शीतल, हल्की, भेदक, दीपन, हृदयको हित और कफ, पित्त, ज्वर, प्रमेह, श्वास, खांसी, रुधिर के दोष, दाह, कुष्ठ तथा कृमिकी नाशक होती है ॥ १३९ ॥

अथ चिरायता ॥

किराततिक्तःकैरातःकटुतिक्तःकिरातकः । काण्डतिक्तोनार्य्यतिक्तो भूनिम्बोरामसेनकः ॥ किरातकोऽन्योनैपालःसोऽर्द्धतिक्तोज्वरान्तकः । किरातःसारकोरूक्षःशीतलस्तिक्तकोलघुः ॥ सन्निपातज्वरश्वासकफपित्तास्रदाहनुत् । कासशोथतृषाकुष्ठज्वरव्रणकृमिप्रणुत् ॥ १४० ॥

चिरायते के नाम और गुण ॥

किराततिक्त, कैरात, कटुतिक्त, किरातक, कांडतिक्त, नार्य्यतिक्त, भूनिम्ब और रोमसेनक यह चिरायते के नामहैं—एक दूसरे प्रकारका चिरायता नैपाल देशमें होताहै उसको अर्द्धतिक्त और ज्वरांतक भी कहते हैं—चिरायता. दस्तावर, रूखा, शीतल, तिक्त, हलका और सन्निपातज्वर, श्वास, कफ, रक्तपित्त, दाह, खांसी, सूजन, तृषा, कुष्ठ, ज्वर, घाव तथा कृमिका विनाशक होताहै ॥ १४० ॥

अथ इन्द्रयवः ॥

उक्तंकुटजबीजन्तुयवमिन्द्रयवंतथा । कलिंगञ्चापिकालिंगंतथाभद्रयवंस्मृतम् (इतिक्लीबेअमरःप्राह) क्वचिदिन्द्रस्यनामैवभवेत्तदभिधायकम् । फलानीन्द्रयवास्तस्यतथाभद्रयवाअपि॥ इन्द्रयवंत्रिदोषघ्नंसंग्राहिकटुशीतलम् । तिक्तंदाहहरंहन्तिरक्तपित्तप्रवाहिकाम् । ज्वरातीसाररक्तार्शोवमिवीसर्पकुष्ठनुत् । दीपनंगुदकीलास्रवातास्रश्लेष्मशूलजित् १४१

इन्द्रजौ के नाम और गुण ॥

कुटज के बीजको यव, इन्द्रयव, कलिंग, कालिंग और भद्रयव कहते हैं इसको अमरसिंहने नपुंसकलिंग में कहाहै और धन्वन्तरि कहते हैं कि इन्द्रके सम्पूर्ण नाम कुटज वृक्षके नाम हैं उसके फलको इंद्रयव और भद्रयव कहते हैं इंद्रयव त्रिदोषनाशक, ग्राही, कटु, शीतल, तिक्त, दाहनाशक, रक्तपित्तप्रवाहिकानाशक तथा दीपन और ज्वर अतीसार खूनी बवासीर, छर्दि, वीसर्प, कुष्ठ, गुदकील, रुधिरदोष, वातरक्त कफ तथा शूलका नाशक होताहै ॥ १४१ ॥

मयनफलम् ॥

मर्दनश्छर्दनःपिंडीनटःपिंडीतकस्तथा । करहाटोमरुवकःशल्यकोविषपुष्पकः । मदनोमधुरस्तिक्तोवीर्य्योष्णोलेखनोलघुः ॥ वान्तिकृद्विद्रधिहरःप्रतिश्यायव्रणान्तकः । रूक्षःकुष्ठकफानाहशोथगुल्मव्रणापहः ॥ १४२ ॥

मैनफल के नाम और गुण ॥

मर्दन, छर्दन, पिंड, नट, पिंडीतक, करहाट, मरुवक, शल्यक और विषपुष्पक यह मैनफलके नामहैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मैनफल. मधुर, तिक्तरस, वीर्य्य में उष्ण, लेखन, हलका, छर्द्दिकारक, प्रतिश्यायनाशक, रूखा और विद्रधि, पीनस, कुष्ठ, कफ, आनाह, सूजन, गुल्म तथा व्रणनाशक होताहै ॥ १४२ ॥

अथ रासना ॥

रास्नायुक्तरसारस्या सुवहारसनारसा। एलापर्णीचसुरसासुगन्धाश्रेयसीतथा ॥ रास्नामपाचिनीतिक्तागुरूष्णाकफवातजित्। शोथश्वाससमीरास्रवातशूलोदरापहा ॥ कासज्वरविषाशीतिवातिकामयसिध्महृत् ॥ १४३ ॥

रासनाके नाम और गुण ॥

रासना, युक्तरसा, रस्या, सुवहा, रसना, रसा, एलापर्णी, सुरसा, सुगंधा और श्रेयसी यह रासनाके नामहैं, रासना. आमकी पचानेवाली, तिक्त, भारी, उष्ण और कफ, वात, सूजन, श्वास, वातरक्त, वातशूल, उदररोग, खांसी, ज्वर, विष, अस्सी प्रकारके वातरोग तथा सिध्मरोगकी नाशक होती है १४३॥

अथ रास्नाभेदनाईइतिलोके ॥

नाकुलीसरसानागसुगन्धागन्धनाकुली । नकुलेष्टाभुजङ्गाक्षीसर्प्पाङ्गीविषनाशिनी ॥ नाकुलीतुवरातिक्ताकटुकोष्णाविनाशयेत् । भोगीलूतावृश्चिकाखुविषज्वरकृमिव्रणान् ॥ १४४ ॥

रासनाका भेद अर्थात् नाईके नाम और गुण ॥

नाकुली, सुरसा, नागसुगन्धा, गन्धनाकुली, नकुलेष्टा, भुजंगाक्षी, सर्पाङ्गी और विषनाशिनी यह नाई के नामहैं, नाई. तिक्त कटु, कषायरसयुक्त, उष्ण और सर्प, मकडी, बिच्छू तथा मूसेका विष, ज्वर कृमि तथा घावकी नाशक होती है ॥ १४४ ॥

अथ माचिका ॥

(पश्चिमदेशेमोइआइतिलोकेप्रसिद्धोवृक्षविशेषः) माचिकाप्रस्थिकाम्बष्ठातथाचाम्बालिकाम्बिका। मयूरविदलाकेशी सहस्राबालमूलिका ॥ माचिकाम्लारसेपाकेकषाया शीतलालघुः। पक्वातीसारपित्तास्रकफकण्ठामयापहा ॥ १४५ ॥

माचिका अर्थात् पश्चिम देशमें मोइया इस प्रसिद्ध के नाम और गुण ॥

माचिका, प्रस्थिका, अम्बष्ठा, अम्बालिका, अम्बिका, मयूरविदला, केशी, सहस्रा और बालमूलिका यह माचिकाके नामहैं, माचिका. रसमें अम्ल, पाकमें कषाय, शीतल, हलकी और पक्वातीसार पित्त, रुधिरदोष, कफ तथा कंठके रोगोंकी नाशक होती है ॥ १४५ ॥

अथ तेजवती ॥

तेजवल्कलइतिच। तेजस्विनीतेजवती तेजोह्वातेजनीतथा॥ तेजस्विनीकफश्वासकासास्यामयवातहृत्। पाचन्युष्णाकटुस्तिक्तारुचिवह्निप्रदीपिनी ॥ १४६ ॥

तेजवती के नाम और गुण ॥

तेजस्विनी, तेजवती, तेजोह्वा और तेजनी यह तेजोवती के नामहैं, तेजवती. कफ, श्वास, खांसी, मुखके रोग तथा वातकी नाशक, पाचक, उष्ण, कटु, तिक्तरसयुक्त, रुचिकारक और अग्निदीपक होती है ॥ १४६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ उमिजिनीमालकांगुनीइतिवा ॥

ज्योतिष्मतीस्यात्कटभीज्योतिष्काकङ्गुनीतिच। पारावतपदीपण्यालताप्रोक्ताककुन्दनी ॥ ज्योतिष्मतीकटुस्तिक्तासराकफसमीरजित्। अत्युष्णवमनीतीक्ष्णावह्निबुद्धिस्मृतिप्रदा ॥ १४७ ॥

मालकांगनीके नाम और गुण ॥

ज्योतिष्मती,कटभी,ज्योतिष्का,कंगुनी, पारावतपदी, पण्यालता और ककुन्दनी यह मालकागनी के नामहैं, मालकांगनी. कटु तिक्तरसयुक्त, सारक, कफ वातनाशक, अत्यन्त उष्ण, छर्द्दिकारक तीक्ष्ण और अग्नि, बुद्धि तथा स्मृति की देनेवाली होती है ॥ १४७ ॥

अथ कूटः ॥

कुष्ठरोगाह्वयंवाप्यंपारिभव्यन्तथोत्पलम् ॥ कुष्ठमुष्णङ्कटुस्वादुशुक्रलन्तिक्तकंलघु ॥ हन्तिवातास्रवीसर्पकासकुष्ठमरुत्कफान् ॥ १४८ ॥

कूटके नाम और गुण ॥

कुष्ठ,रोगाह्वय, वाप्य,पारिभव्य और उत्पल यह कूटके नामहैं, कूट. उष्ण,कटु, तिक्त मधुररसयुक्त, वीर्य्यवर्द्धक, हलकी और वातरक्त, वीसर्प, खांसी, कुष्ठ, वात तथा कफनाशक होती है ॥ १४८ ॥

अथ कुष्ठभेदपुष्करमूलम् ॥

उक्तंपुष्करमूलन्तुपौष्करंपुष्करञ्चतत्। पद्मपत्रञ्चकाश्मीरंकुष्ठभेदमिमंजगुः ॥ पौष्करं कटुकन्तिक्तमुष्णंवातकफज्वरान्। हन्तिशोथारुचिश्वासान्विशेषात्पार्श्वशूलनुत् १४९ ॥

पुष्करमूल के नाम और गुण ॥

पुष्करमूल, पौष्कर, पुष्कर, पद्मपत्र, काश्मीर और कुष्ठभेद यह पुष्करमूलके नामहैं, पुष्करमूल कटु तिक्तरसयुक्त, उष्ण और वातकफज्वर, सूजन, अरुचि तथा श्वासनाशक होताहै और यह विशेष पसली की पीडामें अत्यन्तगुणदायक है ॥ १४९ ॥

अथ चोक ॥

कटुपर्णीहैमवतीहेमक्षीरीहिमावती। हेमाह्वापीतदुग्धाचतन्मूलञ्चोकमुच्यते ॥ हेमाह्वारेचनीतिक्ताभेदिन्युत्क्लेशकारिणी। कृमिकण्डूविषानाहकफपित्तास्रकुष्ठनुत् ॥ १५० ॥

चोकके नाम और गुण ॥

कटुपर्णी, हैमवती,हेमक्षीरी, हिमावती, हेमाह्वा और पीतदुग्धा, यह कटुपर्णी के नामहैं इसकी जडको चोक कहते हैं, चोक.दस्तावर, तिक्त, भेदक, मचली करनेवाली और कृमि, कंडू,विष, आनाह कफ, पित्त, कुष्ठ तथा रक्तदोषकी नाशक होती है ॥ १५० ॥

अथ काकराशृंगी ॥

शृंगीकर्कटशृंगीचस्यात्कुलीरविषाणिका। अजशृंगीचवक्त्राचकर्कटाख्याचकीर्तिता ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शृंगीकषायातिक्तोष्ण कफवातक्षयज्वरान् । श्वासोऽर्द्ध्ववाततृट्कासहिक्कारुचिवमीन् हरेत् ॥ १५१ ॥

काकडासिंगी के नाम और गुण ॥

शृंगी, कर्कटशृंगी, कुलीर, विषाणिका, अजशृंगी, वक्रा और कर्कटाख्या यह काकडासिंगी के नामहैं, काकडासिंगी. तिक्त कषायरसयुक्त, उष्ण और कफ वात क्षय, ज्वर, श्वास, ऊर्द्ध्व वात, तृषा खांसी, हिचकी, अरुचि तथा छर्द्दिकी नाशक होती है ॥ १५१ ॥

अथ कायफरस्यनामगुणाः ॥

कट्फलःसोमवल्कश्च कैटर्य्यःकुम्भिकाऽपिच । श्रीपर्णीकाकुमुदिकाभद्राभद्रवतीतिच ॥ कट्फलस्तुवरस्तिक्तःकटुर्वातकफज्वरान् । हन्तिश्वासप्रमेहार्शःकासकण्ठामयारुचीः ॥ १५२ ॥

कायफल के नाम और गुण ॥

कट्फल, सोमवल्क, कैटर्य्य, कुंभिका, श्रीपर्णिका, कुमुदिका, भद्रा और भद्रवती यह कायफलके नामहैं, कायफल. कषाय तिक्त और कटुरसयुक्त और वातकफज्वर, श्वास, प्रमेह, बवासीर, खांसी, कंठरोग तथा अरुचिका नाशक होताहै ॥ १५२ ॥

अथ भार्ङ्गीवभनेटीइतिच ॥

भार्ङ्गीभृगुभवापद्माफञ्जीब्राह्मणयष्टिका । ब्राह्मण्यंगारवल्लीचखरशाकाचहञ्जिका ॥ भार्ङ्गीरूक्षाकटुस्तिक्तारुच्योष्णापाचनीलघुः । दीपनीतुवरागुल्मरक्तमुन्नाशयेद्ध्रुवम् ॥ शोथकासकफश्वासपीनसज्वरमारुतान् ॥ १५३ ॥

भारंगीके नाम और गुण ॥

भार्ङ्गी, भृगुभवा, पद्मा, फंजी, ब्राह्मणयष्टिका, ब्राह्मणी, अंगारवल्ली, खरशाका और हञ्जिका यह भारंगीके नामहैं, भारंगी. रूखी, कटुतिक्तकषायरसयुक्त, रुचिकारक, उष्ण, पाचक, लघु, दीपन और गुल्म, रुधिर, सूजन, खांसी, कफ, श्वास, पीनस, ज्वर तथा वातनाशक होती है ॥ १५३ ॥

अथ पाषाणभेदः ॥

पाषाणभेदकोऽश्मघ्नोगिरिभिद्भिन्नयोजनी। अश्मभेदोहिमस्तिक्तःकषायोवस्तिशोधनः ॥ भेदनोहन्तिदोषार्शोगुल्मकृच्छ्राश्महृद्रुजः । योनिरोगान्प्रमेहांश्च प्लीहशूलव्रणानिच ॥ १५४ ॥

पाषाणभेदके नाम और गुण ॥

पाषाणभेद, अश्मघ्न, गिरिभित् और भिन्नयोजनी यह पाषाणभेद के नामहैं, पाषाणभेद. शीतल, तिक्त कषायरसयुक्त, मूत्राशयका शोधक, भेदक और त्रिदोष, बवासीर, गुल्म, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, हृदयकेरोग, योनिरोग, प्रमेह, प्लीहा, शूल तथा घावका नाशक होताहै ॥ १५४ ॥

अथ धावई ॥

धातकीधातुपुष्पीचताम्रपुष्पीचकुञ्जरा। सुभिक्षाबहुपुष्पीचवह्निज्वालाचसास्मृता॥ धातकीकटुकाशीतामृदुकृत्तुवरालघुः। तृष्णातीसारपित्तास्रविषकृमिविसर्पजित् १५५॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धवई के नाम और गुण ॥

धातुकी, धातुपुष्पी, ताम्रपुष्पी, कुंजरा, सुभिक्षा, बहुपुष्पी और [illegible] यह धवई के नाम हैं धवई. कटु, कषायरसयुक्त, शीतल, कोमलता करनेवाली, हल्की और [illegible], अतीसार, पित्त, रक्तदोष, विष, कृमि और वीसर्पनाशक होती है ॥ १५५ ॥

अथ मञ्जिष्ठा ॥

मञ्जिष्ठाविकसाजिङ्गीसमंगाकालमेषिका । मण्डूकपर्णीभण्डीरीभण्डीयोजनवल्ल्यपि ॥ रसायन्यरुणाकालारक्तांगीरक्तयष्टिका। भण्डीतकीचगण्डीरीमञ्जूषावस्त्ररञ्जिनी॥ मञ्जिष्ठामधुरातिक्ताकषायास्वरवर्णकृत् । गुरुरुष्णाविषश्लेष्मशोथयोन्यक्षिकर्णरुक् ॥ रक्तातीसारकुष्ठास्त्रवीसर्प्पव्रणमेहनुत् ॥ १५६ ॥

मजीठके नाम और गुण ॥

मंजिष्ठा, विकसा, जिंगी, समंगा, कालमेषिका, मंडूकपर्णी, भंडीरी, भंडी, योजनवल्ली, रसायनी, अरुणा काला, रक्तांगी, रक्तयष्टिका, भंडीतकी, गण्डीरी, मंजूषा और वस्त्ररंजिनी यह मजीठ के नाम हैं, मजीठ. मधुर तिक्त कषायरसयुक्त, स्वरको उत्तम करनेवाला, वर्णकोहित, भारी, उष्ण और विषकफ, सूजन, योनिरोग, नेत्ररोग, कर्णरोग और रक्तातीसार, कुष्ठ, रक्तदोष, वीसर्प, घाव तथा प्रमेहनाशक होता है ॥ १५६ ॥

अथ कुसुम्भ ॥

स्यात्कुसुम्भंवह्निशिखं वस्त्ररञ्जकमित्यपि । कुसुम्भंमधुरंरूक्षंवह्निकृद्रोचनंमतम् ॥ विण्मूत्रदोषशमनंकटूष्णंगुरुपित्तलम् । कृमिहृद्वातलंकृच्छ्रं रक्तपित्तकफापहम् १५७ ॥

कुसुंभके नाम और गुण ॥

कुसुंभ, वह्निशिख और वस्त्ररंजक यह कुसुम के नामहैं, कुसुम. मधुर, रूखा, दीपन, रोचक तथा मलमूत्रोंके दोषोंका नाशक, कटु, उष्ण, भारी, पित्तकारी, कृमिहारी तथा वातवर्द्धक और मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त तथा कफनाशक होताहै ॥ १५७ ॥

अथ लाही ॥

लाक्षापलंकषालक्तो यावोवृक्षामयोजतुः । लाक्षावर्ण्याहिमाबल्यास्निग्धाचतुवरालघुः ॥ अनुष्णाकफपित्तास्त्रहिक्काकासज्वरप्रणुत् । व्रणोरःक्षतवीसर्प्पकृमिकुष्ठगदापहा ॥ अलक्तकोगुणैस्तद्वद्विशेषाद्व्यङ्गनाशनः ॥ १५८ ॥

लाखके नाम और गुण ॥

लाक्षा, पलंकषा, अलक्त, याव, वृक्षामय और जतु यह लाख के नामहैं, लाख. वर्ण के लिये हित, शीतल, बलकारक, स्निग्ध, कषाय, हलकी उष्णतासे रहित और कफ पित्तरक्तदोष, हिचकी, खांसी, ज्वर, घाव, उरःक्षत, वीसर्प, कृमि तथा कुष्ठरोगकी नाशक होती है और अलक्तकमें भी इसीप्रकार के गुण होते हैं यह व्यंगरोग में अधिक गुणकरताहै ॥ १५८ ॥

अथ हरिद्रा ॥

हरिद्राकाञ्चनीपीतानिशाख्यावरवर्णिनी । कृमिघ्नाहलदीयोषित्प्रियाहट्टविलासिनी॥ हरिद्राकटुकातिक्तारूक्षोष्णाकफपित्तनुत्।वर्ण्यात्वग्दोषमेहास्त्रशोथपांडुव्रणापहा १५९॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हल्दी के नाम और गुण ॥

हरिद्रा-कांचनी-पीता-... वरवर्णिनी-कृमिघ्ना-हल्दी-योषितप्रिया और हट्टविलासिनी यह हल्दी के नामहैं-हल्दी.कटु ति... रसयुक्त-रूखी-उष्ण-वर्णके लिये हित और कफ पित्त त्वचादोष, प्रमेह रक्तदोष-सूजन-पांडु और ...व के रोगकी नाशक होती है ॥ १५६ ॥

कर्पूरहरदि ॥

दार्वीभेदाम्रगन्धाचसुरभीदारुदारुच । कर्पूराःपद्मपत्रास्यात्सुरीमत्सुरतारका॥ आम्रगन्धिर्हरिद्रायासाशीतावातलामता। पित्तहन्मधुरातिक्तासर्वकण्डूविनाशिनी ॥ १६० ॥

कपूरहल्दी के नाम और गुण ॥

दार्वीभेदा, आम्रगन्धा, सुरभीदारु, दारु, कर्पूरा, पद्मपत्रा, सुरीमत् और सुरतारका यह कपूरहल्दी के नामहैं, कपूरहल्दी. शीतल, वायुवर्द्धक, पित्तनाशक, मधुर तिक्त रसयुक्त और सब प्रकारकी खुजली की नाशक होती है ॥ १६० ॥ अथ वनहरदी ॥

अरण्यहलदीकन्दः कुष्ठवातास्रनाशनः ॥ १६१ ॥

वनहल्दी के गुण ॥

वनहल्दी नामका कन्द कुष्ठ और वातरक्तदोष का नाशक होताहै ॥ १६१ ॥

अथ दारुहरिद्रा ॥

दार्वीदारुहरिद्राचपर्ज्जन्यापर्ज्जनीतिच। कटंकटेरीपीताचभवेत्सैवपचम्पचा॥ सैव कालीयकःप्रोक्तस्तथाकालेयकोऽपिच । पीतद्रुश्चहरिद्रुश्च पीतदारुकपीतकम् ॥ दार्व्युष्णाकटुकातिक्तानेत्रकर्णास्यरोगनुत् । मेहकण्डूविसर्पघ्नी त्वग्दोषव्रणनाशिनी ॥ विषघ्नीस्वेदनीपित्तकफशोथविनाशिनी ॥ १६२ ॥

दारुहल्दी के नाम और गुण ॥

दार्वी,दारुहरिद्रा,पर्ज्जन्या,पर्ज्जनी,कटङ्कटेरी,पीता,पचम्पचा,कालीयक,कालेयक, पीतद्रु,हरिद्रु, पीतदारु और कपीतक यह दारुहल्दीके नामहैं दारुहल्दी. उष्ण,कटु तिक्त रसयुक्त, नेत्ररोग,कर्णरोग, मुखरोग, प्रमेह, खुजली, वीसर्प, त्वचाके दोष, घावपूरक,विषनाशक,पसीनाकारक और पित्तकफनाशक तथा शोथनाशक होती है ॥ १६२ ॥ रसांजनम् ॥

दार्वीक्काथसमंक्षीरंपादम्पक्कायथाघनम् । तदारसाञ्जनाख्यन्तन्नेत्रयोःपरमंहितम् ॥ रसाञ्जनन्तार्क्ष्यशैलं रसगर्भञ्चतार्क्ष्यजम् । रसाञ्जनंकटुश्लेष्मविषनेत्रविकारनुत् ॥ उष्णंरसायनन्तिक्तंछेदनंव्रणदोषहृत् ॥ १६३ ॥

रसौतके नाम और गुण ॥

दारुहल्दी के काढ़ेमें समभाग दूध मिलाकर परिपाक करने से जब चौथाई गाढ़ा शेष रहजाय उसको रसौत कहते हैं यह नेत्रोंको अत्यन्तहितकारी होता है रसांजन, तार्क्ष्यशैल, रसगर्भ और तार्क्ष्यज यह रसौतके नामहैं रसौत. कटु तिक्तरसयुक्त, उष्ण, रसायन, छेदन और कफ विष नेत्ररोग तथा घावनाशक होताहै ॥ १६३ ॥ अथ बाकुची ॥

अवल्गुजीबाकुचीस्यात् सोमराजीसुपर्णिका । शशिलेखाकृष्णफलासोमापूतफली

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तिच ॥ सो॰नवल्लीकालमेषीकुष्ठघ्नीचप्रकीर्त्तिता । बाकुचीमधु[illegible]काकटुपाकारसायनी॥ विष्टम्भहृद्धिमारुच्यासराश्लेष्मास्रपित्तनुत् । रूक्षाहृद्याश्[illegible]स[illegible]हज्वरकृमिप्रणुत् ॥ तत्फलंपित्तलंकुष्ठकफानिलहरंकटु । केश्यन्त्वच्यंवमिश्वासकास[illegible]मामपाण्डुनुत् १६४॥

बकुची के नाम और गुण ॥

अवल्गुज, बाकुची, सोमराजी, सुपर्णिका, शशिलेखा, कृष्णफला, सोमा, पूतिफली, सोमवल्ली, कालमेषी और कुष्ठघ्नी यह बकुचीके नामहैं बकुची. मधुर, तिक्तरसयुक्त, विपाकमें कटु, रसायन, विष्टम्भनाशक, शीतल, रुचिकारक, दस्तावर, कफनाशक, रक्तपित्तनाशक, रूखा, हृदयको हित और श्वास, कुष्ठ, प्रमेह, ज्वर तथा कृमिनाशक होती है बकुचीका फल. पित्तवर्द्धक, कटु, केशोंको हित, त्वचा का उपकारी और कुष्ठ कफ वात श्वास खांसी सूजन आमदोष तथा पांडुका नाशक होताहै ॥ १६४ ॥

अथ चक्रमर्द्दः ॥

चक्रमर्द्दःप्रपुन्नाटोदद्रुघ्नोमेषलोचनः। पद्माटःस्यादेड़गजश्चक्रीपुन्नाटइत्यपि ॥ चक्रमर्दोलघुःस्वादुरूक्षःपित्तानिलापहः । हृद्योहिमःकफश्वासकुष्ठदद्रुकृमीन्हरेत् ॥ हन्त्युष्णं तत्फलंकुष्ठकण्डूदद्रुविषानिलान् । गुल्मकासकृमिश्वासनाशनंकटुकंस्मृतम् ॥ १६५ ॥

पवांड़के नाम और गुण ॥

चक्रमर्द, प्रपुन्नाट, दद्रुघ्न, मेषलोचन, पद्माट, एड़गज, चक्री और पुन्नाट यह पवांड़के नामहैं पवांड़. हलका, मधुर, रूखा, हृदयको हित, शीतल और पित्त, वात, कफ, श्वास, कुष्ठ, दाद तथा कृमिका नाशक होताहै पवांड़ का फल. उष्ण, कटु और कुष्ठ, खुजली, दाद, विष, वात, गुल्म, खांसी, कृमि तथा श्वासनाशक होताहै ॥ १६५ ॥

अथ अतीसः ॥

विषात्वतिविषाविश्वाशृङ्गीप्रतिविषारुणा । शुक्लकन्दाचोपविषाभंगुराघुणवल्लभा ॥ विषासोष्णाकटुस्तिक्तापाचनीदीपनीहरेत् ।कफपित्तातिसारामविषकासवमिकृमीन् १६६॥

अतीसके नाम और गुण ॥

विषा, अतिविषा, विश्वा, शृङ्गी, प्रतिविषा, अरुणा, शुक्लकन्दा, उपविषा, भंगुरा और घुणवल्लभा यह अतीसके नामहैं, अतीस. उष्ण, कटु, तिक्तरसयुक्त, पाचक, दीपन और कफ, पित्त, अतीसार, आमरोग, विष, खांसी, छर्दि तथा कृमिनाशक होताहै ॥ १६६ ॥

अथ सावरलोधः । पठिआलोधइतिलोके ॥

लोध्रस्तिल्वस्तिरीटश्चशावरोगालवस्तथा ॥ द्वितीयःपट्टिकालोध्रःक्रमुकःस्थूलवल्कलः । जीर्णपत्रोबृहत्पत्रःपट्टीलाक्षाप्रसादनः ॥ लोध्रोग्राहीलघुःशीतश्चक्षुष्यःकफपित्तनुत् । कषायोरक्तपित्तासृग्ज्वरातीसारशोथहृत् ॥ १६७ ॥

लोध और पठानीलोधके नाम और गुण ॥

लोध्र, तिल्व, तिरीट, शावर और गालव यह लोधके नामहैं पट्टिकालोध्र, क्रमुक, स्थूलवल्कल जीर्णपत्र, बृहत्पत्र, पट्टी और लाक्षाप्रसादन यह पठानीलोधके नामहैं लोध. ग्राही, हलका, शीतल नेत्रों को हित, कफ पित्तनाशक, कषाय और रक्तपित्त, रक्तदोष, ज्वर, अतीसार तथा सूजनका नाशक होताहै १६७ ॥

१ त्रिविधातिविषाज्ञेया शुक्लाकृष्णातथारुणा ॥ रसवीर्य्यविपाकेषु निर्विशेषगुणाचसा ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ लशुनः ॥

लशुनस्तुरसोनः[illegible]ग्रगन्धोमहौषधम्। अरिष्टोम्लेच्छकन्दश्चयवनेष्टोरसोनकः। यदामृतंवैनतेयो जह्रे सुरसत्तमात् ॥ तदाततोऽपतद्बिन्दुःसरसोनोऽभवद्भुवि। पञ्चभिश्चरसैर्युक्तो रसे[illegible]म्लेनवर्ज्जितः ॥ तस्माद्रसोनइत्युक्तोद्रव्याणांगुणवेदिभिः। कटुकश्चापिमूलेषुतिक्तःपत्रेषुसंस्थितः ॥ नालेकषायउद्दिष्टोनालाग्रेलवणःस्मृतः। बीजेतुमधुरःप्रोक्तोरसस्तद्गुणवेदिभिः ॥ रसोनोबृंहणोवृष्यःस्निग्धोष्णःपाचनःसरः। रसेपाकेचकटुकस्तीक्ष्णोमधुरकोमतः ॥ भग्नसंधानकृत्कण्ठ्योगुरुःपित्तास्रवृद्धिदः। बलवर्णकरोमेधाहितोनेत्र्योरसायनः। हृद्रोगजीर्णज्वरकुक्षिशूलविबन्धगुल्मारुचिकासशोफान्॥ दुर्नामकुष्ठानलसादजन्तुसमीरणश्वासकफांश्चहन्ति। मद्यंमांसंतथाम्लञ्चहितंलशुनसेविनाम् ॥ व्यायाममातपंरोषमतिनीरंपयोगुडम्। रसोनमश्नन्पुरुषस्त्यजेदेतान्निरन्तरम् ॥ १६८ ॥

लहसन के नाम उत्पत्ति और गुण ॥

लशुन, रसोन, उग्रगन्ध, महौषध, अरिष्ट, म्लेच्छकन्द, यवनेष्ट और रसोनक यह लहसन के नामहैं, जिस समय गरुडजीने इंद्रसे अमृत छीनलिया था उस समय उस अमृतसे एक बूंद पृथ्वी पर गिरपडी उसी से लहसन उत्पन्नहुआहै, लहसनमें अम्लरस के विना पांचो रस होते हैं इसी से इसका नाम रसोनहै, लहसनकी जडमें कटु पत्र में तिक्त, नाल में कषाय, नालके अग्रभाग में लवण और बीज में मधुररस होताहै, यह उसके रसज्ञ लोगोंने कहाहै, लहसन. धातुवर्द्धक, वीर्य्यवर्द्धक, स्निग्ध, उष्ण, पाचक, सारक, कटु मधुर रसयुक्त,विपाकमें कटु, तीक्ष्ण,टूटेको जोडनेवाला गलेका शुद्धकरनेवाला, कंठको हित, भारी, रक्तपित्तवर्द्धक, बलकारी, वर्णको उत्तम करनेवाला मेधाको हित, नेत्रोंको हित, रसायन और हृदय के रोग, जीर्णज्वर, कुक्षिकी पीडा विबन्ध, गुल्म अरुचि, खांसी, सूजन, बवासीर, कुष्ठ, आमदोष, मंदाग्नि,कृमि, वात श्वास तथा कफनाशक होताहै, लहसन खानेवाले पुरुषको मद्य, मांस तथा खट्टी वस्तु हित है और व्यायाम, धूप, क्रोध बहुत जलपान, दुग्ध और गुड यह संपूर्ण निरन्तर त्यागकरने के योग्य हैं ॥ १६८ ॥

अथ पलाण्डुः ॥

पलाण्डुर्यवनेष्टश्चदुर्गन्धोमुखदूषकः। पलाण्डुस्तुगुणैर्ज्ञेयोरसोनसदृशोगुणैः ॥ स्वादुपाकेरसोऽनुष्णःकफकृन्नातिपित्तलः। हरतेकेवलंवातंबलवीर्य्यकरोगुरुः ॥ १६९ ॥

प्याजके नाम और गुण ॥

पलांडु, यवनेष्ट, दुर्गन्ध और मुखदूषक यह प्याज के नाम हैं, प्याजमें लहसनके समान गुणहैं और विशेषता यहहै कि प्याज.रस तथा पाक में मधुर, शीतल, कफकृत् कुछ पित्तकारक,केवल वातनाशक बलवीर्य्यवर्द्धक और भारी होती है ॥ १६९ ॥

अथ भल्लातकम् ॥

भल्लातकंत्रिषुप्रोक्तमरुष्कोऽरुष्करोऽग्निकः। तथैवाग्निमुखीभल्लीवीरवृक्षश्चशोफकृत् ॥ भल्लातकफलंपक्कंस्वादुपाकरसंलघु। कषायंपाचनंस्निग्धंतीक्ष्णोष्णंछेदिभे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दनम् ॥ मेध्यंवह्निकरंहन्तिकफवातव्रणोदरम् । कुष्ठार्शोग्रहणी[illegible]गुल्मशोफानाहज्वरकृमी
न् ॥ तन्मज्जामधुरोवृष्योबृंहणोवातपित्तहा । वृन्तमारुष्कर[illegible]मधुपित्तघ्नंकेश्यमग्निकृ
त् ॥ भल्लातकःकषायोष्णःशुक्लोमधुरोलघुः । वातश्लेष्म[illegible]नाहकुष्ठार्शोग्रहणीग
दान् ॥ हन्तिगुल्मज्वरश्वित्रवह्निमांद्यकृमिव्रणान् ॥ १७० ॥

भिलावेके नाम और गुण ॥

भल्लातक शब्द त्रिलिंगी है, अरुष्क, अरुष्कर, अग्निक, अग्निमुखी, भल्ली, वीरवृक्ष और शोफकृत्, यह भिलावेके नामहैं, भिलावेका पक्काफल-मधुर कषायरसयुक्त पाक में मधुर, हलका, पाचक स्निग्ध, तीक्ष्ण, उष्ण, छेदक, भेदक, मेधाको हित, अग्निकारक और कफ, वात, घाव, उदर, कुष्ठ बवासीर, ग्रहणी, गुल्म, सूजन, आनाह,ज्वर तथा कृमिनाशक होताहै, उसकी मींगी.मधुर वीर्य्यवर्द्धक, धातुवर्द्धक और वात तथा पित्तनाशक होता है गोलभिलावा. मधुर, पित्तनाशक, केशों को हित और अग्निवर्द्धक होताहै, भिलावा. कषाय मधुर रसयुक्त, उष्ण, वीर्यवर्द्धक, हलका और वातकफ, उदर, आनाह, कुष्ठ, बवासीर, ग्रहणी, गुल्म, ज्वर, श्वित्र, मंदाग्नि, कृमि तथा घावनाशक होता है ॥ १७० ॥

अथ भंगा ॥

भंगागञ्जामातुलानीमादिनीविजयाजया । भंगाकफहरीतिक्ताग्राहिणीपाचनीलघुः॥ तीक्ष्णोष्णापित्तलामोहमन्दवाग्वह्निवर्द्धिनी । मदनोद्दीपनीनिद्राजननीहर्षदायिनी ॥ धनुस्तम्भंजलत्रासंविषूचिंचमदात्ययम्। प्रवृत्तिंरजसाबर्क्कींहन्त्यापत्यप्रसूतिकृत् १७१ ॥

भांगके नाम और गुण ॥

भंगा,गंजा,मातुलानी,मादिनी,विजया और जया-यह भंगके नामहैं,भंग. कफनाशक,तिक्त,ग्राही पाचक, हलकी, तीक्ष्ण,उष्ण,पित्तवर्द्धक, मोह तथा मदकारक और वाक्य तथा अग्निकी भी बढ़ाने वाली व कामोद्दीपक, निद्राजनक और हर्षदायक होतीहै इसके सेवन करने से धनुस्तंभ वायु,जल त्रास, विषूचिका मदात्यय और अधिक रज प्रवृत्ति का निवारण तथा इसके द्वारा जरायु की शिथिलता दूरहोकर प्रसवबाधा नष्ट होतीहै ॥ १७१ ॥ अथ पोस्ता ॥

तिलभेदःखसतिलःखाखसश्चापिसस्मृतः । स्यात्खाखसफलोद्भूतंवल्कलंशीतलं लघु ॥ ग्राहितिक्तंकषायञ्चवातकृत्कफास्रहृत् । धातूनांशोषकंरूक्षंमदकृद्वाग्विवर्द्धनम्॥ मुहुर्मोहकरंरुच्यंसेवनात्पुंस्त्वनाशनम् ॥ १७२ ॥

पोस्तके नाम और गुण ॥

तिलभेद, खसतिल और खाखस यह पोस्ते के नाम हैं,पोस्ते का वक्कल. शीतल, हलका, ग्राही तिक्त कषाय रसयुक्त, वातवर्द्धक , कफ तथा खांसीनाशक, धातुओं का सुखानेवाला, रूखा, मदकारक, वाक्यवर्द्धक, वारंवार मोह करनेवाला, रुचिकारक और अधिक सेवन करने से पुरुषार्थ का नाशक होता है ॥ १७२ ॥

अथ अफीम ॥

उक्तंखसफलक्षीरमाफूकमहिफेनकम् । आफूकंशोषणंग्राहिश्लेष्मघ्नंवातपित्तलम् ॥ आक्षेपशमनंनिद्राजननंमदकारिच ।स्वेदनंवेदनाहृच्चमूत्रातीसारनुत्परम् ॥ कासश्वासा तिसारघ्नंशोणितस्रुतिवारणम्। तथाखसफलोद्भूतवल्कलप्रायमित्यपि ॥ १७३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अफीम के नाम और गुण ॥

पोस्त फल के दूधको [illegible]और अहिफेण कहते हैं, अफीम. सुखानेवाली, ग्राही, कफनाशक, वातपित्तवर्द्धक, आक्षेप[illegible]नाशक, निद्राजनक, मादक, स्वेदकारक, वेदनानाशक, मूत्रातीसार, खांसी, श्वास, अतीसार [illegible] रक्तस्रावको निवारणकरतीहै और प्रायः पोस्तके वल्कलकेही समान इसमें गुण होते हैं ॥ १७[illegible]॥

अथ खाखसबीजानि ॥

उच्यन्तेखसबीजानि तेखाखसतिलाअपि । खसबीजानिबल्यानि वृष्याणिसुगुरूणि च ॥ जनयन्तिकफंतानि शमयन्तिसमीरणम् ॥ १७४ ॥

खसखस के नाम और गुण ॥

खसबीज और खाखसतिल यह खसखस के नाम हैं, खसखस.बलकारक, वीर्यवर्द्धक, बहुत भारी, कफकारक और वातनाशक होतीहै ॥ १७४ ॥

अथ सैन्धवः ॥

सैन्धवोऽस्त्रीशीतशिवं माणिमंथञ्चासिंधुजम् । सैन्धवंलवणंस्वादुदीपनंपाचनंलघु ॥ स्निग्धंरुच्यंहिमंवृष्यं सूक्ष्मंनेत्र्यंत्रिदोषहृत् ॥ १७५

सेंधोनोन के नाम और गुण ॥

सैंधव शब्द पुंलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग, शीतशिव, माणिमन्थ और सिन्धुज यह सेंधोनोन के नाम हैं, सेंधानोन. लवण मधुर रसयुक्त, दीपन, पाचक, हलका, स्निग्ध, रुचिकारक, शीतल, वीर्य-वर्द्धक, सूक्ष्म, नेत्रहित और त्रिदोषनाशक होता है ॥ १७५ ॥

अथ शाकम्भरि ॥

शाकम्भरीयंकथितं गुडाख्यंरोमकन्तथा । गुडाख्यंलघुवातघ्नमत्युष्णंभेदिपित्तलम् ॥ तीक्ष्णोष्णञ्चापिसूक्ष्मञ्चाभिष्यन्दिकटुपाकिच ॥ १७६ ॥

सांभरनोनके नाम और गुण ॥

शाकंभरीय, गुडाख्य और रोमक यह सांभरनोनके नाम हैं, सांभरनोन. हलका, वातनाशक, अतिउष्ण, भेदक, पित्तवर्द्धक, तीक्ष्ण, उष्ण, सूक्ष्म, अभिष्यंदी और विपाकमें कटु होताहै ॥ १७६ ॥

अथ पांगा ॥

सामुद्रंयत्तुलवणमक्षीवंवशिरञ्चतत् । सामुद्रजंसागरजं लवणोदधिसम्भवम् ॥ सामुद्रंमधुरम्पाके सतिक्तंमधुरंगुरु । नात्युष्णंदीपनंभेदि सक्षारमविदाहिच ॥ श्लेष्मलंवात नुत्तीक्ष्णमरूक्षंनातिशीतलम् ॥ १७७ ॥

पांगानोन के नाम और गुण ॥

सामुद्रलवण, अक्षीव, वशिर, सामुद्रज, सागरज और लवणोदधिसंभव यह पांगानोनके नाम हैं, पांगानोन. पाक में मधुर, तिक्त, मधुररसयुक्त, भारी, मंदोष्ण, दीपन, भेदक, क्षारयुक्त, विदाहरहित, कफकारक, वातनाशक, तीक्ष्ण, रूक्षतारहित और कुछ शीतल होताहै ॥ १७७ ॥

अथ विरिआसोचर इति ॥

विडम्पाकञ्चकतकं तथाद्राविडमासुरम् । विडंसक्षारमूर्ध्वाधः कफवातानुलोमनम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाचक, सारक और शूलगुल्म, विबन्ध, आमदोष वातकफ छर्दि, तृषा, मुखकी विरसता, हृदय के रोग तथा मन्दाग्निका नाशक होताहै ॥ १८६ ॥

इति श्रीमिश्रलटकनतनयश्रीमिश्रभावविरचितभावप्रकाशस्यभाषानुवादे हरीतक्यादिवर्गःप्रथमः ॥ समाप्तः

अथ कर्पूरादिवर्गः (तत्रादौकर्पूरस्य नामगुणाश्च) ॥

पुंसिक्लीबेचकर्पूरःसिताभ्रोहिमवालुकः । घनसारश्चन्द्रसंज्ञः हिमनामापिसस्मृतः॥ कर्पूरःशीतलोवृष्यश्चक्षुष्योलेखनोलघुः । सुरभिर्मधुरस्तिक्तः कफपित्तविषापहः ॥ दाहतृष्णास्यवैरस्य मेदोदौर्गन्ध्यनाशनः॥ आक्षेपशमनोनिद्राजननोघर्मवर्धनः। वेदनाहारकःकामशान्तिकृच्छुक्रमेहहृत् ॥ कर्पूरोद्विविधःप्रोक्तः पक्वापक्वप्रभेदतः ॥ पक्वात्कर्पूरतःप्राहुरपक्वंगुणवत्तरम् ॥ १ ॥

अथकर्पूरादिवर्गः । कपूरके नाम और गुण ॥

कर्पूरशब्द पुंलिङ्ग और नपुंसकलिंगहै सिताभ्र, हिमवालुक, घनसार, चन्द्र और हिम यह कपूर के नाम हैं, कपूर. शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, नेत्रोंकोहित, लेखन, हलका, सुगन्धियुक्त, मधुर तिक्तरस युक्त और कफपित्त, विष, दाह, तृषा, मुखकी विरसता, मेदरोग तथा दुर्गन्धिनाशक, आक्षेपवातनाशक, निद्राजनक, स्वेदवर्धक, वेदनाहारक और कामवेगशान्तकारक तथा शुक्रप्रमेहनाशक होता है, कपूरकच्चा तथा पक्का इनदोप्रकारोंका होताहै, पक्के कपूरकी अपेक्षा कच्चाकपूर अधिक गुणकारी होताहै ॥ १ ॥

अथ चीनिआकर्पूरः ॥

चीनकश्चीनकर्पूरःकृत्रिमोधवलःपटुः । मेघसारस्तुषारश्चद्वीपकर्पूरजःस्मृतः ॥ चीनाकसंज्ञःकर्पूरःकफक्षयकरःस्मृतः । कुष्ठकंडूवमिहरस्तथातिक्तरसश्चसः ॥ २ ॥

चीनियाकपूर के गुण ॥

चीनक, चीनकर्पूर, कृत्रिम, धवल, पटु, मेघसार, तुषार और द्वीपकर्पूरज यह चीनियाकपूर के नामहैं चीनाक नाम कपूर. कफनाशक, तिक्तरसयुक्त, कोढ़ और खुजली तथा छर्दिनाशक होताहै २॥

अथ कस्तूरी ॥

मृगनाभिर्मृगमदः कथितस्तुसहस्रभित् । कस्तूरिकाचकस्तूरी वेधमुख्याचसास्मृता ॥ कामरूपोद्भवाश्रेष्ठानेपालीमध्यमाभवेत् । कामरूपोद्भवाकृष्णानैपालीनीलवर्णयुक्॥ काश्मीरदेशसम्भूता कस्तूरीह्यधमामता । काश्मरीकपिलच्छायाकस्तूरीत्रिविधास्मृता॥ कस्तूरिकाकटुस्तिक्ताक्षारोष्णाशुक्रलागुरुः।कफवातविषच्छर्दिशीतदौर्गन्ध्यशोषहृत् ३ ॥

कस्तूरी के नाम और गुण ॥

मृगनाभि, मृगमद, सहस्रभित, कस्तूरिका, कस्तूरी और वेधमुख्या यह कस्तूरी के नामहैं, कामरूपदेशमें उत्पन्न हुई कस्तूरी कृष्णवर्ण तथा उत्तम होती है, नैपालदेश में उत्पन्न हुई नीलवर्ण तथा मध्यम होती है और कश्मीरदेश में उत्पन्न हुई कस्तूरी कुछ कपिल वर्ण तथा निकृष्ट होती है इस प्रकार कस्तूरी के तीन भेद होते हैं, कस्तूरी. कटुतिक्तरसयुक्त, क्षार, उष्ण, वीर्यवर्द्धक, भारी और कफ, वात, विष, छर्दि, शीत, दुर्गन्धि तथा शोषरोगकी नाशक होती है ॥ ३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ मुमुकदाना ॥

लताकस्तूरिकातिक्ता स्वाद्वीवृष्याहिमालघुः। चक्षुष्याच्छेदिनीश्लेष्मतृष्णावस्त्यास्य रोगहृत् ॥ ४ ॥

लताकस्तूरीके गुण ॥

लताकस्तूरी (वेदमुश्क) तिक्त मधुर रसयुक्त, वीर्य्यवर्द्धक, शीतल, हलकी, नेत्रोंकोहित, छेदक और कफ, तृषा, मूत्राशय के रोग तथा मुखरोगनाशक होती है ॥ ४ ॥

अथ गौरासाखभेद आएडी इति लोके ॥

गन्धमार्ज्जारवीर्य्यन्तुवीर्य्यकृत्कफवातहृत्।कण्डुकुष्ठहरंनेत्र्यंसुगन्धंस्वेदगन्धनुत् ५॥

आंडी (मुश्कबिलाई) के गुण ॥

आंडीको गन्धमार्जारबीज कहते हैं यह वीर्यवर्द्धक नेत्रोंको हित, सुगन्धियुक्त और कफ बात खुजली कुष्ठ तथा पसीने की दुर्गन्धिनाशक होती है ॥ ५ ॥

अथ चन्दनम् ॥

श्रीखण्डंचन्दनंनस्त्रीभद्रश्रीस्तैलपर्णिकः।गन्धसारोमलयजस्तथाचन्द्रद्युतिश्चसः॥ स्वादेतिक्तंकषेपीतंच्छेदेरक्तंतनौसितम्। ग्रन्थिकोटरसंयुक्तंचन्दनंश्रेष्ठमुच्यते ॥ चन्दनं शीतलंरूक्षंतिक्तमाह्लादनंलघु। श्रमशोषविषश्लेष्मतृष्णापित्तास्रदाहनुत ॥ ६ ॥

श्वेतचन्दनके नाम और गुण ॥

श्रीखण्ड, चन्दन शब्द पुंलिंग और नपुंसकलिंग है भद्रश्री तैलपर्णिक गन्धसार मलयज और चन्द्रद्युति यह चन्दनके नामहैं स्वादुमें तिक्त रगड़नेसे पीला काटने से लाल ऊपर देखने में श्वेतवर्ण और गांठ तथा गढ्ढोंसेयुक्त चन्दन श्रेष्ठ होताहै चन्दन शीतल रूखा तिक्त प्रसन्न करनेवाला हलका और श्रम, शोष, विष, कफ, तृषा, पित्त, रक्तदोष तथा दाहनाशक होताहै ॥ ६ ॥

अथ पीतचन्दनम् ॥

कलम्बकइतिलोके। कालीयकन्तुकालीयंपीताभंहरिचन्दनम् ॥ हरिप्रियंकालसारं तथाकालानुसार्य्यकम्। कालीयकंरक्तगुणंविशेषाद्व्यंगनाशनम् ॥ ७ ॥

पीतचन्दन अर्थात् कलंबकके नाम और गुण ॥

कालीयक कालीय पीताभ हरिचन्दन हरिप्रिय कालसार और कालानुसार्य्यक यह पीतचन्दन के नामहैं पीतचन्दन. गुणोंमें रक्तचन्दन के समानहै और विशेष करके मुखकी झांईको दूर करताहै ॥ ७ ॥

अथ रक्तचन्दनम् ॥

रक्तचन्दनमाख्यातं रक्तांगंक्षुद्रचन्दनम्। तिलपर्णंरक्तसारं तत्प्रवालफलंस्मृतम् ॥ रक्तंशीतंगुरुस्वादुछर्दितृष्णास्रपित्तहृत्। तिक्तंनेत्रहितंवृष्यंज्वरव्रणविषापहम् ॥ ८ ॥

रक्तचन्दन के नाम और गुण ॥

रक्तचन्दन रक्तांग क्षुद्रचन्दन तिलपर्ण, रक्तसार और प्रवालफल यह रक्तचन्दन के नाम हैं लाल-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चन्दन. शीतल, भारी, मधुरतिक्तरसयुक्त, नेत्रोंको हित, वीर्यवर्द्धक, छर्दि, तृषा, रक्तपित्तज्वर, व्रण तथा विषका नाशक होताहै ॥ ८ ॥

अथ वकम् ॥

पतंगंरक्तसारञ्चसुरंगंरञ्जनंतथा। पट्टरञ्जकमाख्यातंपत्तूरञ्चकुचन्दनम् ॥ पतंगंमधुरंशीतंपित्तश्लेष्मव्रणास्रनुत्। हरिचंदनवद्वेद्यंविशेषाद्दाहनाशनम् ॥ चन्दनानितुसर्वाणिसदृशानिरसादिभिः। गन्धेनतुविशेषोऽस्तिपूर्वःश्रेष्ठतमोगुणैः ॥ ९ ॥

पतंगके नाम और गुण ॥

पतंग, रक्तसार, सुरंग, रंजन, पट्टरंजक, पत्तूर और कुचन्दन यह पतंगकेनाम हैं पतंग. मधुर, शीतल और पित्तकफ घाव तथा रुधिरनाशक होताहै यह गुणोंमें हरिचन्दन के समानहै और विशेष करके दाहनाशक है सब प्रकार के चन्दन रसादिकों में तुल्य हैं केवल गन्ध में भेद है इनमें क्रमपूर्व्वक एक से दूसरा गुणों में श्रेष्ठहै ॥ ९ ॥

अथ अगुरु कृष्णागुरु अगुरुसत ॥

अगुरुप्रवरंलोहंराजार्हंयोगजंतथा। वंशिकंकृमिजंवापिकृमिजग्धमनार्यकम् ॥ अगुरूष्णंकटुत्वच्यंतिक्तंतीक्ष्णञ्चपित्तलम्। लघुकर्णाक्षिरोगघ्नंशीतवातकफप्रणुत् ॥ कृष्णंगुणाधिकंतत्तुलोहवद्वारिमज्जति। अगुरुप्रभवःस्नेहःकृष्णागुरुसमःस्मृतः ॥ १० ॥

अगर और काले अगरके नाम व गुण ॥

अगुरु, प्रवर, लोह, राजार्ह, योगज, वंशिक, कृमिज, कृमिजग्ध और अनार्यक यह अगरके नाम हैं अगर. उष्ण, कटु, तिक्त रसयुक्त, त्वचाको हित, तीक्ष्ण, पित्तवर्द्धक, हलका और कर्णरोग, नेत्ररोग, शीत, वात तथा कफनाशक होता है इसमें से काला अगर गुणों में अधिक है यह पानी में डालने से लोहे के समान डूबजाताहै अगर का तेलभी काले अगर के समान गुणकारी होताहै ॥ १० ॥

अथ देवदारुः ॥

देवदारुस्मृतंदारुभद्रंदार्विन्द्रदारुच। मस्तदारुद्रुकिलिमंकृत्रिमंसुरभूरुहः ॥ देवदारुलघुस्निग्धंतिक्तोष्णंकटुपाकिच। विबन्धाध्मानशोथामतन्द्राहिक्काज्वरास्रजित् ॥ प्रमेहपीनसश्लेष्मकासकण्डूसमीरनुत् ॥ ११ ॥

देवदारुके नाम और गुण ॥

देवदारु, दारुभद्र, दारु, इन्द्रदारु, मस्तदारु, द्रुकिलिम कृत्रिम और सुरभूरुह यह देवदारु के नाम हैं देवदारु. हलका, स्निग्ध, तिक्त, उष्ण, पाक में कटु और विबन्ध, आध्मान, सूजन, आमदोष, तन्द्रा, हिचकी, ज्वर, रक्तदोष, प्रमेह, पीनस, कफ, खांसी, खुजली तथा वात का नाशक होताहै ॥ ११ ॥

अथ धूपसरलः ॥

सरलःपीतवृक्षःस्यात्तथासुरभिदारुकः। सरलोमधुरस्तिक्तोकटुपाकरसोलघुः ॥ स्निग्धोष्णःकर्णकण्ठाक्षिरोगरक्षोहरःस्मृतः। कफानिलस्वेददाहकासमूर्च्छाव्रणापहः ॥ १२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सरल अर्थात् एक प्रकार के देवदारुके नाम और गुण॥

सरल, पीतवृक्ष और सु[illegible]रू यह सरलकेनामहैं सरल.मधुर, तिक्त और कटुरसयुक्त, पाकमें कटु, हलका, स्निग्ध, उष्ण और [illegible]रोग, कंठरोग, नेत्ररोग, राक्षसोंकी पीडा, कफ, वात, स्वेद, दाह, खांसी, मूर्च्छा तथा घावका नाशक होताहै॥ १२॥

अथतगरम्॥

कालानुसार्य्यंतगरंकुटिलंलघुसंनतम्। अपरंपिण्डतगरंदण्डहस्तीचबर्हिणम्॥ तगरद्वयमुष्णंस्यात्स्वादुस्निग्धंलघुस्मृतम्। विषापस्मारशूलाक्षिरोगदोषत्रयापहम्॥१३॥

तगरके नाम और गुण॥

कालानुसार्य्य, तगर, कुटिल और लघुसन्नत यह तगरके नामहैं और दूसरे प्रकारके तगरको पिंडतगर दण्डहस्ती और बर्हिण कहते हैं यह दोनोंप्रकारके तगर. उष्ण, मधुर, स्निग्ध, लघु और विष, मृगी, शूल, नेत्ररोग तथा त्रिदोषनाशक होते हैं॥ १३॥

अथपद्मकम्॥

पद्मकंपद्मगन्धिस्यात्तथापद्माह्वयंस्मृतम्। पद्मकन्तुवरन्तिक्तंशीतलंवातलंलघु॥ वीसर्पदाहविस्फोटकुष्ठश्लेष्मास्रपित्तनुत्। गर्भसंस्थापनंवृष्यंवमित्रणतृषाप्रणुत्॥१४॥

पद्माक के नाम और गुण॥

पद्मक, पद्मगंधि और पद्म यह पद्माक के नामहैं, पद्माक. कषाय तिक्तरसयुक्त, शीतल, वातवर्द्धक हलका, गर्भका स्थापन करनेवाला, रुचिकारक और विसर्प, दाह, विस्फोट, कुष्ठ, कफ, रक्तदोष, पित्त, छर्दि, घाव तथा तृषाका नाशक होताहै॥ १४॥

अथगुग्गुलुः॥

गुग्गुलुर्देवधूपश्चजटायुःकौशिकःपुरः। कुस्तालूखलकंक्कीबेमहिषाक्षःपलङ्कषः॥ महिषाक्षोमहानीलःकुमुदःपद्मइत्यपि। हिरण्यःपञ्चमोज्ञेयोगुग्गुलोःपञ्चजातयः॥ भृंगाञ्जनसवर्णस्तुमहिषाक्षइतिस्मृतः। महानीलस्तुविज्ञेयःस्वनामसमलक्षणः॥ कुमुदःकुमुदाभःस्यात्पद्मोमाणिक्यसन्निभः। हिरण्याक्षस्तुहेमाभःपञ्चानांलिंगमीरितम्॥ महिषाक्षोमहानीलोगजेन्द्राणांहितावुभौ। हयानांकुमुदःपद्मःस्वस्त्यारोग्यकरौपरौ॥ विशेषेणमनुष्याणांकनकःपरिकीर्तितः। अभावान्महिषाक्षश्चयतःकैश्चिन्नृणामपि॥ गुग्गुलुर्विशदस्तिक्तोवीर्य्योष्णःपित्तलःसरः। कषायःकटुकःपाकेकटूरूक्षोलघुःपरः॥ भग्नसन्धानकृद्वृष्यःसूक्ष्मःस्वर्योरसायनः। दीपनःपिच्छिलोबल्यःकफवातव्रणापचीः॥ मेदोमेहाश्मवातांश्चक्लेदकुष्ठाममारुतान्। पिडिकाग्रन्थिशोफार्शोगण्डमालाकृमीन्जयेत्॥ माधुर्य्याच्छमयेद्वातंकषायत्वाच्चपित्तहा। तिक्तत्वात्कफजित्तेनगुग्गुलुःसर्व्वदोषहा॥ सनवोबृंहणोवृष्यःपुराणस्त्वतिलेखनः। स्निग्धःकाञ्चनसङ्काशःपक्वजम्बूफलोपमः॥ नूतनोगुग्गुलुःप्रोक्तःसुगन्धिर्यस्तुपिच्छिलः। शुष्कोदुर्गन्धकश्चैवत्यक्तप्रकृतिवर्णकः॥ पुराणःसतुविज्ञे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यःगुग्गुलुर्वीर्य्यवर्जितः। अम्लंतीक्ष्णमजीर्णञ्च व्यवायंश्रममातपम् ॥ मद्यंरोषन्त्यजे त्तुसम्यग्गुणार्थीपुरसेवकः ॥ १५ ॥

गूगल के नाम और गुण ॥

*गुग्गुलु, देवधूप, जटायु, कौशिक, पुर, कुस्तालु, उलूखल, (यह शब्द नपुंसकलिंगहै) महिषाक्ष और पलंकष यह गुग्गुलके नाम हैं महिषाक्ष, महानील, कुमुद, पद्म और हिरण्य यह पांच गुग्गुलके भेदहैं, यह महिषाक्ष गूगल भौंरे तथा अंजनके समान रंगवाला होताहै महानील गूगल अत्यन्तनील वर्ण होताहै, कुमुदनाम गूगल कुमुद के समान कांतिवाला होताहै, पद्मनाम गूगल माणिक्य के समान होताहै, और हिरण्याक्ष गूगल सुवर्ण के समान कान्तिवाला होताहै यह पांचों के लक्षण कहे गये हैं महिषाक्ष और महानील गूगल हाथियोंके लिये हितकारी होतेहैं, कुमुद और पद्मनाम गूगल घोड़ोंके लिये मंगलकारी और रोगनाशक होते हैं और हिरण्याक्ष गूगल मनुष्यों के लिये हितकारी है, कहीं २ महिषाक्ष गूगल भी मनुष्योंके प्रयोजनमें आताहै, गूगल विशद, तिक्त, कटु, कषायरस-युक्त, पाकमें कटु, वीर्यमें उष्ण, पित्तवर्द्धक, दस्तावर, रूखा, अत्यन्त लघु, टूटेको जोड़नेवाला, वीर्य-वर्द्धक, सूक्ष्म, स्वरको हित, रसायन, दीपन, फिसलाहटवाला, बलकारी और कफ, वात, घाव अपची, मेददोष, प्रमेह, पथरी, वातरोग, क्लेद, कुष्ठ, आमवात, पीड़िता, गंडमाला, ग्रंथि, सूजन बवासीर तथा कृमिका नाश करताहै, गूगल मधुरता से वातको, कषायरस से पित्तको और तिक्त रससे कफ को नाश करताहै इसप्रकार करके गूगल सर्वदोषों का नाशक है, नवीन गूगल मांस तथा वीर्य्यवर्द्धक होता है प्राचीन गूगल अत्यन्त कफकारक होता है, सुवर्ण के समान कान्तियुक्त पक्की जामन के समान वर्णवाला, सुगन्धित और पिच्छिल गूगल नवीन कहलाता है, सूखा दुर्गन्धितयुक्त, विकारी वर्णवाला और वीर्य्यरहित गूगल पुराना जानना चाहिये- गुणों की प्राप्ति की इच्छासे गूगल का सेवन करनेवाला पुरुष खट्टी, तीक्ष्ण तथा अजीर्ण करनेवाली वस्तु मैथुन परिश्रम धूप, मद्य और क्रोधको अच्छे प्रकार से छोड़े देवे ॥ १५ ॥

अथ सरलनिर्य्यासगुग्गुलुः ॥

श्रीवासःसरलस्रावःश्रीवेष्टोवृक्षधूपकः।श्रीवासोमधुरस्तिक्तःस्निग्धोष्णस्तुवरःसरः॥ पित्तलोवातमूर्द्धाक्षिस्वररोगकफापहः। रक्षोघ्नःस्वेददौर्गन्ध्यःयूकाकण्डूव्रणप्रणुत्॥१६॥

सरलनिर्यास (गंधाबिरोजा) के नाम और गुण ॥

श्रीवास, सरलस्राव, श्रीवेष्ट और वृक्षधूपक यह सरलनिर्यासके नामहैं, सरलनिर्यास मधुर तिक्त कषाय रसयुक्त, स्निग्ध, उष्ण, दस्तावर, पित्तवर्द्धक और वातरोग, शिररोग, नेत्ररोग, स्वरभंग कफ, राक्षसोंकी पीड़ा, पसीनेकी दुर्गन्धि, जुआं, खुजली तथा व्रणका नाशक होताहै ॥ १६ ॥

अथ रालः ॥

रालस्तुशालनिर्य्यासस्तथासर्ज्जरसःस्मृतः। देवधूपोयक्षधूपस्तथासर्वरसश्चसः ॥ रालोहिमोगुरुस्तिक्तःकषायोग्राहकोहरेत्। दोषास्रस्वेदवीसर्पज्वरव्रणविपादिकाः ॥ ग्रहभग्नाग्निदग्धाश्चशूलातीसारनाशनः ॥ १७ ॥

---

* जायन्तेसुरपादपामरुभुविग्रीष्मेऽर्कसंतापिताःशीतार्ताःशिशिरेपिगुग्गुलुरसंमुञ्चन्तितेपञ्चधा। हेमाभंमहिषाक्षतुल्यमपरंसत्प द्मरागोपमंभृङ्गाभंकुमुदद्युतिचविधिनाग्राह्यंपरीक्ष्याततः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राल केनाम और गुण ॥

राल सालनिर्यास सर्जरस, देवधूप, यक्षधूप और सर्वरस यह रालके नामहैं, राल शीतल, भारी, तिक्त कषाय रसयुक्त, ग्राही और वातादिक दोष, रुधिरके दोष, स्वेद वीसर्प, ज्वर, घाव, बिवांई ग्रहोंके दोष- भग्नरोग- अग्निदग्ध- शूल और अतीसार इनसबका नाशक है ॥ १७ ॥

अथ कुंदुरुसुगन्धद्रव्यशल्लकीनिर्यासः ॥

कुन्दुरुस्तुमुकुन्दःस्यात्सुगन्धःकुन्दइत्यपि । कुन्दुरुर्मधुरस्तिक्तस्तीक्ष्णस्त्वच्यःकटुर्हरेत् ॥ ज्वरस्वेदग्रहालक्ष्मीमुखरोगकफाऽनिलान् ॥ १८ ॥

कुन्दुरु एकप्रकार की सुगन्धित द्रव्य जो शल्यकीवृक्षकागोंद है उसके नामगुण ॥

कुन्दुरु मुकुन्द सुगन्ध और कुन्द यह कुन्दुरुके नाम हैं कुन्दुरु मधुर तिक्त कटुरसयुक्त तीक्ष्ण त्वचा को हितकारी और ज्वर धूप ग्रहोंके दोष आलस्य मुखरोग कफ तथा वातका नाशक होताहै ॥ १८ ॥

अथ शिलारसः ॥

सिह्लकस्तुतुरुष्कःस्याद्यतोयवनदेशजः । कपितैलंचसंख्यातस्तथाचकपिनामकः ॥ सिह्लकःकटुकःस्वादुःस्निग्धोष्णाशुक्रकान्तिकृत् । वृष्यःकण्ठ्यःस्वेदकुष्ठज्वरदाहग्रहापहःमूत्राघाताश्मरीमूत्रकृच्छ्रकण्डूविनाशनः ॥ १९ ॥

शिलारस के नाम और गुण ॥

शिला रस यवनदेशमें उत्पन्न होताहै इसीसे इसको तुरुष्क कहते हैं सिह्लक, कपितैल और कपि यह शिलारसके नाम हैं शिलारस. कटु, मधुर, रसयुक्त, स्निग्ध, उष्ण, वीर्य्यवर्द्धक, कान्तिवर्द्धक, पुष्ट गलेका शुद्ध करनेवाला और स्वेद, कुष्ठ, ज्वर, दाह तथा ग्रहोंके दोषोंका दूर करनेवाला तथा मूत्राघात, पथरी, मूत्रकृच्छ्र और खुजलीका नाशक होताहै ॥ १९ ॥

अथ जायफल ॥

जातीफलंजातिकोशंमालतीफलमित्यपि । जातीफलंरसेतिक्तंतीक्ष्णोष्णंरोचनंलघु॥ कटुकंदीपनंग्राहिस्वर्य्यंश्लेष्मानिलापहम् । निहन्तिमुखवैरस्यंमलदौर्गन्ध्यकृष्णताः ॥ कृमिकासवमिश्वासशोषपीनसहृद्रुजः ॥ २० ॥

जायफल के नाम और गुण ॥

जातीफल, जातिकोश और मालती फल यह जायफलकेनामहैं जायफल—तिक्त, कटु रसयुक्त, तीक्ष्ण, उष्ण, रुचिकारक, हलका, दीपन, ग्राही, स्वरकोहित और कफ वात मुखकी विरसता, मलकी दुर्गन्धि तथा कृष्णता कृमि खांसी छर्दि श्वास शोष पीनस तथा हृदय के रोगोंका नाशक होताहै ॥ २० ॥

अथ जावत्री ॥

जातीफलस्यत्वक्प्रोक्ताजातीपत्रीभिषग्वरैः । जातिपत्रीलघुःस्वादुःकटूष्णारुचिवर्णकृत् ॥ कफकासवमिश्वासतृष्णाकृमिविषापहा रक्तवैशद्यजननीतिक्तादौर्गन्ध्यनाशिनी ॥ २१ ॥

जावित्रीके नाम और गुण ॥

वैद्यलोग जायफल की त्वचाको जातिपत्री कहते हैं जावित्री. हलकी, मधुर, कटु रसयुक्त, उष्ण, रुचि-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कारक, वर्णको हित और कफ, खांसी, छर्दि, श्वास, तृषा, कृमि तथा [illegible] नाशक खूनकी साफ़ करनेवाली, तिक्त और दुर्गन्धि नाशक होतीहै ॥ २१ ॥

अथ लवंगः ॥

लवंगंदेवकुसुमंश्रीसंज्ञंश्रीप्रसूनकम् । लवंगंकटुकंतिक्तंलघुनेत्रहितंहिमम् ॥ दीपनंपाचनंरुच्यंकफपित्तास्रनाशकृत् । तृष्णांछर्दिंतथाध्मानंशूलमाशुविनाशयेत् ॥ कासंश्वासंचहिक्काञ्चक्षयंक्षपयतिध्रुवम् ॥ २२ ॥

लवङ्गके नाम और गुण ॥

लवंग, देवकुसुम, श्रीसंज्ञ और श्रीप्रसूनक, यह लवंगके नाम हैं लौंग.कटु, तिक्त रसयुक्त, हलकी, नेत्रोंकोहित, शीतल, दीपन, पाचक, रुचिकारक और कफ पित्तरक्तदोष, तृषा, छर्दि, उदर, आध्मान, शूल, खांसी, श्वास, हिचकी तथा क्षयरोग की नाशक होती है ॥ २२ ॥

अथ इलायचीपूरवी ॥

एलास्थूलाचबहुलापृथ्वीकात्रिपुटापिच । भद्रैलाबृहदेलाचचन्द्रवालाचनिष्कुटिः ॥ स्थूलैलाकटुकापाकेरसेचानलकृल्लघुः । रूक्षोष्णाश्लेष्मपित्तास्रकण्डूश्वासतृषापहा ॥ हल्लासविषवस्त्यास्यशिरोरुग्वमिकासनुत् ॥ २३ ॥

बडी इलायची के नाम और गुण ॥

एला, स्थूला, बहुला, पृथ्वीका, त्रिपुटा, भद्रैला, बृहदेला, चन्द्रवाला और निष्कुटि यह बडी इलायची के नामहैं बडी इलायची.रस तथा विपाक में कटु, अग्निवर्द्धक, हलकी, रूखी, उष्ण और कफ, पित्त, रक्तदोष, खुजली, श्वास, तृषा, हल्लास (थुकथुकी) विषमूत्राशयके रोग, मुखरोग, शिरकेरोग, छर्दि तथा खांसीकी नाशक होती है ॥ २३ ॥

अथ एलागुजराती ॥

सूक्ष्मोपकुञ्चिकातुच्छाकोरंगीद्राविडीत्रुटिः । एलासूक्ष्माकफश्वासकासार्शोमूत्रकृच्छ्रहृत् ॥ रसेतुकटुकाशीतालघ्वीवातहरीमता ॥ २४ ॥

छोटी इलायचीके नाम और गुण ॥

सूक्ष्मा, उपकुंचिका, तुच्छा, कोरंगी, द्राविडी और त्रुटि, यहछोटीइलायचीके नाम हैं छोटीइलायची-कफ, श्वास, खांसी, बवासीर, मूत्रकृच्छ्र तथा वातनाशक, कटु, शीतल और लघु होती है ॥ २४ ॥

अथ तज ॥

त्वक्पत्रञ्चवरांगंस्याद्भृंगंचोदन्तथोत्कटम् । त्वचंलघूष्णंकटुकंस्वादुतिक्तञ्चरूक्षकम् ॥ पित्तलंकफवातघ्नं कण्ड्वामारुचिनाशनम् । हृद्वस्तिरोगवातार्शः कृमिपीनसशुक्रहृत् ॥ २५ ॥

तजकेनाम और गुण ॥

त्वक्पत्र, वरांग, भृंग और उत्कट, यह तजके नामहैं, तज, हलकी, उष्ण, कटु. मधुर तिक्तरसयुक्त रूखी, पित्तवर्द्धक और कफ, वात, खुजली, आमदोष, अरुचि, मूत्राशयके रोग, बादी बवासीर, कृमि, पीनस तथा वीर्य्यनाशक होती है ॥ २५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दालचीनी ॥

त्वक्स्वाद्वीतुतनुत्वक्स्यात्तथादारुसितामता । उक्तादारुसितास्वाद्वीतिक्ताचानिल पित्तहृत् ॥ सुरभिः शुक्रलावण्यामुखशोषतृषापहा ॥ २६ ॥

दालचीनीके नाम और गुण ॥

त्वक् स्वाद्, तनुत्वक् और दारुसिता, यहदालचीनी के नामहैं, दालचीनी. मधुर, तिक्तरस युक्त वात, पित्तनाशक, सुगन्धित, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक मुखका सूखना तथा तृषानाशक होतीहै॥ २६ ॥

अथ पत्रकम् ॥

पत्रन्तमालपत्रञ्चतथास्यात्पत्रनामकम् । पत्रकंमधुरंकिञ्चित्तीक्ष्णोष्णंपिच्छिलं लघु ॥ निहन्तिकफवातार्शोहल्लासारुचिपीनसान् ॥ २७ ॥

तेजपातके नाम और गुण ॥

पत्र, तमालपत्र और पत्रनामक, यह तेजपातके नामहैं, तेजपात. मधुर, कुछ तीक्ष्ण, उष्ण, लस-दार, हलका और कफ, वात, बवासीर, हल्लास (मतली) अरुचि तथा पीनसकानाशक होताहै ॥ २७ ॥

अथ नागकेशरः ॥

नागपुष्पःस्मृतोनागःकेशरोनागकेशरः । चाम्पेयोनागकिञ्जल्कः कथितःकाञ्चना ह्वयः ॥ अयंपुष्पेतुक्लीबे । नागपुष्पंकषायोष्णंरूक्षंलघ्वामपाचनम् । ज्वरकण्डूतृषास्वेद च्छर्दिहल्लासनाशनम् ॥ दौर्गन्ध्यकुष्ठवीसर्पकफपित्तविषापहम् ॥ २८ ॥

नागकेशर के नाम और गुण ॥

नागपुष्प, नाग, केशर, नागकेशर, चाम्पेय, नागकिञ्जल्क और काञ्चनाह्वय, यह नागकेशर के नामहैं, यह शब्द जब नपुंसकलिंगमें व्यवहार कियेजातेहैं तब पुष्पवाची होते हैं, नागकेशर कषाय, उष्ण, रूखी, हलकी, आमकी पचानेवाली और ज्वर, खुजली, तृषा, स्वेद, छर्दि, मतली, दुर्गन्धि, कुष्ठ, वीसर्प, कफ, पित्त तथा विषनाशक होतीहै ॥ २८ ॥

अथ त्रिजातचातुर्जातके ॥

त्वगेलापत्रकैस्तुल्यैस्त्रिसुगन्धित्रिजातकम् । नागकेशरसंयुक्तं चातुर्जातकमुच्यते ॥ तद्द्वयंरोचनंरूक्षंतीक्ष्णोष्णंमुखगन्धहृत्लघुपित्ताग्निकृद्वर्ण्यंकफवातविषापहम् ॥२६॥

त्रिजात और चतुर्जातके लक्षण तथा गुण ॥

तज, इलायची और तेजपात यह समभाग एक में मिलाने से त्रिजात या त्रिसुगन्ध कहलाता है और इन्हों में नागकेशर मिलाने से चातुर्ज्जातक कहलाता है यह दोनों रोचक, रूखे, तीक्ष्ण, उष्ण, मुख की दुर्गन्धिनाशक, हलके, पित्तवर्द्धक, अग्निकारक, वर्णको हित और कफ वात तथा विषनाशक होते हैं ॥ २६ ॥

अथ कुंकुमम् ॥

कुंकुमंघुसृणंरक्तंकाश्मीरंपीतकंवरम् । सङ्कोचंपिशुनंधीरं वाह्लीकंशोणिताभिधम् ॥ कुंकुमंघुसृणंरक्तंकाश्मीरंपीतकंवरम् । सूक्ष्मकेशरमारक्तंपद्मगन्धितदुत्तमम् ॥ वाह्लीक काश्मीरदेशजक्षेत्रेकुंकुमंयद्भवेद्धितत् । सूक्ष्मकेशरमारक्तंपद्मगन्धितदुत्तमम् ॥ वाह्लीक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देशसञ्जातं कुंकुमंपाण्डुरम्मतम् । केतकीगन्धयुक्तन्तन्मध्यं सूक्ष्मकेशरम् ॥ कुंकुमम्पारसीकेयन्मधुगन्धितदीरितम् । ईषत्पाण्डुरवर्णंतदधमंस्थूलकेशरम् ॥ कुंकुमंकटुकं स्निग्धं शिरोरुग्व्रणजन्तुजित् । तिक्तंवमिहरंवर्ण्यंव्यंगदोषत्रयापहम् ॥ ३० ॥

केशरके नाम और गुण ॥

कुंकुम, घुसृण, रक्त, काश्मीर- पीतक- वर- संकोच- पिशुन- धीर—वाह्लीक और शोणित-यह केशर के नामहैं-जो केशर कश्मीरमें उत्पन्न होतीहै वह सूक्ष्म केशर रक्तवर्ण पद्मके समान गन्धिवाली और श्रेष्ठ होतीहै,जो केशर वाह्लीकदेश में उत्पन्न होतीहै वह पाण्डुवर्ण, केतकीके समानगन्धवाली सूक्ष्म केशर मध्यम होतीहै और जो केशर पारसदेशमें उत्पन्न होतीहै वह शहदके समान गन्धियुक्त कुछ पाण्डुवर्ण स्थूल केशर निकृष्ट होतीहै- केशर-तिक्त, कटुरसयुक्त, स्निग्ध, वर्णकोहित-और शिररोग, घाव, कृमि, छर्दि, व्यंग तथा त्रिदोषनाशक होतीहै ॥ ३० ॥

अथ गोरोचना॥

गोरोचनातुमङ्गल्यावन्ध्यागौरीचरोचना । गोरोचनाहिमातिक्तावश्यामङ्गलकान्तिदा॥ विषालक्ष्मीग्रहोन्मादगर्भस्रावक्षतास्रहृत् ॥ ३१ ॥

गोरोचनके नाम और गुण ॥

गोरोचना, मङ्गल्या- वन्ध्या—गौरी और रोचना यह गोरोचनके नाम हैं, गोरोचन.शीतल, तिक्त, वशीकरण, मङ्गलकारक कांतिवर्द्धक और विष, अलक्ष्मी,ग्रहोंके दोष, उन्माद, गर्भगिरना,घाव तथा रक्तदोष नाशक होताहै ॥ ३१ ॥

अथ नखनखीगन्धद्रव्यम् ॥

नखंव्याघ्रनखंव्याघ्रा युधन्तच्चक्रकारकम् । नखंस्वल्पंनखीप्रोक्ताहनुर्हट्टविलासिनी॥ नखद्रव्ययग्रहश्लेष्मवातास्रज्वरकुष्ठहृत् । लघूष्णंशुक्रलंवर्ण्यंस्वादुव्रणविषापहम् ॥ अलक्ष्मीमुखदौर्गन्ध्यहृत्पाकरसयोःकटुः ॥ ३२ ॥

नखनखीके नाम और गुण ॥

नख, व्याघ्रनख, और चक्रकारक यह नखके नामहैं, और छोटे नखको नखी, हनु, और हट्टविलासिनी कहते हैं. नख और नखी दोनों ग्रह दोष, कफ,वात, रुधिर, ज्वर,कुष्ठ, घाव,विष,अलक्ष्मी और मुखकी दुर्गन्धिके नाशक लघु, उष्ण, वीर्यवर्द्धक वर्णकोहित, मधुर कटुरसयुक्त और विपाकमें कटुहोते हैं ॥ ३२ ॥

अथ सुगन्धबाला ॥

बालंह्रीवेरबर्हिष्ठोदीच्यङ्केशाम्बुनामच । बालकंशीतलंरूक्षंलघुदीपनपाचनम् ॥ हृल्लासारुचिवीसर्पहृद्रोगामातिसारजित् ॥ ३३ ॥

सुगन्धबालाके नाम और गुण ॥

बाल, ह्रीवेर, बर्हिष्ठ, उदीच्य, केश और अंबु—यह सुगन्धबालाके नाम हैं, सुगन्धबाला. शीतल,रूखी, लघु, दीपन, पाचक और मतली, अरुचि, वीसर्प, हृदयके रोग, आमदोष तथा अतीसार नाशक होताहै ॥ ३३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ बीरणम् ॥

स्याद्बीरणंबीरतरुर्बीरञ्चबहुमूलकम् । बीरणम्पाचनंशीतं वान्तिहल्लघुतिक्तकम् ॥ स्तम्भनंज्वरनुद्वान्तिमदजित्कफपित्तहृत् । तृष्णास्रविषवीसर्पकृच्छ्रदाहव्रणापहम् ३४

गांडरके नाम और गुण ॥

बीरण,बीरतरु, बीर और बहुमूलक यह गांडर के नाम हैं, गांडर शीतल, लघु, पाचक, स्तंभन, तिक्त और छर्दि, ज्वर, श्रम, मद, कफ, पित्त, तृषा, रुधिर, विष, वीसर्प, मूत्रकृच्छ्र, दाह तथा घावनाशक होती है ॥ ३४ ॥

अथ उशीर ॥

बीरणस्यतुमूलंस्यादुशीरंनलदंचतत् । अमृणालञ्चसेव्यञ्च समगंधिकमित्यपि ॥ उशीरम्पाचनंशीतंस्तम्भनंलघुतिक्तकम् । मधुरंज्वरहृद्वांतिमदनुत्कफपित्तहृत् ॥ तृष्णास्रविषवीसर्पदाहकृच्छ्रव्रणापहम् ॥ ३५ ॥

खसके नाम और गुण ॥

गांडरकी जडको उशीर (खस) कहतेहैं नलद, अमृणाल, सेव्य और समगन्धिक यह खसके नामहैं खस.पाचक, शीतल, स्तंभन, लघु, तिक्त, मधुररसयुक्त और ज्वर, छर्दि, मद, कफ, पित्त, तृषा, रक्तदोष, विष, वीसर्प,दाह, मूत्रकृच्छ्र तथा व्रणकी नाशक होती है ॥ ३५ ॥

अथ जटामांसी ॥

जटामांसीभूतजटाजटिला च तपस्विनी । मांसीतिक्ताकषाया च मेध्याकान्तिबलप्रदा ॥ स्वाद्वीहिमात्रिदोषास्रदाहवीसर्पकुष्ठनुत् ॥ ३६ ॥

जटामांसीके नाम और गुण ॥

जटामांसी, भूतजटा, जटिला और तपस्विनी यह जटामांसी के नामहैं, जटामांसी.तिक्त, मधुर और कषायरसयुक्त,मेधाको हित, बलवर्द्धक,कान्तिकारक, स्वादु, शीतल और त्रिदोष, रक्तदोष,दाह, वीसर्प तथा कुष्ठनाशक होती है ॥ ३६ ॥

अथ भूरछरीलइतिलोके ॥

शैलेयन्तुशिलापुष्पंवृद्धङ्कालानुसार्यकम् ॥ शैलेयंशीतलंहृद्यंकफपित्तहरंलघु । कण्डूकुष्ठाश्मरीदाहविषहृद्गुदरक्तहृत् ॥ ३७ ॥

छारछबीलाके नाम और गुण ॥

शैलेय,शिलापुष्प,वृद्ध और कालानुसार्यक यह छारछबीलेके नामहैं, छारछबीला. शीतल, हृदयको हित, कफ पित्तनाशक, हलका और खुजली, कुष्ठ, पथरी, दाह,विष तथा गुदाके रक्तका नाशक होताहै ॥ ३७ ॥

मोथानागरमोथा ॥

मुस्तकंनस्त्रियांमुस्तंत्रिषुवारिदनामकम् । कुरुविन्दश्चसंख्यातोऽपरःक्रोडकसेरुकः ॥ भद्रमुस्तंचगुन्द्राचतथानागरमुस्तकः । मुस्तंकटुहिमंग्राहितिक्तंदीपनपाचनम् ॥ कषा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यंकफपित्तास्रतृड्ज्वरारुचिजन्तुहृत् । अनूपदेशेयज्जातं मुस्तकंतत्प्रशस्यते ॥ तत्रापिमुनिभिःप्रोक्तं वरंनागरमुस्तकम् ॥ ३८ ॥

नागरमोथा के नाम और गुण ॥

मुस्तक शब्द पुंलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग होता है मुस्त शब्द त्रिलिंगी होताहै, वारिद और कुरुविन्द यह मोथा के नामहैं, कोड, कसेरुक, भद्रमुस्त, गुंद्रा और नागरमुस्तक यह नागरमोथाके नामहैं, मोथा. कटु, तिक्त, कषायरसयुक्त, शीतल, ग्राही, दीपन, पाचक और कफपित्तरक्तदोष, तृषा, ज्वर, अरुचि तथा कृमिनाशक होताहै जो मोथा अनूपदेश में उत्पन्न होताहै वह उत्तम है उसमें भी मुनियोंने नागरमोथे को सबसे श्रेष्ठ कहाहै ॥ ३८ ॥

अथ कर्चूरः ॥

कर्चूरोवेधमुख्यश्चद्राविड़ःकल्पकःशटी।कर्चूरोदीपनोरुच्यःकटुकस्तिक्तएवच॥सुगन्धिःकटुपाकःस्यात् कुष्ठार्शोव्रणकासनुत् । उष्णोलघुःहरेच्छ्वासंगुल्मवातकफकृमीन्॥३९॥

कचूर के नाम और गुण ॥

कर्चूर, वेधमुख्य, द्राविड, कल्पक और शटी यह कचूरके नामहैं, कचूर. दीपन, रुचिकारक, कटु, तिक्त रसयुक्त, सुगन्धित, पाक में कटु, उष्ण, हलका और कुष्ठ, बवासीर, घाव, खांसी, श्वास, गुल्म, वात, कफ तथा कृमिनाशक होताहै ॥ ३९ ॥

अथ एकांगी ॥

मुरागन्धकटीदैत्या सुरभिःशालपर्णिका । मुरातिक्ताहिमास्वाद्वी लघ्वीपित्तानिलापहा ॥ ज्वरासृग्भूतरक्षोघ्नी कुष्ठकासविनाशिनी ॥ ४० ॥

मरोरफली के नाम और गुण ॥

मुरा, गंधकटी, दैत्या, सुरभि और शालपर्णिका यह मरोरफलीके नामहैं, मरोरफली. तिक्त, मधुर रसयुक्त, शीतल, हलकी और पित्त, वायु, ज्वर, रक्तदोष, भूतोंका आवेश, राक्षसोंकी बाधा, कुष्ठ तथा खांसी की नाशक होती है ॥ ४० ॥

अथ गन्धपलाशीसुगन्धद्रव्यंकाश्मीरेप्रसिद्धा ॥

शठीपलाशीषड्ग्रन्था सुव्रतागन्धमूलिका । गन्धारिकागन्धवधूर्वधूःपृथुपलाशिका ॥ भवेद्गन्धपलाशीतु कषायाग्राहिणीलघुः । तिक्तातीक्ष्णाचकटुकानुष्णास्यमलनाशिनी॥ शोथकासव्रणश्वासशूलहिध्मग्रहापहा ॥ ४१ ॥

गन्धपलाशी (एक प्रकारकी सुगन्धित वस्तु काश्मीरदेशमें प्रसिद्धहै) के नाम और गुण ॥

शठी, पलाशी, षड्ग्रंथा, सुव्रता, गन्धमूलिका, गन्धारिका, गन्धवधू, वधू और पृथुपलाशिका यह गन्धपलाशीके नाम हैं, गंधपलाशी. कषाय, तिक्त कटुरसयुक्त, ग्राही, हलकी, तीक्ष्ण, उष्णतारहित. मुखकेमल की नाशक और सूजन, खांसी, घाव, श्वास, श्वेत कुष्ठ तथा ग्रहदोषों की नाशक होती है ॥ ४१ ॥

अथ प्रियंगुगन्धप्रियंगु ॥

प्रियंगुःफलिनीकान्ता लताचमहिलाह्वया । गुन्द्रागुन्द्रफलाश्यामा विष्वक्सेनाङ्गनाप्रिया ॥ प्रियंगुःशीतलातिक्ता तुवरानिलपित्तहृत् । रक्तातियोगदौर्गन्ध्यस्वेददाहज्वराप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हा ॥ गुल्मतृड्विषमोहघ्नी तद्वद्गन्धप्रियंगुकाः। तत्फलंमधुरंरूक्षं कषायंशीतलंगुरु॥ विबन्धाध्मानबलकृत् संग्राहिकफपित्तजित् ॥ ४२ ॥

प्रियंगु (ककुनी) और गंधप्रियंगुके नाम और गुण ॥

प्रियंगु, फलिनी, कान्ता, लता, महिला, गुन्द्रा, गुन्द्रफला, श्यामा, विष्वक्सेना और अङ्गनाप्रिया यह प्रियंगुके नामहैं प्रियंगु. शीतल, तिक्तकषायरसयुक्त और वातपित्त रुधिरकी अधिकता, दुर्गन्धि, स्वेद, दाह, ज्वर, गुल्म, तृषा, विष और मोहनाशक होतीहै और गन्धप्रियंगुमें भी यही गुण होते हैं प्रियंगु का फल. मधुर, कषायरसयुक्त, रूखा, शीतल, भारी, बलवर्द्धक, ग्राही, विबंध तथा आध्मान करनेवाला और कफ तथा पित्तनाशक होताहै ॥ ४२ ॥

अथ रेणुकामरिचसदृशा ॥

रेणुकाराजपुत्रीच नन्दिनीकपिलाद्विजा । भस्मगन्धापाण्डुपुत्री स्मृताकौन्तीहरेणुका ॥ रेणुकाकटुकापाकेतिक्तानुष्णाकटुर्लघुः । पित्तलादीपनीमेध्या पाचिनीगर्भपातिनी ॥ बलासवातकृच्चैवतृट्कण्डूविषदाहनुत् ॥ ४३ ॥

रेणुका (मिर्चके सदृश एकप्रकारकी सुगन्धित द्रव्य) के नाम और गुण ॥

रेणुका, राजपुत्री, नन्दिनी, कपिला, द्विजा, भस्मगंधा, पांडुपुत्री, कौन्ती और हरेणुका यह रेणुकाके नाम हैं, रेणुका. विपाकमेंकटु, तिक्त, कटुरसयुक्त, उष्णतारहित, हलकी, पित्तवर्द्धक, दीपन, मेधाकोहित, पाचक गर्भगिरानेवाली और कफ वातका कोप, खुजली, तृषा, विष तथा दाहकी नाशक होती है ॥ ४३ ॥

अथ ठिवन ॥

ग्रन्थिपर्णंग्रन्थिकंचकाकपुच्छञ्चगुच्छकम्। नीलपुष्पंसुगंधञ्चकथितंतैलपर्णकम् ॥ ग्रंथिपर्णंतिक्ततीक्ष्णंकटूष्णंदीपनंलघुः । कफवातविषश्वासकण्डूदौर्गन्ध्यनाशनम् ॥४४॥

भटोरा के नाम और गुण ॥

ग्रंथिपर्ण, ग्रंथिक, काकपुच्छ, गुच्छक, नीलपुष्प, सुगन्ध और तैलपर्णक यह भटोराके नामहैं, भटोरा. तिक्त कटुरसयुक्त, तीक्ष्ण, उष्ण, दीपन, हलका और कफ, वात, विष, श्वास, खुजली तथा दुर्गन्धिनाशक होताहै ॥ ४४ ॥

अथ ग्रन्थिपर्णस्यैवभेदईषत्सुगन्धः स्थौणेयंथनेरइतिलोकेप्रसिद्धम् ॥

स्थौणेयकंबर्हिबर्हंशुकबर्हंञ्चकुक्कुरम् । शीर्णरोमशुकञ्चापिशुकपुष्पंशुकच्छदम् ॥ स्थौणेयकङ्कटुस्वादुतिक्तंस्निग्धंत्रिदोषनुत् । मेधाशुक्रकरंरुच्यंरक्षोघ्नंज्वरजंतुजित् ॥ हन्तिकुष्ठास्रतृड्दाहदौर्गन्ध्यतिलकालकान् ॥ ४५ ॥

कुकरौंधाके नाम और गुण ॥

स्थौणेयक, बर्हिबर्ह, शुकबर्ह, कुक्कुर, शीर्णरोम, शुक, शुकपुष्प और शुकच्छद यह कुकरौंधे के नाम हैं, कुकरौंधा. कटु, मधुर, तिक्त, स्निग्ध, त्रिदोषनाशक, मेधाको हित, वीर्यवर्द्धक, रुचिकारक और राक्षसों की पीडा, ज्वर, कृमि, कुष्ठ, रक्तदोष, तृषा, दाह, दुर्गंधि तथा तिलनाशक होताहै ॥ ४५ ॥

अथग्रन्थिपर्णस्यैवभेदः भटेउरइतिनैपालदेशेभवति ॥

निशाचरोधनहरः कितवोगणहासकः । रोचकोमधुरस्तिक्तःकटुःपाकेकटुर्लघुः ॥ तीक्ष्णो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हृद्योहिमोहन्तिकुष्ठकण्डूकफानिलान्।रक्षोश्रीस्वेदमेदोऽस्[illegible]रगन्धविषव्रणान् ॥४६॥

ग्रंथिवर्ण का भेद भटेउर नाम से नैपालदेशमें प्रसिद्ध है उस[illegible] नाम और गुण ॥

निशाचर, धनहर, कितव और गणहासक यह भटेउर के नाम हैं, भटेउर. रुचिकारक,मधुर तिक्त, कटु, विपाकमें कटु,हलका,तीक्ष्ण, हृदयको हित, शीतल और कुष्ठ, खुजली,कफ, वात,राक्षसों की बाधा, अलक्ष्मी, स्वेद, मेद, रुधिरविकार, ज्वर, दुर्गन्धि, विष तथा घावका नाशक होताहै ॥ ४६ ॥

अथ भूम्यामलकीसदृशस्तालीसः ॥

तालीसमुक्तम्पत्राढ्यंधात्रीपत्रञ्चतत्स्मृतम् । तालीसंलघुतीक्ष्णोष्णंश्वासकासकफानिलान् ॥ निहन्त्यरुचिगुल्मामवह्निमान्द्यक्षयामयान् ॥ ४७ ॥

भूमिआमले के समान तालीस होता है उसके नाम और गुण ॥

तालीस, पत्राढय और धात्रीपत्र यह तालीस के नाम हैं, तालीस. हलका, तीक्ष्ण, उष्ण और श्वास, खांसी, कफ, वात,अरुचि,गुल्म,आमदोष,मंदाग्नि तथा क्षयरोगका नाशक होताहै ४७॥

अथ कङ्कोलंसुगन्धद्रव्यम् शीतलचीनीतिलोके ॥

कङ्कोलंकोलकम्प्रोक्तंतथाकोशफलंस्मृतम् । कङ्कोलंलघुतीक्ष्णोष्णंतिक्तंहृद्यंरुचिप्रदम् ॥ आस्यदौर्गन्ध्यहृद्रोगकफवातामयान्ध्यहृत् ॥ ४८ ॥

शीतलचीनीके नाम और गुण ॥

कङ्कोल, कोलक और कोशफल यह शीतलचीनी के नाम हैं, शीतलचीनी. लघु, तीक्ष्ण, उष्ण तिक्त, हृदय को हित, रुचिकारक और मुखकी दुर्गन्धि, हृदय के रोग, कफ वातरोग तथा अन्धता की नाशक होती है ॥ ४८ ॥

अथ गन्धकोकिलागन्धमालती ॥

स्निग्धोष्णाकफहृत्तिक्तासुगन्धागन्धकोकिला । गन्धकोकिलयातुल्या विज्ञेयागन्धमालती ॥ ४९ ॥

गन्धकोकिला और गन्धमालतीके गुण ॥

गन्धकोकिला. स्निग्ध, उष्ण, तिक्त और सुगन्धित होती है सुगन्धमालती में भी इसी के समान गुण होतेहैं ॥ ४९ ॥

अथलामज्जकमुशीरवत् पीतच्छवितृणविशेषः ॥

लामज्जकंसुनालंस्यादमृणालंलयंलघुः । इष्टकापथकंसेव्यंनलदञ्चावदातकम् ॥ लामज्जकंहिमन्तिक्तंलघुदोषत्रयास्रजित्।त्वगामयस्वेदकृच्छ्रदाहपित्तास्ररोगनुत् ५०॥

लामज्जक (खसके समान पीले रङ्गका एकतृण) के नाम और गुण ॥

लामज्जक, सुनाल, अमृणाल,लय,लघु,इष्टकापथक,सेव्य,नलद और अवदातक यह लामज्जक के नाम हैं,लामज्जक. शीतल, तिक्त, लघु और त्रिदोष, रक्त, चर्मरोग, स्वेद, मूत्रकृच्छ्र, दाह तथा रक्तपित्तनाशक होताहै ५० ॥

अथ एलवालुकंकङ्कोलसदृशंकुष्ठगन्धि ॥

एलवालुकमैलेयंसुगन्धिहरिवालुकम् । एलवालुकमेलालुकपित्थंपत्रमीरितम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एल्वालुकटुकंपाकेकषायंशीतलंलघु। हन्तिकण्डूव्रणच्छर्दितृट्कासारुचिहृद्रुजः॥ बला सविषपित्तास्त्रकुष्ठमूत्रगदकृमीन्॥ ५१॥

एलवालुक (दालचीनीकासाडौल और कूट कीसी सुगन्धि उसमें होती है) के नाम और गुण॥

एलवालुक, ऐलेय, सुगन्धि, हरिवालुक, एलालु और कपित्थपत्र यह एलवालुक के नामहैं,एलवालुक.पाकमें कटु, कषाय, शीतल, लघु और खुजली, घाव, छर्दि, तृषा, खांसी, अरुचि, हृदय के रोग, कफ, विष, पित्त, रुधिर, कुष्ठ, मूत्ररोग तथा कृमिनाशक होताहै॥ ५१॥

कोसचीमोथा॥

गुडतजीइतिचइयन्तुवितुन्नकनाम्नोवृक्षस्यत्वक्मुस्ताकृतिः। कुटन्नटंदासपुरंवालेयं परिपेलवम्॥ प्लवगोपुरगोनर्दकैवर्त्तीमुस्तकानिच॥ मुस्तावत्पेलवंपुष्टंशुक्लाभंस्याद्वितुन्नकम्। वितुन्नकंहिमंतिक्तं कषायंकटुकान्तिदम्॥ कफपित्तास्त्रवीसर्पकुष्ठकण्डूविषव्रणुत्॥ ५२॥

जलमोथा (वितुन्नकनामवृक्षकीछाल, इसकी मोथेके समान आकृति होतीहै) के नाम और गुण॥

कुटन्नट, दासपुर, वालेय, परिपेलव,प्लव,गोपुर,गोनर्द और कैवर्त्त मुस्तक यहजलमोथाकेनाम हैं वितुन्नक के पत्ते मोथाके समान कोमल और शुक्लवर्ण होते हैं, वितुन्नक.शीतल, तिक्त,कषाय, कटु, कान्तिवर्द्धक और कफ पित्त रक्त वीसर्प कुष्ठ खुजली तथा विषका नाशक होताहै॥ ५२॥

अथ स्पृक्का॥

सुगन्धिद्रव्यंशाकविशेषः। लङ्कोइकपुरीतिलोकेच। स्पृक्कासृक्ब्राह्मणीदेवीमरुन्मालालतालघुः। समुद्रान्तावधूःकोटिवर्षालङ्कोपिकेत्यपि॥ स्पृक्कास्वाद्वीहिमावृष्यातिक्तानिखिलदोषनुत्। कुष्ठकण्डूविषस्वेददाहास्रज्वररक्तहृत्॥ ५३॥

स्पृक्का (लंकोइकपुरी नामसेप्रसिद्ध सुगन्धित शाक विशेष) के नाम व गुण॥

स्पृक्का, असृक्, ब्राह्मणी, देवी, मरुन्नमाला, लता, लघु,समुद्रान्ता वधू कोटिवर्षा और लंकोपिका यह स्पृक्काके नामहैं स्पृक्का. मधुर, तिक्त,शीतल, वीर्यवर्द्धक, त्रिदोषनाशक और कुष्ठ, खुजली, विष, स्वेद, दाह, अलक्ष्मी, ज्वर तथा रक्तनाशक होती है॥ ५३॥

अथ पर्पटीइतिप्रसिद्धंपद्मावतीइतिच॥

उत्तरदेशेसुगन्धिद्रव्यं।पर्पटीरञ्जनाकृष्णाजतुकाजननीजनी। जतुकृष्णाग्निसंस्पर्शाजतुकृच्चक्रवर्तिनी॥ पर्पटीतुवरातिक्ताशिशिरावर्णकृल्लघु। विषव्रणहरीकण्डूकफपित्तास्त्रकुष्ठनुत्॥ ५४॥

उत्तरदेशमें प्रसिद्ध पद्मावतीके नाम और गुण॥

पर्पटी, रंजना, कृष्णा, जतुका, जननी, जनी, जतुकृष्णा, अग्निसंस्पर्शा, जतुस्त् और चक्रवर्तिनी यह पद्मावतीके नामहैं पद्मावती. कषाय, तिक्त,शीतल,वर्णकारक, लघु और विष,व्रण,खुजली,कफ, पित्त, रक्त तथा कुष्ठनाशक होती है॥ ५४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ नलिका ॥

उत्तरापथेप्रसिद्धा। सुगन्धाबलाकृतिर्यवारीइतिचक्कचित्प्रसिद्धा। नलिकाविद्रुमलताकपोतचरणानटी। धमन्यञ्जनकेशीचनिर्मध्यासुषिरानली ॥ नलिकाशीतलालघ्वीचक्षुष्याकफपित्तहृत्। कृच्छ्राश्मवाततृष्णास्रकुष्ठकण्डूज्वरापहा ॥ ५५ ॥

नलिका उत्तर देशकी सुगन्धित वस्तु सुगन्धबाला के समान उसके नाम व गुण ॥

नलिका,विद्रुमलता,कपोतचरणा,नटी,धमनी,अंजनकेशी,निर्मध्या,सुषिरा और नली यह नलिका के नामहैं नलिका. शीतल,लघु, नेत्रोंकोहित और कफ,पित्त,मूत्रकृच्छ्र, पथरी,वात, तृषा, रक्तकुष्ठ, खुजली तथा ज्वरनाशक होतीहै ॥ ५५ ॥

अथ प्रपौण्डरीकम् ॥

सुगन्धद्रव्यंपुण्डेरीइतिलोकेप्रसिद्धम्। प्रपौण्डरीकंपौण्डर्य्यंचक्षुष्यंपौण्डरीयकम्॥ पौण्डर्य्यंमधुरंतिक्तंकषायंशुक्रलंहिमम् ॥ चक्षुष्यंमधुरंपाकेवर्ण्यंपित्तकफप्रणुत् ॥ ५६॥

इति भावप्रकाशे कर्पूरादिवर्गः ॥

पुण्डेरी एकप्रकार की सुगन्धित वस्तु के नाम और गुण ॥

प्रपौण्डरीक, पौण्डर्य्य, चक्षुष्य और पौण्डर्यक यह पुण्डेरीके नामहैं, पुण्डेरी. मधुर, तिक्त, कषाय वीर्य्यवर्द्धक, शीतल, नेत्रोंकोहित, पाकमें मधुर, वर्णकोहित और पित्तकफनाशक होतीहै ॥ ५६ ॥

इति श्रीभावप्रकाशस्यभाषानुवादेकर्पूरादिवर्गः ॥

अथ गुडूच्यादिवर्गस्तत्रादौगुडूच्याउत्पत्तिर्नामानिगुणाश्च ॥

अथ लङ्केश्वरोमानी रावणोराक्षसाधिपः। रामपत्नींबलात्सीतांजहारमदनातुरः ॥ ततस्तंबलवान्रामो रिपुंजायापहारिणम्। वृतोवानरसैन्येनजघानरणमूर्द्धनि ॥ हतेतस्मिन्सुराराती रावणेबलगर्विते। देवराजःसहस्राक्षः परितुष्टोऽतिराघवे ॥ तत्रयेवानराःकेचिद्राक्षसैर्निहतारणे। तानिन्द्रोजीवयामाससंसिच्यामृतवृष्टिभिः॥ततोयेषुप्रदेशेषुकपिगात्रात्परिच्युताः। पीयूषबिन्दवःपेतुस्तेभ्योजातागुडूचिका॥ गुडूचीमधुपर्णीस्यादमृताऽमृतवल्लरी। छिन्नाछिन्नरुहाछिन्नोद्भवावत्सादनीतिच ॥ जीवन्तीतन्त्रिकासोमासोमवल्लीचकुण्डली। चक्रलक्षणिकाधीराविशल्याचरसायनी॥ चन्द्रहासीवयस्थाचमण्डलीदेवनिर्मिता। गुडूची कटुका तिक्ता स्वादुपाका रसायनी॥ संग्राहिणीकषायोष्णालघ्वीबल्याग्निदीपनी। दोषत्रयामतृड्दाहमेहकासांश्चपाण्डुताम् ॥ कामलाकुष्ठवातास्रज्वरकृमिवमीन्हरेत्। प्रमेहश्वासकासार्शःकृच्छ्रहृद्रोगवातनुत् ॥ १ ॥

गिलोयकी उत्पत्ति नाम और गुण ॥

एकसमय राक्षसोंका स्वामी लंकाका राजा मदोन्मत्त रावण कामसे व्याकुलहोकर रामचन्द्रजी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की पत्नी सीताजीको हरलेगया इसकेउपरान्त अत्यन्तप्रतापी रामचन्द्रजीने वानरोंकी सेना इकट्ठी करके स्त्रीके हरनेवाले रावणको मारा देवताओंके परमशत्रु उस रावणके मारेजाने पर सहस्रलोचन इन्द्रने रामचन्द्रजी पर अत्यन्तप्रसन्न होकर उस रण में राक्षसों के हाथसे मारेहुए वानरों को अमृत बरसाकर जिवाया उन वानरोंके शरीरसे जहां २ अमृतके बिन्दुपड़े उसी स्थानमें यह गिलोय उत्पन्न हुई, गुडूची, मधुपर्णी, अमृता, अमृतवल्लरी, छिन्ना, छिन्नरुहा, छिन्नोद्भवा, वत्सादनी, जीवन्ती तन्त्रिका, सोमा, सोमवल्ली, कुण्डली, चक्रलक्षणिका, धीरा, विशल्या, रसायनी, चन्द्रहासी, वयस्था, मण्डली और देवनिर्मिता यह गिलोयके नामहैं, गिलोय.कटु, तिक्त, पाकमें मधुर, रसायन, ग्राही, कषाय, उष्ण, हलकी, बलकारक, अग्निदीपक और त्रिदोष आम, तृषा, दाह, प्रमेह, खांसी, पाण्डु, कामला, कुष्ठ, वातरक्त, ज्वर, कृमि, छर्दि, श्वास, बवासीर, मूत्रकृच्छ्र, वात तथा हृदयके रोग की नाशक होती है ॥ १ ॥

अथ पर्णम्* ॥

ताम्बूलवल्लीताम्बूलीनागिनीनागवल्लरी । ताम्बूलंविशदंरुच्यंतीक्ष्णोष्णंतुवरंसरम् ॥ वश्यंतिक्तंकटुक्षारंरक्तपित्तकरंलघु ।बल्यंश्लेष्मास्यदौर्गन्ध्यमलवातश्रमापहम् २॥

तांबूल के नाम और गुण ॥

तांबूलवल्ली, तांबूली, नागिनी और नागवल्लरी यह ताम्बूल (पान) के नामहैं ताम्बूल. विशद, रुचिकारक, तीक्ष्ण, उष्ण, कषाय, सारक, वशीकरण, तिक्त, कटु, क्षार, रक्त, पित्तकारक, हलका, बलकारी और कफ, मुखकी दुर्गन्धि, मल, वात तथा श्रमका नाशक होताहै ॥ २ ॥

अथ बिल्वः ॥

बिल्व.शाण्डिल्यशैलूषौमालूरश्रीफलावपि । श्रीफलस्तुवरस्तिक्तोग्राहीरूक्षोऽग्निपित्तकृत् । वातश्लेष्महरोबल्योलघुरुष्णश्चपाचनः ॥ ३ ॥

बेलके नाम और गुण ॥

बिल्व, शाण्डिल्य, शैलूष, मालूर और श्रीफल यह बेलके नामहैं,बेल. कषाय, तिक्त, ग्राही, रूखा अग्निवर्द्धक, पित्तकारी, वात, कफनाशक, बलकारी, हलका, उष्ण और पाचक होताहै ॥ ३ ॥

अथ गम्भारी ॥

गम्भारीभद्रपर्णीचश्रीपर्णीमधुपर्णिका । काश्मीरीकाश्मरीहीराकाश्मर्यःपीतरोहिणी ॥ कृष्णवृन्तामधुरसामहाकुसुमिकापिच । काश्मरीतुवरातिक्तावीर्योष्णामधुरागुरुः ॥ दीपनीपाचनीमेध्याभेदिनीभ्रमशोषजित् । दोषतृष्णामशूलार्शोविषदाहज्वरापहा ॥ तत्फलंबृंहणंवृष्यंगुरुकेश्यंरसायनम् ।वातपित्ततृषारक्तक्षयमूत्रविबन्धनुत्॥ स्वादुपाकेहिमंस्निग्धंतुवराम्लविशुद्धिकृत् । हन्याद्दाहतृषावातरक्तपित्तक्षतक्षयान् ॥ ४ ॥

गम्भारीके नाम और गुण ॥

गम्भारी, भद्रपर्णी, श्रीपर्णी, मधुपर्णिका, काश्मीरी, काश्मरी, हीरा, काश्मर्य, पीतरोहिणी, कृष्णवृन्ता, मधुरसा और महाकुसुमिका यह गम्भारी (खंभारी) के नामहैं गम्भारी. कषाय, तिक्त, उष्ण, मधुर, भारी, दीपन, पाचक, मेधाकोहित, भेदक और भ्रम, शोष, त्रिदोष, तृषा, आम, शूल, बवासीर, विष

*अनिनाय मुखे पर्णं यः पूगं खादते नरः । मतिभ्रंशो दरिद्री स्यादन्ते न स्मरते हरिम् ॥ जो प्राणी विना पान सुपारी खाताहै उसकी बुद्धि भ्रष्ट होजाती है और वह दरिद्री होकर अन्तमें हरिका स्मरण नहीं करता है ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दाह तथा ज्वरनाशक होती है गम्भारीकाफल. धातुवर्द्धक,वीर्यवर्द्धक,भारी,केशोंकोहित,रसायन और वात,पित्त, तृषा, रक्तक्षय, मूत्रका रुकना, दाह, वात, रक्त तथा घावका नाशक, पाकमें मधुर,शीतल स्निग्ध, कषाय, अम्ल और शोधनकारक होताहै ॥ ४॥

अथ पाण्डरिकठपाण्डरि ॥

पाटलिःपाटलामोघामधुदूतीफलेरुहा । कृष्णवृन्ताकुबेराक्षीकालस्थाल्यलिवल्लभा॥ ताम्रपुष्पीचकथितापरास्यात्पाटलासिता । मुष्ककोमोक्षकोघण्टापाटलिःकाष्ठपाटला ॥ (कालस्थालीत्यत्रकाचस्थालीत्येके) पाटलातुवरातिक्तानुष्णादोषत्रयापहा । अरुचिः श्वासशोथास्रछर्दिहिक्कातृषाहरी ॥ पुष्पंकषायंमधुरंहिमंहृद्यंकफास्रनुत् । पित्तातिसारहृत्कण्ठ्यंफलंहिक्कास्रपित्तहृत् ॥ ५ ॥

पाटलि और घण्टापाटलिके नाम और गुण ॥

पाटलि, पाटला, अमोघा, मधुदूती, फलेरुहा, कृष्णवृन्ता, कुबेराक्षी, कालस्थाली अथवा काचस्थाली, अलिवल्लभा और ताम्रपुष्पी यह पाटला (पाढरि) के नामहैं एक दूसरे प्रकारकी श्वेतपाटला होती है उसको मुष्कक, मोक्षक, घण्टापाटलि और काष्ठपाटला यह कहते हैं, पाढरि. कषाय,तिक्त कुछ उष्ण और त्रिदोष, अरुचि, श्वास,सूजन, रुधिर, छर्दि, हिचकी तथा तृषा की नाशक होती है पाढरिका पुष्प.कषाय, मधुर, शीतल, हृदयको हित और कफ, रक्तदोष, पित्त, अतीसारनाशक तथा कण्ठका शोधक होताहै इसका फल हिचकी और रक्तपित्त को नाश करताहै ॥ ५ ॥

अथ अगेंथगनिआरिइतिच ॥

अग्निमन्थोजयःसस्याच्छ्रीपर्णीगणिकारिका।जयाजयन्तीतर्कारीनादेयीवैजयन्तिका॥अग्निमन्थःश्वयथुनुद्वीर्योष्णःकफवातहृत्।पाण्डुनुत्कटुकस्तिक्तस्तुवरोमधुरोऽग्निदः६॥

अरणीके नाम और गुण ॥

अग्निमन्थ, जय, श्रीपर्णी, गणिकारिका, जया, जयन्ती, तर्कारी, नादेयी और वैजयन्तिका यह अरणी काष्ठके नामहैं अरणी.सूजननाशक, उष्ण, कटु, तिक्त, कषाय, मधुर, अग्निवर्द्धक और कफ वात तथा पाण्डुरोगनाशक होती है ॥ ६ ॥

अथ सोनापाढा ॥

स्योनाकःशोषणश्चस्यान्नटकट्वङ्गटुण्टुकाः । मण्डूकपर्णपत्रोर्णशुकनासकुटन्नटाः॥दीर्घवृन्तोरलुश्चापिपृथुशिम्बःकटम्भरः ॥ स्योनाकोदीपनःपाकेकटुकस्तुवरोहिमः ॥ ग्राही तिक्तोऽनिलश्लेष्मपित्तकासप्रणाशनः ।टुण्टुकस्यफलंबालंरूक्षंवातकफापहम् ॥ हृद्यं कषायंमधुरंरोचनंलघुदीपनम् । गुल्मार्शःकृमिहृत्प्रौढंगुरुवातप्रकोपनम् ॥ ७ ॥

सोनापाढा के नाम और गुण ॥

स्योनाक, शोषण, नट,कट्वङ्ग टुण्टुक,मण्डूकपर्ण,पत्रोर्ण, शुकनास कुटंनट,दीर्घवृन्त,अरलु, पृथुशिम्ब और कटंभर यह सोनापाढाके नामहैं सोनापाढा.दीपन,पाकमें कटु,कषाय,तिक्त,शीतल,ग्राही और वात कफ पित्त तथा खांसी का नाशक होताहै इसका कच्चाफल. रूखा, हृदय को हित,कषाय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मधुर, रुचिकारक, हलका, अग्निदीपक और वात, कफ, गुल्म, बवासीर तथा कृमिनाशक होताहै पक्काफल. भारी और वायुका कोपकरनेवाला होताहै ॥ ७ ॥

अथ बृहत्पञ्चमूलस्यलक्षणंगुणाः ॥

श्रीफलःसर्वतोभद्रा पाटलागणिकारिका । स्योनाकःपञ्चभिश्चैतैःपञ्च मूलंमहन्मतम् । पञ्चमूलंमहत्तिक्तंकषायंकफवातनुत् । मधुरंश्वासकासघ्नमुष्णंलघ्वग्निदीपनम् ॥ ८ ॥

बृहत्पञ्चमूल के लक्षण और गुण ॥

बेल, खंभारी, पाढर, अरणी और सोनापाढा इनपांचोंके मिलनेसे बृहत्पञ्चमूल कहलाताहै बृहत्पञ्चमूल, तिक्त, कषाय, मधुर, हलका. दीपन, उष्ण और कफ वात श्वास तथा खांसीका नाशक होताहै ॥ ८ ॥

अथ सरिवन ॥

शालिपर्णीस्थिरासौम्यात्रिपर्णीपीवरीगुहा । विदारिगन्धादीर्घाङ्गीदीर्घपत्रांशुमत्यपि ॥ शालिपर्णीगुरुश्छर्दीज्वरश्वासातिसारजित् । शोषदोषत्रयहरीबृंहण्युक्तारसायनी ॥ तिक्ताविषहरीस्वादुःक्षतकासकृमिप्रणुत् ॥ ९ ॥

शालिपर्णी (सरिवन) के नाम और गुण ॥

शालिपर्णी, स्थिरा, सौम्या, त्रिपर्णी, पीवरी, गुहा, विदारिगंधा, दीर्घाङ्गी, दीर्घपत्रा और अंशुमती यह सरिवन के नाम हैं सरिवन. धातुओं का पुष्टकरनेवाला, रसायन, तिक्त, मधुर, भारी और विष छर्दि, ज्वर, श्वास, अतीसार, शोष, त्रिदोष, घाव, खांसी तथा कृमिनाशक होताहै ॥ ९ ॥

अथ पिठवन ॥

पृश्निपर्णीपृथक्पर्णीचित्रपर्ण्यहिपर्ण्यपि । क्रोष्टुविन्नासिंहपुच्छीकलशीधावनिर्गुहा ॥ पृश्निपर्णीत्रिदोषघ्नीवृष्योष्णमधुरासरा । हन्तिदाहज्वरश्वासरक्तातीसारतृड्वमीः १० ॥

पृश्निपर्णी (पिठवन) के नाम और गुण ॥

पृश्निपर्णी, पृथक्पर्णी, चित्रपर्णी, अहिपर्णी, क्रोष्टुविन्ना, सिंहपुच्छी, कलशी, धावनि और गुहा यह पृश्निपर्णीके नामहैं, पृश्निपर्णी. वीर्यवर्द्धक, उष्ण, मधुर, सारक और त्रिदोष, दाह, ज्वर, श्वास रक्तातीसार, तृषा तथा छर्दिनाशक होतीहै ॥ १० ॥

अथ वरहण्टा ॥

वार्त्ताकीक्षुद्रभण्टाकीमहतीबृहतीकुली । हिंगुलीराष्ट्रिकासिंहीमहोष्ट्रीदुष्प्रधर्षिणी ॥ बृहतीग्राहिणीहृद्यापाचनीकफवातहृत् । कटुतिक्तास्यवैरस्यमलारोचकनाशिनी ॥ उष्णाकुष्ठज्वरश्वासशूलकासाग्निमान्द्यजित् ॥ ११ ॥

बड़ी भटकटैया के नाम और गुण ॥

वार्त्ताकी, क्षुद्रभण्टाकी, महती, बृहती, कुली, हिंगुली, राष्ट्रिका, सिंही, महोष्ट्री और दुष्प्रधर्षिणी यह बड़ी भटकटैयाके नामहैं भटकटैया. ग्राही, हृदयको हित, पाचक, कटु, तिक्त, उष्ण और कफ, वात, मुखकी विरसता, मल, अरुचि, कुष्ठ, ज्वर, श्वास, शूल, खांसीतथाअग्निकीमन्दताकोनाशकरतीहै ॥ ११ ॥

अथ भटकटैयारोगिणीइतिच ॥

कण्टकारीतुदुःस्पर्शाक्षुद्राव्याघ्रीनिदिग्धिका । कण्टालिकाकण्टकिनीधावनीबृहती

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तथा ॥ उभे च बृहत्यौ॥(यतआह सुश्रुतः)क्षुद्रायाक्षुद्रभद्राख्याबृहतीतिनिगद्यते।श्वेता क्षुद्राचन्द्रहासालक्ष्मणाक्षेत्रदूतिका॥ गर्भदाचन्द्रभाचन्द्रीचन्द्रपुष्पाप्रियंकरी। कण्टका रीसरातिक्ताकटुकादीपनीलघुः ॥ रूक्षोष्णापाचनीकासश्वासज्वरकफानिलान्।निहन्ति पीनसंश्वासपार्श्वपीडाहृदामयान्॥ तयोःफलंकटुरसेपाकेचकटुकंभवेत्। शुक्रस्यरेचनं भेदितिक्तंपित्ताग्निकृल्लघु॥ हन्यात्कफमरुत्कण्डूकासमेदकृमिज्वरान्। तद्वत्प्रोक्तासि ताक्षुद्राविशेषाद्गर्भकारिणी ॥ १२ ॥

छोटी भटकटैयाके नाम और गुण ॥

कण्टकारी,दुःस्पर्शा,क्षुद्रा,व्याघ्री, निदिग्धिका कण्टालिका कण्टकनी धावनी और बृहती यह छोटी भटकटैया के नामहैं छोटी भटकटैया और बड़ी भटकटैया इनदोनों को बृहती कहते हैं क्योंकि सुश्रुत में कहा है कि क्षुद्रा (छोटीभटकटैया) और क्षुद्रभण्टाकी यह दोनों बृहती कहलाती हैं श्वेतभटकटैया को चन्द्रहासा,लक्ष्मणा,क्षेत्रदूतिका,गर्भदा, चन्द्रभा, चन्द्री,चन्द्रपुष्पा और प्रियंकरी कहते हैं भट-कटैया.सारक,तिक्त,कटु,दीपन,हलकी,रूखी,उष्ण,पाचक और खांसी, श्वास, ज्वर, कफ, वात, पी-नस,पसलीकादर्द,कृमि तथा हृदयके रोगोंकी नाशक होतीहै दोनों भटकटैयाके फल कटु पाकमें कटु वीर्यके गिरानेवाले भेदक तिक्त पित्तवर्द्धक अग्निकारक हलके और कफ वात खुजली मेद कृमि तथा ज्वरके नाशक होते हैं श्वेत भटकटैयामें भी यही गुण होते हैं और यह विशेष करके गर्भ देने वाली होती है ॥ १२ ॥

अथ गोक्षुरः ॥

गोक्षुरःक्षुरकोऽपिस्यात् त्रिकण्टःस्वादुकण्टकः। गोकण्टकोगोक्षुरकोवनशृङ्गाटइत्यपि ॥ पलंकषाश्वदंष्ट्राचतथास्यादिक्षुगन्धिका । गोक्षुरःशीतलःस्वादुर्बलकृद्वस्तिशोधनः ॥ मधुरोदीपनोवृष्यः पुष्टिदश्चाश्मरीहरः । प्रमेहश्वासकासार्शःकृच्छ्रहृद्रोगवातनुत् ॥ १३ ॥

गोखुरू के नाम और गुण ॥

गोक्षुर, क्षुरक, त्रिकण्ट, स्वादुकण्टक, गोकण्टक, गोक्षुरक, वनशृङ्गाट, पलंकषा, अश्वदंष्ट्रा और इक्षुगन्धिका यह गोखुरू के नाम हैं गोखुरू. शीतल, मधुर, बलकारक, मूत्राशयका शोधक, दीपन, वीर्यवर्द्धक, पुष्टिकारक और पथरी, प्रमेह, श्वास, खांसी, बवासीर, मूत्रकृच्छ्र, हृदय के रोग तथा वातका नाशक होताहै ॥ १३ ॥

अथ लघुपञ्चमूलस्य लक्षणंगुणाश्च ॥

शालिपर्णीपृष्ठपर्णीवार्ताकीकण्टकारिका।गोक्षुरःपञ्चभिश्चैतैःकनिष्ठंपञ्चमूलकम्॥ पञ्चमूलंलघुस्वादुबल्यम्पित्तानिलापहम्।नात्युष्णंबृंहणंग्राहिज्वरश्वासाश्मरीप्रणुत् १४

लघुपंचमूल के लक्षण और गुण ॥

सरिवन, पिठवन, बड़ी व छोटी भटकटैया और गोखुरू यह पांचों मिलेहुए होनेसे लघुपञ्चमूल कहाते हैं, लघुपञ्चमूल.मधुर, हलका, बलकारक, कुछ उष्ण,धातुवर्द्धक, ग्राही और पित्त,वायु,ज्वर, श्वास तथा पथरी का नाशक होताहै ॥ १४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ दशमूलस्य लक्षणं गुणाश्च ॥

उभाभ्यांपञ्चमूलाभ्यां दशमूलमुदाहृतम् । दशमूलंत्रिदोषघ्नंश्वासकासशिरोरुजः ॥ तन्द्राशोथज्वरानाहपार्श्वपीडारुचिर्हरेत् ॥ १५ ॥

दशमूल के लक्षण और गुण ॥

दोनों पञ्चमूलोंके मिलाने से दशमूल कहाते हैं, दशमूल. त्रिदोष, श्वास, खांसी, शिरोरोग, तंद्रा, सूजन, ज्वर, आनाह, पसलीकी पीडा और अरुचिका नाशक होताहै ॥ १५ ॥

जीवइतिशाकविशेषः । शर्करावन्मधुरपुष्पाव्रततिः ॥

जीवन्तीजीवनीजीवाजीवनीयामधुस्रवा॥मङ्गल्यानामधेयाचशाकश्रेष्ठापयस्विनी ॥ जीवन्तीशीतलास्वादुःस्निग्धादोषत्रयापहा । रसायनीबलकरीचक्षुष्याग्राहिणीलघुः॥१६॥

जीव (डोंडी) शाकविशेष शक्कर के समान मधुरपुष्पवाली लता के नाम और गुण ॥

जीवन्ती, जीवनी, जीवा, जीवनीया, मधुस्रवा, मङ्गल्या, शाकश्रेष्ठा और पयस्विनी यह जीवन्ती के नाम हैं जीवन्ती. शीतल, मधुर, स्निग्ध, त्रिदोषनाशक, रसायन, बलकारक, नेत्रहित, ग्राही और लघु होती है ॥ १६ ॥

अथमुद्गपर्णी ॥

मुद्गपर्णीकाकपर्णीसूर्य्यपर्ण्यल्पिकासहा । काकमुद्गाचसाप्रोक्तातथामार्ज्जारगन्धिका॥ मुद्गपर्णीहिमारूक्षातिक्तास्वादुश्चशुक्रला । चक्षुष्याक्षतशोथघ्नीग्राहिणीज्वरदाहनुत् ॥ दोषत्रयहरीलघ्वीग्रहण्यर्शोऽतिसारजित् ॥ १७ ॥

वनमूंग के नाम और गुण ॥

मुद्गपर्णी, काकपर्णी, सूर्य्यपर्णी, अल्पिका, सहा, काकमुद्गा और मार्जारगन्धिका यह वनमूंग के नाम हैं वनमूंग. शीतल, रूखी, तिक्त, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, ग्राही, हलकी और घाव, सूजन, ज्वर, दाह, त्रिदोष, संग्रहणी, बवासीर और अतीसारनाशक होतीहै ॥ १७ ॥

अथ माषपर्णी ॥

माषपर्णीसूर्य्यपर्णीकाम्बोजीहयपुच्छिका। पाण्डुलोमशपर्णीच कृष्णवृन्तामहासहा॥ माषपर्णीहिमातिक्तारूक्षाशुक्रबलास्रकृत् ।मधुराग्राहिणीशोथवातपित्तज्वरास्रजित् १८॥

वनउर्दके नाम और गुण ॥

माषपर्णी, सूर्य्यपर्णी, काम्बोजी, हयपुच्छिका, पांडु, लोमशपर्णी, कृष्णवृन्ता और महासहा यह वनउर्द के नाम हैं, वनउर्द. शीतल, तिक्त, रूखा, वीर्य्यवर्द्धक, कफकारी, मधुर, ग्राही और सूजन, वात, पित्त, ज्वर तथा रुधिरनाशक होताहै ॥ १८ ॥

अथ जीवनीयगणस्यलक्षणं गुणाश्च ॥

माषपर्णीगणोऽयन्तुजीवनीयगणःस्मृतः ॥ अष्टवर्गःसयष्टीकोजीवन्तीमुद्गपर्णिका । जीवनोमधुरश्चापिनाम्नासपरिकीर्तितः॥ जीवनीयगणःप्रोक्तःशुक्रकृद्बृंहणोहिमः॥गुरुगर्भप्रदस्तन्यकफकृत्पित्तरक्तहृत् । तृष्णांशोषंज्वरंदाहंरक्तपित्तंव्यपोहति ॥ १९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जीवनीयगणका लक्षण और गुण ॥

प्रथम कहाहुआ अष्टवर्ग, मुलहटी, जीवन्ती, वनमूंग और वनउर्द यह सब मिलकर जीवनीय गण कहाताहै, इसको जीवन और मधुर भी कहतेहैं,जीवनीयगण. वीर्यवर्द्धक, शरीरका पुष्टकारक, शीतल, भारी, गर्भदायक, दूध पैदाकरनेवाला, कफकारक और रक्तपित्त, तृषा, शोष, ज्वर, दाह, पित्त तथा रुधिर के दोषों का नाशक होताहै ॥ १९ ॥

अथ शुक्लरक्तैरण्डः ॥

शुक्लएरण्डआमण्डश्चित्रोगन्धर्वहस्तकः।पञ्चांगुलोवर्द्धमानोदीर्घदण्डोऽप्यदण्डकः॥ वातारिस्तरुणश्चापि रुबूकश्चनिगद्यते। रक्तोऽपरोरुबूकःस्यादुरुबूकोरुबूस्तथा॥ व्याघ्रपुच्छश्चवातारिश्चञ्चुरुत्तानपत्रकः। एरण्डयुग्मंमधुरमुष्णंगुरुविनाशयेत्॥ शूलशोथकटीवस्तिशिरःपीडोदरज्वरान्। ब्रध्नश्वासकफानाहकासकुष्ठाममारुतान्॥ एरण्डपत्रंवातघ्नंकफकृमिविनाशनम्। मूत्रकृच्छ्रहरञ्चापिपित्तरक्तप्रकोपणम्॥ वाताग्र्यग्रदलंगुल्मंवस्तिशूलहरंपरम्। कफवातकृमीन्हन्तिवृद्धिंसप्तविधामपि॥ एरंडफलमत्युष्णंगुल्मशूलानिलापहम्। यकृत्प्लीहोदरार्शोघ्नंकटुकंदीपनंपरम्॥ तद्वन्मज्जाचविड्भेदीवातश्लेष्मोदरापहः॥ २०॥ श्वेत और रक्त एरण्ड के नाम व गुण॥

आमण्ड,चित्र,गन्धर्वहस्तक,पञ्चांगुल,वर्द्धमान, दीर्घदण्ड, अदण्डक,वातारि, तरुण और रुबूक यह श्वेत एरण्डकेनामहैं और लालएरण्डको रुबूक,उरुबूक,रुबू,व्याघ्रपुच्छ,वातारि,चञ्चु और उत्तानपत्रक कहते हैं यह दोनोंप्रकार के एरण्ड. मधुर, उष्ण, भारी और शूल, सूजन, कमरकी पीडा, मूत्राशय की पीडा, शिरकी पीडा, उदर, ज्वर, बद, श्वास, कफ, आनाह, खांसी, कुष्ठ, आम तथा वातनाशक होते हैं, एरण्डकेपत्ते. वात, कफ, कृमि तथा मूत्रकृच्छ्रनाशक और रक्तपित्तकारक होतेहैं अरण्डकी कोपल. गुल्म, मूत्राशयकी पीडा, कफ, वात, कृमि और सातप्रकार के वृद्धरोगों को नाशकरती है, अरण्डका फल. अत्यन्तउष्ण, कटु, अतिदीपन और गुल्म, शूल, वात, यकृत्, प्लीहा, उदर और बवासीर का नाशक होताहै, इसकी मींगी मलभेदक और वात कफ तथा उदररोगनाशक होती है ॥ २० ॥

अथ शुक्लरक्तार्कइतिलोके ॥

अलर्कोगणरूपःस्यान्मन्दारोवसुकोऽपिच॥श्वेतपुष्पःसदापुष्पःसबालार्कःप्रतीपसः॥ रक्तोपरोर्कनामास्यादर्कपर्णोविकीर्णकः। रक्तपुष्पःशुक्लफलस्तथास्फोटःप्रकीर्तितः॥ अर्कद्वयंसरंवातकुष्ठकण्डूविषव्रणान्। निहन्तिप्लीहगुल्मार्शश्लेष्मोदरशकृत्कृमीन्॥ अलर्ककुसुमंवृष्यंलघुदीपनपाचनम्। अरोचकप्रसेकार्शःकासश्वासनिवारणम्॥ रक्तार्कपुष्पंमधुरंसतिक्तंकुष्ठक्रिमिघ्नंकफनाशनञ्च। अर्शोविषंहन्तिचरक्तपित्तंसंग्राहिगुल्मेश्वयथौहितंतत्॥ क्षीरमर्कस्यतिक्तोष्णंस्निग्धंसलवणंलघु। कुष्ठगुल्मोदरहरंश्रेष्ठमेतद्विरेचनम्॥ अर्कमूलंकफोत्सारिस्वेदनंवामनंतथा। श्वासकासप्रतिश्यायानतीसारंप्रवाहिकाम्॥ रक्तपित्तंशीतपित्तं ग्रहणींचाप्यसृग्दरम्। नाशयेत्कफजान्रोगान्विषकीटंसमुद्भवम्॥ २१॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्वेत और लालआकके नाम और गुण ॥

अलर्क, गणधूप, मन्दार, वसुक, श्वेतपुष्प, सदापुष्प, बालार्क प्रतापस यह श्वेतमदार के नाम हैं लालमदारको अर्कपर्ण विकीरण रक्तपुष्प और आस्फोट कहते हैं दोनोंप्रकार के आक. सारक और वात, कुष्ठ, खुजली, विष, घाव, प्लीहा, गुल्म, बवासीर, कफ, उदर तथा विष्ठाके कृमियों के नाशक होते हैं श्वेत आक के पुष्प. वीर्यवर्द्धक, लघु, दीपन, पाचन और अरुचि कफादिकोंका बहना बवासीर खांसी तथा श्वासके नाशक होते हैं लालआकके पुष्प. मधुर, तिक्त, ग्राही और कुष्ठ, कृमि, कफ, बवासीर विष, रक्तपित्त, गुल्म तथा सूजन के नाशक होते हैं आकका दूध. तिक्त, लवण, उष्ण, स्निग्ध, हलका और कुष्ठ, गुल्म तथा उदर नाशक होताहै और यह विरेचन के लिये भी बहुत श्रेष्ठहै आककी जड. कफकी निकालनेवाली, पसीनालानेवाली और वमनकारक होती है इसके सेवनकरने से श्वास, कास, जुकाम, अतीसार, प्रवाहिका, रक्तपित्त, शीतपित्त, संग्रहणी, प्रदर और समस्त कफरोगोंकी नाशक होती है और घिसकर लेपकरनेसे बिच्छू आदिकोंके विषको दूरकरती है २१॥

अथ सेहुण्डः ॥

सेहुण्डःसिंहतुण्डःस्याद्वज्रीवज्रद्रुमोऽपिच । सुधासमन्तदुग्धाचस्नुक्स्त्रियांस्यात्स्नुहीगुडा॥ सेहुण्डोरेचनस्तीक्ष्णोदीपनःकटुकोगुरुः। शूलमष्ठीलिकाध्मानःकफगुल्मोदरानिलान् ॥ उन्मादमोहकुष्ठार्शःशोथमेदोऽश्मपाण्डुताः । व्रणशोथज्वरप्लीहविषदूषीविषंहरेत् ॥ उष्णवीर्य्यंस्नुहीक्षीरंस्निग्धश्चकटुकंलघु । गुल्मिनांकुष्ठिनाञ्चापितथैवोदररोगिणाम् ॥ हितमेतद्विरेकार्थेयेचान्येदीर्घरोगिणः ॥ २२ ॥

थूहरके नाम और गुण ॥

सेहुण्ड, सिंहतुण्ड, वज्री, वज्रद्रुम, सुधा, समन्तदुग्धा, स्नुक स्नुही और गुडा यह थूहरके नामहैं थूहर. दस्तावर, तीक्ष्ण, दीपन, कटु, भारी और शूल, अष्ठीलिका, आध्मान, कफ, गुल्म, उदर, वात, उन्माद, मोह, कुष्ठ, बवासीर, सूजन, मेद, पथरी, पांडु, घावकी सूजन, ज्वर, प्लीहा, विष तथा नेत्रके मलके विषका नाशक होताहै थूहरका दूध. वीर्य में उष्ण, स्निग्ध, कटु, हलका और गुल्मरोगी, कुष्ठी, उदररोगी तथा अन्य प्राचीन रोगवालों को विरेचनके लिये अत्यन्त हितकारीहै२२॥

अथ सेहुण्डभेदः। शातलाअनेनैवनाम्नाप्रसिद्धा ॥

शातलासप्तलासाराविमलाविद्रुलाचसा। तथानिगदिताभूरिफेनाचर्मकषेत्यपि॥ शातलाकटुकापाकेवातलाशीतलालघुः। तिक्ताशोथकफानाहपित्तोदावर्त्तरक्तजित् ॥ २३ ॥

शातलाके नाम और गुण ॥

शातला, सप्तला सारा, विमला, विद्रुला, भूरिफेना और चर्मकषा यह शातलाके नामहैं, शातला. पाकमें कटु, बादी, शीतल, हलका, तिक्त और सूजन, कफ, आनाह, पित्त, उदावर्त्त तथा रक्त दोष का नाशक होताहै ॥ २३ ॥

अथ कलिहारी ॥

कलिहारीतुहलिनीलाङ्गलीशक्रपुष्प्यपि। विशल्याग्निशिखानन्तावह्निवक्त्राचगर्भनुत्॥ कलिहारीसराकुष्ठशोफार्शोव्रणशूलजित्। सक्षाराश्लेष्मजित्तिक्ताकटुकातुवरापिच॥ तीक्ष्णोष्णकृमिहल्लघ्वीपित्तलागर्भपातिनी ॥ २४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करिहारीके नाम और गुण ॥

कलिहारी, हलिनी, लांगली, शक्रपुष्पी, विशल्या, अग्निशिखा, अनन्ता, वह्निवक्त्रा और गर्भनुत् यह करिहारी के नामहैं करिहारी. सारक, क्षार, तिक्त, कटु, कषाय, तीक्ष्ण, उष्ण, हलकी, पित्तवर्द्धक और कुष्ठ, सूजन, बवासीर, घाव, शूल, कफ, कृमि तथा गर्भकी नाशक होती हैं ॥ २४ ॥

अथ श्वेतरक्तकरवीरः ॥

करवीरःश्वेतपुष्पःशतकुम्भोऽश्वमारकः । द्वितीयोरक्तपुष्पश्चचण्डातोलगुड़स्तथा ॥ करवीरद्वयंतिक्तंकषायंकटुकञ्चतत् । व्रणलाघवकृन्नेत्रकोपकुष्ठव्रणापहम् ॥ वीर्योष्णंकृमिकण्डूघ्नंभक्षितंविषवन्मतम् ॥ २५ ॥

श्वेत और रक्त कनेरके नाम और गुण ॥

करवीर, श्वेतपुष्प, शतकुम्भ और अश्वमारक यह श्वेत कनेरके नामहैं और लालकनेरको रक्तपुष्प, चण्डात और लगुड कहते हैं दोनों प्रकारके कनेर. तिक्त, कषाय, कटु, घावके हलके करनेवाले, वीर्य में उष्ण और नेत्रोंका कोप, कुष्ठ, घाव, कृमि तथा खुजलीनाशक होते हैं और खानेसे विषके समान गुणदायक होते हैं ॥ २५ ॥

अथ धत्तूरः ॥

धत्तूरधूर्त्तधूस्तूराउन्मत्तःकनकाह्वयः । देवताकितवस्तूरीमहामोहीशिवप्रियः ॥ मातुलोमदनश्चास्यफलेमातुलपुत्रकः । धत्तूरोमदवर्णाग्निवातकृज्ज्वरकुष्ठनुत् ॥ कषायोमधुरस्तिक्तोयूकालिक्षाविनाशकः ॥ उष्णोगुरुर्व्रणश्लेष्मकण्डूकृमिविषापहः ॥ २६ ॥

धतूरे के नाम और गुण ॥

धतूर, धूर्त, धूस्तूर, उन्मत्त, कनक, देवता, कितव, तूरी, महामोही, शिवप्रिय, मातुल और मदन यह धतूरे के नामहैं इसके फलको मातुलपुत्र कहते हैं धतूरा. मदकारी, वर्णकोहित, अग्निवर्द्धक, बादी, कषाय, मधुर, तिक्त, उष्ण, भारी और जुआं, लीख, घाव, कफ, खुजली, कृमि तथा विष नाशक होताहै २६॥

अथ अरूसा ॥

वासकोवासिकावासाभिषङ्माताचसिंहिका । सिंहास्योवाजिदन्तास्यादाटरूषोऽटरूषकः ॥ आटरूषोवृषस्ताम्रःसिंहपर्णश्चसंस्मृतः । वासकोवातकृत्स्वर्यःकफपित्तासृनाशनः ॥ तिक्तस्तुवरकोहृद्योलघुःशीतस्तृडर्त्तिहृत् । श्वासकासज्वरच्छर्दिमेहकुष्ठक्षयापहः ॥ २७ ॥

अड़ूसाके नाम और गुण ॥

वासक, वासिका, वासा, भिषङ्माता, सिंहिका, सिंहास्य, वाजिदन्ता, आटरूष, वृष आटरूषक और सिंह पर्ण यह अड़ूसेकेनामहैं अड़ूसा. बादी, स्वरकोहित, तिक्त, कषाय, हृदयकोहित, हलका, शीतल और कफ, पित्त, रुधिर, दोष, तृषा, श्वास, खांसी, ज्वर, छर्दि, प्रमेह, कुष्ठ तथा क्षयरोगका नाशक होता है ॥ २७ ॥

अथ दवन् पापरा ॥

पर्पटोवरतिक्तश्चस्मृतःपर्पटकश्चसः । कथितःपांशुपर्य्यायस्तथाकवचनामकः ॥ पर्पटोहन्तिपित्तास्रभ्रमतृष्णाकफज्वरान् । संग्राहीशीतलस्तिक्तोदाहनुद्वातलोलघुः ॥२८॥

१ पीत करवीरकोन्यपीत प्रसवः सुगन्धि कुसुमश्च । कृष्णस्तुकृष्णकुसुमश्चतुर्विधोऽयंगुणेतुल्यः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पित्तपापड़ेके नाम और गुण ॥

परपट, वरतिक्त, पर्पट, रेणु, अंशु और कवच यह पित्तपापड़े के नामहैं पित्तपापड़ा. पित्त, रक्तदोष, श्रम, तृषा, कफ, ज्वर तथा दाहका नाशक, ग्राही, शीतल, तिक्त, बादी और हलका होताहै ॥ २८॥

अथ निम्बः ॥

निम्बःस्यात्पिचुमर्दश्चपिचुमन्दश्चतिक्तकः । अरिष्टःपारिभद्रश्चहिङ्गुनिर्य्यासइत्यपि ॥ निम्बःशीतोलघुर्ग्राहीकटुपाकोग्निवातनुत् । अहृद्यःश्रमतृट्कासज्वरारुचिकृमिप्रणुत् ॥ व्रणपित्तकफच्छर्दिकुष्ठहृल्लासमेहनुत् । निम्बपत्रंस्मृतंनेत्र्यंकृमिपित्तविषप्रणुत् ॥ वातलंकटुपाकञ्चसर्व्वारोचककुष्ठनुत् । निम्बफलंरसेतिक्तंपाकेतुकटुभेदनम् ॥ स्निग्धंलघूष्णंकुष्ठघ्नंगुल्मार्शःकृमिमेहनुत् ॥ २९ ॥

नींबके-नाम और गुण ॥

पिचुमर्द, पिचुमन्द, तिक्तक, अरिष्ट, पारिभद्र और हिङ्गुनिर्यास यह नींबकेनामहैं नींब. शीतल, हलका, ग्राही, पाकमें कटु, हृदयको अप्रिय और श्रम, तृषा, खांसी, ज्वर, अरुचि, कृमि, घाव, पित्त, कफ, छर्दि, कुष्ठ, मतली, अग्निवात तथा प्रमेहका नाशक होताहै नींबके पत्ते. नेत्रोंको हित, बादी, पाकमें कटु और कृमि, पित्त, विष, सबप्रकारकी अरुचि तथा कुष्ठके नाशकहोतेहैं नींबकी निंबौरी. रसमें तिक्त, पाकमें कटु, भेदक, स्निग्ध, हलकी, उष्ण और कुष्ठ, गुल्म, बवासीर, कृमि तथा प्रमेहकी नाशक होती है ॥ २९ ॥

अथ वकाइन ॥

महानिम्बःस्मृतोद्रेकारम्यकोविषमुष्टिकः । केशमुष्टिर्निम्बकश्चकार्मुकोजीवइत्यपि ॥ महानिम्बोहिमोरूक्षस्तिक्तोग्राहीकषायकः । कफपित्तश्रमच्छर्दिकुष्ठहृल्लासरक्तजित् ॥ प्रमेहश्वासगुल्मार्शोमूषिकाविषनाशनः ॥ ३० ॥

बकायन के नाम और गुण ॥

महानिंब, अद्रेका, रम्यक, विषमुष्टिक, केशमुष्टि, निंबक, कार्मुक और जीव यह बकायन के नाम हैं बकायन. शीतल, रूखी, तिक्त, ग्राही, कषाय और कफ, पित्त, श्रम, छर्दि, कुष्ठ, मतली, रक्तदोष, प्रमेह, श्वास, गुल्म, बवासीर तथा मूसेके विषकी नाशक होतीहै ॥ ३० ॥

अथ फरहद ॥

पारिभद्रोनिम्बतरुर्म्मन्दारःपारिजातकः । पारिभद्रोऽनिलश्लेष्मशोथमेदःकृमिप्रणुत् ॥ तत्पत्रंपित्तरोगघ्नंकर्णव्याधिविनाशनम् ॥ ३१ ॥

जलनींब के नाम और गुण ॥

पारिभद्र, निम्बतरु, मन्दार और पारिजातक यह जलनींबके नाम हैं जलनींब. वात, कफ, सूजन, मेह और कृमिनाशक होताहै उसके पत्ते पित्तके रोग और कर्णके रोगके नाशक होतेहैं ॥ ३१ ॥

अथ कचनारः ॥

काञ्चनारःकाञ्चनकोगण्डारिःशोणपुष्पकः । (अथ कचनारभेदः ।) कोविदारश्चमरिकःकुद्दालोयुगपत्रकः । कुण्डलीताम्रपुष्पश्चाश्मन्तकःस्वल्पकेशरी ॥ काञ्चनारोहि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मोग्राहीतुवरःश्लेष्मपित्तनुत् । कृमिकुष्ठगुदभ्रंशगण्डमालाव्रणापहः ॥ कोविदारोऽपित द्वत्स्यात्तयोःपुष्पंलघुस्मृतम् । रूक्षंसंग्राहिपित्तास्रप्रदरक्षयकासनुत् ॥ ३२ ॥

कचनारके नाम और गुण ॥

कांचनार, कांचनक, गंडारि और शोणपुष्पक यह कचनारके नामहैं और दूसरे प्रकारके कचनारको कोविदार, मरिक याचमरिक कुदाल, युगपत्रक, कुंडली, ताम्रपुष्प, अश्मन्तक और स्वल्पकेशरी कहते हैं कचनार. शीतल, ग्राही, कषाय और कफ, पित्त, कृमि, कुष्ठ, गुदभ्रंश, गण्डमाला तथा घावकी नाशक होतीहै कोविदार में भी कचनारके समान गुण होतेहैं इनदोनों के पुष्प. हलके, रूखे, ग्राही, और पित्त रक्तदोष, प्रदर, क्षय तथा खांसीके नाशक होतेहैं ॥ ३२ ॥

अथ सहिञ्जनश्यामःश्वेतरक्तश्च ॥

शोभाञ्जनःशिग्रुतीक्ष्णगन्धकाक्षीवमोचकाःतद्बीजंश्वेतमरिचंमधुशिग्रुःसलोहितः ॥ शिग्रुःकटुःकटुःपाकेतीक्ष्णोष्णोमधुरोलघुः । दीपनोरोचनोरूक्षःक्षारस्तिक्तोविदाहकृत् ॥ संग्राहीशुक्रलोहृद्योपित्तरक्तप्रकोपनः । चक्षुष्यःकफवातघ्नोविद्रधिश्वयथुकृमीन् ॥ मेदो पचीविषप्लीहगुल्मगण्डव्रणान्हरेत् । श्वेतःप्रोक्तगुणोज्ञेयोविशेषाद्दाहकृद्भवेत् ॥ प्लीहा नंविद्रधिंहन्तिव्रणघ्नःपित्तरक्तहृत् । मधुशिग्रुःप्रोक्तगुणोविशेषाद्दीपनःसरः ॥ शिग्रुवल्क लपत्राणांस्वरसःपरमार्त्तिहृत् । चक्षुष्यंशिग्रुजंबीजंतीक्ष्णोष्णंविषनाशनम् ॥ अवृष्यंक फवातघ्नंतन्नस्येनशिरोर्त्तिनुत् ॥ ३३ ॥

श्वेत श्याम और लाल सहंजनके नाम और गुण ॥

शोभांजन, शिग्रु, तीक्ष्णगन्धक, अक्षीव और मोचक यह सहंजनके नाम हैं सहंजनके बीजको श्वेतमिर्च कहते हैं और लाल सहंजनको मधुशिग्रु कहते हैं सहंजन. कटु, पाकमें कटु, तीक्ष्ण, उष्ण, मधुर, हलका, दीपन, रुचिकारक, रूखा, क्षार, तिक्त, विदाही, ग्राही, वीर्यवर्द्धक, हृदयकोहित, रक्तपित्तके कोप का करनेवाला नेत्रहित और कफ, वात, विद्रधि, सूजन, कृमि, मेध, अपची, विष, प्लीहा, गुल्म, गलगण्ड तथा घावका नाशक होताहै और श्वेत सहंजनमें भी यहीगुणहैं और विशेष करके दाहकारी प्लीहा, विद्रधि, घाव, पित्त तथा रक्त दोषका नाशक होताहै और लाल सहंजनमें भी यहीगुणहोते हैं यह विशेष करके दीपन और सारक होताहै सहंजनके वल्कल और पत्तोंकारस. पीडाका अत्यन्त नाशक होताहै सहंजन के बीज. नेत्रोंकोहित, तीक्ष्ण, उष्ण, विषनाशक, वीर्यको अहित और कफ तथा वायुनाशक होते हैं इनकी हुलाससे शिरके रोग नष्ट होते हैं ३३ ॥

अथ श्वेतपुष्पानीलपुष्पाअपराजिता ॥

आस्फोतागिरिकर्णीस्याद्विष्णुक्रान्तापराजिता । अपराजितेकटुमेध्येशीतेकण्ठ्येसुदृ ष्टिदे ॥ कुष्ठमूत्रत्रिदोषामशोथव्रणविषापहे । कषायेकटुकेपाकेतिक्तेचस्मृतिबुद्धिदे ॥ ३४ ॥

श्वेत और नीले पुष्पकी विष्णुक्रान्ता के नाम और गुण ॥

आस्फोता, गिरिकर्णी, विष्णुक्रान्ता और अपराजिता यह विष्णुक्रान्ताके नामहैं दोनों प्रकारकी विष्णुक्रान्ता. कटु, मेधाकोहित, शीतल, कंठकोहित, सुन्दरदृष्टि देनेवाली कषाय, पाकमें कटु तिक्त, स्मृति तथा बुद्धिदेनेवाली और कुष्ठ, मूत्रदोष, त्रिदोष, आम, सूजन, घाव तथा विषकी नाशक होतीहै ॥ ३४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ भेउडीसम्भालू । सेन्दुवारइतिच ॥

सिन्दुवारःश्वेतपुष्पःसिन्दुकःसिन्दुवारकः।नीलपुष्पीतुनिर्गुण्डीशेफालीसुवहाचसा॥ सिन्दुकःस्मृतिदस्तिक्तःकषायःकटुकोलघुः। केश्योनेत्रहितोहन्तिशूलशोथाममारुतान् ॥ कृमिकुष्ठारुचिश्लेष्मज्वरान्नीलापितद्विधा।सिन्दुवारदलंजन्तुवातश्लेष्महरंलघु॥३५॥

संभालूके नाम और गुण ॥

सिन्दुवार, श्वेतपुष्प, सिन्दुक और सिन्दुवारक यह संभालूके नामहैं नीले संभालूको नीलपुष्पी निर्गुण्डी शेफाली और सुवहा कहतेहैं संभालू. स्मृतिदायक, तिक्त, कषाय, कटु, हलका, केश तथा नेत्रों को हित और शूल, सूजन, आमवात, कृमि, कुष्ठ, अरुचि, कफ तथा ज्वरनाशक होताहै नीला संभालू भी इसीके समान गुणवाला होताहै संभालू के पत्ते हलके और कृमि वातके नाशक होतेहैं ॥ ३५ ॥

अथ कोरैया ॥

कुटजःकूटजःकीटोवत्सकोगिरिमल्लिका । कालिङ्गःशक्रशाखीचमल्लिकापुष्पइत्यपि॥ इन्द्रोयवफलःप्रोक्तोवृक्षकःपाण्डुरद्रुमः।कुटजःकटुकोरूक्षोदीपनस्तुवरोहिमः॥ अर्शोऽतिसारपित्तास्रकफतृष्णामकुष्ठनुत् ॥ ३६ ॥

कुरैयाके नाम और गुण ॥

कुटज, कूटज, कीट, वत्सक, गिरिमल्लिका, कालिंग, शक्रशाखी, मल्लिकापुष्प, इन्द्र, यवफल, वृक्षक, और पाण्डुरद्रुम यह कुरैयाके नाम हैं, कुरैया. कटु, रूखी, दीपन, कषाय, शीतल और बवासीर, अतीसार, पित्त, रक्त, कफ, तृषा, आम तथा कुष्ठनाशक होती है ॥ ३६ ॥

अथ कण्टकरेजाकरञ्जघोराकरञ्ज ॥

करञ्जोनक्तमालश्चकरजश्चिरबिल्वकः । घृतपूर्णकरञ्जोऽन्यःप्रकीर्य्यःपूतिकोऽपि च ॥ सचोक्तःपूतिकरजःसोमवल्कश्चसस्मृतः । करञ्जःकटुकस्तीक्ष्णोवीर्य्योष्णोयोनिदोषहृत् ॥ कुष्ठोदावर्त्तगुल्मार्शोव्रणकृमिकफापहः । तत्पत्रंकफवातार्शःकृमिशोथहरंपरम् ॥ भेदनंकटुकंपाकेवीर्य्योष्णंपित्तलंलघु । तत्फलंकफवातघ्नं मेहार्शःकृमिकुष्ठजित्॥ घृतपूर्णकरञ्जोऽपिकरञ्जसदृशोगुणैः ॥ ३७ ॥

करंजुआके नाम और गुण ॥

करञ्ज, नक्तमाल, करज और चिरबिल्वक यह करंजुए के नामहैं और दूसरे प्रकारके करंजुए को घृतपूर्ण प्रकीर्य, पूतिका, पूतिकरज और सोमवल्क कहतेहैं, करंजुआ. कटु, तीक्ष्ण, वीर्यमें उष्ण और योनिके दोष, कुष्ठ, उदावर्त्त, गुल्म, बवासीर, घाव, कृमि, तथा कफनाशक होता है, करंजुए के पत्ते. कफ, वात, बवासीर, कृमि तथा सूजन के नाश करने में अत्यन्तश्रेष्ठ, भेदक, पाक में कटु, वीर्य में उष्ण, पित्तवर्द्धक और हलके होते हैं और करंजुए के फल. कफ, वात, प्रमेह, बवासीर कृमि तथा कुष्ठनाशक होते हैं, दूसरे प्रकारके करंजुए में भी इसी प्रकारके गुण होते हैं ॥ ३७ ॥

अथ अरारिः ॥

उदकीर्य्यस्तृतीयोऽन्यःषड्ग्रन्थाहस्तिवारुणी । मर्कटीवायसीचापिकरञ्जीकरभ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ञ्जिका ॥ करञ्जीस्तम्भनीतिक्तातुवराकटुपाकिनी। वीर्य्योष्णवर्दिपित्तार्शःकृमिकुष्ठप्रमेहजित् ॥ ३८ ॥

डार करंज के नाम और गुण ॥

उदकीर्य, षड्ग्रंथा, हस्तिवारुणी, मर्कटी, वायसी, करंजी और करभंजिका यह डारकरंज के नाम हैं, डारकरंज. स्तंभन, तिक्त, कषाय, पाक में कटु, उष्ण और छर्दि, पित्त, बवासीर, कृमि, कुष्ठ तथा प्रमेहनाशक होताहै ॥ ३८ ॥

अथ श्वेतरक्तगुञ्जा ॥

श्वेतारक्तोच्चटाप्रोक्ताकृष्णलाचापिसास्मृता। रक्तासाकाकचिञ्चीस्यात्काकानन्ताच रक्तिका ॥ काकादनीकाकपीलुःसास्मृताकाकवल्लरी। गुञ्जाद्वयन्तुकेश्यंस्यात्वातपित्तज्वरापहम् ॥ मुखशोषभ्रमश्वासतृष्णामदविनाशनम्। नेत्रामयहरंवृष्यंबल्यंकण्डूव्रणंहरेत्॥ कृमीन्द्रलुप्तकुष्ठानिरक्ताचधवलापिच ॥ ३९ ॥

श्वेत और लाल घोंघची के नाम और गुण ॥

उच्चटा और कृष्णला, यह श्वेत घोंघची के नाम हैं और लाल घोंघची को काकचिंची, काकानन्ता, रक्तिका, काकादनी, काकपीलु और काकवल्लरी कहते हैं यह दोनों प्रकारकी घोंघची. केशोंकोहित, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक और वात, पित्त, ज्वर, मुखका सूखना, घाव, श्वास, तृषा, उन्मत्तता, नेत्ररोग, खुजली, घाव, कृमि, गंजापन तथा कुष्ठकी नाशक होती हैं ॥ ३९ ॥

अथ कपिकच्छु ॥

कपिकच्छुरात्मगुप्ता वृष्याप्रोक्ताचमर्कटी। अजराकण्डुराव्यंगा दुःस्पर्शाप्रावृषायणी ॥ लाङ्गलीशूकशिम्बीच सैवप्रोक्तामहर्षिभिः। कपिकच्छुर्भृशंवृष्या मधुराबृंहणीगुरुः ॥ तिक्तावातहरीबल्या कफपित्तास्रनाशिनी। तद्बीजंवातशमनं स्मृतंवाजीकरं परम् ॥ ४० ॥

कवांच के नाम और गुण ॥

कपिकच्छु, आत्मगुप्ता, वृष्या, मर्कटी, अजरा, कंडुरा, अव्यंगा, दुःस्पर्शा, प्रावृषायणी, लांगली, और शूकशिंबी यह कवांच के नाम हैं, कवांच. अत्यन्तवीर्यवर्द्धक, मधुर, पोषक, भारी, बलकारक, तिक्त और कफ, पित्त तथा रक्तदोषनाशक होता है, कवांच का बीज. वातनाशक और अत्यन्त वीर्यवर्द्धक होताहै ॥ ४० ॥

अथ रोहिणी ॥

मांसरोहिण्यतिरुहा वृत्ताचर्मकरीकृशा। प्रहारवल्लीविकशा वीरवत्यपिकथ्यते ॥ स्यान्मांसरोहिणीवृष्यासरादोषत्रयापहा ॥ ४१ ॥

रोहिणी के नाम और गुण ॥

मांसरोहिणी, अतिरुहा, वृत्ता, चर्मकरी, कृशा, प्रहारवल्ली, विकशा और वीरवती यह मांसरोहिणीके नामहैं, मांसरोहिणी. वीर्यवर्द्धनी, सारक और त्रिदोषनाशक होती है ॥ ४१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ चिल्ल ॥

चिल्लकोवातनिर्हार्[illegible]श्लेष्मघ्नोधातुपुष्टिकृत् । आग्नेयोविषवद्यस्य फलमत्स्यनिषूदनम् ॥ ४२ ॥

चीलू के गुण ॥

चिल्लक. वात कफनाशक, धातुपोषक और अग्निगुणयुक्त होता है, इसका फल विषके समान मछलियों का नाशक होता है ॥ ४२ ॥

अथ टङ्कारी ॥

टङ्कारीवातजित्तिक्ता श्लेष्मघ्नीदीपनीलघुः । शोथोदरव्यथाहन्त्री पित्तापिचविसर्पिणाम् ॥ ४३ ॥

टंकारी के गुण ॥

टङ्कारी. वातनाशक, तिक्त, दीपन, हलकी, सूजन तथा उदरकी व्यथा की नाशक और विसर्प रोग वालोंको हितकारक होती है ॥ ४३ ॥

अथ वेतसः ॥

वेतसोनम्रकःप्रोक्तो वानीरोवंजुलस्तथा । अभ्रपुष्पश्चविदुलो रथःशीतश्चकीर्त्तितः ॥ वेतसःशीतलोदाहशोथार्शोयोनिरुक्प्रणुत् । हन्तिवीसर्पकृच्छ्रास्रपित्ताश्मरिकफानिलान् ॥ ४४ ॥

वेत के नाम और गुण ॥

वेतस, नम्रक, वानीर, वञ्जुल, अभ्रपुष्प, विदुल, रथ और शीत यह वेतके नाम हैं,वेत. शीतल और दाह, सूजन, बवासीर, योनिरोग, विसर्प, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, पथरी, कफ तथा वातनाशक होता है ॥ ४४ ॥

अथ जलवेतसः ॥

निकुञ्चकःपरिव्याधोनादेयोजलवेतसः । जलजोवेतसःशीतःकुष्ठहृद्वातकोपनः॥४५॥

जलवेतके नाम और गुण ॥

निकुञ्चक, परिव्याध, नादेय और जलवेतस यह जलवेत के नामहैं,जलवेत. शीतल, कुष्ठनाशक और वायुका कोप करनेवाला होता है ॥ ४५ ॥

अथ इज्जलसमुद्रफल इतिलोके ॥

इज्जलोहिज्जलश्चापि निचुलश्चाम्बुजस्तथा । जलवेतसवद्वेयो हिज्जलोऽयंविषापहः ॥ ४६ ॥

समुद्रफलके नाम और गुण ॥

इज्जल, हिज्जल, निचुल और अम्बुज यह समुद्रफल के नाम हैं, समुद्रफल. जलवेत के समान गुणवाला और विषनाशक होताहै ॥ ४६ ॥

अथ ढेरा ॥

अङ्कोटोदीर्घकीलःस्यादङ्कोलश्चनिकोचकः । अङ्कोटकःकटुस्तीक्ष्णःस्निग्धोष्णस्तु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वरोलघुः ॥ रेचनःकृमिशूलामशोफग्रहविषापहः । विसर्पकफपित्तास्रमूषकाहिविषापहः ॥ तत्फलंशीतलंस्वादु श्लेष्मघ्नंबृंहणंगुरु । बल्यंविरेचनंवातपित्तदाहक्षयास्रजित् ॥ ४७ ॥

पिस्ते के नाम और गुण ॥

अक्षोट, दीर्घकील, अक्षोल और निकोचक यह पिस्ते के नामहैं, पिस्तेका वृक्ष.कटु, तीक्ष्ण,स्निग्ध, उष्ण, कषाय, हलका, दस्तावर और कृमि, शूल, आम, सूजन, ग्रहदोष, विष, विसर्प, कफ, पित्त,रक्त-दोष, मूसेका विष तथा सर्पके विषका नाशक होताहै इसका फल. शीतल, मधुर, पोषक,भारी,बल-कारक, दस्तावर और कफ, वात, पित्त, दाह,क्षय तथा रक्तदोषका नाशक होताहै ॥ ४७ ॥

अथ वरिआर सहदेवी ककहिआ गुलशकरी । इति बलाचतुष्टयम् ॥

बलावाट्यालिकावाट्या सैववाट्यालकाऽपिच । महाबलापीतपुष्पा सहदेवीचसास्मृता ॥ ततोऽन्यातिबलाऋष्यप्रोक्ताकङ्कतिकाचसा । गाङ्गेरुकीनागबला ह्येषाह्रस्वागवेधुका ॥ बलाचतुष्टयंशीतं मधुरंबलकान्तिकृत् । स्निग्धंग्राहिसमीरास्रपित्तास्रक्षतनाशनम् ॥ बलामूलत्वचश्चूर्णं पीतंसक्षीरशर्करम् । मूत्रातिसारंहरति दृष्टमेतन्नसंशयः ॥ हरेन्महाबलाकृच्छ्रं भवेद्वातानुलोमनी । हन्यादतिबलामेहं पयसासितयासमम् ॥ ४८ ॥

बरियारा, सहदेई, ककैह्या, गुलशकरी यह बलाचतुष्टयहै इसके नाम और गुण ॥

बला, वाट्यालिका, वाट्या और वाट्यालक यह बरियाराके नामहैं महाबला, पीतपुष्पा और सह-देवी यह सहदेई के नाम हैं अतिबला, ऋष्यप्रोक्ता और कङ्कतिका यह ककैह्याके नामहैं गाङ्गेरुकी, नागबला,ह्रस्वा और गवेधुका यह गुलशकरीके नामहैं यह चारों.शीतल,मधुर,बलवर्द्धक,कान्तिकारक स्निग्ध, ग्राही और वात, रक्तपित्त, रक्तदोष तथा घावनाशक होती हैं बरियारेकी जड़कीछाल का चूर्ण शक्कर और दूधके साथ पीनेसे मूत्रातीसार नष्ट होताहै यह देखा गयाहै इसमें कुछ सन्देह नहींहै सहदेईका चूर्ण दूध शक्कर के साथ पीनेसे मूत्रकृच्छ्रका नाश होताहै वात अपने मार्गके अनुसार होजातीहै ककैह्या का चूर्ण दूध शक्कर के साथ पीने से प्रमेह नष्ट होताहै ॥ ४८ ॥

अथ लक्ष्मणा ॥

पुत्रकाकाररक्ताल्पबिन्दुभिर्लाञ्छितासदा । लक्ष्मणापुत्रजननी वस्तगन्धाकृतिर्भवेत् ॥ कथितापुत्रदावश्यं लक्ष्मणामुनिपुङ्गवैः ॥ ४९ ॥

लक्ष्मणा के नाम और गुण ॥

इसमें बालक के समान लाल और छोटे बिंदुओं के चिह्न सदैव रहते हैं लक्ष्मणा. पुत्रजननी और वस्तगंधाकृति यह लक्ष्मणाके नामहैं, मुनिलोगोंने लक्ष्मणाको अवश्य पुत्र देनेवाली कहाहै ॥ ४९ ॥

स्वर्णवल्ली ॥

स्वर्णवल्लीरक्तफला काकायुःकाकवल्लरी । स्वर्णवल्लीशिरःपीडां त्रिदोषान्हन्ति दुग्धदा ॥ ५० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वर्णवल्लीके नाम और गुण ॥

स्वर्णवल्ली, रक्तफला, काकायु और काकवल्लरी यह स्वर्णवल्ली के नामहैं स्वर्णवल्ली. शिरके रोग तथा त्रिदोषनाशक होती है और दुग्ध उत्पन्न करती है ॥ ५० ॥

अथ कार्पासः ॥

कार्पासीतुण्डकेरीच समुद्रान्ताचकथ्यते। कार्पासकीलघुःकोष्णामधुरावातनाशिनी ॥ तत्पलाशंसमीरघ्नं रक्तकृन्मूत्रवर्द्धनम्। तत्कर्णपीड़कानादपूयास्रावविनाशनम् ॥ तद्वीजंस्तन्यदंवृष्यं स्निग्धंकफकरंगुरु ॥ ५१ ॥

कपासके नाम और गुण ॥

कार्पासी, तुण्डकेरी और समुद्रान्ता यह कपास के नामहैं कपास. हलका, कुछ उष्ण, मधुर और वायु नाशक होताहै कपासके पत्ते. रक्त तथा मूत्रवर्द्धक और वात, कानकी फुंसी, शब्द तथा पीपके बहने को रोकनेवाले होते हैं कपासके बीज दुग्धवर्द्धक, वीर्यवर्द्धक, स्निग्ध, कफकारक और भारी होतेहैं ५१॥

अथ वंशः ॥

वंशस्त्वक्सारकर्मारौत्वचिसारस्तृणध्वजः। शतपर्वाशतफली वेणुमस्करतेजनाः॥ वंशःसरोहिमःस्वादुःकषायोवस्तिशोधनः। छेदनःकफपित्तघ्नःकुष्ठास्रव्रणशोथजित् ॥ तत्करीरःकटुःपाकेरसेरूक्षोगुरुःसरः। कषायःकफकृत्स्वादुर्विदाहीवातपित्तलः॥ तद्यवास्तु सरारूक्षाःकषायाःकटुपाकिनः। वातपित्तकराउष्णा बद्धमूत्राःकफापहाः ॥ ५२ ॥

बांसके नाम और गुण ॥

वंश, त्वक्सार, करमार, त्वचिसार, तृणध्वज, शतपर्वा, शतफली, वेणु, मस्कर और तेजना यह बांसके नामहैं बांस. सारक, शीतल, मधुर, कषाय, मूत्राशय का शोधक, छेदक और कफ पित्त कुष्ठ घाव तथा सूजनका नाशक होताहै बांसका अंकुर. पाकमें कटु, रसमें कटु, रूखा, भारी, सारक, कषाय, कफवर्द्धक, मधुर, विदाही और वात पित्तका नाशक होताहै बांसके जौ. सारक, रूखे, कषाय, पाकमें कटु, वादी, पित्तवर्द्धक, उष्ण, मूत्ररोधक और कफनाशक होते हैं ॥ ५२ ॥

अथ नलः॥

नलःपोटगलःशून्यमध्यश्चधमनस्तथा॥ नलंस्तुमधुरस्तिक्तःकषायःकफरक्तजित् ॥ उष्णोहृद्वस्तियोन्यर्तिदाहपित्तविसर्पहृत् ॥ ५३ ॥

नरकुलके नाम और गुण ॥

नल, पोटगल, शून्यमध्य और धमन, यह नरकुल के नाम हैं नरकुल. मधुर, तिक्त, कषाय, उष्ण और कफ, रक्तदोष, हृदयरोग, मूत्राशयके दोष, योनिके दोष, दाह, पित्त तथा वीसर्पनाशक होता है ॥ ५३ ॥

अथ रामशर। शरपतइतिवा ॥

(अथ मुञ्जः) मुञ्जोमुञ्जातकोबाणः स्थूलदर्भःसुमेखलः ॥ मुञ्जद्वयन्तुमधुरं तुवरंशिशिरंतथा। दाहतृष्णाविसर्पास्रमूत्रकृच्छ्राक्षिरोगजित्। दोषत्रयहरंवृष्यं मेखलासूपयुज्यते ॥ ५४ ॥

भद्रमुञ्जःशरोबाणस्तेजनश्चक्षुवेष्टनः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सरपत और मूंजके नाम और गुण ॥

भद्रमुञ्ज, शर, बाण, तेजन और चक्षुवेष्टन यह सरपतके नामहैं मुञ्ज, मुञ्जातक, वाण, स्थूलदर्भ और सुमेखल यह मूंजके नाम हैं यह दोनों मधुर, कषाय, शीतल, वीर्यवर्द्धक और दाह, तृषा, विसर्प, आम, मूत्रकृच्छ्र, नेत्ररोग तथा त्रिदोषनाशक होते हैं इनका मेखला बनाने आदि में काम पड़ता है ॥ ५४ ॥

अथ काशः ॥

काशःकाशेक्षुरुद्दिष्टःसस्यादिक्षुरसस्तथा। इक्ष्वालिकेक्षुगन्धाच तथापोटगलःस्मृतः॥ काशःस्यान्मधुरस्तिक्तः स्वादुपाकोहिमःसरः । मूत्रकृच्छ्राश्मदाहास्रक्षयपित्तजरोगजित् ॥ ५५ ॥

काशके नाम और गुण ॥

काश, काशेक्षु, इक्षुरस, इक्ष्वालिका, इक्षुगन्धा और पोटगल यह काशके नामहैं काश. मधुर, तिक्त, पाक में मधुर, शीतल, सारक और मूत्रकृच्छ्र, पथरी, दाह, रक्तदोष, क्षय तथा पित्तरोग की नाशक होती है ॥ ५५ ॥

गन्धपटेरइतिच ॥

गुन्द्रःपटेरकोरच्छः शृङ्गवेराभमूलकः ॥ गुन्द्रःकषायोमधुरः शिशिरःपित्तरक्तजित् ॥ स्तन्यःशुक्ररजोमूत्रशोधनोमूत्रकृच्छ्रहृत् ॥ ५६ ॥

गन्धपटेरके नाम और गुण ॥

गुन्द्र, पटेरक, रच्छ और शृङ्गवेराभ, मूलक यह गन्धपटेरकेनाम हैं गन्धपटेर. कषाय, मधुर, शीतल, पित्तरक्तनाशक, दुग्ध, वीर्य, रज तथा मूत्रशोधक और मूत्रकृच्छ्रनाशक होताहै ॥ ५६ ॥

मोथीतृणविशेषः ॥

एरकागुन्द्रमूलाचशिविर्गुन्द्राशरीतिच ॥ एरकाशिशिरावृष्या चक्षुष्यावातकोपिनी॥ मूत्रकृच्छ्राश्मरीदाहपित्तशोणितनाशिनी ॥ ५७ ॥

मोथीतृणविशेषके नाम और गुण ॥

एरका, गुन्द्रमूला, शिवि, गुन्द्रा और शरी यह मोथीके नामहैं मोथी. शीतल, वीर्यवर्द्धक, नेत्रहित वादी और मूत्रकृच्छ्र, पथरी, दाह, पित्त तथा रक्तदोष नाशक होती है ॥ ५७ ॥

अथ कुशः ॥

कुशोदर्भस्तथाबर्हिः सूच्यग्रोयज्ञभूषणः ॥ (अथडाभ) ततोऽन्योदीर्घपत्रःस्यात् क्षुरपत्रस्तथैवच ॥ दर्भद्वयंत्रिदोषघ्नं मधुरंतुवरंहिमम्। मूत्रकृच्छ्राश्मरीतृष्णावस्तिरुक् प्रदरास्रजित् ॥ ५८ ॥

कुशके नाम और गुण ॥

कुश, दर्भ, बर्हि, सूच्यग्र और यज्ञभूषण यह कुशके नामहैं और भी एक प्रकारका कुश होताहै उसको दीर्घपत्र और क्षुरपत्र कहते हैं दोनों प्रकार के कुश. त्रिदोषनाशक, मधुर, कषाय, शीतल और मूत्रकृच्छ्र, पथरी, तृषा, मूत्राशयके रोग, प्रदर तथा रक्तदोष नाशक होते हैं ॥ ५८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथकत्तृणम्। रौंहिससोधिआइतिच ॥

कत्तृणंरौहिषंदेवजग्धंसौगन्धिकंतथा। भूतीकंव्यामपौरञ्च श्यामकंधूमगन्धिकम्॥
रौहिषंतुवरंतिक्तं कटुपाकंव्यपोहति। हत्कण्ठव्याधिपित्तास्रशूलकासकफज्वरान्॥५९॥

कत्तृण (रौहिषसोधिआनामसे प्रसिद्ध एक प्रकारकी पीली खस) के नाम और गुण॥

कत्तृण, रौहिष, देवजग्ध, सौगन्धिक, भूतिक, व्यामपौर, श्यामक और धूमगन्धिक यह कत्तृण के नामहैं कत्तृण. कषाय, तिक्त, पाकमें कटु और हृदय के रोग, कण्ठरोग, पित्त, रक्तदोष, शूल, खांसी, कफ तथा ज्वरनाशक होता है॥ ५९॥

अथ भूस्तृणम्॥

गुह्यबीजन्तुभूतीकंसुगन्धंजम्बुकप्रियम्॥भूस्तृणंतुभवेच्छत्रा मालातृणकमित्यपि॥
भूस्तृणंकटुकंतिक्तं तीक्ष्णोष्णंरेचनंलघु॥विदाहिदीपनंरूक्षमनेत्र्यंमुखशोधनम्। अवृ
ष्यंबहुविट्कञ्च पित्तरक्तप्रदूषणम्॥ ६०॥

भूस्तृण के नाम और गुण॥

गुह्यबीज, भूतीक, सुगन्ध, जम्बुकप्रिय, भूस्तृण, छत्रा और मालातृण—यह भूस्तृणके नामहैं भूस्तृण. कटु, तिक्त, तीक्ष्ण, उष्ण, दस्तावर, हलका, विदाही, दीपन, रूखा, नेत्रोंको अहित, मुखशोधक, वीर्यको अहित, मलवर्द्धक और पित्त तथा रक्तका दूषित करनेवाला होताहै॥ ६०॥

अथ नीलदूर्वा॥

नीलदूर्वारुहानन्ता भार्गवीशतपर्विका। शष्पंसहस्रवीर्याच शतवल्लीचकीर्तिता॥
नीलदूर्वाहिमातिक्ता मधुरातुवराहरा। कफपित्तास्रवीसर्पतृष्णादाहत्वगामयान्॥६१॥

नीलीदूबके नाम और गुण॥

नीलदूर्वा, रुहा, अनन्ता, भार्गवी, शतपर्विका, शष्प, सहस्रवीर्या और शतवल्ली यह नीलीदूब के नामहैं नीलीदूब. शीतल, तिक्त, मधुर, कषाय और कफ, पित्त रक्तदोष, वीसर्प, तृषा, दाह और त्वचाके रोगोंकी नाशक होती है॥ ६१॥

अथ श्वेतदूर्वा॥

दूर्वाशुक्लातुगोलोमी शतवीर्याचकथ्यते। श्वेतादूर्वाकषायास्यात् स्वाद्वीव्रण्याच
जीवनी। तिक्ताहिमाविसर्पास्रतृट्पित्तकफदाहहृत्॥ ६२॥

श्वेतदूर्वा के नाम और गुण॥

गोलोमी और शतवीर्या यह श्वेतदूर्वा के नामहैं श्वेतदूर्वा. कषाय, मधुर, घावमें हित, जीवनरूप तिक्त, शीतल और वीसर्प, रक्तदोष, तृषा, पित्त, कफ तथा दाहनाशक होती है॥ ६२॥

अथ गाण्डरिदूबिपाचइतिच॥

गण्डदूर्वातुगण्डालीमत्स्याक्षीशकुलाक्षकः। गण्डदूर्वाहिमालोहद्राविणीग्राहिणी
लघुः॥ तिक्ताकषायामधुरा वातकृत्कटुपाकिनी। दाहतृष्णाबलासास्रकुष्ठपित्तज्वरा
पहा॥ ६३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गांडरके नाम और गुण ॥

गण्डाली, गण्डदूर्वा, मत्स्याक्षी और शकुलाक्षक यह गांडर के नामहैं गांडर. शीतल लोहेकी गलानेवाली, ग्राही, हलकी, तिक्त, कषाय, मधुर, बादी, पाकमें कटु, दाह, तृषा, कफ, रक्त, पित्त तथा ज्वर नाशक होती है ॥ ६३ ॥

अथ विदारीकन्दः। क्षीरविदारीगेण्ठिइतिलोके ॥

वाराहीकन्दएवान्यैश्चर्मकारालुकोमतः । अनूपसम्भवेदेशेवाराहइवलोमवान् ॥ विदारीस्वादुकन्दाचसातुक्रोष्ट्रीसितास्मृता। इक्षुगन्धाक्षीरवल्लीक्षीरशुक्लापयस्विनी ॥ वाराहवदनागृष्टिर्वदरेत्यपिकथ्यते। विदारीमधुरास्निग्धाबृंहणीस्तन्यशुक्रदा॥ शीता स्वर्य्यामूत्रलाचजीवनीबलवर्णदा। गुरुःपित्तास्रपवनदाहान्हन्तिरसायनी ॥ ६४ ॥

विदारीकन्दके नाम और गुण ॥

इसको पश्चिम में गृष्टि कहते हैं और इसीको कोई चर्मकारालुकभी कहते हैं यह अनूपदेशमें वाराह के समान रोमोंसेयुक्त उत्पन्न होता है विदारी, स्वादुकंद, क्रोष्ट्री, सिता, इक्षुगन्धा, क्षीरवल्ली, क्षीरशुक्ला, पयस्विनी, वाराहवदना, गृष्टि और वदरा यह विदारीकन्द के नामहैं विदारीकन्द. मधुर, स्निग्ध, धातुवर्द्धक, दुग्धवर्द्धक, वीर्यवर्द्धक, शीतल, स्वरकोहित, मूत्रकारक, जीवनरूप, बलकारक, वर्णकोहित, भारी, रसायन और पित्त, रक्तदोष वात तथा दाहनाशक होताहै ॥ ६४ ॥

अथ मुशलीकन्दम् ॥

तालमूलीतुविद्वद्भिर्मुशलीपरिकीर्तिता। मुशलीमधुरावृष्यावीर्य्योष्णाबृंहणीगुरुः॥ तिक्तारसायनीहन्तिगुदजान्यनिलन्तथा॥ ६५ ॥

मुशली के नाम और गुण॥

तालमूली को पण्डितलोग मुशली कहते हैं मुशली. मधुर, वीर्यवर्द्धक, वीर्य में उष्ण, धातुवर्द्धक, भारी, रसायन, तिक्त और गुदाके रोग तथा वातनाशक होती है ॥ ६५ ॥

अथ शतावरीमहाशतावरी ॥

शतावरीबहुसुताभीरुरिन्दीवरीवरी। नारायणीशतपदीशतवीर्य्याचपीवरी ॥ महा शतावरीचान्याशतमूल्यर्द्धकण्टिका । सहस्रवीर्य्याहेतुश्चऋष्यप्रोक्तामहोदरी॥ शता वरीगुरुःशीतातिक्तास्वाद्वीरसायनी। मेधाग्निपुष्टिदास्निग्धानेत्र्यागुल्मातिसारजित् ॥ शुक्रस्तन्यकरीबल्यावातपित्तास्रशोथजित् । महाशतावरीमेध्याहृद्यावृष्यारसायनी ॥ शीतवीर्य्यानिहन्त्यर्शोग्रहणीनयनामयान् ॥ ६६ ॥

शतावरी महाशतावरी के नाम और गुण॥

शतावरी, बहुसुता, भीरु, इन्दीवरी, वरी, नारायणी, शतपदी, शतवीर्या और पीवरी यह शतावरि के नामहैं शतमूली, अर्द्धकंटिका, सहस्रवीर्या, हेतु, ऋष्यप्रोक्ता और महोदरी यह महाशतावरीके नामहैं शतावरी. भारी, शीतल, तिक्त, मधुर, रसायन, मेधा, अग्नि तथा पुष्टिवर्द्धक, स्निग्ध, नेत्रहित, वीर्यवर्द्धक, दुग्धवर्द्धक, बलकारक और गुल्म, अतीसार, वात, पित्त, रक्तदोष तथा सूजनकी नाशक होती है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महाशतावरी. मेधाकोदि हृदयको प्रिय, वीर्य्यवर्द्धक, रसायन, शीतल और बवासीर, ग्रहणी तथा नेत्ररोगनाशक होती है ॥ ६६ ॥

अथ असगन्धः ॥

गन्धान्तावाजिनामादिरश्वगन्धाहयाह्वया। वराहकर्णीवरदाबलदाकुष्ठगन्धिनी ॥ अश्वगन्धानिलश्लेष्माश्वित्रशोथक्षयापहा। बल्यारसायनीतिक्ताकषायोष्णातिशुक्रला॥६७

असगन्ध के नाम और गुण ॥

गन्धान्ता, वाजिनामादि, अश्वगन्धा, हयाह्वया, वराहकर्णी, वरदा, बलदा और कुष्ठगन्धिनी यह असगन्ध के नामहैं असगन्ध. वात, कफ, श्वेतकुष्ठ, सूजन तथा क्षयरोगकी नाशक, बलकारक, रसायन, तिक्त, कषाय, उष्ण और अत्यन्तवीर्यवर्द्धक होती है ॥ ६७ ॥

अथ पाठा ॥

पाठाम्बष्ठाम्बष्ठिकाचप्राचीनापापचेलिका । एकष्ठीलारसाप्रोक्तापाठिकावरतिक्तिका ॥ पाठोष्णाकटुकातीक्ष्णावातश्लेष्महरीलघुः । तिक्तारुचिकरीचाम्लाभानसन्धानकारिणी ॥ हन्तिशूलज्वरच्छर्दिकुष्ठातीसारहृद्रुजः ॥ दाहकण्डुविषश्वासकृमिगुल्मगरव्रणान् ॥ ६८ ॥

पाठा वा पाढर के नाम और गुण ॥

पाठा, अम्बष्ठा, अम्बष्ठिका, प्राचीना, पापचेलिका, एकष्ठीला, रसा, पाठिका और वरतिक्तिका यह पाठा वा पाढर के नामहैं पाठा. उष्ण, कटु, तीक्ष्ण, वातकफनाशक, हलकी और तिक्त, अरुचिनाशक, स्वादमें खट्टी और टूटेहुये की जोड़नेवाली तथा शूल, ज्वर, छर्दि, कुष्ठ, अतीसार, हृदय के रोग, दाह, खुजली, विष, श्वास, कृमि, गुल्म, गरदोष तथा घावनाशक होती है ॥ ६८ ॥

अथ श्वेतपनिलर ॥

श्वेतात्रिवृत्त्रिभण्डीस्यात्त्रिवृतात्रिपुटापिच । सर्व्वानुभूतिःसरलानिशोत्रारेचनीतिच ॥ श्वेतात्रिवृद्रेचिनीस्यात्स्वादुरुष्णासमीरहृत् । रूक्षापित्तज्वरश्लेष्मपित्तशोथोदरापहा ॥ ६९ ॥

श्वेतनिशोथ के नाम और गुण ॥

श्वेता, त्रिवृत्, त्रिभण्डी, त्रिवृता, त्रिपुटा, सर्वानुभूति, सरला, निशोत्रा और रेचनी यह सफेद निशोथके नामहैं सफेद निशोथ. दस्तावर, मधुर, उष्ण, रूखा और वात, पित्तज्वर, कफ, पित्त, सूजन तथा उदररोगका नाशक होताहै ॥ ६९ ॥

अथ श्यामपनिलर ॥

त्रिवृत्श्यामार्द्धचन्द्राचपालिन्दीचसुषेणिका । मसूरविदलाकोलाकैषिकाकालमेषिका ॥ श्यामात्रिवृत्ततोहीनागुणातीव्रविरेचनी । मूर्च्छादाहमदभ्रान्तिकण्ठोत्कर्षणकारिणी ॥ ७० ॥

काले निशोथ के नाम और गुण ॥

त्रिवृत्, श्यामा, अर्द्धचन्द्रा, पालिन्दी, सुषेणिका, मसूरविदला, कोला, कैषिका और कालमेषिका

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

यह काले निशोथके नामहैं काला निशोथ. श्वेत निशोथकी अपेक्षा गुणोंमें न्यूनहै, विशेषता यहहै कि बहुत दस्तावर और मूर्च्छा, दाह, मद, भ्रान्ति तथा कण्ठ की उत्तमता करनेवालाहै ॥ ७० ॥

अथ लघुदन्ती ॥

लघुदन्तीविशल्याचस्यादुदुम्बरपर्ण्यपि । तथैरण्डफलाशीघ्राश्येनघण्टाघुणप्रिया ॥ वाराहाङ्गीचकथितानिकुम्भश्चमकूलकः (अथ बृहद्दन्तीएरण्डपत्रविटपा) द्रवन्तीसावरीचित्राप्रत्यक्पर्ण्यर्कपर्ण्यपि ॥ चित्रोपचित्रान्यग्रोधीप्रत्यक्छ्रेण्याखुकर्ण्यपि ॥ दन्तीद्वयंसरम्पाकेरसेचकटुदीपनम् ॥ गुदांकुराश्मशूलार्शःकण्डूकुष्ठविदाहनुत् । तीक्ष्णोष्णंहन्तिपित्तास्रकफशोथोदरकृमीन् (अथ लघुदन्तीफलम्) क्षुद्रदन्तीफलन्तुस्यान्मधुरंरसपाकयोः । शीतलंसृष्टविण्मूत्रंगरशोथकफापहम् ॥ ७१ ॥

छोटी दन्ती के नाम और गुण ॥

विशल्या, उदुम्बरपर्णी, एरण्डफला, शीघ्रा, श्येनघण्टा, घुणप्रिया, वाराहांगी, निकुम्भ और मकूलक यह छोटी दन्तीके नामहैं बड़ीदन्ती. इसके पत्ते अरण्डके पत्तोंके समान होते हैं द्रवन्ती, सावरी, चित्रा, प्रत्यक्पर्णी, अर्कपर्णी, चित्रोपचित्रा, न्यग्रोधी, प्रत्यक्श्रेणी और आखुकर्णी यह बड़ी दन्तीके नामहैं यह दोनों दन्ती.दस्तावर, रस तथा पाकमें कटु, दीपन, तीक्ष्ण, उष्ण और गुदांकुर, पथरी शूल, बवासीर, खुजली, कुष्ठ, विदाह, पित्त, रक्तदोष कफ, सूजन, उदर तथा कृमिनाशक होती हैं छोटी दन्ती का फल रस तथा पाक में मधुर, शीतल, मल मूत्रका निकालनेवाला और गरदोष, सूजन तथा कफनाशक होताहै ॥ ७१ ॥

जयपालोदन्तिबीजंविख्यातन्तितिडीफलम् । जयपालोगुरुःस्निग्धोरेचीपित्तकफापहः ॥ ७२ ॥

जमालगोटेके नाम और गुण ॥

जयपाल, दन्तीबीज और तिंतिड़ीफल यह जमालगोटेके नामहैं जमालगोटा. भारी, स्निग्ध, दस्तावर और पित्त तथा कफनाशक होताहै ॥ ७२ ॥

इन्द्रारुण बड़ीइन्द्रकला ॥

ऐन्द्रीन्द्रवारुणीचित्रागवाक्षीचगवादिनी । वारुणीचपराप्युक्तासाविशालामहाफला ॥ श्वेतपुष्पामृगाक्षीचमृगैर्वारुमृगादनी । गवादिनीद्वयंतिक्तंपाकेकटुसरंलघु ॥ वीर्योष्णंकामलापित्तकफप्लीहोदरापहम् । श्वासकासापहंकुष्ठगुल्मग्रन्थिव्रणप्रणुत् ॥ प्रमेहमूढगर्भामगण्डामयविषापहम् ॥ ७३ ॥

दोनों इन्द्रायण के नाम और गुण ॥

ऐन्द्री, इन्द्रवारुणी, चित्रा, गवाक्षी, गवादनी और वारुणी यह इन्द्रायनके नामहैं दूसरी इंद्रायनको विशाला, महाफला, श्वेतपुष्पा, मृगाक्षी, मृगैर्वारु और मृगादनी कहतेहैं दोनों इन्द्रायन. तिक्त, पाक में कटु, दस्तावर, हलकी, उष्ण और कामला, पित्त, कफ, प्लीहा, उदर, श्वास, खांसी, कुष्ठ, गुल्म, ग्रन्थि, घाव, प्रमेह, मूढगर्भ (वायुकेद्वारा टेढ़ाहोकर योनिमें आयाहुआ गर्भ) आम, गलगंड तथा विषनाशक होती हैं ॥ ७३ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ नील ॥

नीलीतुनीलिनीतूलीकालदोलाचनीलिका । रञ्जनीश्रीफलीतुच्छाग्रामीणामधुपर्णिका ॥ क्लीतकाकालकेशीचनीलपुष्पाचसास्मृता । नीलिनीरेचिनीतिक्ताकेश्यामोहभ्रमापहा ॥ उष्णाहन्त्युदरप्लीहवातरक्तकफानिलान् । आमवातमुदावर्त्तम्मन्दंचविषमुद्धतम् ॥ ७४ ॥

नीलके नाम और गुण ॥

नीली, नीलिनी, तूली ,कालदोला, नीलिका, रञ्जनी, श्रीफली, तुच्छा, ग्रामीणा, मधुपर्णिका क्लीतका, कालकेशी और नीलपुष्प यह नीलके नामहैं नील. दस्तावर, तिक्त, केशोंको हित, उष्ण और मोह,भ्रम, उदर, प्लीहा, वात रक्त, वात कफ, आमवात, उदावर्त्त, मद तथा विषका नाशक होताहै ॥ ७४ ॥

अथ शरफोका ॥

शरपुङ्खःप्लीहशत्रुर्नीलीवृक्षाकृतिश्चसः । शरपुङ्खोयकृत्प्लीहगुल्मव्रणविषापहः । तिक्तःकषायःकासास्रश्वासज्वरहरोलघुः ॥ ७५ ॥

सर्फोंकाके नाम और गुण ॥

शरपुङ्ख प्लीहशत्रु और नीलीवृक्षाकृति, यह शरफोंका के नामहैं शरफोंका. तिक्त, कषाय,हलका और यकृत्,प्लीहा,गुल्म,घाव, विष, खांसी, रक्तदोष,श्वास तथा ज्वरनाशक होता है ॥ ७५ ॥

अथ यवासदुरालभानामानिगुणाश्च ॥

यासोयवासोदुःस्पर्शोधन्वयासःकुनाशकः । दुरालभादुरालम्भासमुद्रान्ताचरोदिनी॥ गान्धारीकच्छुरानन्ताकषायादुरभिग्रहा । यासःस्वादुःसरस्तिक्तस्तुवरःशीतलोलघुः ॥ कफमेदोमदभ्रान्तिपित्तासृक्कुष्ठकासजित्। तृष्णाविसर्पवातास्रवमिज्वरहरःस्मृतः॥ यवासस्यगुणैस्तुल्याबुधैरुक्तादुरालभा ॥ ७६ ॥

जवासा और दुरालभाके नाम और गुण ॥

यास,यवास,दुःस्पर्श,धन्वयास,कुनाशक,दुरालभा,दुरालम्भा,समुद्रान्ता,रोदनी,गान्धारी,कच्छुरा, अनन्ता,कषाया और दुरभिग्रहा यह जवासेके नामहैं जवासा.मधुर, दस्तावर, तिक्त, कषाय, शीतल, हलका और कफ, मेद, मद, भ्रान्ति, पित्त, रक्तकुष्ठ, खांसी, तृषा, वीसर्प, वातरक्त, छर्दि तथा ज्वर नाशक होताहै पण्डितलोग दुरालभाको भी जवासे के समान गुणवाली कहते हैं ॥ ७६ ॥

अथ मुण्डी ॥

मुण्डीभिक्षुरपिप्रोक्ताश्रावणीचतपोधना । श्रवणाह्वामुण्डतिकातथाश्रवणशीर्षका॥ महाश्रावणिकान्यातुसास्मृताभूकदम्बिका। कदम्बपुष्पिकाचस्यादव्यथातितपस्विनी ॥ मुण्डतिकाकटुःपाकेवीर्योष्णामधुरालघुः। मेध्यागण्डापचीकृच्छ्रकृमियोन्यर्त्तिपाण्डुनुत्॥ श्लीपदारुच्यपस्मारप्लीहमेदोगुदार्त्तिहृत्। महामुण्डीचतत्तुल्यागुणैरुक्तामहर्षिभिः ७७॥

मुण्डी और महामुण्डीके नाम और गुण ॥

मुण्डी, भिक्षु, श्रावणी, तपोधना, श्रवणाह्वा, मुण्डतिका और श्रवणशीर्षका यह मुण्डीके नाम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हैं, महामुण्डी को महाश्रावणिका, भूकदम्बिका, कदम्बपुष्पिका, अव्यथा और अतितपस्विनी कहते हैं, मुण्डी. पाकमें कटु, वीर्य में उष्ण, मधुर, हलकी, मेधाको हित और गलगण्ड, अपची, मूत्रकृच्छ्र, कृमि, योनिरोग, पाण्डु, श्लीपद, अरुचि, मृगी, प्लीहा, मेद तथा गुदाका व्याधिनाशक होती है महर्षिलोगोंने महामुण्डी को भी मुण्डी के समान कहा है ॥ ७७ ॥

अथ चिरचिरि ॥

अपामार्गस्तुशिखरीह्यधःशल्योमयूरकः ॥ मर्कटीदुर्ग्रहाचापिकिणिहीखरमञ्जरी॥अपामार्गःसरस्तीक्ष्णोदीपनस्तिक्तकःकटुः । पाचनोरोचनश्छर्दिकफमेदोऽनिलापहः ॥ निहन्तिहृद्रुजाध्मार्शःकण्डूशूलोदरापची ॥ ७८ ॥

लटजीराके नाम और गुण ॥

अपामार्ग, शिखरी, अधश्शल्य, मयूरक, मर्कटी, दुर्ग्रहा, किणिही और खरमञ्जरी यह लटजीरे के नाम हैं लटजीरा. दस्तावर, तीक्ष्ण, दीपन, तिक्त, कटु, पाचक, रुचिकारक और छर्दि, कफ, मेद, वात, हृदयके रोग, आध्मान, बवासीर, खुजली, शूल, उदर तथा अपचीका नाशक होता है ॥ ७८ ॥

अथ रक्तचिरचिरा ॥

रक्तोन्योवसिरोवृत्तफलोधामार्गवोऽपिच । प्रत्यक्पर्णीकेशपर्णीकथिताकपिपिप्पली॥ अपामार्गोऽरुणोवातविष्टम्भीकफकृद्धिमः ॥ रूक्षःपूर्वगुणैर्न्यूनःकथितोगुणवेदिभिः ॥ अपामार्गफलंस्वादुरसेपाकेचदुर्जरम् । विष्टम्भिवातलंरूक्षंरक्तपित्तप्रसादनम् ॥ ७९ ॥

लाललटजीरे के नाम और गुण ॥

वसिर, वृत्तफल, धामार्गव, प्रत्यक्पर्णी, केशपर्णी और कपिपिप्पली यह लाललटजीरे के नाम हैं, लाललटजीरा. बादी, विष्टंभी, कफकारक, शीतल, रूखा और श्वेतलटजीरे से गुणोंमें कम होता है यह गुणज्ञलोगोंने कहा है लटजीरे के फल. रस तथा पाकमें मधुर विलम्बसे पचनेवाले विष्टम्भी, बादी, रूखे और रक्त पित्त करनेवाले होते हैं ॥ ७९ ॥

अथ तालमखाना ॥

कोकिलाक्षस्तुकाकेक्षुरिक्षुरःक्षुरकःक्षुरः।भिक्षुःकाण्डेक्षुरप्युक्तइक्षुगन्धेक्षुबालिका॥क्षुरकः शीतलोवृष्यःस्वाद्वम्लःपित्तलस्तथा॥तिक्तोवातामशोथाश्मतृष्णादृष्ट्यनिलास्रजित्॥८०॥

तालमखाने के नाम व गुण ॥

कोकिलाक्ष, काकेचु, इक्षुर, क्षुरक, क्षुर, भिक्षु, काण्डेक्षु, इक्षुगन्धा और इक्षुबालिका यह तालमखानेके नाम हैं-तालमखाना. शीतल, वीर्यवर्द्धक, मधुर, अम्ल, तिक्त, पित्तवर्द्धक और आमवात, सूजन, पथरी, तृषा, दृष्टि तथा वातरक्त का नाशक होता है ॥ ८० ॥

अथ हड़सङ्कारि ॥

ग्रन्थिमानस्थिसंहारीवज्रांगीवास्थिशृङ्खला। अस्थिसंहारकःप्रोक्तोवातश्लेष्महरोऽस्थियुक् ॥ उष्णःसरःकृमिघ्नश्चदुर्नामघ्नोऽक्षिरोगजित् । रूक्षःस्वादुर्लघुर्वृष्यःपाचनः पित्तलःस्मृतः॥ काण्डत्वग्विरहितमस्थिशृङ्खलायामाषार्द्धैर्द्विदलमकञ्चुकन्तदर्द्धम्। सम्पिष्टंतदनुततस्तिलस्यतैलेसम्पक्वंवटकमतीववातहारि ॥ ८१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हारसिंगारके नाम और गुण ॥

ग्रन्थिमान, अस्थिसंहारी, वज्राङ्गी और अस्थिशृङ्खला यह हारसिंगारके नामहैं हारसिंगार. हड्डियोंका जोडनेवाला, उष्ण, सारक,रूखा, मधुर,हलका, वीर्यवर्द्धक, पाचक, पित्तवर्द्धक और वातकफ, कृमि, बवासीर तथा नेत्ररोगोंका नाशक होताहै हारसिंगार के बक्कलको निकालकर उसके आधे छिलेहुये चने आदिककी दालें एकमें पीसकर बनाये हुये बडेको तिल्लोंके तेलमें पकाकर सेवनकरने से अत्यन्त वातका नाश होताहै ॥ ८१ ॥

अथ घिउकुवारि ॥

कुमारीगृहकन्याचकन्याघृतकुमारिका । कुमारीभेदिनीशीतातिक्तानेत्र्यारसायनी ॥ मधुराबृंहणीबल्यावृष्यावातविषप्रणुत् । गुल्मप्लीहयकृद्वृद्धिकफज्वरहरीहरेत् ॥ ग्रन्थ्यग्निदग्धविस्फोटपित्तरक्तत्वगामयान् ॥ ८२ ॥

घीग्वारके नाम और गुण ॥

कुमारी, गृहकन्या,कन्या और घृतकुमारिका यह घीग्वारके नाम हैं घीग्वार. भेदक,शीतल,तिक्त, नेत्रोंको हित, रसायन, मधुर, धातुवर्द्धक, बलकारी, वीर्यवर्द्धक और वात, विष, गुल्म, प्लीहा,यकृत्, वृद्धि,ज्वर,ग्रंथि,मन्दाग्नि,अग्निदग्ध,विस्फोट,रक्तपित्त और त्वचा के रोगोंका नाशक होताहै॥ ८२ ॥

अथ श्वेतपुनर्नवा ॥

पुनर्नवाश्वेतमूलाशोथघ्नीदीर्घपत्रिका । कटुःकषायानुरसापाण्डुघ्नीदीपनीसरा ॥ शोफानिलगरश्लेष्महरीव्रणयोदरप्रणुत् ॥ ८३ ॥

श्वेतगदहपूरना के नाम और गुण ॥

पुनर्नवा, श्वेतमूला, शोथघ्नी और दीर्घपत्रिका यह श्वेतगदहपूरना के नाम हैं श्वेतगदहपूरना. कटु,कुछ कषाय,दीपन और पांडु,सूजन,वात,गरदोष, कफ,घाव तथा उदररोग नाशक होता है॥८३॥

अथ रक्तपुष्पापुनर्नवा ॥

पुनर्नवापरारक्तारक्तपुष्पाशिलाटिका । शोथघ्नःक्षुद्रवर्षाभूर्वृषकेतुःकपिल्लकः ॥ पुनर्नवारुणातिक्ताकटुपाकाहिमालघुः । वातलाग्राहिणीश्लेष्मपित्तरक्तविनाशिनी ॥ ८४ ॥

लालगदहपूरनाके नाम और गुण ॥

रक्तपुष्पा, शिलाटिका, शोथघ्नी, क्षुद्रवर्षाभू,वृषकेतु और कपिल्लक यह लालगदहपूरनाके नामहैं लालगदहपूरना. तिक्त, पाकमेंकटु, शीतल, हलका, बादी,ग्राही कफ और पित्त तथा रक्तनाशक होताहै ॥ ८४ ॥

अथ गन्धप्रसारणी ॥

प्रसारणीराजबलाभद्रपर्णीप्रतापनी । सरणीसारणीभद्राबलाचापिकटम्भरा॥प्रसारणीगुरुर्वृष्याबलसन्धानकृत्सरा । वीर्योष्णावातहृत्तिक्तावातरक्तकफापहा ॥ ८५ ॥

गन्धप्रसारणी के नाम और गुण ॥

प्रसारिणी,राजबला, भद्रपर्णी, प्रतापनी, सरणी, सारिणी, भद्रा, बला और कटंभरा यह गन्धप्रसारिणीके नामहैं गन्धप्रसारिणी. भारी, वीर्यवर्द्धक, बलकारी, टूटे की जोडनेवाली, दस्तावर, उष्ण,वातनाशक, तिक्त और वात, रक्त तथा कफनाशक होतीहै ॥ ८५॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ करिआबांसा ॥

इन्द्रजम्बूकवत्पत्रासुगन्धाकलघण्टिका । कृष्णातुसारिवाश्यामागोपीगोपवधूश्च सा (गोरियासांउ) इयमपिजम्बूवत्पत्रादुग्धगर्भाव्रततिर्भवति । धवलासारिवागोपी गोपकन्याकृशोदरी ॥ स्फोटाश्यामागोपवल्लीलतास्फोताचचन्दना । गोपीगोपस्यस्त्रीपुं योगादीप् । गोपा गांपातीतिगोपागोपकन्या श्यामापदेनकृष्णाश्वेतापिसारिवाकथ्यते॥ साश्वतेनसारिवापदस्यप्रयुक्तत्वात् (तद्यथा) सारिवायांनिशिश्यामाश्यामौचहरिता सिताविति । सारिवायुगलंस्वादुस्निग्धंशुक्रकरंगुरु ॥ अग्निमान्द्यारुचिश्वासाकासा मविषनाशनम् । दोषत्रयास्त्रप्रदरज्वरातीसारनाशनम् ॥ ८६ ॥

कृष्ण और श्वेतसारिवा (सांई) के नाम और गुण ॥

कालीसारिवा के पत्ते इन्द्रजम्बू (जामन) के समान होतेहैं सुगन्धा, कलघण्टिका, कृष्णा, सारिवा श्यामा गोपी और गोपवधू, यह कालीसारिवा के नामहैं श्वेतसारिवा के भी पत्ते जामन के समान होतेहैं इसका वृक्ष दूधसे भरीहुई लताकी जातिका होताहै धवला, सारिवा, गोपा, गोपकन्या, कृशोदरी, स्फोटा, श्यामा, गोपवल्ली, लता, आस्फोता और चन्दना, यह श्वेत सारिवा के नाम हैं श्यामशब्दसे कृष्ण और श्वेत दोनों सारिवा लीजाती हैं क्योंकि साश्वतने सारिवामात्रमें इसशब्दका प्रयोग कियाहै जैसे सारिवा शब्दमें निशि, श्यामा श्याम हरित और असित, यह कहेजातेहैं दोनों सारिवा मधुर, स्निग्ध, वीर्यवर्द्धक, भारी और मन्दाग्नि, अरुचि, श्वास खांसी, आम विष, त्रिदोष, रक्त दोष, प्रदर, ज्वर तथा अतीसारनाशक होती हैं ॥ ८६ ॥

अथ भंगरा ॥

भृङ्गराजोभृङ्गरजो मार्कवोभृङ्गएवच । अङ्गारकःकेशराजोभृङ्गारःकेशरञ्जनः ॥ भृङ्गारःकटुकस्तीक्ष्णोरूक्षोष्णःकफवातनुत् । केश्यस्त्वच्यःकृमिश्वासकासशोथामपाण्डु नुत् ॥ दन्त्योरसायनोबल्यः कुष्ठनेत्रशिरोर्त्तिनुत् ॥ ८७ ॥

भंगरे के नाम और गुण ॥

भृङ्गराज, भृङ्गरज, मार्कव, भृङ्ग, अङ्गारक, केशराज, भृङ्गार और केशरञ्जन यह भंगरेके नामहैं भंगरा.कटु, तीक्ष्ण, रूखा, उष्ण, कफ वात नाशक, केशोंकोहित, त्वचा को उपकारी, रसायन, बलकारक, दांतों को हित और कृमि, श्वास, खांसी, सूजन, आम, पाण्डु, कुष्ठ, नेत्ररोग तथा शिरके रोगोंका नाशक होताहै ॥ ८७ ॥

शणपुष्पाइति च हुली । शण इव पुष्पा ॥

शणपुष्पीस्मृताघण्टाशणपुष्पसमाकृतिः।शणपुष्पीकटुस्तिक्तावामिनीकफपित्तजित्८८

शणपुष्पी (इसके पुष्प सनके पुष्पके समान होते हैं) के नाम और गुण ॥

शणपुष्पी, घण्टा और शणपुष्पसमाकृति यह शणपुष्पी के नामहैं शणपुष्पी. कटु, तिक्त, छर्द्दिकारक और कफ पित्तनाशक होती है ॥ ८८ ॥

अथ त्रायमाणा ॥

बलभद्रात्रायमाणा त्रायन्तीगिरिसानुजा । त्रायन्तीतुवरातिक्तासरापित्तकफापहा ॥ ज्वरहृद्रोगगुल्मार्शोभ्रमशूलविषप्रणुत् ॥ ८९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रायमाणा (चिरायते के फल) के नाम गुण ॥

बलभद्रा, त्रायमाणा, त्रायन्ती और गिरसानुजा यह त्रायमाणा के नाम हैं त्रायमाणा. कषाय, तिक्त, दस्तावर और पित्त, कफ, ज्वर, हृदयरोग, गुल्म, बवासीर, भ्रम, शूल तथा विषकी नाशक होती है ॥ ८९ ॥

अथ चूर्णहार ॥

मूर्व्वामधुरसादेवी मोरटातेजनीस्रुवा । मधूलिकामधुश्रेणीगोकर्णीपीलुपर्ण्यपि ॥ मूर्व्वासरागुरुस्वादुस्तिक्तापित्तास्रमेहनुत् । त्रिदोषतृष्णाहृद्रोगकण्डूकुष्ठज्वरापहा ॥९०॥

मरोडफली के नाम और गुण ॥

मूर्वा, मधुरसा, देवी, मोरटा, तेजनी स्रुवा, मधूलिका, मधुश्रेणी, गोकर्णी और पीलुपर्णी यह मरोडफली के नाम हैं मरोड़फली. दस्तावर, भारी, मधुर, तिक्त और रक्तपित्त, प्रमेह, त्रिदोष, तृषा, हृदयकेरोग, खुजली, कुष्ठ तथा ज्वरनाशक होती है ॥ ९० ॥

अथ कवैआ ॥

काकमाचीध्वाङ्क्षमाची काकाह्वाचैववायसी । काकमाचीत्रिदोषघ्नी स्निग्धोष्णा स्वरशुक्रदा ॥ तिक्तारसायनीशोथकुष्ठार्शोज्वरमेहजित् । कटुर्नेत्रहिताहिक्काच्छर्दिहृद्रोगनाशिनी ॥ ९१ ॥

मकोह के नाम और गुण ॥

काकमाची. ध्वांक्षमाची, काकाह्वा और वायसी यह मकोह के नाम हैं मकोह. त्रिदोषनाशक, स्निग्ध, उष्ण. स्वरकोहित, वीर्यवर्द्धक, तिक्त, कटु, रसायन, नेत्रोंकोहित और सूजन, कुष्ठ, बवासीर, ज्वर, प्रमेह, हिचकी, छर्दि तथा हृदय के रोगोंकी नाशक होती है ॥ ९१ ॥

कौआठोढ़ी ॥

काकनासातुकाकाङ्गी काकतुण्डफलाचसा । काकनासाकषायोष्णा कटुकारसपाकयोः ॥ कफघ्नीवामनीतिक्ता शोथार्शःश्वित्रकुष्ठहृत् ॥ ९२ ॥

कौआठोडी के नाम और गुण ॥

काकनासा, काकाङ्गी और काकतुण्डफला, यह कौआठोडी के नाम हैं, कौआठोडी. कषाय, उष्ण, रस तथा पाक में कटु, छर्दिकारक, तिक्त और कफ, सूजन, बवासीर तथा श्वेतकुष्ठ नाशक होती है ॥ ९२ ॥

अथ काकजङ्घा मसीतिलोके ॥

काकजङ्घानदीकान्ता काकतिक्तासुलोमशा । पारावतपदीदासी काकाचापिप्रकीर्तिता ॥ काकजङ्घाहिमातिक्ता कषायाकफपित्तजित् । निहन्तिज्वरपित्तास्रज्वरकण्डूविषक्रमीन् ॥ ९३ ॥

काकजङ्घा के नाम और गुण ॥

काकजङ्घा, नदीकान्ता, काकतिक्ता, सुलोमशा, पारावतपदी, दासी और काका यह काकजङ्घाके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नामहैं काकजङ्घा. शीतल, तिक्त, कषाय और कफ, पित्त,ज्वर, रक्तपित्त, घाव, खुजली, विष तथा कृमिनाशक होती है ॥ ९३ ॥

अथ नागपुष्पी ॥

नागपुष्पीश्वेतपुष्पानागिनीरामदूतिका॥ नागिनीरोचनीतिक्ता तीक्ष्णोष्णाकफपित्तनुत्॥ विनिहन्तिविषंशूलं योनिदोषवमिकृमीन् ॥ ९४ ॥

नागपुष्पी के नाम और गुण ॥

नागपुष्पी,श्वेतपुष्पा, नागिनी और रामदूतिका यह नागपुष्पीके नाम हैं नागपुष्पी. रुचिकारक, तिक्त, तीक्ष्ण,उष्ण और कफपित्त,विष, शूल, योनिदोष, छर्दि तथा कृमिनाशक होती है ॥ ९४ ॥

अथ मेढ़ासिङ्गी ॥

मेषशृङ्गीविषाणीस्यान्मेषवल्ल्यजशृङ्गिका । मेषशृङ्गीरसेतिक्ता वातलाश्वासकासहृत् ॥ रूक्षापाकेकटुस्तिक्ताव्रणश्लेष्माक्षिशूलनुत् । मेषशृङ्गीफलंतिक्तंकुष्ठमेहकफप्रणुत्॥ दीपनंस्रंसनंकासकृमिव्रणविषापहम् ॥ ९५ ॥

मेढ़ासिंगी के नाम और गुण ॥

मेषशृङ्गी विषाणी मेषवल्ली और अजशृङ्गिका यह मेढ़ासिंगी के नाम हैं मेढ़ासिंगी.तिक्त, बादी, रूखी, पाकमें कटु और श्वास, खांसी, कुष्ठ, घाव, कफ तथा नेत्रकी पीडाकी नाशक होती है मेढ़ासिंगी का फल. तिक्त, दीपन, स्रंसन और कुष्ठ, प्रमेह, कफ, खांसी, कृमि, घाव तथा विषदोष नाशक होताहै ॥ ९५ ॥

अथ हंसपदी ॥

हंसपादीहंसपदी कीटमातात्रिपादिका । हंसपादीगुरुःशीता हन्तिरक्तविषव्रणान् ॥ विसर्पदाहातीसारलूताभूताग्निरोहिणीः ॥ ९६ ॥

हंसपदी के नाम और गुण ॥

हंसपादी, हंसपदी, कीटमाता और त्रिपादिका यह हंसपदी के नाम हैं हंसपदी. भारी, शीतल और रक्तदोष विष, घाव, वीसर्प, दाह, अतीसार, मकड़ी, भूतदोष तथा अग्निरोहिणीरोग को नाशकरतीहै ॥ ९६ ॥

अथ सोमलता ॥

सोमवल्लीसोमलता सोमक्षीरीद्विजप्रिया । सोमवल्लीत्रिदोषघ्नी कटुस्तिक्तारसायनी ॥ ९७ ॥

सोमलता के नाम और गुण ॥

सोमवल्ली ,सोमलता, सोमक्षीरी और द्विजप्रिया यह सोमलता के नामहैं सोमलता. त्रिदोषनाशक, कटु, तिक्त और रसायन होती है ॥ ९७ ॥

अथ आकाशवल्ली ॥

(अमरवेलि इति च) आकाशवल्लीतुबुधैः कथितामरवल्लरी। खवल्लीग्राहिणीतिक्ता पिच्छिलाक्ष्मामयापहा ॥ तुवराग्निकरीहृद्या पित्तश्लेष्मामनाशिनी ॥ ९८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अमरवेल के नाम और गुण ॥

आकाशवल्ली और अमरवल्लरी यह अमरवेलके नामहैं अमरवेल. ग्राही, तिक्त, पिच्छिल, कषाय, अग्निवर्द्धक हृदयको हित और नेत्ररोग, पित्त, कफ तथा आमनाशक होतीहै ॥ ९८ ॥

अथ पातालगरुडी ॥

छिलिहिण्टोमहामूलःपातालगरुडाह्वयः। छिलिहिण्टःपरंवृष्यःकफघ्नःपवनापहः ९९

पातालगरुडी के नाम और गुण ॥

छिलिहिण्ट महामूल और पातालगरुडी यह नामहैं पातालगरुडी. अत्यन्त वीर्यवर्द्धक और कफ तथा वायुनाशक होतीहै ॥ ९९ ॥

अथ वन्दा ॥

वन्दावृक्षादनीवृक्षभक्ष्यावृक्षरुहापिच। वन्दाकःस्याद्धिमस्तिक्तःकषायोमधुरोरसे ॥ माङ्गल्यःकफवातास्रर‌क्षोव्रणविषापहः ॥ १०० ॥

बांदा के नाम और गुण ॥

वन्दा वृक्षादनी वृक्षभक्ष्या और वृक्षरुहा यह बांदाके नामहैं बांदा. शीतल, तिक्त, कषाय, मधुर, मङ्गलकारी और कफ, वात, रक्तदोष, राक्षसों की पीडा, घाव तथा विषनाशक होताहै ॥ १०० ॥

अथ वटपत्री ॥

वटपत्रीतुकथितामोहिनीरेचनीबुधैः। वटपत्रीकषायोष्णा योनिमूत्रगदापहा १०१ ॥

वटपत्रीके नाम और गुण॥

वटपत्री को पण्डितलोग मोहिनी और रेचनी कहतेहैं वटपत्री. कषाय, उष्ण और योनि तथा मूत्रके रोगोंको नाश करती है ॥ १०१ ॥

अथ हिंगुपत्री ॥

हिंगुपत्रीतु कवरीपृथ्वीकापृथुकापृथुः ॥ हिंगुपत्रीभवेद्रुच्यातीक्ष्णोष्णापाचनीकटुः। हृद्बस्तिरुग्विबन्धार्शः श्लेष्मगुल्मानिलापहा ॥ १०२ ॥

हिङ्गुपत्री के नाम और गुण ॥

हिंगुपत्री कवरी पृथ्वीका पृथुका और पृथु यह हिंगुपत्री के नामहैं हिंगुपत्री. रुचिकारक, तीक्ष्ण, उष्ण, पाचक, कटु और हृदयके रोग, मूत्राशयके रोग, विबन्ध, बवासीर, कफ, गुल्म तथा वायु-नाशक होती है ॥ १०२ ॥

अथ वंशपत्री ॥

वंशपत्रीवेणुपत्रीपिण्डाहिंगुशिवाटिका। हिंगुपत्रीगुणाविज्ञैर्वंशपत्रीचकीर्तिता ॥ १०३ ॥

वंशपत्री के नाम और गुण ॥

वंशपत्री वेणुपत्री पिण्डा और हिंगु शिवाटिका यह पत्रीके नामहैं वंशपत्री हिंगुपत्रीकेसमान गुण-दायक होतीहै ॥ १०३ ॥

अथ मत्स्याक्षी ॥

मत्स्याक्षीवाह्लिकामत्स्यगन्धामत्स्यादनी मछेछीइतिलोके। छछमछरिआइतिच ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तिच। मत्स्याक्षीग्राहिणीशीताकुष्ठपित्तकफास्रजित् ॥ लघुस्तिक्ताकषायाचस्वाद्वीकटुविपाकिनी ॥ १०४ ॥

मत्स्याक्षी (छछमछरिया या मछेछी)
के नाम और गुण ॥

मत्स्याक्षी, वाह्लिका, मत्स्यगन्धा और मत्स्यादनी यह मत्स्याक्षी के नामहैं मत्स्याक्षी. ग्राही, शीतल, हलकी, तिक्त, कषाय, मधुर, पाकमें कटु और कुष्ठ, पित्त, कफ तथा रक्तदोषनाशक होतीहै ॥ १०४ ॥

अथ सरहटीगण्डनीतिच ॥

सर्पाक्षीस्यात्तुगण्डालीतथानाडीकपालकः। सर्पाक्षीकटुकातिक्तासोष्णाकृमिनिकृन्तनी ॥ वृश्चिकोन्दुरसर्पाणांविषघ्नीव्रणरोपिणी ॥ १०५ ॥

सर्पाक्षीके नाम और गुण ॥

सर्पाक्षी, गण्डाली और नाडीकपालक यह सर्पाक्षीके नामहैं सर्पाक्षी. कटु, तिक्त, उष्ण, घावभरनेवाली, कृमिनाशक और बिच्छू, मूस तथा सर्पके विषकी नाशक होती है ॥ १०५ ॥

अथ शङ्खपुष्पी ॥

शङ्खपुष्पीतुशङ्खाह्वामाङ्गल्यकुसुमापिच। शङ्खपुष्पीसरामेध्यावृष्यामानसरोगहृत् ॥ रसायनीकषायोष्णास्मृतिकांतिबलाग्निदा। दोषापस्मारभूताश्रीकुष्ठकृमिविषप्रणुत् १०६

शङ्खपुष्पी के नाम और गुण ॥

शङ्खपुष्पी, शङ्खाह्वा और माङ्गल्यकुसुमा यह शङ्खपुष्पी के नामहैं शङ्खपुष्पी. दस्तावर, मेधाको हित, आयुको हित, उष्ण, रसायन, कषाय, स्मृति, कान्ति, बल तथा अग्निवर्द्धक और मानसिक रोग, त्रिदोष, मृगी, भूतदोष, अलक्ष्मी, कुष्ठ, कृमि तथा विषकी नाशक होती है ॥ १०६ ॥

अथ अर्कपुष्पी ॥

अर्कपुष्पीक्रूरकर्मापयस्याजलकामुका। अर्कपुष्पीकृमिश्लेष्ममेहपित्तविकारजित् १०७॥

अर्कपुष्पी के नाम और गुण ॥

अर्कपुष्पी, क्रूरकर्मा, पयस्या और जलकामुका यह अर्कपुष्पी के नामहैं अर्कपुष्पी. कृमि, कफ, प्रमेह और पित्तके विकारों की नाशक होती है ॥ १०७ ॥

अथ लज्जालुः ॥

लज्जालुःस्याच्छमीपत्रासमङ्गाजलकारिका। रक्तपादीनमस्कारीनाम्नाखदिरकेत्यपि ॥ लज्जालुःशीतलातिक्ताकषायाकफपित्तजित्। रक्तपित्तमतीसारंयोनिरोगान्विनाशयेत् ॥ १०८ ॥

लज्जालू के नाम और गुण ॥

लज्जालु, शमीपत्रा, समङ्गा, जलकारिका, रक्तपादी, नमस्कारी और खदरिका यह लज्जालू के नाम हैं लज्जालू. शीतल, तिक्त, कषाय, और कफपित्त, रक्तपित्त, अतीसार तथा योनिरोगनाशक होतीहै ॥ १०८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लज्जालूभेदः अलम्बुषा ॥

अलम्बुषाखरत्वक्च तथामेदोगलास्मृता। अलम्बुषा लघुः स्वादुः कृमिपित्तकफापहा ॥ १०९ ॥

लज्जालू का भेद अलम्बुषाके नाम और गुण ॥

अलम्बुषा, खरत्वक् और मेदागला यह अलम्बुषा के नामहैं अलम्बुषा. हलकी, मधुर और कृमि, कफ तथा पित्तनाशक होती है ॥ १०९ ॥

अथ दूधी ॥

दुग्धिकास्वादुपर्णीस्यात्क्षीराविक्षीरिणीतथा। दुग्धिकोष्णागुरूरूक्षावातलागर्भकारिणी ॥ स्वादुक्षीराकटुस्तिक्तासृष्टमूत्रमलापहा । स्वादुर्विष्टम्भिनीवृष्याकफकुष्ठकृमिप्रणुत् ॥ ११० ॥

दूधीके नाम और गुण ॥

दुग्धिका, स्वादुपर्णी, क्षीरा और विक्षीरिणी यह दूधी के नामहैं दूधी. उष्ण, भारी, रूखी, बादी, गर्भकारक, स्वादिष्ठ दुग्धवाली, कटु, तिक्त, मधुर, मलमूत्रकी निकालनेवाली, विष्टंभी, वीर्यवर्द्धक और कफ, कुष्ठ तथा कृमिनाशक होती है ॥ ११० ॥

अथ भुइआंवला ॥

भूम्यामलकिकाप्रोक्ताशिवातामलकीतिच। बहुपत्राबहुफलाबहुवीर्य्याजटापिच। भूधात्रीवातकृत्तिक्ताकषायामधुराहिमा। पिपासाकासपित्तास्रकफपाण्डुक्षतापहा॥ १११ ॥

भुइँआमलेके नाम और गुण ॥

भूम्यामलकिका, शिवा, तामलकी, बहुपत्रा, बहुफला, बहुवीर्या और अजटा यह भुइँआमले के नाम हैं भुइँआमला. बादी, तिक्त, कषाय, मधुर, शीतल और तृषा, खांसी, रक्तपित्त, कफ, पांडु तथा क्षतनाशक होताहै ॥ १११ ॥

अथ ब्राह्मी ब्रह्ममाण्डूकी ॥

ब्राह्मीकपोतवङ्काचसोमवल्लीसरस्वती ॥ मण्डूकपर्णीमाण्डूकी त्वाष्ट्री दिव्यामहौषधी ॥ ब्राह्मीहिमासरातिक्तालघुर्मेध्याचशीतला ॥ कषायामधुरास्वादुपाकायुष्यारसायनी । स्वर्य्यास्मृतिप्रदाकुष्ठपाण्डुमेहास्रकासजित् ॥ विषशोथज्वरहरीतद्वन्मण्डूकपर्णिनी ॥ ११२ ॥

ब्राह्मी और ब्रह्ममाण्डूकी के नाम और गुण ॥

ब्राह्मी कपोतवङ्का सोमवल्ली और सरस्वती यह ब्राह्मी के नामहैं मण्डूकपर्णी माण्डूकी त्वाष्ट्री दिव्या और महौषधी यह ब्रह्ममाण्डूकी के नामहैं ब्राह्मी. दस्तावर, वीर्य में शीतल, तिक्त, कषाय, मधुर, हलकी, मेधाको हित, शीतल, पाकमें मधुर, आयुको हित, रसायन, स्वरको हित, स्मृतिदायक और कुष्ठ, पाण्डु, प्रमेह, रक्तदोष, खांसी, विष, सूजन तथा ज्वरनाशक होती है ब्रह्ममाण्डूकी में भी इसी के समान गुणहोते हैं ॥ ११२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ गूमा ॥

द्रोणाचद्रोणपुष्पीचफलेपुष्पाचकीर्त्तिता।द्रोणपुष्पीगुरुःस्वादूरूक्षोष्णावातपित्तकृत् । स तीक्ष्णलवणास्वादुपाकाकट्वीचभेदिनी।कफामकामलाशोथतमकश्वासजन्तुजित् ११३॥

गूमाके नाम और गुण ॥

द्रोणा, द्रोणपुष्पी और फलेपुष्पा यह गूमा के नामहैं गूमा. भारी, लवण, मधुर, कटु, रूखा, उष्ण, बादी, पित्तवर्द्धक, तीक्ष्ण, पाकमें मधुर, भेदक और कफ, आम, कामला, सूजन, तमकश्वास तथा कृमिनाशक होताहै ॥ ११३ ॥

अथ हुरहुरद्वितीयहुरहुर ॥

सुवर्च्चलासूर्य्यभक्तावरदाबदरापिच । सूर्य्यावर्त्तारविप्रीताऽपराब्रह्मसुवर्च्चला॥ सुवर्च्चलाहिमारूक्षास्वादुपाकासरागुरुः । अपित्तलाकटुःक्षाराविष्टम्भकफवातजित् ॥ अन्यातिक्ताकषायोष्णासरारूक्षालघुःकटुः । निहन्तिकफपित्तास्रश्वासकासारुचिज्वरान् ॥ विस्फोटकुष्ठमेहास्रयोनिरुक्कृमिपाण्डुताः ॥ ११४ ॥

दोनों प्रकार के हुरहुर के नाम और गुण ॥

सुवर्चला, सूर्य्यभक्ता, वरदा, बदरा, सूर्य्यावर्ता और रविप्रीता यह हुरहुर के नामहैं और दूसरे प्रकारके हुरहुर को ब्रह्मसुवर्चला कहते हैं हुरहुर. शीतल, रूखा, पाक में मधुर,दस्तावर,भारी, पित्तको न करनेवाली, क्षार, कटु और विष्टंभ, कफ तथा वातको नाशकरतीहै और दूसरे प्रकारकी हुरहुर. तिक्त, कषाय, उष्ण, दस्तावर, रूखी, हलकी, कटु और कफ, पित्त, रक्तदोष, श्वास, खांसी, अरुचि, ज्वर, विस्फोट, कुष्ठ, प्रमेह, रक्तपित्त, योनिरोग, कृमि तथा पांडुनाशक होतीहै ॥ ११४ ॥

अथ बांझखखसा ॥

बन्ध्याकर्कोटकीदेवीकन्यायोगीश्वरीतिच ।नागारिर्नक्रदमनीविषकण्टकिनीतथा ॥ बन्ध्याकर्कोटकीलघ्वीकफनुद्व्रणशोधिनी । सर्पदर्पहरीतीक्ष्णाविसर्पविषहारिणी ११५ ॥

बांझखखसा के नाम और गुण ॥

बन्ध्याकर्कोटकी, देवी, कन्या, योगीश्वरी, नागारि, नक्रदमनी और विषकंटकिनी यह बांझखखसा के नामहैं बांझखखसा. हलका, घावको शोधक,तीक्षण और कफ, सर्पकाविष विसर्प तथा विषनाशक होताहै ॥ ११५ ॥

अथ भुइखखसा वल्लीभूमिप्रसरणशीला ॥

मार्कण्डिकाभूमिवल्लीमार्कण्डीमृदुरेचनी । मार्कण्डिकाकुष्ठहरी ऊर्ध्वाधःकायशोधिनी ॥ विषदुर्गन्धकासघ्नीगुल्मोदरविनाशिनी ॥ ११६ ॥

भुइँखखसा के नाम और गुण ॥

मार्कण्डिका,भूमिवल्ली,मार्कण्डी और मृदुरेचनी यह भुइँखखसाकेनामहैं भुइँखखसा.वमन,विरेचन के द्वारा ऊपर नीचे के शरीरका शुद्ध करनेवाला और कुष्ठ, विष, दुर्गन्धि, खांसी, गुल्म तथा उदररोगनाशक होताहै ॥ ११६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ देवदालीसोनैआखखसावत् फलव्रततिः ॥

देवदालीतुवेणीस्यात् कर्कटीचगरागरी। देवताडीवृत्तकोशस्तथाजीमूतइत्यपि॥ पीतपराखरस्पर्शाविषघ्नीगरनाशिनी। देवदालीरसेतिक्ताकफार्शःशोफपाण्डुताः॥नाशयेत् वामनीतिक्ताक्षयहिक्काकृमिज्वरान्। देवदालीफलंतिक्तंकृमिश्लेष्मविनाशनम्॥ स्रंसनं गुलमशूलघ्नमर्शोघ्नंवातजित्परम्॥११७॥

सुनैया (खकसा के समान फलवाली लता) के नाम और गुण ॥

देवदाली, वेणी, कर्कटी, गरागरी, देवताण्डी वृत्तकोश और जीमूत यह सुनैयाके नामहैं पीतवर्ण की दूसरी सुनैयाको खरस्पर्शा, विषघ्नी और गरनाशिनी कहते हैं सुनैया. रसमें तिक्त, छर्दिकारक, तीक्ष्ण और कफ,बवासीर, सूजन, पांडु,क्षय, हिचकी, कृमि तथा ज्वरनाशक होती है सुनैयाका फल. तिक्त, स्रंसन और कफ, कृमि, गुल्म, श्वास, शूल, बवासीर तथा अत्यन्त वातनाशक होताहै ११७॥

अथ जलपिप्पली पानिसगाइतिलोके ॥

जलपिप्पल्यभिहिताशारदीशकुलादनी। मत्स्यादनीमत्स्यगन्धालाङ्गलीत्यपिकीर्त्तिता॥ जलपिप्पलिकाहृद्याचक्षुष्याशुक्रलालघुः। संग्राहिणीहिमारूक्षारक्तदाहव्रणापहा॥ कटुपाकरसारुच्याकषायावह्निवर्द्धिनी॥ ११८॥

जल पीपल के नाम और गुण ॥

जलपिप्पली, शारदी, शकुलादनी, मत्स्यादनी, मत्स्यगंधा और लांगली यह जलपीपलके नामहैं जलपीपल. हृदयको हित, नेत्रोंकोहित, वीर्यवर्द्धक, हलकी, ग्राही, शीतल, रूखी, रस तथा पाक में कटु, रुचिकारक, कषाय,अग्निवर्द्धक और रक्तदोष, दाह तथा घाव की नाशक होती है ११८॥

अथ गोभी ॥

गोजिह्वागोजिकागोभीदार्विकाखरपर्णिनी॥गोजिह्वावातलाशीताग्राहिणीकफपित्तनुत्॥ हृद्याप्रमेहकासास्रव्रणज्वरहरीलघुः। कोमलातुवरातिक्तास्वादुपाकरसास्मृता॥११९॥

गावजबाँके नाम और गुण ॥

गोजिह्वा, गोजिका, गोभी, दार्विका और खरपर्णिनी यह गोभी के नामहैं गोभी. बादी, शीतल, ग्राही, हृदयको हित,हलकी, कषाय, तिक्त, मधुर, पाकमें मधुर और प्रमेह, खांसी, रक्तदोष तथा ज्वर नाशक होताहै ११९॥

अथ नागदमनी ॥

बलामोटाविषापहा। नागपुष्पीनागपत्रामहायोगेश्वरीतिच। विज्ञेयानागदमनी बलामोटाकटुस्तिक्तालघुःपित्तकफापहा। मूत्रकृच्छ्रव्रणान्रक्षोनाशयेज्जालगर्दभम्। सर्वग्रहप्रशमनीनिश्शेषविषनाशिनी। जयंसर्वत्रकुरुतेधनदासुमतिप्रदा॥१२०॥

नागदमनके नाम और गुण ॥

नागदमनी,बलामोटा, विषापहा, नागपुष्पी, नागपत्रा और महायोगेश्वरी यह नागदमनके नाम हैं नागदमनी.कटु, तिक्त, हलकी, सर्वत्र जयदायक, धन देनेवाली, सुबुद्धिदायक और पित्त, कफ,मूत्रकृच्छ्र घाव,राक्षसोंकीपीडा,जालगर्दभ,सर्वग्रहपीडानिवारक तथा अत्यन्त विषनाशक होतीहै १२०॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ वरवेल ॥

वेल्लंतरोजगतिवीरतरुःप्रसिद्धःश्वेतासितारुणविलोहितनीलपुष्पः । स्याज्जातितुल्यकुसुमःशमिसूक्ष्मपत्रः स्यात्कण्टकीविजलदेशजएषवृक्षः ॥ वेल्लंतरोरसेपाकेतिक्तस्तृष्णाकफापहः । मूत्राघाताश्मजिद्ग्राहीयोनिमूत्रानिलार्त्तिजित् ॥ १२१ ॥

वरवेलके नाम और गुण ॥

वेल्लंतर जगत् में वीरतरु नाम से प्रसिद्ध है इसके पुष्प श्वेत कृष्ण कुछ लाल लाल और नील वर्ण के होते हैं पुष्पों का आकार चमेलीके समान होता है पत्ते छोंकर के समान सूक्ष्म होते हैं यह वृक्ष जलरहित स्थान में उत्पन्न होता है और कांटेवाला होता है वरवेल. रस तथा पाकमें तिक्त, ग्राही और तृषा, कफ, मूत्राघात, पथरी, योनिरोग, मूत्ररोग तथा वातरोग नाशक होताहै ॥ १२१ ॥

छिक्कनी ॥

छिक्कनीक्षवकृत्तीक्ष्णाछिक्किकाघ्राणदुःखदा । छिक्कनीकटुकारुच्यातीक्ष्णोष्णावह्निपित्तकृत् ॥ वातरक्तहरीकुष्ठकृमिवातकफापहा ॥ १२२ ॥

नकछिकनी के नाम और गुण ॥

छिक्कनी,क्षवकृत्,तीक्ष्णा,छिक्किका और घ्राणदुःखदा यह नकछिकनी केनामहैं नकछिकनी. कटु,रुचिकारक,तीक्ष्ण,उष्ण,अग्निवर्द्धक,पित्तकारक और वातरक्त,कुष्ठ,कृमि,वात तथा कफनाशकहोतीहै १२२

अथ कुकुन्दरः ॥

कुकुन्दरस्ताम्रचूडः सूक्ष्मपत्रोमृदुच्छदः । कुकुन्दरःकटुस्तिक्तोज्वररक्तकफापहः ॥ तन्मूलमार्द्रंनिःक्षिप्तंवदनेमुखशोषहृत् ॥ १२३ ॥

कुकुरोंदेके नाम और गुण ॥

कुकुन्दर, ताम्रचूर, सूक्ष्मपत्र और मृदुच्छद यह कुकुरोंदा के नाम हैं यह कटु, तिक्त और ज्वर, रक्तदोष तथा कफनाशक होताहै कुकुरोंदेकी गीली जड़ मुखमें रखनेसे मुखका सूखना मिटताहै ॥ १२३॥

अथ सुदर्शनः ॥

सुदर्शनासोमवल्लीचक्राह्वामधुपर्णिका।सुदर्शनास्वादुरुष्णाकफशोफास्रवातजित् १२४

सुदर्शनके नाम और गुण ॥

सुदर्शना, सोमवल्ली, चक्राह्वा और मधुपर्णिका यह सुदर्शनके नाम हैं सुदर्शन. मधुर, उष्ण और कफ, सूजन तथा वात रक्त नाशक होताहै ॥ १२४ ॥

अथ मूसाकर्णी ॥

आखुकर्णीत्वाखुकर्णपर्णिकाभूदरीभवा । आखुकर्णीकटुस्तिक्ताकषायाशीतलालघुः॥ विपाकेकटुकामूत्रकफामयकृमिप्रणुत् ॥ १२५ ॥

मूसाकर्णीके नाम और गुण ॥

आखुकर्णी,आखुकर्णपर्णिका और भूदरीभवा यह मूसाकर्णी के नाम हैं यह कटु, तिक्त, कषाय, शीतल, लघु, पाकमें कटु और मूत्र, कफ तथा कृमिरोग नाशक होतीहै ॥ १२५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ मयूरशिखा ॥

मयूराङ्कशिखाप्रोक्ता सहस्राहिर्म्मधुच्छदा । नीलकण्ठशिखालघ्वी पित्तश्लेष्मातिसारजित् ॥ १२६ ॥

इति भावप्रकाशेगुडूच्याादिवर्गः ॥

मोरशिखाके नाम और गुण ॥

मयूराङ्कशिखा सहस्राहि और मधुच्छदा यह मोरशिखा के नाम हैं यह हलकी और पित्त, कफ तथा अतीसार नाशक होती है ॥ १२६ ॥

इति भावप्रकाशस्थभाषानुवादेगुडूच्यादिवर्गः ॥

अथ पुष्पवर्गः । तत्रादौकमलस्यनामानिगुणाश्च ॥

वापुंसिपद्मंनलिनमरविन्दंमहोत्पलम् । सहस्रपत्रंकमलं शतपत्रंकुशेशयम् ॥ पङ्केरुहन्तामरसं सारसीसरसीरुहम् । बिसप्रसूनराजीवपुष्कराम्भोरुहाणिच ॥ कमलंशीतलंवर्ण्यं मधुरंकफपित्तजित् । तृष्णादाहास्रविस्फोटविषवीसर्पनाशनम् ॥ विशेषतःसितंपद्मंपुण्डरीकमितिस्मृतम् । रक्तंकोकनदंज्ञेयं नीलमिन्दीवरंस्मृतम् ॥ धवलंकमलंशीतं मधुरंकफपित्तजित् । तस्मादल्पगुणंकिञ्चिदन्यद्रक्तोत्पलादिकम् ॥ १ ॥

अथ पुष्पवर्गः ॥

कमल के नाम और गुण ॥

पद्म, नलिन, अरविन्द, महोत्पल, सहस्रपत्र, कमल, शतपत्र, कुशेशय, पंकेरुह, तामरस, सारस, सरसीरुह, बिसप्रसून, राजीव पुष्कर और अम्भोरुह यह कमलके नामहैं यह सब शब्द पुल्लिंग और नपुंसकलिंगहैं कमल.शीतल, वर्णकोहित, मधुर और कफ, पित्त, तृषा, दाह, रक्तदोष, विस्फोट, विष तथा वीसर्पनाशक होता है श्वेत कमलको पुण्डरीक लालको कोकनद और नीलको इन्दीवर कहते हैं श्वेतकमल शीतल मधुर और कफ पित्त नाशक होताहै और लालकमलादिक इसकी अपेक्षा कुछ कम गुणवाले होतेहैं ॥ १ ॥

अथ पद्मिनी ॥

मूलनालदलोत्फुल्लफलैःसमुदितापुनः । पद्मिनीप्रोच्यतेप्राज्ञैर्बिसिन्यादिचसास्मृता ॥ आदिशब्दान्नलिनीकमलिनीत्यादि ॥ पद्मिनीशीतलागुर्व्वी मधुरालवणाचसा । पित्तासृक्कफनुद्रूक्षावातविष्टम्भकारिणी ॥ २ ॥

कमलिनी के नाम और गुण ॥

मूल नाल और पत्ते इन सब समेत कमल के पुष्पको पण्डितलोग पद्मिनी कहते हैं विसिनी नलिनी और कमलिनी आदिक उसके नामहैं कमलिनी.शीतल, भारी, मधुर, लवण, रक्त पित्त नाशक कफघ्न, रूखी, बादी और विष्टंभकारक होतीहै ॥ २ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ नवपत्रादि ॥

सम्वर्त्तिकानवदलंबीजकोशस्तुकर्णिका। किञ्जल्कःकेशरःप्रोक्तोमकरन्दोरसःस्मृतः॥ पद्मनालंमृणालंस्यात्तथाबिसमितिस्मृतम्। सम्वर्त्तिकाहिमातिक्ताकषायादाहतृट्प्रणुत्॥ मूत्रकृच्छ्रगुदव्याधिरक्तपित्तविनाशिनी। पद्मस्यकर्णिकातिक्ताकषायामधुराहिमा॥ मुखवैशद्यकृल्लघ्वीतृष्णास्रकफपित्तनुत्। किञ्जल्कःशीतलोवृष्यःकषायोग्राहकोऽपिसः॥ कफपित्ततृषादाहरक्तार्शोविषशोथजित्। मृणालंशीतवृष्यंपित्तदाहास्रजिद्गुरु। दुर्ज्जरंस्वादुपाकञ्चस्तन्यानिलकफप्रदम्। संग्राहिमधुरंरूक्षं शालूकमपितद्गुणम्॥ ३॥

कमल के नवीन पत्ते आदिकोंके नाम और गुण॥

कमल के नवीन पत्तों को सम्बार्त्तिका बीजकोश को कर्णिका केशरको किंजल्क रसको मकरन्द और नालको मृणाल तथा बिस कहते हैं कमलके नवीन पत्ते-शीतल, तिक्त, कषाय और दाह, तृषा, मूत्रकृच्छ्र,गुदा के रोग तथा रक्त पित्त नाशक होते हैं कमलकीकर्णिका (जिसमें बीज होते हैं) तिक्त कषाय मधुर शीतल मुखको सुस्वादु करनेवाली हलकी और तृषा रक्तदोष कफ तथा पित्तनाशक होतीहै कमलकी केशर शीतल वीर्यवर्द्धक कषाय ग्राही और कफ पित्त तृषा दाह रक्तदोष बवासीर विष तथा सूजन की नाशक होती है कमलकीडंडी-शीतल वीर्यवर्द्धक भारी देरमें पचनेवाली, पाक में मधुर दुग्धवर्द्धक, बादी, कफकारक, ग्राही, मधुर तथा रूखी होती है कमल की जडमें भी डण्डी के समान गुण होताहै॥ ३॥

अथ स्थलकमलम्॥

पद्मचारिण्यतिचराव्यथापद्माचशारदा। पद्मानुष्णाकटुस्तिक्ता कषायाकफवातजित्॥ मूत्रकृच्छ्राश्मशूलघ्नी श्वासकासविषापहा॥ ४॥

स्थलकमलके नाम और गुण॥

पद्मचारिणी, अतिचरा, अव्यथा, पद्मा और शारदा यह स्थलकमलकेनामहैं स्थलकमल. कुछ उष्ण, कटु, तिक्त, कषाय और कफ, वात, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, शूल, श्वास, खांसी तथा विषनाशकहोताहै॥४॥

अथ कुमुदिनी कोई इतिलोके॥

श्वेतंकुवलयंप्रोक्तंकुमुदंकैरवंतथा। कुमुदंपिच्छिलंस्निग्धं मधुरंह्लादिशीतलम्॥ ५॥

कुमुदकोकाबेलीके नाम और गुण॥

श्वेत, कुमुदको कुवलय और कैरव कहते हैं कुमुद. पिच्छिल, स्निग्ध, मधुर, आनन्ददायक और शीतल होताहै॥ ५॥

अथ कुमुद॥

कुमुद्वतीकैरविकातथाकुमुदिनीतिच। सातुमूलादिसर्वाङ्गैरुक्तासमुदिताबुधैः॥ पद्मिन्यायेगुणाःप्रोक्ताकुमुदिन्याश्चतेस्मृताः॥ ६॥

कुमुदिनीके नाम और गुण॥

कुमुद्वती कैरविका और कुमुदिनी यह नामहैं पण्डितलोग मूल आदि सर्वाङ्ग युक्त कुमुद को कुमुदिनी कहतेहैं कमलनी के जो गुण कहेगये हैं वही कुमुदिनी में भी होते हैं॥ ६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ जलकुम्भीसेवार ॥

वारिपर्णीकुम्भिकास्याच्छैवालंशैवलञ्चतत् । वारिपर्णीहिमातिक्तालघ्वीस्त्राद्वीसरा कटुः ॥ दोषत्रयहरीरूक्षाशोणितज्वरशोषकृत् । शैवालंतुवरंतिक्तंमधुरंशीतलंलघु ॥ स्निग्धंदाहतृषापित्तरक्तज्वरहरंपरम् ॥ ७ ॥

पुरइन और शिवारके नाम और गुण ॥

वारिपर्णी और कुम्भिका यह पुरइनके नाम हैं शैवाल और शैवल यह शिवारके नामहैं पुरइन. शीतल, तिक्त, हलकी, मधुर, दस्तावर, कटु, रूखी और त्रिदोष, रक्तज्वर तथा शोष नाशक होतीहै शिवार. कषाय, तिक्त, मधुर, शीतल, हलका, स्निग्ध और दाह, तृषा, रक्तपित्त तथाज्वरनाश रुहोताहै ७॥

अथ सेवती गुलाब इतिच ॥

शतपत्रीतरुण्युक्ताकर्णिकाचारुकेशरा। महाकुमारीगन्धाढ्यालाक्षाकृष्णातिमञ्जुला॥ शतपत्रीहिमाहृद्याग्राहिणीशुक्रलालघुः। दोषत्रयास्रजिद्वर्ण्यातिक्ताकट्वीचपाचनी ८ ॥

सेवती गुलाब के नाम और गुण ॥

शतपत्री, तरुणी, कर्णिका, चारुकेशरा, महाकुमारी, गन्धाढ्या, लाक्षा, कृष्णा और अतिमञ्जुला यह सेवती गुलाबके नाम हैं सेवतीगुलाब. शीतल, हृदयको हित, ग्राही, वीर्य्यवर्द्धक, हलका, त्रिदोष नाशक, रक्तदोषनाशक, वर्णकोहित, तिक्त, कटु और पाचक होताहै ॥ ८ ॥

अथ वसन्ती नेवारिइतिलोके ॥

नैपालीकथितातज्ज्ञैःसप्तलानवमालिका । वासन्तीशीतलालघ्वीतिक्तादोषत्रयास्र जित् ॥ ९ ॥

नेवारी के नाम और गुण ॥

नैपाली, सप्तला और नवमालिका यह नेवारी के नामहैं नेवारी. शीतल, हलकी, तिक्त और त्रिदोष तथा रक्तदोषनाशक होती है ॥ ९ ॥

अथवा वार्षिकी बेल इति लोके ॥

श्रीपदीषट्पदानन्दावार्षिकीमुक्तबन्धना। वार्षिकीशीतलालघ्वीतिक्तादोषत्रयापहा ॥ कर्णाक्षिमुखरोगघ्नीतत्तैलंतद्गुणंस्मृतम् ॥ १० ॥

बर्साती बेलके नाम और गुण ॥

श्रीपदी, षट्पदानन्दा, वार्षिकी और मुक्तबन्धना यह बर्साती बेलके नाम हैं बर्सातीबेल. शीतल, हलकी, तिक्त, त्रिदोषनाशक और कर्ण नेत्र तथा मुखरोगनाशक होती है इसके तेल में भी इसी के समान गुण होते हैं ॥ १० ॥

अथ चमेली स्वर्णजाती ॥

जातिर्जातीचसुमनामालतीराजपुत्रिका। चेतिकाहृद्यगन्धाचसापीतास्वर्णजातिका ॥ जातीयुगंतिक्तमुष्णंतुवरंलघुदोषजित्। शिरोक्षिमुखदन्तार्त्तिविषकुष्ठानिलास्रजित ११ ॥

चमेली और पीलीचमेली के नाम और गुण ॥

जाति, जाती, सुमना, मालती, राजपुत्रिका, चेतकी और हृद्यगन्धा यह चमेलीकेनामहैं और पीली चमेलीको स्वर्णजाति कहतेहैं यह दोनों प्रकार की चमेली तिक्त, उष्ण, कषाय, हलकी और त्रिदोष,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिरकी पीडा, नेत्ररोग, मुखरोग, दन्तरोग, विष, कुष्ठ, वात तथा रक्तदोषनाशक होती है ॥ ११ ॥

अथ जुही सुवर्णजुही ॥

यूथिकागणिकाम्बष्ठासापीताहेमपुष्पिका । यूथीयुगंहिमंतिक्तंकटुपाकरसंलघु ॥ मधुरंतुवरंहृद्यंपित्तघ्नंकफवातलम् । व्रणास्रमुखदन्ताक्षिशिरोरोगविषापहम् ॥ १२ ॥

जूही और पीलीजूही के नाम व गुण ॥

यूथिका गणिका और अम्बष्ठा यह जूही के नामहैं पीली जूहीको हेमपुष्पिका कहते हैं यह दोनों जूही. शीतल, तिक्त, पाकमें कटु, रसमेंकटु, हलकी, मधुर, कषाय, हृदयकोहित, पित्तनाशक, कफवर्द्धक, बादी और घाव, रक्तदोष, मुखरोग, दन्तव्याधि, नेत्ररोग, शिरकी पीडा तथा विषनाशक होती है ॥ १२ ॥

अथ चम्पा ॥

चाम्पेयश्चम्पकःप्रोक्तोहेमपुष्पश्चसस्मृतः एतस्यकलिकागन्धफलीतिकथिताबुधैः ॥ चम्पकःकटुकस्तिक्तःकषायोमधुरोहिमः । विषकृमिहरःकृच्छ्रकफवातास्रपित्तजित् ॥ १३ ॥

चंपाके नाम व गुण ॥

चांपेय चंपक और हेमपुष्प यह चंपा के नामहैं पंडित लोग चंपा की कलीको गन्धफली कहते हैं चंपा. कटु, तिक्त, कषाय, शीतल और विष, कृमि, मूत्रकृच्छ्र, वात तथा रक्त पित्त नाशक होती है १३ ॥

अथ वकुल मौलसिरी इति लोके ॥

वकुलोमधुगन्धश्चसिंहकेसरकस्तथा । वकुलस्तुवरोऽनुष्णःकटुपाकरसोगुरुः ॥ कफपित्तविषश्वित्रकृमिदन्तगदापहः ॥ १४ ॥

मौलसिरी के नाम व गुण ॥

वकुल मधुगन्ध और सिंहकेसर मौलसिरी के नाम हैं मौलसिरी. कषाय, कुछ उष्ण, रस तथा पाकमें कटु, भारी और कफ, पित्त, विष, श्वेतकुष्ठ, कृमि तथा दन्तरोगनाशक होती है ॥ १४ ॥

अथ वकुलबृहद्बोलशरीतिच ॥

शिवमल्लीपाशुपतएकाष्ठीलोवुकोवसुः । वुकोऽनुष्णःकटुस्तिक्तःकफपित्तविषापहः ॥ योनिशूलतृषादाहकुष्ठशोथास्रनाशनः ॥ १५ ॥

बडी मौलसिरी के नाम व गुण ॥

शिवमल्ली, पाशुपत, एकाष्ठीला, वुक और वसु यह बडी मौलसिरी के नामहैं बडी मौलसिरी. कुछ उष्ण, कटु, तिक्त और कफ पित्त विष योनिशूल तृषा दाह कुष्ठ सूजन तथा रक्तदोषनाशक होतीहै १५ ॥

अथ कदम्बः ॥

कदम्बःप्रियकोनीपोवृत्तपुष्पोहलिप्रियः । कदम्बोमधुरःशीतोकषायोलवणोगुरुः ॥ सरोविष्टम्भकृद्रूक्षःकफस्तन्यानिलप्रदः ॥ १६

कदम्ब के नाम व गुण ॥

कदम्ब, प्रियक, नीप, वृत्तपुष्प और हलिप्रिय यह कदम्बके नामहैं कदम्ब. मधुर, शीतल, कषाय, लवणभारी, दस्तावर, विष्टंभी, रूखा, कफकारक, दुग्धवर्द्धक और बादी होता है ॥ १६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ कूजा ॥

कुब्जकोभद्रतरणिर्बृहत्पुष्पोऽतिकेसरः। महासहाकण्टकाढ्यानीलालिकुलसंकुला ॥ कुब्जकःसुरभिःस्वादुःकषायानुरसःसरः।त्रिदोषशमनोवृष्यःशीतहर्त्ताचसस्मृतः॥१७॥

कूजा के नाम व गुण ॥

कुब्जक, भद्रतरणि, बृहत्पुष्प, अतिकेसर, महासहा, कण्टकाढ्या, नीला और अलिकुलसंकुला यह कूजा के नामहैं कूजा. सुगन्धित, मधुर, कुछ कषैला, दस्तावर, त्रिदोषनाशक, वीर्यवर्द्धक और शीतनाशक होताहै ॥ १७ ॥

अथ मल्लिका ॥

मल्लिकामदयन्तीचशीतभीरुश्चभूपदी। मल्लिकोष्णालघुर्वृष्यातिक्ताचकटुकाहरेत् ॥ वातपित्तास्यदृग्व्याधिकुष्ठारुचिविषव्रणान् ॥ १८ ॥

बेला के नाम व गुण ॥

मल्लिका, मदयन्ती, शीतभीरु और भूपदी यह बेला के नाम हैं बेला. उष्ण, हलका, वीर्यवर्द्धक, तिक्त, कटु और वात, पित्त, मुखरोग, नेत्ररोग, कुष्ठ, अरुचि, विष तथा घावनाशक होताहै ॥ १८ ॥

अथ माधवी ॥

माधवीस्यात्तुवासन्तीपुण्ड्रकोमण्डकोऽपिच। अतिमुक्तोविमुक्तश्चकामुकोभ्रमरोत्सवः ॥ माधवीमधुराशीतालघ्वीदोषत्रयापहा ॥ १९ ॥

मोतियाके नाम व गुण ॥

माधवी, वासन्ती, पुण्ड्रक, मण्डक, अतिमुक्त, विमुक्त, कामुक और भ्रमरोत्सव यह मोतिये के नाम हैं मोतिया. मधुर, शीतल, हलका और त्रिदोषनाशक होताहै ॥ १९ ॥

अथ केवरासुवर्णकेतकी ॥

केतकःसूचिकापुष्पोजम्बुकःक्रकचच्छदः। सुवर्णकेतकीत्वन्यालघुपुष्पासुगन्धिनी॥ केतकःकटुकःस्वादुर्लघुस्तिक्तःकफापहः। उष्णातिक्तरसाज्ञेयाचक्षुष्याहेमकेतकी ॥ २० ॥

केवडा और सुवर्णकेतकी के नाम व गुण ॥

केतक, सूचिकापुष्प, जम्बुक और क्रकचच्छद यह केवडे के नामहैं सुवर्णकेतकी केवडे का भेद है उस को लघुपुष्पा और सुगन्धिनी कहते हैं केवडा. कटु मधुर, तिक्त, हलका और कफनाशक होताहै सुवर्णकेतकी. तिक्त उष्ण, और नेत्रों को हित होतीहै ॥ २० ॥

अथ किङ्किरात इति गौडादौ प्रसिद्धः ॥

किङ्किरातोहेमगौरःपीतकःपीतभद्रकः ॥ किङ्किरातोहिमस्तिक्तःकषायश्चहरेदसौ। कफपित्तपिपासास्रदाहशोषवमिकृमीन् ॥ २१ ॥

किंकिरात के नाम व गुण ॥

किंकिरात, हेमगौर, पीतक और पीतभद्रक यह किंकिरात के नामहैं किंकिरात. शीतल, तिक्त, कषाय और कफ, पित्त, तृषा, रक्तदोष, दाह, शोष, छर्दि तथा कृमिनाशक होताहै ॥ २१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ कर्णिकारः ॥

कर्णिकारःपरिव्याधःपादपोत्पलइत्यपि ॥ कर्णिकारः कटुस्तिक्तस्तुवरः शोधनोलघुः। रञ्जनःसुखदः शोथश्लेष्मास्रव्रणकुष्ठजित् ॥ २२ ॥

कर्णिकार के नाम व गुण ॥

कर्णिकार, परिव्याध और पादपोत्पल यह कर्णिकार के नामहैं कर्णिकार. कटु, तिक्त, कषाय, शोधन करनेवाला,हलका,रंगदेनेवाला,सुखदायक और सूजन,कफ,रक्तदोष,व्रण तथा कुष्ठनाशक होताहै२२॥

अथ अशोक अमोगि ॥

अशोकोहेमपुष्पश्चवञ्जुलस्ताम्रपल्लवः। कङ्केलिःपिण्डपुष्पश्चगन्धपुष्पोनटस्तथा ॥ अशोकःशीतलस्तिक्तोग्राहीवर्ण्यःकषायकः।दोषापचीतृषादाहकृमिशोथविषास्रजित् २३

अशोक के नाम व गुण ॥

अशोक, हेमपुष्प, वञ्जुल, ताम्रपल्लव, कंकोलि, पिण्डपुष्प, गन्धपुष्प और नट यह अशोक के नामहैं अशोक. शीतल, तिक्त, ग्राही, वर्णकोहित, कषैला और त्रिदोष, अपची, तृषा, दाह, कृमि, शोथ, विष तथा रक्तदोषनाशक होताहै ॥ २३ ॥

अथ बाणपुष्प इति गौडादौ प्रसिद्धः ॥

अम्लातोऽम्लाटनःप्रोक्तस्तथाम्लातकइत्यपि ॥ कुरण्टकोवर्णपुष्पःसएवोक्तोमहासहः। अम्लाटनःकषायोष्णःस्निग्धःस्वादुश्चतिक्तकः ॥ २४ ॥

बाणपुष्प के नाम व गुण ॥

अम्लात, अम्लाटन, अम्लातक, कुरण्टक, वर्णपुष्प और महासह यह बाणपुष्प के नामहैं बाणपुष्प. कषाय, मधुर, तिक्त, उष्ण और स्निग्ध होताहै ॥ २४ ॥

अथ कटसरैया ॥

सैरेयकःश्वेतपुष्पःसैरेयःकटसारिका। सहाचरःसहचरःसचभिन्द्यपिकथ्यते ॥ कुरण्टकोऽत्रपीतेस्याद्रक्तेकुरवकःस्मृतः। नालेबाणाद्वयोरुक्तोदासीआर्त्तगलश्चसः ॥ सैरेयः कुष्ठवातास्रकफकण्डूविषापहः। तिक्तोष्णोमधुरोऽनम्लःसुस्निग्धःकेशरञ्जनः ॥ २५ ॥

कटसरैया के नाम व गुण ॥

सैरेयक, श्वेतपुष्प, सैरेय, कटसारिका, सहाचर, सहचर और भिन्दी यह कटसरैया के नामहैं पीली कटसरैयाको कुरंटक लालकटसरैयाको कुरवक और नीली कटसरैया को बाण दासी और आर्तगल कहतेहैं कटसरैया. कुष्ठ, वात, रक्तदोष, कफ, खुजली तथा विषनाशक, तिक्त, उष्ण, मधुर, कुछ अम्ल, स्निग्ध और बालोंकी रंगनेवाली होतीहै ॥ २५ ॥

अथ कुन्दः ॥

कुन्दन्तुकथितंमाघ्यंसदापुष्पश्चततस्मृतम् । कुन्दंशीतंलघुश्लेष्मशिरोरुग्विषपित्तहृत् ॥ २६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुन्दके नाम गुण ॥

कुन्द, माध्य और सदापुष्प यह कुन्दके नामहैं कुन्द. शीतल, हलका और कफ, शिररोग, विष तथा पित्तनाशक होताहै ॥ २६ ॥

अथ मुचुकुन्दनाम्नैवप्रसिद्धः ॥

मुचुकुन्दःक्षत्रवृक्षश्चित्रकःप्रतिविष्णुकः । मुचुकुन्दःशिरःपीडापित्तास्रविषनाशनः २७॥

मुचकुन्द के नाम और गुण ॥

मुचुकुन्द, क्षत्रवृक्ष, चित्रक और प्रतिविष्णुक यह मुचकुन्दके नामहैं मुचकुंद. शिरकीपीडा रक्त पित्त तथा विषनाशक होताहै ॥ २७ ॥

अथ तिलाभपुष्पस्तिलकनाम्नैवप्रसिद्धः ॥

तिलकःक्षुरकःश्रीमान् पुरुषश्छिन्नपुष्पकः । तिलकःकटुकःपाकेरसेचोष्णोरसायनः॥ कफकुष्ठकृमीन्वस्तिमुखदन्तगदान्हरेत् ॥ २८ ॥

तिलक के नाम गुण ॥

तिलक, क्षुरक, श्रीमान्, पुरुष और छिन्नपुष्पक यह तिलकके नामहैं तिलक. रस तथा पाक में कटु, कुछ उष्ण, रसायन और कफ, कुष्ठ, कृमि, वस्तिरोग, मुखरोग तथा दन्तरोगोंका नाशक होताहै २८ ॥

अथ गेजुनिआ ॥

बन्धूकोबन्धुजीवश्च रक्तोमाध्याह्निकोऽपिच। बन्धूकःकफकृद्ग्राहीवातपित्तहरोलघुः२९

दुपहरिया के नाम व गुण ॥

बन्धूक, बन्धुजीव, रक्त और माध्याह्निक यह दुपहरियाके नामहैं दुपहरिया. कफकारक, ग्राही, वात-पित्तनाशक और हलका होताहै ॥ २९ ॥

अथ वोडहुल तथा साम्फी ॥

ओड्रपुष्पञ्जपाचाथ त्रिसन्ध्यासारुणासिता । जपासंग्राहिणीकेश्या त्रिसन्ध्याकफवातजित् ॥ ३० ॥

गुडहल के नाम व गुण ॥

ओड्रपुष्प, जपा और त्रिसंध्या यह गुडहल के नामहैं गुडहल लाल और सफेद दोप्रकारकी होती है गुड़हल. ग्राही, केशोंकोहित और कफवातनाशक होती है ॥ ३० ॥

अथ सेन्दुरिआ ॥

सिन्दूरीरक्तबीजाचरक्तपुष्पासुकोमला। सिन्दूरीविषपित्तास्रतृष्णावान्तिहरीहिमा३१ ॥

सिंदूरिया के नाम व गुण ॥

सिन्दूरी, रक्तबीजा, रक्तपुष्पा और सुकोमला यह सिंदूरिया के नामहैं सिंदूरिया. विष पित्तरक्त तृषा तथा छर्दिनाशक और शीतल होताहै ॥ ३१ ॥

अथागस्तिः ॥

अथागस्त्योवङ्गसेनो मुनिपुष्पोमुनिद्रुमः ॥ अगस्तिःपित्तकफजिच्चातुर्थकहरोहिमः । रूक्षोवातकरस्तिक्तःप्रतिश्यायनिवारणः ॥ ३२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अगस्त्यके नाम गुण ॥

अगस्त्य, वङ्गसेन, मुनिपुष्प और मुनिद्रुम यह अगस्त्यकेनामहैं अगस्त्य, पित्त, कफ, चातुर्थिकज्वर तथा जुकाम का नाशक, शीतल, रूखा, बादी और तिक्त होताहै ॥ ३२ ॥

अनन्तरतुलसीशुक्लाकृष्णाच ॥

तुलसीसुरसाग्राम्यासुलभाबहुमञ्जरी । अपेतराक्षसीगौरी शूलघ्नी देवदुन्दुभिः ॥ तुलसीकटुकातिक्ताहृद्योष्णादाहपित्तकृत् ॥ दीपनीकुष्ठकृच्छ्रास्रपार्श्वरुक्कफवातजित् ॥ शुक्लाकृष्णाचतुलसीगुणैस्तुल्याप्रकीर्तिता ॥ ३३ ॥

श्वेत और कृष्ण तुलसी के नाम व गुण ॥

तुलसी, सुरसा, ग्राम्या, सुलभा, बहुमञ्जरी, अपेतराक्षसी, गौरी, शूलघ्नी और देवदुन्दुभि यह तुलसीके नामहैं तुलसी. कटु, तिक्त, हृदय को हित, उष्ण, दाहकारक, पित्तवर्द्धक, प्रदीपन और कुष्ठ, मूत्रकृच्छ्र, रक्तदोष, पसलीकी पीड़ा, कफ तथा वातनाशक होती है दोनों तुलसियों में समान गुण होते हैं ॥ ३३ ॥

अथ मरुआ ॥

मारुतोऽसौमरुवकोमरुन्मरुरपिस्मृतः ॥ फणीफणिज्जकश्चापि प्रस्थपुष्पःसमीरणः । मरुदग्निप्रदोहृद्यस्तीक्ष्णोष्णःपित्तलोलघुः ॥ वृश्चिकादिविषश्लेष्मवातकुष्ठकृमिप्रणुत् । कटुपाकरसोरुच्यास्तिक्तोरूक्षःसुगन्धिकः ॥ ३४ ॥

मरुआ के नाम व गुण ॥

मारुत, मरुवक, मरुत्, मरु, फणी, फणिज्जक, प्रस्थपुष्प और समीरण यह मरुआके नामहैं मरुआ. अग्निवर्द्धक, हृदयकोहित, तीक्ष्ण, उष्ण, पित्तवर्द्धक, हलका, पाक तथा रसमें कटु, रुचिकारक, तिक्त, रूखा, सुगन्धियुक्त और बिच्छू आदिका विष, कफ, वात, कुष्ठ तथा कृमिनाशक होताहै ॥ ३४ ॥

अथ दवना ॥

उक्तोदमनकोदान्तोमुनिपुत्रस्तपोधनः । गन्धोत्कटोब्रह्मजटोविनीतःकुलपुत्रकः ॥ दमनस्तुवरस्तिक्तोहृद्योवृष्यःसुगन्धिकः । ग्रहणीविषकुष्ठास्रक्लेदकण्डूत्रिदोषजित् ३५ ॥

दोना के नाम व गुण ॥

दमनक, दान्त, मुनिपुत्र, तपोधन, गन्धोत्कट, ब्रह्मजट, विनीत और कुलपुत्रक यह दोनाके नाम हैं दोना. कषाय, तिक्त, हृदयकोहित, वीर्यवर्द्धक, सुगन्धित और ग्रहणी, विष, कुष्ठ, रक्तदोष, क्लेद, खुजली तथा त्रिदोषनाशक होताहै ॥ ३५ ॥

अथ वर्वरी ॥

वर्वरीतुवरीतुङ्गीखरपुष्पाजगन्धिका । पर्णाशस्तत्रकृष्णेतुकठिल्लककुठेरकौ ॥ तत्र शुक्लेऽर्जकःप्रोक्तोवटपत्रस्ततोपरः । वर्वरीत्रितयंरूक्षंशीतंकटुविदाहिच ॥ तीक्ष्णंरुचिकरंहृद्यंदीपनंलघुपाकिच ॥ पित्तलंकफवातास्रकण्डूकृमिविषापहम् ॥ ३६ ॥

इति श्रीभावप्रकाशेपुष्पादिवर्गः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बबईके नाम व गुण ॥

वर्वरी,तुवरी,तुङ्गी, खरपुष्पा, अजगन्धिका और पर्णाश यह बबईके नामहैं कालीबबईको कटिञ्जक तथा कुठेरक कहतेहैं और श्वेतबबईको अर्जक तथा वटपत्र कहतेहैं यह तीनोंप्रकारकी बबई. रूखी, शीतल, कटु, विदाही, तीक्ष्ण, रुचिकारक, हृदयकोहित, दीपन, शीघ्रपरिपाक होनेवाली, पित्तवर्द्धक और कफ, वातरक्त, खुजली, कृमि तथा विषनाशक होती हैं ॥ ३६ ॥

इति भावप्रकाशस्यभाषानुवादेपुष्पादिवर्गः ॥

अथ वटादिवर्गस्तत्रादौवटस्यनामानिगुणाश्च ॥

वटोरक्तफलःशृङ्गीन्यग्रोधःस्कन्धजोध्रुवः।क्षीरीवैश्रवणावासोबहुपादोवनस्पतिः॥ वटः शीतोगुरुर्ग्राहीकफपित्तव्रणापहः। वर्ण्योविसर्पदाहघ्नः कषायोयोनिदोषहृत् ॥ १ ॥

अथ वट आदि वर्ग ॥

बर्गदके नाम और गुण ॥

वट, रक्तफल, शृंगी, न्यग्रोध, स्कन्धज, ध्रुव, क्षीरी, वैश्रवणावास, बहुपाद और वनस्पति यह बर्गदके नामहैं बर्गद. शीतल, भारी, ग्राही, वर्णकोहित, कषाय और कफ, पित्त,घाव, विसर्प, दाह तथा योनिदोषनाशक होताहै ॥ १ ॥

अथ पिप्पलः ॥

बोधिद्रुःपिप्पलोऽश्वत्थश्चलपत्रोगजाशनः। पिप्पलोदुर्ज्जरःशीतः पित्तश्लेष्मव्रणास्रजित् ॥ गुरुस्तुवरकोरूक्षो वर्ण्योयोनिविशोधनः ॥ २ ॥

पीपल के नाम गुण ॥

बोधिद्रु, पिप्पल, अश्वत्थ, चलपत्र और गजाशन यह पीपल के नाम हैं पीपल. कठिनतासे पचनेवाला, शीतल, पित्तनाशक, कफघ्न, व्रण तथा रक्तदोषनाशक, भारी, कषाय, रूखा, वर्णको हित और योनिदोषका शुद्धकरनेवाला होता है ॥ २ ॥

अथ पिप्पलभेदः। गजदण्डसहोराइतिलोके ॥

पारीषोऽन्यःपलाशश्च कपिचूतःकमण्डलः। गर्द्दभाण्डःकन्दरालःकपीतनःसुपार्श्वकः ॥ पारीषोदुर्ज्जरःस्निग्धः कृमिशुक्रकफप्रदः। फलेऽम्लोमधुरोमूलेकषायःस्वादुमज्जकः ॥ ३ ॥

पीपल के भेद (गजदण्ड सहोरा) के नाम और गुण ॥

पारीष, पलाश, कपिचूत,कमण्डल, गर्द्दभाण्ड, कन्दराल, कपीतन और सुपार्श्वक यह गजदण्ड सहोरा के नाम हैं गजदण्ड. कठिनता से पचनेवाला, स्निग्ध और कृमि, वीर्य तथा कफका वर्द्धक होता है इसका फल. अम्ल तथा मधुर जड. कसैली और मींगी. मीठी होती है ॥ ३ ॥

अथ वेलियापीपर ॥

नन्दीवृक्षोऽश्वत्थभेदःप्ररोहीगजपादपः। स्थालीवृक्षःक्षयतरुःक्षीरीचस्याद्वनस्पतिः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नन्दीवृक्षोलघुःस्वादुस्तिक्तस्तुवरउष्णकः। कटुपाकरसोग्राहीविषपित्तकफास्रजित्॥४॥

वेलियापीपल के नाम व गुण॥

नन्दीवृक्ष, अश्वत्थभेद, प्ररोही, गजपादप, स्थालीवृक्ष, क्षयतरु, क्षीरी और वनस्पति यह वेलियापीपल के नाम हैं वेलियापीपल. लघु, मधुर, तिक्त, कषाय, उष्ण, रस तथा पाक में कटु, ग्राही और विष, पित्त, कफ तथा रक्तदोषनाशक होता है॥ ४॥

अथ उदुम्बरः॥

उदुम्बरोजन्तुफलोयज्ञाङ्गोहेमदुग्धकः। उदुम्बरोहिमोरूक्षोगुरुःपित्तकफास्रजित्॥ मधुरस्तुवरोवर्ण्योव्रणशोधनरोपणः॥ ५॥

गूलर के नाम व गुण॥

उदुम्बर, जन्तुफल, यज्ञाङ्ग और हेमदुग्धक यह गूलर के नाम हैं गूलर. शीतल, रूखा, पित्तनाशक, कफ तथा रक्तनाशक, मधुर, कषाय, वर्ण को हित और घावको शुद्धकरके भरनेवाला होताहै ५॥

अथ कटुम्भरी॥

काकोदुम्बरिकाफल्गुर्मलयूर्जघनेफला। मलयूःस्तम्भकृत्तिक्ताशीतलातुवराजयेत्॥ कफपित्तव्रणश्वित्रकुष्ठपाण्डर्शकामलाः॥ ६॥

कठियागूलर के नाम व गुण॥

काकोदुम्बरिका, फल्गु, मलयू और जघनेफला यह कठियागूलर के नाम हैं कठियागूलर. स्तम्भन, तिक्त, शीतल, कषाय और कफ, पित्त, घाव, श्वेतकुष्ठ, कुष्ठ, पाण्डु, बवासीर तथा कामला नाशक होता है॥ ६॥

अथ पर्करिः॥

प्लक्षोजटीपर्करीचपर्कटीचस्त्रियामपि। प्लक्षःकषायःशिशिरोव्रणयोनिगदापहः॥ दाहपित्तकफास्रघ्नःशोथहारक्तपित्तहृत्॥ ७॥

पकरिया के नाम व गुण॥

प्लक्ष, जटी, पर्करी और पर्कटी यह पकरियाके नामहैं पकरिया. कषाय, शीतल और घाव, योनिरोग, दाह, पित्त, कफ, रक्तदोष, सूजन तथा रक्तपित्तनाशक होता है॥ ७॥

अथ शिरीषः॥

शिरीषोभण्डिलोभण्डीभण्डीरश्चकपीतनः। शुकपुष्पःशुकतरुर्मृदुपुष्पःशुकप्रियः॥ शिरीषोमधुरोऽनुष्णस्तिक्तश्चतुवरोलघुः। दोषशोथविसर्पघ्नःकासव्रणविषापहः॥ ८॥

सिरस के नाम व गुण॥

शिरीष, भण्डिल, भण्डी, भण्डीर, कपीतन, शुकपुष्प, शुकतरु, मृदुपुष्प और शुकप्रिय यह सिरस के नाम हैं सिरस. मधुर, कषाय, तिक्त, कुछ उष्ण, हलका और त्रिदोष, सूजन, विसर्प, खांसी, घाव तथा विषनाशक होता है॥ ८॥

अथ क्षीरवृक्षपञ्चवल्कलयोर्लक्षणंगुणाश्च॥

न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थपारीषप्लक्षपादपाः। पञ्चैतेक्षीरिणोवृक्षास्त्वेषांत्वक्पञ्चवल्कलम्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

केचित्तुपारीषस्थानेशिरीषंवेतसंपरेवदन्तीतिशेषः। क्षीरवृक्षाहिमावर्ण्यायोनिरोगव्रणा
पहाः ॥ रूक्षाःकषायामेदोघ्नाविसर्पामयनाशनाः ॥ शोथपित्तकफास्रघ्नाःस्तन्याभग्ना
स्थियोजकाः। त्वक्पञ्चकंहिमंग्राहिव्रणशोथविसर्पजित् ॥ तेषांपत्रंहिमंग्राहिकफवातास्र
नुल्लघु॥ विष्टम्भाध्मानजित्तिक्तंकषायंलघुलेखनम्॥ ९॥

क्षीरिवृक्ष और पञ्चवल्कल के लक्षण और गुण॥

बरगद, गूलर, पीपल, पारीष और पकरिया इनपांच वृक्षोंको क्षीरिवृक्ष कहतेहैं और इनके वल्कल को पञ्चवल्कल कहतेहैं कोई २ पारीष के स्थान में सिरस और कोई वेतसका व्यवहार करते हैं क्षीरिवृक्ष.शीतल, वर्ण को हित, रूखे,कषाय, दुग्धवर्द्धक, टूटीहड्डीके जोड़नेवाले और योनि-रोग, घाव,मेदके दोष,वीसर्प, सूजन, पित्त,कफ तथा रक्तदोषनाशक होतेहैं पञ्चवल्कल. शीतल, ग्राही और घाव, सूजन, वीसर्पनाशक इनके पत्ते.शीतल, ग्राही,हलके,तिक्त, कषाय, लेखन और कफ,वात, रक्तदोष, विष्टंभ तथा आध्मानरोगनाशक होते हैं॥ ९॥

अथ शालः॥

शालस्तुसर्जकार्श्याश्वकर्णिकाःशस्यसम्बरः। अश्वकर्णःकषायःस्याद्व्रणस्वेदकफकृ
मीन्॥ व्रध्नविद्रधिबाधिर्य्ययोनिकर्णगदान्हरेत्॥ १०॥

शालके नाम व गुण॥

शाल सर्ज कार्श्य अश्वकर्णिका और शस्यसम्बर यह शालकेनामहैं शाल.कषाय और घाव,स्वेद, कफ, कृमि, बद, विद्रधि, बधिरता,योनिरोग तथा कर्णरोगनाशक होताहै॥ १०॥

अथ शालभेदः॥

सर्ज्जकोऽजककर्णःस्याच्छालोमरिचिपत्रकः। अजकर्णःकटुस्तिक्तःकषायोष्णोऽपपो
हति॥ कफपाण्डुश्रुतिगदान्मेहकुष्ठविषव्रणान्॥ ११॥

शालभेद के नाम व गुण॥

सर्ज्जक,अजककर्ण,शाल और मरिचपत्रक यह शालभेदके नामहैं शालभेद.कटु,तिक्त,कषाय,उष्ण और कफ, पाण्डु, कर्णरोग, प्रमेह, कुष्ठ,विष तथा घावको दूरकरताहै॥ ११॥

अथ शालई॥

शल्लकीगजभक्ष्याचसुवहासुरभीरसा।महेरुणाकुन्दुरुकीवल्लकीचबहुस्रवा॥ शल्ल
कीतुवराशीतापित्तश्लेष्मातिसारजित्। रक्तपित्तव्रणहरीपुष्टिकृत्समुदीरिता॥ १२॥

सलई के नाम व गुण॥

शल्लकी,गजभक्ष्या,सुवहा,सुरभी,रसा,महेरुणा,कुन्दुरुकी, वल्लकी और बहुस्रवा यह सलईके नामहैं सलई.कषाय, शीतल, पुष्टिकारक और पित्त,कफ,अतिसार,रक्तपित्त तथा घावनाशक होती है॥ १२॥

अथ शीसव॥

शिंशिपापिच्छिलाश्यामा कृष्णसाराचसागुरुः। कपिलासैवमु
(कपिलवर्णाशीसव) ख्ताशिंशिपाकटुकातिक्ताकषायाशोषहारिणी। उष्णवीर्य्याह
निभिर्भस्मगर्भेतिकीर्त्तिता॥ शिंशिपाकटुकातिक्ताकषायाशोषहारिणी। उष्णवीर्य्याह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रेन्मेद कुष्ठश्वित्रवमिक्रमीन् ॥ वस्तिरुग्व्रणदाहास्रबलासघ्नगर्भपातिनी ॥ १३ ॥

शीशम और कपिलवर्ण शीशम के नाम व गुण ॥

शिंशिपा.पिच्छिला,श्यामा,कृष्णसारा और अगुरु यह शीशमकेनामहैं कपिलवर्ण शीशमकोभस्मगर्भा कहतेहैं शीशम.कटु, तिक्त, कषाय, वीर्यमें उष्ण,गर्भगिरानेवाली और शोष, मेद, कुष्ठ, श्वेतकुष्ठ, छर्दि, कृमि, मूत्राशयकीपीड़ा, घाव, दाह, रक्तदोष तथा कफनाशक होताहै ॥ १३ ॥

अथ कौह ॥

ककुभोऽर्जुननामाख्योनदीसर्ज्जश्चकीर्तितः इन्द्रद्रुर्वीरवृक्षश्चवीरश्चधवलःस्मृतः॥
ककुभःशीतलोहृद्यःक्षतक्षयविषास्रजित् ॥ मेदोमेहव्रणान्हन्तितुवरःकफपित्तहृत् १४ ॥

अर्जुनवृक्ष के नाम व गुण ॥

ककुभ,अर्जुननामाख्य,नदीसर्ज,इन्द्रद्रु,वीरवृक्ष,वीर और धवल यह अर्जुनकेनामहैं अर्जुन.शीतल, हृदयकोहित,कषाय और घावक्षय, विष, रक्तदोष, मेद,प्रमेह, घाव, कफ तथा पित्तनाशक होताहै १४॥

अथ सनविजयसारइतिच ॥

बीजकःपीतसारश्चपीतशालकइत्यपि । बन्धूकपुष्पःप्रियकःसर्ज्जकश्चासनःस्मृतः ॥
बीजकःकुष्ठवीसर्पश्वित्रमेहगुदक्रमीन् हन्तिश्लेष्मास्रपित्तञ्चत्वच्यःकेश्योरसायनः १५॥

विजयसार के नाम व गुण ॥

बीजक, पीतसार, पीतशालक, बन्धूकपुष्प, प्रियक, सर्जक और आसन यह विजयसारके नाम हैं विजयसार.कुष्ठ, वीसर्प, श्वेतकुष्ठ, प्रमेह, गुदा के कृमि, कफ तथा रक्तपित्तनाशक, त्वचाकोहित, केशोंको उपकारी और रसायन होताहै ॥ १५ ॥

अथ खदिरः ॥

खदिरोरक्तसारश्चगायत्रीदन्तधावनः । कण्टकीबालपत्रश्चबहुशल्यश्चयज्ञियः ॥
खदिरःशीतलोदन्त्यःकण्डूकासारुचिप्रणुत् । तिक्तःकषायोमेदोघ्नःक्रिमिमेहज्वरव्रणान् ॥
श्वित्रशोथामपित्तास्रपाण्डुकुष्ठकफान्हरेत् ॥ १६ ॥

खैर (कत्था) के नाम व गुण ॥

खदिर, रक्तसार, गायत्री, दन्तधावन, कण्टकी, बालपत्र, बहुशल्य और यज्ञिय यह कत्थेके नामहैं कत्था.शीतल, दांतोंकोहित, तिक्त, कषाय और खजली, खांसी, अरुचि, मेद, कृमि,प्रमेह, ज्वर,घाव, श्वेतकुष्ठ, सूजन, आम, पित्त, रक्तदोष, पाण्डु, कुष्ठ तथा कफनाशक होताहै ॥ १६ ॥

अथ श्वेतखदिरपपरीखयरइतिच ॥

खदिरःश्वेतसारोऽन्यःकदरःसोमवल्कलः। कदरोविशदोवर्ण्योमुखरोगकफास्रजित् १७॥

पपड़ियाकत्थे के नाम व गुण ॥

खदिर, श्वेतसार,कदर और सोमवल्कल यह पपड़ियाकत्थेके नामहैं पपड़ियाकत्था. विशद,वर्णको हित और मुखरोग, कफ तथा रक्तदोषनाशक होताहै ॥ १७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ इरिमेद दुर्गन्धखदिरइतिच ॥

इरिमेदोविट्खदिरःकालस्कन्धोऽरिमेदकः । इरिमेदःकषायोष्णोमुखदन्तगदास्रजित ॥ हन्तिकण्डूविषश्लेष्मकृमिकुष्ठविषव्रणान् ॥ १८ ॥

दुर्गन्धित खदिर के नाम व गुण ॥

इरिमेद, विट्खदिर, कालस्कन्ध और अरिमेदक यह इसके नामहैं दुर्गंधितखदिर. कषाय, उष्ण और मुखरोग, दन्तरोग, रक्तदोष, खुजली, विष, कफ, कृमि, कुष्ठ, घाव तथा ग्रहदोषनाशक होताहै ॥ १८ ॥

अथ रोहितकः ॥

रोहीतकोरोहितकोरोहीदाडिमपुष्पकः।रोहीतकःप्लीहघातीरुच्योरक्तप्रसाधनः १९ ॥

रोहितक (लालकरञ्ज) के नाम व गुण ॥

रोहीतक, रोहितक, रोही और दाडिमपुष्पक यह रोहितकके नामहैं रोहितक. प्लीहानाशक रुचिकारक और रुधिरका शुद्धकरनेवाला होताहै॥१९॥ अथ बबूल ॥

बब्बूलःकिङ्किरातःस्यात्किङ्किराटःसपीतकः । सएवकथितस्तज्ज्ञैराभाषपदमोदिनी ॥ बब्बूलःकफनुद्ग्राहीकुष्ठकृमिविषापहः ॥ २० ॥

बबूल के नाम व गुण ॥

बब्बूल, किंकिरात, किंकिराट, सपीतक और आभाषपदमोदिनी यह बबूलके नामहैं बबूल. ग्राही और कफ, कुष्ठ, कृमि तथा विषनाशक होताहै॥२०॥ अथ रीठा ॥

अरिष्टकस्तुमाङ्गल्यःकृष्णवर्णोऽर्थसाधनः । रक्तबीजःपीतफेनःफेनिलोगर्भपातनः ॥ अरिष्टकस्त्रिदोषघ्नोग्रहजिद्गर्भपातनः ॥ २१ ॥

रीठा के नाम व गुण ॥

अरिष्टक, माङ्गल्य, कृष्णवर्ण, अर्थसाधन, रक्तबीज, पीतफेन, फेनिल और गर्भपातन यह रीठा के नामहैं रीठा. त्रिदोषनाशक ग्रहदोषनाशक और गर्भगिरानेवाला होताहै ॥ २१ ॥

अथ पितौजिया ॥

पुत्रजीवोगर्भकरोयष्टीपुष्पोऽर्थसाधकः । पुत्रजीवोगुरुर्वृष्योगर्भदःश्लेष्मवातहृत् ॥ सृष्टमूत्रमलोरूक्षोहिमःस्वादुःपटुःकटुः ॥ २२ ॥

पुत्रजीवा (पितौजिया) के नाम व गुण ॥

पुत्रजीव, गर्भकर, यष्टीपुष्प और अर्थसाधक यह पुत्रजीवाके नाम हैं पुत्रजीवा. भारी, वीर्य्यवर्द्धक, गर्भदायक, कफघ्न, वातनाशक, मलमूत्रकान्तिकासनेवाला, रूखा, शीतल, मधुर, लवण तथा कटु होताहै ॥ २२ ॥

अथ इंगुदी ॥

इंगुदोऽङ्गारवृक्षश्चतिक्तकस्तापसद्रुमः । इंगुदःकुष्ठभूतादिग्रहव्रणविषकृमीन् ॥ हन्त्युष्णःश्वित्रशूलघ्नस्तिक्तकःकटुपाकवान् ॥ २३ ॥

गोंदी के नाम व गुण ॥

इंगुद, अङ्गारवृक्ष, तिक्तक और तापसद्रुम यह गोंदीके नामहैं गोंदी. कुष्ठ, भूतादिकोंका आवेश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रहदोष, घा, विष, कृमिरोग, श्वेतकुष्ठ तथा शूलनाशक, उष्ण, तिक्त और पाकमें कटु होती है २३ ॥

अथ जिङ्गिनी ॥

जिङ्गिनीझिङ्गिनीझिङ्गीसुनिर्य्यासाप्रमोदिनी। जिंङ्गिनीमधुरासोष्णाकषायाव्रणशोधिनी॥कटुकाव्रणहृद्रोगवातातीसारहृत्पटुः। तमालःशालवद्वेद्योदाहविस्फोटहृत्पुनः २४ ॥

जिङ्गिनी के नाम व गुण ॥

जिङ्गिनी, झिङ्गिनी, झिङ्गी, सुनिर्यासा और प्रमोदिनी यह जिङ्गिनीके नामहैं जिङ्गिनी. मधुर, उष्ण, कषाय, व्रणशोधक, कटु और घाव, हृदयरोग, वात तथा अतीसारनाशक होती है और यह तमाल शाल के समान होकर दाह तथा विस्फोटककी नाशक होती है ॥ २४ ॥

अथ तूणी ॥

तूणींतुन्नकआपीनस्तुणिकःकच्छकस्तथा। कुठेरकःकान्तलकोनन्दिवृक्षश्चनन्दकः॥ तूणीरक्तःकटुःपाकेकषायोमधुरोलघुः।तिक्तोग्राहीहिमोवृष्योव्रणकुष्ठास्रपित्तजित् ॥२५॥

तुनिके नाम व गुण ॥

तूणी, तुन्नक, आपीन, तुणिक, कच्छक, कुठेरक, कान्तलक, नन्दिवृक्ष और नन्दक यह तुनिके नाम हैं तुनि. पाकमें कटु, कषाय, मधुर, तिक्त, हलका, ग्राही, शीतल, वीर्यवर्द्धक और घाव, कुष्ठ तथा रक्त पित्तनाशक होताहै ॥ २५ ॥

अथ भूर्जपत्रः ॥

भूर्जपत्रःस्मृतोभूर्जचर्म्मीबहुलवल्कलः । भूर्ज्जोभूतग्रहश्लेष्मकर्णरुक्पित्तरक्तजित् ॥ कषायोराक्षसघ्नश्चमेदोविषहरःपरः ॥ २६ ॥

भोजपत्रके नाम व गुण ॥

भूर्जपत्र, भूर्जचर्म्मी और बहुलवल्कल यह भोजपत्र के नामहैं भोजपत्र. कषाय और भूतावेश ग्रहदोष, कफ, कर्णरोग, रक्तपित्त, राक्षस, मेद तथा विषके नाशकरने में अत्यन्तश्रेष्ठ होता है ॥ २६ ॥

अथ पलाशः ॥

पलाशःकिंशुकःपर्णोयज्ञियोरक्तपुष्पकः । क्षारश्रेष्ठोवातहरोब्रह्मवृक्षःसमिद्वरः ॥ पलाशोदीपनोवृष्यःसरोष्णव्रणगुल्मजित् । कषायःकटुकस्तिक्तःस्निग्धोगुदजरोगजित् ॥ भग्नसन्धानकृद्दोषग्रहण्यर्शःकृमीन्हरेत्।तत्पुष्पंस्वादुपाकेतुकटुतिक्तंकषायकम्॥ वातलंकफपित्तास्रकृच्छ्रजिद्ग्राहिशीतलम् । तृड्दाहशमकंवातरक्तकुष्ठहरम्परम् ॥ फलंलघूष्णंमेहार्शःकृमिवातकफापहम्। विपाकेकटुकंरूक्षंकुष्ठगुल्मोदरप्रणुत् ॥ २७ ॥

पलाशके नाम व गुण ॥

पलाश, किंशुक, पर्ण, यज्ञिय, रक्तपुष्पक, क्षारश्रेष्ठ, वातहर, ब्रह्मवृक्ष और समिद्वर यह पलाश के नामहैं पलाश. दीपन, वीर्यवर्द्धक, दस्तावर, उष्ण, कषाय, कटु, तिक्त, स्निग्ध, टूटेकोजोड़नेवाला और घाव, गुल्म, गुदाके उत्पन्नरोग, त्रिदोष, ग्रहणी, बवासीर तथा कृमिनाशक होताहै पलाशकेपुष्प. पाक में मधुर, कटु, तिक्त, कषाय, बादी, ग्राही, शीतल और कफ, रक्तपित्त, मूत्रकृच्छ्र, तृषा, दाह, वातरक्त,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तथा कुष्ठनाशक होतेहैं पलाशकाफल.हलका, उष्ण, पाकमें कटु, रूखा और प्रमेह, बवासीर, कृमि, वात, कफ, कुष्ठ, गुल्म तथा उदररोगनाशक होताहै ॥ २७ ॥

अथ शाल्मलिः ॥

शाल्मलिस्तुभवेन्मोचापिच्छिलापूरणीतिच । रक्तपुष्पास्थिरायुश्चकण्टकाढ्याचतूलिनी । शाल्मलीशीतलास्वाद्वीरसेपाकेरसायनी । श्लेष्मलापित्तवातास्रहारिणीरक्तपित्तजित् ॥ २८ ॥

सेमरके नाम व गुण ॥

शाल्मलि,मोचा,पिच्छिला,पूरणी,रक्तपुष्पा,स्थिरायु,कण्टकाढ्या और तूलिनी यह सेमरके नाम हैं सेमर.शीतल, रस तथा पाक में मधुर, रसायन, कफकारक और पित्त, वातरक्त तथा रक्तपित्तनाशक होती है ॥ २८ ॥

अथ मोचरसः ॥

निर्य्यासः शाल्मलेः पिच्छाशाल्मलीवेष्टकोऽपिच । मोचास्रावोमोचरसोमोचनिर्य्यास इत्यपि ॥ मोचास्राहिमोग्राहीस्निग्धोवृष्यःकषायकः ॥ प्रवाहिकातिसारामकफपित्तास्रदाहनुत् ॥ २९ ॥

मोचरसके नाम व गुण ॥

सेमरके गोंदको पिच्छा, शाल्मलीवेष्टक, मोचास्राव, मोचरस और मोचनिर्यास कहतेहैं मोचरस-शीतल, ग्राही, स्निग्ध, वीर्यवर्द्धक, कषाय और प्रवाहिका, अतीसार, आम,कफ, पित्तरक्त तथा दाह-नाशक होताहै ॥ २९ ॥

अथ कूटशाल्मलिः ॥

कुत्सितःशाल्मलिःप्रोक्तोरोचनःकूटशाल्मलिः । कूटशाल्मलिकस्तिक्तःकटुकःकफवातनुत् ॥ भेद्युष्णःप्लीहजठरःयकृद्गुल्मविषापहः ॥ भूतानाहविबन्धास्रमेदःशूलकफापहः ॥ ३० ॥

कालीसेमर के नाम व गुण ॥

कुत्सित, शाल्मलि,रोचन और कूटशाल्मलि यह कालीसेमरके नामहैं कालीसेमर.तिक्त,कटु,भेदक, उष्ण और कफ, वात, प्लीहा, उदर, यकृत्, गुल्म, विष, भूतावेश, आनाह, विबन्ध, रक्तदोष, मेद, शूल तथा कफनाशक होती है ॥ ३० ॥

अथ धवः ॥

धवोघटोनन्दितरुः स्थिरोगौरोधुरन्धरः । धवःशीतःप्रमेहार्शःपाण्डुपित्तकफापहः ॥ मधुरस्तुवरस्तस्यफलंचमधुरंमनाक् ॥ ३१ ॥

धवई के नाम व गुण ॥

धव, घट,नन्दितरु, स्थिर, गौर और धुरन्धर यह धवईकेनामहैं धवई. शीतल, मधुर, कषाय और प्रमेह, बवासीर, पाण्डुरोग, पित्त तथा कफनाशक होती है इसका फल कुछ मधुर होताहै ॥ ३१ ॥

अथ धामिन ॥

धन्वंगस्तुधनुर्वृक्षोगोत्रवृक्षःसुतेजनः । धन्वंगःकफपित्तास्रकासहत्तुवरोलघुः ॥ बृंहणोबलकृद्रूक्षःसंधिकृद्व्रणरोपणः ॥ ३२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धामिन के नाम व गुण ॥

धन्वङ्ग, ज्ञनुर्वृक्ष, गोत्रवृक्ष और सुतेजन यह धामिन के नामहैं धामिन. कफ, पित्त, रक्तदोष तथा खांसी की नाशक, कषाय, हलकी, धातुवर्द्धक, बलकारक, रूखी, टूटेहुए को जोड़नेवाली और घावको भरने वाली होतीहै ॥ ३२ ॥

अथ करीरः ॥

करीरःक्रकरीपत्रोग्रन्थिलोमरुभूरुहः । करीरःकटुकस्तिक्तःस्वेद्युष्णोभेदनःस्मृतः ॥ दुर्नामकफवातामगरशोथव्रणप्रणुत् ॥ ३३ ॥

करील के नाम व गुण ॥

करील, क्रकरीपत्र, ग्रन्थिल और मरुभूरुह यह करीलके नाम हैं करील. कटु, तिक्त, स्वेदकारक, उष्ण, भेदक और बवासीर, कफ, वात, आम, गरदोष, शोथ तथा व्रणनाशक होताहै ॥ ३३ ॥

अथ सहोरा ॥

शाखोटःपीतफलकोभूतावासःखरच्छदः । शाखोटोरक्तपित्तार्शोवातश्लेष्मातिसारजित् ॥ ३४ ॥

सहोरा के नाम व गुण ॥

शाखोट, पीतफलक, भूतावास और खरच्छद यह सहोरे के नामहैं सहोरा. रक्तपित्त, बवासीर, वात, कफ और अतीसारनाशक होताहै ॥ ३४ ॥

अथ वरुणः ॥

वरुणोवरणःसेतुस्तिक्तशाकःकुमारकः । वरुणःपित्तलोभेदी श्लेष्मकृच्छ्राश्ममारुतान् ॥ निहन्तिगुल्मवातास्रकृमींश्चोष्णोऽग्निदीपनः । कषायोमधुरस्तिक्तः कटुकोरूक्षकोलघुः ॥ ३५ ॥

वरना के नाम व गुण ॥

वरुण, वरण, सेतु, तिक्तशाक और कुमारक यह वरना के नामहैं वरना. पित्तवर्द्धक, भेदक, अग्निदीपक, कषाय, मधुर, तिक्त, कटु, रूखा, हलका और कफ, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, वात, गुल्म, वातरक्त तथा कृमिनाशक होताहै ॥ ३५ ॥

अथ कटभी ॥

कटभीस्वादुपुष्पश्चमधुरेणुःकटुम्भरः । कटभीतुप्रमेहार्शः नाडीव्रणविषकृमीन् । हन्त्युष्णाकफकुष्ठघ्नीकटूरूक्षाचकीर्त्तिता॥तत्फलंतुवरंज्ञेयंविशेषात्कफशुक्रहृत् ॥ ३६ ॥

कटभी के नाम व गुण ॥

कटभी, स्वादुपुष्प, मधुरेणु और कटुम्भर यह कटभीके नामहैं कटभी. प्रमेह, बवासीर, नासूर, विष, कृमि, कफ तथा कुष्ठनाशक, उष्ण, कटु और रूक्षहोता है इसके फलमें इसीकेसमान गुणहोते हैं यह विशेष करके कफ तथा वीर्य का नाशक होताहै ॥ ३६ ॥

अथ मोक्षपलाशवत्पर्वतवृक्षः ॥

मोक्षस्तुमोक्षकोऽपिस्याद्घोलीढोगोलिहस्तथा । क्षारश्रेष्ठःक्षारवृक्षोद्विविधःश्वेतकृष्णकः । मोक्षकःकटुकस्तिक्तोग्राह्युष्णःकफवातहृत् ॥ विषमेदोगुल्मकण्डूबस्तिरुक्कृमिशुक्रनुत् ॥ ३७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मोक्ष (पलाश के समान पहाड़ी वृक्ष) के नाम और गुण ॥

मोक्ष, मोक्षक, गोलीढ गोलिह, क्षारश्रेष्ठ, क्षारवृक्ष इसको घण्टापाटला भी कहते यह श्वेत और श्याम दोभेदका होताहै मोक्ष. कटु, तिक्त, ग्राही, उष्ण और कफ, वात, मेद, विष, गुल्म, खुजली, मूत्राशय की पीड़ा, कृमि तथा वीर्यनाशक होताहै ॥ ३७ ॥

अथ जलशिरषिठिंएिठणिइतिच ॥

शिरीषिकाठिंएिठणिकादुर्बलाम्बुशिरीषिका।त्रिदोषविषकुष्ठार्शोहरीवारिशिरीषिका३८॥

जलशिरसके नाम व गुण ॥

शिरीषिका, ठिण्ठिणिका, दुर्बला और अम्बुशिरीषिका यह जलशिरसके नाम हैं जलशिरस. त्रिदोष, विष, कुष्ठ तथा बवासीरनाशक होताहै ॥ ३८ ॥

अथ शमी ॥

शमीसक्तुफलातुङ्गाकेशहन्त्रीफलाशिवा । मङ्गल्याचतथालक्ष्मीशमीरःसाल्पिका स्मृता ॥ शमीतिक्ताकटुःशीताकषायारेचनीलघुः । कफकासभ्रमश्वासकुष्ठार्शःकृमिजित् स्मृता ॥ ३९ ॥

शमीके नाम व गुण ॥

शमी, सक्तुफला, तुङ्गा, केशहन्त्री, फला, शिवा, मङ्गल्या और लक्ष्मी यह शमीके नाम हैं छोटी शमीको शमीर कहते हैं शमी. तिक्त, कटु, शीतल, कषाय, दस्तावर, हलकी और कफ, खांसी, भ्रम, श्वास, कुष्ठ, बवासीर तथा कृमिनाशक होती है ॥ ३९ ॥

अथ छितवन ॥

सप्तपर्णोविशालत्वक्शारदोविषमच्छदः । सप्तपर्णोव्रणश्लेष्मवातकुष्ठास्रजन्तुजित् ॥ दीपनःश्वासगुल्मघ्नःस्निग्धोष्णस्तुवरःसरः ॥ ४० ॥

छितवनके नाम व गुण ॥

सप्तपर्ण, विशालत्वक्, शारद और विषमच्छद यह छितवन के नाम हैं छितवन. घावकफ, वात, कुष्ठ, रक्तदोष, कृमि, श्वास तथा गुल्मनाशक, दीपन, स्निग्ध, उष्ण, कषाय तथा दस्तावर होता है ॥ ४० ॥

अथ तिनिशःतिरिच्छइतिच ॥

तिनिशःस्यन्दनोनेमीरथद्रुर्वञ्जुलस्तथा। तिनिशःश्लेष्मपित्तास्रमेदःकुष्ठप्रमेहजित् ॥ तुवरःश्वित्रदाहघ्नोव्रणपाण्डुकृमिप्रणुत् ॥ ४१ ॥

तिनिश के नाम व गुण ॥

तिनिश, स्यन्दन, नेमी, रथद्रु और वञ्जुल यह तिनिश के नामहैं तिनिश. कफ, पित्त, रक्तदोष, मेद, कुष्ठ, प्रमेह, श्वेतकुष्ठ, दाह, घाव, पांडु तथा कृमिनाशक और कषैला होताहै ॥ ४१ ॥

अथ भुइँसहा ॥

भूमीसहोद्दारदारुर्नरिदारुःखरच्छदः । भूमीसहस्तुशिशिरोरक्तपित्तप्रसादनः ४२ ॥

इति श्रीभावप्रकाशेवटादिवर्गः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भुइँसहाके नाम व गुण ॥

भूमीसह, [illegible]रदारु, नारिदारु और खरच्छद यह भुइँसहा के नामहैं भुइँसहा. शीतल और रक्तपित्त करनेवाला [illegible]ताहै ॥ ४२ ॥ इति भावप्रकाशस्यभाषानुवादेवटादिवर्गः ॥

अथाम्रादिफलवर्गस्तत्रादावाम्रस्यनामानिगुणाश्च ॥

आम्रःप्रोक्तोरसालश्चसहकारोऽतिसौरभः। कामांगोमधुदूतश्चमाकन्दःपिकवल्लभः॥ आम्रपुष्पमतीसारकफपित्तप्रमेहनुत्। असृग्दुष्टिहरंशीतंरुचिकृद्ग्राहिवातलम् ॥ आम्रंबालंकषायाम्लंरुच्यंमारुतपित्तकृत्। तरुणन्तुतदत्यम्लंरूक्षंदोषत्रयास्त्रकृत्॥ आम्रमामंत्वचाहीनमातपेऽतिविशोषितम्। अम्लंस्वादुकषायंस्याद्भेदनंकफवातजित्॥ पक्वन्तुमधुरंवृष्यंस्निग्धंबलसुखप्रदम्। गुरुवातहरंहृद्यंवर्ण्यंशीतमपित्तलम्॥ कषायानुरसंवह्निश्लेष्मशुक्रविवर्द्धनम्। तदेववृक्षसम्पक्वंगुरुवातहरंपरम् ॥ मधुराम्लरसंकिञ्चिद्भवेत्पित्तप्रकोपनम्। आम्रकृत्रिमपक्वञ्चतद्भवेत्पित्तनाशनम्॥ रसस्याम्लस्यहीनस्तुमाधुर्य्याच्चविशेषतः। उषितंतत्परंरुच्यंबल्यंवीर्य्यकरंलघु ॥ शीतलंशीघ्रपाकिस्याद्वातपित्तहरंसरम्। तद्रसोगालितोबल्योगुरुर्वातहरःसरः॥ अहृद्यस्तर्पणोऽतीवबृंहणःकफवर्द्धनः। तस्यखण्डंगुरुपरंरोचनंचिरपाकिच ॥ मधुरंबृंहणंबल्यंशीतलंवातनाशनम्। वातपित्तहरंरुच्यंबृंहणंबलवर्द्धनम् ॥ वृष्यंवर्णकरंस्वादुदुग्धाम्रंगुरुशीतलम्। मन्दानलत्वंविषमज्वरञ्चरक्तामयंबद्धगुदोदरञ्च ॥ आम्रातियोगोनयनामयंवाकरोतितस्मादतितान्निनाद्यात्। एतदम्लाम्रविषयंमधुराम्लपरंनतु ॥ मधुरस्यपरंनेत्रहितंत्वाद्याद्गुणायतः। शुण्ठ्याम्भसोऽनुपानंस्यादाम्राणामतिभक्षणे॥ जीरकंवाप्रयोक्तव्यंसहसौवर्चलेनच १॥

अथ आम्रादिफलवर्गः। आमके नाम व गुण ॥

आम्र, रसाल, सहकार, अतिसौरभ, कामाङ्ग, मधुदूत, माकन्द और पिकवल्लभ यह आमके नाम हैं आमका बौर. अतीसार, कफ, पित्त, प्रमेह तथा रक्तदोषनाशक, शीतल, रुचिकारक, ग्राही और बादी होता है इसकी कैरी. कषाय अम्ल रुचिकारक और वातपित्तवर्द्धक होती है कच्चा आम. अत्यन्त खट्टा, रूखा, त्रिदोषकारक और रुधिर का बिगारनेवाला होताहै छिलका छीलकर धूपमें सुखाया हुआ कच्चा आम. खट्टा, मधुर, कषैला, भेदक और कफ तथा वातनाशक होताहै पक्काआम. मधुर, वीर्यवर्द्धक, स्निग्ध, बलकारी, सुखद, भारी, वातनाशक, हृदयको हित, वर्णको हित, शीतल, पित्तका नहीं बढ़ानेवाला, कुछ कषैला और अग्नि, कफ तथा वीर्यका बढ़ानेवाला होताहै वृक्षका पकाहुआ आम. मधुर, अम्ल, भारी, अत्यन्तवातनाशक और कुछ पित्तवर्द्धक होताहै पालकाआम. पित्तनाशक, खट्टापन न होनेसे अधिक मधुरताके कारण अत्यन्तपित्तनाशक होताहै बासीपकाहुआ आम. बलकारक, अत्यन्तरुचिकारक, वीर्यवर्द्धक, हलका, शीतल, शीघ्र पकनेवाला, वातपित्तनाशक और दस्तावर होताहै पक्केआमका निकालाहुआ रस. बलकारक, भारी, वातनाशक, दस्तावर, हृदयको अहित, तृप्तिकारक, बहुत धातुवर्द्धक और कफवर्द्धक होताहै आमके तरासे हुये टुकडे. भारी, रुचि, देरमें पचनेवाले, मधुर, धातुवर्द्धक, बलकारक, शीतल और वातनाशक होते हैं दूध के साथ आम.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मधुर, वीर्यवर्द्धक, वर्णका [illegible]त, भारी, शीतल, वात पित्त नाशक, रुचिकारक, धातुवर्द्धक [illegible] बलका बढ़ानेवाला होताहै बहुतआम खाने से. मन्दाग्नि, विषमज्वर, रुधिररोग, उदर तथा गुदाक [illegible]जकड़ना और नेत्ररोग होते हैं इससे बहुत आम न खाना चाहिये यह सब बातें खट्टे आमके विषय में [illegible]ड़ीगई हैं मीठे आमके विषय में नहीं क्योंकि मीठे आमके अत्यन्त नेत्रको हितकारी आदिक गुणकहे ये हैं बहुत आम खानेमें सोंठिकापानी पीछे पीनाचाहिये अथवा जीरा और कालेनोनका सेवनकरना चाहिये ॥१॥

अथाम्रावर्त्तस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

पक्कस्यसहकारस्यपटेविस्तारितोरसः । घर्म्मशुष्कोमुहुर्दत्तआम्रावर्त्तइतिस्मृतः ॥ (अम्बवटइतिलोके) आम्रावर्त्तस्तृषाच्छर्दिवातपित्तहरःसरः । रुच्यःसूर्य्यांशुभिःपाकाल्लघुश्चसहिकीर्तितः ॥ २ ॥ अमरस के लक्षण और गुण ॥

पक्के आमका रस कपड़ेपर फैला के धूप में सुखायाहुआ और उसपर बारबार टपकाया हुआ दलदार सूखाहुआ आम्रावर्त्त कहलाताहै यह आम्रावर्त्त. तृषा, छर्दि, वात तथा पित्तनाशक, दस्तावर, रुचिकारक और विशेष करके धूपमें पकनेसे हलका होताहै ॥ २ ॥

अथ कोइलीया ॥

आम्रबीजंकषायंस्याच्छर्द्यतीसारनाशनम् । ईषदम्लञ्चमधुरंतथाहृदयदाहनुत् ॥ (अथ नवपल्लवः) आम्रस्यपल्लवंरुच्यंकफपित्तविनाशनम् ॥ ३॥

आमकी बिजलीके गुण ॥

आमकी बिजली. कषैली, कुछ खट्टी, मधुर और छर्दि, अतीसार तथा हृदय के दाहकी नाशक होती है आमके नवीनपत्ते. रुचिकारक और कफ तथा पित्तनाशक होते हैं ॥ ३ ॥

अथ अम्बरा ॥

आम्रातकःपीतनश्चमर्क्कटाम्रःकपीतनः ॥ आम्रातमम्लंवातघ्नंगुरूष्णंरुचिकृत्सरम् ॥ तर्पणंश्लेष्मलंस्निग्धंवृष्यंविष्टम्भिबृंहणम् । गुरु पक्कन्तुतुवरंस्वादुरसेपाकेहिमंस्मृतम् ॥ बल्यम्मरुत्पित्तक्षतदाहक्षयास्रजित् ॥ ४ ॥

अमराके नाम व गुण ॥

आम्रातक, पीतन, मर्कटाम्र और कपीतन यह आम्रा के नाम हैं कच्चा अमरा. अम्ल, वातनाशक, भारी, उष्ण, रुचिकारक और दस्तावर होता है पक्का अमरा. कषाय, मधुर पाकमें मधुर, शीतल, तृप्तिकारक, कफवर्द्धक, स्निग्ध, वीर्यवर्द्धक, विष्टम्भी, धातुवर्द्धक, भारी, बलकारक और वात, पित्त, क्षत, दाह, क्षय तथा रक्तदोष नाशक होताहै ॥ ४ ॥

अथ राजाम्रः ॥

राजाम्रष्टङ्कआम्रातःकामाह्वोराजपुत्रकः । राजाम्रन्तुवरंस्वादुविशदंशीतलंगुरु ॥ ग्राहिरूक्षंविबन्धाध्मवातकृत्कफपित्तनुत् ॥ ५ ॥

राजाम्र के नाम व गुण ॥

राजाम्र, टङ्क, आम्रात, कामाह्व और राजपुत्रक यह राजाम्रके नामहैं राजाम्र, कषाय, मधुर, विशद,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शीतल, भारी ग्राही, रूखा, विबन्ध तथा आध्मान करनेवाला, बादी और कफ पित्तनाशक होताहै ॥ ५॥

अथ कोशाम्रकोशम्भइतिच ॥

कोशाम्रउक्तःक्षुद्राम्रःकृमिवृक्षःसुकोशकः। कोशाम्रःकुष्ठशोथास्रपित्तव्रणकफापहः ॥ तत्फलंग्राहिवातघ्नमम्लोऽम्लंगुरुपित्तलम्। पक्कन्तुदीपनंरुच्यंलघूष्णंकफवातनुत् ६ ॥

कोशाम्र कोशम्भके नाम व गुण ॥

कोशाम्र, क्षुद्राम्र, कृमिवृक्ष और सुकोशक यह कोशाम्रके नामहैं कोशाम्र, कुष्ठ, सूजन, रक्तपित्त, व्रण तथा कफनाशक होताहै कोशाम्रका कच्चाफल. ग्राही, वातनाशक, खट्टा, उष्ण, भारी और पित्तवर्द्धक होताहै कोशाम्रका पक्काफल. दीपन, रुचिकारक, हलका, उष्ण और कफ तथा वातनाशक होताहै ६ ॥

अथ कटहर ॥

पणसःकण्टकिफलःपनसोऽतिबृहत्फलः। पनसंशीतलंपक्कंस्निग्धंपित्तानिलापहम् ॥ तर्पणंबृंहणंस्वादुमांसलंश्लेष्मलंभृशम्। बल्यंशुक्रप्रदंहन्तिरक्तपित्तक्षतव्रणान् ॥ आमन्तदेवविष्टम्भिवातलन्तुवरंगुरु। दाहकृन्मधुरंबल्यंकफमेदोविवर्द्धनम् ॥ पनसोद्भूतबीजानिवृष्याणिमधुराणिच। गुरूणिबद्धविट्कानिसृष्टमूत्राणिसंवदेत् (अन्यच्च) मज्जापनसजोवृष्योवातपित्तकफापहः। विशेषात्पनसोवर्ज्योगुल्मिभिर्मन्दवह्निभिः ॥ ७ ॥

कटहल के नाम व गुण ॥

पणस, कण्टकिफल, पनस और अतिबृहत्फल यह कटहल के नामहैं पक्का कटहल. शीतल, स्निग्ध, वातपित्तनाशक, तृप्तिकारक, धातुवर्द्धक, मधुर, मांसवर्द्धक, अत्यन्तकफकारक, बलकारक, वीर्यवर्द्धक और रक्तपित्त, क्षत तथा घावनाशक होताहै कच्चा कटहल विष्टंभी, बादी, कषैला, मधुर, भारी, दाहकारक, बलकारक और कफ तथा मेदवर्द्धक होताहै, कटहलके बीज. वीर्य्यवर्द्धक, मलरोधक, मधुर, भारी और मूत्र निकालनेवाले होते हैं और भी कहागयाहै कि कटहल के बीज. वीर्य्यवर्द्धक और वात पित्त तथा कफनाशक होते हैं गुल्मरोगवाले और मन्दाग्नि पुरुषों को कटहल अत्यन्त वर्जनीय है ॥ ७ ॥

अथ बड़हर ॥

लकुचः क्षुद्रपनसोलिकुचोडहुरित्यपि। आमंलकुचमुष्णञ्चगुरुविष्टम्भकृत्तथा ॥ मधुरञ्चतथाम्लञ्चदोषत्रितयरक्तकृत्। शुक्राग्निनाशनंवापिनेत्रयोरहितंस्मृतम् ॥ सुपक्कन्तत्तुमधुरमम्लञ्चानिलपित्तहृत्। कफवह्निकरंरुच्यंवृष्यंविष्टम्भकञ्चतत् ॥ ८ ॥

बड़हल के नाम व गुण ॥

लकुच, क्षुद्रपनस, लिकुच और डहु यह बड़हलके नामहैं कच्चा बड़हल उष्ण भारी विष्टंभी मधुर खट्टा त्रिदोषकारी रुधिरका बिगाड़नेवाला वीर्यनाशक अग्निनाशक और नेत्रोंको अहित होताहै पक्का बड़हल मधुर खट्टा बादी पित्त कफ अग्नि तथा विष्टम्भकारी रुचिकारक और वीर्यवर्द्धक होताहै ॥ ८ ॥

अथ कदली ॥

कदलीवारणामोचाम्बुसारांशुमतीफला। मोचाफलंस्वादुशीतंविष्टम्भिकफनुद्गुरु ॥ स्निग्धंपित्तास्रतृड्दाहक्षतक्षयसमीरजित्। पक्कंस्वादुहिमंपाकेस्वादुवृष्यञ्चबृंहणम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्षुत्तृष्णानेत्रगदहन्मेहघ्नरुचिमांसकृत्। माणिक्यमर्त्यामृतचम्पकाद्या भेदाःक[illegible]स्याबहवो ऽपिसन्ति॥ उक्तागुणास्तेष्वधिकाभवन्ति निर्दोषतास्याल्लघुता च तेषाम्॥ ९॥

केलेके नाम व गुण॥

कदली, वारणा, मोचा, अंबुसारा और अंशुमती फला यह केले के नाम हैं कच्चा केला. मधुर, शीतल, विष्टम्भी, कफघ्न, भारी, स्निग्ध और रक्त पित्त, तृषा, दाह, क्षय तथा वातनाशक होताहै पक्काकेला. मधुर, शीतल, पाकमें मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, धातुवर्द्धक, रुचिकारक, मांसवर्द्धक और क्षुधा, तृषा, नेत्ररोग तथा प्रमेहनाशक होता है माणिक्यमर्त्य अमृत और चंपकादि केलेके बहुतसे भेदहैं इनमें कहेहुये गुण अधिकतासे होते हैं यह विशेषकरके हलके और निर्दोष होते हैं॥ ९॥

अथ गुरुभीहंभुकुरइतिच॥

चिर्भिटंधेनुदुग्धंचतथागोरक्षकर्कटी। चिर्भिटंमधुरंरूक्षंगुरुपित्तकफापहम्॥ अनुष्णंग्राहिविष्टम्भिपक्कंतूष्णंचपित्तलम्॥ १०॥

कचरीके नाम व गुण॥

चिर्भिट, धेनुदुग्ध और गोरक्षकर्कटी यह कचरीके नामहैं कच्ची कचरी. मधुर, रूखी, भारी, पित्तघ्न, कफनाशक, कुछ उष्ण, ग्राही और विष्टम्भकारक होतीहै पक्की कचरी. उष्ण और पित्तवर्द्धक होती है १०

अथ नारिकेल॥

नारिकेरोदृढफलोजाङ्गलीकूर्च्चशीर्षकः। तुङ्गस्कन्धफलश्चैवतृणराजःसदाफलः॥ नारिकेरफलंशीतंदुर्ज्जरंवस्तिशोधनम्॥ विष्टम्भिबृंहणंबल्यंवातपित्तास्रदाहनुत्॥ विशेषतःकोमलनारिकेरंनिहन्तिपित्तज्वरपित्तदोषान्। तदेवजीर्णंगुरुपित्तकारिविदाहिविष्टम्भिमतंभिषग्भिः॥ तस्याम्भःशीतलंहृद्यंदीपनंशुक्रलंलघुः। पिपासापित्तजित्स्वादुवस्तिशुद्धिकरम्परम्॥ नारिकेरस्यतालस्य खर्ज्जूरस्यशिरांसितु। कषायस्निग्धमधुरबृंहणानिगुरूणिच॥ ११॥

नारियलके नाम व गुण॥

नारिकेर, दृढफल, जाङ्गली, कूर्चशीर्षक, तुङ्ग, स्कन्धफल, तृणराज और सदाफल यह नारियलके नामहैं नारियल. शीतल, कठिनतासे पचनेवाला, मूत्राशयका शोधक, विष्टम्भी, धातुवर्द्धक, बलकारक और वात, पित्त, रक्तदोष तथा दाहनाशक होताहै कोमल नारियल. पित्तज्वर और पित्तके दोषों को विशेषकरके नाश करताहै पुराना नारियल. भारी, पित्तवर्द्धक, विदाही और विष्टंभी होताहै नारियल का पानी. शीतल, हृदयकोहित, दीपन, वीर्य्यवर्द्धक, हलका, तृषानाशक, पित्तघ्न, मधुर और मूत्राशय का अत्यन्त शोधन करनेवाला होताहै नारियल, ताड और खजूर इन वृक्षोंके मस्तक. कषाय, मधुर, स्निग्ध, धातुवर्द्धक और भारी होतेहैं॥ ११॥

अथ तरबूजइतिलोकेकालिन्दम्॥

कालिन्दंकृष्णबीजंस्यात्कालिंगञ्चसुवर्त्तुलम्। कालिन्दंग्राहिदृक्पित्तशुक्रहृच्छीतलं गुरु॥ पक्कन्तुसोष्णंसक्षारंपित्तलंकफवातजित्॥ १२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तरबूजके नाम व गुण ॥

कालिन्द, कृष्णबीज, कालिङ्ग और सुवर्तुल यह तरबूज के नामहैं कच्चा तरबूज. ग्राही, दृष्टि, पित्त तथा वीर्य्यनाशक शीतल और भारी होता है पक्का तरबूज. उष्ण, क्षार, पित्तकारक और कफ तथा वातनाशक होताहै ॥ १२ ॥

अथ खर्बूजा ॥

दशाङ्गुलन्तुखर्वूजंकथ्यतेतद्गुणाअथ । खर्वूजंमूत्रलंबल्यंकोष्ठशुद्धिकरंगुरु ॥ स्निग्धंस्वादुतरंशीतंवृष्यम्पित्तानिलापहम् ॥ तेषुयच्चाम्लमधुरं सक्षारञ्चरसाद्भवेत् ॥ रक्तपित्तकरन्तत्तुमूत्रकृच्छ्रकरम्परम् १३ ॥

खरबूजेके नाम व गुण ॥

दशांगुल और खरवूज यह खरबूजे के नामहैं खरबूजा. मूत्रकारक, बलवर्द्धक, कोष्ठशोधक, भारी, स्निग्ध, मधुर, शीतल, वीर्यवर्द्धक और पित्त तथा वातनाशक होतेहैं जो खरबूजा कुछ क्षार और खटमिट्ठा होताहै वह रक्तपित्त और मूत्रकृच्छ्र को करताहै ॥ १३ ॥

अथ लघुखीराबालमखीरा ॥

त्रपुषंकण्टकिफलं सुधावासःसुशीतलम् । त्रपुषंलघुनीलञ्च नवंतृट्क्लमदाहजित् ॥ स्वादुपित्तापहंशीतं रक्तपित्तहरम्परम् । तत्पक्वमम्लमुष्णंस्यात् पित्तलंकफवातनुत् ॥ तद्बीजंमूत्रलंशीतंरूक्षंपित्तास्रकृच्छ्रजित् ॥ १४ ॥

बालमखीरा के नाम व गुण ॥

त्रपुष, कण्टकिफल, सुधावास और सुशीतल यह बालमखीरे के नामहैं कच्चा बालमखीरा. हलका, मधुर, शीतल और तृषा, ग्लानि, दाह, पित्त तथा रक्तपित्त नाशक होताहै पक्का बालमखीरा. खट्टा, उष्ण, पित्तवर्द्धक और कफ तथा वातनाशक होताहै इसके बीज मूत्रकारक शीतल रूखे और पित्त रक्तदोष तथा मूत्रकृच्छ्रकारक होते हैं ॥ १४ ॥

अथ सुपारीछोटी ॥

घोण्टःपूगीचपूगश्च गुवाकःक्रमुकोऽस्यतु ॥ फलम्पूगीफलम्प्रोक्तमुद्वेगश्चतदीरितम् ॥ पूगंगुरुहिमंरूक्षंकषायाङ्कफपित्तजित् ॥ मोहनंदीपनंरुच्यमास्यवैरस्यनाशनम् ॥ आर्द्रंतद्गुर्वभिष्यन्दिवह्निदृष्टिहरंस्मृतम् ॥ स्विन्नंदोषत्रयच्छेदिदृढमध्यन्तदुत्तमम् १५ ॥

छोटी सुपारी के नाम व गुण ॥

घोण्ट, पूगी, पूग, गुवाक और क्रमुक यह सुपारी वृक्षके नाम हैं इसके फलको पूगीफल और उद्वेग कहतेहैं सुपारी. भारी, शीतल, रूखी, कषैली, कफनाशक, पित्तघ्न, मदकारक, दीपन, रुचिकारक और मुखके फीकेपनेको दूरकरती है कच्ची सुपारी. भारी अभिष्यन्दी और अग्नि तथा दृष्टिनाशक होतीहै और सिझाईहुई सुपारी त्रिदोषनाशक होती है जिस सुपारीका मध्यभाग दृढ होताहै वह श्रेष्ठहै १५॥

अथ तालः ॥

तालस्तुलेखपत्रःस्यात्तृणराजोमहोन्नतः । पक्वंतालफलम्पित्तरक्तश्लेष्मविवर्द्धनम् ॥ दुर्जरम्बहुमूत्रञ्च तन्द्राभिष्यन्दिशुक्रदम् ॥ तालमज्जातुतरुणः किञ्चिन्मदकरोलघुः ॥ श्लेष्मलोवातपित्तघ्नः सस्नेहोमधुरःसरः ॥ १६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ ताड़ी ॥

तालजन्तरुणन्तोयमतीवमदकृन्मतम्। अम्लीभूतन्तदातुस्यात्पित्तकृद्वातदोषहृत् १६

ताड के नाम व गुण।

ताल, लेखपत्र, तृणराज और महोन्नत यह तालके नाम हैं पक्का ताडका फल. पित्त, रक्त तथा कफ वर्द्धक कठिनता से पचनेवाला बहुमूत्रकारक और तन्द्रा अभिष्यन्द तथा वीर्यका करनेवाला होताहै पक्के ताडकी गिरी. कुछमदकारक हलकी कफवर्द्धक वातनाशक पित्तघ्न स्निग्ध मधुर और दस्तावर होती है ताड़ी बहुत मद करती है और खट्टी होजाने पर पित्तवर्द्धक तथा वात रोग नाशक होतीहै ॥ १६ ॥

अथ बेल ॥

बिल्वःशाण्डिल्यशैलूषौमालूरश्रीफलावपि। बालंबिल्वफलंबिल्वकर्कटीबिल्वपेशिका॥ ग्राहिणीकफवातामशूलघ्नीबिल्वपेषिका ।(अन्यच्च) बालंबिल्वफलंग्राहिदीपनम्पाचनङ्कटु ।कषायोष्णंलघुस्निग्धंतिक्तवातकफापहम् ॥ पक्वंगुरुत्रिदोषंस्याद्दुर्जरंपूतिमारुतम्। विदाहिविष्टम्भकरंमधुरंवह्निमान्द्यकृत्॥फलेषुपरिपक्वंयद्गुणवत्तदुदाहृतम्। बिल्वादन्यत्रविज्ञेयमामन्तद्धिगुणाधिकम्॥द्राक्षाबिल्वशिवादीनांफलंशुष्कंगुणाधिकम्॥१७॥

बेल के नाम व गुण॥

बिल्व,शांण्डिल्य, शैलूष, मालूर और श्रीफल यह बेलके नाम हैं बेलके कच्चे फलको बिल्व, कर्कटी और बिल्वपेशिका कहते हैं बेलका कच्चा फल. ग्राही, दीपन, पाचक, कटु, कषाय, उष्ण, हलका,तिक्त, स्निग्ध और वात तथा कफका नाशक होताहै पक्का बेल. भारी, त्रिदोषकारक, कठिनतासे पचनेवाला, वायु को सुगन्धित करनेवाला, विदाही, विष्टम्भी, मधुर और मन्दाग्नि करनेवाला होताहै फलों में पक्केही फल गुणदायक होते हैं परन्तु बेल नहीं क्योंकि यह कच्चाही अधिक गुणवाला होताहै मुनक्का बेल और हड आदिक फल सूखेही अधिक गुणवाले होते हैं ॥ १७ ॥

अथ कैथि ॥

कपित्थस्तुदधित्थःस्यात्तथापुष्पफलःस्मृतः ॥ कपिप्रियोदधिफलस्तथादन्तशठोऽपि च ॥ कपित्थमामंसंग्राहिकषायंलघुलेखनम्। पक्वंगुरुतृषाहिक्काशमनंवातपित्तजित्॥ स्यादम्लन्तुवरङ्कण्ठशोधनंग्राहिदुर्ज्जरम् ॥ १८ ॥

कैथे के नाम व गुण ॥

कपित्थ, दधित्थ, पुष्पफल, कपिप्रिय, दधिफल और दन्तशठ यह कैथे के नाम हैं कच्चा कैथा. ग्राही, कषैला, हलका और लेखन होताहै पक्का कैथा. भारी,तृषा, हिचकी,वात तथा पित्तनाशक, खट्टा, कषैला, कण्ठशोधक, ग्राही और कठिनता से पचनेवाला होताहै ॥ १८ ॥

अथ नारङ्गी ॥

नारङ्गोनागरङ्गःस्यात्त्वक्सुगन्धोमुखप्रियः। नारङ्गोमधुराम्लःस्याद्दीपनंवातनाशनम्॥ अपरन्त्वम्लमत्युष्णंदुर्ज्जरंवातहृत्सरम् ॥ १९ ॥

नारङ्गी के नाम व गुण ॥

नारङ्ग, नागरङ्ग, त्वक्सुगन्ध और मुखप्रिय यह नारंगी के नामहैं नारंगी. मधुर, खट्टी, दीपन और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वातनाशक होतीहै और दूसरे प्रकार की नारङ्गी बहुत खट्टी होती है यह उष्ण कठिनता से पचने वाली, वातनाशक और दस्तावर होतीहै ॥ १६ ॥

अथ तेन्दु ॥

तिन्दुकःस्फूर्जकःकालस्कन्धश्चाशितिसारकः। स्यादामन्तिन्दुकंग्राहिवातलंशीतलं लघु ॥ पक्वंपित्तप्रमेहास्रश्लेष्मघ्नंमधुरंगुरु ॥ २० ॥

तेंदुआ के नाम व गुण ॥

तिंदुक, स्फूर्जक, कालस्कन्ध और शितिसारक यह तेंदुआ के नाम हैं कच्चा तेंदुआ. ग्राही, बादी, शीतल और हलका होताहै पक्का तेंदुआ. मधुर, भारी और पित्त, प्रमेह, रक्तदोष तथा कफ नाशक होताहै ॥ २० ॥

अथ कुपीलु ॥

यस्यफलंकुचिलाइतिलोके। मकरतेंदुआइतिच ॥ तिन्दुकोयस्तुकथितोजलदोदीर्घपत्रकः। कुपीलुःकुलकःकाकतिन्दुकःकालपीलुकः ॥ काकेन्दुर्विषतिन्दुश्चतथामर्कटतिन्दुकः। कुपीलुःशीतलंतिक्तंवातलंमदकृल्लघु॥ पादव्यथाहरंग्राहिकफपित्तास्रनाशनम् २१॥

कुपील कुचले का वृक्ष इसके नाम व गुण ॥

तिन्दुक,जलद,दीर्घपत्रक,कुपीलु,कुलक,कालतिन्दुक, कालपीलुक, काकेन्दु, विषतिन्दु और मर्कटतिन्दुक यह कुपीलु अर्थात् कुचले के वृक्षके नाम हैं कुपीलु. शीतल, तिक्त, बादी, मदकारक, हलका, व्यथानाशक, ग्राही और कफ, पित्त तथा रक्तनाशक होता है ॥ २१ ॥

अथ फलेन्द्रा ॥

फलेन्द्राकथितानन्दीराजजम्बूर्महाफला। तथासुरभिपत्राचमहाजम्बूरपिस्मृता ॥ राजजम्बूफलंस्वादुविष्टम्भिगुरुरोचनम् ॥ २२ ॥

फलेंदा के नाम व गुण ॥

फलेन्द्रा, नन्दी, राजजम्बू सुरभिपत्रा और महाजम्बू यह फलेंदेके नामहैं फलेंदा. मधुर, विष्टम्भी, भारी और रुचिकारक होताहै ॥ २२ ॥

अथ जामुनीनदीजामुनी ॥

क्षुद्राजम्बूःसूक्ष्मपत्रानादेयीजलजम्बुका।जम्बूःसंग्राहिणीरूक्षाकफपित्तास्रदाहाजित् २३

छोटी जामन के नाम व गुण ॥

क्षुद्रजम्बू, सूक्ष्मपत्रा, नादेयी और जलजम्बुका यह छोटी जामनके नामहैं जामन. ग्राही, रूखी और कफ, पित्त, रक्त तथा दाहनाशक होतीहै ॥ २३ ॥

अथ बैरि ॥

पुंसिस्त्रियाञ्चकर्कन्धूर्बदरीकोलमित्यपि । फेनिलंकुवलंघोंटासौवीरंबदरंमहत् ॥ अजप्रियाकुहाकोलीविषमोभयकण्टका। तत्रबदरविशेषाणांलक्षणानिगुणाश्च । पच्यमानंसुमधुरंसौवीरंबदरंमहत्। सौवीरंबदरंशीतंभेदनंगुरुशुक्रलम् ॥ बृंहणम्पित्तदाहास्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्षयतृष्णानिवारणम्। सौवीरंलघुसम्पक्कंमधुरंकोलमुच्यते ॥ कोलन्तुबदरंग्र [illegible]रुच्यमु ष्णञ्चवातलम्। कफपित्तकरञ्चापिगुरुसारकमीरितम् ॥ कर्कन्धुक्षुद्रबदरंकथि[illegible]पूर्वसूरिभिः। अम्लंस्यात्क्षुद्रबदरंकषायंमधुरंमनाक् ॥ स्निग्धंगुरुचातिक्तञ्चवा[illegible]पित्तापहंस्मृतम्। शुष्कंभेद्यग्निकृत्सर्वंलघुतृष्णाक्लमास्रजित् ॥ २४ ॥

बेर के नाम व गुण ॥

कर्कन्धू (यह शब्द पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में होताहै) बदरी, कोल, फेनिल, कुवल, घोंटा, सौवीर, बदर, अजप्रिया, कुहा, कोली, विषम और भयकंटक यह बेरकेनाम हैं बेर अनेक प्रकारकेहोते हैं उन के लक्षण और गुण लिखते हैं जो बेर पकने के समयपर मधुर और बडाहो उसको सौवीर कहते हैं [illegible]वीर. शीतल, भेदक, भारी, वीर्यवर्द्धक, धातुवर्द्धक और पित्त, दाह, रक्तदोष तथा क्षयनाशक होता [illegible] बेर सौवीरसे कुछ छोटा और पकनेपर मधुर होताहै उसको कोल कहते हैं कोल. ग्राही, रुचिका[illegible]ष्ण, बादी, कफकारक, पित्तवर्द्धक, भारी और दस्तावर होताहै प्राचीन पण्डितलोग छोटे बेरको [illegible] कहते हैं कर्कन्धू. खट्टा, कुछ मधुर, कषाय, तिक्त, स्निग्ध, भारी और वात तथा पित्तनाशक [illegible]ता[illegible] सूखाबेर. भेदक, अग्निवर्द्धक, हलका और तृषा, ग्लानि तथा रक्तदोषनाशक होताहै २४॥

अथ पानीयामलकम् ॥

प्राचीनाम[illegible]दिक मुके पानीयामलकंस्मृतम्। प्राचीनामलकंदोषत्रयजिद्ज्वरघातिच २५॥

पानी आमलेके नाम व गुण ॥

लोकमें प्राचीनामलकको पानीयामलक कहते हैं यह त्रिदोषनाशक और ज्वरघ्न होताहै २५ ॥

अथ लवली। हरफारीइतिच ॥

सुगन्धमूलालवलीपाण्डुःकोमलवल्कला ॥ लवलीफलमश्मार्शःकफपित्तहरंगुरु ॥ विशदंरोचनंरूक्षंस्वाद्वम्लन्तुवरंरसे ॥ २६ ॥

हरफारेवडी के नाम व गुण ॥

सुगन्धिमूला, लवली, पाण्डु और कोमलवल्कला यह हरफारेवडी के नाम हैं हरफारेवडी. पथरी, बवासीर, कफ तथा पित्तनाशक, भारी, विशद, रुचिकारक, रूखी, मधुर, खट्टी और कषैली होती है २६॥

अथ करोंदा। करौंदी ॥

करमर्दःसुषेणःस्यात्कृष्णपाकफलस्तथा। तस्माल्लघुफलायातुसाज्ञेयाकरमर्दिका ॥ करमर्दद्वयंत्वाममम्लंगुरुतृषाहरम्। उष्णंरुचिकरंप्रोक्तंरक्तपित्तकफप्रदम् ॥ तत्पक्वंमधुरंरुच्यंलघुपित्तसमीरजित् ॥ २७ ॥

करोंदा और करौंदी के नाम व गुण ॥

करमर्द, सुषेण, कृष्णपाक और कृष्णफल यह करोंदा के नामहैं छोटेकरोंदे को करमर्दिका अर्थात् करौंदीकहते हैं दोनों प्रकारके कच्चे करोंदे. खट्टे, भारी, तृषानाशक, उष्ण, रुचिकारक और रक्तपित्त तथा कफकारक होते हैं और पकजानेपर. मधुर, रुचिकारक, हलके और पित्त तथा वातनाशक होते हैं २७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ प्रियालः ॥

प्रियालस्तुखरस्कन्धश्चारोबहुलवल्कलः ॥ राजादनस्तापसेष्टःसन्नकद्रुर्द्धनुष्पटः ॥ चारःपित्तकफास्रघ्नस्ततूफलंमधुरंगुरु ॥ स्निग्धंसरंमरुत्पित्तदाहज्वरतृषापहम् ॥ प्रियालमज्जामधुरोवृष्यःपित्तानिलापहः ॥ हृद्योऽतिदुर्जरःस्निग्धोविष्टम्भीचामवर्द्धनः ॥२८॥

चिरौंजी के नाम व गुण ॥

प्रियाल, खरस्कन्ध, चार, बहुलवल्कल, राजादन, तापसेष्ट, सन्नकद्रु और धनुष्पट यह चिरौंजी के नाम हैं चिरौंजी. पित्त कफ तथा रक्तदोषनाशक इसका फल. मधुर, भारी, स्निग्ध, दस्तावर और वात, पित्त, दाह, ज्वर तथा तृषानाशक होताहै इसकी मींगी. मधुर, वीर्यवर्द्धक,पित्तनाशक,वातघ्न, हृदयकोहित, कठिनतासे पचनेवाली, स्निग्ध, विष्टम्भी और आमवर्द्धक होती है ॥ २८ ॥

अथ क्षीरणी ॥

राजादनःफलाध्यक्षोराजन्याक्षीरिकापिच।क्षीरिकायाःफलंवृष्यंबल्यंस्निग्धंहिमंगुरु॥ तृष्णामूर्च्छामदभ्रान्तिक्षयदोषत्रयास्रजित् ॥ २९ ॥

खिन्नी के नाम व गुण ॥

राजादन, फलाध्यक्ष, राजन्य और क्षीरिका यह खिन्नीके नामहैं खिन्नी. वी[illegible]क, बलकारक, स्निग्ध, शीतल, भारी और तृषा, मूर्च्छा,मद,भ्रांति,क्षय,त्रिदोष तथा रक्तदोषनाशक होतीहै २९॥

अथ कण्टाइ ॥

विकङ्कतःस्रुवावृक्षोग्रन्थिलःस्वादुकण्टकः॥सएवयज्ञवृक्षश्चकण्टकीव्याघ्रपादपि॥ विकङ्कतफलंपक्वंमधुरंसर्वदोषजित् ॥ ३० ॥

कंटाई के नाम व गुण ॥

विकंकत, स्रुवावृक्ष, ग्रंथिल, स्वादुकंटक, यज्ञवृक्ष, कंटकी और व्याघ्रपात् यह कंटाई के नाम हैं कंटाई का पक्वफल.मधुर और सर्वदोषनाशक होता है ॥ ३० ॥

अथ कमलगट्टा ॥

पद्मबीजन्तुपद्माक्षंगालोड्यंपद्मकर्कटी। पद्मबीजंहिमंस्वादुकषायंतिक्तकंगुरु ॥ विष्टम्भिवृष्यंरूक्षञ्चगर्भसंस्थापकंपरम् । कफवातकरंबल्यंग्राहिपित्तास्रदाहनुत् ॥ ३१ ॥

कमलगट्टेके नाम व गुण ॥

पद्मबीज, पद्माक्ष, गालोड्य और पद्मकर्कटी यह कमलगट्टे के नामहैं कमलगट्टा. शीतल, मधुर, कषाय, तिक्त, भारी, विष्टम्भी, वीर्यवर्द्धक, रूखा, गर्भस्थितिकरने में श्रेष्ठ, कफकारी, बादी,बलकारक, ग्राही और पित्त, रक्तदोष तथा दाहनाशक होता है ॥ ३१ ॥

अथ मखाना ॥

माखान्नंपद्मबीजाभंपानीयफलमित्यपि। माखान्नंपद्मबीजस्यगुणैस्तुल्यंविनिर्दिशेत् ३२॥

मखानेके नाम व गुण ॥

माखान्न, पद्मबीजाभ और पानीयफल यह मखानेकेनामहैं मखानेमें कमलगट्टेके समानगुणहैं३२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ सिंघाड़ा ॥

शृङ्गाटकंजलफलंत्रिकोणफलमित्यपि । शृंगाटकंहिमंस्वादुगुरुवृष्यंकषाय... ॥ ग्राहि शुक्रानिलश्लेष्मप्रदंपित्तास्रदाहनुत् ॥ ३३ ॥

सिंघाडेके नाम व गुण ॥

शृङ्गाटक, जलफल और त्रिकोणफल यह सिंघाडेके नामहैं सिंघाडा. शीतल, कषैला, मधुर, भारी, धातुवर्द्धक, ग्राही, वीर्य्यवर्द्धक, बादी, कफकारक और पित्त, रक्तदोष तथा दाहनाशक होताहै ३३ ॥

अथ भेट ॥

...कुमुदबीजन्तुबुधैःकैरविणीफलम् । भवेत्कुमुद्वतीबीजंस्वादुरूक्षंहिमंगुरु ॥ ३४ ॥

कोकाबेलीके फलके नाम व गुण ॥

...पुनः... ...ण्डितलोग कैरविणीफल कहते हैं यह मधुर, रूखा, शीतल और भारी होताहै ३४ ॥

अथ महुआबनमहुआ ॥

म... ...पः स्यान्मधुपुष्पोमधुस्रवः । वानप्रस्थोमधुष्ठीलोजलजेत्रमधूलकः ॥ ...कंपुष्पं... शीतलंगुरुबृंहणम् । बलशुक्रकरंप्रोक्तंवातपित्तविनाशनम् । फलंशीतं गुरुस्वादु... ...वातपित्तनुत् । अहृद्यंहन्तितृष्णास्रदाहश्वासक्षतक्षयान् ॥ ३५ ॥

महुआ और वनमहुआके नाम व गुण ॥

मधूक, गुडपुष्प, मधुपुष्प, मधुस्रव, वानप्रस्थ और मधुष्ठील यह महुआके नाम हैं जलमें हुए महुएको मधूलक कहतेहैं महुएका पुष्प. मधुर, शीतल, भारी, धातुवर्द्धक, बलकारक, वीर्यवर्द्धक और वातपित्तनाशक होताहै महुएका फल. शीतल, भारी, मधुर, वीर्यवर्द्धक, हृदयको अहित और वात, पित्त, तृषा, रक्तदोष, दाह, श्वास, क्षत तथा क्षयनाशक होताहै ॥ ३५ ॥

अथ फरुसा ॥

परूषकन्तुपरुषमल्पास्थिचपरापरम् । परूषकंकषायाम्लमामंपित्तकरंलघु ॥ तत्प क्वंमधुरंपाकेशीतंविष्टम्भिबृंहणम् । हृद्यन्तुपित्तदाहास्रज्वरक्षयसमीरहृत् ॥ ३६ ॥

फालसे के नाम व गुण ॥

परूषक, परुष, अल्पास्थि और परापर यह फालसे के नामहैं फालसे का कच्चाफल. कषैला, खट्टा, पित्तवर्द्धक और हलका होताहै पक्का फालसा. पाक में मधुर, शीतल, विष्टम्भी, धातुवर्द्धक, हृदयको हित और पित्त, दाह, रक्तदोष, ज्वर, क्षय तथा वातनाशक होताहै ॥ ३६ ॥

अथ तूत ॥

तूतःस्थूलश्चपूगश्चक्रमुकोब्रह्मदारुच । तूतंपक्वंगुरुस्वादुहिमंपित्तानिलापहम् ॥ तदेवामंगुरुसरमम्लोष्णंरक्तपित्तकृत् ॥ ३७ ॥

सहतूतके नाम व गुण ॥

तूत, स्थूल, पूग, क्रमुक और ब्रह्मदारु यह सहतूतके नामहैं पक्का सहतूत. भारी, मधुर, शीतल और पित्तवातनाशक होताहै कच्चासहतूत. भारी, दस्तावर, खट्टा, उष्ण और रक्त पित्तकरनेवाला होताहै ३७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ अनार ॥

दाडिमं करकोदन्तबीजोलोहितपुष्पकः । तत्फलंत्रिविधंस्वादुस्वाद्वम्लंकेवलाम्ल
कम् ॥ तत्तुस्वादुत्रिदोषघ्नंतृड्दाहज्वरनाशनम् । हृत्कण्ठमुखगन्धघ्नंतर्पणंशुक्रलंलघु ॥
कषायानुरसंग्राहिस्निग्धंमेधाबलापहम् ॥ स्वाद्वम्लंदीपनंरुच्यंकिञ्चित्पित्तकरंलघु॥ अ
म्लन्तुपित्तजनकमम्लंवातकफापहम् ॥ ३८ ॥

अनारके नाम व गुण ॥

दाडिम, करक, दन्तबीज और लोहितपुष्पक यह अनार के नाम हैं इसका फल. मधुर, खटमिठा और केवल खट्टा इनभेदोंसे तीन प्रकारका होता है मीठा अनार. त्रिदोष, तृषा, दाह, ज्वर, हृदयरोग, कण्ठरोग तथा मुखरोगनाशक, तृप्तिकारक, वीर्यवर्द्धक, हलका, कुछ कषैला, ग्रा... स्नि... मेधा तथा बलवर्द्धक होताहै खटमिट्ठा अनार. दीपन, रुचिकारक, कुछ पित्तवर्द्धक ... है खट्टा अनार. पित्तवर्द्धक और कफवातनाशक होता है ॥ ३८ ॥

अथ बहुआर ॥

बहुवारस्तुशीतःस्यादुद्दालोबहुवारकः॥शेलुःश्लेष्मान्तकश्चापिपिच्छि...तरुका:
बहुवारोविषस्फोटव्रणवीसर्पकुष्ठनुत् ॥ मधुरस्तुवरास्तिक्तःकेश्यश्चकफापि... ॥ फलमा
मन्तुविष्टम्भिरूक्षंपित्तकफास्रजित् । तत्पक्वंमधुरंस्निग्धंश्लेष्मलंशीतलंगुरु ॥ ३९ ॥

लिसौंडे के नाम व गुण ॥

बहुवार, शीत, उद्दाल, बहुवारक, शेलु, श्लेष्मांतक, पिच्छिल और भूतवृक्षक यह लिसौंडेके नाम हैं लिसौडा. विष, स्फोटक, घाव, वीसर्प, कुष्ठ, कफ तथा पित्तनाशक, मधुर, कषाय, तिक्त और केशोंको हित होताहै कच्चालिसौडा. विष्टम्भी, रूखा और पित्त, कफ तथा रक्तदोषनाशक होता है पक्का लिसौडा. मधुर, स्निग्ध, कफकारक, शीतल और भारी होता है ॥ ३९ ॥

अथ कतकः ॥

पयःप्रसादिकतकङ्कतकंतत्फलञ्चतत् । कतकस्यफलंनेत्र्यंजलनिर्मलताकरम् ॥
वातश्लेष्महरंशीतंमधुरंतुवरंगुरु ॥ ४० ॥

निर्मली के नाम व गुण ॥

पयःप्रसादि और कतक यह निर्मली के नाम हैं और इसके फलको भी कतक कहते हैं निर्मली का फल. नेत्रों को हित, जलका निर्मल करनेवाला. वातनाशक, कफघ्न, शीतल, मधुर, कषैला और भारी होता है ॥ ४० ॥

अथ द्राक्षा ॥

द्राक्षास्वादुफलाप्रोक्तातथामधुरसापिच । मृद्वीकाहारहूराचगोस्तनीचापिकीर्तिता ॥
द्राक्षापक्कासराशीताचक्षुष्याबृंहणीगुरुः । स्वादुपाकरसास्वर्य्यातुवरासृष्टमूत्रविट् ॥ को
ष्ठमारुतकृद्वृष्याकफपुष्टिरुचिप्रदा । हन्तितृष्णाज्वरश्वासवातवातास्रकामलाः ॥ कृ
च्छ्रास्रपित्तसंमोहदाहशोषमदात्ययान् ॥ आमास्वल्पगुणागुर्वी सैवाम्लारक्तपित्तकृ
त् ॥ वृष्यास्याद्गोस्तनीद्राक्षा गुर्वीचकफपित्तनुत् । (गोस्तनी मुनक्का इतिलोके)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अबीजान्यास्वल्पतरा गोस्तनीसदृशीगुणैः । द्राक्षापर्वतजालघ्वी साम्लाश्लेष्माम्लपित्तकृत् ॥ द्राक्षापर्वतजायादृक् तादृशीकरमर्दिका । अबीजा । ईषद्बीजा । किसमिस इति लोके । पर्वतजा पहारी इति लोके । करमर्दिका करौंदी इतिलोके ॥ ४१ ॥

दाखके नाम व गुण ॥

द्राक्षा, स्वादुफला, मधुरसा, मृद्वीका, हारहूरा और गोस्तनी यह दाखके नामहैं पकीहुई दाख. दस्तावर, शीतल, नेत्रोंकोहित, धातुवर्द्धक, भारी, पाकमें मधुर२ कषाय, मधुर, स्वरकोहित, मलमूत्र ... निकालनेवाली, कोष्ठमें वात उत्पन्नकरनेवाली, वीर्यवर्द्धक, कफकारक, पोषक, रुचिकारक और तृष्णा, ज्वर, श्वास, वात, वातरक्त, कामला, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, मोह, दाह, शोष और मदनाशक होती है ... उससे गुणोंमें न्यूनहोतीहै खट्टीदाख. रक्त, पित्तकारकहोती है मुनक्का. वीर्यवर्द्धक, भारी और ... क होता है किसमिस. मुनक्काकेही समान गुणवाली होतीहै पहाड़ीदाख. हलकी, ... अम्लपित्तकारक होतीहै जैसी पहाड़ीदाख होती है वैसीही करौंदी होतीहै ॥ ४१ ॥

अथ क्षुद्रखर्ज्जूरी । पिण्डखर्ज्जूरी छोहारा ॥

भूमिखर्जूरिका स्वाद्वी दुरारोहामृदुच्छदा । तथास्कन्धफलाकाककर्कटीस्वादुमस्त... पी । पिण्डखर्जूरिकात्वन्या सादेशेपश्चिमेभवेत् । खर्ज्जूरीगोस्तनाकारा परद्वीपादिहागता ॥ ... दिक मुश्चिमेदेशे साछोहारेतिकीर्त्यते । खर्ज्जूरीत्रितयंशीतं मधुरंरसपाकयोः ॥ स्निग्धरुचिकरंहृद्यं क्षतक्षयहरंगुरु । तर्पणंरक्तपित्तघ्नं पुष्टिविष्टम्भशुक्रदम् ॥ कोष्ठमारुतहृद्बल्यं वान्तिवातकफापहम् । ज्वरातिसारक्षुत्तृष्णाकासश्वासनिवारकम् ॥ मदमूर्च्छामरुत्पित्तमद्योद्भूतगदान्तकृत् । महतीभ्यांगुणैरल्पा स्वल्पखर्ज्जूरिकास्मृता ॥ खर्जूरीतरुतोयन्तु मदपित्तकरंभवेत् ॥ वातश्लेष्महरंरुच्यं दीपनंबलशुक्रकृत् ॥ ४२ ॥

खजूर पिण्डखजूर और छुहाराके नाम व गुण ॥

भूमिखर्जूरिका, स्वाद्वी, दुरारोहा, मृदुच्छदा, स्कन्धफला, काककर्कटी और स्वादुमस्तका यह खजूर के नामहैं और दूसरी पिंडखजूर कहलातीहै वह पश्चिमदेश में उत्पन्नहोती है मुनक्का के समान आकारवाली खजूर अन्यद्वीपसे यहांआई और पश्चिमदेशमें उत्पन्नहोती है उसको छुहारा कहते हैं और तीनों प्रकारकी खजूर. शीतल, रस तथा पाकमें मधुर, स्निग्ध, रुचिकारक, हृदयकोहित, क्षत तथा क्षयनाशक, भारी, तृप्तिकारक, रक्तपित्तनाशक, पोषक, विष्टम्भी, वीर्यवर्द्धक, बलकारक और कोष्ठकीवायु, छर्दि, वात, कफ, ज्वर, अतीसार, क्षुधा, तृषा, खांसी, श्वास, मद, मूर्च्छा, वातपित्त तथा मदात्ययरोगनाशक होतीहैं छोटी खजूर में बड़ी खजूर से कम गुण होतेहैं खजूरके वृक्षकारस. मदकारक, पित्तवर्द्धक, वातघ्न, कफनाशक, रुचिकारक, दीपन, बलकारक और वीर्यवर्द्धक होताहै ॥ ४२ ॥

अथ पिण्डखर्ज्जूरीभेदः सुलेमानी ॥

सुलेमानीतुमृदुलादलहीनफलाचसा । सुलेमानीश्रमभ्रान्तिदाहमूर्च्छास्रपित्तहृत् ४३

पिण्डखजूरकाभेद सुलहमानी के नाम व गुण ॥

सुलेमानी, मृदुला और दलहीनफला यह सुलेमानीके नामहैं सुलेमानी. श्रम, भ्रम, दाह, मूर्च्छा और रक्तपित्तनाशक होतीहै ॥ ४३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ बादाम ॥

वाताद[illegible]वैरीस्यान्नेत्रोपमफलस्तथा ॥ वातादउष्णःसुस्निग्धो वातघ्नःशुक्रकृद् गुरुः ॥ व[illegible]मज्जामधुरो वृष्यःपित्तानिलापहः । स्निग्धोष्णःकफकृन्नेष्टो रक्तपित्तविकारिणाम् ॥ ४४ ॥

बदाम के नाम व गुण ॥

वाताद, वातवैरी और नेत्रोपमफल यह बदामके नामहैं बदाम. उष्ण, स्निग्ध, वातनाशक, वीर्यवर्द्धक और भारी होताहै बदामकी गिरी. मधुर, वीर्यवर्द्धक, पित्तघ्न, वातनाशक, स्निग्ध, उष्ण, कफकारक होतीहै यह रक्तपित्तके विकारवालोंको हित नहीं होती है ॥ ४४ ॥

अथ सेव ॥

मुष्टिप्रमाणंबदरं सेवंसिवितिकाफलम् । सेवंसमीरपित्तघ्नं बृंहणंकफ[illegible]रु पाके च मधुरं शिशिरंरुचिशुक्रकृत् ॥ ४५ ॥

सेव के नाम व गुण ॥

मुष्टिप्रमाण, बदर, सेव और सिवितिकाफल यह सेवके नामहैं सेव. वातघ्न, पि[illegible]तुवर्द्धक, कफकारक, भारी, रस तथा पाकमें मधुर, शीतल, रुचिकारक और वीर्यवर्द्ध[illegible]ताहै ॥ ४५

अथामृतफलम् ॥

यत् खुरासानकाबुलप्रभृतिषुदेशेषु नासपातीति प्रसिद्धम् ॥ अ[illegible]लघुवृष्यं सुस्वादुत्रीनहरेद्दोषान् । देशेषुमुद्गलानां बहुलन्तल्लभ्यतेलोकैः ॥ ४६ ॥

नासपाती के नाम व गुण ॥

अमृतफल (नासपाती) हलकी, वीर्यवर्द्धक, स्वादिष्ठ, त्रिदोषनाशक होती है यह मुद्गलादि देशमें बहुतमिलती है ॥ ४६ ॥

अथ पीलूः ॥

पीलुर्गुडफलःस्रंसी तथाशीतफलोऽपिच । पीलुश्लेष्मसमीरघ्नं पित्तलंभेदिगुल्मनुत् ॥ स्वादुतिक्तञ्चयत्पीलु तन्नात्युष्णन्त्रिदोषहृत् ॥ ४७ ॥

पीलू के नाम व गुण ॥

पीलु, गुडफल, स्रंसी और शीतफल यह पीलू के नामहैं पीलू. कफघ्न, वातनाशक, पित्तवर्द्धक, भेदक और गुल्मनाशक होताहै मधुर, तिक्त, रसवाला पीलू. बहुत उष्ण नहीं होता और त्रिदोषको नाश करताहै ॥ ४७ ॥

अथ अखरोटपीलुः

पीलुःशैलभवोक्षोटः कर्परालश्चकीर्त्तितः । अक्षोटकोऽपिवातादसदृशः कफपित्तकृत् ॥ ४८ ॥

अखरोट के नाम व गुण ॥

पीलु, शैलभव, अक्षोट और कर्पराल यह अखरोट के नाम हैं अखरोट. बदाम के समान गुणवाला और कफपित्तकारक होताहै ॥ ४८ ॥

अथ विजौरा ॥

बीजपूरोमातुलुङ्गोरुचकःफलपूरकः । बीजपूरफलंस्वादुरसेम्लंदीपनंलघु ॥ रक्तपित्तहरंकण्ठजिह्वाहृदयशोधनम् ॥ श्वासकासारुचिहरं हृद्यंतृष्णाहरंस्मृतम् ॥ ४९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बिजौरा के नाम व गुण ॥

बीजपूर, मातलुङ्ग, रुचक और फलपूरक यह बिजौरा के नामहैं बिजौरेकाफल. अम्ल, दीपन, हलका, रक्तपित्तनाशक,कण्ठ,जिह्वा और हृदयकाशोधक, हृदयकोहित और खांसी, अरुचि तथा तृषानाशक होताहै ॥ ४६ ॥

अथ बिजौराभेद मधुककड़ी ॥

बीजपूरोऽपरःप्रोक्तो मधुरोमधुकर्कटी । मधुकर्कटिकास्वाद्वी रोचनीशीतलागुरुः ॥ रक्तपित्तक्षयश्वासकासहिक्काभ्रमापहा ॥ ५० ॥

बिजौराका भेद मधुककड़ीके नाम व गुण ॥

दूसरे प्रकारके बिजौरे (चकोतरे)को मधुर और मधुकर्कटी कहते हैं मधुककडी. मधुर, रुचि-कारक, शीतल, भारी और रक्तपित्त, क्षय, श्वास, खांसी, हिचकी तथा भ्रमनाशक होती है ॥ ५० ॥

अथ जम्बीरीद्वयम् ॥

... पुनःप्रोक्तो दन्तशठो जम्भजम्भीरजम्भलाः । जम्बीरमुष्णंगुर्वम्लं वातश्लेष्म ... लकासकफोत्क्लेश छर्दितृष्णामदोषजित् । आस्यवैरस्यहृत्पीडावह्निमा ... स्वल्पजम्बीरिकातद्वत् तृष्णाछर्दिनिवारणी ॥ ५१ ॥

दोनोंजंभीरी नींबूके नाम व गुण ॥

जम्बीर, दन्तशठ, जम्भ, जम्भीर और जम्भल यह जंभीरी नींबूके नामहैं जंभीरी. उष्ण, भारी, खट्टा और वात, ..., विबन्ध, शूल, खांसी, कफकी पीडा, छर्दि, तृषा, आमदोष, मुखकी विरसता, हृदयकी पीडा, मन्दाग्नि तथा कृमिनाशक होताहै छोटा जम्भीरी भी इसीके समान गुणवाला होता है और विशेषकरके तृषा और छर्दिनाशक होताहै ॥ ५१ ॥

निम्बू ॥

निम्बूस्त्रीनिम्बुकंक्लीबे निम्बूकमपिकीर्त्तितम् । निम्बूकमम्लंवातघ्नं दीपनंपाचनंलघु ॥ (अन्यच्च) निम्बूकङ्कृमिसमूहनाशनन्तीक्ष्णमम्लमुदरग्रहापहम् । वातपित्तकफशूलिनेहितंकष्टनष्टरुचिरोचनंपरम् ॥ त्रिदोषवह्निक्षयवातरोगनिपीडितानां विषविह्वलानाम् । मन्दानलेबद्धगुदेप्रदेयं विसूचिकायांमुनयोवदन्ति ॥ ५२ ॥

नींबूके नाम व गुण ॥

निम्बू (स्त्रीलिङ्ग) निम्बुक (नपुंसकलिङ्ग) और निंबूक यह नींबूके नामहैं नींबू. खट्टा, वातनाशक, दीपन, पाचक और हलका होताहै और भी कहाहुआ है कि निम्बू. कृमिसमूहनाशक, तीक्ष्ण, खट्टा, उदररोगनाशक, ग्रहोंका शान्तकरनेवाला, वात, पित्त, कफ तथा शूलवाले को हित, कष्टसाध्य तथा नष्टहोगई रुचिवाले को रुचिकारक और त्रिदोष, मन्दाग्नि, वातरोग, विष, गलेकेरोग, बद्धगुद और विसूचिकामें देनेके योग्य होताहै यह मुनियोंने कहाहै ॥ ५२ ॥

अथ मिष्टनिम्बू ॥

मिष्टनिम्बूफलंस्वादु गुरुमारुतपित्तनुत् । गररोगविषध्वंसि कफोत्क्लेशिचरक्तहृत् ॥ शोषारुचितृषाछर्दि हरंबल्यञ्चबृंहणम् ॥ ५३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मीठेनिंबूके गुण ॥

मीठ[illegible] मधुर, भारी, वातघ्न, पित्तनाशक, कफका उखाड़नेवाला, बलकारक, धातुवर्द्धक और गरदोष, [illegible]दोष, शोष, अरुचि, तृषा तथा छर्दिनाशक होताहै ॥ ५३ ॥

अथ कर्म्मरङ्गम् ॥

कर्म्मरङ्गंहिमंग्राहिस्वाद्वम्लंकफवातहृत् ५४ (अथ अम्लिका) अम्लिकाचुक्रिकाम्ली च चुक्रादन्तशठापिच । अम्लाचचिंचकाचिञ्चा तिन्तिडीकाचतिन्तिडी । अम्लिका म्लागुरुर्वातहरीपित्तकफास्रकृत् । पक्वातुदीपनीरूक्षा सरोष्णाकफवातनुत् ॥ ५५ ॥

कमरखके गुण ॥

कर्मरङ्ग (कमरख) शीतल, ग्राही, मधुर, खट्टो और कफवातनाशक होतीहै ५४ ॥ (इमली[illegible] व गुण) अम्लिका, चुक्रिका, अम्ली, चुक्रा, दन्तशठा, अम्ला, चिंचिका, चिंचा, तिंतिडी[illegible] यह इमलीके नामहैं कच्चीइमली खट्टी भारी, वातनाशक और रक्त तथा कफकारक[illegible] दीपन, रूखी, दस्तावर, उष्ण और कफ तथा वातनाशक होतीहै ॥ ५५ ॥

अथाम्लवेतसः ॥

स्यादम्लवेतसश्चुक्रंशतवेधिसहस्रनुत् । अम्लवेतसमत्यम्लंभेद[illegible]दीपनम् हृद्रोगशूलगुल्मघ्नंपित्तलंलोमहर्षणम् । रूक्षंविण्मूत्रदोषघ्नंप्लीहोदावर्त्तन[illegible] ॥ हि[illegible] नाहारुचिश्वासकासाजीर्णवमिप्रणुत् । कफवातामयध्वंसिछागमांसद्रवत्वकृत् । चणका म्लगुणंज्ञेयंलोहसूचीद्रवत्वकृत् ॥ ५६ ॥

अमलबेतके नाम व गुण ॥

अम्लबेतस चुक्र शतबेधी और सहस्रनुत यह अमलबेतके नामहैं अमलबेत. अत्यन्त खट्टा, भेदक हलका, दीपन, पित्तवर्द्धक, रोमांचकारक, रूखा और हृदयके रोग, शूल, गुल्म, मलदोष, मूत्रदोष, प्लीहा, उदावर्त्त, हिचकी, आनाह, अरुचि, श्वास, खांसी, अजीर्ण, छर्दि, कफरोग तथा वातरोगनाशक होताहै इससे बकरेका मांस जल्दी गलताहै इसमें चनेकी कांजीके समान गुण होताहै और यह लोहेकी सुई को गलाताहै ॥ ५६ ॥

अथ विषाम्बिल ॥

वृक्षाम्लन्तिन्तिडीकञ्चचुक्रंस्यादम्लवृक्षकम् । वृक्षाम्लमाममम्लोष्णंवातघ्नंकफपित्तलम् । पक्वन्तुगुरुसंग्राहिकटुकन्तुवरंलघु ॥ अम्लोष्णंरोचनंरूक्षंदीपनंकफवातकृत् । तृष्णार्शोग्रहणीगुल्मशूलहृद्रोगजन्तुजित् ॥ ५७ ॥

विषाम्बिलके नाम व गुण ॥

वृक्षाम्ल, तिंतिडीक, चुक्र और अम्लवृक्ष यह विषाम्बिलके नामहैं कच्चा विषाम्बिल. खट्टा, उष्ण, वातघ्न, कफकारक और पित्तवर्द्धक होताहै पक्का विषाम्बिल. भारी, ग्राही, कटु, कषैला, खट्टा, हलका, उष्ण, रुचिकारक, रूखा, दीपन, कफकारक, बादी और तृषा, बवासीर, ग्रहणी, गुल्म, शूल, हृदयकेरोग तथा कृमिनाशक होताहै ॥ ५७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ चतुरम्लपञ्चाम्लयोर्लक्षणम् ॥

अम्लवेतसवृक्षाम्लस्[illegible]जम्बीरनिम्बुकैः।चतुरम्लंहिपञ्चाम्लंबीजपूरयु[illegible]तु ५८॥

चतुरम्ल और पञ्चाम्लके लक्षण ॥

अमलबेत, चूकाशाक, बड़ाजंभीरी और निंबू इनचारोंको चतुरम्ल कहते हैं और [illegible]में बिजौरा मिलाने से पंचाम्ल कहलाताहै ॥ ५८ ॥ अथ परिभाषा ॥

फलेषुपरिपक्वंयद्गुणवत्तदुदाहृतम् । बिल्वादन्यत्रविज्ञेयमामंतद्धिगुणाधिकम् ॥ फले[illegible]सरसंयत्स्याद्गुणवत्तदुदाहृतम् । द्राक्षाबिल्वशिवादीनांफलंशुष्कंगुणाधिकम् ॥ फल[illegible]पणंसर्वमज्ञानमपिनिर्दिशेत् । फलंहिमाग्निदुर्वातव्यालकीटादिदूषितम् ॥ अका[illegible]जम्पाकातीतंनभक्षयेत् । पाकातीतंपाकमतिक्रम्यस्थितम् ॥ ५९ ॥

इति श्रीभावप्रकाशे फलवर्गः ॥

परिभाषा ॥

बेल[illegible]हर सम्पूर्ण फल पक्केही गुणदायक होते हैं और बेल कच्चाही अधिकगुणवाला हो-त[illegible] फल है वायुकही गुणदायक होते हैं परन्तु दाख बेल और हड़ आदिक सूखेही अधिकगुण-वा[illegible]होते हैं और [illegible] गुणके समान फलोंकी मींगीके भी गुण जानने चाहिये जो फल पाला अग्नि वि[illegible]युक्त वायुदिक [illegible]र कीटादिकोंके द्वारा दूषित अकालमें उत्पन्न खराब पृथ्वी में पैदाहुआ और पकनेके उपरान्त [illegible] अधिक दिनतक रहा (उतराहुआ) हो वह फल भक्षणके योग्य नहीं रहताहै ५९॥

इति भावप्रकाशस्यभाषानुवादेफलवर्गः समाप्तः ॥

अथ धातूपधातुरसोपरसरत्नोपरत्नविषोपविषवर्गः ॥

तत्र धातूनांलक्षणानिगुणाश्च ॥

स्वर्णंरूप्यञ्चताम्रञ्चरङ्गंयसदमेवच । सीसंलौहञ्चसप्तैतेधातवोगिरिसम्भवाः ॥ वलीपलितखालित्यकार्श्यबल्यजरामयान् । निवार्य्यदेहंदधतिनृणांतद्धातवोमताः ॥ १ ॥

अथ धातु उपधातु रस उपरस रत्न उपरत्न विष उपविष वर्गः ॥

धातुओंके लक्षण और गुण ॥

सुवर्ण, रूपा, तांबा, रांगा, जस्त, सीसा और लोहा यह सात धातु पर्व्वतसे उत्पन्न होती हैं यह झुर्रीबालोंका पकना गञ्जापन कृशता दुर्बलता और वृद्धावस्था आदि रोगोंको दूरकरके देहको पुष्ट करती हैं इसलिये इनको धातु कहते हैं ॥ १ ॥

तत्रादौसुवर्णस्योत्पत्तिनामलक्षणगुणाश्च ॥

पुरानिजाश्रमस्थानांसप्तर्षीणांजितात्मनाम् । पत्नीर्विलोक्यलावण्यलक्ष्मीसम्पन्नयौवनाः । कन्दर्पदर्पविध्वस्तचेतसोजातवेदसः । पतितंयद्धरापृष्ठेरेतस्तद्धेमतामगात् ॥ मरीचिरङ्गिराअत्रिःपुलस्त्यःपुलहःक्रतुः । वशिष्ठश्चेतिसप्तैतेकीर्तिताःपरमर्षयः । कृत्रिमञ्चापिभवतितद्रसेन्द्रस्यवेधतः ॥ स्वर्णंसुवर्णंकनकंहिरण्यंहेमहाटकम् । तपनीयञ्चगा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चामीकरंशातकुम्भंतथाकार्त्तस्वरञ्चतत् । जाम्बूनदंजातरूपमहा[illegible]मित्यपि । दाहेरक्तंसितंच्छेदेनिषेकेकुंकुमप्रभम् ॥ तारंशुल्वोज्झितंस्निग्धं कोमलंगुरु[illegible]सत् (सत्तमम्) तच्छ्वेतंकठिनंरूक्षंविवर्णंसमलंदलम् । दाहेछेदेसितंश्वेतंकषेत्या[illegible]लघुस्फुटम् (दलझोरइतिलोके स्फुटंयद्घनाहतंस्फुटति) सुवर्णंशीतलं वृष्यंबल्यंगुरुरसायनम् ॥ स्वादुतिक्तञ्चतुवरंपाकेचस्वादुपिच्छिलम् । पवित्रंबृंहणंनेत्र्यंमेधास्मृतिमतिप्रदम् ॥ हृद्यमायुःकरंकान्तिवाक्विशुद्धिस्थिरत्वकृत् । विषद्वयक्षयोन्मादत्रिदोषज्वरशोषजित् ॥ बलंसवीर्य्यंहरतेनराणांरोगव्रजान्पोषयतीहकाये असौख्यकर्त्तीचसदासुवर्णमशुद्धमेतन्मरणञ्चकुर्य्यात् ॥ असम्यङ्मारितंस्वर्णंबलं[illegible] ञ्चनाशयेत् । करोतिरोगानूमृत्युञ्चतद्धन्यात्प्रयत्नतस्ततः ॥ २ ॥

सुवर्णकी उत्पत्ति नामलक्षण और गुण ॥

पूर्वकालमें अपने आश्रममें बैठेहुये जितेन्द्रिय सप्तर्षिलोगोंकी युवावस्थायुक्त[illegible] को देखकर कामके वेगसे चलायमानचित्तवाले अग्निदेवताका जो वीर्य पृथ्वीप[illegible]वर्ण गया मरीचि, अंगिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और वशिष्ठ यह सातों ऋषि [illegible] पारेके बेधसे कृत्रिम सुवर्णभी होताहै स्वर्ण, सुवर्ण, कनक, हिरण्य, हेम, हाटक, तपनी[illegible] काञ्चन, चामीकर, शातकुम्भ, कार्त्तस्वर, जाम्बूनद, जातरूप और महारजत य[illegible]के नामहैं जो सुवर्ण तपानेसे लाल, काटनेसे श्वेत, कसौटीमें कसनेसे केशरके समान चांदीरहित तांबेसे रहित स्निग्ध कोमल और भारी होताहै वह उत्तम होताहै जो सुवर्ण श्वेत कठिन रूखा विवर्ण मलयुक्त दलवाला तपानेमें तथा काटनेमें श्वेत कसौटीपर कसनेसे घीके वर्ण हलका और घनके मारनेसे फटनेवाला होताहै वह निकृष्ट कहाताहै सुवर्ण. शीतल, वीर्यवर्द्धक, बलकारक, भारी, रसायन, मधुर, तिक्त, कषैला, पाकमें मधुर, पिच्छिल, पवित्र, धातुवर्द्धक, नेत्रोंको तथा बुद्धिकोहित, स्मृतिदायक, बुद्धिवर्द्धक, हृदयको हित, आयुवर्द्धक, कान्तिकारक, वाणीको उत्तम तथा स्थिर करनेवाला और स्थावर, जङ्गम, विष, क्षय, उन्माद, त्रिदोष, ज्वर तथा राजयक्ष्मा नाशक होताहै अशुद्ध सुवर्ण. बलवीर्य नाशक रोगकारी शरीरशोषक और सुखका नाशक होताहै और इससे मृत्युभी होजाती है अच्छेप्रकार से नहीं माराहुआ सुवर्ण. बलवीर्यनाशक और रोग तथा मृत्युकारक भी होताहै इससे यत्नपूर्वक सुवर्ण को मारना चाहिये ॥ २ ॥

अथ रूप्यस्योत्पत्तिनामलक्षणगुणाश्च ॥

त्रिपुरस्यवधार्थायनिर्निमिषैर्विलोचनैः । निरीक्षयामासशिवःक्रोधेनपरिपूरितः ॥ अग्निस्ततकालमपतत्तस्यैकस्माद्विलोचनात् । ततोरुद्रःसमभवद्वैश्वानरइवज्वलन् ॥ द्वितीयादपतन्नेत्रादश्रुबिन्दुस्तुवामकात् । तस्माद्रजतमुत्पन्नमुक्तकर्म्मसुयोजयेत् ॥ कृत्रिमञ्चभवेत्तद्धिवङ्गादिरसयोगतः । रूप्यन्तुरजतंतारञ्चन्द्रकान्तिसितप्रभम् ॥ गुरुस्निग्धंमृदुश्वेतंदाहच्छेदघनक्षमम् । वर्णाढ्यंचन्द्रवत्स्वच्छंरूप्यंनवगुणंशुभम् ॥ कठिनंकृत्रिमंरूक्षंरक्तंपीतदलंलघु । दाहच्छेदघनैर्नष्टंरूप्यंदुष्टंप्रकीर्तितम् ॥ रूप्यंशीतंकषायाम्लंस्वा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दुपाकरसंसरम् । वय[illegible]स्थापनंस्निग्धंलेखनंवातपित्तजित् ॥ प्रमेहादिक[illegible]नाश यत्यचिराद्ध्रुवम् । तारंश[illegible]रीरस्यकरोतितापंविद्वंघनंयच्छतिशुक्रनाशम् [illegible]यंबलंह न्तितनोश्चपुष्टिंमहागदान्पोषयतिह्यशुद्धम् ॥ ३ ॥

रूपेकी उत्पत्तिनामलक्षण और गुण ॥

त्रिपुरके मारनेके लिये क्रोधमें पूर्णहोके शिवजीने विना पलक लगाये नेत्रोंसे देखा उससमय एक नेत्रसे अग्नि गिरी उस अग्निसे अग्निके समान जाज्वल्यमान रुद्र उत्पन्न हुए और दूसरे वाम नेत्र से अश्रुबिन्दु गिरा उससे चांदी उत्पन्न हुई उसको कहेहुए अनेक कामोंमें लानाचाहिये यह वङ्ग आदि [illegible]ओंके योगसे कृत्रिमभी होतीहै रूप्य,रजत, तार,चन्द्रकांति और सितप्रभ यह रूपाके नामहैं जो रूपा. तृष[illegible] चिकना,कोमल,तपानेसे अथवा काटनेसे श्वेत,चोटका सहने वाला,चन्द्रमाके समान कान्तिवा- [illegible] स्वच्छ होताहै वह श्रेष्ठहै जो रूपा. काठिन, कृत्रिम, रूखा,रक्तवर्ण, पीतदलयुक्त, हलका और [illegible] तथा चोट लगानेसे विकारयुक्त होवे वह निकृष्टहै रूपा,शीतल, कषैला, खट्टा, मधुर, [illegible]वर, अवस्थाका स्थित रखनेवाला, स्निग्ध, लेखन और वातपित्त तथा प्रमेह आदि [illegible]क होताहै विनाशोधा हुआ रूपा. तापकारक, वीर्य्य, बल, वीर्यनाशक, धातु तथा शरीर[illegible]शक और बडे रोगोंका उत्पन्न करनेवाला होताहै ॥ ३ ॥

अथ ताम्रस्योत्पत्तिर्नामलक्षणंगुणाश्च ॥

शुक्रंय[illegible]केयस्यपतितंधरणीतले। तस्मात्ताम्रंसमुत्पन्नमिदमाहुःपुराविदः ॥ ताम्रमौदुम्बरंशुल्बमुदुम्बरमपिस्मृतम् । रविप्रियंम्लेच्छमुखंसूर्य्यपर्यायनामकम् ॥ जपाकुसुमसङ्काशंस्निग्धंमृदुघनक्षमम् । लोहनागोज्झितंताम्रंमारणायप्रशस्यते ॥ कृष्णंरूक्षमतिस्तब्धंश्वेतञ्चापिघनासहम् । लोहनागयुतञ्चेतिशुल्बंदुष्टंप्रकीर्तितम् ॥ ताम्रंकषायंमधुरञ्चतिक्तमम्लञ्चपाकेकटुसारकञ्च । पित्तापहंश्लेष्महरञ्चशीतंतद्रोपणंस्याल्लघुलेखनञ्च ॥ पाण्डूदरार्शोज्वरकुष्ठकासश्वासक्षयान्पीनसमम्लपित्तम् । शोथंकृमिंशूलमपाकरोतिप्राहुःपरेबृंहणमल्पमेतत् ॥ एकोदोषोविषेताम्रेत्वसम्यङ्मारितेऽष्टते । दाहःश्वेदोरुचिर्मूर्च्छाक्लेदोरेकोवमिर्भ्रमः (रेकोविरेकः) ॥ ४ ॥

तांबेकी उत्पत्तिनाम लक्षण और गुण ॥

प्राचीन पण्डित लोग कहते हैं कि जो स्वामिकार्तिकजी का वीर्य्य पृथ्वी पर गिरा उससे तांबा उत्पन्न हुआ ताम्र, औदुम्बर, शुल्ब, उदुम्बर, रविप्रिय, म्लेच्छमुख और सूर्यके संपूर्णनाम यह तांबे के नामहैं जो तांबा. गुडहलके फूलके समान वर्णयुक्त, चिकना, कोमल, चोटसहनेवाला और लोह तथा सीसेके मेलसे रहित होताहै वह श्रेष्ठहै जो तांबा.कृष्ण अथवा श्वेतवर्ण रूखा बहुत कठिन लोह तथा सीसेके मेलवाला और चोट लगनेसे फटने वाला होताहै वह निकृष्ट होताहै तांबा.कषाय,मधुर, तिक्त, अम्ल, पाकमेंकटु, दस्तावर, पित्त तथा कफनाशक, शीतल, घावका पूरनेवाला, हलका ,लेखन, कुछ धातु वर्द्धक और पांडु, उदर, बवासीर, ज्वर, कुष्ठ, खांसी, श्वास,क्षय, पीनस, अम्लपित्त, सूजन, कृमि तथा शूलनाशक होताहै विषमें एक दोष होताहै और अच्छे प्रकार से विना मारेहुए तांबेमें दाह, स्वेद, अरुचि, मूर्च्छा, क्लेद, दस्त, छर्दि और भ्रम यह आठ दोष होते हैं ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ रङ्गस्यनामलक्षणगुणाः ॥

रङ्गं ... प्रोक्तंतथापिच्चटमित्यपि । खुरकंमिश्रकञ्चापिद्विविधंवङ्गमुच्यते ॥ उत्तमं खुरकंतत्र ... कंत्ववरंमतम् । रङ्गंलघुसरंरूक्षमुष्णंमेहकफक्रमीन् ॥ निहन्तिपाण्डुंसश्वासंचक्षुष्यं ... मनाक् । सिंहोयथाहस्तिगणंनिहन्ति तथैववंगोऽखिलमेहवर्गम् ॥ देहस्यसौख्यंप्रबलेन्द्रियत्वं नरस्यपुष्टिंविदधातिनूनम् ॥ ५ ॥

रांगाके नाम व गुण ॥

रङ्ग, वङ्ग, त्रपु और पिच्चट यह रांगेके नामहैं रांगा दोप्रकार काहै एक क्षुरक दूसरा मिश्रक मिश्रककी अपेक्षा क्षुरक उत्तम होताहै रांगा. हलका, दस्तावर, रूखा, उष्ण, नेत्रोंकोहित, कुछ पित्तवर्द्धक ... प्रमेह, कफ, कृमि, पांडु तथा श्वासनाशक होताहै जिस प्रकार सिंह हाथियोंको मारताहै उसी... वङ्ग संपूर्ण प्रमेहोंको नाशकरताहै और यह शरीरको सुखदायक इन्द्रियों को प्रबल ... मनुष्योंको पुष्टतादेनेवाला होताहै ॥ ५ ॥

अथ यसद ॥

यसदंरंगसदृशंरीतिहेतुश्चतन्मतम् । यसदंतुवरंतिक्तंशीतलंकफपि... परमंमेहात्पाण्डुंश्वासञ्चनाशयेत् ॥ ६ ॥

जस्तेके नाम व गुण ॥

जस्ता वङ्गके समान होताहै और पीतलका कारणहै जस्ता. कषैला, तिक्त, शीतल, नेत्रोंकोहित और कफ, पित्त, प्रमेह, पांडु तथा श्वासनाशक होताहै ॥ ६ ॥

अथ सीसस्योत्पत्तिर्नामगुणाश्च ॥

दृष्ट्वाभोगिसुतांरम्यांवासुकिस्तुमुमोचयत् । वीर्य्यंजातस्ततोनागःसर्वरोगापहोनृणाम् ॥ सीसंब्रध्नञ्चवप्रञ्चयोगेष्टंनागनामकम् । नागःभुजङ्गःइत्यादि ॥ सीसंवङ्गगुणंज्ञेयंविशेषान्मेहनाशनम् । नागस्तुनागशततुल्यबलंददातिव्याधिंविनाशयतिजीवनमातनोति ॥ वह्निंप्रदीपयतिकामबलंकरोतिमृत्युञ्चनाशयतिसन्ततसेवितःसः । पाकेनहीनौकिलवङ्गनागौकुष्ठानिगुल्मांश्चतथातिकष्टान् ॥ कण्डूम्प्रमेहानलसादशोथभगन्दरादीन्कुरुतःप्रभुक्तौ ॥ ७ ॥

सीसेकी उत्पत्ति नाम और गुण ॥

भोगीसर्पकी सुन्दर कन्याको देखकर वासुकिका वीर्यगिरा उससे सीसा उत्पन्नहुआ यह सीसा मनुष्योंके सम्पूर्ण रोगोंका नाशक होताहै सीस, ब्रध्न, वप्र, योगेष्ट और सर्पोंके नाम भुजङ्ग इत्यादिनाम यह सीसेके नामहैं सीसा. वङ्गके समान गुणवाला होताहै और विशेषकरके प्रमेहों का नाशकहै यह सीसा सदैव सेवनकरनेसे सौ हाथियोंके समान बलदायक रोगनाशक जीवनदायक अग्निदीपक और कामतथा बलकावर्द्धकहोताहै इससे मृत्युकाभी नाशकहोताहै अच्छी रीतिसे नहीं फुकेहुये सीसा और रांगा, कुष्ठ, गुल्म, अत्यन्त कष्ट, खुजली, प्रमेह, मन्दाग्नि, जकडना सूजन और भगन्दरको करते हैं ॥ ७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ लोहस्योत्पत्तिर्नामलक्षणगुणाश्च ॥

पुरालोमिनदैत्यानांनिहतानांसुरैर्युधि । उत्पन्नानिशरीरेभ्योलोहानिविविधानिच ॥
लोहोऽस्त्रीशस्त्रकंतीक्ष्णंपिण्डंकालायसायसी । गुरुतादृढतोत्क्लेदःकश्मलंदाहकारिता ॥
अश्मदोषःसुदुर्गन्धोदोषःसप्तायसस्यतु । लोहंतिक्तंसरंशीतंमधुरंतुवरंगुरु ॥ रूक्षंवय
स्यंचक्षुष्यंलेखनंवातलंजयेत् । कफंपित्तंगरंशूलंशोथार्शःप्लीहपाण्डुताः ॥ मेदोमेहकृमी
नूकुष्ठंतत्किट्टंतद्वदेवहि । पाण्डुत्वकुष्ठामयमृत्युदंभवेद्धृद्रोगशूलौकुरुतेऽश्मरीञ्च ॥ ना
नारुजानाञ्चतथाप्रकोपं करोतिहल्लासमशुद्धलोहम् ॥ जीवहारिमदकारिचायसंदेह
कृत्पदसंस्कृतंध्रुवम् ॥ पाटवंनतनुतेशरीरकेदारुणांहृदिरुजाञ्चयच्छति । कूष्माण्डं
...ञ्चमाषान्राजिकांतथा ॥ मद्यमम्लरसञ्चापित्यजेल्लोहस्यसेवकः ॥ ८ ॥

लोहेकी उत्पत्ति नाम लक्षण और गुण ॥

...पुनःप्र... लोगोंकेद्वारा युद्धमेंमारेगये लोमिन नाम दैत्योंके शरीरसे अनेकप्रकारके लोहेकी
...पुंल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग) शस्त्रक, तीक्ष्ण, पिण्ड, कालायस और आयस यह लो-
...भारीपन, कठिनता, मचली, मूर्च्छा, दाह, पत्थरकादोष और दुर्गन्धि यह सात लोहेके दोष
हैं लोहा ... है कबर, शीतल, मधुर, कषैला, भारी, रूखा, अवस्थाकास्थापक, नेत्रोंकोहित, लेखन,
बा... पीडा और कफ और लारदोष, शूल, सूजन, बवासीर, प्लीहा, पाण्डु, मेद, प्रमेह, कृमि तथा कुष्ठनाशक होता
है और इसीकेदिक सुलोहके कीटमें भी गुणहोतेहैं बिना शोधाहुआ लोहा नपुंसकता कुष्ठ हृदयकेरोग
शूल पथरी मतली अनेक प्रकारकी पीडा और मृत्युको भी करताहै अशुद्ध लोहा. जीवकानाशक, म-
दकारी, देहको अशुद्ध करनेवाला, शरीरको असमर्थकरनेवाला और हृदयके रोगोंका अत्यन्त उत्पन्न
करनेवाला होताहै लोहके सेवनकरनेवाले मनुष्योंको पेठा, तिलका तेल, उर्द, राई, मद्य और खटाई
त्यागदेनी चाहिये ॥ ८ ॥ तत्र सारलोहस्य लक्षणं गुणाश्च ॥

क्ष्माभृच्छिखराकाराण्यङ्गान्यम्लेनलेपयेत् । लोहेस्युर्यत्रसूक्ष्माणितत्सारमभिधीय
ते ॥ लोहंसाराह्वयंहन्याद्ग्रहणीमतिसारकम् । अर्द्धसर्वाङ्गजंवातंशूलञ्चपरिणामजम् ॥
छर्दिञ्चपीनसंपित्तंश्वासंकासंव्यपोहति ॥ ९ ॥

सारलोह के लक्षण और गुण ॥

जो लोहा खटाईके लेपकरनेसे सूक्ष्म भाग पर्वतके शृंगके समान लक्षितहो वह सार कहलाता है
सार नाम लोहा. ग्रहणी, अतीसार, अर्द्धाङ्ग तथा सर्वाङ्ग, वात, परिणामशूल, छर्दि, पीनस, पित्त, श्वास
तथा खांसीका नाशक होताहै ॥ ९ ॥ अथ कान्तलोहस्य लक्षणं गुणाश्च ॥

यत्पात्रेनप्रसरतिजलेतैलबिन्दुःप्रतप्ते हिङ्गुर्गन्धंत्यजतिचनिजं तिक्ततांनिम्बक
ल्कः । तप्तंदुग्धंभवतिशिखराकारकंनैतिभूमिं कृष्णाङ्गस्यात्सजलचणकः कान्तलोहं
तदुक्तम् ॥ गुल्मोदरार्शःशूलाममामवातंभगन्दरम् । कामलाशोथकुष्ठानिक्षयंकान्तमयो
हरेत् ॥ प्लीहानमम्लपित्तञ्चयकृच्चापिशिरोरुजम् ॥ सर्वान्रोगान्विजयतेकान्तलोहंन
संशयः ॥ बलंवीर्य्यंवपुःपुष्टिंकुरुतेऽग्निंविवर्द्धयेत् ॥ १० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कान्तलोह के लक्षण और गुण ॥

जो [illegible] -ोहेके पात्रमें जलको तपाकर तेल डालनेसे फैलेनहीं हींग भूननेसेहींगकी सुगन्धिजाती रहै नींब [illegible] ल का कड़वाहट न हो और दूध गरम करने से शिखरके समान ऊंचाहो और गिरे नहीं उसको क[illegible] र लोहा कहते हैं कान्तीसार लोहा.गुल्म, उदर, बवासीर, शूल, आम, आमवात, भगंदर, कामल[illegible], सूजन, कुष्ठ, क्षय, प्लीहा, अम्लपित्त, यकृत्, शिरके रोग और सम्पूर्ण रोगों को निस्सन्देह दूर करता है यह बल, वीर्य, शरीरकी पुष्टता और अग्निकी वृद्धि करताहै ॥ १० ॥

अथ कीटी ॥

ध्मायमानस्यलोहस्यमलंमण्डूरमुच्यते । लोहसिंहानिकाकिट्टीसिंहानश्चनिगद्यते यल्लोहंयद्गुणंप्रोक्तंतत्किट्टमपितद्गुणम् ॥ ११ ॥

कीटीके नाम व गुण ॥

तपाये हुये लोहे के मलको मण्डूर लोह सिंहानिका किट्ट और सिंहान कहते[illegible] गुण होते हैं वही उसकी कीटी में भी होतेहैं ॥ ११ ॥

अथोपधातवः ॥

तत्रोपधातूनांलक्षणंगुणाश्च ॥

सप्तोपधातवःस्वर्णमाक्षिकंतारमाक्षिकम् । तुत्थंकांस्यंचरीतिश्चसिन्[illegible]चशि[illegible]ला[illegible] ॥ (उपधातवःगौणाधातवः) उपधातुषुसर्वेषुतत्तद्धातुगुणाअपि । सन्ति[illegible]ऽत्रोना[illegible] दंशाल्पभावतः ॥ १२ ॥

उपधातुओं के लक्षण और गुण ॥

सोनामक्खी, रूपामक्खी, तूतिया, कांसा, पीतल, सिंदूर, और शिलाजीत यह सात उपधातुहैं संपूर्ण उपधातुओं में अपनी २ धातुके गुण होतेहैं परन्तु कुछ कम होते हैं क्योंकि इनमें धातुओंका अंशथोड़ा होताहै ॥ १२ ॥

तत्र सुवर्णमाक्षिकस्य नामानिगुणाश्च ॥

स्वर्णमाक्षिकमाख्यातं तापीजंमधुमाक्षिकम् । ताप्यंमाक्षिकधातुश्चमधुधातुश्चसस्मृतः ॥ किंचित्सुवर्णसाहित्यात्स्वर्णमाक्षिकमीरितम् । उपधातुःसुवर्णस्यकिंचित्स्वर्णगुणान्वितम् ॥ तथाचकाञ्चनाभावेदीयतेस्वर्णमाक्षिकम् । किन्तुतस्यानुकल्पत्वात्किञ्चिदूनगुणास्ततः ॥ नकेवलंस्वर्णगुणावर्त्तन्तेस्वर्णमाक्षिके । द्रव्यान्तरस्यसंसर्गात्सन्त्यन्येऽपिगुणायतः ॥ सुवर्णमाक्षिकंस्वादुतिक्तंवृष्यंरसायनम् । चक्षुष्यंवस्तिरुक्कुष्ठपाण्डुमेहविषोदरान् ॥ अर्शःशोथंविषङ्कण्डूंत्रिदोषमपिनाशयेत् ॥ मन्दानलत्वंबलहानिमुग्रांविष्टम्भितांनेत्रगदान्सकुष्ठान् । तथैवमालांव्रणपूर्वकाञ्चकरोतितापीजमशुद्धमेतत् ॥ १३ ॥

सोनामक्खी के नाम और गुण ॥

स्वर्णमाक्षिक, तापीज, मधुमाक्षिक, ताप्य, माक्षिकधातु और मधुधातु यह सोना मक्खी के नामहैं कुछ सुवर्ण के योग होनेसे स्वर्णमाक्षिक कहलातीहै इसमें सुवर्ण के कुछ गुणहैं यह सुवर्ण के अभाव में व्यवहार कीजाती है सोनामक्खी सोनेकी उपधातुहोनेसे उसकी अपेक्षा कुछ न्यूनगुणवाली है सोना मक्खी में केवल सुवर्णही के गुण नहीं हैं किन्तु अन्य द्रव्योंके संयोगसे और २ भी गुण होते हैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सोनामक्खी.मधुर,तिक्त,वृष्यबलवर्द्धक,रसायन,नेत्रोंको हित और मूत्राशय के रोग,कुष्ठ,[illegible],विष, उदर,बवासीर,सूजन,क्षय,खुजली तथा त्रिदोषनाशक होती है विना शोधीहुई सोनामक्खी मन्दाग्नि, अत्यन्त बल की हानि,विष्टम्भ,नेत्ररोग,कुष्ठ,गण्डमाला तथा घावको करतीहै ॥ १३ ॥

अथ तारमाक्षिकस्य नामगुणाः ॥

तारमाक्षिकमन्यत्तुतद्भवेद्रजतोपमम् । किञ्चिद्रजतसाहित्यात्तारमाक्षिकमीरितम् ॥ अनुकल्पतयातस्यततोहीनगुणाःस्मृताः । नकेवलंरूप्यगुणायतःस्यात्तारमाक्षिकम् ॥ स्वादुपाकेरसेकिञ्चित्तिक्तंवृष्यंरसायनम् । चक्षुष्यंवस्तिरुक्कुष्ठपाण्डुमेहविषोदरम् ॥ [illegible]र्शःशोथंक्षयङ्कण्डूंत्रिदोषमपिनाशयेत् । मन्दानलत्वंबलहानिमुग्रांविष्टम्भितान्नेत्रग तृष[illegible]कुष्ठान् । तथैवमालांव्रणपूर्व्विकाञ्चकरोतितापीजमिदञ्चतद्वत् ॥ १४ ॥

रूपामक्खी के नाम व गुण ॥

[illegible]पुनःप्र[illegible] समान होतीहै कुछ चांदीके संयोग से तारमाक्षिक कहलाती है यह चांदीकी अ- [illegible] से चांदीकी अपेक्षा कम गुणवाली है रूपामाखी में केवल चांदीकेही गुण नहीं क्षा[illegible] होते [illegible]रूपामाखी;[illegible]द्रव्योंके संयोगसे अन्य २ भी गुण होतेहैं रूपामाखी.रस तथा पाकमें मधुर,कुछ तिक्त, [illegible]वर्द्ध[illegible],रस[illegible]है व[illegible]नेत्रोंकोहित और मूत्राशय की पीड़ा,कुष्ठ,खुजली,प्रमेह,विष,उदर,बवासीर,सूजन, [illegible]पाण्डु[illegible]त्रिदोषनाशक होतीहै जैसे विनाशोधी सोनामाखी. मन्दाग्नि,अत्यन्त बलनाश, वि- ष्टम्भ,नेत्ररोग[illegible]दिक गण्डमाला औरघावकोभरतीहै इसीप्रकार अशुद्धरूपामाखीभी जाननीचाहिये१४॥

अथ तूतिया ॥

तुत्थंवितुन्नकञ्चापिशिखिग्रीवंमयूरकम् । तुत्थन्ताम्रोपधातुर्हिकिञ्चित्ताम्रेणतद्भवे त् ॥ किञ्चित्ताम्रगुणन्तस्माद्वक्ष्यमाणगुणञ्चतत् । तुत्थकंकटुकंक्षारंकषायंवामकंलघु ॥ लेखनम्भेदनंशीतंचक्षुष्यंकफपित्तहृत् । विषाश्मकुष्ठकण्डूघ्नंखर्परञ्चापितद्गुणम् ॥ १५ ॥

तूतियाके नाम व गुण ॥

तुत्थ,वितुन्नक,शिखिग्रीव और मयूरक यह तूतियाके नामहैं तूतिया तांबेकी उपधातुहै उसमें कुछ तांबेका संयोगहै इसकारण से इसमें कुछ तांबेके गुणहैं और आगे लिखे हुए गुणभी हैं तूतिया.कटु, क्षार,कषैला,छर्द्दि करानेवाला,हलका,लेखन,भेदक,शीतल,नेत्रोंकोहित और कफ,पित्त,विष, पथरी, कुष्ठ तथा खुजली नाशक होताहै खपरिया में भी इसीके समान गुण होतेहैं ॥ १५ ॥

अथ कांसा ॥

उपधातुर्भवेत्कांस्यंद्वयोस्तरणिरङ्गयोः॥ ताम्रत्रपुजमाख्यातङ्कांस्यंघोषञ्चकंसकम् । संयोगजप्रभावेणतस्यान्येऽपिगुणाःस्मृताः ॥ कांसस्यतुगुणाज्ञेयाःस्वयोनिसदृशाजनैः । गुरुनेत्रहितंरूक्षंकफपित्तहरम्परम् ॥१६॥ कांस्यङ्कषायन्तिक्तोष्णंलेखनंविशदंसरम् ।

कांसे के नाम व गुण ॥

कांस्य,घोष और कंसक यह कांसे के नामहैं यह तांबे और रांगेकी उपधातुहै तांबे और रांगेसे कांसा बनताहै कांसेमें अपने कारण के समान गुण होते हैं और संयोगके प्रभाव से अन्य२भी गुणहैं कांसा.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कषाय ... ण,लेखक,विशद,दस्तावर,भारी,नेत्रों को हित और कफ तथा पित्त के नाश करने में श्रेष्ठ है ... १६ ॥

तथा पीतरिकांचीपीतरि ॥

पित्त... रकूटंस्यादारोरीतिश्चकथ्यते । राजरीतिर्ब्रह्मरीतिःकपिलापिङ्गलापिच ॥ संरीतिरप्युप... गुःस्यात्ताम्रस्ययसदस्यच । पित्तलस्यगुणाज्ञेयाःस्वयोनिसदृशाजनैः ॥ संयोगजप्रभावेणतस्याप्यन्येगुणाःस्मृताः । रीतिकायुगलंरूक्षंतिक्तञ्चलवणंरसे ॥ शोधनंपाण्डुरोगघ्नंक्रिमिघ्नंनातिलेखनम् ॥ १७ ॥

पीतल और कच्ची पीतल के नाम व गुण ॥

पित्तल,आरकूट,आर,रीति यह पित्तल के नामहैं कपिला,राजरीति,पिंगला और ब्रह्मरीति यह ... पीतल के नामहैं पीतल तांबे और जस्तेकी उपधातुहै पीतल में अपने कारण के समान गुण ... और संयोग के प्रभाव से अन्य गुणभी होतेहैं दोनों पीतल,रूखी,तिक्त,लवण, शोधनकार... तथा कृमिनाशक और बहुत लेखन नहीं होतीहैं ॥ १७ ॥

अथ सिन्दूर ॥

सिन्दूरंरक्तरेणुश्चनागगर्भश्चसीसजम् । सीसोपधातुःसिन्दूरंगु... ... वन तम् ॥ संयोगजप्रभावेणतस्याप्यन्येगुणाःस्मृताः ॥ सिन्दूरमुष्णंवीस... कण्डू विषहम् । भग्नसन्धानजननंव्रणशोधनरोपणम् ॥ १८ ॥

सिन्दूर के नाम और गुण ॥

सिन्दूर,रक्तरेणु,नागगर्भ और सीसज यह सिंदूर के नामहैं सिंदूर सीसेकी उपधातुहै इसीसे इसमें सीसेके समान गुण होतेहैं और संयोग के प्रभाव से अन्य गुणभी होतेहैं सिंदूर.उष्ण,टूटेको जोड़ने वाला,घावका शोधक तथा भरनेवाला और वीसर्प,कुष्ठ तथा खुजली नाशक होताहै ॥ १८ ॥

अथ शिलाजतु ॥

(तदुत्पत्तिर्नामलक्षणेगुणाश्च) निदाघेघर्म्मसन्तप्ताधातुसारन्धराधराः । निर्य्यासवत्प्रमुञ्चन्तितच्छिलाजतुकीर्त्तितम् ॥ सौवर्णंराजतन्ताम्रमायसन्तच्चतुर्विधम् । शिलाजत्वद्रिजतुचशैलनिर्य्यासइत्यपि ॥ गैरेयमश्मजञ्चापिगिरिजंशैलधातुजम् । शिलाजंकटुतिक्तोष्णंकटुपाकंरसायनम् ॥ छेदियोगवहंहन्तिकफमेदाश्मशर्कराः । मूत्रकृच्छ्रंक्षयंश्वासंवातार्शांसिचपाण्डुताम् ॥ अपस्मारन्तथोन्मादंशोथकुष्ठोदरकृमीन् । सौवर्णन्तुजपापुष्पवर्णंभवतितद्रसात् । मधुरंकटुतिक्तञ्चशीतलंकटुपाकिच ॥ राजतम्पाण्डुरंशीतंकटुकंस्वादुपाकिच । ताम्रंमयूरकण्ठाभंतीक्ष्णमुष्णञ्चजायते ॥ लौहंजटायुपक्षाभंतत्तिक्तंलवणम्भवेत् । विपाकेकटुकंशीतंसर्वश्रेष्ठमुदाहृतम् ॥ १९ ॥

शिलाजीत के नाम उत्पत्ति लक्षण और गुण ॥

ग्रीष्म ऋतुमें धूपसे तप्त पर्वतों से जो धातुओं का सार गोंदके समान निकलताहै उसको शिलाजीत कहतेहैं सोनेका चांदीका तांबेका और लोहेका इसरीति से चार प्रकारका शिलाजीत होताहै अद्रिजतु, शिलाजतु,शैलनिर्यास,गैरेय,अश्मज,गिरिज और शैलधातुज यह शिलाजीत के नामहैं शिलाजीत-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कटु, तिक्त, उष्ण, पाकमें क[illegible]सायन, छेदन, योगवाही और कफ, मेद, पथरी, शर्करा, मू[illegible] क्षय, श्वास, वात, बवासीर, पाण्डु, मृगी, उन्माद, सूजन, कुष्ठ, उदर तथा कृमि नाशक होताहै सो[illegible]जीत. गुडहर के पुष्पसमान वर्णवाला, मधुर, कटु, तिक्त, शीतल और पाकमें कटु होताहै च[illegible], शिलाजीत. श्वेतवर्ण, शीतल, कटु और पाकमें मधुर होताहै तांबेका शिलाजीत. मोरकेकंठसम[illegible]वाला, तीक्ष्ण और उष्ण होताहै लोहेका शिलाजीत. जटायु के पक्षके समान वर्णवाला, तिक्त, [illegible]ण, पाकमें कटु और शीतल होताहै और यही शिलाजीत गुणमें सबसे अधिक होताहै ॥ १६ ॥

अथ रसस्तत्ररसस्यनिरुक्तिः ॥

रसायनार्थिभिर्लोकैःपारदोरस्यतेयतः । ततोरसइतिप्रोक्तःसचधातुरपिस्मृतः॥२०॥

पारेका वर्णन व पारेकी निरुक्ति ॥

[illegible] की इच्छा करनेवाले लोग पारेको रसन अर्थात् भक्षण करतेहैं इसीसे इसको रस कहते हैं [illegible] भी कहते हैं ॥ २० ॥

अथ पारदस्योत्पत्तिर्लक्षणनामगुणाः ॥

[illegible]युतंरेतःपतितन्धरणीतले । तद्देहसारजातत्वाच्छुक्लमच्छमभूच्चतत्॥क्षे[illegible]वीर्य्यञ्चतुर्विधम् । श्वेतंरक्तन्तथापीतंकृष्णन्तत्तुभवेत्क्रमात् ॥ ब्रा[illegible]ःशूद्रश्चखलुजातितः । श्वेतंशस्तंरुजांनाशेरक्तङ्किलरसायनम्॥ धातु[illegible]कृष्णमेवच । पारदोरसधातुश्चरसेन्द्रश्चमहारसः ॥ चपलःशिववीर्य्यश्चरसःसूत[illegible]वाङ्मयः । पारदःषड्रसःस्निग्धस्त्रिदोषघ्नोरसायनः ॥ योगवाहीमहावृष्यःसदादृष्टिबलप्रदः । सर्वामयहरःप्रोक्तोविशेषात्सर्वकुष्ठनुत् ॥ स्वस्थोरसोभवेद्ब्रह्मा बद्धोज्ञेयोजनार्दनः । रञ्जितःक्रामितश्चापिसाक्षाद्देवोमहेश्वरः ॥ मूर्च्छितोहरतिरुजंबन्धनमनुभूयखेगतिंकुरुते। अजरीकरोतिहिमृतःकोऽन्यःकरुणाकरःसूतात्॥ असाध्योयोभवेद्रोगोयस्यनास्तिचिकित्सितम् । रसेन्द्रोहन्तितंरोगंनरकुञ्जरवाजिनाम् ॥ मलंविषंवह्निगिरित्वचापलन्नैसर्गिकन्दोषमुशन्तिपारदे । उपाधिजौद्वौत्रपुनागयोगजौदोषौरसेन्द्रे कथितौमुनीश्वरैः ॥ मलेनमूर्च्छामरणंविषेणदाहोऽग्निनाकष्टतरःशरीरे । देहस्यजाड्यङ्गिरिणासदास्याच्चाञ्चल्यतोवीर्य्यहतिश्चपुंसाम् ॥ वङ्गेनकुष्ठम्भुजगेनषण्ढोभवेदतोऽसौपरिशोधनीयः । वह्निर्विषमलश्चेतिमुख्यादोषास्त्रयोरसे ॥ एतेकुर्वन्तिसन्तापंमृतिंमूर्च्छान्नृणांक्रमात् । अन्येऽपिकथितादोषाभिषग्भिःपारदेयदि ॥ तथाप्येतेत्रयोदोषाहरणीयाविशेषतः । संस्कारहीनंखलुसूतराजंयःसेवतेतस्यकरोतिबाधाम्॥ देहस्यनाशंविदधातिनूनंकष्टांश्चरोगाञ्जनयेन्नराणाम् ॥ २१ ॥

पारेकी उत्पत्ति नाम लक्षण और गुण ॥

पृथ्वीपर गिरेहुए शिवजी के वीर्यसे पारा उत्पन्न हुआहै शिवजीके शरीरके सारांशसे उत्पन्नहोनेके कारण वह श्वेत और स्वच्छ हुआ और क्षेत्र के भेदसे श्वेत, रक्त, पीत तथा कृष्ण इनभेदों से चार प्रकारका होता है ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र यह क्रमसे चारोंकी जातिहैं श्वेत पारा. रोगोंके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

[illegible] रक्तवर्ण पारा. रसायन में पीतवर्ण पारा. धातुओं के भेद[illegible] और कृष्णवर्ण पारा. आ-नाश[illegible] करने में श्रेष्ठ है पारद, रसधातु, रसेन्द्र, महारस, चपल, शिववीर्य, रस, सूत और शिव काश [illegible] पारेके नाम हैं पारा. छः रसोंसे युक्त, स्निग्ध त्रिदोषनाशक, रसायन, योगवाही, जीके न[illegible] [illegible]क, सदैव दृष्टि को बल देनेवाला, सर्वरोगनाशक और विशेष करके सर्वकुष्ठनाशक अत्यन्त[illegible] होता है स्वस्थपारा. ब्रह्माके समान बंधाहुआ पारा जनार्दन के समान और रञ्जित तथा कामित पारा. साक्षात् शिवजी के समान होताहै मूर्च्छितपारा. रोगनाशक बंधाहुआपारा आकाशकी गति देनेवाला और मराहुआ पारा. वृद्धावस्थानाशक होता है पारेसे अधिक हित करनेवाला कोई नहीं है जो रोग असाध्य होते हैं जिनकी चिकित्सा नहींहै मनुष्य हाथी तथा घोड़े के वह रोग पारेकेद्वारा नष्टहोते हैं पारेमें स्वभावहीसे मल, विष, वह्नि, गिरि और चञ्चलता यह दोष होते हैं और [illegible] रांगे और सीसे के योगसे उपाधिज होनेवाले होते हैं मलसे मूर्च्छा, विषसे मरण, अग्नि से[illegible] अत्यन्त दाह, गिरिसे शरीर की जड़ता, चञ्चलता से वीर्यका नाश, वङ्गसे कुष्ठ और सीसे[illegible] ता होती है इससे पारे को शुद्ध करना चाहिये अग्नि विष और मल यह तीन [illegible] द्वारा क्रमसे सन्ताप, मृत्यु और मूर्च्छा होती है यद्यपि पारेमें और अनेक दोष[illegible] पि इनतीनों दोषोंके दूर करने में विशेष यत्न करना चाहिये जो मनुष्य विना श[illegible] से करता है उसको अत्यन्त बाधा उत्पन्न होती हैं अर्थात् देहका नाश होता [illegible] बड़े कठिन रोग उत्पन्न होते हैं ॥ २१ ॥

अथोपरसानांलक्षणम् ॥

गन्धोहिंगुलमभ्रतालकशिलाःस्रोतोऽञ्जनण्टङ्कणंराजावर्त्तकचुम्बकौस्फटिकयाशङ्खः खटीगैरिकम् । कासीसंरसकङ्कपर्दसिकताबोलांश्चकंकुष्ठकंसौराष्ट्रीचमताअमीउपरसाः सूतस्यकिञ्चिद्गुणैः ॥ (उपरसागौणारसाः) ॥ २२ ॥

उपरसों के लक्षण ॥

गन्धक, सिंदरफ, अभ्रक, हरताल, मैनशिल, सुरमा, सुहागा, रेह, चुम्बक, फिटकरी, शंख, खड़िया, गेरू, हीराकसीस, खपरिया, कौड़ी, बालू, बोल, मुरदासिंग और सोरठी मट्टी यह सब उपरस कहलाते हैं इनमें पारे के कुछ २ गुण होते हैं ॥ २२ ॥

हिंगुलस्यनामानिलक्षणंगुणाश्च ॥

हिंगुलन्दरदंम्लेच्छमिंगुलञ्चूर्णपारदम् । दरदस्त्रिविधःप्रोक्तश्चर्म्मारःशुकतुण्डकः ॥ हंसपादस्तृतीयःस्याद्गुणवानुत्तरोत्तरम् । चर्म्मारःशुक्लवर्णःस्यात्सपीतःशुकतुण्डकः ॥ जपाकुसुमसङ्काशोहंसपादोमहोत्तमः । तिक्तंकषायंकटुहिंगुलंस्यान्नेत्रामयघ्नङ्कफपित्तहारि । हृल्लासकुष्ठज्वरकामलांश्चप्लीहामवातौचगरञ्जिहन्ति ॥ ऊर्ध्वपातनयुक्त्यातुडमरूयन्त्रपाचितम् । हिंगुलन्तस्यसूतन्तुशुद्धमेवंनशोधयेत् ॥ २३ ॥

सिंदरफ के नाम लक्षण व गुण ॥

हिंगुल, दरद, म्लेच्छ, इंगुल और चूर्णपारद यह सिंदरफके नाम हैं चर्मार, शुकतुण्डक और हंसपाद यह तीन प्रकार के सिंदरफ होते हैं यह क्रमसे उत्तरोत्तर गुणमें अधिक होते हैं चर्मार.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिंदरफ. श्वेतवर्ण, शुकतुण्डक, पीतवर्ण और हंसपाद. गुडहरके पुष्पके समान रक्तवर्ण ... और यही सबसे उत्तम होताहै सिंदरफ. तिक्त, कषाय, कटु और नेत्ररोग, कफ, पित्त, मतली ... ज्वर, कामला, प्लीहा, आमवात तथा गरदोषनाशक होताहै ऊपर उडाने की युक्ति से ... यंत्र में पकाए हुए सिंदरफ से निकला हुआ पारा शुद्ध होताहै उसको फिर शुद्ध न करे ॥ २३ ॥

अथ गन्धकस्योत्पत्तिर्नामलक्षणेगुणाश्च ॥

श्वेतद्वीपेपुरादेव्याः क्रीडन्त्यारजसाप्लुतम्। दुकूलन्तेनवस्त्रेणस्नातायाःक्षीरनीरधौ॥
...नंयद्रजस्तस्माद्गन्धकःसमभूत्ततः । गन्धकोगन्धिकश्चापिगन्धपाषाणइत्यपि ॥
...कश्चकथितोबलिर्बलरसोपिच । चतुर्द्धागन्धकःप्रोक्तोरक्तःपीतःसितोऽसितः ॥
...होय सक्तः पीतश्चैवरसायने।व्रणादिलेपनेश्वेतःकृष्णःश्रेष्ठःसुदुर्ल्लभः॥(श्रेष्ठःहेम
...पुनः ...स्ततरः)गन्धकःकटुकस्तिक्तोवीर्य्योष्णस्तुवरःसरः।पित्तलःकटुकःपा
...जेत्।हन्तिकुष्ठक्षयप्लीहकफवातान्रसायनः ।अशोधितोगन्धकएषकु
...शरीरे। शोषञ्चरूपञ्चबलंतथोजःशुक्रंनिहन्त्येवकरोतिचास्रम्॥ २४॥

गन्धक की उत्पत्ति नाम लक्षण और गुण ॥

पीर्वकाल और ...द्वीप में क्रीडा करती हुई श्रीपार्वतीजी का वस्त्र रज से भरगया उसी वस्त्र को पहनकर क्षीर ...दिक मु... स्नान करने से जो रज फैला उसीसे गन्धक उत्पन्न हुई गन्धक, गन्धिक, गन्धपाषाण, सौगन्धिक, बलि और बलरस यह गन्धक के नामहैं लाल, पीली, श्वेत और कृष्ण इन भेदोंसे चारप्रकार की गन्धक होती है लालगन्धक. सुवर्ण बनाने में पीली. रसायन में श्वेत. घाव आदिके लेप करने में और कृष्णगन्धक. सुवर्णादिक बनाने में सबसे श्रेष्ठ है परन्तु वह दुर्लभ है गन्धक. कटु, तिक्त, उष्ण, कषैली, दस्तावर, पित्तवर्द्धक, रसायन, पाक में कटु और खुजली, वीसर्प, कृमि, कुष्ठ, क्षय, प्लीहा, कफ तथा वातनाशक होतीहै विना शोधीहुई गन्धक. कुष्ठ, शरीर संताप और सुख, रूप, बल, ओज तथा वीर्य्य की हानि और रुधिर के दोषों को करती है ॥ २४ ॥

अथाभ्रकस्योत्पत्तिर्नामलक्षणेगुणाश्च ॥

पुरावधायवृत्रस्यवज्रिणावज्रमुद्धृतम्। विस्फुलिङ्गास्ततस्तस्यगगनेपरिसर्पिताः ॥
तेनिपेतुर्घनध्वानाच्छिखरेषुमहीभृताम्। तेभ्यएवसमुत्पन्नंतत्तद्गिरिषुचाभ्रकम् ॥ तद्वज्रं
वज्रपातत्वादभ्रमभ्ररवोद्भवात्।गगनात्स्खलितंयस्माद्गगनञ्चततोमतम् ॥ विप्रक्ष
त्रियविट्शूद्रभेदात्तत्स्याच्चतुर्विधः। क्रमेणैवासितंरक्तंपीतंकृष्णञ्चवर्णतः । प्रशस्यतेसि
तन्तारंरक्तंतत्तुरसायने॥ पीतंहेमनिकृष्णन्तुगदेषुद्रुतयेऽपिच । पिनाकंदर्दुरंनागंवज्रञ्चे
तिचतुर्विधम् ॥ मुञ्चत्यग्नौविनिक्षिप्तंपिनाकन्दलसञ्चयम् । अज्ञानाद्भक्षणंतस्यमहाकु
ष्ठप्रदायकम्॥ दर्दुरंत्वग्निनिःक्षिप्तंकुरुतेदर्दुरध्वनिम् । गोलकान्बहुशःकृत्वासस्यान्मृ
त्युप्रदायकः ॥ नागन्तुनागवद्वह्नौफूत्कारंपरिमुञ्चति । तद्भक्षितमवश्यन्तुविदधातिभग
न्दरम्॥ वज्रन्तुवज्रवत्तिष्ठेत्तन्नाग्नौविकृतिंव्रजेत्। सर्वाभ्रेषुवरंवज्रंव्याधिवार्द्धक्यमृत्युह
त्॥ अभ्रमुत्तरशैलोत्थंबहुसत्त्वंगुणाधिकम्। दक्षिणाद्रिभवंस्वल्पंसत्त्वमल्पगुणप्रदम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अभ्र[illegible]मधुरंसुशीतमायुष्करंधातुविवर्द्धनञ्च । हन्यात्त्रिदोषंव्रणमेहकुष्ठप्लीहोदरंग्रन्थिवि[illegible]गांश्च ॥ रोगान्हन्तिदृढयतिवपुर्वीर्यवृद्धिंविधत्तेतारुण्याढ्यंरमयतिशतंयोषितां[illegible]त्येष । दीर्घायुष्कान्जनयतिसुतान्विक्रमैः सिंहतुल्यान् मृत्योर्भीतिंहरतिसततंसेव्यमानंमृताभ्रम् ॥ पीडांविधत्तेविविधांनराणांकुष्ठंक्षयंपाण्डुगदञ्चशोथम् । हृत्पार्श्वपीडाञ्चकरोत्यशुद्धमभ्रन्त्वसिद्धंगुरुताप्रदंस्यात् ॥ २५ ॥

अभ्रककी उत्पत्तिलक्षण नाम और गुण ॥

पहले वृत्रासुरके मारने के लिये जब इन्द्रने वज्रउठाया तब उससे पतंगे उडकर आकाशमें फैले पीछे मेघोंके गर्जनेसे पहाडोंके शिखरोंपर गिरे जिन २ पर्वतोंपर वह अग्निकी चिनगारियां गिरी में अभ्रक उत्पन्न हुआ यह वज्रसे उत्पन्न होनेके कारण वज्रअभ्र [मेघ] अभ्रके [illegible] कारण अभ्र और गगनसे गिरनेकेकारण गगनकहलाताहै ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और [illegible] चारप्रकार का होताहै यह चारों प्रकारका अभ्रक क्रमसे श्वेत, रक्त, पीत और कृष्ण [illegible] चांदीकी क्रियामें लाल. रसायनकी क्रियामें पीला. सुवर्णकी क्रियामें और कृष्ण [illegible] नाशकरने में श्रेष्ठहै पिनाक, दर्दुर, नाग और वज्र यह चारप्रकार का अभ्रक होताहै [illegible] अग्निमें छोडनेसे पत्तर२ अलग होजाताहै अज्ञानतासे जो उसको खाय तो महाकु[illegible] नाम अभ्रक.अग्निमें छोडनेसे गोलाकार होकर मेढकके समान शब्दकरताहै इस[illegible]से मृत्युहोती है नागनाम अभ्रक.अग्निमें छोडनेसे सर्पके समान फुंकार शब्द करता है इसके खा[illegible] अवश्य भगन्दर नाम रोग होताहै और वज्रनाम अभ्रक.अग्निमें छोडनेसे वज्रके समान स्थित रहताहै विकारको नहीं प्राप्तकरता यह संपूर्ण अभ्रकोंमें श्रेष्ठहै इससे रोग वृद्धावस्था और मृत्युका नाश होताहै उत्तरके पर्वतों में उत्पन्न हुआ अभ्रक अत्यन्त बलयुक्त और गुणदायक होताहै दक्षिणीय पर्वतों में पैदाहुआ अभ्रक स्वल्पबल और गुणयुक्त होताहै अभ्रक. कषैला, मधुर, शीतल, आयुवर्द्धक, धातुवर्द्धक और त्रिदोष, घाव, प्रमेह, कुष्ठ, प्लीहा, उदरग्रन्थि, विष तथा कृमिनाशक होताहै नित्यसेवन कियाहुआ माराहुआ अभ्रक. रोगनाशक, शरीरको दृढकरनेवाला, मृत्युकेभयका नाशक और वीर्यवर्द्धक होताहै इसको सेवन करने वाला पुरुष तरुण सौ स्त्रियोंको नित्य रमाताहै और सिंहके समान पराक्रमवाले दीर्घायु पुत्रोंको उत्पन्न करताहै विनाशोधाहुआ अभ्रक मनुष्योंको अनेक प्रकारकी पीडाओंका देनेवाला और कुष्ठ क्षय पाण्डु सूजन हृदय की पीडा पसलीकी पीडा और भारीपनका करनेवाला होताहै ॥ २५ ॥

अथ हरितालस्य नामानि लक्षणंगुणाश्च ॥

हरितालंतुनालंस्यादालंतालकमित्यपि । हरितालंद्विधाप्रोक्तंपत्राख्यंपिण्डसंज्ञकम् ॥ तयोराद्यंगुणैःश्रेष्ठंततोहीनगुणंपरम् । स्वर्णवर्णंगुरुस्निग्धंसपत्रंचाभ्रपत्रवत् ॥ पत्राख्यंतालकंविद्याद्गुणाढ्यंतद्रसायनम् । निष्पत्रंपिण्डसदृशंस्वल्पसत्वंतथागुरु ॥ स्त्रीपुष्पहारकंस्वल्पगुणंतत्पिण्डतालकम् । हरितालंकटुस्निग्धंकषायोष्णंहरेद्विषम् ॥ कण्डूकुष्ठास्यरोगास्रकफपित्तकचव्रणान् । हरतिचहरितालञ्चारुतांदेहजातांसृजतिचबहुतापमंगसङ्कोचपीडाम् । वितरतिकफवातौकुष्ठरोगंविदध्यादिदमशितमशुद्धंमारितञ्चाप्यसम्यक् ॥ २६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हरितालके नाम लक्षण और गुण ॥

हरिताल, ताल, आल और तालक यह हरितालके नामहैं हरिताल दो प्रकारकी है ... की दूसरी गोबरिया इनमें पहली गुणोंमें श्रेष्ठ है और दूसरीमें कम गुणहैं तबकिया हरिताल ... के समान वर्णवाली, भारी, स्निग्ध, अभ्रकके समान पत्रयुक्त, श्रेष्ठ, गुणदायक और रसायन होतीहै ... बरियाहरिताल. पिण्डकेसमान पत्ररहित, स्वल्पबलवाली, थोड़ेगुणोंसेयुक्त, हलकी और स्त्रीकेरजकीनाशक होती है हरिताल. कटु, कषाय, स्निग्ध, उष्ण और विष खजुली, कुष्ठ, मुखरोग, रक्तदोष, कफ, पित्त तथा कचव्रण (बालोंकाघाव) नाशक होतीहै विनाशोधी और अच्छी न मारीहुई हरितालके सेवनकरनेसे देहकी ...ताकानाश और अनेक प्रकारके सन्ताप आक्षेप कफ वात तथा कुष्ठरोग होताहै ॥ २६ ॥

अथ मनःशिलानामानिगुणाश्च ॥

... मनोगुप्तामनोह्वानागजिह्विका । नैपालीकुनटीगोधाशिलादिव्यौषधिः ... पुनःश्रे... लागुरुर्वर्ण्यासरोष्णालेखनीकटुः । तिक्तास्निग्धाविषश्वासकासभूतक... शिलामन्दबलंकरोतिजन्तुंध्रुवंशोधनमन्तरेण । मलानुबन्धंकिलमूत्ररो... दश्मकुर्य्यात् ॥ २७ ॥

मैनसिल के नाम और गुण ॥

मनःशिल... गुप्ता, मनोह्वा, नागजिह्विका, नैपाली, कुनटी, गोधा, शिला और दिव्यौषधि यह मैनसिल के ना... मैनसिल. भारी, वर्णकोहित, दस्तावर, उष्ण, लेखन, कटु, तिक्त, स्निग्ध और विष, श्वास, खांसी, भूतबाधा. कफ तथा रक्तदोषनाशक होती है विनाशोधी मैनसिल के खाने से बलकी हानि, मलमूत्रका अवरोध, शर्करा और मूत्रकृच्छ्र इनकी उत्पत्ति होतीहै ॥ २७ ॥

अथ सुरमासौवीर ॥

अञ्जनंयामुनञ्चापिकापोताञ्जनमित्यपि । तत्तुस्रोतोऽञ्जनंकृष्णं सौवीरंश्वेतमीरितम् ॥ वल्मीकशिखराकारंभिन्नमञ्जनसन्निभम् । घृष्टन्तुगैरिकाकारमेतत्स्रोतोऽञ्जनंस्मृतम् ॥ स्रोतोऽञ्जनसमंज्ञेयंसौवीरन्तत्तुपाण्डुरम् । स्रोतोऽञ्जनंस्मृतंस्वादुचक्षुष्यंकफपित्तनुत् ॥ कषायंलेखनंस्निग्धंग्राहिच्छर्दिविषापहम् । सिध्मक्षयास्रहच्छ्रीतंसेवनीयंसदाबुधैः ॥ स्रोतोञ्जनगुणाःसर्वेसौवीरेपिमताबुधैः । किन्तुद्वयोरञ्जनयोःश्रेष्ठंस्रोतोऽञ्जनंस्मृतम् ॥ २८ ॥

सुरमा के नाम और गुण ॥

अञ्जन यामुन और कापोताञ्जन यह सुरमेके नाम हैं काले सुरमेको स्रोतोञ्जन और श्वेतको सौवीर कहतेहैं कालासुरमा. वामीके शिखरके समान आकारवाला, तोडनेसे अञ्जनकेसमान कान्तिवाला और घिसनेसे गेरूके समान होताहै सौवीरनाम सुरमा भी इसीके समान होताहै परन्तु वह श्वेत वर्णहोताहै कालासुरमा. मधुर, नेत्रोंकोहित, कफपित्तनाशक, कषैला, लेखन, स्निग्ध, ग्राही और छर्दि विष, सिध्म (श्वेतकुष्ठ वा सेंहुआं) क्षय तथा रक्तदोषनाशक होताहै इस कारण पण्डितों को सदैव इसका सेवन करना चाहिये श्वेतसुरमा भी इसी के समान गुणवाला होताहै परन्तु दोनों सुरमों में कालासुरमा श्रेष्ठहै ॥ २८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ सोहागा ॥

टङ्कणं ...नकरोरूक्षःकफघ्नोवातपित्तकृत् । अयमुपरसत्वात्पुनरुक्तः ॥ २९ ॥

सुहागे के गुण ॥

सुहागा. अग्निवर्द्धक, रूखा, कफघ्न, बादी और पित्तवर्द्धक होताहै यह उपरसके कारण दुबारालिखाहै २९

अथ फिटकरी ॥

स्फटीचस्फटिकाप्रोक्ताश्वेताशुभ्राचरङ्गदा। दृढरङ्गासुरङ्गा च गतरङ्गापिकथ्यते॥ स्फाटिकातुकषायोष्णावातपित्तकफव्रणान्। निहन्तिश्वित्रवीसर्पान्योनिसङ्कोचकारिणी ॥...

फिटकरीके नाम व गुण ॥

स्फटी, स्फटिका, श्वेता, शुभ्रा, रङ्गदा, दृढरङ्गा, सुरङ्गा और गतरङ्गा यह फिटकरीकेनामहैं फिटकरी ... उष्ण, योनिसंकोचक और वातपित्त, कफ, घाव, श्वेतकुष्ठ तथा वीसर्पकी नाशकरने...

अथ रेवटी ॥

...निग्धंहिंदा...

राजावर्त्तःकटुस्तिक्तःशिशिरःपित्तनाशनः। राजावर्त्तःप्रमेहघ्नश्छर्द्दिहिक्का...नकेटा ३१

रेवटी के गुण ॥

राजावर्त अर्थात् रेवटी. कटु, तिक्त, शीतल और पित्त, प्रमेह, छर्दि तथा हिचकीन...होताहै ३१

अथ चुम्बकः ॥

चुम्बकःकान्तपाषाणोयःकान्तोलोहकर्षकः । चुम्बकोलेखनःशीतो मदोविषगरापहः ॥ ३२ ॥

चुम्बक के नाम व गुण ॥

चुम्बक, कान्तपाषाण और लोहकर्षक यह चुम्बक के नामहैं जिस पत्थर से लोहा खिंचजाता है उसे चुम्बक कहते हैं चुम्बक. लेखन, शीतल और मेद, विष तथा गरदोषनाशक होताहै ॥ ३२ ॥

गेरू सुवर्णगेरू ॥

गैरिकंरक्तधातुश्चगैरेयंगिरिजंतथा। सुवर्णगैरिकन्त्वन्यत्ततोरक्ततरंहितत् ॥ गैरिकद्वितयंस्निग्धंमधुरंतुवरंहिमम् । चक्षुष्यंदाहपित्तास्रकफहिक्काविषापहम् ॥ ३३ ॥

गेरू और सुनहरी गेरू के नाम व गुण ॥

गैरिक, रक्तधातु, गैरेय और गिरिज यह गेरूके नामहैं और दूसरी सुनहरी गेरू इससे अधिक लाल होताहै दोनों गेरू. स्निग्ध, मधुर, कषैले, शीतल, नेत्रकोहित और दाह, पित्त, रक्तदोष, कफ, हिचकी तथा विषनाशक होते हैं ॥ ३३ ॥

अथ खरी. गौरखरी ॥

खटिकाकटिकाचापिलेखनीचनिगद्यते। खटिकादाहजिच्छीतामधुराविषशोथजित्॥ लेपादेतद्गुणाप्रोक्ताभक्षितामृत्तिकासमा। खटीगौरखटीद्वेचगुणैस्तुल्येप्रकीर्त्तिते ॥ ३४॥

खडिया और श्वेतखडिया के नाम व गुण ॥

खटिका, कटिका और लेखनी यह खडियाके नामहैं खडिया. मधुर, शीतल और दाह, विष तथा सूजन की नाशक होतीहै यह गुण लेपकरने में हैं और खानेमें मृत्तिकाके समान होतीहै खडिया और श्वेतखडिया दोनों में समान गुणहैं ॥ ३४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ बालू ॥

बालुकासिकताप्रोक्ताशर्करारेतजापिच। बालुकालेखनीशीताव्रणोरःक्षतनाशिनी ३५

बालू के नाम व गुण ॥

बालुका, सिकता, शर्करा और रेतजा यह बालू के नामहैं बालू. लेखन, शीतल और घाव तथा उरःक्षतनाशक होतीहै ॥ ३५ ॥

खपरी आतुत्थभेद ॥

खर्परीतुत्थकंतुत्थादन्यत्तद्रसकंस्मृतम्। येगुणास्तुत्थकेप्रोक्तास्तेगुणारसकेस्मृताः३६॥

तूतिये का भेद खपरिया के नाम व गुण ॥

खर्परीतुत्थक और तुत्था यह तूतिया का भेदमात्र है इसका दूसरा नाम रसक है तूतिया के जो गुण हैं वेही पुनः खपरियामें भी हैं ॥ ३६ ॥

काशीस मांगफूल ॥

काशीसंधातुकाशीसंपांशुकाशीसमित्यपि। तदेवकिंचित्पीतंतुपुष्पकाशीसमुच्यते॥ काशीसमम्लमुष्णंचतिक्तश्चतुवरंतथा। वातश्लेष्महरंकेश्यंनेत्रकण्डूविषप्रणुत्॥ मूत्रकृच्छ्राश्मरीश्वित्रनाशनंपरिकीर्त्तितम्॥ ३७॥

हीराकशीस के नाम व गुण ॥

काशीस, धातुकाशीस और पांशुकाशीस यह हीराकशीस के नामहैं कुछ पीले कशीस को पुष्प काशीस कहते हैं हीराकशीस. खट्टा, उष्ण, तिक्त, कषैला, केशोंकोहित और वात, कफ, नेत्रोंकी खुजली, विष, मूत्रकृच्छ्र, पथरी तथा श्वेतकुष्ठनाशक होताहै ॥ ३७ ॥

अथ सौराष्ट्रीमाटी ॥

सौराष्ट्रीतुवरीकांक्षीमृत्तालकसुराष्ट्रजे ॥ आढकीचापिसाख्यातामृत्स्नाचसुरमृत्तिका। स्फटिकायागुणाःसर्वेसौराष्ट्र्यापिकीर्त्तिताः ३८ (अथ कृष्णमृत्तिका) कृष्णमृत्क्षतदाहास्रप्रदरश्लेष्मदाहनुत् ३९ (अथ कर्दमः) कर्दमोदाहपित्तार्त्तिशोथघ्नः शीतलःसरः ॥ ४० ॥

सोरठी मिट्टी के नाम व गुण ॥

सौराष्ट्री, तुवरी, कांक्षी, मृत्तालक, सुराष्ट्रज, आढकी, मृत्स्ना और सुरमृत्तिका यह सोरठी मट्टी के नामहैं इसमें सब फिटकरी के गुण होतेहैं ३८ [काली मट्टीके गुण] कालीमट्टी. घाव, दाह, रक्तदोष, प्रदर, कफ तथा पित्तनाशक होती है ३९ [कर्दम [कीचड़] के गुण] कर्दम. दाह, पित्तरोग तथा सूजन की नाशक, शीतल और दस्तावर होती है ॥ ४० ॥

अथ बोल ॥

बोलगन्धरसप्राणःपिण्डगोपरसाःसमाः। बोलंरक्तहरंशीतंमेध्यन्दीपनपाचनम् ॥ मधुरंकटुतिक्तंचदाहस्वेदत्रिदोषजित् ॥ ज्वरापस्मारकुष्ठघ्नंगर्भाशयविशुद्धिकृत् ४१ ॥

बोल के नाम व गुण ॥

बोल, गन्धरस, प्राण, पिण्डगोपरस और सम यह बोलके नाम हैं बोल. रक्तनाशक, शीतल,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मेधा को [illegible] दीपन, पाचक, मधुर, कटु, तिक्त, गर्भाशयशोधक और दाह, स्वेद,त्रिदोष,ज्वर, मृगी तथा कुष्ठ [illegible] होता है ॥ ४१ ॥

अथ कंकुष्ठोत्पत्तिलक्षणनामगुणाः ॥

हिमवत्पादशिखरे कंकुष्ठमुपजायते । तत्रैकं नालिकाख्यं स्यात्तदन्यद्रेणुकं स्मृतम् ॥ पीतप्रभं गुरु स्निग्धं श्रेष्ठं कंकुष्ठमादिशेत् ॥ श्यामं पीतं लघुत्यक्तं मत्त्वं नेष्टं तथाण्डकम् । कंकुष्ठं काककुष्ठञ्च वराङ्गं रङ्गदायकम् ॥ कंकुष्ठं रेचनं तिक्तं कटूष्णं वर्णकारकम् । कृमिशोथोदराध्मानगुल्मानाहकफापहम् ॥ ४२ ॥

कंकुष्ठ [मुर्दासिंग] की उत्पत्ति नाम व गुण ॥

हिमालय पर्वत के शिखर में कंकुष्ठ उत्पन्न होता है कंकुष्ठ दोप्रकारकाहै एक [illegible] दूसरा पीतवर्ण होता है पीतवर्ण भारी और स्निग्ध होता है वह श्रेष्ठ होताहै जो [illegible] और हलका होता है वह बल और गुण से रहित होता है कालकुष्ठ कंकुष्ठ वर [illegible] यह कंकुष्ठ के नाम हैं कंकुष्ठ रेचक तिक्त कटु उष्ण वर्णकारक और कृमि सू[illegible] गुल्म आनाह तथा कफनाशक होता है ॥ ४२ ॥

(अथ रत्नस्यनिरुक्तिः) धनार्थिनोजनाःसर्वेरमन्तेऽस्मिन्नतीवयत [illegible]तोरत्नमि[illegible] प्रोक्तंशब्दशास्त्रविशारदैः ॥ ४३ ॥ रत्नकी निरुक्ति ॥

धनार्थीलोग इसमें अत्यन्त अनुरक्त रहते हैं इसी से शब्दशास्त्र के जाननेवाले इसको रत्न कहते हैं ॥ ४३ ॥

अथ रत्नस्यनामानिस्वरूपणंच ॥

रत्नंक्लीबेमणिःपुंसिस्त्रियामपिनिगद्यते । तत्तुपाषाणभेदोऽस्तिमुक्तादिचतदुच्यते ॥ तथा (चामरसिंहः) रत्नंमणिर्द्वयोरश्मजातोमुक्तादिकेऽपिच ॥ ४४ ॥

रत्न के नाम और स्वरूप ॥

रत्न [नपुंसकलिङ्ग] को मणि पुँल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग कहते हैं यह पाषाण का भेदहै जैसे मोती आदिक और अमरकोषमें कहाहै कि रत्न अथवा मणि पत्थरों के भेद तथा मोती आदिक कहातेहैं ॥ ४४ ॥

अथ रत्नानांनिरूपणम् ॥

रत्नंगारुत्मतंपुष्परागोमाणिक्यमेवच । इन्द्रनीलश्चगोमेदस्तथावैडूर्यमित्यपि ॥ मौक्तिकंविद्रुमश्चेतिरत्नान्युक्तानिवैनव । रत्नंहीरा ॥ गारुत्मतंपन्ना । माणिक्यंपद्मरागः । इन्द्रनीलःलीला । (विष्णुधर्म्मोत्तरेऽपिनवरत्ननिरूपणम्) मुक्ताफलंहीरकंचवैडूर्यंपद्मरागकम् ॥ पुष्परागंचगोमेदंनीलंगारुत्मतंतथा । प्रवालयुक्तान्येतानिमहारत्नानिवैनव ॥ तत्रहीरकंहीराइतिलोके ॥ ४५ ॥

रत्नोंका वर्णन ॥

हीरा, पन्ना, पुष्पराग, माणिक्य, नीलम, गोमेद, वैडूर्य, मोती और मूंगा यह नौरत्न हैं विष्णुधर्मोत्तरग्रन्थ में भी रत्नोंका वर्णन है जैसे कि मोती, हीरा, वैडूर्य, माणिक्य, पुष्पराग, गोमेद, नीलम, पन्ना और मूंगा यह नौ महारत्न हैं ॥ ४५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तस्यनामलक्षणंगुणाश्च ॥

हीरकःपुंसिवज्रोऽस्त्रीचन्द्रोमणिवरश्चसः । सतुश्वेतःस्मृतोविप्रोलोहितः ...यः स्मृतः ॥ पीतोवैश्योऽसितःशूद्रश्चतुर्वर्णात्मकश्चसः । रसायनेमतोविप्रःसर्वसिद्धि...दायकः ॥ क्षत्रियोव्याधिविध्वंसीजरामृत्युहरःस्मृतः । वैश्योधनप्रदःप्रोक्तस्तथादेहस्यदार्ढ्यकृत् ॥ शूद्रोनाशयतिव्याधीन्वयस्तम्भंकरोतिच । पुंस्त्रीनपुंसकानीहलक्षणीयानिलक्षणैः ॥ ...वृत्ताःफलसम्पूर्णास्तेजोयुक्ताबृहत्तराः । पुरुषास्तेसमाख्यातारेखाबिन्दुविवर्जिताः ॥ ...बिन्दुसमायुक्ताःषडस्रास्तेस्त्रियःस्मृताः । त्रिकोणाश्चसुदीर्घास्तेविज्ञेयाश्चनपुंस... ...तेषुस्युःपुरुषाःश्रेष्ठारसबन्धनकारिणः । स्त्रियःकुर्वन्तिकायस्यकान्तिंस्त्रीणांसुख... ...स्त्ववीर्य्यास्युरकामाःसत्त्ववर्जिताः । स्त्रियःस्त्रीभ्यःप्रदातव्याःक्लीबंक्लीबे... ...यःसर्वदादेयाःपुरुषाःवीर्य्यवर्द्धनाः । अशुद्धंकुरुतेवज्रंकुष्ठंपार्श्वव्यथा... ...स्यंगुरत्वञ्चतस्मात्संशोध्यमारयेत् ॥ ४६ ॥

हीराके नाम लक्षण और गुण ॥

... वज्र पुँल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग चन्द्र और मणिवर यह हीरेके नाम हैं श्वेतहीरा ब्राह्मण, ... क्षत्रिय, पीला वैश्य और कालाहीरा शूद्रवर्ण होता है इस क्रमसे चारप्रकारका हीरा होता ... वर्णका हीरा. रसायन में श्रेष्ठ और सर्वसिद्धिदायक क्षत्रियवर्ण हीरा. रोग वृद्धावस्था और मृत्युका नाशक वैश्यवर्ण हीरा. संपत्तिदायक और शरीरका दृढकरनेवाला और शूद्रवर्ण हीरा. रोगनाशक और अवस्थाका स्थापन करनेवाला होता है हीरे में पुरुष स्त्री और नपुंसक इनके भी लक्षण होते हैं जो हीरा सुन्दर गोल सम्पूर्ण फलदायक तेजयुक्त बहुत बडा और रेखा तथा बिन्दुरहित होताहै वह पुरुष कहलाताहै जो हीरा रेखा तथा बिन्दुयुक्त और छःकोनेवालाहोताहै उसको स्त्री कहते हैं जो हीरा त्रिकोण और लम्बा होता है वह नपुंसक होता है उनमें से पुरुष जातिके हीरे श्रेष्ठ और पारेके बांधनेवाले होतेहैं स्त्रीजातिके हीरे शरीरकी शोभा करनेवाले और स्त्रियोंको सुखदायक होते हैं नपुंसक जातिके हीरे वीर्य्यरहित बलवर्जित और बेकाम होते है स्त्रियोंको स्त्रीहीरे नपुंसकों को नपुंसकहीरे और वीर्यबढानेवाले पुरुषहीरे सबको सदैव देनेचाहिये विनाशोधाहुआ हीरा कुष्ट,पसलीकीपीडा,पाण्डु और लूलेपनको करताहै इससे हीरेको शुद्धकरके मारनाचाहिये ॥ ४६ ॥

मारितस्यवज्रस्यगुणाः ॥

आयुःपुष्टिंबलंवीर्य्यंवर्णंसौख्यंकरोतिच । सेवितंसर्वरोगघ्नंमृतंवज्रंनसंशयः ॥ ४७ ॥

मारेहुएहीरेके गुण ॥

मराहुआ हीरा सेवनकरनेसे आयु, पुष्टता, बल, वीर्य, वर्ण, सुखकोकरता और निस्सन्देह सब रोगोंकोनाशकरताहै ॥ ४७ ॥

अथ हरितमणिः (पन्नाइतिलोके) तस्यनामानि ॥

गारुत्मतंमरकतमश्मगर्भोहरिन्मणिः ४८ (अथ माणिक्यइतिलोकेतस्यनामानि) माणिक्यंपद्मरागःस्याच्छोणरत्नं च लोहितम् ४९ (अथ पुष्परागनामानि) पुष्परागोमंजुमणिःस्याद्वाचस्पतिवल्लभः ५० (अथ इंद्रनीलगोमेदयोर्नामानि) नी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्नंतथन ... ंचगोमेदःपीतरत्नकम् ५१ (अथ वैदूर्य्यं) वैदूर्य्यंदूरजंरत्नंस्यात्केतुग्रह वल्लभ... १२ ॥

पन्नाके नाम ॥

गारुत्म... मरकत, अश्मगर्भ और हरिन्मणि यह पन्नाके नामहैं ४८ [माणिक्यके नाम] माणिक्य, पद्मराग, शोणरत्न और लोहित यह माणिक्यके नाम हैं ४९ [पुष्परागके नाम] पुष्पराग, मञ्जुमणि और वाचस्पतिवल्लभ यह पुष्पराग के नामहैं ५० [नीलम और गोमेदके नाम] नीलमको नीले और इन्द्रनील और गोमेदको पीतरत्न कहते हैं ५१ [वैडूर्य के नाम] वैडूर्य, दूरजरत्न और केतुग्रहवल्लभ यह वैडूर्य के नामहैं ॥ ५२ ॥

अथ मौक्तिकस्यनामानि ॥

मौक्तिकंशौक्तिकंमुक्तातथामुक्ताफलंचतत् ॥ शुक्तिःशङ्खोगजक्रोडःफणीम... वेणुरेतेसमाख्यातास्तज्ज्ञैर्मौक्तिकयोनयः।मौक्तिकंशीतलंवृष्यंचक्षुष्यंब...

मोती के नाम ॥

मौक्तिक, शौक्तिक, मुक्ता और मुक्ताफल यह मोती के नाम हैं शुक्ति शङ्ख ... सर्प छर्ली मेढक और बांस यह मोतीके उत्पत्तिस्थानहैं मोती. शीतल, वीर्यवर्द्धक, नेत्रों ... हित, ... और पुष्टदायक होताहै ॥ ५३ ॥

अथ प्रवालस्यनामानि ॥

पुंसिःक्लीबेप्रवालःस्यात्पुमानेवतुविद्रुमः ॥ ५४ ॥ (अथ रत्नानांगुणाः) रत्नानिभक्षितानिस्युर्मधुराणिसराणिच । चक्षुष्याणिचशीतानिविषघ्नानिधृतानिच ॥ मङ्गल्यानि मनोज्ञानिग्रहदोषहराणिच (किंरत्नंकस्यग्रहस्यप्रीतिकारित्वेनदोषहरंभवतीतिप्रश्ने तदुत्तरमाहरत्नमालायाम्) माणिक्यन्तरणेःसुजातममलंमुक्ताफलंशीतगोर्माहेयस्यतुविद्रुमोनिगदितःसौम्यस्यगारुत्मतम् । देवेज्यस्यचपुष्परागमसुराचार्यस्यवज्रंशनेर्नीलंनिर्म्मलमन्ययोर्निगदितेगोमेदवैडूर्य्यके ॥ ५५ ॥

मूंगे के नाम ॥

प्रवाल [पुँल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग] और विद्रुम [पुँल्लिङ्ग] यह मूंगे के नाम हैं ५४ रत्नों के गुण. रत्न सेवनकरने से मधुर, दस्तावर, नेत्रों को हित, शीतल तथा विषनाशक और धारणकरने से मङ्गलदायक तथा ग्रहदोषनाशक होते हैं कौनरत्न किसग्रहके दोषको शान्तकरता है यह रत्नमालामें कहाहै कि माणिक्य. सूर्यका, सुन्दर निर्मल मोती. चन्द्रमाका, मूंगा मङ्गलका, पन्ना बुधका, पुष्पराग बृहस्पतिका, हीरा शुक्रका, नीलम शनैश्चरका, गोमेद राहुका और वैडूर्यकेतुका, दोषनाशक होताहै ५५

अथोपरत्नानां निरूपणम् ॥

उपरत्नानिकाचश्चकर्पूराश्मातथैवच । मुक्ताशुक्तिस्तथाशङ्खइत्यादीनिबहून्यपि ॥ उपरत्नानिगौणरत्नानि । कर्पूराश्माकपनीयाकर्पुनीआ ॥ मुक्ताशुक्तिःसीप । गुणायथैव रत्नानामुपरत्नेपुतेतथा । किन्तुकिञ्चित्ततोहीनाविशेषोऽयमुदाहृतः ॥ ५६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपरत्नोंका वर्णन ॥

काच, कर्पूरी, पत्थर, मोतीकी सीप और शङ्खादिक बहुतसे उपरत्नहैं रत्नोंमें जो गुण [illegible] उपरत्नों में हैं परन्तु विशेषता यहहै कि रत्नोंकी अपेक्षा कुछ कम गुण हैं ॥ ५६ ॥

अथ विषस्य नाम लक्षणगुणाः ॥

विषन्तुगरलःक्ष्वेडस्तस्यभेदानुदाहरे । वत्सनाभःसहारिद्रःसक्तुकश्चप्रदीपनः ॥ सौराष्ट्रिकःशृङ्गिकश्चकालकूटस्तथैवच । हालाहलोब्रह्मपुत्रोविषभेदाअमीनव ॥ ५७ ॥

विषके नाम लक्षण और गुण ॥

[illegible]विष, गरल और क्ष्वेड यह विषके नामहैं वत्सनाभ, हारिद्र, सक्तुक, प्रदीपन, सौराष्ट्रिक, शृङ्गिक, [illegible], हालाहल और ब्रह्मपुत्र यह नौ प्रकारके विषहैं ॥ ५७ ॥

तत्र वत्सनाभस्य स्वरूपनिरूपणम् ॥

[illegible]पुनःप्रो[illegible]ोवत्सनाभ्याकृतिस्तथा।यत्पार्श्वेनतरोर्वृद्धिर्वत्सनाभःसभाषितः ५८॥

वत्सनाभ विषके स्वरूप का वर्णन ॥

जि[illegible]वी, हर्लण्डीके समानहों और जिसकी आकृति बछडेके नाभिकी समान हो जिसके पास [illegible] वृद्धि न हो उसको वत्सनाभ [मीठातेलिया] विष कहते हैं ॥ ५८ ॥

अथ हारिद्रस्य स्वरूपनिरूपणम् ॥

हरिद्रा[illegible]योहारिद्रःसउदाहृतः ५९ (अथ सक्तुकस्य स्वरूपम्) यद्ग्रन्थिः सक्तुकेनैवपूर्णामध्यःससक्तुकः ॥ ६० ॥

हारिद्रका स्वरूप ॥

जिस विषवृक्षकी जड़ हल्दीके समानहो उसको हारिद्र (विष) कहते हैं ५९ (सक्तुक विषका स्वरूप) जिस विषकी गांठ सक्तुके समान चूर्णसे पूर्णहो उसे सक्तुक विष कहतेहैं ॥ ६० ॥

अथ प्रदीपनस्य स्वरूपम् ॥

वर्णतोलोहितोयःस्याद्दीप्तिमानूदहनप्रभः । महादाहकरःपूर्वैःकथितःसप्रदीपनः॥ ६१ ॥

प्रदीपनविषका स्वरूप ॥

जो विष रक्तवर्णदीप्तिमान् अग्नि के समान प्रभायुक्त और अत्यन्तदाह करनेवाला होताहै उस को प्राचीनलोग प्रदीपन कहतेहैं ॥ ६१ ॥

अथ सौराष्ट्रिकस्य स्वरूपम् ॥

सुराष्ट्रविषयेयःस्यात्ससौराष्ट्रिकउच्यते ६२ (अथ शृङ्गिकस्यस्वरूपम्) यस्मिन्गोशृङ्गेबद्धेदुग्धम्भवतिलोहितम् । सशृङ्गिकइतिप्रोक्तोद्रव्यतत्त्वविशारदैः ॥ ६३ ॥

सौराष्ट्रिकका स्वरूप ॥

जो विष सुराष्ट्रदेशमें उत्पन्न होताहै उसे सौराष्ट्रिकविष कहतेहैं ६२ [शृङ्गिकविषकास्वरूप] जिस विषको गौके सींगमें बांधनेसे दूध लाल होजाताहै उसको द्रव्य तत्त्वज्ञलोग शृङ्गिक [सिंगिया] कहते हैं ॥ ६३ ॥

अथ कालकूटस्य स्वरूपम् ॥

देवासुररणेदेवैर्हतस्यपृथुमालिनः । दैत्यस्यरुधिराज्जातस्तरुरश्वत्थसन्निभः ॥ नि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

र्यासःक[illegible]ोऽस्यमुनिभिःपरिकीर्तितः। सोहिक्षेत्रेशृङ्गवेरेकोङ्कणेमलयेभवेत् ॥ ६४ ॥

कालकूटका स्वरूप ॥

देवदा[illegible]के युद्धमें देवताओंसे मारेहुए पृथुमाली नाम दैत्यके रुधिरसे जो पीपलके समान वृक्ष उत्पन्नहुआ उसके गोंदको कालकूट कहते हैं यह शृङ्गवेर कोङ्कण और मलयमें उत्पन्न होताहै ॥ ६४ ॥

अथ हालाहलस्य स्वरूपम् ॥

गोस्तनाभफलोगुच्छस्तालपत्रच्छदस्तथा । तेजसायस्यदह्यन्तेसमीपस्थाद्रुमाद यः ॥ असौहालाहलोज्ञेयःकिष्किन्धायांहिमालये ॥ दक्षिणाब्धितटेदेशेकोङ्कणेऽपि[illegible] जायते ॥ ६५ ॥

हालाहलका स्वरूप ॥

जिस विष वृक्षके फल मुनक्काकेसमान गुच्छाकार उत्पन्न होते हैं जिसकेपत्ते ता[illegible] हैं और जिसके तेजसे निकटके वृक्षादिक जलजाते हैं उसको हालाहल कहते हैं [illegible] मालय दक्षिण समुद्रकातट और कोङ्कणदेश में उत्पन्न होता है ॥ ६५ ॥

अथ ब्रह्मपुत्रस्य स्वरूपम् ॥

वर्णतःकपिलोयःस्यात्तथाभवतिसारतः ॥ ब्रह्मपुत्रःसविज्ञेयोजायते[illegible] ॥ [illegible] ह्मणःपाण्डुरस्तेषुक्षत्रियोलोहितःप्रभः। वैश्यःपीतःसितःशूद्रोविषउक्त[illegible]धः ॥ र[illegible] यनेविषंविप्रंक्षत्रियन्देहपुष्टये। वैश्यंकुष्ठविनाशायशूद्रन्दद्याद्वधायहि ॥ विषंप्राणहरंप्रोक्तंव्यवायिचविकाशिच। आग्नेयंवातकफहृद्योगवाहिमदावहम् ॥ व्यवायिसकलकाय गुणव्यापनपूर्वकंपाकगमनशीलं। विकाशि। ओजःशोषणपूर्वकंसन्धिबन्धशिथिलीकर णशीलम्॥ आग्नेयं। अधिकाग्न्यंयोगवाहिसंगिगुणग्राहकं ॥ मदावहम् । तमोगुणा धिक्येनबुद्धिविध्वंसकम् ॥ तदेवयुक्तियुक्तन्तुप्राणदायिरसायनम् । योगवाहित्रिदोषघ्नं बृंहणंवीर्य्यवर्द्धनम् ॥ येदुर्गुणाविषेऽशुद्धेतेस्युर्हीनाविशोधनात्। तस्माद्विषंप्रयोगेषुशोध यित्वाप्रयोजयेत् ॥ ६६ ॥

ब्रह्मपुत्रका स्वरूप ॥

जोविष कपिलवर्ण और सार से उत्पन्नहोताहै उसको ब्रह्मपुत्र जानना चाहिये यह मलयपर्व्वत में होताहै श्वेतवर्ण ब्राह्मण, रक्तवर्ण क्षत्रिय, पीतवर्ण वैश्य और कृष्णवर्णविष शूद्र यह चारप्रकार का विष होताहै रसायनमें ब्राह्मणविष, शरीरकी पुष्टतामें क्षत्रियविष, कुष्ठनाशकरने में वैश्यविष और मारने में शूद्रविष देनाचाहिये विष प्राणनाशक व्यवायि [संपूर्ण शरीर में गुणके व्याप्त होजाने पर परिपाकको प्राप्त होनेवाला] विकाशी [ओजको सुखाकर सन्धि बन्धनोंको शिथिल करनेवाला] अधिक अग्निके गुणवाला वातघ्न कफनाशक योगवाही [जिस द्रव्यके साथ मिले उसीके गुणको ग्रहण करनेवाला] और मदावह [तमोगुणकी अधिकतासे बुद्धिका नाशक होताहै] यह विष जो युक्तिपूर्व्वक काममें लायाजाय तो प्राणदायक रसायन योगवाही त्रिदोषनाशक धातुवर्द्धक और वीर्य-वर्द्धक होताहै अशुद्ध विषमें जो दुर्गुण होतेहैं वह शुद्धकरने से हीन होजाते हैं इसकारण से विषको शुद्धकरके काममें लानाचाहिये ॥ ६६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथोपविषाणां निरूपणम् ॥

अर्कक्षीरंस्नुहीक्षीरंलांगलीकरवीरकः। गुञ्जाहिफेनोधत्तूरःसप्तोपविष [illegible]यः ॥ उपविषाःगौणविषाः। एषांगुणास्तत्रतत्रद्रष्टव्याः ॥ ६७ ॥

इति श्रीभावप्रकाशेधातूपधातुरसोपरसरत्नोपरत्नविषोपविषवर्गः ॥

उपविषोंका वर्णन ॥

[illegible] आककादूध,थूहरकादूध,करहारी,कनेर,घोंघची, अफीम और धतूरा यह सात उपविष हैं इनके गुण तृष[illegible] वर्णन होचुकेहैं ॥ ६७ ॥

[illegible] श्रीभा[illegible]वप्रकाशस्यभाषानुवादेधातुउपधातुरसउपरसरत्नउपरत्नविषउपविषवर्गसमाप्तः ॥

अथ धान्यवर्गः। तत्रधान्यानांभेदाः ॥

शा[illegible]हलं व्रीहिधान्यंशूकधान्यंतृतीयकम्। शिम्बीधान्यंक्षुद्रधान्यमित्युक्तंधान्यप[illegible]कम् ॥ [illegible]रक्तशाल्याद्याव्रीहयःषष्टिकादयः। यवादिकंशूकधान्यंमुद्गाद्यंशिम्बिधान्यकम् [illegible]ङ्ग्वादिकंक्षुद्रधान्यंतृणधान्यञ्चतत्स्मृतम् ॥ १ ॥

अथ धान्यवर्ग। धान्यों के भेद ॥

शालिधान्य,व्रीहिधान्य,शूकधान्य शिंबीधान्य और क्षुद्रधान्य यह पांचप्रकारके धान्य होते हैं लाल धान आदिक शालिधान्य साठीआदिक व्रीहिधान्य जौआदिक शूकधान्य मूंग आदिक शिंबीधान्य और कंगनी आदिक क्षुद्रधान्य अथवा तृणधान्य कहलातेहैं ॥ १ ॥

तत्र शालिधान्यस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

कण्डनेनविनाशुक्लाहैमन्ताःशालयःस्मृताः २ (अथ शालीनांनामानि) रक्तशालिः सकलमःपाण्डुकःशकुनाहृतः। सुगन्धकःकर्दमकोमहाशालिश्चदूषकः ॥ पुष्पाण्डकः पुण्डरीकस्तथामहिषमस्तकः। दीर्घशूकःकाञ्चनकोहायनोलोध्रपुष्पकः ॥ इत्याद्याःशालयः सन्तिबहवोबहुदेशजाः। ग्रन्थविस्तरभीतेस्तेसमस्तानात्रभाषिताः ॥ ३ ॥

शालिधान्यके लक्षण और गुण ॥

जो हेमन्त ऋतुका धान्य विनाकूटे श्वेतहो वह शालिधान्य कहलाते हैं २ [शालियों के नाम] रक्तशालि,कलम,पांडुक,शकुनाहृत,सुगंधक,कर्दमक,महाशालि,दूषक,पुष्पांडक,पुंडरीक,महिषमस्तक, दीर्घशूक,कांचनक,हायन और लोध्रपुष्पक इत्यादिक बहुत से शालि अनेक देशों में होतेहैं यहां ग्रन्थ के विस्तार के भयसे सब नहीं कहेगये हैं ॥ ३ ॥

अथ तेषांगुणाः ॥

शालयोमधुराःस्निग्धाबल्याबद्धाल्पवर्चसः। कषायालघवोरुच्याःस्वर्य्यावृष्याश्च बृंहणाः ॥ अल्पानिलकफाःशीताः पित्तघ्नामूत्रलास्तथा। शालयोदग्धमृज्जाताःक षायालघुपाकिनः ॥ सृष्टमूत्रपुरीषाश्चरूक्षाःश्लेष्मापकर्षणाः ॥ कैदारावातपित्तघ्नाःगुर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मधुर[illegible]लेखनोमृदुः । व्रणेषुतिलवत्पथ्योरूक्षोमेधाग्निवर्द्धनः । कटुपाकोऽनभि[illegible]द्रीस्वर्य्योबलकरोगुरुः । बहुवातमलोवर्णस्थैर्य्यकारीचपिच्छिलः ॥ कण्ठत्वगामय[illegible]सपित्तमेद[illegible]प्रणाशनः । पीनसश्वासकासोरुस्तम्भलोहिततृट्प्रणुत् ॥ अस्मादतिय[illegible]यूनस्तोक्ययोन्यूनतरस्ततः ॥ १० ॥

शूकधान्यका वर्णन ॥

(जौ अतिजौ (बड़ीनोककृष्णा औररक्तवर्ण) स्तोक्य (हरावर्ण और नोकरहितजौ) इनकेनाम गुण) यव (इसकीनोक श्वेतहोती है) अतियव (इसमेंनोकनहींहोती) स्तोक्य (हरितवर्णऔरछोटा) यह जौकेभेदहैं जौ. कषैला, मधुर, शीतल, लेखन, कोमल, घावमें तिलके समान, पथ्य, रूखा[illegible]धाकोहित, अग्निवर्द्धक, पाकमेंकटु, अभिष्यन्दसे रहित, स्वरको हित, बलकारक, भारी, अत्यन्[illegible]दी, बहुतमल वर्द्धक, वर्णको स्थिर करने वाला, पिच्छिल और कण्ठरोग, त्वचारोग, कफ[illegible]पित्त, [illegible] नस, श्वास, खांसी, ऊरुस्तम्भ, रक्तदोष तथा तृषानाशक होताहै यवकी अपेक्षा अ[illegible] गुण कम होताहै और स्तोक्यमें बहुतही कम गुण होतेहैं ॥ १० ॥

अथ गोधूमस्यनामानिलक्षणंगुणाश्च ॥

गोधूमःसुमनोऽपिस्यात्त्रिविधःसचकीर्त्तितः । महागोधूमइत्याख्य[illegible]चादेशात्मागतः ॥ (महागोधूमः) बड़गोधूमाइतिलोके । मधूलीतुततःकिञ्चि[illegible]सामध्यदेशजा ॥ निःशूकोदीर्घगोधूमःक्वचिन्नंदीमुखाभिधः । गोधूमोमधुरःशी[illegible]वातपित्तहरोगुरुः ॥ कफशुक्रप्रदोबल्यःस्निग्धःसन्धानकृत्सरः । जीवनोबृंहणोवर्ण्योव्रण्योरुच्यःस्थिरत्वकृत् (कफप्रदोनवीनोनतुपुराणः) पुराणयवगोधूमःक्षौद्रजांगलशूल्यभागिति॥ वाग्भटेनवसंतेगृहीतत्वात् । मधूलीशीतलास्निग्धापित्तघ्नीमधुरालघुः ॥ शुक्रलाबृंहणीपथ्यातद्वन्नन्दीमुखःस्मृतः ॥ ११ ॥

गेहूँके नाम लक्षण और गुण ॥

गोधूम और सुमन यह गेहूँकेनामहैं महागोधूम जिसको बड़ागेहूं कहतेहैं पश्चिमदेशसे आताहै मधूली नाम गेहूं कुछ छोटा होताहै और मध्यदेशमें उत्पन्न होताहै और नन्दीमुखनाम गेहूं नोकरहित और लम्बाहोताहै गेहूं. मधुर, शीतल, वातघ्न, पित्तनाशक, भारी, कफकारक, वीर्यवर्द्धक, बलकारक, स्निग्ध, टूटेको जोड़नेवाला, सारक, जीवन, धातुवर्द्धक, वर्णकोहित, घावमेंपथ्य, रुचिकारक और शरीरको स्थिर करनेवाला होताहै नवीनगेहूं. कफकारक होताहै न कि पुराना क्योंकि वाग्भटमें कहाहै कि वसन्तऋतुमें पुराने जौ, गेहूं, सहत, जंगली जीवोंका मांस और शूल्य (कवाव) खानाकहाहै मधूली नाम गेहूं. शीतल, स्निग्ध, पित्तनाशक, मधुर, हलके, वीर्यवर्द्धक, धातुवर्द्धक और पथ्य होतेहैं नन्दीमुख गेहूंमें भी इसी के समान गुणहोते हैं ॥ ११ ॥

अथ शिम्बीधान्यम् ॥

तत्पर्य्यायानाह ॥ शमीजाःशिम्बिजाःशिम्बीभवाःसूप्याश्चवैदलाः (तेषांगुणाः) वैदलामधुरारूक्षाःकषायाःकटुपाकिनः ॥ वातलाःकफपित्तघ्नाबद्धमूत्रमलाहिमाः । ऋतेमु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्गमसूराभ्यामन्येत्वाध्मानकारिणः ॥ मुद्गमसूरयोराध्मानकारित्वमन्यवैदल [illegible] ध्यानतुस र्व्वथा। एतयोरपिकिञ्चिदाध्मानकारित्वात् ॥ १२ ॥

शिम्बीधान्यका वर्णन इसके नाम और गुण ॥

शमीज, शिम्बीज, शिम्बभिव, सूर्य्य और वैदल यह शिम्बीधान्यके नामहैं इनके गुण शिम्बीधान्य. मधु कषाय रूखा पाकमेंकटु बादी कफनाशक पित्तघ्न मलमूत्ररोधक और शीतल होताहै मूंग और मसूरको छोडकर सब शिम्बीधान्य आध्मानकारक होतेहैं यहां मूंग और मसूर अन्य शिम्बीधान्यों की अपेक्षा आध्मानकारी नहीं हैं यह कहागया न कि सर्वथा क्योंकि यहभी कुछ आध्मानकरतेहैं आध्मा- [illegible] अफरेको कहते हैं ॥ १२ ॥

तत्र मुद्गस्यगुणाः ॥

[illegible]द्गोरूक्षोलघुर्ग्राहीकफपित्तहरोहिमः। स्वादुरल्पानिलोनेत्र्योज्वरघ्नोवनजस्तथा ॥ मुद्गो [illegible]विधःश्यामोहरितःपीतकस्तथा । श्वेतोरक्तश्चतेषान्तुपूर्व्वःपूर्व्वोलघुःस्मृतः ॥ सुश्रुतेनपुनःप्रोक्तोहरितःप्रवरोगुणैः। चरकादिभिरप्युक्तएषएवगुणाधिकः ॥ १३ ॥

मूंग के गुण ॥

मूंग. रूखी, हलकी, ग्राही, पित्तनाशक, कफघ्न, शीतल, मधुर, कुछ बादी, नेत्रों को हित और ज्वरकी नाशक होतीहै वनमूंगमें भी इसी के समान गुणहोते हैं मूंग बहुत प्रकारकी होती है जैसे श्याम हरी पीत श्वेत और लाल यह क्रम से पूर्व्व २ हलकी हैं सुश्रुत ने हरी मूंगको सबसे गुणों में श्रेष्ठ कहाहै और चरकादिक मुनियोंने भी इसीको अधिकगुणयुक्त कहाहै ॥ १३ ॥

अथ उड़द ॥

माषोगुरुःस्वादुपाकःस्निग्धोरुच्योऽनिलापहः। स्रंसनस्तर्पणोबल्यःशुक्रलोबृंहणः परः ॥ भिन्नमूत्रमलस्तन्योमेदःपित्तकफप्रदः। गुदकीलार्दितःश्वासपंक्तिशूलानिनाशयेत् ॥ कफपित्तकरामाषाःकफपित्तकरंदधि। कफपित्तकरामत्स्यावृन्ताकंकफपित्तकृत् १४॥

उर्द के गुण ॥

उर्द. भारी, पाक में मधुर, स्निग्ध, रुचिकारक, वातनाशक, उष्ण, तृप्तिकारक, बलकारी, वीर्यवर्द्धक, धातुवर्द्धक, मलमूत्रका पृथक् करनेवाला, दुग्धवर्द्धक, मेदकरनेवाला, पित्तवर्द्धक, कफकारी और गुदाकी कीलकीपीडा, श्वास तथा पंक्तिशूलका नाशक होताहै उर्द, दही, मछली और बैंगन यह चारों कफ तथा पित्तके करनेवालेहैं ॥ १४ ॥

अथ वोड़ायस्यचवेरातरालोविआइत्यादयोभेदाः ॥

राजमाषोमहामाषश्चपलश्चबलःस्मृतः। राजमाषोगुरुःस्वादुस्तुवरस्तर्पणःसरः ॥ रूक्षोवातकरोरुच्यःस्तन्यभूरिबलप्रदः। श्वेतोरक्तस्तथाकृष्णस्त्रिविधःसप्रकीर्त्तितः ॥ योमहांस्तेषुभवतिसएवोक्तोगुणाधिकः ॥ १५ ॥

(राजमाष जिसके बोड़ा वेरातरा और लुबिया आदिक भेद हैं उसके नाम और गुण)

राजमाष, महामाष, चपल और चवल यह राजमाष के नाम हैं राजमाष, भारी, मधुर, कषैले, तृप्तिकारक, दस्तावर, रूखे, वातवर्द्धक, रुचिकारक, दुग्धवर्द्धक और बहुत बलकारी होते हैं श्वेत रक्त तथा कृष्ण इनभेदोंसे राजमाष तीनप्रकारकाहोताहै इनमें जो बड़ाहोताहै वही अधिक गुणवान् होताहै १५॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ निष्पावःसतुराजशिम्बीबीजंभटवासुइतिलोके ॥

निष्प... राजशिम्बिःस्याद्वल्लकःश्वेतशिम्बिकः। निष्पावोमधुरोरूक्षोविपाकेऽम्लो गुरुःसरः ...षायस्तन्यपित्तास्रमूत्रवातविबन्धकृत् । विदाह्युष्णोविषश्लेष्मशोथहृच्छुक्रनाशनः ॥ १६ ॥

भटमाष के नाम व गुण ॥

निष्पाव, राजशिम्बी, वल्लक और श्वेतशिम्बिक यह भटमाष के नाम हैं भटमाष. मधुर, रूखा, पाकमें खट्टा, भारी, दस्तावर, कषैला और दुग्ध, पित्त, रक्त, मूत्र, वात तथा विबन्धकारी उष्ण और विष, कफ, सूजन तथा वीर्यनाशक होताहै ॥ १६ ॥

अथ मोठ ॥

मकुष्ठोवनमुद्गःस्यान्मकुष्ठकमुकुष्ठकौ ॥ मकुष्ठोवातलोग्राहीकफपित्तहरोलघुः । वह्नि जिन्मधुरःपाकेकृमिकृज्ज्वरनाशनः ॥ १७ ॥

मोठ के नाम व गुण ॥

मकुष्ठ, वनमुद्ग, मकुष्ठक और मुकुष्ठक यह मोठ के नामहैं मोठ. बादी, ग्राही (क़ाबिज़) हलकी पाकमें मधुर, कृमिकारक और कफ, पित्त, जठराग्नि तथा ज्वरनाशक होती है ॥ १७ ॥

अथ मसूर ॥

मङ्गल्यकोमसूरःस्यान्मङ्गल्याचमसूरिका । मसूरोमधुरःपाकेसंग्राहीशीतलोलघुः ॥ कफपित्तास्रजिद्रूक्षोवातलोज्वरनाशनः ॥ १८ ॥

मसूर के नाम व गुण ॥

मङ्गल्यक, मसूर, मङ्गल्या और मसूरिका यह मसूर के नाम हैं मसूर. पाकमें मधुर, क़ाबिज़, शीतल, हलकी, रूखी, बादी और कफ, पित्त, रक्तदोष तथा ज्वरनाशक होती है ॥ १८ ॥

अथ रहरी ॥

आढकीतुवरीचापिसाप्रोक्ताशणपुष्पिका । आढकीतुवरारूक्षामधुराशीतलालघुः ॥ ग्राहिणीवातजननीवर्ण्यापित्तकफास्रजित् ॥ १९ ॥

अरहड के नाम व गुण ॥

आढकी, तुवरी और शणपुष्पिका यह अरहड के नाम हैं अरहड. कषैली, रूखी, मधुर, शीतल, हलकी, क़ाबिज़, बादी, वर्णकोहित और पित्त, कफ तथा रक्तनाशक होती है ॥ १९ ॥

अथ छोला ॥

चणकोहरिमन्थःस्यात्सकलप्रियइत्यपि । चणकःशीतलोरूक्षःपित्तरक्तकफापहः ॥ लघुःकषायोविष्टम्भीवातलोज्वरनाशनः । सचांगारेणसम्भृष्टस्तैलभृष्टश्चतद्गुणः ॥ आर्द्रभृष्टोबलकरोरोचनश्चप्रकीर्तितः । शुष्कभृष्टोऽतिरूक्षश्चवातकुष्ठप्रकोपणः ॥ स्विन्नःपित्तकफंहन्यात्सूपःक्षोभकरोमतः ॥ आर्द्रोऽतिकोमलोरुच्यःपित्तशुक्रहरोहिमः । कषायोवातलोग्राहीकफपित्तहरोलघुः ॥ २० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चने के नाम व गुण ॥

चणक, हरिमन्थ और सकलप्रिय यह चने के नाम हैं चना. शीतल,रूखा,हलका,कषै... विष्टम्भी, बादी और रक्त, पित्त, कफ तथा ज्वरनाशक होताहै अङ्गारों में और तेल में भूनेहुए च... भी यही गुणहैं गीला भूनाहुआ चना. बलकारी और रुचिवर्द्धकहोताहै सूखा भूनाहुआ चना. ...न्त रूखा और वात तथा कुष्ठकारीहोताहै सिझायाहुआ चना. पित्त तथा कफनाशक होताहै च..की दाल क्षोभ (बिगाड) करतीहै कच्चाचना.अत्यन्त कोमल,रुचिकारी, शीतल, कषैला, बादी, क़ाबिज़, हलका और रक्त, पित्त तथा कफ नाशक होताहै ॥ २० ॥ केराव ॥

कलायोवर्त्तुलःप्रोक्तःसतिनश्चहरेणुकः । कलायोमधुरःस्वादुपाकेरूक्षश्चशीतलः ॥२१॥

मटर के नाम गुण ॥

कलाय,वर्तुल, सतीन और हरेणुक यह मटर के नामहैं मटर. रस तथा पाक में मधुर, रूखा और शीतल होताहै ॥ २१ ॥

अथ खेसारी ॥

त्रिपुटःखण्डकोऽपिस्यात्कथ्यन्तेतद्गुणाअथ । त्रिपुटोमधुरस्तिक्तस्तुवरोरूक्षणोभृशम्॥ कफपित्तहरोरुच्योग्राहकःशीतलस्तथा । किन्तुखञ्जत्वपंगुत्वकारीवातातिकोपनः ॥२२॥

खिसारी के नाम व गुण ॥

त्रिपुट, और खण्डक यह खिसारीके नामहैं खिसारी. मधुर, तिक्त, कषैली, अत्यन्त रूखी, कफघ्न, पित्तनाशक, रुचिकारक, क़ाबिज़, शीतल, लूला, लँगड़ाकरनेवाली और अत्यन्त बादी होती है ॥२२॥

अथ कुलत्थी ॥

कुलत्थिकाकुलत्थश्चकथ्यन्तेतद्गुणाअथ । कुलत्थःकटुकःपाकेकषायःपित्तरक्तकृत् ॥ लघुर्विदाहीवीर्य्योष्णःश्वासकासकफानिलान् ॥ हन्तिहिक्काश्मरीशुक्रदाहानाहान्सपीनसान् । स्वेदसंग्राहकोमेदोज्वरकृमिहरःपरः ॥ २३ ॥

कुलथी के नाम व गुण ॥

कुलथीको कुलत्थिका और कुलत्थ कहते हैं कुलथी.पाकमें कटु,कषैली,पित्त तथा रक्तकारक,हलकी, विदाही,उष्ण,स्वेदरोधक और श्वास, खांसी, कफ, वात, हिचकी, पथरी, वीर्य, दाह, आनाह, पीनस, मेद, ज्वर तथा कृमिनाशक होती है ॥ २३ ॥ अथ तिलः ॥

तिलःकृष्णःसितोरक्तःसवर्ण्योऽल्पतिलःस्मृतः । तिलोरसेकटुस्तिक्तोमधुरस्तुवरोगुरुः ॥ विपाकेकटुकःस्वादुःस्निग्धोष्णःकफपित्तनुत् । बल्यःकेश्योहिमस्पर्शस्त्वच्यस्तन्योव्रणेहितः ॥ दन्त्योऽल्पमूत्रकृद्ग्राहीवातघ्नोऽग्निमतिप्रदः । कृष्णःश्रेष्ठतमस्तेषुशुक्लोमध्यमःसितः ॥ अन्येहीनतराःप्रोक्तास्तज्ज्ञैरक्तादयस्तिलाः ॥ २४ ॥

तिलके नाम गुण ॥

काला,श्वेत और रक्त यह तीन प्रकारका तिल होताहै एक प्रकार का और भी छोटा तिल जिसको वन्य कहतेहैं होताहै तिल. कटु, तिक्त, मधुर, कषैला, भारी, पाकमें कटु, तथा मधुर, स्निग्ध, उष्ण, कफघ्न, पित्तनाशक, बलकारक, केशोंकोहित, स्पर्शमें शीतल, त्वचाकोहित, दुग्धवर्द्धक, घावमें हित, दांतोंको दृढ करनेवाला,मूत्रको कम करनेवाला, क़ाबिज़,वातघ्न, अग्निकारक और बुद्धिवर्द्धकहोताहै

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सब ति[illegible] काले तिल श्रेष्ठ होतेहैं श्वेत तिल. वीर्यवर्द्धक और मध्यम होताहै और रक्तवर्ण आदिक [illegible] गुणों में हीन होते हैं ॥ २४ ॥ अथातसी ॥

अत[illegible]नीलपुष्पीचपार्वतीस्यादुमाक्षुमा । अतसीमधुरातिक्तास्निग्धापाकेकटुर्गुरुः ॥ उष्णा[illegible]क्शुक्रवातघ्नीकफपित्तविनाशिनी ॥ २५ ॥

अलसीके नाम व गुण ॥

अतसी, नीलपुष्पी, पार्वती, उमा और क्षुमा यह अलसीके नामहैं अलसी. मधुर, तिक्त, स्निग्ध, पाक में कटु, भारी, उष्ण और दृष्टि, वीर्य, वात, कफ तथा पित्तनाशक होतीहै ॥ २५ ॥

अथ तोरीतोड़िसेतिलोके ॥

तुवरीग्राहिणीप्रोक्तालघ्वीकफविषास्रजित् । तीक्ष्णोष्णावह्निदाकण्डूकुष्ठकोष्ठकृमीन्प्रणुत् ॥ २६ ॥

तोरी के गुण ॥

तोरी. क्राबिज्र, हलकी, तीक्ष्ण, उष्ण, अग्निकारक और कफ, विष, रक्त, खुजली, कुष्ट तथा कोष्ठ के कृमियोंकी नाशक होतीहै ॥ २६ ॥

अथ रक्तसरीसोपिअरीसरीसो ॥

सर्षपःकटुकःस्नेहस्तुन्तुभश्चकदम्बकः । गौरस्तुसर्षपःप्राज्ञैःसिद्धार्थइतिकथ्यते ॥ सार्षपस्तुरसेपाकेकटुःस्निग्धःसतिक्तकः । तीक्ष्णोष्णः कफवातघ्नोरक्तपित्ताग्निवर्द्धनः ॥ रक्षोहरोजयेत्कण्डूकुष्ठकोष्ठकृमिग्रहान् । यश्चारक्तस्तथागौरःकिन्तुगौरोवरोमतः ॥२७॥

लाल और पीलीसरसोंके नाम व गुण ॥

सर्षप, कटुक, स्नेह, तुन्तुभ और कदम्बक यह सरसोंके नामहैं श्वेत सरसोंको पण्डितलोग सिद्धार्थ कहतेहैं सरसों. रस तथा पाकमें कटु, स्निग्ध, कुछ तिक्त, तीक्ष्ण, उष्ण, रक्त, पित्त तथा अग्निवर्द्धक राक्षसीयबाध नाशक और कफ, वात, खुजली, कुष्ठ, कोष्ठके कृमि तथा ग्रहदोष नाशक होती है लाल और श्वेत यह दोनों सरसों समानहैं परन्तु श्वेतसरसों श्रेष्ठहै ॥ २७ ॥

अथ राई कृष्णराई ॥

राजीतुराजिकातीक्ष्णगन्धाकुञ्जनिकासुरी । क्षवःक्षुधाभिजनकःकृमिकृत्कृष्णसर्षपः । राजिकाकफपित्तघ्नीतीक्ष्णोष्णारक्तपित्तकृत् । किंचिद्रूक्षाग्निदाकण्डूकुष्ठकोष्ठकृमीन्हरेत् ॥ अतितीक्ष्णाविशेषेणतद्वत्कृष्णापिराजिका ॥ २८ ॥

राई और काली राईके नाम व गुण ॥

राजी, राजिका, तीक्ष्णगन्धा, कुञ्जनिका और आसुरी यह राई के नामहैं क्षव, क्षुधाभिजनक, कृमिकृत् और कृष्णसर्षप यह कालीराई के नामहैं राई. तीक्ष्ण, उष्ण, रक्त, पित्तकारक, कुछ, रूखी, अग्निवर्द्धक और कफ, पित्त, खुजली, कुष्ठ तथा कोष्ठ के कृमि की नाशक होती है कालीराई. विशेष करके तीक्ष्ण और राई के समान गुणवाली होती है ॥ २८ ॥

अथ क्षुद्रधान्यम् ॥

क्षुद्रधान्यंकुधान्यंचतृणधान्यमितिस्मृतम् । क्षुद्रधान्यमनुष्णंस्यात्कषायंलघुलेखनम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मधुरंकटुकंपाकेरूक्षंचक्लेदशोषकम् ॥ वातकृद्बद्धविट्कंचपित्तरक्तकफापहम् ॥ २९ ॥

क्षुद्रधान्यका वर्णन ॥

क्षुद्रधान्य, कुधान्य और तृणधान्य यह क्षुद्रधान्यके नामहैं क्षुद्रधान्य. कुछ उष्ण कषैला हलका लेखन मधुर पाकमें कटु रूखा गीलेको सुखानेवाला बादी मलरोधक और पित्त रक्त तथा कफना-शक होताहै ॥ २९ ॥

तत्र कंगुनी ॥

स्त्रियांकंगुप्रियंगुद्वेकृष्णारक्तासितातथा। पीताचतुर्विधाकंगुस्तासाम्पीतावरास्मृता॥ कंगुस्तुभग्नसंधानवातकृद्बृंहणीगुरुः। रूक्षाश्लेष्महरातीववाजिनांगुणकृद्भृशम्॥ ३० ॥

कंगुनीके नाम व गुण ॥

कंगुनीको कंगु और प्रियंगु कहते हैं यह कृष्ण, रक्त, श्वेत और पीत इन भेदोंसे चार प्रकारकीहै इन में पीलीकंगुनी श्रेष्ठहै कंगुनी. टूटे हाडको जोडनेवाली, बादी, धातुवर्द्धक, भारी, रूखी, अतिकफ-नाशक और घोडोंको अत्यन्त गुणदायक होती है ॥ ३० ॥

अथ चीना ॥

चीनाकःकंगुभेदोऽस्तिसज्ञेयःकंगुवद्गुणैः ३१ (अथ श्यामा) श्यामाकःशोषणोरूक्षोवातलःकफपित्तहृत् ॥ ३२ ॥

चीनाके गुण ॥

चीना. कंगुनीका भेदहै इसमें कंगुनीके समान गुणहोते हैं ३१ (सामाके गुण) सामा. सुखाने वाला, रूखा, बादी और कफपित्तनाशक होताहै ॥ ३२ ॥

अथ कोद्रवः ॥

कोद्रवःकोरदूषःस्यादुद्दालोवनकोद्रवः। कोद्रवोवातलोग्राहीहिमःपित्तकफापहः ॥ उद्दालस्तुभवेदुष्णोग्राहीवातकरोभृशम् ॥ ३३ ॥

कोदोंके नाम व गुण ॥

कोद्रवको कोरदूष कहतेहैं और वनकोदोंको उद्दाल कहतेहैं कोदो. बादी, क़ाबिज़, शीतल तथा पित्त कफनाशक और वनकोदो. उष्ण, क़ाबिज़ और अत्यन्त बादी होताहै ॥ ३३ ॥

अथ चारुकः सरबीजः ॥

चारुकःसरबीजःस्यात्कथ्यन्तेतद्गुणाअथ। चारुकोमधुरोरूक्षोरक्तपित्तकफापहः ॥ शीतलोलघुवृष्यश्चकषायोवातकोपनः ॥ ३४ ॥

सरबीजके नाम व गुण ॥

सरबीजको चारुक कहतेहैं सरबीज. मधुर, कषैला, रूखा, रक्तपित्तनाशक, कफघ्न, शीतल, हल-का, वीर्यवर्द्धक और बादी होताहै ॥ ३४ ॥

अथ वंशबीजः ॥

यवावंशभवारूक्षाःकषायाःकटुपाकिनः। बद्धमूत्राःकफघ्नाश्चवातपित्तकराःसराः॥३५॥

बांसके बीजोंके गुण ॥

बांसकेबीज. रूखे, कषैले, पाकमेंकटु, मूत्ररोधक, कफनाशक, बादी, पित्तवर्द्धक और दस्तावर होते हैं ३५॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ बर्रेकुसुम्भबीज ॥

कुसुम्भबीजंवरटासैवप्रोक्तावरट्टिका । वरटामधुरास्निग्धारक्तपित्तकफापहा ॥ कषायाशीता,गुर्व्वीस्यादवृष्यानिलापहा ॥ ३६ ॥

कुसुमके बीजोंके नाम व गुण ॥

कुसुम्भबीज, वरटा और वरट्टिका यह कुसुमके बीजोंके नामहैं कुसुमकेबीज. मधुर, कषैले, स्निग्ध, रक्तपित्तनाशक, कफघ्न, शीतल, भारी, वीर्यके नहीं बढ़ानेवाले और वातनाशक होते हैं ॥ ३६ ॥

अथ गरहेडुआ ॥

गवेधुकातुविद्वद्भिर्गवेधुःकथितास्त्रियाम् । गवेधुःकटुकास्वाद्वीकार्श्यकृत्कफनाशिनी ३७॥

गरहडुआके नाम व गुण ॥

गरहडुआको गवेधुका और गवेधू (स्त्रीलिंग) कहते हैं गरहडुआ. कटु, मधुर, कृशकरनेवाला और कफनाशक होताहै ॥ ३७॥

अथ तीनी ॥

प्रसाधिकातुनीवारस्तृणान्नमितिचस्मृतम् । नीवारःशीतलोग्राही पित्तघ्नःकफवातकृत् ३८

तिन्नीपसाईके नाम व गुण ॥

प्रसाधिका, नीवार और तृणान्न यह तिन्नीपसाईके नामहैं तिन्नीपसाई. शीतल, ग्राही, पित्तनाशक, कफकारी और बादी होती है ॥ ३८ ॥

अथ पुनेरा ॥

पवनाल्लोहिमःस्वादुर्ल्लोहितःश्लेष्मपित्तजित् । अवृष्यस्तुवरोरूक्षःक्लेदकृत्कथितो लघुः ॥ ३९ ॥

पुनेराके गुण ॥

पवना पुनेरा. शीतल, मधुर, वीर्यको नहीं बढ़ानेवाला, कफघ्न, पित्तनाशक, रूखा, क्लेदकारक और हलका होताहै ॥ ३९ ॥

अथ सर्वधान्यगुणाः ॥

धान्यंसर्व्वंनवंस्वादुगुरुश्लेष्मकरंस्मृतम् । तत्तुवर्षोषितंपथ्यंयतोलघुतरंहितम् ॥ वर्षोषितंसर्वधान्यंगौरवंपरिमुञ्चति । नतुत्यजतिवीर्य्यंस्वंक्रमान्मुञ्चत्यतःपरम् ॥ एते पुयवगोधूमतिलमाषानवाहिताः ॥ पुराणाविरसारूक्षानतथागुणकारिणः ॥ पुराणावर्षद्वयादुपरिस्थिताः । यवादयोनवाःस्वास्थ्यान्प्रातिहिताः ॥ पथ्याशिनान्तुपुराणाहिताः । पुराणायवगोधूमक्षौद्रजांगलशूल्यभुगितिवासन्तेवाग्भटेनोक्तत्वात् ॥ ४० ॥

इति श्रीभावप्रकाशे धान्यवर्गः ॥

सम्पूर्णधान्योंके गुण ॥

सम्पूर्ण नवीनधान्य. मधुर, भारी और कफकारक होतेहैं एकवर्षका पुरानाधान्य. हलकेपनेसे पथ्य होताहै एकवर्षका पुराना सब अनाज भारीपनको छोडताहै और वीर्य्यको नहीं छोडता इसके उपरांत क्रमसे वीर्यको भी छोडताहै जौ, गेहूं, तिल और उर्द यह नवीनही हितकारी होतेहैं और दोवर्षके पुराने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रसरहित और रूखे होजाते हैं ऊपर कहेहुए जौ आदिक नवीन होनेपर स्वस्थपुरुषों को [illegible]कारी होते हैं परन्तु पथ्यवालोंको पुराने हितहैं क्योंकि वाग्भटने वसन्तचर्य्यामें पुराने जौ तथा गे[illegible]हूत जङ्गली जीवोंका मांस और शूल्य कबाब खाना कहाहै ॥ ४० ॥

इति श्रीभावप्रकाशस्यभाषानुवादेधान्यवर्गःसमाप्तः ॥

अथ शाकवर्गस्तत्र शाकनिरूपणम् ॥

पत्रंपुष्पंफलंनालंकन्दंसंस्वेदजंतथा। शाकंषड्विधमुद्दिष्टंगुरुविद्याद्यथोत्तरम् १ ॥

अथ शाकोंका वर्णन ॥

पत्र, पुष्प, फल, नाल, कन्द और स्वेदज यह छः प्रकारके शाक (तरकारी) होते हैं यह क्रमसे उत्तरोत्तर भारी होते हैं १ ॥

अथ शाकानांगुणाः ॥

प्रायःशाकानिसर्व्वाणिविष्टम्भीनिगुरूणिच। रूक्षाणिबहुवर्च्चांसिसृष्टविण्मारुतानिच ॥ शाकंभिनत्तिवपुरस्थिनिहन्तिनेत्रं वर्णंविनाशयतिरक्तमथापिशुक्रम्। प्रज्ञाक्षयञ्चकुरुतेपलितञ्चनूनं हन्तिस्मृतिंगतिमितिप्रवदन्तितज्ज्ञाः ॥ शाकेषुसर्व्वेषुवसन्तिरोगास्तेहेतवोदेहविनाशनाय। तस्माद्बुधःशाकविवर्ज्जनन्तुकुर्य्यात्तथाम्लेषुसएवदोषः ॥ एतानिशाकनिन्दकानिवचनानिसामान्यानि ॥ अथ शाकेषुविशिष्टानिवचनानि ॥ २ ॥

शाकों के गुण ॥

प्रायःसंपूर्ण शाक. विष्टम्भी, भारी, रूखे, अत्यन्त मलवर्द्धक, मलनिकालनेवाले और बादी होते हैं शाक शरीरकी हड्डी, नेत्र, वर्ण, रुधिर, वीर्य, बुद्धि, स्मृति तथा गतिको नष्टकरते हैं और बालोंको श्वेत करते हैं संपूर्ण शाकोंमें रोगरहते हैं वही शरीरके विनाशके कारण होते हैं इससे पण्डितलोग शाकका त्यागकरें और खटाई में भी यही दोषहै यह शाकोंकी निन्दा के सामान्य वचन हैं अब शाकोंके वर्णनमें विशेष वचन कहेजातेहैं ॥ २ ॥

तत्र पत्रशाकानि ॥ तत्रापिवास्तूकद्वयस्यनामानि गुणाश्च ॥

वास्तूकंवास्तुकञ्चस्यात्क्षारपत्रञ्चशाकराट्। तदेवतुबृहत्पत्रंरक्तस्याद्गौडवास्तुकम् ॥ प्रायशोयवमध्येस्याद्यवशाकंमतःस्मृतम्। वास्तूकद्वितयंस्वादुक्षारंपाकेकटूदितम्। दीपनंपाचनंरुच्यंलघुशुक्रबलप्रदम्। सरंप्लीहास्रपित्तार्शःकृमिदोषत्रयापहम् ॥ ३ ॥

पत्रशाकोंका वर्णन। दोनोंबथुईके नाम व गुण ॥

वास्तूक, वास्तुक, क्षारपत्र और शाकराट् यह बथुई के नामहैं बडेपत्तेकी लालबथुई को गौडवास्तुक और प्रायः यवोंके बीचमें होनेसे यवशाक कहतेहैं दोनों बथुई- मधुर, क्षार, पाकमें कटु, दीपन, पाचक, रुचिकारक, हलकी, वीर्यवर्द्धक, बलकारी, दस्तावर और प्लीहा, रक्तपित्त, बवासीर, कृमि तथा त्रिदोषनाशक होती हैं ॥ ३ ॥

अथ पोतकी

पोतक्युपोदिकासातुमालवामृतवल्लरी। पोतकीशीतलास्निग्धाश्लेष्मलावातपित्तनुत् ॥ अकण्ठ्यापिच्छिलानिद्राशुक्रदारक्तपित्तजित्। बलदारुचिकृत्पथ्याबृंहणीतृप्तिकारिणी ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पोयके नाम व गुण॥

पोतकी, [illegible]ोदिका, मालवा और अमृतवल्लरी यह पोयके नामहैं पोय.शीतल, स्निग्ध, कफकारक, वातपित्तनाश[illegible] कण्ठको अहित, पिच्छिल, निद्राकारी, वीर्यवर्द्धक, रक्तपित्तनाशक, बलकारी, रुचिकारक, पथ्य, धातुवर्द्धक और तृप्तिकारी होतीहै ॥ ४ ॥

अथ श्वेतमरुसा लोहितमरुसा नवड़ा इतिच॥

मारिषोवाष्पकोमार्षःश्वेतोरक्तश्चससमृतः । मारिषोमधुरःशीतोविष्टम्भीपित्तनुद्गुरुः॥ वातश्लेष्मकरोरक्तपित्तनुद्विषमाग्निजित्। रक्तमार्षोगुरुर्नातिसक्षारोमधुरःसरः॥ श्लेष्मलःकटुकःपाकेस्वल्पदोषउदीरितः ॥ ५ ॥

श्वेतमरसा और लालमरसाके नाम और गुण॥

मारिष वाष्पक और मार्ष यह दोनों मरसाके नामहैं मरसा. मधुर, शीतल, विष्टम्भी, पित्तनाशक, भारी, बादी, कफकारी और रक्तपित्त तथा विषमाग्निनाशक होताहै लालमरसा. बहुत भारीपन से रहित, कुछ क्षार, मधुर, दस्तावर, कफकारी, पाक में कटु और थोड़े दोषवाला होताहै ॥ ५ ॥

अथ चवराई । अल्पमरुसा इतिच॥

तण्डुलीयोमेघनादः काण्डेरस्तण्डुलेरकः । भण्डीरस्तण्डुलीबीजोविषघ्नश्चाल्पमारिषः ॥ तण्डुलीयोलघुःशीतोरूक्षःपित्तकफास्रजित् । सृष्टमूत्रमलोरुच्योदीपनोविषहारकः ॥ ६ ॥

चौराई के नाम व गुण॥

तण्डुलीय, मेघनाद, काण्डेर, तण्डुलेरक, भण्डीर, तण्डुलीबीज, विषघ्न और अल्पमारिष यह चौराई के नामहैं चौराई. शीतल, हलकी, रूखी, पित्तघ्न, कफनाशक, रक्तदोषनाशक, मलमूत्र निकालने वाली, रुचिकारी, दीपन और विषनाशक होती है ॥ ६ ॥

अथ चवराईभेदः॥

जलतण्डुलीयंशास्त्रेकचटामितिप्रसिद्धम् । पानीयंतण्डुलीयन्तुकचटंसमुदाहृतम् । कचटंतिक्तकंरक्तपित्तानिलहरंलघु ॥ ७ ॥

जलचौराईके नाम व गुण॥

जलचौराई को जलतण्डुलीय और कचट कहते हैं जलचौराई. तिक्त, रक्तपित्तनाशक, वातघ्न और हलकी होती है ॥ ७ ॥

अथ पलकी॥

पालक्यावास्तुकाकाराच्छुरिकाचीरितच्छदा ॥ पालक्यावातलाशीताश्लेष्मलाभेदिनीगुरुः। विष्टम्भिनीमदश्वासपित्तरक्तकफापहा ॥ ८ ॥

पालकके नाम व गुण॥

पालक्या, वास्तुकाकारा, छुरिका और चीरितच्छदा यह पालकके नामहैं पालक. बादी, शीतल, कफकारी, दस्तावर, भारी, विष्टम्भी और मदरोग, श्वास, पित्तरक्त तथा विषनाशक होताहै ॥ ८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ नारीशाकंकालशाकमितिच ॥

नाडिकंकालशाकञ्चश्राद्धशाकञ्चकालकम् ॥ कालशाकंसरंरुच्यंवातकृत्कफशोथहृत् । बल्यंरुचिकरंमेध्यंरक्तपित्तहरंहिमम् ॥ ९ ॥

नारीके शाक के नाम व गुण ॥

नाडिक,कालशाक,श्राद्धशाक और कालक यह नारीके शाकके नामहैं नारीकाशाक. दस्तावर,रुचिकारक,बादी,कफघ्न,शोथनाशक,बलकारी,रुचिकारक,मेधाकोहित,रक्तपित्तनाशक और शीतलहोताहै ९ ॥

अथ पटुआ ॥

पट्टशाकस्तुनाड़ीकोनाड़ीशाकश्चसःस्मृतः । नाड़ीकोरक्तपित्तघ्नोविष्टम्भीवातकोपनः १०

पटुआ शाकके नाम व गुण ॥

पट्टशाक नाडीक और नाडीशाक यह पटुशाक के नामहैं पटुआ. रक्तपित्तनाशक, विष्टम्भी और बादी होताहै ॥ १० ॥

अथ कलम्बी ॥

कलम्बीशतपर्वाचकथ्यन्तेतद्गुणाअथ । कलम्बीस्तन्यदाप्रोक्तामधुराशुक्रकारिणी ११ ॥

कलगीके नाम व गुण ॥

कलगीको कलंबी और शतपर्व्वा कहतेहैं कलगी. दुग्धवर्द्धक, मधुर और वीर्यवर्द्धक होतीहै ॥ ११ ॥

अथ लोणी बृहल्लोणी ॥

लोणालोणीचकथिताबृहल्लोणीतुघोटिका । लोणीरूक्षास्मृतागुर्वीवातश्लेष्महरीपटुः ॥ अर्शोघ्नीदीपनीचाम्लामन्दाग्निविषनाशिनी । घोटिकाम्लासराचोष्णावातकृत्कफपित्तहृत् ॥ वाग्दोषव्रणगुल्मघ्नीश्वासकासप्रमेहनुत् । शोथलोचनरोगेच हितातज्ज्ञैरुदाहता ॥ १२ ॥

छोटी और बडी नोनिया के नाम व गुण ॥

छोटी नोनियाको लोणा तथा लोणी और बडी नोनियाको घोटिका कहतेहैं नोनिया. रूखी, भारी, दीपन, खट्टी, नमकीन और वात कफ, बवासीर, मन्दाग्नि तथा विषनाशक होती है और बडी नोनिया. खट्टी, दस्तावर, उष्ण, बादी और कफ, पित्त, त्वचा के दोष, घाव, गुल्म, श्वास, खांसी, प्रमेह, सूजन और नेत्ररोगनाशक होती है ॥ १२ ॥

अथ चाङ्गेरी अम्बिलीनारातिच ॥

चाङ्गेरीचुक्रिकादन्तशठाम्बष्ठाम्ललोणिका । अश्मन्तकस्तुशफरीपिसलीचाम्लपत्रकः ॥ चाङ्गेरीदीपनीरुच्यारूक्षोष्णाकफवातनुत् । पित्तलाम्लाग्रहण्यर्शःकुष्ठातीसारनाशिनी ॥ १३ ॥

चाङ्गेरी चूकाका भेद उसके नाम व गुण ॥

चाङ्गेरी, चुक्रिका, दन्तशठा, अम्बष्ठा, अम्ललोणिका, अश्मन्तक, शफरी, पिसली और अम्लपत्रक यह चाङ्गेरी के नामहैं चाङ्गेरी. दीपन, रुचिकारक, रूखी, उष्ण, पित्तवर्द्धक, खट्टी और कफ, वात, ग्रहणी, बवासीर, कुष्ठ तथा अतीसारनाशक होतीहै ॥ १३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ चूक ॥

चुक्रिका ...तुपत्राम्लारोचनीशतवेधिनी ॥ चुक्रात्वम्लतरास्वाद्वीवातघ्नीकफपित्त कृत् । रुच्यालघुतरापाकेवृन्ताकेनातिरोचनी ॥ १४ ॥

चूकाके नाम व गुण ॥

चुक्रिका, पत्राम्ला, रोचनी और शतवेधिनी यह चूकाके नामहैं चूका बहुतखट्टा, मधुर, वातनाशक, कफ, पित्तकारक, रुचिकारी, शीघ्रपचनेवाला और बैंगन के साथ बहुत रुचिकारी होता है ॥ १४ ॥

अथ चेवुनानाड़ीचवत् ॥

चिञ्चाचञ्चुश्चञ्चुकीचदीर्घपत्रासतिक्तका ॥ चुञ्चुःशीतासरारुच्यास्वाद्वीदोषत्र यापहा । धातुपुष्टिकरीबल्यामेध्यापिच्छिलकास्मृता ॥ १५ ॥

चेवुना के नाम व गुण ॥

चिञ्चा, चञ्चू, चञ्चुकी, दीर्घपत्रा और तिक्तका चेवुना. शीतल, दस्तावर, रुचिकारी, मधुर, त्रिदोष- नाशक, धातुपोषक, बलकारी, मेधाकोहित और पिच्छिल होताहै ॥ १५ ॥

अथ हिलमोचिकाहुरहुरइतिलोके ॥

ब्राह्मीशङ्खधराचारीमन्त्रीचाहिलमोचिका । शोथंकुष्ठंकफंपित्तंहरतेहिलमोचिका १६ ॥

हुरहुर के नाम व गुण ॥

ब्राह्मी, शङ्खधरा, आचारी, मन्त्री और हिलमोचिका यह हुरहुरके नाम हैं हुरहुर. सूजन, पित्त, कफ और कुष्टनाशक होता है ॥ १६ ॥

अथ शिरिआरी ॥

शितिवारःशितिवरःस्वस्तिकःसुनिषण्णकः । श्रीवारकःसूचिपत्रःपर्णकःकुक्कुटःशिखी ॥ चाङ्गेरीसदृशःपत्रश्चतुर्दलइतीरितः । शाकोजलान्वितेदेशेचतुःपत्रीतिचोच्यते ॥ सु निषण्णोहिमोग्राहीमोहदोषत्रयापहः ॥ अविदाहीलघुःस्वादुःकषायोरूक्षदीपनः । वृष्यो रुच्योज्वरश्वासमेहकुष्ठभ्रमप्रणुत् ॥ १७ ॥

शिरयारी के नाम और गुण ॥

शितिवार, शितिवर, स्वस्तिक, सुनिषण्णक, श्रीवारक, सूचिपत्र, पर्णक, कुक्कुट और शिखी यह शिरयारी के नाम हैं इसके पत्ते चाङ्गेरी के समान होते हैं और यह सजलदेशमें उत्पन्न होताहै इसमें चार दल होते हैं उसको चतुःपत्री भी कहते हैं शिरयारी. शीतल, ग्राही, मेदनाशक, त्रिदोषघ्न, विदाह- रहित, हलकी, मधुर, कषैली, रूखी, दीपन, वीर्य्यवर्द्धक, रुचिकारी और ज्वर, श्वास, प्रमेह, कुष्ठ तथा भ्रमनाशक होतीहै ॥ १७ ॥

अथ मुरईपत्रम् ॥

पाचनंलघुरुच्योष्णंपत्रंमूलकजंनवम् । स्नेहसिद्धंत्रिदोषघ्नमसिद्धंकफपित्तकृत् १८ ॥

मूलीके पत्तों के गुण ॥

मूली के नये पत्ते. पाचक, हलके, रुचिकारक और उष्ण होते हैं यह स्नेह में पकायेहुए त्रिदोष- नाशक और कच्चे, कफ, पित्तकारी होते हैं ॥ १८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ गुम्मा ॥

द्रोणपुष्पीदलंस्वादुरूक्षंगुरुचपित्तकृत्। भेदनंकामलाशोथमेहज्वरहरं[illegible] ॥ १९ ॥

गूमाके गुण ॥

गूमाकेपत्ते.मधुर, कटु, रूखे,भारी,पित्तवर्द्धक, भेदक और कामला, सूजन, प्रमेह तथा ज्वरनाशक होते हैं ॥ १९ ॥

अथ जवाइन ॥

यवानीशाकमाग्नेयंरुच्यंवातकफप्रणुत्। उष्णंकटुचतिक्तंचपित्तलंलघुशूलहृत्॥२०॥

अजवाइन के शाकके गुण ॥

अजवाइनका शाक. अग्निके गुणवाला, रुचिकारी, वातघ्न, कफनाशक, उष्ण, कटु, तिक्त, पित्तवर्द्धक, हलका और शूलनाशक होताहै ॥ २० ॥

अथ चकवड़ ॥

दद्रुघ्नपत्रंदोषघ्नमम्लंवातकफापहम्। कण्डूकासक्रमिश्वासदद्रूकुष्ठप्रणुल्लघु ॥ २१ ॥

पवांड के पत्तोंके गुण ॥

पवांडके पत्ते. दोषनाशक,खट्टे, हलके और वात, कफ,खुजली,खांसी,कृमि,श्वास,दाद तथा कुष्ठ-नाशक होते हैं ॥ २१ ॥

अथ सेहुण्ड ॥

सेहुण्डस्यदलंतीक्ष्णंदीपनंरोचनंहरेत्।आध्मानाष्ठीलिकागुल्मशूलशोथोदराणिच २२॥

सेंहुड के पत्तों के गुण ॥

सेंहुडकेपत्ते. तीक्ष्ण,दीपन,रुचिकारक और उदर, आध्मान, अष्ठीला, गुल्म,शूल तथा सूजननाशक होते हैं ॥ २२ ॥

अथ दवनपापरा ॥

पर्प्पटोहन्तिपित्तास्रज्वरतृष्णाकफभ्रमान्।संग्राहीशीतलस्तिक्तोदाहनुद्वातलोलघुः २३॥

पित्तपापड़े के शाक के गुण ॥

पित्तपापड़ा. पित्त, रक्त, ज्वर, तृषा, कफ, भ्रम तथा दाहनाशक, ग्राही, शीतल, तिक्त, बादी और हलका होताहै ॥ २३ ॥

अथ गोभी ॥

गोजिह्वाकुष्ठमेहास्रकृच्छ्रज्वरहरोलघुः २४ ॥ (अथ पटोलपत्र) पटोलपत्रंपित्तघ्नं दीपनम्पाचनंलघु। स्निग्धंवृष्यंतथोष्णञ्चज्वरकासक्रमिप्रणुत् ॥ २५ ॥

गोभी के गुण ॥

गोभी. कुष्ठ, मेह, रक्तदोष, मूत्रकृच्छ्र तथा ज्वरनाशक और हलकी होती है ॥ २४ ॥ (परवलके पत्तोंके गुण) पटोलपत्र.पित्तघ्न, दीपन, पाचन, हलके, स्निग्ध, वीर्यवर्द्धक, उष्ण और ज्वर, खांसी तथा कृमिनाशक होते हैं ॥ २५ ॥

अथ गुडूची ॥

गुडूचीपत्रमाग्नेयंसर्वज्वरहरंलघु। कषायंकटुतिक्तञ्चस्वादुपाकंरसायनम् ॥ बल्य मुष्णञ्चसंग्राहिहन्याद्दोषत्रयंतृषाम्। दाहप्रमेहवातास्रकामलाकुष्ठपाण्डुताम् ॥ २६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गिलोयके पत्तों के गुण ॥

गिलोयके पत्ते. अग्निके गुणवाले, संपूर्ण ज्वरनाशक, हलके, कषैले, कटु, तिक्त, पाकमें मधुर, रसायन, बलकारी, उष्ण, ग्राही और त्रिदोष, तृषा, प्रमेह, वातरक्त, कामला, कुष्ठ तथा पांडुनाशक होते हैं॥२६॥

अथ कसौंदी ॥

काममर्दोऽरिमर्दश्चकासारिःकर्कशस्तथा।कासमर्ददलंरुच्यंवृष्यंकासविषास्रनुत्॥ मधुरंकफवातघ्नंपाचनंकण्ठशोधनम्। विशेषतःकासहरंपित्तघ्नंग्राहकंलघु ॥ २७ ॥

कसौंदी के नाम व गुण ॥

कासमर्द, अरिमर्द, कासारि और कर्कश यह कसौंदी के नाम हैं कसौंदीके पत्ते. रुचिकारी, वीर्यवर्द्धक, खांसीनाशक, विषघ्न, रक्तदोषनाशक, मधुर, कफवातनाशक, पाचक, कण्ठशोधक और विशेष करके खांसी तथा पित्तके नाशक, ग्राही और हलके होते हैं ॥ २७ ॥

अथ चणक ॥

रुच्यश्चणकशाकंस्याद्दुर्जरंकफवातकृत्।अम्लंविष्टम्भजनकंपित्तनुद्दन्तशोथहृत् ॥२८॥

चनेके शाकके गुण ॥

चनेकाशाक. रुचिकारी, कठिनतासे पचनेवाला, कफकारी, बादी, खट्टा, विष्टम्भी, पित्तनाशक और दांतोंकी सूजनका नाशक होताहै ॥ २८ ॥

अथ केराव ॥

कलायशाकम्भेदिस्याल्लघुतिक्तंत्रिदोषजित् २९ (अथसरिसो) कटुकंसार्षपंशाकं बहुमूत्रमलंगुरु। अम्लपाकंविदाहिस्याद्दुष्णंरूक्षंत्रिदोषजित् ॥ सक्षारंलवणंतीक्ष्णंस्वादुशाकेषुनिन्दितम् ॥ ३० ॥ मटरके शाकके गुण ॥

मटरकाशाक. दस्तावर, हलका, तिक्त और त्रिदोषनाशक होताहै २९ ॥ (सरसोंकेशाककेगुण) सरसोंकाशाक. कटु, मलमूत्रवर्द्धक, भारी, खट्टा, विदाही, उष्ण, रूखा, त्रिदोषनाशक कुछ क्षार सलोन मधुर और तीक्ष्ण होताहै यह संपूर्ण शाकों में निन्दितहै ॥ ३० ॥

अथ पुष्पशाकानि । तत्रागस्तिपुष्पस्यगुणाः ॥

अगस्तिकुसुमंशीतंचातुर्थकनिवारणम् । नक्तान्ध्यनाशनंतिक्तंकषायंकटुपाकिच । पीनसश्लेष्मपित्तघ्नंवातघ्नंमुनिभिर्मतम् ॥ ३१ ॥

पुष्पशाकोंका वर्णन ॥ अगस्तिके पुष्पोंका गुण ॥

अगस्तिके पुष्प. शीतल, चौथैया ज्वरनाशक, रतौंधी दूरकरनेवाले, तिक्त, कषैले, पाकमें कटु और पीनस, कफ, पित्त तथा वातनाशक होते हैं ॥ ३१ ॥

अथ कदलीपुष्पम् ॥

कदल्याःकुसुमंस्निग्धंमधुरंतुवरंगुरु । वातपित्तहरंशीतंरक्तपित्तक्षयप्रणुत् ॥ ३२ ॥

केलेकेफूलके गुण ॥

केलेके पुष्प. स्निग्ध, मधुर, कषैले, भारी, शीतल और वातपित्त, रक्तपित्त तथा क्षयनाशक होते हैं ३२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शोभाञ्जन ॥

शिग्रोःपुष्पन्तुकटुकंतीक्ष्णोष्णंस्नायुशोथकृत् । कृमिहृत्कफवातघ्नंवि[illegible]प्लीहगुल्मजित् ॥ मधुशिग्रोस्त्वक्षिहितंरक्तपित्तप्रसादनम् ॥ ३३ ॥

सहजनके पुष्पोंके गुण ॥

सहजने के पुष्प. कटु, तीक्ष्ण, उष्ण, स्नायु में सूजन करनेवाले और कृमि, कफ, वात, विद्रधि, प्लीहा तथा गुल्मनाशक होतेहैं लालसहजनके पुष्प. नेत्रोंको हित और रक्तपित्तकारक होते हैं ॥ ३३ ॥

अथ शाल्मलीपुष्पम् ॥

शाल्मलीपुष्पशाकंतुघृतसैन्धवसाधितम् । प्रदरंनाशयत्येवदुःसाध्यञ्चनसंशयः ॥ रसेपाकेचमधुरंकषायंशीतलंगुरु । कफपित्तास्रजिद्ग्राहिवातलंचप्रकीर्त्तितम् ॥ ३४ ॥

सेमरके पुष्पोंके गुण ॥

घृत और सेंधोनोनके द्वारा पकायेहुए सेमरके पुष्प. अत्यन्त दुस्साध्य प्रदरकोभी नाश करतेहैं यह मधुर, कषैले, पाकमें मधुर, शीतल, भारी, कफघ्न, पित्तघ्न, रक्तदोषघ्न, ग्राही और बादी होते हैं ॥ ३४ ॥

अथ फलशाकानि । तत्रकूष्माण्डस्यनामानिगुणाश्च ॥

कूष्माण्डंस्यात्पुष्पफलम्पीतपुष्पंबृहत्फलम् । कूष्माण्डंबृंहणंवृष्यंगुरुपित्तास्रवातनुत् ॥ बालंपित्तापहंशीतंमध्यमंकफकारकम् । वृद्धंनातिहिमंस्वादुसक्षारन्दीपनंलघु ॥ वस्तिशुद्धिकरंचेतोरोगहृत्सर्व्वदोषजित् ॥ ३५ ॥

फलशाकोंका वर्णन ॥ पेठेकेनाम और गुण ॥

कूष्माण्ड, पुष्पफल, पीतपुष्प और बृहत्फल यह पेठेके नामहैं पेठा. धातुवर्द्धक, वीर्यवर्द्धक, भारी और रक्तपित्त तथा वातनाशक होताहै कच्चापेठा. पित्तनाशक तथा शीतल मध्यमपेठा. कफकारक और पक्का पेठा. बहुत शीतलतासे रहित, मधुर, कुछक्षार, दीपन, हलका, मूत्राशयका शोधक और चित्तके रोग तथा सर्वदोषनाशक होताहै ॥ ३५ ॥ अथ कोहडी ॥

कूष्माण्डीतुभृशंलघ्वीकर्कारुरपिकीर्तितम् । कर्कारुर्ग्राहिणीशीतारक्तपित्तहरागुरुः ॥ पक्कातिक्ताग्निजननीसक्षाराकफवातनुत् ॥ ३६ ॥

छोटेपेठेके नाम व गुण ॥

बहुत छोटेपेठेको कूष्माण्डी और कर्कारु कहते हैं छोटापेठा. ग्राही, शीतल, रक्तपित्तनाशक और भारी होताहै पकाहुआ छोटापेठा. तिक्त, अग्निकारक, कुछक्षार और कफवातनाशक होताहै ॥ ३६ ॥

अथ लवलौआ । गृहलौआ ॥

अलाबूःकथितातुम्बीद्विधादीर्घाचवर्त्तुला । मिष्टतुम्बीदलंहृद्यंपित्तश्लेष्मापहंगुरु ॥ वृष्यंरुचिकरंप्रोक्तंधातुपुष्टिविवर्द्धनम् ॥ ३७ ॥

लौकीके नाम व गुण ॥

लौकीको अलाबू और तुम्बी कहते हैं यह लम्बी और गोल दोप्रकारकी होतीहै लौकी. मधुर, हृदयको हित, पित्तघ्न, कफनाशक, भारी, वीर्यवर्द्धक, रुचिकारी और धातुपोषक होतीहै ॥ ३७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ तीतलौकी ॥

इक्ष्वाकुः कटुतुम्बीस्यात्सातुम्बीचमहाफला । कटुतुम्बीहिमाहृद्यापित्तकासविषापहा ॥ तिक्ताकटुर्विपाकेचवातपित्तज्वरान्तकृत् ॥ ३८ ॥

कडवीतूंबीके नाम व गुण ॥

इक्ष्वाकु, कटुतुम्बी, तुम्बी और महाफला यह कडवीलौकीके नामहैं कडवीलौकी. शीतल, हृदयकोहित, तिक्त, पाकमें कटु और पित्त, खांसी, विष, वात तथा पित्तज्वरनाशक होती है ॥ ३८ ॥

अथ ककड़ी ॥

एर्वारुःकर्कटीप्रोक्ताकथ्यन्तेतद्गुणाअथ।कर्कटीशीतलारूक्षाग्राहिणीमधुरागुरुः॥रुच्यापित्तहरासामापक्वातृष्णाग्निपित्तकृत्॥३९॥ककडीके नाम व गुण ॥

ककडीको एर्वारु और कर्कटी कहते हैं ककडी. शीतल, रूखी, ग्राही, मधुर और भारी होतीहै कच्ची ककडी, रुचिकारक तथा पित्तनाशक और पक्की ककडी. तृषा, अग्नि तथा पित्तनाशक होती है ॥ ३६ ॥

अथ चिचिण्डा ॥

चिंचिण्डाश्वेतराजिःस्यात्सुदीर्घोगृहकूलकः । चिचिण्डोवातपित्तघ्नोबल्यःपथ्योरुचिप्रदः ॥ शोषिणोऽतिहितःकिञ्चिद्गुणैर्न्यूनःपटोलतः ॥ ४० ॥

चिचेंडाके नाम व गुण ॥

चिचिंड, श्वेतराजि, सुदीर्घ और गृहकूलक यह चिचेंडके नामहैं चिचेंडा. वातघ्न, पित्तनाशक, बलकारी, पथ्य, रुचिकारक, शोषरोगियोंको अत्यन्तहित और परवलसे कुछ कमगुणवाला होताहै ॥ ४० ॥

अथ करेलाकरेली ॥

कारवेल्लंकटिल्लंस्यात्कारवेल्लीततोलघुः । कारवेल्लंहिमंभेदिलघुतिक्तमवातलम् ॥ ज्वरपित्तकफास्रघ्नंपाण्डुमेहकृमीन्हरेत्।तद्गुणाकारवेल्लीस्याद्विशेषाद्दीपनीलघुः ४१॥

करेला और करेलीके नाम व गुण ॥

कारवेल्ल और कटिल्ल या कठिल्ल यह करेलेकेनामहैं करेली इससेछोटी होतीहै करेला.शीतल,दस्तावर, हलका, तिक्त, वातरहित और केवल पित्त, कफ, रक्त, पाण्डु, प्रमेह तथा कृमिनाशक होताहै और करेली में भी इसीके समान गुण होतेहैं यह विशेषकरके दीपन तथा हलकी होती है ॥ ४१ ॥

अथ नेनुआ ॥

महाकोशातकीप्रोक्ता हस्तिघोषामहाफला । धामार्गवोघोषकश्च हस्तिपर्णश्चसस्मृतः ॥ महाकोशातकीस्निग्धा रक्तपित्तानिलापहा ॥ ४२ ॥

घियातोरई के नाम व गुण ॥

महाकोशातकी, हस्तिघोषा, महाफला, धामार्गव, घोषक और हस्तिपर्ण यह घियातोरईके नामहैं घियातोरई. स्निग्ध और रक्तपित्त तथा वातनाशक होतीहै ॥ ४२ ॥

अथ तोरई ॥

धामार्गवःपीतपुष्पो जालिनीकृतवेधना।राजकोशातकीत्वेतितथोक्ताराजिमत्फला॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राजकोशातकीशीता मधुराकफवातला। पित्तघ्नीदीपनीश्वासज्वरकासकृमि[illegible]त् ४३॥

तोरईके नाम व गुण॥

धामार्ग, पीतपुष्प, जालिनी, कृतवेधना, राजकोशातकी और राजिमत्फला यह तोरईके नामहैं तोरई. शीतल, मधुर, कफकारक, बादी, पित्तनाशक, दीपन और श्वास, ज्वर, खांसी तथा कृमिनाशक होती है॥ ४३॥

अथ पटोर॥

पटोलःकूलकस्तिक्तः पाण्डुकःकर्कशच्छदः। राजीफलःपाण्डुफलो राजेयश्चामृताफलः॥ बीजगर्भःप्रतीकश्च कुष्ठहाकासभञ्जनः। पटोलंपाचनंहृद्यं वृष्यंलघ्वग्निदीपनम्॥ स्निग्धोष्णंहन्तिकासास्रज्वरदोषत्रयकृमीन्। पटोलस्यभवेन्मूलंविरेचनकरंसुखात्॥ नालंश्लेष्महरंपत्रं पित्तहारिफलंपुनः। दोषत्रयहरंप्रोक्तंतद्वत्तिक्तापटोलिका ४४॥

परवलके नाम व गुण॥

पटोल, कूलक, तिक्त, पाण्डुक, कर्कशच्छद, राजीफल, पाण्डुफल, राजेय, अमृताफल, बीजगर्भ, प्रतीक, कुष्ठहा और कासभञ्जन यह परवलके नामहैं परवल. पाचक, हृदयको हित, वीर्यवर्द्धक, हलका, दीपन, स्निग्ध, उष्ण और खांसी, रक्तज्वर, त्रिदोष तथा कृमिनाशक होताहै परवलकी जड़. सुखपूर्वक दस्तावर परवलकी डण्डी. कफनाशक पत्ते. पित्तनाशक और फल. त्रिदोषनाशक होताहै और कडवे परवलमें भी इसी के समान फल होते हैं॥ ४४॥

अथ कुन्दुरी॥

बिम्बीरक्तफलातुण्डी तुण्डकेरीचबिम्बिका। ओष्ठोपमफलाप्रोक्ता पीलुपर्णीचकथ्यते॥ बिम्बीफलंस्वादुशीतं गुरुपित्तास्रवातजित्। स्तम्भनंलेखनंरुच्यं विबन्धाध्मानकारकम्॥ ४५॥

कुंदरूके नाम व गुण॥

बिम्बी, रक्तफला, तुण्डी, तुण्डकेरी, बिम्बिका, ओष्ठोपमफला और पीलुपर्णी यह कुंदरूके नामहैं कुंदरू. मधुर, शीतल, भारी, रक्तपित्तनाशक, वातघ्न, स्तम्भन, लेखन, रुचिकारक और विबन्ध तथा आध्मानकारी होताहै॥ ४५॥

शिम्बिशेवा॥

शिम्बिःशिम्बीपुस्ताशिम्बीस्तथापुस्तकशिम्बिका। शिम्बीद्वयञ्चमधुरं रसेपाकेहिमंगुरु॥ बल्यंदाहकरंप्रोक्तं श्लेष्मलंवातपित्तजित्॥ ४६॥

दोनोंसेमोंके नाम व गुण॥

शिम्बि और शिम्बी यह सेमके नामहैं दूसरी सेमको पुस्ताशिम्बी और पुस्तकशिम्बिका कहते हैं दोनों प्रकारकी सेम. रस तथा पाकमें मधुर, शीतल, भारी, बलकारी, दाहकारक, कफकारक और वातपित्तनाशक होती हैं॥ ४६॥

अथ सुवराशिम्बि॥

कोलशिम्बिःकृष्णफला तथापर्य्यङ्कपट्टिका। कोलशिम्बिःसमीरघ्नीगुर्व्युष्णाकफपित्तकृत्॥ शुक्राग्निसादकृद्वृष्या रुचिकृद्बद्धविड्गुरुः॥ ४७॥

सुवरासेम के नाम व गुण॥

कोलशिम्बि, कृष्णफला और पर्य्यङ्कपादिका यह सुवरासेम के नामहैं सुवरासेम. वातनाशक, भारी, उष्ण, मलरोधक और कफ, पित्त, वीर्य, मन्दाग्नि तथा रुचिकारक होती है॥ ४७॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ सोहिजनाफल ॥

सौभाञ्जनफलंस्वादु कषायंकफपित्तनुत् ॥ शूलकुष्ठक्षयश्वासगुल्मघ्नंदीपनंपरम् ४८

सहजनके फलकेगुण ॥

सहजनके फल मधुर, कसैले, दीपन और कफ, पित्त, शूल, कुष्ठ, क्षय, श्वास तथा गुल्मनाशक होते हैं ॥ ४८ ॥

अथ भण्टा ॥

वृन्ताकंस्त्रीतुवार्ताकुर्भण्टाकीभाण्टिकापिच । वृन्ताकंस्वादुतीक्ष्णोष्णं कटुपाकमपित्तलम् ॥ ज्वरवातबलासघ्नं दीपनंशुक्रलंलघु । तद्बालंकफपित्तघ्नं वृद्धंपित्तकरंलघु ॥ वृन्ताकंपित्तलंकिञ्चिदङ्गारपरिपाचितम् । कफमेदोनिलामघ्नमत्यर्थंलघुदीपनम् ॥ तदेवहिगुरुस्निग्धं सतैलंलवणान्वितम् । अपरंश्वेतवृन्ताकं कुक्कुटाण्डसमंभवेत् ॥ तदर्शःसुविशेषेण हितंहीनञ्चपूर्ववत ॥ ४९ ॥

बैंगनके नाम व गुण ॥

वृन्ताक, वार्त्ताकु, भण्टाकी और भाण्टिका (यह तीन शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं) यह बैंगनकेनाम हैं बैंगन. मधुर, तीक्ष्ण, उष्ण, पाकमें कटु. पित्तको न करनेवाले, ज्वरनाशक, वातघ्न, कफघ्न, दीपन, वीर्यवर्द्धक और हलके होते हैं कच्चे बैंगन. कफ पित्त नाशक और पक्के बैंगन. पित्तवर्द्धक तथा भारी होते हैं अङ्गार आदि में भूनेहुए बैंगन. कुछ पित्तवर्द्धक, हलके, दीपन और कफ, मेद, वात तथा आमदोषनाशक होते हैं इन्हीं में नोन और तेल मिलाने से भारी और स्निग्ध होते हैं मुर्गेके अण्डेके समान एकप्रकार के श्वेत बैंगन. बवासीर में अत्यन्त पथ्य और पहले कहेहुए बैंगनों से गुणमें कम होते हैं ॥ ४९ ॥

अथ डिंडिश ॥

डिण्डिशोरोमशफलो मुनिनिर्मितइत्यपि । डिण्डिशोरुचिकृद्भेदी पित्तश्लेष्मापहःस्मृतः ॥ सुशीतोवातलोरूक्षो मूत्रलश्चाश्मरीहरः ॥ ५० ॥

टिंडेके नाम व गुण ॥

डिण्डिश, रोमशफल और मुनिनिर्मित यह टिंडेकेनामहैं टिंडा. रुचिकारक, दस्तावर, पित्तघ्न, कफनाशक, शीतल, बादी, रूखा, मूत्रवर्द्धक और पथरीनाशक होताहै ॥ ५० ॥

अथ पिण्डारः ॥

पिण्डारंशीतलंबल्यंपित्तघ्नंरुचिकारकम् । पाकेलघुविशेषेणविषशान्तिकरंस्मृतम् ५१

पिंडारके गुण ॥

पिण्डार. शीतल, बलकारक, पित्तघ्न, रुचिकारी, शीघ्रपचनेवाला और विशेष करके विषनाशक होताहै ॥ ५१ ॥

अथ खेखसा ॥

कर्कोटकीपीतपुष्पा महाजालीतिचोच्यते । कर्कोटीमलहृत्कुष्ठहृल्लासारुचिनाशिनी ॥ श्वासकासज्वरान्हन्ति कटुपाकाचदीपनी ॥ ५२ ॥

खिखसाके नाम व गुण ॥

कर्कोटकी, पीतपुष्पा और महाजाली यह खिखसाके नामहैं खिखसा. मल, कुष्ठ, मतली, अरुचि, श्वास, खांसी तथा ज्वरनाशक, पाकमें कटु और दीपन होताहै ॥ ५२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ करेरुआ ॥

डोडिकाविषमुष्टिश्च डोडींत्यपिमुमुष्टिका । डोडिकापुष्टिदावृष्यारुच्यावह्निप्रदालघुः॥ हन्तिपित्तकफार्शांसि कृमिगुल्मविषामयान् ॥ ५३ ॥

करेरुआके नाम व गुण ॥

डोडिका, विषमुष्टि, डोडी और सुमुष्टिका यह करेरुआके नामहैं करेरुआ, पुष्टिकारी, वीर्यवर्द्धक, रुचिकारी, दीपन, हलका और पित्त, कफ, बवासीर, कृमि, गुल्म तथा विषरोगनाशक होताहै ॥ ५३ ॥

अथ कण्टकारीफलम् ॥

कण्टकारीफलंतिक्तंकटुकंदीपनंलघु । रूक्षोष्णंश्वासकासघ्नंज्वरानिलकफापहम् ५४ ॥

भटकटैयाकेफलकेगुण ॥

भटकटैया के फल. तिक्त, कटु, दीपन, हलके, रूखे, उष्ण और श्वास, खांसी, ज्वर, वात तथा कफ-नाशक होते हैं ॥ ५४ ॥

अथ नालशाकानि । तत्रसर्षपनालम् ॥

तीक्ष्णोष्णंसार्षपंनालंवातश्लेष्मव्रणापहम्।कण्डूवमिहरंदद्रूकुष्ठघ्नंरुचिकारकम् ५५

नालशाकोंकावर्णन ॥ सरसोंकीनालकेगुण ॥

सरसोंका नाल. तीक्ष्ण, उष्ण, रुचिकारक और वात, कफ, घाव, खुजली, कृमि, दाद तथा कुष्ठ-नाशक होताहै ॥ ५५ ॥

अथ कन्दशाकानि । तत्रसूरणस्यनामानिगुणाश्च ॥

सूरणःकन्दओलश्चकन्दलोऽर्शोघ्नइत्यपि। सूरणोदीपनोरूक्षःकषायःकण्डुकृत्कटुः॥ विष्टम्भीविशदोरुच्यःकफार्शःकृन्तनोलघुः ॥ विशेषादर्शसेपथ्यःप्लीहागुल्मविनाशनः ॥ सर्वेषांकन्दशाकानांसूरणःश्रेष्ठउच्यते ॥ दद्रूणांरक्तपित्तानांकुष्ठिनांनहितोहिसः । सन्धानयोगंसम्प्राप्तःसूरणोगुणवत्तरः ॥ ५६ ॥

कन्दशाकोंकावर्णन ॥ ज़िमींक़न्दके नाम व गुण ॥

सूरण, कन्द, ओल, कन्दल और अर्शोघ्न यह ज़िमींक़न्दके नाम हैं ज़िमींक़न्द. दीपन, रूखा, कषैला, कटु, खुजली करनेवाला, विष्टम्भी, विशद, रुचिकारक, हलका और कफ, बवासीर, प्लीहा, गुल्म और विशेष करके बवासीर नाशक होताहै यह ज़िमींक़न्द सब क़न्दशाकों में श्रेष्ठहै दाद, रक्तपित्त और कुष्ठरोगवालोंको ज़िमींक़ंद हितकारी नहीं है ज़िमींक़ंद संधानके योगसे अधिक गुणदायक होता है ५६॥

अथ आरु ॥

आरुकमप्यालुकं तत् कथितम्। (वीरसेनश्च) काष्ठालुकशङ्खालुकहस्त्यालुका
नि कथ्यन्ते ॥ पिण्डालुकसप्तालुकरक्तालुकानि चोक्तानि । काष्ठालुकं काठिन्ययुक्तंकढा
रु । शङ्खालुकंश्वेततायुक्तम् (शङ्खारु) हस्त्यालुकंदीर्घतायुक्तं महाशरीरम् । पिण्डा
लुकंवर्त्तुलम् (सुथनी) सप्तालुकंमधुरतायुक्तं रोमान्वितंदीर्घसुथनी । रक्तालूरक्तारुर
तड़ा इतिच ॥ आलुकंशीतलंसर्वंविष्टम्भिमधुरंगुरु । सृष्टमूत्रमलंरूक्षंदुर्ज्जरंरक्तपित्त
नुत् ॥ कफानिलकरंबल्यं वृष्यंस्वल्पाग्निवर्द्धनम् ॥ ५७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आलूके नाम व गुण ॥

आरुक ‑ लुक और वीरसेन यह आलूके नामहैं काष्ठालुक शङ्खालुक हस्त्यालुक पिण्डालुक मध्वालुक और रक्तालुक यह आलूके भेदहैं जो आलू कठिनतायुक्तहो वह काष्ठालुक (कठिया आलू) जो आलू श्वेतहो उसको शङ्खालुक जो आलू दीर्घ तथा बड़े आकारवालाहो उसको हस्त्यालुक गोल आलूको पिण्डालुक मधुरतायुक्त रोमयुक्त तथा दीर्घ आलूको मध्वालुक और लाल आलूको रक्तालू (रतालू) कहते हैं सम्पूर्ण आलू.शीतल, विष्टम्भी, मधुर,भारी, मलमूत्रनिस्सारी, रूखे,कठिनता से पचनेवाले, रक्तपित्तघ्न, कफकारी, बादी, बलकारक, वीर्यवर्द्धक और दुग्धवर्द्धक होते हैं ॥ ५७ ॥

अथ अरुई ॥

रक्तालुभेदेयादीर्घातन्वीचपृथुतालुकी । आलुकीबलकृत्स्निग्धागुर्वीहृत्कफनाशिनी ॥ विष्टम्भकारिणीतैलेतलितातिरुचिप्रदा ॥ ५८ ॥

अरुईके नाम व गुण ॥

जो रतालू लंबा और छोटा हो उसको आलुकी (अरुई) कहते हैं अरुई.बलकारक,स्निग्ध, भारी, हृदयके कफकी नाशक और विष्टम्भी होतीहै यह तेलमें तलीहुई अत्यन्त रुचिकारक होती है ॥५८॥

अथ वोचीमुरई नेवाएमुरई ॥

मूलकंद्विविधंप्रोक्तंतत्रैकंलघुमूलकम्॥शालमर्कटकंविस्रंशालेयंमरुसम्भवम्॥चाणक्यमूलकंतीक्ष्णंतथामूलकपोतिका । नेपालमूलकंचान्यत्तुतद्भवेद्गजदन्तवत् ॥ लघुमूलंकटूष्णंस्याद्रुच्यंलघुचपाचनम् । दोषत्रयहरंस्वर्यंज्वरश्वासविनाशनम् ॥ नासिकाकण्ठरोगघ्ननयनामयनाशनम् । महत्तदेवरूक्षोष्णंगुरुदोषत्रयप्रदम् ॥ स्नेहसिद्धंतदेवंस्याद्दोषत्रयविनाशनम् ॥ ५९ ॥

मूलीके नाम व गुण ॥

मूली दोप्रकार की होतीहै लघुमूलक,शालमर्कटक,विस्र, शालेय, मरुसंभव, चाणक्यमूलक और मूलकपोतिका यह मूलीके नामहैं दूसरी हाथी के दांतकी समान बड़ी मूली नेपालदेशमें उत्पन्न होतीहै छोटी मूली. कटु, उष्ण, रुचिकारक, हलकी, पाचक, त्रिदोषनाशक, स्वरकोहित और ज्वर, श्वास, नासिकाकेरोग,कण्ठरोग तथा नेत्ररोगोंकी नाशक होतीहै बड़ी मूली. रूखी, उष्ण, भारी और त्रिदोषकारी होती है परन्तु वह भी तैलादिमें पकाईहुई त्रिदोषनाशक होती है ॥ ५९ ॥

अथ गाजर ॥

गाजरंगृञ्जनंप्रोक्तं तथानारङ्गवर्णकम् । गाजरंमधुरंतीक्ष्णं तिक्तोष्णंदीपनंलघु ॥ संग्राहिरक्तपित्तार्शोग्रहणीकफवातजित् ॥ ६० ॥

गाजरके नाम व गुण ॥

गाजर, गृञ्जन और नारङ्गवर्णक यह गाजरके नामहैं गाजर. मधुर, तीक्ष्ण, उष्ण, तिक्त, दीपन हलकी, ग्राही. और रक्तपित्त, ववासीर, ग्रहणी, कफ तथा वातनाशक होती है ॥ ६० ॥

अथ केराकन्द ॥

शीतलःकदलीकन्दोबल्यःकेश्योऽम्लपित्तजित्॥वह्निकृद्दाहहारीचमधुरोरुचिकारकः ६१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

केलाकन्दके गुण ॥

केलाकन्द. शीतल, बलकारी, केशोंकोहित, अम्ल, पित्तनाशक, दीपन, दाहनाशक, म[illegible] और रुचि-दायक होताहै ॥ ६१ ॥

अथ मानकन्दः ॥

मानकःस्यान्महापत्रःकथ्यन्तेतद्गुणाअथ। मानकःशोथहच्छीतःपित्तरक्तहरोलघुः ६२ ॥

मानकेचूके नाम व गुण ॥

मानकेचूको मानक और महापत्र कहते हैं मानकेचू. सूजननाशक, शीतल, रक्तपित्तघ्न और हलका होता है ॥ ६२ ॥

अथ वाराहीकन्दः ॥

गेठिइतिलोके । बाराहीपित्तलाबल्याकट्वीतिक्तारसायनी ॥ आयुःशुक्राग्निकृन्मेहकफकुष्ठानिलापहा ॥ ६३ ॥

बाराहीकन्दके गुण ॥

बाराहीकन्द. पित्तवर्द्धक, बलकारक, कटु, तिक्त, रसायन, आयु तथा वीर्यवर्द्धक, दीपन और प्रमेह, कफ, कुष्ठ तथा वातनाशक होताहै ६३ ॥

अथ हस्तिकर्णा ॥

गजकर्णातुतिक्तोष्णातथावातकफाञ्जयेत्। शीतज्वरहरीस्वादुःपाकेतस्यास्तुकन्दकः॥ पाण्डुशोथकृमिप्लीहगुल्मानाहोदरापहः। ग्रहण्यर्शोविकारघ्नोवनसूरणकन्दवत्॥ ६४ ॥

हस्तिकर्णाके गुण ॥

हस्तिकर्णा. तिक्त, उष्ण, पाकमें मधुर और वात कफ तथा शीतज्वरनाशकहोतीहै इसका कन्द. पाण्डु, सूजन, कृमि, प्लीहा, गुल्म, आनाह और उदररोगनाशक होताहै यह वनसूरण कन्दके समान ग्रहणी तथा बवासीरका नाशक होताहै ६४ ॥

अथ केमुकम् ॥

केमुआ इतिलोके । केमुकंकटुकंपाकेतिक्तंग्राहिहिमंलघु ॥ दीपनंपाचनंहृद्यं कफपित्तज्वरापहम्। कुष्ठकासप्रमेहास्रनाशनंवातलंकटु ॥ ६५ ॥

केमुआके गुण ॥

केमुआ. पाकमें कटु, तिक्त, ग्राही, शीतल, हलका, दीपन, पाचक, हृदयकोहित, बादी, सलौना और कफपित्तज्वर, कुष्ठ, खांसी, प्रमेह तथा रक्तदोषनाशक होताहै ॥ ६५ ॥

अथ कसेरुचिचोढ़ ॥

कसेरुद्विविधन्तत्तुमहद्राजकसेरुकम्। मुस्ताकृतिर्लघुस्याद्यत्तच्चिचोढ़मितिस्मृतम् ॥ कसेरुकद्वयं शीतंमधुरंतुवरंगुरु। पित्तशोणितदाहघ्नं नयनामयनाशनम् ॥ ग्राहिशुक्रानिलश्लेष्मारुचिस्तन्यकरंस्मृतम् ॥ ६६ ॥

कसेरू और चिचोडके गुण ॥

कसेरू दोप्रकारकाहै बडे कसेरूको राजकसेरू और मोथाके समान आकृतिवाले छोटे कसेरूको चिचोड़ कहतेहैं दोनोंकसेरू. शीतल, मधुर, कषैले, भारी, पित्तघ्न, रक्तनाशक, दाह तथा नेत्ररोग के दूर करनेवाले, ग्राही और वीर्य, वात कफ, अरुचि तथा दूध के वर्द्धक होते हैं ॥ ६६ ॥

अथ कसेरुभिसीड़ा ॥

पद्मादिकन्दःशालूकङ्करहाटश्चकथ्यते। मृणालमूलम्भिस्साण्डं जलालूकञ्चकथ्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ते ॥ ...कंशीतलंवृष्यंपित्तदाहास्रनुद्गुरु । दुर्ज्जरंस्वादु...कञ्च स्तन्यानिलकफ प्रदम् ॥ ...ग्राहिमधुरं रूक्षम्भिसाण्डमपितद्गुणम् ॥ ६७ ॥

कसेरूभिसंडिाके नाम व गुण ॥

कमल आदिके कन्दको शालूक, करहाट, मृणालमूल, भिस्सांड और जलालूक कहते हैं कमलका कन्द. शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, पित्तघ्न, दाहनाशक, रक्तदोषनाशक, भारी, कठिनता से पचनेवाला, पाकमें मधुर, दुग्धवर्द्धक, बादी, कफकारक, ग्राही, मधुर और रूखा होता है भसीडमें भी इसीके समान गुण होते हैं ॥ ६७ ॥

बालंह्यनार्तवंजीर्णंव्याधितः क्रिमिभक्षितम् । कन्दंविवर्ज्जयेत् सर्वंयद्वाऽग्न्यादिविदूषितम् ॥ अतिजीर्णमकालोत्थं रूक्षंसिद्धमदेशजम् । कर्कशंकोमलंचातिशीतव्यालादिदूषितम् ॥ संशुष्कंसकलंशाकं नाश्नीयान्मूलकंविना । अतैलादिसिद्धं रूक्षमदेशजमशुभस्थानजम् ॥ ६८ ॥

कच्चा विना समयके उत्पन्न हुआ पुराना व्याधियुक्त कीडोंकाखायाहुआ और अग्निसे दूषित ऐसे कन्दको सदैव त्याग करदे बहुत पुराने अकालमें उत्पन्नहुए तैलादिक विना पकायेहुए बुरेस्थान में उत्पन्न हुए कठोर बहुत कोमल पाला तथा सर्पादिकसे दूषित और सूखे सब शाक न खाने चाहिये परन्तु मूली सूखीहुई भी अहित नहीं है ॥ ६८ ॥

अथ संस्वेदजशाकानितेषांनामानि गुणाश्च ॥

उक्तंसंस्वेदजंशाकम्भूमिच्छत्रंशिलीन्ध्रकम् । क्षितिगोमयकाष्ठेषु वृक्षादिषुतदुद्भवेत् । सर्वेसंस्वेदजाःशीतादोषलाः पिच्छिलाश्चते । गुरवश्छर्द्यतीसारज्वरश्लेष्मामयप्रदाः ॥ श्वेतशुभ्रस्थलीकाष्ठवंशगोव्रणसम्भवाः । नातिदोषकरास्तेस्युः शेषास्तेभ्योविगर्हिताः ॥ संस्वेदजाश्छाताइतिलोके ॥ ६९ ॥

इति श्रीभावप्रकाशे शाकवर्गः ॥

संस्वेदज [छाता] शाकोंका वर्णन । इनके नाम और गुण ॥

पृथ्वी, गोबर, काष्ठ और वृक्षादिकोंपर स्वेदजशाक उत्पन्न होते हैं इनको भूमिच्छन्न और शिलीन्ध्रक कहते हैं सबप्रकारके स्वेदजशाक. शीतल, दोषकारी, पिच्छिल, भारी और छर्दि, अतीसार, ज्वर तथा कफरोग करनेवाले होते हैं जो स्वेदजशाक. पवित्रस्थान, काष्ठ, बांस तथा वृक्षमें उत्पन्न होते हैं वह अत्यन्त दोषकारी नहीं होते हैं इनके सिवाय सब स्वेदजशाक निन्दित हैं ॥ ६९ ॥

इति श्रीभावप्रकाशस्यभाषानुवादेशाकवर्गःसमाप्तः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशाय नमः ॥

भावप्रकाश

द्वितीयभाग ॥

अथ मांसवर्गः । तत्र मांसस्य नामानि ॥

मांसंतुपिशितंक्रव्यमामिषंपललम्पलम्। मांसंवातहरंसर्वंबृंहणंबलपुष्टिकृत् ॥ प्रीणनं गुरुहृद्यञ्चमधुरंरसपाकयोः ॥ १ ॥

अथ मांसवर्ग । मांसके नाम ॥

मांस, पिशित, क्रव्य, आमिष, पलल और पल यह मांसके नामहैं सबप्रकारका मांस. वातनाशक, धातुवर्द्धक, बल तथा पुष्टताकारक, प्रीति उपजानेवाला, भारी, हृदयको हित और रस तथा पाकमें मधुर होताहै ॥ १ ॥

अथ तद्भेदाः ॥

मांसवर्गोद्विधाज्ञेयोजाङ्गलोऽनूपभेदतः २ (तत्र जाङ्गलस्यलक्षणंगुणाश्च) मांसवर्गोऽत्रजङ्घालाविलस्थाश्चगुहाशयाः तथापर्णमृगाज्ञेयाविष्किराःप्रतुदोऽपिच । प्रसहाः (अथग्राम्याअष्टौजाङ्गलजातयः) जाङ्गलामधुरारूक्षास्तुवरालघवस्तथा । बल्यास्ते बृंहणावृष्यादीपनादोषहारिणः ॥ मूकतांमिन्मिनत्वंचगद्गदत्वार्दितेतथा । बाधिर्यमरुचिच्छर्दिंप्रमेहंमुखजानूगदान् ॥ श्लीपदंगलगण्डञ्चनाशयत्यनिलामयान् ॥ ३ ॥

मांसकेभेद ॥

मांस दो प्रकारकाहै एक जाङ्गल दूसरा आनूप २ [जाङ्गलके लक्षण गुण] जङ्घाल, विलस्थ, गुहाशय, पर्णमृग, विष्किर, प्रतुद, प्रसह और ग्राम्य यह आठप्रकारके जाङ्गलमांसहैं जाङ्गल मांस. मधुर, कषैला, रूखा, हलका, बलकारी, धातुवर्द्धक, वीर्यवर्द्धक, दीपन, दोषनाशक और मूकता, मिनमिनापन, गद्गदता, अर्दित, बधिरता, अरुचि, छर्दि, प्रमेह, मुखरोग, श्लीपद, गलगण्ड तथा वातरोगनाशक होताहै ३ ॥

अथानूपस्यलक्षणं गुणाश्च ॥

कूलेचराःप्लवाश्चापिकोशस्थाःपादिनस्तथा । मत्स्याएतेसमाख्याताःपञ्चधाऽनूपजातयः ॥ अनूपामधुराःस्निग्धागुरवोवह्निसादनाः । श्लेष्मलाःपिच्छिलाश्चापिमांसपुष्टिप्रदाभृशम् ॥ तथाभिष्यन्दिनस्तेहिप्रायःपथ्यतमाःस्मृताः ॥ ४ ॥

अनूपमांसके लक्षण व गुण ॥

कूलेचर, प्लव, कोशस्थ, पादी और मत्स्य यह पांच प्रकारका अनूपमांस होताहै अनूपमांस. मधुर, स्निग्ध, भारी, मन्दाग्निकारी, कफकारी, पिच्छिल, अत्यन्त मांसपोषक, अभिष्यन्दी और प्रायः पथ्य होताहै ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ जाङ्गलानांगणनाविशिष्टगुणाश्च ॥

हरिणैणकुरङ्गर्ष्यपृषतन्यङ्कुसम्बराः। राजीवोऽपिचमुण्डीचेत्याद्याःजङ्गालसंज्ञकाः॥ हरिणस्ताम्रवर्णःस्यादेणःकृष्णःप्रकीर्त्तितः। कुरङ्गईषत्ताम्रःस्यादेणतुल्याकृतिर्महान् ॥ ऋष्योनीलाङ्गकोलोकेसरोझइतिकीर्त्तितः। पृषतश्चन्द्रबिन्दुःस्याद्धरिणात्किञ्चिदल्पकः॥ न्यङ्कुर्बहुविषाणोऽथसम्बरोगवयोमहान् । राजीवस्तुमृगोज्ञेयोराजभिःपरितोवृतः ॥ योमृगःशृंगहीनःस्यात्समुण्डीतिनिगद्यते । जङ्गालाःप्रायशःसर्वेपित्तश्लेष्महराःस्मृताः ॥ किञ्चिद्वातकराश्चापिलघवोबलवर्द्धनाः ॥ ५ ॥

जङ्गालोंकी गणना और विशेषगुण ॥

हरिण, एण, कुरङ्ग, ऋष्य, पृषत, न्यङ्कु, सम्बर, राजीव और मुण्डी यह जङ्गाल कहलातेहैं ताम्रवर्ण मृग को हरिण कृष्णवर्ण को एण कुछ ताम्रवर्ण बडे तथा कृष्णमृगके समान आकृतिवाले हिरणको कुरङ्ग नीलवर्ण हरिणको ऋष्य (यह रोझ नामसे प्रसिद्धहै) हिरणकी अपेक्षा कुछ छोटे तथा चन्द्र-बिन्दुयुक्त मृगको पृषत् और बहुत सींगवालेको न्यङ्कु बडे शरीरवालेको सम्बर अथवा गवय सबओर रेखाओंसे युक्त मृगको राजीव और सींगरहित मृगको मुण्डी कहते हैं प्रायः सम्पूर्ण जङ्घाल. पित्त, कफनाशक, कुछ बादी, हलके और बलवर्द्धक होते हैं ॥ ५ ॥

अथ विलेशयानां गणनागुणाश्च ॥

गोधाशशभुजंगाखुशल्लक्याद्याविलेशयाः। विलेशयावातहरामधुरारसपाकयोः ॥ बृंहणाबद्धविण्मूत्रावीर्य्योष्णाश्चप्रकीर्त्तिताः ॥ ६ ॥

विलेशयों की गणना और गुण ॥

गोह, खरगोश, सर्प, चूहा और सेई आदिक विलेशय कहलातेहैं विलेशय, वातनाशक रस तथा पाकमें मधुर, धातुवर्द्धक, मलमूत्ररोधक और वीर्य में उष्ण होते हैं ॥ ६ ॥

अथ गुहाशयानां गणना गुणाश्च ॥

सिंहव्याघ्रवृकाऋक्षतरक्षुद्वीपिनस्तथा।बभ्रूजम्बूकमार्ज्जाराइत्याद्याःस्युर्गुहाशयाः॥ तरक्षुःहउहाइतिलोके । द्वीपीचिताव्याघ्रइतिलोके ॥ स्थूलपुच्छोरक्तनेत्रोबभ्रूदेहःसनाकुलः। गुहाशयोवातहरागुरूष्णामधुराश्चते ॥ स्निग्धाबल्याहितानित्यंनेत्रगुह्यविकारिणाम् ॥ ७ ॥

गुहाशयों की गणना और गुण ॥

सिंह, व्याघ्र, भेडिया, रीछ, चीतल, चीता, व्याघ्र, मोटीपूंछ तथा लालनेत्रवाला बडानौला, सियार और बिलार इत्यादिक गुहाशय कहाते हैं गुहाशयों का मांस. वातनाशक, भारी, उष्ण, मधुर, बलकारी और नेत्र तथा गुदाके रोगवालों को सदैव हित होताहै ॥ ७ ॥

अथ पर्णमृगाणां गणना गुणाश्च ॥

वनौकोवृक्षमार्ज्जारोवृक्षमर्कटिकादयः। एतेपर्णमृगाःप्रोक्ताःसुश्रुताद्यैर्महर्षिभिः ॥ वनौकावानरःवृक्षमार्ज्जारोवृक्षबिडालः। वृक्षमर्कटिकारूषीइतिलोके । स्मृताःपर्णमृगाःवृष्याश्चक्षुष्याःशोषिणोहिताः। श्वासार्शःकासशमनाःसृष्टमूत्रपुरीषिकाः ॥ ८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पर्णमृगों की गणना और गुण ॥

वानर, वृक्षबिलार और वृक्षमर्कटिका (रूखी) इत्यादि पर्णमृग कहलाते हैं पर्णमृगोंका मांस. वीर्यवर्द्धक, नेत्ररोग तथा शोषरोगमें हित मलमूत्र निस्सारक और श्वास बवासीर तथा खांसी नाशक होता है ॥ ८ ॥

अथ विष्किराणांगणनागुणाश्च ॥

वर्त्तकालावववर्त्तीरकपिञ्जलकतित्तिराः । कुलिङ्गकुक्कुटाद्याश्चविष्किराःसमुदाहृताः ॥ विकीर्य्यभक्षयन्त्येतेयस्मात्तस्माद्धिविष्किराः । कपिञ्जलइतिप्राज्ञैःकथितोगौरतित्तिरिः ॥ कुलिङ्गोगवरैआइतिलोके । विष्किरामधुराःशीताःकषायाःकटुपाकिनः । बल्यावृष्यास्त्रिदोषघ्नाःपथ्यास्तेलघवःस्मृताः ॥ ९ ॥ विष्किरोंकी गणना और गुण ॥

बटेर, लवा, वर्त्तीर, श्वेततीतर, तीतर, गौरैया और मुर्गा आदि विष्किर कहलाते हैं यह बखेर करखातेहैं इस्से इनको विष्किर कहते हैं विष्किर मांस. मधुर, शीतल,कषैला,पाकमें कटु,बलकारक, वीर्यवर्द्धक, त्रिदोषनाशक, पथ्य और हलका होताहै ॥ ९ ॥

अथ प्रतुदानांगणनागुणाश्च ॥

हरीतोधवलःपाण्डुश्चित्रपक्षोबृहच्छुकः । पारावतःखञ्जरीटःपिकाद्याःप्रतुदाःस्मृताः ॥ प्रतुद्यभक्षयन्त्येतेतुण्डेनप्रतुदास्ततः ।हारीतःहारिलइतिलोके॥ कपोतोधवलःपाण्डुःशतपत्रोबृहच्छुकः । दार्वाघाटइत्यमरः । कठफोरवाइतिलोके ॥ प्रतुदामधुराःपित्तकफघ्नास्तुवराहिमाः । लघवोबद्धवर्चस्काकिञ्चिद्वातकराःस्मृताः ॥ १० ॥

प्रतुदोंकी गणना और गुण ॥

हारिल, कठफुरवा, जंगलीतीतर, पहाडीतोता, कबूतर, खञ्जन और कोयल आदिक प्रतुद कहलाते हैं यह टोंटमार कर खाते हैं इसी से प्रतुद कहातेहैं प्रतुदोंका मांस.मधुर, पित्तघ्न, कफ नाशक, कषैला, शीतल, हलका, मलरोधक और कुछ बादी होता है ॥ १० ॥

अथ प्रसहानाङ्गणनागुणाश्च ॥

काकोगृध्रउलूकश्चचिल्लश्चशशघातकः । चाषोभासश्चकुररइत्याद्याःप्रसहाःस्मृताः ॥ शशघातकः बाजइतिलोके । चाषंनीलकण्ठमितिलोके। भासोगृध्रविशेषःस्यात् । कुररःकराकुरइतिलोके । प्रसहाःकीर्तिताएतेप्रसह्याच्छिद्यभक्षणात् । प्रसहाःखलुवीर्योष्णास्तन्मांसंभक्षयन्तिये ॥ तेशोषभस्मकोन्मादशुक्रक्षीणाभवन्तिहि ॥ ११ ॥

प्रसहों की गणना और गुण ॥

काक,गृध्र,उलूक,चील,बाज,नीलकण्ठ,गृध्रविशेष और कुरर आदिक प्रसह कहाते हैं यह जबरदस्ती छीनकर खाते हैं इस हेतु से प्रसह कहाते हैं प्रसहमांस. वीर्य में उष्ण होताहै जो कोई इनके मांसको खातेहैं वह शोष भस्मक तथा उन्माद रोगसे व्याकुल और क्षीणवीर्य होजाते हैं ॥ ११ ॥

अथ ग्राम्याणांगणनागुणाश्च ॥

छागमेषवृषाश्चाश्वाग्राम्याःप्रोक्तामहर्षिभिः । ग्राम्यावातहराःसर्वेदीपनाःकफपित्तलाः ॥ मधुरारसपाकाभ्यांबृंहणाबलवर्द्धनाइत्यनूपाजन्तवः ॥ १२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्राम्यों की गणना और गुण ॥

बकरा, मेढा, बैल और घोडे आदिको ग्राम्य कहते हैं संपूर्ण ग्राम्यमांस. वात नाशक, दीपन, कफ पित्तवर्द्धक, रस और पाकमें मधुर, धातुवर्द्धक और बलवर्द्धक होते हैं ॥ १२ ॥

अथ कूलेचराणांगणनागुणाश्च ॥

लुलायगण्डवाराहचमरीवारणादयः।एतेकूलचराःप्रोक्तायतःकूलेचरन्त्यपाम् ॥ लुलायोमहिषःगण्डः,खड्गः,(चमरीचमरपुच्छिगौ) कूलेचरामरुत्पित्तहरावृष्याबलावहाः । मधुराःशीतलाःस्निग्धामूत्रलाःश्लेष्मवर्द्धनाः ॥ १३ ॥

कूलेचरोंकी गणना और गुण ॥

भसा,गैंडा,सूअर,सुरागौ और हाथी आदिक कूलेचर कहलाते हैं क्योंकि यह जलके किनारेपर चरते हैं कूलेचरों का मांस. वात पित्तनाशक, वीर्यवर्द्धक, बलकारी, मधुर, शीतल, स्निग्ध, मूत्रकारक और कफवर्द्धक होताहै ॥ १३ ॥

प्लवानांगणनागुणाश्च ॥

हंससारसकारण्डबकक्रौञ्चशशारिकाः। नन्दीमुखीसकादम्बाबलाकाद्याःप्लवाःस्मृताः॥ प्लवन्तिसलिलेयस्मादेतेतस्मात्प्लवाःस्मृताः॥कारण्डःकपर्दिकाख्योबृहद्बकाशः "क्रौञ्च इतिकराकुलनामकोविहंगःस्यात्" टेङ्कइतिवालोके शशारिकासिन्धुइति ॥ स्थूलाकठोरावृत्ताचयस्याश्चञ्चूपरिस्थिता। गुटिकाजम्बुसदृशीप्रोक्तानन्दीमुखीतिसा॥ कादम्बः करवाइतिलोके। बलाकाबगुलीइतिलोके॥ प्लवाःपित्तहराःस्निग्धामधुरागुरवोहिमाः । वातश्लेष्मप्रदाश्चापिबलशुक्रकराःसराः ॥ १४ ॥

प्लवोंकी गणना और गुण ॥

हंस, सारस, कारण्ड, बगला, ढेंक, शशारिक नन्दीमुखी, बत्तक और बलाका (बगलाविशेष) आदि को प्लव कहते हैं क्योंकि यह जलपर तैरते हैं जिसपक्षी की चोंचपर स्थूल कठोर और गोलजामन के समान गोलीसी बनीहो उसको नन्दीमुखी कहते हैं प्लवोंका मांस. पित्तघ्न, स्निग्ध, मधुर, भारी, शीतल, बादी, कफकारक, बलवीर्यवर्द्धक और दस्तावर होताहै ॥ १४ ॥

अथ कोशस्थानांगणनागुणाश्च ॥

शङ्खःशङ्खनखश्चापिशुक्तिशम्बूककर्कटाः । जीवाएवंविधाश्चान्येकोशस्थाःपरिकीर्तिताः॥ शङ्खनखःक्षुद्रशङ्खः॥ कोशस्थामधुराःस्निग्धाःवातपित्तहराहिमाः। बृंहणाबहुवर्चस्कावृष्याश्चबलवर्द्धनाः ॥ १५ ॥

कोशस्थोंकी गणना और गुण ॥

शङ्ख, क्षुद्रशङ्ख, सीपी, घोंघा और कर्कट इसप्रकार के अनेक जीव कोशस्थ कहाते हैं कोशस्थों का मांस. मधुर, स्निग्ध, वातघ्न, पित्तनाशक, शीतल, धातुवर्द्धक, बहुत मलकारी और वीर्य तथा बलवर्द्धक होताहै ॥ १५ ॥

अथ पादिनांगणनागुणाश्च ॥

कुम्भीरकूर्मनक्राश्चगोधामकरशङ्कवः । घण्टिकः शिशुमारश्चेत्यादयःपादिनः स्मृताः ॥ कुम्भीरोमारकोजलजन्तुःकूर्मः कच्छपः नक्रःनाकइतिलोकेगोधागोहिजलज-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

न्तुः। मकरमगरइतिलोके। शंकुःसाकुचइतिलोके ॥ घण्टिकःघरीआलइतिलोके। शिशुमारःसूसइतिलोके। पादिनोऽपिचयेतेतुकोशस्थानाङ्गुणैःसमाः॥ १६ ॥

पादियों की गणना और गुण ॥

कुम्भीर (मारनेवाला जल का जीव) कछुआ, नाक, गोह, मगर, साकुच, घड़ियाल और सूंस आदिक पादिक कहलाते हैं पादियों में कोशस्थों के समान गुण कहते हैं ॥ १६ ॥

अथ मत्स्यनामानिगुणाश्च ॥

मत्स्योमीनोविसारश्चझषोवैसारिणोऽण्डजः। शकुलीपृथुरोमाचससुदर्शनइत्यपि॥ रोहिताद्यास्तुयेजीवास्तेमत्स्याःपरिकीर्तिताः। मत्स्याःस्निग्धोष्णमधुरागुरवःकफपित्तलाः॥ वातघ्नाबृंहणावृष्यारोचकाबलवर्द्धनाः। मद्यव्यवायसक्तानांदीप्ताग्नीनाञ्च पूजिताः॥ १७॥

मछलियों के नाम और गुण ॥

मत्स्य, मीन, विसार, झष, वैसारिण, अण्डज, शकुली, पृथुरोमा और सुदर्शन यह मछलियों के नामहैं रोहू आदि जीवोंको मत्स्य कहते हैं मछली. स्निग्ध, उष्ण, मधुर, भारी, कफवर्द्धक, पित्तकारक, वातघ्न, धातुवर्द्धक, वीर्यवर्द्धक, रुचिकारक और बलवर्द्धक होती है यह मद्य पीनेवाले मैथुन में आसक्त और दीप्ताग्निवाले पुरुषों को हितहै ॥ १७ ॥

अथ जङ्गलादीनांनामानिगुणाश्चतत्रजङ्गलेषुहरिणस्यगुणाः ॥

हरिणःशीतलोबद्धविण्मूत्रोदीपनोलघुः। रसेपाकेचमधुरःसुगन्धिःसन्निपातहा॥ १८॥

जङ्गल आदिकोंके नामगुण। जङ्गलों में हरिणके गुण ॥

हरिण का मांस. शीतल, मलमूत्र रोधक, दीपन, हलकारस तथा पाक में मधुर सुगन्धित और सन्निपात नाशक होता है ॥ १८ ॥

करीसाइलहरिणः ॥

एणःकषायोमधुरःपित्तासृक्कफवातहृत्। संग्राहीरोचनोबल्योज्वरप्रशमनःस्मृतः १६॥

एणके मांस के गुण ॥

काले हरिण का मांस. कषैला, मधुर, ग्राही, रुचिकारक, बलवर्द्धक और पित्त, रक्त, कफ वात तथा ज्वरनाशक होताहै ॥ १६ ॥

अथ कुरंगः ॥

कुरङ्गोबृंहणोबल्यःशीतलःपित्तहृद्गुरुः। मधुरोवातहृद्ग्राहीकिञ्चित्कफकरःस्मृतः २०॥

कुरङ्गके गुण ॥

कुरङ्गका मांस. धातुवर्द्धक, बलकारी, शीतल, पित्तघ्न, भारी, मधुर, वातघ्न, ग्राही और कुछ कफकारक होताहै ॥ २० ॥

अथ रोऊ ॥

ऋष्योनीलाण्डकश्चापिगवयोरोझइत्यपि। गवयोमधुरोबल्यःस्निग्धोष्णःकफपित्तलः २१

ऋष्य के नाम गुण ॥

ऋष्य, नीलाण्डक, गवय और रोझ यह ऋष्यकेनामहैं ऋष्यका मांस. मधुर, बलकारक और स्निग्ध, उष्ण और कफपित्तवर्द्धक होताहै ॥ २१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ चित्तरि॥

पृषतस्तुभवेत्स्वादुर्ग्राहकःशीतलोलघुः।दीपनोरोचनःश्वासज्वरदोषत्रयास्रजित्२२॥

चित्तर के गुण॥

चित्तर का मांस. मधुर, ग्राही, हलका, दीपन, रुचिकारक और श्वास, ज्वर, त्रिदोष तथा रक्तनाशक होता है॥ २२॥

अथ बारहसिंगी॥

न्यंकुःस्वादुर्लघुर्बल्यो वृष्योदोषत्रयापहः २३ (अथ साबर) साबरंपललंस्निग्धं शीतलंगुरु चस्मृतम्। रसेपाकेचमधुरं कफदंरक्तपित्तहृत्॥ राजीवस्तुगुणैर्ज्ञेयः पृषतेनसमोजनैः॥ २४॥

बारहसिंहा के गुण॥

बारहसिंहाका मांस. मधुर, हलका, बलकारी, वीर्यवर्द्धक और त्रिदोषनाशक होताहै २३ (साबरके गुण) साबर का मांस. स्निग्ध, शीतल, भारी, रस तथा पाकमें मधुर, कफकारक और रक्तपित्तनाशक होताहै राजीव में चित्तर के समान गुण होते हैं॥ २४॥

अथ पीठी॥

मुण्डीतुज्वरकासाम्लक्षयश्वासापहोहिमः २५ (अथ विलेशयेषु तत्रशशःस्यात्) लम्बकर्णःशशःशूली लोमकर्णोविलेशयः। शशःशीतोलघुर्ग्राही रूक्षःस्वादुःसदाहितः॥ वह्निकृत्कफवातघ्नो वातसाधारणःस्मृतः। ज्वरातीसारशोषास्रश्वासामयहरश्चसः॥ २६॥

मुण्डी मृग के गुण

मुण्डी का मांस. ज्वर, खांसी, रक्त क्षय तथा श्वास नाशक और शीतल होता है २५ (विलेशयों में से खरगोशके नामगुण) लम्बकर्ण, शशशूली, लोमकर्ण और विलेशय यह खरगोश के नाम हैं खरगोशका मांस. शीतल, हलका, ग्राही, रूखा, मधुर, सदैवहितकारी, दीपन, वातको ठीक करनेवाला और कफ, पित्त, ज्वर, अतीसार, शोष रक्तदोष तथा श्वासनाशक होता है॥ २६॥

अथ साही॥

सेधातुशल्यकःश्वावित्कथ्यन्तेतद्गुणाअथ।शल्यकःश्वासकासास्रशोषदोषत्रयापहः२७

सेई के नाम व गुण॥

सेधा. शल्यक और श्वावित् यह सेई के नाम हैं सेई का मांस. श्वास, खांसी, रक्तदोष, शोष तथा त्रिदोषनाशक होता है॥ २७॥

अथ पक्षिणांनामानि गुणाश्च॥

पक्षीखगोविहङ्गश्च विहगश्चविहङ्गमः। शकुनिर्विःपतत्रीच विष्किरोविकिरोऽण्डजः॥ धान्याःकूलेचरायेऽत्र तेषांमांसंलघूत्तमम्। आनूपंवलकृन्मांसं स्निग्धंगुरुतरंस्मृतम्॥ २८॥

पक्षियों के नाम और गुण॥

पक्षी, खग, विहङ्ग, विहग, विहंगम, शकुनि, वि, पतत्रि, विष्किर, विकिर और अण्डज यह पक्षियों के नामहैं इनमें से कूलेचर पक्षियों का मांस श्रेष्ठ और हलका होताहै अनूपदेशमें उत्पन्न होनेवाले पक्षियों का मांस. बलकारक स्निग्ध और भारी होता है॥ २८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तेषुविष्किरेषुवटेरवटइ ॥

वर्त्तीकोवर्त्तकश्चित्रस्तोऽन्यावर्त्तकाःस्मृताः । वर्त्तकोऽग्निकरःशीतो ज्वरदोषत्रयापहः ॥ सुरुच्यःशुक्रदोबलयो वर्त्तकाल्पगुणास्ततः ॥ २९ ॥

बटेर के नाम व गुण ॥

वर्त्तीक, वर्त्तक और चित्र यह बटेर के नाम हैं एकप्रकार की दूसरी बटेरको वर्त्तका कहते हैं बटेर. दीपन, शीतल, ज्वरघ्न, त्रिदोषनाशक, रुचिकारी, वीर्यवर्द्धक और बलकारक होताहै और वर्त्तकामें इससे कम गुण होते हैं ॥ २९ ॥ अथ लावा ॥

लावाविष्किरवर्गेषु तेचतुर्धामताबुधैः। पांशुलोगौरकोऽन्यस्तु पौण्डरीकोदरस्तथा॥ लावावह्निकराःस्निग्धा गरघ्नाग्राहिकाहिताः । पांशुलःश्लेष्मलस्तेषु वीर्य्योष्णोह्यनिलनाशनः ॥ गौरोलघुतरोरूक्षो वह्निकारीत्रिदोषजित् । पौण्ड्रकःपित्तकृत्किंचिल्लघुवातकफापहः ॥ दर्भरोरक्तपित्तघ्नो हृदामयहरोहिमः ॥ ३० ॥

लवा के नाम व गुण ॥

विष्किरों में से लवा चार प्रकार का होताहै पांशुल, गौरक, पौण्ड्रक और दर्भर लवाका मांस. अग्निकारक, स्निग्ध, विषदोष नाशक. ग्राही और हितकारी होताहै पांशुलका मांस. कफकारी, उष्ण तथा वात नाशक,गौरक का मांस. बहुत हलका, रूखा,दीपन तथा त्रिदोषनाशक, पौण्ड्रकका मांस. पित्तवर्द्धक कुछ हलका तथा वात कफ नाशक और दर्भरका मांस. रक्त पित्तघ्न, हृदय रोगनाशक तथा शीतल होताहै ॥ ३० ॥ अथ बगेरा ॥

वालीकोवर्त्तिचटकोवार्त्तीकश्चैवसस्मृतः।वालीकोमधुरःशीतोरूक्षश्चकफपित्तनुत् ३१॥

बगेराके नाम व गुण ॥

वालीक, वर्त्तिचटक और वार्त्तीक यह बगेराके नाम हैं बगेरा. शीतल, मधुर, रूखा और कफपित्त नाशक होताहै ॥ ३१ ॥ अथ कृष्णतित्तिरिगौरतित्तिरी ॥

तित्तिरिःकृष्णवर्णःस्याच्चित्रोऽन्योगौरतित्तिरिः । तित्तिरिर्बलदोग्राही हिक्कादोषत्रयापहः ॥ श्वासकासज्वरहरस्तस्माद्गौराधिकोगुणैः ॥ ३२ ॥

काले और गोरेतीतरके नाम व गुण ॥

काले तीतरको कृष्ण तित्तिर और चित्र वर्णवाले तीतरको गौर तित्तिर कहते हैं तीतर.बलकारी, ग्राही और हिचकी, त्रिदोष, श्वास, खांसी तथा ज्वरनाशक होताहै गौर. तित्तिर में इससे अधिक गुण होते हैं॥ ३२॥ अथ गवरैया ॥

चटकःकलविङ्कःस्यात् कुलिङ्गःकालकण्ठकः । कुलिंगःशीतलःस्निग्धः स्वादुःशुक्रकफप्रदः ॥ सन्निपातहरोवेश्म चटकश्चातिशुक्रलः ॥ ३३ ॥

गौरैया के नाम व गुण ॥

चटक, कलविङ्क, कुलिङ्ग और कालकण्ठक यह गौरैयाके नाम हैं गौरैया.शीतल, स्निग्ध, मधुर,वीर्य-वर्द्धक, कफकारी और सन्निपातनाशक होती है घरकी गौरैया बहुत वीर्यवर्द्धक होती हैं ॥ ३३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुक्कुटो वनकुक्कुटः ॥

कुक्कुटः कृकवाकुःस्यात् कालज्ञश्चरणायुधः । ताम्रचूडस्तथादक्षो प्रातर्णादीशिखण्डिकः ॥ कुक्कुटोबृंहणःस्निग्धो वीर्योष्णोऽनिलहृद्गुरुः । चक्षुष्यःशुक्रकफकृद् बल्यो वृष्यःकषायकः ॥ आरण्यकुक्कुटःस्निग्धो बृंहणःश्लेष्मलोगुरुः । वातपित्तक्षयवमिविषमज्वरनाशनः ॥ ३४ ॥ मुर्गा और वनमुर्गे के नाम व गुण ॥

कुक्कुट कृकवाकु कालज्ञ चरणायुध ताम्रचूड दक्ष प्रातर्णादी और शिखण्डिक यह मुर्गे के नाम हैं मुर्गा धातुवर्द्धक स्निग्ध उष्ण वातनाशक भारी नेत्रोंको हित कफकारक बलकारी पोषक और कषैला होताहै वनमुर्गा स्निग्ध धातुवर्द्धक कफकारक भारी और वात पित्त क्षय छर्दि तथा विषमज्वर नाशक होताहै ॥ ३४ ॥ प्रतुदेषुहारीतस्य ॥

हारीतोरक्तपीतःस्याद्धरितोऽपिसकथ्यते । हारीतोहारीलइतिलोके ॥ हारीतोरूक्ष उष्णश्चरक्तपित्तकफापहः ॥ स्वेदस्वरकरःप्रोक्त ईषद्वातकरश्चसः ॥ ३५ ॥

प्रतुदों में हारिल के नाम व गुण ॥

हारीत (हारिल) रक्त तथा पीतवर्ण होता है इसको हारित भी कहते हैं हारिल रूखा उष्ण रक्त पित्त नाशक कफघ्न श्वेतकारी स्वर को हित और कुछ बादी होता है ॥ ३५ ॥

पाण्डुधवलपाण्डू ॥

पाण्डुस्तुद्विविधोज्ञेयश्चित्रपक्षःकलध्वनिः । द्वितीयोधवलःप्रोक्तःसकपोतःस्फुटस्वनः ॥ चित्रपक्षःपित्तरोषा इतिलोके ॥ चित्रपक्षःकफहरोवातघ्नोग्रहणीप्रणुत् ॥ धवलःपाण्डुरुद्दिष्टोरक्तपित्तहरोहिमः ॥ ३६ ॥ पाण्डु (पिण्डकी) के नाम व गुण ॥

पाण्डु दो प्रकारका होता है एक तो चित्रपक्ष तथा कलध्वनि कहाता है और दूसरा धवल कपोत तथा स्फुटस्वन कहाता है पहला कफ वात तथा ग्रहणी नाशक और दूसरा रक्त पित्त नाशक तथा शीतल होता है ॥ ३६ ॥ अथ मयूरः

मयूरश्चन्द्रकीकेकीमेघरावीभुजङ्गभुक् । शिखीशिखावलोबर्हीशिखण्डीनीलकण्ठकः ॥ शुक्लापाङ्गःकलापीचमेघनादःकपाल्यपि । रसेपाकेचमधुरःसंग्राहीवातशान्तिकृत् ॥ ३७ ॥

मयूरके नाम व गुण ॥

मयूर, चन्द्रकी, केकी, मेघरव, भुजङ्गभुक्, शिखी, शिखावल्ल, बर्हीं, शिखण्डी, नीलकण्ठक, शुक्लापाङ्ग, कलापी, मेघनाद और कपाल यह मयूरकेनामहैं मयूर, रस तथा पाकमें मधुर, ग्राही और वातनाशक होतेहैं ॥ ३७ ॥ कबूतर परेवा ॥

पारावतःकलरवःकपोतोरक्तवर्द्धनः । पारावतोगुरुःस्निग्धोरक्तपित्तानिलापहः ॥ संग्राहीशीतलस्तज्ज्ञैःकथितोवीर्य्यवर्द्धनः ॥ ३८ ॥

कबूतरके नाम व गुण ॥

पारावत, कलरव, कपोत और रक्तलोचन यह कबूतर के नामहैं कबूतर, भारी, स्निग्ध, रक्त पित्त-नाशक, वातघ्न, ग्राही, शीतल और वीर्यवर्द्धक होताहै ॥ ३८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ पक्ष्यण्डस्यगुणाः ॥

नातिस्निग्धानिवृष्याणिस्वादुपाकरसानिच । वातघ्नान्यपिशुक्राणिगुरूण्यण्डानि पक्षिणाम् ॥ ३९ ॥

पक्षियोंके अंडोंकेगुण ॥

पक्षियोंके अण्डे. कुछ स्निग्ध, पुष्टिकारक, रस तथा पाकमें मधुर, वातनाशक, भारी और अत्यन्त वीर्यवर्द्धक होते हैं ॥ ३९ ॥

ग्राम्येषु छागस्य ॥

छागलोवर्करश्छागोवस्तोजश्छेलकःस्तुभः। अजाछागीस्तुभाचापिछेलिकाचगलस्तनी ॥ छागमांसंलघुस्निग्धंस्वादुपाकंत्रिदोषनुत् । नातिशीतमदाहिस्यात्स्वादुपीनसनाशनम् ॥ परंबलकरंरुच्यंबृंहणंवीर्यवर्द्धनम् । अजायाअप्रसूतायामांसंपीनसनाशनम् ॥ शुष्ककासेऽरुचौशोषेहितमग्नेश्चदीपनम् । अजासुतस्यबालस्यमांसंलघुतरंस्मृतम् ॥ हृद्यंज्वरहरंश्रेष्ठंसुखदंबलदंभृशम् । मांसंनिष्कासिताण्डस्यछागस्यकफकृद्गुरु ॥ स्रोतःशुद्धकरंबल्यंमांसदंवातपित्तनुत् । वृद्धस्यवातलंरूक्षंतथाव्याधिमृतस्यच॥ ऊर्द्ध्वजत्रुविकारघ्नंछागमुण्डंरुचिप्रदम् ॥ ४० ॥

ग्राम्यों में बकरेकेनामगुण ॥

छागल, बर्कर, छाग, वस्त, अज, छेलक और स्तुभ यह बकरे के नाम हैं अजा, छागी, स्तुभा, छेलिका और गलस्तनी यह बकरीके नाम हैं बकरेका मांस. हलका, स्निग्ध, पाक में मधुर, त्रिदोषनाशक, कुछ शीतल,दाहरहित, मधुर, पीनसनाशक, बलकारी, रुचिकारी और धातु तथा वीर्यवर्द्धक होताहै विनाब्याईहुई बकरीका मांस. पीनसनाशक, सूखी खांसी अरुचि तथा सूजन में हितकारी और दीपनहोता है बकरे के बच्चेका मांस. बहुत हलका, हृदयकोहित, ज्वरनाशक, सुखदायक और अत्यन्त बलवर्द्धक होताहै बधिया बकरेका मांस. कफकारक, भारी, स्रोतों का शुद्ध करने वाला बलकारी,मांस वर्द्धक और वात पित्तनाशक होताहै वृद्ध अवस्था रोगसे मरेहुए बकरेका मांस. बादी और रूखा होताहै बकरेका शिर जत्रु (हँसुआ) के ऊपरका रोगों के नाशक और उसका मूँड रुचिकारी होताहै ॥ ४० ॥

अथ मेढा ॥

मेढ्रोमेढोहुडोमेषउरणोऽप्येडकोऽपिच। अविर्वृष्णिरस्तथोर्णायुरुक्थ्यन्तेतद्गुणाअथ॥ मेषस्यमांसंपुष्टौस्यात्पित्तश्लेष्मकरंगुरु।तस्यैवाण्डविहीनस्यमांसंकिञ्चिल्लघुस्मृतम् ४१

मेढ्रकेनाम व गुण ॥

मेढ्र, मेढ, हुड, मेष, उरण, एडक, अवि, वृष्णि और ऊर्णायु यह मेढेके नामहैं मेढेका मांस. पोषक, पित्तकारी, कफवर्द्धक तथा भारी और बधिया मेढेका मांस. कुछ हलका होताहै ॥ ४१ ॥

अथ एडिकादुम्बिका इतिलोके दुम्बा ॥

एडकःपृथुशृङ्गःस्यान्मेदःपुच्छस्तुदुम्बकः।एडकस्यपलंज्ञेयंमेषामिषसमंगुणैः ॥ मेदःपुच्छोद्भवंमांसंहृद्यंवृष्यंश्रमापहम्। पित्तश्लेष्मकरंकिञ्चिद्वातव्याधिविनाशनम् ॥४२॥

दुंबाके नाम व गुण ॥

एडक, पृथुशृङ्ग, मेदः, पुच्छ और दुम्बक यह दुंबाके नामहैं इसके मांसमें मेढेके मांसके सदृश गुण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होतेहैं इस[illegible] पूंछका मांस. हृदयको हित, वीर्यवर्द्धक, कामनाशक, कफपित्तवर्द्धक और कुछ वात रोग नाशक होताहै ॥ ४२ ॥

अथ वर्द्गावः ॥

बलीवर्दस्तुवृषभऋषभश्चतथावृषः । अनड्वान्सौरभेयोपिगौरुक्षाभद्रइत्यपि ॥ सुरभिःसौरभेयीचमाहेयीगौरुदाहृता । गोमांसन्तुगुरुस्निग्धंपित्तश्लेष्मविवर्द्धनम् ॥ बृंहणंवातहृद्बल्यमपथ्यंपीनसप्रणुत् ॥ ४३ ॥

बैलके नाम व गुण ॥

बलीवर्द वृषभ, ऋषभ, वृष, अनड्वान्, सौरभेय, गो, उक्षा और भद्र यह बैलके नामहैं सुरभि, सौरभेयी, माहेयी और गो यह गौकेनामहैं गोमांस अत्यन्त भारी, स्निग्ध, पित्त तथा कफवर्द्धक, धातु वर्द्धक, वातघ्न, बलकारी, अपथ्य और पीनसनाशक होताहै ॥ ४३ ॥

अथ घोड़ा ॥

घोटकेप्यश्वतुरगतुरङ्गाश्चतुरङ्गमः । वाजिवाहार्वगन्धर्वहयसैन्धवसप्तयः ॥ अश्व मांसन्तुक्षुवरंवह्निकृत्कफपित्तलम् । वातहृद्बृंहणंबल्यंचक्षुष्यंमधुरंलघु ॥ ४४ ॥

घोड़ेके नाम व गुण ॥

घोटक, अश्व, तुरग, तुरङ्ग, तुरङ्गम, बाजी, वाह, अर्वन्, गन्धर्व, हय, सैंधव और सप्ति यह घोडेकेनाम हैं घोड़ेका मांस. लवण, दीपन, कफ, पित्तकारक, वातनाशक, धातुवर्द्धक, बलकारी, नेत्रोंकोहित, मधुर और हलका होताहै ॥ ४४ ॥

अथ कूलेचरेषुमाहिषस्य ॥

महिषोघोटकारिःस्यात्कासरश्चरजस्वलः । पीनस्कन्धःकृष्णकायोलुलायोयमवाहनः ॥ माहिषस्यामिषंस्वादुस्निग्धोष्णंवातनाशनम् । निद्राशुक्रप्रदंबल्यंतनुदार्ढ्यकरङ् गुरु ॥ वृष्यञ्चसृष्टविण्मूत्रंवातपित्तास्रनाशनम् ॥ ४५ ॥

कूलेचरोंमें भैंसेकेनाम व गुण ॥

महिष, घोटकारि, कासर, रजस्वल, पीनस्कन्ध, कृष्ण काय, लुलाय और यमवाहन यह भैंसेके नामहैं भैंसेका मांस. मधुर, स्निग्ध, उष्ण, वातनाशक, निद्राकारक, वीर्यवर्द्धक, बलिष्ठ, शरीरको दृढ करनेवाला, भारी, पुष्टकारक, मलमूत्र निस्सारक और वात, पित्त तथा रक्तनाशक होता है ॥ ४५ ॥

अथ मण्डूकः ॥

मण्डूकःप्लवगोभेकोवर्षाभूर्दर्दुरोहरिः । मण्डूकःश्लेष्मलोनातिपित्तलोबलकारकः ॥४६ ॥

मेढक के नाम व गुण ॥

मण्डूक, प्लवग, भेक, वर्षाभू, दर्दुर और हरि यह मेढक के नाम हैं मेढकका मांस. कफवर्द्धक कुछ पित्तकारक और बलकारी होता है ॥ ४६ ॥

अथ पादिषुकछुआ ॥

कच्छपोगूढपात्कूर्मःकमठोदृढपृष्ठकः । कच्छपोबलदोवातपित्तनुत्पुंस्त्वकारकः ॥ ४७ ॥

पादियों में से कच्छप के नाम व गुण ॥

कच्छप, गूढपाद, कूर्म, कमठ और दृढपृष्ठक यह कछुए के नाम हैं कछुएका मांस. बलकारक वात पित्त नाशक और पुंस्त्ववर्द्धक होता है ॥ ४७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ विशेषाः। अथ सद्योहतस्यमांसस्यगुणाः॥

सद्योहतस्यमांसंस्याद्रुग्व्याधिघातियथाऽमृतम्॥ वयस्यंबृंहणंसात्म्यमन्यथातद्विवर्जयेत्। स्वयंमृतस्यमांसम्॥ स्वयंमृतस्यचाबल्यमतीसारकरंगुरु॥ ४८॥

विशेषवर्णन। शीघ्रमारेहुएमांसकेगुण॥

शीघ्र माराहुआ मांस. अमृतके समान रोगनाशक, अवस्थाकोहित, धातुवर्द्धक और सात्म्य होता है और इससे विरुद्धको त्याग करना योग्यहै स्वयंमरेहुए जीवका मांस. बलनाशक, अतीसारकारक और भारी होताहै॥ ४८॥

वृद्धबालमांसम्॥

वृद्धानांदोषलंमांसंबालानांबलकृल्लघु। सर्पदष्टस्यमांसञ्चशुष्कमांसंत्रिदोषकृत्॥ व्यालदष्टञ्चदुष्टञ्चशुष्कंशूलकरंपरम्॥ ४९॥

वृद्धऔरबच्चोंकेमांसकागुण॥

वृद्धोंका मांस. त्रिदोषकारी, बच्चोंका मांस. बलकारी और हलका सर्पादिकोंसे दूषित तथा सूखा मांस. त्रिदोष तथा शूलकारक और भारी होताहै॥ ४९॥

अथ विषादिमृतस्यमांसम्॥

विषाम्बुरुङ्मृतस्यैतन्मृत्युदोषरुजांकरम्। क्लिन्नमुतक्लेशजनकंकृशवातप्रकोपनम्॥ तोयपूर्णशिराजालंमृतमप्सुत्रिदोषकृत्॥ ५०॥

विषआदिसेमरेहुएजीवोंकेमांसकागुण॥

विष जल तथा रोगसे मरेहुये जीवका मांस त्रिदोष रोग और मृत्युकारक होताहै सडाहुआ मांस क्लेशकारक होता है दुर्बल जीवों का मांस बादी जल में डूब कर मरे हुये तथा जलसे भरी हुई नसों वाले जीव का मांस त्रिदोषकारी होता है॥ ५०॥

विहङ्गेषुपुमाञ्छ्रेष्ठःस्त्रीचतुष्पदजातिषु। परार्द्धोलघुपुंसांस्यात्स्त्रीणांपूर्वार्द्धमादिशेत्॥ देहमध्यंगुरुप्रायंसर्वेषांप्राणिनांस्मृतम्॥ पक्षक्षेपाद्विहङ्गानांतदेवलघुकथ्यते। गुरूण्यण्डानिसर्वेषांगुर्वीग्रीवाचपक्षिणाम्॥ उरःस्कन्धोदरंकुक्षीपादौपाणीकटीतथा। पृष्ठत्वग्यकृदन्त्राणिगुरूणीहयथोत्तरम्॥ ५१॥

पक्षियोंमें नरोंकामांस और चौपायोंमें मादाओंका मांस श्रेष्ठहै नरोंका पिछला भाग और मादाओं का पहला भाग हलका होताहै संपूर्ण जीवोंके शरीरका मध्यभाग भारी होताहै परन्तु पक्षोंके चलाने से पक्षियोंका मांस हलका होता है सब पक्षियों के अण्ड तथा ग्रीवा भारी और छाती स्कन्ध, उदर, मस्तक, पैर, हाथ, कमर, पीठ, त्वचा, यकृत् तथा आंतें यह क्रमसे उत्तरोत्तर भारी होती हैं॥ ५१॥

लघुवातकरंमांसंखगानांधान्यचारिणाम्। मत्स्याशिनांपित्तकरंवातघ्नंगुरुकीर्तितम्॥ बृंहणंगुरुवातघ्नंतेषामेवंपलाशिनाम्। तुल्यजातिष्वल्पदेहामहादेहेषुपूजिताः। अल्पदेहेषुशस्यन्तेतथैवस्थूलदेहिनः॥ ५२॥ पलाशिनांश्लेष्मकरंलघुरूक्षमुदीरितम्।

जो पक्षी नाज खातेहैं उनका मांस. हलका तथा वातनाशक, मत्स्य खानेवालेपक्षियों का मांस. पित्तवर्द्धक, वातनाशक तथा भारी और मांसाहारी पक्षियोंका मांस कफकारी, हलका तथा रूखा होताहै

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तुल्य जाति[illegible]लोंमें बडे शरीरवालों की अपेक्षा छोटे शरीरवालों का श्रेष्ठ और उनमें भी स्थूल शरीरवालोंका मांस श्रेष्ठ होता है ॥ ५२ ॥ मत्स्येषुरोहितस्य ॥

रक्तोदरोरक्तमुखोरक्ताक्षोरक्तपक्षतिः । कृष्णपुच्छोझषश्रेष्ठोरोहितःकथितोबुधैः ॥ रोहितःसर्वमत्स्यानांवरोवृष्योऽर्दितार्तिजित् । कषायानुरसःस्वादुर्वातघ्नोनातिपित्तकृत् ॥ ऊर्ध्वंजत्रुगतानूरोगानूहन्याद्रोहितमुण्डकम् ॥ ५३ ॥

रोहू मछली के गुण ॥

लाल उदर, लालमुख, लालनेत्र, लालपर और कालीपूंछवाली सब मछलियों में श्रेष्ठ रोहू मछली कहलातीहै रोहू मछली.सब मछलियों में श्रेष्ठ, वीर्यवर्द्धक, अर्दित रोगनाशक, कुछ कषैली, मधुर, वात नाशक और कुछ पित्तकारक होती है इसका शिर हसुए के ऊपर के रोगोंको नाश करता है ॥ ५३ ॥

शिलीन्ध्रः ॥

शिलीन्ध्रःश्लेष्मलोबल्योविपाकेमधुरोगुरुः । वातपित्तहरोहृद्यमामवातकरश्चसः ॥५४॥

शिलिन्ध्रा मछली के गुण ॥

शिलीन्ध्र मछली. कफवर्द्धक, बलकारी, पाकमें मधुर, भारी, वात पित्तनाशक, हृदयको हित और आम वातकारक होतीहै ॥ ५४ ॥ अथ भाकुर ॥

भकुरोमधुरःशीतोवृष्यःश्लेष्मकरोगुरुः । विष्टम्भजनकश्चापिरक्तपित्तहरःस्मृतः॥५५॥

भाकुर मछली के गुण ॥

भाकुर मधुर, शीतल, वीर्यवर्द्धक, कफकारी, भारी, विष्टम्भी और रक्तपित्तनाशक होतीहै ॥ ५५ ॥

मोचिका ॥

मोचिकावातहृद्बल्याबृंहणीमधुरागुरुः । पित्तहृत्कफकृद्रुच्यावृष्यादीप्ताग्नयेहिता॥५६॥

मोचिकामछलीके गुण ॥

मोचिकामछली. वातनाशक, बलकारी, धातुवर्द्धक, मधुर, भारी, पित्तघ्न, कफकारक, रुचिकारी, वीर्य्यवर्द्धक और बडी अग्निवाले पुरुषों को हित है ॥ ५६ ॥

मठनाचूआरीइतिचपोठियावोरीइतिच ॥

पाठिनःश्लेष्मलोबल्योनिद्रालुःपिशिताशनः । दूषयेद्रुधिरंपित्तकुष्ठरोगंकरोतिच॥५७॥

पाठीनके गुण ॥

पाठीन, कफवर्द्धक, बलिष्ठ, निद्राकारक, रुधिरदूषक और पित्त तथा कुष्ठरोगकारक होतीहै ॥ ५७ ॥

अथ सींगी ॥

शृङ्गीतुवातशमनीस्निग्धाश्लेष्मप्रकोपनी॥रसेतिक्ताकषायाचलघ्वीरुच्यास्मृताबुधैः५८

सिंगीमछलीके गुण ॥

सिंगीमछली. वातनाशक, स्निग्ध, कफको कुपित करनेवाली, तिक्त, कषैली, हलकी और रुचिकारक होती है ॥ ५८ ॥

अथ हीलसा ॥

इल्लिसोमधुरःस्निग्धोरोचनोवह्निवर्द्धनः॥पित्तहृत्कफकृत्किञ्चिल्लघुर्वृष्योऽनिलापहः॥५९॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हिलसामछली के गुण ॥

हिलसा. मधुर, स्निग्ध, रुचिकारक, दीपन, पित्त कफवर्द्धक, कुछ हलकी वीर्यवर्द्धक और वात-नाशक होती है ॥ ५९ ॥

अथ सौरी ॥

शष्कुलीग्राहिणीहृद्यामधुरातुवरास्मृता ६० (अथ गर्गरा) गर्गरःपित्तलःकिञ्चिद्वात
जित्कफकोपनः ॥ ६१ ॥

सौरीमछलीके गुण ॥

सौरी. ग्राही हृदयकोहित मधुर और कषैली होती है ६० (गर्गरामछलीके गुण) गर्गरा. पित्त-वर्द्धक कुछ वातनाशक और कफको कुपितकरनेवाली होती है ॥ ६१ ॥

अथ कवई ॥

कविकामधुरास्निग्धाकफघ्नारुचिकारिणी। किञ्चित्पित्तकरीवातनाशिनीवह्निवर्द्धिनी६२

कवईमछलीके गुण ॥

कवई. मधुर, स्निग्ध, कफनाशक, रुचिकारक, कुछ पित्तवर्द्धक, वातनाशक और दीपन होती है ॥ ६२ ॥

अथ बाम्बी ॥

वर्मिमत्स्योहरेद्वातंपित्तंरुचिकरोलघुः ६३ (अथ दण्डारी) दण्डमत्स्योरसेतिक्तः
पित्तरक्तंकफंहरेत्।वातसाधारणःप्रोक्तःशुक्लोबलवर्द्धनः ॥ ६४ ॥

बांबीमछली के गुण ॥

बांबी, वातनाशक, पित्तवर्द्धक, रुचिकारक और हलकी होती है ६३ (दण्डारीमछली के गुण) दण्डारी. तिक्त, पित्त, रक्त तथा कफनाशक, वीर्यवर्द्धक, बलकारक और वातको साधारण रखनेवाली होती है ॥ ६४ ॥

अथ अरङ्गी ॥

अरङ्गीमधुरःस्निग्धोविष्टम्भीशीतलोलघुः ६५ (अथ पपता) महासफरसंज्ञस्तु
तिक्तःपित्तकफापहः। शिशिरोमधुरोरुच्योवातसाधरणःस्मृतः ॥ ६६ ॥

अरंगी मछली के गुण ॥

अरंगी. मधुर, स्निग्ध, विष्टम्भी, शीतल और हलकी होती है ६५ (पपता मछली के गुण) पपता. तिक्त, मधुर, पित्त, कफनाशक, रुचिकारक, शीतल और वातको साधारण रखनेवाली होती है ॥ ६६ ॥

अथ गरई ॥

गरघ्नीमधुरातिक्तातुवरावातपित्तहृत्। कफघ्नीरुचिकृल्लघ्वीदीपनीबलवीर्य्यकृत् ६७

गिरई मछली के गुण ॥

गिरई. मधुर, तिक्त, कषैली, वात, पित्तनाशक, कफघ्न, रुचिकारक, हलकी, दीपन और बल, वीर्य वर्द्धक होती है ॥ ६७ ॥

अथ मंगुरी ॥

मंगुरोवातहृद्बल्योवृष्यःकफकरोलघुः ६८ (अथ टेङ्गरा) सपादमत्स्योमेधाकृन्मेदः
क्षयकरश्चसः। वातपित्तकरश्चापिरुचिकृत्परमोमतः ॥ ६९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंगुरी मछली के गुण ॥

मंगुरी. वातनाशक, बलकारी, वीर्यवर्द्धक, कफकारी और हलकी होती है ६८ (टेंगरा मछलीके गुण) टेंगरा. मेधाकोहित, मदनाशक, वादी, पित्तवर्द्धक और अत्यन्तरुचिकारक होतीहैं ॥ ६९ ॥

अथ शफरीपोठीइतिच ॥

प्रोष्ठीतिक्ताकटुःस्वादुःशुक्रघ्नीकफवातजित् । स्निग्धास्यकण्ठरोगघ्नीरोचनीचलघुःस्मृतः ॥ ७० ॥

शफरी मछली के गुण ॥

शफरी. तिक्त, कटु, मधुर, वीर्यनाशक, स्निग्ध, रुचिकारी, हलकी और कफ, वात, मुखरोग तथा कण्ठरोगनाशक होतीहै ॥ ७० ॥

अथ क्षुद्रमत्स्याः ॥

क्षुद्रामत्स्याःस्वादुरसाःदोषत्रयविनाशनाः । लघुपाकारुचिकराबलदास्तेहितामताः ७१

छोटी मछलियों के गुण ॥

छोटी मछली. मधुर, त्रिदोषनाशक, हलकी, रुचिकारक, बलकारी और सबप्रकारसे हित होती हैं ॥७१॥

अथातिक्षुद्रमत्स्याः ॥

अतिसूक्ष्माःपुंस्त्वहरारुच्याःकासानिलापहाः ७२ (अथ मत्स्याण्डा) मत्स्यगर्भोभृशंवृष्यःस्निग्धःपुष्टिकरोलघुःकफमेदःप्रदोबल्योग्लानिकृन्मेहनाशनः (अथ सूखठी) शुष्कमत्स्यानवाबल्याद्दुर्जराविड्विबन्धिनः (अथ दग्धमत्स्याः) दग्धमत्स्योगणैःश्रेष्ठःपुष्टिकृद्बलवर्द्धनः ॥ ७३ ॥

बहुत छोटी मछलियोंके गुण ॥

बहुत छोटी मछली. रुचिकारक और पुंस्त्व, खांसी तथा वातनाशक होती हैं ७२ (मछलियों के अण्डोंके गुण) मछलियोंके अण्डे अत्यन्त वीर्यवर्द्धक, स्निग्ध, पुष्टकारी, हलके, प्रमेहनाशक और कफ, मेद, बल तथा ग्लानिकारक होतेहैं सूखीमछली. बलरहित कठिनतासे पचनेवाली और मलको बाँधनेवाली होती हैं भूनीहुई मछलीगुणोंमें श्रेष्ठ, पुष्टिकारक और बलवर्द्धक होतीहै ॥ ७३ ॥

अथ कूपजादिमत्स्यगुणाः ॥

कौपमत्स्याःशुक्रमूत्रकुष्ठश्लेष्मविवर्द्धनाः । सरोजामधुराःस्निग्धाबल्यावातविनाशनाः ॥ नादेयाबृंहणामत्स्यागुरवोऽनिलनाशनाः । रक्तपित्तकरावृष्याःस्निग्धोष्णाःस्वल्पवर्चसः ॥ चौड्याःपित्तकराःस्निग्धामधुरालघवोहिमाः । ताडागागुरवोवृष्याःशीतलाःबलमूत्रदाः ॥ ताडागावन्निर्झरजाबलायुर्मतिदृक्कराः ॥ ७४ ॥

कूपादिमें उत्पन्न मछलियोंके गुण ॥

कुएंकी मछली. वीर्य, मूत्र, कुष्ठ तथा कफवर्द्धक, सरोवरकी मछली. मधुर, स्निग्ध, बलकारी तथा वातपित्तनाशक, नदीकी मछली. धातुवर्द्धक, भारी, वातनाशक, रक्तपित्तकारी, वीर्यवर्द्धक, स्निग्ध, उष्ण तथा मलको स्वल्प करने वाली, गढैया की मछली. पित्त कारक, स्निग्ध, मधुर, हलकी तथा शीतल, तडाग की मछली भारी, वीर्यवर्द्धक, शीतल, बलिष्ठ तथा मूत्रकारक और झिरने की मछली तडाग की मछली के समान गुणकारक, बलिष्ठ, आयुवर्द्धक, बुद्धिदायक तथा दृष्टिवर्द्धक होती हैं ॥ ७४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथर्त्तुविशेषेमत्स्यविशेषः ॥

हेमन्तेकूपजामत्स्याःशिशिरेसारसाहिताः। वसन्तेतेतुनादेयाग्रीष्मेचौण्डयसमुद्भवाः॥तडागजातावर्षासुतास्वपथ्यानदीभवाः। नैर्झराःशरदिश्रेष्ठाविशेषोऽयमुदाहृतः ७५

इति श्रीभावप्रकाशेमांसवर्गः ॥

ऋतुविशेष में मत्स्यविशेष ॥

हेमन्तमें कुएंकी, शिशिरमें सरोवरकी, वसन्तमें नदीकी, ग्रीष्ममें गढैयाकी, वर्षामें तडागकी और शरदृतुमें झिरने की मछली श्रेष्ठहैं वर्षाऋतुमें नदी की मछलियों का सेवन करना अहितहै ७५ ॥

इति श्रीभावप्रकाशस्य भाषानुवादे मांसवर्गःसमाप्तः ॥

अथ कृतान्नवर्गः ॥

अत्रान्नानांसाधनप्रकारःसिद्धानांगुणाश्च। तत्रपरिभाषिता ॥

समवायिनिहेतौयेमुनिभिर्गणितागुणाः। कार्य्येऽपितेऽखिलाज्ञेयाःपरिभाषेतिभाषिता ॥ क्वचित्संस्कारभेदेनगुणभेदोभवेद्यतः। भक्तंलघुपुराणस्यशालेस्तच्चिपिटोगुरुः ॥ क्वचिद्योगप्रभावेनगुणान्तरमपेक्ष्यते। कदन्नंगुरुसर्पिश्चलघूक्तंसुहितंभवेत् ॥ १ ॥

कियेहुए अन्नका वर्ग ॥

इसमें अन्नोंके बनानेकी रीति और कियेहुओंके गुण। परिभाषा ॥

मुनियोंने समवायिकारण (जिन पदार्थोंसे वस्तु बनाईजातीहै) में जो गुण कहेहैं वही सम्पूर्ण उनके कार्यमें भी होतेहैं यह परिभाषा कहीहै कहीं संस्कारके भेदसे गुणोंका भेद होजाताहै जैसे पुराने चांवलका भात तौ हलका और उनके चिडवे भारी होते हैं कहीं संयोगके प्रभावसे गुणमें भेद होजाते हैं जैसे केला और घी यह दोनों भारी होतेहैं परन्तु यह दोनों मिलेहुए सुगमतासे परिपाक को प्राप्त होते हैं ॥ १ ॥

अथ भक्तस्यनामानिसाधनंगुणाश्च ॥

भक्तमन्नंतथान्धश्चक्वचित्कूरश्चकीर्त्तितम्। ओदनोऽस्त्रीस्त्रियांभिस्सादीदिविःपुंसिभाषितः ॥ सुधौतास्तण्डुलाःस्फीतास्तोयेपञ्चगुणेपचेत्। तद्भक्तंप्रस्तुतंचोष्णंविशदंगुणवन्मतम् ॥ भक्तंवह्निकरंपथ्यंतर्पणंरोचनंलघु। अधौतमश्रुतंशीतंगुर्वरुच्यंकफप्रदम् २॥

भातके नाम साधन और गुण ॥

भक्त, अन्न, अन्ध, कूर, ओदन, भिस्सा और दीदिवि यह भातके नामहैं अच्छे प्रकारसे धोयेहुए फूले हुए चांवलों को पांचगुने जलमें पकावे फिर मांड निकलेहुए कुछ उष्ण चांवल वह भात कहलाते हैं वह भात गुणकारी होताहै भात. अग्निवर्द्धक, पथ्य, तृप्तिकारक, रुचिकारी और हलका होताहै विना धोयेहुए चांवलोंका बेमांड निकलाहुआ भात. शीतल, भारी, अरुचिकारी और कफवर्द्धक होताहै २ ॥

अथ पहिति ॥

दलितन्तुशमीधान्यंदालिर्दालीस्त्रियामुभे। दालीतुसलिलेसिद्धालवणार्द्रकहिंगुभिः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संयुक्तासूप म्नीस्यात्कथ्यन्तेतद्गुणाअथ । सूपोविष्टम्भकोरूक्षःशीतस्तुसविशेषतः ॥
निस्तुषोभृष्टसंसिद्धःलाघवंसुतरांव्रजेत् ॥ ३ ॥

दालकेनाम साधन और गुण ॥

दलाहुआ शमीधान्य. दालि और दाली कहलाताहै जलमें पकीहुई और लवण, अदरक तथा हींग युक्त दालको सूप कहते हैं सूप (पकीहुई दाल) विष्टम्भी, रूखी और शीतल होतीहै छिलके रहित और भुनीहुई दालपकानेसे अत्यन्त हलकी होती है ॥ ३ ॥

अथ खिचिरी ॥

तण्डुलादालिसंमिश्रालवणार्द्रकहिंगुभिः । संयुक्तासलिलेसिद्धाकृशराकथिताबुधैः ॥
कृशराशुक्रलाबल्यागुरुःपित्तकफप्रदा । दुर्जराबुद्धिविष्टम्भमलमूत्रकरीस्मृता ॥ ४ ॥

खिचडीके नाम साधन और गुण ॥

लवण, अदरक तथा हींगयुक्त दाल चांवल जल में पाक कियेहुए कृशरा कहेजाते हैं खिचडी. वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, भारी, पित्तकफकारक, कठिनतासे पचनेवाली, बुद्धिकारक, विष्टम्भी और मलमूत्रकारी होती है ॥ ४ ॥

अथ तापहारी । ताताहरीतिलोके ॥

घृतेहरिद्रासंयुक्तेमाषजाम्भर्ज्जयेद्वटीम् । तण्डुलांश्चापिनिर्धौतान्सहैवपरिभर्जयेत् ॥ सिद्धयोग्यंजलंतत्रप्रक्षिप्यकुशलःपचेत् । लवणार्द्रकहिंगूनिमात्रयातत्रनिःक्षिपेत् ॥ एषा सिद्धिःसमानज्ञाप्रोक्तातापहरीबुधैः । भवेत्तापहरी बल्या वृष्याश्लेष्माणमाचरेत् ॥ बृंहणीतर्पणीरुच्यागुर्वीपित्तहरास्मृता ॥ ५ ॥

ताहरीके नाम साधन और गुण ॥

हल्दीके सहित घृतमें चांवल और उर्दकी बडियोंको भूने फिर परिपाक होने योग्य जलमें पकावे और प्रमाणके अनुसार उसमें लवण, अदरक तथा हींग छोडे यह परिपाकहोनेपर तापहरी (ताहरी) कहलातीहै ताहरी. बलकारी, वीर्यवर्द्धक, कफकारी, धातुवर्द्धक, तृप्ति तथा रुचिकारक, भारी और अपने कारणके समान गुणवाली होतीहै ५ ॥ अथ खीर ॥

पायसंपरमान्नंस्यात् क्षीरिकापितदुच्यते । शुद्धेऽर्द्धपक्केदुग्धेतु घृताक्तांस्तण्डुलान्पचेत् ॥ तैःसिद्धाक्षीरिकाख्याता ससिताज्ययुतोत्तमा । क्षीरिकादुर्जराप्रोक्ता बृंहणीबलवर्द्धिनी ॥ नालिकेरन्तनूकृत्यच्छिन्नंपयसिगोःक्षिपेत् । सितागव्याज्यसंयुक्ते तत्पचेन्मृदुनाऽग्निना ॥ नारीकेरोद्भवाक्षीरी स्निग्धाशीतातिपुष्टिदा । गुर्वीसुमधुरावृष्या रक्तपित्तानिलापहा ॥ ६ ॥

खीरके नाम साधन और गुण ॥

पायस, परमान्न और क्षीरिका यह खीरके नामहैं शुद्ध तथा अर्द्धपक्व दुग्धमें घृतयुक्त पकेहुए चांवलोंको पकाकर शर्करा तथा घृतसे युक्तकरे वह खीर कहातीहै खीर. कठिनतासे पचनेवाली, धातु बलवर्द्धक, विष्टम्भी और पित्त, रक्तपित्त, जठराग्नि तथा वातनाशक होती है नारियल बारीक कटेहुए गोलेको गौके दूधमें छोडकर शक्कर और गौके घृतसमेत मन्दाग्निसे पकावे यहनारियलकी खीर. स्निग्ध, शीतल, अत्यन्त पुष्टिकारक, भारी, मधुर, वीर्यवर्द्धक और रक्तपित्त तथा वातनाशक होती है ॥ ६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ सेवई ॥

समितांवर्त्तिकांकृत्वा सूक्ष्मांतुयवसन्निभाम् । शुष्कांक्षीरेणसंसाध्या भोज्याघृतसितान्विता ॥ सेविकातर्पणीबल्या गुर्वीपित्तानिलापहा । ग्राहिणीसन्धिकृद्रुच्या तांखादेन्नातिमात्रया ॥ ७ ॥

सेवईकेसाधन और गुण ॥

जौके समान मैदाकी अत्यन्त पतली बत्तियोंको बनाकर धूपमें सुखावे फिर उनको दूधमें पकाकर घृत शर्करा मिलाकर खाय सेवई. तृप्तिकारक, बलकारी, भारी, वातपित्तनाशक, ग्राही, टूटेको जोडनेवाली और रुचिकारक होती हैं इनको अधिक न खाय ॥ ७ ॥

अथ मण्डा ॥

गोधूमाधवलाधौताः कुट्टिताःशोषितास्ततः । प्रोक्षितायन्त्रनिष्पिष्टाश्चालिताः समितास्मृताः ॥ वारिणाकोमलांकृत्वा समितांसाधुमर्दयेत् । हस्ततलालनयातस्या लोप्त्रींसम्यक्प्रसारयेत् ॥ अधोमुखघटस्यैतद् विस्तृतंप्रक्षिपेद्बहिः । मृदुनावह्निनासाध्यः सिद्धो मण्डकउच्यते (लोप्त्रीलोइ इतिलोके) दुग्धेनसाज्यखण्डेन मण्डकंभक्षयेन्नरः । अथवासिद्धमांसेन सतक्रवटकेनवा ॥ मण्डकोबृंहणोवृष्यो बल्योरुचिकरोभृशम् । पाकेऽपि मधुरोग्राही लघुर्दोषत्रयापहः ॥ ८ ॥

मण्डेके साधन और गुण ॥

धवल धोयेहुए कूटेहुए और सुखायेहुए गेहुओंको पीसकर चालनेसे समिता (मैदा) कहलातीहै ...को जलसे सानकर खूब उसने और हाथोंसे उसकी लोईको खूबफैलावे उस फैलीहुई लोईको औंधेघडेके ऊपरडाले फिर मन्दाग्निसे उसको पकावे इसपकीहुई रोटीको मण्डा कहतेहैं मण्डेको दूध घी तथा खांडके साथ अथवा मांस और दही बडेके साथ खाय तो धातुओंकी पुष्टता वीर्यकी वृद्धि और रुचि होतीहै मण्डा. पाकमें मधुर, ग्राही, हलका और त्रिदोषनाशक होताहै ॥ ८ ॥

अथ पूरीकुत्रापिदुनौरी इतिच ॥

कुर्य्यात्समितयाऽतीवतन्वीपर्प्पटिकाततः । स्वेदयेत्तप्तकेतान्तुपोलिकांजगदुर्बुधाः ॥ तांखादेल्लप्सिकायुक्तां तस्यामण्डकवद्गुणाः । तप्तकं तवा इतिलोके ॥ ९ ॥

पूरीकासाधन और गुण ॥

मैदेकी बहुत पतली पपडीको तवेके ऊपर पकावे यह पोलिका कहलातीहै इसको हलुएके संग खाय इसमें मण्डेके समान गुण होते हैं ॥ ९ ॥

अथ प्रसंगाल्लप्सी ॥

समितांसर्पिषाभृष्टां शर्करांपयसिक्षिपेत् । तस्मिन्घनीकृतेन्यस्येल्लवङ्गमरिचादिकम् ॥ सिद्धैषालप्सिकाख्याता गुणास्तस्यावदाम्यहम् । लप्सिकाबृंहणीवृष्या बल्यापित्तानिलापहा ॥ स्निग्धाश्लेष्मकरीगुर्वी रोचनीतर्पणीपरम् ॥ १० ॥

लप्सीका साधन और गुण ॥

घृतमें भूनीहुई मैदाको शक्कर समेत दूधमें छोडे और औटनेसे गाढ़होजानेपर लौंग और मिर्च

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आदिक छो. यह पकीहुई लप्सी कहलाती है लप्सी. धातु और वीर्यवर्द्धक, बलकारी, वातपित्त-नाशक, स्निग्ध, कफकारी, भारी और रुचि तथा तृप्तिकारी होती है ॥ १० ॥

अथ रोटी ॥

शुष्कगोधूमचूर्णेन किञ्चित्पुष्टाञ्चपोलिकाम् । तप्तकेस्वेदयेत्कृत्वा भूयर्यङ्गारेऽपितांपचेत्॥ सिद्धैषारोटिकाप्रोक्ता गुणांस्तस्याः प्रचक्ष्महे । रोटिकाबलकृद्रुच्या बृंहणीधातुवर्द्धनी॥ वातघ्नीकफकृद्गुर्वी दीप्ताग्नीनांप्रपूजिता ॥ ११ ॥

रोटीका साधन और गुण ॥

सूखे गेहुओंके आटेकी रोटी बनाकर तवेपर सेंककर फिर अङ्गारोंपर सेंके इसको रोटिका (रोटी) कहते हैं रोटी. बल तथा रुचिकारक, पोषक, धातुवर्द्धक, वातनाशक, कफकारी, भारी और दीप्ताग्नियोंको हितकारी होतीहै ॥ ११ ॥

अथ वाटी ॥

शुष्कगोधूमचूर्णंतु साम्बुगाढंविमर्द्दयेत् । विधायवटकाकारं निर्धूमेऽग्नौशनैःपचेत् ॥ अङ्गारकर्कटीह्येषाबृंहणीशुक्रलालघुः । दीपनीकफकृद् बल्यापीनसश्वासकासजित् १२॥

बाटीका साधन और गुण

सूखे गेहुओंके आटेको जलसे कडा उसनकर बटिकाकार बाटी बनावे इनको निर्धूम अग्नि में धीरे २ पकावे इसको अङ्गारकर्कटी कहते हैं यह धातुवर्द्धक, वीर्यवर्द्धक, हलकी, दीपन, कफकारक, बलकारी और पीनस, श्वास तथा खांसीनाशक होतीहै ॥ १२ ॥

अथ यवरोटी ॥

यवजारोटिकारुच्यामधुराविशदालघुः । मलशुक्रानिलकरीबल्याहान्तिकफामयान् । पीनसश्वासकासांश्चमेदोमेहगलामयान् ॥ १३ ॥

जौकीरोटीके गुण ॥

जौकीरोटी. रुचिकारी, मधुर, विशद, हलकी, मलवर्द्धक, वीर्यकारक, बादी, बलिष्ठ और कफरोग, पीनस, श्वास, खांसी, मेद, प्रमेह तथा गलेके रोगोंकी नाशक होतीहै ॥ १३ ॥

अथ माषरोटिका ॥

चूर्णंयच्छुष्कमाषाणां चमसीसाभिधीयते । चमसीरचितारोटी कथ्यतेबलभद्रिका ॥ रूक्षोष्णावातलाबल्या दीप्ताग्नीनांप्रपूजिता । माषाणांदालयस्तोये स्थापितास्त्यक्तकञ्चुकाः ॥ आतपेशोषितायन्त्रे पिष्टास्ताधूमसीस्मृता । धूमसीरचिताचैव प्रोक्ताझर्झरिका बुधैः ॥ झर्झरीकफपित्तघ्नी किञ्चिद्वातकरीस्मृता ॥ १४ ॥

उर्दकी रोटीके गुण ॥

सूखे उर्दोंके आटेको चौंसी कहते हैं चौंसीकी रोटीको बलभद्रिका कहते हैं यह रूखी, उष्ण, बादी बलकारी और दीप्ताग्नियोंको हित होतीहै उर्दोंकी दाल पानीमें भिगोकर छिलकेको निकालकर धूपमें सुखाके पीसीहुई धूमसी कहलातीहै धूमसीकी रोटीको झर्झरिका कहते हैं यह कफपित्तनाशक और कुछ बादी होतीहै ॥ १४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ चणकरोटिका ॥

चणक्यारोटिकारूक्षाश्लेष्मपित्तास्रनुद्गुरुः । विष्टम्भिनीनचक्षुष्यातद्गुणाचातिशष्कुली ॥ १५ ॥

चनेकी रोटीके गुण ॥

चनेकी रोटी. रूखी, कफ तथा रक्त पित्त नाशक, भारी, विष्टम्भी और नेत्रों को अहित होती है तिल की रोटी में भी इसीके समान गुण होते हैं ॥ १५ ॥

अथ पिष्टिका ॥

दालिः संस्थापितातोयेततोऽपहतकञ्चुका । शिलायांसाधुसम्पिष्टा पिष्टिकाकथितावुधैः ॥ १६ ॥

पिट्ठी का लक्षण ॥

दालको जलमें भिजोकर छिल्के निकालके शिल पर पीसने से पिष्टिका कहलाती है ॥ १६ ॥

अथ बेढ़ई ॥

माषपिष्टिकयापूर्णगर्भागोधूमचूर्णतः । रचितारोटिकासैव प्रोक्तावेढमिकाबुधैः ॥ ...वेढमिकाबल्या वृष्यारुच्याऽनिलापहा । ऊष्मसन्तर्पणीगुर्वी बृंहणीशुक्रलापरम् ॥ ...मलास्तन्यमेदःपित्तकफप्रदा । गुदकीलार्दितश्वासपङ्क्तिशूलानिनाशयेत् १७॥

बेढ़ईके गुण ॥

राजक्षा पिट्ठी से भरीहुई गेहूंकी रोटीको वेढमिका कहते हैं बेढ़ई. बलकारक, पुष्टता करने वाली, रुचिकारी, वातनाशक, उष्ण, तृप्तिकारक, भारी, धातुवर्द्धक, वीर्यवर्द्धक, मल सूत्रको भिन्न करने वाली, दुग्ध कारक, मेदवर्द्धक, कफ पित्तकारक और गुदकील, अर्दित, श्वास तथा परिणाम शूल नाशक होती है ॥ १७ ॥

अथ पापर ॥

धूमसीरचिताहिङ्गुहरिद्रालवणैर्युताः । जीरकस्वर्जिकाभ्याञ्चतनूकृत्यचवेल्लिताः ॥ मौद्गापर्प्पटास्तेसदाङ्गारभृष्टाःपरमरोचकाः । दीपनाःपाचनारूक्षागुरवःकिञ्चिदीरिताः ॥ चणकस्यगुणैर्युक्ताःपर्प्पटाश्चणकोद्भवाः स्नेहभृष्टाश्चतद्गुणाःप्रोक्ताविशेषाल्लघवोहिताः । स्तुतेसर्वेभवेयुर्मध्यमागुणैः ॥ १८ ॥

पापड़ की विधि ॥

हींग, हल्दी, लौंग, जीरा और सज्जी सहित धुआंस बहुत पतली करके वेली गई और अङ्गारोंपर भुनी गई इसको परपट कहते हैं पापड़. अत्यन्त रुचिकारी, दीपन, पाचन, रूखे और कुछ भारीहोते हैं मूंग के पापड़. बहुत हलके और इन्हीं के समान गुण वाले होते हैं चने के पापड़ों में चनेके समानगुण होते हैं और सम्पूर्ण पापड़. घृतादि में भूनेहुये गुणों में मध्यम होते हैं ॥ १८ ॥

अथ पूरी ॥

माषाणांपिष्टिकांयुञ्ज्याल्लवणार्द्रकहिङ्गुभिः । तयापिष्टिकयापूर्णासमिताकृतपोलिका ॥ ततस्तैलेनपक्वासापूरीकाकथिताबुधैः । रुच्यास्वाद्वीगुरुःस्निग्धाबल्यापित्तास्रदूषिका ॥ चक्षुस्तेजोहरीचोष्णापाकेवातविनाशिनी । तथैवघृतपक्वापिचक्षुष्यारक्तपित्तहृत् ॥ १९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूरीके गुण ॥

मैदामें. लौंग, अदरक और हींग समेत उर्दकी पीठीको भरकर बेली गई फिर तेल में पकाई गई पूरिका कहलाती है पूरी. रुचिकारक, सुस्वादु, भारी, स्निग्ध, बलवर्द्धक, रक्त पित्त कारक, पाकमें उष्ण-वात नाशक और दृष्टिको हरनेवाली होतीहैं घीकी पूरी. रक्त पित्त नाशक नेत्रोंको हित और इसीके समान गुणवाली होती है ॥ १६ ॥ अथ वरा ॥

माषाणांपिष्टिकायुक्तालवणार्द्रकहिङ्गुभिः । कृत्वाविदध्याद्वटकास्तांस्तैलेषुपचेच्छनैः ॥ विशुष्कावटकाबल्याबृंहणावीर्य्यवर्द्धनी ॥ वातामयहरारुच्याविशेषादर्दितापहा ॥ विबन्धभेदिनीश्लेष्मकारिणीऽत्यग्निपूजिता ॥ संचूर्ण्यनिक्षिपेत्तक्रेभृष्टजीरकहिङ्गुभिः। लवणंतत्रवटकान्सकलानपिमज्जयेत् ॥ शुक्लस्तत्रवटकोबलकृद्रोचनोगुरुः । विबन्धहृद्विदाहीचश्लेष्मलःपवनापहः ॥ राज्यक्तपातिनोवान्यान्पाचनांस्तांस्तुभक्षयेत् । राज्यक्ता राइताइतिलोके ॥ २० ॥

बडोंकी विधि ॥

उर्दकी पिट्ठी में. नोन, अदरक और हींग मिलाकर बडे बनावे और उनको तेलमें धीरे २ पकावे सूखे बडे. बलकारी, धातुवर्द्धक, वीर्यवर्द्धक, वातरोगनाशक, रुचिकारक, अर्दित तथा विबन्ध[illegible] कफकारी और तीक्ष्ण अग्निवालोंको हित होते हैं जीरा, हींग और नोन को मट्ठे में [illegible] अग्नि में उसमें बडे. भिजोवे यह बडे. वीर्यवर्द्धक, बल तथा रुचिकारी, भारी, विबन्धनाशक, विदाही, कफकारक, और वातनाशक होते हैं रायते के बडे अत्यन्त रुचिकारी और पाचक होते हैं यह खाने चाहि[illegible] ॥

अथ काञ्जीवरा ॥

मन्थनीनूतनाधार्य्याकटुतैलेनलेपिता । निर्मलेनाम्बुनापूर्य्यतस्यांचूर्णंविनिःक्षिपेत् ॥ राजिकाजीरलवणहिङ्गुशुण्ठीनिशाकृतम् । निःक्षिपेद्वटकांस्तत्रभाण्डस्यास्यञ्चमुद्रयेत् ॥ ततोदिनत्रयादूर्ध्वमम्लाःस्युर्वटकाध्रुवम् । काञ्जिकवटकोरुच्योवातघ्नःश्लेष्मकारकः ॥ शीतःदाहंशूलमजीर्णंहरतेदृगामयेष्वहितः ॥ २१ ॥

कांजीके बडोंकी विधि ॥

नवीन हांडीको कटु तेलसे लेपकर निर्म्मल जलसे भरे उसमें जीरा, राई, लौंग, हींग, सोंठ और हल्दी पीसकर छोंडे और इसमें बडोंको भिगोकर पात्र के मुखको बन्दकरदे फिर तीनदिन के उपरान्त बडे अवश्य खट्टे होजायँगे कांजीके बडे. रुचिकारक, वात नाशक, कफकारी और शूल, अजीर्ण तथा दाहनाशक होते हैं यह नेत्ररोग में हित नहीं होते हैं ॥ २१ ॥

झोर बड़ा ॥

अम्लिकांस्वेदयित्वातुजलेनसहमर्दयेत् । तन्नीरेकृतसंस्कारेवटकान्मज्जयेज्जनः ॥ अम्लिकावटकास्तेतुरुच्यावह्निप्रदीपनाः । वटकस्यगुणैःपूर्वैरेषोऽपिचसमन्वितः २२ ॥

इमलीके बडे ॥

इमली को जलमें भिगोकर मले और संस्कार युक्त उसी पानी में बडोंको भिगोवे इमली के बडे. रुचिकारी, दीपन और कांजीके बडों के समान गुणवाले होते हैं ॥ २२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ मूंगबरा ॥

मुद्गानांवटकास्तक्रेभर्जितालघवोहिमाः।संस्कारजप्रभावेनत्रिदोषशमनाहिताः २३ ॥

मूंगके बडे ॥

मट्ठे के साथ पकाये हुये मूंग के बडे. हलके, शीतल और संस्कार के प्रभाव से त्रिदोषनाशक तथा हितकारी होते हैं ॥ २३ ॥

अथ माषवटी ॥

माषाणांपिष्टिकाहिङ्गुलवणार्द्रकसंस्कृताः तयाविरचितावस्त्रेवटिकाःसाधुशोषिताः ॥ भर्जितास्तप्ततैलैस्ता अथवाम्बुप्रयोगतः। वटकस्यगुणैर्युक्ताज्ञातव्यारुचिदाभृशम् २४॥

उर्द्दकी बडियां ॥

हींग, नोन और अदरक समेत उर्द्द की पिट्ठीसे बडियां बनाकर वस्त्रपर अच्छेप्रकारसे सुखावे फिर उनको तेलमें भूनकर जलमें पकावे बडियोंमें बडोंकेही समान गुण होते हैं और यह अत्यन्त रुचिकारक होती हैं ॥ २४ ॥

अथ कोहडौरी ॥

कूष्माण्डकवटीज्ञेयापूर्वोक्तवटिकागुणाः। विशेषात्पित्तरक्तघ्नी लघ्वी चकथिताबुधैः २५ ॥

कुंभडौरीके गुण ॥

[illegible] बडियोंके समान गुण होतेहैं और यह विशेषकरके हलकी तथा रक्तपित्तनाशक होतीहै २५

अथ मुद्गवटी ॥

राजमाष[illegible] वटिकातद्वद्रचितासाधितातथा । पथ्यारुच्यातथालघ्वीमुद्गसूपगुणास्मृता २६ ॥

मूंगकी बडियां ॥

उर्द्दकी बडियोंके समान बनाईगई मूंगकी बडी. हित, पथ्य, रुचिकारक, हलकी और मूंगकी दालके समान गुणवाली होती हैं ॥ २६ ॥

अथ रिकवछ ॥

माषपिष्टिकयालिप्तंनागवल्लीदलंमहत् । तत्तुसंस्वेदयेद्युक्त्यास्थाल्यामास्तारकोपरि ॥ ततोनिष्काश्यतंखण्ड्यंततस्तैलेनभर्जयेत्। खण्ड्यंखण्डेनयोग्यमितियावत् ॥ अलीकमत्स्यउक्तोऽयंप्रकारःपाकपण्डितैः। तद्वृन्ताकभटित्रेणवास्तुकेनचभक्षयेत् २७॥

पानके सैंढेकी विधि ॥

बडे पानपर उर्द्दकी पिट्ठीको लपेटकर बटोही में कपडेपर रख युक्ति पूर्वक उबाले फिर निकालकर टुकडे करके तेल में भूने उसको पण्डित लोग अलीकमत्स्य कहतेहैं इसको बैंगनके भर्त्ते और बथुई के सागके सङ्ग खाय ॥ २७ ॥

अथकटी ॥

स्थाल्यांघृतेवातैलेवाहरिद्राहिङ्गुभर्जयेत्। अवलेहनसंयुक्तंतक्रन्तत्रैवनिक्षिपेत्॥ एषा सिद्धासमरिचाक्कथिताकथिताबुधैः। अवलेहनम् अरिहनइतिलोके । क्वथितापाचनी रुच्यालघ्वीवह्निप्रदीपनी ॥ कफानिलविबन्धघ्नीकिञ्चित्पित्तप्रकोपिणी । अलीकमत्स्याः शुष्कावाकिंवाक्कथितयापुनः ॥ बृंहणारोचनावृष्याबल्यावातगदापहाः । कोष्ठशुद्धिकराः शुक्त्याकिञ्चित्पित्तप्रकोपनाः ॥ अर्दितेसहनुस्तम्भेविशेषेणहिताःस्मृताः ॥ २८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कढ़ीकीविधि और गुण ॥

पात्रमें घृत अथवा तेल डालकर हल्दी और हींगको भूने फिर उसमें अरिहन वेसनआदि जिस चीजकीकढ़ी बनानीहो उससे मिलाहुआ मट्ठा छोड़े और निमक मिर्च डालकर पकावे उसको क्वथिता कहते हैं कढ़ी. पाचक, रुचिकारक, हलकी, दीपन, कफवातनाशक, विबन्धनाशक और कुछ पित्तकाकोप करनेवाली होतीहै सेंढे सूखे अथवा कढ़ी में भिगोयेहुए धातुवर्द्धक, रुचिकारक, वीर्य और बलवर्द्धक और वातनाशक होते हैं सूखे सेंढे. कोष्ठको शुद्ध करनेवाले और अर्दित तथा जाबड़ोंके जकड़ने में विशेष करके हितकारी होतेहैं और कुछ पित्तको कुपित करते हैं ॥ २८ ॥

अथ अदवरा ॥

मुद्गपिष्ठाविरचितान्वटांस्तैलेनपाचितान् । हस्तेनचूर्णयेत्सम्यक्तस्मिंश्चूर्णेविनिःक्षिपेत् । भृष्टंहिङ्ग्वार्द्रकंसूक्ष्मंमरीचंजीरकंतथा ॥ निम्बूरसंजवानींचयुक्त्यासर्वंविमिश्रयेत् । मुद्गपिष्टिंपचेत्सम्यक्स्थाल्यामास्तारकोपरि । तस्यास्तुगोलकंकुर्यात्तन्मध्येपूरणंक्षिपेत् ॥ तैलेतान्गोलकान्पक्त्वाक्वथितायांनिमज्जयेत् । गोलकाःपाचकाःप्रोक्तास्तेत्वार्द्रकवटाअपि । मुद्गार्द्रकवटारुच्यालघवोबलकारकाः । दीपनास्तर्पणाः[illegible]षुदोषेषुपूजिताः ॥ २९ ॥

अदवरा मूंगकी डुबकी की विधि ॥

तेलमें पकेहुए मूंगके बड़ोंको चूर्ण करके उसमें भुनी हींग, अदरक, मिर्च, जीरा, नींबूकारस, [illegible] और अजवाइन मिलावे और मूंगकी पीठीको किसी पात्रमें रख अच्छीतरह पकाले उसके गोले पूर्वोक्त मसालेसमेत मूंगकेचूर्णको भरकरतेलमेंपकावे फिर इनगोलोंको कढ़ीमें भिगोवे इनको आर्द्र[illegible] बड़ा कहते हैं यह रुचिकारक, हलके, बलकारी, दीपन, तृप्तिकारक, पथ्य और त्रिदोषमें हित होतेहैं २९ ॥

अथ पकोरी ॥

दालयश्चणकानान्तुनिस्तुषायन्त्रपेषिताः । तच्चूर्णंवेशनंप्रोक्तंपाकशास्त्रविशारदैः ॥ वटिकावेशनस्यापिक्वथितायांनिमर्जिताः । रुच्याविष्टम्भजननीबल्यापुष्टिकरीस्मृता ॥ एवमन्येऽपिवेशनभवाःप्रकाराःखण्डनखण्डप्रभृतयोबोद्धव्याः ॥ ३० ॥

पकौड़ी की विधि और गुण ॥

बिन छिलकेकी पिसीहुई चनेकी दालको बेशन कहतेहैं कढ़ीमें भिगोईहुई बेशनकी पकौड़ी. रुचिकारक, विष्टम्भी, बलवर्द्धक और पुष्टिकारक होतीहै इसीप्रकार औरभी बेशनके बनेहुए खण्ड आदिक पदार्थ जानने चाहिये ॥ ३० ॥

अथ मांसस्यप्रकारास्तच्छुद्धमांसंसुधवासुइतिलोके ॥

पाकपात्रेघृतंदद्यात्तैलञ्चतदभावतः । तत्रहिङ्गुहरिद्रांचभर्जयेत्तदनन्तरम् ॥ छागादेरस्थिरहितंमांसंतत्खण्डितंध्रुवम् । धौतंनिर्गालितंतस्मिन्घृतेतद्भर्जयेच्छनैः ॥ सिद्धयोग्यंजलंदत्त्वालवणन्तुपचेत्ततः सिद्धेजलेनसम्पिष्यवेशवारंपरिक्षिपेत् ॥ वेशवारःवेगर इतिलोके । द्रव्याणिवेशवारस्यनागवल्लीदलानिच । तण्डुलाश्चलवंगानिमरिचानिसमा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सतः ॥ अनेनविधिनासिद्धंशुद्धंमांसमितिस्मृतम् ॥ शुद्धमांसंपरंवृष्यंबल्यं च्यञ्चबृंहणम् । त्रिदोषशमकंश्रेष्ठंदीपनंधातुवर्द्धनम् ॥ ३१ ॥

मांस के प्रकार शुद्ध मांस (सुधवास) की विधि और गुण ॥

पकाने के पात्र में घृत अथवा अभाव में तेल डाल कर उसमें हींग और हल्दीको भूने फिर अस्थिरहित बकरे आदिके मांस को टुकडे २ करके और धोके साफ कर उसी घृतमें धीरे२भूने फिर उसमें परिपाक के अनुमान जल और निमक डाले पकजाने पर जल से पीसकर बेसवार (पान चावल लौंग और मिर्च यह संक्षेप विधिहै) डाले इस प्रकार से बनेहुए मांस को शुद्धमांस कहते हैं यह अत्यन्त वीर्यवर्द्धक, बलकारी, रुचिकारक, पोषक, त्रिदोषनाशक, दीपन और धातुवर्द्धक होताहै ॥ ३१ ॥

अथ सेहुडक । सहवासु इति लोके ॥

छागादेर्मांसमूर्वादेःकुट्टितंखण्डितंपुनः। शुद्धमांसविधानेनपचेदेतत्सहार्द्रकम् ॥ सहार्द्रकंगुणैर्ग्रन्थेशुद्धमांसगुणंस्मृतम् ॥ ३२ ॥

सेहुडक (सहवासु) की विधि और गुण ॥

बकरे आदि की जङ्घा आदिकों का मांस कूटकरके काटा गया और शुद्धमांस की विधिसे पकाया [illegible]र्द्रक कहाताहै इसमें शुद्धमांस के समान गुण होते हैं ॥ ३२ ॥

अथ अखनी ॥

[illegible]घृतंदत्त्वाहरिद्राहिङ्गुभर्जयेत्। छागादेस्सकलस्यापिखण्डान्यपिच भर्जयेत् ॥ [illegible]याग्यंजलंदत्त्वापचेन्मृदुतरंयथा । जीरकादियुतेतक्रेमांसखण्डानितारयेत् ॥ तक्र[illegible]ांसन्तुवातघ्नंलघुरुच्यंबलप्रदम् । कफघ्नंपित्तलंकिञ्चित्सर्वाहारस्यपाचनम् ॥ तक्रमांसम् अखनीइतिलोके ॥ ३३ ॥

अखनी की विधि और गुण ॥

पकाने के पात्र में घृत डालकर हल्दी और हींग को भूने फिर उसी में बकरी आदिके मांस के टुकडों को भूने इसके उपरान्त परिपाक के अनुसार धीमी अग्निमें पकावे फिर जीरा आदि मसालोंसे युक्त मठे में उन मांस के टुकडों को छोडे इसको तक्रमांस कहते हैं यह वातनाशक, हलका, रुचिकारी, बलिष्ठ, कफनाशक, कछु पित्तवर्द्धक और सम्पूर्ण भोजन के पदार्थों का पचानेवाला होताहै ॥ ३२ ॥

अथ आस ॥

पाकपात्रेतुबृहतीमांसखण्डानिनिःक्षिपेत्। पानीयंप्रचुरंसर्पिःप्रभूतंहिङ्गुजीरकम् ॥ हरिद्रामार्द्रकंशुण्ठीलवणंमरिचानिच । तण्डुलांश्चापिगोधूमान्जम्बीराणांरसान्बहून् ॥ यथासर्वाणिवस्तूनिसुपक्वानिभवन्तिहि । तथापचेत्तुनिपुणोबहुमांसंक्षितिर्यथा ॥ एषाहरीसाबलकृद्वातपित्तापहागुरुः । शीतोष्णाशुक्रदास्निग्धासरासंधानकारिणी ॥ ३४ ॥

आसकी विधि और गुण ॥

पकाने के बडे पात्र में मांस के टुकडे डाले उसमें अधिक जल, घी, हींग, जीरा, हल्दी, अदरक, सोंठ, निमक, मिरच, चांवल, गेहूं और जंभीरी नींबूका रस यह सब वस्तु डाले इन सब वस्तुओंको अच्छे प्रकार से पकावे फिर जब मांड के समान होजाय तब उतारे इसको हरीसा कहते हैं हरीसा बलकारी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वात पित्तना[illegible]क, भारी, शीतोष्ण, वीर्यवर्द्धक, स्निग्ध, दस्तावर और टूटे हुये को जोडने वाली होती है ॥ ३४ ॥

अथ तलितमांसम् ॥

शुद्धमांसविधानेनमांसंसम्यक्प्रसाधितम् । पुनस्तदाज्येसम्भृष्टंतलितंप्रोच्यतेबुधैः ॥ तलितंबलमेधाग्निमांसौजःशुक्रवृद्धिकृत् । तर्पणंलघुसुस्निग्धरोचनंदृढताकरम् ॥ ३५ ॥

तले हुये मांसकी विधि और गुण ॥

शुद्धमांस की रीति से पके हुये मांसको फिर घीमें भूने यह तलित कहलाताहै तला हुआ मांस बल, मेधा, अग्नि, मांस, ओज तथा वीर्यवर्द्धक, तृप्तिकारक, हलका, स्निग्ध, रुचिकारी और पुष्टि कारक होता है ॥ ३५ ॥

अथ सींख ॥

कालखण्डादिमांसानिग्रन्थितानिशलाकया । घृतंसलवणंदत्त्वानिर्धूमेदहनेपचेत् ॥ तत्तुशूल्यमिदंप्रोक्तंपाककर्मविचक्षणैः । शूल्यंपलंसुधातुल्यंरुच्यंवह्निकरंलघु ॥ कफ वातहरंबल्यंकिञ्चित्पित्तकरंहितम् ॥ ३६ ॥

सींककी विधि और गुण ॥

बकरे आदिके यकृत् आदिके मांसको घी और निमक मिलाकर शलाकामें पोवै फिर धूमरहित अग्नि में पकावे इसको शूल्य कहतेहैं यह अमृतके तुल्य रुचिकारी, अग्निवर्द्धक, हलका, कफ, वातन[illegible] कुछ पित्तवर्द्धक होताहै ॥ ३६ ॥

मांस शृङ्गाटकम् ॥

शुद्धमांसंतनूकृत्यकर्त्तितंस्वेदितंजले । लवङ्गहिङ्गुलवणमरिचार्द्रकसंयुतम् ॥ जीरकधान्याकनिम्बूरससमन्वितम् । घृतेसुगन्धेतद्भृष्टंमांसंशृङ्गाटकोच्यते ॥ मांस[illegible] ङ्गाटकंरुच्यंबृंहणंबलकृद्गुरु । वातपित्तहरंवृष्यंकफघ्नंवीर्यवर्द्धनम् ॥ ३७ ॥

मांस शृङ्गाटककीविधि और गुण ॥

शुद्धमांसके सूक्ष्म टुकडे करके जलमें उबाले फिर लौंग, हींग, निमक, मिर्च, अदरक, इलायची, जीरा, धनियां और नींबूके रसको मिलाके और सुगन्धित घृत में भूने यह पूरण कहलाता है मैदा के बनेहुए सिंघाडे में पूरनभरके फिर घृत में भूननेसे मांस शृंगाटक कहलाता है यह रुचिकारक, धातुवर्द्धक, बलकारी, भारी, वात पित्त नाशक, पुष्टिकारक, कफघ्न और वीर्यवर्द्धक होता है ॥ ३७ ॥

अथ मांसरसा ॥

सिद्धमांसरसोरुच्यःश्रमश्वासक्षयापहः । प्रीणनोवातपित्तघ्नः क्षीणानामल्परेतसाम् ॥ विश्लिष्टभग्नसन्धीनांशुद्धानांशुद्धिकाङ्क्षिणाम् । स्मृत्योजोबलहीनानांज्वरक्षीणक्षतोरसाम् ॥ शस्यतेस्वरहीनानांदृष्टय्रायुःश्रवणार्थिनाम् । प्रकाराःकथिताःसन्तिबहवोमांससम्भवाः ॥ ग्रन्थविस्तारभीतिस्तेमयानात्रप्रकीर्त्तिताः ॥ ३८ ॥

मांसके रसके गुण ॥

पकेहुए मांसका रस रुचिकारी, प्रसन्नताकारक और श्रम, श्वास, क्षय, वात तथा पित्तनाशक होता है यह क्षीण, अल्पवीर्यवाले, भग्नहुई संधिवाले, वमनादिकों से शुद्ध अथवा शुद्धताके चाहने वाले, स्मरण तथा ओजरहित, निर्बल, ज्वर से क्षीण, उरक्षत रोगयुक्त, स्वरहीन और दृष्टि, श्रवण,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शक्ति तथा आयुके चाहने वालोंको श्रेष्ठ होताहै मांसके बहुत से प्रकार प्राचीन लोगोंने कहेहैं परन्तु ग्रन्थ के विस्तारके भयसे मैंने यहां नहीं लिखे हैं ॥ ३८ ॥

शाकपाकविधिः ॥

हिङ्गुजीरयुतेतैलेक्षिपेच्छाकंसुखण्डितम् । लवणंचाम्लचूर्णादिसिद्धेहिङ्गूदकंक्षिपेत् ॥ इत्येवंसर्वशाकानांसाधनोऽभिहितोविधिः ॥ ३९ ॥

शाक बनाने की विधि ॥

शाकको टुकडे २ करके हींग और जीरायुक्त तेलमें छोडे फिर पकजानेपर निमक अमचूर आदिक मसाले और हींगयुक्तजल छोडे यह संपूर्ण शाकोंके बनानेकी विधि कही गई है ॥ ३९ ॥

तत्र मण्ठकंमाठइतिलोके ॥

समितांमर्दयेदन्यज्जलेनापिचसन्नयेत् । तस्यास्तुवटिकांकृत्वापचेत्सर्पिषिनीरसम् ॥ एलालवंगकर्पूरमरीचाद्यैरलंकृते । मज्जयित्वासितापाकेततस्तञ्चसमुद्धरेत् ॥ अयं प्रकारःसंसिद्धोमठइत्यभिधीयते । सन्नयेत्मर्दयेत् ॥ मठस्तुबृंहणोवृष्योबल्यःसुमधुरो [illegible] पित्तानिलहरोरुच्योदीप्ताग्नीनांसुपूजितः ॥ समिताःशर्करासर्पिर्निर्मिताअपरेऽ [illegible] काराअमुनातुल्यास्तेऽपिचेत्तद्गुणाःस्मृताः ॥ ४० ॥

पक्वान्नबनाने के प्रकार मांठ (बालूसाई) की विधि और गुण ॥

[illegible] पहले मैदाको घीसे मले फिर जलसे उसने उसकी बटिका बनाकर विना जलके घृतमें पकावे फिर इलायची लौंग कपूर और मिर्च आदि मसाल्लोंसे युक्त शक्करके पागमें भिगोकर निकाले इसको मंड (बालूसाई) कहते हैं यह धातुवर्द्धक, वीर्यवर्द्धक, बलकारी, सुन्दर, मधुर, भारी, वात पित्त नाशक, रुचिकारक और दीप्ताग्नि पुरुषोंको हित होतेहैं मैदा शक्कर और घृतके द्वारा इसी प्रकार बनेहुए अन्य पदार्थों में भी इसी प्रकारके गुण होतेहैं ॥ ४० ॥

अथ संयावपेराक ॥

पर्प्पट्यःसाज्यसमितानिर्मिताघृतभर्जिताः । कुट्टिताश्चालिताःशुद्धशर्कराभिर्विमर्द्दिताः ॥ तत्रचूर्णंक्षिपेदेलालवङ्गमरिचानिच । नालिकेरंसकर्पूरञ्चारवीजान्यनेकधा ॥ घृतक्तसमितापुष्टरोटिकारचितातततः । तस्यान्तःपूरणंतस्यकुर्य्यान्मुद्रांदृढांसुधीः ॥ सर्पिषि प्रचुरेतान्तुसुपचेन्निपुणोजनः । प्रकारज्ञैःप्रकारोऽयंसंयावइतिकीर्त्तितः ॥ ४१ ॥

पिराक गूंझा की विधि ॥

घृतयुक्त मैदाकी रोटी को घीमें सेके फिर उसको कूटकर छानले उसमें सफेद शक्कर मिला के इलायची, लौंग, मिर्च, नारियलकीगिरी, कपूर और चारदाना आदिक मसाले छोडे फिर घृतयुक्त मैदाके पुष्टरोट बनावे उसमें पहले कहेहुए पूरको भरकर दृढतासे उसके मुखको बन्दकरके गोठन लगादे फिर बहुतसे घीमें उसको अच्छे प्रकार से पकावे इसको संयाव (गूंझा) कहतेहैं इसमें माठके समान गुण होतेहैं ॥ ४१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ कर्पूरनालिका ॥

घृताढ्ययासमितयालम्बंकृत्वापुटंततः । लवङ्गोल्बणकर्पूरयुतयासितयाऽन्वितम् ॥ पचेदाज्येनसिद्धैषाज्ञेयाकर्पूरनालिका । संयावसदृशीज्ञेयागुणैःकर्पूरनालिका ॥ ४२ ॥

कर्पूर नालिकी विधि ॥

घृतयुक्त मैदासे लम्बा दोनासा बनाकर उसमें लौंग, मिर्च और कर्पूर युक्त शक्कर भरकर घृतमें पकावे इसको कर्पूरनालिका कहतेहैं इसमें पिराक के समान गुण होतेहैं ॥ ४२ ॥

फेनिका फेनी ॥

समितायाघृताढ्यायावर्त्तिर्दीर्घांसमाचरेत् । तास्तुसन्निहितादीर्घाःपीठस्योपरिधारयेत् ॥ वेल्लयेद्वेल्लनेनैतायथैकापर्प्पटीभवेत् । ततश्छुरिकयातान्तुसलग्नामेवकर्त्तयेत् ॥ ततस्तुवेल्लयेद्भूयःशट्टकेनचलेपयेत् । शालिचूर्णघृतंतोयंमिश्रितंशट्टकंवदेत् ॥ ततः संवृत्यतल्लोप्त्रींविदधीतपृथक्पृथक् । पुनस्तांवेल्लयेल्लोप्त्रींयथास्यान्मण्डलाकृतिः॥ ततस्तांसुपचेदाज्येभवेयुश्चपुटाःस्फुटाः । सुगन्धयाशर्करयातदुद्धूलनमाचरेत् ॥ सिद्धैषाफेनिकानाम्नीमण्डकेनसमागुणैः । ततःकिञ्चिल्लघुरियंविशेषोऽयमुदाहतः ॥ प्रसारयेत्वेल्लनः वेलनइतिलोके ॥ पर्प्पटीरोटी । लोप्त्रींलोईइतिलोके ॥ ४३

फेनी की विधि ॥

घृतयुक्त मैदाकी लम्बी बत्ती बनावे फिर उनको निकट रखकर बेलनसे बेले फिर एकरोटी सी [illegible] जानेपर चक्कूसे मिलीहुई को चीरे इसके पीछे (शट्टक) चावलों का आटा घी और जल (यह तीनो मिलेहुये शट्टक कहलातेहैं) को उस पर लेपकरके फिर उन चिरीहुई पट्टियोंको लपेटकर अलग २ करले और उनको मण्डलाकार बनाके बेले और घीमें पकाले तब तार २ अलग होजायँगे इसको सुगन्धि युक्त शक्कर में लपेटे यह फेनिका कहलती है इसमें मांठ (बालूसाई) के समान गुण होते हैं और विशेष करके कुछ हलकापन भी होताहै ॥ ४३ ॥

अथ शष्कुलीसोहाली इतिलोके ॥

समितायाघृताक्तायालोप्त्रींकृत्वाचवेल्लयेत् । आज्येतांभर्जयेत्सिद्धांशष्कुलीफेनिकागुणा ॥ ४४ ॥

सुहालीकी विधि ॥

घृतयुक्त मैदाकी लोईको बेलकर घीमें पकानेसे शष्कुलीकहलातीहै इसमें फेनीकेसमानगुण होतेहैं ४४

अथ सेवीकामोदकसेवकालाडू ॥

घृताढ्ययासमितयाकृत्वासूत्राणितानितु । निपुणोभर्जयेदाज्येखण्डपाकेनयोजयेत् ॥ युक्तेनमोदकान्कुर्य्यात्तेगुणैर्मण्डकायथा ॥ ४५ ॥

सेवके लड्डुओंकी विधि ॥

घृत युक्त मैदाके सूत्रोंको घीमें पकाकर फिर खांडके पाकमें लड्डू बनावे इन में मांठके समान गुण होते हैं ॥ ४५॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ मुक्तामोदका मोतिलाडू ॥

मुद्गानांधूमसींसम्यग् घोलयेन्निर्मलाऽम्बुना। कटाहस्थघृतस्योर्ध्वं झर्झरंस्थापयेत्ततः॥ धूमसीन्तुद्रवीभूतां प्रक्षिपेद् झर्झरोपरि। पतन्तिबिंदवस्तस्मात्तान्सुपक्कान्समुद्धरेत्॥ सितापाकेनसंयोज्य कुर्य्याद्धस्तेनमोदकान् ॥ झर्झरंझर्झराइतिलोके। लघुर्ग्राहीत्रिदोषघ्नःस्वादुःशीतोरुचिप्रदः॥ चक्षुष्योज्वरहृद्बल्यस्तर्पणोमुद्गमोदकः ॥ ४६ ॥

मूंगके मोतीचूरके लड्डू ॥

मूंगकी धुआंसको स्वच्छ जल में घोलै फिर घीसे भरीहुई कढ़ाई के किनारे पर रक्खे हुए झरने में उसको छोडे उससे बुंदें गिरती हैं उनको पकाकर निकालले फिर शक्कर के पाक में उनके लड्डू बनाले मूंगके लड्डू हलके, ग्राही, त्रिदोषनाशक, मधुर, शीतल, रुचिकारी, नेत्रोंकोहित, ज्वरघ्न, बलकारी और तृप्तिकारक होतेहैं ॥ ४६ ॥

अथ वेशनमोदकः। सेवका लडुआ ॥

एवमेवप्रकारेण कार्य्यावेशनमोदकाः । तेबल्यालघवःशीताःकिञ्चिद्वातकरास्तथा ॥ ...नोज्वरघ्नाश्च पित्तरक्तकफापहाः ॥ ४७ ॥

बेशन की बूंदीके लड्डू ॥

...लड्डू भी मूंगकेही लड्डुओंके समान करने चाहिये यह. बलकारक, हलके, शीतल, कुछ ...विष्टम्भी और ज्वर, रक्तपित्त तथा कफनाशक होते हैं ॥ ४७ ॥

दुग्धकूपिका ॥

तण्डुलचूर्णविमिश्रितनष्टक्षीरेणसान्द्रपिष्टेन । दृढकूपिकांविदध्यात्ताञ्चपचेत्सर्पिषा सम्यक् ॥ अथतांकोरितमध्यांघनपयसापूर्णगर्भाञ्च । शङ्कमुद्रितवदनांसर्पिषिसपक्कव दनाञ्च ॥ अथपाण्डुखण्डपाकेस्नापयेत्कर्पूरवासितेकुशलः । अथदुग्धकूपिकासाबल्या पित्तानिलापहा ॥ वृष्याशीतागुर्वीशुक्रकरीबृंहणीरुच्या । विदधातिकायपुष्टिंदृष्टिंदूर प्रसारिणींसुचिरम् ॥ ४८ ॥ दुग्धकूपिका की विधि और गुण ॥

फटे दूधमें चावल के आटे को मिलाके उसको अच्छेप्रकार से पीसले फिर उसकी दृढ़ कुप्पी बनाकर घीमें अच्छी तरह सेंकले इसके उपरान्त इसमें गाढ़ा दूध भरके ऊपर कहेहुए फटेदूध में पीसेहुए चावलके चूरेसे उसके मुखको बंदकरके घीमें पकाले फिर उसे कपूरयुक्त श्वेत शक्करकी चासनी में पागले उसको दुग्धकूपिका कहते हैं यह. बलकारक, वातपित्तनाशक, शीतल, भारी, वीर्य-वर्द्धक, तृप्ति तथा रुचिकारी शरीर को पुष्ट करनेवाली और दृष्टिवर्द्धक होती है ॥ ४८ ॥

कुण्डलिनीजलेबी ॥

नूतनंघटमानीयतस्यान्तःकुशलोजनः । प्रस्थार्द्धपरिमाणेनदध्नाऽम्लेनप्रलेपयेत् ॥ द्विप्रस्थांसमितांतत्रदध्यम्लंप्रस्थसम्मितम् । घृतमर्द्धशरावञ्चघोलयित्वाघृतेक्षिपेत् ॥ आतपेस्थापयेत्तावद्यावद्यातितदम्लताम् । ततस्तत्प्रक्षिपेत्पात्रेसच्छिद्रेभाजनेतुतत् ॥ परिभ्राम्यपरिभ्राम्यतत्तन्तप्तेघृतेक्षिपेत्। पुनःपुनस्तदावृत्त्याविदध्यान्मण्डलाकृतिम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तांसुपक्कांघृतान्नीत्वासितापाकेतनुद्रवे । कर्पूरादिसुगन्धञ्चस्नापयित्वोद्धरेत्ततः ॥ एषा कुण्डलिनीनाम्नापुष्टिकान्तिबलप्रदा । धातुवृद्धिकरीवृष्यारुच्याचक्षिप्रतर्पणी ॥ ४९ ॥

जलेबी की विधि और गुण ॥

नवीन घटलाकर उसमें आधसेर खट्टे दहीका लेपकरे फिर दोसेर मैदा एकसेर खट्टादही और पावभर घी घोलकर उसमें छोडे यह छोडकर जबतक खट्टा न होजाय तबतक धूपमें रक्खे फिर उसको छिद्रयुक्त पात्रमें लेकर तपेहुए घीमें वारंवार घुमा २ कर मण्डलाकार बनाकर पकजाने पर कर्पूरादिकोंसे सुगन्धित शक्करकी चासनी में डुबोवे इसको कुण्डलिनी कहते हैं यह.पुष्टिकारक,कान्तिवर्द्धक,बलिष्ट धातु तथा वीर्यवर्द्धक, रुचिकारी और इन्द्रियोंको तृप्ति करनेवाली होतीहै ॥ ४९ ॥

अथ पश्चात्परिवेश्याणि सिखरिणी ॥

आर्दौमाहिषमम्लमम्बुरहितंदध्याढकंशर्करां शुभ्रांप्रस्थयुगोन्मितांशुचिपटेकिञ्चिञ्चकिञ्चित्क्षिपेत् । दुग्धेनार्द्धघटेनमृन्मयनवस्थाल्यांदृढंस्रावयेदेलाबीजलवङ्गचन्द्रमरिचैर्योग्यैश्चतद्योजयेत् ॥ भीमेनप्रियभोजनेनरचितानाम्नारसालास्वयं श्रीकृष्णेनपुरापुनःपुनरियंप्रीत्यासमास्वादिता ॥ एषायेनवसन्तवर्जितदिनेसंसेव्यतेनित्यशस्तस्य स्यादतिवीर्य्यवृद्धिरनिशंसर्वेन्द्रियाणांबलम् ॥ ग्रीष्मेतथाशरदियेरविशोषि[illegible] अग्नि में चप्रमत्तवनितासुरतातिखिन्नाः । येचापिमार्गपरिसर्पणशीर्णगात्रास्तेषामियं[illegible] कफक्षुरक, णमाशुकुर्य्यात् ॥ रसालाशुक्रलाबल्यारोचिनीवातपित्तजित् । दीपिनीबृंहणी[illegible] [illegible]॥ धुराशिशिरासरा । रक्तपित्तंतृषांदाहंप्रतिश्यायंविनाशयेत् ॥ ५० ॥

भोजन के पीछे परोसने की वस्तु । शिखरन की विधि और गुण ॥

पहले जलरहित भैंसके १६ सेर खट्टे दही और आठसेर शक्करको श्वेतवस्त्र में थोडी २ छोडे फिर आधे घडे दूध से नये मृत्तिकाके पात्र में छानलेवे और इसमें यथायोग्य इलायची, लौंग, कपूर और मिर्च डाले यह भोजन प्रिय भीमसेन से बनाई गई रसाला कहलाती है पूर्वकाल में श्रीकृष्णजीने प्रीतिपूर्वक वारंवार इसका स्वादु लियाथा जो मनुष्य वसन्तऋतुको छोडकर नित्य इसका सेवन करते हैं उनके अत्यन्त वीर्यकी वृद्धि और इन्द्रियों में बल होताहै जो मनुष्य ग्रीष्म तथा शरदृतुकी धूपसे अत्यन्त संतप्त अथवा मदोन्मत्त स्त्रियोंके साथ भोग करने से अत्यन्त खिन्न और मार्ग में चलने से जिनके अंग शिथिल होगये हैं उनके शरीर में यह शिखरन अत्यन्त शीघ्र पुष्टता को करतीहै शिखरन. वीर्यवर्द्धक, बलकारी, रुचिकारी, वातपित्तनाशक, दीपन, धातुवर्द्धक,स्निग्ध, मधुर,शीतल, दस्तावर और रक्तपित्त,तृषा,दाह तथा पीनसनाशक होती है ॥ ५० ॥

शर्करोदकशर्बत ॥

जलेनशीतलेनैवघोलिताशुभ्रशर्करा । एलालवङ्गकर्पूरमरिचैश्चसमन्विता ॥ शर्करोदकनाम्नातत्प्रसिद्धंविदुषांमुखे । शर्करोदकमाख्यातंशुक्रलंशिशिरंसरम् ॥ बल्यं रुच्यंलघुस्वादुवातपित्तप्रणाशनम् । मूर्च्छाछर्दितृषादाहज्वरशान्तिकरम्परम् ॥ ५१ ॥

शर्बत की विधि और गुण ॥

शीतल जलसे श्वेत शक्कर को घोलके इसमें इलायची, लौंग, कपूर और मिर्च मिलावे इसको

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शर्करोदक कहते हैं शर्बत. वीर्यवर्द्धक, शीतल, दस्तावर, बलिष्ठ, रुचिकारक, हलका, मधुर, वातघ्न, रक्तपित्तनाशक और मूर्च्छा, छर्दि, तृषा, दाह तथा ज्वर के नाश करने में श्रेष्ठ होताहै ॥ ५१ ॥

अथ प्रपानकंपन्ना ॥

तत्रआम्रफलप्रपानकम् ॥ आम्रमामंजलेस्विन्नंमर्दितंदृढपाणिना । सिताशीताम्बुसंयुक्तंकर्पूरमरिचान्वितम् ॥ प्रपानकमिदंश्रेष्ठंभीमसेनेननिर्मितम् । सद्योरुचिकरंबल्यंशीघ्रमिन्द्रियतर्पणम् ॥ ५२ ॥ पन्नाकीविधि ॥ आमकापन्ना ॥

कच्चे आमको पानीमें उबालकर हाथसे खूबमले फिर उसमें शक्कर, शीतल जल, कपूर और मिर्च मिलावे यह भीमसेनका बनायाहुआ पन्ना बहुत श्रेष्ठ होताहै आमका पन्ना. शीघ्र रुचिकारक, बलकारी और शीघ्र इन्द्रियों को तृप्तकरनेवाला होताहै ॥ ५२ ॥

अथाम्लिकाफलपानकम् ॥

अम्लिकायाःफलंपक्कंमर्दितंवारिणादृढम् । शर्करामरिचैर्मिश्रंलवङ्गेन्दुसुवासितम् ॥ अम्लिकाफलसम्भूतंपानकंवातनाशनम् । पित्तश्लेष्मकरंकिञ्चित् सुरुच्यं वह्निबोधनम् ॥ ५३ ॥ इमलीकापन्ना ॥

[illegible]मलीको जलमें मलकर शक्कर मिर्च लौंग और कपूर मिलावे यह इम्लीका पन्ना. वात-[illegible]ठ कफपित्तनाशक, अत्यन्त रुचिकारी और दीपन होताहै ॥ ५३ ॥

निम्बूकफलपानकम् ॥

भागैकंनिम्बुजंतोयंषड्भागंशर्करोदकम् । लवङ्गमरिचैर्मिश्रंपानंपानकमुत्तमम् ॥ निम्बूफलभवंपानमत्यम्लंवातनाशनम् । वह्निदीप्तिकरंरुच्यंसमस्ताहारपाचकम् ॥ ५४ ॥

नींबूकापन्ना ॥

एकभाग नींबूकारस और छः भाग शर्बत मिलाकर लौंग और मिर्च छोड़े नींबूका पन्ना. बहुत खट्टा, वातनाशक, दीपन, रुचिकारक और संपूर्ण आहारका पचानेवाला होता है ॥ ५४ ॥

धान्याकपानकम् ॥

शिलायांसाधुसम्पिष्टंधान्याकंवस्त्रगालितम् । शर्करोदकसंयुक्तंकर्पूरादिसुसंस्कृतम् ॥ नूतनेमृन्मयेपात्रेस्थितंपित्तहरंपरम् ॥ ५५ ॥

धनियेकापन्ना ॥

शिलपर अच्छे प्रकार से धनियेको पीसकर शर्बत मिलाके वस्त्रमें छाने फिर कपूर आदिक सुगन्धित वस्तु मिलाके मृत्तिका के नवीन पात्रमें रक्खे यह पन्ना पित्तका अत्यन्तनाशक होताहै ५५॥

अथ काञ्जी ॥

काञ्जीविधिर्वटकावसरेलिखितः काञ्जीकंरोचनंरुच्यंपाचनंवह्निदीपनम् । शूलजीर्णविबन्धघ्नंकोष्ठशुद्धिकरंपरम् ॥ नभवेत्तुकाञ्जिकंयत्रतत्रजालिःप्रदीयते ॥ ५६ ॥

कांजीके गुण ॥

कांजी बनानेकी विधि बड़ोंके साथमें लिखी गई है कांजी. रुचियुक्त और अन्यवस्तुमें भी रुचिका-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रक, पाचक, दीपन, कोष्ठ शोधक और शूल, अजीर्ण तथा विबन्धनाशक होतीहै जहां कांजी न मिले वहां जालि का व्यवहार करते हैं ॥ ५६ ॥

अथ जारी ॥

आममाम्रफलंपिष्टंराजिकालवणान्वितम् । भृष्टहिंगुयुतंपूतंघोलितंजालिरुच्यते ॥ जालिर्हरतिजिह्वायाःकुण्ठत्वंकण्ठशोधनी।मन्दमन्दन्तुपीतासारोचिनीवह्निबोधिनी ५७

जालीकी विधि ॥

कच्चे आमको पीसकर उसमें राई, नोन और भूनीहींग मिलाकर घोले इसको जाली कहते हैं यह. जिह्वाकी खुजलीकी नाशक, कण्ठशोधक और थोडी २ पीनेसे रुचिकारी तथा दीपन होती है ५७

अथ तक्रम् ॥

तुर्य्यांशेनजलेनसंयुतमतिस्थूलंसदम्लंदधि प्रायोमाहिषमम्बुकेनविमलेमृद्भाजनेगालयेत् । भृष्टंहिंगुचजीरकञ्चलवणंराजीञ्चकिञ्चिन्मितां पिष्टान्तत्रविमिश्रयेद्भवतितत्तक्रंनकस्यप्रियम् ॥ तक्रंरुचिकरंवह्निदीपनंपाचनंपरम् । उदरेयेगदास्तेषांनाशनंतृप्तिकारकम् ॥ ५८ ॥

मट्ठेकीविधि और गुण ॥

चौथाई जल से युक्त बहुत गाढ़े भैंसके खट्टे दहीको निर्मल मृत्तिकाके पात्रमें मथकर ... अग्नि में ... जीरा, नोन और राई पीसकर मिलावे यह मट्ठा सबको प्रिय होताहै मट्ठा.रुचिकारक, दीपन कफकारक, पाचक, तृप्तिकारक और उदरके संपूर्ण रोगोंका नाशक होताहै ॥ ५८ ॥

अथ दुग्धम् ॥

विदाहीन्यन्नपानानियानिभुङ्क्तेहिमानवः । तद्विदाहप्रशान्त्यर्थंभोजनान्तेपयःपिबेत् ॥ दुग्धस्यापरेगुणाउक्ताएवदुग्धवर्गे॥ ५९ ॥ दूध ॥

मनुष्य जिन दाहकारी वस्तुओंको भोजन करताहै उनके दाहके शान्त करनेको भोजनके अन्तमें दूध पीनाचाहिये दूधके और सबगुण दुग्धवर्ग में कहेगयेहैं ॥ ५९ ॥

अथ सक्तवः ॥

धान्यानिभ्राष्ट्रभृष्टानियन्त्रपिष्टानिसक्तवः ६० (तत्रयवसक्तवः) यवजाःसक्तवःशीतादीपनालघवःसराः । कफपित्तहरारूक्षालेखनाश्चप्रकीर्त्तिताः ॥ तेपीताबलदावृष्याबृंहणाभेदनास्तथा । तर्पणामधुरारुच्याःपरिणामेबलापहाः ॥ कफपित्तश्रमक्षुत्तृड्व्रणनेत्रामयापहाः । प्रशस्ताघर्मदाहाध्वव्यायामार्त्तशरीरिणाम् ॥ ६१ ॥

सत्तुओंकी विधि ॥

भाडमें भुनेहुए और पिसेहुए धान्यको सक्तु कहते हैं ६० (जौकेसत्तू) जौके सत्तू. शीतल, दीपन, हलके, दस्तावर, कफपित्तनाशक, रूखे और लेखन होते हैं पान कियेहुये सत्तू. बलकारी, वीर्य तथा धातुवर्द्धक, दस्तावर, तृप्तिकारक, मधुर, रुचिकारी, परिणाममें बलकारक और कफ, पित्त, श्रम, क्षुधा, तृषा, घाव तथा नेत्ररोगनाशक होते हैं यह धूप, दाह, मार्ग तथा व्यायाम से पीडित शरीरवालों को उपकारी होते हैं ॥ ६१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चणकयव सक्तवः ॥

निस्तुषैश्चणकैर्भृष्टैस्तुर्य्यांशैश्चयवैःकृताः।सक्तवःशर्करासर्पिर्युक्ताग्रीष्मेतिपूजिताः ६२

जौचने के सत्तू ॥

विनाछिलके के भूनेहुये चने और समभाग जौके सत्तू घी शक्करसे मिलेहुये ग्रीष्मऋतु में अत्यन्त उपकारी होते हैं ॥ ६२ ॥

शालिसक्तवः ॥

सक्तवःशालिसम्भूतावह्निदालघवोहिमाः । मधुराग्राहिणीरुच्यथापथ्याश्चबलशुक्रदाः ॥ नभुक्त्वानरदैश्छित्त्वाननिशायांनवाबहून् । नजलान्तरितान्नद्विःसक्तूनाद्यान्नकेवलान् ॥ पृथक्पानंपुनर्दानमामिषंपयसानिशि। दन्तच्छेदनमुष्णञ्चसप्तसक्तुषुवर्जयेत् ६३

चावल के सत्तू ॥

चावलके सत्तू.दीपन, हलके,शीतल,मधुर, ग्राही,रुचिकारक, पथ्य और बलवीर्यदायक होते हैं भोजनके अन्त में दांतों से चबाकर रात्रि के समय बहुत जलरहित अथवा केवल जल से सत्तू न ...तुओं के साथ अलग जल न पिये एकबार सत्तू खाकर फिर दियेहुये सत्तू न खाय मांस सहित ... रात्रि के समय दांतों से काटकर और उष्ण सत्तू वर्जितहैं ॥ ६३ ॥

अथ बहुरी ॥

...यवास्तुनिस्तुषाभृष्टाःस्मृताधानाइतिस्त्रियाम् । धानाःस्युर्दुर्जरारूक्षास्तृट्प्रदागुरवश्चताः ॥ तथामेहकफच्छर्दिनाशिन्यःसम्प्रकीर्तिताः ॥ ६४ ॥

बौहरी की विधि और गुण ॥

भूसीरहित भुने हुये जवों को बौहरी कहते हैं बौहरी. कठिनतासे पचनेवाली,रूखी, तृषानाशक, भारी और प्रमेह, कफ तथा छर्दिनाशक होतीहै ॥ ६४ ॥

अथ लाजा ॥

येषांस्युस्तण्डुलास्तानिधान्यानिसतुषाणिच । भृष्टानिस्फुटितान्याहुर्लाजानितिमनीषिणः ॥ लाजाःस्युर्मधुराःशीतालघवोदीपनाश्चते । स्वल्पमूत्रमलारूक्षाबल्याःपित्तकफच्छिदः ॥ छर्द्यतीसारदाहास्रमेहमेदस्तृषापहाः ॥ ६५ ॥

खीलोंकी विधि और गुण ॥

जिन धान्योंसे चावल निकलते हैं उनको भूसी समेत भूनने पर फूल कर जो वस्तु तैयार होतीहै उसे लाजा (खील) कहते हैं खील.मधुर,शीतल, हलकी,दीपन, स्वल्प मल मूत्रकारी,रूखी,बलकारी और पित्त, कफ, छर्दि, अतीसार,दाह,रक्त दोष,प्रमेह,मेद तथा तृषानाशक होतीहै ॥ ६५ ॥

अथ चिड़वा ॥

शालयःसतुषाआर्द्राभृष्टाअस्फुटिताश्चतत् । कुट्टिताश्चिपिटाःप्रोक्तास्तेस्मृताःपृथुकाअपि ॥ पृथुकागुरवोवातनाशनाःश्लेष्मलाअपि । सक्षीराबृंहणावृष्याबल्याभिन्नमलाश्चते ॥ ६६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चिडओं की विधि और गुण ॥

छिलके सहित भिगोयेहुये धान्य भूनेगये और विना खिलेहुये कूटे गये चिपिट और पृथुक(चिड़वे) कहलाते हैं चिड़वे. भारी वातनाशक और कफकारी होते हैं दूध सहित चिड़वे धातु तथा वीर्यवर्द्धक बलकारी और मल भेदक होते हैं ॥ ६६ ॥

अथ होलकः ॥

अर्द्धपक्वैःशमीधान्यैस्तृणभृष्टैश्चहोलकः।होलकोऽल्पानिलोमेदःकफदोषत्रयापहः॥ भवेद्योहोलकोयस्यसचतत्तद्गुणोभवेत् ॥ ६७॥

होलोंकी विधि और गुण ॥

आधे पकेहुए चने आदिक शमीधान्य तृण से भूनेहुए होलक (होले) कहलाते हैं होले. कुछ बादी और मेद, कफ तथा त्रिदोषनाशक होते हैं जिस शमीधान्य का होला होता है उसी के समान गुण होताहै ॥ ६७

अथ ऊंबी ॥

मञ्जरीत्वर्द्धपक्वाया यवगोधूमयोर्भवेत् । तृणानलेनसंभृष्टा बुधैरूम्बीतिसास्मृता ॥ (उमियाइतिलोके) ऊंबीकफप्रदाबल्यालघ्वीपित्तानिलापहा ॥ ६८ ॥

ऊंबीकी विधि और गुण ॥

जो और गेहूं की आधी पकीहुई बाली तृणकी अग्नि से भूनी हुई ऊंबी कहातीहै यह ... अग्नि में कफकारक, वर्द्धक, बलकारी, हलकी और वात पित्तनाशक होती है ॥ ६८ ॥

अथ घुघुरी ॥

अर्द्धस्विन्नास्तुगोधूमाअन्येऽपिचणकादयः । कुल्माषाइतिकथ्यन्तेशब्दशास्त्रेषुपण्डितैः ॥ कुल्माषागुरवोरूक्षावातलाभिन्नवर्चसः ॥ ६९ ॥

घुघुरी की विधि और गुण ॥

आधे भीगेहुये गेहूं तथा चने आदिक अनाज को कुल्माष (घुघुरी) कहते हैं घुघुरी.भारी, रूखी, बादी और मलभेदक होतीहै ॥ ६९ ॥

अथ तिलकुट ॥

पललन्तमस्माख्यातंसैक्षवन्तिलपिष्टकम् । पललंमलकृद्वृष्यंवातघ्नंकफपित्तकृत् ॥ बृंहणञ्चगुरुस्निग्धंमूत्राधिक्यनिवर्त्तकम् ॥ ७० ॥

तिलकुटकी विधि और गुण ॥

गुड आदिकों से युक्त कुटेहुये तिलोंको पलल (तिलकुट) कहतेहैं पलल. मलवर्द्धक, वीर्यकारक, वातघ्न,कफ,पित्तकारी, धातुवर्द्धक, भारी, स्निग्ध और मूत्रको स्वल्प करनेवाला होताहै ॥ ७० ॥

अथ पीना ॥

तिलकिट्टन्तुपिण्याकतथातिलखलिःस्मृता॥पिण्याकोलेखनोरूक्षोविष्टम्भीदृष्टिदूषणः ७१

खलीके गुण ॥

तिलके फोकको पिण्याक और तिलखलि बोलते हैं खली. लेखन,रूखी, विष्टम्भी और दृष्टिदूषक होती है ॥ ७१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ चाउर ॥

तण्डुलोमेहजन्तुघ्नःसनवस्त्वतिदुर्जरः ॥ ७२ ॥

इतिश्री भावप्रकाशेकृतान्नवर्गः ॥

चावलों के गुण ॥

चावल प्रमेह तथा कृमिनाशक और नये चावल अत्यन्त कठिनतासे पचनेवाले होते हैं ७२ ॥

इति श्रीभावप्रकाशस्य भाषानुवादे कृतान्नवर्गः समाप्तः ॥

अथ वारिवर्गः । तत्रपानीयनामानिगुणाश्च ॥

पानीयंसलिलंनीरंकीलालञ्जलमम्बुच। आपोवार्वारिकन्तोयंपयःपाथस्तथोदकम् ॥ जीवनंवनमम्भोऽर्णोऽमृतंघनरसोऽपिच । पानीयंश्रमनाशनंक्लमहरंमूर्च्छापिपासापहं तन्द्राछर्दिविबन्धहद्बलकरंनिद्राहरंतर्पणम् । हृद्यंगुप्तरसंह्यजीर्णशमकंनित्यंहितंशीतलं लघ्वच्छंरसकारणंनिगदितंपीयूषवज्जीविनाम् ॥ १ ॥

अथ वारिवर्गः ॥ पानीके नाम गुण ॥

...य, सलिल, नीर, कीलाल, जल, अम्बु, अप्, वार, तोय, पयस्, पाथ, उदक, जीवन, वन, ... अमृत और घनरस यह पानी के नाम हैं पानी. श्रम, ग्लानि, मूर्च्छा, तृषा, तन्द्रा, छर्दि, ... निद्रानाशक, बलवर्द्धक, तृप्तिकारी, हृदयको हित, अप्रकटरस, अजीर्णनाशक, सदैव ...शीतल, हलका, रसोंकाकारण और प्राणियों को अमृतके समान कहाहै ॥ १ ॥

तस्यभेदाः ॥

पानीयंमुनिभिःप्रोक्तंदिव्यंभौममितिद्विधा ॥ दिव्यंचतुर्विधंप्रोक्तंधाराजंकरकाभवम् ॥ तौषारञ्चतथाहैमन्तेषुधारंगुणाधिकम् ॥ २

पानीके भेद ॥

मुनिलोगोंने दिव्य और भौम दोप्रकारका जल कहाहै इसमें से दिव्य जल चारप्रकारकाहै धारा का ओलोंका ओसका और बरफका ॥ २ ॥

तत्रधारस्य लक्षणं गुणाश्च ॥

धाराभिःपतितंतोयंगृहीतंस्फीतवाससा। शिलायांवासुधायांवाधौतायांपतितञ्चतत् ॥ भाजनेसृन्मयेवापिस्थापितंधारमुच्यते ॥ धारं सौवर्णेराजतेताम्रेस्फाटिकेकाचनिर्मिते। त्रिदोषघ्नमनिर्देश्यरसंलघु। सौम्यंरसायनंबल्यंतर्पणंह्लादिजीवनम् ॥ पाचनंमति नीरंत्रिदोषघ्नमनिर्देश्यरसंलघु। सौम्यंरसायनंबल्यंतर्पणंह्लादिजीवनम् ॥ पाचनंमति कृन्मूर्च्छातन्द्रादाहश्रमक्लमान् । तृष्णांहरतिनात्यर्थंविशेषात्प्रावृषिस्थितम् ॥ ३ ॥

धारा के जलके लक्षण और गुण ॥

धाराओंसे गिराहुआ सुन्दर वस्त्र, शिला तथा पृथ्वीमें पडाहुआ सुवर्ण, चाँदी, तांबा, स्फटिक, काच अथवा मृत्तिका के पात्रमें रक्खागया धाराका जल कहलाताहै धाराका जल. त्रिदोषनाशक, गुप्तरस, हलका, सौम्य, रसायन, बलकारी, तृप्तिकारक, आनन्ददायक, जीवनरूप, पाचक, बुद्धिवर्द्धक और मूर्च्छा, तन्द्रा, दाह, श्रम, ग्लानि तथा तृषानाशक होताहै यह वर्षाऋतुमें विशेष हितकारी होता है ॥ ३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्मृतम् ॥ जांगलंसलिलंरूक्षं लवणंलघुपित्तनुत् । वह्निकृत्कफकृत्पथ्यं विकारान्हरते बहून् ॥ आनूपंवार्य्यभिष्यन्दिस्वादुस्निग्धंघनंगुरु । वह्निकृत्कफकृद्धृद्यंविकारान्हरते बहून ॥ साधारणन्तुमधुरंदीपनंशीतलंलघु । तर्पणंरोचनंतृष्णांदाहदोषत्रयप्रणुत् ११॥

इनके लक्षण और गुण ॥

जिसदेश में थोड़ाजल थोड़े वृक्ष और रक्तपित्त का कोपहो उसको जाङ्गल कहते हैं और वहां के जल को जाङ्गल जल कहते हैं जिस देश में बहुत जल बहुत वृक्ष और कफ वातके रोगहों उसको अनूप कहते हैं और वहां के जल को आनूप कहते हैं जिस देशमें इनदोनोंके लक्षण मिलतेहों उसको साधारण और वहां के जलको साधारण जल कहते हैं जाङ्गल जल. रूखा,नमकीन,हलका,पित्तघ्न, अग्निवर्द्धक,कफकारी,पथ्य और बहुत विकारों का नाशक होता है आनूपजल. अभिष्यन्दी, मधुर, स्निग्ध, गाढ़ा, भारी, अग्निवर्द्धक, कफकारी,हृदय को हित और बहुत से रोगों का नाशक होता है साधारण जल.मधुर,दीपन, शीतल, हलका,पित्त और रुचिकारक और दाह तृषा तथा त्रिदोषनाशक होता है ॥ ११ ॥

अथ भौमानामेवनादेयादीनां लक्षणानिगुणाश्च ॥

तत्र नादेयस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

नद्यानदस्यवानीरंनादेयमितिकीर्तितम् । नादेयमुदकंरूक्षंवातलंलघुदीपनं कफकृत्-भिष्यन्दिविशदंकटुकंकफपित्तनुत् । नद्यःशीघ्रवहालघ्व्यःसर्वायाश्चामलोदकाः ॥ गुर्व्यःशैवलसञ्छन्नामन्दगाःकलुषाश्चयाः । हिमवत्प्रभवाःपथ्यानद्योऽश्माहतपाथसः ॥ गंगाशतद्रूसरयूयमुनाद्यागुणोत्तमाः । सह्यशैलभवानद्योवेणागोदावरीमुखाः ॥ कुर्वन्ति प्रायशःकुष्ठमीषद्वातकफावहाः ॥ नदीसरस्तडागस्थेकूपप्रस्रवणादिजे । उदकेदेशभेदेन गुणान्दोषांश्चलक्षयेत् ॥ १२ ॥

भूमिसंबन्धी नदीआदिके जलोंके लक्षण गुण ॥

नादेयके लक्षण और गुण ॥

नदी अथवा नद के जलको नादेय कहते हैं यह.रूखा,बादी,हलका,दीपन,अभिष्यन्दरहित,विशद, कटु और कफ पित्तनाशक होताहै जिन नदियों का जल. निर्मल, प्रबलप्रवाहवाला होताहै वह हलकाहै मंद प्रवाह शिवार ढकीहुई और गंदले जलवाली नदियोंका जल. भारी होताहै हिमालय से उत्पन्न पाषाणों से टकराये हुए जलवाली गङ्गा सतलज सरयू और यमुनाका जल. पथ्य तथा उत्तम गुणवाला होताहै सह्य पर्वत से उत्पन्न वेणा और गोदावरी आदिक नदियों का जल पुष्ट और कुछ कफ तथा वात को उत्पन्न करता है नदी सरोवर कूप और झरना आदि के जल के दोष गुण देशके भेदसे जाननेचाहिये ॥ १२ ॥

अथौद्भिदस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

विदार्य्यभूमिंनिम्नांयमहत्याधारयास्रवेत् । तत्तोयमौद्भिदंनामवदन्तीतिमहर्षयः ॥ औद्भिदंवारिपित्तघ्नमविदाह्यतिशीतलम् । प्रीणनंमधुरंबल्यमीषद्वातकरंलघु ॥ १३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

औद्भिज जलके लक्षण और गुण ॥

पृथ्वीको खोदकर गहरे स्थानसे जो जल बडी धाराके साथ निकलताहै उसको औद्भिज कहतेहैं यह.पित्तनाशक, विदाह रहित, अत्यन्त शीतल, प्रसन्नताकारक, मधुर, बलकारी, कुछ बादी और हलका होताहै ॥ १३ ॥

नैर्झरस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

शैलसानुस्रवद्वारिप्रवाहेनिर्झरोझरः । सतुप्रस्रवणश्चापितत्रत्यंनैर्झरंजलम् ॥ नैर्झरंरुचिकृन्नीरंकफघ्नंदीपनंलघु । मधुरंकटुपाकञ्चवातंस्यादपित्तलम् ॥ १४ ॥

झरने के जलके लक्षण और गुण ॥

पर्वत के शिखरसे निकले हुये जल के प्रवाहको निर्झरझर तथा प्रस्रवण और उसके जलको नैर्झर कहतेहैं झरने का जल.रुचिकारी, कफघ्न, दीपन, हलका, मधुर, पाकमें कटु, बादी और पित्तनाशक होताहै ॥ १४ ॥

अथ सारसस्य लक्षणंगुणाश्च ॥

नद्याःशैलादिरुद्धायायत्रसंश्रुत्यतिष्ठति । तत्सरोजलसञ्छन्नंतदम्भःसारसंस्मृतम् ॥ सारसंसलिलंबल्यंतृष्णाघ्नंमधुरंलघु । रोचनन्तुवरंरूक्षंबद्धमूत्रमलंस्मृतम् ॥ १५ ॥

सारसजलके लक्षण व गुण ॥

[illegible]पादिसे रुकीहुई नदीका जल जिस स्थानमें ठहरताहै उस जलसे युक्त स्थानको सर और [illegible] को सारस कहतेहैं सरोवर का जल.बलकारी, तृषानाशक, मधुर, हलका, रुचिकारी, कषैला, [illegible] मलमूत्र रोधक होताहै ॥ १५ ॥

अथ ताडागस्य लक्षणं गुणाश्च ॥

प्रशस्तभूमिभागस्थोबहुसंवत्सरोषितः । जलाशयस्तडागःस्यात्ताडागंतज्जलंस्मृतम् ॥ ताडागमुदकंस्वादुकषायंकटुपाकिच । वातलंबद्धविण्मूत्रमसृक्पित्तकफापहम् १६ ॥

तडाग के जलका लक्षण और गुण ॥

बहुत दिनसे उत्तम पृथ्वी के भागमें स्थित बडे जलाशयको तडाग और वहां के जलको ताडाग कहतेहैं तडागका जल.मधुर, कषैला, पाकमेंकटु, बादी, मलमूत्र रोधक और रक्तपित्त तथा कफका नाशक होताहै ॥ १६ ॥

वाप्यलक्षणंगुणाश्च ॥

पाषाणैरिष्टकाभिर्वाबद्धःकूपोबृहत्तरः । ससोपानाभवेद्वापीतज्जलंवाप्यमुच्यते ॥ वाप्यंवारियदिक्षारंपित्तकृत्कफवातहृत् । तदेवमिष्टंकफकृत्वातपित्तहरंभवेत् ॥ १७ ॥

बावडी के जलका लक्षण और गुण ॥

पाषाण अथवा ईंटोंसे बंधेहुये सीढ़ियों समेत बडे कुएंको वापी और उसके जलको वाप्य कहते हैं बावडीका जल.खारी होय तो पित्तवर्द्धक तथा कफवात नाशक और मधुर होय तो कफकारी तथा वात पित्त नाशक होताहै ॥ १७ ॥

अथ कौपस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

भूमौखातोऽल्पविस्तारोगम्भीरोमण्डलाकृतिः।बद्धोऽबद्धःसकूपःस्यात्तदम्भःकौपमुच्यते ॥ कौपंपयोयदिस्वादुत्रिदोषघ्नंहितंलघु । तत्क्षारंकफवातघ्नंदीपनंपित्तकृत्परम् ॥ १८ ॥

कुएंके जलका लक्षण और गुण ॥

पृथ्वीमें खुदे हुये थोडे विस्तारवाले गोलाकार गम्भीर ईंट आदि से बँधे हुये अथवा विना बँधेहुये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जलाशयको कूप और वहाँके जलको कौप कहतेहैं कुएंका जल जो मधुर होय तो त्रिदोषनाशक हितकारी तथा हलका और खारी होय तो कफ वातनाशक दीपन तथा अत्यन्त पित्तवर्द्धक होताहै ॥१८॥

अथ चौण्ड्यस्यलक्षणं गुणाश्च ॥

शिलाकीर्णस्वयंश्वभ्रंनीलाञ्जनसमोदकम्। लतावितानसञ्छन्नंचौण्ड्यमित्यभिधीयते॥ अश्मादिभिरबद्धंयत्तच्चौण्ड्यमितिवापरे। तत्रत्यमुदकंचौण्ड्यमुनिभिस्तदुदाहृतम् ॥ चौण्ड्यवह्निकरंनीरंरूक्षंकफहरंलघु। मधुरंपित्तनुद्रुच्यंपाचनंविशदंस्मृतम् ॥ १९ ॥

चौंड्य जलके लक्षण और गुण ॥

चारोंओर शिलाओंसे घिराहुआ लताओंके समूहोंसे आच्छादित स्वच्छ और नीलवर्णजलसे युक्त स्वयं उत्पन्न हुआ जलाशय चुंड कहलाताहै और उसके जलको चौंड्य कहतेहैं कोई कोई लोग जो शिलाओंसे बँधा हुआ नहो उसको चुंड कहतेहैं चुंडकाजल. दीपन, रूखा, कफनाशक, हलका, मधुर, पित्तघ्न, रुचिकारी, पाचक और विशद होताहै ॥ १९ ॥

अथ पल्वलस्य लक्षणं गुणाश्च ॥

अल्पंसरःपल्वलंस्याद्यत्रचन्द्रर्क्षगेरवौ। रवौसूर्येचन्द्रर्क्षगेकर्कराशिस्थेऽ[illegible] इतियावत् ॥ चन्द्रर्क्षंमृगशिरस्तत्रगेमुख्यपाठः। नतिष्ठतिजलंकिञ्चित्तत्रत्यं[illegible] अग्नि में कफकृत्गुरुक, म् ॥ पाल्वलंवार्य्यभिष्यन्दिगुरुस्वादुत्रिदोषकृत् ॥ २० ॥ [illegible] ॥

पल्वल का लक्षण और गुण ॥

जिस छोटे सरोवरमें वर्षा ऋतु में कुछ जलरहै और फिर क्रमसे सूखजाय उसको पल्वल और उ[illegible] के जलको पाल्वल कहतेहैं पल्वल का जल. अभिष्यन्दी, भारी, मधुर और त्रिदोषकारी होताहै ॥२०॥

अथ विकिरस्यजलस्य लक्षणं गुणाश्च ॥

नद्यादिनिकटेभूमिर्याभवेद्बालुकामयी। उद्धाव्यतेततोयत्तुतज्जलंविकिरंविदुः ॥ विकिरंशीतलंस्वच्छंनिर्दोषंलघुचस्मृतम्। तुवरंस्वादुपित्तघ्नंक्षारंतत्पित्तलंमनाक् ॥ २१ ॥

विकिरजल का लक्षण और गुण ॥

नदीके आदि किनारे बालुका समेत पृथ्वी से जो जल निकाला जाताहै उसको विकिर (चोआ) कहतेहैं यह शीतल, स्वच्छ, दोषरहित, हलका, मधुर, कषैला तथा पित्तनाशक और खारी होय तो कुछ पित्तवर्द्धक होताहै ॥ २१ ॥

अथ कैदारस्यजलस्यलक्षणं गुणाश्च ॥

केदारंक्षेत्रमुद्दिष्टंकैदारंतज्जलंस्मृतम्। कैदारंवार्य्यभिष्यन्दिमधुरंगुरुदोषकृत् २२

खेतके जलका लक्षण और गुण ॥

खेत को केदार और उसके जल को कैदार कहतेहैं यह. अभिष्यन्दी, भारी, मधुर और दोषकारी होताहै ॥ २२ ॥

अथ वृष्टिजलस्य लक्षणं गुणाश्च ॥

वार्षिकंतदहर्दृष्टंभूमिस्थमहितंजलम्। त्रिरात्रमुषितंतत्तुप्रसन्नममृतोपमम् ॥ २३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वर्षा के जल के लक्षण और गुण ॥

उसी दिन का बरसा हुआ भूमि में स्थित [कीचडयुक्त] बर्साती जल अहितकारी होताहै परन्तु तीन दिनका बासी निर्मल वह जल अमृत समान होताहै ॥ २३ ॥

अथ हेमन्तादिकालविरोधेविहितजलविशेषः ॥

हेमन्तेसारसन्तोयंताडागंवाहितंस्मृतम् । हेमन्तेविहितंतोयंशिशिरेऽपिप्रशस्यते ॥ वसन्तग्रीष्मयोःकौपं वाप्यंवानैर्झरंजलम् । नादेयंवारिनादेयंवसन्तग्रीष्मयोर्बुधैः ॥ विषवद्वनवृक्षाणां पत्राद्यैर्दूषितंयतः । औद्भिदंवांतरीक्षंवा कौपंवाप्राग्विस्मृतम् ॥ शस्तं शरदिनादेयं नीरमंशूदकंपरम् । दिवारविकरैर्जुष्टं निशिशीतकरांशुभिः ॥ ज्ञेयमंशूदकनाम स्निग्धंदोषत्रयापहम् । अनभिष्यंदिनिर्दोषमांतरीक्षंजलोपमम् ॥ बल्यंरसायनंमेध्यं शीतंलघुसुधासमम् । रविकरैर्जुष्टमित्युक्ते दिवापदं समस्तदिवसप्राप्त्यर्थं शीतकरांशुभिर्जुष्टमित्युक्ते निशीतिपदं समस्तरात्रिप्राप्त्यर्थम् अन्यच्च शरदि, स्वच्छमुदयाद[illegible]स्त्यस्याखिलं हितम् । वृद्धसुश्रुतस्तु ॥ पौषेवारिसरोजातं माघेतत्तुतडागजम् । फा[illegible]म्भतं चैत्रेचौण्ड्यंहितंमतम् ॥ वैशाखेनैर्झरंनीरं ज्येष्ठेशस्तन्तथौद्भिदम् । आ[illegible] कौपं श्रावणेदिव्यमेवच ॥ भाद्रेकौप्यंपयःशस्तमाश्विनेचौण्ड्यमेवच । [illegible]शीर्षेच जलमात्रं प्रशस्यते ॥ २४ ॥

[illegible]

हेमन्तादि ऋतुओं में विहित जलविशेष ॥

हेमन्त और शिशिरऋतु में सरोवर अथवा तडाग का जल हितकारी होता है वसन्त और [illegible]ष्मऋतु में कुआँ बावडी अथवा झरनेका जल हित होताहै और इन्हीं ऋतुओं में नदीका जल कभी ग्रहण न करना चाहिये क्योंकि उससमय विषयुक्त वनके पत्रादिकों से जल दूषित होजाताहै वर्षाकाल में औद्भिज आन्तरिक्ष और कुएंका जल हितकारी है शरदृऋतु में नदी का जल और अंशूदक विशेष हितकारी है जो जल दिनभर सूर्य्य की किरणों से तपाहुआ और रात्रिभर चन्द्रमा की किरणोंसे युक्तहुआ वह अंशूदक कहलाताहै अंशूदक. स्निग्ध,त्रिदोषनाशक,अभिष्यन्दरहित, निर्दोष, आन्तरिक्ष जलके समान उपकारी, बलकारी,रसायन,मेदाको हित,शीतल, हलका और अमृत के समान गुणकारी होता है कोई २ कहतेहैं कि शरदृऋतु में अगस्त्य के उदय से स्वच्छ हुआ सम्पूर्ण जल हितकारी है वृद्धसुश्रुत ने कहा है कि पूष में सरोवर का माघमें तडागका फागुनमें कुएंक चैत्र में चुण्डका वैशाखमें झरने का ज्येष्ठमें उद्भिज आषाढमें कुएं का श्रावण में दिव्य भादोंमें कुएंका आश्विन में चुण्डका और कार्तिक तथा मार्गशीर्ष में सम्पूर्ण जल श्रेष्ठ हैं ॥ २४ ॥

जलग्रहणकालः ॥

भौमानामम्भसाम्प्रायोग्रहणंप्रातरिष्यते। शीतत्वंनिर्मलत्वञ्चयतस्तेषांमतोगुणः२५॥

जलके ग्रहण करनेका समय ॥

भूमिका जल प्रातःकाल ग्रहण करना चाहिये क्योंकि उससमय का जल शीतल और निर्मल होताहै और यही जलके परमगुण हैं ॥ २५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ जलस्य पानविधिः ॥

अत्यम्बुपानान्नविपच्यतेऽन्नं निरम्बुपानाच्चसएवदोषः । तस्मान्नरोवह्निविवर्द्धनायमुहुर्मुहुर्वारिपिबेदभूरि ॥ २६ ॥

जलपान की विधि ॥

अत्यन्त जलपीने से और अत्यन्तही न पीने से अन्न नहीं पचता इससे मनुष्य अग्नि बढ़नेके लिये वारंवार थोड़ा २ जल पिये ॥ २६ ॥

अथ शीतलजलपानस्यविषयाः ॥

मूर्च्छापित्तौष्ण्यदाहेषुविषेरक्तेमदात्यये । श्रमेभ्रमेविदग्धेऽन्नेतमकेवमथौतथा ॥ ऊर्ध्वगेरक्तपित्तेचशीतमम्बुप्रशस्यते ॥ २७ ॥

शीतल जलपीने के विषय ॥

मूर्च्छा, पित्त, उष्णता, दाह, विष, रक्तदोष, मदात्यय, श्रम, भ्रम, अन्नकी विदग्धता, तमकश्वास, छर्दि और ऊर्ध्वगत रक्तपित्त में शीतलजल श्रेष्ठ है ॥ २७ ॥

अथ तन्निषेधः ॥

पार्श्वशूलेप्रतिश्यायेवातरोगेगलग्रहे । आध्मानेस्तिमितेकोष्ठेसद्यःशुद्धौन[illegible] अरुचिग्रहणीगुल्मश्वासकासेषुविद्रधौ । हिक्कायांस्नेहपानेचशीताम्बुपरिवर्ज[illegible]

शीतल जलका निषेध ॥

पार्श्वशूल, पीनस, वातरोग, गलरोग, आध्मान, आर्द्रकोष्ठ, वमनादिके द्वारा शी[illegible] अग्नि में कफकारक, नवीनज्वर, हिचकी, अरुचि, ग्रहणी, गुल्म, श्वास, खांसी, विद्रधि और स्नेहपान में शीतल[illegible] का ग्रहण नहीं करे ॥ २८ ॥

अथाल्पजलपानस्यविषयः ॥

अरोचकेप्रतिश्यायेमन्देऽग्नौश्वयथौक्षये । मुखप्रसेकेजठरे कुष्ठेनेत्रामयेज्वरे ॥ व्रणेचमधुमेहेच पिबेत्पानीयमल्पकम् ॥ २९ ॥

थोड़ा जलपीनेका विषय ॥

अरुचि, पीनस, मन्दाग्नि, सूजन, क्षय, मुखस्राव, उदर, कुष्ठ, नेत्र, रोग, ज्वर, घाव और मधुप्रमेहमें थोड़ा जलपिये ॥ २९ ॥

जलपानस्यावश्यकता ॥

जीवनंजीविनांजीवोजगत्सर्वन्तुतन्मयम् । अतोऽत्यन्तनिषेधेनकदाचिद्वारिवार्य्यते ॥ हारीतश्चातृष्णागरीयसीघोरासद्यःप्राणविनाशिनी । तस्माद्देयंतृषार्त्तायपानीयंप्राणधारणम् ॥ तृषितोमोहमायाति मोहात्प्राणान्विमुञ्चति । अतःसर्वास्ववस्थासु नक्वचिद्वारिवर्जयेत् ॥ ३० ॥

जलपीनेकी आवश्यकता ॥

जल प्राणियों का जीवनस्वरूप और संपूर्ण जगत् जलमय है इससे बुद्धिमान् पुरुष जलपीने का अत्यन्त निषेध कभी न करे हारीतमुनिने भी कहाहै कि तृषा अत्यन्त भयानक और शीघ्र प्राणनाशक होती है इससे तृषासे व्याकुल पुरुषको प्राण धारण करनेकेलिये जलदेना उचितहै तृषासे व्याकुल पुरुष जल न मिलने से मोहको प्राप्तहोताहै और मोहसे प्राणोंको भी त्यागकरताहै इससे संपूर्ण अवस्थाओंमें जलका अत्यन्त निषेध कहीं भी न करना चाहिये ॥ ३० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ प्रस्तंजलम् ॥

अगन्धमव्यक्तरसंसुशीतंतर्षनाशनम्॥स्वच्छंलघुचहृद्यञ्चतोयंगुणवदुच्यते ॥ ३१ ॥

श्रेष्ठ जलके लक्षण ॥

गन्धरहित, गुप्तरस, अत्यन्त शीतल, तृषानाशक, निर्मल, हलका और हृदयको हित जल गुणदायक होता है ॥ ३१ ॥

अथ निन्दितजलम् ॥

पिच्छिलंकृमिलंक्लिन्नंपर्णशैवालकर्दमैः। विवर्णंविरसंसान्द्रंदुर्गन्धंनिहितंजलम् ॥ कलुषंछन्नमम्भोजपर्णनीलीतृणादिभिः। दुःस्पर्शनमसंस्पृष्टंसौरचान्द्रमरीचिभिः ॥ अनार्तवंवार्षिकन्तुप्रथमंतच्चभूमिगम्। व्यापन्नंपरिहर्त्तव्यंसर्वदोषप्रकोपणम् ॥ तत्कुर्यात्स्नानपानाभ्यांतृष्णाध्मानचिरज्वरान्। कासाग्निमान्द्याभिष्यन्दकण्डूगण्डादिकंतथा३२॥

निन्दितजलके लक्षण ॥

पिच्छिल कीडोंसे युक्त पत्ते शिवार तथा कीचड़ आदि से सड़ाहुआ विवर्ण विरस घना दुर्गन्धियुक्त गदला कमल के पत्ते तथा नील के तृण आदिकों से ढकाहुआ कुत्सित स्थान में उत्पन्न हुआ ... चन्द्रमा की किरणों से नहीं स्पर्श किया अकाल में बरसा हुआ शीघ्रही पृथ्वी पर पड़ा ... रोगयुक्त जल त्याग करना चाहिये क्योंकि इससे सम्पूर्ण दोषोंका कोप होता है यह जल ...वा पान करनेसे तृषा आध्मान उदर ज्वर खांसी मन्दाग्नि अभिष्यन्द खुजली और गलराजआदि रोगोंको उत्पन्न करता है ॥ ३२ ॥

अथ दुष्टजलस्यनिर्दोषीकरणोपायः ॥

निन्दितञ्चापिपानीयंक्वथितंसूर्य्यतापितम् । सुवर्णरजतंलौहंपाषाणंसिकतामपि ॥ भृशंसन्ताप्यनिर्वाप्यसप्तधासाधितंतथा । कर्पूरजातिपुन्नागपाटलादिसुवासितम् ॥ शुचिसान्द्रपटस्राविक्षुद्रजन्तुविवर्जितम् । स्वच्छंकनकमुक्ताद्यैःशुद्धंस्याद्दोषवर्जितम् ॥ पर्णमूलविषग्रन्थिमुक्ताकनकशैवलैः। गोमेदेनचवस्त्रेणकुर्य्यादम्बुप्रसादनम् ॥ ३३ ॥

बुरे जलके निर्दोष करने के उपाय ॥

अग्नि में गरम कियागया धूपमें तपाया गया अत्यन्त तपाये हुये सुवर्ण चांदी लोहा पत्थर बालू अथवा मृत्तिका से सातबार बुझाय कर कपूर चंमेली श्वेत कमल और पाटल आदिकों से सुगन्धित कियागया पवित्र तथा गाढ़े कपड़े से छानकर छोटे २ कीडोंसे रहित कियागया अथवा सुवर्ण तथा मोती आदिकोंसे निर्म्मल कियागया शुद्ध जल दोषरहित होताहै पत्ता जड़ मृणालकी गांठ मोती सोना शिवार गोमेद और वस्त्रके द्वारा जलको निर्म्मलकरे ॥ ३३ ॥

अथ पीतस्यजलस्य पाकविधिः ॥

आमंजलंजीर्य्यतियामयुग्मादूयामैकमात्राच्छृतशीतलञ्च। तदूर्ध्वमात्रेणश्रृतंकदुष्णं पयःप्रपाकेत्रयएवकालाः ॥ ३४ ॥

इति श्रीभावप्रकाशेवारिवर्गः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पियेहुए जलके परिपाककी विधि॥

जलके परिपाकके तीन कालहैं कच्चा जल एक प्रहरमें गरमकरके ठंढा कियाहुआ आधेपहर में और गरम कुछ उष्ण रहनेपर चौथाईपहरमें परिपाकको प्राप्त होताहै॥ ३४॥

इति श्रीभावप्रकाशस्यभाषानुवादेवारिवर्गः॥

अथ दुग्धवर्गः। दुग्धस्यनामगुणाः॥

दुग्धंक्षीरंपयःस्तन्यंबालजीवनमित्यपि। दुग्धंसुमधुरंस्निग्धंवातपित्तहरंसरम्॥ सद्यःशुक्रकरंशीतंसात्म्यंसर्वशरीरिणाम्। जीवनंबृंहणंबल्यंमेध्यंवाजिकरंपरम्॥ वयःस्थापनमायुष्यंसन्धिकारिरसायनम्। विरेकवान्तिवस्तीनांतुल्यमोजोविवर्द्धनम्॥ जीर्णज्वरे मनोरोगेशोषमूर्च्छाभ्रमेषुच। ग्रहण्यांपाण्डुरोगेचदाहेतृषिहृदामये॥ शूलोदावर्त्तगुल्मेषुवस्तिरोगेगुदाङ्कुरे। रक्तपित्तेऽतिसारेच्चयोनिरोगेश्रमेक्लमे॥ गर्भस्रावेचसततंहितंमुनिवरैःस्मृतम्। बालवृद्धक्षतक्षीणाःक्षुद्व्यवायकृशाश्चये॥ तेभ्यःसदातिशयितंहितमेतदुदाहृतम्॥ १॥

अथ दुग्ध वर्ग। दूधकेनाम और गुण॥

दुग्ध, क्षीर, पयस, स्तन्य और बालजीवन यह दूधकेनाम हैं दूध, मधुर, स्निग्ध, वातपि[illegible] अग्नि में [illegible] कफकारक, शीघ्र वीर्यकारी, शीतल, सब प्राणियोंको स्वात्म्य, जीवनरूप, धातुवर्द्धक, बलकारी, मेध[illegible] अत्यन्त वाजीकरण, अवस्थाका स्थापक, आयुकोहित, टूटेहुएका जोडनेवाला, रसायन, वमन, विरे[illegible]॥ तथा वस्तिक्रियाके तुल्य गुणकारी और जीर्णज्वर, मनकेरोग, शोष, मूर्च्छा, भ्रम, ग्रहणी, पाण्डुरोग, दाह, तृषा, हृदय के रोग, शूल, उदावर्त्त, गुल्म, मूत्राशयके रोग, गुदांकुर, रक्तपित्त, अतीसार, योनिरोग, श्रम, ग्लानि तथा गर्भस्रावमें सदैव हितकारी होताहै बालक, वृद्ध, क्षतसे क्षीण और क्षुधा तथा मैथुनसे कृश मनुष्योंको दुग्ध सदैव अत्यन्त हितकारी होताहै॥ १॥

अथ गोदुग्धस्यगुणाः॥

गव्यंदुग्धंविशेषेणमधुरंरसपाकयोः। शीतलंस्तन्यकृत्स्निग्धंवातपित्तास्रनाशनम्॥ दोषधातुमलस्रोतःकिञ्चित्क्लेदकरंगुरु। जरासमस्तरोगाणांशान्तिकृत्सेविनांसदा २॥

गौदूधके गुण॥

गौकादूध. रस तथा पाकमें विशेष करके मधुर, शीतल, दुग्धवर्द्धक, स्निग्ध, वात तथा रक्तपित्तकानाशक, दोष, धातु मल तथा स्रोतोंका कुछ आर्द्रकरनेवाला, भारी और सदैव सेवनसे वृद्धावस्था तथा सम्पूर्ण रोगोंका नाशक होताहै॥ २॥

वर्णविशेषेगुणविशेषाः॥

कृष्णायागोर्भवेद्दुग्धंवातहारिगुणाधिकम्। पीतायाहरतेपित्तंतथावातहरंभवेत्॥ श्लेष्मलंगुरुशुक्लायारक्तचित्राचवातहृत् (अथधेनोर्विवत्सायाश्चगुणाः) बालवत्साविवत्सानांगवांदुग्धंत्रिदोषकृत् (बकेनीगोगुणाः) वष्कयिण्यास्त्रिदोषघ्नंतर्पणंबलकृत्पयः॥३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वर्णविशेषसे गुण विशेष ॥

काली गौका दूध.वातनाशक,अत्यन्त गुणकारी पीली गौका दूध.पित्त तथा वातनाशक श्वेत गौका दूध.कफकारी तथा भारी और लाल तथा अनेकप्रकारके वर्णवाली गौकादूध. वातनाशक होता है छोटेबछड़ेवाली और बछड़े से रहित गौका दूध त्रिदोषकारी होताहै बकेनी (बाखरी) गौकादूध त्रिदोषनाशक, तृप्तिकारक और अत्यन्त बलकारी होताहै ॥ ३ ॥

अथ देशविशेषेणगुणविशेषः ॥

जाङ्गलानूपशैलेषुचरन्तीनांयथोत्तरम् । पयोगुरुतरंस्नेहोयथाहारंप्रवर्त्तते ॥ ४ ॥

देशविशेषसे गुणविशेष ॥

जाङ्गलदेश अनूपदेश और पर्वतीयदेशोंमें चरनेवाली गौकादूध क्रमसे भारीहोताहै और घी आहार के अनुसार निकलताहै ॥ ४ ॥

अथाहारविशेषेगुणविशेषः ॥

स्वल्पान्नभक्षणाज्जातंक्षीरंगुरुकफप्रदम् । तत्तुबल्यंपरंवृष्यंस्वस्थानांगुणदायकम्
...णकार्पासबीजजातंगुणैर्हितम् ॥ ५ ॥

आहारविशेषसे गुणविशेष ॥

...न्न खानेवाली गौकादूध.भारी, कफकारक, बलिष्ठ, अत्यन्त वीर्यवर्द्धक और स्वस्थ पुरुषों ...गुणदायक होताहै पयार, तृण और बिनौले खानेवाली गौओंका दूध रोगियोंको हित होताहै५॥

अथ महिषीदुग्धस्यगुणाः ॥

माहिषंमधुरङ्गव्यात्स्निग्धंशुक्रकरंगुरु।निद्राकरमभिष्यन्दिक्षुधाधिक्यकरंहिमम्८ ॥

भैंसके दूधकेगुण ॥

भैंसकादूध.मधुर, वीर्यवर्द्धक, भारी, निद्राकारी, अभिष्यन्दी, क्षुधाका बढ़ानेवाला और गौके दूध से अधिक घृतयुक्त होताहै ॥ ६ ॥

छागी दुग्धस्यगुणाः ॥

छागंकषायंमधुरंशीतंग्राहितथालघु । रक्तपित्तातिसारघ्नंक्षयकासज्वरापहम् ॥ अजानामल्पकायत्वात्कटुतिक्तनिषेवणात् ।स्तोकाम्बुपानाद्व्यायामात्सर्वरोगापहंपयः॥७॥

बकरीके दूधके गुण ॥

बकरीका दूध. कषैला, मधुर, शीतल, ग्राही,हलका और रक्तपित्त,अतीसार, क्षय, खांसी तथा ज्वर का नाशक होताहै शरीरके हलकेपनसे कटु, तिक्त आदि वस्तुओंके भोजनसे थोडा जलपानेसे और व्यायाम करनेसे बकरियोंकादूध सम्पूर्ण रोगोंका नाशक होताहै ॥ ७ ॥

मृगादिदुग्धस्यगुणाः ॥

मृगीनांजाङ्गलोत्थानामजाक्षीरगुणंपयः ८ (भेड़ीदुग्धगुणाः) आविकंलवणंस्वादुस्निग्धोष्णञ्चाश्मरीप्रणुत् । अहृद्यंतर्पणंवृष्यंशुक्रपित्तकफप्रदम् ॥ गुरुकासेऽनिलोद्भूतेकेवलेचानिलेवरम् ॥ ९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मृगी आदिके दूधका गुण ॥

मृगी आदिक जङ्गली पशुओंकादूध बकरीके दूधके समान गुणकारी होताहै ८ (भेड़ीके दूधकागुण) भेड़ीकादूध. नमकीन, मधुर, स्निग्ध, उष्ण, पथरीनाशक, हृदयको अहित, तृप्तिकारक, केशोंको हित, वीर्यवर्द्धक, कफपित्तकारक, भारी और वायुकी खांसी तथा केवल वातरोगोंमें हित होताहै ॥ ९ ॥

अथ घोड़ीदुग्धम् ॥

रूक्षोष्णंवडवाक्षीरंबल्यंशोषानिलापहम्। अम्लंपटुलघुस्वादुसर्वमैकशफंतथ १०॥

घोड़ीके दूधके गुण ॥

घोड़ीका और संपूर्ण एक खुरवाले पशुओंका दूध.रूखा, उष्ण, बलकारी, खट्टा, नमकीन, मधुर, हलका और शोष तथा वातनाशक होताहै ॥ १० ॥

अथ उष्ट्रीदुग्धम् ॥

औष्ट्रंदुग्धंलघुस्वादुलवणंदीपनंतथा। कृमिकुष्ठकफानाहशोथोदरहरंसरम् ॥ ११ ॥

ऊंटनी का दूध ॥

ऊंटनी का दूध.हलका, मधुर, नमकीन, दीपन, दस्तावर और कृमि, कुष्ठ, कफ, आनाह, सूज तथा उदर रोग नाशक होता है ॥ ११ ॥

हस्तिनीदुग्धम् ॥

बृंहणंहस्तिनीदुग्धंमधुरंतुवरंगुरु। वृष्यंबल्यंहिमंस्निग्धंचक्षुष्यंस्थिरता [illegible] ॥

हथिनी का दूध ॥

हथिनी का दूध.धातुवर्द्धक, मधुर, कषैला, भारी, बलवीर्य्यवर्द्धक, शीतल, स्निग्ध, नेत्रोंको हि और स्थिरता करनेवाला होता है ॥ १२ ॥

अथ नारीदुग्धम् ॥

नार्यालघुपयःशीतंदीपनंवातपित्तजित्। चक्षुःशूलाभिघातघ्नंनस्याश्च्योतनयोर्वरम् १३

नारीका दूध ॥

नारीका दूध.हलका, शीतल, दीपन, वात, पित्त तथा नेत्रकी पीड़ा नाशक और नासलेनेमें तथा नेत्रोंके भरने में श्रेष्ठहै ॥ १३ ॥

अथाधारोष्णादिगुणाः ॥

धारोष्णंगोपयोबल्यंलघुशीतंसुधासमम्। दीपनंचत्रिदोषघ्नंतद्धाराशिशिरंत्यजेत्। धारोष्णंशस्यतेगव्यंधाराशीतंतुमाहिषम्। शृतोष्णमाविकंपथ्यंशृतशीतमजापयः॥ आमंक्षीरमभिष्यंदिगुरुश्लेष्मामवर्द्धनम्। ज्ञेयंसर्वमपथ्यंतुगव्यमाहिषवर्जितम् ॥ नारीक्षीरंत्वाममेवहितंनतुशृतंहितम्। शृतोष्णंकफवातघ्नंशृतंशीतंतुपित्तनुत् ॥ अर्द्धोदकंक्षीरशिष्टमामाल्लघुतरंपयः। जलेनरहितंदुग्धमतिपक्वंयथायथा ॥ तथातथागुरुस्निग्धंवृष्यंबलविवर्द्धनम् ॥ १४ ॥

धारोष्ण आदिक दूधके गुण ॥

धारोष्ण गऊकादूध.बलकारी, हलका, शीतल, अमृत समान दीपन और त्रिदोषनाशक होताहै परन्तु धारा शीतल दूधको ग्रहण न करै गौका दूध धारोष्ण, भैंसका दूध धारा शीतल, भेड़ीका दूध अग्निसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गरम किया हुआ और बकरी का दूध गरम करके शीतल किया हुआ गुणकारी होताहै ॥ औ भैंसके दूधको छोडकर संपूर्ण कच्चादूध अभिष्यन्दी, भारी, कफवर्द्धक, आमकारी और अपथ्य होता है नारी का दूध.कच्चाही, हितकारी होताहै पक्का नहीं होता दूधको पकाकर गरम २ पीनेसे कफ, वात और ठंढाकरके पीनेसे पित्तकानाश होताहै दूधमें आधापानी मिलाकर औटानेसे जब सब पानीजलकर केवल दूध रहजाय वह कच्चे दूधसे हलका होताहै जल रहित दूध जितना अधिक औटाया जाय उतनाही अधिक भारी स्निग्ध वीर्य्यवर्द्धक और बलकारी होताहै ॥ १४ ॥

अथ पियूषकिलाटक्षीरशाकस्तक्रपिण्डमोरटानांलक्षणानिगुणाश्च ॥

क्षीरंतत्कालसूतायाघनंपेयूषमुच्यते । पेयूषंपेवसइतिलोके ॥ नष्टदुग्धस्यपक्वस्यपिण्डःप्रोक्तःकिलाटकः । किलाटकःगिजिरीइतिलोके ॥ अपक्वमेवयन्नष्टंक्षीरशाकंहितत्पयः । क्षीरशाकंतुषिभराइतिलोके ॥ दध्नातक्रेणवानष्टंदुग्धंबद्धंसुवाससा । द्रवभावेनसहितंतक्रपिण्डःसउच्यते ॥ नष्टदुग्धंभवन्नीरंमोरटंजेज्जटोऽब्रवीत् । पेयूषंचकिलाटश्चक्षीरशाकंतथैवच ॥ तक्रपिण्डइमेवृष्याबृंहणाबलवर्द्धनाः । गुरवःश्लेष्मलाहृद्यावात[illegible]नाशनाः ॥ दीप्ताग्नीनांविनिद्राणांविद्रधौचाभिपूजिताः । मुखशोषतृषादाहरक्त[illegible]प्रणुत् ॥ लघुर्बलकरोरुच्योमोरटःस्यात्सितायुतः । सन्तानिकागुणाः ॥ १५ ॥

पेवसी गिजरी खरिसा तक्रपिंड और मोरटके लक्षण व गुण ॥

राजशीघ्र ब्यानेवाली गौके गाढ़ेहोनेवाले दूधको पेयूष (पेवसी) फटेहुये दूधको पकाकर उससे बनाये हुये पिण्डको किलाटक (गिजरी) विना पकाये फटेहुये दूधको क्षीरशाक (खरिसा) दही अथवा मट्ठेके द्वारा दूधको फाड़कर और बांधके उसके जलको निकालके जो रूप बनताहै उसे तक्रपिण्ड और जेज्जट कहतेहैं कि फटेहुये दूधके पानीको मोरट कहतेहैं पेवसी गिजरी खरिसा और तक्रपिण्ड यह सब धातु, बल तथा वीर्य्यवर्द्धक, भारी, हृदयको हित, वात पित्त नाशक और दीप्ताग्नि, निद्रारहित और मैथुन करनेवाले पुरुषोंको अत्यन्त हितकारी होताहै शक्करयुक्त मोरट. हलका, बलकारी, रुचिकारक और मुखका सूखना, तृषा, दाह, रक्तपित्त तथा ज्वरका नाशक होता है ॥ १५ ॥

सन्तानिकासाठी ॥

सन्तानिकागुरुःशीतावृष्यापित्तस्रवातनुत् । तर्पणीबृंहणीस्निग्धाबलासबलशुक्रला १६

मलाई के गुण ॥

मलाई.भारी, पुष्टिकारी, शीतल, रक्तपित्त तथा वातनाशक, तृप्ति कारक, धातुवर्द्धक, स्निग्ध और कफ, बल तथा वीर्यवर्द्धक होती है ॥ १६ ॥

अथ खण्डादियुक्तदुग्धगुणाः ॥

खण्डेनसहितंदुग्धंकफकृत्पवनापहम् । सितासितोपलायुक्तंशुक्रलंत्रिमलापहम् ॥ सगुडंमूत्रकृच्छ्रघ्नंपित्तश्लेष्मकरंपरम् ॥ १७ ॥

खांड आदि से युक्त दूधके गुण ॥

खांडयुक्त दूध. कफकारी तथा वातनाशक सफेद मिश्रीयुक्त दूध वीर्यवर्द्धक और त्रिदोष नाशक और गुड़युक्त दूध मूत्रकृच्छ्र नाशक तथा कफ पित्तका अधिक करनेवाला होता है ॥ १७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

अथ प्रभातादिभव दुग्धगुणाः ॥

रात्रौचन्द्रगुणाधिक्याद्व्यायामाकरणात्तथा । प्रभातिकंतदाप्रायःप्रादोषाद्गुरु शीतलम् ॥ दिवाकरकराघाताद्व्यायामानलसेवनात् । प्राभातिकात्तुप्रादोषंलघुत्रात कफापहम् ॥ १८ ॥

प्रातःकाल के दूध के गुण ॥

रात्रि में चन्द्रमा के गुणकी अधिकता से और व्यायाम आदिक शरीरसंबन्धी क्रियाओं के न होने से प्रायः प्रातःकालका दूध सायङ्काल के दूधसे भारी और शीतल होताहै दिनमें सूर्यकी किरणों के लगने से और व्यायाम आदिक शारीरक क्रियाओं तथा अग्निके सेवनसे सायङ्कालका दूध प्रातःकालके दूधकी अपेक्षा हलका और कफ वात नाशक होताहै ॥ १८ ॥

अथ दुग्धसेवनसमयविशेषेगुणमाह ॥

वृष्यंबृंहणमग्निदीपनकरंपूर्वाह्णकालेपयो मध्याह्नेतुबलावहंकफहरंपित्तापहंदीपनम् ॥ बालेवृद्धिकरंक्षयेक्षयकरंवृद्धेषुरेतोवहं । रात्रौपथ्यमनेकदोषशमनंक्षीरंसदासेव्यते ॥ वदन्तिपेयंनिशिकेवलंपयोभोज्यंनतेनेहसहौदनादिकम् ॥ भवेदजीर्णंनशयीत शर्वरीक्षीरस्यपीतस्यनशेषमुत्सृजेत् । विदाहीन्यन्यपानानिदिवाभुङ्क्तेहियन्नरः दाहप्रशान्त्यर्थंरात्रौक्षीरंसदापिबेत् । दीप्तानलेकृशेपुंसिवातवृद्धेपयःप्रिये ॥ म पथ्यंसद्यःशुक्रकरंयतः ॥ १९ ॥

अग्नि में कफक्षूरक

दूधके सेवन के समय २ के गुण ॥

प्रातःकाल पियाहुआ दूध. पुष्टिकारक, धातुवर्द्धक तथा दीपन मध्याह्न समय में पियाहुआदूध. बलकारी, कफ पित्तनाशक तथा दीपन बालअवस्थामें पियाहुआ दूध. शरीरवर्द्धक, क्षीणता में पियाहुआ दूध. क्षयनाशक वृद्धावस्था में पियाहुआ दूध. वीर्यवर्द्धक और रात्रि समय में पियाहुआ दूध.पथ्य अनेक दोषनाशक तथा नेत्रोंको हित होताहै कहागया है कि रात्रि में चावल आदिके साथ दूध न पिये परन्तु केवल दूध पिये क्योंकि चावल आदिके साथ दूधपीने से अजीर्ण होताहै और रात्रि में नींद नहीं आती है और दूध पीकर उच्छिष्ट न छोड़ना चाहिये मनुष्य दिनमें जिन विदाहकारी अन्न पानादिकों का सेवन करताहै उनके दाह के शान्तिके लिये रात्रि में सदैव दूध पीना चाहिये कृशपुरुष, बालक, वृद्ध, दुग्धप्रिय और दीप्ताग्निवाले पुरुष को दूध अत्यन्त पथ्यहै क्योंकि यह शीघ्रही वीर्य्य को उत्पन्न करता है ॥ १९ ॥

अथ मथितस्य दुग्धस्यगुणाः ॥

क्षीरंगव्यमथाजंवाकोष्णंदण्डाहतंपिबेत्। लघुवृष्यंज्वरहरंवातपित्तकफापहम् ॥ २० ॥

मथेहुए दूध के गुण ॥

गौ अथवा बकरीका मथाहुआ, कुछ उष्ण, दूध पीने से हलका, वीर्यवर्द्धक और ज्वर, वात, पित्त तथा कफनाशक होताहै ॥ २० ॥ अथ गोजगुणाः

गोदुग्धप्रभवंकिंवाछागीदुग्धसमुद्भवम् । भवेदेतत्त्रिदोषघ्नंरोचनंबलवर्द्धनम् ॥ वह्निवृद्धिकरंवृष्यंसद्यस्तृप्तिकरंलघु । अतीसारेऽग्निमान्द्येचज्वरेजीर्णेप्रशस्यते ॥ २१ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दूधके फेनोंके गुण ॥

गौ अथवा बकरी के दूधका फेन. त्रिदोषनाशक, रुचिकारी, बलवर्द्धक, अग्निवर्द्धक, पथ्य, शीघ्र तृप्तिकारी, हलका और अतीसार, मन्दाग्नि तथा जीर्णज्वर में श्रेष्ठ होताहै ॥ २१ ॥

निन्दितं दुग्धम् ॥

विवर्णंविरसंचाम्लंदुर्गन्धंग्रथितंपयः। वर्ज्जयेदम्ललवणयुक्तंकुष्ठ्यादिहेतुतः॥ २२ ॥

इति श्रीभावप्रकाशेदुग्धवर्गः ॥

निन्दित दूधके लक्षण ॥

विवर्ण, विरस, खट्टा, दुर्गन्धियुक्त, फटाहुआ और खटाई तथा लवणसे युक्त दूध त्यागकरने के योग्य है क्योंकि इस्से कुष्ठ आदिक रोग उत्पन्न होतेहैं ॥ २२ ॥

इति भावप्रकाशस्यभाषानुवादेदुग्धवर्गःसमाप्तः ॥

अथ दधिवर्गः । तत्रदध्नो गुणाः ॥

...ष्णंदीपनंस्निग्धंकषायानुरसंगुरु। पाकेऽम्लंग्राहिपित्तास्रशोथमेदःकफप्रदम् ॥
...प्रतिश्यायेशीतगेविषमज्वरे। अतीसारेऽरुचौकार्श्येशस्यतेबलशुक्रकृत् ॥ १ ॥

अथ दधिवर्ग । दहीके गुण ॥

राजस. उष्ण, दीपन, स्निग्ध, कषैला, भारी, पाकमें खट्टा, ग्राही, रक्तपित्तकारी, सूजन तथा मेदवर्द्धक, कफकारी, बल वीर्यवर्द्धक और मूत्रकृच्छ्र, पीनस, शीतक नाम विषमज्वर, अतीसार, अरुचि तथा कृशतामें हितकारी होताहै ॥ १ ॥

अथ दधिभेदः ॥

आदौमन्दंततःस्वादुस्वाद्वम्लञ्चततःपरम्। अम्लंचतुर्थमत्यम्लंपञ्चमंदधिपञ्चधा॥ २ ॥

दहीके भेद ॥

मन्द, मधुर, मधुराम्ल, अम्ल और अत्यम्ल यह पांच प्रकार का दही होताहै ॥ २ ॥

अथ मन्दादीनां लक्षणंगुणाश्च ॥

मन्दंदुग्धंयदव्यक्तंरसंकिञ्चिद्घनंभवेत्। मन्दंस्यात्सृष्टविण्मूत्रदोषत्रयविदाहकृत्॥
यत्सम्यग्घनतांयातंव्यक्तस्वादुरसंभवेत्। अव्यक्ताम्लरसंतत्तुस्वादुविज्ञैरुदाहृतम् ॥
स्वादुस्यादत्यभिष्यन्दिवृष्यंमेदःकफावहम्। वातघ्नंमधुरंपाकेरक्तपित्तप्रसादनम्। स्वा
द्वम्लसान्द्रंमधुरंकषायानुरसंभवेत्। स्वाद्वम्लस्यगुणाज्ञेयाःसामान्यदधिवज्जनैः। यत्ति
रोहितमाधुर्य्यंव्यक्ताम्लत्वंतदम्लकम्। अम्लन्तुदीपनंपित्तरक्तश्लेष्मविवर्द्धनम् ॥
तदत्यम्लंदन्तरोमहर्षकण्ठादिदाहकृत्। अत्यम्लंदीपनंरक्तवातपित्तकरंपरम् ॥ ३ ॥

मन्दादिकों के लक्षण और गुण ॥

जो दूध कुछ गाढ़ाहोकर गुप्तरस होजाताहै उसको मन्द दही कहतेहैं, यह मल तथा मूत्र निस्सारक त्रिदोषकारी और विदाही होताहै जो दही. खूब गाढ़ा, मधुर और खटाई से रहित हो उसको स्वादु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कहते हैं यह अत्यन्त अभिष्यन्दी. वीर्यवर्द्धक, मेद तथा कफकारक, वातनाशक, पाक में मधुर और रक्त पित्तनाशक होताहै जो दही. खूब गाढ़ा कुछ कषैला और मधुर होता है उसको स्वाद्वम्ल कहते हैं इसमें दहीके सामान्य गुण होतेहैं जो दही मधुरतासे रहित हो और जिसमें खटाई प्रकट होती हो वह अम्ल कहाताहै यह दीपन और रक्त पित्त तथा कफवर्द्धक होता है जिस दही के खाने से दन्तहर्ष, रोमहर्ष तथा कण्ठादिकों में दाह उत्पन्नहो वह अत्यम्ल कहलाताहै यह दीपन और वात तथा रक्तपित्तकारक होता है ॥ ३ ॥

गोदधिगुणाः ॥

गव्यंदधिविशेषेणस्वाद्वम्लञ्चरुचिप्रदम् । पवित्रंदीपनंहृद्यंपुष्टिकृत्पवनापहम् ॥
उक्तंदध्नाशेषाणांमध्येगव्यंगुणाधिकम् ॥ ४ ॥

गौके दही के गुण ॥

गौकादही. विशेष करके मधुर, बलकारी, रुचिकारी, पवित्र, दीपन, स्निग्ध, पुष्टिकारक, वातनाशक और सम्पूर्ण दहियों में अधिक गुणवाला होताहै ॥ ४ ॥

माहिषदधिगुणाः ॥

माहिषंदधिसुस्निग्धंश्लेष्मलंवातपित्तनुत् । स्वादुपाकमभिष्यन्दिवृष्यंगुर्वस्रदूषकम् ५

भैंसके दहीके गुण ॥

भैंसका दही. अत्यन्त स्निग्ध, कफकारी, वात पित्तनाशक, पाक में मधुर, अभिष्यन्दी, [illegible] अग्नि में [illegible] कफकारक, वर्द्धक और रक्तदूषक होता है ॥ ५ ॥

छागीदधिगुणाः ॥

आजन्दध्युत्तमंग्राहिलघुदोषत्रयापहम् । शस्यतेश्वासकासार्शःक्षयकार्श्येषुदीपनम् ॥६॥

बकरीके दहीके गुण ॥

बकरीका दही. अत्यन्त ग्राही, लघु, त्रिदोषनाशक, दीपन और श्वास, खांसी, बवासीर, क्षय तथा कृशता में हितकारी होता है ॥ ६ ॥

पक्वदुग्धदधिगुणाः ॥

पक्वंदुग्धभवंरुच्यंदधिस्निग्धंगुणोत्तमम् । पित्तानिलापहंसर्वधात्वग्निबलवर्द्धनम् ॥ ७ ॥

पक्के दूधके दही के गुण ॥

पक्के दूधका दही. रुचिकारक, स्निग्ध, गुणों में श्रेष्ठ, वात पित्त नाशक और सम्पूर्ण धातु, अग्नि तथा बलका वर्द्धक होताहै ॥ ७ ॥

निःसरदुग्धदधिगुणाः ॥

असारंदधिसंग्राहिशीतलंवातलंलघु । विष्टम्भिदीपनंरुच्यंग्रहणीरोगनाशनम् ॥ ८ ॥

साररहित दूधके दहीका गुण ॥

मक्खन निकले हुए दूधका दही. ग्राही, शीतल, बादी, हलका, विष्टंभी, दीपन, रुचिकारी और ग्रहणी रोगका नाशक होताहै ॥ ८ ॥

गालितदधिगुणाः ॥

गालितंदधिसुस्निग्धंवातघ्नंकफकृद्गुरु । बलपुष्टिकरंरुच्यंमधुरंनातिपित्तकृत् ॥ ९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निचोड़े हुए दहीका गुण ॥

निचोड़ा हुआ दही. अत्यन्त स्निग्ध, वातनाशक, कफकारी, भारी, बलकारी, पुष्टिकारक, रुचिकारी, मधुर और कुछ पित्तकारी होता है ॥ ९ ॥

शर्करादिसहितदधिगुणाः ॥

सशर्करंदधिश्रेष्ठंतृष्णापित्तास्रदाहजित् । सगुडंवातनुद्वृष्यंबृंहणंतर्पणंगुरु ॥ १० ॥

शर्करादि युक्त दही के गुण ॥

शर्करा युक्त दही. श्रेष्ठ, गुणदायक और तृषा, रक्तपित्त तथा दाहनाशक होता है गुड युक्त दही. वातनाशक, बीज तथा धातुवर्द्धक, तृप्तिकारी और भारी होता है ॥ १० ॥

अथ रात्रौदधिभोजननिषेधः ॥

ननक्तंदधिभुञ्जीतनचाप्यघृतशर्करम् । नामुद्गसूपंनाक्षौद्रंनोष्णंनामलकैर्विना ॥ अयमर्थः रात्रौदधिनभुञ्जीत् भुञ्जीत् चेत्तदा अघृतशर्करतामुद्गसूपक्षौद्रमुष्णं विनामलकैश्चदधिनभुञ्जीत् । तेनघृतशर्करादियुक्तंदधिरात्रावपिभुञ्जीतेत्यर्थः तथाचशस्यतेदधिनोरा[illegible]श्चाम्बुघृतान्वितम् ॥ रक्तपित्तकफोत्थेषु विकारेषुतुनैवतत् । तदम्बुघृतान्वित [illegible]१ ॥

रात्रि में दही खानेका निषेध ॥

[illegible] दही नहीं खाना चाहिये और जो खाय तो जल घी शक्कर मूंगकी दाल सहत अथवा राजस[illegible]मिलाकर खाय रात्रि में भी घी शक्कर आदिसे युक्त और उष्ण दही भोजन करना चाहिये [illegible]हा भी गयाहै कि रात्रि में दही श्रेष्ठ नहीं होता परन्तु घी शक्कर अथवा जलसे युक्त दोषकारी नहीं [illegible]पानते परन्तु रक्त पित्त और कफजनित विकारों में जल अथवा घृत युक्त दही भी विकारी है ॥ ११ ॥

अथर्त्तुविशेषे विधिनिषेधौ ॥

हेमन्तेशिशिरेचापिवर्षासुदधिशस्यते। शरद्ग्रीष्मवसन्तेषुप्रायशस्तद्विगर्हितम् ॥ १२ ॥

ऋतु विशेषमें विधि और निषेध ॥

हेमन्त शिशिर और वर्षाऋतुमें दहीखाना श्रेष्ठहै शरद् ग्रीष्म और वसन्त ऋतुमें प्रायः दही खाना अहितहै ॥ १२ ॥

अथाविधिनादधिसेवनेदोषमाह ॥

ज्वरासृक्पित्तवीसर्पकुष्ठपाण्ड्वामयभ्रमान् । प्राप्नुयात्कामलाञ्चोग्रांविधिंहित्वा दधिप्रियः ॥ १३ ॥

विनाविधिके दहीखानेमेंदोष ॥

जो विना विधिके दही खाताहै वह ज्वर, रक्त, पित्त, वीसर्प, कुष्ठ, पांडु, भ्रम और उग्र कामला रोगसे ग्रसित होताहै ॥ १३ ॥

अथ सरस्यमस्तुनश्चलक्षणंगुणाश्च ॥

सलोकेसरइत्युक्तोदध्नोमण्डस्तुमस्त्विति ॥
दध्नस्तूपरियोभागोघनःस्नेहसमन्वितः । सलोकेसरइत्युक्तोदध्नोमण्डस्तुमस्त्विति ॥
सरःस्वादुर्गुरुर्वृष्योवातवह्निप्रणाशनः । साम्लोवस्तिप्रशमनःपित्तश्लेष्मविवर्द्धनः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मस्तुक्लमहरंबल्यंलघुभक्ताभिलाषकृत् । स्रोतोविशोधनंह्लादिकफतृष्णानिलापहम् ॥
अवृष्यंप्रीणनंशीघ्रंभिनत्तिमलसञ्चयम् ॥ १४ ॥

इति श्रीभावप्रकाशेदधिवर्गः ॥

दहीकीमलाई और दहीकेतोडकेगुण ॥

दहीके ऊपर जो घृतयुक्त गाढ़ाभाग (मलाई) होताहै उसको लोकमें सरकहते हैं और दही के तोडको मस्तु कहते हैं दही की मलाई. मधुर, भारी, वीर्यवर्द्धक, वात तथा अग्निनाशक और जो खट्टी होय तो वस्तिशोधक और कफ पित्त वर्द्धक होती है दहीका तोड. ग्लानिनाशक, बलकारक, हलका, अन्ननें रुचि करानेवाला, श्रोतोंका शोधक, आनन्ददायी, कफघ्न, तृषानाशक, वातघ्न, वीर्य को न करनेवाला, प्रीतिकारी और शीघ्र संचित मलका निकालनेवाला होताहै ॥ १४ ॥

इति श्रीभावप्रकाशस्यभाषानुवादेदधिवर्गःसमाप्तः ॥

अथ तक्रवर्गः तत्रतक्रस्यभिन्नानिनामानिलक्षणानिगुणाश्च ॥

घोलन्तुमथितंतक्रमुदश्विच्छच्छिकापिच । ससरंनिर्जलंघोलंमथितन्त्वस अग्नि में तक्रंपादजलंप्रोक्तमुदश्वित्वर्द्धवारिकम् । छच्छिकासारहीनास्यात्स्वच्छाप्रचुरकफकृरक, घोलन्तुशर्करायुक्तंगुणैर्ज्ञेयंरसालवत् । मथितंमहुपाइतिलोके । छच्छिकाछाच्छ ॥ के ॥ वातपित्तहरंह्लादिमथितंकफपित्तनुत् । तक्रंग्राहिकषायाम्लंस्वादुपाकरसंलघु ॥ र्योष्णंदीपनंवृष्यंप्रीणनंवातनाशनम् ॥ ग्रहण्यादिमतांपथ्यंभवेत्संग्राहिलाघवात् । किञ्चस्वादुविपाकित्वान्नचपित्तप्रकोपणम् । अम्लेष्णंदीपनंवृष्यंप्रीणनंवातनाशनम् ॥ कषायोष्णविपाकित्वाद्रौक्ष्याच्चापिकफापहम् । नतक्रसेवीव्यथतेकदाचिन्न तक्रदग्धाःप्र भवन्तिरोगाः । यथासुराणामसृतंसुखायतथानराणांभुवितक्रमाहुः । उदश्वित्कफकृद्ब ल्यमामघ्नंपरमंमतम् । छच्छिकाशीतलालघ्वीपित्तश्रमतृषाहरी । वातनुत्कफकृत्सातुदी पनीलवणान्विता ॥ १ ॥

अथतक्रवर्ग । मट्ठेके अलग २ नामलक्षण और गुण ॥

घोल, मथित, तक्र, उदश्वित और छच्छिका यह मट्ठेके भेदोंके नामहैं मलाई सहित और निर्जल मट्ठेको घोल. मलाई रहित जलयुक्त मट्ठेको मथित. चतुर्थांश जलसहित मट्ठेको तक्र. अर्द्धांश जल सहित मट्ठेको उदश्वित और बहुत जलयुक्त मक्खन निकलेहुए मट्ठेको छच्छिका (छांछ) कहते हैं शक्करयुक्त घोल शिखरन के समान गुणकारी होताहै घोल.वात पित्तनाशक, मथित, कफ पित्त नाशक तक्र.ग्राही,कषैला, खट्टा,पाकमें मधुर,हलका,उष्ण,दीपन, वीर्यवर्द्धक, प्रीतिकारी,वातनाशक,ग्रहणी आदिक रोगवाले पुरुषोंको पथ्य और हलकेपनेसे ग्राही पाकमें मधुरहोनेसे पित्तकाकोपन करनेवाला औरकषैलेपनसे उष्णतासे तथा रूक्षतासे कफकानाशकहोताहै तक्रसेवनकरनेवाला परुष कभी व्यथाको नहीं प्राप्तहोताहै और उसको किसी प्रकारका रोग नहीं होताहै जैसे देवता लोगोंको

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अमृत सुखकारी होताहै इसी प्रकार मनुष्योंको मट्ठा हितकारीहै उदस्वित. कफवर्द्धक, बलकारी और श्रमका अत्यन्तनाशक होताहै छाँछ. शीतल, हलकी, कफकारी और पित्त, श्रम, तृषा तथा वातनाशक होती है और लवणयुक्त छाछ अग्निको दीपन करती है ॥ १ ॥

अथोद्धृतघृतस्तोकोद्धृतानुद्धृतघृतानांतक्राणांगुणाः ॥

समुद्धृतघृतंतक्रंपथ्यंलघुविशेषतः । स्तोकोद्धृतघृतंतस्माद्गुरुवृष्यंकफावहम् ॥
अनुद्धृतघृतंसान्द्रंगुरुपुष्टिकफप्रदम् ॥ २ ॥

घृतनिकलेहुए अल्पघृतनिकलेहुए और नहींघृत निकलेहुए मट्ठोंके गुण ॥

घी निकलाहुआ मट्ठा पथ्य तथा अत्यन्त हलका कुछ घी निकला हुआ मट्ठा इसकी अपेक्षा कुछ भारी, पुष्ट तथा कफकारी और बिन घी निकला हुआ मट्ठा. गाढा, भारी और पुष्टि तथा कफकारी होताहै ॥ २ ॥

अथ दोषविशेषेव्याधिविशेषेतक्रविशेषाः ॥

वातेऽम्लंशस्यतेतक्रंशुण्ठीसैन्धवसंयुतम् । पित्तेस्वादुसितायुक्तंसव्योषमधिकेकफे ॥
[illegible] तंघोलंसैन्धवेनचसंयुतम् । भवेदतीववातघ्नमर्शोऽतीसारहृत्परम् ॥ रुचि
[illegible] बस्तिशूलविनाशनम् । मूत्रकृच्छ्रेतुसगुडंपाण्डुरोगेसचित्रकम् ॥ ३ ॥

दोषविशेष और रोगविशेष में तक्रविशेष ॥

राज[illegible] [illegible]में. सोंठि तथा सैंधवयुक्त खट्टामट्ठा श्रेष्ठहै, पित्तमें. मिश्रीयुक्त मधुर मट्ठा श्रेष्ठहै, कफमें. त्रिकटु [illegible] मट्ठा श्रेष्ठहै, हींग, जीरा और सैंधवयुक्त घोल. अत्यन्त वातनाशक, रुचिकारी, पुष्ट तथा बल[illegible]रा, वस्तिकी पीड़ानाशक और बवासीर तथा अतीसार नाश करने में श्रेष्ठ होताहै, गुड़युक्त घोल मूत्रकृच्छ्रमें हितहै और चीतायुक्त घोल पाण्डुरोगमें हितकारी होताहै ॥ ३ ॥

अथामपक्वतक्रगुणाः ॥

तक्रमामंकफंकोष्ठेहन्तिकण्ठेकरोतिच । पीनसश्वासकासादौपक्वमेवप्रयुज्यते ॥ ४ ॥

कच्चे और पक्के मट्ठे के गुण ॥

कच्चा मट्ठा कोष्ठ के कफ का नाशक और कण्ठ में कफका करनेवाला होता है पक्का मट्ठा पीनस श्वास तथा खांसी आदिरोगों में व्यवहार करना चाहिये ॥ ४ ॥

अथ तक्रसेवननिमित्तानि ॥

शीतकालेऽग्निमान्द्येचतथावातामयेषुच । अरुचौस्रोतसांरोधेतक्रंस्यादमृतोपमम् ॥
तत्तुहन्तिगरच्छर्दिप्रसेकविषमज्वरान् । पाण्डुमेदोग्रहण्यर्शोमूत्रग्रहभगन्दरान् ॥ मेहं
गुल्ममतीसारंशूलप्लीहोदरारुचीः । श्वित्रकोष्ठगतव्याधीन्कुष्ठशोथतृषाक्रमीन् ॥ ५ ॥

मट्ठे के सेवन के प्रयोजन ॥

शीतकाल. मन्दाग्नि, वातरोग, अरुचि और स्रोतों के रुकनेमें मट्ठा अमृत के समान हित होता है मट्ठा गरदोष, छर्दि, प्रसेक, विषमज्वर, पाण्डु, मेद, ग्रहणी, बवासीर, मूत्राघात, भगन्दर, प्रमेह, गुल्म, अतीसार, शूल, प्लीहा, अरुचि, उदर, श्वेतकुष्ठ, कोष्ठकेरोग, कुष्ठ, सूजन, तृषा तथा कृमिनाशक होताहै ॥ ५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तक्रस्याविषयाः ॥

नैवतक्रंक्षतेदद्यान्नोष्णकालेनदुर्बले। नमूर्च्छाभ्रमदाहेषुनरोगेरक्तपित्तजे ॥ ६ ॥

मट्ठा नहीं देने के स्थान ॥

घाव, ग्रीष्मऋतु, दुर्बल पुरुष, मूर्च्छा, भ्रम, दाह और रक्तपित्त में मट्ठा हितकारी नहीं होताहै ॥ ६ ॥

अथ गव्यादीनांतक्राणांविशिष्टागुणाः ॥

यान्युक्तानिदधीन्यष्टौतद्गुणंतक्रमादिशेत् ॥ ७ ॥

इति श्रीभावप्रकाशेतक्रवर्गः ॥

गौआदि के मट्ठे के विशेष गुण ॥

जो आठ प्रकार के दही कहे गये हैं उसी प्रकार उनके मट्ठे भी जानने चाहियें ॥ ७ ॥

इति भावप्रकाशस्यभाषानुवादे तक्रवर्गः समाप्तः ॥

अथ नवनीतवर्गः ॥ तत्र नवनीतस्यनामानिगुणाश्च ॥

मृक्षणंसरजंहैयङ्गवीनंनवनीतकम्। नवनीतंहितंगव्यंवृष्यंवर्णबलाग्निकृत् अग्नि में हिवातपित्तासृक्क्षयार्शोऽर्दितकासहृत्। तद्धितंबालकेवृद्धेविशेषादमृतंशिशोः कफक्षूरक [illegible] ॥

अथ नवनीत वर्ग ॥ मक्खन के नाम और गुण ॥ [illegible] ॥

मृक्षण, सरज, हैयंगवीन और नवनीत यह मक्खन के नामहैं गौका मक्खन. हितकारी, वीर्यवर्द्धक वर्ण तथा बलकारी, दीपन, ग्राही और वातरक्त, पित्त और क्षय, बवासीर, अर्दित वात तथा खांसी का नाशक होताहै मक्खन. बालक तथा सबोंको हितहै छोटे लडकोंको अमृत के समान होताहै ॥ १ ॥

माहिषस्यगुणाः ॥

नवनीतंमहिष्यास्तुवातश्लेष्मकरंगुरु । दाहपित्तश्रमहरंमेदःशुक्रविवर्द्धनम् ॥ २ ॥

भैंसके मक्खन के गुण ॥

भैंसका मक्खन. बादी, कफकारी, भारी, मेदवर्द्धक, वीर्यवर्द्धक और दाह, पित्त तथा श्रमनाशक होताहै २

अथ पयसोनवनीतस्यगुणाः ॥

दुग्धोत्थंनवनीतंतुचक्षुष्यंरक्तपित्तनुत् ॥ वृष्यंबल्यमतिस्निग्धंमधुरंग्राहिशीतलम् ३॥

दूधके मक्खन के गुण ॥

दूध से निकला हुआ मक्खन. नेत्रों को हित, रक्तपित्तनाशक, वीर्यवर्द्धक, बलकारी, अत्यन्त स्निग्ध, मधुर, ग्राही और शीतल होता है ॥ ३ ॥

अथ सद्यःसमुद्धृतनवनीतगुणाः ॥

नवनीतन्तुसद्यस्कंस्वादुग्राहिहिमंलघु। मेध्यंकिञ्चित्कषायाम्लमीषत्तक्रांशसंक्रमात् ४॥

ताजेमक्खन के गुण ॥

शीघ्र निकला हुआ मक्खन. मधुर, ग्राही, शीतल, हलका, मेधाको हित और मट्ठे के संयोगसे कुछ कषैला तथा खट्टा होता है ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ चिरन्तननवनीतगुणाः ॥

सक्षारकटुकाम्लत्वाच्छर्द्यर्शःकुष्ठकारकम्। श्लेष्मलंगुरुमेदस्यंनवनीतंचिरन्तनम् ५

इति श्रीभावप्रकाशे नवनीतवर्गः ॥

पुराने मक्खन के गुण ॥

पुराना मक्खन.क्षार,कटु तथा अम्ल होने के कारण छर्दि, ववासीर, कुष्ठ, कफ तथा मेदको करता हैं और भारी होताहै ॥ ५ ॥

इति भावप्रकाशस्यभाषानुवादेनवनीतवर्गःसमाप्तः ॥

अथ घृतवर्गः। तत्रघृतस्यनामानिगुणाश्च ॥

घृतमाज्यंहविःसर्पिःकथ्यन्तेतद्गुणाअथ। घृतंरसायनंस्वादुचक्षुष्यंवह्निदीपनम् ॥ शीतवीर्य्यंविषालक्ष्मीपापपित्तानिलापहम् । अल्पाभिष्यन्दिकान्त्योजस्तेजोलावण्यबुद्धिकृत्॥स्वरस्मृतिकरंमेध्यमायुष्यंबलकृद्गुरु। उदावर्त्तज्वरोन्मादशूलानाहव्रणान्हरेत् ॥ [illegible]कफकरंरक्षःक्षयवीसर्परक्तनुत् ॥ १ ॥

अथ घृतवर्ग ॥ घीकेनाम और गुण ॥

[illegible]ाज्य, हविष और सर्पिष् यह घीके नाम हैं घी. रसायन, मधुर,नेत्रों को हित,दीपन वीर्य में
राजय[illegible]ल,कुछ अभिष्यन्दी,कान्तिकारक, ओजवर्द्धक,तेजकारी ,शोभा तथा बुद्धिवर्द्धक,स्वर तथा स्मृति-
कारी, मेधा तथा आयुकोहित,बलकारी,भारी, स्निग्ध, कफकारी, राक्षसों के दोषका नाशक और विष,
अलक्ष्मी,पाप, पित्त,वात,उदावर्त्त,ज्वर,उन्माद,शूल, आनाह, घाव, क्षय, वीसर्प तथा रक्तदोषनाशक
होताहै ॥ १ ॥

गव्यस्य घृतस्य गुणाः ॥

गव्यंघृतंविशेषेणचक्षुष्यंवृष्यमग्निकृत् । स्वादुपाककरंशीतंवातपित्तकफापहम् ॥ मेधालावण्यकान्त्योजस्तेजोवृद्धिकरंपरम् । अलक्ष्मीपापरक्षोघ्नंवयसःस्थापकंगुरु ॥ बल्यंपवित्रमायुष्यंसुमङ्गल्यंरसायनम्। सुगन्धंरोचकंचारुसर्वाज्येषुगुणाधिकम् ॥ २ ॥

गौके घीके गुण ॥

गौका घी. नेत्रोंको अत्यन्तहित, वीर्यवर्द्धक, दीपन,रस तथा पाकमें मधुर, वातादि त्रिदोषनाशक,
मेधाकारी,शोभा तथा कान्तिवर्द्धक,ओज तथा तेजकारक,दुर्भाग्यनाशक,पातक तथा राक्षसदोषना-
शक, अवस्थाका स्थित रखनेवाला,भारी,बलिष्ठ,पवित्र,आयुकोहित,मंगलरूप,रसायन,सुगन्धियुक्त,
रुचिकारी और सुन्दर होताहै यह सम्पूर्ण घृतोंमें अधिक गुणवालाहै ॥ २ ॥

माहिषस्य गुणाः ॥

माहिषन्तुघृतंस्वादुपित्तरक्तानिलापहम्। शीतलंश्लेष्मलंवृष्यंगुरुस्वादुविपच्यते ३

भैंसके घीके गुण ॥

भैंसकाघी.मधुर, रक्तपित्त तथा वातनाशक,शीतल,कफकारी, वीर्यवर्द्धक, भारी और पाकमें मधुर होताहै ॥ ३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छागस्य गुणाः ॥

आजमाज्यङ्करोत्यग्निंचक्षुष्यंबलवर्द्धनम् । कासेश्वासेक्षयेचापिहितंपाकेभवेत्कटु: ४ ॥

बकरीके घीके गुण ॥

बकरीका घी.दीपन,नेत्रोंकोहित,बलवर्द्धक,पाकमें कटु और खांसी, श्वास तथा राजयक्ष्मारोग में हितकारी होताहै ॥ ४ ॥

अथ उष्ट्रीघृतम् ॥

औष्ट्रंकटुघृतंपाकेशोषंकृमिविषापहम् । दीपनंकफवातघ्नंकुष्ठगुल्मोदरापहम् ॥ ५ ॥

उँटनी के घीके गुण ॥

उँटनी का घी.पाकमें कटु,दीपन और सूजन,विष,कृमि,कफ, वात, कुष्ठ, गुल्म तथा उदररोगनाशक होताहै ॥ ५ ॥

अथ आविकंघृतम् ॥

पाकेलघ्वाविकंसर्पिःसर्वरोगविनाशनम् । वृद्धिंकरोतिचास्थीनामश्मरीशर्करापहम् ॥
चक्षुष्यमग्निंव्युषणंवातदोषनिवारणम् ॥ ६ ॥

भेड के घीके गुण ॥

भेडका घी, पाकमें हलका,सर्वरोगनाशक, हड्डियों का बढानेवाला, नेत्रोंकोहित,दीपन और तथा वातरोगनाशक होताहै ॥ ६ ॥

अथ नारीघृतम् ॥

कफेऽनिलेयोनिदोषेपित्तेरक्तेचतद्धितम् । चक्षुष्यमाज्यंस्त्रीणांवासर्पिःस्यादमृतोपमम् ७ ॥

नारीके घीके गुण ॥

नारीका घी. नेत्रोंको हित और कफ, वात, योनिरोग, पित्तरक्तमें अमृतके समान गुणकारी होताहै ॥ ७ ॥

अथाश्वीघृतम् ॥

वृद्धिंकरोतिदेहाग्नेर्लघुपाकेविषापहम् । तर्पणंनेत्ररोगघ्नंदाहनुद्वडवाघृतम् ॥ ८ ॥

घोडीके घृतके गुण ॥

घोडीका घी. देहकी अग्निका बढानेवाला, पाकमें हलका, तृप्तिकारी और विषदोष, नेत्ररोग तथा दाहनाशक होताहै ॥ ८ ॥

दुग्धघृतस्य गुणाः ॥

घृतंदुग्धभवंग्राहिशीतलंनेत्ररोगहृत् । निहन्तिपित्तदाहास्रमदमूर्च्छाभ्रमानिलान् ९ ॥

दूधके घीके गुण ॥

दूधसे निकाला हुआ घी.ग्राही, शीतल और नेत्ररोग,पित्त,दाह,रक्तदोष,मद,मूर्च्छा,भ्रम तथा वातनाशक होताहै ॥ ९ ॥

अथह्यस्तनदधिजघृतगुणाः ॥

हविर्ह्यस्तनदुग्धोत्थंतत्स्याद्धैयङ्गवीनकम् । हैयङ्गवीनंचक्षुष्यंदीपनंरुचिकृत्परम् ॥
बलकृद्बृंहणंवृष्यंविशेषाज्ज्वरनाशनम् ॥ १० ॥

एकदिनके जमेहुये दहीके घी के गुण ॥

एकदिनके जमेहुये दही से निकले हुये घी को हैयंगवीन कहते हैं यह- नेत्रोंको हित, दीपन, अत्यन्त रुचिकारी,बल तथा धातुवर्द्धक,वीर्यवर्द्धक और विशेषकरके ज्वरनाशक होताहै ॥ १० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुराणघृतस्य गुणाः ॥

वर्षादूर्ध्वंभवेदाज्यंपुराणंतत्त्रिदोषनुत् । मूर्च्छाकुष्ठविषोन्मादापस्मारतिमिरापहम् ॥ यथायथाऽखिलंसर्पिः पुराणमधिकंभवेत् । तथातथाऽगुणैःस्वैःस्वैरधिकंतदुदाहृतम् ॥ ११ ॥

पुराने घीके गुण ॥

एकवर्षके रक्खेहुये घीको पुराना घृत कहते हैं यह, त्रिदोषनाशक और मूर्च्छा, कुष्ठ, विष, उन्माद, मृगी तथा तिमिरनाशक होताहै संपूर्ण घी जैसे २ पुराने होते हैं वैसेही वैसे अपने २ गुणोंमें अधिक होते हैं ११

अथ नूतनस्यघृतस्यविषयाः ॥

योजयेन्नवमेवाज्यंभोजनेतर्पणेश्रमे । बलक्षयेपाण्डुरोगेकामलानेत्ररोगयोः ॥ १२ ॥

नवीनघीके विषय ॥

भोजन, तृप्ति, श्रम, बलकानाश, पांडुरोग, कामला तथा नेत्ररोग में नवीन घृतको काम में लाना चाहिये ॥ १२ ॥

घृतप्रयोगस्याविषयाः ॥

राजयक्ष्मणिबालेचवृद्धेश्लेष्मकृतेगदे । रोगेसामेविषूच्याञ्चविबन्धेचमदात्यये ॥ ज्वरेचदहनेमन्देनसर्पिर्बहुमन्यते ॥ १३ ॥

इति श्रीभावप्रकाशेघृतवर्गः ॥

घीदेनेमें निषेध कियेहुये स्थान ॥

राजयक्ष्मा, कफरोग, आमयुक्तरोग, विसूचिका, विबन्ध, मदात्यय, ज्वर तथा मन्दाग्निमें और बालक तथा वृद्धोंको बहुत घी उपकारी नहीं है ॥ १३ ॥

इति भावप्रकाशस्यभाषानुवादे घृतवर्गः समाप्तः ॥

अथ मूत्रवर्गस्तत्रगोमूत्रगुणाः ॥

गोमूत्रंकटुतीक्ष्णोष्णंक्षारंतिक्तकषायकम् । लघ्वग्निदीपनंमेध्यंपित्तकृत्कफवातहृत् ॥ शूलगुल्मोदरानाहकण्ड्वक्षिमुखरोगजित् । किलासगदवातामवस्तिरुक्कुष्ठनाशनम् ॥ कासश्वासापहंशोथकामलापाण्डुरोगहृत् । कण्डूकिलासगदशूलमुखाक्षिरोगान् गुल्मातिसारमरुदामयमूत्ररोधान् ॥ कासंसकुष्ठजठरकृमिपाण्डुरोगान् गोमूत्रमेकमपिपीतमपाकरोति ॥ सर्वेष्वपिचमूत्रेषुगोमूत्रंगुणतोऽधिकम् । अतोऽविशेषात्कथनेमूत्रंगोमूत्रमुच्यते ॥ प्लीहोदरश्वासकासशोथवर्चोग्रहापहम् । शूलगुल्मरुजानाहकामलापाण्डुरोगहृत् ॥ कषायंतिक्ततीक्ष्णञ्चपूरणात्कर्णशूलनुत् ॥ १ ॥

अथ मूत्रवर्गः । गोमूत्र के गुण ॥

गोमूत्र-कटु, तीक्ष्ण, उष्ण, क्षार, तिक्त, कषैला, हलका, दीपन, मेधाकोहित, पित्तकारी और कफ, वात, शूल, गुल्म, उदर, आनाह, खुजली, नेत्ररोग, मुखरोग, किलास, आमवात, वस्तिरोग, कुष्ठ, खांसी, श्वास, सूजन, कामला तथा पाण्डुरोग नाशक होताहै ग्रन्थान्तरमें कहाहुआहै, कि एक गोमूत्रपान करनेसे खुजली, किलास, शूल, मुखरोग, नेत्ररोग, गुल्म, अतीसार, वातरोग, मूत्राघात, खांसी, कुष्ठ, उदर, कृमि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और पाण्डु इन सब रोगोंको नाशकरताहै सम्पूर्ण मूत्रोंमें गोमूत्र अधिक गुणवाला होताहै इसीकारण से जहां सामान्यतासे मूत्र कहाहो वहां गोमूत्रही का व्यवहार करना चाहिये गोमूत्र कषैला, तिक्त, तीक्ष्ण और प्लीहा, उदर, श्वास, खांसी, सूजन, मलका रुकना, शूल, गुल्म, आनाह, कामला तथा पाण्डु रोगनाशक और कानोंमें भरनेसे कानकी पीड़ाका नाश होताहै ॥ १ ॥

मानुषमूत्रगुणाः ॥

नरमूत्रंगरंहन्तिसेवितन्तद्रसायनम् । रक्तपामाहरंतीक्ष्णंसक्षारलवणंस्मृतम् ॥ गोजाविमहिषीणांतुस्त्रीणांमूत्रंप्रशस्यते । खरोष्ट्रेभनराश्वानांपुंसांमूत्रंहितंस्मृतम् ॥ २ ॥

इति श्रीभावप्रकाशेमूत्रवर्गः ॥

मनुष्यके मूत्रके गुण ॥

मनुष्यका मूत्र.गरदोषनाशक, रसायन, रक्तदोष तथा खुजलीनाशक, तीक्ष्ण, क्षार और नमकीन होताहै गौ, बकरी, भेड़ और भैंस इनमें स्त्रीजाति (मादा) कामूत्र श्रेष्ठहै गदहा, ऊंट, हाथी, मनुष्य और घोड़ा इनमें नरजातिकामूत्र श्रेष्ठहै ॥ २ ॥

इति भावप्रकाशस्यभाषानुवादे मूत्रवर्गः समाप्तः ॥

अथ तैलवर्गः । तत्रतैलस्य स्वरूपनिरूपणम् ॥

तिलादिस्निग्धवस्तूनांस्नेहस्तैलमुदाहृतम् । तन्तुवातहरंसर्वंविशेषात्तिलसम्भवम् ॥ १ ॥

अथ तैलवर्ग ॥ तेलके स्वरूपका वर्णन ॥

तिल आदिक स्निग्ध वस्तुओंके स्नेहको तैल कहते हैं सम्पूर्ण तेल वातनाशक होते हैं और तिल का तेल विशेष करके बादीको हरताहै ॥ १ ॥ अथ तिलतैलगुणाः ॥

तिलतैलंगुरुस्थैर्यबलवर्णकरंसरम् । वृष्यंविकाशिविशदंमधुरंरसपाकयोः ॥ सूक्ष्मंकषायानुरसंतिक्तंवातकफापहम् । वीर्येणोष्णंहिमंस्पर्शेबृंहणंरक्तपित्तकृत् ॥ लेखनंबद्धविण्मूत्रंगर्भाशयविशोधनम् । दीपनंबुद्धिदंमेध्यंव्यवायिव्रणमेहनुत् ॥ श्रोत्रयोनिशिरःशूलनाशनंलघुताकरम् । त्वच्यंकेश्यञ्चचक्षुष्यमभ्यङ्गेभोजनेऽन्यथा ॥ छिन्नभिन्नच्युतोत्पिष्टमथितक्षतपिच्चिते । भग्नस्फुटितविद्धाग्निदग्धविश्लिष्टदारिते ॥ तथाभिहतनिर्भुग्नमृगव्याघ्रादिविक्षते । वस्तौपानेऽन्नसंस्कारेनस्येकर्णाक्षिपूरणे ॥ सेकाभ्यङ्गावगाहेषुतिलतैलंप्रशस्यते । ननुबृंहणलेखनयोःकथंसामानाधिकरण्यमित्याह । रूक्षादिदुष्टःपवनःस्रोतःसङ्कोचयेद्यदा । रसोसम्यग्वहन्कार्श्यंकुर्य्याद्रक्ताद्यवर्द्धयन् ॥ तेषुप्रवेष्टुंसरत्वसौक्ष्म्यस्निग्धत्वमार्दवैः । तैलंक्षमंरसेनेतुंकृशानांतेनबृंहणम् ॥ व्यवायिसूक्ष्मतीक्ष्णोष्णसरत्वैर्मेदसःक्षयम् । शनैःप्रकुरुतेतैलंतेनलेखनमीरितम् ॥ द्रुतंपुरीषंबध्नातिस्खलितंतत्रवर्त्तयेत् । ग्राहकंसारकञ्चापितेनतैलमुदीरितम् ॥ घृतमब्दात्परंपक्कंहीनवीर्यंप्रजायते । तैलपक्कमपक्कंवाचिरस्थायिगुणाधिकम् ॥ २ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तिलके तेलके गुण ॥

तिलका तेल.भारी,स्थिरताकारक,बल तथा वर्णवर्द्धक, दस्तावर,पुष्टिकारक,विकाशी, विशद,रस तथा पाकमें मधुर, सूक्ष्म, कुछ कषैला, तिक्त, वातघ्न,कफनाशक,वीर्यमें उष्ण, स्पर्शमें शीतल,धातुवर्द्धक, रक्तपित्तकारी, कृशताकारी, मलमूत्ररोधक, गर्भाशय शोधन, दीपन, बुद्धिदायक,मेधाको हित, व्यवायि,घावनाशक,प्रमेहनाशक,वर्ण तथा योनि शूलनाशक,शिरकी पीड़ाका दूरकरनेवाला शरीरको हलका करनेवाला और शरीरमें लगानेसे त्वचा,केश तथा नेत्रोंकोहित परन्तु खानेसे त्वचा आदिकोंको अहित होताहै यह छिन्न,भिन्न,च्युत,मथित,उत्पिष्ट,क्षत,पिच्चित,भग्न,स्फुटित,विद्ध,अग्निदग्ध,विश्लिष्ट,विदारित,अभिहत,निर्भुग्न,मृग तथा व्याघ्र आदिकोंसे विक्षत (इन शब्दोंका विशेष अर्थ भग्न निदानमें कियाहै) पुरुषोंको वास्तिक्रियामें पानकरने में अन्नके संस्कार में नासलेने में कान तथा नेत्रोंके भरनेमें परिषेक में अभ्यंगमें और अवगाहमें श्रेष्ठ होताहै यहांपर यह सन्देह होसक्ताहै कि एकही वस्तुमें लेखन (कृशताकरना) और बृंहण (धातुओंका बढना) यह दोनों गुण कैसे होसक्ते हैं? इसका उत्तर यहहै कि जिससमय रूक्षादि वस्तुओंके सेवनसे दूषित वायु स्रोतोंको संकुचित करताहै तब रस अच्छप्रकारसे बह नहीं सक्ताहै इससे रुधिरादिकोंकी वृद्धि न होने से कृशता होती है सर सूक्ष्मता स्निग्धता और मृदुतासे तेल रसके लेजानेको समर्थ होताहै इसीसे कृशपुरुषोंकेलिये धातुवर्द्धक होताहै व्यवायी, सूक्ष्म,तीक्ष्ण, उष्ण और सर इन गुणोंके द्वारा तेल धीरे २ मेद धातुको क्षयकरताहै इसलिये पुष्टताकारक कहलाताहै तेल पतले मलको बांधताहै इससे ग्राही और स्खलित मलको निकालताहै इससे दस्तावर कहलाताहै एकवर्षका पुराना पकाहुआ घी हीन वीर्य होजाताहै परंतु तेल कच्चाहो वा पक्का जितना पुराना होगा उतनाही अधिक गुणकारी होगा ॥ २ ॥

सर्षपराजिक तैलगुणाः ॥

दीपनंसार्षपंतैलंकटुपाकरसंलघु । लेखनंस्पर्शवीर्य्योष्णंतीक्ष्णपित्तास्रदूषकम् ॥ कफमेदोऽनिलार्शोघ्नंशिरःकर्णामयापहम् । कण्डूकुष्ठकृमिश्वित्रकोठदुष्टकृमिप्रणुत् ॥ तद्वद्राजिकयोस्तैलंविशेषान्मूत्रकृच्छ्रकृत् । राजिकयोःकृष्णराईआरक्तराईद्वयोः ॥ ३ ॥

सरसों और राईके तेलके गुण ॥

सरसोंका तेल.दीपन, रस तथा पाकमें कटु,हलका,कृशताकारक, स्पर्श तथा वीर्य में उष्ण,तीक्ष्ण, रक्तपित्तदूषक और कफ,मेद,वात, बवासीर, शिरके रोग, कानके रोग, खुजली, कुष्ठ,कृमि, श्वेतकुष्ठ, कोठ तथा दुष्ट घावनाशक होताहै कृष्ण तथा लाल राईका तेलभी इसी के समान गुणकारी होताहै और विशेषकरके मूत्रकृच्छ्रकारी होताहै ॥ ३ ॥

तुवरीतैलगुणाः ॥

तीक्ष्णोष्णंतुवरीतैलंलघुग्राहिकफास्रजित् । वह्निकृद्विषहृत्कण्डूकुष्ठकोठकृमिप्रणुत् ॥ मेदोदोषापहञ्चापिव्रणशोथहरंपरम् ॥ ४ ॥

तुबरीतेलके गुण ॥

तुबरीका तेल.तीक्ष्ण, उष्ण, हलका, ग्राही,दीपन और कफ,रक्तदोष, विष, खुजली,कुष्ठ,कोठ,कृमि, मेददोष, घाव तथा सूजनका अत्यन्तनाशक होताहै ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ अतसीतैलगुणाः ॥

अतसीतैलमाग्नेयंस्निग्धोष्णंकफपित्तकृत्। कटुपाकमचक्षुष्यंबल्यंवातहरंगुरु ॥ मलकृद्रसतःस्वादुग्राहित्वग्दोषहृद्घनम्। वस्तौपानेतथाभ्यङ्गेनस्येकर्णस्यपूरणे ॥ अनुपानविधौचापिप्रयोज्यंवातशान्तये ॥ ५ ॥

अलसीके तेलके गुण ॥

अलसीका तेल. अग्निके गुणवाला, स्निग्ध, उष्ण, कफ तथा पित्तवर्द्धक, पाकमें कटु, नेत्रोंको अहित, बलकारी, वातनाशक, भारी, मलवर्द्धक, मधुर, ग्राही, त्वचाके दोषों का नाशक और घना होताहै वस्ति क्रिया पान अभ्यङ्ग (तेल लगाना) नास कानोंका भरना अनुपान और वातकी शान्ति करनेकेलिये अलसीका तेल श्रेष्ठहै ॥ ५ ॥

वररेतैलगुणाः ॥

कुसुम्भतैलमम्लंस्यादुष्णंगुरुविदाहि च ॥ चक्षुर्भ्यामहितंबल्यंरक्तपित्तकफप्रदम् ६॥

कुसुमके तेलके गुण ॥

कुसुमका तेल. खट्टा, उष्ण, भारी, विदाही, नेत्रोंको अहित, बलकारी और रक्तपित्त तथा कफकारक होता है ॥ ६ ॥

अथ खाखसबीजतैलस्यगुणाः

तैलंतुखसबीजानांबल्यंवृष्यंगुरुस्मृतम्। वातहृत्कफहृच्छीतंस्वादुपाकरसंचतत् ७॥

खसखसके तेलके गुण ॥

खसखसका तेल. बलकारी, पुष्टिदायक, भारी, वातनाशक, कफघ्न, शीतल और रस तथा पाक में मधुर होता है ॥ ७ ॥

एरण्डतैलगुणाः ॥

एरण्डतैलंतीक्ष्णोष्णंदीपनंपिच्छिलंगुरु । वृष्यंत्वच्यंवयःस्थापिमेधाकान्तिबलप्रदम् ॥ कषायानुरसंसूक्ष्मंयोनिशुक्रविशोधनम्। विस्रंस्वादुरसेपाकेसतिक्तंकटुकंसरम् ॥ विषमज्वरहृद्रोगपृष्ठगुह्यादिशूलनुत्। हन्तिवातोदरानाहगुल्माष्ठीलाकटिग्रहान् ॥ वातशोणितविड्बन्धव्रध्नशोथामविद्रधीन्। आमवातगजेन्द्रस्यशरीरवनचारिणः ॥ एकएव निहन्तायमेरण्डस्नेहकेसरी ॥ ८ ॥

रेंडीके तेलके गुण ॥

रेंडीका तेल. तीक्ष्ण, उष्ण, दीपन, पिच्छिल, भारी, पुष्टिकारक, त्वचाकोहित, अवस्थाको स्थिररखनेवाला, मेधाकारी, कान्ति तथा बलकारी, कुछ कषैला, सूक्ष्म योनि तथा वीर्यशोधक, दुर्गन्धियुक्त, रस तथा पाक में मधुर, तिक्त, कटु, दस्तावर और विषमज्वर, हृदयरोग, पीठकी पीडा, गुह्यकाशूल, वात, उदर, आनाह, गुल्म, अष्ठीला, कटिग्रह, वातरक्त, मलका रुकना, बद, सूजन, आम तथा विद्रधिनाशक होताहै शरीररूपी वनमें विचरते हुए आमवातरूपी हाथीको मारनेवाला केवल सिंहरूप रेंडीका तेलही है ॥ ८ ॥

रालतैलगुणाः ॥

तैलंसर्जरसोद्भूतंविस्फोटव्रणनाशनम्। कुष्ठपामाकृमिहरंवातश्लेष्मामयापहम् ९ ॥

रालके तेलके गुण ॥

रालका तेल. विस्फोट, घाव, कुष्ठ, खुजली, कृमि और वात कफके रोगोंका नाशक होताहै ॥ ९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सर्वतैलगुणाः ॥

तैलंस्वयोनिगुणकृद्वाग्भटेनाखिलंमतम्॥ अतःशेषस्यतैलस्यगुणाज्ञेयाःस्वयोनिवत् १०

इति श्रीभावप्रकाशेतैलवर्गः ॥

संपूर्ण तेलोंके गुण ॥

वाग्भटने कहाहै कि जिस वस्तुका तेल होताहै उसमें उसीके समान गुण होते हैं इससे जो तेल नहीं लिखेगये हैं उनमें उनके कारणके समान गुण जानने चाहिये ॥ १० ॥

इति भावप्रकाशस्यभाषानुवादेतैलवर्गःसमाप्तः ॥

अथ सन्धानवर्गः। तत्रकाञ्जिकस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

सन्धितंधान्यमण्डादिकाञ्जिकंकथ्यतेजनैः । काञ्जिकंभेदितीक्ष्णोष्णंरोचनंपाचनं लघु॥ दाहज्वरहरंस्पर्शात्पानाद्वातकफापहम् । माषादिवटकैर्यत्तुक्रियतेतद्गुणाधिकम् ॥ शोष लघुवातहरन्तत्तुरोचनंपाचनंपरम् । शूलाजीर्णविबन्धाननाशनंवस्तिशोधनम् ॥ शोष मूर्च्छाभ्रमार्त्तानांमदकण्डूविशोषिणाम्। कुष्ठिनांरक्तपित्तीनांकाञ्जिकंनप्रशस्यते॥ पाण्डु रोगेयक्ष्मणिचतथाशोषातुरेषुच। क्षतक्षीणेतथाश्रान्ते मन्दज्वरनिपीडिते ॥ एतेषान्तु हितंप्रोक्तंकाञ्जिकंदोषकारकम् ॥ १ ॥

अथ संधान (अचार) वर्ग। कांजीके लक्षण और गुण ॥

संधान कियेहुए धान्यके मण्ड आदिको कांजिक कहते हैं कांजी भेदक, तीक्ष्ण, उष्ण, रुचिकारी, पाचक और हलकी होती है इसके स्पर्श करने से दाह तथा ज्वर का नाश होता है और पान करने से वात और कफका नाश होताहै उर्द आदिके बड़ों से जो कांजी बनतीहै वह. अधिक गुणवाली, हलकी, वातनाशक, रुचिकारी, अत्यन्त पाचक, वस्तिशोधक और शूल, अजीर्ण, विबन्ध तथा आमदोषनाशक होती है शोष, मूर्च्छा, श्रम, मदरोग, खुजली, कुष्ठ तथा रक्तपित्तरोगवाले पुरुषोंको कांजी हितकारी नहीं है पाण्डुरोग, राजयक्ष्मा, शोषरोग, क्षतक्षीण, श्रम और मन्दज्वर में कांजी दोषकारी होतीहै ॥ १ ॥

अथ तुषोदकस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

तुषोदकंयवैरामैःसतुषैःशकलीकृतैः। यवैरुदकेसंहितैःसन्धानवर्गोक्तत्वात्॥ तुषाम्बु दीपनंहृद्यंपाण्डुकृमिगदापहम्। तीक्ष्णोष्णंपाचनंपित्तरक्तकृद्वस्तिशूलनुत् ॥ २ ॥

तुषोदक के लक्षण और गुण ॥

भूसी समेत कच्चे जवोंको कूटकर जो कांजी बनाई जातीहै उसको तुषोदक कहते हैं तुषोदक. दीपन, हृदयकोहित, तीक्ष्ण, उष्ण, पाचक, रक्तपित्तकारी और पाण्डु, कृमि, तथा वस्तिशूल नाशक होताहै ॥ २ ॥

अथ सौवीरस्य लक्षणंगुणाश्च ॥

सौवीरन्तुयवैरामैःपक्वैर्वानिस्तुषैःकृतम् । गोधूमैरपिसौवीरमाचार्य्याःकेचिदूचिरे ॥ सौवीरन्तुग्रहण्यर्शःकफघ्नंभेदिदीपनम्। उदावर्त्ताङ्गमर्दास्थिशूलानाहेषुशस्यते ॥ ३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सौवीरके लक्षण और गुण ॥

भूसीविना पक्के अथवा कच्चे जवोंको कूटकर जो संधान कियाजाताहै उसको सौवीर कहते हैं कोई कोई आचार्य गेहुँओंकोभी सौवीर कहते हैं सौवीर. ग्रहणी तथा बवासीरनाशक, कफघ्न, भेदक, दीपन, और उदावर्त्त, अङ्गमर्द, हड्डियोंकी पीडा तथा आनाहनाशक होताहै ॥ ३ ॥

अथारनालस्य लक्षणं गुणाश्च ॥

आरनालन्तुगोधूमैरामैःस्यान्निस्तुषीकृतैः। पक्वैर्वासन्धितैस्तत्तुसौवीरसदृशंगुणैः ॥ ४ ॥

आरनाल के लक्षण और गुण ॥

विना भूसीके कच्चे अथवा पक्के गेहुँओं के संधान को आरनाल कहते हैं इसमें सौवीर के समान. गुण होतेहैं ॥ ४ ॥ अथ धान्याम्लस्य लक्षणंगुणाश्च ॥

धान्याम्लशालिचूर्णञ्चकोद्रवादिकृतंभवेत्। धान्याम्लंधान्ययोनित्वात्प्रीणनंलघुदीपनम् ॥ अरुचीवातरोगेषुसर्वेष्वास्थापनेहितम् ॥ ५ ॥

धान्याम्ल के लक्षण और गुण ॥

शालिचूर्ण और कोदों आदिकों के द्वारा जो संधान होताहै उसको धान्याम्ल कहते हैं धान्याम्ल. धान्यसे उत्पन्न होनेके कारण प्रीतिकारक, हलका, दीपन और अरुचि, संपूर्ण वातरोग तथा आस्थापन में हितकारी होताहै ॥ ५ ॥ अथ शिण्डाक्यालक्षणंगुणाश्च ॥

शिण्डाकीराजिकायुक्तैःस्यान्मूलकदलद्रवैः। सर्षपस्वरसैर्वापिशालिपिष्टकसंयुतैः ॥ सन्धितैरितिशेषः। शिण्डाकीरोचनीगुर्वीपित्तश्लेष्मकरीस्मृता ॥ ६ ॥

शिण्डाकी के लक्षण और गुण ॥

राई समेत मूली के पत्तोंके रससे अथवा चावल की पिट्ठी समेत सरसों के रससे जो संधान बनताहै उसको शिण्डाकी कहतेहैं शिण्डाकी. रुचिकारक, भारी और कफपित्तवर्द्धक होताहै ॥ ६ ॥

अथ शुक्तस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

कन्दमूलफलादीनिसस्नेहलवणानिच । यत्रद्रव्येऽभिषूयन्तेतच्छुक्तमभिधीयते ॥ शुक्तंकफघ्नंतीक्ष्णोष्णंरोचनंपाचनंलघु। पाण्डुकृमिहरंरूक्षंभेदनंरक्तपित्तकृत् ॥ ७ ॥

जिस द्रव पदार्थ में तेल और लवणयुक्त कन्दमूल और फलादिक छोडे जायँ उसको शुक्त कहते हैं शुक्त. कफनाशक, तीक्ष्ण, उष्ण, रुचिकारी, पाचक, हलका, पाण्डु तथा कृमिनाशक, रूखा, भेदक और रक्त पित्तकारी होताहै ॥ ७ ॥

अथ सन्धानस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

कन्दमूलफलाढ्यंयत्तत्तुविज्ञेयमासुतम्। तद्रुच्यंपाचनंवातहृल्लघुविशेषतः ॥ ८ ॥

संधान के लक्षण और गुण ॥

अधिक कन्दमूल और फलोंकरके युक्त संधान कियेहुए द्रव पदार्थको आसुत कहते हैं आसुत. रुचिकारी, पाचक, वातनाशक और हलका होताहै ॥ ८ ॥

अथ मद्यस्यनामानिलक्षणंगुणाश्च ॥

मद्यन्तुशीधुमैरेयमिराचमदिरासुरा। कादम्बरीवारुणीचहालापित्रलवल्लभा ॥ प्रेयं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

न्मदकंलोकेतन्मद्यमभिधीयते। यथारिष्टंसुराशीधुरासवाद्यमनेकधा॥ मद्यंसर्वंभवेदुष्णंपित्तकृद्वातनाशनम्। भेदनंशीघ्रपाकञ्चरूक्षंकफहरंपरम्॥ अम्लञ्चदीपनंरुच्यंपाचनंचाशुकारिच। तीक्ष्णंसूक्ष्मञ्चविशदंव्यवायिचविकाशिच॥ ९॥

मद्यके नाम लक्षण और गुण॥

मद्य, शीधु, मैरेय, मिरा, मदिरा, सुरा, कादम्बरी, वारुणी, हाला और बलबल्लभा यहमद्यकेनामहैं लोकमें मदकारी पीने के पदार्थों को मद्य कहतेहैं जैसे अरिष्ट सुरा शीधु और आसवादिक अनेक प्रकार हैं सब प्रकारके मद्य. उष्ण, पित्तवर्द्धक, वातनाशक, भेदक, शीघ्र पचनेवाले, रूखे, अत्यन्त कफनाशक, खट्टे, दीपन, रुचिकारी, पाचक, शीघ्रताकारी, तीक्ष्ण, सूक्ष्म, विशद, व्यवायी और विकाशी होते हैं॥ ९॥

अथारिष्टस्यलक्षणंगुणाश्च॥

पक्वौषधाम्बुसिद्धंयन्मद्यंतत्स्यादरिष्टकम्। अरिष्टंमद्यमितिलोके॥ यथाद्राक्षारिष्टम्। दशमूलारिष्टम्॥ बब्बूलारिष्टमिति अरिष्टंलघुपाकेनसर्वतश्चगुणाधिकम्। अरिष्टस्यगुणाज्ञेयाबीजद्रव्यगुणैःसमाः॥ १०॥

अरिष्ट के लक्षण और गुण॥

औषध और जलको पकाकर जो मद्य बनताहै उसको अरिष्ट कहतेहैं अरिष्ट. संपूर्ण मद्योंमें अधिक गुणकारी, हलका और जिस वस्तु से बनाहो उसके समान गुणकारी होताहै द्राक्षारिष्ट दशमूलारिष्ट और बब्बूलारिष्ट इत्यादि॥ १०॥

अथ सुरापानलक्षणंगुणाश्च॥

शालिषष्टिकपिष्टादिकृतंमद्यंसुरास्मृता। सुरागुर्वीबलस्तन्यपुष्टिमेदःकफप्रदा॥ ग्राहिणीशोथगुल्मार्शोग्रहणीमूत्रकृच्छ्रनुत्॥ ११॥

सुराके लक्षण और गुण॥

धान और साठी आदिकी पीठीसे जो मद्य बनताहै उसको सुरा कहते हैं सुरा. भारी, बलकारी, दुग्धवर्द्धक, शरीरको पुष्टकरनेवाली, मेद और कफकारी, ग्राही और सूजन, गुल्म, बवासीर, ग्रहणी तथा मूत्रकृच्छ्रनाशक होती है॥ ११॥

अथ सुराभेदोवारुणीतस्यालक्षणंगुणाश्च॥

पुनर्नवाशिलापिष्टैर्वारुणीविहितास्मृता। संहितैस्तालखर्जूररसैर्यासापिवारुणी॥ सुरावद्वारुणीलघ्वीपीनसाध्मानशूलनुत्। सुरातोभेदार्थेलघ्वीति॥ १२॥

सुराभेद वारुणी के लक्षण और गुण॥

सिलपर पीसीहुई पुनर्नवासे जो मद्य बनती है उसको वारुणी कहते हैं खजूर और तालके रसको संधान करके जो मद्य बनतीहै उसको भी वारुणी कहते हैं वारुणी. सुराके समान गुणकारी, अत्यन्त हलकी और पीनस, आध्मान तथा शूलनाशक होती है॥ १२॥

अथ शीधुद्वयस्यलक्षणंगुणाश्च॥

इक्षोःपक्वैःरसैःसिद्धःशीधुःपक्वरसश्चसः। आमैस्तैरेवयःशीधुःसचशीतरसःस्मृतः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शीधुःपक्करसैःश्रेष्ठःस्वराग्निबलवर्णकृत्। वातपित्तकरःसद्यःस्नेहनोरोचनोहरेत् ॥ विबन्धमेदःशोफार्शःशोफोदरकफामयान्। तस्मादल्पगुणःशीतरसैःसंलेखनःस्मृतः॥१३॥

दोप्रकारके शीधुके लक्षण और गुण ॥

ईख के पक्के रससे जो मद्य बनतीहै उसको पक्करस शीधु और कच्चे रससे जो बनतीहै उसको शीत रस शीधु कहतेहैं पक्केरसका शीधु. श्रेष्ठ, गुणकारी, स्वर तथा वर्णकोहित, अग्नि तथा बलकारी, बादी, पित्तवर्द्धक, शीघ्र, स्निग्ध करनेवाली, रुचिकारी और विबन्ध, मेद, शोष, बवासीर, सूजन, उदर तथा कफरोगनाशक होतीहै कच्चे रसकी शीधुमें इससे कमगुण होतेहैं और लेखन होती है ॥ १३ ॥

अथासवस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

यदपक्कौषधाम्बुभ्यांसिद्धंमद्यंसआसवः। यथालोहासवादिः ॥ आसवस्यगुणाज्ञेया बीजद्रव्यगुणैःसमाः ॥ १४ ॥

आसव के लक्षण और गुण ॥

कच्ची औषध और जल से जो मद्य बनती है उसको आसव कहतेहैं यह जिस वस्तु से बनती है उसीके समान गुण करतीहै ॥ १४ ॥

अथ नवपुराणमद्यगुणाः ॥

मद्यंनवमभिष्यन्दित्रिदोषजनकंसरम्। अहृद्यंबृंहणन्दाहिदुर्गन्धंविशदंगुरु ॥ जीर्णन्तदेवरोचिष्णुकृमिश्लेष्मानिलापहम्। हृद्यंसुगन्धिगुणवल्लघुस्रोतोविशोधनम् ॥ १५ ॥

नवीन और पुरानी मद्य के गुण ॥

नवीनमद्य. अभिष्यन्दी, त्रिदोषकारी, दस्तावर, हृदयको अहित, धातुवर्द्धक, दाहकारी, दुर्गन्धियुक्त, विशद और भारी होती है प्राचीनमद्य. रुचिकारी, कृमिनाशक, कफघ्न, वातनाशक, हृदयकोहित सुगन्धियुक्त, हलकी और स्रोतोंको शुद्ध करनेवाली होती है इसी में विशेष गुण होते हैं ॥ १५ ॥

अथ सात्त्विकानांमद्यंपिबतांचेष्टाविशेषाः ॥

सात्त्विकेगीतहास्यादिराजसेसाहसादिकम् ॥ तामसेनिन्द्यकर्माणिनिद्रांचमदिराचरेत्। आचरेत्कुर्य्यात् ॥ १६ ॥

सात्त्विक आदि पुरुषोंकी मद्य पीनेकी चेष्टा ॥

सात्त्विकपुरुष. मद्य पीने से गीत तथा हास्यादिक राजसीपुरुष. मद्य पीने से साहस आदि कार्य और तामसीपुरुष. मद्यपीने से निन्दितकार्य्य तथा निद्राको प्राप्त होताहै ॥ १६ ॥

विधिनामात्रयाकालेहितैरन्नैर्यथाबलम्। प्रहृष्टोयःपिबेन्मद्यंतस्यस्यादमृतंयथा ॥ किन्तुमद्यंस्वभावेनयथैवान्नंतथास्मृतम्। अयुक्तियुक्तंरोगाययुक्तियुक्तंयथामृतम् ॥ १७ ॥

जो पुरुष विधिपूर्वक समयपर मात्राके अनुसार हितकारी द्रव्योंकेसाथ बलके अनुसार मद्य पीता है उसको वह मद्य अमृत के समान गुणकारी होती है मद्य. स्वभावहीसे अन्नके समान होतीहै जैसे युक्तिपूर्वक सेवन कियाहुआ अन्न अमृतके समान गुणकारी होताहै और विना युक्ति के रोगोंको उत्पन्न करताहै इसीप्रकार मद्यको भी जानना चाहिये ॥ १७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ मद्यानांगन्धनाशनोपायः ॥

मुस्तैलबालुगदजीरकधान्यकैला यश्चर्वयन्सदशिवाचमभिव्यनक्ति ॥ स्वाभाविकं मुखजमुज्झतिपूतिगन्धंगन्धञ्चमद्यलशुनादिभवञ्चनूनम् ॥ १८ ॥

इति श्रीभावप्रकाशेसन्धानवर्गः ॥

मद्यकी दुर्गन्धि नाशकरनेका उपाय ॥

नागरमोथा, एलबालुक, कूट, जीरा, धनियां और इलायची इनसबको चाबकर जो सभामें बोल चालकरताहै उसके मुखकी स्वाभाविक दुर्गन्धि और मद्य तथा लहसन आदिकीभी दुर्गन्धि मिट जाती है ॥ १८ ॥ इति श्रीभावप्रकाशस्य भाषानुवादे संधानवर्गः समाप्तः ॥

अथ मधुवर्गस्तत्रमधुनोनामानिगुणाश्च ॥

मधुमाक्षीकमाध्वीकक्षौद्रसारघ्यमीरितम् । मक्षिकावरटीभृंगवान्तपुष्परसोद्भवम् ॥ मधुशीतंलघुस्वादुरूक्षंग्राहिविलेखनम् । चक्षुष्यन्दीपनंस्वर्य्यंव्रणशोधनरोपणम् ॥ सौकुमार्य्यकरंसूक्ष्मंपरंश्रोतोविशोधनम् । कषायानुरसंह्लादिप्रसादजनकंपरम् ॥ वर्ण्यंमेधाकरंवृष्यंविशदंरोचनंहरेत् । कुष्ठार्शःकासपित्तास्रकफमेहक्लमकृमीन् ॥ मेदस्तृष्णावमिश्वासहिक्कातीसारविड्ग्रहान् । दाहक्षतक्षयांस्तत्तुयोगवाह्यल्पवातलम् ॥ १ ॥

अथ मधुवर्ग सहतकेनाम और गुण ॥

मधु, माक्षीक, माध्वीक, क्षौद्र, सारघ्य, मक्षिकावान्त, वरटीवान्त, भृङ्गवान्त और पुष्परसोद्भव यहसहतके नामहैंसहत. शीतल, हलका, मधुर, रूखा, ग्राही, कृशताकारक, नेत्रोंकोहित, दीपन, स्वरकोहित, घावकाशुद्धकरनेवाला औरभरनेवाला, सुकुमारकारी, सूक्ष्म, श्रोतोंकाशोधक, कुछकषैला, आनन्ददायक, प्रसन्नताकारी, वर्णकोहित, मेधाकारी, वीर्यवर्द्धक, विशद, रुचिकारी, योगवाही, कुछबादी और कुष्ठ, बवासीर, खांसी रक्त पित्त, कफ, प्रमेह, ग्लानि, कृमि, मेद, तृषा, छर्दि, श्वास, हिचकी, अतीसार, मलका रुकना, दाह, क्षत तथा क्षयनाशक होताहै ॥ १ ॥

अथ मधुभेदाः ॥

माक्षिकंभ्रामरंक्षौद्रंपैत्तिकंछात्रमित्यपि । आर्घ्यमौद्दालकंदालमित्यष्टौमधुजातयः ॥ २ ॥

सहतके भेद ॥

माक्षिक, भ्रामर, क्षौद्र, पैत्तिक, छात्र, आर्घ्य, औद्दालक और दाल यह आठप्रकारका सहतहोताहै ॥ २ ॥

अथ तेषांलक्षणंगुणाश्च । तत्रमाक्षिकस्यलक्षणम् ॥

माक्षिकाःपिंगवर्णास्तुमहत्योमधुमक्षिकाः । ताभिःकृतंतैलवर्णंमाक्षिकंपरिकीर्तितम् ॥ माक्षिकंमधुषुश्रेष्ठंनेत्रामयहरंलघु । कामलार्शःक्षतश्वासकासक्षयविनाशम् ॥ ३ ॥

इनके लक्षण और गुण इनमें से माक्षिक के लक्षण और गुण ॥

पिंगल वर्णवाली बड़ी मधु मक्षिकाओंको मक्षिका कहते हैं इनके कियेहुये तेलके समान वर्ण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाले सहतको माक्षिक कहतेहैं यह संपूर्ण सहतोंमें श्रेष्ठ,हलका और नेत्ररोग,कामला,बवासीर,घाव, श्वास, खांसी तथा क्षयनाशक होताहै ॥ ३ ॥

अथ भ्रामरस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

किञ्चित्सूक्ष्मैः प्रसिद्धेभ्यः षट्पदेभ्योऽलिभिश्चितम् । निर्मलंस्फटिकाभंयत्तन्मधुभ्रामरंस्मृतम् ॥ भ्रामरंरक्तपित्तघ्नंमूत्रजाड्यकरंगुरु ॥ स्वादुपाकमभिष्यन्दिविशेषात्पिच्छिलंहिमम् ॥ ४ ॥

भ्रामरके लक्षण और गुण ॥

प्रसिद्ध भ्रमरोंसे कुछ छोटे भ्रमरों के द्वारा इकट्ठे किये गये स्फटिकके समान निर्मल सहतको भ्रामर कहतेहैं यह रक्त पित्त नाशक मूत्ररोधक भारी पाकमेंमधुर अभिष्यन्दी अत्यन्त पिच्छिलं और शीतल होताहै ॥ ४ ॥

अथ क्षौद्रस्य लक्षणं गुणाश्च ॥

मक्षिकाः कपिलाः सूक्ष्माः क्षुद्राख्यास्तत्कृतंमधु । मुनिभिः क्षौद्रमित्युक्तंतद्वर्णात्कपिलंभवेत् ॥ गुणैर्माक्षिकवत्क्षौद्रंविशेषान्मेहनाशम् ॥ ५ ॥

क्षौद्रके लक्षण और गुण ॥

कपिल वर्णवाली छोटी मक्खियोंके द्वारा इकट्ठेकियेगये कपिलवर्णके सहतको क्षौद्र कहतेहैं यह माक्षिकके समान गुणवाला और विशेष करके प्रमेहनाशक होताहै ॥ ५ ॥

अथ पौतिकस्य लक्षणंगुणाश्च ॥

कृष्णायामशकोपमालघुतराः प्रायोमहापीडिका वृक्षानांतरुकोटरान्तरगताः पुष्पासवंकुर्वते । तास्तज्ज्ञैरिहपूतिकानिगदितास्ताभिः कृतंसर्पिषातुल्यंयन्मधुतद्वनेचरजनैः संकीर्तितंपौतिकम्॥ पौतिकंमधुरूक्षोष्णंपित्तदाहास्रवातकृत। विदाहिमेहकृच्छ्रघ्नंग्रन्थ्यादिक्षतशोषिच ॥ ६ ॥

पौतिकके लक्षण और गुण ॥

कृष्णवर्णवाली मच्छरके समान छोटी अत्यन्त पीडादेनेवाली और बडे वृक्षोंके खोखलोंमें सहतको इकट्ठा करनेवाली मधुमक्षिकाओंको पूतिका कहते हैं इनके कियेहुये घृततुल्य सहतको पौतिक कहते हैं यह रूखा, पित्तवर्द्धक, दाहकारी, रक्तदूषक, बादी, प्रमेह तथा मूत्रकृच्छ्रनाशक और ग्रन्थि आदि घावोंका नाशक होताहै ॥ ६ ॥

छात्रस्यलक्षणंगुणाः

वरटाः कपिलाः पीताः प्रायोहिमवतोवने । कुर्वन्तिछत्रकाकारंतज्जंछात्रंमधुस्मृतम् ॥ छात्रंकपिलपीतंस्यात्पिच्छिलंशीतलंगुरु ॥ स्वादुपाकंकृमिश्चित्ररक्तपित्तप्रमेहजित् । भ्रमतृष्णमोहविषहृत्तर्पणञ्चगुणाधिकम् ॥ ७ ॥

छात्रके लक्षण और गुण ॥

कपिल और पीतवर्णकी मधुमक्षिका प्रायः हिमालयके वनोंमें छत्तालगाती हैं इनके सहतको छात्र कहते हैं यह. कपिल तथा पीतवर्ण,पिच्छिल,शीतल,भारी,पाकमें मधुर, तृप्तिकारक, अधिक गुणकारी और कृमि, श्वेतकुष्ठ, रक्तपित्त, प्रमेह, भ्रम, तृषा, मोह तथा विषनाशक होताहै ॥ ७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथार्घ्यस्य लक्षणंगुणाश्च ॥

मधूकवृक्षनिर्यासंजरत्कार्वाश्रमोद्भवम् । स्रवन्त्यार्घ्यन्तदाख्यातंश्वेतकंमालवेपुनः॥ तीक्ष्णतुण्डास्तुयापीतामक्षिकाःषट्पदोपमाः॥ आर्घ्यास्तास्तत्कृतंयत्तदार्घ्यमित्यपरेजगुः आर्घ्यमध्वतिचक्षुष्यंकफपित्तहरंपरम् । कषायंकटुकंपाकेतिक्तञ्चबलपुष्टिकृत् ॥ ८ ॥

आर्घ्यके लक्षण और गुण ॥

जरत्कारु मुनिके आश्रमके महुओंके वृक्षोंके गोंदको आर्घ्य और इसको मालवदेशमें श्वेतक कहते हैं कोई आचार्य्य कहते हैं कि तीक्ष्ण चोंचवाली, भ्रमरों के समान पीतवर्णवाली, मधुमक्षिकाओं को आर्घ्य कहते हैं और इनके सहतकोभी आर्घ्य कहतेहैं यह अत्यन्तनेत्रोंको हित, कषैला, पाकमें कटु, तिक्त, बल और पुष्टिकारी तथा कफ पित्त का अत्यन्त नाशक होताहै ॥ ८ ॥

अथौद्दालकस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

प्रायोवल्मीकमध्यस्थाःकपिलाःस्वल्पकीटकाः । कुर्वन्तिकापिलंस्वल्पंतस्थादौद्दालकंमधु ॥ औद्दालकंरुचिकरंस्वर्य्यंकुष्ठविषापहम् । कषायमुष्णमम्लञ्चकटुपाकञ्च पित्तकृत् ॥ ९ ॥

औद्दालक के लक्षण और गुण ॥

कपिल वर्णवाले प्रायःबामीमें रहनेवाले एकप्रकारके छोटे कीडे जो थोडासा कपिलवर्णकासहत इकट्ठा करतेहैं उसको औद्दालक कहतेहैं यह रुचिकारी, स्वरवर्द्धक, कुष्ठ तथा विषनाशक, कषैला, उष्ण, खट्टा, पाकमें कटु और पित्तवर्द्धक होताहैं ॥ ९ ॥

अथ दालस्यलक्षणंगुणाः ॥

संस्रुत्यपतितंपुष्पाद्यत्तुपत्रोपरिस्थितम् । मधुराम्लकषायञ्चतद्दालंमधुकीर्त्तितम् ॥ दालंमधुलघुप्रोक्तंदीपनीयंकफापहम् । कषायानुरसंरूक्षंरुच्यंछर्दिप्रमेहजित् ॥ अधिकंमधुरंस्निग्धंबृंहणंगुरुभारिकम् । लघुपाकेगुरुभारिकंतुलितम् ॥ १० ॥

दालके लक्षण और गुण ॥

पुष्पोंसे टपककर पत्तोंपर इकट्ठेहुए सहतको दाल कहतेहैं यह मधुर, खट्टा, कुछ कषैला, पाकमेंलघु, दीपन, कफनाशक, रूखा, रुचिकारी, छर्दि तथा प्रमेहनाशक, स्निग्ध धातुवर्द्धक और तौल में भारी होताहै ॥ १० ॥

अथ नवपुराणमधुगुणाः ॥

नवंमधुभवेत्पुष्ट्यैनातिश्लेष्महरंसरम् । पुराणंग्राहकंरूक्षंमेदोघ्नमतिलेखनम् ॥ मधुनःशर्करायाश्चगुडस्यापिविशेषतः । एकसंवत्सरेवृत्तेपुराणत्वंस्मृतंबुधैः ॥ ११ ॥

नये पुराने सहतके गुण ॥

नवीन सहत पुष्टिकारी, दस्तावर और अत्यन्त कफनाशक नहीं होताहै पुराना सहत ग्राही, रूखा, मेदनाशक और अत्यन्त कृशताकारक होताहै पण्डितलोग कहते हैं कि सहत शक्कर और गुड एक वर्षके व्यतीतहोनेपर पुराने होतेहैं ॥ ११ ॥

अथ मधुनःशीतस्यगुणाधिक्यमुष्णतायांनिषेधः ॥

विषपुष्पादपिरसंसविषाभ्रमरादयः । गृहीत्वामधुकुर्वन्तितच्छीतंगुणवन्मधु ॥ त्रिषा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

न्वयात्तदुष्णान्तुद्रव्येणोष्णेनवासह। उष्णार्त्तस्योष्णकालेचस्मृतंविषसमंमधु॥ १२॥

शीतल सहतकी गुणमें अधिकता और उष्णता का निषेध॥

विषयुक्त भ्रमरादिक विषयुक्त पुष्पोंसे भी रसको लाकर सहत बनाते हैं इसलिये शीतल सहत गुणकारी होताहै और विषयुक्त होनेके कारण उष्ण अथवा उष्ण वस्तुओंके साथ उष्णता से व्याकुल पुरुषको अथवा उष्णकाल में सहत विषके समान होताहै॥ १२॥

अथ मयनम्॥

मयनन्तुमधुच्छिष्टंमधुशेषञ्चसिक्थकम्। मध्वाहारोमदनकंमधूषितमपिस्मृतम्॥
मदनंमृदुसुस्निग्धंभूतघ्नंव्रणरोपणम्। भग्नसन्धानकृद्वातकुष्ठवीसर्परक्तजित्॥१३॥

इति श्रीभावप्रकाशेमधुवर्गः॥

मोम के नाम और गुण॥

मयन मधुच्छिष्ट मधुशेष सिक्थक मध्वाहार मदनक और मधूषित यह मोमके नाम हैं मोम कोमल स्निग्ध भूतनाशक घावका भरनेवाला टूटेको जोड़नेवाला और वात कुष्ठ वीसर्प तथा रक्त दोषनाशक होताहै॥ १३॥

इति श्रीभावप्रकाशस्यभाषानुवादेमधुवर्गःसमाप्तः॥

अथेक्षुवर्गस्तत्रादाविक्षोर्नामानिगुणाश्च॥

इक्षुर्दीर्घच्छदःप्रोक्तस्तथाभूमिरसोऽपिच। गुडमूलोऽसिपत्रश्चतथामधुतृणःस्मृतः॥
इक्षवोरक्तपित्तघ्नाबल्यावृष्याःकफप्रदाः स्वादुपाकरसाःस्निग्धागुरवोमूत्रलाहिमाः १॥

अथ इक्षुवर्ग। ईखके नाम और गुण॥

इक्षु,दीर्घच्छद,भूमिरस,गुड़मूल,असिपत्र और मधुतृण यह ईखके नामहैं ईख.रक्तपित्तनाशक,बलकारी, पुष्टिकारक, कफवर्द्धक,रस तथा पाक में मधुर,स्निग्ध, भारी,मूत्रवर्द्धक और शीतल होतीहै१॥

अथेक्षुभेदाः॥

पौण्ड्रकोभीरुकश्चापिवंशकःशतपोरकः। कान्तारस्तापसेक्षुश्चकाण्डेक्षुःसूचिपत्रकः॥नैपालोदीर्घपत्रश्चनीलपोरोऽथकोशकः॥इत्येताजातयस्तेषांकथयामिगुणानपि॥२॥

ईख के भेद॥

पौण्ड्रक, भीरुक, वंशक, शतपोरक,कान्तार,तापसेक्षु,कांडेक्षु,सूचिपत्रक,नैपाल,दीर्घपत्र, नीलपोर और कोशक यह बारह ईखके भेदहैं अब इनके गुणोंको कहता हूं॥ २॥

अथ श्वेतपौण्ड्राभौररीगुणाः॥

वातपित्तप्रशमनोमधुरोरसपाकयोः। सुशीतोबृंहणोबल्यःपौण्ड्रकोभीरुकस्तथा ३॥

श्वेत पौंडा और भौंरीके गुण॥

पौंडा और भीरुक यह दोनों वातपित्तनाशक, रस तथा पाक में मधुर, अत्यन्त शीतल, धातु वर्द्धक और बलकारी होते हैं॥ ३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ करियाकुशिआरगुणाः ॥

कोशकारोगुरुःशीतोरक्तपित्तक्षयापहः ४ (कान्तारेक्षुगुणः) कान्तारेक्षुर्गुरुर्वृष्यः श्लेष्मलोबृंहणःसरः ५ ॥

कोशकारके गुण ॥

कोशकार. भारी, शीतल और रक्तपित्त तथा क्षयनाशक होते हैं ४ (कान्तार के गुण) कान्तार. भारी, वीर्यवर्द्धक, कफकारी, धातुवर्द्धक और दस्तावर होताहै ५ ॥

वडौखागुणाः ॥

दीर्घपोरःसुकठिनःसक्षारोवंशकःस्मृतः ६ (शतपोरकगुणाः) शतपर्वाभवेत्किञ्चित्कोशकारगुणान्वितः । विशेषात्किञ्चिदुष्णश्चसक्षारःपवनापहः ॥ ७ ॥

बंशक (बड़ौखा) ईषके गुण ॥

बड़े पोरवाली कठिन और क्षारयुक्त ईषको वंशक कहतेहैं ६ (शतपोरकके गुण) शतपोरक कुछ कोशकार के समान गुणवाला और विशेषकरके कुछ उष्ण, क्षारयुक्त तथा वातनाशक होताहै ७ ॥

तापसेक्षुगुणाः ॥

तापसेक्षुर्भवेन्मृद्वीमधुराश्लेष्मकोपनी।तर्पणीरुचिकृच्चापिवृष्याचबलकारिणी ॥ ८ ॥

तापसेक्षुके गुण ॥

तापसेक्षु. कोमल, मधुर, कफकोकुपित करनेवाली, तृप्ति और रुचिकारक, वीर्यवर्द्धक तथा बलकारी होतीहै ॥ ८ ॥

काण्डेक्षुगुणाः ॥

एवंगुणैस्तुकाण्डेक्षुःसतुवातप्रकोपणः ९ (अथसूचीपत्रनैपालीदीर्घपत्रनीलपोराणांगुणाः) सूचीपत्रोनीलपोरोनैपालोदीर्घपत्रकः । वातलाःकफपित्तघ्नाःसकषायाविदाहिनः ॥ १० ॥

काण्डेक्षुके गुण ॥

काण्डेक्षु. तापसेक्षुके समानगुणवाली और विशेषकरके वातको कुपित करतीहै ९ (सूचीपत्र नैपाली दीर्घपत्र और नीलपोरके गुण) सूचीपत्र नीलपोर नैपाली और दीर्घपत्र नाम ईख बादी, कफपित्त नाशक, कषैली और विदाही होतीहै १० ॥

मनोगुप्तागुणाः ॥

मनोगुप्तावातहरीतृष्णामयविनाशिनी । सुशीतामधुरातीव्ररक्तपित्तप्रणाशिनी ॥ ११ ॥

मनोगुप्ताके गुण ॥

मनोगुप्ता नाम ईख. शीतल, मधुर और वायु, तृषा तथा रक्त पित्तनाशक होती है ॥ ११ ॥

अथ बालयुववृद्धेक्षुगुणाः ॥

बालइक्षुःकफंकुर्यान्मेदोमेहकरश्चसः । युवातुवातहृत्स्वादुरीषत्तीक्ष्णश्चपित्तनुत् ॥ रक्तपित्तहरोवृद्धःक्षतहृद्बलवीर्य्यकृत् ॥ १२ ॥

छोटी बड़ी और पकीहुई ईषके गुण ॥

छोटी ईख. कफकारी, मेदवर्द्धक तथा प्रमेहकारी, मध्यम ईख. वातनाशक, मधुर, कुछ तीक्ष्ण तथा पित्तनाशक और खूब पकी हुई ईख. बलवीर्यवर्द्धक, घाव नाशक तथा रक्त पित्तनाशक होती है १२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथांगभेदेनभेदः ॥

मूलेतुमधुरोऽत्यर्थंमध्येऽपिमधुरःस्मृतः । अग्रेग्रन्थिषुविज्ञेयइक्षुःपटुरसोजनैः ॥ १३ ॥

अङ्ग के भेदसे गुण के भेद ॥

ईखकी जड़ अत्यन्त मधुर मध्यमें मधुर और अग्रभाग तथा ग्रन्थिमें लवण रस होताहै ॥ १३ ॥

अथ दन्तपीडितेक्षुरसस्यगुणाः ॥

दन्तनिष्पीडितस्येक्षोरसःपित्तास्रनाशनः। शर्करासमवीर्य्यःस्यादविदाहीकफप्रदः॥ १४॥

दांतोंसे चूसेहुये ईखके गुण ॥

दांतसे चूसाहुआ ईखका रस. रक्तपित्तनाशक, शक्कर के समान वीर्यवाला, विदाह रहित और कफकारी होताहै ॥ १४ ॥ अथ यन्त्रपीडितेक्षुरसस्यगुणाः ॥

मूलाग्रजन्तुग्रन्थ्यादिपीडनान्मलसङ्करात् । किञ्चित्कालंविधृत्याचविकृतिंयाति यान्त्रिकः ॥ तस्माद्विदाहीविष्टम्भीगुरुःस्याद्यान्त्रिकोरसः ॥ १५ ॥

यन्त्रसे निकाले हुए ईखके रसके गुण ॥

यन्त्रके द्वारा निकालाहुआ ईखकारस. मूल अग्रभाग तथा ग्रन्थि आदिके एक साथ निचोड़नेके द्वारा मलके मिलजाने से और कुछदेर रखने से विकारयुक्त होजाताहै इसीसे यह विदाही विष्टम्भी और भारी होताहै ॥ १५ ॥ अथ पर्युषितेक्षुरसस्यगुणाः ॥

रसःपर्युषितोनेष्टश्चाम्लोवातापहोगुरुः । कफपित्तकरःशोषीभेदनश्चातिमूत्रलः ॥ १६ ॥

रक्खेहुएरसकेगुण ॥

ईखका बासीरस. अहितकारी, खट्टा, वातनाशक, भारी, कफ पित्तवर्द्धक, शोषकारी, भेदक और अत्यन्त मूत्रवर्द्धक होताहै १६ ॥ अथ पक्वस्येक्षुरसस्यगुणाः ॥

पक्वोरसोगुरुःस्निग्धःसुतीक्ष्णःकफवातनुत्।गुल्मानाहप्रशमनःकिञ्चित्पित्तकरःस्मृतः १७

ईखके पकेहुए रसके गुण ॥

ईखका पकाहुआ रस. भारी, स्निग्ध, अत्यन्त तीक्ष्ण, कफ वातनाशक, गुल्म तथा आनाहनाशक और कुछ पित्तकारी होताहै ॥ १७ ॥

अथेक्षुरसस्यविकाराणांगुणाः ॥

इक्षोर्विकारास्तृड्दाहमूर्च्छापित्तास्रनाशनाः । गुरवोमधुराबल्याःस्निग्धावातहराःस राः ॥ वृष्यामोहहराःशीताबृंहणाविषहारिणः ॥ १८ ॥

ईखके रसके विकारों के गुण ॥

ईखके रसके विकार. तृषा, दाह, मूर्च्छा, रक्तपित्त, वात, मोह तथा विषदोषनाशक, भारी, मधुर बलकारी, स्निग्ध, दस्तावर, वीर्यवर्द्धक, शीतल और धातुवर्द्धक होते हैं ॥ १८ ॥

अथ फाणित ! ढरकारावच्छोवाइतिलोके तस्यलक्षणंगुणाश्च ॥ ॥

इक्षोरसस्तुयःपक्वःकिञ्चिद्गाढोबहुद्रवः । सरावेक्षुविकारेषुरुयातःफाणितसंज्ञया ॥ फाणितंगुर्वभिष्यन्दिबृंहणंकफशुक्रकृत् । वातपित्तश्रमान्हन्तिमूत्रवस्तिविशोधनम् ॥ १९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फाणित [राबके] के लक्षण और गुण ॥

ईखका काथहुआ रस. कुछ गाढा और बहुत पतला फाणित कहलाताहै राब. भारी अभिष्यन्दीपुष्ट कफ तथा वीर्यवर्द्धक वातघ्न, पित्त तथा श्रमनाशक और मूत्र तथा वस्तिशोधक होती है ॥ १६ ॥

अथ मत्स्यण्डी राबकाकवखण्डरावइतिलोके । तस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

इक्षोरसोयःसम्पक्कोघनःकिञ्चिद्द्रवान्वितः । मन्दंयतस्स्यन्दतेतस्मात्तन्मत्स्यण्डीनिगद्यते । मत्स्यण्डीभेदिनीबल्यालघ्वीपित्तानिलापहा ॥ मधुराबृंहणीवृष्यारक्तदोषापहा स्मृता ॥ २०

मत्स्यण्डी [खड़रफ] के लक्षण और गुण ॥

कुछ पतला बहुत गाढा पकाहुआ ईखका रस किसी पात्रमें थोडा २ करके टपकायागया मत्स्यण्डी कहाताहै मत्स्यण्डी. भेदक, बलकारी, हलकी, वात, पित्तनाशक, मधुर, धातुवर्द्धक, पुष्टिकारक और रक्त दोषनाशक होतीहै ॥ २० ॥

अथ गुडस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

इक्षोरसोयःसम्पक्कोजायतेलोष्टवद्दृढः । सगुडोगौडदेशेतुमत्स्यण्ड्येवगुडोमतः । गुडो वृष्योगुरुःस्निग्धोवातघ्नोमूत्रशोधनः ॥ नातिपित्तहरोमेदःकफकृमिबलप्रदः ॥ २१ ॥

गुडके लक्षण और गुण ॥

ईखका पकाहुआ रस ढेलेके समान दृढ होजाताहै उसे गुड कहते हैं गौडदेशमें मत्स्यण्डीकोही गुड कहते हैं गुड. वीर्यवर्द्धक, भारी, स्निग्ध, वातनाशक, मूत्रशोधक, कुछ पित्तनाशक और मेद, कफ, कृमि तथा बलवर्द्धक होताहै ॥ २१ ॥

अथ पुराणगुडस्यगुणाः ॥

गुडोजीर्णोलघुःपथ्योऽनभिष्यन्द्यग्निपुष्टिकृत् ॥ पित्तघ्नोमधुरोवृष्योवातघ्नोऽसृक्प्रसादनः ॥ २२ ॥

पुरानेगुडकेगुण ॥

पुरानागुड. हलका, पथ्य, अभिष्यन्दरहित, दीपन, पुष्टिकारी, पित्तघ्न, मधुर, वीर्यवर्द्धक, वातनाशक और रुधिरको उत्तम करनेवाला होताहै ॥ २२ ॥

नवीनगुडस्यगुणाः ॥

गुडोनवःकफश्वासकासकृमिकरोऽग्निकृत् । श्लेष्माणमाशुविनिहन्तिसदार्द्रकेणपित्तंनिहन्तिचतदेषहरीतकीभिः । शुण्ठ्यासमंहरतिवातमशेषमित्थंदोषत्रयक्षयकरायनमोगुडाय ॥ २३ ॥

नवीनगुडकेगुण ॥

नवीन गुड. कफ, श्वास, खांसी, कृमि और अग्निको बढाताहै अदरकयुक्त गुड. कफनाशक, हड सहित गुड पित्तनाशक और सोंठ सहित गुड संपूर्ण वातरोगनाशक होताहै इसप्रकार त्रिदोषनाशक गुड धन्यहै उसके लिये नमस्कारहै ॥ २३ ॥

अथ खांडगुणाः ॥

खण्डन्तुमधुरंवृष्यंचक्षुष्यंबृंहणंहिमम् । वातपित्तहरंस्निग्धंबल्यंवान्तिहरंपरम् । खण्डमतिप्रसिद्धम् ॥ २४ ॥

खांडकेगुण ॥

खांड. मधुर, वीर्यवर्द्धक, नेत्रोंको हित, धातुवर्द्धक, शीतल, वात, पित्तनाशक, स्निग्ध, बलकारी और अत्यन्त छर्द्दिनाशक होती है ॥ २४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ सिता चीनीइतिलोकेप्रसिद्धा। तस्यलक्षणंगुणाश्च॥

खण्डन्तुसिकतारूपंसुश्वेतंशर्करासिता। सितासुमधुरारुच्यावातपित्तास्रदाहहृत्॥ मूर्च्छाछर्दिज्वरान्हन्तिसुशीताशुक्रकारिणी॥ २५॥

चीनीकेलक्षण और गुण॥

अत्यन्त श्वेत और बालूके समान खांडको सिता और शर्करा कहते हैं चीनी.अत्यन्त मधुर, रुचिकारी,अत्यन्त शीतल,वीर्यवर्द्धक औरवात,रक्त,पित्त,दाह,मूर्च्छा,छर्दि तथा ज्वरनाशकहोती है॥ २५॥

अथ गुडशर्करामिश्रीद्वयोर्गुणाः॥

भवेत्पुष्पसिताशीतारक्तपित्तहरीलघुः। सितोपलासरालघ्वीवातपित्तहरीहिमा॥ २६॥

गुडशर्करा और मिश्रीकेगुण॥

पुष्पसिता (गुलशक्कर) शीतल, रक्त पित्तनाशक और हलकी होतीहै मिश्री. दस्तावर, हलकी, वात पित्तनाशक और शीतलहोती है॥ २६॥

मधु खण्डगुणाः॥

मधुजाशर्करारूक्षाकफपित्तहरीगुरुः॥ छर्द्यतीसारतृड्दाहरक्तहृत्तुवराहिमा॥ २७॥

सहतकी शक्करके गुण॥

सहतकी शक्कर. रूखी, कफ पित्तनाशक, भारी, कषैली, शीतल और छर्दि, अतीसार, तृषा, दाह तथा रक्तदोषनाशक होती है॥ २७॥

यथायथैषानैर्मल्यं मधुरत्वंतथातथा॥ स्नेहलाघवशैत्यादिसरत्वञ्चतथातथा॥२८॥

इति श्रीभावप्रकाशेइक्षुवर्गः समाप्तोद्रववर्गः॥

यह संपूर्ण जैसी२निर्मलहोंगी उतनीही अधिक मधुर,स्निग्ध हलकी,शीतल और दस्तावरहोंगी २८

इति श्रीभावप्रकाशस्यभाषानुवादेइक्षुवर्गोद्रववर्गस्समाप्तः॥

अथानेकार्थनामवर्गस्तत्रद्व्यर्थानिनामानि॥

यथा अश्मन्तकः अम्ललोणिकाकोविदारश्चकाठिल्लकः। कारवेल्लोरक्तपुनर्नवाचकुलकः। पटोलःकुपीलुश्चकुचिलाइतिलोकेप्रसिद्धः। कोशातकीमहाकोशातकीराजकोशातकीचदीप्यकः॥ यवान्यजमोदाचमरुचकःफणिज्जकःपिण्डीतकः। मरुवकःमरुषा इतिलोकेपिण्डीतकः॥ मयनफरइतिलोकेमधूलिकः। मूर्वाजलयष्टीचरुचकंसौवर्चलंबीजपूरकञ्च॥ लोणिकालोणिशाकञ्चाङ्गेरीशाकञ्चवसुकः॥ क्षारलवणश्चवाह्लीकम् कुंकुमंहिंगुचवित्तुन्नकम्। धान्यकंतुत्थुञ्चस्वादुकण्टकःगोक्षुरोविकङ्कतश्च। अग्निमुखीभल्लातकीलाङ्गलीच अग्निशिखम् कुंकुमंकुसुम्भश्च। अजशृंगीमेषशृंगीचप्रियंगुःफलिनीकंगूश्चभृंगःभृंगराजस्त्वक्च॥ समंगामञ्जिष्ठालज्जालूश्चअमोघाविडंगंपाटलाचमोचाकदली। शाल्मलिश्चकुटन्नटःस्योनाकःकैवर्त्तीमुस्तञ्चकुनटी॥ धनिकामनःशिलाच

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घोण्टा। पूगोबदरीच। त्रिपुटा। त्रिवृत्सूक्ष्मैलाच। शटी। कर्चूरोगन्धपलाशश्च। दन्तशठः। जम्बीरःकपित्थश्च। दन्तशठा। अम्लिकाचाङ्गेरीच। अरुणम्। मञ्जिष्ठाअतिविषाच। कणा। पिप्पलीजीरकश्च। तालपर्णी। मुशलीमुराच। पीलुपर्णी। मूर्वाबिम्बीच। ब्राह्मणी। भार्ङ्गीस्पृक्काच। अपराजिता। विष्णुक्रान्ताशालिपर्णीच। आस्फोता। अपराजितासारिवाच। पारावतपदी। ज्योतिष्मतीकाकजङ्घाच। शारदी। सारिवाजलपिप्पलीच। उग्रगन्धा। वचायवानीच। परिव्याधः। कर्णिकारोजलवेतसश्च। अञ्जनम्। स्रोतोऽञ्जनंसौवीरञ्च। अग्निचित्रकोभल्लातश्च। कृमिघ्नः। विडङ्गोहरिद्राच। तेजनः। शरोवेणुश्च। तेजनो। तेजवतीमूर्वाच। रोचनः। कम्पिल्यःरोचनाच। रोचना। गोरोचना। राजादनम्। क्षीरिकाप्रियालश्च। शकुलादनी। कटुकाजलपिप्पलीच। गोलोमी। श्वेतदूर्वावचा। पद्मा। पद्मचारिणी भार्ङ्गीच। श्यामा। सारिवाप्रियङ्गुश्च। धान्यम्। धान्याकंशाल्यादिच। सहवीर्य्या। नीलदूर्वामहाशतावरीच। सेव्यम्। उशीरंलामज्जकञ्च। उदुम्बरः। जन्तुफलंताम्रञ्च। ऐन्द्री। इन्द्रवारुणीइन्द्राणीच। कटम्भरा। कटुकाश्योनाकश्च। क्षारः। यवक्षारःस्वर्जिकाच। गण्डीरः। शाकविशेषोगण्डीरीतिलोकेगण्डारीमञ्जिष्ठाच। गन्धारी। दुरालभा। गन्धपलाशीच। चित्रा। इन्द्रवारुणी वृहद्दन्तीच। तुण्डिकेरी। कार्पासीबिम्बीच। धारा। गुडूचीक्षीरकाकोलीच। अबालपत्रः। खदिरोयवासश्च। वारि। बालकमुदकञ्च। अङ्गारवल्ली। भार्गीमुञ्जाच। अमृणालम्। लामज्जकम् उशीरञ्च। कुण्डली। गुडूचीकोविदारश्च। गन्धफली। प्रियङ्गुश्चम्पककलिकाच। दीर्घमूलः। यवासःशालिपर्णीच। पिच्छिलाशाल्मलीशिंशिपाच। पुष्पफलः। कपित्थःकूष्माण्डश्च। पोटगलः। नलःकाशश्च। यवफलः। कुटजोवंशश्च। देवी। मूर्वास्पृक्काचविश्वा। शुण्ठ्यतिविषाच। शीतशिवम्। सैन्धवंमिश्रेयाच। कर्कशः। कांपिल्यःकासमर्दश्च। चर्मकषा। शातला मांसरोहिणीच। नन्दिवृक्षः। अश्वत्थभेदोगोमुखपत्रशाखः वेलियापीपर इतिलोके। तुणिश्च। पयःक्षीरमुदकश्च। रुहा। दूर्वामांस रोहिणीच। सिंही। बृहतीवासाच॥ १॥

अथ अनेकार्थनामवर्गः॥ दोअर्थवाचीनाम॥

अश्मन्तक (लोनियासाग और कचनार) कठिल्लक (करेला और लाल गदापूरना) कुलक (पर्वल और कुचला) कोशातकी (दोनोंतुरई) दीप्यक (अजवाइन अजमोद) मरुवक (मर्सामैनफल) मधूलिक (मरोरफली मुलहटी) रुचक (कालानिमक बिजौरानींबू) लोणिका (लोनियांऔचूकाकासाग) वसुक (लालआक औरखारीनिमक) वाह्लीक (केशर और हींग) वितुन्नक (धनियांऔरतूतिया) स्वादुकण्टक (गोखरू और शमी) अग्निमुखी (भिलावां और करिहारी) अग्निशिख (केशरऔर कुसुम) अजशृङ्गी (काकडासिंगी और मेढ़ासिंगी) प्रियङ्गु (मालकङ्गनी और काकुन) भृङ्ग (भंगराऔर दालचीनी) समङ्गा (मजीठ और छुईमुई) अमोघा (बायबिडंग और पाटला) मोचा (केला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और सेमर) कुटन्नट [सोनापाठा और जलमोथा] कुनटी [धनियां और मैनसिल] घोंटा [सुपारी और बेर] त्रिपुटा [निशोत और छोटीइलायची] शटी [कपूर और कपूरकचरी] दन्तशठ [जंबीरी नींबू और कैथा] दन्तशठा [इमली और चूका] अरुण [मँजीठ और अतीस] कणा [पीपल और जीरा] तालपर्णी [मुसली और मुरामांसी] पीलुपर्णी [मरोड़फली और कुंदरू] ब्राह्मणी [भारंगी और स्पृक्का नामएकप्रकारकी बूटी] अपराजिता [विष्णुक्रान्ता और शालपर्णी] आस्फोता [विष्णुक्रान्ता और सारिवा] पारावतपदी [मालकङ्गनी और काकजङ्घा] शारदी [अनन्तमूल और जलपीपल] उग्रगन्धा [वच और अजवाइन] परिव्याध [अमलतास और बेतस] अंजन [श्वेत और कालासुरमा] अग्नि [चीता और भिलाँवा] क्रमिघ्न [बायबिडंग और हलदी] तेजन [सर और बांस] तेजनी [मालकङ्गनी और मरोरफली] रोचन [कपीला और गोरोचन] रोचना [गोरोचन और हल्दी] राजादन [खिन्नी और चिरोंजी] शकुलादनी [कुटकी और जलपीपल] गोलोमी [श्वेतदूब और बच] पद्मा [पद्मचारिणी और भारंगी] श्यामा [अनन्तमूल और मालकाँगनी] धान्य [धनियां और अन्न] सहवीरिया [नीलीदूब और बड़ी सतावर] सेव्य [खस और पीलीखस] उदुम्बर [गूलर और तांबा] ऐन्द्री [इन्द्रायन और बड़ीदन्ती] कटम्भरा [कुटकी और सोनापाठा] क्षार [जवाखार और सर्ज्जी] गण्डीर [गांडर और मँजीठ] गन्धारी [जवासा और गन्धपलासी] चित्रा [इन्द्रायण और बड़ीदन्ती] तुण्डकेरी [कपास और कुँदरू] धारा [गिलोय और क्षरिकाकोली] बालपत [कत्था और जवासा] वारि [सुगन्धबाला और जल] अङ्गारबल्ली [भारङ्गी और मूंग] अमृणाल [खस और पीलीखस] कुण्डली [गिलोय और कचनार] गन्धफली [मालकङ्गनी और चम्पेकीकली] दीर्घमूल [जवासा और शालिपर्णी] पिच्छिला [सेमर और सीसम] पुष्पफल [कैथा और कुम्हड़ा] पोटगल [नल और कास] यवफल [कुरैया और बांस] देवी [मरोरफली और स्पृक्का] विश्वा [सोंठ और अतीस] शीतशिव [सेंधानोन और सौंफ] कर्कश [कबीला और कसौंदी] चर्मकशा [सातला और मांसरोहिणी] नन्दिवृक्ष [बेलिया पीपल और तुन] पय [दूध और जल] रुहा [दूब और मांसरोहिणी] सिंही [कटैली और वासा] ॥ १ ॥

अथ त्र्यर्थानिनामानि ॥

क्रमुकः । पूगस्तूदः । पट्टिकालोध्रश्च । क्षुरकः । कोकिलाक्षोगोक्षुरस्तिलकनाम पुष्पविशेषश्च । प्रियकः । प्रियंगुकदम्बोऽसनश्च । पृथ्वीका । कालाजाजीबृहदेलाहिंगुपत्रीच । भूतीकम् । भूनिम्बकतृणभूस्तृणश्च । सोमवल्कः । कट्फलःश्वेतखदिरोघृतपूर्णकरञ्जश्च । सौगन्धिकंकह्लारंकत्तृणंगन्धकश्च । भृङ्गः । भृङ्गराजस्त्वग्भ्रमरश्च । अरिष्टः । निम्बोरसोनंमद्यञ्च । मर्कटीकपिकच्छुरपामार्गःकरञ्जीच । अम्बष्ठा । पाठानागरीमाचिका च । कृष्णा । पिप्पलीकालाजाजीनीलीच । क्षीरिणी । दुग्धिकाक्षीरकाकोलीश्वेतसारिवाच । मधुपर्णी । गुडूचीगम्भारीनीलाच । मण्डूकपर्णःस्योनाकःसःस्त्रियांतुमञ्जिष्ठा । ब्रह्ममाण्डूकीच । श्रीपर्णी । गम्भारीगणिकारिकाकट्फलञ्च । अमृता । गुडूची । हरीतकीधात्रीच । अनन्ता । दुरालभानीलदूर्वालाङ्गलीच । ऋष्यप्रोक्ता । अतिबलामहाशतावरीकपिकच्छूश्च । कृष्णवृन्ता । पाटलीगम्भारीमाषपर्णीच । जीवन्ती । गुडूचीशाकवि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शेषोवन्दाच । लता । सारिवाप्रियंगुर्ज्योतिष्मतीच । समुद्रान्ता । दुरालभाकर्पासीस्पृक्काच । हैमवती । हरीतकीश्वेतवचापीतदुग्धःसेहुण्डःयस्यमूलश्चोकइतिप्रसिद्धम् । अव्यथा हरीतकी । महाश्रावणीपद्मचारिणीच । षड्ग्रन्था । वचगन्धपलाशीकरञ्जीच । वरदा । सुवर्चलाहुरहुरइतिलोकेअश्वगन्धावाराहीगेंठीतिलोके । इक्षुगन्धाः । काशःकोकिलाक्षीगोक्षुरक्षीरविदारीच । कालस्कन्धः । तमालस्तिन्दुकंकालखदिरश्च । महौषधम् शुण्ठीरसोनोविषञ्च । मधु । क्षौद्रंपुष्परसोमद्यञ्च । कपीतनः । आम्रातकःशिरीषीगर्द्दभाण्डश्च । मदनः । पिण्डीतकोधत्तूरःसिक्थकञ्च । शतपर्वा । वंशोदूर्वावचाच । सहस्रवेधीअम्लवेतसोमृगमदाहिंगुच । ताम्रपुष्पी । धातकीपाटलाश्यामात्रिवृच्च । सदापुष्पाः । श्वेतार्कोरक्तार्कःकुन्दश्च । सुरभीमल्लकीमुरैलबालुकम् । लक्ष्मीः । ऋद्धिर्वृद्धिःशमीच । कालानुसार्य्यम् । कालीयकंतगरंशैलेयञ्च । चाम्पेयः । चम्पकोनागकेसरःपद्मकेसरश्च । विनादेयी । गणिकारिकाजलजम्बूर्जलवेतसीच । पाक्यम् । विडंसौवर्चलंयवक्षारश्च । विशल्या । लाङ्गलीगुडूचीलघुदन्तीच । इन्द्रद्रुः । ककुभोदेवदारुःकुटजश्च । काश्मीरम् । कुंकुमंपुष्करमूलंकाश्मीरीगम्भारीच । गुन्द्रः । पटेरकःशरश्च । गुन्द्रा । प्रियंगुर्भद्रमुस्तकश्च । चुक्रम् । चुक्रमम्लवेतसंवृक्षाम्लश्चपारिभद्राः । निम्बःपारिजातोदेवदारुश्च । पीतदारु । हरिद्रादेवदारुसरलश्च । वीरः । ककुभोवीरणंकाकोलीचवीरतरुः । ककुभोवीरणंशरश्च । मयूरः । अपामार्गोऽजमोदातुत्थञ्च । रक्तसारः । रक्तचन्दनंपतङ्गंखदिरश्च । बदरा । सुवर्चलाअश्वगन्धावाराहीच । वसिरः । रक्तापामार्गोगजपिप्पलीसमुद्रलवणञ्च । सौवीरम् । अञ्जनभेदोवदरसन्धानभेदश्च । वञ्जुलःअशोकोवेतसास्तिनिशश्च । शिला । मनःशिलाजतुगैरिकञ्च । सोमवल्ली । वाकुची गुडूचीब्राह्मीच । अक्षीवः । शोभाञ्जनोमहानिम्बःसमुद्रलवणञ्च । कारवी । कालाजाजीशताङ्काजमोदाच । धामार्गवः । रक्तापामार्गोराजकोशातकीमहाकोशातकीच । दुःस्पर्शः । यवासःकपिकच्छूःकण्टकारीच । पलाशः । किंशुकोगन्धपलाशीपत्रञ्च । कालमेषी । मञ्जिष्ठावाकुचीश्यामात्रिवृच्च । पलंकषा । गुग्गुलुगोक्षुरोलाक्षाच । मधुरसा । द्राक्षामूर्वागम्भारीच । रसा । रास्नाशल्लकीपाठाच । श्रेयसी । हरीतकीरास्नागजपिप्पलीच । लोहम् । अयःकांस्यमगरुच । सहा । मुद्गपर्णी । बलाभेदःककहीइतिलोके । शतपत्री । सेवतीगुलाबइतिलोके । रास्नानाकुलीनीलपुष्पः । सिन्दुवारः ॥ २ ॥

तीन अर्थवाले शब्द ॥

क्रमुक [सुपारी ब्रह्मदारु और पठानीलोध] क्षुरक [तालमखाना गोखुरू और तिलकनामपुष्पविशेष] प्रियक [मालकङ्गनी कदम्ब और आसन] पृथ्वीका [कालाजीरा, बड़ी इलायची और हिंगुपत्री] भूतीक [चिरायता कतृण और भूतृण] सोमवल्क [कायफल श्वेतकत्था और घृतपूर्ण करंजुआ] सौगन्धिक [कह्लार कतृण और गन्धक] भृंग [भंगरा दालचीनी और भ्रमर] अरिष्ट [निम्ब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लहसन और मद्य] मर्कटी [किवांच लटजीरा और करंजुआ] अम्बष्ठा [पाढ़ल चूका और माचिका] कृष्णा [पीपल कालाजीरा और नील] क्षीरणी [दूधी क्षीरकाकोली और सफेद अनन्तमूल] मधुपर्णी [गिलोय गम्भारी और नील] मण्डूकपर्णी [सोनापाठा स्त्रीलिङ्गमें मंजीठ और ब्राह्मणी] श्रीपर्णी [गम्भारी गणकारिका और कायफल] अमृता [गिलोय हड और आमला] अनन्ता [जवासा नीलीदूब और लाङ्गली] ऋष्यप्रोक्ता [अतिबला बडीसतावर और किवांच] कृष्णवृन्ता [पाटली गंभारी और माषपर्णी] जीवन्ती [गिलोय शाकविशेष औरबन्दा] लता [अनन्तमूल प्रियंगु और मालकांगनी] समुद्रान्ता [जवासा कपास और स्पृक्का] हेमवती [हड सफेदवच और पीलेदूधकासेंहुडा] अव्यथा [हड मवडी मुण्डी और पद्मचारिणी] षड्ग्रन्था [वच कपूरकचरी और करंजुआ] बरदा [हुरहुर असगन्ध और गेंठी] इक्षुगन्धा [तालमखाना गोखुरू और क्षीरबिदारी] कालस्कन्ध [तमाल तेंदू और कालाकत्था] महौषधि [सोंठ, लहसन और विष] मधु [सहत पुष्परस और मद्य] कपीतन [आमरा सिरस और गर्दभाण्ड] मदन [मैनफल धतूरा और मोम] शतपर्व्वा [बांस दूब और वच] सहस्रवेधी [अमलवेत कस्तूरी और हींग] ताम्रपुष्पी [पाढ़ल धाई और कालानिशोत] सदापुष्प [सफेदमदार कालामदार और कुन्द] सुरभी [सनई मरोरफली और एलबालु] लक्ष्मी [ऋद्धि वृद्धि और शमी] कालानुसार्यम् [कालीयक तगर और शैलेय] चाम्पेय [चम्पा नागकेशर और पद्मकेशर] नादेयी [गणकारिका जलजामुन और जलवेत] पाक्य [बिड कालानोन और जवाखार] विशल्या [करिहारी गिलोय और छोटीदन्ती] इन्द्रद्रु [अर्जुन देवदारु और कुरैया] काश्मीर [केशर पुष्करमूल और गम्भारी] गुन्द्र [पटेरकसर्प] गुन्द्रा [प्रियंगु और भद्रमोथा] चुक्र [चूका अमलवेत और वृक्षाम्ल] पारिभद्र [नींब पारिजात और देवदारु] पीतदारु [हल्दी देवदारु और सरल] वीर [अर्जुनवीरन और काकोली] वीरतरु [अर्जुन वीरन और सर] मयूर [लटजीरा अजमोद और तूतिया] रक्तसार [रक्तचन्दन पतङ्ग और कत्था] बदरा [सौबर्चल असगन्ध और बाराहीकन्द] वसिर [लाललटजीरा गजपीपल और समुद्रकानोन] सौवीर [अञ्जनभेद बेर और सन्धानभेद] बञ्जुल [अशोकवेत और तिनिश] शिला [मैनसिल सिलाजीत और गेरू] सोमवल्ली [बकुची गिलोय और ब्राह्मी] अक्षीव [सहजन महानिम्ब और समुद्रलवण] कारवी [कालाजीरा सौंफ और अजमोद] धामार्गव [लाललटजीरा और दोनों तोरई] दुःस्पर्श [जवासा किवांच और भटकटैया] पलाश [टेसू कपूरकचरी और पत्ता] कालमेषी [मँजीठ बाकुची और कालानिशोत] पलंकषा [गूगल गोखुरू और लाख] मधुरसा [दाख मरोरफली और गम्भारी] रसा [रास्ना सल्लकी और पाठा] श्रेयसी [हड रास्ना और गजपीपल] लोह [लोहा कांसा और अगर] सहा [मुद्गपर्णी कहही और सेवती गुलाब] सुबहा [रास्ना नाकुली और नीलपुष्पका सिंदुवार] २ ॥

अथ बह्वर्थानिनामानि ॥

अक्षशब्दःस्मृतोऽष्टासुसौवर्चलबिभीतके। कर्षपद्माक्षरुद्राक्षशकटेन्द्रियपाशके। काकाख्यःकाकमाचीचकाकोलीकाकणान्तिका॥ काकजङ्घाकाकनासाकाकोदुम्बरिकापिच। सप्तस्वर्थेषुकथितःकाकशब्दोविचक्षणैः॥ सर्पद्विरदमेषेषुसीसकेनागकेसरे। नागवल्ल्या नागदन्त्यानागशब्दःप्रयुज्यते॥ मांसेद्रवेचेक्षुरसेपारदेमधुरादिषु। बालरोगेविषेनीरेरसोनवसुवर्त्तते॥ ३॥ इति श्रीभावप्रकाशेहरीतक्यादिद्रव्याणांनामानिगुणाश्च॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनेकार्थक नाम ॥

अक्ष (कालानिमक बहेडा कर्ष पद्माक्ष रुद्राक्ष शकट इन्द्रिय और पाशा) काक (काकमाची काकोली घोंघची काकजङ्घा काकनासा काकोदुम्बरिका और काकाह्वय) नाग (सर्प हाथी मेढा सीसा नागकेसर नागवल्ली और नागदन्ती) रस (मांसरस ईखकारस पारा मधुरादिक छः रस बालरोग विष और जल ये रसके नौ अर्थ हैं ३ ॥

इति श्रीभावप्रकाशस्यभाषानुवादेहरीतकीआदिद्रव्योंके नाम और गुण समाप्त ॥

अथ मानपरिभाषा ॥

नमानेनविनायुक्तिर्द्रव्याणांजायतेक्वचित् । अतःप्रयोगकार्यार्थंमानमात्रोच्यतेमया ॥ चरकस्यमतंवैद्यैराद्यैर्यस्मान्मतंततः । विहायसर्वनामानि मागधंमानमुच्यते ॥ १ ॥

अथ मानपरिभाषा ॥

तोलके विना किसी द्रव्यकी युक्ति कहीं ठीक नहीं होती इस कारण से व्यवहार की सुगमताके लिये यहांपर मानका वर्णन करते हैं प्राचीन वैद्यलोगों ने चरकहीका मत मानाहै इसलिये सम्पूर्ण मानोंको छोडकर मागध मान कहतेहैं ॥ १ ॥

त्रसरेणुर्बुधैःप्रोक्तस्त्रिंशतापरमाणुभिः । त्रसरेणुस्तुपर्य्यायैर्नाम्नावंशीनिगद्यते ॥ जालान्तरगतैःसूर्य्यकरैर्वंशीविलोक्यते । षड्वंशीभिर्मरीचिःस्यात्ताभिःषड्भिश्चराजिका ॥ तिसृभीराजिकाभिश्चसर्षपःप्रोच्यतेबुधैः । यवोष्टसर्षपैःप्रोक्तोगुञ्जस्यात्तच्चतुष्टयम् ॥ षड्भिस्तुरक्तिकाभिस्स्यान्माषकोहेमधानकौ । माषैश्चतुर्भिःशाणःस्याद्धरणःसनिगद्यते ॥ टङ्कःसएवकथितस्तद्द्वयंकोलउच्यते । क्षुद्रकोवटकश्चैवद्रङ्क्षणःसनिगद्यते॥कोलद्वयन्तुकर्षःस्यात्सप्रोक्तःपाणिमानिकः। अक्षःपिचुःपाणितलंकिञ्चित्पाणिश्चतिन्दुकम् ॥ विडालपदकंचैवतथाषोडशिकामता । करमध्योहंसपदंसुवर्णंकवलग्रहः ॥ उदुम्बरञ्चपर्य्यायैःकर्षमेवनिगद्यते। स्यात्कर्षाभ्यामर्द्धपलंशुक्तिरष्टमिकातथा ॥ शुक्तिभ्याञ्चपलंज्ञेयंमुष्टिराम्रञ्चतुर्थिका । प्रकुञ्चःषोडशीबिल्वंपलमेवात्रकीर्त्यते ॥ पलाभ्यांप्रसृतिर्ज्ञेयाप्रसृतञ्चनिगद्यते । प्रसृतिभ्यामञ्जलिःस्यात्कुडवोर्द्धशरावकः ॥ अष्टमानञ्चसज्ञेयःकुडवाभ्याञ्चमानिका । शरावोऽष्टपलंतद्वज्ज्ञेयमत्रविचक्षणैः ॥ शरावाभ्यांभवेत्प्रस्थःचतुःप्रस्थैस्तथाढकः । भाजनंकांस्यपात्रंचचतुःषष्टिपलश्चसः ॥ चतुर्भिराढकैर्द्रोणःकलशोनल्वणोऽर्मणः । उन्मानञ्चघटोराशिर्द्रोणपर्यायसंज्ञितः ॥ द्रोणाभ्यांसूर्पकुम्भौचचतुःषष्टिशरावकः। सूर्प्पाभ्याञ्चभवेद्द्रोणीवाहोगोणीचसास्मृता ॥ द्रोणीचतुष्टयंखारीकथितासूक्ष्मबुद्धिभिः।चतुस्सहस्रपलिकाषण्णवत्यधिकाचसा॥ पलानांद्विसहस्रञ्चभारएकःप्रकीर्त्तितः। तुलापलशतंज्ञेयंसर्वत्रैवैषनिश्चयः॥माषटङ्काक्षबिल्वानिकुडवप्रस्थमाढकम्।राशिर्गोणीखारिकेतियथोत्तरंचतुर्गुणम्॥मागधपरिभाषायांषड्रत्तिकोमाषश्चतुर्विंशतिरत्तिकष्टङ्कःषण्णवतिरत्तिकःकर्षः। अयञ्चरकसम्मतः। सुश्रुतमते । पञ्चरत्तिकोमाषोविंशतिरत्ति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कष्टङ्कोऽशीतिरत्तिकःकर्षः। अयमेवकालिंगपरिभाषायामपि। यतस्तत्राष्टरत्तिकोमाषो द्वात्रिंशद्रत्तिकष्टङ्कःसार्द्धटङ्कद्वयमितःकर्षः॥ २॥

तीस परमाणु का एक त्रसरेणु अथवा वंशी कहतेहैं झरोखे आदि में से आईहुई सूर्य्यकी किरणों से जो सूक्ष्म पदार्थ दिखाई देतेहैं उनको त्रसरेणु और वंशी कहते हैं छः वंशीकी एकमरीचि, छः मरीचि की राई, तीन राई की सरसों, आठ सरसोंका जव, चारजवकी रत्ती, छःरत्ती का माशा इसको हेम और धामक भी कहते हैं चार माशे का शाण, इसको धरण और टङ्कभी कहते हैं दोशाणका कोल इसको क्षुद्र वटक और द्रंक्षण कहते हैं दो कोल का कर्ष इसको पाणिमानिक अक्ष पिचु पाणितल किंचित् पाणि तिन्दुक विडालपदक पोडाशिका करमध्या हंसपद सुवर्ण कवलग्रह और उदुम्बर कहते हैं दो कर्षका अर्द्धपल इसको शुक्ति और अष्टमिका कहते हैं दोशुक्ति का एकपल इसको मुष्टिमात्र चतुर्थिका प्रकुञ्च पोडशी और बिल्व कहते हैं दोपलकी प्रसृति इसको प्रसृत भी कहतेहैं दोप्रसृति की अञ्जली इसको कुडव अर्द्धशराव और अष्टमान दोकुडवकी एक मानिका इसको शराव और अष्टपद दोशराव का प्रस्थ, चारप्रस्थ का आढ़क, इसको भाजन कांस्यपात्र और चतुष्षष्टि पल कहतेहैं चार आढ़कका द्रोण इसको कलश नल्वण अर्मन उन्मान घट और राशि कहतेहैं दो द्रोणका सूर्प इसको कुंभभी कहतेहैं यह चौंसठ शरवाका होताहै दोसूर्पकी द्रोणी इसको बाह और गोणी कहतेहैं चार द्रोणीकी एक खारी यह चार हज़ार छयानबे पलकी होती है दो हज़ार पलका एक भार होता है एकसौ पलकी एकतुला होती है माशा टङ्क अक्ष बिल्व कुडव प्रस्थ आढ़क राशि गोणी और खारी यह सब क्रमसे उत्तरोत्तर चौगुने हैं जैसे माशे से चौगुना टङ्क इत्यादि मागध परिभाषा में छः रत्ती का माशा चौबिस रत्तीका टङ्क और छयानबे रत्तीका कर्ष यह चरक का मत है सुश्रुतके मत में ५ रत्ती का माशा २० रत्तीका टङ्क और अस्सी ८० रत्ती का कर्ष और इसी प्रकार से कलिङ्ग परिभाषा में भी आठरत्ती का माशा बत्तीस रत्ती का टङ्क और ढाई टङ्कका कर्ष होताहै॥ २॥

गुञ्जादिमानमारभ्ययावत्स्यात्कुडवस्थितिः। द्रवार्द्रशुष्कद्रव्याणांतावन्मानंसमंमतम्॥ प्रस्थादिमानमारभ्यद्विगुणंतद्द्रवार्द्रयोः। मानन्तथातुलायास्तुद्विगुणंनक्कचित्स्मृतम्॥ मृद्वृक्षवेणुलोहादेर्भाण्डंयच्चतुरंगुलम्। विस्तीर्णञ्चतथोच्चञ्चतन्मानंकुडवंवदेत्॥ इति मागधमानम्॥ ३॥

रत्तीआदिसे लेकर कुडवपर्य्यन्त द्रवआर्द्र और शुष्क द्रव्योंकामान तुल्यहोता है प्रस्थ से आदि लेकर संपूर्ण द्रव और आर्द्र पदार्थोंका प्रमाण दूना ग्रहण करना चाहिये और तुलाका मान द्विगुण कभी नहींहोता मृत्तिका वृक्ष बांस और लोहा आदिके पात्र जो चार अंगुल लंबे चारअंगुल चौंडे और चार ही अंगुल गहरे होते हैं उनमें जितना पदार्थ माताहै उसे कुडव कहतेहैं इति मागधमानम्॥ ३॥

कालिंगमानम्॥

यतोमन्दाग्नयोह्रस्वाहीनसत्त्वानराःकलौ। अतस्तुमात्रातद्योग्याप्रोच्यतेसुज्ञसम्मता॥ यवोद्वादशभिर्गौरसर्षपैःप्रोच्यतेबुधैः। यवद्वयेनगुञ्जास्यात्त्रिगुञ्जोवल्लउच्यते॥ माषोगुञ्जाभिरष्टाभिःसप्तभिर्वाभवेत्क्वचित्। चतुर्भिर्माषकैःशाणःसनिष्कष्टङ्कएवच॥ गद्याणोमाषकैःपड्भिःकर्षःस्याद्दशमाषिकः। चतुःकर्षैःपलंप्रोक्तंदशशाणमितंबुधैः॥ चतुः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पलैश्चकुडवःप्रस्थाद्याःपूर्ववन्मताः । स्थितिर्नास्त्येवमात्रायाःकालमग्निंवयोबलम् ॥ प्रकृतिंदोषदेशौचदृष्ट्वामात्रांप्रकल्पयेत् । नाल्पंहन्त्यौषधंव्याधिंयथाम्भोऽल्पंमहानलम् ॥ अतिमात्रंचदोषायशस्योसस्थेबहूदकम् । इतिमानपरिभाषा ॥ ४ ॥

अथ कलिङ्गमानम् ॥

कलियुगमें मन्दाग्नि ह्रस्व और सत्त्व से हीन पुरुष होते हैं इससे उनके योग्यमात्रा कहीजाती है बारहसफ़ेद सरसोंका जव दो जवोंकी एकरत्ती तीन रत्तीका बल्ल आठ अथवा सात रत्ती का माशा चारमाशेका शाण इसको निष्क और टङ्क कहते हैं छः माशेका गद्याण दशमाशेका कर्ष चारकर्षका अथवा दश शाणका पल चारपलका कुडव और प्रस्थादिक पूर्वके समान होते हैं मात्राका कोई नियम नहीं है काल, अग्नि, बल, अवस्था, प्रकृति, दोष और देश इनको विचारकर मात्राकी कल्पना करनी चाहिये जैसे थोडासा जल बहुतसी अग्निको नहीं बुझासक्ताहै इसीप्रकार बडे रोगको थोडी औषध नहीं नाश करती है और जैसे बहुत जल खेतमें अन्नकी हानि करताहै इसीप्रकार बहुत औषधभी दोषों को करती है इससे योग्यही मात्रा देनी चाहिये—इति मानपरिभाषा ॥ ४ ॥

अथ भेषजानां विधानानि ॥

स्वरसश्चतथाकल्कःक्वाथश्चहिमफाण्टकौ । ज्ञेयाःकषायाःपञ्चैतेलघवः स्युर्यथोत्तरम् ॥ ५ ॥

औषधोंकीविधि ॥

स्वरस, कल्क, क्वाथ, हिम और फाण्ट यह पांचप्रकार के कषाय उत्तरोत्तर हलके होते हैं ॥ ५ ॥

तत्रादौस्वरसविधिः ॥

आहतात्तत्क्षणात्कृष्टाद्द्रव्यात्क्षुण्णात्समुद्भवेत् । वस्त्रनिष्पीडितोयश्चस्वरसोरसउच्यते ॥ आहतात्शीताग्निकीटादिभिरनुपहतात् । क्षुण्णात् । संपिष्टात् । कुडवञ्चूर्णितंद्रव्यंक्षिप्तञ्चद्विगुणेजले । अहोरात्रंस्थितंतस्माद्भवेद्वारसउत्तमः ॥ चूर्णितञ्चूर्णीकृतं । स्वरआदायशुष्कद्रव्यंवास्वरसानामसम्भवे । जलेऽष्टगुणितेसाध्यंपादशिष्टंचगृह्यते ॥ स्वरसस्यगुरुत्वाच्चपलमर्द्धंप्रयोजयेत् । निशोषितञ्चाग्निसिद्धंपलमात्रंरसंपिबेत् ॥ निशोषितंनिशायामुषितम् । सितामधुगुडक्षारान्जीरकंलवणंतथा । घृतंतैलञ्चचूर्णादीन्कोलमात्रान्रसेक्षिपेत् ॥ कोलष्टङ्कद्वयंच ॥ ६ ॥

स्वरसकीविधि ॥

पाला अग्नि तथा कीट आदिकोंले नहीं बिगडीहुई औषधको लाकर उसी क्षण कूटकर जो वस्त्रके द्वारा अर्क निकाला जाताहै उसको स्वरस कहते हैं अथवा १२ तोले चारमाशे औषधको कूटकर दूने जलमें एकदिन रात भिगोवे फिर छानले यह उत्तम रस होताहै अथवा सूखी औषधोंका जब रस न निकलसके तब अठगुने पानीमें पकावे और चौथाई रहजानेपर छानले स्वरसके भारी होनेसे १ तोला ८ माशे पीना चाहिये जलमें भिगोयके और आगमें औटाकर निकलाहुआ रस तीनतोला चारमाशे पीनाचाहिये चीनी सहत गुड क्षार जीरा नोन तेल और चूर्णादिक आठमाशे स्वरसमें छोडनेचाहिये६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तण्डुलजलविधिः ॥

कण्डितंतण्डुलपलञ्जलेऽष्टगुणितेक्षिपेत् । भावयित्वाजलंग्राह्यंदेयंसर्वत्रकर्मसु ॥ भावयित्वाकोमलीकृत्य ॥ ७ ॥ चावलके पानीकी विधि ॥

कूटेहुये चारतोले चावल अठगुने जलमें भिगोवे और भीजजानेपर जल छानले इसको सब कार्यों में व्यवहार करे ॥ ७ ॥

अथ हिमविधिः ॥

क्षुण्णंद्रव्यंपलंसम्यक्षड्भिर्नीरपलैःप्लुतम्।निशोषितंहिमःसस्यात्तथाशीतकषायकः॥ तस्यमानंमतंपानेपलद्वयमितंबुधैः । क्षुण्णंचूर्णीकृतम् ॥ ८ ॥

इनकी विधि ॥

चारतोले औषध को खूब कूटकर छः गुने जलमें भिगोवे और रात्रिभर भीज जानेपर छानले इस को हिम और शीतकषाय कहते हैं यह आठ तोले पीना चाहिये ॥ ८ ॥

अथ मन्थविधिः ॥

जलेचतुःपलेशीतेक्षुण्णंद्रव्यपलंक्षिपेत् । मृत्पात्रेमन्थयेत्सम्यक्तस्माच्चद्विपलंपिबेत् ॥ क्षुण्णंचूर्णीकृतम् मन्थयेत्मथनीयात् ॥ ९ ॥

मन्थकी विधि ॥

कूटी हुई चार तोले औषध को सोलह तोले ठण्ढे जलमें भिगोकर मृत्तिकाके पात्र में अच्छेप्रकार से मथले इसको मन्थ कहते हैं यह आठतोले पीना चाहिये ॥ ९ ॥

अथ फाण्टविधिः ॥

क्षुण्णेद्रव्यपलेसम्यक्जलमुष्णंविनिःक्षिपेत् । मृत्पात्रेकुडवोन्मानंततस्तुस्रावयेत्पटात् ॥ सस्याच्चूर्णद्रवःफाण्टस्तन्मानंद्विपलोन्मितम् । क्षौद्रंसितागुडादींस्तुकर्षमात्रान्विनिःक्षिपेत् ॥ क्षुण्णेचूर्णीकृतेसचूर्णद्रवःफाण्टःस्यादित्यन्वयः ॥ १० ॥

फाण्टकी विधि ॥

कूटीहुई चारतोले औषधको सोलह तोले गरम जल डालकर मट्टी के पात्र में रक्खे फिर कपडे में छानले इसको फाण्ट कहते हैं इसकी मात्रा आठ तोले की है इसमें सहत चीनी और गुड आदिक तोले भर मिलावे ॥ १० ॥

अथ कल्कविधिः ॥

द्रव्यमार्द्रशिलापिष्टंशुष्कंवासजलंभवेत् । प्रक्षिप्यगालयेद्वस्त्रेतन्मानंकर्षसंमितम् ॥ कल्केमधुघृतंतैलंदेयंद्विगुणमात्रया । सितागुडसमन्दद्याद्द्रवोदेयश्चतुर्गुणः ॥ ११ ॥

कल्ककी विधि ॥

गीली औषधको अथवा सूखी औषधको जलसे शिलपर पीसकर छानले इसकी मात्रा एकतोले कीहै इसमें सहत घी और तेल दूना छोडना चाहिये चीनी तथा गुड समभाग और अन्य गीली वस्तु चौगुनी छोडनी चाहिये ॥ ११ ॥

अथ चूर्णविधिः ॥

अत्यन्तशुष्कंयद्द्रव्यंसुपिष्टंवस्त्रगालितम्। तत्स्याच्चूर्णंरजःक्षोदस्तन्मात्राकर्षसंमित॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चूर्णेगुडःसमोदेयःशर्कराद्विगुणामता। चूर्णेषुभर्जितंहिंगुदेयंनोत्क्लेदकृद्भवेत्॥ लिहेच्चूर्णं द्रवैःसर्वैर्घृताद्यैर्द्विगुणोन्मितैः। पिबेच्चतुर्गुणैरेवंचूर्णमालोडितंद्रवैः॥ १२॥

चूर्णकीविधि॥

अत्यन्त सूखीहुई औषधको खूब पीसकर कपडे से छानले इसको चूर्णरज और क्षोद कहते हैं इस की मात्रा तोलेभरकीहै चूर्ण में गुड बराबर और चीनी दूनी डालनी चाहिये चूर्ण में हींग मिलानी होय तो भूनके मिलावे जो चूर्ण को चाटे तो घृतआदिक गीलेपदार्थ दूने मिलाने चाहिये और जो घोल कर पिये तो चौगुनीडाले॥ १२॥

चूर्णावलेहगुटिकाकल्कानामनुपानकम्। पित्तवातकफातङ्केत्रिद्व्येकपलमाहरेत्॥यथा तैलंजलेप्राप्तंक्षणेनैवविसर्पति। अनुपानबलादङ्गेतथासर्पतिभेषजम्॥ १३॥

चूर्ण अवलेह गुटिका और कल्कका अनुपान पित्त वात और कफके रोगमें क्रमसे बारहतोले आठ तोले और चारतोले होने चाहिये जैसे जल में तेलछोडने से बहुत जल्दी फैलजाताहै उसी प्रकार औषधभी अनुपान के बलसे शरीर में फैलतीहै॥ १३॥

भावनाविधिः॥

द्रवेणयावतासम्यक्चूर्णंसर्वंप्लुतम्भवेत्। भावनायाःप्रमाणंतुचूर्णेप्रोक्तंभिषग्वरैः॥१४॥

भावनाकी विधि॥

श्रेष्ठवैद्योंने कहाहै कि चूर्ण जितनी गीलीवस्तुके छोडनेसे डूबजावे उतनीही छोडनीचाहिये॥१४॥

अथ पुटपाकविधिः॥

पुटपाकस्यकल्कस्यस्वरसोगृह्यतेयतः। अतस्तुपुटपाकानांयुक्तिरत्रोच्यतेमया॥ पुटपाकस्यपाकोऽयंलेपस्यांगारवर्णता। लेपंचद्व्यंगुलंस्थूलंकुर्य्याद्व्द्यंगुलमात्रकम्॥ काश्मरीवटजम्ब्वादिपत्रैर्वेष्टनमुत्तमम्। पलमात्रोरसोग्राह्यःकर्षमात्रंमधुक्षिपेत्॥ कल्कचूर्णद्रवाद्यास्तुदेयाःकोलमिताबुधैः॥ १५॥

पुटपाककी विधि॥

पुटपाक करके कल्कका स्वरस लियाजाताहै इसलिये यहां पुटपाककी विधि कहतेहैं गम्भारी बरगद और जामनआदि के पत्तोंसे लपेटकर दो अंगुल अथवा एकअंगुलका मट्टीका लेपकरे फिर जब तक लेप रक्तवर्ण न होय तबतक अग्निमें पकावे इसका चारतोले रसलेनाचाहिये सहत तोलेभर कल्कचूर्ण तथा अन्यकोई गीलीवस्तु आठमाशे छोडनीचाहिये॥ १५॥

उष्णोदकविधिः॥

अष्टमेनांशशेषेणचतुर्थेनार्द्धकेनवा। अथवाक्वथनेनैवसिद्धमुष्णोदकंभवेत्॥श्लेष्मामवातमेदोघ्नंवस्तिशोधनदीपनम्। कासश्वासज्वरान्हन्ति पीतमुष्णोदकंनिशि॥ उष्णोदकंमुद्रवटाइतिलोके॥ १६॥

गरमजलकी विधि॥

जल अग्निमें औटानेसे अष्टमांश चतुर्थांश या अर्द्धांश रहजानेपर लेनाचाहिये अथवा केवल उबालहीले गरमजल रात्रिमें पीने से कफ और मेद आमवात खांसी श्वास तथा ज्वरका नाशक मूत्राशय का शोधक और दीपन होताहै॥ १६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्षीरपाकविधिः ॥

क्षीरमष्टगुणंद्रव्यात्क्षीरान्नीरंचतुर्गुणम् । क्षीरावशेषंतत्पीतंशूलमामोद्भवंजयेत् ॥ १७॥

क्षीरपाकविधि ॥

जिस वस्तुके साथ दूध औटानाहो उसका अठगुना दूध दूधका चौगुना जल मिलाके औटावे जब केवल दूध बाकीरहै तब उसको पिये इससे आमका शूल नष्ट होताहै ॥ १७ ॥

क्वाथविधिः ॥

पानीयंषोडशगुणंक्षुण्णेद्रव्यपलेपिक्षेत् । मृत्पात्रेक्वाथयेद्ग्राह्यमष्टमांशावशेषितम् ॥ कर्षादौतुपलंयावद्दद्यात्षोडशिकंजलम् । ततस्तुकुडवंयावत्तोयमष्टगुणंभवेत् ॥ चतुर्गुणमतश्चोर्ध्वंयावत्प्रस्थादिकंजलम् । षोडशिकंषोडशगुणम् । तज्जलंपाययेद्धीमान्कोष्णं मृद्वग्निसाधितम् । शृतःक्वाथःकषायश्चनिर्यूहःसनिगद्यते ॥ १८ ॥

क्वाथकीविधि ॥

चार तोले कुटीहुई औषध सोलह गुने जलके साथ मृत्तिका के पात्रमें औटावे जब आठभागका एक भाग रहजाय तब छानले एक तोले से चारतोलेतक औषधमें सोलहगुना जल चारतोले से सोलह तोलेतक अठगुना जल और सोलह तोलेसे चौंसठ तोलेतक चौगुना जल क्वाथ बनाने में छोडनाचाहिये बुद्धिमान् पुरुष मन्द अग्निमें पकेहुए जलको कुछ उष्ण पिलवावे इसको शृत क्वाथ कषाय और निर्यूह कहतेहैं ॥ १८ ॥ क्वाथपानमात्रामाह ॥

मात्रोत्तमापलेनस्यात्त्रिभिरक्षैस्तुमध्यमा । जघन्याचपलार्द्धेनस्नेहक्वाथौषधेषुच ॥ तन्त्रान्तरे। क्वाथ्यद्रव्यपलेवारिद्भिरष्टगुणमिष्यते। चतुर्भागावशिष्टन्तुपेयंपलचतुष्टयम्॥ दीप्तानलंमहाकायंपाययेदञ्जलिंजलम् । अन्येत्वर्द्धंपरित्यज्य प्रसृतितुचिकित्सिकाः ॥ क्वाथत्यागमनिच्छन्तस्त्वष्टभागावशेषितम् । पारम्पर्योपदेशेन वृद्धवैद्याःपलद्वयम् ॥ अष्टभागवशेषितस्य चतर्भागावशिष्टपिक्षयागुरुत्वात् दीप्तानलंमहाकायंपलद्वयंपाययेन्मध्यमाग्निमल्पकायंपलमात्रंपाययेत् मात्रोत्तमापलेनस्यादित्यादिवचनात् ॥ क्वाथेक्षिपेत्सितामंशैश्चतुर्थाष्टमषोडशैः । वातपित्तकफातङ्केविपरीतंमधुस्मृतम् ॥ जीरकंगुग्गुलंक्षारं लवणंचशिलाजतु । हिंगुत्रिकटुकंचैव क्वाथेशाणोन्मितंक्षिपेत् ॥ क्षीरंघृतंगुडंतैलंमूत्रंचान्यद्द्रवंतथा । कल्कंचूर्णादिकंक्वाथे निक्षिपेत्कर्षसंमितम् ॥ तत्रोपविश्यविश्रान्तः प्रसन्नवदनेक्षणः । औषधंहेमरजतं मृद्भाजनपरिस्थितम् ॥ पिबेत्प्रसन्नहृदयः पीत्वापात्रमधोमुखम् । विधायाचम्यसलिलं ताम्बूलाद्युपयोजयेत् ॥ १९ ॥

क्वाथपीनेकी मात्रा ॥

चारतोलेकी उत्तम तीन तोलेकी मध्यम और दो तोलेकी निकृष्टमात्रा होती है स्नेह क्वाथ और औषधोंकी यह मात्राहै तन्त्रान्तरमें कहागया है कि चारतोले क्वाथकी औषध में सोलहगुना पानी डालकर गरम करने में जब चौथाई बाकीरहै तब उस सोलह तोले जलकोपिये दीप्ताग्नि और बडे शरीरवाले पुरुषको सोलह तोले क्वाथ पिलावे और जो मंदाग्नि तथा छोटे शरीरवालेहों उनको

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आधात्यागकर आधापिलानी चाहिये और जो क्वाथको त्याग न करना चाहते हों वह अष्टमांश बाकी रहै तब पियें यह वृद्धवैद्योंका संमतहै चतुर्थांश क्वाथकी अपेक्षा अष्टमांश बचाहुआ क्वाथ भारीहोताहै इसलिये दीप्ताग्नि और बडे शरीरवाले पुरुषोंको आठतोले और मध्यमाग्नि तथा छोटे शरीर वाले पुरुषोंको चारतोले क्वाथ पिलाना चाहिये क्योंकि उत्तममात्रा चार तोलेकी होती है इत्यादिक वचन कहेगये हैं क्वाथमें जो चीनी छोडनीहोय तो वातपित्त तथा कफके रोगों के क्रमसे चतुर्थांश अष्टमांश और षोडशांश छोडदे परन्तु सहतकी मात्रा इस्से विपरीत है जैसे वात रोगमें षोडशांश इत्यादि जीरा, गूगल, जवाखार, सैंधव, शिलाजीत, हींग, सोंठ, पीपल और मिरच यह सब वस्तु मिलानीहोयँ तो चारमाशे मिलावे दूध, घृत, गुड, तेल, मूत्र अथवा अन्य कोई गीलापदार्थ और कल्क तथा चूर्ण आदिक क्वाथमें एक तोलेभर मिलावे अच्छे प्रकारसे बैठकर प्रसन्नमुख नेत्रवाला पुरुष सुवर्ण चांदी अथवा मृत्तिकाके पात्रमें रक्खीहुई औषधको खुशीमनसे पीकर पात्रको औंधादे फिरजलसे मुखको धोकर तांबूल आदिको खाय ॥ १९ ॥

अवलेहविधिः ॥

क्वाथादेर्यत्पुनःपाकाद्घनत्वंसारसक्रिया। सोऽवलेहश्चलेहश्चतन्मात्रास्यात्पलोन्मिता ॥ सिताचतुर्गुणाकार्य्या चूर्णाच्चद्विगुणोगुडः। द्रवंचतुर्गुणंदद्यादितिसर्वत्रनिश्चयः ॥ सुपक्वेतन्तुमत्वंस्यादवलेहेऽप्सुमज्जनम्। स्थिरत्वपीडितेमुद्रांगन्धवर्णरसोद्भवः ॥ दुग्धमिक्षुरसंयूषंपञ्चमूलकषायजम्। वासाक्वाथंयथायोग्यमनुपानंप्रशस्यते ॥ २० ॥

अवलेहचटनी की विधि ॥

ऊपरके कहेहुये क्वाथ आदिकों को फिर औटाकर गाढाहोने से अवलेह अथवा लेह कहा जाताहै इसकी मात्रा चारतोले की है अवलेह बनानेमें औषधके चूर्णसे चौगुनी शक्कर दूना गुड और चौगुनेही सब द्रवपदार्थ छोडे पकेहुए अवलेहकी यह परीक्षाहै कि जलमें छोडनेसे डूबजाय तारसेछूटे दबानेसे स्थिर बनारहै सुगन्धआवे और वर्ण तथा रस ठीकहो अवलेह खानेके पीछे दूध ईखकारस पञ्चमूलका काढा अथवा बासाका काढा इनमेंसे किसी को उचित समझकर पिये ॥ २० ॥

वटकाविधिः ॥

वटकाअथकथ्यन्तेतन्नामगुटिकावटी। मोदकोवटिकापिण्डीगुडोवर्त्तिस्तथोच्यते ॥ लेहवत्साध्यतेवह्नौगुडोवाशर्कराथवा। गुग्गुलुर्वाक्षिपेत्तत्रचूर्णंतन्निर्मितावटी ॥ तत्रवह्निसिद्धेगुडादौ। कुर्यादवह्निसिद्धेनक्वचिद्गुग्गुलुनावटी ॥ द्रवेणमधुनावापिगुटिकांकारयेद्बुधः ॥ सिताचतुर्गुणादेयावटीषुद्विगुणोगुडः। चूर्णेचूर्णसमःकार्य्यो गुग्गुलुर्मधुतत्समम् ॥ (तत्समम्। चूर्णसमम्) द्रवंतुद्विगुणंदेयंमोदकेषुभिषग्वरैः ॥ द्रवंद्रवरूपद्रव्यं कर्षप्रमाणंतन्मात्राबलंदृष्ट्वाप्रयुज्यते। बलमितिकालादेरप्युपलक्षणम् ॥ २१ ॥

गोलीकीविधि ॥

वटक, गुटिका, वटी, मोदक, वटिका, पिंडी, गुड और वर्त्ति यह गोली के नाम हैं गुड, चीनी अथवा गूगलको अवलेह के समान अग्निमें पकाकर औषधियोंके चर्ण मिलाने से गोली बनतीहै कहीं २

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अग्निमें वि[illegible]ा पकाये गूगल अथवा सहत आदिक गीली वस्तुसे गोली बनाई जाती है मोदक बनाने में जो चीनी छोड़नीहोवे तो चौगुनी गुडदूना और चूर्ण गूगल तथा सहत औषधियों के चूर्णके बराबर डालने चाहिये और जो गीली वस्तु डालनी हो तो दूनी छोडे इसकी मात्रा एकतोलेकी है अथवा बल देश तथा काल अवस्था आदि विचारकर मात्रादेनी चाहिये ॥ २१ ॥

घृततैलयोर्विधिः ॥

कल्काच्चतुर्गुणीकृत्यघृतंवातैलमेवच । चतुर्गुणद्रवेसाध्यंतस्यमात्रापलोन्मिता ॥ मात्रापलोन्मिता । भक्षणाय ॥ निक्षिप्यक्काथयेत्तोयंक्काथ्यद्रव्याच्चतुर्गुणम् । पादाशिष्टंगृहीत्वातुस्नेहस्तेनैवसाधयेत् ॥ चतुर्गुणंमृदुद्रव्येकठिनेऽष्टगुणंजलम् । मृद्वादिक्काथ्यसंघातेदद्यादष्टगुणंपयः ॥ अत्यन्तकठिनेद्रव्येनीरंषोडशिकंमतम् । मृदुद्रव्येआर्द्रद्रव्येगुडूच्यादौ ॥ कठिनेशुष्कद्रव्येशुण्ठ्यादौअत्यन्तकठिने । चिरशुष्केदेवदार्व्यादौ ॥ कर्षादितःपलंयावत्क्षिपेत्षोडशिकंजलम् । तदूर्ध्वंकुडवंयावत्भवेदष्टगुणंपयः ॥ प्रस्थादितःक्षिपेन्नीरंखारीयावच्चतुर्गुणम् । पूर्वंचतुर्गुणंमृदुद्रव्यइत्यादिना क्काथ्यद्रव्यंतन्मृदुत्वादिगुणभेदेनजलगतपरिमाणमुक्तम् ॥ इदानींकेचिदाचार्याःकर्षादितःपलंयावदित्यादिवचने क्काथ्यंद्रव्यगतपरिमाणभेदेनजलगतपरिमाणंमन्यन्ते । अम्बुक्काथरसैर्यत्रपृथक्स्नेहस्यसाधनम् ॥ कल्कस्यांशन्तत्रदद्याच्चतुर्थंषष्ठमष्टमम् । अस्यायमर्थः ॥ अम्बुनास्नेहसाधने कल्कंस्नेहस्यचतुर्थमंशंदद्यात् । क्काथेनस्नेहसाधनेस्नेहस्यषष्ठभागंकल्कंदद्यात् ॥ स्वरसैःस्नेहसाधनेस्नेहस्याष्टमभागंकल्कंदद्यात् । पुनर्विशेषमाह ॥ दुग्धेदध्निरसेतक्रेकल्कोदेयोऽष्टमांशिकः । कल्काच्चसम्यक्पाकार्थंतोयमत्रचतुर्गुणम् ॥ कल्कात् । कल्कद्रव्यात् ॥ चतुर्गुणंतोयंपेषणार्थम् । द्रवाणियत्रस्नेहेषुपञ्चादीनिभवन्तिहि ॥ तत्रस्नेहसमान्याहुर्यथापूर्वञ्चतुर्गुणम् ॥ अस्यायमर्थः । यत्रस्नेहेषुआदीनिपञ्चद्रव्याणिदुग्धदधिस्वरसतक्रकल्कोपयुक्तजलानिप्रत्येकंस्नेहसमानिबोद्धव्यानियथापूर्वम् । दुग्धदधिस्वरसतक्रंसमदितंस्नेहाच्चतुर्गुणंभवति । द्रव्येणकेवलेनैवस्नेहपाकोभवेद्यदि ॥ तत्राम्बुपिष्टःकल्कस्याज्जलञ्चात्रचतुर्गुणम् ॥ अत्रकल्कद्रव्ये । क्काथेनकेवलेनैवपाकोयत्रोदितःक्कचित् क्काथ्यद्रव्यस्यकल्कोऽपितत्रस्नेहेप्रयुज्यते ॥ कल्कहीनस्तुयःस्नेहःससाध्यःकेवलेद्रवे । केवलेद्रवे ॥ क्काथितरस्मिन्स्वरसादिरूपे । पुष्पकल्कस्तुयःस्नेहस्तत्रतोयंचतुर्गुणम् ॥ स्नेहात्स्नेहाष्टमांशश्चपुष्पकल्कःप्रयुज्यते ॥ वर्त्तिवत्स्नेहकल्कःस्याद्यदांगुल्याविवर्त्तितः । शब्दहीनोऽग्निनिक्षिप्तःस्नेहःसिद्धोभवेत्तदा ॥ यदाफेनोद्गमस्तैलेफेनशान्तिश्चसर्पिषि । वर्णगन्धरसोत्पत्तिःस्नेहःसिद्धोभवेत्तदा ॥ स्नेहपाकस्त्रिधाप्रोक्तोमृदुर्मध्यःखरस्तथा । ईषत्सरसकल्कस्तुस्नेहपाकोमृदुर्भवेत् । मध्यपाकस्यसिद्धिश्चकल्केनीरसकोमले ईषत्कठिनकल्कश्चस्नेहपाकोभवेत्खरः ॥ तदूर्ध्वंदग्धपाकःस्याद्दाहकृन्निष्प्रयोजनः ॥ आमपक्वश्चनिर्वीर्योवह्निमान्द्यकरोगुरुः ॥ नस्यार्थंस्यान्मृदुःपाकोमध्यमःसर्वकर्मसु ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अभ्यंगार्थःखरःप्रोक्तोयुञ्ज्यादेवंयथोचितम् ॥ घृततैलगुडादींश्चसाधयेन्नैकवासरे। प्रकुर्वन्त्युषितास्त्वेतेविशेषाद्गुणसञ्चयम् ॥ २२ ॥

घृत और तैलकी विधि ॥

कल्कका चौगुना घी अथवा तेल चौगुने पतले पदार्थ में मिलाकर पाककरे इसके पीनेकी मात्रा चारतोलेकी है क्वाथकी औषधियोंको चौगुने जलमें औटावे फिर चौथाई रहजानेपर उसी में घृत आदिको मिलाकर पकावे क्वाथकी वस्तु जो कोमल गिलोय आदिक होयतो चौगुनाजल और सोंठ आदिक कठिन वस्तुहोंय तो अठगुना जल और सूखेदेवदारु आदिक अतिकठोर पदार्थ होंय तो सोलह गुना जलहोना चाहिये और जो कोमल और कठोर दोनों मिली वस्तुहोंय तो अठगुना जलडालना चाहिये चारमाशे से चारतोलेतक औषधमें सोलह गुना जल चारतोलेसे सोलह तोलेतक अठगुना और सोलह तोले से अधिक होय तो चौगुना जल छोडनाचाहिये जल क्वाथ अथवा स्वरसके द्वारा अलग तैल आदिक बनानेकी विधि जहांकहींहोवे वहां क्रमसे कल्क स्नेहका चतुर्थांश षष्ठांश और अष्टमांश लेनाचाहिये अर्थात् जलके द्वारा स्नेह बनाने में कल्क स्नेहका चौथाई क्वाथके साथ स्नेह बनानेमें कल्क स्नेहका छठाभाग औरस्वरसकेसाथ स्नेहबनानेमेंस्नेहका आठवांहिस्साकल्कलेनाचाहिये फिर विशेष कहतेहैं कि दूध दही स्वरस और मट्ठेके द्वारा स्नेह बनानेमें आठवांभाग कल्क लेना चाहिये और इस कल्कके अच्छेप्रकार परिपाक होने के लिये चौगुना जलपीसने में मिलाना चाहिये जिसस्नेहके बनानेमें प्रथम कहीहुई दूध,दही,स्वरस,मट्ठा और कल्क यह पांचोंद्रव वस्तु मिलानी कही हो वहां इन हर एक का प्रमाण स्नेह के समान होना चाहिये जैसे पहले दूध,दही,स्वरस, मट्ठा. यह सब मिल करके स्नेहके चौगुने होते हैं स्नेहके बनानेमें जो केवल द्रव्यही कहाहो तो उसमें जलसे पीसा हुआ कल्क और जल चौगुना मिलाना चाहिये जहां केवल क्वाथहीसे स्नेहका पाक करना लिखाहो वहां क्वाथकी औषधियोंका कल्क भी व्यवहार कियाजाता है और जहां कल्करहित स्नेह बनाना लिखाहो वहां केवल स्वरस आदि द्रव पदार्थों से पाक करे जो स्नेह पुष्पोंके कल्कसे बनाना लिखाहो वहां स्नेहसे चौगुना जल और स्नेहका आठवां भाग पुष्पका कल्क मिलाना चाहिये स्नेहका कल्क जो उंगलीके द्वारा दबानेसे बत्तीके समान होजाय और अग्निमें डालने से शब्द न हो तब स्नेहको ठीक हुआ जानना चाहिये जब तेलमें फेना उठनेलगे घीका फेना फटजाय और यथायोग्य वर्ण सुगन्धि तथा रसकी उत्पत्तिहो तब स्नेह सिद्धहुआ जानना चाहिये स्नेहका पाक तीनप्रकारका होताहै मृदु मध्य और खर इनमेंसे जिस स्नेहका कल्क कुछ रसयुक्तहो वह मृदु पाक जिसका कल्क नीरस तथा कोमल हो उसको मध्य पाक और जिसका कल्क कुछ कठोर होजाय उसको खरपाक कहते हैं इससे भी अधिकपाक करनेमें गन्धपाक कहलाताहै यह दाहकारी और निष्प्रयोजन होताहै और पाकमें कच्चा रहाहुआ स्नेह वीर्यरहित मन्दाग्निकारी और भारी होताहै नासलेनेमें मृदुपाक अन्य सम्पूर्ण कार्यों में मध्यपाक और शरीरमें लगानेके लिये खरपाक कहागया है घी तेल और गुड आदिको एकही दिनमें पाक न करे क्योंकि बासी होनेसे गुणकी विशेषता होती है ॥ २२ ॥

अथ सन्धानविधिः ॥

द्रवेषुचिरकालस्थंद्रव्यंयत्सन्धितम्भवेत् । आसवारिष्टभेदैस्तुप्रोच्यतेभेषजोचितम्॥ भेषजेषुयदुच्चितंतद्भैषजोचितम् ॥ २३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संधानकी विधि॥

पतले पदार्थमें बहुत दिनतक औषधको भिगोनेसे जो आसव और अरिष्ट आदिक भेद बनतेहैं उनको संधान कहते हैं ॥ २३॥ तत्रआसवारिष्टयोर्लक्षणमाह॥

यदपक्वौषधाम्बुभ्यां सिद्धंमद्यंसआसवः । अरिष्टःक्वाथसाध्यःस्यात्तयोर्मानंपलोन्मितम् ॥ (सामान्यतोऽरिष्टविधिः) अनुक्तमानारिष्टेषुद्रवाद्द्रोणगुडात्तुलम् । क्षौद्रक्षिपेद्गुडादर्द्धं प्रक्षेपंदशमांशिकम् ॥ दशमांशिकम् । गुडस्यैवदशमांशम् ॥ २४॥

आसव और अरिष्टके लक्षण॥

कच्ची औषधि और जलके द्वारा जो मद्य बनती है उसको आसव कहते हैं और क्वाथकरके जो मद्य बनतीहै उसको अरिष्ट कहते हैं इनदोनों की मात्रा चार तोलेकी है जहां अरिष्ट बनानेका प्रमाण न लिखाहो वहां जल एक द्रोण गुड ४०० तोले सहत २०० तोले और औषधि गुडका दशांश डालना चाहिये॥ २४॥ द्विविधंशीधुमाह॥

ज्ञेयःशीतरसःशीधुरपक्वमधुरद्रवैः (मधुरद्रवैरिक्षुरसादिभिः) सिद्धःपक्वरसःशीधुः सम्पक्वमधुरद्रवैः । परिपक्वान्नसन्धानात् समुत्पन्नांसुराञ्जगुः । सुरामण्डःप्रसन्नास्यात्ततःकादम्बरीघना । तदधोजगलोज्ञेयोमेदकोजगलाद्घनः ॥ २५॥

दोप्रकारके शीधुके लक्षण॥

विना पकाये हुए मधुर रसयुक्त ईखके रस आदि पतले पदार्थोंसे जो मद्य बनताहै उसको शीत रस शीधु कहतेहैं और मधुर रसयुक्त पतले पदार्थोंको पकाय करके जो मद्य बनता है उसको पक्व रस शीधु कहते हैं अन्नको पकाकर उसके संधानकरनेसे जो मद्य बनताहै उसको सुरा कहतेहैं मद्यके ऊपर के निर्मल अंशको प्रसन्ना उससे कुछ घनेको कादंबरी कादंबरी के नीचेके अंशको जगल और जगलसे भी घने अंशको मेदक कहते हैं॥ २५॥

पक्वौसौहतसारःस्यात्सुराबीजंचकिण्वकम् । सुराबीजम् ॥ यवगोधूमतण्डुलादि । यत्तालखर्जूररसैःसन्धितासाहिवारुणी ॥ कन्दमूलफलादीनिसस्नेहलवणानिच । विनष्टमभिषूयन्तेतच्चुक्रमभिधीयते ॥ अभिषूयन्ते । द्रवेणाप्लाव्यसन्धीयन्ते ॥ विनष्टमम्लतांयातंमद्यंवामधुरद्रवः ॥विनष्टंसन्धितोयस्तुतच्छुक्तमभिधीयते॥ गुडाम्बुजासतैलेनकन्दशाकफलैस्तथा । सन्धितश्चाम्लतांयातंगुडचुक्रंप्रचक्षते ॥ एवमेवहिशुक्तस्यान्मृद्वीकासम्भवंतथा । तुषाम्बुसन्धितंज्ञेयमामैर्विदलितैर्यवैः ॥ यवैस्तुनिस्तुषैःपक्वैःसौवीरंसाधितंभवेत् । आरनालन्तुगोधूमैरामैःस्यान्निस्तुषीकृतैः ॥ पक्वैर्वासंहितैस्तत्तुसौवीरसदृशंगुणैः । कल्माषधान्यमण्डादिसंहितंकांजिकंविदुः ॥ शिण्डाकिसहिताज्ञेयामूलकैःसर्षपादिभिः ॥ २६॥

परिपाक किये हुए सारांशरहित जौ गेहूं और चावल आदि वस्तुओं से जो मद्य बनती है उसको सुराबीज या किण्वक कहतेहैं और ताडकेरस तथा खजूरके रसको संधानकरके जो मद्य बनतीहै उसको वारुणी कहते हैं जिस पतले पदार्थमें तेल तथा लवणयुक्त कन्दमूलफलआदिक भिजोयकरके संधान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किये जाते हैं उसको चुक्र कहते हैं मद्य अथवा मधुर रसयुक्त पतलीवस्तुको संधान करके स्वाभाविक रस नष्ट होजानेपर उसको शुक्त कहतेहैं और गुडका शर्बत, जल, तेल, कन्द, शाक तथा फल इनकोसंधान करके खट्टे होजानेपर गुडशुक्त कहतेहैं इसीप्रकार मुनक्काको भी संधान करके शुक्त बनताहै कच्चे भूसी सहित जवोंको पीसकर संधान करनेसे तुषाम्बु बनताहै भूसी रहित जवोंको पकाकर संधान कियेहुएको सौवीर कहते हैं कच्चे अथवा पक्के भूसीरहित गेहुओंको संधान करके जो वस्तु बनतीहै उस को आर्नाल कहतेहैं इसमें सौवीरके समान गुण होतेहैं नाजके मराडके साथ कुछ भीजेहुए गेहूं आदिको संधान करके कांजी बनती है मूली और सरसों आदिको संधानकरके शिंडाकी बनतीहै॥२६॥

अथ धातूनांशोधनमारणविधिः ॥

तत्रमारणायोग्यंसुवर्णमाह । दाहेरक्तंसितञ्छेदेनिकषेकुङ्कुमप्रभम् ॥ तारशुल्बोज्झितंस्निग्धंकोमलंगुरुहेमसत् । सत् ॥ उत्तमम् । तच्छेदेकठिनंरूक्षंविवर्णंसमलंदलम् । दाहेछेदेसितंश्वेतंकषेस्फुटलघुस्त्यजेत् ॥ २७ ॥

धातुओं के शोधन और मारण की विधि मारने के योग्य सुवर्ण ॥

जो सुवर्ण तपाने में लाल काटने में श्वेत और कसने में केसर के समान होता है और जो रूपे अथवा तांबे के मेल से रहित, स्निग्ध, कोमल और भारी होताहै वह श्रेष्ठ है जो सुवर्ण श्वेत, कठोर-रूखा, वर्णरहित, मलयुक्त, दलसहित और तपाने में काटने में श्वेत चोट लगाने से फटनेवाला हलका तथा कसनेमें श्वेत हो वह निकृष्ट है ॥ २७ ॥

शोधनविधिः ॥

पत्तलीकृतपत्राणिहेम्नोवह्नौप्रतापयेत् । निषिञ्चेत्तत्तप्तानितैलतक्रेचकाञ्जिके ॥ गोमूत्रेचकुलत्थानांकषायेतुत्रिधात्रिधा । एवंहेम्नःपरेषाञ्चधातूनांशोधनंभवेत् ॥ २८ ॥

सुवर्ण के शोधने की विधि ॥

सुवर्ण के बहुत पतले पत्रों को आग में तपाकर तिलोंका तेल, मट्ठा, कांजी, गोमूत्र और कुलथी का काढ़ा इन सब में तीन तीन बार बुझावे इस रीति से सुवर्ण शुद्ध होता है और अन्य धातु भी शुद्ध होती हैं ॥ २८ ॥ अथाशुद्धस्यसुवर्णस्यदोषमाह ॥

असौख्यकार्यैचसदासुवर्णमशुद्धमेतन्मरणञ्चकुर्यात् ॥ २९ ॥ बलंसवीर्यंहरतेनराणांरोगव्रजंपोषयतीहकाये।

अशुद्ध सुवर्ण के दोष ॥

विना शोधा हुआ सुवर्ण बलवीर्य का नाश, रोगोंकी उत्पत्ति, कार्य्य में अनुत्साह और मृत्यु को भी करता है ॥ २९ ॥

स्वर्णस्यमारणविधिः ॥

स्वर्णस्यद्विगुणंसूतमम्लेनसहमर्दयेत् । तद्गोलकसमंगन्धंनिदध्यादधरोत्तरम् ॥ गन्धकचूर्णम् गोलकञ्चततोरुध्वाशरावदृढसंपुटे ॥ त्रिंशद्वनोपलैर्दद्यात्पुटान्येवचतुर्दश । निरुत्थंजायतेभस्मगन्धोदेयःपुनःपुनः ॥ रुध्वाासवस्त्रकुट्टितचिक्कणमृत्तिकया वनोपलः। गोइठाइतिलोके निरुत्थंयत्पुनर्नजीवति ३०॥ स्वर्णस्य अतितनूकृतपत्रस्यगन्धम् ।

सुवर्ण के मारण की विधि ॥

शुद्ध सुवर्ण को दूने पारे के साथ खटाई में घोटे फिर गोला बनाकर उसके ऊपर और नीचे गन्धक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का चूरा रखे फिर उस गोले को सकोरों के मजबूत सम्पुट में रखकर वस्त्र युक्त कूटी हुई चिकनी मट्टी से बन्द कर दे फिर तीस बिनवां कण्डों से चौदह बार पुटपाक करे इस प्रकार वारंवार गन्धक देकर पुट देने से सुवर्ण की निरुत्थ (जो फिर न जी सके) भस्म होती है ॥ ३० ॥

अथान्यप्रकारः ॥

काञ्चनेगलितेनागंषोडशांशेननिःक्षिपेत् । चूर्णयित्वातथाम्लेनघृष्ट्वाकृत्वातुगोलकम् ॥ गोलकेनसमंगन्धंदत्वाचैवाधरोत्तरम् । शरावसम्पुटेधृत्वापुटेद्विंशद्वनोपलैः ॥ एवंसप्तपुटैर्हेमनिरुत्थंभस्मजायते । अत्रापिपूर्ववद्गन्धः प्रदातव्यः ॥ ३१ ॥

दूसरा प्रकार ॥

सुवर्ण को गलाकर उसका सोलहवां हिस्सा सीसा छोडे फिर चूर्ण करके खटाई में पीस गोला बनावे और गोले के ऊपर नीचे गोले के समान गन्धक लपेटे इस प्रकार वारंवार गन्धक देकर के बीस बीस बिनुवां कण्डों से सात पुट देवे इस रीति से सुवर्ण की निरुत्थ भस्म होती है ॥ ३१ ॥

अन्यच्च ॥

काञ्चनाररसैर्घृष्ट्वासमसूतकगन्धयोः । कज्जलींहेमपत्राणिलेपयेत्समयातया ॥ हेमपत्रसमया । काञ्चनारत्वचःकल्कैर्मूषायुग्मंप्रकल्पयेत् । धृत्वातत्सम्पुटेगोलं मृन्मूषासम्पुटेचतत् ॥ निधायसन्धिरोधञ्चकृत्वासंशोष्यगोलकम् । वह्निंखरतरंकुर्यादेवंदत्वापुटत्रयम् ॥ निरुत्थंजायतेभस्मसर्वकर्मसुयोजयेत् । काञ्चनारप्रकारेणलांगलीहन्तिकाञ्चनम् ॥ (लांगलीकरिहारी) ज्वालामुखीतथाहन्यात्तथाहन्तिमनःशिला । शिलासिन्दूरयोश्चूर्णंसमयोरर्कदुग्धकैः ॥ सप्तधाभावनान्दद्याच्छोषयेच्चपुनःपुनः । ततस्तुगलितेहेम्निकल्कोऽयंदीयतेसमः ॥ पुनर्द्धमेदतितरांयथाकल्कोविलीयते । एवंवेलात्रयंदद्यात्कल्कंहेमम्रतिर्भवेत् ॥ ३२ ॥ तीसरी विधि ॥

समभाग पारे और गन्धककी कजलीकरे फिर इसको कचनारके रसमें पीसकर समभाग सुवर्ण के पत्रोंपै लपेटे और गोला बनावे फिर कचनारकी छालको पीसकर दो घरिया बनावे उनमें गोलेको रक्खे फिर इन घरियाओंमें बन्दहुये सुवर्णको घरियासमेत मिट्टीके सकोरोंमें रक्खे और कपडौं करके सुखावे फिर अत्यन्ततीक्ष्ण अग्निमें तीन पुटपाकदेवे इसप्रकारसे सुवर्णकी सब कामकेयोग्य निरुत्थ भस्म होजातीहै ऊपर कही हुई कचनार की विधि के अनुसार करिहारी अरनी अथवा मैनसिलसे सुवर्ण की भस्म होती है मैनसिल और सिन्दूर का समभाग चूर्णकरके आकके दूधसे सातबार भावना देदेकर सुखावे फिर सुवर्णको गलाकर उसमें इसीचूर्णको समभाग छोडे और अत्यन्त तीक्ष्ण अग्नि में ऐसी आंच देवे जिससे कि यह कल्क भस्महोकर लुप्त होजाय तीनबार इस रीतिके करनेसे सुवर्ण की भस्म ठीक होतीहै ॥ ३२ ॥

एवंमारितस्य सुवर्णस्यगुणाः ॥

सुवर्णंशीतलंवृष्यंबल्यंगुरुरसायनम् । स्वादुतिक्तंचतुवरंपाकेचस्वादुपिच्छिलम् ॥ पवित्रंबृंहणंनेत्र्यंमेधास्मृतिमतिप्रदम् । हृद्यमायुष्करंकान्तिवाग्विशुद्धिस्थिरत्वकृत् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषद्वयक्षयोन्मादत्रिदोषज्वरशोषजित् । वृष्यमूषायकामुकायहितम् ॥ असम्यङ्मारितंस्वर्णबलंवीर्यञ्चनाशयेत् । करोतिरोगान्मृत्युञ्चतद्धन्याद्यत्नतस्ततः ॥ ३३ ॥

सुवर्ण की भस्म के गुण ॥

सुवर्ण. शीतल, कामी लोगों को हित, बलकारी, भारी, रसायन, मधुर, तिक्त, कषैला, पाकमें मधुर पिच्छिल, पवित्र, धातुवर्द्धक, नेत्रों को हित, मेधाकारी, स्मृति तथा बुद्धिदायक, हृदय को हित, आयुकारी, कान्तिवर्द्धक, वाणी का शोधक, स्थिरताकारी और दोनों प्रकार के विष, क्षय, उन्माद, त्रिदोष, ज्वर तथा राजयक्ष्मा नाशक होता है अच्छे प्रकार से नहीं मरा हुआ सोना—बल, वीर्य्य की हानि, रोगोंकी उत्पत्ति और मृत्युकोभी करताहै इससे बडे यत्नपूर्वक सुवर्णको भस्म करनाचाहिये ॥ ३३ ॥

धात्वादिमारणोपयुक्तान्पुटप्रकारानाहरसप्रदीपे ॥

लोहादेरपुनर्भावस्तद्गुणत्वंगुणाढ्यता । सलिलेतरणञ्चापितत्सिद्धिःपुटनाद्भवेत् ॥ गम्भीरेविस्तृतेकुण्डेद्विहस्तेचतुरस्रके । वनोपलसहस्रेणपूरितंपुनरौषधम्॥कोष्ठिरुद्धेप्रयत्नेनगोविष्ठोपरिधारयेत्। वनोपलसहस्रार्द्धंकोष्ठिकोपरिनिःक्षिपेत् ॥ वह्निंविनिक्षिपेत्तत्रमहापुटमितिस्मृतम् । कोष्ठंमृन्मूषा गोविष्ठागोइटा महापुटम् ॥ ३४ ॥

रसप्रदीप में कहेहुये धातु आदिकों के मारनेके योग्य पुटोंके प्रकार—महापुट ॥

भस्म किये हुये लोहा आदिक का फिर न जीना और जल में डालने से तैरना ठीक भस्महोने का और गुणयुक्त होनेका चिह्नहै और यह चिह्न पुटपाकही से होते हैं दीर्घ चौडे और गम्भीर दो हाथ के चौकोने कुण्ड में एकहजार अरने कण्डे रखकर मट्टीकी घरिया में रक्खी हुई औषधि को अच्छे प्रकार बन्द करके कण्डोंपर रक्खे फिर पांच सौ कण्डे उसके ऊपर रखकर अग्नि लगादे यह महापुट कहलाताहै ॥ ३४ ॥

सपादहस्तमानेनकुण्डेनिम्नेतथायते । वनोपलसहस्रेणपूर्णेमध्येविधारयेत् ॥ पुटनद्रव्यसंयुक्तांकोष्ठिकांमुद्रितांमुखे । अथार्द्धानिकरण्डानिअर्द्धान्युपरिनिक्षिपेत् । एतद्गजपुटंप्रोक्तंख्यातंसर्वपुटोत्तमम् ॥ हस्तैश्चतुर्विंशत्यंगुलप्रमाणःससपादस्तेनत्रिंशदंगुलप्रमाणेनेत्यर्थःअतएवोक्तम् । साधारणनरांगुल्यात्रिंशदंगुलकोगजइतिगजपुटम् ॥ ३५ ॥

गजपुट का वर्णन ॥

सवाहाथ(तीसअंगुल) लम्बे चौडे कुण्डमें हजार अरने कण्डे भरे फिर औषधियुक्त अच्छे प्रकारसे बन्द मट्टीकी घरिया को उसपर रक्खे फिर उसपर पांचसौ कण्डे रखकर आग लगादे यह सम्पूर्ण पुटों में श्रेष्ठ गजपुट कहाताहै ऊपर कहेहुये सवाहाथ (तीसअंगुल) से एकगज समझना चाहिये क्योंकि ऐसाही कहा हुआ है कि मनुष्योंके साधारण तीसअंगुलका एक गजहोताहै ॥ ३५ ॥

अरत्निमात्रकेकुण्डेपुटंवाराहमुच्यते । वितस्तिमात्रकेखातेकथितंकौक्कुटंपुटम् ॥ अरत्निस्तूकनिष्ठेनमुष्टिनेत्यमरः । निःसृतकनिष्ठयामुष्ट्योपलक्षितोहस्तोऽरत्निरित्यर्थः ॥ षोडशांगुलकेखातेकस्यचित्कौक्कुटंपुटम् ॥ ३६ ॥

फैली हुई कनिष्ठिका उंगली समेत मुट्ठी युक्त हाथभरके गहरे चौडे कुण्ड में पुटदेनेको वाराहपुट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और बिलस्त [illegible]र के गहरे चौडे कुण्ड में पुट देनेको कुक्कुटपुट कहते हैं कोई २ लोग सोलह अंगुल के लम्बे चौडे गहरेकुण्ड में पुट देनेको कुक्कुट पुट कहते हैं ॥ ३६ ॥

यत्पुटंदीयतेखातेअष्टसंख्यैर्वनोपलैः । कपोतपुटमेतन्तु कथितंपुटपण्डितैः ॥ गोष्ठान्तर्गोखुरक्षुण्णशुष्कंचूर्णितगोमयम् । गोबरंतत्समाख्यातंवरिष्ठंरससाधने ॥ बृहद्भाण्डस्थितैर्यत्रगोबरैर्दीयतेपुटम् ॥ तद्गोबरपुटंप्रोक्तंभिषग्भिःसूतभस्मनि । बृहद्भाण्डेतुषैःपूर्णेमध्येमूषांविधारयेत् । क्षिप्त्वाग्निमुद्रयेद्भाण्डंतद्भाण्डंपुटमुच्यते ॥ ३७ ॥

आठकण्डे भरनेवाले कुण्ड में जो पुटपाक दिया जाता है उसको कपोतपुट कहते हैं गोशालाओंमें गौओं के खुरोंसे पिसे हुये गौओंके मलको गोबर कहते हैं यह पारेके साधन करनेमें श्रेष्ठहै बडे पात्र में स्थित गोबर के द्वारा जहां पुट दिया जाता है उसको गोबरपुट कहते हैं इस्से पाराभस्म होताहै भूसी से भरे हुये किसी बडे पात्रके बीचमें औषधयुक्त घडियाको रक्खे और अग्नि लगाकर पात्रको बन्द करदे यह भाण्डपुट कहलाताहै ॥ ३७ ॥

अथ यन्त्रप्रकारानाहतत्रैव ॥

भाण्डेवितस्तिगम्भीरेमध्येनिहितकूपिका । कूपिकाकण्ठपर्यन्तंबालुकाभिश्चपूरिते ॥ भेषजंकूपिकासंस्थंवह्निनायत्रपच्यते । बालुकायन्त्रमेतद्धियन्त्रंतत्रबुधैःस्मृतम् ॥ बालुकायन्त्रम् ॥ ३८ ॥

यन्त्रोंके प्रकार । बालुकायन्त्र ॥

एकबिलस्त गहरे पात्रके बीच में औषधयुक्त सीसीको रक्खे और सीसी के गले तक बालूभरदे फिर अग्नि के द्वारा औषध को पकावे यह बालुका यन्त्र कहलाताहै ॥ ३८ ॥

निबद्धमौषधंसूतंभूर्जेतत्त्रिगुणंवरे । रसपोटलिकाकाष्ठेदृढंबध्वागुणेनहि ॥ सन्धानपूर्णकुम्भान्तःस्वावलम्बनसंस्थितम् । अधस्ताज्ज्वालयेदग्नितत्तदुक्तक्रमेणहि ॥ दोलायन्त्रमिदंप्रोक्तंस्वेदनाख्यंतदेवहि । दोलायन्त्रम् । सन्धानंकाञ्जिकादि ॥ ३९ ॥

दोलायंत्र ॥

पारे समेत औषधि को भोजपत्रमें लपेटकर तीनतहकी पोटली बनावे फिर उस पोटलीको किसी काठके टुकडे में बांधकर कांजी आदिसे भरे हुये पात्र में पेंदीको न छूतीहुई लटकावे और उसपात्र के नीचे आग बलाकर क्रमसे अग्निदे इसको दोलायंत्र अथवा स्वेदनयंत्र कहते हैं ॥ ३९ ॥

साम्बुस्थालीमुखेबद्धेवस्त्रेस्वेद्यंनिधायच । पिधायपच्यतेयत्रतद्यन्त्रंस्वेदनंस्मृतम् ॥ स्वेदनंयन्त्रम् ॥ ४० ॥

जलसे भरी हुई बटलोई के मुखपर बँधे हुये कपडे में उबालने की औषध को रखकर उसका मुखबन्दकरदे और पाक करे इसको स्वेदन यन्त्र कहते हैं ॥ ४० ॥

अथस्थाल्यांरसंक्षिप्त्वानिदध्यात्तन्मुखोपरि । स्थालीमूर्ध्वमुखींसम्यङ्निरुध्यमृदुमृत्स्नया ॥ ऊर्ध्वस्थाल्यांजलंक्षिप्त्वाचुल्ल्यामारोप्ययत्नतः । अधस्ताज्ज्वालयेदग्निंयावत्प्रहरपञ्चकम् ॥ स्वाङ्गशीतंततोयन्त्रादुद्गृह्णीयाद्रसमुत्तमम् । विद्याधराभिधंयन्त्रमेतत्तज्ज्ञैरुदाहृतम् ॥ विद्याधरयन्त्रम् ॥ ४१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विद्याधर यन्त्र ॥

एकपात्र में पारा छोडकर उसके ऊपर एक ऊर्ध्वमुख दूसरा पात्र रक्खे और उसकी संधिकोगीली मट्टी से बन्द करदे फिर ऊपर के पात्र में जलभर के चूल्हे पर चढावे और नीचे पांच पहर तक आगबलावे फिर अच्छेप्रकारसे शीतल होजानेपर पारेको निकालले इसको विद्याधर यन्त्रकहतेहैं ४१॥

वालुकाभिःसमस्ताङ्गंगर्तेमूषांरसान्विताम् । दीप्तोपलैःसंवृणुयाद्यन्त्रंभूधरनामकम् ॥ भूधरयन्त्रम् ॥ ४२ ॥

भूधर यन्त्र ॥

पारे समेत घडिया को वालूसे अच्छे प्रकार ढककरके सब ओर से जलते हुये कण्डोंकी आंचदे इसको भूधरयन्त्र कहते हैं ॥ ४२ ॥

यन्त्रंडमरुसंज्ञंस्यात्तत्स्थाल्योर्मुद्रितेमुखे । डमरुयन्त्रम् ॥ ४३ ॥

डमरूयन्त्र ॥

दोपटलों के मुखोंको परस्पर संपुट जोडकर जो यन्त्र बनताहै उसको डमरूयन्त्र कहतेहैं ४३ ॥

अथ मारणाययोग्यंरूप्यमाह ॥

गुरुस्निग्धंमृदुश्वेतंदाहच्छेदघनक्षमम् । स्वर्णादिरहितंस्वच्छंतारंनवगुणंशुभम् ॥ (अथायोग्यम्) कठिनंकृत्रिमंरूक्षंरक्तंपीतदलंलघु । दाहच्छेदघनैर्नष्टंरूप्यंदुष्टंप्रकीर्त्तितम् ॥ ४४ ॥

मारनेके योग्य चांदी ॥

जो चांदी भारी,स्निग्ध,कोमल,तपाने वा काटने से श्वेत,चोटकी सहनेवाली,सुवर्णादि धातुओं के मेलसे रहित और निर्मल होतीहै वह उत्तम है और जो चांदी कठोर, कृत्रिम, रूखी, लाल, पीतदल युक्त,हलकी और तपानेसे काटने से अथवा घनकी चोटसे नष्ट होजाती है वह दोषयुक्त है ॥ ४४ ॥

अथ शोधनविधिः ॥

पत्तलीकृतपत्राणितारस्याग्नौप्रतापयेत् । निषिञ्चेत्तप्ततप्तानितैलेतक्रेचकाञ्जिके॥ गोमूत्रेचकुलत्थानांकषायेचत्रिधात्रिधा । एवंरजतपत्राणांविशुद्धिःसम्प्रजायते ॥ ४५ ॥

चांदीके शुद्धकरने की विधि ॥

चांदीके पतले पत्रोंको अग्निमें तपा २ कर क्रमसे तेल, मट्ठा,काँजी, गोमूत्र और कुलथी के काढे में तीन २ बार बुझावे इसप्रकार से चाँदी शुद्ध होती है ॥ ४५ ॥

अथाशुद्धस्यरूप्यस्यदोषमाह ॥

रूप्यंत्वशुद्धंप्रकरोतितापंविबन्धकंवीर्य्यबलक्षयञ्च । देहस्यपुष्टिंहरतेतनोतिरोगांस्ततःशोधनमस्यकुर्यात् ॥ ४६ ॥

अशुद्धचाँदीके दोष ॥

अशुद्धचाँदी ताप,विबन्ध,वीर्य,बलका नाश,देहकी पुष्टता का नाश और अनेक रोगोंको करतीहै ४६॥

अथ रूप्यमारणविधिः ॥

भागैकंतालकंमर्द्यंयाममम्लेनकेनचित् । तेनभागत्रयंतारपत्राणिपरिलेपयेत् ॥ धृत्वामूषापुटेरुध्वापुटेत्त्रिंशद्वनोपलैः । समुद्धृत्यपुनस्तालंदत्त्वारुध्वापुटेपचेत् ॥ एवंचतुर्दशपुटैस्तारभस्मप्रजायते । अथान्यप्रकारः । स्नुहीक्षीरेणसंपिष्टंमाक्षिकंतेनलेपयेत् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तालकस्यप्रकारेणतारपत्रस्यबुद्धिमान्॥ पुटेच्चतुर्दशपुटैस्तारम्भस्मप्रजायते॥ ४७॥

चाँदीमारने की विधि॥

एकभाग हरताल को पहरभर किसी खटाई से मर्दन करे उसको तीनभाग चाँदीके पत्रोंपर लपेटै फिर उनपत्रों को घड़ियामें रखकर उसका मुखबन्द करदे और तीस कण्डों में पुटपाक करे इसप्रकार वारंवार हरताल लेपकरके चौदह पुटदेनेसे चाँदीभस्महोती है-दूसराप्रकार-थूहरके दूधमें सोनामक्खी को पीसकर हरिताल के समान चाँदीके पत्रोंपर लेपकरके पहले कहीहुई विधि से चौदह पुटदेनेसे चाँदी भस्म होती है॥ ४७॥ एवं मारितस्य रूप्यस्य गुणः॥

रौप्यंशीतंकषायञ्चस्वादुपाकरसंसरम्। वयसःस्थापनंस्निग्धंलेखनंवातपित्तजित्॥ प्रमेहादिकरोगांश्चनाशयत्यचिराद्ध्रुवम्॥ ४८॥

चाँदीकी भस्म के गुण॥

चाँदी. शीतल, कषैली, रस और पाक में मधुर, दस्तावर, अवस्थाको स्थित रखनेवाली, स्निग्ध, लेखन वात पित्तनाशक और प्रमेहादिक रोगों की शीघ्र नाशक होती है॥ ४८॥

अथ मारणयोग्यंताम्रमाह॥

जपाकुसुमसङ्काशंस्निग्धंगुरुघनक्षमम्। लोहनागोज्झितंताम्रंमारणायप्रशस्यते॥ ४९॥

मारने के योग्य तांबा॥

जो तांबा गुडहर के समान लाल, स्निग्ध, कोमल घन का सहनेवाला और लोहे सीसे के मेलसे रहित होताहै वह श्रेष्ठहै॥ ४९॥ अथायोग्यताम्रमाह॥

कृष्णंरूक्षमतिस्वच्छंश्वेतंचापिघनासहम्। लोहनागयुतंचेतिशुल्बंदुष्टंप्रकीर्तितम्॥ ५०॥

अयोग्य तांबा॥

जो तांबा-कालेरङ्गका, रूखा, बहुत स्वच्छ, श्वेतवर्ण, घनको नहीं सहनेवाला और लोहे तथा सीसेसे युक्तहोताहै वह दोषयुक्त होताहै॥ ५०॥ अथ शोधनविधिः॥

पत्तलीकृतपत्राणिताम्रस्याग्नौप्रतापयेत्। निषिञ्चेत्तप्ततप्तानितैलेतक्रेचकाञ्जिके॥ गोमूत्रेचकुलत्थानांकषायेचत्रिधात्रिधा। एवंताम्रस्यपत्राणांविशुद्धिःसंप्रजायते॥ एको दोषोविषेताम्रेत्वशुद्धेऽष्टौभ्रमोवमिः। विरेकःस्वेदउत्क्लेदोमूर्च्छादाहोऽरुचिस्तथा॥ नवि षंविषमित्याहुस्ताम्रन्तुविषमुच्यते। एकोदोषोविषेताम्रेत्वष्टौदोषाःप्रकीर्तिताः॥ ५१॥

तांबा शुद्ध करने की विधि॥

तांबेके सूक्ष्म पत्रोंको अग्निमें तपा २ कर तेल, मट्ठा, कांजी, गोमूत्र और कुलथीके काढ़ेमें तीन २ बार बुझावे इस रीति से तांबा शुद्ध होता है विष में एकदोष और अशुद्ध तांबे में भ्रम, छर्दि, दस्त, स्वेद, क्लेद, मूर्च्छा, दाह, तथा अरुचि यह आठ दोषहैं इसीकारणसे एक दोषयुक्त विषको विष न कह-कर आठ दोषयुक्त अशुद्ध तांबे को विष कहते हैं॥ ५१॥

अथ ताम्रस्य मारणविधिः॥

सूक्ष्माणिताम्रपत्राणि कृत्वासंस्वेदयेद्बुधः। वासरत्रयमम्लेन ततः खल्वेविनिः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्षिपेत् ॥ पादांशंसूतकंदत्त्वा याममम्लेनमर्दयेत्। ततउद्धृत्यपत्राणिलेपयेद्द्विगुणेनच ॥ गन्धकेनाम्लघृष्टेनतस्यकुर्याच्चगोलकम् । ततःपिष्ट्वाचमीनाक्षींचाङ्गेरींवापुनर्नवाम् ॥ (चाङ्गेरीचतुष्पत्राम्ललोनिकाभेदः) तत्कल्केनबहिर्गोलंलेपयेद्द्व्यंगुलोन्मितम् ॥ धृत्वा तद्गोलकंभाण्डेशरावेणचरोधयेत्। बालुकाभिःप्रपूर्याथविभूतिलवणाम्बुभिः ॥ दत्त्वाभाण्डमुखेमुद्रांततश्चुल्ल्यांविपाचयेत्। क्रमवृद्ध्याग्निनासम्यग्यावद्यामचतुष्टयम्॥ स्वाङ्गशीतंसमुद्धृत्यमर्दयेच्छूरणद्रवैः। यामैकंगोलकंतच्चनिःक्षिपेच्छूरणोदरे॥ मृदालेपस्तुकर्त्तव्यःसर्वतोऽङ्गुष्ठमात्रकः। पाच्यंगजपुटेक्षिप्तंमृतंभवतिनिश्चितम्॥ वमनंचविरेकंचभ्रमंक्लममथारुचिम्। विदाहंस्वेदमुत्क्लेदंनकरोतिकदाचन ॥ ५२॥

तांबा मारने की विधि ॥

तांबेके बारीक पत्रोंको आगमें तपाकर तीन दिन खटाई में भिगोवे फिर चौथाई पारा मिलाकर खटाई समेत खरल में एक पहर मर्दन करे फिर खरल से निकालकर खटाई से पीसीहुई दूनी गन्धक से उन पत्रों पर लेप करके गोला बनावे और मकोय चूका अथवा पुनर्नवाको पीस कर गोले के ऊपर दो अंगुल का मोटा लेप करे फिर इस गोले को किसी पात्रमें रखकर पात्रमें बालू भरके और उसे सकोरेसे बन्दकरके मट्टी नोन और जल इनसबको मिलाके उसकेमुखको बन्द करदे और चूल्हे पर चढ़ायके धीरे २ अग्नि को बढ़ाता हुआ चार पहर तक आगदेवे फिर अच्छे प्रकार शीतल होजानेपर उस गोले को निकाल के जिमीकन्द के रस में एकपहर खरलकरे और फिर गोलाबनाकर जिमीकन्दके बीचमें रक्खे और उस पर एक अंगुलका मोटा मट्टी का लेपकरके गज पुटमें पाक करे इसप्रकार से निस्सन्देह तांबेकी उत्तम भस्म होती है और यह तांबा.वमन, विरेचन, भ्रम, ग्लानि, अरुचि, विदाह, स्वेद तथा क्लेदको नहीं करता है ॥ ५२ ॥

एवं मारितस्य ताम्रस्य गुणाः ॥

ताम्रंकषायंमधुरंसतिक्तमम्लञ्चपाकेकटुसारकञ्च। पित्तापहंश्लेष्महरञ्चशीतंतद्रोपणंस्याल्लघुलेखनञ्च॥ पाण्डूदरार्शोज्वरकुष्ठकासश्वासक्षयान्पीनसमम्लपित्तम्। शोथंकृमिंशूलमपाकरोतिप्राहुर्बुधाबृंहणमल्पमेतत् ॥ एकोदोषोविषेताम्रेत्वसम्यग्मारितेपुनः। दाहःस्वेदोऽरुचिर्मूर्च्छाक्लेदोरेकोवमिर्भ्रमः ॥ रेकोविरेकः ॥ ५३ ॥

तांबेकी भस्म के गुण ॥

तांबा. कषैला, मधुर, तिक्त, खट्टा, पाकमें कटु,दस्तावर,कफ पित्तनाशक,शीतल,घावको भरनेवाला, हलका, लेखन, कुछ धातुवर्द्धक और पांडु, उदर, बवासीर, ज्वर, कुष्ठ, खांसी, श्वास, क्षय, पीनस, अम्लपित्त, सूजन, कृमि तथा शूलनाशक होता है विषमें एक दोष और अच्छे प्रकारसे नहीं बने तांबेमें दाह, स्वेद, अरुचि, मूर्च्छा, क्लेद, विरेचन, छर्दि और भ्रम यह आठ दोष होते हैं ॥ ५३ ॥

अथ वङ्गस्यरूपनिरूपणम् ॥

वङ्गंचगिरिजंतच्चखुरकंमिश्रकंद्विधा। तयोस्तुखुरकंश्रेष्ठमिश्रकंत्वहितंमतम् ५४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बङ्गकास्वरूप ॥

बङ्ग और जस्ता यह दोनों खुरक और मिश्रक भेदसे दोप्रकारकेहैं इन्में से खुरकश्रेष्ठ और मिश्रक अहित होता है ॥ ५४ ॥

तस्याशुद्धस्यदोषमाह ॥

वङ्गंविधत्तेखलुशुद्धिहीनमाक्षेपकम्पौचकिलासगुल्मौ । कुष्ठानिशूलंकिलवातशोथं पाण्डुप्रमेहञ्चभगंदरञ्च ॥ विषोपमंरक्तविकारवृन्दंक्षयञ्चकृच्छ्राणिकफज्वरञ्च । मेहाश्मरी विद्रधिमुष्करोगानूनागोऽपिकुर्यात्कथितान्विकारान् ॥ ५५ ॥

अशुद्धबङ्गके दोष ॥

अशुद्ध बङ्ग. आक्षेप, कम्प, किलास, गुल्म, कुष्ठ, शूल, वात, सूजन, पांडु, प्रमेह, भगंदर, विषके समान रुधिर के विकार, क्षय, मूत्रकृच्छ्र, कफ, ज्वर, मेह, पथरी, विद्रधि और अण्डकोश के रोगोंको उत्पन्न करताहै ॥ ५५ ॥

तस्यशोधनमभिधीयते ॥

वङ्गनागौप्रतप्तौचगलितौतौनिषेचयेत् । त्रिधात्रिधाविशुद्धिःस्याद्रविदुग्धेऽपिचात्रिधा ॥ निषेचयेत्तैलतक्रकाञ्जिकगोमूत्रकुलत्थक्काथेषुप्रत्येकंत्रिधा त्रिधाततोऽर्कदुग्धेऽपित्रिधा ॥ ५६ ॥

बङ्गकेशोधनकी विधि ॥

बङ्ग और सीसेको पिघलाकर तेल, मट्ठा, कांजी, गोमूत्र, कुलथीकाकाढ़ा और आकका दूध इन सब में तीन २ वार क्रम से बुझावे इसप्रकारसे सीसा और रांगा शुद्धहोताहै ॥ ५६ ॥

अथ वङ्गस्यमारणविधिः ॥

मृत्पात्रेद्राविते वङ्गेचिञ्चाश्वत्थत्वचोरजः । क्षिप्त्वावङ्गचतुर्थांशमयोदर्व्याप्रचालयेत् ॥ चिञ्चाअमिली । रजश्चूर्णम्। अयोदर्वीकरछुली । ततोद्वियाममात्रेणवङ्गंभस्मप्रजायते ॥ अथभस्मसमंतालंक्षिप्त्वाम्लेनविमर्दयेत् । ततोगजपुटेपक्त्वापुनरम्लेनमर्दयेत् ॥ तालेनदशमांशेनयाममेकंततःपुटेत् ॥ एवंदशपुटैःपक्वंवङ्गंभवतिमारितम्॥ ५७ ॥

बङ्गमारनेकीविधि ॥

मिट्टीके पात्रमें बङ्गको गलाकर चतुर्थांश इमली और पीपलकी छालका चूर्ण छोड़े और लोहे की कलछीसे चलावे इसरीति से दोपहरमें बङ्गभस्महोती है फिर भस्म के समानभाग हरताल मिलाकर खटाईमें घोटे और गजपुटमें पाककरे फिर दशमांश हरिताल मिलाकर एक पहरतक पुटपाककरे इसप्रकार दशवार पुट देनेसे बङ्गकी भस्म होतीहै ॥ ५७ ॥

एवंमारितस्यवङ्गस्यगुणाः ॥

वंगंलघुसरंरूक्षंकुष्ठमेहकफक्रिमीन् । निहन्तिपाण्डुंसश्वासंनेत्र्यमीषत्तुपित्तलम्॥ सिंहोगजौघंतुयथानिहन्तितथैववङ्गोऽखिलमेहवर्गम्। देहस्यसौख्यंप्रबलेन्द्रियत्वंनरस्यपुष्टिंविदधातिनूनम् ॥ ५८ ॥

बङ्गकी भस्मके गुण ॥

बङ्ग. हलकी, दस्तावर, रूखी, नेत्रोंकोहित, कुछ पित्तकारी और कुष्ठ, प्रमेह, कफ, कृमि, पाण्डु तथा श्वास, रोगकी नाशक होतीहै जैसे सिंह हाथियोंके समूहको मारताहै उसी प्रकार बङ्ग सब प्रकारके प्रमेहोंको नाशकरतीहै और यह सुख इन्द्रियों में सामर्थ्य और शरीरकी पुष्टताको बढ़ाती है ॥ ५८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ यशदस्यस्वरूपम् ॥

यशदंगिरिजंतस्यदोषाःशोधनमारणे । वङ्गस्येवहिबोद्धव्यागुणास्तुगणयाम्यथ ॥ यशदंचसरंतिक्तंशीतलंकफपित्तहृत् । चक्षुष्यंपरमंमेहान्पाण्डुंश्वासञ्चनाशयेत् ॥ ५९ ॥

जस्तेकास्वरूप ॥

जस्तेके दोष शोधन और मारण बंगके समान हैं जस्ता. कषैला, तिक्त, शीतल, नेत्रोंको हित और कफ, पित्त, प्रमेह, पाण्डु तथा श्वासनाशक होताहै ॥ ५९ ॥

अथ सीसकस्यशोधनम् ॥

तस्यसाहजिकादोषारङ्गस्येवनिदर्शिताः । शोधनञ्चापितस्यैवभिषग्भिर्गदितंपुरा ६० ॥

सीसेकाशोधन ॥

सीसे के स्वाभाविक दोष रांगेके समानदेखाये हैं और उसका शोधन भी रांगेके समानही वैद्यों ने कहाहै ॥ ६० ॥

अथ सीसस्यमारणविधिः ॥

ताम्बूलरससंपिष्टंशिलालेपात्पुनःपुनः । द्वात्रिंशद्भिःपुटैर्नागानिरुत्थंभस्मजायते । शिलामनःशिलाः (अन्यच्च) अश्वत्थचिञ्चात्वक्चूर्णञ्चतुर्थांशेननिक्षिपेत् । मृत्पात्रे विद्रुतोनागोलोहदर्व्याप्रचालितः ॥ यामैकेनभवेद्भस्मतत्तुल्यास्यान्मनःशिला । काञ्जिकेनद्वयंपिष्ट्वापचेद्गजपुटेनच । स्वांगशीतंपुनःपिष्ट्वाशिलयाकाञ्जिकेनच । पुनःपचेच्छरावाभ्यामेवंषष्टिपुटैर्मृतिः ॥ ६१ ॥

सीसेकेमारणकीविधि ॥

पानके रसमें पिसीहुई मैनसिलका वारंवार लेपकरके बत्ती संपुटमें सीसेकी निरुत्थ भस्म होती है (दूसरीविधि) मृत्तिकाके पात्रमें सीसेको गलायकरपीपल और इमलीकीछालकाचूर्ण उसकाचतुर्थांश उसमें छोडे और लोहेकी कलछीसे उसको चलावे इसप्रकार एक पहरमें भस्म होतीहै फिर भस्मके समान मैनसिल मिलायकर दूनी कांजीमें पीस गजपुटमें पाककरे फिर शीतल होजानेपर मैनसिल सिलाके कांजीमें पीस पुटपाक करे इसप्रकार साठिपुटपाक करने से सीसेकी भस्म होतीहै ॥ ६१ ॥

एवं मारितस्यसीसस्यगुणाः ॥

सीसंरङ्गगुणंज्ञेयंविशेषान्मेहनाशनम् ॥ नागस्तुनागशततुल्यबलंददाति व्याधिञ्चनाशयतिजीवितमातनोति । वह्निंप्रदीपयतिकामबलंकरोति मृत्युञ्चनाशयतिसन्ततसेवितःसः ॥ ६२ ॥

सीसेकीभस्मके गुण

सीसेमें बङ्गके समान गुणहोतेहैं और विशेषकरके प्रमेहोंको नाशकरताहै सदैव सेवनकियागया सीसा सौहाथियों के समान बलदायक व्याधिनाशक आयुवर्द्धक दीपन काममें बलदायक और मृत्युकाभी नाशकहोताहै ॥ ६२ ॥

अथ लोहस्याशुद्धस्यदोषमाह ॥

षण्ढत्व[1]कुष्ठामयमृत्युकारीहृद्रोगशूलौकुरुतेऽश्मरीञ्च । नानारुजानांचतथाप्रकोपं कुर्याच्चहृल्लासमशुद्धलोहम् । अतस्तस्यदोषशान्तयेशोधनमभिधीयते । पत्तलीकृतपत्रा

(१) खण्डत्वेतिवा पाठः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

णिलोहस्याग्नौप्रतापयेत् । निषिञ्चेत्ततप्तानितैलेतक्रेचकाञ्जिके । गोमूत्रेचकुलत्थानां कषायंचत्रिधात्रिधा । एवंलोहस्यपत्राणांविशुद्धिःसंप्रजायते ॥ ६३ ॥

अशुद्धलोहेके दोष ॥

अशुद्ध लोहा लूलापन या नपुंसकता, कुष्ठ, मृत्यु, हृदयके रोग, शूल, पथरी, मतली और अनेक प्रकारके रोगोंको उत्पन्न करताहै इससे उसके दोषोंकी शान्तिकेलिये लोहेका शोधन कहते हैं लोहेके सूक्ष्म पत्रोंको अग्निमें तपा २ कर तेल, मट्ठा, कांजी, गोमूत्र और कुलथीके काढेमें तीन २ बार बुझावे इसरीतिसे लोहा शुद्ध होजाताहै ॥ ६३ ॥

अथ लोहस्य मारणविधिः ॥

शुद्धंलोहभवंचूर्णपातालगरुडीरसैः । मर्दयित्वापुटेद्वह्नौ दद्यादेवंपुटत्रयम् ॥ पुटत्रयं कुमार्याश्च कुठारच्छिन्निकारसैः । पुटषट्कंततोदद्यादेवं तीक्ष्णमृतिर्भवेत् (अन्यच्च) क्षिपेद्द्वादशमांशेन दरदंतीक्ष्णचूर्णतः । मर्दयेत्कन्यकाद्रावैर्यामयुग्मंततःपुटेत् ॥ एवं सप्तपुटैर्मृत्युं लोहचूर्णमवाप्नुयात् ॥ ६४ ॥

लोहेके मारनेकी विधि ॥

शुद्धलोहे के चूर्णको पातालगरुडी (इन्द्रायण) के अर्कमें घोटकर तीनवारपुटपाककरे फिर घी-कुवारके रसमें घोटकर तीनवार पुटपाककरे फिर कुरैयाके रस में घोटकर छः वार पुटपाककरे इस रीतिसे लोहा भस्महोताहै (दूसराप्रकार) लोहचूर्ण का दशमांश सिंगरफ मिलाके घीकुवारकेरस में घोटे दोपहरतक फिर पुटपाककरे इसप्रकार सातवार पुटपाक करनेसे लोहा भस्म होताहै ॥ ६४ ॥

सत्योऽनुभूतोयोगेन्द्रैः क्रमोऽन्योलोहमारणे। कथ्यतेरामराजेनकौतूहलधियाऽधुना॥ सूतकात्द्विगुणंगन्धंदत्त्वाकुर्याच्चकज्जलीम् । द्वयोःसमंलोहचूर्णमर्दयेत्कन्यकाद्रवैः ॥ यामयुग्मंततःपिण्डं कृत्वाताम्रस्यपत्रके । घर्म्मेधृत्वारुबूकस्यपत्रैराच्छादयेद्बुधः ॥ या मद्वयाद्भवेदुष्णं धान्यराशौन्यसेत्ततः। दत्त्वोपरिशरावंतु त्रिदिनान्तेसमुद्धरेत् ॥ पिष्ट्वा चगालयेद्वस्त्रादेवंवारितरंभवेत् । दाडिमस्यदलंपिष्ट्वातच्चतुर्गुणवारिणा ॥ तद्रसेनायस श्चूर्णंसञ्जीयप्लावयेदिति । आतपेशोषयेत्तच्चपुटेदेवंपुनःपुनः ॥ एकविंशतिवारैस्तंम्रियते नात्रसंशयः । एवंसर्वाणिलोहानि स्वर्णादीन्यपिमारयेत् ॥ ६५ ॥

योगीलोगों से अनुभव की हुई लोहे के मारने की अन्य विधि कुतूहल पूर्वक रामराजा ने कही है कि पारे से दूनी गन्धक लेकर कजली करे फिर कजली के समान लोहे का चूर्ण मिलाय घीकुवार के रस में दो पहर घोटि के गोला बनावे गोले को तांबे के पात्र में रखकर दो पहर रेंडी के पत्तों से ढककर धूप में रक्खे फिर गोलेके गरम होजाने पर सकोरेसे ढककर तीन दिन तक धान्य राशिमें रक्खे फिर तीन दिन के पीछे निकालकर कपडे से छानले इस रीति से लोहा पानी में तैरने लगता है फिर उससे चौगुने पानी में अनार की पत्ती को पीस कर उस के रस में लोहे को भिगोवे और धूपमें सुखावे और पुटपाक करे इस रीतिसे इक्कीस वार पुटपाक देने से निस्सन्देह लोहे की भस्म होती है ॥ ६५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एवंमारितस्य लोहस्यगुणाः ॥

लोहंतिक्तंसरंशीतंकषायंमधुरंगुरु । रूक्षंवयस्यंचक्षुष्यं लेखनंवातलंजयेत् ॥ कफं पित्तंगरंशूलंशोफार्शःप्लीहपाण्डुताः । मेदोमेहक्रिमीन्कुष्ठंतत्किट्टंतद्वदेवहि ॥ गुञ्जामेकां समारभ्य यावत्स्युर्नवरक्तिकाः । तावल्लोहंसमश्नीयाद्यथादोषानलंनरः ॥ कूष्माण्डं तिलतैलंच माषान्नंराजिकांतथा । मद्यमम्लरसञ्चैववर्जयेल्लोहसेवकः ॥ शिलागन्धार्क दुग्धाक्ताः ॥ स्वर्णाद्याःसर्वधातवः । म्रियन्तेद्वादशपुटैः सत्यंगुरुवचोयथा ॥ ६६ ॥

लोहे की भस्म के गुण ॥

लोहा.तिक्त,दस्तावर,शीतल,कषैला, मधुर, भारी, रूखा, अवस्था का रखनेवाला, नेत्रों कोहित, लेखन, बादी और कफ,पित्त,गरदोष,शूल, सूजन, बवासीर, प्लीहा, पाण्डु, मेद, प्रमेह, कृमि तथा कुष्ठ-रोगनाशक होताहै इसकी कीटीमें भी इसी के समान गुण होते हैं दोष और अग्नि के बल को विचार कर एक रत्ती से लेकर नौरत्ती तक लोहा खाना चाहिये लोह सेवन करनेवाला पुरुष.पेठा, तिलों का तेल, उर्द, राई, मद्य और खटाई को त्याग करदे मैनसिल गन्धक और आकके दूध में भि-गोई हुई संपूर्ण धातु बारह पुटों में भस्म होती हैं यह निस्सन्देह गुरु का वचनहै ॥ ६६ ॥

अथोपधातूनांमारणप्रकारमाह । तत्रस्वर्णमाक्षिकस्याशुद्धस्यदोषमाह ॥

मन्दानलत्वंबलहानिमुग्रांविष्टम्भितांनेत्रगदांसकुष्ठान् । मालांतथैवव्रणपूर्विका ञ्चकुर्यादशुद्धंखलुमाक्षिकञ्च ॥ (अतस्तस्यदोषशान्तये शोधनमभिधीयते) माक्षिक स्यत्रयोभागाभागैकंसैन्धवस्यच । मातुलुङ्गद्रवैर्वाथ जम्बीरस्यद्रवैःपचेत् ॥ चालयेल्लो हजेपात्रेयावत्पात्रंसुलोहितम् । भवेत्ततस्तुसंशुद्धिं स्वर्णमाक्षिकमृच्छति ॥ ६७ ॥

उपधातुओं के मारण का प्रकार अशुद्ध । सोनामक्खी के दोष ॥

अशुद्ध सोनामक्खी.मन्दाग्नि,बलहानि,विष्टम्भ,नेत्ररोग,कुष्ठ,गण्डमाला और घाव को करतीहै इससे उसके दोषोंकी शान्तिकेलिये शुद्धकरनेकी विधि कही जातीहै सोनामक्खी तीन भाग और सेंधानोन एक भाग मिलायकर बिजौरा अथवा जंभीरी नींबूके रसों से लोहेके पात्रमें पाककरे और जबतक पात्र लाल न होजाय तबतक चलातारहै इस रीतिसे सोनामक्खी शुद्ध होतीहै ॥ ६७ ॥

अथ मारणविधिः ॥

कुलत्थस्यकषायेणघृष्ट्वातैलेनवापुटेत्।तक्रेणवाजमूत्रेणम्रियतेस्वर्णमाक्षिकम् ६८ ॥

सोनामक्खी मारनेकी विधि ॥

कुलथीके काढ़े में तेलमें मट्ठे में अथवा बकरेके मूत्रमें घोटकर पुटपाक करने से सोनामक्खी भस्म होती है ॥ ६८ ॥

अथ तारमाक्षिकस्यशोधनमाह ॥

स्वर्णमाक्षिकवद्दोषाविज्ञेयास्तारमाक्षिके । अतस्तद्दोषशान्त्यर्थंशोधनंतस्यकथ्यते॥ कर्कोटीमेषशृंग्युत्थैर्द्रवैर्जम्बीरजैर्दिनम् । भावयेदातपेतीव्रे विमलाशुद्ध्यतिध्रुवम् ६९ विमला तारमाक्षिकम् । कर्कोटीखेखसा ॥ मेषशृङ्गीमेढाश्रृङ्गी ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रूपामक्खीका शोधन ॥

रूपामक्खीमें भी सोनामक्खीके समान दोष होते हैं इससे उसके दोषों के शान्त करनेके लिये उसका शोधन लिखतेहैं खिखसा मेढ्ढासिंगी और जंभीरी नींबूके रससे तेज धूप में एकदिन भावना देनेसे रूपामक्खी शुद्धहोतीहै ॥ ६९ ॥

अथ मारणम् ॥

कुलत्थस्यकषायेणघृष्ट्वातैलेनवापुटेत् । मरणंत्राजमूत्रेणतारमाक्षिकमृच्छति ॥ ७० ॥

रूपामक्खीका मारण ॥

कुलथी का काढा, तेल, अथवा बकरे का मूत्र इनमें घोटकर पुटपाक करने से रूपामक्खी भस्महोतीहै ॥ ७० ॥

अथ तयोर्विशिष्टागुणाः ॥

नकेवलंस्वर्णरूप्यगुणास्तापीजयोर्मताः । द्रव्यान्तरस्यसंसर्गात्सन्त्यन्येऽपिगुणास्तयोः ॥ माक्षिकंमधुरंतिक्तंस्वर्य्यंवृष्यंरसायनम् । चक्षुष्यंवस्तिरुक्कुष्ठंपाण्डुमेहविषोदरम् ॥ अर्शःशोफंक्षयंकण्डूंत्रिदोषञ्चनियच्छति ॥ ७१

सोनामक्खी और रूपामक्खी के गुण ॥

सोनामक्खी और रूपामक्खीमें केवल सोने और चांदीकेही गुण नहींहोते किन्तु द्रव्यान्तरकेसंयोग से अन्य २ गुणभीहोतेहैं सोनामक्खी और रूपामक्खी मधुर, तिक्त, स्वरकोहित, वीर्यवर्द्धक, रसायन, नेत्रोंकोहित और वस्तिकी पीडा, कुष्ठ, पाण्डु, प्रमेह, विष, उदर, बवासीर, सूजन, क्षय, खुजली तथा त्रिदोषनाशक होतीहै ॥ ७१ ॥

अथ तुत्थस्यशोधनमाह ॥

विष्ठयामर्दयेत्तुत्थंमार्जारककपोतयोः । दशांशंटङ्कणंदत्त्वापचेल्लघुपुटेततः ॥ पुटंदध्ना पुटंक्षौद्रैर्देयंतुत्थविशुद्धये ॥ ७२ ॥

तूतिये का शोधन ॥

बिल्ली और कबूतर की बिष्ठासे तूतियेको पीसे फिर दशांश सुहागा मिलाकर लघुपुटमें पाककरे फिर दहीकेसाथ पुटपाककरे और सहतकेसाथ पुटपाककरे इसरीतिसे तूतिया शुद्ध होताहै ॥ ७२ ॥

एवं शुद्धस्यतुत्थस्यगुणाः ॥

तुत्थकंकटुकंक्षारंकषायंवामकंलघु । लेखनंभेदनंशीतञ्चक्षुष्यंकफपित्तहृत् ॥ विषाश्मकुष्ठकण्डूघ्नंतद्गुणंखर्परेमतम् ॥ ७३ ॥

शुद्धतूतियाके गुण ॥

शुद्धतूतिया कटुक्षार कषैला छर्दिकारी हलका लेखन भेदक शीतल नेत्रोंको हित और कफ पित्त विष पथरी कुष्ठ तथा खुजली नाशक होताहै खपरियामें भी इसीके समान गुणहैं ॥ ७३ ॥

अथ कांस्यस्यरीतेश्चशोधनन्त्वभिधीयते । पत्तलेकृतपत्राणिकांस्यस्याग्नौप्रतापयेत् । निषिञ्चेत्तत्ततप्तानि तैलेतक्रेचकाञ्जिके ॥ गोमूत्रेचकुलत्थानांकषायेत्रत्रिधात्रिधा । एवंकांस्यस्यरीतेश्चविशुद्धिःसंप्रजायते ॥ ७४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कांसा और पीतलके शुद्ध करने की रीति ॥

कांसे और पीतलके बारीक पत्रोंको अग्निमें तपा २ कर तेल मट्ठा क़ांजी गोमूत्र और कुलथीके काढ़ेमें तीन २ बार बुझावे इससे कांसा और पीतल शुद्ध होताहै ॥ ७४ ॥

अथ मारणविधिः ॥

अर्कक्षीरेणसंपिष्टोगन्धकस्तेनलेपयेत् । समेनकांस्यपत्राणिशुद्धान्यम्लद्रवैर्मुहुः । ततोमूषापुटेधृत्वापचेद्गजपुटेनच । एवंपुटद्वयात्कांस्यंरीतिश्चम्रियतेध्रुवम् ॥ ७५ ॥

कांसे और पीतलके मारनेकी विधि ॥

गन्धकको आकके दूधमें पीसकर समभाग कांसे और पीतलके शुद्ध पत्रोंपर लेपकरे और खटाई में वारंवार शुद्धकरे फिर घड़ियामें रखकर गजपुट में दोबार पाककरे इसप्रकारसे कांसे और पीतल की भस्म होतीहै ॥ ७५

एवंमारितयोःकांस्यरीत्योर्गुणाः ॥

कांस्यंकषायंतीक्ष्णोष्णंलेखनंविशदंसरम् । रीतिकातुभवेद्रूक्षासतिक्तालवणारसे ॥ शोधिनीपाण्डुरोगघ्नी कृमिहन्नातिलेखनी ॥ ७६ ॥

कांसे और पीतलकी भस्मके गुण ॥

कांसा.कषैला,तीक्ष्ण,उष्ण,लेखन,विशद,दस्तावर, भारी,नेत्रोंकोहित, रूखा और कफ,पित्तनाशक होताहै पीतल. रूखी,तिक्त,नमकीन,शोधक,कुछलेखन और पाण्डु तथा कृमिनाशक होतीहै ॥ ७६ ॥

अथ सिन्दूरस्यशोधनमाह ॥

दुग्धाम्लयोगतस्तस्यविशुद्धिर्गदिताबुधैः । अथगुणाः ॥ सिन्दूरउष्णोवीसर्पकुष्ठकण्डूविषापहः । भग्नसन्धानजननो व्रणशोधनरोपणः ॥ ७७ ॥

सिंदूर का शोधन और गुण ॥

दूध और खटाई के संयोग से सिंदूर शुद्ध होताहै शुद्ध सिंदूर.उष्ण, टूटेको जोड़नेवाला, घावका शोधक और भरनेवाला और वीसर्प,कुष्ठ, खुजली तथा विष नाशक होताहै ॥ ७७ ॥

अथ शिलाजतुनःशोधनमाह । तत्रशोधनायोग्यशिलाजत्वाह ॥

गोमूत्रगन्धवत्कृष्णंस्निग्धंमृदुतथागुरु ॥ तिक्तंकषायंशीतञ्चसर्वश्रेष्ठंतदायसम् । (आयसम्अयसउपधातुः) विन्ध्यादौबहुलंतन्तुतत्रलोहंयतोऽधिकम् । तच्छोधनमृतव्यर्थमनेकमलमेलनात् । शिलाजतुसमानीयसूक्ष्मंखण्डंविधायच ॥ निक्षिप्यात्युष्णपानीयेयामैकंस्थापयेत्सुधीः । मर्दयित्वाततोनीरंगृह्णीयाद्वस्त्रगालितम् ॥ स्थापयित्वाच मृत्पात्रेधारयेदातपेबुधः । उपरिस्थंघनंयत्स्यात्तत्क्षिपेदन्यपात्रके । एवंपुनःपुनर्नीतंद्विनासाभ्यांशिलाजतु ॥ भवेत्कार्य्यक्षमंवह्नौक्षिप्तंलिङ्गोपमम्भवेत् । निर्धूमञ्चततःशुद्धंसर्वकर्मसुयोजयेत् ॥ अथान्यप्रकारः । तत्रप्रथमतस्तस्यबहिर्मलमपाकर्त्तुंकेवलजलेनप्रक्षालनंकर्त्तव्यं । ततस्तदन्तर्गतमृत्तिकासिकतादिदोषदूरीकरणायवक्ष्यमाणक्वाथेनतत्रभावनादेया (तदाहवाग्भटः) व्याधिव्याधितसात्म्यंसमनुसरन्भावयेदयःपात्रे । प्राक्केवल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जलधौतंशु ष्कंक्काथैस्ततोभाव्यम् ॥ तुल्यंगिरिजेनजलेंद्वसुगुणेभावनौषधंक्काथ्यम्। तत्क्काथेपादांशेपूतोष्णंप्रक्षिपेद्गिरिजम् । तत्समरसतांयातंसंशुष्कंप्रक्षिपेद्रसेभूयः। स्वैःस्वैरेवंक्काथैर्भाव्यंवारान्भवेत्सप्त ॥ अथस्निग्धस्यशुद्धस्यघृतंतिक्तकसाधितम्। त्र्यहंयुञ्जीतगिरिजमेकैकेनतथात्र्यहम् ॥ फलत्रयस्ययूषेणपटोल्यामधुकस्यच। शिलाजमेवंदेहस्यभवन्त्यत्युपकारकम् ॥ ७८ ॥

शिलाजीतका शोधन और शोधने के योग्य शिलाजीत॥

गोमूत्र कीसी गन्धवाले,कृष्णवर्ण,स्निग्ध, कोमल,भारी,तिक्त,कषैला और शीतल,शिलाजीत सब से श्रेष्ठहोताहै शिलाजीत बिन्ध्य आदि पर्वतों में लोहेकी अधिकताके कारण बहुत उत्पन्न होताहै वह शोधन के विना व्यर्थ है क्योंकि उसमें अनेक मल मिले रहतेहैं शिलाजीत के छोटे २ टुकडे करके एकपहरतक गरमजल में भिगोवे फिर मलकर उसपानी को कपडे में छानले और मृत्तिका के पात्र में भरकर धूप में रक्खे उसके ऊपर जमेहुये घने भागको दूसरे पात्रमें रक्खे इसप्रकार दो महीने में वारंवार करनेसे शिलाजीत शुद्ध होताहै शिलाजीत अग्निमें जलनेसे लिंगके समान और धूपरहित होयतो शुद्धजानकर सम्पूर्ण कार्योंमें व्यवहारकरे दूसराप्रकार शिलाजीत को बाहरके मल के दूरकरने के लिये प्रथम केवल जल से धोवे फिर उसके भीतरी मृत्तिका और बालू आदिदोषों के दूर करने को आगे कहेहुये क्काथसे भावनादे और वाग्भटनेभी ऐसाही कहाहै कि रोगीके सात्म्य [स्वभाव] को देखकर पहले शिलाजीत को केवल जलसे धोकर सुखावे और क्काथ के द्वारा लोहे के पात्र में भावना दे शिलाजीतके समान क्काथकी औषधों को लेकर अठगुने पानी में पाककरे फिर चतुर्थांश रहजाने पर उसको छानकर उसमें शिलाजीत छोडे फिर क्काथ में मिलजाने पर सुखाके दूसरी बार रस में छोडे इसप्रकार वारंवार संपूर्ण क्काथों से सात २ भावनादे फिर तिक्त वस्तुओंसे बनायेहुये घृत में तीनदिन भिजोवे इसके उपरांत तीनदिन त्रिफलाके क्काथ में तीन दिन परवलके क्काथमें और तीन दिन मुलहठीके क्काथमें भिगोवे इसप्रकारसे बनकर शिलाजीत शरीरको अत्यन्त उपकारी होताहै ॥ ७८ ॥ क्काथद्रव्याणिभावानापलञ्चाहहारीतः ॥

लोहस्थितंनिम्बगुडूचिसर्पिर्यवैर्यथावत्परिभावयेत्तत् । सन्तानिकाकीटपतंगदंशदुष्टौषधीदोषनिवारणाय॥सन्तानिकातद्बहिःसंलग्नमृत्तिकादिमयी। एवंभावनांदत्वासंशोष्यकेवलेनजलेनशोधनंकर्त्तव्यम्॥ (तत्प्रकारमाहअग्निवेशः)उष्णेचकालेरवितापयुक्तेव्यभ्रेनिवातेसमभूमिभागे। चत्वारिपात्राण्यसितायसानिन्यस्यातपेतत्रकृतावधानः। शिलाजतुश्रेष्ठमवाप्यपात्रेप्रक्षिप्यतस्माद्द्विगुणञ्चतोयम्। उष्णंतदर्द्धंक्कथितञ्चदत्वाविशोधयेत्तन्मृदितंयथावत् ॥ ततस्तुयत्कृष्णमुपैतिचोर्ध्वंसन्तानिकायद्रविरश्मितप्तम्।पात्रेतदन्यत्रततोनिदध्यात्तत्रापरंकोष्णजलंक्षिपेच्च पुनश्चतस्मादपरत्रपात्रेपश्चाच्चपात्रादपरत्रभूयः। यदाविशुद्धंजलमेवमूर्ध्वेकृष्णंसमस्तंमलमेत्यधस्तात् ॥ तदात्यजेत्तत्सलिलंमलञ्चशिलाजतस्याज्जलशुद्धमेवम् ॥ ७९ ॥

हारीत की कहीहुई क्काथकी वस्तु और भावना का फल ॥

नींब गिलोय और जवों के क्काथसे शिलाजीतमें मृत्तिका आदिक बाहरके मैल कीट पतङ्गोंके काटने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से उत्पन्नहुये दोष और दोषयुक्त औषधियों के संयोग से उत्पन्न हुये दोष के निवृत्त करने के लिये भावना देकर सुखावे और फिर केवल जलसे धोवे अग्निवेशने कहा है कि मेघोंसे और वायु से रहित धूपयुक्त ग्रीष्मऋतु के दिनों में चार काले रङ्गवाले लोहे के पात्र समतल की पृथ्वीपर धूपमें रक्खे फिर उत्तम शिलाजीत को लेकर एक पात्र में रक्खे उसमें दूना गरमजल और आधा भाग क्काथ डालकर मल करके शुद्ध करे फिर धूप में धरे २ जब उसपर काली मलाई सी पडजाय तो उसको दूसरे पात्र में रखदे और गरमजल छोडकर धूप में रखदे फिर उसीप्रकार मलाई सी पडजानेपर अन्यपात्र में रक्खे इसप्रकार वारंवार करने से जब ऊपर निर्मल जल आजाय और सम्पूर्ण काला मैल नीचे बैठ जाय तब उस जल और मैलको फेंकदे इसप्रकार शिलाजीत केवल जल से शुद्ध होजाती है ॥ ७९ ॥ एवं शोधितस्यशिलाजतुनोगुणानाह ॥

शिलाजतुस्मृतंतिक्तंकटूष्णंकटुपाकिच । रसायनंयोगवाहिश्लेष्ममेहाश्मशर्कराः ॥ मूत्रकृच्छ्रंक्षयंश्वासंशोथमर्शांसिपाण्डुताम् । वातरक्तंतथाकुष्ठमपस्मारोदरंहरेत् ॥ ८० ॥

शुद्धशिलाजीत के गुण ॥

शुद्ध शिलाजीत तिक्त,कटु,उष्ण,पाक में कटु,रसायन, योगवाही और कफ, प्रमेह, पथरी, शर्करा, मूत्रकृच्छ्र,क्षय, श्वास,सूजन,बवासीर,पाण्डु,वातरक्त,कुष्ठ,मृगी तथा उदरनाशक होती है ॥ ८० ॥

अथ रसस्यशोधनविधिः । तत्रस्वेदनम् ॥

नानाधान्यैर्यथाप्राप्तैस्तुषवर्जैर्जलान्वितैः। मृद्भाण्डंपूरितंरक्षेद्यावदम्लत्वमाप्नुयात् ॥ तन्मध्येभृङ्गरामुण्डीविष्णुक्रान्तापुनर्नवा । मीनाक्षीचैवसर्पाक्षीसहदेवीशतावरी ॥ त्रिफलागिरिकर्णीचहंसपादीचचित्रकम् । समूलंकुट्टयित्वातुयथालाभंविनिःक्षिपेत् ॥ पूर्वाम्लभाण्डमध्येतुधान्याम्लकमिदंस्मृतम्। स्वेदनादिषुसर्वत्ररसराजस्ययोजयेत् ॥ विष्णुक्रान्तागिरिकर्णीचअपराजितैवश्वेतनीलपुष्पभेदात् । अत्यम्लमारनालंवातदभावेप्रयोजयेत् (तदभावेधान्याम्लाभावे) त्र्यूषणंलवणंजाजीरजनीत्रिफलार्द्रकम्। महाबलानागबलामेघनादःपुनर्नवा॥ मेषशृङ्गीचित्रकञ्चनवसारंसमंसमम्। एतत्समस्तंव्यस्तंवापूर्वाम्लेनैवपेषयेत् ॥ प्रलिम्पेत्तेनकल्केनवस्त्रमंगुलमात्रकम्। तन्मध्येनिःक्षिपेत्सूतंबद्ध्वात्रिदिनंपचेत् ॥ दोलायन्त्रेऽम्लसंयुक्तेजायतेस्वेदितोरसः । मेघनादःचवराई शाकविशेषः। मेषशृङ्गी मेढ़ाशृंगी। तदलाभेकर्कटशृङ्गीग्राह्या। नवसारं। नवसादरं। अन्यच्च । मूलकानलसिन्धूत्थत्र्यूषणार्द्रकराजिकाः । रसस्यषोडशांशेनद्रव्यंयुञ्ज्यात्पृथक्पृथक् । द्रवेष्वनुक्तमानेषुमतंमानमितंबुधैः॥ पट्टाव्रतेषुचैतेषुसूतंप्रक्षिप्यकाञ्जिके ॥ स्वेदयेद्दिनमेकञ्चदोलायन्त्रेणबुद्धिमान् । स्वेदात्तीव्रोभवेत्सूतोमर्दनाच्चसुनिर्मलः ॥ मूलकमुरईअनलश्चित्रकम् ॥ त्र्यूषणंत्रिकटु राजिकाराई ॥ ८१ ॥

पारे का शोधन । प्रथम स्वेदन ॥

जहांतक मिलसके वहांतक भूसीरहित अनेक प्रकारोंके धान्योंको लेकर मृत्तिका के पात्र में जल से भिगोवे फिर खटाई आजाने पर भँगरा, गोरखमुण्डी, विष्णुक्रान्ता, पुनर्नवा, मछैछी, नागफनी,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सहदेई, सतावर, त्रिफला, नीले फूल की विष्णुक्रान्ता और चीता इन सब पदार्थोंको जहांतक मिल सकें जड समेत कूटकर उसी पात्र में छोडे इसको धान्याम्ल कहते हैं और जो धान्याम्ल न मिलै तो बहुत खट्टे आर्नाल को काम में लावे यही धान्याम्ल पारेके स्वेदनआदि सब कार्योंमें व्यवहार किया जाता है ॥ सोंठि, मिर्च, पीपल, सेंधानोन, राई, हल्दी, हड, बहेडा, आंवला, अदरक, बरियारा, गुलसकरी, चौराई, पुनर्नवा, मेढासिंगी, चीता और नौसादर यह सम्पूर्ण वस्तु समभाग लेकर इकट्ठे अथवा अलग अलग धान्याम्ल में पीसे इसी कल्क से वस्त्रके ऊपर एक अंगुल मोटा लेप करे और उसमें पारा रखके बांधकर तीन दिनतक किसी पात्र में खटाई भरकर दोलायन्त्र में पाक करे इस प्रकार से पारे का स्वेदन होता है ऊपर कहीहुई औषधियों में मेढासिंगी के अभाव में काकडासिंगी लेनीचाहिये (दूसराप्रकार) मूली, चीता, सेंधानोन, सोंठि, मिर्च, पीपल, अदरक और राई यह सम्पूर्ण औषधि प्रत्येक पारे के सोलहवें हिस्से लेकर जहां कोई ठीक ठीक परिमाण नहीं कहाहुआ हो वहां सम प्रमाण लेना चाहिये फिर किसी कपडे में यह सब औषधि और पारे को बांधकर कांजी में छोडे और एक दिन दोलायन्त्र में पाक करे स्वेदन से पारा तीव्र और मर्द्दन से निर्बल होता है ॥ ८१ ॥

अथ मर्द्दनम् ॥

इष्टिकाचूर्णचूर्णाभ्यामादौमर्द्योरसस्ततः । दध्नागुडेनसिन्धूत्थराजिकागृहधूमकैः ॥ अन्यच्च । कुमारिकाचित्रकरक्तसर्षपैः कृतैःकषायैर्बृहतीविमिश्रितैः । फलत्रिकेणापिविमर्दितोरसोदिनत्रयंसर्वमलैर्विमुच्यते ॥ ८२ ॥

मर्द्दनकी विधि ॥

सुरखी और चूनेसे पारे को मलकर दही, गुड, सेंधानोन, राई और घरके धुयें से मर्द्दनकरे अथवा घीगुआर, चीता, लाल सरसों, भटकटैया और त्रिफला के काढ़े से तीन दिनतक मर्द्दन कियाहुआ पारा सम्पूर्ण मलों से अलग होजाता है ॥ ८२ ॥

अथ मूर्च्छनम् ।

त्र्यूषणंत्रिफलावन्ध्याकन्दैःक्षुद्राद्वयान्वितैः ॥ चित्रकोर्णानिशाक्षारकन्यार्ककनकद्रवैः । सूतंकृतेनयूषेणवारान्सप्ताभिमर्दयेत् । इत्थंसंमूर्च्छितःसूतस्त्यजेत्सप्तापिकञ्चुकात् । वन्ध्याकन्दःबांझखेखसाकन्दःक्षुद्राद्वयंछोटीकटाईबड़ीकटाई । उर्णा । उर्ण मेषका। निशा हरिद्रा क्षारः यवक्षारःकन्याकुमारिकाअर्कपत्ररसः । कनकधत्तूरपत्ररसः ॥ ८३ ॥

पारे का मूर्च्छन ॥

सोंठ, पीपल, मिर्च, हड, बहेडा, आंवला, बांझखेखसा, दोनों भटकटैया, चीता, ऊन, हल्दी, जवाखार, घीगुआर, आक के पत्तों का और धतूरे के पत्तोंका रस इन सब के काढ़े में सातबार पारे को मर्द्दनकरै इस रीति से मूर्च्छित हुआ पारा सात केंचुलों को छोडता है ॥ ८३ ॥

अथोर्द्ध्वपातनम् ॥

मयूरग्रीवताप्याभ्यान्नष्टपिष्टीकृतस्यच।यन्त्रेविद्याधरेकुर्याद्रसेन्द्रस्योर्द्ध्वपातनम्॥ ताप्यम् सुवर्णमाखी । नष्टपिष्टीकृतस्य ॥ कुमारिकाद्रवयोगेनतावन्मर्दनं कर्त्तव्यंयावत्पारदःपृथक्नदृश्यतइत्यर्थः।विद्याधरयन्त्रेडमरुयन्त्रे ॥ ८४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पारे का ऊर्द्ध्वपातन ॥

तूतिया सोनामक्खी और घीगुआर के रस से पारेको इतना रगडे कि वह अलग नहीं दिखलाई पडे फिर विद्याधरयन्त्र में पारे को उडावे ॥ ८४ ॥

अथाधःपातनम् ॥

त्रिफलाशिग्रुशिखिभिर्लवणासुरिसंयुतैः । नष्टपिष्टंरसंकृत्वालेपयेदूर्द्ध्वभाजनम् ॥ ततोदीप्तैरधःपातमुपलैस्तस्यकारयेत् । यन्त्रेभूधरसंज्ञेतुततःसूतोविशुध्यति ॥ स्वेदनादिक्रियाभिस्तुशोधितोऽसौयदाभवेत् । तदाकार्याणिकुरुतेप्रयोज्यःसर्वकर्मसु ॥ ८५ ॥

पारे का नीचे गिराना ॥

हड़, बहेड़ा, आवला, सहँजना, चीता, सेंधानोन और राई इन वस्तुओं से पारे को खूब रगड कर ऊपर के पात्रमें लेप करदे और भूधरयन्त्र में कराडों की आंच देकर नीचे गिरावे इस रीति से भी पारा शुद्ध होताहै स्वेदन आदिक क्रियाओंसे शुद्ध पारा सम्पूर्ण कार्योंके लिये योग्य होता है ॥८५॥

अथ मुख्यदोषहरः शोधनविधिः ॥

गृहकन्याहरतिमलन्त्रिफलाग्निञ्चित्रकोविषंहन्ति । तस्मादेभिर्मिश्रैर्वारान्संमूर्च्छयेत्सप्त ॥ ८६ ॥ मुख्य दोष की नाश करनेवाली शोधन की विधि ॥

पारे के मल को घीगुआर अग्निदोष को त्रिफला और विषदोष को चीता नाशकरता है इस लिये इन सम्पूर्ण वस्तुओं से पारे को सात बार मूर्च्छित करना चाहिये ॥ ८६ ॥

अथ सर्वदोषहरःसंक्षिप्तशोधनविधिः ॥

कुमारिकाचित्रकरक्तसर्षपैःकृतःकषायैर्बृहतीविमिश्रितैः । फलत्रिकेणापिविमर्दितोरसोदिनत्रयंसर्वमलैर्विमुच्यते ॥ ८७ ॥

सर्वदोषनाशक संक्षिप्त शोधन की विधि ॥

घीगुआर, चीता,लाल सरसों, भटकटैया और त्रिफला इनके क्वाथ से तीन दिनतक मर्दन करने से पारे के सम्पूर्ण मल छूट जाते हैं ॥ ८७ ॥

कुमार्य्याचनिशाचूर्णैर्दिनंसूतंविमर्दयेत् । एवंकदर्थितःसूतोषण्ढोभवतिनिश्चितम् ॥ बह्वौषधीकषायेणस्वेदितःसबलीभवेत् । सर्पाक्षीचिञ्चिकावन्ध्याभृङ्गाब्दैःस्वेदितोबलीततःसपावकद्रावैःस्विन्नःस्यादतिदीप्तिमान् । सर्पाक्षी । नागफनी।चिञ्चिका।अम्बिलीवन्ध्याबांझखेखसा भृंगः भृंगराजः । अब्दोमुस्ता पावकः चित्रकम् ॥ ८८ ॥

घीगुआर और हल्दी के चूर्ण से एकदिन मर्दन कियागया पारा निस्सन्देह नपुंसक होजाता है फिर बहुत औषधियों के क्वाथ से स्वेदन कियागया बलवान् होजाता है नागफनी, इमली, बाँझ खेखसा, भांगरा और नागरमोथा इनऔषधियों के द्वारा स्वेदन करने से पारा बलीहोताहै और चीतेके रस से स्वेदन कियाहुआ पारा अत्यन्त दीप्तिमान होता है ॥ ८८ ॥

अथ रसस्यमारणविधिः ॥

धूमसारंरसंतोरीगन्धकंनवसादरम् । यामैकंमर्दयेदम्लैर्भागंकृत्वासमंसमम् ॥ काचकूप्यांविनिक्षिप्यताञ्चमृद्वस्त्रमुद्रया । विलिप्यपरितोवक्त्रेमुद्रान्दत्त्वाविशोषयेत् ॥ अधः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सच्छिद्रपिठरीमध्येकूपींनिवेशयेत्। पिठरींबालुकापूरैर्भृत्वाचाकूपिकागलम्॥ निवेश्यचुल्ल्यांतदधोवह्निंकुर्य्याच्छनैःशनैः।तस्मादप्यधिकंकिञ्चित्पावकंज्वालयेत्क्रमात्॥एवंद्वादशभिर्यामैर्म्रियतेरसउत्तमः। स्फोटयेत्स्वांगशीतंतमूर्ध्वगंगन्धकंत्यजेत् ॥ अधस्थञ्च मृतंसूतंगृह्णीयात्तन्तुमात्रया॥ यथोचितानुपानेनसर्वकर्मसुयोजयेत्॥ ८९ ॥

पारे की मारण विधि ॥

धुआं,पारा,गन्धक और नौसादर इन सब वस्तुओंको समभाग लेकर एकपहर खटाईमें घोटे फिर इन औषधियोंको शीशी में रखकर कपडौटी करे और धूपमें सुखावे फिर किसी हाँडी के बीचमें छेद करके उसमें शीशी रक्खे और उस हाँडी में शीशी के गलेतक बालू भरदे फिर इस हाँडी को चूल्हेके ऊपर चढ़ाकर नीचे मन्दी २ अग्नि जलावे और धीरे २ अग्नि तेजकरताजाय इसप्रकार बारहपहर में पारा भस्म होता है फिर शीतल होजाने पर शीशी फोड कर ऊपर की गन्धक को छोडकर नीचे स्थितहुई पारेकी भस्म को लेले और इसे यथायोग्य अनुपानके साथ सबकार्योंमें व्यवहारकरे॥८९॥

अथान्यप्रकारः॥

अपामार्गस्यबीजानांमूषायुग्मंप्रकल्पयेत्। तत्संपुटेक्षिपेत्सूतंमलयूदुग्धमिश्रितम्॥ (मलयूकाष्ठोदुम्बरिका) द्रोणपुष्पीप्रसूनानिविडङ्गमरिमेदकः। एतच्चूर्णमधश्चोर्द्ध्वं दत्त्वामुद्रांप्रदीयते॥ तद्गोलंस्थापयेत्सम्यक्मृन्मूषासंपुटेपचेत्। एवमेवपुटेनैव सूतकम्भस्मजायते॥ तत्प्रयोज्यंयथास्थानेयथामात्रंयथाविधि॥ ९०॥

अथान्यप्रकार॥

लटजीरे के बीजों से दोघड़िया बनावे उनके संपुट में कठियागूलर के दूध से घुटेहुए पारेको रक्खे फिर गूमाके फूल वायविडंग और दुर्गन्धित खैरके चूर्णको घड़ियोंके ऊपर और नीचे लपेटकर और बंदकरके माटी की घड़ियाओं में रक्खे और पुटपाक करे इसप्रकार पुट देने से पारा भस्म होताहै योग्यस्थान में मात्रा के अनुसार विधिपूर्व्वक इसका व्यवहार करना चाहिये॥ ९०॥

अथान्यप्रकारः॥

काष्ठोदुम्बरिकादुग्धैरसंकिञ्चिद्विमर्दयेत्। तद्दुग्धघृष्टहिंगोश्चमूषायुग्मंप्रकल्पयेत्॥ क्षिप्त्वातत्संपुटेसूतंतत्रमुद्रांप्रदापयेत्। धृत्वातद्गोलकं प्राज्ञोमृन्मूषासंपुटेऽधिके॥ ९१॥

अथान्यप्रकार॥

कठियागूलर के दूध में पारे को कुछ घोटकर कठियागूलर के दूध से हींग को पीस कर बनाई हुई घड़ियाओं में रक्खे और उस संपुटको बन्दकरदे और इस गोले को मट्टी की घड़ियाओं में रखकर गजपुट में पाककरे इस रीति से पारा भस्म होताहै॥ ९१॥

अन्यप्रकारः॥

नागवल्लीरसैर्घृष्टःकर्कोटीकन्दगर्भितः।मृन्मूषासंपुटेपक्वःसूतोयात्येवभस्मताम् ९२॥

अन्यप्रकार॥

पान के रसमें घुटेहुए पारेको ककडी की जडके भीतर भरके मट्टीकी घड़ियाओं के संपुट में पाक करने से पारा भस्म होताहै॥ ९२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ कर्पूररसस्यविधिः ॥

तत्रपारदस्यसंक्षिप्तं शोधनंकर्त्तव्यं। शुद्धसूतसमंकुर्यात्प्रत्येकंगौरिकंसुधीः । इष्टिकां खटिकांतद्वत्स्फटिकां सिन्धुजन्मच । वल्मीकंक्षारलवणंभाण्डरञ्जनमृत्तिकाम् । सर्वाण्येतानिसञ्चूर्ण्यवाससाचापिशोधयेत् ॥ खटिकाखरी ॥ स्फटिकाफटकरी । सिन्धुजन्म सैन्धवम् । वल्मीकम्बवडर । क्षारलवणम् खारीनोन । भाण्डरञ्जनमृत्तिका काविसा : एभिश्चूर्णैर्युतंसूतं यावद्यामंविमर्दयेत् । तच्चूर्णसहितंसूतंस्थालीमध्येपरिक्षिपेत्॥तस्याः स्थाल्यामुखेस्थालीमपरांधारयेत्समाम् । सवस्त्रकुट्टितमृदामुद्रयेदनयोर्मुखम् ॥ संशोष्य मुद्रयेद्भूयो भूयःसंशोष्यमुद्रयेत् । सम्यग्विशोष्यमुद्रांतांस्थालींचुल्ल्यांविधारयेत् ॥ अग्निंनिरन्तरंदद्याद्यावद्दिनचतुष्टयम् । अंगारोपरितद्यन्त्रंरक्षेद्यत्नादहर्निशम् ॥ शनैरुद्घाटयेद्यन्त्रमूर्ध्वस्थालीगतंरसम् । कर्पूरवत्सुविमलंगृह्णीयाद्गुणवत्तरम् ॥ तद्देवं कसुमचन्दनकस्तूरीकुकुमैर्युक्तम् । खादन्हरतिफिरंगंव्याधिंसोपद्रवंसपदि ॥ विन्दति वह्नेर्दीप्तिंपुष्टिंवीर्यबलंविपुलम् । रमयतिरमणीशतकंरसकर्पूरस्यसेवकःसततम् ॥ इति कर्पूररसः ॥ ६३ ॥

कपूर रसकीविधि ॥

पारेको संक्षेप से शुद्धकरके गेरू, ईंट, खड़िया, फिटकडी, सैंधानोन, बामी की मिट्टी, खारी नोन खपरा यह प्रत्येक औषध पारेके समभाग लेकर चूर्णकरके छानले फिर इन चूर्णोंके साथ एकपहर पारे को रगड़कर इन चूर्णों समेत पारे को किसी बटले आदि में रखकर उसके ऊपर दूसरा बटला रक्खे और वस्त्रसमेत कूटी हुई मिट्टी से उन दोनोंके मुखको बन्दकरके सुखाले इस प्रकारसे वार-वार कपड़ौटी करे फिर सूख जाने पर उसको चूल्हे पर चढ़ावे और चार दिनतक बराबर आगबालता रहै और इस पात्रके अङ्गारों पर रक्खे हुये की यत्नपूर्वक रक्षाकरे फिर शीतल होजानेपर धीरे से यन्त्र को खोलकर ऊपरके बटलेमें स्थित कपूरके समान निर्मल अत्यन्त गुणकारी रसको लेले लौंग, चन्दन, कस्तूरी, और केशर के साथ इसका सेवन करने से शीघ्रही उपद्रव सहित फिरङ्ग रोग नष्ट होता है और कपूर रसका सेवन करने वाला पुरुष अग्निकी दीप्ति शरीर की पुष्टता तथा बलवीर्य की वृद्धिको और सौ स्त्रियों के साथ रमणकी शक्ति को प्राप्त होता है ॥ ६३ ॥

अथ सिन्दूररसः ॥

शुद्धसूतस्यगृह्णीयाद्भिषग्भागचतुष्टयम् । शुद्धगन्धस्यभागैकंतावत्कृत्रिमगन्धकम् ॥ अथवापारदस्यार्द्धंशुद्धगन्धकमेवहि । तयोःकज्जलिकांकुर्याद्दिनमेकंविमर्दयेत् ॥ मृत्तिकांवाससासार्द्धंकुट्टयेदतियत्नतः । तयावारत्रयंसम्यक्काचकूपींप्रलेपयेत् । मृत्तिकांशोषयित्वातुकूप्यांकज्जलिकांक्षिपेत्।तांकूपींबालुकायन्त्रेस्थापयित्वारसंपचेत् ॥ अग्निंनिरन्तरं दद्याद्यावद्दिनचतुष्टयम्।गृह्णीयादूर्ध्वसंलग्नंसिन्दूरसदृशंरसम्॥ इति सिन्दूररसः६४॥

सिन्दूर रस ॥

चारभाग शोधाहुआ पारा एकभाग शुद्ध गन्धक और एकभाग कृत्रिम गन्धक अथवा पारे की आधी शुद्ध गन्धक मिलाकर एक दिन पारे और गन्धक की कजली करे फिर अच्छे प्रकार कूटीहुई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिट्टीसे शीशी पर तीनबार कपड़ौटी करे और सूखजाने पर शीशी में कजली भरकर शीशी को बालुकायन्त्रमें चढ़ावे और चारदिनतक निरन्तर आगदेतारहै फिर शीतल होजानेपर शीशी के ऊपर लगेहुये सिन्दूरसमान रसको पोंछकरलेले ॥ ६४ ॥

एवंमारितस्यमूर्च्छितस्यपारदस्यगुणाः ॥

पारदःकृमिकुष्ठघ्नोजयदोदृष्टिकृत्सरः । मृत्युहच्चमहावीर्य्योयोगवाहीज्वरापहः ॥ स्मृत्योजोरूपदोवृष्योवृद्धिकृद्धातुवर्द्धनः । षण्ढत्वनाशनःशूरःखेचरःसिद्धिदःपरः ॥ पारदःसकलरोगहास्मृतःषड्रसोनिखिलयोगवाहकः । पञ्चभूतमयएषकीर्तितस्तेनतद्गुणगणैर्विराजते । (रसामृते)यस्यरोगस्ययोयोगस्तेनैवसहयोजितः । रसेन्द्रोहन्तितंरोगंनरकुञ्जरवाजिनाम् ॥ ६५ ॥ इसप्रकार मारेहुए और मूर्च्छित पारेके गुण ॥

पारा कृमि और कुष्ठनाशक, जयदायक, दृष्टिकारी, दस्तावर, मृत्युनाशक, अत्यन्त वीर्यवाला, योगवाही, वृद्धावस्थानाशक, स्मृति तथा ओजवर्द्धक, रूपको उत्तम करनेवाला, कामियोंकोहित, धातुवर्द्धक, नपुंसकतानाशक, शूरताकारी, और आकाश गमनमें शक्ति तथा सिद्धिदेनेवाला होताहै. पारा. सम्पूर्ण रोगोंका नाशक छः रसों से युक्त सबका योगवाही और पञ्चभूतात्माहोने से पांचों भूतोंके गुणों से युक्त होताहै रसामृतमेंकहाहै कि मनुष्य, घोड़ा और हाथी इनके जिन२ रोगोंका जौन२ सायोग है पारा उनयोगोंके साथ सम्पूर्ण रोगोंको नाश करताहै ॥ ६५ ॥

अथोपरसानां शोधनविधिः । तत्रहिंगुलस्य शोधनविधिः ॥

मेषीक्षीरेणदरदमम्लवर्गैश्चभावितम् । सप्तवारान्प्रयत्नेनशुद्धिमायातिनिश्चितम्६६ ॥

उपरसोंका शोधन । सिन्दरफका शोधन ॥

भेड़ीका दूध और अम्लवर्गकेद्वारा सातबार भावनादियाहुआ सिंदरफ निस्सन्देह शुद्धहोताहै॥६६॥

एवंशोधितस्य हिंगुलस्यगुणाः ॥

तिक्तंकषायंकटुहिंगुलंस्यान्नेत्रामयघ्नंकफपित्तहारि । हल्लासकण्डूज्वरकामलांश्चप्लीहामवातौचगरंनिहन्ति ॥ ६७ ॥ सोधेहुए सिंदरफके गुण ॥

सिंदरफ.तिक्त,कषैला, कटु और नेत्ररोग,कफ,मतली,खुजली, ज्वर, कामला, प्लीहा, आमवात तथा गरदोष नाशक होताहै ॥ ६७ ॥ अथ हिंगुलाद्रसाकर्षणविधिः ॥

निम्बूरसैर्निम्बपत्ररसैर्वायाममात्रकम् । घृष्ट्वादरदमूर्ध्वन्तुपातयेत्सूतयुक्तिवत् ॥ तत्रोर्ध्वपिठरीलग्नंगृह्णीयाद्रसमुत्तमम् । शुद्धमेवहितंसूतंसर्वकर्मसुयोजयेत् ॥ ६८ ॥

सिंदरफसे पारा निकालनेकी विधि ॥

निम्बू अथवा नींबके पत्तों के रससे सिंदरफको एक पहर घोटकर कहीहुई विधिसे पारे के समान ऊर्ध्व पातन करे और ऊपरके पात्रमें लगेहुये पारेको लेले यह पारा शुद्ध हितकारी और संपूर्णकार्यों में व्यवहार करने के योग्य होताहै ॥ ६८ ॥

अथ गन्धकस्याशुद्धस्यदोषमाह ॥

अशुद्धगन्धकःकुर्यात्कुष्ठंपित्तरुजांभ्रमम् । हन्तिवीर्यंबलंरूपंतस्माच्छुद्धःप्रयुज्यते॥६९॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अशुद्ध गन्धकके दोष ॥

अशुद्ध गन्धक.कुष्ठ,पित्तरोग तथा भ्रमकारक और वीर्य, बल तथा रूपनाशक होताहै इस्से शुद्ध गन्धक व्यवहारमें लावे ॥ ९९ ॥

अथ शोधनविधिः ॥

लोहपात्रेविनिःक्षिप्यघृतमग्नौप्रतापयेत् । तप्तेघृतेतत्समानंक्षिपेद्गन्धकजंरजः ॥ विद्रुतंगन्धकंदृष्ट्वातनुवस्त्रेविनिःक्षिपेत् । यथावस्त्राद्विनिःस्रुत्यदुग्धमध्येऽखिलंपतेत् ॥ एवंसगन्धकःशुद्धःसर्वकर्मोचितोभवेत् ॥ १०० ॥

गन्धक शुद्धकरने की विधि ॥

लोहेके पात्र में घीको गरम करके उसमें उसीके समान गन्धक का चूरा छोडे फिर गन्धक को टिघला हुआ जानकर किसी पतले कपडे से दूधमें छानले इसप्रकार से शुद्धहुआ गन्धक सम्पूर्ण कार्यों के योग्य होताहै ॥ १०० ॥

एवं शुद्धस्यगन्धकस्यगुणाः ॥

गन्धकःकटुकस्तिक्तोवीर्य्योष्णस्तुवरः सरः । पित्तलः कटुकः पाकेकण्डूवीसर्पजन्तुजित् ॥ हन्तिकुष्ठक्षयप्लीहकफवातान्रसायनम् ॥ १०१ ॥

शुद्धगन्धकके गुण ॥

गन्धक. कटु, तिक्त, वीर्य में उष्ण, कषैली, दस्तावर, पित्तवर्द्धक, पाक में कटु और खुजली, वीसर्प, क्रमि, कुष्ठ, क्षय, प्लीहा, कफ तथा वातनाशक होताहै ॥ १०१ ॥

अथाभ्रकस्याशुद्धस्यदोषमाह ॥

पीडांविधत्तेविविधान्नराणांकुष्ठंक्षयंपाण्डुगदञ्चकुर्य्यात् । हृत्पार्श्वपीडाञ्चकरोत्यसह्यामशुद्धमभ्रंगुरुवह्निहृत्स्यात् ॥ १०२ ॥

अशुद्ध अभ्रकके दोष ॥

अशुद्ध अभ्रक. भारी, अग्निनाशक और मनुष्योंको अनेक प्रकारकी पीडा, कुष्ठ, क्षय, पाण्डु, हृदयकी पीडा और पसलीकी अत्यन्त पीडाको करताहै ॥ १०२ ॥

अथाभ्रकस्यशोधनविधिमाह ॥

कृष्णाभ्रकंधमेद्वह्नौततःक्षीरेविनिःक्षिपेत् । भिन्नपत्रंतुतत्कृत्वातण्डुलीयाम्लयोर्द्रवैः ॥ भावयेदष्टयामंतदेवमभ्रंविशुद्ध्यति ॥ १०३ ॥

अभ्रकका शोधन ॥

काले अभ्रकको आगमें तपाकर दूधमें बुझावे फिर पत्रोंको अलग करके चौराई सागकेरस और खट्टे रसमें आठपहर भावनादे इसप्रकार अभ्रक शुद्ध होताहै ॥ १०३ ॥

अथ तस्यमारणम् ॥

कृत्वाधान्याभ्रकंतच्चशोषयित्वाथमर्द्दयेत् । अर्कक्षीरैर्दिनंखल्वेचक्राकारंचकारयेत् ॥ वेष्टयेदर्कपत्रैश्चसम्यग्गजपुटेपचेत् । पुनर्मर्द्यंपुनःपाच्यंसप्तवारान्पुनःपुनः ॥ ततोवट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जटाक्काथैस्तद्वद्देयंपुटत्रयम् । म्रियतेनात्रसंदेहःप्रयोज्यंसर्वकर्मसु ॥ तुल्यंघृतंमृताभ्रेण लोहपात्रेविपाचयेत् । घृतेजीर्णेतदभ्रन्तुसर्वयोगेषुयोजयेत् ॥ १०४ ॥

अभ्रक मारने की विधि ॥

धान्याभ्रक बनायकर सुखाले और आकके दूधसे एकदिन खर लकरके टिकिया बनाले फिर आकके पत्तोंमें लपेटकर गजपुटमें पकावे इसीप्रकार सातबार घोट २ कर गजपुटमें पाककरे फिर बरगदकी जटाओं के क्वाथसे घोट २ कर तीनबार पुटपाककरे इसप्रकारसे निस्संदेह अभ्रक भस्म होजाताहै अभ्रककी भस्मकेसम भाग घी मिलाकर लोहेके पात्रमें पाककरे घीके जलजानेपर उस अभ्रकको सब कार्यों में व्यवहारकरे ॥ १०४ ॥

अथ धान्याभ्रकस्यविधिः ॥

पादांशशालिसंयुक्तमभ्रंबध्वाथकम्बले । त्रिरात्रंस्थापयेन्नीरेतत्क्लिन्नंमर्दयेत्करैः ॥ कम्बलाद्गलितंसूक्ष्मंबालुकारहितञ्चयत् ॥ तद्धान्याभ्रमितिप्रोक्तमभ्रमारणसिद्धये १०५॥

धान्याभ्रककी विधि ॥

अभ्रकमें चौथाई शालिधान्य मिलाकर कंबलमें बांधे फिर तीनदिनतक पानीमें भिजोकर गीला होजानेपर हाथोंसे उसको मलै फिर बालूके समान जो अभ्रक उसकम्बलसे छने उसको धान्याभ्रक कहते हैं इससे अभ्रकका मारना सिद्ध होताहै ॥ १०५ ॥

एवंमारितस्याभ्रकस्यगुणाः ॥

अभ्रंकषायंमधुरंसुशीतमायुष्करन्धातुविवर्द्धनञ्च । हन्यात्त्रिदोषंव्रणमेहकुष्ठप्लीहादरं ग्रन्थिविषकृमींश्च ॥ रोगान्हन्तिदृढयतिवपुर्वीर्यवृद्धिंविधत्तेतारुण्याढ्यंरमयतिशतं योषितांनित्यमेव ॥ दीर्घायुष्कान्जनयतिसुतान्सिंहतुल्यप्रभावान् मृत्योर्भीतिंहरति सुतरांसेव्यमानंमृताभ्रम् ॥ १०६ ॥

अभ्रककी भस्मके गुण ॥

अभ्रक कषैला, मधुर, शीतल, आयुकारी, धातुवर्द्धक और त्रिदोष, घाव, प्रमेह, कुष्ठ, प्लीहा, उदर, ग्रन्थि, विष तथा कृमिनाशक होताहै अभ्रककी भस्मके सेवनसे रोगोंनाश, शरीरकी पुष्टता, तरुण, सौस्त्री के भोगनेकी शक्ति, सिंहकेतुल्य पराक्रमवाले दीर्घायु पुत्रोंके उत्पन्न करने की सामर्थ्य और मृत्युके भय का नाश होताहै ॥ १०६ ॥

अथ तालकस्याशुद्धस्यदोषमाह ॥

अशुद्धंतालमायुर्हृत्कफमारुतमेहकृत् । तापस्फोटाङ्गसङ्कोचंकुरुतेतेनशोधयेत् १०७॥

अशुद्धहरतालके दोष ॥

अशुद्ध हरताल आयुनाशक और कफ, वात, प्रमेह, ताप, विस्फोटक तथा अङ्ग संकोचकारी होताहै इसलिये इसको शुद्धकरना चाहिये ॥ १०७ ॥

अथ तालस्यशोधनमाह ॥

तालकंकणशःकृत्वातच्चूर्णंकाञ्जिकेपचेत् । दोलायन्त्रेणयामैकंततःकूष्माण्डजद्रवैः ॥ तिलतैलेपचेद्यामंयामञ्चत्रिफलाजले । एवंयन्त्रेचतुर्यामंपक्वंशुद्ध्यतितालकम् ॥१०८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हरतालका शोधन ॥

हरतालको चूर्णकरके दोलायन्त्रकेद्वारा कांजी, कुम्हडेकारस, तिलकातेल और त्रिफलाके काथमें पहर २ भर पाककरे इसप्रकार चारपहर पाककरनेसे हरताल शुद्ध होताहै ॥ १०८ ॥

अथ तालस्यमारणविधिः ॥

सदलंतालकंशुद्धंपौनर्नवरसेनतु । खल्वेविमर्दयेदेकंदिनंपश्चाद्विशोषयेत् ॥ ततः पुनर्नवाक्षारैःस्थाल्यामर्द्धंप्रपूरयेत् । तत्रतद्गोलकंधृत्वापुनस्तेनैवपूरयेत् ॥ आकण्ठंपिठरंतस्यपिधानंधारयेन्मुखे। स्थालींचुल्ल्यांसमारोप्यक्रमाद्वह्निंविवर्द्धयेत्॥दिनान्यन्तरशून्यानिपञ्चवह्निंप्रदापयेत् । एवंतन्म्रियतेतालंमात्रातस्यैकरक्तिका ॥ अनुपानान्यनेकानियथायोग्यंप्रयोजयेत् ॥ १०९ ॥

हरतालकी मारणविधि ॥

शुद्ध तबकिया हरतालको पुनर्नवाके रसमें एक दिन खरलकरके सुखावे फिर किसी बटले में आधीदूरतक पुनर्नवाके खारकोभरके उसमें उस हरतालके गोलेकोरक्खे और उसके ऊपर पुनर्नवाका खार ऊपरतक (गलेतक) भरदे फिर सकोरे आदिसे बटलेके मुखको बन्दकरके चूल्हेके ऊपर चढ़ाकर अग्निबलाकर क्रम २ से बढ़ाताजाय इसप्रकार निरन्तर पाककरनेसे हरतालकी भस्म होतीहै इसकी मात्रा एकरत्तीकी होतीहै और अनुपान यथायोग्य विचारके अनेक प्रकारसे व्यवहारकरे ॥ १०९

एवंशोधितस्यमारितस्यतालकस्यगुणाः ॥

हरितालंकटुस्निग्धंकषायोष्णंहरेद्विषम् । कण्डूकुष्ठास्यरोगास्त्रकफपित्तकचव्रणान् ॥ (अन्यच्च)तालकंहरतेरोगान्कुष्ठमृत्युज्वरापहम् । शोधितंकुरुतेकान्तिवीर्य्यवृद्धितथायुषम् ॥ ११० ॥

हरतालकी भस्मके गुण ॥

हरताल. कटु, स्निग्ध, कषैली, उष्ण और विष, खुजली, कुष्ठ, मुखरोग, रक्तदोष, कफ, पित्त, तथा केशोंके घावका नाशक होताहै औरभी कहागया है कि शुद्ध हरताल कुष्ठ आदि रोग मृत्यु तथा वृद्धावस्था नाशक और कान्ति, वीर्यकी वृद्धि और आयुकारक होताहै ॥ ११० ॥

अथ अशुद्धायामनःशिलाया दोषमाह ॥

तालकस्यैवभेदोऽस्तिमनोगुप्तैतदन्तरम् । तालकंत्वतिपीतंस्याद्भवेद्रक्तामनःशिला॥ मनःशिलामन्दबलंकरोतिजन्तुंध्रुवंशोधनमन्तरेण । मलस्यबन्धंकिलमूत्ररोधंसशर्करंकृच्छ्रगदश्चकुर्यात् ॥ १११ ॥

अशुद्ध मैनशिल के दोष ॥

मैनशिल हरतालका भेदमात्रहै विशेषता यहहै कि हरताल पीला और मैनशिल लाल होताहै अशुद्ध मैनशिल बलकी घटाने वाली कृमिकारक मल मूत्र की रोधक और शर्करासहित मूत्रकृच्छ्रकारी होतीहै ॥ १११ ॥

अथ तच्छोधनविधिः ॥

पचेत्त्र्यहमजामूत्रे दोलायन्त्रेमनःशिलाम् । भावयेत्तत्सप्तधापित्तैरजायाःसाविशुद्ध्यति ॥ ११२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मैनशिल का शोधन॥

मैनशिल को तीनदिन तक बकरे के मूत्र में दोलायन्त्रसे पकाकर बकरे के पित्तेसे सातबार भावनादे इसरीतिसे मैनशिल शुद्ध होतीहै॥ ११२॥

एवंशोधितायामनःशिलायागुणानाह॥

मनःशिलागुरुर्वर्ण्यासरोष्णालेखनीकटुः। तिक्तास्निग्धाविषश्वासकासभूतविषास्रनुत्॥ ११३॥ शुद्ध मैनशिलके गुण॥

शुद्ध मैनशिल. भारी, वर्ण को हित, दस्तावर, उष्ण, लेखन, कटु, तिक्त, स्निग्ध और विष, श्वास, खांसी, भूतावेश, कफ तथा रक्तदोषनाशक होतीहै॥ ११३॥

अथ खर्परस्तुत्थभेदस्तस्यशोधनविधिः॥

नरमूत्रेचगोमूत्रेसप्ताहंरसकम्पचेत्।दोलायन्त्रेणशुद्धःस्यात्ततःकार्य्येषुयोजयेत्॥११४॥

तूतियाका भेद खपरियाका शोधन॥

नरमूत्र और गोमूत्र में सातबार दोलायन्त्रके द्वारा खपरियाको पाककरे इस प्रकारसे शुद्धहुई खपरिया सब कार्योंके योग्य होतीहै॥ ११४॥

अथ तस्यगुणाः॥

खर्परंकटुकंक्षारंकषायंवामकंलघु। लेखनंभेदनंशीतंचक्षुष्यंकफपित्तहृत्॥ विषाश्मकुष्ठकण्डूनांनाशनंपरमंमतम्॥ ११५॥

खपरियाके गुण॥

खपरिया. कटु, खारी, कषैली, छर्दिकारक, हलकी, लेखन, भेदक, शीतल, नेत्रोंको हित और कफ, पित्त, विष, पथरी, कुष्ट तथा खुजलीनाशक होतीहै॥ ११५॥

अथ सर्वोपरसानांसाधारणशोधनविधिः॥

सूर्य्यावर्त्तोवज्रकन्दःकदलीदेवदालिका।शिग्रुःकोशातकीवन्ध्याकाकमाचीचबालकम्॥ एषामेकरसेनैवत्रिक्षारैर्लवणैःसह। भावयेदम्लवर्गैश्चदिनमेकंप्रयत्नतः॥ ततःपचेच्चतद्द्रवैर्दोलायन्त्रेदिनंसुधीः। एवंशुद्ध्यन्तितेसर्वेप्रोक्ताउपरसाह्मिये॥ विशेषश्च। कंकुष्ठंगैरिकंशङ्खःकासीसंटङ्कणंतथा। नीलाञ्जनंशुक्तिभेदाःक्षुल्लकाःसवराटकाः॥ जम्बीरवारिणास्विन्नाःक्षालिताःकोष्णवारिणा॥ शुद्धिमायान्त्यमीयोज्याभिषग्भिर्योगसिद्धये। एवंशोधितानामुपरसानांपृथग्गुणागुणग्रन्थेद्रष्टव्याः॥ ११६॥

सम्पूर्ण उपरसोंकी साधारण शोधन विधि॥

सूर्यावर्त्त, वज्रकन्द, केला, देवदाली, सहँजना, तुरई, बांझखिखसा, काकमाची और सुगन्धबाला इनमें से किसी एकका रस जवाखार, सज्जी, सुहागा, सेंधानोन और अम्लवर्गके साथ एक दिन भावना देकर इसी रसके साथ एकदिन दोलायन्त्रमें पाककरे इसप्रकार सम्पूर्ण उपरस शुद्धहोते हैं मुर्दासिंग, गेरू, शंख, हीराकसीस, सुहागा, लीलासुरमा, सीपीकेभेद घोंघे और कौडी यह सम्पूर्ण उपरस जंभीरी नींबूके रसके साथ पाककरके कुछ गरम जलसे धोने से शुद्ध होतेहैं इसप्रकार शुद्ध कियेगये उपरसोंके अलग २ गुण गुणग्रन्थ में देखने चाहिये॥ ११६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ रत्नानांशोधनमारणविधिः । तत्राशुद्धस्यवज्रस्यदोषमाह ।
अशुद्धंकुरुतेवज्रंकुष्ठंपार्श्वव्यथांतथा।।पाण्डुतापंगुरुत्वञ्चतस्मात्संशोध्यमारयेत् ११७॥

रत्नोंके शोधन और मारणकी विधि । अशुद्ध हीरे के दोष ॥

अशुद्धहीरा. कुष्ठ, पसलियोंमें पीड़ा, पाण्डु और लूलेपनको करताहै इससे हीरे को शुद्धकरके भस्म करना चाहिये ॥ ११७ ॥

अथ वज्रस्यशोधनविधिः ॥

कुलत्थकोद्रवक्काथेदोलायन्त्रेविपाचयेत् । व्याघ्रीकन्दगतंवज्रंत्रिदिनंतद्धिशुद्ध्यति ॥ व्याघ्रीकण्टकारिका । अन्यःशोधनविधिः । गृहीत्वाह्निशुभेवज्रंव्याघ्रीकन्दोदरेक्षिपेत् ॥ माहिषीविष्ठयालिप्त्वाकारीषाग्नौविपाचयेत् ॥ त्रियामायांचतुर्यामंयामिन्यन्तेऽश्वमूत्रके सेचयेत्पाचयेदेवंसप्तरात्रेणशुद्ध्यति ॥ ११८ ॥

हीरा शुद्ध करनेकी विधि ॥

हीरेको भटकटैयाकी जड में भरकर कुलथी और कोदोंके काढ़ेके साथ तीन दिनतक दोलायन्त्र में पाककरे तो हीरा शुद्धहोवे दूसरी विधि शुभ दिनमें हीरालेकर भटकटैयाकी जड़में रक्खे और उस में भैंसका गोबर लपेटकर रातभर कण्डोंकी आंचमें पकावे और प्रातःकाल घोडे के मूत्रमें बुझावे इस प्रकार सात रात्रितक पाककरने और बुझाने से हीरा शुद्ध होताहै ॥ ११८ ॥

अथ वज्रस्यमारणविधिः ॥

हिंगुसैन्धवसंयुक्तेक्षिपेत्काथेकुलत्थजे । तप्तंतप्तंपुनर्वज्रम्भवेद्भस्मत्रिसप्तधा (अन्य मारणप्रकारः) मेषशृंगभुजंगास्थिकूर्मपृष्ठाम्लवेतसम् ॥ शशदन्तंसमम्पिष्ट्वावज्रीक्षीरेणगोलकम् । कृत्वातन्मध्यगंवज्रंम्रियतेध्मातमेवहि ॥ ११९ ॥

हीरा मारनेकी विधि ॥

हीरेको तपा २करहींग और सेंधोनोनके साथ कुलथीके काढ़ेमें इक्कीसबार बुझानेसे हीरा मरजाता है (दूसरी विधि) मेढ़ेकेसींग, सर्पकी, हड्डी, कछुयेकी पीठ, अमलवेत और खरगोशके दांत इन सबको सम भाग लेकर थूहरके दूधमें पीसकर गोला बनावै इस गोलेके बीचमें हीरा रखकर पाककरने से शीघ्रही भस्म होताहै ॥ ११९ ॥

मारितस्यवज्रस्यगुणाः ॥

आयुःपुष्टिंबलंवीर्यंवर्णंसौख्यंकरोतिच । सेवितंसर्वरोगघ्नंमृतंवज्रंनसंशयः ॥ १२० ॥

हीरेकी भस्मके गुण ॥

हीरेकी भस्म. आयु, पुष्टता, बल, वीर्य, वर्ण तथा सुखकारी और सम्पूर्ण रोगनाशक होतीहै १२० ॥

अथ शेषरत्नानांशोधनमारणविधिः ॥

वज्रवत्सर्वरत्नानिशोधयेन्मारयेत्तथा। शुद्धानांमारितानाञ्चतेषांशृणुगुणानपि ॥ मणयोवीर्यतःशीतामधुरास्तुवरारसात् । चक्षुष्यालेखनाश्चापिसारकाविषहारकाः ॥ धारणात्तेतुमंगल्याग्रहदृष्टिहराअपि । उपरत्नानांशोधनमारणविधिश्चिन्त्यः ॥ १२१ ॥

शेषरत्नोंके शोधन मारणकी विधि ॥

हीरेकेसमान सम्पूर्णरत्नोंका शोधन और मारण होताहै इनकेगुण रत्न वीर्यमें शीतल, मधुर, कषैले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नेत्रोंका हित, लेखन, दस्तावर और विषनाशक होते हैं यहधारणकरने से ग्रहदृष्टिनाशक और मङ्गलकारी होते हैं ॥ १२१ ॥ अथविषाणांशोधनविधिः। तत्रवत्सनाभस्य स्वरूपनिरूपणम् ॥

सिंदुवारसदृक्पत्रोवत्सनाभ्याकृतिस्तथा। यत्पार्श्वेनतरोर्वृद्धिर्वत्सनाभःसभाषितः १२२

विषोंकी शोधनविधि। वत्सनाभ का स्वरूप वर्णन ॥

जिसवृक्षके पत्ते निर्गुण्डीके पत्तों के समान जिसकी आकृति बछडेकी नाभिके समान और जिसके निकटके वृक्षोंकी वृद्धि न हो उसको वत्सनाभ कहते हैं ॥ १२२ ॥

विषस्यशोधनविधिः ॥

गोमूत्रेत्रिदिनंस्थाप्यंविषंतेनविशुद्ध्यति। रक्तसर्षपतैलाक्तेतथाधार्य्यञ्चवाससि ॥ येगुणागरलेप्रोक्तास्तेस्युर्हीनाविशोधनात्। तस्माद्विषंप्रयोगेतुशोधयित्वाप्रयोजयेत् १२३

विषका शोधन ॥

विषको तीन दिनतक गोमूत्रमें भिजोकर लाल सरसों के तेलसे भीगे हुये कपडे में तीन दिन तक रक्खे विष में जो दोष कहेगये हैं वह शुद्ध करने से हीनहोजाते हैं इस विषको शोध कर काम में लाना चाहिये ॥ १२३ ॥ अथ विषस्यगुणाः ॥

विषंप्राणहरंप्रोक्तंव्यवायिचविकाशिच। आग्नेयंवातकफहृद्योगवाहिमदावहम् ॥ व्यवायिसकलकायगुणव्यापनपूर्वकपाकगमनशीलं। विकाशिओजःशोषणपूर्वकसन्धिबन्धशिथलीकरणशीलम्। आग्नेयम् अधिकाग्न्यंशं ॥ योगवाहिसंगिगुणग्राहकम् मदावहंतमोगुणप्राधान्येनबुद्धिविध्वंसकम् ॥ तदेवयुक्तियुक्तन्तुप्राणदायिरसायनम्। योगवाहिपरंवातश्लेष्मजित्सन्निपातहृत् ॥ १२४ ॥

विषके गुण ॥

विष. प्राणनाशक, संपूर्ण शरीरमें अपने गुणके फैल जानेपर पाक होनेवाला ओजको सुखाकर संधियों के बन्धन को शिथिल करनेवाला, अधिक अग्नि के गुणवाला संगीके गुण का ग्राहक कफ वातनाशक और तमोगुणकी प्रधानतासे बुद्धिका नाशक होताहै परन्तु युक्तिपूर्वक व्यवहार करनेसे प्राणदायक रसायन योगवाही और वात कफ तथा सन्निपातका अत्यन्त नाशक होताहै॥१२४॥

अथोपविषाणां निरूपणम् ॥

अर्कक्षीरंस्नुहीक्षीरंलांगलीकरवीरकः। गुञ्जाहिफेनोधत्तूरःसप्तोपविषजातयः ॥ एतेषांशोधनंचिन्त्यंगुणास्तत्रतत्रद्रष्टव्याः ॥ १२५ ॥

उपविषोंका वर्णन ॥

आकका दूध, थूहर का दूध, करिहारी, कनेर, घोंघची, अफ़ीम और धतूरा यह सात उपविषहैं इनका शोधन बिचार लेनाचाहिये और इनका गुण वहां देखना चाहिये जहां इनका वर्णन होचुकाहै ॥१२५॥

अथ द्रव्याणांगुणवतामवधिः ॥

गुणहीनंभवेद्वर्षादूर्ध्वंतद्रूपमौषधम्। मासद्वयात्तथाचूर्णंलभतेहीनवीर्य्यताम् ॥ हीनत्वंगुटिकालेहौलभेतेवत्सरंयदि। हीनाःस्युर्घृततैलाद्याश्चतुर्मासाधिकास्तथा ॥ घृत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तैलाद्याइतियोगविशेषणम् । चतुर्मासाधिकाःवत्सरादुपरिचत्वारोमासाअधिकायेषुते । घृततैलयोर्विशेषमाह (तन्त्रान्तरे) घृतमब्दात्परंपक्वंहीनवीर्य्यत्वमाप्नुयात् । तैलंपक्वम पक्वञ्चचिरस्थायिगुणाधिकम् ॥ तदपिषोडशमासाभ्यन्तरेणंपक्वंतैलंगुणाधिकंबोद्धव्यम् औषध्योलघुपाकाःस्युर्निवीर्य्यावत्सरात्परम् । औषध्योधान्यादयःलघुपाकाःशीघ्रपाकाः निर्वीर्याःस्युःपुराणाःस्युर्गुणैर्युक्ताआसवाधातवोरसाः ॥ १२६ ॥

द्रव्योंके गुणोंकी अवधि ॥

एकवर्ष के उपरांत तद्रूप औषध गुणरहित होजाती है चूर्ण कीहुई औषध दोमहीने के उपरात हीनवीर्य होजाती है गुटिका तथा अवलेह एकवर्षमें हनिवीर्य होजातेहैं और घृत तथा तेल आदिक एकवर्ष चार महीनें के पीछे हनिवीर्य होजाते हैं तन्त्रान्तर में घृत और तेलके विषय में विशेषता कही गईहै कि पक्वाघी एकवर्ष के ऊपर हनिवीर्य होजाताहै परन्तु तेल कच्चाहोचाहे पक्काहो जितना पुराना होगा उतनाही अधिक गुणकारी होगा इसपरभी सोलह महीनोंके भीतर पक्का तेल अधिक गुणकारी होता है शीघ्र परिपाक होने वाले धान्यादिक एकवर्ष के उपरांत हनिवीर्य होजातेहैं और आसव धातु तथा रस यह पुरानेही अधिक गुणकारी होते हैं ॥ १२६ ॥

अथ स्नेहपानविधिः ॥

स्नेहश्चतुर्विधःप्रोक्तोघृततैलंवसातथा । मज्जाचतंपिबेन्मर्त्यःकिंचिदभ्युदितेरवौ ॥ स्थावरोजंगमश्चैवद्वियोनिःस्नेहउच्यते । तिलतैलंस्थावरेषुजंगमेषुघृतंवरम् ॥ द्वाभ्यां त्रिभिश्चतुर्भिर्वायमकास्त्रिवृतोमहान् । अस्यायमर्थः । द्वाभ्यांस्नेहाभ्यांघृततैलाभ्यांय मकाख्यःस्नेहःस्यात् । त्रिभिःस्नेहैःघृततैलवसारूपैस्त्रिवृताख्यःस्यात् । चतुर्भिर्घृततै लवसामज्जाभिर्महान्महास्नेहःस्यादित्यर्थः (पिबेत्त्र्यहंचतुरहंपञ्चाहंषडहानिचेतियदु क्तम्) मृदुकोष्ठस्त्रिरात्रेणस्निग्धस्नेहोपसेवया । मध्यकोष्ठश्चतुर्भिश्चादिवसैःस्निह्यतिध्रु वम् ॥ पञ्चभिर्वाथषड्भिर्वादिनैःक्रूरोविशुद्ध्यति । सप्तरात्रात्परंस्नेहःसात्मीभवतिसेवि तः ॥ मृदुमध्यक्रूरकोष्ठानांसर्वेषांसप्तरात्रात्परंसात्मीभवति । वातानुलोम्यवह्निर्दीप्तिको ष्ठशुद्धिमृदस्निग्धांगतास्वरवचनांगलाघवधातुपुष्टिद्विजदार्ढ्यंनिर्जरताबलवर्णकारीभ- वति ॥ नतुभक्तद्वयेवातानुलोम्यादीन्करोति । दोषकालवयोवह्निबलान्यालोक्ययोजयेत् । हीनाञ्चमध्यमांज्येष्ठांमात्रांस्नेहस्यबुद्धिमान् ॥ अमात्रयातथाकालेमिथ्याहारविहारतः । स्नेहःकरोतिशोथार्शस्तन्द्रानिद्राविसंज्ञिताः ॥ देयादीप्ताग्नयेमात्रास्नेहस्यैकपलोन्मि ता । मध्यमायत्रिकर्षास्याज्जघन्यायाद्विकार्षिकी ॥ मध्यमायमध्यमाग्नयेजघन्यायहीना ग्नये अथवास्नेहमात्राःस्युस्तिस्रोन्याःसर्वसम्मताः ॥ अहोरात्रेणमहतीजीर्यत्यह्नितुमध्य मा । जीर्य्यत्यल्पादिनार्द्धेनसाविज्ञेयासुखावहा (अयमर्थः) याहोरात्रेणजीर्यतिसामात्रा महती । एवंमध्यमाकनिष्ठाचज्ञेया । अल्पास्याद्दीपनीवृष्यास्वल्पदोषेप्रपूजिता । मध्यमा स्नेहनीज्ञेयाबृंहणीभ्रमहारिणी ॥ ज्येष्ठाकुष्ठविषोन्मादग्रहापस्मारनाशिनी ॥ १२७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्नेह पानकीविधि ॥

स्नेह चार प्रकार का होताहै घी, तेल, चरबी और मज्जा कुछ सूर्य उदय होने पर स्नेह पानकरना चाहिये स्थावर तथा जङ्गम कारणों के भेदसे स्नेह दो प्रकारका होताहै उन में से स्थावर में तिल कातेल और जङ्गम में घृत सबसे श्रेष्ठ होताहै घी और तेल मिलकर जो स्नेह बनता है उसकोयमक घी तेल और चरबी मिलकर जो स्नेह बनताहै उसको त्रिवृत् और घी तेल चरबी और मज्जा इन चारोंके मिलने से जो स्नेह बनताहैं उसको महास्नेह कहते हैं कोमलकोष्ठवाला तीन दिन मध्यम कोष्ठवाला चारदिन और कठिन कोष्ठवाला पांच अथवा छःदिन स्नेहपानकरे क्योंकि कहाहुआहै किं कोमल कोष्ठवाला तीनदिन स्नेह पानकरनेसे स्निग्ध मध्यम कोष्ठवाला चारदिन स्नेह पान करने से स्निग्ध और क्रूरकोष्ठ वाला पांच अथवा छःदिन स्नेहपान करने से शुद्ध होताहै कोमल मध्यम और क्रूरकोष्ठवाले सबहीको सात दिनके उपरांत स्नेह सात्म्य (स्वभावकेअनुकूल)होजाता है और स्नेह के सेवनसे वातकी अनुलोमता (नीचेका जाना) अग्निदीप्ति कोष्ठ शुद्धि शरीर की कोमलता तथा स्निग्धता स्वर वचन तथा शरीर का हलकापन वृद्धावस्था का नाश और बल वर्ण की उत्तमता होती है इससे भोजनमें अरुचि और शरीरमें ग्लानि आदिक नहीं होती दोष काल अवस्था बल और अग्निके बलको विचारकर हीन मध्य अथवा बडी मात्रा से स्नेह को काममें लाना चाहिये मात्रा के विना अकाल में अथवा नियमरहित आहार करने से स्नेहपानकरने वालेको सूजन बवासीर तन्द्रा निद्रा और संज्ञारहित होना यह सबरोग उत्पन्न होते हैं और दीप्ताग्निको चार तोलेकी मात्रा मध्यम अग्निवाले को तीन तोलेकी और मन्द अग्निवालेको दो तोले स्नेह की मात्रा देनी चाहिये स्नेह पीने की अन्यभी तीन मात्रा सर्व सम्मतहैं जितना स्नेह एक रात दिनमें पचे वह बडीमात्रा एक दिनमें जितना पचे वह मध्यममात्रा और आधे दिनमें जितना पचे वह हीनमात्रा कहलातीहै हीनमात्रा दीपन बीर्यवर्द्धक और थोडेदोष में हितकारी होती है मध्यममात्रा स्निग्धकरनेवाली धातुवर्द्धक और श्रमनाशक होती है और बडीमात्रा कुष्ठ विष उन्माद ग्रहदोष मृगीनाशक होतीहै ॥ १२७ ॥

सुश्रुतःपुनरेवाह । यामात्राप्रथमेयामेगतेजीर्य्यतिवासरे । सामात्रादीपयत्यग्निमल्पदोषेचपूजिता ॥ यामात्रावासरस्यार्द्धेव्यतीतेपरिजीर्य्यति । सावृष्याबृंहणीचस्यान्मध्यदोषेप्रपूजिता ॥ यामात्राचरमेयामेस्थितेऽह्नःपरिजीर्य्यति ॥ सामात्रास्नेहनीज्ञेयाबहुदोषेषुपूजिता ॥ केवलंपैत्तिकेसर्पिर्वातिकेलवणान्वितम् । देयंबहुकफेवह्निव्योषक्षारसमन्वितम् ॥ रूक्षक्षतविषार्त्तानांवातपित्तविकारिणाम् । हीनमेधास्मृतीनांचसर्पिःपानंप्रशस्यते । कृमिकोष्ठानिलाविष्ठाःप्रवृद्धकफमेदसः । पिबेयुस्तैलसात्म्यास्तुतैलंदार्ढ्यार्थिनस्तुये ॥ व्यायामाकर्षिताःशुष्करेतोरक्तामहारुजाः । क्रूराशयाःक्लेशसहावातार्त्तादीप्तवह्नयः । मज्जानंचपिबेयुस्तेसर्पिर्वासर्वतोहितम् ॥ क्रूरकोष्ठाःसर्वतःसर्वस्मात्स्नेहात् । शीतकालेदिवास्नेहमुष्णकालेपिबेन्निशि । वातपित्ताधिकेरात्रौवातश्लेष्माधिकेदिवा ॥ नस्याभ्यञ्जनगण्डूषमूर्द्धकर्णाक्षितर्पणे ॥ तैलंघृतंवायुञ्जीतदृष्ट्वादोषबलाबलम् ॥ घृते कोष्णजलंपेयंतैलेयूषःप्रशस्यते ॥ वसामज्ज्ञोःपिबेन्मण्डमनुपानंसुखावहम् ॥ १२८ ॥

फिर सुश्रुतने कहाहै कि जो मात्रा दिनके एकपहर व्यतीत होनेपर परिपाक होती है वह दीपन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और थोड़े दोषमें हितहै जो मात्रा आधादिन व्यतीत होनेपर परिपाक होतीहै वह वीर्य तथा धातुवद्धक और मध्यदोषमें हितहै और जो मात्रा दिनके चौथे पहर में परिपाक होतीहै वह स्निग्ध करने वाली और बहुतदोषमें हित है पित्तरोगमें केवल घी वातज रोगमें सेंधानोन युक्त घी और बहुतकफ में चीता त्रिकटु तथा जवाखारयुक्त घी पानकराना चाहिये रूखे क्षत तथा विषसे व्याकुल वात पित्त के रोगसे ग्रसित और हीन हुई मेधा तथा स्मृतिवाले पुरुषों को घी पीना श्रेष्ठहै कृमिरोगी क्रूर कोष्ठवाले कफ तथा मेदकी वृद्धि से युक्त सदैव तैल सेवन करनेवाले पुष्टताचाहनेवालों को तेल पीना चाहिये और व्यायामसे दुर्बल क्षीण बीर्य तथा रुधिरवाले और महारोग से ग्रसित व क्रूर कोष्ठवाले, क्लेशके सहने वाले तथा बादीसे पीड़ित व दीप्ताग्नि वाले पुरुषों को मज्जा पीना उचित है अथवा सबसे उत्तम पीना चाहिये तथा शीतल काल में दिनको उष्णकाल में तथा वात पित्तके कोपमें रातको और कफ वात के कोप में दिन को स्नेह पान करना चाहिये नासलेने में शरीरके लगाने में कुल्ला करने में शिरपर लगाने में और कान तथा नेत्रोंके भरने में तेल अथवा घीका व्यवहार दोषके बलाबलको देखकर करना चाहिये घी का कुछ उष्णजल तेलका यूष और चरबी तथा मज्जाका माड़ अनोपान करना चाहिये ॥ १२८ ॥

स्नेहद्विषःशिशूनवृद्धानसुकुमारानकृशानपि। तृष्णालुकानुष्णकालेसहभक्तेनपाययेत् ॥ सर्पिष्मतीबहुतिलायवागूस्वल्पतण्डुला । सुखोष्णासेव्यमानातुसद्यःस्नेहनकारिणी ॥ शर्कराचूर्णसंयुक्तेदोहनस्थेघृतेतुगाम् । दुग्ध्वाक्षीरंपिबेद्रूक्षःसद्यःस्नेहनमुत्तमम् ॥ मिथ्याचाराबहुत्वाद्वायस्यस्नेहोनजीर्य्यति । विष्टभ्यवापिजीर्य्येतवारिणोष्णेनवामयेत् ॥ स्नेहस्याजीर्णशङ्कायांपिबेदुष्णोदकन्नरः। तदोद्गारोभवेच्छुद्धोभक्तंप्रतिरुचिस्तथा । स्नेहेनपैत्तिकस्याग्निर्यदातीक्ष्णतरीकृतः । तदास्योदीर्य्यतेतृष्णांविषमान्तस्यपाययेत् ॥ शीतलंपायसंतेनतृष्णातस्यप्रशाम्यति ॥ १२९ ॥

स्नेह से द्वेष करनेवाले बालक, वृद्ध, सुकुमार, कृश और तृषा से व्याकुल पुरुषोंको उष्णकाल में भात के साथ स्नेह पान कराना चाहिये अधिक तिलयुक्त और थोड़ेचावलयुक्त यवागूको घीके साथ कुछ उष्ण पान करने से बहुत शीघ्र स्नेहन होताहै दुहनेके पात्रमें शक्कर और घी छोड़कर गौ को दुहै है उसके पीने से रूखा पुरुष शीघ्रही स्निग्ध होजाता है नियमरहित आचार से अथवा अधिकता से जो स्नेह न पचे अथवा देरमें पचे तो उष्णजल पीकर वमनकरना चाहिये स्नेहके अजीर्णहोने के सन्देह में उष्णजल पान करना चाहिये इससे डकारकी शुद्धता और अन्न में रुचिहोतीहै जोस्नेह से पित्त प्रकृतिवाले पुरुषकी अग्नि तीक्ष्ण होकर अत्यन्त तृषाको उत्पन्नकरे तो शीतलजल पिलाकर वमन कराने से तृषा निवृत्त होतीहै ॥ १२९ ॥

अजीर्णीवर्जयेत्स्नेहमुदरीतरुणज्वरी ॥ दुर्बलोऽरोचकीस्थूलोमूर्च्छितोमेहपीडितः। दत्तवस्तिर्विरक्तश्चवान्तस्तृष्णाश्रमान्वितः । अकालप्रसवानारीदुर्दिनेचविवर्जयेत् ॥ स्वेद्यःसंशोध्यमद्यस्त्रीव्यायामासक्तचिन्तकाः॥वृद्धबालकृशारूक्षाःक्षीणास्राःक्षीणरेतसः। वातार्त्तास्तिमिरार्त्तायेतेषांस्नेहनमुत्तमम् ॥ वातानुलोम्यदीप्ताऽग्निर्वर्चःस्निग्धमसंहतम् ॥ मृदुस्निग्धांगताग्लानिःस्नेहद्वेषोऽथलाघवम् ॥ विमलेन्द्रियतासम्यक्स्निग्धेरू

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्षेविपर्य्ययः। भक्तद्वेषोमुखस्रावोगुदेदाहःप्रवाहिका ॥ तन्द्रातीसारषण्ढत्वंमृशंस्निग्ध स्यलक्षणम् । रूक्षस्यस्नेहनंस्नेहैरतिस्निग्धस्यरूक्षणम् ॥ १३० ॥

अजीर्ण, उदर, नवीन, ज्वर, दुर्बलता, अरुचि, स्थूलता, मूर्च्छा,प्रमेह,तृषा, तथाश्रमसे युक्त, वमन किया हुआ, विरेचनकियाहुआ, जिसको वस्ति दीगई हो ऐसा पुरुष और अकालमें प्रसूताहुई स्त्री स्नेह पान न करे और दुर्दिनमें भी स्नेह पान न करे स्वेदन तथा संशोधन करने के योग्य मतवाले स्त्रियोंमें आसक्त व्यायाम करनेवाले वृद्ध,बालक,कृश,रूखे,क्षीणवीर्य तथा रुधिरवाले वातसे व्याकुल और तिमिररोगवाले पुरुषों को स्नेहपान विशेष उपकारी होता अच्छे प्रकारसे स्नेहपान कियेहुए पुरुषकी वायुकी शुद्धता अग्नि की दीप्ति कोष्ठकी शुद्धता शरीर की कोमलता तथा स्निग्धता ग्लानि स्नेहसे द्वेष हलकापन और इन्द्रियों की निर्मलता होतीहै और रूखे पुरुष के इस्से विपरीत लक्षण होतेहैं अधिक स्नेहपान करनेसे भोजनमें अरुचि मुखका बहना गुदा में दाह प्रवाहिका तन्द्रा अतीसार और पौलापन होताहै रूखेको स्निग्ध करना और बहुत स्निग्धको रूखा करना चाहिये ॥ १३० ॥

श्यामाकचणकाद्यैश्चतक्रपिण्याकसक्तुभिः । दीप्ताग्निःशुद्धकोष्ठश्चपुष्टधातुर्दृढेन्द्रियः ॥ निर्जरोबलवर्णाढ्यःस्नेहसेवीभवेन्नरः । स्नेहेऽव्यायामसंशीतवेगाघातप्रजागरान् ॥ दिवास्वप्नमभिष्यन्दिरूक्षान्नंचविवर्जयेत् ॥ १३१ ॥

सामा,चने,मट्ठा, खल अथवा सत्तू आदिकोंके साथ स्नेहपान करने से अग्नि की दीप्ति, कोष्ठकी शुद्धता,धातुओंकी पुष्टता,इन्द्रियों की दृढता,वृद्धावस्थाकानाश,बलकी अधिकता और वर्णकी उत्तमताहोतीहै स्नेहपान करके व्यायाम, शीत, वेगों का रोकना, रात्रि में जागरण,दिनकासोना और अभिष्यन्दी तथा रूखा अन्न त्याग करना चाहिये ॥ १३१ ॥ अथ पञ्चकर्माणि ॥

प्रथमंवमनंपश्चाद्विरेकश्चानुवासनम् । एतानिपञ्चकर्माणिनिरूहोनावनंतथा १३२॥

पंचकर्म्म ॥

प्रथम वमन फिर विरेचन फिर अनुवासन फिर निरूहवस्ति और सब के पीछे नासलेना यह पांचकर्म्म हैं ॥ १३२ ॥ अथ वमनविधिः ॥

शरत्कालेवसन्तेचप्रावृट्कालेचदेहिनाम् । वमनंरेचनंचैवकारयेत्कुशलोभिषक् ॥ बलवन्तंकफव्याप्तंहल्लासादिनिपीडितम् ॥ तथावमनसात्म्यञ्चधीरचित्तञ्चवामयेत् ॥ विषदोषेस्तन्यरोगेमन्देऽग्नौश्लीपदेऽर्बुदे॥ हृद्रोगेकुष्ठवीसर्पेमेहाजीर्णभ्रमेषुच॥ विदारिकापचीकासश्वासपीनसवृद्धिषु ॥ अपस्मारेज्वरोन्मादेतथारक्तातिसारिषु ॥ नासतात्वोष्ठपाकेषुकर्णस्रावेऽधिजिह्वके ॥ गलशुण्ड्यामतीसारेपित्तश्लेष्मगदेतथा । मेदोगदेऽरुचौचैववमनंकारयेद्भिषक् ॥ स्तन्यरोगेदुष्टदुग्धजनितेबालस्यरोगे ॥ १३३ ॥

वमन की विधि ॥

चतुर वैद्य मनुष्योंको शरद, वसन्त और प्रावृट् ऋतु में वमन तथा विरेचन करावें बलवान् कफसे व्याप्त,मतली आदिरोगों से व्याकुल वमनमें अभ्यास रखने वाले और धीर चित्तवाले पुरुषों को वमन कराना चाहिये विषदोष,दुग्धरोग,मन्दाग्नि, श्लीपद, अर्बुद, हृदय के रोग, कुष्ठ, वीसर्प, प्रमेह, अजीर्ण,भ्रम,विदारिका,अपची,खांसी,श्वास,पीनस, वृद्धि, मृगी, ज्वर, उन्माद, रक्तातीसर, नासिका

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पकना तालु और ओष्ठका पकना, कानका बहना, अधिजिह्वक, गलशुण्डी, अतीसा, कफ तथा पित्तके रोग, मेदरोग और अरुचि में वमन कराना श्रेष्ठहै ॥ १३३ ॥

नवाम्यनीयस्तिमिरीनगुल्मीनोदरीकृशः ॥ नातिवृद्धोगर्भिणीचनस्थूलोनक्षतातुरः ॥ मदार्तोबालकोरूक्षःक्षुधितश्चनिरूहितः ॥ उदावर्त्त्यूर्ध्वरक्तीचदुश्छर्द्यःकेवलानिली ॥ पाण्डुरोगीकृमीव्याप्तःपठनात्स्वरघातवान् ॥ एतेऽप्यजीर्णव्यथितावाम्यायेविषपीडिताः । कफव्याप्ताश्चतेवास्यामधुकक्वाथपानतः ॥ ऊर्ध्वरक्तीयस्यनासाक्षिकर्णास्यमार्गैरक्तेप्रवर्त्ततेसः । भुक्तरूक्षकर्कशद्रव्याद्दुश्छार्द्यःमधुकस्थानेमधुकेतिद्वितीयःपाठः ॥ १३४ ॥

तिमिर, गुल्म (बायगोला) तथा उदररोगवाले, कृश, अत्यन्त वृद्ध, गर्भिणी स्त्री, स्थूल, क्षतसे व्याकुल, मदसे पीडित, बालक, रूखे, क्षुधायुक्त, निरूहवस्तियुक्त, उदावर्त्त तथा ऊर्ध्व रक्तवाले, केवलवात रोगी, रूखी अथवा कठोरवस्तु भोजन करनेवाले, पाण्डुरोगी, कृमियुक्त, वातके द्वारा स्वरभङ्ग वाले इन पुरुषोंको वमन न कराना चाहिये और इन्हीं लोगों से युक्त भी अजीर्ण तथा विषसे पीडित और कफ से व्याप्त होय तो मौहेके काढ़ेसे वमन कराना चाहिये ॥ १३४ ॥

सुकुमारंकृशम्बालंवृद्धंभीरुञ्चवामयेत् । पाययित्वायवागूंवाक्षीरतक्रदधीनिच ॥ असात्म्यैःश्लेष्मलैर्भोज्यैर्दोषानुत्क्लेश्यदेहिनाम् । स्निग्धस्विन्नायवमनंदत्तंसम्यक्प्रवर्त्तते । वमनेषुचसर्वेषुसैन्धवंमधुवाहितम् । बीभत्संवमनंदद्याद्विपरीतंविरेचनम् ॥ बीभत्समरुच्यंविपरीतंरुच्यम् ॥ १३५ ॥

सुकुमार, कृश, बालक, वृद्ध और भयभीत पुरुष को यवागू, दूध, मट्ठा अथवा दही पिलाकर वमन करानी चाहिये स्निग्ध और स्वेदनयुक्त पुरुष को असात्म्य और कफकारी भोजनों से दोषोंको उखाड़कर वमन कराने से अच्छे प्रकार दोषनिकलजातेहैं संपूर्ण वमन की औषधियों में सेंधानोन और सहत मिलाना हितकारीहै वमन कराने वाली औषध अरुचिकारी और विरेचनकारी औषध रुचियुक्त देनी चाहिये ॥ १३५ ॥

क्वाथ्यद्रव्यस्यकुडवंश्रपयित्वाजलाढके । अर्द्धभागावशिष्टञ्चवमनेष्ववचारयेत् ॥ क्वाथपानेनवप्रस्थाज्येष्ठामात्राप्रकीर्त्तिता । मध्यमाषण्मताप्रोक्तात्रिप्रस्थाचकनीयसी ॥ वमनेचविरेकेचतथाशोणितमोक्षणे । अर्द्धत्रयोदशपलंप्रस्थमाहुर्मनीषिणः ॥ अर्द्धत्रयोदशपलंसार्द्धषट्कम् । कल्कचूर्णावलेहानांत्रिपलंमात्रयोत्तमम् । मध्यमंद्विपलंविद्यात्कनीयस्तुपलंभवेत् । वमनेचाष्टवेगास्युःपित्तान्ताउत्तमास्तुते । षड्वेगामध्यमावेगाश्चत्वारस्त्ववरेमताः ॥ कफंकटुकतीक्ष्णोष्णैःपित्तंस्वादुहिमैर्जयेत् । सस्वादुलवणाम्लोष्णैःसंसृष्टंवायुनाकफम् ॥ कृष्णांकट्फलंसिन्धुंचकफेकोष्णजलैःपिबेत् । पटोलवासानिम्बांश्चपित्तेशीतजलैःपिबेत् ॥ कट्फलंमयनफलम् । सश्लेष्मवातपीडायांसक्षीरंमदनंपिबेत् । अजीर्णेकोष्णपानीयंसिन्धुंपीत्वावमेत्सुधीः ॥ मदनं(मयनफलम्)वमनंपाययित्वातुजानुमात्रासनेस्थितम् । कण्ठमेरण्डनालेनस्पृष्टशन्तंवामयेद्भिषक् ॥ प्रसेकोहृद्ग्रहःकोठःकण्डूदुश्छर्दितेभवेत् । अतिवान्तेभवेत्तृष्णाहिक्कोद्गारोविसंज्ञता ॥ जिह्वानिःसरणंचाक्ष्णोर्व्यावृ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्तिर्हनुसंहतिः।रक्तछर्दिःष्ठीवनञ्चकण्ठपीडाचजायते॥हनुसंहतिर्हन्वोरमिलनम् १३६॥
क्वाथ की औषध को एककुडवमात्र लेकर आढकभर जलमें औटावे जबआधाबाकीरहे तब उसे काम में लावे वमन के क्वाथ की बडीमात्रा ९ प्रस्थ मध्यममात्रा ६ प्रस्थ और छोटीमात्रा ३ प्रस्थकी होतीहै वमन विरेचन और फस्त लेनेमें साढेछः पलका एक प्रस्थ लियाजाताहै कल्क, चूर्ण और अवलेहकी बडीमात्रा ३ पलकी मध्यममात्रा २ पलकी और छोटीमात्रा एकपलकी होतीहै वमनमें आठवार वेग होना उत्तमहै इनके अन्तमें पित्तगिरताहै छःवारवेगहोनामध्यम और चारवार वेगहोना हीन गिना जाताहै वमनकेद्वारा कफको कटु, तीक्ष्ण तथा उष्ण वस्तुओंसे पित्तको मधुर तथा शीतल वस्तुओंसे और वातयुक्त कफको मधुर लवण खट्टी तथा उष्ण वस्तुओंसे नाशकरे कफमें पीपल मैनफल तथा सैंधेनोनको उष्ण जलसे पान करके पित्तमें परवल वांसा तथा नींबको शीतल जलसे पान करके कफयुक्त वातमें मैनफल को दूध के साथ पान करके और अजीर्ण में सैंधेनोन युक्त गरमजलको पीकर वमनकरे वमन की औषधिको पिलाके उकडू बैठाकर और गलेको रेंडीकी नालसे स्पर्श कराकर वमन करावे वमन के बिगड जानेसे लारकाबहना हृदय के रोग कोढ और खुजली होजातीहै अत्यन्त वमनकरने से तृषा हिचकी डकार अज्ञानता जिह्वाकानिकालना नेत्रों का उलटनापलटना जावडोंका न मिलना वमन में रुधिरका गिरना थूकना और कंठमें पीडा यह लक्षण होतेहैं ॥ १३६ ॥

वमनस्यातियोगेतुमृदुःकुर्य्याद्विरेचनम्। वमनेनप्रविष्टायांजिह्वायांकवलःग्रहः॥ स्निग्धाम्ललवणैर्युक्तःघृतक्षीररसैर्हिताः।(रसैर्मांसरसैः) फलान्यम्लानिखादेयुस्तस्यचान्येऽग्रतोनराः॥ निःसृतान्तुतिलद्राक्षाकल्कलिप्तांप्रवेशयेत्। (निःसृतांजिह्वां) व्यावृत्तेऽक्षिणघृताभ्यक्तेपीडनञ्चशनैःशनैः। हनुमोक्षेस्मृतःस्वेदोनस्यञ्चश्लेष्मवातहृत् ॥ रक्तपित्तविधानेनरक्तष्ठीवमुपाचरेत् ॥ १३७॥

वमनकी अधिकतामें हलका विरेचन देनाचाहिये और वमनकेद्वारा जिह्वाके भीतर प्रविष्टहोजाने पर स्निग्ध खट्टे लवणयुक्त हृदयको हित घी दूध और मांस के रस के द्वारा ग्रास बनाकर मुख में रक्खे और दूसरे पुरुष उसके सन्मुख खट्टे फलों को खायँ जो वमन के वेग से जिह्वा बाहर निकल आईहो तो तिल और मुनक्काओं को पीसकर जिह्वा में लेपकरके भीतर को प्रविष्टकरे जो वमनसे नेत्रों में बाधा पहुंचे तो घी लगाकर धीरे २ दबावे जो वमन से दोनोंजावडे परस्पर न मिलतेहों तो कफ वातनाशक स्वेद और नासका प्रयोग करना चाहिये और वमनसे जो मुख के द्वारा रुधिर निकलताहो तो रक्त पित्त की विधि से शान्त करना चाहिये ॥ १३७ ॥

धात्रीरसाञ्जनोशीरलाजाचन्दनवारिभिः ॥ मन्थंकृत्वापाययेच्चसघृतंक्षौद्रशर्करम् । शाम्यन्त्यनेनतृष्णाद्यारोगाश्छर्दिसमुद्भवाः॥ हृत्कण्ठशिरसांशुद्धिर्दीप्ताग्नित्वञ्चलाघवम्। कफपित्तविनाशश्चसम्यग्वान्तस्यलक्षणम् ॥ ततोऽपराह्णेदीप्ताग्निंमुद्गषष्टिकशालिभिः। हृद्यैश्चजांगलरसैःकृत्वायूषञ्चभोजयेत् ॥ तन्द्रानिद्रास्यदौर्गन्ध्यंकण्डूञ्चग्रहणींविषम्। सुवान्तस्यनपीडायैभवन्त्येतेकदाचन ॥ अजीर्णशीतपानीयंव्यायाममैथुनंतथा। स्नेहाभ्यंगञ्चरोषञ्चदिनमेकंसुधीस्त्यजेत् ॥ (इतिवमनाधिकारः) ॥ १३८॥

आमला, रसौत, खस, खील, चन्दन और सुगन्धवाला इनको मथकर घी, सहत और शक्कर मिला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के पीने से वमन से उत्पन्न होनेवाले तृषा आदिक सम्पूर्ण उपद्रव शान्त होतेहैं अच्छे प्रकारसे वमन-नहोनेपर हृदय कण्ठ और शिरकी शुद्धता, अग्निकी दीप्ति, हलकापन और कफ पित्तका नाशहोताहै फिर अच्छी तरहसे वमन होजाने पर तीसरे पहर दीप्ताग्नि पुरुषको मूंग,साठी और चावलोंके साथ जंगली जीवोंके मांसका मनोहर जूस बनाकर पिलाना चाहिये तन्द्रा,निद्रा,मुखकी दुर्गन्धि, खुजली, ग्रहणी और विष यह सब अच्छी रीतिसे वमन करने वाले को पीड़ा नहीं देतेहैं वमनके उपरान्त एक दिन अजीर्णकारी वस्तु, शीतल जल, व्यायाम, मैथुन,तैलादि लगाना और क्रोध का त्यागकरे इति वमनाधिकारः ॥१३८॥ अथ विरेचनविधिः ॥

स्निग्धस्विन्नायवान्तायदद्यात्सम्यग्विरेचनम् । अवान्तस्यत्वधःस्रस्तोग्रहणींछादये त्कफः ॥ मन्दाग्निंगौरवंकुर्य्याज्जनयेद्वाप्रवाहिकाम् । अथवापाचनैरामंबलासंपरिपाच येत् ॥ ऋतौवमन्तेशरदिदेहशुद्धौविरेचयेत् । अन्यदात्ययिकेकार्य्येशोधनंशीलयेद् बुधः ॥ आत्ययिके प्राणसङ्कटे । पित्तेविरेचनंयुञ्ज्यादामोद्भूतेगदेतथा । उदरेचतथा ध्मानेकोष्ठशुद्धौविशेषतः॥ दोषाःकदाचित्कुप्यन्तिजितालङ्घनपाचनैः । शोधनैःशोधिता येतुननेषांपुनरुद्भवः ॥ बालोवृद्धोभृशंस्निग्धक्षतक्षीणोभयान्वितः । श्रान्तस्तृषार्त्तःस्थूल श्चगर्भिणीचनवज्वरी॥नवप्रसूतानारीचमन्दाग्निश्चमदात्ययी । शल्यार्द्दितश्चरूक्षश्च नविरेच्याविजानता ॥ १३९ ॥ विरेचनकी विधि ॥

स्नेहन, स्वेद और वमनके उपरान्त विरेचन देना चाहिये विना वमन कराये विरेचन देनेसे कफ नीचे जाकर ग्रहणी को आच्छादित करके मन्दाग्नि शरीर का भारीपन अथवा प्रवाहिका को उत्पन्न करताहै अथवा पाचन औषधों से कच्चे कफ के परिपाक होने पर विरेचन दे वसन्त और शरद् ऋतुमें देहकी शुद्धता के लिये विरेचन दे और प्राणोंके संकट आजाने पर अन्य ऋतु-ओं में भी विरेचन देना चाहिये पित्तमें आमसे उत्पन्न हुए रोग में उदर तथा आध्मान रोग में और कोष्ठकी शुद्धता के लिये विरेचन देना चाहिये लंघन और पाचन के द्वारा शान्त हुए दोष चाहे फिर कुपित होजायँ परन्तु वमन आदिके द्वारा निकाले हुए दोष फिर नहीं उत्पन्न होतेहैं बालक, वृद्ध, अत्यन्त स्निग्ध,क्षतसे क्षीण,भयभीत, श्रान्त, कृशित,स्थूल, गर्भिणी स्त्री, नवीन ज्वरवाला, नवीन प्रसूतास्त्री, मन्दाग्निवाला, मदात्यय से युक्त, शस्त्रसे पीड़ित और रूखा इन सबको कदापि विरेचन न देना चाहिये ॥ १३९ ॥

जीर्णज्वरीगरव्याप्तोवातरोगीभगन्दरी । अर्शःपाण्डूदरग्रन्थिहृद्रोगारुचिपीडिताः । योनिरोगप्रमेहार्त्तोगुल्मप्लीहव्रणार्द्दितः । विद्रधिच्छर्दिविस्फोटविषूचीकुष्ठसंयुताः ॥ कर्ण नासाशिरोवक्रगुदमेढ्रामयान्विताः।प्लीहशोथाक्षिरोगार्त्ताःकृमिक्षारानिलार्द्दिताः॥शूलिनो मूत्रघातार्त्ताविरेकार्हानरामताः॥बहुपित्तोमृदुःकोष्ठोबहुश्लेष्माचमध्यमः ॥ बहुवातःक्रूर कोष्ठोदुर्विरेच्यःसकथ्यते । मृद्वीमात्रामृदौकोष्ठेमध्यकोष्ठेचमध्यमा॥ क्रूरेतीक्ष्णामताद्रव्यै मृदुमध्यमतीक्ष्णकैः॥मृदुर्द्राक्षापयश्चञ्चुतैलैरपिविरिच्यते॥ मध्यमस्त्रिवृतातिक्ताराजवृक्षै र्विरिच्यते । क्रूरार्कपयसाहेमक्षीरीदन्तीफलादिभिः ॥ चञ्चुतैलमैरण्डतैलम् । राजवृक्षः ।

(१) क्रूरःस्नुकपयसेतिवापाठः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धनवहेरा।स्नुक्षीरी। चोकदन्तीफलम् बृहदन्तीफलम्। जयपालेतिप्रसिद्धम् ॥ १४०॥

जीर्णज्वर, गरदोष, वातरोग, भगन्दर, बवासीर, पाण्डु, उदरग्रन्थि, हृदयके रोग, अरुचि, योनिरोग, प्रमेह, गुल्म, प्लीहा, व्रण, विद्रधि, छर्दि, विस्फोटक, विसूचिका, कुष्ठ, कान तथा नासिकाके रोग, शिर मुख गुदा तथा लिङ्ग के रोग, प्लीहा की सूजन, नेत्ररोग, कृमि, क्षार तथा वातकी पीडा, शूल और मूत्राघात इनसंपूर्ण रोगों में विरेचन देना उचितहै अधिक पित्तवाले का कोष्ठ कोमल और अधिक कफवालेका मध्यम और अधिक वातवाले कोष्ठ क्रूर (कठिनता से विरेचन देनेके योग्य) होताहै कोमल कोष्ठ में कोमल दस्तावर औषधों की हलकी मात्रा मध्यमकोष्ठ में मध्यम दस्तावर औषधियों की मध्यम मात्रा और क्रूरकोष्ठमें तीक्ष्ण दस्तावर औषधियों की बडीमात्रा देनी चाहिये दाख, रेडीकातेल और दूधके द्वारा कोमल कोष्ठका विरेचन होताहै निसोथ, कुटकी और अमलतास के द्वारा मध्यम कोष्ठ का विरेचन होताहै और आकका दूध या सेहुँडका दूध चोक और जमालगोटाके द्वारा क्रूरकोष्ठ का विरेचन होताहै ॥ १४० ॥

मात्रोत्तमाविरेकस्यत्रिंशद्वेगैःकफान्तिकः। वेगैर्विंशतिभिर्मध्याहीनोक्तादशवेगिका॥ द्विपलंश्रेष्ठमाख्यातंमध्यमंचपलंभवेत्। पलार्द्धञ्चकषायाणांकनीयस्तुविरेचनम् । कल्क मोदकचूर्णानांकर्षमध्वाज्यलेहतः। कर्षद्वयंपलंवापिवयोरोगाद्यपेक्षया ॥ पित्तोत्तरेत्रिवृ च्चूर्णंद्राक्षाक्काथादिभिःपिबेत्। त्रिफलाक्काथगोमूत्रैःपिबेद्व्योषंकफार्द्दितः॥ त्रिवृत्सैन्धव शुण्ठीनांचूर्णमम्लैःपिबेन्नरः। वातार्द्दितोविरेकायजांगलानांरसेनवा॥ एरण्डतैलंत्रिफ लाक्काथेनद्विगुणेनवा। युक्तंपीतंपयोभिर्वानचिरेणविरिच्यते॥शीघ्रमेवविरिच्यतइत्यर्थः। त्रिवृताकौटजंबीजंपिप्पलीविश्वभेषजम्। समृद्वीकारसंक्षौद्रंवर्षाकालेविरेचनम् ॥ त्रिवृ द्दुरालभामुस्तशर्करोदीच्यचन्दनम्। द्राक्षाम्बुनासयष्ट्याह्वंशीतलञ्चघनात्यये॥उदीच्य म्बालाघनात्ययेशरदि। पिप्पलीनागरंसिन्धुंश्यामांत्रिवृतयासह॥ लिह्यात्क्षौद्रेणशिशि रेवसन्तेचविरेचनम्।श्यामाकृष्णसारण्ड॥त्रिवृताशर्करातुल्याग्रीष्मकालेविरेचनम्१४१

विरेचन की जिस मात्रा से तीस दस्तआवें वह उत्तम है इसके अन्तमें कफ गिरताहै मध्यममात्रा में बिस दस्त और हीनमात्रा में दश दस्त आते हैं और दस्तावर औषधियों के क्काथकी पूरी मात्रा दोपल मध्यममात्रा एकपल और हीनमात्रा आधे पलकी होती है कल्क मोदक और चूर्ण एकतोले घी और सहत के साथ दोकर्ष अथवा एकपल रोगी की अवस्था और रोग आदि को विचार कर देनी चाहिये पित्त के कोपमें मुनक्का आदिके काढे के साथ निसोथका चूर्ण कफके कोपमें त्रिफला के क्काथ तथा गोमूत्र के साथ त्रिकुटा का चूर्ण और वात के कोप में खटाई अथवा जंगली जीवोंके मांस के रस के साथ निसोथ सेंधानोन तथा सोंठके चूर्ण को अथवा द्विगुण त्रिफला के क्काथ तथा दूधके साथ रेडीकेतेल को पिये इनसे शीघ्रही विरेचन होताहै वर्षाकाल में निसोथ, इन्द्रजौ, पीपल और सोंठ को मुनक्का के काढेके साथ सहत मिलाकर विरेचन के लिये पिये शरदृतु में विरेचन के लिये निसोथ, जवासा, नागरमोथा, शक्कर, सुगन्धबाला, लालचन्दन और मुलहठी को मुनक्काके काढेके साथ पानकरे हेमन्तऋतु में विरेचन के लिये निसोथ, चीता, पाढर, जीरा, सरल, वच और चोक यह सब गरमजलके साथ चूर्ण करके पिये शिशिर तथा वसन्तऋतु में पीपल, सोंठ, सेंधानोन, काला निसोथ और सफ़ेद निसोथ इनसबके चूर्णको सहतके साथ चाटे और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गीष्मऋतुमें विरेचन के लिये निसोथका चूर्ण और शक्कर समभाग मिलाकर सेवन करे ॥ १४१ ॥

अभयामरिचंशुण्ठीविडंगामलकानिच । पिप्पलीपिप्पलामूलंत्वक्पत्रंमुस्तमेवच ॥ एतानिसमभागानिदन्तीतुत्रिगुणाभवेत् । त्रिवृताष्टगुणाज्ञेयाषड्गुणाचात्रशर्करा ॥ मधुनामोदकान्कृत्वाकर्षमात्रान्प्रमाणतः । एकैकंभक्षयेत्प्रातःशीतञ्चानुपिबेज्जलम् ॥ तावद्विरिच्यतेजन्तुर्यावदुष्णंनसेवते । पानाहारविहारेषुभवेन्नियन्त्रणःसदा ॥ विषमज्वरमन्दाग्निपाण्डुकासभगन्दरान् । पृष्ठपार्श्वोरुजघनजङ्घोदररुजंजयेत् । स्नेहाभ्यङ्गञ्चरोषञ्चदिनमेकंसुधीस्त्यजेत् । सततंशीलनादेवपलितानिप्रणाशयेत् । अभयामोदकाह्येतेरसायनवराःस्मृताः ॥ इति अभयादिमोदकः ॥ १४२ ॥

हड,मिर्च,सोंठ,बायबिडंग,आंवला,पीपल,पीपरामूल, दालचीनी, तेजपात, नागरमोथा यह संपूर्ण समभाग इनका तिगुना जमालगोटा, अठगुना निसोथ और छःगुनी शक्कर मिलाकर सहत के साथ दो २ तोलेके मोदकबनावै प्रातःकाल उठकर शीतल जलके अनुपानसे एक २ मोदक रोजखाय जब तक गरम जल न पियेगा तबतक दस्त आते रहेंगे इन मोदकोंके सेवनमें पान आहार और विहारकी कोई रोक नहीं है विषमज्वर, मन्दाग्नि, पाण्डु, खांसी, भगन्दर, पीठ तथा पसलियोंकी पीडा जङ्घा पिण्डली नितम्ब तथा उदरकीपीडा इन सब रोगोंका इसके सेवन से नाश होताहै इनको खाकर एक दिन तेलमर्दन और क्रोध न करे इनके सदैव सेवन करनेसे श्वेत बाल काले होजाते हैं यह अभयादि मोदक रसायनोंमें श्रेष्ठ कहे गये हैं इति अभयादि मोदक ॥ १४२ ॥

पीत्वाविरेचनंशीतजलैःसंसिच्यचक्षुषी । सुगन्धिकिञ्चिदाघ्रायताम्बूलंशीलयेद्बुधः ॥ निर्वातस्थोनवेगांश्चधारयेन्नशयीतच । शीताम्बुनस्पृशेत्क्वापिकोष्णनीरंपिबेन्मुहुः ॥ बलासौषधपित्तानिवायुर्वान्तेयथाव्रजेत् । रेकात्तथामलंपित्तंभेषजंचकफोव्रजेत् ॥ १४३ ॥

विरेचन औषधको पीकर शीतल जलसे नेत्रोंको सींचे और कोई सुगन्धित वस्तु सूंघकर तांबूल खाके वातरहित स्थान में बैठे और वेगोंका धारण शयन तथा शीतल जलका स्पर्श न करे वारंवार गरम जल पिये जैसे वात वमनके अन्तमें कफ पित्त और औषधियों से मिलजातीहै इसी प्रकार विरेचनके अन्तमें मल, पित्त और औषधियों के साथ कफ मिल जाता है ॥ १४३ ॥

दुर्विरक्तस्यनाभेस्तुस्तब्धताकुक्षिशूलरुक् । पुरीषवातसङ्गश्चकण्डूमण्डलगौरवम् ॥ विदाहोऽरुचिराध्मानंभ्रमश्छर्दिश्चजायते । तंपुनःपाचनैःस्नेहैःपक्वास्निग्धन्तुरेचयेत् ॥ तेनास्योपद्रवायान्तिदीप्ताग्निर्लघुताभवेत् । विरेकस्यातियोगेनमूर्च्छाभ्रंशोगुदस्यच ॥ शूलंकफातियोगःस्यान्मांसधावनसन्निभम् । मेदोनिभञ्जलाभासंरक्तञ्चापिविरिच्यते ॥ तस्यशीताम्बुभिःसिक्त्वाशरीरंतण्डुलाम्बुभिः । मधुमिश्रैस्तथाशीतैःकारयेद्वमनंमृदु ॥ सौसहकारत्वचःकल्कोदध्नासौवीरकेणवा । पिष्ट्वानाभिप्रलेपेनहन्त्यतीसारमुल्बणम् ॥ सौवीरन्तुयवैरामैःपक्वैर्वानिस्तुषैःकृतैः । सौवीरंसन्धानम् । अजाक्षीरंरसञ्चापिवैष्किरंहारिणंतथा । शालिभिःषष्टिकैस्तुल्यैमसूरैर्वापिभोजयेत् । वर्तिकालावविष्किरकपिञ्जलकतित्तिराः ॥ चकोरक्रकराद्याश्चविष्किराःसमुदाहृताः । कपिञ्जलइतिख्यातोलोकेकपिश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तित्तिराः ॥ क्रकरः । कण्टइतिलोके ॥ हारिणस्ताम्रवर्णःस्यान्मृगः । शीतैःसंग्राहिभिर्द्रव्यैःकुर्यात्संग्रहणंभिषक् ॥ १४४ ॥

जिसको अच्छे प्रकार से विरेचन नहीं होते हैं उसके नाभि का जकड़ना, कोख में पीड़ा, मल तथा वायुका न निकलना, खुजली, चकत्ते, भारीपन, बिदाह, अरुचि, आध्मान, भ्रम और छर्दि होतीहै ऐसी दशा में स्निग्ध तथा पाचक औषधियों से दोषों को परिपाककरके फिर विरेचन देना चाहिये इसरीति से उपद्रवों का नाश अग्नि की दीप्ति और हलकापन होताहै विरेचनकी अधिकतामें मूर्च्छा, गुदभ्रंश, कफका बहुत निकलना, शूल और मांसके धोवन मेद जल अथवारुधिरके समान दस्त होता है ऐसी दशामें रोगीके शरीरमें शीतल जल सींचकर चावलों के शीतल जल में सहत मिलाकर पान कराके कुछ वमन करावे अथवा दही (सौवीर कच्चे अथवा पक्के भूसी सहित यवोंको सन्धान करके जो वस्तु बनती है उसे सौवीर कहते हैं) के साथ आम की छाल को पीसकर नाभि पर लेप करे इस्से बहुत बढ़ा हुआ भी अतीसार शान्त होताहै और बकरी का दूध विष्किर (बटेर लवा कपिशवर्ण तीतर चकोर और कराट आदिक विष्किर कहलातेहैं) पक्षी अथवा लालमृगके मांसकारस चावल साठी और मसूरके साथ पानकरावे और शीतल तथा ग्राही वस्तुओंसे दस्तोंको रोंके ॥ १४४ ॥

लाघवेमनसस्तुष्टावनुलोमंगतेऽनिले । सुविरिक्तंनरंज्ञात्वापाचनंपाययेन्निशि । इन्द्रियाणांबलंबुद्धेःप्रसादोवह्निदीप्तिता । धातुस्थैर्य्यंवयस्थैर्य्यम्भवेद्रेचनसेवनात् ॥ प्रवातसेवांशीताम्बुस्नेहाभ्यंगमजीर्णताम् । व्यायामंमैथुनञ्चैवनसेवेतविरेचितः ॥ शालिषष्टिकमुद्गाद्यैर्यवागूंभोजयेत्कृताम् । जङ्गालविष्किराणांवारसैःशाल्योदनंहितम् । हरिणैणकुरङ्गर्ष्यवातायुमृगमात्रकाः । राजीवःपृषतश्चैवजङ्गालाःशरभादयः ॥ १४५ ॥

शरीर का हलकापन मनकी प्रसन्नता और वायु का नीचे जाना इनवातों से अच्छी रीति का विरेचन हुआ जान के रात्रि के समय पाचन औषधियों का पान करावे विरेचन के सेवन से इन्द्रियों में बल, बुद्धिकी प्रसन्नता, अग्निकी दीप्ति और धातु तथा अवस्था की स्थिरता होती है और विरेचन वस्तुका सेवन करनेवाला अत्यन्त वायु शीतल जल तैलमर्दन अजीर्णकारी वस्तुओंका भोजन व्यायाम तथा मैथुन का त्याग करदे विरेचन के उपरान्त चावल साठी और मूंग की यवागू (अथवा जङ्गाल हरिण, एण, कुरंग, ऋष्य, वातायु, राजीव, पृषत और शरभादिक जङ्गाल कहलातेहैं) और विष्किर जीवों के मांस के रस के साथ भात खिलावे ॥ १४५ ॥

अथ स्नेहवस्तिविधिः ॥

वस्तिर्द्विधानुवासाख्योनिरूहश्चततःपरम् । यःस्नेहोदीयतेसःस्यादनुवासननामकः ॥ कषायक्षीरतैलैर्योनिरूहःसनिगद्यते । वस्तिभिर्दीयतेयस्मात्तस्माद्वस्तिरितिस्मृतः ॥ वस्तिभिःमृगादीनांमत्राशयैः तत्रानुवासनाख्योहिवस्तिर्यःसोऽत्रकथ्यते । अनुवासनभेदश्चमात्रावस्तिरुदीरितः ॥ पलद्वयन्तस्यमात्रातस्मादर्द्धापिवाभवेत् । अनुवासस्तुरूक्षःस्यात्तीक्ष्णाग्निःकेवलानिली ॥ १४६ ॥

अथ स्नेहवस्तिविधि ॥

वस्ति दो प्रकारकी होती है एक अनुवासन दूसरी निरूह केवल स्नेहके द्वारा जो वस्ति दीजाती

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है वह अनुवासन और क्वाथ दूध तथा तेल के द्वारा जो वस्ति दीजाती है उसको निरूह कहते हैं वस्ति (मृगादिकों के मूत्राशय) द्वारा इसका व्यवहार कियाजाताहै इसलिये इसको वस्ति क्रिया कहते हैं इनमें से प्रथम अनुवासन को कहते हैं मात्रावस्ति अनुवासनवस्ति का भेद कहीगई है इस की मात्रा दो अथवा एक पलकी होती है रूखे दीप्ताग्निवाले और केवल वातकी प्रबलतावाले पुरुषों को अनुवासन हितहै ॥ १४६ ॥

नानुवास्यस्तुकुष्ठीस्यान्मेहीस्थूलस्तथोदरी। नास्थाप्यानानुवास्याश्चजीर्णोन्मादतृडर्दिताः॥ शोथमूर्च्छारुचिभयश्वासकासक्षयातुराः॥ १४७॥

कुष्ठ प्रमेह स्थूलता और उदर रोगवालों को अनुवासन हितकारी नहीं है अजीर्ण, उन्माद, तृषा, सूजन, मूर्च्छा, अरुचि, भय, श्वास, खांसी तथा क्षयसे व्याकुल पुरुषों को अनुवासन और आस्थापन दोनों निषिद्ध हैं ॥ १४७ ॥

नेत्रंकार्य्यंसुवर्णादिधातुभिर्वृक्षवेणुभिः॥ नलैर्दन्तैर्विषाणाग्रैर्मणिभिर्वाविधीयते। नेत्रं नाडीतथाचोक्तंविश्वप्रकाशे। नेत्रंमथिगुणेवस्त्रेतरुमूलेविलोचने। नेत्रबन्धेचनाड्याञ्चनेत्रोनेतरिभेद्यवत्॥ एकवर्षात्तुषड्वर्षाद्यावन्मानंषडंगुलम्। ततोद्वादशकंयावन्मानंस्यादष्टसम्मितम्॥ ततःपरंद्वादशभिरंगुलैर्नेत्रदीर्घता। मुखच्छिद्रंकलायाभच्छिद्रंकोलास्थिसन्निभम्॥ यथासङ्ख्यंभवेन्नेत्रंश्लक्ष्णंगोपुच्छसन्निभम्। गोपुच्छसन्निभंमूलेस्थूलंतस्मात्क्रमात्कृशम्॥ मुखच्छिद्रादिप्रमाणंनेत्रंक्रमेणषड्वर्षायद्वादशवर्षायतदूर्ध्ववर्षायज्ञेयम् आतुरांगुष्ठमानेनमूलेस्थूलंविधीयते। कनिष्ठिकापरीणाहमग्रेचगुटिकामुखम्॥ परिणाहोऽत्रस्थौल्यम्। तन्मूलेकर्णिकेद्वेचकार्येभागाच्चतुर्थकात्। कर्णिकागवादिकर्णवत्। योजयेत्तत्रवस्तिञ्चबन्धद्वयविधानतः। मृगाजशूकरगवांमहिषस्यापिवाभवेत्॥ वस्तिरितिशेषः। मूत्रकोशस्यवस्तिस्तुतदलाभेतुचर्मणः। कषायरक्तःसुमृदुर्वस्तिःस्निग्धोदृढोहितः॥ व्रणवस्तेस्तुनेत्रंस्यात्श्लक्ष्णमष्टांगुलोन्मितम्। मुद्गच्छिद्रंगृध्रपक्षनलिकापरिणाहिच॥ शरीरोपचयंवर्णंबलमारोग्यमायुषः। कुरुतेपरिवृद्धिञ्चवस्तिःसम्यगुपासितः॥ दिवाशीतेवसन्तेचस्नेहवस्तिःप्रदीयते। ग्रीष्मवर्षाशरत्कालेरात्रौस्यादनुवासनम्॥ नचातिस्निग्धमशनंभोजयित्वानुवासयेत्। मदंमूर्च्छाञ्चजनयेद्द्विधास्नेहःप्रयोजितः॥ द्विधाभोजनेवस्तौच। रूक्षंभुक्तवतोत्यन्तंबलंवर्णञ्चहापयेत्। युक्तस्नेहमतोजन्तुंभोजयित्वानुवासयेत्॥ युक्तस्नेहंयथोचितस्नेहंभोज्यंभोजयित्वेत्यर्थः॥ १४८ ॥

सुवर्णादि धातु वृक्ष बांस नलदांत सींगों के अग्रभाग अथवा मणियों के द्वारा नेत्र (नल) बनावे नेत्र शब्दका नल अर्थ विश्वप्रकाश कोश में लिखा है मथानी की रस्सी वस्त्र वृक्षोंकी जड़ आंख आंखोंकीपट्टी नली और नायक यह नेत्र शब्दके अर्थ हैं एकवर्षसे छः वर्षकी अवस्थाके बालकको छः अंगुल छः वर्षसे बारहवर्षतक के बालकको आठ अंगुल और बारहवर्ष के उपरांत चाहे जितनी अवस्थाहो बारह अंगुलकी लम्बीनली होनीचाहिये नलीका छेद क्रमसे मूंग मटर और बेरकी गुठली के बराबर करना चाहिये यह चिकनी और गौकीपूंछ के समान मूलमें स्थूल और नीचेकी ओर क्रम क्रम

(१) नेत्रम्मथिगुणेवस्त्रभेदेमूलेद्रुमस्यच। रथेचक्षुषिनेनद्यांचनीनाड्यांचयोषिदितिमेदिनी॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से पतली पौती है नलीकामूल रोगी के अंगूठेके समान मोटा अग्रभाग कनिष्ठा उंगली के समान मोटा और मुख बहुत चिकना तथा गोलीके समान गोलबनाना चाहिये और नलीके मूल के चतुर्थ भाग में दोगोंके स कान बनाने चाहिये उनमें वस्तिको दोबन्धनोंसे बांधे मृग बकरा शूअर बैलअथवा भैंसेकी मूत्राशय वस्ति में श्रेष्ठ होती है परन्तु इनके अभाव में चमडेकीवस्ति बनवानी चाहिये सबप्रकार की वस्ति कषायवर्ण से रंगीहुई कोमल स्निग्ध और मजबूत होनी चाहिये घाव में देने की वस्तिकी नली कोमल तथा आठउंगलकी लम्बी साफहोनी चाहिये उसके मुखका छिद्र मूंगकेसमान और मुटाई गिद्ध के परके समान होनी चाहिये अच्छेप्रकार से वस्ति क्रिया होजाने पर शरीर की पुष्टता, वर्णकी उत्तमता, बल, आरोग्य और आयुकी वृद्धिहोती है शीत तथा वसन्त ऋतु में दिन को और ग्रीष्म वर्षा तथा शरद्ऋतु में रात्रि को स्नेह वस्ति लेनी चाहिये अत्यन्त स्निग्ध भोजन कराय के स्नेहवस्ति नहीं देनी चाहिये क्योंकि एकसमय में भोजन और वस्ति दोनों से सेवना किया हुआ स्नेह, मद और मूर्च्छा को उत्पन्न करताहै और अत्यन्त रूखी वस्तु खिलाकरकेभी स्नेह वस्ति देने से बल और वर्णका नाशहोता है इसीकारण से यथायोग्य स्निग्ध भोजन करायकर स्नेह वस्ति देनी चाहिये ॥ १४८ ॥

हीनमात्रावुभौवस्तीनातिकार्य्यकरौस्मृतौ । अतिमात्रौतथानाहक्लमातीसारकारकौ॥ उभौवस्तीअनुवासननिरूहाख्यौ । उत्तमास्यात्पलैःषड्भिर्मध्यमास्यात्पलैस्त्रिभिः । पलाद्वयर्द्धेनहीनास्यादुक्तमात्रानुवासने । शताह्वासैन्धवाभ्याञ्चदेयंस्नेहेचचूर्णकम् । तन्मात्रोत्तममध्यान्त्याषट्चतुर्द्वयमाषकैः ॥ १४९ ॥

हीनमात्रा से व्यवहार की गई दोनों वस्ति अच्छे प्रकार से कार्यको नहीं सिद्धकरसक्ती हैं और मात्रा की अधिकता से आनाह ग्लानि तथा अतीसारको उत्पन्न करती हैं स्नेह वस्तिकी उत्तम मात्राछः पल मध्यम मात्रा तीनपल और हीनमात्रा डेढ़ पलकी होती है जिस स्नेह से वस्ति देनी हो उसमें सौंफ और सेंधोनोनके चूर्ण को मिलावै इसचूर्ण की उत्तममात्रा छः माशेकी मध्यममात्रा चारमाशे की और हीन मात्रा दो माशेकी होती है ॥ १४९ ॥

विरेचनात्सप्तरात्रेगतेजातबलायच । भुक्तान्नायानुवास्यायवस्तिर्देयोऽनुवासनः ॥ अथानुवास्यंस्वभ्यक्तमुष्णाम्बुस्वेदितंशनैः । भोजयित्वायथाशास्त्रंकृतञ्चंक्रमणंततः ॥ उत्सृष्टानिलविण्मूत्रंयोजयेत्स्नेहवस्तिना । उष्णाम्बुस्वेदितम् । उष्णाम्बुनास्नापितं १५०

विरेचनके पीछे सात रात्रि व्यतीत होजाने पर और बलहोजाने पर भोजन करायके स्नेहवस्ति देनीचाहिये जिसको वस्ति देनीहोय उसे शरीर में तेल मल के उष्णजल से स्नानकरावे फिर विधिके अनुसार भोजन कराकर कुछ टहलावे फिर वायु मूत्र और मल के त्यागहोजाने पर स्नेहवस्ति देवे ॥ १५० ॥

सुप्तस्यवामपार्श्वेनवामजङ्घाप्रसारिणः । कुञ्चितापरजङ्घस्यनेत्रंस्निग्धेगुदेन्यसेत् ॥ बद्ध्वावस्तिमुखंसूत्रैर्वामहस्तेनधारयेत् । पीडयेद्दक्षिणेनैवमध्यवेगेनधीरधीः ॥ जृम्भाकासक्षवादीश्चवस्तिकालेनकारयेत् । त्रिंशन्मात्रामितःकालःप्रोक्तोवस्तेस्तुपीडने ॥ ततःप्रणिहितेस्नेहेउत्तानोवाक्शतंभवेत् । स्वजानुनःकरावर्त्तंकुर्य्याच्छोटिकयापुनः ॥ एषा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मात्राभवेदेकासर्वत्रैवैषतिश्चयः। निमिषोन्मेषणंपुंसामंगुल्याश्छोटिकाथवा। गुर्वक्षरोच्चारणंवास्यान्मात्रेयंस्मृताबुधैः। प्रसारितैःसर्व्वगात्रैर्यथावीर्यंप्रसर्पति॥ यथावीर्य्यं स्नेहादि। ताडयेत्तलयोरेनन्त्रींस्त्रीन्वारान्छनैःशनैः। स्फिजोश्चैवतथाश्रोणीशय्यांचैवोत्क्षिपेत्ततः॥ स्फिजोश्चैनंस्वपाणिभ्यांपूर्ववत्ताडयेद्बुधः। शय्याञ्चपदतस्तस्यत्रीन्वारानुत्क्षिपेत्ततः॥ जातेविधानेतुततःकुर्य्यान्निद्रांयथासुखम्। सानिलःसपुरीषश्चस्नेहःप्रत्येतियस्यतु॥ उपद्रवंविनाशीघ्रंससम्यगनुवासितः। उपद्रवस्थानेतुषचौषाविति सुश्रुतेपाठः॥ १५१॥

वस्ति देनेके समय रोगीको बाईं करवट से सुलाकर बाईं जांघको फैलवावे और दक्षिण जांघको सुकड़वावे फिर गुदामें तेललगाकर वैद्य बायेंहाथसे, सूत्रोंसे बंधेहुये वस्ति के मुखको पकड़ेरहै और दाहिने हाथसे धीरे २ नलीको भीतर डाले वस्तिदबानेका समयतीसमात्रा(अपने घुटनेके चारों तरफ चुटकी बजाकर हाथ घुमाने में जितना समय लगताहै उसको एकमात्रा कहते हैं अथवा नेत्रोंका एक बार खोलना मूंदना जितने समयमें हो पुरुषों के चुटकी बजाने में जो समय हो अथवा एक गुरु अक्षर के बोलने में जितना समयहो उसको मात्रा कहते हैं) का कहागया है और वस्तिदेनेके समय जंभाई, खांसी, तथा छींकको त्यागदे इस प्रकारसे स्नेह भीतर प्रविष्ट होजानेपर सौवाक्य के उच्चारण करने में जितनी देर लगती है उतनीदेरतक चित्त पड़ारहै संपूर्ण अङ्गोंके फैलाने से स्नेह आदिक अपने वीर्यके अनुसार फैलजातेहैं रोगीके नितम्ब और दोनों हाथोंको तीन २वारफैलवावे फिर हाथ पैरके तलुए और कमर में हाथसे ताडन करे और पगांतनकी ओरसे शय्याको तीन बार ऊँचे को उचकावे फिर एड़ियों में हाथसे थपकी लगावे इस प्रकार संपूर्ण विधानके होजानेपर रोगीको सुखपूर्वक निद्रा करावे जिसके उपद्रवोंके विना वायु और मलसहित स्नेह फिर निकल आवे उसका अनुवासन अच्छे प्रकारसे हुआ जानों॥ १५१॥

जीर्णान्नमथसायाह्नेस्नेहेप्रत्यागतेपुनः। लघ्वन्नंभोजयेत्कामंदीप्ताग्निस्तुनरोयदि॥ अनुवासितायदातव्यमितरेऽह्निसुखोदकम्। धान्यशुण्ठीकषायंवास्नेहव्यापत्तिनाशनम्॥ सुखोदकमुष्णोदकव्यापत्तिर्व्याधिः। अनेनविधिनाषड्वासप्तवाष्टौनवापिवा। विधेयावस्तयस्तेषामन्तेचैवनिरूहणम्॥ १५२॥

स्नेह के निकलजाने पर जो क्षुधा लगे तो सायंकाल के समय खूब गलाहुआ अथवा कोई हलका अन्न भोजन करावे दूसरे दिन उष्णजल अथवा धनियां और सोंठ का काढ़ा पिलावे इससे स्नेह की संपूर्ण व्याधि नष्ट होजाती हैं इस प्रकारसे छः सात आठ अथवा नौबार स्नेह वस्ति देकर निरूहवस्ति दे॥ १५२॥

दत्तस्तुप्रथमोवस्तिःस्नेहयेद्वस्तिवङ्क्षणौ। सम्यग्दत्तोद्वितीयस्तुमूर्द्धस्थमनिलंजयेत्॥ बलंवर्णञ्चजनयेत्तृतीयस्तुप्रयोजितः। चतुर्थपञ्चमौदत्तौस्नेहयेतांरसासृजी॥ षष्ठोमांसंस्नेहयतिसप्तमोमेदएवच। अष्टमोनवमश्चापिमज्जानञ्चयथाक्रमम्॥ यथाक्रममितिवचनादष्टमोऽस्थिस्नेहयेत्। एवंशुक्रगतान्दोषान्द्विगुणःसाधुसाधयेत्॥ (अ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ष्टादशादधिकवस्तिः) अष्टादशाष्टादशकान्दिनाद्योनानिषेवते । सकुञ्जरबलोऽश्वस्यजव तुल्योऽमरप्रभः ॥ रूक्षायबहुवातायस्नेहवस्तिंदिनेदिने । दद्याद्वैद्यस्तथान्येषामग्न्या बाधभयात्त्र्यहात् ॥ स्नेहोऽल्पमात्रोरूक्षाणांदीर्घकालमनत्ययः । अनत्ययः । अबाधः । तथानिरूहःस्निग्धानामल्पमात्रःप्रशस्यते । अथवायस्यतत्कालंस्नेहोनिर्यातिकेवलः ॥ तस्याप्यल्पतरोदेयोनहिस्निग्धेऽवतिष्ठते । अवतिष्ठतेदत्तःस्नेहइतिशेषः । अशुद्धस्य मलोन्मिश्रःस्नेहोनैतियदापुनः । तदाङ्गसदनाध्मानेशूलंश्वासश्चजायते ॥ पक्वाशयेगुरु त्वञ्चतत्रदद्यान्निरूहणम् । तीक्ष्णंतीक्ष्णौषधैर्युक्तंफलवर्तिमथापिवा ॥ यथानुलोमनोवा युर्मलःस्नेहश्चजायते । तथाविरेचनंदद्यात्तीक्ष्णंनस्यञ्चशस्यते ॥ १५३ ॥

पहली वस्ति देने से मूत्राशय और वङ्क्षण स्निग्ध होते हैं, दूसरी वस्ति से मस्तक की वायुशान्त होती है, तीसरी वस्ति से बल तथा वर्ण की उत्तमता होती है, चौथी तथा पांचवीं वस्ति से रस तथा रक्त छठी वस्तिसे मांस सातवीं वस्ति से मेद आठवीं से हड्डी और नवीं वस्ति से मज्जा स्निग्धहोती है अठारहदिन तक वस्ति लेने से वीर्य्यके संपूर्ण दोष नष्ट होते हैं और छत्तीस दिनतक वस्तिलेने से हाथी के समान बल घोडे के समान वेग और देवताओं के समान कांति होती है रूखापन और वायु की अधिकता होने पर प्रतिदिन स्नेहवस्तिदे परन्तु अन्यस्थानों में मन्दाग्निके भय से तीन दिनका अन्तर देकर स्नेहवस्तिदे रूखे पुरुषों को थोडीमात्रा से बहुत दिनतक स्नेह देने में दोष नहीं इसी प्रकार स्निग्ध पुरुषोंको थोडीमात्रासे निरूहवस्ति देना श्रेष्ठहै जिसके वस्तिदेनेसे तत्क्षण केवलस्नेह निकल आवे उसको फिर बहुत थोडीमात्रा देनी चाहिये वमन विरेचनादिकों के द्वारा शरीर को विना शुद्धकिये स्नेहवस्ति देनेसे जो स्नेह मलके साथ मिलकर बाहर न निकले तो शरीरकीशिथिलता आध्मान शूल श्वास और पक्वाशयमें भारीपन मालूम होताहै उससमय निरूहवस्ति अथवा तीक्ष्ण औषध सहित तीक्ष्ण फलवर्ति (इसका आगे वर्णन होगा) का प्रयोग करे वायु मल और स्नेह के नीचे जाने के लिये विरेचन और तीक्ष्ण नासदे ॥ १५३ ॥

यस्यनोपद्रवंकुर्य्यात्स्नेहवस्तिरनिःसृतः।सर्वोऽल्पोऽथ्यावृतोरौक्ष्याद्युपेक्ष्यःसविजानता॥ अनायातन्त्वहोरात्रेस्नेहंसंशोधनैर्हरेत्।स्नेहवस्तावनायातेनान्यःस्नेहोविधीयते १५४॥

जिसके स्नेह वस्ति निकलनेसे कोई उपद्रव न हो वहां रूखेपनका कारण समझकर कोई यत्न न करे एक रात्रि और दिनतक जो स्नेह न निकले तो शोधक औषधियोंके द्वारा स्नेह को निकाले स्नेह वस्तिके न निकलने पर दूसरे बार स्नेह देना अनुचित है ॥ १५४ ॥

गुडूच्येरण्डपूतीकभार्ङ्गीवृषकरौहिषम् । शतावरींसहचरंकाकनासांपलोन्मिताम् ॥ यवमाषातसीकोलकुलत्थान्प्रसृतोन्मितान् । चतुर्द्रोणेऽम्भसःपक्त्वाद्रोणशेषेणतेनच॥ पचेत्तैलाढकंसर्वैर्जीवनीयैःपलोन्मितैः । अनुवासनमेतद्धिसर्ववातविकारनुत् ॥ पूतीकःक रञ्जः । रौहिषमीषत्सुगन्धतृणविशेषः । काकनासाकौआठोढ़ी । प्रसृतम् । पलद्वयम् । षो ढासप्तव्यापदस्तुजायन्तेवस्तिकर्म्मणः । दूषितान्समुदायेनतांश्चिकित्स्याच्चसुश्रुतात् ॥ समुदायेनसमुचितनेत्रादिसामग्र्या ॥ १५५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गिलोय, रेंडी, करञ्जुआ, भारङ्गी, वांसा, आगियासतावर, झिण्टी और काकजङ्घा यह संपूर्ण एक २ पल जौ, उर्द, अलसी, बेर और कुलथी यह सब दो २ पल इन सबको चार द्रोण पानीमें औटाकर एक द्रोण बाकी बचने पर उस पानी को छानले और उस पानी से एक आढक तेल जीवनीयगण का एक २ पल औषधियोंका कल्क मिलाकर पकावे इस तेलके द्वारा अनुवासन करने से सब वात रोगों का नाश होताहै अयोग्य नली आदि के द्वारा वस्तिक्रिया करने से छिहत्तर रोग उत्पन्न होते हैं सुश्रुत के मत से इन रोगोंकी चिकित्सा करे ॥ १५५ ॥

पानाहारविहाराश्च परिहाराश्चकृत्स्नशः । स्नेहपानसमाःकार्य्या नात्रकार्य्याविचारणा ॥ १५६ ॥

वस्तिक्रिया में पान, आहार, विहार और संपूर्ण त्याग करने के योग्य वस्तु स्नेहपान के समान जाननी चाहिये ॥ १५६ ॥

अथ निरूहवस्ति विधिः ॥

निरूहवस्तिबहुधाभिद्यतेकारणान्तरैः । तैरेवतस्यनामानिधृतानिमुनिपुङ्गवैः ॥ कारणान्तरैः । समवायिकारणभेदैः । निरूहस्यापरन्नामप्रोक्तमास्थापनंबुधैः । स्वस्थाने स्थापनाद्दोषधातूनांस्थापनंमतम् ॥ निरूहस्यप्रमाणंतुप्रस्थपादोत्तरंपरम् । मध्यमंप्रस्थमुद्दिष्टंहीननञ्चकुडवास्त्रयः ॥ परंश्रेष्ठम् ॥ १५७ ॥

निरूहवस्ति की विधि ॥

निरूहवस्ति बहुधा कारणों के भेदसे अनेक प्रकारकी होतीहै और उन्हीं कारणों के अनुसार उसके नाम होते हैं दोष और धातुओं को अपने २ स्थानमें स्थापित करने से निरूहवस्तिका दूसरा नाम आस्थापन है निरूहवस्तिकी श्रेष्ठमात्रा सवा प्रस्थ मध्यममात्रा एकप्रस्थ और हीनमात्रा तीन कुडवकी होतीहै ॥ १५७ ॥

अतिस्निग्धोऽक्लिष्टदोषःक्षतःक्षीणःकृशस्तथा । अक्लिष्टदोषः । अदत्तोत्क्लेशनइतियावत्क्षतोरस्कःउरःक्षतवान् । आध्मानछर्दिहिक्कार्शःकासश्वासप्रपीडितः ॥ गुदशोफातिसारार्त्तोविसूचीकुष्ठसंयुतः ॥ गर्भिणीमधुमेहीचनास्थाप्यश्च जलोदरी ॥ १५८ ॥

अत्यन्त स्निग्ध ऊपर को गये दोषवाला, छातीमें घाववाला, कृश और उदर, आध्मान, छर्दि, हिचकी, बवासीर, खांसी, श्वास, गुदा के रोग, सूजन, अतीसार, विसूचिका, कुष्ठ, मधुप्रमेह तथा जलन्धर रोगसे ग्रसित पुरुष और गर्भिणी स्त्रीको आस्थापन न दे ॥ १५८ ॥

वातव्याधावुदावर्त्तेवातासृग्विषमज्वरे ॥ मूर्च्छातृष्णोदरानाहमूत्रकृच्छ्राश्मरीषुच । वृद्ध्यासृगुदरमन्दाग्निप्रमेहेषुनिरूहणम्॥ शूलेऽम्लपित्तेहृद्रोगेयोजयेद्विधिवद्बुधः । उत्सृष्टानिलविण्मूत्रंस्निग्धंस्विन्नमभोजनम् ॥ मध्याह्नेगृहमध्येचयथायोग्यंनिरूहयेत् ॥ स्निग्धंस्वभ्यक्तम् । उष्णाम्बुस्नापितम् । स्नेहवस्तिविधानेनबुधःकुर्य्यान्निरूहणम् ॥ जातेनिरूहेचततोभवेदुत्कटकासनः ॥ तिष्ठेन्मुहूर्त्तमात्रन्तुनिरूहागमनेच्छया । अत्रमुहूर्त्तमात्रशब्देनैतदपिबोधितम् निरूहप्रत्यागमनकालोमुहूर्त्तमात्रः ॥ अनायातंमुहूर्त्तेतु निरूहंशोधनैर्हरेत् । निरूहैरेवमतिमान्क्षारमूत्राम्लसैन्धवैः ॥ १५९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वातव्याधि, उदावर्त्ति, वातरक्त, विषमज्वर, मूर्च्छा, तृषा, उदर, आनाह, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, वृद्धि, प्रदर, मन्दाग्नि, प्रमेह, शूल, अम्लपित्त और हृदय के रोगों में विधिपूर्व्वक वस्ति देनी चाहिये वायु मल और मूत्र का त्याग करके और तेल लगाकरके गरम जल से स्नान करे फिर विना भोजन किये घरमें बैठालकर मध्याह्नके समय यथायोग्य निरूहवस्तिदेवे स्नेहवस्तिके समान निरूहवस्ति देनी चाहिये निरूहवस्तिके होजानेपर उसके निकलने के लिये एकमुहूर्त्त भर उकडू बैठे जो मुहूर्त्त भर में बाहर न निकले तो शोधन औषधियों से अथवा क्षार मूत्र खटाई और सेंधा नोन के द्वारा फिर निरूहवस्तिदेकर उस को निकाले ॥ १५९ ॥

यस्यक्रमेणगच्छन्तिविट्पित्तकफवायवः । लाघवंचोपजायेतसुनिरूढंतमादिशेत् । यस्यस्याद्वस्तिबल्याल्पवेगोहीनमलानिलः ॥ मूर्च्छार्त्तिजाड्यारुचिमान्दुर्निरूढंतमादिशेत् । विविक्ततामनस्तुष्टिःस्निग्धताव्याधिनिग्रहः ॥ आस्थापनेस्नेहवस्त्योःसम्यग्दानेतुलक्षणम् ॥ विविक्तता। दत्तौषधनिःसरणम्। अनेनविधिनायुञ्ज्यान्निरूहंवस्तिदानवित् ॥ द्वितीयंवातृतीयंवाचतुर्थंवायथोचितम् ॥ १६० ॥

कफ, पित्त, वात और मल इनके निकलजानेसे शरीरमें हलकापन मालूमदे तो अच्छेप्रकारसे हुई निरूहवस्ति जानना जिसके वस्ति के वेगकी अल्पता से वायु तथा मल कमनिकले मूत्र रुकजाय और जडता तथा अरुचि उत्पन्न हो उसकी निरूहवस्ति बिगडी हुई जानना चाहिये औषधियों का अच्छी रीति से निकलजाना, मनकी प्रसन्नता, स्निग्धता और रोग की शान्ति यह स्नेह और निरूहवस्ति के अच्छे प्रकार से होजाने के लक्षण हैं इसप्रकारसे दो तीन अथवा चार बार यथा योग्य विचार कर निरूहवस्ति लेनी चाहिये ॥ १६० ॥

सस्नेहएकःपवनेपित्तेद्वौपयसासह ॥ कषायकटुमूत्राद्याःकफेतूष्णास्त्रयोहिताः ॥ पित्तश्लेष्मानिलाविष्टंक्षीरयूषरसैःक्रमात् । निरूहंभोजयित्वाचततस्तमनुवासयेत् ॥ सुकुमारस्यवृद्धस्यबालस्यचमृदुर्हितः । वस्तिस्तीक्ष्णःप्रयुक्तस्तुतेषांहन्याद्बलायुषी ॥ दद्यादुत्क्लेशनंपूर्व्वमध्यंदोषहरन्ततः । पश्चाच्छंशमनीयञ्चदद्याद्वस्तिंविचक्षणः ॥ १६१ ॥

वायुरोगमें स्नेहसहित एकबार पित्तरोग में दुग्धसहित दोबार और कफजरोगों में उष्ण कषैली तथा कटु मूत्रादिकोंके साथ तीनबार वस्ति देनी चाहिये निरूहवस्ति देनेके उपरान्त पित्तवालेको दूध कफवाले को यूष और वातवाले को मांस का रस खिलाकर अनुवासनवस्ति देनी चाहिये, सुकुमार वृद्ध और बालकको कोमलवस्ति हितहै क्योंकि इनको तीक्ष्णवस्ति देनेसे बल और आयुकी हानिहोती है पहले उत्क्लेशनवस्ति मध्यमें दोपहर वस्ति और पीछे संशमनीय वस्ति लेनी चाहिये ॥ १६१ ॥

एरण्डबीजंमधुकंपिप्पलीसैन्धवंवचा । हबुषाफलकल्कश्चवस्तिरुत्क्लेशनःस्मृतः ॥ इत्युत्क्लेशनवस्तिः शताह्वामधुकंबिल्वंकौटजंफलमेवच ॥ सकाञ्जिकःसगोमूत्रोवस्तिर्दोषहरःस्मृतः । इति दोषहरवस्तिः ॥ प्रियङ्गुर्मधुकंमुस्तातथैवचरसाञ्जनम् । सक्षीरःशस्यतेवस्तिर्दोषाणांशमनःस्मृतः ॥ इति शमनवस्तिः ॥ १६२ ॥

रेडीके बीज, मुलहठी, पीपल, सेंधानोन, वच और हाऊवेर इनके कल्कसे जो वस्ति दीजाती है उस को उत्क्लेशन कहते हैं सतावर, मुलहठी, बेल और इन्द्रजौ इन सब को कांजी और गोमूत्र के साथ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो वस्ति दीजाती है उसको दोषहर कहते हैं मालकंगनी,मुलहठी, नागरमोथा और रसौत इनसब को दूध के साथ मिलाकर जो वस्ति दीजाती है उसको शमनवस्ति कहते हैं ॥ १६२ ॥

त्रिफलाक्काथगोमूत्रक्षौद्रक्षारसमायुताः॥ऊषकादिप्रतीवापैर्वस्तयोलेखनाःस्मृताः।ऊषकादिप्रतीवापाः। ऊषकादिगणविशेषेणचूर्णप्रक्षेपाः ॥ इति लेखनवस्तयः॥ १६३ ॥

त्रिफलाकाकाढा, गोमूत्र, सहत और जवाखार के साथ ऊषकादि गणका चूर्ण मिलाकर जो वस्ति दीजाती है उसको लेखनवस्ति कहतेहैं इति लेखनवस्ति ॥ १६३ ॥

बृंहणद्रव्यनिष्क्वाथैः कल्कैर्मधुरकैर्युताः ॥ सर्पिर्मांसरसोपेतावस्तयोबृंहणाःस्मृताः ॥ इतिबृंहणवस्तयः ॥ १६४ ॥

बृंहण [धातुपोषक] औषधियों के क्काथ और जीवनीयगणके कल्कके साथ घी और मांसकारस मिलाकर जो वस्ति दीजातीहै उसको बृंहणवस्ति कहते हैं इति बृंहणवस्ति ॥ १६४ ॥

बदर्य्यैरावतीशेलुशाल्मलीपुष्पजांकुराः ॥ ऐरावती । नारङ्गी । शेलुः । बहुआर । क्षीरसिद्धाःक्षौद्रयुक्तानाम्नापिच्छिलसंज्ञिताः । अजोरभ्रैणरुधिरैर्युक्तादेयाविचक्षणैः ॥ अजश्छागः । उरभ्रोमेषः ॥ एणःकृष्णमृगः। मात्रापिच्छिलवस्तीनांपलैर्द्वादशभिर्मता ॥ इति पिच्छिलवस्तयः १६५ ॥

बेर, नारङ्गी, बहुआर, सेमर के फूलके अंकुर इन संपूर्ण वस्तुओं को दूधके साथ परिपाक करके सहत और रुधिरके साथ जो वस्तु दीजातीहै उसको पिच्छिलवस्ति कहते हैं बकरा मेढ़ा और काले मृगकारुधिर वस्तियोंमें युक्त करना चाहिये पिच्छिलवस्तिकी मात्रा बारह पलकी होतीहै इति पिच्छिलवस्ति ॥ १६५ ॥

दत्त्वादौसैन्धवस्याक्षंमधुनःप्रसृतिद्वयम् । विनिर्म्मथ्यततोदद्यात्स्नेहस्यप्रसृतित्रयम्॥एकीभूतेततःस्नेहेकल्कस्यप्रसृतिङ्क्षिपेत् । संमूर्च्छितेकषायन्तु चतुःप्रसृतिसम्मितम्॥गृह्णीयाच्चतदावायमन्तेद्विप्रसृतोन्मितम्।क्षिप्त्वाविमथ्यदद्याच्चनिरूहंकुशलोभिषक्॥एवंप्रकल्पितोवस्तिर्द्वादशप्रसृतिर्भवेत्॥वातेचतुष्पलंक्षौद्रंदद्यात्स्नेहस्यषट्पलम्॥ पित्तेचतुष्पलंक्षौद्रंस्नेहंदद्यात्पलत्रयम्॥कफेतुषट्पलंक्षौद्रंक्षिपेत्स्नेहं चतुष्पलम् १६६ ॥

पहले एकतोला सैंधानोन, सोलह तोले सहत,एकमें मिलाकर चौबीस तोले घी,आठतोले कल्क की औषधि, बत्तीसतोले क्काथ और सोलह तोले उसमें छोडने की औषधि यह संपूर्ण वस्तु एकमें मिलाकर मथले फिर इसीसे निरूहवस्ति लेनी चाहिये इसका प्रमाण चौबीस पलका है वातरोगमें सोलह तोले सहत और चौबीस तोले स्नेह पित्तरोगमें सोलह तोले सहत और बारहतोले स्नेह और कफके रोगोंमें चौबीस तोले सहत और सोलह तोले स्नेहके द्वारा निरूहवस्ति देनी चाहिये इति निरूहमात्रा ॥ १६६ ॥

एरण्डक्काथतुल्यांशंमधुतैलंपलाष्टकम्। शतपुष्पापलार्द्धेनसैन्धवार्द्धेनसंयुतम्॥ मधुतैलकसंज्ञोऽयंवस्तिर्दारुविलोडिताः। मेदोगुल्मकृमिप्लीहमलोदावर्तनाशनः ॥ बलवर्णकरश्चैववृष्योदीपनबृंहणः । मधुतैलकवस्तिः॥ १६७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रेंडी का क्वाथ बत्तीसतोले, सहत और तेलमिला हुआ बत्तीस तोले, सौंफ दो तोले और सेंधानोन दो तोले इनसब वस्तुओं को मिलाकर किसी काष्ठके टुकडे से खूबचलावे इसरीति से जो वस्तिदीजाती है उसको मधुतैलक कहते हैं इससे मेद, गुल्म, कृमि, प्लीहा, मल तथा उदावर्त्तका नाश, बल तथा वर्णकी वृद्धि, अग्नि की दीप्ति और वीर्य तथा धातुओं की पुष्टता होती है इति मधुतैलकवस्ति ॥१६७॥

क्षौद्राज्यक्षीरतैलानांप्रसृतंप्रसृतंभवेत् । हबुषासैन्धवाक्षांशोवस्तिःस्याद्यापनःपरः॥ इति पाचनसारकोयापनवस्तिः १६८ ॥

सहत, घी और दूध आठ २ तोले और हाऊबेर तथा सेंधानोन एक २ तोले इन सम्पूर्ण वस्तुओंसे जो वस्ति दीजाती है उसको यापन कहते हैं इति यापनवस्ति ॥ १६८ ॥

एरण्डमूलनिष्क्वाथोमधुतैलंससैन्धवम् । एषयुक्तरथोवस्तिःसवचापिप्पलीफलः ॥ इति युक्तरथोवस्तिः ॥ १६९ ॥

रेंडीका क्वाथ, सहत, तेल, सेंधानोन, वच और पीपल इनसबको मिलाकर जो वस्ति दीजाती है उसको युक्तरथ कहते हैं इति युक्तरथवस्ति ॥ १६९ ॥

पञ्चमूलस्यनिष्क्वाथैस्तैलंमागधिकामधु।ससैन्धवःसयष्ट्याह्वःसिद्धवस्तिरितिस्मृतः॥ इति सिद्धवस्तिः ॥ १७० ॥

पञ्चमूल का काढ़ा, तेल, पीपल, सहत, सेंधानोन और मुलहठी इन सबकी वस्ति को सिद्धवस्ति कहते हैं इति सिद्धवस्ति ॥ १७० ॥

स्नानमुष्णोदकैःकुर्य्याद्दिवास्वप्नमजीर्णताम्।वर्जयेदपरंसर्वमाचरेत्स्नेहवस्तिवत् १७१

निरूहवस्ति के उपरान्त उष्णजल से स्नानकरे दिनमें न सोवे अजीर्णकारी वस्तु न खाय और संपूर्ण कार्य स्नेहवस्ति के समान करे ॥ १७१ ॥

अथोत्तरवस्तिविधिः ॥

अतःपरम्प्रवक्ष्यामिवस्तिमुत्तरसंज्ञितम् । निरूहादुत्तरोयस्मात्तस्मादुत्तरसंज्ञकः ॥ द्वादशाङ्गुलकंनेत्रंमध्येचकृतकर्णिकम् । मालतीपुष्पवृन्ताभञ्छिद्रंसर्षपनिर्गमम्॥पञ्चविंशतिवर्षाणामधोमात्राद्विकार्षिकी।तदूर्ध्वम्पलमात्राचस्नेहस्योक्ताभिषग्वरैः ॥१७२ ॥

उत्तरवस्ति की विधि ॥

निरूहवस्ति के उपरान्त यह दीजाती है इसी से इसको उत्तरवस्ति कहते हैं इसकी विधि अब कहतेहैं उत्तरवस्ति की नली बारह अंगुल की लम्बी होतीहै उसके बीचमें गौ के कानके समान एक कार्णिका होतीहै यह चमेली के फूलकी डण्डी के समान बनीहुई होती है और इसके अग्रभाग में सरसों निकलने के लायक एक छिद्र होताहै पच्चीस वर्ष से कम अवस्थावाले को दो तोले की मात्रा और इससे अधिक अवस्थावाले को आठ तोले स्नेह की मात्रा श्रेष्ठ है ॥ १७२ ॥

अथास्थापनशुद्धस्यतृप्तस्यस्नानभोजनैः । स्थितस्यजानुमात्रेचपीठेस्निग्धशलाकया॥ स्निग्धयामेढ्रमार्गेतुततोनेत्रन्नियोजयेत् । शनैःशनैर्घृताभ्यक्तंमेढ्ररन्ध्राङ्गुलानिषट् ॥ ततोऽवपीडयेद्वस्तिंशनैर्नेत्रंविनिर्हरेत्॥ततःप्रत्यागतेस्नेहेस्नेहवस्तिक्रमोहितः ॥१७३॥

रोगीको आस्थापनसे शुद्धकरके स्नान भोजनकराके घुटनोंके बलखड़ाकरे फिर स्नेहयुक्त शलाका

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के द्वारा अच्छे प्रकारसे देखकर स्नेहयुक्त नली को धीरे २ लिङ्गमें प्रवेशकरे छः अंगुलतक प्रवेश करके वस्ति को दबावे फिर धीरे २ नलीको निकालले फिर स्नेह के बाहर निकल आनेपर स्नेह-वस्ति के समान विधिकरे ॥ १७३ ॥

स्त्रीणांकनिष्ठिकास्थूलन्नेत्रंकुर्य्याद्दशांगुलम् । मुद्गप्रवेशयोग्यञ्चयोन्यन्तश्चतुरंगुलम् ॥ द्व्यंगुलंमूत्रमार्गेचसूक्ष्मंनेत्रंवियोजयेत् । मूत्रकृच्छ्रविकारेषुबालानांत्वेकमंगुलम् ॥ शनैर्निष्कम्पमाधेयंसूक्ष्मंनेत्रंविचक्षणैः । मालतीपुष्पवृन्ताभन्नेत्रमित्युदितंपुनः । सूक्ष्मशब्दाभिधानेबालानांततोऽपिनेत्रस्यसूक्ष्मताबोधनार्थं । योनिमार्गेषुनारीणांस्नेहमात्राद्विपालिकी ॥ मूत्रमार्गेपलोन्मानंबालानांचद्विकार्षिकी । उत्तानायैस्त्रियैदद्यादूर्ध्वजान्वैविचक्षणः । अप्रत्यागच्छतिभिषग्वस्तावुत्तरसंज्ञिते ॥ भूयोवस्तिंविदध्याच्चसंयुक्तंशोधनैर्गुणैः । फलवर्त्तिंविदध्याद्वायोनिमार्गेदृढाम्भिषक् ॥ सूत्रैर्विनिर्मितांस्निग्धांशोधनद्रव्यसंयुताम् । दह्यमानेतथावस्तौदद्याद्वस्तिंविशारदः ॥ क्षीरवृक्षकषायेणपयसाशीतलेनवा । दह्यमानेवस्तौ । यस्मिन्स्थानेवस्तिर्दत्तस्तस्मिन्दह्यमाने ॥ १७४ ॥

स्त्रियोंके लिये दश अंगुल लम्बी और कनिष्ठिकाके समान मोटी नली बनानी चाहिये और उसका छेद एक मूंग जाने के समान होना चाहिये योनि के भीतर चार अंगुल और जिस छिद्र से मूत्र निकलता है उस में दो अंगुल नली छोडनी चाहिये लडकियों के मूत्ररुच्छ्र रोग में एक अंगुल प्रमाण की पतली नली धीरे २ इस प्रकार से छोडनी चाहिये कि वह किसी प्रकार से हिलने न पावे नली की आकृति चमेली के फूल की डण्डी के समान होनी चाहिये स्त्रियोंके योनि मार्ग में आठ तोले की स्नेहमात्रा मूत्रमार्ग में चारतोले की मात्रा और लडकियों के लिये दो तोले की मात्रा होनी चाहिये स्त्री को चित्त सुलाकर और दोनों घुटने उठा कर वस्ति देनी चाहिये जो उत्तर वस्ति फिर बाहर न निकल आवे तो संशोधक औषध मिलाकर फिर वस्ति दे अथवा योनिमार्ग में सूत्रसे बनी हुई स्निग्ध शोधन औषधियुक्त दृढ फल वर्ति रक्खे जो वस्ति लेनेसे वस्ति के स्थान में दाह उत्पन्न हो तो क्षीर वृक्षों के काढेसे अथवा शीतल जल से वस्ति दे ॥ १७४ ॥

वस्तिशुक्ररुजःपुंसांस्त्रीणामार्त्तवजारुजः । हन्यादुत्तरवस्तिस्तुनोचितोमेहिनांक्वचित् ॥ सम्यग्दत्तस्यलिंगानिव्यापदःक्रममेवच । वस्तेरुत्तरसंज्ञस्यसमानःस्नेहवस्तिना १७५ ॥

वस्ति देनेसे पुरुषोंके वीर्यदोष और स्त्रियों के रजदोष नष्ट होते हैं परन्तु प्रमेहवालों को उत्तर वस्ति कभी नहीं देनी चाहिये उत्तर वस्ति के अच्छेप्रकार देने के तथा उसके बिगडने के चिह्न और क्रम संपूर्ण स्नेहवस्ति के समान होते हैं ॥ १७५ ॥

अथ फलवर्तिविधिः ॥

घृताभ्यक्तेगुदेक्षिप्त्वाश्लक्ष्णास्वांगुष्ठसन्निभा । मलप्रवर्तिनीवर्त्तिःफलवर्त्तिश्चसास्मृता ॥ १७६ ॥

फलवर्तिकी विधि ॥

गुदा में घृतलगाकर रोगी के अंगूठेके बराबर आकारवाली चिकनी और मलकी निकालने वाली जो बत्ती रक्खी जाती है उसको फलवर्ति कहते हैं ॥ १७६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ नस्यग्रहणविधिः ॥

नस्यंतत्कथ्यतेधीरैर्नासाग्राह्यंयदौषधम्। नावनंनस्यकर्मेतितस्यनामद्वयंमतम्॥ नस्यकर्मनासिकायांकर्मचिकित्सायेनतत्नस्यकर्म । नस्यभेदोद्विधाप्रोक्तोरेचनंस्नेहनंतथा। रेचनंकर्षणंप्रोक्तंस्नेहनंबृंहणंमतम्॥ कफपित्तानिलध्वंसीपूर्वमध्यापराह्णके । दिनस्यग्रह्यनेनस्यंरात्रावप्युत्कटेगदे ॥ दिनस्य। त्रिधाविभक्तस्य। पूर्वभागादौ ॥ १७७॥

नासलेने की विधि ॥

नासिका के द्वारा जो औषध ग्रहण की जाती है उसको नस्य नावन और नस्य कहते हैं नस्य दोप्रकार की होती है रेचन और स्नेहन इनमेंसे रेचन घटाने वाली और स्नेहन बढ़ाने वालीहोती है कफ पित्त तथा वायु के नाश करने के लिये क्रमसे पूर्वाह्न मध्याह्न और पराह्न में नास लेनी चाहिये और बड़ी कठिन व्याधि में रात्रिकेसमय भी नास लीजाती है ॥ १७७ ॥

नस्यन्त्यजेद्भोजनान्तेदुर्दिनेचापतर्पितः । तथानवप्रतिश्यायीगर्भिणीगरदूषितः ॥ अजीर्णीदत्तवस्तिश्चपीतस्नेहोदकासवः । क्रुद्धःशोकाभिभूतश्चतृषार्त्तोवृद्धबालकौ ॥ वेगावरोधीश्रान्तश्चस्नातुकामश्चवर्ज्जयेत् । नस्यमितिशेषः ॥ १७८॥

भोजन के अन्त में मेघोंसे छाये हुये दिनमें तर्पण क्रिया में नयेजुकाममें गर्भ में विषरोग में अजीर्ण में वस्तिक्रिया के उपरांत स्नेह जल अथवा मदिरा पीकर क्रोधमें शोक में तृषा में वृद्धतामें लड़कपन में वेगोंके रोकने में थकावट में और स्नान करने के समय नस्य का त्याग करे ॥ १७८ ॥

अष्टवर्षस्यबालस्यनस्यकर्मसमाचरेत्। अशीतिवर्षादूर्ध्वञ्चनावनंनैवदीयते १७९॥

आठ वर्ष की अवस्था के भीतर और अस्सीवर्ष के उपरांत नास न लेनी चाहिये ॥ १७९ ॥

अथवैरेचनंनस्यंग्राह्यंतैलेसुतीक्ष्णकैः । तीक्ष्णंभेषजसिद्धैर्वास्नेहैःक्काथैःरसैस्तथा ॥ नासिकारन्ध्रयोरष्टौषट्चत्वारइवबिन्दवः । प्रत्येकंरेचनंयोग्यंमुख्यमध्याल्पमात्रया ॥ नस्यकर्माणिदानव्यंशाणैकंतीक्ष्णमौषधम्। हिंगस्याद्यवमात्रन्तुमाषैकंसैन्धवंमतम्॥ क्षीरञ्चैवाष्टशाणंस्यात्पानीयञ्चत्रिकार्षिकम्॥कार्षिकंमधुरद्रव्यंनस्यकर्मणियोजयेत्१८० ॥

रेचन नस्य लेने में अत्यन्त तीक्ष्ण तैल अथवा तीक्ष्ण औषधियों से बनेहुये स्नेह क्वाथ और रसके द्वारा नास लेनी चाहिये नासिका के छिद्रों में उत्तम मध्यम और हीनमात्रा के अनुसार क्रम से आठ बिन्दु छः बिन्दु और चार बिन्दु विरेचन हुलास लेनी चाहिये नस्य कर्म में तीक्ष्ण औषध एक शाण तीन माशे हींग एक जौ सेंधानोन छः रत्ती दूध दो तोले पानी तीन तोले और मधुर पदार्थ एक तोलेभर ग्रहण करना चाहिये ॥ १८० ॥

अवपीडःप्रधमनंद्वौभेदावपरौस्मृतौ । शिरोविरेचनस्यार्थेतौतुदेयौयथायथम् ॥ कल्कीकृतादौषधाद्यःपीड़ितोनिःसृतोरसः। सोऽवपीड़ःसमुद्दिष्टस्तीक्ष्णद्रव्यसमुद्भवः ॥ षडंगुलाद्विवक्त्रायानाडीचूर्णन्तयाधमेत्। तीक्ष्णंकोलमितंवक्त्रवातैःप्रधमनंहितम्॥ ऊर्ध्वजत्रुगतेरोगेकफजेस्वरसंक्षये। अरोचकेप्रतिश्यायेशिरःशूलेचपीनसे ॥ शोफापस्मारकुष्ठेषुनस्यंवैरेचनंहितम्। भीरुस्त्रीकृशबालानांनस्यंस्नेहेनशस्यते ॥ गलरोगेसन्निपाते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निद्रायांविषमज्वरे। मनोविकारेकृमिषुपूज्यतेचावपीडनम्॥ अत्यन्तोत्कटदोषेषुविसंज्ञेषु चदीयते। चूर्णंप्रधमनंधीरैस्तद्धितीक्ष्णतरंयतः (नस्यंवैरेचनंयथा) नस्यंस्याद्गुडशुण्ठीभ्यांपिप्पलीसैन्धवेनवा। जलपिष्टेनकर्णाक्षिनासामूर्द्धभवागदाः॥ मन्याहनुगलोद्भूता नश्यन्तिभुजपृष्ठजाः॥ १८१॥

नस्यके और भी दो भेद हैं अवपीड और प्रधमन यह दोनों शिर के विरेचनके लिये देनीचाहिये तीक्ष्ण औषधियों को कूटकर उनका रस निकालकर जो नास लीजाती है उसको अवपीड कहते हैं छः अंगुल की लम्बी दोनों ओर मुखवाली, भीतरसे पोली, नलीमें छःमाशे तीक्ष्ण औषधियों काचूर्ण भरकर फूंकने से नासिका के छिद्र में चूर्ण के प्रवेश कराने को प्रधमन कहते हैं गले की हँसली के ऊपर के रोगों में कफजनित स्वरभङ्ग में अरुचि प्रतिश्याय (जुकाम) शिरकी पीड़ा, पीनस, सूजन, मृगी और कुष्ठमें रेचन नास हितकारी है भयभीत स्त्री कृश और बालकों को स्नेहननास हितकारी है गले के रोग, सन्निपात, निद्रा विषमज्वर, मनके विकार और कृमिरोगों में अवपीड नास श्रेष्ठ है अत्यन्त प्रबल दोषों में और संज्ञारहित होने में बुद्धिमान् लोग प्रधमन नास देते हैं क्योंकि यह अत्यन्त तीक्ष्ण है गुड और सोंठ समभाग मिलाकर अथवा पीपल और सेंधानोन यह दोनों समभाग जल में पीस कर इनके द्वारा नासलेने से नासिका गलेके पीछे की नस, मस्तक, जाबडे, गला और कान तथा नेत्र के ऊपरके रोग नष्टहोते हैं और हाथ तथा पीठके रोगभी नाशको प्राप्त होते हैं॥ १८१॥

मधूकसारकृष्णाभ्यांवचामरिचसैन्धवैः॥ नस्यंकोष्णाम्भसापिष्टंदद्यात्संज्ञाप्रबोधनम्। अपस्मारेतथोन्मादेसन्निपातेऽपतन्त्रके॥ सैन्धवंश्वेतमरिचंसर्षपाकुष्ठमेवच। वस्तमूत्रेणसंपिष्टंनस्यन्तन्द्रानिवारणम्(श्वेतमरिचंसहिजनकाबीजं) रोहितस्यचपित्तेनभावितंमरिचंवचा। कट्फलंचेतितच्चूर्णंदेयंप्रधमनंबुधैः॥ १८२॥

महुवे का गाभा, पीपल,बच,मिर्च और सेंधानोन इनसम्पूर्ण औषधियों को समभाग लेकर गरम जलसे पीसले फिर इसकी नास लेनेसे जड़ता दूर होकर संज्ञा आजाती है मिरगी उन्माद सन्निपात औ अपतन्त्रक रोगमें भी ये नासलेनी चाहिये सेंधानोन, सहँजनके बीज, सरसों, और कूट इनसबको बकरे के मूत्रमें पीसकर नासलेने से तन्द्रा का नाश होता है रोहू मछलीके पित्तसे मिर्च बच और कायफलके चूर्णको भावना देकर इसके द्वारा प्रधमन नास लेनेसे तन्द्राका नाश होताहै१८२॥

अथबृंहणनस्यस्यकल्पनाकथ्यतेऽधुना। मर्शश्चप्रतिमर्शश्चद्वौभेदौस्नेहनेमतौ॥ मर्शस्यतर्पणीमात्रामुख्याशाणैःस्मृताऽष्टभिः। मध्यमातुचतुःशाणैर्हीनाशाणमितामता॥ एकैकस्मिंस्तुमात्रेयंदेयानासापुटेबुधैः। मर्शस्यद्वित्रिवेलंवावीक्ष्यदोषबलाबलम्॥ एकांतरंद्व्यन्तरंवानस्यंदद्याद्विचक्षणः (एकांतरमेकंदिनमन्तरंनस्यशून्यंयत्रतदेकान्तरम्) त्र्यहंपञ्चाहमथवासप्ताहंवासुयन्त्रितः। अथवात्र्यहम्। त्रीण्यहानियावत्। प्रतिदिनं एवंपञ्चाहंसप्ताहञ्च। सुयन्त्रितः। सावधानः। यथाऽच्छिक्कंनभवति। मर्मेशिरोविरेके चव्यापदोविविधाःस्मृताः॥ दोषोत्क्लेशात्क्षयाच्चैवविज्ञेयास्तायथाक्रमम्॥ दोषोत्क्लेशनिमित्तासुयुञ्ज्याद्वमनशोधनम् (वमनरूपं शोधनम्) अथ क्षयनिमित्तासु यथास्वंबृंहणंहितम्॥ १८३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अब बृंहण नस्य का विधान कहा जाता है इसके मर्श और प्रतिमर्श दोभेद हैं मर्शकी उत्तममात्रा दो तोलेकी, मध्यममात्रा एकतोले की, और हीनमात्रा तीनमाशे की होती है नासिका के एक २ छिद्र में इतनी २ मात्रा देनी चाहिये दोषके बलाबल को देखकर दिनमें दोबार तीनबार अथवा एक दिनका या दो दिनका अन्तर दे कर तीनदिन पांचदिन अथवा सातदिन तक मर्शनस्य का ग्रहण करै मर्श औ विरेचन नस्यके प्रयोगसे क्रमपूर्वक दोषोंकीवृद्धि और क्षयके द्वारा अनेक उपद्रव होसके हैं इसलिये दोषोंकी वृद्धिसे भये उपद्रवों में वमन रूप शोधन और क्षयसे भये उपद्रवों में क्षयके अनुसार बृंहणक्रिया करनी चाहिये ॥ १८३ ॥

शिरोनासाक्षिरोगेषुसूर्य्यावर्त्तार्द्धभेदके॥ दन्तरोगेऽबलेहीनेमन्याबाह्वंसजेगदे। मुखशोषेकर्णनादेवातपित्तगदेतथा॥ अकालपलितेचैवकेशश्मश्रुप्रपातने । पूज्यतेबृंहणंनस्यंस्नेहैर्वामधुरद्रवैः ॥ १८४ ॥

शिर नासिका तथा नेत्र के रोगों में सूर्य्यावर्त्तमें अर्द्धावभेदकमें दन्तरोग बलकी क्षीणता गलेके पीछे की नसके रोग भुजाओं के रोग कन्धेके रोग मुखका सूखना तथा कानमें शब्द उठने में और वात पित्त रोग में स्नेह अथवा मधुर पतली वस्तुओंसे बृंहणनस्य देना चाहिये और विनासमय के बालोंका पकना और बालोंका अथवा दाढ़ीका गिरना इन रोगोंमें भी नस्य देनी चाहिये ॥ १८४ ॥

बृंहणंनस्यंयथा ॥

सशर्करंपयःपिष्टंभृष्टमाज्येनकुंकुमम् । नस्यप्रयोगतोहन्याद्वातरक्तभवारुजः ॥ भ्रूशङ्खाक्षिशिरःकर्णसूर्य्यावर्त्तार्द्धभेदकान् । नस्यंस्यादणुतैलेनतथानारायणेनवा ॥ माषादिनावासर्पिर्भिस्तद्भेषजसाधितैः (अणुतैलमुक्तंसुश्रुतेनतद्यथा) तिलपरिपीड़नोपकरणकाष्ठान्याहृत्ययैरनल्पकालंतिलाः परिपीड़ितास्तान्यणूनिखण्डशः कल्पयित्वाउलूखलेसंकुट्यकटाहेपानीयेनाङ्गाठ्यक्वाथयेत्ततस्तैलं निःसरतितत्तैलंहस्तेनजलान्निःसार्य्यवातघ्नौषधकल्केनपचेत् । तदणुतैलमितितद्वातरोगहरम् ॥ तैलंकफेस्याद्वातेचकेवलेपवनेतथा । दद्यान्नस्यंसदापित्तेसर्पिर्मज्जानमेवच ॥ १८५ ॥

बृंहणनस्य ॥

केसरको धीमें भूनकर शक्कर और दूधके साथ पीसलेय इसके नस्य लेने से वात रक्तजनित रोग, सूर्य्यावर्त, अर्द्धावभेदक और भौंह, शिर की हड्डी, नेत्र, शिर और कानके रोग नष्ट होते हैं अणुतैल, नारायण तैल अथवा उर्द आदि यथायोग्य औषधियों से बनाये भये घीकेद्वारा नस्य लेनेको बृंहण नस्य कहते हैं (अणुतैल की सुश्रुत में कहीहुई विधि) जिनकाष्ठों से तिल पेरेजातेहों उनको लाकर छोटे २ टुकडे करके ओखलीमें कूटे फिर कढ़ाई में पानीकेसाथ औटाने से काठमें लगाहुआ तेल निकलता है इस तेलको ठंढेहोनेपर हाथकेद्वारा जल से निकालकर वातनाशक औषधियों के कल्ककेसाथ पाककरे इसको अणुतैल कहते हैं यह वातनाशक होताहै कफ वातजनितरोगों में तेलकी नास केवल वातरोगोंमें चरबीकीनास और पित्तकेरोगोंमें घी तथामज्जाकी नास लेनीचाहिये १८५॥

माषात्मगुप्तरास्नाभिर्बलारुबुकरौहिषैः । कृतोऽश्वगन्धयाक्वाथोहिंगुसैंधवसंयुतः ॥ कोष्णोनस्यप्रयोगेणपक्षाघातंसकम्पनम् । जयेदर्दितवातञ्चमन्यास्तम्भापबाहुकौ १८६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उड़द, किवांच, रासना, बरियारा, रेंडी, गन्धतृण और असगन्ध इनसंपूर्ण वस्तुओंका काढ़ाकरके हींग और सेंधानोन मिलावे फिर कुछ उष्णता बाकी रहनेपर इसकी नासले इससे पक्षाघात, कम्प, अर्दित वात, गलेकेपीछेकी नसका जकड़ना और अपबाहुक रोगका नाशहोता है ॥ १८६ ॥

प्रतिमर्शस्यमात्रातुद्वित्रिबिन्दुमितामता । प्रत्येकशोनासिकायास्नेहनेऽतिविनिश्चितम् । स्नेहग्रंथिद्वयंयावन्निमग्नाचोद्धृताततः । तर्ज्जनीयंस्रवेद्विन्दुंसामात्राबिन्दुसंज्ञिता।एवंविधैर्बिन्दुसंज्ञैरष्टाभिःशाणउच्यते।सदेयोमर्शनस्येषुप्रतिमर्शोद्विबिन्दुकः १८७॥

प्रतिमर्शकी मात्रा नासिकाके दोनों छिद्रों में दो अथवा तीन बिन्दु देनी चाहिये तर्जनी उंगली को दोपोरुएतक स्नेह में डुबोकर निकालने से जो बूंद टपकती है उसीकी यहां बिंदुसंज्ञाहै इन आठ बिंदुओंका एक शाण होताहै यही एक शाण मर्शनस्यकी मात्रा है और प्रतिमर्शनस्य की मात्रा दो बिंदुकी होती है ॥ १८७ ॥

समयाःप्रतिमर्शस्यबुधैःप्रोक्ताश्चतुर्दश ॥ प्रभातेदन्तकाष्ठान्तेगृहान्निर्गमनेतथा ॥ व्यायामाध्वव्यवायान्तेविण्मूत्रान्तेऽञ्जनेकृते।कवलान्तेभोजनान्तेदिवास्वप्नोत्थितेतथा॥ वमनान्तेतथासायंप्रतिमर्शःप्रयुज्यते। ईषदुच्छिङ्कनात्स्नेहोयथावक्त्रंप्रपद्यते ॥ नस्येनिषिक्तन्तंविन्द्यात्प्रतिमर्शःप्रमाणतः । (मात्रायुक्तम्) उच्छिष्टन्नपिबेच्चैतन्निष्ठीवेन्मुखमागतम् (उच्छिष्टम् । नस्यावशिष्टं) क्षीणेतृष्णास्यशोषार्त्तेबालेवृद्धेचपूज्यते । प्रतिमर्शान्नजायन्तेरोगाश्चैवोर्ध्वजत्रुजाः ॥ बलीपलितनाशश्चबलमिन्द्रियजंभवेत् १८८॥

पण्डित लोगोंने प्रतिमर्श नस्य के चौदह समय कहे हैं प्रातःकाल दन्तधावन के पीछे घरसे बाहर निकलने के समय, व्यायामके पीछे, मार्ग पर्य्यटनके पीछे, मैथुनके उपरांत मलमूत्र का त्यागकरके, अञ्जन लगाकर, कवलके उपरान्त भोजन करके, दिनमें सोकर वमनके उपरान्त और सायंकाल में जितना स्नेह सूंघकर छींकलेने से मुखमें आजाय वही प्रतिमर्शका प्रमाणहै जो स्नेह नासिकासेमुख में आजाय उसको थूकदे पिये नहीं क्षीणता तृषा तथा मुखके सूखनेसे व्याकुल बालक और वृद्धको प्रतिमर्श उत्तम होता है और इससे हँसलीके ऊपरके रोग झुर्री बालोंका पकना इन रोगोंका नाश होता है और इन्द्रियों में बल होताहै ॥ १८८ ॥

बिभीतंनिम्बगम्भारीशिवाशेलुश्चकाकिनी।एकैकतैलनस्येनपलितंनश्यतिध्रुवम् १८९

बहेड़ा, नींब, गम्भारी, हड़, बहुआर और कौआटोंटी इन में से किसी का तेल बनाकर नास लेनेसे बालोंका पकना नष्ट होताहै ॥ १८९ ॥

अथ नस्यविधिंवक्ष्येनस्यग्रहणहेतवे । देशेवातरजोमुक्तेकृतदन्तनिघर्षणम् ॥ विशुद्धंधूमपानेनस्विन्नभालगलंतथा। उत्तानशायिनंकिञ्चित्प्रलम्बाशिरसंनरम् ॥ आस्तीर्णेहस्तपादञ्चवस्त्राच्छादितलोचनम् ॥ समुन्नामितनासाग्रंवैद्योनस्तेनयोजयेत् ॥ कोष्णेनास्तपादञ्चवस्त्राच्छादितलोचनम् ॥ शुक्त्यावायन्त्रयुक्त्यावाञ्ज्ञोतैर्वानस्यमाचरेत् (स्रोच्छिन्नधारेणहेमतारादिशुक्तिभिः । शुक्त्यावायन्त्रयुक्त्यावाञ्ज्ञोतैर्वानस्यमाचरेत् (स्रोतैर्वस्त्रैस्तदुपलक्षितैस्तूलैरपि) नस्येष्वासिच्यमानेषुशिरोनैवप्रकम्पयेत् । नकुप्येन्नप्रभाषेतनोच्छिकेन्नहसेत्तथा ॥ एतैर्हिविहितःस्नेहोनैवान्तःसम्प्रपद्यते । ततःकासतिप्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्यायशिरोऽक्षिगदसम्भवः॥शृंगाटकमभिव्याप्यस्थापयेन्नगिलेद्द्रवम्। पञ्चसप्तदशैवा स्युर्मात्राःस्नेहस्यधारणे॥ उपविश्याथनिष्ठीवेन्नासावक्त्रागतंद्रवम्। वामदक्षिणपार्श्वाभ्यांनिष्ठीवेत्संमुखन्नहि। नीतेनस्येमनस्तापंरजःक्रोधञ्चसन्त्यजेत्। शयीतनिद्रान्त्यक्त्वा चप्रोत्तानोवाक्शतन्नरः॥ तथाशिरोविरेकान्तेधूमोवाकवलोहिता। नस्येत्रीण्युपदिष्टानिलक्षणानिप्रयोगतः॥ १६०॥

नासलेने की विधि॥

वायु और धूलसे रहित स्थान में दन्तधावन और धूम्रपान कराकर मस्तकपर पसीना आजाने पर चित्त सुलाकर हाथ पैर फैलावे और शिरको कुछ लंबा रक्खे फिर किसी वस्त्र से नेत्र मूंदकर नासिका के अग्रभागको कुछ उठाकर नासदेवे सुवर्ण और चाँदी आदि से बनी हुई सीपी अथवा साधारण सीपी या वस्त्र अथवा रुईके द्वारा कुछ उष्ण नासकी औषधिकी धार लगातार छोंडे और यन्त्रके द्वाराभी नास दीजाती है नासलेनेके उपरान्त शिरका कंपाना क्रोध करना बोलना छींकना और हँसी का त्यागकरे क्योंकि शिरके कंपाने आदिसे छोडाहुआ स्नेह भीतर नहीं आता और खांसी जुकाम शिरके रोग तथा नेत्रके रोग उत्पन्न होते हैं शृङ्गाटक पर्य्यन्त स्नेहके पहुंचजानेपर इसको निगले नहीं पांच सात अथवा दशमात्रा तक स्नेहको धारण करे नासिका के द्वारा मुखमें आये हुये गीले पदार्थको बैठकर बाईं अथवा दाहिनी ओरको थूंकदे परन्तु सन्मुख न थूंके नस्यको त्यागकरके मनका ताप रजोगुण के कार्य्य और क्रोधको त्याग करदे और सौवाक्य के उच्चारण में जितना समय लगताहै उतनी देरतक चित्त लेटे परन्तु सोवे नहीं शिरके विरेचन के उपरान्त धूम अथवा कवलका ग्रहण करना हितहै शास्त्रज्ञ पण्डितों ने प्रयोगके अनुसार शुद्धिहीन और अतियोग यह तीन लक्षण नस्य के कहेहैं॥ १६०॥

शुद्धहीनातियोगाहिविज्ञेयाःशास्त्रचिन्तकैः। लाघवंमलसंशुद्धिःस्रोतसांव्याधिसंक्षयः॥चित्तेन्द्रियप्रसादश्चशिरसःशुद्धिलक्षणम्। कण्डूप्रदेहोगुरुतास्रोतसांकफसंस्रवः॥ मूर्ध्निहीनविशुद्धेस्तुलक्षणंपरिकीर्तितम् (हीनविशुद्धेर्हीननस्येनविशुद्धेः) मस्तुलुङ्गागमोवातवृद्धिरिन्द्रियविभ्रमः॥ शून्यताशिरसश्चापिमूर्ध्निगाढंविरेचिते॥मस्तुलुङ्गम्॥मस्तकान्तःस्नेहः इन्द्रियविभ्रमः। इन्द्रियाणामन्यथाविषयग्रहणः। हीनातिशुद्धेशिरसिकफवातघ्नमाचरेत्। तत्रहीनेननस्येनशुद्धेवातघ्नमाचरेत्। सम्यग्विशुद्धेशिरसिसर्पिर्नस्येनदीयते॥ कफप्रसेकःशिरसोगुरुतेन्द्रियविभ्रमः॥ लक्षणन्तदतिस्निग्धेतत्ररूक्षंप्रदापयेत्॥ भोजयेच्चानभिष्यन्दिनस्येवातिकमादिशेत्॥ वातिकम्। वातलमुपदिशेत्। इति पञ्चकर्माणि॥ १६१॥

इन में से हलकापन, स्रोतोंके मलकी शुद्धता, रोगकानाश और मन तथा इन्द्रियों की प्रसन्नता यह शिरके शुद्ध होनेके लक्षणहैं खुजली, भारीपन, स्रोतों में कफका बहना और ग्लानि यह शिरके अच्छे प्रकार न शुद्धहोनेके लक्षणहैं मस्तक के भीतरसे स्नेहका निकलना वायुकी वृद्धि इन्द्रियोंका भ्रम और मस्तक की शून्यता यह शिरके अधिक विरेचन होनेसे अतियोग लक्षण कहलाताहै हीन शुद्धि में कफनाशक और अतियोग में वातनाशक क्रिया करनी चाहिये हीननस्यसे शुद्धता होनेपर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वातघ्न क्रिया करे शिरके अच्छेप्रकार शुद्ध होजानेपर नासमें घी छोडें शिरके अत्यन्त चिकनेहोजाने पर कफका बहना मस्तककी भारीपन और इन्द्रियोंका भ्रम होताहै ऐसी अवस्थामें रूक्षक्रियाकरनी चाहिये और अभिष्यन्द रहितभोजन तथा बादी औषधियोंकेद्वारा नासलेनीचाहिये इतिपंचकर्म१६१॥

अथ धूमपानविधिः॥

धूमस्तुषड्विधःप्रोक्तःशमनोबृंहणस्तथा॥ रेचनःकासहाचैववामनोव्रणधूपनः॥ शमनस्यतुपर्य्यायौमध्यःप्रायोगिकस्तथा॥ बृंहणस्यचपर्य्यायौस्नेहनोमृदुरेवच। रेचनस्यापिपर्यायौशोधनस्तीक्ष्णएवच॥ १६२॥ धूमपान विधि॥

धूमपान छः प्रकार का है शमन, बृंहण, रेचन, कासघ्न वामन और व्रणधूपन शमनधूम को मध्य तथा प्रायोगिकभी कहते हैं बृंहण को स्नेहन तथा मृदु कहतेहैं और रेचन धूमको शोधन तथा तीक्ष्ण भी कहतेहैं॥ १६२॥

अधूमार्हाश्चखल्वेतेश्रान्तोभीतश्चदुःखितः। दत्तवस्तिविरिक्तश्चरात्रौजागरितस्तथा॥ पिपासितश्चदाहार्त्तस्तालुशोषीतथोदरी। शिरोऽभितापीतिमिरीच्छर्द्याध्मानप्रपीडितःक्षतोररुकःप्रमेहार्त्तःपाण्डुरोगीचगर्भिणी। रूक्षःक्षीणोऽभ्यवहृतक्षीरक्षौद्रघृतासवः॥ भुक्तान्नदधिमत्स्यश्चबालोवृद्धःकृशस्तथा। अकालेचातिपीतश्चधूमःकुर्य्यादुपद्रवान्॥ तत्रेष्टंसर्पिषःपानंनावनांजनतर्पणम्। सर्पिरिक्षुरसंद्राक्षांपयोवाशर्कराम्बुवा॥ मधुराम्लौरसौवापिवमनायप्रदापयेत्॥ १६३॥

थकाहुआ, भीत, दुःखी, वस्ति अथवा जिसको विरेचन दियागयाहो, रात्रिमें जागाहुआ, तृषित, दाहयुक्त और तालूका सूखना, उदर, शिरकेरोग, तिमिर, छर्दि, आध्मान, उरःक्षत, प्रमेह तथा पाण्डुरोगसे युक्त, गर्भिणीस्त्री, रूक्षतायुक्त, क्षीण, दूध, सहत अथवा आसवपान कियेहुए अन्न, दही अथवा मछली खायेहुए बालक, वृद्ध और कृश इनसबको धूमपान अयोग्यहै और समयके विना भी धूमपान करनेसे उपद्रव उत्पन्न होतेहैं उपद्रवों के उत्पन्न होनेपर घृतपान, नस्य, अञ्जन तथा संतर्पणक्रिया करनीचाहिये और घी, ईखकारस, दाख, दूध, शर्बत अथवा मधुर अम्लरस के द्वारा वमनकरे॥ १६३॥

धूमस्तुद्वादशाद्वर्षात्गृह्यतेशीतकान्नच। कासश्वासप्रतिश्यायान्मन्याहनुशिरोरुजः॥ वातश्लेष्मविकारांश्चहन्याद्धूमःसुयोजितः। धूमोपयोगात्पुरुषःप्रसन्नेन्द्रियवाङ्मनः॥ दृढकेशद्विजश्मश्रुःसुगन्धिवदनोभवेत्॥ १६४॥

बारह वर्ष की अवस्थासे लेकर अस्सी वर्ष तक धूमपान कराना चाहिये अच्छे प्रकार धूमपान करनेसे खांसी, श्वास, जुकाम, गलेकेपीछेकी नस तथा जाबडे के रोग शिरकी पीडा और वातकफके रोग शान्तहोतेहैं और इन्द्रिय, वाक् तथा मनकी प्रसन्नता केश, दांत तथा दाढीकी दृढता और मुखमें सुगन्ध होजाती है॥ १६४॥

धूमनाडीभवेत्तत्रत्रिखण्डाचत्रिपर्व्विका। कनिष्ठिकापरीणाहाराजमाषागमान्तरा॥ (राजमाषागमःसमस्तानाडी) धूमनाडीभवेद्दीर्घाशमनेरोगिणोऽङ्गुलैः। चत्वारिंशन्मितैस्तद्वद्द्वात्रिंशद्भिर्मृदौमता॥ (मृदौबृंहणे) तीक्ष्णेचतुर्विंशतिभिःकासघ्नेषोड

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शोन्मितैः (तीक्ष्णेरेचने) दशांगुलैर्वामनीयेतथास्याद्व्रणनाडिका (तथादशांगुलमिता) कलायमण्डलस्थूलाकुलत्थागमरन्ध्रिका ॥ १९५ ॥

धूमपीने की नली तीनखण्ड तथा तीनपोरवाली बनानी चाहिये इसकी मुटाई कनिष्ठा उंगली के समान और छेद बड़ेउर्द के जाने के लायक होना चाहिये नलीकी लम्बाई शमनधूममें रोगीके चालीस अंगुल बृंहणधूममें बत्तीस अंगुल रेचन धूममें चौबीस अंगुल कासघ्न धूममें सोलह अंगुल और वामनधूममें दश अंगुलकी होनी चाहिये व्रणधूपन धूममें दशअंगुलकी लम्बाई मटरके समान मुटाई और कुलथी के जाने भरेका छेद होना चाहिये ॥ १९५ ॥

अथेषिकांप्रलिम्पेच्चसुश्लक्ष्णंद्वादशांगुलाम्। (ईषिकाम् शरकाण्डम्) धूमद्रव्यस्य कल्केनलेपश्चाष्टांगुलःस्मृतः। कल्कंकर्षमितंलिप्त्वाच्छायाशुष्कंचकारयेत् ॥ ईषिकाम पनीयाथस्नेहाक्तांवर्त्तिमादरात्। अङ्गारैर्दीपितांकृत्वाधृत्वानेत्रस्यरन्ध्रके ॥ वदनेनपिबे द्धूमंवदनेनैवसंत्यजेत्। नासिकाभ्यांततःपीत्वामुखेनैववमेत्सुधीः ॥ १९६ ॥

बारह अंगुल के लम्बे एक सरकण्डेपर एकतोला धूमपान की औषधियों के कल्क से आठ अंगुल तक चारोंओर लेप करके छायामें सुखावे फिर सूखजाने पर सरकण्डे को धीरे धीरे निकालकर उस पोली बत्ती में तेल लगाकर और अङ्गारे से जलाकर नलीके छेदपर रक्खे पहले मुख से धूमपीकर मुखही से निकाले फिर नाकसे धुआं पीकर मुखमें से निकाले ॥ १९६ ॥

शरावसंपुटेक्षिप्त्वाकल्कमङ्गारदीपितम्। छिद्रेनेत्रंनिवेश्याथव्रणंतेनैवधूपयेत् ॥ एलादिकल्कंशमनेस्निग्धंसर्जरसंमृदौ। रेचनेतीक्ष्णकल्कंचश्वासघ्नेक्षुद्रकोषणम् ॥ वमनेस्नायुचर्माद्यंदद्याद्धूमस्यपानकम्। व्रणेनिम्बवचाद्यंचधूपनंसंप्रशस्यते ॥ १९७ ॥

किसी सकोरे में औषधियों का कल्क धरके अङ्गारोंपर रक्खे और उसे एकछिद्र युक्त सकोरेसे बंद करदे फिर उसी सकोरेके छेदमें नली लगाकर घावमें धूप देवे शमनधूममें इलायची आदि औषधियों का कल्क बृंहण में चिकना राल का रस रेचन में तीक्ष्ण औषधियों का कल्क कासघ्न में भटकटैया तथा मिर्च और वामन में स्नायु चर्मादिक पीने के लिये ग्रहण करने चाहिये और व्रणमें नींब तथा वच आदिके कल्क से धुआं देना श्रेष्ठहै ॥ १९७ ॥

अन्येऽपिधूमागेहेषुकर्त्तव्यारोगशान्तये। (सयथा) मयूरपिच्छंनिम्बस्यपत्राणिबृह तीफलम् ॥ मरिचंहिंगुमांसीचबीजंकार्पाससम्भवम्। छागरोमाहिनिर्मोकोविष्ठावैडा लिकीतथा ॥ (अहिनिर्मोकः सर्पकञ्चुकः) गजदन्तश्चतच्चूर्णंकिंचिद्घृतविमिश्रितम्। गेहेषुधूपनंदत्तंसर्वान्बालग्रहान्हरेत् ॥ पिशाचान्राक्षसान्हत्वासर्वज्वरहरंभवेत्। (इत्यपराजितोधूमः) ॥ १९८ ॥

रोगों के नाशके लिये घरमें औरभी धूम काम में लाने चाहिये जैसे मोरकी पूंछ, नींबकेपत्ते, भटकटैया का फल, मिर्च, हींग, जटामांसी, बिनौला, बकरे के रोंयें, साँपकी केंचली, बिल्ली की विष्ठा और हाथीदांत इनसबका चूर्ण करके कुछ घी मिलाय घरमें धूपदेने से संपूर्ण बालग्रह पिशाच तथा राक्षसों कानाश होकर संपूर्ण ज्वरों का नाश होताहै इति अपराजित धूप ॥ १९८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मनस्तापंरजःक्रोधोधूमपानेनिवारयेत्नेत्राणिधातुजान्याहुर्नलंवंशादिजान्यो ॥१९९॥

धूमपानकरके मनकातापं रजोगुणके काम और क्रोधको त्यागदेवे धूमपानकी नली धातुकी अथवा बांसआदि की बनावे ॥ १९९ ॥ अथ गण्डूषकवलप्रतिसारणविधिः ॥

तत्रगण्डूषकवलप्रतिसारणानांभेदकानिलक्षणान्याह । तत्रगण्डूषः । स्नेहक्षीरकषायादिद्रवैःसम्पूर्णमाननम् । आपूर्य्यस्थीयतेतावद्विधिर्गण्डूषधारणे । कफपूर्णास्यताया वच्छेदोदोषस्यवाभवेत् ॥ नेत्रघ्राणस्रुतिर्य्यावत्तावद्गण्डूषधारणम् । गण्डूषान्सुस्थितः कुर्य्यात्स्विन्नभालगलादिकः ॥ मनुष्यस्त्रींस्तथापञ्चसप्तवादोषनाशनात् । गलादिकइत्यादिशब्देनगण्डकपोलौगृह्येतेसुश्रुतोक्तत्वात् ॥ चतुर्विधःस्याद्गण्डूषःस्नेहनःशमनस्तथा ॥ शोधनोरोपणश्चैवकवलश्चापितादृशः । स्निग्धोष्णैःस्नैहिकोवातेस्वादुशीतैः प्रसादनः ॥ पित्तेकट्वम्ललवणैरुष्णैःसंशोधनङ्कफे । कषायतिक्तमधुरैःकटूष्णोरोपणो व्रणे । दद्याद्द्रवेषुचूर्णञ्चगण्डूषेकोलमात्रकम् । कर्षप्रमाणःकल्कश्चकवलेदीयतेबुधैः ॥ धार्यन्तेपञ्चमाद्वर्षाद्गण्डूषाःकवलादयः । व्याधेरपचयस्तुष्टिर्वैशद्यंवक्त्रलाघवम् ॥ इन्द्रियाणांप्रसादश्चगण्डूषेविधृतेभवेत् । हरेदास्यस्यवैरस्यंशोषपाकंव्रणंतृषाम् ॥ दन्तचालञ्चगण्डूषोवैशद्यंतुकरोतिहि ॥ २०० ॥

गण्डूष (कुल्ला) कवल (ग्रास) और प्रतिसारण (मंजन) की विधि गंडूषकवल और प्रतिसारणके अलग २ लक्षण ॥

गण्डूष स्नेह दूध अथवा क्वाथ आदिकपतले पदार्थोंको मुखमें भरके रखनेको गण्डूष धारण कहते हैं जबतक मुखमें कफ भराहै अथवा दोषों का नाश होवे और नेत्र तथा नासिकासे जल टपकने लगे तबतक गण्डूष धारणकरे स्वस्थ होकर जबतक माथे और गले आदिमें स्वेद न आजावे तबतक कुल्ले करता रहै एक दो तीन पांच अथवा सात बार दोषके नाशहोने के लिये कुल्ले करे गण्डूष (गरारा) चार प्रकार काहै स्नेहन, शमन, शोधन और रोपण और इसी प्रकारसे ग्रासके भी यही चारप्रकार होते हैं वातरोगमें स्निग्ध तथा उष्ण औषधियोंके द्वारा स्नेहन गण्डूष पित्तकी अधिकतामें मधुर तथा शीतल औषधियोंके द्वारा शमन गण्डूष कफकी अधिकता में कटु अम्ल तथा लवण रसयुक्त उष्ण औषधियों के द्वारा शोधन गण्डूष और घाव में कषैली, तिक्त, मधुर, कटु तथा उष्ण औषधियों के द्वारा रोपण गण्डूषको काम में लाना चाहिये गण्डूष के लिये पतली वस्तुओं में औषधियों का चूर्ण छः माशे और ग्रासके लिये एक तोला कल्क देना चाहिये पांच वर्ष की अवस्था के उपरान्त गण्डूष और ग्रास आदिको धारण करना चाहिये गण्डूष धारण करनेसे रोग का नाश संतुष्टता प्रसन्नता मुखमें हलकापन तथा इन्द्रियों की चैतन्यता होती हैं और मुख की विरसता, सूखना, पकना, घाव, तृषा तथा दांतों का हिलना नष्ट होताहै और मुख निर्मल होजाताहै ॥ २०० ॥

अथ कवलः ॥

अर्द्धंनिःक्षिप्यसंचर्व्यनिष्ठीवेत्कवलेविधिः ॥

वातपित्तकफघ्नस्यद्रव्यस्यकवलंमुखे । कवलःकुरुतेकाङ्क्षाम्भक्ष्येषुहरतेकफम् । तृष्णांशोषञ्चवैरस्यंदन्तचालञ्चनाशयेत् २०१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रास की विधि॥

वात, पित्त और कफनाशक वस्तुओं के ग्राससे आधा मुखभर के चबाकेर थूक देनेको ग्रास विधि कहतेहैं ग्रास धारणकरनेसे भोजन में रुचि और कफ तृषा मुखका सूखना विरसता तथा दांतोंका हिलना नष्ट होताहै॥ २०१॥

अथ प्रतिसारणम्॥

दन्तजिह्वामुखानांयच्चूर्णकल्कावलेहकैः। शनैर्घर्षणमंगुल्यातदुक्तंप्रतिसारणम्॥ वैर स्यंमुखदौर्गन्ध्यंमुखशोकंतथातृषाम्। अरुचिन्दन्तपीडाञ्चनिहन्तिप्रतिसारणम्॥ हीने जाड्यकफोत्क्लेशावरसज्ञानमेवच। अतियोगान्मुखेपाकःशोषस्तृष्णावमिःक्लमः॥ २०२॥

प्रतिसारण की विधि॥

चूर्ण, कल्क अथवा अवलेहको उंगलियों में लगाकर दांत जिह्वा और मुखके धीरे २ रगड़ने को प्रति सारण कहतेहैं प्रतिसारण से मुखकी विरसता तथा दुर्गन्धि मुखका सूखना तृषा अरुचि और दांतों की पीड़ा का नाशहोताहै परन्तु प्रतिसारण के अच्छेप्रकारसे न होने में मुखकी जड़ता कफकी वृद्धि और रसों के ग्रहण करने में असामर्थ्य होती है प्रतिसारणकी अधिकता में मुखका पकना, सूखना, तृषा, छर्दि और ग्लानि होती है॥ २०२॥

अथ स्वेदविधिः॥

स्वेदश्चतुर्विधःप्रोक्तस्तापोष्मस्वेदसंज्ञितः॥ उपनाहोद्रवःस्वेदःसर्वेवातार्त्तिहारिणः तापस्वेदउष्मस्वेदश्चताभ्यांसंज्ञितः॥ उपनाहःस्वेदः। स्वेदौतापोष्मजौप्रायःश्लेष्मघ्नौ समुदीरितौ। उपनाहस्तुवातघ्नः पित्तसंगेद्रवोहितः॥ द्रवोहिद्रवस्वेदः। महाबलेमहाव्या धौशीतेस्वेदोमहान्स्मृतः। दुर्बलेदुर्बलस्वेदोमध्यमेमध्यमोमतः॥ बलासेरूक्षणःस्वेदो रूक्षस्निग्धःकफानिले। रूक्षणःरूक्षयतीतिरूक्षणःनन्द्यादित्वाल्ल्युप्रत्ययः॥ २०३॥

स्वेद की विधि॥

स्वेद चार प्रकारका होताहै तापसस्वेद उष्णस्वेद उपनाहस्वेद और द्रवस्वेद यह चारों प्रकारके स्वेद वातनाशक होते हैं तापसस्वेद तथा उष्णस्वेद यह दोनों कफनाशक उपनाहस्वेद वातनाशक और द्रवस्वेद पित्तनाशक होताहै बलवान् अथवा बड़ेरोग से युक्त अथवा शीतकाल में महास्वेद दुर्बल में स्वल्पस्वेद और मध्यम अवस्थावाले को मध्यमस्वेद हितहै कफ में रूखा स्वेद कफवात में रूखा और चिकनास्वेद देना चाहिये॥ २०३॥

कफमेदोवृतेवातेकोष्णंगेहंरवेःकरान्। नियुद्धंमार्गगमनंगुरुप्रावरणंध्रुवम्॥ चिन्ता व्यायामभारांश्चसेवेतामयमुक्तये। येषांनस्यंप्रदातव्यंवस्तिश्चापिहिदेहिनाम्॥ शोधनी याश्चयेकेचित्पूर्वंस्वेद्याश्चतेमताः। स्वेद्याऊर्ध्वन्त्रयोऽपीहभगन्दर्य्यर्शसस्तथा॥ अ श्मर्य्याचातुरोजन्तुःशमयेच्छस्त्रकर्मणः। शस्त्रकर्मणःऊर्ध्वंपश्चाच्चेतिसुश्रुते। पश्चात्स्वे द्याहृतेशल्येमूढगर्भगदेतथा। कालेप्रजाताऽकालेवापश्चात्स्वेद्यानितम्बिनी॥ २०४॥

कफ तथा मेदके द्वारा वायुके रुकजानेपर उष्णघरमें रहना धूप युद्ध मार्ग गमन भारी वस्त्रोंका ओढ़ना चिन्ता व्यायाम और बोझालेचलना इन सबबातोंका सेवनकरे जिनको नस्य तथा वस्तिदेनी होय अथवा विरेचन आदिकेद्वारा शुद्धकरनाहो उनको प्रथम स्वेद कराना चाहिये भगन्दर बवासीर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और पथरी इन रोगोंमें शस्त्रकर्मके पीछे स्वेद करानाचाहिये मूढगर्भरोग (वायुसेगर्भका ...होजाना) में शस्त्रके निकाललेनेपर और समयमें अथवा बे समयमें प्रसवहोनेके उपरान्त स्वेददेना चाहिये २०४

सर्वान्स्वेदान्निवातेचजीर्णान्तेवाविचारयेत् । स्वेदाद्धातुस्थितादोषाःस्नेहक्लिन्नस्य देहिनः ॥ द्रवत्वंप्राप्यकोष्ठान्तर्गत्वायान्तिविरेकताम् । स्नेहाभ्यक्तशरीरस्यशीतैराच्छाद्यचक्षुषी ॥ स्वेद्यमानशरीरस्यहृदयंशीतलैःस्पृशेत् (शीतैरार्द्रवस्त्रादिभिः)॥ २०५ ॥

संपूर्ण स्वेद भोजनके परिपाक होजानेपर वायुरहित स्थानमें निकालने चाहिये स्नेह धारणकिये हुए पुरुषको स्वेद देनेसे धातुओंमें स्थित संपूर्ण दोष पिघलकर कोष्ठके भीतर जातेहैं और दस्त के द्वारा निकलजातेहैं शरीरमें तेलआदिक लगायेहुए मनुष्यके नेत्रोंको शीतल वस्त्रसे ढके फिर पसीना निकालकर इसके हृदयको शीतल वस्तुसे स्पर्शकरे ॥ २०५ ॥

अजीर्णोदुर्बलीमेहीक्षतःक्षीणःपिपासितः । अतीसारीरक्तपित्तीपाण्डुरोगीतथोदरी॥ मेदस्वीगर्भिणीचैवनहिस्वेद्याविजानता । (स्वेदादेषांयातिदेहोविनाशंनोसाध्यत्वंयाति चैषांविकाराः) एतान्यपिमृदुस्वेदैःस्वेदसाध्यानुपाचरेत् । मृदुस्वेदंप्रयुञ्जीततथाहृन्मुष्कदृष्टिषु ॥ २०६ ॥

अजीर्ण,दुर्बलता,प्रमेह,घावसे क्षीणता तथा तृषासेयुक्त और गर्भिणी स्त्रीको स्वेद नहीं देनाचाहिये और अतीसार,रक्तपित्त,पाण्डु,उदर तथा मेदसे युक्त कोभी स्वेद दिवाना हितकारी नहीं है क्योंकि इनको स्वेद देने से रोगियों के शरीर नष्ट होजाते हैं अथवा रोग असाध्य होजाते हैं और इनको जो स्वेदहीसे साध्यसमझे तो थोडा स्वेददे हृदय अण्डकोश और नेत्रोंमेंभी कोमल स्वेद देनाचाहिये २०६

अतिस्वेदात्सन्धिपीडादाहस्तृष्णाक्लमोभ्रमः । पित्तासृक्पिडिकाकोपस्तत्रशीतैरुपाचरेत् ॥ २०७ ॥

अधिक स्वेददेनेसे सन्धियों में पीडा, दाह, तृषा, ग्लानि, भ्रम, रक्तपित्त और पिडिका (फुंसी) उत्पन्न होतीहैं इन उपद्रवोंमें शीत इलाज करना चाहिये ॥ २०७ ॥

तत्र तापस्वेदमाह ॥

तेषुतापाभिधःस्वेदोबालुकावस्त्रपाणिभिः प्रतप्तैरम्लसिक्तैश्चकायेऽलक्तकवेष्टिते २०८॥

तापस्वेद की विधि ॥

शरीर में लत्ते लपेटकर बालूवस्त्र अथवा हाथों को खटाई में भिगोकर और गरम करके जो स्वेद दिया जाताहै उसको तापस्वेद कहते हैं ॥ २०८ ॥

ऊष्मस्वेदमाह ॥

अथवावातनिर्नाशिद्रव्यक्राथरसादिभिः । उष्णैर्घटंपूरयित्वापार्श्वेच्छिद्रंविधायच ॥ विमुद्ध्यास्यंत्रिखण्डांचधातुजांकाष्ठजामुत । षडंगुलास्यांगोपुच्छांनाडींयुञ्ज्याद्द्विहस्त काम् ॥ सुखोपविष्टंस्वभ्यक्तंगुरुप्रावरणावृतम् । हस्तिशुण्डिकयानाड्यास्वेदयेद्वात रोगिणम् ॥ त्रिखण्डामितिस्त्रेदसौकर्यार्थम् षडंगुलास्यामिति । मूलेषडंगुलंविशाल मुखंगोपुच्छमिवक्रमकृशम् । तेनाग्रगोपुच्छाग्रपरिमाणेनकृशाम् नाडीमन्तःसरन्ध्रांद्वि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हस्तिकाः हस्तद्वयपरिमाणाम्॥ हस्तिशुण्डिकयेतिहस्तिशुण्डेवक्रमशःकृतत्वान्नाड्या इयंसंज्ञा ॥ २०९ ॥

उष्ण स्वेद ॥

किसी घटमें वातनाशक औषधियों का उष्ण क्काथ अथवा रसादिक भरके उसका मुख बन्द करे और उसके किसी ओर एकछिद्र करके तीन खण्डवाली धातु अथवा काष्ठसे बनीहुई भीतरसे पोली मूल में छः अंगुल के मुखवाली दो हाथ की लम्बी और गौ की पूंछके समान गावदुम बनीहुई नली लगावे वातरोगीकोतेल आदि लगाकर और भारी वस्त्र उढ़ाकर सुखपूर्वक बैठावे फिर हस्तिशुण्डिक (हाथी की सूंड के समान होने से हस्तिशुंण्डक कहाती हैं) नाम नली से स्वेद देवे ॥ २०९ ॥

पुरुषायाम्मात्रांवाभूमिंसंमार्ज्यखादिरैः॥काष्ठैर्दग्ध्वातथाभुक्ष्यक्षीरधान्याम्लवारिभिः॥ वातघ्नपत्रैराच्छाद्यशयानंस्वेदयेन्नरम्। एवंमाषादिभिःस्विन्नैःशयानंस्वेदमाचरेत् २१०

जितना बड़ा रोगी हो उतनी पृथ्वी को सफाकरके उसपर कत्थे की लकड़ी को जलाकर पीछे दूध और कांजी छिड़ककर वातनाशक पत्ते बिछावे फिर उनपर रोगीको सुलाकर उर्द आदिकोंके द्वारा स्वेद देवे ॥ २१० ॥

उपनाहस्वेदः ॥

तथोपनाहस्वेदञ्चकुर्य्याद्वातहरौषधैः। प्रदह्यदेहंवातार्त्तंक्षीरमांसरसादिभिः ॥ अम्ल पिष्टैःसलवणैःसुखोष्णैःस्नेहसंयुतैः। उपग्राम्यानूपमांसैर्जीवनीयगणेनच ॥ दधिसौवीर कक्षीरैर्वीरतर्वादिनातथा। कुलत्थमाषगोधूमैरतसीतिलसर्षपैः ॥ शतपुष्पादेवदारुशे फालीस्थूलजीरकैः॥एरण्डमूलजीरैश्चरास्नामूलकशिग्रुभिः। मिसिकृष्णाकुठेरैश्चलवणै रम्लसंयुतैः ॥ प्रसारण्यश्वगन्धाभ्यांबलाभिर्दशमूलकैः। गुडूच्यावानरीबीजैर्यथालाभं समाहृतैः॥क्षुण्णैःस्विन्नैश्चवस्त्रेणबद्धैःसंस्वेदयेन्नरम्। महाशाल्वणसंज्ञोऽयंयोगःसर्वानि लार्त्तिहृत् ॥ अस्यायमर्थः। उपनाहस्वेदञ्चकुर्य्यात्केनप्रकारेणेत्याकाङ्क्षायांतत्प्रकारमा ह। वातहरौषधैःकथम्भूतैः। अम्लपिष्टैः। अम्लेनकाञ्जिकतक्रादिनापिष्टैःसलवणैः। स्ने हसंयुतैः। क्षीरमांसरसन्वितैः। सुखोष्णैः। वातार्त्तंदेहंप्रदह्यप्रलिप्यस्वेदयेदित्यर्थः।अथ वाम्लेनसंपिष्टैःकोष्णैःसूक्ष्मपुटस्थितैः।भेषजैःस्वेदयेत्किंवास्विन्नैःकोष्णैःपटस्थितैः २११

उपनाह स्वेद ॥

कांजी से वातनाशक औषधियों को पीसकर लवण तेल आदिक दूध तथा मासके रसादिकोंको मिलावे फिर कुछ गरमकरके वातरोगी के शरीर में लेपकरके उपनाह स्वेद देवे अथवा ग्रामीण तथा अनूपदेश के जीवों के मांसकारस जीवनीयगण दही सौवीर दूध और वीरतरु आदिगण के द्वारा स्वेद देना चाहिये कुलथी, उर्द, गेहूं, अलसी, तिल, सरसों, सौंफ, देवदारु, शेफालिका, कालीजीरी, रेंडी कीजड़, जीरा, रासना, मूली, सहँजन, सौंफ, पीपल, सफेद तुलसी, सेंधानोन, कांजी, गन्धप्रसारणी, असगन्ध, वरियारा, दशमूल, गिलोय और किवांच के बीज इनसंपूर्ण औषधियों में से जितनी मिलसकें उनकोलेकर कूटकर उबाले फिर किसी वस्त्रमें बाँधकर स्वेददेवे यह महाशाल्वण नाम स्वेद संपूर्ण वात रोगों का नाशक है ऊपर कही हुई औषधियों को कांजी आदिसे पीसकर कुछ उष्ण करके अथवा उबालकर कुछ उष्णता रहनेपर वस्त्र में बाँध के स्वेद देवे ॥ २११ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्रवस्वेदमाह ॥

द्रवस्वेदस्तुवातघ्नोद्रव्यक्काथेनपूरिते। कटाहेकोष्ठकेवापिसूपविष्टोवगाहयेत् ॥ सौवर्णं राजतंवापिताम्रंलोहश्चदारुजम् । कोष्ठकन्तत्रकुर्वीतोच्छ्रायेषड्विंशदंगुलम् ॥ आयामेवातदेवस्याञ्चतुष्कोणन्तुचिक्कणम् (पक्षान्तरमाह) नाभेःषडंगुलंयावन्मग्नंक्काथस्य धारया ॥ कोष्णयास्कन्धयोःसिक्तस्तिष्ठेत्स्निग्धतनुर्नरः ॥ (अयमर्थः) प्रथमतोवातघ्न द्रव्यक्काथेनकण्ठपूरिते कोष्ठकेकटाहेवासूपविष्टस्तिष्ठेत् ॥ अथवानाभेःषडंगुलमूर्ध्वंयावत्क्काथेमग्नउपविष्टः। पश्चात्क्काथस्यधारयास्कन्धयोःसिच्यमानस्तिष्ठेत् ॥ यावत्कोष्ठकं परिपूर्णंभवतीत्यर्थः। क्काथपक्षेप्रथमतःस्नेहाभ्यक्ततनुरुपविशेत् ॥ मुहूर्त्तैकंसमारभ्ययावत्स्याच्चतुष्टयम्। तावत्तदवगाहेतयावदारोग्यनिश्चयः ॥ एवंतैलेनदुग्धेनसर्पिषास्वेदयेन्नरम्। एकान्तरेद्व्यन्तरेवायुक्तःस्नेहोऽवगाहने ॥ एतावताक्काथोदुग्धश्चनित्यमेवयुज्यतेस्नेहस्तुदिनमेकन्द्वेवादिनेगमयित्वायुक्तः । अग्निमान्द्यशङ्कयेतिभावः ॥ शिरामुखैर्लोमकूपैर्धमनीभिश्चतर्पयेत्। शरीरेबलमाधत्तेयुक्तःस्नेहोऽवगाहने ॥ जलसिक्तस्यवर्द्धन्तेयथामूलेऽङ्कुरादयः। तथैवधातुवृद्धिर्हिस्नेहसिक्तस्यजायते ॥ नातः परतरःकश्चिदुपायोवातनाशनः। शीतशूलव्युपरमेस्तम्भगौरवनिग्रहे ॥ दीप्तेऽग्नौमार्दवेजातस्वेदनाद्विरतिर्मता ॥ २१२ ॥ द्रवस्वेद ॥

वातनाशकऔषधियोंकेकाढे से किसी कढाव अथवा हौंजको भरके उसमें रोगीको बैठालकर स्नान करावे सुवर्ण,चाँदी,तांबा,लोहा अथवा काष्ठकेद्वारा चौकोना चिकना हौदबनावे यहउंचाई तथा चौडाईमें छव्बीस अङ्गुलका होना चाहिये(दूसरा प्रकार)रोगी शरीरमें तैलमर्दन करके नाभिके छःअंगुलऊपरतकके धडको डुबोकर कढाव अथवा हौज़में बैठे और उस कडाह अथवा हौज़में वातनाशक औषधियोंका क्काथभरदे फिर रोगीके कन्धेपर धीरे२ कुछ गरम क्काथकी धारा तबतक छोडतारहे जबतक वह कडाह अथवा हौज़ ऊपरतक भर न जाय चारमुहूर्त्ततक अथवा जबतक रोगके नाशका निश्चय न हो जाय तबतक उसीमें बैठारहे इसप्रकार तैल दूध अथवा घृतके द्वारा स्वेददेवे परन्तु तैलादिक स्नेहके द्वारा एक अथवा दो दिनका बीच देकर स्वेददेवे क्योंकि स्नेहके द्वारा नित्य स्वेदके देने से मन्दाग्नि होनेका संदेह होताहै अवगाहनके द्वारा स्नेह देनेसे रोमकूप शिराओं के मुख और धमनियों के द्वारा संपूर्ण शरीरमें स्नेह प्रविष्ट होकर शरीरकी तृप्ति और बलको बढ़ाताहै जैसे जड में जलके सींचने से अंकुरादि उत्पन्न होतेहैं उसी प्रकार स्नेह के द्वारा सिंचेहुये शरीरकी धातु बढ़तीहैं इससे बढ़कर और कोई वातके नाशकरने का उपाय नहीं है शीतलता,शूल,स्तब्धता तथा भारीपनके निवृत्त होजानेपर और अग्निकी दीप्ति तथा शरीरमें कोमलता उत्पन्न होनेपर स्वेदको नहीं देनाचाहिये २१२॥

अथ मूर्द्धतैलविधिः ॥

अभ्यंगःपरिषेकश्चपिचुर्वस्तिरितिक्रमात्॥मूर्द्धतैलञ्चतुर्द्धास्याद्बलवत्तद्यथोत्तरम्॥ अभ्यंगःतैलेनशिरसोमर्दनम्। परिषेकः। शिरसिधारापातनंपिचुः। तैलाक्तस्तूलःफाहा इतिलोकेवस्तिर्वक्ष्यमाणः ॥ त्रयोऽभ्यंगादयःपूर्वेप्रसिद्धाःसर्वतःस्मृताः। शिरोवस्ति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विधिश्चात्रप्रोच्यतेसुज्ञसम्मतः॥शिरोवस्तिश्चर्म्मणःस्याद्द्विमुखोद्वादशांगुलः। शिरःप्रमाणस्तंबध्द्वापस्तकेमाषपिष्टकैः ॥ सन्धिरोधंविधायाशुस्नेहैःकोष्णैःप्रपूरयेत्।तावद्धार्य्यस्तुयावत्स्यौन्नासाकर्णमुखस्रुतिः॥वेदनोपशमोवापिमात्राणांवासहस्रकम्।स्वजानुनःकरावर्त्तंकुर्य्याच्छोटिकयायुतम् ॥ एषामात्राभवेदेकासर्व्वत्रैवेषनिश्चयः। विनाभोजनमेवात्रशिरोवस्तिःप्रशस्यते ॥ प्रयोज्यस्तुशिरोवस्तिःपञ्चसप्तदिनानिवा । विमोच्यशिरसोवस्तिंगृह्णीयाच्चसमन्ततः ॥ ऊर्ध्वकायन्ततःकोष्णेनीरेस्नानंसमाचरेत् । अनेनदुर्ज्जयारोगावातजायान्तिसंक्षयम् ॥ शिरःकम्पादयस्तेनसर्व्वकालेषुयुज्यते।पञ्चसप्तदिनानिवेत्युक्त्वासर्व्वकालेष्वितिशिरःकम्पादिरोगानुवृत्तौज्ञेयम् ॥ २१३ ॥

मस्तकमेंतेलडालने की विधि ॥

अभ्यङ्ग [शिरमें तेलमलना] परिषेक [मस्तकमें तेलकी धार छोड़ना] पिचु [तेलसे डूबीहुई रुईको शिरमें रखना] और वस्ति [वस्तिकी रीतिआगे लिखेंगे] यह चारप्रकार शिरमें तेलडालने केहैं यह क्रमसे एकसे एक बलकारी हैं प्रथम तीन अभ्यङ्गादिक प्रसिद्ध हैं। अब शिरकी वस्तिका विधान कहा जाताहै। मस्तकके प्रमाणके अनुसार दो मुखवाली बारह अंगुलकी चमड़ेकी वस्ति बनवाकर मस्तक में बाँधे और उसकी संधियों को उर्द्दकी पिट्ठी से बंदकरदे फिर कुछ गरम तेलादिकसे भरके जबतक नाक कान और मुख न बहनेलगे या रोगकी शान्ति न होजाय तबतक अथवा एकहज़ार मात्रा पर्य्यन्त उसको धारणकरे[घुटने के ऊपर चुटकी बजाकर हाथ घुमानेमें जितना समय लगताहै उसको मात्रा कहतेहैं] भोजन विना कियेही शिरोवस्ति दीजाती है यह पांच अथवा सातदिन तक देनी चाहिये वस्तिको खोलकर उस तेल आदिको सब ओरसे ग्रहणकरे फिर उष्ण जलमें स्नानकरे इसके द्वारा दुर्जय वातजरोग और शिरका कंपना आदिक नाश होते हैं इस्से सब समयोंमें इसका ग्रहण करना चाहिये ॥ २१३ ॥

अथ कर्णविधिः ॥

स्वेदयेत्कर्णदेशन्तुकिञ्चिन्नुःपार्श्वशायिनः । मूत्रैःस्नेहैःरसैरुष्णैःश्रोत्ररन्ध्रंप्रपूरयेत्॥ कर्णञ्चपूरितंरक्षेच्छतंपञ्चशतानिवा । सहस्रंवापिमात्राणांश्रोत्रकण्ठशिरोगदे ॥ मूत्राद्यैःपूरणंकर्णेभोजनात्प्राक्प्रशस्यते। तैलाद्यैःपूरणंकर्णेभास्करेऽस्तमुपागते ॥ २१४ ॥

कानमेंतेल आदिछोड़नेकी विधि ॥

मनुष्यको कुछ करवट युक्त सुलाकर कानमें स्वेददे पीछे कुछ गरम २ मूत्र स्नेह तथा मांसके रससे कानको भरदेवे कानकण्ठ अथवा शिरके रोगमें पांच सात अथवा हज़ार मात्रा पर्य्यन्त कानको स्नेहादिसे भरारखना चाहिये जो कान में मूत्रादिक भरने हों तो भोजनसे पहले और तैलआदिक भरने होयँ तो सूर्य्यास्तके उपरान्त भरने चाहिये ॥ २१४ ॥

(तद्यथा)कर्णशूलाकुलेकोष्णंवस्तमूत्रंससैन्धवम् । निःक्षिपेत्तेनशाम्यन्तिशूलपाकादिकारुजः ॥ शृंगवेरञ्चमधुकंसैन्धवंतैलमेवच । कदुष्णंकर्णयोर्देयमेतत्स्याद्वेदनापहम्॥पीतार्कपत्रमाज्येनलिप्तंवह्नौप्रतापयेत्। तद्रसःश्रवणेक्षिप्तःकर्णशूलहरःपरः२१५

कानकी पीड़ामें कुछ गरम २ बकरेकामूत्र सेंधानिमक मिलाकर डालनेसे कानकी पीड़ा और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कानका पकना आदिक नष्ट होताहै अदरक,मुलहठी,सेंधानोन और तेल यह सब कुछ गरम २ कान में छोडनेसे कानकी पीडा नष्ट होती है पीलेआकके पत्तों में घी चुपडकर आगमें तपाकर निकाले फिर यह रसकानमें छोडनेसे कानकी पीडा नष्ट होतीहै ॥ २१५ ॥

अथ लेपविधिः ॥

आलेपस्यतुनामानिलेपोलेपनलिप्तकौ । दोषघ्नोविषहावर्ण्यःसचलेपस्त्रिधामतः ॥
त्रिप्रमाणश्चतुर्भागस्त्रिभागार्द्धांगुलोन्नतः । आर्द्रोऽव्याधिहरःसस्याच्छुष्कोदूषयतिच्छविम् ॥ (चतुर्भागत्रिभागार्द्धांगुलोन्नतः) ॥ २१६ ॥

लेपकी विधि ॥

आलेप लेप लेपन और लिप्तक यह लेप के नामहैं दोषघ्न, विषहा और वर्ण्य इनभेदोंसे लेपतीन प्रकार का होताहै लेपकी मुटाई के तीनप्रमाणहैं चौथाई अंगुल तिहाई अंगुल और आधाअंगुल गीलालेप रोगनाशक और सूखालेप कान्तिनाशक होताहै ॥ २१६ ॥

दोषघ्नोलेपोयथा ॥

शोथघ्नोदारुसिद्धार्थशुण्ठीशोभाञ्जनत्वचाम् । आरनालेनपिष्टानांप्रलेपःसर्व्वशोथहा
(शोथघ्नीपुनर्नवा) शिरीषंमधुयष्टीचतगरंरक्तचन्दनम् । एलामांसीनिशायुग्मंकुष्ठंबालकमेवच॥इतिसंचूर्ण्यलेपोऽयंपञ्चमांशघृतप्लुतः।जलेनक्रियतेसुज्ञैर्दशांगइतिसंज्ञितः ॥
वीसर्पञ्चविषस्फोटाञ्छोथदुष्टव्रणान्जयेत् ॥ २१७ ॥

दोषघ्न लेप ॥

पुनर्नवा, देवदारु,सरसों,सोंठऔर सहँजन की छाल इन सबको आरनालसे पीसकर लेपकरने से सब प्रकार की सूजनों का नाश होताहै सिरस की छाल,मुलहठी,तगर,लालचन्दन,इलायची,जटा-मांसी, हल्दी, दारुहल्दी,कूट और सुगन्धबाला इन सब के चूर्णको पंचमांश घी में मिलाकर जल के साथ लेपकरने से वीसर्प, विषस्फोट, सूजन और दुष्टव्रणोंका नाश होताहै ॥ २१७ ॥

विषहालेपो यथा ॥

अजादुग्धतिलैर्लेपोनवनीतेनसंयुतः । शोथमारुष्करंहन्तिलेपोवाकृष्णमार्त्तिकः ॥
(नवनीतेनार्द्रकेण) ॥ २१८ ॥ विषनाशक लेप ॥

बकरी के दूधमें तिल मिलाकर भैंसके मक्खनके साथ लेप करनेसे भिलावे से होनेवाली सूजन नष्ट होतीहै अथवा कालीमिट्टी के लेपसे भी उसका नाश होताहै ॥ २१८ ॥

वर्ण्यलेपोयथा ॥

रक्तचन्दनमञ्जिष्ठालोध्रकुष्ठप्रियंगवः।वटांकुरामसूराश्चव्यंगघ्नामुखकान्तिदाः ॥ २१९ ॥

वर्ण्यलेप ॥

लालचन्दन,मजीठ,लोध,कूट,मालकांगनी, बडके अंकुर और मसूर इन सब वस्तुओं के लेपकरनेसे व्यङ्ग रोगका नाश और मुखकी कान्ति होतीहै ॥ २१६ ॥

अथलेपविधिश्चैवप्रोच्यतेसुज्ञसम्मतः । आलेपश्चप्रदेहश्चद्वौभेदौतस्यभाषितौ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चर्मार्द्रमाहिषंयद्वत्प्रोच्यतेसंमितस्तयोः। शीतस्तनुर्विशोषीचप्रलेपःपित्तहन्मतः ॥ आर्द्रोघनस्त[illegible]ष्णःस्यात्प्रदेहःश्लेष्मवातहा। नरात्रौलेपनंकुर्य्याच्छुष्यमाणंनधारयेत् ॥ शुष्यमाणमु[illegible]ेतप्रदेहंपीडनम्प्रति। तमसापिहितोह्यूष्मालोमकूपमुखेस्थितः ॥ विना लेपेननिर्यातिरात्रौनलेपयेदतः। तमसारात्र्यन्धकारेण। रात्रावपिप्रलेपादिर्व्रणेदेयोविचक्षणैः। अपाकिन्यतिगम्भीरेरक्तश्लेष्मसमुद्भवे ॥ लेपोयथा। मधुकंचन्दनंमूर्वानलमूलञ्चपर्पटम्। उशीरंबालकंपद्मंप्रलेपःपित्तशोथहृत् ॥ प्रदेहोयथा। बीजपूरजटाहिंस्रादेवदारुमहौषधम्। रास्नाऽरणिःप्रदेहोऽयंवातशोथविनाशनः॥ अरणिरग्निमन्थः। कृष्णापुराणपिण्याकशिग्रुत्वक्सिक्ताशिवा। गोमूत्रपिष्टःकोष्णोऽयंप्रदेहःश्लेष्मशोथहा २२०॥

अवलेपकी विधि कहीजातीहै ॥

प्रलेप और प्रदेह यह लेप के दोभेद हैं यह भैंसे के गीले चमडे की मुटाई के समान प्रमाण में होनी चाहिये शतिल और सुखानेवाला पतला लेप प्रलेप कहलाता है इस्से पित्तकानाश होता है गीले गाढ़े और उष्ण लेपको प्रदेह कहते हैं इस्से कफवात का नाश होताहै रात्रि के समय लेप नहीं लगाना चाहिये और सूख जानेपर छुडा डालना चाहिये परन्तु घाव आदि से पीब निकालने के लिये सूखा लेप भी लगारहनेदे अन्धकार के द्वारा ढकी हुई रोमकूपों में स्थित ऊष्मा रात्रिके समय निकलतीहै इसलिये रात्रिकेसमय लेप न करना चाहिये परन्तु नहींपकेहुए बहुत गंभीर और रक्तकफसे उत्पन्नहुए घावमें रात्रिमें भी लेपलगाना चाहिये प्रलेपकी विधि मुलहठी, लाल चन्दन, मरोरफली, चीतेकीजड, पित्तपापडा, खस, सुगन्धबाला और कमल इनके लेपकरनेसे पित्तजनित सूजन का नाश होताहै प्रदेह, बिजौरा, नींबूकीजड, जटामांसी, देवदारु, सोंठ, रासना और अरणी काष्ठ इनका लेप वातजनित सूजन का नाश करताहै पीपल, पुरानी तिलकीखली, सहँजने की छाल, बालू और हड इनसबको गोमूत्रमें पीस गरम २ लेपकरने से कफजनित सूजन नष्टहोतीहै ॥ २२० ॥

अथ शोणितस्रावणविधिः ॥

शोणितंस्रावयेज्जन्तोरामयंप्रसमीक्ष्यच। प्रस्थंप्रस्थार्द्धमथवाप्रस्थार्द्धार्द्धमथापिवा॥ शरत्कालेस्वभावेनशोणितंस्रावयेन्नरः। त्वग्दोषग्रन्थिशोथाद्यानश्यन्तिरुधिरोद्भवाः॥ ऽभ्रे वर्षासुविद्युत्सुशीतेग्रीष्मेशरद्यपि। मध्याह्नेशीतकालेचरुधिरंस्रावयेद्बुधः ॥ २२१ ॥

रक्तस्रावण [फस्त] की विधि ॥

प्राणी के रोगको देखकर एकप्रस्थ आधे प्रस्थ अथवा चौथाई प्रस्थ रुधिर निकलवावे शरदृतु में स्वभावही से रुधिर निकलावाना चाहिये इस्सेरुधिर जनितत्वचाके दोष, ग्रंथि औरसूजनआदिकनष्ट होतेहैं वर्षा शीत ग्रीषम और शरदृतुमें मेघरहित मध्याह्नकालमें रुधिर निकलवानाचाहिये २२१ ॥

मधुरंवर्णतोरक्तमशीतोष्णंतथागुरु। शोणितंस्निग्धविस्रञ्चविदग्धंपित्तवद्भवेत् ॥ विस्रताद्रवतारागश्चलनंविलयस्तथा। भूम्यादिपञ्चभूतानामेतेरक्तेगुणाःस्मृताः ॥ २२२ ॥

मधुर, रक्तवर्ण अनुष्ण, शीत, भारी, स्निग्ध, आमकीसी गन्धिसे युक्त और विदाही रुधिर पित्तकारक होताहै रुधिर में आमकीसी दुर्गन्धि, पतलापन, रक्तता, चलना और लीन होजाना यह पृथ्वी आदि पांचों महाभूतों के गुणहैं ॥ २२२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रक्तेदुष्टेभवेच्छोथोरक्तमण्डलमेवच । व्यथादाहश्चपाकश्चकण्डूश्चपिडिकोद्गमः॥ वृद्धेरक्तांगनेत्रत्वंशिराणांपूर्णतातथा । गात्राणांगौरवंनिद्रामेहोदाहश्चजायते॥ क्षीणेऽस्रे मधुराकांक्षामूर्च्छाचत्वचिरूक्षता । शैथिल्यञ्चशिराणांस्याद्वातादुन्मार्गगामिता ॥ वातातूरूक्षक्षैण्यजनितात् ॥ २२३ ॥

रुधिर दूषित होने से सूजन, रुधिरके चकत्ते,व्यथा,दाह,पकना,खुजली और फुन्सी उत्पन्न होती हैं रुधिर अधिक होनेसे शरीरतथा नेत्रोंमें,रक्तता,शिराओंकी पूर्णता,शरीरका भारीपन,अधिक निद्रा, मद और दाह उत्पन्न होताहै रुधिर क्षीण होनेपर मधुर वस्तुकी इच्छा,मूर्च्छा,त्वचा में रूखापन तथा शिराओंकी शिथिलता होतीहै और रूखेपन वा क्षीणतासे उत्पन्नहुई वायुऊपरको जातीहै ॥ २२३॥

अरुणंफेनिलंरूक्षंपरुषंतनुशीघ्रगम् । अास्कन्दिसूचीनिस्तोदिरक्तंस्याद्वातदूषितम् ॥ पित्तेनपीतंहरितंनीलंश्यावञ्चविस्त्रकम् । अस्वादूष्णंमाक्षिकाणांपिपीलिकामनिष्टकम् ॥ शीतलंबहुलंस्निग्धंगैरिकोदकसन्निभम् । मांसपेशीप्रभंस्कन्दिमन्दगंकफदूषितम् ॥ द्विदोषदुष्टंसंसृष्टंत्रिदुष्टंपूतिगन्धकम् । सर्वलक्षणसंयुक्तंकाञ्जिकाभञ्चजायते ॥ विषदुष्टंभवेच्छ्यावंनासिकोन्मार्गगंतथा । विस्रंकाञ्जिकसंकाशंसर्वकुष्ठकरंतथा ॥ इन्द्रगोपप्रभंज्ञेयंप्रकृतिस्थमसंहतम् ॥ २२४ ॥

वायुसे दूषित रुधिर. लाल, फेनायुक्त, रूखा,कर्कश, पतला, शीघ्रगामी,विशद और शरीर में सुई चुभोने के समान पीडा देताहै पित्त से दूषित रुधिर.पीत, हरा, नीला, श्याम, आमकी दुर्गन्धिवाला मधुरतारहित, उष्ण और मक्खी तथा चैंटियों को अप्रिय होताहै और कफसे दूषित रुधिर शीतल बहुत चिकना गेरू मिलेहुये जल के समान वर्णवाला, मांसपेशी के समान कान्तिवाला, पिच्छिल और धीरेचलने वाला होताहै दो दोषोंसे दूषित रुधिर दो दोषों के लक्षणवाला और तीन दोषों से दूषित रुधिर आम के समान गन्धियुक्त कांजी के समान आभावाला तथा त्रिदोषों के संपूर्णलक्षणों से युक्त होताहै विष दूषित रुधिर श्यामवर्ण आमकी गन्धिवाला कांजी के समान आभायुक्त नाक के द्वारा ऊपर से निकलनेवाला और सबप्रकारोंके कुष्ठों का उत्पन्न करने वाला होताहै निर्दोष रुधिर बीरबहूटी के समान वर्ण वाला और पतला होताहै ॥ २२४ ॥

शोथेदाहेऽङ्गपाकेचरक्तवर्णोऽसृजःस्रुतौ। वातरक्तेतथाकुष्ठेसपीडेदुर्जयेऽनिले ॥ पाण्डुरोगेश्लीपदेचविषदुष्टेचशोणिते । ग्रन्थ्यर्बुदापचीक्षुद्ररोगाधिमन्थकाभिधे॥ विदारीस्तनरोगेषुगात्राणांसादगौरवे। रक्ताभिष्यन्दतन्द्रायांपूतिघ्राणास्यदाहके ॥ यकृत्प्लीहविसर्पेषुविद्रधौपिडिकोद्गमे । कर्णौष्ठघ्राणवक्त्राणांपाकेदाहेशिरोरुजि॥ उपदंशेरक्तपित्तेरक्तस्रावेप्रशस्यते । दोषेष्वेषुप्रक्षणैर्वाजलौकालाबुकादिभिः ॥ अथवापिशिरामोक्षैःकारयेद्रक्तपातनम् ॥ २२५ ॥

सूजन और दाह शरीर का पकना,शरीरका रक्तवर्णहोना,रुधिर का बहना,वात रक्त,कुष्ठ अत्यन्त पीडादायक,दुर्जय,वात,पांडु,श्लीपद,रुधिर का विषसे दूषित होना, ग्रन्थि, अर्बुद, अपची छिद्ररोग अधिमन्थ,विदारी,दूधके रोग,शरीर का टटना तथा भारीपन, रक्ताभिष्यन्द,तन्द्रा नासिककी दुर्गन्धि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुखका दाह, रक्त, प्लीहा, वीसर्प, विद्रधि, फुन्सी, कान, ओठ, नासिका तथा मुखकापकना, दाह, शिरके रोग, उपदंश और रक्तपित्त इनसम्पूर्ण रोगोंमें रुधिर निकलवाना श्रेष्ठहै ऊपर कहेहुए रोगोंमें सींगी, जोंक, तोंबी के द्वारा अथवा फस्त लेकर रुधिर निकलवाना चाहिये ॥ २२५ ॥

नकुर्वीतशिरामोक्षंकृशस्यातिव्यवायिनः । क्लीबस्यभीरोर्गर्भिण्याःसूतायाःपाण्डुरोगिणः ॥ पञ्चकर्मविशुद्धस्यपीतस्नेहस्यचार्शसाम् । सर्वांगशोथयुक्तानामुदरिश्वासकासिनाम् ॥ छर्द्यतीसारकुष्ठानामतिस्विन्नतनोरपि । ऊनषोडशवर्षस्यगतसप्ततिकस्यच ॥ आघातात्स्नुतरक्तस्यशिरामोक्षोनशस्यते । तथाचस्नुतरक्तस्यरक्तपित्तादिनागतरक्तस्य एषांचात्ययिकेरोगेजलौकाभिर्विनिर्हरेत् । तथाचविषजुष्टानांशिरामोक्षोपिशस्यते ॥ गोशृंगेणजलौकाभिरलाबूभिरपित्रिधा । वातपित्तकफैर्दुष्टंशोणितंस्नावयेद्बुधः ॥ द्विदोषाभ्यान्तुदुष्टंयत्त्रिदोषैरपिदूषितम् । दूषितंस्नावयेद्युक्त्याशिरामोक्षैःपदैस्तथा ॥ २२६ ॥

कृश, अत्यन्त मैथुन करनेवाला, नपुंसक, भयभीत, गर्भिणी, शीघ्रप्रसूतास्त्री, पांडुरोगी, पञ्चकर्मशुद्ध स्नेहपान कियेहुए बवासीर रोगवाला, सबअंगोंमें सूजनवाला और उदर, श्वास, खांसी, छर्दि, अतीसार तथा कुष्ठरोग से व्याकुल इनसबको फस्तलेना हितकारी नहीं है अत्यन्त स्वेदादियागया सोलहवर्ष की उमर से कम सत्तरबर्ष की अवस्था से ऊपर और जिस के रक्त पित्तादिरोगोंसे रुधिर निकल गयाहो इनसबको भी फस्त लेना हितकारी नहीं है परन्तु यह सम्पूर्ण रोग मिले झुले होंतो जोंक लगवाकर रुधिर निकालना चाहिये और जो विषसे युक्त होयँ तो फस्त लेना उपकारी है वातपित्त तथा कफके द्वारा रुधिर के दूषित होनेपर क्रमसे सिंगी जोंक तथा तोंबीके द्वारा रुधिर निकलवाना चाहिये दोदोष अथवा तीनदोषोंसे रुधिर न दूषित होनेपर युक्तिपूर्व्वक फस्तसे अथवा पद से रुधिर निकलवाना चाहिये ॥ २२६ ॥

गृह्णातिशोणितंशृंगंदशांगुलमितम्बलात् । जलौकाहस्तमात्रंतुतुम्बीतुद्वादशांगुलम् ॥ पदमंगुलमात्रस्याशिरासर्वांगशोधिनी ॥ २२७ ॥

सींगीसे दशअंगुल तक का जोंकों से हाथभरका तोंबी से बारह अंगुलतकका पद से एक अंगुल तक का और फस्त लेनेसे सम्पूर्ण शरीर भरेका रुधिर शुद्ध होताहै ॥ २२७ ॥

शीतेनिरन्नेमूर्च्छार्तिनिद्राभीतिमदश्रमैः ॥ युक्तेनास्नावयेद्रक्तंतथाविण्मूत्रसंगिनाम् ॥ शोणितेचाप्रवृत्तेतुकुष्ठत्रिकटुसैन्धवैः ॥ मर्द्दयेद्व्रणवक्त्रञ्चतेनरक्तंप्रवर्त्तते ॥ तस्मान्नशीतेनात्युष्णेनास्विन्नेनातितापिते ॥ पीत्वायवागूंतप्तस्यस्नावयेच्छोणितंबुधः ॥ अतिस्विन्नस्योष्णकालेतथैवातिशिराव्यधात् ॥ अतिप्रवर्त्ततेरक्तंतत्रकुर्यात्प्रतिक्रियाम् ॥ अतिप्रवृत्तेरक्तेतुलोध्रसर्ज्जरसाञ्जनैः ॥ यवगोधूमचूर्णैश्चयवधन्वनगैरिकैः ॥ सर्पनिर्म्मोकचूर्णैर्वाभस्मनाक्षौमवस्त्रयोः ॥ मुखंव्रणस्यबद्ध्वाचशीतैश्चोपचरेद्व्रणम् ॥ विध्येदूर्ध्वंशिरान्तावद्दहेत्क्षारेणवह्निना ॥ २२८ ॥

शीत, उपवास, निद्रा, भय, मद, श्रम और मल, मूत्र के वेग में रुधिर नहीं निकलवाना चाहिये जो फस्त देने से रुधिर निकले तो कूट त्रिकटु और सेंधानोन मिलाकर घाव के ऊपर रगड़ने से रुधिर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निकलताहै शीतकाल अत्यन्त उष्णऋतु स्वेदक्रिया और संतर्पणक्रिया में रुधिर नहीं निकलवाना चाहिये बुद्धिमान् वैद्य यवागू को पिलाकर तृप्तहुए मनुष्य का रुधिर निकलवावे अत्यन्त स्वेदयुक्त मनुष्यका उष्णकाल में अथवा बड़ीसिराके छिदजाने से जो बहुत रुधिर निकले तो उसका यत्न करे बहुत रुधिर के बहनेपर लोध, राल, रसौत, जौ तथा गेहुँओंका आटा, धवई, जवासा, गेरू, सर्पकी काँचलीका चूर्ण अथवा रेशमी कपड़े की भस्म के द्वारा घाव के मुखको बाँधकर शीतल इलाजकरे और ऊपर की नस को छेदकर क्षार अथवा अग्नि से घाव के मुख को जलावे ॥ २२८ ॥

व्रणंकषायःसन्धत्तेरक्तंस्कन्दयतेहिमः। व्रणास्यंयोजयेत्क्षारोदाहःसङ्कोचयेच्छिराः ॥ रक्तेदुष्टेऽवशिष्टेपिव्याधिर्नैवप्रकुप्यति। अतोरक्षेत्सावशेषंरक्तेनातिस्रुतिर्हिता ॥ आन्ध्यमाक्षेपकंतृष्णान्तिमिरंशिरसोरुजः। पक्षाघातंश्वासकासौहिक्कादाहौचपाण्डुताम् ॥ कुरुतेऽतिस्रुतंरक्तंमरणंवाकरोतिच। देहस्योत्पत्तिरसृजादेहस्तेनैवधार्य्यते ॥ रक्तंजीवस्यचाधारस्तस्माद्रक्षेदसृग्बुधः। शीतोपचारैःकुपितेस्रुतरक्तस्यमारुते ॥ कोष्णेनसर्पिषाशोथंसव्यथंपरिषेचयेत्। क्षीणस्यैणशशोरभ्रहरिणच्छागमांसजः ॥ रसःसमुचितःपानेक्षीरंषष्टिकयाहितम्। पीडाशान्तिर्लघुत्वंचव्याध्युपद्रवसंक्षयः ॥ मनःस्वास्थ्यंभवेच्चिह्नंसम्यङ्निःसारितेऽसृजि। व्यायाममैथुनक्रोधशीतस्नानप्रवातकान् ॥ एकाशनंदिवानिद्राक्षाराम्लकटुभोजनम्। शोकंवादमजीर्णंचत्यजेदाबलदर्शनात् ॥ २२६ ॥

कषाय घाव को जोड़ताहै, शीत क्रिया रुधिर को गाढ़ा करती है, क्षार घाव के मुखको जोड़ताहै और जलाने से सिरा शिकुड़जातीहै जो दूषितरुधिर कुछ बाकीभी रहजाय तो रोग कुपित नहीं होता इसलिये कुछ रुधिर बचालेना चाहिये क्योंकि रुधिर का बहुत निकलना अच्छा नहीं होता बहुत रुधिर निकलवानेसे अन्धता, आक्षेप, तिमिरि, तृषा, शिरकीपीड़ा, पक्षाघात, श्वास, खांसी, हिचकी, दाह, पाण्डुरोग और मृत्युभी होती है रुधिर से शरीर की उत्पत्ति तथा स्थिति होतीहै और रुधिरही जीव का आधारहै इसलिये यत्नपूर्वक रुधिर की रक्षा करना चाहिये रुधिर निकलवानेवालेकी वायु जो शीतल क्रियाओं से कुपित होजाय तो कुछ उष्ण घी से पीड़ायुक्त घाव की सूजन को सींचे रुधिर निकलनेसे क्षीण होनेवाले पुरुषको एण, खरगोश, भेड़, हिरन अथवा बकरेके मांसका रस पिलावे या सांठी के चावलों की खीर पिलावे पीड़ा की शांति, शरीरका हलकापन, रोगके उपद्रवोंका नाश और मनकी प्रसन्नता यह अच्छेप्रकारसे रुधिर निकलने के लक्षणहैं रुधिर निकलवाके जबतक बल न आजाय तबतक व्यायाम, मैथुन, क्रोध, शीतक्रिया, स्नान, अधिक वायु, एकबार भोजन, दिनको सोना, खार, खटाई तथा कटु वस्तुका खाना, शोक, बकबाद और अजीर्णकारी वस्तुओंका भोजन इन सबको त्याग करे ॥ २२६ ॥

अथ प्रसादनकर्म्माणि ॥

सेकआश्च्योतनंपिण्डीविडालस्तर्पणंतथा ॥ पुटपाकेऽञ्जनञ्चेतिकृत्वानेत्रमुपाचरेत् २३०

नेत्रप्रसादनकर्म ॥

सेक, आश्च्योतन, पिण्डी, विडाल, तर्पण, पुटपाक और अञ्जन इन सब उपायों से नेत्रोंका इलाज करनाचाहिये ॥ २३० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ कल्पोविधिः । तत्रसेकाविधिः ।

सेकस्तुसूक्ष्मधाराभिःसर्वस्मिन्नयनेहितः। मीलिताक्षस्यमर्त्यस्यप्रदेयश्चतुरंगुलात्॥ ससस्नेहोभवेद्वातेपित्तेरक्तेचरोपणः । लेखनस्तुकफेकार्यस्तस्यमात्राभिधीयते ॥ षड्भिर्वाचांशतैःस्नेहे चतुर्भिश्चैवरोपणे॥ तैस्त्रिभिर्लेखनेकार्य्यःसेकोनेत्रप्रसादने ॥ निमेषोन्मेषणंपुंसामंगुल्याच्छोटिकाथवा । गुर्वक्षरोच्चारणंवावाङ्मात्रेयंस्मृताबुधैः ॥ सेकस्तुदिवसेकार्योरात्रौचात्यन्तिकेगदे । एरण्डस्यदलैःपिष्टैःपक्कमाज्यंपयोहितम् ॥ सुखोष्णंनेत्रयोरन्तःसिक्तंवातार्त्तिनाशनम् ॥ २३१ ॥

सेककी विधि ॥

नेत्रको मींचेहुए पुरुषके नेत्रपर चार अंगुल की दूरीसे सूक्ष्म धाराके द्वारा सींचना हितकारी होताहै वातरोगमें स्नेहन(चिकनाई)पित्त अथवा रुधिरके रोगमें रोपण और कफकेरोगोंमें लेखन(कृशकारक) सेक हितकारीहै स्नेहनसेकका काल ६०० मात्रा रोपण सेकका ४०० मात्रा और लेखन सेकका काल ३०० मात्राका होताहै नेत्रोंका खोलना मूंदना चुटकी बजाना अथवा एक गुरुअक्षरका उच्चारण करना इनमें जितना समय लगताहै उसको एक वाङ्मात्रा कहतेहैं सेकक्रिया दिनमें करनी चाहिये परन्तु अत्यन्त कठिन पीड़ा होनेपर रात्रिको भी करे रेंडीके पत्ते जड़ तथा छालके द्वारा बकरीके दूधको पकाकर कुछ गरम २ नेत्रोंके भीतर सेकदेनेसे वातके सबरोग दूर होते हैं ॥ २३१ ॥

अथाश्च्योतनविधिः ॥

क्वाथक्षौद्रासवस्नेहबिन्दूनांयत्तुपातनम् ॥ द्व्यंगुलोन्मीलितेनेत्रेप्रोक्तमाश्च्योतनंहितत् । बिन्दवोऽष्टौलेखनेषुरोपणेदशबिन्दवः ॥ स्नेहनेद्वादशप्रोक्ताःशीतलेकोष्णरूपिणः ॥ उष्णेतुशीतरूपाःस्युःसर्वत्रैवैषनिश्चयः ॥ वातेतिक्तंतथास्निग्धंपित्तेमधुरशीतलम् ॥ कफेतिक्तोष्णरूक्षंचक्रमादाश्च्योतनंहितम् । आश्च्योतनानांसर्वेषांमात्रास्याद्वाक्शतोन्मिता ॥ ततःपरंलोचनाभ्याम्भेषजानामयोगतः । आश्च्योतनं न कर्त्तव्यंनिशायां केनचित्क्वचित् ॥ (तद्यथा) बिल्वादिपञ्चमूलेनबृहत्येरण्डशिग्रुभिः ॥ क्वाथ आश्च्योतनेकोष्णोवाताभिष्यन्दनाशनः ॥ २३२ ॥

आश्च्योतनकीविधि ॥

खुलेहुए नेत्रोंमें क्वाथ, सहत, आसव तथा स्नेहकी बूंदोंका दो अंगुलकी दूरीसे टपकाना आश्च्योतन कहाताहै लेखनमें आठ बूंद, रोपणमें दश बूंद और स्नेहनमें बारह बूंद छोडनी चाहिये शीत से हुए नेत्ररोगमें कुछ उष्ण और उष्णतासे हुए नेत्ररोगमें शीतल आश्च्योतन हितकारी है वातरोगमें तिक्त और स्निग्ध पित्तरोग में मधुर और शीतल तथा कफरोगमें तिक्त उष्ण और सूखा आश्च्योतन हितकारीहै सम्पूर्ण आश्च्योतन धारण करनेका समय एकसौमात्राहै इससे अधिक न धारण करना चाहिये क्योंकि इसके उपरान्त नेत्रोंमें औषधिका योग नहीं होता और रात्रिके समय कभी आश्च्योतन न करना चाहिये बेल आदिक पञ्चमूल, भटकटैया, रेंडी और सहँजना इनसब के कुछ उष्ण क्वाथके द्वारा आश्च्योतन करनेसे वातका अभिष्यन्द नष्ट होताहै ॥ २३२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ पिण्डीविधिः ॥

युक्तभेषजकल्कस्यपिण्डीकवलमात्रया। वस्त्रखण्डेनसंबध्वानेत्रेऽभिष्यन्दनाशिनी ॥ स्निग्धोष्णापिण्डिकावातेपित्तेसाशीतलामता। रूक्षोष्णाश्लेष्मणिप्रोक्ताधिरुक्तोबुधैरयम् ॥ (सा यथा) धात्रीविरचितापित्तेशिग्रुपत्रकृताकफे २३३ ॥

पिण्डी (पोटली) की विधि ॥

यथायोग्य औषधियोंके कल्कसे एक ग्रासके समान बनाईहुई पिंडियाको वस्त्रमें बाँधकर नेत्रोंमें लगानेको पिण्डी विधि कहतेहैं इससे नेत्रोंका अभिष्यन्द नष्टहोताहै वातरोगमें स्निग्ध तथा उष्ण पिण्डी पित्तरोगमें शीतल पिण्डी और कफरोगमें रूखी तथा उष्ण पिण्डी कहीगईहै रेंडीकी जड़ तथा छालकी पिण्डी वातरोगनाशक होतीहै आंवलेकी पिण्डी पित्तरोगनाशक और सहँजनेके पत्तोंकी पिण्डी कफरोगनाशक होतीहै ॥ २३३ ॥

अथ विडालकविधिः ॥

विडालकोबहिर्लेपोनेत्रपक्ष्मविवर्जितः । तस्यमात्रापरिज्ञेयामुखालेपविधानवत् ॥ यष्टीगैरिकसिन्धूत्थदार्वीताक्ष्यैःसमांशकैः। जलपिष्टैर्बहिर्लेपःसर्वनेत्रामयापहः २३४ ॥

विडालक की विधि ॥

पलकों को छोडकर नेत्रोंके ऊपर लेपकरने को विडालक कहतेहैं विडालककी मात्रा मुखके लेपके समान होतीहै मुलहठी,गेरू,सैंधानोन,दारुहल्दी और रसौत यह संपूर्ण समभाग लेकर जलसे पीस नेत्रोंके ऊपर लेपकरने से नेत्रोंके सबरोग दूर होतेहैं ॥ २३४ ॥

अथ तर्पणविधिः ॥

वातातपरजोहीनेवेश्मन्युत्तानशायिनः । अभितोमाषचूर्णेनक्लिन्नेनपरिपिण्डितौ ॥ ससमौदृढौचसम्बाधौकर्त्तव्यौनेत्रकोशयोः । पूरयेद्घृतमण्डेनविलीनेनसुखोदकैः ॥ सपिषाशतधौतेनक्षीरजेनघृतेनवा । निमग्नान्यक्षिपक्ष्माणियावत्स्युस्तावदेवहि ॥ पूरयेन्मीलितेनेत्रेततउन्मीलयेच्छनैः । भिषग्भिरेषविख्यातस्तर्पणस्योदितोविधिः ॥ यद्रूक्षपरिष्यन्दिनेत्रंकुटिलमाविलम् । शीर्णपक्ष्मशिरोत्पातकृच्छ्रोन्मीलनसंयुतम् ॥ तिमिरार्जुनशुक्राद्यैरभिष्यन्दाधिमन्थकैः । शुष्काक्षिपाकशोथाभ्यांयुतंवातविपर्ययैः ॥ दत्तेनतर्पयेत्सम्यङ्नेत्ररोगविशारदः । तर्पणंधारयेद्वर्त्मरोगेवाचांशतंबुधैः ॥ स्वस्थेकफेसन्धिरोगेवाचांपञ्चशतानिच । षट्शतानिकफेकृष्णरोगेसप्तशतानिहि ॥ दृष्टिरोगेशतान्यष्टावधिमन्थेसहस्रकम् । सहस्रंवातरोगेषुधार्यमेवहितर्पणम् ॥ पूर्णेचापांगमार्गेणस्रावयित्वाक्षिशोधयेत् । स्विन्नेनयवपिष्टेनस्नेहवीर्यैरितंततः ॥ यथास्वन्धूमपानेनकफमस्यविरेचयेत् । एकाहंवात्र्यहंवापिपञ्चाहंतर्पणञ्चरेत् ॥ तर्पणेतृप्तिलिंगानिनेत्रस्यैतानिलक्षयेत् । सुखस्वप्नावबोधत्वंवैशद्यंनेत्रपाटनम् ॥ निर्वृतिर्व्याधिशान्तिश्चक्रियालाघवमेवच । निर्वृतिःसुखंक्रियालाघवम् । नेत्रस्यक्रियायांनिमेषोन्मेषादौ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लघुता । ...विलमतिस्निग्धमश्रुकण्डूपदेहवत् ॥ घर्षतोदयुतंनेत्रमतितर्पितमादिशेत् ॥ आस्रा...शोफपीडाढ्यमुपदेहसमाकुलम् । रूक्षमास्रावमरुणंनेत्रंस्याद्धीनतर्पितम् ॥ अनयोर्दोषबाहुल्यात्प्रयतेतचिकित्सिते । रूक्षस्निग्धोपचाराभ्यामेतयोःस्यात्प्रतिक्रिया ॥ (अनयोःअतितर्पितहीनतर्पितयोः) दुर्दिनात्युष्णशीतेषुचिन्तायांसंभ्रमेषुच । अशान्तोपद्रवेचाक्षितर्पणं न प्रशस्यते २३५ ॥

तर्पणकी विधि ॥

वायु धूप और धूलिरहित स्थानमें रोगीको चित्तलिटाकर उर्दकी पिट्ठीसे दोनों नेत्रोंमें कटोरीके समान मज़बूत घेराबनावे और नेत्र बन्दकराकर उसमें टिघलाहुआ घी मांड गरमजल सौबेरका धोया हुआ अथवा दूधसे निकालाहुआ घी जबतक पलकें न डूबजायँ तबतक भरे फिर धीरे २ रोगी से नेत्र खुलवावे यह वैद्यलोगोंने तर्पणकी विधि वर्णनकी है रूखापन,सूखना, कुटिलता, मैलापन, पलकोंका गिरना, सिराओंका उत्पात, कठिनतासे खुलना,तिमिर,अर्जुन,शुक्र अभिष्यन्द,अधिमन्थ,पाक,सूजन और वात विपर्यय इनदोषोंवाले नेत्रोंमें तर्पणविधि उत्तमकहीहै वर्त्मरोगमें एकसौ मात्रातक,कफकी स्वस्थता तथा सन्धिरोगमें पांचसौमात्रा,कफरोगमें छःसौमात्रा,कृष्णरोगमें सातसौमात्रा, दृष्टिरोगमें आठसौमात्रा और अधिमन्थ तथा वातरोगमें हज़ार मात्रातक तर्पणका धारण करनाचाहिये यह पण्डितोंका मतहै फिर नेत्रके कोनेसे उसभरेहुएपदार्थको निकालकर जौकेआटेसे स्नेहवीर्य(नेत्रोंमेंतेल आदि लगानेसे जो क्लेशहो) कानाश और नेत्रोंका शोधनकरे फिर यथायोग्य धूमपान कराकर कफ निकलवावे एकदिन तीनदिन अथवा पांच दिनतक तर्पणकरे अच्छे प्रकारसे तर्पण होजानेके यह लक्षण हैं कि सुखपूर्वक निद्रा, नेत्रोंकी निर्मलता,सामर्थ्यसुख,खोलने मूंदनेमें शीघ्रता और रोगकी शान्ति बहुत तर्पण होनेसे भारीपन, मैलापन,बहुत चिकनापन,आंसुओंका बहना,खुजली, रगडनेसे पीडा और उपदेह (नेत्रोंका लिपाहुआ सा होना)होताहै तर्पणके अच्छे प्रकारसे नहोनेपर आंसुओंका बहना,सूजन,पीडा,ललाई,रूखापन,मैलापन और उपदेह होताहै तर्पणकी अधिकता और हीनतामें दोषोंकी अधिकता होनेमें चिकित्साकरे रूखे और स्निग्ध उपचारोंसे इनकी चिकित्सा होतीहै मेघसे छायेहुये दिनमें अत्यन्तउष्ण तथा शीतकालमें चिन्तामें भ्रममें और उपद्रवोंके शान्त न होनेमें नेत्रोंका तर्पण न करना चाहिये ॥ २३५ ॥

अथ पुटपाकविधिः ॥

द्वेबिल्वेस्निग्धमांसस्यपरद्रव्यपलंमतम् । द्रवस्यकुडवोन्मानंसर्वमेकत्रपेषयेत् ॥ तदेकत्रसमालोड्यपत्रैःसुपरिवेष्टितम् । पुटपाकविधानेनतत्पश्चात्तद्रसंबुधैः । तर्पणोक्तेन विधिनायथावदवधारयेत् ॥ दृष्टिमध्येनिषेच्यःस्यान्नित्यमुत्तानशायिनः । स्नेहनोलेखनश्चैवरोपणश्चेतिसत्रिधा ॥ हितःस्निग्धोऽतिरूक्षस्यास्निग्धस्यसतुलेखनः । दृष्टेर्बलार्थमितरःपित्तासृग्व्रणवातनुत् ॥ (इतरोरोपणः) स्नेहमांसवसामज्जामेदःस्वाद्वौषधैः कृतः । स्नेहनःपुटपाकःस्याद्धार्योऽयंवाक्शतंनरः ॥ जांगलानांयकृन्मांसैर्लेखनद्रव्यसंयुतैः । कृष्णलोहरजस्ताम्रशङ्खविद्रुमासिन्धुजैः ॥ समुद्रफेनकाशीसस्रोतोञ्जदधिमस्तुभिः । लेखनोवाक्शतंतस्यपरंधारणमिष्यते ॥ स्तन्यजांगलमध्वाज्यतिक्तद्रव्यविपा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चितम्। लेखनात्त्रिगुणोधार्यःपुटपाकस्तु रोपणः ॥ (तिक्तकद्रव्याण्याह) निम्बामृताटृषपटोलनिदिग्धिकाभिःस्यात्पञ्चतिक्तकइतिप्रथितोगणोऽयम् ॥ चरेत्तर्पणोक्तांतुक्रियांव्यापत्तिदर्शने। व्यापत्तिदर्शनेमिथ्याकृतपुटपाकजनितव्याधिदर्शने ॥ तेजांस्यनिलमाकाशमादर्शम्भास्वराणिच। नेक्षेततर्पितेनेत्रेयइचवापुटपाकवान् ॥ २३६ ॥

पुटपाककी विधि ॥

स्निग्ध मासके दोपल अन्यऔषधी एकपल और पतली वस्तु आठपल इनसबको एकसाथ पीसकर एकमेंमिलायकर पुटपाककी विधिसे पत्तोंमें लपेटकर पाककरे फिर रोगीको चित्त लिटाकर पुटपाक में कही हुई विधि के अनुसार इन औषधियोंका रस नेत्रमें छोडे स्नेहनरोपण और लेखन भेद से पुटपाक तीनप्रकारका है अत्यन्त रूखे को स्नेहन स्निग्धको लेखन और दृष्टि में बल उत्पन्न करने केलिये रक्तपित्त घाव तथा वातके शान्त करने के लिये रोपण पुटपाक हितकारी है स्नेह मांस चरबी मज्जा मेद और मधुर औषधियों के द्वारा स्नेहन पुटपाक होता है यह दोसौ वाक्य उच्चारण पर्यन्त नेत्रों में धारण करना चाहिये जांगलपशुओं की यकृत् तथा मांस,लेखन औषध, काले लोहकाचूर्ण, तांबा, शङ्ख, मूंगा, सेंधानोन, समुद्रफेन, कसीस, सुरमा और दहीका तोड इनसब वस्तुओं से लेखन पुटपाक होताहै यह एकसौ वाक्य उच्चारण पर्यन्त धारण करनाचाहिये दूध,जङ्गली पशुओंकी मज्जा तथा घी और तिक्त द्रव्य (नींब गिलोय बांसा परवल और भटकटैया यह सब मिलकर पञ्चतिक्त कहाते हैं) के द्वारा रोपण पुटपाक होताहै यह तीन सौ वाक्य उच्चारण पर्यन्त धारण करना चाहिये पुटपाक के बिगडजानेसे रोगोंके उत्पन्न होनेपर तर्पण में कहीहुई क्रिया के द्वारा चिकित्सा करे तर्पण अथवा पुटपाक के उपरान्त तेजयुक्त पदार्थ वायु आकाश दर्पण और चमकीली वस्तुओं को न देखे ॥ २३६ ॥

अथाञ्जनविधिः ॥

अथसंपक्वदोषस्यप्राप्तमञ्जनमाचरेत्। अञ्जनंक्रियतेयेनतद्द्रव्यंचाञ्जनंमतम् (तद्यथा) रसोवटीस्तथाचूर्णमितित्रिविधमञ्जनम्। यथापूर्वंबलंतेषुस्नेहमाहुर्मनीषिणः ॥२३७॥

अञ्जनकी विधि ॥

दोषोंके परिपाक होजाने पर यथायोग्य अञ्जनकरे जिन वस्तुओंका नेत्रमें अञ्जन लगाया जाताहै उनको अञ्जन कहते हैं अञ्जन तीन प्रकार का है गोली रस और चूर्ण यह क्रमसे उत्तरोत्तर अधिक बल तथा स्नेह से युक्त होते हैं ॥ २३७ ॥

तत्प्रत्येकंत्रिधाप्रोक्तंलेखनंरोपणंतथा।स्नेहनंचेतिलिङ्गानितेषांविस्तरतःशृणु॥ लेखनंक्षारतीक्ष्णाम्लरसैरञ्जनमुच्यते। नेत्रवर्त्मशिराजालश्रोत्रशृङ्गाटकस्थितम् ॥ मुखनासाक्षिभिर्दोषमुत्क्लिश्यस्रावयेच्चतत्। कषायंतिक्तकंचापिसस्नेहंरोपणंमतम् ॥ स्नेहस्य शैत्याद्वर्ण्यंस्याद्दृष्टेश्चबलवर्द्धनम्। मधुरंस्नेहमण्डंतदञ्जनंस्यात्प्रसादनम् ॥ दृष्टिदोषप्रसादार्थंस्नेहनार्थञ्चतद्धितम्। एरण्डमात्रावर्त्तिस्तुलेखनीस्यात्प्रमाणतः ॥ साद्वैकंरेणुकामितारोपणीवर्त्तिरिष्यते। क्रियतेस्नेहनीवर्त्तिर्द्विहरेणुकमात्रया ॥ रसाञ्जनस्य मात्रातुपिष्टावर्त्तिमितामता ॥ २३८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यह लेखन, रोपण और स्नेहन भेदसे तीन २ प्रकार के हैं क्षार, तीक्ष्ण तथा खट्टी वस्तुओं से जो अञ्जन बनता है उसको लेखन कहतेहैं लेखन,अञ्जन,लगाने से नेत्रवर्त्म,शिरा,कान और शृङ्गाटक में स्थित दोष,मुख, नासिका तथा नेत्रों के द्वारा उखड़कर निकल जाता है कषैली, तिक्त वस्तु और स्नेह के द्वारा जो अंजन बनता है उसको रोपण कहते हैं रोपण अंजन स्नेहकी शीतलता से वर्ण का उत्तम करनेवाला और नेत्रों के बलका बढ़ानेवाला होताहै मधुर वस्तु और स्नेह के द्वारा जो अञ्जन बनता है वह स्नेहन कहाताहै दृष्टिके दोषोंकी शान्ति और स्नेहन के लिये यह श्रेष्ठ होताहै अञ्जन लगानेके लिये लेखनीवर्त्ति (सलाई) हरेणु (गगनधूल) के समान रोपणीवर्त्ति (सलाई) डेढ़ हरेणु के समान परिमाणवाली और स्नेहनीवर्त्ति दो हरेणुके समान परिमाणवाली होती है और रसाञ्जन की मात्रा पिष्टवर्त्ति के समान होती है ॥ २३८ ॥

चूर्णन्तुलेखनंवैधैर्द्विशलाकंप्रदीयते । रोपणंत्रिशलाकंस्याच्चतस्रःस्नेहनाञ्जने ॥ (चतस्रःशलाकाःस्नेहनाञ्जनेचूर्णे) मुखेयामुकुलाकाराकलायपरिमण्डला । अष्टांगुलाशलाकास्यादश्मजाधातुजाथवा ॥ (कलायपरिमण्डलाअग्रेकलायवद्वर्त्तुला)ताम्रलोहाश्मसंजाताशलाकालेखनेमता । सुवर्णरजतोद्भूतास्नेहनेसमुदाहृता ॥ अंगुलीचमृदुत्वेन रोपणेसंप्रयुज्यते । कृष्णाभागावधिंलिम्प्यादपाङ्गंयावदञ्जनम् ॥ हेमन्तेशिशिरेचैवमध्याह्नेऽञ्जनमिष्यते । पूर्वाह्लेवापराह्लेवाग्रीष्मेशरदिचेष्यते । वर्षास्वनभ्रेनात्युष्णेवसन्तेतुसदैवहि ॥ अथवासर्वदाप्रातःसायंवाञ्जनमाचरेत् । नातिशीतोष्णवाताभ्रवेलायांतत्प्रयुज्यते॥ श्रान्तेऽथरुदितेभीतेपीतमद्येनवज्वरे। अजीर्णेवेगघातेचनाञ्जनंसंप्रयुज्यते ॥ रागोपदेहौतिमिरंशूलंसंरम्भमेवच । निद्राक्षयंचकुरुतेनिषिद्धेयुक्तमञ्जनम् ॥ २३९ ॥

लेखन अञ्जन का चूर्ण दोशलाका निरूपण का तीनशलाका और स्नेहनका चारशलाका प्रयोग करना चाहिये शलाका मुखमें फूलकी कली के समान,अग्रभागमें मटर के समान,गोल,आठ उंगल की लम्बी,पत्थर अथवा धातुकीहोनी चाहिये लेखनमें ताम्र, लोह अथवा पत्थर की शलाका स्नेहन में चाँदी अथवा सुवर्ण की शलाका और रोपणमें कोमलताके कारण शलाकाके स्थानमें उंगली का व्यवहार करना चाहिये नेत्रके कृष्णभागसे लेकर कोरतक अञ्जन लगाना चाहिये हेमन्त तथा शिशिरऋतुमें मध्याह्न के समय ग्रीष्म तथा शरदऋतुमें पूर्वाह्ण अथवा पराह्णमें वर्षा में मेघरहित अथवा अत्यन्त उष्णतासे रहित समय में और वसन्तऋतु में सदैव अञ्जन लगाना उचितहै अथवा सम्पूर्ण ऋतुओं में प्रातःकाल और सायंकाल में अञ्जन लगाना चाहिये अत्यन्त शीत उष्ण वायु और मेघों से रहित समय में अञ्जन लगाना चाहिये थकाहुआ, रोदन कियाहुआ, भययुक्त, मद्यपिये हुआ, नवीन ज्वरवाला, अजीर्णवाला और मल मूत्र आदिवेगों का धारण करनेवाला इनसबको अञ्जन लगाना हितकारी नहीं है निषिद्ध अवस्था में अञ्जन लगानेसे ललाई नेत्रलियेहुये से मालूम होना, तिमिर, शूल, घबराहट और निद्राका नाश होताहै ॥ २३९ ॥

अथ वर्त्तीलेखनीयथा ॥

शङ्खनाभिर्विभीतस्यमज्जापथ्यामनःशिलाः । पिप्पलीमरिचंकुष्ठंवचाचेतिसमांशकम् ॥ छागक्षीरेणसंपिष्यवर्त्तिंकुर्याद्यवोन्मिताम् । एरण्डमात्रांसंपिष्यजलैःकुर्य्याद्यथा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ञ्जनम् ॥ तिमिरंमांसवृद्धिंचकाचंपटलमर्बुदम् । रात्र्यन्धंवार्षिकंपुष्पंवर्त्तिश्चन्द्रोदया हरेत् ॥ (इति चन्द्रोदयवर्त्तिलेखनी) २४० ॥

लेखनी बत्ती ॥

शङ्ख की नाभि, बहेडेकी मींगी, हड, मैनशिल, पीपल, मिर्च, कूट और वच यह सम्पूर्ण समभाग बकरी के दूधमें जौके समान बत्ती बनावे फिर इसको हरेणु के परिमाण जल में पीसकर अञ्जन लगावे यह चन्द्रोदय नाम बत्ती तिमिर, मांसवृद्धि, काच, पटल, अर्बुद, रतौंधी और कालेतिलकी फुल्लीको नष्ट करतीहै ॥ २४० ॥

अथ रोपणीवर्त्तिः ॥

अशीतिस्तिलपुष्पाणिषष्टिःपिप्पलितण्डुलाः । जातीपुष्पाणिपञ्चाशन्मरिचानितु षोडशः ॥ सूक्ष्मपिष्टाम्बुनावर्त्तिःकृताकुसुमिकाभिधा । तिमिरार्जुनशुक्राणांनाशिनीमांसवृद्धिनुत् ॥ एतस्याअञ्जनेप्रोक्तामात्रासार्द्धहरेणुका ।(इति कुसुमिकारोपणीवटी) २४१ ॥

रोपणी बत्ती ॥

तिल के फूल, असली. पीपल के दाने, साठ. चमेली के फूल, पचास. और मिर्च सोलह. इनको जल से खूब पीसकर बत्ती बनावे इसको कुसुमिका कहतेहैं इसके अञ्जन लगानेसे तिमिर, अर्जुन, शुक्र और मांसवृद्धि का नाश होताहै इसकी मात्रा आधे हरेणुकी होती है ॥ २४१ ॥

अथ स्नेहनीवर्त्तिः ॥

धात्र्यक्षपथ्याबीजानिएकद्वित्रिगुणानिच । पिष्टावर्त्तिंजलैःकुर्य्यादञ्जनंद्विहरेणुकम् ॥ नेत्रस्रावंहरत्याशुवातरक्तरुजन्तथा ॥ २४२ ॥

स्नेहनी बत्ती ॥

आमले के बीज एकभाग बहेडे के बीज दो भाग और हडके बीज तीन भाग इन सबको पानी में पीसकर बत्तिबनावे इसकी मात्रा दो हरेणु होतीहै इसके द्वारा आंसुओं का बहना और वात रक्त की पीडा का नाश होताहै ॥ २४२ ॥

अथ रसक्रियालेखनी ॥

तुत्थमाक्षिकसिन्धूत्थाःसिताशङ्खमनःशिलाः । गैरिकंसिन्धुफेनंचमरिचंचेतिचूर्णयेत् । संयोज्यमधुनाकुर्य्यादञ्जनार्थंरसक्रियाम् । वर्त्मरोगार्मतिमिरकाचशुक्रहरींपराम् ॥ २४३ ॥

लेखनी रसक्रिया ॥

तूतिया, सोनामक्खी, सेंधानोन, चीनी, शङ्ख, मैनशिल, गेरू, समुद्रफेनऔर मिर्च इनसबकाचूर्णकरके सहतके साथ अञ्जन लगावे इससे वर्त्मरोग, अर्म्म, तिमिर, काच और शुक्ररोगका नाश होताहै ॥ २४३ ॥

अथ रोपणीरसक्रिया ॥

रसाञ्जनंसर्जरसोजातीपुष्पंमनःशिलाः । समुद्रफेनोलवणंगैरिकंमरिचन्तथा ॥ एतत्समांशंमधुनापिष्टंप्रक्लिन्नवर्त्मने । अञ्जनंक्लेदकण्डूघ्नंपक्ष्मणाञ्चप्ररोहणम् ॥ २४४ ॥

रोपणी रसक्रिया ॥

रसौत, राल, चमेलीके फूल, मैनशिल, समुद्रफेन, सेंधानोन, गेरू और मिर्च इन सबको समभाग सहत में पीसकर अञ्जन लगानेसे क्लिन्नवर्त्म [illegible] या खुजली का नाश होताहै और पलकेंउगतीहैं ॥ २४४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ स्नेहनीरसक्रिया ॥

कतकस्य फलंघृष्ट्वामधुनानेत्रमञ्जयेत्।ईषत्कर्पूरसहितंस्मृतन्नेत्रप्रसादनम् ॥ २४५ ॥

स्नेहनीरसक्रिया ॥

निर्मली को सहत के साथ पीसकर कुछ कपूर मिलाकर अञ्जन लगानेसे नेत्र निर्मल होते हैं ॥२४५॥

अथ चूर्णतल्लेखनंयथा ॥

दक्षाण्डत्वच्छिलाकाचशङ्खचन्दनसैन्धवैः। अञ्जनंहरतेनित्यंसर्वानक्षिगदान्बला त्॥(दक्षःकुक्कुटःतथाचनिघण्टुः)कृकवाकुस्तथादक्षःकालज्ञोऽथशिखण्डिकइति॥२४६॥

लेखन चूर्ण ॥

मुर्गे के अण्डेके छिलके, मैनशिल, कचनोन, शङ्ख, लालचन्दन और सेंधानोन इनको समभाग चूर्ण कर अञ्जन लगाने से नेत्रके सम्पूर्ण रोग नष्ट होते हैं ॥ २४६ ॥

अथ रोपणचूर्णम् ॥

शिलायांरसकंपिष्ट्वासम्यगाप्लाव्यवारिणा। गृह्णीयात्तज्जलंसर्वन्त्यजेच्चूर्णमधोगतम् ॥ शुष्कंतच्चजलंसर्वंपर्पटीसन्निभंभवेत्।विचूर्ण्यभावयेत्सम्यक्त्रिवेलंत्रिफलारसैः। कर्पूरस्यरजस्तत्रदशमांशेननिःक्षिपेत्। अञ्जयेन्नयनन्तेनसर्वदोषप्रशान्तये ॥ समस्त नेत्ररोगघ्नंचूर्णमेतन्नसंशयः ॥ २४७ ॥ रोपण चूर्ण ॥

खपरियाको शिलपर पीसकर पानीमें घोले फिर थोडीदेर रखकर ऊपरके पानीकोलेले और नीचेके बैठे चूरेको फेंकदे पीछे उस जलको सुखाकर जो पपडीसी जमें उसको पीसकर तीनबार त्रिफलाके रसमें भावनादे और उसमें दशमांश कपूर मिलाकर अञ्जनलगावे इस्से निस्संदेह नेत्रके संपूर्ण रोग नष्ट होते हैं ॥ २४७ ॥ अथ स्नेहनंचूर्णम् ॥

अग्नितप्तंहिसौवीरंनिषिञ्चेत्त्रिफलारसैः। सप्तवेलंतथास्तन्यैःस्त्रीणांसिक्तंविचूर्णितम् ॥ (सौवीरंश्वेतमञ्जनम्) अञ्जयेत्तेननयनेप्रत्यहंचक्षुषोर्हितम्। सर्वानक्षिविकारांस्तुहन्यादेतन्नसंशयः ॥ २४८ ॥ स्नेहन चूर्ण ॥

सफेद सुरमाको आगमेंतपा २ कर सातबार त्रिफलेके रसमें और सातबार स्त्रीके दूधमें बुझावे फिर पीसकर निरन्तर अञ्जन लगानेसे निस्संदेह सम्पूर्ण नेत्रके रोग नष्ट होतेहैं ॥ २४८ ॥

अथ प्रत्यञ्जनविधिः ॥

गतदोषमपेताश्रुप्रपश्यत्सम्यगम्भसि। प्रक्षाल्याक्षियथादोषंकार्य्यंप्रत्यञ्जनन्ततः ॥ तथानिर्वातदोषेक्षिधावनंसम्प्रयोजयेत् ॥प्रत्यञ्जनेकृतेदद्याच्चूर्णंतीक्ष्णप्रसादनम् ॥ (तद्यथा) शुद्धनागेन्द्रतुल्यन्तुशुद्धंसूतंविनिक्षिपेत्। कृष्णाञ्जनंतयोस्तुल्यंसर्वमेकत्रचूर्णयेत् ॥ दशमांशेनकर्पूरंतस्मिंश्चूर्णेविनिःक्षिपेत्। एतत्प्रत्यञ्जनंनेत्रेगदजिन्नयनामृतम् ॥ (कृष्णाञ्जनंश्रोतोऽञ्जनम् तथा च मदनपालः) श्रोतोऽञ्जनन्तुतद्विद्यादञ्जनाभंयदञ्जनम् ॥ (नयनामृतंप्रत्यञ्जनम्) ॥ २४९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रत्यञ्जनकी विधि ॥

दोष तथा अश्रुरहित अच्छे प्रकार खुलेहुए नेत्रोंको जल से अच्छीरीति पर धोकर दो[illegible] अनुसार प्रत्यञ्जनक्रिया करे परन्तु दोषोंकी शान्तिहुए विना नेत्रोंको न धोवे ऐसी अवस्थामें ती[illegible] चूर्णके द्वारा प्रत्यञ्जनक्रिया करे शुद्धसीसेको टिघलाकर समभाग शुद्धपारा मिलावे और इनदोनों के समान काला सुरमा मिलाकर पीसले फिर दशमांश कपूर मिलाकर अञ्जन लगावे इस प्रत्यञ्जन से नेत्रोंके संपूर्ण रोग नष्ट होतेहैं यह नेत्रोंके लिये अमृत समान है यह नयनामृत प्रत्यञ्जन है ॥ २४६ ॥

अथ दृष्टिप्रसादनीशलाका ॥

त्रिफलाभृङ्गशुण्ठीनांरसैस्तद्वच्चसर्पिषा । गोमूत्रमध्वजाक्षीरैः सिक्तोनागःप्रतापितः॥ तच्छलाकांहरत्येवसर्वान्नेत्रभवान्गदान् । (इतिभेषजानांविधानानि) ॥ २५० ॥

दृष्टिप्रसादिनी शलाका ॥

सीसेको आगमें तपा२ कर क्रमसे त्रिफलेकारस, भंगरेकारस, सोंठकारस, घी, गोमूत्र, सहत और बकरी के दूधमें बुझावे फिर इस सीसेकी सलाई बनवावे यह सलाई संपूर्ण नेत्रोंके रोगोंको दूर करती है इति औषधियों के बनाने की विधि ॥ २५० ॥

अथ भेषजभक्षणसमयः ॥

भैषज्यमभ्यवहरेत्प्रभातेप्रायशोबुधः । कषायांस्तुविशेषेणतत्रभेदस्तुदर्शितः ॥ ज्ञेयः पञ्चविधःकालोभैषज्यग्रहणेनृणाम् । किञ्चित्सूर्योदयेजातेतथादिवसभोजने ॥ सायन्तनेभोजनेचमुहुश्चापितथानिशि ॥ २५१ ॥

औषधखाने के समय लिखते हैं ॥

बहुधा औषध खाना प्रातःकालही उचित है और क्राथतो विशेष करके प्रातःकालही सेवनकरनाचाहिये मनुष्यों के औषध खाने के पांच समय कहेगये हैं कुछ सूर्य के उदय होने पर दिनके भोजन के समय सायंकाल के भोजन के समय वारंवार और रात्रि में ॥ २५१ ॥

तत्र प्रथमकालः ॥

प्रायःपित्तकफोद्रेकेविरेकवमनार्थयोः । लेखनार्थेचभैषज्यंप्रभातेऽनन्नमाहरेत् ॥ २५२ ॥

पहला समय ॥

बहुधा पित्त तथा कफकी वृद्धिमें और विरेचन वमन तथा लेखन के निमित्त प्रातःकाल विना भोजन किये औषध खाना चाहिये ॥ २५२ ॥

अथ द्वितीयकालः ॥

भैषज्यंविगुणेपानेभोजनाग्रेप्रशस्यते । अरुचौचित्रभोज्यैश्चमिश्रंरुचिरमाहरेत् ॥ समानवातेविगुणेमन्देऽग्नावतिदीपनम् । दद्याद्भोजनमध्येचभैषज्यंकुशलोभिषक् ॥ व्यानकोपेतुभैषज्यंभोजनान्तेसमाहरेत् । हिक्काक्षेपककम्पेषुपूर्वमन्तेचभोजनात् ॥ २५३ ॥

दूसरा समय ॥

अपान वायुके कुपित होनेपर भोजनके पहले औषध खाना चाहिये अरुचि में अनेक प्रकार के सुन्दर भोजनों में मिलाकर औषध खाना [illegible]िये समानवायुके कोप तथा मन्दाग्नि में भोजन के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्पर्शनशीतोष्णमृदुकठिनत्वादिनाडीपरीक्षणंवा । प्रश्नतःउदरलाघवगौरवतृषाऽतृषाबुभुक्षाऽबुभुक्षाबलाबलादि ॥ मिथ्यादृष्टाविकाराहिदुराख्यातास्तथैवच । तथादुष्परिपृष्टाश्चमोहयेयुश्चिकित्सकान् ॥ (तत्रदर्शनंनेत्रजिह्वामूत्रादीनांकर्त्तव्यम्) ॥ १ ॥

चिकित्साकेलिये रोगीकी परीक्षा ॥

वाग्भटने कहाहै कि दर्शन स्पर्श और प्रश्नके द्वारा रोगीकी परीक्षा करनी चाहिये दर्शनके द्वारा आयु साध्यता तथा असाध्यता आदि स्पर्शके द्वारा शीतलता, उष्णता, कोमलता तथा कठोरता आदिक अथवा नाड़ी और प्रश्नकेद्वारा उदरका हलकापन, भारीपन, तृषा, तृषाका न होना, क्षुधा, क्षुधाका न होना तथा बलाबल आदिकी परीक्षा करनीचाहिये अच्छेप्रकारसे विना देखे विचारपूर्वक विना कहे और भलीभांति विनापूंछे वैद्यको अच्छेप्रकारसे रोगका ज्ञान नहींहोताहै नेत्र जिह्वा और मूत्रआदि की परीक्षा दर्शनसे करनी चाहिये ॥ १ ॥ तत्र नेत्रपरीक्षा यथा ॥

नेत्रंस्य तृपवनाद्रूक्षंधूम्रवर्णंतथारुणम् । कोणंगतंप्रविष्टंचतथास्तब्धविलोकनम् ॥ हरिद्राखण्डवर्णंवारक्तंवाहरितंतथा । दीपद्वेषिसदाहञ्चनेत्रंस्यात्पित्तकोपतः ॥ चक्षुर्बलासबाहुल्यात्स्निग्धंस्यात्सलिलप्लुतम् । तथाधवलवर्णञ्ज्योतिर्हीनंबलान्वितम् ॥ नेत्रंद्विदोषबाहुल्यात्स्याद्दोषद्वयलक्षणम् । त्रिदोषलिंगसङ्केनतन्मारयतिरोगिणम् ॥ त्रिदोषदूषितंनेत्रमन्तर्मग्नंभृशंभवेत् । त्रिलिंगंसलिलस्राविप्रान्तेनोन्मीलयत्यपि ॥ २ ॥

नेत्र परीक्षा ॥

वायु के कोपमें नेत्र. रूखे, धूमले तथा रक्तवर्ण, भीतर को घुसेहुए और स्तब्धदृष्टिवाले होते हैं पित्तके कोपमें नेत्र. हल्दी के समान वर्णवाले, रक्त अथवा हरे, दाहयुक्त और दीपकको न देखसकने वाले होते हैं कफके कोपमें नेत्र. स्निग्ध (चिकने) आंसूभरे, श्वेतवर्ण, तेजरहित और बलयुक्त रहते हैं दो दोषों की अधिकता में दो दोषों के लक्षण मालूम होते हैं और त्रिदोष के कोपमें नेत्र. भीतरको बहुत घुसेहुए, सदैव आंसू बहतेहुए, कोरोंमें खुलेहुए और तीनों दोषोंके लक्षणोंसे युक्त होते हैं त्रिदोष के सम्पूर्ण लक्षण होनेपर रोगी मरजाते हैं ॥ २ ॥

अथ जिह्वापरीक्षा ॥

शाकपत्रप्रभारूक्षास्फुटनारसनानिलात् । रक्ताश्यावाभवेत्पित्ताल्लिप्ताद्रांधवलाकफात् ॥ परिदग्धाखरस्पर्शाकृष्णादोषत्रयेऽधिके । मैवदोषद्वयाधिक्येदोषद्वितयलक्षणम् ॥ ३ ॥

जिह्वा परीक्षा ॥

वायुके कोपमें जिह्वा सागके पत्तोंके समान कान्तिवाली, रूखी तथा कटीहुई होतीहै पित्तके कोपसे रक्तवर्ण अथवा धूसरवर्णवाली होतीहै कफके कोपसे लिपीहुई गीली और श्वेतवर्ण होतीहै दो दोषोंकी अधिकतामें दो दोषोंके लक्षण होते हैं और त्रिदोषके कोपमें जिह्वा जलीहुईसी गऊकी जिह्वाके समान कठोरस्पर्शवाली और कृष्णवर्ण होती है ॥ ३ ॥

अथ मूत्रपरीक्षा ॥

वातेनपाण्डुरंमूत्रंरक्तंनीलञ्चपित्ततः । रक्तमेत्रभवेद्रक्ताद्धवलंफेनिलंकफात् ॥ (अथ शरीरस्यशैत्योष्णत्वादिज्ञानार्थंस्पर्शनंकार्य्यम्) ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मूत्रपरीक्षा ॥

वायुसे पाण्डुवर्ण, पित्तसे शुक्ल अथवा नीलवर्ण रुधिरसे रक्तवर्ण और कफसे श्वेत तथ...नेसे युक्त मूत्र होताहै शरीरकी शीतलता और उष्णता आदिक जाननेकेलिये स्पर्श करना चाहि...॥ ४ ॥

तत्र नाडीपरीक्षामाह ॥

पुंसोदक्षिणहस्तस्यस्त्रियोवामकरस्यतु। अंगुष्ठमूलगांनाडींपरीक्षेतभिषग्वरः ॥ अंगुलीभिस्तुतिसृभिर्नाडीमवहितःस्पृशेत्। तच्चेष्टयासुखंदुःखंजानीयात्कुशलोऽखिलम्॥ सद्यःस्नातस्यसुप्तस्यक्षुत्तृष्णातपशीलिनः। व्यायामश्रान्तदेहस्यसम्यङ्नाडीनबुध्यते ॥ वातेऽधिकेभवेन्नाडीप्रव्यक्तातर्जनीतले। पित्तेव्यक्तामध्यमायांतृतीयांगुलिकाकफे ॥ तर्जनीमध्यमामध्येवातपित्ताधिकेस्फुटा। अनामिकायांतर्जन्यांव्यक्तावातकफेभवेत् ॥ मध्यमानामिकामध्येस्फुटापित्तकफेऽधिके। अंगुलित्रितयेऽपिस्यात्प्रव्यक्तासान्निपाततः ॥ वाताद्वक्रगतिन्धत्तेपित्ताद्रुतप्लुत्यगामिनी। कफान्मन्दगतिर्ज्ञेयासन्निपातादतिद्रुता। वक्रमुत्प्लुत्यचलतिधमनीवातपित्ततः ॥ वहेद्वक्रञ्चमन्दञ्चवातश्लेष्माधिकेत्वतः। उत्प्लुत्यमन्दञ्चलतिनाडीपित्तकफेऽधिके ॥ कामात्क्रोधाद्वेगवहाक्षीणाचिन्ताभयप्लुता ॥ स्थित्वास्थित्वाचलेद्यासाहन्तिस्थानच्युतातथा। अतिक्षीणाचशीताचप्राणान्हन्तिनसंशयः ॥ ज्वरकोपेनधमनीसोष्णावेगवतीभवेत्। मन्दाग्नेःक्षीणधातोश्चसैवंमन्दतरामता ॥ चपलाक्षुधितस्यस्यात्तृप्तस्यभवतिस्थिरा। सुखिनोऽपिस्थिराज्ञेयातथाबलवतीमता ॥ ५ ॥

नाडी परीक्षा ॥

नाडीकी परीक्षा
पण्डित वैद्य पुरुषके दाहिने हाथकी और स्त्रीके बायेंहाथकी अंगूठेके मूलमें स्थित नाडीकी परीक्षा
करे सावधान होकर तीन उंगलियोंसे नाडीको स्पर्श करे और उसकी चेष्टासे सम्पूर्ण सुख तथा
दुःखको जानले शीघ्र स्नान कियेहुएकी, सोयेहुएकी, भूखेकी, प्यासेकी, धूपसे संतप्तकी और व्यायाम
के द्वारा थकेहुए की नाडी अच्छेप्रकारसे नहीं मालूम होतीहै वायुकी अधिकता में तर्जनी के नीचे
पित्तकी अधिकता में मध्यमा के नीचे और कफकी अधिकता में तीसरी अनामिका उंगली के नीचे
नाडी अधिक फडकतीहुई मालूम होतीहै वात पित्तकी अधिकता में तर्जनी तथा मध्यमा के बीचमें
कफ वातकी अधिकतामें अनामिका और तर्जनीके नीचे और पित्त कफकी अधिकतामें मध्यमा तथा
अनामिकाके बीचमें नाडीका फडकना अधिक मालूम देताहै सन्निपातमें तीनों उंगलियों के नीचे
सम मालूम होतीहै वायुकी अधिकतामें वक्रगतिवाली पित्तकी अधिकतामें उछल २ कर चलनेवाली
कफकी अधिकता में मन्दगतिवाली और सन्निपातमें बहुत शीघ्र चलनेवाली होतीहै वात पित्तकी
अधिकतामें टेढी और उछल २ कर चलनेवाली वात कफकी अधिकतामें टेढी और धीरे २ चलने
वाली तथा कफ पित्तकी अधिकतामें धीरे २ उछल २ कर नाडी चलनेवाली होतीहै कामसे अथवा
क्रोधसे वेगवती और चिन्ता अथवा भयसे नाडी क्षीण होतीहै जो नाडी ठहर २ कर चले अपनेस्थान
से हटजाय अत्यन्त क्षीण होय अथवा अत्यन्त शीतल होय वह नाडी निस्सन्देह प्राणोंको नाशकर-
तीहै ज्वरके कोपमें नाडी उष्ण और वेग... होतीहै मन्दाग्नि और क्षीण धातुवालेकी नाडी अत्यन्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मन्द होतीहै दुखेकी नाडी चञ्चल तृप्तकी नाडी स्थिर और सुखी पुरुषकी नाडी स्थिर और बलवती होतीहै ॥ ५ ॥ अथ येनयेनरोगाणांज्ञानंस्यात्तत्तदाह ॥

हेतुस्तदङ्कुसंप्राप्तिंपूर्वरूपञ्चलक्षणम् । तथैवोपशयःपञ्चरोगविज्ञानहेतवः ॥ ६ ॥

जिनके द्वारा रोगका ज्ञान होताहै उनका वर्णन ॥

हेतु, संप्राप्ति, पूर्वरूप, लक्षण और उपशय यह पांच रोगों के जाननेके कारण हैं ॥ ६ ॥

तत्र हेतोर्लक्षणमाह ॥

यत्तुनस्याद्विनायेनतस्यतद्धेतुरुच्यते । शास्त्रेसंव्यवहारायतत्पर्यायान्प्रचक्ष्महे ॥ निदानंकारणंहेतुर्निमित्तंचनिबन्धनम् । मूलमायतनंतत्रप्रत्ययोऽपिनिगद्यते ॥ (तत्र हेतुर्व्याधीनांज्ञानायहेतुर्यथा) वर्षारूक्षश्रमहिमानशनानि मैथुनशोकचिन्ताभयादयो वातप्रकोपहेतवोवातजान्व्याधीन्बोधयन्ति । शरत्कट्वम्लोष्णतीक्ष्णक्रोधतृषाक्षुधा भिघातातपादयः ॥ पित्तप्रकोपहेतुःपित्तजान्व्याधीन्बोधयन्ति । वसन्तमधुरस्निग्ध शीतादयःकफप्रकोपहेतवःकफजान्व्याधीन्बोधयन्ति ॥ ७ ॥

हेतुका लक्षण ॥

जिसके विना जो कार्य्य न होसके उसे हेतु कहतेहैं निदान कारण हेतु निमित्त निबन्धन मूल आयतन यह उसके नाम चिकित्साशास्त्रमें व्यवहारके निमित्त कहेगयेहैं उसमें हेतु रोगोंके जानने के लिये कहागयाहै जैसे वर्षाकाल, रूक्षता, परिश्रम, शीत, उपवास, मैथुन, शोक, चिन्ता और भय आदिक वायुके कोप होनेके हेतुहैं यह वातजरोगोंको उत्पन्न करते हैं शरदृत्तु, कटु, तथा खट्टी वस्तु उष्ण तथा तीक्ष्ण वस्तु, क्रोध, तृषा, क्षुधा, चोट और धूप आदिक पित्तके कोपके कारणहैं इनके द्वारा पित्तके रोग उत्पन्न होतेहैं वसन्तऋतु, मधुर तथा स्निग्धवस्तु और शीतादिक कफके कोपके हेतु हैं इनसबके द्वारा कफके रोग उत्पन्न होते हैं ॥ ७ ॥

अथ संप्राप्तिर्लक्षणमाह ॥

यथादुष्टेनदोषेणयथाचानुविसर्पता । उत्पत्तिर्यामयस्यासौसंप्राप्तिर्जातिरागतिः ॥ यथादुष्टेनदोषेणयथाकारणभेदेनदोषेणयथाचानुविसर्पिता । अनेकधादोषाणांत्रिसर्पता मूर्द्धाधस्तिर्यगादिगतिभेदेन । तथाचविसर्पता । आमयस्ययाउत्पत्तिः । असौसंप्राप्तिः । शास्त्रव्यवहारायसंप्राप्तेःपर्य्यायानाहजातिरागतिरिति ॥ ८ ॥

संप्राप्तिका लक्षण ॥

कारणके अनुसार दोषको प्राप्तहुए दोष ऊपर नीचे और तिरछे फैलकर जैसे रोगोंको उत्पन्न करते हैं उसको संप्राप्ति कहते हैं जाति और आगति यह उसके नामहैं ॥ ८ ॥

संप्राप्तेरौपाधिकभेदानाह ॥

संख्याविकल्पप्राधान्यबलकालविशेषतः । साभिद्यतेयथात्रैववक्ष्यन्तेऽष्टौज्वराइति ॥ संख्यादिरूपविरोधास्तेभ्यःसासंप्राप्तिर्भिद्यतेभेदवतीक्रियतइत्यर्थः । तत्रसंख्यांविवृणोति । यथाज्वरोऽष्टधाअतीसारःषड्विधइत्यादि ॥ ९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संप्राप्तिके उपाधिसे हुए भेद ॥

संख्या, विकल्प, प्राधान्य, बल और काल इन विशेषों से संप्राप्तिके भेद होते हैं संख्[...] विशेषता जैसे आगे कहेंगे कि आठप्रकारके ज्वर और छःप्रकारके अतीसार इत्यादि ॥ ९ ॥

विकल्पंविवृणोति ॥

दोषाणांसमवेतानांविकल्पोंऽशांशकल्पना । समवेतानांसमुदितानांदोषाणामंशांशकल्पनाहीनमध्याधिकभेदैर्भागकल्पनाविकल्पः(प्राधान्यंविवृणोति)स्वातन्त्र्यपारतन्त्र्याभ्यांव्याधेःप्राधान्यमादिशेत् । व्याधेःस्वातन्त्र्येणप्राधान्यंपारतन्त्र्येणऽप्राधान्यंचवदेदित्यर्थः । यथास्वतन्त्रस्यज्वरस्यप्राधान्यंज्वराधीनानांश्वासादीनामप्राधान्यम् (बलंविवृणोति)हेत्वादिकात्स्न्र्यावयवैर्बलाबलविशेषणम् । अत्रापिव्याधेरित्यनुवर्ततेहेत्वादेःहेतुपूर्वरूपरूपाणाम् । कात्स्न्र्येनसाकल्येनअवयवैःएकदेशेनव्याधेरबलाबलयोर्विशेषणम् । विशेषबोधः(कालंविवृणोति)नक्तंदिनर्तुभुक्तांशैर्व्याधिकालोयथामलम् ॥ नक्तमत्राव्ययंरात्रिवाचकम् । एतेनैतदुक्तंयस्मिन्नक्तादिरंशोयस्यदोषस्यप्रकोपउक्तोऽस्तिसोंऽशस्तस्यदोषजस्यव्याधेःकालइत्यर्थः । नक्तादेरंशेषुवातादेःप्रकोपेउक्तोवाग्भटेन । तेव्यापिनोऽपिहन्नाभ्योरधोमध्योर्दूर्ध्वसंश्रयाः । वयोऽहोरात्रिभुक्तानामन्तमध्यादिगाःक्रमादिति ॥ वातपित्तकफाः (ऋतुषुवातादिकोपयथा) वर्षासुशिशिरेवायुःपित्तंशरदिउष्णके ॥ वसन्तेतुकफःकुप्येदेषाप्रकृतिरार्त्तवी ॥ १० ॥

विकल्प परस्पर मिलेहुए वातादिक दोषों की अंशांश कल्पना अर्थात् वातादि दोषों में प्राप्त रूक्षता आदिका हीन मध्य और अधिक भेदोंके विभागके निश्चयको विकल्प कहतेहैं (इसरोगमें वातादि दोषों में से किसके कितने अंश हैं यह निश्चय करना) प्राधान्य स्वतन्त्रता और परतन्त्रतासे व्याधि की प्रधानता और अप्रधानताको क्रमसे जानना चाहिये जैसे स्वतन्त्र ज्वर की प्रधानता और उसके आधीन श्वासादिकों की अप्रधानता बल हेतु पूर्वरूप और रूप इन संपूर्ण लक्षणों के होनेसे रोगका बल और इनमें से किसी २ के होनेसे अबल जानना चाहिये काल रात्रि दिन ऋतु और भोजनका समय इनमेंसे जौनसा अंश जिस दोषके कोप का कहागया है वही अंश उसीदोष से उत्पन्न हुए रोगका काल कहाजाता है रात्रि आदिकों के किस अंशमें किस दोषका कोप होताहै यह वाग्भटने कहाहै कि वात पित्त और कफ यह सम्पूर्ण शरीर में रहनेवाले होकर भी क्रमसे हृदय और नाभिके नीचे बीचमें और ऊपर रहतेहैं अवस्था दिन रात्रि और भोजन इनके अन्त मध्य और आदि में क्रमसे वात पित्त और कफका कोप होता है किस ऋतुमें किस दोषका कोप होताहै यह कहतेहैं जैसे कि वर्षा तथा शिशिर में वातका शरद् तथा ग्रीष्म में पित्तका और वसन्तमें कफका कोप होताहै ॥ १० ॥

(संप्राप्तिर्व्याधीनांज्ञानायहेतुर्यथा) मिथ्याहारविहारकुपितावाताद्यामाशयगमनरसदूषणकोष्ठाग्निबहिर्निस्सरणरूपंज्वरोत्पत्तिप्रकारम्बोधयति । तथा व्याधीनांसंख्यादोषांशकल्पनाप्राधान्यबलकालांश्चबोधयति । तेषुज्ञातेषुचिकित्साविशेषश्चस्यात् ११ ॥

संप्राप्ति रोगोंके जाननेका कारणहै [illegible] नियमरहित आहार विहारके द्वारा कुपितहुए वाता-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिक दोष आमाशय में जानेसे रसको दूषित करने से और जठराग्निको बाहर निकलने से ज्वर की उत्पत्ति के कारणों को प्रकट करते हैं इसीप्रकार रोगों की संख्या दोषों की अंशांशकल्पना प्राधान्य बल और काल ये प्रकट होते हैं और इन सम्पूर्णोंके ज्ञातहोनेपर विशेषतासे चिकित्सा होती है ॥ ११॥

अथ पूर्वरूपस्य लक्षणमाह ॥

पूर्वरूपन्तुतद्येन विद्याद्भाविनमामयम् । सामान्यञ्चविशिष्टञ्च द्विविधंतदुदाहृतम् ॥ सामान्यंतत्रदोषाणां विशेषैरनधिष्ठितम् । विशिष्टमीषद्व्यक्तंस्याद्विशेषैश्चसमन्वितम् ॥ दोषाणांविशेषाः जृम्भातिशयनेत्रदाहाग्निमान्द्यादयः । तत्रपूर्वरूपंव्याधीनांज्ञानायहेतुर्यथा । श्रमादयोभाविनंज्वरंबोधयन्ति । अथचअतएवश्रमादयोऽतिशयितजृम्भायुक्ता भाविनंवातज्वरंनेत्रदाहयुक्ताः पित्तज्वरंवह्निमान्द्ययुक्ता भाविनंकफज्वरं बोधयन्ति॥१२॥

पूर्वरूपका लक्षण ॥

जिसके द्वारा होनेवाला रोग निश्चित होताहै उसको पूर्वरूप कहते हैं पूर्वरूप दो प्रकारका है सामान्य और विशेष उनमेंसे दोषोंके जम्भाई बहुत नेत्रों का जलना और मन्दाग्नि आदि विशेषों से जो युक्त न हो उसको सामान्य कहतेहैं और दोषोंके विशेषों से युक्त कुछ प्रकट लक्षणवाले पूर्वरूप को विशिष्ट कहते हैं पूर्वरूप रोगों के ज्ञानका कारण है जैसे श्रम आदिक से होनेवाला ज्वर मालूम पड़ताहै और इसी श्रमआदिके साथ अत्यन्त जम्भाई आती हों तो होनेवाला वातज्वर जो नेत्रमें अत्यन्त दाहहो तो होनेवाला पित्तज्वर और जो मन्दाग्नि हो तो होनेवाला कफज्वर मालूम होताहै ॥ १२ ॥

अथ लक्षणस्यलक्षणमाह ॥

पूर्वरूपंविशिष्टंयद्व्यक्तंतल्लक्षणंस्मृतम् । संस्थानंलिङ्गंचिह्नञ्चव्यञ्जनंरूपमाकृतिः॥ विशिष्टंपूर्वरूपम् । ईषद्व्यक्तंरूपम् । तदेवसम्यग्व्यक्तंलक्षणंस्मृतंतस्य शास्त्रे व्यवहारायपर्यायानाहसंस्थानमित्यादि लक्षणंव्याधेर्ज्ञानायहेतुर्यथा । स्वेदावरोधःसन्तापःसर्वाङ्गग्रहणन्तथा।युगपद्यत्ररोगेतुसज्वरःपरिकीर्त्तितः।युगपदेतल्लक्षणंज्वरंबोधयति १३ ॥

लक्षण का लक्षण ॥

विशिष्ट पूर्वरूप जो अच्छेप्रकारसे प्रकट हो तो उसको लक्षण कहते हैं संस्थान लिङ्ग चिह्न व्यञ्जन रूप और आकृति यह लक्षण के नाम हैं लक्षण रोगों के जानने का कारण है जैसे कि स्वेद का मालूम होना संताप और सब शरीर में पीडा यह संपूर्ण लक्षण जिस रोग में होयँ उसको ज्वर कहते हैं ॥ १३ ॥

अथोपशयस्यलक्षणमाह ॥

औषधान्नविहाराणामुपयोगंसुखावहम्।नृणामुपशयंविद्यात्सहिसात्म्यमितिस्मृतः ।'१४॥

उपशय का लक्षण ॥

सुखदायक औषध अन्न और विहारके सेवनको उपशय कहतेहैं और इसको सात्म्यभी कहतेहैं ॥१४॥

तत्र वातस्योपशयमाह ॥

मधुरलवणसाम्लस्निग्धनस्योष्णनिद्रागुरुरविकरवस्तिस्वेदसम्मर्दनानि । दधिघृततिलतैलाभ्यंगसन्तर्पणानि प्रकुपितपवमानंशान्तये तानिकुर्युः ॥ १५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वायु का उपशय ॥

मधुर,अम्ल,लवण तथा स्निग्ध वस्तु,नासलेना,उष्ण वस्तु, निद्रा, भारीवस्तु,धूप,वास्ति क्रिया, स्वेदन, मर्दन, दही ,घृत, तिल, तेलका लगाना, संतर्पण और वर्षाका अन्त यह सब एवं कुपित वायु को शान्त करतेहैं ॥ १५ ॥

अथ पित्तस्योपशयमाह ॥

तिक्तस्वादुकषायशीतपवनच्छायानिशावीजनज्योत्स्नाभूगृहयन्त्रवारिजलजंस्त्रीगात्रसंस्पर्शनम् । सर्पिःक्षीरविरेकसेकरुधिरस्रावप्रदेहादिकं पानाहारविहारभेषजमिदं पित्तप्रशान्तिन्नयेत् ॥ १६ ॥

पित्तका उपशय ॥

तिक्त, मधुर,कषैली, तथा शीतलवस्तु,वायु,छाया,रात्रि,पंखा,चांदनी,तहखाना,फव्वारेका जल, कमल, स्त्रियों के अंगका स्पर्श, घी, दूध, विरेचन,सेक,रुधिर निकलवाना और लेप आदिक तथा पान, आहार,विहार और औषधों के द्वारा पित्त शान्त होताहै ॥ १६ ॥

अथ कफस्योपशयमाह ॥

रूक्षक्षारकषायतिक्तकटुकव्यायामनिष्ठीवनं धूमात्युष्णशिरोविरेकवमनस्वेदोपवासादिकम् । तृड्वातध्वनियुद्धजागरजलक्रीडांगनासेवनं पानाहारविहारभेषजमिदंश्लेष्माणमुग्रंहरेत् ॥ जलक्रीडाकफंकथंहरति । तदाह । जलक्रीडाजनितशैत्येनावरुद्धोष्मापङ्कलिप्ताभितःपाकाग्निरिवोग्रोभूत्वाकफंशोषयतीतिसमाधिः ॥ उपशमोव्याधेर्ज्ञानायहेतुर्यतउक्तंचरकेण । गूढलिंगंसंकीर्णंलक्षणंचव्याधिमुपशमानुपशमाभ्यांपरीक्षेदिति। तथाचसुश्रुते। अभ्यंगस्वेदनस्नेहैर्विकारोवातिकस्तुयः । नशाम्येत्तत्रविज्ञेयोरक्तमत्रास्तिदूषितम् ॥ १७ ॥

कफका उपशय ॥

रुक्ष, क्षार,कषैली,तिक्त तथा कटुवस्तु, व्यायाम, थूकना,धूम,उष्णवस्तु, नासलेना, वमन, स्वेद, उपवास,तृषा,वायु,मार्गचलना,युद्ध,जागना,जलक्रीडा, और मैथुन इन सब पान आहार विहार और औषधके सेवनसेबहुत बढ़ाहुआभी कफ शान्तहोताहै जलक्रीडा किसप्रकारसे कफको शान्तकरती है इसका उत्तर कहते हैं कि जलक्रीडा से उत्पन्न हुये शीतके द्वारा रुकीहुई ऊष्मा सब ओर पङ्क से लेप से रुककर बहुत प्रचण्ड होनेवाली पाककी अग्निके समान उग्र होकर कफको सुखातीहै उपशय रोगके ज्ञानका कारणहै क्योंकि यह चरकने कहाहै कि छिपे हुये लक्षणवाले और मिलेहुये लक्षण वाले रोगोंकी उपशय और अनुपशय से रक्षाकरे और सुश्रुतने भी कहाहै कि जो तैलादि लगाना स्वेद और स्नेहके द्वारा वातजनित रोग शान्त न होय तो रुधिरको दूषित जाननाचाहिये ॥ १७ ॥

सर्वेषामेवरोगाणांनिदानंकुपितामलाः । तत्प्रकोपस्यतुप्रोक्तंविविधाहितसेवनम् ॥ सर्वेषांरोगाणांनिदानंसंनिकृष्टंकारणम् । कुपितास्वहेतुदुष्टामलाःवातपित्तकफाएवेत्यन्वयः (तथाचवाग्भटः) दोषाएवहिसर्वेषांरोगाणामेककारणमिति । नन्वागन्तुजव्याधिषुव्यभिचारःस्यात् । तन्न । तत्राप्युत्पत्त्यनंतरंदोषप्रकोपस्यावश्यम्भावित्वात् । उत्पन्नद्रव्येषुगुणयोगस्येव (उक्तंचचरके) आगन्तुर्हियथापूर्वोजायते । पश्चान्निजैर्दोषैरनुबध्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तइति। तस्य कोपस्यतु। दोषप्रकोपस्यतु। निदानम्। विविधानिनानाविधानि। यान्य हितान्यसात्म्यान्याहारविहारादीनि। तेषांसेवनम्॥ १८॥

अपने कारणों से दोषयुक्त वात, पित्त और कफ यही तीनों संपूर्ण रोगोंके समीपी कारण हैं और अनेक प्रकारके अहितकारी आहार विहार आदिकोंका सेवन दोषोंके कोपका कारणहै और ऐसाही वाग्भटने कहाहै कि वात पित्त और कफ यही संपूर्णरोगोंके मुख्य कारणहैं अब यह शंका होतीहै कि आगन्तुक रोगोंमें वातादिक दोष कारण नहीं होते हैं ? इसका उत्तर यहहै कि जैसे कोई वस्तु जब उत्पन्न होलेतीहै तब उसमें गुणोंका संयोग होता है उसीप्रकार आगन्तुक रोगोंके उत्पन्न होतेही दोषोंका कोप होताहै और चरकनेभी कहाहै कि पहले आगन्तुक रोग उत्पन्न होताहै फिर अपने दोषों से युक्त होजाताहै॥ १८॥

यथा वायोः प्रकोपस्यनिदानानि॥

नीवारस्त्रिपुटःसतीनचणकःश्यामाककमुद्गाढकी निष्पावश्चमकुष्ठकश्चवरटामंगल्य कःकोद्रवः॥ यद्द्रव्यंकटुकंसतिक्ततुवरंशीतञ्चरूक्षंलघु स्वल्पाशोविषमाशनंनिरशनं भुक्तेह्यजीर्णेऽशनम्॥ भुक्तंजीर्णतरंपरिश्रमभरोगर्त्तादिकोल्लंघनं बाहुभ्यान्तरणन्तरोःप्रपतनंमार्गेऽतियानंपदा॥ दण्डादिप्रहतिस्तथोच्चपतनंधातुक्षयोजागरो शोकाद्यावरणंव्यवायभृशतावातादिवेगाहतिः॥ अत्यर्थंवमनंविरेचनमतिस्रावोऽधिकश्चासृजो रोगान्मांसविहीनतातिमदनश्चिन्ताचशोकोभयम्॥ वर्षावैशिशिरोदिनस्यरजनेर्भागौतृतीयौघनाः प्राग्वातस्तुहिनंशरीरमरुतोदुष्टेरमीहेतवः॥ नीवारःप्रसाधिकाः। तीनीइतिलोके। त्रिपुटःखेसारीइतिलोके। सतीनःवर्त्तुलकलापःनिष्पावः। कोलशिम्बीसदृशफला। राजशिम्बिस्तस्याबीजमन्नंभवति। वरटिबराटिका। कुसुम्भबीजम्। बररेइतिलोके।मंगल्यकोमसूरः।विषमाशनम्। बहुस्तोकमकालेवाभुक्तंतद्विषमाशनम्। अतियानम्। पादाभ्यामतिचलनम्। तरोःप्रपतनम्। तरोरित्युपलक्षणम्। जागरःरात्रौ। वातादिवेगाहतिः। आदिशब्देनविण्मूत्राश्रुछिक्कोद्गारछर्दिशुक्रक्षुत्तृषोच्छ्वासनिद्राःसंगृह्यन्ते। दिनस्यत्रिधाविभक्तस्य। एवंरजनेश्च। यस्यपुनरुक्तिस्तेनतेनवातस्यातिदुष्टिर्बोद्धव्या॥ १९॥

वायुके कोपके निदान॥

तिन्नीके चावल, खिसारी, मटर, चने, सामा, मूंग, अरहड, सेम, मोठ, कुसुमकेबीज, मसूर, कोदों, कटु, तिक्त, कषाय, शीतल, रूखी तथाहलकी वस्तु, स्वल्प भोजन, विषमाशन [अधिक थोडा वा विनासमय के भोजन] उपवास, भोजनके पचेविना फिरभोजन करना, भोजनका अच्छेप्रकार से पचजाना परिश्रम, भार, गड्ढे आदिकों का फलांगना, भुजाओंसे तैरना, वृक्षादिकोंसे गिरना, बहुत पैदल चलना, डंडे आदिकी चोट, उच्चस्थानसे गिरना, धातुक्षय, रात्रिमें जागना, शोकादिकोंसे युक्तहोना अत्यन्त मैथुन, वात, मल, मूत्र, आंसू, हिचकी, डकार, छर्दि, वीर्य, क्षुधा, तृषा, ऐंडाईतथा निद्राकेवेगकारोकना, अत्यन्त वमन, अत्यन्त विरेचन, बहुत रुधिर निकलवाना, रोगसे मांसकाघटना, अत्यन्त काम, चिन्ता, शोक, भय, वर्षा, शिशिर-ऋतु, दिन तथा रात्रिका पिछला तिहाई भाग, मेघ, पूर्वकी वायु और हिम इनसबकेद्वारा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शरीरकी वायु कुपित होतीहै इनमेंसे जो २ बातें दो बार कहीगई हैं उनसे वायु अत्यन्त कुपित होताहै यह जानना चाहिये ॥ १६ ॥ अथ पित्तस्यप्रकोपकारणानि यथा ॥

कट्वम्ललोष्णविदाहितीक्ष्णलवणक्रोधोपवासातपस्त्रीसम्भोगतृषाक्षुधा, महननव्यायाममद्यादिभिः । भुक्तेजीर्य्यतिभोजनेचशरदिग्रीष्मेतथाप्राणिनांमध्याह्नेचतथार्द्धरात्रसमयेपित्तप्रकोपोभवेत् ॥ (विदाहिलक्षणम्) विदाहिद्रव्यमुद्गारमम्लंकुर्य्यात्तथातृषाम्। हृदिदाहञ्चजनयेत्पाकंगच्छतितच्चिरात् ॥ (अन्यच्च) माषैस्तिलैःकुलत्थैश्चमत्स्यैर्मेषामिषेणच । गव्येनदधितक्रेणनृणांपित्तंप्रकुप्यति ॥ २० ॥

पित्तके कोपहोने के कारण ॥

कटु, अम्ल, लवण, उष्ण, विदाही (जो वस्तु खट्टी डकारलावे तृषा तथा हृदयमें दाह करे और बहुत देरमें पचे उसे विदाही कहतेहैं) तथा तीक्ष्णवस्तु. क्रोध, उपवास, धूप, स्त्रीप्रसंग, तृषा तथा क्षुधाका रोकना, व्यायाम, मद्य, भोजनके पचनेका समय, शरद् तथा ग्रीष्मऋतु, मध्याह्न और अर्द्ध रात्रि यह सब पित्तके कोपके कारणहैं औरभी कहाहै कि उर्द, तिल, कुलथी, मछली, मेढ़ेकामांस और गौका दही तथा मट्ठा इन सबसे पित्त कुपित होताहै ॥ २० ॥

अथ श्लेष्मप्रकोपकारणानि यथा ॥

गुरुपटुमधुराम्लस्निग्धमाषैस्तिलैश्च द्रवदधिदिननिद्राशीतसर्पिःप्रपूरैः ॥ प्रथमदिवसभागेरात्रिभागेऽपिचाद्ये भवतिहिकफकोपोभुक्तमात्रेवसन्ते ॥ प्रथमदिवसभागे त्रिधाविभक्तस्यदिवसस्यप्रथमभागे । एवंरात्रेश्चाद्यभागे ॥ ननुसर्व्वेषांरोगाणांनिदाने दोषाएवकिमन्यदप्यस्तीतिसंशयेचरकआह । निदानार्थकरोरोगोरोगस्याप्युपलक्ष्यते॥ इतिरोगस्यनिदानार्थकरःनिदानस्यरोगोऽपिउपलक्ष्यतेदृश्यते । अत्रदृष्टान्तमाह ॥ तद्य थाज्वरसन्तापाद्रक्तपित्तमुदीर्य्यते । रक्तपित्ताज्वरस्ताभ्यांश्वासश्चाप्युपजायते ॥ प्लीहाभिवृद्धयाजठरंजठराच्छोफएवच । अर्शोभ्योजाठरंदुःखंगुल्मश्चाप्युपजायते॥प्रतिश्यायाद्‌थोत्कासःकासात्संजायतेक्षयः । अन्येत्वाहुर्मधुकोशे । रोगस्यरोगश्चेन्निदानंतथानिदानमित्येवोच्यते । तद्विहायनिदानार्थकरइतिवचनमेतद्‌बोधयति । रोगस्यरोगोनिदानार्थकरः । निदानकार्य्यकरणेसहायः । निदानन्तुरक्तपित्तादीन्कतिचिद्रोगान्प्रतिज्वरादिरेवहेतुरितिसिद्धान्तः । अतएवाग्रेस्पष्टमेवचरकः । कश्चिद्धिरोगोरोगस्यहेतुर्भूत्वेति । प्रथमस्यरोगस्यज्वरादेर्योदुष्टोदोषोहेतुः सएवपश्चाद्भाविनोरक्तपित्तादेरपिरोगस्यहेतुः । सर्वेषामेवरोगाणांनिदानंकुपितामलाः ॥ इतिनियमात्तत्रयदारक्तपित्तादेरुपद्रवलक्षण योगेनरोगत्वविघातःस्यात्ततः सर्वेषामितिवचनंसामान्यम् । निदानार्थकरइतिविशेषवचनात् ॥ २१ ॥

कफ के कोपके कारण ॥

भारी, लवण, मधुर, खट्टी तथा स्निग्धवस्तु, उर्द, तिल, पतलीवस्तु, दही, दिनमेंसोना, शीत, परिश्रमादिका न करना दिन तथा रात्रिकी पहली तिहाई वसन्त ऋतु और भोजन का अन्त यह सब कफके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कोप के कारण हैं केवल दोषही सम्पूर्ण रोगों के कारणहैं अथवा कोई औरभी सन्देहके दूरकरने को चरक ने कहा है कि एक रोग दूसरे रोगका निदान कार्य में सहायक होताहै जैसे ज्वरके संताप से रक्त पित्त उत्पन्न होताहै रक्तपित्त से ज्वर होताहै और इनदोनोंसे राजयक्ष्मा रोग होताहै प्लीहाके बहुत बढ़नेसे उदर और उदरसे सूजन उत्पन्न होतीहै बवासीरसे दुःखदायी उदररोग और गुल्म उत्पन्नहोताहै जुकामसे खांसी और खांसी से क्षयरोग उत्पन्न होताहै और लोगों ने मधुकोश में कहाहै कि जो रोगका रोगही निदानहै तो पिछले वाक्यमें ऐसा न कहकर निदानार्थकर यह वचन कहागया है उससे यह प्रकट होताहै कि एक रोग दूसरे रोगका निदान कार्य्यमें सहायक होताहै परन्तु रक्तपित्त आदिक कुछ रोगों के ज्वरादिकही कारण हैं यह सिद्धान्त है इसी से चरक ने कहाहै कि कोई रोग किसी रोग का कारण होकर इत्यादि पहले ज्वर आदिक रोगका जो दोषयुक्त दोष कारण होताहै वही पीछे होनेवाले रक्त पित्त आदिकोंकाभी कारण होताहै क्योंकि संपूर्ण रोगों के निदान कोपयुक्त दोषही होतेहैं यह नियमहै तब जो यहकहो कि रक्त पित्त आदिकों में उपद्रवका लक्षण मिलैगा इस निमित्त उनको रोग न कहसकेंगे तो संपूर्ण इस वचनको सामान्य माननाचाहिये क्योंकि निदानार्थकर यह विशेष वचनहै ॥ २१ ॥

रोगस्यहेतोरोगस्यवैचित्र्यमाह ॥

कश्चिद्धिरोगोरोगस्यहेतुर्भूत्वाप्रशाम्यति । यथाज्वरोरक्तपित्तमुत्पाद्यस्वयंप्रशाम्यतिननुयोदोषोद्रेकेणज्वरोरक्तपित्तमुत्पादितवांस्तस्मिन्सतिसतुज्वरःकथंशाम्यति । तत्रव्याधिस्वभावएवकारणमिति न दोषः। न प्रशाम्यतिचाप्यन्योहेत्वर्थंकुरुतेऽपिच । अन्योहेत्वर्थमपिकुरुतेस्वयञ्चनप्रशाम्यतियथाप्रतिश्यायःकासंकरोतिस्वयञ्चनप्रशाम्यति । तथार्शोजठरगुल्मौकरोतिस्वयञ्चननिवर्त्ततइति । (अथदोषधातुमलानांक्षीणानाञ्चचिकित्सामाहसुश्रुतः) अत्यन्तकुत्सितावेतौसदास्थूलकृशौनरौ । श्रेष्ठोमध्यशरीरस्तुस्थूलःक्षीणोनपूजितः ॥ कर्षयेद्बृंहयेच्चापिसदास्थूलकृशौनरौ । रक्षणञ्चापिमध्यस्यकुर्व्वीत कुशलोभिषक् ॥ (अन्यच्च) क्षपयेद्बृंहयेच्चापिदोषधातुमलान्भिषक् । नरोरोगान्वितोयावद्रोगेणरहितोभवेत् ॥ क्षपयेदतिप्रवृद्धान्दोषधातुमलांस्तत्तत्क्षयहेतुभिरौषधान्नविहारैर्ह्रासयित्वासमीकुर्य्यात् ।बृंहयेत् । क्षीणान्दोषादींस्तत्तद्वृद्धिहेतुभिरौषधान्नविहारैर्वर्द्धयित्वासमीकुर्य्यात् ॥ २२ ॥

रोगका रोगहीकारणहै इसमें विचित्रता कहतेहैं ॥

कोई रोग किसीरोगको उत्पन्न करके शान्त होजाता है जैसे ज्वर, रक्त पित्तको उत्पन्न करके आप शान्त होजाताहै अब यह सन्देह होताहै कि जिसदोषसे ज्वर रक्तपित्तको उत्पन्न करता है उस दोषके वर्त्तमानरहनेपर ज्वर किसप्रकार शान्तहोसक्ताहै? इसका उत्तर यह है कि रोगका स्वभावही इसका कारणहै कोईरोग अन्यरोगोंको उत्पन्न करतेहैं और आप नहीं शान्तहोते जैसे जुकाम खांसीको उत्पन्न करके आप नहीं शान्त होता और बवासीर उदर तथा गुल्मरोगको उत्पन्नकरके आप नहीं शान्त होती बढ़े हुए तथा क्षीणहुए दोष धातु और मलों की चिकित्सा सुश्रुतने कही है कि स्थूल और कृश यह दोनों प्रकार के मनुष्य अत्यन्त निन्दितहैं मध्यमशरीरवाला सबसे श्रेष्ठहै इससे चतुरवैद्य स्थूलको कृश और कृशको स्थूल करे और मध्य शरीवालेकी रक्षा करे रोगीके बढ़ेहुए दोष धातु और मलको

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्षीणकरनेवाली औषधि अन्न और विहारसे क्षीणकरके समकरे और क्षीणहुए दो । धातु तथा मलको वृद्धिकरनेवाली औषधि अन्न और विहार से बढ़ाकर समकरे ॥ २२ ॥

अस्वस्थोयेनविधिनास्वस्थोभवतिमानवः।तमेवकारयेद्वैद्योयतःस्वास्थ्यंसदेप्सितम् २३

जिसप्रकारसे बेचैन पुरुष सुचित्त होजाय वही रीति वैद्यको करनीचाहिये क्योंकि सुचित्तताही को लोग सदैव चाहते हैं ॥ २३ ॥

स्वस्थस्य लक्षणमाह ॥

समदोषःसमाग्निश्चसमधातुमलक्रियः। प्रसन्नात्मेन्द्रियमनाःस्वस्थइत्यभिधीयते॥ समक्रियः। शरीरानुरूपकर्मा। आत्माशरीरं। तन्त्रान्तरेऽपि। विण्मूत्राखिलदोषधातु समताकाङ्क्षान्नपानेरुचिर्भुक्तंजीर्य्यतिपुष्टयेपरिणतिःस्वप्नावबोधैःसुखम् ॥ गृह्णातोवि षयान्यथास्वमुचितानूवृत्तिमनोवृत्तितः। स्वस्थस्याभिहितंचतुर्दशविधंजन्तोरिदंलक्षण म् ॥ रुचिः शरीरकान्तिः नन्वहर्निशर्त्तुभुक्तवत्सुदोषाणांवृद्धेःकथंसमदोषता। उच्यते। अ होरात्रप्रथमभागादिषुतत्तद्दोषवृद्धेःस्वस्थवृत्तोक्तविधिभिरुपशमात्समदोषतेति न दो षः (किञ्च) यत्समत्वंहिदोषाणांभिषग्भिरवधार्य्यते। नतत्स्वास्थ्यंविनावक्तुंशक्यम न्येनहेतुना ॥ तेनसमदोषस्वस्थयोर्लक्षणमन्योन्यापेक्षयास्वस्थःसमदोषःस्वस्थःस्वस्थ स्योहितंचततदोषधातुमलानां स्वप्रमाणस्थितानां साभ्यानुवृत्तिहेतुर्यद्द्रव्यापच्चस्वस्था नुवृत्तिङ्करोति। ऋतुचर्य्याध्यायेसेव्यत्वेनोक्तम्। तथामात्राःशीलयेत्तृतीयेऽध्यायेरक्त शालिः षष्टिकयवगोधूमजांगलमांसजीवन्तीशाकादिमोदकक्षीरादि ॥ तथायदोजस्कर रसायनंवाजीकरणंसर्व्वदाशीलनीयत्वेननिर्दिष्टम् ॥ २४ ॥

स्वस्थ का लक्षण ॥

जिसकेदोष अग्नि और धातु समहोयँ शरीरके अनुरूप कार्य्यकरनेमें सामर्थ्य होय और शरीर इन्द्रिय तथा मन प्रसन्न हो उसको स्वस्थ कहते हैं और ग्रन्थान्तरमें भी कहाहै कि मल, मूत्र, संपूर्ण दोष तथा धातुओं की समता, अन्न तथा पान में रुचि शरीर में कान्ति, भोजन का परिपाक होना तथा परिपक्क होकर पुष्टताकारी होना, सुखपूर्व्वक निद्राआना, यथायोग्य विषयों का ग्रहण करना और मनकी वृत्तिका ठीक होना यह १४ स्वस्थ के लक्षण हैं अब यह सन्देह होताहै कि रात्रि दिन ऋतु और भोजन के अनुसार दोषोंकी वृद्धि होती है तो दोषों की समता कैसेहोसक्ती है? इसका उत्तर यहहै कि रात्रि दिन के प्रथम आदिक भागों में दोषों की वृद्धि होतीहै परन्तु स्वस्थके लिये कहीहुई विधियों के द्वारा उसके शान्त होजानेसे दोषों की समता होजातीहै इससे कोई दोष नहीं है किन्तु वैद्य लोग जिसको दोषों की समता कहते हैं वह स्वस्थता के विना और किसी हेतुसे हो नहीं सक्ती इससे दोषों की समता और स्वस्थता यह दोनों एकलक्षणवाले हैं तो स्वस्थको सम दोष और समदोष को स्वस्थ कहसक्ते हैं जो वस्तु अपने प्रमाण में स्थित दोष धातु तथा मलकी समता करनेवाली और स्वस्थता को बनाये रखनेवाली होती है वह स्वस्थलोगों को हितकारी है ऋतुचर्य्या अध्याय में सेवन करने के योग्य जो वस्तु कही गई हैं मात्राः शीलयेत् इत्यादिक तृतीयाध्याय में लालधान्य, सांठी, जौ, गेहूं, जंगलीपशुओं का मांस जीवन्ती आदि का शाक, मोदक तथा दुग्धादिक जो कहेगये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हैं और ओ करनेवाले रसायन तथा वाजीकरण यह संपूर्ण स्वस्थचित्तकेलिये हितकारी हैं इनका सेवन करना चाहिये ॥ २४ ॥

अथ दोषधातुमलानांवृद्धेर्निदानान्याह ॥

तत्तद्वृद्धिकराहारविहारातिनिषेवणात्। दोषधातुमलानांहिवृद्धिरुक्ताभिषग्वरैः॥ २

दोष धातु और मल की वृद्धि के निदान ॥

दोष धातु और मलको बढ़ानेवाले आहार विहारोंके अधिक सेवनसे इनकी वृद्धिहोती है ॥ २५॥

अतिवृद्धानां तेषांलक्षणान्याह ॥

वातेवृद्धेभवेत्कार्श्यंपारुष्यंचोष्णकामिता। गाढंमलंबलञ्चाल्पंगात्रस्फूर्तिर्विनिद्रता॥ विण्मूत्रनेत्रगात्राणांपीतत्वंक्षीणमिन्द्रियम्। शीतेच्छातापमूर्च्छाःस्युःपित्तेवृद्धेऽल्पमूत्रता॥ विडादिशौक्ल्यंशीतत्वंगौरवञ्चातिनिद्रता॥ सन्धिशैथिल्यमुत्क्लेदोमुखसेकःकफेऽधिके॥ रसेवृद्धेऽन्नविद्वेषोजायतेगात्रगौरवम्। लालाप्रसेकश्छर्दिश्चमूर्च्छासादोभ्रमःकफः॥ प्रवृद्धंरुधिरंकुर्य्याद्गात्रमारक्तवर्णकम्। लोचनञ्चतथारक्तंशिराःपूरयतेऽपिच॥ (अन्यच्च) रक्तन्तुकुरुतेवृद्धंविसर्पप्लीहविद्रधीन्। कुष्ठंवातास्रकंगुल्मशिरापूर्णत्वकामले॥ गात्राणांगौरवंनिद्रामदोदाहश्चजायते॥ व्यंगाग्निसादसंमोहरक्तत्वङ्नेत्रमूत्रताः॥ गुदमेढ्रास्यपाकार्शःपिडकामशकास्तथा॥ इन्द्रलुप्तांगमर्दासृग्दरास्तापंकरांघ्रिषु। शमयेद्रक्तवृद्ध्युत्थान्रक्तस्रुतिविरेचनैः॥ २६॥

बहुत बढ़ेहुए दोष धातु और मल के लक्षण ॥

वायु के बढ़ने पर कृशता, चर्ममें कठोरता, उष्ण वस्तुमें अभिलाषा, मलका गाढ़ापन, थोड़ा बल, शरीर का फड़कना और निद्रा की हानि यह सब बातें होती हैं पित्त बढ़ने पर मल, मूत्र, नेत्र तथा शरीरकी पीतता, इन्द्रियोंकी क्षीणता, शीतकी इच्छा, संताप, मूर्च्छा और मूत्रकी अल्पता यहसब लक्षण होतेहैं कफ बढ़ने पर मल आदिकी श्वेतता, शीत, भारीपन, बहुत निद्रा, संधियोंकी शिथिलता, मतली और मुख से कफ गिरना यह लक्षण होते हैं रस बढ़ने पर. अन्न में अरुचि, शरीर में भारीपन, लार बहना, छर्दि, मूर्च्छा, शिथिलता, भ्रम और कफकी अधिकता यह लक्षण होते हैं रुधिर बढ़नेपर. शरीर तथा नेत्रों की रक्तता और शिराओं की रुधिर से पूर्णता होती है और भी कहाहै कि रुधिर बढ़नेपर वीसर्प, प्लीहा, विद्रधि, कुष्ठ, वातरक्त, गुल्म, शिराओं का भरना, कामला, शरीर का भारीपन, निद्रा, मद, दाह, व्यङ्ग मन्दाग्नि, मूर्च्छा, त्वचा, नेत्र तथा मूत्रकी रक्तता, गुदा, लिङ्ग तथा मुख का पकना, बवासीर, फुंसी, मस्से, इन्द्रलुप्त, शरीर का टूटना, प्रदर और हाथ पैरों में संताप यह लक्षण होतेहैं रुधिर के बढ़ने से उत्पन्न हुये रोगों को रुधिर के निकलवाने और विरेचन से शुद्ध करे ॥ २६ ॥

मांसवृद्धन्तुगण्डौष्ठस्फिगुपस्थोरुबाहुषु। जङ्घयोःकुरुतेवृद्धिंतथागात्रस्यगौरवम्॥ उदरेपार्श्वयोर्वृद्धिंकासश्वासादयस्तथा॥ दौर्गन्ध्यंस्निग्धतागात्रेमेदोवृद्धौभवेदिति॥ (अन्यच्च) प्रवृद्धंकुरुतेमेदःश्रममल्पेऽपिचेष्टिते। तत्स्वेदगलगण्डौष्ठरोगमेहादिजन्मच॥ श्वासंस्फिग्जठरग्रीवास्तनानांलम्बनंतथा। वृद्धा... निकुर्व्वन्ति अस्थीन्यन्यानिचा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्थिषु॥आचरन्तितथादन्तान्विकटान्महतस्तथा।मज्जावृद्धस्समस्त ङ्गने । गौरवमाच
रेत्॥शुक्राश्मरीशुक्रवृद्धौशुक्रस्यातिप्रवर्त्तनम्।मलप्रवृद्धावाटोपोजायेर्जठरेऽव्यथा॥मू
त्रवृद्धेर्मुहुर्मूत्रमाध्मानंवस्तिवेदना।स्वेदेवृद्धेतुदौर्गन्ध्यंत्वचिकण्डूश्चजायते॥आर्त्तवादि
प्रवृत्तिःस्याद्दौर्गन्ध्यञ्चार्त्तवेभवेत् । अङ्गमर्दश्चजायेतलिंगस्यादार्त्तवेऽधिके ॥ स्तनयो
रतिपीनत्वंक्षीरस्त्रावोमुहुर्मुहुः । तोदश्चतत्रभवतिस्तन्याधिक्यस्यलक्षणम् ॥ उदरादि
प्रवृद्धिस्तुवृद्धेगर्भेऽभिजायते । स्वेदश्चगर्भवत्याःस्यात्प्रसवेऽव्यसनंमहत् ॥ २७ ॥

मांस बढ़नेपर कपोल, ओष्ठ, कूला, लिङ्ग, जङ्घा, भुजा और पिण्डलीकी वृद्धि तथा शरीरमें भारीपन होताहै मेदबढ़नेपर उदर तथा पसलियोंमें वृद्धि, खांसी, श्वास आदिक रोग और शरीर में दुर्गन्धि तथा स्निग्धता होती है और भी कहागयाहै कि मेदबढ़नेपर थोडेसे काममें भी परिश्रम, तृषा, स्वेद, गलगण्ड, ओष्ठ रोग, श्वास, प्रमेहादिकरोग और कूला, उदर, ग्रीवा तथा दोनों स्तनों की वृद्धि यह सब लक्षण होते हैं हड्डियोंके बढ़नेपर हड्डीपर हड्डी निकलती हैं और दांत विकट तथा बड़े होजाते हैं मज्जा बढ़नेपर सम्पूर्ण शरीर और नेत्रों में भारीपन होताहै वीर्य बढ़नेपर वीर्य्य की पथरी उत्पन्न होतीहै और वीर्य अधिक गिरता है मलकी वृद्धिहोनेपर उदर में गड़गड़ाहट और पीड़ा होतीहै मूत्र बढ़नेपर वारंवार मूत्रका वेग आध्मान और मूत्राशय में पीड़ा होतीहै स्वेद बढ़नेपर शरीरमें दुर्गन्धि और त्वचा में खुजली होती है आर्त्तव के बढ़नेपर आर्त्तव का बहुत गिरना आर्त्तव में दुर्गन्धि और शरीर में पीड़ा होती है दुग्धबढ़नेपर दूध का वारंवार बहना और स्तनों में बहुत मुटाई तथा पीड़ा होती है गर्भ के बढ़नेपर उदर की बहुत वृद्धि स्वेद और प्रसवकालमें अत्यन्त दुःख होताहै ॥ २७ ॥

अथातिवृद्धानां दोषाणां मलानांह्रासनमाह ॥

तत्तद्ध्रासकराहारविहारपरिषेवणात् । दोषधातुमलानांहिह्रासोनिगदितोनृणाम् ॥
पूर्वःपूर्वोऽतिवृद्धत्वाद्वर्द्धयेद्धिपरस्परम् । तस्मादतिप्रवृद्धानांधातूनांह्रसनंहितम् ॥ २८ ॥

बहुत बढ़े हुए दोष तथा मलोंके घटानेका उपाय ॥

दोष धातु और मलके घटानेवाले आहार विहारके सेवनसे इनकी क्षीणता होतीहै पहली २ धातुके बढ़ने से पिछली २ धातुकी भी वृद्धिहोती है इस्से बहुत बढ़ी हुई धातुओं का घटाना हित-कारी है ॥ २८ ॥

अथ दोषधातुमलानां क्षयस्यनिदानान्याह ॥

असात्म्यान्नसदाक्रोधशोकचिन्ताभयश्रमैः । अतिव्यवायानशनात्यर्थसंशोधनैरपि ॥
वेगानांधारणाच्चापिसाहसादभिघाततः।दोषाणामथधातूनांमलानाञ्चभवेत्क्षयः॥ २९॥

दोषधातु और मलों के क्षयके निदान ॥

विरुद्ध अन्न, सदैव क्रोध, शोक, चिन्ता, भय, श्रम, अत्यन्त मैथुन, लंघन, वमन आदिकी अधिकता मलमूत्रादि वेगोंकाधारण सहसाकर्म और चोट इन कारणोंसे दोषधातु और मलका क्षय होताहै २९॥

तेषांक्षीणानां लक्षणान्याह ॥

वातक्षयेऽल्पचेष्टत्वंमन्दवाक्त्वंविसंज्ञता । पित्तक्षयेऽधिकश्लेष्मावह्निमान्द्यंप्रभा
क्षयः ॥ सन्धयःशिथिलाम[illegible]न्दाहःकफक्षये । हृत्पीडाकण्ठशोषौत्वक्शून्यात्वट्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रसक्षये ॥ [illegible]ः[illegible]थाहिमाम्लेच्छात्वक्पारुष्यंक्षयेऽसृजः । गण्डौष्ठकन्धरास्कन्धवक्षोजठरसन्धिषु ॥ [illegible]पस्थशोथपिण्डीषुशुष्कतागात्ररूक्षता । तोदोधमन्यःशिथिलाभवेयुर्मांससंक्षये ॥ प्लीहाभिवृद्धिःसन्धीनांशून्यतातनुरूक्षता । प्रार्थनास्निग्धमांसस्यालिंगं स्यान्मेदसःक्षये ॥ अस्थिशूलन्तनौरौक्ष्यंनखदन्तत्रुटिस्तथा । अस्थिक्षयेलिंगमेतद्वैद्यैः सर्व्वैरुदाहृतम् ॥ शुक्राल्पत्वंपर्वभेदस्तोदःशून्यत्वमस्थिनि । लिंगान्येतानिजायन्तेनराणांमज्जसंक्षये ॥ शुक्रक्षयेरतेशक्तिर्व्यथाशेफसिमुष्कयोः । चिरेणशुक्रसेकःस्यात्सेके रक्ताल्पशुक्रता ॥ ३० ॥

दोषादिकोंकी क्षीणताके लक्षण ॥

वायुके क्षय होनेपर चेष्टाकी अल्पता, वाक्यकी मन्दता और संज्ञाका न होना यह लक्षण होते हैं पित्तके क्षय होनेपर कफकी वृद्धि,शरीरमें कान्तिका न होना और मन्दाग्नि होती है कफके क्षयहोनेपर सन्धियोंकी शिथिलता, मूर्च्छा,रूखापन और दाह होताहै रसके क्षय होनेपर हृदयमें पीडा, गलेका सूखना,त्वचाकी शून्यता और तृषा होतीहै रुधिरके क्षयहोनेपर शिराओंकी शिथिलता,शीतल तथाखट्टी वस्तुओं में इच्छा और त्वचामें रूक्षता होती है मांसके क्षयहोनेपर.कपोल, ओष्ठ, ग्रीवा, कन्धे, छाती, उदर,संधि,लिङ्ग, नितम्ब तथा पिंडलियोंमें सूखापन रूक्षता पीडा और नाडियों में शिथिलता होती है मेदके क्षय होनेसे प्लीहाकी वृद्धि, संधियोंकी शून्यता,शरीरमें रूक्षता और स्निग्ध वस्तु तथा मांस में अभिलाष होतीहै हड्डियों के क्षय होनेपर हड्डियों में पीडा शरीर में रूक्षता और नख तथा दांतोंकी हानि होती है मज्जाके क्षयहोनेपर वीर्यकी अल्पता, पोरुओं में पीडा, शरीरमें सुइयांसी चुभना और हड्डियों में शून्यता होती है वीर्य्यके क्षयहोनेपर मैथुन करने की शक्तिका न होना, लिङ्ग तथा अण्डकोशों में पीडा और बहुत देरमें थोडा वीर्य रुधिर समेत गिरना यह लक्षण होते हैं ॥ ३० ॥

अथौजःक्षयस्यनिदानमाह ॥

ओजःसंक्षीयतेकोपाच्चिन्ताशोकश्रमादिभिः । रूक्षतीक्ष्णोष्णकटुकैःकर्षणैरपरैरपि ३१ ॥

ओजके क्षयका निदान ॥

क्रोध, चिन्ता, शोक, तथा श्रमादिकों से और रूखी, तीक्ष्ण, उष्ण, कटु तथा अन्य कृशताकारक वस्तुओं से ओजका क्षय होता है ॥ ३१ ॥

अथ क्षीणौजसोलक्षणमाह ॥

बिभेतिदुर्बलोऽभीक्ष्णञ्चिन्तयेद्व्यथितेन्द्रियः । अभ्युत्थायोन्मनारूक्षःक्षामःस्यादोजसःक्षये ॥ पुरीषस्यक्षयेपार्श्वेहृदयेचव्यथाभवेत् । सशब्दस्यानिलस्योर्द्ध्वगमनंकुक्षिसंवृतिः ॥ (उदरसङ्कोचः) मूत्रक्षयेऽल्पमूत्रत्वंवस्तौतोदश्चजायते । स्वेदनाशेत्वचोरौक्ष्यञ्चक्षुषोरपिरूक्षता ॥ स्तब्धाश्चरोमकूपाःस्युर्लिंगंस्वेदक्षयेभवेत् । आर्तवस्यस्वकालेचाभावस्तस्याल्पताथवा । जायतेवेदनायोनौलिंगंस्यादार्त्तवक्षये ॥ अभावःस्वल्पतावास्यात्स्वप्नस्यभवतस्तथा ॥ म्लानौपयोधरावेतल्लक्षणंस्तन्यसंक्षये ॥ अनुन्नतोभवेत्कुक्षिगर्भस्यास्पन्दनन्तथा ॥ इतिगर्भक्षयेप्राज्ञै[illegible]दाहृतम् ॥ ३२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ओजके क्षयका लक्षण ॥

ओजके क्षयहोनेसे भय,दुर्बलता, निरन्तर चिन्ताकरना,इन्द्रियोंमें पीडा,बुरीछाया,मनमें बिकलता और शरीरमें रूखापन तथा [illegible]ता होती है मलके क्षयहोनेपर पसली तथा हृदयमें पीडा होती है और शब्दसहित वायु ऊपर[illegible] है और उदरमें संकोच होताहै मूत्रके क्षय होनेपर. मूत्रकी अल्पता और मूत्राशय में पीड़ा होत[illegible]वेदके नाशहोनेपर. स्वेदकानाश, त्वचा तथा नेत्रोंकी रूक्षता और रोमकूप जकड जाते हैं आ[illegible]क्षयहोनेपर. समयके अनुसार आर्त्तवका न निकलना अथवा स्वल्प निकलना और योनि में पी[illegible] लक्षण होते हैं. दुग्धके क्षय होनेपर. दूधकी स्वल्पता अथवा अभाव और स्तनोंमें संकोच होताह[illegible]के क्षय होनेपर. उदरका उन्नत न होना और गर्भका न फडकना यह लक्षण होते हैं ॥ ३२ ॥ अ[illegible]क्षीणानांधातु दोषमलानांवर्द्धनमाह ॥

तत्तत्संवर्द्ध[illegible]रविहारातिनिषेवणात् ॥ तत्तत्प्राप्यनरःशीघ्रंतत्तत्क्षयमपोहति ॥
ओजस्तुवर्द्धतेनॄण[illegible]सुस्निग्धैःस्वादुभिस्तथा ॥ वृष्यैरन्यैर्विशेषात्तुक्षीरमांसरसादिभिः ॥
(अन्यच्च) दोषधातुमलक्षीणोबलक्षीणेऽपिमानवः। तत्तत्संवर्द्धनंयत्तदन्नपानंप्रकांक्षते ॥
यद्यदाहारजातन्तुक्षीणःप्रार्थयतेनरः ॥ तस्यतस्यसलाभेनतत्तत्क्षयमपोहति ॥ ३३ ॥

क्षीण हुये धातु दोष तथा मलोंके बढ़ानेका उपाय ॥

दोषादिकों में से जो कोई क्षीणहुआहो उसके बढ़ानेवाले आहारविहारोंके अत्यन्त सेवनसे क्षीणताका नाश होताहै स्निग्ध मधुर तथा वृष्य (कामियोंकाहित)वस्तु और दूध तथा मांसके रसादिकों के सेवनसे ओजकी वृद्धि होती है और भी कहागयाहै कि दोष धातु मल और बल इनमेंसे जो कोई क्षीण होताहै उसी के बढ़ानेवाली वस्तु पर रोगी की इच्छाहोती है इस्से क्षीणपुरुष जिस २ पदार्थ की अभिलाषाकरे उसी २ वस्तुके सेवनसे क्षीणताका नाश होताहै ॥ ३३ ॥

तत्रकेनक्षीणःकिंकाङ्क्षतीत्याकांक्षायामाह ॥

कषायकटुतिक्तानिरूक्षशीतलघूनिच॥यवमुद्गप्रियंगूश्चवातक्षीणोऽभिकाङ्क्षति ३४ ॥

किसकी क्षीणतामें किसपदार्थकी अभिलाषा होती है उसको कहते हैं॥

वायुकी क्षीणताहोनेपर कषैली कटु तिक्त रूखी शीतल तथा हलकी वस्तु यव मूंग और काकुन में अभिलाष होताहै ॥ ३४ ॥

पित्तक्षीणःकिंकाङ्क्षतीत्याकाङ्क्षायामाह ॥

तिलमाषकुलत्थादिपिष्टान्नविकृतिन्तथा । मस्तुशुक्ताम्लतक्राणिकाञ्जिकञ्चतथा दधि ॥ कट्वम्ललवणोष्णानितीक्ष्णंक्रोधंविदाहिच । समयंदेशमुष्णञ्चपित्तक्षीणोऽभिकाङ्क्षति ॥ ३५ ॥

पित्तक्षीणमें कौनसी वस्तुओंका अभिलाष होताहै उसको कहते हैं ॥

तिल, उर्द, कुलथी, पीठीकी बनीहुई वस्तु, दहीका तोड, सिरका खट्टा, मट्ठा, काँजी, दही, कटु, अम्ल, लवण तथा उष्णवस्तु तीक्ष्ण तथा विदाही वस्तु क्रोध और उष्णकाल तथा देश इनसंपूर्ण वस्तुओंकी इच्छा पित्तक्षीण मनुष्य करताहै ॥ ३५ ॥

मधुरस्निग्धशीतानिलवणाम्लगुरू[illegible]दधिक्षीरंदिवास्वप्नंकफक्षीणोऽभिकाङ्क्षति३६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिस पुरुष की कफ क्षीण होगयाहो वह मधुर, स्निग्ध, शीतल, लवण, अम्ल तथा भारीवस्तु, दही, दूध और दिनमें सोनेकी इच्छाकरता है ॥ ३६ ॥

रसक्षीणोनरः काङ्क्षत्यम्भोऽतिशिशिरंमुहुः। रात्रिनिद्रांहिमं चन्द्रंभोक्तुञ्चमधुरंरसम्॥ इक्षुमांसरसंमन्थंमधुसर्पिगुड़ोदकम् । द्राक्षादाड़िमशुक्तानि स्नेहलवणानिच ॥ रक्तसिद्धानिमांसानिरक्तक्षीणोऽभिकाङ्क्षति। अन्नानिदधिसिद्धानि षाडवांश्चबहूनपि ॥ स्थूलक्रव्यादमांसानिमांसक्षीणोऽभिकाङ्क्षति । षाडवामधुराम्लादिरससंयोगपाचिता गुड़ावप्रभृतयः॥ मेदःसिद्धानिमांसानिग्राम्यानूपौदकानिच सक्षाराणिविशेषेणमेदःक्षीणोऽभिकाङ्क्षति॥ अस्थिक्षीणस्तथामांसंमज्जास्थिस्नेहसंयुतम्। स्वाद्वम्लसंयुतंद्रव्यं मज्जाक्षीणोऽभिकाङ्क्षति ॥ शिखिनःकुक्कुटस्याण्डंहंससारसयोस्तथा ग्राम्यानूपौदकानाञ्चशुक्रक्षीणोऽभिकाङ्क्षति । यवान्नंयवकान्नञ्चशाकानिविविधानिच । मसूरमाषयूषञ्चमलक्षीणोऽभिकाङ्क्षति ॥ पेयमिक्षुरसंक्षीरंसगुड़म्बदरोदकम्। मूत्रक्षीणोऽभिलषतित्रपुसैर्वारुकाणिच ॥ अभ्यङ्गोद्वर्त्तनेमद्यंनिवातशयनासने । गुरुप्रावरणंचैवस्वेदक्षीणोऽभिकाङ्क्षति॥कट्वम्ललवणोष्णानिविदाहीनिगुरूणिच । फलशाकानिपानानिस्त्रीकाङ्क्षत्यार्त्तवक्षये ॥ सुराशाल्यान्नमांसानिगोक्षीरंशर्करांतथा । आसवंदधिहृद्यानिस्तन्यक्षीणोऽभिवाञ्छति ॥ मृगाजाविवराहाणांगर्भान्वाञ्छतिसंस्कृतान्। वसाशूल्यप्रकारादीन्भोक्तुंगर्भपरिक्षये ॥ ३७ ॥

रसक्षीण मनुष्य वारंवार शीतल जल, रात्रि में निद्रा, हिम, चाँदनी, मधुररस, ईष, मांसरस, मन्थ, सहत, घी और गुड का शर्बत इन वस्तुओं की अभिलाषा करता है रक्तक्षीण मनुष्य दाख, अनार, मक्खन, स्नेहयुक्त लवण और रुधिर में पका हुआ मांस इन वस्तुओंकी अभिलाषा करताहै मांसक्षीण पुरुष. दही के साथ बनेहुए अन्न षाडव (मधुर तथा खट्टे आदि रसोंको मिलाकर जो वस्तु परिपाक की जाती है उसको षाडव कहते हैं) और स्थूल तथा मांसखानेवाले पशुओं के मांस की इच्छा करताहै मेदक्षीण पुरुष. मेदके साथ परिपाक हुए ग्रामीण तथा जल के जीवों के मांस क्षारसहित चाहना करताहै अस्थिक्षीण पुरुष. मज्जा, अस्थि तथा स्नेहयुक्त मांसकी इच्छा करताहै मज्जाक्षीणपुरुष. मधुर तथा खट्टी वस्तुओं की अभिलाषा करताहै वीर्य्यक्षीण पुरुष. मोर, मुर्गा, हंस तथा सारस के अण्डे और ग्राम अनूपदेश तथा जल के जीवों के मांस की अभिलाषा करताहै मलक्षीण पुरुष. जौ, छोटे जौ, अनेक प्रकार के शाक और मसूर तथा उर्द की दालका यूष इन वस्तुओं की अभिलाषा करताहै मूत्रक्षीण मनुष्य. ईखकारस, दूध, गुड युक्त बेरकापन्ना, खीरा और ककडी इन वस्तुओं की अभिलाषा करताहै स्वेदक्षीण मनुष्य. तेलमर्दन, उबटना, मद्य, बातरहित स्थानमें शयन करना तथा बैठना और भारी ओढ़ना इन वस्तुओं की इच्छा करताहै आर्त्त व क्षीण स्त्री कटु अम्ल लवण उष्ण बिदाही तथा भारीवस्तु फल शाक और जलकी अभिलाषा करती है दुग्धक्षीण स्त्री मद्य चावल मांस गौकादूध शर्करा आसव दही और हृदय के हितकारी वस्तुओं को चाहतीहै गर्भक्षीण स्त्री मृगी, बकरी, भेड तथा शूकरी के पकाये हुए गर्भ चरबी और शल्य (कबाब) आदिक अनेक प्रकार की वस्तुओं के भोजन करनेकी इच्छा करती है ॥ ३७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ बललक्षणमाह सुश्रुतमते ॥

रसादिशुक्रपर्य्यन्तंपुष्टधातुनिमित्तकम् । चेष्टासुपाटवंयत्तुबलंतदभि ीयते ॥ ३८ ॥

सुश्रुतमें कहाहुआ बलका लक्षण ॥

रसकोआदि लेकर और अन्त धातुओंकी पुष्टता के कारण जो कार्य में सामर्थ्य होती है उसको बलकहते हैं ॥ ३८ ॥

अथ बलस्यक्षयनिदानमाह ॥

अभिघात[illegible]यात्[illegible]चिन्तयाचपरिश्रमात् । धातूनांसंक्षयाच्छोकाद्बलंसंक्षीयते नृणाम् ॥ ३९ ॥

बलक्षयका निदान ॥

चोट, भय, क्रोध, चिन्ता, परिश्रम, धातुक्षय और शोक इनकारणोंसे मनुष्योंका बलक्षीण होताहै ३९॥

अथ बलक्षयस्यलक्षणम् ॥

गौरवंस्त[illegible]त्रेमुखम्लानिर्विवर्णता॥ तन्द्रानिद्रावातशोथोबलक्ष्यापत्तिलक्षणम् ४०

बलक्षय का लक्षण ॥

शरीर में भा[illegible]पन, तथा स्तब्धता मुखमें म्लानता- वर्णका बिगडना, तन्द्रा निद्राकी अधिकता और बा[illegible]पन यह बलक्षय के लक्षणहैं ॥ ४० ॥

अथ बलवृद्धिनिदानमाह ॥

दोषसाम्यकरंयत्तुवह्निसाम्यकरञ्चयत्॥ धातुपुष्टिकरंद्रव्यंबलन्तदभिवर्द्धयेत्॥४१॥

बलवृद्धि का निदान ॥

जिन वस्तुओं के द्वारा दोष तथा अग्निकी समता और धातुओंकी पुष्टता होती है उन्हीं के द्वारा बलकी वृद्धि होतीहै ॥ ४१ ॥

अथ बलाबललक्षणमाह ॥

कृशोऽपिबलवान्कश्चित्स्थूलोऽप्यल्पबलीयतः ॥ तस्माच्चेष्टापटुत्वेनबलवन्तंविदुर्बुधाः ॥ ४२ ॥

इतिश्री मिश्रलटकनतनयश्रीमन्मिश्रभावविरचिते
भावप्रकाशेषष्ठप्रकरणंसम्पूर्णतामगात् ॥

बलाबलका लक्षण ॥

कोई कृश होकर भी बलवान् और कोई स्थूल होकर भी थोडे बलवाला होता है इस्से कार्य्य में सामर्थ्य देखकर बलाबलका निश्चय करना चाहिये ॥ ४२ ॥

इति श्रीमिश्रलटकनतनयश्रीमन्मिश्रभावविरचितभावप्रकाशस्यभाषानुवादेषष्ठःप्रकरणंसम्पूर्णम् ॥

इति[illegible]खण्डः समाप्तिमगात् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विसर्प, नाड़ी, स्तनरोग, ग्रन्थि, अपची, अर्बुद, गलगंडरोग, वृद्धि, उपदंश, फीलपांव, छोटे २ रोग, शूकरोग, मुखरोग, शाफरोग और नपुंसकता इनसब रोगोंकी उत्तमोत्तम चिकित्सा वर्णितहै और वमन और जुलाब किनरोगों में योग्य [illegible] जिसका वर्णन, स्थावर और जंगम विषकी चिकित्सा, नेत्र, कर्ण, नासा और शिरोरोगकी चिकित्सा, रेवतीग्रह, [illegible] इत्यादि ग्रहों की चिकित्सा, ज्वर, अतीसार, राजरोग, वायुगोला, हृदयके रोग, पांडुरोग, रक्त पित्त, मूर्च्छा और सम्पूर्ण [illegible] मदों की चिकित्सा, प्यास [illegible] वमन, हिचकी, दमा, खांसी स्वरभेद, कृमिरोग, उदावर्त्त, हैजा अरुचि, मूत्रदोष, मृगी रोग और उन्माद इत्यादि [illegible] रोगोंकी चिकित्सा उत्तमोत्तम क[illegible] [illegible]ली तेल और घी इत्यादिके द्वारा वर्णन की गई है जिसको जिला रोहतक मौजे बेरी ग्राम निवासि पण्डित रविद[illegible] और मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के खर्चसे प्रत्यक्षरका भाषा में उल्था कियाहै और उत्तर प्रदेशान्तर्गत तारग[illegible]देस पण्डित रामविहारी सुकुल ने कठिन शब्दों का कोष और अकारादि सूचीपत्र और साधारण सूचीपत्र र[illegible]ना [illegible]पित किया है यह पुस्तक अवश्य प्रत्येक मनुष्य के देखने के योग्यहै इससे सम्पूर्ण चिकित्सा का काम हो[illegible]ता है ॥

[illegible]घण्टरत्नाकर भाषा क़ी० ५॥) पु० ॥

जिसमें सम्पूर्ण [illegible] पूर्ण अतीसार, संग्रहणी बवासीर, अजीर्ण, हैजा, अलस विलम्बिका, कृमिरोग, पांडुकामला, ह-लीमक, रक्तपित्त [illegible], शोषरोग, खांसीरोग, हिचकीरोग, श्वासरोग स्वरभेद रोग, अरोचकरोग, छर्दिरोग, तृषा रोग, [illegible], निद्रा, [illegible]यास, [illegible]त्ययरोग, दाहरोग, उन्मादरोग, भूतादिकके उन्मादका, तंत्र मंत्र डाकिनी सा-किनी [illegible] [illegible]व्याधि, अल्पकेशीकी चिकित्सा, ऊरुस्तम्भरोग, आमवात, [illegible] वातरक्तरोग, शूलरोग, उदा[illegible], आनाह २ [illegible] गुल्मरोग, यकृत्प्लीहरोग, हृद्रोग, मूत्रकृच्छ्ररोग, मूत्राघात, पित्तव्या[illegible] [illegible]बलता, सूजन, अंडवृद्धि, बदरोग, गलगंड, फीलपांव, विद्रधि, घाव, अग्निदग्ध, भग्नरोग, नसूर, [illegible]री, भग[illegible] [illegible]रोग, कुष्ठ, अम्लपित्त, विस्फोटक अर्थात् शीतला, फिरंगरोग, छोटे २ रोग, शिर, नेत्र, कान और मुंहके रोग, भगंदर, आत[illegible] [illegible], स्त्रियोंके प्रदर आदि सब रोग, बालकों के रोग और नपुंसकताकी उत्तमोत्तम काढ़े, चूर्ण, गोली, रस, तेल अ[illegible] इत्यादिके द्वारा वर्णन कीगई है इसकाभी जिला रोहतक मौजे बेरी ग्राम निवासि पण्डित रविदत्त वैद्यने मुंशी नव[illegible]र (सी, [illegible]ई, ई) के खर्च से अक्षर २ का भाषा में उल्था कियाहै यह पुस्तक भी अवश्य देखने योग्यहै क्योंकि इसी एक पुस्तकसे चिकित्साका पूरा २ काम निकलसक्ताहै ॥

शार्ङ्गधरसंहिता भाषा टीका सहित क़ी० ॥) पु० ॥

जिसमें सुश्रुत चरक आदि वैद्यकीय सब ग्रंथों के मतसे ज्वर, अतीसार, संग्रहणी, बवासीर, अजीर्ण हैजा, कृमिरोग, पां-डुरोग, रक्त पित्त, राजरोग खांसी, हिचकी, दमा, स्वरभेद, अरुचि, वमन, प्यास मूर्च्छा, दाहरोग, उन्मादरोग, मृगीरोग, वातव्याधि, शूलरोग, गुल्मरोग, हृदयकेरोग, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, पथरी, प्रमेह, पेटके रोग, सूजन, अंडवृद्धि, बदरोग, फीलपांव, गलगंड, व्रणरोग, अग्निदग्ध, नासूर, भग्नरोग, भगंदर, आतशक, शूकरोग, कुष्ठरोग, शीतला, क्षुद्ररोग, शिर, नेत्र, कान, नाक और मुंहरोग सम्पूर्ण विषरोग स्त्रियों और बालकोंके सब रोग और धातुपुष्ट और नपुंसकताकी अत्युत्तम चिकित्सा काढ़े, चूर्ण, गोली, रस, तेल, घी इत्यादि के द्वारा वर्णित है इसके मूल श्लोकोंको शार्ङ्गधरजी महाराज और भाषा टीका को जयपालजीने अत्यन्त परिश्रम से रचना कियाहै यह पुस्तकभी अवश्य दर्शनीयहै ॥

भैषज्यरत्नावली भाषाटीका सहित क़ी० २॥) पु० ॥

जिसमें ज्वर चिकित्सा, ज्वरातीसार चिकित्सा, पिलही और यकृत् की चिकित्सा, पांडुरोग चिकित्सा, शोथरोग चिकि-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्सा, पेटके रोगोंकी [illegible]चिकित्सा, क्षोभ रोगकी चिकित्सा, मेद रोगकी चिकित्सा, आमाशयरोग चिकित्सा, छर्दिरोग चिकित्सा, दाह चिकित्सा, [illegible] रोग चिकित्सा, रक्तपित्त चिकित्सा, अग्निमन्दकी चिकित्सा, अरुचि चिकित्सा, संग्रहणी चिकित्सा, अतीसार चि[illegible]रोग चिकित्सा, अम्लपित्तरोग चिकित्सा, शूलरोग चिकित्सा, गुल्मरोग चिकित्सा, उदावर्तरोग चिकित्सा, [illegible] चिकित्सा, अर्शरोग चिकित्सा, राजयक्ष्मा चिकित्सा, खांसीरोगकी चिकित्सा, हिचकी और श्वास-रोग चिकित्सा, स्वर[illegible]द चिकित्सा, हृद्रोग चिकित्सा, वातव्याधि चिकित्सा, आमवात चिकित्सा, मूत्रकृच्छ्ररोग चिकित्सा, मूत्राघातरोग चिकित्सा, पथरीरोग चिकित्सा, आतशकरोग चिकित्सा, शूकरोग चि[illegible]प्रमेह चिकित्सा, बहुमूत्ररोग चिकित्सा, औपसर्गिक मेहरोग चिकित्सा, शुक्रमेह चिकित्सा, प्रमेह पिड़िका चिकित्स[illegible]चिकित्सा, वृद्धिरोग चिकित्सा, फीलपांवकी चिकित्सा, गलगंड रोगादि चिकित्सा, शीतपित्त उदर्द और कोढ़रोगो[illegible]कित्सा, मसूरिकारोग चिकित्सा, वातरक्त चिकित्सा, कुष्ठरोग चिकित्सा, बवासीर की चिकित्सा, भगंदर चिकित्सा, [illegible] चिकित्सा, ऊरुस्तंभ चिकित्सा, भग्नरोग चिकित्सा, व्रणशोथ शारीरव्रण चिकित्सा, सद्योव्रण चिकित्सा, नसूरकी [illegible]त्सा, [illegible]रोग चिकित्सा, मूर्च्छा चिकित्सा, उन्मादरोग चिकित्सा, अपस्माररोग चिकित्सा, मदात्ययरोग चिकित्सा, [illegible]ोग, नासा[illegible] और मुखरोग चिकित्सा, क्षुद्ररोग चिकित्सा, स्त्रीरोग चिकित्सा, बालरोग चिकित्सा, विषरोग चिकि[illegible]धिरसायन अधिकार, वाजीकरणाधिकार और परिशिष्ट पर्यन्त विषयों के काढ़े, चूर्ण, रस, लेप, तेल, घी, यन्त्र, मन्त्र [illegible]ादिकों से अ[illegible] वर्णितहैं जिसमें कोई रोग ऐसा नहीं जिसकी परिपूर्ण औषध इस ग्रन्थसे न होसके यह [illegible]थ बहुतही [illegible]अकेलेही ग्रन्[illegible] से परिपूर्ण वैद्य होसक्ताहै जिसे मुन्शीजीने रोहतक प्रदेशांतर्गत बेरीनिवासि प[illegible]त रवि[illegible]जी से त[illegible] का संस्कृतसे श्लोक२ के टीकेको ज़िला उन्नाव मौज़े ता[illegible] पुस्तक अवश्य देखनेके लायक़ है॥

अमृतसाग[illegible]र जलीक़लम क़ी० १)

जिसको श्रीमन्महाराजाधिराज सवाई प्रतापसिंहजी वीरेश वैकुण्ठवासी ने वैद्यक के चरक सुश्रुत वा[illegible] णिक ग्रन्थों से सार २ बातें निकाल कर रचा जिसमें सम्पूर्ण रोगोंकी उत्पत्ति, लक्षण, यत्न और यत्न[illegible] विधि, फोड़[illegible] शोधन, गोली, अवलेह जो आज़माई हुई हैं और जिनका सामयिक रोगों में प्रचार है लिखी हैं प[illegible] वर्णन, [illegible] मित्त छापेखाने के मालिकने और भी विशेष बातें जो उचित और उपयोगिक थीं संयुक्तकराई [illegible] तोना और [illegible]याधिभेद [illegible] हों और (यथानामःतथागुणः) यह दृष्टान्त भी प्रत्यक्ष फल दिखावे यह पुस्तक इसछापेखाने म असंख्यही छपकर बिकचुकी है और ग्राहकोंकी मांग बराबर चलीआती हैं इसपर रजिस्टरी भी होगई है॥

चरकसंहिता सटीक मुजल्लिद की० ७॥) पु०

यह वही चरकसंहिता है जोकि वैद्यक ग्रन्थों में सर्वत्र प्रसिद्ध है व बड़े २ वैद्यराजों से अतिशय माननीय है विद्वान् लोग अन्य ग्रन्थों में लिखी हुई औषधियों का संग्रह इसके नामसे निर्भय हो करते हैं अब इस प्रसिद्ध ऋषिप्रणीत ग्रन्थकी प्रशंसा करना केवल इबारत का बढ़ानाही है-इस यन्त्रालयमें यह ग्रन्थ बहुत परिश्रम से बनवाया गया और छापागया है जिसमें रुपया भी विशेष व्यय हुआ है यह ग्रन्थ मूल श्लोकों के नीचे भाषा देवनागरी में टीका संयुक्त करके छापागया है यह टीका चरक के बंगला टीका से और मूल श्लोकार्थ दोनों से देखकर किया गयाहै इस टीकाके उत्तम होने में कोई सन्देह नहींहै छपाई भी इसकी बहुतउम्दा है अक्षर उम्दा व क़ाग़ज़ सफ़ेद मोटा चिकना लगायागया है दो जिल्दों में यह पुस्तक छापीगई है एक जिल्द में सूत्रस्थान, निदानस्थान, विमानस्थान, शारीरकस्थान, इन्द्रियस्थान है और आदि में सूचीपत्र प्रत्येक रोगों का विस्तार सहित लगाहैं दूसरी जिल्द में चिकित्सितस्थान, कल्पस्थान, सिद्धिस्थानहै तसवीरें भी लगाई गई हैं इत्यलम्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकाश मध्यखण्ड प्रथम व
द्वितीयभाग सटीक

अतीसार, बवासीर, अजीर्ण, कृमिरोग, पांडु,
मक, रक्तपित्त, अम्लपित्त, क्षयी, खांसी, हिचकी, दमा,
चि, वमन, प्यास, मूर्च्छा, मदात्यय, दाह, उन्माद, मृगी,
स्तम्भ, आमवात, पित्तव्याधि, कफव्याधि और वातरक्त
क रोगों के लक्षण और अत्युत्तम औषधें वर्णित हैं ॥

जिसको

भाव मिश्र ने ललित श्लोकों में रचना किया था

उसीको

भार्गव वंशावतंस मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) ने अपने ख़र्च से
आगरा पुर पीपलमंडीनिवासि चौरासिया गौडवंशावतंस लखनऊ
केनिङ्गकालेज के संस्कृताध्यापक स्वर्गवासीपण्डित कालीचरण जी से
प्रत्यक्षर का भाषा टीका रचना कराया ॥

दूसरीबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा दिसम्बर सन् १९०२ ई० ॥

इस पुस्तककी रजिस्ट्री नं० ३७४ ता० ९ अप्रैल सन् १८९५ई० में हुईहै इसलिये कोई छापै नहीं ॥

२३ जज़ ४ वर्क़

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

इस [illegible] मतवे में जितने प्रकारकी वैद्यककी पुस्तकें छपी हैं उनमेंसे कुछ [illegible] लिखीहैं जिस किसी अवलोकन करनेवाले [illegible] होवे छापेखानेके पुस्तकालयसे अपनी दरख्वास्त भेजके [illegible] रस्त किताबोंको मँगाकर अवलोकन कर [illegible] हैं ॥

सुश्रुतसंहिता भाषा क्री० २[illegible] पु० [illegible]

जिसमें वैद्यक विद्याकी विस्तारसे उत्पत्ति, शिष्योंको जनेऊ और शि[illegible]नेकी वि[illegible] ग्रन्थके सब अध्यायों की सूची, गुरुदेवजीका विद्यार्थी को अच्छी [illegible]से पढ़ावे यह उचि[illegible] चीरनेके पीछे वैद्यका रोगीकी रक्षा पढ़ना, ऋतु[illegible] फाड़नेके हथियारों का वर्णन, चीरने फाड़नेके [illegible]यारों के भे[illegible] और उनके ग्रहण करनेका [illegible] वर्णन, वैद्यका शिष्यको चीरना फारना सिखाना, शिष्यका गुरुदेवजीसे वैद्यक विद्या पढ़के [illegible] राजाकी आज्ञासे शुद्धचित्तहोकर चिकित्सा करना, क्षारपाकविधि और अग्निकर्म विधिका वर्णन, जोंक [illegible] रक्तकीविधि और यत्नसे रक्षा दोष धातु मलके क्षय और वृद्धिके जाननेका वर्णन, बालकके [illegible] विधि, फोड़ा [illegible] चीरने का वर्णन, घावके लेपन और बन्धकी विधि, घाववाले पुरुषको जिसप्रकार से रहन [illegible] वर्णन, [illegible] स्तुओं का वर्णन, घावके प्रश्न विषयके अध्याय का वर्णन, घावके स्थानोंका वर्णन कृत्य [illegible] अकृत्य [illegible] व्याधिभेद [illegible] आठप्रकारके शस्त्र कर्म करनेवाले अध्यायका व्याख्यान, प्रणष्टशल्यनाम फोड़े के [illegible] का लक्षण, श[illegible]नाम [illegible] फोड़े के निकालने का वर्णन, विपरीताविपरीत नामक घावके जाननेका वर्णन, दूतको वैद्यके बुलानेके समय में और वैद्य कोभी रोगी के यहां जानेमें शुभ अशुभ शकुन और रोगीके शुभ अशुभ स्वप्नों के द्वारा शुभ अशुभ फलका वर्णन, रोगीको अपनीही छाया जिसप्रकार की दिखलाई दे उसके शुभाशुभका फल, रोगी के स्वभाव के उलटा होजानेका फल, रोगीको जिसजिस लक्षणवाले रोग मार डालते हैं उनका वर्णन, सेनायुक्त और शत्रुओं को जीतने की इच्छावाले राजाकी वैद्यको रक्षाकरनी योग्यहै वैद्यको, रोगी के आयुकी परीक्षा, फोड़ों के लेपइत्यादि औषधों का वर्णन, वैद्यका औषधके योग्य भूमिकी परीक्षाकरना, औषधों के समूहों के गुणवर्णन, जो औषध वमन और जो जुलाब से रोगोंको हरनेवाली हैं उनका वर्णन, औषध और रसोंके गुणवीर्य और विपाक के जाननेका वर्णन, रसविशेषों के जानने का वर्णन, वमनद्रव्यों और जुलाब की द्रव्यों का वर्णन, जलवर्ग, दूधवर्ग, दहीवर्ग, माठावर्ग, तैलवर्ग, शहदवर्ग, ईखवर्ग, मदिराकांजी और मूत्रवर्ग का वर्णन, अन्नपान विधिका वर्णन, वातव्याधि बवासीर, पथरी, भगंदर, कुष्ठ, प्रमेह, उदररोग, मूढ़गर्भ, विद्रधिरोग, विसर्प, नाड़ीरोग, स्तनरोग, ग्रंथि, अपची, अर्बुद, गलगंड, वृद्धि, आतशक, फीलपांव, छोटे२ रोग, शूकदोष, भग्नरोग, और मुख रोगों के निदान का वर्णन, सर्वभूत चिंता शारीर, शुक्रशोणित शुद्धि शारीर, गर्भावक्रांति शारीर, गर्भव्याकरण शारीर, शरीर संख्या व्याकरण शारीर, प्रत्येक कर्म निर्देश शारीर, सिरावर्णन विभक्ति शारीर, सिराव्यध विधि शारीर, धमनी व्याकरण शारीर, गर्भिणी व्याकरण शारीर का वर्णन, द्विव्रणीय, सद्योव्रण, भग्नरोग, वात व्याधि, महावातव्याधि, बवासीर, पथ[illegible] कुष्ठ, महाकुष्ठ, प्रमेह, मधुप्रमेह, पेटरोग, मूढ़ गर्भ, विद्रधि

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

[illegible]प्रकाश सटीक के मध्यखण्ड के प्रथम भाग का सूचीपत्र ॥

विषय	पृष्ठ
प्रथम ज्वर का अधि[illegible]र	१
ज्वर की उत्पत्ति	[illegible]
[illegible]	२
[illegible]	२
[illegible]	३
[illegible]	२
[illegible]	४
[illegible]	४
[illegible]	५
[illegible]	५
[illegible]	५
[illegible]	६
अच्छीतरह कियेहुये लंघन का लक्षण	६
हीन लंघन का लक्षण	६
बहुत लंघन कियेका लक्षण	९
सुश्रुतादितन्त्र और तन्त्रान्तर में निषेध	९
आमका लक्षण	११
आम सहित वातका लक्षण	१२
निराम वातका लक्षण	१२
साम पित्तका लक्षण	१२
निराम पित्तका लक्षण	१२
साम कफका लक्षण	१२
आमकी चिकित्सा	१३
लंघन में भी जलपानविधि	१४
अल्प जलपानविधिरोगविशे-	

विषय	पृष्ठ
[illegible] शीतल और उष्ण [illegible] विधि निषेध	१४
उष्ण जलका विधान	१४
उष्णोदकका लक्षण	१४
ऋतुभेद में जलपाकभेद	१४
[illegible] दोषों की अधिकता वा [illegible] कल्पना [illegible]	१५
ऋतुभेद में जलग्रहण के वास्ते देशभेद	१५
ऋतुपक्वजलका विषयभेद में शीतल पान विधि	१६
औटाके शीतल किये हुये जल का गुण	१६
उसमें विशेषान्तर काल विभाग भेद में उष्णोदक का लक्षणान्तर	१६
उसका गु०	१६
जठराग्नि से शीतल आदि जलोंकापाककालकी अवधि	१७
रोगविशेषमें जलसंस्कार	१७
उसमें तन्त्रान्तर से विस्तर	१८
षडंग जल विधि	१९
वातादिज्वरोंकी पाकावधि	१९
ज्वर में औषधप्रयोग	२०
क्वाथलक्षण	२३
तरुणज्वर में पाचकादोष	२३
पाचन शमनों का ल०	२५
सामान्य ज्वरमें पाचन कषाय	२५

विषय	पृष्ठ
सामान्यसेसंशमनीय	२५
पाकप्रकार	२५
शोधन साध्य रोग	२६
सावान्तर	२६
निषिद्धशोधन शमन	२७
सावान्तरयोगविस्तर	२७
[illegible]ज्वर में रस	३१
[illegible]स्य ज्वर में रस	३३
ज्वरवाले को अन्न देनेका समय	३५
अन्नग्रहणके अर्थ स्थान	३८
भोजन के अर्थ उपवेशन प्रकार	३८
ज्वरवालेके अर्थ हित अन्न	३९
अन्नसाधनप्रकिया	३९
मंड का ल० विधि गु०	४०
पेयाकी विधि गु०	४०
प्रमथ्या की विधि गु०	४०
यूष की विधि गु०	४०
जूसका दूसरा प्रकार	४१
मूंग के जूस की विधि	४१
मूंग के जूस का गु०	४१
मसूर के जूस का गु०	४१
यवागू आदिकी वि० गु०	४१
विलेपीकी वि० गु०	४१
भात की विधि गुण	४२
रसौदनविधि	४२
रसौदन गुण	४२
उसकी प्रक्रिया	४३
औषधसिद्धपेयाके गुण	४३

विषय	पृष्ठ
पंचमुष्टिकयूष	४४
खिलोंके सत्तूका गुण	४५
ज्वरनाशक फल	४५
ज्वरवाले के नियम	४६
ज्वरमुक्तकालक्षण	४६
ज्वरमुक्तके नियम	४७
वातज्वरका अधिकार	४७
वातज्वरका सन्निकृष्ट विप्रकृष्टकारणपूर्वक संप्राप्ति	४७
उसका पूर्वरूप	४८
वातज्वरका लक्षण	४८
वातज्वरकी चिकित्सा	४८
विशेषकथनपूर्वक औषध	४९
निद्रानाशका निदान	५२
उसकी चिकित्सा	५२
वाकीकथनादिपूर्वक चिकित्सा	५२
इति वातज्वराधिकार ॥	५२
अथ पित्तज्वरका अधिकार	५२
उसमेंउसका विप्रकृष्ट सन्निकृष्ट कथनपूर्वक संप्राप्ति	५४
पित्तज्वरका पूर्वरूप	५४
उसके लक्षण	५४
पित्तज्वर की चिकित्सा	५५
औषधावली	
इतिपित्तज्वराधिकार	५८
कफज्वराधिकार	५८
कफज्वरका लक्षण	५८
उसकी चिकित्सा	५९
इति कफज्वराधिकार	६०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

विषय	पृष्ठ
वातपित्तज्वराधिकार	६१
उसका पूर्वरूप	६१
वातपित्तज्वरका लक्षण	६१
उसकी चिकित्सा	६१
इतिवातपित्तज्वराधिकार	६२
वातकफज्वर का अधिकार	६२
पूर्वरूप	६२
उसकालक्षण	६२
वातकफज्वरकी चिकित्सा	६३
इति वातकफज्वराधिकार	६६
पित्तकफज्वरका अधिकार	६६
पूवरूप	६६
उसका लक्षण	६६
पित्तकफज्वरकी चिकित्सा	६७
इति पित्त क०	६८
सन्निपात ज्वराधिकार	६६
उसका पूर्वरूप	६६
उसके सामान्य ल०	६६
सामान्य सन्निपात ज्वर के तेरह भेद	७०
वाताधिक का ल०	७०
पित्ताधिक का ल०	७०
कफाधिक का ल०	७१
वात पित्ताधिक का ल०	७१
वात कफाधिक का ल०	७१
पित्तकफाधिकका ल०	७१
वात पित्तकफाधिकका ल०	७१
प्रवृद्धमध्यहीनव तादिजनित सन्निपातज्वरों के लक्षण	७२
तेरहसन्निपात विशेषोंके शीतांगादि तेरह नाम	७२
तन्त्रांतर में वाताधिक तेरह सन्निपात के कुम्भीपाकादि तेरह नाम लक्षण	७७
उन हर एक के ल०	७७
असाध्य सन्निपात ज्वर का ल०	७९
सामान्य सन्निपात ज्वरकी चिकित्सा	७९
लंघनकीअवधि	८०
हनन प्रशममें कारण	८१
धातुपाकका लक्षण	८१
मलपाकका लक्षण	८१
बालूका स्वेद	८२
नासके भेद	८२
निष्ठीवन	८३
अवलेह भेद	८४
अथ अंजन	८५
काथ भेद	८५
सन्निपातज्वर में रस भेद	८६
शीतज्वर में रस भेद	[illegible]
अन्न भेद	[illegible]
वाताधिक सन्निपात ज्वर की चिकित्सा	९१
पित्ताधिक सन्निपात ज्वरकी चिकित्सा	९१
कफाधिक सन्निपात ज्वरकी चिकित्सा	९१
वातपित्ताधिक सन्निपात ज्वरकी चिकित्सा	९२
प्रवृद्ध मध्य हीनवातादि सन्निपात ज्वरोंकी चिकित्सा	९२
शीतांगादि तेरह सन्निपात ज्वरोंकी चिकित्सा	९३
शीतांगकी चिकित्सा	९३
तन्द्रिककी चिकित्सा	९३
प्रलापकी चिकित्सा	९४
रक्तष्ठीविकीचिकित्सा	९४
भुग्ननेत्रकी चिकित्सा	९४
अभिन्यासकीचिकित्सा	९५
जिह्वककी चिकित्सा	९५
अन्तककी चिकित्सा	९६
रुग्दाहकीचिकित्सा	९७
चित्तभ्रमकी चिकित्सा	९८
कण्ठकुब्जकी चिकित्स[illegible]	[illegible]
इतिसन्निपातज्वराधि[illegible]	[illegible]
आगन्तुज्वराधिकार	[illegible]
उसकानिदान	[illegible]
उसकी संप्राप्ति	[illegible]
उनकी चिकित्सा	[illegible]
इति आगन्तुज्वराधिकारः	[illegible]
विषमज्वराधिकार	१०५
उसकानिदानसंप्राप्ति	१०५
विषमज्वरकासामान्य लक्षण	[illegible]
[illegible] सतत [illegible]	१०६
अन्येद्युष्कलक्षण	१०६
तिजारी और चौथैया का लक्षण	१०७
द्विदोषाधिकतृतीयक का लक्षण	१०८
कफाधिक और वाताधिकचतुर्थकके विपर्य्यय का लक्षण	१०९
सन्ततादियोंकेदाहपूर्व और शीत पूर्व होने में कारण	११०
विषमज्वरविशेष	११०
विषमज्वरविशेषप्रलेपक का लक्षण	१११
विषमज्वरोंकी सामान्य चिकित्सा	१११
सन्ततादिकोंकी विशेष चिकित्सा	११२
अथ अन्न	११२
सततादियोंकी विशेष चिकित्सा	११३
सन्[illegible]दिविपर्य्यय	
विषमज्वरोंकीचिकित्सा	[illegible]
रसादिधातुगतज्वरका लक्षण	११७
उसकी चिकित्सा	११७
रक्तगतज्वर	११७
उसकी चिकित्सा	११७
मांस[illegible]काल०	११७
उसकी [illegible]कित्सा	११७
मेदोगत [illegible]ल०	११७
उस[illegible]	[illegible]
अ[illegible]	[illegible]
उसकी [illegible]	[illegible]
मज्जा[illegible]	[illegible]
शुक्र[illegible]	[illegible]
अथ[illegible]	[illegible]
जीर्णज्[illegible] लक्षण	[illegible]
जीर्ण[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]ज्वरकी स[illegible]चिकित्सा	[illegible]
[illegible]दुर्जल जल से हुये ज्वर की चिकित्सा	१२०
साध्यज्वरकालक्षण	१२१
ज्वरके उपद्रव	१२१
उपद्रवों की चिकित्सा विशेष	१२१
ज्वरमें श्वासकी चिकित्सा	१२२
मूर्च्छाकी चिकित्सा	१२२
ज्वरकेअरुचिकी चिकित्सा	१२३
ज्वरके वमनकी चिकित्सा	१२३
ज्वरमें तृषाकी चिकित्सा	१२३
अतीसारकी चिकित्सा	१२४
ज्वरमें मलग्रह की चिकित्सा	१२४

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय	पृष्ठ
हिचकी की [illegible]कित्सा	१२४
ज्वर में कासकीचिकित्सा	१२४
ज्वर में दाहकी चिकित्सा	१२५
सुखसाध्य ज्वरका लक्षण	१२५
बहिर्वेग ज्वरका लक्षण	१२५
वर्षादिमेंदुर्बोकीचिकित्सा	१२५
विशेषार्थप्राधान्य	१२५
[illegible]साध्य ज्वर का [illegible]	१२५
[illegible]	१२६
[illegible]	१२६
[illegible]	१२७
[illegible]	१२७
[illegible]	१२८
[illegible]	१२८
[illegible]	१२८
[illegible]	१२८
[illegible]	१२८
[illegible] सामान्य लक्षण उसकी संख्या	[illegible]
सामान्य अतीसार की चिकित्सा	१३०
क्रिमि चिकित्सा	१३०
आम पक्व का ल०	१३०
योगचतुष्टय	१३०
भैषज्यावलि	१३१
वातातीसार का ल०	१३३
उसकी चि०	१३३
पित्तातीसार का ल०	१३३
उसकी चि०	१३३
रक्तातीसार का ल०	१३३
उसकी सम्प्राप्ति	१३३
उसकी चि०	१३३
गुदाके दाहपाककी चि०	१३६
गुदाकी पीड़ामें चि०	१३७
[illegible]पाक[illegible]का ल०	१३७
[illegible]चिकित्सा	१३८
[illegible]केअतीसार [illegible]	१३९
[illegible] चि०	१३९
[illegible]क शोकातीसार का [illegible]	१४०
[illegible]संप्राप्ति	१४०
आगन्तुक भयातीसार का संप्राप्ति ल०	१४१
[illegible]की चि०	१४१
[illegible]मातीसार की संप्राप्ति [illegible]	[illegible]
उसकी चिकित्सा	१४२
शोषातीसारकी चि०	१४२
वमनातीसार की चि०	१४२
अतीसार का भेद प्रवाहिका उसकासंप्राप्तिपूर्वकल०	१४३
उसका वातादिभेदरूप लक्षण	१४३
उसकी चि०	१४४
असाध्य अतीसार वालेका लक्षण	१४४
मुक्तअतीसारका ल०	१४५
अतीसारवालेकेवर्जनीय	१४५
इति अतीसारअधिकारः	१४६
ज्वरातीसारकी चि०	१४६
इतिज्वरातीसाराधिकारः	१४७
ग्रहणीरोगाधिकारः	१४८
उसकी संप्राप्ति	१४८
ग्रहणीस्वरूप	१४८
ग्रहणीरोगका संख्यापूर्वक सामान्य ल०	१४८
वातकीग्रहणी का निदान संप्राप्तिपूर्वकलक्षण	१४९
पित्तका निदान [illegible] पूर्वकलक्षण	१४९
कफकी ग्रहणी का निदान पूर्वकसंप्राप्ति	१५०
सन्निपातकी ग्रहणी रोगका निदानपूर्वक संप्राप्ति	१५०
संग्रहणीरोग का ल०	१५०
घटीयन्त्रनाम ग्रहणीरोग	१५१
सामान्यग्रहणीरोग की चिकित्सा	१५१
गोदधिगु०	१५१
भैंसकेदहीकागु०	१५१
बकरी के दहीकागु०	१५१
तक्रभेद	१५२
[illegible]के सामान्य से गु०	१५२
[illegible]ई निकाले हुये और थोड़ीचिकनाई निकालेहुये तथाचिकनाई न निकालेहुये तक्रकेगु०	१५३
आमपक्वतक्रकेगु०	१५३
तक्रकानिषेध	१५३
उसकागुणोत्कर्ष	१५३
इतिग्रहणीरोगाधिकार	१५३
मध्यखण्ड ॥ द्वितीयोभागः ॥	
अर्श (बवासीर) काअधिकार	१५७
अर्शकासन्निकृष्टनिदान	१५७
वातार्शकाविप्रकृष्ट निदान	१५७
पित्तार्शका विप्रकृष्ट निदान	१५८
कफार्शकाविप्रकृष्ट निदान	१५८
सन्निपातार्शकाविप्रकृष्ट निदान	१५८
अर्शकापूर्वरूप	१५९
अर्शके [illegible]प्राप्तिपूर्वक सामान्यल०	१५९
वातार्शका ल०	१५९
पित्तार्शकाल०	१६०
रक्तार्शकाल०	१६१
रक्तकाभीवाताधिकका लक्षण	१६१
कफाधिककाल०	१६१
द्वन्द्वजअर्शकाल०	१६२
सन्निपातार्शका सहज अर्शलक्षण	१६२
सुखसाध्यअर्शकाल०	१६३
कष्टसाध्यअर्शकाल०	१६३
साध्य अर्श का ल०	१६३
अभ्यन्तरवलि	१६३
प्रत्येक असाध्यल०	१६३
अर्शकाअरिष्ट	१६३
इनसेमिलित अर्शका लक्षण	१६३
लिंगार्शकाल०	१६४
सामान्यसेअर्शकी चि०	१६४
रक्तार्शकोचि०	१७२
इतिअर्शोधिकारः	१७३
जठराग्निविकाराधिकारः	१७३
सन्निकृष्टकारणपूर्वक उदराग्निविकार	१७३
मन्दाग्निकाल०	१७३
तीक्ष्णअग्निकाल०	१७३
विषमाग्निकाल०	१७३
समाग्निकाल०	१७३
भस्मकका निदानसंप्राप्ति पूर्वकल०	१७४
भस्मककेउपद्रवअरिष्ट	१७४
अजीर्णकाविप्रकृष्ट निदान	१७४
अजीर्णकासामान्य लक्षण	१७५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
सन्निकृष्टकारणसहित		धिकारः	१६१	पैत्तिक	२००	उस में विशेष	[illegible]
अजीर्णकेभेद	१७५	पांडुरोगकासंख्यापूर्वक		मार्गभेद		अरिष्ट	
आमाजीर्णकाल०	१७६	सन्निकृष्टनिदान	१९१	उपद्रव		अवधि	२१४
विदग्धअजीर्णकाल०	१७६	विप्रकृष्टनिदानपूर्वक		साध्यत्वादिक		चिकित्सा	२१५
विष्टब्धअजीर्णकाल०	१७६	संप्राप्ति	१९२	साध्य		निदान विशेषकरके विशेष	
रसशेषाजीर्णकाल०	१७६	उसकापूर्वरूप	१९२	असाध्य		शो[illegible]	२१५
इसके उपद्रव	१७७	वातकेपांडुरोगकाल०	१९२	अरिष्ट	[illegible]१	व्यव[illegible]शोषिकाल०	२१६
विषूचीआदिरोग	१७७	पित्तकेपांडुरोगकाल०	१९३	रक्तपित्तकीचि०	[illegible]१	शोक[illegible]षिकाल०	२१६
विषूचीकीनिरुक्ति	१७७	कफकेपांडुरोगकाल०	१९३	इति रक्तपि० ॥		जराशो[illegible]काल०	२१६
विषूचीकानिदान	१७७	सन्निपातकेपांडुरोगका		अथ अम्लपित्ताधि०	२०७	म[illegible]	
विषूचीकालक्षण	१७७	लक्षण	१९३	अम्लपित्तका विप्रकृष्ट		व्य[illegible]	
विषूचीके उपद्रव	१७७	मृत्तिकाकेपांडुरोगकी		निदान	[illegible]०७	उरः[illegible]	
अलसकल०	१७८	संप्राप्ति	१९३	अम्लपित्तकाल०		उरः[illegible]	
विषूचि अलसकका		उसकालक्षण				[illegible]	
अरिष्ट	१७८	उसकासामान्यल०	[illegible]३	नीचेके [illegible]लपित्तका[illegible]०	२०८	लिं[illegible]	
विलंबिकाल०	१७८	असाध्यल०	१९४	अम्ल पित्तकी अवस्था		उर[illegible]	
जीर्णआहारकाल०	१७८	पांडुभेदकामलाका		विशेष	२०८	साध्य[illegible]	
उसकीचि०	१७८	निदानपूर्वकसंप्राप्ति	१९४	अम्लपित्तदोषसंसर्गः	२०८	राजय[illegible]	
अजीर्ण में रस	१८२	कामलाकाल०	१९५	दोषभेदसेल०भेद	२०८	शो[illegible]	
उत्क्लेशकाल०	१८५	उसकाभेद	१९५	अम्लपित्तकासाध्य-		[illegible]	
विशिष्टद्रव्याजीर्णमें		कोष्ठाश्रयकामला	१९५	त्वादिक	२०९	[illegible]शोषचि०	
विशिष्टपाचन	१८६	कुम्भकामलावालोंका		श्लेष्म पित्तकाल०	२०[illegible]	[illegible]शोषचि०	
(इतिजठराग्निविकारः)	१८८	आरिष्टल०	१९५	अम्लपित्त श्लेष्म पित्तकी		उरःक्षतकीचि०	२२०
अथ क्रमि अधिकारः	१८८	दोनोंकामलावालोंका		चिकित्सा	२०९	राजयक्ष्मामेंरस	२२२
उनकेभेद और निदान	१८९	अरिष्टल०	१९५	इति अम्लः	२११	इतिराजयक्ष्माधिकार	२२३
उनकेलक्षण	१८९	हलीमककाल०	१९५	अथ राजयक्ष्माधिकारः ॥	२११	कासकाअधिकार	२२३
भीतरकी कृमियों के		सामान्यसे उनकीचि०	१९५	उसका सन्निकृष्टविप्र-		कासकानिदानसंप्राप्ति	
विप्रकृष्टनिदान	१८९	इति पांडुरोगाधि० ॥	१९६	कृष्टनिदान	२११	पूर्वकसामान्यल०	२२३
उत्पन्नकृमि ल०	१८९	अथ रक्तपित्ताधि० ॥	१९६	यक्ष्मादिकोंका निरूपण	२१२	संख्या	२२३
कफकृमियोंकेविप्रकृष्ट		उसकीनिदानपूर्वक		उसकी संप्राप्ति	२१२	पूर्वरूप	२२३
निदान	१८९	संप्राप्ति	१९६	पूर्वरूप	२१३	वातिककाल०	२२३
कफजकृमियोंकीसंप्राप्ति		रक्तपित्त का सामान्य		यक्ष्मावालेका ल०	२१३	पैत्तिककाल०	२२४
पूर्वकल०	१८९	लक्षण	१९६	सुश्रुतोक्तल०	२१३	श्लैष्मिकका ल०	२२४
रक्तकीकृमि	१९०	उसकेमार्ग	१९६	उल्बणताकरके दोषोंके भेद		क्षतकासकानिदान	
मलकीकृमि	१९०	पूर्वरूप	१९६	से राजयक्ष्माके एकादश		पूर्वकल०	२२४
कृमियोंकीचि०	१९१	विशेष ल०	२००	लक्षण	२१३	क्षयकासकीनिदानपूर्वक	
पांडुरोगकामलाहलीमका-		वातिक	२००	असा[illegible]	२१४	संप्राप्ति	२२४

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय	पृष्ठ
...चि० ...णिका ल०	२२४
...साध्य याप्य का-	
...की चि०	२२५
...सकी चि०	२२५
...की चि०	२२६
...की चि०	२२६
...की चि०	२२६
...चि०	२२७
...न्य चि०	२२७
[illegible]	२३०
[illegible]	२३०
[illegible]	२३०
[illegible]	२३०
[illegible]	२३०
...की चि०	२३१
...हिक्काधिकार	२३२
अथ श्वासाधिकारः	२३२
उसका निदान	२३२
श्वास के भेद	२३२
उसका पूर्वरूप	२३२
उसकी संप्राप्ति	२३३
महाश्वासका ल०	२३३
ऊर्ध्वश्वासका ल०	२३३
उसका अरिष्ट ल०	२३४
तमकश्वास	
तमककीही पित्तानुबन्ध	
जनित ज्वरादि योग से	
प्रतमकसंज्ञा उसका	२३५
दूसरा ल०	२३५
क्षुद्रश्वास	

विषय	पृष्ठ
श्वासोंकी साध्यत्वादिक	
...	२३५
...धिकारः	२३८
और ...दाधिकारः	२३८
...निदान संप्राप्ति	
...	२३८
...स्वरभेदवाले का	
लक्ष...	२३८
पैत्ति... ल०	२३८
...लक्षण	२३८
...दका	
...	२३८
...	२३८
...	२३८
...साध्यत...	२३९
स्वरभेदकी चि०	२३९
इति स्वरभेदाधिकारः	२४०
अरोचकाधिकारः	२४०
निदानकेसहितअरोचक	२४०
वातिकका ल०	२४०
पैत्तिकका ल०	२४०
श्लैष्मिकका ल०	२४०
आगन्तुजका ल०	२४०
त्रिदोषजका ल०	२४१
वातजादि भेदसे अन्यथा	
विकृति	२४१
वृद्धभोजोक्त उनके अलग २	
लक्षण	२४१
अरोचक की चि०	२४१
इति	२४२
वमनाधिकार	२४३
उसकी सन्निकृष्ट विप्रकृष्ट	
निदान पूर्वक संप्राप्ति	
पूर्वरूप	२४३
छर्दिका सामान्य ल०	२४३
वातकी छर्दि का ल०	२४३
पित्तकी छर्दिका ल०	२४४
कफकीका ल०	२४४

विषय	पृष्ठ
सन्निपातकी छर्दिका ल०	२४४
आगन्तुज का ल०	२४४
उपद्रव्य	२४५
असाध्य और साध्य का	
लक्षण	२४५
छर्दिकी चि०	२४५
इति छर्द्यधिकार	२४६
अथ तृष्णाधिकारः	२४६
तृष्णाकी निदानपूर्वक	
संप्राप्ति	२४६
संख्या	२४६
तृष्णाका सामान्य ल०	२४७
वातकी	२४७
पित्तकी	२४७
...षाका ल०	२४८
क्षतज...का ल०	२४८
क्षयकी तृषा का ल०	२४८
आमकी तृषा का ल०	२४८
भुक्तोद्भवतृषाका ल०	२४८
उपसर्ग की तृषाका ल०	२४९
उपसर्ग	२४९
तृषा की चि०	२४९
इति तृषाधिकारः	२५०
मूर्च्छाधिकार	२५१
मूर्च्छाकी निदान पूर्वक	
संप्राप्ति	२५१
सामान्य ल०	२५१
उसका पूर्वरूप	२५२
वातकी मूर्च्छा का ल०	२५२
पैत्तिककीमूर्च्छाका ल०	२५२
कफकी मूर्च्छाका ल०	२५२
सन्निपातकी मूर्च्छा	२५२
रक्तकी मूर्च्छा का ल०	२५३
मद्की मूर्च्छाका ल०	२५४
विषकी मूर्च्छाका ल०	२५४
तन्द्राका ल०	२५४
क्लमका ल०	२५५
निद्राका ल०	२५५

विषय	पृष्ठ
संन्यासकी संप्राप्ति पूर्वक	
लक्षण	२५५
संन्यास से मूर्च्छा भेद	२५५
मूर्च्छाकी चि०	२५५
रक्तजमूर्च्छाकी चि०	२५६
संन्यासकी चि०	२५७
मूर्च्छामें रस	२५७
भ्रमकी चि०	२५७
तन्द्रा और अतिनिद्रा की	
चिकित्सा	२५७
इति तन्द्रासंन्यासाधिकार	२५८
मदात्ययका अधिकार	२५८
मद्का स्वभाव	२५८
युक्तिपूर्वक सेवन किये	
की महिमा	२५८
तन्त्रांतरोक्तमद्यपानमाला	२५९
मद्यके गु०	२६०
सात्त्विकमद्यका ल०	२६०
राजसमद्यका ल०	२६०
तामसमद्यका ल०	२६०
तन्त्रांतरोक्त अतितामस	
लक्षण	२६१
मदात्ययोंका निदान	२६१
विकार	२६२
मदात्यय का सामान्य	
लक्षण	२६३
वातिक मदात्यय का	
निदान	२६३
उसका ल०	२६३
पैत्तिक मदात्यय का नि-	
दान	२६३
उसका ल०	२६४
श्लैष्मिकमदात्ययका नि-	
दान	२६४
उसका ल०	२६४
सान्निपातिक मदात्यय-	
यकानिदान लक्षण	२६४
परमद	२६४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय	पृष्ठ
पानाजीर्ण	२६५
पानविभ्रम	२६५
असाध्यमदात्ययों का लक्षण	२६५
मदात्ययों की चि०	२६५
कोदोंआदिकेमदकी चि०	२६७
इति	२६७
दाहकाअधिकार	२६८
पित्तकादाह	२६८
उसकी पित्त ज्वरोक्त क्रम चिकित्सा	२६८
रक्तका दाह	२६८
रक्तपूर्णकोष्ठज	२६८
मद्यज दाह	२६८
तृष्णानिरोधज	२६८
धातुक्षयज	२६९
मर्माभिघातज	२६६
असाध्य	२६६
दाहकी चि०	२६६
इति दाहाधिकारः	२७०
अथ उन्मादाधिकारः	२७०
उन्मादकी निरुक्ति	२७०
उसीका अवस्थाभेद में नामान्तर	२७०
उन्मादका विप्रकृष्ट लक्षण	२७०
सन्निकृष्ट निदान	२७१
उसकी संप्राप्ति	२७१
उन्मादकासामान्यल०	२७१
वातिकोन्मादकी निदान पूर्वकसंप्राप्ति	२७१
उसीका ल०	२७१
पैत्तिक की निदान पूर्वक संप्राप्ति	२७२
उसका ल०	२७२
श्लैष्मिक की निदान पूर्वक संप्राप्ति	२७२
उसका लक्षण	२७२
सन्निपातिक का निदान पूर्वक ल०	२७३
मनोदुःख का विप्रकृष्ट निदान	२७३
उसका ल०	२७३
विषज का ल०	२७३
अरिष्ट	२७४
देवादिकृत उन्माद का सामान्य ल०	२७४
देवाविष्ट का ल०	२७४
दैत्याविष्टका ल०	२७४
गन्धर्वाविष्टका ल०	२७४
यक्षाविष्टका ल०	२७५
पित्राविष्टका ल०	२७५
नागाविष्टका ल०	[illegible]
राक्षसाविष्टका ल०	[illegible]
ब्रह्मराक्षसाविष्टका लक्षण	२७५
पिशाचाविष्टका ल०	२७६
हिंसार्थगृहीतका ल०	२७६
देवादियों का आवेश समय	२७६
उन्माद की चि०	२७७
देवाद्याविष्टों की चि०	२७९
इति (मिर्गी)	२८०
अपस्मार का अधिकार	२८०
अपस्मारकी निदान पूर्वक संप्राप्ति	२८०
उसकी संख्या	२८०
उसका सामान्य ल०	२८०
पूर्वरूप	२८०
वातिक का ल०	२८१
पैत्तिक का ल०	२८१
श्लैष्मिक का ल०	२८१
सन्निपातिक का ल०	२८१
अपस्मारका अरिष्ट ल०	२८१
उसके प्रकोपका ल०	२८१
अपस्मारकी चि०	२८२
इति मिर्गी अधिकार	२८४
वातव्याधिअधिकार	२८४
उसका विप्रकृष्ट निद[illegible]	[illegible]
वातव्याधिकी साम[illegible] चिकित्सा	[illegible]
विशिष्ट वातव्याधियों की चि०	[illegible]
शिरोग्रह का ल०	[illegible]
उसकी चि०	[illegible]
जृंभाका ल०	[illegible]
उसकी चि०	[illegible]
हनुग्रह का निदान सहित लक्षण	२०७
उसकी चि०	[illegible]
जिह्वास्तंभ का [illegible]	[illegible]
[illegible]चेके [illegible]	२८५
मूक गद्गद मिनूमिन[illegible] इनका लक्षण	२८८
उनकी चि०	२८८
प्रलाप का ल०	२८९
उसकी चि०	२८९
रसाज्ञान का ल०	२८९
उसकी चि०	२८[illegible]
त्वक् शून्यता का ल०	२९[illegible]
उसकी चि०	२९०
अर्दितका संप्राप्ति पूर्वक लक्षण	२९०
असाध्यका ल०	२९०
उसकी चि०	२९१
मन्यास्तम्भ का निदान पूर्वक ल०	२९२
उसकी चि०	२९२
बाहुशोष का ल०	२९२
उसकी चि०	२९२
अपबाहुक का ल०	२९३
उसकी चि०	२९३
विश्वाची का ल०	२९३
उसकी चि०	२९३
ऊर्ध्ववातका ल०	२९३
उसकी चि०	२९[illegible]
आध्मान का ल०	[illegible]
उसकी चि०	२९[illegible]
प्रत्याध्मान का ल०	२[illegible]
उसकी चि०	२[illegible]
वात[illegible]ष्ठीलाका ल०	२[illegible]
प्रत्य[illegible]ष्ठीलाका ल०	२९६
उन[illegible] चि०	२९६
तूनी क[illegible] ल०	२९६
[illegible]	[illegible]
उस[illegible]	[illegible]
गृध्र[illegible]	[illegible]
गृध्रसी[illegible]	[illegible]
खंज [illegible]	[illegible]
उस[illegible]	[illegible]
क[illegible]	[illegible]
[illegible]का चि०	[illegible]
[illegible]कशीर्षका [illegible]	[illegible]
[illegible]सकी चि०	[illegible]
खल्लीका ल०	३०२
उसकी चि०	३०२
वातकंटकका ल०	३०२
उसकी चि०	३०२
पाददाह का ल०	३०२
उसकी चि०	३०२
पादहर्षका ल०	३०३
उसकी चि०	३०३
आक्षेपकका सामान्यल०	३०३
उसके चारों भेद	३०३
केवल वातके आक्षेपकका लक्षण	३०३
कफयुक्त का ल०	३०३
उसकी चि०	३०३
अन्तरायामका ल०	३०४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

विषय	पृष्ठ
[illegible]ाह्या[illegible]का ल०	३०५
[illegible]चि०	३०५
[illegible]नुस्तंभ का ल०	३०५
[illegible] का ल०	३०५
[illegible] चि०	३०५
[illegible] का ल०	३०६
[illegible]	३०६
[illegible]ा ल०	३०७
[illegible]	३०७
[illegible] ल०	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	३०८
[illegible]	३०८
[illegible]	३०९
[illegible]	३०९
[illegible]चि०	[illegible]
[illegible] वातोंके	
लक्षण	३११
उसकी चि०	३११
स्थान विशेष करके वात	

विषय	पृष्ठ
रोग विशेष	३१२
[illegible]	३१२
[illegible]पाच[illegible]	३१२
और [illegible]ा ल०	३१२
[illegible]	३१२
[illegible] के वातका लक्षण	३१३
[illegible]	३१३
गु[illegible] वातका ल०	३१३
[illegible]	३१४
[illegible] चि०	३१४
[illegible]	
[illegible]	३१४
[illegible]	३१४
[illegible]	३१५
उसकी चि[illegible]	३१४
स्नायुगत[illegible] ल०	३१४
उसकी चि०	३१५
सन्धिगतका ल०	३१५
उसकी चि०	३१५
उक्तरोगोंकी कष्टसाध्यता	३१५
वात के उपद्रव	३१५
[illegible]ाप्य	३१५
पांचप्रकार के प्रकुत वातोंके	
कार्य्य ल०	३१५
वातव्याधियोंकेसामान्य	

विषय	पृष्ठ
औषध	३१५
वात रोग में रस	३२२
इति	३२३
ऊरुस्तम्भाधिकारः	३२३
उसका विप्रकृष्ट सन्निकृष्ट	
निदानसंप्राप्तिपूर्वक	
लक्षण	३२३
पूर्वरूप	३२३
लक्षण	३२४
ऊरुस्तम्भका अरिष्ट	३२४
उसकी चि०	३२४
इति	३२७
आमवाताधिकारः	३२७
आमवात की निदान पूर्वक	
[illegible]ापसे	३२७
आम[illegible]	३२८
आमवात का सामान्य	
लक्षण	३२८
तन्त्रान्तरमें उसीका ल०	३२८
वाताधिकमें इसीका ल०	३२८
उसी के विशिष्ट ल०	३२९
उस के साध्यत्वादिक	३२९
आमवात की चि०	३२९
इति	३३६
पित्तव्याधि अधिकारः	३३६

विषय	पृष्ठ
उनकेविप्रकृष्टनिदान	३३६
पित्त के रोग	३४०
इनकी चिकित्सा अपने	
प्रकरण में जानलेवे	३४०
कफव्याधियों के सामान्य	
से विप्रकृष्ट निदान	३४०
इनकी चि०अपनेप्रकरण में	
जाननी चाहिये	३४०
इति	३४१
वातरक्त का अधिकार	३४१
उसका विप्रकृष्ट निदान	३४१
संप्राप्ति	३४२
पूर्वरूप	३४२
वातरक्तका ल०	३४३
अधिकरक्त वातरक्त	३४३
अधिकपित्त वातरक्त	३४३
अधिक कफ द्विदोष	३४३
त्रिदोषकावातरक्त	३४३
पादानिरिक्त स्थान	३४४
वातरक्त के उपद्रव	३४४
असाध्यत्वादिक	३४४
वातरक्तकी चि०	३४५
इति	३६३

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ …प्रकाशे मध्यखण्डः प्रारभ्यते ॥

(अ…) …दौज्वराधिकारमाह ॥

…श्रुतः। अतोज्वराधिकारोऽत्र प्रथमंलिख्यतेमया॥ १ ॥

…प्रकाशे मध्यखण्ड ॥

ज्वराधिकार ॥

कच्चाजल … का राजा कहागयाहै इसलिये मैं प्रथम ज्वराधिकार को लिखताहूं ॥ १ ॥
पहरमें परि…

तत्र ज्वरस्यप्रथममुत्पत्तिमाहसुश्रुतः ॥

दक्षापमानसंक्रुद्धरुद्रनिःश्वाससम्भवः। ज्वरोऽष्टधापृथग्द्वन्द्वसङ्घातागन्तुजःस्मृतः॥
अस्यायमर्थः। दक्षकर्तृकोयोऽपमानस्तेनसंक्रुद्धोयोरुद्रस्तस्ययोनिःश्वासस्तस्मात्संभव
उत्पत्तिर्यस्यसज्वरः। क्रुद्धरुद्रनिःश्वाससम्भूतत्वेनज्वरःस्वभावात्पैत्तिकइतिबोध्यते। य
तउक्तंचरकेण। क्रोधात्पित्तमित्यादितेनसर्वज्वरेषुपित्तोपशमनकारिणीचिकित्साकर्त्तव्या
अतएववाग्भटः॥ ऊष्मापित्तादृतेनास्तिज्वरोनास्त्यूष्मणाविना। तस्मात्पित्तविरुद्धानि
त्यजेत्पित्ताधिकेऽधिकम्॥ २ ॥

सुश्रुतकी कही हुई ज्वरकी उत्पत्ति ॥

दक्षके अपमानसे क्रुद्ध होकर श्रीशिवजी महाराज ने जो श्वास छोड़ाहै उससे ज्वर उत्पन्न हुआ है वह ज्वर पृथक् द्वन्द्व सन्निपात और आगन्तुक भेदसे आठ प्रकार का है क्रोध युक्त शिवजीके श्वास के द्वारा उत्पन्न होनेके कारण ज्वर स्वभावही से पैत्तिक होताहै क्योंकि चरक ने भी कहाहै कि क्रोध से पित्त उत्पन्न होताहै इत्यादि इसलिये सम्पूर्ण ज्वरों में पित्तके शान्त करने वाली चिकित्साकरनी चाहिये इसी से वाग्भट ने भी कहाहै कि पित्तके विना ऊष्मा नहीं होती और ऊष्माके विना ज्वर नहीं होता इसलिये संपूर्ण ज्वरों में पित्त विरुद्धवस्तुओं को त्यागकरदे और अधिक पित्तवाले ज्वर में अधिक त्याग करदे ॥ २ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

अधिक।म.त। रुद्रसम्भूतत्वेनज्वरस्यदेवतात्मकत्वात्पूजार्हत्वंचोपदर्शितम् अ[illegible] एव
वैदेहः। ज्वरःसंपूजनैर्वापिसहसैवोपशाम्यतीति ॥ ३ ॥

ज्वर शिवजीसे उत्पन्न हुआहै इसलिये देवतात्मकहै इसीसे पू[illegible]ग्य कहा गयाहै इस[illegible]
वैदेह आचार्य ने भी कहाहै कि ज्वर पूजनके द्वारा शीघ्र शान्त होज[illegible]है। ३ ॥

मूर्त्तिरप्यस्योक्तासुश्रुतेन ॥

रुद्रकोपाग्निसम्भूतःसर्वभूतप्रतापनः। त्रिपाद्भस्मप्रहर[illegible]शिराःसुमहोदरः ॥
व्याघ्रचर्मवसनःकपिलोमाल्यविग्रहः॥ पिंगेक्षणोह्रस्वजंघोब[illegible]वान्महान्॥पुर
षोलोकनाशार्थमसौज्वरइतिस्थितः। तैस्तैर्नामभिरन्येषांसत्त्व[illegible]ति ॥ जन्मा
निधनेचैवप्रायोविशतिदेहिनाम् ॥ ऋतेदेवमनुष्याभ्यांनान्य[illegible]म ॥ ४ ॥

सुश्रुतमें कही हुई ज्वरकी मूर्त्ति ॥

शिवजी की क्रोधाग्नि से उत्पन्न हुआ ज्वर सब प्राणियों को संता[illegible]
तीन शिर, बडाउदर, व्याघ्र के चर्मका ओढ़ना, कपिलवर्ण, मा[illegible]धारी [illegible] वेदर्श[illegible]
पिंडली होती हैं बुरी आकृतिवाला बडा बल[illegible] करने के
यह ज्वर अन्य अन्य प्राणियों के शरीरमें प्र[illegible]हुआ अन्य २ नामों से कहाज[illegible]
का पालक घोडोंका अभिताप इत्यादि जन्मके आदिमें और मृत्युके समय ज्वर [illegible]
रीर में प्रविष्ट होताहै देवता और मनुष्यों को छोडकर और कोईप्राणी ज्वरको न[illegible]

तस्यज्वरस्यसंख्यारूपांसम्प्राप्तिमाह ॥

ज्वरोष्टधेतिअष्टत्वंविवृणोति पृथगितिवातिकःपैत्तिकःश्लैष्मिक[illegible]
श्चत्रयःवातपैत्तिकःवातश्लैष्मिकःपित्तश्लैष्मिकश्चेतिसंघातजः स[illegible]पातिक[illegible]
ल्बणैकोल्बणैः षट्स्युर्हीनमध्याधिकैश्चषट्। समश्चैकोविकारास्ते[illegible]न्निपातास्त्रयोदश ॥
इतिचरके॥ त्रयोदशसन्निपाता उक्तास्तेयथावातोल्बणः। पित्तोल्बणः। कफोल्बणः।
वातपित्तोल्बणः। वातश्लैष्मोल्बणः। पित्तश्लैष्मोल्बणः। एवंषट्। अधिकवातोमध्य
पित्तोहीनकफः। अधिकवातोमध्यकफोहीनपित्तः। अधिककफोमध्यपित्तोहीनवातअ
धिककफोमध्यवातोहीनकफः अधिकपित्तो मध्यकफोहीनवातः अधिकपित्तोमध्यवातो
हीनकफश्चेतिषट्। उल्बणएकः एवंत्रयोदश। अत्रतुत्रिदोषजत्वेनसाम्यात्सान्निपाति
कएकःएवंगणितः॥ ५ ॥ ज्वरकी संख्यारूप सम्प्राप्ति कही जाती है ॥

ज्वर आठ प्रकारका है जैसे पृथक् अर्थात् वातका पित्तका और कफका इन तीन प्रकारकाहै द्वंद्वजतीन प्रकार का है जैसे वातपित्तका वातकफका और पित्तकफका एक सन्निपातका चरकने कहा है कि दो दोष उल्बण (बढ़ेहुए) तथा एकदोष उल्बण होने से छः प्रकार काहै दोषोंकी हीनता, मध्यता और अधिकता से छःप्रकार काहै और दोषों की समतासे एक प्रकारकाहै इस प्रकार सन्निपात तेरह प्रकारका है जैसे वातोल्बण, पित्तोल्बण, कफोल्बण, वातपित्तोल्बण, वातश्लेष्मोल्बण तथा पित्तश्लेष्मोल्बण इन छः प्रकारोंका होताहै और अधिकवात, मध्यपित्त, हीनकफ, अधिकवात

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मध्य कफ, हीनपित्त, अधिककफ, मध्यपित्त, हीनवात, अधिककफ, मध्यवात, हीन कफ, अधिक पित्त, मध्य कफ, हीनवात, अधिक पित्त, मध्य वात, हीन कफ इन छः प्रकारोंका होताहै और तीनों दोषों की समान वृद्धिवाला एक इस प्रकार से तेरह सन्निपात होते हैं परन्तु यहाँ तो सन्निपात त्रिदोष से उत्पन्न होताहै इस समता को लेकर एकही गिनागयाहै ॥ ५ ॥

आगन्तुजइति ... आगन्तुशब्देनाभिघातादयोहेतवउच्यन्ते कुत्रचिद्व्याधयः ...र्यकारणयोरभेदो... तुआगन्तुजाअभिघाताद्यनेककारणयोगादनेकेभवन्ति। त ...स्यागन्तुजत्वे ...सा... आगन्तुकोऽप्यत्रैकएवगणितः। नत्वागन्तुजेपिज्वरेवातादिल ...दर्शनादागन्तुजः ...दोषजाद्भिन्नः। उच्यते, उत्तरकालंदोषोत्पत्तेः तथा चचरके। आ ...न्तुकोहिव्यथापूर्व... ...इचाद्भिन्नैर्दोषैरनुबध्यतइति ॥ ६ ॥

यहां आगन्तु ... चोट आदिक कारण लिये जाते हैं और कहींपर कार्य्य कारण के अभेदको मानने से ... कहीजाती हैं आगन्तुज ज्वर चोट आदिक अनेक कारणोंके होनेसे अनेक होते हैं ... सामान्यतासे आगन्तुक ज्वर भी यहां एकही गिनागयाहै अब यह सन्देह ... दोषोंके लक्षण दिखाई देते हैं तो आगन्तुज दोषजसे कैसे ... इसका उत्तर यह है ... आगन्तु रोगमें दोषों का कोप पीछे होता है और ... कहा है कि आगन्तुज ज्वर पहले चोट आदिकों से उत्पन्न होता है और पीछेसे ... वायु ... युक्त होता है ॥ ६ ॥

अथ ज्वरस्यविप्रकृष्टकारणकथनपूर्विकांसम्प्राप्तिमाह ॥

...राभ्यांदोषाह्यामाशयाश्रयाः। बहिर्निरस्यकोष्ठाग्निंज्वरदाःस्यूरसा ... मिथ्याहारविहाराभ्यां अनुचिताहारचेष्टाभ्यां हेतुभूताभ्यांदोषा, वातपित्तकफाः ...माशयाश्रयाः ...शयंगतारसानुगाःरसदूषकाः बहिर्निरस्यकोष्ठाग्निंकोष्ठगताग्ने रूष्माणम्। नतुसमस्तमग्निंतदादोषपाकासम्भवःस्यात्॥ बहिःप्रक्षिप्यज्वरदाःस्युर्ज्वर कारिणोभवेयुरित्यर्थः ॥ ७ ॥

ज्वर के समीपी कारण के कथनपूर्वक संप्राप्तिको कहतेहैं ॥

अनुचित आहार, विहारके द्वारा आमाशयमें गयेहुए वात, पित्त, कफ रसको दूषितकरतेहुए कोष्ठाग्नि को बाहर निकालके (कोष्ठमें प्राप्त अग्नि की ऊष्मा को न कि सम्पूर्ण अग्निको क्योंकि सम्पूर्ण अग्नि के निकलने से दोषों का परिपाक होना असम्भव होजायगा) ज्वरको उत्पन्न करते हैं॥ ७॥

अथ ज्वरस्यसामान्यविशिष्टंचपूर्वरूपमाह ॥

श्रमोऽरतिर्विवर्णत्वंवैरस्यंनयनप्लवः। इच्छाद्वेषौमुहुश्चापिशीतवातातपादिषु॥ जृम्भां गमर्दोगुरुताऽरोमहर्षोऽरुचिस्तमः। अप्रहर्षश्चशीतंचभवन्त्युत्पत्स्यतिज्वरे ॥ सामान्य तोविशेषात्तुजृम्भात्यर्थंसमीरणात्। पित्तान्नयनयोर्दाहःकफान्नान्नाभिनन्दनम्॥श्रमोऽध्या पारंविनैवअरतिरस्वस्थचित्तत्वंविवर्णत्वंम्लानगात्रता। वैरस्यंमुखस्याप्रकृतरसता। नयनप्लवःनयनयोरश्रुपूर्णत्वम्। शीतवातातपादिषुमुहुरिच्छाद्वेषौआदिशब्दाज्ज्वलनेज

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लेच। यतउ[illegible]रकेण। ज्वलनातपवातेषुभक्तिद्वेषावनिश्चितावेति। शयनादिष्विच्[illegible]न्ये अंगमर्द्दोऽगमोटनम्। गुरुतागात्रस्य। रोमहर्षः रोमांचता अरुचिर्भोज्ये। तमः[illegible] ग्नस्येवज्ञानम्। अप्रहर्षः हर्षाभावः। शीतंलगतिचकाराद्[illegible]ः। उपदेशद्वेषाद[illegible] ऽपिभवन्ति। तृतीयश्लोकस्थंसामान्य इतिपूर्वश्लोकाभ्यां[illegible]नीयः। तेनसामान्य तोज्वरेउत्पत्स्यतिभविष्यतिश्रमादयःपूर्वमेवभवंतीत्यर्थः। उ[illegible]तीत्यात्मनेपदिनोपि शतृङ्भावआर्षत्वाद्विशेषादुच्यते। समीरणाज्ज्वरेउत्पत्स्यति[illegible]शयेनजृम्भाभवति। पित्तज्वरेउत्पत्स्यतिअत्यर्थंनयनयोर्दाहोभवति। कफज्वरे[illegible]त्स्यति अत्यर्थंन नान्ना भिनन्दनम् अन्नाकाङ्क्षा न भवति। जृम्भादयोभवन्तियत[illegible]मान्यध[illegible]र्मसंक्रान्तोविशि ष्टोधर्मोभवति॥ ८॥ अब ज्वरके सामान्य और विशिष्ट पूर्व[illegible] कह[illegible]

परिश्रम के विना किंयेहुये श्रम मालूम होना चित्तकीअव्यग्रता का [illegible]ना, मुखका विरस होना, नेत्रोंसे आंसूबहना, शीत, वायु तथा आतप आदि[illegible]में और जल लेना चाहिये क्योंकि चरक में कहाहुआ है कि अग्नि[illegible] त[illegible] कभी अनिच्छा और कोई कहतेहैं कि आदि [illegible] का [illegible] इच्छा तथा अनिच्छा का होना, अंगों में पीड़[illegible] शरीरमें भारीपन, जम्हाई, रोमांच अन्धेरे, मेदवाह, आसा, मालूम होना, हर्षका न होना, निर्मलता, उपदेश न मानन[illegible] सामान्यता से यह सम्पूर्ण लक्षण जब ज्वर उत्पन्न होनेवाला होताहै तब होते[illegible] के द्वारा वातज अत्यन्त नेत्रों में दाह होने से पित्तज और अन्न में अत्यन्त [illegible] उत्पन्न होने वाला है यह जानलेना चाहिये यह विशेष लक्षण है॥ ८॥

द्वन्द्वजपूर्वरूपमाह॥

रूपैरन्यतराभ्यांतुसंसृष्टैर्द्वन्द्वजंविदुः। अन्यतराभ्यांजृम्भानेत्र[illegible]दाहाभ्याम्। जृम्भा[illegible] रुचिभ्यांनेत्रदाहान्नारुचिभ्यांवासंसृष्टैरूपैः श्रमादिभिः। द्वन्द्वजंद्विदोषजंपूर्वरूपंविदुः॥ ९॥

अब द्वन्द्वज का पूर्वरूप कहते हैं॥

दो दोषों के मिलेहुये लक्षणों से द्वन्द्वज ज्वरका पूर्वरूप जानना चाहिये श्रम आदिक सामान्य पूर्वरूपों करके सहित जमुहाई तथा नेत्रोंमें दाह के द्वारा वात पित्तज जमुहाई तथा अन्न में अरुचि के द्वारा वात कफज और नेत्रोंमें दाह तथा अन्न में अरुचि के द्वारा पित्तकफ ज्वर होने वाला जानना चाहिये॥ ९॥

त्रिदोषजपूर्वरूपमाह॥

सर्व्वलिंगसमवायःसर्व्वदोषप्रकोपजे। सर्व्वरूपजेसर्व्वरूपे सर्व्वलिंगसमवायः अतिशायितजृम्भानेत्रदाहान्नारुचिसहितानांश्रमादीनांसमवायोभवति॥ १०॥

अब त्रिदोष ज्वरका पूर्वरूप कहते हैं॥

अत्यन्त जमुहाई नेत्रोंमें दाह तथा अन्नमें अरुचि. इन विशेष लक्षणोंसे युक्त श्रम आदिक सब सामान्य लक्षणों के होनेपर त्रिदोष ज्वरका पूर्वरूप जानना चाहिये॥ १०॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ ज्वरस्यसामान्यलक्षणमाह ।

स्वेदावरोधःसन्तापःसर्वांगग्रहणन्तथा । युगपद्यत्ररोगेतुसज्वरोऽयपदिश्यते ॥ तापइतिवक्तव्येसन्ता[illegible]नंदेहेन्द्रियमनसांसन्तापबोधनार्थम् । यतउक्तंचरकेणज्वर विशेषणंदेहेन्द्रियमन[illegible] । तत्रदेहसन्तापोदेहेन्द्रियोष्णता । इन्द्रियसन्तापइन्द्रि यतापवैकृत्यंमनःसन्ता[illegible]त्यलक्षणम् । यतउक्तं । इन्द्रियाणांतुवैकृत्यंयत्रसन्तापल क्षणम् । वैचित्त्य[illegible]निर्म्मनःसन्तापलक्षणमिति ॥ सर्व्वांगग्रहणम् । सर्वेषामं गानांवेदनयाग्रह[illegible]निस्तम्भनगृहीतानीवबाभवन्तियुगपदिति । मिलितमे तल्लक्षणम् । प्र[illegible]चारात् । यथास्वेदावरोधः । कुष्ठंपूर्वरूपे । तथासंतापो दा[illegible]ग्रहणंसर्व्वांगरोगाख्यवातव्याधौ ॥ ११ ॥

[illegible] ज्वरका सामान्य लक्षण कहते हैं ॥

[illegible]नेका रुकना, संताप, सबशरीर में पीडा.यह सब लक्षण इकट्ठे होते हैं उसको [illegible]तापके [illegible]न में संताप कहनेसे देह इन्द्रिय तथा मनका ताप ग्रहण कियाजाताहै [illegible]न्द्रिय तथा [illegible]रकाविशेषण कहाहै देहसन्ताप अर्थात् देह [illegible]इन्द्रियसन्ताप अर्थात् इन्द्रियों[illegible]तापरूप विकार और मनका संताप अर्थात् [illegible]र ऐसाही कहाभीहै कि इन्द्रियोंके विकारको इन्द्रियसंताप और असावधानता [illegible] न लगना तथा ग्लानिको मनका संताप कहते हैं यह सब लक्षण इकट्ठे होयँ [illegible]होने से अन्यरोगों के लक्षण होते हैं जैसे पसीनेका रुकना कुष्ठके पूर्वरूप में [illegible]सपूर्ण अंगमें पीडा सर्वांगनाम वातरोगमें होतीहै ॥ ११ ॥

अथ प्रस्वेदानिर्गमनपक्षेकारणमाह ॥

रुणद्धिचाप्यपांधातून्यस्मात्तस्माज्ज्वरातुरः । भवत्यत्युष्णगात्रश्चस्विद्यतेनचस र्वशः ॥ यस्माज्ज्वरोऽत्रभवतिसर्वशःस्विद्यतेचन ॥ १२ ॥

अब पसीनेके न निकलनेका कारण कहते हैं ॥

ज्वरातुर मनुष्यकी जलसंबंधी धातुओंके रुकनेसे शरीर अत्यन्त उष्ण होजाताहै और सब शरीरमें पसीना नहीं निकलताहै ज्वर होनेके कारणसेही स्वेदका रुकना होता है ॥ १२ ॥

अथ सामान्यतोज्वरस्यचिकित्सामाह ॥

अंशांशंयत्रदोषाणांविवेक्तुंनैवशक्नुयात् । साधारणींक्रियांतत्रविदधातुचिकित्सकः ॥ सामान्यतोज्वरीपूर्वंनिर्वातेनिलयेवसेत् । निर्वातमायुषोवृद्धिमारोग्यंकुरुतेयतः ॥ व्यज नस्यानिलस्तृष्णास्वेदमूर्च्छाश्रमापहः । तालवेत्रभवोवातस्त्रिदोषशमनोमतः ॥ वंशव्य जनजःसोष्णोरक्तपित्तप्रकोपनः । चामरोवस्त्रसम्भूतोमायूरोवेत्रजस्तथा ॥ एतेदोषजि तावाताःस्निग्धाहृद्याःसुपूजिताः । नवज्वरीभवेद्यत्नाद्गुरूष्णवसनावृतः ॥ यथर्तुपक्वपा नीयंपिबेत्किंचिन्निवारयन् ॥ १३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अब ज्वरकी सामान्य चिकित्सा कहते हैं॥

जहाँ वातादिक दोषोंके अंश अलग २ न किये जासकें तहाँ वैद्यको साधारण चिकित्सा करना चाहिये सामान्यतासे ज्वरवाला मनुष्य प्रथम वायुरहित स्थान मे [illegible] क्योंकि वायुरहित स्थान आयुवर्द्धक और आरोग्यकारी होताहै पंखेकी वायु, तृषा, स्वेद, मूर्च्छा [illegible] श्रम नाशक. ताडके पंखे की वायु. त्रिदोष नाशक, बांस के पंखेकी वायु. उष्ण तथा रक्तपित्तका [illegible], वस्त्र, मोरके पंखे तथा बेंतके पंखेकी वायु. त्रिदोषनाशक, स्निग्ध हृदयकोहित और अत्यन्त [illegible] री होती हैं नवीनज्वर वाला मनुष्य. भारी तथा गरम वस्त्रको ओढ़ेरहै और जिसऋतुमें जैसे [illegible] चाहो उसीप्रकार परिपाकहुये जलको कुछ ठहर २ कर थोडा २ पिये ॥ १३ ॥

विनापिभेषजैर्व्याधिःपथ्यादेवानिवर्त्तते ॥ नतुपथ्यविहीनस्य [illegible] षजानांशतैरपि । ततो ज्वरेवर्ज्जनीयान्याहसुश्रुतः ॥ परिषेकान्प्रदेहांश्चस्नेहान्संशोधन [illegible] व्यवायश्चव्यायामंशिशिरंजलम् ॥ क्रोधप्रवातभोज्यांश्चवर्ज [illegible] त्तरु [illegible] स्नानादिः,प्रदेहोऽनुलेपनाभ्यंगादिः । स्नेहान् । पानैर्नि [illegible] द्वा [illegible] ॥ १४ [illegible]

औषधोंके विना केवल पथ्यहीसे रोग नि [illegible] रोग नहीं निवृत्त होताहै इसलिये सुश्रुतमें [illegible] हुये नवीन [illegible] वरमें त्याग करनेके [illegible] जातीहै तरुणज्वरमें स्नानादिक,लेप तथा तैल मर्दनादिक, पीनेमें निषिद्ध, स्नेह, [illegible] में निद्रा, मैथुन, व्यायाम, शीतल जल, क्रोध, अत्यन्त वायु और भोजन करने के [illegible] त्याग करदे ॥ १४ ॥

अथ निषेधाद्दोषमाह ॥

शोषंछर्दिंमदंमूर्च्छांभ्रमंतृष्णामरोचकम् । प्राप्नोत्युपद्रवानेतान्प [illegible] आदिशब्देनप्रदेहादयोगृह्यन्ते । हारीतेनप्रत्येकदूषणमुक्तञ्च ॥ [illegible] यामज [illegible] र्व्यवायात्स्तम्भमूर्च्छनम् । मृतिश्चस्नेहपानाद्यैर्मूर्च्छाच्छर्दिर्मद [illegible] रुचिः ॥ गुर्वन्न [illegible] जनात्स्वप्नाद्विष्टम्भोदोषकोपनम् ॥ अग्निसादःखरत्वञ्चस्रोतसांचप्रवर्त्तनम् ॥ मृतिरितिव्यवायादित्यत्रसम्बध्यते । स्वप्नाद्दिवास्वापात् ॥ १५ ॥

इनके सेवनकरने में दोष॥

स्नानादिकों के सेवनसे शोष, छर्दि, मद, मूर्च्छा, भ्रम, तृषा तथा अरुचि.यह संपूर्ण उपद्रव पैदा होते हैं आदि शब्द से लेपादिकों का ग्रहण कियाजाताहै हारीतने इनसबके अलग अलग दोष वर्णन कियेहैं व्यायाम (दण्डकसरत) से ज्वरकी वृद्धि,मैथुनसे स्तंभ,मूर्च्छा तथा मृत्यु स्नेह पान करनेसे मूर्च्छा, छर्दि, मद तथा अरुचि होतीहै और भारी अन्न के भोजन तथा दिन के सोने से विष्टम्भ, दोषों का कोप, मंदाग्नि,शरीर में कठोरता और श्रोतोंका रुकना होताहै॥ १५ ॥

अन्यच्चवर्जयेत् । सज्वरोज्वरमुक्तोवाविदाहीनिगुरूणिच ॥ असात्म्यान्नानिपानानि विरुद्धाध्यशनानिच । व्यायाममतिचेष्टांवाऽभ्यंगंस्नानंचवर्जयेत् ॥ तेनज्वरःशमंयाति शान्तश्चनपुनर्भवेत् ॥ १६ ॥

ज्वरयुक्त अथवा ज्वर से छुटाहुआ मनुष्य विदाही तथा भारी वस्तु अहित अन्न तथा पान विरुद्ध

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भोजन,व्यायाम,बहुत कामकरना,तैलमर्दन और स्नान इनसबको त्यागदे इससे शान्त होता है और हुआ ज्वर फिर नहीं होता है ॥ १६ ॥

ज्वरीलंघनंकुर्य्या चरकोवाग्भटश्च । आमाशयस्थोहत्वाग्निंसामोमार्गान् पिधापयन् ॥ विदधा दोषस्तस्माल्लंघनमाचरेत् । यथा । ज्वरादौलंघनंप्रोक्तंज्वर मध्येतुपाचनम् ॥ ज्व षजंदद्याज्ज्वरमुक्तेविरेचनम् । त्रिविधंत्रिविधेदोषेतत्समी क्ष्यप्रयोजयेत् ॥ दोषे घनंपथ्यंमध्येलंघनपाचनम् । प्रभूतेशोधनंतच्चमूलादुन्मूल येन्मलान् ॥ क्रदर्ज्ञने । तरुणंतुज्वरंपूर्वंलंघनेनक्षयंनयेत् ॥ आमदोषमलिंगाद्वा लंघयेत्तंयथाविधि ॥ १७ ॥

ज्वरमें लंघन करना यह चरक और वाग्भटने कहाहै जैसे कि आम सहितदोष आमाशय में अग्नि को मन्द करके श्रोतों को ढककर ज्वर को उत्पन्न करताहै इसलिये लंघन करने से आदि में लंघन,मध्य में पाचन और अन्त में औषध ज्वरके छूटजाने पर विरे- चन तीन प्रकार के दोषोंमें यह सब तीन प्रकार से विचार करना चाहिये दोषके कम बढ़ेहुए दोषमें शोधन करना चाहिये क्योंकि जड से नष्ट होजाते हैं कि नवीनज्वर में लंघन देकर आम क्षय मार्ग चाहिये और जो उसके लक्षण न मालूम पडें तौभी विधिपूर्वक लंघनदेनाचाहिये १७॥

अन्यच्च ॥

सप्ताहात्पित्तंतुदशभिर्दिनैः । श्लेष्मद्वादशभिर्घस्रैःपच्यतेवदतांवर ॥ कुर्य्याद्दोषानुरूपतः । त्रिरात्रमेकरात्रंवाऽहोरात्रमथवाज्वरे ॥ निर्वा स्वेदाल्लं नादुष्णवारिणः । पानादामज्वरेक्षीणेपश्चादौषधमाचरेत् ॥ १८ ॥

अन्यप्रकार ॥

सातदिनमें वायु,दश दिनमें पित्त.और बारह दिनमें कफ.परिपाक को प्राप्त होताहै लंघनके योग्य मनुष्य दोषों के अनुसार ज्वर में तीन रात्रि एकरात्रि अथवा एक रात्रि दिन लंघनकरे वायु रहित स्थान में रहनेसे स्वेद से लंघन से और उष्ण जल के पान से आमज्वर के क्षीण होने पर पीछे से औषधि देनी चाहिये ॥ १८ ॥

(आत्रेयेणोक्तम्) ज्वरादौलंघनंप्रोक्तंज्वरमध्येतुपाचनम् । ज्वरान्तेभेषजंदद्या ज्ज्वरमुक्तेविरेचनम् ॥ दोषशेषस्यपाकार्थमग्नेःसन्धुक्षणायच । लंघितश्चाप्यदोषश्चे द्यवागूपानमाचरेत् ॥ शालिषष्टिकमुद्गानांयूषंवाशस्तमाचरेत् । पञ्चकोलेनसंसिद्धांय वागूंमध्यलंघने ॥ अत्यर्थंलंघितंदृष्ट्वातस्यसंतर्पणंहितम् ॥ द्राक्षादाडिमखर्जूरपियालैः सपरूषकैः ॥ तर्पणार्हस्यकर्तव्यन्तर्पणंज्वरशान्तये ॥ १६ ॥

आत्रेयजीने कहाहै कि ज्वरके आदि में लंघन ज्वरके मध्यमें पाचन ज्वरके अन्तमें औषध और ज्वरके छूटजाने पर विरेचन देनाचाहिये लंघनकिये हुए मनुष्यको शेष दोषों के परिपाक के लिये और अग्निको प्रज्वलितकरने के लिये शालि तथा साठीके चांवलोंकी यवागू अथवा मूंगका यूष पिला- वे मध्यमलंघन युक्त पुरुषको पंचकोलसे बनीहुई यवागूपानकरावे और अत्यन्त लंघनयुक्त पुरुषको

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संतर्पण हितक… दाख,अनार,खजूर, चिरौंजी और फालसे के द्वारा संतर्पण के योग्य …रुषको…ज्वर की शांतिके लिये संतर्पण देनाचाहिये ॥ १६ ॥

अत्रलंघनशब्देनानशनमुच्यते । (यतआहसुश्रुतः) आ…स्तिमितैर्दोषैर्यावन्तं कालमातुरः । तावत्वनशनंकुर्यात्ततःसंसर्गमाचरेत् ॥ आन…मितैर्दोषैःसम्बद्धः(सं सर्गऔषधान्नादिप्रसंगम् (यतआहचरकः) चतुःप्रकारासं… पिपासामारुतातपौ। पाचनान्युपवासश्चव्यायामश्चेतिलंघनम् ॥ चतुःप्रकाराःसं… वमनञ्चविरेचनम्। निरूहवस्तिशिरोविरेचनानि। नत्वनुवासनंतस्यबृंहणत्वात् … लंघ…कर्षणमित्यर्थः। (तथाचसुश्रुतः) शरीरलाघवकरंयद्द्रव्यंकर्म्मवापुनः । तं… नमितिज्ञेयंबृंहणंतुपृथ ग्विधम् ॥ लंघनकर्षणादन्यत्शरीरपोषकमित्यर्थः ॥ २० ॥

यहाँ लंघन शब्द से अनाहार लेनाचाहिये क्योंकि सुश्रुतमें कहाहै … बद्धदोषों से युक्तरहै तबतक उपवासकराना चाहिये पीछे औषध और आहारका सेव… है कि चार प्रकार की संशुद्धि तृषा वायु धूप पाचन उपवासऔर व्यायाम … हैं चारप्रकारकी संशुद्धि अर्थात् वमन विरेचन … ग्रहण नहीं होता क्योंकि वह धातुवर्द्धक है और ऐसाही … श्रुतने कहा है कि जो … शरीरको हलकाकरनेवाला होता है उसको लंघन कहतेहैं और बृंहण इससे पृथक् … विपरीत शरीरका पुष्टकरनेवाला होताहै ॥ २० ॥

ननु आनद्धस्तिमितैर्दोषैरित्यादिपूर्वोक्तसुश्रुतवचनात्सामान्यतो… नरूपंलंघनंक्रियते। तथाचतुःप्रकारासंशुद्धिः । इत्यादिचरकवचना… सर्वैर्ज्वरिभिःकथंनक्रियते। तत्रोच्यतेवमनादिकमवस्थाविशेषेषुक्रिय…तुसर्वे… थाचसुश्रुतः) सोत्क्लेशेबलिनेदेयंवमनंश्लैष्मिकज्वरे। पित्तप्रायेवि…स्तुकार्य्यःप्रशिथि लाशये ॥ सरुजेऽनिरुजेकार्य्यःसोदावर्त्तेनिरूहणम् । कफाभिपन्नेशिरसिकार्य्यंमूर्द्धवि रेचनम् ॥ २१ ॥

अबयह सन्देह होताहै कि [आनद्धस्तिमितैर्दोषैः] इत्यादि पूर्वोक्त सुश्रुत के वचनकेद्वारा सामा-न्यतासे ज्वरयुक्त मनुष्य जैसे उपवासरूप लंघन करतेहैं उसीप्रकार [चतुःप्रकारासंशुद्धिः] इत्यादि चरकके वचनसे वमनादि रूप लंघन संपूर्ण ज्वरवाले क्योंनहीं करते इसकाउत्तर यह है कि वमना-दिक अवस्था के अनुसार दियेजाते हैं संपूर्ण ज्वरवालोंको नहीं और ऐसाही सुश्रुत ने कहाहै कि मतली युक्त बलवान् मनुष्य को कफ ज्वर में वमन पित्तकी अधिकता तथा आशयकी शिथिलतामें विरेचन पीडायुक्त अथवा पीड़ा रहित उदावर्त्त समेत ज्वरमें निरूहण और शिरमें कफ भरेहोने पर शिरका विरेचन देनाचाहिये ॥ २१ ॥

अपिच । सर्वज्वरिभिःपिपासाविग्रहश्चनकार्यः (यतआहहारीतः) तृष्णागरीयसी घोरासद्यःप्राणविनाशिनी। तस्माद्देयंतृषार्त्तायपानीयंप्राणधारणम् ॥ अतोऽवस्थाविशे षेएवपिपासासहनंज्वरिभिमारुतसेवनंचकार्य्यं । सुश्रुतेनप्रवातसेवनस्यसर्वथानिषिद्ध

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...पूत्। ...तसेवनमप्यवस्थाविशेषएवउक्तम् । आतपसेवनंच...रथाविशेषएव युक्त... ॥ २२ ॥

संपूर्ण ज्वरोंमें तृषाका रोकना अनुचितहै क्योंकि हारीतने कहाहै कि तृषा अत्यन्तभयंकर और शीघ्रही प्राणोंकी नाश करनेवाली होती है इसलिये तृषासे व्याकुल मनुष्य को प्राणों के धारण करनेके लिये जल देना चाहिये और ... अवस्था के अनुसार तृषा का रोकना और वायुका सेवन ज्वर वालों को उचितहै क्योंकि सुश्रुत ने वायुके सेवनका सब प्रकारसे निषेध किया है इसीलिये वायुका सेवन अवस्था विशेषमेंही कहा गयाहै और धूप का सेवनभी अवस्था विशेषही में योग्यहै ॥ २२ ॥

लङ्घनाम्बु...वागूभिर्यदादोषोनपच्यते । तदा तु मुखवैरस्यं तृष्णारोचकनाशनैः । ज्वरघ्नैःपाचनै...र्वैद्यःकषायैःसमुपाचरेत् ॥ इत्यत्रलङ्घनपाचनयोःस्फुटएवभेदः । व्यायामोऽपिनकार्य्यस्त... ...ति... इत्वात् । अवस्थाविशेषेपुनःपार्श्वपरिवर्त्तनादिरूपःसोऽपिकर्त्तव्यःतस्मा... ...काराःक्षुत्शुद्धिरित्यादिश्लोकेलङ्घनपदंकर्षणपर्य्यायमितिनिर्णीतम् २३

लंघन... ...यवागू ... द्वारा दोष का परिपाक न होय तो मुखकी विरसता तृषा तथा अरुचि ...आमक्ष... ...पाचन ...र ... को हित कषायों के द्वारा वैद्यको चिकित्सा करनी चाहिये यहां ... ... व्यायाम भी न करने चाहिये क्योंकि इसका ...क वायु, तृ... परन्तु अवस्था विशेष ... करवट ... आदिक व्यायाम करना चाहिये इससे (चतुः ... क्षय मार्ग ... इत्यादि श्लोक में लंघन शब्द कर्षणवाची है यह निश्चय हुआ ॥ २३ ॥ ...प... वायु...

अनशनरूपस्यलङ्घनस्यफलमाह ॥

...नीतेदोषेसन्धुक्षितेऽनले । विज्वरत्वंलघुत्वंचक्षुच्चैवास्योपजायते ॥ लङ्घ... ...प्रवृद्धेक्षयंनीते । यतआह । आहारंपचतिशिखीदोषाहारवर्जितः । पच... ...धुक्षिते... ...तेआच्छादकदोषेक्षीणेऽग्नौप्रदीप्तेयथोक्तसम्प्राप्तिसामग्रीविघटनात् ...विज्वरत्वंशरीरस्थैर्य्येपुरवाभावेनलघुत्वम् । क्षुत्बुभुक्षा च जायतेइत्यर्थः ॥ २४ ॥

कच्चाजल एकपहर ... पहरमें परि...

अनाहाररूप लंघन का फल ॥

लंघन के द्वारा दोषों के क्षय होनेपर और अग्नि के दीप्त होनेपर ज्वर का नाश शरीर में हलकापन और क्षुधाहोती है और ऐसाही कहागयाहै कि अग्नि आहारको परिपाक करतीहै और आहार के अभाव में दोषों का परिपाक करती है अर्थात् अग्नि के द्वारा इसके ढकने वाले दोषों के क्षीण होजाने से अग्नि दीप्त होनेपर पहली कहीहुयी सम्प्राप्ति की सामिग्री का नाश होताहै इसी से ज्वर चलाजाता है शरीर में हलकापन और क्षुधा उत्पन्न होती है ॥ २४ ॥

अन्यच्चाहसुश्रुतः । अनवस्थितदोषाग्नेर्लङ्घनंदोषपाचनम् । ज्वरघ्नंदीपनंकांक्षारुचिलाघवकारकम् ॥ अनवस्थितदोषाग्नेःस्वस्थानादितस्थतोगतोदोषोअग्निश्चयस्यज्वरिणः काङ्क्षाअन्नाभिलाषःरुचिःलङ्घनेनामपाकान्मुखशोषादिनाशेमुखस्ययत्प्रकृतत्वं सैवरुचिःशोभारुचिःस्त्रीदीप्तिशोभायामभीष्टार्थाभिलाषयोरितिमेदिनीकारः ॥ २५ ॥

सुश्रुत ने और भी कहाहै कि जिसके दोष तथा अग्नि अपने स्थानसे इधर उधर चलेजाते हैं

१ अभिष्वङ्गेस्पृहायां च गभस्तौ च रुचिः स्त्रियामित्यमरः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उस ज्वरवाले [illegible] घनदोषों का पचानेवाला, ज्वरघ्न, अन्नमें रुचि, आमके परिप [illegible] से मुख के सूखने आदिको नाशकरके शोभा करनेवाला और शरीरको हलका करने वाला होताहै [illegible]।

सम्यक्कृतस्यलंघनस्यलक्षणमाह ॥

वातमूत्रपुरीषाणांविसर्गेगात्रलाघवे । हृदयोद्गारकण्ठास्य[illegible]तन्द्राक्लमेगते ॥ स्वेदेजातेऽरुचौचापिक्षुत्पिपासासहोदये । कृतंलंघनमादेश्यं नि[illegible]चान्तरात्मनि ॥ हृदयस्यशुद्धिरनवरोधः। उद्गारशुद्धिःसधूमाम्लोद्गाराभावः कण्ठस[illegible]तरसत्वम्। तंद्राक्लमे तंद्राचक्लमश्चतस्मिंस्तंद्रानिद्राक्लमेऽत्रग्लानिःक्षुत्पिपासासहो[illegible]क्षुत्पि[illegible]पासयोःसहयुगपदुदये। अन्तरात्मनिमनसि। एतानिलक्षणानिमिलितान्येवस[illegible]कृतंल[illegible]नंबोधयन्ति। नतुप्रत्येकम् ॥ २६ ॥ अच्छे प्रकारसे किये हुये लंघनके लक्षण [illegible]

अच्छे प्रकार लंघन किये जानेपर आगे कहेहुए संपूर्ण लक्षण इकट्ठे होते हैं [illegible]मूत्र तथा मल का निकला शरीर में हलकापन हृदय की शुद्धता (हृदयका न रुकना) डकार[illegible]ता (मधुर और खट्टी डकारका न आना) कंठकी शुद्धता (कंठमें कफलिप्त[illegible] न होना [illegible] शुद्धता (मुखमें स्वाभाविक रसका होना)तन्द्रा तथा ग्लानिका नाश क्षुधा और [illegible]की सा[illegible] स्वेद निकलना रुचिहोना और मनका प्रसन्न होना [illegible] ॥ २६ ॥

हीनस्य लं[illegible]नस्यलक्षणमाह ॥

कफोत्क्लेशःसहल्लासःष्ठीवनंचमुहुर्मुहुः । कण्ठस्यहृदयाशुद्धिस्तंद्रा[illegible] उपस्थितवमनत्वमिवकफोत्क्लेशः कफस्यवमनायोपस्थितिः । हल्लास[illegible] त्कफनिर्गमः ॥ २७ ॥ हीन लंघन के लक्षण ॥

कफका उत्क्लेश (मानोवमनहोना चाहतीहै) हृल्लास (मतली) बार बार [illegible]दयसे [illegible] कलना कंठ तथा हृदयकी अशुद्धता और तन्द्रा यह हीनलंघनके लक्षणहैं [illegible] ॥

अतिशयितस्यलंघनस्यलक्षणमाह ॥

पर्वभेदोङ्गमर्दश्चकासःशोषोमुखस्यच। क्षुत्प्रणाशोऽरुचिस्तृष्णादौर्बल्यंश्रोत्रनेत्रयोः॥ मनसःसंभ्रमोऽभीक्ष्णमूर्ध्ववातास्तमोहृदि । देहाग्निर्बलहानिश्चलंघनेऽतिकृतेभवेत् ॥ अरनिर्बलहानिश्चलंघनेऽतिकृतेभवेत्। कर्णनेत्रयोःस्वंविषयग्रहणासामर्थ्यम्॥ मनसःसंभ्रमःभ्रांतिः। ऊर्ध्ववातःउद्गारवाहुल्यम् ॥ हृदितमःअंधकारप्रविष्टस्यैवज्ञानम् ॥ २८ ॥

लंघनकी अधिकताके लक्षण ॥

लंघनकी अधिकता में आगे कहे हुए लक्षण होते हैं संधियोंका टूटना, शरीरमें पीडा, खांसी, मुखका सूखना, क्षुधा न लगना, अरुचि, तृषा, कान तथा नेत्रों की शक्तिका घटना, भ्रान्ति, वारंवार डकार आना, अंधकारमें घिराहुआसा मालूम होना और देह तथा अग्निके बलका नाश अथवा ग्लानि तथा बलका नाश ॥ २८ ॥

बलरक्षणं लङ्घनंकारयेदित्याह ॥

बलाविरोधिनाचैनंलंघनेनोपपादयेत् । बलाधिष्ठानमारोग्यंयदर्थोऽयंक्रियाक्रमः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अ[illegible]र्थः । [illegible]नर॥गनंबलाविरोधिनाअनतिबलक्षयकारिणालंघनेनउप[illegible]देदुपचरेत् कुतइ[illegible]त्राह । यदर्थमस्मैआरोग्यायअयंक्रियाक्रमः॥ चिकित्सोपक्रमः। ततःआरोग्यंबलाधिष्ठानंबलाश्रय[illegible]र्थः ॥ २९ ॥

[illegible]क लंघन कराना चाहिये इसको कहते हैं॥

रोगीको जिस्से बहुत [illegible] क्षय न होय ऐसा लंघन कराके चिकित्सा करनी चाहिये क्योंकि चिकित्सा आरोग्य के लि[illegible]ा करती है और आरोग्यका आशय बलहै ॥ २९ ॥

केषाञ्चिदनशनस्या[illegible]माहसुश्रुतः। तद्धिमारुततृष्णाक्षुतमुखशोषश्रमान्वितैः॥न कार्य्येगुर्व्विणीबालवृद्ध[illegible]भीरुभिः॥ नक्षयाध्वश्रमक्रोधकामशोषचिरज्वरी।तत्रअनशनं।उल्बणमारुतयुक्ते[illegible]रिणानकार्य्यमारुतेऽत्रनिरामोबोद्धव्यः ॥ सामेमारुतेलंघनं कार्य्यमेव । [illegible]तन्त्रान्तरे। अवश्यमेवकुर्वीतज्वरीसामेसमीरणे॥ लङ्घनंह्यामपाकार्थं नतदूर्ध्वंयथा[illegible] तदूर्ध्वं आमपाकादूर्ध्वम् । अतएवोक्तम् । कफपित्तेद्रवेधातुसहेतेलंघनंबहु [illegible]आमक्षयादूर्ध्वमपिवायुर्नसहतेक्षणम् । लाघवात् ॥ ३० ॥

कु[illegible]रोगियोंके लंघनका निषेध सुश्रुत ने कहाहै॥

[illegible]क वायु, तृषा, क्षुधा, मुखका सूखना तथा भ्रमसे युक्त गर्भिणी स्त्री, बालक, वृद्ध, दुर्बल, भय-[illegible] क्षय मार्गका श्रम, क्रोध, खांसी, शोष तथा जीर्णज्वरसे युक्त इन सबको लंघन नहीं कराना [illegible]पै वायु शब्द से आम रहित वायु लेनी चाहिये क्योंकि आमयुक्त वात में लंघन कराना [illegible]ान्तरमें कहागयाहै कि ज्वरवाला आमयुक्त वातमें आमके परिपाकके लिये लंघन [illegible]जब एकपहर समान आमके परिपाक के उपरान्त लंघन न करे इसीसे कहागया है कि पहरमें परि[illegible]को धातुहैं यह आमके परिपाकके उपरांत भी बहुत लंघनको सहसके हैं परन्तु परिपाक[illegible] उपरान्त क्षणभर भी लंघनको नहीं सहसक्ती ॥ ३० ॥

आमस्यलक्षणमाह ॥

आहारस्यरसःसारोयोनपक्कोऽग्निलाघवात् । आमसंज्ञाञ्चलभतेबहुव्याधिसमाश्रयः ॥ तन्त्रान्तरेतु । आममन्नरसंकेचित्केचित्तुमलसञ्चयम् । प्रथमंदोषदुष्टिंवाकेचिदामंप्रचक्षते ॥ अविपक्कमसंसक्तंदुर्गंधंबहुपिच्छिलम् । सादनंसर्वगात्राणामामइत्यामशब्दितः॥ तेनामेनसमायुक्ता दोषादूष्याश्चताद्दशाः । तदुद्भवाआमयाश्चसामाइति बुधैःस्मृताः ॥ ३१ ॥

आमकालक्षण ॥

आहारका सारांश रस जोकि अग्निके हलके पनेसे परिपाकको नहीं प्राप्तहोताहै वह आम कहलाताहै इससे बहुतसे रोग होते हैं तन्त्रान्तरमें कहागयाहै कि कोई २ पण्डित अन्न के रसको कोई २ संचित मलको और कोई २ दोष के प्रथम विकारको आमकहते हैं परिपाक को नहीं प्राप्तहुआ विना मिला हुआ दुर्गन्धि युक्त बहुत चिकना और संपूर्ण शरीरको पीडा देनेवाला आम कहलाताहै आमयुक्त दोष (वात पित्त कफ) तथा दूष्य (रस, रुधिर, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और वीर्य) और आमजनित रोग साम कहलातेहैं ॥ ३१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तत्र सामस्यवातस्यलक्षणमाह ॥

वायुःसामोविबन्धाग्निःसादतंद्रांत्रकूजनैः । वेदनाशोथनिस्तोदैःक्रम[illegible]निपीडयेत् ॥ विचरेद्युगपच्चापिगृह्णातिकुपितोभृशम् । स्नेहाद्यै[illegible]द्धिमायातिमेघःसूर्य्योदयेनिशि ॥ विचरेदयुगपत्वायुरामश्चैककालंविचरेत्तुकुपित[illegible]वायुः । भृशमतिशये नगृह्णात्यङ्गानीत्यर्थः ॥ ३२ ॥

आमयुक्त वातके लक्षण ॥

आमयुक्त वात,विबन्ध,मंदाग्नि,तन्द्रा,आंतोंमें गुडगुडाशब्द,सूजन[illegible] सुईगडनेके समान क्रमसे संपूर्ण शरीरमें पीड़ाकरती है कुपित आमयुक्त वात आमके साथ [illegible]ही संपूर्ण शरीरमें विचरती हुई सर्वांगोंको ग्रहण करती है और स्नेहादिकों से मेघोंके आगमन मे [illegible]के उदय में तथा रात्रि में वृद्धिको प्राप्त होती है ॥ ३२ ॥

वातस्यतस्यैवनिरामस्यलक्षणमाह ॥

निरामोविशदोरूक्षोनिर्गन्धोऽत्यल्पवेदनः।विपरीतगुणैःशांतिःस्निग्धैर्यातिवि[illegible]षतः ३३

आमरहित वात के लक्षण ॥

आमरहित वात.विशद, रूखी,गन्धरहित और थोडी पीडावाली होती है और विपरीत [illegible] और विशेषकरके स्निग्ध वस्तुओं से इसकी शान्ति होती है ॥ ३३ ॥

अथ प्रसङ्गात्सामस्यपित्तस्यलक्षणमाह ॥

पित्तंसामंभवेदम्लंदुर्गंधंहरितंगुरु । अम्लिकाकण्ठहृद्दाहकरंश्य[illegible] अम्लिकाअम्बिलस्तुचुर्कीतिलोके ॥ ३४ ॥

प्रसंग से आमसहित पित्तके लक्षण ॥

आमसहित पित्त. खट्टा, दुर्गन्धियुक्त, हरा, भारी, खट्टीडकार लाने वा[illegible] कण्ठ [illegible] दाह करनेवाला, धूसरवर्ण और स्थिर होता है ॥ ३४ ॥

पित्तस्यतस्यनिरामस्यलक्षणमाह ॥

निरामंपित्तमाताम्रमत्युष्णंकटुकंसरम् । दुर्गन्धिरुचिकृद्वह्निबलवर्द्धनमीरितम् ३५॥

आमरहित पित्तके लक्षण ॥

आमरहित पित्त.ताम्रवर्ण अत्यन्तउष्ण,कटु,दस्तावर,दुर्गन्धियुक्त, रुचिकारक और अग्निके बलका बढ़ानेवाला होताहै ॥ ३५ ॥ अथ सामकफस्यलक्षणमाह ॥

आलस्यतन्द्राहृदयाविशुद्धिर्दोषाप्रवृत्त्याविलमूत्रताभिः । गुरूदरत्वारुचिसुप्ततामिरामान्वितंव्याधिमुदाहरन्ति ॥ आमञ्जयेलङ्घनकोष्णपेयालघ्वन्नसूपौदनतिक्तयूषैः । विरूक्षणस्वेदनपाचनैश्चसंशोधनैरूर्ध्वमधस्तथैव । तद्विमारुततृष्णायांलङ्घनंकार्य्यमेवच । तथामुखशोषभ्रमावपिनिरामावेवविवक्षितौसामयोस्तुतयोर्ल्लङ्घनंकार्य्यमेवगुर्व्विणीबालवृद्धादिभिरपिनिरामैरेवनैवलङ्घनंकार्य्यंसामैःपुनस्तैरपिलङ्घनंकार्य्यमेव। क्षयेधातुक्षयेराजयक्ष्माचवातजेज्वरे ॥ ३६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आमसहित कफके लक्षण ॥

[illegible] कफसे आलस्य,तन्द्रा,हृदय में शुद्धताका न होना,दोषोंका न निकलना,गँदला मूत्र होना,उदरका भारी होना,अरुचि और निद्रा अधिकहोतीहै लंघन, कुछ उष्णपेया,हलकाअन्न, दाल, भात,तिक्तयूष, रूखास्वेद,पाचन और ऊपर तथा नीचे का शोधन इनसबसे आम का नाश करना चाहिये मुखका सखना और श्रम यह जब आमरहित मनुष्य में होयँ तो लंघन न करावे और जो आम सहित होयँ तो करावे गर्भिणीस्त्री बालक और वृद्धादिक जो आमरहित हों तो लंघन न करें और आम सहित होयँ तो यह भी लंघन करें ॥ ३६ ॥

लङ्घनंनकार्य्यंज्वरीलङ्घनेऽपिजलंपिबेदित्याहसुश्रुतः । तृषितोमोहमायातिमोहात्प्राणान्विमुञ्चति। अतःसर्व्वास्ववस्थासुनक्कचिद्वारिवर्ज्जयेत्। हारीतेनोक्तम् । तृष्णागरीयसीघोरासद्यःप्राण[illegible]शिनी।तस्माद्देयंतृषार्त्तायपानीयंप्राणधारणम्। अवश्यंपेयमपि जलंज्वरीकिञ्चिद्वा[illegible]नूपिबेत्। यतआहसुश्रुतएव।जीविनांजीवनंजीवोजगत्सर्वन्तुतन्मयम्। अतो[illegible]निषेधेननक्कचिद्वारिवारयेत् ॥ जीवनंजलंकिंचित्तु[illegible]रयेदेव । तथाच [illegible]ज्वरनावुदरेतथा।अरोचकेप्रतिश्यायेप्रसेकेश्वयथौक्षये॥ व्रणेचमधु[illegible]त्। मुखप्रसेकेअल्पंपिबेत् मन्दमाचरेत्पिबेत्॥ यत आह । अ[illegible]ऽपिप्रयोजितम्।प्रयातिश्लेष्मपित्तत्वंज्वरितस्यविशेषतः ॥३७॥

[illegible] न भी जलपिये यह सुश्रुतने कहाहै कि प्यासा जल न मिलने से मोह को प्राप्त [illegible] प्राणों को त्याग करताहै इसलिये किसी अवस्थामें भी जलपान निषेध नहींहै [illegible] अत्यन्त भयंकर और शीघ्रही प्राणकी नाश करनेवाली होतीहै इसलिये [illegible] के निमित्त प्यासे को जल देना चाहिये यद्यपि जलपीना अवश्य है तथापि [illegible] जल पिये क्योंकि सुश्रुत ने ही कहाहै कि जल जीवों का जीवनहै और संपूर्ण संसार जलमयहै [illegible]लिये जलका अत्यन्त निषेध कहींभी न करना चाहिये अर्थात् कुछनिषेध करना चाहिये और ऐसा कहागयाहै कि ज्वर,नेत्ररोग,कुष्ठ,मंदाग्नि,उदर,अरुचि,जुकाम मुखसेपानी छूटना,सूजन,क्षय,घाव और मधुप्रमेह इनरोगों में बहुत थोड़ा जलपीना चाहिये तृषा लगनेपर भी बहुत पिया हुआजल कफ और पित्त रूप होजाताहै और विशेष करके ज्वरवाले को ॥ ३७ ॥

तच्चजलंनवज्वरीशीतलंनपिबेदित्याहसुश्रुतः॥ नवज्वरेप्रतिश्यायेपार्श्वशूलेगलग्रहे। सद्यःशुद्धौतथाध्मानेव्याधौवातकफोद्भवे॥ अरुचिग्रहणीगुल्मश्वासकासेषुविद्रधौ। हिक्कायांस्नेहपानेचशीतंवारिविवर्ज्जयेत्(अन्यच्चसएव)सेव्यमानेनशीतेनज्वरस्तोयेनवर्द्धते। अत्रशीतंजलंअक्कथितंनिषिद्धम्। तथासतिक्कथितमायातम्॥ ३८॥

नवीन ज्वरवाला शीतल जल न पिये यह सुश्रुत ने कहाहै कि नवीन ज्वर,जुकाम,पसली की पीड़ा,गलेका रोग,जिसको शीघ्रही वमन विरेचनादि दिये गयेहों,आध्मान, (अफरा) वात तथा कफके रोग,अरुचि,ग्रहणी,गुल्म,श्वास,खांसी,विद्रधि, हिचकी और स्नेहपान इन संपूर्ण बातों में शीतलजल वर्ज्जित है और भी सुश्रुतहीने कहाहै कि शीतल जल पीनेसे ज्वर बढ़ताहै यहां शीतल जल बिन औटाया हुआ निषिद्धहै न कि औटायाहुआ ॥ ३८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तत्रक्वथितस्यविधिर्गुणश्च ॥

क्वाथ्यमानंतुनिर्वेगंनिष्फेनंनिर्म्मलंचयत्। तत्तोयंक्वथितंज्ञेयंदोषघ्नंपाचनं ... ॥ ३९॥

जलके क्वाथकीविधि और गुण ॥

अग्निमें धीरे २ औटायागया फेनारहित निर्मल जलको क्वाथ किया हुआ जल कहते हैं यह दोषघ्न, पाचक और हलका होताहै ॥ ३९ ॥

निर्वेगंशनैःक्वथितस्यविधानमाहसुश्रुतः ॥

वातश्लेष्मज्वरार्त्तायहितमुष्णाम्बुतृप्यते। दीपनंस्यात्तु कफजेवातपित्तानुलोमनम् ॥ तद्धिमार्दवकृद्दोषःस्रोतसांशीतमन्यथा(वाग्भटश्च)तृष्णायांप्राप्तमुष्णाम्बुपिबेद्वातकफज्वरे। तत्कफंविलयंनीत्वातृष्णामाशुनिवर्त्तयेत्॥उदीर्य्यचाग्निंस्रोतांसिमृदुकृत्यविशोधयेत्। वातपित्तकफस्वेदशकृन्मूत्राणिसारयेत् ॥ ४० ॥

क्वाथकियेहुए जलकी विधि सुश्रुतने कहीहै ॥

वातकफज्वर और कफज्वरमें गरम जल हितकारी दीपन तृप्तिकारी वातपि... करने वाला और दोष तथा स्रोतोंको कोमलकरनेवाला होता है और शीतल जल इ... विपरीत वालाहै और वाग्भटने कहाहै कि वात कफ ज्वर में प्यास लगने से गरम जल ... नाश होकर शीघ्रही तृषा निवृत्त होतीहै अग्नि दीप्त होकर स्रोत कोमल होकर ... वात,पित्त,कफ,स्वेद,मल तथा मूत्र यहसब निकलजातेहैं ॥ ४० ॥

अथोष्णोदकस्यलक्षणंगुणाश्च ॥

क्वाथ्यमानन्तुनिर्वेगंनिष्फेनंनिर्म्मलंतथा । अर्द्धावशिष्टंयत्तोयंत... ज्वरकासकफश्वासपित्तवातामभेदसाम्। नाशनंपाचनञ्चैवपथ्यमु...दकंस...

उष्णजल के लक्षण और गुण ॥

जो जलमन्दअग्निमें धीरे २ गरम करनेसे आधा बाकीरहै और फेनारहित तथा निर्मलहो उसको उष्ण जल कहते हैं यह ज्वर, खांसी, कफ,श्वास,पित्त,वात,आम तथा मेदनाशक, पाचक और सदैव पथ्य होताहै ॥ ४१ ॥

अथर्त्तुभेदेजलस्यपाकभेदः ॥

त्रिपादशेषंसञ्जिलंग्रीष्मेशरदिशस्यते (अन्येतु) निदाघेत्वर्द्धपादोनंपादहीनंतुशारदम्। हिमेऽर्द्धशेषंशिशिरेतथावर्षावसन्तयोः॥शिशिरेचवसंतेचहिमेचार्द्धावशेषितम्। अष्टमांशावशेषंतुवारिवर्षासुशस्ते ॥ इतिकेचिद्बुधाःप्रावृट्वर्ज्येष्वागमदर्शनात्(केचित्)पक्षयोस्त्रिषुवेदेषुबाणेष्वंगेषुवस्तुषु। एषुभागावशेषंस्याद्म्बुवर्षादिषुक्रमात्॥४२॥

ऋतु के भेद से जलके पाककरने का भेद ॥

शरद् तथा ग्रीष्म ऋतुमें तिहाई जलाहुआ जल और हेमन्त शिशिर वर्षातथा वसन्त में आधा जलाहुआ जल श्रेष्ठहोताहै और कोई कहतहैं कि ग्रीष्म ऋतुमें अष्टमांश जलाहुआ शरद् ऋतु में चौथाई जलाहुआ शिशिर वसन्त तथा हेमन्त ऋतुमें आधाजला हुआ और वर्षा ऋतुमें अष्टमांश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब हुआ ज श्रेष्ठ होताहै कोई पण्डित तो शास्त्रोंको देखकर ऐसा कहतेहैं कि ऋतुमें आधा बचा हु रद् ऋतुमें तिहाई बचाहुआ हेमन्त ऋतुमें चौथाई वसन्तमें पंचमांश ग्रीष्म ऋतु में षष्ठांश और प्रावृट् ऋतुमें सप्तमांश बचाहुआ जल श्रेष्ठ होताहै ॥ ४२॥

अत्रदोषाणांयथोल्बणताहीनतावातथाऽव्यवस्थाकल्पनीया । तत्पादहीनंपित्तघ्नमर्द्ध हीनंतुवातनुत् । त्रिपादहीनंश्लेष्मघ्नंसंग्राह्यग्निप्रदीपनम् ॥ गुणाश्चात्रिपादहीनस्यतं त्रांतरे । आरोग्याम्बुसंज्ञातस्यलक्षणं । पादशेषंतुयत्तोयमारोग्यांबुतदुच्यते । आरोग्यां बुसदापथ्यंकासश्वासकफापहम् । सद्योज्वरहरंग्राहिदीपनंपाचनंलघु । आनाहपाण्डुशू लार्शोगुल्मशोथोदरापहम् ॥ ४३ ॥

यहां दोषोंकी वृद्धि तथा हीनता के अनुसार व्यवस्था करनी चाहिये चौथाई जलाहुआ जल. पित्त नाशक, आधाजलाहुआ वातनाशक और चौथाई बचाहुआ जल कफनाशक ग्राही और दीपन होता है चौथाई बचेहुए जलको तन्त्रान्तरमें आरोग्य जल कहाहै इसके लक्षण और गुण कहेजातेहैं औटाने से चौथाई बचाहुआ जल आरोग्य कहाताहै यह सदैव पथ्य, शीघ्र ज्वरनाशक, ग्राही, दीपन, पाचक और खांसी, श्वास, कफ, आनाह, पांडु, शूल, बवासीर, गुल्म, सूजन तथा उदरनाशक होताहै ४३॥

अथऋतुभेदेजलस्यग्रहणायदेशभेदः ॥

रविर्गेबोध्रव्यं हेमंतेशिशिरेचांबुसारसंवातडागजम् । वसंतग्रीष्मयोःकौप्यंवा र्दंतिनम् ॥ नादेयंवारिनादेयंवसन्तग्रीष्मयोर्बुधैः । विषवत्पत्रपुष्पादिदुष्ट ॥ औद्भिदंचान्तरीक्षंवाकौप्यवाप्राट्षिस्मृतम् । शस्तंशरदिनादेयंनीर रविकरैरुष्णंनिशिशीतकरांशुभिः । ज्ञेयमंशूदकंनामस्निग्धंदोषत्रया नभिष्यंदिनिर्दोषञ्चान्तरीक्षजलोपमम् । बल्यंरसायनंमेध्यंशीतंलघुसुधासम १ (अन्यच्च) शरत्सुगस्त्येरुदयादखिलंसलिलंहितम् (वृद्धसुश्रुतः) कार्त्तिकेमार्ग शीर्षेचजलमात्रंप्रशस्यते ॥ अथर्त्तुपक्कमपिजलंविषयविशेषेशीतलंपिबेदित्याहसुश्रुतः । मूत्रकृच्छ्रेपाण्डुरोगेतृष्णाच्छर्दिश्रमेषु च । मद्य दाहातीसारपित्तास्रमूर्च्छामद्यविषार्त्तिषु ॥ सन्निपातसमुत्थेषुशृतशीतंप्रशस्यते ॥ ४४ ॥ पानसमुद्भूतेरोगेपित्तोत्थितेतथा ।

कच्चाजल एकपहर पहरमें परि

ऋतुभेदसे जलके लेनेके लिये देशभेद ॥

हेमन्त तथा शिशिर ऋतुमें सरोवर तथा तडागका जल. वसन्त तथा ग्रीष्मऋतु में कूपका बावडीका तथा झरनेका जल ग्रहण करना चाहिये और वसंत तथा ग्रीष्मऋतुमें नदीका जल नहीं ग्रहण करना चाहिये क्योंकि पत्र पुष्पादिकों के द्वारा दूषित झरनोंके योगसे वह विषके तुल्यहोजाताहै वर्षाऋतुमें उद्भिज, अन्तारिक्ष तथा कुएँका जल श्रेष्ठ है शरदऋतु में नदीका जल और अंशूदक अत्यन्त श्रेष्ठ है (दिनभर सूर्यकी किरणों से तपाहुआ और रात्रिभर चन्द्रमा की किरणोंसे शीतल हुआ जल अंशूदककहाताहै) यह स्निग्ध, दोषनाशक, अभिष्यन्द रहित, अन्तारिक्षजलके समाननिर्दोष, बलकारक, रसायन, मेधाको हित, शीतल, हलका और अमृतके समान गुणकारी होताहै औरभी कहा गयाहै कि शरदऋतुमें अगस्त्यके उदयहोनेसे संपूर्ण जल हितकारी होतेहैं वृद्ध सुश्रुतने कहाहै कि

(१) वेदेतुच्छान्दसंहस्वत्वम् अन्तरऋक्षाणयस्यपृषोदरादित्वादित्वम्अस्मिन्पक्षेअन्तारिक्षमिति ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कार्त्तिक और अगहनमें संपूर्ण जल श्रेष्ठ होते हैं ऋतुके अनुसार औटाया हुआ जल अवस्था विशेष में शीतल करके पीना चाहिये ऐसाही सुश्रुतने कहाहै कि दाह, अतीसार, रक्तपित्त, मूर्च्छा तथा विषसे पीडित, मूत्रकृच्छ्र, पांडुरोग, तृषा, छर्दि, श्रम, मद्यपानसे हुए रोग, पित्तरोग और त्रिदोष जनित रोग युक्त मनुष्यको औटाया हुआ जल. शीतल करके पीना चाहिये ॥ ४४ ॥

अथ क्वथितस्यजलस्यशीतलीकृतविशेषमाहसुश्रुतः ॥

शृताम्बुतत्त्रिदोषघ्नंयदन्तर्बाष्पशीतलम्। अरूक्षमनभिष्यन्दिकृमितृट्ज्वरहल्लघु ॥ धारापातेनविष्टम्भिदुर्ज्जरंपवनाहतम्। भिनत्तिश्लेष्मसंघातंमारुतञ्चापकर्षति ॥ अजीर्णंजरयत्याशुपीतमुष्णोदकंनिशि।अन्तर्बाष्पशीतलम्। पिहितमेवशीतलम्॥ ४५ ॥

औटायेहुये जलके शीतल करनेमें विशेषता ॥

सुश्रुत ने कहाहै कि औटाय करके ढकाहुआ जो जल शीतल होताहै वह त्रिदोषनाशक, रुक्षता और अभिष्यन्दरहित और कृमि, तृषा तथा ज्वरनाशक होताहै धार डाल डाल कर जो जल शीतल कियाजाताहै वह विष्टंभी और देरमें पचने वाला होताहै वायुके द्वारा जो जल शीतल कियाजाता है वह मिले हुए कफ का भेदक और वात नाशक होताहै रात्रिमें पियाहुआ उष्ण जल शीघ्र अजीर्णको नाश करताहै ॥ ४५ ॥

अत्रापरेऽपिविशेषाः ॥

दिवाशृतंपयोरात्रौगुरुतामधिगच्छति।रात्रौशृतंदिवापीतंगुरुत्वमधिगच्छति॥ पर्य्युषितंवह्निगुणोत्सृष्टंत्रिदोषकृत्।गुर्व्वम्लपाकंविष्टम्भिसर्वरोगेषुनिन्दि[illegible] पुनस्तप्तंतोयंविषसमंभवेत् ॥ निर्यहोऽपितथाशीतःपुनस्तप्तोविषोपमः [illegible]

इसमें औरभी विशेषताकहीजातीहै ॥

रात्रिका औटाया हुआ जल.दिन में और दिन का औटाया हुआ जल.रात्रि में भारी और औटायाहुआ बासी जल.अग्नि के गुणों को त्याग करके त्रिदोषकारक भारी, पाकमें खट्टा, विष्टंभी और संपूर्ण रोगोंमें निन्दित होताहै औटाया हुआ जल और क्वाथ शीतल होनेसे फिर गरम करने पर विष तुल्य होजाताहै ॥ ४६ ॥

रात्रौतूष्णोदकस्यलक्षणमन्यदाह ॥

अष्टमेनांशशेषेणचतुर्थेनद्विकेनवा ॥ अथवाक्वथनेनैवसिद्धमुष्णोदकंवदेत् ॥ (अथ तस्यगुणाः) श्लेष्मानिलामभेदोघ्नंदीपनंवस्तिशोधनम् । श्वासकासज्वरहरंपीत मुष्णोदकंनिशि ॥ ४७ ॥ रात्रिमें उष्ण जलका अन्य लक्षण कहाजाता है ॥

जैसे कि अष्टमांश बचाहुआ चौथाई बचाहुआ और आधा बचाहुआ अथवा केवल औटाया हुआ जल. उष्णोदक कहाताहै रात्रिमें उष्ण जल पीनेसे कफ, वात, आमदोष, मेद, श्वास, खांसी तथा ज्वरका नाश, अग्निकी दीप्ति और मूत्राशयकी शुद्धता होतीहै ॥ ४७ ॥

रात्रौचउष्णमेवाम्बुतप्तमेवपिबेदित्याह ॥

उष्णंतदग्निजननंलघ्वच्छंवस्तिशोधनम् । पार्श्वरुक्पीनसाध्मानहिक्कानिलकफापहम् ॥ शस्तंतट्श्वासशूलेषुसद्यःशुद्धौनवज्वरे ॥ ४८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...रात्रमें औटाया हुआ जल गरम पीना चाहिये यह कहते हैं

...आ गरम जल. दीपन, हलका, निर्मल, मूत्राशय का शोधक और पसली की पीडा, पीनस, आध्मान, ...हचकी, वात तथा कफकानाशक और तृषा, श्वास, शूल, शीघ्र हुई वमनादिक शुद्धता और नवीन ज्वरमें हितकारी है ॥ ४८ ॥

विषयविशेषेत्वाममेवजलंशीतलंपिबेदित्याहसुश्रुतः । मूर्च्छापित्तोष्णदाहेषुविषेरक्ते मदात्यये। भ्रमश्रमपरीतेषुतमकेश्वयथौतथा। धूमोद्गारेऽविदग्धेऽन्नेशोषेचमुखकण्ठयोः। ऊर्ध्वगेरक्तपित्तेचशीतलाम्बुप्रशस्यते॥ शीतलंजलम् । आममेवनतुक्कथितम्क्कथितन्तु शीतंदाहादिषुयदुक्तं। तत्सज्वरेषुविज्वरेषुनदाहादिष्वामंशीतंप्रशस्यतइतिभेदः ॥ ४९॥

विशेष अवस्थाओंमें कच्चाही शीतल जल पीनाचाहिये यह सुश्रुतने कहाहै कि मूर्छा, पित्त, उष्ण, दाह, विषदोष, रक्तदोष, मदात्यय, भ्रम, श्रम, तमक, श्वास, सूजन, धुमेली डकार, विदग्धअन्न मुख का सूखना, कंठका सूखना और ऊर्ध्वगत रक्त पित्तमें शीतलजलश्रेष्ठ है यहां कच्चा शीतल जल न कि औटाया शीतल जल और औटाया हुआ शीतलजल जो दाहादिक में कहागयाहै वह ज्वरवालों के ...ये कहै और ज्वररहित दाहादिकोंमें तो कच्चाही शीतल जल श्रेष्ठहै यही भेदहै ॥ ४९ ॥

आमादिजलानांजठराग्नीनांपाककालावधिमाह ॥

...आमंजलंपाकमुपैतियामंपक्वंपुनःशीतलमर्द्धयामम् । पक्वंकदूष्णञ्चततोऽर्द्धकालास्त्र ...पैतितुजलस्यपाके ॥ ५० ॥

कच्चे आदि जलकी उदरमें परिपाक होनेकी अवधि ॥

कच्चाजल एकपहरमें औटायाहुआ शीतलजल, आधेपहरमें और औटायाहुआ कुछ गरमजल चौथाई पहरमें परिपाकको प्राप्तहोताहै नियमके अनुसार पियेहुए जलके यह तीनकाल परिपाकहोनेकेहैं ५०॥

रोगविशेषेजलसंस्कारमाह ॥

पित्तमद्यविषार्त्तेषुतिक्तकैःशृतशीतलम्। जलंहितमितिशेषःतिक्तानिबहुलानितेभ्यो निश्चित्ययोगमाहसुश्रुतः ॥ मुस्तपर्पटकोदीच्यच्छत्राख्योशीरचन्दनैः । शृतंशीतंज लंदद्यात्तृड्दाहज्वरशान्तये (छत्राऽत्रधान्याकः) यतआहनिघण्टौधन्वन्तरिः । कुस्तु म्बुरुःस्वर्णिकाचछत्राधान्यंवितुन्नकम् ॥ इत्यदितद्गुणाश्च धान्यकंदीपनंरुच्यंपाचनं स्वादुपाकिच । दोषत्रयतृषादाहश्वासकासज्वरप्रणुदित्यादि ॥ ५१ ॥

रोगविशेष में जल के संस्कार कहतेहैं ॥

पित्त मद्य तथा विषसे पीडित मनुष्य को तिक्त द्रव्यों के द्वारा औटाया हुआ शीतल जल श्रेष्ठहै तिक्त वस्तु बहुतसी हैं उनमें से सुश्रुत का कहाहुआ योग कहाजाताहै मोथा, पित्तपापडा, सुगन्धबाला, छत्रा, खस और चन्दन इनके साथ परिपाक कियेगये और शीतल कियेहुए जलको तृषा, दाह तथा ज्वर की शान्तिके लिये दे यहां छत्रा का अर्थ धनियां क्योंकि निघंटु में धन्वन्तरिने कहाहै कि कुस्तुंबुरु, स्वर्णिका, छत्रा, धान्य और वितुन्नक यह धनियें के नामहैं धनियेंकेगुण धनियां. दीपन, रुचिकारी, पाचन, पाकमें मधुर और त्रिदोष, तृषा, दाह, श्वास, खांसी तथा ज्वरनाशक होती है ॥ ५१ ॥

चक्रदत्तवङ्गसेनवृन्दादयश्छत्रास्थाने नागरंपठन्तितदुक्तं (यथा) मुस्तपर्पटकोशीर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चन्दनोदीच्यनागरैः।नागरंकटुकमपिनात्रापित्तजनकंमधुरपाकित्वादितितत्राभिप्रायः। नागरंमुस्तकमितिकेचित्क्वचिदेकदेशेनसमुदायोऽत्रगम्यते । यथाभीमोभीमसेनइति चन्दनैरित्यत्रसहार्थेतृतीयातेनमुस्तादिभिः षड्भिरामैवक्षुण्णैःसहितंजलम् शृतंजल मेवकेवलंयथर्तुपक्वंपश्चात्तच्छीतलीकृतंदद्यात् ॥ ५२ ॥

चक्रदत्त, बंगसेन और वृन्दादिक छत्राके स्थानमें नागर (सोंठ) कहतेहैं क्योंकि सोंठ कटुभी पाकमें मधुर होनेसे पित्तकारक नहीं होती यह उनका अभिप्रायहै कोई २ कहतेहैं कि नागर शब्दसे नागरमोथे का ग्रहण होताहै क्योंकि कहीं एकदेश कहनेसे समुदाय भरका ग्रहण होता है जैसे भीम कहनेसे भीमसेन का बोध होताहै यहां चन्दन शब्दमें तृतीया विभक्ति सहार्थ में हैं इससे मोथा आदिक छः वस्तुओं को कच्ची कूटकर ऋतुओं के अनुसार परिपाक किये हुए जलमें मिलायके शीतल करे और पिये ॥ ५२ ॥ तथाचवङ्गसेनः ॥

यदप्सुशृतशीतासुषडङ्गादिप्रयुज्यते । कर्षमात्रंततोद्रव्यंग्राहयेत्प्रास्थिकेऽम्भसि॥ अस्यायमर्थः यद्धेतोरप्सुजलेशृतशीतासुशृतासुकेवलास्वेवयथर्त्तुपक्वासुशीतासुशीत लीकृतासुषडङ्गादिद्रव्यं प्रयुज्यते आममेवसंक्षुद्य जलेस्थाप्यते ततःप्रक्षेप्यत्वात्कर्षमा त्रंद्रव्यंसमुचितंषडङ्गादिप्रास्थिकेऽम्भसि। प्रस्थमात्रेक्वथितशीतलेजलेक्षेप्तुंग्राहयेत् अ तएवषडङ्गमभिधायषडङ्गपानीयमितिवंगसेनादिभिरुक्तम् । अस्मिन्पक्षेचन्दनंश्वेतमे वग्राह्यंनतुरक्तंतत्कषायलेपयोरवप्रयोक्तुंयतआह । कषायलेपयोःप्रायोयुज्यतेरक्तचन्द नमिति ॥ षडङ्गपानीयमिदम् ॥ ५३ ॥

ऐसाही बंगसेनने कहाहै ॥

जिस कारण से ऋतुके अनुसार औटाये हुए जलको शीतल करके षडंगादि बस्तु कच्ची कूटकर छोडीजाती हैं इसलिये चौंसठ तोले जलमें एक तोले औषध छोडनीचाहिये इसी से षडंग कहकर षडंग जल बंगसेनादि में कहाहै यहां चन्दन कहनेसे श्वेतचन्दन लेनाचाहिये लाल न लेना चाहिये क्योंकि लालचन्दन. कषाय और लेपमें डालाजाताहै इसीलिये कहा गयाहै कि प्रायः कषाय और लेपमें लालचन्दन छोडनाचाहिये यह षडंग जल कहलाताहै ॥ ५३ ॥

षडंगादेःपानेऽनुविधातव्येप्रक्रियाविहितामहावंगसेनेन ॥

कर्षमात्रंयथाद्रव्यंग्राहयेत्प्रास्थिकेऽम्भसि । अर्द्धशृतंप्रयोक्तव्यंपानेपेयादिसंवि धौ॥ आदिशब्देनयूषयवागूविलेपीभक्तानिगृह्यन्तेपानप्रक्रियांशार्ङ्गधरोऽप्येतामेवाह । तुण्ंद्रव्यंपलंसाध्यंचतुःषष्टिपलेजले । अर्द्धशिष्टंतुतद्देयंपानेपेयादिसंविधौ ॥ पानप्र योगश्चषडंगमुक्तवान् । अस्मिन्पक्षेचन्दनंरक्तंग्राहयम् । कषायलेपयोःप्रायोयुज्यतेर क्तचन्दनमितिवचनात् ॥ ५४ ॥

षडंगादिके पीनेकी विधि यह आगे कहीहुई प्रक्रिया महाबंगसेन ने कहीहै ॥

चौंसठ तोले जलमें एक तोले औषध डालकर औटावे जब आधा रहजाय तब पीनेके लिये और पेया यूष यवागू बिलेपी तथा भातमें काममें लावे शार्ङ्गधरने भी यही पान करनेकी प्रक्रिया कही है

* छत्रस्यादातपत्राणेछत्रामधुरिकौषधे । धान्याकेचशिलीन्ध्रेचेतिहेमचन्द्रः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कि चौंसठ पल ... एकपल कुटीहुई औषध छोडकर औटानेसे जब आधा रहजाय तब पीनेके लिये और पे...दिकों में प्रयोगकरै और पानका प्रयोग षडंग कहाहै यहां चन्दन कहने से लाल चन्दन ग्रहण करना चाहिये क्योंकि ऐसा कहागयाहै कि कषाय और लेपमें लाल चन्दन प्रायःछोडा जाताहै ॥ ५४ ॥

तथारक्तचन्दनस्यगुणः ॥

रक्तंहिमंस्वादुपाकंछर्दितृष्णास्रपित्तजित्।तिक्तंनेत्रहितंवृष्यंज्वरव्रणविषापहम्॥५५॥

लालचन्दन के गुण॥

लाल चन्दन. शीतल, पाकमें मधुर, तिक्त, नेत्रोंको हित,वीर्यवर्द्धक और छर्दि, तृषा,रक्तपित्त, ज्वर, घाव तथा विषनाशक होताहै ॥ ५५ ॥

षडंगादिप्रयुज्यतइत्यादिशब्देनवक्ष्यमाणाद्योयोगाउच्यंतेयथा । श्रीपर्णीचंदनो शीरसमधूकपरूषकम् । श्रीपर्णीपरूषकयोःफलंग्राह्यंमधुकस्यतुपुष्पकम् । पानंपित्तज्वरं हन्यात्शारिवाद्यंसशर्क्करम् । अन्यच्च । हन्यात्सयष्टिमधुकंतथैवोत्पलपूर्वकम् । पानेशृ तंकिंवासोत्पलंशर्क्करायुतम् । हन्यात्पित्तज्वरमितिशेषः उत्पलमत्रकमलमित्यादि ५६ ॥

षडंग आदिका प्रयोग करना चाहिये यहां आदि शब्दसे आगे कहेजाने वाले योग लक्षित होते हैं जैसे बेर, लालचन्दन, खस, महुएके फूल और फालसा इनसबका पूर्वोक्त रीतिसे बनाहुआ जल पित्त ज्वरको नष्ट करताहै और शारिवादि गणके द्वारा बनाहुआ जल. शक्कर सहित पित्तज्वरको नाशकरता ...भी कहागयाहै कि कमलकाफूल और मुलहठी इनका पूर्वोक्त रीतिसे बनाहुआ जल अथवा कमल डालकर औटाया हुआ जल शक्कर सहित पीनेसे पित्तज्वरको नाश करताहै ॥ ५६ ॥

दिवास्वापंनकुर्वीतयतोऽसौस्यात्कफावहः । ग्रीष्मवर्ज्जेषुकालेषुदिवास्वापोनिषिध्य ते ॥ उचितोहिदिवास्वापो नित्यंयेषांशरीरिणाम् । वातादयःप्रकुप्यन्ति तेषामस्वपतां दिवा ॥ ५७ ॥

दिनको न सोवे क्योंकि इससे कफ बढताहै परन्तु ग्रीषम ऋतुको छोडकर अन्य ऋतुओं में दिनका सोना निषेधहै जिन मनुष्योंको दिनका सोना नित्य उचितहै उनके दिनमें न सोनेसे वातादिकों का कोप होताहै ॥ ५७ ॥

येषांदिवास्वप्नमुचितंतानाह ॥

व्यायामप्रमदाध्ववाहनरतक्लान्तानतीसारिणः शूलश्वासवमीतृषापरिगतांहिक्काम रुत्पीडितान् ॥ क्षीणांक्षीणकफान्शिशून्मदहतान्वृद्धांस्तथाजीर्णिनो रात्रौजागरिता न्नरान्निरसनान्कामंदिवास्वापयेत् ॥ ५८ ॥

जिनको दिनमें सोना उचितहै उनको कहतेहैं ॥

व्यायाम, स्त्रीप्रसंग, मार्गगमन, सवारीपर चढनेकी थकावट,ग्लानि, अतीसार, शूल, श्वास,छर्दि, तृषा, हिचकी, वात, अजीर्ण, क्षिणता, कफकी क्षीणता तथा रात्रिमें जागरण इनसे युक्त बालक, मदसे व्याकुल, वृद्ध और उपवास करने वाले इनमनुष्योंको दिनमें यथेष्ट सोना चाहिये ॥ ५८ ॥

अथ वातिकज्वराणांपाकावधिमाह ॥

वातिकःसप्तरात्रेणदशरात्रेणपैत्तिकः । श्लैष्मिकोद्वादशाहेनज्वरःपाकमुपैतिहि ॥ यतआहसुश्रुतः । बहुदोषस्यमन्दाग्नेः रसस्यामत्वेऽवधिमतिक्रम्यापिज्वरस्तिष्ठति ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सप्तरात्रात्परं रे। लङ्घनाम्बुयवागूभिर्यदादोषोनपच्यते ॥ तदा मु रस्यत रोचकनाशनैः। कषायैःपाचनैर्हृद्यैर्ज्वरघ्नैःसमुपाचरेदिति ॥ ५९ ॥

वातजआदि ज्वरोंके परिपाककी अवधि॥

वातज्वर सातरात्रि में. पित्तज्वर दशरात्रि में. और कफज्वर बारहरात्रिमें, परिपाकको प्राप्तहोता है रसके आमहोनेपर अवधिसे अधिक भी ज्वर रहताहै क्योंकि सुश्रुतने कहाहै कि बहुत दोषयुक्त और मन्दाग्निवाले मनुष्यका लंघन षडंगजल और यवागूके सेवनसे दोष जो परिपाक को न प्राप्त होयँ तो मुखकी विरसता, तृषा तथा अरुचि नाशक हृदय को हित पाचन और ज्वरघ्न क्वाथों के द्वारा उसकी चिकित्सा करे ॥ ५९ ॥ ज्वरस्यतारुण्यंमध्यावस्थाजीर्णतावधि ॥

आसप्तरात्रात्तरुणंज्वरमाहुर्मनीषिणः। द्वादशाहमभिव्याप्यमध्यंजीर्णंततःपरम् ॥ आसप्तरात्रादितिअत्ररात्रिपदादयंरात्रिशब्दोदिवसस्योपलक्षकः। तेनसप्तमदिवसादर्वाग्ज्वरस्तरुणइत्यर्थः। (तथाचोक्तंतन्त्रान्तरे) ज्वरेव्यतीतेषडहेजीर्णइत्युच्यतेबुधैरिति। द्वादशाहात्परंजीर्णमाहुरन्येमनीषिणः॥ (अतएवजातूकर्णः) जीर्णस्त्रयोदशेदिवसइति ॥ ६० ॥ ज्वरकी तरुणता मध्यावस्था और जीर्णावस्था की अवधि ॥

पण्डित लोग ज्वरको आरंभसे सातरात्रि पर्यन्त तरुण बारह रात्रितक मध्य और इसके उपरांत जीर्ण कहते हैं यहां रात्रिशब्द दिनका जनाने वालाहै इससे सात दिन पर्यन्त ज्वर तरुण इत्यादि जानना चाहिये और तन्त्रान्तर में कहा गयाहै कि छः दिनके उपरान्त ज्वर जीर्ण होजाता है यह कोई २ पण्डित कहते हैं और कोई २ कहते हैं कि बारह दिनके उपरान्त ज्वरजीर्ण कहलाताहै इसी से जातूकर्ण ने कहाहै कि तेरहवें दिन ज्वर जीर्ण होजाताहै ॥ ६० ॥

अथज्वरेयुंजीतभेषजम् ॥

वातिकेसप्तरात्रेणदशरात्रेणपैत्तिके। श्लैष्मिकेद्वादशाहेनज्वरेयुंजीतभेषजम् ॥ सप्तरात्रात्परंरात्रिशब्दोदिवसस्योपलक्षकःअतएवोक्तम्। पाययेदातुरंसाऽममौषधंसप्तमेदिने। शमनेनाथवादृष्ट्वानिराममन्तमुपाचरेदिति शार्ङ्गधरेणोक्तम्। गुडूचीपिप्पलीमूलनागरैःपाचनंस्मृतम्। वातज्वरेतथापेयंकालिंगंसप्तमेऽहनीति ॥ हारितेनोक्तम्। एतांक्रियांप्रयुंजीतषड्रात्रंसप्तमेऽहनि। पिबेत्कषायसंयोगात्पेयांज्वरविनाशिनीम् ॥ एतां क्रियांलङ्घनादिरूपांकषायसंयोगात्कषायेणसाधितांपेयामित्यर्थः (खरनादेनाप्युक्तम्) इतिषड्रात्रिकःप्रोक्तोनवज्वरहरोविधिः। ततःपरंपाचनीयंशमनीयंज्वरेहितम् ॥ ततोज्वरमध्येकरणीयमित्यर्थः ॥ ६१ ॥ ज्वरमें औषध देनेका समय ॥

वातज्वर में सातवें दिन, पित्तज्वर में दशवें दिन और कफज्वरमें बारहवें दिन औषध देनी चाहिये आमयुक्त रोगीको सातवें दिन औषध पिलावे अथवा आमरहित देखकर शमन औषधियों के द्वारा चिकित्सा करे शार्ङ्गधरने कहाहै कि वातज्वरमें गिलोय पीपलामूल और सोंठ इनसे पाचन औषध बनाके अथवा इन्द्रजौका काढ़ा सातवें दिन पिलावे हारीतने कहाहै कि यह लंघनादिरूप चिकित्सा छः दिनतक करनी चाहिये और सातवें दिन क्वाथके द्वारा बनीहुई ज्वरनाशक पेया पान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क[illegible]ज्वरनाद[illegible]भा कहाहै कि नवीन ज्वरनाशक यह विधि छः दिनकेलिये कहीगई [illegible]फिर ज्वरकेमध्य में पाचक [illegible]र शमन औषध करनीचाहिये ॥ ६१ ॥

वाग्भटश्च ॥ सप्ताहादौषधंकेचिदाहुरन्येदशाहतः । लध्वन्नेभोजितेकेचिद्देयमामोल्ब णेनतु ॥ सप्ताहात्सप्ताहमारभ्येत्यर्थः अत्रल्यब्लोपेकर्मणिपञ्चमीअतएवसुश्रुतः । दश रात्रात्परंसर्वैर्दातव्यमितिनिश्चितमिति अतएवदशरात्रेद्वादशाहेवोतिलङ्घनवताव्यती तेनइत्यर्थः (अत्रचरकस्त्वेवमाह)ज्वरितंषडहेऽतीतेलघ्वन्नप्रतिभोजितम्। पाचनंपाययेद्वैद्योनिरामंसप्तमेऽहनि॥ सप्तमेऽहनिलघ्वन्नन्दत्त्वा॥अष्टमेदिनेकषायंपाययेदित्यर्थः ६२॥

वाग्भटने कहाहै कि किसीके मतमें सातवें दिनसे किसीके मतमें दशवें दिनसे और किसीकेमत में लंघनके उपरान्त कुछ हलका अन्न भोजन करायके औषध देनीचाहिये परन्तु जो आमका दोष अधिक वर्त्तमानहो तो औषध न देवे इसी से सुश्रुतने कहा है कि दशरात्रिके उपरान्त औषध देनी चाहिये यह सबका निश्चयहै यहां चरक ने तो ऐसा कहाहै कि ज्वरवाले को छः दिनके व्यतीत होजाने पर सातवें दिन आमसे रहित होजाने पर हलका अन्न भोजन करायके आठवें दिन क्वाथ पिलावे ॥ ६२ ॥

तथाचसुश्रुतः । सप्तरात्रात्परंकेचिन्मन्यंतेदेयमौषधमिति ॥ सप्तरात्रात्परम्, अष्टमे ऽहनीत्यर्थः । केचिच्चरकादयः । चक्रदत्तेऽपि । सप्तरात्रेणपच्यन्तेसप्तधातुगतामलाः । निरामस्तुततःप्रोक्तोज्वरप्रायोऽष्टमेदिने ॥ एवंसतिकषायदानेसप्तमाष्टमयोर्दिवसयोर्वि कल्पः । तत्रापिवयोबलाग्निर्दोषःदेशकालोचितंकुर्यात् ॥ ६३ ॥

ऐसाही सुश्रुतने भी कहाहै कि सात दिनके उपरान्त आठवें दिन कोई २ चरकादिक औषधदेना कहते हैं चक्रदत्तने भी कहाहै कि सातों धातुओंके दोष सात दिनमें परिपाक होजाते हैं इसलिये प्रायः आठवें दिन ज्वर आमरहित होजाताहै इस प्रकारसे सातवें और आठवें दिनमें क्वाथ देनेका विकल्प अर्थात् मतभेद पायागयाहै ऐसा होनेपरभी अवस्था,बल,अग्निदोष, देश और कालके अनुसार चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ६३ ॥

भेषजमन्नञ्चदोषपाकंदृष्ट्वादद्यादित्याहसुश्रुतः । पैत्तिकेचज्वरेदेयमल्पकालसमुत्थि त । अचिरेज्वरितस्यापिभैषज्यंदोषपाकतइति ॥ अस्यायमर्थः ॥ अल्पकालसमुत्थितेत पैत्तिकेज्वरेदोषपाकंदृष्ट्वाभैषज्यं देयं नतु तत्रदशरात्रापेक्षातथाअचिरज्वरितस्यापिपैत्ति केतरनवज्वरयुक्तस्यापिदोषपाकंदृष्ट्वाभैषज्यंदेयमित्यर्थः ॥ ६४ ॥

औषधि और भोजन दोषोंके परिपाकको देखकर देनेचाहिये यह सुश्रुतने कहाहै थोडे समय से होने वाले पित्तज्वरमें औषध देनीचाहिये यहां दश दिन व्यतीत होनेकी प्रतीक्षा न करे और दोषके परिपाक को देखकर पित्तज्वर के सिवाय अन्य नवीन ज्वरों में भी औषध देनीचाहिये ॥ ६४ ॥

दोषपाकलक्षणमाहसुश्रुतः ॥

मृदौज्वरेलघौदेहेप्रचलेषुमलेषुच । पक्कंदोषंविजानीयाज्ज्वरेदेयंतदौषधमिति ॥ ज्व रेमृदौस्वल्पाभूते । मलेषुवातपित्तकफमूत्रपुरीषेषुप्रचलेषुस्वमार्गसञ्चारिषु । पक्कंनिरा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मं दोषप्रकृतिर्विकृत्यादेतेषांपक्वलक्षणम्। दोषाणांदुष्टवातंपित्तकफानांप्रकृतिः ज्वरस्य तदुपद्रवाणांचोत्पादनम्। तस्यावैकृत्यंवैपरीत्यंतस्माद्दोषपाकज्ञानंकेषांमते क्षुत्क्षामत्वंलघुत्वञ्चगात्राणांज्वरमार्दवम्। दोषप्रकृतिरुत्साहोनिरामज्वरलक्षणम्॥ दोषःप्रकृतिःदोषाणांस्वमार्गसंचारः॥ ६५॥

सुश्रुतका कहाहुआ दोषोंके परिपाकका लक्षण॥

ज्वरकी स्वल्पता, शरीरका हलकापन और वातपित्त, कफ, मल तथा मूत्र इनको अपने २ मार्ग से चलनेपर दोषोंका परिपाक हुआ जानकर ज्वरवालेको औषध देनी चाहिये और दोषयुक्त बात, पित्त और कफकी ज्वर और ज्वरके उपद्रवोंका उत्पन्न करना यह प्रकृतिहै उसका विपरीत होनाभी दोषोंके परिपाक होनेका लक्षणहै किसी२का यह मतहै कि क्षुधा से क्षीणहोना, शरीरका हलकापन, ज्वरकी कमी होनी, दोषोंका अपने मार्गसे चलना और उत्साह यह आमरहित ज्वरके लक्षणहैं॥ ६५॥

ज्ञेयःपञ्चविधःकालोभैषज्यग्रहणेनृणाम्। तत्रानुक्तेप्रभातंस्यात्कषायेषुविशेषतः ६६॥

मनुष्यों के औषध सेवन करने के पांच समयहैं उनमें से जहां कोई समय न कहाहो वहां प्रातःकाल देना चाहिये और क्वाथतो विशेषकरके प्रातःकालही पीना चाहिये॥ ६६॥

मुख्यभैषज्यसम्बन्धोनिषिद्धस्तरुणज्वरे। तोयपेयादिसंस्कारैर्निर्दोषंतत्रभेषजम्॥ मुख्यभेषजंक्वाथःतस्यसम्बन्धःपानम्। यतआह। नकषायंप्रशंसन्तिनराणांतरुणेज्वरे। कषायेणाकुलीभूतादोषाजेतुंसुदुस्तराः॥ आकुलीभूताःप्रवृद्धाःस्वमार्गंपरित्यज्यइतस्ततोगताः। अत्रकषायशब्देनक्वाथोगृह्यते॥ ६७॥

नवीन ज्वर में क्वाथ पीना निषिद्धहै परन्तु जल अथवा पेय आदिकों के संस्कार के लिये जो औषध दीजाती है वह निर्दोषहै क्योंकि कहागयाहै कि मनुष्यों को तरुणज्वरमें कषाय, हितकारी नहीं है क्योंकि कषाय के द्वारा बढ़ेहुए वातादिक दोष अपने २ मार्ग को छोड़कर इधर उधर गयेहुए फिर शान्तकरने के लिये अत्यन्त दुस्तर होजाते हैं यहां कषाय शब्दका अर्थ क्वाथलेना चाहिये॥ ६७॥

उक्ताश्चक्वाथस्यपर्य्यायाः॥

शृतंक्वाथकषायश्चनिर्यूहःसनिगद्यतइति। तोयपेयादिसंस्कारेनिर्दोषंतत्रभेषजमिति। तत्रतरुणज्वरेभेषजंमुख्यभेषजंक्वाथरूपंनतुकल्पनमुद्दिश्यकषायः प्रतिषिध्यतइतिकल्पनंतोयपेययवाग्वादिकम्॥ ६८॥ क्वाथ के नाम॥

शृति क्वाथ, कषाय और निर्यूह यह क्वाथके नामहैं यहां तरुणज्वर में क्वाथ पीना निषिद्धहै परन्तु पेया आदिके बनाने में क्वाथका निषेध नहीं है॥ ६८॥

ननुस्वरसश्चतथाकल्कःक्वाथश्चहिमफाण्टकौ। ज्ञेयाकषायाःपञ्चैतेलघवःस्युर्यथोत्तरम्॥ इतिवचनात् स्वरसादयोऽपिकथन्ननिषिध्यतेतत्राह। तन्नयःकषायःकषायःस्यात्सवर्ज्यस्तरुणज्वरेइति। चतुर्थभागावशेषकरणेनाष्टमभागशेषकरणेच। कषायवर्णःकषायरसश्चस्यात्। सकषायःक्वाथःसतरुणज्वरेनिषिद्धः॥ ६९॥

अब यह सन्देह होताहै कि स्वरस, कल्क, क्वाथ, हिम और फांट यह पांच प्रकारके कषाय एक से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एक क्रमसे मलके होतेहैं इसवचन के अनुसार स्वरस आदिक पांचों कषायोंका निषेध क्यों नहीं किया जाताहै ? इसका उत्तर यहहै कि तरुणज्वरमें पांचों कषायोंका निषेध नहींहै चतुर्थांश बचाहुआ अथवा अष्टमांश बचाहुआ जो कषायवर्ण क्राथ नाम कषाय बनता है वही तरुणज्वरमें निषिद्धहै ६९॥

क्राथस्यलक्षणमाह॥

पादशिष्टकषायःस्यात्। अतःषडङ्गादिस्तरुणज्वरेननिषिद्धः। पाकादूर्ध्वपाकेचोक्तलक्षणभावेनकषायत्वाभावात्॥ ७०॥ क्राथ के लक्षण॥

सोलह गुने पानी में औषध छोडकर औटानेसे चौथाई बचनेपर कषाय कहलाताहै इसीसे नवीन ज्वरमें षडंग आदिक जल निषिद्ध नहीं है क्योंकि उनमें परिपाक न होने से अथवा अर्द्धांश बचने से ऊपर कहेहुए लक्षण के न मिलने के कारण कषायपना नहीं है॥ ७०॥

अथ तरुणज्वरेकषायदोषमाह॥

दोषावृद्धाःकषायेणस्तम्भितास्तरुणज्वरे। स्तभ्यन्तेनविपच्यन्तेकुर्वन्तिविषमज्वरम्॥ कषायेणस्तम्भिताप्रवृत्तयेनिवारिताः। यतआह। कषायरसगुणान्। कषायस्तम्भनःशीतोरूक्षःपित्तःकफापहइत्यादि। स्तभ्यन्ते। आध्मानंकुर्वन्तिनविपच्यंते। सुखेननविपच्यंते। दुःखंदत्त्वाविलम्बेनविपच्यंतेइतियावत्॥ ७१॥

नवीन ज्वर में कषाय का दोष॥

नवीन ज्वरमें कषाय देने से दोष बढकर अपने २ मार्ग से निवृत्त होजाते हैं आध्मान को उत्पन्न करते हैं अत्यन्त कष्टपूर्वक बहुत देरमें परिपाकको प्राप्त होते और विषमज्वर को उत्पन्न करते हैं क्योंकि कषाय के गुण यह कहेगये हैं कि कषाय. स्तंभन, शीतल, रूखा और कफ पित्त नाशक होताहै॥ ७१॥

(अन्यच्च) नच्यवन्तेनपच्यन्तेकषायैःस्तम्भितामलाः। तिर्यग्विमार्गगावातेघोरंकुर्य्युर्नवज्वरम्॥ ७२॥

और भी कहागयाहै कि नवीनज्वर में कषाय देने से दोष जकडकर न निकलते हैं और न परिपाकको प्राप्त होते हैं अथवा दोष तिरछे होकर मार्ग से रहित होके अत्यन्त घोर नवीन ज्वर को उत्पन्न करते हैं॥ ७२॥

अनुपस्थितदोषाणांवमनंतरुणेज्वरे। हृद्रोगंश्वासमानाहंमोहंचकुरुतेभृशम्॥ अनुपस्थितदोषाणांतयमर्थः। कफादिदोदोषोपस्थितौस्वयमेवचेद्भवतिवमनंनतद्दोषाय। अनुपस्थितदोषाणांतरुणज्वरेवमनंयत्नकृतंहृद्रोगादीन्करोतीत्यर्थः॥ एतेनवचनेनतरुणज्वरेयत्नाद्वमनंनिषिद्धम्। अवस्थाविशेषेतदपिकर्तव्यमित्याह। सद्योभुक्तस्यवाजातेज्वरेसंतर्पणोत्थिते। वमनंवमनार्हस्यशस्तमित्याहवाग्भटः॥ वमनंचेतिविकल्पोलंघनापेक्षया। वमनार्हस्येत्यनेनगर्भिण्यतिकृशातिवृद्धादिनिषेधः॥ ७३॥

दोषोंके विना उपस्थित हुए नवीन ज्वरमें वमन कराने से हृदयके रोग, श्वास, अफरा और मोह उत्पन्न होतेहैं इसका यह आशयहै कि कफादि दोषों के उपस्थित होनेपर जो स्वयं वमन होजाय

(१) कषायोरसभेदेस्यादङ्गरागेविलेपने. निर्यासेचकषायोऽथसुरभौलोहितेऽन्यवदितिविश्वः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तो कोई दोष नहीं है परन्तु दोषों के उपस्थित हुए विना नवीनज्वरमें यत्नपूर्वक वमन कराने से हृदय के रोगादिक उत्पन्न होते हैं इस वचनके द्वारा नवीनज्वर में यत्नपूर्वक वमन कराना निषिद्ध है यह सिद्ध हुआ परन्तु अवस्था विशेष में वमन करानाभी चाहिये क्योंकि वाग्भटने कहाहै कि भोजन करने के उपरान्त जो शीघ्रही ज्वर आजाय अथवा संतर्पण क्रियासे ज्वरआवे तो वमन योग्य (गर्भिणी कृश और वृद्ध आदिक वमनके अयोग्य हैं) मनुष्योंको वमन करावे॥ ७३ ॥

अत्रवृद्धवाग्भटः। वमितंलंघयेत्प्राज्ञोलंघितंनतुवामयेत् । वमनंक्लेशबाहुल्याद्धन्याल्लंघनकर्षितम्॥ नकार्य्यंगुर्विणीबालवृद्धदुर्बलभीरुभिः । अनशनमितिशेषः अनेनानशनवचनेनगुर्व्विण्यादीनामनशननिषेधः । ज्वरेसामेपाचनंनिरामेशमनपथ्यान्नमण्डादिकञ्चदद्यात् । पाचनलक्षणंपश्चाद्गुणप्रस्तावेबोधव्यम् ॥ ७४ ॥

यहांपर वृद्ध वाग्भटने कहाहै कि वमन कियेहुये को लंघन करावे परन्तु लंघन कियेहुएको वमन न करावे क्योंकि लंघनकेद्वारा क्षीणमनुष्य को वमन कराने से बहुत क्लेशके कारण उसका नाशभी हो सक्ताहै गर्भवती, बालक, वृद्ध, भयभीत और दुर्बलको लंघन न करावे इस वचनसे गर्भिणी आदिकोंको लंघनका निषेध कियागया इसलिये इनको आमसहित ज्वर में पाचन और आमरहित ज्वर में शमन औषध और पथ्य अन्न मण्डादिक देने चाहिये पाचन और शमन के लक्षण पीछे गुणों के वर्णन में कहेगये हैं ॥ ७४ ॥

पाययेदातुरंसामंपाचनंसप्तमेदिने । शमनेनाथवादृष्ट्वानिरामंतमुपाचरेत् ॥ (अन्यच्च) कृशंचैवाल्पदोषञ्चशमनीयैरुपाचरेत् ॥ ७५ ॥

आमसहित ज्वरवाले को सातवें दिन पाचन औषध पिलावे और आमके परिपाक को देखकर शमन औषध के द्वारा चिकित्सा करे औरभी कहागयाहै कि कृश तथा अल्पदोषवाले की चिकित्सा शमन औषध से करना चाहिये॥ ७५ ॥

(ननु) लालाप्रसेकोहृल्लासोहृदयाशुद्ध्यरोचकौ ॥ तन्द्रालस्याविपाकास्यवैरस्यंगुरुगात्रता । क्षुन्नाशोबहुमूत्रत्वंस्तब्धताबलवान्ज्वरः ॥ आमज्वरस्यलिंगानिनदद्यात्तत्रभेषजम् । भेषजंह्यामदोषस्यभूयोजनयतिज्वरम् ॥ भूयोबाहुल्येन ॥ ७६ ॥

अब यह सन्देह होताहै कि लारकाबहना,मतली,हृदयका शुद्ध न होना,अरुचि, तन्द्रा,आलस्य,परिपाकका न होना, मुखकी विरसता, शरीर का भारीपन, क्षुधाकानाश, मूत्रकी अधिकता, शरीरका जकड़ना और बहुत ज्वर यह आमज्वर के लक्षणहैं इसमें औषध न देनी चाहिये क्योंकि आमदोषवाले को औषध देनेसे ज्वर बहुत बढ़जाताहै॥ ७६ ॥

(अन्यच्च) पाययेद्दोषहरणंमोहादामज्वरेतुयः । सप्तमंकृष्णसर्पन्तुकराग्रेणपरामृशेत्॥ इतिवचनादामज्वरेभेषजनिषेधात्कथंसामेज्वरेवापाचनंदेयम् । उच्यते । निरुपद्रवेसामज्वरेपाचनंदेयम् । सोपद्रवेतुसामेभेषजंनिषिद्धम्। तथा च वाग्भटः ॥ सप्ताहात्परतोऽदुष्टेसामेस्यात्पाचनंज्वरे । निरामेशमनंस्तब्धेसामेनौषधमाचरेत् ॥ अदुष्टेनिरुपद्रवेस्तब्धेसोपद्रवे ॥ ७७ ॥

औरभी कहागयाहै कि जो वैद्य अज्ञानतासे आमज्वरमें दोषनाशक औषध पिलाताहै वह सोयेहुए

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कालसर्पको हाथसे पकडताहै इनवचनोंकेद्वारा आमसहित ज्वरमें औषध का निषेध होनेसे आमज्वर में प्रधान औषध किस प्रकार देनी चाहिये ? इसका उत्तर यहहै कि उपद्रवरहित आमज्वर में पाचन औषध देनी चाहिये और उपद्रवसहित आमज्वर में तो औषधका निषेध है ऐसाही वाग्भटने भी कहाहै कि सातदिन के उपरान्त दोषरहित आमज्वर में पाचन देना चाहिये आमरहित ज्वर में शमन देनाचाहिये और उपद्रवसहित आमज्वरमें औषध देना निषिद्ध है ॥ ७७ ॥

अथ सामान्यज्वरेपाचनकषायमाहसुश्रुतः ॥

नागरंदेवकाष्ठञ्चध्यामकंबृहतीद्वयम् । दद्यात्पाचनकंपूर्वंज्वरितेभ्योज्वरापहम् ॥ ध्यामकंरोहिषंतदलाभादुशीरंदद्यात् । बृहतीद्वयबृहत्फलासूक्ष्मफलाबृहतीक्षुद्राबृहतीचेति कण्टकारीद्वयंवादद्यात् ॥ कण्टकारीद्वयंशुण्ठीध्यामकंसुरदारुचेतिशार्ङ्गधरेणोक्तत्वात् । नागरादिःक्काथःसर्व्वज्वरेषु ॥ ७८ ॥

सुश्रुतका कहाहुआ सामान्य ज्वर में पाचन कषाय ॥

सोंठ, देवदारु, रोहिष (सुगन्धिततृण) और दोनों भटकटैया इनका क्काथ करके ज्वरवालों को ज्वरके नाशके लिये देवे और जो रोहिष न मिलै तो खस डाले यह सम्पूर्ण ज्वरोंपर नागरादि नाम क्काथ है ॥ ७८ ॥ सामान्यतःसंशमनीयान्याह सुश्रुतः ॥

अथसंशमनीयानिकषायाणिनिबोधमे । सर्वज्वरेषुदेयानियानिवैद्येनजानता ॥ वृश्चीवोबिल्ववर्षाभूःपयःसोदकमेवच । पचेत्क्षीरावशेषन्तत्पेयंसर्वज्वरापहम् ॥ वृश्चीवःश्वेतपुनर्नवा वर्षाभूःरक्तपुनर्नवा । तथाचमदनपालः । पुनर्नवःश्वेतमूलोवृश्चीवोदीर्घपत्रकः । पुनर्नवाऽपरारक्तावर्षाभूरक्तपुष्पकः ॥ ७९ ॥

सुश्रुत के कहेहुए सामान्य शमन कषाय ॥

अब शमनकारक कषाय मैं कहताहूं जिनको कि ज्ञानवान् वैद्य सम्पूर्ण ज्वरों में देसक्ता है वृश्चीव, बेल, वर्षाभू, दूध और जल यह सब पाककरके जब केवल दूध बाकी रहजाय तब सम्पूर्ण ज्वरों के शान्त करने के लिये वृश्चीव अर्थात् श्वेतगदहापूरना वर्षाभू अर्थात् लालगदहापूरना ऐसाही मदनपालने कहाहै कि श्वेतजडवाली लम्बे पत्तेवाली को वृश्चीव और लालपुष्पवाली लाल गदहापूरना को वर्षाभू कहते हैं ॥ ७९ ॥

पाकप्रकारमाह ॥

क्षीरमष्टगुणंद्रव्यात्क्षीरान्नीरंचतुर्गुणम् । क्षीरावशेषंपातव्यंक्षीरपाकेत्वयंविधिः ॥ द्रव्यात्पलपरिमितात् (अन्यच्च) उदकाद्द्विगुणंक्षीरंशिशिपोशीरमेवच ॥ तत्क्षीरशेषक्कथितंपेयंसर्वज्वरापहम् ॥ ८० ॥

क्षीरपाककी विधि ॥

औषध से अठगुणा दूध और दूधका चौगुना जल इनको मिलाकर औटाने से जब केवल दूध बाकी रहजाय तब उतारले यह क्षीरपाककी विधि है यहां औषध चार तोले होनी चाहिये दूसरा प्रकार पानी से दूना दूध, मिलाकर उसमें शीशम और खस छोडकर पाककरने से जब केवल दूध बाकी रहे तब पिये इससे सम्पूर्ण ज्वरों का नाश होता है ॥ ८० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुडूचीधान्यकारिष्टंपद्मकंरक्तचन्दनम् । एषांक्काथःसुप्रसिद्धःसर्वज्वरहरःस्मृतः ॥ दीपनोदाहहल्लासतृष्णाच्छर्द्यरुचिंहरेत्।गुडूच्यादिक्काथःसंशोधकंतरुणज्वरेनिषिद्धम् । तदाहसुश्रुतः छर्दिमूर्च्छामदश्वासभ्रमतृड्विषमज्वरान्॥ संशोधनस्यपानेनप्राप्नोतितरुणज्वरी ॥ ८१ ॥

गिलोय, धनियां, नींब, पद्माक और लालचन्दन इनसबका क्काथ सम्पूर्ण ज्वरोंका नाशक प्रसिद्धहै यह दीपन और दाह, मतली, तृषा, छर्दि तथा अरुचिनाशक होता है यह गुडूच्यादि क्काथ. संशोधन होने के कारण नवीनज्वर में निषिद्ध है ऐसाही सुश्रुतने भी कहाहै कि नवीनज्वर में संशोधन औषध पीने से छर्दि, मूर्च्छा, मद, श्वास, भ्रम, तृषा तथा विषमज्वर उत्पन्न होताहै ॥ ८१ ॥

निषिद्धमपिसंशोधनमवस्थाविशेषेदेयम् । (यतआह) रोगेशोधनसाध्येतुयोभवे-द्दोषदुर्बलम् ॥ तंसमीक्ष्यभिषक्कुर्य्याद्दोषप्रच्यावनंमृदु । दोषदुर्बलंदोषैरुपचितैर्दुर्बलं नतूपवासादिकृशम् अतएवसमीक्ष्येति ॥ ८२ ॥

निषिद्ध भी संशोधन अवस्था विशेष में देना चाहिये क्योंकि कहागया है कि इकट्ठे हुए दोषोंके द्वारा दुर्बल जिस रोगी के शोधन साध्यरोग होवे वैद्य उसको देखकर कोमलतासे दोष निकालने वाली औषध देवे ॥ ८२ ॥

शोधनसाध्य रोगमाह ॥

सद्योज्वरेविषेऽजीर्णेमन्देऽग्नावुदरेतथा । स्तन्यरोगेचहृद्रोगेकासश्वासेषुवामयेत् ॥ जीर्णज्वरगरच्छर्दिगुल्मप्लीहोदरेषुच । शूलेशोथेमूत्रघातेकृमिरोगेविरेचयेत् ॥ (अन्यच्च) चलेदोषेमृदौकोष्ठेनेक्षेततत्रबलंनृणाम् । अव्यापद्दुर्बलस्यापिशोधनंहितदाभवेत् ॥ कुतोबलंनापेक्षणीयमित्याशङ्कायामाहतदातस्यामवस्थायांशोधनंदुर्बलस्यापि दोषदुर्बलस्यापिअव्यापद्भवेत् । छर्द्यादिव्याधिकृन्नभवतीत्यर्थः ॥ ८३ ॥

शोधनसे साध्यरोग ॥

नवीनज्वर, विष, अजीर्ण मन्दाग्नि, उदर, दुग्धरोग, हृदयकेरोग, खांसी और श्वासमें वमन कराना चाहिये जीर्णज्वर, गरदोष, छर्दि, गुल्म, प्लीहोदर, शूल, सूजन, मूत्राघात और कृमिरोगमें विरेचन देना चाहिये औरभी कहागयाहै कि दोषों के चलायमान होनेपर और कोष्ठके मृदु होनेपर मनुष्यों के बल को विना देखे दुर्बल मनुष्यको भी संशोधन देनेसे कोई दोष नहीं होता बलका विचार क्यों नहीं करना चाहिये इस सन्देह के दूर करने को कहतेहैं कि ऐसी अवस्थामें दोषोंके द्वारा दुर्बल मनुष्यको शोधन औषध देने से छर्दि आदिक दोष नहीं उत्पन्न होतेहैं ॥ ८३ ॥

बलवतःपुरुषस्यपक्वस्यदोषस्यस्वस्थानस्थितस्यशोधनाविधानेदोषमाहसुश्रुतः ॥ पक्वोऽप्यनिर्हृतोदोषोदेहेतिष्ठन्महात्ययम् । विषमंवाज्वरंकुर्य्याद्बलव्यापदमेववा ॥ पक्वःलङ्घनाम्बुपानपेयादिभिःअनिर्हृतःअधोमार्गेणानुत्सृष्टःमहात्ययंविषमज्वरंचातुर्थिकंतस्यैवमहात्ययत्वादितिगदाधरः (गम्भीरमितिकार्तिकः) महात्ययंमहाकष्टंवाबलव्यापदं बलक्षयम् ॥ ८४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बलवान् पुरुषके अपने स्थान में स्थित परिपक्व दोषों के शोधन न करने में सुश्रुतने दोष कहाहै जैसे कि [illegible]वनादि के द्वारा नहीं त्याग कियागया लंघन जलपान तथा पेया आदिकों से परिपाक को प्राप्तहुआ दोष शरीर में स्थित होकर अत्यन्त कृच्छ्रसाध्य विषमज्वर और बलक्षयको करता है यहां अत्यन्त कृच्छ्र विषमज्वरका अर्थ गदाधरने चौथिया कियाहै क्योंकि यही ज्वर अत्यन्त कृच्छ्र-साध्यहै और कार्तिक ने गम्भीरज्वर अथवा अत्यन्त कष्टदायक ज्वर यह अर्थ कियाहै ॥ ८४ ॥

संशोधनमाह ॥

आरग्वधग्रन्थिकमुस्ततिक्ताहरीतकीभिःक्कथितःकषायः । सामेसशूलेकफवातपित्ते ज्वरेहितोदीपनपाचनश्च ॥ इतिआरग्वधादिःक्काथः (अन्यच्च) पथ्यारग्वधतिक्तात्रिवृदामलकैःशृतंतोयम् । पाचनसारकमुक्तंमुनिभिर्जीर्णज्वरेसामे । इति आरोग्यपञ्चकद्वयम् ॥ ८५ ॥

संशोधनका वर्णन ॥

अमलतास, पीपलामूल, मोथा, कुटकी और हड इनसबका क्काथकरके आम तथा शूलयुक्त कफ, वात तथा पित्तके ज्वर में देना चाहिये यह दीपन और पाचकहै यह आरग्वधादि क्काथ कहलाताहै और भी कहागयाहै कि हड, अमलतास, कुटकी, निशोथ और आंवला इनके द्वारा औटायाहुआ जल पाचन और दस्तावर कहागयाहै यह आमसहित जीर्णज्वर में देना चाहिये यह दो आरोग्य पंचक कहलाते हैं ॥ ८५ ॥

अनन्ताबालकंमुस्तंनागरंकटुरोहिणी । पिष्ट्वासुखाम्बुनाकल्कंपाययेदक्षसंमितम् ॥ कल्कःस्वल्पेनकालेनहन्यात्सर्व्वज्वरामयान् । विदध्यात्कोष्ठसंशुद्धिंदापयेच्चहुताशनम् ॥ अनन्तासारिवासारिवादिकल्कः ॥ ८६ ॥

सारिवा, सुगन्धबाला, मोथा, सोंठ और कुटकी इनसबको पीसकर कुछ गरमजल के साथ तोले भर कल्क पिलावै यह थोडेही कालमें संपूर्ण ज्वरोंका नाशकरताहै और कोष्ठको शुद्ध करके अग्निको दीप्त करताहै इति सारिवादि कल्क ॥ ८६ ॥

संशोधनंसंशमनंचयेषांनिषिद्धंतानाह ॥

पीताम्बुर्लङ्घितक्षीणोजीर्णोभुक्तःपिपासितः । नपिबेदौषधंजन्तुःसंशोधनमथेतरत् ॥ पीताम्बुःपीततिक्ताम्बुःभुक्तोभुक्तवानित्यर्थः । अत्राध्यवसितादित्वात्कर्त्तरिक्तप्रत्ययः इतरत्संशमनं ॥ ८७ ॥

जिनको शोधन और शमनका निषेधहै उनका वर्णन ॥

तिक्त जल पियेहुए लंघन कियेहुए क्षीण अजीर्णवाला भोजन कियाहुआ और प्यासा इन सबको [शो]धन और शमन औषधका निषेधहै ॥ ८७ ॥

त्रिफलारजनीयुग्मंकण्टकारीयुगंशटी । त्रिकटुग्रन्थिकंमूर्वागुडूचीधन्वयासकः ॥ [क]टुकापर्पटोमुस्तंत्रायमाणाचबालकम् । निम्बःपुष्करमूलञ्चमधुयष्टीचवत्सकः ॥ यवा[नी]न्द्रयवोभार्ङ्गीशिग्रुबीजंसुराष्ट्रजा । वचात्वक्पद्मकोशीरचन्दनातिविषाबलाः ॥ शालि[प]र्णीपृष्ठिपर्णीविडंगन्तगरंतथा । चित्रकंदेवकाष्ठञ्चचव्यंपत्रंपटोलजम् ॥ जीवकर्षभकौचै

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वलवङ्गंवंशलोचनम् । पुण्डरीकञ्चकाकोलीपत्रकंजातिपत्रकम् ॥ तालीसपत्रमेतानिसम भागानिचूर्णयेत् । अर्द्धांशंसर्व्वचूर्णस्यकिरातंप्रक्षिपेत्सुधीः ॥ एतत्सुदर्शनंनाम चूर्णंदोष त्रयापहम् । ज्वरांश्चनिखिलान्हन्तिनात्रकार्य्याविचारणा ॥ दोषजागन्तुकांश्चापिधातु स्थान्विषमज्वरान् । सन्निपातोद्भवांश्चापिमानसानपिनाशयेत् ॥ शीतादीनपिदाहादी न्मोहंतन्द्रांभ्रमंतृषाम् । कासंश्वासञ्चपाण्डुञ्चहृद्रोगंकामलामपि ॥ त्रिकपृष्ठकटीजानु पार्श्वशूलंनिवारयेत् । शीताम्बुनापिबेदेतत्सर्व्वज्वरनिवृत्तये ॥ सुदर्शनंयथाचक्रंदानवा नांविनाशनम् । तथाज्वराणांसर्वेषांचूर्णमेतत्प्रणाशनम् ॥ पुष्करमूलाभावेतुकुष्ठमपिदद्या त्भाङ्गर्यभावेकण्टकारीमूलम् । सौराष्ट्राभावेस्फटिकांदद्यात् । तगरालाभेकुष्ठंदेयंजीवक र्षभकयोरलाभेविदारीकन्दस्यभागद्वयंदद्यात् पुण्डरीकंश्वेतकमलंकाकोल्यभावेअश्वग न्धामूलंतालीसपत्रकाभावेस्वर्णतालीसप्रदीयतइति । अथवाकण्टकारीजटादेया (इ तिसुदर्शनचूर्णम्) ॥ ८८ ॥

हड, बहेडा, आमला, हल्दी, दारुहल्दी, दोनों भटकटैया, कचूर, सोंठ, मिर्च, पीपल, पीपलामूल, मरोरफली, गिलोय, धमासा, कुटकी, पित्तपापडा, मोथा, त्रायमाण, सुगन्धबाला, नींबकीछाल, पुष्करमूल, मुलहठी, कुरैया, अजवाइन, इन्द्रयव, भारंगी, सहजनके बीज, सोरठीमट्टी, वच, दालचीनी, पद्माक, खस, चन्दन, अतीस, बरियारा, शालिपर्णी, पृष्ठपर्णी, वायविडंग, तगर, चीता, देवदारु, चव्य, परवलकेपत्ते, जीवक, ऋषभक, लौंग, वंशलोचन, श्वेतकमल, काकोली, तेजपात, जाविन्त्री और तालीस इनसबको समभाग लेकर चूर्णकरे फिर सब चूर्णका आधा चिरायता मिलावे यह सुदर्शननाम चूर्ण त्रिदोषनाशक और संपूर्ण ज्वरोंका मूलनाशकहै यह दोषजनित आगन्तुक धातुओं में स्थित विषमज्वर सान्निपातज्वर मानसज्वर शीत अथवा दाहादिके ज्वरोंका नाशक और प्रमेह, तन्द्रा, भ्रम, तृषा, खांसी, श्वास, पाण्डु, हृदयके रोग, कामला, त्रिकशूल, पीठकी पीड़ा, कमरकी पीड़ा, घुटनोंकी पीड़ा और पसलीकी पीड़ाको नाशकरताहै संपूर्ण ज्वरों के नाशकरने के लिये शीतल जल के साथ इसका पान करना चाहिये जैसे सुदर्शनचक्र दैत्योंका नाश करता है इसीप्रकार यह सुदर्शनचूर्ण भी संपूर्ण ज्वरोंको नाशकरताहै इस चूर्णमें पुष्करमूलके अभावमें कूट, भारंगी के अभावमें भटकटैया की जड़, सोरठीमिट्टी के अभावमें फिटकरी, तगरके अभाव में कूट, जीवक ऋषभकके अभावमें विदारीकन्दके दोभाग, काकोली के अभावमें असगन्धकी जड़, तालीस के अभावमें स्वर्ण तालीस अथवा भटकटैयाकी जड़ देनी चाहिये इति सुदर्शनचूर्णम् ॥ ८८ ॥

निम्बपत्रवराव्योषजवानीलवणत्रयम् । क्षारोदिग्वह्निरामेषुत्रिनेत्रक्रमशोंऽशकान् ॥ सर्वमेकीकृतंचूर्णंप्रत्यूषेभक्षयेन्नरः । एकाहिकंद्वयाहिकञ्चतथात्रिदिवसज्वरम् ॥ चातु र्थिकंमहाघोरंसततंसन्ततंदिवा । धातुस्थञ्चत्रिदोषोत्थंज्वरंहन्तिनसंशयः ॥ निम्बा दिचूर्णम् ॥ ८९ ॥

नींबकीपत्ती १० भाग. हड, बहेडा, आमला तीनभाग. सोंठ, मिर्च, पीपल ३ भाग. अजवाइन ५ भाग सेंधा, काला तथा बिड्नोन ३ भाग और सज्जी तथा जवाखार २ भाग इनसबको चूर्णकरके प्रातःकाल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खाय यह एकाहिक, द्व्याहिक, त्र्याहिक, अत्यन्तघोर चातुर्थिक, सतत, संतत, धातुस्थ और त्रिदोषजनित ज्वरको नाशकरता है इति निम्बादिचूर्णम् ॥ ८६ ॥

शटीनिशाद्वयंदारुशुण्ठीपुष्करमूलकम्। एलागुडूचीकटुकापर्पटश्चयवासकः ॥ शृंगीकिराततिक्तञ्चदशमूलीतथैवच। क्काथमेषांपिबेत्कोष्णंसिन्धुचूर्णयुतन्नरः ॥ ज्वरान्सर्वान्द्रुतंहन्तिनात्रकार्याविचारणा (इतिशठ्यादिक्काथः) अनुभूतमिदम् ॥ ९० ॥

शठ्यादि क्काथ ॥

कचूर, हल्दी, दारुहल्दी, देवदारु, सोंठ, पुष्करमूल, इलायची, गिलोय, कुटकी, पित्तपापड़ा, धमासा, काकड़ासिंगी, चिरायता और दशमूल इनसबका क्काथ सेंधानोन डालकर कुछ गरम २ पिये यह संपूर्ण ज्वरोंको नाशकरता है इसमें किसी प्रकारका भी संदेह नहीं है यह अनुभव किया हुआ है ॥ ९० ॥

हरीतकीत्रिवृद्वृद्धदारकाणांपृथग्भवेत् । पलद्वयंकणाशुण्ठीगुडूचीगोक्षुरीवरी ॥ सहदेवीविडंगंचप्रत्येकम्पलसम्मितम्। मधुनावटिकांकृत्वाखादेज्ज्वरमपोहति ॥ कासंश्वासंमलस्तम्भवह्निमान्द्यंनियच्छति (इति हरीतक्यादिगुटी) अनुभूतमेतत् ॥ ९१ ॥

हरीतक्यादि गोली ॥

हड, निसोथ और विधारा यह सब दो २ पल पीपल, सोंठ, गिलोय, गोखुरू, शतावर, सहदेई और बायबिड़ंग यहसब एक २ पल इन संपूर्ण औषधियों को पीसकर सहतकेसंग गोली बनावे इसके खाने से ज्वर, खांसी, श्वास, मलका रुकना और मंदाग्निका नाशहोताहै यह अनुभव कियाहुआहै ॥ ९१ ॥

लाक्षादशाक्षात्वरुणाषडक्षासचन्दनंलोहितचन्दनं च । त्वक्पत्रकंवारिसुरासमुस्ताप्रत्येकमेतानिपलोन्मितानि ॥ किराततिक्तात्रिवृतासतिक्ताऽमृताकणापर्पटकण्टकार्यः । विडंगविश्वामलकानिवासारसानिशावीरणसिन्दुवाराः ॥ एतानिदेयानिपृथक्पलार्द्धंमानानिसर्वाणिचभेषजानि। कल्कानमीषांविदधीतगव्यदुग्धेनवैसार्द्धतुलामितेन । तैलंतिलानान्तुतुलानुमानं तेनैवकल्केनशनैःपचेच्च ॥ हन्याज्ज्वरांस्तैलमिदंसमस्तान् कुर्य्याद्बलंवीर्यमतीवपुष्टिम्। विमर्द्दनादाशुपरिश्रमंभ्रमंशमंनयेत्संजनयेत्द्युतिंतनोः ॥ तथाठ्यथामस्थिसमुद्भवामपिप्रहृत्यनिद्रांसमुपार्जयेत्सुखम् ॥ अरुणामञ्जिष्ठावारिवालंरसारास्ना। इतिलाक्षादितैलम् ॥ ९२ ॥

लाक्षादि तैल ॥

लाख १० तो० मजीठ ६ तोले सफेद चन्दन, लाल चन्दन, दालचीनी, तेजपात, सुगन्धबाला, मरोड़फली और मोथा यहसब चार २ तोले चिरायता, निसोथ, कुटकी, गिलोय, पीपल, पित्तपापड़ा, भटकटैया, बायबिड़ंग, सोंठ, आंवला, बांसा, रासना, हल्दी, खस और संभालू यहसब दो २ तोले इन संपूर्ण औषधियोंकाकल्क दोसौ तोले गौकादूध और चारसौ तोले तिलका तेल इनसबको विधिपूर्वक धीरे २ पाककरके सेवन करे यह तैल संपूर्ण ज्वरोंकानाशक, बलवीर्य्य अत्यन्त पुष्टता और शरीरमें कान्तिकारी होताहै इसके मर्द्दनकरने से परिश्रम, भ्रम और हड्डियोंकी पीड़ाका नाश होकर सुखपूर्वक निद्रा आती है ॥ ९२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लाक्षारससमंतैलंतैलान्मस्तुचतुर्गुणम्। अश्वगन्धानिशादारुकौन्तीकुष्ठाब्दचन्दनैः॥ समूर्व्वारोहिणीरास्नाशताह्वामधुकैःसमैः। सिद्धंलाक्षादिकंनामतैलमभ्यञ्जनादिना। सर्व्वज्वरक्षयोन्मादश्वासापस्मारवातनुत्॥यक्षराक्षसभूतघ्नंगर्भिणीनांचशस्यते। मस्तुदधिजलं। कौन्तीरेणुकाचन्दनमत्रश्वेतमेवनतुरक्तम्॥ रोहिणीकटुका। इतिलाक्षादि ६३॥

दूसरा लाक्षादि तैल॥

लाखके रसके समान तिलोंका तेल और उसका चौगुना दहीका तोड इनमें असगंध, हल्दी, देवदारु, रेणुका, कूट, नागरमोथा, श्वेतचन्दन, मरोडफली, कुटकी, रासना, शतावर, और मुलहठी इन सब समभाग औषधियों का कल्क छोडकर विधिपूर्वक परिपाक करने से लाक्षादिनाम तैल बनताहै यह मर्दनादिकों से सब प्रकार के ज्वर, क्षय, उन्माद, श्वास, मृगी, वात, यक्ष, राक्षस तथा भूतोंको नाश करताहै और गर्भिणी स्त्रियोंको अत्यन्त हितकारी है॥ ६३॥

लाक्षाहरिद्रामञ्जिष्ठाफेनिलंमधुकंबला। लामज्जकंचन्दनंचचम्पकंनीलमुत्पलम्॥ प्रत्येकमेषांषट्मुष्टीःपक्त्वातोयेचतुर्गुणे। चतुर्भागावशेषेतुगर्भेचैतत्समावपेत्॥ रेणुकापद्मकञ्चैववाजिगन्धातथैवच।वेतसञ्चोरकंकष्ठंदेवदारुनखंत्वचम्॥ शतपुष्पापुण्डरीकंमांसीमधुकमेवच। एभिरक्षमितैःकल्कैःकषायेणैवपेषितैः॥ मस्तुशुक्तारनालानामाढकांशंसमापयेत्। क्षीराढकसमायुक्तंतैलप्रस्थंविपाचयेत्॥ अभ्यंगात्तैलमेतद्धिशीघ्रंदाहमपोहति। व्यपोहतितथावातपित्तश्लेष्मभवज्वरम्॥ सप्रलापंसतृष्णञ्चतालुशोषभ्रमान्वितम्। ग्रहोपसृष्टायेबालारक्षसादूषिताश्चये॥ तेषांकष्टंप्रशमयेत्तैलंलाक्षादिकंमहत्। फेनिलंबदरी॥लामज्जकमुशीरवत्पीतछवितृणविशेषः॥ लामज्जकंयदानस्यादुशीरन्दीयतेतदा। चम्पकमित्यस्यस्थानेकुत्रापिगैरिकमितिपाठः॥ नीलोत्पलस्यालाभेतुकुमुदंदेयमिष्यते। समावपेत्प्रक्षिपेदित्यर्थः॥ चोरकग्रन्थिपर्णस्यभेदोभटिउरइतिनैपालदेशेभवतितदलाभेग्रन्थिपर्णंदेयम्। पुण्डरीकंश्वेतकमलम्॥ मस्तुदधिजलम्॥ शुक्तंसन्धानभेदः॥ आरनालःसोऽपिसन्धानभेदः। इति महालाक्षादितैलम्॥ ६४॥

महालाक्षादि तैल॥

लाख, हल्दी, मजीठ, बेर, महुआ, बरियारा, लामज्जक (खसके समान पीला तृण विशेष इसके अभावमें खस डाली जातीहै) चन्दन, चम्पा अथवा गेरू और नीलकमल (इसके अभावमें कोकावेली छोडीजाती है) इन सब औषधियोंको चौबीस २ तोले लेकर चौगुने जल में पाक करे जब चौथाई रहजाय तब उतारले फिर इसमें रेणुका, पद्माक, असगंध, बेत, चोरक (यह कुकुरोंधेका भेद भटेउरनामसेनैपालमें प्रसिद्धहै इसके अभावमें कुकुरोंधा लेना चाहिये) कूट, देवदारु, नख, दालचीनी, सौंफ, श्वेत, कमल, जटामासी और मुलहठी इन सब तोले २ औषधियोंका कषायके द्वारा पिसे हुआ कल्क दहीका तोड दोसौ छप्पन तोले, सिरका दोसौ छप्पन तोले, आरनाल दोसौछप्पन तोले दूध दोसौ छप्पनतोले और तिलका तेल चौंसठ तोले मिलाके पाककरे इसतेलके लगानेसे शीघ्रही दाहका नाश होताहै और प्रलाप, तृषा, तालूका सूखना तथा भ्रमसहित वात पित्त कफसे उत्पन्न ज्वर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नाशको प्राप्त होताहै यह महालाक्षादि तैल ग्रहोंसे दूषित बालक और राक्षसों से पीडित होनेवाले के कष्टको दूर होताहै ॥ ६४ ॥ अथ नवज्वरेरसाः ॥

सूतोगन्धष्टङ्कणःशोषणश्चसर्वैस्तुल्याशर्कराभत्स्यपित्तैः । भूयोभूयोमर्दयेत्तत्त्रिरात्रं वल्लोदेयःशृंगवेरद्रवेण ॥ तापेशीतंव्यञ्जनैस्तक्रभक्तंवृन्ताकाढ्यंपथ्यमेतत्प्रदिष्टम् । अह्नै वोग्रंहन्तिसद्योज्वरन्तुपित्ताधिक्येमूर्ध्नितोयंचदद्यात् ॥ अस्यप्रक्रियापाराशुद्धभाग १ गन्धकभाग १ सोहागाभृष्टभाग १ मरिचभाग १ शर्कराभाग ४ रोहितमत्स्यपित्तभाग ४ प्रतिदिनसर्वैदिनत्रयंमर्दयेत्।रसमिमंरक्तिकात्रयमितमार्द्रकरसेनदद्यात् । ओदनं तक्रंवृन्ताकफलंभोक्तुंदद्यात् । व्यञ्जनाद्यैःशीतलमुपचारंकुर्य्यात् । उदकमञ्जरीरसो नवज्वरेषुरसरत्नप्रदीपे ॥ ६५ ॥

नवीन ज्वरपररस ॥

शुद्धपारा १ भाग गन्धक १ भाग सुहागा १ भाग मिर्च १ भाग और शक्कर ४ भाग इनसब औषधियोंको चारभाग मछली के पित्तेके द्वारा तीन दिनतक वारंवार घोटे फिर तीनरत्ती यह रस अदरक के रसके साथ सेवन करने को देवे मट्ठा भात और बैंगन का पथ्यदेवे दाहमें व्यजन आदिके द्वारा शीतल उपचार करे और पित्तकी अधिकतामें शिरपर जलछोंडे उसके सेवनसे एकही दिनमें नवीन उग्रज्वर का नाश होताहै इति उदकमंजरी रस ॥ ६५ ॥

अद्यात्सम्ंसूतसमुद्रफेनंहिंगुंसगन्धंपरिमर्द्ययामम् । नवज्वरेवल्लयुगंत्रिघस्रमार्द्राम्भसाऽयंज्वरधूमकेतुः (अथ प्रक्रिया) पाराशुद्धगन्धकशुद्धहिंगुलशुद्धसमुद्रफेनस मभागंसर्वंयाममेकमार्द्रकरसेनसंमर्द्यरक्तिकाषट्कमितमार्द्रकरसेनदिनत्रयं नवज्वरीभक्षयेत् दिनत्रयान्नवज्वरोनश्येत् इतिज्वरधूमकेतुः॥ रसेन्द्रचिंतामणौ ॥ ६६ ॥

रसेन्द्रचिन्तामणिमें कहाहुआ ज्वर धूम केतुरस ॥

शुद्धपारा, शुद्धगन्धक, शुद्धसिंदरक और शुद्धसमुद्रफेन इन सबको समभाग लेकर अदरकके रसमें एक पहर घोटे फिर अदरक के रसके साथ छः रत्ती रस तीनदिनतक खाय तो इस धूमकेतु रस से नवीनज्वर का नाश होताहै ॥ ६६ ॥

शुद्धसूतोविषंगंधःप्रत्येकंशाणसंमितः।धूर्त्तबीजंत्रिशाणंस्यात्सर्वेभ्योद्विगुणाभवेत् ॥ हेमाह्वाकारयेदेषांसूक्ष्मंचूर्णंप्रयत्नतः । जम्बीरबीजकैर्देयंचूर्णंगुञ्जाद्वयोन्मितम् ॥ आर्द्रकस्यरसेनापिज्वरंहंतित्रिदोषजम् । एकाहिकंद्व्याहिकश्चत्र्याहिकश्चचतुर्थकम् ॥ विषमञ्चज्वरंहन्यान्नवंजीर्णञ्चसर्व्वथा । महाज्वरांकुशोनाम्नारसोऽयंसर्व्वसम्मतः ॥ प्रक्रिया, शुद्धपारा, शुद्धगन्धक, शुद्धविष, प्रत्येकंटङ्कं १ धत्तूरबीजटङ्कं ३ चोकटङ्क १२ सर्व्वेषांचूर्णमतिसूक्ष्मंकर्त्तव्यम् (इतिमहांज्वरांकुशःसर्व्वज्वरेषुशार्ङ्गधरे) ॥ ९७ ॥

शार्ङ्गधरमें कहाहुआ संपूर्ण ज्वरोंपर महाज्वरांकुशरस ॥

शुद्धपारा, शुद्धविष, शुद्धगन्धक यहसब चार २ मासे धतूरेके बीज बारह मासे और चोक चारतोले इनसब औषधियोंका सूक्ष्म चूर्णकरे फिर दोरत्ती रस जंभीरी नींबूके रसके साथ तथा अदरकके रसके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

साथ सेवन करनेसे त्रिदोषज, एकाहिक, द्व्याहिक, त्र्याहिक, चातुर्थिक, विषमज्वर और जीर्णज्वर का नाश होताहै यह महाज्वरांकुश रस सर्व सम्मतहै ॥ ९७॥

एकोभागोरसाच्छुद्धाच्छैलेयःपिप्पलीशिवा। आकारकरभोगंधःकटुतैलेनशोधितः॥ फलानिचेन्द्रवारुण्याश्चतुर्भागमिताश्र्मी । एकत्रमर्दयेच्चूर्णमिन्द्रवारुणिकारसैः॥ माषोन्मितांवटींकृत्वादद्यात्सद्योज्वरेबुधः। छिन्नारसानुपानेनज्वरघ्नीवटिकामता॥ शैलेयः छरइतिलोकेशिवाहरीतकी। आकारकरभःअकरकराइतिलोके । चतुर्भागमिताअमीशैलेयादयः। षट्समुदिताभागचतुष्टयमिताः॥ ज्वरघ्नीवटिकाशार्ङ्गधरे ॥ ९८ ॥

शार्ङ्गधरमें कहीहुई ज्वरनाशक गोली ॥

शुद्धपारा १ भा० छर, पीपल, हड, अकरकरा, कटुतेल में शोधी हुई गन्धक और इन्द्रायणके फल यह सब चारभाग इनसब औषधियोंको चूर्ण करके इन्द्रायण के रसमें खरल करे और उर्द के बराबर गोली बाँधे इस गोली को गिलोयके रसके साथ सेवन करनेसे नवीन ज्वरका नाश होताहै ९८ ॥

रसंगन्धञ्चदरदंजैपालंक्रमवर्द्धितम् । दन्तीरसेनसंपिष्यवटीगुञ्जामिताभवेत् ॥ प्रभातेसितयासार्द्धमसिताशीतवारिणा । एकेनदिवसेनैषानवज्वरहरीभवेत् ॥ (इति ज्वरघ्नीवटिकारसरत्नप्रदीपे ॥ ९९ ॥

रसरत्नप्रदीप में कहीहुई ज्वरनाशक गोली ॥

पारा १ भाग गंधक २ भाग सिंदरफ ३ भाग जमालगोटा ४ भाग इन सबको जमालगोटे के रस में पीसकर एक रत्ती की गोली बनावे फिर प्रातःकाल शक्कर के साथ अथवा शक्कर न होतो शीतल जलके साथ इसका सेवन करने से एकही दिनमें नवीनज्वरका नाशहोताहै॥ ९९॥

रसगन्धोविषंशुण्ठीपिप्पलीमरिचानिच । पथ्याविभीतकंधात्रीदन्तीबीजंचशोधितम्॥ चूर्णमेषांसमांशानांद्रोणपुष्पीरसैःपुटेत्। वटींमाषनिभांकुर्य्याद्भक्षयेन्नूतनेज्वरे ॥ नवज्वरहरीवटी ॥ १०० ॥

नवीनज्वरनाशकगोली ॥

शुद्धपारा, शुद्धगन्धक, शुद्धसींगिया, सोंठ, पीपल, मिर्च, हड, बहेडा, आंवला और शुद्ध जमालगोटा इन सबको समभाग लेकर चूर्णकर गूमाके रसमें खरलकरके पुटपाककरे फिर उर्दके समान गोली बनाकर नवीन ज्वर में सेवनकरे॥ १००॥

एकभागोरसोभागद्वयंशुद्धश्चगन्धकम्। गरलस्यत्रयोभागाचतुर्भागाहिमावती॥ जैपालकःपञ्चभागोनिम्बुद्रवविमर्दितः। कृमिघ्नःप्रमितावत्यःकार्याःसर्वज्वरच्छिदः॥ शृंगवेरेणदातव्या वटिकैकादिनेदिने। जीर्णेज्वरेतथाऽजीर्णेसमेवाविषमेतथा ॥ ज्वरंसर्वनिहन्तासौ दावोवनमिवानलः॥ नवज्वरेरसः ॥ १०१ ॥

नवीन ज्वर पर रस॥

पारा १ भाग, शुद्धगन्धक २ भाग, विष ३ भाग, मकोय ४ भाग और जमालगोटा ५ भाग इनसबको नींबूकेरसमें घोटकर बायबिडंगके समान गोली बनावे फिर अदरकके रस के साथ एक गोली रोज खानेसे जीर्णज्वर, आम सहित ज्वर और सम तथा विषम आदिक संपूर्ण ज्वरोंका नाशहोताहै जैसे दावाग्नि से वन का नाश होताहै उसी प्रकार यह भी संपूर्ण ज्वरोंका नाशकरताहै ॥ १०१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथसामान्यज्वरेरसाः ॥

शुद्धंसूतंविषंगन्धंधूर्त्तबीजंत्रिभिःसमम् । चतुर्णांद्विगुणंव्योषंचूर्णंगुञ्जाद्वयोन्मितम् ॥ आर्द्रकस्यरसैःकिंवाजम्बीरस्यरसैर्युतम् । महाज्वरांकुशोनाम्नासर्वज्वरविनाशनः ॥ एकाहिकंद्व्याहिकञ्चत्र्याहिकञ्चचतुर्थकम् । विषमंवात्रिदोषंवाज्वरंहन्तिनसंशयः ॥ (प्रक्रिया) शुद्धपारदटंङ्क १ शुद्धविषटङ्क १ शुद्धगन्धकटङ्क १ धत्तूरबीजटङ्क ३ त्रिकुटाप्रत्येकटङ्क ४ सर्वेषांचूर्णमतिसूक्ष्मंकर्तव्यम् । इतिमहाज्वराङ्कुशःसर्वज्वरेषु ॥ १०२ ॥

सामान्य ज्वर पर रस महाज्वरांकुश रस ॥

शुद्धपारा, शुद्धबिष, शुद्धगन्धक, यह सब एक २ भाग धतूरेके बीज ३ भाग और इनचारोंका दूना त्रिकटुका चूर्ण इन सब औषधियोंको चूर्ण करके अदरकके रस अथवा जंभीरी नींबूके रसके साथ दो रत्ती इस महाज्वरांकुश रस के सेवन करनेसे एकाहिक, द्व्याहिक, त्र्याहिक तथा चातुर्थिक, बिषम ज्वर और त्रिदोषज यह सब प्रकारके ज्वर निस्सन्देह नाशको प्राप्त होते हैं ॥ १०२ ॥

सूतंगन्धंविषंचैवटङ्कणंचमनःशिलाम् । एतानिटङ्कमात्राणिमरिचंत्वष्टटङ्ककम् ॥ कटुत्रयंटङ्कषट्कंखल्लेक्षिप्त्वाविचूर्णयेत् । रसःश्वासकुठारोऽयंसर्वज्वरहरःपरः ॥ इति श्वासकुठारोरसःश्वासेसर्वज्वरेरसरत्नाकरे ॥ १०३ ॥

श्वास कुठाररस ॥

शुद्धपारा, गन्धक, बिषसुहागा और मैनशिल यह सब चार २ मासे मिर्च बत्तीसमासे और त्रिकुटा चौबीस मासे इनसब औषधियों को एक साथ पीसकर चूर्णकरे इस श्वासकुठाररसके सेवनसे श्वास और सब प्रकारके ज्वरोंका नाश होताहै ॥ १०३ ॥

दारुमूषांशिखिग्रीवांरसकञ्चपृथक्पृथक् । टङ्कत्रयानुमानेनगृहीत्वाकनकद्रवैः ॥ मर्द्दयेत्त्रिदिनंकार्य्यावटीचणकमात्रया । मरिचैरेकविंशत्यासप्तभिस्तुलसीदलैः ॥ खादे[त्व]टीद्वयंपथ्यंदुग्धभक्तंसशर्करम् । तरुणंविषमंजीर्णंहन्यात्सर्वज्वरंध्रुवम् ॥ दारुमूषा [दा]रुमूसी शिखिग्रीवातुत्थंरसकङ्खपरियाप्रत्येकंस्यात् । टङ्क ३ धत्तूरपत्रस्यरसेनमर्द्दयेत् [इति] ज्वरांकुशःसर्वज्वरेषु ॥ १०४

सम्पूर्णज्वरोंपर ज्वरांकुश रस ॥

दारुमूसी, तूतिया और खपरिया यहसब तोले २ भर लेकर धतूरे के पत्तों के रसमें तीन दिनतक खरलकरे फिर चनेके बराबर गोली बनाके इक्कीस कालीमिर्च और सात तुलसी दलोंके साथ दो गोली खाय और शक्करसहित दूध भात का भोजनकरे इस से नवीन विषम तथा जीर्ण यह सब [प्र]कारके ज्वर निस्संदेह नाश को प्राप्त होते हैं ॥ १०४ ॥

मरिचंसार्द्धकर्षंस्यात्तावद्दग्धवराटकम् ॥ विषं [?] नागरंकर्षमात्रञ्चटंकणंकर्षकद्वयम् । रसोहुताशनोनाम्नाखाद्योगुञ्जामितोज्वरे । इतिहुता[श]नोरसः ॥ १०५ ॥ [क]र्षंचतुर्थांशंसर्वमेकत्रचूर्णयेत् ॥

हुताशनरस ॥

सोंठ १ तोला, सुहागा २ तोला, मिर्च १ तोला, कौड़ीकी भस्म १॥ तोला और विष तीनमासे इन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सब औषधियोंको एक साथ चूर्णकरे यह हुताशननामक रस ज्वरमें एक रत्ती खानाचाहिये ॥ १०५ ॥

शुद्धजैपालटंकन्तुकटूवींटंकद्वयोन्मितम् । गैरिकंटंकमेकञ्चकुन्यानीरेणमर्दयेत् ॥ कला यसदृशीकार्य्यावटिकाताञ्चभक्षयेत ॥ शीतलेनजलेनैववटीजीर्णज्वरापहा । इति ज्वर घ्नीवटिका ॥ १०६ ॥

ज्वरनाशक गोली ॥

शुद्ध जमालगोटा ४ मासे कुटकी आठ मासे और गेरू ४ मासे इन सबको घीकुआरके रस में घोटकर मटरके समान गोली बनावे इस गोली को शीतल जल के साथ सेवन करने से जीर्णज्वर का नाश होताहै ॥ १०६ ॥

द्विभागतालेनहतंचताम्रं रसंचगन्धंचसमीनमायुः । विषंसमंचद्विगुणञ्चताम्रात्त्रिःसप्त वारेणदिवाकरांशौ ॥ विमर्द्यचारिष्टरसेनचूर्णंगुञ्जैकदत्तंसितयासमेतम् । ज्वरांकुशोऽयं रविसुन्दराख्योज्वरान्निहन्त्यष्टविधान्समस्तान् (अस्यप्रक्रिया) पारटंक १ गन्धटंक १ विषटंक १ द्विगुणतालकहतताम्रटंक २ रोहूमत्स्यकेपित्तटंक १ सर्वमेकत्रचूर्णयित्वानि म्बपत्ररसैर्भावयित्वाउष्णे संशोष्यरत्तिकामात्रं १ श्वेतशर्करयाभक्षणीयं सर्व्वज्वरेरवि सुन्दरोरसः १०७॥

सब ज्वरोंपर रविसुन्दर रस ॥

दूनी हरतालके द्वारा माराहुआ तांबा ८ मासे शुद्धपारा, गंधक, विष, और रोहू मछलीका पित्ता यह सब चार २ मासे इन सब औषधियों को एकसाथ पीसकर नींबके पत्तों के रससे धूपमें सुखा सुखा कर २१ भावनादेवे फिर श्वेत शक्करके साथ एक रत्ती इस रविसुन्दर रसको खाय तो आठों प्रकारके सब ज्वरोंका नाश होताहै ॥ १०७ ॥

शुद्धंसूतंतथागन्धंखल्वेतावद्विमर्दयेत् । सूतंनदृश्यतेयावत्किन्तुकज्जलवद्भवेत् ॥ एषाकज्जलिकाख्याताबृंहणीवीर्य्यवर्द्धिनी।नानानुपानयोगेनसर्वव्याधिविनाशिनी १०८

शुद्धपारा और शुद्ध गन्धकको समभाग लेकर तबतक खरलकरे जबतक कि पारा और गन्धक मिलकर कजली न होजाय यह कजली धातु तथा वीर्यवर्द्धक और अनेक प्रकारोंके अनुपानोंके यो से सम्पूर्ण रोगों की नाशक होती है ॥ १०८ ॥

कज्जलिकाविधानंतद्गुणाश्च रसरत्नप्रदीपे ॥

जपापत्ररसेनाथवर्द्धमानरसेनच । भृङ्गराजरसेनापिकाकमाच्यारसेनच ॥ रसंसंशो धयेत्तेनतत्समंशोधयेद्बलिम् । भृङ्गराजरसैःपिष्टाशोषयेदर्करश्मिभिः ॥ सप्तधावात्रिधा वापिपश्चाच्चूर्णन्तुकारयेत् । चूर्णयित्वासमंतेनरसेनसहमर्दयेत् ॥ नष्टसूतंयदाचूर्णंभ वेत्कज्जलसन्निभम् । निर्धूमबदरांगारेद्रवीकुर्य्यात्प्रयत्नतः ॥ तत्रतंमाहिषीविष्ठास्थापि तेकदलीदले । निःक्षिपेत्तदुपर्य्यन्यत्पत्रंदत्त्वाप्रपीडयेत् ॥ शीतलञ्चततःपत्रात्समुद्धृत्य विचूर्णयेत् । एवंसिद्धाभवेद्व्याधिघातिनीरसपर्पटी ॥ ज्वरादिव्याधिभिर्व्याप्तंविश्वं द्वापुराहरः । चकारकृपयायुक्तःसुधावद्रसपर्पटीम् । रत्तिकासंमिताताबद्भृष्टजीरकसंयु ताम् ॥ गुञ्जार्द्धभृष्टहिंग्वाढ्यांभक्षयेद्रसपर्पटीम् । रोगानुरूपभैषज्यैरपितांभक्षयेद्बुधः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पिबेत्तदनुपानीयंशीतलंञ्चुलुकत्रयम् । प्रत्यहंतस्यचैकैकांरत्तिकांवर्द्धयेद्भिषक् । नाधिकांदशगुञ्जातोभक्षयेत्तांकदाचन ॥ एकादशदिनारम्भात्तांतथैवापकर्षयेत् । एवमेतांसमश्नीयान्नरोविंशतिवासरान् ॥ शिवंगुरूंस्तथाविप्रान्पूजयित्वाप्रणम्यच । श्रद्धयाभक्षयेदेतांक्षीरमांसरसाशनः ॥ ज्वरञ्चग्रहणींवापितथातीसारमेवच । कामलांपाण्डुरोगञ्चशूलप्लीहजलोदरम् ॥ एवमादीन्गदान्हत्वाहृष्टःपुष्टश्चवीर्यवान् । जीवेद्वर्षशतंसाग्रंवलीपलितवर्ज्जितः ॥ इति रसपर्पटी ॥ १०९ ॥

रसरत्नप्रदीप में कज्जलीकी विधि और गुण ॥

गुडहरके पत्तोंका रस रेंडीके पत्तोंका रस भंगरेका रस और काकमाचीका रस इनसे पारेको शुद्ध करके पारेके समान गन्धकको शुद्ध करके भंगरेके रससे पीस २ कर सात बार अथवा तीन बार धूप में सुखावे फिर पारे और गन्धककी कज्जली करे और धूमरहित बेरीकी लकडी के कोयलोंपर उस कज्जलीको गलाकर भैंसके गोबरपर रक्खे हुए केलेके पत्तेपर डाले फिर उसके ऊपर दूसरा पत्ता डालकर दबादे इसके उपरान्त शीतल होजानेपर उसको पत्तेसे निकालकर पीसले इस प्रकार सम्पूर्ण रोगनाशक रस पर्पटी सिद्ध होतीहै पूर्वकालमें ज्वरादि रोगोंसे सम्पूर्ण संसारको व्याकुल देखकर श्री शिवजीने कृपाकरके यह रस पर्पटी बनाईथी प्रथम दिन एक रत्ती पर्पटी रसको एकरत्ती भुने जीरे और आधी रत्ती भुनी हींगके साथ खाय पंडित लोग रोगके अनुसार औषधियोंके साथ इसको सेवन करें और औषध खानेके उपरान्त तीन चुल्लू जल पियें वैद्यको चाहिये कि इसकी एक २ रत्ती रोज बढ़ाताजाय परन्तु दश रत्तीसे अधिक कभी न बढ़ावे फिर ग्यारहवें दिनसे इसी प्रकार एक २ रत्ती घटाताजाय इस रीतिसे बीस दिन तक रसपर्पटी का सेवन करे श्रीशिवजी गुरू और ब्राह्मणोंको पूजन तथा नमस्कार करके श्रद्धापूर्वक इस रसका सेवन करना चाहिये इसके साथ दूध और मांसके रसका सेवन करे इसके सेवनसे ज्वर ग्रहणी अतीसार कामला पांडु शूल प्लीहा तथा जलंधर आदि रोगोंसे छूटकर झुर्री तथा बालोंकी श्वेततासे रहित होके हृष्टपुष्ट होकर सौबर्षतक जीताहै इति रसपर्पटी ॥ १०९ ॥

अथ ज्वरिणोऽन्नदानसमयस्तत्रचरकः ॥

क्षुत्सम्भवतिपक्केषुरसदोषमलेषुच । कालेवायदिवाऽकालेसोऽन्नकालउदाहृतः ॥ (अन्यच्च) आमेपाकंगतेनॄणांयदाभोजनलालसा । भवेत्कालेह्यकालेवासोऽन्नकाल उदाहृतः ॥ (तत्र कालमाह) ज्वरस्यपाकावस्थानदानकालः ॥ ११० ॥

ज्वरवालेको अन्नदेनेका समय ॥

इसमें चरकने कहा है कि रसदोष तथा मलोंके परिपाक होनेपर क्षुधा लगतीहै इसीलिये समय अथवा असमयहो वही अन्नका समय कहागयाहै और भी कहागयाहै कि समय अथवा बेसमय आमके परिपाक होनेसे मनुष्योंको जब क्षुधालगे वही भोजनका समयहै वह काल यहकहागयाहै कि ज्वरकेपाक होनेकी अवस्था अन्नदेनेका समयहै ॥ ११० ॥

ज्वरस्यपाककालश्च ॥

वातिकःसप्तरात्रेषुदशरात्रेणपैत्तिकः । श्लैष्मिकोद्वादशाहेनज्वरःपाकमुपैतिहि ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्वरस्यपाकउपशमः ज्वरपाकेनैवरसपाकोदोषपाकोऽपिकथितः यथादोषपाकंविनाज्वर पाको न भवतिरसपाकंविनादोषपाकश्च न भवति। ननुयथापैत्तिकज्वरो। दशाहोरात्रेण पाकंयाति। एकादशदिनेऽन्नंदीयते। यथाश्लैष्मिकोज्वरोद्वादशाहोरात्रेणपाकंयाति। त्रयोदशेदिवसेऽन्नंदीयते। तथावातिकोज्वरः सप्ताहोरात्रेणपाकंयातिअष्टमेदिवसेऽन्नं कथंनदीयते। कथंसप्तमएवदिवसेऽन्नंदीयतइत्युच्यते॥ १११॥

ज्वर के परिपाक होने का समय॥

बातज्वर सात रात्रिमें पित्तज्वर दशरात्रिमें और कफज्वर बारह दिनमें परिपाक अर्थात् शान्ति को प्राप्त होता है यहां ज्वर के परिपाक कहने से रस तथा दोषोंका भी परिपाक कहागया यह जानना चाहिये क्योंकि दोषों के पाक के बिना ज्वर का पाक नहीं होता और रस के पाक हुये बिना दोषों का पाक नहीं होता अब यह सन्देह होता है कि जैसे पित्तज्वर दशरात्रि में पाकको प्राप्त होता है ग्यारहवें दिन अन्न दिया जाता है और कफ ज्वर बारह रात्रिमें पाक होकर तेरहवें दिन अन्नदिया जाता है इसी प्रकार बात ज्वर सातरात्रि में परिपाक होताहै तो आठवें दिन अन्न क्यों नहीं दिया जाता सातवें ही दिन क्यों दियाजाता है॥ १११॥

कफपित्तेद्रवेधातुसहेतेलंघनंबहु। आमक्षयादूर्ध्वमपिवायुर्नसहतेक्षणम्॥ इति वचनादामरसपाकेजातेआहारलाभंविनावायुः क्षणमात्रमपिसोढुं न शक्नोति सम्आशुका रित्वात् क्षणादाक्षेपकादीन्विकारान्सञ्जनयति। अतोवातिकेज्वरेपाकदिनानामन्ति मे। सप्तमएवदिनेऽन्नंदीयते॥ ११२॥

इसका उत्तर यहहै कि कफ और पित्त यह पतली धातुहैं इसीसे यह बहुत लंघन सहसक्ती हैं परन्तु बात आमके परिपाक होने के उपरान्त क्षण भरभी लंघन को नहीं सहसक्ती है इस वचनसे यह ज्ञात होता है कि आमरसके परिपाक के उपरान्त बात क्षण भरभी आहारके बिना नहींरहसक्ती है और शीघ्रकारी होने के कारण क्षणभरही में आक्षेपादिक रोगोंको उत्पन्न करती हैं इसलिये बात ज्वर के परिपाक के दिनों के अन्तके सातवें ही दिनअन्न दियाजाता है॥ ११२॥

(तथा च धन्वन्तरिः) ज्वराभिभूतःषडहेऽव्यतीते विपक्वदोषःकृतलङ्घनादिः। योभेषजंखादतिवैद्यवश्योनिःसंशयंहन्त्यचिरात्सरोगान्॥ ज्वराभिभूतःवातज्वराभिभूतःविपक्वदोषःपक्ववातःकृतलङ्घनादिः। आदिशब्दात्कृतपक्वजलपाननिर्वातगृहवासगुरूष्णवसनधारणादिः भेषजमित्यन्नस्याप्युपलक्षणम्। (अतएवाह चरकः) ज्वरितंषडहेऽतीते लघ्वन्नंप्रतिभोजितम्। पाचनंशमनीयंवा कषायंपाययेत्तुतम् इति॥ ज्वरितंवातज्वरिणम्। षडहेऽतीतइत्युपलक्षणम्। पित्तज्वरिणं दशाहेऽतीते। श्लेष्मज्वरिणं द्वादशाहेऽतीते। लघ्वन्नंभोजितंज्वरिणम्॥ ११३॥

और धन्वन्तरि ने कहा है कि लंघनादिक (आदिशब्दसे पक्वेजलका पीना वायु रहित स्थानमें रहना और भारी तथा उष्ण वस्त्र का धारण करना आदिक लियेजाते हैं) कियेहुए परिपाकहुएबात वाला बातज्वर छःदिनके व्यतीत होजानेपर बैद्यके बशीभूतहोकर जो औषध तथा अन्नादिका सेवन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करताहै वह निस्सन्देह ज्वरका नाश करताहै चरकने कहाहै कि वातज्वरवाले को छःदिनके उपरान्त पित्तज्वरवालेको दश दिनके उपरान्त और कफज्वरवालेको बारहदिनके उपरान्त हलका अन्न भोजन कराकर पाचन अथवा शमन कषाय पानकरावै॥ ११३ ॥

सज्वरंज्वरमुक्तंवादिनान्तेभोजयेल्लघु । गुर्वभिष्यन्द्यकालेच ज्वरीनाद्यात्कथञ्चन ॥ दिनान्तेअंतशब्दोऽत्रमध्यवाचीतेनत्रिधा विभक्तस्यदिवसस्यमध्यभागे पित्तस्यप्राधान्यसमये । उक्तंच वाग्भटेन ॥ तेव्यापिनोऽपिहृन्नाभ्योरधोमध्योर्ध्वसंश्रयाः । वयोऽहोरात्रभुक्तानान्तेऽन्तमध्यादिमाःक्रमात् । तेवातपित्तश्लेष्माणः ॥ ११४ ॥

ज्वरयुक्त अथवा ज्वररहित मनुष्यको दिनके अन्त में हलका भोजन करावे और भारी तथा अभिष्यन्दी वस्तु अथवा अकालमें ज्वरवालेको भोजन न कराना चाहिये यहाँ अंत शब्दका अर्थ मध्य है इसलिये दिनके तीनभाग करके पित्तकी प्रधानतावाले मध्यभाग में भोजन देना चाहिये और वाग्भटने भी कहाहै कि वात पित्त और कफ यह व्यापक होनेपर भी क्रमसे हृदय तथा नाभि के नीचे मध्यमें तथा ऊपर स्थितरहते हैं और अवस्था दिनरात्रि तथा भोजन के अन्त मध्य और आदिमें प्रबल होते हैं ॥ ११४ ॥

पित्तकालोऽपिमध्याह्नादर्वाक् । यतआह ॥ याममध्येनभोक्तव्यं यामयुग्मंनलङ्घयेत् ॥ याममध्येरसोत्पत्तिर्यामयुग्माद्बलक्षयः ॥ एतत्संख्यापरमितिचेत्तन्नयत आह । श्लेष्मक्षयेप्रवृद्धोष्मा बलवाननलस्तदा । वेगापायेऽन्यथातद्धि ज्वरवेगाभिवर्द्धनम् ॥ तदापित्तप्राधान्यसमये अन्यथा उक्तसमयादन्यथा वेगापाये जठराग्निवेगनाशे तद्भोजनं ज्वरवेगाभिवर्द्धनं भवतीत्यर्थः ॥ ११५ ॥

पित्तके समयमें भी मध्याह्नसे पहले भोजनकरना चाहिये क्योंकि कहागया है कि पहले पहरके भीतर और दोपहरके उपरान्त भोजन न करे क्योंकि पहले पहरमें रसकी उत्पत्ति होतीहै और दोपहरके उपरान्त बलका नाश होताहै यह संख्याके लिये कहागयाहै इसका सन्देह नहीं करना चाहिये क्योंकि कहागया हैं कि ऊष्माके बढ़नेसे कफका क्षय होजाने पर अग्नि बलवान् होतीहै इससे पित्तकी अधिकताके समय भोजन अवश्य देनाचाहिये नहीं तो जठराग्निके वेगके नाशहोजाने पर भोजनदेने से ज्वरका वेग बढ़ता है ॥ ११५ ॥

अत्र विषमज्वरिणोऽन्नदानकालविशेषमाह चरकः ॥

सर्वज्वरेषुसप्ताहं मात्रावल्लघुभोजयेत् । वेगापायेऽन्यथातद्धि ज्वरवेगाभिवर्द्धनम् ॥ सर्वज्वरेषुसर्वविषमज्वरेषुवेगापाये ज्वरवेगापाये भोजयेत् । अन्यथा ज्वरवेगापायेविनातद्भोजनं ज्वरवेगाभिवर्द्धनं भवति ॥ ११६ ॥

विषमज्वरमें अन्नदेनेका विशेषसमय चरकने कहाहै ॥

सब प्रकारके विषमज्वरमें ज्वरके वेगके शान्त होजाने पर सातादिनतक मात्राके अनुसार हलका भोजनदेना चाहिये और ज्वरके वेगके शान्तहुए विना भोजनदेने से ज्वरका वेग बढ़ताहै ॥ ११६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथान्नग्रहणाय स्थानमाह ॥

आहारनिर्हारविहारयोगाः सदैवसद्भिर्विजनेविधेयाः। इति ॥ ११७ ॥

भोजनकरनेका स्थान ॥

सज्जन लोग आहार मलमूत्रका त्याग और विहार सदैव निर्जन स्थानमें करें ॥ ११७ ॥

अत्यबलस्य ज्वरितस्य भोजनायोपवेशनप्रकारमाह सुश्रुतः ॥

ज्वरेप्रमेहोभवतिस्वल्पैरपिविचेष्टितैः। निषण्णंभोजयेत्तस्मान्मूत्रोच्चारौचकारयेत् निषण्णंयथास्थानस्थितमेव नतुस्थानान्तरंनीतम् ॥ ११८ ॥

अत्यन्तनिर्बलज्वरवालेको सुश्रुतका कहाहुआभोजनकेलिये बैठनेका प्रकार ॥

ज्वरमें थोडीभी चेष्टाकरनेसे मोह उत्पन्न होताहै इसलिये उसको अन्य स्थानमें न लेजाकर जि स्थानमें बैठाहो उसी स्थानमें भोजन करावे और मल मूत्रका त्यागभी वहीं करावे ॥ ११८ ॥

अन्नग्रहणसमये प्रथमं ज्वरितेनकवलः कर्त्तव्य इत्याह ॥

यथादोषोचितैर्द्रव्यैः कर्त्तव्यःकवलग्रहः। अरोचकास्यवैरस्य मलपूतिप्रसेकहृत् ॥ भृष्टजीरकचूर्णेन सिंधुजन्मयुतेनच। जिह्वादंतान्मुखस्यान्तर्घृष्ट्वाकवलमाचरेत् ॥ मुखे मलंविगन्धत्वं विरसत्वञ्चनश्यति। मनःप्रसन्नंभवति भोजनेऽतिरुचिर्भवेत् ॥ ११९ ॥

भोजनके समय ज्वरवालेको प्रथम कवलका ग्रहण करना चाहिये ॥

ज्वरवाला दोषके अनुसार औषधियोंके द्वारा कवलका ग्रहण करे इस्से अरुचि मुखकी विरसता मैल दुर्गन्धि और लार बहना आदिक नष्ट होतेहैं भुनाहुआ जीरा सेंधानोन मिलायके चूर्णकरे उस के द्वारा जिह्वा दांत और मुखके मध्यमें रगडकर पूर्वोक्त विधिके अनुसार कवलके ग्रहणकरने से मुखका मल दुर्गन्ध तथा विरसताका नाश और मनकी प्रसन्नता तथा भोजनमें रुचि होती है ११९ ॥

ज्वरितोहितमश्नीयाद्यद्यप्यस्यारुचिर्भवेत्। अन्नकालेह्यभुञ्जानः क्षीयतेम्रियतेऽपि च ॥ अयमर्थः। यद्यपिज्वरितस्यहितेभक्ष्येऽरुचिर्भवेत्। तथापिज्वरितोहितमेवाश्नीया दितिनियमः (यतआहसुश्रुतः) गुर्वभिष्यन्द्यकालेचज्वरीनाद्यात्कथञ्चन ॥ नतुतस्या हितंभुक्तमायुषेवासुखायच ॥ आनद्धःस्तिमितैर्दोषैर्यावन्तंकालमायुषः। तावत्कालंसल घ्वन्नमश्नीयात्सविरक्तवत् ॥ आनद्धःस्तिमितैर्दोषैःअपक्वैर्दोषैर्व्याप्तइत्यर्थः। ननुहितेव स्तुनिकथमरुचिःस्यादतआह ॥ सातत्यात्स्वाद्वभावाच्च पथ्यंद्वेषत्वमागतमिति। सात त्यादेकस्यैवभक्ष्यस्यसर्वदोषयोगात्स्वाद्वभावात्भक्ष्यान्तरादपिविस्वादुतः ॥ पथ्यमप्रि यंस्यात्तथापितदेवपथ्यम् ॥ कल्पनाविधिभिस्तैस्तैःप्रियत्वंगमयेत्पुनरिति। अथ ज्वरि तोऽन्नकालेऽश्नीयादेवेतिद्वितीयोनियमःकुतइतिचेत्हियतोहेतोःअभुञ्जानःक्षीयते॥ पक्व दोषधातुर्भवतिततःम्रियतेऽपिच ॥ १२० ॥

ज्वरवाला मनुष्य हित भोजनमें अरुचि होनेपरभी हितकारीही भोजन करे अहितकारी न करे यह नियमहै भोजनके समय भोजन न करने से क्षीणता और मृत्युभी होती है सुश्रुतने कहाहै कि देरमें पचनेवाली और अभिष्यन्दी (दहीआदि) वस्तु और अकालमें भोजन ज्वरवाला त्यागकरदे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्योंकि अहित भोजन आयु और सुखकारी नहींहोताहै रोगी जबतक परिपाक रहित दोषोंसे व्याप्त तबतक विरेचनवालेके समान हलका भोजनकरे हितकारी वस्तुमें अरुचि क्यों होतीहै? इस [illegible]हके दूरकरनेको कहते हैं कि निरन्तर एक भी वस्तुके खानेसे अथवा स्वादुके न होने से जो [illegible]में अरुचि होजाय तो अनेकप्रकारकी भोजन बनाने की विधियों से रोगीको फिर रुचि उत्पन्न [illegible]वे ज्वरवालेको भोजनके समय अवश्य भोजन करना चाहिये यह दूसरा नियमहै क्योंकि समय भोजन न करनेसे दोष और धातुओंका परिपाक होकर क्षय होनेसे मृत्युतक होजातीहै॥ १२०॥

ज्वरितायहितान्यन्नादीन्याह ॥

रक्तशाल्यादयःशस्ताःपुराणाःषष्टिकैःसह। यवाग्वोदनलाजार्थे ज्वरितानांज्वरापहाः॥ [illegible]न्मसूरांश्चणकान् कुलत्थान्समकुष्ठकान्। यूषार्थेयूषसात्म्यानां ज्वरितानांप्रदापये त् ॥ पटोलपत्रंवार्त्ताकुं कुलकंकारवेल्लकम्। कर्कोटकंपर्पटकं गोजिह्वांबालमूलकम् ॥ पत्रंगुडूच्याःशाकार्थेज्वरितानांज्वरापहम् ॥ १२१ ॥

ज्वरवालेको हितअन्नादिक ॥

पुराने लाल धान्यादिक और साठी यह ज्वरनाशक होते हैं इसलिये ज्वरवालेको इनकी यवागू,भात और खीलें श्रेष्ठ हैं मूंग, मसूर, चने,कुलथी और मोठ इनका यूष ज्वरवालोंको देवे पर्वल के पत्ते, बैंगन, परवल,करेला,खिकसा, पित्तपापडा,गोभी,कच्ची मूली और गिलोयकी पत्ती इन का शाक ज्वरवाले को ज्वर के नाश करने को देवे ॥ १२१ ॥

लावान्कपिञ्जलानेणान् हरिणान्पृषताञ्छशान्। कुरंगान्कालपुच्छांश्च तथैवमृग मातृकान्। मांसार्थेमांससात्म्यानांज्वरितानांप्रदापयेत्॥ सारसक्रौञ्चशिखिनस्तथाति त्तिरकुक्कुटान् । गुरूष्णत्वान्नशंसन्तिकेचिदेवंव्यवस्थिताः ॥ तित्तिरइत्यन्यकृष्णति [illegible]तरः॥ १२२॥

मांस के अभ्यासवाले ज्वररोगी को लवा,सफेद तीतर, काला हिरन, ताम्रवर्ण हिरन, चित्रवर्ण [illegible]हिरन, खरगोश, कुछ ताम्रवर्ण के बडे हिरन, काली पूंछवाले हिरन और मोटे मृग.इनसबका मांस [illegible] सारस,कुरर,मोर,काला तीतर और मुर्गा इनसबका मांस भारीपन और उष्णता से ज्वरवाले [illegible] हितकारी नहीं है यह किसी २ का मतहै ॥ १२२ ॥

ज्वरितानांप्रकोपंतु यदायातिसमीरणः। तदैतेऽपिहिशस्यन्तेमात्राकालोपपादिताः॥ निम्बुकंदाडिमंधात्रीपलमम्लंप्रकांक्षते । प्रदद्यादम्लसात्म्यायकाञ्जिकंवापुरातनम् ॥ [illegible]तेषांगुणनामानिपूर्वोक्तानि ॥ १२३ ॥

[illegible] जिस समय ज्वरवाले की वायु कुपितहो उस समय यह संपूर्ण मांस भी समय और मात्राके [illegible]सार हितकारी हैं खटाईके अभ्यासवाले ज्वररोगी को निंबू अनार आंवला अथवा पुरानी [illegible]जी देनी चाहिये इनसबके नाम और गुण पहले कहे गये हैं ॥ १२३ ॥

अथान्नसाधनप्रक्रियामाह। तत्रमण्डस्यलक्षणंविधिर्गुणाश्च ॥

तण्डुलानांसुसिद्धानांचतुर्दशगुणेजले । रसःसिक्थैर्विरहितोमण्डइत्यभिधीयते ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुण्ठीसैन्धवसंयुक्तोदीपनःपाचनश्चसः। अन्नस्यसम्यक्सिद्धात्रज्ञेयामण्डस्यसिद्धता॥ पेयायूषयवागूनांविलेपीभक्तयोरपि। मण्डोग्राहीलघुःशीतोदीपनोधातुसाम्यकृत्॥ ज्वरघ्नस्तर्पणोबल्यःपित्तश्लेष्मश्रमापहः॥ १२४॥

अन्न बनाने की प्रक्रिया मण्डके लक्षण विधि और गुण॥

चौदह गुने जलमें परिपाक किये गये चावलों के भात रहित रसको मण्ड कहतेहैं सोंठ और सेंधव युक्त मण्ड दीपन और पाचन होताहै मण्ड, पेया, यूष, यवागू, विलेपी और भात इन सबमें अन्न का खूब परिपाक होजानाही सिद्ध होजाने का लक्षण है मण्ड. ग्राही, हलका, शीतल, दीपन, धातुओंको समकरनेवाला, ज्वरनाशक, तृप्तिकारी, बलकारक और पित्त, कफ तथा श्रम नाशक होताहै॥ १२४॥

अथ पेयायाविधिर्गुणाश्च॥

चतुर्दशगुणेनीरे रक्तशाल्यादिभिःकृता। द्रवाधिकास्वल्पसिक्थापेयाप्रोक्ताभिषग्वरैः॥ सातिलघ्वीग्राहिणीचधातुपुष्टिविधायिनी। तृड्ज्वरानिलदौर्बल्यकुक्षिरोगविनाशिनी॥ स्वेदाग्निजननीज्ञेयावातवर्च्चोऽनुलोमनी। शुण्ठीसैन्धवसंयुक्तादीपनीपाचनीचसा॥ आमशूलहरीरुच्यास्याद्विबन्धविनाशिनी॥ १२५॥

पेयाकीविधि और गुण॥

चौदह गुने जलमें परिपाक कियेगये लालधानोंके चावल थोड़ेहों और जल अधिकहो इसको वैद्यलोग पेया कहते हैं पेया बहुत हलकी, ग्राही, धातुओंकी पुष्टकरनेवाली, स्वेद तथा अग्निवर्द्धक, वात तथा मलको अपने मार्गमें लेजानेवाली और तृषा, ज्वर, वायु, दुर्बलता तथा कोखके रोगकी नाशकरनेवाली होतीहै यह सोंठ और सेंधानोनसे युक्त दीपन, पाचन, रुचिकारक और आमशूल तथा विबन्धनाशक होती है॥ १२५॥

अथ प्रमथ्यायाविधिर्गुणाश्च॥

प्रमथ्याप्रोच्यतेद्रव्यपलात्कल्कीकृताच्छृतात्। तोयेऽष्टगुणितेतस्याःपानमाहुःपलद्वयम्॥ द्रव्यंपाचद्रव्यंतस्याःपलद्वयशेषायागुणैःप्रमथ्यापेयावत्ततोलघ्वीविशेषतः॥ १२६

प्रमथ्याकी विधि और गुण॥

चार तोले वस्तु अठगुनेजलमें परिपाक करनेसे जब आठतोले बाकीरहै तब उतारले इसको प्रमथ्या कहतेहैं प्रमथ्यामें पेयाके समान गुण होतेहैंऔर यहविशेषकरके पेयाकी अपेक्षा हलकी होतीहै १२६॥

अथ यूषस्यविधिर्गुणाश्च॥

अष्टादशगुणेनीरेशिम्बीधान्यश्शृतोरसः। विरलान्नोघनःकिञ्चित्पेयातोयूषउच्यते उक्तःसएवनिर्यूहोरुचिकृच्चविशेषतः॥ १२७॥

यूषकीविधि और गुण॥

अठारहगुने जल में शिम्बी धान्य को परिपाक करनेसे पेयाकी अपेक्षा कुछ गाढ़ा और थोड़े अन्नवाला जो रस तैयार होताहै उसको यूष और निर्यूहभी कहतेहैं यह विशेषकरके रुचिकारीहोताहै १२७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यूषस्यप्रकारान्तरमाह ॥

त कल्कद्रव्यपलंशुण्ठीपिप्पलीचार्द्धकार्षिकी । वारिप्रस्थेनविपचेत्तद्द्रवोयूषउच्यते ॥
भियमर्थः । यूषान्तंपलमितंतत्कल्कीकृतम् । शुण्ठीपिप्पलीचसमुदितार्द्धकर्षमितात्क
ल्कीकृतात् । उभयमपिप्रस्थमितेनवारिणापचेत् । तद्द्रवोयूषः । यूषोबल्योलघुःपाकेरु
च्यःकण्ठ्यःकफापहः ॥ १२८ ॥

यूषकी दूसरीविधि ॥

जिस अन्नका यूष बनाना हो उस अन्न को चारतोले कूटकर छःमाशे कुटीहुईसोंठ और पीपल मिलावे फिर चौंसठ तोले जलमें परिपाक करे इसके रसको यूष कहतेहैं यूष.बलकारी,हलका, रुचिकारी, कंठको हित और कफनाशक होताहै ॥ १२८ ॥

अथ मुद्गयूषविधिः । वृन्दटीकायान्तन्त्रान्तरे ॥

मुद्गानांद्विपलंतोयेश्शृतमर्द्धाढकोन्मिते । पादस्थंमर्दितंपूतंदाडिमस्यपलेनतत् ॥
युक्तंसैन्धवविश्वाङ्गधान्यकैःपादकार्षिकैः । कणाजीरकयोश्चूर्णशाणैःकेनावचूर्णितम् ॥
संस्कृतोमुद्गयूषोऽयंपित्तश्लेष्महरोमतः ॥ (अथ मुद्गयूषगुणाः) मुद्गानामुत्तमोयूषो
दीपनःशीतलोलघुः ॥ व्रणोऽर्द्धजन्तुतृड्दाहकफपित्तज्वरास्रजित् । (अथमुद्गामलकयूष
गुणाः) मुद्गामलकयूषस्तुभेदीपित्तानिलापहः।तृड्दाहशमनःशीतोमूर्च्छाश्रममदापहः ।
(अथ मसूरयूषगुणाः) मसूरयूषःसंग्राहीबृंहीस्वादुःप्रमेहनुत् ॥ १२९ ॥

मूंगके यूषकी विधि ॥

आठतोले मूंगको एकसौ चौबीस तोले जलमें पाककरे जब चौथाई जल बाकी रहे तब खूबघोट कर चार तोले अनार का रस, सेंधानोन, सोंठ, धनियां, जीरा और पीपलका चूर्ण मिलावे इसप्रकार से सिद्धहुआ मूंगका यूष. कफपित्तनाशक होता है मूंगका उत्तम यूष, दीपन, शीतल, हलका और घाव, हंसली के ऊपर की पीड़ा, दाह, कफपित्तज्वर तथा रक्तपित्तनाशक होताहै और मिलेहुये मूंग और आंवलेका यूष. दस्तावर, शीतल और पित्त, वात, तृषा, दाह, मूर्च्छा, श्रम तथा मदका नाशक होताहै मसूर का यूष. ग्राही, धातुवर्द्धक, मधुर और प्रमेहनाशक होताहै ॥ १२९ ॥

अथ यवाग्वादिविधिर्गुणाश्च ॥

यवागूःषड्गुणेतोयेसंसिद्धाघनासिक्थका । पृथक्द्रवस्तुविरलैःसंयुक्ताज्वरिणेहि
ता ॥ यवागूर्दीपनीलघ्वीतृष्णाघ्नीवस्तिशोधिनी । श्रमग्लानिहरीपथ्याज्वरेचैवाति
सारिके ॥ १३० ॥

यवागू आदिकी विधि और गुण ॥

छःगुने जलमें चावलों को परिपाक करके जब चावल और पानी अलग २ बनारहे तब उतारले वह यवागू विधिपूर्वक पीहुई ज्वरवालेको हितकारीहै यवागू. दीपन, हलकी, तृषानाशक, मूत्राशयकी शोधक, श्रम तथा ग्लानिकी नाशक, ज्वरातीसार में हितकारीहै ॥ १३० ॥

अथ विलेप्याविधिर्गुणाश्च ॥

चतुर्गुणाम्बुसंसिद्धाविलेपीघनासिक्थका । पृथक्द्रवेणरहितारुयाताशिथिलभक्ति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का ॥ संसिद्ध अतीवसिद्धाविलेपीगिलहर्थीइतिलोके । विलेपीदीपनीबल्याहृद्यासंग्राहिणीलघुः । व्रणाक्षिरोगिणांपथ्यातर्पणीतृड्ज्वरापहा ॥ १३१ ॥

विलेपीकी विधि और गुण ॥

चौगुने जलमें चावलोंको बहुत पकायके जब भात अधिक होय जल कमहो और पानी अलग हो इसको विलेपी और शिथिलभक्तिका (गुलार्धी) कहतेहैं विलेपी. दीपन, बलकारी, हृदयकोहित ग्राही, हलकी, घाव तथा नेत्ररोगवालोंको पथ्य, तृप्तिकारी और तृषा तथा ज्वरनाशक होती है ॥ १३१॥

अथ भक्तस्यविधिर्गुणाश्च ॥

जलेचतुर्दशगुणेतण्डुलानांचतुष्पलम्। विपचेत्स्रावयेन्मण्डंतद्भक्तंमधुरंलघु॥ (चक्रदत्तस्तु) अन्नम्पञ्चगुणेतोयेयवागूंषड्गुणेपचेत् । तत्रान्नंभक्तंतथाच । भिस्सास्त्रीभक्तमथोन्नमोदनोऽस्त्रीसदीदिविरित्यमरः। भक्तंवह्निकरंपथ्यंतर्पणंमूत्रलंलघु ॥ सुधौतंप्रस्नुतंचोष्णंविशदङ्गुणवत्तरम्। अधौतमस्नुतंशीतंत्वेष्यङ्गुरुकफप्रदम् ॥ अत्युष्णंबलहृद्भक्तंशीतंशुष्कञ्चदुर्ज्जरम्। अतिक्लिन्नंग्लानिकरंदुर्ज्जरन्तण्डुलान्वितम् ॥ अतिक्रान्तसजलंयत्पर्युषितम्। भृष्टतण्डुलजंरुच्यंसुगन्धिकफहल्लघु । वातास्थापितमन्दाग्निविविक्तानांप्रशस्यते ॥ १३२ ॥

भातकी विधि और गुण ॥

चारपल चावल चौदहगुने जलमें परिपाक करके मांड निकालने से भात बनताहै यह मधुर और हलका होताहै "चक्रदत्तने" कहाहै कि पचगुने जलमें अन्न और छःगुने जलमें यवागूका पाक करे यहां अन्न शब्दका अर्थ भातहै क्योंकि "अमरसिंहने" भिस्सा भक्त अन्न ओदन और दीदिविभातके नाम कहे हैं भात. दीपन, पथ्य, तृप्तिकारी, मूत्रवर्द्धक और हलका होता है अच्छेप्रकारधोयेहुये चावलोंका मांड निकालाहुआ कुछउष्ण, निर्म्मल भात अधिक गुणकारी होताहै बिनधोये चावलों का बिनमांड निकाला हुआ ठंढाभात. पुष्टिकारक, भारी और कफकारकहोताहै अत्यन्त उष्णभात. बलनाशक, शीतल तथा रूखाहुआ भात. बहुतदेरमें पचनेवाला बहुत गीला भात. ग्लानिकारक कुछकच्चा भात. बहुत देरमेंपचनेवाला और भूनेहुए चावलोंका भात. रुचिकारक, सुगन्धित, कफनाशक, हलका और जिनको वमन, विरेचन तथा आस्थापनदियागयाहो तथा मन्दाग्निवालोंको हितकारीहोताहै १३२

अथ रसौदनविधिः । वृन्दटीकायान्तन्त्रान्तरे ॥

मांसलंसक्थिजंमांसंतथानस्थिचतैत्तिरम् । चतुःपलोन्मितंसूक्ष्मङ्कल्पितंक्षालितञ्जले॥ पिप्पलीपिप्पलीमूलशुण्ठीजीरकधान्यकैः॥ द्विशाणैःसंयुतेतोयेक्वाथ्यमर्द्धाढकोन्मिते । पादस्थितंजलंतत्रदाडिमात्कुट्टितान्नयेत् ।तंरसंमर्दितंभृष्टहिंगुसैन्धवजीरकैः ॥ युक्तंप्रधूपितंपथ्यंशुद्धानांशुद्धिकांक्षिणाम् । (अथ रसौदनगुणाः) रसौदनोगुरुर्वृष्योबल्यो वातज्वरापहः ॥ १३३ ॥

रसौदनकीविधि और गुण ॥

तीतरकी जांघके अस्थि रहित मोटे सोलह तोले मांसको खूब काटकर पानीमें धोकर पीपल पीपलामल सोंठ जीरा और धनियां यह सब आठ २ माशे मिलायके एकसौ चौबीस तोले जलमें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पकरे जब चौथाई रहजाय तब उसमें भूनीहींग सेंधानोन और जीरायुक्त अनारकारस मिलावे यह गरम २ भातकेसाथ खायाहुआ वमन विरेचनादिसे शुद्ध और शुद्धता के चाहनेवालोंको पथ्यहै न. भारी, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारी और वातज्वरनाशक होताहै ॥ १३३ ॥

केवलजलसाध्यान्मण्डादीनभिधायौषधसाध्यानांतेषांप्रक्रियामाह ॥

यंचतुःपलंद्रव्यंचतुःषष्टिपलेऽम्बुनि । तत्क्काथेनार्द्धशिष्टेनमण्डपेयादिसाधयेत् ॥ वैद्याः पलंद्रव्यंग्राहयत्याढकेऽम्भसि। भेषजस्यातिबाहुल्यात्कदाचिदरुचिर्भवेत्॥यैर रौषधैर्यैश्चकृतामण्डादयोबुधैः। विचार्य्यतद्गुणानेतांस्तद्गुणानेवनिर्दिशेत् ॥ १३४ ॥

ल जलकेद्वारा सिद्धहोनेवाले मंडादिकोंको कहकर औषध से सिद्धहोनेवालोंकी प्रक्रिया कहतेहैं ॥ चारपल औषधको चौंसठपल जल में औटाय के जब आधा बाकीरहै तब उसी क्वाथ से मांड तथा पेया आदिक बनावे वृद्धवैद्य एकपलऔषधको चौंसठपल जलमें काढ़ाबनाना कहतेहैं क्योंकि औषधके बहुत होनेसे कभी २ अरुचिहोजाती है जिनअन्न और औषधियोंके द्वारा मांडआदिक बनाये जातेहैं उन औषधियों और अन्नके गुणोंको विचारकर मंडआदिके गुण कहनेचाहिये ॥ १३४ ॥

अथौषधसिद्धापेयागुणाः ॥

अन्नकालेहितापेया यथास्वंपाचनैःकृता । दीपनी पाचनी लघ्वी ज्वरार्त्तानांज्वराप हा ॥ यथास्वंपाचनैःकृता यथादोषं पाचनैःकृता ॥ १३५ ॥

औषधसे सिद्धपेया आदि के गुण ॥

दोषके अनुसार पाचन औषधियोंसे कीहुई पेया भोजनके अवसरमें सेवनकीगई दीपन, पाचन, हलकी और ज्वरवालोंके ज्वरकी नाशक होतीहै ॥ १३५ ॥

यथा ॥

पञ्चमूल्याःकषायन्तु पाचनंवातिकज्वरे । सक्षौद्रंपैत्तिकेमुस्तकटुकेन्द्रयवैःकृतम् ॥ पिप्पल्यादिकषायन्तुपाचनंकफजेज्वरे । लघुनापञ्चमूलेन पिप्पल्यासहधान्यया॥ हत्यापञ्चमूल्याथ व्याघ्रीदुःस्पर्शगोक्षुरैः। सिद्धानिभिषगन्नानि प्रयुञ्जीतयथाक्रम म् ॥ वातपित्तेश्लेष्मपित्ते कफवातेत्रिदोषजे। अयमर्थः। वातपित्तेषुलघुनापञ्चमूलेन सिद्धान्यन्नानिभिषक्प्रयुञ्जीत ॥ शालिपर्णीपृष्ठिपर्णी कण्टकारीद्वयंतथा। गोक्षुरःप ञ्चमःप्रोक्तः पञ्चमूलमिदंलघु ॥ श्लेष्मपित्तेपिप्पल्यासहधान्ययाकफवाते महत्याप ञ्चमूल्या ॥ श्रीफलःसर्वतोभद्रापाटलागणिकारिका । श्योनाकःपंचमःप्रोक्तंपंचमूल मिदंमहत् ॥ यवासःत्रिदोषजेव्याघ्रीदुःस्पर्शगोक्षुरैःव्याघ्रीकण्टकारिकादुःस्पर्शः १३६॥

दोषके अनुसार पाचन औषध ॥

वातज्वरमें पंचमूलका क्वाथ. पित्तज्वरमें मोथा, कुटकी तथा इन्द्रजौका सहतयुक्त क्वाथ और कफ ज्वरमें पिप्पल्यादि गणका क्वाथ. पाचनहोताहै वातपित्तज्वर में छोटे पंचमूल (शालिपर्णी पृष्ठिपर्णी दोनों भटकटैया यह छोटा पंचमूलहै)के क्वाथसे बनेहुए अन्नदेवे कफपित्तज्वरमें पीपल तथा धनिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के क्वाथसे पा० कियेहुए अन्नदेवे कफवातज्वरमें बडे पंचमूल (बेल गम्भारी पाटला अरनी और सोनापाढ़ा यह बडा पंचमूलहै) के क्वाथसे पाक कियेहुए अन्नदेवे और त्रिदोषज्वरमें भटकटैया जवासा तथा गोखुरू के क्वाथसे पाक कियेहुए अन्नदेवे ॥ १३६ ॥

पेयांवारक्तशालीनांवस्तिपार्श्वशिरोरुजि।श्वदंष्ट्राकण्टकारीभ्यांसिद्धांज्वरहरींपि। विवद्धवर्चाःसयवांपिप्पल्यामलकैःशृताम्। सर्पिष्मतींपिबेत्पेयांज्वरीदोषानुलोमिनीं कासीश्वासीचहिक्कीचपञ्चमूलीशृतंपिबेत् । यवोऽत्रान्तः अत्रपञ्चमूलीबृहतीलघ्वी ता॥ तथाशृतांपेयांपिबेदित्यर्थः ॥ पेयाभेषजसंयोगाल्लघुत्वाच्चाग्निदीपनी। वातमू पुरीषाणांदोषाणांचानुलोमिका ॥ स्वेदनायचसोष्णत्वाद्द्रवत्वात्तृट्क्षयायच। आ भावात्प्राणायसरत्वाल्लाघवायच ॥ ज्वरघ्नीहेतुसाम्यत्वात्तस्मात्तांपूर्वमाचरेत् । हेतुसा म्यत्वाद्धेतवःवातपित्तकफास्तेषांसाम्यत्वात् ॥ १३७ ॥

गोखुरू और भटकटैयाके क्वाथसे पाक कीगई लालधानके चावलोंकी ज्वरनाशक पेया मूत्राशय पसली तथा शिरकी पीडा में पीनी चाहिये ज्वरवाला मलके रुकजानेपर जौ सहित पीपल और आंवलोंके क्वाथके द्वारा पाककीहुई पेयाको घी डालकरपिये यह दोषोंको अपने २ मार्गपर करदेती है खांसी श्वास तथा हिचकीवाला छोटे अथवा बडे पंचमूल के क्वाथसे पाक कीहुई पेयाको पिये पेया औषधके संयोगसे तथा हलकेपनसे दीपन और वात मूत्र तथा मलको अपने मार्गके अनुसार करनेवाली होतीहै पेया.उष्णताके कारण स्वेदकारक, पतलेपनसे तृषानाशक, आहार होने से प्राण-धारक,दस्तावर होने से हलका करनेवाली और वात पित्त तथा कफकी समता करनेके कारण ज्वर-नाशक होती है इसलिये पहले पेया का पान करे ॥ १३७ ॥

पञ्चमुष्टिकयूषः ॥

यवकोलकुलत्थानांमुद्गमूलकशुण्ठयः। एकैकमुष्टिमादायपचेदष्टगुणेजले ॥ पञ्च ष्टिकइत्येषवातपित्तकफापहः। शूलेप्रशस्यतेगुल्मेकासेश्वासेक्षयेज्वरे ॥ १३८ ॥

पंचमुष्टिक यूष ॥

जौ, बेर, कुलथी, मूंग और सूखी मूली इन सबको चार २ तोले लेकर अठगुने जलमें पका यह पंचमुष्टिक नाम यूष.वात पित्त तथा कफनाशक और शूल, गुल्म, खांसी, श्वास, क्षय तथा में श्रेष्ठ होताहै ॥ १३८ ॥

रुद्धमूत्रपुरीषस्यगुदेवर्तिंनिधापयेत् । पिप्पलीपिप्पलीमूलयवानीचव्यसाधिताम् पाययेत्तुयवागूंवामारुताद्यनुलोमिनीम् ॥ १३९ ॥

जिसका मल मूत्र रुकगयाहो उसकी गुदा में बत्ती रक्खै अथवा पीपल, पीपलामूल, अज इन और चव्य इन सब के क्वाथ से पाक कीगई वातादिकोंको अपने मार्ग में लेजानेवाली य पिलावे ॥ १३९ ॥

पेयायवाग्वोश्चक्वचिदपवादमाह ॥

मदात्ययेमद्यनित्येग्रीष्मेपित्तकफोत्थिते ॥ ऊर्ध्वगेरक्तपित्तेचयवागूर्नहिताज्वरे १४०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त पेया और यवागूका कहीं २ निषेध कहाजाता है ॥

मदात्ययरोगमें नित्य मद्य पीनेवालेको ग्रीष्मऋतु में पित्त तथा कफ से हुए ज्वर में और ऊपर हुए रक्तपित्त में यवागू हितकारी नहीं है ॥ १४० ॥

दाहच्छर्द्यर्दितंक्षामंनिरन्नंतृष्णयान्वितम् । घर्मार्त्तेमद्यपञ्चापितोयालोडितसक्तुकम् ॥ र्करामधुसंयुक्तंपाययेल्लाजतर्पणम् । लाजतर्पणंलाजसक्तुरूपंतर्पणम् ॥ ज्वरापहैः फलरसैर्युक्तमन्नंहितंक्वचित् ॥ १४१ ॥

दाह तथा छर्दिसे पीडित, क्षीण, लंघन कियेहुए, प्यासे, धूपसे व्याकुल और मद्यपीने वालोंको र्कर और सहत युक्त लाजातर्पण (तृप्तिकारी खीलों के सत्तू) पिलावे और कहीं २ ज्वरनाशक फलों के रससे युक्त अन्न हितकारी होताहै ॥ १४१ ॥

सन्तर्पणस्वरूपञ्चाहधन्वन्तरिः ॥

द्राक्षादाडिमखर्जूरमृदिताम्बुसशर्करम् । लाजचूर्णसमध्वाज्यंसन्तर्पणमुदाहृतम् ॥ लाजचूर्णद्राक्षादिजलशर्करामध्वाज्यसहितंतर्पणमुक्तमित्यर्थः ॥ १४२ ॥

धन्वन्तरिका कहाहुआ संतर्पणका स्वरूप ॥

दाख, अनार, खजूर, घी और सहत इनके साथ खीलोंके चूर्णकोशक्करसहित जलमें घोलले यह संतर्पण कहाताहै ॥ १४२ ॥ लाजसक्तुगुणाःगुणाधिकारे ॥

लाजानांसक्तवःक्षौद्रसितायुक्ताविशेषतः । छर्द्यतीसारतृड्दाहविषमूर्च्छाज्वरापहाः ॥ (चरकस्तु) तत्रतर्पणमेवादौप्रदेयंलाजसक्तुभिः । ज्वरापहैःफलरसैर्युक्तंसमधुशर्करम् ॥ १४३ ॥

गुणाधिकारमें कहेहुए खीलों के सत्तुओंके गुण ॥

सहत और शक्करयुक्त खीलोंके सत्तू. विशेष करके छर्दि, अतीसार, तृषा, दाह, विष, मूर्च्छा तथा र नाशक होते हैं चरकने तो कहाहै कि ज्वरनाशक फलोंके रस सहत और शक्करयुक्त खीलोंके तुओंके द्वारा पहले तर्पण देना चाहिये ॥ १४३ ॥

ज्वरघ्नानिफलान्याहचरकएव ॥

द्राक्षादाडिमखर्जूरप्रियालैःसपरूषकैः । तर्पणार्हस्यदातव्यंतर्पणंज्वरनाशनम् ॥ प्रियालमत्रपक्वफलंनतन्मज्जागुरुत्वात् । तर्पणार्हस्य । दाहच्छर्दितृषार्त्तस्यलंघितस्यक्षीणस्येत्यर्थः ॥ १४४ ॥ चरकके कहेहुए ज्वरघ्नफल ॥

दाख, अनार, खजूर, चिरौंजी और फालसा. इनके द्वारा तर्पणके योग्य (दाह, छर्दि तथा तृषा व्याकुल, लंघन कियेहुए और क्षीण) मनुष्योंको तर्पण देना चाहिये इससे ज्वरका नाश होताहै चिरौंजी का पक्का फल ग्रहण कियाजाता है उसकी मज्जा नहीं ग्रहण कीजाती है क्योंकि वह री होती है ॥ १४४ ॥

श्रमोपवासानिलजेहितंनित्यंरसौदनम् । रसोऽत्रमांसस्यरसः । तेनसिक्तोओदनो रसौदनः । अन्नेनव्यञ्जनमित्यनेनसमासः । मुद्गयूषौदनञ्चैवहितंकफसमुत्थिते । सएव

(१) ओदननस्त्रियांभक्ते बलाया मोदिनी स्त्रियामिति मेदिनी ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सितयायुक्तःशीतपित्तज्वरेहितः ॥ सएवमुद्गयूषौदनमेव । कृशोऽल्पदोषोयःक्षीणकफ जीर्णज्वरान्वितः । विबन्धासृष्टदोषश्चरुक्षपित्तानिलज्वरी ॥ पिपासार्त्तःसदाहश्चपण सासमुखीभवेत् (अन्यच्च) अजादुग्धंगुडोपेतंपातव्यंज्वरशांतये । तदेवतुपयःपी। तरुणेहन्तिमानवम् ॥ तरुणेज्वरे (अन्यच्च) जीर्णेज्वरेकफेक्षीणेक्षीरंस्यादमृतोपमम् तदेवतरुणेपीतंविषवद्धन्तिमानवम् ॥ १४५ ॥

श्रम, उपवास तथा वातजनित ज्वरमें मांसके रसके साथ भात. खाना सदैव हितहै कफज्वरमें मूंगके यूषकेसाथ भात हितहै और पित्तज्वरमें शक्करयुक्त मूंगके यूषकेसाथ शीतल भात हितहै रूक्ष अल्पदोषवाला क्षीण कफवाला जीर्णज्वरसे युक्त रुकेहुए दोषवाला रूखा पित्त तथा वातज्वर युक्त तृषासे व्याकुल और दाहयुक्त इन सबको दूध हितहै और कहागयाहै कि गुडयुक्त बकरीका दूध ज्वरके दूर करनेको पीना चाहिये परन्तु वही दूध जो नवीन ज्वरमें पियाजावे तो मनुष्य का नाश होताहै और भी कहागया है कि जीर्णज्वर और कफ की क्षीणता में दूध अमृतके समान होताहै परन्तु वही दूध नवीनज्वर में पीनेसे विषके समान मनुष्यको मारताहै ॥ १४५ ॥

अथ ज्वरिणोनियमानाह ॥

नद्विरद्यान्नपूर्वाह्णेनाभिष्यन्दिकदाचन । नतीक्ष्णन्नगुरुप्रायंभुञ्जीततरुणज्वरी ॥ नजातुतर्पयेत्प्राज्ञःसहसाज्वरकर्षितम् । तेनसंशमितोऽप्यस्यपुनरेवभवेज्ज्वरः॥ १४६॥

ज्वरवाले के नियम ॥

नवीन ज्वरवाला दोबार अथवा पूर्वाह्ण में भोजन न करे और अभिष्यन्दी तीक्ष्ण तथा भारी वस्तुओंको न खाय बुद्धिमान् वैद्य ज्वरसे कृश मनुष्यको सहसा किसी प्रकारका तर्पण न देवे क्योंकि इस्से शान्तहुआ भी ज्वर फिर उत्पन्न होजाताहै ॥ १४६ ॥

अथ ज्वरविमुक्तेपूर्वरूपमाह ॥

दाहास्वेदोभ्रमस्तृष्णाकम्पविड्भेदसंज्ञता। कूजनञ्चातिवैगन्ध्यमाकृतिर्ज्वरमोक्षणे। विड्भेदोमलप्रवृत्तिरत्रसम्पदादिभ्योभावेक्तिप्कूजनंकुन्थनंअतिवैगन्ध्यंगात्रस्य। ज्वर मुक्तोभविष्यत्यामेतल्लक्षणंभवति ॥ ननुदोषक्षयंविनानव्याधिनिवृत्तिःक्षीणाश्चदोषाःक थमेवंविधंरूपंकरिष्यति । उच्यतेकश्चितक्षीणेऽपिविनाशकालेस्वशक्तिंदर्शयति ॥ यथा निर्वाणावस्थायांदीपोविशेषात्प्रज्वलति ॥ वाग्भटोऽप्याह ॥ धातून्प्रक्षोभयन्दोषोमो क्षकालेविलीयते । ततोनरःश्वसन्कूजन्वमन्स्विद्यन्नचेष्टतइति । नचेष्टतेऽचेष्टः स्यात् । त्रिदोषजेज्वरेह्येतदन्तर्वेगेचधातुगे । लक्षणंमोक्षकालेस्यादन्यस्मिन्स्वेददर्श नम् ॥ एतद्दाहादिकंलक्षणंमोक्षकालेएतेष्वेवज्वरेषुस्यात् । केषुत्रिदोषजेषु अन्तर्वेगेधा तुगेज्वरेअन्यस्मिन्स्वेदमात्रदर्शनंभवति ॥ १४७ ॥

ज्वरछूटने का पूर्वरूप ॥

दाह, स्वेद, भ्रम, तृषा, कंप, मलकी प्रवृत्ति, संज्ञाका होना, अव्यक्त शब्द और शरीरमें बहुत दुर्गन्ध यह सब लक्षण जब ज्वरछूटने वाला होताहै तब होतेहैं अब यह सन्देह होता है कि दोषके नाशके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तारोग नहीं निवृत्तहोसक्ता तो क्षीणहुए दोष उसप्रकारके लक्षणोंको कैसे करसक्ते हैं ? इसका उत्तर ते हैं कि जैसे दीपक, बुझनेके समय बहुत प्रज्वलित होताहै उसीप्रकार क्षीणहुआ भी कोई कोई नाशके समय अपनी शक्ति को दिखाता है वाग्भटनेभी कहाहै कि दोष आनेके समय धातुओं को भित करताहुआ नाशको प्राप्त होताहै उसीसे मनुष्य हांफताहुआ, खींचता हुआ, वमन करता हुआ स्वेदयुक्तहो चेष्टा रहित होजाताहै ऊपर कहेहुये लक्षण त्रिदोषज्वर भीतर वेगवाले ज्वर तथा तुओं में स्थित ज्वर के छूटनेके समय होते हैं और अन्यज्वरों में केवल पसीना आता है ॥ १४७॥

अथ ज्वरमुक्तस्यलक्षणमाह ॥

देहोलघुर्व्यपगतक्लममोहतापःपाकोमुखेकरणसौष्ठवमव्यथत्वम् । स्वेदःक्षवःप्रकृतियोगमनोऽन्नलिप्साकण्डूश्चमूर्ध्निविगतज्वरलक्षणानि ॥ (सुश्रुतोऽप्याह) स्वेदोलघुत्वंशिरसःकण्डूपाकोमुखस्यच । क्षवथुश्चान्नकांक्षाचज्वरमुक्तस्यलक्षणम् ॥ १४८ ॥

ज्वरके छूटने के लक्षण ॥

शरीरमें हलकापन, ग्लानिकानाश, मोह तथा तापका नाश, मुखमें फुंसियोंका निकलना, इन्द्रियों की प्रसन्नता, व्यथाका न होना, स्वेद, छींक, मनका यथावस्थित होना, अन्नमें इच्छा और शिर में खुजली यह ज्वरके छूटनेके लक्षणहैं सुश्रुतने भी कहाहै कि स्वेद, शरीर में हलकापन, शिरमें खुजली, मुखमें फुंसी निकलना, छींक और अन्नमें इच्छा यह लक्षण होतेहैं ॥ १४८ ॥

अथ ज्वरमुक्तस्यनियमाः ॥

व्यायामञ्चव्यवायञ्चस्नानञ्चक्रमणानिच । ज्वरमुक्तोनसेवेतयावन्नोबलवान्भवेत् ॥ (अन्यच्च) व्यायामंचव्यवायञ्चप्रवातंशिशिरंजलम् । ज्वरमुक्तोनसेवेतयावन्नोबलवान्भवेत् । जन्तोर्ज्वरविमुक्तस्यस्नानंकुर्यात्पुनर्ज्वरम् । तस्माज्ज्वरविमुक्तोऽपिस्नानंविषमित्यजेत् ॥ बलवर्णाग्निवपुषांयावन्नप्रकृतिर्भवेत् । तावज्ज्वरेणमुक्तोऽपिवर्जनीयान्विवर्जतु ॥ १४९ ॥

ज्वर से छूटेहुए के नियम ॥

जिसका ज्वर छूटगयाहो वह जबतक बलवान् न हो तबतक दण्डकसरत मैथुन स्नान और भ्रमण इनका सेवन न करे और भी कहागयाहै कि जिसका ज्वर छूटगयाहो वह बलवान् होनेतक दण्डकसरत, मैथुन अधिक वायु और शीतल जलका सेवन न करे ज्वर से छूटेहुए मनुष्यको स्नान करने से फिर ज्वर आजाताहै इसलिये ज्वरके छूटजाने परभी जबतक बल न आवे तबतक स्नानको विषके तुल्य त्याग करदेवे बल वर्ण अग्नि और शरीर जबतक पहलासा न होजावे तबतक ज्वरके छूटजाने परभी निषिद्ध पदार्थोंका सेवन न करे ॥ १४९ ॥

अथ वातज्वराधिकारमाह।

तत्रवातज्वरस्यविप्रकृष्टसन्निकृष्टकारणकथनपूर्विकांसंप्राप्तिमाह ॥

शीतलाहारचेष्टाभ्यांवायुरामाशयाश्रयः।बहिर्निरस्यकोष्ठाग्निंज्वरकृत्स्याद्रसानुगः१५०

वात ज्वरका अधिकार। वात ज्वरके दूरवाले और समीपी कारणों समेत संप्राप्ति का वर्णन ॥

वातकारी आहार और विहारोंकेद्वारा वायु आमाशयमें प्रविष्ट होकर जठराग्निको बाहर निकालतीहै और रसको दूषित करके ज्वरको उत्पन्न करतीहै ॥ १५० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ तस्यपूर्वरूपमाह ॥

जृम्भात्यर्थंसमीरणादितिसमीरणज्वरेउत्पत्स्यतिअत्यर्थंजृम्भास्यात् जृम्भाचश्र दिपूर्विकाभवति ॥ १५१ ॥ वातज्वरका पूर्वरूप ॥

वातज्वरके होनेसे पहले सामान्यज्वर सम्बन्धी पूर्वरूपके श्रमादिक लक्षणोंसमेत बहुत जंभ आतीहैं ॥ १५१ ॥ अथ वातज्वरस्यलक्षणमाह ॥

वेपथुर्विषमोवेगःकण्ठोष्ठमुखशोषणम् । निद्रानाशःक्षवःस्तम्भोगात्राणांरौक्ष्यमेव च ॥ शिरोहृद्गात्ररुग्वक्त्रवैरस्यंवद्धविट्कता । शूलाध्मानेजृम्भणञ्चभवत्यनिल ज्वरे ॥ एतानिलक्षणानिप्रायोभावित्वेनसुश्रुतेनिर्दिष्टानि । चकारादन्यान्यपिचरकनि दानोक्तानिबोद्धव्यानि ॥ तान्येवश्लोकेनप्रदर्शयति । भवन्तिविविधावातवेदनाःपादसु प्तता । पिण्डिकोद्वेष्टनंकर्णस्वनोवक्त्रकषायता ॥ गात्रसादोहनुस्तम्भोविश्लेषःसन्धि जानुनोः । शुष्ककासोवमिर्लोमदन्तहर्षःश्रमभ्रमौ ॥ अरुणंमूत्रनेत्रादितृट्प्रलापोष्ण गात्रता । विषमोवेगः । शरीरोष्णतादिरूपोज्वरवेगो । विषमोभवतीत्यर्थःक्षवस्तम्भः छिक्कायाःअभावःतथाच (वाग्भटः) हर्षोरोमांगदन्तेषुवेपथुःक्षवथोर्ग्रहः । भ्रमःप्रलापोघ र्मेच्छाविलापश्चानिलज्वरे ॥ इतिचरकोऽपिक्षवथूद्गारविनिग्रहइतिशिरोहृद्गात्ररु क् । गात्रपदेप्रयुक्तेशिरोहृच्छब्दप्रयोगः । तत्रतत्रविशेषेणवेदनाबोधनार्थः ॥ १५२ ॥

वातज्वरके लक्षण ॥

वातज्वरमें कंप विषमवेग(कभीकम कभीअधिक)कंठ,ओष्ठ तथा मुखकासूखना, निद्राकानाश, छींक का बंदहोना,शरीरमेंसूखापन,शिर,हृदय तथा अंगोंमेंपीडा,मुखकीबिरसता, मलकारुकना,शूल,अफ और जंभाई यह लक्षण होते हैं यहलक्षण प्रायःहोते हैं इसलिये सुश्रुतने कहे हैं और चकारसे चरकने कहेहुए अन्यलक्षणभी जानने चाहिये वहीआगे कहेजाते हैं अनेकप्रकारकी वायुकीपीडा,निद्राकाना पिंडलियोंमेंऐंठन,कानोंमेंशव्द,मुखमेंकषैलापन, शरीरमेंशिथिलता, जाबडेकाजकना,संधितथा घुटने में टूटने की सी पीडा, सूखी खांसी, छर्दि, रोमांच, दांतों में सरसराहट, श्रम, भ्रम, मूत्र तथा नेत्रादिकी ललाई, तृष, प्रलाप और शरीरमें उष्णता यह वातज्वर के लक्षणहैं यहां विषम वेगशब्दसे शरीर में उष्णता आदि ज्वर वेगका विषम होना लियाजाताहै और छींकका रुकना अर्थात् नआना वाग्भटने भी कहाहै कि वातज्वर में रोमांच, शरीर में शिथिलता, दांतों में सरसराहट, कंप, छींकका न आन, भ्रम, प्रलाप, धूपकी इच्छा और मिलाप यह लक्षण होते हैं और चरकने भी कहाहै कि वातज्वर में छींकतथा डकारका नआना और मस्तक हृदय तथा शरीरमें पीडाहोतीहै यहांशरीरमें पीडाकहनेसेशिर और हृदयकाबोध होताहै तो इनके फिर कहनेसे इनमें विशेष पीडा होतीहै यहजानना चाहिये १५

अथ वातज्वरचिकित्सा ॥

आमाशयस्थोहत्वाग्निंसामोमार्गान्पिधापयन् । विदधातिज्वरंदोषस्तस्माल्लंघ नमाचरेत् ॥ इतिवचनात्सामान्यतोज्वरितगात्रस्ययावदारोग्यदर्शनंलङ्घनामिधानेवा तज्वरिणोलङ्घनविधानेविशेषमाहचरकः । ज्वरितंषडहेऽतीतेलघ्वन्नंप्रतिभोजितम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाचनंशमनीयञ्चकषायंपाययेद्विदक् ॥ सुश्रुतोऽप्याह । वातिकेसप्तरात्रेण दशरात्रेण पैत्तिके । श्लैष्मिकेद्वादशाहेनज्वरेयुंजीतभेषजम् ॥ नन्वन्नंवैप्राणिनांप्राणाइतिश्रुतिः तदन्नंविनाप्राणिभिःकथंस्थातव्यमित्याह । दोषाणामेवसाशक्तिर्लंघनेयासहिष्णुता । नहिदोषक्षयेकश्चित्सहतेलंघनंमहत् ॥ कफपित्तेद्रवेधातूसहेतेलंघनंबहु। आमक्षयाद्दूर्ध्वं पिवायुर्नसहतेक्षणम् १५३ ॥

वातज्वर की चिकित्सा ॥

आमाशयमें स्थित आमसहित दोष अग्निको मंदकरके मार्गोंको रोकताहुआ ज्वरको उत्पन्न करताहै इसलिये लंघनकरना चाहिये इस वचन के द्वारा सामान्यता से संपूर्ण ज्वरवालोंको आरोग्य पर्यन्त लंघनका विधान कियागया परन्तु वातज्वरवालेको लंघन करानेमें चरकने विशेषता कहीहै जैसेकि ज्वरवालेको छःदिनके उपरान्त हलकाअन्न भोजनकरायके पाचन और शमन कषाय पिलाना चाहिये सुश्रुतनेभी कहाहै कि वातज्वरमें सातवेंदिन पित्तज्वरमें दशवेंदिन और कफज्वरमें बारहवें दिन औषध देनीचाहिये अब यह सन्देह होताहै कि अन्नही प्राणियोंकेप्राणहैं इस श्रुतिके अनुसार अन्न के बिना प्राणी कैसे रहसक्तेहैं ? इसका उत्तर यहहै कि रोगी जो लंघनोंको सहताहै यह दोषोंही की शक्तिहै दोषोंके क्षय होजानेपर कोई भी बहुत लंघन नहीं सहसक्ता है कफ और पित्त यह पतली धातुहैं इसलिये आमके परिपाक होजानेपरभी बहुत लंघन सहसक्तेहैं और बात आमके परिपाक होजानेपर क्षणभरभी लंघनको नहीं सहसक्ती ॥ १५३ ॥

तत्रभेषजमाह ॥

श्रीफलःसर्वतोभद्राकामदूतीचशोणकः । तर्कारीगोक्षुरःक्षुद्राबृहतीकलशीस्थिरा ॥ रास्नाकणाकणामूलंकुष्ठंशुण्ठीकिरातकः । मुस्ताबलामृताबालद्राक्षावासःशताह्विका ॥ क्वाथोनिहन्त्येवप्रभञ्जनकृतंज्वरम् । सोपद्रवञ्चयोगोऽयंसर्वयोगवरःस्मृतः ॥ श्रीफलोबिल्वःसर्वतोभद्रागम्भारिकामदूतीपाटला । शोणकःशोनापाठाइतिलोकेतर्कारीग णिकारीकलशीपृष्ठिपर्णीस्थिराशालिपर्णी बलासुगन्धबालाद्राक्षायासोयवासः । दशमूलादिक्वाथः ॥ १५४ ॥

औषधियोंका वर्णन दशमूलादिक्वाथ ॥

बेल गंभारी, पाटला, सोनापाठा, अरणी, गोखुरू, छोटी, बडी, भटकटैया, पृष्ठपर्णी, शालिपर्णी, रासना, पीपल, पीपलामूल, कूट, सोंठ, चिरायता, मोथा, गिलोय, सुगन्धबाला, बरियारा, दाख, जवासा और सतावर इन सब औषधियोंका क्वाथ उपद्रवयुक्त वातज्वरको नष्ट करताहै यह योग संपूर्ण योगों में श्रेष्ठ कहागयाहै ॥ १५४ ॥

सुश्रुतः। पञ्चमूलीकषायन्तुपाचनंवातिकेज्वरेइति । अत्रपंचमूलीबृहत्पंचमूलीअ थवात्रिशती । श्रीपर्णीतर्कारीश्रीफलटुण्टूकपाटलामूलैः । पाचनमुचितंमारुतजनित ज्वरहारिवारिणाक्वथितैः । इति बृहत्पञ्चमूलीक्वाथः ॥ १५५ ॥

बृहत्पञ्चमूलीक्वाथ ॥

सुश्रुतने कहाहै कि पंचमूलका काढा वातज्वरमें दोषका पचानेवाला होताहै यहां पञ्चमूल कहने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से बड़ा पञ्चमूल लेना चाहिये इसीसे त्रिशतीका मतहै कि गम्भारी, अरणी, बेल, सोनापाठा और पाटला इन औषधियोंकी जड़केक्काथसे वातज्वरमें ज्वरकेनाशके लिये पाचन देनाचाहिये ॥ १५५ ॥

किरातकाम्रृतोदीच्यबृहतीद्वयगोक्षुरैः। त्रिपर्णीकलशीबिल्वैःक्काथोवातज्वरापहः॥ एदीच्यंबालकंत्रिपर्णीशालिपर्णीकलशीपृष्ठिपर्णीकिरातादिक्काथः ॥ १५६ ॥

किरातादिक्काथ ॥

चिरायता, मोथा, गिलोय, सुगन्धबाला, दोनों भटकटैया, गोखुरू, शालिपर्णी, पृष्ठिपर्णी और बेल इन औषधियोंका क्काथ वातज्वरनाशक होताहै ॥ १५६ ॥

गुडूचीपिप्पलीमूलनागरैःपाचनंशृतम्। वातज्वरेतथापेयंकालिंगंसप्तमेऽहनि ॥कालिंगशृतमिन्द्रयवन्तस्यशृतंत्रिशती॥ १५७ ॥

गिलोय, पीपलामूल और सोंठ इन औषधियोंकाक्काथ अथवा इन्द्रजौका क्काथ वातज्वरमें सातवें दिन पाचनके लिये पीनाचाहिये ॥ १५७ ॥

विश्वामृताग्रंथिकसिद्धतोयमरुज्ज्वरःस्यात्पिबतःकुतोऽयम्। क्काथोऽथकुस्तुम्बुरदेवदारुक्षुद्रौषधैःपाचनमत्रचारु ॥ इति विश्वाशुण्ठीक्काथः। औषधंपाचनमितिवेदाःप्रमाणमितिवत् ॥ १५८ ॥

बिश्वादि क्काथ ॥

सोंठ, गिलोय और पीपलामूल इनका काढ़ा पीनेसे वातज्वर नष्ट होताहै धनियां, देवदारु और भटकटैया इनका काढ़ा वातज्वरमें पाचन होताहै औषधियोंके द्वारा पाचनहोताहै इसे वेदकेप्रमाण के समान प्रामाणिक समझनाचाहिये ॥ १५८ ॥

पञ्चमूलीबलारास्नाकुलत्थैःसहपौष्करैः। क्काथोहन्याच्छिरःकम्पंपर्वभेदम्मरुज्ज्वरम् ॥ इतिपञ्चमूलीबिल्वादिः। बृहत्पञ्चमूल्यादिक्काथः ॥ १५९ ॥

बृहत्पञ्चमूल्यादिक्काथ ॥

बेल, सोनापाठा, गंभारी, पाटला, अरणी, बरियारा, रासना, कुलथी और पुष्करमूल इनसब औषधियोंकाक्काथ शिरका कांपना और पोरुओंका टूटना इन समेत वातज्वरको नष्ट करताहै ॥ १५९ ॥

कणारसोनामृतवल्लिविश्वानिदग्धिकासिंदुकभूमिनिम्बैः। समुस्तकैराचरितःकषायोहिताशिनांहन्तिगदानिमांस्तु॥ ज्वरम्मरुदष्टसमुद्भवन्तथाबलासजंचानलमन्दताञ्च। कण्ठावरोधंहृदयावरोधंस्वेदञ्चरोम्णाञ्चहिमत्वमोहान्॥ इति कणादिक्काथः ॥ १६० ॥

कणादिक्काथ ॥

पीपल, लहसन, गिलोय, सोंठ, भटकटैया, सेंधानोन, चिरायता और मोथा इन औषधियोंकेक्काथके सेवनसे पथ्यकरनेवालोंके आगेकहेहुए रोग नष्टहोते हैं वातज्वर, कफज्वर, मन्दाग्नि, कंठका रुकना हृदयका रुकना, स्वेद, रोमांच, शीतलता और मोह ॥ १६० ॥

शुद्धंशङ्करशुक्रमक्षतुलितंमारारिनारीरजस्तद्वत्ताधद्रुमापतिस्फुटगलालङ्कारवस्तुस्मरम् ॥ तावत्येवमनःशिलाचविमलातावत्तथाटङ्कणम्। शुण्ठीद्व्यक्षमिताकणाचमरिचदिक्पालसंख्याक्षकम्॥ विषादिवस्तूनिशिलोपरिष्टाद्विचूर्णयेद्वासससिशोधयेच्च। ततस्तु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ल्वेरसगन्धकौचचूर्णञ्चतद्यामयुगंविमर्द्य ॥ कल्पतरुर्नामधेयोयथार्थनाम रसःश्रेष्ठः । हरीरणश्लेष्मगदांहरतेमात्रास्यस्मृतागुञ्जैका ॥ आर्द्रकेणसममेषभक्षितोहन्तिवातक निम्भवंज्वरम्। श्वासकासमुखस्रेकशीततावह्निसांद्यविसूचीश्चनाशयेत्॥ नस्यनखेच र्वतिशिरोऽर्तिंकफवातजां मोहंमहान्तमपिचप्रलापंक्षवथुग्रहम्॥ कल्पतरुरसः॥१६१॥

कल्पतरुरस ॥

शुद्धपारा, शुद्धगन्धक, विष, मैनशिल, सोनामक्खी और सुहागा यह सब तोले २ भर सोंठ और पीपल दो२तोले मिर्चदशतोले विषआदिक वस्तुओंको शिलपर पीसकर वस्त्रमें छानले फिरपारा और गन्धकको खरलमें दोपहरघोटे इसके पीछे सब वस्तुओं को एकमें मिलादे यह कल्पतरु नाम रस यथार्थ नामवाला बहुत श्रेष्ठहै इससे वात तथा कफ के रोगोंका नाशहोताहै इसकी मात्रा एकरत्ती अदरकके रसके साथ सेवन किया हुआ यह रस बात तथा कफ जनित ज्वर श्वास,खांसी, मुखसे लार बहना, शीतलता,मंदाग्नि और विशूचिका का नाशकरताहै यह नासलेने से और लेपकरने से कफ. वात जनित शिरकी पीड़ा प्रलाप छींककारुकना और अत्यन्त मोह इन सबको नाशकरताहै॥१६१॥

सामान्यज्वरचिकित्सोक्तोमहाज्वरांकुशःप्रदेयोऽत्र ॥ १६२॥

सामान्य ज्वरकी चिकित्सामें कहाहुआ महाज्वरांकुशरस भी वातज्वर में देना चाहिये॥ १६२ ॥

विषमहौषधमागधिकोषणद्युमणिरक्तकमार्द्रकमर्दितम् । क्रमविवर्द्धितमुद्दलितंज्वर त्रिपुरभैरवएषरसोवरः। द्युमणि । मारितंताम्रंतस्यभागाःपञ्चरक्तकंहिंगुलंतस्यभागाःष ट्। मात्रास्यरक्तिकार्द्धंत्रिपुरभैरवोरसोज्वरे॥ १६३॥

ज्वरपर त्रिपुरभैरव रस ॥

शुद्ध विष १ भा० सोंठ २ भा० पीपल ३ भा० मिर्च ४ भा० तांबेकी भस्म ५ भा० और शुद्धसिंद- र ६ भा० इनसब औषधियों को अदरक के रसमें घोटकर आधरत्ती सेवनकरे यह ज्वरों के नाश मेंमें बहुत श्रेष्ठहै ॥ १६३ ॥

श्लेष्मज्वरेस्वेदंजङ्घापार्श्वास्थिशूलिनि।पीनसश्वासबाधिर्येकारयेत्तद्विधानवित्॥श्रो तसांमार्दवंकृत्वानीत्वापावकमाशयम्। हत्वावातकफःस्तम्भंस्वेदोज्वरमपोहति॥१६४॥

बात कफ ज्वरमें पिंडली पसली तथा हड्डियोंकी पीड़ामें और पीनस श्वास तथा बधिरता में स्वेद देनाचाहिये स्वेद श्रोतोंको कोमलकरके अग्निको उसके स्थानमें ले जाकर और वायु तथा कफकी रुकावट को दूरकरके ज्वरको नाशकरता है ॥ १६४ ॥

खर्परभृष्टपटस्थितकाञ्जिकसंसिक्तबालुकास्वेदः ॥ शमयतिवातकफामयशूलाङ्गभ दीन्। (बालुकास्वेदः) कम्पिशिरोहृदयगात्रव्यथायांजृम्भायांपादसुप्ततायाम् ॥ पिण्डकोद्वेष्टनेऽङ्गसादेहनुस्तम्भेचलोमहर्षे॥ १६५॥

खपरे में बालूको भूनकर कपडे में रखकर कांजीसे भिजोवे इसके द्वारास्वेद लेनेसे वात तथा कफ के रोग,कंप,मस्तक,हृदय और शिरकी पीड़ा,जँभाई,पैरोंकी सुन्नता,पिंडलियोंकी पीड़ा, शरीरकी शिथिलता,जाबडेका जकडना और रोमांच इनका नाशहोताहै यह बालुकास्वेद कहलाताहै॥ १६५॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मातुलुङ्गफलकेशरोद्धृतःसिन्धुजन्ममरिचान्वितोमुखे । हन्तिवातकफरोगमास्यगं शोषमाशुजड़तामरोचकम् ॥ (इतिकवलःकण्ठोष्ठमुखशोषे) ॥ १६६ ॥

कंठ ओठ तथा मुख के सूखने पर कवलकी विधि ॥

सैंधानोन और मिर्चयुक्तनींबूके जीरेको मुखमें रखने से वात कफ मुखरोग कंठ ओठ तथा मुख का सूखना जड़ता और अरुचि इनसबका शीघ्र नाशहोताहै ॥ १६६ ॥

अन्यच्च ॥

शर्करादाडिमाभ्याञ्चद्राक्षादाड़िमयोस्तथा । कल्कंविधारयेदास्येशोषवैरस्यनाशनम् ॥ द्राक्षामलकयोःकल्कंसघृतंवदनेक्षिपेत्। तेनघृष्ट्वामुखस्यान्तःकुर्वीतप्रतिसारणम्। तेनतालुगलान्तस्थःसंशोषश्चैवशाम्यति। सुरसंजायतेवक्त्रंरुचिर्भवतिभोजने ॥ १६७ ॥

अन्यप्रकार ॥

शक्कर तथा अनार अथवा दाख तथा अनारके कल्कको मुखमें रखने से मुखकी विरसता और मुखके सूखनेका नाश होताहै दाख और आंवलेके कल्कको घृत सहित मुखमें रक्खे उसको मुखमें घिसके उगलदे इस्से तालु तथा गलेका सूखना नष्टहोताहै मुख सुरस होजाताहै और भोजन में रुचिहोतीहै ॥ १६७ ॥

निद्रानाशस्य निदानमाह ॥

नावनंलङ्घनंचिन्ताव्यायामःशोकभीरुषः।एभिरेवभवेन्निद्रानाशःश्लेष्मातिसंक्षयात् १६८

निद्राके नाशका निदान ॥

नासलेना, लंघन, चिन्ता, व्यायाम, शोक, भय, क्रोध और कफका अत्यन्त नाश इनकारणों से निद्रा का अत्यन्त नाशहोता है ॥ १६८ ॥

अथ तस्यचिकित्सामाह ॥

भृष्टन्तुविजयाचूर्णं मधुनानिशिभक्षयेत् । निद्रानाशेऽतिसारेचग्रहण्यांपावकक्षये गुडंपिप्पलिमूलस्यचूर्णेनालोडितंलिहेत्। चिरादपिचसन्नष्टांनिद्रामाप्नोतिमानवः ॥ यसजङ्घामूलंबद्धंवाशिरसिकाकमाच्याश्च । विधृतंनिद्राजनकंत्वङ्मूलंवाशृतंसगुडं पीतमितिशेषः मूलन्तुकाकमाच्याबद्धंसूत्रेणमस्तकेनियतम्। विदधातिनष्टनिद्रीनिद्रामिवेवासिद्धमिदम् ॥ शीलयेन्मन्दनिद्रस्तुक्षीरमद्यरसान्दधि । अभ्यङ्गोद्वर्त्तनस्नानमूर्द्धकर्णाक्षितर्पणम् ॥ रसंमांसरसम्। कान्ताबाहुलताश्लेष्मोनिवृत्तिःकृतकृत्यता॥ मनोनुकूलाविषयाःकामंनिद्रासुखप्रदा । रसेशाकेचसूपेचसर्पिर्यूषपयःसुच ॥ निद्रांसञ्जनयत्याशुपलाण्डुरुपयोजितः। रसेमांसरसे ॥ ऐक्षवंपोतकीमाषःसुरामांसरसःपयः । गोधूमतिलमत्स्याश्च।निद्रांकुर्वन्तिदेहिनामितिनिद्रनाशे ॥ १६९ ॥

निद्रानाशकी चिकित्सा ॥

भूनी हुई भंगके चूर्णको शहद के साथ रात्रिमें खानेसे निद्राका न आना, अतीसार, ग्रहणी और मंदाग्नि इनरोगों का नाश होताहै पीपलामूलके चूर्णको गुडमें मिलाकर चाटने से बहुतदिनसे नष्ट हुई भी निद्राको मनुष्य प्राप्त होता है काकजंघाकी जड़ अथवा काकमाचीकी जड़ शिरमें बांधने से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तनिद्रा आतीहै अथवा ऊपर लिखीहुई औषधोंकी छाल और जडके क्राथमें गुड मिलाकर पीनेसे निद्रा आतीहै यह सिद्धयोगहै निद्राकी अल्पता होने पर दुग्ध,मद्य,मांस,रस तथा दहीके सेवनसे तैल-मर्दन,उबटन तथा स्नान करने से और शिर कान तथा नेत्रों को तैलादिकें द्वारा पूर्ण करनेसे निद्रा आतीहै उत्तम स्त्रीका आलिङ्गन,कफकी उत्पत्ति,कृतार्थता और मनके अनुकूल भोगादिक इनसब से सुख पूर्व्वक निद्राआती है मांसरस,शाक,दाल,घी,यूष और दूध इनमें प्याजडालकर खानेसे शीघ्र निद्राआती है शक्कर आदिक ईखके पदार्थ,पोय,उर्द,सुरा, मांसरस, दूध, गेहूं,तिल और मछली इन के सेवनसे निद्रा आती है ॥ १६९ ॥

दारुहैमवतीकुष्ठशताह्वाहिङ्गुसैन्धवैः । लिम्पेत्कोष्णैरम्लपिष्टैःशूलाध्मानयुतोदरम् । हैमवतीश्वेतवचादारुषट्कालेपःशूलाध्माने ॥ १७० ॥

शूल तथा अफरा पर दारुषट्कलेप ॥

देवदारु,श्वेतवच,कूट,सौंफ,हींग इनऔषधियों को काँजी के साथ पीसकर कुछ गरम २ पेटपर लेपकरने से शूल तथा अफरेका नाश होताहै ॥ १७० ॥

कटुतैलंकणाहिङ्गुवचालसुनसाधितम् । उष्णंविनिहितंहन्तिकर्णयोर्निःस्वनंव्यथाम् ॥ तैलंकर्णस्वने॥ कणासुगन्धिवचया यवान्याचसमन्विता । ताम्बूलसहिताहन्तिशुष्ककासंमुखेधृता इतिशुष्ककासे ॥ १७१ ॥

पीपल,हींग,वच और लहसन इनको कडुवे,तेलमें पाककरे इस तेलको कानमें छोडने से पीडा और कानों के शब्दका नाश होताहै पीपल,सुगन्धित वच,अजवाइन और पान इनके एकसाथ मुख में रखने से सूखी खांसीका नाश होताहै ॥ १७१ ॥

अथान्नमाह ॥

श्रमोपवासानिलजेहितोनित्यंरसौदनः । मुद्गामलकयूषस्तुबद्धविट्कायदीयते ॥ रसो मांसरसः । पेयांवारक्तशालीनांवस्तिपार्श्वशिरोरुजि ॥ श्वदंष्ट्राकण्टकारीभ्यांसिद्धांज्वरहरींपिबेत् । कासीश्वासीचहिक्कीचपञ्चमूलीश्रृतंपिबेत् ॥ पेयामितिशेषःइतिवातज्वराधिकारः ॥ १७२ ॥

वातज्वरमें देने के योग्य अन्न ॥

परिश्रम, उपवास तथा वातजनित ज्वरमें मांसके रस के साथ भात खाना सदैव हितकारी है ज्वरमें जो मूत्राशय पसली तथा शिरमें पीडाहोय तो गोखुरू और भटकटैया के क्राथसे बनीहुई लाल धानके चावलों की पेयापिये खांसी श्वास तथा हिचकी आनेपर पंचमूलसे बनीहुई पेया पिये इति वातज्वराधिकार ॥ १७२ ॥

अथ पित्तज्वराधिकारः ॥

तत्रपित्तज्वरस्यविप्रकृष्टसन्निकृष्टकथनपूर्विकांसंप्राप्तिमाह । पित्तलाहारचेष्टाभ्यांपित्तमामाशयाश्रयम् ॥ बहिर्निरस्यकोष्ठाग्निंज्वरकृत्स्याद्रसानुगः। पित्तस्यपङ्गुत्वात्तेन कोष्ठाग्नेरुष्माबहिर्नेतुंनशक्यते ॥ यतआह। पित्तंपङ्गुःकफःपङ्गुःपङ्गवोमलधातवः ॥ वायुनायत्रनीयन्ते तत्रगच्छन्तिमेघवत्।इतिततोऽत्रपित्तंवातसहायंबोद्धव्यम्॥यतआह।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्रव्यमेकरसंनास्तिनरोगोऽप्येकदोषजः। एकस्तुकुपितोदोषइतरानपिकोपयेत्॥१७३॥

पित्तज्वरका अधिकार॥

पित्तज्वरके दूर और समीपी कारणों सहित संप्राप्ति का वर्णन इसप्रकार करते हैं कि पित्त वर्द्धक आहार विहारों के द्वारा आमाशयमें गयाहुआ पित्त जठराग्नि को बाहर निकालकर और रसे को दूषित करके ज्वरको उत्पन्न करता है पित्त पंगुहै इसलिये जठराग्नि की गरमी को बाहर नहीं निकालसक्ताहै क्योंकि कहागया है कि पित्त कफ मल और धातु यह सब पंगुहैं (चलनेमें असमर्थ हैं) मेघोंके समान वायु जहाँ इन्हें लेजातीहै वहाँजाते हैं इसलिये पित्त वायु की सहायता से ऊपर कहेहुए कार्य्य को करताहै क्योंकि कहागयाहै कि कोई द्रव्य एक रसयुक्त नहींहै और एकही दोषसे उत्पन्न हुआ कोई रोग नहीं एकदोष कुपित होकर अन्यदोषोंकोभी कुपित करताहै॥ १७३॥

इति तस्यपूर्वरूपमाह॥

पित्तान्नयनयोर्दाहइति।पित्तज्वरेउत्पत्स्यतिनेत्रदाहःस्यात्।सचश्रमादिपूर्वकोभवति १७४

पित्तज्वरका पूर्वरूप॥

पित्तज्वरके उत्पन्नहोनेकेपहले शमआदिक सामान्य ज्वरके पूर्वरूपसहित नेत्रोंमें दाह होताहै १७४॥

अथ पित्तज्वरस्य लक्षणमाह॥

वेगस्तीक्ष्णोऽतिसारश्चनिद्राल्पत्वंतथावमिः। कण्ठौष्ठमुखनासानांपाकःस्वेदश्चजायते॥ प्रलापोवक्त्रकटुतामूर्च्छादाहोमदस्तृषा। पीतविण्मूत्रनेत्रत्वंपैत्तिकेभ्रमएवच॥ अतीसारःपित्तस्यतस्यसरत्वात्सद्रवमलप्रवर्त्तिर्नत्वतिसारवत्तस्यज्वरोपद्रवत्वात्वमिः। यदापित्तंकफस्यस्थानंयातितदाबोद्धव्यम्॥ प्रलापोऽनर्थकंवचःमूर्च्छारूपादेरज्ञानः॥ (मदः) पूगकोद्रवधत्तूरभक्षणादिवमत्तता॥ भ्रमश्चक्रारूढस्येवज्ञानंचकाराद्रक्तकोठादयोबोद्धव्याः॥ १७५॥

पित्तज्वर के लक्षण॥

पित्तज्वरमें तीक्ष्णवेग,अतीसार,निद्राकी अल्पता,छर्द्दि, कण्ठ,ओठ,मुख और नासिका का पक-,स्वेद,प्रलाप (अनर्थक वचन) मुखकी कटुता,मूर्च्छा,दाह,मद,तृषा,मलमूत्र तथा नेत्रोंकी पीतता और भ्रम यह लक्षण होतेहैं यहां अतीसार शब्दसे पित्तके दस्तावर होनेके कारण मलका पतलापन होना चाहिये अतीसार रोग न जाननाचाहिये क्योंकि यह ज्वरका उपद्रवमात्रहै पित्तज्वर में जब पित्त कफ के स्थानमें जाताहै तब छर्द्दि होतीहै यहां भ्रम शब्दका अर्थ चक्करमें पड़ाहुआसा मालूम होताहै और चकारसे रक्तकोठादिरोग जाननाचाहिये॥ १७५॥

अथ पित्तज्वरस्यचिकित्सा॥

आमाशयस्थोहत्वाग्निंसामोमार्गान्पिधापयन्। विदधातिज्वरंदोषस्तस्माल्लङ्घनमाचरेत्॥इतिवचनात्सामान्यतोज्वरिमात्रस्ययावदारोग्यदर्शनंलङ्घनाभिधानम्। पित्तज्वरिणोलङ्घनविधानेविशेषमाह। सुश्रुतः। पैत्तिकेदशरात्रेणज्वरेयुञ्जीतभेषजमिति। (दशरात्रेणलङ्घनवताव्यतीतेनेत्यर्थः)॥ १७६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पित्तज्वरकी चिकित्सा ॥

...आमसहित दोष आमाशयमें स्थितहुआ अग्निको मन्दकरके रसके लेचलनेवाली नाडियोंको ...कर ज्वरको उत्पन्न करताहै इसलिये लंघन कराना चाहिये इस वचनके द्वारा सम्पूर्ण ज्वर ...रोंको सामान्यतासे आरोग्यपर्य्यन्त लंघन देना चाहिये यह सिद्ध होताहै इसमें पित्तज्वरवाले ... लंघन देनेके लिये विशेषता कहीहै जैसे कि पित्तज्वर में दश दिन लंघन कराके ग्यारहवें दिन ...षध देनी चाहिये ॥ १७६ ॥

किंतद्भेषजंतदाह ॥

...तिक्तामुस्तायवैःपाठाकट्फलाख्यांसह्योदकम् । पक्कंसशर्करंपीतंपाचनंपैत्तिकेज्वरे ॥ (तिक्तादिक्काथः) ॥ १७७ ॥

औषधियोंका वर्णन तिक्तादिक्काथ ॥

कुटकी,मोथा,जव,कायफल,पाढा और सुगन्धबाला इन औषधियोंके क्काथमें शक्कर डालकर पीने से पित्तज्वरमें पाचन होताहै ॥ १७७ ॥

पर्पटोवासकस्तिक्ताकैरातोधन्वयासकः । प्रियंगुश्चकृतःक्काथएषांशर्करयायुतः ॥ पिपासादाहपित्तास्रयुक्तंपित्तज्वरंहरेत् । (पर्पटादिक्काथः) ॥ १७८ ॥

परपटादिक्काथ ॥

पित्तपापडा,बांसा,कुटकी, चिरायता, जवासा और मालकांगनी इन औषधियोंके क्काथमें शक्कर डालकर पीनेसे तृषा,दाह तथा रक्तपित्तज्वरका नाश होताहै ॥ १७८ ॥

द्राक्षाहरीतकीमुस्ताकटुकाकृतमालकः । पर्पटश्चकृतःक्काथएषांपित्तज्वरापहः ॥ मुख...लापार्त्तिदाहमूर्च्छाभ्रमप्रणुत् । पिपासारक्तपित्तानां शमनोभेदनोमतः ॥ (द्राक्षा...थः) ॥ १७९ ॥

द्राक्षादिक्काथ ॥

...ख,हड,मोथा,कुटकी,अमलतास और पित्तपापडा इनऔषधियोंका क्काथ पीनेसे पित्तज्वर,मुखका ...वना,प्रलाप,अन्तर्दाह,मूर्च्छा,भ्रम,तृषा तथा रक्तपित्तकानाश होताहै और मलका भेद होताहै१७९॥

... पटोलयवधान्याकमधुकंमधुसंयुतम् (क्काथः) हन्तिपित्तज्वरंदाहंतृष्णाञ्चातिप्रमा...ीम् ॥ (पटोलादि) ॥ १८० ॥

पटोलादिक्काथ ॥

परवल, इन्द्रजौ, धनियां और मुलहठी इनका काढा शहद डालकर पीने से पित्तज्वर, दाह और ...न्त तृषाको दूर करताहै ॥ १८० ॥

...गुडूच्यामलकैर्युक्तःकेवलोवापिपर्पटः । पित्तज्वरंहरेत्तूर्णंदाहशोषभ्रमान्वितम् ॥ (गुडूच्यादिक्काथः) ॥ १८१ ॥

गुडूच्यादिक्काथ ॥

गिलोय और आंवले समेत पित्तपापडेका क्काथ अथवा केवल पित्तपापडेका क्काथ पानकरनेसे दाह, ...ष तथा भ्रमसहित पित्तज्वरको शीघ्र नाश करताहै ॥ १८१ ॥

एकःपर्पटकःश्रेष्ठःपित्तज्वरविनाशनः । किंपुनर्यदियुज्येतचन्दनोशीरबालकैः ॥ १८२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

केवल पित्तपापडेकाही क्वाथ पित्तज्वर को नाशकरताहै और चन्दन, खस तथा सुगन्धबाले योगहोने पर तो क्याही कहनाहै ॥ १८२ ॥

ह्रीवेरचन्दनोशीरघनपर्पटसाधितम् । दद्यात्सुशीतलंवारितृट्छर्दिज्वरदाहनुत् । (ह्रीवेरादिक्वाथः) १८३ ॥ ह्रीवेरादिक्वाथ ॥

सुगन्धबाला, लालचन्दन, खस, मोथा और पित्तपापडेका क्वाथ, ठंढा करके पीनेसे तृषा, छर्दि, ज्वर तथा दाहका नाश होताहै ॥ १८३ ॥

भूनिम्बातिविषालोध्रमुस्तकेन्द्रयवामृताः । बालकंधान्यकंबिल्वंकषायोमाक्षिकान्वितः ॥ विड्भेदश्वासकासांश्चरक्तपित्तज्वरंहरेत् । (भूनिम्बादिक्वाथः) ॥ १८४ ॥

भूनिंबादिक्वाथ ॥

चिरायता, अतीस, लोध, मोथा, इन्द्रजौ, गिलोय, सुगन्धबाला, धनियां और बेल इन औषधियों के काढेमें शहद डालकर पान करनेसे मलभेद श्वास खांसी, रक्तपित्त तथा ज्वर का नाशहोताहै १८४॥

द्राक्षाचन्दनपद्मानिमुस्तातिक्तामृतापिच । धात्रीबालमुशीरंचलोध्रेन्द्रयवपर्पटाः ॥ परूषकंप्रियंगुश्चयवासोवासकस्तथा । मधुकंकुलकञ्चापिकिरातोधान्यकंतथा ॥ एषांक्वाथोनिहन्त्येवज्वरंपित्तसमुत्थितम् । तृष्णांदाहंप्रलापञ्चरक्तपित्तंभ्रमंक्लमम् ॥ मूर्च्छांछर्दितथाशूलंमुखशोषमरोचकम् । कासंश्वासञ्चहल्लासंनाशयेन्नात्रसंशयः ॥ (महाद्राक्षादिक्वाथः) ॥ १८५ ॥ महाद्राक्षादि क्वाथ ॥

दाख, लालचन्दन, पद्माक, मोथा, कुटकी, गिलोय, आमला, सुगन्धबाला, खस, लोध, इन्द्रजौ, पित्तपापड, फालसा, मालकांगनी, जवासा, बांसा, मुलहठी, परवल, चिरायता और धनियां इनसब औषधियोंका क्वाथ पीनेसे पित्तज्वर, तृषा, दाह, प्रलाप, रक्तपित्त, श्रम, ग्लानि, मूर्च्छा, छर्दि, शूल, मुखका सूखना, अरुचि, खांसी, श्वास तथा मतली का नाश होताहै ॥ १८५ ॥

ससितोनिशिपर्युषितःप्रातर्धान्याकतन्दुलक्वाथः । पीतःशमयत्यचिरादन्तर्दाहं पैत्तम् ॥ (धान्याकक्वाथः) ॥ १८६ ॥ धनियेंकाक्वाथ ॥

धनियेंका बासीक्वाथ शक्कर डालकर प्रातःकाल पीनेसे अत्यन्त शीघ्र अन्तर्दाह सहित पित्तज्वर नाश होताहै ॥ १८६ ॥

अमृतायाहिमःप्रातःससितःपैत्तिकंज्वरम् । वासायाश्चतथाक्वाथोरक्तपित्तज्वरञ्जयेत् ॥ १८७ ॥

गिलोयको कूटकर सायंकाल में भिजोदे फिर प्रातःकाल उसको छानके शक्करसहित पीनेसे पित्तज्वर नाश होताहै इसीप्रकार बाँसेके भी कषाय के पानकरने से रक्तपित्त तथा ज्वरका नाश होताहै १८७ ॥

गुडूचीभूमिनिम्बश्चबालंवीरणमूलकम् । लघुमुस्तंतत्वद्धात्रीद्राक्षावासाचपर्पटः एषांक्वाथोहरत्येवज्वरंपित्तकृतंद्रुतम् । सोपद्रवमपिप्रातर्निपीतोमधुनासह ॥ गुडूच्यादिक्वाथः ॥ १८८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुडूच्यादिक्वाथ ॥

…गिलोय,चिरायता, सुगन्धबाला,खस, छोटा मोथा, निसोथ,आंवला, दाख, बांसा और पित्तपाप- …इन औषधियोंका क्वाथ सहत डालकर प्रातःकाल पीने से उपद्रव सहित पित्तज्वर का नाश …ताहै ॥ १८८ ॥

…शस्यबदर्यावानिम्बस्यमृदुपल्लवैः।अम्लपिष्टैःप्रलेपोऽयंहन्याद्दाहयुतंज्वरम् १८९

पलाश (ढाक) बेर अथवा नींबके कोमल पत्तों को कांजीसे पीसकर लेपकरनेसे दाहयुक्त ज्वर का नाश होताहै ॥ १८९ ॥

उत्तानसुप्तस्यगम्भीरताम्रकांस्यादिपात्रेनिहितेचनाभौ । शीताम्बुधाराबहुलापत …ती निहन्तिदाहंज्वरितज्वरञ्च ॥ १९० ॥

रोगीको चित्तसुलाकर नाभिपर तांबे अथवा कांसे आदिके गहरेपात्र को रखकर उसमें शीतल जलकीधार छोडने से शीघ्रही दाह और ज्वरका नाश होताहै ॥ १९० ॥

पथ्यांतैलघृतक्षौद्रैर्लिहन्दाहज्वरापहाम् । कासासृक्पित्तवीसर्पश्वासान्हन्तिवमी मपि ॥ (तैलघृतक्षौद्रैरित्यत्रनसमुच्चयस्तेनकेवलेनक्षौद्रेणापिलिह्यात्) ॥ १९१ ॥

हडको पीसकर तेल घी तथा सहतके साथ चाटनेसे खांसी, रक्तपित्त, विसर्प, श्वास,छर्दि, दाह तथा ज्वरका नाशहोताहै तेल,घी और सहत इनको इकट्ठा न लेकर केवल सहतके साथही चाटनेसे रोगोंका नाश होताहै ॥ १९१ ॥

कांजिकार्द्रपटेनावगुण्ठनंदाहनाशनम्।अथगोतक्रसंस्विन्नंशीतलीकृतवाससा॥१९२॥

कांजीसे भिगोयेहुए वस्त्रके ओढनेसे भी दाहका नाश होताहै अथवा गौके मट्ठेमें भीगेहुए शीतल वस्त्रको लपेटनेसे दाहका नाश होताहै ॥ १९२ ॥

…क्षामलककल्केनकवलोऽत्रहितोमतः । पक्वंदाडिमबीजैर्वाधानाकल्केनचक्वचित् ॥ …ते कवलः। धानात्रधान्यकमिति कल्कः) ॥ १९३ ॥

…ख और आंवलेके कल्कसे पक्के अनारके बीजोंके कल्कसे अथवा धनियें के कल्कके द्वारा कवल …णकरनेसे दाहका नाश होताहै ॥ १९३ ॥

अथान्यमाह ॥

दाहकम्पार्दितंक्षामं निरन्नंतृष्णयान्वितम् ॥ शर्करामधुसंयुक्तंपाययेल्लाजतर्पणम् ॥ (लाजतर्पणंलाजसक्तुरूपंतर्पणंसन्तर्पणस्वरूपमुक्तंसामान्यज्वरचिकित्सायाम्) मुद्गयू …ोदनोदेयःसितयापैत्तिकेज्वरे ॥ १९४ ॥

पित्तज्वरवालेको अन्न ॥

…दाह तथा कंपसे पीड़ित क्षीण लंघनी और प्यासे पित्तज्वरवालेको शक्कर और सहत युक्त खी- …लके सत्तुओंका तर्पण देनाचाहिये अथवा शक्कर सहित मूंगके यूषकेसाथ भातदेनाचाहिये ॥१९४॥

हर्म्येशुभ्राभ्रसङ्काशेशशाङ्ककरशीतले।मलयोदकसंसिक्तेसुप्यात्पित्तज्वरीनरः ॥१९५॥

पित्तज्वरवाला शुभ्रमेघोंके समान कांतिवाले चन्द्रमाकी किरणों से शीतल और चन्दनसे सिंचे हुए स्थानमें सोवे ॥ १९५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हारावलीचन्दनशीतलानांसुगन्धपुष्पाम्बरभूषितानाम् । नितम्बिनीनांसुपयोधराणामालिंगनान्याशुहरन्तिदाहम् ॥ आह्लादञ्चास्यविज्ञायनस्त्रीरपनयेत्पुनः । हितञ्च जयेदन्नंनप्रीतिसुरतम्महत् ॥ १९६ ॥

हार तथा चन्दनसे शीतल अंगवाली सुगन्धित पुष्प तथा वस्त्रोंसे आभूषित सुन्दर पयोधरवाली स्त्रियोंके आलिंगनसे शीघ्रही दाहका नाश होताहै इस प्रकार पुरुषको आनन्दित जानकर स्त्रियों फिर हटवावे नहीं और हित अन्न भोजन करवावे परन्तु बहुत मैथुन करना हितकारी नहीं है१९६

वाप्यःकमलहासिन्योजलयन्त्रगृहाःशुभाः ॥ नार्यश्चन्दनदिग्धांग्योदाहदैन्यहरामताः ॥ (इति पित्तज्वराधिकारः) ॥ १९७ ॥

फूलेहुए कमलवाली बावडी फव्वारेयुक्तघर और चन्दनलगेहुए अंगवालीस्त्री यह सब दाह और दीनताको नाश करतेहैं इति पित्तज्वराधिकार ॥ १९७ ॥

अथ श्लेष्मज्वराधिकारः (अथ श्लेष्मज्वरस्यविप्रकृष्टसन्निकृष्टकारणकथनपूर्विकांसंप्राप्तिमाह) ॥

श्लेष्मलाहारचेष्टाभ्यांकफोह्यामाशयाश्रयः । बहिर्निरस्यकोष्ठाग्निंज्वरकृत्स्याद्रसानुगः ॥ कफस्यकोष्ठाग्नितेजसोबहिर्नयनेनपंगुत्वादाशङ्कायांजातायांपित्तस्येवासिद्धान्तोबोद्धव्यः ॥ १९८ ॥

कफज्वराधिकार कफज्वरके दूर और समीपीकारण सहित संप्राप्तिका वर्णन ॥

कफकारी आहार और विहारोंके द्वारा आमाशयमें गयाहुआ कफ जठराग्निकी ऊष्माको बाहर निकालकर रसको दूषित करता हुआ ज्वरको उत्पन्न करताहै कफ पंगुहै इसलिये जठराग्निकी ऊष्माको बाहर नहीं निकाल सक्ताहै इस सन्देहके उत्तर में पित्तके समान सिद्धान्त यहां भी ना चाहिये ॥ १९८ ॥

अथ तस्यपूर्वरूपमाह ॥

कफान्नान्नाभिनन्दनमितिकफज्वरे उत्पत्स्यति । अनन्नाभिलाषःस्यात्सचश्रमादिकोभवति ॥ १९९ ॥

कफज्वरका पूर्वरूप ॥

कफज्वरके उत्पन्न होनेके पहले श्रम आदिक सामान्यज्वरके पूर्वरूप सहित अन्नमें अनिच्छा होती है ॥ १९९ ॥

अथ श्लेष्मज्वरस्यलक्षणमाह ॥

स्तैमित्यंस्तिमितोवेगआलस्यंमधुरास्यता ।शुक्लमूत्रपुरीषत्वंस्तम्भस्तृप्तिरथापिवा॥गौरवंशीतमुत्क्लेदोरोमहर्षोऽतिनिद्रिता । प्रतिश्यायोऽरुचिःकासः कफजेक्ष्णोश्चशुक्लता । स्तैमित्यमंगानांआर्द्रपटावगुण्ठितत्वमिव । स्तिमितोवेगःज्वरस्यमन्दोवेगःआलस्यंसमर्थस्यापिकर्मण्यनुत्साहः । छर्दःवमनोपस्थितमिवस्तम्भःअङ्गानांनम्रतातृप्तिः ॥ अन्नभिलाषःसत्यपिभोजनसामर्थ्यात्गौरवंगात्राणाम् । शीतंलगतिउत्क्लेदःवमनोपस्थितिरितिच । अतिनिद्रतानिद्राधिक्यंप्रतिश्यायोनासारोगविशेषः । अरुचिःभोजनानिच्छा चकारात्पिडिका शीतामुखप्रसेकश्छर्दिस्तंद्राहृदयोपलेपउष्णाभिलाषोवह्निमान्द्यमितिश्च

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्तउक्तम् । प्रसेकःपिडिकाःशीतश्छर्दिस्तन्द्रोष्णकामिता । कफेनलिप्तंहृदयं स्वेदग्नेश्च मन्दता ॥ २०० ॥ कफज्वर के लक्षण ॥

शरीरमें गीलाकपडा लिपटाहुआ सा मालूम होना ज्वरका वेग मन्द होना, आलस्य, मुख मधुररहे तथा मलका श्वेतहोना, शरीरका अकडना अन्नमें अनिच्छा, शरीरका भारीपन, शीतलगना, ...ली, रोमांच, निद्राकी अधिकता, जुकाम, अरुचि, खांसी और नेत्रोंकी शुक्लता यह लक्षण कफज्वर होते हैं चकारसे मुख तथा नासिका का बहना फुंसी, शीत, छर्दि, तंद्रा, उष्णताकी इच्छा, कफसे भराहुआ सा हृदय और मन्दाग्नि यह लक्षण होते हैं ॥ २०० ॥

अथ श्लेष्मज्वरस्यचिकित्सा ॥

आमाशयस्थोहत्वाग्निंसामोमार्गांपिधापयन् । विदधातिज्वरंदोषस्तस्माल्लंघनमाचरेत् ॥ इतिवचनात्सामान्यतोज्वरोमात्रस्य यावदारोग्यदर्शनं लंघनाभिधानंश्लेष्मज्वरिणोलंघनविधानेविशेषमाहसुश्रुतः । श्लैष्मिकेद्वादशाहेनज्वरेयुंजीतभेषजमिति । द्वादशाहेचलंघनवताव्यतीतेनेत्यर्थः ॥ २०१ ॥

कफज्वरकी चिकित्सा ॥

आमाशयमें स्थित दोष अग्निको मन्दकरके स्वेद तथा रसके बहनेवाले स्रोतोंको आच्छादन करता हुआ ज्वरको उत्पन्न करताहै इसलिये लंघनकरना चाहिये इसवचनके द्वारा सामान्यतासे सम्पूर्ण ज्वरवालोंको लंघनकरना रोगकी निवृत्तितक उचितहै इनमें कफज्वरके रोगमें सुश्रुतने विशेषता कहीहै जैसे कि कफज्वरमें बारहदिन लंघन करायके तेरहवें दिन औषध देनी चाहिये ॥ २०१ ॥

किंतद्भेषजं तदाह ॥

पिप्पल्यादिकषायंतुकफजेपरिपाचनम् (पिप्पल्यादिगणमाह) पिप्पलीपिप्पलीमूलं चव्यजपिप्पली । नागरंचित्रकंचव्यंरेणुकैलाजमोदिका ॥ सर्षपोहिंगुभार्ङ्गीचपाठेन्द्रयवाजीरकाः । महानिम्बवचामूर्वाविषातिक्ताविडंगकम् ॥ पिप्पल्यादिगणोह्येषकफमारुतनाशनः । गुल्मशूलज्वरहरोदीपनस्त्वामपाचनः ॥ पिप्पल्यादिक्काथः ॥ २०२ ॥

औषधियोंका वर्णन, पिप्पल्यादि क्काथ ॥

पिप्पल्यादि गणका क्काथ कफज्वरमें पाचन होताहै पिप्पल्यादिगण पीपल, पीपलामूल, मिर्च, गजपीपल, सोंठ, चीता, चव्य, रेणुका, इलायची, अजवाइन, सरसों, हींग, भारंगी, पाढ़ा, इन्द्रजौ, जीरा, महानिंब, वच, मरोडफली, अतीस, कुटकी और बायबिडंग यह सब पिप्पल्यादि गणकहातेहैं यह कफवात बायगोला शूल तथा ज्वरनाशक दीपन और आमकापचानेवालाहोता है ॥ २०२ ॥

क्षौद्रोपकुल्यासंयोगश्वासकासज्वरापहः । प्लीहानंहन्तिहिक्कांचबालानामपिशस्यते ॥ पिप्पलीत्रिफलाचापिसमभागान्ज्वरीलिहन् । मधुनासर्पिषाचापिकासीश्वासीसुखीभवेत् २०३

सहतके साथ पीपलचाटनेसे श्वास खांसी ज्वर प्लीहा तथा खुशकीका नाशहोताहै और यही बालकोंको भी श्रेष्ठहै पीपल और त्रिफला समभाग सहत और घीके साथ चाटनेसे खांसी श्वास तथा ज्वरका नाशहोताहै ॥ २०३ ॥

चतुर्भद्रिका ॥

कट्फलंपौष्करंशृंगीकृष्णाचमधुनासह । श्वासकासज्वरहरोलेहोऽयंकफनाशनः २०४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चतुर्भद्रिका ॥

कायफल, पुष्करमूल, काकड़ासिंगी और पीपल इनको सहतके साथचाटनेसे खांसी,श्वास, तथा कफका नाश होताहै ॥ २०४ ॥

अष्टांगावलेहः ॥

कट्फलंपौष्करंशृंगीयवानीकारवीतथा । कटुत्रयंचसर्वाणिसमभागानिचूर्णयेत् ॥ कस्यरसैर्लिह्यान्मधुनावाकफज्वरी । कासश्वासारुचिच्छर्दिहिक्काश्लेष्मानिलापहः२०

अष्टांगावलेह ॥

कायफल, पुष्करमूल, ककड़ासिंगी, अजवाइन,सौंफ, सोंठ, मिर्च और पीपल इनसब औषधि को समभाग लेकर अदरकके रस अथवा सहतके साथचाटने से कफज्वर, खांसी, श्वास, अरुचि, छर्दि, हिचकी, कफ तथा वातका नाश होताहै ॥ २०५ ॥

सिन्दुवारदलक्काथंकणाढ्यंकफजेज्वरे । जंघयोश्चबलेक्षीणेकर्णेचपिहितेपिबेत् ॥ यवानीपिप्पलीवासायथाखाखसवल्कलम् । एषांक्काथंपिबेत्कासेश्वासेचकफजेज्वरे २०६॥

कफज्वरमें पिंडलियोंके बलके क्षीण होजाने में और कानों के बन्दहोजाने में पीपल डालकर निर्गुण्डीके क्वाथका पानकरे अजवाइन, पीपल, बांसा और पोस्तके छिलके इन औषधियोंका क्वाथ पीने से श्वास, खांसी तथा कफज्वरका नाशहोताहै ॥ २०६ ॥

वासादिक्काथः ॥

वासाक्षुद्रामृताक्काथःक्षौद्रेणज्वरकासहृत् ॥ २०७ ॥ (मरिचादिक्काथः) मरिचंपिप्पलीमूलंनागरंकारवीकणा । चित्रकंकट्फलंकुष्ठंससुगन्धिवचाशिवा॥कण्टकारीजटाशृंगीयवानीपिचमन्दकः । एषांक्काथोहरत्येवज्वरंसोपद्रवंकफात् ॥ २०८ ॥

बांसादि क्काथ ॥

बांसा भटकटैया और गिलोय इनके क्काथमें सहत डालकर पीने से ज्वर तथा खांसीका नाश है ॥२०७॥ (मरिचादि क्काथ) मिर्च, पीपलामूल, सोंठ, सौंफ, पीपल, चीता, कायफल , कूट, न्धित वच,हड़, भटकटैयाकीजड़, काकड़ासिंगी, अजवाइन, नींबकीछाल इन औषधियों का क्का पीने से उपद्रव सहित कफज्वरका नाश होताहै ॥ २०८ ॥

कफवातव्याधिहरस्त्वाद्वाताधिकारोक्तकल्पतरुरसोयोज्यः । सिन्धुत्रिकटुराजीभिरार्द्रकेणकफेहितःकवलइतिशेषः ॥ २०९ ॥

वातज्वराधिकार में कहाहुआ कल्पतरुनामरस कफज्वरमें देनाचाहिये क्योंकि वह कफ वातरोगों का नाशकहै सैंधानोन, सोंठ, मिर्च, पीपल और राई इनको अदरकके रसमें मिला ग्रास बनाकर मुखमें रखने से कफका नाश होताहै ॥ २०९ ॥

अथान्यमाह ॥

मुद्गयूषोदनोदेयो ज्वरेकफसमुत्थिते । (इति श्लेष्मज्वराधिकारः) ॥ २१० ॥

(कफज्वरमें अन्न) कफज्वरमें मूंगका यूष और भातदेना चाहिये इति कफज्वराधिकार ॥२१०॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ वातपित्तज्वराधिकारः ॥

विप्रकृष्टसन्निकृष्टकारणकथनपूर्विकांसंप्राप्तिमाह । (तत्रवातपित्तज्वरस्य) वातपित्तकरैर्वातपित्तेआमाशयाश्रये । बहिर्निरस्यकोष्ठाग्निंरसगेज्वरकारिणी ॥ स्याता स्वमितिशेषः ॥ २११ ॥ (अथ तस्य पूर्वरूपमाह) प्राग्रूपेवातपित्तस्यभवतोवातपैत्तिके ज्वरइतिशेषः ॥ २१२ ॥ वातपित्तज्वराधिकार ॥

द्वंद्वजज्वरके दूर और समीपी कारणों समेत संप्राप्ति कही जाती है इनमें से पहले वातपित्तज्वर का वर्णन करते हैं वातपित्तवर्द्धक आहार विहारों के सेवनसे आमाशय में गये हुए वात पित्त जठराग्नि की ऊष्मा को बाहर निकाल कर और रसको दूषित करके ज्वरको उत्पन्न करते हैं॥२११॥ (वातपित्तज्वर का पूर्वरूप) वातपित्तज्वरके उत्पन्न होने के पहले वातज्वर और पित्तज्वर के पूर्वरूप सम्बन्धी मिलेहुये लक्षण होते हैं ॥ २१२ ॥

अथ वातपित्तज्वरलक्षणमाह ॥

तृष्णामूर्च्छाभ्रमोदाहोनिद्रानाशःशिरोरुजा।कण्ठास्यशोषोवमथूरोमहर्षोरुचिस्तमः ॥ पर्वभेदश्चजृम्भाचवातपित्तज्वराकृतिः।पर्वभेदःपर्वाणिभिद्यन्तइतिसन्धिषुव्यथा २१३॥ (अथ वातपित्तज्वरस्यचिकित्सा) वातपित्तज्वरेदेयमौषधंपञ्चमेहनि ॥ २१४ ॥

वातपित्तज्वरका लक्षण ॥

तृषा, मूर्च्छा, भ्रम, दाह, निद्राकानाश, शिरमें पीड़ा, कंठ तथा मुखका सूखना, छर्दि, रोमांच, अरुचि, तम, संधियों में पीडा और जंभाई यह वातपित्तज्वर के लक्षण हैं ॥ २१३ ॥ (वातपित्तज्वर की चिकित्सा) वातपित्तज्वरमें पांचवें दिन औषध देना चाहिये ॥ २१४ ॥

किरातादिक्काथः ॥

भूनिम्बतिक्तममृताद्राक्षामामलकंशटी । निःक्काथ्यसगुडंक्काथंवातपित्तज्वरेपिबेत्॥२१५॥

किरातादि क्काथ ॥

चिरायता, गिलोय, दाख, आंवला और कचूर इन औषधियों का क्काथ गुड मिलाकर वात पित्त ज्वर में पीना चाहिये ॥ २१५ ॥ पञ्चभद्रक्काथः ॥

गुडूचीपर्पटोमुस्तंकिरातोविश्वभेषजम् । वातपित्तज्वरेदेयंपञ्चभद्रमिमंशुभम् ॥२१६॥

पंचभद्र क्काथ ॥

गिलोय,पित्तपापड़ा,मोथा,चिरायता और सोंठ-यह पंचभद्र नाम क्काथ पित्तज्वरमें देनाचाहिये॥२१६॥

त्रिफलादिक्काथः ॥

त्रिफलाशाल्मलीरास्नाराजवृक्षाटरूषकैः।शृतमम्बुहरत्याशुवातपित्तभवंज्वरम्॥२१७॥

त्रिफलादि क्काथ ॥

हड़, बहेड़ा, आंवला, सेमर, रासना, अमलतास और बांसा इन औषधियों का क्काथ वातपित्तज्वर को शीघ्रही नाश करताहै ॥ २१७॥

मधुकंसारिवाद्राक्षामधूकंचन्दनोत्पलम् । काश्मरीफलकंलाध्रत्रिफलापद्मकेसरम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परूषकंमृणालञ्चक्षिपेत्संचूर्ण्यवारिणि । निःशोषितंसिताक्षौद्रलाजयुक्तन्तुतत्पिबेत् ॥ वातपित्तज्वरंदाहंतृष्णांमूर्च्छारुचिभ्रमान् । शमयेद्रक्तपित्तञ्चजीमूतमिवमारुतः ॥ अत्रमधुकादिमृणालान्तसमुदितम् । पलद्वयपरिमितंसंचूर्ण्यक्षिपेत् ॥ वारिणिषट्पलपरिमितेमधुकादिहिमोदाहे ॥ २१८ ॥

दाह पर मधुकादि हिम ॥

मुलहठी, सारिवा, दाख, महुआ, लालचन्दन, नीलकमल, गंभारीका फल, लोध, त्रिफला, कमल की केशर, फालसा और कमल की डंडी यह सब वस्तुमिलाकर आठतोले लेकर चूर्णकरे और इसमें चौबीस तोले जल छोड़े रातभर भिगोके प्रातःकाल सहत शक्कर और खीलोंका चूर्ण छोड़कर पिये जैसे वायुके द्वारा मेघ दूर होजाते हैं उसी प्रकार इसके सेवनसे वात पित्तज्वर, दाह, तृषा, मूर्च्छा अरुचि, भ्रम तथा रक्तपित्त यह सब दूर होते हैं ॥ २१८ ॥

अथान्नमाह ॥

मुद्गामलकयूषस्तु वातपित्तज्वरेहितः । महादाहेप्रदातव्योयूषश्चणकसम्भवः ॥ दाडिमामलकमुद्गसम्भवोयूषउक्तइतिवातपैत्तिके ॥ २१९ ॥

वातज्वरमें अन्न ॥

वात पित्तज्वरमें मूंग तथा आमलेका यूष हितकारीहै और बहुत दाह उत्पन्न होनेपर चनेका यूष देना चाहिये वातपित्तज्वरमें अनार आमला और मूंग का यूष देनाचाहिये ॥ २१९ ॥

कफपित्तहरामुद्गाःकारवेल्यादयस्तथा । प्रायेणनचतेदेयावातपित्तोत्तरेज्वरे ॥ दत्तास्तुज्वरविष्टम्भशूलोदावर्त्तकारिणः । इति वातपित्तज्वराधिकारः ॥ २२० ॥

मूंग और करेला आदिक कफपित्तनाशक होतेहैं इसलिये वातपित्तज्वरमें प्रायःयह न देनेचाहिये क्योंकि इनके देनेसे ज्वर, विष्टंभ, शूल और उदावर्त्त उत्पन्नहोताहै । इति वातपित्तज्वराधिकार भा०।

अथ वातश्लेष्मज्वराधिकारः ॥

तत्रतस्यविप्रकृष्टसन्निकृष्टकारणकथनपूर्विकांसंप्राप्तिमाह । वातश्लेष्मकरैर्वातक... वामाशयाश्रयौ । बहिर्निरस्यकोष्ठाग्निरसगौज्वरकारिणौ ॥ २२१ ॥ (पूर्वरूपमाह प्राग्रूपेवातकफयोःस्यातांवातकफज्वरे ॥ २२२ ॥

वातकफज्वराधिकार ॥

वात पित्त के दूर और समीपी कारणों समेत संप्राप्ति कहते हैं वात कफवर्द्धक आहार विहारोंके सेवन से आमाशय में गये हुये वातकफ जठराग्नि की ऊष्माको वाहर निकालकर रसको दूषितकरते हुए ज्वरको उत्पन्न करतेहैं ॥ २२१ ॥ (वातकफज्वरका पूर्वरूप) वातकफज्वरके होनेसे पहले वातज्वर और कफज्वर सम्बन्धी पूर्वरूपके लक्षण होते हैं ॥ २२२ ॥

अथ तस्यलक्षणमाह ॥

स्तैमित्यंपर्वणांभेदोनिद्रागौरवमेवच । शिरोग्रहःप्रतिश्यायःकासःस्वेदाप्रवर्त्तनम् ॥ सन्तापोमध्यवेगश्चवातश्लेष्मज्वराकृतिः । स्वेदाप्रवर्त्तनंस्वेदस्यआसमन्ताद्भावेनप्रवृ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्तिः (तथाच हारीतः) शिरोग्रहःस्वेदभवश्चकासोज्वरस्यलिंगंकफवातजस्येति । स्वेदप्रवःस्वेदोत्पत्तिः ॥ २२३ ॥

वात कफ ज्वर के लक्षण ॥

शरीरमें गीला कपडा लिपटा हुआसा मालूम देना, पोरुओंमें पीडा, निद्रा, शरीरमें भारीपन, शिरःपीडा, जुकाम, खांसी, स्वेदाप्रवर्त्तन (बहुत पसीना) संताप और ज्वरका वेग मध्यम यह वातकफके लक्षणहैं यहां स्वेदाप्रवर्त्तन शब्दका अर्थ बहुत पसीनेका निकलनाहै क्योंकि ऐसाही हारीत कहाहै कि वातकफज्वर में शिरकी पीडा, पसीना निकलना और खांसी यह लक्षण होतेहैं ॥२२३॥

ननुस्वेदःपित्तस्यधर्मोऽतएव पित्तज्वरेकण्ठौष्ठमुखनासानांपाकः स्वेदश्चजायतेइत्युक्तिः । तस्मात्कथंवातश्लेष्मज्वरेस्वेदस्यातिप्रवृत्तिः । उच्यते । विकृतिविषमसमवायारब्धत्वान्नदोषइतिकार्त्तिकः । प्रकृतिसमवायस्यविकृतिविषमसमवायस्य चायमर्थःप्रकृत्याहेतुभूतयासमःकारणानुरूपःसमवायः । कार्य्यकारणभावःसम्बन्धःप्रकृतिसमवायः । कारणानुरूपंकार्य्यमितियावत् यथाप्रकृतैर्यथास्थितैः । शुक्लैस्तन्तुभिःसमवायकारणैरारब्धःपटःशुक्लएवभवति । यथाचप्रकृतेनकेवलेनवातेनपित्तेनकफेनवातजनितोज्वरोवाताद्युचितैर्धर्मैर्वेपथुवेगाधिक्यस्तैमित्यादिभिर्युक्तोभवति । विकृतिविषमसमवायस्तुविकृत्याहेतुभूतयाविषमःकारणानुरूपःसमवायःकार्य्यस्यकरणेसम्बन्धः । यथा । संयोगाद्विकृताभ्यांहरिद्राचूर्णाभ्यां हेतुभूताभ्यांविषमःकारणानुरूपो लोहितोवर्णोजायतेतथायोगेन विकृताभ्यांवातश्लेष्मभ्यां हेतुभूताभ्यांविषमःकारणानुरूपो स्वेदस्यातिप्रवृत्तिरितिसिद्धान्तः ॥ २२४ ॥

सन्देह होताहै कि पसीना निकलना पित्तका धर्म्महै क्योंकि कहागयाहै कि पित्तज्वरमें कंठ ओष्ठ तथा नासिकाका पकना और पसीना निकलना यह लक्षण होते हैं इसलिये वात कफ ज्वरमें पसीना कैसे निकलसक्ताहै? इसका उत्तर यहहै कि विकृति विषम समवायारब्धहोनेके कारण दोष नहींहै यह कार्त्तिकने कहाहै प्रकृति सम समवाय और विकृति विषम समवायका यह अर्थहै प्रकृतिका अर्थ हेतुभूत समका अर्थ कारणको अनुरूप और समवायका अर्थ कार्य्य कारण भाव सम्बन्ध तो प्रकृति सम समवायका अर्थ हुआ कि कारण के अनुरूप कार्य्य जैसे स्वाभाविक श्वेत तन्तुरूपकारणोंसे प्रारंभ किया गया पटरूप कार्य्य श्वेतही होताहै इसी प्रकार हेतुभूत केवल वात पित्त अथवा कफके द्वारा उत्पन्नहुआ ज्वर वातादिकोंके उचित कम्पवेगकी अधिकता अथवा शरीरमें गीलाकपड़ा लिपटा हुआसा मालूम होना इत्यादि धर्मों से युक्तहोता है विकृति विषम समवाय अर्थात् हेतुभूत विकृति के द्वारा कारण के अनुरूप कार्य्यका न होना जैसे कि संयोग के द्वारा विकारको प्राप्त हुये हेतुभूत हल्दी और चूने से विषम अर्थात् कारण के विपरीत रक्तवर्ण उत्पन्न होता है उसी प्रकार संयोग के द्वारा विकारको प्राप्त हुये हेतुभूत वात कफों से विषम अर्थात् कारण से विपरीत स्वेद की अत्यन्त प्रवृत्ति होतीहै यह सिद्धान्तहै ॥ २२४ ॥

अथ वातश्लेष्मज्वरस्यचिकित्सामाह ॥

वातश्लेष्मज्वरेदेयमौषधंनवमेहनि ॥ २२५ ॥ पिप्पलीपिप्पलीमूलं चव्यचित्रक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नागरैः । दीपनीयःस्मृतोवर्गोवातश्लेष्मज्वरापहः ॥ कोलमात्रोपयोगित्वात्पञ्चकोल दंस्मृतम् ॥ तीक्ष्णोष्णंपाचनंश्रेष्ठं दीपनंकफदाहनुत् । गुल्मप्लीहोदरानाहंशूलघ्नं कोपनम् ॥ २२६ ॥

वातकफज्वरकी चिकित्सा ॥

वात कफ ज्वर में नवेंदिन औषध देनी चाहिये ॥ २२५ ॥ (पंचकोल) पपिल, पीपल चव्य, चीता और सोंठ यह वर्गदीपन और वात कफज्वरका नाशकहै यह सब दो २ कोल (त माशे) प्रयोग की जातीहैं इसलिये इसको पंचकोल कहते हैं यह पंचकोल तीक्ष्ण उष्ण पा दीपन और कफवात बायगोला प्लीहा उदर आनाह तथा शूलनाशक है और पित्तको कुपि करता है ॥ २२६ ॥

द्वितीयकिरातादिक्काथः ॥

किरातविश्वामृतवह्निसिंहिका व्याघ्रीकणामूलरसोनसिन्दुकैः । कृतःकषायोविनिह न्तिसत्वरंज्वरंसमीरात्सकफात्समुत्थितम् ॥ २२७ ॥

दूसरा किरातादि क्काथ ॥

चिरायता,सोंठ,गिलोय,भटकटैया,पीपल,पीपलामूल, लहसन और संभालू इन औषधियों का क्काथ शीघ्रही वात कफज्वर को नाश करता है ॥ २२७॥

पिप्पल्यादिक्काथः ॥

पिप्पल्यादिगणक्काथंपिबेद्वातकफज्वरी।नातःपरंकिञ्चिदस्ति ज्वरेभेषजमुत्तमम् ॥२२८॥

पिप्पल्यादि क्काथ ॥

पिप्पल्यादि गणका क्काथ वात कफज्वर में पीना चाहिये इससे बढ़कर और ज्वर की उत्तम औषध नहींहै ॥ २२८ ॥

बृहत्पिप्पल्यादि क्काथ ॥

पिप्पलीपिप्पलीमूलं चव्यचित्रकनागरम् । वचासातिविषाजाजी पाठ का ॥ किराततिक्तकंमूर्वा सर्षपामरिचानिच । कट्फलंपुष्करंभार्ङ्गी विडङ्गकका अर्कमूलंबृहतिंसिही श्रेयसीसदुरालभा । दीपकश्चाजमोदाच शुकनासासहिं ॥ एतानिसमभागानि गणएकोऽष्टविंशतिः । एषांक्काथोनिपीतःस्याद्वातश्लेष्मज्वरा ॥ हन्तिवातंतथाशीतं प्रस्वेदमतिवेपथुम् । प्रलापञ्चातिनिद्रांच रोमहर्षारुचीतथा ॥ हावातेऽपतन्त्रेचशून्यत्वेसर्व्वगात्रजे । पिप्पल्यादिमहाक्काथोज्वरेसर्वत्रपूजितः ॥२२

बृहत्पिप्पल्यादि क्काथ

पीपल,पीपलामूल,चव्य,चीता,सोंठ,वच,अतीस,कालाजीरा,पाढ़ा,कुरैया,रेणुका,चिरायता ड- फली,सरसों,मिर्च,कायफल,पुष्करमूल,भारंगी, बायविडंग,काकड़ासिंगी, आक की जड़, बड़ी टक- टैया, रास्ना, जवासा, अजवाइन,अजमोद,सोनापाढ़ा और हींग इन अट्ठाईस औषधियोंका एक गण इनसब औषधियों को समभाग लेकर क्काथकरके पीनेसे वात कफ ज्वर, वात, शीत,स्वेद, अत्यन्त कम्प, प्रलाप, अतिनिद्रा, रोमांच, अरुचि, महावात, अपतंत्रवात और सर्वांगपीड़ा इनसबका नाश होताहै यह बृहत्पिप्पल्यादिक्काथ संपूर्ण ज्वरोंमें हितकारीहै ॥ २२९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तदशमूलीरसःपीतः कणाढ्यःकफवातजे। ज्वरेविपाकेनिद्रायां पार्श्वरुक्श्वा:तकासके॥ तमूलीक्काथः। अत्रश्रेयसीरास्नाः वातश्लेष्मज्वरहरत्वात् ॥ २३० ॥

दशमूलीक्काथ ॥

दशमूली के क्काथमें पीपलका चूर्ण छोड़कर पीनेसे वात,कफज्वर अपरिपाक,अधिकनिद्रा,पस-की पीड़ा,श्वास और खांसी इनसब का नाश होताहै ॥ २३० ॥

पिप्पलीभिःशृतंतोयमनभिष्यन्दिदीपनम् । वातश्लेष्मज्वरंहन्ति सेवितंप्लीहनाशम् ॥ (पिप्पली क्काथः) ॥ २३१ ॥

पिप्पली क्काथ ॥

पीपलका क्काथ बनाकर सेवन करनेसे वात,कफ ज्वर और प्लीहाका नाश होताहै यह क्काथ अभिष्यन्दरहित और दीपन है ॥ २३१॥

सूतकंटङ्कणंभृष्टं गन्धंशुद्धंसमंसमम् । द्विगुणंसूतकाद्देयं जैपालंतुषवर्जितम् ॥ सैंधवंमरिचंचिंचा त्वक्क्षारःशर्करापिच । प्रत्येकंसूततुल्यंस्याज्जम्बीरैर्मर्दयेद्दिनम् ॥ सूर्यशेखरनामायं रसोगुञ्जाद्वयोन्मितः। भक्षितस्तप्ततोयेन वातश्लेष्मज्वरापहः ॥ सूर्यशेखरीरसो वातश्लेष्मज्वरे शीतज्वरे च रसप्रदीपे ॥ २३२ ॥

रसप्रदीप में कहाहुआ वात कफ और शीतज्वरपर सूर्य्यशेखरनाम रस ॥

शुद्ध पारा भुनासुहागा और शुद्धगन्धक यह समभाग और पारेकादूना छिलाहुआ जमालगोटा,सैंधानोन,मिर्च,इमलीकी छालका खार और शक्कर यहसब प्रत्येक पारेके समभागले इनसब औषधियोंको जंभीरी नींबूके रसमें एकादिन घोटकर दोरत्ती सेवनकरे और ऊपरसे गरम जलपिये इससे वात कफ ज्वर का नाश होताहै ॥ २३२ ॥

...र्गमेभृष्टकुलत्थचूर्णं निपातनंशस्तमितिब्रुवन्ति । जीर्णसकृद्दोर्लवणस्यभाज ...पातंस्वेदहरंसुधूलनात् ॥ २३३ ॥

...सीना निकलनेपर भुनीहुई कुलथी का चूर्ण मलना श्रेष्ठ है पुराने गोबरका चूर्ण और नोनके ...का चूर्ण मलने से पसीने का नाश होता है ॥ २३३ ॥

मरिचंपिप्पलीशुण्ठी पथ्यालोध्रञ्चपौष्करम् । भूनिम्बःकटुकाकुष्ठं कर्चूरोलिंगिकाशटी ॥ एतानिसमभागानि सूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् । एतदुद्धूलनंश्रेष्ठं स्रोतोवत्स्वेदनिर्गमे ॥ लिंगिकापंचगुरियाइतिलोके । अत्रशटीगंधपलाशी (मरिचाद्युद्धूलनम्) २३४ ॥

मरिचादि उद्धूलन ॥

मिर्च,पीपल,सोंठ,हड़,लोध,पुष्करमूल,चिरायता,कुटकी,कूट,कचूर,पंचगुरिया और गन्धपलाशी इनसब औषधियों को समभाग लेकर महीन पीस धूराकरने से स्रोत के समानभी बहता हुआ पसीना निवृत्त होता है ॥ २३४ ॥

भूनिम्बकारवीतिक्ता वचाकट्फलजंरजः । एषामुद्धूलनंश्रेष्ठं सततंस्वेदसंश्रये ॥ भूनिम्बाद्युद्धूलनम् ॥ २३५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूनिंबादि उद्धूलन॥

चिरायता, अजमोद, कुटकी, वच और कायफल इन औषधियों को चूर्ण करके धूराकरने से निर बहताहुआ पसीना नष्ट होताहै॥ २३५॥

पूर्व्वोक्तोबालुकास्वेदोऽप्यत्रसमुचितः।यदुक्तम्। पीनसश्वासबाधिर्य्ये जंघापा स्थिशूलिनि। वातश्लेष्मज्वरेस्वेदंकारयेत्तद्विधानवित्॥ मातुलुंगफलकेशरोधृतःस जन्ममरिचान्वितोमुखे। हन्तिवातकफरोगमास्यगंशोषमाशुजडतामरोचकम्॥ २३६

प्रथम कहाहुआ बालुकास्वेद भी वात कफज्वर में देना चाहिये क्योंकि कहागया है कि पीनस श्वास, बधिरता, पिंडली, पसली तथा हड्डियों की पीड़ा और वात कफज्वर में स्वेदकी विधि जाननेवाला वैद्य स्वेद दे सेंधानोन और मिर्चसहित नींबूके जीरे को मुखमें रखनेसे वात कफ जनित रोग मुखका सूखना मुखकी जड़ता और अरुचिका नाश होता है॥ २३६॥

अथान्नमाह॥

महत्यापञ्चमूल्यान्नं सम्यक्सिद्धंचिकित्सकः। सप्तमेदिवसेदद्याज्ज्वरेवातबलासजे॥ इति वातश्लेष्मज्वराधिकारः॥ २३७॥

वात कफज्वरमें अन्न॥

वात कफज्वरवालेको पंचमूल के क्वाथके द्वारा पकाहुआ अन्न सातवें दिन देवे इति वात कफज्वराधिकार॥ २३७॥

अथ पित्तश्लेष्मज्वराधिकारः॥

तत्रतस्यविप्रकृष्टसन्निकृष्टकारणकथनपूर्विकां संप्राप्तिमाह॥ पित्तश्लेष्मकरैःपित्त कफावामाशयाश्रयौ। बहिर्निरस्यकोष्ठाग्निं रसगौज्वरकारिणौ॥ २३८॥

पित्त कफज्वराधिकार॥

पित्त कफज्वर के दूर और समीपी कारणों समेत संप्राप्ति का वर्णन करते हैं पित्त आहार विहारोंके सेवनसे आमाशयमें प्राप्तहुए पित्त और कफ जठराग्निकी ऊष्माको बाहर कर और रसको दूषित करके ज्वर को उत्पन्न करते हैं॥ २३८॥

पूर्व्वरूपमाह॥

प्राग्रूपेपित्तकफयोः स्यातांपित्तकफज्वरे॥ २३९॥

पित्त कफज्वरका पूर्व्वरूप॥

पित्त कफ ज्वरके होनेसे पहले पित्तज्वर और कफज्वर सम्बन्धी पूर्वरूपके लक्षण होतेहैं २३९

तस्यलक्षणमाह॥

लिप्ततिक्तास्यतातन्द्रा मोहःकासोऽरुचिस्तृषा। मुहुर्दाहोमुहुश्शीतं पित्तश्लेष्मज्व कृतिः॥ आस्यतिक्तत्वंपित्तेनलिप्तत्वंकफेनतन्द्राअर्द्धोन्मीलितनेत्रत्वंमोहोमूर्च्छा २४०॥

पित्त कफज्वर के लक्षण॥

पित्त कफज्वरमें पित्त से मुखका कडुआपन तथा कफसे मुखका लिपाहुआसा मालूम होना तन्द्रा, मूर्च्छा, खांसी, अरुचि, तृषा और कभी शीत, कभी दाह यह लक्षण होते हैं॥ २४०॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ पित्तश्लेष्मज्वरस्यचिकित्सा ॥

पित्तश्लेष्मज्वरेदेयमौषधंदशमेऽहनि ॥ २४१ ॥

पित्त कफज्वरकी चिकित्सा ॥

पित्त कफज्वर में दशवें दिन औषध देनी चाहिये ॥ २४१ ॥

गुडूचीनिम्बधान्याकंचन्दनंकटुरोहिणी । गुडूच्यादिरयंक्काथोपाचनोदीपनःस्मृतः ॥ तृष्णादाहारुचिच्छर्दिपित्तश्लेष्मज्वरापहः । इतिगुडूच्यादिः ॥ २४२ ॥

गुडूच्यादि क्काथ ॥

गिलोय, नींब, धनियां, लालचन्दन और कुटकी इन संपूर्ण औषधियोंका क्काथ पाचन, दीपन और तृषा, दाह, अरुचि, छर्दि तथा पित्त कफज्वरनाशक होताहै ॥ २४२ ॥

अमृताकटुकारिष्टपटोलघनचन्दनम् । नागरेन्द्रयवंचैतदमृताष्टकमीरितम् ॥ क्थितंसकणाचूर्णंपित्तश्लेष्मज्वरापहम् । हल्लासारोचकच्छर्दिस्तृष्णादाहनिवारणम् ॥ (अमृताष्टकम्) ॥ २४३ ॥

अमृताष्टक ॥

गिलोय, कुटकी, नींब, परवल, मोथा, लालचन्दन, सोंठ और इन्द्रजौ यह अमृताष्टक कहलाता है इन सब औषधियों का क्काथ पीपलका चूर्ण मिलाकर पीने से पित्तकफज्वर, मतली, अरुचि, छर्दि, तृषा और दाहका नाश होताहै ॥ २४३ ॥

कण्टकार्य्यमृताभार्ङ्गीविश्वेंद्रयववासकम् । भूनिम्बचन्दनंमुस्तंपटोलकटुरोहिणी ॥ विपाच्यपाययेत्क्काथंपित्तश्लेष्मज्वरापहम् । दाहतृष्णारुचिच्छर्दिकासशूलनिवारणम् ॥ [illegible]कण्टकार्यादिक्काथः ॥ २४४ ॥

कण्टकार्य्यादि क्काथ ॥

[illegible] कटैया, गिलोय, भारंगी, सोंठ, इन्द्रजौ, बांसा, चिरायता, लालचन्दन, मोथा, परवल और कुटकी [illegible] औषधियों के क्काथ के पीने से पित्त कफज्वर, दाह, तृषा, अरुचि, छर्दि, खांसी और शूल का नाश [illegible]ता है ॥ २४४ ॥

नागरोशीरबिल्वाब्दधान्यमोचरसाम्बुभिः । कृतःक्काथोभवेद्ग्राहीपित्तश्लेष्मज्वरापहः ॥ नागरादिक्काथः ॥ २४५ ॥

नागरादि क्काथ ॥

सोंठ, खस, बेल, मोथा, धनियां, मोचरस और सुगन्धबाला इन औषधियों का क्काथ ग्राही और [पि]त्त कफज्वरनाशक होता है ॥ २४५

शर्करामक्षमात्रांच कटुकांचोष्णवारिणा । पीत्वाज्वरंजयेज्जन्तुःपित्तश्लेष्मसमुद्भवम् ॥ अत्रकटुकायाःद्वादशमाषाःशर्करायाश्चत्वारोमाषाएवंकर्षःइतिचरकः । वैद्यस्यव्यवहारेकटुकाशर्करयोःसमभागयोरेवकर्षः ॥ (कटुकीकल्कः) ॥ २४६ ॥

कर्ष कटुकी कल्क ॥

एकतोला कुटकी एकतोला शक्कर इनको गरमजलकेसाथ पानकरनेसे पित्त कफज्वरका नाश हो-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ताहै यहां कुटकी बारहमाशे और शक्कर चारमाशे यह मिलकर चरकके मतमें एककर्ष होताहै परंतु वैद्यलोगोंके व्यवहारमें शक्कर और कुटकीका समभाग एककर्ष होताहै ॥ २४६ ॥

सपत्रपुष्पवासायाःरसःक्षौद्रसितायुतः। पित्तश्लेष्मज्वरंहंतिसाम्लपित्तंसकामलम्॥ अत्रवासारसोऽर्द्धपलपरिमितोदेयः। मधुसितयोःप्रत्येकंटंकःप्रक्षेप्यः॥ २४७॥

पत्र और पुष्पसहित बांसेका दोतोले रस तीन २ माशे शक्कर और सहत मिलाकर पीनेसे पित्त कफज्वर, अम्लपित्त और कामलाका नाश होताहै ॥ २४७ ॥

अथान्नमाह ॥

कषायःपरिपक्कस्तुशृंगवेरपटोलयोः। पित्तश्लेष्मज्वरवमीदाहकण्डूहरोभवेत्॥ (अन्यच्च) पटोलधान्ययोर्यूषःपित्तश्लेष्मज्वरापहः। (इति पित्तश्लेष्मज्वराधिकारः) २४८॥

पित्त कफज्वरमें अन्न ॥

अदरक और परवलका यूष. पित्त कफज्वर, छर्दि, दाह और खुजलीको नष्ट करताहै और यह कहागया है कि परवल और धनियेंका यूष पित्त, कफज्वरको नाश करताहै इति पित्तकफज्वराधिकार ॥ २४८ ॥

अथ सन्निपातज्वराधिकारमाह ॥

तत्रसन्निपातज्वरस्यविप्रकृष्टसन्निकृष्टकारणकथनपूर्विकांसंप्राप्तिमाह। त्रिदोषजनकैर्वातपित्तश्लेष्मामगेहगाः। बहिर्निरस्यकोष्ठाग्निरसगाज्वरकारिणः॥ २४९॥

सन्निपातज्वराधिकार ॥

सन्निपातज्वरके दूर और समीपीकारण समेत संप्राप्तिका वर्णन करतेहैं त्रिदोषकारी आहर विहारोंके सेवनसे आमाशयमें गयेहुए वात पित्त और कफ जठराग्निकी ऊष्माको बाहर निकालकर और रसको दूषितकरके ज्वरको उत्पन्न करते हैं ॥ २४९ ॥

पूर्वरूपमाह ॥

प्राग्रूपाणित्रिदोषाणां स्युस्त्रिदोषज्वरेनृणाम्॥ २५०॥

सन्निपातज्वरका पूर्वरूप ॥

सन्निपातज्वरके होनेसे पहले वात कफ और पित्तज्वर सम्बन्धी पूर्वरूपोंके लक्षण होतेहैं २५०

अथ सन्निपातज्वरस्य सामान्यानिलक्षणान्याह ॥

क्षणेदाहःक्षणेशीतमस्थिसंधिशिरोरुजा। सस्रावेकलुषेरक्तेनिर्भुग्नेचापिलोचने॥ सस्वनौसरुजौकर्णौकण्ठःशूकैरिवावृतः। तन्द्रामोहःप्रलापश्चकासःश्वासोरुचिर्भ्रमः॥ परिदग्धाखरस्पर्शाजिह्वास्रस्ताङ्गतापरा। ष्ठीवनंरक्तपित्तस्यकफेनोन्मिश्रितस्यच शिरसोलोठनंतृष्णानिद्रानाशोहृदिव्यथा। स्वेदमूत्रपुरीषाणांचिराद्दर्शनमल्पशः कृशत्वंनातिगात्राणांसततंकण्ठकूजनम्। कोठानांश्यावरक्तानांमण्डलानाञ्चदर्शनम्॥ मूकत्वंस्रोतसांपाकोगुरुत्वमुदरस्यच। चिरात्पाकश्चदोषाणांसन्निपातज्वराकृतिः॥ लोचनेसस्रावेसाश्रुणीकलुषेऽस्वच्छेनिर्भुग्नेनिर्गतेकुटिलेच। कण्ठःशुकैरिवावृतःधान्याग्रैरिवावृतः। जिह्वापरिदग्धापरिदग्धेवज्ञायते। अथवापरिदग्धाइवकृष्णादृश्यते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तेस्रस्ताङ्गताशिथिलांगता । ष्ठीवनमित्यादिकफसंयुक्तस्यष्ठीवनंशिरसोलुठनमितस्त तश्चालनंकृशत्वन्नातिगात्राणामितिगात्राणां अतिशयितंकार्श्यंनव्याधिप्रभावात्सततं निरन्तरंकोठःवरटीदष्टसंस्थानंकोठइत्यभिधीयतेश्यावःकपिशोवर्णः । मूकत्वमवचन त्वमल्पवचनत्वंवास्रोतसांकर्णनासादीनाम् ॥ २५१ ॥

सन्निपातज्वरके सामान्यलक्षण ॥

सन्निपातज्वर में कभी दाह, कभी शीत, हड्डी, सन्धि तथा मस्तकमें पीडा, नेत्रोंसे आंसू बहना, निर्मल स्वच्छ न रहना, रक्तवर्णहोना, बाहर निकली हुईसी मालूम होना तथा टेढीहोना, कानोंमें पीडा तथा अकारण शब्द सुनाईदेना, कंठमें कांटे पडजाना, तन्द्रा, मोह, प्रलाप, खांसी, श्वास, अरुचि, भ्रम, जिह्वा जलीहुईसी अथवा जलेहुएके समान काली तथा कठोर अंगों में शिथिलता कफसहित रुधिर तथा पित्तका थूकना, मस्तकका घुमाना, तृषा, निद्राकानाश, हृदयमें पीडा, स्वेद, मूत्र तथा मलका बहुत देरमें थोडा निकलना, शरीरका बहुत दुर्बल न होना, गलेमें निरन्तर अव्यक्त शब्दहोना, त्वचापर कपिश तथा रक्तवर्ण बरों के काटेके समान चकत्तोंका पडना, वचन कम बोलना अथवा बन्दहोजाना, कान तथा नासिका आदिक स्रोतोंका पकना, उदरका भारीपन और दोषोंका बहुतदेरमें परिपाकहोना यह लक्षण होतेहैं ॥ २५१ ॥

ननुवातादयःपरस्परविरुद्धगुणास्तेषांसंभूयैकत्रकार्य्यारम्भकत्वंनोपपद्यते । परस्प रोपघातात्दहनसलिलयोरिवतत्कथंवातपित्तकफाः मिलित्वाविकारोत्पादकाःअत्रसमा धानमुक्तंदृढबलेन। विरुद्धैरपिनत्वेतेगुणैर्घ्नन्तिपरस्परम्। दोषाःसहजसात्म्यत्वाद्विषंघोर महीनिव ॥ गदाधरस्तुहेत्वन्तरमुक्तवान् । दैवाद्दोषस्वभावाद्वादोषाणांसान्निपातिके । विरुद्धैश्चगुणैस्तैश्चनोपघातःपरस्परमिति ॥ २५२ ॥

अब यह सन्देह होताहै कि वात पित्त और कफ इनके गुण परस्पर विरुद्धहैं तो यह परस्पर मिल कर ... र्यको कैसे करसक्ते हैं ? जैसे अग्नि और जल दोनों के मिलने में एकके आघात से दूसरेका ... ताहै उसप्रिकार वात पित्त और कफ परस्पर मिलकर एक दूसरेका आघात न करके रोगको उत्पन्न करसक्केहैं इसका समाधान "दृढबलने" यह कहाहै कि वात पित्त और कफ परस्पर विरुद्ध ...वाले होकरके भी एक दूसरे का नाश नहीं करते जैसे दारुण विष सर्पों को नहीं नाश करताहै ...सी प्रकार साथ उत्पन्नहोने और समताके कारण परस्पर विरोधी नहीं होते और "गदाधरने दूसरा कारण कहाहै कि भाग्यसे अथवा स्वभावसे विरुद्ध गुणवाले दोषों के परस्पर मिलनेपर भी एक के ...ण दूसरेका नाश नहीं करते ॥ २५२ ॥

ननुभिन्नचयप्रकोपकालानांवातपित्तकफानांयुगपदुत्पन्नाभावात्कथंसम्भूयसन्निपात ...रम्भकत्वमुत्पद्यतेउच्यते । त्रिदोषजनकनिदानबलेनयुगपदेषांप्रकोपादितिसि द्धान्तः ॥ २५३ ॥

अब यह सन्देह होता है कि वात पित्त और कफसे सञ्चय और कोपके समयके अलग २ होने से यह एक साथ उत्पन्न नहीं हो सक्के तो तीनों मिलकर सन्निपातज्वरको कैसे उत्पन्न करेंगे ? इसका उत्तर यहहै कि त्रिदोषकारी निदानोंके बलसे एकसाथ तीनोंदोष कुपित होतेहैं यह सिद्धान्तहै ॥ २५३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ सामान्यसन्निपातज्वरस्यत्रयोदशविशेषानाह ॥

एकोल्बणास्त्रयस्तेषुद्व्युल्बणाश्चतथेतिषट् । त्र्युल्बणश्चभवेदेकोविज्ञेयःसतुसप्तमः॥ प्रवृद्धमध्यहीनैस्तुवातपित्तकफैश्चषट् । सन्निपातज्वरस्यैवंस्युर्विशेषास्त्रयोदश । तत्रप्रवृद्धवातःमध्यपित्तोहीनकफः १ मध्यवातःप्रवृद्धपित्तोहीनकफः २ हीनवातोप्रवृद्धपित्तो मध्यकफः ३ प्रवृद्धवातोहीनपित्तोमध्यककफः ४ मध्यवातोहीनपित्तःप्रवृद्धकफः ५ हीन वातोमध्यपित्तः प्रवृद्धकफः ६ इतिषट् ॥ २५४ ॥

सामान्य सन्निपातज्वर के तेरह भेद कहेजाते हैं ॥

बढ़ेहुए एकदोषवाले तीन बढ़ेहुए दोदोषवाले तीन इसप्रकार छःहुए बढ़ेहुये तीनोंदोषवाला एक और वातपित्त तथा कफकी अधिकता मध्यता और हीनतासे छः इस प्रकारतेरह सन्निपात ज्वर होते हैं वातादिकों की अधिकता मध्यता तथा हीनताके द्वारा आगे कहेहुए यह छः प्रकार होतेहैं अधिक वात मध्यपित्त हीनकफ एक मध्यवात अधिकपित्त हीनकफ दूसरा हीनवात अधिकपित्त मध्यकफ तीसरा अधिक वात हीनपित्त मध्यकफ चौथा मध्यवात हीनपित्त अधिककफ पांचवां हीनवात मध्यपित्त अधिककफ छठा ॥ २५४ ॥

तेषांनामानिक्रमादाह ॥

विस्फारकश्चाशुकारीकम्पनोवभ्रसंज्ञकः । शीघ्रकारीतथाभल्लुःसप्तमःकूटपालकः॥ संमोहकःपालकश्च याम्यःक्रकचइत्यपि । ततःकर्कटकःप्रोक्तस्ततोवैदारिकाभिधः ॥ तन्त्रान्तरेविस्फारकइत्यत्रविस्फोरकइतिपाठः । बभ्रस्थानेबभ्रुरितिपाठःकुत्रापिबद्धइति पाठःभल्लुरित्यत्रफल्गुरितिपाठःयाम्यइत्यत्रसंग्रामइतिपाठःकर्कटकइत्यत्रकर्कोटकइति पाठः ॥ २५५ ॥

सन्निपातज्वरोंके क्रम से नाम ॥

विस्फारक, आशुकारी, कंपन, बभ्र, शीघ्रकारी, भल्लु, कूटपालक, संमोहक, पालक, याम्य, क्रक[illegible] क, और वैदारिक किसी २ ग्रंथमें बिस्फारक के स्थानमें बिस्फोरक बभ्रके स्थानमें बभ्रु अथवा [illegible] बद्ध भल्लुके स्थानमें फल्गु याम्यके स्थानमें संग्राम और कर्कटकके स्थानमें कर्कोटक यह पाठहै [illegible]

तत्रवातोल्बणस्यलक्षणमाह ॥

श्वासःकासोभ्रमोमूर्च्छाप्रलापोमोहवेपथुः । पार्श्वस्यवेदनाजृम्भाकषायत्वंमुखस्य च ॥ वातोल्बणस्यलिङ्गानिसन्निपातस्यलक्षयेत् । एषविस्फारकोनाम्नासन्निपातःसुदारुणः ॥ २५६ ॥

अधिक वातवाले सन्निपात के लक्षण ॥

श्वास, खांसी, भ्रम, मूर्च्छा, प्रलाप, मोह, कंप, पसलीकीपीड़ा, जंभाई और मुखमें कषैलापन यह अधि[illegible] वातवाले सन्निपात के लक्षणहैं इसका नाम बिस्फारकहै और अत्यन्त भयानक होताहै ॥ २५६ [illegible]

अथ पित्तोल्बणस्यलक्षणमाह ॥

अतिसारोभ्रमोमूर्च्छामुखपाकस्तथैवच । गात्रेचबिन्दवोरक्तादाहोऽतीवप्रजायते ॥ पित्तोल्बणस्यलिङ्गानि सन्निपातस्यलक्षयेत् । भिषग्भिःसन्निपातोऽयमाशुकारीप्रकीर्तितः ॥ २५७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अधिक पित्तवाले सन्निपात के लक्षण ॥

अतीसार, भ्रम, मूर्च्छा, मुखका पकना, शरीरमें लालबिन्दु और अत्यन्त दाह यह आशुकारी नाम अधिक पित्तवाले सन्निपात के लक्षणहैं ॥ २५७ ॥

अथ कफोल्बणस्यलक्षणमाह ॥

जडतागद्गदावाणीरात्रौनिद्राभवत्यपि । प्रस्तब्धेनयनेचैवमुखमाधुर्य्यमेवच ॥ कफोल्बणस्यलिङ्गानिसन्निपातस्यलक्षयेत्।मुनिभिःसन्निपातोऽयमुक्तःकम्पनसंज्ञकः॥२५८॥

अधिक कफवाले सन्निपात के लक्षण ॥

जड़ता, गद्गद वचन, रात्रिमें निद्राकाभी होना, पथरीलीआंखें होना और मुखमें मधुरता यह अधिक कफवाले सन्निपात के लक्षणहैं मुनिलोगों ने इस सन्निपात को कंपन नाम से प्रसिद्ध कियाहै २५८ ॥

अथ वातपित्तोल्बणस्यलक्षणमाह ॥

वातपित्ताधिकोयस्य सन्निपातःप्रकुप्यति । तस्यज्वरोमदस्तृष्णामुखशोषःप्रमीलकः ॥ आध्मानारुचितन्द्राश्चकासश्वासभ्रमश्रमाः।मुनिभिर्बभ्रुनामायंसन्निपातउदाहृतः२५९

अधिक वातपित्तवाले सन्निपात के लक्षण ॥

मद, तृषा, मुखका, सूखना नेत्रोंको बन्द किये रहना, अफरा, अरुचि, तंद्रा, खांसी, श्वास, भ्रम और श्रम यह अधिक वातपित्तवाले सन्निपात के लक्षणहैं इसका नाम बभ्रु कहा है ॥ २५९॥

अथ वातश्लेष्मोल्बणस्यलक्षणमाह ॥

वातश्लेष्माधिकोयस्यसन्निपातःप्रकुप्यति । तस्यशीतज्वरोमूर्च्छाक्षुत्तृष्णापार्श्वनिग्रहः ॥ शूलमस्विद्यमानस्यतंद्राश्वासश्चजायते । असाध्यःसन्निपातोऽयंशीघ्रकारी [illegible]ते ॥ नहिजीवत्यहोरात्रमनेनाविष्टविग्रहः ॥ २६० ॥

अधिक वातकफवाले सन्निपातके लक्षण ॥

[illegible]तज्वर, मूर्च्छा, छींक, तृषा, पसलियों की ऐंठन, पसीना न निकलनेपर अधिकपीड़ा, तन्द्रा और [illegible] यह अधिक वात कफवाले सन्निपात के लक्षणहैं इस असाध्य सन्निपात को शीघ्रकारी कहते [illegible] इस सन्निपात में जो ग्रसित होताहै वह एकरात्रि दिनसे अधिक नहीं जीताहै ॥ २६० ॥

अथ पित्तश्लेष्मोल्बणस्यलक्षणमाह ॥

पित्तश्लेष्माधिकोयस्यसन्निपातःप्रकुप्यति ॥ अंतर्दाहोबहिःशीतंतस्यतृष्णाप्रवर्द्धते। तुद्यतेदक्षिणेपार्श्वेउरःशीर्षगलग्रहः॥ ष्ठीवतिश्लेष्मपित्तञ्चकृच्छ्रात्कोठश्चजायते। विड्भेदश्वासहिक्काश्चवर्द्धन्तेसप्रमीलकाः॥ ऋषिभिर्भल्लुनामायंसन्निपातउदाहृतः २६१

अधिक पित्तकफवाले सन्निपातके लक्षण ॥

भीतरदाह, बाहरशीत, अत्यन्ततृषा, दहनीपसली, हृदय, मस्तक तथा गलेमें पीड़ा, कष्टसे पित्त तथा कफकाथूकना बरौंके काटनेकेसे चकत्ते, मल पतलाहोजाना, श्वास, हिचकी और नेत्रोंका मूंदना यह अधिक पित्त कफवाले सन्निपातके लक्षणहैं मुनिलोग इस सन्निपातको भल्लुनामकहते हैं॥ २६१॥

अथ वातपित्तश्लेष्मोल्बणस्यलक्षणमाह ॥

सर्व्वदोषोल्बणोयस्यसन्निपातःप्रकुप्यति ॥ त्रयाणामपिदोषाणांतस्यरूपाणिलक्ष

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

येत् । व्याधिर्भोदारुणश्चैव वज्रशस्त्राग्निसन्निभः ॥ केवलोच्छ्वासपरमस्तब्धांगःस्तब्ध लोचनः । त्रिरात्रात्परमेतस्यजंतोर्हरतिजीवितम् ॥ तदवस्थंतुतंदृष्ट्वामूढोव्याहरतेज नः । धर्षितोराक्षसैर्नूनमवेलायांचरंतिये ॥ अम्बयाब्रुवतेकेचिद्यक्षिण्याब्रह्मराक्षसैः । पिशाचैर्गुह्यकैश्चैवतथान्यैर्म्मस्तकेहतम् ॥ कुलदेवार्चनाहीनंधर्षितंकुलदैवतैः । नक्षत्र पींडामपरेगरकर्म्मेतिचापरे ॥ सन्निपातमिमंप्राहुर्भिषजाःकूटपालकम् ॥ २६२ ॥

वात पित्त और कफ इनतीनोंकी अधिकतासे युक्तसन्निपातके लक्षण ॥

त्रिदोषज सन्निपातमें तीनों दोषों के लक्षण होतेहैं यह संपूर्ण रोगों में प्रधान भयकारी वज्र शस्त्र तथा अग्नि के समानहोताहै इससे बहुत श्वासलेना शरीर का जकडना और नेत्रोंका न बन्दहोना यह लक्षणहोतेहैं यहसन्निपात तीनही रात्रि में मनुष्यके प्राणोंको हरलेताहै इससन्निपातसे युक्तरोगी को देखकर मूर्खलोग कहतेहैं कि इसको कुसमय में घूमनेवाले राक्षसोंने घेराहै कोई कहतेहैं अम्बा देवी ब्रह्मराक्षस यक्षिणी पिशाच गुह्यक अथवा अन्य भूतादिक लगेहैं कोई कहतेहैं कि कुलदेवकापूजन न करनेसे कुलदेवोंने आदबायाहै कोई नक्षत्रपीडा कहतेहैं और कोई विषकादोष कहतेहैं इस सन्निपातको वैद्यलोग कूटपालकनाम कहतेहैं ॥ २६२ ॥

अथ प्रवृद्धमध्यहीनवातादिजनितसन्निपातज्वराणांलक्षणान्याह ॥

प्रवृद्धमध्यहीनैस्तुवातपित्तकफैश्चयः । तेनरोगास्तएवोक्तायथादोषबलाश्रयाः ॥ प्रलापायाससंमोहकम्पमूर्च्छारतिभ्रमाः । एकपक्षाभिघातश्चतत्राप्येतेविशेषतः ॥ एषसंमोहकोनाम्नासन्निपातःसुदारुणः । रोगास्तएवोक्ताःउक्ताएवतेरोगाःव्यथान्नेपथुनि द्रानाशविष्टम्भादयोवातजाःदाहतृष्णोष्णतास्वेदादयःपित्तजाः गौरवाग्निमान्द्योत्काश नासिकामुखप्रसेकादयःकफजाःतत्रापिप्रलापादयःपक्षाघातानांविशेषाद्भवन्ति ॥ [illegible]

अधिक मध्य और हीनवातादिजनित सन्निपातों के लक्षण ॥

अधिकवात मध्यपित्त और हीनकफके द्वाराजो सन्निपात उत्पन्नहोताहै उसमें पहलेकहेहुए वा[illegible] दोषोंके रोग दोषोंके बलके अनुसार होतेहैं अर्थात् वेदना,कम्प,निद्राका नाश तथा विष्टंभादिक वा[illegible] जनित दाह,तृषा,उष्णता तथास्वेदआदिक पित्तजनित और भारीपन,मंदाग्नि,वमनतथामुखनासिका आदिकाबहना यहकफजनितरोगहै और इससन्निपातमें प्रलाप,श्रम,मोह,कम्प,मूर्च्छा,ग्लानि,भ्रान्ति और पक्षाघात यह लक्षण विशेषकरके होतेहैं इस भयानक सन्निपातको संमोहक कहतेहैं ॥ २६३ ॥

ननुवातःप्रवृद्धः सज्वरंकरिष्यतिपित्तन्तुमध्यसममितियावत्तत्कथंज्वरंकरिष्यतिय तआह । धातवस्तन्मलादोषाःस्युर्नाशायासमास्तनौ । समाःसुखायविज्ञेया बलायोपच यायच ॥ इतिउच्यते । अत्रपित्तंमध्यमपि अप्रकृतमेवयतोऽप्रकृतयोर्वातश्लेष्मणोरपे क्षयामध्यं तेन मध्यकुपितमित्यर्थः । ननु कफक्षीणः सकथं ज्वरं करिष्यति हीनशक्ति त्वात् उच्यते दोषाः क्षीणाअपि व्याधीन कुर्वत्येव यत आह वातक्षयेऽल्पचेष्टत्वं मन्दवाक्त्वंविसंज्ञता । पित्तक्षयेऽधिकःश्लेष्मावह्निर्मन्दःप्रभाक्षयः ॥ शिथिलाःसन्धयो मूर्च्छारौक्ष्यदाहःकफक्षयः । इत्याशङ्कासिद्धान्तश्चात्रपरत्रापि ॥ २६४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अब यह सन्देह होताहै कि अधिक वातज्वर को उत्पन्न करतीहै यह ठीकहै परन्तु मध्य अर्थात् समपित्त कैसे ज्वर उत्पन्न करताहै क्योंकि कहागयाहै कि धातु और धातुओंके मलरूप वातादिक दोष समता राहतहोकर शरीरको नष्टकरते हैं और समहोकर सुख बल तथा वृद्धिको करते हैं इसका उत्तरयह है कि यहां मध्यपित्त भी विकार युक्त लियाजाताहै क्योंकि विकारयुक्त वात तथा कफकी अपेक्षा पित्तकी मध्यमता लीजातीहै इसलिये मध्यपित्तका अर्थ मध्य कुपितपित्त लेनाचाहिये दूसरा संदेह यह होताहै कि हीनकफ हीनशक्ति के द्वारा ज्वरको कैसे उत्पन्न करेगा ? इसका उत्तर यहहै कि दोष क्षीणहोकरभी रोगोंको उत्पन्न करतेहैं क्योंकि कहागयाहै कि वायुके क्षीणहोनेपर चेष्टा तथा बाणीकी अल्पता और संज्ञाका न होना यह लक्षण होतेहैं पित्तके क्षयहोनेपर कफकी अधिकता मंदाग्नि और कान्तिका नाशहोताहै और कफके क्षयहोनेपर संधियोंमें शिथिलता मूर्च्छा सूखापन और दाह होता है यह सिद्धान्त यहां और अन्यअधिक मध्य तथा हीन दोषजनित सन्निपातोंमें जाननाजाहिये २६४॥

मध्यप्रवृद्धहीनैस्तुवातपित्तकफैश्चयः । तेनरोगास्तएवोक्तायथादोषबलाश्रयाः ॥ मोहप्रलापमूर्च्छास्युमन्यास्तम्भःशिरोग्रहः । कासःश्वासोभ्रमस्तन्द्रासंज्ञानाशोहृदिव्य था ॥ खेभ्योरक्तंविसृजतिसंरक्तंस्तब्धनेत्रता । तत्राप्येतेविशेषाःस्युर्मृत्युरर्वाक्त्रिवास रात् ॥ भिषग्भिःसन्निपातोऽयंकथितःपाकलाभिधः ॥ २६५ ॥

मध्यवात अधिकपित्त और हीनकफ जनित सन्निपातमें पूर्वोक्त वातादि जनितरोग दोषोंके बलके अनुसार होते हैं और मोह प्रलाप मूर्च्छा गलेके पीछेकी नसका जकडना,शिरमेंपीडा,खांसी, श्वास भ्रम,तंद्रा,संज्ञाका न होना हृदयमेंपीडा शरीरके सम्पूर्ण छिद्रोंसे रुधिरका बहना और नेत्रोंका रक्त वर्ण तथा बन्द न होना यह सब लक्षण विशेषकरके होते हैं इस पाकलनाम सन्निपात में तीन दिन के भीतर मृत्यु होती है ॥ २६५ ॥

[illegible]द्धमध्यैस्तुवातपित्तकफैश्चयः॥तेनरोगास्तएवोक्तोयथारागबलाश्रयाः । हृदयं [illegible]स्ययकृत्प्लीहान्त्रफुष्फुसाः॥पच्यतेत्यर्थमूर्द्धाधःपूयशोणितनिर्गमः । शीर्णदन्त [illegible]त्युश्चतत्राप्येतद्विशेषतः॥ भिषग्भिःसन्निपातोऽयंयाम्योनाम्नाप्रकीर्त्तितः २६६

[illegible]हीन वात अधिकपित्त और मध्य कफसे जो सन्निपात उत्पन्न होताहै उसमें पहले कहेहुए वात [illegible]त्त और कफके रोग दोषोंके बलके अनुसार होतेहैं और हृदयमें दाह यकृत् प्लीहा, आंतें तथा फुष्फुस का पकना ऊपर तथा नीचेसे पीब तथा रुधिरका निकलना और दांतोंमें शिथिलता होतीहै यह या- [illegible]म्यनाम सन्निपात है इसमें मृत्यु होतीहै ॥ २६६ ॥

प्रवृद्धहीनमध्यैस्तुवातपित्तकफैश्चयः ॥ तेनरोगास्तएवोक्तायथादोषाबलाश्रयाः । प्र [illegible]पायाससम्मोहःकम्पमूर्च्छारतिभ्रमाः ॥ मन्यास्तम्भेनमृत्युःस्यात्तत्राप्येतद्विशेषतः । [illegible]षग्भिःसन्निपातोऽयंक्रकचःसम्प्रकीर्त्तितः ॥ २६७ ॥

अधिकवात हीनपित्त और मध्यकफके द्वारा जो सन्निपात उत्पन्न होताहै उसमें पहले कहेहुए वातादिदोषजनितरोग दोषोंके बलके अनुसार होते हैं और प्रलाप, श्रम, मोह, कंप,मूर्च्छा, ग्लानि, भ्रम और गलेके पीछेकी नसका जकडना इन विशेष लक्षणों समेत मृत्यु होती है इस सन्निपातको क्रकच कहते हैं ॥ २६७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मध्यहीनप्रवृद्धैस्तुवातपित्तकफैश्चयः। तेनरोगास्तएवोक्तायथादोषबलाश्रयाः॥ अन्तर्दाहोविशेषोऽत्रनचवक्तुंसशक्यते।रक्तमालक्ककेनैवलक्ष्यतेमुखमण्डलम्॥पित्तेनाकर्षितःश्लेष्माहृदयान्नप्रसिच्यते। इषुणेवाहतम्पार्श्वंतुद्यतेखन्यतेहृदि॥ प्रमीलकःश्वासहिक्कावर्द्धतेतुदिनेदिने। जिह्वादग्धाखरस्पर्शागलःशूकैरिवावृतः॥ विसर्गंनाभिजानातिकूजेच्चापिकपोतवत्। अतीवश्लेष्मणापूर्णःशुष्कवक्त्रौष्ठतालुकः॥ तन्द्रानिद्रातियोगार्तोहतवाङ्निहतद्युतिः। नरतिंलभतेनित्यंविपरीतानिचेच्छति॥ आयस्यतेचबहुशोरक्तंष्ठीवतिचाल्पशः। एषकर्कटकोनाम्नासन्निपातःसुदारुणः॥ २६८॥

मध्यवात हीनपित्त और अधिककफके द्वारा जो सन्निपात होताहै उस में वातादिजनितरोग दोषोंके बलके अनुसार होतेहैं औरविशेषकरके अन्तर्दाहकसा होताहै जो कहा नहींजाताहै मखमहावर से रँगासा होजाताहै पित्तसे खींचाहुआ कफ हृदयके बाहर नहीं निकलता पसलियोंमें बाण लगनेके समान पीडा होतीहै और हृदयमें खोदनेके समान पीडा होतीहै नेत्रोंका बंदहोना श्वासतथा हिचकी दिनोंदिन बढती हैं जिह्वा जलेहुएकेसमान कठोर होतीहै गलेमें कांटे होजाते हैं मलमूत्रका निकलना मालूम नहीं होता कबूतरके समान शब्द होजाताहै मुख ओष्ठ तथा तालु अत्यन्त कफसे पूर्ण तथा सूखजातेहैं तंद्रा तथा निद्रा अधिक होतीहै बोलनेकी शक्ति तथा कान्तिका नाश होताहै किसी प्रकार चैन नहीं पडता विरुद्ध वस्तुओंकी इच्छा होतीहै श्रम बहुत होताहै और थोडेसे रुधिर की वमन होतीहै इस भयंकर सन्निपातको कर्कटक कहते हैं॥ २६८॥

हीनमध्यप्रवृद्धैस्तुवातपित्तकफैश्चयः। तेनरोगास्तएवोक्तायथादोषबलाश्रयाः॥ अल्पशूलंकटीतोदोमध्येदाहोरुजाश्रमः। मूत्रशंक्रमःशिरोवस्तिमन्याहृदयवाग्रुजः॥ प्रमीलकःश्वासकासहिक्काजाड्यंविसंज्ञता। प्रथमोत्पन्नमेनन्तुसाधयंतिकदाचन॥ [illegible]संनिवृत्तेत्तुकर्णमूलेसुदारुणः। पिडिकाजायतेजन्तोर्यथाकृच्छ्रेणजीवति॥ सवैद[illegible]ज्ञोऽयंसन्निपातःसुदारुणः। त्रिरात्रात्परमेतस्यव्यर्थमौषधकल्पनम्॥ २६९॥

हीनवात मध्यपित्त औरअधिककफ के द्वारा जो सन्निपात होताहै उसमें पहले कहेहुए वा[illegible] दिजनित रोग दोषोंके बलके अनुसार होते हैं हड्डी तथा कटिमें पीडा, अन्तर्दाह, पीडा,श्रम, अत्यन्[illegible] ग्लानि,मस्तक मूत्राशय गलेके पीछेकीनस हृदय तथा वाणीमें रोग,नेत्रोंका बंदहोना, श्वास,खांसी हिचकी,जडता और संज्ञाका न होना यह लक्षण विशेषकरके होते हैं यह रोग पहले उत्पन्न होनेपर कदाचित् साध्य होताहै इसके किसी प्रकार निवृत्त होनेपर कानोंके मूलमें भयंकर गांठदार फुडिय[illegible] उत्पन्न होतीहै उससे मनुष्य बहुत कष्ट करके बचताहै इस सन्निपातको वैदारिक कहते हैं इस सन्नि[illegible]पात में तीनरात्रिके उपरान्त औषध करना व्यर्थ है॥ २६९॥

अथ तन्त्रान्तरेवातोल्बणादीनांसन्निपातज्वरविशेषाणांत्रयोदशानांशीतांगादीनित्रयोदशनामान्तराणिलक्षणान्तराणिचाह॥

शीतांगस्त्रिमलोद्भवज्वरगणेतन्द्रीप्रलापीततो रक्तष्ठीवयिताचतत्रगणितःसम्भुग्ननेत्रस्तथा॥साभिन्यासकजिह्वकश्चकथितःप्राक्सन्धिगोथान्तकोरुग्दाहःसहचित्तविभ्रम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इहद्दौकर्णकण्ठग्रहौ ॥ तन्द्रीतन्द्रिकःप्रलापीप्रलापकःरक्तष्ठीवयितारक्तष्ठीवीसंभुग्ननेत्रः भुग्ननेत्रः। अभिन्यासकःअभिन्यासः कर्णकण्ठग्रहौकर्णग्रहः कर्णिकःकण्ठग्रहःकण्ठ कुब्जकः ॥ २७० ॥

तन्त्रान्तरमें वातोल्बणादि तेरह सन्निपात ज्वरोंके भेदोंके शीतांग आदिकतेरह अन्यनाम लक्षण सहित कहेगये हैं वह आगे वर्णन किये जाते हैं ॥

शीतांग, तन्द्रिक, प्रलापक, रक्तष्ठीवी, भुग्ननेत्र, अभिन्यास, जिह्वक, संधिग, अन्तक, रुग्दाह, चित्तविभ्रम, कर्णिक और कंठकुब्जक यह तेरह सन्निपातज्वर होते हैं ॥ २७० ॥

अथ तेषांप्रत्येकंलक्षणानि ॥

हिमशिशिरशरीरःसन्निपातज्वरीयः श्वसनकसनहिक्कामोहकम्पप्रलापैः ॥ क्लमबहुक फवातादाहवम्यङ्गपीडास्वरविकृतिभिरार्त्तःशीतगात्रःसउक्तः ॥ २७१ ॥

इनके अलग २ लक्षण ॥

जिस सन्निपातवालेका शरीर पालेके समान शीतल हो और श्वास, खांसी, हिचकी, मोह, कंप, प्रलाप, ग्लानि, बहुतकफ, वात, दाह, छर्द्दि, शरीरमेंपीड़ा और स्वरभंग उत्पन्न हो उसे शीतांग सन्निपात कहते हैं ॥ २७१ ॥

तन्द्रातीवततस्तृषातिसरणंश्वासोऽधिकःकासरुक् सन्तप्तातितनुर्गलेश्वयथुतासा ग्रेचकण्डूकफः ॥ सुश्यामारसमाक्लमःश्रवणयोर्म्मान्द्यञ्चदाहंस्तथा यत्रस्यात्सहित छर्द्दिकोनिगदितोदोषत्रयोत्थाज्वरः ॥ २७२ ॥

जिस सन्निपात ज्वरमें अधिक तन्द्रा, अधिकतृषा, अतीसार, अधिकश्वास, खांसी, पीड़ा, शरीर में ...ताप, गलेमें शोथ, नासिकाके अग्र भागमें शीतलता, जिह्वामें अत्यन्तश्यामता, ग्लानि, बधिरता ... होताहै उसको तन्द्रिक कहतेहैं ॥ २७२ ॥

...ज्वरेनिखिलदोषनितान्तरोष जातेप्रलापबहुलाःसहसोत्थिताश्च । कम्पव्यथा ...दाहविसंज्ञताःस्युर्नाम्नाप्रलापकइतिप्रथितःपृथिव्याम् ॥ २७३ ॥

जिस सन्निपातमें सम्पूर्ण दोष अत्यन्त कुपित हों सहसा बहुत प्रलाप उत्पन्नहो और कंप, पीड़ा, शरीरमें दाह तथा अज्ञानता होय उसको प्रलापक कहते हैं ॥ २७३ ॥

निष्ठीवीरुधिरस्यरक्तसदृशंकृष्णंतनौमण्डलं लौहित्यंनयनेतृषारुचिवमिश्वासा तिसारभ्रमाः ॥ आध्मानञ्चविसंज्ञताचपतनंहिक्काङ्गपीडाभृशं रक्तष्ठीविनिसन्निपातज ...लिंगज्वरेजायते ॥ २७४ ॥

रुधिरकी वमन, शरीरमें रुधिरके समान तथा काले रंगके चकत्ते नेत्रोंमें ललाई, तृषा, अरुचि, छर्द्दि, श्वास, अतीसार, भ्रम, अफरा, अज्ञानता, गिरना, हिचकी और शरीरमें अत्यन्त पीड़ा यह रक्तष्ठीवी सन्निपातके लक्षण हैं ॥ २७४ ॥

भृशंनयनवक्रताश्वसनकासतन्द्राभृशं प्रलापमदवेपथुःश्रवणहानिमोहास्तथा ॥ पुरोनिखिलदोषजेभवतियत्रलिंगज्वरे पुरातनचिकित्सकैःसइहभुग्ननेत्रोमतः ॥ २७५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिस सन्निपातमें नेत्रोंका बहुत टेढ़ापन, श्वास, खांसी, तन्द्रा, भ्रम, प्रलाप, मद, कंप, बधिरता और मोह यह लक्षण होतेहैं उसको प्राचीन वैद्य भुग्ननेत्र नामक सन्निपात कहते हैं ॥ २७५ ॥

दोषास्तीव्रतराभवन्तिबलिनःसर्वेऽपियत्रज्वरेमोहोऽतीवविचेष्टतांविकलताश्वासोभृशंमूकता ॥ दाहश्चिक्कणमाननञ्चदहनोमन्दोबलस्यक्षयः सोऽभिन्यासइतिप्रकीर्त्तितः इहप्राज्ञैर्भिषग्भिःपुरा ॥ २७६ ॥

जिस सन्निपातमें सम्पूर्ण दोष बहुतबलवान् होयँ और अत्यन्त मोह, चेष्टाका न होना, विकलता, अत्यन्त श्वास, मूकता, दाह, मुखमें चिकनापन, मंदाग्नि और बलका नाश होय उसको अभिन्यास कहतेहैं ॥ २७६ ॥

त्रिदोषजनितेज्वरेभवतियत्रजिह्वाभृशं वृताकठिनकण्टकैस्तदनुभनिरंमूकता ॥ श्रुतिक्षतिबलक्षतिश्वसनकाससन्तापयः। पुरातनभिषग्वरास्तमिहजिह्वकञ्चक्षते ॥ २७७ ॥

जिस सन्निपातमें जिह्वा बहुत कठिन, कांटोंसे आच्छादितहो, अत्यन्त मूकताहो, बधिरता तथा बलक्षयहो और श्वास, खाँसी तथा संताप हो उसको जिह्वक कहते हैं ॥ २७७ ॥

व्यथातिशयिताभवेच्छ्वयथुसंयुतासन्धिषु प्रभूतकफतामुखेविगतनिद्रताकासरुक्॥समस्तमितिर्कीत्तितंभवतिलक्ष्मयत्रज्वरे त्रिदोषजनितेबुधैःसहिनिगद्यतेसन्धिगः २७८

अत्यन्त व्यथा, संधियों में सूजन, मुख में बहुत कफ, निद्रा का नाश और खाँसी यह सब लक्षण जिस सन्निपात ज्वरमें होतेहैं उसको संधिग कहते हैं ॥ २७८ ॥

यस्मिन्लक्षणमेतदस्तिसकलैर्दोषैरुदीतेज्वरे ऽजस्त्रंमूर्द्धविधूननंसकसनंसर्वांगपीडाधिका ॥ हिक्काश्वाससदाहमोहसहितादेहेऽतिसंतप्तता वैकल्यञ्चवृथावचांसिमुनिभिः संकीर्त्तितःसोऽन्तकः ॥ २७९ ॥

जिस सन्निपात में निरन्तर शिर कंपना, खाँसी, सब शरीर में अत्यन्त पीड़ा, हिचकी, श्[illegible] मोह, शरीर में अत्यन्त ताप, व्याकुलता और अनर्थक वचन यह लक्षण होते हैं उसको [illegible] कहते हैं ॥ २७९ ॥

दाहोऽधिकोभवतियत्रतृषाचतीव्रा श्वासप्रलापविरुचिभ्रममोहपीडाः ॥ मन्या[illegible] व्यथनकण्ठरुजःश्रमश्च रुग्दाहसंज्ञउदितस्त्रिभवोज्वरोऽयम् ॥ २८० ॥

जिस सन्निपात में अत्यन्त दाह, तीव्र, तृषा, श्वास, प्रलाप, अरुचि, भ्रम, मोह तथा पीड़ा होय गले के पीछे की नस जबड़ा तथा कंठ में खेद हो और श्रम होय उसको रुग्दाह कहते हैं ॥ २८० ॥

गायतिनृत्यतिहसतिप्रलपतिविकृतंनिरीक्ष्यतेमुह्येत् । दाहव्यथाभयार्त्तोनरस्तु[illegible]त्तभ्रमेज्वरेभवति ॥ २८१ ॥

जिस सन्निपात में रोगी गावे, नाचे, हँसे, प्रलाप करे, टेढ़े नेत्रों से देखे, मोह को प्राप्त हो और दाह, पीड़ा तथा भयसे व्याकुल होय उसको चित्तभ्रम कहते हैं ॥ २८१ ॥

दोषत्रयेणजनिताकिलकर्णमूले तीव्रज्वरोभवतितुश्वयथुर्व्यथाच ॥ कण्ठग्रहोबाधिरताश्वसनंप्रलापः प्रस्वेदमोहदहनानिचकर्णिकाख्ये ॥ २८२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिस सन्निपात में कर्णमूल पर अत्यन्त सूजन तथा पीड़ा हो और कंठरोध, बांधिरता, श्वास, प्रलाप, स्वेद, मोह तथा दाह होय उसको कर्णिक कहतेहैं ॥ २८२ ॥

कण्ठःशूकशतावरुद्धवदतिश्वासःप्रलापोऽरुचिर्दाहोदेहरुजातृषापिचहनुस्तम्भः शिरोर्त्तिस्तथा ॥ मोहोवेपथुनासहेतिसकलंलिंगंत्रिदोषज्वरे । यत्रस्यात्सहिकण्ठकुब्ज उदितःप्राच्यैश्चिकित्साबुधैः ॥ २८३ ॥

जिस सन्निपात में कंठके भीतर सैकड़ों कांटेसे मालूमपड़ें और अत्यन्त श्वास प्रलाप अरुचि दाह शरीर में पीड़ा तृषा जबड़ेका जकड़ना शिरमें पीड़ा मोह तथा कम्प होय उसको कंठकुब्ज कहतेहैं ॥ २८३ ॥

सन्धिगस्तेषुसाध्यःस्यात्तन्द्रिकश्चित्तविभ्रमः । कर्णिकोजिह्वकःकण्ठकुब्जःपञ्चापिकष्टकाः ॥ रुग्दाहस्त्वतिकष्टेनसंसाध्यस्तेषुभाषितः । रक्तष्ठीवीभुग्ननेत्रःशीतगात्रः प्रलापकः ॥ अभिन्यासोन्तकाश्चैतेषडसाध्याःप्रकीर्त्तिताः ॥ २८४ ॥

ऊपर कहेहुये सन्निपातोंमें से सन्धिग साध्य है तन्द्रिक, चित्तविभ्रम, कर्णिक, जिह्वक तथा कंठ-कुब्जक यह पांच कष्टसाध्य हैं रुग्दाह अत्यन्त कष्टसाध्यहै और रक्तष्ठीवी, भग्ननेत्र, शीतगात्र, प्रला-पक, अभिन्यास तथा अन्तक यह छः असाध्य कहे हैं ॥ २८४ ॥

अथतन्त्रान्तरेवातोल्बणादीनांसन्निपातज्वरविशेषाणां त्रयोदशानांकुम्भीपाकादीनि त्रयोदशनामान्तराणिलक्षणान्तराण्याह ॥ कुम्भीपाकःप्रोर्णुनावःप्रलापीह्यन्तर्दाहोदंडपातोऽन्तकश्च । एणीदाहश्चाथहारिद्रसंज्ञोभेदाएतेसन्निपातज्वरस्य ॥ अजघोषभूतहासौयंत्रापीडश्चसंन्यासः । संशोषीचविशेषास्तस्यैवोक्तास्त्रयोदशान्यत्र ॥ २८५ ॥

[illegible]रमें वातोल्बणादि तेरह सन्निपात भेदोंके कुम्भीपाकादि अन्य तेरहनाम और लक्षण जो [illegible]सो अबआगेकहतेहैं कुम्भीपाक, प्रोर्णुनाव, प्रलापी, अन्तर्दाह, दंडपात, अन्तक, एणीदाह, हारि-[illegible]घोष, भूतहास, यन्त्रापीड, संन्यास और संशोषी यह तेरह सन्निपातज्वरके भेद हैं ॥ २८५ ॥

अथैषांलक्षणानि ॥

घोणाविवराद्बहुशोणासितलोहितंगाढम् । विलुठन्मस्तकमभितः कुम्भीपाकेन पीडितंविद्यात् ॥ २८६ ॥

इनके लक्षण ॥

जिस सन्निपात में नासिका से लाल काला तथा गाढ़ा बहुत रुधिर गिरे और रोगी शिरको [इध]र उधर चलावे उसको कुम्भीपाक कहतेहैं ॥ २८६ ॥

उत्क्षिप्ययःस्वमंगंक्षिपत्यधस्तान्नितांतमुच्छ्वसिति । तंप्रोर्णुनावजुष्टंविचित्रकष्टंविजानीयात् ॥ २८७ ॥

जिस सन्निपात में रोगी अपने अंगोंको ऊपर उठा २ कर नीचेडाले और बहुत श्वासले उस सन्निपातको प्रोर्णुनाव कहतेहैं यह विचित्र कष्टदायक होताहै ॥ २८७ ॥

स्वेदभ्रमांगभेदाःकम्पोदवथुर्वमिर्व्यथाकण्ठे । गात्रञ्चगुर्व्वतीवप्रलापिजुष्टस्य जायतेलिंगम् ॥ २८८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिस सन्निपातमें स्वेद, भ्रम, शरीरमें पीडा, कम्प, सन्ताप, छर्दि, कंठमें पीडा. और शरीरमें बहुत भारीपन होय उसको प्रलापी कहतेहैं॥ २८८॥

अन्तर्दाहःशैत्यंबहिःश्वयथुररतिरपितथाश्वासः । अंगमपिदग्धकल्पंसोऽन्तर्दाहा द्दितःकथितः॥ २८९॥

जिस सन्निपात में भीतर दाह, बाहर शीत, सूजन, ग्लानि तथा श्वास और शरीर जला हुआसा मालूमपडे उसको अन्तर्दाह कहतेहैं॥ २८९॥

नक्तंदिवानिद्रामुपैतिगृह्णातिमूढधीर्नभसः । उत्थायदण्डपातीभ्रमातुरःसर्व्वतोभ्र मति॥ नभसोगृह्णातिआकाशात्किञ्चिद्ग्रहीतुंकरौप्रसारयतीत्यर्थः॥ २९०॥

जिस सन्निपात में रात्रि दिन निद्रा न पडे रोगी आकाश से कुछ लेनेके लिये हाथ फैलावै और भ्रमातुर होकर उठकर इधर उधर चले उसको दंडपात कहते हैं॥ २९०॥

सम्पूर्य्यतेशरीरंग्रन्थिभिरभितस्तथोदरंमरुता । श्वासातुरस्यसततंविचेतनस्या न्तकार्त्तस्य॥ २९१॥

जिस सन्निपात में शरीरपर गाँठें सी पड जायँ, पेट में वात भरजाय, श्वास होय और निरंतर अचैतन्यता बनी रहै उसको अन्तक कहते हैं॥ २९१॥

परिधावतीवगात्रेरुक्पात्रेभुजंगपतंगहारिणगणः । वेपथुमतःसदाहस्यैणीदाहज्वरा र्त्तस्य। रुक्पात्रेपीडाभाजनेगात्रस्यविशेषणमेतत्॥ २९२॥

जिस सन्निपात में पीडा युक्त शरीरपर सर्प पतंग तथा हिरनसे दौडते मालूम पडें और कंप तथा दाह उत्पन्न हो उसको एणीदाह कहते हैं॥ २९२॥

यस्याऽतिपीतमंगंनयनेसुतरांमलस्ततोऽप्यधिकम्। दाहोऽतिशीततावबहि... रिद्रकोज्ञेयः॥ २९३॥

जिस सन्निपात में शरीर तथा नेत्र पीलेहों और मल उनसेभी अधिक पीला होय भी... और बाहर शीतलता होय उसको हारिद्रक कहते हैं॥ २९३॥

छगलकसमानगन्धःस्कन्धरुजावान्निरुद्धगलरन्ध्रः । अजघोषसन्निपातादात क्षःपुमान्भवति॥ २९४॥

जिस सन्निपातमें बकरेके समान दुर्गन्धिआवै, कन्धोंमें पीडा होय, कंठ रुकजाय और नेत्र, ता... वर्ण होयँ उसको अजघोष कहते हैं॥ २९४॥

शब्दादीनधिगच्छतिनस्त्रान्विषयान्यादिन्द्रियग्रामैः। हसतिप्रलपतिपरुषंसज्ञेयोभू हासार्त्तः॥ २९५॥

जिस सन्निपातमें रोगी अपनी इन्द्रियोंसे शब्दादिक विषयोंको न ग्रहण करसके हँसे और कठोर प्रलाप करे उसको भूतहास कहते हैं॥ २९५॥

येनमुहुर्ज्वरवेगाद्यन्त्रेणेवावपीड्यतेगात्रम्॥ रक्तंपीतंचवमेद्यन्त्रापीडःसविज्ञेयः २९६

जिस सन्निपातमें ज्वरके वेगसे शरीर यन्त्रके द्वारा दबायासाजाय और रक्त तथा पीतवर्ण वमन करे उसको यन्त्रापीड कहतेहैं॥ २९६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अतिसरतिवमतिकूजतिगात्राण्यभितश्चिरंनरःक्षिपति । संन्याससन्निपातेप्रलपत्युग्राक्षिमण्डलोभवति ॥ २६७ ॥

जिस सन्निपातमें अतीसार, छर्दि, गलेमें अव्यक्त शब्द, अंगोंका इधर उधर पटकना, प्रलाप और नेत्रोंकी उग्रता होय उसको संन्यास कहतेहैं ॥ २६७ ॥

मेचकवपुरेतिमेचकलोचनयुगलोमलोत्सर्गात् । संशोषिणीसितपिडिकामण्डलयुक्तोज्वरेनरोभवति ॥ २६८ ॥

जिस सन्निपातमें मलके त्याग करनेसे शरीर तथा नेत्र अत्यन्त काले रंग होजायँ और श्वेतवर्ण मंडलयुक्त फुड़िया उत्पन्न होयँ उसको संशोषी कहतेहैं ॥ २६८ ॥

नारायणएवभिषक्भेषजमेतेषुजाह्नवीनीरम्। नैरुज्यहेतुरेकोनित्यंमृत्युञ्जयोध्येयः २६९

इन सन्निपातोंमें नारायणही वैद्य औषध गंगाजीकाजल और आरोग्यके लिये निरन्तर श्रीमृत्युंजयका ध्यान करना चाहिये ॥ २६९

अथासाध्यस्यसन्निपातज्वरस्यलक्षणमाह ॥

सन्निपातज्वरस्यान्तेकर्णमूलेसुदारुणः । शोथःसंजायतेतेनकश्चिदेवप्रमुच्यते ॥ स दारुणःमारकत्वात् । अतस्तेनशोथेनकश्चिदेवप्रमुच्यते ॥ कोऽपिजीवितंत्यजतिइत्यर्थः। सन्निपातज्वरान्कष्टानसाध्यानपरेजगुः ॥ दोषेप्रवृद्धेनष्टेऽग्नौसर्व्वसम्पूर्णलक्षणः । सन्निपातज्वरोऽसाध्यःकष्टसाध्यस्ततोऽन्यथा ॥ सर्व्वाणिदाहशीतादीनिसम्पूर्णानिआतुरगतानिप्रोक्तानियावल्लक्षणानियस्यसः । ततोऽन्यथादोषेपक्वेअग्नौदीप्तेस्वल्पलक्षण [illegible]ाध्यइत्यर्थः ॥ ३०० ॥

असाध्य सन्निपात ज्वरका लक्षण ॥

[illegible]न्निपात ज्वरके अन्तमें करण मूलपर अत्यन्त भयानक सूजन उत्पन्न होती है इस सूजनके होने[illegible] प्रायः सबलोग मृत्युको प्राप्त होतेहैं और कभी कोई दैवयोगसे बचभी जाताहै (सन्निपात ज्वरोंको [illegible]ोई कष्टसाध्य और कोई असाध्य कहतेहैं) जिस सन्निपातमें दोष बहुत बढ़जायँ अग्नि नष्ट होजाय और पहले कहेहुए दाह शीतादिक सम्पूर्ण लक्षण मिलें वह असाध्यहै और जो दोष परिपक्व होय अग्नि दीप्तिहोय और सब लक्षण न मिलें तो कष्ट साध्य जानना चाहिये ॥ ३०० ॥

अथ सामान्यसन्निपातज्वरस्यचिकित्सा ।

सन्निपातार्णवेमग्नंयोऽभ्युद्धरतिमानवम्। कस्तेननकृतोधर्मःकांचपूजांनसोऽर्हति ॥ मृत्युनासहयोद्धव्यंसन्निपातंचिकित्सता । यश्चतत्रभवेज्जेतासजेतामयसंकुले॥३०१॥

सामान्य सन्निपातज्वरकी चिकित्सा ॥

सन्निपातरूपी समुद्रमें डूबेहुए मनुष्यका जो उद्धार करताहै वह सब धर्मोंका करने वाला और संपूर्ण पूजाओं के योग्यहै सन्निपातकी चिकित्सा करना मृत्युके संग युद्ध करनाहै इस युद्धमें जो कोई जीतते हैं वह सब रोगोंके जीतनेवाले होतेहैं ॥ ३०१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्लेष्मनिग्रहमेवादौकुर्य्याद्व्याधौत्रिदोषजे । संसर्गेयोगरीयान्स्यादुपक्रम्यसवैभवेत् ॥ शेषदोषविरोधेनसन्निपातेतथैवच । संसर्गेदोषद्वयसंसर्गेगरीयानूबलत्तरः ॥ अंशांशंयत्रदोषाणांविवेक्तुंनैवशक्नुयात् । क्रियांसाधारणींतत्रविदधीतचिकित्सकः ॥ लङ्घनंबालुकास्वेदोनस्यंनिष्ठीवनंतथा । अवलेहोञ्जनंचैवप्राक्प्रयोज्यंत्रिदोषजे ॥ ज्वर इतिशेषः ॥ ३०२ ॥

सन्निपात रोगमें पहले कफको शांत करनाचाहिये और दो दोषोंके संसर्गसे जो रोग उत्पन्न हो उसमें जो दोष बलवान्हो उसकी चिकित्साकरे परन्तु दूसरे दोषके लिये जो हानिकारकहो उसमें दृष्टि रखनी चाहिये और त्रिदोषज रोगमें भी इसीप्रकार चिकित्सा करनीचाहिये वैद्य जहां दोषों के अंश २ अलग न करसके वहां साधारण चिकित्साकरे सन्निपातमें पहले लंघन बालुकास्वेद नस्य निष्ठीवन (कफनिकालना) अवलेह और अंजन इनकाप्रयोग करनाचाहिये ॥ ३०२ ॥

ननु क्रियायास्तुगुणालाभेक्रियामन्यांप्रयोजयेत् । पूर्वस्यांशान्तवेगायांनक्रियासङ्करोहितः ॥ इतिवचनेनक्रियासङ्करस्यनिषिद्धत्वात्कथमत्रनस्यनिष्ठीवनावलेहांजनानियुगपद्विधीयन्तइत्याशङ्क्याह । क्रियाभिस्तुल्यरूपाभिःक्रियासांकर्यमिष्यते । भिन्नरूपतयैतास्तुनहिकुर्वन्तिदूषणम् ॥ ३०३ ॥

यहां यह सन्देह होताहै कि एक क्रियाके द्वारा कुछ उपकार न होनेपर दूसरी क्रिया करनीचाहिये परन्तु पहली क्रियाके वेगके शांत होजानेपर दूसरी क्रिया करनी चाहिये क्योंकि क्रियाओं का संयोग हितकारी नहीं होताहै इस वचनके द्वारा क्रियाओंके संयोगका निषेध हुआ तो यहां नस्य, निष्ठीवन, अवलेह और अंजन एक साथहीं क्यों विधान कियेजाते हैं?इसका उत्तर यहहै कि समान क्रियाओं के एक साथ करनेमें दोष होताहै और जुदी २ क्रियाओंके करनेमें कोई दोष नहीं है ॥

तत्रलङ्घनस्यावधिमाह ॥

त्रिरात्रंपंचरात्रंवा दशरात्रमथापिवा । लङ्घनंसन्निपातेषुकुर्यादारोग्यदर्शनात् ॥ लङ्घनेत्रिरात्राद्विकल्पउल्बणेवा । तत्राद्यापेक्षयादोषाणांशीघ्रमध्यमन्दशक्तित्वात् । व्याधिस्वभावाद्वाआरोग्यदर्शनादिति । यावदारोग्यदर्शनंस्यात्तावद्वालङ्घनंकुर्यात् । एतेनत्रिरात्राद्यवधेर्नेनियतत्वंसूचितम् । अतएवसुश्रुतःप्राह । सप्तमेदिवसेप्राप्तेदशमेद्वादशेपिवा । पुनर्घोरतरोभूत्वाप्रशमंयातिहंतिवा ॥ घोरतरइतिस्वभावादेवतदाघोरतरोभूत्वेति ३०४

लंघनकी अवधि ॥

सन्निपातज्वरमें तीनरात्रि, पांचरात्रि, दशरात्रि अथवा आरोग्य पर्य्यन्त लंघन कराना चाहिये यहां लंघनके विषयमें तीन रात्रि आदिक अलग २ कल्पना वातादिकोंकी वृद्धिके अनुसार दोषों की शीघ्र मध्यम तथा मन्दशक्तिके अनुसार अथवा रोगके स्वभावके अनुसार जाननी चाहिये जबतक आरोग्य न होय तबतक लंघनदेवे इससे तीन रात्रि आदि अवधिका निश्चित न होना सूचित होता है इसीसे सुश्रुतने कहाहै कि सातवें दशवें अथवा बारहवें दिन सन्निपातज्वर फिर स्वभावहीसे बढ़कर शांतहोताहै अथवा मारताहै ॥ ३०४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हननप्रशमयोःकारणमाह ॥

पित्तकफानिलवृद्ध्यादशदिवसद्वादशाहसप्ताहात् । हन्तिविमुञ्चत्यथवात्रिदोषजो धातुमलपाकात् । त्रिदोषजोज्वरइतिशेषः । धातुमलपाकात् । धातुपाकाद्धन्तिमलपाकाद्विमुञ्चतीत्यर्थः । धातुमलपाकेप्राक्तनकर्म्मैवहेतुः । तत्रयदिजीवनसम्बर्द्धकंकर्म्मास्तितदामलपाकोऽन्यथाधातुपाकःसचरसादिशुक्रान्तधातूनांपाकोबोद्धव्यः ॥ ३०५ ॥

शान्तहोनेका अथवा रोगीके मारनेकाकारण ॥

सन्निपात ज्वर दशवें दिन बारहवें दिन अथवा सातवेंदिन शान्तहोजाताहै अथवा क्रमसे पित्त कफ तथा वायुकी वृद्धिके द्वारा मारता है अथवा धातु तथा मलके पाकके द्वारा मारताहै या शान्त होजाताहै अर्थात् धातुओंके पाकसे मारताहै और मलके परिपाक होनेसे शांत होताहै धातु तथा मलके परिपाकमें पूर्वजन्मके कर्महीकारणहोते हैं अर्थात् जो जीवनके बढ़ानेवाले कर्म्म हैं तो मलों का पाक होताहै और नहीं तो रसको आदिले वीर्य्य पर्यंत धातुओंका पाकहोताहै ॥ ३०५ ॥

तत्रधातुपाकस्यलक्षणमाह ॥

निद्रानाशोहृदिस्तम्भोविष्टम्भोगौरवारुची । अरतिर्बलहानिश्चधातूनांपाकलक्षणम् ॥ विष्टम्भउदरस्यगौरवंगात्राणाम् । अन्यच्च । संबाध्यमानोहृदिनाभिदेशेगात्रेषुवापाकरुजान्वितेषु । पीडाज्वरार्तोऽङ्गुलिभिश्चगच्छेत्सधातुपाकीकथितोभिषग्भिः । अपरञ्च । नाभेरूर्द्ध्वंहृदोऽधस्तात्पीडितेचेद्व्यथाभवेत् । धातोःपाकंविजानीयादन्यथातुमलस्यच ॥ ३०६ ॥ धातुओंके परिपाकहोनेका लक्षण ॥

[illegible]नाश, हृदयमें स्तम्भ, उदरमें विष्टंभ, शरीर में भारीपन, अरुचि, ग्लानि और बलका [illegible] धातुओंके परिपाक होनेके लक्षणहैं अन्यप्रकार हृदय तथा नाभिमें पीडा, शरीरका पकना, [illegible]र ज्वरसे पीडित होकर अंगुलियों के बलसे चलना यह धातुपाकके लक्षणहैं अन्य प्रकार [illegible] और हृदय के बीचमें दबाने से पीडा होय तो धातुओं का पाक जानना चाहिये और इस[illegible]के न होने में मलका परिपाक समझना चाहिये ॥ ३०६ ॥

अथ मलपाकलक्षणम् ॥

दोषप्रकृतिवैकृत्यंलघुताज्वरदेहयोः । इन्द्रियाणाञ्चवैमल्यंमलानांपाकलक्षणम् ॥ [illegible]षावातादयस्तेषांप्रकृतित्वेतुदाहतंद्रागौरवादिकरणंतस्यावैकृत्यंवैपरीत्यंवैमल्यंमलरा[illegible]त्यम् । मलानांदोषाणांपाकलक्षणम् । अन्यच्च । शश्वदिन्द्रियपञ्चकस्यपटुतावह्ने[illegible]यत्रक्रमात् । तृषणादिप्रशमोज्वरस्यमृदुतातंदोषपाकंवदेत् ॥ ३०७ ॥

मलदोषके परिपाकका लक्षण ॥

वातादि दोषोंकी प्रकृतिकी विकृति अर्थात् दाह, तंद्रा और भारीपन आदिका न होना ज्वरका थोडा होना शरीरमें हलकापन और इन्द्रियोंकी निर्मलता यह दोषोंके परिपाक होनेका लक्षणहै अन्यप्रकार सदैव पांचों इन्द्रियोंकी सामर्थ्य क्रमसे अग्निकी दीप्ति तृषा आदि उपद्रवोंकी शान्ति और ज्वरकी स्वल्पता यह दोषोंके पाकके लक्षण हैं ॥ ३०७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हृन्नाभ्योरतिवेदनातिशरणं तीव्रोज्वरस्तृणमदः श्वासाधिक्यमरोचकोऽरतिरितिस्याद्धातुपाकाकृतिः ॥ ३०८ ॥

हृदय तथा नाभिके बीचमें अत्यन्त पीड़ा, अतीसार, ज्वरकी तीक्ष्णता, तृषा, मद, श्वासकी अधिकता, अरुचि और बेचैनी यह धातुपाकके लक्षण हैं ॥ ३०८ ॥

आमस्याधिक्येनसप्तमदिवसाद्यवध्यतिक्रमेपरमावधिमाह । हारीतः । सप्तमीद्विगुणायावन्नवम्येकादशीतथा । एषात्रिदोषमर्य्यादा मोक्षाय च बधाय च ॥ नवम्येकादशीचागमनदिवसं विहाय बोद्धव्या, तेनागमनदिवसं नीत्वादशमीद्वादशीतथा । अत्ररात्रिरित्यध्याहि्रयते ॥ ३०९ ॥

आमकी अधिकतासे सातवेंदिन आदिकी अवधिके उल्लंघनमें हारीत परम अवधिको कहतेहैं सन्निपातज्वर के छूटने और मारनेकी सातवां चौदहवां नवां आठरहवां ग्यारहवां और बाईसवां दिन अवधिहै नवां और ग्यारहवां दिन ज्वर आने के दिनको छोड़कर लेना चाहिये इस्से ज्वर आनेवाले दिन समेत दशवां और बारहवां दिन होताहै ॥ ३०९ ॥

सन्निपातज्वरीपूर्व्वं सम्यग्लङ्घनमाचरेत् । शृतंशीतंपिबेदम्भःसमयेभेषजंभजेत् ॥ सन्निपातेनतृप्यन्तं पार्श्वरुक्तालुशोषिणम् । यःपाययेज्जलंशीतं समृत्युर्नरविग्रहः ॥ शीतंअक्कथितंशृतंतुशीतंविहितमेवइतिलङ्घनम् ॥ ३१० ॥

सन्निपातज्वरवाला पहले अच्छेप्रकारसे लंघन करे और समयके अनुसार औषधके द्वारा परिपाक कियाहुआ जल शीतल करके पिये और औषधका सेवन करे सन्निपात ज्वरमें जिसको तृषा पसली में पीड़ा और तालु सूखताहो उसको जो कोई विना गरम कियाहुआ शीतल जल पिलाताहै उसको मनुष्यरूपी मृत्यु जानना चाहिये इति लंघन ॥ ३१० ॥

बालुकास्वेदः ॥

वातश्लेष्मकृतेस्वेदान्कारयेद्रूक्षनिर्म्मितान् । स्निग्धःस्वेदोनिषिद्धोऽत्रविनाकेवलवातजात् ॥ खर्परभृष्टपटस्थितकाञ्जिकसंभिक्तबालुकास्वेदः । शमयतिवातकफामयमस्तकशूलांगभंगादीन् ॥ स्रोतसांमार्द्दवंकृत्वा नीत्वापावकमाशयम् । हत्वावातकफस्तम्भंस्वेदोज्वरमपोहति॥इति बालुकास्वेदः॥३११॥ बालुका स्वेद ॥

वात कफजनित रोगमें रूखा स्वेद देना चाहिये इसमें चिकना स्वेद निषेधहै परन्तु केवल वातजनितरोगमें स्निग्ध स्वेद देनाचाहिये किसीखपरेमें बालूको गरम करके कपड़ेमें बाँधे फिर कांजीमें भिगोकर स्वेददे इस्से कफरोग शिरकी पीड़ा और शरीरकी पीड़ा शान्त होतीहै स्रोतोंको कोमल करके अग्निको अग्निके ही स्थानमें लाकर और वायु तथा कफके जकड़ने को नाशकरके स्वेद ज्वर को नाशकरताहै इति बालुका स्वेद नस्य ॥ ३११ ॥

अथ सैन्धवादिनस्यम् ॥

सैंधवंश्वेतमरिचं सर्षपाःकुष्ठमेवच । वस्तमूत्रेणसंपिष्टं नस्यंतन्द्रानिवारणम् ॥ श्वेतमरिचंशिग्रुबीजम् । इति सैंधवादि नस्यम् ॥ ३१२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नस्य ॥

सेंधानोन, श्वेतमिर्च, सरसों और कूट इनसब औषधियोंको बकरेके मूत्रमें पीसकर नास लेने से तन्द्राका नाश होताहै इति सैंधवादि नस्य ॥ ३१२ ॥

मधूकसारसिंधूत्थवचोषणकणाःसमाः । श्लक्ष्णंपिष्ट्वाम्भसानस्यं दद्यात्संज्ञाप्रबोधनम् । मधूकसारादिनस्यम् ॥ ३१३ ॥

महुएके वृक्षकासाग, सेंधानोन, वच, मिर्च और पीपल इन सबको बराबर लेकर महीन पीसकर जल के साथ नास लेनेसे चैतन्यता होती है इति मधूक सारादि नस्य ॥ ३१३ ॥

मातुलुंगार्द्रकरसं कोष्णंत्रिलवणान्वितम् । अन्यद्वासिद्धविहितं नस्यंतीक्ष्णंप्रयोजयेत् ॥ तेनप्रभिद्यतेश्लेष्मा प्रभिन्नश्चप्रसिच्यते । शिरोहृदयकण्ठास्यपार्श्वरुक्चोपशाम्यति ॥ मोहामयेनमुग्धं बोधयितुंयादृशःशक्तः। कल्पतरुर्नामधेयो रसोनतादृक्परं किञ्चित् ॥ इति नस्यम् ॥ ३१४ ॥

नींबू तथा अदरकका रस और तीनोंनोन इनको मिलायके कुछ गरम २ नास लेनी चाहिये अथवा इनसे अन्य और जो तीक्ष्ण हुलास कही गई है वह देनी चाहिये और नासके द्वारा कफ गीलाहोकर निकलजाताहै और शिर, हृदय, कंठ, मुख तथा पसलियोंकी पीडा शान्त होती है मोह रोगसे मोहित मनुष्यको चैतन्य करनेके लिये जैसाकि कल्पतरु रसहै वैसी और कोई औषधि नहीं है इसलिये कल्पतरु रसकी नास लेनी चाहिये इति नस्य ॥ ३१४ ॥

अथ निष्ठीवनम् ॥

[illegible]तालुगलक्लोम मरुतिपित्तेनदूषितम् । तदासञ्जारयेच्छोषं जिह्वाविरसतांतथा ॥ [illegible]दाजिह्वां लेपयेन्मधुपिष्टया । द्राक्षयासाज्यपातेन जिह्वास्यात्सरसामृदुः ॥ [illegible]वरसोपेतं सैंधवंकटुकत्रयम् । आकण्ठाद्धारयेदास्ये निष्ठीवेच्चपुनःपुनः ॥ तेना[illegible]कोष्ठां समन्यापार्श्वशिरोगलात् । लीनोऽप्याकृष्यतेश्लेष्मा लाघवंचास्यजाय[illegible]पर्वभेदोज्वरोमूर्च्छानिद्राश्वासगलामयाः । मुखाक्षिगौरवंजाड्यमुत्क्लेशश्चोपशा[illegible]ति ॥ सकृद्द्विस्त्रिश्चतुःकुर्याद् दृष्ट्वादोषबलाबलम् । एतद्धिपरमंप्राहुः भेषजंस[illegible]पातिनाम् ॥ इति कवलग्रहः ॥ ३१५ ॥

निष्ठीवन ॥

[illegible] जिह्वा, तालु, कंठ और फुप्फुस यह जो वायु तथा पित्तके द्वारा दूषित होकर जिह्वाका सूखना वि[illegible]लता और फटना उत्पन्नकरें तो दाख को पीसकर घी और सहत के साथ जिह्वा में लेपकरे इस्से जिह्वा सरस और कोमल होजाती है सेंधानोन सोंठ पीपल और मिर्च इनको पीसकर अदरक के रस में मिलाय के गले तक मुख में रखकर वारंवार थूके इस्से हृदय गलेके पीछे की नस पसली शिर तथा गले में लिपटाहुआ कफ निकल जाताहै इसकारण हलकापन होता है और पोरुओं की पीडा, ज्वर, मूर्च्छा, निद्रा, श्वास, गलेके रोग मुखतथा नेत्रों का भारीपन शरीरकीजड-ता और मतली यह सब निवृत्त होते हैं दोषोंके बलाबलको देखकर एकबार दो बार तीनबार अथ-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वा चार बार यह क्रियाकरनी चाहिये सन्निपात रोग वालों को यह औषध परम हितकारी है इति कवल ग्रहण॥ ३१५॥

अथावलेहः॥

कट्फलंपौष्करंशृंगी व्योषंयासश्चकारवी। श्लक्ष्णंचूर्णीकृतश्चैतन्मधुनासहलेहयेत्॥ एषावलेहिकाहन्ति सन्निपातंसुदारुणम्। हिक्कांश्वासञ्चकासञ्च कण्ठरोगञ्च नाशयेत्॥ एतद्योज्यंकफोद्रेके चूर्णमार्द्रकजैरसैः। तंत्रांतरे चोक्तम्। अष्टांगमधुना लिह्यादार्द्रकस्वरसेनवा। संमोहंदारुणंहन्यात्तंद्राकाससमन्वितम्॥ ३१६॥

अवलेह॥

कायफल, पुष्करमूल, काकडासिंगी, सोंठ, पीपल, मिर्च, जवासा और कालाजीरा इनसबको पीस कर सहतकेसाथ चाटनेसे अत्यन्त कठिन सन्निपात, हिचकी, श्वास, खांसी और कंठ रोगोंका नाशहोताहै अधिक कफवाले सन्निपात में यह अदरक के रसके साथ देना चाहिये और तन्त्रान्तर में कहा गया है कि अष्टांगावलेह सहत के साथ अथवा अदरकके रस के साथ सेवन करने से तन्द्रा और खांसी सहित भयंकर मोहका नाश होता है॥ ३१६॥

सर्व्वेषुसन्निपातेषु नक्षौद्रमवचारयेत्। शीतोपचारिक्षौद्रंस्याच्छीतंचात्रविरुध्यते॥ सन्निपातज्वरेषु श्लेष्मनिग्रहार्थं सर्व्वदास्वेदोहितः। तत्राग्निसम्बन्धेन देहस्योष्णता तिष्ठति। उष्णेनमधुना विरोधः॥ उक्तंचसुश्रुतेन। उष्णैर्विरुध्यतेसर्व्वं विषान्वयतया मधु। उष्णार्त्तमुष्णैरुष्णञ्च तन्निहन्तियथाविषमिति॥ शीतोपचारिक्षौद्रंस्यात् शीतं चात्रविरुध्यते। शीतेनोपचारोऽस्यास्तीतिशीतोपचारि॥ शीतञ्चात्रसन्निपातेनविरुद्धयते॥ ३१७॥

सम्पूर्ण सन्निपातों में सहत नहीं देनाचाहिये क्योंकि सहत शीतल वस्तुओं के [illegible] या जाताहै और शीतलता सन्निपातों में विरुद्ध है सन्निपात ज्वरमें कफके दूरकरनेकेलिये [illegible] हितकारी है इस लिये सदैव अग्निके संयोग से शरीर उष्ण रहताहै और उष्णताके साथ [illegible] का विरोध है और सुश्रुत ने कहाहै कि सहत विषके संबंध होने के कारण सब प्रकार उष्ण [illegible] विरोधी होताहै इसलिये उष्णता से व्याकुल मनुष्यों को अथवा उष्ण वस्तुओं के साथ या उ[illegible] कियाहुआ सहत विषके समान मारने वाला होताहै॥ ३१७॥

(अवलेहः) प्रायेणोर्द्ध्वजत्रुजरोगहरत्वात्सायमुपयुज्यते॥ यतउक्तंचरकेण ऊर्द्ध्वजत्रुगदघ्नीयासासायमवलेहिका। अधोरोगहरीयासा भोजनात्प्राक्प्रयुज्यते। पौष्करंपुष्करमूलं तदलाभेकुष्ठंदेयम् शृंगीकर्कटशृंगी। व्योषंशुण्ठी पिप्पली मरि[illegible]॥ नि। यासोयवासः। केचिद्यासस्थाने यवानींप्रक्षिपन्ति। कारवीमंगरैला इतिलोके। अष्टांगावलेहिका॥ ३१८॥

अवलेह प्रायः हँसलीके ऊपर के रोगोंको दूर करताहै इसलिये सायंकालको देनाचाहिये क्योंकि चरकने कहा है कि जो अवलेह हँसली के ऊपर के रोगोंको दूर करता है वह सायंकाल को देना चाहिये और जो अवलेह नीचेके रोगोंको नाशकरताहै वह भोजनके पहलेदेवे॥ ३१८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्विन्नमामलकं पिष्ट्वा द्राक्षयासहमेलयेत् । विश्वभेषजसंयुक्तं मधुनासहलेहयेत् ॥ तेनास्यशाम्यतिश्वासः कासोमूर्च्छारुचिस्तथा । इति चतुरंगावलेहः ॥ ३१६ ॥

चतुरंगावलेह ॥

पके हुये आंवलोंको पीसकर दाख और सोंठ मिलाके सहतके साथ चाटे इससे श्वास खांसी तथा मूर्च्छा और अरुचि का नाश होता है ॥ ३१६ ॥

अथाञ्जनम् ॥

शिरीषबीजंगोमूत्रकृष्णामरिचसैन्धवैः । अञ्जनंस्यात्प्रबोधाय सरसोनाशिलावचैः ॥ (शिरीषबीजा) ॥ ३२० ॥

अञ्जन शिरीषबीजाद्यंजन ॥

सिरसके बीज, गोमूत्र, पीपल, मिर्च, सेंधानोन, लहसन, मैनसिल और वच इन औषधियों को पीसकर अंजन लगाने से रोगीको चैतन्यताहोतीहै ॥ ३२० ॥

अयोरजःश्वेतलोध्रं मरिचंचाञ्जनंतथा । गोमूत्रेणसमायुक्तंतन्द्रानाशनमुत्तमम् ॥ (लोहचूर्णाद्यञ्जनम्) अञ्जनंसम्यगारब्धं मधुसिन्धुशिलोषणैः । प्रमोहद्रोहिभवति भाषितंदण्डपाणिना ॥ ३२१ ॥

लोहचूर्णाद्यंजन ॥

लोहचूर्ण, सफ़ेदलोध और मिर्च इनको गोमूत्र में पीसकर अंजन करनेसे तन्द्राका नाशहोताहै सहत, सेंधानोन, मैनसिल और मिर्च इनको पीस अंजन लगानेसे मोहका नाशहोताहै ॥ ३२१ ॥

सतंविषञ्चमरिचंतुत्थकंनवसादरम् । चूर्णितंस्वरसैमर्द्यंधूर्त्तपत्ररसोनयोः ॥ सन्निपात[illegible]मूर्द्धिनलिम्पेत्पदोपरि । अस्थिव्यथास्वनेनैवलेपंकुर्यात्पदोपरि ॥ (पदम्पा[illegible]लोके) ॥ ३२२ ॥

इतिअंजन ॥

[illegible]पारा, विष, मिर्च, तूतिया और नौसादर इनको बराबर लेकर धतूरेके पत्ते और लहसनके रसमें [illegible]कर शिरमें और पैरोंपर लेपकरे इससे सन्निपातजनित मोहका नाशहोताहै और हड्डियों में [illegible]होय तोभी इसीका लेप पैरोंपर करना चाहिये ॥ ३२२ ॥

क्वाथ ॥

बिल्वःश्योनाकगम्भारीपाटलागणिकारिका । पित्तघ्नंवातकफहृत्पञ्चमूलमिदंमहत् ॥ [illegible]ालिपर्णीपृष्ठिपर्णीबृहतीकण्टकारिका । गोक्षुरुर्वातपित्तघ्नंकनीयःपञ्चमूलकम् ॥ उभ[illegible]शमूलंतत्पिप्पलीचूर्णसंयुतम् । सन्निपातज्वरंहान्तिहृद्कण्ठग्रहनाशनम् ॥ तन्द्रावात[illegible]शमूलंत[illegible] । महान्तियानिमूलानि काष्ठगर्भाणियानिच ॥ तेषान्तु कफातङ्कश्वासपार्श्वार्तिकासनुत् । अत्रबिल्वादीनांपञ्चानांमूलस्यवल्कलंग्राह्यम् ॥ (द[illegible]) वल्कलंग्राह्यंह्रस्वमूलानिकृत्स्नशः । [illegible]शमूलीक्वाथः) ॥ ३२३ ॥

क्वाथ दशमूलीक्वाथ ॥

बेल, सोनापाढा, गंभारी, पाटला, अरणी यह बृहत्पंचमूल कहलाताहै यह वात कफ तथा पित्त का नाशकहै शालिपर्णी, पृष्ठिपर्णी, दोनों भटकटैया और गोखुरू यह छोटा पञ्चमूल वात पित्तका

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नाशकहै यहदशों मिलकर दशमूल कहलातेहैं दशमूलका क्वाथ पीपलका चूर्णडालकर सेवनकरने से सन्निपातज्वर हृदय तथा कंठका अवरोध तंद्रा वात तथा कफके रोग श्वास पसलीकी पीड़ा और खांसीका नाश होताहै जिन वृक्षों की जड़ मोटी और भीतर काष्ठ से भरीहुई होय उनकी छाललेनी चाहिये और जिन वृक्षोंकी जड छोटी तथा भीतर काष्ठसे रहितहोय वह संपूर्ण लेनी चाहिये यहां बेल आदिक पांच वृक्षोंकी छाल लेनी चाहिये ॥ ३२३ ॥

दशमूलीकषायस्तुपिप्पलीपौष्करान्वितः। सन्निपातज्वरेदेयःश्वासकाससमन्विते ॥ (द्वादशाङ्गक्वाथः) ॥ ३२४ ॥

द्वादशांगक्वाथ ॥

दशमूल के काढ़ेमें पीपल और पुष्करमूल मिलाकर पानकरने से सन्निपातज्वर श्वास तथा खांसीका नाश होताहै ॥ ३२४ ॥

चिरज्वरेवातकफोल्बणेवात्रिदोषजेवादशमूलमिश्रः। किराततिक्तादिगणःप्रयोज्यःशुध्यर्थिनेवात्रिवृताविमिश्रः ॥ किराततिक्तादि। किराततिक्तकोमुस्तंगुडूचीविश्वभेषजम्। किरातादिर्गणोह्येषचातुर्भद्रकमित्यपि ॥ (इति चतुर्दशाङ्गक्वाथः) ॥ ३२५ ॥

चतुर्दशांगक्वाथ ॥

पुराने ज्वर में और अधिक वात कफवाले सन्निपातज्वर में दशमूल और किराततिक्तादिगण का क्वाथ देना चाहिये और जिसको दस्तदेने होयँ उसको निसोथ मिलाकर यह क्वाथदेवे चिरायता मोथा गिलोय और सोंठ इनको किराततिक्तादिगण और चातुर्भद्रक कहते हैं ॥ ३२५ ॥

दशमूलीशटीशृङ्गीपौष्करंसदुरालभम् ॥ भार्ङ्गीकुटजबीजञ्चपटोलंकटुरोहिणी ॥ अष्टादशांगइत्येषसन्निपातज्वरापहः। कासहृत्ग्रहपार्श्वार्त्तिश्वासहिक्कावमीहरः ॥ (अष्टादशांगक्वाथः) ॥ ३२६ ॥

अष्टादशांगक्वाथ ॥

दशमूल, कचूर, काकडासिंगी, पुष्करमूल, जवासा, भारंगी, इन्द्रजौ, परवल और कुट... अष्टादशांग क्वाथ सेवनकरने से सन्निपातज्वर, खांसी, हृदयका रुकना, श्वास, पसली की ... हिचकी तथा छर्दिका नाश होताहै ॥ ३२६ ॥

भूनिम्बदारुदशमूलमहौषधाब्दतिक्तेन्द्रबीजधनिकेभकणाकषायः। तन्द्राप्रलापक... सनारुचिदाहमोहश्वासत्रिदोषजनितज्वरनाशनःस्यात् ॥ (द्वितीयोऽष्टादशांगक्वाथः उक्तंचवङ्गसेनेन अष्टादशांगइत्येषमृत्युकल्पज्वरंजयेदिति ॥ ३२७ ॥

दूसराअष्टादशांगक्वाथ ॥

चिरायता, देवदारु, दशमूल, सोंठ, मोथा, कुटकी, इन्द्रजौ, धनियां और गजपीपल इनका क्वा... तन्द्रा, प्रलाप, खांसी, अरुचि, दाह, मोह, श्वास और सन्निपातज्वरका नाशकरताहै और वङ्गसेनने कहाहै कि यह अष्टादशांगनाम क्वाथ मृत्युके समान ज्वरको नाश करताहै ॥ ३२७ ॥

अथ सन्निपातज्वरेरसाः ॥

विषंत्रिकटुकंगन्धंटङ्कणंमृतशुल्बकम्। धत्तूरस्यचबीजानिहिंगुलंनवमंस्मृतम् ॥ एतानिसमभागानिदिनैकंविजयाद्रवैः। मर्दयेच्चणकाकाराःकर्त्तव्यावटिकाथसा ॥ भक्षणीया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नुपातव्योरविमूलकषायकः। मृतसंजीवनीनाम्नासन्निपातज्वरान्तकृत्॥ इति मृतसंजीवनीवटिकासन्निपातज्वरेरसप्रदीपे॥ ३२८॥

सन्निपातज्वरपर रस॥

विष, त्रिकुट, गन्धक, सुहागा, तांबेकी भस्म, धतूरेके बीज और सिंगरफ इनसबको समभाग लेकर भांगके रसमें एकदिन खरलकरे और चनेके समान गोली बनावे इस गोलीको आककी जडके काथ के साथ सेवन करे यह मृतसंजीविनी नाम गोली सन्निपातज्वरकी नाश करनेवाली है (इति मृतसंजीविनी वटिका)॥ ३२८॥

शुद्धसूतंसमंगन्धं सूतांशंमृतताम्रकम्। त्रिभिस्तुल्यैर्गवांक्षीरैर्म्मर्द्दयेदातपेखरे॥ मर्द्दयेद्दिनमेकन्तुनिर्गुण्डीशिग्रुजद्रवैः। विधायगोलन्तंगोलमन्धमूषागतंपचेत्॥ त्रियामं बालुकायन्त्रेततःखल्वेविचूर्णयेत्। अष्टमांशंविषंतत्रक्षिपेत्तेनापिमर्द्दयेत्॥ त्रिनेत्राख्यो रसोह्येषदेयोगुञ्जाद्वयोन्मितः। पञ्चकोलकषायेणछागीदुग्धेनवासह॥ रसेनानेनभुक्तेन सन्निपातज्वरोमहान्। संक्षयंव्रजतिक्षिप्रंकर्त्तव्योनात्रसंशयः॥ इति त्रिनेत्ररसः। सन्निपातज्वरेरसप्रदीपे॥ ३२९॥ सन्निपात ज्वरपर त्रिनेत्र रस॥

शुद्धपारा, शुद्धगंधक और तांबेकी भस्म इन औषधियोंको समभाग लेकर इन्हीं के समान गौके दूध में मर्द्दन करके तीक्ष्ण धूपमें सुखावे फिर निर्गुण्डी और सहजन के काथ के द्वारा एकदिन मर्द्दन करे फिर गोला बनाकर अंध नाम घरियामें रखकर तीन पहर बालुकायन्त्रमें पाककरे इसके उपरान्त खरलमें पीस के अष्टमांश विष मिलाकर घोटले यह त्रिनेत्र नामरस पंचकोलके काढ़े अथवा बकरीके दूधके साथ दो रत्ती सेवन करना चाहिये इससे अत्यन्त कठिन सन्निपातज्वर का नाश होताहै इसमें कोई सन्देह नहींहै॥ ३२९॥

...षोडशनिष्कंस्यादारण्योपलसम्भवम्। मरिचंनिष्कमात्रञ्चविषंनिष्कंविचूर्णयेत्॥ रसोभस्मेश्वरोनामसन्निपातज्वरान्तकृत्। एकगुञ्जामितोभक्ष्यआर्द्रकस्यद्रवेण ... इति भस्मेश्वरोरसः। सन्निपातज्वरेरसेन्द्रचिन्तामणौ॥ ३३०॥

भस्मेश्वररस॥

अरनेकंडोंकी भस्म चौंसठ माशे मिर्च चार माशे और विष चार माशे इन सबको पीसकर एकरत्ती प्रमाण यह भस्मेश्वररस अदरकके रसके साथ सेवन करनेसे सन्निपातज्वरका नाश करताहै ३३०॥

द्वौकर्षौसूतकाद्ग्राह्यौगन्धकाद्द्वौतथैवच। यत्नतस्तूभयंमर्द्यंदिनंहंसपदीद्रवैः॥ कल्कस्यवटिकांकृत्वानिक्षिपेत्काचभाजने। कर्षैकममृतंतत्रक्षिप्त्वावक्त्रंनिरोधयेत्॥ कूपिकायाःपरोभागोबालुकाभिश्चपूरयेत्। सार्द्धयावदहोरात्रंतावत्तत्रपचेद्रसम्॥ यामपात्रोऽनलोदेयःस्वाङ्गशीतंसमुद्धरेत्। तोलार्द्धममृतंतत्रक्षिपेत्तावत्तथोषणम्॥ भक्षिरक्तिकामात्रोरसस्त्वग्निकुमारकः। सन्निपातज्वरंहन्याद्वातंमन्दाग्नितामपि॥ शूलञ्च ग्रहणींगुल्मंक्षयंजत्रुगदन्तथा। श्वासकासादिकान्सर्व्वान्गदानेषविनाशयेत्॥ इति अग्निकुमारोरसः। सन्निपातज्वरादिषुरसेन्द्रचिन्तामणौ॥ ३३१॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अग्निकुमाररस ॥

पारा और गन्धक दो २ तोले लेकर हंसपदी जड़ीके रसमें एकदिन घोंटे फिर उसकी गोली बनाकर शीशीमें रक्खे और उसी शीशीमें १ तोला विष छोड़कर शीशीका मुख बन्दकरदे और शीशीके दोनों ओर बालूभरके डेढ़ दिनतक अर्थात् बारह पहरतक दीपक के समान मन्द २ आंचदेवे फिर शीतल होजानेपै उसको निकाल कर आधे तोले विष और आधे तोले मिर्च मिलावे यह एक रत्ती सेवन करने से सन्निपातज्वर, वात, मन्दाग्नि, शूल, ग्रहणी, वायगोला, राजयक्ष्मा, पसलीके रोग, श्वास और खांसी आदिक सब रोगोंका नाशकहै ॥ ३३१ ॥

गन्धेशटंकमरिचंविषंधत्तूरजैर्द्रवैः । दिनंसंमर्दितंशुष्कंपञ्चवक्त्रोरसोभवेत् ॥ आर्द्रकस्यद्रवेणैषदातव्योरक्तिकामितः। सन्निपातज्वरेदेयोघोरेतद्दोषनाशनः ॥ पञ्चवक्त्रोरसः सन्निपातेरसेन्द्रचिन्तामणौ ॥ ३३२ ॥ पंचवक्त्ररस ॥

पारा, गन्धक, सुहागा, मिर्च और विष इनसब औषधियोंको धतूरे के पत्तोंके रसमें एक दिन घोटकर सुखालेवे यह पंचवक्त्र नाम रस अदरकके रसके साथ एकरत्ती प्रमाण सेवन करने से घोर सन्निपातज्वर का नाश करताहै ॥ ३३२ ॥

अमृतवराटकमरिचैर्द्विपञ्चनवभागयोजितैरचिता । वटिकामुद्गसमानाकफत्रिदोषाग्निमान्द्यहरी ॥ अमृतादिवटी ॥ ३३३ ॥

अमृतादि वटी ॥

विष २ भाग कौड़ीकी भस्म ५ भाग और मिर्च ९ भाग इनसबको मिलाकर मूंगके समान बनाई हुई गोली सेवन करने से कफ त्रिदोष और मंदाग्निका नाश करती है ॥ ३३३ ॥

अथ शीतज्वरेरसाः ॥

सूतकंगन्धकञ्चैवहरितालंमनःशिला: । एकनिष्कंद्विनिष्कञ्चचतुर्निष्कंत[illegible] ॥ पञ्चनिष्कंरसैःकारवेल्याःसम्यक्प्रकल्पयेत् । ताम्रपत्राणितुल्यानितेनकल्केनले[illegible] ॥ शरावसंपुटेतानिकृत्वातेषामुपर्य्यपि। दद्यात्तांपिष्टिकांपश्चात्पुटपाकेनपाचयेत् ॥ [illegible] संचूर्णयेदेवंरसःक्षौद्रेणभक्षितः । यवैकमात्रयाहन्तिघोरंशीतज्वरंध्रुवम् ॥ पाराटंक गन्धकटंक २ हरतालटंक ४ मनःशिलाटंक ४ ताम्रपत्रटंक १२ शीतज्वरारिः प्रदीपे ॥ ३३४ ॥ शीतज्वरपररस ॥

पारा ४ माशा गंधक ८ माशा हरिताल १६ माशा और मैनसिल २० माशा इन औषधियों[illegible] करेलीके रसमें पीसले फिर उन्हीं औषधियोंके समान तांबेके पात्रोंपर औषधियोंका लेप करदे फिर सकोरेमें इनपत्रोंको रखकर सकोरेसेही बन्दकरदे और उसके ऊपरभी इन्हीं औषधियोंका लेपकरके पुटपाकमें पाककरे फिर पीसकर एकजौंके प्रमाण इसरसको सहतके साथ खानेसे निस्सन्देह घो[illegible] शीतज्वरका नाशहोताहै ॥ ३३४ ॥

पारदंगन्धकञ्चैव तुल्यञ्चदरदंविषम्। विषादष्टगुणंयोज्यं मरिचंविश्वभेषजम् ॥ अ[illegible] गन्धाथविजयाकासमर्दःकठिल्लकः । चतुर्णाञ्चरसैरेतैश्चूर्णान्येतानिमर्दयेत् ॥ तुलस्या

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्तुदलैःसार्द्धंभक्षितोरक्तिकामितः। हन्तिशीतज्वरंघोरं नाम्नायंशीतकेशरी ॥ ३३५ ॥

शीतकेशरीरस ॥

पारा, गन्धक, तूतिया, सिंगरफ और विष यह समभाग और विषसे अठगुनी मिर्च तथा सोंठ इन औषधियोंको असगन्ध, भंग, कसौंदी और करेला इन चारोंके रसमें घोटे एकरत्तीके प्रमाण यह शीत केशरीनाम रस तुलसीदलके साथ खानेसे घोर शीतज्वर को नाश करताहै ॥ ३३५ ॥

तालकंतुत्थकंताम्रंसूतगन्धकटङ्कणम्। सर्व्वमेतत्समंचूर्णंकारवेल्लीरसद्रवैः॥ दिनैकंमर्द्दयेत्तेनरसकर्द्दमकेनतु। ताम्रस्यभाजनस्यान्तर्लिंपेदर्द्धांगुलोन्मितम्॥ तत्पचेद्वालुकायन्त्रेयवायावत्स्फुटन्तिहि। शीतलंतद्विगृह्णीयात्ताम्रपात्रोदराद्भिषक्॥ शीतभंजीरसोमाषमात्रेमरिचसंयुतः। भक्षितःपर्णखण्डेननाशयेद्विषमज्वरान्॥ इति शीतभंजीरसः। रसेन्द्रचिन्तामणौ॥ ३३६ ॥

शीतभंजी रस ॥

हरताल, तूतिया, तांबा, पारा, गन्धक और सुहागा इन सब बराबर औषधियोंको पीसकर करेलेके रस में एक दिनतक खरल करके लुगदी बनाले फिर किसी तांबेके पात्रके भीतर आध अंगुल मोटा लेप करदे और बालुकायन्त्र में पाककरे यन्त्रपर जौ रखदे जब देखे कि जौ फूटगये तब उतार ले और शीतल होजानेपर तांबेके पात्रमें से औषध को छुडाले यह एकमाशे प्रमाण शीतभंजी रस मिर्च और पानके साथ खानेसे विषमज्वरों को नाशकरताहै ॥ ३३६ ॥

तालकोदरदोद्भूतःपारदोगन्धकःशिला। क्रमाद्भागार्द्धरहितंकारवेल्यम्बुमर्दितम्॥ अनेन[illegible]प्रमाणेनताम्रपात्रंप्रलेपयेत्। अधोमुखंदढेभाण्डेतन्निरुध्याथपूरयेत्॥ चुल्यां बा[illegible]घस्रमग्निंप्रज्वालयेदधः। शीतंसंचूर्ण्यमाषोऽस्यनागवल्लीदलेस्थितः॥ भक्षितो[illegible]ःसार्द्धंसमस्तविषमज्वरान्। शीतदाहादिकांहन्तिपथ्यंशाल्योदनम्पयः॥ इति [illegible]जीरसः। शीतज्वरादिविषमज्वरेषुरसरत्नप्रदीपे॥ ३३७ ॥

दूसरा शीतभंजी रस ॥

हरताल ४ भाग सिंगरफ से निकालाहुआ पारा २ भाग गन्धक १ भाग और मैनसिल आधा [illegible]ग इनसब औषधियों को करेले के रस में मर्दन करे और इन्हीं औषधियों के बराबर तांबेके पत्रों [illegible] सब पिसीहुई औषधियों का लेप करदे फिर किसी पात्रमें इनको रखकर दूसरे पात्रसे बन्दकरदे [illegible]र संधियों पर लेपकरदे फिर बालुकायन्त्र में उसके नीचे एक दिनतक आंचदे और शीतल हो जाने पर चूर्णकर एक उर्द के प्रमाण यह रस पान और मिर्च के साथ खाय यह शीत दाहादिक सम्पूर्ण विषमज्वरोंको नाशकरताहै इसमें दूध भातका पथ्य करनाचाहिये ॥ ३३७ ॥

कट्फलंत्रिफलादारुचन्दनंसपरूषकम्। कटुकापद्मकोशीरंविपचेत्कर्षकञ्जले॥ त्रि[illegible]षदाहतृष्णाघ्नंपानमात्रेप्रपूजितम्। दीर्घकालज्वरार्त्तानामेतत्स्याद्मृतोपमम्॥ कर्षकट्फलाद्युशीरान्तानांसमुदितानांजलेप्रस्थमितेविपचेत्। अर्द्धशेषंकट्फलादिपानंतृष्णायांदाहेच॥ ३३८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तृषा और दाहमें कट्फलादिपान ॥

कायफल, हड, बहेडा, आंवला, देवदारु, चन्दन, फालसा, कुटकी, पद्माक, खस इनसब मिलीहुई एक तोले औषधियोंको लेकर चौंसठ तोले जल में परिपाककरने से जब आधा रहजाय तब लेले यह पान करनेसे त्रिदोष, दाह, तृषा इनको नाश करता है और बहुत कालके पुराने ज्वरवालोंको अमृत के समान है ॥ ३३८ ॥

सन्निपातेतुदाहार्त्तंयःसिञ्चेच्छीतवारिणा। आतुरःसकथंजीवेद्भिषग्वासकथम्भवेत्॥ एषसन्निपातिनोदाहेशीताम्बुशेकनिषेधोरुग्दाहादन्यत्रतत्रवाप्यवगाहनस्योक्तत्वात्॥३३९॥

सन्निपातमें दाहसे पीडित मनुष्यको जो शीतल जलसे सींचता है वह वैद्य नहीं होसक्ताहै और वह रोगी नहीं जीसक्ताहै सन्निपातवालेको दाहमें शीतल जलसे सींचनेका यह निषेध रुग्दाह सन्निपातको छोडकर अन्यसन्निपातोंमें जाननाचाहिये क्योंकि रुग्दाहमें वापी का स्नान लिखा है ॥ ३३९ ॥

अथान्नमाह ॥

दुःस्पर्शगोक्षुरक्षुद्रासिद्धमाहारमर्पयेत्। दोषशान्तिबलाग्न्यर्थंत्रिदोषज्वरिणेभिषक्॥ दुःस्पर्शोयवासःआहारमुचितमन्नम्। लाजसक्तून्समश्नीयात्सैन्धवेनसमन्वितान्। तेचजीर्यन्त्यविघ्नेनज्वरीजीवेत्तदाध्रुवम्॥ इतिकेचित्॥ रक्तपित्तहितत्वेनतृषादाहज्वरेषुच। लाजानांशक्तवःशीतानेवतेऽत्रहितामताः॥ पाचनोदीपनःस्वेद्योलाजमण्डोयतःस्मृतः। दशमूलादिसंसिद्धःसन्निपातज्वरेहितः॥ ३४०॥

सन्निपातवालेको देनेके योग्य अन्न ॥

सन्निपातवालेको दोषकी शांतिके लिये और बल तथा अग्निकी वृद्धिके लिये जवासा गोखरू और भटकटैयाके द्वारा सिद्ध अन्न खानेकोदे कोई कहते हैं कि ज्वरवाला सैंधवयुक्त खीलके [illegible]जाय और वह जो सुखपूर्वक पचजांय तो रोगी अवश्यजीताहै खीलों के सत्तू शीतल होतेहैं इस[illegible]ह रक्तपित्त, तृषा और दाहयुक्त ज्वरमें हितकारी हैं परन्तु सन्निपातज्वरमें नहीं खीलोंकामांड[illegible]न पाचन और स्वेदकारी होताहै इसलिये दशमूल आदिकोंके क्वाथ के द्वारा सिद्ध कियाहुआ [illegible]का मांड देना हितहै ॥ ३४० ॥

सन्निपातज्वरीयस्तुकम्पतेप्रलपत्यपि। किंचिदेवनजानातिचिकित्सातस्यकथ्यते अभ्यञ्जयेत्पुराणेनसर्पिषापूर्वमेवतम्। वलारास्नागुडूच्याद्यैस्तैलैश्चपरिषेचयेत् वर्त्तकोवर्त्तिकालावो वार्त्तीकास्तेतित्तिरिःशशः। कुलिंगश्चरसेनैषां तर्पयेतयथानलम् वर्त्तकःवटेरि इतिलोके। वर्त्तिकावटे इतिलोके। वार्त्तीकोवात चटकेति निघण्टुः। व[illegible]रा इतिलोके। कुलिंगःगवरैआ इतिलोके॥ सन्निपातेक्षुधार्त्तंयो भोजयेत्पिशितोदनम्। सकथंभिषगाख्यन्तु लभतेमनुजाधमः॥ ३४१॥

जो सन्निपात ज्वरवाला कांपता हो अनर्थक वचन कहताहो और संज्ञारहितहो उसकोपहले पुराने घीसे मर्दन करके बरियारा रासना और गिलोय आदिके तेलसे सींचे फिर बटेर बटई लवा बात चटक तीतर खरगोश और गौरैया इनके मांसकेरससे, अग्निके बलके अनुसार तृप्तकरावे सन्निपातज्वरमें भूखे रोगीको जो वैद्य मांसकेसाथ भात खिलाताहै वह अधम मनुष्य वैद्यनामको कैसे पासक्ताहै ॥ ३४१॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ वातोल्बणसन्निपातज्वरस्य चिकित्सा ॥

पञ्चमूलीकषायन्तु दद्याद्वातोल्बणेज्वरे । भृशोष्णंवासुखोष्णंवा दृष्ट्वादोषबलाबलम् । पञ्चमूलीमहतीप्रथमप्राप्तायास्त्यागेवचनाभावात् ॥ ३४२ ॥

वातोल्बण सन्निपात की चिकित्सा ॥

अधिक वातवाले सन्निपात में बडे पंचमूल का क्काथ दोषों के बलके अनुसार बहुत अथवा थोडा उष्ण पान करावै ॥ ३४२ ॥

अथ पित्तोल्बणसन्निपातज्वरस्यचिकित्सा ॥

परूषकञ्चत्रिफलादेवदारुचकट्फलम् । चन्दनंपद्मकंचैव तथाकटुकरोहिणी ॥ पृष्ठिपर्णीशृतंत्वेतिरूषितंशीतलंजलम् । पित्तोत्तरेनृणामेतत्सन्निपाताचिकित्सितम् ॥ परूषादिक्काथः ॥ ३४३ ॥ पित्तोल्बण सन्निपात की चिकित्सा ॥

फालसा, त्रिफला, देवदारु, कायफल, लालचन्दन, पद्माक, कुटकी और पृष्ठपर्णी इन औषधियों का क्काथ बासी करके शीतल पान करने से पित्तोल्बण सन्निपात का नाशहोताहै इति परूषादि क्काथ ॥ ३४३ ॥

किराततिक्तकंमुस्तंगुडूचीविश्वभेषजम् । पाठोदीच्यंमृणालञ्चशृतंपित्ताधिकेपिबेत् ॥ इतिकिराताादिसप्तकम् ॥ ३४४ ॥

चिरायता, मोथा, गिलोय, सोंठ, पाठा, सुगन्धबाला और कमल की डंडी इनका क्काथ अधिक पित्तवाले सन्निपात में पीना चाहिये इति किराताादि सप्तक ॥ ३४४ ॥

अथ कफोल्बणसन्निपातज्वरस्यचिकित्सा ॥

बृ[illegible]पौष्करंभार्ङ्गीशटीशृंगीदुरालभा । वत्सकंस्यतुबीजानिपटोलंकटुरोहिणी ॥ बृहत्[illegible]गणःशस्तःसन्निपातकफोत्तरे ॥ श्वासादिषुचसर्व्वेषुहितःसोपद्रवेष्वपि ॥ (इति बृह[illegible]ादिः) ॥ ३४५ ॥ कफोल्बण सन्निपात की चिकित्सा ॥

[illegible]दोनों भटकटैया, पुष्करमूल, भारंगी, कचूर, काकडासिंगी, जवासा, इन्द्रजौ, परवल और कुटकी [illegible] बृहत्यादि गणका क्काथ श्वासादिक सब उपद्रवों सहित अधिक कफवाले सन्निपातज्वर में श्रेष्ठ [illegible] इति बृहत्यादि क्काथ ॥ ३४५ ॥

अथ वातपित्तोल्बणसन्निपातज्वरचिकित्सा ॥

[illegible]त्तहरंवृष्यंकनीयस्पञ्चमूलकम् । तत्क्काथोमधुनाहन्तिवातपित्तोल्बणंज्वरम् ३४६

वात पित्तोल्बणसन्निपातकी चिकित्सा ॥

छोटा पंचमूल, वात पित्तनाशक और पुष्टिकारी होताहै इसलिये इसका क्काथ सहत डालकर पीने से अधिकवात पित्तवाले सन्निपातका नाश करताहै ॥ ३४६ ॥

अथ वातश्लेष्मोल्बणसन्निपातज्वरचिकित्सा ॥

किराततिक्तकम्मुस्तंगुडूचीविश्वभेषजम् । चातुर्भद्रकमित्याहुर्व्वातश्लेष्मोल्बणे ज्वरे ॥ चतुर्भद्रकःक्काथः ॥ ३४७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वात कफोल्बण सन्निपातकी चिकित्सा ॥

चिरायता, मोथा, गिलोय और सोंठ इन औषधियोंकाक्काथ अधिक वात कफवाले सन्निपात में देनाचाहिये इति चातुर्भद्रकक्काथ ॥ ३४७ ॥

अथ पित्तश्लेष्मोल्बणसन्निपातज्वरचिकित्सा ॥

पर्पटःकट्फलंकुष्ठमुशीरंचन्दनंजलम् । नागरंमुस्तकंशृङ्गीपिप्पल्येषांशृतंहितम् ॥ तृष्णादाहाग्निमान्द्येषुपित्तश्लेष्मोल्बणेज्वरे । पर्पटादिक्काथः ॥ ३४८ ॥

पित्त कफोल्बण सन्निपातकी चिकित्सा ॥

पित्तपापडा, कायफल, कूट, खस, लालचन्दन, सुगन्धबाला, सोंठ, मोथा, काकडासिंगी और पीपल इन औषधियोंका क्काथ. तृषा, दाह, मन्दाग्नि और अधिक पित्त कफवाले सन्निपातमें हितहै इति पर्पटादि क्काथ ॥ ३४८ ॥

अथ वातपित्तश्लेष्मोल्बण सन्निपातज्वरचिकित्सा ॥

नागरंधान्यकंभार्ङ्गीपद्माकंरक्तचन्दनम् । पटोलःपिचुमन्दश्चत्रिफलामधुकंबला ॥ शर्कराकटुकामुस्तंगजाह्वाव्याधिघातकः । किराततिक्तममृतादशमूलीनिदिग्धिका ॥ योगराजोनिहन्त्येषसन्निपातंत्रिकोल्बणम् । सन्निपातसमुत्थानंमृत्युमप्यागतंजयेत् ॥ गजाह्वागजपिप्पली । व्याधिघातकिरवालाकिराततिक्तंद्वैगुणयार्थपृथक्पठितम् ॥ इति योगराजक्काथः ॥ ३४६ ॥

वात पित्त कफोल्बण सन्निपातकी चिकित्सा ॥

सोंठ, धनियां, भारंगी, पद्माक, लालचन्दन, परवल, नींब, त्रिफला, मुलहठी, बरियारा, शक्कर, कुटकी, मोथा, गजपीपल, अमलतास, चिरायता, गिलोय, दशमूल और भटकटैया इन औषधियों के द्वारा क्काथ बनाकर पीनेसे तीनों दोषोंकी अधिकतासे युक्त सन्निपातज्वर का नाश होताहै अथ सन्निपात के द्वारा आईहुई मृत्युको भी जीतताहै इतियोगराजक्काथ ॥ ३४६ ॥

अथ प्रवृद्धमध्यहीनवातादिजनितसन्निपातज्वराणां चिकित्सामाह ॥

प्रवृद्धंकर्षयेद्दोषंक्षीणंसंवर्द्धयेद्भिषक् । चिकित्सेयंविधातव्यादोषयोर्वृद्धहीनयोः । अस्यमर्थः । प्रवृद्धंदोषंकर्षयेत् । तत्क्षयहेतुभिरौषधान्नविहारैःकृशीकृत्यसमीकुर्य्यात् क्षीणंदोषंसंवर्द्धयेत् । तद्वृद्धौहेतुभिरौषधान्नविहारैर्व्वर्द्धयित्वासमीकुर्य्यादित्यर्थः । प्रवृद्धेशमितेदोषेमध्यमःस्वयमेवहि । शान्तिंयातिशमन्नीतेऽनुबन्धेत्वनुबन्धवत् । अस्यायमर्थः । वर्षासुवायुरनुबन्ध्यःप्रधानमितियावत् । पित्तश्लेष्माणावनुबन्धौवायोरनुचरौ ॥ शरदिपित्तमनुबन्ध्यःकफोऽनुबन्धः । वसंतेकफोऽनुबंध्योवातपित्तेऽनुबन्धौ । तत्रयथानुबन्ध्येप्रशमंनीतेऽनुबन्धःस्वयमेवशान्तिंयाति ॥ तथाप्रवृद्धेदोषेशमितेह्रासयित्वासमीकृतेमध्यमोदोषः । हिनिश्चयेनस्वयमेवशान्तिंयातिप्रकृतोभवतीत्यर्थः ॥ ३५० ॥

अधिक मध्य तथा हीन वातादि दोषवाले सन्निपातोंकी चिकित्सा ॥

जो दोष अधिक होय उस दोषको उसी दोषके क्षीण करनेवाली औषध अन्न तथा विहारकेद्वारा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्षीण करके सम ... और जो दोष क्षीणहोय उसको उसके बढ़ानेवाली औषध अन्न तथा विहारके द्वारा बढ़ाकर समकरे जैसे प्रधानके शान्त होजानेपर अप्रधानभी शान्त होजाताहै उसीप्रकार बढ़ हुए दोषके शान्त होजानेपर मध्यम दोष आपही शान्त होजाताहै इसका यह तात्पर्य्यहै कि वर्षाकाल में वायु प्रधान और पित्त तथा कफ उसके अनुचर अर्थात् अप्रधान शरद् ऋतुमें पित्त प्रधान और वात तथा कफ अप्रधान वसन्तऋतुमें कफप्रधान और वात तथा पित्त अप्रधान इन ऋतुओं में जैसे प्रधानके शान्त होजानेपर अप्रधान शान्तहोजातेहैं उसीप्रकार बढ़ेहुए दोषके शान्तहोकर समहोजा-नेपर मध्यम दोष निस्संदेह आपही शान्त होजाताहै ॥ ३५० ॥

अथ शीतांगादीनांसन्निपातज्वराणांत्रयोदशानांविशिष्टापिचिकित्सा ॥

तत्रशीताङ्गस्यचिकित्सामाह ॥

भास्वन्मूलंजीरकव्योषभार्ङ्गीव्याघ्रीशुण्ठीपुष्करंगोजलेन । सिद्धंसद्यःशीतगात्रार्त्ति मोहश्वासश्लेष्मोद्रेककासान्निहन्ति ॥ भास्वन्मूलंअर्कमूलम् ॥ कर्कोटिकाकन्दरजःकुलत्थः कृष्णावचाकट्फलकृष्णजीरैः । किराततिक्तानलकट्फलाम्बुपथ्याभिरुद्वर्त्तनमत्रशस्त म् ॥ कर्कोटिकाकन्दरजःखेखसामूलरजः । रसविषमरिचमहेशप्रियफलभस्मैकभूचत र्वसुभिः । भागैर्म्मितमुद्धूलनमिदमतिस्वेदशैत्यहरम् ॥ ३५१ ॥

शीतांगादिक तेरहसन्निपातोंकी विशेष चिकित्सा कहीजातीहै ॥

शीतांगकी चिकित्सा ॥

आककी जड, जीरा, त्रिकटु, भारंगी, भटकटैया, सोंठ, पुष्करमूल इन औषधियोंको गोमूत्रके द्वारा सिद्ध करके सेवन करनेसे शीघ्रही शीतांग, मोह, श्वास, कफकी वृद्धि और खांसीका नाश होताहै बांझ ककडीकी जडका चूर्ण, कुलथी, पीपल, वच, कायफल, काला जीरा, चिरायता, चीता, कायफल, सु-गंधबाला और हड इन औषधियोंको पीसकर शरीरमें मलनेसे हित होताहै पारा १ भाग विष २ भाग मिर्च ४ भाग और धतूरेका फल ८ भाग इन औषधियोंको शरीरमें मलनेसे अत्यन्त स्वेद और शी-तका नाश होताहै ॥ ३५१ ॥ अथ तंद्रिकस्यचिकित्सा ॥

... क्षुद्रामृतापौष्करनागराणि श्रृतानिपीतानिशिवायुतानि । शुण्ठीकणागस्तिरसोषणा ... मरिचकचपञ्चपचावचारुक्क्रिमिहरनागरशर्व्वरीगवा ...ननस्येनतन्द्राविजयोल्बणानि ॥ मरिचकचपञ्चपचावचारुक्क्रिमिहरनागरशर्व्वरीगवा ...क्ष्यः । छगलकजलकलिकतानितान्तंनसिनिहितानन्नुतन्द्रिकंजयन्ति ॥ कचः बालकः पञ्चपचादारुहरिद्रा । रुक् कुष्ठम् कृमिहरःविडंगःशर्व्वरी हरिद्रा गवाक्षी इन्द्रवारुणी ॥ नसिनानासिकायाम् । तुरंगलालालवणोत्तमेन्दुमनःशिलामागधिकामधूनि ॥ नियोजिता न्यक्षिणिनिश्चितञ्चतन्द्राञ्चनिद्राञ्चनिवारयन्ति । लवणोत्तमंसैन्धवं इन्दुः कर्पूरः ॥ निद्रामतिनिद्राम् ॥ ३५२ ॥

तंद्रिककी चिकित्सा ॥

भटकटैया, गिलोय, पुष्करमूल और सोंठ इनऔषधियों का क्वाथ हडडालकर पीना चाहिये सोंठ, पीपल, मिर्च और अगस्तके फूलकारस इनको मिलाकर नासलेनेसे तंद्राका नास होताहै मिर्च, सुगन्धबाला, दारुहल्दी, वच, कूट, बायबिडंग, सोंठ, हल्दी और इन्द्रायण इनऔषधियोंको बकरेके म-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रमें पीसकर न सलेनेसे तंद्राका नाशहोताहै घोडेकीलार, सेंधानोन, कपूर, मैन ल और पीपल इन औषधियों ो सहत के साथ नेत्रोंमें लगानेसे निस्सन्देह तन्द्रा और अ न्त निद्राका नाश होताहै ॥ ३५२ ॥

अथ प्रलापकस्यचिकित्सा ॥

सतगरवरतिक्तारेवताम्भोदतिक्ता नलदतुरगगन्धाभारतीहारहूराः ॥ मलयजदशमूलीशङ्खपुष्पीसुपक्वाःप्रलपनमपहन्युःपानतोनातिदूरात् ॥ वरतिक्तोऽत्रपर्पटीनतुमहानिम्बस्तन्त्रान्तरानुरोधात् नलदं लामज्जकं तदलाभादुशीरंग्राह्यम् भारतीब्राह्मी वरम्भीइतिलोके ॥ हारहूराद्राक्षा ॥ सान्त्वनैरञ्जनैस्तीक्ष्णैर्नस्यैस्तिमिरसेवनैः । सर्व्वतोविकृतंचित्तमस्यप्रकृतिमानयेत् ॥ ३५३ ॥

प्रलापकी चिकित्सा ॥

तगर,पित्तपापडा,अमलतास,मोथा,कुटकी,लामज्जक,असगन्ध,ब्राह्मी,दाख,चन्दन, दशमूलऔर शंखपुष्पी इनऔषधियोंका क्काथ पानकरनेसे शीघ्रही प्रलापक,सन्निपातका नाश होताहै(तसल्ली)अंजन तीक्ष्ण नस्य और अन्धकारका सेवन इनसबसे सबप्रकारकरके बिगडेहुए चित्तको प्रकृतिमेंलावे३५३॥

अथ रक्तष्ठीविनश्चिकित्सा ॥

रोहिषधन्वयवासकवासापर्पटगन्धलताकटुकाभिः । शर्करयासममेषकषायःक्षतजष्ठीविनउग्रदुपायः ॥ रोहिषम् सुगन्धतृणविशेषः । रोहिसइतिलोके । गन्धलता प्रियंगू ॥ पद्मकचन्दनपर्पटमुस्तं जातीजीवकचन्दनवारि । क्लीतकनिम्बयुतंपरिपक्वंवारिभवेदिहशोणितहारि ॥ क्लीतकं यष्ठीमधुकम् । मधुकमधूकपरूषकपाथश्चन्दनपल्लवदारुसनाथः ॥ श्रीपर्णीफलशीतकषायःसासितइहस्यादस्रजयाय । इहरक्तष्ठीविनिपल्लवपत्रकं पाथः वालः श्रीपर्णी गम्भारी ॥ ३५४ ॥

रक्तष्ठीवीकी चिकित्सा ॥

रोहिष (सुगन्धितृणविशेष) जवासा, बांसा, पित्तपापडा, प्रियंगु और कुटकी इनऔषधियों क्काथ शक्कर डालकरपीनेसे क्षतसेहुए रक्तष्ठीवी सन्निपातका नाश होताहै पद्माक, लालचन्दन,पित्तपापडा, मोथा, चमेली, जीवक, श्वेतचंदन, सुगन्धबाला, मुलहठी और नींब इनऔषधियोंके क्काथके पीनेसे रक्तष्ठीवी सन्निपातके रुधिरका नाश होताहै मुलहठी, महुआ, फालसा, सुगन्धबाला, लालचंदन, तेजपात, देवदारु, गंभारी इनऔषधियोंका शीतल कषाय शक्करडालकर पीनेसे रक्तष्ठीवी सन्निपातका नाश होता है ॥ ३५४ ॥

अथ भुग्ननेत्रस्यचिकित्सा ॥

तुरंगगन्धालवणोग्रगन्धामधूकसारोषणमागधीभिः । वस्ताम्बुशुण्ठीलशुनान्विताभिर्नस्यंकृशंभुग्नदृशंकरोति ॥ ३५५ ॥

भुग्ननेत्रकी चिकित्सा ॥

असगन्ध, सेंधानोन, वच, महुएकासाग, मिर्च, पीपल, सोंठ और लहसन इनऔषधियोंको बकरेके मूत्रमें पीसकर नासलेनेसे भुग्ननेत्र सन्निपातका नाश होताहै ॥ ३५५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथाभिन्यासस्यचिकित्सा ॥

शृंगीभार्ङ्ग्यभयाजाजीकणाभूनिम्बपर्पटाः। देवदारुवचाकुष्ठयासकट्फलनागरैः॥ मुस्तधान्याकतिक्तेन्द्रयवपाठाहरेणुभिः। हस्तिपिपल्यपामार्गपिप्पलीमूलचित्रकैः॥ विशालारग्वधारिष्टशटीवाकुचिकाफलैः। विडंगरजनीदार्वीयवानीद्वयसंयुतैः॥ समांशैर्विहितःक्काथोहिङ्ग्वार्द्रकरसान्वितः। अभिन्यासज्वरंघोरंहन्तितन्द्राञ्चतत्क्षणात्॥ प्रमेहंकर्णशूलञ्चसन्निपातांस्त्रयोदश। हिक्कांश्वासञ्चकासञ्चतथासर्व्वानुपद्रवानितिशृंग्यादिक्काथः॥ ३५६॥

अभिन्यास की चिकित्सा॥

काकडासिंगी, भारंगी, हड, कालाजीरा, पीपल, चिरायता, पित्तपापडा, देवदारु, वच, कूट, जवासा, कायफल, सोंठ, मोथा, धनियां, कुटकी, इंद्रजौ, पाठा, रेणुका, गजपीपल, लटजीरा, पीपलामूल, चीता, इंद्रायण, अमलतास, नींब, कचूर, बकुची, बायबिडंग, हल्दी, दारुहल्दी दोनोंअजवाइन इनसब बराबर, औषधियोंका क्काथ हींग और अदरकका रस मिलाकर पीनेसे घोर अभिन्यास, तंद्रा, प्रमेह, कानकीपीडा तेरह सन्निपात, हिचकी, श्वास, खांसी और सबप्रकारके उपद्रवोंका नाशहोताहै इतिशृंग्यादिक्काथ ३५६

अथ जिह्वकस्यचिकित्सा॥

किराततिक्ताकुलकृत्कुलिंजंकर्चूरकृष्णाकटुतैलयुक्तः॥ अम्लद्रवःसंशमयेद्रसज्ञादोषांस्तुतोदाशरथिर्यथात्र॥ आकुलकृत्अकरकरहाइतिलोके। अम्लद्रवःबीजपूरादिरसःइतिकिरातादिकवलः॥ ३५७॥

जिह्वककी चिकित्सा॥

चिरायता, अकरकरहा, इन्द्रजौ, कचूर, पीपल और कडुआतेल इनसबको निंबूआदिके रस में मिलाकर कवलग्रहण करने से जैसे स्तुति कियेगये श्रीरामचन्द्रजी दोषोंको नाशकरते हैं उसीप्रकार यहभी दोषोंको नाशकरताहै इति किरातादिकवल॥ ३५७॥

शालूरपर्णीमालूरमूलामयमधुप्लुता। शङ्खपुष्पीसहितासेव्यावाचांविशुद्धये (पर्ण्यादिः अवलेहः) शालूरपर्णीब्राह्मीमालूरमूलंबिल्वमूलंआमयःकुष्ठम्॥ ३५८॥

ब्राह्मी, बेलकीजड, कूट और शंखपुष्पी इनऔषधियोंको पीसकर सहतके साथ चाटने से वाणी शुद्धहोती है इति शालूरपर्ण्यादि अवलेह॥ ३५८॥

क्षुद्रानागरपुष्कराम्रतलताब्राह्मीवचासुव्रता भार्ङ्गीवासकयासतोयसुरसाक्काथोजयेज्जिह्वकम्। विश्वावर्मविभावरीयुगवरावत्सादनीवारिद व्याघ्रीनिम्बपटोलपुष्करजदारुग्दारुभिर्वाकृतः॥ पुष्करम्पुष्करंमूलं तथाचामरसिंहः। मूलेपुष्करकाश्मीरपद्मपत्राणिपौष्करे। सुव्रतागन्धपलाशीकाशमीरेप्रसिद्धा। सुरसातुलसीविश्वादियोगान्तरवर्मः पर्पटःविभावरीयुगंहरिद्रादारुहरिद्राच। वरात्रिफला। वत्सादनी गुडूची। व्याघ्रीकण्टकारिका॥ ३५९॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भटकटैया, सोंठ, पुष्करमूल, गिलोय, ब्राह्मी, वच, गन्धपलाली, भारंगी, बां..., जवासा, सगन्धबाला और तुलसी इन औषधियोंका क्वाथ जिह्वक सन्निपात को नाशकरताई सोंठ, पित्तपापडा, हल्दी, दारुहल्दी, त्रिफला, गिलोय, मोथा, भटकटैया, नींब, परवल, पुष्करमूल, कूट और देवदारु इनका क्वाथ जिह्वक सन्निपातका नाश करताहै ॥ ३५९ ॥

अथ सन्धिकस्यचिकित्सा ॥

शटीसुरतरूत्तमास्थविरदारुरास्नाःसमाः सनागरसुधान्विताःपिबशतावरीसंयुताः । मृदुज्वलनपाचिताःसहपुरेणसन्धिग्रह व्यथापहतयेवृथाशिशिरसेवनंमाकृथाः ॥ उत्तमा त्रिफलास्थविरदारुविधाराइतिलोके । सुधागुडूचीपुरोगुग्गुलुः । वचाकवचकच्छुरास हृचरामृताभंगुरा । सुराह्वघननागराऽतरुणदारुरास्नापुराः । वृषातरुणभीरुभिःसह भवन्तिसन्धिग्रह व्यथोरुजडिमक्लमभ्रमणपक्षघातद्रुहः ॥ कवचःपर्पटकःकच्छुरायवासः । भंगुराअतिविषासुराह्वोदेवदारु । अतरुणदारुवृद्धदारुपुरोगुग्गुलुः । वृष बृहद्दन्तीएरण्डवत्पत्रविटपा । तदलाभेदन्तीचग्राह्यासमानगुणत्वात् ॥ तरुणःएरण्डःभीरुः शतावरी॥ सुरदारुशटीसुधालतासुवहाशुण्ठियुताःशृताजलेनासपुराःशमयन्तिसेविताः सततंसन्धिगतंसदागतिम् ॥ (सुवहारास्ना)मुस्तैरण्डप्राणदाबाणदारुछिन्नाशास्नाभारु कर्चूरतिक्ताः । वासाविश्वापञ्चमूलाश्वगन्धा हन्युर्मन्यास्तम्भसन्धिग्रहार्त्तीः । प्राणदा हरीतकीबाणःनीलपुष्पसहचरः । तिक्ताकटुकी ॥ ३६० ॥

संधिग की चिकित्सा ॥

कचूर, देवदारु, त्रिफला, बिधारा, रासना सोंठ, गिलोय और शतावर इनऔषधियों का मन्द अग्नि में क्वाथ करके गूगल डाल संधिग सन्निपात में पीडाके नाशकरने के लिये पीनाचाहिये और शीत का सेवन न करना चाहिये अथवा वच, पित्तपापडा, जवासा, झिंटी, गिलोय, अतीस, देवदारु, मोथा, सोंठ, बिधारा, रासना, गूगल, बडीदन्ती (इसके न मिलने में दन्ती लेनीचाहिये) रेंडी और शतावर इनऔषधियोंका क्वाथ संधिग्रह, पीडा, पेट का भारीपन, ग्लानि, भ्रान्ति और पक्षाघातको नाश...ताहै अथवा देवदारु, कचूर, गिलोय, रासना और सोंठ इनका क्वाथ गूगल डालकर पीनेसे सन्धियों में ...ी हुई वातकी पीडा का नाशकरताहै अथवा मोथा, रेंडी, हड, झिंटी, देवदारु, गिलोय, रासना, शता..., कचूर, कुटकी, बांसा, सोंठ, पंचमूल और असगन्ध इन औषधियों का क्वाथ सेवन करने से ग... पीछे की नसका जकडना और संधिग्रहका नाश होताहै ॥ ३६० ॥

अथान्तकेचिकित्सा ॥

इहापहायव्रतमुष्णवारिज्वरारियूषादिगदापहारि । ज्वरच्छिदंजीवितदञ्चनित्यंमृत्युञ्जयञ्चेतसिचिन्तयस्व ॥ इहअन्तकेव्रतंलङ्घनादिनियमम् । कर्पूरप्रकरावदात्तवपुषंसंयोगमुद्राजुषम् । शश्वद्भक्तजनेषुभावुकजुषंभालस्फुरच्चक्षुषम् ॥ सम्पूर्णामृतकुम्भसम...तकरंशुभ्राक्षमालाधरम् । पिंगोतुंगजटाकलापरुचिरंचन्द्रार्द्धमौलिंस्तुहि ॥ भिषग्भि...तिनिर्णीतंसन्निपातेऽन्तकाभिधे । भेषजंजाह्नवीनीरंवैद्योगोविन्दएवहि ॥ ३६१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अन्तक की चिकित्सा ॥

इस अन्तक सन्निपात में लंघन गरम जल और ज्वरनाशक यूष आदिकों को छोडकर ज्वरके नाश करनेवाले और जीवन के देनेवाले श्रीमृत्युंजय का ध्यान करना चाहिये कपूर के समानश्वेत वर्ण वाले संयोग मुद्राको धारण किये हुए निरंतर भक्तजनों के मंगल करनेवाले ललाटमें दीप्तिमान् नेत्रवाले अमृतसे भरेहुए घटको हाथमें धारण कियेहुये रुद्राक्षपहरेहुए पिंग्लवर्ण बडी २ जटाओंके समूहसे सुंदर औ अर्द्धचंद्रको मस्तकमें धारण कियेहुये श्री शिवजी महाराज का ध्यानकरो वैद्यलोगोंने अन्तक नाम सन्निपात में यह चिकित्सा कही है कि औषध तो गंगाजी का जल और वैद्य नारायण हैं ॥ ३६१ ॥

अथ रुग्दाहचिकित्सा ॥

उशीरचंदनोदीच्यद्राक्षामलकपर्पटैः । शृतंशीतंजलंदद्याद्दाहतृड्ज्वरशांतये ॥ षडंगपानीयम् । ससितोनिशिपर्युषितः प्रातर्द्धान्याकतण्डुलक्काथः।पीतःशमयत्यचिरादन्तर्दाहज्वरम्पैत्तम् । धान्याकतन्दुलाःकण्डितधान्याकबीजानि । इतिधान्याकक्काथः।पथ्यातैलघृतक्षौद्रैर्लिह्याद्दाहविनाशिनीम् । पथ्यातैलघृतक्षौद्रैरित्यत्रनसमुच्चयः ॥ तेनकेवलेनमधुनापिलिह्यात् । पथ्यावलेहः । प्रशमयतिदाहमचिराद्दधियुक्तकर्कन्धुपल्लवैर्लेपः ॥ लेपोहिमकरमलयजानिम्बदलैस्तक्रपिष्टैर्वा । हिमकरःकर्पूरः । तथाचघनसारश्चन्द्रसंज्ञ इत्यमरः ॥ उत्तानसुप्तस्यगम्भीरताम्रकांस्यादिपात्रेनिहितेचनाभौ । शीताम्बुधाराबहुलापतन्तीनिहन्तिदाहंत्वरितंज्वरञ्च ॥ शीताम्भसातुशतशश्चविलोडितेन गव्येन चन्दनयुतेनघृतेनदिग्ध्वा । दाहज्वरीसकमलोत्पलमाल्यधारी क्षिप्रंविशेत्सलिलकोष्ठमनल्पकालम् ॥ काञ्जिकार्द्रपटेनावगुण्ठनंदाहनाशनम् । अथगोतक्रसंस्विन्नशीतलीकृतवाससाम् ॥ ३६२ ॥

रुग्दाह की चिकित्सा ॥

खस, लालचंदन, सुगंधबाला, दाख, आंवला और पित्तपापडा. इन औषधियों का क्वाथ शीतल करके देने से दाह,तृषा तथा ज्वरका नाश होताहै इतिषडंगपानीय॥ कुटेहुये धनियें के बीजोंको सायंकाल में भिजोकर प्रातःकाल क्वाथ करके शक्कर डालकर पीनेसे अंतर्दाह और पित्तज्वर का नाश होताहै इतिधान्याक क्वाथ॥हडको पीसकर तेल घी और सहत इनमेंसे किसीके साथ चाटनेसे दाह का नाश होताहै इतिपथ्यावलेह॥बेरके पत्तोंको दही के साथ लेपकरने से अथवा कपूर चंदन और नींबके पत्तों को मट्ठेके साथ पीसकर लेप करने से दाहका नाश होताहै रोगी को चित्त सुलाकर उस की नाभिपर गहरे तांबे अथवा कांसे आदिके पात्रको रखकर उसमें शीतल जलकी बडी धार छोडनेसे दाह और ज्वरका नाशहोताहै शीतल जलसे सैकडों बार धोये गये गौके घी में चंदन मिला के शरीर में लेप करके और कमल तथा कोकाबेलियों की मालाओं को पहर के दाहज्वरवाला शीघ्र ही जलसे भरेहुए हौज़ में प्रवेश करके बहुत देरतक उसी में रहै इससे दाहका नाश होताहै कांजी में भिगोये हुए वस्त्र के लपेटने से अथवा गौके मट्ठे में भिगोये हुए शीतल वस्त्र के लपेटने से दाह का नाश होताहै ॥ ३६२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथान्नमाह ॥

दाहवम्यर्दितंक्षामंनिरन्नंतृष्णयान्वितम् । शर्करामधुसंयुक्तंपाययेल्लाजतर्पणम् ॥ (लाजसक्तुरूपतर्पणम्) ॥ ३६३ ॥

दाहवालेको देनेके योग्य अन्न ॥

दाह तथा छर्दि से व्याकुल,क्षीण,लंघन किया हुआ और तृषित इनको शक्कर तथा सहत युक्त खीलोंके सतुओं से तृप्त कराना चाहिये ॥ ३६३ ॥

वाप्यःकमलहासिन्योजलयन्त्रगृहाःशुभाः । नार्य्यश्चन्दनदिग्धांग्योदाहेदैन्यहरा मताः ॥ ३६४ ॥

फूले हुए कमलवाली बावडी फव्वारे वाला घर और शरीर में चन्दन लगाये हुए स्त्री यह सब दाह की दीनता को दूर करतेहैं ३६४ ॥

मुक्तावलीचन्दनशीतलानांसुगन्धपुष्पाम्बरभूषितानाम् ।नितम्बिनीनांसुपयोधराणा मालिङ्गनान्याशुहरन्तिदाहम् ॥ प्रह्लादश्चास्यविज्ञायतास्त्रीरपनयेत्पुनः । हितञ्चभोजये दन्नंयेनाप्नोतिसुखंमहत् ॥ (प्रह्लादंकामकृतहर्षम्) ॥ ३६५ ॥

मोतियों की माला पहरने तथा चन्दन के लगाने से शीतल शरीरवाली सुगन्धित पुष्प तथा वस्त्रों से आभूषित नितंबवाली और सुन्दर स्तनयुक्त ऐसी स्त्रियों के आलिंगन करने से शीघ्रही दाहका नाश होताहै इस प्रकार उस पुरुषको कामकी वृद्धि होय तब स्त्रियोंको हटादे और ऐसेहित-कारी अन्नोंको भोजन करावे जिस्से उसको बहुत सुख होवे ॥ ३६५ ॥

अथ चित्तभ्रमस्यचिकित्सा ॥

कणोषणोग्रालवणोत्तमानिकरञ्जबीजंप्रमदामलानि । पथ्याक्षसिद्धार्थकहिंगुशुण्ठीयु तानिवस्ताम्बुविमिश्रितानि ॥ पिष्ट्वागुटीयंनयनेनिधेयाप्रचेतनेऽतिप्रथितान्वितार्था । चित्तभ्रमायस्मृतिभूतदोषंशिरोऽक्षिरोगभ्रमनाशहेतुः ॥ (वस्ताम्बुछागमूत्रं) कुम्भोद्भ वतरोरम्भोगुडविश्वकणान्वितम् । निहितंनसिनूनंस्याच्चित्तभ्रमविनाशनम् ॥ कुम्भो[illegible] वतरोरम्भःअगस्तिवृक्षत्वक्कल्करसः ॥ ३६६ ॥

चित्तभ्रमकी चिकित्सा ॥

पीपल,मिर्च,वच, सेंधानोन,करंजकेबीज,धतूरा,आंवला, हड, बहेडा, पलीसरसों, हींग और सौंठ इन औषधियों को समभाग लेकर बकरे के मूत्र में पीसके गोली बनावे इस गोलीको घिसकर नेत्र में लगाने से चैतन्यता होतीहै चित्तभ्रम, मृगी, भूतदोष, शिर तथा नेत्रके रोग और भ्रम यहसब इसके लगानेसे दूर होतेहैं अगस्त्यके वृक्षकी छालके कल्क का रस, गुड तथा पीपल युक्त नास लेने से चित्तभ्रम का नाश होताहै ॥ ३६६ ॥

मुरामूर्द्धजमेघाब्दमधूकमलयोद्भवैः । मरुत्तरुमधूनिमिश्रैःपुरपाणिजपांशुभिः ॥ लो लामञ्जकेलाभिर्धूपश्चित्तभ्रमापहः । ग्रहदोषहरःश्रीदःसौभाग्यकरउत्तमः॥मुराएकांगी-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

मूर्द्धजोबालाः। म[illegible]त्तरुदेवदारु। पुरःगुग्गुलःपाणिजःनखःपांशुःपर्पटकम्। लौहंअगुरु। लामज्जकम्उशीरवत्पीततृणविशेषःतदलाभेउशीरंग्राह्यम् ॥ ३६७ ॥

मरोडफली,सुगंधबाला,मोथा,महुआ,चंदन, देवदारु,गूगल, नखी, पित्तपापडा, अगर, लामज्जक और इलायची इन औषधियों को सहत के साथ चाटने से चित्तभ्रम तथा ग्रहदोषों का नाश और शोभा तथा सौभाग्य की वृद्धि होती है ॥ ३६७ ॥

मृद्वीकामरदारुमत्स्यशकलामुस्तामलक्योऽमृता पथ्यारेवतरामसेनकरजोराजीफलैःसंयुताः । हन्युश्चित्तरुजोऽथदर्दुरदलापाठापटोलीपयः पथ्यापर्पटराजवृक्षकटुकाशम्बूकपुष्टयःशृताः ॥ मृद्वीका द्राक्षा। मत्स्यशकलाकटुकी। आरेवतःआरग्वधः। रामसेनकः किराततिक्तकः। रजःपर्पटकः। राजीफलःपटोलः। अथ योगान्तरमाह। दर्दुरदलामण्डूकपर्णीसाच ब्राह्मी। मञ्जिष्ठाशोणकञ्चतथाप्यत्रब्राह्मीग्राह्या। यतःउक्तंद्रव्यगुणग्रंथे। ब्राह्मीमतिप्रदामेध्याज्वरहंत्रीरसायनी। ब्राह्मीवरम्भीतिलोकेपयःबालकम्। राजवृक्षःआरग्वधः। शम्बूकपुष्पीशंखपुष्पी ॥ ३६८ ॥

दाख,देवदारु,कुटकी,मोथा,आंवले,गिलोय, हड, अमलतास, चिरायता,पित्तपापडा और परवल यह सब औषध चित्तभ्रमको नाशकरती है दर्दुरदला (ब्राह्मी) पाठा परवल सुगन्धबाला हड पित्त-पापडा अमलतास कुटकी और शंखपुष्पी इन सब औषधियों का क्वाथ चित्तभ्रम सन्निपात को नाशकरताहै दर्दुरदला शब्दसे ब्राह्मी मजीठ और शोणक का ग्रहण कियाजाताहै परंतु यहां ब्राह्मी ही ग्रहण करनी चाहिये क्योंकि द्रव्य गुण ग्रंथमें कहाहै कि ब्राह्मी बुद्धिवर्द्धक मेधाकोहित ज्वर नाशक और रसायन होतीहै ॥ ३६८ ॥

अथ कर्णकस्यचिकित्सा ॥

प्रलेपस्तमस्तन्नयत्यन्तमेकःसमुद्रिक्तशोथश्चरक्तावशेषः। पक्वेचशस्त्रक्रियापूयजित्सा व्रणत्वंगतेचोचितातच्चिकित्सा। अयमर्थः। अत्यन्तंकार्णिकंएकःप्रलेपःअतस्तन्नाशन्नय[illegible]। तच्चिकित्साव्रणाच्चिकित्सा। निशाविशालामयमाणिमन्थदार्व्यंगुदीमूलकृतःप्रलेपः। [illegible]भाकरक्षीरयुतःप्रभावाद्व्यस्तःसमस्तोऽप्यथकार्णिकघ्नः ॥ कुलत्थःकट्फलंशुण्ठीका[illegible]वीचसमांसकैः। मुखोष्णैर्लेपनंकार्य्यङ्कर्णमूलेमुहुर्मुहुः॥ गैरिकंखटिनीशुण्ठीकट्फलार[illegible]वधैःसमैः। उष्णैःकांजिकसम्पिष्टैर्लेपःकर्णकमूलनुत् ॥ ३६९ ॥

कर्णक सन्निपातकी चिकित्सा ॥

कर्णमूल की थोडीसी सूजन को एक लेपही नष्ट कर देताहै बहुत बढ़जाने पर रुधिर निकलवाना चाहिये पकजाने पर शस्त्रके द्वारा पीब निकलवाना चाहिये और घाव होजानेपर घावकी चिकित्सा करनी चाहिये हल्दी, इंद्रायण, कूट, सेंधानोन, दारुहल्दी और इंगुदी की जड इन सब औषधियों में से एक एक अथवा संपूर्ण औषधियों को आकके दूधके साथ लेप करने से कर्णक सन्निपात का नाश होताहै कुलथी कायफल सोंठ और कालाजीरा इन सब औषधियों को बराबर लेकर कुछ गरम

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गरम वारंवार कर्ण मूल में लेपकरे गेरू खड़िया सोंठ कायफल और अमलतास इन औषधियों को कांजीमें पीसकर कुछ गरम लेप करने से कर्णमूल का नाश होताहै ॥ ३६९ ॥

शिग्रुराजिकयोःकल्कंकर्णमूलेप्रलेपयेत् । कर्णमूलभवःशोथस्तेनलेपेनशाम्यति । अशिशिरजलपरिमृदितंमरिचकणाजीरसिंधुजंत्वरितम् । नस्यविधिसेवितंननुकर्णकरुग्नाशकृद्गदितम् ॥ भार्ङ्गीजयापौष्करकण्टकारीकटुत्रिकोग्राघनकुण्डलीभिः । कुलीरशृङ्गीकटुकारसाभिःकृतःकषायःकिलकर्णकघ्नः॥भार्ङ्गीवभनेटीतिलोके । तदलाभेकण्टकारीमूलंग्राह्यम् । जयागनिआरीतिलोकेपौष्करंपुष्करमूलम् । उग्रावचा । कुण्डलीगुडूची । कुलीरशृंगीकर्कटशृंगी । रसारास्ना । दशमूलमत्स्यशकलाचपलात्रिफलामहौषधकिरातयुतम्।मरिचंपरिकथितमाशुबलादपहन्तिकर्णरुजःसकलाः॥चपलापिप्पली॥ ३७० ॥

सहँजना और राईके कल्कको कर्णमूलमें लेप करनेसे कर्णमूलकी सूजनका नाश होताहै मिर्च पीपल जीरा सेंधानोन इन सबको गरम जलमें पीसकर नासलेने से कर्णकरोग का नाश होता है भारंगी (इसके अभावमें भटकटैयाकी जड) अरणी,पुष्पकरमूल,भटकटैया,सोंठ,पीपल,मिर्च,वच, मोथा,गिलोय, काकडासिंगी,कुटकी और रासना इनका क्वाथ कर्णक सन्निपातको नाश करता है दशमूल.कुटकी,पीपल,त्रिफला,सोंठ,चिरायता और मिर्च इनका क्वाथ शीघ्रही कर्णक सन्निपातको नाश करताहै ॥ ३७० ॥

अथ कण्ठकुब्जस्यचिकित्सा ॥

फलत्रिकत्र्यूषणमुस्तकट्वीकलिङ्गसिंहाननशर्वरीभिः । क्वाथःकृतःक्वंततिकण्ठकुब्जंकण्ठीरवःकुञ्जरमाशुतद्वत् ॥ (सिंहाननोवासकः । शर्वरीहरिद्रा) किरातकटुकाकणाकुटजकण्टकारीशटीकलिद्रुकिलिमाभयाकटुककट्फलाम्भोधरैः । विषामलकपुष्करानलकुलीरशृंगीवृषैः महौषधसखैरयंजयतिकण्ठकुब्जंगणः । शटीकर्चूरःकलिद्रुःविभीतकःकिलिमंदेवदारुकटुकंमरिचंविषाअतीसवृक्षःवृक्षादिभिः किंविशिष्टैर्महौषधसखैःमहौषधस्यसखिभिःतेनएतैःसहितेनमहौषधेनेत्यर्थः ॥ ३७१ ॥

कंठकुब्जकी चिकित्सा ॥

त्रिफला,त्रिकटु,मोथा,कुटकी,इन्द्रजौ,बांसा और हल्दी इनका काढ़ा जैसे सिंह हाथियोंका नाशकरताहै इसीप्रकार कंठकुब्ज सन्निपातको नाश करताहै चिरायता,कुटकी,पीपल,कुरैया, भटकटैया,कचूर,बहेड़ा,देवदारु,हड, मिर्च,कायफल,मोथा, अतीस, आंवला, पुष्करमूल, चीता,काकडासिंगी और बासा इनके क्वाथमें सोंठ छोडकर पीनेसे कंठकुब्ज सन्निपातका नाशहोताहै ॥ ३७१ ॥

अथोल्बणवातादिप्रवृद्धमध्यक्षीणवातादिहेतुकानांकुम्भीपाकादिनांत्रयोदशाचिकित्सातुल्यहेतुकानांविस्फुरकादीनांत्रयोदशानामिवविधातव्या (इतिसन्निपातज्वराधिकारः ॥ ३७२ ॥

अधिक वातादि और अधिक मध्य तथा क्षीण वातादि हेतुओंसे उत्पन्न कुम्भीपाकादितेरह सन्निपातोंकी चिकित्सासमान हेतुवाले विस्फोटक आदि तेरह सन्निपातोंके समान जाननी चाहिये इति सन्निपात ज्वराधिकार ॥ ३७२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथागन्तुज्वराधिकारस्तत्रागन्तुकज्वरस्यनिदानान्याह ॥

अभिघाताभिषंगाभ्यामभिचाराभिशापतः । आगन्तुर्जायतेदोषैर्यथास्वन्तंविभावयेत् ॥ अभिघातःशस्त्रमुष्टिलगुडादिभिर्हननम् । अभिषंगःकामशोकभयक्रोधभूतादीनामावेशः ॥ अभिचारःकृत्याद्युत्पादनंअभिशापःब्राह्मणगुरुवृद्धसिद्धादिकृतःशापः । तंआगन्तुज्वरम्यथास्वंयथादोषलक्षणंदोषैर्विभावयेद्विजानीयात् ॥ ३७३ ॥

आगन्तुकज्वराधिकार । आगन्तुकज्वरके निदान ॥

अभिघात (शस्त्र घूसा और लाठीआदिसेमारना) अभिषंग (काम शोक भय क्रोध और भूतादिकोंका आवेश) अभिचार (कृत्यादिकरना) अभिशाप (ब्राह्मण,गुरु,वृद्ध तथा सिद्धादि पुरुषोंका शाप) इनसब कारणोंसे आगन्तुकज्वर उत्पन्न होताहै इस आगन्तुकज्वरको दोषोंके लक्षणके अनुसार कुपितहुये दोषों से जानले ॥ ३७३ ॥

अपराण्यपिनिदानान्याह ॥

येभूतविषवाय्वग्निक्षतभंगादिसम्भवाः । रागद्वेषभयाद्यैश्चतेस्युरागन्तवोगदाः ॥ भवाद्यशब्देनक्रोधलोभादयःसंगृह्यन्ते।तेनरागादयोभंगाद्यन्तायेहेतवोऽप्यागन्तुसंज्ञाः स्युःकार्यकारणयोरभेदोपचारादेतेनागन्तुजः इत्यत्राप्यागन्तुशब्दोहेतुवाचीआगंतुर्जायतेदोषैरित्यत्र व्याधिवाचीअभिघाताभिषंगाभ्यामित्यादिश्लोकैर्दोषैर्यथास्वंतंविभावयेयदिति वचने नैवंप्रतीयतेअभिघातादीनांविप्रकृष्टकारणत्वंमिथ्याहारविहाराणामिवदोषाणांसन्निकृष्टकारणत्वं तथासतिदक्षापमानसंक्रुद्धरुद्रेत्यादिश्लोके आगंतुज्वरस्याष्टमत्वविधानोदोषजेष्वेवप्रवेशात् । उच्यते । आगन्तुज्वरस्यदोषाआरम्भका न किन्तु पश्चादनुबन्धिनः ॥ ३७४ ॥ अन्य निदान ॥

जो रोग भूत,विष,वायु,अग्नि,घाव,भंग,राग,द्वेष और भयआदिकोंसे उत्पन्न होते हैं वह आगंतुक कहलातेहैं भयादि कहने से क्रोध और लोभादिकोंकाभी ग्रहण होताहै रागको आदि लेकर जो हेतुकहे गयेहैं वहभी आगंतुक संज्ञक हैं क्योंकि कार्य्य और कारणमें अभेदकी कल्पना कीजातीहै इससे आगंतुजस्मृतः इसवाक्य में आगंतु शब्द हेतुवाची है और आगंतुर्जायतेदोषैः इसवाक्य में रोगवाची है अभिघाताभिषंगाभ्यां इत्यादिक श्लोक में दोषों के लक्षणों के अनुसार उसको जानना चाहिये इस वचन से यह मालूम होताहै कि अभिघात आदिक मिथ्याहार विहारोंके समान दूरवाले कारणहैं और दोषसमीपी कारणहैं ऐसा होनेसे दक्षापमान संक्रुद्ध इत्यादि श्लोकमें आगन्तुज्वरका आठवां कहनाठीक न होगा? क्योंकि वह दोषज ज्वरोंमेंही आजायगा इसका उत्तरयहहै कि दोष आगन्तुज्वर के प्रारम्भ करनेवाले नहीं हैं किन्तु पीछे से होनेवाले हैं ॥ ३७४ ॥

तथाचागन्तुज्वरस्यसंप्राप्तिमाह । चरकः । आगन्तुर्हिव्यथापूर्वोजायतेपश्चान्निजैर्दोषैरनुबध्यतइति ॥ तत्रकस्यागंतोःकोनिजोदोषइत्यपेक्षायामाह॥कामशोकभयाद्वायुः क्रोधात्पित्तंत्रयोमलाः । भूताभिषंगात्कुप्यन्तिभूतसामान्यलक्षणाः ॥ कामशोकभयात् कामशोकभयजादागन्तोःवायुःकुप्यति । क्रोधात्तुक्रोधजादागन्तोः पित्तंप्रकुप्यति ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूताभिषंगाद्भूतावेशजादागन्तोस्त्रयोमलादोषाकुप्यन्तीत्यर्थः । भूतसामान्यलक्षणाः भूतस्यभूतलक्षणस्यसामान्यंसमानतायेषांतानिभूतसामान्यानिलक्षणानियेषांतेभूतसामान्यलक्षणाःमलाः ॥ ३७५ ॥

चरककी कहीहुई आगन्तुकज्वरकीसंप्राप्ति ॥

आगन्तुज्वरमें पहले पीड़ा होतीहै और फिर जिस आगन्तुज्वर का जो दोषहै उससे युक्त होताहै किस आगंतज्वरका कौनसा निज दोषहै यहकहतेहैं जैसे कि काम शोक तथा भयसे वायु क्रोधसे पित्त और भूतावेशसे भूतोंके लक्षणोंके समान लक्षणवाले तीनोंदोष कुपित होतेहैं ॥ ३७५ ॥

अथागन्तुज्वराणांहेतुभेदेनलक्षणभेदानाह ॥

श्यावास्यताविषकृतेतथातीसारएवच । भक्तारुचिःपिपासाचतोदश्चसहमूर्च्छया ॥ विषकृतेस्थावरजंगमविषभक्षणकृतेज्वरेमुखःश्यावः शुक्लानुविद्धःकृष्णोवर्णःशाकवर्णोवा अतीसारःस्थावरविषेणैवतस्याधोगामित्वात् । तोदःसूचीव्यधनेनेवव्यथा ॥ ३७६ ॥

आगंतुज्वरोंके कारणोंकेभेदसे लक्षणोंकेभेद ॥

विषखाने से होनेवाले आगंतुज्वरमें मुखकी श्यामता,अतीसार,अन्नमें अरुचि,तृषा,सुईके चुभनेके समान पीड़ा और मूर्च्छा होतीहै विषखाना यह कहनेसे स्थावर और जंगम दोनों विषोंका ग्रहण होताहै परंतु अतीसार केवल स्थावर विषमें होताहै क्योंकि वह अधोगामी होताहै ॥ ३७६ ॥

औषधीगन्धजेमूर्च्छाशिरोरुग्वमथुस्तथा । कामजेचित्तविभ्रंशस्तन्द्रालस्यमभोजनम् ॥ हृदयेवेदनाचास्यगात्रञ्चपरिशुष्यति । कामजेसमीहितकान्ताद्यप्राप्तिनिमित्तके ज्वरे । चकाराद्वाग्भटोक्तान्यपिलक्षणानिबोद्धव्यानि ॥ तानियथा । कामाद्भ्रमोऽरुचिर्दाहोह्रीनिद्राधीधृतिक्षयइति ॥ ३७७ ॥

किसी औषधके सूंघनेसे उत्पन्न हुए ज्वरमें मूर्च्छा शिरमें पीड़ा और छर्दि होतीहै कामज अर्थात् वांछित कांता आदिके न मिलने से उत्पन्नहुए ज्वरमें चित्तका विभ्रम,तन्द्रा,आलस्य, हृदयमें पीड़ा और शरीरकी सुखावट होती है और चकारसे वाग्भटके कहेहुए अन्यलक्षणभी जानने चाहिये जैसे कि कामज्वर में भ्रम,अरुचि,दाह,लज्जा,निद्रा और बुद्धि तथा धैर्यका नाश होताहै ॥ ३७७ ॥

मूर्च्छांगमर्दोतृट्नेत्रचापल्यंकुचवक्त्रयोः । स्वेदःस्याद्धृदिदाहश्चस्त्रीणांकामज्वरे भवेत् ॥ ३७८ ॥

स्त्रियों के कामज्वर में मूर्च्छा अंगोंमें पीड़ा तृषा नेत्रोंमें चपलता स्तन तथा मुखपर स्वेद और हृदयमें दाह होताहै ॥ ३७८ ॥

बालकंशतपत्राणिगन्धसारमुशीरकम् । चोचधान्येयकंमांसीक्काथःकामज्वरापहः । संध्यायांसंस्तरःकार्यःसुगन्धैःकुसुमैर्भृशम् । क्रीडनीयंस्वकान्तेनसहरात्रौतथास्त्रियः । इदमपिकुत्रापिकथितंअत्रपुनः ॥ भयात्प्रलापःशोकाच्चभवेत्कोपाच्चवेपथुः । भयाद्भयजे ज्वरेप्रलापःशोकाच्चचकारेण ॥ प्रलापएवानुकृष्यते । कोपाच्चकोपादपिवेपथुर्भवति । ननुवेपथुः वातस्यधर्मः तत्कथंक्रोधजेज्वरेवेपथुः । यतउक्तम् । क्रोधोत्थितमिति । एकः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकुपितोदोषइत...नापिकोपयेदितिवचनात् पित्तकोपित्तवातजन्यएवात्रवेप...क्रोधाद्वायुरपिभवति। यतउक्तंविदेहेन । क्रोधशोकौस्मृतौवातपित्तरक्तप्रकोपनाविति ॥ ३७९ ॥

सुगंधबाला, कमल, चंदन, खस, दालचीनी, धनियां और जटामांसी इनके क्राथपीनेसे कामज्वर का नाशहोताहै संध्याके समय सुगंधित पुष्पादिकोंके द्वारा उत्तमशय्या बिछवाकर स्त्रियोंको अपने पतिकेसाथ और पुरुषोंको अपनी २ स्त्रियोंकेसाथ क्रीडाकरना चाहिये इससे कामज्वर का नाशहोता है कहींपर ऐसाभी कहागया है कि भय तथा शोकजनित ज्वरमें प्रलाप और क्रोधजनित ज्वरमें कंप होताहै अब यह संदेह होताहै कि कंपवायुका धर्म्महै तो क्रोधजनितज्वरमें कंप कैसे होसक्ताहै क्योंकि कहागयाहै कि क्रोधसे पित्त कुपित होताहै इसका उत्तर यहहै कि कुपितहुआ एकदोष अन्यदोषोंको भी कुपित करता है इसवचनके अनुसार कोपयुक्त पित्तके द्वारा कुपितहुई वायुकंपको उत्पन्न करती है अथवा क्रोधसे वायुभी कुपित होती है क्योंकि विदेहने कहाहै कि क्रोध और शोकवायु और रक्त-पित्तको कुपित करते हैं ॥ ३७९ ॥

भूताभिषंगादुद्वेगोहास्यरोदनकम्पनम् ॥ केचिद्भूताभिषंगोत्थंब्रुवतेविषमज्वरम् । भूताभिषंगोत्थोविषमज्वरोभवति ॥ कदाचिद्वेगवान् । कदाचिच्छान्तवेगइत्यर्थः । अभिचाराभिशापाभ्यांमोहस्तृष्णाचजायते । तृष्णाचेतिचकारेणहारीतानुवादिवाग्भटोक्तअबोद्धव्यम् । तद्यथा । तत्राभिचारिकैर्मंत्रैर्हूयमानस्यतप्यते । पूर्वंमनस्ततोदेहस्ततोविस्फोटतृड्भ्रमैः ॥ सदाहमूर्च्छाग्रस्तस्यप्रत्यहंवर्द्धतेज्वरइति ॥ ३८० ॥

भूतोंके आवेशसे होनेवाले ज्वरमें उद्वेग, अनर्थक हास्य, रोदन और शरीरमें कंपहोताहै और कोई२ कहते हैं कि भूतावेशमें विषमज्वर होताहै अर्थात् कभी ज्वरका वेगअधिक और कभी न्यून होजाताहै अभिचार और अभिशापसे होनेवाले ज्वरमें मोह तथा तृषा होती है यहां चकारसे हारीत और वाग्भट के कहेहुए अन्यलक्षण भी जानने चाहिये जैसे कि अभिचारके मंत्रोंके द्वारा दुःखित मनुष्यको पहले मनकाताप फिर शरीरमें उष्णता इसके पीछे विस्फोटक, तृषा, भ्रम, दाह तथा मूर्च्छा होती है और ज्वर प्रतिदिन बढता है ॥ ३८० ॥

अथ तेषांचिकित्सा ॥

आगन्तुजेज्वरेनैवनरःकुर्वीतलङ्घनम् । तथाचवाग्भटः । शुद्धवातक्षयागन्तुजीर्णज्व...लङ्घनम् नेष्यन्तइतिशेषः । अन्यच्च । लङ्घनंनहितंकामशोकचिन्ताप्रहारजे । भयभूत...क्रोधलङ्घनैश्चकृतेज्वरे ॥ किंत्वग्नौदीपितेतत्रदद्यान्मांसरसौदनम् ॥ अभिघातज्वरेयु...क्रियामुष्णविवर्जिताम् ॥ कषायंमधुरंस्निग्धंयथादोषमथापिच । अभिघातज्वरोनश्ये...नाभ्यंगेनसर्पिषः ॥ रक्तावसेकैर्मेध्यैश्चतथामांसरसौदनैः । मेध्यैर्मेधायैर्हितैः ३८१ ॥

आगन्तुज्वरोंकी चिकित्सा ॥

आगन्तुज्वरमें लंघन न कराना चाहिये और ऐसाही वाग्भटने भी कहाहै कि केवल वातजनित, ...जनित, आगन्तुज और जीर्णज्वर में लंघन श्रेष्ठ नहीं होता और भी कहागयाहै कि काम, शोक, ...न्ता, प्रहार, भय, भूतावेश, श्रम, क्रोध और उपवास इनसे उत्पन्नहुए ज्वरमें लंघन हितकारी नहीं है ...न्तु इनकारणोंसे ज्वर आनेपर जो रोगीकी अग्नि दीप्तहोय तो मांसके रसकेसाथ भातदेवे अभिघा-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त से हुए ज्व में उष्णता रहित चिकित्सा करनी चाहिये और कषाय मधुर तथा स्निग्ध वस्तु अथवा दोषके अनुसार वस्तु देनीचाहिये घीकेपीनेसे अथवा मलनेसे रुधिर निकलवाने से मेधाकी हितकारी वस्तुओं से और मांसके रसयुक्त भातखानेसे अभिघातज्वरका नाश होताहै ॥ ३८१ ॥

व्यधबन्धश्रमात्यध्वभंगभ्रंशसमुद्भवान् । ज्वरानुपाचरेत्पूर्वंक्षीरमांसरसौदनैः ॥ व्यधताडनंकर्णादिवेधोवा । भंगछेदभेदादिकः भ्रंशोवृक्षादितःपतनम् ॥ अध्वश्रान्तेषुवाभ्यंगदिवानिद्राञ्चकारयेत् । औषधीगन्धविषजौविषपित्तप्रशमनैः ॥ जयेत्कषायैर्मतिमान्सर्वगन्धकृतैर्भिषक् । सर्वगन्धमाह । चातुर्जातककर्पूरंकंकोलागुरुकुंकुमम् । लवंगसहितंचैवसर्वगन्धंविनिर्दिशेत् ॥ ३८२ ॥

व्यध (ताडना अथवा कानआदिका छिदवाना) बन्धन श्रम बहुत मार्गचलना भंग (छेदनभेदनादिक) और वृक्षादि पतनके द्वारा उत्पन्नहुए ज्वर में पहले दूध और मांस रसयुक्त भातके द्वारा चिकित्सा करे मार्ग चलने के द्वारा उत्पन्न हुए ज्वर में तैलादि मर्द्दन और दिन में शयन कराना चाहिये औषधियों के सूंघने से और विष के द्वारा उत्पन्नहुए ज्वर में विष तथा पित्तनाशक कषाय और सर्वगंधके क्वाथके द्वारा चिकित्सा करना चाहिये दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेशर, कपूर, कंकोल, अगर, केशर और लौंग यह सब सर्वगन्ध कहातीहैं ॥ ३८२ ॥

क्रोधजेपित्तजित्कार्य्यन्धार्य्यन्सद्वाक्यमेवच । आश्वासेनेष्टलाभेन वायोःप्रशमनेन च ॥ हर्षणैश्चशमंयान्तिकामक्रोधभयज्वराः । कामैरथमनोघ्नैश्चपित्तघ्नैश्चाप्युपक्रमैः ॥ सद्वाक्यैश्चशमंयातिज्वरःक्रोधसमुत्थितः (कामैःकामविषयैः) मनोघ्नैःधिक्कारादिभिर्भयजनकवचनैर्वा । कामात्क्रोधज्वरोनश्येत्क्रोधात्कामज्वरस्तथा । घातिताभ्यामुभाभ्यांच कामक्रोधज्वरक्षयः ॥ घातिताभ्यामुभाभ्यांमनसिनिगृहीताभ्यांकामक्रोधाभ्याम् ३८३॥

क्रोधज्वर में पित्तनाशक चिकित्सा धैर्य्य और श्रेष्ठ वचन हितकारी होतेहैं आश्वास वाक्य (तसल्ली) वांछित वस्तुका मिलना वायुकी शान्ति और हर्षसे काम क्रोध तथा भयजनितज्वर शान्त होते हैं कामके विषय धिक्कार अथवा भयकारी वचन पित्तघ्न चिकित्सा और सद्वाक्यों के द्वारा क्रोधज्वर शान्त होता है कामके द्वारा क्रोधज्वर तथा क्रोध के द्वारा कामज्वर नष्ट होता है और इन दोनों को चित्त में रोकने से दोनों प्रकारके ज्वरों का नाश होता है ॥ ३८३ ॥

भूतविद्यासमुद्दिष्टैर्बन्धावेशनताडनैः । जयेद्भूताभिषंगोत्थंमनःशान्त्यैचमानसम् ताडनैरित्यत्रस्थानेकेचित्पूजनैरितिपठन्ति । सहदेवायामूलंविधिनाकण्ठेनि... ज्यठ ति ॥ एकद्वित्रिचतुर्भिर्दिवसैर्भूतज्वरंपुंसाम् । अभिचाराभिशापोत्थौज्वरौहोमा... त्पत्र येत् ॥ दानस्वस्त्ययनातिथ्यैरुत्पातग्रहदुष्टिजौ । इत्यागन्तुज्वराधिकारः ॥ ३८...

भूतविद्या में कहेहुए बंधन आवेशन और ताडनके द्वारा भूतके अवेश से उत्पन्न होनेवाले... नाश होताहै यहां ताडन के स्थान में कोई २ पूजन यह पाठ कहते हैं मनकी प्रसन्नता से मान... ज्वर का नाश होताहै सहदेई की जड विधिपूर्वक गले में बाँधने से एक दो तीन तथा चारदिन भूतज्वर का नाश होताहै अभिचार तथा अभिशाप से उत्पन्नहुये ज्वरको होमादिकों से शान्तकर...

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चाहिये और उत्प तथा यह पीडासे उत्पन्नहुए ज्वरको दान स्वस्त्ययन तथा आर्ते सत्कारके द्वारा शान्तकरे इति प्रागन्तु ज्वराधिकार ॥ ३८४ ॥

अथ विषमज्वरोऽधिकारमाह। तत्रविषमज्वरस्यनिदानकथनपूर्विकांसम्प्राप्तिमाह ॥ दोषोऽल्पोऽहितसम्भूतोज्वरोत्सृष्टस्यवापुनः । धातुमन्यतमम्प्राप्यकरोतिविषमज्वरम् ॥ अयमर्थःज्वरोत्सृष्टस्यज्वरेणत्यक्तस्य । सन्निकृष्टहेतुमाह । दोषःअल्पःज्वरमुक्तः स्वल्पोऽपिविप्रकृष्टहेतुमाह। अहितमाहारविहारादितेनसम्भूतः । सम्पूर्णोजातःअन्यतमन्धातुरसरक्तादिकम्। प्राप्यदूषयित्वापुनर्विषमज्वरंकरोति। ज्वरोत्सृष्टस्यचेतित्राशब्देनेतिबाध्यते। प्रथमतोविषमज्वरोभवति। यतउक्तम्। आरम्भाद्विषमोयस्तु॥३८५॥

विषमज्वरका अधिकार विषमज्वरकी निदान समेत संप्राप्ति ॥

छूटेहुए ज्वरवाले मनुष्य का थोडा भी दोष अहितकारी आहार विहारादिकों के द्वारा पूराहोकर रस रक्त आदिक किसी धातुमें प्राप्तहोकर उसको दूषित करता हुआ फिर विषमज्वरको उत्पन्न करता है यहां वा शब्द से यह मालूम होताहै कि पहले भी विषमज्वर होताहै क्योंकि कहागयाहै कि आरंभ से जो विषम होताहै इत्यादि ॥ ३८५ ॥

रसादिकन्धातुन्दूषयित्वाविषमज्वरंकरोति। इत्यपेक्षायामाह। संततंरसरक्तस्थःसततंरक्तधातुगः। दोषःक्रुद्धोज्वरम्पुंसांसोऽन्येद्युःपिशिताश्रितः॥मेदोगतस्तृतीयेऽह्निअस्थिमज्जागतःपुनः। कुर्याच्चातुर्थिकंघोरमन्तकंरोगसंकरम्॥ अंतकमिवमारकत्वात्॥३८६॥

रसआदिक धातुओंको दूषित करके विषमज्वर उत्पन्न होताहै इसलिये कहते हैं कि संतत ज्वर रस तथा रक्त धातु में स्थित सतत ज्वर रक्त धातुमें स्थित अन्येद्युष्क ज्वर मांसमें स्थित तृतीयक ज्वर मेद धातु में स्थित और चातुर्थिक नाम विषमज्वर अस्थि तथा मज्जा में स्थित दोषों से उत्पन्न होताहै अत्यन्त घोर चातुर्थिक ज्वर यमराज के समान मारनेवाला और अनेक रोगोंका उत्पन्न करनेवाला होताहै ॥ ३८६ ॥ अथ विषमज्वरस्यसामान्यंलक्षणमाह ॥

यःस्यादनियतात्कालाच्छीतोष्णाभ्यांतथैवच ॥ वेगतश्चापिविषमोज्वरःसविषमःस्मृतः। यस्त्वनियतात् कालात्स्यादित्यस्यायमर्थः ॥ यथावातिकोज्वरःसप्तदिनानिपैत्तिकोदशदिनानिश्लैष्मिकोद्वादशदिनानिदोषाणांप्राबल्यैर्वातिकश्चतुर्दशदिनानि पैत्तिकविंशतिदिनानिश्लैष्मिकश्चतुर्विंशतिदिनानिस्यात् तथाविषमज्वरोऽनियतंकालंन्यानस्यादित्यर्थः। शीतोष्णाभ्यांगुणाभ्यामपितथास्यात् ॥ वेगतश्चापिविषमःकदाचिदतिवेगवान्। कदाचिच्छ्रान्तवेगः ॥ ३८७ ॥

विषमज्वरका सामान्य लक्षण ॥

जिस ज्वरका समय निश्चित न हो शीत तथा उष्णका नियम न हो और कभी अधिक कभी स्वल्पवेगहो उसको विषमज्वर कहतेहैं जिसका समय निश्चित न हो इसका यह तात्पर्य्य है कि जैसे वातज्वर सात दिन पित्तज्वर दश दिन और कफज्वर बारह दिन तथा दोषोंकी प्रबलता होने र वातज्वर चौदहदिन पित्तज्वर बीसदिन और कफज्वर चौबीसदिन रहताहै इसप्रकार विषमज्वर का कोईकाल निश्चित नहींहै ॥ ३८७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषमज्वरस्य भेदानाह ॥

सन्ततःसततोऽन्येद्युस्तृतीयकचतुर्थकौ ॥ ३८८ ॥

विषमज्वरके भेद ॥

सन्तत सतत अन्येद्युष्क तृतीयक और चातुर्थिक यह पांच विषमज्वरके भेदहैं ॥ ३८८ ॥

तत्रसन्ततस्यलक्षणमाह ॥

सप्ताहंवादशाहंवाद्वादशाहमथापिवा । सन्तत्यायोऽविसर्गीस्यात्सन्ततःसनिगद्यते विकल्पोवातिकादिभेदात् । सन्तत्यानैरन्तर्य्येण अविसर्गोअपरित्यागीननुमुक्तानुबन्धित्वंविषमत्वमितिविषमलक्षणम् ॥ तदत्रनघटतइतिकथमयंविषमेषुपठ्यते । घटत एवेतिनदोषः ॥ यतउक्तंचरकेण । विसर्गेद्वादशेकृत्वादिवसेऽव्यक्तलक्षणम् ॥ दुर्लभोपशमःकालंदीर्घमेवानुवर्त्ततइति । यत्तुखरनादेनोक्तम् ॥ ज्वराःपञ्चतुयेप्रोक्ताःपूर्वंसन्ततकादयः। चत्वारःसन्ततंहित्वाज्ञेयास्तेविषमज्वराइति॥ तच्चिरेणत्यागाभिप्रायेण॥३८९॥

संततज्वरका लक्षण ॥

सात दिन दश दिन अथवा बारह दिन तक निरन्तर जो ज्वर रहताहै उसको संतत कहतेहैं सात दिन आदिकी कल्पना वातादि दोषोंके भेदसेहै अब यह सन्देह होताहै कि मुक्तानुबन्धित्व (छोड़कर फिर आजाना) ही विषमज्वरका लक्षणहै परन्तु संततज्वरमें यह बात नहीं है तो इसको विषमज्वरोंमें क्यों कहा इसका उत्तर यहहै कि संततज्वरमें मुक्तानुबंधित्वहै इसलिये कोई दोष नहीं है क्योंकि चरकने कहाहै कि संततज्वर बारहवें दिन छूटकर अप्रकट लक्षणों से युक्त बहुत कालतक रहताहै इसके शांतहोनेका काल दुर्लभहै और "खरनादने" जो कहाहै कि जो संतत आदिक पांचज्वर पहले कहेगयेहैं उनमेंसे संततको छोड़कर बाकीके चार विषमज्वर कहलातेहैं इसका अभिप्रायकेवल ज्वरके बहुतकालतक छूटनेहीपर है ॥ ३८९ ॥

सततलक्षणमाह ॥

अहोरात्रेसततकोद्वौकालावनुवर्त्तते । द्वौकालौअहन्येककालंरात्रावेककालम्॥ यतो दोषाणामहोरात्रेप्रत्येकंद्वौद्वौप्रकोपकालौ । यतउक्तंवाग्भटेनवयोऽहोरात्रिभुक्तानामन्तमध्यादिगाःक्रमादिति ॥ ३९० ॥

सततका लक्षण ॥

जो ज्वर दिन रात्रिमें दोबार आताहै उसको सतत कहते हैं दिन रात्रिमें दोबार आताहै इसका यह अर्थ है कि एकबार दिनमें आताहै और एकबार रात्रिमें आताहै क्योंकि दिनरात्रि में हरएक दोष के कुपितहोनेके दो२कालहैं और ऐसाही वाग्भटने कहाहै कि अवस्था दिनरात्रि और भोजन इनके अन्तमध्य और आदिमें क्रमसे वातपित्त और कफकुपित होतेहैं ॥ ३९० ॥

अन्येद्युष्कलक्षणमाह ॥

अन्येद्युष्कस्त्वहोरात्रादेककालंप्रवर्त्तते । एककालंदोषापेक्षयाएककालमपि ॥ द्वितीयंप्रथमकालेह्येवदोषस्थिते ॥ ३९१ ॥

अन्येद्युष्कका लक्षण ॥

जो ज्वर रात्रिदिनमें एकबार आताहै उसको अन्येद्युष्क कहतेहैं यहां एकबार दोषोंकी अपेक्षासे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कहागयाहै और ... ारभी दूसरेकालमें जाननाचाहिये क्योंकि पहलेकालमें दोष हृदयमें रहताहै ३६१

तृतीयकचतुर्थकयोर्लक्षणमाह ॥

तृतीयकस्तृतीयेऽह्निचतुर्थेऽह्निचतुर्थकः । तृतीयेऽह्निइत्यागमनदिनंगृहीत्वा ॥ यतउक्तम् दिनमेकमतिक्रम्ययोभवेत्सतृतीयकः । दिनद्वयन्त्वतिक्रम्ययःस्यात्सहिच तुर्थकइतिअत्राहसुश्रुतः ॥ कफस्थानविभागेन यथासंख्यंकरोतिहि । सततान्येद्युःतृती यचतुर्थकप्रलेपकान् ॥ अहोरात्रादहोरात्रेस्थानात्स्थानंप्रपद्यते । दोषआमाशयंप्राप्य करोतिविषमज्वरम् ॥ अयमर्थःआमाशयोरःकण्ठशिरःसन्धयःपञ्चकफस्थानानिएषु तिष्ठन्दोषायथासंख्यंसततादीन्करोति । तत्रआमाशयेस्थितोदोषःसततंकरोतिद्वौ कालौ ॥ अहोरात्रेकालद्वयेदोषप्रकोपात्हृदयेस्थितोदोषआमाशयमागत्यअन्येद्युष्कं करोति । एककालंनैकदेकस्मिन्नेवाहोरात्रेदोषआमाशयमागत्यअन्येद्युष्कंकरोति ॥ त त्रद्वौदोषप्रकोपकालौएकस्मिन्कालेहृदयेतिष्ठत्यपरस्मिन्नामाशयइति । कण्ठेस्थितो दोषोऽहोरात्रात्हृदयमायाति ॥ तृतीयेदिनेआमाशयमागत्यस्वप्रकोपकालेतृतीयकंज्व रंकरोति । एककालंनतुद्वौकालौस्वभावात् ॥ एवमेवशिरस्थितोदोषोअहोरात्रात्कण्ठ मायाति । ततःपुनरहोरात्रात्हृदयमायातिचतुर्थेदिने । आमाशयमागत्यस्वप्रकोपका लेचतुर्थकंज्वरंकरोति । एककालन्नतुद्वौकालौस्वभावादेव ॥ ननुदोषस्यागमनंक्रमेणनि जस्थानगमनक्रमात्कथंतृतीयचतुर्थदिवसयोर्ज्वरागमनम् । उच्यतेदोषोहिप्रकोपसम येवेगंपरित्यज्यलाघवात्स्वस्थानन्तुवेगदिनएवयाति ॥ यतआह दोषःप्रकोपकालेहिवेग वत्वेनलाघवात् । वेगवासरएवायंस्वस्थानमधिगच्छति ॥ सन्धिषुस्थितः प्रलेपकंकरो ति । सन्धयश्चामाशयेऽपिसन्तितेषुस्थितःप्रलेपकंसर्वदाकरोति ॥ ३९२ ॥

तृतीयक और चातुर्थिकके लक्षण ॥

तीसरे दिन अर्थात् एकदिन बीच में छोड़कर जो ज्वर आताहै उसको तृतीयक अर्थात् एक-
तरा और चौथे दिन अर्थात् दोदिनका अन्तर देकर जो ज्वर आता है उसे चातुर्थिक अर्थात् तिजारी
कहते हैं तीसरा दिन ज्वर आनेके दिनको लेकर समझना चाहिये क्योंकि कहा गयाहै कि एक दिन
का अन्तर देकर जो ज्वर आताहै वह तृतीयक और दो दिन का अन्तर देकर जो आताहै वह चातु-
र्थिक कहाताहै यहांपर सुश्रुतने कहाहै कि दोष एक रात दिन में एक स्थानसे दूसरे स्थानमें जाता
है इस प्रकार क्रमसे कफ के स्थान के विभागोंके अनुसार आमाशयमें प्राप्त होकर क्रम पूर्वक सतत
अन्येद्युष्क तृतीयक चातुर्थिक और प्रलेपक नाम विषम ज्वरोंको करताहै इसका यह तात्पर्य है कि
आमाशय हृदय कंठ शिर और सन्धि समूह यह पांच कफके स्थानहैं दोष इनइन स्थानोंमें स्थितहो
कर क्रमसे सतत आदि ज्वरोंको करताहै इनमें से आमाशय में स्थित दोष दिन रात्रिमें दोबार सतत
ज्वरको उत्पन्न करताहै क्योंकि दिन रात्रिमें दोषोंके कुपित होने के दोकाल हैं हृदय में स्थित
दोष आमाशयमें आकर अन्येद्युष्क ज्वर को दिन रात्रिमें एकबार उत्पन्न करताहै क्योंकि दिन
रात्रिमें दोषके कुपित होनेके दोकाल हैं उनमें से एक काल में हृदय में रहताहै और दूसरे काल में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आमाशय में आकर ज्वर को उत्पन्न करताहै कंठ में स्थित दोष एक रात्रि दिन हृदय में आता है और तीसरे दिन आमाशय में जाकर अपने कोपके समय एक बार तृतीयक ज्वर को उत्पन्न करताहै दो बार नहीं उत्पन्न करने में स्वभाव ही कारण है इसी प्रकार शिर में स्थित दोष एक रात्रि दिनमें कण्ठमें आताहै इसके पीछे एक रात्रि दिनमें हृदय में आता है फिर चौथेदिन आमाशयमें आकर अपने कोपके समय एक बार चातुर्थिक ज्वर को उत्पन्न करताहै दो बार स्वभाव ही से नहीं उत्पन्न करताहै अब यह सन्देह होताहै कि दोष जितने दिनमें आमाशय में जाताहै अपने स्थानमें जाने के लिये उतनाही समय चाहिये तो तीसरे और चौथे दिन ज्वर कैसे आताहै इसका उत्तर यहहै कि दोष कोपके समय वेगको छोडकर हलके होने के कारण उसी दिन अपने स्थान में चलाजाताहै क्योंकि कहागया है कि दोष कोप के समय वेगवान् होकर हलके होनेके कारण वेगहोने केही दिन अपने स्थान को चला जाताहै संधियों में स्थित दोष प्रलेपकको उत्पन्न करताहै और संधि आमाशय में भी हैं इसलिये संधियों में स्थित दोष निरन्तर प्रलेपक ज्वरको करता है॥ ३९२॥

निवृत्तःपुनरायातिविषमोनियतेदिने। स्वभावःकारणंतत्रमन्यंतेमुनिपुङ्गवाः ॥ स्वभावस्यकारणत्वे कफस्थानविभागनिरपेक्षाच्चतुर्थकादिविपर्य्ययाश्रपिज्वराःस्वस्वकाले प्रभवंति । अधिशेतेयथाभूमिंबीजंकालेप्ररोहति ॥ अधिशेतेतथाधातून्दोषःकालेप्रकुप्यति। सुश्रुतोऽप्याह। सचापिविषमोदेहंनकदाचित्प्रमुञ्चति । ग्लानिगौरवकार्श्येभ्यःसयस्मान्नप्रमुच्यते । वेगेतुसमतिक्रांतेगतोऽयमितिलक्ष्यते ॥ धात्वंतरेषुलीनत्वात्सौक्ष्म्यान्नैवोपलभ्यते ॥ ३९३

मुनिलोगोंने कहाहै कि निवृत्त हुआ विषमज्वर नियत दिनमें फिर आजाताहै उसमें स्वभावही कारणहै स्वभावके कारण होनेसे कफके स्थानके विभागोंकी अपेक्षा न करके अपने २ समयमें ज्वर चातुर्थिक आदिके उलटेपनसे भी आजातेहैं जैसे पृथ्वीमें बोयाहुआ बीज अपने समयपर उगता है उसीप्रकार धातुओंमें स्थित दोष समयपर कुपित होताहै और सुश्रुतने भी कहाहै कि विषमज्वर शरीरको कभी नहीं छोडता क्योंकि ग्लानि शरीरका भारीपन और दुर्बलता यह सब बनेरहते हैं और वेगके चलेजानेपर ज्वरचलागया सा मालूम होताहै परंतु धातुओंके बीचमें लीन होनेकेकारण सूक्ष्मतासे जाना नहींजाताहै॥ ३९३॥

द्विदोषोल्बणस्यतृतीयकस्यलक्षणमाह॥

कफपित्तात्त्रिकग्राहीपृष्ठाद्वातकफात्मकः। वातपित्ताच्छिरोग्राहीत्रिविधःस्यात्तृतीयकः॥ त्रिकग्राहीवेदनयात्रिकंगृह्णातीत्यर्थः। वातकफात्मकःपृष्ठात्ल्यबथयापृष्ठंव्याप्य भवतीत्यर्थःल्यब्लोपेकर्म्मण्यधिकरणेचेतिसूत्रेणपञ्चमी ॥ ३९४॥

आधिक दो दोषवाले तृतीयकज्वरके लक्षण॥

जो तृतीयकज्वर कफ पित्तसे उत्पन्न होताहै उसमें रीडके नीचेकी हड्डियोंमें पीडा होतीहै जो तृतीयकज्वर वात कफसे उत्पन्न होताहै उसमें पीठमें पीडा होतीहै और जो तृतीयकज्वर वातपित्तसे उत्पन्न होताहै उसमें शिरकी पीडा होतीहै इसलिये तीनप्रकारका तृतीयकज्वर होताहै॥ ३९४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कफोल्बणस्यवातोल्बणस्यचातुर्थिकस्यलक्षणमाह ॥

चातुर्थिकोदर्शयतिस्वभावंद्विविधंज्वरः । जङ्घाभ्यांश्लैष्मिकःपूर्वंशिरसोऽनिलसम्भवः॥श्लैष्मिकःश्लेष्मोल्बणःतथा अनिलसंभवोवातोल्बणः नन्वस्तिपैत्तिकोपिचातुर्थिकः यतआहनागभर्तृतंत्रे ऊर्द्ध्वकायंतुयःपूर्वंगृह्णातिसोनिलात्मकः । मध्यकायंतुगृह्णाति पूर्वंयस्तुसपित्तजः ॥ पूर्वंगृह्णात्यधःकायंश्लेष्मवृद्धश्चतुर्थकः किंतुप्रायेणकफवाताभ्यां भवतितस्मात्पैत्तिकश्चतुर्थकश्चरकादिभिर्नोक्तः ॥ ३६५ ॥

अधिककफ और अधिकवातवालेचातुर्थिक ज्वरका लक्षण ॥

चातुर्थिकज्वर दो प्रकारके स्वभावोंको दिखाताहै उनमें से अधिक कफवाला पिंडलियोंसे चढ़ता है और अधिक वातवाला शिरसे चढ़ताहै चातुर्थिकज्वर पैत्तिकभी होताहै क्योंकि नागभर्तृ तंत्र में कहाहै कि वातवाला चातुर्थिकज्वर पहले शिरसे चढ़ताहै पित्तवाला चातुर्थिकज्वर शरीरके मध्यसे चढ़ताहै और कफवाला चातुर्थिकज्वर शरीरके नीचेसे चढ़ताहै परन्तु प्रायः चातुर्थिकज्वर कफ और वातसे उत्पन्न होताहै इसलिये चरक आदिकोंने पित्तसेहुए चातुर्थिकज्वरको नहीं कहाहै ॥ ३६५ ॥

संततादीनांत्रिदोषजत्वम् । यतउक्तंचरके प्रायशःसन्निपातेनपञ्चस्युर्विषमज्वराइति ॥ प्रायशोग्रहणादेकदोषजाद्विदोषजाअपिभवन्तीति । जैज्जटःउल्बणश्लेष्मवातः पूर्वंप्रथमंजङ्घाभ्याम् ॥ व्यथयाजंघेव्याप्यपश्चात्सकलंशरीरंव्याप्नोति । एवमुल्बण वातजातःशिरसःपूर्वंव्यथया।शिरोव्याप्यसकलंशरीरंव्याप्नोतीत्यर्थः । विषमज्वरएवान्यश्चातुर्थिकविपर्ययः ॥ अस्थिमज्जागतोदोषश्चतुर्थकविपर्ययः । जायतेभिषजाज्ञेयोविषमज्वरएवसः ॥ अन्यःसंततादिपञ्चकादपरःचातुर्थिकःविपर्ययाख्योज्वरःसोऽपि विषमज्वरएववैद्येनज्ञातव्यःसकिंधातुस्थइत्यपेक्षायामाह । अस्थीत्यादि ॥ ३६६ ॥

संतत आदिक ज्वरोंका त्रिदोषजपन कहाजाताहै चरकने कहाहै कि प्रायः पांचों विषमज्वर सन्निपातसे होतेहैं जैज्जटने कहाहै कि प्रायः शब्दसे यह मालूम होताहै कि एकदोष और दो दोषसे भी विषमज्वर होताहै अधिक कफवाला चातुर्थिकज्वर पहले पीड़ासे पिंडलियोंको व्याप्तकरके पीछे सम्पूर्ण शरीरमें व्याप्तहोताहै इसीप्रकार अधिक वातसे उत्पन्नहुआ चातुर्थिकज्वर पहले पीड़ासे शिरको व्याप्तकरके सम्पूर्ण शरीरको व्याप्तकरता है संतत आदि पांचप्रकारके विषमज्वरोंसे भिन्न चातुर्थिक विपर्यय नामज्वर विषमज्वरों मेंही जानना चाहिये यह अस्थि और मज्जामें स्थित दोनोंसे उत्पन्न होताहै ॥ ३६६ ॥

तस्यचातुर्थिकविपर्ययस्यलक्षणमाह ॥

समध्येज्वरयत्यह्नीआद्यन्तेचविमुञ्चति । चातुर्थिकविपर्यय इत्युपलक्षणम् । सन्ततादिविपर्ययोऽपिबोद्धव्यः । यथाअहोरात्रेद्वौकालौमुञ्चतिशेषंसर्व्वमहोरात्रंतिष्ठतीतिसततविपर्ययः । अहोरात्रेएककालंमुञ्चतिशेषंसर्व्वमहोरात्रंतिष्ठति अन्येद्युष्कविपर्ययः मध्येएकंदिनंज्वरंजनयति । आदावन्त्येचमुञ्चतीतिमध्येएकंदिनंज्वरयतिआदावन्त्येच दिनेमुञ्चतीतितृतीयकविपर्ययः ॥ ३९७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चातुर्थिक विपर्य्यय के लक्षण ॥

चातुर्थिक विपर्य्यय ज्वर मध्यमें दोदिन रहताहै और आदि अन्तके दोदिन नहीं रहता अर्थात् दो दिन ज्वर रहताहै और बीचमें एकदिन नहींआता चातुर्थिक विपर्य्यय यह उपलक्षणमात्रहै इससे संततादिक विपर्य्यय भी जानना चाहिये जैसे जो ज्वर रात्रि दिनमें दो बार उतरे और बाकी रात्रि दिन चढ़ारहै वह सतत विपर्य्यय कहलाताहै जो ज्वर रात्रि दिनमें एकसमय उतरे और बाकी संपूर्ण रात्रि दिन चढ़ारहै वह अन्येद्युष्क विपर्य्यय कहलाताहै जो ज्वर मध्यमें एकदिन होवे और आदि अन्तके दिनमें उतर जाय उसको तृतीयक विपर्य्यय कहते हैं॥ ३६७॥

एतेविषमज्वरोपलक्षकाःअन्येरात्रिज्वरादयोऽपिविषमज्वराबोद्धव्याः। यथा समौ वातकफौयस्यक्षीणपित्तस्यदेहिनः॥ रात्रौप्रायोज्वरस्तस्यदिवाहीनकफस्यतु। प्रायःबाहुल्येन॥ ३६८॥

यह विषमज्वर उपलक्षणमात्र है इससे अन्यरात्रि ज्वरादिक भी विषमज्वर जानने चाहिये जैसे जिस मनुष्यके कफवात समहो तथा पित्त क्षीणहोवे उसको प्रायः रात्रिमें ज्वरआताहै और जिसका कफ क्षीणहोवे उसको बहुधा दिनमें ज्वर आताहै॥ ३९८॥

सन्ततादीनांशीतपूर्व्वत्वेदाहपूर्व्वत्वेचहेतुमाह॥

त्वक्स्थौश्लेष्मानिलौशीतमादौजनयतोज्वरम्। तयोःप्रशान्तयोःपित्तमन्तर्दाहंकरोतिच॥ शीतंशीतसहितम्। प्रशान्तयोःप्रशान्तवेगयोःअन्तःअभ्यन्तरे। करोत्यादौतथा पित्तंत्वक्स्थंदाहमतीवचातस्मिन्प्रशान्तेत्वितरौकुरुतःशीतमन्ततः॥ अन्ततःहस्तपादादितःशीतदाहादिज्वरयोःत्रिदोषजत्वमाह। द्वावेतौदाहशीतादीज्वरौसंसर्गजौस्मृतौ। दाहपूर्व्वस्तयोःकष्टःसुखसाध्यतमोऽपरः॥ संसर्गजौसान्निपातिकौ। कष्टःकष्टसाध्यः॥ ३६९॥

संततादि ज्वरोंके पहले शीत तथा दाह होनेका कारण॥

कफ और वात त्वचा में स्थितहोकर ज्वरके आदि में शीतको उत्पन्न करते हैं और उनके वेगके शान्त होजानेपर पित्त भीतर दाहको उत्पन्न करताहै त्वचामें स्थित पित्तज्वर पहले अत्यन्त दाह को उत्पन्नकरताहै और उसके वेगके शान्तहोजानेपर कफ और वात हाथ पैरोंमें शीत उत्पन्न करतेहैं दाह पूर्व और शीतपूर्व यह दोनोंज्वर सन्निपात होते हैं इनमें से दाहपूर्व कष्टसाध्य और शीतपूर्व अत्यन्त सुखसाध्य होताहै॥ ३६९॥

विषमज्वरविशेषमाह॥

विदग्धेऽन्नरसेदेहेश्लेष्मपित्तेव्यवस्थिते। तेनार्द्धशीतलंदेहमर्द्धमुष्णंप्रजायते॥ अन्नरसेविदग्धे। आहारजेरसेदुष्टेदेहेश्लेष्मपित्तेव्यवस्थितेदुष्टेस्थिते। तेनहेतुनाशीतलंकफेनउष्णंपित्तेनअर्द्धत्वंचार्द्धनारीश्वराकारेणनरसिंहाकारेणवा॥ कायेदुष्टंयदापित्तंश्लेष्माचान्तेव्यवस्थितः। तेनोष्णत्वंशरीरस्यशीतत्वंहस्तपादयोः। (अन्तेहस्तपादादौ) कायेश्लेष्मायदादुष्टःपित्तंचान्तेव्यवस्थितम्। शीतत्वंतेनगात्रस्यादुष्णत्वंहस्तपादयोः॥ ४००॥

विषमज्वरकी विशेषता॥

विषमज्वरमें आहारके रसके दूषित होजानेपर और कफ तथा पित्तके दूषित होजानेपर आधा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शरीर कफके द्वारा शीतल और आधा शरीर पित्तके द्वारा उष्ण होताहै आधा शरीर शीतल और आधा शरीर उष्ण अर्द्धनारीश्वराकारसे अथवा नरसिंहाकारसे होताहै जब दोषयुक्त पित्त शरीर में और दोषयुक्त कफ हाथ पैरोंमें स्थित होताहै तब शरीर उष्ण और हाथ पैर शीतल होजाते हैं जब दोषयुक्त कफ शरीरमें और दोषयुक्त पित्त हाथ पैरों में स्थित होताहै उस रोगीका शरीर शीतल और हाथ पैर उष्ण होतेहैं ॥ ४०० ॥

विषमज्वरविशेषस्यप्रलेपकस्यलक्षणमाह ॥

प्रलिंपन्निवगात्राणिघर्मेणगौरवेणच । मन्दज्वरविलेपीचसशीतःस्यात्प्रलेपकः ॥ गौरवेणउपलक्षितः । मन्दज्वरविलेपीमन्दवेगस्यसदासम्बन्धोऽस्यास्तीतिमन्दज्वरविलेपी । अयंविषमज्वरः । तथाचसुश्रुतः । प्रलेपकाख्योविषमःप्रायशःक्लेशशोषिणाम् ॥ ज्वराश्चविषमाःसर्व्वेप्रायःक्लेशायशोषिणामिति ॥ ४०१ ॥

अब विषमज्वर विशेष प्रलेपकके लक्षण ॥

जिस ज्वरमें शरीर भारीहोवे अंगोंमें पसीना भराहुआ सा मालूम होवे और ज्वर मन्दवेगसे सदैव बनारहे तथा शीतलगे उसको प्रलेपक कहते हैं यह विषमज्वरहै और ऐसाही सुश्रुतने कहाहै कि प्रलेपक नाम विषमज्वर प्रायः क्लेशकारी राजयक्ष्मावाले के होताहै और प्रायः सम्पूर्ण विषमज्वर राजयक्ष्मावालेको क्लेशकारी होते हैं ॥ ४०१ ॥

अथ विषमज्वराणांसामान्यचिकित्सा ॥

ज्वराश्चविषमाःसर्व्वेसन्निपातसमुद्भवाः । यथोल्बणस्यदोषस्यतेषुकार्य्यञ्चिकित्सितम् ॥ विषमेष्वपिकर्त्तव्यमूर्द्ध्वञ्चाधश्चशोधनम् । स्निग्धोष्णैरन्नपानैश्चशमयेद्विषमज्वरम् ॥ कालिंगकःपटोलस्यपत्रंकटुकरोहिणी । पटोलंसारिवामुस्तंपाठाकटुकरोहिणी ॥ निम्बःपटोलंत्रिफलामृद्वीकामुस्तवत्सकौ । किरातत्तिक्तममृताचन्दनंविश्वभेषजम् ॥ गुडूच्यामलकंमुस्तमर्द्धश्लोकसमापनाः । कषायाःशमयंत्याशुपञ्चपञ्चविधंज्वरम् ॥ कालिंगकःइन्द्रयवःवत्सकःकुटजः । चन्दनमत्ररक्तचन्दनम् । कषायाःपञ्चपञ्चविधंसन्ततसततान्येद्युष्कतृतीयकचतुर्थकरूपम् ॥ ४०२ ॥

विषमज्वरों की सामान्य चिकित्सा ॥

सम्पूर्ण विषमज्वर त्रिदोषसे उत्पन्न होतेहैं उनमें से जिस दोषकी अधिकता देखे उसकी चिकित्सा करे विषमज्वर में वमन विरेचनादि के द्वारा शोधन करके स्निग्ध और उष्ण अन्न पानके द्वारा विषमज्वर को शान्त करना चाहिये आगे कहे हुए पांच क्वाथ क्रमसे पांच प्रकारके विषमज्वरों को शान्त करते हैं इन्द्रजौ परवलके पत्ते और कुटकी १ परवल सारिवा (अनन्तमूल) नागरमोथा पाढा और कुटकी २ नींब, परवल, त्रिफला, दाख, मोथा और कुरैयाकीछाल ३ चिरायता, गिलोय, लालचन्दन और सोंठ ४ गिलोय आंवला और मोथा ५ यह पांचों क्वाथ क्रमसे सन्तत, सतत, अन्येद्युष्क, तृतीयक और चातुर्थिकज्वर को शान्त करते हैं ॥ ४०२ ॥

महाबलामूलमहौषधाख्यांक्वाथोनिहन्याद्विषमज्वरंहि । शीतंसकम्पंपरिदाहयुक्तंविना श्रयेद्द्वित्रिदिनप्रयोगात् ॥ मुस्तामलकगुडूचीविश्वौषधकण्टकारिकाक्वाथःपीतःसकणा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चूर्णःसमधु.वैषमज्वरंहन्ति ॥ तिलतैललवणयुक्तःकल्कोलशुनस्यसेवितः प्रातः । विषमज्वरमपहरतेवातव्याधीनशेषांश्च ॥ कालाजाजीतुसगुडाविषमज्वरनाशिनी । मधुनाचाभयालीढाहंत्याशुविषमज्वरान् ॥ कालाजाजीतुमंगरैलाइतिच । साचकिञ्चिद्भृष्टागुडतुल्याकर्षमिताभक्षणीया । पीतोमरिचचूर्णेनतुलसीपत्रजोरसः । द्रोणपुष्पीरसोवापीनिह्न्तिविषमज्वरान् ॥ समगुडमसितंजीरकमीषन्मरिचेनभक्षितंसद्यः । एकाहिकंप्रशमयेत् समरेष्विवदानवानिंद्रः ॥ शुंठ्यजाजीगुडंपिष्टंपीतमुष्णेनवारिणा । जीर्णमद्येनतक्रेणतीव्रंशीतज्वरंजयेत ॥ ४०३ ॥

सहदेईकी जड़ और सोंठ इनका काढ़ा शीत कम्प और दाहसमेत विषमज्वरको दो तीन दिनमें नष्टकरताहै मोथा, आंवला, गिलोय, सोंठ और भटकटैया इनके काढ़े में पीपलका चूर्ण और सहत मिलाकर पीनेसे विषमज्वरका नाशहोताहै लहसनको पीसकर तिलके तेल और सेंधोनोन के साथ खानेसे विषमज्वर और सब वातव्याधियों का नाश होताहै कालेजीरेको भूनकर उसके बराबर गुड़ मिलाकर एकतोले खानेसे विषमज्वरका नाशहोताहै सहतकेसाथ हड़चाटने से विषमज्वरका नाश होताहै तुलसी अथवा गोमाके पत्तोंकारस मिर्चका चूर्ण मिलाकर सेवनकरने से विषमज्वरका नाश होताहै पुरानागुड़ और कालाजीरा बराबर लेकर कुछ मिर्चमिलाके खानेसे जैसे इन्द्र दैत्योंका नाश करते हैं उसी प्रकार यह एकाहिकज्वरका नाशकरताहै सोंठ कालाजीरा और गुड़ यह सब बराबर पीसकर उष्णजल पुरानीमद्य अथवा मट्ठेकेसाथ सेवन करने से तीव्र शीतज्वरका नाश होताहै ४०३॥

अथ सन्ततादीनांविशिष्टाचिकित्सा ॥

अमृतायाःशतंचूर्णंवाससापरिशोधितम् । पृथक्षोडशभागाःस्युर्गुडमाक्षिकसर्पिषाम् ॥ यथाग्निभक्षयेदेतन्नरोहितमिताशनः । नास्यकश्चिद्भवेद्व्याधिर्नजरापलितंनच ॥ नज्वराःविषमानैवमोहानानिलरक्तकम् । नचनेत्रगतारोगाःपरमेतद्रसायनम् ॥ मेधाकरंत्रिदोषघ्नंप्रयोगादस्यबुद्धिमान् । जीवेद्वर्षशतंसाग्रंयथैवादितिजस्तथा ॥ इतिगुडूचीमोदकः ॥ ४०४ ॥

सन्ततादिज्वरोंकी विशेषचिकित्सा ॥

वस्त्रमें छानाहुआ गिलोयका चूर्ण १०० भाग गुड़ १६ भाग सहत १६ भाग और घी १६ भाग इनसबको एकमें मिलाकर अग्निके बलके अनुसार इसको खाय और हितकारी तथा परिमित आहारखाय इस परम रसायनके सेवनसे कोई व्याधि वृद्धावस्थावालोंका सफ़ेदहोना विषमज्वर मोह वातरक्त और नेत्ररोग कभी भी नहीं होतेहैं यह मेधाकारी तथा त्रिदोषनाशकहै और इसके सेवनसे देवताओं के समान सौवर्षतक जीताहै इति गुडूचीमोदकः ॥ ४०४ ॥

अथान्नमाह ॥

तक्रमांसंपयोमांसंदधिमांसमथापिवा । माषमांसञ्चभुञ्जानो मुच्यते विषमज्वरात् ॥ अग्निवेशेनोक्तम् । सुरासमण्डापानार्थेभोजनेचरणायुधाः । तित्तिराविष्किराःपथ्याः कुक्कुटाःविषमज्वरे॥गृहकुक्कुटाःवनकुक्कुटाविष्किराः।वर्तिकालावाविष्किरचकोराद्याः४०५॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथअन्न॥

मट्ठेके साथ जलके साथ अथवा दहीके साथ पाक किया गया मांस या उर्दों के साथ पाक हुआ मांस भोजन करनेसे विषमज्वरको नाश करताहै "अग्निवेशने" कहाहै कि विषमज्वर में पान करने के लिये मांड सहित सुरा और भोजन के लिये वनका मुर्गा घरका मुर्गा तीतर और विष्किर (बटेर लवा और चकोरादिक) पक्षियोंका मांस पथ्यहै ॥ ४०५ ॥

अथ सततादीनांविशिष्टाचिकित्सा ॥

त्रायन्तीकटुकानन्तासारिवाभिःशृतंजलम्।पटोलाब्दवृषातिक्तासारिवाभिःशृतंजलम्।सततारव्येज्वरेदेयंवातादीनांनिवृत्तयेवृषाबृहद्दन्तीएरण्डवत्पत्रविटपातदलाभेदन्तीचग्राह्यासमानगुणत्वात्। पटोलेन्द्रयवानन्तापथ्यारिष्टामृताजलम्। क्वथितंतज्जलंपीतंज्वरंसततकंजयेत्॥अनन्तासारिवा।अरिष्टःनिम्बः।जलंबालकम्।द्राक्षापटोलनिम्बाब्दशक्राह्वत्रिफलाशृतम्।जलंजन्तुःपिबेच्छीघ्रमन्येद्युर्ज्वरशान्तये।शक्राह्वःइन्द्रयवः४०६

सतत आदिकों की विशेष चिकित्सा ॥

त्रायमाणा, कुटकी, जवासा तथा सारिवा इनका काढ़ा और परवल मोथा बड़ीदन्ती (इसके न होनेमें दन्ती) कुटकी तथा अनन्त मूल इनका काढ़ा सततनाम ज्वरमें वातादिकों के निवृत्तकरने के लिये देना चाहिये परवल, इन्द्रजौ, अनन्तमूल, हड़, नींब, गिलोय और सुगन्धबाला इनकाकाढ़ा पीने से सततज्वरका नाश होताहै दाख, परवल, नींब, मोथा, इन्द्रजौ और त्रिफला इनका क्वाथ पीनेसे अन्येद्युष्क ज्वरका नाश होताहै ॥ ४०६ ॥

कर्म्मसाधारणंत्यक्त्वातृतीयकचतुर्थकौ। भिषजाप्रतिकर्त्तव्यौविशेषोक्तचिकित्सितैः उशीरंचन्दनंमुस्तंगुडूचीधान्यनागरम् ॥ अम्भसाक्वथितंपेयंशर्करामधुयोजितम्। ज्वरे तृतीयकेपुंसांतृष्णादाहसमन्विते ॥ अपामार्गजटाकट्यांलोहितैःसप्ततन्तुभिः । बद्धा वारेरवेस्तूर्णंज्वरंहन्तितृतीयकम् ॥ स्थिरातामलकीदारुशिवावृषमहौषधैः ॥ सितामधुयताक्वाथश्चतुर्थकहरःपरः ॥ स्थिराशालिपर्णी ॥ तामलकीभूधात्रीशिवाहरीतकी। वृषोवासा ॥ ४०७ ॥

वैद्य तृतीयक और चातुर्थिक ज्वरमें साधारण चिकित्साको छोड़कर विशेष कहीहुई चिकित्सा करे खस, चन्दन, मोथा, गिलोय, धनियां और सोंठ इनके क्वाथ में शक्कर और सहत डालकर तृषा तथा दाह युक्त तृतीयक ज्वरमें पिये रविबार के दिन लटजीरेकी जड़ को लाल सात डोरोंके द्वारा कमरमें बांधने से तृतीयक ज्वरका नाश होताहै शालिपर्णी, भुइं आंवला, देवदारु, हड़, बांसा और सोंठ इनके काढ़ेमें शक्कर और सहत डालकर पीनेसे चातुर्थिक ज्वरका नाश होता है ॥ ४०७ ॥

अगस्तिपत्रस्वरसेननस्यंनिहन्तिचातुर्थिकमुग्रवीर्य्यम्। शिरीषपुष्पस्यनिशाद्वयस्य कल्केनवातद्घृतसंयुतेनतत् ॥ नस्यमिति ॥ ४०८ ॥

अगिस्त के पत्तों के रसकी नास लेनेसे और सिरस के फूल, हल्दी तथा दारुहल्दी के कल्क में घी डाल कर नास लेनेसे चातुर्थिक ज्वरका नाश होताहै ॥ ४०८ ॥

ज्वरस्यवेगंकालञ्चचिन्तयन्ज्वर्य्यतेतुयः। तस्येष्टैरद्भुतैर्वापिविषमैर्न्नाशयेत्स्मृतिम्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सन्ततंविषमंचापिसततंसुचिरोत्थितम्। ज्वरंसुभोजनैःपथ्यैरिष्टैश्चसमुपाचरेत् ॥ सन्ततादिविपर्य्ययाणांविषमज्वराणांचिकित्सासन्ततादीनामिवकर्त्तव्या ॥ ४०९ ॥

जो ज्वरवाला ज्वरके वेग और समयको ध्यान करता हुआ क्षीण होताहै उसकी यादको वांछित आश्चर्य्यकारी अथवा विषम वस्तुओं के द्वारा नाश करनी चाहिये बहुत कालसे हुए संतत और सतत नाम विषमज्वरमें सुन्दर हितकारी और बांछित भोजनों से चिकित्सा करे संततादि विपर्य्यय विषमज्वरों की चिकित्सा सन्ततादिके समान करनी चाहिये ॥ ४०९ ॥

शीताभिभूतेपुरुषेकुर्य्याच्छीतहरींक्रियाम् । दाहाभिभूतेतुविधिविदध्याद्दाहनाशनम् ॥ आच्छादनैर्बहुतरैर्गुरुभिःकम्बलादिभिः। तूलवत्यामहाशीतंशीतादिज्वरिणोहरेत् तूलवतीतुरजाईइतिलोके। तंस्तनाभ्यांसुपीनाभ्यांपीवरोरुर्नितम्बिनी ॥ युवतीगाढमालिंगेत्तेनशीतंप्रशाम्यति । कान्तांगसंगसञ्जातंतद्वत्शीतेनिवारिते ॥ प्रह्लादंचास्य विज्ञायपृथक्तांकारयेत्स्त्रियम् । ततोदाहेतुसञ्जातेपत्रैरैरण्डसम्भवैः ॥ शीतलैर्द्धारितैरंगैर्दाहंतस्यापनोदयेत् ॥ ४१० ॥

शीत युक्त पुरुष की शीत नाशक और दाहयुक्त पुरुष की दाहनाशक चिकित्साकरे शीतादिज्वर वालेको बहुत शीत लगने पर रजाई और कंबल आदिक बहुत भारी ओढ़ने की चीजोंसे शीत को निवृत्तकरे मोटी जंघावाली युवती स्त्री बहुत बड़े अपने स्तनों से उस शीतवाले पुरुष को अत्यन्त आलिंगन करे इस्से शीतका नाश होताहै और इस प्रकार स्त्रीके आलिंगन से शीतके निवृत्त होने पर उसकी कामकी इच्छा हुई जानकर उस स्त्री को हटाले फिर दाहके उत्पन्न होने पर रेंडीके पत्ते और शीतल वस्तुओं को शरीर पर रखनेसे दाहको नाश करे ॥ ४१० ॥

तालकंशुक्तिकाचूर्णंदत्तंतत्रोभयोरपि । नवमांशश्चतुत्थंस्यान्मर्द्दयेत्कन्यकाद्रवैः । तत्तुसंशुष्कमुपलैर्वन्यैर्गजपुटेपचेत् ॥ शीतंतच्चूर्णयेच्चूर्णंगुञ्जामात्रंसितायुतम् । प्रभाते भक्षयेत्तेनयातिशीतज्वरक्षयम् ॥ वान्तिर्भवतिकस्यापिकस्यचिन्नभवत्यपि । एकेनदिवसेनैवशीतज्वरहरंपरम् ॥ मध्याह्नसमयेपथ्यंशिखरिण्योदनंतथा । इति भूतभैरवचूर्णंशीतज्वरे ॥ ४११ ॥

शीतज्वरपर भूतभैरव चूर्ण ॥

हरिताल और सीपका चूर्ण बराबर लेकर इन दोनोंका नवांभाग तूतिया मिलाके घीग्वार के रसमें घोटे फिर सूख जानेपर अरने कंडों में गजपुटके द्वारा पाककरे शीतल होजाने पर पीसकर शक्करके साथ एक रत्ती रसखाय तो इस्से शीतज्वरका नाश होताहै इस औषधिके खानेसे किसीको वमन होतीहै और किसीको नहीं होती यहएकही दिनमें शीतज्वरका नाश करताहै इसमें मध्याह्न के समय शिखरन और भातका पथ्यदेना चाहिये ॥ ४११ ॥

कायस्थानाकुलीतिक्तावयस्थापुरचोरकैः सहदेवावचाकुष्ठैःशीतघ्नैर्धूपलेपनैः ॥ एतैरेवौषधैःपिष्टैर्लवणक्षारसंयुतैः । साम्लैर्विपाचितंतैलमभ्यंगाच्छीतनाशनम् ॥ कायस्था हरीतकी । नाकुलीरास्नाभेदःनाईइतिलोके । वयस्थागुडूची । पुरोगुग्गुलुः । चोरकः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भण्डीउरतद... भेंगाठिवन। सहदेवाब्रहद्दला। क्षारोयवक्षारः। कायस्था... धूपनंलेपनं तैलञ्च ॥ ४१२ ॥

कायस्थादि धूपनलेपन और तैल ॥

हड, नाकुली (रासनाभेद) कुटकी, गिलोय, गूगल, चोरक (इसके अभावमें गठिवन) सहदेई वच और कूट इनकी धूप देनेसे अथवा लेप करनेसे शीतज्वरका नाश होताहै और इन औषधियोंके साथ नोन तथा जवाखार मिलाकर कांजीके साथ पीसकर विधिपूर्वक तेल निकाले इसके मर्दन से शीतका नाश होताहै ॥ ४१२ ॥

एरण्डस्यतुपत्राणिलिप्तभूमौनिधापयेत्। दाहादिज्वरिणोदेहेतानिपत्राणिधारयेत्॥तेन नश्यतिदाहोऽस्यज्वरश्चैवोपशाम्यति।दाहेशान्तेयदाशैत्यंतच्चयुक्त्यानिवारयेत् ४१३॥

लिपीहुई पृथ्वीमें रेंडीके पत्तोंको रक्खे फिर दाहादि ज्वरवाले के शरीर पर इन पत्तोंको रक्खे इससे दाह और ज्वरका नाश होताहैं दाहके शान्त होजाने पर जो शीत लगे तो उसको युक्ति पूर्व्वक निवृत्त करे ॥ ४१३ ॥

जघनचक्रचलन्मणिमेखलासरसचन्दनचन्द्रविलेपना। वनलतेवतनुंपरिवेष्टयेत्प्र बलदाहनिपीडितमंगना। चन्द्रःकर्पूरः। तदंगसंगसञ्जातशैत्येदाहेनिवारिते। प्रह्लाद श्चास्यविज्ञायतांस्त्रीमपनयेत्पुनः ॥ ४१४ ॥

नितंबोंमें चंचल मणियोंकी मेखलावाली और चंदन तथा कपूर के लेपवाली स्त्री वनकी लताके समान अत्यन्त दाहवाले पुरुषके शरीरको आलिंगन करे स्त्री के अंग संगसे उत्पन्न हुई शीतलताके द्वारा दाहके निवृत्त होजानेपर और उस पुरुषको कामकी इच्छा उत्पन्न होनेपर उस स्त्रीको हटाले ४१४

सुवर्च्चिकानागरकुष्ठमूर्व्वालाक्षानिशारोहितयष्टिकाभिः। सिद्धंहरेत्षड्गुणतक्रपक्वं तैलंज्वरंदाहसमन्वितंच ॥ इति षट्तक्रतैलम् ॥ ४१५ ॥

षट् तक्र तैल ॥

सज्जी, सोंठ, कूट, मरोड़फली, लाख, हल्दी और मजीठ इन औषधियोंके द्वारा छः गुने मट्ठे में तेलको परिपाक करके मर्दन करनेसे दाह सहित ज्वरका नाश होताहै ॥ ४१५ ॥

रास्नानागरकुष्ठचन्दननिशायष्ट्याह्वकृष्णाबला लाक्षासैन्धवसारिवामधुरसादेवाह्व रोहीतकैः ॥ सोशीराम्बुधिफेनरोहिषजलैस्तैलंपचेत्षड्गुणे। तक्रेतच्चजयेज्ज्वरंदृढतरं दाहादिशीतादिकम् ॥ चन्दनमत्रश्वेतम्। मधुरसामूर्वारोहीतकःरोहिणीतिलोके। रो हिषेतिरोहिततृणविशेषःजलम्। महाषट्तक्रतैलम् ॥ ४१६ ॥

महाषट् तक्रतैल ॥

रासना, सोंठ, कूट, श्वेतचन्दन, हल्दी, मुलहठी, पीपल, बरियारा, लाख, सेंधानोन, अनन्तमूल, मरोड़फली, देवदारु, रोहिणी, खस, समुद्रफेन, रोहिष, सुगन्धबाला इन औषधियों के साथ छः गुने मट्ठे में तेलको परिपाक करके मर्दन करनेसे दाहादि और शीतादि अत्यन्त कठिन ज्वरका नाश होताहै ४१६

पद्मकोत्पलकल्हारमृणालविषपौष्करैः। कुमुदोशीरमञ्जिष्ठापद्मगैरिककट्फलैः ॥ सारिवाद्वयलोध्राब्दक्षीरीखर्ज्जूरमस्तकैः। धात्रीशतावरीयुक्तैःक्वाथेकल्केप्रयोजितैः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लाक्षारसपयः शुक्तमस्तुभिःसहकांजिकैः। पक्वंतैलमिदंत्वच्यंदाहज्वरहरंपरम्॥ लाक्षारसादिपृथक्तैलतुल्यः। इति पद्मकादितैलम्॥ ४१७॥

पद्मकादि तैल॥

पद्माक, नीलकमल, श्वेतकमल, कमलकीडण्डी, विष, पुष्करमूल, कोकाबेली, खस, मजीठ, कमल, गेरू, कायफल, दोनों सारिवा, लोध, खिन्नी, खजूर, आंवला और शतावर इनके कल्कका काढ़ा लाखका रस दूध सिरका दहीका तोड और कांजी इनके द्वारा विधिपूर्वक परिपाक कियाहुआ तेल त्वचाको हित और दाह ज्वरका अत्यन्त नाशक होताहै इसमें लाखके रसादिक अलग अलग तेलके समान होने चाहिये॥ ४१७॥

प्रलेपकेप्रयुञ्जीतश्लेष्मज्वरहरींक्रियाम्॥ ४१८॥

प्रलेपक नाम ज्वरमें कफज्वरनाशक चिकित्सा करे॥ ४१८॥

रुद्रजटागोशृंगंविडालविष्ठोरगस्यनिर्म्मोकः॥ मदनफलभूतकेश्यौवंशत्वग्रुद्रनिर्म्माल्यम्॥घृतयवमयूरपुच्छच्छगलकलोमानिसर्षपाःसवचाः॥हिंगुगवास्थिमरीचाःसमभागाश्छागमूत्रसंपिष्टाः। धूपनविधिनाशमयन्त्येतेसर्वान्ज्वराञ्नियतम्॥ ग्रहडाकिनीपिशाचप्रेतविकारानयंधूपः॥ रुद्रजटाजटाधारीभूतकेशीजटामांसी। रुद्रनिर्माल्यंपुष्पादि। मयूरपुच्छंचन्द्रकमितिमाहेश्वरोधूपः॥ ४१९॥

माहेश्वर धूप॥

जटाधारी, गौकासींग, बिल्लीकीविष्ठा, सांपकी केंचुली, मैनफल, जटामांसी, बांसकीछाल, शिवजीका निर्माल्य, घी, जौ, मोरपंख, बकरेकेबाल, सरसों, वच, हींग, गौकीहड्डी और मिर्च इनऔषधियोंको बराबर लेकर बकरेके मूत्रमें पीसकर विधिपूर्व्वक धूपदेने से सबप्रकारके ज्वर, ग्रह, डाकिनी, पिशाच और प्रेतोंके विकार नष्ट होते हैं॥ ४१९॥

सोमंसानुचरंदेवंसमातृगणमीश्वरम्। पूजयन्प्रयतःशीघ्रंमुच्यतेविषमज्वरात्॥ सोममुमयासहितम्। सानुचरंनन्द्यादिगणसहितम्। प्रयतःपवित्रः। विष्णुंसहस्रमूर्द्धानंचराचरपतिंविभुम्। स्तुवन्नामसहस्रेणज्वरान्सर्व्वान्व्यपोहति॥ सहस्रमूर्द्धानमितिसहस्रशीर्षेत्यादिवेदाभिहितनामसहस्रेणभारतोक्तेनेत्यर्थः॥ ४२०॥

पवित्र होकर नन्दी आदिगण मातृका और पार्वतीसहित श्रीशिवजीका पूजनकरने से शीघ्रही सम्पूर्ण विषमज्वरोंसे छूटजाताहै और सहस्र शिरवाले सब संसारकेस्वामी व्यापक विष्णुभगवान्की सहस्र नाम(महाभारत अथवा वेदमेंकहेहुये)के द्वारा स्तुति करनेसे संपूर्ण ज्वरोंकानाश होताहै४२०॥

ज्वरस्यापिदेवत्वात्पूजाकार्य्या (यतआहविदेहः) तीर्थायतनदेवाग्निगुरुवृद्धोपसर्पणैः। श्रद्धयापूजनैश्चापिसहसाशाम्यतिज्वरः॥ तीर्थंऋषिजुष्टंजलम्। आयतनम्। देवाधिष्ठितंपुरुषोत्तमक्षेत्रश्रीशैलादि। इतिविषमज्वराधिकारः॥ ४२१॥

देवताहोनेसे ज्वरकाभी पूजन करना चाहिये क्योंकि विदेहने कहाहै कि तीर्थ (ऋषियोंसे सेवन किया हुआजल) आयतन (देवताओंसे युक्त पुरुषोत्तम क्षेत्र और श्रीशैलादिक) देवता अग्नि गुरु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तथा वृद्ध इनकी उपासना करनेसे और भक्तिपूर्वक पूजनकरने से सहसा ज्वरका नाश होताहै इति विषमज्वराधिकार ॥ ४२१ ॥

अथ रसादिधातुगतज्वरमाह ॥

गुरुताहृदयोत्क्लेशःसदनंछर्द्यरोचकौ । रसस्थेतुज्वरेलिङ्गंदैन्यंचास्योपजायते ॥ गुरुतागात्राणांहृदयस्थस्यदोषस्योपचितत्वाद्वमनमिवदैन्यंक्लीबचित्तता । रसस्थेरसधातुगते । अथतस्यचिकित्सा । रसस्थेतुज्वरेतस्मिन्कुर्याद्वमनलङ्घने ॥ ४२२ ॥

रसादिधातुओं में गयेहुएज्वरका वर्णन ॥

ज्वरके रसधातुमें प्राप्त होजानेपर शरीरमें भारीपन हृदयमें दोषके इकट्ठे होनेसे जीमिचलाना, पीडा, छर्दि, अरुचि और दीनता होतीहै ज्वरकेरसधातुमें प्राप्तहोनेपर वमन और लंघन करानाचाहिये ४२२

अथ रक्तगतज्वरमाह ॥

रक्तनिष्ठीवनंदाहोमोहश्छर्दनविभ्रमौ । प्रलापःपिडिकातृष्णारक्तप्राप्तेज्वरेनृणाम् ॥ मोहोऽव्यग्रचित्तता । अथ तस्यचिकित्सा । सेकःसंशमनोलेपःरक्तमोक्षमसृग्गते ४२३ ॥

रक्तधातु में गयेहुए ज्वरका वर्णन ॥

ज्वरके रक्तधातु में प्राप्त होने पर दाह, चित्तकी व्यग्रता, छर्दि, भ्रम, प्रलाप, पिडिका और तृषा होतीहै इसमें परिसेक शमन लेप और रुधिर निकलवाना यह सब चिकित्सा करवानीचाहिये ४२३ ॥

अथ मांसगतमाह ॥

पिण्डकोद्वेष्टनंतृष्णासृष्टमूत्रपुरीषता । उष्णान्तर्दाहविक्षेपौग्लानिःस्यान्मांसगेज्वरे । उष्णान्तर्मोहविक्षेपावितिपठन्तितत्रउष्णाअन्तः विक्षेपःहस्तपादादिचालनम् तस्यचिकित्सा तीक्ष्णंविरेकंचतथाकुर्य्यान्मांसगतेज्वरे ॥ ४२४ ॥

मांसमें गयेहुए ज्वरका वर्णन ॥

ज्वरके मांसमें प्राप्त होनेपर पिण्डलियों में पीड़ा तृषा मलमूत्रका निकलना शरीरके भीतर उष्णता हाथ पैरोंका पटकना व ग्लानि होतीहै मांसमें गयेहुए ज्वरवालेको तीक्ष्ण वमन करानाचाहिये ४२४॥

मेदोगतमाह ॥

भृशंस्वेदस्तृषामूर्च्छा प्रलापश्छर्दिरेवच । दौर्गन्ध्यारोचकौग्लानिर्मेदस्थेचासहिष्णुता ॥ भृशंस्वेदःमेदोमलत्वात् तस्यचिकित्सा मेदस्थेमेदसोनाशम् ॥ ४२५ ॥

मेदमें गयेहुए ज्वरका वर्णन ॥

ज्वरके मेदधातुमें जानेपर अत्यन्त स्वेद तृषा मूर्च्छा प्रलाप छर्दि शरीरमें दुर्गन्धि अरुचि ग्लानि और असहिष्णुता (बर्दास्त न होना) होतीहै इस में मेदनाशक चिकित्सा होनी चाहिये ॥ ४२५ ॥

अस्थिगतमाह ॥

भेदोस्थ्नांकूजनंश्वासोविरेकश्छर्दिरेवच । विक्षेपणञ्चगात्राणांविद्यादस्थिगतेज्वरे ॥ तस्यचिकित्सा । अस्थिस्थेतुज्वरेकुर्य्याद्वातनाशनकंविधिम् । वस्तिकर्म्मप्रयोक्तव्यम भ्यंगोन्मर्दनन्तथा ॥ ४२६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हड्डियोंमें गयेहुए ज्वरका वर्णन ॥

ज्वरके हड्डियोंमें प्राप्त होनेपर हड्डियोंमें पीड़ा, कंठमें अव्यक्त शब्द, श्वास, दस्तआना, छर्दि और अंगोंका पटकना यह सब लक्षण होतेहैं इसमें वातनाशक चिकित्सा, वस्तिकर्म, तैलादिमर्दन और उबटन यह सब करने चाहिये ॥ ४२६ ॥

मज्जागतमाह ॥

तमःप्रवेशनंहिक्काकासःशैत्यंवमिस्तथा। अन्तर्दाहोमहाश्वासोमर्मच्छेदश्चमज्जगे॥ असाध्यत्वान्नात्रचिकित्सा ॥ ४२७ ॥

मज्जामें गयेहुए ज्वरका वर्णन ॥

ज्वरके मज्जामें प्राप्त होनेपर सब ओर अंधकार सा मालूम होना, हिचकी, खांसी, बाहर शीत, भीतर दाह, छर्दि, बहुत श्वास और मर्म्मोंमें छिदने के समान पीड़ा होतीहै यह ज्वर असाध्य होता है इसीसे इसकी चिकित्सा नहीं कहीहै ॥ ४२७॥

शुक्रगतमाह ॥

मरणंप्राप्नुयात्तत्रशुक्रस्थानगतेज्वरे । शेफसःस्तब्धतामोक्षःशुक्रस्यतुविशेषतः ॥ ननुशुक्रगतेमरणमित्युक्तंतच्चशुक्रंसर्वदेहगं । नैवंस्वाश्रयस्थशुक्रगेमरणम् ॥ ४२८ ॥

वीर्य्यमें गयेहुए ज्वरका वर्णन ॥

ज्वरके वीर्य्यस्थानमें प्राप्त होजाने पर लिंगकी स्तब्धता और वीर्य्यका बहुत निकलना यह लक्षण होतेहैं इसज्वरमें रोगी नहीं जीताहै अब यह सन्देह होताहै कि वीर्य्यमें ज्वरके जानेपर मृत्यु होतीहै यह कहागयाहै और वीर्य्य सम्पूर्ण शरीरमें रहताहै यह कैसे होसक्ताहै? इसका उत्तर यहहै कि वीर्य्यके निजस्थानमें ज्वरके जानेपर मृत्यु होतीहै ॥ ४२८ ॥

अथ जीर्णज्वराधिकारमाह ॥

तत्रजीर्णज्वरस्यसामान्यलक्षणमाह । योद्वादशेभ्योदिवसेभ्यऊर्द्ध्वंदोषत्रयेभ्योद्विगुणेभ्यऊर्द्ध्वं । नृणांतनौतिष्ठतिमन्दवेगोभिषग्भिरुक्तोज्वरएषजीर्णः ॥ ४२९ ॥

जीर्णज्वरका अधिकार जीर्णज्वरका सामान्य लक्षण ॥

बारह दिनके उपरान्त अथवा तीनों दोषोंकी अवधिके दूने दिनोंसे अधिक जो ज्वर मन्दवेग समेत शरीर में रहताहै उसको जीर्णज्वर कहते हैं ॥ ४२९ ॥

जीर्णज्वरस्यैवविशेषंवातबलासकमाह ॥

नित्यंमन्दज्वरोरूक्षःशूनःकृच्छ्रेणसिध्यति । स्तब्धांगःश्लेष्मभूयिष्ठोनरोवातबलासकी ॥ वातबलासकीनरईदृग्भवेत् । शूनःशोथी । श्लेष्मभूयिष्ठोबहुश्लेष्मकः ॥ ४३० ॥

जीर्णज्वरविशेष वातबलासक का लक्षण ॥

जिसके वातबलासक ज्वर होताहै उसके ज्वर का वेग मन्द, सूजन, रूक्षता, शरीरमें शिथिलता और कफ की अधिकता होतीहै ॥ ४३० ॥

अथ जीर्णज्वरस्यसामान्यचिकित्सा ॥

जीर्णज्वरीनरःकुर्य्यान्नोपवासंकदाचन । लङ्घनात्सभवेत्क्षीणोज्वरस्तुस्याद्बलीयतः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुराणेऽपिज्वरेदोषायद्यपथ्यैःपुनस्तथा । लङ्घयेत्तत्रतत्पश्चात्पूर्व्वमेवाचरेत्क्रियाम् ॥ तथापूर्व्ववत् ॥ ४३१ ॥

जीर्णज्वर की सामान्य चिकित्सा ॥

जीर्णज्वरवाला मनुष्य उपवास कभी न करे क्योंकि उपवास करने से वह क्षीण होजाताहै और ज्वर बलवान् होजाताहै और जो कुपथ्य से पुराने ज्वर में भी नवीन ज्वरके समान दोष उत्पन्न होयँ तो लंघनकराना चाहिये और फिर पहले के समान चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ४३१ ॥

निदिग्धिकानागरकामृतानांक्काथंपिबेन्मिश्रितपिप्पलीकम् । जीर्णज्वरारोचककास शूलश्वासाग्निमान्द्यार्दितपीनसेषु ॥ हन्त्यूर्द्ध्वजामयम्प्रायःसायन्तेनोपयुज्यते । इति त्रिकण्टकक्काथः ॥ ४३२ ॥

त्रिकंटक क्काथ ॥

भटकटैया, सोंठ और गिलोय इनके काढ़ेमें पीपल मिलाकर पीनेसे जीर्णज्वर, अरुचि, खांसी, शूल, श्वास, मंदाग्नि, पीनस और ऊर्ध्वगतरोग नष्ट होते हैं यह सायंकालमें पीनाचाहिये ४३२ ॥

पिप्पलीमधुसंयुक्तःक्काथश्छिन्नोद्भवोद्भवः । जीर्णज्वरकफध्वंसीपञ्चमूलकृतोऽथवा ॥ अमृतायाःकषायन्तुशीतलीकृतमीरितम् । मधुपादयुतम्पीतंजीर्णज्वरहरम्परम् ॥ पिप्पलीमधुसम्मिश्रंगुडूचीस्वरसंपिबेत् । जीर्णज्वरकफप्लीहकासारोचकनाशनम् ॥ जीर्णज्वरेग्निमान्द्येचशस्यतेगुडपिप्पली । कासाजीर्णारुचिश्वासहृत्पाण्डुकृमिरोगनुत् ॥ द्विगुणःपिप्पलीचूर्णाद्गुडोऽत्रभिषजांमतः । पिप्पलीमधुसंयुक्तामेदःकफविनाशिनी॥ श्वासकासज्वरहरीपाण्डुप्लीहोदरापहा ॥ ४३३ ॥

गिलोय तथा पंचमूलके काढ़ेमें पीपल और सहत मिलाकर पीनेसे जीर्णज्वरका नाश होताहै गिलोयके काढ़ेको शीतल करके उसमें चतुर्थांश सहत मिलाके पीनेसे जीर्णज्वरका नाशहोता है गिलोयके स्वरसमें पीपल और सहत छोडकर पीनेसे जीर्णज्वर, कफ, प्लीहा, खांसी तथा अरुचि का नाश होताहै पीपलके चूर्णका दूना गुड मिलायके खानेसे जीर्णज्वर, मन्दाग्नि, खांसी, अजीर्ण, अरुचि, श्वास,पाण्डु तथा कृमिरोगका नाश होताहै सहतके साथ पीपलखाने से मेद, कफ, श्वास, खांसी,ज्वर पाण्डु, प्लीहा और उदररोगका नाश होताहै ॥ ४३३ ॥

आमलंचित्रकंपथ्यापिप्पलीसैन्धवन्तथा । चूर्णितोयङ्गणोज्ञेयःसर्व्वज्वरहरःपरः ॥ भेदीरुचिकरःश्लेष्महन्तादीपनपाचनः । इति आमलक्यादिचूर्णम् ॥ ४३४ ॥

आमलक्यादि चूर्ण ॥

आमला, चीता, हड, पीपल और सेंधानोन इनसबका चूर्ण. सर्वज्वरनाशक, भेदी, रुचिकारी, कफनाशक, दीपन और पाचन होताहै ॥ ४३४ ॥

द्राक्षामृताशटीशृंगीमुस्तकंरक्तचन्दनम् । नागरंकटुकापाठाभूनिम्बःसदुरालभः ॥ उशीरंधान्यकम्पद्मम्बालकंकण्टकारिका । पुष्करंपिचुमंदञ्चदशाष्टांगमिदंस्मृतम् ॥ जीर्णज्वरारुचिश्वासकासश्वयथुनाशनम् । द्राक्षादिरष्टादशांगक्काथः ॥ ४३५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्राक्षादि अष्टादशांग क्राथ ॥

दाख, गिलोय, कचूर, काकडासिंगी, मोथा, लालचन्दन, सोंठ, कुटकी, पाढ़ा, चिरायता, जवासा, खस, धनियां, पद्माक, सुगन्धबाला, भटकटैया, पुष्करमूल और नींब इनसबका क्राथ सेवन करने से जीर्णज्वर, अरुचि, श्वास, खांसी और सूजनका नाश होताहै ॥ ४३५ ॥

त्रिवृद्ध्यापञ्चवृद्ध्यावासप्तवृद्ध्याथवापिवा । गव्यक्षीरेणसंपिष्टापिबेद्दशदिनानिहि ॥ तथैवापनयेदेताएवंविंशतिवासरान् । पिबतांज्वरशान्तिःस्यात्पाण्डुरोगश्चशाम्यति ॥ कासश्वासोऽग्निमान्द्यञ्चकफाधिक्यञ्चनश्यति । त्र्यादिवृद्धिर्यथाकफवृद्धिर्दुग्धवृद्धिर्यथाग्निवृद्धिः ॥ (इतिवर्द्धमानपिप्पली) ॥ ४३६ ॥

वर्द्धमान पिप्पली ॥

पीपलको तीन पांच अथवा सातके क्रमसे प्रतिदिन बढ़ाताहुआ गौके दूधमें पीसकर दशदिनतक पिये और ग्यारहवें दिनसे इसीप्रकार दश दिनतक घटावे इसप्रकार बीस दिनतक पीपलके पीने से ज्वर, पाण्डुरोग, खांसी, श्वास, मन्दाग्नि और कफकी अधिकता का नाश होता है यहां तीन आदि की वृद्धि कफकी वृद्धिके अनुसार और दूधकी वृद्धि जठराग्निके अनुसार करनीचाहिये ॥ ४३६ ॥

वातश्लेष्मज्वरोक्तास्यात्क्रियावातबलासके । जीर्णज्वरेकफेक्षीणेदाहेतृष्णासमन्विते ॥ पयःपीयूषसदृशंतन्नवेतुविषोपमम् । चन्दनाद्यंहितंतैलंशोषाधीकारकीर्त्तितम् ॥ तथानारायणंतैलंजीर्णज्वरहरंपरम् । इतिजीर्णज्वराधिकारः ॥ ४३७ ॥

वातबलासकज्वर में वातकफज्वर में कहीहुई चिकित्सा करे जीर्णज्वर, कफकी क्षीणता और तृषा सहित दाह में दूध अमृतके समानहै और नवीन ज्वरमें विषके समान शोषाधिकारमें कहाहुआ चन्दनादि तैल और नारायण तैल जीर्णज्वर का अत्यन्तनाशकहै इति जीर्णज्वराधिकार ४३७ ॥

अथ दुर्ज्जलजनितस्य ज्वरस्यचिकित्सा ॥

हरीतकीनिम्बपत्रंनागरंसैन्धवोऽनलः । एषांचूर्णंसदाखादेद्दुर्ज्जलज्वरशान्तये ॥ इति हरीतक्यादिचूर्णम् ॥ ४३८ ॥

बुरेजलसेउत्पन्नहुए ज्वरकी चिकित्सा हरीतक्यादिचूर्ण ॥

हड, नींबकी पत्ती, सोंठ, सेंधानोन और चीता इनका चूर्ण सदैव सेवनकरनेसे बुरेजलसे उत्पन्न हुए ज्वरका नाश होताहै ॥ ४३८ ॥

अरुचिमनलमान्द्यंपीनसश्वासकासानुदरमुदकदोषानाशुहन्यादशेषान् । जनयतितनुकान्तिचित्तनेत्रप्रसादं पलपरिमितशुण्ठीक्षौद्रसिद्धःकषायः ॥ इतिशुण्ठीक्काथः ४३९ ॥

शुंठीक्काथ ॥

चारतोले सोंठके काढ़ेमें सहत डालकर पीनेसे अरुचि, मंदाग्नि, पीनस, श्वास, खांसी, उदर और बुरेजलसेहुए दोषका नाश होताहै तथा कांतिकी वृद्धि और चित्त तथा नेत्रोंमें प्रसन्नता होती है ४३९॥

विषंभागद्वयंदग्धंकपर्दंपञ्चभागकम् । मरिचंनागरञ्चैवचूर्णंवस्त्रेणशोधयेत् ॥ आर्द्रकस्यरसेनास्यकुर्य्यान्मुद्गनिभांवटीम् । वारिणावटिकायुग्मंप्रातःसायञ्चभक्षयेत् ॥ अयं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रसोज्वरेयोज्यःसामेदुर्ज्जलजेऽपिच । अजीर्णाध्मानविष्टम्भशूलेषुश्वासकासयोः ॥ इति दुर्ज्जलजेतारसः ॥ ४४० ॥

दुर्ज्जलजेतारस ॥

विष २ भाग कौडीकीभस्म ५ भाग सोंठ ५ भाग और मिर्च ५ भाग इनसब औषधियोंके चूर्ण को वस्त्रमें छानकर अदरकके रसमें मूंगके समान गोली बनावे प्रातःकाल और सायंकाल जलके साथदो गोलीखाय इस्से आमसहितज्वर,बुरेजलसे होनेवालाज्वर,अजीर्ण, अफरा,विष्टंभ, शूलश्वास और खांसीका नाश होता है ॥ ४४० ॥

पटोलमुस्तामृतवल्लिवासकंसनागरंधान्यकिराततिक्तकम् । कषायमेषांमधुनापिबेन्नरोनिवारयेद्दुर्ज्जलदोषमुल्बणम् ॥ इति पटोलादिक्काथः ॥ ४४१ ॥

पटोलादि क्काथ ॥

पर्वल, मोथा, गिलोय,वांसा,सोंठ,धनियां,चिरायता इनका क्काथ सहत डालकर पीनेसे बुरेजल से होनेवाले बहुत बडे दोषको भी नाशकरता है ॥ ४४१ ॥

किराततिक्तात्रिवृदम्बुपिप्पलीविडंगविश्वाकटुरोहिणीरजः । निहन्तिलीढंमधुनातिसत्वरंसुदुस्तरंदुर्जलदोषजंज्वरम् ॥ इति किरातादिचूर्णम् ॥ ४४२ ॥

किरातादि चूर्ण ॥

चिरायता, निसोथ, सुगन्धबाला, पीपल,बायबिंडग,सोंठ और कुटकी इनसबको चूर्णकरके सहत के संगचाटनेसे बहुत शीघ्र बुरेजलके दोषसे उत्पन्नहुआ अत्यन्त दुस्तरज्वर शान्त होताहै ॥ ४४२॥

भोजनाग्रेनरैर्भुक्तंशुण्ठ्यजाज्यभयोत्थितम् । कल्कन्तुसेवितंनित्यंनानादेशोद्भवंजलम्॥सहार्द्रकयवक्षारौपीत्वाकोष्णेनवारिणा॥नानादेशसमुद्भूतंवारिदोषमपोहति॥ ४४३ ॥

भोजनके पहले सोंठ, कालाजीरा और हड इनकी चटनी पीसकर खानेसे अनेक देशोंके जलसे उत्पन्न हुआ ज्वरशान्त होताहै अदरक और जवाखार गरमजलके साथ पीनेसे अनेक देशोंके जलसे उत्पन्न हुआ दोष शान्त होताहै ॥ ४४३ ॥

अथ साध्यज्वरस्यलक्षणमाह ॥

बलवत्स्वल्पदोषेषु ज्वरःसाध्योऽनुपद्रवः ॥ ४४४ ॥

साध्यज्वरका लक्षण ॥

जिस ज्वरमें रोगी सबल होय दोष थोडे होयँ और कोई उपद्रव न होयँ सो साध्य है ॥ ४४४ ॥

अथ ज्वरस्योपद्रवानाह ॥

श्वासोमूर्च्छाऽरुचिश्छर्दिस्तृष्णातीसारविग्रहाः । हिक्काकासांगदाहश्चज्वरस्योपद्रवादश ॥ ४४५ ॥

ज्वरके उपद्रव ॥

श्वास,मूर्च्छा, अरुचि,छर्दि, तृषा, अतीसार, मलकारुकना, हिचकी,खांसी और दाह ये दशज्वरके उपद्रवहैं ॥ ४४५ ॥

अथ प्रसंगादुपद्रवाणांचिकित्साविशेषमाह ॥

सञ्जातोपद्रवोव्याधिस्त्याज्योनस्याच्चिकित्सकैः । व्याधौशान्तेप्रणश्यन्तिसद्यःसर्व्वे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऽप्युपद्रवाः ॥ अतोऽव्याधिंजयेद्यत्नात्पूर्वंपश्चादुपद्रवान् । भिषग्यःकुशलःसोऽत्रजयेत्पूर्वमुपद्रवम् ॥ तेष्वपिप्रचुरेषुप्राङ्नाशयेदाशुकारिणम् । मूलव्याधिंजयेत्पूर्वंयत्रयोवा भवेद्बली ॥ अविरोधेनकार्यातदुभयोरपिचक्रियाम् ॥ ४४६ ॥

प्रसंगसेज्वरके उपद्रवोंकीविशेष चिकित्सा ॥

वैद्य उपद्रवों के उत्पन्न होनेपर रोगको छोड न देवे क्योंकि रोगके शान्तहोजाने पर सम्पूर्ण उपद्रव शीघ्रही शान्त होजाते हैं इसीसे पहले रोगको नाशकरे पीछेउपद्रवोंकी चिकित्साकरे और जो चतुरवैद्य होय तो पहले उपद्रवोंकोजीते परन्तु उपद्रवों में से जो उपद्रव बहुत शीघ्र हानिकारी होवे उसकी चिकित्सा पहले करे एक दूसरेके विरोधसे रहित पहले मुख्यरोगकी चिकित्साकरे अथवा जो बलवान् होय उसकी चिकित्साकरे ॥ ४४६ ॥

तत्र ज्वरेश्वासस्यचिकित्सा ॥

सिंहीव्याघ्रीताम्रमूलीपटोलीशृंगीपद्मापुष्करंरोहिणीच। शाकंशट्याःशैलमल्ल्याश्च बीजंश्वासंहन्यात्सन्निपातंदशांगः॥ सिंहीबृहत्कण्टकारी । व्याघ्रीलघुकण्टकारी। ताम्रमूलीदुरालभा । रोहिणीकटुकी । शैलमल्लीकोरैया । दशांगप्रयोगः ॥ ४४७ ॥

ज्वरवालेके श्वासकी चिकित्सा ॥

बडी भटकटैया छोटी भटकटैया जवासा पटोली काकडासिंगी पद्माक पुष्करमूल कुटकी कचूर काशाक कुरैया का बीज इनका क्वाथ सेवन करने से सन्निपातजश्वास का नाश होता है इतिदशांग प्रयोग॥ ४४७ ॥

भार्ङ्गीनिम्बघनाभयामृतलताभूनिम्बवासाविषा त्रायंतीकटुकावचात्रिकटुकस्योनाकशक्रद्रुमैः । रास्नायासपटोलपाटलशटीदार्व्वीविशालात्रिवृत् ब्राह्मीपुष्करसिंहिकाद्वयनिशाधात्र्यक्षदेवद्रुमैः ॥ क्वाथोऽयंखलुसन्निपातनिवहान्द्वात्रिंशतांपानतो दुर्द्धर्षान्निजतेजसाविजयतेसर्पान्गरुत्मानिव । किञ्चश्वासबलासकासगुदरुग्हृद्रोगहिक्कामरुन्मन्यास्तम्भगलामयार्दितमलाविष्टम्भवधर्मानपि ॥ विषाअतीसशक्रद्रुमःवकुलइतिलोके। देवद्रुमोदेवदारु । इतिद्वात्रिंशत्क्वाथः ॥ ४४८ ॥

द्वात्रिंशत्क्वाथ ॥

भारंगी,नींब,मोथा,हड,गिलोय,चिरायता,बांसा,अतीस,त्रायमाणा,कुटकी,बच,सोंठ,पीपल,मिर्च, सोनापाठा, मोलसरी,रासना,जवासा,पर्वल,पटोली,कचूर,गाजवां,इन्द्रायण,निसोथ,ब्राह्मी,पुष्करमूल,दोनोंभटकटैया,हल्दी, आंवला,बहेडा और देवदारु इनका काढा सर्पोंको गरुडजी के समानसन्निपातों को जीतता है और श्वास, कफ,खांसी,गुदाकीपीडा,हृदय के रोग,हिचकी, वात,गलेके पीछे की नसका जकडना,गलेके रोग,अर्दितवात,विष्टंभ तथा बदरोगको नाशकरता है ॥ ४४८ ॥

मधुनाकृष्णाकट्फलकर्कटशृंगीभवंचूर्णम् । श्वासामयेमहोग्रेलीढ्वालोकःसुखीभवति ॥ वन्योपलाग्नितापितदात्रस्याग्रेणपञ्जरेदाहः । अपहरतिश्वासामयमसंशयंभाषितंमुनिभिः ॥ ४४९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पीपल,कायफल और काकडासिंगी के चूर्णको सहत के साथ चाटने से बहुत बढ़ेहुये श्वासरोग कानाश होताहै अरनेकंडों से खुरपे को गरम करके पांजर में दागनेसे निस्संदेह श्वास रोगका नाश होताहै यहमुनिलोगोंने कहा है॥ ४४६ ॥

अथ ज्वरेमूर्च्छायांचिकित्सा ॥

आर्द्रकस्यरसैर्नस्यंमूर्च्छायामाचरेन्नरः। अञ्जनञ्चप्रयुञ्जीतमधुसिन्धुशिलोषणैः॥ शीताम्भसाऽक्षिसेकःसुरभिर्धूपःसुगन्धिपुष्पञ्च । मृदुतालवृन्तवातःकोमलकदलीदल स्पर्शः॥ ४५०॥

ज्वर में मूर्च्छा की चिकित्सा ॥

अदरकके रसकी नासलेने से और सहत सेंधानोन मैनशिल और मिर्चको पीसकर अंजनलगानेसे मूर्च्छाका नाश होताहै शीतल जलको नेत्रों में सींचनेसे सुगन्धित धूप तथा पुष्पोंसे कोमल पंखेकी वायुसे और कोमल केलेके पत्तोंके स्पर्शसे मूर्च्छाका नाश होता है॥ ४५०॥

अथ ज्वरेऽरुचेश्चिकित्सा ॥

अरुचौतुशृंगवेरजरसकैःसोष्णैःससिन्धुजैःकवलः ॥ सिन्धूत्थमातुलुंगीफलकेशर धारणंवक्के॥ ४५१॥

ज्वर में अरुचिकी चिकित्सा॥

अरुचिमें,गरम अदरक के रसको सेंधानिमक मिलाकर मुखमें रक्खे अथवा नींबूके रस में सेंधानिमक मिलाकर मुखमें रक्खे॥ ४५१॥

अथ ज्वरेछर्देश्चिकित्सा ॥

क्काथोगुडूच्याःसमधुःसुशीतःपीतःप्रशान्तिंवमनस्यकुर्य्यात्। विड्माक्षिकाणांमधुनाऽवलीढासचन्दनाशर्करयान्वितावा॥ ४५२॥

ज्वर में छर्दिकी चिकित्सा॥

गिलोय के काढ़ेको ठंढाकरके सहत डालकर पीनेसे छर्दिका नाश होताहै मक्खी की बीटको सहत के साथ चन्दन अथवा शक्कर युक्त चाटने से छर्दिका नाश होताहै॥ ४५२॥

अथ ज्वरेतृष्णायाश्चिकित्सा॥

दन्तशठबीजपूरकदाडिमबदरैः सचुक्रकैर्वदने।लेपोजयतिपिपासामथरजतगुटीमुखान्तःस्था॥ शीतम्पयःक्षौद्रयुतंनिपीतमाकण्ठमाशुवेवतदुद्वमेच्च । तर्षंमहान्तंशमयेद्विवक्त्रेधृत्वाथवाक्षौद्रवटाग्रलाजाम्॥ ४५३॥

ज्वर में तृषाकी चिकित्सा॥

बिजौरा नींबू,जंभीरी नींबू,अनार,बेर और चूका इनसब औषधियों को मुख में लेप करनेसे और चाँदीकी गोली को मुखमें रखने से तृषाका नाश होताहै सहतयुक्त ठंढेदूधको गलेतक पीकर शीघ्र ही वमन करने से अथवा सहत बर्गद के अंकुर और खीलों को एक में मिलाकर मुखमें रखने से तृषा का नाश होताहै॥ ४५३॥

अथ ज्वरेऽतीसारस्यचिकित्सा॥

लङ्घनमेकंमुक्त्वानान्यदस्तीह भेषजंबलिनः। समुदीर्णदोषनिचयंशमयतितत्पाचयेद

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पिच॥वत्सादनीवत्सकवारिवाहविश्वम्भरानिम्बविषासविश्वाः। ज्वरेतिसारंत्वरितंजयन्तिविश्वामृतावत्सकवारिवाहाः (विश्वम्भराभूनिम्बः) पाठामृतापर्पटमुस्तविश्वाकिराततिक्तेन्द्रयवान्विपाच्य। पिबन्हरत्येवहठेनसर्वान्ज्वरातिसारानपिदुर्निवारान् ४५४॥

ज्वर में अतीसार की चिकित्सा॥

बलवान् ज्वरवालेको अतीसार में लंघनके सिवाय और कोई औषधि नहीं है लंघनसे बढ़े हुये दोषोंकी शान्ति और परिपाक होताहै गिलोय, कुरैया, मोथा, चिरायता, नींब, अतीस और सोंठ इनके क्काथ से शीघ्रही ज्वरके अतीसार का नाशहोताहै सोंठ, गिलोय, कुरैया और मोथा इनके काढ़ेसे अतीसार का नाशहोताहै पाठा, गिलोय, पित्तपापड़ा, मोथा, सोंठ, चिरायता और इन्द्रजौ इनके काढ़ेके पीनेसे सम्पूर्ण दुर्निवार्य्य ज्वरातीसारों का भी नाश होताहै॥ ४५४॥

अथ ज्वरेविड्ग्रहस्यचिकित्सा॥

विड्ग्रहेवातजित्कर्म्मकुर्य्यादत्रानुलोमनम्। मलम्प्रवर्त्तयेदाशुतीक्ष्णाभिःफलवर्त्तिभिः॥ पथ्यारग्वधतिक्तात्रिवृदामलकैःशृतन्तोयम्। जीर्णज्वरेविबन्धेदद्यादाश्वेवविड्ग्रहःशाम्येत्॥ ४५५॥

ज्वरमें मल रुकजाने की चिकित्सा॥

ज्वरमें मलके रुकजाने पर वातनाशक तथा वातकी नीचे लेजानेवाली चिकित्सा करे और तीक्ष्ण फल बर्त्तियों के द्वारा मलको निकाले हड़, अमलतास, कुटकी, निसोथ और आंवला इनके काढ़ेको पीने से जीर्णज्वर में मलके रुकनेका नाश होताहै ४५५॥

अथ ज्वरेहिक्कायाश्चिकित्सा॥

नीरेणसिन्धूत्थरजोऽतिसूक्ष्मंनस्येननूनंविनिहन्तिहिक्काम्। शुण्ठीहठाद्वासितयासमेताधूपोऽथवाहिंगुसमुद्भवश्च॥ ४५६॥

ज्वरमें हिचकी की चिकित्सा॥

सैंधोनोन को जलमें महीन पीसकर नासलेनेसे अथवा सोंठ शक्करमें मिलाकर नास लेनेसे या हींग की धूपदेने से हिचकी का नाश होताहै॥ ४५६॥

अथ ज्वरेकासस्यचिकित्सा॥

कासेकणाकणामूलंकलिंगद्रुफलंरजः। सविश्वभेषजंलिह्यान्मधुनावावृषाद्रसम्॥ (रजःपर्पटकम्) पुष्करमूलकटुत्रिकशृंगी कट्फलयासककारविकाभिः। मधुलुलिताभिरयंखलुलेहःकासरिपुःकफरोगहरश्च॥ ४५७॥

ज्वरमें खांसीकी चिकित्सा॥

ज्वरमें खांसी आनेपर पीपल, पीपलामूल, बहेड़ा, पित्तपापड़ा और सोंठ इनके चूर्ण को सहत के साथ चाटे अथवा वांसे के रस को सहत के साथ चाटे पुष्करमूल, सोंठ, पीपल, मिर्च, काकड़ासिंगी, कायफल, जवासा और कालाजीरा इन सब के चूर्ण को सहत के साथ चाटनेसे खांसी और कफकेरोगों का नाश होताहै॥ ४५७॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ ज्वरेदाहस्यचिकित्सा ॥

दाहाधिकारेलिखितंदाहेकुर्याच्चिकित्सितम्।परंज्वरेविरुद्धंयन्नोचितंतच्चिकित्सितम् ४५८

ज्वरमें दाहकी चिकित्सा ॥

दाहाधिकारमें कही हुई चिकित्सा दाहमें करे परन्तु ज्वर में जो विरुद्ध होय तो वह चिकित्सा न करै ॥ ४५८ ॥

अथ सुखसाध्यस्यज्वरस्यलक्षणम् ॥

सन्तापोऽभ्यधिकोबाह्येतृष्णादीनांचमार्द्दवम् । बहिर्वेगस्यलिंगानिसुखसाध्यत्वमेवच । तृष्णादीत्यादिशब्देनान्तर्द्दाहसन्ध्यस्थिव्यथाश्वासागृह्यन्तेतेषांमार्द्दवमल्पता । बहिर्वेगस्यज्वरस्य । वर्षाशरद्वसन्तेषुवाताद्यैःप्राकृतःक्रमात् । प्राकृतःसुखसाध्यस्तु ज्वरःसुरभिसम्भवः (सुरभिर्वसन्तः) ॥ ४५९ ॥

सुखसाध्य ज्वर का लक्षण ॥

जिस ज्वरमें शरीरके बाहर बहुत संताप होवे और तृषा अन्तर्दाह संधि हड्डियों में पीडा तथा श्वास इनकी अल्पता होवे वह बाहर वेगवाला ज्वर होताहै यह सुखसाध्य है वर्षा, शरद और वसन्त इन ऋतुओंमें क्रमसे वात पित्त तथा कफके द्वारा स्वाभाविक ज्वर होताहै इनमें से वसन्त में हुआ स्वाभाविक ज्वर सुख साध्य है ॥ ४५९ ॥

अथ कष्टसाध्यस्यज्वरस्यलक्षणम् ॥

वैकृतोऽन्यःसदुःसाध्यःप्राकृतश्चानिलोद्भवः । अन्यःप्राकृतादन्यःवैकृतः ॥ ४६० ॥

कष्टसाध्यज्वरका लक्षण ॥

वैकृत अर्थात् स्वाभाविक से विरुद्ध जैसे शरदृऋतु में कफज इत्यादि और स्वाभाविक वातज्वर कष्टसाध्य होताहै ॥ ४६० ॥

वर्षादिषुजातानांचिकित्साविशेषार्थंप्राधान्यमाह ॥

वर्षासुमारुतोदुष्टःपित्तश्लेष्मान्वितोज्वरम् । कुर्यात्पित्तञ्चशरदितस्यचानुबलः कफः । कफोवसन्तेतमपिवातपित्तंभवेदनु ॥ ४६१ ॥

वर्षाआदिमें उत्पन्न ज्वरकी विशेष चिकित्साके लिये प्राधानता कहते हैं ॥

वर्षा में वायु दूषित होकर पित्त तथा कफसे युक्त ज्वर को उत्पन्न करताहै शरदृऋतु में दूषित हुआ पित्त कफ के साथ ज्वर को उत्पन्न करताहै और वसन्तऋतु में दूषित हुआ कफ वात पित्त के साथ ज्वर को उत्पन्न करताहै ॥ ४६१ ॥

तस्यपित्तज्वरस्यचिकित्सामाह ॥

तत्प्रकृत्याविसर्गाच्चतत्रनानशनाद्भयम् । तत्प्रकृत्यातस्यपित्तस्यप्रकृत्यास्वभावेन ॥ ततउक्तम् ॥ कफपित्तेद्रवेधातुसहेतेलङ्घनंबहु । इतिविसर्गाच्चशरदोविसर्गकालत्वाच्च ॥ यतउक्तम् ॥ वर्षाशरद्धेमन्ताविसर्गकालास्तत्रोपचितबलाः । प्राणिनोभवन्तिसोमस्यत्र लवत्वादिति ॥ तत्रशरदिपित्तज्वरेअनशनाद्भयंन । वसन्तेकफज्वरेऽपिकफप्रकृत्यालङ्घनाद्भयंनभवति ॥ किन्तुवसन्तस्यादानकालत्वान्निःशङ्कंनकर्त्तव्यम् । यतउक्तं ॥ शिशिर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वसन्तग्रीष्मास्त्वादानकालास्तत्रापचितबलाःप्राणिनोभवन्ति सूर्य्यस्यबलत्वादिति ॥ एतेनेदमुक्तम् । वर्षासुवायुःप्रधानम्पित्तश्लेष्मणावप्रधाने ॥ शरदिपित्तंप्रधानम् कफोऽप्रधानःवसन्तेश्लेष्माप्रधानम् वातपित्तेअप्रधाने । तत्रप्रधानस्यप्राधान्येनचिकित्साकर्त्तव्यासाचाप्रधानेनिषिद्धानविधेया ॥ एवंवैकृतेष्वपिप्रधानस्यप्राधान्येनचिकित्साकर्त्तव्या । तथाचोक्तम् संसर्गेयोगरीयान्स्यादुपक्रम्यःसवैभवेत् ॥ शेषदोषाविरोधेनसन्निपातेतथैवच । इतिसंसर्गेदोषद्वयसंसर्गेगरीयान्प्रधानः । अन्तर्दाहोऽधिकातृष्णाप्रलापःश्वसनंभ्रमः।सन्ध्यस्थिशूलमस्वेदोदोषवर्चोविनिग्रहः ॥ अन्तर्वेगस्यलिङ्गानिकष्टसाध्यत्वमेवच । वर्चोविनिग्रहःपुरीषाऽप्रवृत्तिः ॥ ४६२ ॥

पित्तज्वरकी चिकित्सा ॥

पित्तज्वरमें पित्तके स्वाभाविक पतलेपन से और विसर्ग कालहोनेसे लंघनदेनेमें कोई भय नहीं होता क्योंकि कहागयाहै कि कफ और पित्त यह दोनों पतली धातुहैं इसलिये बहुत लंघनको सह सक्ते हैं विसर्गसे अर्थात् शरदृत्तुके विसर्गकालहोनेसे क्योंकि कहागयाहै कि वर्षा शरद् और हेमन्त यह विसर्गकालहैं इनमें चन्द्रमाके बलवान् होनेके कारण प्रायःमनुष्योंका बल इकट्ठा होताहै इसलिये शरदृत्तुके पित्तज्वरमें लंघनकरानेसे कोई भय नहीं है वसन्तऋतुके कफज्वरमेंभी कफके स्वाभाविक पतलेहोनेसेलंघनकरानेमें भयनहींहै परन्तु आदानकाल होने से निस्सन्देहहोकर लंघन नहीं करानाचाहिये क्योंकि कहागयाहै कि शिशिरवसन्त और ग्रीष्म यह आदानकालहैं इनमें सूर्य्यके बलवान्होनेसे प्रायः प्राणियोंका बलघटताहै इस्से यह मालूमहोताहै किवर्षामें वायुप्रधान पित्त तथा कफ अप्रधान शरद्में पित्तप्रधान कफअप्रधान और वसन्तमें कफप्रधान वात तथा पित्तअप्रधान होते हैं इस्से इनसब कालोंमें अप्रधानकी अविरोधी प्रधानकी चिकित्सा करनी चाहिये इसीप्रकार वैकृत ज्वरोंमेंभी अप्रधानकी अविरोधी प्रधानकी चिकित्सा करनी चाहिये क्योंकि कहागयाहै कि दोदोष और सन्निपातमें जो दोष बलवान्हो उसकी चिकित्साकरे परन्तु इसबातपर ध्यानरक्खे कि बाकी के दोषोंके विरुद्ध न होवे भीतरदाह अधिकतृषा प्रलाप श्वास भ्रम संधि तथा हड्डियोंमेंपीडा पसीने का न निकलना और दोष तथा मलका न निकलना यह अन्तर्वेग ज्वरके लक्षण हैं यह कष्टसाध्य होता है ॥ ४६२ ॥

अथासाध्यस्यज्वरस्यलक्षणमाह ॥

ज्वरःक्षीणस्यशूनस्यगम्भीरोदीर्घरात्रिकः । असाध्योबलवान्यश्चकेशसीमन्तकृज्ज्वरः ॥ दीर्घरात्रिकःबहुरात्रानुबन्धीकेशसीमन्तकृत । प्रभावात्केशेषुसीमन्तंयःकरोति ॥ ४६३ ॥

असाध्य ज्वरका लक्षण ॥

क्षीण तथा सूजनयुक्त पुरुषका ज्वर और गंभीर तथा बहुत रात्रितक रहनेवाला ज्वर असाध्य होताहै और जिस बलवान् ज्वरके द्वारा रोगी के बाल अकस्मात् जूडेसे बँधजायँ वह असाध्यहै४६३॥

अथ गम्भीरज्वरस्यलक्षणमाह ॥

गम्भीरस्तुज्वरोज्ञेयोह्यन्तर्दाहेनतृष्णया । आनद्धत्वेनचात्यर्थंकासश्वासोद्गमेन च ॥ आनद्धत्वंनविबद्धमलत्वेन ॥ ४६४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गम्भीरज्वरका लक्षण ॥

जिसज्वरमें भीतर दाह,तृषा,खांसी,श्वास और मलकी बहुत रुकावटहो उसको गंभीरकहतेहैं ४६४॥

सामान्यज्वरेकर्णमूलशोथस्यसुखसाध्यत्वादिकमाह ॥

ज्वरस्यपूर्वंज्वरमध्यतोवाज्वरान्ततोवाश्रुतिमूलशोथः । क्रमादसाध्यःखलकृच्छ्रसाध्यःसुखेनसाध्योमुनिभिःप्रदिष्टः ॥ ४६५ ॥

सामान्यज्वरमें कर्णमूलकी सूजनका सुखपूर्व्वक साध्यपना आदि कहतेहैं ॥

ज्वरके पहले ज्वरके मध्यमें और ज्वरके अन्तमें कर्णमूलकी सूजन क्रमसे असाध्य कष्टसाध्य और सुखसाध्य होतीहै ॥ ४६५ ॥

अथारिष्टमाह ॥

रोगिणोमरणंयस्मादवश्यम्भाविलक्ष्यते । तल्लक्षणमरिष्टंस्याद्रिष्टमप्यभिधीयते॥हेतुभिर्बहुभिर्जातोबलिभिर्बहुलक्षणः । ज्वरःप्राणान्तःकृद्यश्चशीघ्रमिन्द्रियनाशनः ॥ शीघ्रमिन्द्रियनाशनःउत्पन्नमात्रएवचिकित्स्यमानोऽपि इन्द्रियाणां चक्षुरादीनांशक्तियो नाशयति ॥ ४६६ ॥

अरिष्टका लक्षण ॥

जिस लक्षण से रोगीकी मृत्यु अवश्यहोगी यह निश्चयहो उसको अरिष्ट तथा रिष्ट कहतेहैं जो ज्वर बलवान् बहुतसे कारणोंसे उत्पन्न तथा बहुत लक्षणवाला होय वह अवश्य मारनेवाला होताहै और जो ज्वर उत्पन्न होतेही चिकित्साके होनेपरभी शीघ्र नेत्रादिक इन्द्रियोंकी शक्तिको नाशकरता है वह असाध्यहै ॥ ४६६ ॥

अन्यच्चारिष्टमाह ॥

विसंज्ञस्ताम्यतेयस्तुशेतेनिपतितोऽपिवा । शीतार्द्दितोऽन्तरुष्णश्चज्वरेणम्रियतेनरः ॥ विसंज्ञःविगतज्ञानः ॥ ताम्यतेनष्टहर्षःशेतेनिपतितोवाअत्रापिवाशब्दएवार्थः । निपतितएवतिष्ठतिनचोत्थातुंसमर्थः ॥ तथासनशेतेवाशीतार्द्दितोःबहिः । अन्तरुष्णःअन्तर्दाहवान् ॥ (अन्यच्च) योहृष्टरोमारक्ताक्षोहृदिसङ्घातशूलवान् । वक्त्रेणचैवोच्छ्वसिति तंज्वरोहन्तिमानवम् ॥ हृष्टरोमाञ्चवान्हृदिसंघातवान्सन्निपातिकशूलवान् । वक्त्रेणचैवोच्छ्वसितिनतुनासिकया॥ (अन्यच्च) हिक्काश्वासतृषायुक्तंमूढविभ्रान्तलोचनम् । सन्ततोच्छ्वासिनंक्षीणंनरंक्षपयतिज्वरः॥ क्षपयतिसमापयतीत्यर्थः (अन्यच्च) हतप्रभेन्द्रियंक्षाममरोचकनिपीडितम् । गम्भीरतीक्ष्णवेगार्त्तंज्वरितंपरिवर्जयेत् ॥ हतप्रभेन्द्रियम् हताप्रभादीप्तिर्येषांअथवाहताप्रभाप्रतिभाविषयग्रहणशक्तिर्येषाम् तथाविधानि इन्द्रियाणियस्यतंहतप्रभेन्द्रियम्॥क्षामंक्षीणम् गम्भीरतीक्ष्णवेगार्त्तंगम्भीरःउक्तलक्षणकः ॥ तीक्ष्णवेगःअतिदुःसहवेगः । ताभ्यामार्त्तंदुःखितम् (अन्यच्च) मरणंप्राप्नुयात्तत्रशुक्रस्थानगतेज्वरे ॥ शेफसस्तब्धताभोक्षःशुक्रस्यतुविशेषतः । व्याख्यातोऽयंश्लोकः॥ ४६७ ॥

अन्य प्रकारके अरिष्ट जो मनुष्यज्वरके वेगसे ज्ञानरहित होजाय और शय्यामें उठनेकी शक्तिसे रहित होकर पडारहै अथवा सोवे और भीतर दाह तथा बाहर शीतसे युक्तहो वह मरजाताहै अन्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकारके अरिष्ट जिस ज्वरवालेके शरीरमें रोमांच होवें नेत्र लालहोंय हृदयमें सन्निपातकी पीडा होय और मुखसेही श्वासले वह नहीं जीताहै अन्यप्रकार जिस ज्वरमें हिचकी श्वास तृषा मूर्च्छा नेत्रोंका इधर उधर चलाना तथा क्षीणताहो और निरन्तर श्वास चले वह मनुष्यको मारताहै अन्य प्रकार जिस ज्वरवालेकी इन्द्रियोंकी दीप्ति अथवा विषयोंके ग्रहण करनेकी शक्ति नष्ट होजाय क्षीणता तथा अरुचि होय और बहुत वेगके साथ गंभीर ज्वरहोय ऐसे रोगीको वैद्य त्याग करदे अन्य प्रकार वीर्य्य स्थानमें ज्वरके जानेपर लिंगकी शिथिलता और अधिक वीर्य्यपात होताहै इसमें रोगी नहीं जीताहै ॥ ४६७ ॥ अथ विषमज्वरस्यारिष्टमाह ॥

आरम्भाद्विषमोयस्ययस्यवादीर्घरात्रिकः । क्षीणस्यचातिरूक्षस्यगम्भीरोयस्यहन्तितम् ॥ यस्यआरम्भाद्विषमः । प्रथममेवविषमःनतुज्वरोत्सृष्टस्य । यस्यदीर्घरात्रिकः । यस्यक्षीणस्यातिरूक्षस्यचगम्भीरोभवति। तंविषमोदीर्घरात्रिकोगम्भीरश्चहन्तीत्यर्थः । (इति ज्वराधिकारः) ॥ ४६८ ॥ विषमज्वरका अरिष्ट ॥

जो ज्वर उत्पन्न होतेही विषमहोय अथवा बहुत रात्रि तक रहै वह असाध्य है और क्षीण तथा रूखे शरीरवाले का गंभीर ज्वर असाध्य होताहै इतिज्वराधिकार ॥ ४६८ ॥

अथातीसाराधिकारः । तत्रातीसारस्यप्रकृष्टानिनिदानान्याह ॥

गुर्व्वतिस्निग्धरूक्षोष्णद्रवस्थूलातिशीतलैः । विरुद्धाध्यशनाजीर्णैर्विषमैश्चापिभोजनैः ॥ स्नेहाद्यैरतियुक्तैश्चमिथ्यायुक्तैर्विषैर्भयैः । शोकदुष्टाम्बुमद्यातिपानैःसात्म्यर्त्तुपर्य्ययैः ॥ जलाभिरमणैर्वेगविघातैःकृमिदोषतः । नृणांभवत्यतीसारोलक्षणंतस्यवक्ष्यते ॥ गुरुमात्रयास्वभावेनसंस्कारेणचअतिशब्दःस्थूलान्तःसहसम्बद्ध्यते । स्थूलमसम्यक्पिष्टन्नंधूमादि । विरुद्धंसंयुक्तंक्षीरमत्स्यादि । अध्यशनमजीर्णेभुज्यतेयत्तदध्यशनमुच्यते । अजीर्णआमंविदग्धञ्च । बहुस्तोकमकालेचभुक्तंयद्विषमंहितत् । भोजनैरितिगुर्व्वादिभिर्विषान्तैःसर्वैःसहसम्बध्यते । स्नेहाद्यैःस्नेहपानस्वेदनवमनविरेचनानुवासननिरूहान्तैः अतियुक्तैर्वारंवारंप्रयुक्तैर्मिथ्यायुक्तैः अविधिप्रयुक्तैश्चतैर्विषैः विषाण्यत्रस्थावराणितेषामधोगत्वात्।शोकबन्धादिवियोगजनितमनःपीडा । सात्म्यर्त्तुपर्य्ययैःसात्म्यविपरीतैरसात्म्यैः ॥ तथायस्मिन्नृतौयदुचितंतद्विपरीतैः । जलाभिरमणैःजलक्रीडादिभिः । वेगविघातैःमूत्रपुरीषादिहठधारणैः । कृमिभिःपक्वाशयस्यदुष्टैः ।एतानियथासम्भवंवातादीनांदुष्टैःकारणानिबोद्धव्यानि । नन्वेवंसतिस्वहेतुदुष्टेनवातादिनातिसारोभवत्वेवतावन्मात्रवाच्यंकिमर्थंगुर्व्वादिह्यभिधानमुच्यतेगुर्व्वादिहेतुदूषिताएव । वातादयोबाहुल्येनातिसारंजनयन्ति । ननुलङ्घनभुक्तजीर्णतादिलघ्वन्नंक्रोधतृषाक्षुधाभिहननदध्यारणालव्यायामवर्षाशरद्वसन्तादिभिःकुपिताः । अतोगुर्व्वादीन्युच्यन्ते । एवमन्यत्रापिबोद्धव्यम् ॥ ४६९ ॥

१ अथज्वरमुक्तस्नानम् ॥ धनिष्ठाश्रवणौस्वातिज्येष्ठाशतभिषातथा । रविमन्दभौमवाराश्चन्द्रःशुभविवर्जितः ॥ केन्द्रस्थाश्चाशुभाःशस्ताव्यतीपातादिवासराः । तिथिर्नशुद्धाप्रतिपत्तृतीयानवमीतथा ॥ स्नानायरोगमुक्तानांदशमीचत्रयोदशी । बुधेन्दुगुरुशुक्राणांवाराःस्नानेनशोभनाः । रोगामुक्तस्यनाश्लेषारोहिणीभद्रदायिनी ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अतीसाराधिकार अतीसारके दूरवालेनिदान ॥

भारी वस्तु (मात्रा स्वभाव अथवा संस्कारसे) बहुत चिकनीवस्तु बहुत रूखीवस्तु बहुत उष्ण वस्तु बहुत पतलीवस्तु बहुत स्थूलवस्तु (अच्छेप्रकारसे नहीं पिसे हुए गेहूं आदिक) तथा बहुत शीतलवस्तुके सेवनसे विरुद्ध (दूध तथा मछली आदिक संयोग विरुद्ध) अध्यशन (अजीर्णमें भोजन) अजीर्ण (कच्चातथा अर्द्धपक्व अन्नादिक) तथा विषम (प्रमाणसे अधिक अथवा थोड़ा और अकालमें भोजन) भोजनसे स्नेहपान स्वेद वमन विरेचन अनुवासन तथा निरूह वस्तिके वारंवार देनेसे अथवा विधिपूर्व्वक न देनेसे विधिपूर्व्वक नहींदियेगये स्थावर विषोंसे भय शोक दूषितजल तथा मद्यके बहुत पीनेसे सात्म्य विपर्य्यय (स्वभावके विपरीत) तथा ऋतु विपर्य्यय (जिसऋतुमें जो आहार विहार उचितहैं उनसे विपरीत) से जलक्रीडासे मलमूत्रादिकोंकेवेगके रोकने से और पक्काशयके दुष्ट कृमियोंसे मनुष्यों के अतीसाररोगउत्पन्न होताहै यह संपूर्ण कारण यथासंभव वातादिकों के दोषोंसे जानने चाहिये अब यह सन्देहहोताहै कि अपने हेतुओं से दोषयुक्त वातादिकोंके द्वारा तो अतीसार होताही है फिर इतनाहीन कहकर भारीपन आदि कारण क्यों कहे ? इसका उत्तर यहहै कि भारी आदि कारणोंसे दोषयुक्त वातादिकही बहुधा अतीसारको उत्पन्न करतेहैं नकि लंघन भोजनका परिपाकहोना आदिक हलकाअन्न क्रोध तृषा क्षुधाकारोकना दही आरनाल (कांजीविशेष) व्यायाम वर्षा शरद् और वसन्त आदिकोंसे दोषयुक्त वातादिक अतीसारको उत्पन्न करते हैं इसीलिये भारी आदि कारण कहे जातेहैं इसीप्रकार और स्थानोंमें भी जानने चाहिये ॥ ४६९ ॥

तस्यैवपूर्वरूपमाह ॥

हृन्नाभिपार्श्वोदरकुक्षितोदगात्रावसादानिलसन्निरोधाः । विट्संगआध्मानमथाविपाकोभविष्यतस्तस्यपुरःसराणि ॥ विट्संगःपुरीषाप्रवृत्तिःअविपाकोभुक्तस्यपुरःसराणि ॥ एतानिलक्षणानिपूर्वभावीनि ॥ ४७० ॥

अतीसार का पूर्व रूप ॥

अतीसार रोग होनेसे पहले हृदय, नाभि, पसली तथा कुक्षिमें सुई गड़ने के समान पीड़ा शरीर में शिथिलता वायु का रुकना मलका न निकलना अफरा और भोजन का न पचना यह लक्षण होतेहैं ॥ ४७० ॥

अथातीसारस्यसंप्राप्तिमाह ॥

संशम्यापांधातुरग्निंप्रवृद्धोवर्चोमिश्रोवायुनाधःप्रणुन्नः सरत्यतीवाऽतिसारंतमाहुर्व्याधिंघोरंषड्विधन्तंवदन्ति ॥ अपांधातुःअत्रसमासाकरणाद्बहुत्वेनचरसजलमूत्रस्वेदमेदःकफपित्तरक्तादयोद्रवधातवोगृह्यन्तेः । प्रवृद्धःअग्निंसंशम्यशमयित्वावर्चोमिश्रः पुरीषयुक्तःवायुनाअधःप्रणुन्नःअधःप्रेरितः । अथ सामान्यंरूपमाह । अतिसरतिनदीवत् अतीसारंतमाहुर्व्याधिंघोरमिति । योरसादिद्रवधातुःअतीवसरतीतिप्रकृतिमतिक्रम्यगुदाऽध्वनासरतितंव्याधिमतीसारमाहुः । किंविधंघोरंघोरंभीमंभयानकमित्यमरः अस्य संख्यामाह । षड्विधन्तंवदन्तीतिषड्विधत्वंविवृणोति । एकैकशःसर्वशश्चापिदोषैः शोकेनान्यःषष्ठआमेनचोक्तः ॥ ४७१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अतीसारकी संप्राप्ति ॥

जिसरोग में रस, जल, मूत्र, स्वेद, मेद, कफ, पित्त तथा रुधिरादिक जलकी धातु बढ़कर अग्नि को शान्त करके मलके साथ मिली हुई और वायुके द्वारा नीचे प्रेरणाकी गई निकलती है उसको अतीसार कहते हैं वैद्यलोग इस रोगको अत्यन्त भयङ्कर और छः प्रकारका कहते हैं अतीसारका साधारण रूप यहहै कि रसादिक पतलीधातु अपने स्वभावको छोडकर गुदाके मार्ग से बहुत निकलती हैं इससे इस रोगको अतीसार कहते हैं इसकी संख्या वर्णन कीजाती हैं अतीसार छः प्रकारकाहै जैसे वातज पित्तज कफज त्रिदोषज शोकज और आमज ॥ ४७१ ॥

अथ सामान्यातीसारस्यचिकित्सामाह ॥

आमपक्वक्रमंहित्वानातीसारेक्रियायतः। अतोऽतीसारेसर्व्वस्मिन्नामंपक्वञ्चलक्षयेत् ४७२

अतीसारकी सामान्यचिकित्सा ॥

अतीसारमें आमके परिपाकके क्रमको छोड़कर और कोई चिकित्सा नहीं है इसलिये सम्पूर्ण अतिसारोंमें आम और परिपाक पर अधिक दृष्टि देनी चाहिये ॥ ४७२ ॥

अथ क्रमाचिकित्सातत्रामपक्वयोर्लक्षणम् ॥

संसृष्टमामैर्दोषैस्तुन्यस्तमप्सुनिमज्जति । पुरीषंभृशदुर्गन्धिपिच्छिलञ्चामसंज्ञितम्॥एतान्येवतुलिङ्गानिविपरीतानियस्यवै। लाघवञ्चविशेषेणतन्तुपक्वंविनिर्दिशेत्४७३॥

क्रमसे चिकित्सा आम और पक्वका लक्षण ॥

आमसहित दोषोंसे युक्त होनेके कारण जो मलजल में डालने से डूबजाय और अत्यन्त दुर्गन्धित तथा पिच्छिल होय उसको आम कहते हैं और इन लक्षणों से रहित तथा बहुत हलके मलको पक्व कहते हैं ॥ ४७३ ॥

नचसंग्राहकंदद्यात्पूर्वमामातिसारिणे। अकालेसंग्रहीतस्तुविकारान्कुरुतेबहून् ॥ दण्डकालसकाध्मानंग्रहण्यर्शोभगन्दरान् । शोथपाण्ड्वामयप्लीहगुल्ममेहोदरज्वरान् ॥ डिम्भस्थःस्थविरस्थश्चवातपित्तात्मकश्चयः । क्षीणधातुबलश्चापिबहुदोषोऽतिविश्रुतः॥ आमोऽपिस्तम्भनीयःस्यात्पाचनान्मरणंभवेत् ॥ लङ्घनमेकंत्यक्त्वानान्यदस्तीहभेषजंबलिनः । समुदीर्णंदोषचयंतत्पाचयेत्तथाशमयेत् ॥ लङ्घनएवदोषदुःसहपिपासायांदोषपाकार्थंषडंगविधिनार्द्धश्रृतम्। योगचतुष्टयमाह । धान्याम्बुभ्यांश्रृतंतोयंतृष्णादाहातिसारिणे। ह्रीवेरश्रृंगवेराभ्यांमुस्तपर्पटकेनवा ॥ मुस्तोदीच्यश्रृतंशीतंप्रदातव्यंपिपासवे॥ हितंलङ्घनमेवादौपूर्वरूपेऽतिसारिणे ॥ कार्य्यंवानशनस्यान्तेप्रद्रवंलघुभोजनम्॥ ४७४ ॥

आमातीसार में पहले ग्राही औषध न दे क्योंकि समयके विना मलके रोकने से दंडक, अलसक, आध्मान, ग्रहणी, बवासीर, भगन्दर, सूजन, पांडु, प्लीहा, गुल्म, प्रमेह, उदर और ज्वर यहसब विकार उत्पन्न होतेहैं बालक, वृद्ध, वात पित्तवाले, क्षीण धातु, निर्बल और जिनकादोष बहुत निकल गयाहो इनसब को आमहोने परभी ग्राही औषध देनीचाहिये क्योंकि इनको केवल पाचक औषध देने से मृत्यु होती है बलवान् को अतीसार में लंघनके सिवाय और कोई औषध नहीं है क्योंकि लंघन से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बहुत बढ़ेहुए दोष परिपाक और शान्ति को प्राप्तहोते हैं अतीसारवाले को बहुत तृष होनेपर आगे कहे हुए चार योग षडंग जलकी विधिके अनुसार आधा जल बाकी रहजाने पर दोषों के परिपाक के लिये सेवनकराना चाहिये जैसे धनियां और सुगंधबाला का जल १ तृषा दाह युक्त अतीसारमें देना चाहिये सुगन्धबाला तथा सोंठ २ मोथा तथा पित्तपापड़ा ३ और मोथा तथा सुगन्धबाला ४ इनके द्वारा औटकर आधा बचाहुआ शीतल जल तृषामें देना चाहिये अतीसार के पूर्वरूपमें पहले लंघन हितकारी है और लंघनके अन्तमें पतली तथा हलकी वस्तुका भोजन कराना चाहिये ॥ ४७४ ॥

पथ्यादारुवचामुस्तैर्नागरातिविषान्वितैः। आमातीसारनाशायक्काथमेभिःपिबेन्नरः॥ इति पथ्यादिक्काथः ॥ ४७५ ॥

पथ्यादिक्काथ ॥

हड़, देवदारु, वच, मोथा, सोंठ और अतीस इनका काढ़ा आमातीसारका नाश करताहै ४७५ ॥

पाठाहिङ्ग्वाजमोदोग्रापञ्चकोलाद्रुजंरजः। उष्णाम्बुपीतंसरुजंजयत्यामंससैन्धवम्॥ इति पाठादिचूर्णम् ॥ ४७६ ॥

पाठादिचूर्ण ॥

पाठा, हींग, अजवाइन, वच और पंचकोल इनसबके चूर्ण में सेंधानोन मिलाकर गरमजलके साथ पीनेसे पीड़ायुक्त आमका नाश होताहै ॥ ४७६ ॥

हरीतकीसातिविषाहिङ्गुसौवर्चलंवचा। सैन्धवञ्चापिसंपिष्यपाययेदुष्णवारिणा ॥ आमातिसारयोगोऽयंपाचयित्वाचिकित्सति। आमातिसारयोगेनयद्येतेननशाम्यति ॥ नतंयोगशतेनापिचिकित्सतिचिकित्सकः॥ इति हरीतक्यादिकल्कः ॥ ४७७ ॥

हरीतक्यादिकल्क ॥

हड़, अतीस, हींग, कालानोन, वच और सेंधानोन इनसब औषधियोंको पीसकर गरमजल के साथ पानकरानेसे पाचन होकर आमातीसारका नाश होताहै जो आमातीसार इसयोगसे भी न शान्तहो वह सैकड़ों योगोंसे भी नहीं अच्छा होताहै ॥ ४७७ ॥

वत्सकातिविषाबिल्वंमुस्तकंबालकंशटी। अतीसारंजयेत्सामंचिरजंरक्तशूलजित् ॥ इति वत्सकादिक्काथः ॥ ४७८ ॥

वत्सकादि क्काथ ॥

कुरैया, अतीस, बेल, सोंठ, मोथा, सुगन्धबाला और कचूर इनका क्काथ बहुत दिनके पुराने आमातीसार और रक्तशूलको नाश करताहै ॥ ४७८ ॥

एरण्डरससंपिष्टंपक्कमामघ्ननागरम्। आमातीसारशूलघ्नंपाचनंदीपनंपरम् ॥ नागरस्यपुटपाकःकल्कश्च ॥ ४७९ ॥

सोंठका पुटपाक और कल्क ॥

सोंठको रेंडीके रसमें पीसकर इसका कल्कसेवनकरने से अथवा पुटपाक करके सेवन करने से आमातीसार तथा शूलका नाश होताहै और यह पाचन तथा दीपन है ॥ ४७९ ॥

धान्यबालकबिल्वाब्दनागरैःपाचितंजलम्। आमशूलविबन्धघ्नंपाचनंदीपनंपरम् ॥ इति धान्यादिपञ्चकम् ॥ ४८० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धान्यादिपञ्चक ॥

धनियां, सुगन्धबाला, बेल, मोथा और सोंठ इनका क्वाथ आम शूल तथा विबन्धनाशक और अत्यन्त दीपन पाचन होताहै ॥ ४८० ॥

पित्तेधान्यचतुष्कन्तुशुण्ठीत्यागाद्वदन्तिहि । रक्तेऽपिपित्तसाधर्म्म्याद्देयंधान्यचतुष्टयम् ॥ इति धान्यादिचतुष्कम् । इत्यामातीसारचिकित्सा ॥ ४८१ ॥

धान्यादि चतुष्क ॥

पित्तातीसारमें सोंठको छोड़कर धनियां आदिक चार औषधी देनी चाहिये और रक्तातीसारमें भी ऐसाही करना चाहिये इत्यामातीसार चिकित्सा ॥ ४८१ ॥

सलोध्रंधातकीबिल्वंमुस्ताम्रास्थिकलिङ्गकम् । पिबेन्माहिषतक्रेणपक्कातीसारनाशनम् ॥ लोध्रादिचूर्णम् ॥ ४८२ ॥

लोध्रादि चूर्ण ॥

लोध, धवई, बेल, मोथा, आमकी बिजली और इन्द्रजौ इन औषधियोंके चूर्णको भैंसके मट्ठेके साथ पीनेसे पक्कातीसारका नाश होताहै ॥ ४८२ ॥

समङ्गाधातकीपुष्पंमञ्जिष्ठालोध्रएवच । शाल्मलीवेष्टकोलोध्रोदाडिमद्रुफलत्वचौ ॥ आम्रास्थिमध्यंलोध्रञ्चबिल्वमध्यंप्रियंगुच । मधुकंशृङ्गवेरञ्चदीर्घवृन्तत्वगेवच ॥ चत्वारएतेयोगास्युःपक्कातीसारनाशनाः । तेयोगाउपयोज्याःस्युःसक्षौद्रास्तण्डुलाम्बुना ॥ समङ्गालज्जालू । शाल्मलीवेष्टकोमोचरसः ॥ दाडिमद्रुफलयोःत्वचौ । प्रियङ्गोर्नपुंसकमत्रफलेवर्तमानत्वात् ॥ शृंगवेरमत्रशुण्ठी । दीर्घवृन्तःशोणाकस्तस्यत्वचः ॥ समंगादीनिचत्वारिचूर्णानि ॥ ४८३ ॥

लज्जालू, धवईकेफूल, मजीठ तथा लोध १ मोचरस, लोध और अनारकीछाल तथा अनारक छिलका २ आमकी गुठलीका मध्य लोध बेल तथा प्रियंगु (ककुनी) के फल ३ मुलहठी सोंठ सोनापाढ़ेकीछाल और दालचीनी ४ यह चारोंचूर्ण पक्कातीसारको नाशकरते हैं यह चूर्ण चावलके पानी और सहतके साथ सेवन करना चाहिये ॥ ४८३ ॥

कञ्चटदाडिमजम्बूशृङ्गाटकपत्रबर्हिष्ठम् । जलधरनागरसहितंगंगामपिवेगवाहिनींरुन्ध्यात् ॥ कञ्चटचौराईशाकस्यभेदः । कञ्चटादिभिश्चतुर्भिःअत्रपंचशब्दःसम्बध्यते ॥ बर्हिष्ठंबालकम् । गंगाधरक्वाथः ॥ ४८४ ॥

गंगाधर क्वाथ ॥

कंचट, (चौराईके सागकाभेद) अनार, जामन, सिंघाड़ा, बेल, सुगन्धबाला, मोथा और सोंठ इनके क्वाथके सेवनसे नदीके प्रवाहके समानभी दस्तोंका वेग रुक जाताहै कंचट आदिचार औषधियोंकी पत्तीलेनी चाहिये ॥ ४८४ ॥

मोचरसमुस्तानागरपाठारलुधातकीकुसुमैः । चूर्णमथितसमेतंरुणद्धिगंगाप्रवाहमपिसद्यः॥ अरलुःसोनापाठाः। मथितंनिर्ज्जलंदधिवस्त्रपूतम्॥ इति गंगाधरचूर्णम् ४८५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गंगाधर चूर्ण ॥

मोचरस, मोथा, सोंठ, पाठा, सोनापाठा और धवईकेफूल इनकाचूर्ण मथित (कपडे में छाना हुआ जलरहित दही) के साथ गंगाजी के भी प्रवाहको बन्द करदेताहै ॥ ४८५ ॥

मुस्तावत्सकबीजंमोचरसोबिल्वधातकीलोध्रम् । गुडमथितसंप्रयुक्तंगङ्गामपिवेगवाहिनींरुन्ध्यात् ॥ इति द्वितीयगंगाधरचूर्णम् ॥ ४८६ ॥

द्वितीयगंगाधर चूर्ण ॥

मोथा, इन्द्रजौ, मोचरस, बेल, धवई के फूल और लोध इनसबका चूर्ण गुड और मथित के साथ गंगाजी के भी प्रवाहको बन्द करदेताहै ॥ ४८६ ॥

मुस्ताररलुकशुण्ठीभिर्धातकीलोध्रबालकैः । बिल्वमोचरसाभ्याञ्चपाठेन्द्रयववत्सकैः ॥ आम्रबीजंसमंगातिविषायुक्तैश्चचूर्णितैः । मधुतण्डुलपानीयंपीतंहन्तिप्रवाहिकाम् ॥ हंति सर्व्वानतीसारान्ग्रहणींहन्तिवेगतः । वृद्धंगंगाधरंचूर्णंरुन्ध्याद्गीर्वाणवाहिनीम् ॥ इति वृद्धगंगाधरचूर्णम् ॥ ४८७ ॥

वृद्धगंगाधर चूर्ण ॥

मोथा, सोनापाढा, सोंठ, धवईकेफूल, लोध, सुगन्धबाला, बेल, मोचरस, पाढा, इन्द्रजौ, कुरैया, आमकीगुठली, लजालू और अतीस इनका चूर्ण सहत और चावलों के पानीके साथ सेवन करनेसे प्रवाहिका सर्वअतीसार तथा ग्रहणीको नाश करताहै और गंगाजी के भी प्रवाहको रोकसक्ताहै ॥ ४८७॥

अङ्कोलमूलकल्कस्तण्डुलपयसासमाक्षिकःपीतः । सेतुरिववारिवेगंझटितिनिरुन्ध्यादतीसारम् ॥ अङ्कोलःढेलाइतिप्रसिद्धः ॥ ४८८ ॥

अंकोलकी जडका कल्क चावलके पानी और सहतके साथ पीनेसे जलके वेगको बांधके समान अतीसारों को रोकताहै ॥ ४८८ ॥

कुटजत्वक्तुलामार्द्रांद्रोणनीरेपचेद्भिषक् । पादशेषंशृतंनीत्वावस्त्रपूतंपुनःपचेत् ॥ लज्जालूधातकीबिल्वंपाठामोचरसस्तथा । मुस्ताचातिविषाचैवचूर्णमेषांपलंपलम् ॥ निक्षिप्यविपचेत्तावद्यावद्दर्वीप्रलिप्यते । जलेनछागदुग्धेनपीतोमण्डेनवाजयेत् ॥ घोरान्सर्व्वानतीसारान्नानावर्णान्सवेदनान् । असृग्दरंसमस्तञ्चतथार्शांसिप्रवाहिकाम् ॥ इति कुटजाष्टकावलेहः ॥ ४८९ ॥

कुटजाष्टकावलेह ॥

कुरैयाकी गीली ४०० तोले छालको एकहजार चौबीस तोले पानी में औटावे जब चौथाई रहजाय तब छानले और उस पानीको फिर चूल्हेपर चढाकर लजालू, धवई के फूल, बेल, पाढा, मोचरस, मोथा और अतीस इन सब औषधियों का पृथक् २ चार २ तोले चूर्ण डालकर तबतक औटावे जबतक कि वह करछी में लगनेलगे यह औषध जल बकरी का दूध अथवा मांडके साथ सेवन करनेसे अत्यन्त भयंकर पीडायुक्त अनेक प्रकार के रंगवाले अतीसार सबप्रकार के प्रदर बवासीर और प्रवाहिका का नाश करती है ॥ ४८९ ॥

कृत्वालबालंसुदृढंपिष्टैरामलकैर्भिषक् । आर्द्रकस्वरसेनाशुपूरयेन्नाभिमण्डलम् ॥ न

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दीवेगोपमंघोरंप्रवृद्धंदुर्द्धरंनृणाम् । सद्योऽतीसारमजयंनाशयत्येषयोगराट् ॥ पाठांपि ष्टाचगोदध्नातथामध्यत्वगाघजा । अतीसारंव्यथानाहंहन्त्येवाशु न संशयः ॥ ४६० ॥

आंवलों को पीसकर नाभि पर दृढ घेरासा बनाकर अदरक के रस से उस नाभिको ऊपरतकभर दे यह उत्तम योगनदी के समान वेगवाले भयङ्कर बहुत बढ़ेहुए कष्टदायक असाध्य अतीसार को भी नाश करता है पाढ़ाको गौके दहीमें पीसकर अथवा आमके वृक्षके भीतर की छालके साथ पीसकर सेवन करने से अतीसार व्यथा तथा दाह का नाश शीघ्रही निस्सन्देह होता है ॥ ४६० ॥

अथ वातातीसारस्यलक्षणमाह ॥

अरुणंफेनिलंरूक्षमल्पमल्पंमुहुर्मुहुः । शकृदामंसरुक्शब्दंमारुतेनातिसार्य्यते ॥ अरुणमीषद्रक्तम् । शकृत्पुरीषम्सरुक्शब्दम् ॥ शब्दोगुदेतत्साहचर्य्याद्रुगपिगुदएव बोद्धव्या ॥ ४६१ ॥

वातातीसार का लक्षण ॥

वातातीसार में कुछ लाल फेनायुक्त रूखा और कच्चा मल शब्द तथा पीडासहित वारंवार थोड़ा २ निकलताहै ॥ ४६१ ॥

अथ तस्यचिकित्सा ॥

वचाचातिविषामुस्तंबीजानिकुटजस्यच । श्रेष्ठःकषायएतेषांवातातीसारशान्तये ॥ ४६२ ॥

वातातीसार की चिकित्सा ॥

वच, अतीस, मोथा और इन्द्रजौ इन औषधियों का काढ़ा वातातीसार के नष्ट करने को अत्यन्त श्रेष्ठहै ॥ ४६२ ॥

अथ पित्तातीसारलक्षणमाह ॥

पित्तात्पीतंशकृद्रक्तंदुर्गन्धिहरितंद्रुतम् । गुदपाकतृषामूर्च्छादाहयुक्तंप्रवर्त्तते ४६३ ॥

पित्तातीसार का लक्षण ॥

पित्तातीसार में लाल, पीला, हरा, दुर्गन्धित मल, गुदाका पकना, तृषा, मूर्च्छा और दाहसहित निकलताहै ॥ ४६३ ॥

अथ तस्यचिकित्सा ॥

बिल्वशक्रयवाम्भोदबालकातिविषाकृतः । कषायोहन्त्यतीसारंसामंपित्तसमुद्भवमिति बिल्वादि ॥ ४६४ ॥

पित्तातीसार की चिकित्सा ॥

बेल, इन्द्रजौ, मोथा, सुगन्धवाला और अतीस इनऔषधियों के क्राथसे आमसहित पित्तातीसार का नाश होता है इति बिल्वादि क्राथ ॥ ४६४ ॥

रसाञ्जनंसातिविषंकुटजस्यफलत्वचम् । धातकींशृंगवेरञ्चपाययेत्तण्डुलाम्बुना ॥ निहन्तिमधुनापीतंपित्तातीसारमुल्बणम् । अग्निंसंदीपयेदेतच्छूलमाशुनिवारयेत् ॥ इति रसाञ्जनादिचूर्णम् ॥ ४६५ ॥

रसौत, अतीस, कुरैयाकी छाल, इन्द्रजौ, धवई के फूल और सोंठ इनका चूर्ण चावलके पानी और सहत के साथ सेवन करने से बढ़ेहुए अतीसार तथा शूल का शीघ्र नाश होताहै और अग्नि दीप्ति होती है इति रसाञ्जनादि चूर्ण ॥ ४६५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ पित्तातीसारभेदस्यरक्तातीसारस्यलक्षणसंप्राप्तिमाह ॥

पित्ताकृतिर्यदात्यर्थं द्रव्यमश्नातिपैत्तिके । तदास्यजायतेऽभीक्ष्णंरक्तातीसारउल्बणः ॥ ४९६ ॥

पित्तातीसार का भेद रक्तातीसारका लक्षण और संप्राप्ति ॥

पित्तातीसार में पित्तकारी वस्तुओं के अधिक सेवन करने से अत्यन्त घोर रक्तातीसार उत्पन्न होताहै ॥ ४९६ ॥

अथ तस्यचिकित्सामाह ॥

वत्सत्वग्दाडिमतरुशलाटुफलसम्भवात्वक्च । त्वग्युगलंपलमानंविपचेदष्टांशसम्मितेतोये ॥ अष्टमभागशेषंक्काथंमधुनापिबेत्पुरुषः । रक्तातीसारमुल्बणमतिशयितंनाशयेन्नियतम् ॥ इति कुटजदाडिमक्काथः ॥ ४९७ ॥

रक्तातीसार की चिकित्सा कुटजदाड़िम क्काथ ॥

कुरैयाकी छाल और कच्चे अनारका छिलका इनदोनोंको एकपललेकर अठगुने जलमें औटावै फिर अष्टमांश बाकी रहजानेपर सहत डालकर पिये उससे बहुत बढ़ेहुये रक्तातीसारका नाशहोताहै ४९७॥

कुटजातिविषामुस्ताबालकंलोध्रचन्दनम् । धातकीदाडिमंपाठाक्काथमेषांसमाक्षिकम् ॥ पिबेद्रक्तातिसारेतु दाहशूलप्रशान्तये । कुटजादिकषायोऽयं सर्वातीसारनाशनः ॥ इति कुटजादिक्काथः ॥ ४९८ ॥ कुटजादि क्काथ ॥

कुरैया, अतीस, मोथा, सुगन्धबाला, लोध, लालचन्दन, धवई के फूल, अनार और पाढ़ा इनके क्काथ में सहत डालकर पीनेसे रक्तातीसार, दाह, शूल और सब प्रकारों के अतीसारोंका नाशहोताहै ४९८ ॥

कल्कस्तिलानांकृष्णानांशर्करापञ्चभागिकः । आजेनपयसापीतःसद्योऽतीसारनाशनः ॥ सवत्सकःसातिविषः सबिल्वःसोदीच्यमुस्तश्चकृतःकषायः । सामेसशूलेसहशोणितेचचिरप्रवृत्तेपिहितोऽतिसारे ॥ कृष्णमृन्मधुकंलोध्रंकौटजंतण्डुलाम्बुना । पीतमेकत्रसक्षौद्रंरक्तसंग्राहणंपरम् ॥ ४९९ ॥

पिसेहुए काले तिल १ भाग और शक्कर ४ भाग इनको बकरी के दूध के साथ पीने से शीघ्रही अतीसार का नाश होताहै कुरैया, अतीस, बेल, सुगंधबाला और मोथा इनका क्काथ आम शूल और रुधिरसहित बहुत पुराने अतीसारको भी नाश करताहै काली मिट्टी, मुलहठी, लोध और इन्द्रजौ इन औषधियों को चावल के पानी और सहत के साथ पीने से रुधिर बन्द होताहै ॥ ४९९ ॥

गुडेनभक्षयेद्बिल्वंरक्तातीसारनाशनम् । आमशूलविबन्धघ्नंकुक्षिरोगहरंपरम् ॥ इति गुडबिल्वम् ॥ ५०० ॥

गुड बिल्व ॥

गुडकेसाथ बेलखानेसे रक्तातीसार आमकी पीड़ा विबन्ध और कोखके रोगोंका नाश होताहै ५००॥

जम्ब्वाम्रामलकीनान्तुकुट्टयेत्पल्लवान्नवान् । संगृह्यस्वरसन्तेषामजाक्षीरेणयोजयेत् ॥ तत्पीतंमधुनायुक्तंरक्तातीसारनाशनम् । इति जम्ब्वादिस्वरसः ॥ ५०१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जम्ब्वादि स्वरस ॥

जामन, आम और आंवलेके नये पत्तोंको कूटकर रस निकाले उसको बकरीके दूध में मिलाकर सहत डालकर पीनेसे रक्तातीसार का नाश होताहै ॥ ५०१ ॥

निक्वाथ्यमूलममलंगिरिमल्लिकायाः । सम्यक्पलद्वितयमम्बुचतुःशरावे ॥ तत्पादशेषसलिलंखलुशोषणीयं । क्षीरेपलद्वयमितेकुशलैरजायाः ॥ प्रक्षिप्यमाषकानष्टौमधुनस्तत्रशीतले । रक्तातिसारीतत्पीत्वानैरुज्यंक्षिप्रमाप्नुयात् ॥इति कुटजक्षीरम् ॥५०२॥

कुटज क्षीर ॥

कुरैयाकी जड़ आठतोले लेकर एक सौ अट्ठाईस तोले पानीमें औटावे फिर चौथाई बाकी रहने पर आठ तोले बकरी का दूध मिलावे फिर पानी जलकर केवल दूध बाकी रहने पर ठंढा करके आठ माशे सहत मिलाकर पिये इससे शीघ्रही रक्तातीसार का नाश होताहै ॥ ५०२ ॥

पीत्वाशतावरीकल्कं पयसाक्षीरभुग्जयेत् । रक्तातिसारंपीत्वावातया।सिद्धंघृतंनरः ॥ इति शतावरीकल्कः ॥ ५०३ ॥

शतावरी कल्क ॥

शतावरि के कल्क को दूध के साथ पीनेसे अथवा शतावरि के द्वारा सिद्ध किये हुए घृतके सेवन से रक्तातीसारका नाश होताहै ॥ ५०३ ॥

गोदुग्धंनवनीतञ्च मधुनासितयासह । लीढंरक्तातिसारेतुग्राहकंपरमंमतम् ॥ नवनीतावलेहः ॥ ५०४ ॥

नवनीतावलेह ॥

गौकादूध, मक्खन, सहत और शक्कर इनसबको मिलाकर चाटनेसे रक्तातीसारका नाशहोताहै ५०४॥

पीतंमधुसितायुक्तंचन्दनंतण्डुलाम्बुना । रक्तातीसारजिद्रक्तपित्ततृड्दाहमेहनुत् ॥ चन्दनमत्रश्वेतचन्दनम् । इति चन्दनकल्कः ॥ ५०५ ॥

चन्दन कल्क ॥

सफ़ेद चन्दन सहत और शक्कर समेत चावल के पानी के साथ सेवन करने से रक्तातीसार, रक्तपित्त, तृषा, दाह और प्रमेहका नाश होताहै ॥ ५०५ ॥

विरेकैर्बहुभिर्यस्यगुदंपित्तेनदह्यते । पच्यतेवातयोःकार्य्यंसेकप्रक्षालनादिकम् ॥ आदिशब्देनलेपादिग्रहः । पटोलयष्टीमधुकक्वाथेनशिशिरेणहि ॥ गुदप्रक्षालनंकार्य्यंतैनैवगुदसेचनम् । दाहेपाकेहितंछागीदुग्धंसक्षौद्रशर्करम् ॥ गुदस्यक्षालनेसेकेयुक्तंपानेचभोजने । गुदस्यदाहपाकयोः ॥ ५०६ ॥

गुदाके दाह और पकने की चिकित्सा ॥

अतीसार में बहुत दस्त आनेके कारण पित्तसे जो गुदा दाहयुक्त होय और पकजाय तो परिषेक (सींचना) धोना और लेपादिक करे परवल और मुलहठीके शीतल क्वाथ से गुदाको धोवे और सींचे गुदाके दाह तथा पकनेमें शक्कर और सहतयुक्त बकरीका दूध पीने तथा भोजन करने में और गुदाके धोने तथा सींचने में हितकारीहै ॥ ५०६ ॥

अतिप्रवृत्त्यामहतीभवेद्यदिगुदव्यथा । स्विन्नमूषकमांसेनतदासंस्वेदयेत्गूदम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ गोधूमचूर्णस्थसंशीतस्यतुवारिणा । साज्यस्यगोलकंकृत्वामृदुसंस्वेदयेद्गुदम् ॥ अथ गुदव्यथायाम् । गुदनिस्सरणेप्रोक्तंचांगेरीघृतमुत्तमम् ॥ ५०७ ॥

बहुत दस्त आनेसे जो गुदामें बहुत पीडा होय तो मूसे के मांसको उबाल कर गुदामें उसका बफारादे गेहूंके आटेको पानीमें सानकर दूध मिलाके गोला बनावै उस्से गुदामें धीरे २ स्वेददे गुदाके बाहर निकल आनेमें चांगेरी का घृत लगाना चाहिये ॥ ५०७ ॥

गुदभ्रंशेगुदंस्नेहैरभ्यज्यान्तःप्रवेशयेत् । प्रविष्टंस्वेदयेन्मन्दंमूषकस्यामिषेणहि ॥ मूषकस्यामिषेणकाञ्जिकेनस्विन्नेनएरण्डपत्रादिस्थापितेनस्वेदयेत् ॥ ५०८ ॥

गुदभ्रंशरोग में गुदा में तैलादिक स्नेह लगाकर गुदाको भीतर घुसेडे फिर कांजीमें पकेहुए मूसे के मांसको रेंडीके पत्ते पर रखकर स्वेद देवे ॥ ५०८ ॥

शम्बूकमांसंसुस्विन्नंसतैललवणान्वितम् । ईषद्घृतेनचाभ्यज्यस्वेदयेत्तेनयत्नः ॥ गुदभ्रंशमशेषेणनाशयेत्क्षिप्रमेवच । मूषकस्याथवसयापायुंसम्यक्प्रलेपयेत् ॥ [illegible]द्भ्रंशाभिधोव्याधिःप्रणश्यतिनसंशयः ॥ ५०९ ॥

[illegible]घोंघेके मांसको उबालकर तेल तथा नोन मिलाने और कुछ घी लगाकर उस्से यत्नपूर्वक स्वेद [illegible] इस्से शीघ्रही गुदभ्रंशका नाश होताहै मूसेकी चरबीको गुदामें लेप करनेसे गुदभ्रंशका नाश हो[illegible] है ॥ ५०९ ॥

चांगेरीकोलदध्यम्लक्षारनागरसंयुतम् । घृतंविपक्वंपातव्यंगुदभ्रंशगदापहम् चांगेरीचतुःपत्रीअमलोणिकातस्याःस्वरसः । कोलस्यक्काथः ॥ दध्यम्लंदधिरूपमम्लम् । एतत्त्रयंमिलितंघृताच्चतुर्गुणंक्षारनागरयोःक्काथः ॥ इति चांगेरीघृतम् ॥ ५१० ॥

चांगेरी घृत ॥

चूकाका रस, बेरका काढा, खट्टा दही और जवाखार तथा सोंठ का काढा इन औषधियोंके साथ परिपाक किये गये घृतके सेवनसे गुदभ्रंशका नाश होताहै इसमें चूकाके रस आदि तीनों औषधियों का चौथाई घृत छोडना चाहिये ॥ ५१० ॥

कोमलंपद्मिनीपत्रंयःखादेच्छर्करान्वितम् । एतन्निशिचित्यनिर्दिष्टंनतस्यगुदनिर्गमः॥ पद्मिनीपत्रंसंशोष्यसंचूर्ण्यशर्करायुक्तंखादेत् । अयंतुगुदभ्रंशोऽतीसारंविनापिभवति ततःक्षुद्ररोगेषुलिखितः ॥ अत्रगुदस्यदाहपाकव्यथाप्रसंगाद्भ्रंशोऽपिलिखितः । चिकित्सातूभयत्रतुल्यैव ॥ ५११ ॥

कमलिनीके कोमल पत्ते को सुखाकर पीसके शक्करके साथ खाय इस्से निस्सन्देह गुदभ्रंशका नाश होताहै अतीसारके विनाभी गुदभ्रंश होताहै वह क्षुद्र रोगोंमें लिखागयाहै और गुदाके दाहपाक तथा व्यथाके प्रसंगसे यहांभी लिखदियाहै इसकी चिकित्सा दोनों जगह समानहै ॥ ५११ ॥

अथ श्लेष्मातीसारस्यलक्षणम् ॥

श्वेतंस्निग्धंघनंविस्रंशीतलंमंदवेदनम्।गौरवारुचिसंयुक्तंश्लेष्मणासार्यतेशकृत् ५१२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कफातीसारका लक्षण ॥

कफातीसारमें स्वेद, स्निग्ध, घना, शीतल और आमकी सी दुर्गन्धवाला मल कुछ पीडाके साथ निकलताहै इस में अरुचि और शरीरमें भारीपन होताहै ॥ ५१२ ॥

अथ तस्यचिकित्सा ॥

श्लेष्मातिसारेप्रथमंहितंलंघनपाचनम् । योज्यश्चामातिसारघ्नोयथोक्तोदीपनो गणः ॥ ५१३ ॥

कफातीसार की चिकित्सा ॥

कफातीसार में पहले लङ्घन तथा पाचन हितहै और आमातीसार नाशक कहाहुआ दीपनगण देना चाहिये ॥ ५१३ ॥

चव्यंसातिविषामुस्तंबालबिल्वंसनागरम् । वत्सकत्वक्फलंपथ्याछर्दिंश्लेष्मातिसारनुत् ॥ चव्यादिक्काथः ॥ ५१४ ॥ चव्यादि क्काथ ॥

चव्य, अतीस, मोथा, कच्ची, बेलगिरी, कुरैयाकी छाल, इन्द्रजौ, सोंठ और हड इनका क्काथ छर्दि और कफातीसारको नाश करताहै ॥ ५१४ ॥

हिंगुसौवर्च्चलंव्योषमभयातिविषावचा । पीतमुष्णाम्बुनाचूर्णमेषांश्लेष्मातिसारनुत् ॥ हिंग्वादिचूर्णम् ॥ ५१५ ॥ हिंग्वादिचूर्ण ॥

हींग, कालानोन, त्रिकटु, हड, अतीस और वच इनका चूर्ण गरम जलके साथ पीने से कफातीसार को नाश करताहै ॥ ५१५ ॥

कृमिशत्रुवचाबिल्वपाठाधान्याककट्फलम् । एषांक्काथंभिषग्दद्यादतीसारेबलासगे द्विदोषलक्षणैर्विद्यादतीसारंद्विदोषजम् । तेषांचिकित्साप्रोक्तैवविशिष्टाचनिगद्यते । कट्फलंमधुकंलोध्रंत्वग्दाडिमफलस्यच ॥ सतण्डुलजलंचूर्णंवातश्लेष्मातिसारनुत् । इतिवातश्लेष्मातिसारे ॥ चित्रकातिविषामुस्तंबालबिल्वंसनागरम् ॥ वत्सकत्वक्फलंपथ्यावातपित्तातिसारनुत् । इतिवातपित्तातिसारे ॥ मुस्तासातिविषामूर्व्वावचाचकुटजःसमाः । एषांकषायःसक्षौद्रःपित्तश्लेष्मातिसारनुत् ॥ इतिपित्तश्लेष्मातिसारे ॥ ५१६ ॥

बायबिडंग वच बेल पाठा धनियां और कायफल इनका क्काथ करके कफातिसार वालेको देना चाहिये जिस अतीसार में दोदोषोंके लक्षण मिलतेहों उसको द्विदोषज अतीसार जानना उनदोषों को अलग २ चिकित्सा कहआये हैं अब मिलीहुई चिकित्साको कहते हैं कि कायफल, मुलहठी, लोध अनारका छिलका इन औषधियोंके चूर्णको चावल के पानी के साथ सेवन करने से वात कफातीसारका नाश होताहै वात पित्तातीसारकी चिकित्सा चीता, अतीस, मोथा, कच्चाबेल, सोंठ, कुरैयाकीछाल, इन्द्रजौ और हड इनके काढ़ेसे वात पित्तातीसारका नाशहोताहै पित्तकफातीसार की चिकित्सा मोथा, अतीस, मरोर फली, वच और कुरैया इनसब बराबर भागके काढ़ेमें सहत डालकर पीनेसे पित्तकफातीसारका नाश होताहै ॥ ५१६ ॥

अथ सन्निपातातीसारस्यलक्षणम् ॥

तन्द्रायुक्तोमोहसादास्यशोषी वर्च्चःकुर्य्यान्नैकरूपंतृषार्त्तः । सर्व्वोद्भूतेसर्व्वलिंगोपपत्तिःकृच्छ्रःसाध्योबालवृद्धाऽबलानाम् ॥ ५१७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सन्निपातातीसारका लक्षण ॥

सन्निपातातीसारमें तीनों दोषोंके लक्षण होते हैं और तन्द्रा, मोह, शिथिलता, मुखकासूखना, अनेक प्रकारके मलका निकलना और तृषा होती है यह बालक वृद्ध और स्त्रियोंको कष्टसाध्यहै ॥ ५१७ ॥

अथ तस्याचिकित्सा । पञ्चमूलीबलाबिल्वगुडूचीमुस्तनागरैः ॥ पाठाभूनिम्बबर्हिष्ठकुटजत्वक्फलैःशृतम् । सर्वजंहन्त्यतीसारंज्वरञ्चापितथावमिम् ॥ सशलोपद्रवंश्वासंकासंचापिसुदुस्तरम् । पञ्चमूलीचसामान्यपित्तेयोज्याकनीयसी ॥ वातेपुनर्बलासेच सायोज्यामहतीमता ॥ इति पञ्चमूल्यादिकःक्काथः ॥ ५१८ ॥

सन्निपातातीसार की चिकित्सा ॥

पंचमूल, बरियारा, बेल, गिलोय, मोथा, सोंठ, पाठा, चिरायता, सुगन्धबाला, कुरैयाकीछाल और इन्द्रजौ इन औषधियोंके काढ़ेसे पीड़ा तथा उपद्रव सहित सन्निपातातीसार ज्वर छर्दि श्वास और [illegible]स्तर खांसीका नाश होताहै सन्निपातातीसारमें जो पित्त अधिक होय तो छोटा पंचमूल और जो [illegible] तथा कफ अधिक होय तो बड़ा पंचमूल ग्रहण करना चाहिये इति पंचमूल्यादि क्काथ ॥ ५१८ ॥

अभयानागरंमुस्तंगुडेनसहयोजितम् । चतुःसमेयंगुटिकासर्वातीसारनाशनम् ॥ [illegible]तीसारमानाहंसविबन्धंविषूचिकाम् । कृमीनरोचकंहन्याद्दीपयत्याशुचानलम् ॥ ([illegible] चतुःसमोमोदकः) ॥ ५१९ ॥

हड़, सोंठ, मोथा और गुड़ इन चारोंको समभाग लेकर मोदक बनावे उसके सेवनसे आमातीसार सब प्रकारके अतीसार, आनाह, विबन्ध, विषूचिका कृमि तथा अरुचिका नाश होताहै और शीघ्रही अग्नि दीप्ति होती है इति चतुस्सम मोदक ॥ ५१९ ॥

तत्कालाकृष्टकुटजत्वचंतण्डुलवारिणा । पिष्ट्वाचतुःपलमितांजंबूपत्रेनवेष्टिताम् ॥ सूत्रेणबध्वागोधूमपिष्टेनपरिवेष्टिताम् । लिप्ताञ्चघनपङ्केननिर्दहेद्गोमयाग्निना ॥ अंगारवर्णाञ्चमृदंदृष्ट्वावह्नेःसमुद्धरेत् । ततोरसंसमादायशीतंक्षौद्रयुतंपिबेत् ॥ उक्तःकृष्णात्रिपुत्रेणपुटपाकस्तुकौटजः । जयेत्सर्वानतीसारान्रक्तजान्सुचिरोत्थितान् ॥ (इतिकुटजपुटपाकः) ॥ ५२० ॥

चारपल कुरैयाकी ताजी छालको चावलोंके पानीमें पीसकर जामनके पत्तेमें सूतसे बांधे फिर उसपर गेहूंके आटेको लपेटकर गाढ़ीगाढ़ी मट्टीसे लेप करदे और कंडोंकी अग्निमें पाककरे जब देखे कि मट्टी लाल होगईहै तब अग्निसे निकालले फिर तोड़कर उसके रसको निकालकर ठंढा होनेपर सहत डालके पिये इस्से सब प्रकारके अतीसार और पुराने रक्तातीसारका नाश होता है यह कृष्णात्रिपुत्रने कहाहै इति कुटज पुटपाक ॥ ५२० ॥

कुटजत्वक्कृतःक्काथोवस्त्रपूतोहिमीकृतः । सलीढोऽतिविषयुक्तःस्यात्त्रिदोषातिसारनुत् ॥ इच्छन्त्यत्राष्टमांशेनक्काथादतिविषारजः । लेहः । प्रक्षेपयेत्चतुर्थांशमितिकेचिद्वदन्तिहि ॥ (इति कुटजावलेह) ॥ ५२१ ॥

कुरैयाके छालके काढ़ेको वस्त्रमें छानकर अष्टमांस अतीसका चूर्ण मिलाकर चाटे इस्से सन्नि-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पातज अतीसारका नाश होताहै इसमें कोई कोई पण्डित काढ़ेका चौथाई अतीस मिलाना चाहिये ऐसा कहतेहैं इति कुटजावलेह ॥ ५२१ ॥

पलमङ्कोटमूलस्यपाठांदार्व्वीञ्चतत्समाम् । पिष्ट्वातण्डुलतोयेनवटकानक्षसंमिता न् ॥ छायाशुष्कांश्चतान्कुर्यात्तेष्वेकंतण्डुलाम्बुना । पेषयित्वाप्रदद्यात्तंपानायगदिनेभि षक् । वातपित्तकफोद्भूतान्द्वन्द्वजान्सान्निपातिकान् ॥ हन्यात्सर्व्वानतीसारान्वटकोऽयं प्रयोजितः । (इति अङ्कोटवटकः) ॥ ५२२ ॥

हिंगोट की जड पाठा और दारुहल्दी इनसब औषधियों को एक २ पल लेकर चावलों के जलमें पीसकर तोले २ भर का बड़ा बनावे और छायामें सुखावे फिर एक बड़ा चावल के पानीमें पीसकर पिलावे इससे वातज, पित्तज, कफज, द्वन्द्वज और सन्निपातज सब प्रकारके अतीसारों का नाश होताहै इति अंकोट बटक ॥ ५२२ ॥

अथागन्तुजस्यशोकातीसारस्यसंप्राप्तिपूर्व्वकंलक्षणमाह ॥

तैस्तैर्भावैःशोचतोऽल्पाशनस्यबाष्पोष्मावैवह्निमाविश्यजन्तोः ॥ कोष्ठंगत्वाक्षोभ स्यरक्तंतच्चाधस्तात्काकणन्तीप्रकाशम् ॥ निर्गच्छेद्वैविड्विमिश्रंह्यविड्वानिर्गन्धंवा वद्यातिसारः । शोकोत्पन्नोदुश्चिकित्स्योऽतिमात्रंरोगोवैद्यैःकष्टएषप्रदिष्टः ॥ अयमर्थन स्तैर्भावैःबन्धुवित्तक्षयादिभिःशोचतःशोकंकुर्व्वतःजन्तोःप्राणिनःबाष्पोष्णाबाष्पः जःदेहोष्मणाजनितंनेत्रनासागलादिषुजलंतेनसहितः । ऊष्माशोकजंदेहतेजः । सर्कोष्ठ ङ्गत्वावह्निमाविश्यजठराग्निःमन्दीकृत्वा । बाष्पसाहित्यादूष्मणापिवह्नेर्मन्दीभावइतिन दोषः । वह्नेर्मन्दीभावादेव । अल्पाशनस्येति । जन्तोर्विशेषणम् । ततस्तस्यजन्तोःरक्तंक्षो भयेत्स्वस्थानाच्चालयेदितिसंप्राप्तिः । अथ लक्षणम् । तच्चरक्तमधस्ताद्गुदात् । काकण न्तीप्रकाशम् । गुञ्जाफलसदृशम् । विड्विमिश्रंगन्धवच्च । अविट्निर्गन्धंवानिर्गच्छेत्शो कोत्पन्नोऽतीसारः । अतिमात्रंदुश्चिकित्स्य । शोकापनोदनंविनाकेवलेनभेषजेनप्रतीकर्त्तु मशक्यत्वात् । एषोऽतीसारःकष्टसाध्यःकथितः ॥ ५२३ ॥

आगन्तुजशोकातीसार का संप्राप्ति समेत लक्षण।

बन्धु और धन आदिकों के नाश होनेसे शोच करतेहुए थोडा भोजन करने वाले मनुष्य की नासिका तथा गले आदिसे उत्पन्न जल और शोकजनित शरीर की ऊष्मा एक साथ कोष्ठमें जाकर जठराग्नि को मंद करके रुधिर को बिगाडतीहै वह रुधिर मलयुक्त अथवा मलरहित गन्ध युक्त अथवा गंधरहित होकर घोंघचीके समान गुदाके द्वारा निकलताहै इसको शोकातीसार कहते हैं यह रोग अत्यन्त कष्टसाध्यहै यहां वाष्पसहित होनेके कारण ऊष्मासेभी अग्निके मन्द होनेमें कोई दोष नहींहै ॥ ५२३ ॥

अथागन्तुजेनभयातीसारस्यसंप्राप्तिपूर्व्वकंलक्षणमाह ॥

भयनक्षाभतादाषाद्दूषयंतिमलंयदा । तदातिसार्यतेजंतुःक्षिप्रमुष्णंजलप्लवम् ॥ वातपि त्तातिसारस्यप्रायोलिंगैःसमन्वितम् । अभयोपशमाच्छर्म्मयस्मिन्स्यात्सभयात्स्मृतः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्लवतीतिप्लवम्॥ जलेप्लवमानम्॥ ननुभयातिसारस्यकथमागन्तुजत्वमयमपिदोषजएव। यतआह। भयेनक्षोभितादूषितादोषामलंदूषयंतितिंमलमतिसरति । अत्रपूर्व्वमेव दोषसम्बन्धः। उच्यते। रागद्वेषभयाद्यैवतेस्युरागंतवोगदाइतिवचनाद्भयातीसारआगन्तुजएव। भयेनैवहेतुभूतेनदोषावातपित्तकफाअतीसारंजनयंतिक्षोभिताःसञ्चालिताः ननुदूषिताभयेनत्रयाणामपिदोषाणां दूषणासम्भवात् अतिसर्त्तुंचलितावातपित्तकफामलंदूषयंतितत्सर्व्वेवातपित्तकफमलंभयेनैवातिसार्य्यते। पश्चाद्वातसम्बन्धेनभयाद्वायुरितिवचनात्॥ अतएवभयातिसारेवातहर्षैवक्रियाकथितेतिसाधुः॥ ५२४॥

आगन्तुकभयातीसारका संप्राप्तिपूर्व्वक लक्षण॥

भयातीसार में भयके द्वारा क्षोभित दोष जब मलको दूषित करते हैं तब शीघ्रही जलमें बहता हुआ उष्ण और वात पित्त व अतीसारके चिह्नों से युक्त मल निकलताहै भयकी शान्तिसे सुख होताहै इससे इसको भयातीसार कहते हैं अब यह सन्देह होताहै कि भयातीसार दोषजहै इसको आगन्तुक क्यों कहते हैं और कहाभी गयाहै कि भयके द्वारा क्षोभित (चलायमान) दोषयुक्त वातादि मलको दूषित करके अतीसारको उत्पन्न करतेहैं इस वचनके द्वारा रोग उत्पन्न होनेके पहलेही का सम्बन्ध सूचित होताहै इसका उत्तर यह है कि रागद्वेष और भयसे उत्पन्न रोग आगन्तुक जाते हैं इस वचनके द्वारा भयातीसार आगन्तुक है यहां भयके द्वारा दूषित दोष यह अभिप्राय क्योंकि तीनोंदोषोंका दूषित होना भयकेद्वारा असंभव है अतीसार के लिये चलायमान वात पित्त और कफ मलको दूषित करतेहैं वह सम्पूर्ण वात पित्त कफका मल भयके द्वारा निकलता है आर पीछे भयके द्वारा वायु होतीहै इस वचनके अनुसार वायुका सम्बन्ध होताहै इसीसे भयातीसार में वातनाशक क्रिया कही गई है॥ ५२४॥

अथ तयोश्चिकित्सा। भयशोकसमुद्भूतौज्ञेयौवातातिसारवत्॥ तयोर्वातहरीकार्य्याहर्षणाश्वासनैःक्रिया। वातातिसारवत्वातातिसारलक्षणयोस्तयोश्चिकित्साचहर्षणाश्वासनपूर्विकावातहरीकर्त्तव्या॥ ५२५॥

शोकातीसार और भयातीसारकी चिकित्सा॥

भय और शोकजनित अतीसारमें हर्ष और आश्वास पूर्व्वके वातातीसारके समान वातनाशक चिकित्सा करनी चाहिये॥ ५२५॥

अथामातीसारस्य संप्रातिपूर्वकंलक्षणमाह॥

अन्नाजीर्णात्प्रद्रुताःक्षोभयन्तोदोषाः कोष्ठेधातुसंघान्मलांश्च। नानावर्णंनैकशःसारयंतिशूलोपेतंषष्ठमेनंवदंति॥ अन्नंभुक्तंतदजीर्णञ्चेतिकर्म्मधारयेअन्नाजीर्णम्तस्मात् प्रद्रुतःक्षोभयन्तःचालयन्तः। नैकशइत्यत्रनाकादित्वान्नाक्षरविपर्य्ययःनत्वामेनदोषादूष्यन्तेगुर्वादिभक्षणादिभिरिवतेचातीसारमुत्पादयन्ति॥ नत्वामेनातीसारमुत्पादयंति। तेनामातीसारोऽपिदोषजएव किमर्थंपृथगुक्तम् उच्यते॥ अथामातीसारस्यचिकित्सा॥ अतीसारेषुसर्व्वेषुएवसंग्राहकमौषधमुक्तमामातीसारेतुग्राहकंनिषिद्धम्॥ यतउक्तम्नामे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संग्राहकंदद्य(ा)तीसारेकदाचन । संगृहीतोबलादामोविकारान्कुरुतेबहून् ॥ बलाद्भेषजबलाद्विकाराद्ग्रहण्याध्मानशूलगुल्मशोथोदरज्वरादीन् ॥ ५२६ ॥

आमातीसारका संप्राप्तिपूर्व्वक लक्षण ॥

अन्नके अजीर्ण होने से वात पित्त और कफ अपने २ मार्ग से हटकरके रस रक्तादिक धातुओंको और मलों को कोष्ठ में चलायमान करतेहुए क्रीडाके साथ अनेकप्रकारके वर्णयुक्त मलको वारंवार निकालते हैं यह छठा आमातीसार कहाताहै अब यह सन्देह होताहै कि भारी आदि वस्तुओंकेद्वारा जैसे दोष दूषित होते हैं उसीप्रकार आमके द्वारा दूषित होतेहैं और वही अतीसारको उत्पन्नकरते हैं आम अतीसारको नहीं उत्पन्न करता इसलिये आमातीसार भी दोषजहै इसको अलग क्योंकहा इसका उत्तर यहहै कि सबप्रकार के अतीसारों में ग्राही औषध दीजाती है परन्तु आमातीसार में ग्राही औषधका निषेध है क्योंकि कहागयाहै कि आमातीसारमें ग्राही औषध कभी न देना चाहिये क्योंकि औषधके बलके द्वारा आमको रोकने से ग्रहणी, अफरा, शूल, गुल्म, सूजन, उदर और ज्वरादिक अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं ॥ ५२६ ॥

तस्यचिकित्सा ॥

वत्सकातिविषाशुण्ठीबिल्वहिंगुयवाम्बुदाः । चित्रकेणयुतैःक्काथआमातीसारनः ॥ शोथातीसारस्यचिकित्सा । शोथघ्नीन्द्रयवाःपाठाश्रीफलातिविषाघनाः ॥ क्कताःसोषणाःपीताःशोथातीसारनाशनाः ॥ शोथघ्नीपुनर्न्नवा । उष्णंमरिचं ॥ इति श[illegible]तीसारः ॥ ५२७ ॥

आमातीसार की चिकित्सा ॥

कुरैया, अतीस, सोंठ, बेल, हींग इन्द्रजौ और चीता इनके काढ़े से आमातीसारका नाशहोताहै सूजनवाले अतीसार की चिकित्सा पुनर्नवा, इन्द्रजौ, पाठा, बेल, अतीस और मोथा इनके काढ़े में मिर्च डालकर पीनेसे सूजनयुक्त अतीसार का नाश होताहै ॥ ५२७ ॥

आम्रास्थिमध्यमालूरफलक्काथःसमाक्षिकः । शर्करासहितोहन्याच्छर्द्यतीसारमुल्बणम् ॥ मालूरफलंबिल्वफलं । कषायोभृष्टमुद्गस्यसलाजमधुशर्करः ॥ निहन्याच्छर्द्यतीसारंतृष्णांदाहंज्वरंभ्रमम् ॥ इति छर्द्यतीसारः ॥ ५२८ ॥

आमकी बिजली और बेलके काथ में शक्कर और सहत डालकर पीनेसे छर्द्दि अतीसार का नाश होताहै भुनीहुई मूंगके काढ़े में खील सहत और शक्कर डालकर पीने से छर्दि अतीसार तृषा दाह ज्वर और भ्रमका नाश होताहै इति छर्द्दिअतीसार ॥ ५२८ ॥

दध्नासससारेणसमाक्षिकेणभुञ्जीतनिःसारकपीडितस्तु । सुतप्तकुप्यक्कथितेनवापिक्षीरेणशीतेनमधुप्लुतेन ॥ निःसारकःनिठाहीतिलोके । सुतप्तकुप्यकथितेनसुतप्तसुवर्णरजतनिर्वापणक्कथितेनभुञ्जीतपथ्यमितिशेषः ॥ निःसारके ॥ ५२९ ॥

मरोडेसे पीडित मनुष्य विना मक्खन निकला दही और सहतके साथ पथ्य भोजन करे अथवा सोने या चांदीसे बुझाये हुए दूधको शीतलकरके सहत डाल पथ्यसे भोजन करे ॥ ५२९ ॥

दीप्ताग्निर्निःपुरीषोयःसार्य्यतेफेनिलंशकृत् । सपिबेत्फाणितंशुण्ठीदधितैलंपयोघृतम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बलाविश्वाशृतंक्षीरंगुडतैलानुयोजितम् । दीप्ताग्निंपाययेत्प्रातःसुखदंवा सःक्षये ॥ पुरीषक्षये ॥ ५३० ॥

दीप्ताग्निवाले पुरुषको मलके नाश होजाने पर जो फेनायुक्त पतले दस्त आवें तो सोंठ दही तिलका तेल दूध और घी मिलाकर पिये बरियारा और सोंठके द्वारा दूधका पाक करके गुड और तेल छोडकर प्रातःकाल पीनेसे दीप्ताग्निवालेको मलके क्षय होजाने पर सुख होताहै ॥ ५३० ॥

तुलांसंकुट्यबिल्वस्यपचेत्पादावशेषितम् । सक्षीरंसाधयेत्तैलंश्लक्ष्णापिष्टैरिमैःसमैः॥ बिल्वंसधातकीकुष्ठंशुण्ठीरास्नापुनर्नवाः । देवदारुवचामुस्तंलोध्रमोचरसान्वितम् ॥ एभिर्मृद्वग्निनापक्वंग्रहण्यर्शोऽतिसारनुत् । बिल्वतैलमितिख्यातमत्रिपुत्रेणभाषितम् ॥ ग्रहण्यर्शोऽधिकारेयेस्नेहाःसमुपदर्शिताः । प्रयोज्यास्तेऽतिसारेऽपित्रयाणांतुल्यहेतुना॥ इति बिल्वतैलम् ॥ ५३१ ॥

चारसौ तोले बेलगिरी को कूटकर १०२४ एकहजार चौबीस तोले जलमें औटावे फिर चौथाई [illegible]ी रहजाने पर तिलका तेल तथा दूध डाले फिर बेलगिरी धवईके फूल कूट सोंठ रासना पुनर्नवा [illegible]ारु वच मोथा लोध और मोचरस इन सबको बराबर भाग लेकर छोडकर मंदाग्निमें पाक करे [illegible] बिल्वतैलग्रहणी बवासीर तथा अतीसारको नाश करताहै ग्रहणी और बवासीर के अधिकार में [illegible]नेह कहेगये हैं वह अतीसारमें भी काममें लाने चाहिये क्योंकि यह तीनों समान हेतुवाले हैं इ[illegible] बिल्वतैल ॥ ५३१ ॥

अथातीसारस्यभेदः प्रवाहिकातस्याःसंप्राप्तिपूर्वकंलक्षणमाह ॥

वायुःप्रवृद्धोनिचितंबलासंनुदत्यधस्तादहिताशनस्य । प्रवाहतोऽल्पंबहुशोमलाक्तं प्रवाहिकांतांप्रवदन्तितज्ज्ञाः ॥ अस्यायमर्थःअहिताशनस्यअतिशयेनवातलभक्ष्यभोजिनःप्रवृद्धोवायुःप्रवाहतः कण्ठेहद्बलेनसशब्दंवायुमपानमार्गेणत्यजतःनिचितंसञ्चितं बलासंकफंमलाक्तंपुरीषयुक्तंअल्पंबहुशः वारंवारंअधस्ताद्गुदात्नुदतिवैद्याः तांप्रवाहिकांप्रवदान्तिकथयन्तीति ॥ ५३२ ॥

अतीसारको भेद प्रवाहिकाका संप्राप्तिपूर्वक लक्षण ॥

अत्यन्त वायुवर्द्धक आहारके करनेसे कुपितहुई वात संचित कफको नीचे लेजातीहै इसलिये बहुत अपशब्दों सहित वारंवार थोडामल संयुक्त कफ गुदाके द्वारा निकलताहै इस रोगको वैद्यलोग प्रवाहिका कहते हैं ॥ ५३२ ॥ तस्यावातजादिभेदेनरूपमाह ॥

प्रवाहिकावातकृतासशूलापित्तात्सदाहासकफाकफाच्च । सशोणिताशोणितसम्भवाश्चताःस्नेहरूक्षप्रभवामतास्तु।तत्ररूक्षप्रभवावातजास्नेहप्रभवाकफजातुशब्दात्तीक्ष्णप्रभवापित्तजारक्तजाच ॥ तासामतीसारवदादिशेच्चलिङ्गंक्रमंचामविपक्वतांच ५३३॥

वातजादिभेदों से प्रवाहिकाके लक्षण ॥

वातजप्रवाहिका पीडासहित पित्तजप्रवाहिका दाहयुक्त कफजप्रवाहिका कफसहित और रक्तजप्रवाहिका रक्तसहित होतीहै रूखी वस्तुओं से वातज स्नेहोंके सेवन से कफज और तीक्ष्ण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तथा उष्ण ऋतुओंके सेवनसे पित्तज तथा रक्तज प्रवाहिका उत्पन्न होती हैं प्रवाहिकाओं के लक्षण क्रम और आमका परिपाक यह सब अतीसारों के समान जानने चाहिये ॥ ५३३ ॥

तस्याश्चिकित्सामाह ॥

बिल्वपेशीगुडंलोधंतैलंमरिचसंयुतम् । लीढ्वाप्रवाहिकाक्रान्तःसत्वरंसुखमाप्नुयात् ॥ बिल्वाद्यवलेहः ॥ ५३४ ॥

प्रवाहिका की चिकित्सा ॥

बेल, पुराना गुड , लोध, तिलका तेल और मिर्च इन सबको एकमें मिलाकर चाटने से प्रवाहिका का नाश होताहै ॥ इति बिल्वाद्यवलेह ॥ ५३४ ॥

धातकीबदरीपत्रंकपित्थरसमाक्षिकम् । सलोध्रमेकतोदध्ना पिबेन्निर्वाहिकार्दितः ॥ एकतःप्रत्येकंदध्नापिबेदित्यर्थः ॥ इति धातक्यादिः ॥ ५३५ ॥

धवईके फूल, बेलकी पत्ती, कैथेका रस, सोनामक्खी और लोध इनमें से किसी एकको दही के साथ खाने से प्रवाहिका का नाश होताहै ॥ इति धातक्यादि ॥ ५३५ ॥

अथासाध्यातिसारिणांलक्षणमाह ॥

पक्वजाम्बवसङ्काशंयकृत्खण्डनिभंतनुम् । घृततैलवसामज्जावेसवारपयोदधि । सधावनतोयाभंकृष्णंनीलारुणप्रभम् । कर्बुरंमेचकंस्निग्धंचन्द्रिकोपगतंघनम् ॥ मस्तुलुंगाभंसगन्धंक्कथितंबहु । तृष्णादाहारुचिश्वासहिक्कापार्श्वास्थिशूलिनम् । मूर्च्छारतिसंमोहयुक्तंपक्वबलीगुदम् । प्रलापयुक्तञ्चभिषग्वर्जयेदतिसारिणम् ॥ असंवृत गुदंक्षीणंशूलाध्मानैरुपद्रुतम् । गुदेपक्वेगतोष्माणमतीसारिणमुत्सृजेत् ॥ असंवृत गुदंगुदसंवरणाक्षमम् । गुदेपक्वेगुदपाकारम्भकेपित्तेविद्यमानेपिशीतगात्रंनष्टाग्निंवा ॥ श्वासशूलपिपासार्त्तंक्षीणंज्वरनिपीडितम् । विशेषेणनरंवृद्धमतीसारोविनाशयेत् ॥ शोथंशूलंज्वरंतृष्णांश्वासंकासमरोचकम् । छर्दिंमूर्च्छांचहिक्कांचदृष्ट्वातीसारिणन्त्यजेत् ॥ हस्तपादाङ्गुलीसन्धिप्रपाकोमूत्रनिग्रहः । पुरीषस्योष्णतात्तीवमरणायातिसारिणः ॥ अतीसारीराजरोगीग्रहणीरोगवानपि । मांसाग्निबलहीनोयोदुर्लभंतस्यजीवनम् ॥ बालेवृद्धेत्वसाध्योऽयंलिङ्गैरेतैरुपद्रुतः । अपियूनामसाध्यंस्यादतिदुष्टेषुधातुषु ॥ ५३६ ॥

असाध्य अतीसारवालों के लक्षण ॥

जिस अतीसार में रोगीका मल पकी जामनके समान तथा यकृत्के खण्ड के समान वर्णवाला हो पतलाहो घी तेल चरबी मज्जा बेसवार दूध अथवा दहीके तुल्य अथवा मांसके धोवनके समान होय काला नीला लाल अंजन अथवा मोरकी पूँछके समान सचिक्कण तथा नाना प्रकारके वर्णों से युक्तहोवे वह रोगी असाध्यहै जिस रोगीका मल दुर्गन्धयुक्त अथवा सुगंधित भेजेके समान बहुतसा निकले वह असाध्यहै अतीसारमें तृषा, दाह, अरुचि, श्वास, हिचकी, पसली तथा हड्डियों में पीड़ा, मूर्च्छा, व्याकुलता, मोह, गुदाके चक्रोंका पकना और प्रलाप होय तो असाध्य जानना चाहिये जिस अतीसारवालेको गुदाके बन्दकरने की शक्ति न होय शूल तथा अफराहोय गुदा पकजाय और ऊष्मा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

न रहै उसको वैद्य त्यागदेवे जो अतीसारवाला श्वास शूल तथा तृषा से व्याकुल क्षीण और ज्वर से युक्तहो वह असाध्यहै वृद्ध मनुष्यको विशेषकरके अतीसार मारताहै सूजन,शूल,ज्वर,तृषा,श्वास, खांसी,अरुचि,छर्दि,मूर्च्छा और हिचकी इनसे युक्त अतीसार असाध्य होताहै जिस अतीसारमें हाथ पैर उंगली तथा संधियां पकी हुईसी मालूम पड़ें मूत्र रुकजाय और मल बहुतगरमहो वह असाध्य है अतीसार राजयक्ष्मा और ग्रहणीवाले जो मनुष्य मांस अग्नि तथा बलसे क्षीणहैं उनका जीना दुर्लभहै बालक और वृद्धोंका अतीसार इन सम्पूर्ण उपद्रवों से युक्तहोने पर असाध्य होताहै और धातुओंके अत्यन्त दूषित होजानेपर युवा पुरुषका भी अतीसार असाध्य होजाताहै ॥ ५३६ ॥

अथातीसारमुक्तस्यलक्षणम् ॥

यस्योच्चारंविनामूत्रंसम्यग्वायुश्चगच्छति । दीप्ताग्नेर्लघुकोष्ठस्यस्थितस्तस्योदरामयः ॥ ५३७ ॥ गयेहुए अतीसार के लक्षण ॥

जिसको मल त्यागकरनेके समय के विना भी मूत्र तथा अपानवायु अच्छेप्रकारसे निकले अग्नि [दी]प्तहो कोष्ठ हलका होजाय उसको अतीसाररहित जानना चाहिये ॥ ५३७ ॥

अथातीसारिणोवर्जनीयान्याह ॥

[स्न]ानावगाहमभ्यंगगुरुस्निग्धादिभोजनम्॥व्यायाममग्निसन्तापमतीसारीविवर्जयेत्। [स्ना]नमुद्धृतजलेनअवगाहनंनद्यादौ ॥ ५३८ ॥ अतीसारवालेको त्याज्य वस्तु ॥

[...] भरेहुए जल से स्नान और नदी आदिकमें गोता लगाना शरिर में तैलादिमर्दन भारी तथा स्निग्ध वस्तुओं का भोजन व्यायाम और अग्निसे तपना यह अतीसारवालेको वर्ज्जितहैं ५३८॥

प्रत्येकंदशगद्याणःशुद्धसूतकगन्धयोः । विंशतित्रिदिनंखल्वेपिष्ट्वाकुर्य्याच्चकज्जलीम् ॥ पश्चादर्कस्यदुग्धेनपिष्ट्वातांकज्जलींत्र्यहम् । ततोवज्रस्यदुग्धेन पिष्ट्वातांकज्जलींत्र्यहम् ॥ आर्द्रकंचित्रकंश्वेतंनिःसहायञ्चमर्दयेत् । पेषयेत्तद्रसैरेवं कज्जलीन्तांदिनत्रयम् ॥ पीतानाञ्चकपर्दीनांचूर्णंगद्याणविंशतिः । विंशतिःशङ्खचूर्णस्यचत्वारिंशच्चमिश्रितम् ॥ त्रिदिनंमर्दयेत्खल्वेपूर्वोक्तेनक्रमेणच । त्र्यहमर्कस्यदुग्धेनवज्रीदुग्धेनच त्र्यम् । तन्मध्येकज्जलींक्षिप्त्वाचित्रकार्द्ररसेनतु ॥ खल्वेपिष्ट्वात्रयःकार्या गुट्योबदरसम्मिताः ॥ लिप्त्वादग्ध्वाशुचूर्णेनपक्वकुल्हरिकान्तरम्। प्रक्षिप्यगुटिकास्तत्रचूर्णलिप्तपिधानकम् ॥ दत्त्वावस्त्रंमृदालिप्त्वागर्त्तेहस्तप्रमाणिका । तद्गर्भेकुल्हरींमुक्त्वापुटोदेयश्चशाणकैः॥ पश्चाच्चित्रकनीरेणस्वांगशीतञ्चपेषयेत् । गुटिकापूर्वरीत्येवकृत्वादेयःपुनःपुटः॥ दग्धानांगुटिकानाञ्चचूर्णंकृत्वाथकूपके। क्षेप्यन्नाम्नैवनिःपन्नोरसोऽयंशङ्खपोटली॥ आमज्वरातिसारेचश्वासेकासेतथैवच । श्लेष्मपित्तामवातेषुमन्दाग्नौग्रहणीषुच ॥ अष्टादशप्रमेहेषुजीर्णेजीर्णज्वरेषुच । द्वात्रिंशन्मरिचैःसार्कसघृतंवल्लपञ्चकम् ॥ सर्वरोगेषुदातव्यंमरिचयाज्यंविनाज्वरे । शालयोदधिदुग्धादिभोजनंमधुरंहितम् । कट्वम्लक्षारतैलाद्यादूरतःपरिवर्जयेत्। विधिनानेनकर्त्तव्योरसोऽसौशंखपोटली ॥ क्रमेणत्रिनिवर्त्तन्ते प्रोक्तरोगानसंशयः ॥ ५३९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुद्ध पारा और गंधक पांच २ तोले लेकर एकसाथ तीन दिन घोटकर कजलीकरे फिर आकके दूध में तीन दिन घोटकर थूहरके दूधमें तीन दिन खरलकरे इसके उपरान्त अदरक और श्वेत चीते की जड़को विना जल के कूटकर रस निकाले उस रसमें तीन दिन कजली को घोटे फिर पीली कौडी और शंखका दश २ तोले चूर्ण एकमें मिलाकर पहली कहीहुई विधिसे तीन दिन घोटकर आकके दूधमें और थूहरके दूधमें तीन २ दिन घोटे फिर उसमें वह कजली मिलाकर अदरक और चीते के रसमें घोटकर बेरके बराबर गोली बनावै इसके उपरान्त खूब पक्की कुल्हियाके भीतर चूने का लेपकरके पकावे फिर उसमें वह गोली भरदे और चूने से लिपेहुए ढकनेसे बन्दकरके कपड़ौटी करदे फिर हाथभरका गढ़ा खोदकर अरने कण्डोंसे उसमें पुटदे और शीतल होनेपर निकालके चीते के रसमें पीसकर पहलीसी गोली बनाले और उसीप्रकार से फिर पुटदे पीछे गोलियोंको निकाल पीसकर शीशीमें रक्खे फिर बत्तीस मिर्च और घी के साथ पंद्रह रत्ती यह शंखपोटली नाम रस खाने से आमज्वर अतीसार, श्वास, खांसी, कफ, पित्त, आमवात, मंदाग्नि, ग्रहणी, अठारह प्रमेह, जीर्णता और बलक्षयका नाश होता है ज्वर में मिर्च और घीके साथ न देना चाहिये धान, दही, दूध आदिक भोजन पथ्यहैं और कटु, खटाई, क्षार तथा तेल आदिक त्याज्यहैं इस प्रकारसे इस शंख पोटली नाम रस के सेवन करनेसे कहेहुए संपूर्ण रोग क्रमसे निस्सन्देह नाशको प्राप्त होतेहैं ॥ इति शंखपोटलीरस ॥ ५३९ ॥

त्रैलोक्यविजयाजातीफलेतुल्येकलिंगके। गृहीत्वाद्विगुणंश्रेष्ठोलोहःसर्वातिसारनुत् बिल्वमोचरसलोध्रधातकीपुष्पचूतफलबीजसंयुताम् । भक्षयेदतिविषावलेहिकांसिन्धुवेगमपिरुद्धरंध्रुवम् ॥ इत्यतीसाराधिकारः ॥ ५४० ॥

भांग तथा जायफल को समभाग लेकर इनके दूने इन्द्रजौ ले और इनसबका दूना लोहसार ले फिर सब को मिलाकर सेवन करनेसे सब अतीसारोंका नाश होताहै बेल, मोचरस, लोध, धवई के फूल, आमकी बिजली और अतीस इन सब औषधियों का अवलेह बनाकर खानेसे समुद्र के वेगके समान भी अतीसार रुकजाताहै ॥ इति अतीसाराधिकार ॥ ५४० ॥

अथ ज्वरातीसाराधिकारः। ज्वरातिसारयोरुक्तंनिदानंयत्पृथक्पृथक्। तस्माज्ज्वरातिसारस्यनिदानंनोदितंपुनः ॥ ५४१ ॥

ज्वरातीसार ॥

ज्वर और अतीसारका निदान पहले अलग २ कहचुके हैं इस लिये ज्वरातीसारका निदान फिर नहीं कहतेहैं ॥ ५४१ ॥

अथ ज्वरातीसारस्यचिकित्सा ॥

ज्वरातीसारयोरुक्तंभेषजंयत्पृथक्पृथक्। नतन्मिलितयोःकार्यमन्योन्यंवर्द्धयेद्यतः ॥ अयमभिप्रायः। ज्वरहरमनुलोमनम्भवति। अतीसारहरंस्तम्भनम्भवति। अतःपरस्परविरुद्धत्वात्पृथगुक्तंभेषजंमिलितयोर्नकार्य्यम् । यतआह । अनुलोमनंज्वरघ्नंग्राहकमतीसारहृद्भवति। पृथगुक्तमौषधंतज्ज्वरातीसारेविरुद्धमन्योन्यम् ॥ अतस्तौप्रतिकुर्वीत विशेषोक्तचिकित्सितैः। लङ्घनमेकंमुक्त्वानचान्यदस्तीहभेषजंबलिनः ॥ समुदीर्णदोष

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निचयंतत्पाचयेत्तथाशमयेत्। लङ्घनमुभयोरुक्तंमिलितेकार्येविशेषनस्तदनु। उत्पलषष्ठकसिद्धंलाजमण्डादिकंसकलम्। उत्पलषष्ठकंयथा। पृष्ठपर्णीबलाबिल्वधनिकानागरोत्पलैः। ज्वरातीसारयोर्वापिपिबेत्साम्लंशृतन्नरः। अत्रलाजामण्डाद्यपेक्षयावाशब्दः। अतीसारपुरीषातिप्रवृत्त्याअम्लत्वञ्चदाडिमरसादिनाकर्त्तव्यम्।इतिउत्पलषष्ठकम् ५४२॥

ज्वरातीसारकी चिकित्सा॥

ज्वर और अतीसारकी जो औषध अलग २ कहीगईहैं उनको मिलाकर खानेसे ज्वरातीसार नहीं जाताहै क्योंकि वह परस्पर विरुद्धहोकर एक दूसरे को बढ़ातीहैं इसका यह अभिप्रायहै कि ज्वरघ्न औषध मलको निकालनेवाली और अतीसारनाशक औषध ग्राही होतीहै इस लिये परस्पर विरुद्धहोने के कारण अलग २ कही हुई औषध मिलाकर न करनी चाहिये क्योंकि कहागयाहै कि ज्वरघ्न औषध मलकी निकालनेवाली और अतीसारकी औषध ग्राही होतीहै इस कारण से अलग अलग कही हुई औषध ज्वरातीसार में परस्पर विरुद्धहोती हैं इस लिये ज्वरातीसारमें विशेष कही हुई [illegible]धियोंके द्वारा चिकित्सा करनी चाहिये इसरोगमें बलवान् पुरुषको लंघनके सिवाय और कोई [illegible]ध नहींहै लंघनके द्वारा दोष परिपाक और शान्तिको प्राप्तहोते हैं ज्वर और अतीसार इनदोनों [illegible]घन कहागयाहै और दोनोंके मिलेहोने पर विशेष करके लंघन कराना चाहिये लंघनके उपरान्त [illegible] षष्ठकके द्वारा सिद्ध हुआ खीलोंका माँड देनाचाहिये पृष्ठपर्णी, बरियारा, बेल, धनियां, सोंठ [illegible]लिकमल यह उत्पलषष्ठक कहलाताहै इनके द्वारा काढ़ाकरके अनारका रस मिलाकर ज्वरातीसारमें देनाचाहिये इति उत्पलषष्ठक॥ ५४२॥

कणाकरिकणालाजक्काथोमधुसितायुतः।पीतोज्वरातिसारस्यतृष्णामाशुविनाशयेत्॥ इति कणादिक्काथः।नागरातिविषामुस्ताऽमृताभूनिम्बवत्सकैः।क्काथःसर्वज्वरान्हन्तिअतीसारंसुदारुणम्॥ इति नागरादिक्काथः। गुडूच्यातिविषाधान्यशुण्ठीबिल्वाम्बुबालकैः। पाठाभूनिम्बकुटजचन्दनोशीरपर्पटैः॥ पिबेत्कषायंसक्षौद्रंज्वरातीसारनाशनम्॥ हृल्लासारुचितृड्दाहवमीनाञ्चनिवृत्तये॥ बृहद्गुडूच्यादिक्काथः। उत्पलंदाडिमत्वक्चपद्मकेशरमेवच। पीतंतण्डुलतोयेनज्वरातीसारनाशनम्॥ इति उत्पलादिचूर्णम्। बिल्वबालकभूनिम्बगुडूचीमुस्तवत्सकैः। कषायःपाचनःशोथज्वरातीसारनाशनः॥ बिल्वादिक्काथः। नागरातिविषाबिल्वगुडूचीमुस्तवत्सकैः। कषायःपाचनःशोथज्वरातीसारनाशनः॥ इति नागरादिक्काथः। दशमूलीकषायेणविश्वामक्षसमांपिबेत्। ज्वरेचैवातिसारेचसशोथेग्रहणीगदे॥ इति दशमूलीक्काथः। इति ज्वरातीसाराधिकारः॥ ५४३॥

पीपल, गजपीपल, खील इनके काढ़ेको शीतल करके सहत तथा शक्कर मिलाकर पीने से ज्वरातीसारवाले की तृषाका नाशहोताहै इति कणादिक्काथ. सोंठ, अतीस, मोथा, गिलोय, चिरायता और इन्द्रजौ इनकेकाढ़े से संपूर्ण ज्वर और घोर अतीसारका नाश होताहै इति नागरादिक्काथ. गिलोय, अतीस, धनियां, सोंठ, बेल, सुगन्धबाला, पाठा, चिरायता, कुरैया, लालचन्दन, खस और पित्तपापडा इनके काढ़ेमें सहत डालकर पीने से ज्वरातीसार, जीमिचलाना, अरुचि, तृषा, दाह और छर्दिका नाश होताहै इति बृहद्गुडूच्यादिक्काथ. नीलकमल अनारके छिलके और कमलका जीरा इनके चूर्ण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

को चावलोंके पानीके साथ पीनेसे ज्वरातीसारका नाश होताहै इति उत्पलादिचूर्ण. बेल,सुगन्धबाला, चिरायता,गिलोय,मोथा और इन्द्रजौ इनका काढ़ा पाचक और सूजन तथा ज्वरातीसारका नाशक होताहै इति बिल्वादिकाथ सोंठ, अतीस, बेल,गिलोय,मोथा और इन्द्रजौ इनका काढ़ा पाचक और सूजन तथा ज्वरातीसारका नाशक होताहै इति नागरादि क्वाथ तोले भर सोंठ दशमूल के काढ़ेके साथपीनेसे सूजन सहित ज्वर अतीसार और ग्रहणीका नाश होताहै इति दशमूलक्वाथ॥इति ज्वरा-तीसाराधिकार ॥ ५४३ ॥

अथ ग्रहणीरोगाधिकारः । तत्रग्रहणीरोगस्यसम्प्राप्तिमाह ॥

अतीसारेनिवृत्तेऽपिमन्दाग्नेरहिताशिनः । भूयःसन्दूषितोवह्निर्ग्रहणीमपिदूषयेत् ॥ अपिशब्दादजातातीसारस्यापिग्रहणीरोगःस्यात् ॥ ५४४ ॥

ग्रहणीरोगाधिकारग्रहणीरोगकी संप्राप्ति ॥

अतीसारके निवृत्तहोजाने पर जो मन्दाग्निवाला पुरुष अहित भोजनकरे तो दूसरीबार अग्नि दूषित होकर ग्रहणीको दूषित करतीहै अतीसारके न होनेपर भी ग्रहणीरोग होताहै ॥ ५४४ ॥

अथ ग्रहणीस्वरूपमाह ॥

ग्रहण्यग्निधराकला । यतआहचरके । अग्न्यधिष्ठानमन्नस्यग्रहणाद्ग्रहणीमता । अपक्वंधारयत्यन्नम्पक्वन्त्यजतिचाप्यधः ॥ सुश्रुतेऽपि । षष्ठीपित्तधरानामयाकलापरिकीर्त्तिता । आमपक्वाशयान्तरस्थाग्रहणीसाभिधीयते ॥ ग्रहण्याबलमग्निर्हिसचापिग्रहणीमता । तस्मादग्नौप्रदुष्टेतुग्रहण्यपिविदुष्यति॥ एतेननिवृत्तातिसारिणापिअहिताहारपरीहारःकरणीयःआवह्निबललाभादित्युक्तम्भवति अतएवाहसुश्रुतः । तस्मात्कार्यःपरीहारोह्यतीसारेविरिक्तवत् । यावन्नप्रकृतिस्थःस्याद्दोषतःप्राणतस्तथा । विरिक्तेनैवविरिक्तवत् ॥ ५४५ ॥

ग्रहणीका स्वरूप ॥

अग्निकी धारण करनेवाली कलाको ग्रहणी कहतेहैं क्योंकि चरकमें कहाहै कि अग्निके धारण करनेवाली कला अन्नके ग्रहण करने से ग्रहणी कहलाती है यह कच्चे अन्नको धारण करती है और पके अन्नको नीचे छोड़ती है सुश्रुतने भी कहाहै कि आमाशय और पक्वाशय के बीचमें जो पित्तधरा नाम छठी कलाहै उसको ग्रहणी कहतेहैं ग्रहणीका बल अग्निहै इसलिये अग्निको भी ग्रहणीकहतेहैं इससे अग्निके दूषितहोने पर ग्रहणी भी दूषित होतीहै इससे यह सिद्ध होताहै कि अतीसार के निवृत्त होजानेपर जबतक अग्निमें बल न आजाय तबतक अहितकारी आहारका त्यागकरनाचाहिये इसी से सुश्रुतने कहाहै कि जबतक दोष और बल स्वाभाविक न होजायँ तबतक अतीसारवाले को जुलाब लेनेवाले के समान अपथ्यका त्याग करना चाहिये॥ ५४५ ॥

अथ ग्रहणीरोगस्यसंख्यापूर्वकंसामान्यंलक्षणमाह ॥

एकैकशःसर्वशश्चदोषैरत्यन्तमूर्च्छितैः । सादुष्टाबहुशोभुक्तामाममेवविमुञ्चति । पक्वंवासरुजंपूतिमुहुर्बद्धंमुहुर्द्रवम् । ग्रहणीरोगमाहुस्तमायुर्वेदविदोजनाः ॥ अतीसारेद्रवधातुप्रवृत्तिर्ग्रहण्यान्तुबद्धस्यापिमलस्यप्रवृत्तिरितितयोर्भेदः ॥ ५४६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रहणीरोगका संख्यापूर्व्वक सामान्य लक्षण ॥

जिस रोगमें अलग २ और मिलेहुए बहुत बढ़ेहुए वातादि दोषोंसे दोषयुक्त ग्रहणी भोजनकियेहुए पदार्थको कच्चा अथवा पक्का दस्तों में बहुतसा निकाले और मल कभी बंधा कभी पतलाहोकर दुर्गन्ध युक्त पीड़ाके साथ निकले उसको ग्रहणी रोग कहते हैं अतीसार में पतला मल निकलता है और ग्रहणी में बंधाहुआ भी मल निकलताहै यही इन दोनों में भेदहै ५४६ ॥

अथ वातजायांग्रहण्यांनिदानसम्प्राप्तिपूर्व्वकंरूपमाह ॥

कटुतिक्तकषायातिरूक्षशीतलभोजनैः । प्रमितानशनात्यध्ववेगनिग्रहमैथुनैः ॥ मारुतःकुपितोवह्निंसञ्छाद्यकुरुतेगदम् । तस्यान्नंपच्यतेदुःखंशुक्तपाकंखरांगता ॥ कण्ठास्यशोषःक्षुत्तृष्णातिमिरंकर्णयोःस्वनः । पार्श्वोरुवंक्षणग्रीवारुगभीक्ष्णंविषूचिका ॥ हृत्पीड़ाकार्श्यदौर्बल्यंवैरस्यम्परिकर्त्तिका । गृद्धिःसर्वरसानाञ्चमनसःस्यदनन्तथा ॥ जीर्णेजीर्य्यतिचाध्मानंभुक्तेस्वास्थ्यमुपैतिच । सवातगुल्महृद्रोगप्लीहाशङ्कीचमानवः ॥ चिराद्दुःखंद्रवंशुष्कंतन्वामंशब्दफेनवत् । पुनःपुनःसृजेद्वर्चःकासश्वासार्दितोऽनिलात् ॥ प्रमितपरिमितंगदंग्रहणीगदम् । शुक्तपाकम् ॥ ५४७ ॥

वातजग्रहणीका निदान और सम्प्राप्तिपूर्व्वक लक्षण ॥

कटु, तिक्त, कषाय, रूखा तथा शीतल भोजन करनेसे थोड़ा भोजन, लंघन, बहुत मार्ग में घूमना, वेगका रोकना और मैथुनकेद्वारा कुपितहुई वात अग्निको आच्छादितकरके ग्रहणीको उत्पन्न करतीहै वातजग्रहणी में भोजन का बहुत देर में पचना तथा परिपाक में खट्टा होनाहै शरीर में कठोरता, कृशता, दुर्बलता, कंठ तथा मुखका सूखना, क्षुधा, तृषा, अन्धकार सा मालूम होना और पसली, जंघा, हृदय, वंक्षण तथा ग्रीवा में पीड़ा होना, विशूचिका, मुखकी बिरसता, गुदामें काटने के समान पीड़ा, सब रसोंके खाने की इच्छा मनमें अप्रसन्नता, भोजनके परिपाक होजाने पर अथवा परिपाक के समय अफरा भोजनके पीछे स्वस्थता वारंवार थोड़े २ फेने युक्त कच्चे मलका कष्ट के साथ बहुत देरमें निकलना और खांसी तथा श्वास के द्वारा व्याकुलता यह लक्षण होतेहैं इसरोग में वातगोला हृदय के रोग और प्लीहा होगईसी मालूम होतीहै ॥ ५४७ ॥

अथ पित्तजायांग्रहण्यांनिदानसम्प्राप्तिपूर्व्वकंरूपमाह ॥

कटुतिक्तविदाह्यम्लक्षाराद्यैःपित्तमुल्बणम् । आप्लावयद्धन्त्यनलंजलंतप्तमिवानलम् ॥ सोऽजीर्णंपीतनीलाभंपीताभःसार्य्यतेद्रवम् । अत्यम्लोद्गारहृत्कण्ठदाहारुचितृषार्द्दितः ॥ आप्लावयत्‌मज्जयत्‌ननुपित्तमग्निगुणयुक्तंतत्‌कथमग्निंहन्तीत्याह । जलंतप्तमिवानलमितियथा । अग्निगुणयुक्तमपितप्तंजलमनलंहान्तितथापित्तमपिहन्ति । सार्य्यतेअत्रपित्तेनेतिकर्तृपदमध्याहरणीयम् ॥ ५४८ ॥

पित्तकी ग्रहणीका निदान और सम्प्राप्तिपूर्व्वक लक्षण ॥

कटु, चिर्परा, विदाही, खट्टा तथा खारी आदि पदार्थों से बढ़ाहुआ पित्त, गरमजलके समान अग्निको डुबाता हुआ शान्त करता है पित्तजग्रहणी में पीले नीले अथवा केवल पीले पतले तथा कच्चे मलका निकलना खट्टी डकार हृदय तथा कंठमें दाह अरुचि और तृषा होतीहै ॥ ५४८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ श्लेष्मजायाग्रहण्यानिदानपूर्विकांसम्प्राप्तिमाह ॥

गुर्वतिस्निग्धशीतादिभोजनादतिमैथुनात् । भुक्तमात्रस्यचस्वप्नाद्धन्त्यग्निंकुपितःकफः॥ तस्यान्नंपच्यतेदुःखंहल्लासच्छर्द्यरोचकाः। आस्योपदेहमाधुर्यकासष्ठीवनपीनसाः॥ हृदयम्मन्यतेस्तब्धमुदरंस्तिमितंगुरु । दुष्टोमधुरउद्गारःसदनंस्त्रीष्वहर्षणम् ॥ भिन्नामश्लेष्मसंश्लिष्टंगुरुवर्चःप्रवर्त्तनम् । अकृशस्यापिदौर्बल्यमालस्यञ्चकफात्मके ॥ भुक्तमात्रस्यचस्वप्नाद् भुक्तेत्यत्राध्यवसितादित्वात्कर्त्रर्थेक्तः । तेनभुक्तवतःसद्यःशयनादित्यर्थः। आस्योपदेहःमुखस्यकफेनलिप्तत्वम् । स्तिमितंविबद्धंनिश्चलमितियावत् । स्त्रीषु अहर्षणंरिरंसायाअभावः । भिन्नंस्फुटितमामपक्वंश्लेष्मसंश्लिष्टम् । ततएवगुरुवर्चः पुरीषंतस्यप्रवृत्तिः ॥ ५४९ ॥

कफजग्रहणीका निदान और संप्राप्तिपूर्व्वक लक्षण ॥

भारी बहुत स्निग्ध तथा शीतल आदि भोजनसे बहुत मैथुनसे और भोजनके उपरान्त तुरन्तही सोने से कुपित हुआ कफ अग्निको नष्ट करताहै कफजग्रहणी में अन्नका बहुतदेर में पचना, [illegible] मिचलाना, छर्दि, अरुचि, मुखका कफ से लिपारहना तथा मधुर रहना, खांसी, बहुत थूकना, पीन[illegible] हृदय, जकड़ाहुआसा मालूमहोना, पेटकाभारी तथा निश्चलहोना, विकारी, मीठी २ डकार, शिथिल[illegible] मैथुनकी इच्छाका न होना, कफसहित बिखरेहुए कच्चे तथा भारी मलका निकलना, कृशताके [illegible] भी बलरहित होना और आलस्य यह लक्षण होतेहैं ॥ ५४९ ॥

अथ त्रिदोषजस्य ग्रहणीरोगस्य निदानपूर्विकां सम्प्राप्तिमाह ॥

पृथग्वातादिनिर्दिष्टहेतुलिंगसमागमे। त्रिदोषन्निर्दिशेदेवंतेषांवक्ष्यामिलक्षणम् ५५०॥

सन्निपातजग्रहणीका निदान और संप्राप्तिपूर्व्वक लक्षण ॥

अलग २ कहेहुये वातादिकोंके हेतु और चिह्नोंके मिलनेसे त्रिदोषजग्रहणी जाननीचाहिये ५५० ॥

अथ ग्रहणीरोगस्यभेदंसंग्रहणीरोगमाह ॥

द्रवंघनंमितंस्निग्धंसकटीवेदनंशकृत् । आमंबहुसुपैच्छिल्यंसशब्दंमन्दवेदनम् । पक्षान्मासाद्दशाहाद्वानित्यञ्चातिविमुञ्चति । अन्त्रकूजनमालस्यं दौर्ब्बल्यंसदनम्भवेत् ॥ दिवाप्रकोपोभवतिरात्रौशांतिञ्चगच्छति । दुर्विज्ञेयादुर्न्निवाराचिरकालानुबन्धिनी। साभवेदामवातेनसंग्रहाद्ग्रहणीमता । स्निग्धंस्नेहसदृशम् । दिवाप्रकोपोभवति रात्रौशांतिञ्चगच्छतीतिव्याधेरेवप्रभावः ॥ ५५१ ॥

ग्रहणीरोगका भेद संग्रहणी रोगका वर्णन ॥

संग्रहणी रोगमें पतला, गाढ़ा, थोड़ा, स्नेहके सदृश, बहुत पिच्छिल और कच्चामल शब्द और थोडी थोडी पीडा सहित निकलताहै इस रोग में एक पक्ष भरमें महीने भरमें दश दिन में अथवा नित्य पहले कहेहुए लक्षणयुक्त रुक रुक कर दस्त आते हैं और आंतों में गुड़गुड़ाहट, आलस्य, दुर्बलता, कमरमें पीडा तथा शरीरमें शिथिलता होतीहै इसरोगमें स्वभावसेही दिनमें रोगकावेग और रात्रिमें स्वस्थता होतीहै यह रोग बहुत कठिनतासे जाननेके योग्य बहुत दिनतक रहनेवाला और अत्यन्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कठिनतासे औषध करनेके योग्य आमवातसे उत्पन्न होता है इसको संग्रहणी कहते हैं ॥ ५५१ ॥

अथ घटीयन्त्राख्यं ग्रहणीरोगभेदमाह ॥

प्रसुप्तिःपार्श्वयोःशूलंतथाजलघटिध्वनिः । तंवदन्तिघटीयंत्रमसाध्यंग्रहणीगदम् ॥ प्रसुप्तिःप्रकर्षेणशयनम् । तथाजलघटीध्वनिः। अधोमुखीकृतायाजलघट्याजलनिःसरणेयथाध्वनिःतथामलनिर्गमसमयेभवति । यदागदोऽयंदेहंव्याप्नोतितदातस्यजीवितंगच्छति ॥ ५५२ ॥ घटीयन्त्र नाम ग्रहणी रोगका भेद ॥

अधिक निद्रा और मल निकलने के समय जल से भरेहुए औंधाये हुए घट से जल निकलने के शब्दके समान दस्त में शब्द होताहै इसको घटीयंत्र ग्रहणी कहतेहैं यह रोग जब मनुष्यके शरीर में व्याप्त होताहै तो उसकी मृत्यु होजाती है ५५२ ॥

अथ सामान्यग्रहणीरोगस्यचिकित्सामाह ॥

ग्रहणीमाश्रितंरोगमजीर्णवदुपाचरेत् । लङ्घनैर्दीपनीयैश्चसदातीसारभेषजैः ॥ दोषं सान्निरामञ्चविद्यादत्रातिसारवत् । अतीसारोक्तविधिनातस्यामञ्चविपाचयेत् ॥ पेयादिलघ्वन्नंपञ्चकोलादिभिर्युतम् । दीपनानिचतक्रंचग्रहण्यांयोजयेद्भिषक् ॥ कपित्थ ... चांगेरीतक्रदाडिमसाधिता ॥ यवागूःपाचयत्यामंशकृत्संवर्त्तयत्यपि ॥ संवर्त्तयति ... करोति ॥ ५५३ ॥ सामान्य ग्रहणीरोगकी चिकित्सा ॥

ग्रहणी रोगकी चिकित्सा अजीर्णके समान करनी चाहिये और लंघन, दीपन, औषध तथा अतीसारमें कहीहुई औषधोंसे चिकित्साकरे इसमें दोषका आम सहित और आमसे रहितहोना अतीसारके समान जानना चाहिये अतीसारमें कहीहुई विधि के अनुसार आमका परिपाककरे पंचकोल आदिकोंसेयुक्त पेयादिक हलका अन्न दीपनवस्तु और मट्ठा ग्रहणीरोग में देनाचाहिये कैथा, बेल, चूका, मट्ठा और अनार इनसबकेद्वारा सिद्धकीहुई यवागू आमको पचाती और मलको बांधतीहै ५५३ ॥

अथ तक्रम् ॥

(अत्रगोदधिगुणाः)गव्यंदध्युत्तमंबल्यंपाकेस्वादुरुचिप्रदम् ॥ पवित्रंदीपनंस्निग्धं पुष्टिकृत्पवनापहम् । उक्तंदध्नामशेषाणांमध्येगव्यंगुणाधिकम् । (अथ महिषीदधिगुणाः) माहिषंदधिसुस्निग्धंश्लेष्मलंवातपित्तनुत् । स्वादुपाकमभिष्यन्दिवृष्यंगुर्वस्रदूषणम्॥ (अथ छागीदधिगुणाः) आजंदध्युत्तमंग्राहिलघुदोषत्रयापहम् । शस्यतेश्वासकासार्शःक्षयकार्श्येषुदीपनम् । उत्तमंग्राहिग्रहिण्यामतिश्रेष्ठमित्यर्थः ॥ ५५४ ॥

मट्ठेका वर्णन ॥

(गौके दहीके गुण) गौका दही श्रेष्ठ, बलकारक, पाकमें मधुर, रुचिकारी, पवित्र, दीपन, स्निग्ध, पुष्टकारी, वात नाशक और संपूर्ण दहियोंमें श्रेष्ठ होताहै (भैंसके दहीके गुण) भैंसका दही स्निग्ध, कफकारी, वातपित्तनाशक पाकमें मधुर, अभिष्यन्दी, वीर्य्यवर्द्धक, भारी और रक्तका दूषितकरनेवाला होताहै (बकरीके दहीके गुण) बकरीका दही श्रेष्ठ, ग्राही (ग्रहणीरोगमें अत्यन्तहित) हलका, त्रिदोषनाशक, दीपन और श्वास, खांसी, बवासीर, क्षय और कृशता को नाशकरताहै ॥ ५५४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ तक्रस्यभेदः॥

तक्रन्तुघोलमथितोदश्वित्तक्रप्रभेदतः। सुश्रुताद्यैर्मुनिश्रेष्ठैश्चतुर्द्धापरिकीर्त्तितम्॥ ससरंनिर्जलंघोलंमथितन्त्वसरोदकम्। तक्रंपादजलंप्रोक्तमुदश्विच्चार्द्धवारिकम्॥५५५॥

मट्ठे के भेद॥

तक्र,घोल, मथित और उदश्वित् यह चार मट्ठे के भेद सुश्रुत आदि मुनियोंने कहेहैं मलाई सहित दहीके निर्जलके मट्ठे को घोल, मलाई उतरेहुये दहीके निर्जल मट्ठे को मथित, चौथाई जल सहित मट्ठे को तक्र. और आधे जल सहित मट्ठे को उदश्वित् कहतेहैं॥ ५५५॥

वातपित्तहरंघोलंमथितंकफपित्तनुत्। उदश्वित्कफदंबल्यंश्रमघ्नंपरमंमतम्॥ (अथतक्रस्यगुणाः) तक्रंग्राहिकषायाम्लंमधुरंदीपनंलघु। वीर्य्योष्णंबलदंवृष्यंप्रीणनंवातनाशनम्॥ यान्युक्तानिदधीन्यष्टौतद्गुणंतक्रमादिशेत्। ग्रहण्यादिमतांतक्रंपथ्यंसंग्राहिलाघवात्॥ वातघ्नमम्लसान्द्रत्वात्सद्यस्कन्त्वविदाहिच। किञ्चस्वादुविपाकञ्चअन्तेपित्तप्रकोपणम्॥ कषायोष्णविकाशित्वाद्रौक्ष्याच्चैवकफेहितम्॥ ५५६॥

घोल. वातपित्तनाशक मथित. कफपित्तनाशक उदश्वित्. कफकारी, बलिष्ठ तथा अत्यन्त श्रमनाशक होताहै तक्र. ग्राही, कषैला,खट्टा,मधुर,दीपन,हलका,वीर्य में उष्ण, बलकारी,वीर्यबर्द्धक प्रीतिकारी और वातनाशक होताहै जो आठप्रकारके दहीकहेगयेहैं उसीप्रकार उनके मट्ठेकेभी गुण जानने चाहिये ग्रहणी आदि रोगवालोंको ग्राही और हलकेपनेसे तक्रपथ्यहै तक्र खट्टे तथा घनेपनेसे वातनाशक होताहै ताजातक्र.अविदाही पाकमें मधुर तथा अंतमें पित्तको कुपितकरनेवाला होताहै और कषैलेपनसे उष्णतासे और विकाशी तथा रूखेपनके गुणसे कफनाशक होताहै॥५५६॥

अथोद्धृतस्नेहस्यस्तोकोद्धृतस्नेहस्यानुद्धृतस्नेहस्यतक्रस्यगुणाः॥

समुद्धृतघृतंतक्रंपथ्यंलघुविशेषतः। स्तोकोद्धृतघृतंतस्माद्गुरुवृष्यंकफावहम्॥ अनुद्धृतघृतंसान्द्रंगुरुपुष्टिबलप्रदम्॥ ५५७॥

घीनिकलेहुए कुछघीनिकलेहुए और बिनघीनिकलेहुए मट्ठेकेगुण॥

जिस मट्ठेसे अच्छे प्रकार घी निकाल लियाजाता है वह पथ्य तथा बहुत हलका होताहै जिस मट्ठेसे थोडा घी निकाला जाताहै वह पहलेकी अपेक्षा भारी वीर्यवर्द्धक तथा कफकारी होता है और जिस मट्ठेसे घी नहीं निकालाजाताहै वह गाढा भारी पुष्टिकारी तथा बलवर्द्धक होताहै ५५७॥

अथ दोषविशेषेतक्रविशेषाः॥

वातेम्लंसैन्धवोपेतंपित्तेस्वाद्वम्लशर्करम्। पिबेत्तक्रंकफेनापिक्षारत्रिकटुसंयुतम्॥ हिंगुजीरयुतंघोलंसैन्धवेनावचूर्णितम्। ग्रहण्यर्शोऽतिसारघ्नंभवेद्वातहरम्परम्। रोचनंपुष्टिदंबल्यंवस्तिशूलविनाशनम्॥ ५५८॥

दोषविशेषमें तक्र विशेष॥

वातकी अधिकतामें खट्टा तथा सैंधवयुक्त मट्ठा सेवन करनाचाहिये पित्तमें खटमिट्ठा मट्ठा शक्कर डालकर सेवन करना चाहिये और कफमें जवाखार तथा त्रिकटुयुक्त मट्ठा पीना चाहिये हींग जीरा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तथा सेंधेनोनसे युक्त मट्ठा. ग्रहणी, बवासीर, अतीसार, वात तथा मूत्राशयकी पीड़ाका नाशक रुचिकारी, पुष्टिकारी और बलवर्द्धक होताहै ॥ ५५८ ॥

अथामपक्वतक्रगुणाः ॥

तक्रमामंकफंकोष्ठेहन्तिकण्ठेकरोतिच । पीनसश्वासकासादीन्पक्वमेवविशिष्यते५५९ ॥

कच्चे व पक्के मट्ठे के गुण ॥

कच्चामट्ठा. कोष्ठके कफको नष्टकरताहै तथा गलेके कफको बढ़ाताहै और पक्कामट्ठा. पीनस, श्वास तथा खांसी आदिमें विशेष गुणकारी होताहै ॥ ५५९ ॥

अथ तक्रस्यानिषेधः ॥

नैवतक्रंक्षतेदद्यान्नोष्णकालेनदुर्बले । नमूर्च्छाभ्रमदाहेषुनरोगेरक्तपैत्तिके ॥ ५६० ॥

मट्ठेका निषेध ॥

क्षत, उष्णकाल, दुर्बलता, मूर्च्छा, भ्रम, दाह और रक्तपित्त इनमें मट्ठाका निषेध है ॥ ५६० ॥

अथ तक्रस्यगुणोत्कर्षः ॥

नतक्रसेवीव्यथतेकदाचिन्नतक्रदग्धाःप्रभवन्तिरोगाः । यथासुराणाममृतंसुखायतथानराणांभुवितक्रमाहुः ॥ ५६१ ॥

मट्ठेके गुणोंकी बड़ाई ॥

मट्ठका सेवन करनेवाला कभी व्यथित नहीं होता और मट्ठेके द्वारा नष्टहुए रोग फिर नहीं उत्पन्न होतेहैं जैसे देवताओंको अमृत सुखदायकहै उसीप्रकार पृथ्वी में मनुष्योंको मट्ठा सुखदायी है ५६१॥

मुद्गयूषंरसंतक्रंधान्यजीरकसंयुतम् । सैन्धवेनान्वितन्दद्यात्षड्यूषणमितीरितम् ॥ रसंलघुग्राहिमांसरसम् । इति षड्यूषगुणः ॥ ५६२ ॥

मूंगकायूष, मांसकारस और मट्ठा इनमें धनियां, जीरा और सेंधानोन मिलाकर देना चाहिये यह षड्यूषन कहलाताहै ॥ इति षड्यूषनम् ॥ ५६२ ॥

कर्षंगन्धकमर्द्धपारदमुभेकुर्य्याच्छुभांकज्जलीं त्र्यक्षन्त्र्यूषणतश्चपञ्चलवणंसार्द्धञ्च कर्षंपृथक् ॥ भृष्टंहिंगुचजीरकद्वययुतंसर्वार्द्धभंगान्वितं खादेट्टंकमितंप्रवृत्तिगदवांस्तक्रेणाबिल्वेनवा ॥ इति लाईचूर्णम् ॥ ५६३ ॥

गन्धक १ तोला पारा ६ माशे इन दोनोंकी कजली करे फिर त्रिकटु २ तोला पांचोनोन डेढ़ २ तोले और भुनीहींग दोनोंजीरे डेढ़ २ तोले और इन सबकी आधीभंग इन सबको मिलाकर मट्ठे अथवा बेलके साथ चारमाशे रोजखानेसे दस्तवालेको हितकारी होताहै ॥ इति लाईचूर्ण ॥ ५६३ ॥

जातीफलंलवंगैलापत्रत्वङ्नागकेशरैः । कर्पूरचन्दनतिलत्वक्क्षीरीतगरामलैः ॥ तालीसपिप्पलीपथ्यास्थूलजीरकचित्रकैः । शुण्ठीविडंगमरिचैःसमभागंविचूर्णितैः ॥ यावन्त्येतानिसर्वाणिदद्याद्भङ्गाञ्चतावतीम् । सर्वचूर्णसमंकृत्वाप्रदेयाशुभ्रशर्करा ॥ कर्षमात्रामिदंखादेन्मधुनाप्लावितंजनः । नाशयेद्ग्रहणींकासंक्षयंश्वासमरोचकम् ॥ इति जातीफलादिचूर्णम् ॥ ५६४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जायफल, लौंग, इलायची, तेजपात, दालचीनी, नागकेशर, कपूर, चन्दन, तिल, वंशलोचन, तगर, आंवला, तालीस, पीपल, हड, जीरा, चीता, सोंठ, बायबिडंग और मिर्च इनसब औषधियोंको समभागलेकर चूर्ण करे और सबकी बराबर भंग मिलाकर सबके समान श्वेत शक्कर मिलावे और सहतके साथ एक तोले भरखाय इससे ग्रहणी, खांसी, क्षय, श्वास और अरुचिकानाश होताहै॥ इति जातीफलादिचूर्ण ५६४

चित्रकंपिप्पलीमूलंक्षारोलवणपञ्चकम्। व्योषंहिंग्वजमोदाचचव्यंचैकत्रचूर्णयेत्॥ वटिकामातुलुंगस्यरसैर्वादाडिमस्यच। कृताविपाचयत्यामन्दीपयत्याशुचानलम्॥ अजमोदायवानिका। चित्रकादिवटिका॥ ५६५॥

चीता, पीपलामूल, जवाखार, पांचों नोन, त्रिकटु, हींग, अजवाइन और चव्य इनसब औषधियों को चूर्ण करके नींबू अथवा अनारके रस में गोलीबांधे यह गोली आमको परिपाक करती है और अग्निको बढ़ाती है॥ इति चित्रकादिवटिका॥ ५६५॥

श्रीफलशलाटुमज्जानागरचूर्णेनमिश्रितःसगुडः। ग्रहणीगदमत्युग्रंतक्रभुजाशीलितोजयति॥ श्रीफलशलाटुबिल्वस्यामंफलम्॥गुडभागद्वयम्। इतिबिल्वकल्कः॥ ५६

कच्ची बेलगिरी और सोंठका चूर्ण दूना गुड मिलाकर खाने से और मट्ठेका पथ्य करने से बढ़ेहुए भी ग्रहणी रोगका नाश होता है॥ इति बिल्वकल्क॥ ५६६॥

चतुःपलंसुधाकाण्डंत्रिफलालवणत्रयम्। वार्त्ताकोःकुडवञ्चार्कमूलाद्विल्वंतत्॥ दग्ध्वाद्रवेनवार्त्ताकोर्गुटिकाभोजनान्तरे। भुक्ताभुक्तंपचत्याशुनाशयेद्ग्रहणींगदम्॥ कासंश्वासंतथार्शांसिविसूचीञ्चहृदामयम्॥ इतिवार्त्ताकुगुटिका॥ ५६७॥

सेंहुडेकी मोटी टहनी ४ पल तीनों नोन ३ पल बनका बैंगन ४ पल और चीता तथा आककी जड चार २ तोले इनसब औषधियों को जलाकर बैंगन के रसमें गोली बनावे भोजन के उपरान्त इस गोली को खानेसे बहुत शीघ्र भोजन पचता है और ग्रहणी खांसी श्वास बवासीर विसूचिका तथा हृदय के रोगोंका नाश होताहै॥ इति वार्ताकुगुटिका॥ ५६७॥

मुस्तकातिविषाबिल्वकौटजंसूक्ष्मचूर्णितम्। मधुनाचसमालीढंग्रहणींसर्वजांजयेत्॥ कौटजइन्द्रयवः॥ इतिमुस्तकादिचूर्णम्॥ ५६८॥

मोथा, अतीस, बेल और इन्द्रजौ इनका सूक्ष्म चूर्ण करके सहत के साथ चाटनेसे सब प्रकार की ग्रहणी का नाश होताहै॥ इति मुस्तकादिचूर्ण॥ ५६८॥

श्वेतोवायदिवारक्तःसुपक्वोग्रहणीगदः। गुडेनाधिकसर्ज्जेणभक्षितेनाशुनश्यति॥ इति सर्ज्जरसचूर्णम्॥ ५६९॥

राल को गुडके साथ खानेसे बहुत शीघ्र श्वेत तथा रक्त पकाहुआ ग्रहणीरोग नष्ट होताहै॥ इतिसर्जरसचूर्ण॥ ५६९॥

बिल्वाब्दशक्रयववालकमोचसिद्धमाजंपयः पिबतियोदिवसत्रयंवा॥ सोऽतिप्रवृद्धचिरजंग्रहणीविकारं सामंसशोणितमसाध्यमपिक्षिणोति॥ ५७०॥

बेल, मोथा, इन्द्रजौ, सुगन्धवाला और मोचरस इनके द्वारा क्षीर पाककी विधि से बकरीका

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दूध तीनदिनतक पीने से बहुत बढ़ेहुए बहुत पुराने और आम तथा रुधिर सहित साध्य ग्रहणी रोग का नाश होताहै ॥ ५७० ॥

॥ प्रस्थत्रयंत्वामलकीरसस्यशुद्धस्यदत्त्वार्द्धतुलांगुडस्य । चूर्णीकृतैर्ग्रन्थिकजीरचव्य व्योषैःसकृष्णाहवुषाजमोदैः॥ विडंगसिन्धुत्रिफलाजवानीपाठाग्निधान्यैश्चपलप्रमाणैः॥ दत्त्वात्रिवृच्चूर्णपलानिचाष्टावष्टौचतैलस्यपचेद्यथावत्। तंभक्षयेदक्षपलप्रमाणंयथेष्टचे ष्टस्त्रिसुगन्धियुक्तम् ॥ अनेनसर्वेग्रहणीविकाराःसश्वासकासास्वरभेदशोथाः । शाम्य न्तिचायंचिरमन्तरग्नेर्हतस्यपुंस्त्वस्यचवृद्धिहेतुः ॥ स्त्रीणान्तुबन्ध्यामयनाशनःस्यात्क ल्याणकोनामगुडःप्रसिद्धः। तैलेमनाग्त्रिवृद्भृष्टंत्रिफलायाःपलत्रयम् ॥ सिद्धेनिधेय मत्रैवगुडेकल्याणपूर्व्वके॥ इति कल्याणगुडः॥ ५७१ ॥

आंवले का रस १२८ तो० शुद्धगुड २०० तो० पीपलामूल, जीरा, चव्य, सोंठ, मिरच, पीपल' गजपीपल, हाऊबेर, अजमोदा, बायबिडंग, सेंधानोन, त्रिफला, अजवाइन, पाठा, चीता और धनिया [illegible]ह सब एक २ पल और तेल तथा निसोथका चूर्ण आठ २ प० तेलमें निसोथ के चूर्णको कुछ भू-[illegible]कर आंवलेका रस और गुड मिलाकर पाक करे फिर ऊपर कहीहुई सम्पूर्ण औषधियों का चूर्ण [illegible]लावे यह एक रुद्राक्ष अर्थात् चार पांच माशे त्रिसुगन्ध चूर्ण के साथ खानेसे सबप्रकार की ग्रह-[illegible] श्वास, खांसी, स्वरभेद, सूजन, मंदाग्नि तथा नपुंसकता को नष्ट करता है और स्त्रियों के [illegible]यापनको भी दूरकरता है ॥ इति कल्याणगुड ॥ ५७१ ॥

पिप्पलीपिप्पलीमूलंचित्रकंगजपिप्पली। धान्याकञ्चविडंगानिजवानिमरिचानिच ॥ त्रिफलाचाजमोदाचनीलनीजीरकस्तथा । सैन्धवंरोमकञ्चापिसामुद्रंरुचकंविडम् ॥ आरग्वधश्चत्वक्पत्रंसूक्ष्मैलाचोपकुञ्चिका। शुण्ठीशक्रयवाश्चैवप्रत्येकंकर्षसंमिताः ॥ मृद्वीकायाःपलान्यत्रचत्वारिकथितानिहि । त्रिवृतायाःपलान्यष्टौगुडस्यार्द्धतुलांतथा ॥ तिलतैलपलान्यष्टावामलक्यारसस्यतु । प्रस्थत्रयमिदंसर्वंशनैर्मृद्वग्निनापचेत् ॥ औदुम्बरंचामलकंबदरञ्चयथाबलम् । तावन्मात्रमिदंखादेद्भक्षयेद्वायथानलम् ॥ निखिलान्ग्रहणीरोगान्प्रमेहांश्चैवविंशतिम्। उरोघातंप्रतिश्यायंदौर्बल्यंवह्निसंक्षयम्॥ ज्वरानपिहरेत्सर्व्वान्कुर्य्यात्कान्तिमतिंबलम् । पिचुपाठान्वयाद्दन्तिरक्तपित्तञ्चविड् ग्रहम् ॥ धातुक्षीणोयक्षीणःस्त्रीषुक्षीणःक्षयीचयः । तेभ्योहितश्चबन्ध्यायैमहाकल्याण कोगुडः ॥ इति महाकल्याणकगुडः ॥ ५७२ ॥

पीपल, पीपलामूल, चीता, गजपीपल, धनियां, बायबिडंग, अजवाइन, मिर्च, त्रिफला, अज-मोद, नीलनी, जीरा, सेंधानोन, सांभरनोन, समुद्रनोन, कालानोन, विड्नोन, अमलतास, दालची-नी, तेजपात, छोटी इलायची, कालाजीरा, सोंठ और इन्द्रजौ यह सब एक २ तो० दाख १६ तो० निसोथ ३२ तो० गुड २०० तोला तिलका तेल ३२ तो० और आंवलेका रस १९२ तो० इनसबको विधिपूर्व्वक मंदाग्नि में पाककर इसको गूलर के समान आंवलेके बराबर अथवा बेरके बराबर या अग्निके बलके अनुसारखाय इसके खानेसे संपूर्ण ग्रहणरोग, बीसों प्रमेह, उरोघात, जुकाम, दुब-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लता, मन्दाग्नि, और सर्वज्वरों को हरताहै तथा कान्ति, मति और बलको करताहै और यदि नीमकी छालका चूर्ण और पाढा इनके साथ सेवनकरै तो रक्तपित्त तथा मलरोधको दूरकरताहै और यह धातु क्षीण वृद्ध स्त्री प्रसंग से क्षीण क्षय रोगी और बन्ध्या स्त्री इन सबको हितकारी है इति॥

महाकल्याणक गुड ॥ ५७२॥

कूष्माण्डानांसुपक्वानांस्विन्नानांनिष्कुलत्वचाम् । सर्पिःप्रस्थंपलशतंताम्रपात्रेशनैः पचेत् ॥ पिप्पलीपिप्पलीमूलंचित्रकंगजपिप्पली । धान्यकानिविडङ्गानिनागरंमरिचानिच ॥ त्रिफलाचाजमोदाचकलिङ्गाजाजिसैन्धवम् । एकैकस्यपलञ्चैकंत्रिवृतोऽष्टौपलानिच ॥ तैलस्यचपलान्यष्टौगुडात्पञ्चाशदेवतु । आमलक्यारसस्यात्रप्रस्थत्रयमुदीरितम् ॥ तावत्पाकंप्रकुर्वीतमृदुनावह्निनाभिषक् । यावद्दर्व्याःप्रलेपंस्यात्तदैनमवतारयेत् ॥ औदुम्बरंचामलकंबादरंवाययथाबलम् । तावन्मात्रमिदंखादेद्भक्षयेद्वाययथानलम् ॥ अनेनैवविधानेनप्रयुक्तश्चदिनेदिने । निहन्तिग्रहणीरोगान्कुष्ठानर्शोभगंदरान्॥ ज्वरमानाहहृद्रोगंगुल्मोदरविसूचिकाः । कामलांपाण्डुरोगञ्चप्रमेहांश्चैवविंशतिम् वातशोणितवीसर्पदद्रूयक्ष्महलीमकान् । वातपित्तकफान्सर्वान्दुष्टाञ्छुद्धान्समानत् ॥ व्याधिक्षीणावयःक्षीणाःस्त्रीषुक्षीणाश्चयेनराः । तेभ्योहितोगुडोऽयंस्याद्वन्ध्यानांसुपुत्रदः ॥ वृष्योवल्योबृंहणश्चवयसःस्थापनंतथा । इतिकूष्माण्डकल्याणकगुडः ५७

अच्छे प्रकार पके हुए छिलके और बीजसे रहित उबालेहुए कुंभडे को सौपल लेकर एकप्रस्थ घी और आठ पल तिलका तेल तांबेके पात्रमें डालकर भूने फिर आंवलेका रस ३ प्रस्थ और गुड २०० तोले डालकर पाक करे इसके उपरान्त पीपल, पीपलामूल, चीता, गजपीपल, धनियां, बायबिडंग सोंठ, मिर्च, त्रिफला, अजवाइन, इन्द्रजौ, कालाजीरा और सेंधानोन यह सब एक एक पल और निसोथ आठ पल इन सबको पीसकर उसमें डालकर मंदाग्नि से तबतक पाककरे जबतक कि करछी में लगने लगे फिर उतारले यह गूलर आंवला अथवा बेर के बराबर या अग्नि के बलके अनुसार प्रतिदिन खाने से ग्रहणी, कुष्ठ, बवासीर, भगंदर, ज्वर, आनाह, हृदयके रोग, गुल्म, उदर रोग, विसूचिका, कामला, पाण्डुरोग, बीसों प्रमेह, वातरक्त, वीसर्प, दाद, यक्ष्मा तथा हलीमकका नाश होताहै और दूषित वात पित्त तथा कफ शुद्धहोजातेहैं और व्याधि से क्षीण, वृद्ध स्त्रियों के द्वारा क्षीण मनुष्योंको हितकारी होताहै यह वंध्या स्त्रियोंको पुत्र देनेवाला, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारी, धातुवर्द्धक और अवस्थाका स्थित रखनेवाला होताहै ॥ इति कूष्मांडकल्याणकगुड ॥ ५७३ ॥

अतीसाराधिकारलिखितंबिल्वतैलञ्चात्रहितम् । इति ग्रहणीरोगाधिकारः ५७४॥

अतीसाराधिकार में कहाहुआ बेलका तेल भी ग्रहणी रोग में हितकारी है ॥ इति ग्रहणीरोगाधिकार ॥ ५७४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भावप्रकाशः द्वितीयभागः ॥

अथार्शोऽधिकारः ॥

तत्रार्शसः सन्निकृष्टानि निदानान्याह ॥

पृथग्दोषैः समस्तैश्चशोणितात्सहजानिच । अर्शांसिषट्प्रकाराणिविद्याद्गुदबलित्रये ॥ केचिद्रुधिरस्यापिदोषत्वंमन्यन्ते, तन्मतमाश्रित्याह, शोणितादिति । सहजानि शरीरेसहजातानि, संख्यांचाह, षट्प्रकाराणीति, गुदबलित्रयेसार्द्धचतुरङ्गुलंगुदस्य मानम्, तस्यावयवभूतास्तिस्रोबलयः, शङ्खावर्त्तनिभाःउपर्य्युपरिसन्ति । तासांनामप्रवाहणीविसर्ज्जनीसंवरणीचेति, तत्रगुदोऽष्टार्द्धांगुलमानस्तदूर्ध्वमंगुलमानप्रथमाबलिःसार्द्धैकाङ्गुलमानाद्वितीयातृतीया च तावती ॥ उक्तञ्च । अर्द्धांगुलप्रमाणेनगुदौष्ठंपरिकीर्त्तितम्। गुदौष्ठादंगुलञ्चैकंप्रथमान्तुबलिंविदुः।सार्द्धैकांगुलमानेनपृथगन्येप्रकीर्त्तिते ॥ १॥

भावप्रकाश द्वितीयभाग ॥

बवासीर का अधिकार ॥

बवासीरके समीपी कारण ॥

गुदाके तीन चक्रों में छः प्रकार का बवासीर रोग उत्पन्न होताहै जैसे वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, रक्तज और सहज (शरीर के साथ उत्पन्न हुआ) गुदाके तीन चक्र अर्थात् साढे चार अंगुल का गुदाका प्रमाणहै और गुदा के अंगभूत तीन चक्र शंखावर्त्तके समान ऊपर ऊपरहैं उन का नाम प्रवाहणी, विसर्ज्जनी और संवरणी हैं गुदाके मुखका प्रमाण आधा अंगुलहै उसके ऊपर का चक्र १ अंगुल और उसके ऊपर दो चक्र डेढ़ डेढ़ अंगुलके हैं और कहागयाहै कि गुदाका मुख आधा अंगुल इसके ऊपर एक चक्र एक अंगुल और उसके ऊपर दो चक्र डेढ़ डेढ़ अंगुलकेहैं ॥ १ ॥

अथ वातार्शसोविप्रकृष्टं निदानमाह ॥

कषायकटुतिक्तानिरूक्षशीतलघूनिच । प्रमितात्यशनंतीक्ष्णंमद्यंमैथुनसेवनम् ॥ लङ्घनंदेशकालौ च शीतौव्यायामकर्मच । शोकोवातातपस्पर्शोहेतुर्वातार्शसाम्मतः ॥ आप्रमितमपरिमितंतीक्ष्णमितिमद्यविशेषणम् । पिष्टादिमृदुमद्यस्यवातशमकत्वात् ॥ आतपस्तूष्णवीर्य्योद्भूतरौक्ष्याद्वातप्रकोपेहेतुः । वातार्शसाम् ॥ नन्वर्शांसिसर्वाणित्रिदोषजानियतआह । पञ्चात्मामारुतःपित्तंकफोगुदबलित्रये । सर्वएवप्रकुप्यन्तिगुदजानांसमुद्भवे ॥ तथाकथंवातार्शसामिति । उच्यते । तत्तदाधिक्याद्व्यपदेशभेदइति न दोषः । अतएवाग्रेवक्ष्यतेवातोल्बणानामिति । तथाचचरकः । अर्शांसिनामजायन्तेनासन्निपतितैस्त्रिभिः । दोषैर्दोषविशेषात्तुविशेषःकथ्यतेऽर्शसामिति ॥ २ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वातज बवासीर के दूरवाले कारण ॥

कषैली, कटु, तिक्त, रूखी, शीतल तथा हलकी वस्तु, बेप्रमाण बहुत भोजन, तीक्ष्ण, मद्य, अधिक मैथुन, लङ्घन, शीतल देश तथा काल, व्यायाम, शोक और वायु तथा धूपका सेवन यह वातज बवासीरके कारणहैं अब यह सन्देह होताहै कि सम्पूर्ण बवासीर त्रिदोषजहैं क्योंकि कहागयाहै कि बवासीर के उत्पन्न होनेमें पांच प्रकारकी वात तथा पित्त और कफ यह सब गुदाके तीन चक्रों में कुपित होते हैं तो वातज बवासीर यह क्यों कहा इसका उत्तर यहहै कि दोषोंकी अधिकताके अनुसार वातज आदि भेदोंकी कल्पना कीगईहै इस लिये कोई दोष नहीं है इसीसे आगे कहेंगे कि वातोल्बणोंके इत्यादि और ऐसाही चरकनेभी कहाहै कि सन्निपातके विना बवासीर नहीं होती परन्तु दूषणोंके द्वारा दोषों की विशेषतासे वातज आदि भेदोंकी विशेष कल्पना करी जाती है ॥ २ ॥

तथा पित्तार्शसोविप्रकृष्टं निदानमाह ॥

कट्वम्ललवणोष्णानिव्यायामाग्न्यातपप्रभाः। देशकालावशिशिरौक्रोधोमद्यमसूयनम् ॥ विदाहितीक्ष्णमुष्णञ्चसर्वंपानान्नभोजनम् । पित्तोल्बणानांविज्ञेयःप्रकोपेहेतुरर्शसाम् ॥ उष्णद्रव्यस्यस्पर्शनादिग्रोद्धव्यम् । उष्णपानभोजनस्याग्रेवक्ष्यमाणत्वात् ॥ ग्न्यातपप्रभाअग्न्यातपयोःप्रभातेजः अथवाअग्न्यातपतद्रव्यस्यतेजःदीप्तिःप्रभा शिशिरोदेशोमरुत्शरद्ग्रीष्मश्चकालः क्रोधःदमःकोपःअसूयनंपरसम्पत्तौद्वेषः पे उत्पत्तौ ॥ ३ ॥

पित्तज बवासीरके दूरवाले कारण ॥

कटु, अम्ल तथा लवणरस, उष्णवस्तुका स्पर्शादि, व्यायाम, अग्नि तथा धूपका सेवन, उष्ण देश तथा काल, क्रोध, मद्यपान, पराई सम्पत्ति में द्वेष, विदाही, तीक्ष्ण तथा उष्णवस्तुओंका पान भोजनादिक यह सम्पूर्ण पित्तकी बवासीरके कारणहैं ॥ ३ ॥

अथ कफार्शसो विप्रकृष्टनिदानमाह ॥

मधुरस्निग्धशीतानिलवणाम्लगुरूणिच। अव्यायामदिवास्वप्नशय्यासनसुखेरतिः॥ प्राग्वातसेवाशीतौचदेशकालावचिन्तनम्॥श्लैष्मिकानांसमुद्दिष्टमेतत्कारणमर्शसाम् ४

कफकी बवासीरके दूरवाले कारण ॥

मधुर, लवण, स्निग्ध, शीतल, खट्टी तथा भारीवस्तु, व्यायाम न करना, दिन में सोना, शय्या तथा आसनके सुखमें अनुराग, पुरवाई हवा, शीतल देश तथा काल और चिन्ताका न होना यह कफज बवासीर के कारणहैं ॥ ४ ॥ अथ द्वित्रिदोषार्शोविप्रकृष्टं निदानमाह ॥

हेतुलक्षणसंसर्गाद्वियाद्द्वन्द्वोल्बणानिच । सर्वोहेतुस्त्रिदोषाणांसहजैर्लक्षणंसमम् ॥ जनकत्वेनत्रयोदोषायेषांतानित्रिदोषजानि । अर्शसांसर्वोहेतुःपृथग्वातपित्तकफार्शोहेतुः ॥ त्रिदोषार्शोलक्षणंश्वासरुजाविबन्धैःसहजार्शोभिःसमम् । ननुत्रिदोषाणामिति विशेषणंव्यर्थम् ॥ यतःसर्वएवव्याधयस्त्रिदोषजाः। उक्तञ्च ॥ द्रव्यमेकरसंनास्तिनरोगोऽप्येकदोषजः । एकस्तुकुपितोदोषइतरानपिकोपयेत् ॥ इतियुक्तिमप्याहस्वकारणाद्वृद्धोवायुःशैत्याद्वायुंद्रवत्वात्पित्तंवर्द्धयतइतिउच्यते। यत्रस्वस्वकारणात्त्रयोदोषाःकुप्यन्तितत्रत्रिदोषजव्यपदेशइतिनदोषः॥ ५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्विदोष व त्रिदोषकी बवासीरके दूरवाले कारण ॥

जिस अर्शरोगमें दो दोषोंके कारण व लक्षण मिलते हों उसको द्वन्द्वज बवासीर कहते हैं तथा वात, पित्त और कफकी बवासीरके मिलेहुए सब कारण त्रिदोषकी बवासीरके जानने चाहिये और त्रिदोषकी बवासीरके लक्षण सहज बवासीरके समान होतेहैं अब यह सन्देहहोताहै कि सम्पूर्ण रोग त्रिदोषवाले होते हैं तो बवासीरका त्रिदोषवाली यह विशेषण क्यों दिया और कहा भी गयाहै कि कोई द्रव्य एक रसयुक्त नहीं है और एक दोष से उत्पन्न कोई रोग नहीं है क्योंकि एक दोष कुपित होकर अन्य दोषोंको भी कुपित करताहै और युक्तिसे भी सिद्ध होताहै कि अपने कारणोंसे बढ़ीहुई वायु शीतगुणसे वातको और पतलेपनसे पित्तको बढ़ाती है इसका उत्तर यहहै कि जहां अपने अपने कारणोंसे तीनोंदोष कुपित होते हैं वहां त्रिदोषज यह विशेषण दियाजाताहै इससे कोई दोष नहीं है ॥ ५ ॥

अथार्शसः पूर्वरूपमाह ॥

विष्टम्भोऽन्नस्यदौर्बल्यंकुक्षेराटोपएवच । कार्श्यमुद्गारबाहुल्यंसक्थिसादोल्पविट्कता ॥ ग्रहणीदोषपाण्डुर्तेराशङ्काचोदरस्यच । पूर्वरूपंविनिर्दिष्टमर्शसामभिवृद्धये ६ ॥

बवासीरका पूर्वरूप ॥

बवासीर होने से पहले अन्नका अजीर्ण, दुर्बलता, कोषमें गुडगुडशब्द, कृशता, बहुत डकार, जङ्घाओंमें शिथिलता, मलकी अल्पता और ग्रहणी, पांडु तथा उदररोगकी शंका यह लक्षण होतेहैं ॥ ६ ॥

अथार्शसांप्राप्तिपूर्वकंसामान्यलक्षणमाह ॥

दोषास्त्वङ्मांसमेदांसिसंदूष्यविविधाकृतीन् । मांसांकुरानपानादौकुर्वन्त्यर्शांसिताञ्जगुः ॥ त्वङ्मांसपदेनत्वङ्मांसमाश्रितंरक्तमभिगृह्यते । किञ्चितुसाधारणरक्तस्रावणोपदेशात् ॥ आदिशब्देननासानेत्रनाभिमेढ्रादिष्वपिकुर्वन्ति ॥ ७ ॥

बवासीरके संप्राप्तिपूर्वक सामान्य लक्षण ॥

वातादिक दोष, त्वचा, मांस, मेद और रुधिरको दूषित करके गुदा, नासिका, नेत्र, नाभि तथा लिंग आदि स्थानोंमें अनेकप्रकारके आकारवाले मांसके अंकुरोंको उत्पन्न करतेहैं उन्हें बवासीर कहतेहैं ७॥

वातार्शोलक्षणम् ॥

गुदांकुराबह्वनिलाःशुष्काश्चिमिचिमान्विताः । म्लानाःश्यावारुणाःस्तब्धाविशदाःपरुषाःखराः ॥ मिथोविसदृशावक्रास्तीक्ष्णाविस्फुटिताननाः । बिम्बीकर्कन्धुखर्जूरकर्कोटिफलसन्निभाः ॥ केचित्कदम्बपुष्पाभाःकेचित्सिद्धार्थकोपमाः । शिरःपार्श्वांसकट्यूरुवंक्षणाभ्यधिकव्यथाः ॥ क्षवथूद्गारविष्टम्भहृद्ग्रहारोचकप्रदाः । कासश्वासाग्निवैषम्यकर्णनादभ्रमावहाः ॥ तैरार्त्तोग्रथितंस्तोकंसशब्दंसप्रवाहिकम् । रुक्फेनपिच्छानुगतंविबद्धमुपवेश्यते ॥ कृष्णत्वङ्नखविण्मूत्रनेत्रवक्त्रंतथैवच । गुल्मप्लीहोदराष्ठीलासम्भवस्ततएवच ॥ बह्वनिलाःवातोल्बणगुदांकुराः ॥ अर्शांसिचिमिचिमान्विताः । चिमिचिमाव्यथाविशेषाः । चरचराइतिलोके तदन्विताः । श्यावारुणाःश्यावाधूम्रवर्णाः अरुणवर्णावा । स्तब्धाःकठिनाःविशदाःपिच्छिलाः । परुषागोजिह्वावत् । खरस्पर्शाःकर्कशाः । खराक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कोंटीफलवत्सूक्ष्मानेककण्टकचिताः। बिम्ब्यादिफलसन्निभाः॥ आकृत्याअत्रविकल्पबोधकंवक्ष्यमाणंकश्चित्केचिदितिपदंप्रतिसम्बद्धनीयम् ॥ कदम्बपुष्पाभाःस्थिरानेकसूक्ष्मशिखराः। सिद्धार्थकोपमाःपीतसूक्ष्मपिटिकाचिताः॥ तैरार्तइत्यर्शोभिःपीडितः। तैरार्त्तोविबद्धमुपवेश्यतइत्यार्त्तस्यप्रयोज्यकर्त्तुःकर्म्मतार्षत्वात्॥ ग्रथितंमलगुटिकाग्रंथितविड्वर्त्तिरूपम्। पिच्छापिच्छिलोद्रवभागः॥ बद्धंसंहतम्। विशब्दोनपुंसकेऽप्यस्ति॥ उपवेश्यतेत्याज्यते। ततएववातार्शएवगुल्मादीनांसम्भवः। अष्ठीलानाभेरधोभागेपाषाणपिण्डिकावद्वातव्याधिविशेषः॥ ८॥

वातकी बवासीर के लक्षण॥

वातकी बवासीर के मस्से. सूखे, चरचराहटवाले, म्लान, धुमेले अथवा लालवर्णवाले, कठोर, विशद (पिच्छलतासे रहित) गौकीजिह्वा के समान खरखरे, खिकसाके समान सूक्ष्म कांटेवाले, परस्पर भिन्नरूपवाले, टेढे नुकीले फटेहुए मुखवाले, कुंदुरू, बेर, खजूर तथा खिकसा के फलके समान आकृतिवाले, कोई कदंबके फूलके समान अनेक कांटोंसे युक्त, कोई सरसों के समान फुंसियोंसे युक्त... शिर, पसली, कन्धे, कमर, जङ्घा तथा वंक्षण (जांघ और कमरका मध्य) में अधिक पीडा, छं... डकार, विष्टंभ, हृदयके रोग, अरुचि, खांसी, श्वास, विषमाग्नि, कानोंमें शब्द तथा भ्रमके करने... होते हैं इनसे पीड़ित मनुष्यको गांठदार, थोडा शब्द, पीड़ा, फेना तथा प्रवाहिकायुक्त पतलेपन... बन्धे दस्त आतेहैं और उस मनुष्य के नख, त्वचा, मल, मूत्र, मुख तथा नेत्र काले होजाते हैं और ईसी वातकी बवासीर से बायगोला, पिलही, उदररोग तथा अष्ठीला (नाभि के नीचे पत्थरकी बटिया के समान वातव्याधि) उत्पन्न होती है॥ ८॥

पित्तार्शोलक्षणम्॥

पित्तोत्तरानीलमुखारक्तपीतसितप्रभाः। तन्वस्रस्राविणोविस्रास्तनवोमृदवःश्लथाः॥
शुकजिह्वायकृत्खण्डजलौकोवक्त्रसन्निभाः। दाहपाकज्वरस्वेदतृष्णामूर्च्छारतिप्रदाः॥
सोष्माणोद्रवनीलोष्णपीतरक्तामवर्चसः। यवमध्याहरित्पीतहारिद्रंत्वङ्मुखादयः॥ तनुअघनम्। श्लथालम्बिनः॥ सन्निभाआकृत्या। पाकोगुदस्यसोष्माणःउष्णस्पर्शाः॥ हरिच्छाकवर्णम्। पीतंहरितालवर्णम्॥ हारिद्रंहरिद्रावर्णम्। आदिशब्दान्मलमूत्रपुरीषाणांग्रहणम्॥ ९॥

पित्तकी बवासीरके लक्षण॥

पित्तकी बवासीर के मस्से. नीले मुखवाले, रक्त पीत तथा कृष्णवर्णवाले, पतले, रुधिरके बहानेवाले, आमकी गन्धिवाले, पतले, कोमल, लम्बे, तोतेकी जीभ, यकृत् खंड अथवा जोंकके मुखके समान आकृतिवाले, उष्णस्पर्शवाले और जौके समान मध्यवाले होतेहैं इनसे पीडित मनुष्यको दाह, गुदाका पकना, ज्वर, स्वेद, तृषा, मूर्च्छा तथा बेचैनी होती है नीले, पीले, लाल तथा आमसहित, पतले, उष्णतायुक्त दस्त आते हैं और रोगीकामुख, त्वचा, मल तथा मूत्र हरा और हरिताल तथा हल्दी के समान पीला होजाताहै॥ ९॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ पित्तोत्तरभेदरक्तार्शोलक्षणमाह ॥

रक्तोल्बणगुदेकीलाःपित्ताकृतिसमन्विताः। वटप्ररोहसदृशागुञ्जाविद्रुमसन्निभाः॥ अत्यर्थंदुष्टमुष्णञ्चगाढविट्कप्रपीडिताः । स्रवन्तिसहसारक्तंतस्यचातिप्रवृत्तितः॥ भेकाभःपीड्यतेदुःखैःशोणितक्षयसंभवैः। हीनवर्णबलोत्साहोहतौजाःकलुषेन्द्रियः॥ विट्श्यावंकठिनंरूक्षमधोवायुर्नवर्त्तते। तनुचारुणवर्णञ्चफेनिलंवासृगर्शसाम्॥ कटयूरूगुदशूलञ्चदौर्बल्यंयदिवाधिकम्॥ तत्रानुबन्धोवातस्यहेतुर्यदिचरूक्षणम्॥ शिथिलंश्वेतपीतंच विट्स्निग्धंगुरुशीतलम् । यद्यर्शसांघनंचासृक्तन्तुमत्पाण्डुपिच्छिलम्॥ गुदंसपिच्छंस्तिमितंगुरुस्निग्धंचकारणम्। श्लेष्मानुबन्धोविज्ञेयस्तत्ररक्तार्शसांबुधैः॥ गुदेतुकीलाअर्शांसिपित्ताकृतिसमन्विताः। पित्तार्शोलक्षणयुक्ताः। आकारेणचवटप्ररोहसदृशाःदुःखैःरोगैःत्वक्पारुष्याम्बुशीतप्रार्थनादिभिः। कलुषेन्द्रियःव्याकुलसर्वेन्द्रियः। अथ रक्तस्यापिवातोल्बणस्यलक्षणमाह। रक्तार्शांसि अनुबन्धः उल्बणम्। रूक्षंरूक्षयतीतिरूक्षण रूक्षंद्रव्यम्। पित्तोल्बणस्यतुलक्षणम्। रक्तोल्बणागुदेकीलाःपित्ताकृतिसमन्विताः॥ आदिनैवोक्तंरक्तपित्तयोःसमानलिङ्गत्वात्॥ १०॥

खूनी बवासीर के लक्षण॥

खूनी बवासीर के मस्से पित्तकी बवासीर के समान लक्षण वाले,बर्गदके अंकुर समान आकृति वाले और घोंघची तथा मूँगेके सदृशहोते हैं मलके कडेहोने से पीडित हुए इन मस्सोंमें से एकाएकी गरम और दूषित बहुतसा रुधिर निकलता है रुधिर के बहुत बहनेसे मेढक के समान रंगवाला रोगी रुधिर के क्षयसे उत्पन्नहुए त्वचाकी कठिनता तृषा तथा शीतकी इच्छा आदिक रोगोंसे पीडित होताहै वर्ण बल तथा उत्साह रहित होजाताहै ओजका नाश होताहै सम्पूर्ण इन्द्रियांव्याकुल होजातीहैं मैला कठिन तथा रूखा मल उतरताहै और अधोवायु नहीं निकलती जो रूखी वस्तुके सेवनसे खूनी बवासीर होय और पतला लाल तथा फेने समेत रुधिर निकले और कमर जंघा तथ उदर में पीडा और दुर्बलता होय तो उसमें वायुकी अधिकता जाननी चाहिये जो स्निग्ध तथा भारीवस्तु के सेवन से खूनी बवासीर हुईहोय और मल ढीला स्वेद पीला स्निग्ध भारी तथा शीतल होय रुधिर गाढ़ा पाण्डुवर्ण तन्तुओंसे भरा तथा चिकना होय और गुदा गीले कपडे से ढकी हुईसी चिकनी होय तो उसमें कफकी अधिकता जाननी चाहिये और खूनी बवासीर के मस्से पित्तकी बवासीर के समान लक्षण वाले होते हैं इत्यादि कहनेहीसे अधिक पित्तवाली खूनी बवासीर का लक्षण कहागया क्योंकि रुधिर और पित्तके लक्षण समान होते हैं॥ १०॥

कफोल्बणस्यलक्षणम्॥

श्लेष्मोल्बणामहामूलाघनामन्दरुजःसिताः। उत्सन्नोपचिताःस्निग्धाःस्तब्धवृत्तगुरुस्थिराः॥ पिच्छिलाःस्तिमिताःश्लक्ष्णाःकण्ड्वाढ्याःस्पर्शनप्रियाः । करीरपनसास्थ्याभास्तथागोस्तनसन्निभाः॥ वङ्क्षणानाहिनःपायुवस्तिनाभिविकर्षिणः। सकासश्वासहल्लासप्रसेकारुचिपीनसाः॥ मेहकृच्छ्रशिरोजाड्यशिशिरज्वरकारिणः। क्लैब्याग्निमार्दवाच्छ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिरामप्रायविकारदाः॥ वसाभास्सकफप्रायपुरीषाःसप्रवाहिकाः। उत्सन्नाःउन्नताः। उपचिताःस्थूलाःस्निग्धाःस्नेहाभ्यक्ताः । स्थिरानिश्चलाः । पिच्छिलाःकफोल्बणत्वात् । स्तिमिताआर्द्रचर्म्मावगुण्ठिताइव। श्लक्ष्णामणिवन्मसृणाः । करीरोवंशांकुरः । पनसास्थिगोस्तनाः । तदाकृतयःवङ्क्षणानाहिनःवङ्क्षणयोरानाहकारिणः । पाय्वादिष्वाकर्षणवत्पीडाकारिणः। कृच्छ्रंमूत्रकृच्छ्रम् । शिरोजाड्यंशिरोभागेशीताक्रान्तमिव । क्लैब्यंस्त्रीष्वनिच्छाअत्रछर्दिशब्दःसान्तआर्षत्वात्। आमप्रायविकारदाः । आमबहुलाव्याधयोऽतीसारग्रहण्यादयस्तानूददति ॥ ११ ॥

कफकी बवासीरके लक्षण ॥

कफकी बवासीरके मस्से. बडीजडवाले, घने, थोडी पीडावाले, श्वेत, ऊंचे, मोटे, चिकनाई से भरे हुये, अचल, सचिक्कन, गीलेवस्त्रसे ढकेहुएके समान, मणियोंकेसमान, स्वच्छ, खुजलीवाले, स्पर्शकरनेमें सुखदायी, करील कटहलके वीज अथवा मुनक्काके समान आकारवाले, वंक्षणमें बंधनसा करनेवाले, गुदा मूत्राशय तथा नाभिमें खैंचनेकीसी पीडाकरनेवाले और खांसी, श्वास, मतली, नाक मुखकाबह अरुचि. पीनस, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, शिरमें शीतसा मालूम होना, शीतज्वर, नपुंसकता, मंदाग्नि, छर्दि यतीसार और ग्रहणीआदि आमके विकार इनसब रोगों के करनेवाले होतेहैं और रोगीको प्रवा सहित अधिक कफसे युक्त चरबी केसे दस्त आतेहैं ॥ ११ ॥

द्वन्द्वजार्शोलक्षणम् ॥

हेतुलक्षणसंसर्गाद्विद्याद्द्वन्द्वोल्बणानिच ॥ १२ ॥

द्वंद्वज बवासीरका लक्षण ॥

ऊपरकहेहुए दोदोषों के कारण और लक्षणोंके मिलनेसे द्वन्द्वज बवासीर जाननी चाहिये ॥ १२ ॥

अथ त्रिदोषजार्शःसहजार्शोलक्षणमाह ॥

सर्वैःसर्वात्मकान्याहुर्लक्षणैःसहजानिच। सर्वलक्षणैर्वातपित्तकफार्शोलक्षणैःप्रागुक्तैः सर्वात्मकानिसन्तितान्यर्शांसिअतस्तथातैरेवलक्षणैःसहजान्यर्शांस्याहुः ॥ १३ ॥

त्रिदोषज और सहज बवासीर के लक्षण ॥

ऊपरकहेहुए वात पित्त और कफके संपूर्ण लक्षणोंके मिलने से त्रिदोषज और सहज बवासीर जाननी चाहिये ॥ १३ ॥ तन्त्रान्तरेसहजार्शोलक्षणंपृथगाहुः ॥

अर्शांसिसहजातानिदारुणानिभवन्तिहि । दुर्दर्शनानिपाण्डूनिपरुषाण्यरुणानिच॥ अन्तर्मुखानितैरार्त्तःक्षीणःक्षीणस्वरोभवेत्। क्षीणानलःक्षीणरेताःशिरासन्ततविड्ग्रहः॥ अल्पप्रजाःक्रोधशीलोभग्नकांस्यस्वनान्वितः । शिरोदृक्कर्णनासासुरोगीहृल्लेखसेकवान् ॥ १४ ॥ तन्त्रान्तरमें कहाहुआ सहज बवासीर का अन्य लक्षण ॥

सहजबवासीरके मस्से भयंकर, दुर्दर्शन, पाण्डु तथा रक्तवर्णवाले, कठोर और भीतरकी ओर मुखवाले होतेहैं इनसे व्याकुल मनुष्य. क्षीण, क्रोधी, फूटेकांसेके समान तथा क्षीणशब्दवाला, मन्दाग्नि, अल्पवीर्य्यवाला, निकलीहुई नशवाला, मलकी रुकावटवाला, थोडी सन्तानवाला और शिर दृष्टि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कान तथा नासिकाके रोगवाला होताहै और उसका हृदय लिपाहुआसा मालूमहोताहै और नासिका तथा मुखसे जल निकलताहै ॥ १४ ॥

सुखसाध्यार्शोलक्षणम् ॥

बाह्यायांतुबलौजातान्येकदोषोल्बणानिच । अर्शांसिसुखसाध्यानिनचिरोत्पतितानि च ॥ बाह्यायांबलौसंवरण्याम् । नचिरोत्पतितानि अतिक्रान्तसंवत्सराणिएतानिलक्षणमिलितानिसुखसाध्यत्वबोधकानि ॥ १५ ॥

सुखसाध्यबवासीरके लक्षण ॥

एक दोषकी अधिकतावाले बाहरके संवरणी नाम चक्रमें उत्पन्न होनेवाले और एकवर्षके भीतर के पैदाहोनेवाले बवासीरके मस्से सुखसाध्य होतेहैं ॥ १५ ॥

कष्टसाध्यार्शोलक्षणम् ॥

द्वन्द्वजानिद्वितीयायांबलौयान्याश्रितानिच । कृच्छ्रसाध्यानितान्याहुःपरिसंवत्सराणि च ॥ द्वितीयायांबलौसर्जन्याम् । परिसंवत्सराणिपरिगतःसंवत्सरोयेषांतान्यतीतसंवत्सराण्यतियावत् । एतानिप्रत्येकंकष्टसाध्यलक्षणानि ॥ १६ ॥

कष्टसाध्य बवासीरके लक्षण ॥

दोदोषोंकी अधिकतावाले विसर्जनीनाम दूसरे चक्रमें पैदाहोनेवाले और एकवर्षके पुरानेबवासीर के मस्से कष्टसाध्यहोतेहैं १६ ॥

असाध्यार्शोलक्षणम् ॥

सहजानित्रिदोषाणियानिचाभ्यन्तरांबलिम् । जायन्तेऽर्शांसिसंश्रित्यतान्यसाध्यानि निर्दिशेत् (अभ्यन्तरांबलिंप्रवाहिणीम्) एतान्यपिप्रत्येकमसाध्यानिलक्षणानि ॥ १७ ॥

असाध्य बवासीरके लक्षण ॥

सहज अथवा त्रिदोषज और प्रवाहिणी नाम भीतरके चक्रमें उत्पन्न होनेवाले बवासीर के मस्से असाध्य होतेहैं ॥ १७ ॥

शेषत्वादायुषस्तानिचतुष्पादसमन्वये । याप्यन्तेदीप्तकायाग्नेःप्रत्याख्येयान्यतोन्यथा ॥ यद्यायुःशेषोवर्त्ततेचिकित्सायाश्चत्वारःपादास्तेयदावैद्यवचनकारीधनवानुदारोजितेंद्रियोरोगी । शास्त्रकर्माणिकुशलोवैद्यःअनलसः ॥ आप्तःप्रियःपरिचारकः । षट्रसवीर्यादिकमौषधंएषांसमन्वयेसमागमे ॥ अतिदीप्तकायाग्नेःपुरुषस्यतानिअर्शांसियाप्यन्ते चिकित्सायाम् । अतोऽन्यथाप्रत्याख्येयानिचिकित्साहीनानीत्यर्थः ॥ १८ ॥

जो आयु बाकीहोय होगी की अग्नि दीप्तहोय और चतुष्पाद मिलें तो असाध्यभी याप्य होतेहैं और ऐसा न होवे तो चिकित्साके अयोग्यहैं चतुष्पाद अर्थात् वैद्यकी आज्ञामाननेवाला, धनी, दाता तथा जितेन्द्रिय रोगी शास्त्र तथा चिकित्सामें कुशल वैद्य आलस्य रहित विश्वासपात्र तथा प्रियपरिचारक और नवीन तथा रसवीर्य्यादि से युक्त औषध इन चारों बातोंको चतुष्पाद कहतेहैं ॥ १८ ॥

अथार्शोरिष्टमाह ॥

हस्तेपादेमुखेनाभ्यांगुदेवृषणयोस्तथा । शोथोहृत्पार्श्वशूलंचतस्यासाध्योऽर्शसोहि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सः ॥ असा ः सन्निहितमरणबोद्धव्यः। अर्शसः अर्शोरोगयुक्तः ॥ एतन्मिलितमरिष्टल क्षणम्। हृत्पार्श्वशूलंसंमोहश्छर्दिरंगस्यरुग्ज्वरः॥ तृष्णागुदास्यपाकश्चानिहन्युर्गुदजा तुरम्। गुदास्यचास्यमोष्ठदेशस्तस्यपाकः॥ हृत्पार्श्वशूलादिसमस्तंचारिष्टलक्षणंतृष्णा रोचकशूलार्त्तमतिप्रस्रुतशोणितम्। शोथातीसारसंयुक्तमर्शांसिक्षपयन्तिहि॥ १९॥

बवासीरका अरिष्ट॥

जिस बवासीरवालेके हाथ, पैर, मुख, नाभि, गुदा तथा अंडकोशोंमें सूजनहोय और हृदय तथा पसलियों में पीड़ाहोय उसकी मृत्यु निकट जाननी चाहिये जिस बवासीरवाले के हृदय तथा पसलियोंमें पीड़ाहोय मूर्च्छा, छर्दि, शरीरकी पीड़ा ज्वर तथा तृषा उत्पन्नहो और गुदाका मुखपक-जाय उसकी मृत्यु निकट जाननी चाहिये जो बवासीरवाला तृषा, अरुचि, शूल, बहुत रुधिरकाबहना, सूजन और अतीसार इनसे युक्त होय उसकी मृत्युहोती है ॥१९॥

मेढ्रार्शो लक्षणम्॥

मेढ्रादिष्वपिवक्ष्यन्तेयथास्वंनाभिजानिच। गण्डूपदास्यरूपाणिपिच्छिलानिमृदूनि च॥ यथास्वंयथात्मीयलक्षणम्। नचात्रोक्तनिदानपूर्वसम्प्राप्तिलक्षणंयुक्तम्॥ तत्र सःपदन्तुमांसांकुरःसाम्यात्। गण्डूपदःकञ्चुलकः॥ २०॥

लिंगादि की बवासीरका लक्षण॥

लिंग आदिकोंमें भी अपने २ लक्षणोंके अनुसार मस्से उत्पन्न होतेहैं उनमेंसे नाभिमें हुए मस्से केंचुयेके मुख के समान आकृतिवाले सचिक्कण और कोमल होतेहैं॥ २०॥

अथ मांसांकुरसाम्यादत्राधिकारे चर्मकीलस्यसम्प्राप्तिपूर्वकंलक्षणमाह॥

व्यानोगृहीत्वाश्लेष्माणंकरोत्यर्शस्त्वचोबहिः। कीलोपमंस्थिरखरंचर्मकीलंतुतद्विदुः॥ खरंकर्कशम्॥ २१॥

मस्सोंके समान होनेके कारण इस अधिकारमें चर्मकीलका सम्प्राप्ति पूर्वक लक्षण कहाजाताहै॥

व्यान वायु कफको ग्रहण करके त्वचाके ऊपर स्थिर कर्कश और कील के समान मस्सा उत्पन्न करती है उसको चर्मकील कहतेहैं॥ २१॥

तस्य च वातादिभेदेन लक्षणमाह॥

वातेनतोदपारुष्यंपित्तादसितरक्तता। श्लेष्मणास्निग्धतातस्यग्रथितत्वंसवर्णता॥ सवर्णताशरीरसमानवर्णता॥ २२॥

वातादि भेदसे चर्मकीलके लक्षण॥

वायुकी चर्म्मकील में पीड़ा तथा कठिनता पित्तकी चर्म्मकील में मस्से के मुखका कालापन और कफकी चर्म्मकील में स्निग्धता गठीलापन तथा शरीर के समान वर्ण होताहै॥ २२॥

अथ सामान्यतोऽर्शसःचिकित्सा॥

यद्वातस्यानुलोम्यायदग्निबलवृद्धये। अन्नपानौषधंसर्वंतत्सेव्यंनित्यमर्शसैः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्शसैः अर्शोरोगयुक्तैः । शालिषष्टिकगोधूमयवान्नानिघृतैःसह ॥ अजाक्षीरेणवानिम्बप टोलानांरसेनवा । कान्दैर्वार्त्ताकुमूलांशैःरसैर्मांसरसेनवा ॥ जीवन्त्युपोदिकाशाकैस्तण्डुली यकवास्तुकैः । अन्यैश्चसृष्टविण्मूत्रमरुद्भिर्वह्निदीपनैः ॥ अर्शांसिभिन्नवर्चांसिहन्याद्वा तातिसारवत् । सतक्रंलवणंदद्याद्वातवर्चोऽनुलोमनम् ॥ नप्ररोहंतिगुदजाःपुनस्तक्रस माहताः । तक्राभ्यासोऽर्शसैःकार्य्योबलवर्णोऽग्निवृद्धये । स्रोतःसुतक्रशुद्धेषुसम्यक्च लतितद्रसः ॥ तेनपुष्टिस्तथातुष्टिर्बलंवर्णश्चजायते । वातश्लेष्मविकाराणांशतञ्चविनि वर्त्तते ॥ २३ ॥

बवासीर की सामान्य चिकित्सा ॥

जो अन्न पान तथा औषध वायु के नीचे लेजानेवाले और अग्निबलको बढ़ानेवाले होयँ वह संपूर्ण बवासीरवालों को नित्य सेवन करना चाहिये बवासीरवालेको.घृतसहित,शालि, साँठी, गेहूं और जौ इनको बकरी का दूध, नींब, परवलका रस,ज़मींकंद, बैंगन तथा मूलीका यूष, मांसका रस इनमें से किसीके साथ सेवन करावे और जीवन्ती, पोय, चौराई, बथुई और अन्य मलमूत्र की निकालने वाली वायुको नीचे लेजानेवाली तथा दीपन वस्तुओं के साथ सेवन करावे बवासीर में मलके भेद होजाने पर वातातीसार के समान चिकित्सा करे वायु तथा मलके नीचे लेजाने के लिये नोन सहित मट्ठेका सेवन करे मट्ठेके द्वारा नष्टहुई बवासीर फिर नहीं निकलती बवासीरवालोंको बल वर्ण तथा अग्निकी वृद्धिके लिये सदैव मट्ठेका सेवन करनाचाहिये मट्ठेके द्वारा स्रोतोंके शुद्ध होजाने पर रस अच्छीप्रकार से शरीर में फैलता है इससे पुष्टता,तुष्टता,बल तथा वर्ण की उत्पत्ति होती है और वात कफके सैकडों विकार शान्त होजाते हैं ॥ २३ ॥

चिरबिल्वाग्निसिन्धूत्थनागरेन्द्रयवारलुः । तक्रेणपिबतोऽर्शांसिनिपतन्त्यसृजास ह ॥ चिरबिल्वःकरञ्जः । तस्यफलस्यात्रमज्जाग्राह्या ॥ अरलुः शोणकः । इतिकरञ्जा दिचूर्णम् ॥ २४ ॥

करंजुयेकी मींगी,चीता,सैंधानोन,सोंठ,इन्द्रजौ और सोनापाठा इनके चूर्णको मट्ठेके साथ पीनेसे रुधिर सहित मस्से गिर जातेहैं ॥ इति करंजादि चूर्ण ॥ २४ ॥

लेपंरजनिचूर्णेनसुधादुग्धयुतेनच । अर्शोरोगनिवृत्त्यर्थंकारयेत्तुचिकित्सकः ॥ पिप्पली सैन्धवंकुष्ठंशिरीषस्यफलंतथा । सुधादुग्धार्कदुग्धंवालेपोऽयंगुदजान्हरेत् ॥ हरिद्राजा लिनीचूर्णंकटुतैलसमन्वितम् । एषलेपोवरःप्रोक्तोह्यर्शसामन्तकारकः ॥ जालिनीकटु तोरइइतिलोके । असितानांतिलानान्तुपलंशीतजलेनच ॥ खादतोऽर्शांसिशाम्यन्ति दृढादन्ताभवन्तिच । शस्त्रैर्वाथजलौकोभिःप्रच्छन्नंकठिनार्शसः ॥ शोणितंसञ्चितंदृष्ट्वा हरेत्प्राज्ञःपुनःपुनः ॥ २५ ॥

थूहरके दूधके साथ हल्दीके चूर्णको लेप करनेसे बवासीर जातीहै. पीपल,सैंधानोन,कूट, सिरसके बीज इन सबको थूहर अथवा आकके दूधके साथ लेप करनेसे मस्सोंका नाश होताहै हल्दी और कडवी तोरईका चूर्ण कडुये तेलके साथ लेप करनेसे बवासीरका नाश होताहै चार तोले कालेतिल शीतलजलके साथ खानेसे बवासीर शान्त होजातीहै और दांत दृढ होजाते हैं जो कठोर मस्सों में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छिपाहुआ इकट्ठा रुधिर मालूम देतो वारंवार शस्त्र अथवा जोंकोंकेद्वारा निकलवानाचाहिये २५॥

कासीसंसैन्धवंकृष्णाशुण्ठीकुष्ठञ्चलाङ्गली। शिलाभिदश्वमारश्चदन्तीजन्तुघ्नाचित्रकम्॥ तालकंकुनटीस्वर्णक्षीरीचैतैःपचेद्भिषक्। तैलंस्नुह्यर्कपयसागवांमूत्रचतुर्गुणम्॥ एतदभ्यङ्गतोऽर्शांसिक्षारेणैवपतन्तिहि। क्षारकर्म्मकरंह्येतन्नचसन्दूषयेद्बलिम्॥ कासीसङ्कसीसइतिलोके। लाङ्गलीकरिहारीतिलोके। शिलाभित्पाषाणभेदः। अश्वमारःकनैलइतिलोके। स्वर्णक्षीरीचोराईइतिलोके। इतिबृहत्कासीसाद्यतैलम्॥ २६॥

कसीस सेंधानोन पीपल सोंठि कूट करिहारी पाषाणभेद कनेर दन्ती बायबिडंग चीता हरिताल मैनशिल चौराई इन वस्तुओंके द्वारा तेलको थूहर तथा मदारका दूध और चौगुना गोमूत्र डालकर विधिपूर्वक पाककरे इस तेलके लगानेसे मस्से गिरपडतेहैं यह तेल क्षारके कार्य्यको सिद्ध करताहै और चक्रोंको दूषित नहीं करताहै॥ इति बृहत्कासीसाद्यतैल॥ २६॥

शुण्ठीकणामरिचनागदलत्वगेलंचूर्णीकृतंक्रमविवर्द्धितमूर्ध्वमन्त्यात्। खादेदिदंसमसितंगुदजाग्निमान्द्यगुल्मारुचिश्वसनकण्ठहृदामयेषु॥ तद्यथा एलाबीजमत्रसूक्ष्मग्राह्यम्। अतआहमदनपालः। एलासूक्ष्माकफश्वासकासार्शोमूत्रकृच्छ्रनुदित्यादि तस्याबीजंभागः १ तजभागः २ दलंपत्रकम् ३ नागंनागकेशरम्॥ यतआहनिघन्वन्तरिः। नागपुष्पंमतंनागंकेशरंनागकेशरमित्यादि तस्यभागः ४ मरिच ५ पी० ६ सोंठि ७ चिनीभाग १८ सम शर्क्करचूर्णम्॥ २७॥

सोंठि७भाग, पीपर६भाग, कालीमिरच५भाग, नागकेसर४ भाग, तेजपात२भाग, दालचीनी२भाग, छोटी इलायचीके दाने १ भाग, चीनी २८भाग इन सब औषधियोंको चूर्णकरके और लिखीहुई चीनी मिलाकर खाने से बवासीर, मन्दाग्नि, बायगोला, अरुचि, श्वास, कंठ और हृदयके रोग यह सब नष्ट होतेहैं॥ इति समशर्क्कर चूर्ण॥ २७॥

त्रिकत्रयंवचाहिंगुपाठाक्षारौनिशाद्वयम्। चव्यतिक्ताकलिङ्गानिशताह्वालवणानिच॥ ग्रन्थिबिल्वाजमोदाचगणोऽष्टाविंशतिर्मतः॥ एतानिसमभागानिसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत्॥ चूर्णंबिडालपदकंपिबेदुष्णेनवारिणा। एरण्डतैलयुक्तंवालिह्याच्चूर्णमिदंनरः॥ हन्यादर्शांसिसर्व्वाणिश्वासशोषभगन्दरान्। हृच्छूलंपार्श्वशूलंचवातगुल्मंतथोदरम्॥ हिक्कांकासंप्रमेहांश्चपाण्डुरोगंसकामलम्। आमवातमुदावर्त्तमन्त्रवृद्धिंगुदकृमीन्॥ अन्येचग्रहणीदोषाभिषग्भिर्येप्रकीर्त्तिताः। विजयोनामचूर्णोऽयंतान्सर्व्वान्नाशुनाशयेत्॥ महाज्वरोपसृष्टानांभूतोपहतचेतसाम्। अप्रजानाञ्चनारीणांहितमेतद्धिभेषजम्॥ त्रिकत्रयंत्रिफला। त्रिकटुत्रिसुगन्धीनि॥ क्षारौस्वर्ज्जिकाजवक्षारश्च। लवणानिपञ्चग्रन्थिपिप्पलीमूलम्। बिडालपदकंकर्ष इति विजयचूर्णम्॥ २८॥

हड, बहेडा, आंवला, सोंठि, मिरच, पीपल, त्रिसुगन्ध (दालचीनी तेजपात और इलायची) वच, हींग, पाठा, जवाखार, सज्जी, हल्दी, दारुहल्दी, चव्य, कुटकी, इन्द्रजौ, सौंफ, पांचोंनोन, पीपलामूल, बेल और अजमोद इन सबको समभाग लेकर महीन चूर्ण करे फिर १ तोले भर चूर्ण गरमजल के साथ पिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथवा रेंडीके तेलके साथ चाटे इससे संपूर्ण बवासीर,श्वास,सूजन, भगन्दर,हृदयकी पीड़ा पसलीकी पीड़ा,बायगोला,उदररोग,हिचकी,खांसी,प्रमेह,पांडुरोग,कामला,आमवात,उदावर्त्त,आंतकाबढ़ना,गुदा के कृमि और वैद्योंके कहेहुए ग्रहणीके संपूर्ण दोष यहसब शीघ्र नष्टहोतेहैं यह चूर्ण बहुतज्वरसेव्याकुल तथा भूतों से विकल चित्तवाले मनुष्यों को और बंध्यास्त्रियों को हितकारी है इति विजय चूर्ण ॥२८॥

मरिचमहौषधचित्रकशूरणभागायथोत्तरंद्विगुणाः । सर्व्वसमोगुडभागःसेव्योऽयंमोदकःप्रसिद्धफलः ॥ ज्वलनंज्वलयतिजाठरमुन्मूलयतीहशूलसगुल्मगदान् । निःशेषयतिश्लीपदमर्शांसिविनाशयत्याशु॥तद्यथामरिचभागः१।शुण्ठीभागः२। चीताभागः ४ शूरणभागः८। गुडभागः १५ । इति लघुशूरणमोदकः ॥ २९ ॥

मिर्च १ भा० सोंठि२ भा० चीता ४ भा० जिमींकन्द ८ भा० और गुड १५ भा० इन सब औषधियोंके मोदक बनावे इनके खानेसे उदरकी अग्नि दीप्त होतीहै और शूल,बायगोला, श्लीपद और बवासीरका शीघ्र नाश होताहै इति लघुशूरणमोदक ॥ २९ ॥

[illegible]षोडशशूरणभागावह्लेरष्टौमहौषधस्यास्य।अर्द्धेनभागयुक्तिर्मरिचस्यततोऽपिचार्द्धेन॥ [illegible]ळाकणासमूलातालीसारुष्करकृमिघ्नानाम् । भागामहौषधसमादहनांशातालमू[illegible]॥ भागाःशूरणतुल्यादातव्योवृद्धदारकस्यापि । भृङ्गैलेमरिचांशेसर्व्वाण्येकत्रकार[illegible] ॥ द्विगुणेनगुडेनयुतःसेव्योऽयंमोदकःप्रकामघनैः । गुरुवृष्यभोजनरतैरितरेषूपद्रवंकुर्य्यात् ॥ भस्मकमनेनजनितंपूर्वमगस्त्यस्ययोगराजेन । भीमस्यमारुतेरपिमहाशनौतेनतौयातौ ॥ अग्निबलवर्णहेतुर्नकेवलंशूरणोमहावीर्य्यः । हन्ताशस्त्रक्षारानलैर्विनाप्यर्शसामेषः ॥ श्वयथुश्लीपदगदहृद्ग्रहणींचकफानिलोद्भूताम् । नाशयतिवलीपलितंमेधांकुरुतेजरांचहरेत् ॥ हिक्कांकासंश्वासंचराजरोगंप्रमेहांश्च । प्लीहानंचतथोग्रंहन्त्याशुरसायनंपुंसाम् ॥ एषांभागायथा॥शूरणभागः१६।चीताभागः८।शुण्ठीभागः४। मरिचभागः २। हर्रे। बहेरा। आँवरा। पीपरि। पिपरामूल। तालीस। भेलातदसह्यत्वेरक्तचन्दनम्। विडंगप्रत्येकंभागः४।तालमूलीभागः८।विधाराभागः१६। तजभागः१। इलायचीछोटीबीजभागः १। गुडभागः १७६। इति बृहच्छूरणमोदकः ॥ ३० ॥

जिमींकन्द १६ भाग,चीता ८भाग,सोंठि४ भाग,मिर्च दो भाग,हड,बहेडा,आँवला,पीपल,पीपलामूल,तालीस,भिलावाँ,बायबिडंग यहसब चारचार भाग तालमूली ८ भाग,बिधारा १६ भाग,तज १ भाग, छोटीइलायची के दाने १ भाग,गुड १७६ भाग इन सब औषधियों को चूर्ण करके गुडके साथ मोदक बनावै यह औषध धनवानों को खानी चाहिये क्योंकि इसमें भारी और वीर्य्यवर्द्धक भोजन करना चाहिये और नहीं तो उपद्रव करतीहै इसके द्वारा अगस्त्य और भीमसेन को भस्मक रोग होगयाथा इसीसे वह बहुत खानेवालेहुए यह केवल अग्निबल तथा वर्णहीका बढानेवाला नहीं है किन्तु शस्त्र क्षार तथा अग्निके विनाभी बवासीरको नष्टकरताहै इसके द्वारा सूजन,श्लीपद,कफ तथा वातजनित ग्रहणी,झुर्री, बालोंकी सफेदी, वृद्धावस्था, हिचकी, खांसी, श्वास, राजयक्ष्मा,प्रमेह तथा प्लीहा इनसबकानाश होताहै और यह रसायन तथा बुद्धिवर्द्धकहै इति बृहच्छूरण मोदक॥३०॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रिवृत्तेजोवतीदन्तीश्वदंष्ट्राचित्रकंशटी । गवाक्षीमुस्तविश्वाह्वविडङ्गानिहरीतकी ॥ पलोन्मितानिचैतानिपलान्यष्टावरुष्करात् । वृद्धदारात्पलान्यष्टौशूरणस्यतुषोडश ॥ जलेद्रोणद्वयेक्काथ्यंचतुर्भागावशेषितम् । पूतंपूतंरसंभूयःक्काथेभ्यस्त्रिगुणंगुडम् ॥ मलयित्वापचेत्तावद्यावदर्वीप्रलेपनम् । अवतार्य्यततःपश्चाच्चूर्णानीमानिदापयेत् ॥ त्रिवृत्तेजोवतीकन्दचित्रकद्विपलांशिकान् । एलात्वङमरिचंचापि नागाह्वञ्चापिषट्पलम् ॥ द्वात्रिंशच्चपलान्यत्रचूर्णयित्वानिधापयेत्।ततोमात्रांप्रयुञ्जीतजीर्णेक्षीररसाशिनः (कन्दः शूरणः) हन्यादर्शांसिसर्व्वाणितथासर्व्वोदराण्यपि ॥ गुल्मानपिप्रमेहांश्चपाण्डुरोगंहलीमकम् । दीपयेदनलंमन्दंयक्ष्माणंचापकर्षति ॥ आढ्यवातेप्रतिश्यायेपीनसेचहितोमतः। भवन्त्यनेनपुरुषाःशतंवर्षाण्यनामयाः ॥ दीर्घायुषःप्रजननोबलीपलितवर्ज्जिताः । गुडः श्रीबाहुशालोऽयंरसायनवरोमतः ॥ दुर्न्नामान्तकरोह्येषदृष्टोवारसहस्रशः। यावद्दर्वीप्रलेपः स्याद् गुडोवातन्तुमान् भवेत् ॥ तोयपूर्णेयदापात्रेक्षिप्तोनप्लवतेगुडः । क्षिप्तस्तुनिश्चल[illegible]ष्ठेत्पतितस्तुनशीर्य्यति॥एषपाकःसमस्तानांगुडानांपरिकीर्त्तितः। सार्द्धपलंपलंचार्द्धं[illegible] येद् गुडखण्डयोः । श्रेष्ठातुमध्यमाहीनामात्रोक्तामुनिभिस्त्रिधा । श्रीबाहुशालः ३१[illegible]

निसोथ,तेजोवती (चव्य) दन्ती,गोखुरू,चीता,कचूर,इन्द्रायन,मोथा,सोंठि,बायविडंग [illegible] यह सब एक२पल भिलांवा ८ प०बिधारा ८प० जिमींकन्द १६प० इनसब औषधियोंको २०४८ तोले पानीमें औटावे जब चौथाई बाकीरहै तब छानले फिर क्काथकी औषधियोंका तिगुना गुड उस पानी में डालकर जवतक करछी में लगने लगे तबतक पाककरके उतारले फिर निसोथ,चव्य, जिमींकन्द, चीता यह सब दो२पल इलायची, तज,मिर्च तथा गजपीपल यह सब छः २ पल इन सब बत्तीस पल औषधियोंके चूर्णको मिलावे इसको मात्राके अनुसार खाय और इसके पचजाने पर दूध तथा मांसके रसका पथ्यकरे इसके द्वारा सब प्रकारकी बवासीर,सम्पूर्ण उदररोग, बायगोला,प्रमेह,हलीमक,पांडु, मंदाग्नि, राजयक्ष्मा,आढ्यवात,जुकाम तथा पीनसका नाश होताहै और झुर्री बालोंकी सफेदी तथा संपूर्ण रोगोंसे निवृत्त होकर सन्तान उत्पन्न करनेमें समर्थ होके सौवर्ष तक जीता है यह श्रीबाहुशाल नाम गुडरसायनों में श्रेष्ठहै और बवासीरके नाश करने में यह सैकडोंबार अनुभव किया गया है जब करछी में लगने लगै सूतसा निकलने लगे पानीमें डालनेसे नघुले फेकने से निश्चलबनार है अथवा गिरकर बहने न लगे तब गुडका परिपाक हुआ जानना चाहिये मुनिलोगोंने इसकी मात्रा तीनप्रकार की कही है श्रेष्ठमात्रा ६ तोले मध्यम मात्रा ४ तोले और हीनमात्रा २ तोले ॥ इति श्री बाहुशाल गुड ॥ ३१ ॥

तिलभल्लातकैःपथ्यागुडश्चेतिसमांशकैः । दुर्नामश्वासकासन्घ्नंप्लीहपाण्डुज्वरापहम् ॥ पित्तश्लेष्मप्रशमनी कण्डूकुक्षिरुजापहा । गुदजान्नाशयत्याशु भक्षितासगुडाभया ॥ ३२॥

तिल,भिलांवा,हड और गुड इन सबको समभाग लेकर खाने से बवासीर, श्वास, खांसी, प्लीहा, पांडु और ज्वरका नाश होता है गुडके साथ हडको खाने से पित्त, कफ,खुजली,कोखिकी पीडा और बवासीर का नाश होता है ॥ ३२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रणम्यशङ्करंरुद्रं दण्डपाणिंमहेश्वरम् । जीवितारोग्यमन्विच्छन्नारदोऽपृच्छदीश्वरम् । सुखोपायेनहेनाथ शस्त्रक्षाराग्निभिर्विना । चिकित्सामर्शसांनृणांकारुण्याद्वक्तुमर्हसि ॥ नारदस्यवचःश्रुत्वा नराणांहितकाम्यया । अर्शसांनाशनंश्रेष्ठं भैषज्यंशङ्करोऽवदत् ॥ पाण्ड्यवज्रादिलोहानामादायान्यतमंशुभम् । कृत्वानिर्म्मलमादौतुकुनट्यामाक्षिकेणच ॥ पत्तूरमूलवल्केनलिम्पेद्रसयुतेनच (कुनटीमनःशिलाःमाक्षिकंसुवर्णमाक्षिकम्॥ पत्तूरपटकारइतिलोकेरसःपारदः) वह्नौनिक्षिप्यविधिवत्साराङ्गारेणनिर्द्धमेत् ॥ ज्वालाचतस्यरोद्धव्यात्रिफलायारसेनच । सारःकाष्ठम् । ततोविज्ञायगलितंशंकुनोद्ध्वंसमुच्छ्येत् । त्रिफलायारसेपूते तदाकृष्यतुनिर्वपेत् ॥ नसम्यग्गलितंयत्तु तेनैवविधिनापुनः । ध्मातंनिर्वापयेत्तस्मिँल्लोहंतत्त्रिफलारसे ॥ यल्लोहंनमृतंतत्रपाच्यंभूयोऽपिपूर्ववत् । मारणान्नमृतंयच्च तत्पक्तव्यमलोहवत् ॥ ततःसंशोष्यविधिवच्चूर्णयेल्लोहभाजने । लौहेनैव यथावत्स्याद् दृषदासूक्ष्मचूर्णितम् ॥ कृत्वालोहमयेपात्रे मृत्तिकालिप्तरन्ध्रके । रसैःपङ्को कृत्वा तंपचेद्धोमयाग्निना । पुटानिक्रमशोदद्यात्पृथगेभिर्विधानतः ॥ त्रिफलार्द्रकभृङ्गाकेशराजस्यबुद्धिमान् ॥ मानकन्दकभल्लातवह्लीनांशूरणस्यच ॥ हस्तिकर्णपलाश कुलिशस्यतथैवच ॥ भृंगःभेंगरिआकेशराजःकेशरागइति । पुटेपुटेचूर्णयित्वा लोहात्षोडशिकंपलम् । तन्मात्रंत्रिफलायाश्च पलेनाधिकमाहरेत् ॥ अष्टभागावशेषेतुरसेतस्याःपचेद्बुधः । अष्टौपलानिदत्त्वाच सर्पिषोलौहभाजने ॥ ताम्रेवालोहदर्व्यातु चालयेद्विधिपूर्वकम् । ततःपाकविधानज्ञःस्वच्छेचोद्ध्वंचसर्पिषि ॥ मृदुमध्यादिभेदेनगृह्णीयात्पाकमन्यतः । आरम्भेतद्विधानज्ञः कृतकौतुकमङ्गलः ॥ घृतश्चामरसंयुक्तंविलिह्याद्रक्तिकाक्रमात् ॥ द्वादशरक्तिकापर्य्यन्तंयथाग्निबलंखादेत् । वर्द्धमानानुपानञ्चगव्यंक्षीरेणसंयुतम् । गव्याभावेत्वजायाश्चस्निग्धवृष्यादिभोजनम् ॥ सद्योवह्निकरञ्चैवभस्मकञ्चनियच्छति । हन्तिवातंतथापित्तंकुष्ठानिविषमज्वरम् ॥ गुल्माक्षिपाण्डुरोगांश्चनिद्रालस्यमरोचकम् । शूलञ्चपरिणामञ्चप्रमेहमपबाहुकम् ॥ इत्ययथुंरुधिरस्रावंदुर्न्नामानंविशेषतः । बलकृद्बृंहणञ्चैवकान्तिदंस्वरबोधनम् ॥ शरीरलाघवकरमारोग्यंपुष्टिवर्द्धनम् । आयुष्यंश्रीकरञ्चैवबलतेजस्करंशुभम् ॥ सश्रीकंपुत्रजननंबलीपलितनाशनम् । दुर्न्नामारिरयंनाम्नादृष्टोवारसहस्रशः ॥ अनेनार्शांसिदह्यन्ते यथातूलञ्चवह्निना । सौकुमार्य्याल्पकायत्वान्मद्यसेवीयदानरः ॥ जीर्णमद्यादियुक्तादिभोजनैःसहदापयेत् । लावतित्तिरवर्त्तीरमयूरशशकादयः ॥ चटकःकलविङ्कश्चवर्त्तकाहरितालकः ॥ श्येनकश्चवहल्लावोवनविष्किरकादयः ॥ पारावतमृगादीनांमांसंजांगलकंशुभम् । वर्त्तीरःबगेरीतिलोके ॥ वनचटकःकलविङ्कोगृहचटकः । वर्त्तकावटेरिइतिलोके ॥ हरितालकःहरिलइतिलोके । विष्किरावर्त्तकादयः ॥ मद्गुरोरोहितःश्रेष्ठःशकुलश्चविशेषतः । मत्स्यराजा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इतिप्रोक्ता हितमत्स्यायदेहिने ॥ वृन्ताकस्यफलंशस्तंपटोलंवृहतीफलम् ॥ प्रलम्बाभी रुवेत्राग्रन्ताडकन्तण्डुलीयकम् ॥ प्रलम्बावालम्बालाबूः । भीरुःशतावर्यग्रपत्रम्पत्र शाकम्। ताडकंदेवदालीअकरकरेतिलोके। तथाचनिघण्टेधन्वन्तरिः । जीमूतकोदेव ताडःकृतकोशोगरागरी ॥ प्रोक्ताखुविषहृद्वेणीदेवदालीचताडकः । देवदालीरसेतिक्ता कफार्शःशोथपाण्डुता। नाशयेदित्यादि ॥ वास्तूकंधान्यशाकञ्चचित्रकञ्चक्रमर्द्दकम् । च क्रमर्द्दकञ्चकवडशाकम् ॥ नालिकेरञ्चखर्ज्जूरंदाडिमंलवलीफलम् । शृंगाटकञ्चपक्वाम्रं द्राक्षातालफलानिच ॥ हितान्येतानिवस्तूनिलोहमेतत्समश्नताम्। नाश्नीयाल्लकुचंको लकर्कन्धूबदराणिच ॥ जम्बीरंबीजपूरंचातिन्तिडींकरमर्द्दकम् । कोलंक्षुद्रबदरम् ॥ क र्कन्धूबृहद्बदरम्। अनूपानिचमांसानिक्रकरंपुण्ड्रकाणिच । करकरं । हंससारसदा त्यूहचाषक्रौञ्चबलाकिका। ढाक्। नीलकण्ठं। मानकन्दंकसेरूणिकतकञ्चकलिंगकम् ॥ तरबूज। कूष्माण्डकञ्चकर्कोटंक्रमुकञ्चविशेषतः। कटुकंकालशाकञ्चकुन्दुरूकर्कटीतथा तिलकाड़ा । ककारादीनिसर्व्वाणिद्विदलानिचवर्ज्जयेत् ॥ शङ्करेणसमाख्यातोयं जानुकम्पया। जगतामुपकारायदुर्न्नामारिरयंध्रुवम् ॥ स्थानाच्चलतिमेरुश्चपृथ्वी तिवायुना। पतन्तिचन्द्रताराश्चामिथ्याचेदहमब्रुवम् ॥ ब्रह्मघ्नाश्चकृतघ्नाश्चक्रूरा स्त्यवादिनः। वर्ज्जनीयाःसधर्म्मेणभिषजागुरुनिन्दकाः ॥ मुनिरसपिष्टविडंगंमुनिरसलीढंचिरस्थितंघर्म्मे। द्रावयतिलोहदोषानूवह्निर्नवनीतपिण्डमिव ॥ मुनिरत्रागस्त्यः। का लेमलप्रवृत्तिर्लाघवमुदरेविशुद्धिरुद्गारे ॥ अंगेषुनावसादोमनःप्रसादोऽस्यपरिपाके। क्रि मिरिपुचूर्णंलीढंसहितंस्वरसेनवंगसेनस्य ॥ क्षपयत्यचिराच्चियतंलोहाजीर्णोद्भवंशूलम्। वंगसेनस्यअगस्तेः॥ भवेद्यद्यतिसारस्तु दुग्धंपीत्वातुतंजयेत्। गुञ्जाद्वादशकादूर्ध्वंवृद्धिरस्यभयप्रदा ॥ शङ्करप्रणीतंलोहम्। इति सामान्याक्रिया ॥ ३३ ॥

एक समय संपूर्ण जीवोंके नीरोग करने की इच्छा करते हुए नारदजीने संपूर्ण संसारके कल्याण करनेवाले दंडपाणि महेश्वर श्रीशिवजीको प्रणाम करके पूंछा कि हे नाथ! ऐसा कौनसा सुखदायी उपाय है कि जिससे शस्त्र क्षार तथा अग्नि के विनाभी बवासीरों की चिकित्सा होजाय वह आप मनुष्यों पर दया करके कहिये ऐसे नारदके वचन सुनकर मनुष्योंके हितकी कामना से श्रीशिवजीने बवासीरकी नाशकरनेवाली परम उत्तम यह औषधी कही कि पाराज्य लोह अथवा वज्रआदिक लोहोंमें से किसी प्रकारके लोहेको लेकर पारालगाकर मैनसिल और सोनामाखीसे शुद्धकरे फिर पतंगकी जड़ का कल्क और पारेसे लेपकरके सारनाम काष्ठके कोयलों में तपावे और जो आगकी लपट उठे तो उस को त्रिफलेके काढ़ से बुझावे फिर उसको गला जानकर त्रिफलेके क्वाथमें बुझावे और जितना लोहा अच्छे प्रकार से न गलाहो उसको उसी प्रकारसे फिर गलाकर त्रिफले के क्वाथमें बुझावे इसप्रकार से लोहे के न मरनेपर पूर्वोक्तविधि से फिर पाककरे और इसप्रकारसे भी जो लोहा न मरे उसको त्यागकरदे फिर बाकी लोहेको सुखाके लोहे के पात्र में लोहे के ही डंडे से खूब महीन चूर्णकरे इसके

१ चूर्णं राजोनुकम्पयेतिपाठान्तरम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपरान्त क्रमसे त्रिफला, अदरक, भांगरा, जलभांगरा, मानकेचू, भिलावां, चीता, ज़मी न्द, हस्तिकर्णी, ढाक और थूहर इनके द्वारा अलग २ क्वाथ करके लोहेकी लुगदी बनावे और उसको लोहेके पात्र में रक्ख बन्दकरके मिट्टीसे लेपकरे और कंडोंकी आंचमें पुटपाक देवे हरएकपुटमें इसीप्रकार से पाककरे फिर सोलहपल त्रिफलेको चौगुने जलमें पाककरके अष्टमांश बाकी रहनेपर उतारले फिर लोहे अथवा तांबेके पात्रमें आठपल घी डालके १६ पल लोहा मिलावे और उसमें वह क्वाथ मिलाके मन्दाग्नि में पाककरे और लोहेकीडंडीसे चलाताजाय जब जल सूखकर घी बाकी रहै तब उतारले परन्तु पाककी विधिका जाननेवाला वैद्य अवस्थाके अनुसार और औषधोंको उसमें डालकर मृदुमध्य आदिकपाकदेकर उतारे और औषध सेवनके प्रारम्भमें कौतुक और मंगलकरके सहत और घीकेसाथएक रत्ती औषध से प्रारम्भकरे और अग्नि बलके अनुसार बारह रत्ती तक बढ़ावे और इसके ऊपर गौके दूध का अनुपानकरे और औषधके साथ अनुपानकोभी बढ़ाताजाय इसके द्वारा शीघ्रही अग्नि दीप्त होती है और भस्म , वात, पित्त, कुष्ठ, विषमज्वर, बायगोला, नेत्ररोग, पांडु, अधिक निद्रा, आलस्य, अरुचि, शूल परिणाम शूल, प्रमेह, अपबाहुक, सूजन, रुधिर का बहना तथा बवासीर इनसबका नाशहोताहै और यह औषधि बलकारी, धातुवर्द्धक, कान्तिकारी, स्वरको हित, शरीर को हलका करनेवाली, आरोग्य- कारी, पुष्टिवर्द्धक, आयुको हित, शोभाकारी तथा तेजवर्द्धकहै और इस के द्वारा पुत्रउत्पन्न करने की सामर्थ्य उत्पन्न होतीहै झुर्रीमिटजातीहै बाल काले होजाते हैं यह लोह बवासीर का परमशत्रु है

इसबातका सैकडोंबार अनुभव कियागयाहै जैसे अग्निके द्वारा रुई भस्महोतीहै इसीप्रकार इस औष- धि से बवासीरोंका नाश होताहै सुकुमार छोटे शरीरवाले अथवा मद्य के सेवन करनेवाले मनुष्यों को पुरानी मद्य तथा भोजन आदि के साथ यह औषध देनी चाहिये लवा, तीतर, बटेर, मोर, खरगोश वनकी गौरैया, गैरी, हारिल, बाज, बड़ालवा, वनके विष्किर पक्षी, कबूतर तथा मृगादिक वनके जीवों का मांस हितकारीहै मद्गुर, रेहू तथा शकुल यह मछलियों में श्रेष्ठ मत्स्यराज कहलाती हैं यह परम हितकारी हैं बैंगन, परवल, भटकटैया के फल, लम्बी लौकी, सतावरके पत्ते, देवदाली (अकरकरा) तथा चौराई, बथुई, धनियां, चीता, चकवड़, नारियल, खजूर, अनार, हरफारेवड़ी, सिंघाडा, पक्का आम, दाख और ताड़काफल यह ऊपर कहीहुई संपूर्ण वस्तु लोहे के सेवन करनेवालों को हितहैं बड़हल, छोटा बेर, बड़ाबेर, जंभीरी नींबू, बिजौरा नींबू, इमली, करौंदा, अनूपमांस, केकड़ा, पुंड्रक, हंस, सारस, नीलकंठ, चाष, बक, मानकेचू, कसेरू, निर्म्मली, तरबूज, कुंभड़ा, खिरुसा, सुपारी, कड़वी वस्तु, कालशाक, कुंरूरु, ककडी, ककारादि सब वस्तु और दो दलवाली सबवस्तु इन सबको लोहे का सेवन करनेवाला छोडदे संसारके उपकार के लिये श्रीशिवजीने यह बवासीर की नाश करने वाली औषधि कहीहै चाहे सुमेरु पर्वत अपने स्थान से हटजाय पृथ्वी वायुसे उड़जाय और चन्द्रमा तथा तारा गिरपड़ें परन्तु यह औषधि कभी मिथ्या नहीं होसक्ती है ब्रह्मघाती, कृतघ्न, क्रूर मिथ्यावादी और गुरुनिन्दक इन मनुष्योंको धर्मात्मा वैद्य यह औषध न देवे अगस्तके रसमें बाय- विडंग को पीसकर धूपमें सुखावे फिर अगस्त के रसके साथ चाटै इससे जैसे अग्निके संयोग से मक्खन टिघलताहै उसी प्रकार लोह खाने से हुए संपूर्ण दोष टिघल जातेहैं अर्थात् नष्ट होजाते हैं समय पर मलका त्याग, डकारकी शुद्धता, उदरमें हलकापन, शरीर में शिथिलता का न होना और मनकी प्रसन्नता यह खाये हुए लोहेके परिपाक होजाने के लक्षणहैं अगस्त के रसके साथ बायविडंगके चूर्ण के चाटने से शीघ्रही लोह के खानेसे अजीर्ण हुआ नष्ट होजाता है लोहके सेवन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से उत्पन्न हुए अतीसार दूध के पीनेसे निवृत्त होताहै बारह रत्तीसे अधिक लोह खाने से अत्यन्त कष्ट होता है ॥ इति शंकरप्रणीतं लोहम् ॥ इति बवासीरकी सामान्य चिकित्सा ॥ ३३ ॥

अथ रक्तार्शसांचिकित्सा ॥

रक्तार्शसामुपेक्षेतरक्तमादौस्रवेद्भिषक् । दुष्टास्रनिःसृतेनस्युःशूलानाहासृगामयाः ॥ ३४ ॥

खूनी बवासीर की चिकित्सा ॥

वैद्य खूनी बवासीर में पहले रुधिर को न बन्द करे क्योंकि दूषित रुधिरके निकल जानेपर शूल आनाह और रुधिरके रोग नहीं होते हैं ॥ ३४ ॥

चन्दनकिराततिक्तकधन्वजवासाःसनागराःक्वथिताः । रक्तार्शसांप्रशमनादार्वीत्वगुशीरनिम्बाश्च ॥ चन्दनमत्ररक्तम् । नागरमत्रमुस्तकम् ॥ इति चन्दनादिक्वाथः ॥ ३५ ॥

लालचन्दन, चिरायता, धमासा, जवासा, नागरमोथा, दारुहल्दी, दालचीनी, खस और नींब इन का क्वाथ पीने से खूनी बवासीर शान्त होती है ॥ इति चन्दनादि क्वाथ ॥ ३५ ॥

नवनीततिलाभ्यासात्केशरनवनीतशर्कराभ्यासात् । दधिसरमथिताभ्यासाद्गुदज[...]शाम्यन्तिरक्तवहाः ॥ दध्नस्तूपरियोभागोघनस्नेहयुतःसरः । मथितंसरर्रहितंनिर्[...]वस्त्रपूतंदधि ॥ सपद्मकेशरंक्षौद्रंनवनीतंनवंलिहन् । सिताकेशरसंयुक्तंरक्तार्शसिसुख[...]वेत् ॥ पयसाशृतेनयूषैःसतीनमुद्गाढकीमशूराणाम् । ओदनमद्याम्लैःशालिश्यामा[...]द्रवजम् ॥ शशहरिणलावमांसैःकपिञ्जलैरेणमांसैश्च । ओदनमद्याम्लैरीषत्सुगंधैश्च ३६ ॥

मक्खन तथा तिल मक्खन नागकेशर तथा शक्कर और दही की मलाई तथा मथित इनतीन योगोंसे खूनी बवासीर शान्त होतीहै निर्जल मलाईरहित वस्त्रके द्वारा छाने हुए दही को मथित कहते हैं कमल की केशर, सहत, ताजा मक्खन, शक्कर और नागकेशर इनसबको चाटने से खूनी बवासीर नष्ट होतीहै मटर, मूंग, अरहड और मशूर इन सबको दूधके साथ परिपक्व करके इनका यूष बनावे उसके साथ धान, सामा और कोदों का भात खाय मद्य तथा खट्टी वस्तु सहित तथा कुछ सुगन्धयुक्त इनवस्तुओंको खानेसे खूनी बवासीर शान्त होतीहै खरगोश, हिरन, लवा, सफेदतीतर और काला हिरन इनके मांसके साथ भी ऊपर कहाहुआ भात खाना चाहिये ॥ ३६ ॥

समंगोत्पलमोचाकस्तिरीटतिलचन्दनैः । सिद्धंछागीपयोदद्याद्गुदजेशोणितात्मके ॥ समंगालजालू मोचाकोमोचरसः । तिरीटोलोध्रः । चन्दनंरक्तम् । इति समंगादिदुग्धम् ३७ ॥

लजालू, नीलकमल, मोचरस, लोध, तिल और लालचन्दन इनके द्वारा बकरीके दूधको क्षीर पाक करके खूनी बवासीरमें देना चाहिये ॥ इति समंगादि दुग्ध ॥ ३७ ॥

भावितंरजनीचूर्णैःस्नुहीक्षीरैःपुनःपुनः । बन्धनात्सुदृढंसूत्रंछिनत्त्यर्शोभगन्दरम् ॥ इति क्षारसूत्रम् ॥ ३८ ॥

हल्दीके चूर्ण और थूहरके दूधसे सात दिनतक भावना दिये गये सूतको बहुत मजबूत कर बांधनेसे बवासीरके मस्से और भगंदर कट जाताहै इति क्षारसूत्र ॥ ३८ ॥

नासानाभिममुत्थेषु तथामेढ्रादिजेष्वपि । त्रिष्वप्यर्शःसुकुर्वीततत्रतत्रयथोचितम् ॥ चर्म्मकीलन्तुसंछिद्यदहेत्क्षारेणचाग्निना ॥ ३९ ॥

१ ओदनमद्यादम्लैरिति पाठान्तरम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नासिका नाभि तथा लिंग आदिमें मस्सोंके उत्पन्न होनेपर जिसमें जो चिकित्सा उचित होय सो करे और चर्मकीलको काटकर क्षार तथा अग्निसे जलावे ॥ ३९ ॥

वेगावरोधंस्त्रीपृष्ठयानान्युत्कुटकासनम् । यथास्वंदोषलंचान्नमर्शसःपरिवर्ज्जयेत् ॥ (इत्यर्शोऽधिकारः) ॥ ४० ॥

मल मूत्रादिका वेग रोकना, स्त्री प्रसंग, हाथी आदि सवारियों पर चढ़ना, उकड़ू बैठना और अपने अपने अनुसार दूषित अन्न इन सबको बवासीरवाला छोडदे इति बवासीरका अधिकार ॥ ४० ॥

अथ जठराग्निविकाराधिकारः । तत्रसन्निकृष्टनिदानपूर्व्वकानुदराग्निविकारानाह ॥

कफपित्तानिलाधिक्यात्तत्साम्याज्जाठरोऽनलः ॥ मन्दस्तीक्ष्णोऽथविषमःसमश्चेति चतुर्विधः ॥ ४१ ॥

जठराग्नि के विकारका अधिकार ॥

समीपी कारणों समेत उदरके विकारोंका वर्णन ॥

कफ पित्त तथा वायुकी अधिकतासे और समतासे क्रमपूर्व्वक मन्द तीक्ष्ण विषम और सम यह चारप्रकारकी अग्नि होतीहैं ॥ ४१ ॥

मन्दस्याग्नेर्लक्षणमाह ॥

अल्पापिनैवमन्दाग्नेर्मात्राभुक्ताविपच्यते।छर्दिःसादःप्रसेकःस्याच्छिरोजठरगौरवम् ४२

मन्दाग्निका लक्षण ॥

मन्दाग्निवाले पुरुषको थोडा भी भोजन नहीं पचता और छर्द्दि शिथिलता मुखसे पानी छूटना तथा शिर और पेटमें भारीपन होताहै ॥ ४२ ॥

तीक्ष्णस्यलक्षणमाह ॥

मात्रातिमात्राप्यशितातीक्ष्णाग्निःपच्यतेसुखम् । अतएवहिकेनापिमतस्तीक्ष्णाग्निरुत्तमः ॥ ४३ ॥

तीक्ष्णाग्निका लक्षण ॥

तीक्ष्णाग्निवाले पुरुषको अधिक भोजनभी सुखपूर्व्वक पचजाताहै इसलिये कोई कोई तीक्ष्णाग्निको उत्तम कहते हैं ॥ ४३ ॥

विषमस्यलक्षणमाह ॥

अशिताखलुमात्रापिविषमाग्नेस्तुदेहिनः । कदाचित्पच्यतेसम्यक्कदाचिन्नविपच्यते॥ तस्याध्मानमुदावर्त्तंशूलंजठरगौरवम् । प्रवाहणमतीसारस्तथास्यादन्त्रकूजनम् ॥ ४४ ॥

विषमाग्निका लक्षण ॥

विषमाग्निवाले पुरुषको प्रमाणके अनुसार भी भोजन कभी पचताहै और कभी नहीं पचता और आध्मान उदावर्त्त शूल पेटमें भारीपन प्रवाहिका अतीसार तथा पेटमें गडगडाहट होती है ॥ ४४ ॥

समस्यलक्षणमाह ॥

समासमाग्नेरशितामात्रासम्यग्विपच्यते। सोऽग्निरुत्तमएतेषुनतीक्ष्णस्तूत्तमोमतः॥ सचमधुरस्निग्धादिभोज्यःसम्यगग्नावुत्तमः । तर्हिकथंतीक्ष्णविकारमध्येगणना । उच्यते । समोऽग्निःक्षुधाविघातादाश्वेवतथाविकारंनकरोति तीक्ष्णस्तुस्वल्पकालमपिक्षुधा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विघाताद्दाहवे पैत्तिकान्विकारान्कुरुते। तीक्ष्णःपित्तसमुत्थजाग्विषमोवाततहेतुकान् ॥ तथाकरोतिमन्दाग्निविकारान्कफसम्भवान् ॥ ४५ ॥

समाग्निका लक्षण ॥

समाग्निवाले पुरुषको प्रमाणके अनुसार भोजन अच्छे प्रकारसे पच जाताहै यही अग्नि सम्पूर्ण अग्नियोंमें उत्तमहै और तीक्ष्णाग्नि उत्तम नहीं है अब यह सन्देह होताहै कि तीक्ष्णाग्नि मधुर स्निग्धादि भोजनोंको अच्छेप्रकारसे पचातीहै इसलिये उत्तमहै तो उसकी रोगोंमें गणना क्योंकरीहै?इसका उत्तर यहहै कि सम अग्नि क्षुधाके रोकने से शीघ्रही विकारको नहीं करती और तीक्ष्णाग्नि थोडी देर भी क्षुधाके रोकने से शीघ्र पित्तसम्बन्धी विकारोंको करतीहै और ऐसाही कहाभी है कि तीक्ष्णाग्नि पित्त सम्बन्धी विषमाग्नि वातसम्बन्धी और मन्दाग्नि कफसम्बन्धी विकारों को करती है ॥ ४५ ॥

भस्मकस्यनिदानसंप्राप्तिपूर्व्वकंलक्षणमाह ॥

कट्वादिरूक्षान्नभुजांनराणांक्षीणेकफेमारुतपित्तवृद्धौ। अधिप्रवृद्धःपवनान्वितोऽग्निर्भुक्तं क्षणाद्भस्मकरोतियस्मात्तस्मादसौभस्मकसंज्ञकोऽभूदुपेक्षितोऽयंपचतेचधातून् ४६ ॥

भस्मक रोगका निदान संप्राप्ति पूर्वक लक्षण ॥

कटुआदि रूखी वस्तुओं के खानेवाले मनुष्यों के कफके क्षीण होजाने पर और वात तथा पित्तके बढ़नेपर बहुत बढ़ी हुई वात सहित अग्नि भोजन को क्षणभरमें पचाती है इसीसे इसको भस्म कहते हैं इसमें तरह देनेसे यह धातुओं को पचाती है ॥ ४६ ॥

भस्मकस्यसोपद्रवमरिष्टमाह ॥

तृट्स्वेददाहमूर्च्छादीन्कृत्वैषोऽत्यग्निसम्भवान् ॥ पक्कान्नमाशुधात्वादीन्सक्षिप्रं नाशयेद्ध्रुवम् ॥ ४७ ॥

भस्मकका उपद्रव सहित अरिष्ट ॥

तृषा, स्वेद, दाह तथा मूर्च्छा आदिको उत्पन्न करतीहुई अन्नको शीघ्रही पचाकर वह अग्नि शीघ्रही धातु आदिकोंको भस्मकर देतीहै ॥ ४७ ॥

अथाजीर्णस्यविप्रकृष्टंनिदानमाह ॥

अत्यम्बुपानाद्विषमाशनाच्चसन्धारणात्स्वप्नविपर्य्ययाच्च। कालेऽपिसात्म्यंलघुचापि भुक्तमन्नंनपाकंभजतेनरस्य। सन्धारणात्। क्षुधामूत्रपुरीषादीनाम् । स्वप्नविपर्य्ययात् दिवाशयनाद्रात्रौजागरणात्। लघुचापीत्यपिशब्दात्स्निग्धोष्णादिगुणयुक्तमपि । (अन्यच्च) ईर्ष्याभयक्रोधपरिप्लुतेनलुब्धेनरुग्दैन्यनिपीडितेन । प्रद्वेषयुक्तेनचसेव्यमानमन्नं नसम्यक्परिपाकमेति॥परिप्लुतेनव्याप्तेन। उक्तकारणेभ्योऽतिमात्रान्नभोजनंविशेषादजीर्णस्यकारणमजीर्णञ्चबहुव्याधीनांकारणमित्याह । अनात्मवन्तःपशुवद्भुञ्जन्तेयेऽप्रमाणतः। रोगानीकस्यतेमूलमजीर्णंप्राप्नुवन्तिहि॥अनात्मवन्तः। अबुद्धिमन्तः। रोगानीकस्य विसूच्यादेर्मूलंकारणम् (अन्यच्च) प्रायेणाहारवैषम्यादजीर्णंजायतेनृणाम् । तन्मूलोरोगसङ्घातःतद्विनाशाद्विनश्यति॥अजीर्णविनाशाद्विनश्यति।रोगसङ्घातःरोगसमूहः ४८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अजीर्णका दूरवाला निदान ॥

बहुत जलपान, विषमाशन क्षुधा तथा मलमूत्रादि वेगोंका रोकना दिनमें सोना और रात्रि में जागना इनसब कारणोंसे सात्म्य हलका स्निग्ध तथा उष्णादि गुणयुक्त भोजन समयपर कियाहुआ भी परिपाकको नहीं प्राप्त होताहै (अन्यप्रकार) ईर्षा भय तथा क्रोधसे व्याकुल लोभी रोगी दीन और द्वेषी मनुष्यों को अन्न अच्छेप्रकारसे नहीं पचता है ऊपर कहे हुए कारणों में से बहुत भोजन नहीं अजीर्णका मुख्य कारणहै और अजीर्ण से बहुत रोग उत्पन्न होतेहैं जैसे कि जो निर्बुद्धि मनुष्य पशु के समान बेप्रमाण भोजन करतेहैं वह विसूचिका आदि रोगोंके कारण रूप अजीर्णको प्राप्त होतेहैं (अन्यप्रकार) प्रायः आहारकी बिषमतासे मनुष्योंको अजीर्ण होताहै यह अजीर्ण अनेक रोगोंका कारण है और इसके नष्ट होनेसे वह रोगभी नष्ट होजाताहै ॥ ४८ ॥

अजीर्णस्यसामान्यंलक्षणमाह ॥

ग्लानिगौरवविष्टम्भभ्रममारुतमूढता ॥ विबन्धोऽतिप्रवृत्तिर्वा सामान्याजीर्णलक्षणम् ॥ मारुतमूढतावायोरवरोधः । विबन्धःमलप्रवृत्तिः ॥ ४६ ॥

अजीर्णका सामान्य लक्षण ॥

ग्लानि, भारीपन, विष्टंभ, भ्रम, वायुका रुकना और मलका रुकना अथवा पतला होकर निकलना यह सामान्य अजीर्णके लक्षणहैं ॥ ४६ ॥

सन्निकृष्टकारणसहिताजीर्णस्यभेदानाह ॥

आमंविदग्धंविष्टब्धंकफपित्तानिलैस्त्रिभिः । त्रिभिरित्येकशोनतुमिलितैः ॥ अजीर्णकेचिदिच्छंतिचतुर्थंरसशेषतः । केचित्तुसुश्रुतादयः ॥ रसशेषतोःभुक्तस्यपक्वस्यसारभूतोयोद्रवःसोरसः । सोऽपिपच्यतेभुक्तस्यसारभूतोयो ॥ द्रवःसचापक्वःसारःरसशेषस्तस्मात् । चतुर्थमजीर्णम् । नन्वामाजीर्णाद्रसशेषस्यकोभेदः । उच्यते ॥ आमंमधुरतांगतमपक्वमन्नमेव । रसशेषस्तुभुक्तस्यपक्वस्यसारभूतोयोद्रवःसचापक्वःइतिभेदः ॥ ५० ॥

समीपी कारणों समेत अजीर्णके भेद ॥

कफ पित्त और वायुके द्वारा क्रमसे आम विदग्ध और विष्टब्धनामक तीनप्रकारका अजीर्ण होताहै और कोई २ सुश्रुतादिक अन्न के सारांशको भूतरसके न पकने से चौथारस शेषनाम अजीर्ण कहतेहैं अब यह सन्देहहै कि आमाजीर्ण और रसशेषाजीर्ण में क्या भेदहै इसका उत्तर यहहै कि आम मधुरताको प्राप्तहोनेवाले कच्चे अन्नहीको कहते हैं और रसशेष पचेहुये भोजन के सारांशभूत पतले रसके न पकनेको कहतेहैं यही भेदहै ॥ ५० ॥

अजीर्णपञ्चमंकेचिन्निर्दोषंदिनपाकिच । निर्दोषंगौरवंभ्रमशूलादिदोषाऽजनकम् दिनपाकिच । अहोरात्रेणपाकंयातीतिस्वभावः । यत्तुमात्राकालसात्म्यातिदोषाद्दिनांतरेपाकंयातितद्दिनपाकि । अतएव । याममध्येनभोक्तव्यमितिवचनम् ॥ ५१ ॥

मात्रा काल तथा सात्म्य आदिके दोषसे जो भोजन रात्रि दिन में पचताहै और भारीपन भ्रम तथा शूलादिक दोष नहीं उत्पन्न होतेहैं उसको भी कोई २ पण्डित लोग दिनपाकी नाम पांचवां अजीर्ण कहतेहैं इसीसे दिनके प्रथम पहरमें न खाना चाहिये यह वचन कहाहै ॥ ५१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वदन्ति, षष्ठश्चाजीर्णप्राकृतंप्रतिवासरम्। प्राकृतमविकारकम्। प्रतिवासरंप्रतिदिन वी। भुक्तंयावन्नजीर्णंतावदजीर्णमित्युच्यते। एतदभिधानस्यप्रयोजनंपाकार्थंवाम श्वंशयनंप्रियशब्दादिसेवनादिकम्। नचात्राहारस्यनिषेधः। प्रातराशेत्वजीर्णेतुसाय शेनदुष्यतीतिवचनेनसायमाशस्यावश्यंकर्तव्यत्वात्॥ ५२॥

प्रतिदिन भोजनके न पचजानेतक विकार रहित छठा अजीर्ण कहलाताहै इस अजीर्ण के मानने का यह प्रयोजनहै कि भोजनके परिपाकके लिये बाईंकरवँटसे सोवे और प्रिय वचनोंका श्रवण आदि करे और इस अजीर्ण में भोजनका निषेध नहींहै क्योंकि कहागयाहै कि प्रातःकाल के भोजन के न पचनेपर सायंकाल में भोजन करने से कोई दोष नहीं होता इस वचनसे सायंकाल में भोजन करना अवश्यहै यह बात सिद्ध हुई॥ ५२॥

अथामाजीर्णस्यलक्षणमाह॥

तत्रामेगुरुतोत्क्लेशःशोथोगण्डाक्षिकूटगः। उद्गारश्चयथाभुक्तमविदग्धंप्रवर्त्तते॥ गुरुताउदरांगयोः। उत्क्लेशः उपस्थितवमनमिव॥ अक्षिकूटोऽक्षिपुटकः॥ ५३॥

आमाजीर्ण का लक्षण॥

आमाजीर्ण में उदर तथा शरीरका भारीपन मतली गाल तथा नेत्रों के पोटोंमें सूजन और खट्टे से रहित जैसा भोजन किया है उसी प्रकार की डकार यह लक्षण होतेहैं॥ ५३॥

अथ विदग्धाजीर्णस्यलक्षणमाह॥

विदग्धेभ्रमतृण्मूर्च्छाःपित्ताच्चविविधारुजः। उद्गारश्चसधूमाम्लस्वेदोदाहश्चजायते॥ विविधारुजःऊषचोषादयःदाहादयः॥ ५४॥

विदग्धाजीर्ण के लक्षण॥

भ्रम, तृषा, मूर्च्छा, धुएं समेत खट्टी डकार, स्वेद, दाह और ऊष चोष आदिक पित्तकी अनेक पीडा यह विदग्धाजीर्णके लक्षण हैं॥ ५४॥

अथ विष्टब्धाजीर्णस्य लक्षणमाह॥

विष्टब्धेशूलमाध्मानंविविधावातवेदनाः। मलवाताऽप्रवृत्तिश्चस्तम्भोमोहोऽङ्गपीडनम्। वातवेदनाःतोदभेदादयः। स्तम्भोऽङ्गानाम्। मोहोमूर्च्छा॥ ५५॥

विष्टब्धाजीर्ण के लक्षण॥

शूल, आध्मान, तोदभेद आदिक वातकी अनेक पीडा, मल तथा वायुका न निकलना, शरीर में जडता तथा पीडा और मूर्च्छा यह विष्टब्धाजीर्ण के लक्षणहैं॥ ५५॥

अथ रसशेषाजीर्णस्य लक्षणमाह॥

रसशेषेऽन्नविद्वेषोहृदयाशुद्धिगौरवैः॥ ५६॥

रस शेष अजीर्ण के लक्षण॥

अन्न में अरुचि और हृदय में अशुद्धता तथा भारीपन यह रसशेष अजीर्ण के लक्षणहैं॥ ५६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एतस्योपद्रवानाह ॥

मूर्च्छाप्रलापोवमथुःप्रसेकःसदनंभ्रमः । उपद्रवाभवन्त्येतेमरणञ्चाप्यजीर्णतः ५७ ॥

अजीर्ण के उपद्रव ॥

मूर्च्छा, प्रलाप, छर्दि, मुखमें पानी छूटना, शिथिलता और भ्रम यह अजीर्णके उपद्रव हैं और अजीर्ण से मृत्युभी होजाती है ॥ ५७ ॥

अतिशयितेभ्योऽचामाद्यजीर्णेभ्योविसूच्यादिरोगानाह ॥

आमंविदग्धंविष्टब्धमित्यजीर्णंयदीरितम् ॥ विसूच्यलसकौतस्माद्भवेच्चापिविलम्बिका ॥ नात्रयथासंख्यम् ॥ तदाविष्टब्धाद्विलम्बिकाभवितुमर्हति। साचकफवाताभ्यांभवतीत्येकैकतोऽजीर्णाद्विसूच्यादित्रयोत्पत्तिः ॥ ५८ ॥

बहुत बढ़े हुए आमादिक अजीर्णोंसे विसूचिका आदिक रोग उत्पन्न होते हैं जैसे ऊपर कहेहुए आमाजीर्ण विदग्धाजीर्ण और विष्टब्धाजीर्ण से विसूची, अलसक और विलम्बिका यह रोग उत्पन्न होते हैं ॥ ५८ ॥

विसूच्यानिरुक्ति माह ॥

सूचीभिरिवगात्राणितुदन्सन्तिष्ठतेऽनिलः।यत्राजीर्णेनसावैद्यैर्विषूचीतिनिगद्यते ॥ ५९ ॥

विषूचिकाकीनिरुक्ति ॥

अजीर्णके द्वारा जहां रोगीकेशरीरमें सुई गडने के समान पीडा करती हुई वायु स्थित होतीहै ॥ तब उसको वैद्यलोग विषूचिका (हैजा) कहते हैं ॥ ५९ ॥

विषूच्यानिदानमाह ॥

नतांपरिमिताहारालभन्तेविदितागमाः । मूढास्तामजितात्मानोलभन्तेऽशनलोलुपाः ॥ विदितागमाः । ज्ञातायुर्वेदाः ॥ ६० ॥

विषूचिकाका निदान ॥

प्रमाणसहित भोजन करनेवाले और वैद्यक शास्त्रके जाननेवाले मनुष्यों को विषूचिका नहीं होती मूर्ख इन्द्रियोंके वशीभूत और भोजनके लोभी मनुष्योंको विषूचिका होती है ॥ ६० ॥

विषूच्यालक्षणमाह ॥

मूर्च्छातिसारौवमथुःपिपासाशूलंभ्रमोद्वेष्टनजृम्भदाहाः । वैवर्ण्यकम्पौहृदयेरुजश्च भवन्तितस्याशिरसश्चभेदः ॥ उद्वेष्टनंहस्तपादयोः । शिरसोभेदःशिरःशूलम् ॥ ६१ ॥

विषूचिका के लक्षण ॥

मूर्च्छा, अतीसार, छर्दि, तृषा, शूल, भ्रम, हाथ पैरोंमें ऐंठन, जंभाई, दाह, रंगका बिगडना, कम्प, हृदयमें पीडा और शिरमें पीडा यह विषूचिकाके लक्षणहैं ॥ ६१ ॥

विषूच्याउपद्रवानाह ॥

निद्रानाशोऽरतिःकम्पोमूत्राघातोविसंज्ञता । अमीउपद्रवाघोराविषूच्याःपञ्चदारुणाः ॥ अमीनिद्रानाशादयःउपद्रवाः । सर्वेषामेवरोगाणांघोराभयंकराः । विषूच्यापञ्चदारुणाः । विषूच्यास्तुपञ्चापियदिस्युस्तदादारुणाः । प्राणभयंकराः ॥ ६२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषूचिकाके उपद्रव ॥

निद्राका नाश, बेचैनी, कम्प, मूत्रका रुकना और बेहोशी का होना यह पांच उपद्रव सभी रोगों में भयंकरहैं और विषूचिका में यह पांचो होयँ तो प्राणनाशक जानने चाहियें ॥ ६२ ॥

अलसकलक्षणमाह ॥

कुक्षिरानह्यतेऽत्यर्थम्प्रताम्यत्यथकूजति । निरुद्धोमारुतश्चैवकुक्षावुपरिधावति ॥ वातवर्चोनिरोधश्चयस्यात्यर्थम्भवेदपि । तस्यालसकमाचष्टेतृष्णोद्गारौचयस्यतु ॥ आनह्यतेआध्मायते । प्रताम्यतिताड़यति । कूजतिआर्त्तनादंकरोति । कुक्षौअजीर्णेन निरुद्धोमारुतः । उपरिधावति । हृदयकण्ठादिकंगच्छतिइत्यर्थः । काश्यपस्त्वाह । नाधोयातिनचाप्यूर्ध्वमाहारोयेनपच्यते । कोष्ठेस्थितोऽलसीभूतस्ततोऽसावलसःस्मृतः ६३

अलसक का लक्षण ॥

कोखमें बहुत अफरा, ताडन, कराहना, कोखमें अजीर्णके द्वारा रुकी हुई वायुका हृदय कंठादिकों में जाना, वायु तथा मलकारुकना, तृषा और डकार यह अलसक के लक्षण हैं काश्यपने तो कहाहै कि भोजन न ऊपर जाय न नीचेजाय और विनापचा हुआ कोष्ठमें निश्चल होकर ठहरे इसको अलसक कहते हैं ॥ ६३ ॥

विषूच्यलसकयोरिष्टमाह ॥

यःश्यावदन्तोष्ठनखोऽत्यसंज्ञोवम्यर्द्दितोऽभ्यन्तरयातनेत्रः । क्षामस्वरःसर्वविमुक्तसंधियायान्नरोऽसौपुनरागमाय ॥ सर्वाविमुक्ताःशिथिलीभूताःसन्धयोयस्यसः ॥ ६४ ॥

विषूचिका और अलसकके अरिष्ट ॥

जिस अलसक और विषूचिका रोग वालेके दांत ओंठ तथा नख कालेहोजायँ बेहोशी आजाय छर्दि होय नेत्रभीतर घुसजायँ स्वर क्षीणहोजाय और सबसंधियां शिथिल होजायँ उसकीमृत्युहोतीहै ६४ ॥

विलम्बिकालक्षणमाह ॥

दुष्टन्तुभुक्तंकफमारुताभ्यां प्रवर्त्ततेनोर्ध्वमधश्चयत्र । विलम्बिकान्तांभृशदुश्चिकित्स्यामाचक्षतेशास्त्रविदःपुराणाः ॥ भृशदुश्चिकित्स्याम्प्रत्याख्येयामनुपचरणीयाम् । इदमसाध्यञ्चेतिजैज्जटः ॥ ६५ ॥ विलम्बिका का लक्षण ॥

कफ और वायुके द्वारा दोषयुक्त भोजन ऊपर और नीचे न जाय इसको प्राचीन वैद्यलोग विलम्बिका कहते हैं यह औषध करनेके योग्य नहींहै और जैजटने इसको असाध्य कहाहै ॥ ६५ ॥

अथ जीर्णाहारस्यलक्षणमाह ॥

उद्गारशुद्धिरुत्साहोवेगोत्सर्गोयथोचितः । लघुताक्षुत्पिपासाचजीर्णाहारस्यलक्षणम् ॥ ६६ ॥ पचेहुए भोजनके लक्षण ॥

शुद्ध डकार आना, उत्साह, यथायोग्य मल मूत्रादि बेगों का निकलना, शरीरमें हलकापन क्षुधा और तृषा यह भोजन के पचजाने के लक्षणहैं ॥ ६६ ॥

तस्यचिकित्सा ॥

हरीतकीतथाशुण्ठीभक्ष्यमाणागुडेनच । सैन्धवेनयुतावास्यात्सातत्येनाग्निदीपनी ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नशुण्ठीमथचोपकुल्यांपथ्यांतृतीयामथदाडिमंवा । आमेष्वजीर्णेषुगु मयेषुवर्चो बन्धेषुचनित्यमद्यात ॥ ६७ ॥

अजीर्ण की चिकित्सा ॥

हड और सोंठ को गुड अथवा सेंधे निमक के साथ निरन्तर सेवन करने से अग्नि दीप्त होती है के साथ सोंठ पीपरि हड अथवा अनार को नित्य खाने से आमाजीर्ण गुदाके रोग और मलकी रुकावट का नाश होता है ॥ ६७ ॥

व्योषंदन्तींत्रिवृच्चित्रंकृष्णामूलंविचूर्णितम् । तच्चूर्णंगुडसम्मिश्रंभक्षयेत्प्रातरुत्थितः॥ एतद्गुडाष्टकन्नामबलवर्णाग्निवर्द्धनम् । शोथोदावर्त्तशूलघ्नंप्लीहपाण्ड्वामयापहम् ॥ सर्वचूर्णसमोगुडोदेयः । गुडाष्टकम् ॥ ६८ ॥

त्रिकटु, दन्ती, निसोत, चीता और पीपलामूल इन सब औषधियों को समभाग चूर्ण करके और इन सबकी बराबर गुड मिलाके प्रातःकाल खानेसे बल वर्ण तथा अग्निकी वृद्धि होती है और सूजन उदावर्त्त शूल प्लीहा तथा पांडुरोग का नाश होताहै इतिगुडाष्टकम् ॥ ६८ ॥

दहनाजमोदसैन्धवनागरमरिचानिचाम्लतक्रेण । सप्ताहादग्निकरंपाण्ड्वर्शोनाशनम्परमम् ६९ ॥

चीता, अजमोद, सेंधानोन, सोंठ और मिर्च इन सबको खट्टे मट्ठे के साथ सातदिन सेवन करने से अग्निकी वृद्धि और पाण्डु तथा बवासीरका नाश होताहै ॥ ६९ ॥

तत्रामेवमनङ्काय्र्यंविदग्धेलङ्घनंहितम् । विष्टब्धेस्वेदनंशस्तंरसशेषेशयीतच ॥ वचालवणतोयेनवान्तिरामेप्रशस्यते । कणासिन्धुवचाकल्कंपीत्वाचशिशिराम्भसा ॥ जलमत्रसरावमात्रम् । वचाकर्षार्द्धमिता । द्वयोश्चूर्णमुष्णेनजलेनपिबेत् । कणादिकल्कंवा पीत्वावान्तिरामेप्रशस्यते । इत्यनेनान्वयः । धान्यनागरसिद्धंवातोयंदद्याद्विचक्षणः ॥ आमाजीर्णप्रशमनंशूलघ्नंवस्तिशोधनम् ॥ भवेद्यदाप्रातरजीर्णशङ्कातदाभयानागरसैन्धवाभ्याम् । विचूर्णितांशीतजलेनभुक्त्वाभुञ्ज्यादशंकंमितमन्नकाले ॥ विदह्यतेयस्यतु भुक्तमात्रंदन्दह्यतेहृच्चगलश्चयस्य । द्राक्षांसितामाक्षिकसम्प्रयुक्तांलीढाभयांचापिसुखंलभेत ॥ ७० ॥

आमाजीर्ण में वमन बिदग्धाजीर्ण में लङ्घन बिष्टब्धाजीर्ण में स्वेदन और रस शेषाजीर्णमें शयन कराना चाहिये बच और सेंधानोन छःछः माशे लेकर गरमजलके साथ पीकर वमन करे इस्से आमाजर्णि नष्ट होताहै पीपल सेंधानोन और बचके कल्कको शीतल जलके साथ पीकर वमनकरने से आमाजीर्ण नष्ट होताहै धनियाँ और सोंठके काढ़ेको सेवन करनेसे आमाजीर्ण तथा शूलकानाश होताहै और मूत्राशय शुद्ध होताहै जो प्रातःकाल अजीर्णका सन्देह होय तो हड सोंठ और सेंधेनोन को शीतल जलके साथ खाय फिर भोजनके समयपर निस्सन्देह होकर प्रमाण सहित भोजनकरे जो भोजनके उपरान्त विदाह होय और हृदय तथा गलेमें जलन होय तो दाख और हडको शक्कर और संहत के साथ चाटै इस्से आनन्द होता है ॥ ७० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रिकटुः मजमोदासैन्धवंजीरकेद्वेसमचरणधृतानामष्टमोंहिंगुभागः। प्रथमकवलेक्तंसर्पिषाचूर्णमेतज्जनयतिजठराग्निवातरोगांश्चहन्ति ॥ इतिहिंग्वष्टकम्॥ ७१॥

त्रिकुट, अजमोद, सेंधानोन, दोनों जीरे और इन सबकी अष्टमांश हींग सबको पीसकर प्रथमग्रा में घृतके साथखाय इस्सें अग्निकी वृद्धि होतीहै और वातरोगोंका नाशहोताहै इति हिंग्वष्टक॥ ७१॥

द्वौक्षारौचित्रकंपाठा करञ्जंलवणानिच। सूक्ष्मैलापत्रकंभार्ङ्गीकृमिघ्नंहिंगुपौष्करम्। शटीदार्व्वीत्रिविन्मुस्तंवचाचेन्द्रयवास्तथा॥ वृक्षाम्लंजीरकंधात्रीश्रेयसीचोपकुञ्चिका। अम्लवेतसमम्लीका यवानीदेवदारुच। अभयातिविषाश्यामा हवुषारग्वधंसमम्॥ तिलमुष्ककशिग्रूणांकोकिलाक्षपलाशयोः। क्षाराणिलोहकिट्टञ्च तप्तंगोमूत्रसेचितम्॥ सूक्ष्मचूर्णानिकृत्वातु समभागानिकारयेत्। मातुलुंगरसेनैवभावयेद्दिवसत्रयम्॥ दिनत्रयन्तुशूक्तेन तथार्द्रकरसेनच। अत्यग्निकारकंचूर्णं प्रदीप्ताग्निसमप्रभम्॥ उपयुक्तंविधानेननाशयत्यचिराद्ध्रुवान्॥ अजीर्णमथगुल्मञ्चप्लीहानंगुदजानिच॥ उदराण्यन्त्रवृद्धिञ्चअष्ठीलांवातशोणितम्॥ प्रणुदत्युल्बणान्दोषान्नष्टाग्निंचप्रदीपयेत्॥ द्वौक्षारौस्वर्जिकायवक्षारश्च। लवणानिपञ्च। वृक्षाम्लंविषामिलइतिलोके। श्रेयसीहरीतकी। उपकुञ्चिकामंगरैलाइतिलोके। अम्लवेतसकाभावेचुक्रंदातव्यम्। श्यामाप्रियंगुमुष्ककः घण्टापाडरिइतिलोके। कोकिलाक्षःकोइलषाइतिलोके॥ इतिबृहदग्निमुखंचूर्णम् ७२॥

सज्जी, जवाखार, चीता, पाठा, करंजुआ, पांचोनोन, छोटी इलायची, तेजपात, भारङ्गी बायबिड़ंग हींग, पुष्करमूल, कचूर, दारुहल्दी, निसोत, मोथा, बच, इन्द्रजौ, चूक, जीरा, आमला, हड़, काला-जीरा, अमलवेत, (इसके अभाव में चूक देना चाहिये) इमली, अजवाइन, देवदारु, हड़, अतीस, प्रियंगु, हाऊबेर, अमलतास और तिल, घंटापाढल, सहिंजना, छीला तथा पलाशकाखार और गोमूत्र में बुझाया हुआ लोहका कीट–इन सब औषधियों को समभाग लेकर सूक्ष्मचूर्ण करके नींबूके रसमें तीन दिन भावना देवे और तीन २ दिन सिरके में तथा अदरकके रसमें भावनादे यह चूर्ण अत्यन्त अग्निवर्द्धक जलतीहुई अग्निके समानहै विधिपूर्वक इसका सेवन करनेसे अजीर्ण, वायगोला, प्लीहा, बवासीर उदररोग, आंतका बढ़ना, अष्ठीला, बात रक्त तथा दोषोंकी वृद्धि यह सब नष्ट होते हैं और नष्टहुई अग्निभी दीप्त होती है इति बृहदग्नि मुख चूर्ण॥ ७२॥

स्नुह्यर्कचित्रकैरण्ड वरुणंसपुनर्नवम्। तिलापामार्गकदलीपलाशंतिन्तिडीतथा॥ गृहीत्वाज्वालयेदेतत्प्रस्थंभस्माखिलंयथा ॥ जलाढकेविपक्तव्यंयावत्पादावशेषितम्। सुप्रसन्नंविनिस्राव्य लवणप्रस्थसंयुतम्॥ पक्वंनिर्धूमकठिनसूक्ष्मचूर्णीकृतंपुनः॥ यवानीजीरकव्योषस्थूलजीरकहिंगुभिः॥ शीतोदकेनतच्चूर्णं पिबेत्प्रातर्हिमात्रया। तस्मिन्जीर्णेऽन्नमश्नीयाद्यूषैर्जांगलजैरसैः॥ ईषदम्लैःसलवणैःसुखोष्णैर्वह्निदीपनैः। एतेनाग्निर्विवर्द्धेत बलमारोग्यमेवच॥ तत्रानुपानंशस्तंहितक्रंवाभोजनेहितम्। मन्दाग्न्यर्शोविकारेषुवातश्लेष्मामयेषुच॥ सर्व्वांगशोथरोगेषु शूलगुल्मोदरेषुच॥ अश्मर्य्यांशर्करायाञ्चविण्मूत्रानिलरोगिषु॥ वैश्वानरक्षारः॥ ७३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

थूहर, आक, चीता, रेंडी, बरना, पुनर्नवा, तिल, लटजीरा, केला, ढाक और इमली इन सब समभाग औषधियोंको जलाकर सबकी ६४ तोले भस्मको २५६ तोले जलमें औटावै चौथाई बाकी रहने पर ठहराकर किसी पात्रमें उड़ेलले फिर उस जलके साथ ६४ तोले निमक मिलाकर फिर पाक करे इसके उपरान्त धूमरहित कड़ा होजानेपर सूक्ष्म चूर्णकरे फिर अजवाइन, जीरा, त्रिकटु, काला जीरा और हींग मिलाकर शीतल जलके साथ प्रातःकाल मात्राके अनुसार खाय और औषधके पच जानेपर यूष तथा जंगली जीवों के मांसके रसके साथ अन्नखाय कुछ खट्टी तथा उष्ण लवणयुक्त दीपन वस्तुओं के साथ अन्नखाय अनुपानमें अथवा भोजनमें मट्ठेका सेवन करे यह औषधि अग्नि-वर्द्धक बल तथा आरोग्यकारी और मन्दाग्नि बवासीर वात कफके रोग सर्वांगसूजन शूल बायगोला उदररोग पथरी शर्करा वातरोग तथा मलमूत्ररोग इन सबकी नाशकहै इति वैश्वानरक्षार ॥ ७३ ॥

सामुद्रलवणंकार्य्यमष्टकर्षमितंबुधैः । सौवर्चलंपञ्चकर्षं विडसैन्धवधान्यकम् ॥ पिप्पलीपिप्पलीमूलं पत्रकंकृष्णजीरकम् ॥ तालीसंकेशरंचव्यमम्लवेतसकंतथा ॥ द्विकर्षमात्राण्येतानि प्रत्येकंकारयेद्बुधः । मरिचंजीरकंविश्वमेकैकंकर्षमात्रकम् ॥ दाडिमंस्याच्चतुःकर्षंत्वगेलाचार्द्धकर्षिका । एतच्चूर्णीकृतंसर्वंलवणंभास्कराभिधम् । भक्षयेच्चाणमानन्तु तक्रमस्तुककाञ्जिकैः ॥ वातश्लेष्मभवंगुल्मं प्लीहानमुदरक्षयम् ॥ अर्शांसिग्रहणींकुष्ठंविबन्धंचभगन्दरम् । शूलंशोथंश्वासकासामदोषांश्चापिहृद्रुजम् ॥ अश्मरींशर्कराश्चापि पाण्डुरोगंकृमीनपि । मन्दाग्निनाशयेदेतद्दीपनंपाचनंपरम् ॥ हितायसर्वलोकानांभास्करेणविनिर्म्मितम् । हन्यात्सर्वाण्यजीर्णानि भुक्तमात्रमसंशयम् । अत्रदाडिमस्यबीजानांकर्षचतुष्टयमितंदेयम् ॥ इति भास्करलवणम् ॥ ७४ ॥

खारी निमक ८ तोले, कालानोन ५ तोले, विड़नोन, सेंधानोन, धनियां, पीपलामूल, तेजपात, कालाजीरा, तालीस, नागकेशर, चव्य तथा अमलवेत यह सब दो २ तोले मिर्च, जीरा तथा सोंठ एक २ तोला, अनारदाना ४ तोला, दालचीनी तथा इलायची छः२ माशे इनसब औषधियों को एक साथ चूर्ण करके मट्ठा दही अथवा कांजी के साथ चार माशे चूर्णखाय इससे वात, कफके रोग, बाय, गोला, प्लीहा, उदर क्षय, बवासीर, ग्रहणी, कुष्ठ, मलका रुकना, भगन्दर, शूल, सूजन, श्वास, खांसी, आमदोष, हृदयकी पीड़ा, पथरी, शर्करा, पाण्डुरोग, कृमि तथा मंदाग्निका नाशहोताहै और यह दीपन तथा पाचनहै सब संसार के हितके लिये भगवान् सूर्य्य देवताने इसको बनायाहै इसके खानेसे सब प्रकारके अजीर्ण निस्सन्देह नष्ट होजाते हैं इति भास्कर लवण ॥ ७४ ॥

सैन्धवसमूलमगधाचव्यानलनागरंपथ्या । क्रमवृद्धमग्निवृद्धौवडवानलनामचूर्णं स्यात् ॥ इति वडवानलचूर्णम् ॥ ७५ ॥

सेंधानोन, पीपलामूल, पीपल, चव्य, चीता, सोंठ और हड़ इन सब औषधियों को क्रमसे एक एक भाग बढ़ाकर (सेंधानोन १ भाग पीपलामूल २ भाग इत्यादि) ले और चूर्णकर मात्राके अनुसार खाय इससे अग्नि बढ़ती है इति वडवानल चूर्ण ॥ ७५ ॥

पथ्यानागरकृष्णाकरञ्जबिल्वाग्निभिःसितातुल्यैः ॥ वडवानलइवजरयतिबहुगुर्वतिभोजनंचूर्णम् ॥ इति द्वितीयवडवानलचूर्णम् ॥ ७६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हड, सोंठ, पीपल, करंजुआ, बेल और चीता यह सब समभाग चूर्ण करके इनकी बराबर शक्करडा कर सेवन करने से बहुत भारी भोजन भी परिपाक होजाताहै इति द्वितीय वडवानल चूर्ण ॥ ७६

एलात्वक्नागपुष्पाणांमात्रोत्तरविवर्द्धिता । मरिचंपिप्पलीशुण्ठी चतुष्पञ्चोत्तरोत्त रा ॥ द्रव्याण्येतानियावन्तितावतीसितशर्करा । चूर्णमेतत्प्रयोक्तव्यमग्निसन्दीपनं म् ॥ इति समशर्करचूर्णम् ॥ ७७ ॥

इलायची १ भाग, दालचीनी २ भाग, नागकेशर ३ भाग, मिर्च ४ भाग, पीपल ५ भाग और सोंठ६ भाग इन सबकी बराबर सफेद शक्कर इन सब औषधियों के मिलेहुए चूर्ण के खानेसे अत्यन्त अग्नि की दीप्ति होतीहै इति समशर्कर चूर्ण ॥ ७७ ॥

अथाजीर्णरसाः ॥

द्विपलंगन्धकंशुद्धंपलमेकन्तुपारदम् । मृतलोहंतथाताम्रंकर्षद्वयमितंपृथक् ॥ सञ्चू र्ण्यसर्व्वंसम्मिश्रंद्रावयित्वाग्नियोगतः । सम्यग्द्रुतंसमस्तंतत्पञ्चांगुलदलेक्षिपेत् ॥ पु नःसंचूर्ण्यतत्सर्व्वंलौहपात्रेनिधापयेत् । जम्बीररस्यरसंतत्रपूतंपलशतंक्षिपेत् ॥ चुल्ल्यां निवेश्यतद्यत्नान्मृदुनावह्निनापचेत् । रसेतस्मिन्घनीभूते तत्संशोष्यविचूर्णयेत् ॥ पञ्च कोलकषायस्य चुक्रेणसहितस्यच । भावनातत्रदातव्या पश्चात्संशोषयेच्छनैः ॥ भृष्ट टङ्कनचूर्णेन तुल्येनसहमेलयेत् । मरिचेनापितुल्येन तदर्द्धेनविडेनच । भावयेत्सप्त कृत्वस्तु चणकाम्लजलेनच । ततःसंशोष्यसम्पिष्य कूपमध्येनिधापयेत् ॥ रसःक्रव्याद नामायं भैरवानन्दयोगिना ॥ उक्तःसिंहलराजाय बहुमांसाशिनेपुरा ॥ भक्षयेद्भोजनस्या न्ते माषद्वयमितंरसम् ॥ भक्षयित्वारसंपश्चात् पिबेत्तक्रंससैन्धवम् ॥ अत्यर्थगुरुयद्भु क्तमतिमात्रमथापिच । तत्सर्व्वंजीर्यतिक्षिप्रं रसस्यैतस्यभक्षणात् ॥ शूलंगुल्मञ्चविष्ट म्भंप्लीहानमुदरंतथा । रसःक्रव्यादनामाऽयंविनिहन्तिनसंशयः ॥ इति क्रव्यादरसाजीर्णे रसेन्द्रचिन्तामणौरसरत्नप्रदीपेच ॥ ७८ ॥

अजीर्णपररस ॥

शुद्धगन्धक २ पल, शुद्धपारा १ पल, लोहे तथा तांबेकी भस्म दो २ तोले इनसब औषधियोंको मिलाकर आगपर खूब गलावे और गलाकर रेंडीके पत्तेपर डाले फिर उसको चूर्ण करके लोहेकेपात्र में रक्खे और उसमें ४०० तोले जंभीरी नींबूका रस छोडकर चूल्हेपर चढाय मन्दाग्नि से पाक करे इसके उपरान्त रसके गाढे होजानेपर सुखाके चूर्ण करे फिर चूकसहित पंचकोलके काढे में भावना देकर सूख जानेपर उसके समान भुना सुहागा तथा मिर्च और आधाभाग विडनोन मिला कर चनोंके रसमें सातवार भावनादे फिर सुखायके और पीसके सीसी में रखछोडे यह क्रव्यादनाम रस पूर्व्वकालमें बहुत मांसके खानेवाले सिंहलद्वीप के राजाकेलिये भैरवानन्द योगी ने कहाथा भोजनके अन्तमें दोमाशे इस रसको खाकर सेंधेनोन समेत मट्ठा पिये इससे बहुत भारी तथा बहुत अधिक भी भोजन शीघ्र पचजाताहै और शूल, बायगोला, विष्टम्भ, प्लीहा तथा उदररोग सबनष्ट होतेहैं इति क्रव्यादरस ॥ ७८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्षारत्रयंसूतगन्धौपञ्चकोलमिदंसमम् । सर्व्वैस्तुल्याजयाभृष्टातदर्द्धाशिग्रुजाजटा ॥ ततसर्व्वंजयाशिग्रुवह्निमार्कवजैर्द्रवैः । भावयेत्त्रिदिनंघर्म्मेततोलघुपुटेपचेत् ॥ सप्तधा द्रवैर्घृष्टोरसोज्वालानलोभवेत् । निष्कोऽस्यमधुनालीढोऽनुपानंगुडनागरम् ॥ हन्त्य जीर्णमतीसारंग्रहणीमग्निमार्दवम् । श्लेष्महृल्लासवमनमालस्यमरुचिंजयेत् ॥ (अथ पञ्चकोलम्) पिप्पलीपिप्पलीमूलंचव्यचित्रकनागरैः । जयात्रविजयामार्कवोभृंगराजः ॥ इति ज्वालानलोरसः । अजीर्णेरसरत्नप्रदीपे ॥ ७९ ॥

जवाखार, सज्जी, सुहागा, पारा, गन्धक, पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता और सोंठ यह सब समभाग और सबकी बराबर भुनी हुई भंग और भंगकी आधी सहिंजने की जड इन सब को मिला कर भंग, सहिंजना, चीता तथा भांगरा के रसकी घाममें तीन दिन भावनादेवे फिर हलके पुटमें पाक करके अदरखके रसमें घोटले चारमाशे इस रसको सहतके साथ चाटे और सोंठ तथा गुडका अनुपान करे इसके द्वारा अजीर्ण, अतीसार, ग्रहणी, मन्दाग्नि, कफ, मतली, छर्दि, आलस्य तथा अरुचिका नाश होताहै इति ज्वालानलरस ॥ ७९ ॥

टङ्कणंरसगन्धौचसमभागंत्रयंविषात् । कपर्दःस्वर्ज्जिकाक्षारोमागधीविश्वभेषजम् ॥ पृथक्पृथक्कर्षमात्रंवसुभागमिहोषणम् । जम्बीराम्लैर्दिनंघृष्टंभवेदग्निकुमारकः ॥ विसूचीशूलवातादिवह्निमान्द्यप्रशान्तये । क्षारोजवक्षारः । अग्निकुमारोविसूच्यामजीर्णेरसरत्नप्रदीपे । रसेन्द्रचिन्तामणौ ॥ ८० ॥

सुहागा, पारा तथा गन्धक एक २ भाग, विष ३ भाग, कौडी की भस्म, सज्जी, जवाखार, पीपल तथा सोंठ एक २ भाग और मिर्च ८ भाग इनसब औषधियोंको जंभीरी नींबूके रसमें एक दिन घोटे फिर मात्रा के अनुसार सेवन करने से विसूचिका शूल और वातादि की मन्दाग्नि नष्ट होती है इति अग्निकुमाररस ॥ ८० ॥

पारदामृतलवंगगन्धकंभागयुग्ममरिचेनमिश्रितम् । तत्रजातिफलमर्द्धभागिकंतिन्तिडीफलरसेनमर्द्दितम् ॥ वह्निमांद्यदशवक्त्रनाशनोरामबाणइतिविश्रुतोरसः । संग्रहग्रहणिकुम्भकर्णकमामवातखरदूषणंजयेत् ॥ दीयतेतुमरिचानुपानतः सद्यएवजठराग्निदीपनः । रोचनःकफकुलान्तकारकःश्वासकासवमिजन्तुनाशनः ॥ पाराभाग १ । विषभाग १ । लवंगभाग १ । गन्धकभाग १ । मरिचभाग २ । जायफरभागआधा । इति रामबाणरसः । रसेन्द्रचिन्तामणौ ॥ ८१ ॥

पारा, विष, लौंग तथा गन्धक एक एक भाग, मिर्च दो भाग, जायफल आधा भाग इनसब औषधियों को इमली के रसमें पीसकर सेवनकरे यह रामबाणनामरस मंदाग्निरूपी रावण संग्रहणीरूपी कुंभकर्ण और आमवातरूपी खरदूषणको नाश करताहै मिर्च के अनुपानके साथ इसका सेवन करने से जठराग्नि दीप्तहोती है रुचि होती है और कफ श्वास खांसी छर्दि तथा कृमियों का नाश होता है इति रामबाणरस ॥ ८१ ॥ अथ शङ्खवटी ॥

पलञ्चिञ्चाक्षारंपरिमितमिदंपञ्चलवणं द्वयंसम्यक्पिष्टंभवतिलघुनिम्बूफलरसैः ॥ त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तःपिष्टतस्मि पलपरिमितंशङ्खशकलम् क्षिपेद्वारान्सप्तद्रवमिहचतेनैवविधिना ॥ लप्रमाणंकटु त्रयञ्चपलार्द्धमानंवचाहिंगुभागः । विषंपलंद्वादशभागयुक्तंतावद्रसोगन्कएषचोक्तः ॥ वदरास्थिप्रमाणेनवटीमेतस्यकारयेत् । भक्षयेत्सैवयासाम्यात्सर्व्वाजीर्णप्रशान्तये ॥ सर्व्वोदरेषुशूलेषुविसूच्यांविविधेषुच । अग्निमान्द्येषुगुल्मेषुसदाशङ्खटीहिता । इति शङ्खवटीरसः । रसरत्नप्रदीपे ॥ ८२ ॥

इमलीकाखार १ पल और पांचौनोन एक २ पल इनको कागदी नींबूके रसमें खूब पीसे फिर १ पल शंखको सातबार तक्रादिक सात द्रवों में पहले कहीहुई विधिसे डालकर शुद्धकरके मिलावे इसके उपरान्त त्रिकटु १ पल वच तथा हींग आधेपल विष पारा तथा गन्धक आधेपल इनसब औषधियोंको एकसाथ पीसकर बेरकी गुठली के समान गोली बनावे फिर इसको संपूर्ण अजीर्णोंकी शान्तिके लिये खाय इसके द्वारा संपूर्ण उदर शूल विसूचिका अनेक प्रकारकी मन्दाग्नि और बायगोलेका नाश होताहै इति शंखवटी ॥ ८२ ॥

स्नुह्यर्कचिञ्चापामार्ग्गरम्भातिलपलाशजान् । लवणानाददीतैषांप्रत्येकंकर्षमात्रया ॥ लवणानिपृथक्पञ्चग्राह्याणिपलमात्रया । स्वर्ज्जिकाचयवक्षारष्टङ्कणंत्रितयंपलम् ॥ सर्व्वं त्रयोदशपलंसूक्ष्मंचूर्णंविधायच । निम्बूफलरसेप्रस्थंसम्मितेतत्परिक्षिपेत् । तत्रशङ्खस्यशकलंपलंवह्नौप्रताप्यतु । दाराञ्निर्व्वापयेत्सप्तसर्व्वंद्रवतितद्यथा । नागरंत्रिपलंग्राह्यंमरिचन्तुपलद्वयम् । पिप्पलीपलमानास्यात्पलार्द्धंभृष्टहिंगुनः ॥ ग्रन्थिकंचित्रकञ्चापि जवानीजीरकंतथा । जातीफलंलवंगञ्चपृथक्कर्षद्वयोन्मितम् ॥ रसोगन्धोविषञ्चापिटङ्कण ञ्चमनःशिला ॥ एतानिकर्षमात्राणिसर्व्वंसञ्चूर्ण्यमिश्रयेत् ॥ शरावार्द्धेनचुक्रेणवटिकांतस्य कारयेत् । माषप्रमाणासद्वैद्यैर्बृहच्छङ्खवटीस्मृता ॥ सर्व्वाजीर्णप्रशमनीसर्व्वशूलनिवारिणी । विसूच्यलसकादीनासद्योभवतिनाशिनी । इति बृहच्छङ्खवटीअजीर्णे ॥ ८३ ॥

थूहर, आक, इमली, लटजीरा, केला, तिल तथा ढाक इनसबके क्षार एक २ तोले सेंधानोन १ तो० पांचोंनोन एक २ पल सज्जी जवाखार तथा सुहागा दो २ पल इनसब १३ पल औषधियोंको महीन चूर्ण करके एकप्रस्थ नींबूके रसमें छोडे फिर एकपल शंखको सातबार अग्निमें तपा २ कर उसमें बुझावे जिससे कि शंख गल जाय और सोंठ ३ पल, मिर्च २ पल, पीपल १ पल, भुनीहींग आधापल, पीपलामूल, चीता, अजवाइन, जीरा, जायफल तथा लौंग दो २ तोले, पारा, गन्धक, विष, सुहागा तथा मैनसिल एक २ तो० इनसब औषधियों को महीन पीसकर उसमें मिलावे फिर १६ तोले चूक मिलाकर माशे २ भरकी गोली बनावे इसके सेवनसे संपूर्ण अजीर्ण और शूल तथा विसूचिका और अलसक आदि रोगोंका नाश होताहै इति बृहच्छंखवटी ॥ ८३ ॥

टङ्कणकणामृतानांसहिंगुलानांसमंभागम् । मरिचस्यभागयुगलंनिम्बनीरैर्वटीका र्य्या ॥ वटिकांकलायसदृशीमेकांद्वेवासमश्नीयात् । सत्यमजीर्णेशान्त्यैवह्नेर्व्वृद्ध्यैकफध्वस्त्यै ॥ इति अजीर्णकण्टकोरसः ॥ ८४ ॥

सुहागा, पीपल, विष, तथा सिंगरफ एक २ भाग और मिर्च २ भाग इन सब औषधियोंको नींबके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समें पीसकर भटरके समान गोली बनावे फिर एक अथवा दोगोली खानेसे अ र्णु तथा कफका ाश होताहै और अग्नि दीप्त होतीहै इति अजीर्णकंटकरस ॥ ८४ ॥

जलपीतमपामार्गंशूलंहन्याद्विसूचिकाम् । सतैलंकारवेल्यम्बुनाशयेद्विविसूचिकाम् ॥ बालमूलस्यतुक्काथःपिप्पलीचूर्णसंयुतः । विसूचीनाशनःश्रेष्ठोजठराग्निविवर्द्धनः ८५ ॥

लटजीरेके काढ़ेको पीनेसे शूल तथा विसूचिकाका नाशहोताहै करेलेके रसमें तेल डालकर पीनेसे विसूचिकाका नाश होताहै कच्ची मूलीके काढ़ेमें पीपलका चूर्ण छोड़कर पीनेसे विसूचिकाका नाश और अग्निकी वृद्धि होतीहै ॥ ८५ ॥

बिल्वनागरनिःक्काथोहन्याच्छर्दिविसूचिकाम् । बिल्वनागरकैटर्य्यक्काथस्तदधिकोगुणैः ॥ कैटर्य्यःकट्फलः ॥ ८६ ॥

बेल और सोंठके काढ़ेसे छर्दि तथा विसूचिकाका नाश होताहै और बेल सोंठ तथा कायफलका काढ़ा इससेभी अधिक गुणकारीहै ॥ ८६ ॥

व्योषंकरंजस्यफलंहरिद्रेरसंसमावाप्यचमातुलुंग्याः । छायाविशुष्कावटिकाकृतासा हन्याद्विसूचींनयनाञ्जनेन ॥ अनुभूतमिदम् । अपामार्गस्यपत्राणिमरिचानिसमानि च । अश्वस्यलालयापिष्ठाञ्जनाद्धन्तिविसूचिकाम् ॥ ८७ ॥

त्रिकटु,करंजुआ,हल्दी,दारुहल्दी और नींबूकारस इन सम्पूर्ण औषधियोंको मिलाकर छायामेंसुखाकर गोली बांधे इस गोलीको घिसकर अंजन लगानेसे विसूचिकाका नाश होताहै यह अनुभव किया हुआहै लटजीरे की पत्ती और मिर्च समभाग लेकर घोड़ेकी लार में पीसकर अंजन लगानेसे विसूचिका का नाश होताहै ॥ ८७ ॥

विसूच्यामतिवृद्धायांतक्रंदधिसमंजलम् । नारिकेराम्बुपेयंवाप्राणत्राणाययोजयेत् ॥ त्वक्पत्रकैरण्डुकशिग्रुकुष्ठैरम्लप्रदिष्टैःसवचाशताह्वैः । उद्वर्त्तनंखल्लिविसूचिकाघ्नंतैलंविपक्वञ्चतदर्थकारि ॥ कुष्ठसैन्धवयोःकल्कंचुक्रंतैलेतुसाधितम् । विसूच्यांमर्दनंतेनखल्लीशूलनिवारणम् । पिपासायांतथोत्क्लेशेलवङ्गस्याम्बुशस्यते । जातीफलस्यवापीतंश्रृतंभद्रघनस्यवा ॥ ८८ ॥

विसूचिकाके बहुत बढ़जानेपर प्राणोंकी रक्षाके लिये मट्ठा समभाग जल मिलाहुआ दही अथवा नारियलका जल पीना चाहिये दालचीनी तेजपात रासना अगर सहिंजन कूट वच और सौंफ इन सबको कांजीमें पीसकर उबटन लगाने से बांयटे तथा विसूचिका का नाश होता है और इन्हीं औषधियों के द्वारा तेलको पकाकर मर्दन करनेंसे बांयटे तथा विसूचिकाका नाश होताहै कूट तथा सेंधेनोनका कल्क और चूक इनको डाल तेलको पकाकर मर्दन करने से विसूचिकावाले के बाँयटे तथा शूल का नाश होताहै विसूचिका में तृषा तथा उत्क्लेश के होनेपर लौंग जायफल अथवा नागरमोथे का क्काथ पिलाना चाहिये ॥ ८८ ॥ अथ उत्क्लेशस्यलक्षणम् ॥

उत्क्लिश्यानंचनिर्गच्छेत्प्रसेकष्ठीवनेरितम् । हृदयंपीड्यतेचास्यतमुत्क्लेशंविनिर्दिशेदिति ॥ ८९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उत्क्लेशका लक्षण ॥

उबकाई आवे परन्तु अन्न न गिरे और प्रसेक (मुखसे पानी छूटना) थुकथुकी तथा हृदय पीड़ाहोय उसको उत्क्लेश कहतेहैं ॥ ८९ ॥

सरुग्वानद्धमुदरमम्लैःपिष्टैःप्रलेपयेत् । दारुहैमवतीकुष्ठंशताह्वाहिंगुसैन्धवैः ॥ हैमवतीश्वेतवचा । इति दारुषट्कम् ॥ ९० ॥

पीड़ासहित उदरके फूलने पर देवदारु, श्वेत वच, कूट, सौंफ, हींग और सैंधानोन इन सबको कांजी में पीसकर लेपकरे इति दारुषट्क ॥ ९० ॥

तक्रेणयुक्तंयवचूर्णमुष्णंसक्षारमार्त्तिंजठरेनिहन्यात् । स्वेदोघटैर्वाबहुबाष्पपूर्णैरुष्णैस्तथान्यैरपिपिण्डतापैः ॥ विलम्बिकालसकयोरयमेवक्रियाक्रमः। अतएवतयोरुक्तंपृथङ्नहिचिकित्सितम् ॥ ९१ ॥

जौंके चूर्ण और जवाखारको मट्ठे में मिलाकर गरमगरम पेटमें लेप करनेसे पीड़ाका नाश होता है भाफसे भरेहुए घड़ोंके द्वारा स्वेद लेनेसे अथवा अन्य उष्ण गोलेआदि के सेकनेसे पीड़ा का नाश होताहै विलम्बिका और अलसक कीभी चिकित्सा इसी क्रमसे होतीहै इसी हेतुसे उनकी चिकित्सा पृथक् नहीं लिखीगई ॥ ९१ ॥

तंभस्मकंगुरुस्निग्धसान्द्रमन्दहिमस्थिरैः । अन्नपानैर्नयेच्छान्तिंपित्तघ्नैश्चविरेचनैः ॥ अत्युद्धताग्निशान्त्यैमाहिषदधिदुग्धसर्पींषि । संसेवेतयवागूंसमधूच्छिष्टांससर्पिष्काम् ॥ असकृत्पित्तहरणंपायसंप्रतिभोजनम् । श्यामात्रिवृद्विपक्वञ्चपयोदद्याद्विरेचनम् ॥ यत्किञ्चिन्मधुरंमेध्यं श्लेष्मलंगुरुभोजनम् । सर्व्वंतदत्यग्निहितंभुक्त्वाप्रस्वपनंदिवा ॥ सितन्तण्डुलसितकमलंछागक्षीरेणपायसंसिद्धम् । भुक्त्वाथतेनपुरुषोदशादिवसाद्बुभुक्षितोभवेत् ॥ ९२ ॥

भारी स्निग्ध कठोर मन्द शीतल तथा स्थिरगुणयुक्त अन्नपान के द्वारा और पित्तनाशक वस्तु तथा विरेचनके द्वारा भस्मक को शान्त करे बहुत बढ़ी हुई अग्नि को शान्त करने के लिये भैंसका दूध दही तथा घी सेवन करे और चावलोंका चूर्ण शहद मिलाकर घीमें पाक कीगई यवागू का सेवन करे सदैव पित्तनाशक खीरका भोजन करे प्रियंगु और निसोत के द्वारा पाककियेहुए दूधसे विरेचनकरवावे मधुर मेधा को हित कफकारी और भारी भोजन तीक्ष्णाग्निवालोंको हितहै और भोजन के उपरान्त दिनमें सोना भी हितहै श्वेत चावल और श्वेत कमल के साथ बकरीके दूधकी खीर करके खानेसे दशदिन में भूख नहीं लगती है ॥ ९२ ॥

अथ विशिष्टद्रव्याजीर्णेविशिष्टंपाचनद्रव्यमाह ॥

अलंपनसपाकायफलंकंदलसम्भवम् । कंदलस्यतुपाकायबुधैरपिघृतंहितम् ॥ घृतस्यपरिपाकायजम्बीरस्यरसोहितः । नारिकेरफलतालबीजयोः पाचकंमपदितण्डुलंविदुः । क्षीरमेवसहकारपाचनंचारमज्जानिहरीतकीहिता ॥ मधूकमालूरनृपादनानांपरूषखर्ज्जूरकपित्थकानाम् । पाकायपेयंपिचुमन्दबीजंघृतेऽपितक्रेऽपितदेवपथ्यम् ॥ खर्ज्जूरशृं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

टकयोःप्रशस्तंविश्वौषधंकुत्रचभद्रमुस्तम् । यज्ञांगबोधिद्रुफलेषुशस्तं ...तथावार्य्यु संप्रपीतम् ॥ तण्डुलेषुपयसःपयोहितंदीप्यकन्तुचिपिटेकणायुतम् । ष...कादधिजले जीर्यतेकर्कटीचसुमनेषुजीर्यति ॥ सुमनेषुगोधूमेषुजीर्यति ॥ गोधूममाषहरिमन्थसती मुद्गपाकोभवेज्झटितिमातुलपुत्रकेण। मातुलपुत्रकंधत्तूरफलम्। कंगूश्यामा। खण्डंच ...ण्डयतिमाषभवन्त्वजीर्णं तैलंकुलत्थमथवाविदधातिजीर्णम् । खर्ज्जूरिकाविषकशे ...शितासुशस्तंशृंगाटकेमधुफलेष्वपिभद्रमुस्तम् ॥ कंगुश्यामाकनीवाराकुलत्थाश्चावि ...म्बितम्। दध्नोजलेनजीर्यन्तिवैदलःकाञ्जिकेनतु । पिष्टान्नंशीतलंवारिकृशरासैन्ध वंपचेत्। माषेण्डरीनिम्बुफलंपायसंमुद्गयूषकः ॥ बटोवेंसवाराज्ञवंगेनफेनीसमंपर्प्पटः शिग्रुबीजेनयाति । कणामूलतोलड्डुकापूपसट्टादिपाकोभवेच्छष्कुलीमण्डयोश्च । वेस वारोवगसइतिलोके। तद्यथा। स्नेहोनिशाहिंगुलवङ्गकैलाधान्यार्कजीरार्द्रकनागराणि॥ अम्लोषणंसैन्धवचूर्णमन्येयथोचितंसंस्कृतयेप्रणीतम्। इतिसट्टासट्टकपानविशेषः । म ण्डमाण्डेतिलोके॥ ९३ ॥ द्रव्यविशेषके अजीर्ण में पाचन द्रव्यविशेष ॥

कटहलके परिपाकके लिये केला केलेके परिपाक के लिये घी घीके परिपाकके लिये जँभीरी नींबू का रस नारियल तथा ताडके बीजके परिपाकके लिये चावल आमके परिपाकके लिये दूध और चिरौंजीके परिपाकके लिये हड हितकारीहै महुआ,बेल, चिरौंजी,फालसा, खजूर,घी और मट्ठा इनके अजीर्ण में निंबौलीका पेय बनाकर पीना चाहिये खजूर और सिंघाडे के अजीर्ण में सोंठ और नागरमोथेका सेवन करना चाहिये गूलर पीपल और पकरियाके फलों के अजीर्णमें सोंठ अथवा नागरमोथेका बासी काढा पीना चाहिये चावलोंके अजीर्णमें दूध दूधके अजीर्णमें अजवाइन और चिडवोंके अजीर्णमें पीपल और अजवाइनका सेवन करना चाहिये सांठी के चावलोंके अजीर्ण में दहीका तोड पीना चाहिये और ककडी का अजीर्ण गेहूंसे मिटजाताहै गेहूं उर्द चना मटर और मूंग इनके अजीर्णमें धतूरे के फल सेवन करने चाहिये और उर्द के अजीर्ण को खांड नष्ट करतीहै तथा काकुन सामा खजूर कमलकी डंडी कसेरू शक्कर सिंघाडा और महुआ इनके अजीर्ण में नागरमोथेका सेवन करे काकुन सामा तिन्नी और कुलथी इनके अजीर्ण में दहीका तोड हितहै दालवाली चीज़ें कांजी से पचतीहैं पीठीकी चीज़ें शीतल जल से और खिचडी सेंधानोन से पचतीहै नींबूसे इमरती और मूंगके यूषसे खार पचती है नोनसे वेसवार (तैलादिक स्नेह हल्दी हींग लौंग इलायची धनियां जीरा अदरक सोंठ खटाई मिर्च और सेंधानोन यह सब वस्तु यथोचित अन्नके सुधारने के लिये छोडनी चाहिये इसको वेसवार कहते है)पचताहै लौंगसे फेनी पचतीहै पापड सहिंजनके बीजसे पचताहैलड्डूमालपुआ और सट्टक (पन्नाविशेष) आदि पीपलामूलसे पचतेहैं पूरी माडसे पचती हैं ॥ ९३ ॥

किमत्रचित्रंबहुमत्स्यमांसभोजीसुखीकाञ्जिकपानतःस्यात् । इत्यद्भुतंकेवलवह्निपक्वो मांसेनमत्स्यःपरिपाकमेति ॥ आममाम्रफलंमत्स्यतद्बीजंपिशितेहितम् । कूर्म्ममांसंयव क्षारःशीघ्रंपाकमुपैतिहि ॥ कपोतपारावतनीलकण्ठकपिञ्जलानांपिशितानिभुक्त्वा। का शस्यमूलंपरिपिष्यपीतंसुखीभवेन्नाबहुशोहिदृष्टम् ॥ कपोतोधवलःपाण्डुः ॥ मांसानिस र्वाण्यपियान्तिपाकक्षारेणसद्यस्तिलनालजेन ॥ ९४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मछली ६९ मांस को बहुतसा खाकर कांजी पीनेसे पचजाताहै यह कुछ आश्चर्य नहींहै पर केवल अग्नि मेंपकाई हुई मछली मांसके साथ खाने से पचजाती है यह आश्चर्य्य है कूच्चे आर मछली और आमकी बिजलीसे मांस पचताहै कछुएकामांस जवाखारसे बहुत जल्द पचताहै श्वे तथा पांडुरंगका कबूतर नीलकंठ और सफ़ेद तीतर इनके मांसको खाकर कांसकी जड़को पीस पीनेसे परिपाक होता है यह बहुत बार देखागयाहै तिलकी डंडीके क्षारसे संपूर्ण मांस पचतेहैं॥९४

चञ्चूकसिद्धार्थकवास्तुकानांगायत्रिमारक्तथितेनपाकः ॥ चञ्चूकचेचूइतिलोके। यत्रीखदिरः। पालङ्किकाकेवुककारवेल्लीवार्त्ताकुवंशांकुरमूलकानाम् । उपोतिकालाबुप टोलकानां सिद्धार्थकोमेघरवश्चपक्ता ॥ मेघरवःचौराइतिलोके। विपच्यतेशूरणकंगुडेन तथालुकंतण्डुलधावनेन । पिण्डालुकंजीर्य्यतिकोरदूषात्कशेरुपाकःकिलनागरेण ॥ लवणस्तण्डुलतोयात्सर्पिर्जम्बीरकाद्यम्लात् । मरिचादपितच्छीघ्रंपाकंयात्येवकाञ्जि कात्तैलम् ॥ ९५ ॥

चेंचू,सरसों और बथुयेकाशाक खैरसारसे पचताहै पालक, केऊ, करेला, बैंगन, बांसके अंकुर, मूली, पोय, लौकी और परवल यह सब श्वेत सरसों और चौराई से पचते हैं जमींकंद गुड़ से और आलू चावल के धोवन से पचता है गोल आलू कोदोंसे और कसेरू सोंठसे पचताहै नोन चावलके पानीसे घी जंभीरी नींबू आदिकी खटाईसे अथवा मिर्चसे और तेल कांजी से पचताहै ॥ ९५ ॥

क्षीरंजीर्य्यतितक्रेणतद्व्यंकोष्णमण्डकात् । माहिषंमाणिमन्थेनशङ्खचूर्णेनतद्दधि॥ मण्डकःमाडइतिलोके। रसालंजीर्य्यतिव्योषात्खण्डंनागरभक्षणात् । सितानागरमुस्ते नतथेक्षुश्चार्द्रिकारसात् । जरामिरागैरिकचन्दनाभ्यामभ्येतिशीघ्रंमुनिभिःप्रदिष्टम् ॥ उष्णेनशीतंशिशिरेणचोष्णं जीर्णोभवेत्क्षारगणस्तथाम्लैः ॥ इरामदिरा । तप्तंतप्तंहेम वातारमग्नौतोयेक्षिप्तंसप्तकृत्वस्तदम्भः । पीत्वाजीर्णंतोयजातंनिहन्यात्तत्रक्षौद्रंभद्रमु स्तंविशेषात् ॥ तत्रतोयाजीर्णे। इति जठराग्निविकारः॥ ९६ ॥

दूध मट्ठेसे गौका दूध कुछ गरम मांडसे भैंसका दूध सेंधोनोन से और भैंसका दही शंखके चूर्ण से पचताहै पौंडा त्रिकटु से खांड सोंठसे चीनी नागरमोथे से और ईख अदरक के रस से पचती है पुरानी मद्य गेरू तथा चन्दन से शीतल वस्तु उष्ण वस्तुसे उष्ण वस्तु शीतल वस्तु से और संपूर्ण क्षार खटाई से पचतेहैं जलपीने से अजीर्ण होने में सोने अथवा चांदीको आगमें तपा तपाकर सात बार पानीमें बुझावे और उस पानीको पिये उससे अजीर्ण दूर होता है नागरमोथा और सहत के द्वारा पानी का अजीर्ण नष्ट होताहै इति जठराग्निविकार ॥ ९६ ॥

अथ क्रिम्यधिकारः। अथ क्रिमीनांभेदानाह ॥

क्रिमयस्तुद्विधाप्रोक्ताबाह्याभ्यन्तरभेदतः। तेषांनिदानान्याह। बहिर्मलकफासृग्विड् जन्मभेदाच्चतुर्विधाः॥ नामतोविंशतिविधाबाह्यास्तत्रमलोद्भवाः ॥ तत्रतेषुबाह्याःक्रिम यःमलोद्भवाः। त्वक्लग्नवहिर्मलस्वेदसम्भवाः। तेषांरूपाण्याह। तिलप्रमाणसंस्थान वर्णाःकेशाम्बराश्रयाः। तिलानामिवपरिमाणानिवर्णायेषांते ॥ बहुपादाश्चसूक्ष्माश्चयू

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...लिख्याश्चनामतः । द्विधातत्रयूकाबहुपादाकृष्णाकेशाश्रया । लिख्या...सूक्ष्माःश्वेताव स्त्राश्रयाः । ततुकर्त्तव्यविकारमाह । द्विधातेकोठपिटिकाकण्डूगण्डान्प्रकुर्व्वते ॥ ९७॥

क्रिमिरोगाधिकार क्रिमियोंके भेद ॥

बाह्य और आभ्यन्तर प्रकार से क्रिमि दो प्रकार केहैं स्वेद कफ रक्त और मलसे वह उत्पन्न होते हैं इसलिये कारणभेदसे चार प्रकार के होते हैं और नामभेद से बीस प्रकार के होतेहैं उनमेंसे मल अर्थात् स्वेद से उत्पन्न हुए क्रिमि बाह्य कहलातेहैं यह तिलके समान आकृति तथा वर्णवाले होतेहैं और बाल तथा वस्त्रों में रहते हैं इनमें से बहुत पैरवाले काले यूक (जुआं) नाम क्रिमि बालों में रहते हैं और सूक्ष्म श्वेत वर्ण वाले लिख्य (लीख) नामवाले क्रिमि वस्त्रों में रहतेहैं यह दोनों प्रकारके क्रिमि चकत्ते फुंसी खुजली और फोडोंको उत्पन्न करतेहैं ॥ ९७ ॥

आभ्यन्तरक्रिमीणांविप्रकृष्टंनिदानमाह ॥

अजीर्णभोजीमधुराम्लसेवीद्रवप्रियःपिष्टगुडोपभोक्ता । व्यायामवर्ज्जीचदिवाशयी चविरुद्धभोजीलभतेक्रिमींश्च ॥ ९८ ॥

आभ्यन्तर क्रिमियों के दूरवाले कारण ॥

अजीर्णकारी वस्तु मधुर खट्टी तथा बहुत पतली वस्तु पीठी और गुडके खाने से विरुद्ध भोजनसे व्यायाम न करनेसे और दिनमें सोनेसे क्रिमि उत्पन्न होतेहैं ॥ ९८ ॥

उत्पन्नक्रिमिलक्षणमाह ॥

ज्वरोविवर्णताशूलंहृद्रोगःसदनंभ्रमः । भक्तद्वेषोऽतिसारश्चसञ्जातक्रिमिलक्षणम् ॥९९॥

उत्पन्नहुए क्रिमियोंके लक्षण ॥

आभ्यन्तर क्रिमियोंके उत्पन्न होनेपर ज्वर,विवर्णता,शूल,हृदय के रोग,शिथिलता,भ्रम,भोजनमें अरुचि और अतीसार यह लक्षण होतेहैं ॥ ९९ ॥

अथ कफजक्रिमीणांविप्रकृष्टंनिदानमाह ॥

मांसमाषगुडक्षीरदधिशुक्तैःकफोद्भवाः शुक्तंकालान्तरेणाम्लीभूतइक्षुरसविकारः ॥१००॥

कफके क्रिमियोंके दूरवाले कारण ॥

मांस,उर्द,गुड,दूध,दही और सिरके के खाने से कफके क्रिमि उत्पन्न होतेहैं ॥ १०० ॥

कफजक्रिमीणांसम्प्राप्तिपूर्व्वकंलक्षणमाह ॥

कफादामाशयेजातावृद्धाःसर्पन्तिसर्वतः । पृथुब्रध्ननिभाःकेचित्केचिद्गण्डूपदोपमाः ॥ रूढधान्यांकुराकारास्तनुदीर्घास्तथाणवः । श्वेतास्ताम्रावभासाश्चनामतःसप्तधातुते ॥ अन्त्रादाउदरावेष्टाहृदयादामहागुहाः । चुरवोदर्भकुसुमाःसुगन्धास्तेचकुर्व्वते ॥ हृल्लास मास्यश्रवणमविपाकमरोचकम् । मूर्च्छाच्छर्दिज्वरानाहकासक्षवथुपीनसान् ॥वन्धश्चर्म्म लतारूढोऽकुरितः । तनवःपरिणाहेनतथादीर्घास्तनुदीर्घाश्चुरवश्चुरमानः । ततुकर्त्तव्य विकाराहृल्लासादयः ॥ १०१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कफके क्रिमियों के संप्राप्तिपूर्व्वक लक्षण ॥

कफसे आमाशयमें उत्पन्न हुए क्रिमि बढ़कर सब ओरको फैलतेहैं उनमें से कुछ स्थूल कुछ तस्मे के समान कुंछ केंचुए के समान कुछ उगे हुए नाजके अंकुरके समान और कुछ लंबे तथा कुछ पतले होतेहैं इनका वर्ण श्वेत अथवा तांबेकासा होताहै यह नामसे सात प्रकारके होतेहैं जैसे अन्त्राद उदरावेष्टक हृदयाद महागुद चुरु दर्भकुसुम और सुगन्ध इनके द्वारा मतली मुख से पानी छूटना भोजनका न पचना अरुचि मूर्च्छा छर्दि ज्वर अफरा कृशता छींक और पीनस यहसब रोगहोतेहैं १०१॥

शोणितजक्रिमीणांविप्रकृष्टंनिदानमाह ॥

विरुद्धाजीर्णशाकाद्यैःशोणितोत्थाभवन्तिहि ॥ १०२॥

रुधिरके क्रिमियोंके दूरवाले कारण॥

विपरीत भोजन और अजीर्णकारी वस्तु तथा शाकादिक के खाने से रक्तज क्रिमि उत्पन्न होतेहैं१०२॥

अथ रक्तजक्रिमीणांसम्प्राप्तिपूर्वकलक्षणम् ॥

रक्तवाहिशिरास्थानारक्तजाजन्तवोऽणवः। अपादावृत्तताम्राश्चसौक्ष्म्यात्केचिददर्शनाः॥ केशादालोमविध्वंसारोमद्वीपाउदुम्बराः । षट्तेकुष्ठैककर्म्माणःसहसौरसमातरः॥ सौरसमातृभ्यांसहवर्त्ततइतिसहसौरसमातरः ।ः १०३ ॥

रक्तज क्रिमियों के संप्राप्तिपूर्व्वक लक्षण॥

रुधिर के लेजानेवाली नाड़ियों में रक्तज क्रिमि उत्पन्न होतेहैं यह क्रिमि पैर रहित सूक्ष्म गोल और तांबेकेसे रंग वाले होतेहैं इनमेंसे कुछ सूक्ष्मता के कारण दिखाई नहींदेते यह नामभेद से छः प्रकारकेहैं जैसे केशाद रोमविध्वंस रोमद्वीप उदुम्बर सौरस और मातृ इन सबके द्वारा कुष्ठरोग उत्पन्न होताहै ॥१०३॥

पुरीषजानाहपुरीषजाक्रिमीणांविप्रकृष्टन्निदानमाह ॥

पक्वाशयेपुरीषोत्थाजायन्तेऽधोविसर्पिणः।वृद्धास्तेस्युर्भवेयुश्चतेयदामाशयोन्मुखाः॥ तदास्योद्गारनिःश्वासविड्गन्धानविधायिनः। पृथुवृत्ततनुस्थूलाश्श्यावपीतसितासिताः॥ तेपञ्चनाम्नाक्रिमयःककेरुकमकेरुकाः । सौसुरादामलूनाख्यालेलिहाजनयन्तिच ॥ विड्भेदशूलविष्टम्भकार्श्यपारुष्यपाण्डुताः। रोमहर्षाग्निसदनगुदकण्डुर्विमार्गगाः॥ वृद्धास्तेऽधोविसर्पिणःस्युःयदातेआमाशयोन्मुखाभवेयुरित्यन्वयः। तेविमार्ग्गगाःसन्तो विड्भेदादीञ्जनयन्तिइत्यर्थः॥ १०४॥

मलके क्रिमियों के दूरवाले कारण ॥

उर्द पीठी खटाई नोन गुड तथा शाकके खानेसे मलके क्रिमि उत्पन्न होतेहैं मलके क्रिमि पक्वाशय में उत्पन्न होकर नीचेकी ओर जाते हैं यह बढ़कर जब आमाशय की ओर जातेहैं तब रोगी को डकार श्वास तथा मलमें दुर्गन्ध उत्पन्न होतीहै इनमें से कुछ स्थूल तथा गोल कुछ सूक्ष्म तथा स्थूल और धुमैले पीले श्वेत तथा काले वर्ण के होतेहैं यह नामसे पांच प्रकारके होतेहैं जैसे ककेरुक मकेरुक सौसुराद मलून और लेलिहा यह विपथगामी होकर मल भेद शूल विष्टंभ कृशता कठोरता पांडुवर्ण रोमांच मन्दाग्नि और गुदामें खुजली इन रोगों को उत्पन्न करतेहैं ॥ १०४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ क्रिमीणांचिकित्सा ॥

विडंगव्योषसंयुक्तमन्नमण्डंपिबेन्नरः । दीपनंक्रिमिनाशायजठराग्निविवृद्धये॥ प्रत्यहं कटुकंतिक्तंभोजनंकफनाशनम् । क्रिमीणांनाशनंरुच्यमग्निसन्दीपनंपरम् ॥ विडंगशृत नीयंविडंगेनावधूलितम् । पीतंक्रिमिहरंदष्टंक्रिमिजांश्चगदाञ्जयेत् ॥ लिह्याद्विडंगचूर्णामधुनाक्रिमिनाशनम् । पलाशबीजस्यरसंपिबेन्माक्षिकसंयुतम् ॥ पिबेत्तद्बीजकल्कं मधुनाक्रिमिनाशनम् । कम्पिल्लचूर्णकर्षार्द्धंगुडेनसहभक्षितम् ॥ पातयेत्तुक्रिमीन्सर्वानुदरस्थान्नसंशयः ॥ विडंगंकौटजंबीजंतथाबीजंपलाशजम् ॥ सञ्चूर्ण्यंखादेत्खण्डेन क्रिमीन्नाशयितुन्नरः । निम्बपत्रसमुद्भूतं रसंक्षौद्रयुतंपिबेत् ॥ धत्तूरपत्रजंवापिक्रिमिनाशनमुत्तमम् ॥ १०५ ॥

क्रिमियों की चिकित्सा ॥

बायविडंग और त्रिकटु समेत मांड के पीने से क्रिमि नष्ट होते हैं और अग्नि बढ़ती है प्रतिदिन कटु तथा तिक्त भोजन करने से कफ तथा क्रिमियों का नाश होताहै और रुचि तथा अग्नि की वृद्धि होतीहै बायविडंग के द्वारा औटायेहुए जल में बायविडंग काही चूर्ण छोडकर पीने से क्रिमि और क्रिमियोंसे उत्पन्न होनेवाले रोगोंका नाश होताहै बायविडंगके चूर्णको सहतकेसाथ चाटनेसे क्रिमियों का नाश होताहै पलाश के बीजोंके काढ़ेमें सहत डालकर पीने से अथवा ढाकके बीजों को पीसकर सहत मिलाकर चाटने से क्रिमियोंका नाश होताहै ६ माशे कबीले के चूर्णको गुड के साथ खाने से निस्सन्देह पेटके सब क्रिमि गिरपडतेहैं बायविडंग इन्द्रजौ तथा ढाकके बीज इनसबको पीसकर खांड के साथ खानेसे क्रिमि नष्ट होते हैं नींबकी अथवा धतूरे की पत्तीमें सहत डालकर पीने से क्रिमियों का नाश होताहै ॥ १०५ ॥

रसेन्द्रेणसमायुक्तोरसोधत्तूरपत्रजः । ताम्बूलपत्रजोवापिलेपोयूकाविनाशनः ॥ धत्तूरपत्रकल्केनतद्रसेनैवपाचितम् ॥ तैलमभ्यंगमात्रेणयूकानाशयतिक्षणात् ॥ १०६ ॥

धतूरे की पत्ती के अथवा पान के रसमें पारा मिलाकर लेप करने से जुओंका नाश होताहै धतूरे की पत्तीके रस और कल्कसे पाक कियेगये तेलको मर्दन करनेसे जुआंओंका नाश होताहै ॥ १०६ ॥

क्रिमीणांविट्कफोत्थानामेतदुक्तंचिकित्सितम् । रक्तजानान्तुसंहारंकुर्य्यात्कुष्ठचिकित्सया ॥ क्षीराणिमांसानिघृतानि चापिदधीनिशाकानिचपर्णवन्ति । अम्लंचमिष्टञ्चरसं विशेषात्क्रिमिञ्जिघांसुःपरिवर्जयेद्धि ॥ इति क्रिम्यधिकारः ॥ १०७ ॥

मल और कफसे उत्पन्न हुए क्रिमियों की यह चिकित्सा कहीगई और रक्तज क्रिमियोंका नाश कुष्ठ की चिकित्सा से करना चाहिये दूध मांस घी दही पत्र शाक खटाई और मिठाई यह सब क्रिमि रोगवाले को छोड देना चाहिये इति क्रिमिअधिकार ॥ १०७ ॥

अथ पाण्डुरोगकामलाहलीमकाधिकारः ॥

तत्र पाण्डुरोगस्यसंख्यापूर्वकंसन्निकृष्टनिदानमाह ॥

पाण्डुरोगाःस्मृताःपञ्चवातपित्तकफैस्त्रयः । चतुर्थःसन्निपातेनपञ्चमोभक्षणान्मृदः॥ पञ्चमोभक्षणान्मृदइतिननुमृत्तिकापिदूषितदोषद्वारणैवपाण्डुरोगंजनयती.तिमृद्भक्षणजः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाण्डुरोगो ...षजादभिन्नएवंकथंपञ्चमइति । उच्यते । अपरकारणकुपितावातादयोऽ न्यरोगान्कुर्वन्ति । मृत्तिकाभक्षणात्कुपितास्तुवातादयोविशेषतःपाण्डुरोगमेवजन न्त्येवेतिविशेषचिकित्साविशेषाच्चपञ्चमश्चरकेणोक्तः ॥ १०८ ॥

पांडु कामला और हलीमकरोगका अधिकार ॥

पांडुरोगके संख्यापूर्वक समीपी कारण ॥

पांडुरोग पांच प्रकारकाहै जैसे वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज और मृत्तिकाके खानेसे अब र सन्देह होताहै कि मिट्टी खानेसे दूषितहुए दोष पांडुरोगको उत्पन्न करतेहैं इसलिये मिट्टी खाने ं हुआ पांडुरोगभी दोषजसे अलग नहींहै तो उसको अलग पांचवां क्यों गिनाया इसका उत्तर यहहै कि अन्य कारणोंके द्वारा कुपित वातादिक अन्य रोगोंकोभी उत्पन्न करतेहैं परन्तु मिट्टी खाने से कुपित दोष पांडुरोगकोही उत्पन्न करते हैं यह विशेषताहै और चिकित्साकी विशेषतासे चरकने इस को पांचवां कहाहै ॥ १०८ ॥

अथ विप्रकृष्टंनिदानपूर्विकांसम्प्राप्तिमाह ॥

व्यवायमम्लंलवणानिमद्यंमृदंदिवास्वप्नमतीवतीक्ष्णम् । निषेव्यमाणस्यविदूष्यरक्तं दोषास्त्वचंपाण्डुरतांनयन्ति ॥ तीक्ष्णंराजिकादिः ॥ १०९ ॥

पांडुरोग की दूरवाले कारणों समेत संप्राप्ति ॥

मैथुन, खटाई, नोन, मद्यपान, मृत्तिकाभक्षण, दिनमेंसोना और बहुततीखीराई आदि वस्तुओंका सेवन इनकारणोंसे कुपित दोष रुधिरको दूषित करके त्वचाको पांडुवर्ण करते हैं ॥ १०९ ॥

अथ पूर्वरूपमाह ॥

त्वक्स्फोटनिष्ठीवनगात्रसादमृद्भक्षणप्रेक्षणकूटशोथाः । विण्मूत्रपीतत्वमथाविपाको भविष्यतस्तस्यपुरःसराणि ॥ प्रेक्षणकूटशोथइतिअक्षिगोलकशोथः ॥ ११० ॥

पांडुरोगका पूर्वरूप ॥

पांडुरोग होनेसे पहले त्वचाका कुछ फटना थुकथुकी अंगोंकी शिथिलता मृत्तिकाकाभक्षण नेत्रके पोटों में सूजन मल मूत्रकापीलापन और भोजनका परिपाक न होना यह लक्षण होते हैं ॥ ११० ॥

अथ वातिकस्यपाण्डुरोगस्यलक्षणमाह ॥

त्वङ्मूत्रनयनादीनांरूक्षकृष्णारुणाभता । वातपाण्ड्वामयेकम्पस्तोदानाहभ्रमादयः ॥ कृष्णारुणाभतापाण्डुत्वंनातिक्रामति अतएवसुश्रुतेनसर्व्वेषुचैतेषुअपिपाण्डुभावोयतो ऽधिकोऽतःखलुपाण्डुरोगइति । भ्रमादयइत्यादिशब्दाद्भेदशूलादयः ॥ १११ ॥

वातज पांडुरोगके लक्षण ॥

वातज पांडुरोगमें त्वचा मूत्र तथा नेत्रादिकोंमें रूखापन कालापन तथा ललाई होतीहै और कंप शरीरमें पीडा आनाह भ्रम तथा शूलादिक उत्पन्न होतेहैं कालापन और ललाई पांडुवर्ण को उल्लंघन नहीं करती क्योंकि सुश्रुतने कहा है कि सब प्रकारके पांडुरोगोंमें पांडुता अधिक होती है इसलिये इसको पांडुरोग कहतेहैं ॥ १११ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ अथ पैत्तिकस्यलक्षणमाह ॥

पीतत्वङ्नखविण्मूत्रोदाहतृष्णाज्वरान्वितः । भिन्नविट्कोऽतिपीताभःपित्तपाण्डुर्भवेन्नरः ॥ भिन्नविट्कःस्द्रवमलः ॥ ११२ ॥

पित्तज पांडुरोग का लक्षण ॥

पित्त के पांडुरोगों में त्वचा, नख, मल तथा मूत्र में पीलापन, दाह, तृषा, ज्वर मलभेद और बहुत पीलापन यह लक्षण होतेहैं ॥ ११२ ॥

अथ श्लैष्मिकस्यलक्षणमाह ॥

कफप्रसेकःश्वयथुस्तन्द्रालस्यातिगौरवैः । पाण्डुरोगीकफाच्छुक्लैस्त्वङ्मूत्रनयनाननैः ॥ अत्रोपलक्षणेनतृतीया ॥ ११३ ॥

कफके पांडु रोग के लक्षण ॥

कफ के पांडुरोग में मुखसे कफ निकलना, सूजन, तन्द्रा, आलस्य, शरीर में बहुत भारीपन और त्वचा, मूत्र, नेत्र तथा मुखमें श्वेतता यह लक्षण होतेहैं ॥ ११३ ॥

सान्निपातिकस्यलक्षणमाह ॥

सर्व्वान्नसेविनःसर्वैर्दुष्टादोषास्त्रिदोषजम् । त्रिदोषलिङ्गंकुर्व्वन्तिपाण्डुरोगंसुदुःसहम् ॥ ११४ ॥

सन्निपातज पांडुरोग के लक्षण ॥

पांडु रोगकारी सम्पूर्ण वस्तुओं के सेवन से दूषितहुए सम्पूर्ण दोष अत्यन्त दुस्सह सन्निपातज पांडु रोग को उत्पन्न करते हैं इसमें तीनों दोषों के लक्षण होतेहैं ॥ ११४ ॥

अथ मृज्जस्यसम्प्राप्तिमाह ॥

मृत्तिकादनशीलस्यकुप्यन्त्यन्यतमोमलः । कषायामारुतंपित्तंमूषरामधुराकफम् ॥ कोपयेन्मृद्रसादींश्चरौक्ष्याद्भुक्तंचरुक्षयेत् । पूरयत्यविपक्वैवस्रोतांसिनिरुणद्धयपि ॥ इन्द्रियाणांबलंहत्वातेजोवीर्यौजसीतथा । पाण्डुरोगंकरोत्याशुबलवर्णाग्निनाशनम् ॥ स्रोतांसिशिरामुखानि । तेजोदीप्तिः ॥ ओजःसर्व्वधातुरसः ॥ ११५ ॥

मिट्टी खानेसे हुए पांडुरोगकी संप्राप्ति ॥

मिट्टी खानेसे वात पित्त अथवा कफ कुपित होताहै अर्थात् कषैली मिट्टीसे वायु क्षारमिट्टीसे पित्त और मधुर मिट्टीसे कफ कुपित होता है मिट्टी रूखेपन से रसादिकोंको और भोजन कियेहुए पदार्थ को रूखा करती है और आप कच्चीही स्रोतोंको भरके रोकदेतीहै और इन्द्रियोंके बल तेज वीर्य्य तथा ओजको नष्टकरके शीघ्रही बल वर्ण तथा अग्निके नाश करने वाले पांडु रोगको उत्पन्न करतीहै ११५॥

अथ मृज्जस्यलक्षणमाह ॥

मृद्भक्षणाद्भवेत्पाण्डुस्तन्द्रालस्यनिपीडितः । सकासश्वासशूलार्त्तःसदारुचिसमन्वितः ॥ शूनाक्षिकूटगण्डभ्रूःशूनपान्नाभिमेहनः । क्रिमिकोष्ठोऽतिसार्येतमलंसासृक्कफान्वितम् ॥ क्रिमिकोष्ठाउदराभ्यन्तरस्थक्रिमिर्भवेदित्यनेनसम्बध्यते । अतिसार्येतमलमितिकर्मकर्तृतत्कर्मवत्मन्तव्यम् ॥ तस्मिन्कर्मण्यर्थेऽत्रयत्प्रत्ययः ॥ ११६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिट्टी खाने से हुए पांडुरोग के लक्षण ॥

मिट्टी खानेसे हुए पांडुरोग में तन्द्रा आलस्य खांसी श्वास शूल तथा सदैव अरुचि होतीहै और उदरमें कृमि होते हैं आंखों के पोटे गाल भृकुटी पैर नाभि तथा लिंगमें सूजन होतीहै और कफ तथा रुधिर सहित दस्त आतेहैं ॥ ११६ ॥

अथासाध्यस्यलक्षणमाह ॥

जरारोचकहृल्लासछर्दितृष्णाक्लमान्वितः । पाण्डुरोगीत्रिभिर्दोषैस्त्याज्यःक्षीणोहतेन्द्रियः ॥ पाण्डुरोगश्चिरोत्पन्नःखरीभूतोनसिद्ध्यति । कालप्रकर्षाच्छूनांगोयोवापीतानिपश्यति ॥ खरीभूतःअतिरूक्षितःसर्वधातुः । बद्धाल्पविट्सहरितंसकफंयोऽनिसार्यते ॥ दीनःस्वेदातिदिग्धांगश्छर्दिमूर्च्छातृषान्वितः । पाण्डुदन्तनखोयस्तुपाण्डुनेत्रश्चयोभवेत् ॥ पाण्डुसङ्घातदर्शीचपाण्डुरोगीविनश्यति । पाण्डुसङ्घातदर्शीपीतवर्णस्यराशिंपश्यति । अन्तेषुशूनंपरिहीनमध्यंम्लानंतथान्तेषुचमध्यशूनम् । गुदेमुखेशेफसिमुष्कयोश्चशूनंप्रताम्यन्तमसंज्ञकल्पम् । विवर्जयेत्पाण्डुकिनंयशोऽर्थीतथातिसारज्वरपीडितञ्च । अन्तेषुहस्तपादादिषु ॥ म्लानंक्षीणम् । प्रताम्यन्तंग्लानिंगच्छन्तम् ॥ असंज्ञकल्पंमृतसदृशम् ॥ ११७ ॥

असाध्य पांडुरोग के लक्षण ॥

ज्वर, अरुचि, मतली, छर्दि, तृषा तथा ग्लानि के होनेपर क्षीणता तथा इन्द्रियोंकी शक्तिके नष्टहो जानेपर और तीनों दोषोंके होनेपर पांडुरोग असाध्य जानना चाहिये बहुत पुराने पांडुरोगमें धातुओं के अत्यन्त रूखे होजानेपर असाध्य जानना चाहिये थोड़े दिन से होनेवाले पांडुरोगमें जो सूजन उत्पन्न हो और रोगी को सम्पूर्ण बस्तु पीलीदीखें तो असाध्य जानना चाहिये जिसपांडु रोगवाले का हरा कफ सहित बंधा हुआ थोड़ा २ मल निकले वह असाध्य है जो पांडुरोगी बहुत दीन स्वेद के द्वारा लिपेहुए से शरीरवाला और छर्दि मूर्च्छा तथा तृषा से व्याकुल होय वह असाध्य है जिस पांडुरोगवालेके दांत नख तथा नेत्रपीले होजायँ और सबपदार्थ पीलेदीखें वहअसाध्यहै जिसपांडुरोग वाले के हाथ पैरों में सूजन होय शरीरका मध्यभाग क्षीण होजाय अथवा हाथ पैर क्षीण होयँ और मध्य में सूजन होय वह असाध्य है जिस पांडु रोग वाले के मुख लिंग गुदा तथा अंडकोशों में सूजन होय और ग्लानि बेहोशी अतीसार तथा ज्वर होय वह असाध्य है ॥ ११७ ॥

अथ पाण्डुरोगभेदस्यकामलायानिदानपूर्विकांसम्प्राप्तिमाह ॥

पाण्डुरोगीतुयोऽत्यर्थंपित्तलानिनिषेवते । तस्यपित्तमसृङ्मांसंदग्ध्वारोगायकल्प्यते ॥ पित्तंकर्तृदग्ध्वासन्दूष्यरोगायकामलारूपाय । पाण्डुरोगिणएवातिशयितपित्तलसेवयाकामलाभवतिनायन्नियमः ॥ किन्तुकामलास्वतन्त्रापिभवति । यथाराजयक्ष्माकासादुपेक्षिताद्भवतिनायंनियमः ॥ किन्तुराजयक्ष्मास्वतन्त्रोऽपिभवति । तद्वदेव ॥ ११८ ॥

पांडुरोग का भेद कामलारोगकी निदानपूर्वक संप्राप्ति ॥

जिस पांडु रोग वाले को बहुत पित्तकारी वस्तुओं के सेवन से बढ़ाहुआ पित्त रुधिर तथा मांसको दूषित करता है उसको कामला रोग उत्पन्न होताहै पांडु रोग वाले कोही पित्तकारी वस्तुओं के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नसे कामला रोग होताहै यह नियम नहीं है किन्तु कामला अपने आपभी स्वतन्त्र होता है जैसे खांसी की उपेक्षा करने से राजयक्ष्मा होता है यह नियम नहींहै किन्तु राजयक्ष्मा स्वतन्त्र भी होता है उसी प्रकार यहां भी जानना चाहिये ॥ ११८ ॥

कामलायालक्षणमाह ॥

हारिद्रनेत्रःसुभृशंहारिद्रत्वङ्नखाननः । पीतरक्तसकृन्मूत्रोभेकवर्णोहतेन्द्रियः ॥ दाहाविपाकदौर्बल्यसदनारुचिकर्षितः । हारिद्रंहरिद्रावर्णम् ॥ पीतरक्तसकृन्मूत्रः । पीतेरक्तेवासकृन्मूत्रेयस्यसः ॥ भेकवर्णःबृहद्भेकवर्णः ॥ ११९ ॥

कामला का लक्षण ॥

कामला में नेत्र त्वचा नख तथा मुखका हल्दी के समान अत्यन्त पीला होना मल मूत्र का पीत अथवा रक्त होना बडे मेंढक के समान वर्ण होजाना इन्द्रियों की शक्तिका नाश दाह भोजन कानपचना दुर्बलता शिथिलता और अरुचि यह लक्षण होते हैं ॥ ११९ ॥

तस्याभेदमाह ॥

कामलाबहुपित्तैषाकोष्ठशाखाश्रयामता । एकाकोष्ठाश्रया । अपराशाखाश्रया ॥ १२० ॥

कामला के भेद ॥

बहुत पित्तवाला यह कामलारोग एक कोष्ठाश्रय और दूसरा शाखाश्रय होताहै ॥ १२० ॥

तत्रकोष्ठाश्रयांकामलामाह ॥

कालान्तरात्खरीभूताकृच्छ्रास्यात्कुम्भकामला ॥ १२१ ॥

कोष्ठाश्रय कामलाका वर्णन ॥

बहुत कालका पुराना कामलारोग रूक्ष होकर कुंभकामला नाम कहाजाताहै यह कठिनता से साध्यहै ॥ १२१ ॥

कुम्भकामलीनामारिष्टलक्षणमाह ॥

छर्द्यरोचकहृल्लासज्वरक्लमनिपीडितः । नश्यतिश्वासकासार्त्तोविड्भेदीकुम्भकामली १२२

कुंभकामलाका अरिष्ट ॥

कुंभ कामलारोगवालेको जो छर्दि, अरुचि, मतली, ज्वर, ग्लानि, श्वास, खांसी और मलभेदहोयतो वह नहीं जीता है ॥ १२२ ॥

अथो भयोरपि कामलयोऽरिष्टलक्षणमाह ॥

कृष्णपीतसकृन्मूत्रोभृशंशूनश्चमानवः । सरक्ताक्षिमुखच्छर्दिविण्मूत्रोयश्चताम्यति ॥ दाहारुचितृषानाहतन्द्रामोहसमन्वितः । नष्टाग्निसंज्ञःक्षिप्रंहिकामलावान्विपद्यते १२३

दोनों कामलाओंके अरिष्ट ॥

जिस कामलावालेका मल मूत्र काला पीला अथवा लाल होय नेत्र मुख तथा वमन रक्त वर्ण होय और सूजन तथा मोहहोय वह असाध्यहै जिसकामलावालेको दाह, अरुचि, आनाह, तन्द्रा, मोह, तथा मन्दाग्नि और बेहोशीहोय वह नहीं जीताहै ॥ १२३ ॥

अथ पाण्डुरोगस्यैवभेदंहलीमकमाह ॥

यदातुपाण्डोर्वर्णःस्याद्धरितश्यावपीतकः । बलोत्साहक्षयस्तन्द्रामन्दाग्नित्वंमृदुज्वरः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्त्रीष्वहर्षों ऽनदंश्चश्वासतृष्णारुचिभ्रमाः । हलीमकन्तदातस्यविद्यादनिलपित्तत पाण्डोःपाण्डुरोगिणः ॥ १२४ ॥

पांडुरोगके भेद हलीमकका वर्णन ॥

जो पांडु रोगवालेका वर्ण हरा धुमेला तथा पीलाहोय बलतथा उत्साहका क्षयहोय और तन्द्रा मन्दाग्नि थोडाज्वर मैथुनमें अनिच्छा शरीरमेंपीड़ा श्वास तृषा अरुचि तथा भ्रम होयतो उसे हलीमक रोग जानना चाहिये यह वायु और पित्तसे उत्पन्न होताहै ॥ १२४ ॥

अथ तस्यपाण्डुरोगचिकित्सामाह ॥

सप्तरात्रंगवांमूत्रैर्भावितञ्चायसोरजः । पाण्डुरोगप्रशान्त्यर्थम्पयसाप्रपिबेन्नरः ॥ गोमूत्रसिद्धंमण्डूरञ्चूर्णंसगुडमश्नतः । पाण्डुरोगक्षयंयातिपंक्तिशूलञ्चदारुणम् ॥ अयोमलंसुसंतप्तंभूयोगोमूत्रसाधितम् । मधुसर्पियुतंलीढ्वापाण्डुरोगीसुखीभवेत् ॥ १२५ ॥

पांडुरोगकी चिकित्सा ॥

लोहेकी भस्मको सातदिन गोमूत्रमें भावना देकर सेवन करनेसे पांडुरोगका नाश होताहै गोमूत्रके द्वारा बना हुआ मंडूर गुडके साथ खानेसे पांडु और भयंकर परिणाम शूलका नाश होताहै मंडूरको वारंवार अग्निमें तपा तपा कर गोमूत्र में बुझावे फिर इस के चूर्णको घी और सहत के साथ चाटनेसे पांडुरोगका नाश होताहै ॥ १२५ ॥

पुनर्नवात्रिवृद्व्योषंविडंगंदारुचित्रकम् । कुष्ठंहरिद्रात्रिफलादन्तीचव्यंकलिंगकम् ॥ कटुकापिप्पलीमूलंमुस्तंशृंगीचकारवी ॥ यवानीकट्फलंचैतिपृथक्पलमितंसमम् ॥ मंडूरंद्विगुणंचूर्णाद्गोमूत्रेऽष्टगुणेपचेत् । गुडेनवटिकांकृत्वातक्रेणालोड्य तांपिबेत् । पुनर्नवादिमण्डूरवटकोऽश्विविनिर्मितः । पाण्डुरोगंनिहन्त्याशुकामलाञ्चहलीमकम् ॥ श्वासंकासञ्चयक्ष्माणंज्वरंशोथंतथोदरम् । शूलंप्लीहानमाध्मानमर्शांसिग्रहणीकृमीन् ॥ वातरक्तञ्चकुष्ठञ्चसेवनान्नाशयेद्ध्रुवम् । अत्रपुनर्नवादिमण्डूरम् २४। प्रत्येकपल १। लोहकीटचूर्णपल ४८। गोमूत्रपल १९२। पुनर्नवादिमण्डूरः ॥ १२६ ॥

पुनर्नवा,निसोत,त्रिकटु,बायबिडंग,देवदारु,चीता,कूट,हल्दी,दारुहल्दी,त्रिफला,दन्ती, चव्य,इन्द्रजव,कुटकी,पीपलामूल,मोथा,काकडासिंगी,कालाजीरा,अजवाइन और कायफल यहसब एक२ पल और इनसबके चूर्णका दूना अर्थात् ४८ पल मंडूर इनसबको १९२ पल गोमूत्र में पाक करके गुड डालकर बड़े बनावे फिर मट्ठेमें इस बड़ेको घोलकर पिये यह पुनर्नवादि मंडूर बटक अश्विनीकुमारने बनायाहै इसकेद्वारा पांडुरोग, कामला,हलीमक, श्वास,खांसी, यक्ष्मा,ज्वर,सूजन,उदरशूल प्लीहा,आध्मान,बवासीर ग्रहणी,कृमि,बात रक्त और कुष्ठका नाशहोताहै इति पुनर्नवादि मंडूर१२६

त्र्यूषणंत्रिफलामुस्तंविडंगंचित्रकंतथा । एतानिनवभागानिनवभागाहतायसः ॥ एतदेकीकृतंचूर्णंनरोऽष्टादशरक्तिकम् । प्रलिह्यान्मधुसर्पिर्भ्यांपिबेत्तक्रेणवामह ॥ गोमूत्रेणापिवेद्धापिपाण्डुरोगंविनाशयेत् । शोथंहृद्रोगमुदरंक्रिमिकुष्ठंभगन्दरम् ॥ नाशयेदग्निमान्द्यञ्चदुर्नामकमरोचकम् । आर्द्रकस्यरसेनापिलिह्यात्कफसमृद्धिमान् ॥ अत्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नायसलोहंनवरक्तिकापरिमितंभक्षणीयम् । यतउक्तंरसप्रदीपे ॥ गुञ्जा... रभ्य यावत्स्युर्नवरक्तिकाः । तावल्लोहंसमश्नीयाद्यथादोषांनलंनरः ॥ एवं,...प्रथमदिने त्र्यूषणादिसहितंरक्तिकाद्वयमितंप्रतिदिनंरक्तिकाद्वयंद्वयंवर्द्धयेत् । यावत्त्र्यूषणादिसहि...दशरक्तिकाःस्युः ॥ त...स्ताःप्रतिदिनंखादेत् । इति नवायसंचूर्णम् ॥ १२७ ॥

... त्रिकटु, त्रिफला, मोथा, ...यविडंग तथा चीता यह सब एक २ भाग और लोहेकी भस्म ९ भा० ...सब औषधियोंको एकमें मिलाकर घी और संहतके साथ १८ रत्तीचाटे अथवा मट्ठे या गोमूत्रके साथ पिये इससे पांडु, सूजन, हृदयकेरोग, उदरकृमि, कुष्ठ, भगन्दर, मन्दाग्नि, बवासीर तथा अरुचिका नाश होताहै जिसके कफ अधिकहोय वह अदरकके रसके साथ इसको चाटे यहांलोहा९रत्तीभर खाना चाहिये क्योंकि रसप्रदीपमें कहागयाहै कि दोष और अग्निके अनुसार एकरत्तीसे लेकर ९ रत्तीतक लोहा खाना चाहिये इसीसे पहले दिन त्रिकटु आदि सहित लोहा दोरत्तीखाय फिर प्रतिदिन दो२ रत्ती बढ़ाकर १८ रत्ती तक होजानेपर प्रतिदिन इतना २ ही सेवन करे इति नवायसचूर्ण ॥ १२७ ॥

अथ कामलाचिकित्सा ॥

त्रिफलायागुडूच्यावादार्व्यानिम्बस्यवा । प्रातर्माक्षिकसंयुक्तःशीतलःकामलापहः ॥ अञ्जनेकामलार्त्तानांद्रोणपुष्पीरसोहितः । गुडूचीपत्रकल्कंवापिबेत्तक्रेणकामली ॥ धात्री लोहरजोव्योषनिशाक्षौद्राज्यशर्कराः । लीढानिवारयन्त्याशुकामलामुद्धतामपि ॥ कुम्भाख्यकामलायांतुहितःकामलिकोविधिः । गोमूत्रेणपिबेत्कुम्भकामलावाञ्छिलाजतुम् ॥ दग्ध्वाक्षकाष्ठैर्मलमायसन्तुगोमूत्रनिर्वापितमष्टवारान् । विचूर्ण्यलीढंमधुनाचिरेणकुम्भाह्वयंपाण्डुगदंनिहन्ति ॥ अपहरतिकामलार्तिनस्येनकुमारिकाजलंसद्यः ॥ १२८ ॥

कामला की चिकित्सा ॥

त्रिफला, गिलोय, दारुहल्दी अथवा नींबके शीतल काढ़े में सहत डालकर प्रातःकाल पीने से कामला का नाश होता है गूमाके रसका अंजन लगाना कामलावालों को हितकारी है गिलोय के पत्तोंको पीसकर मट्ठे के साथ पीनेसे कामला का नाश होता है आंवला, लोहचूर्ण, त्रिकटु, हल्दी, सहत, घी और शक्कर इनसबको मिलाकर चाटने से बहुत बढ़ेहुए भी कामलारोगका नाश होताहै कुम्भकामला में भी कामलाकेही समान चिकित्सा करनी चाहिये शिलाजीतको गोमूत्र के साथ पीनेसे कुम्भकामला का नाश होताहै ॥ १२८ ॥

अथ हलीमकचिकित्सा ॥

मारितमायसञ्चूर्णंमुस्ताचूर्णेनसंयुतम् । खदिरस्यकषायेणपिबेद्धन्तुंहलीमकम् ॥ सितातिलबलायष्टीत्रिफलारजनीयुगैः । लोहंलिह्यात्समध्वाज्यंहलीमकनिवृत्तये १२९

हलीमककी चिकित्सा ॥

लोहेकी भस्म और मोथे के चूर्णको कत्थे के काढ़े के साथ पीनेसे हलीमक का नाश होताहै शक्कर, तिल, बरियारा, मुलहठी, त्रिफला, हल्दी और दारुहल्दीके साथ लोहेको सहत और घी मिलाकर चाटने से हलीमक का नाश होताहै ॥ १२९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अमृतल... कंप्रसाधितंतुरगाविद्विषःसर्पिः। क्षीरेचतुर्गुणमेतद्धितरेच्चहलीकार्त्तेभ्यः॥ ...ृतलतायंघृतम्॥ १३०॥

गिलोय के रस और कल्क के द्वारा भैंसके घीको भैंस के चौगुने दूध के साथ पाककरके हलीमक रोगमें देना चाहिये इति अमृतलतादिघृत॥ १३०॥

मधुरैरन्नपानैस्तंवातपित्तहरैर्हरेत्। कामलापाण्डुरोगोक्तांक्रियांचात्रोपयोजयेत्१३१

मधुर तथा वात पित्तनाशक अन्नपान के द्वारा और पांडुरोग तथा कामला में कहीहुई चिकित्सा के द्वारा हलीमक को दूरकरे॥ १३१॥

अथ सामान्यतःपाण्डुरोगकामलाहलीमकचिकित्सा॥

फलत्रिकामृतावासातिक्ताभूनिम्बनिम्बजःक्काथः। क्षौद्रयुतोऽयंहन्याद्धलीमकंपाण्डुकामलारोगम्॥ १३२॥

पांडु कामला और हलीमक की सामान्य चिकित्सा॥

त्रिफला, गिलोय, बांसा, कुटकी, चिरायता और नींब इनके क्काथ में सहत डालकर पीनेसे हलीमक पांडु और कामला का नाश होताहै॥ १३२॥

त्र्यूषणंत्रिफलामुस्तविडङ्गंचव्यचित्रकम्। दार्वीत्वङ्माक्षिकोधातुग्रन्थिकोदेवदारुच॥ एषांद्विपलिकान्भागान्कृत्वाचूर्णंपृथक्पृथक्। मण्डूरचूर्णंद्विगुणंशुद्धंचाञ्जनसन्निभम्। मूत्रेचाष्टगुणेपक्त्वातस्मिन्तत्प्रक्षिपेन्नरः। उदुम्बरसमाकारान्वटकांस्तान्यथाग्निच॥ उपयुञ्जीततक्रेण जीर्णेसात्म्यञ्चभोजनम्। मण्डूरवटिकाह्येताःप्राणदाःपाण्डुरोगिणाम्॥ कुष्ठानिजठरंशोथमूरुस्तम्भंकफामयान्। अर्शांसिकामलामेहंप्लीहानंशमयन्तिच॥ त्र्यूषणादिमण्डूरवटिका॥ १३३॥

त्रिकटु, त्रिफला, मोथा, वायबिडंग, चव्य चीता, दारुहल्दी, दालचीनी, सोनामक्खी, पीपलामूल और देवदारु इनसबको दो दो पल लेकर पृथक् २ चूर्णकरै और इनसबके दूने अञ्जन के समान पिसे हुए मंडूर के चूर्णको अठगुने गोमूत्र में पाककरके ऊपर कहेहुए चूर्णोंको गेरे फिर गूलर के समान बड़े बनाकर मट्ठे के साथ अपनी अग्निके अनुसार सेवनकरे और पचजानेपर सात्म्य भोजन करे यह पांडुरोगवालोंको प्राणदायकहै और कुष्ठ, उदर, सूजन, जंघाओं का जकडना, कफरोग, बवासीर, कामला, प्रमेह तथा प्लीहा इनसबको नाशकरे है इति त्र्यूषणादि मंडूरवटिका॥ १३३॥

किराततिक्तासुरदारुदार्वीमुस्तागुडूचीकटुकापटोलम्। दुरालभापर्पटकंसनिम्बंकटुत्रिकंवह्निफलत्रिकञ्च॥ फलंविडङ्गस्यसमांशिकानिसर्वैःसमंचूर्णमथायसश्च। सर्पिर्मधुभ्यांवटिकाविधेयातक्रानुपानाद्भिषजाप्रयोज्या॥ निहन्तिपाण्डुञ्चहलीमकञ्चशोथंप्रमेहंग्रहणीरुजञ्च। श्वासञ्चकासञ्चसरक्तपित्तमर्शांस्यथोवाग्ग्रहमामवातम्॥ व्रणांश्चगुल्मान्कफविद्रधिञ्चचित्रञ्चकुष्ठञ्चततःप्रयोगात्। इत्यष्टादशांगलोहम् १३४॥

चिरायता, देवदारु, दारुहल्दी, मोथा, गिलोय, कुटकी, परवल, जवासा, पित्तपापडा, नींब, त्रिकटु, चीता, त्रिफला तथा बायबिडंग यह सब समभाग और इन सबकी बराबर लोहेका चूर्ण मिलाकर घी तथा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...त के साथ मोदक बनावे फिर मट्ठे के अनुपानसे सेवनकरे इससे पांडु, हलीमक, ...जन, प्रमेह, ...णी, श्वास, खांसी, रक्तपित्त, बवासीर, वचनका रुकजाना, आमवात, घाव, ब... कफ, ...धि, शिवत्र (श्वेतकुष्ठ) और कुष्ठका नाश होताहै इति अष्टादशांगलोह ॥ १३४ ॥

यवगोधूमशाल्यन्नैरसैर्जाङ्गलजैर्हितैः। मुद्गाढकीमसूराद्यैरेषु भोजनमिष्यते॥ एषु ...ण्डुरोगकामलाहलीमकेषु १३५ ॥ इति पाण्डुरोगकामलाहलीमकाधिकारः॥

...डु,कामला और हलीमक रोगमें जौ,गेहूं,शालिधानोंके चावलोंकाभात,जंगलीजीवोंकेमांसकारस, ...ग,अरहड़ और मसूरआदिक भोजनकेलिये देनेचाहिये १३५ इतिपांडुकामलाहलीमकरोगाधिकारः॥

अथ रक्तपित्ताधिकारः। तत्ररक्तपित्तस्यनिदानपूर्विकांसम्प्राप्तिमाह॥

घर्म्मव्यायामशोकाध्वव्यवायैरतिसेवितैः। तीक्ष्णोष्णक्षारलवणैरम्लैःकटुभिरेवच॥ पित्तंविदग्धंस्वगुणैर्विदहत्याशुशोणितम्। तीक्ष्णंमरिचादि॥ उष्णमग्नितापादि। क्षारो यवक्षारादिः। विदग्धंदूषितम्।स्वगुणैःस्वकारणैः। गुणैस्तीक्ष्णादिभिः। गुणैरितिबहुत्वे नतीक्ष्णाम्ललवणकटूष्णघर्म्मादयोगृह्यन्तेविदहतिदूषयति॥ १३६॥

रक्तपित्तका अधिकार॥ रक्तपित्त की निदान पूर्वकसंप्राप्ति॥

धूप, व्यायाम, शोक, मार्ग तथा मैथुनके अत्यन्त सेवनसे और मिर्चादि तीक्ष्ण जवाखारादिक्षार अग्नि, संतापादि, उष्णता, नोन, खटाई तथा कटुवस्तुओं के सेवनसे दूषितहुआ पित्त तीक्ष्णादि अपने गुणोंसे शीघ्रही रुधिर को दूषित करताहै॥ १३६॥

अथ रक्तपित्तस्यसामान्यलक्षणमाह॥

ततःप्रवर्त्ततेरक्तमूर्द्धञ्चाधोद्विधापिवा। अत्ररक्तमित्युपलक्षणम्। तेनसंसृष्टंपित्तञ्च। अतएवरक्तञ्चपित्तञ्चरक्तपित्तमितिद्वन्द्वइतिसुश्रुतः। रक्तञ्चतत्पित्तंचेतिरक्तपित्तंरागप्राप्तं पित्तरक्तमित्युच्यतेरक्तपित्तंकर्म्मधारयश्च। रक्तपित्तमनीषिभिरितिउभयत्रापिनदोषः कारणत्रयात्कारणत्रयमाह। संयोगाद्दूषणात्तत्तुसामान्यात्गन्धवर्णयोः। रक्तस्यापि पित्तमाख्यातं। मार्गानाह। ऊर्ध्वंनासाक्षिकर्णास्यैर्मेढ्रयोनिगुदैरधः। कुपितंरोमकूपैश्च समस्तैस्तत्प्रवर्त्तते। कुपितंपित्तम्॥ १३७॥

रक्त पित्तका सामान्यलक्षण॥

ऊपर कहेहुये कारणोंसे कुपित हुआ रुधिर (यहां रुधिर उपलक्षणमात्र है इससे पित्तभी उसके साथ जानना चाहिये) ऊपर से नीचेसे अथवा दोनों मार्गोंसे निकलताहै उनमें से ऊपर नासिका नेत्र कान तथा मुखके द्वारा और नीचे लिंग योनि तथा गुदाके द्वारा कुपित हुआ रक्तपित्त निकलताहै और संपूर्ण रोमकूपोंसे भी रक्तपित्त निकलताहै॥ १३७॥

पूर्वरूपमाह॥

सदनंशीतकामित्वं कण्ठधूमायनंवमिः। लोहगन्धश्चनिश्वासो भवत्यस्मिन्भविष्यति॥ १३८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रक्तपित्त का पूर्व्वरूप ॥

शि... शीतकी इच्छा, गलेसे धुआं निकलना, छर्द्दि और श्वासमें लोहकीसी गन्ध यह लक्षण रक्तपित्तहोनेके पहले होतेहैं ॥ १३८ ॥

विशिष्टरूपमाह ॥

सान्द्रंसपाण्डुमस्नेहंपिच्छिलंचकफान्वितम् (वातिकमाह) श्यावारुणंमफेनञ्चतनु रूक्षञ्चवातिकम् (पैत्तिकमाह) रक्तपित्तंकषायाभंकृष्णगोमूत्रसन्निभम् । मेचकागारधूमभमञ्जनाभञ्चपैत्तिकम् ॥ मेचकंचिक्कणंकृष्णवर्णं । अञ्जनंस्रोतोञ्जनंतदाभंसंसर्गविशेषेणमार्गभेदमाह । संसृष्टलिंगंसंसर्गाद्त्रिलिंगंसान्निपात्तिकम् । ऊर्ध्वगंकफसंसृष्टमधोगंमारुतानुगम् ॥ द्विमार्गंकफवाताभ्यामुभाभ्यांतत्प्रवर्त्तते ॥ १३९ ॥

रक्त पित्त के विशेषलक्षण ॥

कफज रक्तपित्त में गाढ़ा पांडुवर्ण स्नेहयुक्त और सचिक्कण रक्तनिकलताहै वातज रक्तपित्त में धुमेला तथा रक्तवर्ण फेनेसमेत पतला और सूखा रक्तपित्त निकलताहै पित्तज रक्तपित्त में कषाय के सदृश कृष्णवर्ण गोमूत्रके सदृश चिकने घरके धुयेंके समान अथवा अंजन के समान रक्तपित्त निकलताहै ऊपर कहेहुए दोदोषोंके लक्षणोंके मिलनेसे द्वन्द्वज और सबलक्षणों के मिलनेसे सन्निपातज रक्तपित्त जानना चाहिये ऊपर गयाहुआ रक्तपित्त कफयुक्त नीचे गयाहुआ रक्तपित्त वातयुक्त और ऊपर तथा नीचे दोनों ओरसे गयाहुआ रक्तपित्त कफ वात दोनोंसे मिलाहुआ जानना चाहिये ॥ १३९ ॥

उपद्रवानाह ॥

दौर्बल्यश्वासकासज्वरवमथुमदाःपाण्डुतादाहमूर्च्छाभुक्तेघोरोविदाहस्त्वधृतिरपिसदाहृद्यतुल्याचपीडा॥तृष्णाकोष्ठस्यभेदःशिरसिचतपनंपूतिनिष्ठीवनत्वंद्वेषोभक्तेऽविपाकोविकृतिरपिभवेद्रक्तपित्तोपसर्गात् ॥ विकृतिःमासप्रक्षालनाभतादिः ॥ १४० ॥

रक्तपित्त के उपद्रव ॥

दुर्बलता, श्वास, खांसी, ज्वर, छर्द्दि, मद, पांडुवर्ण, दाह, मूर्च्छा, भोजनकी अत्यन्त कुपचता, अधीरता, हृदयमें बहुत पीड़ा, तृषा, मलभेद, शिरमें सन्ताप, पीपथूकना, भोजनमें अरुचि, भोजनका न पचना और रुधिर का मांसके धोवनके समान होना यह रक्तपित्त के उपद्रवहैं ॥ १४० ॥

साध्यत्वादिकमाह ।

एकदोषानुगंसाध्यंद्विदोषंयाप्यमुच्यते । यत्त्रिदोषमसाध्यंस्यान्मन्दाग्नेरतिवेगवत् ॥ ऊर्ध्वंसाध्यमधोयाप्यमसाध्यंयुगपद्गतम् । व्याधिभिःक्षीणदेहस्यवृद्धस्याऽनश्नतस्तुयत् ॥ १४१ ॥

रक्त पित्तकासाध्यासाध्यआदिका वर्णन ॥

एक दोषवाला रक्तपित्त साध्य दोदोषवाला याप्य और तीन दोषवाला असाध्य होताहै मन्दाग्निवालेका अधिकवेगयुक्त रक्तपित्त असाध्य होताहै ऊपर गयाहुआ साध्य नीचे गयाहुआ याप्य और दोनों ओर गयाहुआ रक्तपित्त असाध्य होताहै रोगोंसे क्षीण शरीरवाले का वृद्धका और भोजन न करने वालेका रक्तपित्त असाध्य होताहै ॥ १४१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ साध्यमाह ॥

एकमार्गंबलवतोनातिवेगंनवोत्थितम् । रक्तपित्तंसुखेकालेसाध्यंस्यान्निरुपद्रवम् ॥ सुखेकालेहिमशिशिरयोः ॥ १४२ ॥

साध्य रक्तपित्त के लक्षण ॥

एक मार्ग में गयाहुआ नवीन उपद्रव रहित और थोडे वेगवाला रक्तपित्त बलवान् रोगीका हेमन्त और शिशिरऋतु में साध्य होताहै ॥ १४२ ॥

असाध्यमाह ॥

मांसप्रक्षालनाभंक्कथितमिवचयत्कर्द्दमाम्भोनिभंवामेदःपूयास्रकल्पंयकृदिवयदिवा पक्वजम्बूफलाभम् । यत्कृष्णंयच्चनीलंभृशमपिकुणपंयत्रचोक्ताविकारास्तद्वर्ज्यंरक्तपित्तंसुरपतिधनुषायच्चतुल्यंविभाति ॥ उक्ताविकारादौर्बल्यादयः । सुरपतिधनुषातुल्यं । नानावर्णम् । येनचोपहतोरक्तंरक्तपित्तेनमानवः । पश्येद्दृश्यंवियच्चापितदसाध्यमसंशयम् ॥ येनरक्तपित्तेनोपहतोमनुष्योदृश्यघटपटादिकंरक्तंपश्यतिसनश्यतिवियच्चापिअदृश्यमपीत्यर्थः (अथारिष्टमाह) लोहितंछर्दयेद्यस्तुबहुशोलोहितेक्षणः । लोहितोद्गारदर्शीच म्रियतेरक्तपैत्तिकः॥लोहितोद्गारदर्शीव्याधिमहिम्नोद्गारमपिलोहितंपश्यतीत्यर्थः॥१४३॥

असाध्य रक्तपित्त के लक्षण ॥

जो रक्तपित्त मांसके धोवनके काढेके कीचडसे मिलेहुए जलके मेद तथा पीपके पक्कीजामुनके अथवा यकृत् के समान होवे वह असाध्यहै और जो रक्तपित्त काला नीला बहुत दुर्गन्धित ऊपर कहेहुए उपद्रवों से युक्त अथवा इन्द्रधनुष के समान अनेक रंगवाला होय वह असाध्यहै जो रक्तपित्त वाला आकाश तथा सब दीखनेवाली वस्तुओंको लाल रंगका देखे वह निस्सन्देह असाध्यहै जिस रक्तपित्तवाले को बहुत रुधिर की वमन होय और उद्गार लाल दीखे और जिसके दोनों नेत्र लाल होजावें उसकी मृत्यु होतीहै ॥ १४३ ॥

अथ रक्तपित्तस्यचिकित्सा ॥

पित्तास्रंस्तम्भयेन्नादौप्रवृत्तंबलिनोयतः । हृत्पाण्डुग्रहणीरोगप्लीहगुल्मज्वरादिकृत्॥ शालिषष्टिकनीवारकोरदूषप्रसाधिकाः । श्यामाकाश्चप्रियंगुश्चभोजनंरक्तपित्तिनाम् ॥ प्रियंगुःकंगुः।मसूरमुद्गचणकाःसमकुष्ठाढकीफलाः । प्रशस्ताःसूपयूषार्थेकल्पितारक्तपित्तिनाम् ॥ दाडिमामलकंविद्वानम्लार्थञ्चापिदापयेत् । पटोलनिम्बवेत्राग्रप्लक्षवेतसपल्लवाः॥ शाकार्थेशाकसात्म्यानांतण्डुलीयादयोहिताः । पारावतान्कपोतांश्चलावान्रक्ताक्षवर्त्तकान् ॥ शशान्कपिञ्जलानेणान्हरिणान्कालपुच्छकान्।रक्तपित्तहरान्विद्याद्रसास्तेषांप्रयोजयेत्॥ईषदम्लांश्चघृतभृष्टान्ससैन्धवान्। कफानुगेयूषशाकान्दद्याद्वातानुगेरसम् ॥ पथ्यंसतीनयूषेणससितैर्लाजसक्तुभिः ॥ १४४ ॥

रक्तपित्तकी चिकित्सा ॥

बलवान् रक्तपित्तवालेका पहले रुधिर बन्द नहीं करना चाहिये क्योंकि रुधिरके रोकने से हृदय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के रोग, पांडु [illegible], प्लीहा, बायगोला और ज्वरादिक रोग उत्पन्न होते हैं शालि धान्य साठी तिन्नी, [illegible] धान्य, सामा और कांकुन यह रक्तपित्तवालों को भोजनके लिये हितकारी हैं मसूर मूंग, च[illegible] मटर और अरहड इनकी दालका यूष रक्तपित्तवालोंको देना चाहिये अनार और आमला खटाई [illegible] लिये देना चाहिये परवल, नींब, सरकंडेका अग्रभाग, पकरिया, बेंत [illegible] पत्ती और चौराई आदि शाक देना चाहिये श्वेत तथा पांडुवर्णके कबूतर, लवा, चकोर, बटेर, खर[illegible]श, श्वेततीतर, कालाहिरन ताम्रवर्णका और कालीपूंछकाहिरन इन सबके मांसका रस रक्तपित्तमें हितकारी है कफजरक्तपित्त कुछ खट्टे सेंधेनोन युक्त घीमें भूनकर यूष और शाक देनेचाहिये वातजरक्तपित्तमें मांसका रस हित[illegible] मटरका यूष और शक्कर युक्त खीलोंके सत्तू पथ्यके लिये रक्तपित्तमें देनेचाहिये ॥ १४४ ॥

धान्याकधात्रीवासानांद्राक्षापर्पटयोर्हिमः। रक्तपित्तंज्वरंदाहंतृष्णांशोषञ्चनाशयेत् ॥ धान्यकादिर्हिमः ॥ १४५ ॥

धनियां, आमला, बांसा, दाख और पित्तपापडा इनके द्वारा शीत कषाय (औषध बनानेके प्रकरणमें देखो) बनाकर पिये इससे रक्तपित्त, ज्वर, दाह, तृषा और शोषकानाशहोताहै इतिधान्यकादिहिम १४५॥

ह्रीवेरमुत्पलंधान्यंचन्दनंयष्टिकामृता। उशीरञ्चत्रिवृच्चैषांक्वाथंसमधुशर्करम् ॥ पाययेत्तेनसद्योहिरक्तपित्तंप्रणश्यति। रक्तपित्तंजयत्युग्रंतृष्णांदाहंज्वरंतथा ॥ पद्मोत्पलानां किञ्जल्कःपृष्णिपर्णीप्रियंगुका। जलेसाध्यारसेतस्मिन्पेयास्याद्रक्तपित्तिनाम् ॥ वासापत्रसमुद्भूतो रसःसमधुशर्करः। क्वाथोवाहरतेपित्तोरक्तपित्तंसुदारुणम् ॥ पिष्टानांवृषपत्राणांपुटपाकरसोहिमः। समधुर्हरतेरक्तपित्तंकासज्वरक्षयान् ॥ उत्पलंकुमुदंपद्मंकह्लारंलोहितोत्पलम्। मधुकञ्चेतिपित्तासृक्तृष्णाछर्दिहरोगणः ॥ वासायांविद्यमानायामाशायां जीवितस्यच। रक्तपित्तीक्षयीकासीकिमर्थमवसीदति ॥ आटरूषकमृद्वीकापथ्याक्वाथः सशर्करः। क्षौद्राढ्यःसकलश्वासरक्तपित्तनिबर्हणः ॥ १४६ ॥

सुगन्धवाला, नील कमल, धनियां, चन्दन, मुलहठी, गिलोय, खस और निसोत इनके काढेमें सहत और शक्कर डालकर पीनेसे रक्तपित्त, तृषा, दाह तथा ज्वर का नाश होताहै कमलकी केशर, नीले कमलकी केशर, पृष्णिपर्णी, प्रियंगु (ककुनी) इन औषधियोंके काढेसे पेया बनाकर रक्तपित्तवालोंको देना चाहिये और बांसेके पत्तोंके रस अथवा काढेमें सहत और शक्कर डालकर पीने से अत्यन्त भयंकर रक्तपित्तका नाश होताहै बांसेके पत्तोंको पीसकर पुटपाक करके उसके शीतलरसमें सहत डालकर पीनेसे रक्तपित्त, ज्वर, खांसी और क्षयका नाश होताहै उत्पल, कुमुद, पद्म, कह्लार, रक्तोत्पल यह पांचो प्रकारके कमल और मुलहठी इन औषधियों के सेवन से रक्तपित्त, तृषा और छर्दिकानाश होताहै जीवनकी आशाके होनेपर और बांसेके मिलनेपर रक्तपित्त क्षय और खांसीवालेको कोई भय नहीं है बांसा दाख और हड इनके काढेमें शक्कर और सहत डालकर पीनेसे खांसी श्वास और रक्तपित्तका नाश होताहै ॥ १४६ ॥

दूर्वासोत्पलकिञ्जल्कमञ्जिष्ठाशैलवालुका। शीताशीतमुशीरञ्चमुस्तंचन्दनपद्मकम् ॥ विपचेत्कार्षिकैरेतैराजंप्रस्थमितंघृतम्। तण्डुलानांजलंछागीक्षीरंदद्याच्चतुर्गु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ तत्पानंव...तोरक्तं...वनंनासिकागते । कर्णाभ्यांयस्यगच्छेत्तु... प्रपूरयेत् ॥ ...क्षुस्रवेचिरक्तञ्चेत् पूरयेत्तेनचक्षुषी । मेढ्रपायुप्रवृत्तेतु वस्तिकर्म्मसुयोजयेत् ... रोम...प्रवृत्तेतुतदभ्यङ्गंप्रयोजयेत् । सर्व्वेषुरक्तपित्तेषुतस्माच्छ्रेष्ठमिदंघृतम् ॥ इति दूर्व्वाद्यघृतम् ॥ १४७ ॥

...दूब, कमलकी केशर, म..., एलबालुक, शक्कर, सफेद चन्दन, खस, मोथा, लालचन्दन और ...क यहसब एक२ तोला, बकरीका घी १ प्रस्थ, चावलोंका पानी ४ प्र० और बकरीका दूध ४ प्र० ...न सबके द्वारा विधिपूर्व्वक घी बनाकर जो रोगीके मुखसे रुधिर गिरता होय तो पान करावे जो नासिका से रुधिर निकलता हो तो नासदेवे और कानोंसे रुधिर निकलताहो तो कानों में भरे जो नेत्रोंसे रुधिर बहता हो तो नेत्रोंमें भरे जो लिंग तथा गुदासे रुधिर बहता होय तो इस घीसे वस्ति देवे और जो संपूर्ण रोमकूपोंसे रुधिर बहता होय तो इसको सब शरीर में मर्दन करे सब प्रकारके रक्तपित्तोंमें यह घी बहुत श्रेष्ठहै इति दूर्वाद्य घृत ॥ १४७ ॥

मृद्वीकांचन्दनंलोध्रंप्रियंगुञ्चविचूर्णयेत् । चूर्णमेतत्पिबेत्क्षौद्रवासारससमन्वितम् ॥ नासिकामुखपायुभ्योयोनिमेढ्रादिवेगिनम् । रक्तपित्तंस्रवद्धन्तिसिद्धएषप्रयोगराट् ॥ यच्च शस्त्रक्षतेनैवरक्तंगच्छतिवेगतः । तदप्येतेनचूर्णेनतिष्ठत्येवावचूर्णितम् ॥ इक्षूणांमध्यकाण्डानिसकन्दंनीलमुत्पलम् । केशरंपुण्डरीकस्यमोचामधुकपद्मकैः ॥ वटप्ररोहशुंगाश्च द्राक्षाखर्ज्जूरमेवच । एतानिसमभागानिकषायंसम्प्रकल्पयेत् ॥ उषितंमधुसंयुक्तंपाययेच्छर्करान्वितम् । सप्रमेहंरक्तपित्तंक्षिप्रमेतन्नियच्छति ॥ द्राक्षयाफलिनीभिर्व्वाप्रियालमधुकेनवा । श्वदंष्ट्रयाशतावर्य्यारक्तजित्साधितंपयः ॥ पक्वोदुम्बरकाश्मर्य्याःपथ्याखर्ज्जूरगोस्तनाः । मधुनाघ्नन्तिसंलीढारक्तपित्तंपृथक्पृथक् ॥ अत्रकाश्मर्य्याःफलमेवग्राह्यंफलसाहचर्य्यात् । अतिनिस्रुतरक्तोवाक्षौद्रयुक्तंपिबेदसृक् ॥ सक्तुर्वाभक्षयेदाज्यमांसंवा पित्तसंयुतम् । नासाप्रवृत्तरुधिरंघृतभृष्टंश्लक्ष्णपिष्टमामलकम् । सेतुरिवतोयवेगंरुणद्धिमूर्ध्निप्रलेपेन ॥ घ्राणप्रवृत्तेजलमाशुपेयंसशर्करंनासिकयाचयोवा । द्राक्षारसंक्षीरघृतंपिबेद्वासशर्करञ्चेक्षुरसंहिताय । नस्येदाडिमपुष्पस्यरसोदूर्व्वाभवोऽपिवा । आम्रास्थिजःपलाण्डोर्वानासिकास्रावरक्तजित् ॥ १४८ ॥

दाख, लालचन्दन, लोध और प्रियंगु इन सब औषधियों को पीसकर सहत और बांसे के रस में मिलाकर पिये इससे मुख, नासिका, गुदा, योनि तथा लिंग आदि से निकलता हुआ रुधिर बन्द होताहै शस्त्र आदि के घाव से वेगपूर्वक बहताहुआ रुधिर इस चूर्ण के लगानेसे बंद होजाता है ईख के बीच की पोई, जडसहित नीलकमल की केशर, मोचरस, मुलहठी, पद्माक, बर्गद की जटा, दाख और खजूर इन सब औषधियों को समभाग लेकर क्काथ करे फिर बासी क्काथमें सहत और शक्कर डालकर पीने से प्रमेह तथा रक्तपित्त का शीघ्र नाश होताहै दाख, मालकांगनी, चिरौंजी, मुलहठी, भटकटैया अथवा सतावर के द्वारा क्षीरपाक करके पीने से रक्तपित्त का नाश होताहै पक्कागूलर, गभारीकाफल, हड, खजूर तथा दाख इनमेंसे किसीको पीसकर सहतके साथ चाटने से रक्तपित्तका

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नाश ... ताके ... बहुत रुधिर बहता होय वह सहत डालकर बकरेका रुधिर पिये अथवा सहित युक्त ... कृत् एकबार खाय नासिकाके द्वारा रुधिरके बहनेपर आमलेको घी में भूनकर महीन पीसके ... लेपकरनेसे जैसे बांधसे जल रुकजाताहै उसी प्रकार रुधिर बन्द होजाताहै नासिका के द्वारे रुधिर बहनेपर जल तथा शक्कर दूध तथा शक्कर मुनक्काका काढ़ा तथा शक्कर दूधसे निकला हुआ घी तथा शक्कर अथवा ऊखका रस तथा शक्कर नासिकाके द्वारा पीना चाहिये अनार के फूल ... आमकी बिजली अथवा प्याजके रसकी नास लेनेसे नासिकासे रुधिरका बहना बन्द होताहै ॥ १४...

पुराणंपीनमानीयकूष्माण्डस्यफलंबृहत् । तद्बीजाधारबीजत्वक्शिराशून्यंसमाचरेत् ततस्तस्यतुलांनीत्वापचेज्जलतुलाद्वये।तस्मिन्नर्धेऽवशिष्टेतुयत्नतःशीतलीकृते॥तानिकूष्माण्डखण्ड निपीडयेद्दृढवाससा। यत्नतस्तज्जलंनीत्वापुनःपाकायधारयेत् ॥कूष्माण्डं शोषयेद्घर्मेताम्रपात्रेततःक्षिपेत्।क्षिप्त्वातत्रघृतंप्रस्थंकूष्माण्डंतेनभर्जयेत्॥मधुवर्णंतदा लोक्यतज्जलंतत्रनिक्षिपेत् । सितायाश्चतुलांतत्रक्षिप्त्वातल्लेहवत्पचेत् ॥ सुपक्वेपिप्पली शुण्ठीजीरणांद्विपलेपृथक्। पृथक्पलार्द्धंधान्याकंपत्रैलामरिचत्वचम् ॥ चूर्णमेषांक्षिपेत्त त्रघृतार्द्धंक्षौद्रमावपेत् । एतत्पलमितंखादेदथवाग्निबलंयथा ॥ खण्डकूष्माण्डलेहोऽयं रक्तपित्तञ्चनाशयेत् । पित्तज्वरंतृषांदाहंप्रदरंकृशतांवमिम् ॥ कासंश्वासञ्चहृद्रोगंस्वरभेदंक्षतंक्षयम्। नाशयत्येववृद्धिञ्चबृंहणोबलवर्द्धनः॥ इति खण्डकूष्माण्डावलेहः॥ १४९॥

पुराने बहुत बडे मोटे कुंभडेको लाकर बीज बीजों के रहने के गूदे छिलके और नसोंको निकाल कर चारसौ तोले लेले फिर उसको आठसौ तोले जलमें पाक करे फिर जलके आधे बाकी रहने पर शीतल करके उस कुंभडेको मोटे कपडे में निचोडले और धूपमें कुछ सुखाले इसके उपरान्त किसी तांबेके पात्रमें चौंसठतोले घी डालकर कुंभडेको भूने फिर कुंभडेका रंग सहतके समान देखकर उस कुंभडे के निचोडेहुये जलको भी उसमें डालदे और चारसौ तोले शक्कर डालकर अवलेह के समान पाककरे, पाक होजानेपर पीपल सोंठ तथा जीरा इनका चूर्ण आठ २ तोले और धनियाँ, तेजपात, इलायची, मिर्च तथा दालचीनी इनका चूर्ण दो २ तोले उसमें छोडे और घीका आधा सहत मिलावै इसको एकपल अथवा अग्नि बलके अनुसार सेवन करने से रक्तपित्त, पित्तज्वर, तृषा, दाह, प्रदर, कृशता, छर्दि, खांसी, श्वास, हृदयके रोग, स्वरभेद, क्षत, क्षय तथा वृद्धिरोगका नाश होताहै और धातु तथा बलकी वृद्धि होती है इति खण्डकूष्मांडावलेह ॥ १४९ ॥

पुराणंपीनमानीयकूष्माण्डस्यफलंदृढम् । तद्बीजाधारबीजत्वक्शिराशून्यंसमाचरेत् ॥ ततोऽतिसूक्ष्मखण्डानिकृत्वातस्यतुलांपचेत् । गोदुग्धस्यतुलामध्येमन्देऽग्नौवापचेच्छनैः ॥ शर्करायास्तुलांसार्द्धंगोघृतंप्रस्थमात्रकम् । प्रस्थार्द्धंमाक्षिकञ्चापिकुडवंनारिकेरतः॥ प्रियालफलमज्जानंद्विपलंतिखुरीपलम् । क्षिपेदेकत्रविपचेल्लेहवत्साधु साधयेत् ॥ भिषक्सुपक्वमालोक्यज्वलनादवतारयेत् । कोष्णेतत्रक्षिपेदेषांचूर्णंतानिवदाम्यहम् ॥ एकोऽक्षःशतपुष्पायाअथक्षीरीयवानिका। गोक्षुरःक्षुरकःपथ्याकपिकच्छुफलानिच ॥ सप्तमीत्वक्चसर्वेषामक्षयुग्मंपृथक्पृथक् । धान्यकंपिप्पलीमुस्तमश्वगन्धाशतावरी ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...मूलानागबलाबालकंपत्रकंशटी । जातीफलंलवंगञ्चसूक्ष्मैलान... ॥ ...शृंगाट कंपर्पटकंस...पलामितंपृथक् । चन्दनंनागरन्धात्रीफलञ्चापिकशेरुकम् । ...कंपञ्च कर्षाणिचत्वार्य्येतानिनिक्षिपेत्। पलद्वयमुशीरस्यमषाणस्योषणस्यच ॥ कूष्माण्डस्याव लेहोऽयंभक्षितः पलमात्रया । किंवायथावह्निबलंभुक्त्वारोगान्विनाशयेत् ॥ रक्त...शीत पित्तमम्लपित्तमरोचकम् । वह्निमान्द्यंमदाहञ्चतृष्णांप्रदरमेवच ॥ रक्ताशोंऽपितथाछर्दिं पाण्डुरोगञ्चकामलाम् । उपदंशंविसर्पञ्चजीर्णञ्चविषमंज्वरम् ॥ लेहोऽयंपरमोवृष्योवं र्णोबलवर्द्धनः।स्थापनीयःप्रयत्नेनभाजनेमृन्मयेनवे ॥ इतिवृहत्कूष्माण्डावलेहः॥१५०॥

पुराने मोटे और बहुत मजबूत पेठेको लेकर बीज बीजोंके रहनेका गूदा छिलका और नसें निकाल डाले फिर उसके बहुत छोटे २ चारसौ तोले टुकडे ४०० तोले गौके दूधमें मंदाग्निके द्वारा पाककरे इसके उपरान्त ६०० तोले शक्कर ६४ तोले गौका घी ३२ तोले सहत ३२ तो० गोला ८ तो० चिरौंजी तथा ४ तोले तवाखीर इनसब औषधियोंको इसमें डालकर अच्छेप्रकारसे पाक करे फिर परिपाक हुआ जानके उतारले और कुछ गरमी बाकी रहनेपर सौंफका चूर्ण १ तोले, जवाखार, अजवाइन, गोखरू, तालमखाना, हड, किंवांचके बीज तथा दालचीनी इन सबका चूर्ण दो २ तोले धनियां, पीपल, मोथा, असगन्ध, सतावर, तालमूली, गुलशकरी, सुगन्ध-बाला, तेजपात, कचूर, जायफल, लौंग, छोटीइलायची, बडीइलायची, सिंघाडा, पित्तपापडा इनसब का चूर्ण एक २ पल चन्दन, सोंठ, आमला और कशेरू इनकाचूर्ण पांच २ तोले खस, बकुची तथा मिर्च इनसबका चूर्ण दो२ पल इनसब चूर्णों को उसमें मिलावे इसकूष्माण्डावलेह को एकपल अथवा अग्नि बल के अनुसार सेवनकरने से रक्तपित्त शीतपित्त, अम्लपित्त, अरुचि, मन्दाग्नि, दाह तृषा, प्रदर, खूनी बवासीर, छर्दि, पांडु, कामला, उपदंश (आतशक) बिसर्प, जीर्णज्वर तथा विषम ज्वरों का नाश होताहै और वीर्य्य बल तथा धातुकी वृद्धि होतीहै इस औषधको यत्नपूर्व्वक मिट्टी के नवीनपात्रमें रक्खे इति वृहत्कूष्माण्डावलेह ॥ १५० ॥

कूष्माण्डकस्यस्वरसपलानांशतमात्रया । रसतुल्यंगवांक्षीरंधात्रीचूर्णपलाष्टकम् ॥ मृद्वग्निनापचेत्तावद्यावद्भवतिपिण्डवत् । धात्रीतुल्यासितायोज्यापलार्द्धंलेहयेदनु ॥ खण्डकूष्माण्डकंह्येतद्भुक्तमभ्यासतोहरेत्। रक्तपित्तमम्लपित्तंदाहंतृष्णाञ्चकामलाम्॥ इति खण्डकूष्माण्डकम् ॥ १५१ ॥

पेठेकारस ४०० तो० गौकादूध ४०० तो० और आमले का चूर्ण ३२ तो० इनसब औषधियों को मान्दाग्नि में पाककरे जब सबका पिंडसा होगया देखे तब ३२ तोले शक्कर मिलादे इसको दोतोले रोज सेवन करने से रक्तपित्त, अम्लपित्त, दाह, तृषा तथा कामला का नाश होताहै इति खंड कूष्माण्डक ॥ १५१ ॥

शतावरीच्छिन्नरुहावृषोमुण्डतिकावलाः । तालमूलीचगायत्रीत्रिफलायास्त्वचस्त था ॥ भार्ङ्गीपुष्करमूलञ्चपृथक्पञ्चपलानिच । जलद्रोणेविपक्तव्यमष्टभागावशेषित म् ॥ दिव्यौषधिहतस्यापिमाक्षिकेणहतस्यवा। पलद्वादशकंदेयंरुक्मलोहस्य चूर्णितम्॥ खण्डतुल्यंघृतंदेयंपलंषोडशकंबुधैः। पचेत्ताम्रमयेपात्रेगुडपाकोमतोयथा ॥ प्रस्थार्द्धम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धुनो [illegible] शु [illegible] कस्यच । शृंगीकृष्णाविडंगञ्चशुण्ठ्याजङ्गीपलंपृथक् ॥ त्रिफ[illegible] धान्य[illegible]मरिचकेशरम् । चूर्णंदत्त्वासुमथितंस्निग्धेभाण्डेनिधापयेत् ॥ यथा[illegible]कालंप्रयु[illegible]ते[illegible]डालपदमात्रकम् । गव्यक्षीरानुपानञ्चसेव्योमांसरसःपयः ॥ गुरु[illegible] न्नपा[illegible]स्निग्धमांसादिबृंहणम् । रक्तपित्तंक्षयंकासंपार्श्वशूलंविशेषतः ॥ वातरक्तं[illegible]हञ्चशीतपित्तंवमिंक्लमम् । श्वयथुंपाण्डुरोगञ्चकुष्ठंप्लीहोदरं[illegible] ॥ आनाहंमूत्रसंस्रा[illegible]मम्लपित्तंनिहन्तिच । चक्षुष्यंबृंहणंवृष्यंमंगलंप्रीतिवर्द्धनम् ॥ [illegible]रोग्यंपुत्रदंश्रेष्ठंका[illegible]ग्निबलवर्द्धनम् । श्रीकरंलाघवञ्चैवखण्डखाद्यंप्रकीर्त्तितम् ॥ छागंपारावतंमांसंतित्तिरिप्रकरःशशः । कुरंगःकृष्णसारश्चमांसमेषांप्रयोजयेत् ॥ नारिकेरपयःपानंसुनिषण्णकवास्तुकम् । शुष्कमूलकजीवाख्यंपटोलंबृहतीफलम् ॥ वार्त्ताकंपक्कमाम्रञ्चखर्ज्जूरंस्वादुदाड़िमम् । ककारपूर्व्वकंयच्चमांसञ्चानूपसम्भवम् ॥ वर्ज्जनीयंविशेषेणखण्डखाद्यंसमश्नता । लोहान्तरवदत्रापिपुटनादिक्रियेष्यते ॥ नपुनर्म[illegible]क्षिकेणैवशिलयैवहिमारणम् । भङ्गीबभनेठी । दिव्यौषधीमनःशिला । रुक्मलौहंगजवेलीइतिलोके । सुनिषण्णञ्चतुःपत्रीशाकविशेषः । जीवन्तीजीवइतिशाकविशेषः । ककारपूर्व्वककटुकःकालशाकंकूष्माण्डंकर्कटीकर्कोटककालिंगकर्कन्धुकरमर्द्दककरीरकतककशेरुकाञ्जिकइत्यादिवर्जनीयम् । इतिखण्डखाद्यंलोहम् ॥ १५२ ॥

सतावर, गिलोय, बांसा, मुंडी, बरियारा, तालमूली, खैरकी छाल, त्रिफलाकी छाल, भारंगी तथा पुष्करमूल इनसब औषधियों को बीस २ तोले लेकर १०२४ तोलेजलमें पकावे जब अष्टमांश बाकी रहै तब मैनशिल तथा सोनामक्खी केद्वारा माराहुआ रुक्म नाम लोहेका ४८ तोले चूर्ण इतनीही शक्कर तथा ६४ तोले घी डालकर तांबेके पात्रमें गुड़पाक की बिधिसे पाककरे फिर सहत ३२ तोले बंशलोचन, शिलाजीत, काकडासिंघी, पीपल, बायबिडंग, सोंठ तथा कालाजीरा यह सब चार ४ तोले त्रिफला, धनियां, तेजपात, मिर्च तथा नागकेशर यह सब दो २ तोले इनसबे औषधियोंका चूर्ण मिलाय के खूब चलावे और किसी चिकने पात्र में रखदे फिर १ तोला रोजखाय और गौकादूध मांसरस अथवा जलका अनुपानकरे इसका सेवन करने वाला भारी तथा वीर्य्यवर्द्धक और सचिक्कण तथा मांसादिक धातुवर्द्धक पदार्थ खाय इसके द्वारा रक्तपित्त, क्षय, खांसी, पसलीकी पीड़ा, वातरक्त, प्रमेह, शीतपित्त, छर्दि, ग्लानि, सूजन, पांडु, कुष्ठ, प्लीहा, उदर, अफरा, मूत्र बहना तथा अम्लपित्तका नाश होता है और यह नेत्रोंको हितदायक, धातुवर्द्धक, वीर्यवर्द्धक, मंगलकारी, प्रीतिदायक, आरोग्यकारी, पुत्रदायक, कामाग्निबलवर्द्धक, शोभाकारी तथा शरीरका हलका करनेवाला होताहै बकरा, परेवा, तीतर, केकड़ा, खरगोश, लालहिरन तथा काला हिरन इनसबका मांस इस औषधके सेवन करनेवाले को खाना चाहिये नारियल का जलपीना चाहिये और चौपातिया, बथुई, सूखीमूली, जीवन्ती, परवल, भटकटैयाकेफल, बैंगन, पक्काआम, खजूर तथा मीठाअनार खानाचाहिये इस औषधका सेवनकरनेवाला कटु कालशाक कूष्माण्ड ककडी कर्कोटक कलिंग (तरबूज) कर्कन्धु (बेर) कमरख करील कतक कशेरूऔर कांजीआदिक ककारादिशब्द तथा अनूपदेशके जीवोंका मांस त्यागकरदे अन्यलोहों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

... त्वे पुटपाक आदिक क्रियाकरे परन्तु केवल मैनशिल तथा ... द्वारा मा... ॥ संचूर्ण्यहैं ॥ इति खंडखाद्यलोह ॥ १५२ ॥

... मूलकल्कंकाथक्षीरंचतुर्गुणम् । क्षीरतुल्यंघृतंगव्यंसितयावच्छ... या ॥ ... पचेत्तन्तुपलार्द्धं... येत्सदा । रक्तपित्तंह्यम्लपित्तंक्षयंश्वासञ्चनाशयेत् ... ताव ...पाकः । इति रक्तपित्ता... कारः ॥ १५३ ॥

... पीसिहुई सतावरकी ज... इसका चौगुना दूध तथा घी और उसकीही बराबर शक्कर इन सब ...षधियोंको पाककरे जब केवल ... बाकी रहजाय तब उतारले इसको दोतोले खानेसे रक्त पित्त अम्लपित्त क्षय तथा श्वासका न... होताहै ॥ इति सतावरीपाक ॥ इति रक्तपित्ताधिकार ॥ १५३ ॥

अथाम्लपित्ताधिकारः । तत्राम्लपित्तस्यविप्रकृष्टंनिदानमाह ॥

विरुद्धदुष्टाम्लविदाहिपित्तप्रकोपिपानान्नभुजोविदग्धम् । पित्तंस्वहेतूपचितंपुरायत्त दम्लपित्तंप्रवदन्तिसन्तः ॥ दुष्टंव्यापन्नमन्नम् । पित्तप्रकोपीत्युक्तेऽपिअम्लाविदाहीतिवि शेषार्थम् । पित्तप्रकोपिपानंतक्रादि । अम्लंमाषादि । स्वहेतूपचितंपुरावर्षास्वम्लवि पाकैर्जलैरोषधीभिश्चतादृशीभिरुपचितम् । संचितमम्लपित्तं । तदम्लपित्तंवदन्तिअ म्लपित्ताख्यंरोगंवदन्ति ॥ १५४ ॥

अम्लपित्तका अधिकार अम्लपित्तके दूरवाले कारण ॥

विरुद्धवस्तु, दूषितअन्न, खट्टी तथा विदाहीवस्तु, मट्ठा तथा मद्य आदिक पित्तकारी पीनेकीवस्तु उर्द आदिक पित्तकारी भोजनकी वस्तु इनसबके सेवनकरनेवाले पुरुषोंका बर्षासम्बन्धी खट्टे विपाक वाले जलतथा औषधियोंकेद्वारा संचितपित्त कुपितहोताहै इसको वैद्यलोग अम्लपित्तरोगकहतेहैं १५४

अथाम्लपित्तस्यव्याधेर्लक्षणमाह ॥

अविपाकक्लमोत्क्लेशतिक्ताम्लोद्गारगौरवैः । हृत्कण्ठदाहाऽरुचिभिरम्लपित्तंवदेद्भि षक् ॥ अम्लपित्तंद्विधाप्रोक्तमधोगञ्चतथोर्ध्वगम् ॥ १५५ ॥

अम्लपित्तका लक्षण ॥

अन्नका न पचना, ग्लानि, मतली तिक्त तथा खट्टी डकार, भारीपन, हृदय तथा कंठमें दाह, अरुचि यह लक्षण जिसके होयँ उसको अम्लपित्त जानना चाहिये अम्लपित्त ऊर्ध्वगत और अधोगत भेदोंसे दो प्रकारकाहै ॥ १५५ ॥

तत्रोर्ध्वगस्यलक्षणमाह ॥

वांतंहरित्पीतमनीलकृष्णमारक्तरक्ताभमतीवचाच्छम् । मत्स्योदकाभन्त्वतिपिच्छलाभंश्लेष्मानुजातंसहितंरसेन ॥ आरक्तम् । ईषल्लोहितम् ॥ रक्ताभंवा । अतीवचाच्छंनिर्म्मलम् । रसेनलवणकटुतिक्त रूपेण ॥ १५६ ॥

ऊर्ध्वगत अम्लपित्तके लक्षण ॥

ऊर्ध्वगत अम्लपित्तमें हरा पीला नीला काला कुछ लाल अथवा लाल निर्मल मछलीके धोवन के समान अत्यन्त सचिक्कण कफयुक्त और लवण कटु तथा तिक्त रसयुक्त वमन होताहै ॥ १५६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अधोगस्यलक्षणमाह ॥ ... म् ॥ त्रिषु

तृ... ... भ्रममोहकारिप्रयात्यधोवाविविधप्रकारम् । हृल्लासकोठ... त् ॥ यथ... स्वे दांगपी... रकदाचित् ॥ मूर्च्छासर्वदाज्ञानशून्यता । मोहो विपरीतज्ञा... म् अध्वेति वाश... ऊर्ध्वगापेक्षया । विविधप्रकारम् । हरिद्रावर्णयो... त् ... कदाचित्हल्लासादि च भवति ॥ १५७ ॥

अधोगत अम्लपित्तके लक्षण ॥

अधोगत अम्लपित्तमें तृषा दाह ज्ञानका न होना भ्रम तथा ज्ञा... की विपरीतता होतीहै नीचेके मार्ग से हल्दी आदिक अनेक रंगों समेत मल निकलताहै और कभी ... मतली चकत्ते मन्दाग्नि रोमांच स्वेद तथा शरीरका पीलापन होताहै ॥ १५७ ॥

अम्लपित्तस्यावस्थाविशेषमाह ।

भुक्तेविदग्धेऽप्यथवाप्यभुक्तेकरोतितिक्ताम्लवमिंकदाचित् । उद्गारमेवंविधमेवकण्ठ हृत्कुक्षिदाहंशिरसोरुजंच ॥ करचरणदाहमौष्ण्यं महतीमरुचिंज्वरंचकफपित्तम् । जनयतिकण्डुमण्डलपिडिकाशतनिचितरोगचयम् ॥ भुक्तेविदग्धेतिक्ताम्लवमिंकरोति । तथाउद्गारंएवंविधमेवतिक्ताम्लमेववमिंकरोति । तथाकण्ठहृत्कुक्षिदाहंशिरोरुजंवा॥ करोतितथाकरचरणदाहादिकंजनयति । तथाकंडूमण्डलपिडिकाव्याप्तगात्ररोगचयंक रोति । अन्नविपाकक्लमादिकंजनयति ॥ १५८ ॥

अम्लपित्तकी विशेष अवस्था ॥

कभीकभी भोजनके परिपाकके समयमें अथवा भोजनके विनाकिये तिक्त तथा खट्टा वमन होताहै और इसी प्रकारकी डकारें आतीहैं कंठ हृदय कोख हाथ तथा पैरोंमें दाह होताहै शिरमें पीडाहोतीहै हाथ पैर उष्ण रहतेहैं अरुचि होतीहै कफ पित्त जनित ज्वर होताहै खुजली मंडलाकार चकत्ते तथा फुंसियोंसे शरीर भरजाताहै और अन्नका अपरिपाक तथा मतली आदि रोग उत्पन्न होतेहैं १५८॥

अथाम्लपित्तदोषसंसर्गमाह ॥

सानिलंसानिलकफंसकफंतच्चलक्षयेत् । दोषलिंगेनमतिमान्भिषङ्मोहकरंहितम् ॥ ऊर्ध्वाधःप्रवृत्त्याच्छर्द्यतीसाराभ्यांतुल्यतयावैद्यभ्रान्तिकृत् ॥ १५९ ॥

अम्लपित्तमें दोषोंकासंसर्ग ॥

ऊर्ध्वगत अम्लपित्तमें वमनहोनेसे छर्दि और अधोगत अम्लपित्तमें दस्तआनेसे अतीसारकीभ्रान्ति वैद्योंको होतीहै इसलिये वातयुक्त वातकफयुक्त अथवा केवलकफयुक्त यह परीक्षा लक्षणोंसे करनी चाहिये ॥ १५९ ॥

दोषभेदेन लक्षणभेदमाह ॥

कम्पप्रलापमूर्च्छाझिचिमिचिमिगात्रावसादशूलानि । तमसोदर्शनविभ्रमप्रमोहहर्षा स्तथानिलयुतेन ॥ कफनिष्ठीवनगौरवजड़तारुचिशीतसादवमिलेपाः । दहनबलहानिः कण्डूनिद्राचिह्नंकफानुगेभवति ॥ उभयमिदमेवचिह्नंमारुतकफसम्भवेऽम्लपित्तेस्यात् । चिमिचिमिर्झिनिझिनीतिलोकेहर्षोरोमाञ्चः ॥ १६० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एला...त्व

॥ संचूर्ण्य...

दोषभेदसे लक्षणोंकाभेद ॥

...लपित्तमें कंप प्रलाप मूर्च्छा शरीरमें झनझनाहट शिथिलता शूल ... महोना ... तथा रोमांच होताहै कफयुक्त अम्लपित्तमें कफका थूकना भारीपन जड़ता ... शीत ...थिलता छर्दि मुखमेंकफ ...लिप्तहोना मंदाग्नि निर्बलता खुजली तथा अधिक निद्रा ... और ...तकफ युक्त अम्ल पित्तमें ...त और कफदोनोंके लक्षण मिलते हैं ॥ १६० ॥

...नथाम्लपित्तस्य साध्यत्वादिकमाह ॥

रोगोऽयमम्लपित्ताख्यो यत्नात्संसाध्यते नवः । चिरोत्थितोभवेद्याप्यःकृच्छ्रसाध्यःसक स्यचित् ॥ कस्यचिद्धीन...र...चारशीलस्य ॥ १६१ ॥

...अम्लपित्तका साध्यासाध्यपन ॥

यह अम्लपित्त रोग यत्नसाध्य ...हैं और बहुतदिनोंका पुराना अम्लपित्त याप्य अथवा किसी २ हीन आहार तथा आचारवालेका ...कष्टसाध्य होताहै ॥ १६१ ॥

अथ श्लेष्मपित्तस्यलक्षणमाह ॥

तमोमूर्च्छा...आलस्यंचशिरोरुजा । प्रसेकोमुखमाधुर्य्यंश्लेष्मपित्तस्य लक्ष णमुच्यते ॥ १६२ ॥ ...श्लेष्मपित्त के लक्षण ॥

अन्धकार मालूम होना मूर्च्छा, अरुचि, छर्दि, आलस्य, शिरमें पीड़ा, मुखमें जलभरआना और मुख का मीठा रहना यह श्लेष्मपित्तका लक्षणहै ॥ १६२ ॥

अथाम्लपित्तश्लेष्मपित्तयोश्चिकित्सा ॥

अम्लपित्तेतुवमनंपटोलारिष्टवासकैः । कारयेन्मदनैःक्षौद्रैःसैन्धवैश्चतथाभिषक् ॥ विरेचनंत्रिवृच्चूर्णंमधुधात्रीफलद्रवैः । ऊर्द्ध्वगंवमनैर्विद्वानधोगंरेचनैर्हरेत्॥वर्ज्जिताःअम्ल पित्तमितिशेषः । यवगोधूमविकृतीस्तीक्ष्णसंस्कारवत्तथास्त्वंला जसक्तून्वासितामधुयुता नूपिबेत् । निस्तुषयववृषधात्रीक्वथितंसलिलंत्रिगन्धमधुयुक्तम् ॥ द्रुतमपहरतिवमिंस ञ्जनितामम्लपित्तेन । छिन्नोद्भवानिम्बपटोलपत्रंक्षौद्रान्वितंपीतमनेकरूपम् ॥ सुदारुणं हन्तितदम्लपित्तंयथाशनिस्तालतरुंप्रवृद्धम् । वासामृतापर्पटकनिम्बभूनिम्बमार्क्कवैः । त्रिफलाकुलकैःक्वाथःसक्षौद्रश्चाम्लपित्तहा ॥ १६३ ॥

अम्ल पित्त और श्लेष्म पित्तकी चिकित्सा ॥

अम्लपित्तरोग में परवल, नींब, बांसा तथा मैनफल के काढ़े में सहत और सेंधानोन डालकर पिलाके वमन करावे निसोथ और आँवलेके क्वाथ में सहत डालकर पिला के दस्त करावे ऊर्द्ध्वगत अम्लपित्तमें वमन और अधोगत अम्लपित्त में विरेचन कराना चाहिये अम्लपित्त में जौ और गेहूं के द्वारा तीक्ष्णतारहित भोजन बनाकर देवे अथवा दोष के अनुसार खीलों के सत्तू, सहत और शक्करके साथ पिये भूसी रहित जौ, बांसा और आँवले के काढ़े में दालचीनी, इलायची, तेजपात और सहत डालकर पीनेसे बहुत शीघ्र अम्लपित्तसे होनेवाली छर्दि का नाश होताहै गिलोय, नींब तथा परवल के पत्तों के काढ़े में सहत डालकर पीने से जैसे कि वज्रके लगनेसे बड़े ताड के वृक्षका नाश होताहै उसी प्रकार बड़े भयंकर अम्ल पित्त का नाश होताहै बांसा, गिलोय, पित्तपापड़ा,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नींब, [illegible], त्रिफला और परवल इन के काढे में सहत [illegible] का न[illegible]है ॥ १६३ ॥

प[illegible]पटोलयवचन्दनधान्यधात्री वासावरांगदलनागकण[illegible] मधु[illegible]शैलपालपिण्डी हन्त्यम्लपित्तमरुचिज्वरदाहशोषान् [illegible] रुचिदाहमोह खालित्यमेहशिशिरव्रणशुक्रदोषान् । भु[illegible] वृद्धोप्यनेनहिभवेत्तरुणोऽरिंसंसु ॥ १६४ ॥

पाठा, परवल, धवई, चन्दन, धनियां, आमला, बांसा, तज, तेजपात[illegible]पीपल और हड इन सब औषधियों को पीसकर शक्कर, कमल और सहत के साथ चाटने से [illegible]म्लपित्त, अरुचि, ज्वर, दाह, शोष, छर्दि, मोह, गंजापन, प्रमेह, शीतल घाव और वीर्य्यके दोष [illegible] सब [illegible]ग नष्ट होते हैं इसको आम लेके केसर के साथ चाटने से वृद्धभी तरुण के समान मैथुन [illegible]वालाहोता है ॥ १६४ ॥

कूष्माण्डकरसोग्राह्यःपलानांशतमात्रकम् । रसतुल[illegible]धात्रींचूर्णपलाष्टकम् ॥ धात्रीतुल्यासितायोज्यागव्यमाज्यंपलद्वयम् । मन्दाग्निना पचेत[illegible]यावद्भवतिपिण्डितम् । पलार्द्धंपलमेकंवाप्रत्यहंभक्षयेदिदम् । खण्डकूष्माण्डकंख्यातम्[illegible] ॥ इति खण्डकूष्माण्डकोवलेहः ॥ १६५ ॥

पेठेकारस और गौकादूध चार२सौतोले आमलेकाचूर्ण और शक्कर बत्तीस [illegible]तोले गौका घी ८ तोले इन सबको मंदाग्निमें पकावे जब पिण्डसा होजाय तो उतारले चारतोले [illegible]थवा दोतोले इसको नित्य खाने से अम्ल पित्तका नाशहोताहै इति खंडकूष्मांडकावलेह ॥ १६५ ॥

कुडवंनारिकेरस्यजलेमृद्वग्निनापचेत् । नारिकेरजलाभावेगव्येपयसितत्पचेत् ॥ धान्यकंपिप्पलीमुस्तंचातुर्जातंविचूर्णितम् । प्रत्येकंटङ्कमात्रंतुशीतेतस्मिन्विनिःक्षिपेत् ॥ पलमात्रस्तदर्द्धोऽपिभक्षितःप्रत्यहंनरैः । नारिकेरकखण्डोऽयंपुंस्त्वनिद्राबलप्रदः ॥ अम्लपित्तंरक्तपित्तंशूलञ्चपरिणामजम् । क्षयंक्षपयतिक्षिप्रंशुष्कंदावानलोयथा ॥ पलमात्रगव्यघृतेननारिकेरस्यभर्ज्जनंकर्त्तव्यमितिसम्प्रदायः । इति नारिकेरखण्डः ॥ १६६ ॥

१६ तोलेनारियलके गोलेको चारतोलेगौके घीमेंभूनकर नारियलके जल अथवा गौके दूधकेसाथपाक करे फिर शीतलहोजानेपर धनियां, पीपल, मोथा, दालचीनी, इलायची, तेजपात औरनागकेशरइनसब का चार२माशेचूर्ण उसमें छोडे इसकोचार तोले अथवा दोतोले नित्यखानेसे पुरुषार्थ निद्रातथा बल कीवृद्धि होतीहै और अम्लपित्त रक्तपित्त परिणामशूल तथा क्षयकानाशहोताहै इतिनारिकेरखण्ड १६६

प्रस्थन्तुनारिकेरस्यसूक्ष्मंदृषदिपेषितम् । निष्कुलीकृतकूष्माण्डखण्डानामर्द्धमाढकम् ॥ तद्द्वयंभर्ज्जयेद्गव्येघृतेतुकुडवोन्मिते । ततस्तत्रक्षिपेच्छुद्धंगोदुग्धञ्चाढकोन्मितम् ॥ तत्रैवनिःक्षिपेद्गव्यांसितांप्रस्थद्वयोन्मिताम् । पचेत्सर्व्वाणिचैकत्रमृदुनावह्निनाभिषक् ॥ सुपक्वेशीतलेतत्रचूर्णीकृत्यविनिःक्षिपेत् । सूक्ष्मैलाधान्यकंधात्रीपर्पटंजलदंजलम् ॥ उशीरंचन्दनंद्राक्षांशृंगाटञ्चकशेरुकम् । त्वक्पत्रकंसकर्पूरंकर्षयुग्मंपृथक्पृथक् ॥ सर्व्वैसंमिश्रयेद्रक्षेद्भाजनेमृन्मयेनवे । पलमात्रमिदंप्रातर्भक्षयेद्वायथानलम् ॥ एतन्निषेवितं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हन्ति॥ संचूर्ण्य असंशयः। अम्लपित्तंज्वरंपित्तंरक्तपित्तमरोचकम्॥ वातरक्तंतृषांदाहंपाण्डुरोगंचकामलाम्। क्षयंक्षपयतिक्षिप्रंशूलंचपरिणामजम्॥ नारिकेरस्यखण्डोऽयमश्विभ्यांनिर्मितःपुरा। वर्णदोबृंहणोवृष्यःपुंस्त्वनिद्राबलप्रदः॥इतिबृहन्नारिकेरखण्डः॥१६७॥

नारियल की पिसी हुई गिरी ६४ तोले और छिले हुए पेठेके टुकड़े १२६ तोले इन दोनोंको ६४ तोले गौके घीमें भूनकर शुद्ध गौका दूध २५६ तोले और मिश्री १२८ तोले इसमें मिलावे फिर सबको एक साथ मन्दाग्निसे पाककरे पाक के होजाने पर शीतल करके छोटी इलायची, धनियां, आमला, पित्तपापड़ा, मोथा, सुगन्धबाला, खस, चन्दन, दाख, सिंघाड़ा, कशेरू, दालचीनी, तेजपात और कपूर इन सबका चूर्ण दो दो तोले मिलावे फिर सबको एक में मिलाकर मृत्तिका के नवीन पात्र में रक्खे इसको ४ तोले अथवा अपनी अग्नि के अनुसार प्रातः काल सेवन करने से अम्लपित्त, ज्वर, पित्त, रक्तपित्त, अरुचि, वातरक्त, तृषा, दाह, पांडुरोग, कामला, क्षय तथा परिणामशूलका नाश होताहैं पूर्वकाल में अश्विनीकुमारोंने इसको बनाया था यह वर्णको हित धातु तथा वीर्य्यवर्द्धक और पुरुषार्थ निद्रा तथा बलकारी होताहै इति बृहन्नारिकेरखण्ड॥१६७॥

अथ पित्तश्लेष्मचिकित्सा॥

अभयापिप्पलीद्राक्षासिताधान्ययवासकम्। मधुनाकण्ठदाहघ्नंपित्तश्लेष्महरंपरम्॥ पटोलयवधान्याकपिप्पल्यामलकानिच। एषांक्षौद्रयुतःक्काथःपित्तश्लेष्महरःपरः॥ पित्तश्लेष्मवमीकण्डूकोठविस्फोटदाहनुत्। दीपनःपाचनःक्काथःशृङ्गवेरपटोलयोः॥ पिप्पलीखण्डपथ्याभिस्तुल्याभिर्मोदकःकृतः। पित्तश्लेष्महरोभुक्तोवह्निमान्द्यञ्चनाशयेत्॥ इत्यम्लपित्तश्लेष्मपित्ताधिकारः॥१६८॥

पित्तश्लेष्म की चिकित्सा॥

हड़, पीपल, दाख, मिश्री, धनियां और जवासा इन सब को सहत के साथ चाटने से कंठदाह और पित्त श्लेष्मका नाश होताहै परवल, इन्द्रजौ, धनियां, पीपल और आमला इन के काढ़ेमें सहत डाल कर पीनेसे पित्तश्लेष्मका नाश होताहै सोंठ और परवल का काढ़ा पित्त, श्लेष्म, छर्दि, खुजली चकत्ते, विस्फोटक तथा दाहको नष्ट करताहै और दीपन तथा पाचन होताहै पीपल खांड और हड़ इनको समभाग लेकर मोदक बनावे इससे पित्त श्लेष्म और मंदाग्निका नाशहोताहै इति अम्लपित्त श्लेष्म पित्ताधिकार॥१६८॥

अथ राजयक्ष्माधिकारः। तत्रराजयक्ष्मणोविप्रकृष्टंसन्निकृष्टञ्चनिदानमाह॥

वेगरोधात्क्षयाच्चैवसाहसाद्विषमाशनात्। त्रिदोषोजायतेयक्ष्मागदोहेतुचतुष्टयात्॥ वेगोऽत्रवातमूत्रपुरीषाणिनिगृह्णातियदानर इतिचरकवचनात्। क्षयात्क्षीयतेऽनेनेतिक्षयः। तेनातिव्यवायानशनेर्ष्यादयोधातुक्षयहेतवःक्षयःशब्देनोच्यन्ते। साहसाद्बलवतासमंमल्लयुद्धादितः। विषमाशनाद्बहुस्तोकमकालेवाभुक्तंतद्विषमाशनम्। तस्मात्त्रिदोषःसान्निपातिकः। हेतुचतुष्टयात्। अन्येऽपिहेतवोहेतुचतुष्टयएवान्तर्भवन्ति। यक्ष्मणःपर्यायाराजयक्ष्माक्षयशोषाः॥१६९॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

... गका अधिकार राजयक्ष्माके दूरवाले और सम...ी कारण ... क्ष्म ॥ त्रिप... ... त ॥ यथा... तथा मल आदिक वेगका धारण मैथुन लंघन तथा ईर्षा आदिके द्वा... नके ... मल्लयुद्ध आदिक साहसिक कार्य बहुत थोडा अथवा कुसमयका भोजन इन ... से ... राजयक्ष्मानामरोग उत्पन्न होताहै इन्हीं चारकारणों में अन्यकारणभी जानने चा... राजयक्ष्मा क्षय और शोष यह इसके नामहैं ॥ १६६ ॥

यक्ष्मादीनां निरुक्तिमाह ।

वैद्योऽव्याधिमतांयस्माद्व्याधेर्यत्नेनयक्ष्यते । सयक्ष्माप्रोक्त...तिलोके शब्दशास्त्रविशारदैः ॥ यक्ष्यतेपूज्यते राज्ञश्चन्द्रमसो यस्मादभूदेष किलाम... । तस्मात्तंराजयक्ष्मेति प्रवदन्तिमनीषिणः । क्रियाक्षयकरत्वात्तु क्षय इत्युच्यतेबुधैः ॥ संशोषणाद्रसादीनांशोषइत्यभिधीयते ॥ १७० ॥ यक्ष्मा आदि नामोंकी निरुक्ति ॥

इस रोगके कारण रोगियोंके द्वारा वैद्य यत्नपूर्वक यक्षित (पूजित) होताहै इसलिये इसरोगको यक्ष्मा कहतेहैं यह रोग पहले राजा अर्थात् चन्द्रमाके हुआथा इससे इस...को राजयक्ष्मा कहतेहैं यहरोग क्रियाओंके क्षयकरनेसे क्षय कहाजाताहै और यह रोग शरीरके रसा...दिकोंको...खाताहै इसीसे इसे शोष कहतेहैं ॥ १७० ॥

तस्यसम्प्राप्तिमाह । कफप्रधानैर्दोषैस्तुरुद्धेषुरसवर्त्मसु । अतिव्यवायिनो वापिक्षीणेरेतस्यनन्तराः ॥ क्षीयन्ते धातवःसर्वे ततःशुष्यतिमानवः । कफ...धानैर्दोषैः रसवर्त्मसु रुद्धेषु अनन्तराः सर्व्वे धातवःक्षीयन्ते । ततोमानवः शुष्यति । का...णभूतस्य रसस्यक्षये कार्य्याणां रक्तादीनामनुक्रमेण क्षीयमाणत्वात् । मार्गावरोधे रसक्षयहेतुमाह चरकः । रसःस्रोतःसुरुद्धेषुस्वस्थानस्थोविदह्यते । सऊर्ध्वंकासवेगेनबहुरूपःप्रवर्त्तते ॥ स्वस्थानस्थः हृदयस्थः कासंविनापि रसक्षयोभवति । मार्गावरोधकुपितवातेनरसस्यशोषणात् । उक्तञ्च । वायोर्धातुक्षयात् कोपान्मार्गस्यावरणेनच । अनुलोमक्षयन्दृष्ट्वाप्रातिलोमक्षयावहः ॥ अतिव्यवायिनो वा रेतसिक्षीणे प्रतिलोमक्रमेणानन्तराः सर्व्वेधातवो रसपर्य्यन्ताः क्षीयन्ते । तद्यथा । शुक्रेक्षीणे मज्जाक्षीयते । मज्जनिक्षीणे अस्थिक्षीयते एवं पूर्वं पूर्वं क्षीयते । ननु कार्यस्यशुक्रस्य क्षयेकथं कारणभूतानां मज्जादीनांक्षयः उच्यते शुक्रक्षयाद्वायुः कुप्यति । सवायुःसान्निध्यात् क्रमेणमज्जादीन् सर्व्वान्धातून्शोषयति ततस्तदनन्तरं मानवःशुष्यति ॥ १७१ ॥

राजयक्ष्माकी संप्राप्ति ॥

कफप्रधान दोषोंकेद्वारा रसके मार्गोंके रुकजाने पर संपूर्ण धातु क्षीण होजातीहैं इससे शोषरोग उत्पन्न होताहै अथवा बहुत मैथुनसे वीर्य्यके नष्टहोजानेपर संपूर्णधातु क्षीणहोतीहैं तब यहरोगउत्पन्न होताहै मार्गोंके रुकनेसे रसोंका क्षय होताहै यह चरकने कहाहै जैसे स्रोतोंके रुकजानेपर हृदय में स्थित रस दूषित होकर खांसीके वेगसे ऊपर और बहुत प्रकारोंसे निकलताहै स्रोतोंके रुकनेपरखांसीके विनाभीकुपितवायुकेद्वारा रस सुखजाताहै क्योंकि कहाहुआहै कि स्रोतों के रुकजानेसे और धातु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

औ... पित होताहै अनुलोमक्षयको देखकर प्रतिलोमक्षय होताहै ... में ... करने वाले ॥ संचूर्णयें ... क्षीणहोजानेपर उलटे क्रमसे रस पर्यन्त सम्पूर्ण धातु एकके ... क्षीण होतीहैं ... के क्षीणहोनेपर मज्जा क्षीण होतीहै मज्जाके क्षीणहोनेपर हड्डी क्षीण हो... इत्यादि ... पूर्व पूर्वधातु क्षीणहोतीहै अब यह सन्देह होताहै कि कार्य्यरूप वीर्य्यके क्षीणहोने ... कारण ... मज्जादिक धातु क्यों क्षीणहोतीहैं इसका उत्तर यहहै कि वीर्य्यके क्षयहोनेसे वायु कुपित होतीहै और वह वायु निकट हो... कारण मज्जाआदि संपूर्ण धातुओंको क्रमसे सुखातीहै तब मनुष्यको शोषरोग होताहै ॥ १७१ ॥

पूर्व्वरूपमाह ॥

श्वासांगसादकफसंश्र,तालुशोषवम्यग्निसादमदपीनसकासनिद्राः । शोषेभविष्य तिभवन्तिसचापिजन्तुःशुक्लेक्षणोभवतिमांसपरोरिरंसुः ॥ स्वप्नेषुकाकशुकशल्लकिनील कण्ठगृध्रास्तथैवकपयःकृकलासकाश्च । तंवाहयन्तिसनदीर्विजलांश्चपश्येच्छुष्कांस्त रूनूपवनधूमदवार्दितांश्च ॥ १७२ ॥

राजयक्ष्माका पूर्व्वरूप ॥

राजयक्ष्मा होनेसे पहले श्वास,शरीर में शिथिलता,कफ थूकना,तालुका सूखना,छर्दि,मन्दाग्नि, ... खांसी, ... श्वेतता, मांसभोजन तथा मैथुन में इच्छा होतीहै और स्वप्नमें कौआ,तोता,सेई,नीलकण्ठ,गृध्र, बन्दर तथा गिर्गिटान यह इसको लेचलतेहैं और निर्ज्जल नदी सूखे तथा वायु धूम और दावाग्निसे व्याकुल वृक्ष उसको दिखाईपडतेहैं यह लक्षणहोतेहैं॥ १७२॥

पादयोःयक्ष्मिणोलक्षणमाह ॥

अंसपार्श्वाभितापश्चसन्तापःकरपादयोः।ज्वरःसर्व्वांगिकश्चेतिलक्षणंराजयक्ष्मिणः॥ अंसयोःपार्श्वयोश्चाभितापःपीडाअत्रसकलधातुक्षयपूर्व्वकःसकलशरीरशोषोबोद्धव्यः । एतानित्रीणिलक्षणानिप्रायोभावित्वेनचरकेणोक्तानि ॥ सुश्रुतेनयक्ष्मणिषट्लक्षणान्यु क्तानि भक्तद्वेषोज्वरःश्वासःकासःशोणितदर्शनम्। स्वरभेदश्चजायन्तेषड्रूपेराजयक्ष्म णि ॥ उल्बणतयादोषाणांभेदाद्यक्ष्मणामेकादशलक्षणान्याह । स्वरभेदोऽनिलाच्छूलं सङ्कोचश्चांसपार्श्वयोः ॥ ज्वरोदाहोऽतिसारश्चपित्ताद्रक्तस्यचागमः । शिरसःपरिपूर्ण त्वमभक्तश्छन्दएवच ॥ कासःकण्ठस्यचध्वंसोविज्ञेयःकफकोपतः अनिलादुल्बणात् । ए वंपित्तात्कफाच्च । यतआहसुश्रुतः । एकएवमतःशोषःसन्निपातात्मकोगदः । उद्रेकात्तत्र ल्लिङ्गानिदोषाणांनिपतन्तिहि ॥ १७३ ॥

राजयक्ष्माके लक्षण ॥

राजयक्ष्मारोगमें कन्धे तथा पसलियोंमें पीडा हाथ पैरोंमें जलन और सर्वांग में ज्वर होताहै यह तीन लक्षण बहुधा होतेहैं इसलिये चरकने कहेहैं और सुश्रुतमें छः प्रकारके लक्षण कहेहैं जैसे भोजन में अरुचि,ज्वर,श्वास,खांसी, रुधिर थूकना और स्वरभेद यह छः लक्षण राजयक्ष्मामें होतेहैं दोषोंकी अधिकतासे राजयक्ष्मा के ग्यारह ११ लक्षणहैं वातके अधिकहोने में स्वरभेद शूल कन्धे तथा पसलियों में संकोच होताहै पित्तकी अधिकतामें रुधिर थूकना ज्वर दाह तथा अतीसार होताहै

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और ... में शिरका भारीपन भोजनमें अरुचि खांसी और कंठ... ॥ त्रिप...तने कहाहै ... यक्ष्मारोग ...दोषज एकही होताहै परन्तु वातादिदोषों की अधिकता संयुत ॥ यथा लक्षण होते ... १७३ ॥

अथासाध्यंयक्ष्माणमाह ॥

...दशभिरेभिर्वाषड्भिर्वापिसमन्वितम् । त्रिभिर्वापीडितंलिङ्गैर्ज्वरकासासृगाम... जह्याच्छोषार्दितंजन्तुमिच्छन्सुविमलंयशः ॥ १७४ ॥

असाध्य राजयक्ष्माका लक्षण ॥

ऊपर कहेहुए ग्यारह लक्षण अथवा सुश्रुतके कहेहुए छः लक्षण या ...वर खांसी और रुधिर थूकना इन तीन लक्षणों से युक्त राजयक्ष्मावालेको वैद्य त्याग करदे ॥ १७४ ॥

तत्र विशेषमाह ॥

सर्वैरर्द्धैस्त्रिभिर्वापिलिंगैर्मांसबलक्षये । युक्तोवर्ज्यश्चिकि...त्स्यस्तुसर्वरूपोऽप्यतोऽन्यथा ॥ सर्वैर्लिंगैरेकादशभिरर्द्धैःषड्भिस्त्रिभिर्ज्वरकासरुधिर...मनैः । अतोऽन्यथामांसबलेसतिसर्वरूपोऽपिनप्रत्याख्येयःकिन्तुचिकित्स्यः । ...हाशनंक्षीयमाणमतीसारनिपीडितम् ॥ शूनमुष्कोदरञ्चैवयक्ष्मिणंपरिवर्ज्जयेत् । मह... ...समसाध्यंलक्षणम् ॥ अतीसारनिपीडितमितिद्वितीयम् । यतउक्तं ...मलायत्तंबलंपुंसांशुक्रायत्तञ्चजीवितम् । तस्माद्बलेनसंरक्षेद्यक्ष्मिणोमलरेतसी । शूनमुष्कोदरमितितृतीयम् । अथारिष्टमाह । शुक्लाक्षमन्नद्वेष्टारमूर्ध्वःश्वासनिपीडितम् ॥ कृच्छ्रेणबहुमेहन्तंयक्ष्माणंहन्तिमानवम् । मेहन्तंशुक्रंक्षरन्तम् । शुक्लाक्षत्वाद्येकैकशोऽरिष्टलक्षणमाह । अवधिमाह । परंदिनसहस्रन्तुयदिजीवतिमानवः । सुभिषग्भिरुपक्रान्तस्तरुणःशोषपीडितः ॥ शोषपीडितोमानवश्चेत्तरुणोभवति । सुभिषग्भिरुपक्रान्तोभवति तदापरंदिनसहस्रंद्वितीयंदिनसहस्रंयदिजीवतितत्रजीवनविकल्पइत्यर्थः। एतेनशोषपीडितोमानवश्चेत्तरुणोभवतिसद्वैद्यैश्चिकित्सितोभवतितदाप्रथमदिनसहस्रंजीवेदेवेत्युक्तम् १७५ ॥

असाध्यता में विशेषता ॥

ऊपरकहेहुए ग्यारह छः अथवा तीन लक्षणों से युक्त यक्ष्मावालेका मांस और बलक्षीण होगयाहो उसकी चिकित्सा नहीं करनीचाहिये परन्तु मांस और बलके होनेपर जो सम्पूर्ण लक्षण होयँ तौभी चिकित्सा करनी चाहिये जो यक्ष्मावाला बहुत आहार करनेपरभी क्षीण होता चलाजाय वह असाध्यहै जो यक्ष्मा में अतीसार होय तो असाध्य समझना चाहिये क्योंकि कहागयाहै कि मल के आधीन बल और वीर्य्य के आधीन जीवन होताहै इसलिये यक्ष्मावालेके मल और वीर्य्य की रक्षा यत्नपूर्वक करनी चाहिये जो यक्ष्मा में अंडकोश तथा उदरमें सूजन होय तो असाध्य जानिये जिस यक्ष्मावालेके दोनों नेत्र श्वेत होजायँ अन्नमें अरुचिहोय ऊर्ध्वश्वासचले और बड़े कष्टसे बहुतसा वीर्य्य गिरे वह नहीं जीता है जो राजयक्ष्मावाला तरुण होय अच्छे वैद्यों से चिकित्सा कियाजाय तो एकहज़ार दिन से अधिक जीता है इससे यह सिद्ध होताहै कि जो राजयक्ष्मावाला तरुण होवे और अच्छे वैद्यों से चिकित्सा कियाजाय तो एकहज़ारदिन अवश्य जीता है ॥ १७५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ संचूएयं ... अथ चिकित्सामाह ॥

...धरहितंब...वंतंक्रियासहम् । उपक्रमेदात्मवन्तं दीप्ताग्निमकृ...॥ आ...त्लवन्तंधृतवन्तवा ॥ १७६ ॥

चिकित्सा करनेके योग्य राजयक्ष्मावाला ॥

जो राजयक्ष्मावाल...ररहित बलवान् क्रियाओंका सहनेवाला यत्नवान् दीप्ताग्नि और कृशतारहितहो वह चिकित्...के योग्यहै ॥ १७६ ॥

अथ निदानविशेषशोषानाह ॥

व्यवायशोकवार्द्धक...व्यायामाध्वप्रशोषितान् । व्रणोरःक्षतसंज्ञौचशोषिणोलक्षणैःशृणु॥व्रणशोषीउरःक्षतदोषीच ॥ १७७ ॥

...रणोंकी विशेषतासे यक्ष्माकी विशेषता॥

मैथुन,शोक, वृद्धावस्था,व्यायाम,मार्गगमन,घाव और उरःक्षत इनके द्वारा जो शोषरोग उत्पन्न होताहै उसके लक्षण अल...२ आगे कहतेहैं ॥ १७७॥

...व्यवायशोषिणोलक्षणमाह ॥

व्यवायशोषीशुक्र...क्षयलिंगैरुपद्रुतः । पाण्डुदेहोयथापूर्वंक्षीयन्तेचास्यधातवः ॥ शुक्रस्यक्षयलिंगैःस...तोक्तैः । तानियथाशुक्रक्षयेमेढ्रवृषणवेदनाव्यवायेचाशक्तिः।चिराद्वाप्रसेकःप्रसेकोऽ...शुक्रदर्शनमिति । यथापूर्वंक्षीयन्तेचास्यधातवःप्रथमंशुक्रंक्षीयते पश्चाच्छुक्रक्षयजनितवायुनामज्जादयोऽपिधातवोयथापूर्वंक्षीयन्ते ॥ १७८ ॥

मैथुनकेशोषवालेकेलक्षण ॥

मैथुनकेद्वारा जिसको शोष होताहै उसकेआगे लिखेहुए लक्षण होतेहैंजैसे लिंग तथा अंडकोशोंमें पीडा मैथुनमें अशक्त बहुतदेरमें थोडेसे वीर्य्यका गिरना और शरीरका पीलापन यह लक्षण होतेहैं और पूर्व्व २ के क्रमसे धातु क्षीण होतीहैं अर्थात् पहले वीर्य्य क्षीणहोताहै फिर वीर्य्यके क्षीणहोनेसे कुपित वायुके द्वारा मज्जाआदिकधातु पूर्व्वके क्रमसे क्षीण होतीहैं ॥ १७८ ॥

शोकशोषिणोलक्षणमाह ॥

प्रध्यानशीलःस्रस्तांगःशोकशोष्यपितादृशः विनाशुक्रक्षयकृतैर्विकारैरुपलक्षितः ॥ प्रध्यानशीलस्याभावेनशोकोजनितस्तद्ध्यानपरःस्रस्तांगःशिथिलांगः । तादृशोव्यवायशोषिसदृशः । तेनशुक्रादिसर्व्वधातुक्षययुक्तोभवति । परंशुक्रक्षयकृतैर्विकारैर्मेढ्रवृषणवेदनादिभिर्वर्ज्जितोभवतिव्याधिस्वभावात् ॥ १७९ ॥

शोकके‌द्वारा होनेवाले शोषकेलक्षण ॥

शोकसेहोनेवाले शोषवाला इन आगेलिखेहुए लक्षणोंसे युक्त होताहै जैसे जिस वस्तुके लिये शोक हुआहोय उसका ध्यानकरना शरीरमें शिथिलता और वीर्य्यक्षयके लक्षणों से रहित मैथुनके शोषके लक्षण होते हैं ॥ १७९ ॥

जराशोषिणोलक्षणमाह ॥

जराशोषीकृशोमन्दवीर्य्यबुद्धिबलेन्द्रियः । कम्पनोरुचिमान्भिन्नकांस्यपात्रहतस्वरः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

...म् ॥ त्रिष्ठो
ष्ठीवति... णाह... रवारुचिपीडितः। संप्रस्रुतास्यनासाक्षः शुष्करू... त ॥ यथ... वः
मन्दश... ल्पार्थः। शुक्ररूक्षमलच्छविःशुष्केरूक्षेमलच्छवीयः यसः प्रसु...
प्रसुप्त... र्शाज्ञः ॥ १८० ॥

वृद्धावस्थासेहुए शोषकेलक्षण ॥

जिसको वृद्धावस्थासे शोष उत्पन्न होताहै उसके आगे कहेहुए लक्षण... हैं जैसे कि कृशता और वीर्य बुद्धि बल तथा इन्द्रियों की शक्तिकी अल्पता कम्प अरुचि फूटे का... मान स्वर कफरहित थूकना शरीरमें भारीपन मुख नासिका तथा नेत्रोंसे जल बहना और ...न तथा दीप्तिका सूखा तथा रूखा होना ॥ १८० ॥

अध्वशोषिणोलक्षणमाह ॥

अध्वप्रशोषीस्रस्तांगःसम्भृष्टपरुषच्छविः। सम्भृष्टपरु...च्छविःप्रसुप्तगात्रावयवः शुष्कक्लोमगलाननः। सम्भृष्टस्येवपरुषाछविर्य्यस्यसः। प्र...प्तगात्रावयवःप्रसुप्तःस्प र्शाज्ञः ॥ १८१ ॥

मार्गसे हुए शोषवाले के लक्षण ॥

मार्गचलनेसे होनेवाले शोषरोगमें शरीरकी शिथिलता जलेहुएके स...ान छविका रूखापनहोना शरीर में स्पर्शका ज्ञान न रहना और क्लोम कंठ तथा मुखमें सूखापन ... होतेहैं १८१॥
...शोकरेण्ठइत्काश्र्... जैया॥

अथ व्यायामशोषिणोलक्षणमाह ॥

व्यायामशोषीभूयिष्ठमेभिरेवसमान्वितः। लिंगैरुरःक्षतकृतैःसं...क्तश्चक्षतंविना ॥ एभिरेवस्रस्तांगत्वादिभिरध्वशोषिलक्षणैरेवभूयिष्ठमत्यर्थम् ॥ १८२

व्यायाम से हुए शोषके लक्षण ॥

व्यायाम से हुए शोषमें मार्गगमन से हुए शोष के संपूर्ण लक्षण अधिकतासे होते हैं और क्षतको छोडकर उरःक्षतके भी संपूर्ण लक्षण होतेहैं ॥ १८२ ॥

सनिदानंव्रणशोषमाह ॥

रक्तक्षयाद्वेदनाभिस्तथैवाहारयन्त्रणात्। व्रणिनश्चभवेच्छोषःसचासाध्यतमःस्मृतः १८३

कारणसहित घावसे हुए शोष का वर्णन ॥

घाववाले को रुधिर के बहने से घाव की पीडासे और आहार के रोकने से शोष उत्पन्न होताहै यह अत्यन्त असाध्यहै ॥ १८३ ॥

उरःक्षतनिदानमाह ॥

धनुषायस्यतोऽत्यर्थंभारमुद्वहतेगुरुम्। युद्ध्यमानस्यबलिभिःपततोविषमोच्चतः ॥ वृषंहयंवाधावन्तंदम्यंचान्यंनिगृह्णतः। शिलाकाष्ठाश्मनिर्घातान्क्षिपतोनिघ्नतःपरान् ॥ अधीयानस्यचात्युच्चैर्दूरंवाव्रजतोद्रुतम्। महानदींवातरतोहयैर्वासहधावतः ॥ सहसोत्पततोदूरंतूर्णञ्चापिप्रनृत्यतः। तथान्यैःकर्म्मभिःक्रूरैर्भृशमभ्याहतस्यवा ॥ स्त्रीषुचातिप्रसक्तस्यरूक्षाल्पप्रमिताशिनः। विक्षतेवक्षसिव्याधिर्बलवान्समुदीर्य्यते ॥ आयस्यतः आयासतः। आयासंकुर्व्वतःहयंवृषादिकम्। अन्यंगजोष्ट्रादिकम्॥ शिलादीर्घपाषाणः। अश्मप्रस्तरखण्डः। निर्घातोऽस्त्रविशेषःव्याधिःउरःक्षताख्यः १८४ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उरःक्षत का निदान ॥

ध॥ संचूर्णयं॥ आदिकर परिश्रम, भारी बोझे का उठाना, बलवान् के साथ युद्ध, [illegible] अथवा ऊंचे [illegible] [illegible]रना, दौड़ते हुए बलवान् बैल, घोड़ा, हाथी तथा ऊँट आदि को रोकना, [illegible] पत्थर [illegible] पत्थर के टुकड़े अथवा निर्घात नाम अस्त्र को फेंककर शत्रुओं को मारना, बहुत ऊंचे [illegible] से प[illegible]ना, बहुत जल्दी दूरतक दौड़ना, बड़ी नदीमें तैरना, घोड़ोंके साथ दौड़ना, एकाएकी बहुत दूरतक उछलना, बहुत जल्दी न[illegible] तथा अन्य क्रूरकर्मों के द्वारा बहुत चोटसे बहुत मैथुन से और रूखे अथवा थोड़े भोजन से [illegible] हृदय में बलवान् उरःक्षतनाम रोग उत्पन्न होता है ॥ १८४ ॥

अथ उरःक्षतस्यलक्षणमाह ॥

उरोविरुज्यतेऽत्यर्थंभिद्यतेऽथविभज्यते । शूलंभवतितत्पादंशुष्यत्यंगंप्रवेपते ॥ प्रपीडयतेततःपार्श्वेंशुष्यत्यंगं[illegible]कम्पते । क्रमाद्वीर्य्यंबलंवर्णोरुचिरग्निश्चहीयते ॥ ज्वरोव्यथामनोदैन्यंविड्भेदोऽग्निर्मंधस्तथा । दुष्टश्यावःसदुर्गन्धःपीतोविग्रथितोबहु ॥ कासमानस्यचाभीक्ष्णंकफःसासृक्प्रवर्त्तते । सक्षतःक्षीयतेऽत्यर्थंतथाशुक्रौजसोःक्षयात् ॥ विरुज्यतेपीड्यते । भि[illegible]तइति । विभज्यतेद्विधाक्रियतइव । सक्षतःसपुरुषःक्षतः । [illegible] । अत्यर्थं[illegible]भवति ॥ १८५ ॥

उरःक्षत का लक्षण ॥

उरःक्षतरोगमें छाती भीतर टूटनेकीसी फटनेकीसी तथा चीरनेकीसी पीड़ा होतीहै शूल पैरों का सूखना कम्प तथा पसलियोंमें पीड़ा होती है शरीर सूखताहै वीर्य्य बल वर्ण रुचि तथा अग्नि यह सब क्रम से क्षीण होतेहैं ज्वर पीड़ा मनमें ग्लानि मलभेद तथा मन्दाग्नि होती है खांसीके साथ दूषित धुमैला अथवा पीत वर्ण दुर्गन्धित गांठ युक्त रुधिरसहित वारंवार बहुत सा कफ निकलताहै और वीर्य्य तथा ओजकेक्षयसे अत्यन्त क्षीणता होतीहै इस रोगका पूर्वरूप नहीं प्रकाशित होताहै १८५॥

अथोरःक्षतस्यविशिष्टंलक्षणमाह ॥

उरोरुक्शोणितच्छर्द्दिःकासोवैशेषिकःक्षते । क्षीणेसरक्तमूत्रत्वंपार्श्वपृष्ठकटीग्रहः॥क्षते उरःक्षतवतिउरोरुक्शोणितच्छर्द्दिःकासोवैशेषिकः विशेषतः भवत्यत्रास्मिन्उरःक्षतवति सास्रकफशुक्रौजसांक्षयात्क्षीणेसरक्तमूत्रत्वंपार्श्वपृष्ठकटिग्रहश्चभवति ॥ १८६ ॥

उरःक्षतका विशेष लक्षण ॥

उरःक्षतवालेके छातीमें बहुत पीड़ा रुधिरकी छर्दि तथा बहुत खांसी होतीहै और क्षीण होजाने पर रुधिर सहित मूत्र निकलना और पसली पीठ तथा कमरमें पीड़ा होतीहै ॥ १८६ ॥

निदानविशेषेणोरःक्षतलक्षणमाह ॥

व्रणरोधात्क्षयाच्चैवकोष्ठात्प्रतिमलात्तथा । क्षतोरस्कस्यान्नपाकेनिःश्वासोवातिपूतिकः ॥ क्षयाद्धातुक्षयहेतोरतिव्यवायोदितःकोष्ठात्प्रतिमलात्कोष्ठात्प्रतिमलत्वात्तेनप्रतिलोममलात्पूतिकः पूतिगन्धः ॥ १८७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निदानोंकी विशेषतासे उरःक्षतका लक्षण ... म् ॥ त्रि...
... तथा धातुओंके क्षयहोनेसे वातादिक दोष उलटे होकर उरःक्षत ... ॥ यथ ... तेहैं
इसमें ... परिपाकके समय अत्यन्त दुर्गन्धित श्वास आताहै ॥ १८७ ॥

उरःक्षतस्यसाध्ययाप्यासाध्यलक्षणमाह ॥

अल्पलिंगस्यदीप्ताग्नेःसाध्योबलवतोनवः।परिसंवत्सरोयाप्यःसर्वलिंगेतुवर्जयेत् १८८॥

उरःक्षतका साध्य याप्य और असाध्य लक्षण ॥

दीप्ताग्नि तथा बलवान् मनुष्यका नवीन थोड़े लक्षणवाला उरःक्षत साध्य होताहै एकवर्षका पुराना याप्य होताहै और संपूर्ण लक्षणोंसे युक्त उरःक्षत असाध्य होताहै ॥ १८८ ॥

अथ राजयक्ष्मचिकित्सा ॥

बलिनोबहुदोषस्यपञ्चकर्माणिकारयेत् । यक्ष्मिणःक्षीणदेह ... तत्कृतंस्याद्विषोपमम् ॥ मलायत्तंबलंपुंसांशुक्रायत्तञ्चजीवितम् । तस्माद्यत्नेनसंरक्षेद्य ... मणोमलरेतसी ॥ १८९॥

राजयक्ष्माकी चिकित्सा ॥

बहुत दोषयुक्त बलवान् यक्ष्मावालेकी वमन विरेचनादि पंच कर्मोंके द्वारा चिकित्सा करनी चाहिये परन्तु क्षीणशरीरवाले यक्ष्मारोगीको वमनादिक पांचों कर्म ... कारीहैं मनुष्योंका बल वीर्य्यके आधीन और जीवन मलके आधीन होताहै इ... तय यक्ष्मावालेके मल और वीर्य्यकी रक्षा यत्नपूर्वक करनी चाहिये ॥ १८९ ॥

शालिषष्टिकगोधूमयवमुद्गादयोहिताः।मद्यानिजांगलाःपक्षिमृगाः ... या विशुष्यताम् १९०
शालि,साठी, गेहूं, जौ और मूंगादिक,मद्य,जंगली पक्षी तथा मृगोंकेमांस राजय... मावालेको हितहैं१९०

सपिप्पलीकंसयवंसकुलत्थंसनागरम् । दाडिमामलकोपेतंस्निग्धमाजंरसंपिबेत् ॥ तेनषड्विनिवर्त्तन्तेविकाराःपीनसादयः । द्रव्यतोद्विगुणंमांसंसर्वतोऽष्टगुणंजलम् ॥ पादस्थंसंस्कृतञ्चाज्येषडंगोयूषउच्यते ॥ तथायवपल १। कुलत्थपल १। छागमांसपल४। जलपल४८।शेषपल १२। ततःपलमितेघृतेसंस्कारणीयम् । तत्रकर्षमितंसैन्धवंदेयम् । सौरभार्थंहिंगुदेयम् । पिप्पलीनागरञ्चपृथङ्माषमितंकल्कीकृत्यदेयम् । षडंगयूषः ॥१९१ ॥

जौ तथा कुलथी एक २ पल बकरेका मांस चारपल और जल ४८ पल इनसबको एकसाथ पाककरे जब १२ पल जल बाकीरहै तब १ पल घी डालकर उसका संस्कार करे और १ तोले सेंधानोन थोडीसी हींग और पीपल तथा सोंठ आमला और अनारकारस एक २ माशे मिलाकर इस मांसके रसको सेवन करे इससे पुष्टता होती है और पीनसआदिक रोग नष्ट होते हैं इति षडंगयूष ॥ १९१ ॥

ककुभत्वक्नागबलावानरीबीजंविचूर्णितं पयसा । पीतंमधुघृतयुक्तंसहितंयक्ष्मादिकासहरम् ॥ छागमांसंपयश्छागंछागंसर्पिःसनागरम् । छागोपसेवीशयनंछागमध्येतुयक्ष्मनुत् ॥ मधुताप्यविडंगाश्मजतुलोहघृताभयाः । घ्नन्तियक्ष्माणमत्युग्रंसेव्यमानाहिताशिनः ॥ ताप्यंसुवर्णमाक्षिकम् । शर्करामधुसंयुक्तंनवनीतंलिहन्क्षयी । क्षीराशीलभतेपुष्टिमतुल्येचाज्यमाक्षिके ॥ १९२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एला... त्व...ल गु... करी और कवाँचके बीज इनके चूर्णको दूधकेसाथ... के ... व, घी और ॥ संचूर्ण... खानेसे यक्ष्मा और खांसी आदि रोगोंका नाश होताहै ... करीका दूध, ... बकरीका घी, बकरों के साथ रहना और बकरों में सोना इनसबसे रा... रोगका नाश होता है सोनामक्खी, बायबिडंग, शिलाजीत, लोहकी भस्म और हड इनसबको सहत और घी के साथ चाटने से और पथ्य भोजन करनेसे अत्यन्त उग्र राजयक्ष्माका नाश होताहै ... और सहत के साथ मक्खन ... कर दूधपीने से और समतासे रहित घी तथा सहतको चाटकर दूध पीनेसे राजयक्ष्मावाले... ता होती है ॥ १६२ ॥

सितोपलातुगाक्षीरी पिप्पलीबहुलात्वचः । अन्त्यादूर्ध्वंद्विगुणिताश्चूर्णितामधुसर्पिषा ॥ लेहयेद्राजरोगार्त्तं कासश्वासज्वरातुरम् । पार्श्वशूलिनमल्पाग्निसुप्तजिह्वंरुचिच्युतम् ॥ हस्तपादांगदाहेषु ज्वरेरक्तेतथोर्द्धगे । सितोपलामिश्री । बहुलासूक्ष्मैला । इति सितोपलादिरवलेहः ॥ १६३ ॥

मिश्री १६ भा० बंशलोचन ८ भा० पीपल ४ भा० छोटी इलायची दो भा० और दालचीनी १ भा० इनसबको सहत और घीके साथ चाटनेसे राजयक्ष्मा खांसी श्वास क्षय पसली की पीड़ा मंदाग्नि जिह्वा... हाथ पैर तथा शरीरका दाह ज्वर और ऊर्ध्वगत रक्त पित्तका नाश होताहै इति सितोपलादि ... वलेह ॥ १६३ ॥

जातीफलंविडंगानि चित्रकंतगरंतिलाः । तालीसंचन्दनंशुण्ठीलवंगमुपकुञ्चिका ॥ कर्पूरश्चाभयाधात्रीमरिचंपिप्पलीतुगा॥एषांत्र्यक्षसमाभागाश्चातुर्जातकसंयुताः॥ पलानिसप्तभृंगायाःसितासर्वसमामता । चूर्णमेतत्क्षयंकासंश्वासञ्चग्रहणीगदम् । अरोचकंप्रतिश्यायंतथाचानलमन्दताम् । एतान्रोगान्निहन्त्येववृक्षमिन्द्राशनिर्यथा ॥ इतिजातीफलाद्यंचूर्णम् ॥ १६४ ॥

जायफल, बायबिडंग, चीता, तगर, तिल, तालीस, चन्दन, सोंठ, लौंग, कालाजीरा, कपूर, हड, आमला, मिर्च, पीपल, बंशलोचन, दालचीनी, इलायची, तेजपात और नागकेशर यह सब तोले २ भर भांगरा ७ पल और सबके बराबर मिश्री इस चूर्ण के खानेसे क्षय, खांसी, श्वास, ग्रहणी, अरुचि, पीनस और मन्दाग्निका नाश होताहै इति जातीफलादि चूर्ण ॥ १६४ ॥

बालरोगाधिकारोक्तंतैलंलाक्षादियोजयेत्।अभ्यंगेयक्ष्मिणोनित्यंवृद्धवैद्योविशेषतः १६५

बालरोगों के अधिकार में कहाहुआ लाक्षादि तैल यक्ष्मावालेको वृद्धवैद्योंके उपदेशसे नित्य लगाना चाहिये ॥ १६५ ॥

वासकस्यरसप्रस्थंमाचिकासितशर्कराः।पिप्पल्याद्विपलंतावत्सर्पिषश्चशनैःपचेत्॥ तस्मिंल्लेहत्वमायातेशीतेक्षौद्रपलाष्टकम् । दत्वावतारयेद्वैद्योलीढोलेहोऽयमुत्तमः ॥ हन्त्येवराजयक्ष्माणंकासंश्वासंचदारुणम् । पार्श्वशूलंचहृच्छूलंरक्तपित्तंज्वरंतथा । वासावलेहः ॥ १६६ ॥

बांसे का रस तथा, मिश्री दोनों चौंसठ २ तोले और पीपल तथा घी आठ २ तोले इनसबको धीरे २ पाककरे जब अवलेह बनजाय तब शीतल होजानेपर बत्तीस तोले सहत डालकर चाटे इससे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राजयक्ष्म, स्व... पसली तथा हृदयकी पीडा, रक्तपित्त और ...रका ...म् ॥ त्रिफ... त बांसा ... ॥ ... अथ व्यवायादिहेतुकशोषचिकित्सा ॥ ... त ॥ यथ...

व्य... षिणंक्षीणंरसमांसाज्यभोजनैः । सुकूलैर्मधुरैर्हृद्यैर्जीवनीयैरुपा... रसः मांसरा... सुकूलैर्हितैः ॥ १९७ ॥

मैथुनादिसे उत्पन्न राजयक्ष्माकी चिकित्सा ॥

मैथुनसे हुए राजयक्ष्मावालेकी चिकित्सा मांस रस घी मधुर हितकारा ...था हृदय को हितका भोजनोंसे और जीवनीयगणसे करनी चाहिये ॥ १९७ ॥

अथ शोकशोषचिकित्सा ॥

हर्षणैःश्वसनैःक्षीरैःस्निग्धैर्मधुरशीतलैः।दीपनैर्लघुभिश्चान्नैः... षरोगमुपाहरेत् १९८॥

शोकसे हुए राजयक्ष्माकी चिकित्सा ॥

हर्ष आश्वासवाक्य और दूध स्निग्ध मधुर शीतल हलकी तथा दीप... वस्तुओंकेद्वारा शोषसे हुए राजयक्ष्माकी चिकित्सा करनी चाहिये ॥ १९८ ॥

अथ व्यायामशोषचिकित्सा ॥

व्यायामशोषिणंस्निग्धैःक्षतक्षयहितैर्हिमैः।उपाचरेज्जीव... ...

व्यायामसे हुए राजयक्ष्माकी चिकित्सा ॥

स्निग्ध तथा शीतल वस्तुओंसे जीवनीयगण से और क्षत क्षय तथा कफ... चिकित्सा की विधिसे व्यायामसे होनेवाले राजयक्ष्माकी चिकित्सा करनी चाहिये ॥ १९९ ॥

अध्वशोषचिकित्सा ॥

आस्यासुखैर्दिवास्वप्नैःशीतैर्मधुरबृंहणैः । अन्नमांसरसाहारैरध्वशोषमुपाचरेत् २००॥

मार्गचलनेसे होनेवाले राजयक्ष्माकी चिकित्सा ॥

शीतल मधुर तथा धातुवर्द्धक अन्न तथा मांसके रसके भोजनसे सुखपूर्वक बैठानेसे और दिनमें सुलानेसे मार्ग चलनेसे होनेवाले राजयक्ष्मा की चिकित्साकरे ॥ २०० ॥

अथ व्रणशोषचिकित्सा ॥

व्रणशोषंजयेत्स्निग्धैर्दीपनैःस्वादुशीतलैः।ईषदम्लैरनम्लैर्वायूषमांसरसादिभिः २०१ ॥

व्रणसे हुए राजयक्ष्माकी चिकित्सा ॥

स्निग्ध दीपन मधुर तथा शीतल वस्तुओंसे कुछ खट्टे अथवा खटाई रहित यूषोंसे और मांस के रसादिकोंसे घावसे होनेवाले राजयक्ष्माकी चिकित्साकरे ॥ २०१ ॥

अथोरःक्षतचिकित्सा ॥

बलाश्वगन्धाश्रीपर्णीबहुपुत्रीपुनर्नवा । पयसानित्यमभ्यस्ताःशमयन्तिक्षतक्षयम् ॥ श्रीपर्णीकम्भारि । बहुपुत्रीशतावरी । इति बलादिचूर्णम् ॥ २०२ ॥

उरःक्षतकी चिकित्सा ॥

बरियारा, असगंध, गंभारी, सतावर और पुनर्नवा इनसबको दूधके साथ नित्य सेवन करने से उरःक्षतका नाश होता है इति बलादिचूर्ण ॥ २०२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एला[illegible]त्वे[illegible]पल्यर्द्धपलंपृथक् । सितामधूकखर्ज्जूर[illegible]ीका[illegible]चा[illegible]न्मि ताः॥ संचूर्ण्य[illegible]वटिकाःसम्प्रकल्पयेत्। अक्षमात्रांततश्चै[illegible]दिने॥ क्षतं[illegible]संस्वासा[illegible]कांवमिंभ्रमम्। मूर्च्छांमदंतृषांशोषंपार्श्वशू[illegible]॥ प्ली [illegible]माढ्यवातंचरक्तपित्तंस्वरक्षयम्। एलादिगुटिकाहन्तितृष्यासन्तर्पणी[illegible] इत्ये लादिगुटिका॥ २०३॥

इलायची, तेजपात[illegible] दालचीनी यह तीनों छः२माशे पीपल दो तोले शक्कर मुलहठी खजूर तथा दाख चार चार तोले इन सबको पीसकर सहतके साथ एक एक तोले की गोली बनावे एक गोली रोज खानेसे क्षत, क्षय, ज्वर, खांसी, श्वास, हिचकी, छर्दि, भ्रम, मूर्च्छा, मद, तृषा, शोष, पसलीकी पीडा, अरुचि, प्लीहा, आढ्यवात, रक्तपित्त, तथा स्वरभेद का नाश होताहै और वीर्य की वृद्धि तथा सन्तर्पण होताहै इति एलादि गुटिका॥ २०३॥

द्राक्षायाःप्रस्थमेकन्तुमधुकस्यपलाष्टकम्। पचेत्तोयाढ़केशुद्धेपादशेषेणतेनतु ॥ पलिकेमधुकद्राक्षेपिष्टेकृष्णापलद्वयम्। प्रदायसर्पिषःप्रस्थंपचेत्क्षीरेचतुर्गुणे॥ सिद्धेशीते पलान्यष्टौशर्कारायाःप्रदापयेत्। एतद्द्राक्षाघृतंसिद्धंक्षतक्षीणसुखावहम्॥ वातंपित्तंज्वरं श्वासंविस्फोटकहलीमकं कृच्छ्रप्रदरंरक्तपित्तञ्चहन्यान्मांसबलप्रदम् ॥ इति द्राक्षादि घृतम्॥ २०४॥

दाख ६४ तोले मुलहठी ३२ तोले इन दोनोंको २५६ तोले जलमें औटावे जब चौथाई बाकी रहै तब मुलहठी तथा दाख चारचार तोले और पीपल आठ तोले इनसबको पीसकर उसमें मिलावै और ६४ तोले घी और इसका चौगुना दूध डालकर इसका पाककरे जब पाक होकर शीतल होजाय तब ३२ तोले शक्कर मिलावे इस घृतके सेवनसे क्षत क्षीणवायु, पित्त, ज्वर, श्वास, विस्फोटक, हलीमक, प्रदर तथा रक्तपित्तका नाश होताहै और मांस तथा बलकी वृद्धि होतीहै॥ इति द्राक्षादिघृत॥ २०४॥

क्षीरेधात्रीचमञ्जिष्ठाक्षीरिणाञ्चतथारसैः । पचेत्समैर्घृतंप्रस्थंमधुरैःकर्षसम्मितैः॥ द्राक्षाद्विचन्दनोशीरैःशर्करोत्पलपद्मकैः । मधूककुसुमानन्ताकाश्मरीतृणसंज्ञकैः॥ प्रस्थार्द्धमधुनःशीतेशर्कराद्धतुलांतथा। पलार्द्धिकांश्चसञ्चूर्ण्यत्वगेलापद्मकेशरान्॥ विनीयतत्रसंलिह्यान्मात्रांनित्यंसुयन्त्रितः। अमृतप्राशमित्येतदश्विभ्यांपरिकीर्तितम्॥ क्षीरमांसाशिनांहन्तिरक्तपित्तंक्षतंक्षयम्। तृष्णारुचिश्वासकासच्छर्दिमूर्च्छाप्रमर्द्दनम्॥ मूत्रकृच्छ्रज्वरघ्नञ्चबल्यंस्त्रीरतिवर्द्धनम्। अमृतप्राशावलेहः॥ २०५॥

दूध, घी, आमलेकारस, मँजीठका रस, तथा क्षीरीवृक्षोंका रस यह सब चौंसठ २ तोले इनमें जीवक, दाख, दोनों चन्दन, खस, शक्कर, कमल, पद्माक, महुएके फूल, धमासा, गम्भारी, रोहित तृण इन सबका एक२तोले कल्क मिलाकर पाककरे पाकके शीतल होजानेपर ३२ तोले सहत २०० तोले शक्कर और दालचीनी, इलायची, तेजपात तथा नागकेशर यहसब दोदोतोले मिलावे यह अमृतप्राश अवलेह अश्विनीकुमारोंने बनायाहै इसको मात्राके अनुसार खाकर दूध तथा मांसका आहारकरने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से रक्तपित्त, [illegible]रक्षत, क्षय, तृषा, अरुचि, श्वास, खांसी, छर्दि, मूर्च्छा, [illegible], ज्वर[illegible] बल तथा मैथुन शक्ति की वृद्धि होती है इति अमृत प्राश[illegible] ॥ २०५ ॥

य[illegible]मविदाहिहितंलघु । अन्नपानंनिषेव्यंस्यात्क्षतक्षीणैःसुखा[illegible] ॥ शोकं[illegible]क्रोधमसूयतांचत्यजेदुदारान्विषयान्भजेच्च । तथाद्विजातीन्त्रिद[illegible] इच[illegible]चपुण्याःशृणुयाद्‌द्विजेभ्यः ॥ २०६ ॥

उरःक्षतवाला मनुष्य शीतल, विदाहरहित, हितकारी, हलके तथा तृप्त[illegible] अन्नपानका सेवनकरे शोक, क्रोध, स्त्रीप्रसंग तथा ईर्षाका त्यागकरे उत्तम विषयोंका सेवनकरे[illegible] ब्राह्मण, देवता तथा गुरुओंका पूजन करे और ब्राह्मणोंसे पवित्र कथाओंको सुने ॥ २०६ ॥

राजयक्ष्मणिःरसाः ॥

रसभस्मामृतासत्वंलोहंमधुघृतान्वितम् । अमृतेश्वरनामायंषड्गुञ्जोराजयक्ष्मणि रसभस्ममारितोरसः । अमृतासत्वंगुडूचीसत्वम् । लोहंमारितम् । अमृतेश्वररसोराजयक्ष्मणिरसेन्द्रचिन्तामणौ ॥ २०७ ॥

राजयक्ष्मापररस ॥

पारेकीभस्म गिलोयकासत और लोहेकी भस्म इनको सहत और घी के साथ छः रत्तीखाने से राजयक्ष्माका नाश होताहै इति अमृतेश्वररस ॥ २०७ ॥

त्र्योंऽशोमारितात्सूतादेकोंऽशो हेमभस्मतः । एकोंऽशोमृत[illegible]ताम्रस्यशिलागंधश्चतालकम् ॥ प्रत्येकंभागयुग्मंस्यादेतत्सर्वंविचूर्णयेत् । वराटीः पूर[illegible]तेनछागीक्षीरेणटङ्कणम् ॥ पिष्ट्वातेनमुखंरुद्ध्वामृद्भाण्डेताश्चधारयेत् । कुप्यांपचेद्गजपुटेस्वांङ्गशीतंसमुद्धरेत् ॥ रसोराजमृगाङ्कोऽयंचतुर्गुञ्जःक्षयापहः । मरिचैरूनविंशत्याकणाभिर्दशभिस्तथा ॥ मधुनासर्पिषाचापिदद्यादेतंरसंभिषक् । अनेननश्यतिक्षिप्रंवातश्लेष्मभवःक्षयः ॥ इति राजमृगाङ्कोरसोराजयक्ष्मणिरसेन्द्रचिन्तामणौ ॥ २०८ ॥

पारेकी भस्म ३ भा० सोने तथा तांबेकीभस्म एक २ भा० मैनशिल गन्धक तथा हरिताल दोदो भा० इनसबको एकसाथ पीसकर कौडियों में भरदेवे फिर बकरीके दूध में सुहागेको पीसकर उस सुहागेसे कौडियोंके मुखको बन्दकरके मिट्टीके पात्रमें रखकर गजपुटमें पाककरे फिर शीतल होजाने पर निकालकर चाररत्तीरस उन्नीस मिर्च तथा १० पीपल घी और सहतके साथ खाय इसके द्वारा वात कफसे होनेवाले राजयक्ष्माका शीघ्रही नाश होताहै इति मृगांकरस ॥ २०८ ॥

शुद्धंसूतंद्विधागन्धंकुर्य्यात्खल्वेनकज्जलीम् । तयोःसमंतीक्ष्णचूर्णंमर्दयेत्कन्यकाद्रवैः ॥ द्वियाममातपेगोलंताम्रपात्रेनिधापयेत् ॥ आच्छाद्यैरण्डपत्रेणस्यादुष्णंयामयुग्मतः ॥ धान्यराशौन्यसेत्पश्चादष्टरात्रात्तदुद्धरेत् । सञ्चूर्ण्यगालयेद्वस्त्रैःसत्यंवारितरंभवेत् ॥ त्रिकटुत्रिफलैलाभिर्जातीफललवंगकैः । नवभागोन्मितैरेभिःसमैरेषरसोभवेत् । निष्कद्वयमितंनित्यंमधुनासहलेहयेत् । अयमग्निरसोनाम्नाकासक्षयहरःपरः ॥ इति अग्निरसःशार्ङ्गधरे । इति राजयक्ष्माधिकारः ॥ २०९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...भाग इनदोनोंकी कजली करे फिर इनदोनोंकी ... भस्म मिलाकर घीक्वार ... समें घोटे और गोलासा होजानेपर तांबे के पात्रमें रख... धूप में सुखावे फिर रेंडके पत्तोंसे ढककर गरमही गरम उसको धान्यराशिमें रखदे ... के पीछे निकाल और पीसके कपडेमें छानले तब यह निस्सन्देह पानीमें तैरने लगताहै इसके उपरान्त त्रिकटु, त्रिफला, इलायची, जायफल तथा लौंग यह सब समभाग और इन सबकी बराबर यहरस ग्रहण करे और सहत के साथ चार चार माशे रोजखाय इस्से खांसी और राजयक्ष्माका नाश होता है इति अग्निरस इति राजयक्ष्माधिकार ॥ २०६ ॥

अथ कासाधिकारः । तत्रकासस्यनिदानसम्प्राप्तिपूर्व्वकंसामान्यलक्षणमाह ॥

धूमोपघाताद्रजसस्तथैवव्यायामरूक्षान्ननिषेवणाच्च । विमार्गगत्वादतिभोजनस्यवेगावरोधात्क्षवथोस्तथैवच ॥ प्राणोह्युदानानुगतःप्रदुष्टःसभिन्नकांस्यस्वनतुल्यघोषः । निरेतिवक्त्रात्सहसासदोषोमनीषिभिःकासइतिप्रदिष्टः ॥ सदोषस्तादृक्प्राणानिलरूपः २१० ॥

खांसीका अधिकार । खांसीका निदान संप्राप्तिपूर्व्वक सामान्य लक्षण ॥

मुख तथा नासिका में धुयें तथा धूलके जानेसे व्यायामसे रूखा अन्नखानेसे वेगों के तथा छींकके रोकनेसे और बहुत भोजनके अपने मार्ग के अनुसार पेटमें न जानेसे दोषसहित प्राणवायु उदानके साथ फूटे कांसेके समान शब्द करती हुई हठपूर्व्वक मुखसे निकलती है इसीको पण्डितलोग खांसी कहते हैं ॥ २१० ॥

संख्यामाह ॥

पञ्चकासाःस्मृतावातपित्तश्लेष्मक्षतक्षयैः । क्षयायोपेक्षिताःसर्वेबलिनश्चोत्तरोत्तरम् ॥ क्षयाय राजयक्ष्मणे ॥ २११ ॥

खांसी की संख्या ॥

खांसी ५ प्रकार की होती है जैसे वातज पित्तज कफज क्षतज और क्षयज यह पांचो उत्तरोत्तर बलवान् हैं इनकी उपेक्षा करनेसे राजयक्ष्मा रोग उत्पन्न होताहै ॥ २११ ॥

अथ पूर्व्वरूपमाह ॥

पूर्व्वरूपम्भवेत्तेषांशूकपूर्णगलास्यता । कण्ठेकण्डूश्चभोज्यानामवरोधश्चजायते ॥ कवलगिलनेकण्ठव्यथा ॥ २१२ ॥

खांसीका पूर्व्वरूप ॥

खांसी होनेके पहले गले तथा मुख में काँटेसे पडना गलेमें खुजली और भोजन करने के समय गलेमें पीडा यह लक्षण होते हैं ॥ २१२ ॥

अथ वातिकस्यरूपमाह ॥

हृच्छङ्खपार्श्वोदरमूर्द्धशूलीक्षामाननःक्षीणबलस्वरौजाः । प्रसक्तवेगस्तुसमीरणेन भिन्नस्वरःकासतिशुष्कमेव ॥ शङ्खोललाटैकदेशःशुष्कंश्लेष्मादिरहितम् ॥ २१३ ॥

वातज खांसीके लक्षण ॥

वातज खांसीमें हृदय शङ्ख (शिरकी हड्डियां) पसली उदर तथा शिरमें पीडा मुखमें क्षीणता बल स्वरतथा ओजकीक्षीणताऔरवेगपूर्व्वक स्वरभेदसहित सूखी खांसीआना यह लक्षण होते हैं २१३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पैत्तिकस्यरूपमाह ॥

उरः... ॥ ...क्तशोषैरभ्यर्दितस्तिक्तमुखस्तृषार्त्तः। पित्तेनपीता...मेत्कटूनि...से त्सपाण्...दिह्यमानः । सपाण्डुःपाण्डुरोगयुक्तः ॥ २१४ ॥

पित्तज खांसीके लक्षण ॥

छातीमें दाह ज्वर मुखकासूखना तथा तिक्तता तृषा शरीरमें दाह पांडुवर्ण और खांसीमें पीले तथा कडुए कफका गिरना यह पित्तज खांसीके लक्षणहैं ॥ २१४ ॥

श्लैष्मिकस्यरूपमाह ॥

प्रलिप्यमानेनमुखेनसीदन्शिरोरुजार्त्तःकफपूर्णदेहः । अभक्तरुग्गौरवकण्डुयुक्तः कासेद्भृशंसान्द्रकफःकफेन ॥ प्रलिप्यमानेनेमुखनेश्लेष्मलिप्तेनमुखेनोपलक्षितः । अभक्तरुक्नभक्तेरुक्रुचिर्यस्यसःकण्डूकण्ठएवच ॥ २१५ ॥

कफज खांसीके लक्षण ॥

मुखका कफके लिपा रहना, शिरमें पीड़ा, देहमें कफभरा हुआसा मालूम पड़ना, भोजनमें अरुचि भारीपन गलेमें खुजली और खांसीमें बहुत गाढे कफका निकलना यहकफज खांसीके लक्षणहैं २१५॥

क्षतकासस्यनिदानपूर्विकांसम्प्राप्तिमाह ॥

अतिव्यवायभाराध्वयुद्धाश्वगजनिग्रहैः । रूक्षस्योरःक्षतंवायुर्गृहीत्वाकासमावहेत् ॥ अश्वगजयोर्निग्रहोदमनम् ॥ २१६ ॥

उरःक्षतकी खांसीका निदान और संप्राप्ति ॥

बहुत मैथुन भार उठाना मार्गगमन युद्ध और हाथी तथा घोडेका रोकना इनकारणोंसे वात रूखे पुरुषके उरःक्षत उत्पन्न करके खांसीको उत्पन्न करतीहै ॥ २१६ ॥

लक्षणमाह ॥

सपूर्वंकासतेशुष्कंततःष्ठीवेत्सशोणितम् । कण्ठेनकूजतात्यर्थंविभग्नेनेवचोरसा ॥ सूचीभिरिवतीक्ष्णाभिस्तुद्यमानेनशूलिना । दुःखस्पर्शेनशूलेनभेदपीडाभितापिना ॥ पर्वभेदज्वरश्वासतृष्णावैस्वर्यपीडितः । पारावतइवाकूजन्कासवेगात्क्षतोद्भवात् ॥ कण्ठेनेत्युपलक्षणेतृतीयाएवमुरसेति ॥ २१७ ॥

क्षतजखांसीका लक्षण ॥

उरःक्षतकी खांसीमें पहले सूखी खांसी आतीहै फिर रुधिर सहित थूक निकलताहै गले में बहुत पीडाहोतीहै छातीमें टूटनेके समान तथा सुई गडने के समानपीडा तथा स्पर्शकी असह्यता होतीहै शूल तथा टूटनेकीसी पीडासे व्याकुलता होतीहै पोरुओं का टूटना ज्वर श्वास तृषा तथा स्वरभङ्ग होताहै और खांसीके वेगमें कबूतरके समान गलेसे शब्द निकलताहै यह लक्षण होते हैं ॥ २१७ ॥

क्षयकासस्यनिदानपूर्विकांसम्प्राप्तिमाह ॥

विषमासात्म्यभोज्यातिव्यवायाद्वेगनिग्रहात् । घृणिनांशोचतांनृणांव्यापन्नेऽग्नौत्रयोमलाः ॥ कुपिताःक्षयजंकासंकुर्य्युर्देहक्षयप्रदम्। घृणिनांविचिकित्सायुक्तानां ॥ २१८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्षयज खांसीकी निदानपूर्व्वक संप्राप्ति ॥

विषम तथा असात्म्य भोजन अत्यन्त मैथुन मलमूत्रादि वेगोंका रोकना [illegible] तैल [illegible] केद्वारा अग्निके बिगडने पर तीनों दोष कुपित होकर देहकी क्षय करनेवाली क्षयज [illegible] खांसी को उत्पन्न [illegible]त ९ २१८ ॥

लक्षणमाह ॥

सगात्रशूलज्वरमोहदाहप्राणक्षयञ्चोपलभेत्सकासी । शुष्कंविनिष्ठीवतिनिर्बलस्तुप्रक्षीणमांसोरुधिरंप्रपूयम् । तंसर्वलिंगंभृशदुश्चिकित्स्यंचिकित्सितज्ञाःक्षयजंवदन्ति २१९॥

क्षयकी खांसीका लक्षण ॥

शरीरमें पीड़ा, ज्वर, मोह, दाह, निर्बलता, देहका सूखना, मांसकी क्षीणता तथा पीपसहित रुधिरका थूकना और प्राणक्षय यह क्षयकी खांसी के लक्षणहैं इन सब लक्षणों से युक्त इस खांसीको वैद्यलोग अत्यन्त कठिनतासे चिकित्सा करने के योग्य कहते हैं ॥ २१९ ॥

असाध्यसाध्ययाप्यत्वमाह ॥

इत्येषक्षयजःकासःक्षीणानांदेहनाशनः । साध्योबलवतांवास्याद्याप्यस्त्वेवंक्षतोत्थितः ॥ एवंक्षतोत्थितःक्षीणानामसाध्यः । बलवतांसाध्योयाप्योवास्यात् ॥ नवौकदाचित् सिध्येतामपिपादगुणान्वितौ सिध्येतांक्षतजक्षयजौसद्वैद्यः सद्भेषजःसत्परिचारकयुक्तस्यसदातुरस्यजातौ ॥ "स्थविराणांजराकासःसर्वोयाप्यःप्रकीर्त्तितः" स्थविराणांजराकासःवृद्धानांयःकासोभवतिसजराकाससंज्ञःससर्वएववातजादिरपियाप्यः ॥ २२० ॥

साध्य असाध्य और याप्य लक्षण ॥

क्षयकी खांसी क्षीण मनुष्योंको असाध्य और बलवानोंको साध्य अथवा याप्य होती है क्षत तथा क्षयसे हुई खांसी जो थोडेदिनकी होय और सद्वैद्य उत्तम औषध अच्छा परिचारक तथा वैद्यकी आज्ञा माननेवाला रोगीहोय तो कभी कभी साध्य होतीहै वृद्धपुरुषोंकी खांसीको जरा कास कहते हैं वह वातज आदिक सब याप्यहैं ॥ २२० ॥

त्रीन्पूर्वान्साधयेत्साध्यान्पथ्यैर्याप्यांस्तुयापयेत् । स्वल्पोऽपिकासःउपेक्षणीयोनभवति ॥ किन्तुशीघ्रंप्रतिकरणीयइत्याह । ज्वरारोचकहल्लासस्वरभेदक्षयादयः ॥ भवन्त्युपेक्षयायस्मात्तस्मात्तांत्वरयाजयेत् ॥ २२१ ॥

वातज, पित्तज तथा कफज यह तिन प्रकारकी खांसी साध्यहैं इसलिये इनकी चिकित्सा करनी चाहिये और याप्य खांसीको पथ्यकेद्वारा रोकेरहै थोडीसीभी खांसीकी उपेक्षा न करे किन्तु शीघ्रही उसका यत्नकरे क्योंकि कहागयाहै कि खांसीकी उपेक्षा करने से ज्वर, अरुचि, मतली, स्वरभेद और क्षय आदिक रोग उत्पन्न होतेहैं इसलिये शीघ्रही उसकी चिकित्सा करनी चाहिये ॥ २२१ ॥

अथ कासस्यचिकित्सा ॥ तत्रवातकासस्य चिकित्सा ॥

वास्तुकोवायसीशाकंमूलकंसुनिषण्णकम् । स्नेहास्तैलादयोभक्ष्यास्तथेक्षुरसगौड़िकाः ॥ दध्यारनालाम्लफलंप्रसन्नापानमेवच । शस्यतेवातकासेषुस्वाद्वम्ललवणानिच ॥ वायसीशाकंमाचीकवैयाइतिलोके । सुनिषण्णकंसिरुआइतिलोके ॥ शाकविशेषः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चांगेरी[illegible]षएणंचतुर्दलम्। शाकोजलान्वितेदेशेचतुष्पत्री[illegible]वोचयते॥ [illegible] पतियाइ[illegible]२२॥ वातकी खांसीकी चिकित्सा॥

बथुई, [illegible]या, मूली, चौपतिया, तेल आदिक स्नेह, ऊखका रस, गुड़के बने हुए भोजनके पद[illegible] आरनाल, खट्टेफल, पना और मधुर खट्टे और लवण रस युक्त पदार्थ वातज खांसी में हितकारी चौपतिया जलसहित स्थानमें उत्पन्न होताहै इसमें चांगेरी के समान चारपत्ते होतेहैं॥ २२२॥

ग्राम्यानूपोदकैःशालियवगोधूमषष्टिकान्। रसैर्माषात्मगुप्ता[illegible]षैर्वाभोजयेद्भिषक्॥ ग्राम्यानूपोदकैरसैरित्यन्वयः। आत्मगुप्ताकिवांचइतिलोके। दशमूलीकृताश्वासकासहिक्कारुजापहा। यवागूदीपनीवृष्यावातरोगविनाशिनी॥ रसःकर्कटकानांवाघृतभृष्टःसनागरः। वातकासप्रशमनःश्रृंगीमत्स्यास्युवायुनः॥ २२३॥

शालि धान्य, जौ, गेहूं और सांठी को जंगली अनूप देशके तथा जलके जीवों के मांसके साथ अथवा उर्द तथा किवांच के बीजके यूषके साथ भोजन करावे दशमूलके काढ़े से पाक कीगई यवागू श्वास, खांसी, हिचकी तथा वातरोगोंको नष्ट करती है और वीर्य्य तथा अग्निको बढ़ाती है केकडा अथवा सींगवाली मछली का रस घीमें परिपाक किया हुआ सोंठके साथ खानेसे वातकी खांसी का नाश होताहै॥ २२३॥

अथ पित्तकासस्य चिकित्सा॥

कण्टकारीयुगंद्राक्षावासाकर्चूरबालकैः। नागरेणचपिप्पल्याक्कथितंसलिलंपिबेत्॥ शर्करामधुसंयुक्तंपित्तकासहरंपरम्॥ २२४॥

पित्तकी खांसीकी चिकित्सा॥

दोनों भटकटैया, दाख, बांसा, कपूर, सुगन्धबाला, सोंठ और पीपल इनके काढ़े में शक्कर और सहत डालकर पीनेसे पित्तकी खांसीका नाश होताहै॥ २२४॥

अथ कफकासस्यचिकित्सा॥

पिप्पलीकट्फलंशुण्ठीश्रृंगीभार्ङ्गीतथोषणम्। कारवीकण्टकारीचसिन्दुवारोयवानिका॥ चित्रकोवासकश्चैषांकषायंविधिवत्कृतम्। कफकासविनाशायपिबेत्कृष्णारजोयुतम्। पिप्पल्यादिक्काथः॥ २२५॥ कफकी खांसीकी चिकित्सा॥

पीपल, कायफल, सोंठ, काकडासिंगी, भारंगी, मिर्च, कालाजीरा, भटकटैया, निर्गुण्डी, अजवाइन, चीता और बांसा इनसबका विधिपूर्व्वक क्काथ बनाकर पीपलका चूर्ण मिलाकर पीने से कफकी खांसीका नाश होताहै इति पिप्पल्यादि क्काथ॥ २२५॥

क्षतजकासचिकित्सा॥

इक्षिवक्षुवालिकापद्मम्मृणालोत्पलचन्दनम्। मधुकंपिप्पलीद्राक्षालाक्षाश्रृंगीशतावरी॥ द्विगुणाचतुगाक्षीरीसितासर्वंचतुर्गुणा। लिह्यात्तन्मधुसर्पिर्भ्यांक्षतकासनिवृत्तये॥ इक्षुवालिकाइक्षुभेदः। चन्द्रइतिलोके। पद्मंपद्मकाष्ठंमृणालंविषंउत्पलंकमलंचन्दनमत्रधवलंचूर्णत्वात्श्रृंगीकर्कटश्रृंगीतुगाक्षारीवंशरोचनासाचेक्षोर्द्विगुणा॥ २२६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उरःक्षतकी खांसीकी चिकित्सा ॥

ईख, इक्षुबालिका (एक प्रकारकी ईख) पद्माक, कमलकी डंडी, कमल, [illegible] तेन [illegible] नहठी, पीपल, [illegible]ख, लाख, काकडासिंगी, सतावरि यह सब समभाग और बंशलोचन [illegible] सबकी चौगुनी शक्कर इन सब औषधियों को मिलाकर सहत और घी के साथ चाटने से क्षत[illegible] खांसी का नाश होताहै ॥ २२६ ॥

अथ क्षयकासचिकित्सा ॥

चूर्णंकाकुभमिष्टंवृ[illegible]करसभावितंबहुवारान्। मधुघृतसितोपलाभिर्लेह्यंक्षयकासरक्तहरम् ॥ काकुभचूर्णंककुभचूर्णम् ॥ २२७ ॥

क्षयकी खांसीकी चिकित्सा ॥

अर्जुनकी छालके चूर्णमें अनेक बार बांसेके रसकी भावना देकर सहत घी और मिश्री के साथ चाटनेसे क्षयकी खांसी और रुधिर गिरनेका नाश होताहै ॥ २२७ ॥

अथ कासस्य सामान्य चिकित्सा ॥

ताप्यमानस्यकासेननासास्त्रावेस्वरेजड़े । क्षवथौगंधनासेचधूमपानंप्रयोजयेत् ॥ मनःशिलालमरिचमांसीमुस्तेंगुदैःपिबेत्। धूमंत्र्यहञ्चतस्यानुपयश्चसगुडंपिबेत् ॥ एष कासान्पृथग्द्वन्द्वसर्वदोषसमुद्भवान्। शतैरपिप्रयोगाणामसाध्यान्साधयेद्ध्रुवम् ॥ आलंहरितालं । बदरीदलमालिप्तंशिलयातपशोषितम् । तद्धूमपानंसक्षीरं महाकास निवारणम् ॥ २२८ ॥

खांसीकी सामान्य चिकित्सा ॥

खांसी के द्वारा नाक बहना, स्वरकी जडता तथा छींक उपस्थित होनेपर और सूंघने की शक्ति के न होनेपर धूम्रपान कराना चाहिये मैनशिल- हरिताल, मिर्च, जटामांसी, मोथा और हिंगोट इनके द्वारा तीन दिनतक धूम्रपान करे और धूम्रपान करके गुडसहित दूध पिये इस के द्वारा अलग अलग द्वन्द्वज सान्निपातज और सब प्रकार की असाध्य खांसी भी नष्ट होतीहैं मैनशिल से बेरकी पत्तियों पर लेप करके धूप में सुखावे और इनका धूम्र पान करके दूध पिये इससे बहुत बढ़ी हुई खांसीका नाश होताहै ॥ २२८ ॥

कण्टकारीकृतःक्वाथःसकृष्णःसर्वकासहा । कण्टकार्याःकणायाश्चचूर्णंसमधुकासहृत् २२९ ॥

भटकटैयाके काढेमें पीपलका चूर्ण मिलाकर पीनेसे सब प्रकारकी खांसीका नाश होताहै भटकटैया और पीपलके चूर्णको सहत के साथ चाटने से खांसीका नाश होताहै ॥ २२९ ॥

लवंगजातीफलपिप्पलीनांभागान्प्रकल्प्याक्षसमानमीषाम् । पलार्द्धमानंमरिचंप्रदेयं पलानिचत्वारिमहौषधस्य ॥ सितासमस्तेनसमाथचूर्णंरोगानिमानाशुबलान्निहन्ति । कासज्वरारोचकमेहगुल्मश्वासाग्निमान्द्यग्रहणीविकारान्॥समशर्करंचूर्णंवटिकावा २३०

लौंग, जायफल तथा पीपल यह सब तोले २ भर मिर्च दो तोले सोंठ १६ तो० और इन सब की बराबर शक्कर मिलाकर अथवा मोदक बनाकर खाने से खांसी, ज्वर, अरुचि, प्रमेह, बायगोला श्वास, मन्दाग्नि और ग्रहणीका नाश होताहै इति समशर्करचूर्णया बटिका ॥ २३० ॥

कुनटीसैन्धवंव्योषंविडंगामयहिंगुभिः। लेहःसाज्यमधुःकासश्वासहिक्कानिवारणः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हरीत[illegible]शुण्ठीमरीचंगुडसंयुतम्। कासश्लेष्मापहंप्रोक्तंपर[illegible]म[illegible]नम् २३[illegible]॥

मैनां[illegible]॥ [illegible] त्रिकटु, बायबिडंग, कूट और हींग इन सबको पीसकर सहत और घीके साथ चाटने [illegible] और हिचकीका नाश होताहै हड, पीपल, सोंठ और मिर्च इनके चूर्णको गुडके [illegible] रखनेसे खांसी तथा कफका नाश होताहै और अग्निकी बहुत वृद्धि होतीहै ॥ २३१॥

कर्षःकर्षांशपलंपलद्वयंस्यात्ततोऽर्द्धकर्षश्च । मरिचस्यपिप्पलीनांदाड़िमगुड़यावशूकानाम् ॥ सर्वौषधिभिरसाध्याःकासायेवैद्यनिर्मुक्ताः। अपिपूय[illegible]र्द्दयतांतेषामिदमौषधंपरमम् ॥ कर्षांशोऽत्रकर्षद्वयम् ॥ २३२॥

मिर्च १ तो० पीपल २ तो० अनारकी छाल ४ तो० गुड ८ तो० और जवाखार ६ माशे इनसब औषधियों को सेवन करनेसे सबप्रकारकी असाध्य खांसी भी नष्ट होतीहै और जिनको पीबकीवमन होतीहै उनके लियेभी यह औषधि हितकारी है ॥ २३२॥

मरिचंकर्षमात्रंस्यात्पिप्पलीकर्षसम्मिता । अर्द्धकर्षोयवक्षारःकर्षयुग्मञ्चदाडिमम्। एतच्चूर्णीकृतंयुञ्ज्यादष्टकर्षगुडेनहि। शाणप्रमाणांगुटिकांकृत्वावक्त्रेविधारयेत् ॥ अस्याःप्रभावात्सर्वेऽपिकासायान्त्येवसंक्षयम्। दाडिमफलत्वक्ग्राह्यंमरिचादिगुटिका॥२३३॥

मिर्च तथा पीपल एक एक तोला जवाखार ६ माशा अनारकी छाल २ तोला और गुड ८ तोले इन सबकी चार माशेकी गोली बनाकर मुखमें रखनेसे सब प्रकारकी खांसीका नाश होताहै इति मरिचादि गुटिका ॥ २३३ ॥

समूलवल्कच्छदकण्टकार्यास्तुलान्ततोद्रोणमितंजलञ्च । हरीतकीनांशतमेकपात्रे विपाच्यकुर्याच्चरणाम्बुशेषम्। तस्मिन्कषायेतनुवस्त्रपूतेहरीतकीभिःसहितंगुडस्य । तुलांविनिःक्षिप्यपचेत्सुपक्वमेतत्समुत्तार्यसुशीतलञ्च। पलंपलञ्चापिकटुत्रयञ्च तथाचतुर्जातपलंविचूर्ण्य । पलानिषट्पुष्परसस्यचापिविनिःक्षिपेत्तत्रविमिश्रयेच्च ॥ प्रयुज्यमानोविधिनैषलेहोयथाबलञ्चापियथानलञ्च । वातात्मकंपित्तकृतंकफोत्थं त्रिदोषजातान्यपिचत्रिदोषम्। क्षतोद्भवञ्चक्षयजञ्चकासं श्वासञ्चहन्यात्सहपीनसेन । यक्ष्माणमेकादशरूपमुग्रंहरीतकीयाभृगुणोपदिष्टा ॥ पुष्परसोमधु इतिभृगुहरीतकी ॥ २३४॥

जड पत्ती तथा पुष्प समेत भटकटैया ४०० तोला और १०० हड इन दोनों को १०२८ तोले जलमें पाक करके जब चौथाई बाकीरहै तब छानले फिर उसी काढ़े में ४०० तोले गुड और वही हड़ें डालकर पाककरे अच्छे प्रकार पाक होकर शीतल होजाने पर मिर्च, पीपल तथा सोंठ चारचार तोले दालचीनी, इलायची, तेजपात तथा नागकेशर चारचार तोले और सहत २४ तोले इन सब औषधियोंको उसमें मिलाकर खूब चलादेवे फिर अग्नि बलके अनुसार इनको सेवन करने से बातज, पित्तज, कफज, त्रिदोषज, क्षतज तथा क्षयजआदि सबप्रकारकी खांसी, श्वास, पीनस और संपूर्णलक्षणों से युक्त यक्ष्मा रोगका नाश होताहै इति भृगुहरीतकी ॥ २३४॥

कण्टकारीतुलांनीरद्रोणेपक्त्वाकषायकम्। पादशेषंगृहीत्वाचतत्रचूर्णानिदापयेत् ॥ पृथक्पलांशान्येतानिगुडूचीचव्यचित्रकौ । मुस्तकर्कटशृंगीचत्र्यूषणंधन्वयासकः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भार्ङ्गीरास्नाशटी ... वशर्करापलविंशतिः । प्रत्येकंचपलान्यष्टौप्रदद्यात् ... तैल ... पक्त्वा लेहत्वमानीतेशीतेमधुपलाष्टकम् । चतुर्भागन्तुगाक्षीर्य्याःपिप्पलीच ... ॥ क्षिप्त्वानिदध्यात्सुदृढेमृन्मयेभाजनेशुभे । लेहोऽयंहन्तिहिक्कार्त्तिकासश्वासा ... ॥ कण्टकार्य्यवलेहः इतिकासाधिकारः ॥ २३५ ॥

४०० तोले भटकटैया ... १०२४ तोले जलमें पाककरके चौथाईबाकी रहनेपर उतारले फिर गिलोय, चव्य, चीता, मोथा, काकडासिंगी, सोंठ, पीपल, मिर्च, जवासा, भारंगी, रासना तथा कचूर इन सबको पीसके चार चार तोले शक्कर, अस्सी तोले घी तथा तेल बत्तीस २ तोले इनसब औषधियोंको उस में मिलाकर पाककरे फिर अवलेहसा बनकर शीतल होजानेपर सहत ३२ तोले और बंशलोचन तथा पीपल सोलह २ तोले मिलाकर मट्टी के पात्रमें रखछोड़े इस अवलेहके सेवनसे हिचकी, खांसी तथा श्वासका नाश होताहै इति कंटकादिअवलेह इतिकासाधिकार ॥ २३५ ॥

अथ हिक्काधिकारस्तत्रहिक्काया विप्रकृष्टंनिदानमाह ॥

विदाहिगुरुविष्टंभिरूक्षाभिष्यन्दिभोजनैः । शीतपानाशनस्नानरजोधूमातपानिलैः॥ व्यायामकर्मभाराध्ववेगाघातापतर्पणैः । हिक्काश्वासश्चकासश्चनृणांसमुपजायते ॥ अपतर्पणमनशनादि ॥ २३६ ॥

अब हिचकीका अधिकार हिचकीके दूरवाले कारण ॥

विदाही, भारी, विष्टंभी, रूखी, शीतल तथा अभिष्यन्दी वस्तुओंके भोजनसे शीतल जल पीनेसे शीतल जलमें स्नानकरनेसे नासिकामें धूल तथा धुएंके जानेसे धूप तथा वायुके सेवनसे व्यायाम भार लेचलना मार्गगमन तथा मल मूत्रादि वेगोंके रोकनेसे और व्रत आदिकों से मनुष्यों को हिचकी श्वास और खांसी उत्पन्न होतीहै ॥ २३६ ॥

संप्राप्तिमाह ॥

वायुःकफेनानुगतःपञ्चहिक्काःकरोतिहि । अन्नजांयमलांक्षुद्रांगम्भीरांमहतीन्तथा २३७॥

हिचकीकी संप्राप्ति ॥

कफके साथ मिलीहुई वात पांच प्रकार की हिचकियों को उत्पन्न करतीहै जैसे अन्नजा, यमला, क्षुद्रा, गंभीरा और महती ॥ २३७॥ सामान्यलक्षणमाह ॥

मुहुर्मुहुर्वायुरुदेतिसस्वनोयकृत्प्लिहान्त्राणिमुखादिवाक्षिपन्।सदोषवानाशुहिनस्त्यसून्यतस्ततस्तुहिक्केत्यभिधीयतेबुधैः ॥ वायुरत्रसोदानप्राणोबोद्धव्यः । उदेतिऊर्ध्वंयातिश्वसनःहिगितिशब्दवान्। ऊर्ध्वंगमनंविशिनष्टियकृदित्यादिप्लिहइतिशब्दोऽप्यस्तिदीर्घत्वविकल्पात्।मुखादितिल्यब्लोपे पञ्चमी तेनयकृत्प्लीहान्त्राणिमुखमानीयअक्षिपन् निःसारयन्इवेत्यर्थःवायुः दोषवान्दोषोऽत्रकफःतद्वान्वायुःकफेनानुगतइतिसम्प्राप्तिःहिनस्तीतिहिक्कापृषोदरादित्वाद्रूपासिद्धिःहिगितिशब्दंकरोतीति ॥ २३८ ॥

हिचकीका सामान्य लक्षण ॥

कफ सहित प्राण तथा उदान वायु बारबार हिक् शब्द पूर्वक यकृत्प्लीहा तथा आंतोंको मानो

१ प्राणोदकान्नवाहीनिस्रोतांसिविकृतोनिलः । हिक्काः करोतिसंरुध्य तासां लिंगं पृथक् शृणु ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुखमें [illegible] हुई [illegible] निकलती है इसमें शीघ्रही प्राणोंका नाश होता है [illegible]लिये पंडितलोग इसको [illegible] ॥ २३८ ॥ पूर्वरूपमाह ॥

क[illegible]ोरसोर्गुरुत्वञ्चवदनस्यकषायता । हिक्कानांपूर्वरूपाणिकुक्षेराटोपएवच ॥ [illegible] नस्यकषायतावातात् ॥ २३९ ॥

हिचकी का पूर्वरूप ॥

हिचकी होनेके पहले कंठ तथा हृदय में भारीपन मुख में कषैलापन और पेटमें गड़गड़ाहट का होना यह लक्षण होतेहैं ॥ २३९ ॥ अन्नजालक्षणमाह ॥

पानान्नैरतिसंभुक्तैःसहसापीडितोऽनलः । हिक्कयत्यूर्ध्वगोभूत्वातांविद्यादन्नजांभिषक् ॥ अनिलः प्राणोवायुः ॥ २४० ॥

अन्नजा हिचकी के लक्षण ॥

बहुत अन्न पानके सेवन से कुपित हुई प्राण वायु ऊर्ध्वगामी होकर हिचकी को उत्पन्न करता है इसको अन्नजा कहते हैं ॥ २४० ॥ यमलालिङ्गमाह ॥

चिरेणयमलैर्वेगैर्याहिक्कासम्प्रवर्त्तते । कम्पयन्तीशिरोग्रीवांयमलांतांविनिर्दिशेत् २४१॥

यमला हिचकी के लक्षण ॥

जो हिचकी देर देरमें एक साथ दोबार आतीहै और शिर तथा ग्रीवामें कम्प होताहै उसको यमला कहते हैं ॥ २४१ ॥ क्षुद्रामाह ॥

प्रकृष्टकालैर्यावेगैर्मन्दैःसमभिवर्त्तते । क्षुद्रिकानामसाहिक्का जत्रुमूलंप्रधावति ॥ प्रकृष्टकालैश्चिरेण । जत्रुःकक्षोरसोःसन्धिः ॥ २४२ ॥

क्षुद्रा हिचकी का लक्षण ॥

जो हिचकी जत्रु (बगल और छाती की सन्धि) के मूलसे उठकर थोडेवेगके साथ देरमें आती है उसको क्षुद्रिका कहते हैं ॥ २४२ ॥ गंभीरामाह ॥

नाभिप्रवृत्तायाहिक्काघोरागम्भीरनादिनी । अनेकोपद्रववतीगम्भीरानामसास्मृता॥ अनेकोपद्रववतीतृष्णाज्वरादियुक्ता ॥ २४३ ॥

गंभीरा हिचकी का लक्षण ॥

जो हिचकी नाभिसे उठकर गंभीरशब्द के साथ आतीहै और तृषा तथा ज्वरादिक उपद्रवों के सहित होती है उसको गंभीरा कहते हैं ॥ २४३ ॥

महतीमाह ॥

मर्माण्युत्पीडयन्तीवसततंयाप्रवर्त्तते । महाहिक्केतिसाज्ञेयासर्व्वगात्रप्रकम्पिनी ॥ मर्माणिवस्तिहृदयशिरःप्रभृतीनि ॥ २४४ ॥

महती हिचकी के लक्षण ॥

जो हिचकी वस्ति हृदय तथा शिर आदि मर्मस्थलोंको पीडित करती हुई और सब अंगोंको कँपाती हुई लगातार आती है उसको महती कहते हैं ॥ २४४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

असाध्यत्वमाह ॥

आकम्पतेहिक्कतोयस्यदेहोदृष्टिश्चोर्ध्वंताम्यतेयस्यनित्यम् । क्षीणोऽन्नद्विट्क्षौतिय श्चातिमात्रंतौद्वौचान्त्यौवर्जयेद्धिक्कमानौ ॥ आकम्पतेविस्फूर्यतइवतौद्वाविति । यआकम्प तइत्यादिनानित्यमेवेत्यनेनैकोहिक्कमानः ॥ क्षीणइत्यादिनातिमात्रमित्यन्तेनापरः । तौद्वौ अन्त्यौचगम्भीरयामहतोहिक्कयाहिक्कमानौवर्जयेत् ॥ अपरञ्चअतिसञ्चितदोषस्यभक्त च्छेदकृशस्यच । व्याधिभिःक्षीणदेहस्यवृद्धस्यातिव्यवायिनः ॥ आसांयासासमुत्पन्नाहि क्काहन्त्याशुजीवितम् ॥ यमिकाचप्रलापार्त्तिमोहतृष्णासमन्विता ॥ २४५ ॥

असाध्य हिचकी के लक्षण ॥

जिस हिचकी में सम्पूर्ण शरीर कांपे नेत्र ऊपरको उठजायँ और मोहहोवे वह असाध्यहै जिस हिचकीमें क्षीणता अन्नमें अरुचि और वारंवार छींकहोय वह असाध्य है और गंभीरा तथा महती हिचकी भी असाध्यहैं और भी कहागया है कि दोषोंका बहुत इकट्ठा होना, अन्न में अरुचि, कृशता, रोगोंसे शरीरका क्षीण होना अथवा अत्यन्त मैथुन करना इन सबसे युक्त मनुष्योंकी हिचकी और परिश्रम से हुई हिचकी असाध्य होती है प्रलाप मोह और तृषा युक्त यमिका हिचकी असाध्य होती है ॥ २४५ ॥

साध्यत्वमाह ॥

अक्षीणश्चाप्यदीनश्चस्थिरधात्विन्द्रियश्चयः । तस्यसाधयितुंशक्यायमिकाहन्त्य तोऽन्यथा ॥ २४६ ॥

साध्य हिचकी के लक्षण ॥

क्षीणता तथा दीनतारहित और धातु तथा इन्द्रियोंकी स्थिरतावाले मनुष्य की यमिका हिचकी साध्य होती है और इसके विशेष असाध्य होती है ॥ २४६ ॥

हिक्कायाश्चिकित्सा ॥

यत्किञ्चित्कफवातघ्नमुष्णंवातानुलोमनम् । भेषजंपानमन्नंवाहिक्काश्वासेषुतद्धितम् ॥ हिक्काश्वासातुरेपूर्वंतैलाक्तेस्वेदइष्यते । ऊर्ध्वाधःशोधनंशस्तंदुर्बलेशमनंमतम् ॥ प्राणा वरोधतर्जनविस्मापनशीतवारिपरिषेकैः । चित्रैःकथाप्रयोगैःशमयेद्धिक्कांमनोऽभिघा तैश्च ॥ २४७ ॥

हिचकी की चिकित्सा ॥

कफ वातनाशक उष्ण और वात को अपने मार्ग के अनुसार करनेवाली औषध तथा अन्नपान हिचकी और श्वास में हितकारी है हिचकी और श्वासवाले को पहले तेल लगाकर स्वेद देना चाहिये फिर वमन विरेचन के द्वारा शुद्ध करना चाहिये और दुर्बल मनुष्यको शमन औषध देना चाहिये प्राणायाम तर्जना आश्चर्य्य करना शीतल जल से सींचना अनेक प्रकार की विचित्र कथा और मन के तोड़नेवाली क्रिया इन सबसे हिचकी निवृत्त होती है ॥ २४७ ॥

हिक्कार्त्तस्यपयश्छागंहितंनागरसाधितम् । मधुसौवर्चलोपेतंमातुलुंगरसंपिबेत् ॥ मधुकंमधुसंयुक्तंपिप्पलीशर्करान्विता । नागरंगुडसंयुक्तंहिक्काघ्नंनावनंत्रयम् ॥ प्रवाल शंखत्रिफलाचूर्णंमधुघृतप्लुतम् । पिप्पलीगैरिकञ्चेतिलिह्याद्धिक्कानिवारणः ॥ नैपाल्यागो विषाणाद्वाकुष्ठात्सर्जरसस्यवा । धूपंकशस्यवाकार्यंपिबेद्धिक्कोपशान्तये ॥ नैपालीमनः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिला ... नःक्षिप्तहिंगुमाषभवोरजः । हिक्काःपञ्चापिहन्त्याशुधूमःपीतोनसंशयः॥ ह... णीनांश्चकाथोहिंगुसमन्वितः।हिक्काप्रशमनश्रेष्ठोधन्वन्तरिवचोयथा२४८

सोंठ के द्वारा पाकक्रियाहुआ बकरीका दूध अथवा सहत और काले नोनसे युक्त नींबूका... पीनेसे हिचकी निवृत्तहोती है सहतयुक्त मुलहठी का चूर्ण शक्कर सहित पीपलका चूर्ण अथवा गुड सहित सोंठका चूर्ण इनके द्वारा नासलेनेसे हिचकीका नाशहोताहै मूंगा, ..., त्रिफला और पीपल तथा गेरू इनके चूर्णको सहत और घीके साथ चाटनेसे हिचकीका नाशहोताहै मैनशिल तथा गौका सींग अथवा कूट तथा राल या कुशके द्वारा धूम्रपान करनेसे हिचकी नाशहोती है हींग और उर्दके चूर्ण को धूमरहित अङ्गारेपर छोड़कर उसके धुएंके पीनेसे पांचों प्रकारकी हिचकी का नाश होताहै मटर और पीपल के काढ़े में हींग डालकर पीनेसे हिचकीका नाशहोताहै यह धन्वन्तरि का वचनहै २४८॥

चन्द्रसूरस्यबीजानिक्षिपेदष्टगुणेजले । यदामृदूनिमृदूनीयात्ततोवाससिगालयेत् ॥ हिक्कातिवेगविकलस्तज्जलंपलमात्रया । पिबेत्पिबेत्पुनश्चापिहिक्कावश्यंप्रशाम्यति ॥ चन्द्रसूररसःइतिहिक्काधिकारः॥ २४९ ॥

चन्द्रसूर के बीजों को अठगुने जल में पाककरे जब चौथाई बाकी रहै तब धीरे २ कपड़े में छान ले इसको एक २ पल वारंवार पिये इससे बहुत वेगवालीभी हिचकी नष्टहोती है इति चन्द्रसूर रस इति हिक्काधिकार ॥ २४६ ॥

अथ श्वासाधिकारः । तत्र निदानमाह ॥

यैरेवकारणैर्हिक्कादेहिनांसम्प्रवर्त्तते । तैरेवबहुभिःश्वासोव्याधिर्घोरःप्रजायते ॥ श्वासस्यभेदानाह । महोर्द्ध्वच्छिन्नतमकक्षुद्रभेदैस्तुपञ्चधा ॥ भिद्यतेसमहाव्याधिःश्वास एकोविशेषतः॥ २५० ॥

श्वासका अधिकार श्वासका निदान ॥

जिनकारणोंसे हिचकी उत्पन्नहोती है उन्हींकारणों की अधिकतासे भयंकर श्वासरोग उत्पन्नहोता है महाश्वास, ऊर्ध्वश्वास, छिन्नश्वास, तमकश्वास और क्षुद्रश्वास यह श्वासके पांचभेद हैं॥ २५०॥

तस्यपूर्व्वरूपमाह ॥

प्राग्रूपंतस्यहृत्पीडाशूलमाध्मानमेवच । आनाहोवक्त्रवैरस्यंशङ्खनिस्तोदएवच २५१॥

श्वासका पूर्व्वरूप ॥

श्वासरोग उत्पन्नहोने के पहले हृदयमें पीड़ा, शूल, आध्मान, आनाह, मुखकी विरसता और शिर की हड्डियों में पीड़ा यह लक्षण होते हैं॥ २५१ ॥

सम्प्राप्तिमाह ॥

यदास्रोतांसिसंरुध्यमारुतःकफपूर्व्वकैः । विष्वग्व्रजतिसंरुद्धस्तदाश्वासान्करोति सः । विष्वग्व्रजतिसर्वतोविमार्गान्यातिसंरुद्धःकफेनरुद्धमार्गः॥ २५२ ॥

श्वासकी संप्राप्ति ॥

जब कफयुक्त वात स्रोतों को रोककरके और कफसे रुके हुए मार्गवाली होकर सब ओर अपने मार्गों से रहित होकर घूमती है तब श्वासरोग उत्पन्न होताहै ॥ २५२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महा श्वासस्यलक्षणमाह ॥

ऊद्धूयमानवातोयःशब्दवद्दुःखितोनरः । उच्चैःश्वसितिसन्नद्धो [illegible] शम् ॥ प्रनष्टज्ञानविज्ञानस्तथाविभ्रान्तलोचनः । विष्टब्धाक्षाननोबद्धमूत्रवर्चाविशीर्णवाक् ॥ दीनःप्रश्वसितञ्चास्यदूराद्विज्ञायतेभृशम् । महाश्वासोपसृष्टस्तुक्षिप्रमेवविपद्यते ॥ ऊद्धूयमानवातः ऊर्द्ध्वंनीयमानोवातोयस्यसः शब्दवत् । सशब्दंयथास्यात् ॥ कीदृक्सशब्दस्तद्बोधयितुमाह । मत्तर्षभइव ॥ उच्चैःश्वसितीत्यन्वयःसन्नद्धःआनद्धःआनाहयुक्त इति यावत् । ज्ञानंशास्त्रम् । विज्ञानंतदर्थविनिश्चयः ॥ विशीर्णवाक्स्खलितवचनः । दीनःम्लानःमारकश्चायंमहाश्वासः ॥ २५३ ॥

महाश्वास का लक्षण ॥

जिस मनुष्यकी वायु ऊपर लेजाईगईहोकर मतवाले बैलकेसे शब्दके साथ निरन्तर क्लेश सहित निकलती है शास्त्रज्ञान तथा उसके अर्थजानने की शक्ति नष्ट होजाती है नेत्र चंचल होजाते हैं मुख तथा नेत्र खुले रहतेहैं मल मूत्र रुकजाताहै वचनशक्ति नष्टहोजाती है म्लानता तथा अफराहोताहै और श्वासदूरसे सुनाई देताहै उसको महाश्वास कहतेहैं महाश्वासवाला शीघ्रही मरजाताहै २५३ ॥

ऊर्द्ध्वश्वासमाह ॥

ऊर्द्ध्वंश्वसितियोऽत्यर्थंनचप्रत्याहरत्यधः । श्लेष्मावृतमुखस्रोताःक्रुद्धगन्धवहार्दितः ॥ ऊर्द्ध्वदृष्टिर्विपश्यंस्तुविभ्रान्ताक्षइतस्ततः । प्रमुह्यन्वेदनार्त्तश्चशुष्कास्योरतिपीडितः ॥ ऊर्द्ध्वश्वासेप्रकुपितेह्यधःश्वासोनिरुद्ध्यते । मुह्यतस्ताम्यतश्चोर्द्ध्वश्वासस्तस्यनिहन्त्यसून् ॥ सर्वेषुश्वासेषुऊर्द्ध्वश्वासोऽत्रअत्यर्थमितिविशेषः । नचप्रत्याहरत्यधःनश्वासमधःकरोति । श्लेष्मावृतेत्यादिश्लेष्मणावृतंयन्मुखंस्रोतांसिचतैःक्रुद्धोयोगन्धवहस्तेनार्दितः ॥ विपश्यन्इतस्ततोविकृतंयथास्यादेवंपश्यन् अधःश्वासोनिरुद्ध्यतेश्वासोनाधःप्रवर्त्ततइत्यर्थः । मुह्यतोमोहंप्राप्नुवतस्ताम्यतोग्लानिंप्राप्नुवतश्चऊर्द्ध्वश्वासः असून्प्राणान्हन्ति २५४ ॥

ऊर्ध्वश्वास का लक्षण ॥

जो मनुष्य अत्यन्त ऊपर को श्वास छोड़े नीचे को श्वास न खींचसके कफके द्वारा मुख और स्रोतके बन्द होजाने से कुपितहुई वायुके द्वारा पीड़ित होय ऊपर दृष्टिवाला भ्रमयुक्त नेत्रवाला इधर उधर देखे मोह पीड़ा तथा मुख के सूखने से पीड़ित होय और बेचैनी से व्याकुल होय उस का ऊर्ध्वश्वास कहतेहैं ऊर्ध्वश्वास के कुपित होने पर नीचे के श्वास रुक जाते हैं मोह तथा ग्लानि युक्त मनुष्य ऊर्ध्वश्वास में मरजाताहै ॥ २५४ ॥

छिन्नमाह ॥

यस्तुश्वसितिविच्छिन्नंसर्वप्राणेनपीडितः । नावश्वसितिदुःखार्तोमर्मच्छेदरुजार्दितः ॥ आनाहस्वेदमूर्च्छार्त्तोदह्यमानेनवस्तिना । विप्लुताक्षःपरिक्षीणःश्वसन्रक्तैकलोचनः ॥ विचेताःपरिशुष्कास्योविवर्णःप्रलपन्नरः । छिन्नश्वासेनविच्छिन्नःसशीघ्रंविजहा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्यसून ॥ ...च्छिन्नःसविच्छेदंसर्वप्राणेनसर्वबलेनममर्मच्छेदरुजार्दितः ... हृदयशिरश्छेद वेदनये... ...ह्यमानेनवस्तिनाउपलक्षितः।विप्लुताक्षः अश्रुपूर्णनेत्रः ॥ विचेताः उद्विग्न... ...च्छिन्नश्वासेनविच्छिन्नः यस्तुश्वसितिविच्छिन्नमित्यादिलक्षणयुक्तोयःस्वरः छिन्नश्वासेनविच्छिन्नःपीडितोबोद्धव्यःमारकश्चायंछिन्नश्वासः ॥ २५५ ॥

छिन्नश्वास का लक्षण ॥

जो मनुष्य पीड़ित होकर पूरे बलसे ठहर ठहर कर श्वास लेवे अथवा श्वास न ले तथा कष्ट-युक्त होय हृदय तथा मस्तक में छेदने के समान पीड़ासे युक्त होय आनाह स्वेद मूर्च्छा तथा मूत्राशय में दाह से व्याकुल होवे अश्रुपूर्ण तथा रक्तवर्णनेत्र से युक्त होय बहुत क्षीणता से श्वास छोड़े उद्विग्नचित्त होवे और मुखका सूखना विवर्णता तथा प्रलापसे युक्त होय उसको छिन्नश्वासवाला जानना चाहिये इन लक्षणोंसे युक्त रोगी शीघ्रही मरजाताहै ॥ २५५ ॥

तमकश्वासमाह ॥

प्रतिलोमोयदावायुः स्रोतांसिप्रतिपद्यते । ग्रीवांशिरश्चसंगृह्यश्लेष्माणंसमुदीर्य्य च ॥ करोतिपीनसंतेनरुद्धोघुर्घुरकंतथा । अतीवतीव्रवेगेनश्वासंप्राणप्रपीडकम् । प्रताम्यतिसवेगेनत्रस्यतेसन्निरुध्यते । प्रमोहंकासमानश्चसगच्छतिमुहुर्मुहुः ॥ श्लेष्मणामुच्यमानेनभृशंभवतिदुःखितः । तस्यैवचविमोक्षान्तेमुहूर्त्तंलभतेसुखम् ॥ तथास्योद्ध्वंसतेकण्ठःकृच्छ्राच्छक्नोतिभाषितुम् । नचापिनिद्रांलभतेशयानःश्वासपीडितः ॥ पार्श्वेतस्यावगृह्णातिशयानस्यसमीरणः । आसीनोलभतेसौख्यमुष्णञ्चैवाभिनन्दति ॥ उच्छ्रिताक्षोललाटेनस्विद्यताभृशमार्तिमान् । विशुष्कास्योमुहुःश्वासोमुहुश्चैवावधम्यते ॥ मघाम्बुशीतप्राग्वातैःश्लेष्मलैश्चविवर्द्धते । सयाप्यस्तमकश्वासःसाध्योवास्यान्नवोत्थितः ॥ संगृह्यव्यथयासमुदीर्य्यवर्द्धयित्वा । पीनसंनासास्रावंतेनश्लेष्मणाघुर्घुरं घुर्घुरशब्दंप्राणप्रपीडकम् ॥ प्राणाधिष्ठानहृदयप्रपीडकम् । प्रताम्यतितमसिप्रविशतीववेगेनश्वासवेगेनसन्निरुध्यतेनिश्चेष्टोभवति । इति चरकः । सन्निरुध्यतेश्वासइतिजैयटः ॥ श्लेष्मणाऽमुच्यमानेनमुखंमुखमिवऊद्ध्वंसतेव्यथितोभवतिशयानःशयननिहिताङ्गोऽवगृह्णातिपीडयतिउष्णञ्चैवाभिनन्दति इत्यनेनतमकोवातकफारब्धइतिबोद्धव्यः ॥ उच्छ्रिताक्षोऽशूनाक्षःललाटेनस्विद्यताउपलक्षितः अवधम्यतेगजारूढस्येवसर्वगात्रञ्चाल्यते ॥ तमकस्यैवपित्तानुबन्धजनितज्वरादियोगेनप्रतमकसंज्ञामाह ॥ ज्वरमूर्च्छापरीतश्चविद्यात्प्रतमकंतुतम् ॥ २५६ ॥

तमकश्वास का लक्षण ॥

जब वायु उलटी होकर संपूर्ण स्रोतों में प्राप्त होतीहै और ग्रीवा तथा शिरमें पीड़ा करती हुई कफको बढ़ाकर पीनसको उत्पन्न करतीहै तब उस कफसे रुकीहुई वायु बहुत तीव्रवेग के साथ गले में घुरघुर शब्दपूर्वक हृदय में पीड़ाकारी श्वासरोगको उत्पन्न करती है इससे युक्त होकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मनुष्य अन्धकार में घुसाहुआसा चेष्टा रहित तथा अत्यन्त तृषा से युक्त होताहै और खांसने से मोहको प्राप्त होताहै कफके न निकलने से बहुत दुःखित होताहै कफके निकलने से कुछदेर सुखको प्राप्त होताहै कंठमें पीड़ासे युक्त होताहै बहुत कष्ट से बोलसक्ता है श्वास से पीड़ित होने के कारण सोने से निद्रा नहीं आती है सोने से वायु के द्वारा पसलियों में पीडा होती है बैठने से कुछ सुख होताहै उष्ण वस्तु में इच्छा होती है नेत्रों में सूजन तथा शिरमें पसीना आता है मुखसूख जाताहै बहुत पीडा होती है बहुत श्वास आतेहैं और वारंवार हाथी पर सवार होने के समान शरीर काँपता है मेघ जल शीत पुरवाई हवा और कफकारी वस्तुओं से यह रोग बढ़ता है यह तमक श्वास याप्य है और नवीन होय तो कभी कभी साध्यभी होता है तमकश्वासवाले को जो ज्वर और मूर्च्छा होवे तो उसको प्रतमक जानना चाहिये ॥ २५६ ॥

तस्यैवापरलक्षणमाह ॥

उदावर्त्तरजोजीर्णक्लिन्नकायनिरोधजः । तमसावर्द्धतेऽत्यर्थंशीतलैश्चप्रशाम्यति ॥ मज्जतस्तमसीवास्यविद्यात्प्रतमकन्तुतम् । उदावर्त्तोरोगविशेषःरजोधूलिःअत्राजीर्णो न्नादिक्लिन्नंविदग्धंकायनिरोधःअंगायोगानांनिरोधःतस्मादुत्पन्नः । अथवाक्लिन्नकायःवृद्ध नरःनिरोधःवेगानान्तु ॥ २५७ ॥

प्रतमकश्वास का अन्य लक्षण ॥

उदावर्त्तरोग नासिका में धूलजाना, अजीर्ण, वृद्धावस्था तथा मलादि वेगों के रोकने से प्रतमक श्वास उत्पन्न होता है यह अन्धकारसे बहुत बढ़ता है और शीतल वस्तुओं से शान्त होताहै इस रोग से युक्त मनुष्य सदैव अन्धकार में घुसाहुआसा मालूम होता है इसको प्रतमकश्वास कहतेहैं २५७ ॥

क्षुद्रश्वासस्यलक्षणान्याह ॥

रूक्षायासोद्भवःकोष्ठेक्षुद्रोवातमुदीरयेत् । क्षुद्राश्वासोनसोऽत्यर्थंदुःखेनांगप्रबाधकः ॥ हिनस्तिनसगात्राणिनचदुःखोयथेतरे । नचभोजनपानानांनिरुणद्ध्युचितांगतिम् ॥ नेन्द्रियाणांव्यथांचापि काञ्चिदापादयेद्रुजम् । ससाध्यउक्तोबलिनःसर्वेचाव्यक्तलक्षणाः क्षुद्रःअल्पनिदानलिंगः उदीरयेत्ऊर्द्ध्वंगच्छेत् दुःखःदुःखप्रदःइतरेचत्वारःश्वासाः सर्वे महाश्वासादयोऽपि । अव्यक्तलक्षणाःसन्तःसाध्याः ॥ २५८ ॥

क्षुद्रश्वासका लक्षण ॥

रूखी वस्तुओं के सेवनसे और परिश्रम के द्वारा कोष्ठ में रहनेवाली वायु ऊर्ध्वगामी होकर थोड़े निदान तथा लक्षणवाले क्षुद्रश्वास को उत्पन्न करती है यह क्षुद्रश्वास अत्यन्त क्लेशकारी पीडा शरीर में नहीं उत्पन्न करता है शरीर को हीन नहीं करता अन्य श्वासों के समान दुःखदायी नहीं होता अन्नपान की यथोचित गतिको नहीं रोकता और इन्द्रियों में पीडा तथा अन्य रोगों को नहीं उत्पन्न करता है यह श्वास साध्य है और बलवान् पुरुषों के महाश्वास आदिक संपूर्ण श्वास जो अप्रकट लक्षणवाले होवें तो साध्यहैं ॥ २५८ ॥

श्वासानांसाध्यत्वादिकमाह ॥

क्षुद्रःसाध्यतमस्तेषांतमकःक्षुद्रउच्यते । त्रयःश्वासानसिध्यन्तितमकोदुर्बलस्यच ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कामंप्राणहरा रोगाबहवोनतुतेतथा । यथाश्वासश्चहिक्काचहरतः प्राणमाशुवै ॥ बहवोऽत्र ज्वरादयः । यथेमौश्वासहिक्केहरतोजीवमाशुते ॥ २५९ ॥

श्वास के साध्यासाध्य लक्षण ॥

क्षुद्र श्वास साध्य है तमक श्वास कष्टसाध्य है महाश्वास ऊर्ध्वश्वास तथा छिन्नश्वास ये तीनों असाध्य हैं और दुर्बल मनुष्य को तमकश्वास भी असाध्य है यद्यपि प्राणनाशक ज्वरादि अनेक रोग हैं परन्तु श्वास तथा हिचकी के समान शीघ्र प्राणनाशक और कोई रोग नहीं है २५९॥

अथ श्वासस्य चिकित्सा ॥

श्वासहिक्कातुरंप्रायःस्निग्धैःस्वेदैरुपाचरेत् । युक्तैर्लवणतैलाभ्यांतैरस्यग्रथितःकफः श्वासोविलयमायातिमारुतश्चोपशाम्यति । स्विन्नंज्ञात्वाततश्चैनंभोजयेच्चरसौदनम्॥ स्वरसंश्रृंगबेरस्यमाक्षिकेणसमन्वितम् । पाययेच्छ्वासकासघ्नंप्रतिश्यायकफापहम् ॥ श्रृंगबेरमार्द्रकं । प्रस्थंबिभीतकानामस्थिविनासाधयेदजामूत्रे ॥ अयमवलेहोलीढोमधुसहितःश्वासकासघ्नः ॥ देवदारुबलामांसीःपिष्ट्वावर्त्तिंप्रकल्पयेत् । तांघृताक्तांपिबेद्धूमं श्वासंहन्तिसुदारुणम् ॥ दशमूलीशटीरास्नापिप्पलीविश्वपौष्करैः । श्रृंगीतामलकीभार्गीगुडूचीनागराग्निभिः ॥ यवागूंविधिनासिद्धांकषायंवापिबेन्नरः । श्वासहृद्ग्रहपार्श्वार्त्तिहिक्काकासप्रशान्तये ॥ तामलकीभूम्यामलकी ॥ २६० ॥

श्वास की चिकित्सा ॥

श्वास तथा हिचकीवाले की प्रायः स्निग्ध स्वेदों से चिकित्सा करे नोन तथा तेलको मिलाकर स्वेद देनेसे लिपटा हुआ कफ तथा श्वास नष्ट होताहै और वायु शान्त होती है इस प्रकार स्वेद देकर मांस के रसके साथ भात खिलावै अदरक के रसमें सहत डालकर पीने से श्वास खांसी पीनस तथा कफ का नाशहोता है गुठली रहित ६४ तोले बहेडे को लेकर बकरी के मूत्र में पाक करे फिर इसको सहत के साथ चाटने से श्वास तथा खांसीका नाश होता है देवदारु, बरियारा तथा जटामांसी को समभाग लेकर पीसकर बत्ती बनावे फिर उसको घीमें डुबोकर उसका धूमपान करे इससे अत्यन्त भयंकर श्वासका नाश होताहै दशमूल, कचूर, रासना, पीपल, सोंठ, पुष्करमूल, काकडासिंगी, भुइँआमला, भारंगी, गिलोय सोंठ और चीता इन सबका काढ़ा अथवा इनके काढ़ेसे बनीहुई यवागू पीनेसे श्वास, हृदय के रोग, पसली की पीडा, हिचकी तथा खांसीका नाश होताहै ॥ २६०॥

दशमूलस्यवाक्काथःपौष्करेणावचूर्णितः । श्वासकासप्रशमनःपार्श्वशूलनिवारणः ॥ रम्भाकुन्दशिरीषाणांकुसुमंपिप्पलीयुतम् । पिष्ट्वातण्डुलतोयेनपीत्वाश्वासमपोहति ॥ श्रृङ्गीमहौषधकणाघनपौष्कराणां चूर्णं[1]शटीमरिचयोश्चसितविमिश्रम् । क्काथेनपीतममृतावृषपञ्चमूल्याः श्वासंत्र्यहेणविनिहन्तिहिघोररूपम् ॥ पञ्चमूलीतुसामान्यापित्तेयोज्याकनीयसी । महतीमारुतेदेयासैवदेयाकफाधिके ॥ कूष्माण्डकशिफाचूर्णंपीतंकोष्णेनवारिणा । शीघ्रंशमयतिश्वासंकासञ्चापिसुदारुणम् ॥ हरिद्रांमरिचंद्राक्षांकणांरास्नांशटींगुडम् । कटुतैलंलिहन्हन्याच्छ्वासान्प्राणहरानपि ॥ २६१ ॥

१ बहुषु पुस्तकेषु चूर्णं शटीमरिचयोश्चेतिपाठोदृश्यतइति ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दशमूल के काढ़ेमें पुष्करमूलके चूर्णको छोडकर पीनेसे श्वास, खांसी और पसली की पीडा का नाश होताहै केला, कुन्द और सिरस के फूलोंको पीसकर पीपल मिलाकर चावलोंके पानी के साथ पीने से श्वास का नाश होता है काकडासिंगी, सोंठ, पपिल, मोथा, पुष्करमूल, कचूर तथा मिरचको समभाग लेकर इनके चूर्ण में सबकी बराबर मिश्री मिलाकर गिलोय, बांसा और पंचमूल इनके काढ़ेके साथ पीने से तीन दिनमें अत्यन्त भयंकर श्वासका नाश होता है जो श्वास में पित्त की अधिकता होय तो छोटा पंचमूल और जो कफ तथा वात की अधिकता होय तो बडा पंचमूल लेना चाहिये कुंभडेकी जडके चूर्ण को कुछ गरम जलके साथ पीनेसे शीघ्रही अत्यन्त भयंकर श्वास तथा खांसीका नाश होताहै हल्दी, मिर्च, दाख, पीपल, रासना, कचूर और गुड इन सबको कडुयेतेल के साथ चाटने से प्राणनाशक श्वासका भी नाश होताहै ॥ २६१ ॥

शतंसंगृह्यभार्ग्यास्तुदशमूल्यास्तथाशतम् । शतंहरीतकीनाञ्चपचेत्तोयेचतुर्गुणे ॥ पादावशेषेतस्मिंस्तुरसेवस्त्रनिपीडिते । आलोड्यचतुलांपूतांगुडस्यत्वभयास्ततः ॥ पुनःपचेत्तुमृद्वग्नौयावल्लेहत्वमेतितत् । शीतेचमधुनस्तत्रषट्पलानिविनिःक्षिपेत् ॥ त्रिकटुत्रिसुगन्धञ्चपलमात्रंपृथक्पृथक् । यवक्षारंकर्षयुग्मंसञ्चूर्ण्यप्रक्षिपेत्ततः ॥ भक्षयेदभयामेकांलेहस्यार्द्धपलंतथा । श्वासंसुदारुणंहन्तिकासंपञ्चविधंतथा ॥ अर्शांस्यरोचकंगुल्मंशकृद्भेदंक्षयंतथा । स्वरवर्णप्रदोह्येषजठराग्नेश्चदीपनः ॥ नाम्नाभार्गीगुडःख्यातोभिषग्भिःसकलैर्मतः । भार्गीगुडः ॥ २६२ ॥

भारंगी, दशमूल और हड इनको चार २ सौ तोले लेकर चौगुने जलमें पाककरे जब चौथाई बाकी रहै तब उतार कर छानले फिर उसी जलमें ४०० तोले गुड और वही हर्डे मिलाकर मन्दाग्नि में पाककरे जब अवलेह बन जाय तब उतारले और शीतल होजानेपर सहत २४ तोले, सोंठ, पीपल, मिर्च, दालचीनी, इलायची तथा तेजपात चारचार तोले और जवाखार दो तोले यहसब उसमें मिलावै एक हड और दो तोले अवलेह प्रतिदिन खाय इससे भयंकर श्वास, पांच प्रकार की खांसी, बवासीर, अरुचि, गोला, मलभेद तथा क्षय का नाशहोताहै और स्वर, वर्ण तथा जठराग्निकी वृद्धि होती है इति भार्गी गुड ॥ २६२ ॥

अष्टाङ्गचूर्णसंयुक्तंछागक्षीरंप्रयोजयेत् । श्वासंकासान्वितंघोरंहन्यादेतन्नसंशयः ॥ दशमूलरसंदेयंश्वासनिर्मूलशान्तये । अवश्यमरणीयोयःजीवेद्वर्षशतंनरः ॥ २६३ ॥

अष्टांगचूर्ण के साथ बकरी का दूधपीने से खांसी सहित भयंकर श्वास का निस्सन्देह नाशहोता है श्वासके निर्मूल शान्तिकेलिये दशमूलका रस पीनाचाहिये इससे जिसकी मृत्यु अवश्यहोतीहै वहभी सौ वर्षतक जीताहै ॥ २६३ ॥

रसोगन्धोविषञ्चापिटङ्कणञ्चमनःशिला । एतानिकर्षमात्राणिमरिचंचाष्टकर्षकम् ॥ कटुत्रयंकर्षयुग्मंपृथगत्रविनिःक्षिपेत् । रसःश्वासकुठारोऽयंसर्वश्वासनिवारणः । इति श्वासकुठाररसः इतिश्वासाधिकारः ॥ २६४ ॥

पारा, गन्धक, विष, सुहागा और मैनशिल यहसब एक २ तोले मिर्च ८ तोले और सोंठ पीपल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तथा मिर्च हो तोले इनसबको पीसकर सेवन करनेसे सब प्रकारके श्वासोंका नाश होताहै इति श्वास कुठार श्वासाधिकार ॥ २६४ ॥

अथ स्वरभेदाधिकारः । तत्रस्वरभेदस्यनिदानसम्प्राप्तिपूर्वकंलक्षणमाह ॥

अत्युच्चभाषणविषाध्ययनाभिघात सन्दूषणैःप्रकुपितापवनादयस्तु । स्रोतःसुतेस्वरवहेषुगताःप्रतिष्ठां हन्युःस्वरंभवतिचापिहिषड्विधःसः ॥ अध्ययनमुच्चैर्वेदादिपाठःअभिघातःकण्ठादिदेशेलगुडादिभिःएतैरत्युच्चभाषणादिभिश्चतुर्भिः संदूषणैरन्यैरपिनिजेर्दुष्टहेतुभिःस्रोतःसुस्वरवहेषुचतुर्षुप्रतिष्ठांस्थितिंगताःस्वरंहन्यु रितिलक्षणंसस्वरभेदःषड्विधः । वातपित्तकफसन्निपातक्षयमेदोभवभेदैः ॥ २६५ ॥

स्वरभेदका अधिकार स्वरभेदका निदान और संप्राप्तिपूर्वक लक्षण ॥

बहुत जोरसे बोलना,विषखाना,उच्चस्वरसे वेदआदिक पढ़ना और कंठादिकों में लाठी आदि चोट इन कारणों से कुपित वातादिक दोष स्वरके लेचलनेवाले चारों स्रोतोंमें स्थित होकर स्वरको बिगाडतेहैं स्वरभेद ६ प्रकारकाहै जैसे वातज,पित्तज,कफज,सन्निपातज क्षयज और मेदज॥२६५॥

तत्रवातिकस्वरभेदिनोलक्षणमाह ॥

वातेनकृष्णनयनाननमूत्रवर्चा भिन्नस्वरं वदतिगर्द्दभवत्खरञ्च । पित्तेनाह । पित्तेनपीतनयनाननमूत्रवर्चाब्रूयाद्गलेनसचदाहसमन्वितेन । गलदाहवचनसमयएवबोद्धव्यः । कफेनाह । ब्रूयात्कफेनसततंकफरुद्धकण्ठःस्वल्पंशनैर्वदतिचापिदिवाविशेषात्॥ दिवासूर्यरश्मिभिःकफस्याल्पीभावात् । सन्निपातेनाह । सर्वात्मकेभवतिसर्वविकारसम्पत्तञ्चाप्यसाध्यमृषयःस्वरभेदमाहुः । क्षयजमाह । धूम्येतवाक्क्षयकृतेक्षयमाप्नुयाच्चस्यादेवचापिहतवाक्परिवर्जनीयः । वाक्धूम्येतसधूमेवानिःसरतिदावंवाप्नुयाद्वागेव । मेदोभवमाह । अंतर्गलंस्वरमलक्ष्यपदंचिरेण । मेदोऽन्वयाद्वदतिदिग्धगलस्तृषार्तः । अन्तर्गलंगलस्यमध्यएवस्वरंवदति । दिग्धगलःमेदसाश्लेष्मणाचलिप्तगलः ॥ तृषार्त्तःमेदसोष्मणार्तवरोधात् ॥ २६६ ॥

वातज स्वर भेद के लक्षण ॥

वातज स्वरभेदमें नेत्र,मुख, मूत्र तथा मलमें कालापन और गधेकेसमान कर्कश तथा भंग स्वर निकलताहै पित्तज स्वरभेदमें नेत्र, मुख,मूत्र तथा मलमें पीलापन होताहै और बोलनेके समय गलेमें पीडाहोतीहै कफजस्वरभंग में गलेमें सदैव कफकेभरेरहनेसे बोलनेकी शक्ति कम होजातीहै और दिनमेंसूर्य्यकी किरणोंकेद्वारा कफके कमहोनेसे रात्रिकी अपेक्षा दिनमें धीरे २ कुछअधिक बोलाजाताहै सन्निपातज स्वरभंगमें तीनोंदोषोंके लक्षणहोतेहैं यह स्वरभेद असाध्य होताहै क्षयज स्वरभेदमें बोलनेकी शक्ति क्षीणहोकर धुएंसेयुक्त हुआसा वचन थोडा निकलताहै यह असाध्यहै मेदज स्वरभंगमें मेद तथा कफके द्वार कंठरुकाहुआसा मालूमहोताहै तृषा उत्पन्न होतीहै और गले के भीतर बहुतदेर में स्पष्टतारहित वचन बोलताहै ॥ २६६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

असाध्यत्वमाह ॥

क्षीणस्यवृद्धस्यकृशस्यचापिशिरोत्थितोयश्चसहोपजातः । ... समुद्भव इ... स्वरामयोनैवससिद्धिमेति ॥ क्षीणस्यक्षयरोगिणःकृशस्यअपुष्टस्य ॥ २६७ ॥

असाध्य स्वरभेदका लक्षण ॥

क्षयरोगी, वृद्ध, कृश तथा मेदवाले मनुष्यका स्वरभेद अथवा बहुतकालका पुराना या जन्मही से उत्पन्न हुआ और सन्निपातज स्वरभेद असाध्य होताहै ॥ २६७ ॥

स्वरभेदचिकित्सा ॥

वातादिजनितश्वासकासघ्नायेप्रकीर्त्तिताः । योगास्तानत्रयुञ्जीतयथादोषंचिकित्सकः॥ वातेसलवणंतैलंपित्तेसर्पिःसमाक्षिकम् । कफेसक्षारकटुकंक्षौद्रंकवलइष्यते ॥ गलेतालुनिजिह्वायांदन्तमूलेषुचाश्रितः । तेननिष्कृष्यतेश्लेष्मास्वरश्चाशुप्रसीदति ॥ आद्येकोष्णंजलंपेयंभुक्त्वाघृतरसौदनम् । क्षीराम्बुपानंपित्तोत्थेपिबेत्सर्पिरतन्द्रितः ॥ पिप्पलीपिप्पलीमूलंमरिचंविश्वभेषजम् । पिबेन्मूत्रेणमतिमान्कफजेस्वरसंक्षये ॥ २६८ ॥

स्वर भेदकी चिकित्सा ॥

वातादिदोषजनित श्वास तथा खांसी के नाश करनेवाले जो योग कहे गये हैं वही योग दोष के अनुसार स्वरभेदमें भी लेने चाहिये वातज स्वरभेदमें लवणयुक्त तेलके द्वारा पित्तजमें सहतयुक्त घी के द्वारा और कफज स्वरभेदमें जवाखार तथा त्रिकटुसमेत सहतके द्वारा ग्रास लेना चाहिये कंठ, तालु, जिह्वा तथा दांतोंकी जडमें लगालगाकर ग्रास मुखमें रखना चाहिये इससे कफ निकल जाताहै और स्वर उत्तम होजाताहै वातज स्वरभेद में घी तथा मांसके रसके साथ भात खाकर कुछ उष्ण जल पीना चाहिये पित्तज स्वरभेद में दूधमें जल मिलाकर पीना चाहिये और घी भी पीना चाहिये कफज स्वरभेदमें पीपल, पीपलामूल, मिर्च और सोंठको गौके मूत्रके साथ पिये ॥ २६८ ॥

निदग्धिकातुलाग्राह्यातदर्द्धंग्रन्थिकस्यतु । तदर्द्धंचित्रकस्यापिदशमूलञ्चतत्समम्॥ जलद्रोणद्वयेक्वाथ्यंगृह्णीयादाढकंततः। पूतेक्षिपेत्तदर्द्धन्तुपुराणस्यगुडस्यच ॥ सर्वमेकत्रकृत्वातुलेहवत्साधुसाधयेत् । अष्टौपलानिपिप्पल्यास्त्रिजातकपलंतथा ॥ मरिचस्यपलंचैकंसर्वमेकत्रचूर्णितम् । मधुनःकुडवंदत्वातदश्नीयाद्यथानलम् ॥ निदग्धिकावलेहोऽयंभिषग्भिर्मुनिभिर्मतः। स्वरभेदहरोमुख्यःप्रतिश्यायहरस्तथा ॥ कासश्वासाग्निमांद्यादीन्गुल्ममेहगलामयान् । आनाहमूत्रकृच्छ्राणिहन्याद्ग्रन्थ्यर्बुदानिच ॥ निदग्धिकावलेहः ॥ २६९ ॥

भटकटैया ४०० तोला पीपलामूल २०० तोला चीता तथा दशमूल सौ २ तोला इन सबको २०४८ तोले जलमें पाककरके २५६ तोले बाकी रहनेपर उतारकर छानलो फिर १२८ तोले पुराना गुड मिलायके अवलेहकासा पाककरे पाक होजानेपर पीपल ३२ तोले दालचीनी इलायची तेजपात तथा मिर्च चारचार तोले इन सबको पीसकर उसमें मिलावे और १६ तोले सहत मिलावे फिर अग्निके बलके अनुसार इसका सेवन करनेसे स्वरभेद, पीनस, खांसी, श्वास, मन्दाग्नि, गोला,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रमेह, गले रोग, आनाह, मूत्रकृच्छ्र, ग्रंथि और अर्बुद रोगका नाश होताहै इति निदग्धिकावलेह २६९

मृगना लालवंगकुसुमानिच। त्वक्क्षीरीचेतिलेह्योऽयंमधुसर्पिःसमायुतः॥ वाक्स्तम्भमुग्रंजयति स्वरभ्रंशसमन्वितम्। मृगनाभ्यादिरवलेहः॥ २७०॥

कस्तूरी, छोटी इलायची, लौंग और वंशलोचन इन सबको सहत और घीके साथ चाटनेसे स्वरभेद सहित अत्यन्त कठिन वाक्यस्तंभका नाश होताहै इति मृगनाभ्यादि अवलेह॥ २७०॥

ब्राह्मीवचाभयावासापिप्पलीमधुसंयुता। अस्यप्रयोगात्सप्ताहात्किन्नरैःसहगीयते॥ इति स्वरभेदाधिकारः॥ २७१॥

ब्राह्मी, वच, हड, अडूसा और पीपल इनको सहतके साथ सात दिन सेवन करनेसे मनुष्य किन्नरों के साथ गानेके योग्य होजाताहै इति स्वरभेदाधिकार॥ २७१॥

अथारोचकाधिकारः। तत्रसनिदानमरोचकमाह॥

वातादिभिःशोकभयातिलोभक्रोधैर्मनोघ्नाशनरूपगन्धैः। अरोचकाःस्युःपरिहृष्टदन्तः कषायवक्त्रश्चमतोऽनिलेन॥ अरोचकाःन भोजनेरुचिमुत्पादयन्तीत्यरोचकाव्याधयःपञ्चवातादिभेदैः। वातिकस्यलक्षणमाह। परिहृष्टदन्तःअम्लभक्षणेनेवपरिहृष्टोदन्तोयस्यसः। तथाकषायवक्त्रःकषायरसंवक्त्रंयस्यसः। पैत्तिकमाह। कट्वम्लमुष्णंविरसञ्चपूतिपित्तेनविद्याल्लवणञ्चवक्त्रम्। कट्वम्लमित्यादिनाविद्यादित्यनेनपैत्तिकस्यलक्षणमाहुः श्लैष्मिकमाह। यतोविदग्धश्लेष्मास्यलवणभावमुपैतिलवणञ्चवक्त्रम्। तथा माधुर्य्यं पैच्छिल्यगुरुत्वशैत्यस्निग्धत्वदौर्गन्ध्ययुतंकफेन। पैच्छिल्यंमुखस्याभ्यन्तरेस्निग्धत्वंबहिः। आगन्तुजमाह। अरोचकेशोकभयातिलोभक्रोधाद्यहृद्याशुचिगन्धजेस्यात्॥ स्वाभाविकञ्चास्यमथारुचिश्चत्रिदोषजेनैकरसंभवेत्तु। क्रोधादिशब्देनाहृद्ययोरशनरूपयोर्ग्रहणंस्वाभाविकञ्चअविकृतरसंत्रिदोषजमाह। नैकरसमनेकरसमास्यंस्यात्॥ २७२॥

अरुचिका अधिकार निदान सहित अरुचिका वर्णन॥

वातादिक दोष, शोक, भय, अतिलोभ, क्रोध, मनको अप्रियभोजन रूप तथा गन्धके द्वारा अरुचि उत्पन्न होतीहै वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज और आगन्तुक यह पांच प्रकारकी अरुचि होतीहै वातज अरुचिमें दन्तहर्ष (खटाई खायेसे हुए दांत) और मुखमें कषैलापन होताहै पित्तजअरुचिमें कटु, अम्ल तथा लवणरसयुक्त, उष्ण, विरस और दुर्गन्धित मुख रहताहै कफज अरुचि में मुख लवण तथा मधुररसयुक्त, सचिक्कण, भारी, शीतल तथा दुर्गन्धियुक्त रहताहै और मुखसे बाहर स्निग्धता होतीहै आगन्तुक अरुचिमें शोक, भय, अत्यन्त लोभ, क्रोधादिक और हृदयको अहितभोजन रूप तथा अपवित्र गन्धसे उत्पन्न हुए अरुचि रोगमें मुख स्वाभाविक रहताहै और भोजनमें अरुचिहोतीहै सन्निपातज अरुचिमें कषाय आदिक अनेक रस मुखमें मालूम पडतेहैं॥ २७२॥

वातजादिभेदेनमुखेविकृतिमभिधायान्यथाविकृतिमाह॥

हृच्छूलपीडनयुतंपवनेनपित्तात्तृड्दाहचोषबहुलंसकफप्रसेकम्। श्लेष्मात्मकंबहुरुजंबहुभिश्चविद्याद्वैगुण्यमोहजडताभिरथापरञ्च॥ हृच्छूलपीडनयुतं हृदिशूलेनपीडनं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तेनयुतम् । चोषःप्राइर्वस्थिताग्निनेवसन्तापः बहुभिः त्रिभिर्दोषैः ... कंवातादि रोगयुक्तं वैगुण्यंमनसोऽव्याकुलत्वं । जडताशून्यताअपरम् आगन्तुजम् ॥ २७३ ॥

वातज आदि भेदोंसे मुखके ... कारोंको कहकर अन्यप्रकारके विकारोंको कहतेहैं जैसेवातजअरुचि में हृदयकी पीडा से व्याकुलता होती है पित्तज अरुचिमें तृषा दाह तथा पास रक्खीहुई अग्निसे दाह के समान पीडाहोतीहै कफज अरुचिमें मुखसे कफ निकलताहै सन्निपातज अरुचि में कही हुई वातादि रोगोंकी सब पीडा होती हैं और आगन्तुक अरुचि में मनकी व्याकुलता मोह तथा जडता होतीहै ॥ २७३ ॥

भक्तद्वेषभक्तच्छन्दौचरकसुश्रुताभ्यामरोचकत्वेनैवसंगृहीतौ । वृद्धभोजस्तेषांलक्षणा निपृथगाह । प्रक्षिप्तन्तुमुखेचान्नंयत्रनास्वादतेनरः । अरोचकःसविज्ञेयोभक्तद्वेषमतःशृणु । आस्वादतेअन्नस्यमिष्टतां न प्राप्नोति । तदन्नंमिष्टं न लगतीतियावत् ॥ चिन्तयित्वा तुमनसादृष्ट्वास्पृष्ट्वातुभोजनम् । द्वेषमायातियोजन्तुर्भक्तद्वेषःसउच्यते ॥ कुपितस्यभया र्त्तस्यतथाभक्तनिरोधिनः । यत्रनान्नेभवेच्छ्रद्धासभक्तच्छन्दउच्यते ॥ २७४ ॥

चरक और सुश्रुत में भक्तद्वेष और भक्तच्छन्द को भी अरुचि में गिनाहै परन्तु वृद्धभोज ने इन के लक्षण अलग अलग कहेहैं जैसे जो भोजनकी वस्तु मुखमें रखनेसे उसकी मधुरता न मालूमपडे उसको अरुचि कहतेहैं किसी वस्तुको मनमें शोचकर देखकर अथवा सुनकर जो उसमें द्वेष होजाताहै उसको भक्तद्वेष कहते हैं क्रोधयुक्त भयभीत अथवा भक्तिरहित मनुष्यकी जो अन्न में श्रद्धा न होय तो उसे भक्तच्छन्द कहतेहैं ॥ २७४ ॥

अथारोचकस्यचिकित्सा ॥

भोजनाग्रेसदापथ्यंलवणार्द्रकभक्षणम् । रोचनंदीपनंवह्नेर्जिह्वाकण्ठविशोधनम् ॥ शृंगबेररसंवापिमधुनासहयोजयेत् ॥ अरुचिश्वासकासघ्नंप्रतिश्यायकफापहम् ॥ २७५ ॥

अरुचिकी चिकित्सा ॥

भोजनके पहले सेंधानोन के साथ अदरक सदैव खानी चाहिये यह रुचिकारी,अग्नि दीपक और जिह्वा तथा कंठकी शोधकहै अदरकके रसमें सहत डालकर सेवन करने से अरुचि, श्वास, खांसी, जुकाम तथा कफ का नाश होताहै ॥ २७५ ॥

पक्काम्लीकासिताशीतवारिणावस्त्रगालिता । एलालवङ्गकर्पूरमरिचैरवधूलिता ॥ पानकस्यास्यगण्डूषंधारयित्वामुखेमुहुः । अरुचिंनाशयत्येषपित्तंप्रशमयेत्तथा ॥ अम्लीकापानम् ॥ २७६ ॥

पक्की इमली तथा शक्कर को शीतल जलमें घोलकर वस्त्र में छाने फिर उसमें इलायची, लौंग, कपूर तथा मिर्च मिलावे इस पन्ने के वारंवार कुल्लेकरने से अरुचिका नाशहोकर पित्तकी शान्ति होतीहै इति अम्लिकापान ॥ २७६ ॥

राजिकाजीरकौभृष्टौभृष्टंहिंगुसनागरम् । सैंधवंदधिगोःसर्वंवस्त्रपूतंप्रकल्पयेत् ॥ तावन्मात्रं क्षिपेत्तत्रयथास्याद्रुचिरुत्तमा । तक्रमेतद्भवेत्सद्योरोचनंवह्निवर्द्धनम् ॥ तक्रंतुगव्यम् २७७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राई, जीरा [illegible] भूनकर चूर्णकरे और सेंधानोन तथा सोंठ मिलाकर सब औषधियोंके बराबर गौकादही मिलाकर वस्त्रमें छानकर इसीके बराबर गौकामट्ठा मिलावे इस के सेवन से रुचि और अग्नि दोनों बढ़तीहैं ॥ २७७॥

सम्यगावर्त्तितंदुग्धंनिबद्धंदधिमाहिषम्। एकीकृत्यपटे घृष्टंशुभ्रशर्करयासमम्।एलालवंगकर्पूरमरिचैश्चसमन्वितम्॥ नाम्नाशिखरिणीकुर्याद्रुचिंसकल्लवल्लभाम्। द्वेपलेदाडिमाम्लस्यखण्डंदद्यात्पलत्रयम्। त्रिसुगन्धिपलंचैकंचूर्णमेकत्रकारयेत्। तच्चूर्णंमात्रयाभुक्तमरोचकहरंपरम्। दीपनंपाचनञ्चस्यात्पीनसज्वरकासजित्। दाडिमादिचूर्णम्॥ २७८॥

गाढ़े दूध और वस्त्रमेंबँधेहुए भैंसके दहीको एकसाथ छानकर सफेद शक्कर, इलायची, लौंग, कपूर और मिर्च मिलावे इस्से अरुचि का नाश होताहै इसको शिखरन कहते हैं खट्टाअनार ८ तो० शक्कर १२ तो० और दालचीनी, इलायची तथा तेजपात ४ तो० इनसबके चूर्णको मात्राके अनुसार खाने से अरुचि का नाश होताहै और यह चूर्ण दीपन, पाचन तथा पीनस ज्वर और खांसी का नाशक होताहै इति दाड़िमादिचूर्ण ॥ २७८॥

लवंगकङ्कोलमुशीरचन्दनंनतंसनीलोत्पलकृष्णजीरकम्। जलंसकृष्णागुरुभृंगकेसरंकणाचविश्वानलदंसहेलया॥ तुषारजातीफलवंशरोचनाःसितार्द्धभागाःसकलंविचूर्णितम्। सरोचनंतर्पणमग्निदीपनंबलप्रदंवश्यतमंत्रिदोषजित्॥ उरोविबन्धंतमकंगलग्रहंसकासहिक्कारुचियक्ष्मपीनसम्। ग्रहण्यतीसारमुरःक्षतंनृणांतथाप्रमेहान्निखिलान्निहन्ति। कङ्कोलंसुगन्धविशेषः। नतंतगरम्। जलंबालकंभृंगंत्वक्नलदमुशीरंतुषारःकर्पूरः। लवंगादिचूर्णम्॥ २७९॥

लौंग, कंकोल, खससफ़ेद, चन्दन, तगर, नीलिकमल, कालाजीरा, सुगन्धबाला, कालाअगर, दालचीनी, नागकेशर, पीपल, सोंठ, नलद (पीले रङ्गका तृण उत्तरमें प्रसिद्धहै) छोटी इलायची, कपूर, जायफल और वंशलोचन इन सब बराबर औषधियों को पीसकर सबकी आधीशक्कर मिलावे इसके सेवनसे रुचि, तृप्ति, अग्नि तथा बलकी वृद्धि होतीहै और त्रिदोष छातीका अकड़ना, तमकश्वास, गलग्रह, खांसी, हिचकी, अरुचि, राजयक्ष्मा, पीनस, ग्रहणी, अतीसार, उरःक्षत तथा प्रमेहका नाशहोताहै और यह चूर्ण अत्यन्त वशीकरणभीकरनेवालाहै इति लवंगादि चूर्ण ॥ २७९॥

यवानीदाडिमंशुण्ठीतिन्तिरीकाम्लवेतसैः। बदराम्लं च कुर्वीत चतुःशाणमितानि च॥ सार्द्धाद्वशाणंमरिचंपिप्पलीदशशाणिका। त्वक्सौवर्चलधान्याकजीरकंद्विद्विशाणिकम्॥ चतुःषष्टिमितैःशाणैःशर्करामत्रयोजयेत्। चूर्णितंसर्वमेकत्रयवानीखाण्डवाभिधम्॥ चुर्णंजयेत्पाण्डुरोगंहृद्रोगंग्रहणीज्वरम्। छर्दिशोषातिसारांश्च प्लीहानाहविबन्धताम्॥ अरुचिंशूलमन्दाग्निमर्शोजिह्वागलामयान्। यवानीखाण्डवंचूर्णम्॥ इत्यरोचकाधिकारः॥ २८०॥

---

१ नलदंस्यात्पुष्परसोशीरमांसीपुनद्वयोरिति मेदिनीकारः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अजवाइन, अनार, सोंठ, इमली, अमलवेत तथा बेर सोलह २ माशे मिर्च १[illegible] ४० माशे [illegible]लचीनी, कालानोन, धनिया तथा जीरा आठ २ माशे और शक्कर २१ तोले [illegible] माशे [illegible]नसबको पीस कर सेवन करने से पांडु, हृदय के रोग, ग्रहणी, ज्वर, छर्दि, शोष, अतीसार, प्लीहा, आनाह, विबन्ध, अरुचि, शूल, मन्दाग्नि, बवासीर और जिह्वा तथा कंठके रोग नष्ट होते हैं इति यवानीखांडवचूर्ण इति अरोचिकाधिकार ॥ २८० ॥

अथ छर्द्यधिकारः । तत्रछर्दिविप्रकृष्टसन्निकृष्टनिदानपूर्विकांसंप्राप्तिमाह ॥

अतिद्रवैरतिस्निग्धैरहृद्यैर्लवणैरपि । अकालेचातिमात्रैश्चयथासात्म्यैश्चभोजनैः॥ आमाद्भयात्तथोद्वेगादजीर्णात्कृमिदोषतः । नार्याश्चापन्नसत्वायास्तथातिद्रुतमश्नतः॥ बीभत्स्यैर्हेतुभिश्चान्यैर्भुक्तमुत्क्लिश्यतेबलात् । आमात् अ समम्यक्पक्वाद्रसात् अजीर्णाद्य न्नस्थिताद्भुक्तात् आपन्नसत्वायाः प्राप्तगर्भायाः ॥ दुष्टैर्दोषैः पृथक्सर्वैर्बीभत्स्यालोकनादिभिः । छर्दयः पञ्चविज्ञेयास्तासांलक्षणमुच्यते । अन्यैर्बीभत्स्यैर्विकृतैर्हेतुभिः घृणाकारिभिः । अनिष्टश्रवणस्पर्शनदर्शनभक्षणपानैः । उत्क्लिश्यते ॥ २८१ ॥

छर्दिका अधिकार छर्दिके दूरवाले और समीपी कारणों समेत सम्प्राप्ति ॥

बहुत पतली, बहुत स्निग्ध, हृदय को अहित, वस्तु तथा लवणके बहुत खानेसे समय के विना अथवा बहुत या असात्म्य भोजनसे बहुत जल्दी भोजन करने से आमदोष, भय, घबराहट, अजीर्ण तथा कृमियों के दोषसे स्त्रियों को गर्भ होनेसे और अन्य बीभत्स कारणों से कुपित दोषों के कारण भोजन करी हुई वस्तुकी वमन होती है छर्दि ५ प्रकार की होती है जैसे वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज और आगन्तुक ॥ २८१ ॥

पूर्वरूपमाह ॥

हृल्लासोद्गारसंरोधौप्रसेकोलवणास्यता । द्वेषोऽन्नपाने च भृशंवमीनांपूर्वलक्षणम् २८२

छर्दिका पूर्वरूप ॥

छर्दि होनेके पहले मतली, डकारका रुकना, मुख से जल निकलना, मुखका नमकीन होना और अन्नपान में द्वेष लक्षण होते हैं ॥ २८२ ॥

छर्देःसामान्यलक्षणमाह ॥

छादयन्नाननंवेगैरर्दयन्नङ्गभञ्जनैः । निरुच्यतेछर्दिरितिदोषोवक्त्रंप्रधावितः ॥ छादयन् पूरयन् अङ्गभञ्जनैः अंगभेदैः अर्दयन् अङ्गानि । पीडयन् वक्त्रंप्रधावितःदोषःछर्दिरित्युच्यते ॥ २८३ ॥

छर्दिका सामान्यलक्षण ॥

जिस रोगमें दोष वेग तथा शरीरमें पीड़ा सहित ऊपर मुखकी ओर दौड़ता हुआ मुखको पूर्ण करके बाहर को निकलता है उसको छर्दि कहते हैं ॥ २८३ ॥

वातजाया लक्षणमाह ॥

हृत्पार्श्वपीडामुखशोषशीर्षनाभ्यर्तिकासस्वरभेदतोदैः । उद्गारशब्दंप्रबलंसफेनंवि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चिह्नकृ[illegible]यम् ॥ कृच्छ्रेणचाल्पंमहताचवेगेनार्तोऽनिलाच्छर्दयतीवदुःखम् कषायंकषायरसंभ्रंदुःखमिवछर्दयति ॥ २८४ ॥

वातज छर्दिका लक्षण ॥

वातज छर्दि में. हृदय, पसली, मस्तक तथा नाभि में पीडा, मुखका सूखना, खांसी, स्वरभंग, सुई चुभनेकीसी पीडा, बहुत शब्द के साथ डकार और अत्यन्त कष्ट तथा वेग सहित, फेने समेत, उष्ण, कषैले, पतले, पदार्थ की थोडीसी वमन होती है ॥ २८४ ॥

पित्तजामाह ॥

मूर्च्छापिपासामुखशोषशीर्षताल्वक्षिसन्तापतमोभ्रमार्त्तः । पीतंभृशोष्णंहरितंसतिक्तंधूमञ्चपित्तेनवमेत्सदाहम् ॥ २८५ ॥

पित्तज छर्दिका लक्षण ॥

पित्तकी छर्दिमें. मूर्च्छा, तृषा, मुखका सूखना, अन्धकारसा मालूम होना, भ्रम, मस्तक, तालु तथा नेत्रोंमें दाह और दाहसहित हर एक काले अथवा रक्तवर्ण, अत्यन्त उष्ण, तिक्तरसयुक्त, पतले पदार्थ की वमन होती है ॥ २८५ ॥

कफजामाह ॥

तन्द्रास्यमाधुर्यकफप्रसेकंसन्तोषनिद्रारुचिगौरवार्त्तः । स्निग्धंघनंस्वादुकफाद्विशुद्धंसलोमहर्षोऽल्परुजंवमेत्तु ॥ सन्तोषस्तृप्तिः ॥ २८६ ॥

कफकी छर्दिका लक्षण ॥

कफकी छर्दि में. तन्द्रा, मुखकी मधुरता, कफका बहना, तृप्ति, निद्राकी अधिकता, रोमांच, अरुचि तथा शरीरमें भारीपन होताहै और थोडी पीडा सहित स्निग्ध घने तथा मधुर रसयुक्त श्वेत पदार्थ की वमन होती है ॥ २८६ ॥

त्रिदोषजमाह ॥

शूलाविपाकारुचिदाहतृष्णाश्वासप्रमोहप्रबलाप्रसक्ता । छर्दिस्त्रिदोषाल्लवणाम्लनीलसान्द्रोष्णरक्तंवमतांनृणांस्यात् ॥ २८७ ॥

त्रिदोषज छर्दिका लक्षण ॥

त्रिदोषज छर्दि में. शूल, भोजनका न पचना, अरुचि, दाह, तृषा, श्वास तथा मोह होता है और घने उष्ण नील तथा रक्तवर्ण लवण तथा अम्ल रसयुक्त पदार्थ की सदैव वमन होतीहै ॥ २८७ ॥

आगन्तुजामाह ॥

असात्म्यजा[1]चकृमिजामजाचबीभत्सजादौर्हृदजाचयाहि । सापञ्चमीताञ्चविभावयेच्चदोषोच्छ्रयेणैवयथोक्तमादौ ॥ एताःपञ्चाप्यागन्तुजत्वेनसात्म्यादेकैव । अतएवसागन्तुजापञ्चमीविभावयेत् अनुबन्धयेत् ॥ २८८ ॥

आगन्तुज छर्दिका लक्षण ॥

आगन्तुज छर्दि पांच प्रकार की है जैसे असात्म्यज, कृमिज, आमज, बीभत्सज और गर्भज यह पांचों प्रकार की छर्दि पहले कहेहुए वातज आदि छर्दियों के लक्षणोंके अनुसार दोषोंकी अधिकता से जाननी चाहिये ॥ २८८ ॥

---

[1] शूलहृल्लासबहुलाकृमिजा च विशेषतः । कृमिहृद्रोगतुल्येन लक्षणेन च लक्षिता ॥ उत्क्लेदःष्ठीवनंतोदःशूलंहृल्लासकस्तमः । अरुचिःश्यावनेत्रत्वंशोफश्चकृमिजेभवेत् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपद्रवानाह ॥

कासःश्वासोज्वरस्तृष्णाहिक्कावैचित्यमेवच । हृद्रोगस्तमकश्चैव ... र्द्देरुपद्रवाः ॥ वैचित्यंविकृतचित्तत्वंतमको ऽत्रतमः । श्वासपदेनैवतमकाख्यस्यापिश्वासस्याक्तेः २८६॥

छर्द्दिके उपद्रव ॥

खांसी, श्वास, ज्वर, तृषा, हिचकी, घबराहट, हृदयकेरोग, अन्धकारसा मालूम होना यह सब छर्द्दि के उपद्रव हैं ॥ २८६॥

असाध्यांसाध्याञ्चाह ॥

क्षीणस्ययाच्छर्द्दिरतिप्रसक्तासोपद्रवाशोणितपूययुक्ता । सचन्द्रिकान्तांप्रवदन्त्यसाध्यांसाध्याञ्चिकित्सेन्निरुपद्रवांच ॥ सचन्द्रिकांमयूरपिच्छचन्द्रिकाप्रभायुक्ताम् ॥ २९० ॥

साध्यासाध्य छर्द्दिके लक्षण ॥

जो क्षीण पुरुषको उपद्रव सहित रुधिर तथा पीबसे मिलीहुई मोर के पंखकी चंद्रिका के समान तर्हयुक्त सदैव वमन होय वह असाध्यहै और जो उपद्रव सहित न होय तो साध्यहै ॥ २९० ॥

अथ छर्द्देश्चिकित्सा ॥

आमाशयोत्क्लेशभवाहिसर्व्वाश्छर्द्योमतालंघनमेवतस्मात् । विधीयतेमारुतजांविनातुसंशोधनंवाकफपित्तहारि । हन्यात्क्षीरोदकंपीतंछर्द्दिम्पवनसम्भवाम् । मुद्गामलकयूषोवाससर्पिष्कःससैन्धवः ॥ (क्षीरोदकंनाशितस्यक्षीरस्योदकम्) गुडूचीत्रिफलानिम्बपटोलैःक्वथितंजलम् । पिबेन्मधुयुतंतेनछर्द्दिर्नश्यतिपित्तजा ॥ हरीतकीनांचूर्णन्तुलिह्यान्माक्षिकसंयुतम् । अधोमार्गीकृतेदोषेछर्द्दिःशीघ्रंनिवर्त्तते ॥ विडङ्गत्रिफलाविश्वाचूर्णंमधुयुतंजयेत् । विडङ्गप्लवशुण्ठीनांचूर्णंवाकफजांवमिम् ॥ (प्लवंकैवर्त्तमुस्तकंगुडतजीइतिलोके) पिष्ट्वाधात्रीफलंलाजान्शर्कराञ्चपलोन्मिताम् । दत्वामधुपलञ्चापिकुडवंसलिलस्यच ॥ वाससागालितंपीतंहन्तिछर्द्दिंत्रिदोषजाम् । गुडूच्यारचितंहन्तिहिमंमधुसमन्वितम् ॥ दुर्निवारामपिच्छर्द्दिंत्रिदोषजनितांबलात् ॥ लाजाकपित्थमधुमागधिकोषणानांक्षौद्राभयात्रिकटुधान्यकजीरकाणाम् । पथ्यामृतामरिचमाक्षिकपिप्पलीनांलेहास्त्रयः सकलवम्यरुचिप्रशान्त्यै ॥ क्वाथःपर्पटजःपीतःसक्षौद्रश्छर्द्दिनाशनः ॥ २९१ ॥

छर्द्दिकी चिकित्सा ॥

सब प्रकारकी छर्द्दि आमाशयमें दोषके इकट्ठे होनेसे उत्पन्न होतीहै इसलिये इसमें वमन कराना चाहिये परन्तु वातज छर्द्दिमें वमन न करानी चाहिये इसके उपरान्त कफपित्तनाशक संशोधन औषध देनी चाहिये फटेहुये दूधका पानी अथवा मूंग और आमलेका यूष घी डालकर पीनेसे वातकी छर्द्दि का नाशहोताहै गिलोय, त्रिफला, नींब और परवलके काढ़ेमें सहत डालकर पीनेसे पित्तकी छर्द्दिका नाश होताहै हड़के चूर्णको सहतके साथ चाटनेसे दोष नीचेको जाताहै इसलिये छर्द्दि शीघ्रही निवृत्त होजातीहै बायबिडंग, त्रिफला और सोंठको सहतके साथ चाटने से अथवा बायबिडंग, नागरमोथा, सोंठ इनके चूर्णको सहतके साथ चाटनेसे कफकी छर्द्दिका नाश होताहै आमला खील तथा शक्कर यह सब चारतोले लेकर और इनके साथ चारतोले सहत मिलाकर सोलहतोले जलमें छानकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पीनेसे सन्नि...ज छर्दिका नाश होताहै गिलोयके शीत कषायमें सहत डालकर पीनेसे कृच्छ्र साध्य भी त्रिदोषज छर्दिका शीघ्र नाश होताहै और खील, कैथा, सहत, पीपल व कालीमिरच अथवा सहत, हड, त्रिकुटा, धनियां, जीरा अथवा हड, गिलोय, मिरच, सहत और पीपल इन तीन प्रकारकेअवलेहोंके सेवन करने से सर्व प्रकारकी छर्दि तथा अरुचिका नाश होताहै अथवा पित्तपापडे के क्वाथमें सहत डालके पीवे तो वमन का होना दूरहोजाताहै ॥ २६१ ॥

एलालवङ्गगजकेसरकोलमज्जालाजाप्रियंगुघनचन्दनपिप्पलीनाम्। चूर्णानिमाक्षिकसितासहितानिलीढ्वाछर्दिन्निहन्तिकफमारुतपित्तजातामित्येलादिचूर्णम् ॥ २६२ ॥

इलायची, लौंग, नागकेशर, बेरकीगिरी, खील, मालकांगनी, मोथा, चन्दन और पीपल इनसबको चूर्णकरके सहतकेसाथ चाटनेसे वात, पित्त और कफकीछर्दिका नाशहोताहै इति एलादिचूर्ण ॥ २६२ ॥

अश्वत्थवल्कलंशुष्कंदग्धंनिर्वापितंजलेतज्जलंपानमात्रेणछर्दिंजयतिदुर्जयाम् ॥ पथ्यात्रिकटुधान्याकजीरकाणांरजोलिहन् । मधुनानाशयेच्छर्दिमरुचिञ्चत्रिदोषजाम् ॥ बिल्वत्वचोगुडूच्यावाक्वाथःक्षौद्रेणसंयुतः। छर्दिंत्रिदोषजांहन्ति पर्पटःपित्तजांतथा॥ आम्रास्थिबिल्वनिर्यूहःपीतःसमधुशर्करः । निहन्याच्छर्द्यतीसारंवैश्वानरइवाहुतिम् ॥ निर्यूहः क्वाथः । जम्ब्वाम्रपल्लवश्शृतंलाजरजःसंयुतंशीतम् । शमयतिमधुनायुक्तंवमिमतिसारं तृषामुग्राम् ॥ २६३ ॥

पीपलकी सूखी छालको जलाकर पानीमें बुझावे इस पानी के पीने से दुस्साध्य छर्दिकाभी नाश होजाताहै हड, त्रिकटु, धनियां तथा जीरा इनको पीसकर सहतकेसाथ चाटनेसे त्रिदोषज छर्दि तथा अरुचिका नाश होताहै बेलकी छाल अथवा गिलोयके काढेमें सहत डालकर पीनेसे त्रिदोषज छर्दि का नाश होताहै और पित्तपापडे के काढेमें सहत डालकर पीनेसे पित्तकी छर्दिका नाश होता है आम की गुठली और बेलके काढेमें सहत और शक्कर डालकर पीने से छर्दि और अतीसारका नाशहोताहै जामन और आमके पत्तोंके काढेको शीतल करके और खील तथा सहत डालकर पीने से बहुत भयंकर छर्दि अतीसार तृषाका नाश होता है ॥ २६३ ॥

बीभत्सजांहृद्यतमैरिष्टैर्दौर्हृदजांफलैः। लङ्घनैरामजांछर्दिंजयेत्सात्म्यैरसात्म्यजाम्॥ कृमिहृद्रोगवद्धन्याच्छर्दिंकृमिसमुद्भवाम्। तत्रतत्रयथादोषंक्रियांकुर्याच्चिकित्सकः॥ सोद्गारायांभृशंछर्द्यांमूर्वायाधान्यमुस्तयोः। समधूकाञ्चनंचूर्णंलेहयेन्मधुसंयुतम् ॥ सौवर्चलमजाजीचशर्करामरिचानिच । क्षौद्रेणसहितंलीढंसद्यश्छर्दिनिवारणमिति ॥ छर्द्यधिकारः ॥ २६४ ॥

बीभत्सजछर्दि हृदयकी हितकारी वस्तुओंसे, गर्भजछर्दि अभीष्ट फलों से, आमजछर्दि लंघनों से और असात्म्यजछर्दि सात्म्य वस्तुओंसे निवृत्त होती है कृमिजछर्दिकी चिकित्सा कृमि तथा हृदय के रोगोंके समान करनी चाहिये वैद्यको दोषके अनुसार विचारकर चिकित्सा करनी चाहिये बहुत डकार सहित छर्दिके होनेपर मरोरफली, धनियां, मोथा, मुलहठी और रसौतको सहतके साथ चाटे अथवा कालानोन, जीरा, शक्कर और मिर्च इनको सहतके साथ चाटने से शीघ्रही छर्दिका नाशहोताहै इति छर्द्यधिकार ॥ २६४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ तृष्णाधिकारः। तत्रतृष्णायानिदानपूर्विकांसम्प्राप्तिमाह॥

भयश्रमाभ्यांबलसंक्षयाद्वाप्यूर्ध्वंचितंपित्तविवर्द्धनैश्च। पित्तंस[illegible]राणांता लुप्रपन्नंजनयेत्पिपासाम्॥ स्रोतःस्वपांवाहिषुदूषितेषुदोषैश्चतृट्सम्भवतीहजन्तोः। तिस्रःस्मृतास्ताःक्षतजाचतुर्थक्षयात्तथान्यामसमुद्भवांच॥ भक्तोद्भवासप्तमिकेतितासांनि बोधलिङ्गान्यनुपूर्वशस्तु॥ नराणांपित्तंस्वस्थानएवसञ्चितंपित्तंसवातम्। पित्तविवर्द्धनैः कट्वम्लोष्णादिभिःकुपितात्। भयश्रमाभ्यांबलसंक्षयादुपवासादेश्चवातःकुपितस्तद्व यम्ऊर्ध्वंप्राप्तंऊर्ध्ववशात्पिपासांजनयेत्नकेवलंतालुन्येवदूषितेतृषाभवति किन्तु जलवा हिस्रोतःस्वपि। अतआहस्रोतःस्वित्यत्रबहुवचनंनयुक्तंयतोजलवहेद्वेस्रोतसीसुश्रुतेनो क्ते। उच्यते। तयोरेवानेकप्रतानयोगान्नदोषःअपांवाहिषुस्रोतःस्वितिजिह्वादेरप्युपलक्ष णम्। यतआह। चरकः॥ रसवाहिनीश्चधमनीर्जिह्वाहृदयगलतालुक्लोमसंशोष्यनृणां देहेषुकुरुतस्तृष्णामतिबलौपित्तानिलाविति॥ संख्यामाह। तिस्रइत्यादि॥ २९५॥

तृषाके अधिकार तृषाकी निदानपूर्वक संप्राप्ति॥

भय, परिश्रम, बलकाक्षय और पित्तवर्द्धक, कटु, अम्ल तथा उष्णादि वस्तुओंकेद्वारा कुपितहुए पित्त और वायु ऊर्ध्वगामी होकर तालुमें जातेहैं तब तृषा उत्पन्न होतीहै दूषित दोषोंके द्वारा जलके जाने वाले स्रोतोंके दूषित होजानेपर तृषा उत्पन्न होतीहै तृषा ७प्रकारकी है जैसे वातज, पित्तज, कफज, क्षतज, क्षयज, आमज और अन्नज अब यह सन्देह होताहै कि सुश्रुतमें जलके जाने के दो स्रोत कहे गयेहैं तो यहां बहुवचन क्योंकहा? इसका उत्तर यहहै कि दो होनेपर भी बहुत शाखाओंके विस्तारसे बहुवचन कहागयाहै यहां जलके बहनेवाले स्रोत कहनेसे चरकके वचनके अनुसार जिह्वा, हृदय, कंठ, तालु तथा क्लोमकाभी ग्रहण होताहै अर्थात् वात और पित्त कुपित होकर इनस्थानोंमें भी स्थित होकर तृषाको उत्पन्न करतेहैं॥ २९५॥ तृष्णायाःसामान्यलक्षणमाह॥

ताल्वोष्ठकण्ठास्यविशोषदाहौसन्तापमोहौभ्रमविप्रलापाः। सर्वाणिरूपाणिभवन्तितस्या मुत्पत्तिकालेतुविशेषतोहि॥ २९६॥ तृषाका सामान्य लक्षण॥

तालु, ओठ, कंठ तथा मुखका सूखना और देहमें दाह होताहै और सन्ताप मोह भ्रम तथा प्रलाप होताहै यह सब लक्षण तृषाके उत्पन्न होनेके समय होतेहैं॥ २९६॥

वातजामाह॥

क्षामास्यतामारुतसम्भवायान्तोदस्तथाशङ्खशिरःसुचापि। स्रोतोनिरोधोविरसञ्चव क्त्रंशीताभिरद्भिश्चविवृद्धिमेति॥ शङ्खःशिरःसुशङ्खयोःशिरसिचस्रोतोनिरोधःरसाम्बुवा हिनीधमनीनिरोधः॥ २९७॥ वातज तृषाका लक्षण॥

वातज तृषामें मुखकी मलिनता तथा विरसता माथेकी हड्डी तथा शिरमें पीडा और रस तथा जल के जानेकी नाड़ियों का रुकना यह लक्षण होतेहैं और शीतल जल के सेवन से यह अधिक बढ़तीहै॥ २९७॥

पित्तजामाह॥

मूर्च्छान्नविद्वेषविलापदाहारक्तेक्षणत्वंप्रततश्चशोषः। शीताभिनन्दामुखतिक्तताच

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पित्तातिमि...यांपरिधिपनञ्च ॥ विलापःप्रलापः प्रततश्चशोषः अविरतःशोषः शीतारि नन्दाशी...पनंकण्ठाद्धूमनिर्गमइति ॥ २९८ ॥

पित्तज तृषाका लक्षण ॥

पित्तज तृषामें. मूर्च्छा, अन्नमें द्वेष, प्रलाप, दाह, नेत्रोंका लाल होना, मुखका अधिक सूखना, शीत की इच्छा, मुखमें तीतापन और गलेसे धुयेंका निकलना यह लक्षण होतेहैं ॥ २९८ ॥

कफजामाह ॥

बाष्पावरोधात्कफसंवृतेऽग्नौतृष्णाबलासेनभवेन्नरस्य । निद्रागुरुत्वंमधुरास्यता च तयार्दितःशुष्यतिचातिमात्रम् ॥ अग्नौजठराग्नौकफसंवृतेस्वकारणकुपितेनकफेनोपरि ष्टाच्छादिनाबाष्पावरोधात् अग्नेरूष्मावरोधात् अवरुद्धानलोष्मणाम्बुवहःस्रोतः शोषणा त्बलासेनकफेननरस्यतृड्भवेत्तयातृष्णयाऽर्दितःपीडितःशुष्यतिकृशोभवति ॥ २९९ ॥

कफकी तृषाके लक्षण ॥

अपने कारणोंसे कुपित कफ जठराग्निको आच्छादित करताहै और अग्निकी ऊष्माको रोकता है फिर रुकीहुई ऊष्माके द्वारा जलके जानेवाले स्रोतोंके सूखजानेसे कफकी तृषा उत्पन्न होती है इसमें अधिक निद्रा भारीपन मुखमें मधुरता तथा बहुत कृशता ... ॥ २९९ ॥

क्षतजामाह ॥

क्षतस्यरुक्शोणितनिर्गमाभ्यांतृष्णाचतुर्थीक्षतजामतातु । क्षतस्यशस्त्रादिक्षतयुक्त स्यरुक्पीडा ॥ ३०० ॥

क्षतज तृषाका लक्षण ॥

शस्त्रआदिकेद्वारा घावयुक्त मनुष्यको पीडा और रुधिर निकलनेके कारण क्षतज तृषा उत्पन्नहोतीहै ३००

क्षयजामाह ॥

रसक्षयाद्याक्षयसम्भवासातयाभिभूतस्तुनिशादिनेषु। पेपीयतेऽम्भःससुखंनयातितां सन्निपातादितिकेचिदाहुः ॥ रसक्षयोक्तानिचलक्षणानितस्यामशेषेणभिषग्व्यवस्येत् । रसक्षयलक्षणानिसुश्रुतेनोक्तानिरसक्षयेहृत्पीडाकम्पःशोषःशून्यतातृष्णाचेति व्यवस्येत् जानीयात् ॥ ३०१ ॥

क्षयज तृषाका लक्षण ॥

रसके क्षयहोने से जो तृषा उत्पन्न होती है उसको क्षयज तृषा कहतेहैं क्षयजतृषा में रात्रि दिन जल पीनेसे भी तृप्ति नहीं होती और रसक्षयके संपूर्ण लक्षण मिलतेहैं कोई २ इसको सन्निपातजतृषा भी कहते हैं रसक्षय के लक्षण सुश्रुतके कहे हुये यह हैं जैसे हृदय में पीडा कंप मुखका सूखना शून्यता और तृषा ॥ ३०१ ॥

आमजामाह ॥

त्रिदोषलिङ्गामसमुद्भवाच हृच्छूलनिष्ठीवनसादकर्त्री ॥ ३०२ ॥

आमज तृषाके लक्षण ॥

आमज तृषामें सन्निपातके चिह्न होते हैं और हृदय में पीडा थुकथुकी तथा शरीर में शिथिलता होतीहै ॥ ३०२ ॥

भक्तोद्भवामाह ॥

स्निग्धंतथाम्लंलवणञ्चभुक्तंगुर्वन्नमेवाशुतृषांकरोति। लवणञ्चेतिचकारात्कटुच ॥ ३०३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अन्नज तृषाका लक्षण ॥

स्निग्ध, अम्ल, लवण, कटु और भारी वस्तुओंके सेवनसे शीघ्रही तृषा उत्पन्न होती है उसको अन्नजा तृषा कहते हैं ॥ ३०३ ॥

उपसर्गजामाह ॥

हीनस्वरःप्रताम्यन्दीनमनहृदयंशुष्कगलतालुः । भवतिखलुसोपसर्गातृष्णासाशोषिणीकष्टा ॥ शोषिणीधातुशोषिणी ॥ ३०४ ॥

उपद्रवजतृषाके लक्षण ॥

जिस तृषामें स्वरकी क्षीणता, मूर्च्छा तथा ग्लानि होय और मुख, हृदय तथा तालु सूखजाय वह धातुओं की सुखानेवाली तृषा उपद्रव सहित कष्टसाध्य होती है ॥ ३०४ ॥

उपसर्गानाह । तद्युक्तायाःअरिष्टत्वञ्चाह ॥

ज्वरमोहक्षयकासश्वासाद्युपसृष्टदेहानां । सर्वास्त्वतिप्रसक्तारोगकृशानांवमिप्रसक्तानां ॥ घोरोपद्रवयुक्तास्तृष्णामरणायविज्ञेयाः । आदिशब्दादतीसारादीनांग्रहणम् ॥ अतिप्रसक्ताःनितरांघोरोपद्रवयुक्ताःअतीवमुखशोषादियुक्ताः ॥ ३०५ ॥

तृषा के उपद्रव और अरिष्ट ॥

ज्वर, मोह, क्षय, खांसी तथा श्वास तथा अतीसारादि से युक्त मनुष्यों की अत्यन्त उपद्रव सहित संपूर्ण तृषा और रोगसेक्लेश तथा छर्दिसे व्याकुल मनुष्योंकी घोर उपद्रवयुक्त तृषा मृत्युकारीहोती हैं ३०५

अथ तृष्णायाश्चिकित्सा ॥

वातघ्नमन्नपानंमृदुलघुशीतञ्चवाततृष्णायाम् । तृष्णायांपवनोत्थायांसगुडंदधिशस्यते ॥ स्वादुतिक्तंद्रवंशीतंपित्ततृष्णापहंपरम् । मुस्तपर्पटकोदीच्यछत्राख्योशीरचन्दनैः ॥ शृतंशीतंजलंदद्यात्तृड्दाहज्वरशान्तये । छत्राधान्याकंकश्चिद्धात्रीञ्चदद्यात् चन्दनमत्रधवलंतस्यातितृष्णाहरत्वात्शृतमर्द्धपक्कमत्रकर्त्तव्यम् । षडङ्गपानम् ॥ ३०६ ॥

तृषाकी चिकित्सा ॥

वातजतृषामें वातनाशक, कोमल, हलकी तथा शीतल वस्तुओं के द्वारा चिकित्सा करनी चाहिये और इसमें गुडसहित दही खाना श्रेष्ठहै पित्तज तृषामें मधुर, तिक्त, पतली तथा शीतल वस्तु हितकारी हैं मोथा, पित्तपापडा, सुगन्धबाला, धनियाँ, खस और सफेद चन्दन इनके द्वारा जलको पाककरने पर जब आधारहै तब शीतल करके पीनेसे तृषा, दाह तथा ज्वर शान्त होताहै इति षडंगपानीय ॥ ३०६ ॥

लाजोदकंमधुयुतंशीतंगुडाविमर्दितम् । काश्मरीशर्करायुक्तंपिबेत्तृष्णार्दितोनरः ३०७ ॥

खीलों के द्वारा पाक कियेहुए जल में शीत होजानेपर सहत गुड गंभारी और शक्कर छोडकर पीने से तृषा का नाश होताहै ॥ ३०७ ॥

आस्तरणमार्द्रवासप्रावरणञ्चार्द्रवासःस्यात् । तेनपिपासाशाम्यतिदाहश्चोग्रोऽपिदेहिनांनियतम् ॥ गोस्तनीक्षुरसक्षीरयष्टीमधुमधुत्पलैः । नियतंनासिकापीतेतृष्णाशाम्यतिदारुणा । वैशद्यंजनयत्यास्येसंदधातिमुखेजलम् । तृष्णादाहप्रशमनंमधुगण्डूषधारणम् ॥ जिह्वातालुगलक्लोमशोषेमूर्ध्निनिधापयेत् । केशरंमातुलुङ्गस्यघृतसैन्धवसंयुतम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दाडिमंबदरं ...ध्र कपित्थंबीजपूरकम् । पिष्ट्वामूर्द्धनिलेपस्तु पिपासादाहनाशनः ॥ वारिशीतं मधुयुत ...ठाद्यापिपासितम् । पाययेद्वामयेच्चाथ तेन तृष्णाप्रशाम्यति ॥ प्रातःशर्करयोपेतःक्वाथोधान्याकसम्भवः । जयेत्तृष्णांतथा दाहं ...तु स्रोतोविशोधनम् ॥ आमलंकमलंकुष्ठंलाजाश्चवटरोहकम् । एतच्चूर्णंस्यमधुना गुटिकांधारयेन्मुखे ॥ तृष्णांप्रवृद्धांहन्त्येषामुखशोषञ्चदारुणम् ॥ ३०८ ॥

गीले वस्त्र के ओढ़ने और बिछाने से तृषा तथा अत्यन्त दाहका नाश होताहै दाख, ईखकारस, दूध, मुलहठी, सहत और कमलकाफूल इन सब वस्तुओंको पीसकर नासिकाके द्वारा पीनेसे तृषाका नाश होताहै मुखमें सहतका कुल्ला रखने से तृषा तथा दाहका नाशहोताहै और मुखमें निर्म्मलता होकर जलआताहै जिह्वा, तालु, कंठ तथा क्लोमके सूखनेपर नींबूकाजीरा, घी और सेंधानोन इनसबको मस्तक पर लेपकरे अनार, बेर, लोध, कैथा और बिजौरानींबू इनसबको पीसकर शिरपर लेपकरने से तृषा तथा दाहका नाशहोताहै सहतयुक्त शीतल जल. गलेतक पिलाकर वमन कराने से तृषाका नाश होताहै धनियें के काढ़ेमें शक्कर डालकर प्रातःकाल पीनेसे तृषा तथा दाहका नाशहोताहै और स्रोत शुद्ध होते हैं आमला, कमल, कूट, खील और बर्गदके अंकुर इनसबको पीसकर सहतके साथ गोली बनाकर मुखमें रखने से तृषा तथा मुखके सूखने का नाश होता है ॥ ३०८ ॥

क्षतोद्भवांरुग्विनिवारणेनजयेद्रसानामसृजश्चपानैः । क्षयोत्थितंक्षीरजलंनिहन्यान्मांसोदकंवामधुरोदकंवा ॥ आमोद्भवांत्रिल्ववचायुतानांजयेत्कषायैरथदीपनानाम् । गुर्वन्नजामुल्लिखनैर्जयेच्चक्षयंविनासर्वकृतांञ्चतृष्णाम् ॥ उल्लिखनैःलेखनद्रव्यैःस्निग्धेऽन्नेभुक्तेया तृष्णास्यात्तांगुडाम्बुना शमयेत् । अतिरोगदुर्बलानांतृष्णांशमयेन्नृणामिहाशुपयः॥ पयोन्नदुग्धम् ॥ ३०९ ॥

क्षतजतृषाके नाश करने के लिये मांसरस और रुधिरका पानकरे क्षयजतृषामें. जल मिलाहुआ दूध, मांसकारस अथवा मधुर जल पिये आमजतृषाके दूरकरने के लिये बेल तथा वचके द्वारा क्वाथ बनाकर पिये यह दीपनहै भारी भोजनसे उत्पन्न हुई तृषामें. लेखन वस्तुओं से चिकित्सा करे क्षयज तृषाको छोडकर सबप्रकार की तृषा लेखन वस्तुओं से निवृत्त होती हैं स्निग्ध भोजन करने से जो तृषा उत्पन्न होती है वह गुडके शर्बत पीनेसे शान्त होती है रोगके द्वारा अत्यन्त दुर्बल मनुष्यों की तृषा दूध पीनेसे निवृत्त होती है ॥ ३०९ ॥

मूर्च्छाछर्दितृषानाहस्त्रीमद्यभृशकर्षिताः । पिबेयुःशीतलंतोयंरक्तपित्तेमदात्यये ॥ सात्म्यान्नपानभैषज्यैस्तृष्णांतस्यजयेत्पुनः । तस्यांजितायामन्योऽपिव्याधिःशक्यश्चिकित्सितुम् ॥ तृष्यन्पूर्वामयक्षीणेनलभेतजलंयदि । मरणंदीर्घरोगंवाप्राप्नुयात्त्वरितंनरः ॥ तृषितोमोहमायातिमोहात्प्राणान्विमुञ्चति । तस्मात्सर्वास्ववस्थासुनक्वचिद्वारिवारयेत् ॥ अन्नेनापिविनाजन्तुःप्राणान्धारयतेचिरम् । तोयाभावात्पिपासार्त्तःक्षणात्प्राणैर्विमुच्यते ॥ इतितृष्णाधिकारः ॥ ३१० ॥

मूर्च्छा, छर्दि, तृषा, आनाह, रक्तपित्त और मदात्यय रोगवालोंको और मद्य तथा मैथुन से कृश मनुष्यों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शीतल जल पिलाना चाहिये सदैव अन्नपान तथा औषधोंके द्वारा पहले तृषाको दूर करे क्योंकि तृषाके निवृत्त होजानेपर अन्य रोगकी चिकित्सा होसक्तीहै प्यासेको जो शीघ्र जल न मिले तो मरण अथवा किसी बडेरोगको प्राप्त होताहै तृषासे मोह होताहै और मोहसे मृत्यु होतीहै इसलिये किसी अवस्थामेंभी जल न रोकना चाहिये अन्नके विनाभी प्राणी बहुत कालतक जी सक्ताहै परन्तु जलके विना प्यासा होकर क्षणभरमें ही मरजाताहै इति तृषाधिकार ॥ ३१० ॥

अथ मूर्च्छाधिकारः। तत्रमूर्च्छायानिदानपूर्विकांसंप्राप्तिमाह ॥

क्षीणस्यबहुदोषस्यविरुद्धाहारसेविनः ॥ वेगाघातादभीघाताद्धीनसत्त्वस्यवापुनः। करणायतनेषूग्राबाह्येष्वाभ्यन्तरेषुच। निविशन्तेयदादोषास्तदामूर्च्छन्तिमानवाः॥ बहुदोषस्याधिकदोषस्यनत्वनेकदोषस्य। तदामूर्च्छात्रिदोषजैवस्यात्तथैवास्तुकोदोषः। तत्रपृथक्दोषजानांमूर्च्छानांवक्ष्यमाणत्वाद्वेगाघातान्मलादेः॥ अभिघातात्लगुडादिनाहीनसत्त्वस्यस्वल्पसत्त्वगुणस्य ॥ अर्थादधिकतमोगुणस्ययतउक्तंमूर्च्छापित्ततमःप्रायेति। करणायतनेषुकरणंमनस्तस्यायतनेषुस्वस्थानेषुबाह्येषुकर्मेन्द्रियेषुआभ्यन्तरेषुबुद्धीन्द्रियेषु ॥ ३११ ॥

मूर्च्छाका अधिकार। मूर्च्छाकी निदानपूर्व्वक संप्राप्ति ॥

क्षीण बहुत दोषयुक्त तथा विरुद्ध आहार करनेवाले वेगोंके रोकनेवाले लाठीआदिके चोटवाले और हीनसत्त्ववाले मनुष्योंके मनकी स्थानरूप कर्मेन्द्रिय और बुद्धीन्द्रियों में जब बहुत कठिन दोष प्राप्त होतेहैं तब मूर्च्छा उत्पन्न होतीहै ॥ ३११ ॥

सामान्यलक्षणमाह ॥

संज्ञावहासुनाडीषुपीडितास्वनिलादिभिः। तमोऽभ्युपैतिसहसासुखदुःखव्यपोहकृत् ॥ सुखदुःखव्यपोहाच्चनरःपततिकाष्ठवत्। मोहोमूर्च्छेतितामाहुःषड्विधासाप्रकीर्तिता ॥ तमोगुणःअज्ञानहेतुःअभ्युपैतिआगच्छतिसुखदुःखव्यपोहकृत्। सुखदुःखज्ञाननाशकरंनष्टसुखदुःखज्ञानेनरः काष्ठवत्पतति तांमोहोमूर्च्छेतिप्राहुरित्यन्वयःमूर्च्छायामूर्च्छायोऽपिपर्यायः। यतउक्तम्। संज्ञोपघातोमूर्च्छायोमूर्च्छास्यान्मूर्च्छनंतथा। कश्मलंप्रलयोमोहःसंन्यासस्तुमृतोपमः ॥ इतिषडपिमूर्च्छाविवृणोति। वातादिभिःशोणितेनमद्येनचविषेणच ॥ षट्स्वप्येतासुपित्तन्तुप्रभुत्वेनावतिष्ठते। यतउक्तम्। मूर्च्छापित्ततमःप्रायेति ॥ ३१२ ॥

मूर्च्छाका सामान्य लक्षण ॥

वातादि दोषोंके द्वारा ज्ञानको प्राप्तकरनेवाली नाडियोंके ढकजाने पर सुख दुःखका नाश करनेवाला तमोगुण बढ़ताहै इससे मनुष्य काष्ठके समान गिरपडताहै इसको मूर्च्छा कहतेहैं संज्ञोपघात, मूर्च्छाय, मूर्च्छा, मूर्च्छन, कश्मल, प्रलय, मोह, संन्यास और मृतोपम यह मूर्च्छा के नामहैं मूर्च्छा ६ प्रकारकी है जैसे वातिक, पैत्तिक, कफज, रक्तज, मद्यज और विषज इनछओं प्रकारकी मूर्च्छाओंमेंपित्त प्रधानहै क्योंकि कहागयाहै कि मूर्च्छामें पित्त और तमोगुण अधिक होताहै ॥ ३१२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तस्याः पूर्वरूपमाह ॥

हृत[illegible]ंग्लानिःसंज्ञानाशोबलक्षयः । सर्व[illegible]सां[illegible]र्वरूपाणियथास्वन्ताविवयेदि[illegible]जेज्जटा[illegible]र्यस्यमतमिदमवसेयम् ॥ ३१३

मूर्च्छाका पूर्व रूप ॥

सबप्रकारकी मूर्च्छाओंके होनेसे पहले हृदयमें पीड़ा, जंभाई, ग्लानि, ज्ञानकानाश और बलक्षय होताहै इनको दोषके अनुसार जानलेवे यह जेज्जटाचार्य का मतहै ॥ ३१३ ॥

तत्रवातिकमूर्च्छामाह ॥

नीलंवायदिवाकृष्णमाकाशमथवारुणम् । पश्यंस्तमःप्रविशतिशीघ्रञ्चप्रतिबुध्यते ॥ वेपथुश्चाङ्गमर्दश्चप्रपीडाहृदयस्यच ॥ कार्श्यंश्यावारुणा[illegible]च्छायामूर्च्छायेवातसम्भवे ॥ नीलंनीलवर्णंकृष्णंकज्जलाभं अरुणंअलक्तरागंतमःप्रविश[illegible]ते मूर्च्छेतिश्यावारुणाच्छायागात्रस्य ॥ ३१४ ॥

वातजमूर्च्छा का लक्षण ॥

वातज मूर्च्छामें रोगी आकाश को नीला, काला अथवा लाल [illegible]कर मूर्च्छित होताहै और शीघ्रही चैतन्य होताहै शरीरमें पीड़ा, कम्प, हृदयमें पीड़ा, कृशता और धुमै[illegible] तथा रक्तवर्ण होजाताहै ॥ ३१४

पैत्तिकमूर्च्छामाह ॥

रक्तंहरितवर्णंवावियत्पीतमथापिवा । पश्यंस्तमःप्रविशतिसस्वेदःप्रतिबुध्यते ॥ सपिपासःससन्तापोरक्तपित्ताकुलेक्षणः । सम्भिन्नवर्चाःपीताभोमूर्च्छायेपित्तसम्भवे ३१५ ॥

पित्तकी मूर्च्छाके लक्षण ॥

पित्तज मूर्च्छा में. रोगी आकाशको लाल, हरा अथवा पीला देखकर मूर्च्छित होताहै और पसीना आनेपर चैतन्य होताहै तृषा, सन्ताप, नेत्रों में ललाई तथा पीलापन मलभेद और पीतवर्ण यह लक्षण होते हैं ॥ ३१५ ॥

श्लैष्मिकमूर्च्छामाह ॥

मेघसङ्काशमाकाशतमोभिर्वाघनैर्वृतम् । पश्यंस्तमःप्रविशतिचिराच्चप्रतिबुध्यते ॥ गुरुभिःप्रावृतैरंगैर्यथैवार्द्रेणचर्मणा । सप्रसेकःसहृल्लासोमूर्च्छायेकफसम्भवे ॥ मेघसङ्काशंशुभ्रमेघसङ्काशमित्यर्थः । यतआहसुश्रुतः । कफेनपश्येद्रूपाणिश्वेताभ्रप्रतिमानितु । घनैर्निविडैस्तमोभिःगुरुभिरंगैरुपलक्षितः ॥ ३१६ ॥

कफज मूर्च्छाके लक्षण ॥

कफज मूर्च्छामें. रोगी आकाश को मेघों के समान अथवा घने अन्धकार से ढकाहुआसा देखकर मूर्च्छित होताहै और बहुत देरमें चैतन्य होताहै अंगोंमें भारीपन, शरीर गीले कपड़ोंसे ढकाहुआसा मालूम होना लारबहना और मतली यह लक्षण होते हैं यहां मेघ शब्द से श्वेतमेघ लेना चाहिये क्योंकि सुश्रुतने कहाहै कि कफके श्वेत मेघोंके समान रूप दिखाई देते हैं ॥ ३१६ ॥

मूर्च्छायःषड्विधउक्तःसुश्रुतेन । चरकस्तुसान्निपातिकमपिमूर्च्छायमाह ॥ सर्व्वाकृतिःसन्निपातादपस्मारइवागतः । सजन्तुंपातयत्याशुविनाबीभत्सचेष्टितैः ॥ अपस्मारइवागतस्तेनमहताभिघातेन । पततिचिरेणप्रतिबुध्यतेतर्हितयोःकोभेदइत्यतआह । सन्नि-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पातिकमूर्च्छायःविनाबी ... टतैः । कफेनवमनदन्तघट्टनाक्षिविकृत्या ... विनापातयति ॥ ३१७ ॥

सुश्रुतने ६ प्रकारकी मूर्च्छा ... हैं परन्तु चरकने सन्निपातज मूर्च्छा भी कही हैं जैसे सन्निपातज मूर्च्छा तीनों दोषोंके ... होतीहै और इसमें मृगीके समान शीघ्रही रोगी गिरपड़ता है और देरमें चैतन्य होताहै पर ... के समान मुखसे फेन गिरना दांतोंका कटकटाना और नेत्रों में विकारादिक वीभत्स लक्षण ... हैं और यही इनदोनों में भेदहै ॥ ३१७ ॥

... मूर्च्छायानिदानमाह ॥

पृथिव्यम्भस्तमोरूपं ... यः । तस्माद्रक्तस्यगन्धेनमूर्च्छन्तिभुविमानवाः ॥ तमोरूपंतमोबहुलंमानव ... न्तुसात्त्विकाराजसाश्चअत्रेकेवदन्तिनैवायुक्तिःसमीचीनातर्हिचम्पकादे ... र्च्छाप्रसज्येत् तत्रापिगन्धस्यपार्थिवत्वात् । अतआह ॥ द्रव्यस्वभावमित ... मदोऽपिकिन्तुत्यति ॥ अत्राहभोजः । दर्शनादसृजस्तज्जाद्गन्धाच्चैवप्रमुह्यति ॥ ३१८ ॥ अ

रक्तजमूर्च्छाका निदान ॥

पृथ्वी तथा जल यह दोनों ... रूप हैं और इन्हीं से रुधिर तथा गन्ध उत्पन्न होतेहैं इसी से रुधिर की गन्धि के द्वारा तामस मनुष्य मूर्च्छित होते हैं सात्त्विक और राजस नहीं मूर्च्छित होते हैं यहांपर कोई २ यह कहते हैं कि यह युक्ति ठीक नहींहै क्योंकि ऐसा होने से चम्पादिककी गन्धि से भी मूर्च्छा होनी चाहिये क्योंकि उनमें भी पृथ्वी सम्बन्धी गन्धि है इसी से कहागयाहै कि देखकर जो मूर्च्छा होतीहै यह वस्तुओंका स्वभावहै यहांपर "भोज ने" कहाहै कि रुधिरके देखने से और सूंघने से मूर्च्छा होती है ॥ ३१८ ॥

रक्तेनमूर्च्छितस्यलक्षणमाह ॥

स्तब्धांगयष्टिस्त्वसृजाद्गूढोच्छ्वासश्चमूर्च्छितः ॥ ३१९ ॥

रक्तज मूर्च्छाका लक्षण ॥

रुधिरसे मूर्च्छित मनुष्यका शरीर तथा नेत्र स्तब्ध होजाते हैं और श्वास साफ २ नहीं आता ३१९ ॥

मद्यजविषजयोर्मूर्च्छयोर्निदानम ॥

गुणास्तीव्रतरत्वेनस्थितास्तुविषमद्ययोः । तएवतस्मात्ताभ्यान्तुमोहौस्यातांयथेरितौ ॥ येगुणाःलघुरूक्षाशुविशदव्यवायितीक्ष्णाविकाशिसूक्ष्मोष्णानिर्देश्यरसत्वादयः तैलादिद्रव्येष्वस्तास्तीव्राश्चसन्ति । तएवगुणाःविषमद्ययोस्तुतीव्रतरत्वेनास्थितास्तत्रापिभेदः । तएवमद्येदृश्यन्तेविषेतुबलवत्तराइति ॥ ३२० ॥

मद्यज और विषज मूर्च्छाका निदान ॥

विष और मद्यमें लघु, रूक्ष, विशद, आशु व्यवायी, तीक्ष्ण, विकाशी, सूक्ष्म, उष्ण और योगवाही आदिक गुण तीव्रतासे रहते हैं इसी हेतुसे मद्य और विषके द्वारा मूर्च्छा होती है तन्त्रान्तर में इसमेंभी भेद कहागयाहै कि सन्निपातके कुपित करनेवाले जो विषके गुण कहेगये हैं वही मद्यमें भी हैं परन्तु विषमें यह गुण अधिकतासे रहते हैं ॥ ३२० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मद्यजायामूर्च्छायालक्षणम ॥

मद्येन[illegible]ष्टविभ्रान्तमानसः । गात्राणिविक्षि[illegible]सां[illegible]जरांयावन्नयातितत् ॥ नष्टविभ्र[illegible]तमान्सः भ्रष्टंसर्वथास्मृतिहीनंविभ्रा[illegible]रज्जौस[illegible]भुक्तंमानसंयस्यसः । जरांजीर्णतातन्मद्यम् ॥ ३२१ ॥ मद्यज मूर्च्छाका लक्षण[illegible]

मद्यज मूर्च्छा में-स्मृतिका नाश तथा भ्रान्ति (रस्सी में स[illegible], [illegible]का ज्ञान) युक्त चित्त होता है और जबतक मद्यका परिपाक नहीं होताहै तबतक मनुष्य प्र[illegible]तहै[illegible]ताहै और अंगोंको पटकता हुआ पृथ्वी में पड़ा रहताहै ॥ ३२१ ॥

विषजायालक्षणम[illegible]स्तमः प्र[illegible]

वेपथुस्वप्नतृष्णाःस्युस्तमश्चविषमूर्च्छिते । वे[illegible]वारुणा[illegible]तरंयथास्वंविषलक्षणैः ॥ विषस्यमूलकन्दफलपत्रक्षीरादिभेदभिन्नस्ययथ[illegible]तमःप्रविश्[illegible]सुश्रुतेकल्पस्थानेतल्लक्षणंमद्यापेक्षयातीव्रतरंवेदितव्यंनतुसंज्ञानाशे[illegible] लक्षण ॥ [illegible] ३२२ ॥

विषज मूर्च्छा का लक्षण[illegible]

विषज मूर्च्छा में. कम्प, निद्रा, तृषा तथा अन्धकार मालूम [illegible] खायेहुए विषके लक्षण तीव्रता से मालूम होते हैं मूल, कन्द, फल, पत्र, दूध आदि भेदयुक्त [illegible] सुश्रुतके कल्पस्थान में कहे गये हैं वह लक्षण मद्यकी अपेक्षा तीव्र कहे गयेहैं जोकि इन दोनों में संज्ञाका नाश होता है केवल इसीलिये इनको शमन जानना चाहिये ॥ ३२२ ॥

मूर्च्छाभ्रमतन्द्रादीनांकोभेदइत्यतआह ॥

मूर्च्छापित्ततमःप्रायोरजःपित्तानिलाद्भ्रमः । तमोवातकफात्तन्द्रानिद्राश्लेष्मतमोभवा ॥ रजःपित्तानिलाद्भ्रमइतिनात्रसमुच्चयः । केवलपित्तज्वरेभ्रमस्योक्तत्वात्भ्रमश्च चक्रारूढस्यैवभ्रमवस्तुज्ञानंस्वदेहस्यभ्रमतइवज्ञानञ्च ॥ ३२३ ॥

मूर्च्छा भ्रम और तन्द्रा आदिका भेद ॥

पित्त तथा तमोगुण की अधिकतामें मूर्च्छा पित्त वात तथा रजोगुणकी अधिकतामें भ्रम (चक्रपर चढ़ीहुई घूमती हुईसी सब वस्तुओंका मालूमहोना) वात, कफ तथा तमोगुणकी अधिकतामें तन्द्रा और कफ तथा तमोगुणकी अधिकतामें निद्रा उत्पन्न होतीहै ॥ ३२३ ॥

तन्द्रायालक्षणमाह ॥

इन्द्रियार्थेष्वसंवित्तिर्गौरवंजृम्भणंक्लमः । निद्रार्त्तस्येवयस्येतितस्यतन्द्रांविनिर्दिशेत् । इन्द्रियाणामर्थःप्रयोजनंयेषु । अर्थाद्विषयेषु । असंवित्तिः असम्यक्ज्ञानं । इतिइन्द्रियार्थःसम्यक्ज्ञानादिनिद्रायां प्रबुद्धस्यक्लमाभावस्तन्द्रायान्तुप्रबोधितस्यापिक्लमइत्यनयोर्भेदः ॥ ३२४ ॥ तन्द्राका लक्षण ॥

जब इन्द्रियों में विषयके ग्रहण करनेकी शक्ति न रहै, शरीरमें भारीपन होय, जंभाई आवे और नींद से भरेहुएके समान क्लम (ग्लानि) मालूमहोवे उसको तन्द्रा कहते हैं निद्रा और तन्द्रामें यह भेदहै कि निद्रामें जागनेके उपरान्त क्लम जातारहताहै और तन्द्रावालेकी जागनेपरभी क्लममालूमहोताहै ३२४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्लमस्यलक्षणमाह ॥

योनायासःश्रमोदेहे [illegible] ासससंगतः । क्लमःसइतिविज्ञेयइन्[illegible]कः ॥ इन्द्रियाणांबुद्धीन्द्रियाणा [illegible] याणाञ्च । अर्थःप्रयोजनंविषयग्रहणंतस्यप्र[illegible]धकःआबल्यन ॥ ३२५ ॥

[illegible] क्लमको लक्षण ॥

जिसमें परिश्रमके [illegible] बिना [illegible] लूम देवे श्वास बडे २ आवें और इन्द्रियां अपने २ कामको न करसकें उसको क्ल[illegible] कहते हैं [illegible] ॥

[illegible] द्रालक्षणमाह ॥

यदातु [illegible] सक्लान्तेक[illegible] [illegible]न्विताः ।विषयेभ्योनिवर्त्तन्तेतदास्वपितिमानवः॥ क्लान्तोग्लान[illegible] श्रान्तइतिस[illegible] [illegible] पान्विताः । कर्मेन्द्रियाणिज्ञानेन्द्रियाणिचक्लमान्वित[illegible]न्ताः ॥ ३२६ ॥

[illegible] निद्राका लक्षण ॥

जि[illegible] मय मनुष्यका मन [illegible] । [illegible]न्द्रिय और बुद्धीन्द्रिय शान्त होकर विषयों से निवृत्त होजायँ उसको निद्रायुक्त जानना चाहि[illegible] २६ ॥

[illegible]न्यासस्य संप्राप्तिपूर्वकलक्षणमाह ॥

वाग्देहमनसांचेष्टाआक्षिप्यातिबलामलाः । संन्यस्यन्त्यबलंजन्तुप्राणायतनमाश्रिताः ॥ सनासंन्याससन्यस्तःकाष्ठीभूतोमृतोपमः। प्राणैर्विमुच्यतेशीघ्रंमुक्त्वासद्यःफलांक्रियाम् ॥ आक्षिप्यविनाश्यसंन्यस्यन्तिमूर्च्छयन्तिप्राणायतनंहृदयंसंन्यस्तःमूर्च्छितःकाष्ठीभूतःक्रियारहितःअतएवमृतोपमइतिसद्यःफलांक्रियांसूचीव्यधनांजनावपीडकपिकच्छुघर्षणवृश्चिकादिदंशनादिरूपां ॥ ३२७ ॥

संन्यासका संप्राप्तिपूर्व्वक लक्षण ॥

अत्यन्त बलवान् कुपित दोष प्राणोंके स्थानरूप हृदय में स्थित होकर वाणी, देह तथा मन की चेष्टाको नष्ट करके निर्बल मनुष्यको मूर्च्छित करते हैं वह मूर्च्छित मनुष्य काष्ठके समान क्रियारहित मराहुआसा पडा रहताहै इसको संन्यास कहतेहैं इसमें शीघ्र फलकारी, सुई चुभाना, अंजन लगाना, किवांच रगडना और बिच्छूसे कटाना आदि क्रियाके विना शीघ्रही प्राण निकलजाते हैं ॥ ३२७ ॥

संन्यासस्यमूर्च्छातोभेदमाह ॥

दोषेषुमदमूर्च्छाद्यागतवेगेषुदेहिनः । स्वयमप्युपशाम्यन्तिसंन्यासोनौषधैर्विना ॥ ३२८ ॥

संन्यास और मूर्च्छाकाभेद ॥

मूर्च्छा में दोषोंके वेग अथवा मदके शान्त होजाने पर मनुष्य अपने आप चैतन्य होजातेहैं परंतु संन्यास औषधियों के विना नहीं शान्त होताहै ॥ ३२८ ॥

अथ मूर्च्छायाश्चिकित्सा ॥

सेकावगाहामणयःसहाराःशीताःप्रदेहाव्यजनानिलाश्च । शीतानिपानानिचगन्धवन्तिसर्व्वासुमूर्च्छास्वनिवारितानि ॥ मणयश्चन्द्रकान्तादयःहारामुक्तादिहाराःशीताःप्रदे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

ह्यःसकर्पू[illegible]न्दनानुलेपनानि।शीतानिपानानिसितामत[illegible]नकानि । गन्धवन्तिकर्पूरादिसुग[illegible]ासुमूर्च्छास्वनिवारितानिअस्यायम[illegible]सा[illegible]ैः सेकादीन्यन्यासुमूर्च्छासुहिता[illegible]वकिन्तुवातश्लेष्मजास्वपिननिवारितानितत्रा[illegible]स्यप्राधान्यत्वात् । [illegible]निवर्गेम[illegible]रपयांसिसदाडिमाजांगलजारसाइच । [illegible]चमूर्च्छासुपथ्याःससतीनमुद्गाः (सतीनःकलायः) ॥ ३२९ ॥

मूर्च्छाकीचिकित्सा ॥

मूर्च्छारोगमें जलसे सींचना, स्नानकरवाना, चन्द्रकान्तादि[illegible]का धारण कराना, मोतीआदिकेहार, कपूरसहित चन्दनका लेप, पंखेकीवायु, शीतल त[illegible]पीनेकीवस्तु इनके सेवन से वातज तथा कफज आदि संपूर्ण मूर्च्छा निवृत्त होती हैं [illegible] पाक कियाहुआ दूध, अनार सहित जंगली जीवोंके मांसकारस और जौ, लाल धान[illegible]यह सब मूर्च्छामें पथ्यहैं ३२९

कोलमज्जोषणोशीरकेसरंशीतवारिणा । [illegible]द्वाक्कृष्णांवामधुसंयुताम् ॥ शीतेनतोयेनविसंमृणालंकृष्णाञ्चपथ्यांमधुनावलिह्य[illegible]र्यांश्चनासावदनावरोधंक्षीरंपिबेद्वाप्यथमानुषीणाम् ॥ द्राक्षासितादाडिमलाजव[illegible]रनीलोत्पलपद्मवन्ति । पिबेत्कषायाणिचशीतलानिपित्तज्वरंयानिशमंनयन्ति । [illegible]जगोमूत्रकृष्णामरिचसैन्धवैः । अञ्जनंस्यात्प्रबोधायसरसोनशिलावचैः ॥ अन्यच्च । अञ्जनंसम्यगारब्धंमधुसिन्धुशिलोषणैः । प्रमोहद्रोहिभवतिभाषितंभिषजांवरैः । शिलामनशिला । ऊषणंमरिचः ।मधूकसारसिन्धूत्थवचोषणकणाःसमाः । श्लक्ष्णंपिष्टाम्भसानस्यंकुर्य्यात्संज्ञाप्रबोधनम् ३३०

बेर की गुठली, मिर्च, खस, नागकेसर इन सबको शीतल जल के साथ पानकरने से अथवा सहतके साथ पीपल के चाटनेसे मूर्च्छाका नाश होताहै कमलकी डंडी, पीपल तथा हडको सहत के साथ चाटने से अथवा शीतल जलके साथ कमल की डंडीको पीने से मूर्च्छाका नाश होताहै नाक तथा मुखको बन्दकरनेसे अथवा स्त्रीका दूध पीनेसे मूर्च्छाका नाश होताहै दाख, शक्कर, लजालू, अनार, खील, कह्लार, कमल, नीलकमल और कमल इन सब औषधियोंका शीतल कषाय पीनेसे और पित्तज्वरमें कहीहुई क्रिया करने से मूर्च्छा शान्त होतीहै सिरसकेबीज, गोमूत्र, पीपल, सैंधानोन, रसौत, मैनशिल और बच इन सबको पीसकर अंजन लगाने से मूर्च्छा का नाश होताहै सहत, सैंधानोन, मैनशिल और मिर्च इन सब को पीस अंजन लगाने से मूर्च्छा का नाश होताहै महुआकासार, सैंधानोन, बच, मिर्च तथा पीपल इन सब को पानीमें महीन पीस नास लेने से चैतन्यताहोती है ॥३३०॥

अथ रक्तजादीनां मूर्च्छानां चिकित्सा ॥

रक्तजायान्तुमूर्च्छायांहितःशीतक्रियाविधिः । मद्यजानांपिबेन्मद्यंनिद्रांसेवेत वासुखम् ॥ विषजायांविषघ्नानिभेषजानिप्रयोजयेत् ॥ ३३१ ॥

रक्तज आदि मूर्च्छाओंकी चिकित्सा ॥

रक्तज मूर्च्छाओं में.शीतल क्रियाकरनी चाहिये, मद्यज मूर्च्छा में.मद्यपान अथवा सुखपूर्वक सोवे और विषजमूर्च्छामें.विषनाशक औषध देनीचाहिये ॥ ३३१ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ संन्यासचिकित्सा ॥

प्रभूतदोषस्तमसोऽतिवृद्धात्सम्मूर्च्छितःनैवविबुध्यतेयः । संन्यस्तसंज्ञःसखलुश्चिकि त्स्यःनरोभिषग्भिःप्रविधिविदृश्चः ॥ अनान्यवपीडाश्चधूमाःप्रधमनानिच ॥ सूची भिस्तोदनंशस्तंदाहपीडानखान्तरे ॥ लुञ्चनंकेशलोम्नाञ्चदन्तैर्दंशनमेवच । आत्मगुप्ता वघर्षश्चहितस्तस्यप्रबोधने ॥ अवपीडःकल्कीकृतौषधरसस्यनासापुटेदानम् । प्रधमन मौषधचूर्णस्यद्विमुखयानाडीकस्यमुखवातेननासापुटेदानंतस्यसंन्यस्तस्य ॥ ३३२ ॥

संन्यासकी चिकित्सा ॥

बहुत बढे हुए दोष और तमोगुणकी अधिकता से जो मनुष्य मूर्छित होकर चैतन्य न होय उसको संन्यास रोग जानना वह अत्यन्त कठिनता से चिकित्सा करनेके योग्यहै संन्यास रोगमें अञ्जन औषधके कल्कका रस धूम्रां देना दो मुखवाली नली के द्वारा फूंककर औ- षधियोंके चूर्ण को नाकमें छोडना सूईसे नखों में ज़लाना तथा पीडादेना बाल तथा रोमोंका नोचना दांतोंसे काटना किवांचको लगाना यह सब बातें चैतन्य होनेके लिये करना चाहिये ॥ ३३२॥

अथ मूर्च्छायांरसो ॥

कणामधुयुतंसूतंमूर्च्छायांप्राशयेद्भिषक् । शीतसेकावगाहादीन्सर्वांगेपीडनंहठात् ॥ सूतंमारितं । ताम्रचूर्णसमोशीरंकेशरंशीतवारिणा । पीतंमूर्च्छान्द्रुतंहन्याद्वृक्षमिन्द्रा शनिर्यथा ॥ ताम्रचूर्णंमारितताम्रचूर्णम् ॥ ३३३ ॥

मूर्च्छापररस ॥

पारेकीभस्म पीपल को सहत के साथ चाटने से शीतल जलके सींचनेसे तथा स्नानसे सब शरीर के दबाने से मिर्चे तांबेकी भस्म तथा नागकेशर इन सबको सम भाग लेकर शीतल जल के साथ पीनेसे जैसे इन्द्रके वज्रसे वृक्षका नाश होताहै इसी प्रकार शीघ्र मूर्च्छाका नाश होजाताहै ॥३३३॥

अथ भ्रमस्यचिकित्सा ॥

पिबेद्दुरालभाक्काथंसघृतंभ्रमशान्तये । पथ्याक्काथेनसंसिद्धंघृतंधात्रीरसेनवा । शुण्ठी कृष्णाशताङ्गानांसाभयानांपलंपलम् । गुडस्यषट्पलान्येषागुटिकाभ्रमनाशिनी । ताम्रं दुरालभाक्काथैःपीतन्तुघृतसंयुतम् । निवारयेद्भ्रमंशीघ्रंतंयथाशम्भुभाषितम् ॥ ३३४ ॥

भ्रमकी चिकित्सा ॥

जवासेका काढा अथवा हडका काढा घी डालकर पीनेसे आमले के रस के द्वारा घृतके सेवनसे सोंठ, पीपल, सतावर तथा हड यह सब एक २ पल गुड ६ पल इनको मिलाकै गोली बनाकर खाने से और जवासेके काढ़ेके साथ घी तथा तांबेकी भस्मके पीनेसे शीघ्रही भ्रमका नाशहोताहै ॥ ३३४ ॥

अथ तन्द्रायाअतिनिद्रायाश्चिकित्सा ॥

तुरङ्गलालालवणोत्तमेन्दुमनःशिलामागधिकामधूनि । नियोज्यतान्यक्षिणिविमिश्रि तानितद्रांसनिद्रांविनिवारयन्ति । (इन्दुःकर्पूरः) सैन्धवंश्वेतमरिचंसर्षपाःकुष्ठमेवच । बस्तमूत्रेणसम्पिष्टंनस्यंतन्द्रानिवारणम् । श्वेतमरिचंशिग्रुबीजम् । शुण्ठीकणाग्रालव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्निग्ध तथा शीतल फल और अन्नोंके साथ मद्य पान करे कफप्रकृतिवाला मनुष्य जंगली जीवों के मांस और ... साथ मद्य पानकरे ॥ ३४०

प्राक्... तुश्लैष्मिकोमद्यंभुक्तस्योपरिपैत्तिकः। वातिकस्तु ...पिबेन्मध्येसमदोषोयथेच्छते ॥ वातिकस्तुपिबेन्मद्यंप्रायोगौडिकपैष्टिकम् । कफ... प्रायस्तुमाध्वीकंमाधवंपिबेत् ॥ ...सुमतामेषकथितश्चरकादिभिः। यथोपपत्तिः ...पिबेन्मद्यंहिमात्रया३४१

कफप्रकृति मनुष्य-भोजन के पहले पित्त प्रकृतिमनुष्य-भोजन के पीछे, वातप्रकृति मनुष्य-भोजनके मध्य में और समप्रकृतिवाला मनुष्य इच्छाके अनुसार ... पानकरे-वातप्रकृति वाला मनुष्य प्रायः गौडिक तथा पैष्टिक और कफ तथा पित्तप्रकृति ... मनुष्य प्रायः माध्वीक तथा माधव मद्यको पिये चरक आदिकों ने धनवान् लोगों के लिवारुणा... कही है साधारण मनुष्य योग्यताके अनुसार मात्रासे मद्य पानकरे ॥ ३४१ ॥

मद्यस्यगुण ... लक्षण ॥

रसवातादिमार्गाणांसत्त्वबुद्धीन्द्रियात्मनाम्। प्रधा... सश्चैवहृदयंस्थानमुच्यते॥ मद्यंहृदयमाविश्यस्वगुणैरोजसोगुणान्। दशभिर्दश ... चेतोनयतिविक्रियाम् ॥ लघूष्णतीक्ष्णसूक्ष्माम्लव्यवाय्याशुकरंतथा। रूक्षंविकाशि विशदंमद्यंदशगुणंस्मृतम्॥ गुरुशीतंमृदुस्निग्धंसान्द्रंस्वादुस्थिरंतथा ॥ प्रसन्नंपिच्छिलंसूक्ष्ममोजोदशगुणंस्मृतम् ३४२

मद्यके गुण ॥

रस तथा वायुआदिके बहनेके स्रोत सत्त्वगुण ज्ञानेन्द्रिय आत्मा और प्रधान ओजधातु इनसब का हृदयही स्थानहै मद्य हृदयमें प्रवेश करके अपने आगेलिखेहुये दशगुणों से ओजके दशगुणोंको क्षोभित करके चित्त में विकार उत्पन्न करती है लघु, उष्ण, तीक्ष्ण, सूक्ष्म, अम्ल, व्यवायी, आशुकारी, रूक्ष, विकाशी और विशद यह दश मद्यके गुणहैं गुरु,शीत, मृदु, स्निग्ध, सान्द्र, स्वादु, स्थिर, प्रसन्न पिच्छिल और सूक्ष्म यह दश ओजके गुणहैं ॥ ३४२ ॥

गौरवंलाघवाच्छैत्यमौष्ण्याद्म्लस्वभावतः । माधुर्य्यंमार्दवंतैक्ष्ण्यात्प्रसादश्चाशुभावनात् ॥ रौक्ष्यात्स्नेहव्यवायित्वात्स्थिरत्वंसूक्ष्मतामपि । विकाशिभावात्पैच्छिल्यंवैशद्यात्सान्द्रतांतथा ॥ सौक्ष्म्यान्मद्यंनिहन्त्येवमोजसःस्वगुणैर्गुणान् । सत्त्वंतदाश्रयश्चाशुसंक्षोभ्यकुरुतेमदम् ॥ हृदिमद्यगुणाविष्टेहर्षस्तर्षोरतिःसुखम् । विकाराश्चयथासत्त्वंचित्राराजसतामसाः ॥ जायन्तेमोहनिद्रान्ताइत्येतन्मदलक्षणम् ॥ ३४३ ॥

गुरुको लघुसे, शीतको उष्णसे, मधुरको अम्लसे, मृदुको तीक्ष्णसे प्रसन्नको आशुकारी से, स्नेहको रूक्षतासे, स्थिरको व्यवायीसे, सूक्ष्मको विकाशीसे, पिच्छिलको विशदसे और सान्द्रको सूक्ष्मगुण से मद्य क्षोभित करतीहै इस प्रकार मद्य अपने गुणोंसे ओजके गुणोंको क्षोभित करती है मद्य सत्त्व गुण और हृदयको क्षोभित करके मदको उत्पन्न करती है मद्य के गुणोंके हृदय में प्रविष्ट होनेपर हर्ष, तृषा, अनुराग, सुख तथा विकार आदिक सत्त्वगुण रहित अनेकप्रकारके राजस तथा तामसगुण उत्पन्न होते हैं और अन्त में मोह तथा निद्रा प्राप्त होती है यह मदके लक्षणहैं ॥ ३४३ ॥

हर्षमोजोबलंपुष्टिमारोग्यंपौरुषंतथा । युक्त्यापीतंकरोत्याशुमद्यंमदसुखप्रदम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रोचनंदीपनंहृद्यंस्वरवर्णप्रसादनम् । प्रीणनंबृंहणंबल्यंभयशोकश्रमापहम् ॥ स्वापनंनष्ट निद्राणांमूकानांवाग्विशोधनम् । नाशनं चातिनिद्राणांविबन्धानांविबन्धनुत् ॥ वधबन्ध परिक्लेशःदुःखानाञ्चाप्य... ॥ ... प्रवयसांमद्यमुत्सर्गान्मोदकारकम् । बहुदुः खक्षतस्यास्यशोकैरुपहत...स्य ... विश्रामोजीवलोकस्य मद्यंयुक्त्यानिषेवितम् ॥ ३४४ ॥

युक्तिपूर्वक मद्यके सेवन करनेसे हर्ष, ओज, बल, पुष्टता, आरोग्य और पुरुषार्थ उत्पन्न होते हैं और सुखदायी नशा होताहै विधिपूर्वक सेवन कीहुई मद्य रुचिकारी, दीपन, हृदयको हित, स्वर तथा वर्णको उत्तम करनेवाली, प्रीतिकारी, धातुवर्द्धक, बलकारी, भय, शोक तथा श्रमनाशक, निद्रारहित मनुष्योंको निद्रा करानेवाली, गूंगोंके वचनको शुद्ध करनेवाली, अतिनिद्रानाशक, विबन्धकी नाश करनेवाली वध अथवा बन्धन आदिके क्लेश तथा दुःखके ज्ञानको भुलानेवाली, वृद्धोंको भी आनन्द देनेवाली और बहुत दुःख, क्षत तथा शोकसे व्याकुल मनुष्योंको विश्राम देनेवाली होती है ॥ ३४४ ॥

मदस्त्रिलक्षणोभवति । एकोमदोऽधिकसत्त्वगुणस्यपुंसोभवति । द्वितीयोऽधिकरजोगुण स्यतृतीयोऽधिकतमोगुणस्य । अतएवोक्तञ्चरके ॥ प्रधानाधममध्यानांरुक्मणांव्यक्ति दायकः । यथाग्निरेवंसत्त्वानां मद्यंप्रकृतिदर्शकमिति ॥ ३४५ ॥

मद—तीन प्रकारका है एक अधिक सत्त्वगुणवालेका दूसरा अधिक रजोगुणवालेका और तीसरा अधिक तमोगुणवालेका होताहै इसीसे चरकने कहाहै कि जैसे अग्निमें सुवर्णकी उत्तमता, मध्यमता तथा निकृष्टता प्रकट होतीहै उसीप्रकार मद्यके द्वारा मनुष्योंकी उत्तमादि प्रकृति प्रकट होतीहै ३४५॥

तत्र सात्त्विकस्यमदस्यलक्षणमाह ॥

बुद्धिस्मृतिप्रीतिकरःसुखश्चपानान्ननिद्रारतिवर्द्धनश्च । सम्पाठगीतस्वरवर्द्धनश्चप्रो क्तोऽतिरम्यःप्रथमोमदोहि ॥ प्रीतिःपरेणमैत्री । सुखःसुखयतीतिसुखःसुखकरइत्यर्थः । पानादित्यादिपानादिष्वनुषङ्गवर्द्धनः अतिरम्यः मनोविकारित्वेऽपिनदुःखकरःप्रथमगुण विकारित्वात्प्रथमःएवं द्वितीयं तृतीयञ्च ॥ ३४६ ॥

सात्त्विक मदका लक्षण ॥

सात्त्विकमद-बुद्धि, स्मृति, सुख, अन्य पुरुषोंके साथ मित्रता, अन्नपान तथा निद्रामें अभिलाष, पठन, गीत तथा स्वर को बढ़ाताहै और अत्यन्त आनन्दकारी होताहै ॥ ३४६ ॥

राजसस्यमदस्यलक्षणमाह ॥

अव्यक्तबुद्धिस्मृतिवाग्विचेष्टःसोन्मत्तलीलाकृतिरप्रशान्तः । आलस्यनिद्राभिहतो मुहुश्चमध्येनमत्तःपुरुषोमदेन ॥ अव्यक्तेत्यत्रईषदर्थेनञ्विचेष्टःउन्मत्तस्यलीलाकृति भ्यांसहितः ॥ ३४७ ॥

राजसमदके लक्षण ॥

राजसमदसे-बुद्धि, स्मृति तथा बोलनेकी शक्ति, अल्प होती है वारंवार आलस्य तथा निद्रा आतीहै उन्मत्तकीसी लीला तथा आकृति होजातीहै शान्ति नष्टहोजातीहै और चेष्टा विरुद्ध होजातीहै ३४७॥

तामसस्यमदस्यलक्षणमाह ॥

गच्छेदगम्यांनगुरूंश्चमन्येत्खादेदभक्ष्याणि च नष्टसंज्ञः । ब्रूयाच्चगुह्यानिहृदिस्थितानि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मदेतृतीये रूक्षोऽस्वतन्त्रः॥मन्येदितिपरस्मैसमार्षत्वात् अस्वतन्त्रःमदपरवशः ३४८

तामस मदके लक्षण ॥

तामस मद से—मनुष्य अगम्या में गमन करताहै गुरुओंको नहीं मानता अभक्ष्य पदार्थोंको खाताहै लज्जारहित होजाताहै हृदय में स्थित छिपा हुआ भी कहने लगता है और मदसे परवश होजाताहै ॥ ३४८ ॥

यद्यपिमदास्त्रयएवतथापिसुश्रुतानुरोधादतितामसमदलक्षणमाह। चतुर्थेतुमदेमूढोभग्नदार्विवनिष्क्रियः। कार्य्याकार्य्यविभागज्ञोमृतादप्यपरोमृतः॥ मूढोमोहयुक्तः॥ कोमदन्तादृशंगच्छेदुन्मादमिवचापरम्। बहुदोषमिवामूढःकान्तारंस्ववशःकृती॥ अमूढःविचारबहुलः॥ ३४९॥

यद्यपि मद तीनही प्रकार के हैं तथापि सुश्रुत के मतके अनुसार अतितामस मदका लक्षण कहतेहैं जैसे अतितामस मदसे-मनुष्य मोहयुक्त टूटे हुए वृक्ष के समान चेष्टारहित कार्य्याकार्य्य के विचार से शून्य मरे हुए के समान मूर्च्छित होताहै कौन विचारवान् स्वाधीन और कृतकृत्य पुरुष बहुत दोषवाले वन के समान उन्मादरूपी उस प्रकारके मदमें प्राप्त होने की इच्छाकरेगा अर्थात् कोईभी नहीं करैगा ॥ ३४९ ॥

नातिमाद्यन्तिबलिनःकृताहारामहाशनाः। स्निग्धाःसत्त्ववयोयुक्तामद्यनित्यास्तदन्वयाः॥ मेदःकफाधिकामन्दवातपित्तादृढाग्नयः। विपर्य्ययेऽतिमाद्यन्तिविश्रब्धाःकुपिताश्चये॥ मद्येनचाम्लरूक्षेणसाजीर्णेबहुनापिच॥ ३५०॥

बलवान्, स्निग्ध, सत्त्वगुणयुक्त, अधिक अवस्थावाले, अत्यन्त भोजन करनेवाले, नित्य मद्य पीनेवाले, भोजन किये हुए और जिनके पिता पितामहादिक मद्य पीते हैं ऐसे मनुष्यों को बहुत नशा नहीं होताहै अधिकमेद तथा कफवाले थोडे वात पित्त तथा दृढ़ अग्निवाले उद्दण्ड तथा कोप युक्त और अजीर्णवाले मनुष्योंको बहुत नशा होताहै बहुत खट्टी तथा रूखी मद्य से भी बहुत नशा होताहै ॥ ३५० ॥

अथ मदात्ययानांनिदानमाह ॥

विषस्ययेगुणादृष्टाःसन्निपातप्रकोपणाः। तएवमद्येदृश्यन्तेविषेतुबलवत्तराः॥तस्मादविधिपीतेनतथामात्राधिकेनच। युक्तेनचाहितैरन्नैरकालेसेवितेनच॥मद्येनखलुजायन्तेमदात्ययमुखागदाः। अविधिप्रयुक्तंमद्यंविकारान्तरानुत्पादयति। इत्यतआह। निर्भुक्तमेकान्ततएवमद्यंनिषेव्यमाणंमनुजेननित्यम्। उत्पादयेत्कष्टतमान्विकारानुत्पादयेच्चापिशरीरभेदम्॥ एकान्ततोनैरन्तर्येणविकारान्मदात्ययादीन्। शरीरस्यभेदंनाशम्॥ ३५१॥

मदात्यय रोगका निदान ॥

सन्निपातके कुपित करनेवाले जो गुण विषमें हैं वही मद्यमेंभी हैं परन्तु विषमें विशेष करकेहैं इस लिये अविधिपूर्वक अधिक मात्रा से अहित अन्नों के साथ अथवा अकाल में मद्य पीने से मदात्यय आदिक रोग उत्पन्न होतेहैं विना विधिके मद्य पान करने से अन्य २ विकार भी उत्पन्न होते हैं जैसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कि भोजनके विना निरंतर मद्य पान करनेसे अनन्त दुःखदायी मदात्यय आदिक रोग उत्पन्न होते हैं और शरीर भी नष्ट हो जाताहै ॥ ३५१ ॥

मदात्ययस्य हेत्वन्तरमाह ॥

क्रुद्धेनभीतेनपिपासितेन शोकाभितप्तेनबुभुक्षितेन । व्यायामभाराध्वपरिक्षतेन वेगावरोधाभिहतेनचापि ॥ अत्यम्लभक्ष्यावततोदरेणसाजीर्णभुक्तेनतथाबलेन । उष्णाभितप्तेनचसेव्यमानंकरोतिमद्यंविविधान्विकारान् ॥ तानेवविकारान्विवृणोति । पानात्ययंपरमदंपानाजीर्णमथापिच । पानविभ्रममत्युग्रंतेषांवक्ष्यामिलक्षणम् ॥ ३५२ ॥

मदात्यय आदिकोंके अन्य कारण ॥

क्रुद्ध, भयभीत, तृषित, शोकयुक्त, बुभुक्षित, व्यायाम, भारका लेचलना तथा मार्गगमन से क्षीण, वेगों के रोकनेवाले, चोटवाले बहुत जल पान तथा रूखी वस्तुके सेवनसे फूले हुए पेटवाले, अजीर्ण में भोजनकरनेवाले, दुर्बल और उष्णता से संतप्त ऐसे मनुष्यों को मद्य पीने से अनेक रोग उत्पन्न होते हैं वह रोग यहहैं जैसे पानात्यय, परमद, पानाजीर्ण और पानविभ्रम इनके लक्षण आगे लिखे जाते हैं ॥ ३५२ ॥ अथमदात्ययस्यसामान्यंलक्षणमाह ॥

शरीरदुःखंबलवत्प्रमोहोहृदयेव्यथा । अरुचिःप्रततंतृष्णाज्वरःशीतोष्णलक्षणः ॥ शिरःपार्श्वास्थिसन्धीनांवेदनाविक्षतेयथा । जायतेऽतिबलाजृम्भास्फुरणंवेपनंश्रमः ॥ उरोविबन्धःकासश्चहिक्काश्वासःप्रजागरः । शरीरकम्पःकर्णाक्षिमुखरोगास्त्रिकग्रहः ॥ छर्दिर्विड्भेदउत्क्लेशोवातपित्तकफात्मकः । भ्रमप्रलापोरूपाणामसतांचैवदर्शनम् ॥ तृणभस्मलतापर्णपांशुभिश्चावपूरणम् । प्रधर्षणंविहंगैश्चभ्रांतचेताःसमन्यते ॥ व्याकुलानामशस्तानांस्वप्नानांदर्शनानिच । मदात्ययस्यरूपाणिसर्वाण्येतानिलक्षयेत् ॥ ३५३ ॥

मदात्यय का सामान्य लक्षण ॥

शरीरमें बहुत क्लेश, मोह, हृदयमें पीडा, अरुचि, निरन्तर तृषा, शीत तथा उष्णलक्षणों से युक्त ज्वर, शिरमें पीडा, पसली तथा रीढके नीचे हड्डियों में टूटने कीसी पीडा, हड्डियों की सन्धियोंमें पीडा, बहुत जंभाई, शरीर का फडकना, कम्प, श्रम, हृदय का जकडना, खांसी, श्वास, हिचकी, निद्राकानाश, शरीर कांकपना, कान, नेत्र तथा मुखके रोग, वातज छर्दि, पित्तज मल भेद, कफज मतली, भ्रम, प्रलाप, असत् रूपोंका देखना, तृण, भस्म, लता, पत्र तथा धूलिसे पूर्णसा मालूम होना, चित्तके भ्रमयुक्त होने से पक्षियोंसे घिरा हुआसा मालूम होना और व्याकुलता समेत बुरेस्वप्नोंकादेखना यह सब मदात्यय के लक्षणहैं ॥ ३५३ ॥ अथ वातिकस्यमदात्ययस्यनिदानमाह ॥

स्त्रीशोकभयभाराध्वकर्मभिर्योऽतिकर्षितः । रूक्षाल्पप्रमिताशीच यःपिबत्यतिमात्रया ॥ रूक्षंपरिणतंमद्यंनिशिनिद्रांनिहत्यच । करोतितस्यतच्छीघ्रंवातप्रायंमदात्ययम् ॥ तन्मद्यम् ॥ ३५४ ॥

वातज मदात्यय के निदान ॥

मैथुन, शोक, भय, भार तथा मार्गगमन से कृशशरीरवाला, रूखा तथा अल्पभोजन करनेवाला, मनुष्य. रूखी तथा पुरानी मद्य रात्रि में जागरण करके मात्रासे अधिक पियै तो उसको शीघ्रही वातज मदात्यय रोग होताहै ॥ ३५४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ तस्यलक्षणमाह ॥

हिक्काश्वासशिरःकम्पपार्श्वशूलप्रजागरैः। विद्याद्बहुप्रलापस्यवातप्रायंमदात्ययम् ३५५

वातज मदात्ययके लक्षण ॥

वातज मदात्यय में—हिचकी, श्वास, शिरका कंपना, पसलीमें पीडा, निद्राका नाश और अत्यन्त प्रलाप से यह लक्षण होतेहैं ॥ ३५५ ॥

अथ पैत्तिकस्य निदानमाह ॥

तीक्ष्णोष्णमद्यमम्लंचयोऽतिमात्रंनिषेवते। अम्लोष्णतीक्ष्णभोजीचक्रोधनोऽग्निनरा नरः ॥ तस्योपजायतेतीव्रःपित्तप्रायोमदात्ययः ॥ ३५६ ॥

पित्तजमदात्ययका निदान ॥

तीक्ष्ण, उष्ण तथा खट्टी वस्तुओं से बहुत खानेवाले, क्रोधी और अग्निवान्, मनुष्य—तीक्ष्ण, उष्ण तथा खट्टी मद्यको अधिक सेवनकरे तो बहुत तेज पित्तज मदात्यय रोग उत्पन्न होताहै ॥ ३५६ ॥

अथ तस्यलक्षणमाह ॥

तृष्णादाहज्वरस्वेदमोहातीसारविभ्रमैः। विद्याद्धरितवर्णस्य पित्तप्रायंमदात्ययम् ३५७

पित्तज मदात्ययका लक्षण ॥

पित्तज मदात्ययमें—तृषा, दाह, ज्वर, स्वेद, मोह, अतीसार, भ्रम और शरीरका पीलापन यह लक्षण होते हैं ॥ ३५७ ॥ अथ श्लैष्मिकस्यमदात्ययस्यनिदानमाह ॥

मधुरःस्निग्धोगुर्वाशीयःपिबत्यतिमात्रया। अव्यायामदिवास्वप्नशय्यासनसुखेरतः॥ मदात्ययंकफप्रायंसनरोलभतेध्रुवम् ॥ ३५८ ॥

कफज मदात्ययका निदान ॥

मधुर, स्निग्ध तथा भारी वस्तु खानेवाले, व्यायामरहित, दिनमें सोनेवाले और शयन तथा बैठने के सुखको करनेवाले मनुष्य जो मात्रासे अधिक मद्यपान करें तो उनको निस्सन्देह कफज मदात्यय रोग होताहै ॥ ३५८ ॥ अथ तस्यलक्षणमाह ॥

छर्द्यरोचकहृल्लासतंद्रास्तैमित्यगौरवैः। विद्याच्छीनपरीतस्यकफप्रायंमदात्ययम् ३५९

कफज मदात्ययके लक्षण ॥

कफज मदात्यय में—छर्दि, अरुचि, मतली, तन्द्रा, शरीरमें गीला कपडा लिपटाहुआसा मालूम होना, भारीपन और शीत लगना यह लक्षण होते हैं ॥ ३५९ ॥

अथ सान्निपातिकस्यमदात्ययस्यलक्षणनिदानमाह ॥

ज्ञेयस्त्रिदोषजश्चापिसर्वैर्लिङ्गैर्मदात्ययः ॥ ३६० ॥

सन्निपातज मदात्ययके लक्षण और निदान ॥

त्रिदोषज मदात्यय ऊपरकहेहुये सब निदानोंसे उत्पन्न होताहै और इसमें सबके लक्षणहोतेहैं ३६०

अथ परमदमाह ॥

श्लेष्मोच्छ्रयोऽङ्गगुरुताविरसास्यताच विण्मूत्रशक्तिरथतन्द्रिररोचकश्च । लिंगंपर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्यतमदस्य वदन्ति तज्ज्ञास्तृष्णारुजा शिरसिसन्धिषुचातिभेदः। तन्द्रिस्तन ॥ ३६१॥

परमद के लक्षण ॥

कफकी अधिकता, अंगोंमे ... विरसता, मलवमूत्रका रुकना, तन्द्रा, ... षा, शिर में पीड़ा और सन्धियों में टूटने ... सी पीड़ा यह परमदके लक्षणहैं ॥ ३६१ ॥

पानाजीर्णमाह ॥

आध्मानमुग्रमथवोद्गिरणंविदाहःपानेत्वजीर्णमुपगच्छतिलक्षणानि । ज्ञेयानितत्र भिषजासुविनिशिचतानिपित्तप्रकोपजनितानिचकारणानि ॥ उद्गिरणंवान्तिरुद्गारोवापी यतइतिपानंमद्यम् ॥ ३६२ ॥ पानाजीर्ण के लक्षण ॥

आध्मान, छर्दि और दाह यह पानाजीर्णके लक्षणहैं औरइसमेंपित्तकेकुपितकरनेवालेकारणहोतेहैं ३६२

पानविभ्रममाह ॥

हृद्गात्रतोदकफसंस्रवकण्ठधूममूर्च्छावमिज्वरशिरोरुजनप्रदेहाः । द्वेषःसुरान्नविकृतेषु चतेषुतेषुतंपानविभ्रममुशन्त्यखिलेषुधीराः॥ कण्ठधूमःकण्ठाद्धूमनिर्गतइवप्रदेहःकफेन लिप्तास्यता द्वेषः सुरान्नविकृतेषुचतेषुतेषुसुराविकारेष्वन्नविकारेषु चद्वेषः अखिलेषुमद्यवि कारेषु ॥ ३६३ ॥ पान विभ्रम के लक्षण ॥

हृदय तथा शरीरमें पीड़ा, कफ बहना, गलेसे धुआंसा निकलना, मूर्च्छा, छर्दि, ज्वर, शिरमें पीड़ा, मुख कफसे लिपा हुआसा होना और अनेकप्रकारकी मद्य तथा अन्नकेपदार्थों में द्वेष यह पान विभ्रमके लक्षणहैं ॥ ३६३ ॥ असाध्यानांमदात्ययादीनांलक्षणमाह ॥

हीनोत्तरोष्ठमतिशीतममन्ददाहंतैलप्रभास्यमतिपानहतन्त्यजेच्च । जिह्वौष्ठदन्तम सितन्त्वथवापिनीलंपीतेचयस्यनयनेरुधिरप्रभेवा ॥ हिक्काज्वरौवमथुवेपथुपार्श्वशूला कासभ्रमावपिचपानहतंत्यजेत्तम् ॥ ३६४ ॥

असाध्य मदात्यय आदि के लक्षण ॥

जिसका ओष्ठ क्षीण होजाय ऊपर शीत तथा भीतर बहुत दाह मालूम होवे मुखमें तेललगाहुआ सा मालूमहोय ऐसा मदात्ययवाला असाध्यहै जिह्वा ओष्ठ तथा दांत नीले अथवा काले होयँ और दोनोंनेत्र पीले अथवा लाल होयँ तो मदात्यय असाध्यजानना चाहिये हिचकी, ज्वर, छर्दि, कंप, पसली में पीड़ा खांसी और भ्रम इन सबसे युक्त मदात्ययवाले को त्याग करदेवे ॥ ३६४ ॥

अथ मदात्ययादीनांचिकित्सा ॥

मद्योत्थानाञ्चरोगाणांमद्यमेवहिभेषजम्। यथादहनदग्धानांदहनंस्वेदनंहितम् ॥ मि थ्यातिहीनमद्येनयोव्याधिरुपजायते। समेनैवनिपीतेनमद्येनसहिशाम्यति ॥ बीजपूरक वृक्षाम्लकोलदाडिमसंयुतम् । यवानीहवुषाजाजीशृंगबेरावचूर्णितम् ॥ सस्नेहैःसक्तुभि र्युक्तमुपदंशैश्चिरोत्थितम् । दद्यात्सलवणंमद्यंवातपैत्तिकशान्तये ॥ मद्यंसौवर्चलव्योष युक्तंकिञ्चिज्जलान्वितम् । जीर्णमद्यायदातव्यंवातपानात्ययापहम् ॥ चव्यंसौवर्चलंहिंगु पूरकंविश्वदीपकम् । चूर्णंमद्येनपातव्यंपानात्ययरुजापहम् ॥ ३६५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मदात्यय आदिकी चिकित्सा ॥

जैसे अग्निसे जलेहुओंको अग्निके द्वारा स्वेद देना हितकारीहै इसी प्रकार मद्यसे हुए रोगोंमें मद्यही विधिरहित अधिक अथवा थोडी मद्यसे उत्पन्न होतेहैं वह मात्राके अनुसार मद्यसे शान्त होतेहैं बिजौरानींबू,अमलवेत,और अनार के रस से युक्त,घी मिले हुए सत्तुओं अजवाइन,हाऊबेर,जीरा,सोंठ और सेंधानोन मिलाकर इनके साथ मद्य पान करने से बहुत दिन से उत्पन्न हुआ वात, पित्त संबंधी मदात्यय रोग शान्त होताहै कालानोन,त्रिकुटु और कुछ जल मिलाकर मद्य के पचजाने पर फिर मद्य पिलानेसे वातज मदात्यय शान्त होताहै चव्य,काला नोन,हींग,बिजौरानींबू,सोंठ और अजवाइनका चूर्ण मिलाकरपीनेसेमदात्ययरोगकानाशहोताहै३६५

लावातित्तिरदक्षाणांरसैश्चशिखिनामपि। पक्षिणांमृगमत्स्यानामानूपानांतथोदनैः॥ स्निग्धोष्णलवणाम्लैश्चवेसवारैर्मुखप्रियैः । स्निग्धैर्गोधूमजैरन्नैर्वातप्रायंमदात्ययम् ॥ नारीणांयौवनोष्माणांनिर्दयैरुपगूहनैः । श्रोण्यूरुकुचभारैश्चसंरोधोष्णसुखप्रदैः॥ शयनाच्छादनैरुष्णैश्चान्तर्गेहैःसुखप्रदैः। उत्पन्नोमारुतःशीघ्रंशाम्यतिमदात्ययः॥३६६॥

लवा,तीतर,मुर्गा तथा मोर यह सब पक्षी,मृग,मछली तथा अनूपजीवोंके मांसकेरस,भात,स्निग्ध, उष्ण,लवण,अम्ल तथा मुखको प्रिय,वेसवार और गेहूंके बने हुए स्निग्ध पदार्थ इनसबके साथ मद्य पीनेसे वातज मदात्यय नष्ट होताहै यौवनसे मतवाली स्त्रियोंके आलिंगनसे तथा दाबने में सुखदायी उष्ण नितम्ब जंघा तथा स्तनोंसे उष्ण सुखदायी शय्या तथा आच्छादन से और उष्ण कोठरी आदि भीतरके गृहोंके सेवनसे वातज मदात्ययरोग नष्टहोताहै ॥ ३६६ ॥

पित्तपानात्ययेयोज्याःसर्वतश्चक्रियाहिमाः। सितामाक्षिकसंयुक्तंमद्यमर्द्धोदकंपिबेत् ॥ मद्यंखर्जूरमृद्वीकापरूषकरसैर्युतम्। सदाडिमरसंशीतंसक्तुभिश्चावचूर्णितम्॥सशर्करंवा माध्वीकंसंयुक्तमथवापरम्। दद्याद्बहूदकंकालेपातुंपित्तमदात्यये॥ शशान्कपिञ्जलाने णाँल्लावानशितपुच्छकान् । मधुराम्लान्प्रयुञ्जीतभोजनेशालिषष्टिकान् ॥ पटोलयूष मिश्रंवाछागलंकल्पयेद्रसम्। सतीनमुद्गमिश्रंवादाडिमामलकान्वितम् । द्राक्षामलकख र्जूरपरूषकरसेनच॥ कल्पयेत्तर्पणान्यूषान्रसांश्चविविधात्मिकान्। शीतानिचान्नपाना निशीतशय्यासनानिच । शीतवातजलस्पर्शाःशीतान्युपवनानिच ॥ क्षौमपद्मोत्पलाना ञ्चमणीनांमौक्तिकस्यच। चन्दनोदकशीतानांस्पर्शाश्चन्द्रांशुशीतलाः॥ ३६७॥

पित्तज मदात्ययरोगमें सब शीतल क्रिया करनी चाहिये शक्कर तथा सहत युक्त आधे जल से मिली हुई मद्य पीनी चाहिये खजूर, दाख, फालसा तथा अनारके रससे युक्त शीतल मद्यसत्तुओं के साथ पानकरे शक्करयुक्त दाखकी मद्य अथवा अन्य किसी प्रकारकी अधिक जल मिलीहुई मद्य पान करे इससे पित्तज मदात्यय रोग नष्ट होतेहैं खरगोश,श्वेततीतर,मृग,लवा,दुम्बा,मेढ़ा तथा बकरा इन के मांसकारस मधुर तथा खट्टीवस्तु,परवल,मटर तथा मूंगकायूष,अनार तथा आमलेकी खटाई शालि धान्य,सांठीके चांवल खिलावे अथवा दाख,आमला, खजूर तथा फालसेका यूष और अनेक प्रकारके मांसके रस तृप्तिके लिये देवे शीतल अन्न,जल,शय्या,आसन,वायु,जल,स्पर्श तथा उपवन इनसबका सेवन करना चाहिये रेशमीवस्त्र,कमल,उत्पल,मणि,मोती,चंदन युक्त जल का स्पर्श और चन्द्रमाकी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किरथा इनसबका सेवन करना चाहिये यह सब पित्तजमदात्यय रोग में हितकारी होते हैं ॥ ३६७ ॥

रूक्षतर्पणसंयुक्तंयवानीव्योषसंयुतम्। यवगोधूमकञ्चान्नंरूक्षयूषेणभोजयेत्। कुलत्थकानांशुष्काणांमूलकानां रसेन वा ...र्संयुक्तंयवान्नंवाप्रदापयेत् ॥ ... रसंरूक्षमम्लंवाजांगलंरसम्। व्योषयूषमनागम्लंपिबेत्कफमदात्यये ॥ स्थाल्यां ... लेवा मृष्टंकृत्वातुनीरसम्। कट्वम्ललवणंमांसंखादेत्कफमदात्यये ॥ वामकद्रव्य... मद्येनोल्लेखनंमतम्। मदात्ययेकफोद्भूतेलङ्घनञ्चयथाबलम् ॥ ३६८ ॥

कफज मदात्ययरोगमें अजवाइन तथा त्रिकटुयुक्त रूखे तर्पण (तृप्तिकारी पदार्थ) और जौ तथा गेहूंके पदार्थ रूखे यूषों के साथ अथवा कुलथी तथा सूखी मूलीके यूषके साथ भोजनकरावे या बहुत कटुता युक्त जौ के पदार्थ सेवनकरावे बकरे अथवा जंगलीजीवों के मांसकारस घृतादिरहित कुछ खट्टा सेवन करे और त्रिकटु के यूषमें थोडी खटाई डालकर पानकरे हाँडी अथवा खपरे में कडवे अम्ल तथा लवणयुक्त नीरसमांसको भूनकर खाय वमन करानेवाली औषधियों से युक्त मद्य पिलाकर वमन कराने से और बलके अनुसार लंघन कराने से कफज मदात्यय नष्टहोताहै ॥ ३६८ ॥

यदिदंकर्मनिर्दिष्टंवातपित्तकफान्प्रति। सर्वजेसर्वमेवेदंप्रयोक्तव्यंचिकित्सकैः ३६९ ॥

वातज,पित्तज और कफज मदात्यय रोगमें जो चिकित्सा कही गई है वह संपूर्ण मिलाकर सन्निपातज मदात्यय में करनी चाहिये ॥ ३६९ ॥

अथ प्रसंगात् कोद्रवादिमद चिकित्सा ॥

सगुडःकूष्माण्डरसःशमयतिमदमाशुकोद्रवजम्। धत्तूरजञ्चदुग्धंसशर्करंचाशुपानेन ॥ सछर्दिमूर्च्छातीसारंमदंपूगफलोद्भवम्। सद्यःप्रशमयेत्पीतमातृप्तेर्वारिशीतलम् ॥ वन्यकरीषघ्राणाज्जलपानाल्लवणभक्षणादपिच ॥ शाम्यतिपूगफलोद्भवमदःसशूलःसशर्कराकवलात् ॥ तत्क्षणान्मृदितंचूर्णंसमाघ्रातंप्रणाशयेत्। ताम्बूलोत्थंमदंपुंसामेकमेव स्वभावतः ॥ जातीफलमदंशीघ्रंहन्तिपथ्यानिषेविता। शीततोयावगाहश्चशर्करादधियोजिता ॥ भितिवमदशान्त्यर्थमेतदेवमतापुनः। मद्यंपीत्वायदिनातत्क्षणमवलेढिशर्करांसघृताम् ॥ जातुनमदयतिमद्यंमनागपिप्रथितवीर्य्यमपि ॥ इति पानात्ययपरमदपानाजीर्णपानविभ्रमाधिकारः ॥ ३७० ॥

प्रसंगसे कोदों आदिके मद की चिकित्सा ॥

कुंभडेके रसमें गुडामिलाकर पीने से कोदोंका मद नष्ट होताहै दूधमें शक्कर मिलाकर पीने से धतूरे के मदका नाश होताहै तृप्तिपूर्वक शीतल जलपीने से छर्दि मूर्च्छा तथा अतीसार सहित सुपारीके मदका नाश होताहै वनके कंडेके सूंघने से जलपीनेसे अथवा नोनखाने से भी सुपारीके मदका नाश होताहै शक्करके ग्रास को मुख में रखनेसे चूने से हुई मुखकी पीडा का नाश होताहै चूने को मलकर सूंघनेसे पान के मदका नाश होताहै हडके सेवन से जायफलके मदका शीघ्रनाश होताहै शीतजलमें स्नानकरने से और शक्करसहित दहीके खानेसे बहेडे के मदका नाश होताहै मद्यको पीकर जो शीघ्रही घीमें शक्कर मिलाकर चाटे तौ बहुत नशीली मद्यकाभी मद नाश होताहै इति पानात्यय पर मदपानाजर्णि पानविभ्रमाधिकार ॥ ३७० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ दाहाधिकारः । तत्रदाहःसप्त[illegible]स्तेष्वादौपित्तजंदाहमाह ॥

पित्त[illegible]समःपित्तदाहःस्यात्तस्यसंक्रमः[illegible]हऊष्मा[illegible]व्याधिः पित्तज्वरस[illegible]
पित्तज्व[illegible]युक्तः पित्तज्वरेत्वामाशयदुष्टे[illegible] भेदः तस्यदाह[illegible]पित्त
ज्वरो[illegible]चिकित्सा ॥ ३७१ ॥

दाह का अधिकार ॥

दाह सातप्रकारका है उनमें से पहले पित्तज दाहको कहतेहैं पित्तज दाहमें पित्तज्वरके लक्षण होते हैं (परन्तु भेद यह है कि पित्तज्वरमें बेचैनी तथा आमाशय में दोष अधिक होते हैं और दाहमें यह नहींहोते हैं) इससे इसकी चिकित्साभी पित्तज्वरके समान होतीहै ॥ ३७१ ॥

रक्तजमाह ॥

कृत्स्नदेहानुगंरक्तमुद्रिक्तंदहतिध्रुवम् । सन्धूप्यतेचोष्यतेचताम्राभस्ताम्रलोचनः ॥
लोहगन्धांगवदनोवह्निनेवावकीर्यते । उद्रिक्तमतिरक्तंसतद्दहतिदाहाख्यंव्याधिंकरोतिस
न्दह्यते अग्निनादह्यतइवउष्यते समीपस्थेनेव वह्निनातप्यते चूष्यतइतिपाठान्तरे
आचूषणेनेवपीडामनुभवतीत्यर्थः । वह्निनेवावकीर्य्यतेशरीरोपरिवह्निप्रक्षिप्यतइवशस्त्रा
दिक्षतानिःसृतइव ॥ ३७२ ॥

रक्तजदाहका वर्णन ॥

रक्तज दाहमें संपूर्ण शरीरका रुधिर कुपित होकर दाह को उत्पन्न करता है इसमें रोगी समीपमें धरी हुईसी अग्नि के द्वारा संतप्तके समान पीडित होताहै तृषित होताहै शरीर तथा नेत्र ताम्र वर्ण होजातेहैं शरीर तथा मुखमें लोहेकीसी गन्धि आतीहै और शरीर में चिनगारियांसी गिरीहुई मालूमपड़ती हैं ॥ ३७२ ॥

रक्तपूर्णकोष्ठजमाह ॥

असृजापूर्णकोष्ठस्यदाहोऽन्यःस्यात्सुदुस्तरः । असृजाशस्त्रादिक्षतान्निःसृतरक्तेन ३७३॥

रक्तपूर्णकोष्ठज दाह का वर्णन ॥

शस्त्र आदिके द्वारा हुए घावसे बहने वाले रुधिर से कोष्ठके पूर्ण होजाने पर एक प्रकारका अत्यन्तदुस्तर दाह उत्पन्न होताहै इसको रक्तपूर्ण कोष्ठज कहतेहैं ॥ ३७३ ॥

मद्यजमाह ॥

त्वचंप्राप्तःसपानोष्मापित्तरक्ताभिमूर्च्छितः । दाहंप्रकुरुतेघोरंपित्तवत्तत्रभेषजम् ॥
सपानोष्मामद्यपानजनितऊष्मापित्तरक्ताभिमूर्च्छितः । पित्तरक्ताभ्यांवर्द्धितः ॥ ३७४ ॥

मद्यज दाहका वर्णन ॥

मद्यपीने से हुई ऊष्मा पित्त तथा रुधिरके साथ बढ़ीहुई त्वचामें प्राप्तहोके भयंकर दाहको उत्पन्न करती है इसमें पित्तकी सी चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ३७४ ॥

तृषानिरोधजमाह ॥

तृष्णानिरोधादब्धातौक्षीणेतेजःसमुद्धतम् । सबाह्याभ्यन्तरंदेहंप्रदहेन्मन्दचेतसः ॥
संशुष्कगलताल्वोष्ठोजिह्वानिष्कास्यवेपते । अब्धातौरसेक्षीणेक्षयंप्राप्तेतेजःसमुद्धतंवृद्धं
मन्दचेतसःअल्पबुद्धेःयतस्तेनतृषानिरोधःकृतः ॥ ३७५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तृषा नि[illegible] दाहका वर्णन ॥

जो मन्दबुद्धि मनुष्य तृषा होने पर जल [illegible]हीं पीताहै उसकी रस धातुके क्षीण [illegible]ानेपर बढ़ा [illegible]ा तेज शरीरके भीतर तथा बाहर दाहको [illegible] करता है इसमें कंठ तालु तथा [illegible] सखजाते हैं [illegible] बाहर निकल आती [illegible] मि० ३७५ ॥

धातुक्षयजमाह ॥

धातुक्षयोत्थोप्येदाहस्तेनमूर्च्छातृषान्वितः । क्षामस्वरः क्रियाहीन[illegible]दन्भृश पीडितः ॥ ३७६ ॥

धातुक्षयज दाहका वर्णन ॥

धातुक्षयज दाहमेंमूर्च्छा,तृषा,स्वरभंग,कार्योंमेंअसमर्थता और बहुत दाहहोनेसेमृत्युभीहोजातीहै ३७६

मर्माभिघातजमाह ॥

मर्माभिघातजोऽप्यस्तिसोऽसाध्यःसप्तमोमतः।मर्माणिशिरोहृदयवस्त्यादीनि॥३७७॥

मर्माभिघातज दाहका वर्णन ॥

शिर,हृदय तथा मूत्राशय आदि स्थानोंमें चोटलगनेसे जो दाह उत्पन्न होताहै वह असाध्यहै ३७७

असाध्यदाहमाह ॥

सर्वएवचवर्ज्याःस्युःशीतगात्रस्यदेहिनः ॥ ३७८ ॥

असाध्य दाहके लक्षण ॥

शीतल शरीरवाले मनुष्योंके सम्पूर्ण दाह असाध्य होते हैं ॥ ३७८ ॥

अथ दाहचिकित्सा ॥

शतधौतघृताभ्यक्तंलेपंवायवसक्तुभिः । कोलामलकयुक्तैर्वाधान्याऽम्लैरपिबुद्धिमान् । धान्याम्लंकाञ्जिकभेदः । छादयेत्तस्यसर्वाङ्गमारनालार्द्रवाससा । लामज्जकेनयुक्तेनच न्दनेनानुलेपयेत् ॥ चन्दनाम्बुकणास्यन्दितालवृन्तोपवीजनैः । सुप्याद्दाहार्दितोऽम्भो जकदलीदलसंस्तरे ॥ परिषेकावगाहेषुव्यजनानाञ्चसेवने । शस्यतेशिशिरन्तोयंदाह तृष्णोपशान्तये ॥ फलिनीलोध्रसेव्याम्बुहेमपत्रंकुटन्नटम् । कालीयकरसोपेतंदाहेशस्तं प्रलेपनम्॥फलिनीप्रियङ्गुःसेव्यंउशीरंअम्बुबालकंहेमपत्रंनागकेशरपत्रंकुटन्नटंवितुन्न कंगुडतजीइतिलोके क्वचित्चम्बावती इतिनामकालीयकंकलम्बकइतिलोके । ह्रीबेरप द्मकोशीरचन्दनाम्बुजवारिणा ॥ सम्पूर्णमवगाहेतद्रोणींदाहार्दितोनरः ॥ ३७९ ॥

दाहकी चिकित्सा ॥

सौबारका धोयाहुआ घी तथा जौंके सत्तू मिलाकर लेप करनेसे बेर तथा आमले एक साथ कांजी में पीसकर लेप करने से कांजी में भीगे हुए कपडेके ओढ़नेसे खस तथा चन्दनको शिरके में पीसकर लेपकरनेसे और कमल तथा केले के पत्तोंकी शय्यापर शयन करके चन्दन युक्त जलसे सिंचेहुए पंखों की वायुके सेवनसे दाहका नाश होताहै तृषा तथा दाहकी शान्तिके लिये जलसे सींचना स्नानकरना तथा पंखोंपर छिडकना इन सबकार्यों में शीतल जल श्रेष्ठ है मालकंगनी, लोध, खस,सुगन्धबाला, नागकेशरके पत्ते और गुड़तजी इनसबको कलंबकके रसमें पीसकर लेपकरने से सुगन्धबाला, पद्माक,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

खस,चन्दन [illegible]था कमलको पीसकर जलमें मिलाके[illegible]र इस जलको हौजमें भरकर उसमें स्नान करनेसे दा[illegible] नाशहोताहै ३७९ ॥

वाप्य[illegible]कमलहासिन्योजलयन्त्रगृहाःशु[illegible]नार्यश्चन्दन[illegible]दिग्धाङ्ग्योदाहदैन्यह[illegible]ताः ॥ [illegible]कमलस्याम्भःशर्कराम्भःपयो[illegible]सुरसञ्चापिकार[illegible]जि द्विधिर[illegible]८० ॥

फूलें[illegible]वाली बावडी,फुहारेदार घर और शरीरमें चन्दन लगायेहु[illegible] स्त्री यह सब दाहकी नाशकहैं कमलका जल शक्करयुक्त जल अथवा दूध तथा ईखका रस इनका सेवन करनेसे और पित्त नाशक चिकित्सा करने से दाह का नाश होताहै ॥ ३८० ॥

पटीरपर्पटोशीरनीरनीरदनीरजैः। मृणालमिसिधान्याकपद्मकामलकैःकृतः ॥ अर्द्धशिष्टःसिताशीतःपीतःक्षौद्रसमन्वितः । क्वाथोऽयपोहयेद्दाहंनृणाञ्चपरमोल्बणम् ॥ पटीरंचन्दनम् । इतिचन्दनादिक्वाथः ॥ ३८१ ॥

चन्दन,पित्तपापडा, खस, सुगन्धबाला, मोथा, कमल, कमलकीडंडी, सौंफ, धनियां, पद्माक और आमला इन सबके द्वारा आधा अवशिष्ट काढा बनाकर शीतल होजानेपर शक्कर तथा सहत डालकर पीनेसे बहुत बढ़ेहुएभी दाह का नाश होताहै इति चन्दनादिक्वाथ ॥ ३८१ ॥

तिलतैलंभवेत्प्रस्थंतत्षोडशगुणेशनैः । काञ्जिकेविपचेत्तस्याद्दाहज्वरहरंपरम् ॥ इति काञ्जिकतैलम् । इतिदाहाधिकारः ॥ ३८२ ॥

६४ तोले तिलके तेलको १६ गुनी कांजी में पकाकर मर्द्दन करने से दाहज्वर का नाश होताहै ॥ इति कांजिक तेल इति दाहाधिकार ॥ ३८२ ॥

अथोन्मादाधिकारस्तत्रोन्मादस्य निरुक्तिमाह ॥

मदयन्त्युद्धतादोषायस्मादुन्मार्गमाश्रिताः । मानसोऽयमतोऽव्याधिरुन्मादइतिकीर्त्तितः । अयमर्थः । यस्माद्धेतोरुद्धताःप्रवृद्धाःदोषाःउन्मार्गमाश्रिताःमदयन्तिचित्तंविक्षिपन्तिअस्मिन्नसोऽयमुन्मादइतिकीर्तितःसउन्मादःमानसोऽव्याधिःमनोवैकृत्यकारणात् । तस्यैवावस्थाभेदेनामान्तरमाह । सचाप्रवृद्धस्तरुणोमदसंज्ञां बिभर्त्तिच । सउन्मादः तरुणोनवीनः ३८३ ॥ उन्माद का अधिकार उन्मादकी निरुक्ति ॥

विमार्गमें प्राप्त बढ़ेहुए दोष चित्तको विकल करते हैं इसलिये इसको उन्माद कहते हैं यह मानस रोगहै और वही उन्माद रोग जो बहुत बढ़ा न होय और नवीन होय तो उसको मद कहते हैं ॥ ३८३ ॥

उन्मादस्यविप्रकृष्टंलक्षणमाह ॥

विरुद्धदुष्टाशुचिभोजनानिप्रधर्षणंदेवगुरुद्विजानाम् । उन्मादहेतुर्भयहर्षपूर्वोमनोऽभिघातोविषमाचचेष्टा । दुष्टंधत्तूरबीजादिसहितंअशुचिरजस्वलास्पर्शादिप्रधर्षणमभिभवःविषमाचेष्टाबलवद्विग्रहादिः ॥ ३८४ ॥

उन्मादके दूरवाले कारण ॥

विरुद्ध दुष्ट (धतूरेकेबीज आदिसे युक्त) तथा अशुचि (रजस्वला स्त्री आदिकों से छुएहुए) भोजन

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से देवता गुरू तथा ब्राह्मणोंके तिरस्कारसे भयसे हर्षसे मनके तोडनेसे और बलवान्के साथ युद्धादि से उन्माद रोग उत्पन्न होताहै ॥ ३८४ ॥

सन्निकृष्टं तद्रोगमाह ॥

...दोषैः ... मानसेनचदुःखेनसपञ्चविधः ... ॥ विषाद्भवतिषष्ठश्चयथास्वंतत्रभेषजम् ॥ तस्यसंप्राप्तिमाह । तैरल्पसत्त्वस्य ... दुष्टाः बुद्धेर्निवासंहृदयंप्रदूष्य ॥ स्रोतांस्यधिष्ठायमनोवहानिप्रमोहयन्त्याशु ... तः । अल्पसत्त्वस्यअल्पसत्त्वगुणस्यमलावातादयः बुद्धेर्निवासंहृदयंप्रदूष्येतिएतेनाश्रयस्य दुष्ट्यातदाश्रितायाः बुद्धेरपिदुष्टिरुक्तामनोवहानिस्रोतांसिहृदयाश्रितानिदशएतानिविशेषतोबोद्धव्यानि । चरकेणसकलशरीरस्रोतांस्येवमनोऽधिष्ठानत्वेनोक्तानिप्रमोहयन्तिविकृतिंकुर्वन्ति ॥ ३८५ ॥ उन्मादके समीपी कारण ॥

उन्माद ६ प्रकारकाहै वातज,पित्तज,कफज,सन्निपातज,मनके दुःखसे उत्पन्न और विषज इनमें अपने २ अनुसार चिकित्सा कीजातीहै ऊपर कहेहुए कारणोंके द्वारा दूषित दोष थोडे सत्त्वगुणवाले मनुष्यके बुद्धिके स्थानरूप हृदयको दूषित करके और मनके लेचलनेवाले स्रोतोंमें स्थित होकेचित्त को मोहित करतेहैं ॥ ३८५ ॥ उन्मादस्यसामान्यरूपलक्षणमाह ॥

धीविभ्रमःसत्त्वपरिप्लवश्चपर्याकुलादृष्टिरधीरताच । अबद्धवाक्यंहृदयञ्चशून्यंसामान्यउन्मादगदस्यलिंगम् ॥ धीविभ्रमःशुक्तिकायांरजतज्ञानम् ।सत्त्वपरिप्लवःसत्त्वंमनस्तस्यचाञ्चल्यं ॥ अबद्धवाक्यम्असंबद्धभाषित्वं । शून्यंस्मृतिशून्यम् ॥ ३८६ ॥

उन्मादका सामान्य लक्षण ॥

सामान्य उन्मादमें बुद्धिभ्रम, मनकी चंचलता,व्याकुलदृष्टि,अधीरता, असम्बद्धवाक्य और हृदय का स्मृतिसे रहित होना यह लक्षण होतेहैं ॥ ३८६ ॥

वातिकोन्मादस्यनिदानपूर्विकांसंप्राप्तिमाह ॥

रूक्षाल्पशीतान्नविरेकधातुक्षयोपवासैरनिलोऽतिवृद्धः । चिन्तादिदुष्टंहृदयंप्रदूष्य बुद्धिंस्मृतिंचाप्युपहन्तिशीघ्रम् । प्रदूष्यप्रकर्षेणदूषयित्वा ॥ ३८७ ॥

वातज उन्मादकी निदानपूर्वक संप्राप्ति ॥

रूखे तथा अल्प शीतल अन्नके भोजन से विरेचन से धातुक्षयसे और लंघनों से बहुत बढीहुई वायु चिन्ता आदि से व्याकुल हृदयको दूषित करके बुद्धि तथा स्मृतिको शीघ्र नष्ट करतीहै ३८७ ॥

तस्यैवरूपमाह ॥

अस्थानहास्यस्मितनृत्यगीतवागंगविक्षेपणरोदनानि । पारुष्यकार्श्यारुणवर्णताच जीर्णेवलञ्चानिलजस्यरूपम् ॥ अस्थानेऽनवसरे । हास्यादीनिरोदनान्तानिजीर्णेआहारेबलंव्याधेः ॥ ३८८ ॥

वातज उन्मादका लक्षण ॥

वातज उन्मादमें बे कायदे हँसना,मुसक्याना,नाचना,गाना,बकना,अंगोंका चलाना,रोना,कृशता, कठोरता और रक्तवर्ण होना यह लक्षण होते हैं और भोजनके पचजाने पर यह रोग बढताहै ३८८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

पैत्तिकस्यनिदानपूर्[illegible]कांसंप्राप्तिमाह ॥

अज[illegible]कट्वम्लविदाह्यशीतैर्भोज्यैश्चितं[illegible]त्तमुदीर्णवेगम् । उन्मादमत्युग्रम[illegible]त्मक स्यहा[illegible]तंपूर्ववदाशुकुर्यात् ॥ हृदिस्[illegible]नंचित्तंसं[illegible]पुनः अजीर्ण[illegible]ट्वम्ल[illegible]दाह्य शीतै[illegible]दीर्णवेगंसतु उन्मादंकुर्यात्पूर्व[illegible]त्यर्थः ॥ ३[illegible] ॥

पित्तज उन्मादकी निदानपूर्वक संप्राप्ति ॥

अज[illegible]खारी,कडवी,खट्टी,विदाही तथा उष्ण वस्तुओंके भोजनसे हृदय में इकट्ठा हुआ पित्त कुपित होकर हृदयको दूषित करके बहुत शीघ्र उन्माद को उत्पन्न करता है ॥ ३८६ ॥

तस्यरूपमाह ॥

अमर्षसंरम्भविनग्नभावाःसन्तर्जनाभिद्रवणौष्ण्यरोषाः । प्रच्छायशीतान्नजलाभिलाषाःपीतास्यतापित्तकृतस्यलिंगम् ॥ अमर्षोऽसहिष्णुतासंरम्भआरम्भटोआडम्बरइतियावत् । सन्तर्जनंपरित्रासनं । अभिद्रवणंपलायनंऔष्ण्यंगात्रेचोष्णोदाहविशेषःप्रच्छायइत्यादिच्छायायांशीतयोश्चान्नजलयोरभिलाषः ॥ ३९० ॥

पित्तज उन्मादके लक्षण ॥

पित्तज उन्मादमें असहनता,आडंबर,नंगापन,डरावना,भागना,शरीरमें कुछदाह,क्रोध और छाया तथा शीतल अन्नपान में अभिलाष और पीलामुख यह लक्षण होतेहैं ॥ ३६० ॥

श्लैष्मिकस्यनिदानपूर्विकांसम्प्राप्तिमाह ॥

सम्पूरणैर्मन्दविचेष्टितस्यसोष्माकफोमर्मणिसंप्रवृद्धः । बुद्धिंस्मृतिञ्चाप्युपहन्तिचित्तंप्रमोहयन्संजनयेद्विकारम् ॥ सम्पूरणैः । भोजनादिभिःमन्दविचेष्टितस्यव्यायामरहितस्यसोष्माकफइतिकफोप्युन्मादंकरिष्यन् पित्तसहायमपेक्षते । व्याधिस्वभावान्मर्मणि अत्रमर्मशब्देनहृदयमुच्यतेविकारमुन्मादरूपम् ॥ ३९१ ॥

कफज उन्मादकी निदानपूर्वक संप्राप्ति ॥

व्यायामादिरहित मनुष्य का बहुत भोजन आदिकों से पित्त सहित बढ़ाहुआ कफ हृदयमें स्थितहोकर बुद्धि तथा स्मृति को नष्ट करताहुआ चित्तको मोहित करके उन्माद को उत्पन्न करताहै३६१ ॥

तस्यरूपमाह ।

वाक्चेष्टितंमन्दमरोचकश्चनारीविविक्तप्रियताचनिद्रा । छर्दिश्चलालाचबलञ्चभुक्तेनखादिशौक्ल्यञ्चकफात्मकेस्यात् ॥ वाक्चेष्टितंमन्दंवचनमल्पंनारीविविक्तप्रियतानारीप्रियताविजनप्रियताचभुक्तेसतिबलंव्याधेः ॥ ३९२ ॥

कफज उन्माद का लक्षण ॥

कफज उन्मादमें थोड़ा बोलना,अरुचि,स्त्री में प्रेम,निर्जनस्थान में रहने की इच्छा,अधिक निद्रा, छर्दि,लार बहना और नख आदिको में श्वेतता यह लक्षण होते हैं यह रोग भोजनके उपरान्त बलवान् होताहै ॥ ३६२ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सान्निपातिकस्य निदानपूर्वकं लक्षणमाह ॥

[illegible]ः सन्निपातप्रभवोऽतिघोरःसर्वैःसम[illegible]नैःसतुहेतुभिःस्यात् । सर्वाणिरू[illegible]णिबिभर्त्ति ता[illegible]विरुद्धभैषज्यविधिर्विवर्ज्यः ॥ स[illegible]न्निपातिकउन्मादःसन्निपातग्रहणे[illegible]सर्वात्मक त्व[illegible]रितियत्व[illegible]जस्तम[illegible]ार्थैतेनरजस्तमोमिलितइत्यर्थः[illegible]नवाता दय[illegible]स्त[illegible]मैनोदोषैर्मि[illegible]इचनिदानैःकुपिताउन्मादंजन[illegible]र्वैर्हेतु भिः[illegible]मस्तैर्मि[illegible]तैःस्यात्यतोऽन्यो[illegible]ः सर्वैर्हेतुभिर्मिलितैरेवभवतीति[illegible]स्ति। अयंतुव्याधिप्रभावात्सर्वैर्हेतुभिर्मिलितैःस्यात् । तादृगुन्मादोविरुद्धभैषज्य[illegible]रितिको ऽर्थः ॥ त्रिदोषजेप्रत्येकंवातादेरप्रत्यनीकाकार्या । साचपरस्परविरोधिनीत्रिदोषंहन्ति किञ्चिदेवद्रव्यंआमलकादि । तच्चात्रयौगिकंव्याधिप्रभावादतएवविवर्ज्यःनचिकित्स्य इत्यर्थः ॥ ३९३ ॥

सन्निपातज उन्माद का निदानपूर्वक लक्षण ॥

ऊपर कहे हुए संपूर्ण कारणों से कुपित हुए रजोगुण तमोगुण मिलेहुए वातादिक दोष सन्निपातज उन्माद को उत्पन्न करते हैं इसमें ऊपर कहेहुए संपूर्ण निदान मिलेहुए होते हैं यह रोगका प्रभावहै और इसमें ऊपर कहेहुए सब लक्षण मिलते हैं इस प्रकार के विरुद्ध चिकित्सावाले घोर सन्निपातज उन्मादवाले को वैद्य त्याग करदें ॥ ३९३ ॥

मनोदुःखजस्यविप्रकृष्टंनिदानमाह ॥

चौरैर्नरेन्द्रपुरुषैररिभिस्तथान्यैर्वित्रासितस्यधनबान्धवसंक्षयाद्वा । गाढंक्षतेमनसि चप्रिययारिरंसोर्जायेतचोत्कटतरोमनसोविकारः ॥ अन्यैःहिंस्रादिभिःगाढमतिशयेनक्षतेऽभिहतेप्रियया प्राप्तुमशक्यया रिरंसोःपुरुषस्यविकारःउन्मादरूपः ॥ ३९४ ॥

मनके दुःखसे हुए उन्माद के दूरवाले कारण ॥

चोर राजपुरुष शत्रु अथवा अन्य हिंसक जीवों के भयसे धन तथा बन्धुओं के क्षयसे और बहुत काम से पीडित होकर अभिलाष कीहुई स्त्रीके न मिलने से मनके क्षोभित होनेपर अत्यन्त भयंकर मानसिक उन्माद उत्पन्न होताहै ॥ ३९४ ॥ तस्यरूपमाह ॥

चित्रंब्रवीतिचमनोऽनुगतंविसंज्ञोगायत्यथोहसतिरोदितिचातिमूढः । चित्रमाश्चर्यंमनोऽनुगतंगोप्यमपिविसंज्ञोविरुद्धज्ञानः ॥ अतीवमूढःअतीवज्ञानशून्यः । अत्रविकल्पो बोद्धव्यः ॥ ३९५ ॥

मनके दुःख से हुए उन्मादके लक्षण ॥

मानस उन्मादमें ज्ञानका विपरीत होना अथवा ज्ञानका न होना मनमें स्थित छिपाने के योग्य भी बातों का कहना गाना हँसना और रोना यह लक्षण होते हैं ॥ ३९५ ॥

विषजस्यरूपमाह ॥

रक्तेक्षणोहतबलेन्द्रियभाःसुदीनश्श्यावाननोविषकृतेतुभवेत्परासुः । परासुःमृतः ३९६ ॥

विषज उन्माद के लक्षण ॥

विषज उन्माद में नेत्रोंका लालहोना, बल इन्द्रिय तथा कान्तिका नष्ट होना मुखका मलिन होना और अत्यन्त दीनता यह लक्षण होते हैं इसमें रोगी मरजाताहै ॥ ३९६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अरिष्टमाह ॥

अवाङ्मुखस्तून्मुखोवाक्षीणमांसबलोनरः।जागरूकोह्यसन्देहमुन्मादेनविनश्यति३९७॥

उन्मादके अरिष्ट ॥

जो उन्मादी रोगी नीचेको अथवा ऊपर को मुख किये रहै और उसका मांस तथा बल क्षीण हो जाय निद्रा न आवे तो वह मरजाता है ॥ ३९७ ॥

अथ देवादिकृतस्योन्मादस्य सामान्यलक्षणमाह ॥

अमर्त्यवाग्विक्रमवीर्यचेष्टोज्ञानादिविज्ञानबलादियुक्तः। प्रकोपकालो नियतश्चयस्य देवादिजन्मामनसोविकारः ॥ अमर्त्यवाग्विक्रमवीर्यचेष्टःनमर्त्यस्येववागादयोयत्रसःवि क्रमःपराक्रमःवीर्यंशौर्यंज्ञानादिविज्ञानबलादियुक्तःज्ञानंबुद्धिः आदिपदेनतद्भेदाःमेधावि चारणास्मृत्यादयोगृह्यन्ते। विज्ञानंशिल्पादिविषयकंज्ञानंबलंचेष्टापाटनम् ॥ आदिपदे नाभिमानादिगृह्यतेनियतःवक्ष्यमाणतिथ्यादिभिःमनोविकारउन्मादः ॥ ३९८ ॥

देवता आदिकों से हुए उन्माद का सामान्य लक्षण ॥

जिस उन्मादमें-वाणी, पराक्रम, शौर्य्य, शरीरकी चेष्टा, बुद्धि, स्मृति, मेधा, विचार, शिल्पादि विषयों का ज्ञान तथा बल आदिक मनुष्य के से न होंय और रोगके कोपका समय निश्चित न होवे उसको देवादिकृत उन्माद कहते हैं ॥ ३९८ ॥

तत्रदेवाविष्टस्यलक्षणमाह ॥

सन्तुष्टःशुचिरतिदिव्यमाल्यगन्धोनिस्तन्द्रोप्यवितथसंस्कृतप्रभाषी। तेजस्वीस्थिरनयनोवरप्रदाताब्रह्मण्योभवतिनरःसदेवजुष्टः ॥ अतिदिव्यमाल्यगन्धः। अतिशयेन दिव्यस्यमाल्यस्येवगन्धोयस्यसः ॥ निस्तन्द्रोनिद्रारहितःअवितथंसत्यंब्रह्मण्यःब्राह्मण भक्तः ॥ ३९९ ॥

देवताओं से हुए उन्माद के लक्षण ॥

देवताओं से हुए उन्माद में—रोगी. संतुष्ट, पवित्र, अत्यन्त दिव्यमालाओं कीसी सुगन्धि से युक्त, निद्रारहित, सत्य, संस्कृत बोलनेवाला, तेजस्वी, स्थिर नेत्रवाला, ब्राह्मणभक्त और वरदान देनेवाला होताहै ॥ ३९९ ॥

दैत्याविष्टमाह ॥

संस्वेदीद्विजगुरुदेवदोषवक्ता जिह्माक्षोविगतभयोविमार्गदृष्टिः। सन्तुष्टोभवतिन चान्नपानजातैर्दुष्टात्माभवतिसदेवशत्रुजुष्टः । विमार्गदृष्टिःकुमार्गरतःदुष्टात्मादुष्टस्व भावः ॥ ४०० ॥

दैत्यों से हुए उन्माद का लक्षण ॥

दैत्यों से हुए उन्मादमें-स्वेद, नेत्रों में कुटिलता, निर्भय होना, कुमार्गगामीहोना, अन्नपानादिकों में संतुष्ट न होना, दुष्टता और ब्राह्मण गुरु तथा देवताओं के दोषोंको कहना यह लक्षण होते हैं ४००॥

गन्धर्वाविष्टमाह ।

हृष्टात्मापुलिनवनान्तरोपसेवीस्वाचारःप्रियपरिगीतगन्धमाल्यः। नृत्यन्वैप्रहसति चारुचाल्पशब्दंगन्धर्वग्रहपरिपीडितोमनुष्यः ॥ हृष्टात्माहृष्टजीवात्मापुलिनन्तोयोत्थि तंतटंवनान्तरंवनमध्यन्तयोःसेवी चारु चाल्पशब्दमितिहसनक्रियाविशेषणम् ॥ ४०१ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गन्धर्वोंसे हुए उन्माद का लक्षण ॥

[illegible]धर्वों से हुए उन्माद में- अन्तःकरण की प्रसन्नता, जलके किनारे तथा वनोंमें [illegible]सकरना, अप[illegible]आचार में रहना, गीत तथा सुगन्धित [illegible]ला आदिकों में प्रीतिहोना, सुन्दरनाचन[illegible] और धीरे २ [illegible]र हँसना यह लक्षण होते हैं ॥ ४०१ ॥

[illegible] मिर्गमाह ॥

ते[illegible]म्राक्षः[illegible]तनुरक्तवस्त्रधारागम्भीरो द्रुतगतिरल्पवाक्सहिष्णुः । तेज[illegible]तिच किंददामिकस्मैयोयक्षग्रहपरिपीडितोमनुष्यः ॥ ४०२ ॥

यक्षोंसे हुए उन्मादका लक्षण ॥

यक्षोंसे हुए उन्मादमें-नेत्रोंका ताम्रवर्ण होना, महीन तथा रक्तवस्त्रोंका पहरना, गंभीरता, जल्दी चलना, थोडा बोलना, सहनशीलता, तेजस्वी होना और किसको क्या देदूं ऐसाकहना यह सब लक्षण होतेहैं ॥ ४०२ ॥

पित्राविष्टमाह ॥

प्रेतानांसदिशतिसंस्तरेषुपिण्डान् शान्तात्माजलमपिचापसव्यवस्त्रः । मांसेप्सुस्तिलगुडपायसाभिलाषीतद्भक्तोभवतिपितृग्रहाभिजुष्टः ॥ प्रेतानांमृतानांपितॄणांदिशतिददाति ॥ अपसव्यवस्त्रःदक्षिणस्कन्धकृतोत्तरीयः ॥ ४०३ ॥

पितरोंके उन्माद के लक्षण ॥

पितरोंके उन्माद में-रोगी शान्त होकर दक्षिण कन्धेमें यज्ञोपवीत रखकर और कुशोंको बिछाकर पितरोंको जल तथा पिंडदेताहै पितरोंका भक्त और मांस तिल गुड तथा खीर खानेकी अभिलाषा किया करताहै ॥ ४०३ ॥

नागाविष्टमाह ॥

यस्तूर्व्यांप्रसरतिसर्पवत्कदाचित्सृक्किण्योमुहुरपिजिह्वयावलेढि । क्रोधालुर्घृतमधुदुग्धपायसेप्सुर्विज्ञेयःसखलुभुजङ्गमेनजुष्टः ॥ प्रसरतिससर्पवत्उरसाचलतिसृक्किण्यौ ओष्ठप्रान्तौ ॥ ४०४ ॥

सर्पोंसे हुए उन्मादके लक्षण ॥

सर्पोंके उन्मादमें-सर्पोंके समान छातीसे पृथ्वीपर चलना, जिह्वासे ओठोंके किनारोंको वारंवारचाटना, क्रोधयुक्तहोना और घी, सहत, दूध तथा खीरखानेकीइच्छाकरना यह लक्षण जाननेचाहिये ४०४ ॥

राक्षसाविष्टमाह ॥

मांसासृग्विविधसुराविकारलिप्सुर्निर्लज्जोभृशमतिनिष्ठुरोऽतिशूरः । क्रोधालुर्विविधबलोनिशाविहारीशौचद्विड्भवतिसराक्षसैर्गृहीतः ॥ अतिनिष्ठुरोनिर्दयः ॥ ४०५ ॥

राक्षसोंसे हुए उन्मादके लक्षण ॥

राक्षसों से हुए उन्माद में-मांस रुधिर तथा अनेक प्रकारकी मदिराओं में इच्छा, निर्लज्जता, बहुत निर्दयता, बहुत शूरता, क्रोध, बहुतबल, रात्रिमें घूमना और पवित्र न रहना यह लक्षण होते हैं ४०५ ॥

ब्रह्मराक्षसाविष्टमाह ॥

देवविप्रगुरुद्वेषीवेदवेदाङ्गनिन्दकः । आत्मपीडाकरोऽहिंस्त्रोब्रह्मराक्षससेवितः ॥ अहिंस्रःअहिंसाशीलः ॥ ४०६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब्रह्मराक्षसोंसे हुए उन्मादका लक्षण॥

ब्रह्मराक्[illegible]से हुए उन्मादमें-देवता,ब्राह्मण तथा गुरुओंसे द्वेष करना, वेद तथा वेदांगोंकी [illegible]न्दा करना, [illegible]की पीड़ादेना और हिंसा न करना यह [illegible]ण होते हैं ॥ ४०६ ॥

पिशाचा[illegible]ाह ॥

उ[illegible]पपरुषोविरुद्धभाषीदुर्गन्धोऽशु[illegible]नोलः [illegible]नव नान्त[illegible]ण्याचेष्टस्त्रसतिरुदन्पिशाचजुष्टः [illegible]:नग्नःदिगम्ब[illegible]तिविदे[illegible]वच नात् [illegible]ः । परुषोरूक्षः अतिलोलःसर्वस्मिन्नन्नपानादौलोलुपःण्याचेष्टनांविरुद्ध माचेष्टन् ॥ ४०७ ॥ पिशाचों से हुए उन्माद के लक्षण ॥

पिशाचोंसेहुए उन्मादमें-रोगी,नग्न,कृश,रूखा,विरुद्ध बोलनेवाला, सबप्रकारके अन्नपानादिकों में लोभयुक्त, दुर्गन्धित,बहुत अपवित्र, अत्यन्त खानेवाला, निर्जन तथा वनमें रहनेवाला, विरुद्ध चेष्टा युक्त तथा भयभीत होताहै और रोताहै ॥ ४०७ ॥

ग्रहाहिंसाक्रीडापूजार्थंगृह्णन्ति । अतएवोक्तम् अशुचिंभिन्नमर्य्यादंक्षतंवायदिवा क्षतम् ॥ हिंस्युर्हिंसाविहारार्थंसत्कारार्थमथापिवा ॥ ४०८ ॥

ग्रह मनुष्योंको हिंसा,क्रीडा अथवा पूजाके लिये ग्रहण करतेहैं इसीसे कहागयाहै कि अपवित्र, मर्य्यादारहित, घावयुक्त अथवा घावरहित, मनुष्यको देवादिग्रह हिंसा क्रीडा अथवा पूजनके लिये ग्रहण करतेहैं ॥ ४०८ ॥ तत्रहिंसार्थगृहीतस्यलक्षणमाह ॥

स्थूलाक्षोद्रुतमटनःसफेनवामीनिद्रालुःपततिचकम्पतेचयोऽति । यश्चाद्रिद्विरदन गादिविच्युतःस्यात्सोऽसाध्योभवतितथात्रयोदशेऽब्दे ॥ यश्चाद्रिइत्यादियःपर्वतादिप तितःसन्ग्रहैर्गृह्यतइत्यर्थः । आदिशब्देनभित्तिप्रासादादयोगृह्यन्तेतथात्रयोदशेऽब्देस र्वएवदेवादिगृहीताऽसाध्याः ॥ ४०९ ॥

हिंसाके लिये ग्रहण कियेगयेके लक्षण॥

जो उन्मादी रोगी. फैलेहुए नेत्रवाला, जल्दीचलनेवाला तथा फेनेसहित वमन करनेवाला होताहै निद्राके वशीभूत होकर गिरताहै और कांपताहै वह असाध्यहै जो उन्मादवाला पर्व्वत, हाथी, वृक्ष अथवा घर आदिकों पर से गिरताहै वह असाध्य है और जन्मसे तेरहवें वर्षमें होनेवाले सबप्रकारके उन्माद असाध्य होतेहैं ॥ ४०९ ॥ देवादीनामावेशसमयमाह ॥

देवग्रहाःपौर्णमास्यामसुराःसन्ध्ययोरपि । गन्धर्वाःप्रायशोऽष्टम्यांयक्षाश्चप्रतिपद्य थ ॥ पितरःकृष्णपक्षेचपञ्चम्यामपिचोरगाः । रक्षःपिशाचारात्रौचचतुर्दश्यांविशन्तिहि ॥ कृष्णपक्षेऽमावास्यायांप्रायशः यदन्यत्रापितिथ्यभिधानप्रयोजनंलक्षणार्थंतत्रतिथौचब लिदानार्थम् ननुयदिदेवादयोविशन्तितदाविशन्तस्तेकथंनेत्यतआह । दर्पणादीन्यथा छायाशीतोष्णंप्राणिनोयथा ॥ स्वमणिंभास्करार्चिश्चयथादेहंचदेहधृक् । विशन्तिनचदृ श्यन्ते ग्रहास्तद्वच्छरीरिणांदर्पणादीनीत्यादिशब्देनान्यदपिनिर्मलद्रव्यंजलतैलादिद्रवद्र व्यंचगृह्यतेछायाप्रतिबिम्बंस्वमणिःसूर्य्यमणिःदेहधृक्जीवात्मा ॥ ४१० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देवता आदिकों[illegible] आवेशका समय ॥

दे[illegible]-पौर्णमासीको, असुरग्रह-दोनों संध्या[illegible]में, गन्धर्व प्रायः अष्टमीको, यक्ष-प्रतिप[illegible]को, पितर-[illegible]क्षमें अमावास्याको, स[illegible]मीको, रा[illegible]त्रिके समय और पिशाच-चतुर्दशी[illegible]नुष्य के शरीर[illegible]ब यह सन्द[illegible] मिर्ग[illegible]वता आदिक मनुष्योंके शरीरमें [illegible] प्रवेश करतेहैं वह दिख[illegible] क्यों नहींदेते ? [illegible]सका उत्तर यहहै कि जैसे किसी वस्तुकी छाया[illegible]निर्मल वस्तु तथा जल ते[illegible]आदिकोंमें प्रवेशकरतीहै शीत तथा उष्ण मनुष्यके शरीरमें प्र[illegible] अथवा जैसे सूर्य्यकिरण कान्तिमणिमें प्रवेश करतीहै और जैसे जीवात्मा मनुष्यके शरीरमें प्रवेश करताहै और दिखाई नहीं देता उसीप्रकार देवता आदिकभी मनुष्यके शरीरमें प्रवेश करतेहैं परन्तु दिखाई नहीं देतेहैं ॥ ४१० ॥

अथोन्मादस्यचिकित्सा ॥

वातिकेस्नेहपानंप्राग्विरेकःपित्तसम्भवे । कफजेवमनंकार्य्यंपरोवस्त्यादिकःक्रमः ॥ यच्चोपदिश्यतेकिञ्चिदपस्मारेचिकित्सितम् । उन्मादेतच्चकर्त्तव्यंसामान्यंदोषदूष्ययोः ॥ जलाग्निद्रुमशैलेभ्योविषमेभ्यश्चतंसदा । रक्षेदुन्मादिनंयत्नात्सद्यःप्राणहरंहितत् ॥ तज्जलादि ॥ ४११ ॥

उन्मादकी चिकित्सा ॥

वातज उन्मादमें-पहले स्नेहपान, पित्तज उन्मादमें-विरेचन और कफज उन्मादमें-वमन करना चाहिये पीछेसे वस्ति आदिक देनी चाहिये मिर्गीरोगमें-जो कुछ चिकित्सा कहीगईहै वह उन्मादमें भी करनी चाहिये क्योंकि इनकेदोष और दूष्य (हृदयादिक) समहैं जल, अग्नि, वृक्ष, पर्वत और ऊंचे स्थानादिकों से यत्नपूर्वक उन्मादवालेकी रक्षा करनी चाहिये क्योंकि इनसे शीघ्रही प्राणजानेका सन्देह रहताहै ॥ ४११ ॥

ब्राह्मीकूष्माण्डीफलषड्ग्रन्थाशङ्खपुष्पिकास्वरसाः । दृष्टाउन्मादहृतःपृथगेतेकुष्ठमधुमिश्राः ॥ अयमर्थःब्राह्मीरसःतोला ४ कुष्ठचूर्णमाषद्वयम्मधुअष्टौमाषाः ८ पेयाः । इत्येकोयोगः कूष्माण्डबीजचूर्णमष्टौमाषाः ८ कुष्ठचूर्णमाषद्वयम् २ अयंद्वितीयोयोगः ॥ शंखपुष्पीस्वरसंपलैकं १कुष्ठचूर्णमाषद्वयं२मधुनःअष्टौमाषाःपेयास्तृतीययोगः ॥ ४१२॥

ब्राह्मीका रस ४ तोले, कूटकाचूर्ण २ माशे तथा सहत ८ माशे इनको पीनेसे कुंभडेके बीजोंका चूर्ण ८ माशे कूटकाचूर्ण २ माशे तथा सहत ८ माशे इनके सेवनसे अथवा शंखपुष्पीका रस १ पल, कूटका चूर्ण २ माशे, सहत ८ माशे इनके पीनेसे या श्वेत बच ८ माशे, कूटका चूर्ण २ माशे तथा सहत ८ माशे इनके सेवनसे उन्मादका नाश होताहै ॥ ४१२ ॥

सिद्धार्थकोहिंगुवचाकरञ्जोदेवदारुच । मञ्जिष्ठात्रिफलाश्वेताकटभीत्वक्कटुत्रयम् ॥ समांशानिप्रियंगुश्चशिरीषोरजनीद्वयम् । वस्तमूत्रेणपिष्टोऽयमगदःपानमञ्जनम् ॥ नस्यमालेपनञ्चैवस्नानमुद्वर्त्तनंतथा । अपस्मारविषोन्मादकृत्यालक्ष्मीज्वरापहम् ॥ भूतेभ्यश्चभयंहन्तिराजद्वारेचशस्यते । सर्पिरेतेनसंसिद्धंसगोमूत्रंतदर्थकृत् ॥ सिद्धार्थकादि ॥ ४१३ ॥

सरसों, हींग, बच, करंजुआ, देवदारु, मजीठ, त्रिफला, श्वेतविष्णुक्रान्ता, त्रिकटु, कटुभीकीछाल, मालकांगनी, सिरस, दोनोंहल्दी-इन सब औषधियोंको समभागलेकर बकरेकेमूत्रमें पीसकर पीनेसे,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंजन लग[illegible], नासलेनेसे, लेपकरनेसे, स्नानकर[illegible] और उबटनलगानेसे मिर्गी, विष, [illegible], कृत्या, अल[illegible], ज्वर तथा भूतोंके भयका नाशहोताहै [illegible]र राजद्वारमें श्रेष्ठताहोती है ऊपर कहीहु[illegible] षधियोंके [illegible]गोमूत्र मिलाकर पाककिये घृतके से[illegible]हीगुणहो[illegible]ति सिद्ध[illegible] ॥ ४[illegible] ॥

[illegible]विनाशञ्चदर्शयेदद्भुतानिच । ब[illegible]क्रंरक्षेदुत्ता[illegible] ॥ [illegible]पिक च्छ्वाथ[illegible]हितैलजलैःस्पर्शेत् । कशाभिस्ता[illegible]येतवासुबद्धंविजनेगृ[illegible] ॥ सर्पेणोद्धृतदं तेनदं[illegible]चतम् । त्रासयेच्छस्त्रहस्तैश्चशत्रुभिस्तस्करैस्तथा ॥ अथवाराजपु रुषाबहिर्नीत्वासुसंयतम् । त्रासयेयुर्वधेरेनंतर्जयन्तोनृपाज्ञया ॥ देहदुःखभयेभ्योहियतः प्राणभयंभवेत् । ततस्तस्यशमंयातिसर्वतोविप्लुतंमनः ॥ इष्टद्रव्यविनाशेन मनोयस्या भिहन्यते ॥ तस्यतत्सदृशप्राप्त्याज्ञात्वाश्वासैःशमन्नयेत् ॥ ४१४ ॥

उन्मादवालेको उसके इष्टपदार्थका नाशहोजाना सुनावे, अद्भुतपदार्थ दिखावे अथवा उसके शरीरमें कडुआतेल लगाकर बांधकर धूपमें चित्त सुलावे, उन्मादवालेको किवांच, गरम लोहा, गरमजल तथा गरमतेलका स्पर्शकरावे, निर्जन गृहमें बांधके कोडोंसे पीटे, टूटेहुए दांतवाले सर्पसे कटावे, सिंह,हाथी, शस्त्रधारणकियेहुए शत्रु अथवा चोरों से भयभीतकरावे अथवा राजाकीआज्ञासे राजाके पुरुषों के द्वारा बाहर लेजाकर वधकरनेका भयदिखावे इस प्रकार शारीरक दुःख तथा प्राणोंके भयसे सब ओर से चलायमानचित्त शान्त होजाताहै इष्ट वस्तुके नाशसे चित्तके विकल होजानेपर उसीप्रकारके पदार्थ के देनेसे और समुझानेसे उसको शान्तकरे ॥ ४१४ ॥

त्र्यूषणंहिंगुलवणंवचाकटुकरोहिणी । शिरीषस्यकरञ्जस्यबीजंगौराश्चसर्षपाः ॥ गोमूत्रपिष्टैरेभिस्तुवर्तिर्नेत्राञ्जनेहिता । हन्त्युन्मादमपस्मारंतथाचातुर्थिकंज्वरम् ॥ त्र्यूषणमञ्जनम् ॥ ४१५ ॥

त्रिकटु, हींग, सेंधानोन, बच, कुटकी, सिरस, करंजुआ और श्वेतसरसों इन सब औषधियों को गोमूत्र में पीसकर बत्तीबनाकर नेत्रोंमें अंजन लगाने से उन्माद, मिर्गी और चातुर्थिकज्वर का नाश होताहै इति त्र्यूषणाञ्जन ॥ ४१५ ॥

कुष्ठाश्वगन्धेलवणाजमोदेद्वेजीरकेत्रीणिकटूनिपाठा । माङ्गल्यपुष्पीचसमान्यमूनिस र्वैःसमानाञ्चवचांविचूर्ण्य ॥ ब्राह्मीरसेनाखिलमेवभाव्यं वारत्रयंशुष्कमिदंहिचूर्णम् । अक्षप्रमाणंमधुनाघृतेन लिह्यान्नरःसप्तदिनानिचूर्णम् ॥ माङ्गल्यपुष्पीशंखपुष्पीतिलोके । सारस्वतमिदंचूर्णंब्रह्मणानिर्मितंपुरा । हितायसर्वलोकानांदुर्मेधानांविचेतसाम् ॥ एतस्याभ्यासतःपुंसांबुद्धिर्मेधाधृतिःस्मृतिः । सम्पत्तिःकविताशक्तिःप्रवर्द्धेच्चोत्तरोत्तरम् ॥ सारस्वतञ्चूर्णम् ॥ ४१६ ॥

कूट, असगन्ध, सेंधानोन, अजवाइन, दोनों जीरे, त्रिकटु, पाठा और शङ्खपुष्पी यह सब समभाग और सबके बराबर बचके चूर्णको मिलाकर ब्राह्मी के रसमें तीनबार भावना देवे फिर सूखजाने पर १ तोले चूर्ण घी और सहत के साथ सात दिनतक चाटे यह सारस्वत नाम चूर्ण निर्बुद्धि और विकलचित्तवालोंके लिये ब्रह्माजीने पूर्वकाल में बनाया था इसके सेवनसे मनुष्योंकी बुद्धि, मेधा, धैर्य, स्मृति, सम्पत्ति और कविताकी शक्ति यह सब क्रमसे बढ़ती हैं इति सारस्वत चूर्ण ॥ ४१६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...श्वाजमोदरजो...द्वयसैन्धवोग्रायष्ठ्युग्रकुष्ठमगधोद्भवजीरकाणाम्। चू... प्रभातसम ...हतःसमर्पिर्षा देवतानि... संतिस्वयात्ववक्त्रे। विश्वाद्यचूर्णम् ॥ ४१७ ॥

...दोनों ..., सेंधानोन ... मिर्ग, मुलहठी, कूट, पीपल और जीरा ... व औषधियों की चूर्ण ... घीके साथ प्र... फ...न करने से सरस्वती देवी आपही मुख... करती हैं इति विश्वाद्य चूर्ण ॥ ४१७ ॥

क्वाथेविचूर्णितेक्षिप्त्वाततूषोडशगुणंजलम्। पादशेषंप्रकर्त्तव्यमे... स्मृतः॥ दशमूलीतथारास्नाशतारिस्त्रिवृताबला। मूर्वाशतावरीचेतिक्वाथैस्तुकुडवैःपृथक्॥ कृतैःक्वाथैर्घृतप्रस्थद्वयंमृद्वग्निनापचेत्। कल्कीकृतैर्वक्ष्यमाणद्रव्यैःसम्यक्पुनःपचेत्॥ विशालात्रिफलाकौ...देवदार्वेलवालुकम्। स्थिराऽनन्तारजन्यौद्वेप्रियंगुःसारिवाद्वयम्॥ नीलोत्पलैलामञ्जिष्ठादन्तीदाडिमकेसरम्। विडंगंह्यग्निपत्रीचकुष्ठंचन्दनपद्मके॥ अग्निपत्रीअग्निनौतीतिलोकेअगियाइतिच। तालीसपत्रंबृहतीमालतीकुसुमंनवम्॥ अष्टाविंशतिभिःकल्कैरेतैःकर्षमितैःपृथक्। चतुर्गुणंजलंदत्त्वापिष्टैस्तद्विपचेद्घृतम्॥ महाचैतसंनामेदंसर्वचेतोविकारनुत्। अपस्मारेमहोन्मादेमन्देऽग्नौज्वरकासयोः॥ वातरक्तेप्रतिश्यायेशोषेकार्श्येतृतीयके। मूत्रकृच्छ्रेकटीशूलेविसर्पाभिहतेषुच॥ पाण्ड्वामयेतथाकण्ड्वां विषेमेहेगरेपिच॥ देवादिहतचित्तानांगद्गदानामचेतसाम्। शस्तंस्त्रीणाञ्चबन्ध्यानांधन्यमायुर्बलप्रदम्। अलक्ष्मीपापरक्षोघ्नंसर्वग्रहनिवारणम्। हन्तिभ्रमंमदंमूर्च्छांमेधास्मृतिमतिप्रदम्॥ महाचैतसंघृतम्॥ ४१८॥

औषधियोंको कूटकर सोलहगुने जलमें पाककरके चौथाई बाकीरहनेपर उतारले यह काढ़ेकी विधिहै दशमूल, रासना, रेंडी, निसोथ, बरियारा, मरोड़फली और सतावर इनकेकाढ़े सोलह२ तोले घी १२८ तोले इन सबको मिलाकर धीरे २ पाककरे फिर इन्द्रायण, त्रिफला, रेणुका, देवदारु, एलबालुक, शालिपर्णी, अनन्तमूल, दोनों हल्दी, मालकांगनी, दोनों सारिवा, नीलकमल, इलायची, मजीठ, दन्ती, अनार, नागकेशर, बायबिडंग, अगियाकूट, लालचन्दन, पद्माक, तालीस, भटकटैया और चमेलीकेफूल इन २८ औषधियों के एक २ तोले कल्कमें चौगुना जल मिलाकर पीसके उसको मिलाकर पाककरे इस घृतके सेवनसे सब प्रकार के चित्तकेरोग, मिर्गी, उन्माद, मन्दाग्नि, ज्वर, खांसी, वातरक्त, पीनस, शोष, कृशता, तिजारी, मूत्रकृच्छ्र, कमरकी पीडा, विसर्प, पांडु, खुजली, विष, प्रमेह, गरदोष, भ्रम, मद, मूर्च्छा, स्वरका गद्गदहोना, देवता आदिकों से हुआ चित्तका विकार, चित्तकी शून्यता, अलक्ष्मी, पाप, राक्षस तथा संपूर्ण ग्रहदोषोंका नाश होताहै बंध्यास्त्रियोंकोहित और धन, आयु, बल, मेधा, स्मृति तथा बुद्धिकी वृद्धिहोतीहै इति महाचैतस घृत ॥ ४१८ ॥

अथ देवाद्याविष्टानांचिकित्सा॥

पूजाबल्युपहारेष्टिहोममन्त्राञ्जनादिभिः। जयेदागन्तुमुन्मादंयथाविधिशुचिर्भिषक्॥ ४१९

देवादिकों से उन्माद की चिकित्सा॥

पवित्र वैद्य पूजा, बलि, उपहार, होम, इष्टमन्त्रकाजप और अञ्जनादिकों से आगन्तुक देवता आदिकों से हुए उन्माद को जीते॥ ४१९॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कृष्णा[illegible]चसिन्धूत्थमधुगोरोचनाकृतम् । अञ्जनंसर्वदेवा[illegible]न्मादहरंपर[illegible]॥ कृष्णाद्य[illegible]म् ॥ ४२० ॥

पीप[illegible], सेंधानोन, सहत और गोरोचन [illegible] औषधि[illegible] वता [illegible] हुए सब प्रकार के उन्माद नष्ट हो[illegible] [illegible]द्यञ्जन ॥ ४[illegible]

[illegible]कलोमानिशल्लकीलसुनंतथा । [illegible] प्रयोजयेत् ॥ एतेन[illegible]बलवानपियोग्रहः । ऋक्षलोमकधूपः ॥ ४२१ ॥

रीछ तथा स्यारके रोम, सेईका कांटा, लहसन, हींग और बकरेका मूत्र इनसबको मिलाकर धूनी देनेसे बलवान् ग्रहदोषका भी शीघ्र नाश होताहै इति ऋक्षलोमक धूप ॥ ४२१ ॥

कल्याणकञ्चयुञ्जीतमहद्वाचैतसंघृतम् । तैलंनारायणंवाथमहा[illegible]रायणंतथा ॥ ऋते पिशाचादन्येषुप्रतिकूलंनचाचरेत् । रोगिणंभिषजंयत्तेक्रुद्धाहन्युर्महौजसः ॥ इत्युन्मादाधिकारः ॥ ४२२ ॥

कल्याणघृत, महाचैतसघृत, नारायणतैल अथवा महानारायणतैल—उन्माद रोगों में काममें लाना चाहिये पिशाचोंके सिवाय और किसी देवादिकों के विरुद्ध कोई [illegible] महाबलवान् होनेके कारण रोगी अथवा वैद्यको मार डालते हैं इति उन्मादाधिकार ॥ ४२२ ॥

अथापस्माराधिकारः ॥ तथापस्मारस्यनिदानपूर्विकांसम्प्राप्तिमाह ॥

चिन्ताशोकादिभिर्दोषाःक्रुद्धाहत्स्रोतसिस्थिताः । कृत्वास्मृतेरपध्वंसमपस्मारंप्रकुर्वते ॥ तस्यसंख्यामाह । वातात्पित्तात्कफात्सर्वैर्दोषैःसस्याच्चतुर्विधः ॥ ४२३ ॥

मिर्गीका अधिकार मिर्गीकी निदानपूर्वक संप्राप्ति ॥

चिन्ता तथा शोकादिकोंके द्वारा कुपितहुए दोष हृदयके स्रोतमें स्थितहोकर स्मृतिको नष्ट करके मिर्गीरोगको उत्पन्न करतेहैं मिर्गी चारप्रकारकीहै जैसे वातज, पित्तज, कफज और सन्निपातज ४२३॥

अथापस्मारस्यसामान्यंलक्षणमाह ॥

तमःप्रवेशस्संरम्भोदोषोद्रेकोहतस्मृतिः । अपस्मारइतिज्ञेयोगदोघोरतरोहिसः ॥ संरम्भःनेत्रविकृतिहस्तपादादिविक्षेपणादिकम् ॥ ४२४ ॥

मिर्गीका सामान्य लक्षण ॥

जिस रोगमें अन्धकार में घुसाहुआ सा मालूम पडे नेत्रों में विकार होय रोगी हाथ पैरोंको फेंके और दोषोंकी अधिकतासे स्मृतिका नाशहोय उस भयंकर रोगको मिर्गी कहते हैं ॥ ४२४ ॥

अथ पूर्वरूपमाह ॥

हृत्कम्पःशून्यतास्वेदोध्यानंमूर्च्छाप्रमूढता । निद्रानाशश्चतस्मिंश्चभविष्यतिभवत्यथ ॥ शून्यताहृदयस्यैवध्यानंविस्मापनंमूर्च्छामनोमोहःप्रमूढताइन्द्रियमोहःभविष्यति भाविनितस्मिन्नपस्मारे ॥ ४२५ ॥ मिर्गीका पूर्व्वरूप ॥

मिर्गीहोनेसे पहले हृदयमें कंप तथा शून्यता, स्वेद, ध्यान, मूर्च्छा, इन्द्रियोंकामोह और निद्राका नाश यह लक्षण होते हैं ॥ ४२५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...शात् तत्र वातिकस्य लक्षणमाह ॥

...स्पतेप्रद्दशे ... मीश्वसित्यपि । अभितोऽरुणवर्णानिपश्येद्र...णिचानि
...॥

वातज मिर्गीका लक्षण ॥

वातज मि... दांतोंका ...डना, फने उगलने, ऊंचीश्वासलेना और सब ...तरूपों
...का देखना यह लक्षण होते हैं ॥ ४२६ ॥

पैत्तिकस्यलक्षणमाह ॥

पीतफेनांगवक्त्राक्ष-पीतासृग्रूपदर्शनः । सतृष्णोष्णानलव्याप्तलोकदर्शीचपैत्तिकः॥
पीतस्थासृग्रूपस्यवा... पुनोदर्शनं यस्य स पीतासृग्रूपदर्शनः ॥ ४२७ ॥

पित्तजमिर्गीके लक्षण ॥

पित्तजमिर्गीमें-पीत अथवा लालरंगका देखना, फेना, शरीर, मुख तथा नेत्रोंमें पीतता तृषा और सबवस्तु अग्निसे भरीहुई सी मालूम होना यह लक्षण होते हैं ॥ ४२७ ॥

श्लैष्मिकस्यलक्षणमाह ॥

शुक्लफेनांगवक्त्राक्षःशीतः...गुरुः । पश्येच्छुक्लानिरूपाणिश्लैष्मिकेमुच्यतेचिरात् ॥ शीतःशीतांगःहृष्टांगजःहृष्टरोमा गुरुःगुरुगात्रता ॥ ४२८ ॥

कफज मिर्गीके लक्षण ॥

कफज मिर्गीमें-फेना, अंग, मुख तथा नेत्रोंका श्वेतहोना, शरीरमें भारीपन, शीत तथा रोमांचका होना, सब वस्तुओंका श्वेत देखना और बहुत देरमें होशआना यह लक्षण होते हैं ॥ ४२८ ॥

सान्निपातिकस्यलक्षणमाह ॥

समस्तैर्लक्षणैरेतैर्विज्ञातव्यस्त्रिदोषजः । अपस्मारःसचासाध्योयःक्षीणस्यानवश्च॥
यः ॥ सचात्रिदोषजःअसाध्यःतथाक्षीणस्यअनवश्चएकदोषजोऽप्यसाध्यइत्यर्थः ४२९

सन्निपातज मिर्गीके लक्षण ॥

ऊपर कहेहुये संपूर्ण लक्षणोंसे सन्निपातज मिर्गी जाननी चाहिये यह असाध्य होती है और क्षीण मनुष्य के एकदोषसेभी हुई पुरानी मिर्गी असाध्य होतीहै ॥ ४२९ ॥

अपस्मारस्यारिष्टलक्षणमाह ॥

प्रस्फुरन्तञ्चबहुशःक्षीणंप्रचलितभ्रुवम् । नेत्राभ्याञ्चविकुर्वाणमपस्मारोविनाशयेत् ॥
प्रस्फुरन्तंगात्रस्फुरणयुक्तंनेत्राभ्याञ्चविकुर्वाणंनेत्रेविकृतेकुर्वतः ॥ ४३० ॥

मिर्गी के अरिष्ट ॥

जिस मिर्गीवालेके अंग बहुत फडकते होंय नेत्रों में विकार होय भृकुटी चलायमान होवें और शरीर क्षीण होय उसकी मृत्यु होतीहै ॥ ४३० ॥

प्रकोपकालमाह ॥

पक्षाद्वाद्वादशाहाद्वामासाद्वाकुपितामलाः । अपस्मारंप्रकुर्वन्तिवेगंकिञ्चिदथान्तरम् ॥
पक्षात्पित्तंद्वादशाहाद्वायुर्मासात्कफः । अपस्मारंकरोतीत्यर्थः ॥ वेगंकिञ्चिदथान्तरंकि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्चित्स्वल्पं स्यादन्तरम् । उक्तकालानामन्तरालेऽपिकुर्वन्तिन ... हेतुभूतेषु दोषेषु ... नेषुसदैवापस्माराधिप्रकोपःकथंनस्यादतआह ॥ देवेवर्षत्य ... बीजानिकानि ... शरदि ... न्तितथाऽव्याधिसमुच्छ्रयः (अयमर्थः) य ... मपि ... दिबीजानिस्वभावाच्छरद्येवप्ररोहन्ति । तथा हेतुभूतेषु ... द्यमानेष्वपि स्वभा ... द्वादशाहादिष्वेववेगंकरोतीत्यर्थः ॥ ४३१ ॥

मिर्गीके कुपित होनेके समय ॥

पित्तज मिर्गी-एक पक्षमें, वातज-बारह दिनमें और कफज-महीने भरमें होतीहै और कुछ वेग कहे हुये समयके बीचमें भी होताहै अब यह संदेह होताहै कि मिर्गी के कारण दोषों के सदैव वर्त्तमान रहनेपर मिर्गीभी सदैव क्योंनहीं रहती ? इसका उत्तर यहहै कि जैसे उत्पत्ति के कारणरूप वर्षाऋतु के होनेपर भी बथुईआदिके बीज स्वभावसे शरदृऋतुमेंही उत्पन्न होते हैं उसी प्रकार कारणरूप दोषोंके वर्त्तमान होनेपर भी स्वभावसे मिर्गी बारहवें आदिक दिनों में कुपित होती है ॥ ४३१ ॥

अथापस्मारस्यचिकित्सा ॥

तैलेनलसुनःसेव्यःपयसाचशतावरी । ब्राह्मीरसश्चमधुना ... ॥

मिर्गीकी चिकित्सा ॥

तेलके साथ लहसन, दूधके साथ सतावर और सहत के साथ ब्राह्मीका रस सेवन करने से सब प्रकारकी मिर्गीका नाश होताहै ॥ ४३२ ॥

चूर्णैःसिद्धार्थकादीनांभक्षितैरथवाऽपितैः । गोमूत्रपिष्टैःसर्वाङ्गलेपैःशाम्यत्यपस्मृतिः ॥ सिद्धार्थशिग्रुकट्वंगकिणिहीभिःप्रलेपनम् । चतुर्गुणेगवांमूत्रेतैलमभ्यञ्जनेहितम् ॥ कट्वंगः शोनापाठाकिणिहीचिरचिरी ॥ ४३३ ॥

सरसों आदिके चूर्णके सेवनसे अथवा गोमूत्रमें पीसकर सब शरीरमें लेप करने से सरसों, सहजना, सोनापाठा तथा लटजीरा इनसबके लेपसे अथवा इनमें गौके चौगुने मूत्रको मिलाकर विधिपूर्व्वक तेलको पकाकर शरीरमें मलने से मिर्गीका नाश होताहै ॥ ४३३ ॥

निर्गुण्डीभववन्दाकनावनस्यप्रयोगतः । उपैतिसहसानाशमपस्मारोमहागदः ॥ मनोह्वातार्क्ष्यविष्ठाचशकृत्पारावतस्यच । अंजनाद्धन्त्यपस्मारमुन्मादञ्चविशेषतः ॥ मनोह्वामनःशिलाशकृद्विष्ठा ॥ ४३४ ॥

निर्गुण्डीके बांदेकी नासलेनेसे शीघ्रही बडेभारी मिर्गीका नाश होताहै मैनसिल, रसौत, गोबर और कबूतरकी बीठ इनसबको मिलाकर अंजन लगानेसे मिर्गी और उन्मादका नाश होताहै ४३४

यःखादेत्क्षीरभक्ताशीमाक्षिकेणवचारजः । अपस्मारंमहाघोरंचिरोत्थंसंजयेद्ध्रुवम् ॥ वचाघोरवच ।कूष्माण्डकफलोत्थेनरसेनपरिपेषितम् ॥ अपस्मारविनाशाययष्ट्याह्वंसंपिबेत्त्र्यहम् ॥त्र्यहंमितिएकस्यपानाद्दिवसत्रयेणैवापस्मारोपशमोभवतीत्यभिप्रायः ४३५

बचके चूर्णको सहतके साथ चाटकर दूध भात खाने से बहुत पुरानी मिर्गीकाभी नाश होताहै मुलहठीको पीसकर पेठेके रसकेसाथ एकदिन पीनेसे तीन दिनतक मिर्गी नहीं आती है ॥ ४३५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...ब्राह्मीरसवचा... शङ्खपु...पीश्रृतंघृतम् । पुराणंस्यादपस्मारोन्मादग्रहह... परम् ॥ त... क्रिया । पु... यमितम् ॥ वचाकुष्ठशङ्खपुष्पीनांसमुदितानां... वमितानां ... ब्रा...रस...नपचेत् । ब्राह्मीघृतम् ॥ ४३६ ॥

...का पुरा... ४ तोला, ...च, कूट, शङ्खपुष्पी यह तीनों सोलह २ तोले ... को ६४ तोले ब्राह्मी के ... में ...सिकर उसके साथ घी को पाककर सेवन करने से ... तथा ग्रह के दोषों का नाश होता। इति ब्राह्मीघृत ॥ ४३६ ॥

कूष्माण्डकरसेस...ष्टादशगुणेपचेत् । यष्ट्याह्वकल्कंतत्पानमपस्मारविनाशनम् ॥ कूष्माण्डकघृतम् ॥ ४३७ ॥

अठारह गुने कुंभडे के रस में घीको मुलहठी का कल्क डालकर पाककरके सेवन करने से मिर्गी का नाश होता है इति कूष्मांडघृत ॥ ४३७ ॥

हृत्कम्पोऽक्षिरुजा...स्वेदोहस्तादिशीतता । दशमूलीजलंतस्यकल्याणास्यंप्रयोजयेत् ॥ पञ्चकोलंसम...त्रिफलाविडसैन्धवम् । कृष्णाविडङ्गपूतीकयवानीधान्यजीरकम् ॥ ...पीतंगु...णाम्बुना... ...मयापहम् । अपस्मारेतथोन्मादेऽप्यर्शसांग्रहणीगदे ॥ एतत्कल्याणकंचूर्णंनष्ट...नेश्चदीपनम् ॥ ४३८ ॥

जो मिर्गी में-हृदय का कांपना, नेत्रों में पीडा, स्वेद और हाथ पैरों में शीतलता होय तो दशमूल का क्काथ और कल्याण चूर्ण देवे पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता, सोंठ, मिर्च, हड, बहेडा, आमला, बिडनोन, सेंधानोन, पीपल, बायबिडंग, करंजुआ, अजवाइन, धनियां और जीरा इन सब के चूर्ण को गरम जल के साथ पीनेसे वात कफ के रोग, मिर्गी, उन्माद, बवासीर, ग्रहणी तथा मन्दाग्नि इन सबोंका नाशहोताहै इति कल्याणचूर्ण ॥ ४३८ ॥

द्वौकीटमेद्वौविधिवदानीयरविवासरे । कण्ठेभुजेवासन्धार्य्यजयेदुग्रामपस्मृतिम् ॥ अयन्तुकीटोनदीतीरेसिकतामध्येतिष्ठति शिग्रुकुष्ठजलाजाजीलसुनव्योषहिंगुभिः । वस्तमूत्रेश्रृतंतैलंनावनंस्यादपस्मृतौ ॥ जलंबालकंअजाजीरकःवस्तःछागःनावनंनस्यम् । उन्मादेषुयदुद्दिष्टंपथ्यंनस्याञ्जनौषधम् ॥ अपस्मारेऽपितत्सर्वंप्रयोक्तव्यंभिषग्वरैः । मृतसूताभ्रलोहञ्चशिलागन्धञ्चतालकम् ॥ रसाञ्जनञ्चतुल्यांशन्नरमूत्रेणमर्द्दयेत् । तंगोलंद्विगुणंगन्धंलोहपात्रेक्षणंपचेत् ॥ पञ्चगुञ्जोन्मितंभक्ष्यमपस्मारहरंपरम् । व्योषंसौवर्चलंहिंगुनरमूत्रेणसर्पिषा ॥ पिबेत्कर्षमितंपश्चाद्रसोऽयंभूतभैरवः । भूतभैरवनामरसः इत्यपस्माराधिकारः ॥ ४३९ ॥

रविवार के दिन विधिपूर्वक नदी के किनारे बालू के भीतर रहनेवाले दो कीडोंको लाकर कंठ और भुजा में बांधने से भयंकर मिर्गीका भी नाश होताहै सहँजना, कूट, सुगन्धबाला, जीरा, लहसन, त्रिकटु और हींग इन औषधियों के द्वारा और बकरे का मूत्र डालकर तेल को पकावे उसकी नास लेने से मिर्गी का नाश होताहै उन्माद में जो पथ्य नस्य अंजन और औषध कही गई हैं वह सब मिर्गी में भी व्यवहार करनी चाहिये पारेकी भस्म, अभ्रक की भस्म, लोहे की भस्म, मैनशिल, ग-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

न्धक, हरितमेउ और रसौत इन सब को बराबर लेकर मनुष्य के मूत्रमें ... भूः बुदोषेषु ... बनाकर गोल्याकी दूनी गन्धक के साथ लोहे के पात्र में क्षण भर ... करे ... निकानि ... मिर्गी का ... होता है इसको खाकर त्रिकटु, कालानोन और ही ... घीके सा... ले पिये इति भूतभैरवरस इति मिर्गी का अधिकार ॥ ४३८ ॥ ...

अथ ... धिकारः। तत्रवातव्याधीनांसामान्यतो विप्रकृष्टनिदानान्याह ॥

क... प्रमितरूक्षलघ्वन्नतः। पुरःपवनजागरप्रतर... घातश्रमैः॥ हिमादनशनात्तथानिधुवनाच्चधातुक्षयान्मलादिरवधारणान्मदनशोकचिन्ताभयैः॥ अतिक्षतजमोक्षणाद्गदकृतातिमांसक्षयादतीववमनान्नृणामतिविरेचनात्... मतः॥ पयोदसमयेदिनक्षणदयोस्तृतीयांशयोर्जरामतिगतेशिशिरसंज्ञकालेऽपिच ...॥ देहस्रोतांसिरिक्तानिपूरयित्वाऽनिलोबली। करोतिविविधान्रोगान्सर्वाङ्गैकांगसंश्रयान्॥ प्रमितअत्रवैपरीत्येनोपसर्गस्तेनअपरिमितइत्यर्थः। प्रकर्षेणप्रमितमत्यल्पंच लघ्वन्नम्॥ अतिपुराणंशाल्यादि। कतिचिदन्नानिनवान्यपिवातलानि॥ यतआहगुण... मालायाम्। ... पुटःसतीनचणकश्यामाकमुद्गाढकी। निष्पावाश्च ... टामङ्गल्य...कोद्रवः। एतेवातकराइतिशेषःनीवारःप्रसाधिकातीनीतिलो..., त्रिपुटःखसारीसतीनःकलायः॥ निष्पावोराजमाषःवोडाइतिलोके। मकुष्ठकःमोठइतिलोकेवरटावरटिकावरेइतिलोकेमंगल्यःमसूरी॥ पुरःपवनःप्राग्वातःआमतः। आमेनमार्गावरणात्। यतउक्तम्। वायोर्धातुक्षयात्कोपोमार्गस्यावरणेनचेतिपयोदसमयेवर्षासुजरामतिगतेशितेभुक्तेऽतीवजीर्णतांगतेदेहस्रोतांसिइत्यादिनासंप्राप्तिरुक्ताकषायादिभिर्हेतुभिः वर्षादौसमयेहेतुभूतेबलीअनिलःप्रवृद्धोवायुःकरोतिविविधान्रोगान्॥ ४४०॥

वातव्याधि का अधिकार। वातव्याधियों के सामान्यता से दूरवाले कारण॥

कषाय, कटु तथा तिक्तवस्तु अपरिमित, रूखा तथा हलका अन्न, पूर्वकीवायु, जागरण, तैरना, चोट, श्रम, हिम, लंघन, मैथुन, धातुक्षय, मलमूत्रादिवेगोंका रोकना, कामवेग, शोक, चिन्ता, भय, घावसे बहुत रुधिर का निकलना, रोग के द्वारा मांसकी अत्यन्त क्षय, बहुत विरेचन तथा वमन, आमदोषके द्वारा स्रोतों का रुकना, वर्षाकाल, दिन तथा रात्रि का तीसरा भाग, भोजनका अत्यन्त परिपाक होजाना और शिशिर ऋतु यह सब वायु के कोप होने के कारण हैं, यहां हलका अन्न कहने से बहुत पुराने शालि आदिक और कोई २ नवीन अन्नभी वातकारी जानने चाहिये क्योंकि गुणरत्नमाला में कहा है कि तिन्नी, खिसारी, मटर, राजमाष, मोठ, चने, सामा, मूंग, अरहड, बरैं, मसूर और कोदों यह सब वातकारी हैं ऊपर कहे हुये कारणों से कुपित हुआ बलवान् वायु शरीर के खाली स्रोतको पूर्ण करके सब अंगोंमें अथवा एक २ अंगमें होनेवाले अनेक प्रकार के रोगों को उत्पन्न करताहै ४००

ते रोगाः कथ्यन्ते॥

शिरोग्रहोऽल्पकेशताजृम्भात्यर्थंहनुग्रहः। जिह्वास्तम्भोगद्गदत्वंमिन्मिनत्वञ्चमूकता॥ वाचालताप्रलापश्चरसानामनभिज्ञता॥ बाधिर्य्यंकर्णनादश्चस्पर्शाज्ञत्वंतथार्दितम्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

म... स्तम्भोऽग्र... त बाहुशोषोऽपबाहुकः। वर्णिताचैवविश्वाची ऊर्ध्ववा... रितः॥ ... नञ्चप्रत्याध्मा... तष्ठी... प्रत्यष्ठीला । तूनीचप्रतितूनीचवह्निवैषम्ये... त्रच ॥ ...पार्श्वशू... क्रुष... वच । मुहुश्चमूत्रणंमूत्रनिग्रहोमलगाढता... ॥ पुरी षस्य... चतत... रा । कलायखञ्जतावापिखञ्जतापङ्गुताता... । क्रोष्टु शीर्षकंखल्यौ ... टकएवच। पादहर्षःपाददाहआक्षेपोदण्डकाभिधः ... पित्तकृ ...क्षेपस्तथादण्डाप...तनकः। अभिघातकृताक्षेपआयामोद्विविधःस्मृ... श्चत याबाह्योधनुर्वातश्चकुब्जकः । अपतन्त्रोपतानश्चपक्षाघातःखिल... स्त म्भोव्यथातोदोभेदश्चस्फुरणंतथा । रौक्ष्यंकार्श्यञ्चकार्ष्ण्यञ्चशैत्यंलोम्नाञ्चहर्षणम् ॥ अंगमर्दोऽगविभ्रंशः ...रासङ्कोचएवच। अंगशोषश्चभीरुत्वंमोहश्चचलचित्तता॥ निद्रानाशःस्वेदनाशोबलहानिस्तथैवच। शुक्रक्षयोरजोनाशोगर्भनाशःपरिश्रमः॥ एतएवा शीतिसंख्यारोगायोगेनरूढितः। वातव्याधीतिनामानोमुनिभिःपरिकीर्तिताः॥ एतएवशि रोग्रहादयएवयोगेनवा... वाताद्व्याधिर्वातव्याधिरितिनिरुक्त्या तदावातज्वरादिष्वपि ...दितःशिरोग्रहादयोऽशीतिरेववातव्याधिसंख्याप्रसि द्धानतुवातज्वरादयः४४१॥ इन अनेकप्रकारके रोगोंका वर्णन ॥

शिरोग्रह (मस्तकपीडा) अल्पकृशता, अत्यन्त जंभाई, जाबडेका जकडना, जिह्वास्तंभ, गद्गदता, मिन्मिनाहट, मूकता, वाचालता, प्रलाप, रसोंका न जानना, बहरापन, कानों में शब्दहोना, स्पर्श का न जानना, अर्दित (लकवा) गलेके पीछेकी नसका जकडना, बाहुशोष, अपबाहुक, विश्वाची, ऊर्ध्ववात, आध्मान, प्रत्याध्मान, वातष्ठीला, प्रत्यष्ठीला, तूनी, प्रतितूनी, अग्निकी विषमता, आटोप पसली का शूल, रीडके नीचे की हड्डियोंकाशूल, वारंवारमूतना, मूत्रकारुकना, मलका गाढाहोजाना, मलका न निकलना, गृध्रसी, कलायखंजता, खंजता, पंगुता, क्रोष्टुशीर्षक,खल्ली, वातकंटक, पादहर्ष, पाददाह, आक्षेप, दंडक, कफ पित्त युक्त आक्षेप, दंडापतानक, अभिघातज, आक्षेप, बाह्य आयाम,, आन्तर आयाम, धनुर्वात, कुब्जक, अपतन्त्रिक, अपतान, पक्षाघात, खिल्लांग, कंप, स्तंभ, व्यथा, तोदभेद, स्फुरण, रौक्ष्य, कृशता, कृष्णता, शीत, रोमहर्ष, अंगमर्द, अंगविभ्रंश, शिरासंकोच, अंगशोष, भीरुत्व, मोह, चलचित्तता, निद्रानाश, स्वेदनाश, बलहानि, वीर्यक्षय, रजोनाश, गर्भनाश और परिश्रम यही अस्सीरोग योग और रूढिसे वातव्याधि कहलाते हैं यहां केवल योग कहने से वात ज्वरादिकों काभी वातव्याधियों में ग्रहण न होय इसलिये रूढि कहाहै ॥ ४४१ ॥

अथ वातव्याधीनांसामान्यांचिकित्सामाह ॥

मधुरलवणसाम्लस्निग्धनस्योष्णनिद्रागुरुरविकरवास्तिस्वेदसन्तर्पणानि । दहन जलदसेकाभ्यंगसंमर्द्दनानिप्रकुपितपवमानंशान्तमेतानिकुर्य्युः ॥ ४४२ ॥

वातव्याधियों की सामान्यचिकित्सा ॥

मधुर,लवण,अम्ल तथा स्निग्धवस्तु,नासलेना,उष्णक्रिया,निद्रा,भारीवस्तु,धूप,वस्तिक्रिया, स्वेद, संतर्पण,अग्नि,जलकातरेडाडालना,अभ्यंग और मर्दन यह सब कुपितहुई वायुको शान्तकरते हैं ४४२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ वि[illegible]वात[illegible]व्याधीनांलक्षणानिचिकित्साञ्चाह। तत्रादौ[illegible]शिरोग्रहस्यलक्षण[illegible]
रक्तमाश्रित्यपवनःकुर्य्यान्मूर्द्धधराःशिराः। रूक्षाःस[illegible]नाःक्रूं[illegible]भूतेपुसोऽसाध्यःस[illegible]
रोग्रहः॥[illegible]र्द्धधराःग्रीवागताःसपवनःशिरोग्रहःस्यादित्यर्थः[illegible]

वातव्याधियोंके विशेष लक्षण और चिकित्सा शि[illegible]
कुपित[illegible]यु रुधिर का आश्रय करके शिरके धारण करनेव[illegible] ग्रीवाक[illegible] को रूक्ष[illegible] वेदना
युक्त [illegible] करतीहै इसको शिरोग्रह कहतेहैं यह रोग असाध्यहै॥[illegible]

अथ तस्यचिकित्सा॥

शिरोग्रहेतुकर्तव्याशिरागतमरुत्क्रिया। दशमूलीकषायेणमा[illegible]लुंगरसेनच॥ शृते[illegible]
नतैलेनाभ्यंगःशिरोवस्तिश्चयुज्यते॥ ४४४॥

शिरोग्रह की चिकित्सा॥

शिरोग्रह में नसोंमें गईहुई वायुकी चिकित्सा करनी चाहिये दशमूल के काढ़े और नींबूके रससे
तेलको पका कर लगाने से और शिरोवस्ति देनेसे शिरोग्रह शान्त होताहै॥ ४४४॥

अथ जृम्भायालक्षणमाह॥

पीत्वैकंश्वासमनिलःपुनस्त्यजतिवेगवान्। [illegible]
ते॥ जृम्भशब्दस्त्रिलिंगःतथाचजृम्भस्तुत्रिषुजृम्भ[illegible]मित्यमरः॥ ४४५॥

जंभाई का लक्षण॥

एकबार श्वास लेकर फिर वेगसे श्वास छोड़ना, आलस्य, अधिकनिद्रा यह जृंभाके लक्षणहैं ४४५

अथ तस्यचिकित्सा॥

शुण्ठीपिप्पल्यूषणंदीप्यकश्चसिन्धूद्भूतंचेतिसर्व्वंपृथग्वा। तद्रूपंवासूक्ष्मचूर्णीकृतं
वाजृम्भारम्भस्तम्भकृत्स्यात्तदेव। जृम्भावेगेसमुत्पन्नेशोभनेशयनेनरम्। स्वापयेत्तेन
नियमाज्जृम्भावेगःप्रशाम्यति॥जृम्भावेगःक्षयंयातिकटुतैलेनमर्दनात्। भोजनात्स्वादु
भोज्यानांतथाताम्बूलभक्षणात्॥ ४४६॥

जृंभाकी चिकित्सा॥

सोंठ, पीपल, मिर्च, अजवाइन और सेंधानोन इन सबको एक साथ अथवा अलग २ सूक्ष्म चूर्ण
करके सेवन करने से, सुन्दर शय्यापर शयन करानेसे, कड़ुआ तेल मलने से, मधुर पदार्थोंके भोजन
से और तांबूल खानेसे जंभाई रुकजातीहै॥ ४४६॥

अथ हनुग्रहस्यसनिदानंलक्षणमाह॥

जिह्वानिर्लेखनाच्छुष्कभक्षणादभिघाततः। कुपितोहनुमूलस्थःस्रंसयित्वाऽनिलोहनु
म्॥ करोतिविवृतास्यत्वमथवासंवृतास्यताम्। हनुग्रहःसतेनस्यात्कृच्छ्राच्चर्वणभाषण
म्॥ स्रंसयित्वाअधःकृत्वाविवृतास्यत्वंव्यात्तमुखत्वम्। निर्लेखनंकर्षणम्शुष्कंचणकादि
संवृतास्यत्वंदन्तलग्नताम्॥ ४४७॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

…ग्रहका निदानपूर्व्वक लक्षण ॥

…हाके रगडने … वचने … दके खानेसे और चोटसे जाबडे के मूलमें स्थित वायु कुपित … जाबडोंको … खुलाहुआ अथवा बन्द करदेती है इसको हनुग्रह … ते हैं हनुग्रह … है … श होता है ॥ ४४७ ॥

…थ तस्यचिकित्सा ॥

संहृतंचिबु… विस्विन्नमुन्नमयेद्भिषक् । विवृतंनमयित्वातुकुर्य्यात्प्र… कियाम् । …प्पलीमार्द्रकञ्चै पि… चर्व्यचमुहुर्मुहुः । निष्ठीवेतप्रतोयेनशोधयेद्व… ॥ निष्कु…यलशुनंसम्यक्संक्षु…तिल्तैलवत् । सैन्धवेनान्वितंखादेद्धनुस्तम्भार्द्दितोनरः ॥ रसो नगुटिकामाषविदल… यच । योजयेत्पिष्टिकान्ताञ्चसैन्धवार्द्रकहिङ्गुभिः ॥ ततस्तु वटकान्कृत्वातिलतैलपचे…च्छनैः । भक्षयेत्तान्यथावह्निर्हनुस्तम्भात्सुखीभवेत् ॥ अभ्य ज्यपक्वतैलेनस्वेदयेन्मृदु…ग्निना । वर्स्तिविधारयेन्मूर्ध्नितैलेनपरिपूरितम् ॥ ४४८ ॥

हनुग्रह की चिकित्सा ॥

वैद्य बन्दहुए मुखवाले … ग्रहमें स्निग्ध स्वेद देकर ऊपरवालेको उठावे और नीचेवालेको नीचे … और खुलेहुए मुखवाले … ध स्वेद देकर जाबडोंको झुकावे फिर पीपल और अद- रकको चबाकर गरम जलके कुल्ले करके … को शुद्धकरे छिलेहुए लहसनको तिलके समान पेरकर अर्क निकाल सेंधानोन डालकर खाय तो हनुग्रह दूर होताहै लहसन का जवा तथा उर्द की दाल को पीसकर अदरक हींग तथा सेंधानोन मिलावे फिर उसके बड़े बनाकर तिलके तेलमें धीरे २ पाककरे इनको अपनी अग्निके अनुसार खानेसे और पकेहुये तेलको लगाकर मन्दी आंचसे स्वेद देनेसे और तेलसे भरकर शिरमें वस्तिधारण करने से हनुस्तम्भ दूरहोताहै ॥ ४४८ ॥

समूलपत्रशाखायाःप्रसारण्याःशतंपलम् । सम्यक्संक्षुद्यसलिलेद्रोणमात्रेपचेद्भिष क् ॥ सलिलस्यचतुर्थांशंकषायमवशेषयेत् । ततःपलशतेतैलेतंकषायंपुनःपचेत् ॥ पचेत्पलशतंमस्तुकाञ्जिकंमस्तुनःसमम् । ततःशुद्धंपचेदुग्धंगव्यंतैलाच्चतुर्गुणम् ॥ चित्र कंपिप्पलीमूलंमधुकंसैन्धवंवचा । शतपुष्पादेवदारुरास्नाचगजपिप्पली ॥ प्रसारणीभ वंमूलंमांसीरक्तञ्चचन्दनम् । तथावातारिमूलंचबलामूलंचनागरम् ॥ तैलस्यचाष्टमांशेनस र्वकल्कानिसाधयेत् । नाम्नाप्रसारणीतैलंविख्यातंतत्प्रयुज्यते ॥ पानेनस्येशिरोवस्तौम र्दनेस्वेदनेतथा ॥ प्रयुक्तंवातजान्रोगान्सर्वानपिविनाशयेत् ॥ विशेषतोहनुस्तम्भंजिह्वा स्तम्भंतथार्द्दितम् ॥ गद्गदत्वञ्चविश्वाचींमन्यास्तम्भापबाहुकौ । त्रिकशूलंगृध्रसीञ्च खञ्जतांपंगुतांतथा ॥ कलायखञ्जतांखञ्जंस्तम्भंसङ्कोचमेवच । आन्तरंबाह्यमायामंत थादण्डापतानकम् ॥ धनुर्वातञ्चकुब्जत्वंव्यपोहतिनसंशयः । क्षीणानांस्थविराणाञ्चवा तसङ्कोचितात्मनाम् । प्रसारयेद्यतोऽङ्गानितदुक्तैषाप्रसारणी । (प्रसारणीतैलम्) ४४९॥

जड पत्ती तथा शाखा सहित सौ पल गन्धप्रसारणी को कूटकर १०२४ तोले जलमें पकावे फिर चौथाई बाकी रहजानेपर उस काढ़े में ४०० तोले तेल डालकर फिर पाककरे इसके उपरान्त दही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का तोड तथ[illegible] जौ चार [illegible] सौ तोले डालकर पाककरे फिर [illegible] बेप[illegible] [illegible]लका च[illegible] डालकर पा[illegible]रे चीता, पीपलामूल, मुलहठी, सेंधानोन, बच, [illegible] देवद[illegible] [illegible]सना, गजप[illegible] गन्धप्रसार[illegible]की जड, जटामांसी, लालचन्दन, अरण्डकीजड, [illegible] कल्क ५० [illegible]कर तेलमें डालकर पाककरे इस तेलके [illegible]नेसे, [illegible] से और [illegible]से सब प्रकारके वातरोग, हनुस्तम्भ, जिह्व स्तम्भ अर्दित, [illegible] , म-न्यास्तम्[illegible] रीडके नीचेकी हड्डियोंका शूल, गृध्रसी, खंजता, पंगुत[illegible] खंजता, खल्ली स्तम्भ, [illegible] तथा बाह्य आयाम, दण्डापतानक, धनुर्वात तथा [illegible] इन सबका न[illegible] होताहै और इसके द्वारा क्षीण वृद्ध तथा वायुसे सुकड़ेहुए शरीरवाले मनुष्यों के अंग फैलते हैं इस लिये इसको प्रसारणी कहते हैं इति प्रसारणी तैल ॥ ४४९ ॥

जिह्वास्तम्भस्य लक्षणमाह ॥

वाग्वाहिनीशिरासंस्थोजिह्वांस्तम्भयतेऽनिल[illegible]। जिह्व[illegible]तम्भःसतेनान्नपानवाक्ये ष्वनीशता ॥ अनीशताऽसामर्थ्यम् ॥ ४५० ॥

जिह्वास्तम्भ का लक्षण ॥

वाणीकी ले चलनेवाली नसमें स्थित वायु कुपित होकर[illegible] कोई [illegible] स्तम्भ से रोगी अन्न पान ग्रहण करने में और बोलने में [illegible]मर्थ[illegible] [illegible]है ॥ ४५० ॥

तस्यचिकित्सा ॥

जिह्वास्तम्भेयथावस्थंवातव्याधिचिकित्सितम् । सामान्योक्ताक्रियाचात्रार्दितस्यापिहितामता ॥ ४५१ ॥

जिह्वास्तंभ की चिकित्सा ॥

जिह्वास्तंभ में अवस्था के अनुसार वायु रोगों कीसी सामान्य चिकित्सा करनी चाहिये और अर्दित रोग की भी क्रिया इस में हितकारी है ॥ ४५१ ॥

अथ मूकगद्गदमिन्मिनानां लक्षणमाह ॥

आवृत्यवायुःसकफोधमनीःशब्दवाहिनीः । नरान्करोत्यवचनान्मूकमिन्मिनगद्गदान् ॥ अवचनात्अत्रईषदर्थेनञ्तेनईषद्वचनात्सएववायुःप्रबलश्चेत्तदामूकान्अवचनान्मिन्मिनान्सानुनासिकवचनान्गद्गदान्लुप्तपदव्यञ्जनाभिधायिनः करोतीत्यन्वयः एषांसमानाधिकरणत्वेऽपिदुष्टेऽनुत्कर्षादिनाअदृष्टवशाद्वाभेदोबोद्धव्यः ॥ ४५२ ॥

मूक गद्गद और मिन्मिनों के लक्षण ॥

कफ सहित वायु शब्दके ले चलनेवाली नसोंको ढककर मूक (वचनरहित) मिन्मिन (नाकसे वचन) और गद्गद (अव्यक्तवचन) इन २ वाक्यनाशक रोगों को उत्पन्न करती हैं ॥ ४५२ ॥

अथ तेषांचिकित्सा ॥

प्रस्थंघृतस्यपलिकैःशिग्रुवचालवणधातकीलोध्रैः । आजेपयसिसपाठैःसिद्धंसारस्वतंनाम्ना ॥ विधिवदुपयुज्यमानंजडगद्गदमूकतांक्षणाज्जित्वा । स्मृतिमतिमेधाप्रतिभाःकुर्यात्सुस्पष्टवाग्भवति ॥ सारस्वतंघृतम् ॥ ४५३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इनकी चिकित्सा ॥

... ६ तोले, ... , बच, ... तर ... लोध तथा पाढा यह सब चार २ ... घृतसहित ... पिच ... विधिपूर्वक पाक करे इसघीके विधिपूर्वक ... करने के ... खंज ... शीघ्रही नाश होता है और स्मृति बुद्धि मे... प्रभा तथा ...

...न खंज और ... की विरे... निरूहघृत ॥ ४५३ ॥

...नी चाहिये ॥ ...४ ॥ अथ कल्याणकावलेहः ... अजाजीचाजमोदाचयष्टी ... एता

कम्पतेगमनारम्भेखञ्जन्ति ... चल ... तच्चूर्णंसर्पिषालेह्यंप्रत्यहंभक्षयेन्नरः ॥ एकविंशतिरा

त्रं ॥ गमनारम्भेकम्पतेएतस्य ... इञ्जने घोषोमत्तकोकिलनिस्वनः।कल्याणकावलेहः४५४

यौगिके ॥ ५०५ ॥ ... ता जीरा, अजवाइन, मुलहठी और सेंधानोन इनसबको बरा-

चलने के आरंभमें कंपहोवे ... मनुष्य अतिधर होता है और मेघों के समान

हिये इसमें संपूर्ण सन्धियोंके बन्ध ... हाते ... स्वरभ्रंसतकल्याणकावलेह ॥ ४५४ ॥

अथ ... प्रलापस्यलक्षणमाह ॥ ...

... वचनंयन्नरो ब्रूते ... प्रलापः प्रकीर्तितः ४५५

... का लक्षण ॥

अपने कारणों से कुपित वायु के द्वारा ... जो असंबद्ध और निरर्थक वचन बोलताहै उसको प्रलाप कहते हैं ॥ ४५५ ॥

अथ ... चिकित्सा ॥

सतगरवरतिक्तारेवताम्भोदतिक्ता ... दतुरगगन्धाभारतीहारहूराः । मलयजदशमू लीशङ्खपुष्प्यःसुपक्काःप्रलपनम... पानतोनातिदूरात् ॥ वरतिक्तोत्रपर्पटःनलदमुशीरं भारतीब्राह्मी । हारहूराद्राक्षा ॥ ४५६ ॥

प्रलाप की चिकित्सा ॥

तगर, पित्तपापडा, अमलतास, मोथा, कुटकी, खस, असगन्ध, ब्राह्मी, दाख, चन्दन, दशमूल और शंखपुष्पी इन सबके काढ़े को पीनेसे प्रलाप का नाश होताहै ॥ ४५६ ॥

अथ रसाज्ञानस्यलक्षणमाह ॥

भुञ्जानस्यनरस्यान्नंमधुरप्रभृतीन्रसान् । रसज्ञोयन्नजानातिरसाज्ञानंतदुच्यते ४५७

रसके अज्ञान का लक्षण ॥

भोजनके समय जो मधुरादिक रसोंका जिह्वा इन्द्रियसेज्ञान न होय उसको रसाज्ञान कहतेहैं॥४५७॥

अथ रसाज्ञानस्यचिकित्सा ॥

घर्षेज्जिह्वाञ्जडांसिन्धुत्र्यूषणैःसाम्लवेतसैः । अम्लवेतसकाभावेचुक्रंदातव्यमीरितम् ॥ किराततिक्तकाकट्वीकुटजस्यफलंवचा । ब्राह्मीफलञ्चपालाशंसर्जिकाकृष्णजीरकम् ॥ पिप्पलीपिप्पलीमूलंचित्रंनागरमूषणम् । एषांकल्कैर्मुहुर्घर्षेज्जिह्विकामार्द्रिकारसैः॥तेनसम्यग्विजानातिरसनासकलान्रसान् । कल्कःकिराततिक्तादिर्जिह्वायाःशून्यतांहरेत् ॥ ४५८ ॥

(१) भुञ्जानस्यनरस्यान्नंमधुरप्रभृतीन्रसान्रसज्ञायन्नजानातिरसाज्ञानंतदुच्यते ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रसाज्ञान की चिकित्सा ॥

सेंधानोन, त्रिकटु तथा अमलवेत (इसके ...) ... यता, कुटकी, इन्द्र, जौ, बच, ब्राह्मी, ढाकके बीज, सज्जी, धनेसे, ... सोंठ तथा ... इन सबको पीसकर उससे जिह्वाके रगड़ ... से अच्छ ... से संपूर्ण रसों का ज्ञान होताहै और इस ... शून्यता ... ४५८ ॥

... स्तम्भ अर्दित, ... वश्व ..., म- ... खंजता, पंगुता ... खंजता, खल्ली ... धनुर्वात तथा ... इन सबका ... शरीरवाले मनुष्यों के अंग फैलते हैं इ...

बाधिर्य्यं कर्णनादे ... तयोर्लक्षणमुत्तमम् । तदधिका ...

बधिरता और कर्णनादके लक्षण तथा चिकित्सा कर्ण ... ३६ ॥

अथ त्वक्शून्यतायालक्षणमाह ॥

स्पृश्यमानात्वचायातुशीतोष्णंमृद ... जिह्वा ... स्तम्भःस्तेनान्नपानवाक्ये ... त्तिता ॥ ४६० ॥ ... ताऽसामर्थ्यम् ...

स्पर्श करने से जो ... ता, ता, उष्णता, ... लक्षण ॥

त्वचा की शून्यता कहते ... होकर ... कोई ...

अथ तस्यचिकित्सा ॥

सुप्तवातेत्वसृङ्मोक्षंकारयेद्बहुशोभिषक् । ... णांगारधूमैस्तैलसमन्वितैः ४६१ ॥

त्वचा की शून्यता की चिकित्सा ॥

त्वचा की शून्यतामें बहुतसा रुधिर निकलवावे और तेल युक्त सेंधेनोन को अंगारों पर डालकर धूम देना चाहिये ॥ ४६१ ॥

अथार्दितस्यसम्प्राप्तिपूर्व्वकंलक्षणमाह ॥

उच्चैर्व्याहरतोऽत्यर्थंखादतःकठिनानिच । हसतोजृम्भतोभाराद्विषमाच्छयनासनात्॥ शिरोनासौष्ठचिबुकललाटेक्षणसन्धिगः । अर्दयत्यनिलोवक्त्रमर्दितंजनयेत्ततः ॥ वक्रीभवतिवक्त्रार्द्धंग्रीवाचाप्यपवर्त्तते । शिरश्चलतिवाक्सङ्गोनेत्रादीनाञ्चवैकृतम् ॥ ग्रीवाचिबुकदन्तानांतस्मिन्पार्श्वेचवेदना॥तमर्दितमितिप्राहुर्व्याधिंव्याधिविशारदाः॥ व्याहरतः वदतः कठिनानिपूगफलादीनिविषमात्शयनासनात् ग्रीवादिवैपरीत्येनशयनादासनाच्च अर्दयतिपीड़यतिततस्तदनन्तरम्अर्दितंजनयेत्अर्दितेजातेकिंस्यात्तदाह।वक्रोभवतिइत्यादिअपवर्त्ततेवक्रीभवतिचलतिकम्पतेवाक्संगः वाङ्निरोधःनेत्रादीनामित्यादिशब्देनभ्रूगण्डनासिकादीनांग्रहणम्वैकृत्यंवेदनास्फुरणवक्रत्वादिर्ग्रीवेत्यादीनांग्रहणम् । यस्मिन्पार्श्वेऽर्दितंतस्मिन्पार्श्वेग्रीवादीनांवेदना ॥ ४६२ ॥

अर्दितरोग का संप्राप्तिपूर्व्वक लक्षण ॥

बहुत उच्चस्वरसेबोलना, कठोरवस्तु खाना, हँसना, जंभाईलेना, भारउठाना, ग्रीवाआदिको विपरीत करके शयन करना अथवा बैठना इन कारणों से मस्तक, नासिका, ओष्ठ, ठोढ़ी, ललाट तथा नेत्रकी संधियों में प्राप्तहुई वायु कुपित होकर मुखको पीड़ित करती हुई अर्दितरोगको उत्पन्न करती है इस रोग में आधा मुख तथा ग्रीवा टेढ़ी होजाती है शिर कांपता है वाक्य रुकजाताहै जिस ओर मुख टेढ़ा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उसीओर ... कपोल ... नासिका आदिमेंपीड़ा,फड़कना तथा वक्रता और ... विकारहोते
उसीओर ग्रीवा ... तथा ... तस्थोद्धहै इस रोगको पण्डितलोग अर्दित कहतेहैं ४६२॥
... पिच्छासितः । लालास्रावोऽथथाकम्पःस्फुरण ... नुवाग्ग्रह
दाहो ... खंज ... जेभवेत् । पीतमास्यंज्वरस्तृष्णापि ... मोहकंप
... न खंज और ... की विरे ... निरु कफात्मके ॥ ४६३ ॥ ... द्वारा
... नी चाहिये ॥ ... ४ ॥ अथ ... कफज,पित्तज और कफज वातज अर्दित ... पीड़ा
कम्पतेगमनारम्भेखञ्जञ्चि ... चल ... ओठोंमें सूजन और शूल होताहै पित्तज आर्दितमें—मुखका
म् ॥ गमनारम्भेकम्पतेएतस्य ... होताहै और कफज अर्दित में—कपोल,मस्तक तथा गले के
यौगिके ॥ ५०५ ॥ ... होता है ॥ ४६३ ॥

चलने के आरंभमें कंपहोवे ... साध्यलक्षणमाह ॥

हिये इसमें संपूर्ण सन्धियोंके बन्ध ... त्यस्वप्नंसततंनिगाढंत्रिवर्षंवेपनस्यच॥
आदह ... क्तंप्रकर्षेणलग्नम् ... स्थिगत ... च भाषितुंशीलंयस्य
कम्प ... कल ... स्यखञ्जपंगे ... करयम् अथवात्रय ... गांचक्षुर्नासामुखानांवर्षः। स्रावो
यत्रवेपनस्यकम्पनशीलस्य ... अतिशयेनसिध्यतीत्यन्वयः ॥ ४६४ ॥

असाध्य अर्दितके लक्षण ॥

जिस अर्दित रोगवाले का शरीर क्षीण होवे ... नेत्रोंके पलक न लगें और बहुत तुतलाकर अव्यक्त वचन बोले वह असाध्यहै तीन वर्षके ... होजानेपर अथवा नेत्र, नासिका तथा मुखके बहनेपर और कंपहोने पर अर्दितरोग को असाध्य जानना चाहिये ॥ ४६४ ॥

अथ तस्यचिकित्सामाह ॥

स्नेहपानानिनस्यञ्चभोज्यान्यनिलघस्तिच । उपनाहाश्चशस्यन्तेनावनंबस्तयोऽर्दिते ॥ बस्तिरत्रशिरोबस्तिरेव ॥ ४६५ ॥

अर्दितकी चिकित्सा ॥

अर्दितरोग (लकवा) में स्नेहपान, नस्य,वातनाशक भोजन उपनाह (मलहम)और शिरोबस्ति श्रेष्ठहै ॥ ४६५ ॥

दशमूलकषायेणमातुलुङ्गरसेनवा । बलयापञ्चमूल्यावाक्षीरंवातात्मकेहितम् ॥ पिष्टं मांसघृतंजग्ध्वानवनीतेनसोऽर्दितो । क्षीरमांसरसैर्भुक्त्वादशमूलीरसंपिबेत् ॥ अर्दितेपि त्तजेशीतान्स्नेहांश्चैवविनिर्दिशेत् घृतबस्तिप्रसेकञ्चक्षीरसेकंतथैवच ॥ जिह्मीभूताननो मूकोदाहवान्योऽर्दितीभवेत् । कुर्य्यात् प्रतिक्रियान्तस्यवातपित्तविनाशिनीम् ॥ श्लेष्म भागेक्षयंनीतेबृंहणैःसमुपाचरेत् । अर्दितेशोथसंयुक्तेवमनं च प्रशस्यते ॥ ४६६ ॥

दशमूलके काढ़ेसे,नींबूके रससे,बरियारा अथवा पंचमूलके द्वारा सिद्धहुए दूध के पीने से, पीठी, मांस तथा घृतको मक्खन के साथ खाके अथवा दूध तथा मांसके रसकेसाथ भोजनकरके दशमूलका काढ़ा पीनेसे वातज अर्दितरोगका नाश होताहै पित्तज अर्दितरोगमें—शीतल,स्नेह वस्तुओंका भोजन करे और घी अथवा दूधके द्वारा बस्तिक्रिया तथाप्रसेककरे जो अर्दित रोगमें मुखका टेढ़ापन, मूकता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और दाह ... ता वात ... त्तनाशक क्रियाकरे अर्दितरोगमें ... कफको ... से चिकित्सा करे और जो सूजन भी होय तो ... ॥ ... को रगड़ रेसे ।

रसोन ... कंतिलतैलमिश्रं खादेन्नरोयोर्दितरा ... घनाना ... वायुवेगात् ॥ ४६७ ॥

... नेसे, ... स्तम्भ अर्दित, ... वश्व ..., म- जैसे ... के वेगसे मेघोंके समूह शीघ्रही नाशको प्राप्त ... खंजता, पंगुता ... खंजता, खल्ली का तेल ... नेसे अर्दितरोग का नाश होता ..., धनुर्वात तथा कुब्जता इन सबका ना... ... शरीरवाले मनुष्यों के अंग फैलते हैं इ...

अथ मन्यास्तम्भस्य निदान ...

दिवास्वप्नासनस्थानविकृतोर्ध्वनिरीक्षणैः । मन्य ... ॥

आसनस्थानविकृतोर्ध्वनिरीक्षणैः आसनेनस्थाने ... माह ॥

स्यादेवउपसमीपस्ययन्निरीक्षणंतेन ... यत ... । जिह्वा ... स्तम्भःसतेनान्नपानवाक्ये ग्रीवायाःपश्चाद्भागे ... सामर्थ्यम् ... सञ्ज्ञात ... स्तासांस्तम्भंकरोति ... ४६८ ॥ मन्यास्तंभ ... लक्षण ॥

दिनमें सोनेसे शयन अथवा बैठने के स्थानके विकार ... कोई ... युक्त होनेसे और ऊपरको देखनेसे कुपितहुई वायु कफसे ... के मते उत्तंभको उत्पन्न करतीहै ग्रीवाके पीछे की नसको मन्या कहतेहैं ॥ ४६८ ॥ अथ ... चिकित्सा ॥

दशमूलीकृतंकाथंपञ्चमूल्यापिकल्पितम् । रूक्ष ... तथानस्यंमन्यास्तम्भेप्रयोजयेत् । तैलेनाज्येनवाग्रीवामभ्यज्यार्कदलैरथ । एरण्डपत्रैर्वाछाद्यस्वेदयेद्बहुशोभिषक् ॥ कुक्कुटाण्डद्रवैरुष्णैःसैन्धवाज्यसमन्वितैः॥ग्रीवांसम्मर्दयेत्तेन मन्यास्तम्भःप्रशाम्यति॥४६९॥

मन्यास्तंभकी चिकित्सा ॥

दशमूलका काढा अथवा बडे पंचमूलका काढा पीनेसे रूक्ष,स्वेदतथा नास लेनेसे तेल अथवा घी से मलकर आक अथवा अरंडके पत्तोंसे ढककर वारंवार स्वेद देनेसे मुर्गे के अण्डे के रसमें सेंधानोन तथा घी मिलाकर कुछ गरम २ ग्रीवापर मलने से मन्यास्तंभका नाश होताहै ॥ ४६९ ॥

अथ बाहुशोषस्य लक्षणमाह ॥

अंसदेशेस्थितोवायुःशोषयेदंसबन्धनम् । अंसबन्धनशोषात्स्याद्बाहुशोषःसवेदनः ॥ ४७० ॥

बाहुशोषका लक्षण ॥

कन्धोंमें स्थित वायु कन्धोंके बन्धनोंको सुखाती है इससे पीडासहित बाहु सूखती है ४७० ॥

तस्य चिकित्सा ॥

बाहुशोषेपिबेद्भुक्त्वासर्पिःकल्याणकंमहत् । बलामूलशृतंतोयं सैन्धवेनसमन्वितम् ॥ बाहुशोषकरेवातेमन्यास्तम्भेचशस्यते ॥ ४७१ ॥

बाहुशोषकी चिकित्सा ॥

बाहुशोपमें भोजन करके महाकल्याणकघृत पीना चाहिये बरियारा की जडके काढेमें सेंधानोन डालकर पीनेसे बाहुशोप और मन्यास्तंभ शान्त होताहै ॥ ४७१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...पबाहुकस्यलक्षणमाह ॥

...सङ्कोच... ःसकुर्या... पि...हकम्। सवायुःबाहुस्थःशिराःबाहुस्था... राः४७२ ॥

...तस्य...का लक्षण ॥

... ...पिच कुचित करके अपबाहुकरोग को उत्पन्न करता है ॥ ४७२ ॥

खंज ...चिकित्सामाह ॥

...न खंज और ...की विशे... निरू...र्धजत्रुगतरोगे। शीतलजलेननस्यम्... मेजिंगि

...नी चाहिये ॥ ...४ ॥ ...क... जितथात्मगुप्तास्वरसंपिबेद्वा। ...सेनन

कम्पतेगमनारम्भेखञ्जः... चल... मूलंकल्कीकृतंपिबेत्तथापारिभद्रमूलंच। पारिभद्रो

म्॥ गमनारम्भेकम्पतेएतस्य...ज... अपबाहुक की चिकित्सा॥

यौगिके ॥ ५०५ ॥ ...ता... बाहुरोगों में पहले जिंगिनी वृक्षकी जडको पीसकर शीतल

चलने के आरंभमें कंपहोवे ... की जडको अथवा फरहदकीजडको

हिये इसमें संपूर्ण सन्धियोंके बन्ध... ...कवांच के...स्वप्नंसतैताः... वा उर्द के काढे की नास

...आदह...३ ॥ ...स्थिग...

...कल... ...वातु...स्यखञ्जपंगु... ...कण्टटुण्टुकजटाकाधिक्षियछुतोयैः। कार्पासकास्थि

शणबीजकुलत्थकोलक्काथे ...कस्तीर... ...रसयरसेनवापि॥ शुण्ठ्यासमागधिकयाशतपुष्प

याच सैरण्डमूलकपुनर्नवयासरण... विश्व... बलामृतलताकटुकैर्विपक्वं माषाख्यमेतद

पबाहुहरंहितैलम् ॥ ४७४ ॥

उर्द,अलसी,जौ,पीली झिंटी,भटकटैया, गोखुरू,सोनापाठा,जटामांसी तथा किवांच का रस, कपासके बीज,सनकेबीज,कुलथी तथबेरकाकाढा,बकरेके मांसका रस,सोंठ,पीपल,सौंफ,अरंडकी जड पुनर्नवा,गन्धप्रसारणी,रासना,बरियारा,गिलोय और मिर्च इनसब औषधियों को मिलाकर तेलका पाककरके सेवन करने से अपबाहुक रोगका नाशहोताहै इतिमाषतैल ॥ ४७४ ॥

अथ विश्वाचीलक्षणमाह ॥

तलंप्रत्यंगुलीनांयाकण्डराबाहुपृष्ठतः । बाह्वोःकर्मक्षयकरीविश्वाचीसानिगद्यते ॥ कण्डरामहास्नायुः तलंहस्तस्योपरिभागंतलशब्दोऽत्रउपरिवाचकःयथाभूमितलमिति तेनायमर्थः। बाहुपृष्ठतःबाह्वोःपृष्ठंबाहुपृष्ठमारभ्यतलंप्रतिहस्ततलं यावल्लक्षीकृत्य अंगुलीनांकंडरास्ताः सन्दूष्यबाह्वोःप्रसारणाकुञ्चनादिकर्मक्षयकरीभवति साइहवातव्याधिषुविश्वाचीत्युच्यतेबाह्वोरितिद्वित्वंसम्भवपरमेकस्मिन्नपिबाहौविश्वाचीभवति ४७५ ॥

विश्वाची का लक्षण ॥

जिस रोगमें भुजाकी पीठपरसे हाथके ऊपर अंगुलियों तक रहनेवालीकण्डरानाम बडोनसदूषित होकर भुजाके सकोडने तथा फैलाने आदिकामों को नष्टकरे उसको विश्वाची रोग कहते हैं ॥४७५॥

अथ तस्यचिकित्सामाह ॥

दशमूलीबलामाषक्काथतैलाज्यमिश्रितम्।सायंभुक्त्वापिबेन्नस्यंविश्वाच्यामपबाहुके४७६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विश्वाची की चिकित्सा।

भोजनके ... ... कालके समय दशमूल,बरियारा तथा ... के काढ़े ... कर नासिका ... द्वारा पीनेसे विश्वाची और अपबाहुक ... नाश ... होताहै ॥ ...

माषसि... बलारास्नादशमूलकाहिंगुभिः ... तैसे, ... म् ॥ ऊर्ध्व... नाशनाद्धन्याद् बाहुशोषापबाहुकौ । ... स्तिम्भ अर्दित, ... तम् । मा... तैलम् ॥ ४७७ ॥

उड़द,... ... खिरा, रासना,दशमूल,हींग, सें... , धनुर्वात तथा ... ... ी, खंजता, पंगुता ... खंजता, ... पका कर ... उपरान्त सेवन करने से बाहुशोष, अशरीरवाले मनुष्यों के अंग फैलते हैं इन रोगका नाशहोताहै इति माषादि तैल ॥ ४७७ ॥ ... ६ ॥

अथोर्ध्ववातस्यलक्षणमाह ॥

अधःप्रतिहतोवायुःश्लेष्मणामारुतेनच ... । जिह्वा ... स्तम्भःस तेनान्नपानवाक्ये वायुःसमानवायुःमारुतेनापान... ... ... मिथ्यम् ...

... ऊर्ध्ववात का लक्षण ... लक्षण ॥

कफ और अपान वायु ... नीचे से रुकीहुई समान ... ... कोई ... ऊर्ध्व वात कहते हैं ॥ ४७८ ॥ अथतस्य चिकि... ... ते ...

भागादशविश्वायास्तत्तुल्योवृद्धदारकस्या... ... एवचपथ्यायाश्चतुरंशंहिंगुसंभृष्ट म् ॥ एकःसैन्धवभागस्तत्तुल्यंचित्रकञ्चात्र ... ... द्धमूर्ध्ववातंहन्त्येतच्चूर्णितंभुक्तम् ॥ अथ वृद्धदारकालाभेत्रिवृन्मूलंग्राह्यम् ॥ ४७९ ॥

ऊर्ध्ववातकी चिकित्सा ॥

सोंठ १० भाग बिधारेके बीज १० भाग (बिधारा न मिले तो निसोतकी जड़) हड़ ३ भाग भुनी हींग ४ भाग और सेंधानोन तथा चीता एक २ भाग इनसबको चूर्ण करके खाने से बढ़े हुए ऊर्ध्व वात का नाश होताहै ॥ ४७९ ॥ अथाध्मानस्य लक्षणमाह ॥

साटोपमत्युग्ररुजमाध्मातमुदरंभृशम् । आध्मानमितिजानीयाद्घोरंवातविरोधजम् ॥ आटोपोगुडगुडाशब्दः भृशमाध्मानंवातपूर्णभस्तावद्वातानिरोधजम् अधोवातनिरोधजम् ॥ ४८० ॥ आध्मान का लक्षण ॥

जिसरोग में नीचे की वायु के रुकने से उदरमें बहुत पीड़ा गड़गड़ाहट और बहुत पेटफूलना होय उसको आध्मान कहते हैं ॥ ४८० ॥

अथ तस्यचिकित्सामाह ॥

आध्मानेलंघनंपूर्वंदीपनंपाचनंततः । फलवर्त्तिक्रियांकुर्याद्वास्तिकर्मचशोधनम् ४८१ ॥

आध्मान की चिकित्सा ॥

आध्मानरोग में पहले लंघन फिर दीपन तथा पाचन औषधियों का सेवन फलवर्त्ति (गुदामें बत्ती रखाना) वस्तिकर्म और संशोधन औषध हितकारी हैं ॥ ४८१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क [illegible] ात्रामवेत्कृष्ण [illegible] त्रिवृत्ताश [illegible] त्पलोन्मिता । खण्डादपिपलंग्र [illegible] चूर्णमे [illegible] त्रकारये

[illegible] नाक्षाम [illegible] चूर्णमाहि [illegible] नसाशनम् । नारायणचूर्णम् ॥ ४८२ ॥

[illegible] एत ४ तोला [illegible] सोत [illegible] तरस्थाप १ तोले इनसबको एकसाथ पीसकर [illegible] क तोला

[illegible] चा [illegible] पिच [illegible] होताहै इति नारायणचूर्ण ॥ ४८२ ॥ [illegible]

दो [illegible] खंज [illegible] ः । लिम्पेदुष्णैरम्लपिष्टैःशूलाध्मानयु [illegible] रम् ॥

[illegible] न खंज और [illegible] की विरे [illegible] निरू ॥ [illegible]

[illegible] नी चाहिये ॥ [illegible] ४ ॥ [illegible] फल [illegible] इनसबको काँजीमें पीसकर [illegible] शूल

कम्पतेगमनारम्भेखञ्जन्हि [illegible] चल [illegible] दूक लेप ॥ ४८३ ॥

म् ॥ गमनारम्भेकम्पतेएतस्य [illegible] त्रिवृत् । मुस्ताप्रत्येकमेतानिग्राह्याणिपलमात्र

यौगिके ॥ ५०५ ॥ [illegible] पचेत् । तत्रतोऽयेष्टमंभागंकषायमवशेषयेत् ॥

चलने के आरंभमें कंपहोवे [illegible] तान्येवतस्मिन्क्वाथेशनैःपचेत् ॥

हिये इसमें संपूर्ण सन्धियोंके बन्ध [illegible] ततःस्रस्वप्नंसततारुच्चैर्जैपालबीजतः ॥

आदह [illegible] दात् । गन्ध [illegible] द्व्स्थिग [illegible] हयावद्यामंविमर्द्द

[illegible] कल [illegible] स्यखञ्जपंग [illegible] कर [illegible] मितः । जलेनशीतलंक्षिप्रंरोगानेतान्विनाशये

त् ॥ आध्मानंशूलमानाहंप्रत [illegible] क्नानं [illegible] च । उदावर्त्ततथागुल्ममुदराणिहरत्यसौ ॥

वेगेशान्तेतुभुञ्जीतशर्करासाहितंदधि [illegible] विश [illegible] सैन्धवेनापिततोदध्योदनंमनाक् ॥ महा

नाराचोरसः ॥ ४८४ ॥

हड,अमलतास, आमला, दन्ती, कुटकी,थूहर,निसोत तथा मोथा इन सबकोचार २ तोले लेकर कूटकर ५१२ तोले जलमें पाककरे और चौथाई बाकी रहजाने पर उतार कर छानले फिर छिले हुए नये जमालगोटे के ४ तोले बीज महीन कपडे में बांधकर उसीकाढ़े में डालकर मन्दाग्नि से पकावे और काढ़े के गाढ़े होजाने पर वही जमालगोटेके बीज ८ भाग,सोंठ ३ भाग, मिर्च २भाग और पारा तथा गन्धक दो२ भाग इनसबको खरल में एक साथ एकपहर पीसकर एकरत्ती रस शीतल जल के साथ खाने से दस्त आकर आध्मान, शूल, आनाह, प्रत्याध्मान, उदावर्त्त, गोला और उदर रोगों का नाश होताहै और दस्तों के बन्द होजाने पर शक्करसमेत दहीखाय फिर सेंधानोन मिले हुए दही के साथ भातखाय इति महानाराच रस ॥ ४८४ ॥

अथ प्रत्याध्मानस्यलक्षणमाह ॥

विमुक्तपार्श्वहृदयंतदेवामाशयोत्थितम् । प्रत्याध्मानंविजानीयात्कफव्याकुलतानिलम् ॥ विमुक्तपार्श्वहृदयंपार्श्वहृदयेविहायजातं तदेवाध्मानंकफव्याकुलितानिलंकफेनावरुद्धवातम् ॥ ४८५ ॥ प्रत्याध्मान का लक्षण ॥

कफसे रुकीहुई वायुके द्वारा पसली और हृदय को छोडकर आमाशयमें उत्पन्नहुए आध्मानको प्रत्याध्मान कहते हैं ॥ ४८५ ॥ अथ तस्यचिकित्सामाह ॥

प्रत्याध्मानेसमुत्पन्नेकुर्याद्वमनलङ्घने। दापनादीनियुञ्जीतपूर्ववद्वास्तिकर्मच ४८६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रत्याध्मान की चिकित्सा ॥

प्रत्याध्मा[illegible] पहले व[illegible]न तथा लंघन कराके फिर दीपन औषध देनी च[illegible] पहले के बस्तिक्रिय करनी चाहिये ॥ ४८६ ॥ अथ [illegible]णमाह [illegible]

नाभे[illegible]रस्तात्सञ्जातःसञ्चारीयदिवाचलः । [illegible] तः ॥ वा[illegible]ष्ठीलांविजानीयाद्बहिर्मार्गनिरोधिनीम् । [illegible]

तःदीर्घ[illegible]ष्ठीलावातष्ठीलेतिस्वरूपपरं नतु विशे[illegible] नीं[illegible]शिधिनीतिनमूत्रमरुन्मला[illegible]

[illegible]नेसे, [illegible] स्तम्भ, अर्दित, [illegible] विश्वा[illegible], म- [illegible]ती, खंजता, पंगुत[illegible]यखंजता, खल्ली, धनुर्वात तथा [illegible]ज ॥ इन सबका न[illegible] वाताष्ठीला का ल[illegible] शरीरवाले मनुष्यों के अंग फैलते हैं इ[illegible]

नाभिके नीचे बटिया के समान कठोर जो गांठ उत्[illegible] मलमूत्रकी रोकनेवाली होती है वह चंचल अथवा [illegible] ३६ ॥ [illegible]माह ॥

अथ प्रत्यष्ठीत[illegible] । जिह्व[illegible]स्तम्भःसतेनान्नपानवाक्ये

एतामेवरुजायुक्तां[illegible]मिर्थ्यम् ॥ [illegible]

म् ॥ एतामेवअष्ठीला[illegible] ठरा[illegible]र्य्यगुत्थितामिक्षिण ॥ [illegible]

[illegible] प्रत्यष्ठीलाका ल[illegible] कोई [illegible]

उदर में तिरछी उठीहुई पीडायुक्त वायु तथा मलम[illegible]ते[illegible] रोकने[illegible]ली वाताष्ठीलाको प्रत्यष्ठीला कहते हैं ॥ ४८८ ॥ तयोश्चिकित्साकरस्य[illegible]

आष्ठीलायोःक्रियाकार्यागुल्मस्यान्तर्वि[illegible] चूर्णंहिंग्वादिकञ्चात्रपिबेदुष्णेनवारिणा॥ ⊛ हिंग्वादिचूर्णयथा हिंगुग्रन्थिकधान्[illegible] वचाचव्याग्निपाठाशटी,वृक्षाम्लं लवणत्रयंत्रिकटुकंक्षारद्वयंदाडिमम् ॥ पथ्यापौष्[illegible]सामलहबुषायोज्यस्तदेभिःकृतं चूर्णंभावितमेतदार्द्रकरसैःस्याद्बीजपूरद्रवैरिति ॥ ४८९ ॥

वाताष्ठीला और प्रत्यष्ठीला की चिकित्सा ॥

बाताष्ठीला और प्रत्यष्ठीलामें गुल्म और अन्तर्विद्रधिके समान चिकित्सा करनी चाहिये और आगे कहाहुआ हिंग्वादिचूर्ण गरम जलके साथ पीना चाहिये हींग, पीपलामूल, धनियाँ, जीरा, बच, चव्य, चीता, पाठा, कचूर, चूक, कालानोन, सेंधानोन, विड्नोन, त्रिकटु, जवाखार, सज्जी, अनार, हड, पुष्करमूल, अमलबेत और हाऊबेर इनसबको चूर्ण करके एकदिन अदरक के रसमें और एकदिन नींबूके रसमें भावना देवे यह हिंग्वादिचूर्ण कहलाताहै ॥ ४८६ ॥

अथ तूनीलक्षणमाह ॥

अधोयावेदनायातिवर्चोमूत्राशयोत्थिता । भिन्दतीवगुदोपस्थंसातूनीनामतोमता ॥ उपस्थंशिश्नंभगञ्च ॥ ४९० ॥ तूनीका लक्षण ॥

मलाशय और मूत्राशयसे उठीहुई जो पीडा गुदा और लिंग अथवा भगमें चीरनेके समान पीडा करतीहुई नीचेको जाय उसको तूनी कहते हैं ॥ ४९० ॥

⊛ हिंगुपिप्पलिमूलञ्च धान्यकंजीरकंवचा । चव्यचित्रकपाठाच कर्चूरंतन्तडीयकम् ॥ त्रिकटुव्योपक्षारौद्वौ दाडिमंपुष्करं शिवा । अम्लवेतसहीबेर कृष्णाजाजीसमंसमम् ॥ सर्व्वमेकीकृतंचूर्णं शृङ्गवेररसेनच । मातुलुङ्गरसेभाव्यं चूर्णंहिंग्वादिनामकम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ प्रतितूनीलक्षणमाह ॥

... पिच ... । वेगैःपक्वाशयंयातिप्रतितूनी ... सोच्यते ॥

... खंज ... वेगैर्मुहुर्मुहुःस्वभावोपशमोपलक्षितैः ... ध्वनेनाभि ... नावेगैरुत्पत्तिप्रशमलक्षितैः ॥ ४६ ...

... खंज और ... की विरे ... निरू ...

... नी चाहिये ॥ ... ४ ॥ ... का लक्षण ॥

... हुई पीडा उलटे क्रमसे वारंवार ... साथ ऊर्ध्व ... उसको प्रतितूनी कहते हैं ॥ ४६१ ॥

कम्पतेगमनारम्भेखञ्जन्निव ... म् ॥ गमनारम्भेकम्पतेएतस्य ... यौगिके ॥ ५०५ ॥

... चिकित्सामाह ॥

... तयः । पिबेद्वास्नेहलवणंपिप्पल्यादिमथा ... स्वभ्रंसतेताः ...

चलने के आरंभमें कंपहोवे ... हिये इसमें संपूर्ण सन्धियोंके बन्ध ...

प्रतितूनीकी चिकि ...

... स्थिग ...

... हयुक्त संधानोन अथवा ... साथ पिप्पल्यादिगण या ... अथवा बहुतसा घी पिये ॥ ४६२ ॥

... तस्यखञ्जपंगु ...

अथ त्रिकशूलस्य लक्षणमाह ॥

स्फिगस्थ्नोःपृष्ठवंशास्थ्नोर्यःस ... त्रिकंमतम् । तत्रवातेनयापीडात्रिकशूलंतदुच्यते ॥ ४६३ ॥

त्रिकशूलेका लक्षण ॥

चूतडोंकी हड्डी और रीडकी हड्डी ... दोनोंकी सन्धिको त्रिक कहते हैं इनमें जो वायु के द्वारा पीडा होती है उसको त्रिकशूल कहते हैं ॥ ४६३ ॥

अथ तस्य चिकित्सामाह ॥

कारयेद्वालुकास्वेदंत्रिकशूलेप्रयत्नतः। यद्वाधस्तात्करीषाग्निंधारयेत्सततंनरः ४६४ ॥

त्रिकशूल की चिकित्सा ॥

त्रिकशूलमें यत्नपूर्वक बालुकास्वेद करावे अथवा करसीकी आंच बराबर नीचेरक्खे ॥ ४६४ ॥

आभाश्वगन्धाहवुषागुडूचीशतावरीगोक्षुरकश्चरास्ना। श्यामाशताह्वाचशठीयवानी सनागराचेतिसमंविचूर्ण्य ॥ सर्वैःसमंगुग्गुलुमत्रदद्यात्क्षिपेदिहाज्यञ्चतदर्द्धभागम् । तद्भक्षयेदर्द्धपिचुप्रमाणंप्रभातकालेपयसाथयूषैः ॥ मद्येनवाकोष्णजलेनचाथक्षीरेणवा मांसरसेनवापि । त्रिकग्रहेजानुहनुग्रहेचवातेभुजस्थेचरणस्थितेच ॥ सन्धिस्थितेचास्थिगतेचतस्मिन्मज्जास्थितेस्नायुगतेचकोष्ठे । रोगान्हरेद्वातकफानुविद्धान्वातेरितान्हृद्ग्रहयोनिदोषान् ॥ भग्नास्थिविद्धेषुचखञ्जतायांसगृध्रसीकेखलुपक्षघाते। महौषधंगुग्गुलुमेतमाहुस्त्रयोदशांगंभिषजःपुराणाः ॥ आभावब्बूलः । तथाच आभाबब्बूलपर्यायः कथितःकोविदैरिहेति । इतित्रयोदशांगगुग्गुलुः ॥ ४६५ ॥

बबूल, असगन्ध, हाऊबेर, गिलोय, सतावर, गोखुरू, रासना, श्यामा, सौंफ, कचूर, अजवाइन और सोंठि इनसब औषधियोंको समभाग लेकर पीसे और सबकी बराबर गूगुलमिलाके गूगुलका आधा घी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

पहने वे... ...र्द्धनी चौ...

मिलावे फिर प्रातःकाल ६ माशे औषध जल यूष मद्य उष्णजल ...णमा... इन
किसीकेसाथ सेवनकरनेसे त्रिकशूल, जानुशूल, ह... ...नेसे, ...नेस... म...
कोष्ठमें गई हुई वायु वातकफजरोग, वातजनित हृदयकेरोग ...स्तम्भ अर्दित, ग... ...वेश्वा... म-
खंजिता, ...सी और पक्षाघात इनसबका नाश होताहै ...ली, खंजता, पंगुता ...यखंजता, खल्ली
लोग इनरो... ...महौषध कहते हैं ॥ इतित्रयोदशांगगुग्गुलु, धनुर्वात तथा कुब्ज ॥ इन सबका न...

अथ बस्तिवातस्य ...शरीरवाले मनुष्यों के अंग फैलते हैं इन...

मारुतेऽविगुणेबस्तौमूत्रंसम्यक्प्रवर्त्तते। विकारा... ३६ ॥
अविगुणेअनुलोमेविकाराःविविधाःमुहुर्मुहुर्मूत्र... ...मामाह ॥

बस्तिवातका... ...। जिह्वा स्तम्भः स तेनान्नपानवाक्ये

मूत्राशयमें दोषरहित वायुके स्थित ... ...यम ॥ ...
वायुके स्थित रहनेपर बा... ...मूत्रको रु...
...क्षण ॥

...स्याचिकित्सा ...

...रुद्ध कोई ...

बलामूर्वात्वचंचूर्णं... ...तकर्ष... ...म्मितम् । पिबे... ...ते ... ...ढं ... मूत्रणशान्तिकृत् ॥ यवक्षार
थ्याविभीतधात्रीणांचूर्णं चूर्णंमृतायसः । मधुनाम... ...
स्यचूर्णन्तु संयोज्यसितयासह । भक्षयेन्नि... ...रामेन्मूत्रनिग्रहः ॥ कूष्माण्डस्यतुबी
जानिबीजानित्रपसस्यच । बस्तौसन्धारयेत... ...म्येन्मूत्रनिग्रहः । आमलक्या ...
कल्केनबस्तिभासंप्रलेपयेत् ॥ तेनप्रशाम्यतिक्षिप्रं... ...मूत्रनिग्रहः । ...हतरा... ...योने
र्वामुखस्याभ्यन्तरेशनैः ॥ घनसारयुतांवर्त्तिन्धारयेन्मूत्रनिग्रहे ॥ ४६७ ॥

बस्तिवातकी चिकित्सा ॥

॥ बरियारा, मरोडफली तथा दालचीनी इन सब औषधियोंके समान शक्कर मिलाकर एकतोले चूर्ण
१६ तोले दूधकेसाथ पीनेसे अथवा हड, बहेडा, आमला तथा लोहे की भस्म इनसबको सहतके साथ
चाटनेसे बारम्बार मूत्रआना बन्द होताहै जवाखारकेचूर्णको मिश्री मिलाकर खानेसे कुँभडे तथा खीरे
के बीजोंको पेडूपर रखनेसे आमलेको पीसकर पेडूपर लेपकरने से अथवा लिंग वा योनि के भीतर
कपूरयुक्त बत्तीको धारणकरनेसे मूत्रके रुकावटका नाश होताहै ॥ ४६७ ॥

गृध्रसीलक्षणमाह ॥

स्फिक्पूर्वोरुकटीपृष्ठजानुजङ्घापदंक्रमात् । गृध्रसीस्तम्भरुक्तोदैर्गृह्णातिस्पन्दते
मुहुः ॥ वाताद्वातकफाभ्यांसाविज्ञेयाद्विविधापुनः । वातजायांभवेत्तोदोदेहस्यातीववक्र
ता ॥ जानुजङ्घोरुसन्धीनांस्फुरणंस्तम्भताभृशम् । वातश्लेष्मोद्भवायान्तुगौरवंवह्निमा
र्दवम् ॥ तन्द्रामुखप्रसेकश्चभक्तद्वेषस्तथैवच । गृध्रसीवातजाकेवलास्फिगादिपर्यन्तम्
स्तम्भरुक्तोदैर्गृह्णातिक्रमातूरुद्विक्रमात् ॥ तेनयथायथावर्द्धतेतथातथास्फिगादीन्
क्रामतितात्रग्रहणेनिर्देशक्रमनियमः । तथामुहुःस्पन्दतेस्फिगादिषुशिराकम्पंकरोती
त्यर्थः ॥ ४६८ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

य खंज ... ष्यते ... गृध्रसीका लक्षण ॥

... मन ... पिच । विश्वामें स्तब्धता, वेदना तथा सूईगडनेकी ... पीड़ा और

दू ... खंज और पं ... ढजानेपर क्रमसे जंघा, कमर, पीठ, घुटने ... डली तथा

... न खंज और ... की विरे ... निरूहबस्ति ... कना उत्पन्न करसीहै केवल वातजन्य ... र वातकफ

... नी चाहिये ॥ ५०४ ॥ अ ... कलस्यख ... में पीड़ा, शरीरका बहुत टेढ़ा ... पिंडली, जंघा

कम्पतेगमनारम्भेखञ्जन्धि ... चल ... यते ... है कफयुक्त गृध्रसीरोगमें श ... मन्द्-

म्॥ गमनारम्भेकम्पतेएतस्य ... दयएव ... यह लक्षण होतेहैं ॥ ४९८ ॥

यौगिके ॥ ५०५ ॥ ... ता खञ्ज क ... सामाह ॥

चलने के आरंभमें कंपहोवे ... मनिरामंदीप्ताग्निबस्तिभिःसमुपाचरेत् ॥

हिये इसमें संपूर्ण सन्धियोंके बन्ध ... अस्वप्रंसतैतस्यिस्याद्वस्मन्येव्रहुतंयथा ॥

आदह ... मासमेकंप्रयो ... स्थग ... पहापहः ॥ तैलंघृत

कम्पकलाय ... स्यखञ्जपंगो कर ... कट्यूरुपृष्ठत्रि ... शूलघ्नं ... गृध्रस्युदावर्त्तहरःप्रयो

गः ॥ निष्कुष्य ... एरण्डबीजा ... क्षीरे ... पाचयेत् ॥ तत्पानन्तुकटीशूलगृध्रस्यांपरमौष

धम् । एरण्डमूलंबिल्वञ्चबृहतीकण ... विशे ... ॥ कषायोरुचकोपेतःपीतोवंक्षणबस्तिज

म् । गृध्रसीजंहरेच्छूलंचिरकालानु ... ॥ रुचकंसौवर्चलं । गोमूत्रैरण्डतैलाभ्यां

कृष्णाचूर्णंपिबेन्नरः । दीर्घकालोत्थितांहन्तिगृध्रसींकफवातजाम् ॥ सिंहास्यदन्तीकृतमा

लकानांपिबेत्कषायंरुबुतैलमिश्रम् । योगृध्रसीनष्टगतिःप्रसुप्तःसशीघ्रगःस्याद्धिकिम

त्रचित्रम् ॥ बृहन्निम्बतरोःसारोवारिणापरिपेषितः । सपीतोनाशयेत्क्षिप्रमसाध्यामपि

गृध्रसीम् ॥ शेफालिकादलैःक्वाथोमृद्वग्निपरिपाचितः । दुर्वारंगृध्रसीरोगंपीतमात्रःप्रणा

शयेत् ॥ इति शेफालिकानिर्गुण्डी ॥ ४९९ ॥

गृध्रसीकी चिकित्सा ॥

गृध्रसी रोगवालेको पहले विरेचन अथवा वमनसेशुद्ध करके आमकानाश तथा अग्निकी दीप्ति होजाने पर बस्तिक्रियाकरे वमनादिके द्वारा विना शुद्धकिये बस्ति न देवे क्योंकि शुद्धताकिये विना दियाहुआ स्नेह भस्ममें हवन कियेहुएके समान निरर्थक होताहै गोमूत्रके साथ रेंडीकेतेलको प्रातःकालमहीने भरतकपीनेसे गृध्रसी और ऊरुस्तंभका नाश होताहै अदरकका रस, नींबूका रस, चूक और गुड इनमें तेल तथा घी डालकर पीनेसे कमर, जंघा, पीठ तथा त्रिकका शूल, गोला, गृध्रसी और उदावर्त्तकानाशहोताहै छिलेहुए अरंडकेबीजोंको दूध में पकाकर पीनेसे कमरके शूल और गृध्रसीकानाश होताहै अरंडकीजड, बेल, दोनों भटकटैया इनसबके काढ़े में कालानोन डालकर पीनेसे बंक्षण तथा बस्तिके शूल और गृध्रसीका नाशहोताहै गोमूत्र और रेंडीकेतेलके साथ पीपलका चूर्णपीनेसे बहुत पुरानी कफवातज गृध्रसीकानाश होताहै बांसा, दंती और अमलतासके काढ़ेमें रेंडीकातेल डालकरपीनेसे गृध्रसीके द्वारा जकडेहुए पैरखुलजातेहैं बडे नींबके सारको जलमें पीसकर पीनेसे और निर्गुंडीके पत्तों के काढ़े को पीनेसे असाध्य भी गृध्रसीका शीघ्र नाशहोताहै ॥ ४९९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रास्ना ... स्तुपलञ्चैकं पञ्चकर्षाणिगुग्गुलुः। ... ष ... टिकृतंथा ... इन म्। रास्ना गुग्गुलुः॥ ५००॥

रासना ४ तोला और गूगुल ५ तोला इन दोनों को ... नेसे, ... से गृध्रसी ... नाश होताहै॥ इति रासनागूगुल॥ ... स्तम्भ अर्दित, ... वेश्वाची, ... ती, खंजता, पंगुता, ... खंजता, ...

रास्ना ... देवदारुत्रिकण्टकैरण्डै ... , धनुर्वात तथा कुब्ज ... इन सबका ना...

... रुपृष्ठ ... शूली॥ इति रास्न ... शरीरवाले मनुष्यों के अंग फैलते हैं ...

रासना, गिलोय, अमलतास, देवदारु, ... ३६॥

चूर्ण मिलाकर पीनेसे पिंडली, जंघा, पीठ ... माह॥

सप्तक क्वाथ॥ ५०१॥ ... जिह्वा ... स्तम्भः स तेनान्नपानवाक्ये

पथ्याविभीतामलकीफला ... मथ्येम॥ ...

द्रोणेजलेसंस्थितमे ... अर्द्धावशिष्टं ... क्षिपेत्॥ ...

अमूनिवह्नेरवतारयेद् ... र्या सञ्चूर्ण्यपलार्द्ध ... कोई ...

त्रिवृन्नागरकोषणानि। यथेष्टचेष्टस्यनरस्यशीघ्रं ... नि च भाजनानि॥ ...

माणोविनिहन्तिरोगान्सगृध्रसीनूतनखञ्जताकं ... प्लीहानमुग्रंजठराग्निगुल्मं पाण्डुत्व

कण्डूवमिवातरक्तम्॥ पथ्यादिकोगुग्गुलुरेषनाम्ना ख्यातःक्षितावप्रमितप्रभावः। बले

ननागेनसमंमनुष्यंजवेनकुर्य्यात्तुरगेणतुल्यम्॥ ... आयुःप्रकर्षंविदधातिचक्षुर्बलंतथापु

ष्टिकरोविषघ्नः। क्षतस्यसन्धानकरोविशेषाद्रोगेषु ... सकलेषुतज्ज्ञैः॥ इति पथ्यादि

गुग्गुलुः॥ ५०२॥

हड १०० बहेडा २०० आमला ४०० और गूगुल ६४ तोले इन सबको १०२४ तोले जल में रात्रिभर भिगोकर पाककरे फिर आधारहजानेपर उतार कर छानले और फिर इसी काढ़ेको लोहे के पात्र में औटावे जब गाढ़ा होजाय तब उतारकर बायबिडंग, दन्ती, त्रिफला, गिलोय, पीपल, निसोत, सोंठ और मिर्च इन सब औषधियोंका दो २ तोले चूर्ण छोड़े इसको मात्राके अनुसार सेवन करके शीतल जल पिये और अपनी इच्छाके अनुसार आहार विहारकरे इससे गृध्रसी, खंजिता, प्लीहा अग्निवृद्धि, गोला, विष, पांडु, खुजली, छर्दि तथा वातरक्त का नाश होताहै और हाथी के समान बल, घोडेके समान बेग, आयुकी वृद्धि, नेत्रोंमें बल, शरीरमें पुष्टता तथा घावका भरना यह सब होतेहैं यह सब रोगोंमें हितकारी है॥ इति पथ्यादि गूगुल॥ ५०२॥

अथ खञ्जस्यपंगोश्चलक्षणमाह॥

वायुःकट्याश्रितःसक्थ्नःकण्डरामाक्षिपेद्यदा। खञ्जस्तदाभवेज्जन्तुःपंगुसक्थ्नोर्द्व योर्वधात्॥ सक्थ्नःकट्यादिगुल्फस्तस्यकण्डरांमहास्नायुंआक्षिपेत्। गमनादौकम्पये द्वधाद्गमनादिक्रियाघातात्॥ ५०३॥

खंज और पंगुके लक्षण॥

कमरमें स्थित वायु कुपित होकर जो जंघाओं में स्थित कंडराओं को गमनके समय कंपित करे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

... खंज ... ई होताहै और जो दोनों जंघाओं की गमनादिक क्रिया न... होजायँ तो
...ष्यते ... ॥ अथ तस्यचिकित्सामाह ॥

...भिन... पिच। विरेकास्थापनस्वेदगुग्गुलुस्नेहबस्तिभिः ॥ ५०४ ॥

खंज और पंगुकी चिकित्सा ॥

...न खंज और ...गुकी विरे... निरूहबस्ति स्वेद गूगुल और स्नेह बस्तिके द्वारा चिकित्सा ...नी चाहिये ॥ ५०४ ॥ अथ कलायखञ्जस्यलक्षणमाह ॥

कम्पतेगमनारम्भेखञ्जन्निव चलक्ष्यते । कलायखञ्जन्तंविद्यान्मुक्तसन्धिप्रबन्धनम् ॥ गमनारम्भेकम्पतेएतस्य... दयएवभेदाः। कलायखञ्जइतिशास्त्रेरूढासंज्ञानतु यौगिके ॥ ५०५ ॥

...ता खञ्ज का लक्षण ॥

चलने के आरंभमें कंपहोवे ... तो उसको कलाय खंज जाननाचाहिये इसमें संपूर्ण सन्धियोंके बन्ध ... हैं ॥

अथ ... चिकित्सामाह ॥

क्रमः कलायखञ्जस्यखञ्जपंगु... स्मृतः । विशेषात्... कर्मकार्य्यमत्रविचक्षणैः ५०६ ॥

कलायख... की चिकित्सा ॥

कलाय खंजमें खंज और पंगुके समा... करनी चाहिये और इसमें स्नेह क्रिया विशेषतासे करनी चाहिये ॥ ५०६ ॥

अथ क्रोष्टुकशीर्षस्यलक्षणमाह ॥

वातशोणितजःशोथोजानुमध्येमहारुजः। ज्ञेयःक्रोष्टुकशीर्षस्तुस्थूलःक्रोष्टुकशीर्षवत्। क्रोष्टुःशृगालः ॥ ५०७ ॥

क्रोष्टुक शीर्षका लक्षण ॥

घुटने के बीचमें वातरक्त से उत्पन्नहुई जो सूजन सियारके शिरके समान स्थूल और अत्यन्त पीडायुक्त होती है उसको क्रोष्टुक शीर्ष कहते हैं ॥ ५०७ ॥

अथ तस्यचिकित्सामाह ॥

गुग्गुलुंक्रोष्टुशीर्षेतुगुडूचीत्रिफलाम्भसा । क्षीरेणैरण्डतैलंवापिबेद्वावृद्धदारकम् ॥ गुग्गुलुशुद्धंकर्षमितंगुडूचीत्रिफलाम्भसा । गुडूचीपथ्याविभीतामलकैःसमुदितैश्चतुःकर्षमितैःप्रस्थमितेनजलेनपक्त्वाक्वाथेनोष्णेनपलद्वयमितेनगुग्गुलुंपिबेत् ॥ एरण्डतैलं कर्षमितंक्षीरेणगव्येनपलपरिमितेनपिबेत् । वृद्धदारकचूर्णंवादुग्धेनगव्येनपलचतुष्टयमितेनपिबेत् ॥ रसैस्तित्तिरमांसस्यपोतैर्गुग्गुलुसंयुतैः । वातरक्तक्रियाभिश्चजयेज्जम्बुकमस्तकम् ॥ ५०८ ॥

क्रोष्टुकशीर्षकी चिकित्सा ॥

गिलोय,हड,बहेडा तथा आमला यह सब एक२तोले इन सबका ६४ तोले जलमें काढा करके जब ८ तोले बाकीरहै तब कुछ गरम उस काढ़ के साथ एक तोले शुद्ध गूगुल सेवनकरे चार तोले गौके दूधके साथ१तोले रेंडीका तेल पिये १६ तोलेगौके दूधकेसाथ बिधारेकाचूर्ण पिये अथवा तीतरके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मांस के रसके साथ गूगुलको पिये इससे क्रोष्टुकशीर्ष का नाश होताहै और ... रोगमे वात... चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ५०८ ॥

अथ खल्लीलक्षणमाह ॥

खल्लीतुपादजङ्घोरुकरमूलावमोटिनी । अवमो[illegible]टिनीप[illegible]तनशाला ॥[illegible] ॥

खल्लीका लक्षण ॥

पैर, पिंडली, जंघा और हाथके मूलोंके ऐंठनेको खल्ली कहते हैं ॥ ५०९ ॥

अथ तस्यचिकित्सा[illegible]ह ॥

कुष्ठसैन्धवयोःकल्कश्चुक्रतैलसमन्वितः । [illegible]सुखो[illegible]ष्णोमर्द्दनेयोज्यःखल्लीशूलनिवारणः ॥ ५१० ॥

खल्ली की चिकित्सा ॥

कूट और सेंधेनोन के कल्क में चूक और तेल [illegible] २ रगडने से खल्ली और शूल का नाश होताहै ॥ ५१० ॥

अथ[illegible] ॥

रुक्पादेविषमेन्य[illegible]तेयदा । [illegible]नगुल्फमाश्रित्यतमाहुर्वातकण्टकम् ॥ ५११ ॥

[illegible]वातकण्टकका लक्षण ॥

पैरोंके टेढेमेढे रखने से अथवा बहुत श्रमसे वायु के [illegible]टखनों में जो पीडा उत्पन्न होतीहै उस को वातकंटक कहते हैं ॥ ५११ ॥

अथ तस्यचि[illegible]माह ॥

रक्तावसेचनंकुर्य्यादभीक्ष्णंवातकण्टके । पिबे[illegible]रण्डतैलंवादहेत्सूचीभिरेवच ॥ अभीक्ष्णंपुनः ॥ ५१२ ॥

वातकण्टक की चिकित्सा ॥

वातकंटक रोगमें बारम्बार रुधिर निकलवावे रेंडीका तेल पिये अथवा सुइयोंसे जलावे ॥ ५१२ ॥

अथ पाददाहस्यलक्षणमाह ॥

पादयोःकुरुतेदाहंपित्तासृक्सहितोऽनिलः । विशेषतश्चंक्रमणेपाददाहंतमादिशेत् ॥ ५१३ ॥

पाददाह का लक्षण ॥

पित्त तथा रुधिर सहित वायु दोनों पैरोंमें दाह उत्पन्न करतीहै और चलने के समय विशेष करके दाह होताहै इसको पाददाह कहते हैं ॥ ५१३ ॥

अथ तस्यचिकित्सामाह ॥

वातरक्तक्रमंकुर्य्यात्पाददाहेविशेषतः । मसूरविदलैःपिष्टैःशृतशीतेनवारिणा ॥ चरणौलेपयेत्सम्यक्पाददाहप्रशान्तये । नवनीतेनसंलिप्तौवह्निनापरितापितौ ॥ मुच्येतेचरणौक्षिप्रंपरितापात्सुदारुणात् ॥ ५१४ ॥

पाददाहकी चिकित्सा ॥

पाददाह रोगमें वात रक्त के समान चिकित्सा करनी चाहिये मसूरकी दालको पीसकर जल में पाककरे फिर शीतल करके उसका पैरोंमें लेपकरने से अथवा पैरोंमें मक्खन लगाकर आगमें सेकने से शीघ्रही दाह निवृत्त होजाताहै ॥ ५१४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ पादहर्षस्यलक्षणमाह ॥

हृष्येते ... स्यभवतः ... चप्रसुप्तकौ । पादहर्षःसविज्ञेयः कफवातप्रकोपजः ॥ हृष्येते ... तः ... प्रकौर्तिनसिनीयुक्तौ ५१५ ॥

पादहर्षका लक्षण ॥

कफ ... क वायुके कोपसे झनझनाहट सहित जो पैरोंमें रोमांच होताहै उसको पादहर्ष कहतेहैं॥५१५॥

अथ तस्यचिकित्सामाह ॥

पादहर्षेतुकर्त्तव्यःकफवातह ... विधिः ५१६ (अथाक्षेपकस्यसामान्यंलक्षणमाह)य ... तुधमनीः सर्वाः कुपितोऽभ्येति मारुतः । तदाक्षिपत्याशुमुहुर्मुहुर्देहंमुहुश्चलः ॥ मुहुरा ... पणाद्वायुराक्षेपकइतिस्मृतः । मुहुर्मुहुर्देहमाक्षिपतिगजारूढस्येवपुरुषस्यगात्रंदोलय ति॥किंविशिष्टोमारुतःमुहुश्च ... अयंवायुराक्षेपकइतिस्मृतः देह स्ययन्मुहुराक्षेपणञ्चालनंततः ॥ ५१७ ...

पादह ... की चिकित्सा ॥

... हर्षमें कफ वातनाशक चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ५१६ (आक्षेपका सामान्य लक्षण) जो वारंवार घूमनेवाली वायु कुपित होके और ... डियोंमें प्राप्त होके मनुष्य के शरीरको हाथीपर चढे हुएके समान वारंवार कंपातीहै उसको आक्षेपक कहते हैं ॥ ५१७ ॥

आक्षेपकस्त्रेनरतुरोभेदानाह ॥

पित्तश्लेष्मान्वितोवायुर्वायुरेवचकेवलः । कुर्य्यादाक्षेपकञ्चान्यञ्चतुर्थमभिघातजम् ॥ पित्तान्वितःश्लेष्मान्वितश्चकवलश्चवायुः आक्षेपकत्रितयंकुर्य्यात् । अन्यञ्चतुर्थमभि घातजम् ॥ अन्योदण्डाद्यभिघातजोवायुश्चतुर्थमाक्षेपकंकुर्य्यादित्यर्थः ॥ ५१८ ॥

आक्षेपके चारभेद ॥

एक कफयुक्त वातजनित दूसरा पित्तयुक्त वातजनित तीसरा केवल वातजनित और चौथा लाठी आदिकी चोटसे उत्पन्न हुई वायुजनित होताहै ॥ ५१८ ॥

तत्रकेवलवातजस्याक्षेपकस्यलक्षणमाह ॥

पाणिपादशिरःपृष्ठश्रोणीःस्तम्भातिमारुतः । दण्डवत्स्तब्धगात्रस्यदण्डकःसोनुप क्रमः ॥ सस्वभावादेवसाध्यः अत्रचमुहुर्मुहुराक्षेपणंबोद्धव्यम् ॥ ५१९ ॥

केवल वातजनित आक्षेपका लक्षण ॥

कुपित वायु हाथ, पैर, शिर, पीठ तथा नितंबों को जकडती है और शरीर दंडके समान जकडकर वारंवार हिलता है इसको दंडक कहतेहैं यह रोग असाध्यहै ॥ ५१९ ॥

श्लेष्मान्वितस्यलक्षणमाह ॥

कफ'वृतोयदावायुर्धमनीष्वेवतिष्ठति । सदण्डवत्स्तम्भयतिकृच्छ्रोदण्डापतानकः ॥ दण्डापतानकःसआक्षेपकोदण्डापतानकाख्यः कृच्छ्रः कष्टसाध्यः अत्रचमुहुर्मुहुराक्षेपणंबो द्धव्यम् आगन्तुजाक्षेपकस्यलक्षणंसामान्यमेवबोद्धव्यम् ॥ ५२० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कफयुक्त वातजनित आक्षेपका लक्षण ...

कफयुक्त वायु कुपित होकर नाड़ियों में स्थित होकर शरीरको ... के सम... ... वारंवार हिलाती है इसको दंडापतानक कहतेहैं यह कृच्छ्र साध्यहै आगन्तु ... सामान्य आक्षेपके समान जानना चाहिये ॥ ५२० ॥

अथ तस्यचिकित्सामाह ॥

बलामूलकषायस्यदशमूलीशृतस्यच । यवकोलकुलत्थानांक्काथस्यपयसस्तथा ॥ ष्टावष्टौ स्मृताभागास्तैलादेकस्तदेकतः । पचेदवाप्यमधु रंगणंसैन्धवसंयुतम् ॥ तथागुरु सर्ज्जरसंसरलंदेवदारु च । मञ्जिष्ठांपद्मकंकुष्ठमेलांका... ञ्चसारिवाम् ॥ मांसींशैलेयकं पत्रंतगरंसारिवांवचाम् । शतावरीमश्वगन्धांशतपुष्पां पुनर्नवाम् ॥ ततुसाधुसिद्धंसौवर्णे राजतेमृन्मयेऽपिवा । प्रक्षिप्यक... ... निधापयेत् ॥ एतन्महाबलातैलं प्रयुक्तमविलम्बितम् ...ऽऽस्लेमर्थ्यम् ॥ ...दास्तुवात... धीनूव्यपोहति ॥ हिक्कांश्वासमधीमन्थंगुल्मंकासंसुदुस... ...ण्मासादुपयुक्तंतदन्त्रवृद्धिंचनाशयेत् ॥ यथाबलमलंमात्रं सूतिकायैचदापयेत् । ...चगर्भार्थिनीनारीक्षीणशुक्रश्चयःपुमान् ॥ क्षीणवातेममर्मह... भिघातहतेतथा । भग्नेश्रमाभिपन्नेचसर्वथैतत्प्रशस्यते ॥ एतद्धिराज्ञाकर्त्तव्यंकर्त्तव्यंराजपूजितैः । सुखिभिःसुकुमारैश्चधनिभिर्मानविस्तरैः ॥ एकतःएकत्र अवाप्यप्रक्षिप्य इति महाबलातैलम् ॥ ५२१ ॥

आक्षेपकी चिकित्सा ॥

बरियारे की जड दशमूल जौ बेर तथा कुलथी इनसबका आठ २ भाग काढ़ा तिलकातेल १ भाग दूध ८ भाग इनसबको एकमेंमिलायके पाककरे और मधुरगण, सेंधानोन, अगर, लाख, सरल, देवदारु, मजीठ, पद्माक, कूट, इलायची, तगर, जटामांसी, शिलाजीत, तेजपात, कालीसारिवा, बच, सतावर, असगन्ध, सौंफ तथा पुनर्नवा इन सबको डालकर अच्छेप्रकार से पाककरे पाक होजाने पर सोना, चांदी अथवा मिट्टीके कलशे में बहुत गुप्तकरके रक्खे इसके सेवन से सब प्रकार के आक्षेप आदिक, वातरोग, हिचकी, श्वास, अधिमन्थ, गोला तथा खांसी का नाश होताहै इसको छः मास सेवन करनेसे आंत की वृद्धिका नाश होताहै बलके अनुसार इसकी मात्रा सौरवाली स्त्री को देनी चाहिये गर्भ चाहनेवाली स्त्री और क्षीणवीर्य क्षीणवात मर्ममें चोटवाले चोट से व्याकुल टूटीहुई हड्डी से युक्त तथा श्रमसे क्षीण पुरुषोंको यह हितकारी है यह तेल राजाराज पुरुष सुकुमार और सुखी धनवान् पुरुषों को बनवाना चाहिये ॥ इति महाबला तैल ॥ ५२१ ॥

अथान्तरायामस्यलक्षणमाह ॥

अंगुलीगुल्फजठरहृद्वक्षोगलसंश्रितः । स्नायुप्रतानमनिलस्तदाक्षिपतिवेगवान् ॥ विष्टब्धाक्षस्तब्धहनुर्भग्नपार्श्वःकफंवमन् । अभ्यन्तरेधनुरिवयदानमतिमानवः ॥ तदास्तेऽभ्यन्तरायामंकुरुतेमारुतोबली । यदासबलीमारुतोऽभ्यन्तरायामंकुरुतेतदंगुल्यादिसंश्रिताऽनिलंस्नायुरत्नोपलक्षणंशिराकण्ठयोरपिग्रहणम् ॥ आक्षिपतिकम्पयतितदा समानवःविष्टब्धाक्षःस्तब्धनेत्रःभग्नपार्श्वःभग्नइवपार्श्वेयस्यसः ॥ ५२२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...ाम का लक्षण ॥

... उंगली ढकने ... ,हृदय ... ओर गलेमें स्थित बढ़ीहुई वायु जब इन स्थानों की स्नायु शिरा तथा करा... की कुपित क... हैं तब मनुष्य के नेत्र तथा जावडे सब जकड जाते हैं पसलियां ... जाती हैं क... वमन होताहै और भीतर धनुष के समान मनुष्य झुक जाताहै इसको अन्तरा... ते हैं ॥ ५२२ ॥ अथ बाह्यायामस्यलक्षणमाह ॥

...हेतुर्बलीवायुःसशिराःस्नायुकण्डराः । मन्यापृष्ठाश्रिताबाह्याःसंशोष्यानामयेद्व ...ः ॥ यत्रतंबहिरायामंप्रवदन्तिभिषग्वराः । तमसाध्यंबुधाःप्राहुर्वक्षःकट्यूरुभञ्जनम् ॥ तत्रापियोवक्षःकट्यूरून् भुनक्ति संमर्दयतितमसाध्यंप्राहुः ॥ ५२३ ॥

...बाह्यायामका लक्षण ॥

बडे कारणों से कुपित बलवान् वा... शि... ,स्नायु,कण्डरा और गलेके पीछेकी नसको सुखाकर बाहर की ओर मनुष्य को झुकातीहै ... में जो छाती कमर तथा जंघाओं में टूटने की सी पीड़ा होय तो इसको असाध्य जानना ...

तयो... चिकित्सामाह ॥

बाह्यायामेऽन्तरायाम... विधेयार्दितवत्क्रिया ॥ ५२४ ॥

बाह्यायाम और ...न्तरायाम की चिकित्सा ॥

अन्तरायाम और बाह्यायाम में श्रेष्ठ वैद्य ...र्दितरोग कीसी चिकित्सा करनी चाहिये ॥५२४॥

अथ धनुस्त...म्भस्यलक्षणमाह ॥

धनुस्तुल्योनमेद्यस्तुसधनुस्तम्भसंज्ञितः । विवर्णोबद्धवदनःस्रस्ताङ्गोनष्टचेतनः ॥ प्रस्विद्यंश्चधनुस्तम्भोदशरात्रं न जीवति । अन्तरायामेऽगुल्यादिष्वाक्षेपस्तब्धाक्षत्वादिकंचभवति ॥ धनुस्तम्भेतुधनुर्वत्नमनमात्रमित्येतयोर्भेदः । विवर्णबद्धवदनःबद्धोऽत्र चिबुकस्यज्ञेयः ॥ ५२५ ॥ धनुस्तंभका लक्षण ॥

जिस रोगमें मनुष्य धनुषके समान झुकजाय उसको धनुस्तंभ कहते हैं विवर्ण ठोढ़ी के जकडने से युक्त शिथिलांग चैतन्यतारहित और स्वेदयुक्त धनुस्तंभवाला दशरात्रि में मरजाताहै अन्तरायाम रोग में उंगली आदिकों में कम्प तथा नेत्रादिकों में स्तब्धता होतीहै और धनुस्तंभमें केवल धनुष के समान झुकनाही होताहै यही इन दोनों में भेदहै ॥ ५२५ ॥

अथ कुब्जस्यलक्षणमाह ॥

हृदयंयदिवापृष्ठमुन्नतंक्रमशःसरुक् । क्रुद्धोवायुर्यदाकुर्यात्तदातंकुब्जमादिशेत् ॥ यदेत्युक्त्वायदिवेतिविकल्पार्थस्तेननपुनरुक्तिदोषः । ननुअन्तरायामःक्रोडनतोभवति ॥ बहिरायामःपृष्ठतोभवतिताभ्यामस्यकोभेदःउच्यते । अन्तरायामबहिरायामयोःप्रकृतस्यवान्तःशरीरस्यबहिःशरीरस्यचनमनमत्रतुहृदयंपृष्ठंवाशरीराद्बहिर्भवतीतिभेदः ॥५२६॥

कुब्जका लक्षण ॥

जो कुपित वायुके द्वारा हृदय अथवा पीठ पीडासहित क्रमसे ऊंचेहोयँ तो उसको कुब्ज कहते हैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अब यह सन्देह होता है कि अन्तरायाम हृदयकी ओर ... पीठ की ओर झुका हुआ होताहै तो इन दोनों में और कुब्जमें क्या भेद है? इसका उत्तर यह है कि अन्तरायाम ... याममें स्वभावही से भीतरका और बाहरका शरीर झुकाहुआ होता है और कुब्जमें ... अथवा पीठ शरीर से बाहर निकली हुई होतीहै ॥ ५२६ ॥

अथ तस्यचिकित्सामाह ॥

बाह्यायामेऽन्तरायामेधनुःस्तम्भेचकुब्जके। योज्यंप्रसारणीतैलंतेनतेषांशमोभवेत्॥ तव्याधिषुसामान्यायाःक्रियाःकथिताःपुरा।कर्त्तव्याएवताःसर्वास्तैलमेतद्विशेषतः ५२७

कुब्ज की चिकित्सा ॥

बाह्यायाम,अन्तरायाम,धनुस्तंभ और कुब्जरोग में प्रसारणी तैल उपकारी होताहै वातव्याधियों में जो सामान्य चिकित्सा पहले कही गई हैं वह संपूर्ण इस रोग में भी करनी चाहिये और प्रसारणी का तैल विशेष करके काम में लाना चाहिये ॥ ... चिकित्सा ...

... कस्य लक्षणमाह ॥

... ऽसमिथ्येम ॥ ...

क्रुद्धःस्वैःकोपनैर्वायु... दूर्ध्वं प्रपद्यते । पीडयन्हृदयंगत्वाशिरःशङ्खौचपीडयन्॥ धनुर्वन्नमयेद्गात्राण्याक्षि... मोहयेत्तथा । सकृच्छ्रादुच्छ्वसेदुच्चैःस्तब्धाक्षोऽथनिमीलकः ॥ कपोतइवकूजेच्चनिःसंज्ञःसोऽपतन्त्रकः । स्थानात्पक्वाशयादूर्ध्वंशिरउद्दिश्यआक्षिपेत् चालयेत्अथनिमीलकः ॥ अथवानिमीलिताक्ष... निभवन्तिसोऽपतन्त्रकः ॥ ५२८ ॥

अपतंत्रक का लक्षण ॥

जिस रोग में अपने कारणों से कुपित वायु पक्वाशयसे शिरकी ओर जाकर हृदय,मस्तक तथा कपाल की हड्डियों को पीडित करती हुई शरीर को धनुष के समान झुकावे कंप तथा मोह उत्पन्न होवे दोनों नेत्र स्तब्ध होयँ अथवा बन्द होजावें बहुत कष्ट के साथ श्वास निकले और रोगी संज्ञा रहित होकर कबूतर के समान अव्यक्त शब्द करे उसको अपतन्त्रक कहते हैं ॥ ५२८ ॥

तस्यचिकित्सामाह ॥

अथापतंत्रकेणार्त्तमातुरंनापतर्पयेत्।निरूहबस्तिवमनंसेवयेन्नकदाचन॥ श्वसनाःकफवाताभ्यांरुद्धास्तस्यविमोक्षयेत् । तीक्ष्णैःप्रधमनैःसंज्ञातासुमुक्तासुविन्दति ॥ श्वसनाः प्रश्वासोच्छ्वासवहाधमनीः । मरिचंशिग्रुबीजानिविडङ्गाश्चफणिज्जकम् ॥ एतानिसूक्ष्म चूर्णानिदद्याच्छीर्षविरेचने । फणिज्जकोमरुवकः ॥ इति मरिचादिनस्यम् ॥ ५२९ ॥

अपतन्त्रक की चिकित्सा ॥

अपतन्त्रक रोगवाला मनुष्य. अपतर्पण, निरूहवस्ति और वमनको कभी न करे कफ तथा वायु के द्वारा रुकी हुई श्वास प्रतिश्वासकी लेचलनेवाली नाडियों को तीक्ष्ण चूर्णको नासिका में देने से खोले इनके खुलजाने पर चैतन्यता आजाती है मिर्च, सहँजने के बीज, बायबिडंग और मरुआ इन सबको पीसकर नासलेने से अपतन्त्रक का नाश होताहै इति मरिचादिनस्य ५२९ ॥

हरीतकीवचारास्नासैन्धवंसाम्लवेतसम् । घृतमार्द्रकसंयुक्तमपतन्त्रकनाशनम् ॥ अम्लवेतसकाभावेचुक्रंदातव्यमीरितम् ॥ ५३० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हड़, बच, रासना, धाने ... तबको घी और अदरक के साथ ... न करने से अपत-
... क का नाश ... यहां ... त न मिलै तो चूक डालना चाहिये ॥ ५३० ॥

...पतानकस्यलक्षणमाह ॥

दृष्टिंसं...भ्यसञ्ज्ञांचहृ...ण्ठेनकूजति । हृदिमुक्तेनरःस्वास्थ्यंयातिमोहवृतेपुनः ॥ ग...रुणंप्राहुरेकेतमपतानकम् । गर्भजातनिमित्तश्चशोणितातिस्रवाच्चयः ॥ अभि...ानिमित्तश्चनसिद्ध्यत्यपतानकः । दृष्टिंरूपग्रहणशक्तिंसंस्तभ्यनाशयित्वा ॥ ५३१ ॥

अपतानक का लक्षण ॥

जिस रोगमें देखने की शक्ति तथा ...ानका नाशहोकर गले से अव्यक्तशब्द निकले और वायु के द्वारा हृदय के ढके होनेपर मोह होय ...र हृदय से वायु के हटजाने पर स्वस्थता होवे इसको अत्यन्त भयंकर अपतानक रोग कहते हैं जो ग... ब... रुधिर का बहना अथवा चोट से अपतानक हुआ होवे उसको असाध्य जानना चाहिये ॥ ५३१ ॥

अथ तस्यचिकित्सा ॥

अथापतानकेनार्त्तमस्रुताक्षमवेपनम् । अखट्वापा...यासमुपाचरेत् ॥ अपतानकिनेशस्तंदशमलीशृतंजलम् । पिप्पलीचूर्णसंयुक्तंजीर्णेमांसरसौदनम् ॥ तैलेनमर्दनंचैवतथातीक्ष्णंविरेचनम् । स्रोतोविशोधनंपश्चात्सर्पिःपानंहितंस्मृतम् ॥ हन्त्यभुक्तवतांपीतमम्लंदध्यपतानकम् । मरिचेनसमायुक्तंस्नेहबस्तिरथापिवा ॥ ५३२ ॥

अपतानक की चिकित्सा ॥

अपतानक रोगवाले को जो नेत्रों से जलबहना कम्प तथा मूर्च्छा यह सब न उत्पन्न हुये होवें वह शीघ्रही उसकी चिकित्सा करे दशमूल के काढ़े में पीपलका चूर्ण डालकर पियै फिर उस के पचजाने पर मांस के रसके साथ भातखाय इससे अपतानक रोग नष्टहोताहै तैलमर्दन तीक्ष्णविरेचन पीछे से स्रोतों के शुद्ध करनेवाले घीका पीना अपतानक में हितकारीहै भोजन के पहिले मिर्चयुक्त खट्टे दही के पीनेसे अथवा स्नेहबस्ति लेने से अपतानक का नाश होताहै ॥ ५३२ ॥

अथ पक्षाघातस्यलक्षणमाह ॥

गृहीत्वार्द्धंतनोर्वायुःशिराःस्नायुर्विशोष्यच । पक्षमन्यतमंहन्तिसन्धिबन्धान्विमोक्षयन् ॥ कृत्स्नोर्द्धकायस्तस्यस्यादकर्मण्योविचेतनः । एकांगवातन्तंकेचिदन्येपक्षवधंविदुः ॥ अर्द्धअर्द्धनारीश्वरवत्पक्षबाहुपार्श्वोरुजङ्घादिभागम् । अन्यतमंवामंदक्षिणंवाविमोक्षयन्शिथिलीकुर्वन्अकर्मण्यःकर्मासमर्थःविचेतनःईषत्स्पर्शादिज्ञानयुक्तः ॥ ५३३ ॥

पक्षाघात का लक्षण ॥

कुपित वायु शरीरके आधे भाग कोग्रहण करके और शिरा तथा स्नायु को सुखाके संधि बंधनों को शिथिल करती हुई शरीर के दक्षिण अथवा वामभाग में से एकपक्ष (भुजा, पसली, जंघा तथा पिंडली आदिक) को नष्ट करतीहै इसरोगमें शरीरका संपूर्ण आधाभाग कार्यकरने में असमर्थ और कुछ स्पर्श आदिकेज्ञानसे युक्तहोता है इसरोगकोकोई एकांग वात और कोई पक्षाघातकहते हैं ५३३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ साध्यासाध्य...

दाहसन्तापमूर्च्छाःस्युर्वायौपित्तसमन्विते । शैत्यशो... ...वानित... ...फावृते ॥ दाहोबाह्यःसन्तापःआभ्यन्तरः । एतल्लक्षणमन्यत्रापिवातव्याधौवोद्धव्यं ...यतोत्र यावितिनिर्दिष्टत्वात्पक्षाघातस्यसाध्यत्वादिकमाह । शुद्धवा...हतंपक्षंकृच्छ्... ...दुः । साध्यमानेनयुक्तमसाध्यंक्षयहेतुकम् ॥ शुद्धःकेवलः । अन्येनपित्तेनकफेन... तुकंक्षयोधातुक्षयस्तत्कुपितवातनिमित्तकम् ॥ अपरमसाध्यलक्षणमाह । गर्भिणीसू... काबालवृद्धक्षीणेष्वसृक्क्षये ॥ पक्षाघातंपरिहरेद्वेदनारहितोयदि । वेदनारहितोयदीति भिन्नमसाध्यलक्षणम् ॥ ५३४ ॥

पाक्षाघात के साध्यासाध्य के ल... ॥

पित्तयुक्त वातजनित पक्षाघातमें शरीर में ... मूर्च्छाहोती है और कफ युक्त वातजनित पक्षाघात में शीत... ...रीपन होताहै केवलवात जनित पक्षाघात कृच्छ्र साध्य कफ अथवा पित्तयुक्त ... ...क्षाघात साध्य और धातुक्षय से कुपित वात जनित पक्षाघात असाध्य होताहै गर्भिणी ...का बालक वृद्ध और रक्तक्षयवाले मनुष्यों का पक्षाघात असाध्य है औरपीडा रहित पक्षाघात भी असाध्य होताहै ॥ ५३४ ॥

तस्यचिकित्सा ॥

माषात्मगुप्तोवातारिवाट्यालकजटाशृतम् । हिंगुसैन्धवसंयुक्तंपक्षाघातंविनाशयेत् ॥ माषिकेहिंगुसिन्धूत्थेजरणाद्यास्तुशाणिकाः । माषादिक्काथः ॥ ५३५ ॥

पक्षाघात की चिकित्सा ॥

उर्द किवांच अरंड की जड सहदेई और जटामांसी इन सब के काढे में हींग तथा सेंधानोन माशे २ भरडालकर पीने से पक्षाघात का नाशहोताहै इति माषादि क्काथ ॥ ५३५ ॥

ग्रन्थिकाग्निकणाशुण्ठीरास्नासैन्धवकल्कितम् । माषक्काथशृतंतैलंपक्षाघातंव्यपोहति ॥ ग्रन्थिकादितैलम् ॥ ५३६ ॥

पिपलामूल चीता पीपल सोंठ रासना तथा सेंधानोन इन सबके कल्क के साथ उर्द का काढा डाल कर परिपाक किये हुय तेलके सेवनसे पक्षाघात का नाशहोताहै इति ग्रंथिकादि तेल ॥ ५३६ ॥

माषात्मगुप्तातिविषारुवूकचरास्नाशताह्वालवणैःसुपिष्टैः । चतुर्गुणेमाषवलाकषाये तैलंशृतंहन्तिहिपक्षघातम् ॥ इतिमाषादितैलम् ॥ ५३७ ॥

उर्द किवांच के बीज अतीस रेंडी रासना सतावर और सेंधानोन इन सबका कल्क तिल्लकातेल और तेल का चौगुना उर्द तथा बरियारे का काढा इन सब के साथ विधिपूर्वक पाक किये हुए तेलको सेवन से पक्षाघात का नाशहोताहै इति माषादि तैल ॥ ५३७ ॥

अथ सर्वांगवातस्यलक्षणमाह ॥

सर्वांगपवनेक्रुद्धेगात्रस्फुरणभञ्जने । वेदनाभिःपरीताश्चस्फुटन्तीचास्यसन्धयः ॥ सन्धयोवेदनापरीतायुतास्फुटन्तीच ॥ ५३८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...र्वाङ्ग वातका लक्षण ॥

सम्पूर्ण ... हनेवाले ...तके कुपित होने से शरीर फड़कताहै तथा पीडायुक्त होताहै और सन्धि ...डा हो कर संधि फड़कता है ॥ ५३८ ॥

अथ तस्यचिकित्सामाह ॥

...गतमेकाङ्गगतञ्चापिसमीरणम् । तैलावगाहनंहन्तितोयवेगमिवाचलः ॥५३९॥

सर्वाङ्ग वातकी चिकित्सा ॥

जैसे पर्वत से जलके वेगका नाश होताहै उसी प्रकार वातनाशक तेलों के मँझाने से सर्वाङ्ग और एकाङ्ग वातका नाश होजाताहै ॥ ५३९ ॥

अथ स्थानन...लक्ष्यलक्षणान् वातव्याधीनाह ॥

स्थाननामानुरूपैश्चलिंगैः... ...र्दिशेत् । सर्व्वेष्वेतेषुसंसर्गंपित्ताद्यैरुपलक्षयेत् ॥ प्रथमंह्रस्वकेशत्वंततोवाचालतापच । ...र्श्वशूलञ्चपुरीषस्यातिगाढता ॥ तथामलाप्रवृत्तिश्च कम्पस्तम्भश्चरूक्षता ॥ काश्यं... ...त्यञ्चलोमहर्षोव्यथातथा ॥ तोदोभेदःशिरास्फूर्तिरंगमर्दोऽङ्गशुष्कता । सङ्कोचश्च... ...भ्रंशोमोहश्चञ्चलचित्तता ॥ निद्रानाशःस्वेदनाशोबलहानिश्चभीरुता । शुक्रक्षयोरजोनाशोगर्भनाशःपरिश्रमः ॥ आटोपोगुडगुडाशब्दस्तोदःसूचीव्यधनेनेवपीडाभेदोविदारणेनेवव्यथा । अङ्गविभ्रंशः अंगस्यस्थानत्यागेनसबलत्वंनिद्रानाशोनिद्राल्पत्वमपिगर्भनाशः आमगर्भपातः गर्भशय्यायांवाताधिष्ठानाद्गर्भाग्रहणमितिजैय्यटः । परिश्रमःआयासंविनाश्रमः ॥५४०॥

स्थान और नामके अनुसार लक्षणवाली वातव्याधियों का वर्णन ॥

जो वातव्याधि यहां नहीं कहीगई हैं वह स्थान तथा नामके अनुरूप लक्षणोंसे जाननी चाहिये और इन सबमें पित्त आदिकोंके संसर्ग का भी निर्धार करना चाहिये बालों की अल्पता (गंजापन) आटोप (गुडगुडशब्द) पार्श्वशूल, मलकी कठिनता, मलका न निकलना, कंप, स्तंभ, रूक्षता, कृशता, कृष्णता, शीत, रोमांच, व्यथा, सुई गडाने कीसी पीडा, फटने कीसी पीडा, नसोंका फड़कना, अंगमर्द, अंगोंका सूखना, संकोच, अंग विभ्रंश (अंगोंका अपने स्थानसे हटना) मोह, चित्तकी चंचलता, निद्रा की कमी, स्वेदनाश, बलहानि, भीरुता, शुक्रक्षय, रजोनाश, गर्भपात और विना परिश्रमके श्रम मालुम होना यह सब स्थान तथा नामके लक्षणवाले रोगहैं ॥ ५४० ॥

अथ तेषांचिकित्सामाह ॥

सामान्यवातरोगाणांयाचिकित्साप्रचक्षते।एषांसैवविधातव्यातयैतेयांतिसंक्षयम् ५४१॥

इनकी चिकित्सा ॥

सामान्य वातरोगों में जो चिकित्सा कही गई है उसीसे यह सम्पूर्ण रोग शान्त होते हैं ५४१ ॥

एवंविधानिरूपाणिकरोतिकुपितोऽनिलः । हेतुस्थानविशेषेणभवेद्रोगविशेषकृत् ॥ एवंविधानिरूपाणिशिरोग्रहादीनि।अशीतिहेत्वित्यादिहेतुविशेषःपित्तश्लेष्माद्यावृतत्वादिः । यथाश्लेष्मावृतोवायुःमन्यास्तम्भंकरोतिस्थानविशेषःकोष्ठादिः ॥ यथातत्रकोष्ठाश्रितेनिग्रहोमूत्रवर्चसोरित्यादि ॥ ५४२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुपित वायु इस प्रकारके पूर्वोक्त शिरोग्रह आदिक रोग ... विशेष (पित्त तथा कफादिकों से युक्तहोना जैसे कफयुक्त वायु मन्यास्तंभको करती है) और स्थान विशेष (कोष्ठ आदि जैसे कोष्ठमें स्थित वायु के दूषित होनेपर मल मूत्र का रुकना आदि होताहै) से उत्पन्न करती है ॥

तत्रहेतुविशेषेणवातव्याधिविशेषोयथा ॥

उदानेपित्तसंयुक्तेदाहोमूर्च्छाभ्रमःक्लमः । अस्वेदहर्षौमन्दाग्निःशीतताचकफावृते ॥ प्राणेपित्तावृतेछर्दिर्दाहश्चैवोपजायते । दौर्बल्यंसदनंतन्द्रावैरस्यञ्चकफावृते ॥ प्राणोहृदयाश्रयोवायुः । स्वेदोदाहस्तृषामूर्च्छासमानेपित्तसंयुते ॥ कफेनसक्तेविण्मूत्रेगात्रहर्षश्च जायते । कफेनसंयुक्तेसमानेविण्मूत्रेसक्तेऽवरुद्धेभवतःगात्रहर्षोरोमाञ्चः ॥ अपानेपित्तसंयुक्तेदाहौष्ण्यंरक्तमूत्रता । अधःकायेगुरुत्वञ्चशीतता ... कफावृते ॥ गुदाश्रयोऽपानः । व्यानेपित्तावृतेदाहोगात्रविक्षेपणंक्लमः ॥ ... दण्डकश्चापिशूलशोथौकफावृते । दण्डकःआक्षेपकभेदः ॥ ... ऽसामर्थ्यम् ॥

हेतु विशेषसे वातव्याधि विशेष ॥

उदान वायु के पित्त युक्त होने पर दाह, मूर्च्छा, भ्रम तथा ग्लानि होती है और कफयुक्त होने पर स्वेदका न होना, रोमांच, मन्दाग्नि तथा शीत होताहै. प्राण वायुके पित्तयुक्त होनेपर छर्दि तथा दाह होताहै. और कफयुक्त होने पर दुर्बलता, शिथिलता, तन्द्रा तथा मुख में विरसता होती है. समान-वायु के पित्त युक्त होने पर स्वेद, दाह, तृषा तथा मूर्च्छा होती है. और कफयुक्त होने पर मल, मूत्र का अवरोध तथा रोमांच होते हैं. अपानवायु के पित्त युक्त होने पर दाह, उष्णता तथा मूत्र में रक्तता होतीहै. और कफयुक्त होनेपर शरीरके नीचेके भागमें भारीपन तथा शीतलता होती है व्यान वायु के पित्तयुक्त होने पर दाह, अंगोंका पटकना तथा ग्लानि होतीहै. और कफयुक्त होनेपर स्तंभ, दंडकशूल तथा सूजन होती है ॥ ५४३ ॥

अथ तेषांचिकित्सामाह ॥

वातेसपित्तेकुर्वींवातपित्तहरींक्रियाम् । सकफेतत्रकुर्वीतवातश्लेष्महरींक्रियाम् ५४४॥

इनकी चिकित्सा ॥

पित्तसंयुक्त वायुमें वातपित्तनाशक और कफयुक्त वायुमें वातकफनाशक चिकित्साकरनीचाहिये५४४॥

अथ रसादिधातुगतानांवातानांलक्षणान्याह ॥

त्वग्रूक्षास्फुटितासुप्ताकृशाकृष्णा च तुद्यते । आतन्यतेसरागा च सर्वरुक्त्वग्गतेऽनिले ॥ सर्वरुक्सप्तत्वग्व्यथात्वग्गतेत्वक्शब्देनात्ररसउच्यते । त्वगाधारत्वंचाततेनरसगते त्यर्थः ॥ ५४५ ॥ रसादि धातुओं में प्राप्त होनेवाली वायु के लक्षण ॥

रसधातुमेंकुपित वायुके प्राप्तहोनेपर रूखी, फटीहुई स्पर्शके ज्ञानसे रहित, कठोर, कृष्ण अथवा रक्तवर्ण सुईगडनेकी सी पीडासेयुक्त तथा फैलीहुई त्वचा होतीहै और सातोंत्वचाओंमें पीडा होती है ॥५४५॥

रुजस्तीव्राःससन्तापोवैवर्ण्यंकृशतारुचिः । गात्रेचारूंषिभुक्तस्यस्तम्भश्चासृग्गतेऽनिले ॥ अरूंषिव्रणानिभुक्तस्यभुक्तेत्यत्राध्यवसितादित्वात्कर्त्तरिक्तः । तेनभुक्तवतस्तम्भः सन्तर्पणेनरक्तवृद्धेः ॥ ५४६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...रुधिर धातुमें कुपित वायुके प्राप्त होनेपर अत्यन्त पीड़ा, सन्ताप, विवर्णता, कृशता, अरुचि, शरीर में घाव और भोजन करने पर स्तब्धता होजातीहै ॥ ५४६ ॥

गुर्वङ्गं तुद्यतेऽत्यर्थं दण्डमुष्टिहतं यथा । सरुक्स्तमितमत्यर्थं वाते मांससमाश्रिते ॥ दण्डमुष्टिपीडितमिव तुद्यते स्तिमितं निश्चलमित्यर्थः । मांसमेदसोर्गतवातयोरेकलिंग ...दूरान्तरेण ॥ प्रत्यासत्तेराश्रयाभावात् । तथा मेदःश्रितः कुर्याद्ग्रन्थीन्मन्दरुजोव्र...णान् ॥ तथा मेदःश्रितः मांसगतवत् । अदूरेण प्रत्यासत्तेरस्थिरूपाया मेदाश्च कुर्याद्ग्रन्थी...त्यादिर्विशेषः ॥ ५४७ ॥

मांस धातुमें कुपित वायुके प्राप्त होनेपर शरीर में भारीपन, स्तम्भ, लाठी अथवा घूसोंकी चोटकी सी पीड़ा और शरीरमें पीड़ायुक्त निश्चलता होतीहै वायु के मेदमें प्राप्त होनेपर भी मांस में स्थित वायुकेसे लक्षण होते हैं और विशेषता यह है कि शरीरमें ग्रन्थि घाव तथा थोडीसी पीड़ा होतीहै ५४७॥

भेदोऽस्थिपर्वणां सन्धिशूलं मांसबलक्षयः । अस्वप्नं सतता रुक्च वाते दुष्टेऽस्थिसंस्थिते ॥ वाते मज्जगते पीडा न कदाचित्प्रशाम्यति । मज्जगतेऽस्थिगतवत् ॥ ५४८ ॥

अस्थि धातुमें कुपित वायु के प्राप्त होनेपर हड्डी तथा पोरुओं की संधियोंमें पीड़ा, मांस तथा बल का नाश निद्रा की कमी और सदैव पीडा होती है मज्जागत वायु में भी यही लक्षण होते हैं और उसकी पीड़ा कभी शान्त नहीं होतीहै ॥ ५४८ ॥

क्षिप्रं मुञ्चति बध्नाति शुक्रं गर्भमथापि वा । विकृतिं जनयेच्चापि शुक्रस्थः कुपितोऽनिलः ॥ शुक्रं बध्नाति स्खलयत्येवन गर्भं क्षिप्रं मुञ्चति । आममेव पातयति बध्नाति मूढं करोति वात दुष्टः शुक्रारब्धत्वाद्विकृतिं शुक्रस्य वर्णान्तरत्वादिरूपां गर्भस्याविकृताङ्गत्वादिरूपाञ्जनयति ॥ ५४९ ॥

शुक्र धातु में कुपित वायु के प्राप्त होने पर बहुत शीघ्र वीर्य्यपात अथवा वीर्य्यका थँभना होताहै स्त्रियोंका गर्भपात अथवा गर्भ सूखजाता है और वीर्य्य अथवा गर्भ में विकार उत्पन्न होताहै ५४९॥

अथ तेषां चिकित्सामाह ॥

वायौ त्वगाश्रिते स्नेहाभ्यंगं स्वेदञ्च कारयेत् । रक्तस्थे शीतलाँल्लेपान्विरेकं रक्तमोक्षणम् ॥ मांसमेदोगते वाते सविरेकं निरूहणम् । अस्थिमज्जगते स्नेहं बहिरन्तश्च योजयेत् ५५० ॥

इनकी चिकित्सा ॥

रसगत वायु में तैलमर्दन तथा स्वेद करना चाहिये रक्तगत वायुमें शीतललेप, विरेचन तथा रुधिर निकलवाना अच्छाहै मांस तथा मेद गत वायु में विरेचन तथा निरूहबस्ति देनीचाहिये और अस्थि तथा मज्जागत वायुमें शरीरके भीतर तथा बाहर तैलादि स्नेहका व्यवहार करनाचाहिये ५५०

केतकनागबलातिबलानां यद्बहुलेन रसेन विपक्वम् । तैलमनल्पतुषोदकसिद्धं मारुतमस्थिगतं विनिहन्ति ॥ इति केतकादितैलम् ॥ ५५१ ॥

केतकी, गुलशकरी तथा बरियारा इनके रस और चावलों की भूसीके जल के साथ पाक किया गया तेल हड्डियों में घुसीहुई वायुका नाश करताहै इति केतकादि तैल ॥ ५५१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हर्षोऽन्नपानंशुक्रस्थेबलशुक्रक... ॥

शुक्रगत वायुमें मनकी प्रसन्नता और बल तथा वीर्यका... की सेवन ... ५५२ ॥

अथ स्थानविशेषेण वातव्याधिविशेषोयथा। तत्रकोष्ठगतस्य वातस्यलक्ष...माह ॥

वातेकोष्ठाश्रितेदुष्टेनिग्रहोमूत्रवर्च्चसोः। ब्रध्नहृद्रोगगुल्मार्शः पार्श्वशूलंचजायते ५५३॥

स्थानविशेषसे वातव्याधि विशेष। कोष्ठगत वायुका लक्षण ॥

कोष्ठमें दूषित वायुके प्राप्त होनेपर मूल, मूत्र का रुकना, ब्रध्न, हृदय के रोग, गोला, बवासीर और पसलियों में पीड़ा होती है ॥ ५५३ ॥

अथ कोष्ठलक्षणमाह ॥

स्थानान्यामाग्निपक्वानांमूत्रस्यरुधिरस्यच। हृदुन्द्रकःफुप्फुसश्चकोष्ठइत्यभिधीयते ॥ उन्द्रकःपोठइतिलोके ॥ एतेनकोष्ठशब्देनसर्वेप्याशयाःकथ्यन्ते। तथापिविशेषार्थमामाशयादिगतवातलक्षणान्यपिपृथग्वक्ष्यन्ते ५५४ ॥

कोष्ठका लक्षण ॥

आमाशय, अग्न्याशय, पक्वाशय, मूत्राशय, रुधिराशय, हृदय, उन्द्रक और फुप्फुस इन सबको कोष्ठ कहते हैं यद्यपि कोष्ठ शब्द से संपूर्ण आशयों का ग्रहण होताहै तथापि विशेषताके लिये आमाशय आदिकोंमें गई हुई वायु के लक्षण अलग २ कहेंगे ॥ ५५४ ॥

अथ तस्यचिकित्सामाह ॥

पाचनीयैरसैर्युक्तैरन्यैर्वापाचयेन्मलान्। विशेषतःपिबेत्क्षीरंनरःकोष्ठगतेऽनिले ५५५ ॥

कोष्ठगत वायुकी चिकित्सा ॥

कोष्ठगतवायु में पाचन औषधों के द्वारा पाक किये गये मांसके रसों से अथवा अन्य पाचन औषधियों से दोषों का पाककरे और इसमें विशेष करके दूधपीना चाहिये ॥ ५५५ ॥

अथामाशयगतस्यवातस्य लक्षणमाह चरकः ॥

हृत्पार्श्वोदरनाभीरुक्तृष्णोद्गारविसूचिकाः[1]। कासःकण्ठस्यशोषश्चश्वासश्चामाशयेऽनिले ॥ ५५६ ॥ आमाशयमें प्राप्त वायुके लक्षण ॥

दूषित वायुके आमाशय में प्राप्तहोनेपर हृदय, पसली, उदर तथा नाभिमें पीड़ा, तृषा, डकार, विसूचिका, खांसी, गला सूखना और श्वास यह रोग उत्पन्नहोतेहैं ॥ ५५६ ॥

अथामाशयस्यलक्षणमाह चरकः ॥

नाभिस्तनान्तरंजन्तोराहुरामाशयंबुधाः। इति ॥ ५५७ ॥

आमाशय का लक्षण ॥

नाभि और स्तनोंके बीच में आमाशय होताहै ॥ ५५७ ॥

अथ तस्यचिकित्सामाह ॥

आमाशयस्थेत्वनिलेप्रशस्तंप्राग्लङ्घनंदीपनपाचनञ्च। प्रच्छर्दनंतीक्ष्णविरेचनंवा मुद्गायवाःशालियुताःपुराणाः। भूतीकपथ्याशटिपुष्कराणिबिल्वामृतादारुकनागराणि।

१ यद्यपि साम्प्रतिकपुस्तकेषु विपूचिकेति पाठोदृश्यते सत्वयोपदेशत्वात्प्रामादिकः सद्भिर्नादर्त्तव्यः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उग्रो...मागधि...विडो... धेरन्त्रयःसामसमीरणघ्नाः ॥ भूतीकःशेषःसुगन्धतृण विशेषस्तद... अभउशीरंग्राह्य... पुष्करमूलम् ॥ दारुकंदेवदारुउग्रावचाविषाऽ तिविषा ॥ ५५८ ॥

आमाशय में प्राप्तवायुकी चिकित्सा ॥

वायुके आमाशय में प्राप्त होनेपर पहले ... फिर दीपन, पाचन औषध देनीचाहिये और वमन ... विरेचन ... भोजनके ... पुराने जौ, चावल तथा मूंग देनीचाहिये भूतीक (सुगं- ...विशेष ... कचर ... पुष्करमूल ... बच । गिलोय, देवदारु तथा सोंठ २ बच, अतीस, पी- ... यह तीनोंकाढ़ आमयुक्त वातका नाश करतेहैं ॥ ५५८ ॥

चित्रकेन्द्रयवौपाठाकटुकातिविषाऽभया । आमाशयोत्थवातघ्नंचूर्णंपेयंसुखाम्बुना ॥ ...ोऽस्मिन्भिषजाग्राह्याःषण्णांषड्धरणाःपृथक् । दिनेषुषट्सुदातव्यास्तेनषड्धरणाःस्मृ ...॥ अत्रषण्णांसमुदितानांषड्धर...नांचूर्णीकृतानामेकस्मिन्नहनिएकटङ्कोदेयः ॥ ... आमाशयगतेवातेछर्दिंश्चापियथाक्रमम् । देयःषड्धरणोयोगःसप्तरात्रंसुखाम्बु ना ॥ अयमर्थः । प्रथमदिवसेवमनंकारयितव्यंततोद्वितीयदिनमारभ्यषड्दिनपर्यन्तं पाठक्रमेणैकैकस्यचूर्णंटङ्कमितंदेयमित्यर्थः । इति षड्धरणोयोगः ॥ ५५९ ॥

चीता, इन्द्रजौ, पाठा, कुटकी, अतीस और हड यह सब औषधी एक २ धरण अर्थात् चार २ माशे लेकर चूर्ण करके गरम जलके साथ प्रतिदिन चार माशे खानेसे आमाशयमें गई हुई वातका नाश होताहै. अन्य प्रकार पहले दिन वमन कराके फिर दूसरे दिनसे छःदिनतक ऊपर कहीहुई औषधियोंमें से एक२ औषधिका चूर्ण ऊपर लिखेहुए क्रमसे चार २ माशे रोज देना चाहिये ॥ इति षड्धरण योग ॥ ५५९ ॥

अथ पक्वाशयगतस्यवातस्यलक्षणमाह ॥

पक्वाशयस्थोऽन्त्रकूजंशूलाटोपौकरोतिच । कृच्छ्रमूत्रपुरीषत्वमानाहंत्रिकवेदनम् ॥ आटोपोवातस्यक्षुब्धत्वम् । नतुगुडुगुडाशब्दस्तस्यान्त्रकूजनोक्तत्वात् ॥ ५६० ॥

पक्वाशय में गईहुई वायुके लक्षण ॥

दूषित वायु के पक्वाशयमें प्राप्त होनेपर पेटमें गडगडाहट, शूल, वायुका कोप, मूत्रकृच्छ्र, मलका रुकना, आनाह और त्रिकमें पीडा यह रोग उत्पन्न होते हैं ॥ ५६० ॥

अथ तस्यचिकित्सामाह ॥

वह्नेःसंवर्द्धनंकार्य्यंकर्मोदावर्त्तकंतथा । देयःस्नेहविरेकश्चपक्वाशयगतेऽनिले ॥ वाते जठरगेदद्यात्क्षारचूर्णादिदीपनम् । शुण्ठीकुटजबीजाग्निचूर्णंकोष्णाम्बुकुक्षिगे ॥ ५६१ ॥

पक्वाशयमें गईहुई वायुकी चिकित्सा ॥

वायुके पक्वाशयमें प्राप्त होनेपर अग्निवर्द्धक तथा उदावर्त्तनाशक चिकित्सा करनी चाहिये और स्नेहके द्वारा विरेचन देना चाहिये उदरगत वायुमें क्षार तथा चूर्ण आदिक दीपन वस्तु देनीचाहिये कुक्षिगत वायुमें सोंठ, इन्द्रजौ तथा चीतेके चूर्णको कुछ गरम जल के साथ सेवनकरे ॥ ५६१ ॥

अथ गुदगतस्यवातस्यलक्षणमाह ॥

ग्रहोविण्मूत्रवातानांशूलाध्मानाश्मशर्कराः । जङ्घोरुत्रिकपार्श्वांसपृष्ठरोगोगुदेऽनिले ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रोगोऽत्ररुजापीडांतेयावत् (अथतस्यचिकित्सा) [illegible] नेगुदगतेदुष्टेकु[illegible] वर्त्तकं हितम् ॥ ५६२ ॥ गुदामें गईहुई वायुके लक्षण [illegible] सा ॥

वायुके गुदामें प्राप्त होनेपर मल, मूत्र तथा वायुका अवरोध, शूल, अफरा, पथरी, शर्करा और जँघा, पिंडली, पसली, कन्धे, त्रिक तथा पीठमें [illegible] ईहुई वायुमें उ[illegible] कही हुई चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ५६२ ॥ [illegible] । कोष्ठगत [illegible]

अथ हृदयवा[illegible]सामाह [illegible]

हृदयानिलनाशायगुडूचींमरिचान्विताम् । पिबेत्प्रातःप्रयत्नेनसु[illegible] पिबेदुष्णाम्भसापिष्टमाश्वगन्धांबिभीतकम् । गुडयुक्तंप्रयत्नेनहृदयानिलनाशनम् ॥ दारुसमायुक्तंनागरंपरिपेषितम् । हृद्गतवेदनायुक्तः पीत्वासुखमवाप्नुयात् ॥ ५६३ ॥ [illegible]

हृदयगत वायु की [illegible] सा ॥

हृदयमें वायुके प्राप्तहोनेपर मिर्चयुक्त गिलोय, कुछ गरम जलके साथ प्रातःकाल पिये- [illegible] बहेडा तथा गुडको एक साथ पीसकर उष्ण जल से पिये अथवा देवदारु तथा सोंठको पीसकर उ[illegible] जल के साथ पिये इससे हृदय में गईहुई वात शान्त होतीहै ॥ ५६३ ॥

अथ श्रोत्रादिगतस्यवातस्य लक्षणमाह ॥

श्रोत्रादिष्विन्द्रियवधंकुर्य्यात्क्रुद्धःसमीरणः (अथ तस्यचिकित्सा) श्रोत्रादिष्वनिलेदुष्टेकार्योवातहरःक्रमः । स्नेहाभ्यंगावगाहाश्चमर्द्दनालेपनानिच ॥ ५६४ ॥

श्रोत्रादिमें प्राप्तहुई वायुके लक्षण और चिकित्सा ॥

कुपितहुई वायु श्रोत्रादि जिस इन्द्रियमें प्राप्तहोती है उसीके कामको नष्ट करती है श्रोत्रादिमें दूषित वायुके प्राप्तहोनेपर वातनाशक प्रयोग और स्नेह, अभ्यंग, स्नान, मर्दन तथा लेपन करनाचाहिये ५६४॥

अथ शिरागतस्यवातस्य लक्षणमाह ॥

कुर्य्याच्छिरागतःशूलंशिराकुञ्चनपूरणम् । सबाह्याभ्यन्तरायामंखल्लींकुब्जत्वमेवच ॥ कुञ्चनंसङ्कोचःबाह्यायामंपृष्ठेननतम् । अभ्यन्तरायामंक्रोडेनतंशूलंशिरायामेवपूरणंस्थूलत्वम् ॥ ५६५ ॥ शिराओं में गईहुई वायुके लक्षण ॥

दूषित वायुके शिराओं में प्राप्त होने पर शिराओंमें शूल, संकोच तथा स्थूलता होती है और आगेकी और तथा पीठ की ओर झुकना, खल्ली तथा कुब्जरोग होताहै ॥ ५६५ ॥

अथ तस्यचिकित्सामाह ॥

स्नेहाभ्यंगोपनाहाश्चमर्द्दनालेपनानिच । वातेशिरागतेकुर्यात्तथाचासृग्विमोक्षणम् ५६६

शिराओं में गईहुई वायुकी चिकित्सा ॥

शिराओंमें वायुके प्राप्त होनेपर तैलादिकस्नेह मर्दन, मलहम, मर्दन, लेप और रुधिर निकलवाना हितकारी है ॥ ५६६ ॥

अथ स्नायुगतस्यलक्षणमाह ॥

शूलमाक्षेपकःकम्पःस्तम्भःस्नायुगतेऽनिलाद्भवेत् (अथ तस्यचिकित्सा) स्वेदोपनाहाग्निकर्मबन्धनोन्मर्द्दनानिच । क्रुद्धेस्नायुगतेवातेकारयेत्कुशलोभिषक् ॥ ५६७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...मे प्राप्त वायुके लक्षण और चिकित्सा ॥

...में दूषित वायुके ... होनेसे शूल, आक्षेप, कम्प और स्तंभ होताहै इसमें स्वेद, मल्हम, सेक, बन्धन और मर्दन करवाना चाहिये ... यह।

...स्य लक्षणमाह ॥

हन्ति... सन्धिगतः ... करोतिच। हन्तिविश्लेषयति (अथ तस्यचिकि ... दाहस्नेह... च। ... इन्द्रवारुणिकामूलंमागधीगुडसंयुतम्। ... धवातंव्यपोहति ॥ ५६८ ॥

सन्धिगत वायुके लक्षण और चिकित्सा ॥

सन्धियोंमें दूषित वायुके प्राप्त होनेपर सन्धियोंके बन्धन शिथिल होतेहैं और शूल तथा सूजन ... ती है सन्धिगत वायुमें दाह, स्नेह ... मल्हम और इन्द्रायण की जड, पीपल तथा गुड इनतीनों ... बराबर मिलाकर एकतोले रोज खानेसे सन्धिगत वायुका नाश होता है ॥ ५६८ ॥

उक्तरोगाणां कृच्छ्रसाध्यत्वमाह ॥

हनुस्तम्भार्द्दिताक्षेपपक्षाघातापतानकाः। कालेनमहतायत्नात्सिध्यन्तिचवानवा ॥ सतेष्वेकःकश्चिन्मुच्यतइत्यर्थःपरंकः सिध्यतियस्तरुणोभवतितथाबलवानुपद्रवरहित इच ॥ ५६९ ॥

ऊपर कहेहुये रोगोंकी कष्टसाध्यता ॥

हनुस्तम्भ, अर्द्दित, आक्षेप, पक्षाघात और अपतानक यह रोग बहुत देरमें बडे यत्नसे चिकित्सा करने से किसी २ बलवान् युवावस्थावाले मनुष्य के उपद्रवरहित होनेपर अच्छे होते हैं ॥ ५६९ ॥

तानेववातोपद्रवानाह ॥

विसर्पदाहरुग्भङ्गमूर्च्छारुच्यग्निमार्द्दवैः। क्षीणमांसबलंवाताघ्नन्तिपक्षवधादयः। वातावातविकाराःकार्य्यकारणयोरभेदोपचारात्। वदितिपाठेतत्रपक्षवधाइतियोज्य म् ॥ शूनंसुप्तत्वचम्भग्नंकम्पाध्मानतिपीडितम्। रुजार्त्तिमन्तञ्चनरंवातव्याधिर्विना शयेत् ॥ ५७० ॥

वायुके उपद्रव ॥

विसर्प, दाह, पीडा, मल, मूत्रका रुकना, मूर्च्छा, अरुचि तथा मन्दाग्नि से क्षीणमांसबलवाले. पक्षाघातादि रोगी मरजाते हैं और सूजन, त्वचाके स्पर्शका ज्ञानरहित होना, अङ्गोंका टूटना, कम्प, आध्मान और बहुत पीडा इनसे युक्त होकर वातव्याधिवाला मनुष्य मरजाताहै ॥ ५७० ॥

इदानींपञ्चविधस्यप्रकृतस्यवायोःकार्य्यलिंगञ्चाह ॥

अव्याहतगतिर्यस्यस्थानस्थःप्रकृतौस्थितः। वायुः स्यात्सोऽधिकंजीवेद्वीतरोगः समाःशतम् ॥ ५७१ ॥

पांचप्रकार की वायुके कार्य्य और चिह्न ॥

जिनकी वायु मार्गों के न रुकने से सब कहीं जानेवाली अपने स्थानमें स्थित और स्वाभाविक होय वह रोगरहित होकर सौ वर्ष से अधिक जीते हैं ॥ ५७१ ॥

अथ वातव्याधीनां सामान्यानिभेषजान्याह ॥

माषस्यार्द्धाढकंदेयंतुलार्द्धंदशमूलतः। पलानित्रिछागमांसस्यत्रिंशद्द्रोणेऽम्भसःपचेत् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चतुर्भागावशेषंतंकषायमवतारयेत् । प्रस्थेद्वेतिलतैलस्य [illegible] चतुर्गुणम् । जी[illegible] यानिमंजिष्ठाचव्यंचित्रककट्फलम् । सव्योषंपिप्[illegible] मलकगोक्षुरम् ॥ आत्म गुप्तातथैरण्डःशताह्वालवणत्रयम् । देवदार्वमृ[illegible] वचाशटी ॥ एतैरक्षमितैःकल्कैःपाचयेन्मृदुनाग्निना । पक्षाघातार्दि[illegible] कोष्ठग[illegible] ॥ क[illegible]शिरःशूलेतिमिरेचत्रिदोषजे । पाणिपादशिरोग्री[illegible] गृध्रस्यामपबाहुके । पानेवस्तौतथा[illegible]दपूरणे ॥ त[illegible]ननस[illegible] तद्विकारनुत् । महामाषादिनामेदंभाषितंमुनिभिःपुरा ॥ इति म[illegible]षादितैल[illegible] दत्तात् ॥ ५७२ ॥

वातव्याधियों की सामान्य औषध ॥

उर्द १२८ तोले दशमूल २०० तोले बकरेका मांस [illegible] तोले इन सबको १०२८ तोले जलमें पाककरे फिर चौथाई बाकी रहजानेपर उतारले इसके उपरान्त यह क्काथ तिलोंका तेल १२८ उसका चौगुना दूध इन सबमें जीवनीयगण मजीठ, चव्य, चीता, कायफल, सोंठ, पीपलामूल, पी[illegible] मिर्च, रासना, आमला, गोखुरू, केवांचकेबीज, रेंडी, सतावर, कालानोन, सेंधानोन, देवदारु, बिटनोन, गिलोय, कूट, असगन्ध, बच और कचूर इन सबको एक २ तोले डालकर मन्दाग्नि में पकावे इसके सेवनसे पक्षाघात, अर्दित, हनुस्तम्भ, कर्णशूल, शिरकीपीडा, तींगुर, त्रिदोष, हाथ पैर तथा ग्रीवाका कंपना, चलनेकी शक्तिका कमहोना, कलापखंज, पंगु, गृध्रसी तथा अपबाहुक यह सब रोग नष्टहोते हैं यहतेल पीने में वस्तिक्रियामें शरीरके मलने में नस्यमें और कर्णआदिकों में छोडने के लिये श्रेष्ठ है इस महामाषादितैलसे सम्पूर्ण वातव्याधियोंका नाश होताहै ॥ इति महामाषादितैल ॥ ५७२ ॥

माषायवातसीक्षुद्रामर्कटीचकुरण्टकः । गोकण्टःटुण्टुकश्चैषांप्रत्येकंपलसप्तकम् ॥ चतुर्गुणाम्बुनापक्त्वापादशेषंशृतंनयेत् । कार्पासकास्थिबदरंशणबीजंकुलत्थकम् ॥ पृथक्चतुर्दशपलंचतुर्गुणजलेपचेत् । कषायंतत्रगृह्णीयाच्चतुर्थांशावशेषितम् ॥ प्रस्थ श्छागमांसस्यचतुःषष्टिपलेजले । प्रक्षिप्यपाचयेद्धीमान्पादशेषंरसंनयेत् ॥ तैलप्रस्थेततःक्काथान्सर्वांस्तान्क्रमशःपचेत् । कल्कद्रव्यैःपचेदेभिरमृताकुष्ठसैन्धवैः ॥ रास्नापुनर्नवैरण्डैःपिप्पल्याशतपुष्पया । बलाप्रसारणीभ्यांच्चमांस्याकटुकयातथा ॥ पृथक्कर्षमितैरेतैःसाधयेन्मृदुनाग्निना । हन्यात्तैलमिदंशीघ्रंवातव्याधीनशेषतः ॥ आक्षेपकंपक्षघातमूरुस्तम्भापबाहुकौ । हस्तकम्पंशिरःकम्पंविश्वाचीमर्दितंतथा ॥ इति द्वितीयमाषादितैलम् । शार्ङ्गधरात् ॥ ५७३ ॥

उर्द, जौ, अलसी, भटकटैया, किवांचके बीज, झिंटी, गोखुरू तथा सोनापाठा इनसबको अट्ठाईस २ तोलेलेकर चौगुनेजलमें पाककरके जब चौथाई बाकीरहै तब छानले कपासकेबीज, बेरसनकेबीज तथा कुलथी इनसबको छप्पन २ तोले लेकर चौगुने जल में पाककरे जब चौथाई बाकी रहै तब छानले ६४ तोले बकरे के मांसको चौगुने जल में पकाकर चौथाई रहने पर छानले गिलोय, कूट, सेंधानोन, रासना, पुनर्नवा, रेंडी, पीपल, सौंफ, बरियारा, गन्धप्रसारणी, जटामांसी तथा मिर्च इन सब औषधियोंका एक २ तोला कल्क ऊपर कहेहुए संपूर्ण काढ़ोंको ६४ तोले तेलमें डालकर विधिपूर्वक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

[illegible]ग्निमें पाककरे इस[illegible] पक्षाघात, ऊरुस्तंभ, अपबाहुक, हाथ तथा शिरकाकँपना, विश्वाची [illegible] दंत आदि [illegible]पूर्ण वातरोग नष्ट होते हैं ॥ इतिद्वितीयमाषादितैलं ॥ ५७३ ॥

अश्वगन्धाबलाबिल्वंपा[illegible] यम् । श्वदंष्ट्रातिबलानिम्बाश्योनाकञ्चपुनर्नवाम् ॥ प्रसारिणीमग्नि[illegible]पलंपृथक् । चतुर्द्रोणेजलेपक्त्वापादशेषंशृतंनयेत् [illegible] तुलाढके [illegible]ह सुश्रुकम् । प्रक्षिपेत्तत्रगोक्षीरंततस्तैलाच्चतुर्गुणम् ॥ [illegible] ॥ वचाचन्दनकुष्ठैलामांसीशैलेयसैन्धवैः । [illegible]वच । [illegible]शतपुष्पेन्द्रदारुभिः । [illegible]चतुष्टयेनैवतगरेणप्रसाधयेत् ॥ तत्तै[illegible]ऽभ्यंगेपानवस्तौ [illegible]योजयेत् । पक्षाघातंहनुस्तम्भंमन्यास्तम्भंगलग्रहम् । कुब्जत्वंबधिरत्वञ्चगतिभंगंकटीग्रहम् । गात्रशोषेन्द्रियध्वंसंशुक्रनाशंज्वरक्षयम् ॥ अन्त्रवृद्धिं कुरण्डञ्चदन्तरोगंशिरोग्रहम् । [illegible]र्श्वशूलञ्चपङ्गुत्वंबुद्धिनाशञ्चगृध्रसीम् ॥ अन्यांश्चविविधान्वातान्हरेत्सर्वांगसंश्रयान् । अस्याःप्रभावाद्बन्ध्यापिनारीपुत्रंप्रसूयते ॥ यथानारायणोदेवोदुष्टदैत्यविनाशनः । तथेदंवातरोगाणांनाशनंतैलमुत्तमम् ॥ इति मध्यमनारायणतैलम् ॥ ५७४ ॥

असगन्ध,बरियारा,बेल,पाटला,दोनोंभटकटैया,गोखुरू,अतिबला, नींब,सोनापाठा,पुनर्नवा,गंधप्रसारिणी तथा अरणी इनसब औषधियों के चालीस २तोले चूर्णकोलेकर ४९६ तोले जलमें पकाकर चौथाई रहजाने पर उतारले फिर यह काढ़ा और २५६ तोले सतावर का रस २५६ तोले तिलका तेल और तेलका चौगुना गौका दूध इन सबमें बच, चंदन, कूट, इलायची, जटामांसी, शिलाजीत, सेंधानोन, असगन्ध, बरियारा, रासना, सौंफ, देवदारु, मुद्गपर्णी, माषपर्णी, शालिपर्णी, पृष्ठपर्णी और तगर इनसबके चार२तोले कल्कको डालकर विधिपूर्वक पाककरे इसतेलको भोजन, अंगमर्दन, पान तथा वस्तिक्रिया में व्यवहार करनेसे पक्षाघात, हनुस्तंभ, मन्यास्तंभ, गलग्रह, कुब्जता, बधिरता, गतिभंग, कँटिग्रह, पार्श्वशूल, अंगोंका सूखना, इन्द्रियध्वंस, वीर्यनाश, ज्वर, राजयक्ष्मा, अंत्रवृद्धि, कुरंड, दन्तरोग, शिरोग्रह, पंगुता, बुद्धिनाश, तथा गृध्रसी आदिक अनेक सर्वांग में होनेवाले वातरोग नष्ट होते हैं इस तेलके प्रभावसे बन्ध्या स्त्री भी पुत्रको उत्पन्न करतीहै जैसे श्रीनारायण संपूर्ण दुष्टदैत्यों का नाश करतेहैं इसीप्रकार यह तैल संपूर्ण वातरोगोंको नष्टकरताहै इति मध्यमनारायणतैल ॥ ५७४ ॥

अथ महानारायणतैलम् ॥

तिलतैलंसमादायचतुराढकसम्मितम् । पञ्चपल्लवकल्केनशोधयेद्दोषशान्तये ॥ तत्राजंदुग्धमथवागव्यंतैलसमंपचेत् । शतावरीरसञ्चापितैलतुल्यंपचेद्भिषक् ॥ दशमूलीबलारास्नाशिग्रूत्पलपुनर्नवाः । शेफालिकानागबलाबलाचैवप्रसारिणी ॥ अश्वगन्धासहचरोदर्भमूलंकरञ्जकः । खदिरंचन्दनंलोध्रंवचाशनपलाशकम् ॥ बकुलैरण्डवरुणशालयुग्मकटम्भराः । शिरीषःशिखरीवासाहिंस्राजम्बूबिभीतकम् ॥ काञ्चनारःकपित्थश्चपारिभद्रःप्रियालकम् । पाषाणभेदःशम्पाकोदुग्धिकादाडिमीफलम् ॥ उदुम्बरःसप्तलाचकन्यकामालतीत्वचम् । मागधीनलमूलञ्चयवकोलकुलत्थकम् ॥ आत्मगुप्तार्क

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कार्पासबीजंवस्त्रादनीस्नुही। केतकीमूलधत्तूरलाङ्गलीग[illegible]॥ चित्रकञ्चमहा[illegible] पञ्चवल्कलमेवच। मुण्डीटेकारिमुसलीहंसपादीविशल्य[illegible] एषांदशपलंभागान् वारिण्यष्टगुणेपचेत्। पादशेषंपरिस्राव्यतत्रतैल[illegible]॥ छागोमेषश्चहरिणएणश्च बहुशृंगकः। श[illegible]शल्यःशिवागोधासिंहोव्य[illegible] वन्यौवराहश्च[illegible]म हिषोघोटकस्तथा। कपिर्बभ्रुर्विडालश्चमूषकश्च[illegible] रीटश्चकोरकः। उलूकोनीलकण्ठश्च[illegible]। गृध्रश्च[illegible] वोऽपिच। कपोतःसारसःक्रौञ्चोवन्यःपारावतस्तथा॥ रोहितोम[illegible] कस्तथा। इल्लीसोगर्गरोवर्मिःक्वथिकाकपिकापिच। महामत्स्यःकच्छपश्चशिशुमारश्च सांकुचिः॥ मकरोघण्टिकाकारस्तदलाभेतुगोधिका। यथालाभममीषाञ्चक्वाथंतैलस्य[illegible] पचेत्॥ रास्नाश्वगन्धामिसिदारुकुष्ठपर्णीचतुष्कागुरुकेसराणि। सिन्धूत्थमांसी[illegible] द्वयञ्चशैलेयकंचन्दनपुष्करञ्च॥ एलासयष्टीतगराब्दपत्रंभृंगोष्टवर्गस्तुवचापलाश स्थौणेयवृश्चीवकचोरकाख्यंमूर्वात्वचंकट्फलपद्मकञ्च। मृणालजातीफलकेतकाख्यं सनागपुष्पंसरलंमुराच॥ जीवन्तिकोशीरवरास्तथैवदुरालभावानरिकानखश्च॥ कैव र्त्तमुस्तार्जुनतिक्तकञ्चवातामखर्जूरकतुम्बराश्च। सधातकीग्रन्थिकपर्पटाश्चपटोलहेमा ङ्कजयन्तिकाश्च॥ त्रायन्तिकालम्बुषशक्रबीजंरसाञ्जनाभात्रिवृतारुणाच। द्राक्षाकणा द्रोणपुनर्नवाश्च कौन्तीकृमिघ्नोहयमारकश्च। नीलोत्पलंपद्मककारवीभ्यांरम्भानलो गोक्षुरकःक्षुरश्च। कङ्कोलकालेयकुसुम्भपुष्पन्तुरुष्ककाश्मीरकसिक्थकञ्च॥ लवंगक पूररसालकाण्डकस्तूरिकाबालकमम्बरञ्च॥ दारु देवदारु पर्णीचतुष्कं शालिपर्णी पृष्ठपर्णी मुद्गपर्णी माषपर्णी केशरः पुन्नागस्तस्य पुष्पं ग्राह्यम्। तदलाभेनागकेसरंग्राह्य म्। शैलेयकं छरीला। चन्दनमत्रश्वेतं पुष्करं पुष्करमूलंतगरस्याप्यलाभेतुकुष्ठंदद्या द्भिषग्वरः। भृंगस्त्वक्। अष्टवर्गालाभे शतावरीविदार्य्यश्वगन्धावाराहीद्विगुणादद्यात्। वाराहिगेठिइतिलोके। पालासी कर्चूरभेदःगन्धपलाशीतिकाश्मीरेप्रसिद्धा तदलाभेक चूरएवदेयः। स्थौणेय गठिवनभेदः। ईषत् सुगन्धि थुनेर इतिलोके। वृश्चीवः श्वेत मूला पुनर्नवा। चोरकः ग्रन्थिपर्णस्यैवभेदः भडिउर इति नैपालदेशे प्रसिद्धः। केत कस्य मूलं पुष्पञ्च दद्यात्। कैवर्तमुस्ताकेवटी मोथा गुडतजी इति च नाम। तिक्तकः किराततिक्तकः वातामं वादाम। हेमाङ्कं धत्तूरस्यफलंमूलंपत्रञ्च। जयन्तिका जैतित्व क्। त्रायन्तिका अत्रलभ्यतएवनअलम्बुषा लज्जालूभेदः। पञ्चाङ्ग। आभा बब्बूलः तस्यत्वक्। अरुणा मञ्जिष्ठाद्रोणःद्रोणपुष्पी पञ्चांगःपुनर्नवा रक्तपुष्पा। हयमार कः करवीरस्तस्यमूलम्। पद्मकं नीलोत्पलादन्योत्पलम्। पद्मकाष्ठमुक्तमेव। कारवी मगरेला। रम्भायाः कन्दम्। क्षुरस्यफलानि सपालकाण्डम्। आण्डी सुगन्धद्रव्यम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कल्[illegible]मीषांविपचेतुसु[illegible]ष्टयकुकर्षयुगोन्मितानाम् । शुभेचनक्षत्रमुहूर्त्तलग्ने
सन्तोष्यविप्रांश्चभिषग्वरां[illegible] ॥ [illegible]पूज्यनारायणनामधेयंदेवंत्रिनेत्रंजगतामधीशम् ॥
पात्रेतुहेम्नःखलुराजतेवा[illegible]ऽपिरक्षेत् ॥ अभ्यञ्जनेऽञ्जनेनस्येनिरूहेचा
[illegible]गाहुते[illegible]नेचैव[illegible]तसकः ॥ बहुनात्रकिमुक्तेनतैलमेततूप्रयो
[illegible]ह सूक्ष्म[illegible]
[illegible]तमपिनाशयेत् । एतस्याभ्यासतोजन्तोर्जराजातु
[illegible]त्रच । के[illegible]नेत्रंतेजस्विनितरां गरुडस्येव
[illegible]बाधिर्यं कर्णनादोनजायते । पाणिकम्पःशिरःकम्पः प्रला
[illegible]पनजायते । बुद्धिभ्रंशोनजायेत तस्मात्कर्म्मसुपाटवम् । यथाजलेनसिक्तस्यशा
[illegible]तेःपल्लवादयः । वर्द्धन्तेधातवस्तद्वद् देहिनोऽनेननित्यशः । आमंगर्भन्त्यजेज्जातुसू
[illegible]गुरुग्युताचया ॥ याचदुःप्रसवक्षीणाताभ्यएतद्धितंपरम् । बन्ध्याचलभतेपुत्रंगर्भपा
बन[illegible]यते । योनिरोगाःप्रणश्यन्तिप्रदरश्चप्रशाम्यति।अस्मात्तैलवरादन्यत्कुत्रचिन्ना
स्तिभेषजम्।बल्यंवृष्यंबृंहणञ्चरसायनमिदंमहत्।पुरादेवासुरेयुद्धेदैत्यैरभिहतान्सुरान्॥
भिन्नान्भग्नास्थिकान्विद्धान्पिचितान्व्यथयार्दितान् । दृष्ट्वाहितायदेवानांनराणाञ्च
ब्रवीदिदम् । तैलंनारायणोदेवोमहानारायणाभिधम् ॥ इति महानारायणतैलम् ॥ ५७५ ॥

अथ महानारायणतैल ॥ तिलकातेल १०२४तोलेलेकर पंचपल्लवके कल्ककेसाथ पाककरके तेलके दोषोंको नष्टकरे फिर बकरीकादूध तेलकेसमान, इतनाही सतावरकारस, दशमूल, बरियारा, रासना, सहँजन, उत्पल, पुनर्नवा, संभालू, नागबला, बला, असगन्ध, झिंटी, गंधप्रसारणी, कुशकीजड, करंजुआ, कत्था, चन्दन, लोध, बच, ढाक, सुहसिंली, रेंडी, बरुणा, आसन, दोनोंशाल, कुटकी, सिरस, लटजीरा, बांसा, बालछड, जामन, बहेडा, कचनार, कैथा, नींब, चिरौंजी, पाषाणभेद, अमलतास, दूर्वा, अनार, गूलर, शातला, धीकार, चमेली, तज, पीपल, नरकुलकीजड, जौ, बेर, कुलथी, किवांचकेबीज, आक, कपास के बीज, गिलोय, थूहर, केतकीकीजड, धतूरा, करिहारी, पिलखन, चीता, बडानींब, पंचवल्कल, मुंडी, टिकारी, मुसली, हंसपदी तथा विशल्यक इन सबको चालीस २ तोले लेकर दूने जलमें पाककरे और चौथाई रहनेपर उतारलेवे बकरा, मेढा, हिरन, एण नाम हिरन, बारहसिंहा, खरगोश, सेई, स्यार, गोह, सिंह, व्याघ्र, रीछ, बडेलासूअर, गैंडा, भैंसा, घोडा, बन्दर, नौला, बिलाव, मूसा, मेढक, बटेर, तीतर, लवा, खंजन, चकोर, उल्लू, मोर, जंगलीमुर्ग, गिद्ध, गरुड, हंस, चकवी, चकवा, कारंडव, कबूतर, सारस, बगला, जंगलीकबूतर, रोहूमछली, मद्गुरु, शिलीन्ध्र, शृंगक, इल्लीस, गर्गर, वर्मि, क्रथ, काक, पिक, महामत्स्य, कछुआ, सूस, सांकुच, मगर, घडियाल (घडियाल न मिले तो गोह) इनमें से जहांतक मिलसकें इनके मांसका काढा बनावे ऊपर कहेहुए तेल दूध और काढोंमें रासना, असगन्ध, सौंफ, देवदारु, कूट, शालिपर्णी, पृष्ठपर्णी, मुद्गपर्णी, माषपर्णी, शिलाजीत, श्वेतचन्दन, पुष्करमूल, अगर, नागकेशर, सेंधानोन, जटामांसी, दोनोंहल्दी, इलायची, मुलहठी, तगर, मोथा, तेजपात, दालचीनी, अष्टकवर्ग (इनके अभावमें सतावर, असगन्ध, बिलारीकन्द और बाराहीकन्दके दो २ भाग) बच, गन्धपलासी, भटेउर, श्वेत पुनर्नवा, चोरक, मरोरफली, तज, कायफल, पद्माक, कमलकीडंडी, जायफल, केतकीकीजड तथा फूल, नागकेशर, सरलमुरा, जीवन्ती, खस, त्रिफला, जवासा, किवांच

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के बीज, नखी, कैवर्त्त, मोथा, अर्जुन, चिरायता, बदाम... ...बुवई, पीपलामूल, पित्पापड़ा, परवल, धतूरेकेफल, मूल तथा पत्ते, जयन्ती (... ...) त्रायमाण, ...लू, इन्द्रजौ, रसोत, बबूलकीछाल, निसोत, मजीठ, दाख, पीप... पुनर्नवा, रेणुका, बायविडंग, कनेरकीजड़, नीलकमल, कमल, कालीजीरी, केले... तालमखाना, कंकोल, पीतचन्दन, कुसुमकाफूल, लोबान, केशर, मोम, लौं... कस्तूर, ...बला और अंबर इनसबके दो२ तोले कल्कडालकर... वैद्योंको सन्तुष्टकरके और नारायण... पूजनकरके... सोने, चांदी अथवा लोहेके पात्रमें अच्छेप्रकारसे रक्खे वैद्य रोगके अनु... रूहवस्ति, अवगाहन अथवा पानमें इसका सेवन करावे इसके सेवनसे अस्सी प्रकारकी ... नाश होतीहै इसके अभ्याससे वृद्धावस्था झुर्री तथा बालोंका पकना नहीं होताहै गरुड के स... दृष्टिहोती उच्चस्वरका सुनना, बधिरता, कर्णनाद, हाथ... शिरका कांपना, प्रलाप तथा बुधिमा... नष्टहोताहै और कामों में सामर्थ्य होती है जैसे वृक्षकी जड़में जलके सींचने से वृक्षकीशाखा बढ़ते हैं इसीप्रकार इसके नित्य सेवनकरने से मनुष्यकी धातु बढ़ती हैं जिन स्त्रियों के गर्भ गिर हैं प्रसव के समय अत्यन्त पीड़ा होतीहै अथवा जिनको प्रसूतका रोगहोताहै उनकेलिये यह अत्यन्त हितकारी है इसके सेवनसे बन्ध्याओं के भी पुत्र होताहै गर्भपात नहीं होता योनि के रोग तथा प्रदरका नाश होताहै इस तेलसे बढ़कर और कोई औषध नहीं है यह बलकारी वीर्यवर्द्धक धातुवर्द्धक तथा अत्यन्त रसायनहै पूर्वकालमें देवता और दैत्यों के युद्धमें दैत्यों के द्वारा मारेहुए देवताओं को भिन्न टूटीहुई हड्डीवाले बिंधेहुए पके घाववाले और पीड़ासे व्याकुल देखकर देवता और मनुष्यों के हितके अर्थ श्रीनारायणने यह महानारायणनाम तेल कहाथा इति महानारायणतैलं ॥ ५७५ ॥

नागरंपिप्पलीमूलञ्चव्यमूषणचित्रकम् ॥ भृष्टंहिंग्वजमोदाचसर्षपोजीरकद्वयम् ॥ रेणुकेन्द्रयवौपाठाविडंगंगजपिप्पली । कटुकातिविषाभार्ङ्गीवचामूर्वाचपत्रकम् ॥ देवदारुकणाकुष्ठंरास्नामुस्ताचसैन्धवम् । एलात्रिकण्टकंपथ्याधान्यकञ्चबिभीतकम् ॥ धात्रीचत्वगुशीरंचयवक्षारोऽखिलान्यपि । एतानिसमभागानिसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् ॥ यावन्त्येतानिचूर्णानितावानेवात्रगुग्गुलुः । संमर्द्यसर्पिषापश्चात्सर्वंसंमिश्रयेच्चतत् ॥ एकंपिण्डंचतत्कृत्वाधारयेद्घृतभाजने । गुटिकाटङ्कमात्रास्तुखादेत्तास्तुयथोचिताः ॥ दोषकालाद्यपेक्षया (परिभाषा) आदौशाणोन्मितंखादेत्सार्द्धशाणंततःपरम् ॥ तदग्रेकर्षमर्द्धन्तुपूर्णकर्षन्ततःपरम् । गुग्गुलुर्योगराजोऽयंमहामुख्योरसायनम् । मैथुनाहारपानानांनियमोनात्रविद्यते । अर्शांसिग्रहणीरोगंप्लीहगुल्मोदरानांपि । आनाहंमन्दमग्निंचश्वासंकासमरोचकम् । प्रमेहंनाभिशूलंचकृमिक्षयमुरोग्रहम् । सर्वान्वातामयान्हन्यादामवातमपस्मृतिम् । वातरक्तंतथाकुष्ठंतथादुष्टव्रणानपि । शुक्रदोषंरजोदोषमुदावर्त्तंभगन्दरम् ॥ रास्नादिक्काथसंयुक्तःसर्ववातामयान्हरेत् । काकोल्यादिश्रृतात्पित्तंकफमारग्वधादिना । दार्वीश्रृतेनमेहांश्चगोमूत्रेणचपाण्डुताम् । मधुनामेदसोवृद्धिंकुष्ठंनिम्बश्रृतेनच ॥ छिन्नाक्काथेनवातास्रंशोथंमूलकजाच्छृतात् । पाटलाक्काथसहितोवि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

षंपुषकसम्भवम् ॥ [illegible] [illegible]दारुणांनेत्रवेदनाम् । पुनर्नवादिकाथेनहन्ति
सर्वोदरा[illegible]॥ अथ [illegible]दिक्काथोयथा ॥ रास्नापुनर्नवाशुण्ठीगुडूच्येरण्डजंशृतम् ।
सप्तधातुगतेवातेसमेसर्वांग[illegible] यह इति महायोगराजगुग्गुलुः ॥ ५७६ ॥

सोंठ [illegible]पलामल, च[illegible] [illegible]हींग, अजवाइन, सरसों, दोनोंजीरे, रेणुका, इन्द्रयव, [illegible] [illegible]बिडंग [illegible] [illegible]ह [illegible]भारंगी, बच, मरोडफली, तेजपात, देवदारु, पीपल, [illegible] [illegible] गोखरू, हड, धनियां, बहेडा, आमला, दालचीनी, खस [illegible] [illegible]बर औषधियों [illegible]च । के[illegible] सब के बराबर गूगुलको घीमें मलकर [illegible] में [illegible] फिर पिंडसा बनाकर किसी घृतके पात्र में रखछोडे और चार माशे की गोली बनाकर यथोचित दोष और कालके अनुसार खाय ॥ परिभाषा ॥ पहले ३ माशे फिर ४ ॥ माशे इसके पीछे ६ माशे तदनन्तर १ तोला रोजखाय यह योगराज गूगुल महामुख्य रसायनहै इस [illegible]वनमें मैथुन तथा आहार पानका कोई नियम नहीं है इसके द्वारा बवासीर, ग्रहणी, प्लीहा, गोला, [illegible] आनाह, मन्दाग्नि, श्वास, खांसी अरुचि, प्रमेह, नाभिकी पीडा, कृमि, क्षय, उरोग्रह सब प्रकार के वातरोग, आमवात, मिर्गी, कुष्ठ, वातरक्त, दुष्टव्रण, वीर्य तथा रजके दोष उदावर्त्त और भगन्दर इन रोगों का नाश होताहै रास्नादि क्वाथके साथ इसके सेवनसे सबप्रकारके वातरोग काकोल्यादि गण के काढ़े के साथ सेवन करने से पित्त, आरग्वधादिगणके काढ़े के साथ सेवन करनेसे कफ, दारुहल्दी के काढ़ेके साथ सेवन करने से प्रमेह, गोमूत्र के साथ सेवन करने से पाण्डुरोग, शहद के साथ सेवन करने से मेदकी वृद्धि, नींबके काढ़े के साथ सेवन करने से कुष्ठ, गिलोयके काढ़ेकेसाथ सेवन करने से वातरक्त, सूखीमूलीके काढ़ेके साथ सेवन करनेसे सूजन, पाटलाके काढ़ेके साथ सेवन करने से मूसेका विष, त्रिफला के काढ़ेके साथ सेवन करने से भयंकर नेत्ररोग और पुनर्नवाके काढ़ेके साथ सेवन करने से संपूर्ण उदररोग नष्ट होते हैं रासना, पुनर्नवा, सोंठ, गिलोय और रेंडी इनके काढ़े को रास्नादि क्वाथ कहते हैं ॥ इति महायोगराजगुग्गुलु ॥ ५७६ ॥

युक्तःकल्कोरसोनस्यतिलतैलेनसिन्धुना । वातरोगान्हरेत्सर्वाञ्ज्वरांश्चविषमानपि
रसोनकल्कः ॥ ५७७ ॥

तिलके तेल और सेंधेनोनके साथ लहसन के कल्कको सेवन करने से सबप्रकार के वातरोग और विषमज्वरों का नाश होताहै ॥ इति रसोनकल्क ॥ ५७७ ॥

क्षीरेणतैलेनघृतेनवापिमांसेनसार्द्धंलशुनानिखादेत् । शाल्योदनेनापिचषष्टिकेनप
लार्द्धवृद्ध्यादिवसानिसप्त ॥ वातोत्थरोगान्विषमज्वरांश्चशूलान्सगुल्मान्दहनस्यमा
न्द्यम् । प्लीहानमुग्रंभुजपार्श्वशूलंशिरोव्यथांकृन्ततिशुक्रदोषान् ॥ रसोनकल्कः ॥ ५७८ ॥

दूध, तेल, घी, मांस, भात अथवा सांठी के चावलोंके साथ लहसन का कल्क सात दिनतक दो २ तोले नित्यबढ़ाकर खाने से वातरोग, विषमज्वर, शूल, गोला, मन्दाग्नि, प्लीहा, भुजा तथा पसली की पीडा, शिरकी पीडा और वीर्यदोषका नाश होताहै इति रसोनकल्क ॥ ५७८ ॥

अन्नप्रकारैःपललप्रकारैर्गोधूमकैर्वायवसक्तुभिर्वा । दुग्धेनतैलेनघृतेनवापियुक्तानि
शीतेलशुनानिखादेत् ॥ संवर्त्तकैर्लावकपिञ्जलैर्वामृग्याःपलैर्वाप्यथकौक्कुटैर्वा । वराह
वार्त्तीरकहारिणैर्वासुसंस्कृतैरग्निबलंसमीक्ष्य ॥ ५७९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अन्नके प्रकार, मांसके प्रकार, गेहूं के बनेहुए पदार्थ, जो [illegible] अथवा घीकेसाथ [illegible]-कालमें लहसन खाना चाहिये बत्तक, लवा, सफेदतीतर, मुर्गा [illegible]र, बटेर [illegible] हिरन इन के मांस के साथ अग्निबलके अनुसार लहसन सेवन [illegible]का [illegible] ॥

रसोनपक्वकन्दस्यगुलिकानिस्तुषीकृताः । [illegible]दरीकुर्य्यात्त[illegible]रम् ॥ निश्युग्रगन्धनाशायदध्नासन्नीयरक्षयेत् । ततः [illegible] काष्ठग [illegible] लकस्यपञ्चमंभागंचूर्णमेषांविनिःक्षिपेत । [illegible]कानाचम [illegible] त्रिकंजीरकञ्चसमभागानिचूर्णयेत् । तिलतैलञ्चकल्कस्यतुर्य्यांशेननस[illegible] त्कर्षमितंप्रातःकिंवादोषाद्यपेक्षया । अनुपानंप्रकुर्वीतवातारिशृतमन्वहम् ॥ सर्वाङ्गका गजंवातमर्द्दितञ्चापतन्त्रकम् । अपस्मारंतथोन्मादमूरुस्तम्भञ्चगृध्रसीम् ॥ उरःपृ[illegible] कटीपार्श्वकुक्षिपीडांकृमीन्हरेत् । मद्यंमांसंतथाम्लञ्चरसंसेवेतनित्यशः ॥ आयास[illegible]तपंरोषमतिनीरंगुडंस्त्रियम् । रसोनमश्ननूपुरुषस्त्यजेदेतान्निरन्तरम् ॥ वर्जयेत्त[illegible] सारीप्रमेहीपांडुरोगवान् । अरोचकीगर्भिणीचमूर्च्छार्शोरोगसंयुतः ॥ रक्तपित्तीचशोषी चयक्ष्मीछर्दितोनरः । पित्तेतुपथ्यभुक्कुर्य्यात्प्रयोगान्तेविरेचनम् । अन्यथातस्यजायन्तेकुष्ठपाण्ड्वामयादयः । स्त्रीस्तन्यंत्वरितंदद्याद्बालानामप्यनिच्छताम् ॥ तथाचलभतेसिद्धिंमहावीर्य्याद्रसोनतः ॥ रसोनाष्टकम् ॥ ५८० ॥

पक्के लहसनके छिलके छीलकर जवोंके भीतर के अंकुर निकाल गेरै फिर उसकी दुर्गन्धि के नाशके लिये दही मिलाकर रात्रिभर रक्खे इसके उपरान्त धोकर और सुखाके सिलपर पीस ले फिर कालानोन, अजवाइन, भुनीहींग, सेंधानोन, त्रिकटु तथा जीरा इन सबको बराबर लेकर चूर्ण करके जितनी लहसनकी चटनी होय उसका पंचमांश मिलावे और चौथाई तिलका तेल मिलावे फिर १ तोले अथवा अग्निबलके अनुसार उस औषध को खाकर रेंडीके काढ़ेका अनुपानकरे इसके द्वारा सर्वाङ्ग तथा एकांग वात, अर्दित, अपतन्त्रक, मिर्गी, उन्माद, ऊरुस्तंभ, गृध्रसी, कृमि और हृदय, पीठ, कमर, पसली तथा कोखकी पीड़ा नष्ट होतीहै इस औषध का सेवन करनेवाला नित्य मद्य, मांस, खटाई तथा मांसका रस भोजन करे और परिश्रम, धूप, क्रोध, बहुत जल, गुड़ तथा मैथुनका त्याग करे अतीसार, प्रमेह, पांडु, अरुचि, मूर्च्छा, बवासीर, रक्तपित्त, शोष, यक्ष्मा तथा छर्द्दिरोग वाले और गर्भिणी स्त्री इस औषधका सेवन न करे पित्तरोगमें पथ्यसहित इस औषधका सेवन करके अन्तमें विरेचन करना चाहिये नहीं तो कुष्ठ तथा पांडु आदिक रोग उत्पन्नहोतेहैं बालकोंको इस औषधका सेवन कराकर अनिच्छा होनेपर भी स्त्रियोंका दूध पिलाना चाहिये इस प्रकार करनेसे महावीर्य वाले इस लहसन से कार्य्य सिद्ध होताहै ॥ इति रसोनाष्टक ॥ ५८० ॥

अथ वातव्याधिषुरसाः ॥

रसोगन्धोवरावह्निगुग्गुलुःक्रमवर्द्धितः । तत्रैकभागःसूतःस्याद्गन्धकोद्विगुणःस्मृतः ॥ त्रिभागात्रिफलायोज्याचतुर्भागस्तुचित्रकः । गुग्गुलुःपञ्चभागःस्याद्बुतैलेनमर्द्दितः ॥ क्षिप्त्वातत्रोदितंचूर्णंतेनतैलेनमर्दयेत् । गुटिकांकर्षमात्रान्तुभक्षयेत्प्रातरेवहि ॥ नागरै

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रण्ड...नांकषायंप्रपिबे... ...रण्डतैलेनस्वेदयेत्पृष्ठदेशकम् ॥ विरेकपरिणा मेतुस्निग्धमुष्णञ्चभोजयेत् ... ...कोह्येषरसोनियतसेवितः ॥ मासेनमरुतोरो गान्हरेत्सुरतवर्जितः ॥ वाता... ...१ ॥

...र रस ॥

...हि सुश्रुत

...ग, चीता ४ भाग-और गूगुल ५ भाग इनसब औषधियों ...कर एक ... ...बनावे प्रातःकाल एकगोली रोज खाकर ...पिये फिर रेंडीकेतेलका शरीरमें मलके पीठमें स्वेददेवे इसके उप- ...आजाने पर स्निग्ध तथा उष्ण भोजन करावे इननियमोंके अनुसार महीनेभरतक मैथुन ...कर इस वातारिरस के सेवनसे वातरोग नष्टहोतेहैं ॥ इति वातारिरस ॥ ५८१ ॥

अथोरुस्तम्भाधिकारः ॥

तत्रोरुस्तम्भस्यविप्रकृष्टं सन्निकृष्टंनिदानसंप्राप्तिपूर्वकं लक्षणमाह ॥

शीतोष्णद्रवसंशुष्कगुरुस्निग्धैर्निषेवितैः । जीर्णाजीर्णेतथायाससंक्षोभस्वप्नजाग रैः ॥ सश्लेष्ममेदःपवनःसाममत्यर्थसञ्चितम् । अभिभूयेतरंदोषमूरूचेत्प्रतिपद्यते ॥ सक्थ्यस्थिनीप्रपूर्य्यान्तःश्लेष्मणास्तिमितेनसः । तदास्तम्भातितेनोरुस्तब्धौशीताव चेतनौ ॥ परकीयाविवगुरूस्यातामतिशयेनतौ । ध्यानाङ्गमर्दस्तैमित्यंतन्द्राच्छर्द्यरुचि ज्वरैः ॥ संयुतौपादसदनकृच्छ्रोद्धरणसुप्तिभिः । तमूरुस्तम्भमित्याहुराढ्यवातमथापरे ॥ जीर्णाजीर्णेकिञ्चिज्जीर्णेकिञ्चिदजीर्णेशीतादिभिर्निषेवितैः भुक्तैःसंक्षोभेणसंचलनेनदिवा स्वप्नेनरात्रौजागरणेनअभिभूयदूषयित्वाइतरंदोषंकफंपित्तञ्च । स्तिमितेनआर्द्रेणावृते नेतियावत् ॥ नतुघनेन । सपवनःतदाऊरुंस्तभ्नाति । तेनस्तम्भेनअचेतनौशून्यौपर कीयाविव । अक्रियावित्यर्थः । ध्यानंमूढता । पादसम्बन्धिनीभिःसदनकृच्छ्रोद्धरणसुप्ति भिश्चसंयुक्तौअयंसुश्रुतेनमहावातव्याधिषुपठितः ॥ ५८२ ॥

ऊरुस्तंभका अधिकार। ऊरुस्तंभके दूरवाले और समीपीकारणों समेत संप्राप्ति और लक्षण ॥

शीतल, उष्ण, द्रव, सूखी, भारी तथा स्निग्ध वस्तुओंके सेवन से कुछ जीर्ण तथा कुछ अजीर्ण में भोजन करनेसे परिश्रमसे चलनेसे दिनमेंसोनेसे रात्रिमें जागनेसे कफ तथा मेदयुक्त वायु बहुतसंचित आमयुक्त पित्त तथा कफको दूषितकरके जब जंघाओंमें प्राप्त होतीहै और पतले कफ से जंघाओंकी हड्डियोंको पूर्णकरती है तब जंघाओंको जकडलेतीहै इसरोगमें जंघास्तब्ध, शीतल, शून्य, कार्य्यरहित और बहुतभारी होजातीहैं और रोगीको शरीरमें पीडा गलेवस्त्र से शरीर लिपटाहुआसा मालूमहोना तन्द्रा, छर्दि, अरुचि, मूढता, ज्वर और पैरोंमेंशिथिलता, शून्यता तथा बहुत कष्टसे उठाना यह सबरोग होतेहैं इसको ऊरुस्तंभ और कोई२ आढ्यवात कहते हैं सुश्रुतने इसको महावातरोगों में कहाहै ५८२॥

पूर्वरूपमाह ॥

प्राग्रूपंतस्यनिद्रातिध्यानंस्तिमितताज्वरः। रोमहर्षोऽरुचिश्छर्दिर्जङ्घोर्वोःसदनंतथा ५८३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऊरुस्तंभका पूर्वरू...

ऊरुस्तंभ होनेसे पहले बहुत निद्रा, मूढता, शरीर गीलेवस्त्रसे ढ... आसा मालूम होना, ज्वर, रोमांच, अरुचि, छर्दि और पिंडली तथा जंघाओंमें शिथिलता... ॥ ५८३ ॥

तस्याशु...

वातशङ्किभिरज्ञानात्तत्रस्यात्स्नेहनात्... ॥ जङ्घोरुग्लानिरत्यर्थंशश्वद्दाहवेदना... स्थानेपीडनेगत्यांचालनेचाप्यनीश्वर... अन्यनेयौहिसम्भ... न्यनेयौअन्यचाल्यौभवतःअज्ञानात्अनिश्चयात् । स्क...कर्म्मभिर... र्शनेनवातशङ्किभिःवातव्याधिशङ्किभिः ॥ तत्रऊरुस्तम्भेस्नेहनात्स्नेहदानात् । ... दिनास्नेहन्याचिकित्सया पादसदनादयःऊरु...पमत्वात्विकाराःस्युः जङ्घोर्वौर्भ... दावशक्तिः । अदाहवेदनाईषद्दाहेनसहवेदना ॥ ५८४ ॥

ऊरुस्तंभका अनुपशय ॥

जो वातरोगके लक्षणोंको देखकर ऊरुस्तंभका निश्चय न होसके तो वहां स्नेहनक्रिया करके निश्चय करनाचाहिये इसमें स्नेह न करनेसे पैरोंमें शिथिलता, शून्यता तथा बहुतकष्टसे उठायाजाना होताहै पिंडलियोंमें अत्यन्त ग्लानि तथा वारंवार कुछ दाहसहित पीडा होतीहै पैररखने में क्लेश होताहै शीतल स्पर्श नहीं मालूम होता पैरोंके रखनेमें, दबानेमें, चलनेमें तथा हिलाने, डुलानेमेंशक्ति नहींरहती और जंघा तथा पैर टूटेहुएसे मालूमपडते हैं और दूसरोंसे उठानेके योग्यहोजाते हैं ५८४॥

अथोरुस्तम्भस्यारिष्टलक्षणमाह ॥

यदादाहार्तितोदार्तोवेपनःपुरुषोभवेत् । ऊरुस्तंभस्तदाहन्यात्साधयेदन्यथानवम् ॥ अन्यथादाहाद्युपद्रवरहितंतमपिनवमुत्पन्नमात्रंसाधयेत् ॥ ५८५ ॥

ऊरुस्तंभ के अरिष्ट ॥

ऊरुस्तंभ में जो दाह, पीडा तथा कंपहोय तो उसको असाध्य जानना चाहिये और जो दाहादिक उपद्रव न होयँ तो नवीन ऊरुस्तंभ की चिकित्सा करे ॥ ५८५ ॥

अथ तस्यचिकित्सामाह ॥

स्नेहासृक्स्राववमनंवस्तिकर्म्मविरेचनम् । वर्जयेदामवातेतुयतस्तैस्तस्यकोपनम् ॥ तस्मादत्रसदाकार्यंस्वेदलङ्घनरूक्षणम् ॥ आममेदःकफाधिक्यान्मारुतंपरिरक्षता । यस्मात्कफप्रशमनंनतुमारुतकोपनम् ॥ तत्सर्वंसर्वदाकार्य्यमूरुस्तम्भस्यभेषजम् । सर्वोरूक्षःक्रमःकार्य्यस्तत्रादौकफनाशनः ॥ पश्चाद्वातविनाशायविधातव्याखिलाःक्रियाः । भोज्याःपुराणाःश्यामाककोद्रवोद्दालशालयः ॥ जाङ्गलैरघृतैर्म्मांसैःशाकैश्चालवणैर्हितैः । शाकैरलवणैर्दद्याज्जलतैलाज्यसाधितैः ॥ सुनिषण्णकनिम्बार्कवृन्तारग्वधपल्लवैः । वायसोवास्तुकाद्यैश्चसाधितैःशाकमूलकैः ॥ शाकैरलवणैर्युक्तंजीर्णशाल्योदनंभिषक् ५८६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

[illegible] ऊरुस्तंभकी चिकित्सा ॥

ऊरुस्तंभ में स्नेह, रुधिर [illegible] लवाना, वमन, वस्तिकर्म तथा विरेचनको त्याग करे क्योंकि इन केद्वारा ऊरुस्तंभ बढताहै स्वेद, लंघन [illegible] यह [illegible]न, ऊरुस्तंभ में आममेद तथा कफकी अधिकता होतीहै इसलिये हितकारी [illegible] तरपर दृष्टि रखनी चाहिये जो संपूर्ण वस्तु कफना-शक [illegible] और वा[illegible] ह सुश्रुतव ऊरुस्तंभ में सेवन करनी चाहियें पहले कफ-नाशक [illegible] के पीछे वातनाशक चिकित्सा करनी चाहिये भोजन के [illegible] कोदों, शालि, [illegible] च । के [illegible] जली जीवोंका मांस तथा लवणरहि-[illegible] चाहिये [illegible] तेल तथा घी के द्वारा लवणरहित शाकों को पाक करके भोजनके लिये [illegible] चापातेया नींब, आक, बैंगनें, अमलतास, काकमांची, मूली तथा बथुई आदिके शाक विना नोन [illegible] करके इनके साथ शालिधान्य के चावलों का भात खिलावे ॥ ५८६ ॥

[illegible]क्षणाद्वातकोपश्चेन्निद्रानाशार्त्तिपूर्वकः । स्नेहस्वेदक्रमस्तत्र कार्यो वातामयापहः ॥ प्रबनते[illegible] प्रतिस्रोतो नदीं शीतजलां शिवाम् ॥ सरश्च विमलं शीतं स्थिरतोयं पुनः पुनः । यथा १वशुष्केऽस्य कफे शान्तिमूरुग्रहो व्रजेत् ॥ शरीरबलमग्निञ्च [illegible] र्यैषा रक्षता क्रिया । सक्षा रमूत्रस्वेदांश्च रूक्षाण्युत्सादनानि च ॥ ५८७ ॥

अधिक रूखी क्रियाके द्वारा वायुके कोपसे जो निद्राका नाशहोजाय तो वातनाशक स्निग्ध स्वेद उसको देनाचाहिये शीतल जलवाली नदियोंमें प्रवाहकी ओर रोगी को तैरावे और स्थिर शीतल तथा निर्मल जलवाले तालाब में वारंवार रोगी को तैरावे इस क्रियासे कफके सूखजाने पर ऊरु-स्तंभ शान्त होताहै शरीर बल तथा अग्नि के अनुसार यह रूखी क्रिया करनी चाहिये क्षार, मूत्र, स्वेद तथा रूखे उबटन प्रयोग करने चाहिये ॥ ४८७ ॥

कुर्य्याद्दाहे च मूत्राद्यैः करञ्जफलसर्षपैः । मूलैर्वाप्यश्वगन्धाया मूलैरर्कस्य वा भिषक् ॥ पिचुमर्द्दस्य वा मूलैरथवा देवदारुणः । क्षौद्रसर्षपबल्मीकमृत्तिकासंप्रतैर्भिषक् ॥ गाढमु त्सादनं कुर्य्यादूरुस्तम्भे सवेदने । दन्तीद्रवन्तीसुरसासर्षपैश्चापि बुद्धिमान् ॥ तर्कारीसुर साशिग्रुवचावत्सकनिम्बकैः । पत्रमूलफलैस्तोयं शृतमुष्णञ्च सेचनम् ॥ भल्लातकामृता शुण्ठीदारुपथ्यापुनर्नवा । पञ्चमूलीद्वयोन्मिश्रा ऊरुस्तम्भनिबर्हणाः ॥ पिप्पलीपिप्पली मूलं भल्लातकफलानि च । कल्कं मधुयुतं पीत्वा ऊरुस्तम्भाद्विमुच्यते ॥ ५८८ ॥

अत्यन्त पीडा युक्त ऊरुस्तंभ में करंजुवा तथा सरसों को गोमूत्रमें पीसकर लेपकरे अथवा अस-गन्ध, आक, नींब तथा देवदारुकी जडको गोमूत्र में पीसकर लेपकरे या शहद युक्त सरसों तथा वामीकी मिट्टीसे खूब उबटन करे दंती, मूषाकरनी, रासना तथा सरसोंकेद्वारा अथवा जयन्ती, रासना, सहँजन, बच, कुरैया तथा नींब इनके पत्ते जड तथा फलोंके द्वारा काढा बनाकर कुछ गरम २ पीनेसे भिलावां, गिलोय, सोंठ, देवदारु, हड, पुनर्नवा तथा दशमूल इनके काढेसे अथवा पीपल, पीपलामूल तथा भिलावें के फल इनके कल्कको शहद डालकर पीनेसे ऊरुस्तंभका नाश होताहै ॥ ५८८ ॥

यासश्छिन्नाजमोदासुमु रास्नाश्यामाकपथ्यामरिचमिसिशिवावेल्लशद्ब्वश्वगन्धाः । शुण्ठीतिक्तायवानीसहचरचविकैरण्डदार्व्याजकर्णयऊ षमतिविषाव्हदारीब्रहत्यौ ॥

रुस्तम्भामवातकफपवनरुजंदण्डकांश्चाशुहन्यात् । इति [illegible] नादिकाथः ॥ ५[illegible] ॥

रासना, सामा, हर्ड, मिर्च, सौंफ, आमला, बेलगिरी, [illegible] सा, गिलोय, अजवाइन, सफेद तुलसी, अतीस, विधारा, दोनों भटकटैया, सोंठ, कु[illegible]का [illegible] मोद, [illegible]कुटी, चव्य, रेंडी, दारुहल्दी और शालवृक्ष इनके काढ़ेके सेवनसे हनुस्तंभ, आमवात[illegible] [illegible] और दंडकरोग का नाशहोता है इति रास्नादि क्काथ ॥ ५८६ ॥ [illegible] कोष्ठग [illegible]

ग्रन्थिकारुष्करकृष्णानांक्काथक्षौद्रान्वि[illegible] लह्याद्ध[illegible] तम् ॥ सुखाम्बुनापिबेद्वापिचूर्णंकट्वरणेनरः । पिप्पलीवर्द्धमानेनस[illegible] ऊरुस्तम्भेप्रशंसन्तिगम्भीरारिष्टमेवच । शिलाजतुंगुग्गुलुंवापिप्पलीमथनागरम्[illegible] रुस्तम्भेपिबेन्मूत्रैर्दशमूलीरसेनवा । त्रिफलापिप्पलीमुस्तंचव्यंकटुकरोहिणी ॥ लि[illegible] द्यामधुनाचूर्णमूरुस्तम्भार्दितोनरः । घृतंसौरेश्वरंदद्यादूरुस्तम्भेकफोत्तरे ॥ द[illegible] ण्ठीघृतंवापिवैश्वानरमथापिवा । सैन्धवाद्यंहितंतैलममृताख्योऽपिगुग्गुलुः ५९[illegible]

पीपलामूल, भिलावां तथा पीपल के काढ़े में शहद डालकर पीनेसे त्रिफले का चूर्ण तथा कुटकी इनमें शहद मिलाकर चाटने से षट्धरण चूर्ण को कुछ गरमजल के साथ पीने से शहद अथवा गुडके साथ वर्द्धमान पिप्पली के सेवन से गंभीरारिष्ट के पीनेसे शिलाजीत, गूगल, पीपल अथवा सोंठ इनमेंसे किसीको गोमूत्र अथवा दशमूलके काढ़ेके साथ पीनेसे त्रिफला, पीपल, मोथा, चव्य और कुटकी इनके चूर्ण को शहदके साथ चाटने से ऊरुस्तंभका नाशहोताहै अधिक कफवाले ऊरुस्तंभमें सौरेश्वरघृत, शुंठीघृत, वैश्वानरघृत, सैंधवादि तैल तथा अमृतागुग्गुलु सेवन करना चाहिये ॥ ५९० ॥

कुष्ठश्रीवेष्टकोदीच्यसरलंदारुकेशरम् । अजगन्धाश्वगन्धाचतैलंतैःसार्षपंपचेत् ॥ सक्षौद्रंमात्रयातस्मादूरुस्तम्भार्दितःपिबेत् ॥ इति कुष्ठाद्यंतैलम् ॥ ५९१ ॥

कूट, सरलनिर्यास, सुगन्धबाला, सरलकाष्ठ, देवदारु, नागकेशर, अजमोद और असगंध इन औषधियों के द्वारा सरसों के तेल को पकाकर शहद मिलाके मात्राके अनुसार ऊरुस्तंभ में पानकरे इति कुष्ठादितैल ॥ ५९१ ॥

पलाभ्यांपिप्पलीमूलान्नागरादष्टकट्वरम् । तैलप्रस्थसमंदध्नागृध्रस्यूरुग्रहापहम् ॥ सस्नेहदधिसम्भूतंनतुकट्वरमुच्यते । अष्टकट्वरतैलेचतैलंसार्षपमिष्यते ॥ पिप्पलीमूल शुण्ठ्याश्चप्रत्येकंद्विपलंकृतम् ॥ इत्यष्टकट्वरंतैलम् ॥ ५९२ ॥

पीपलामूल तथा सोंठ आठ २ तोले विना मक्खन निकले दहीका मट्ठा ३२ तोले और कडुवा तेल तथा दही चौंसठ२ तोले इनसबको विधिपूर्वक पाक करके इसतैलके सेवनसे गृध्रसी और ऊरुस्तंभ का नाशहोताहै इति अष्टकट्वर तैल ॥ ५९२ ॥

द्विपञ्चमूलीत्रिफलाचित्रकंदेवदारु च । एकाष्ठीलात्वपामार्गश्रेयसीवायसीशुभा ॥ बलाभार्ङ्गीपृथक्पर्णीसुवहामदयन्तिका । विशालोशीरकाश्मर्यातिस्रोदेयातथाग्निकः ॥ चिरविल्वोह्यशोकश्चकलस्यंशुमतीतथा । पयस्यापीलुपर्ण्यश्चगुडूचीचशतावरी ॥ एषांपञ्चपलान्भागाञ्जलद्रोणेपुसप्तसु । अष्टभागावशेषेणपचेत्तैलाढकंशतम् ॥ कुष्ठञ्च

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शतपु[illegible]यूषणांचित्रव[illegible] । देवदार्व्वागुरुश्रेष्ठंविडंगंमुस्तमेवच ॥ [illegible]श्वगन्धास्थि रापाढामूलीश्यामाकमेवच । [illegible]यष्टी[illegible]रश्चदन्तीहिंग्वम्लवेतसम् ॥ अनेनगर्भेण भिषक्कषायेणचसाधयेत् [illegible]तश्चक्षौद्रेणसहसंसृजेत् ॥ तदस्यनस्यपानार्थंतत्[illegible]भ्यञ्जने[illegible]ह सुश्लक्ष्णूतस्तैलेनानेनशाम्यति ॥ आमवातंशीतवातं[illegible]पञ्चमूलाद्यंतैलम् ॥ ५६३ ॥

[illegible]नच । [illegible], देवदारु, पाठा, [illegible], गजपीपल, कौआटोंटी, मालकांगनी, बरि-[illegible], पृष्ठपर्णी, [illegible] मल्लिका, खस, गंभारी, करंजुआ, अशोक, शालिपर्णी, ककुनी, क्षीरका-[illegible]ला, पीलुपर्णी, गिलोय और सतावर इनसबको बीस २ तोले लेकर सातद्रोण जल में पाक करे [illegible] अष्टमांश बाकी रहै तब उतारकर एक आढक तिलका तेल मिलावे फिर कूट, सौंफ, त्रिकटु, गुगु[illegible] त्रिफला, देवदारु, अगर, बायबिडंग, मोथा, असगंध, शालिपर्णी, पाठा, तालमूली, श्यामा, पीबना[illegible]इरक, दन्ती, हींग और अमलवेत इनकेकल्क मिलाकर विधिपूर्वक तेलका पाक करे फिर शीतल होजाने पर नस्य पान करना अथवा मर्द्दन में इसके सेवनसे बहुत पुराना ऊरुस्तंभ आमवात शीतवात और क्षुद्रवात नष्ट होते हैं इति द्विपंचमूलादि तैल ॥ ५६३ ॥

सिन्धुरुग्विश्वजासोग्राभार्ङ्गीयष्टीस्थिराफलैः । दारुविश्वशटीधान्याकृष्णाकट्फलपौष्करैः ॥ दीप्यकातिविषैरण्डनीलीनीलाम्बुजैःपचेत् । तैलंसकाञ्जिकंहन्तिपानाभ्यंजननावनैः ॥ आमवातंकृमीन्गुल्मान्प्लीहोदरशिरोरुजः । मन्दाग्निपक्षसन्ध्यण्डवातस्तम्भगदानपि ॥ इति महासैन्धवाद्यंतैलम् ॥ ५६४ ॥

सैंधानोन, कूट, सोंठ, बच, भारंगी, मुलहठी, शालिपर्णी, जायफल, देवदारु, कचूर, धनियां, पीपल, कायफल, पुष्करमूल, अजवाइन, अतीस, रेंडी, नील, नीलकमल इनसबकेद्वारा कांजी सहित तेलको पाक करके पान, नस्य तथा मर्द्दन करनेसे आमवात, कृमि, बायगोला, प्लीहा, उदर शिरकेरोग, मंदाग्नि, पक्षाघात, सन्धि तथा अंडकोशोंमें गईहुई वात और ऊरुस्तंभकानाश होताहै इति महासैंधवादि तैल ॥ ५६४ ॥

द्वेपलेसैन्धवात्पञ्चशुण्ठ्याग्रन्थिकचित्रकात् । द्वेद्वेभल्लातकास्थीनिविंशतिर्द्वेतथाऽढके ॥ आरनालात्पञ्चप्रस्थंतैलस्यैरण्डजस्यच । गृध्रस्यूरुग्रहास्यार्तिसर्ववातविकारनुत् ॥ इति सैन्धवाद्यंतैलम् ॥ इत्यूरुस्तम्भनिदानचिकित्साधिकारः ॥ ५६५ ॥

सैंधानोन २ पल, सोंठ ५ पल, पीपलामूल तथा चीता दो २ पल, भिलावेंके बीज २० आरनाल २ आढक इनसब औषधियोंके द्वारा एक प्रस्थ रेंडीके तेलको विधिपूर्व्वक पाक करके सेवनकरनेसे गृध्रसी, ऊरुस्तंभ और सबप्रकारके वातरोग नष्ट होते हैं इति सैंधवादि तैल इति ऊरुस्तंभनिदान-चिकित्साधिकार ॥ ५६५ ॥

अथाऽऽमवाताधिकारः । तत्रामवातस्यनिदानपूर्व्विकांसम्प्राप्तिमाह ॥

विरुद्धाहारचेष्टास्यमन्दाग्नेर्लोलुपस्यच । स्निग्धंभुक्तवतोह्यन्नंव्यायामंकुर्वतस्तथा ॥ वायुनाप्रेरितोह्यामश्लेष्मस्थानंप्रधावति । तेनात्यर्थमपक्वोऽसौधमनीभिःप्रपद्यते ॥ वातपित्तकफैर्भूयोदूषितःसोऽन्नजोरसः । स्रोतांस्यभिष्यन्दयतिनानावर्णोऽतिपिच्छि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लः ॥ जनयत्यग्निदौर्बल्यंहृदयस्यचगौरवम् । व्याधीनाम[illegible]ह्येष आमसंज्ञोऽतिदारुणः ॥ विरुद्धाहारचेष्टस्यविरुद्धहारःक्षीरमत्स्यादि[illegible]ष्टाभुक्त्वाव्यायामादितयायुक्तस्यनिश्चलस्यनिर्व्यायामपरस्य । स्निग्ध[illegible]व्यायामंकुर्वतइतिमिलितोहेतुः ॥ श्लेष्मस्थानम् आमाश्रयसन्ध्यादि ते[illegible]अत्यन्तअपक्वः ॥ पित्तस्थानगमनेनपक्वोभविष्यति । इत्यमि[illegible]। धमनीमार्गैश्चलति ॥ भूयोदूषितःअति[illegible]। सोऽन्न[illegible]ष्यन्दयतिसंश्रित्यरसवहशिरावरोधंकृत्वास्रोतांसिगुरूणिकुर्यात्[illegible]नानावर्णानितवर्णभेदान्नानावर्णः ॥ ५९६ ॥

आमवातका अधिकार । आमवातकी निदानपूर्वक संप्राप्ति ॥

मिले हुये दूध, मछली आदि विरुद्ध भोजन से भोजनके अन्तमें व्यायामआदि विरुद्ध चेष्[illegible] मंदाग्निसे व्यायाम न करने से और स्निग्ध भोजन करके व्यायाम करने से वायुके द्वारा [illegible] कियागया आमरस कफके स्थान आमाशय तथा सन्धि आदिकों में प्राप्त होताहै फिर कफके स्थानमें जानेसे अत्यन्त नहीं पकाहुआ यह आमरस नाडियोंके द्वारा चलकर वात पित्त तथा कफके द्वार फिर अत्यन्त दूषित होकर स्रोतोंमें स्थित होताहुआ रसकी लेचलनेवाली नाडियोंको रोकताहै और भारीपन अनेक प्रकारके रंग तथा चिकनेपनको धारण करताहै इसमें मंदाग्नि, दुर्बलता तथा हृदयमें भारीपन यह सब होतेहैं और यह भयंकर आम अनेक प्रकारके रोगोंका स्थानहै ॥ ५९६ ॥

अथामस्यलक्षणमाह ॥

अजीर्णाद्योरसोजातःसञ्चितोहिक्रमेणवै । आमसंज्ञांसलभतेशिरोगात्ररुजाकरः ॥ अजीर्णाद्भुक्तादजीर्णात् ॥ ५९७ ॥ आमका लक्षण ॥

अजीर्ण से उत्पन्न हुआ जो रस क्रमसे इकट्ठा होकर मस्तक तथा शरीर में पीडा को उत्पन्न करताहै उसको आम कहते हैं ॥ ५९७ ॥

अथामवातस्यसामान्यलक्षणमाह ॥

युगपत्कुपितावेतौत्रिकसन्धिप्रवेशकौ । स्तब्धञ्चकुरुतोगात्रमामवातःसउच्यते ॥ एतौवातकफौत्रिकसन्धिप्रवेशकौवेदनयेतिबोद्धव्यम् । तन्त्रान्तरेतस्यैवलक्षणमाह ॥ अङ्गमर्दोऽरुचिस्तृष्णाआलस्यंगौरवंज्वरः । अपाकःशून्यताङ्गानामामवातस्यलक्षणम् ॥ विशेषार्थमस्यसंग्रहः ॥ ५९८ ॥

आमवातका सामान्य लक्षण ॥

कफ और वात एक साथ कुपित होकर त्रिक संधियों में पीड़ा सहित प्रवेश करते हुए शरीरमें स्तब्धता उत्पन्न करते हैं इसको आमवात कहते हैं तन्त्रान्तरमें कहा हुआ है कि शरीर में पीड़ा, अरुचि, तृषा, आलस्य, शरीरका भारीपन, ज्वर, अन्नका न पकना और अंगोंमें सूजन यह आमवात के लक्षण हैं ॥ ५९८ ॥

अस्यैववाताधिकस्य लक्षणमाह ॥

सकष्टःसर्वरोगाणांयदाप्रकुपितोभवेत् । हस्तपादशिरोगुल्फत्रिकजानूरुसन्धिषु ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करोति सरुजंशोथंयत्रदोषः प्रपद्यते । सदेशोरुज्यतेऽत्यर्थंव्याविद्धइववृश्चिकैः ॥ जनयेत्सोऽग्निदौर्बल्यंप्रसेकारुचिगौरवम् । उत्साहहानिंवैरस्यंदाहञ्चबहुमूत्रताम् ॥ कक्षौकठिनतांशूलं तथानिद्राविपर्ययम् । तृट्छर्दिंभ्रममूर्च्छांचहृद्ग्रहंविड्विबद्धताम् । जाड्यान्त्रकूजमानाहं ... यदाप्रकुपितोभवेत्प्रकर्षेणकुपितःस्यात्तदा ... यत्रदोषःदुष्टःआमःप्रपद्यतेगच्छति ॥ तानाह ... । अन्यांश्च । ... खञ्जत्वादीन् ॥ ५९९ ॥

बहुत बढेहुये आमवात के लक्षण ॥

आमवात जब बहुत बढता है तब आगे कहेहुये उपद्रव होते हैं. और उपद्रव सहित आमवात रोगोंकी अपेक्षा अधिक कष्टसाध्य होता है हाथ, पैर, मस्तक, टकना, त्रिक, घुटने, जंघा तथा संधियों पीडासहित सूजन, जिसजिस स्थानमेंदूषित आमजाय उस उस स्थानमें बिच्छूकाटने कीसी पीडा, ... मुखसे पानीबहना, अरुचि, शरीरका भारीपन, उत्साहका नाश, मुखकी विरसता, दाह, बहुत मूत्र, कोखमें कठिनता तथा शूल, निद्राका नाश, तृषा, छर्दि, भ्रम, मूर्च्छा, हृदयमेंपीडा, मलका रुकना, शरीरमेंजडता, उदरमें गडगडाहट, आनाह और कलापखंज आदिक अन्य दुखदायी उपद्रवहोतेहैं ५९९

तस्यैवविशिष्टानि लक्षणान्याह ॥

पित्तात्सदाहरोगञ्चसशूलंपवनात्मकम् । स्तिमितंगुरुकण्डूकंकफजुष्टंतमादिशेत् ॥ गुरुकण्डूकं बहुकण्डूकम् ॥ ६०० ॥

आमवात के विशेष लक्षण ॥

पित्त से हुये आमवातमें दाह तथा शरीरका रक्तवर्ण होना वातज में अत्यन्त पीडा और कफज आमवातमें शरीरका गीले कपडेसे ढकाहुआसा मालूम पडना तथा बहुत खुजली होती है ६०० ॥

तस्य साध्यत्वादिकमाह ॥

एकदोषानुगःसाध्योद्विदोषोयाप्यउच्यते । सर्वदेहचरैःशोथैःसकष्टःसान्निपातकः ६०१॥

आमवात के साध्यादि लक्षण ॥

एकदोषवाला, साध्य दो दोषवाला याप्य और संपूर्ण अंगोंमें सूजन सहित तीन दोषवाला आमवात असाध्य होताहै ॥ ६०१ ॥ तत्रआमवातस्य चिकित्सामाह ॥

लंघनंस्वेदनंतिक्तंदीपनानिकटूनिच । विरेचनंस्नेहनञ्चवस्तयश्चाममारुते ॥ रूक्षःस्वेदोविधातव्योबालुकापुटकैस्तथा । उपनाहाश्चकर्त्तव्यास्तेऽपिस्नेहविवर्जिताः ॥ आमवाताभिभूतायपीडितायपिपासया । पञ्चकोलेनसंसिद्धंपानीयंहितमुच्यते ॥ शुष्कमूलकयूषंवायूषंवापाञ्चमौलिकम् । रसकंकाञ्जिकंवापिशुण्ठीचूर्णावचूर्णितम् । सौवीरंश्विन्नवार्त्ताकंतथातिक्तंफलानिच । वास्तूकशाकंसारिष्टशाकंपौनर्नवंहितम् ॥ पटोलंगोक्षुरञ्चैववरुणंकारवेल्लकम् । यवान्नंकोरदूषान्नंपुराणंशालिषष्टिकम् ॥ लावकानांतथामांसंहितंतक्रेणसंस्कृतम् । हितश्चयूषःकौलत्थःकलायश्चणकस्यच ॥ रुच्यंदद्याद्यथासात्म्यमामवातहितञ्चयत् ॥ ६०२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आमवात की चिकि[illegible]

लंघन, स्वेदन, तिक्त, कटु तथा दीपनवस्तु, विरेचन, स्नेह[illegible] क्रिया आमवातमें हितकारी हैं बालूकी पोटलियों से रूखा स्वेद और स्नेहरहित [illegible]उबटन करना चाहिये आमवात में तृषा अधिक होनेपर पंचकोलके द्वारा पाक किया [illegible]का यूष, पंचमूल का यूष, मांसका रस अथवा सोंठके चूर्णसे युक्त कांजीका [illegible] बैंग[illegible] फल, बथुई, नींब, पुनर्नवाका शाक, परवल, गोखरू [illegible] सांठी, मट्ठेमें पाक किया हुआ लवाका [illegible]कुल[illegible], मटर तथा [illegible]ननस[illegible] कारी तथा रुचिकारी वस्तु आमवात में देनी चाहिये ॥ ६०२ ॥

शतपुष्पावचाविश्वश्वदंष्ट्रावरुणत्वचः । पुनर्नवामदेवाङ्कशटीमुण्डितिकाःसमाः ॥ प्रसारणीवतर्क्कारी फलञ्चमदनस्यच । शुक्तकाञ्जि[illegible]ष्टाच कोष्णाचलेपनेहिता ॥[illegible] हिंस्राकेबुकान्मूलं शिग्रूर्वल्मीकमृत्तिका । मूत्रपिष्टैश्चकर्त्तव्यमुपनाहःप्रलेपनम्[illegible]

सौंफ, बच, सोंठ, गोखुरू, बरुणाकीछाल, पुनर्नवा, देवदारु, कचूर, मुंडी, गन्धप्रसारणी, जयन्ता[illegible] मैनफल इनको सिरकेमें तथा कांजीमें पीसकर गरम २ लेपकरनेसे और कुलेखाड़ा, केतकीकी जड़, सहजना तथा बामीकीमिट्टी इनसबको गोमूत्रमें पीसकर लेपकरनेसे आमवातका नाशहोताहै ६०३॥

चित्रकंकटुकापाठा कलिंगातिविषामृता । देवदारुवचामुस्तनागरातिविषाभयाः । पिबेदुष्णाम्बुनानित्यमामवातस्यभेषजम् ॥ शटीशुंठ्यभयाचोग्रादेवाङ्कातिविषाऽमृताःक षायमामवातस्य पाचनंरूक्षभोजनम् ॥ पुनर्नवाचबृहती वर्द्धमानफणिज्जकैः । कल्पयेत्क्काथमामेतुमर्वाशिग्रुद्रुमैर्भिषक्॥सेचनञ्चामवातस्य रूबूकपयसापिवा । लिह्यात्पथ्यां सविश्वांवा मूत्रैर्व्वगुग्गुलंपिबेत् ॥ विश्वालम्बुषयोःकल्कमद्याद्वातिलविश्वयोः । विश्वपथ्यामृताक्काथं कवोष्णंकौसिकान्वितम्॥कटीजंघोरुपृष्ठानां रुजंपीतंनिवर्त्तयेत् ६०४॥

चीता, कुटकी, पाठा, इन्द्रयव, अतीस तथा गिलोय अथवा देवदारु, बच, मोथा, सोंठ, अतीस तथा हड़ इनसबको पीसकर गरमजलके साथ नित्य पीने से कचूर, सोंठ, हड़, बच, देवदारु, अतीस तथा गिलोय इनसबके काढ़ेको पीनेसे पुनर्नवा, भटकटैया, रेंडी तथा मरुआ अथवा मरोड़फली सहजन तथा पारिजात के द्वारा काढ़ा बनाकर पीनेसे रेंडीको दूधमें पाककर सेवन करने से अथवा गोमूत्र के साथ गूगुलपीने से हड़ तथा सोंठके चाटनेसे और सोंठ तथा लजालूका चूर्ण अथवा तिल तथा सोंठके कल्कको खानेसे आमवात का नाश होताहै सोंठ, हड़ तथा गिलोय इनके काढ़े में गूगल डालकर कुछ गरम २ पीनेसे कमर, पिंडली, जंघा तथा पीठकी पीड़ाका नाश होताहै ॥ ६०४ ॥

हिंगुचव्यंविडंशुण्ठीकृष्णाजाजीसपुष्करम् । भागोत्तरमिदंचूर्णंपीतंवातामजिद्भवेत् ॥ इति हिंग्वाद्यंचूर्णम् ॥ ६०५ ॥

हींग १ भाग, चव्य २ भाग, विट्नौन ३ भाग, सोंठ ४ भाग, पीपल ५ भाग, कालीजीरी ६ भाग और पुष्करमूल ७ भाग इनसबके चर्णको गरमजल के साथ पीने से आमवातका नाश होताहै इति हिंग्वादि चूर्ण ॥ ६०५

पिप्पलीपिप्पलीमूलंसैन्धवंकृष्णजीरकम् । चव्यचित्रकतालीसपत्रकंनागकेशरम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एषांद्विपलिकानूभागान् प[illegible]वचलस्यच । मरिचाजाजिशुण्ठीनामेकैकस्यपलंपल म् ॥ दाडिमात्कुडवञ्चैव [illegible]लेचाम्लवेतसात् । सर्व्वमेकत्रसंक्षुद्य योजयेत्कुशलो भिषक् ॥ पिप्पल्याद्यमिति[illegible] यह[illegible]तश्चदीपनम् ॥ अर्शांसिग्रहणींगुल्ममुदरंस भगंदरम् ॥ कृमि[illegible]च[illegible]वा[illegible]त[illegible]केनवा ॥ नातःपरतरंकिञ्चिदामवातस्यभे षजम् । [illegible]ह सुश्रुद्ध[illegible] ॥

[illegible],कालाजीरा[illegible]च । के[illegible] तथा नागकेशर यह सब आठ २ [illegible]० [illegible]र्च, कालीजीर तथा सोंठ एक २ पल अनार१ कुडव और अमलबेद २ [illegible]नसब औषधियोंको एक साथ कूटकर सुरा अथवा गरम जलके साथपीने से मन्दाग्नि, बवा-[illegible]ग्रहणी,गोला,उदर,भगन्दर, कृमि,खुजली तथा अरुचिका नाशहोताहै इस्से बढ़कर आमवात [illegible]ई औषधि नहीं है इति पिप्पल्यादिचूर्ण ॥ ६०६ ॥

गुगु[illegible]

बन[illegible]विश्वयवानीभिस्तुल्याभिश्चूर्णितंपिबेत् । तक्रेणोष्णोदकेनापिकाञ्जिकेनाथवा [illegible]नः ॥ आमवातंनिहन्त्याशु शोथंमन्दाग्नितामपि । पीनसंकासहृद्रोगं स्वरभेदमरो चकमिति पथ्याद्यं चूर्णम् ॥ ६०७ ॥

हड,सोंठ तथा अजवाइन इनसबको बराबर लेकर चूर्ण करके मट्ठे उष्ण जल अथवा कांजी के साथ पीने से आमवात,सूजन,मन्दाग्नि,पीनस,खांसी, हृदयके रोग, स्वर फेद तथा अरुचिका नाश होताहै इति पथ्यादि चूर्ण ॥ ६०७ ॥

रसोनविश्वनिर्गुण्डी क्वाथमामार्दितःपिबेत् । नातःपरतरंकिञ्चिदामवातस्यभेषजम् इति रसोनादिकषायः ॥ ६०८ ॥

लहसन,सोंठ और निर्गुंडीके काढ़ेके पीनेसे आमवातका नाश होताहै इस्से बढ़कर आमवात की और औषधि नहीं है इति रसोनादिकषाय ॥ ६०८ ॥

रास्नांगुडूचीमेरण्डं देवदारुमहौषधम् । पिबेत्सर्वांगिके वाते सामेसन्ध्यस्थिमज्ज गे ॥ इति रास्नापञ्चकः ॥ ६०९ ॥

रासना,गिलोय, रेंडी,देवदारु और सोंठ इनकेकाढ़ेको पीनेसे सर्वांग, संधि, अस्थि तथा मज्जा में प्राप्तहुए आमवातका नाश होताहै इति रासना पंचक ॥ ६०९ ॥

पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकनागरैः । क्वथितंवारितत्पेयमामवातविनाशनम् ॥ शटीविश्वौषधीकल्कं वर्षाभूक्वाथसंयुतम् । सप्तरात्रंपिबेज्जन्तुरामवातविनाशनम् ॥इति शट्यादिः ॥ ६१० ॥

पीपल,पीपलामूल,चव्य,चीता तथा सोंठ इनके काढ़ेके पीनेसे आमवातका नाशहोताहै कचूर और सोंठके कल्कको पुनर्नवाके काढ़ेकेसाथ सातदिन पीनेसे आमवातका नाशहोताहै इतिशट्यादि६१०॥

रास्नामृतारग्वधदेवदारुत्रिकण्टकैरण्डपुनर्नवानाम् । क्वाथंपिबेन्नागरचूर्णमिश्रंज ङ्घोरुपार्श्वत्रिकपृष्ठशूली ॥ इति रास्नासप्तकः ॥ ६११ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

रासना, गिलोय, अमलतास, देवदारु, गोखुरू, रेंडी और पुनर्नवा इन [illegible] के काढेमें सोंठका चूर्ण मिलाने से पिंडली, जंघा, पसली, त्रिक तथा पीठकाशूल नष्ट होताहै इति रा[illegible]नासप्तक ॥ ६११ ॥

आमवातेकणायुक्तंदशमूलीजलंपिबेत् [illegible]का अ[illegible]अगाविश्वंगुडूचीनागरेणवा । चित्रकेन्द्रयवापाठाकटुकातिविषाभयाः आ[illegible]गेन्दु[illegible]कोष्ठग[illegible]र्णपेयंसुखाम्बुना ॥ ६१२ ॥

दशमूल के काढेमें पीपल डालकर पीने से सोंठ तथा [illegible] गिलोय के सेवनसे चीता, इन्द्रयव, पाठा, कुटकी, [illegible] इनक[illegible] [illegible]नेनसे [illegible] से आमवात का नाश होताहै ॥ ६१२ ॥

पुनर्नवामृताशुण्ठीशताह्वावृद्धदारकम् । शटीमुण्डी[illegible]काचूर्णमारनालेनपा[illegible] आमाशयोत्थवातघ्नंचूर्णंपेयंसुखाम्बुना । आमवातंनिहन्त्याशुगृध्रसीमुद्धतामपि [illegible]मा इति पुनर्नवादिचूर्णम् ॥ ६१३ ॥

पुनर्नवा, गिलोय, सोंठ, सौंफ, बिधारा, कचूर और मुंडी इनसबके चूर्णको आरनाल अथ जलके साथ पीने से आमवात तथा बढीहुई गृध्रसीका शीघ्र नाश होताहै इति पुनर्नवादिचूर्ण ६१२

कर्षनागरचूर्णस्यकाञ्जिकेनपिबेत्सदा । आमवातप्रशमनंकफवातहरंपरम् ॥ पञ्चकोलकचूर्णन्तुपिबेदुष्णेनवारिणा । मन्दाग्निशूलगुल्मामकफारोचकनाशनम् ॥ आमवातगजेन्द्रस्यशरीरवनचारिणः । एकएवनिहन्त्याशुएरण्डस्तैलकेशरी ॥ एरण्डतैलयुक्तांहरीतकींभक्षयेन्नरोविधिवत् । आमानिलार्तियुक्तोगृध्रसीवृद्ध्यार्दितोनियतम् ॥ आरग्वधस्यपत्राणिभृष्टानिकटुतैलतः । आमघ्नानिनरःकुर्यात्सायंभक्तावृतानिच ॥ ६१४ ॥

१ तोले सोंठ के चूर्णको कांजीके साथ नित्यपीने से आमवात कफ तथा वातका नाश होताहै पंचकोलके चूर्णको गरम जल के साथ पीनेसे मंदाग्नि, शूल, गोला, आमदोष, कफ तथा अरुचि का नाश होताहै शरीररूपी वनमें विचरनेवाले आमवात रूपी हाथीको केवल रेंडी का तेलरूपी सिंह मारताहै रेंडीके तेलके साथ हडके चूर्णको खानेसे आमवात, गृध्रसी, वृद्धि तथा अर्दित रोगका नाश होताहै अमलतास के पत्तोंको कडुए तेलमें भूनकर सायंकालके भोजनके साथ खानेसे आमवातका नाश होताहै ॥ ६१४ ॥

वायुःकट्याश्रितःशुद्धःसामोवाजनयेद्रुजम् । कटीग्रहःसएवोक्तःपंगुसक्थ्नोर्द्वयोर्वधात् ॥ शुण्ठीगोक्षुरक्काथःप्रातःप्रातर्निषेवितः । सामेवातकटीशूलेपाचनंरुक्प्रणाशनम् ॥ यवक्षारसमायुक्तंमूत्रकृच्छ्रविनाशनम् । दशमूलीकषायेणपिबेद्वानागरम्भसा ॥ कटीशूलेषुपातव्यंतैलमेरण्डसम्भवम् । महौषधगुडूच्योश्चक्काथंपिप्पलिसंयुतम् ॥ पिबदामेसरुक्कोष्ठेकटीशूलेविशेषतः । विशोध्यैरण्डबीजानिपिष्ट्वाक्षीरेविपाचयेत् ॥ तत्पायसंकटीशूलेगृध्रस्यांपरमौषधम् । सर्पिस्तैलंगुडंसुक्तंपञ्चमंविश्वभेषजम् ॥ पीतमेतद्धवेत्सद्यस्तर्पणंकटिशूलनुत् । नहिचैतत्समंकिंचिन्निरामेकटिमारुते ॥ शुक्तरुवल्कलसहितंगोमूत्रंस्थापितन्तुसप्ताहम् । हिंगुवचाशतपुष्पासैन्धवयुक्तेनतेनाथ ॥ तत्पुटपक्वंहन्यात्कटीरुजंदारुणंपुंसाम् । आममेदोवृद्धिभवान्विकारांश्चानिलोद्भवान् ॥ ६१५

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आमयुक्त अथवा केवल वात कमरमें स्थित होकर जो पीडाको उत्पन्न करती है उसको कटिग्रह कहते हैं और दोनों जंघाओं के नाश होनेसे पंगुता होती है सोंठ तथा गोखुरूके काढेको प्रातःकाल पीनेसे आमवात में आमका पाक और कटि यहाँ पीडाका नाश होताहै और इसमें जवाखार डालकर पीनेसे मूत्रकृच्छ्र का ना... ...तरा काढा सोंठका काढा अथवा रेंडीका तेल पीने से आमवात का न... ...ह सुश्रुत के काढे में पीपल डालकर पीने से आमवात का... ...का नाश होताहै रेंडी के बीजोंको छीलकर पीसकर दूध ... ...तथा कटिशूलं च । के... घी, तेल, गुड, सिरका और सोंठ ... ...और कमरके शूलका नाश होताहै आमरहित कमरके शूलकी इससे ... और कोई औषधि नहीं है असरसकी छालको सातदिन तक गोमूत्रमें भिगोवे फिर इसमें ... बच, सौंफ और सैंधानोन मिलाकर पटपाक करे इसके सेवन से भयंकर कमरकी पीडा आम-...दकी वृद्धि से हुए रोग और वातके विकार नष्ट होते हैं ॥ ६१५ ॥

गुडूच्यमृतानागरगोक्षुरुमुण्डितिकावरुणकैःकृतंचूर्णम् । मस्त्वारनालपीतंसामानिलनाशनंख्यातम् ॥ इति अमृताद्यंचूर्णम् ॥ ६१६ ॥

गिलोय, सोंठ, गोखुरू, मुण्डी और वरुणाकी छाल इनसबके चूर्णको दहीके तोड अथवा आरनालके साथ पीनेसे आमवातका नाश होताहै ॥ इति अमृतादिचूर्ण ॥ ६१६ ॥

अलम्बुषागोक्षुरकंत्रिफलानागरामृताः । यथोत्तरंभागवृद्धयाश्यामाचूर्णंचतत्समम् ॥ पिबेन्मस्तुसुरातक्रकाञ्जिकोष्णोदकेनवा । आमवातंजयत्याशुसशोथंवातशोणितम् ॥ त्रिकजानूरुसन्धिस्थज्वरारोचकनाशनम् । अलम्बुषादिकंचूर्णंरोगानीकविनाशनम् । हरीतक्यक्षधात्रीभिःप्रसिद्धात्रिफलाक्रमात् । प्रत्येकंतेनवायुञ्ज्याद्भागवृद्धियथोत्तरम् ॥ इति अलम्बुषादिचूर्णम् ॥ ६१७ ॥

मुंडी १ भाग, गोखुरू २ भाग, हड ३ भाग, बहेडा ४ भाग, आमला ५ भाग, सोंठ ६ भाग और गिलोय ७ भाग इन संपूर्ण औषधियोंको पीसकर सबकी बराबर काली सारिवामिलावे दहीका तोड, मद्य, कांजी अथवा गरमजलके साथ इसके सेवनसे सूजनसहित आमवात, ज्वर, अरुचि और त्रिक, घुटने, जंघा तथा सन्धियों की पीडाका नाश होताहै ॥ इति अलम्बुषादिचूर्ण ॥ ६१७ ॥

अलम्बुषागोक्षुरकंमूलंवरुणकस्यच । गुडूचीनागरंचेतिसमभागानिकारयेत् ॥ काञ्जिकेनतुतत्पेयंबिडालपदमात्रकम् । आमवातेप्रवृद्धेचयोगोयममृतोपमः ॥ इति अलम्बुषाद्यंचूर्णम् ॥ ६१८ ॥

मुंडी, गोखुरू, वरुणा की जड, गिलोय और सोंठ इन सब बराबर औषधियोंको पीसकर कांजी के साथ पीनेसे बहुत बढीहुई आमवातका नाश होताहै ॥ इति अलम्बुषादिचूर्ण ॥ ६१८ ॥

अलम्बुषागोक्षुरकंगुडूचीवृद्धदारुकम् । पिप्पलीत्रिवृतामुस्तावरुणंसपुनर्नवम् ॥ त्रिफलानागरञ्चेतिसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् । मस्त्वारनालतक्रेणपयोमांसरसेनवा ॥ आमवातंनिहन्त्याशुश्वयथुंसन्धिसंस्थितम् । इति अलम्बुषाद्यंचूर्णम् ॥ ६१९ ॥

मुण्डी, गोखुरू, गिलोय, विधारा, पीपल, रसौत, मोथा, वरुणा, पुनर्नवा, त्रिफला और सोंठ इनसम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाग औषधियोंको महीन पीसके दहीका तोड, काँजी, मट्ठा, दूध तथा मांसके रसकेसाथ सेवन करने से आमवात और सन्धियों की सूजनका नाश होताहै ॥ इति अलम्बुषादिचूर्ण ॥ ६१६ ॥

माणिमन्थस्यभागौद्वौयवान्यास्तद्वदेवतु का [illegible] जमोदाया नागराद्भागपञ्चकम् ॥ दशद्वौचहरीतक्याःसूक्ष्मचूर्णीकृतंशु [illegible] केणसर्पिषोष्णोदकेनवा ॥ पीतञ्जयत्यामवातंगुल्महृद्वस्तिजानूगदान् । [illegible] ॥ च ॥ विबन्धंजाठरानूरोगानूकटीवस्तिसम [illegible] तानुलाम [illegible] ननस [illegible]
इति वैश्वानरचूर्णम् ॥ ६२० ॥

सेंधानोन तथा अजवाइन दो दो भाग, अजमोद ३ भाग, सोंठ ५ भाग और हड १२ भाग सबको महीन पीसकर दहीका तोड, आरनाल, मट्ठा, घी अथवा गरम जलके साथ पीने से आम [illegible] गोला, हृदय तथा वस्तिके रोग, प्लीहा, ग्रन्थि शूल, आनाह, बवासीर, विबन्ध और उदर तथा [illegible] के रोग यह सब नष्ट होते हैं यह चूर्ण वातको अधोगामी करताहै ॥ इति वैश्वानरचूर्ण ॥ ६[illegible]

असीतकंमागधिकागुडूचीश्यामावराहीगजकर्णशुण्ठीः । समाधृताःकृत्स्नमिदन्तु चूर्णंपिबेत्तदुष्णोदकमण्डयूषैः ॥ तक्रैरसैर्म्मद्यसमस्तुभिर्वायथेष्टचेष्टस्यचभोजनस्य । अवाहुकंगृध्रसिखञ्जवातंविश्वाचितूनीप्रतितूनिरोगान् ॥ जंघामवातार्दितवातरक्तंकटीग्रहंगुल्मगुदामयञ्च । सक्रोष्टुकंपाण्डुगरोग्रशोफंहन्यादूरुस्तम्भमुदीर्णवेगम् ॥ इति असीतकंचूर्णम् ॥ ६२१ ॥

असीतक, पीपल, गिलोय, कालीसारिवा, बाराहीकन्द, गजकर्ण और सोंठ इनसबको समभाग लेकर चूर्ण करके गरम जल, मांड, यूष, मट्ठा, मांसरस, मद्य तथा दही के तोडके साथ सेवनकरे इसक सेवनमें कुछ भोजनादिका नियम नहीं है इसके सेवनसे अपबाहुक, गृध्रसी, खंजवात, विश्वाची, तूनी, प्रतितूनी, पंगु, आमवात, अर्दित, वातरक्त, कटिग्रह, गोला, बवासीर, क्रोष्टुशीर्ष, पांडु, गरदोष, सूजन और बहुत बढ़ाहुआ ऊरुस्तम्भ यह सब नष्ट होतेहैं ॥ इति असीतकचूर्ण ॥ ६२१ ॥

शुण्ठीनांषट्पलंपिष्टंधान्याकंद्विपलंतथा । चतुर्गुणंजलंदत्त्वा घृतप्रस्थंविपाचयेत् ॥ वातश्लेष्मामयान् हन्यादग्निवृद्धिकरंपरम् । दुर्नामश्वासकासघ्नंबलवर्णाग्निवर्द्धनम् ॥ शुण्ठीधान्यकघृतम् ॥ ६२२ ॥

सोंठ २४ तोले, धनियां ८ तोले, घी ६४ तोले और घीका चौगुना जल इनसबको विधिपूर्व्वक पाककरके इस घृतके सेवनसे वातकफके रोग, बवासीर, श्वास तथा खांसी नष्ट होती है और बल, वर्ण तथा अग्निकी वृद्धि होती है ॥ इति शुंठीधान्यकघृत ॥ ६२२ ॥

सर्पिर्नागरकल्केनसौवीरं तच्चतुर्गुणम् । सिद्धमग्निकरंश्रेष्ठमामवातहरंपरम् ॥ इति शुण्ठीघृतम् ॥ ६२३ ॥

चौगुनी काँजी और सोंठके कल्कके साथ पाक कियेहुये घीके सेवन से अग्नि की वृद्धि और आमवातका नाश होताहै ॥ इति शुंठीघृत ॥ ६२३ ॥

नागरक्काथकल्काभ्यां घृतप्रस्थंविपाचयेत् । चतुर्गुणेनतेनाथ केवलेनजलेनवा ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

वातश्लेष्मप्रशमनमग्निसन्दीपनंपरम् । नागरंघृतमित्युक्तंकटीशूलाम्रनाशनम् ॥ इति शुण्ठीघृतम् ॥ ६२४ ॥

६४ तोले घीको सोंठ[illegible] यह [illegible] गुने सोंठ के काढ़े अथवा केवल जलके साथ पाक करके पीनेसे वात [illegible] ह सूक्ष्म [illegible] मवात का नाश होताहै और अग्निदीप्त होती है ॥

[illegible] णमन्थ[illegible]च । कल्कान्कृत्वातुपलिकान् घृतप्रस्थंविपाचये [illegible] तत्सर्पिर्जठरापहम् । शूलंविबन्धमानाहमामवातकटीग्रहम् ॥ [illegible]द्ग्रहणीदोषं मन्दाग्निदीपनंपरम् । पुष्ट्यर्थंपयसासाध्यंदध्नाविण्मूत्रसंग्रहे । [illegible]दीपनार्थमतिमतामस्तुनाचप्रकीर्तितम् ॥ इति कांजिकषट्पलघृतम् ॥ ६२५ ॥

गुगुहींग, सोंठ, पीपल, मिर्च, चव्य तथा सेंधानोन इन सब के चार२ तोले कल्क और २५६ तोले आरनाल के द्वारा ६४ तोले घीका पाककरके सेवनकरने से उदर, शूल, विबन्ध, आनाह, आमवात, कमर [illegible] पीडा तथा ग्रहणी का नाश होताहै और अग्नि की दीप्ति होती है इस घी को चौगुने दूध के साथ पाककरने से पुष्टता दहीके साथ पाककरने से मलमूत्र के अवरोध का नाश और दहीके तोड़के साथ पाक करने से अग्नि की वृद्धि होती है ॥ इति कांजिकषट्पलघृत ॥ ६२५ ॥

शृंगवेरयवक्षारपिप्पलीमूलपिप्पलीः। पिष्ट्वाविपाचयेत्सर्पिरारनालंचतुर्गुणम् ॥ शूलंविबन्धमानाहमामवातंकटीग्रहम् । नाशयेद्ग्रहणीदोषमग्निसन्दीपनंपरम् ॥ इति शृंगवेराद्यंघृतम् ॥ ६२६ ॥

सोंठ, जवाखार, पीपलामूल और पीपल इन सबके समभाग चूर्ण के द्वारा चौगुने आरनाल के साथ घीका पाककरके सेवन करने से शूल, विबंध, आनाह, आमवात, कटिग्रह तथा ग्रहणीका नाश होताहै और अग्नि दीप्त होती है ॥ इति शृंगवेरादिघृत ॥ ६२६ ॥

पिबेद्बिन्दुघृतंवापिधान्वन्तरमथापिवा । महाशुण्ठीघृतंवापिआमवातेपुनःपुनः ॥ यत्किञ्चिल्लेखनंसर्पिर्दीपनंपाचनञ्चयत्। तत्सर्वमामवातेषुयोज्यंवामस्तुषट्पलम् ६२७॥

बिन्दुघृत, धान्वन्तरघृत अथवा महाशुंठीघृत आमवातमें वारंवार पीना चाहिये जो घृत लेखन, दीपन तथा पाचनहोय वह सब घृत और मस्तुषट्पलघृत आमवात में देना चाहिये ॥ ६२७ ॥

अजमोदमरिचपिप्पलीविडंगसुरदारुचित्रकशताह्वाः। सैन्धवंपिप्पलीमूलंभागानवकस्यपलिकाःस्युः ॥ शुण्ठीदशपलिकास्यात्पलानितावन्तिवृद्धदारस्य । पथ्यापलानिपञ्चसर्वाण्येकत्रकारयेच्चूर्णम् ॥ समगुडवटकानदतश्चूर्णंवात्युष्णवारिणापिबतः । नश्यन्त्यामानिलजाःसर्वेरोगाःसकुष्ठाश्च ॥ प्रतितूनीविश्वाचीरोगाश्चान्येऽपिगृध्रसीचोग्राः । कटिपृष्ठगुदस्फुटनञ्चैवातिजङ्घयोस्तीव्रम् ॥ श्वयथुश्चसर्वसन्धिषुयेचान्येत्वामवातसम्भूताः। सर्वेप्रयान्तिनाशन्तमइवसूर्यांशुविध्वस्तम् ॥ क्षुद्बोधमरोगित्वंस्थिरयौवनमथबलीपलितनाशम् । कुरुतेचतथाभ्यासाद्गुणानथान्यांस्तथासुबहून्॥ इत्यजमोदादिः ॥ ६२८ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अजमोद, मिर्च, पीपल, बायबिडंग, देवदारु, चीता, सौंफ, सेंधानोन तथा पीपलामूल यह सब चार२ तोले सोंठ तथा बिधारा चालीस २ तोले और हड २० तोले इन सब बराबर औषधियोंको पीसकर और सबकी बराबर गुड मिलायके बडे बनाकर खानेसे ... गरम जलके साथ केवल चूर्ण पीने से बहुत कठिन आमवात, प्रतितूनी, विश्वाची, गृध्रसी ... जन, आमवातजनितरोग, वातजरोग और कमर, पीठ, गुदा तथा जंघाओंकी पी... र क्षुधाकी ... आरोग्यता, युवावस्थाकी स्थिरता, झुरीं तथा श्वेतबालों ... इनक ... इति अजमोदादि ॥ ६२८ ॥

चित्रकंपिप्पलीमूलंयवानींकारवींतथा। विडंगमजमोदा ... सुरदारु... लासैन्धवंकुष्ठं रास्नागोक्षुरधान्यकम्। त्रिफलामुस्तकंव्योषन्त्वगुशीरंयवाग्रजम्॥ ता लीसपत्रंपत्रञ्च सूक्ष्मचूर्णानिकारयेत्। यावन्त्येता...चूर्णानि तावन्मात्रन्तुगुग्गुलम्। संमर्द्यसर्पिषागाढं स्निग्धेभाण्डेनिधापयेत्। अतोमात्रांप्रयुञ्जीत यथेष्टाहारवा... अग्निमान्द्यामवातादीन्कृमिदुष्टव्रणानपि। प्लीहगुल्मोदरानाहदुर्नामानिविनाशयेत्॥ अग्निञ्चकुरुतेदीप्तंतेजोवृद्धिंबलंतथा। वातरोगान्जयत्येषसन्धिमज्जागतानपि॥ इति योगराजगुग्गुलुः॥ ६२९॥

चीता, पीपलामूल, अजवाइन, कालीजीरी, बायबिडंग, अजमोद, जीरा, देवदारु, चव्य, इलायची, सेंधानोन, कूट, रास्ना, गोखुरू, धनियां, हड, बहेडा, आमला, मोथा, त्रिकटु, दालचीनी, खस, जवाखार, तालीस और तेजपात इन सबको समभाग सूक्ष्म पीसकर इसके बराबर गूगुल मिलावे और घी में खूब मलकर चिकने पात्र में रखछोडे इस औषधिको मात्राके अनुसार सेवनकरके इच्छाके अनुसार आहार करे इससे मंदाग्नि, आमवात, कृमि, दुष्टव्रण, प्लीहा, गोला, उदर, आनाह, बवासीर और संधि तथा मज्जामें गईहुई वायुके रोग यह सब नष्ट होते हैं अग्नि दीप्त होती है और तेज तथा बलकी वृद्धि होतीहै॥ इति योगराजगुग्गुल॥ ६२९॥

प्रसारण्याढकेक्वाथेप्रस्थोगुडरसोमतः। पक्वःपञ्चोषणरजःयुक्तस्यादामवातहा॥ इति प्रसारणीलेहः॥ ६३०॥

गंधप्रसारिणीके २५६ तोलेकाढेमें ६४तो० गुडका शर्बत, पीपलामूल, चीता, सोंठ, पीपल तथा मिर्चके चूर्णको मिलाकर अवलेह पाककरे इसके सेवनसे आमवातका नाशहोताहै॥ इति प्रसारिणीलेह६३०॥

नागरस्यपलान्यष्टौघृतस्यपलविंशतिम्। क्षीरद्विप्रस्थसंयुक्तंखण्डस्यार्द्धशतंपचेत्॥ व्योषत्रिजातकद्रव्यात्प्रत्येकञ्चपलंपलम्। निदध्याच्चूर्णितंतत्रखादेदग्निबलंप्रति॥ आमवातप्रशमनंबलपुष्टिविवर्द्धनम्। बल्यमायुष्यमोजस्यंवलीपलितनाशनम्॥ आमवातप्रशमनंसौभाग्यकरमुत्तमम्। इति खण्डशुण्ठी॥ ६३१॥

सोंठ ३२ तो० घी ८० तो० दूध १२८ तो० सोंठ, पीपल, मिर्च, दालचीनी, इलायची तथा तेजपात यह सब चार २ तो० और शक्कर २०० तो० इन सबको विधिपूर्वक पाककरके अग्निबलके अनुसार सेवन करने से आमवात झुरीं तथा बालोंका पकना यह सब नष्ट होतेहैं और बल, पुष्टि, आयु तथा ओज इन सबकी वृद्धि होती है और सौभाग्य होताहै॥ इति खण्डशुंठी॥ ६३१॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पलंशतंरसोनस्यतिलस्यकुडवंतथा । हिंगुत्रिकटुकंक्षारौद्वौपञ्च लवणानिच ॥ शतपुष्पानिशाकुष्ठंपिप्पलीमूलचित्रकौ । अजमोदाजवानीचधान्यकञ्चापिबुद्धिमान् ॥ प्रत्येकञ्चपलञ्चैषांश्लक्ष्णचूर्णानिकारयेत् । घृतभाण्डेदृढेचैवस्थापयेद्दिनषोडशम् ॥ प्रक्षिप्यतैलमानीञ्चप्रस्थ[illegible] । खादेत्कर्षप्रमाणन्तुतोयंमद्यंपिबेदनु ॥ आमवातेरक्तवाते[illegible] सुश्रुत[illegible]मारेऽनलेमन्देकासेश्वासेगरेषुच ॥ सोन्मादे [illegible] रसोनपिण्डः ॥ ६३२ ॥

[illegible] १६ तो० ह[illegible] त्रिकटु, जवाखार, सज्जी, पांचौनोन, सौंफ, हल्दी, त्रि-[illegible]मूल, चो[illegible] अजमोद, अजवाइन तथा धनियां चार २ तोले इनसब औषधियोंको महीन चूर्णकरके सोलह दिनतक घीके पात्रमें रक्खे फिर तेल तथा कांजी बत्तीस २ तोले उसमें मिला [illegible] १ तोला रोज़खाय और जल अथवा मद्य पानका अनुपान करे इसके द्वारा आमवात, रक्तवात [illegible]ग तथा एकांगगतवात, मिर्गी, मंदाग्नि, खांसी, श्वास, गरदोष, उन्माद, वात, भग्न, शूल और [illegible]गका नाश होताहै ॥ इति रसोनपिण्ड ॥ ६३२ ॥

प्रसारण्यारसेसिद्धंतैलमेरण्डजंपिबेत् । सर्वदोषहरञ्चैवकफरोगहरंपरम् ॥ इति प्रसारणीतैलम् ॥ ६३३ ॥

गंधप्रसारणी के रसके साथ पाक कियेहुए रेंडीके तेल के पीने से सब प्रकारके रोग और विशेष करके कफ के रोग नष्ट होते हैं ॥ इति प्रसारणीतैल ॥ ६३३ ॥

द्विपञ्चमूलीनिर्य्यासफलदध्यम्लकाञ्जिकैः । तैलंकट्यूरुपार्श्वार्तिकफवातामयान्ग्रहान् ॥ हन्तिवस्तिप्रदानेनकरोत्यग्निबलंमहत् । इति द्विपञ्चमूलाद्यंतैलम् ॥ ६३४ ॥

दशमूल का काढ़ा, त्रिफला, खट्टादही और कांजीके द्वारा पाककिये तेलकी वस्ति देनेसे कमर, जंघा तथा पसलियों की पीडा और कफ तथा वातके रोग निवृत्त होतेहैं और अत्यन्त अग्निकी वृद्धि होती है ॥ इति द्विपंचमूलादितैल ॥ ६३४ ॥

सैन्धवंश्रेयसीरास्नाशतपुष्पाजवानिका । स्वर्जिकामरिचंकुष्ठंशुण्ठीसौवर्च्चलंविडम् ॥ वचाजमोदासरणीपौष्करंमधुकंकणाम् । एकान्यर्द्धपलांशानिसूक्ष्मपिष्टानिकारयेत् ॥ प्रस्थमेरण्डतैलस्यप्रस्थन्तुशतपुष्पजम् । काञ्जिकंद्विगुणंदत्त्वामस्तुचद्विगुणंतथा ॥ एतत्सम्भृत्यसम्भारंशनैर्मृद्वग्निनापचेत् । सिद्धमेतत्प्रयोक्तव्यमामवातहरंपरम् ॥ पानाभ्यञ्जनवस्तौचकुरुतेऽग्निबलंभृशम् । वातार्त्तिवंक्षणेशस्तंकटीजानूरुसन्धिजे ॥ शूलेहृत्पार्श्वजेतद्वत्वृद्धेश्लेष्मणिपीडिते ॥ बाह्यायामार्दितानाहैरन्त्रवृद्धिनिपीडिते । अन्यांश्चानिलजानूरोगानूनाशयत्याशुदेहिनाम् ॥ इति बृहत्सैन्धवाद्यंतैलम् ॥ ६३५ ॥

सेंधानोन, गजपीपल, रासना, सौंफ, अजवाइन, सज्जी, मिर्च, कूट, सोंठ, कालानोन, बिड्नोन, बच, अजमोद, गंधप्रसारणी, पुष्करमूल, मुलहठी तथा पीपल यहसब दो २ तोले महीन पीसकर ६४ तोले सौंफका काढ़ा और कांजी तथा दहीका तोर एकसौ अट्ठाईस २ तोले ऊपर कहीहुई संपूर्ण वस्तुओं के साथ ६४ तोले रेंडी का तेल मंदाग्नि में पाककरके पान अभ्यंग तथा वस्तिमें व्यवहार करने से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आमवात, वातकेरोग, दंक्षण, कमर, घुटने, जंघा, संधि, हृदय तथा पसली की पीडा, बढाहुआ कफ, बाह्यायाम, अर्दित, आनाह, अन्त्रवृद्धि और अन्य २ वातरोगोंका नाश होताहै और अत्यन्त अग्निकी वृद्धि होती है ॥ इति बृहत्सैंधवादितैल ॥ ६३५ ॥

स्वल्पप्रसारणीतैलंतैलंवासैन्धवादिकम् । दशमू[illegible]का अ[illegible]दानंप्रशस्यते ६३६ ॥

छोटाप्रसारणीतैल सैंधवादितैल अथवा दशमूलादि[illegible]गोमू[illegible] [illegible]तमें श्रेष्ठहै ६३६॥

तैलस्यद्विपलंदद्यात्काञ्जिकस्यचतुष्पलम् । द[illegible]

वचामदनवाटयावाशताङ्काकुष्ठसैन्धवैः । पिप्पल्यति[illegible]षामुस्ता[illegible]

अक्षांशिकैश्चतत्सर्व्वमन्थयीतविचक्षणः । प्रस्थार्द्धंप्रथमंदेयो[illegible]नरा[illegible]

द्वितीयेचतृतीयेचवर्जयेत्प्रसृतद्वयम् । सर्व्ववातविकारेषुमेहेषुवृषणामये ॥ कुक्षाहृत्

पृष्ठपार्श्वेषुजानुजंघाकटीग्रहे । विबन्धानाहरोगेषुश[illegible]श्मरिपीडिते ॥ भग्नविश्लि[illegible]मा

गात्रेषुपिच्चितेषुक्षतेषुच । एतन्निरूहवत्प्राज्ञोनिरायासोमहागुणः ॥ ६३७ ॥

तेल ८तोले, कांजी १६ तोले, दशमूल का काढा तथा गोमूत्र बीस२तोले, बच, मैनफल, बरिय। सौंफ, कूट, सेंधानोन, पीपल, अतीस, मोथा, रासना, कायफल और पुष्करमूल यह सब एक २ तोले इन सब औषधियोंको एकसाथ मथकर पहलीबार बत्तीस तोले और दूसरी तथा तीसरीबार सोलह तोले औषध के द्वारा निरूहवस्ति देनी चाहिये इससे सब प्रकारके वातरोग, प्रमेह, अण्डवृद्धि, विबन्ध, आनाह, शर्करा, पथरी, अंगोंका टूटना तथा उतरना, पिच्चित, क्षत और कुक्षि, हृदय, पीठ, पसली, घुटने, जंघा तथा कमर की पीडा यह सब नष्ट होते हैं ॥ ६३७ ॥

दधिमत्स्यगुडक्षीरंपोतकीमाषपिष्टकम् । वर्जयेदामवातार्तोमांसमानूपसम्भवम् ॥ अभिष्यन्दकरायेचयेचान्येगुरुपिच्छिलाः । वर्जनीयाःप्रयत्नेन आमवातार्द्दितैर्नरैः ६३८॥

दही, मछली, गुड, दूध, पोय, उर्द, पीठी, अनूपमांस, अभिष्यन्दी, भारी तथा सचिक्कणवस्तु आमवात में यत्नपूर्वक छोडदेनी चाहिये ॥ ६३८ ॥

रास्नैरण्डशतावरीसहचरादुस्पर्शवासामृता । देवाङ्कातिविषाभयाघनशटीशुण्ठी कषायःकृतः ॥ पीतःसोरुबूतैलएषविहितःसामेसशूलेऽनिले । कट्यूरुत्रिकपृष्ठकोष्ठजठरःक्रोडेषुवामार्त्तिजित् ॥ इति मध्यमरास्नादिक्काथः ॥ ६३९ ॥

रास्ना, रेंडी, सतावर, झिंटी, जवासा, बांसा, गिलोय, देवदारु, अतीस, हड, मोथा, कचूर और सोंठ इन सबके काढेमें रेंडीका तेल डालकर पीनेसे आमवात, वातकी पीडा और कमर, जंघा, त्रिक, पीठ, कोष्ठ, उदर तथा क्रोडमें प्राप्तहोनेवाली आमकी पीडाका नाश होताहै ॥ इति मध्यमरासनादिक्काथ ६३९ ॥

रास्नावातारिमूलञ्चवासकञ्चदुरालभम् । शटीदारुबलामुस्तानागरातिविषाभयाः॥ श्वदंष्ट्राव्याधिघातञ्चमिसिधान्यपुनर्नवाः । अश्वगन्धामृताकृष्णावृद्धदारुशतावरा ॥ वचासहचरश्चैवचविकाबृहतीद्वयम् । समभागान्वितैरेतैरास्नाद्विगुणभागिकैः ॥ कषायं पाययेत्सिद्धमष्टभागावशेषितम् । शुण्ठीचूर्णसमायुक्तमामाद्येनयुतंतथा ॥ अलम्बुषादिसंयुक्तमजमोदादिसंयुतम् । यथादोषंयथाव्याधिप्रक्षेपंकारयेद्भिषक् ॥ सर्वेषुवातरोगेषु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सन्धिमज्जगतेषुच। आनाहेषुचसर्वेषुसर्वगात्रानुकम्पने ॥ कुब्जकेवा [illegible]नेचैवपक्षाघातेत थार्दिते। जानुजंघास्थिपीडायांगृध्रस्यांचहनुग्रहे ॥ प्रशस्तंवातरक्तेस्याद्रूरुस्तम्भेतथार्श सि। विश्वाचीगुल्महृद्रोगविसूचीक्रोष्टुशीर्षके ॥ अन्त्रवृद्धौश्लीपदेचयोनिशुक्रामयेतथा। पुंसांमेढ्रगतेरोगेस्त्रीणांबन्ध्या[illegible] षितांगर्भदंमुख्यंनास्तिकिञ्चिदतःपरम्। स र्वेषांपाचनानान्तु[illegible] [illegible]रास्नादिकंनाम प्रजापतिविनिर्मितम् ॥ इति

[illegible]ह [illegible]

[illegible]ासा, जवासा, [illegible]चूर, देवदारु, बरियारा, मोथा, सोंठ, अतीस, हड, गो-[illegible], सा[illegible]नंवा, असगन्ध, गिलोय, पीपल, विधारा, सतावर, बच, झिंटी, चव्य [illegible] भटकटैया यह सब समभाग और रासना के दोभाग इनके अष्टमांश काढ़ेमें शुंठीचूर्ण आ-[illegible]दिचूर्ण अलम्बुषादिचूर्ण अथवा अजमोदादिचूर्ण दोष तथा रोगके अनुसार डालकर पीनेसे संधि [illegible]ज्जागत सबप्रकार के वातरोग, आनाह, गात्रकम्प, कुब्जता, बौनापन, पक्षाघात, अर्दित, [illegible]डली तथा हड्डियोंकी पीड़ा, गृध्रसी, हनुग्रह, वातरक्त, ऊरुस्तम्भ, बवासीर, विश्वाची, गुल्म, [illegible]क रोग, विसूचिका, क्रोष्टुशीर्ष, अन्त्रवृद्धि, श्लीपद, योनिरोग, वीर्य्यरोग, लिंगरोग तथा बन्ध्या-पन इन सबका नाश होताहै इसके द्वारा स्त्रियों के गर्भरहताहै और सम्पूर्ण पाचन औषधियों में यह अत्यन्त श्रेष्ठहै यह महारासनादिक्काथ प्रजापति ने बनायाहै ॥ इति महारासनादिक्काथ ॥ ६४० ॥

रास्नाविश्वविडङ्गानिरुबुकंत्रिफलातथा। दशमूलंपृथक्श्यामाक्काथोवातामयापहः ॥ अर्द्धावभेदकेत्वाढ्येअर्दितेवातखञ्जके । नेत्ररोगेशिरःशूलेज्वरापस्मारयोस्तथा ॥ म नोभ्रंशेचविविधेकथितञ्चशुभप्रदम् । इति रास्नादशमूलम् इतिआमवातनिदानचि कित्साधिकारः ॥ ६४१ ॥

रासना, सोंठ, बायबिडंग, रेंडी, त्रिफला, दशमूल और कालीसारिवा इन सबका काढ़ा बनाकर पीनेसे वातरोग, आधासीसी, ऊरुस्तम्भ, अर्दित, वातखंज, नेत्ररोग, शिरकीपीडा, ज्वर, मिर्गी और उ-न्माद इनसबरोगोंका नाश होताहै ॥ इति रासनादशमूल ॥ इति आमवातचिकित्साधिकार ॥ ६४१ ॥

अथ पित्तव्याध्यधिकारस्तत्रपित्तव्याधीनांविप्रकृष्टंनिदानमाह ॥

कट्वम्लोष्णविदाहितीक्ष्णलवणक्रोधोपवासातपस्त्रीसम्भोगतृषाक्षुधाभिहननव्याया ममद्यादिभिः । मध्येचापिहिभोजनस्यजरताभुक्तेनमध्यक्षणे मध्याह्नेरजनीनिदाघशर दोःपित्तंकरोत्यामयान् ॥ मद्यादिभिरित्यादिशब्देनदधिमत्स्यमाषतिलातसीकाञ्जि कादीनिसंगृह्यन्ते। तीक्ष्णंराजिकादि ॥ मध्येचापिहिभोजनस्ययावत्कालेनभुङ्क्तेतस्य कालस्यमध्यमभागे। जरताभुक्तेनभुक्तस्यजरणकालमध्येमध्यन्दिनेदिनमध्यांशे। रज नीत्रिधाविभक्तस्यदिवसस्यतथारात्रेर्मध्यमेंऽशे ॥ ६४२ ॥

पित्तव्याधियोंका अधिकार। पित्तव्याधियों के दूरवाले कारण ॥

कटु, अम्ल, उष्ण, विदाही, तीक्ष्ण तथा निमकीन वस्तु, क्रोध, लंघन, धूप, मैथुन, तृषा तथा क्षुधा का रोकना, व्यायाम, मद्य, दही, मछली, उर्द, तिल, अलसी तथा काँजी आदि भोजनका मध्य भो-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जनके पचने का समय, मध्याह्न, अर्द्धरात्रि और ग्रीष्म तथा शरदऋतु इन सब कारणों से कुपित पित्तरोगोंको उत्पन्न करताहै ॥ ६४२ ॥

अथ पित्तामयान्याह ॥

अकालपलितंनेत्ररक्तत्वंतस्यपीतिमा । तथा मूत्रस्यपीतत्वंमलस्यापिचपीतता ॥ नखानामामरक्तत्वंतेषामपिचपीतता । दन्तानां ... वपुषस्तथा ॥ तमसोदर्शनञ्चापितथाचवदनाम्लता । उच्छ्वासस्य ... च ॥ ... स्तथाक्रोधोदाहोभेदसमन्वितः । तेजोद्वेषश्चशीतेच्छाह्यतृप्तिश्च ... विदाहश्च जठरानलतीक्ष्णता । रक्तप्रवृत्तिर्विड्भेदः पुरीषस्योष्णता ... त्रकृच्छ्रंशुक्राल्पत्वन्तनूष्णता ॥ स्वेदस्यचापिदौर्गन्ध्यंदेहप्रावरणंतथा । शरीर... सादश्चपाकश्चवपुषस्तथा ॥ चत्वारिंशदमीपित्तव्याधयोमुनिभिर्मताः । एषांचिकित्सा तुस्वप्रकरणेबोद्धव्या ॥ इति पित्तव्याध्यधिकारः ॥ ६४३ ॥

पित्तकेरोग ॥

समयके विना बालोंका पकना, नेत्रोंका लालहोना, नेत्र, मल तथा मूत्रका पीलापन, नखो की रक्तता तथा पीतता, दांत तथा शरीरका पीलापन, अन्धकारसा दीखना, मुखका खट्टापन, श्वासकी उष्णता, धुमैली डकार, भ्रम, ग्लानि, क्रोध, दाह, भेद, तेजसे द्वेष, शीतकीइच्छा, तृप्तिका न होना, बेचैनी, भोजनका विदाह, अग्निकी तीक्ष्णता, रुधिर निकलना, मलभेद, मल तथा मूत्रकी उष्णता, मूत्रकृच्छ्र, वीर्यकी अल्पता, पतलापन तथा उष्णता, स्वेदमें दुर्गन्ध, कपडों में दुर्गन्ध, शरीर में शिथिलता और शरीरका पकना यह चालीस पित्तके रोग मुनिलोगोंने कहे हैं इनकी चिकित्सा अपने २ प्रकरणमें जाननी चाहिये ॥ इति पित्तव्याधि अधिकार ॥ ६४३ ॥

तत्र श्लेष्मव्याधीनां सामान्यतोविप्रकृष्टंनिदानान्याह ॥

गुरुमधुररसादिस्निग्धमन्दोदराग्निद्रवदधिदिननिद्राशीतनिश्चेष्टितानि । प्रथमदिवसभागेभुक्तमात्रेवसन्ते भवतिहिकफरोगोरात्रिभागेऽपिचाद्ये । मधुररसादिइत्यादिशब्देनाम्ललवणौगृह्येते ॥ निश्चेष्टितानिकायिकव्यापाराकरणम् प्रथमदिवसभागेत्रिधाविभक्तस्यदिवसस्याद्यभागेभुक्तमात्रभुक्तस्यपाककालस्य त्रिधाविभक्तस्यप्रथमकाले कफरोगोभवति ॥ ६४४ ॥

कफव्याधियों के सामान्यतासे दूरवाले कारण ॥

भारी, मधुर, खट्टी, निमकीन, स्निग्ध तथा पतली वस्तु, दही, दिनमें सोना, शीत, व्यायाम न करना, जठराग्नि की मन्दता, दिनका प्रथमभाग, भोजनका अन्त, वसन्तऋतु और रात्रिका पहलाभाग इन कारणोंसे कफके रोग होते हैं ॥ ६४४ ॥ तेचोच्यन्ते ॥

प्रथमंमुखमाधुर्य्यंतथैवमुखलिप्तता । मुखप्रसेकश्चतथानिद्राधिक्यंतथैवच ॥ कण्ठे घुर्घुरताचापिकटुकांक्षोष्णकामिता । बुद्धिमान्द्यमचैतन्यमालस्यंतृप्तिरेवच ॥ अग्निमांद्यमलाधिक्यंमलशैत्यंतथैवच । मूत्राधिक्यंमूत्रशौक्ल्यंशुक्राधिक्यंतथैवच ॥ स्तैमित्यं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

गौरवंशैत्यमेतएवहिविंशतिः । योगतोरूढितःप्रोक्तामुनिभिः श्लेष्मिकागदाः ॥ एषांचि कित्सातुस्वेप्रकरणेबोद्धव्या । इति श्लेष्मव्याध्यधिकारः ॥ ६४५ ॥

[illegible] यह [illegible] रोग ॥

मुखकी मधुरता तथा लि[illegible] लार बहना, निद्राकी अधिकता, कंठमें घुर्घुराहट, [illegible] सुखकी मन्दता, अचैतन्यता, आलस्य, तृप्ति, मन्दाग्नि, मल [illegible] मूत्रका अधिकता तथा शुक्लता, वीर्यकीअधिकता, शरीरका भारीपन तथा [illegible] लूमपड़ना, [illegible] लता यह बीसरोग मुनिलोगोंने योग तथा रूढ़िसे कफ [illegible] का चिकित्सा अपने २ प्रकरणमें जाननीचाहिये ॥ इति कफव्याधिका अधिकार ६४५ ॥

अथ वातरक्ताधिकारमाह तत्र वातरक्तस्यविप्रकृष्टनिदानमाह ॥

[illegible]वणाम्लकटुक्षारस्निग्धोष्णाजी[illegible]भोजनैः । क्लिन्नशुष्काम्बुजानूपमांसपिण्याकमूल [illegible]कुलत्थमाषनिष्पावशाकादिपललेक्षुभिः । दध्यारनालसौवीरशुक्ततक्रसुरासवैः ॥ [illegible]विरुद्धाध्यशनाक्रोधदिवास्वप्नातिजागरैः । प्रायशःसुकुमाराणांमिथ्याहारविहारिणाम् ॥ स्थूलानांसुखिनाञ्चापिप्रकुप्येद्वातशोणितम् । हस्त्यश्वोष्ट्रैर्गच्छतश्चाश्नतश्चविदाह्य न्नंसविदाहाशनस्य । कृत्स्नंरक्तंविदहत्याशुतच्चदुष्टंशीघ्रंपादयोश्चीयतेतु ॥ तत्संपृक्तंवा युनादूषितेनतत्प्राबल्यादुच्यतेवातरक्तम् । क्षारायवक्षारादि । अजीर्णभोजनैः अजीर्णे भोजनैः अतिमात्रभोजनैरित्यर्थः । क्लिन्नादीनि मांसविशेषणानि । शुष्कमातपे शोषि तम् । अम्बुजं मत्स्यादिमांसं आनूपंगौडादिपूर्वदेशजम् । पिण्याकंतिलखलिः । मूलकं प्रसिद्धमेव । निष्पावःवोडा । शाकं पत्रशाकम् आदिशब्देन वृन्ताकादीन् फलशाका दीनां गृह्यते फलम् । दोषरहितमपि मांसवातशोणितं प्रकोपयेत् । शटीतादितु मांस विशेषतो वातशोणितं प्रकोपयेत् । आरनाल सौवीरशुक्तानि सन्धानभेदाः । तक्रम्चतु र्थांशं जलयुक्तं वस्त्रपूतंदधिसुरा सन्धानभेदः । विरुद्धं क्षीरमत्स्यादि । अध्यशनम् अजीर्णे भुज्यते यत्तु तदध्यशनमुच्यते । अतिजागरोनिशि । प्रायशःबाहुल्येन सुकुमा राणां । अल्पतरकायव्यापाराणाम् । अथ च मिथ्याहारविहारिणाम् । अथाहारविहा राणां स्थूलानाम् सुखिनां रक्तवृद्ध्या । हस्त्यश्वोष्ट्रैर्गच्छतः यतःवायुर्वर्द्धतेरुधिरञ्च अधोगच्छति । हस्त्यादय उपलक्षणानि । पद्भ्यामपि चलतःअश्नतश्च विदाह्यन्नम् । भ विदाहि निष्पावकुलत्थसर्षपशाकादि । सविदाहाशनस्य सविदाहि अशनंयस्य । भ क्तेऽविदग्धे तदुपरिभुञ्जानस्येत्यर्थःअध्यशनमुक्त्वाप्येतद्वचनंविदग्धंजीर्णम्भोजनस्य विशेषतोहेतुत्वार्थम् । पश्चाद्वातशोणितं प्रकुप्यति इत्यन्वयः । एतेषांकारणानां मध्ये केनचिद्वायुःकेनचिद्रक्तं केनचिदुभयमपि प्रकुप्येत् ॥ ६४६ ॥

वातरक्तका अधिकार वातरक्तके दूरवाले कारण ॥

लवण, अम्ल तथा कटुरस, जवाखारादिकखार, स्निग्ध तथा उष्णवस्तु, अधिक भोजन, गलाहुआ

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तथा सूखामांस, मछली आदि जलके जीवोंकामांस, गौडआदि पूर्वदेशकामांस, तिलकी खली, मूली, कुलथी, उर्द, लोबिया, पत्रशाक, बैंगन, आदिशाक, मांस, ईख, दही, आरनाल, सौवीर, सिरका, तक्र, सुरा, आसव, दूध, मछलीआदि, विरुद्धभोजन, अजीर्णमेंभो... धि, दिनमेंसोना और रात्रिमेंजागना इन सब कारणोंके द्वारा प्रायः नियमरहित आहार विहार... स्थूल और सुखी हाथी घोड़े ऊंट तथा पैरोंसे चलनेवाले विदाही अन्नखानेवाले... रनेवाले ...योंका सम्पूर्ण रुधिर शीघ्र विदाहको प्राप्तहुआ दूषित होकर शीघ्र...

सम्प्राप्तिमा...॥

कृत्स्नंरक्तंविदहत्याशु तच्च दुष्टंस्रस्तंपादयोश्चीयतेतु । तत्सम्पृक्तंवायुना... तत् प्राबल्यादुच्यतेवातरक्तम् ॥ पूर्वोक्तैर्हेतुभिःकृत्स्नंसमस्तम् । अधोगतम् पादयो चीयतेसञ्चितं भवति । तत्रुधिरम् दूषितेन स्व...हेतुभिर्वायुना सम्पृक्तं मिलितं मि... रक्तंउच्यते । ननुचैतस्यसम्प्राप्तिरुक्ता सुश्रुतेन । शीघ्रंरक्तंदुष्टिमायातितच्च व... र्गं संरुणद्ध्याशु वातं । क्रुद्धोऽत्यर्थं मार्गरोधात् सवायुरत्युद्रिक्तं दूषयेद्रक्तमाशु ॥ अ... प्रथमंरक्तस्य दुष्टिरतो रक्तवातमिति व्यपदेष्टुमुचितं भवति । तत्राह तत्प्राबल्यादि ति । तस्यवातस्य दोषत्वेन प्राधान्याद्वातरक्तमिति व्यपदिश्यते ॥ ६४७ ॥

वातरक्तकी संप्राप्ति ॥

पहले कहेहुए कारणोंसे संपूर्ण रुधिर विदग्ध तथा दूषित होकर नीचेगयाहुआ पैरोंमें इकट्ठा होताहै फिर वह रुधिर अपने कारणोंसे दूषितहुई वायुसे मिलकर वातरक्त कहलाताहै सुश्रुतने कहा है कि शीघ्रही दूषितहुआ रुधिर वायुके मार्गोंको रोकताहै और मार्गकेरुकनेसे कुपितहुई वायु बहुत बढ़े हुए रुधिरको दूषित करतीहै यहां पहले रुधिरका कोप होताहै इसलिये रक्तवात कहना उचितहै परन्तु वायुके दोष होनेके कारण प्रधानतासे वातरक्त कहते हैं ॥ ६४७ ॥

पूर्व्वरूपमाह ॥

स्वेदोऽत्यर्थंनवाकार्श्यं स्पर्शाज्ञत्वंक्षतेऽतिरुक् । सन्धिशैथिल्यमालस्यं सदनंपिडिकोद्गमः ॥ जानुजङ्घोरुकट्यंसहस्तपादांगसन्धिषु । निस्तोदःस्फुरणंभेदो गुरुत्वंसुप्तिरेवच ॥ कण्डूःसन्धिषुरुग्दाहो भूत्वानश्यतिचासकृत् । वैवर्ण्यंमण्डलोत्पत्तिर्वाता स्रक्पूर्वलक्षणम् ॥ घर्मागमनमत्यर्थं भवतिनवासर्वथा भवति एतच्च व्याधिमहिम्ना कुष्ठवद्बोद्धव्यम् क्षतेऽतिरुक् यदिक्षतंस्यात् तदातत्रातिरुक् । सदनंसुप्तिः अंगानां पिडिकाप्रादुर्भावः जान्वादिषु निस्तोदः पीडाविशेषः त्वक् कान्तिक्षयः ॥ ६४८ ॥

वातरक्तका पूर्वरूप ॥

वातरक्त होनेसे पहले बहुत स्वेद निकलना अथवा न निकलना शरीरका कालापन, स्पर्शका न जानना, शून्यता, घावमें बहुत पीडा, इन्द्रियों में शिथिलता, आलस्य, फुंसी निकलना, घुटने, पिंडली, जंघा, कमर, कंधे, हाथ, पैर तथा सन्धियोंमें पीडा, अंगोंका फडकना, भेद, भारीपन, सुन्न होजाना, खुजली, सन्धियोंमें पीडा, कभी कभी दाह, विवर्णता और मंडलोंकी उत्पत्ति यह लक्षण होते हैं ॥ ६४८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ वातरक्तस्य लक्षणमाह ॥

वातेऽधिकंतत्रशूलं स्फुरणंतोदनं महा। शोथस्यरौक्ष्यंकृष्णत्वं श्यावतावृद्धिहानयः ॥ धमन्यंगुलिसन्धीनां स[illegible] [illegible]तरुक् । शीतद्वेषानुपशयौस्तम्भवेपथुसुप्तयः ॥ तत्र पादयोःशूल[illegible] [illegible]ह सुश्रुतः। स्पर्शोद्विग्नौ तोदभेदप्रशोफौ स्वापोपेतौ [illegible] [illegible]शोथस्य रौक्ष्यादिकं वृद्धिहानयश्च विज्ञेयाः अथ सुप्तिः [illegible] ॥

वा[illegible]के लक्षण ॥

[illegible]तवाले वातरक्तमें दोनों पैरोंमें बहुत शूल, फड़कना, सुई गड़नेकीसी पीड़ा होतीहै [illegible]वा, काली तथा धुमैली,सूजन कभी बढ़ीहुई अथवा कभी घटीहुई होतीहै उंगलियों की सन्धिकी [illegible]ही संकुचित होती हैं शरीरमें पीड़ा, [illegible]ना, कम्प तथा शून्यता होती हैं और शीत तथा द्वेषसे [illegible]ग बढ़ताहै ॥ ६४६ ॥

अधिक रक्तवातरक्तमाह ॥

बन[illegible]शोथोऽतिरुक्तोदस्ताम्रश्चिमिचिमायते । स्निग्धरूक्षैःशमंनैतिकण्डुक्लेदसमन्वितः ॥ रक्तेऽधिके इत्यनुवर्त्तनीयम्। एवंवक्ष्यमाणपित्तादिष्विति एतच्चारम्भकंरक्ताद्र क्तान्तरंबोद्धव्यंरक्तमपिरक्तान्तरदूषकंभवति ॥ यदुक्तंदुष्टरक्तलक्षणम् । पित्तवद्रक्तेनाति कृष्णञ्चेति ॥ अतिरुक्तोदः अतिरक्तादौयत्रसःशोथःचिमचिमायते । चिमचिमेति कण्डुभेदःस्पर्शप्रियेतियावत्चुहचुहाइतिलोकेतद्युक्तः । क्लेदसमन्वितःक्लेदआर्द्रतात द्युक्तः ॥ ६५० ॥

अधिकरक्तवाले वातरक्तका लक्षण ॥

अधिकरक्तवाले वातरक्तमें सूजन, बहुत पीड़ा, सुईकासा गड़ना,चिमचिमाहट, ताम्रवर्ण,खुजली और गीलापन होताहै यह रोग स्निग्ध और रूखे उपायों से शान्त नहीं होताहै ॥ ६५० ॥

अधिकपित्तंतदाह ॥

पित्तेविदाहःसंमोहःस्वेदोमूर्च्छामदस्तृषा । स्पर्शासहत्वंरुग्दाहःशोथःपाकोभृशो ष्णता ॥ पित्तेअधिकेविदाहःविशेषेणदाहः। विदाहादयश्चपादयोरेवबोद्धव्याः ॥ यतआ: हसुश्रुतःपित्तासृग्भ्यामुग्रदाहौभवेतामत्यर्थोष्णरक्तशोथौमृदूच। पादाविति शेषःसंमोहा आतुरस्यस्वेदःपादयोःमूर्च्छापादयोःसमुच्छ्रयः शोथइतियावत् नतुमूर्च्छामोहःसंमो हस्योक्तत्वात् ॥ ६५१ ॥

अधिक पित्तवाले वातरक्तका लक्षण ॥

अधिक पित्तवाले वातरक्त में पैरों में बहुत दाह, सूजन, स्वेद और पीड़ायुक्त नहीं छूनेके योग्य, बहुत उष्णतायुक्त, पकीहुई, सूजन होती है और रोगीके दाह, सूजन, मोह, मद तथा तृषा उत्पन्न होतीहै ॥ ६५१ ॥

अधिककफमधिकद्विदोषमधिकत्रिदोषञ्चतदाह ॥

कफेस्तैमित्यगुरुतासुप्तिःस्निग्धत्वशीतता । कण्डूर्मन्दाचरुग्द्वन्द्वसर्वलिङ्गञ्चसङ्क रे॥ कफेअधिकेस्तैमित्यम् शरीरस्यार्द्रचर्म्मावगुण्ठितत्वमिव । गुरुतादयःपादयोरेव॥ यतआहसुश्रुतः कण्डूमन्तौश्वेतशीतौसशोथौपीनौस्तब्धौश्लेष्मदुष्टेतुरक्ते । पादा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वितिशेषः ॥ अधिकद्विदोषम् अधिकत्रिदोषम् । च तदाहद्वन्द्वेसर्वलिङ्गञ्चसङ्करेद्वित्रिदोषसंसर्गे ॥ ६५२ ॥

अधिक कफवाले अधिक दो दोषवाले और अधिक ... वाले वातरक्त के लक्षण ॥

अधिक कफवाले वातरक्त में शरीर गीले कपड़े से ढका हुआ ... मालूम होताहै और दोनों पैर. भारी, शून्य, स्निग्ध, शीतल, खुजलीयुक्त तथा कुछ २ पीड़ासे युक्त ... के लक्षणों के मिलने से द्वंद्वज और तीनों दोषों के लक्षण मिलने से त्रिदोषज ... चाहिये ॥ ६५२ ॥

पद्भ्यामन्यदप्यंगमारभ्यस्थानमाह ...

पादयोर्म्मूलमास्थायकदाचिद्धस्तयोरपि । आखोर्विषमिवक्रुद्धंतद्देहमनुसर्प्पति ॥ आखोर्मूषकस्यआखोर्विषमिवेत्यनेनमन्दविसर्प्पत्वंबोधितम् । देहमनुसर्प्पतिअप्रतिक्रियमाणाम् ॥ ६५३ ॥

पैरोंसे अन्य अंगमेंही वातरक्त होतेहैं जैसे वातरक्त कभी पैरों में अथवा कभी हाथों में होकर उपाय न करने से कुपित होकर मूषेके विषके समान धीरे २ सम्पूर्ण शरीरमें फैलताहै ॥ ६५३॥

अथ वातरक्तस्योपद्रवानाह ॥

अस्वप्नारोचकश्वासमांसकोऽथशिरोग्रहः।मूर्च्छाचाथमृदस्तृष्णाज्वरमोहप्रक्षेपकाः॥ हिक्कायांगुलमवीसर्प्पपाकतोदभ्रमक्लमाः । अंगुलीवक्रतास्फोटदाहमर्म्मग्रहार्बुदाः ॥ मांसकोथोमांसगलनम् । मूर्च्छातदंगसमुच्छ्रायः । अमन्दरुक्पीडाबाहुल्यं । प्रवेपकःकम्पः प्रवेपनंप्रवेपःततःस्वार्थिकः ॥ ६५४ ॥

वातरक्तके उपद्रव ॥

निद्राका नाश, अरुचि, श्वास, मांसकागलना, शिरमें पीड़ा जिस अंग में वातरक्तहोय उसकी शून्यता, मद, तृषा, ज्वर, मोह, कंप, हिचकी, पंगुता, वीसर्प, मांसका पकना, सुई गड़नेकीसी पीड़ा, भ्रम, ग्लानि, उंगलियोंका टेढ़ापन, स्फोटक, दाह, मर्मोंका जकड़ना और अर्बुद यह सब वातरक्त के उपद्रव हैं ॥ ६५४ ॥

अथासाध्यत्वादिकमाह ॥

एतैरुपद्रवैर्वर्ज्ज्यंमोहेनैकेनचापितत् । अकृत्स्नोपद्रवंयाप्यंसाध्यंस्यान्निरुपद्रवम् ॥ मोहेनैकेनेतिवचनमस्वप्नादिभिः समस्तैरसाध्यत्वंबोधयति । एकदोषानुगंसाध्यंनवं याप्यंद्विदोषजम् । त्रिदोषजमसाध्यंस्याद्यस्यचस्यूरुपद्रवाः ॥ नवंसँवत्सरादर्वाचीनं तत्साध्यम् । आजानुस्फुटितंयच्चप्रभिन्नंप्रस्रुतञ्चयत् ॥ उपद्रवैश्चयज्जुष्टंप्राणमांसक्षयादिभिः । वातरक्तमसाध्यंस्याद्याप्यंसँवत्सरोत्थितम् ॥ आजानुपद्भ्यांजानुपर्य्यन्तं यद्भवतितदसाध्यंस्यात् । स्फुटितंयच्चत्वङ्मात्रेशीतेनैवकिञ्चिद्विदीर्णम् ॥ प्रभिन्नम् अधिकविदीर्णम् । प्रस्रुतंवहत् ॥ ६५५ ॥

वातरक्तके साध्य असाध्यादि लक्षण ॥

संपूर्ण उपद्रवों से युक्त अथवा केवल मोहहीं से युक्त वातरक्त असाध्य होताहै थोड़े उपद्रव वाला वातरक्त याप्य है, उपद्रवरहित तथा एक दोषसे उत्पन्न हुआ नवीन वातरक्त साध्य है,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्वन्द्वज वातरक्त याप्य है और त्रिदोषज तथा संपूर्ण उपद्रवों से युक्त वातरक्त असाध्य है जिस वातरक्तवाले के घुटने तक पैर फटगये होयँ तथा बहते होयँ और उपद्रवों से बल तथा मांस का क्षय होगया हो वह असाध्य है एकवर्ष का पुराना यह रोग याप्यहै ॥ ६५५ ॥

वातरक्तचिकित्सामाह ॥

...णोणितिन... ...स्यबहुशोहरेत्। अल्पाल्पंरक्षयेद्वायुंयथादोषंयथाबलम्॥ ...ङ्क्ततथारक्तंहरेदित्यर्थः । उग्रांगदाहतोदेषु जलौकोभिर्विनिर्हरे ...कण्डूरुग्वपन... । प्रच्छन्नेनशिराभिर्वादेशाद्देशान्तरंव्रजे ...हरान्निष्काशयेत् चिमिचिमारचुहचुरावइतिलोके । प्रच्छन्नंपच्छनाइतिलोके । व्रजे ...तिरक्तविशेषणम् । अंगेम्लानेतुनस्राव्यंरक्षेद्वातोत्तरञ्चयत् । गम्भीरंश्वयथुंस्तम्भं ...वायुशिरामयान् ॥ ग्लानिमन्यांश्चवातोत्थान्कुर्याद्वायुरसक्क्षयात् । खञ्जादीन् ...गांश्चमृत्युञ्चानवशेषितम् ॥ कुर्यात्तस्मात्प्रमाणेनस्निग्धाद्रक्तंविनिर्हरेत् ६५६॥

वातरक्तकी चिकित्सा ॥

वातरक्तवाले को दोष तथा बलके अनुसार स्नेहप्रयोग करके बहुतसा रुधिर निकलवाना चाहिये परन्तु वायु न बढ़ने देवे बहुत दाह तथा सुईगडनेकीसी पीडायुक्त वातरक्त में जोंकें लगवानी चाहिये चिमचिमाहट खुजली तथा कंपयुक्त वातरक्त में सिंगी लगवाना उचितहै जो रुधिर एकस्थान से दूसरे स्थानमें जाताहोय तो पछना अथवा फस्तसे रुधिर निकलवाना चाहिये वातरक्त में शरीर के ग्लान होनेपर और अधिक वातवाले वातरक्तमें रुधिर नहीं निकलवाना चाहिये क्योंकि रुधिरकेनाश से बढ़ी हुई वायु बहुत सूजन, कंप, स्तंभ, वातजन्य शिरारोग, ग्लानि तथा अन्य वातरोग उत्पन्नकरती है बिलकुल रुधिर के निकलजानेसे खंजादिक वातरोग और मृत्युभी होती है इसलिये स्नेहका सेवनकरके प्रमाणके अनुसार रुधिर निकलवाना चाहिये ॥ ६५६ ॥

विरेच्यःस्नेहयित्वादौस्नेहयुक्तैर्विरेचनैः। मृक्षैर्वामृदुभिःशस्तमसकृद्वस्तिकर्म्मच॥ नहिवस्तिसमंकिञ्चिद्वातरक्तचिकित्सितम् । बाह्यमालेपनाभ्यंगपरिषेकोपनाहनैः ॥ विरेकास्थापनस्नेहपानैर्गम्भीरमाचरेत् । दिवास्वप्नंससन्तापंव्यायामंमैथुनंतथा ॥ कटूष्णगुर्वभिष्यन्दिलवणाम्लौचवर्जयेत् ॥ ६५७ ॥

वातरक्त में विरेचन तथा स्नेह प्रयोग करके स्नेहयुक्त अथवा रूखी, स्वल्प विरेचन करानेवाली औषधियों के द्वारा वारंवार वस्ति देनीचाहिये क्योंकि वस्ति के समान और कोई इसकी औषधि नहीं है बाहरवाले वातरक्त में लेप अभ्यंग परिषेक तथा मल्हम के द्वारा और गम्भीर वातरक्त में विरेचन आस्थापन तथा स्नेह पानकेद्वारा चिकित्सा करनी चाहिये दिनमें सोना, संताप, व्यायाम, मैथुन और कटु, उष्ण, भारी, अभिष्यन्दी, निमकीन तथा खट्टीवस्तु यहसब वातरक्तमें छोडदेनी चाहिये ॥ ६५७ ॥

पुराणायवगोधूमानीवाराःशालिषष्टिकाः। भोजनार्थेरसार्थेतुविष्किराःप्रतुदाहिताः ॥ आढक्यश्चणकामुद्गामसूराःसकुलत्थकाः। यूषार्थेबहुसर्पिष्काःप्रशस्तावातशोणिते ॥ वास्तुकोपोदिकाशाकंशाकंसौवर्च्चलंतथा ॥ घृत सुनिषण्णकवेत्राग्रकाकमाचीशतावरी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मांसरसैर्भृष्टंशाकसात्म्य। यदापयेत् । सुनिषण्णःचांगेरीसदृशं चतुःपत्रशाकःसजलेस्थले भवतिसूसुनईइतिलोके । धवंलोचिलमीइतिक्वचित् ॥ ६५८ ॥

पुराने जौ,गेहूं, तिन्नी, शालिधान्य तथा साँठी यह भोजनके लिये और विष्किर तथा प्रतुद जीवों के मांसकारस यह सब रसकेलिये देनाचाहिये अरहड़,चना,मूंग, मसूर तथा कुलथीके यूषमें बहुत घी मिलाकर वातरक्तमें देना श्रेष्ठहै शाकके अभ्यासवाले वातरक्तवालेको ... माची,सतावर,बथुआ,पोय तथा सौवर्चल शाक घीमें भूनकर मांसके रसके ...

सर्पिस्तैलवसामज्जापानाभ्यञ्जनवस्ति... सुखा... त् ॥ हितोगोधूमचूर्णञ्चच्छागक्षीरघृतप्लुतैः। लेपस्त...तिलाभृष्टाःपिष्टाःपयसि... क्षीरपिष्टातसीलेपोवर्द्धमानफलेनवा ॥ ६५९ ॥

अधिक वातवाले वातरक्तमें घी, तेल, चर्बी तथा मज्जा,पान, मर्द्दन तथा वस्तिक्रियामें देने... और कुछ गरमलेप करना चाहिये गेहूंके आटेको बकरी के दूध तथा घी में मिलाकर लेपकरने ... हुए तिलोंको दूधमें पीसकर लेपकरने से (अलसी को दूध में पीसकर लेपकरने से) अथवा रेंडीके दूधमें पीसकर लेपकरने से वातरक्त का नाश होताहै ॥ ६५९ ॥

उभेशतावेमधुकंबलाञ्चप्रियालकञ्चापिकसेरुकञ्च । घृतंविदारीञ्चसितोपलाञ्चकुर्य्यात्प्रदेहंपवनेसरक्ते ॥ रास्नागुडूचीमधुकंबलेद्वेसजीवकंसर्षभकंपयश्च । घृतञ्च सिद्धंमधुशेषयुक्तंरक्तानिलार्त्तिंप्रणुदेत्प्रदेहः ॥ वासागुडूचीचतुरंगुलानामेरण्डतैलेन पिबेत्कषायम् । क्रमेणसर्वांगजमप्यशेषं जयेदसृग्वातभवंविकारम् ॥ दशमूलीशृतंक्षीरं सद्यःशूलनिवारणम् । परिषेकोऽनिलप्रायेतद्वत्कोष्णेनसर्पिषा ॥ ६६० ॥

सतावर, सौंफ, बरियारा, मुलहठी,चिरौंजी,कसेरू, घी, बिलारीकन्द तथा मिश्री इनसबको पीस कर लेपकरनेसे रासना, गिलोय, मुलहठी, दोनोंबला, जीवक,ऋषभक, दूध तथा घी इन सबको पकाकर शहद मिलाकर लेपकरनेसे वातरक्तका नाश होताहै बांसा, गिलोय तथा अमलतास इनके काढ़े में रेंडीकातेल मिलाकर पीनेसे सर्वाङ्गमें गयेहुए भी वातरक्तका क्रमसे नाश होताहै अधिक वातवाले वातरक्त में दशमूलके साथ दूधका पाककरके सींचने से अथवा कुछ गरम घी के द्वारा सींचने से पीडा का नाश होता है ॥ ६६० ॥

पटोलकटुकाभीरुत्रिफलामृतसाधितम् । क्वाथंपीत्वाजयेज्जन्तुःसदाहंवातशोणितम् ॥ त्रिवृद्विदारीक्षुरकंक्वाथोवातास्रनाशनः । अमृताकफवातघ्नीकफमेदोविशोषिणी ॥ वातरक्तप्रशमनीकण्डूवीसर्पनाशिनी । गुडूच्याःस्वरसंकल्कंचूर्णंवाक्वाथमेवच ॥ प्रभूतकालमासेव्यमुच्यतेवातशोणितात् । अमृतानागरधान्याककर्षत्रितयेनपाचनंसिद्धम् ॥ जयतिसरक्तंवातंसामंकुष्ठान्यशेषाणि । वत्सादन्युद्भवःक्वाथःपीतोगुग्गुलुमिश्रितः ॥ समीरणम् ॥ तद्वातरक्तंशमयत्युदीर्णमाजानुभिन्नंच्युतमप्यवश्यम् ॥ ६६१ ॥ समायुक्तंशोणितंसंप्रणाशयेत् । तिस्रोऽथवापञ्चगुडेनपथ्याजग्ध्वापिबेच्छिन्नरुहाकषायम् ॥

परवल, कुटकी, सतावर, त्रिफला तथा गिलोय इनके काढ़े को पीने से दाहसहित वातरक्तका

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नाश होताहै रसौंत बिलारीकन्द तथा गोखुरूका काढ़ा वातरक्तका नाश[illegible] गिलोय कफ तथा मेदकी सुखानेवाली और कफ वात वातरक्त खुजली तथा विसर्प इन सबकी नाशकहै इसलिये गिलोयका स्वरस कल्क चूर्ण अथवा काढ़ा बहुत कालतक सेवनकरने से वातरक्तका नाश होताहै गिलोय, सोंठ तथा धनियां इन सबको एक २ तोले लेकर काढ़ाकरके पीनेसे वातरक्त आमवात और अनेक प्रकार[illegible] कुष्ठोंका नाश हो[illegible] गिलोयके काढ़े में गूगुल डालकर पीने से वातरक्त का नाश होताहै [illegible] खाकर गिलोयका काढ़ा पीने से बहुत बढ़ेहुए घुटनों[illegible] [illegible]रक्त का नाश हो[illegible] ६६१ ॥

[illegible]तवल्ली भद्राक्षालुङ्गरसेन[illegible]सैर्युक्ता[illegible] ॥
[illegible]यन्मधुनालोड्यशृणुकुर्वन्ति[illegible] । पा[illegible]स्फुटत्तलपाङ्गत्रयम् ॥
[illegible]त्सर्वनाशयेत्याशुसाध्यंचैवस[illegible]गुग्गुलुगुटिका ॥ ६६२ ॥

गूगुल, गिलोय, दाख, पुन्नागकारस और त्रिफल[illegible] काढ़ा इनसबको पीस छः २ माशेकी गोली बनाकर शहदमें मिलाकर खाय इससे अत्यन्त भयंकर पैरोंका फटना सब अंगोंका फटना और वातरक्त का नाश होताहै ॥ इति गूगुलगुटिका ॥ ६६२ ॥

माहिषंनवनीतन्तुबलिनापरिमिश्रितम् । गोमूत्रमिश्रितंकृत्वाक्षीरेणलवणेन च ॥ तदेकत्र समालोड्यवह्निनाभावयेच्छनैः । गात्रमुद्वर्त्तयेत्तेनदेहस्फुटनशान्तये ॥ घृतेनवातंसगुडाविबन्धंपित्तंसिताढ्यामधुनाकफञ्च । वातासृगुग्रंरुबुतैलमिश्राशुण्ठ्यामवातंशमयेद्गुडूची ॥ सिंहास्यपञ्चमूलीछिन्नरुहैरण्डगोक्षुरक्काथः । एरण्डतैलरामठसैन्धवचूर्णान्वितःपीतः ॥ प्रशमयतिवातरक्तंतथामवातंकटीशूलम् । मूत्रपुरीषविबन्धंब्रध्नविकारंसुदुर्वारम् । गन्धर्वहस्तवृषगोक्षुरकामृतानांमूलंबलेक्षुरकयोश्चपचेत्तुधीमान् । वातासृगाशुविनिहन्ति चिरप्ररूढमाजानुगंस्फुटितमूर्ध्वगतन्तुधीमान् ॥ कफपित्तप्रशमनंकच्छूवीसर्पनाशनम् । वातरक्तप्रशमनंहृद्यंगुडघृतंस्मृतम् ॥ पिप्पलीवर्द्धमानंवासेव्यंपथ्यागुडेनवा ६६३ ॥

भैंसके मक्खनके साथ गन्धक, गोमूत्र, दूध तथा सेंधानोन इनसबको मिलाकर अग्निमें थोड़ा गरमकरे इसकेलेप करनेसे देहका फटना शान्त होताहै गिलोय घी के साथ सेवन करनेसे वातरोग गुड़के साथ विबन्ध शक्करके साथ पित्त शहदकेसाथ कफ रेंडी के तेलके साथ वातरक्त और सोंठके साथ सेवनकरने से आमवात को नष्टकरती है बांसा, पंचमूल, गिलोय, रेंडी तथा गोखुरू इनसबके काढ़ेमें रेंडीका तेल, हींग तथा सेंधानोन डालकर पीनेसे वातरक्त, आमवात, कमरकीपीड़ा, मलमूत्रका रुकना और बढ़ाहुआ ब्रध्नरोग नष्टहोताहै रेंडीकी जड़, बांसा, गोखुरू, गिलोय, बरियाराकीजड़ और तालमखाना इन सबके काढ़े के सेवन से बहुत पुराना वातरक्त घुटनोंतक फटाहुआ तथा ऊर्ध्वगत वातरक्त कफ पित्त कच्छू (खुजली) और विसर्पका नाश होताहै गुड़केसाथ घी के सेवनसे वर्द्धमान पिप्पली के सेवनसे तथा गुड़के साथ हड़के सेवनसे वातरक्त का नाश होताहै ॥ ६६३ ॥

कोकिलाक्षामृताक्काथेपिबेत्कृष्णांयथाबलम् । पथ्यभोजीत्रिसप्ताहान्मुच्यतेवातशोणितात् ॥ मधुकाद्द्विगुणंतैलंतैलादाजंपयोभवेत् । तद्यथाग्निबलंपेयंवातरक्तरुजापहम् ॥ अगस्तिपुष्पचूर्णेनमाहिषंजनयेद्दधि । तदुत्थनवनीतेनदेहजंस्फटनंजयेत् ॥ ६६४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

तालमखाने तथा गिल[illegible]के काढ़ेमें पीपलका चूर्ण छोडकर बलके अनुसार पीनेसे और पथ्य भोजनकरनेसे तीन सप्ताह में वातरक्तका नाश होताहै. एकभाग शहद, दोभाग तेल, तीनभाग बकरीका दूध इनतीनोंको मिलाकर अग्निबलके अनुसार पीनेसे वातरक्तका नाश होताहै अगस्तके फूलों का चूर्ण भैंस के दूध में मिलाकर दही जमावे उसके द्वारा जो मक्खन निकाला जाता है वह देह के फटने[illegible]नाश करताहै ॥ ६६४ ॥

मिलाकर वात[illegible]निम्बमञ्जिष्ठावचाकटुकरोहिणी । वत्सादनीदारु[illegible]

माची,सताव[illegible]

वात[illegible]ष्पानंरक्तमण्डलम् । कपाडक[illegible]कुष्ठंपानादेवा[illegible]

[illegible]पिरस्तैलवसामज्जा[illegible]नवास्त[illegible]

क्लि[illegible]च्चवसौषधस्काथेयोग्यमात्राप्रदीयते॥ [illegible]

गोधसचर्णश्चच्छागक्षीरघृत[illegible]लेपस्तद[illegible]

यावद्दद्यात्षोडशिकजलम् । ततः[illegible]॥ ६५८ ॥ [illegible]गंजलम् ॥ चतुर्गुणमतश्चोर्ध्वंयावत्प्रस्थादिकंभवेत् ॥ ६६५ ॥

तथा

त्रिफला, नींबकीछाल, मंजीठ, बच, कुटकी, गिलोय तथा दारुहल्दी इन नौ औषधियों को एक २ तोला लेकर काढ़ा करके पिये इसके सेवनसे वातरक्त, कुष्ठ, गीली खुजली, रक्तमंडल खुजली और कपालिका कुष्ठका नाश होताहै इस ९ कर्षके काढ़ेमें पांचरत्तीका माशा लेना चाहिये और इस काढ़े की योग्य मात्रा देनी चाहिये एक कर्ष से लेकर पलपर्य्यंत औषधियों का काढ़ा सोलह गुने जल में करना चाहिये कुडवपर्य्यन्त में अठारहगुना डालना चाहिये और इसके उपरान्त प्रस्थादिपर्यन्त चौगुना जल डालना चाहिये ॥ ६६५ ॥

विरेचनैर्घृतक्षीरपानैःसेकैःसवस्तिभिः । लेपनंशाल्मलीकल्कमविक्षीरेणसंयुतम् ६६६॥

विरेचन, घृत तथा दुग्धपान, सींचना और वस्तिक्रिया इन सबसे वातरक्तका नाश होताहै शाल्मली की छालको भेड़ीके दूधमें पीसकर लेपकरने से वातरक्त नष्ट होताहै ॥ ६६६ ॥

रक्तोत्तरंक्षीरघृतंमधुकोशीरवारिभिः । सेचनंचात्रकर्तव्यमविक्षीरैःक्षणंक्षणम् ॥ सहस्रशतधौतेनघृतेनरुधिरोत्तरे । लेपनंसुष्ठुशीतेनघृतसर्ज्जरसेनवा ॥ शीतैर्निर्वापणैश्चापिरक्तपित्तोत्तरंजयेत् । रक्तोत्तरंक्षीरघृतंमधुकोशीरवारिभिः॥ सरोगेसरुजेदाहेरक्तेविश्राव्यलेपयेत् । तिलाःप्रियालंमधुकंबिशमूलञ्चवेतसम् ॥ सघृतंपयसापिष्टंप्रलेपोदाहरोगनुत् ॥ ६६७ ॥

अधिकरक्तवाले वातरक्त में दूध घी मुलहठी खस सुगन्धबाला और भेडीका दूध इन सबको मिलाकर उस मिलेहुए से वारंवार सींचना चाहिये हजारबार अथवा सौबार धोयेहुए घी से लेपकरना चाहिये अधिक रुधिर तथा पित्तवाले वातरक्त में अत्यन्त शीतल औषधि अथवा घी तथा राल के लेपसे या शीतल वस्तुओंके सींचने से हितहोताहै दाह तथा पीड़ायुक्त रक्तवर्ण वातरक्त में रुधिर निकलवाकर दूध, घी, मुलहठी, खस तथा सुगंधबालाका लेप करना चाहिये तिल, चिरौंजी, मुलहठी, कमलकीजड़, वेत, घी इन सबको दूधके साथ पीसकर लेपकरने से दाहका नाश होताहै ॥ ६६७ ॥

पित्तोत्तरंतुकाश्मर्य्यद्राक्षारग्वधचन्दनैः । मधुकक्षीरकाकोलीयुक्तैःक्काथंसुशीतलम् ॥ शर्करामधुसंयुक्तंवातरक्तेपिबेन्नरः । धारोष्णंमूत्रसंयुक्तंक्षीरंदोषोनुलोमनम् ॥ पिबेद्वासत्रिवृच्चूर्णम्पित्तरक्तावृतानिले ॥ क्षीरेणैरण्डतैलंवाप्रयोगेनपिबेन्नरः । बहुदोषोविरेकार्थञ्जी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...क्षीरोदनाशनः ॥ पटोलंत्रिफलाभीरुगुडूचीकटुरोहिणी । ... त्ताधिकेशस्तःशर्करामधुसंयुतः ॥ ६६८ ॥

गंभारी, दाख, अमलतास, चन्दन, मुलहठी तथा क्षीरकाकोली इन सबके शीतल हुए काढ़े में शक्कर तथा शहद मिलाकर पीने से अधिक पित्तवाले वातरक्त का नाश होताहै धारोष्ण दूध में गोमूत्र मिलाकर पीने से वायु अपने मार्ग के अनुसार होजाती है निसोत के चूर्ण सहित धारोष्ण ... से पित्त तथा ... युक्त वात शान्त होती है बहुत दोष वाले वातरक्त ... के ... तल पिये और औषधि के पचने पर दूध भात खाय परवल, ... कुटकी इनके ... डालकर पीने ... वातरक्त का नाश होताहै ॥ ६६८ ॥

तिक्तस्यसर्पिषःपानंबहुश... ॥ ... यथस्नेहसेकावलंघनम् ॥ कोष्णासेकाश्चशस्यन्तेत... मूत्रसुराशुक्तैःपरिषेकाःसदाहिताः ॥ गौरसर्षपकल्केनप्रदेहो... जापहः । शिग्रुःसवरुणःकल्कोधान्याम्लेनानिलार्तिजित्पात् ॥ भवतिनचेतिविकल्प... धेयःसिद्धयोगेऽस्मिन् । कल्कःश्लेष्मोत्तरेलेपोवाजिगन्धातिलोद्भवः ॥ लेपःसर्षपनिम्बार्कहिंस्राक्षारतिलैर्हितः ॥ ६६९ ॥

तिक्त घृत का पीना, वारंवार विरेचन, कोमल औषधियों के द्वारा वमन, स्नेह से सींचना, लंघन और गरम वस्तुओं से सींचना यह कफज वातरक्त में श्रेष्ठ उपायहैं तेल, गोमूत्र, सुरा तथा सिरके के द्वारा सींचना और सफेद सरसों के कल्क का लेप वातरक्त की पीडा को नष्ट करताहै सहजन तथा वरुणा की छाल को धान्याम्लमें पीसकर लेप करने से निस्सन्देह वातकी पीडाका नाशहोता है असगंध तथा तिलके कल्क के द्वारा लेप करने से अथवा सरसों, नींब, आक, बाँसा, जवाखार और तिलके द्वारा लेप करने से अधिक कफवाले वातरक्त का नाश होताहै ॥ ६६९ ॥

श्रेष्ठःसक्तुघृतक्षारःकपित्थत्वग्भिरेवच । मसूरशिग्रोस्तद्बीजंहितंधान्याम्लसंयुतम् ॥ मुहूर्तात्क्लिन्नमम्लैश्चसिञ्चेद्वातकफोत्तरे । मुस्तामलकनिशाभिःक्वथितंतोयंसमाक्षिकंपेयम् ॥ जयतिसदागतिरक्तंसकफंवासततयोगेन । हरिद्रामृतकक्वाथंमधुनामधुरीकृतम् ॥ पिबेद्वात्रिफलाक्वाथंवातरक्तेकफाधिके । हरीतकींवातक्रेणपाययेदुदकेनवा ॥ ६७० ॥

सत्तू, घी, जवाखार, कैथा, तज, मसूर तथा सहजनकेबीज इनसबको धान्याम्लमें पीसकर लेपकरके एक मुहूर्त्तके पीछे कांजीके सींचनेसे अधिक कफवाले वातरक्तका नाश होताहै मोथा, आमला तथा हल्दीके काढ़ेमें शहदडालकर पीनेसे अधिक कफवाले वातरक्तका नाशहोताहै हल्दी और गिलोयके काढ़ेमें शहदडालकर पीनेसे त्रिफलाके काढ़ेके पीनेसे अथवा मट्ठा या गरम जलके साथ हडके पीनेसे अधिक कफवाले वातरक्तका नाश होताहै ॥ ६७० ॥

गृहधूमोवचःकुष्ठंशताह्वारजनीद्वयम् । प्रलेपःशूलनुद्वातरक्तेवातकफोत्तरे ॥ अमृताकटुकायष्टीशुण्ठीकल्कंसमाक्षिकम् । गोमूत्रपीतंजयतिसकफंवातशोणितम् ॥ धात्रीहरिद्रामुस्तानांकषायंवासमाक्षिकम् ॥ ६७१ ॥

घरकाधुआं, बच, कूट, सौंफ तथा दोनों हल्दी इनके लेपसे वात कफज वातरक्तकी पीडाका नाश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होताहै-गिलोय,कुटकी,सुं...ठी तथा सोंठके कल्कको शहदयुक्त गोमूत्रके साथ पीनेसे अथवा आमला,हल्दी तथा मोथाके काढेमें शहद डालकर पीनेसे कफसहित वातरक्त का नाश होताहै ॥ ६७१ ॥

लांगलयास्त्वमृतातुल्यंकन्दमुद्धृत्ययत्नतः। योजयेत्त्रिफलालौहरजस्त्रिकटुकैःसमैः॥ गुग्गुलवमृतवल्लीभिर्द्राक्षालुंगरसेनवा । त्रिफलायारसैर्युक्तागुटिकाःकोलसम्मिताः ॥ भक्षयेन्मधुनालोड्यशृणुकुर्वन्तियत्फलम् । पादस्फुटितदुर्भग्नंजानुप्राप्तंचयद्भवेत् ॥ यच्च ...मिलाकर वात...त्वासाध्यंप्रकीर्तितम् । घ्नन्त्येताभक्ष्यमाणस्यप्रबलंवातशोणि...

...चीनी,सतावर... लांग... ६७२ ॥

...सर्पिस्तैलवसामज्जा... ...चूर्ण,त्रिफला,गूगल तथा गिलोय इनसबके चूर्णको... नींबू अथवा ... शहदमें मिलाकर चाटनेसे पैरोंका फटना,दुर्भग्न,घुटनोंतक प्राप्त अथवा देहमें ... भी नाश होताहै इति लांगलीगुटिका ॥ ६७२ ॥

संसर्गेसन्निपातेचक्रियापथमुक्तांमिश्रांकुर्य्यात् ॥ ...३ ॥

द्वन्द्वज और त्रिदोषज वातरक्तमें कहीहुई चिकित्सा मिलाकर करनी चाहिये ॥ ६७३ ॥

बलामतिबलांमेदामात्मगुप्तांशतावरीम् । काकोलींक्षीरकाकोलींरास्नांमृद्वीञ्चपेषयेत् ॥ घृतंचतुर्गुणंक्षीरंतैःसिद्धंवातरक्तनुत् । हृत्पांडुरोगवीसर्प्पकामलादाहनाशनम् ॥ इति बलाघृतम् ॥ ६७४ ॥

बला, अतिबला, मेदा, किवाँच, सतावर, काकोली, क्षीरकाकोली, रास्ना तथा दाख इन सबको पीसकर इनके द्वारा चौगुने दूधसे युक्त घीका पाक करके सेवन करनेसे वातरक्त, हृदय के रोग, पांडु,वीसर्प, कामला और दाह का नाश होता है इति बलाघृत ॥ ६७४ ॥

बलास्थिरानागबलागुडूचीशतावरीकल्ककषायसिद्धम् । तैलंविदध्यादनुवासनेषुतद्वातरक्तंशमयत्युदीर्णम् ॥ अपरपिण्डतैलम् ॥ ६७५ ॥

बला, शालिपर्णी, नागबला, गिलोय,सतावर इनसबके कल्क और काढे के द्वारा तेलका पाककरके अनुवासनवस्ति लेनेसे बहुत बढाहुआ वातरक्त शान्त होता है इति अपरपिण्डतैल ॥ ६७५ ॥

त्रायन्तिकाचामलकीद्विकाकोलीशतावरी । कसेरुकाकषायेणकल्कैरेभिःपचेद्घृतम् ॥ ६७६ ॥

त्रायमाणा, आमला, काकोली, क्षीरकाकोली, सतावर तथा कसेरू इनसबके कल्क तथा कषाय के द्वारा पाककियेहुए घृत के सेवन से वातरक्तका नाश होता है ॥ ६७६ ॥

उभेपरूषकेद्राक्षाकाश्मर्य्यंसुरद्रुमान् । पृथग्विदार्य्याःस्वरसंतथाक्षीरंचतुर्गुणम् ॥ एतदायोजितंसर्पिःपारूषकमितिस्मृतम् । वातरक्तेक्षतेक्षीणेविसर्पेपैत्तिकेज्वरे ॥ पारूषकंघृतम् ॥ ६७७ ॥

दोनों फालसे, दाख, गंभारी तथा देवदारु इन सब के द्वारा चौगुने बिलारीकन्दके रस तथा दूध के साथ घी का पाक करके सेवन करनेसे वातरक्त, क्षतसे क्षीण, वीसर्प और पित्तज्वर नष्ट होता है इति पारूषकघृत ॥ ६७७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शतावरीकल्कगर्भरसेतस्याश्चतुर्गुणे । क्षीरंतुल्यंघृतंसिद्धं वातशोणितनाशनम् ॥ इति शतावरीघृतम् ॥ ६७८ ॥

सतावरके कल्कके द्वारा सतावरके चौगुने रस तथा दूधके साथ पाककिये हुए घीके सेवन से वातरक्त का नाश होताहै इति शतावरीघृत ॥ ६७८ ॥

श्रावणीक्षीरकाकोलीक्षीरिकाजीवकैःसमैः । सिद्धंऋषभकंसर्पिःसक्षीरंवातर[illegible] ॥ [illegible]णम् ॥ इति ऋषभघृतम् ॥ ६७९ ॥

[illegible] कोली, खिन्नी तथा [illegible] इन सबके कल्कके द्वारा चौगुने [illegible] पाक [illegible] वातरक्त का नाश होताहै इति [illegible] घृत ॥ [illegible]

गुडूचीक्वाथकल्काभ्यांसपयर[illegible]म् । [illegible] रक्तकुष्ठजयीसदुस्तरम् ॥ क्षीरंस्नेहसमंदद्याच्चतुर्भि[illegible] [illegible]द्रवैर्द्रव्यैः कुर्यात्स्नेहाच्चतुर्गुणम् ॥ इति गुडूचीघृतम् ॥ ६[illegible] ॥

गिलोयकेक्काथ तथा [illegible] द्वारा समभाग दूधसहित पाककियेहुए घीसे वातरक्त तथा दुस्तर कुष्ठका नाश होताहै इति गुडूचीघृत ॥ ६८० ॥

अमृतायाःकषायेणकल्केनचमहौषधात् । मृद्वग्निनाघृतंसिद्धंवातरक्तहरंपरम् ॥ आमवाताढ्यवातादीन्कृमिकुष्ठव्रणानपि। अर्शांसिगुल्मांश्चतथानाशयेदाशुयोजितम्॥ इति गुडूचीघृतम् ॥ ६८१ ॥

सोंठके कल्क तथा गिलोयके काढ़ेकेसाथ मन्दाग्निमें पाककियेहुए घीके सेवनसे वातरक्त, आमवात,ऊरुस्तंभ,कृमि,कुष्ठ,व्रण,बवासीर और गोलेका शीघ्र नाश होताहै इति गुडूचीघृत ॥ ६८१ ॥

अमृतास्वरसविपक्कंसर्पिस्तत्कल्कसाधितंपीतम् । अपहरतिवातरक्तमुत्तानञ्चावगाढञ्च ॥ इति गुडूचीघृतम् ॥ ६८२ ॥

गिलोय के रस तथा कल्कके साथ पाककियेहुए घीके पीने से ऊपरवाले तथा गंभीर वातरक्त का नाश होताहै इति गुडूचीघृत ॥ ६८२ ॥

अमृतायाःपलशतंजलद्रोणावशेषितम् । घृतप्रस्थंविपक्तव्यंकल्कादष्टौपलानिच ॥ चतुर्गुणेनपयसावातासृक्कुष्ठनाशनम् । कामलापाण्डुरोगघ्नंप्लीहकासज्वरापहम् ॥ इति गुडूचीघृतम् ॥ ६८३ ॥

बत्तीसतोले गिलोय के कल्ककेद्वारा चारसौतोले गिलोय के ६२४ तोले काढ़े और २५६ तोले दूधके साथ ६४ तोले घी का पाककरके सेवनकरने से वातरक्त, कुष्ठ, कामला, पांडु,प्लीहा, खांसी तथा ज्वर का नाश होताहै इति गुडूचीघृत ॥ ६८३ ॥

अमृतामधुकद्राक्षात्रिफलानागरंबला । वासारग्वधवृश्चीवदेवदारुत्रिकण्टकम् ॥ कटुकारोहिणीकृष्णाकाश्मर्यस्यफलानिच । रास्नाक्षुरकगन्धर्वैवृद्धदारघनोत्पलैः ॥ कल्कैरेभिःसमैःकृत्वासर्पिःप्रस्थंविपाचयेत् । धात्रीरसःसमोदेयोवारित्रिगुणसंयुतः ॥ सम्यक्सिद्धञ्चविज्ञायभोज्येपानेचशस्यते । बहुदोषोत्थितंवातरक्तेनसहमूर्च्छितम् ॥ उत्तान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अतिगम्भीरं [illegible] रुजानुकम् । क्रोष्टुशीर्षमहामूलेआमवातसुदारुणे ॥ दाहरोगोपसृष्टस्यवेदनाञ्चातिदुस्तराम् । मूत्रकृच्छ्रमुदावर्तंप्रमेहंविषमज्वरान् ॥ एतान्सर्वान्निहन्त्याशुवातपित्तकफोत्थितान् ॥ सर्वकालोपयोगेनवर्णायुर्बलवर्द्धनम् । अश्विभ्यांनिर्मितंश्रेष्ठंघृतमेतदनुत्तमम् ॥ इति अमृताद्यंघृतम् ॥ ६८४ ॥

[illegible], मुलहठी, दाख, त्रिफला, सोंठ, बरियारा, बांसा, अमलतास, श्वेत पुनर्नवा, देवदा[illegible] खरू [illegible]ल, गंभारी, रासना, तालमखाना, एरंड, बिधारा, मोथा तथा उत्पल इ[illegible] मिलाकर वात[illegible] [illegible]ची, सताव[illegible] जल इनसबकेद्वारा ६४ तोले [illegible] पाककरे इसघृतके [illegible] बाह्य[illegible] [illegible] मण्डली तथा घुटनों में प्राप्त वातर[illegible] है और क्रोष्टु[illegible] [illegible] कठिन पीडा, मूत्रकृच्छ्र, उदावर्त, [illegible] विषमज्वर, वातजनित तथा कफजनि[illegible] [illegible] अश्विनीकुमारके बनायेहुए इस घीके सदैव सेवनसे बल वर्ण तथा आयुकीवृ[illegible] इति अमृत[illegible] ॥ ६८४ ॥

गुडूचीस्वरसेसर्पिर्जीवनीयैश्चसाधितम् । कल्कैश्चतुर्गु[illegible] [illegible]रैःसिद्धंवाजस्रवातनुत् इति गुडूचीघृतम् ॥ ६८५ ॥

जीवनीयगणके कल्कके द्वारा गिलोयकेरस और चौगुनेदूधके साथ पाककियेहुए घीकेसेवनसे वातरक्तकानाश होताहै इति गुडूचीघृत ॥ ६८५ ॥

अमृतायाःशतंप्राप्यजलद्रोणेविपाचयेत् । चतुर्भागावशिष्टन्तुघृतप्रस्थंविपाचयेत् ॥ क्षीरंचतुर्गुणंतत्रदापयेन्मतिमान्भिषक् । कल्कञ्चात्रप्रवक्ष्यामियथावदनुपूर्वशः ॥ काकोलीक्षीरकाकोलीजीवकर्षभकौचयत् । शतावरींपयस्यांचमधुकंनीलमुत्पलम् ॥ अश्वकन्दस्यमूलानिस्थिरंवाकटुरोहिणीम् । ऋद्धिंवृद्धिंतथामेदेश्वदंष्ट्रांबृहतीद्वयम् ॥ गुडूचींपिप्पलींरास्नांवासकञ्चापिसंहरेत् । तदेकस्थंसमैर्भागैः पाचयेन्मृदुनाग्निना॥ पानाभ्यञ्जननस्येषु परिषेकेचदापयेत् ॥ वातरक्तंसशोषाढ्यं सदाहंक्रोष्टुशीर्षकम् । खञ्जोरुस्तम्भवातञ्च वातरक्तंसुदारुणम् ॥ बहूदितंवातकृच्छ्रं गृध्रसींवातकण्टकम् । नाशयेद्योजितंसर्पिर्द्धन्वन्तरिवचोयथा ॥ इति महागुडूचीघृतम् ॥ ६८६ ॥

४०० तोले गिलोयको ६२४ तोले जलमें पाककरके चौथाई बाकी रहनेपर उतारले फिर उसके साथ २५६ तोले दूध और ६४ तोले घी मिलावे इसके उपरान्त इस सबमें काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, ऋषभक, सतावर, दूधी, मुलहठी, नीलकमल, असगन्धकी जड, शालिपर्णी, कुटकी, ऋद्धि, वृद्धि, मेदा, महामेदा, गोखुरू, दोनोंभटकटैया, गिलोय, पीपल, रासना तथा बांसा इनसबऔषधियोंके समभाग कल्क डालकर मंदाग्निमें पाककरे इसघृतको पान, मर्दन, नस्य तथा सींचनेके काममेंलानेसे वातरक्त, शोष, दाह, क्रोष्टुशीर्ष, खंज, ऊरुस्तंभ, दुस्साध्य वातरक्त, वातज, मूत्रकृच्छ्र, गृध्रसी और वातकंटक रोगका नाशहोताहै यह धन्वन्तरिका वचनहै इति महागुडूचीघृत ॥ ६८६ ॥

क्वाथेनशतपुष्पायाः कुष्ठस्यमधुकस्यच । एकैकंसाधयेत्तैलं वातरक्तरुजापहम् ॥ इति शताह्वादितैलम् ॥ ६८७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सौंफ,कूट अथवा मुलहठीके काथके द्वारा पाककियेहुए तेलके सेवन [illegible] वातरक्तका नाश होताहै इति शताह्वादि तैल ॥ ६८७ ॥

स[illegible]रिवारिष्टकूष्माण्डपोतकीभस्मजाम्बुना । गुडूचीगव्यदुग्धाभ्यांकर्मरंगरसेनच ॥ विपचेत्तिलजंतैलं दत्त्वैतानिभिषग्वरः । काकोल्यौजीवकंमेदे शताह्वाक्षीरिणीयुतैः ॥ जि[illegible]सिक्थामृतानन्तासार्जसैन्धवचन्दनैः । हन्याद्वातास्रजंघोरं स्फुटितंग[illegible]नथ[illegible] [illegible]रुयं[illegible]मादींस्त्वग्दोषञ्चविपादिकाम् । कुष्ठान्यर्शांसिवीसर्पं व्रण[illegible] [illegible]तवातरक्तस्य [illegible]विवर्द्धित[illegible] । यन्नहन्यात[illegible] [illegible]डतैलं [illegible]तत्स्मृतम् ॥ इति महापिण्डतैलम् ॥ ६८८ ॥

सारिवा,नींब,पेठा,पोयकीभस्म,[illegible]रस और तिलकातेलइनसबमें काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, मेदा[illegible]जीठ,मोंम,गिलोय,अनन्तमूल, राल,सेंधानोन, और चन्दन इन सब औ[illegible]धों का कल्क डालकर पाक करे इस तेलके सेवन से वातरक्त, स्फुटित तथा गलित,चर्म्मदलरो[illegible]ली,त्वचाकेदोष,बिवाई,कुष्ठ,बवासीर,विसर्प,व्रण, सूजन तथा भगन्दर का नाशहोताहै ऐसाकोईभी बहुत बढ़ाहुआ वातरक्तका विकार नहीं है जो इस महापिंडतैलसे नष्ट न होसके ॥ इति महापिंडतैल ॥ ६८८ ॥

सारिवासर्जमञ्जिष्ठायष्टीसिक्थैःपयोन्वितैः । तैलपक्वंप्रयोक्तव्यं पिण्डाख्यंवातशोणिते ॥ इति पिण्डतैलम् ॥ ६८९ ॥

सारिवा, राल, मँजीठ, मुलहठी तथा मोंम इनसब के द्वारा दूध सहित तेलका पाककरके सेवन करने से वातरक्तका नाशहोताहै ॥ इति पिंडतैल ॥ ६८९ ॥

सारिवासर्जयष्ट्याह्वमधुसिक्थैःपयोन्वितैः । सिद्धमेरण्डजंतैलं वातरक्तरुजापहम् ॥ अपूतमथितस्यास्य पिण्डतैलस्ययोगतः ॥ इति पिण्डतैलम् ॥ ६९० ॥

सारिवा, राल, मुलहठी,तथा मोंम इनसब के द्वारा दूध सहित रेंडीके तेलका पाककरके विनाछाने मथले इस तेलसे वातरक्त की पीडाका नाश होताहै ॥ इति पिंडतैल ॥ ६९० ॥

पद्मकेशरयष्ट्याह्वफेनिलापद्मकोत्पलैः । पृथक्पञ्चदलैर्दत्तं बलाकिंशुकचन्दनैः ॥ जलेश्रृतंपचेत्तैलंप्रस्थंसौवीरसम्मितम् । लोध्रकाकोलिकोशीरजीवकर्षभकेशरैः ॥ मदयन्तिलतापत्रपद्मकेशरपद्मकैः । प्रपौण्डरीककालीयमेदमांसीप्रियङ्गुभिः ॥ कुङ्कुमैर्द्विगुणैःकर्षैर्मञ्जिष्ठायाःपलेनच । महापद्मकमिदंतैलंवातासृग्ज्वरनाशनम् ॥ इति महापद्मकंतैलम् ॥ ६९१ ॥

पद्म, केशर,मुलहठी,नींब,पद्माक,उत्पल,बला,टेसू तथा चन्दन यह सब बीस २ तोले इनसबका काढ़ा सौवीर ६४ तोले और तेल ६४ तोले इनसबमें लोध, काकोली, खस, जीवक, ऋषभक,नागकेशर, चमेलीकेपत्ते, गिलोय, तेजपात,पद्मकेशर,पद्माक, स्थूलकमल,पीतचन्दन,मेदा, जटामांसी,प्रियंगु तथा केशर यह सब दो २ तोले और मँजीठ ४ तोले इनसबको मिलाकर पाककरे इस तेल के सेवनसे वातरक्त का नाश होताहै इति महापद्मकतैल ॥ ६९१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पद्मकोशीरयष्ट्याह्वरजनीक्वाथसाधितम् । स्यात्पिष्टैःसर्वमञ्जिष्ठावीराकाकोलिचन्दनैः ॥ खडाकपद्मकमिदंतैलंवातास्रपित्तनुत् ॥ इति खडाकपद्मकतैलम् ॥ ६६२ ॥

पद्माक, खस, मुलहठी तथा हल्दी इनका काढ़ा और तेल इनसब में राल, मँजीठ, काकोली, क्षीरकाकोली तथा चन्दन के कल्क को डालकर पाककरे इस तेलके सेवनसे वातरक्त का नाश होताहै ॥ इति खडाकपद्मकतैल ॥ ६६२ ॥

जलद्रोणेगुडूच्याःपादशेषितम्।क्षीरद्रोणन्तुताभ्याञ्चपचेत्तैलाढकं [illegible] मञ्जिष्ठाजीवनीयगणोत्थितैः । कष्ठै[illegible]मृद्वीकामांसीव्या[illegible] ॥ हरे[illegible]तैलवलामञ्ज[illegible] [illegible]गुरुविक्रान्तास्थिरातामलकीत[illegible] नतकेशरह्री[illegible]पद्मकोत्पल[illegible]धृत[illegible]सिद्धं[illegible]पानाभ्यङ्गानुवासनैः ॥ सेव्य वातास्रजान्हन्तिस्रोतोधात्वन्तराश्रितान् [illegible]गर्भदंवातपित्तनुत् ॥ स्वेदकण्डूरुजायामशिरःकम्पामयार्दितान् । हन्याद्व्रणकृत[illegible]षान्गुडूचीतैलमुत्तमम् ॥ इति गुडूचीतैलम् ॥ ६६३ ॥

६२४ तोले जल में ४०० तोले गिलोय का चौथाई बचाहुआ काढ़ा ६२४ तोले दूध और २५६ तोले तेल इनसब में मुलहठी, मँजीठ, जीवनीयगण, कूट, इलायची, अगर, दाख, जटामांसी, बघनखी, नखी, रेणुका, मुंडी, त्रिकटु, सौंफ, काकडासिंगी, सारिवा, दालचीनी, तेजपात, विक्रान्त, शालिपर्णी, भुईं आमला, तगर, नागकेशर, सुगन्धबाला, पद्माक, उत्पल और चन्दन इनसबका एक २ तोले कल्क छोड़कर मन्दाग्निमें विधिपूर्वक पाककरे इस तेलके पान मर्दन तथा अनुवासनवस्ति में व्यवहार करने से स्रोत तथा धातुओंमें स्थित वातरक्त, वातपित्त, स्वेद, खुजली, पीडा, आयाम, शिरका कांपना, अर्दित तथा घावका नाश होताहै और यह तैल बलकारी, गर्भदायक और पुत्रकारी है ॥ इति गुडूचीतैल ६६३ ॥

गुडूचीमधुकंह्रस्वपञ्चमूलपुनर्नवा । रास्नामेरण्डमूलञ्चजीवनीयानिलाभतः ॥ पलानांशतिकैर्भागैर्बलापञ्चशतंभवेत् । कोलंबिल्वंयवान्माषान्कुलत्थांश्चाढकोन्मितान् ॥ काश्मर्य्याणाञ्चशुष्काणांद्रोणंद्रोणशताऽम्भसा । साधयेज्जर्जरंपूतंचतुर्द्रोणञ्चशेषयेत् ॥ तैलद्रोणंपचेत्तेनदत्त्वापञ्चगुणंपयः । पिष्ट्वात्रिपलिकंचैवचन्दनोशीरकेशरम् ॥ पत्रैलागुरुकुष्ठानितगरंमधुयष्टिका । मञ्जिष्ठार्द्धपलंचैवतत्सिद्धंसर्वयौगिकम् ॥ वातरक्ते क्षतेक्षीणेभारार्तेक्षीणरेतसि । वेपनोक्षिप्तभग्नानांसर्वकाङ्क्षजरोगिणाम् ॥ योनिदोषमपस्मारमुन्मादंविषमज्वरम् । हन्यात्पुंसवनञ्चैवतैलाग्र्यममृताह्वयम् ॥ इतिअमृताढ्यतैलम् ॥ ६६४ ॥

गिलोय, मुलहठी, छोटा पंचमूल, पुनर्नवा, रासना, अरंडकी जड, जीवनीयगण यह सब चार २ सौ तोले बरियारा २००० तोले बेर, बेल, जौ, उर्द, कुलथी यह सब दोसै छप्पन २ तोले और गंभारी ६२४ तोले इन सब औषधियोंको १०० द्रोण जल में पाककरके जब चार द्रोण बाकीरहै तब छानले इसके साथ ६२४ तोले तेल और तेलका पंचगुना दूध मिलावे फिर इनसब में चन्दन, खस, नागकेशर, तेजपात, अगर, इलायची, कूट, तगर और मुलहठी यहसब बारह २ तोले और मजीठ २ तोले इनसब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

औषधियों के कल्क मिलाकर विधिपूर्वक पाककरे इस तेलके सेवनसे [illegible]रक्त, क्षतसे हुई क्षीणता, कम्प, [illegible]से हुई क्षीणता, वीर्य्यकी क्षीणता, उछलना हड्डी आदिका टूटना, सर्वाङ्ग तथा एकांगगतरोग, योनि[illegible]ग, मिर्गी, उन्माद तथा विषमज्वर इनसब का नाश होता है और पुत्रकी उत्पत्ति होती है॥ इति अमृताह्वयतैल ॥ ६६४ ॥

[illegible]णालोत्पलशालूकसारिवोदीच्यकेशरैः । चन्दनद्वयभूनिम्बपद्मबीजकसेरुकैः ॥ [illegible]टुकानन्तागुन्द्रापर्पटवासकैः । पिष्ट्वातैलंघृतंपक्कंतृणमूलरसेनवा ॥ [illegible]सुयोजितम् । न[illegible]ञ्जनपानैर्वाहन्यात्पित्तगदा[illegible] [illegible]तैलम् ॥ ६९५ ॥

कमलकीडंडी, उत्पल, कमलकी[illegible] [illegible]गन्धबा[illegible] [illegible]नों चन्दन, [illegible]तथता, कमलगट्टे, कसेरू, पर्वल, कुटकी, अनन्[illegible] [illegible]तथा बांसा इनसबको पीसकर तेल अथवा घी तृणमूलका रस और [illegible] दूध इनसबमें [illegible] विधिपूर्वक पाककरे इसको वस्तिक्रिया नस्य मर्द्दन तथा पानकरनेमें [illegible] करनेसे पित्तके रोग नष्टहोतेहैं ॥ इति मृणालादितैल ॥ ६६५ ॥

कनकशिखरिमानक्षा[illegible]संसिद्धतोयेकुसुमलवणयुक्तैःसर्जनीर्य्यासचूर्णैः । विधिश्रृततिलतैलंकल्कयुक्तंनिहन्तिप्रचुरतरमिदानीमिन्द्रलुप्तास्रवातम्॥इतिधत्तूराद्यंतैलम् ६९६॥

धतूरा, लटजीरा तथा मानकेचू इनके क्षारके जल और तेलमें धवई के फूल, सेंधानोन तथा राल इन समभाग के चूर्ण को डालकर पाककरे इसके सेवन से इन्द्रलुप्त और वातका नाश होता है ॥ इति धत्तूरादितैल ॥ ६९६ ॥

शुद्धांपचेन्नागबलातुलान्तुजलार्मणेपादकषायसिद्धम् । विस्राव्यतैलाढकमत्रदेयमजापयस्तैलविमिश्रितन्तु ॥ नतंसयष्टिंमधुकंचकल्कंदत्त्वापृथक्पञ्चपलंविपक्कम् । तद्वातरक्तंशमयत्युदीर्णंवस्तिप्रदानेनहिसप्तरात्रात् ॥ दशाहयोगेनकरोत्यरोगंपीतश्चतैलोत्तममश्विनोक्तम् ॥ इति नागबलातैलम् ॥ ६९७ ॥

४०० तोले गुलशकरीको चौगुनेजलमें पाककरके चौथाई रहनेपरछानले इसकेसाथ तिलकातेल २५६ तोले और उतनाही बकरीकादूध मिलायके इनसबमें तगर, मुलहठीका बसि२तोलेकल्क मिलाकर विधिपूर्व्वक पाककरे इसकेद्वारा वस्तिलेने से सातदिनमें बहुत बढेहुए वातरक्त का नाश होताहै और अश्विनीकुमारकेकहेहुए इसतेलके पीनेसे दशदिनमेंसंपूर्णरोगनष्टहोते हैं॥इतिनागबलातैल६९७

जीवकर्षभकंकोलीरिष्यप्रोक्ताशतावरी । मधुकंमधुपर्णीचकाकोलीद्वयमेवच ॥ मुद्गमाषाख्यपर्णीचदशमूलंपुनर्न्नवा । बलामृताविदारीचसाश्वगन्धाश्मभेदकौ ॥ कुर्य्यात्कल्कंकषायञ्चताभ्यांतैलंघृतंपचेत् । लाभतश्चवसामज्जामांसंप्रतुदविष्किरात् ॥ चतुर्गुणेनपयसाततसिद्धंवातशोणितम्। सर्वदेहाश्रितान्हन्तिव्याधीन्घोरांश्चवातजान्॥ इति जीवकाद्योमिश्रकः ॥ ६९८ ॥

जीवक, ऋषभक, कंकोल, मिर्च, किवांच, सतावर, मुलहठी, गंभारी, काकोली, क्षीरकाकोली, मुद्गपर्णी, माषपर्णी, पुनर्नवा, दशमूल, बरियारा, गिलोय, बिलारीकन्द, असगन्ध तथा पाषाणभेद इनके कल्क तथा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

काढ़ेकेसाथ तेल, दही और [illegible] तथा विष्किर जीवोंकी चर्बी, मज्जा तथा मांस यह जहांतक मिलसकें और चौगुनादूध इन सबको पकावे इसके सेवनसे वातरक्त और सब शरीरमें स्थित घोर वात रोगोंका [illegible]श होताहै ॥ इति जीवकादिमिश्रक ॥ ६९८॥

बलाकषायकल्काभ्यांतैलंक्षीरचतुर्गुणम् । शतपाकंभवेदेतद्वातासृग्वातपित्तनुत् ॥ धन्यंपुंसवनञ्चैवनराणांशुक्रवर्द्धनम् । रेतोयोनिविकारघ्नमेतद्वातविकारनुत् ॥ इति बला [illegible]मिलाकर वात[illegible]म् ॥ ६९९ ॥

[illegible]ची, सताव[illegible] तथा काढ़ेकेसाथ चौगुने दूध सहित [illegible]को सौबार पाककरके [illegible] करने स वात[illegible]पित्त[illegible] [illegible]रोगों का नाश होताहै और वीर्य्य की [illegible] तथा पुत्रो[illegible] [illegible]

मधुयष्ट्याःपलशतंकषायेपादशे[illegible] ॥ [illegible]चेत्कल्कैःपलोन्मितैः ॥ शतपुष्पावरीमूर्व्वापयस्यागुरुचन्दनैः । [illegible]हंसपदीमांसीद्वि[illegible]मधुपर्णिभिः ॥ काकोलीक्षीरकाकोलीतामलक्यृद्धिपद्मकैः । जीवकर्षभजीवन्तीत्वक्[illegible]खबालकैः ॥ प्रपौण्डरीकमञ्जिष्ठासारिवेन्दुवितुन्नकैः । वातासृक्पित्तदाहार्त्तिज्वरघ्नंबलवर्णकृत् ॥ इति मधुकाद्यंतैलम् ॥ ७०० ॥

४०० तोले मुलहठीका काढ़ा २५६ तोले तेल और इतनाही दूध इनसबमें सौंफ, सतावर, मरोड़फली, दूधी, अगर, चन्दन, शालिपर्णी, हंसपदी, जटामांसी, मेदा, महामेदा, गिलोय, काकोली, क्षीरकाकोली, भुईंआमला, ऋद्धि, पद्माक, जीवक, ऋषभक, जीवन्ती, तज, तेजपात, नखी, सुगन्धबाला, कमल, मँजीठ, सारिवा, कपूर और धनियां इनसबके चारचार तोले कल्क डालकर विधिपूर्वकपाककरे इसतेलके सेवन से वातरक्त, पित्त, दाह की पीड़ा तथा ज्वरका नाश होताहै और बल तथा वर्ण की वृद्धि होती है ॥ इति मधुकादितैल ॥ ७०० ॥

मधुयष्ट्याःपलंपिष्टातैलंप्रस्थंचतुर्गुणे । क्षीरसाध्यंशतंवारांस्तदेवमधुकान्वितम् ॥ सिद्धंदेयंत्रिदोषेस्याद्वातास्रश्वासकासनुत् । धन्यंपुंसवनञ्चैवकामलादाहनाशनम् ॥ इति मधुकतैलंशतपाकम् ॥ ७०१ ॥

४ तोले मुलहठी के द्वारा चौगुने दूध सहित तेलको सौबार पाककरके सेवन करनेसे त्रिदोष, वातरक्त, श्वास, खांसी, कामला तथा दाह का नाश होताहै और पुत्रोत्पत्तिहोतीहै ॥ इति शतपाकमधुकतैल ॥ ७०१ ॥

बलाकषायकल्काभ्यांतैलंक्षीरंसमंपचेत् । सहस्रशतपाकंवावातासृग्वातरक्तनुत् ॥ रसायनमिदंश्रेष्ठमिन्द्रियाणांप्रसादनम् । जीवनंबृंहणंस्वर्य्यंशुक्रासृग्दोषनाशनम् ॥ इति बलातैलम् ॥ ७०२ ॥

बरियारे के कषाय तथा कल्क के द्वारा दूध सहित तेल को हजारबार अथवा सौबार पाक करके सेवन करनेसे वातरक्त वीर्य्यदोष रक्तदोष तथा वात रोगोंका नाश होताहै और इन्द्रियों की प्रसन्नता धातुवृद्धिकर स्वरकी उत्तमता तथा आयुकी वृद्धि होतीहै और उत्तम रसायनहै॥इति बलातैल ७०२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुनर्नवामूलशतंविशुद्धंरुवूकमूलञ्चतथाप्रयोज्य । दत्त्वापलंषोडशकञ्चशुण्ठ्याःस ङ्कुट्य सम्यग्विपचेद् घटेऽपाम् ॥ पलानिचाष्टावथकौशिकस्यतेनाष्टशेषेणपुनःपचेत्तु । एरण्डतैलंकुडवञ्चदद्याद्दत्त्वात्रिवृच्चूर्णपलानिपञ्च ॥ निकुम्भचूर्णस्यपलंगुडूच्याःपल यंचार्द्धपलंपलंप्रति । फलत्रयत्र्यूषणचित्रकाणिसिन्धूत्थभल्लातविडङ्गकानि ॥ कर्षंत ...तुचूर्णंपुनर्नवायाःपलमेवचूर्णम् । चूर्णानिदत्त्वाह्यवतार्य्यशीतेखा... ...प्रमाण... वातासृजंवृद्धिगद... जयत्यवश्यंत्वथगृध्रसीञ्च । जंघोरु... ...त्रिकंचतथामवातंप्रबलञ्चहन्ति ॥ इति ... ॥ ७०३ ॥

पुनर्नवा तथा एरंड की जड चा... सोंठ ... सबका कूटकर ३२४८ तोले जल में पाककरे फिर अष्टमांश... ...ले और इस काढे में ३२ तोले गूगुल डाल कर फिर पाक करे इसके ...रान्त इसमें रेंडीका ... १६ तोले निसोत का चूर्ण २० तो० दन्तीका चूर्ण ४ तो० गिलोय का ... ८ तो० त्रिफला, त्रिकटु, चीता, सेंधानोन, भिलावा तथा बायबिडंग छः २ तोले सोनामक्खी का चूर्ण १ तो० और पुनर्नवा का चूर्ण ४ तो० इनसबको डालकर उतार ले फिर शीतल होजाने पर १ तोले नित्य खानेसे वातरक्त,अंडवृद्धि,गृध्रसी और जंघा,पिंडली,पीठ त्रिक तथा वस्ति में हुई कठिन आमवात का नाश होता है ॥ इति पुनर्नवा गुग्गुल ॥ ७०३ ॥

यावशूकसुरदारुसैन्धवंमुस्तकत्रुटिवचायमानिकाः । व्योषदीप्यकनिशाफलत्रिकं जीरकद्वयविडङ्गचित्रकम् ॥ कार्षिकंसुसमसृणंसुयोजितं संयुतंपुरपलैश्चपञ्चभिः । शर्क रांपुरसमांसुपेषयेत्तप्तसर्पिषिविनिक्षिपेत्ततः ॥ वातरक्तमुदरंभगन्दरंप्लीहयक्ष्मविषमज्वरं गरम् । श्वित्रकुष्ठमखिलव्रणानयंचित्तविभ्रममदांश्चदारुणान् ॥ गृध्रसीञ्चगुदजाग्निमंद तांहन्तिकोष्ठजनितंमहागदम् । वज्रमिन्द्रस्यकरादिवच्युतंगुप्तशैलकुलमुत्तमंद्रुतम् ॥ अन्नपानपरिहारवर्जितंसर्वकालसुखदन्निरत्ययम् । सेव्यमानमिदमश्विनिर्म्मितंगुग्गुलो र्हिवटिकारसायनम् ॥ चत्वारोमाषकाहीनेमध्यमेऽष्टौचमाषकाः । श्रेष्ठाद्वादशकाःप्रो क्ताःकोष्ठंविज्ञायपाययेत् ॥ स्रंसनत्वाद् गुरुत्वाद्वागुग्गुलोःकरणक्रमः । इति शर्करासम गुग्गुलुः ॥ ७०४ ॥

जवाखार,देवदारु,सेंधानोन,मोथा,छोटीइलायची,बच, अजवाइन,त्रिकटु,अजमोद,हलदी,त्रिफला, जीरा, कालाजीरा,बायबिडंग तथा चीता इनसब औषधियों के एकएक तोले चूर्णको बीस तोले गूगुल में मिलाकर और गूगुलकी बराबर शक्कर मिलाकर गरम घीमें मिलाले इसके सेवनसे वातरक्त,उदर, भगन्दर,प्लीहा,यक्ष्मा,विषमज्वर, गरदोष, श्वेतकुष्ठ,सबप्रकारके घाव, चित्तभ्रम, मद,गृध्रसी,बवासीर, मन्दाग्नि तथा कोष्ठजनित महारोगोंका नाश होताहै इसके सेवनमें अन्नपानका कोई निषेध नहींहै यह सबकालमें सुखदायी विकाररहित और रसायन है इसकी हीनमात्रा चारमाशे मध्यम मात्रा ८ माशे और श्रेष्ठ मात्रा बारहमाशेकीहै यह कोष्ठको विचारकर यथायोग्य देनी चाहिये ॥ इति शर्करासम गुग्गुल ॥ ७०४

प्रस्थमेकंगुडूच्याश्चअर्द्धप्रस्थञ्चगुग्गुलोः ॥ प्रत्येकंत्रिफलायास्तुतत्प्रमाणंविनिर्दि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शेत्सर्वमेकत्रसंकुट्यक्वा येदुल्बणेऽम्भसि॥ पादशेषंपरिस्राव्यकषायंग्राहयेद्भिषक् पुनः पचेत्कषायन्तुयावत्सान्द्रत्वमागतम् ॥ दन्तीव्योषविडंगानिगुडूचीत्रि ला त्वच तत ...ार्द्धपलंचूर्णंग्रहणीयाच्चप्रतिप्रति ॥ कर्षन्तुत्रिवृतायाश्चसर्वमेकत्रचूर्ण येत् ॥ त मन् ...द्धंविज्ञायकवोष्णेप्रक्षिपेद्बुधः ॥ ततश्चाग्निबलंमत्वाखादेत्कर्षप्रमाणतः । वातर ...मिलाकर वात गुदजान्यग्निसादनम् ॥ दुष्टव्रणंप्रमेहांश्चआमवातंभगन्दरम् । ना वाती,सताव सर्वानेतान्व्यपोहति ॥ इति अमृतागुग्गुलुः ॥ ७०५ ॥

...पिर्स्तैलवसामज्जा ३२ तोले नवा ... तांस २ तोले इनसबको एकसाथ कूटकर ६२४ तोले पोधमचर्ण ... रघृत बाकीरहने ... और इसी काढे को दूसरीबार पाककरके जब गाढा होजाय तब उतारले ६ पे ... दन्ती,सोंठ, पीपल, मिर्च, बाय-बिडंग,गिलोय,त्रिफला तथा तज इनसब औ ... दोदो तोले ... और निसोतका १ तोले चूर्ण मिलावे इसके पीछे अग्निबलको देखकर १ तोले भर रोज औषध ... से वातरक्त, कुष्ठ,बवासीर,मंदाग्नि,दुष्टघाव,प्रमेह, आमवात, भगन्दर, नाडीव्रण, ऊरुस्तंभ ली सूजनका नाश होता है इति अमृतागुग्गुल ॥ ७०५ ॥

त्रिप्रस्थममृतायाश्चप्रस्थमेकन्तुगुग्गुलोः । प्रत्येकंत्रिफलाप्रस्थे वर्षाभूप्रस्थमेवच॥ सर्वमेकत्रसंकुट्यसाधयेदुल्बणेऽम्भसि। पुनःपचेत्पादशेषंयावत्सान्द्रत्वमागतम्। दन्तीचित्रकमूलानांकणाविश्वफलत्रिकम्। गुडूचीत्वक्विडंगानांप्रत्येकार्द्धपलंमतम्॥ त्रिवृताकर्षमेकन्तुसर्वमेकत्रचूर्णयेत् । सिद्धेउष्णेक्षिपेत्तत्रअमृतागुग्गुलुंपरम्॥ अतो यथाबलंखादेदम्लपित्तौविशेषतः । वातरक्तंतथाकुष्ठंगुदजान्यग्निसादनम्॥ दुष्टव्रणं प्रमेहांश्चआमवातंभगन्दरम् । नाड्याढ्यवातंश्वयथुंहन्यात्सर्वामयांस्तथा ॥ अश्विभ्यांनिर्म्मितश्चायममृताख्योहिगुग्गुलुः। इति अमृतागुग्गुलुः॥ ७०६ ॥

१९२ तोले गिलोय, चौंसठ चौंसठ तो० गूगुल, हड, बहेडा, आमला तथा पुनर्नवा इनसबको अच्छे प्रकार कूटकर ६२४ तोले जलमें पाककरे जब चौथाई बाकीरहै तब उतारले और छानकर उसी काढेको गाढा होजाने तक पकावे फिर कुछ गरमी रहनेपर दन्ती,चीता,पीपल,सोंठ,त्रिफला, गिलोय,तज तथा वायबिडंग दोदो तोले और निसोत १ तोले इनसबको चूर्ण करके मिलावे इसको बलके अनुसार सेवनकरनेसे अम्ल, पित्त, वातरक्त, कुष्ठ,बवासीर,मन्दाग्नि,दुष्टव्रण,प्रमेह, आमवात, भगन्दर, नाडीव्रण, ऊरुस्तंभ, सूजन और अन्य संपूर्ण रोगोंका नाश होताहै यह अमृता-गगुल अश्विनीकुमारने बनायाहै ॥ इति अमृतागुग्गुल ॥ ७०६ ॥

गुडरामठशुण्ठीनांमांसकूष्माण्डयोरपि। गुडूच्यागुग्गुलोश्चैवप्रस्थःषोडशभिःपलैः॥ स्निग्धःकाञ्चनसङ्काशःपक्वजम्बूफलोपमः। नूतनोगुग्गुलुःप्रोक्तःसुगन्धिर्यस्तुपिच्छिलः॥ शुष्कोदुर्गन्धिकश्चैववर्णान्यत्वमुपागतः । पुराणःसतुविज्ञेयोनसदेयस्तुरोगिणे॥ इति गुग्गुलुनवपुराणलक्षणम्॥ ७०७॥

गुड, हींग, सोंठ, मांस,पेठा,गिलोय और गूगुल इनसबका १ प्रस्थ ६४ तोलेका होताहै जो गूगुल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्निग्ध सुवर्णके समान कान्तियुक्त अथवा पक्की जामुनके समान कान्तिवा... सु... और सचिक्कन होय उसको नवीन गूगुल जानना चाहिये जो गूगुल सूखा, दुर्गन्धित, बिगडेवर्णवालाहोय वह पुराना जानना चाहिये और यह रोगियोंको न देना चाहिये॥ इति गुग्गुल नवपुराण लक्षण॥ ७०७॥

कृमि...पुदहनव्योषत्रिफलामरदारु चव्यभूनिम्बाः । मागधीमूलंमुस्तंशटीवचाधान्... चैव॥ लवणक्षारनिशायुक्कुस्तुम्बुरुगजकणासहातिविषाः । कर्षांशि...व... तुपलाष्टकञ्चाश्मजतुप्रदद्यात्॥ निष्पत्रशुद्धस्यपुरस्यधीमानूपल..., स्तथैव ...ताचतुष्कंपलमत्र... सुगन्धियुक्त... चूर्णं म...त्रपञ्चचन्द्रप्रभेयंगुटिकाविधेया। ज्वरा...तिसारग्रह... ...शेषतः देव॥ भगन्दरान्कामलपाण्ड... चद...तम्। हन्त्यामयान्पित्तकफानिलोत्थान्नाडीगते... गृध्रसियक्ष्मरोगेमेहेगजाख्येप्रबलेप्रयोज्या। शुक्रक्षयेचाश्म... कृच्छ्रेशुक्रप्रवाहेऽप्युदरामयेच॥ शम्भुंसमभ्यर्च्यकृतप्रसादं प्राप्तागुटीचन्द्रमसाप्र... । नपानभोज्येपरिहारवादोनशीतवातातपमैथुनेषु॥ भक्षस्यपर्वंसततंप्रयोज्यातक्रानुपानाप्यथमस्तुपाना। अजारसोजांगलजोरसोवापयोऽथवा शीतजलानुपानम्॥ शुक्रदोषान्निहन्त्यष्टौप्रमेहांश्चापिविंशतिम्। बलीपलितनिर्मुक्तोवृद्धोऽपितरुणायते॥ गिरिजतुगुग्गुलुलौहान्येकीकृत्याथभावयेद्बहुशः। क्वाथैस्तद्व्याधिहरैस्तदनुचचूर्णीकृतंमिलितम्॥ कृमिरिपुवादिकचूर्णैर्गिरिजतुसमधान्यपटोलयूषेण। इति चन्द्रप्रभागुटिका॥ ७०८॥

बायबिडंग, चीता, त्रिकटु, त्रिफला, देवदारु, चव्य, चिरायता, पिपलामूल, मोथा, कचूर, बच, सोनामक्खी, सेंधानोन, जवाखार, हल्दी, दारुहल्दी, धनियां, गजपीपल तथा अतीस यहसब एक २ तोले शिलाजीत ३२ तोले शुद्धगूगुल तथा लोहचूर्ण आठ२ तोले शक्कर १६ तोले और दन्ती, निसोत, दालचीनी, इलायची तथा तेजपात चार २ तोले इनसब औषधियों को पीस गोलीबनाकर सेवनकरने से ज्वर, अतीसार, ग्रहणी, बवासीर, भगन्दर, कामला, पांडु, मंदाग्नि, कफपित्त तथा वातजन्यरोग, नाडी तथा मर्मोंके घाव, क्षत, क्षय, गृध्रसी, यक्ष्मा, हस्तिप्रमेह, वीर्यक्षय, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, वीर्य का बहना तथा उदररोग यह सब नष्टहोते हैं चन्द्रमाने शिवजीका पूजनकरके प्रसन्नहुए शिवजीसे यहगोलीपाईथी इसके सेवनमें पान, भोजन, शीत, वात, धूप तथा मैथुनका कोई निषेध नहीं है भोजनसे पहले इस गोलीको खाकर मट्ठा दहीका तोड बकरे अथवा जंगलीजीवोंके मांसकारस दूध या शीतल जलका अनुपान करना चाहिये इसके द्वारा आठों वीर्य्य के दोष, बीसों प्रमेह, झुर्री तथा बालोंके पकनेसे रहितहोकर वृद्धभी तरुणसा होजाताहै॥ इति चन्द्रप्रभागुटिका॥ ७०८॥

वरंमहिषलोचनोदरसन्निभवर्णस्यगुग्गुलोःप्रस्थम्। प्रक्षिप्यतोयराशौत्रिफलाञ्च यथोक्तपरिमाणम्॥ द्वात्रिंशच्छिन्नरुहापलानिदेयानियत्नेन। विपचेत्तदप्रमत्तोदर्व्यासंघट्टयेन्मुहुर्यावत्॥ अर्द्धक्षयितंतोयंजातंज्वलनस्यसम्पर्कात्। अवतार्यवस्त्रपूतंपुनरपिसंसाधयेदयःपात्रे॥ सान्द्रीभूतेतस्मिन्नवतार्यहिमोपलस्पर्शे। त्रिफलाचूर्णार्द्धपलंत्रिकटो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

इचूर्णेषडक्षपरिमाणम् ॥ कृमिरिपुचूर्णार्द्धपलंकर्षंकर्षंत्रिवृद्दन्त्योः । प[illegible]मेकन्तुगुडूच्या द्वासंचूर्णंयत्नेन ॥ उपयुज्यचानुपानंयूषंक्षीरंसुगन्धिसलिलञ्च । इ[illegible]आहारविहारैरभि जमुपयुज्यसर्वकालमिदम् ॥ तनुरोधिवातशोणितमेकद्वित्र्युल्बणंचिरो[illegible]थमपि । भग्न तपरिशुष्कंस्फुटितंदीर्णमाजानुयच्चापि । व्रणकासकुष्ठगुल्मश्वयथुंगर[illegible]ांश्च । [illegible]चविबन्धंप्रमेहपिडिकाश्चनाशयत्याशु ॥ सततंनिषेव्यमाणःकालव[illegible] अभिभूयजरादोषंकरोतिकैशोरिकंरूपम् ॥ प्रत्येकंत्रिफलाप्रस्थोजल[illegible] क[illegible]पिरस्तैलवसामज्जा[illegible]गुलोःपाकःसर्वा[illegible]तः ॥ इति कैशोरिकगुग्गुलुः ॥ ७०६ ॥

श्रेष्ठ औषधमन्त्र[illegible]धृत[illegible], हड़[illegible]आमला चौंसठ २ तोले और गिलोय १२८ तोले इन सबको कूटकर ६२४ तो[illegible] ॥ [illegible]कड़छीसे चलाता जाय इसमें औषध कढ़ाई में नीचे लगकर जलने न पावे आधा[illegible] पर छानक[illegible]काढ़ेको लोहे के पात्र में पाककरे जब गाढ़ाहोजाय तब उतारले और शीतल होजाने पर त्रिफल[illegible]चूर्ण दोतोले त्रिकटुका चूर्ण ६ तोले बायबिड़ंग २ तोले निसोत तथा दन्ती एक २ तोले औ[illegible]लोय चारतोले इन सब औषधियों के चूर्णको मिलाकर इस औषधका सेवनकरे और यूष, दूध अथवा सुगन्धित जलका अनुपान करे और यथेष्ट आहार, विहार करे इसके द्वारा बहुत पुराना एक दोषज, त्रिदोषज, घुटने तक सूखाहुआ फटाहुआ अथवा बहताहुआ वातरक्त, घाव, खांसी, कुष्ठ, गुल्म, सूजन, गरदोष, पांडु, प्रमेह, पिड़िका, मन्दाग्नि तथा विबन्ध इनसब रोगों का नाश होताहै और निरन्तर इसका सेवन करने से कालवश सबप्रकार के रोग नष्ट होते हैं और वृद्धावस्थाके दोषों का नाशहोकर किशोर अवस्था का रूप होजाताहै सर्वत्र गुड़के समान गूगुलका पाककरनाचाहिये ॥ इति कैशोरिकगुग्गुल ॥ ७०६ ॥

त्रिफलातिविषादारुदार्वीमुस्तापरूषकैः । खदिरासननक्ताह्वगुडूचीनृपपादपैः ॥ भूनिम्बनिम्बकटुकाकलिङ्गकुलकैःसमैः । क्वाथंकृत्वाततःपूतंशृतमष्टगुणेम्भसि ॥ गुडूच्यास्तत्रसुकृतंचूर्णमर्द्धन्तुवारिणि। क्षिप्त्वासुनूतनेभाण्डेवासयेद्रजनीगतम् ॥ सोमोपेतेनपूतेनकौशिकंपरिभावयेत्।षड्गुणेननुसप्ताहंशिलाजतुसमन्वितम्॥शुक्तस्यतुपलान्यष्टौसमावाप्यविचक्षणः । ताप्यचूर्णपलञ्चैकंद्वेपलेमधुसर्पिषोः ॥ एकीकृत्यसमंसर्वंलिह्यात्सुत्रिफलाम्बुना।तनुनामुद्गयूषेणजांगलानांरसेनवा ॥ जीर्णेऽजीर्णेचभुञ्जीतपुराणंशालिषष्टिकम् । यथारोगंयथासात्म्यंरसैर्यूषैश्चसंस्कृतैः ॥ त्रिसप्ताहप्रयोगेणवातरक्तंसुदारुणम् । निहन्तिवीर्यतःक्षिप्रंकुष्ठरोगान्व्रणानपि ॥ भिन्नंभिन्नञ्चसन्धत्तेत्रिफलाख्योहिगुग्गुलुः ॥ इति त्रिफलागुग्गुलुः ॥ ७१० ॥

त्रिफला, अतीस, देवदारु, दारुहल्दी, मोथा, फालसा, कत्था, शालकाष्ठ, हल्दी, गिलोय, अमलतास, चिरायता, नींब, कुटकी, इन्द्रजौ तथा पर्वल इन सब औषधियों को अठगुने जलमें पाककरके जब चौथाई रहै तब उतारले फिर उसकाढ़ेसे आधा गिलोयका चूर्ण इसमें मिलाकर नवीन वर्तन में एक रात्रि भर रखछोड़े इसके पीछे शिलाजीत तथा गूगुलको समभागलेकर इनके छःगुने ऊपर कहे हुए काढ़े में सातदिनतक भावनादेवे फिर सिरका ३२ तोले सोनामक्खीका चूर्ण ४ तोले और शहद तथा घी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आठ २ तोले इनसब को उसमें अच्छे प्रकार मिलाकर त्रिफले का जल प्रतले ... यूष तथा जंगली जीवोंके मांसका रस इनमेंसे किसी के साथ चाटे और रोग तथा सात्म्यूको विचार कर मांस रस तथा यूष आदिके साथ पुराने शालि तथा साठीके चांवलोंकाभात खिलावे २१ दिनतक इस औषधके सेवनसे अत्यन्त भयंकर वातरक्त,कुष्ठ तथा घावका नाश होताहै और कटेस्थान जुडजातेहैं इति त्रिफलागुग्गुलु ॥ ७१० ॥

...थंकषायस्यत्रिफलायाःसुचूर्णितम्। सौगन्धिकंपलञ्चैकंकौशिकस्य... कुडवंचि...तैलस्यसर्वमादाययत्नतः ... पाचयेत्पाकविद्वैद्यःपात्रेलोहमयेदृढे ॥ ... तथापित्तंश्लेष्माणंखञ्जपंगुताम् । श्वास... तरक्तञ्चगुल्मंशूलोदराणिच। ... प्रत्येत... जतम् ॥ ...योपयोगे नजरापलितनाशनम् । सर्पि... ...च्छालिषष्टिकम् ॥ सिंहनादइतिख्या तोरोगवारणदर्प्पहा । ...दीप्तिकरंपुंसाम्भाषितोदण्डपाणिना ॥ अत्राहुस्त्रिफलाकाथं पृथक्त्रिपलसम्मितम् । ...श्चिन्निर्यातिचैरण्डस्नेहेपाकोऽधिकेखरः ॥ इति सिंहनादगु ग्गुलुः ॥ ७११ ॥

बारह २ तोले त्रिफले के काढ़े में ४ तोले गन्धक का चूर्ण ४ तोले गूगल और १६ तो० रेंडीका तेल मिलाकर लोहेके पात्रमें पाक करले मात्राके अनुसार इसके सेवनसे वात, पित्त, कफ,खंजता, पंगुता, श्वास,खांसी,कुष्ठ,वातरक्त,गोला,शूल,उदर तथा आमवात का नाश होता है इसके निरंतर सेवन से झुर्री तथा बालोंके पकनेका नाश होता है और अग्नि की दीप्ति होती है इसके सेवन में शालि तथा साठीके चांवलों का भात,घी,तेल तथा मांस के रसके साथ पथ्य करना चाहिये इस में पाक करने के समय जब रेंडीका तेल ऊपर आजाय तब पाकहुआ जानिये इससे अधिक रखने में पाक खरा हो जाता है इति सिंहनादगुग्गुल ॥ ७११ ॥

अष्टौपलान्यत्रपलंकषायःप्रस्थोपृथक्शुद्धफलत्रयस्य। दत्त्वापचेद्द्रोणयुगेजलस्यपा दावशेषंपुनरेववैद्यः॥ दन्तीत्रिवृत्त्र्यूषणवारुणीनांविडंगमुस्तात्रिफलामृतानाम्। कन्दो ग्रगन्धालुकमाणकानांसगन्धकाणाञ्चसपारदानाम् ॥ पलार्द्धमानंप्रमितंसचूर्णंदद्याद्वि पक्वंपुनरेवतत्र । फलानिसंचूर्ण्यचकानकानिसहस्रसंख्याकलितानिपश्चात् ॥ खादेद्वि माषद्वितयंप्रतप्तंतोयादिकंदेयमतोऽनुपाने। आमानिलंसन्धिगतंसशूलंशिरोगतंजानुक टिस्थितञ्च॥ अर्शोऽतिवृद्धात्तिविषमज्वरार्तिंप्रमेहकुष्ठानिभगन्दरञ्च। हन्यान्नराणामिति सिंहनादोमेदोमरुच्छ्लेष्मगदान्पुरोऽयम् ॥ दाहोत्यन्तप्रवृत्तिर्वाविकारोऽन्योनचेद्बहुः। विरेकाति तत्कृतस्तुतदातत्रतक्रभक्तंहितंभवेत्॥उद्वर्त्तनंशीतजलस्नानञ्चशयनंतथा । तोयारनाल शयंकुर्य्यातुसिंहनादोयतःसुधीः ॥ ज्ञात्वाबलंशरीरेतुदद्यादेवंनवाभिषक् । तोयारनाल गोक्षीरैःक्रमात्पक्वंविशुध्यति ॥ फलंकनकसंज्ञन्तुकृत्वाचूर्णंततःक्षिपेत् । इति द्वितीयः सिंहनादगुग्गुलुः ॥ ७१२ ॥

गूगल ३२ तोले,त्रिफला एकसौअट्ठाईस२तोले इनको १२४८ तोले जलमें पाक करके चौथाई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बाकीरहनेपर [illegible] फिर [illegible]काढ़ेमें दन्ती, निसोथ, त्रिकटु, इन्द्रायण, बायबिडंग, म[illegible]था, त्रिफला, गिलो[illegible]य, ज़मींकन्द, बच, आलू, मानकेचू, पारा तथा गन्धक इनसबके दोदो तोले चूर्णकोमि[illegible] पाककरे इस[illegible] उपरान्त १००० धतूरेके बीजोंको चूर्णकरके इसमें मिलावे फिर २ माशे इस औषधिको खाकर [illegible]रमजल आदिका अनुपानकरे इसके सेवनसे संधिगत, शूलयुक्त, शिरोगत, घुटने [illegible] में स्थित [illegible]मवात नष्ट होतीहै और बवासीर, विषमज्वर, प्रमेह, कुष्ठ, भगन्दर, मेदजरोग त[illegible] कफ, [illegible]जरोग मिलाकर वात[illegible]के सेवनसे जो बहुत दाह होय अथवा बहुत दस्तआवें तो मट्ठेके साथ भात खि[illegible] [illegible]ची, सताव[illegible] जलमें स्नान तथा शयनकरावे इसकेसेवनसे बहुत दस्तआतेहैं इस[illegible] रोगीके बल को [illegible] [illegible] जल, [illegible] तथा गौकेदूधमें पीसकरके शुद्धहोजा[illegible] वाले इति [illegible]नादगुग्गुल ॥ ७१२ ॥

प्रस्थैकगुग्गुलोर्मानंकटुतलप[illegible] [illegible] ॥ [illegible]ना प्रस्थंसार्द्धद्रोणे जलेपचेत् ॥ पादशेषंसुपूतञ्चपुनरग्नावधिश्रयेत् । [illegible]कलामुस्त[illegible]गामलकानि च ॥ गुडूच्यग्नित्रिवृद्दन्तीवचासूरणमानकम् । कस्तूरीरससूतांशंप्रत्येक[illegible]सम्मितम् ॥ सहस्रंकानकफलंसिद्धेसञ्चूर्ण्यनिःक्षिपेत् । ततोमाषद्वयंजग्ध्वा[illegible]जलादिकम् ॥ अग्निञ्चकुरुतेशीघ्रंबडवानलसन्निभम् । धातुवृद्धिंवयोवृद्धिंबलंसुविपुलंतथा ॥ आमवातंशिरोवातंग्रन्थिवातंभगन्दरम् । जानुजङ्घाश्रितंवातंसकटीग्रहवेदनम् ॥ अश्मरीमूत्रकृच्छ्रंचभग्नेचतिमिरोदरे । अम्लपित्तंतथाकुष्ठंप्रमेहंगुदनिर्गमम् ॥ कासंपञ्चविधंश्वासंक्षयञ्चविषमज्वरम् । प्लीहानंश्लीपदंगुल्मान्पाण्डुरोगंसकामलम् ॥ शोथान्त्रवृद्धिशूलानिगुदजानिविनाशयेत् । मेदःकफामसञ्जातरोगवारणदर्पहा ॥ सिंहनादइतिख्यातोयोगोऽयममृतोपमः । भिषग्विवर्जितेरोगेभाषितोदण्डपाणिना ॥ इति सिंहनादगुग्गुलुः ॥ ७१३ ॥

३२ तोले कडुए तेलसमेत ६४ तोले गूगल और चौंसठ चौंसठ तोले त्रिफलाके ९३६ तोलेजलके द्वारा पाककरके चौथाई बचेहुए काढ़ेको फिर अग्निपै चढ़ावे इसके उपरान्त त्रिकटु, त्रिफला, मोथा, बायबिडंग, आमला, गिलोय, चीता, निसोथ, दन्ती, बच, ज़मींकन्द, मानकेचू, शुद्धगन्धक तथा पारा यह सब दोदो तोले और १००० धतूरेके बीजोंका चूर्ण डालकर उतारले २ माशे इस औषधको खाकर गरमजल आदिका अनुपानकरे इसकेद्वारा अग्नि, धातु, आयु तथा बलकी वृद्धि होतीहै और आमवात, शिरोवात, ग्रन्थिवात, भगन्दर, घुटने या पिंडरियोंमें स्थित वात, कटिग्रह, पीड़ा, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, भग्न, अन्धकारसा दीखना, उदर, अम्लपित्त, कुष्ठ, प्रमेह, कांच निकलना, खांसी, श्वास, क्षय, विषमज्वर, प्लीह, श्लीपद, गोला, पांडु, कामला, सूजन, अन्त्रवृद्धि, शूल, बवासीर, मेद, कफ तथा आमजनितरोग यह सब नष्टहोते हैं यह सिंहनाद गूगल वैद्यों से त्याग कियेहुए भी रोगोंको दूर करता है इति सिंहनादगुग्गुल ॥ ७१३ ॥

शतावरीनागबलावृद्धदारकमुञ्चटा । पुनर्नवामृताकृष्णावाजिगन्धात्रिकण्टकम् ॥ पृथग्दशपलान्येषांश्लक्ष्णचूर्णानिकारयेत् । तदर्द्धशर्करायुक्तंचूर्णंसम्मर्द्दयेद्बुधः ॥ स्थापयेत्सुदृढेभाण्डेमध्वर्द्धाढकसंयुतम् । घृतप्रस्थेनचालोड्यत्रिसुगन्धपलेनच ॥ तंखादे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...दृष्टा...यथावह्नि...लंनरः । वातरक्तंक्षयंकुष्ठंकार्श्यंपित्तास्रसम्भ...म् । ...तापत्तकफो...थांश्च...रोगानन्...श्चतत्कृतान् । हत्वाकरोतिपुरुषंहत्वासर्वामयानद्रुतम् ॥ बलीपलितनिर्मुक्तंमेधा...तिविभूषितम् । करोतिपुरुषंधन्यंपञ्चवर्षशतायुषम् ॥ योगसारामृतंनाम...विवर्द्धनम् । इति योगसारामृतः ॥ ७१४ ॥

...र, गुलशकरी, बिधारा, घोंगची, पुनर्नवा, गिलोय, पीपल, असगन्ध तथा गोखरू ... धियों को ... २ तोले लेकर महीन ... करे और सब औषधिकी आधी शक्कर ... शहद ६४ तोले घी और चार २ तोले दालचीनी ... में रखकर खूब मिलावे फिर अग्निबल ... इस औषधि ... विहार करे इसके द्वारा वात, रक्त, क्षय, कुष्ठ ... तथा कफसे हुए रोग झुर्री तथा बालों का पकना आदि अनेक रोग नष्ट होते हैं ... स्मृति, लक्ष्मी तथा कीर्ति की वृद्धि होती है और १०५ वर्षकी आयु होती है इति योगसारामृत ॥ ७१४ ॥

व्यायामंमैथुनंकोपमुष्णाम्ललवणंरसम्। दिवास्वप्नमभिष्यन्दिगुरुचान्यद्विवर्जयेत् ॥ इति वातरक्तनिदानचिकित्साधिकारः ॥ ७१५ ॥

इति द्वितीयभागस्समाप्तः ॥

वातरक्तवाला मनुष्य, व्यायाम, मैथुन, क्रोध, उष्ण वस्तु, अम्ल तथा लवण वस्तु, दिन में सोना और अभिष्यन्दी तथा भारीवस्तु इन सब को त्याग करदे इति वातरक्तनिदानचिकित्साधिकार ७१५ ॥

इति द्वितीयभाग ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...नरोग, ग्रन्थि, ...पची, अर्बुद, गलगंडरो..., वृद्धि, उपदंश, फीलपांव, छोटे२ रोग, ...सकता ...नसत्र रोगोंकी ...चिकित्सा वर्णितहै और वमन और जुलाब किनरोगों में ... ...थावर और जंगम विषकी चिकित्सा, नेत्र, कर्ण, नासा और शिरोरोगकी चिकित्सा, रेवतीग्रह, पूतनाग्रह इत्यादि ग्रहों की चिकित्सा, ज्वर, अतीसार, ...रोग, वायुगोला, हृदयके रोग, पांडुरोग, रक्त पित्त, मूर्च्छा और सम्पूर्ण मदोंकी चिकित्सा, ..., वमन, हिच... ...खांसी स्वरभेद, कृमिरोग, उदावर्त्त, हैजा अरुचि, मूत्रदोष, मृगी रोग और उन्माद इत्यादि ...की चिकि... उत्तमोत्तम काढ़ चूर्ण गोली वलू और घी इत्यादिके द्वारा वर्णन की गई है जिसको जिला रोहतक मौजे ...पण्डित रविदत्त वैद्यने मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के खर्चसे प्रत्यक्षरका भाषा में उल्था ... उन्नाम प्रदेशान्तर्गत ... निवासि पण्डित राम... सुकुल ने कठिन शब्दों का कोष और अकारादि और साधारण सूचीपत्र रचना कर विभूषित किया है यह पुस्तक अवश्य प्रत्येक मनुष्य ... देखने ... चिकित्सा को काम होसक्ता है ॥

निघ...कर... ...) पु० ॥

जिसमें सम्पूर्ण ज्वर, सम्पूर्ण अतीसार, उस ग्रहणी ववासीर, अजीर्ण, हैजा, अलस विलम्बिका, कृमिरोग, पांडुकामला, हलीमक, रक्तपित्त, राजरोग, शोखरोग, ख...रोग, हिचकीरोग, श्वासरोग स्वरभेद रोग, अरोचकरोग, छर्दिरोग, तृषा रोग, मूर्च्छा, मोह, भ्रम, तन्द्रा, निद्रा, संन्यास, मदात्ययरोग, दाहरोग, उन्मादरोग, भूतादिकके उन्मादका, तंत्र मंत्र डाकिनी साकिनी निवारणोपाय प्रत्यक्ष हाजरायतयंत्र, मिरगी रोग, सम्पूर्ण वातव्याधि, अलपकेशीकी चिकित्सा, ऊरुस्तम्भरोग, आमवात पित्तव्याधि, कफव्याधि, वातरक्तरोग, शूल रोग, उदावर्त्त, आनाह रोग, गुल्मरोग, यकृत्प्लीहरोग, हृद्रोग, मूत्रकृच्छ्ररोग, मूत्राघात, पथरी, प्रमेह, पेटकेरोग, दुर्वलता, सूजन, अंडवृद्धि, वदरोग, गलगंड, फीलपांव, विद्रधि, घाव, अग्निदग्ध, भग्नरोग, नासूर, भगंदर, आतशक, शूकरोग, कुष्ठ, अम्लपित्त, विस्फोटक अर्थात् शीतला, फिरंगरोग, छोटे २ रोग, शिर, नेत्र, कान और मुंहके रोग, स्थावर जंगम विषरोग, स्त्रियोंके प्रदर आदि सव रोग, वालकों के रोग और नपुंसकताकी उत्तमोत्तम काढ़े, चूर्ण, गोली, रस, तेल और घी इत्यादि के द्वारा वर्णन कीगई है इसकाभी जिला रोहतक मौजे वेरी ग्राम निवासि पण्डित रविदत्त वैद्यने मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के खर्च से अक्षर २ का भाषा में उल्था कियाहै यह पुस्तक भी अवश्य देखने योग्यहै क्योंकि इसी एक पुस्तकसे चिकित्साका पूरा २ काम निकलसक्ताहै ॥

शार्ङ्गधरसंहिता भाषा टीका सहित क़ी० ॥) पु० ॥

जिसमें सुश्रुत चरक आदि वैद्यकीय सव ग्रंथों के मतसे ज्वर, अतीसार, संग्रहणी, ववासीर, अजीर्ण हैजा, कृमिरोग, पांडुरोग, रक्त पित्त, राजरोग खांसी, हिचकी, दमा, स्वरभेद, अरुचि, वमन, प्यास मूर्च्छा, दाहरोग, उन्मादरोग, मृगीरोग, वातव्याधि, शूलरोग, गुल्मरोग, हृदयकेरोग, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, पथरी, प्रमेह, पेटके रोग, सूजन, अंडवृद्धि, वदरोग, फीलपांव, गलगंड, व्रणरोग, अग्निदग्ध, नासूर, भग्नरोग, भगंदर, आतशक, शूकरोग, कुष्ठरोग, शीतला, क्षुद्ररोग, शिर, नेत्र, कान, नाक और मुंहरोग सम्पूर्ण विषरोग स्त्रियों और वालकोंके सव रोग और धातुपुष्ट और नपुंसकताकी अत्युत्तम चिकित्सा काढ़े, चूर्ण, गोली, रस, तेल, घी इत्यादि के द्वारा वर्णित है इसके मूल श्लोकोंको शार्ङ्गधरजी महाराज और भाषा टीका को जयपालजीने अत्यन्त परिश्रम से रचना कियाहै यह पुस्तकभी अवश्य दर्शनीयहै ॥

भैषज्यरत्नावलीभाषाटीका सहित क़ी० २॥) पु० ॥

जिसमें ज्वर चिकित्सा, ज्वरातीसार चिकित्सा, पिलही और यकृत् की चिकित्सा, पांडुरोग चिकित्सा, शोथरोग चिकि-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तथा [illegible] चिकित्सा, क्षोम रोगकी चिकित्सा, मेद रोगकी चिकित्सा, आमाशय [illegible] चिकित्सा, [illegible] [illegible] चिकित्सा, रक्तपित्त चिकित्सा, अग्निमन्दकी चिकित्सा, अरुचि चिकित्सा, सं[illegible] अतीसार चिकित्सा, कृमिरोग चिकित्सा, अम्लपित्तरोग चिकित्सा, शूलरोग चिकित्सा, [illegible] रोग चिकि[illegible] चिकित्सा, आनाहरोग चिकित्सा, अन्नरोग चिकित्सा, राजयक्ष्मा चिकित्सा, खांसीरोगकी चिकित्सा, हि[illegible] रोग चिकित्सा, स्वरभेद चिकित्सा, हृद्रोग चिकित्सा, वातव्याधि चिकित्सा, आमवात चि[illegible] मूत्राघातरोग चिकित्सा, पथरीरोग चिकित्सा, आतशकरोग चिकित्सा, शूकरोग चिकित्सा, प्रमेह चिकित्सा, [illegible] औपसार्गिक मेहरोग चिकित्सा, शुक्रमेह चिकित्सा, प्रमेह पिड़िका चिकित्सा, ध्वजभंग चिकित्सा, [illegible] [illegible] की चिकित्सा, गलगंड रोगादि चिकित्सा, शीतपित्त उदर्द और कोढ़रोगों की चिकित्सा, [illegible]रिकारोग चिकित्सा, [illegible] रोग चिकित्सा, ववासीर की चिकित्सा, भगंदर चिकित्सा, विद्रधि चिकित्सा, ऊरुस्तंभ चिकित्सा, [illegible] चिकित्सा, स[illegible]ा, नसूरकी चिकित्सा, शिररोग चिकित्सा, मूर्च्छा चिकित्सा, उन्मादरोग चिकित्सा, अपस्मा[illegible] चिकित्सा, नेत्ररोग, नासारोग और मुखरोग चिकित्सा, क्षुद्ररोग चिकित्सा, स्त्रीरोग चिकित्सा, [illegible] चिकित्सा, विषरोग चि[illegible]ा, वीर्यस्तम्भन विधिरसायन अधिकार, वाजीकरणाधिकार और परिशिष्ट पर्यन्त विषयों के काढ़े, चूर्ण, रस, लेप, तेल [illegible] यन्त्र, मन्त्र और तंत्रादिकों से औषध वर्णितहैं जिसमें कोई रोग ऐसा नहीं जिसकी परिपूर्ण औषध इस ग्रन्थसे न होसके यह ग्रन्थ बहुतही उत्तमहै इसअकेलेही ग्रन्थ से परिपूर्ण वैद्य होसक्ताहै जिसे मुन्शीजीने रोहतक प्रदेशांतर्गत बेरीनिवासि पण्डित रविदत्तजी से तर्जुमा कराके उसी तर्जुमे को संस्कृतसे श्लोक२ के टीकेको ज़िला उन्नाव मौज़े तारगांव निवासी पण्डित रामविहारी सुकुल से शुद्धकरायाहै यह पुस्तक अवश्य देखनेके लायक है ॥

अमृतसागर जलीक़लम क़ी० १)

जिसको श्रीमन्महाराजाधिराज सवाई प्रतापसिंहजी वीरेश वैकुण्ठवासी ने वैद्यक के चरक सुश्रुत वाग्भट्ट आदि अनेक प्रमाणिक ग्रन्थों से सार २ बातें निकाल कर रचा जिसमें सम्पूर्ण रोगोंकी उत्पत्ति, लक्षण, यत्न और यन्त्र, मंत्र, तंत्र, धातुमारण, शोधन, गोली, अवलेह जो आज़माई हुई हैं और जिनका सामयिक रोगों में प्रचार है लिखी हैं परन्तु संसारके उपकारके निमित्त छापेख़ाने के मालिकने और भी विशेष बातें जो उचित और उपयोगिक थीं संयुक्तकराई कि सोना और सुगन्ध दोनों हों और (यथानामःतथागुणः) यह दृष्टान्त भी प्रत्यक्ष फल दिखावे यह पुस्तक इसछापेख़ाने में असंख्यही छपकर बिकचुकी है और ग्राहकोंकी मांगें बराबर चलीआती हैं इसपर रजिस्टरी भी होगई है ॥

चरकसंहिता सटीक मुजल्लिद की० ७॥) पु०

यह वही चरकसंहिता है जोकि वैद्यक ग्रन्थों में सर्वत्र प्रसिद्ध है व बड़े२ वैद्यराजों से अतिशय माननीय है विद्वान् लोग अन्य ग्रन्थों में लिखी हुई औषधियों का संग्रह इसके नामसे निर्भय हो करते हैं अब इस प्रसिद्ध ऋषिप्रणीत ग्रन्थकी प्रशंसा करना केवल इबारत का बढ़ानाही है—इस यन्त्रालयमें यह ग्रन्थ बहुत परिश्रम से बनवाया गया और छापागया है जिसमें रुपया भी विशेष व्यय हुआ है यह ग्रन्थ मूल श्लोकों के नीचे भाषा देवनागरी में टीका संयुक्त करके छापागया है यह टीका चरक के बंगला टीका से और मूल श्लोकार्थ दोनों से देखकर किया गयाहै इस टीकाके उत्तम होने में कोई सन्देह नहीं है छपाई भी इसकी बहुतउम्दा है अक्षर उम्दा व काग़ज़ सफ़ेद मोटा चिकना लगायागया है दो जिल्दों में यह पुस्तक छापीगई है एक जिल्द में सूत्रस्थान, निदानस्थान, विमानस्थान, शारीरकस्थान, इन्द्रियस्थान है और आदि में सूचीपत्र प्रत्येक रोगों का विस्तार सहित लगाहै दूसरी जिल्द में चिकित्सितस्थान, कल्पस्थान, सिद्धिस्थानहै तसवीरें भी लगाई गई हैं इत्यलम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भावप्रकाश म... ड तृ... ...तुर्थ
...ग व उत्तर... सटीक

जिसमें

शूल, उदावर्त, गुल्म, पिलही, वायुगोला, हृद्रोग, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, पथरी, प्रमेह, मेदरोग, शोथरोग, वृद्धिरोग, अंत्रवृद्धि, ब्रध्नरोग, गलगंड, गंडमाला, पीलपांव, विद्रधि, व्रण अधिकार, भग्न अधिकार, नसूर, भगन्दर, गरमी, शूकदोष, कोढ़रोग, शीतपित्त, विसर्प, स्नायुअधिकार, विस्फोटक और फिरंग इत्यादि अनेक रोगों के लक्षण और अत्युत्तम औषधें वर्णित हैं ॥

जिसको

भाव मिश्र ने ललित श्लोकों में रचना किया था

उसीको

भार्गव वंशावतंस मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) ने अपने खर्च से आगरा पुर पीपलमंडीनिवासि चौरासिया गौडवंशावतंस लखनऊ केनिङ्गकालेज के संस्कृताध्यापक पण्डित कालीचरण जी से प्रत्यक्षर का भाषा टीका रचना कराया है ॥

दूसरीबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा दिसम्बर सन् १९०२ ई० ॥

इस पुस्तककी रजिस्ट्री नं० ३७४ ता० ९ अप्रैल सन् १८९९ ई० में हुईहै इसलिये कोई छापै नहीं ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस मतबे में जितने प्रकारकी वैद्यककी पुस्तकें छपी हैं [illegible] मेंसे कुछ लिखीहैं जिस किसी अवलोकन करनेवालेकी कांक्षाहो [illegible] छापेख पुस्तकालयसे अपनी दरख्वास्त भेजके फेहरिस्त [illegible] मँगाकर अवलोकन करसक्ते हैं॥

[illegible] सुश्रुतसंहिता भा[illegible] ॥) पु० ॥

जिसमें वैद्यक विद्याकी विस्तारसे उत्पत्ति, [illegible] की विधि, शिष्यों के पढ़ानेकी विधि और ग्रन्थके सब अध्यायों की सूची, गुरुदेवजीका विद्या[illegible] अच्छी विधिसे पढ़ाना [illegible] उचित धर्म है तिसका वर्णन, फोड़ाके चीरनेके पीछे वैद्यका रोगीकी रक्षा पढ़ना, ऋतुचर्या अर्थात् जिसऋतुमें जिस प्रकारसे [illegible] करना चाहिये तिसका वर्णन, चीरने फाड़नेके हथियारों का वर्णन, चीरने फाड़नेके हथियारों के भेद, और उनके ग्रहण करनेका उपाय और शस्त्रोंकी रक्षा का उपाय वर्णन, वैद्यका शिष्यको चीरना फारना सिखाना, शिष्यका गुरुदेवजीसे वैद्यक विद्या पढ़के राजाके यहां परीक्षा देकर राजाकी आज्ञासे शुद्धचित्तहोकर चिकित्सा करना, क्षारपाकविधि और अग्निकर्म विधिका वर्णन, जोंक, सींगी और तुम्बीलगानेकी विधि रक्तकीविधि और यत्नसे रक्षा दोष धातु मलके क्षय और वृद्धिके जाननेका वर्णन, बालकके कान छेदने की विधि, फोड़ा आदिके चीरने का वर्णन, घावके लेपन और बन्धकी विधि, घाववाले पुरुषको जिसप्रकार से रहना चाहिये तिसका वर्णन, पथ्यापथ्य वस्तुओं का वर्णन, घावके प्रश्न विषयके अध्याय का वर्णन, घावके स्थानोंका वर्णन कृत्य और अकृत्य और व्याधिभेद का विषय, आठप्रकारके शस्त्र कर्म करनेवाले अध्यायका व्याख्यान, प्रणष्टशल्यनाम फोड़े के जानने का लक्षण, शल्यनामक फोड़े के निकालने का वर्णन, विपरीताविपरीत नामक घावके जाननेका वर्णन, दूतको वैद्यके बुलानेके समय में और वैद्य कोभी रोगी के यहां जानेमें शुभ अशुभ शकुन और रोगीके शुभ अशुभ स्वप्नों के द्वारा शुभ अशुभ फलका वर्णन, रोगीको अपनीही छाया जिसप्रकार की दिखलाई दे उसके शुभाशुभका फल, रोगी के स्वभावके उलटा होजानेका फल, रोगीको जिसजिस लक्षणवाले रोग मार डालते हैं उनका वर्णन, सेनायुक्त और शत्रुओं को जीतने की इच्छावाले राजाकी वैद्यको रक्षाकरनी योग्यहै वैद्यको, रोगी के आयुकी परीक्षा, फोड़ों के लेपइत्यादि औषधों का वर्णन, वैद्यका औषधके योग्य भूमिकी परीक्षाकरना, औषधों के समूहों के गुणवर्णन, जो औषध वमन और जो जुलाब से रोगोंको हरनेवाली हैं उनका वर्णन, औषध और रसोंके गुणवीर्य और विपाक के जाननेका वर्णन, रसविशेषों के जानने का वर्णन, वमनद्रव्यों और जुलाब की द्रव्यों का वर्णन, जलवर्ग, दूधवर्ग, दहीवर्ग, माठावर्ग, तैलवर्ग, शहदवर्ग, ईषवर्ग, मदिराकांजी और मूत्रवर्ग का वर्णन, अन्नपान विधिका वर्णन, वातव्याधि बवासीर, पथरी, भगंदर, कुष्ठ, प्रमेह, उदररोग, मूढ़गर्भ, विद्रधिरोग, विसर्प, नाड़ीरोग, स्तनरोग, ग्रंथि, अपची, अर्बुद, गलगंड, वृद्धि, आतशक, फीलपांव, छोटे २ रोग, शूकदोष, भग्नरोग, और मुख रोगों के निदान का वर्णन, सर्वभूत चिंता शारीर, शुक्रशोणित शुद्धि शारीर, गर्भावक्रांति शारीर, गर्भव्याकरण शारीर, शरीर संख्या व्याकरण शारीर, प्रत्येक कर्म निर्देश शारीर, सिरावर्णन विभक्ति शारीर, सिराव्यधि विधि शारीर, धमनी व्याकरण शारीर, गर्भिणी व्याकरण शारीर का वर्णन, द्विव्रणीय, सद्योव्रण, भग्नरोग, वात व्याधि, महावातव्याधि, बवासीर, पथरी, भगंदर, कुष्ठ, महाकुष्ठ, प्रमेह, मधुप्रमेह, पेटरोग, मूढ़ गर्भ, विद्रधि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भावप्रकाश सटीक के मध्यखण्डके तृतीयभागका सूचीपत्र ॥

विषय	पृष्ठ
अथ शूलाधिकारः	१
शूलका सन्निकृष्टनिदान	१
वातिकका विप्रकृष्ट निदान संप्राप्ति पू० ल०	१
शूलकादेश	२
पसली के शूलका ल०	२
वस्ति शूलका ल०	२
पैत्तिक	२
श्लैष्मिक	३
द्वन्द्वज	३
त्रिदोषज	४
आमज	४
शूलके दोषविशेष से देश विशेष	४
तन्त्रान्तरोक्त आमशूल	४
शूल के उपद्रव	५
असाध्यत्वादिक	५
अरिष्ट	५
परिणामशूल	५
अन्नद्रव शूल विशेष	६
शूलका चि०	६
परिणाम शूलकी चिकित्सा	८
अन्नद्रव की चि०	९
इति	१०
उदावर्त्तका अधिकार	१०
उसका विप्रकृष्ट निदान	१०
उसका सामान्य ल०	१०
वेगोंके अभिघातसेहुयेउदावर्त्तोंकीअलगअलगविशेषल०	१०
अपान वायु के रोकने से हुये का लक्षण	१०
मल निरोधज का ल०	११
मूत्रनिग्रहजका ल०	११
जृम्भानिरोधजका ल०	११
अश्रुनिरोधज का ल०	११
छिक्कानिरोधज का लक्षण	११
वान्ति निरोधज	१२
शुक्र निरोधज का ल०	१२
क्षुधा निरोधज का ल०	१२
तृषा निरोधज का ल०	१२
श्वासनिरोधज का ल०	१२

विषय	पृष्ठ
निद्राविघातज का ल०	१३
रूक्षादिकुपितवातजका ल०	१३
उसकानिदान संप्राप्ति पूर्वक लक्षण	१३
संप्राप्ति	१३
असाध्य का ल[illegible]	[illegible]
आनाह[illegible]	[illegible]
[illegible]का आनाह	१४
[illegible]चयज	१४
[illegible]तों की चि०	१४
रू[illegible] कुपित वातके उदावर्त्त की चि०	१५
आनाह की चि०	१६
इति	१६
अथ गुल्माधिकारः	१७
उसका सन्निकृष्ट विप्रकृष्ट कारणपूर्वकसामान्यलक्षण	१७
कोष्ठमें भी स्थान नियम	१७
गुल्मका सामान्य ल०	१७
उसका पूर्वरूप	१७
वातिकका निदान	१८
उसका ल०	१८
पैत्तिक का नि०	१८
उसका ल०	१८
श्लैष्मिक और सन्निपातिक का हेतु	१९
उसका ल०	१९
त्रिदोषज	१९
आर्तवरूप रक्तज	१९
साध्यका ल०	२०
असाध्य का ल०	२१
उसकी चि०	२१
रक्तके गुल्मकी चि०	२४
इति	२४
प्लीहाधिकारः	२४
उसका शरीरावयवविशेष स्वरूप	२४
उसका निदान संप्राप्ति	२४
पूर्वरूप ल०	२५
रक्तज ल०	२५
पैत्तिक का ल०	

विषय	पृष्ठ
वातिक का ल०	२५
असाध्य ल०	२५
शरीरावयव विशेषपिलही यकृत्का स्वरूप	२५
यकृत् रोग[illegible]चि०	[illegible]
प्लीहा[illegible]चि०	२५
[illegible]रोगकी चि०	२६
[illegible]	२६
हृद्रोगाधिकारः	२६
उसका विप्रकृष्ट नि०	२६
संप्राप्ति पूर्वक ल०	२७
वातिक का ल०	२७
पैत्तिक का ल०	२७
श्लैष्मिक का ल०	२७
सान्निपातिक का ल०	२७
कृमिज का ल०	२८
उसकी विप्रकृष्ट निदान पूर्वक संप्राप्ति	२८
उसका ल०	२८
हृद्रोगके उपद्रव	२८
उसकी चि०	२८
इति	२९
मूत्रकृच्छ्राधिकार	२९
उसका विप्रकृष्ट नि०	२९
उसकासंप्राप्ति पू० ल०	२९
वातज का ल०	३०
पैत्तिक का ल०	३०
श्लैष्मिक का ल०	३०
सान्निपातिक का ल०	३०
पुरीषज का ल०	३०
अश्मरीज का ल०	३१
अश्मरीशर्करा का साम्य	३१
शर्करा के उपद्रव	३१
वातकृच्छ्र की चि०	३१
पित्तकृच्छ्र की चि०	३२
कफकृच्छ्र की चि०	३३
सन्निपातके कृच्छ्रकी चि०	३३
अभिघातकृच्छ्रकी चि०	३३
शुक्रविबन्धके कृच्छ्रकी चि०	३३
पुरीषजकृच्छ्रकी चि०	
इति	३४

विषय	पृष्ठ
मूत्राघातका [illegible]	[illegible]
उनके भेद	[illegible]
[illegible] ल०	[illegible]
[illegible]	३६
[illegible]	३६
[illegible] श्लैष्मिक	३६
मूत्रजठर	३६
मूत्रोत्संग	३७
मूत्रक्षय	३७
मूत्रग्रन्थि	३७
मूत्रशुक्र	३७
उष्णवात	३८
मूत्रसाद	३८
विड्विघात	३८
वस्ति कुंडली	३८
उसका असाध्य ल०	३९
कुंडली भूतका ल०	३९
मूत्राघात की चि०	३९
इति	४२
अथ अश्मरीका अधिकार	४२
उनकी संप्राप्ति	४३
इनका पूर्व ल०	४३
सामान्य ल०	४३
वाताधिक	४३
उसकी चि०	४४
पैत्तिक चि०	४५
श्लैष्मिक चि०	४५
शुक्राश्मरी चि०	४६
उसकी संप्राप्ति	४६
उसका ल०	४७
शर्करा भेद	४७
उसके उपद्रव	४७
अश्मरी भेदके अरिष्ट	४७
अश्मरी चि०	४८
इति	५२
प्रमेहका अधिकारः	५२
उसका निदान	५२
पूर्वरूप	५३
उनका सामान्य ल०	५३
सुवर्णादि भेदसे प्रमेहभेद	५३
असाध्य	५४
दशपिडिका	५५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा[…]प्रकाश सटीकके मध्यखण्डके तृतीयभागका सूचीपत्र

विषय	पृष्ठ
उनका ल०	५६
[…]थ चि०	५६
[…]ति	६३
[…]वात[…]ार	६३
[…],सताव[…]	६४
ल[…]	६४
उ[…]	
काश्यका […]	
उसका निदान	६९
उसका ल०	६९
अति कृशके रोग	
कारण	६९
कार्श्य की चि०	६९
इति	७१
उदर का निदान	७१
उसके हेतु	७१
उसकी संप्राप्ति	७२
सामान्य ल०	७२
वातोदर का ल०	७२
पैत्तिक	७२
श्लैष्मिक भेद	७३
सन्निपातोदर का ल०	७३
प्लीहोदर ल०	७४
बद्धगुद ल०	७४
क्षतोदर ल०	७४
जलोदर ल०	७५
साध्यअसाध्य भेद	७६
जातोदकोदर ल०	७६
उदरकी चि०	७६
इति	७९
अथ शोथाधिकारः	७९
उसकाविप्रकृष्टनिदान	७९
उसकासंप्राप्तिपूर्वकसामान्य लक्षण	७९
वातिकशोथका ल०	८०
पैत्तिक	८०
श्लैष्मिक	८०
द्वन्द्वजभेद	८१
सन्निपातिक ल०	८१
अभिघातज	८१
विषज	८१
उपद्रव	८२
कष्टसाध्य	८२
असाध्य	८२
तन्त्रान्तरोक्त विशेष भेद	८२

विषय	पृष्ठ
शोथ चि०	८३
सामान्य चि०	८३
इति	८५
अथ वृद्धि अधिकारः	८५
उसका निदान	८५
और संख्या	८५
वातिक	८५
[…]	८५
[…]	८५
[…]	८[…]
रक्तज	
मेदज	
मूत्रज	८६
अन्त्रवृद्धि	८६
उसकी अवस्था	८६
असाध्य	८६
ब्रध्न	८७
वृद्धिकी चि०	८७
ब्रध्नकी चि०	८९
इति	८९
अथ गलगंड गंडमाला का सामान्य ल०	८९
उसकी संप्राप्ति	८९
वातिक	८९
श्लैष्मिक	९०
मेदोज	९०
असाध्य	९०
गंडमाला का ल०	९०
अपचीका ल०	९१
उसका साध्यत्वादिकभेद	९१
ग्रन्थिका ल०	९१
वातिक का ल०	९१
पैत्तिकभेद	९२
श्लैष्मिक	९२
मेदोजका भेद	९२
शिराज भेद	९२
और भी असाध्य	९२
अनन्तर अर्बुद	९३
उसकी संप्राप्त पूर्वक सामान्य ल०	९३
निदानपूर्वक विशिष्ट ल०	९३
रक्तार्बुद	९३
मांसार्बुदकी संप्राप्ति	९४
निदान	९४
असाध्यभेद	९४
असाध्य भेदान्तर	९४

विषय	पृष्ठ
अ[…]दोंकीपाकाभाव कारण	९४
गलगंडकी चि०	९५
गंडमालाकी चि०	९६
ग्रन्थि और अर्बुदकी चि०	९७
इति	९८
अथ श्लीपदाधिकारः	९८
उसका विप्रकृष्ट कारण	९८
उसका सामान्य ल०	९८
[…]चि०	९८
[…]	९८
[…]	९९
[…]	९९
इति	९९
अथ विद्रधिका अधिका[…]	९९
उसकासंप्राप्ति पूर्वकी […]	
सामान्यलक्षण	९९
विशिष्ट ल०	१००
वातिक का ल०	१००
पैत्तिक का ल०	१००
श्लैष्मिक	१००
सान्निपातिक	१००
अभिघातविद्रधिकासंप्राप्ति पूर्वक ल०	१०१
रक्तज	१०१
भीतरकी विद्रधि	१०१
स्थानविशेषमें ल० विशेष	१०१
स्रावमार्ग	१०२
साध्यत्वादिक	१०२
बाह्यविद्रधियोंका साध्या॰ साध्य	१०२
विद्रधि की चि०	१०३
इति	१०४
अथ व्रणाधिकारः	१०४
व्रणकीसंख्याविवरणपूर्वक सामान्य ल० विशिष्टरूप	१०४
अपक्वव्रण शोथका ल०	१०४
पच्यमान का ल०	१०४
पक्वका ल०	१०५
पाककालमेंसबदोषोंका सम्बन्ध	१०५
पाकमें मतान्तर	१०६
पाक ज्ञानार्थ ल०	१०६
पाकाज्ञान	१०६
पीप न निकालने में दोष	१०६
शोथके कच्चे पक्केके जानने और न जानने में वैद्य का	

विषय	पृष्ठ
गुण दोष	१०६
व्रण शोथ की चि०	१०६
क्रम चि०	१०६
शोथहरलेप	१०७
परिषेचन	१०८
विमलापन	१०८
शोथकी विमलापनविधि	१०८
रक्तमोक्षण	१०८
उपनाह	१०९
पाचन	१०९
पाचन द्रव्य	१०९
भेदन	११०
शस्त्रसाध्य भेदन	११०
शस्त्रनिक्षेपापवाद	११०
भेदन	११०
दारण	११०
पीडन	११०
शोधन	१११
रोपण	१११
सवर्णताकरण	११२
व्रणवालेका भोजन	११२
आगन्तुव्रणकी चि०	११३
अग्निदग्धकी चि०	११५
इति	११५
भग्नाधिकार	११६
भग्नका भेद	११६
सन्धिभग्नकासामान्यल०	११६
उत्पिष्टका ल०	११६
कांडभग्न के प्रकार	११७
कर्कटकादिकांडभग्न ल०	११८
कष्टसाध्य	११८
असाध्य	११८
दूसरा असाध्य ल०	११८
अस्थिविशेषभग्न चि०	११९
भग्नकी चि०	११९
इति	१२२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भावप्रकाश सटीकके मध्यखण्डके चतुर्थभागकी सूचीपत्र

विषय	पृष्ठ
अथनाड़ीव्रणकाअधिकारः	१२२
नाड़ीव्रणकी संप्राप्ति पूर्वक	
निरुक्ति	१२२
विशिष्ट निरुक्ति	१२२
इसकी दोषसम्बन्धसंख्या	१२३
वातकी नाड़ी	१२३
पित्तकी नाड़ी	१२३
कफकी नाड़ी	१२३
त्रिदोषजनाड़ी	१२३
शल्यनिमित्त नाड़ी	१२४
कष्टसाध्य और असाध्य	१२४
नाड़ीव्रणकी चि०	१२४
इति	१२७
भगन्दरकापूर्वरूपसहितल०	१२७
उसके भेद पांच	१२७
भोजोक्त उसकी निरुक्ति	१२७
वातिकशतपोनकभगन्दर	१२८
पैत्तिक उष्ट्रग्रीवा	१२९
श्लैष्मिक परिस्रावी	१२८
सान्निपातिक शंबूकावर्त्त	१२८
शल्यज उन्मार्गि भगन्दर	१२९
कष्टसाध्य असाध्य भेद	१२९
भगन्दरकी चि०	१२९
इति	१३२
अथउपदंशाधिकारः	१३२
उसकी निरुक्ति	१३२
उसकी चिकित्सा	१३६
लिंगार्शका उ.क्रम	१३६
इति	१३६
शूकदोषका अधिकार	१३६
उसका निदान	१३६
उनकेभेद अठारह	१३६
क्रमके अनुसार	१३७
सर्षपिका	१३७
अष्ठीलिका	१३७
ग्रन्थित	१३७
कुम्भिका	१३७
अलजी	१३८
मृदित	१३८
संमूढ पिड़िका	१३८
अधिमन्थ	१३८
पुष्करिका	१३८
स्पर्शहानि	

विषय	पृष्ठ
उत्तमा	१३८
शतपोनक	१३९
त्वक्पाक	१३९
शोणितार्बुद	१३९
मांसार्बुद	१३९
मांसपाक	१३९
विद्रधि	१३९
तिलकालक	[illegible]३९
असाध्य	[illegible]
शूकदोषका चि०	[illegible]
कुष्ठाधिकारः	१४०
उसकी निरुक्ति	१४१
महाकुष्ठ	१४१
क्षुद्रकुष्ठ	१४२
उनके सातप्रकार	१४२
पूर्वरूप	१४२
महाकुष्ठोंके बीचमें कपाल	
का ल०	१४३
औदुम्बर	१४३
मंडल	१४३
सिध्म	१४४
काकण	१४४
पुंडरीक	१४४
ऋक्षजिह्व	१४४
क्षुद्रकुष्ठोंके बीचमें एककुष्ठ	
गजचर्म्म ल०	१४४
चर्मदल ल०	१४५
विचर्चिका	१४५
विपादिका	१४५
पामा	१४५
कच्छू	१४६
दद्रु	१४६
विस्फोट	१४६
किटिभ	१४६
अलसक	१४६
शतारु	१४६
सप्तधातुगतकुष्ठोंकालक्षण	१४६
रसगतका लक्षण	१४६
रुधिरगतका भेद	१४७
मांसगतका भेद	१४७
मेदोगतका	१४७
अस्थिमज्जागत	१४७
शुक्रगत	

विषय	पृष्ठ
कुष्ठोंमें उत्पन्न वातादि	
दोष ल०	१४८
साध्यत्वादिक	१४८
अरिष्ट	१४८
श्वित्रभेद	१४९
दोषभेदसे लक्षण भेद	१४[illegible]
उसके संसर्गज[illegible]	१५[illegible]
कुष्ठकी चि०	[illegible]
[illegible] चि०	१५६
चर्मदलकी चि०	१५७
पामाकी चि०	१५७
कच्छूकी चि०	१५७
दद्रूकी चि०	१५८
श्वित्रकी चि०	१५८
इति	१५९
अथ शीतपित्ताधिकारः	१५९
उसकी विप्रकृष्ट सन्निकृष्ट	
निदान पूर्वक संप्राप्ति	१५९
पूर्वरूप	१५९
शीतपित्तका ल०	१६०
उदर्दका ल०	१६०
कोठोत्कोठका ल०	१६०
इनकी चि०	१६०
इति	१६१
विसर्पाधिकार	१६१
उसकीविप्रकृष्टनिदानसंख्या	
निरुक्ति वो सात प्रकार	१६१
दोषदुष्योंके भेदसे	१६२
विसर्प सात	१६२
वातिकका ल०	१६२
पैत्तिक	१६२
श्लैष्मिक	१६२
सान्निपातिक	१६२
वातपैत्तिक	१६२
वातश्लैष्मिकग्रन्थिविसर्प	१६३
पित्तश्लैष्मिककर्दमवीसर्प	१६३
सान्निपातिक	१६४
क्षतज	१६४
उपद्रव	१६४
साध्यत्वादिक	१६४
विसर्प चि०	१६५
इति	१६६
अथ स्नायु अधिकारः	१६६

विषय	पृष्ठ
उसकाविप्रकृष्टसामान्यल०	१[illegible]
स्नायुरोग की चि०	[illegible]
अथविस्फोटकाधिकारः	[illegible]
विस्फोटक[illegible]	[illegible]
संप्राप्ति	[illegible]
पूर्व[illegible]	१६७
[illegible]श्या[illegible] ल०	१६७
[illegible]	१६८
[illegible]	१६८
श्लैष्मिक	१६८
कफ पैत्तिक	१६८
वात पैत्तिक	१६८
वातश्लैष्मिक	१६८
सान्निपातिक	१६८
रक्तज	१६९
विस्फोटक	१६९
उपद्रव	१६९
उपद्रवोंके लक्षणान्तर	१६९
साध्यत्वादिक	१६९
विस्फोटककी चि०	१६९
इति	१७०
अथ फिरंगका अधिकार	१७०
उसकी निरुक्ति	१७१
विप्रकृष्ट निदान	१७१
लक्षण	१७१
उपद्रव	१७१
साध्यत्वादिक	१७१
फिरंग की चि०	१७१
इति	१७३
अथ मसूरिका निदान	१७३
उसकी सन्निकृष्ट विप्रकृष्ट	
निदान पूर्वक संप्राप्ति	१७३
पूर्वरूप	१७३
वातज	१७४
पित्तज	१७४
रक्तज	१७४
कफज	१७४
सन्निपातिक	१७४
रसादि सप्तधातुगत	१७४
रसकी	१७५
रक्तकी	१७५
मांसकी	१७५
मेदकी	१७५
अस्थिमज्जागत	१७५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भा[illegible]प्रकाश सटीकके मध्यखण्डके चतुर्थभागका सूचीपत्र।

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
शुक्रगत	१७५	उसकी चि०	१८९	जालगर्दभ ल०	१९९	लिंगनाशका ल०	२[illegible]
[illegible]र्म्मज	१७६	चिप्य ल०	१८९	इनकी चि०	१९९	वातका ल०	२११
[illegible]मान्तिका	१७६	कुनखका ल०	१९०	कच्छपिका ल०	१९९	पित्तका लक्षण	२१२
[illegible]स्मा[illegible]	१७६	उनकी चि०	१९०	उसकी चि०	२००	कफका ल०	२१२
[illegible]वातः	१७६	परिवर्त्तिका ल०	१९०	शर्करार्बुदका ल०	२००	सन्निपातका	२१२
[illegible]सतावर[illegible]	१७७	उसकी चि०	१९०	उसकी चि०	२००	रक्तका	२१२
अरिष्ट[illegible]	[illegible]	अवपाटिका ल०	१९१	सहेतु लक्षण वि[illegible]		परिम्लायिका ल०	२१२
मसूरिका [illegible]		[illegible]	१९१	विशेष	२००	हेतु विशेष में मंडल वि-	
विशेष	[illegible]	[illegible]	१९१	[illegible]	२०१	शेष	२१३
मसूरिका की चि०	१७७	उसकी चि०	[illegible]	[illegible]ः	२०१	पित्तविदग्ध दृष्टिका ल०	२१३
इति	१७९	सन्निरुद्ध गुदका लक्षण	१९२	[illegible] और संख्या	२०१	श्लैष्मविदग्ध दृष्टि ल०	२१४
उसका भेद शीतला का		उसकी चि०	१९२	उसके एकादशप्रकार	२०१	धूम दर्शन ल०	२१४
अधिकार	१७९	वृषण कच्छूका ल०	१९२	वातिकका लक्षण	२०१	ह्रस्व जात्य ल०	२१४
उसकी निरुक्ति	१७९	उसकी चि०	१९२	पैत्तिक का ल०	२०१	नकुलान्ध्य ल०	२१४
शीतला के भेद	१८१	अहिपूतनाका ल०	१९३	श्लैष्मिकका ल०	२०१	गंभीरक ल०	२१४
इनका साध्यत्वादिक	१८२	उसकी चि०	१९३	सान्निपातिकका ल०	२०१	निमित्त का ल०	२१५
क्षुद्ररोगाधिकार	१८२	गुदभ्रंशका ल०	१९३	रक्तजका ल०	२०२	अनिमित्तलिंग नाशका ल-	
उसका निदान पूर्वक ल०	१८२	उसकी चि०	१९३	क्षयजका ल०	२०२	क्षण	२१५
पलितकी चि०	१८२	शूकरदंष्ट्रका ल०	१९४	कृमिजका ल०	२०२	इति	२१५
इन्द्रलुप्तका निदान पूर्वक		उसकी चि०	१९४	सूर्यावर्त्तका ल०	२०२	अथ कृष्णमंडल रोग	२१५
लक्षण	१८३	अनुशायीका ल०	१९४	अनन्तवातका ल०	२०२	उनकेनाम और संख्या	२१५
इन्द्रलुप्तकी चि०	१८३	उसकी चि०	१९४	शंखकका ल०	२०३	सव्रणशुक्रलिंगकालक्षण	२१५
दारुण का ल०	१८३	अलसका ल०	१९४	अर्द्धावभेदकका ल०	२०३	इति	२१६
दारुण की चि०	१८३	उसकी चि०	१९४	शिरोरोगोंकी चि०	२०४	सन्धि के रोग	२१६
अरुंषिका ल०	१८३	दारीका ल०	१९५	शिरोबस्तिविधि	२०४	छः सन्धि	२१६
उसकी चि०	१८४	उसकी चि०	१९५	इति	२०७	उनमें होनेवाले रोग और	
इरिवेल्लिका ल०	१८४	कदरका ल०	१९६	अथ नेत्ररोगाधिकारः	२०७	उनके नाम तथा संख्या	२१६
उसकी चि०	१८४	उसकी चि०	१९६	उसका प्रमाण	२०७	पूयालस का ल०	२१६
पनसिका ल०	१८५	तिलका ल०	१९६	उसके अंग	२०७	उपनाह लक्षण	२१६
उसकी चि०	१८५	मशक ल०	१९६	नेत्रके अठहत्तर रोग	२०७	स्रावों की संप्राप्ति	२१६
पाषाण गर्दभका लक्षण	१८५	जतुमणि ल०	१९६	तन्त्रान्तरोक्त विशेष	२०८	पैत्तिक स्राव	२१७
उसकी चि०	१८५	जतुमणि भेद	१९६	उनका सामान्यसे विप्रकृष्ट		श्लैष्मिक स्राव	२१७
मुखदूषिका ल०	१८५	इनकी चि०	१९७	सन्निकृष्ट निदान	२०८	सान्निपातिक स्राव	२१७
उसकी चि०	१८५	न्यच्छका ल०	१९७	संप्राप्ति	२०८	पर्वणी का लक्षण	२१७
मुखलेप	१८६	इसकी चि०	१९७	दृष्टिरोग	२०८	अलजी लक्षण	२१७
व्यंगका ल०	१८६	पद्मिनीकंटक का ल०	१९७	दृष्टि ल०	२०८	इति	२१८
नीलिका ल०	१८६	उसकी चि०	१९७	उसमें चार पटल	२०९	अनन्तरशुक्लभागकेरोग	२१८
उनकी चि०	१८६	अजगल्लिकाका भेद	१९८	प्रथम पटल गत दोष		उनकेनाम और संख्या	२१८
वल्मीक का ल०	१८७	उसकी चि०	१९८	स्वभाव	२०९	प्रस्तार्यर्म का लक्षण	२१८
उसकी चि०	१८८	यवप्रख्याल०	१९८	द्वितीय पटलगत	२०९	शुक्लार्म का लक्षण	२१८
कक्षागन्धका ल०	१८८	अन्त्रालजी ल०	१९८	तृतीय पटलगत	२१०	रक्तार्म का लक्षण	२१८
उनकी चि०	१८८	उनकी चि०	१९८	चतुर्थ पटलगत दोष	२११	अधिमांसार्म का ल०	२१८
अग्निरोहिणीका ल०	१८९	विवृताभेद	१९८	दृष्टिरोगों के नाम और		स्नाय्वर्म का लक्षण	२१८
उसकी चि०	१८९	इन्द्रवृद्धा ल०	१९९	संख्या	२११	शुक्तिका ल०	२१९
विदारिका ल०	१८९	गर्दभिका ल०	१९९	[illegible]लिंगनाश	२११	अर्जुनका ल०	२१९

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय	पृष्ठ
पिष्टकका ल०	२१९
शिराजालका ल०	२१९
शिरापिडिकाका ल०	२१९
बलासग्रन्थितका ल०	२१९
इति	२१९
अथवर्त्मजरोग	२१९
उनकीनिरुक्ति	२१९
उन में होनेवाले रोगों के नाम और संख्या	२२०
उत्संगपीडिका ल०	२२०
कुंभिकाका ल०	२२०
पोथिका ल०	२२०
वर्त्मशर्करा ल०	२२०
अर्शोवर्त्मका ल०	२२१
शुष्कार्शका ल०	२२१
अंजननामिकाका ल०	२२१
बहलवर्त्मभेद	२२१
वर्त्मबन्धकभेद	२२१
क्लिष्टवर्त्मभेद	२२१
वर्त्मकर्दमभेद	२२२
श्याववर्त्मभेद	२२२
प्रक्लिन्नवर्त्म	२२२
अक्लिन्नवर्त्म	२२२
वातहतवर्त्म	२२२
वर्त्मार्बुद	२२२
निमेष	२२२
शोणितार्श ल०	२२३
लगण ल०	२२३
विषवर्त्म ल०	२२३
कुंचन ल०	२२३
इति	२२३
अथपक्ष्मरोग	२२३
पक्ष्ममें होनेवाले रोगोंके नाम	२२३
पक्ष्मकोप ल०	२२३
तन्त्रान्तरोक्त पक्ष्मकोप	२२४
पक्ष्मशात ल०	२२४

विषय	पृष्ठ
समस्त नेत्रके रोग उनके नाम और संख्या	२२४
उनमें अभिष्यन्दचार	२२४
वातिक	२२४
पैत्तिक	२२५
श्लैष्मिक	२२५
रक्तज	२२५
अभिमन्थनाम उनके ल०	२२५
हताधिमन्थ	२२६
वातपर्य्याय	२२६
शुष्काक्षिपाक	२२६
अन्यतोवात	२२७
अम्लाध्युषित	२२७
शिरोत्पात	२२७
शिरोहर्ष	२२७
नेत्रकीसमता ल०	२२७
निरामता ल०	२२८
इति	२२८
नेत्ररोगोंकी चि०	२२८
सेककीविधि	२२९
आश्चोतनविधि	२३०
पिंडीविधि	२३०
बिडालकविधि	२३१
तर्पणविधि	२३१
पुटपाकविधि	२३२
अंजनविधि	२३३
चिकित्सा	२३३
इति	२३९
कर्णरोगाधिकार	२३९
कर्णरोगोंकेनाम और संख्या	२३९
कर्णशूल की संप्राप्ति पूर्वक लक्षण	२३९
असाध्यता	२३९
कर्णनादका ल०	२३९
बाधिर्य्य	२३९

विषय	पृष्ठ
असाध्यबाधिर्य्य	२४०
क्ष्वेडभेद	२४०
कर्णस्राव	२४०
कर्णकंडू	२४०
कर्णगूथ	२४०
प्रतिनाह	२४०
कृमिकर्ण चि०	२४१
...तंगआदि जानेका लक्षण	२४१
दोप्रकारकी कर्णविद्रधि	२४१
कर्णपाक	२४१
पूतिकर्ण	२४१
कर्णगतशोथअर्श	
अर्बुद का ल०	२४२
इनमें वातिक	२४२
पैत्तिक	२४२
कफज	२४२
सन्निपातज	२४२
कर्णपाली ल०	२४३
उसमें परिपोटक का निदान सहित ल०	२४३
उत्पात ल०	२४३
उन्मंथक ल०	२४३
दुःखवर्द्धन ल०	२४३
परिलेहिन ल०	२४३
कर्णरोग चि०	२४४
इति	२४६
नासारोगाधिकारः	२४६
उनके नाम और संख्या	२४६
पीनसका ल०	२४६
अनुक्तसंग्रह	२४६
पूतिनस्य	२४७
नासापाक	२४७
पूयरक्त	२४७
क्षवथु	२४७
आगंतुजक्षवथु	२४७
भ्रंशथु	२४८

विषय	पृष्ठ
दीप्ति ल०	[illegible]
प्रतिनाह ल०	[illegible]
स्राव ल०	२४८
नासाशोष ल०	२४८
प्रतिश्याय ल०	२४८
...क निदान संप्राप्ति पूर्वक लक्षण	२४९
चयादिक्रमजनितनिदान पूर्वक संप्राप्ति	२४९
वातिकका ल०	२५०
पैत्तिकका ल०	२५०
श्लैष्मिकका ल०	२५०
सान्निपातिकका ल०	२५०
दुष्टप्रतिश्यायका ल०	२५०
रक्तजका ल०	२५१
उनमें कृमि	२५१
विकारांतर	२५१
चौंतीससंख्यापूरण	२५१
चिकित्साभेदसे पीनसका लक्षण	२५२
पक्वपीनस का ल०	२५२
नासारोगों की चि०	२५२
इति	२५४
अथमुखरोगाधिकारः	२५४
उसका स्वरूप	२५४
मुखरोगों की संख्या	२५४
उनके निदान	२५४
ओष्ठरोगोंकी निदान पूर्वक संख्या	२५४
वातिकका ल०	२५५
पैत्तिकका ल०	२५५
श्लैष्मिकका ल०	२५५
सान्निपातिक का ल०	२५५
रक्तजका ल०	२५५
मांसजका ल०	२५५
मेदोजका ल०	२५५
अभिघातजका ल०	२५६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय	पृष्ठ
रोगांकी चि०	२५६
[का]रणविधि	२५६
दन्त ओष्ठरोग उनके नाम और संख्या	२५६
शीतादका ल०	२५७
दन्तपुप्पुटका ल०	२५७
दन्तवेष्ट ल०	२५७
सौषिर ल०	२५७
महासौषिर	२५७
परिदर ल०	२५८
उपकुश ल०	२५८
वैदर्भ ल०	२५८
खलिवर्द्धन ल०	२५८
अधिमांसक ल०	२५८
पंचदन्त नाड़ी	२५८
दन्तविद्रधि	२५९
दन्तवेष्टरोगों की चि०	२५९
दंतरोगान्तर उनके नाम और संख्या	२६१
दालनका ल०	२६१
कृमिदन्तका ल०	२६१
भंजनकका ल०	२६२
दंतहर्षका ल०	२६२
दंतशर्कराका ल०	२६२
कपालिका ल०	२६२
श्यावदंतकका ल०	२६२
करालका ल०	२६२
उनकीचि०	२६२
जिह्वारोग	२६४
[उ]नकानिदानसंख्या	२६४
वातजका ल०	२६४
पित्तजका ल०	२६४
कफजका ल०	२६४
अलासका ल०	२६४
उपजिह्विकाका ल०	२६४
उनकी चि०	२६५
अथतालुरोग	२६५

विषय	पृष्ठ
उनकेनाम और संख्या	२६५
गलशुंडी का ल०	२६५
तुंडिकेरीका ल०	२६५
अध्रूष ल०	२६६
कच्छप ल०	२६६
[अ]र्बुद ल०	२६६
मांससंघात [ता]ल[ु]	२६६
तालु पुप्पुट ल०	[illegible]
तालुशोष ल०	२६६
उनकी चि०	२६७
गलरोग	२६७
उनकेनाम और संख्या	२६७
पांचोंरोहिणीका सामान्य संप्राप्ति	२६७
वातजा का ल०	२६८
पित्तजाका ल०	२६८
कफजा का ल०	२६८
सन्निपातजाका ल०	२६८
रक्तजाकाल०	२६८
रक्तकारणइनकीमारकता होनेसे अवधि	२६८
कंठशालूक ल०	२६९
अधिजिह्वक ल०	२६९
वलय ल०	२६९
बलासभेद	२६९
एकवृन्द ल०	२६९
वृन्द ल०	२७०
शतघ्नी ल०	२७०
गिलायु ल०	२७०
गलविद्रधि ल०	२७०
गलौघ ल०	२७०
स्वरघ्न ल०	२७१
मांसतान ल०	२७१
विदारी ल०	२७१
मुखरोगोंकी चि०	२७१
सामान्यकंठ रोगोंकी चिकित्सा	२७२

विषय	पृष्ठ
समस्तमुखरोग उसका निदान और सं०	२७२
वातिकका ल०	२७२
पैत्तिकका ल०	२७३
श्लैष्मिक का ल०	२७३
त्रिलिंगगति त्रिदोष की [illegible]	२७३
चि[कित्सा] ॥	२७३
इति	२७४
अथविषाधिकारः	२७४
विषदोप्रकारका	२७४
स्थावरविषकेदश आश्रय	२७४
जंगमविषकेसोलह आश्रय	२७५
सामान्यस्थावरविष के कार्य	२७५
मूलविषकाकार्य्य	२७५
पत्रविषका कार्य्य	२७५
फलविषका कार्य्य	२७५
पुष्पविषका कार्य्य	२७५
त्वचासारआदि के कार्य्य	२७६
क्षीरविषका कार्य्य	२७६
धातुविषका कार्य्य	२७६
कन्दविषका कार्य्य	२७६
दशगुण	२७६
उनगुणोंसेविषकार्य्य	२७६
विषलिप्तशस्त्रसेहतका लक्षण	२७७
उनकेज्ञानार्थ ल०	२७७
जंगमविषों के सामान्य कार्य्य	२७८
तीक्ष्णतरजंगमों में सर्प	२७८
भोगिआदियोंके काटेका लक्षण	२७८
देशकालविशेषमें काटेकी	

विषय	पृष्ठ
असाध्यता	२७८
दर्वीकरका ल०	२७९
दूषी विष के कार्य्य	[illegible]
स्थानविशेषस्थित दूषी विषमें लक्षण विशे[ष]	२८०
दूषीविषकाप्रकोपसमय	२८०
कुपितदूषीविषकापूर्वरूप	२८१
दूषीविषभेदसेविकारभेद	२८१
दूषीविषकीनिरुक्ति	२८१
दूषीविषकेसाध्यत्वादिक	२८१
गरभेद	२८१
गरकार्य्य	२८२
लूताआदिजन्तुविशेषोंकी उत्पत्तिनिरुक्तिऔरसंख्या	२८२
सामान्यउनकेदंश लक्षण	२८२
असाध्योंका ल०	२८३
आखूविषकाकार्य्य	२८३
प्राणहरमूषिकविषका कार्य्य	२८३
गिरगिटकेकाटेका ल०	२८३
बिच्छूकेविषका ल०	२८३
असाध्याबिच्छू के काटेका लक्षण	२८४
कणभ (कीट) दष्टका ल०	२८४
उच्चिटिंगकेकाटेकाल०	२८४
विषमवालेमेढ़ककेकाटेका लक्षण	२८४
जलौका विषकार्य्य	२८४
छिपकलीकेविषका०	२८५
खनखजूरेकाविषकार्य्य	२८५
मशकविषकार्य्य	२८५
असाध्यमशक ल०	२८५
मक्षिका दंशका ल०	२८५
व्याघ्रादिविषका ल०	२८५
विषोपहतका ल०	२८६
स्थावरविषकी चि०	२८६
जंगमविषकी चि०	२८६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भावप्रकाश सटीकके मध्यखण्डके चतुर्थभागका सूची[illegible]

विषय	पृष्ठ
[illegible]ति	२८७
स्त्रियोंकेप्रदरादि रोगोंका अधिकार	२८७
उसकाविप्रकृष्टनि०	२८७
उसकासामा[illegible]ल०	२८८
श्लैष्मिकप्रदरका ल०	२८८
पैत्तिकका ल०	२८८
वातिकका ल०	२८८
सन्निपातिकका ल०	२८८
रक्तकेबहुतनिकलनेमें उपद्रव	२८९
असाध्यप्रदररोगवालीका लक्षण	२८९
चिकित्सानिवृत्यर्थशुद्ध आर्त्तवका ल०	२८९
प्रदरकी चि०	२८९
इति	२९०
सोमरोगाधिकारः	२९०
उसकीनिदानपूर्वक संप्राप्ति	२९०
उसका ल०	२९०
उसकी चि०	२९१
मूत्रातीसारका ल० चि०	२९१
योनिरोगाधिकारः	२९१
उनकानिदान	२९१
योनिरोगके नाम	२९१
उनके ल०	२९२
विवृतासूची	२९३
त्रिदोषजा	२९३
असाध्यता	२९३
योनिकन्दकानिदान लक्षण	२९३

विषय	पृष्ठ
वातजादि भेदसे लक्षण	२९४
योनिरोगकीचि०	२९४
उसमेंवन्ध्या की चि०	२९४
उसका ल०	२९४
नष्टार्तवकीचि०	२९४
वन्ध्याचि०	२९४
गर्भप्रद औषध[illegible]	
वसर में गर्भ[illegible]	
औषध	२९५
क्रमसे चि०	२९५
गर्भस्रावका निदान	२९८
उनका पूर्वरूप	२९९
उनकी अवधि	२९९
गर्भस्रावकी चि०	२९९
गर्भपातकेउपद्रव	२९९
गर्भकेस्थानान्तर गमन में उपद्रव	३००
उसकी चि०	३००
मासानुमासिक	३००
वातशुष्कगर्भकी चि०	३०२
प्रसवमास	३०२
प्रसवमासअतिक्रमकरकेरहे हुयेगर्भ की चिकित्सा	३०२
समयपरप्रसवविलम्बमें चिकित्सा	३०२
मूढ़गर्भकीनिदानसंप्राप्ति पूर्वक ल०	३०३
उसकीसंख्यानिरास	३०३
चारप्रकार	३०३
उसका ल०	३०४
आठप्रकार	३०४
आठप्रकारान्तर	३०४

विषय	पृष्ठ
असाध्यमूढ़गर्भिणी ल०	३०५
मृतगर्भकाक्रम से कर्षणार्थ क्रम	३०५
गर्भकेमरणमेंकारण	३०५
असाध्यगर्भिणी ल०	३०५
योनिसंवरण ल०	३०५
मूढ़गर्भकी चि०	३०६
[illegible]दनप्रकार	३०६
प्रसूता की योनि में क्षतादिकी चि०	३०६
प्रसूताके उदरमेंअपरा के उपद्रव	३०७
उसकी चि०	३०७
मक्कलका ल०	३०७
उसकी चि०	३०७
प्रसूताकेहित	३०८
सूतिकारोगकानिदान	३०८
व्याधिसामान्यस्वरूप	३०८
ज्वरादियोंका रोगविशेष करकेनिदानविशेष	३०८
सूतिकेरोगकी चि०	३०९
प्रसूताके नियमसमयकी अवधि	३१०
स्तनरोगोंकी संप्राप्ति	३१०
उनकाअतिदेशसे ल०	३११
स्तनरोगकी चि०	३११
इति	३११
अथ बालरोगाधिकारः	३११
बालग्रहोंकेनाम	३११
उनकीउत्पत्ति	३११
सामान्यग्रहजुष्टोंका ल०	३१३
बालग्रहोंकाबाजग्रहण	३१३

विषय	पृष्ठ
विशिष्टग्रहजुष्टोंका ल०	३[illegible]
सामान्यग्रहजुष्टोंकी चि०	
विशिष्टग्रहजुष्टोंकी चि०	३१४
स्कंदग्रहजुष्टोंकी चि०	३१४
स्कंदापस्मारलगेकी चि०	३१५
शकुनीग्रहजुष्टकी चि०	३१६
रेवतीग्रहजुष्ट की चि०	३१७
पूतनाग्रहजुष्ट की चि०	३१७
गंधपूतनाग्रहजुष्ट चि०	३१८
तिक्तद्रुम	३१८
शीतपूतनाग्रहजुष्टकी चि०	३१९
मुखमंडिकाग्रहजुष्ट चि०	३१९
जलाभिमंत्रणमंत्र	३१९
नैगमेयग्रहजु० चि०	३२०
बालरोगोंकेनि० ल०	३२०
तालुकण्ठका ल०	३२१
महापद्म ल०	३२१
कुकूणक ल०	३२१
तुंडीगुदपाक ल०	३२१
अहिपूतना ल०	३२१
अजगल्ली ल०	३२१
परिगर्भिकल०	३२२
दंतोद्भेदकरोग	३२२
बालरोगोंकी चि०	३२२
बालककीकनीयसीमात्रा	३२२
प्रकारांतरसेऔषधोपायन	३२३
अचवनबालकोंकेआभ्यंतर ज्ञानोपाय	३२३
ज्वरकी चि०	३२३
इति	३२८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...वप्रकाश सटीकके मध्यखण्डके चतुर्थभागका सूचीपत्र ।

अथोत्तरखण्ड ॥

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
...जीकरणाधिकारः	३२८	असाध्यक्लैब्य	३३०	वाजीकरण	३३०	उसकाफल	...३३६
उसका ल०	३२८	नपुंसककी चि०	३३०	इति	३३६	उसकेउदाहरण	३३६
नपुंसकका लक्षण संख्या		वाजीकरणविधि	३३०	रसायनाधिकारः	३३६	ग्रन्थकारकृताशीर्वाद	३३७
निदान	३२९	स्त्रीभजनविधि	३३०	उसका ल०	३३६	परिशिष्टभाग	३४०

इति ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तृतीयो भागः ॥

अथ शूलाधिकारः ॥

तत्र शू[illegible]कृष्टं निदानमाह ॥

दोषैः पृथक्समस्तामद्वन्द्वैः शूलोऽष्टधा भवेत् । सर्व्वेष्वेतेषु शूलेषु प्रायेण पवनः प्रभुः ॥ १ ॥

तृतीय भाग ॥

शूलका अधिकार ॥

शूलके समीपी कारण ॥

शूल. आठ प्रकारके हैं जैसे वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, आमज, वातकफज, पित्तकफज और वातपित्तज इनसब शूलोंमें बहुधा वातही प्रधान होताहै ॥ १ ॥

अथ वातिकस्यविप्रकृष्टंनिदानसम्प्राप्तिपूर्व्वकंलक्षणमाह ॥

व्यायामयानादतिमैथुनाच्च प्रजागराच्छीतजलातिपानात् । कलायमुद्गाढकिकोरदूषा दत्यर्थरूक्षाध्यशनाभिघातात् । कषायतिक्तातिविरूढजान्नविरुद्धवल्लूरकशुष्कशाकैः ॥ विट्शुक्रमूत्रानिलसन्निरोधाच्छोकोपवासादतिहास्यभाषात् । वायुःप्रवृद्धोजनयेद्धिशूलंहृत्पृष्ठपार्श्वत्रिकवस्तिदेशे ॥ जीर्णेप्रदोषेचघनागमेचशीतेचकोपंसमुपैतिगाढम् । मुहुर्मुहुश्चोपशमप्रकोपौविण्मूत्रसंस्तम्भनतोदभेदैः ॥ संस्वेदनाभ्यञ्जनमर्द्दनाद्यैःस्निग्धोष्णभोज्यैश्चशमंप्रयाति । व्यायामोमल्लयुद्धादिःयानंतुरगरथादि मैथुनंस्त्रीसेवाप्रजागरंरात्रौएषामतियोगात्शीतलजलप्रभूतपानात्कलायस्त्रिपुटः आढकीतुवरीकोरदूषः कोद्रवःअतिरूक्षद्रव्यसेवाअध्यशनंभुक्तस्योपरिभोजनम् अभिघातोलोष्टादिभिः कषायतिक्तरससेवाविरूढजान्नम् ॥ विरूढमङ्कुरितमन्नम् । कलायचणकादितज्जमन्नभक्ष्यम् ॥ वल्लूरकंशुष्कमांसम् । तस्यशूलस्यदेशमाहहृदादिषु ॥ २ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...तज शूलके दूरवाले निदान और संप्राप्तिपूर्वक लक्षण ॥

...वारी, अत्यन्त मैथुन, रात्रिमें जगना, बहुत शीतल जल पी... मटर, मूंग ... हड, कोदा, बहु... रूखी वस्तु, भोजनके ऊपर भोजन, चोट, कषैली तथा तिक्तवस्तु, अंकुरवाले मटर ... चने आदि अन्नका भोजन, विरुद्ध भोजन, सूखामांस, सूखेशाक, मल, वीर्य्य, मूत्र तथा वायुका ...ना, शोक, लंघन, बहुत हँसना और बहुत जोरसे बोलना इनसब कारणों से बढ़ीहुई वायु हृदय, पीठ, पसली, त्रिक तथा वस्तिमें शूलको उत्पन्न करती है ...

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चार्द्धरात्रेनिदाघ[illegible]जलदात्ययेच । शीतेचशीतैःसमुपैतिशान्तिं[illegible]
[illegible]इच ॥ [illegible]राजमाषः । सौवीरंसन्धानभेदः । सुराविक[illegible]
[illegible]त्पन्नासुरामता॥ तस्याःप्रकारैःरविप्रतापःआतपः । ग्राम्यातियोग[illegible]धक्यम्॥
विदाहीत्युक्तापिअशनैर्विदग्धैरितिबोधयति ॥ अविदाहिवस्तुनोऽपिपित्तवशाद्विदाहि
त्वंभवति ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

... ा आदि भेदोंसे परिणाम शूल के संक्षिप्त लक्षण ॥

... होता, पेटमें गड़गड़ाहट, मलमूत्र ... कष्ट होताहै यह स्निग्ध त... शान्त होताहै-पित्तज परिणाम शूल ... दाह, ग्लानि, स्वेद और कडवा खट्टी तथा नोनका सा मुख होताहै. और यह शीतल क्रियाओं से शान्त होताहै-कफज परिणाम शूल में-छर्दि, मतली, मोह और थोडी तथा देरतक रहनेवाली पीडा होतीहै. यह कडवी तथा तिक्त वस्तुओं से शान्त होताहै. ऊपर कहेहुए दो दोषों के लक्षण मिलने से द्वन्द्वज और तीनों दोषों के लक्षणों के मिलने से त्रिदोषज परिणाम शूल जानना चाहिये-क्षीणहुए मांस, बल तथा अग्निवाले मनुष्य का त्रिदोषज परिणाम शूल असाध्य होताहै ॥ १८ ॥

अथान्नद्रवनामानं शूलविशेषमाह ॥

जीर्णेजीर्य्यतिचाप्यन्नंयच्छूलमुपजायते । पथ्यापथ्यप्रयोगेणभोजनाभोजनेनवा ॥
नशमंयातिनियमात्सोऽन्नद्रवउदाहृतः । नेदंशूलमसाध्यंचिकित्साभिधानात् ॥ १९ ॥

अन्नद्रव नाम शूल का लक्षण ॥

जो शूल भोजन के परिपाक होजानेपर अथवा परिपाक के समय नियम से उत्पन्न होताहै और पथ्य अथवा अपथ्य आहार अथवा लंघन से शान्त न होय उसको अन्नद्रव कहते हैं यह शूल असाध्य नहीं है क्योंकि इसकी चिकित्सा कहीहै ॥ १९ ॥

अथ शूलस्यचिकित्सामाह ॥

वमनंलङ्घनंस्वेदःपाचनंफलवर्त्तयः । क्षारःचूर्णानिगुटिकाःशस्यन्तेशूलशान्तये ॥
विज्ञायवातशूलन्तुस्नेहस्वेदैरुपाचरेत् । स्वल्पशूलाकुलस्यस्यात्स्वेदएवसुखावहः २० ॥

शूलकी चिकित्सा ॥

वमन, लंघन, स्वेद, पाचन औषध, फलवर्त्ति, क्षारचूर्ण तथा गोली शूलके शान्त करनेके लिये श्रेष्ठ हैं-वातशूल में स्नेह तथा स्वेद के द्वारा चिकित्सा करनी चाहिये और थोडे शूल में केवल स्वेदही सुखकारी होता है ॥ २० ॥

मृत्तिकांसजलांपाकाद्घनीभूतांपटेक्षिपेत् । कृत्वाततपोटलींशूलीयथास्वेदंविधापये
दितिमृत्तिकास्वेदः ॥ २१ ॥

घोलीहुई मिट्टीको अग्नि में पकाकर घनी होजाने पर कपडे में रखकर उसकी पोटरी से स्वेद लेना शूलवाले को हितकारी है इति मृत्तिकास्वेद ॥ २१ ॥

कर्पासास्थिकुलत्थकातिलयवैरेरण्डमूलातसीवर्षाभूशणबीजकाञ्जिकयुतैरेकीकृतै
र्वापृथक् ॥ स्वेदःस्यादथकूर्परोदरशिरःस्फिग्जानुपादाङ्गुलीगुल्फस्कन्धकटीरुजोवि
जयतेनिःशेषवातार्तिहा । इति कर्पासास्थ्यादिस्वेदः ॥ २२ ॥

बिनौले, कुलथी, तिल, जौ, अरंडकी जड, अलसी, गदापूर्णा, सनके बीज तथा काँजी इन सबको मिलाकर अथवा अलग २ इनके द्वारा स्वेद देनेसे कुहनी, उदर, शिर, नितंब, घुटने, पैरकी उँगली, टखने, कन्धे तथा कमर इनका शूल तथा वातका शूल नष्ट होताहै ॥ इति कर्पासास्थ्यादि स्वेद ॥ २२ ॥

तिलैश्चगुटिकांकृत्वाभ्रामयेज्जठरोपरि । शूलंसुदुस्तरंतेनशान्तिंगच्छतिसत्वरम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नाभिलेपी [illegible] मदनंका [illegible] । मदनम् । [illegible]
जलंपिबेत्। [illegible] हिंगुलावण [illegible] द्यःशूलनिवारणम् ॥ २ [illegible]

तिलोंका गोलासा बन [illegible] पर घुमाने से दुस्तर शूलका भी नाश होता है [illegible] नफलको कांजी के साथ पीसकर नाभिपर लेप करने से शूलका नाश होताहै सोंठ तथा रेंडी की जड के काढ़े में हींग और कालानोन डालकर पीनेसे शीघ्रही शूल निवृत्त होताहै ॥ २३ ॥

गुडशाल्यिर्यवक्षीरंसर्पिःपानंविरेचनम् । जांगलानिचमांसानिभेषजंपित्तशूलिनाम् ॥ मणीरजतताम्राणांभाजनानिगुरूणिच । तोयेनपरिपूर्णानिशूलस्योपरिधारयेत् ॥ विरेचनंपित्तहरंप्रशस्तंरसाश्चशस्ताःशशलावकानाम् । सगुडांघृतसंयुक्तांभक्षयेद्वाहरीतकीम् ॥ प्रलिह्याच्छूलशान्त्यर्थंधात्रीचूर्णसमाक्षिकम् ॥ २४ ॥

गुड,शालिधान्य,जौ,दूध, घृत पान,विरेचन और जंगली जीवों के मांस यह पित्तजशूलकी औषध हैं मणि,चांदी अथवा तांबेके पात्र में जलभरकर शूलके स्थान पर रखने से पित्तज शूलका नाशहोताहै पित्तघ्न, विरेचन और खरगोश तथा लवापक्षीके मांस का रस. पित्तजशूल में हितहै गुड तथा घीके साथ हडको अथवा शहद के साथ आमले को चाटने से पित्तजशूल का नाश होताहै ॥ २४ ॥

शाल्यन्नंजांगलंमांसमरिष्टंकटुकंरसम् । मधुनाजीर्णगोधूमंकफशूलेप्रयोजयेत् ॥ अरिष्टंभेषजंवारिक्वाथसिद्धंप्रयोजयेत् । लवणत्रयसंयुक्तंपञ्चकोलंसरामठम् ॥ सुखोष्णाम्बुनापीतंकफशूलंप्रणाशयेत् ॥ २५ ॥

शालिधान्य, जंगलीजीवोंका मांस, अरिष्ट (एक प्रकारकी मदिरा) कडुवारस और शहद के साथ पुराने गेहूं यह सब कफजशूलमें देने चाहिये सेंधानोन,कालानोन, विट्नोन,पीपल, पीपलामूल,चव्य,चीता,सोंठ तथा हींग इनसबको कुछ गरम जलके साथ पीनेसे कफजशूल नष्टहोताहै २५ ॥

आमशूलेक्रियाकार्याकफशूलप्रणाशिनी । सेव्यमामहरंसर्वमग्नेर्मन्दस्यवर्द्धनम् ॥ तीक्ष्णायाश्चूर्णसंयुक्तांत्रिफलाचूर्णमुत्तमम् । प्रयोज्यंमधुसर्पिर्भ्यांसर्वशूलनिवारणम् ॥ तीक्ष्णायाश्चूर्णं राजिकादिचूर्णम् दारुहैमवतीकुष्ठशताह्वाहिंगुसैन्धवैः। अम्लपिष्टैःसुखोष्णैश्चलिम्पेच्छूलयुतोदरम् ॥ मूलंबैल्वंतथैरण्डचित्रकंविश्वभेषजम् ॥ हिंगुसैन्धवसंयुक्तंसद्यःशूलनिवारणम् ॥ वातरोगान्तर्गताध्मानचिकित्सायांलिखितोनाराचनामरसोऽन्यच्चविरेचनशूलेहितम् ॥ २६ ॥

आमजशूल में कफजशूल के नाशकरनेवाली चिकित्सा करनी चाहिये और आमनाशक तथा अग्निवर्द्धक औषध करनी चाहिये राई आदि तीक्ष्णवस्तुओंके चूर्णके साथ त्रिफलाके चूर्णको शहद तथा घीके साथ खानेसे सबप्रकार के शूल नष्ट होतेहैं देवदारु, मकोह, कूट, सौंफ,हींग तथा सेंधानोन इनसबको काँजीमें पीसकर कुछ गरम२ उदरमें लेपकरने से पेटके शूलका नाश होताहै बेल तथा रेंडी की जड,चीता,सोंठ,हींग तथा सेंधानोन इनसबके लेपसे शीघ्रही शूलका नाश होताहै वातव्याधि के अधिकार में आध्मानकी चिकित्सा में कहाहुआ नाराचरस तथा अन्य विरेचन शूलमें हित हैं ॥ २६ ॥

स्थाल्यांनिःक्षिप्यतरसत्रंपिधानेनपि कूष्माण्डंतनुकृत्वातुक्षिप्त्वाघर्म्मेविशोषयेत् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

[illegible] यवह्निश्चज्वालोरेणाम शूल के[illegible] । यथ[illegible]मकिन्त्वंगारों [illegible] दोच्छीतंसर्वथाचूर्णं[illegible]तन्तुत[illegible]च्छुण्ठीचूर्णै मिश्रितम् । [illegible]लनभक्षयेन्नित्यंमहाशूलाकुलोनरः । [illegible]पयच्छूलंतदप्येतेन[illegible]श्यति ॥ इति कूष्माण्डक्षारः ॥ २७ ॥

कुँभडेके पतले २ टुकडे करके धूपमें सुखावे फिर उन टुकडा को पात्रमें भरके पात्रका मुख बन्द करदेवे और उस पात्रको अग्नियुक्त चूल्हेपर रखकर जब वह टुकडे अंगारसेहोजायँ और बिलकुल राख न होजायँ तब उनको बुझायकर पीसले फिर इस खारको दोमाशे लेके सोंठके साथ खाकर जल पिये नित्य इसके सेवन से असाध्यभी संपूर्णशूल नष्ट होते हैं ॥ इति कूष्मांडक्षार ॥ २७ ॥

अथ परिणामशूलस्यचिकित्सामाह ॥

लङ्घनंप्रथमंकुर्याद्वमनंसविरेचनम् । पं[illegible]पशान्त्यर्थंतत्रवान्तेविधिर्यथा ॥ पीत्वातुक्षीरमाकण्ठंमदनक्काथसंयुतम् । कान्तारकस्यपौण्ड्रस्यकोशकारस्यवारसम् ॥ कषायोवाथनिम्बस्यकटुतुम्ब्यीरसोऽथवा । यथाविधिवमेद्धीमान्पंक्तिशूलार्दितोजनः ॥ त्रिवृताचतथादन्त्यातैलेनैरण्डजेनवा । दत्तंविरेचनंसद्यःपंक्तिशूलनिवारणम् ॥ २८ ॥

परिणामशूलकी चिकित्सा ॥

परिणामशूल के नाशके लिये पहले लंघन, वमन तथा विरेचन करना चाहिये मैनफल के काढे समेत दूध,कान्तार,पौंड्रक अथवा कोषकार नाम ईषका रस नींबका काढा या कडवी तोंबीका रस कण्ठतक पीकर विधिपूर्वक वमन करना परिणामशूलमें हितकारी है निसोथ अथवा दन्तीकेचर्ण को रेंडीके तेलके साथ पिलाकर विरेचन कराने से शीघ्रही परिणामशूल निवृत्त होताहै ॥ २८ ॥

विडङ्गतण्डुलव्योषत्रिवृद्दन्तीसचित्रकम् । सर्वाण्येतानिसंहृत्यसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् ॥ गुडेनमोदकान्कृत्वाखादेदुष्णेनवारिणा । जयेत्त्रिदोषजंशूलंपरिणामसमुद्भवम् ॥ इति विडंगादिमोदकः ॥ २९ ॥

वायविडंगकीगिरी,त्रिकटु,निसोथ,दन्ती तथा चीता इनसबके चूर्णमें गुड मिलाकर मोदकबनावे उष्णजलके साथ मोदक खाने से त्रिदोषज परिणाम शूल नष्ट होताहै ॥ इति विडंगादिमोदक ॥२९॥

नागरतिलगुडकल्कंपयसामंदिष्ययः पुमान् । लिह्याद्दुग्रंपरिणतिशूलंनश्येत्तस्यत्रिरात्रेण ॥ पीतंशम्बूकजंभस्मजलेनोष्णेनतत्क्षणात् । पंक्तिजंनाशयत्येवशूलंविष्णुरिवासुरान् ॥ लोहपथ्याकणाशुण्ठीचूर्णंसमधुसर्पिषा । विलिहन्विनिहन्त्येवशूलंहिपरिणामजम् ॥ इति पथ्यादिलोहम् ॥ ३० ॥

सोंठ,तिल तथा गुडके कल्कको दूधके साथ पीसकर चाटने से तीनदिनमें परिणामशूल नष्टहोता है शंखकीभस्मको गरमजलके साथपीने से तत्क्षणही परिणामशूल नष्टहोताहै लोहा,हड,पीपल तथ सोंठ इनसबके चूर्णको शहद और घीके साथ चाटनेसे परिणामशूल नष्टहोताहै इतिपथ्यादिलोह ३०॥

नारिकेरंसतोयञ्चलवणेनसुपूरितम् ॥ मृदावेष्टितंशुष्कंपक्वंगोमयवह्निना ॥ पिप्पल्याभक्षितंहंतिशूलंहिपरिणामजम् ॥ वातिकंपैत्तिकञ्च ॥ पिइलैष्मिकंसान्निपातिकमितिनारिकेरक्षारः ३१

१ चुल्ल्यतेऽत्र 'चुल्लभावकरणे' (भ्वा० प० से०) धातोरिन्-चुद्यतेऽत्राग्निरितिवा 'चुद प्रेरणे' (चु० प० से०) बाहुलकाल्लिक्कादिकारादितिवाङीप्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जल समेत न ... र नो ... ारेवमनं टे और सुखावे ...
...रके पीपलम... ारके पारस्त्रानेशूल नष्ट होते ... तद...

...स्यचिकि... ॥

अन्नद्रवाख्येशूलेतुनत्तु ... ती है ... पित्ताम्लमन्नंनच्छर्दयेद्द्रवम्॥ जात्तमात्रेंजरत्पित्तेशूलमाशुविनाशि... ४० ॥ ... कृत्वाकफार्त्तञ्चविरेचनम् ॥ अन्नद्रवेचतत्कार्यंजरत्पित्तेयदीरितम्। जरत्प... बलातुरन्नथ्यंप्रोक्तमन्नद्रवेतुयत् ॥ आमपक्काशयेशुद्धेगच्छेदन्नद्रवःशमम्। माषपर्णींसलवणांसुस्विन्नांतैलपाचिताम् ॥ तादृशासर्पिषाखादेदन्नद्रवनिपीडितः ॥ ३२ ॥

अन्नद्रवश... की चिकित्सा ॥

अन्नद्रवशूलमें जबतक कडुए तथा खट्टे पित्तयुक्त अन्नका वमन न करे तबतक स्वस्थता नहीं होती अम्ल पित्तके उत्पन्न होने पर. शीघ्रही शूलका नाशकरे अन्नद्रवशूलमें. पित्त निकलनेतक वमन और कफ निकलने तक विरेचन करावे अम्लपित्तमें जो चिकित्सा कहीगई है वह अन्नद्रवमें और अन्नद्रवमें जो चिकित्सा कहीगई है वह अम्लपित्तमें करनीचाहिये आमाशय तथा पक्वाशयके शुद्ध होनेपर अन्नद्रवशूल शान्त होताहै तेल में अथवा घी में पाक कीगई माषेंडरी (उर्दकीपीठीका भोजन) को नोनकेसाथ खाने से अन्नद्रव निवृत्त होताहै ॥ ३२ ॥

धात्रीफलभवंचूर्णमयश्चूर्णसमन्वितम्। यष्टीचूर्णेनवायुक्तंलिह्यात्क्षौद्रेणतद्द्रवे॥ श्यामाकतण्डुलैःसिद्धंसिद्धंकोद्रवतण्डुलैः। प्रियंगुतण्डुलैःसिद्धंपायसंसहितंहितम् ॥ प्रियंगुकंगुविशेषः। गौडिकंशौरणंकन्दंकूष्माण्डमपिभक्षयेत् । कलायभवसक्तून्वासक्तून्वालाजसम्भवान् ॥ गौडिकंगुडेनसंस्कृतंपक्वान्नम् । कुलत्थसक्तूनथवादध्नादद्याद्दाधिकंतथा ॥ चणकानामथसक्तून्कोद्रवस्योदनंतथा। दाधिकंदध्नासंस्कृतंभक्तंमहेरिइतिलोके ॥ गोधूममण्डकंतत्रसर्पिषागुडसंयुतम्। ससितंशीतदुग्धेनमृदितंकथितंहितम् ॥ ३३ ॥

अन्नद्रवमें आमलेका चूर्ण लोहेके चूर्णके साथ अथवा मुलहठी के चूर्णकेसाथ शहद मिलाकरचाटे सामा, कोदों अथवा काकुनकी खीर खाय गुडमिलाहुआ पक्वान्न, ज़िर्मींकन्द, पेठा, मटरके सत्तू, खीलके सत्तू, दहीमिले कुलथीके सत्तू, चनेकेसत्तू, दहीडालकर बनाहुआ भात अथवा कोदोंकाभात खाना चाहिये गुडके साथ घी सहित गेहूं का मंड (एक प्रकारकी मैदा की रोटी) शक्कर तथा शीतल दूध के साथ मलकर खाय ॥ ३३ ॥

अन्नद्रवोदुश्चिकित्स्योदुर्विज्ञेयोमहागदः । तस्मात्तस्यप्रशमनेपरंयत्नंसमाचरेत् ॥ अन्नद्रवेजरत्पित्तेवह्निमन्दोभवेद्यतः। तस्मादत्रान्नपानानिमात्राहीनानिकारयेत् ॥ कलाययवगोधूमाःश्यामाकाःकोरदूषकाः। राजमाषाश्चमाषाश्चकुलत्थाःकंगुशालयः ॥ दधिलुप्तरसंक्षीरंसर्पिर्गव्यंसमाहिषम् । वास्तूकंकारवेल्लीचकर्कोटकफलानिच ॥ बर्हिणोहरिणोमत्स्याःरोहिताद्याःकपिञ्जलाः । एतस्मिन्नामयेशस्तामतामुनिचिकित्सकैः ॥ दधिलुप्तरसदध्नालुप्तःरसःप्रकृतोरसोयस्यतत्क्षीरंदधियुक्तंक्षीरमित्यर्थः ॥ ३४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

[illegible] साध्य रोगहैं इस [illegible] रिणाम शूल [illegible] करनेमें [illegible] रनाचाहिये अन्न-[illegible] दोष होजाती है इसलिये इन [illegible] मत्रिहीन क[illegible] चाहिये म[illegible], [illegible], कोदों, महाशूल [illegible] उर्द, कुलथी [illegible] धान्य, दहीयुक्त नष्ट रसवाला दूध, भैंस तथा गौका घी, ॥ २७ ॥ [illegible] हो [illegible] तथा श्वेत तीतरका मांस और रोहू आदि मछली यह सब अ[illegible] में सुखावे फिर उन [illegible] २४ ॥

गुडामलकपथ्यानांचूर्णंप्रत्येक चल्हेपर रखकर [illegible] लोहकिट्टस्यतत्सर्वंमधुसर्पिषा ॥ समालोड्यासमश्नीयादक्षमात्रप्रमाणतः । आदिमध्यावसानेषुभोजनस्यनिहन्तितत् ॥ अन्नद्रवजरत्पित्तमम्लपित्तंसुदारुणम् । परिणामसमुत्थञ्चशूलंसंवत्सरोत्थितमितिगुडमंडूरम् ॥ ३५ ॥

गुड, आमला तथा हडकाचूर्ण चारचार तोले और [illegible] की कीट १२ तोले इनसबको शहद तथा घीके साथ मिलाकर १ तोले भोजन के आदि अन्त तथा मध्यमें खाने से अन्नद्रव, अम्लपित्त, रक्त-पित्त और वर्षभरका पुराना शूल नष्ट होताहै ॥ इति गुडमंडूर ॥ ३५ ॥

आयासंमैथुनंमद्यंलवणंकटुकंरसम् । वेगरोधंशुचक्रोधद्विदलंशूलवांस्त्यजेत् ॥ इति शूलपरिणामशूलान्नद्रवजरत्पित्ताधिकारः ॥ ३६ ॥

परिश्रम, मैथुन, मद्य, लवण, कडुवीवस्तु, वेगोंकारोकना, शोक, क्रोध और द्विदल अन्न यह सब शूलवाला त्यागकरदेवे ॥ इति शूल परिणामशूल और अन्नद्रवका अधिकार ॥ ३६ ॥

अथोदावर्त्ताधिकारः । तत्रोदावर्त्तस्यविप्रकृष्टनिदानमाह ॥

वातविण्मूत्रजृम्भाश्रुक्षवोद्गारवमीन्द्रियैः । क्षुत्तृष्णोच्छ्वासनिद्राणांधृत्योदावर्त्तसम्भवः ॥ इन्द्रियमत्रशुक्रम् । अत्र तृतीयासहार्थे । धृत्यावेगविघातेन ॥ ३७ ॥

उदावर्त्तका अधिकार । उदावर्त्तके दूरवालेकारण ॥

वायु, मल, मूत्र, जंभाई, अश्रु, छींक, डकार, छर्दि, वीर्य्य, क्षुधा, तृषा, श्वास तथा निद्रा इनमें से किसी वेगके भी रोकनेसे उदावर्त्तरोग उत्पन्न होताहै ॥ ३७ ॥

अथोदावर्त्तस्य सामान्यलक्षणमाह ॥

यत्रोर्ध्वंजायतेवायोरावर्त्तःसचिकित्सकैः । उदावर्त्तइतिप्रोक्तोऽव्याधिस्तत्रानिलःप्रभुः ॥ आवर्त्तोभ्रमः ॥ ३८ ॥

उदावर्त्तका सामान्यलक्षण ॥

जिसरोगमें वायुका आवर्त्त (चक्कर) ऊपरकी ओर उत्पन्न होय उसको वैद्यलोग उदावर्त्त कहते हैं सब उदावर्त्तोंमें वायु प्रधान है ॥ ३८ ॥

तत्तद्वेगाभिघातभिन्नानामुदावर्त्तानांक्रमेणविशिष्टानिलक्षणान्याह ।

तत्रापानवातनिरोधजस्योदावर्त्तस्यलक्षणमाह ॥

वातमूत्रपुरीषाणांसङ्गोध्मानंक्लमोरुजा । जाठरेवातजाश्चान्येरोगाःस्युर्वातनिग्रहात् ॥ सङ्गःअप्रवृत्तिः । अपानमाध्मानम् । क्लमोअनायासश्रमःरुजाजठरेअन्येतोदशूलगुल्मादयः ॥ ३९ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऊपर कहे ... वेगों ... मन्द ... उदावर्त्तों के ... है ...

... रोकने से हुए उदावर्त्त के ल...

अपानवायु के रोकने ... विनापरिश्रम के श्रम मालूम होना और उदरमें पीड़ा तथा अन्य ... होती है ... होतेहैं ॥ ३९ ॥

... ४० ॥

अथ ... ॥

आटोपशूलौपरिकर्तिकाचसङ्गःपुरीष... बलातूरर्ध्ववातः । पुरीषमास्यादथवानिरेतिपुरीषवेगेऽभिहतेनरस्य ॥ पुरीषवेगेधारितेसतिआटोपःसरुक्गुडगुडाशब्दःशूलमितिपक्वाशयपरिकर्तिकागुदेकर्त्तनवत्पीडाऊर्ध्ववातउद्गारः ॥ ४० ॥

मलके वेगके रोकने से हुए उदावर्त्तका लक्षण ॥

मलके वेगके रोकने से हुए उदावर्त्त में उदरमें पीडासहित गडगडाहट पक्वाशय में शूल गुदामें काटनेकीसी पीडा मलका रुकना और बहुत डकार होती है अथवा मुखसे मल भी निकलताहै ॥ ४० ॥

अथ मूत्रनिग्रहजमाह ॥

वस्तिमेहनयोःशूलेमूत्रकृच्छ्रंशिरोरुजा । विनामोवंक्षणानाहःस्याल्लिङ्गंमूत्रनिग्रहे ॥ विनामःव्यथयावपुषोनमनम् । वंक्षणानाहः वंक्षणयोराकर्षणवद्व्यथा ॥ ४१ ॥

मूत्रके वेगके रोकने से हुए उदावर्त्त के लक्षण ॥

मूत्रके वेग रोकने से वस्ति तथा लिंगमें पीड़ा मूत्रकृच्छ्र शिरमें पीड़ा पीड़ासे शरीरका झुकजाना और वंक्षण में खैंचने कीसी पीड़ा होतीहै ॥ ४१ ॥

अथ जृम्भानिरोधजमाह ॥

मन्यागलस्तम्भशिरोविकारा जृम्भोपघातात्पवनात्मकाःस्युः । तथाक्षिनासावदनामयाश्चभवन्तितीव्राःसहकर्णरोगैः ॥ ४२ ॥

जंभाई के वेगरोकने से हुए उदावर्त्त के लक्षण ॥

जंभाई के रोकने से हुए गलेके पीछें की नस तथा गले में स्तम्भ वातजन्य शिरके रोग और नेत्र नासिका मुख तथा कानों के रोग उत्पन्न होते हैं ॥ ४२ ॥

अथाश्रुनिरोधजमाह ॥

आनन्दजंवाप्यथशोकजंवानेत्रोदकंप्राप्तममुञ्चतोहि । शिरोगुरुत्वंनयनामयाश्चभवन्तितीव्राःसहपीनसेन ॥ ४३ ॥

आंसुओं के रोकने से हुए उदावर्त्त के लक्षण ॥

आनन्द अथवा शोकसे हुए आंसुओं के रोकने से शिरमें भारीपन नेत्रों के रोग और पीनस यह उत्पन्न होतेहैं ॥ ४३ ॥

अथ छिक्कानिरोधजमाह ॥

मन्यास्तम्भःशिरःशूलमर्दितार्द्धावभेदकौ । इन्द्रियाणाञ्चदौर्बल्यंक्षवथोःस्याद्विधारणात् ॥ ४४ ॥

छींकके रोकने से हुए उदावर्त्त के लक्षण ॥

छींकके रोकनेसे मन्यास्तम्भ, शिरमें पीड़ा, अर्दित, आधाशीशी और इन्द्रियोंकी दुर्बलताहोतीहै ४४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

अथोद्गारनि[illegible]

कण्ठ[illegible]नादः कूजश्च वायोरथवाप्र[illegible]भिहते भवन्ति
तोर्विकाराः पवनप्रसूताः ॥ कण्[illegible]हा[illegible]शये च । कूजोऽव्यक्त
शब्दः उदरे वायोरप्रवृत्तिः । उच्छ्[illegible]वनाज्जाता विकाराः हिक्का
दयः ॥ ४५ ॥

डकार के रोकनेपर हुए उदावर्त्त के लक्षण ॥

डकार के वेग रोकने से कंठ तथा मुखमें ग्राससाभरारहना हृदय तथा आमाशय में सुई गड़ने कीसी पीड़ा उदर में अव्यक्त शब्द श्वास आदिका रुकना और हिचकी आदि वातजन्य रोग होते हैं ॥ ४५ ॥

अथ वान्तिनिरोधजमाह ॥

कण्डूकोठारुचिव्यंगशोथपाण्ड्वामयज्वराः । कुष्ठहृल्लासवीसर्पच्छर्दिनिग्रहजागदाः ॥ ४६ ॥

वमन के रोकने से हुए उदावर्त्त के लक्षण ॥

वमन के वेग रोकने से खुजली, चकत्ते, अरुचि, व्यंग (मुखका रोग विशेष) सूजन, पांडु, ज्वर, कुष्ठ, मतली तथा वीसर्प रोग यह सब उत्पन्न होते हैं ॥ ४६ ॥

अथ शुक्रनिरोधजमाह ॥

मूत्राशये वै गुदमुष्कयोश्च शोथो रुजा मूत्रविनिग्रहश्च । शुक्राश्मरी तत्स्रवणं भवेच्च ते ते विकारा विहिते तु शुक्रे ॥ तत्स्रवणं शुक्रस्रावः ते ते विकाराः वातकुण्डलिकादयः ॥ ४७ ॥

वीर्य्य के वेगके रोकने से हुए उदावर्त्त के लक्षण ॥

वीर्य्य के वेगको रोकने से मूत्राशय, गुदा और अंडकोशों में सूजन तथा पीड़ा, मूत्रका रुकना, वीर्य्यकी पथरी, वीर्य्यका निरर्थक बहना और वातकुण्डलिकाआदि अनेकरोग उत्पन्न होते हैं ॥ ४७ ॥

अथ क्षुधावद्घातजमाह ॥

तन्द्रांगमर्दावरुचिः श्रमश्च क्षुधाविघातात्कृशता च दृष्टेः ॥ ४८ ॥

क्षुधाके रोकने से हुए उदावर्त्त का लक्षण ॥

क्षुधाके रोकने से तन्द्रा, अरुचि, शरीर में पीड़ा, श्रम मालूम होना और दृष्टिकी दुर्बलता यह सब होते हैं ॥ ४८ ॥

अथ तृषाविघातजमाह ॥

कण्ठास्यशोथः श्रवणावरोधस्तृष्णाविघाताद्धृदयेऽव्यथा च ॥ ४९ ॥

तृषाके रोकने से हुए उदावर्त्त के लक्षण ॥

तृषाके रोकने से कंठ तथा मुखका सूखना कानोंका रुकना और हृदय में पीड़ा होती है ॥ ४९ ॥

अथ श्वासनिरोधजमाह ॥

श्रान्तस्य निःश्वासविनिग्रहेण हृद्रोगमोहावथवापि गुल्मः ॥ ५० ॥

श्वासके रोकने से हुए उदावर्त्तका लक्षण ॥

थकेहुये के श्वासके रोकने से हृदयके रोग, मोह अथवा गोला यह सब उत्पन्न होते हैं ॥ ५० ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...जृम्भणं...

...निद्रा...जमाह ॥ ...

जृम्भाङ्गमर्द...पितन्द्रा । ...गौरवम् ।
शिरोगात्राक्षिगौरवामाहुः ... ४० ॥

निद्राके ... लक्षण ॥

निद्राके रोकनेसे जंभाई, शरीरमें पीड़ा, ... बलातरन्धा शिरमें अत्यन्त भारीपन होताहै ५१॥

वेगावरोधजमुदावर्त्तमभिधायरूक्षादिकुपितवातजमाह ॥

तस्यनिदानसंप्राप्तिपूर्वकंलक्षणमाह ॥

वायुःकोष्ठानुगोरूक्षैःकषायकटुतिक्तकैः ॥ भोजनैःकुपितःसद्यउदावर्तंकरोतिच ॥ ५२ ॥

वेगोंके रोकनेसे हुये उदावर्तको क... रूखीआदि वस्तुओं के खानेसे कुपित हुई वायुसे उत्पन्नहुये उदावर्तके निदान और संप्राप्तिपूर्व्वक लक्षण ॥

रूखी, कषैली, कडवी तथा तिक्त वस्तुओंके खानेसे कोष्ठ में स्थित वायु कुपित होकर उदावर्त को उत्पन्न करती है ॥ ५२ ॥ अथ सम्प्राप्तिमाह ॥

वातमूत्रपुरीषाश्रुकफमेदोवहानिवै । स्रोतांस्युदावर्त्तयतिपुरीषंचप्रवर्त्तयेत् ॥ ततोहृद्बस्तिशूलार्त्तोहृल्लासारतिपीडितः । वातमूत्रपुरीषाणिकृच्छ्रेणलभतेनरः ॥ श्वासकासप्रतिश्यायदाहमोहतृषाज्वरान् । वमिहिक्काशिरोरोगमनःश्रवणविभ्रमान् ॥ बहूनन्यांश्च लभतेविकारान्वातकोपजान् । उदावर्त्तयतिवायुरुर्द्धंभ्रमेणैववातादिवहानिस्रोतांसि निरुणद्धिनतुविडादीनधोगमयति ॥ मनोविभ्रमःरज्जौसर्पज्ञानम् । श्रवणविभ्रमः अन्यथाश्रवणम् ॥ ५३ ॥

इसरोगमें वात, मूत्र, मल, अश्रु, कफ तथा मेदके लेचलनेवाले स्रोत रुकजाते हैं और मल नहीं निकलता इसलिये हृदय तथा वस्तिमें शूल, मतली, ग्लानि, वातमूत्र तथा मलका कष्टसे निकलना श्वास, खांसी, पीनस, दाह, मोह, तृषा, ज्वर, छर्दि, हिचकी, शिरके रोग, मन तथा कानों में भ्रम और अन्य अनेक प्रकारके वातजरोग उत्पन्न होतेहैं ॥ ५३ ॥

अथासाध्यस्यलक्षणमाह ॥

तृष्णाछर्दिपरिक्लिष्टंक्षीणंशूलैरुपद्रुतम् । शकृद्वमन्तंमतिमानुदावर्त्तिनमुत्सृजेत् ॥ परिक्लिष्टंक्लेशसंयुक्तम् ॥ ५४ ॥

असाध्य उदावर्त्तके लक्षण ॥

तृषा, छर्दि तथा शूलसे व्याकुल, क्षीण और मलके वमनकरनेवाले उदावर्त्त रोगीको त्यागकरदेवे ५४॥

अथानाहस्यलक्षणमाह ॥

आमंशकृद्वानिचितंक्रमेणभूयोविबद्धंविगुणानिलेन । प्रवर्त्तमानंनयथास्वमेनंविकारमानाहमुदाहरन्ति ॥ आमंअपक्वमाहारसारम् । शकृत्पुरीषंवाक्रमेणनिचितंसञ्चितम् ॥ भूयोविगुणानिलेनदुष्टवायुनाविबद्धंव्यायामशोषितंवायथास्वंपूर्व्ववदप्रवर्त्तनम् । एवंविकारमानाहमाहुः ॥ ५५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

[illegible] आनाहकी लक्षण ॥

आम अथवा [illegible] क्रम [illegible] इकट्ठे होकर [illegible] [illegible] जायँ अथवा व्या याम से सूखजायँ और निकलैं नहीं । २७ ॥

[illegible]में सुखावे फिर उन [illegible]

तस्मिन्भवन्त्यामसमुद्भवेतुतृष्णाप्रतिश्यायशिरोविदाहाः । आमाशयेशूलमथोगुरुत्वंहृत्स्तम्भउद्गारविघातनञ्च ॥ विघातनेमप्रवृत्तिः ॥ ५६ ॥

आमज आनाहके लक्षण ॥

आमज आनाहमें तृषा, पीनस, शिरमें दाह, आमाशय में शूल, शरीरमें भारीपन, हृदयमें स्तंभ और डकारका न आना यह लक्षण होते हैं ॥ ५६ ॥

शकृत्सञ्चयजमाह ॥

स्तम्भःकटीपृष्ठपुरीषमूत्रेशूलोऽथमूर्च्छाशकृतोवमिश्च । श्वासश्चपक्वाशयजेभवन्ति तथालसोक्तानि च लक्षणानि ॥ पक्वाशयजेशकृत्सञ्चयजे आनाहे । स्तम्भशब्दःकटीपृष्ठयोः ॥ स्तब्धतावाचीपुरीषमूत्रयोरप्रवृत्तिवाची । अलसोक्तानिलक्षणानि । आध्मान वातविघातादीनि ॥ ५७ ॥

मलके इकट्ठे होजानेसे हुये आनाहके लक्षण ॥

मलके इकट्ठे होनेसे हुये आनाह में कटि तथा पीठमें स्तंभ, मलमूत्रका रुकना, शूल, मूर्च्छा, विष्ठाकी वमन, श्वास और अफरा तथा वायुका रुकना आदि अलसकमें कहेहुये लक्षण होते हैं ५७ ॥

तत्रोदावर्त्तानांचिकित्सामाह ॥

अधोवातनिरोधोत्थेउदावर्त्तेहितंमतम् । स्नेहपानंतथास्वेदोवर्तिर्वस्तिर्हितोमतः ॥ विड्विघातसमुत्थेतुविड्भङ्गान्नंतथौषधम् । वर्त्यभ्यङ्गावगाहाश्चस्वेदोवस्तिर्हितोमतः ॥ वर्तिःफलवर्त्तिः । मूत्रावरोधजनितेक्षीरवारिवचांपिबेत् ॥ दुःस्पर्शास्वरसंवापिकषायंककुभस्यच । दुःस्पर्शाकण्टकारीदुरालभाचतुल्यगुणत्वात् ॥ एर्वारुबीजतोयेनपिबेद्वालवणीकृतम् । सितामिक्षुरसक्षीरंद्राक्षांयष्टीमथापिवा ॥ सर्वथैवप्रयुञ्जीतमूत्रकृच्छ्राश्मरीविधिः ॥ ५८ ॥

उदावर्तोंकी चिकित्सा ॥

अपानवायु के रोकने से हुये उदावर्त में स्नेह, पान, स्वेद, फलवर्ति और वस्तिक्रिया हितकारी है मलके रोकने से हुये उदावर्त में मलभेदक औषध तथा अन्न, फलवर्ति, उबटना, स्नान, स्वेद और वस्तिक्रिया हित है मूत्र रोकनेसे हुए उदावर्त्तमें बराबर दूध पानी में बचको पीस के डालकर पिये और भटकटैयाका रस अथवा अर्जुनवृक्षका काढ़ापिये ककड़ी के बीजों में कुछ नोन मिलाकर पानीमें पीसकर पिये और शक्कर युक्त ईखका रस अथवा दाख तथा मुलहठीके द्वारा दूधका पाक करके पीने से इसका नाश होताहै मूत्रकृच्छ्र और पथरीरोग में कहीहुई चिकित्सा भी करनी चाहिये ॥ ५८ ॥

जृम्भाभिघातजेस्नेहस्वेदंवापिप्रयोजयेत् । अन्यानपिप्रयुञ्जीतसमीरणहरान्विधान् ॥ नेत्रनीरावरोधोत्थमुञ्चेद्वापिदृशोर्जलम् । स्वप्यात्सुखंचतस्याग्रेकथयेच्चकथाःप्रियाः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

[illegible] तमनं।

[illegible]ाविघातेअ[illegible]शनैः । प्रवर्त्तयेतक्षुतंस[illegible] ॥
[illegible]क्ष्णमरीचराजिक[illegible]ाचरेत् । छर्दि ग्रहसञ्जातेवम
नंलङ्घनंहितम् ॥ विरेच[illegible]वस्तिशुद्धिकरैःसिद्धंचतुर्गुणज
लंपयः ॥ आवारिनाशात्क्वथितं[illegible]रमयेयुःप्रियानार्यःशुक्रोदावर्तिनं
नरम् ॥ तस्याभ्यंगोऽवगाहश्चमदिराच[illegible]लातुरः शालिःपयोनिरूहश्चहितंमैथुनमेव
च ॥ क्षुद्विघातसमुद्भूतेस्निग्धमुष्णंतथालघु । रुच्यमल्पंहितंभक्ष्यंपुष्पंसेव्यंसुगन्धिय
त् ॥ तृषाविघातसम्भूतेशीतःसर्वोविधिर्हितः । कर्पूरशिशिरंस्वल्पपिबेत्तोयंशनैःशनैः ॥
श्रमेश्वासेघृतौशस्तौविश्रामःसरसौदनौ । निद्रावेगविघातोत्थेपिबेत्क्षीरंसितायुतम् ॥
संवाहनसुशय्याऽत्रहितःस्वप्नःप्रियाःकथाः ॥ ५९ ॥

जंभाई के रोकने से हुए उदावर्त्त में स्नेह स्वेद तथा अन्य वातनाशक चिकित्सा करनी चाहिये आंसुओं के रोकने से हुए उदावर्त्त में अंजनादि के द्वारा आंसू निकलवावे सुखपूर्वक सुलावे और उसके आगे बहुतसी प्रिय कथा कहै छींकके रोकने से हुए उदावर्त्त में तीक्ष्ण मिर्च तथा राई आदिकी हुलास अथवा सूर्य्य के दर्शन से छींक लिवावे और स्नेह तथा स्वेदका सेवन करे डकार के रोकने से हुए उदावर्त्त में चिकने धुएंका पानकरे छर्दिके रोकने से हुए उदावर्त्त में वमन, लंघन, विरेचन तथा तैलका मर्द्दन हितकारी है वीर्यके वेगरोकने से हुए उदावर्त्त में वस्तिकी शुद्ध करनेवाली औषधियों के द्वारा चौगुने जल सहित दूधको पानी के जलजानेतक पाककरके पिये और इच्छा के अनुसार प्यारी स्त्रियोंके साथ गमनकरे तेल मर्द्दन, स्नान, मद्यपान, मुर्गेका मांस, शालिधान्य, दूध और उत्तर वस्ति यह सब वीर्य्यके रोकने से होनेवाले उदावर्त्तमें हितकारीहैं क्षुधाके रोकने से हुए उदावर्त्त में स्निग्ध, उष्ण, हलका तथा रुचिकारी भोजन थोडा करना चाहिये और सुगन्धित पुष्प सूंघने चाहिये तृषाके रोकनेसे हुए उदावर्त्तमें सब प्रकारकी शीतल चिकित्सा हितकारी है और कपूरसे बसायाहुआ ठंढा जल थोडा२ धीरे२ पीना चाहिये श्रमके श्वासके रोकनेसे हुए उदावर्त्त में विश्राम करना चाहिये और मांसके रसके साथ भात खाना चाहिये निद्राके वेगके रोकनेसे हुए उदावर्त्त में शक्करयुक्त दूधका पीना संवाहन (पैरदबाना) सुन्दरशय्या, निद्रा और प्रियवाक्योंका सुनना यह सबहितकारी हैं ५९ ॥

वातादिवेगविघातजनितानामुदावर्त्तानांचिकित्सामभिधायरूक्षादि
कुपितवातजनितस्योदावर्त्तस्यचिकित्सामाह ॥

हिङ्गुमाक्षिकसिन्धूत्थैःपिष्टैर्वर्तिंविनिर्म्मिताम् । घृताभ्यक्तांगुदेन्यस्येदुदावर्तविना
शिनीम् ॥ (फलवर्त्तिः) मदनंपिप्पलीकुष्ठंवचागौराश्चसर्षपाः । गुडक्षीरसमायुक्तंफल
वर्त्तिरिहोदिता ॥ मदनफलादिफलवर्त्तिः ॥ ६० ॥

वातादि वेगों के रोकने से हुए उदावर्त्तोंकी चिकित्सा को कहकर रूखी आदि वस्तुओंके
सेवनसे कुपित हुई वायुके द्वारा उत्पन्न हुए उदावर्त्त की चिकित्सा ॥

हींग, शहद तथा संधानोन इनको पीसकर बत्ती बनावे और उस बत्तीको घी में डुबोकर गुदामें रखने से उदावर्त्तका नाश होताहै मैनफल, पीपल, कूट, बच, सफेद सरसों, गुड तथा दूध इनसबकी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

[illegible] दोदावर्त्तका नाश होताहै इसे[illegible] [illegible] मदनफल

फलवर्त्ति ॥ ६० [illegible]

खण्डफलंत्रिवृत्ताक्षःकृष्णा[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]नाविडालपदकंनरो लिह्यात् ॥ एतद्गाढपुरीषेदेयं[illegible]यंचूर्णंनाराचकंनाम्ना ॥ इति नाराचचूर्णम् ॥ ६१ ॥

शक्कर ४ तोले, निशोथ १ तोले और पीपल २ तोले इनसबके तोलेभर चूर्ण को भोजन से पहिले शहद के साथ चाटने से रुकेहुए मलवाले उदावर्त्तका नाश होताहै यह नाराचनाम चूर्ण मधुरहै इसलिये राजाओं के योग्यहै इति नाराच चूर्ण ॥ ६१ ॥

सव्योषपिप्पलीमूलंत्रिवृद्दन्तीचचित्रकम् [illegible]गुडसंमिश्रंभक्षयेत्प्रातरुत्थितः॥ एतद्गुडाष्टकंनाम्नाबलवर्णाग्निवर्द्धनम् । उदावर्तप्लीहगुल्मशोथपाण्ड्वामयापहम् ॥ इति गुडाष्टकम् ॥ ६२ ॥

त्रिकटु, पीपलामूल, निशोथ, दन्ती तथा चीता इन सबके चूर्ण को गुडमें मिलाकर प्रातःकाल खानेसे उदावर्त्त, प्लीहा, गोला, सूजन तथा पांडुरोगका नाश होताहै और बल वर्ण तथा अग्निकी वृद्धि होतीहै इति गुडाष्टक ॥ ६२ ॥

मूलकंशुष्कमार्द्रंवावर्षाभूःपञ्चमूलकम् । कृतमालफलंचाप्सुपक्त्वातेनघृतंपचेत् ॥ तत्पीतंशमयेत्क्षिप्रंमुदावर्तमशेषतः । पंचमूलकमत्रबृहत्॥इति शुष्कमूलकाद्यंघृतम्६३॥

सूखी अथवा गीली मूली, पुनर्नवा, बड़ा पंचमूल और अमलतास इनके काढे के साथ घीको पकाकर पीने से सब प्रकारके उदावर्त्त नष्ट होते हैं इति शुष्कमूलादिघृत ॥ ६३ ॥

अथानाहस्यचिकित्सामाह ॥

तुल्यकारणकार्य्यत्वादुदावर्तहरींक्रियाम् । आनाहेषुचकुर्वीतविशेषश्चाभिधीयते ॥ त्रिवृत्कृष्णाहरीतक्योद्विचतुःपञ्चभागिकाः।गुडेनतुल्यागुटिकाहरत्यानाहमुल्बणम् ६४॥

आनाह की चिकित्सा ॥

उदावर्त और आनाह के कार्य्य कारण समान होने के कारण आनाह में उदावर्तनाशक चिकित्सा करनी चाहिये और विशेष आगे कहते हैं निशोथ २ भा० पीपल ४ भा० और हड ५ भा० इनसब के चूर्णके समान गुड मिलाकर गोलीबनावे इसके खानेसे बहुत बढ़ेहुए आनाह का नाश होताहै ॥ ६४ ॥

वर्त्तिस्त्रिकटुसैन्धवसर्षपगृहधूमकुष्ठमदनफलैः । मधुनिगुडेवापक्वैर्विहितासांगुष्ठसंमिताविज्ञैः ॥ वर्त्तिरियंदृष्टफलाशनैःप्रणिहितागुदेघृताभ्यक्ता । आनाहमुदरजांतिंशमयतिजठरंयथागुल्मम् ॥ इति त्रिकटुकादिवर्त्तिः । इत्युदावर्त्तानाहनिदानचिकित्साधिकारः ॥ ६५ ॥

त्रिकटु, सेंधानोन, सरसों, घरकाधुआं, कूट और मैनफल इन सबको शहद और गुड में पाक करके अंगूठे की बराबर बत्ती बनावे और इस बत्ती को घी में डुबोकर धीरे २ गुदा में रखने से आनाह, उदावर्त, उदर तथा गोला इन सबका नाश होताहै यह अनुभव कियागयाहै इति त्रिकटुकादिवर्त्ति इति उदावर्तानाह निदान चिकित्साधिकार समाप्त ॥ ६५ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...तमनं ॥ ६ ।

...पलमाक्षि...

तत्र गुलम... ...ती है ...न्यलक्षणमाह ॥

दुष्टावातादयोऽत्यर्थंमिथ्याहारादि... ४० ॥ ...पञ्चधागुलमकोष्ठान्तर्ग्रन्थिरूपिणम् ॥ दुष्टःस्वकारणैःमिथ्याहाराध्यशन... बलातुरल्पाहारोबलवद्विग्रहादिःपञ्चधेतिवातपित्तकफसन्निपातरक्तजान्येवंप्रपञ्चद्वन्द्वजास्तुप्रकृतिसमवेतत्वात्पृथक्नगण्यन्ते । अर्शोवत् । कोष्ठान्तःहृदयाद्वस्तिपर्य्यन्तंकोष्ठस्तन्मध्येकुत्रापिग्रन्थिरूपिणंगुटिकाकारम् । तत्रपञ्चविधत्वंविवृणोति । सव्यस्तैर्जायतेदोषैःसमस्तैरपिचोच्छ्रितः । पुरुषाणांतथास्त्रीणांरक्तजंचोपजायते ॥ आर्त्तवरूपादपिरक्तात्गुलमोभवतिइत्याह । आर्त्तवादपिगुलमःस्यात्सतुस्त्रीणांप्रजायते ॥ अन्यस्त्वसृग्भवःपुंसांतथास्त्रीणांप्रजायते । कोष्ठेऽपिस्थाननियममाह ॥ तस्यपञ्चविधंस्थानंपार्श्वहृन्नाभिवस्तयः ॥ ६६ ॥

गुलमका अधिकार गुलमके दूरवाले और समीपी कारणोंसहित सामान्य लक्षण ॥

अपने २ कारणों के द्वारा अथवा नियमरहित आहार विहार से दूषित हुए वातादिक दोष हृदय तथा वस्तिके बीचमें किसी स्थानपर बटिया के समान पांचप्रकार का गोला उत्पन्न करते हैं और वह पांचों यह हैं जैसे वातज, पित्तज, कफज तथा सन्निपातज यह चार तो पुरुष तथा स्त्री दोनों के होते हैं और स्त्रियों के ऋतुसम्बन्धी रुधिर से उत्पन्न हुआ एक प्रकारका गोला होताहै और सामान्य रुधिर से हुआ गोला स्त्री पुरुष दोनों के होता है यह पांचवां है दोनों पसली, हृदय, नाभि तथा वस्ति यह पांच गोले के स्थानहैं ॥ ६६ ॥

अथ गुलमस्यसामान्यलक्षणमाह ॥

हृद्वस्त्योरन्तरेग्रन्थिःसञ्चारीयदिवाचलः । वृत्तश्चयोपचयवान्सगुलमइतिकीर्त्तितः ॥ नाभिशब्देनवस्तिर्बोध्यःसामीप्यादेवयथागङ्गायांघोषइति । वस्तेरपिगुलमाश्रयत्वेनोक्तत्वात् अन्येहृद्वस्त्योरेवपाठान्तरंपठन्ति ॥ अन्येतुवस्तौविद्रधिःस्यात्सगुलमइति । तन्नवस्तेरपिगुलमस्थानत्वात् ॥ तथाच चरके । पञ्चस्थानानिगुलमस्यपार्श्वहृन्नाभिवस्तयः ॥ इतिसंचारीचलनशीलअचलः स्थिरवृत्तोवर्तुलश्चयोपचयवानितिकदाचिद्वर्द्धयते वृद्धिंगच्छतिकदाचिदपचीयतेहीनोभवति एतल्लक्षणंसामान्योक्तमपिवातिकव्यवतिष्ठत इतिजैय्यटः । गयदासस्तुसामान्यमेवाह । सर्वगुलमानांवातमूलत्वात् ॥ ६७ ॥

गोलेका सामान्य लक्षण ॥

हृदय और वस्ति के बीच में चल अथवा निश्चल गोल गांठके समान जो पदार्थ उत्पन्न होताहै और कभी २ घटता बढ़ता रहताहै उसको गुलम (गोला) कहते हैं ॥ ६७ ॥

तस्यपूर्व्वरूपमाह ॥

उद्गारबाहुल्यपुरीषबन्धस्तृषाक्षमत्वान्त्रविकूजनञ्च । आटोपमाध्मानमपंक्तिशूलमा सन्नगुलमस्यवदन्तिचिह्नम् ॥ अरुचिंकृच्छ्रविण्मूत्रेवाततत्वंचान्त्रकूजनम् । आनाहंचोर्ध्ववातञ्चसर्व्वगुलमेषुलक्षयेत् ॥ ६८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

[illegible] भावप्रकाश स[illegible]रिणाम शूल के[illegible] ।

[illegible] और दो[illegible] [illegible]ाहट.मलमू[illegible]

[illegible] गुल्मका पूर्वरूप ॥ [illegible]

गुल्म होनेके पहले बहुत डकार [illegible] [illegible]त हो[illegible]तों में शब्द, उदर में गडगडाहट, अफरा, भोजनका न प[illegible] [illegible] सबप्रकारके गुल्मों में अरुचि, मल,मूत्र तथा वायुका कष्टसे निकल[illegible] [illegible] आनाह और बहुत डकार यह सब ल-क्षण होतेहैं ॥ ६८ ॥

अथ [illegible]कस्यनिदानमाह ॥

रूक्षान्नपानंविषमातिमात्रंविचेष्टनंवेगविनिग्रहश्चशोका[illegible]तोऽतिमलक्षयश्चनिरन्नताचानिलगुल्महेतुः । विचेष्टनंविरुद्धाचेष्टाबलवद्विग्रहादि ॥ शोकाभिघातः शोकेन मनोधिष्ठानस्यहृदयस्याभिघातः ॥ अतिमलक्षय[illegible]विरेकादिनानिरन्नताउपवासः ६९ ॥

वातजगुल्म के निदान ॥

रूखा अन्न, पान, विषम भोजन, बहुत भोजन, बलवान् के साथ युद्धादिक, विरुद्ध चेष्टा, मलमूत्रादि वेगोंका रोकना, शोकसे चित्तका दुःखी होना, विरेचनादिके द्वारा बहुत मलका क्षय और लंघन यह सब वातजगुल्मके कारणहैं ॥ ६९ ॥ अथ तस्यलक्षणमाह ॥

यःस्थानसंस्थानरुजांविकल्पंविड्वातसङ्गंगलवक्त्रशोषम् । श्यावारुणत्वंशिशिरज्वरंचहृत्कुक्षिपार्श्वांशिरोरुजश्च ॥ करोतिजीर्णेऽत्यधिकंप्रकोपंभुक्तेमृदुत्वंसमुपैतियश्च । वातात्सगुल्मोनचतत्ररूक्षंकषायतिक्तंकटुनोपसेवेत ॥ श्यावारुणत्वंशरीरस्य । शिशिरज्वरंशीतज्वरम् ॥ जीर्णेआहारेप्रकुप्यतिभुक्तेचशान्तिगच्छतिसवातिकोगुल्मःरूक्षआहारकषायंतिक्तकटुरसास्तत्रतस्मिन्वातगुल्मे ॥ नोपसेवेतनसुखयति ॥ ७० ॥

वातजगुल्म के लक्षण ॥

वातजगुल्म. कभी बडा, कभी छोटा, कभी गोल, कभी लंबा होताहै और कभी नाभि में अथवा कभी बस्तिआदिक स्थानों में जाताहै और कभी पीडासहित तथा पीडारहित होजाताहै इस रोगमें मल तथा मूत्रका रुकना, गले तथा मुखका सूखना, शरीर में श्यामता अथवा रक्तता, शीतज्वर और हृदय, कोख, पसली, अंग तथा शिरमें पीडा होती है यह रोग भोजनके पचजानेपर बढताहै और भोजन करनेपर शान्त होताहै और इसमें रूखी, कषैली, तिक्त तथा कडवी वस्तु हितकारी नहीं होतीहै ॥ ७० ॥

अथ पैत्तिकस्यनिदानमाह ॥

कट्वम्लतीक्ष्णोष्णविदाहिरूक्षक्रोधाऽतिमद्यार्कहुताशसेवा । आमोऽभिघातोरुधिरंचदुष्टंपैत्तस्यगुल्मस्यनिमित्तमुक्तम् ॥ विदाहिवंशकरीरादि । अतिशब्दोमद्यादिषुयोज्यम् । आमोऽन्ननिदग्धाजीर्णम् ॥ अभिघातोलगुडादिना ॥ ७१ ॥

पित्तजगुल्मका निदान ॥

कडवी, खट्टी, तीक्ष्ण, उष्ण, विदाही तथा रूखी वस्तु, क्रोध, बहुत मद्यपान, धूप, अग्निसेवन, विदग्धाजीर्ण, लाठीआदिकी चोट और दूषित रुधिर यह पित्तजगुल्मके कारणहैं ॥ ७१ ॥

अथ तस्यलक्षणमाह ॥

ज्वरःपिपासासदनांगरागःशूलंमहज्जीर्य्यतिभोजनेच । स्वेदोविदाहोव्रणवच्चगुल्मः

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

…सह:पैत्तिक… …गोदेहरु…हितयम् । … दाह
…एवच्चगुल्मःस्पर्शा…
…ती है
…॥ ४० ॥

पित्तजगुल्ममें ज्वर, तृषा, शरीरमें … , विदाह, भोजनके पचने के समय बहुत पीडा, गोलेका घावके समान छूनेके योग्य न … लक्षण होते हैं ॥ ७२ ॥

अथ श्लैष्मिकस्यसान्निपातिकस्य च हेतुमाह ॥

शीतंगुरुस्निग्धमचेष्टनञ्चसम्पूरणंप्रस्वपनंदिवाच । गुल्मस्यहेतुःकफसम्भवस्य सर्वस्तुदिष्टोनिचयात्मकस्य ॥ सम्पूरणमुदरपूरणम् । निचयात्मकस्यसान्निपातिकस्य ॥ सर्वोहेतुःवातपित्तकफानांहेतुः ॥ ७३ ॥

कफज और सन्निपातजगुल्मके निदान ॥

शीतल, भारी तथा स्निग्ध वस्तु, चेष्टारहित होना, खूब पेटभर खाना और दिनमें सोना यह कफज गुल्मके निदानहैं ऊपर कहेहुए सम्पूर्ण कारणों से सन्निपातजगुल्म होताहै ॥ ७३ ॥

अथ श्लैष्मिकस्यलक्षणमाह ॥

स्तैमित्यशीतज्वरगात्रसादहृल्लासकासारुचिगौरवाणि । कफस्यलिंगानिचयानिता निभवन्तिगुल्मेकफकोपजाते ॥ कफस्यलिंगानिवेदनाल्पतावह्निमान्द्यादीनि ॥ ७४ ॥

कफजगुल्मके लक्षण ॥

गीले कपडे से शरीरका ढकाहुआ सा मालूम होना, शीतज्वर, शरीरका टूटना तथा भारीपन, मतली, खांसी, अरुचि और मन्दाग्नि तथा थोडी पीडा आदि कफके अनेक लक्षण होते हैं ॥ ७४ ॥

व्यामिश्रलिंगानपरांस्तुगुल्मान्त्रीन्दिशेदौषधकल्पनार्थम् ॥ ७५ ॥

औषधियों की कल्पना के लिये दो दोषोंके मिलेहुए लक्षणवाले और भी तीनप्रकारके द्वन्द्वज गुल्म जानने चाहिये ॥ ७५ ॥

अथ त्रिदोषजमाह ॥

महारुजंदाहपरीतमश्मवदूघनोन्नतंशीघ्रविदाहिदारुणम् । मनःशरीराग्निबलापहा रिणंत्रिदोषजंगुल्ममसाध्यमादिशेत् ॥ धातुरूपरक्तजस्यापिविप्रकृष्टनिदानानिलक्षणा निचपैत्तिकस्यैवबोद्धव्यानि । परमत्राभिघातादिहेतुर्विशेषः ॥ ७६ ॥

त्रिदोषजगुल्मके लक्षण ॥

सन्निपातज गुल्म: पत्थरके समान कठिन तथा ऊंचा और अत्यन्त पीडा तथा दाहयुक्त होताहै और इसमें शीघ्रही विदाह, मनकी व्याकुलता और शरीर तथा अग्निके बलका नाश होताहै यह भयंकर गुल्म असाध्य जानना चाहिये सामान्य धातुरूप रुधिरसे उत्पन्न हुए गुल्मके दूरवाले कारण और लक्षण पित्तजगुल्मके समान होते हैं परन्तु चोट आदि कारण विशेष होते हैं ॥ ७६ ॥

अथार्तवरूपरक्तजमाह ॥

नवप्रसूताहितभोजनायायाचामगर्भेविसृजेदृतौवा । वायुर्हितस्याःपरिगृह्यरक्तंकरोति गुल्मंसरुजंसदाहम् ॥ पैत्तस्यलिंगेनसमानलिंगंविशेषणञ्चाप्यपरंनिबोध । यःस्पन्दते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भावप्रकाश स... रिणाम शूल ... ।

... पूर्वरूप ।

गुल्म होनेके पहले बहुत डकार ... होना आंतों में शब्द, उदर में गडगडाहट, अफरा, भोजनका न प... सबप्रकारके गुल्मों में अरुचि, मल,मूत्र तथा वायुका कष्टसे निकल... आनाह और बहुत डकार यह सब लक्षण होतेहैं ॥ ६८ ॥

अथ ...कस्यनिदानमाह ॥

रूक्षान्नपानंविषमातिमात्रंविचेष्टनंवेगविनिग्रहश्चशोकाभिघातोऽतिमलक्षयश्चनिरन्नताचानिलगुल्महेतुः । विचेष्टनंविरुद्धचेष्टाबलवद्विग्रहादि ॥ शोकाभिघातः शोकेन मनोधिष्ठानस्यहृदयस्याभिघातः ॥ अतिमलक्षयः विरेकादिनानिरन्नताउपवासः ६९ ॥

वातजगुल्म के निदान ॥

रूखा अन्न, पान, विषम भोजन, बहुत भोजन, बलवान् के साथ युद्धादिक, विरुद्ध चेष्टा, मलमूत्रादि वेगोंका रोकना, शोकसे चित्तका दुःखी होना, विरेचनादिके द्वारा बहुत मलका क्षय और लंघन यह सब वातजगुल्मके कारणहैं ॥ ६९ ॥ अथ तस्यलक्षणमाह ॥

यःस्थानसंस्थानरुजांविकल्पंविड्वातसङ्गंगलवक्त्रशोषम् । श्यावारुणत्वंशिशिरज्वरंचहृत्कुक्षिपार्श्वाङ्गशिरोरुजश्च ॥ करोतिजीर्णेऽत्यधिकंप्रकोपंभुक्तेमृदुत्वंसमुपैतियश्च । वातात्सगुल्मोनचतत्ररूक्षंकषायतिक्तंकटुनोपसेवेत ॥ श्यावारुणत्वंशरीरस्य । शिशिरज्वरंशीतज्वरम् ॥ जीर्णेआहारेप्रकुप्यतिभुक्तेचशान्तिंगच्छतिसवातिकोगुल्मःरूक्षआहारकषायंतिक्तकटुरसास्तत्रतस्मिन्वातगुल्मे ॥ नोपसेवेतनसुखयति ॥ ७० ॥

वातजगुल्म के लक्षण ॥

वातजगुल्म कभी बडा, कभी छोटा, कभी गोल, कभी लंबा होताहै और कभी नाभि में अथवा कभी वस्तिआदिक स्थानों में जाताहै और कभी पीडासहित तथा पीडारहित होजाताहै इस रोगमें मल तथा मूत्रका रुकना, गले तथा मुखका सूखना, शरीर में श्यामता अथवा रक्तता, शीतज्वर और हृदय, कोख, पसली, अंग तथा शिरमें पीडा होती है यह रोग भोजनके पचजानेपर बढताहै और भोजन करनेपर शान्त होताहै और इसमें रूखी, कषैली, तिक्त तथा कडवी वस्तु हितकारी नहीं होतीहै ॥ ७० ॥

अथ पैत्तिकस्यनिदानमाह ॥

कट्वम्लतीक्ष्णोष्णविदाहिरूक्षक्रोधाऽतिमद्यार्कहुताशसेवा । आमोऽभिघातोरुधिरंचदुष्टंपैत्तस्यगुल्मस्यनिमित्तमुक्तम् ॥ विदाहिवंशकरीरादि । अतिशब्दोमद्यादिषुयोज्यम् । आमोऽन्नविदग्धाजीर्णम् ॥ अभिघातोलगुडादिना ॥ ७१ ॥

पित्तजगुल्मका निदान ॥

कडवी, खट्टी, तीक्ष्ण, उष्ण, विदाही तथा रूखी वस्तु, क्रोध, बहुत मद्यपान, धूप, अग्निसेवन, विदग्धाजीर्ण, लाठीआदिकी चोट और दूषित रुधिर यह पित्तजगुल्मके कारणहैं ॥ ७१ ॥

अथ तस्यलक्षणमाह ॥

ज्वरःपिपासासदनांगरागःशूलंमहज्जीर्यतिभोजनेच । स्वेदोविदाहोव्रणवच्चगुल्मः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...सहः पैत्तिके ... गोदेहस्यलौहित्यम् । ... दाहा
...णवच्चगुल्मःस्पर्शा ... ती है
... ॥ ७० ॥

पित्तजगुल्ममें ज्वर, तृषा, शरीरमें ..., विदाह, भोजनके पचने के समय बहुत पीडा, गोलेका घावके समान छूनेके योग्य न ... लक्षण होते हैं ॥ ७२ ॥

अथ श्लैष्मिकस्यसान्निपातिकस्य च हेतुमाह ॥

शीतंगुरुस्निग्धमचेष्टनञ्चसम्पूरणंप्रस्वपनंदिवाच । गुल्मस्यहेतुःकफसम्भवस्य सर्वस्तुदिष्टोनिचयात्मकस्य ॥ सम्पूरणमुदरपूरणम् । निचयात्मकस्यसान्निपातिकस्य॥ सर्वोहेतुःवातपित्तकफानांहेतुः ॥ ७३ ॥

कफज और सन्निपातजगुल्मके निदान ॥

शीतल, भारी तथा स्निग्ध वस्तु, चेष्टारहित होना, खूब पेटभर खाना और दिनमें सोना यह कफज गुल्मके निदानहैं ऊपर कहेहुए सम्पूर्ण कारणों से सन्निपातजगुल्म होताहै ॥ ७३ ॥

अथ श्लैष्मिकस्यलक्षणमाह ॥

स्तैमित्यशीतज्वरगात्रसादहृल्लासकासारुचिगौरवाणि । कफस्यलिंगानिचयानिता निभवन्तिगुल्मेकफकोपजाते ॥ कफस्यलिंगानिवेदनाल्पतावह्निमान्द्यादीनि ॥ ७४ ॥

कफजगुल्मके लक्षण ॥

गीले कपडे से शरीरका ढकाहुआ सा मालूम होना, शीतज्वर, शरीरका टूटना तथा भारीपन, मतली, खांसी, अरुचि और मन्दाग्नि तथा थोडी पीडा आदि कफके अनेक लक्षण होते हैं ॥ ७४ ॥

व्यामिश्रलिंगानपरांस्तुगुल्मांस्त्रीणांदिशेदौषधकल्पनार्थम् ॥ ७५ ॥

और भी तीनप्रकारके द्वन्द्वज गुल्म जानने चाहियें ॥ ७५ ॥ औषधियों की कल्पना के लिये दो दोषोंके मिलेहुए लक्षणवाले

अथ त्रिदोषजमाह ॥

महारुजंदाहपरीतमश्मवद्घनोन्नतंशीघ्रविदाहिदारुणम् । मनःशरीराग्निबलापहा रिणंत्रिदोषजंगुल्ममसाध्यमादिशेत् ॥ धातुरूपरक्तजस्यापिविप्रकृष्टनिदानानिलक्षणा निचपैत्तिकस्यैवबोद्धव्यानि । परमत्राभिघातादिहेतुर्विशेषः ॥ ७६ ॥

त्रिदोषजगुल्मके लक्षण ॥

सन्निपातज गुल्म. पत्थरके समान कठिन तथा ऊंचा और अत्यन्त पीडा तथा दाहयुक्त होताहै और इसमें शीघ्रही विदाह, मनकी व्याकुलता और शरीर तथा अग्निके बलका नाश होताहै यह भयंकर गुल्म. असाध्य जानना चाहिये सामान्य धातुरूप रुधिरसे उत्पन्न हुए गुल्मके दूरवाले कारण और लक्षण पित्तजगुल्मके समान होते हैं परन्तु चोट आदि कारण विशेष होते हैं ॥ ७६ ॥

अथार्तवरूपरक्तजमाह ॥

नवप्रसूताहितभोजनायायाचामगर्भंविसृजेदृतौवा । वायुर्हितस्याःपरिगृह्यरक्तंकरोति गुल्मंसरुजंसदाहम् ॥ पैत्तस्यलिंगेनसमानलिंगंविशेषणञ्चाप्यपरंनिबोध । यःस्पन्दते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

।पाए७ [illegible] शूलःसमगर्भलिंगः [illegible] पूर्वरूप [illegible] गुल्मोमासेऽयत
दशमेचिकित्स्यः। नवप्रसूता [illegible] महाशूल [illegible] भोजनाया चामगर्भ
विसृजेत्नवममासादर्वाक्प्रसूय [illegible] २७॥ [illegible] आर्त्तवप्रवृत्तिकालेऽहितभो
जनाअपथ्याचरणाद्वावायुःरक्तं [illegible] गर्भाशयेगुल्मंकरोति। भोजनपदं
विहारस्याप्युपलक्षणम्॥ यतश्चाह [illegible] । ऋतावनाहारतयाभयेनविरूक्षैर्वेगविनि
ग्रहैश्च॥ संस्तम्भनोल्लेखनयोनिदोषैर्गुल्मःस्त्रियारक्तभवोऽभ्युपैति । चिरात्स्पन्दते
चलतिनाङ्गैःनहस्तपादाद्यैः । समगर्भलिंगः अत्रसमशब्दःसर्वशब्दार्थःतेनसमानिस
र्वाणिगर्भलिंगानिआर्त्तवप्रवृत्तिकालेआर्त्त [illegible]मुखपीततास्तनमुखकृष्णतादोहदा
दीनियत्रसः। एतेचव्याधिप्रभावात्। यथायक्ष्मिणोरिरंसा। सरौधिरआर्त्तवरूपरक्तजःस्त्री
णांप्रजायतेइति। गर्भसमानलिङ्गत्वेविशेषज्ञानार्थमाह। मासेऽयतीतेदशमेचिकित्स्यः।
नवदशमासयोःप्रसवकालत्वादित्येके। तन्न यःस्पन्दतेपिण्डितएवनाङ्गैरित्यादिनवसंश
यस्यानिराकृतत्वात्गर्भःप्रत्यङ्गैःनिरन्तरंनिःशूलंस्पन्दतेगुल्मश्चैतद्विपरीतइति । किञ्च
नवमेदशमेप्रसूयतइत्युत्सर्गोनतुनियमः। तदधिककालेऽपिप्रसवदर्शनादागमाच्च। यत
आहचरकः। तंस्त्रीप्रसूतेसुचिरेणगर्भंपुष्टंयदावर्षगणैरपिस्यात्॥ तस्मान्मासेऽयतीतेदश
मेचिकित्स्यइतिनसंशयव्यवच्छेदार्थंकिन्तुतदासुखेनचिकित्सार्थंयतउक्तम्। रक्तगुल्मेपु
राणत्वंसुखसाध्यस्यलक्षणम्॥ पुराणताचास्यदशमासातिक्रमेणैवभवति। जैय्यटेनाप्यु
क्तम्। दशमासोपरिपिण्डितेगुल्मेस्नेहादिनोपस्कृतेदेहाद्येनगर्भाशयक्षतिमादधातिरक्त
भेदनमिति॥ ७७॥

ऋतुसम्बन्धी रुधिरसे उत्पन्न हुए गुल्मका वर्णन॥

नवप्रसूता (प्रसवके अन्तमें जिसकी अग्नि, बल, वर्ण तथा मांस स्वाभाविक न रहैं) आम गर्भ प्रसवा (नवें महीने के पहले जिसका गर्भ गिरपडे) और ऋतुमती स्त्री जो कुपथ्य भोजन करे तो वायु उसके रुधिरको लेकर गर्भाशयमें दाह तथा पीडासहित गुल्म को उत्पन्न करती है इसमें पित्तजगुल्मके से लक्षण होते हैं और विशेषता आगे कहते हैं जैसे कि ऋतुसम्बन्धी रक्तजगुल्म में गर्भके सम्पूर्ण लक्षण होते हैं अर्थात् ऋतु समय में ऋतुका न होना मुखका पीलापन स्तनों के अग्रभागमें कालापन तथा दोहद आदि सम्पूर्ण लक्षण होते हैं परन्तु जैसे गर्भ हाथ पैर आदिक अंगों को चलाताहै उसी प्रकार रक्तजगुल्म हाथ पैरों के चलानेसे रहित होकर शूलसहित देरमें फडकताहै यह रोग स्त्रियों के होताहै और दशवें महीनेके उपरान्त इसकी चिकित्सा करनी चाहिये यहां पहले कहेहुए अहितआहार से अहितविहारका भी ग्रहण होताहै क्योंकि चरकने कहाहै कि ऋतुकाल में उपवास, भय, रूखीवस्तु, वेगोंका रोकना, स्तंभन, उल्लेखन और योनिदोष इन सब कारणों से स्त्रियों के रक्तजगुल्म उत्पन्न होताहै यहां दशवें महीने के व्यतीत होजाने पर इसकी चिकित्सा करनी चाहिये इसमें किसीका मत यहहै कि नवां और दशवां महीना प्रसवका समयहै इसलिये इनके बीतने पर चिकित्सा करनी चाहिये परन्तु यह ठीक नहीं है क्योंकि हाथ पैरों के फडकनेसे रहित इत्यादि कहनेही से सन्देह दूरकर दियागयाहै और नवें तथा दशवें महीने में प्रसव होताहै यह स्वभाव है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नियम नहींहै क्यो[illegible]धिक [illegible]र्तुगमनं[illegible]का होना देखा[illegible]तहै[illegible] [illegible]ोंकि चरकने [illegible] होजाने पर वर्षोंके उपरान्त[illegible] [illegible]रतीहै [illegible]लिये दशवें महीने [illegible] [illegible]ाहिये यह सन्दे[illegible] दूरकरने को नहीं कहाहै किन्तु सुखपूर्व[illegible] [illegible]ती है [illegible] [illegible]हागयाहै कि रक्तगुल्मका पुराना- पन सुखसाध्य होनेका लक्षणहै और इ[illegible] [illegible] ४० ॥ [illegible]ानेके उपरान्त होताहै और जैय्यट नेभी कहाहै कि दश महीनेके उपरान्त गोलेके [illegible] बलातुर[illegible]जाने पर स्नेह आदिसे युक्त शरीर वाली स्त्री [illegible] रुधिर निकलवाना गर्भाशय में कोई हानि नहीं पहुँचाताहै ॥ ७७ ॥

अथासाध्यलक्षणमाह ॥

महारुजादाहपरीतमश्मवद्घनोन्नतंशीघ्रविदाहिदारुणम् । मनःशरीराग्निबलाप हारिणंत्रिदोषजंगुल्ममसाध्यमादिशेत् ॥ दाहपरीतंदाहेनव्याप्तंसकलदेहम् । शीघ्रविदा हिशीघ्रविदग्धाजीर्णकरम् ॥ दारुणंमारकम् । मनोपहारिणंमनोवैकृत्यकारकम् ॥ शरीरा ग्निबलापहारिणंशरीरस्यकार्श्यकरम् ॥ ७८ ॥

असाध्य गुल्म के लक्षण ॥

जो गुल्म. पत्थरके समान कठिन तथा ऊंचा और वेदना तथा दाहसे युक्त होय और शीघ्रही विदग्धाजीर्ण, मनकी व्याकुलता, शरीरकी कृशता, अग्निकी विषमता तथा बलका नाश उत्पन्न करे उस त्रिदोषज प्राणनाशक गुल्मको असाध्य कहते हैं ॥ ७८ ॥

अपरमसाध्यलक्षणमाह ॥

सञ्चितःक्रमशोगुल्मोमहावास्तुपरिग्रहः । कृतःशूलःशिरानद्धोयदाकूर्मइवोन्नतः ॥ दौर्बल्यारुचिहृल्लासकासच्छर्द्यरतिज्वरैः । तृष्णातन्द्राप्रतिश्यायैर्युज्यतेनससिद्ध्यति ॥ महावास्तुपरिग्रहःव्यापकतयाबृहत्स्थलंगृह्णातियुज्यतेयुक्तोभवति । अपरञ्च ॥ गृही त्वासज्वरश्वासंछर्द्यतीसारपीडितम् । हृन्नाभिहस्तपादेषुशोफःकर्षतिगुल्मिनम् ॥ कर्षति मारणायकर्षति । अपरञ्च । श्वासःशूलंपिपासान्नविद्वेषोग्रन्थिमूढता ॥ जायतेदुर्बलत्व ञ्चगुल्मिनोमरणायवै । ग्रन्थिमूढताग्रन्थिरूपस्यगुल्मस्याकस्माद्विलयनम् ॥ ७९ ॥

अन्य असाध्य लक्षण ॥

क्रमसे इकट्ठाहुआ बड़े स्थानका घेरनेवाला, शूलयुक्त, शिराओंसे बंधाहुआ, कछुएके समान उन्नत और दुर्बलता, अरुचि, मतली, खांसी, छर्दि, बेचैनी, ज्वर, तृषा, तन्द्रा तथा पीनससे युक्त गुल्म असाध्य होताहै जिस गुल्मवालेको ज्वर, श्वास, छर्दि, अतीसार और हृदय, नाभि, हाथ तथा पैरोंमें सूजन होय वह नहीं जीता श्वास, शूल, तृषा, अन्नमें अनिच्छा, ग्रन्थिरूप गुल्मका एकाएकी लुप्त होजाना और दुर्बलता यह सब लक्षण मरनेवाले गुल्मरोगीके होतेहैं ॥ ७९ ॥

तत्र गुल्मस्यचिकित्सामाह ॥

वातारितैलेनपयोयुतेनपथ्यासमेतेनविरेचनंहि । संस्वेदनंस्निग्धमतिप्रशस्तंप्रभञ्ज नक्रोधकृतेचगुल्मे ॥ स्वर्जिजकाकुष्ठसहितःक्षारःकेतकसम्भवः । पीतस्तैलेनशमयेद्गु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...रिणाम शूल...

...रांश्चमयूरां... ...शालीप्रसन्नाः

वातगुल्म... पित्त... ...वीरकाम्रसिता

कम्पिल्यंवासमाक्षिकम् ॥ त्रि... ॥ २७ ॥ ...हो...कंकपिलाइतिलोके

अभयांद्राक्षयाखादेत्पित्तगुल्म... में सुखावे फिर उन... गुल्मनाक्तैःश्लेष्मगुल्ममुपाचरेत्।

अपरैश्चबलासघ्नैर्युक्तियुक्तैःशमे चलहेपर रखकर...

गुल्म (गोला) की चिकित्सा ॥

वातजगुल्ममें रेंडीका तेल तथा दूध सहित हडको पीकर विरेचन करना चाहिये और स्निग्ध स्वेदभी इसमें बहुत हितहै सज्जी, कूट और केतकीकी जडका खार इन सबको रेंडीके तेलके साथ पीने से वातजगुल्म नष्ट होताहै वातजगुल्मवालेको तीतर, मोर, मुर्गा, क्रौंच तथा बत्तक इन सबके मांसका रस, घी, शालि धान्य और शर्बत यह सब भोजनके लिये देना चाहिये पित्तके गुल्ममें दस्तोंके लिये त्रिफलाके काढ़ेके साथ निसोथका चूर्ण अथवा शहद और शक्करके साथ कबीलेका चूर्ण ग्रहण करना चाहिये दाख अथवा गुडके साथ हड खाने से पित्तके गुल्मका नाशहोताहै वात के गुल्ममें जो योग कहेगयेहैं और अन्य कफनाशक युक्तिवाले योगों के द्वारा कफजगुल्मकी चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ८० ॥

हिंगुग्रन्थिकधान्यजीरकवचाचव्याग्निपाठाशटीवृक्षाम्लंलवणत्रयंत्रिकटुकंक्षारद्वयंदाडिमम्। पथ्यापौष्करवेतसाम्लहवुषाजाज्यस्तदेभिःकृतंचूर्णंभावितमेतदार्द्रकरसैःस्याद्बीजपूरद्रवैः ॥ गुल्माध्मानगुदांकुरान्ग्रहणिकोदावर्त्तसंज्ञौगदौप्रत्याध्मानगरोदराश्मरियुतांस्तूनीद्वयारोचकान् । ऊरुस्तम्भमतिभ्रमञ्चमनसोबाधिर्य्यमष्ठीलिकांप्रत्यष्ठीलिकया सहापहरतेप्राक्पीतमुष्णाम्बुना ॥ हृत्कुक्षिवङ्क्षणकटीजठरान्तरेषुवस्तिस्तनांसफलकेषुचपार्श्वयोश्च । शूलानिनाशयतिवातबलासजानिहिंग्वाद्यमाद्यमिदमाश्विनसंहितोक्तम् ॥ इति हिंग्वाद्यंचूर्णम् ॥ ८१ ॥

हींग, पीपलामूल, धनियां, जीरा, बच, चव्य, चीता, पाठा, कचूर, अमलवेत, समुद्रनोन, विट्नोन सेंधानोन, त्रिकटु, जवाखार, सज्जी, अनार, हड, पुष्करमूल, कैथा, हाऊबेर और कालीजीरी इनसब औषधियोंको बराबर लेके महीन पीस अदरक और बिजौरा नींबूके रसमें सात २ पुट देवे प्रातःकाल गरम जलके साथ इसके सेवनसे गुल्म, आध्मान, बवासीर, ग्रहणी, उदावर्त्त, प्रत्याध्मान, गरदोष, उदर, पथरी, तूनी, प्रतितूनी, अरुचि, ऊरुस्तम्भ, मतिभ्रम, बधिरता, अष्ठीला, प्रत्यष्ठीला और हृदय, कोख, वंक्षण, कटि, उदर, वस्ति, स्तन, कन्धे तथा पसलियोंमें होनेवाले वात कफज शूल यह सब नष्ट होतेहैं ॥ इति हिंग्वादिचूर्ण ॥ ८१ ॥

धीमानुपचरेद्गुल्मंप्रत्येकञ्चत्रिदोषजम् । सन्निपातोत्थितेगुल्मेत्रिदोषघ्नोविधिर्हितः ८२

बुद्धिमान् वैद्य वातज आदि गुल्मोंमें जो चिकित्सा कहीगईहै वही सम्पूर्ण चिकित्सा त्रिदोषज गुल्ममें भी करे ॥ ८२ ॥

शरफुङ्खात्रिलवणंपथ्याचूर्णंसमंद्वयम् । शाणप्रमाणमश्नीयाच्चूर्णंगुल्मगदापहम् ॥ स्वर्जिकाशाणमानास्यात्तावदेवगुडंभवेत् । उभयोर्वटिकांखादेत्गुल्मामयविनाशिनीम् ॥ प

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लाशवन्त्रिशिख ... तिल ... त्वमनं ःस्वर्जिकाचे ... तद् ... गुल्महराःक्षा ... ष्क्काः । इति क्षाराष्टकम् ॥

सर्फोंकाके क्षारका ... लेकर ३ माशे रो खाने से अथवा सज्जी ३ माशे और उतना ... गुल्मका नाश होताहै ढाक,थूहर, लज्जीरा, इमली, आक तथा तिलकंडी ... र और सज्जी यहक्षाराष्टक कहलाताहै इसके द्वारा गुल्मका नाश और अजीर्ण ... बलातुर ... इति क्षाराष्टक ॥ ८३ ॥

सामुद्रंसैन्धवंकाचंयवक्षारःसुवर्चलम् । टङ्कणंस्वर्जिकाक्षारंतुल्यंचूर्णंप्रकल्पयेत् ॥ वज्रीक्षीरेरविक्षीरैरातपेभावयेत्त्र्यहम् । वेष्टयेदर्कपत्रेणरुध्वाभाण्डेपुनःपचेत् ॥ तत्क्षारं चूर्णयेत्पश्चात्त्र्यूषणंत्रिफलातथा । यवानीजीरकोवह्निश्चूर्णमेषाञ्चकारयेत् ॥ सर्वचूर्णसमंक्षारंसर्वमेकत्रकारयेत् । तच्चूर्णटङ्कयुगलंसलिलेनप्रयोजयेत् ॥ गुल्मेशूलेतथाजीर्णे शोथेसर्वोदरेषुच । मन्देवह्नावुदावर्तेप्लीह्निचापिपरंहितम् ॥ वातेऽधिकेजलैःकोष्णैर्हितं पित्तेऽधिकेघृते । गोमूत्रेणकफाधिक्येकाञ्जिकेनत्रिदोषजे ॥ वज्रक्षारइतिख्यातःप्रोक्तः पूर्वंस्वयम्भुवा । सेवितोहरतेजीर्णंतथाजीर्णभवान्गदान् ॥ इति वज्रक्षारः ॥ ८४ ॥

सामुद्रनोन, सेंधानोन, कचनोन, जवाखार, कालानोन, सुहागा, सज्जी इनसबको बराबर लेकर थूहर तथा आकके दूधमें तीन २ दिन भावना देके धूपमें सुखावे फिर आकके पत्तोंमें उसको बांधके किसी पात्रमें रख पात्रके मुखको बन्दकरके फिर अग्निपर पकावे इसके उपरान्त इस क्षारको निकालके पीसकर त्रिकटु, त्रिफला, अजवाइन, जीरा तथा चीता इन सबके चूर्ण के बराबर उस क्षार को मिलाके ६ माशे चूर्ण जलके साथ नित्य खाय इसके द्वारा गुल्म, शूल, अजीर्ण, सूजन, सब प्रकार के उदर, मन्दाग्नि, उदावर्त्त तथा प्लीहाका नाश होताहै इस चूर्ण को अधिक वातवाले रोगमें कुछ गरम जलके साथ, अधिक पित्तवाले रोग में घीके साथ, अधिक कफवाले रोगमें गोमूत्रके साथ और सन्निपातज रोग में कांजीके साथ सेवनकरे यह पूर्वकालमें ब्रह्माजीने कहाहै इसके सेवनसे अजीर्ण तथा अजीर्ण से उत्पन्न हुए रोग नष्ट होते हैं ॥ इति वज्रक्षार ॥ ८४ ॥

सुवर्चिकाटङ्कमितातत्समानार्द्रिकापिच । उभेभुञ्जीतयुगपद्गुल्मामयनिवृत्तये ॥ सुवर्चिकासोराइतिलोके ॥ गुल्मीकुमारिकामांसंकर्षार्द्धंघृतान्वितम् । शुक्तिचूर्णस्यगुटिकाटङ्कमात्रासवेष्टयेत् ॥ गुडेनशाणमानेनतांलिहेद्गुल्मरोगवान् । लिहेद्व्योषाभयासिन्धुसूक्ष्मचूर्णावधूलितम् ॥ कुमारिकाघिउकुवारि इति लोके ॥ ८५ ॥

शोरा, अदरक इन दोनोंको तीन २ माशे लेकर एकसाथ खानेसे घीग्वारके ६ माशे गूदेको गौकेघीके साथ खानेसे और सीपके चूर्णकी ३ माशे भरकी गोली तीनमाशे गुडके साथ चाटनेसे अथवा त्रिकटु, हड तथा सेंधेनोन में लपेटकर खानेसे गुल्मरोगका नाश होताहै ॥ ८५ ॥

वल्लूरमूलकंमत्स्यंशुष्कशाकानिवैदलम् । नखादेदालुकंगुल्मीमधुराणिफलानिच ॥ वैदलानांनिषेधेऽपिमाषकुलत्थयोर्नात्रनिषेध इति सुश्रुतटीका ॥ ८६ ॥

सूखामांस, मूली, मछली, रूखाशाक, उर्द तथा कुलथी को छोडकर सब दाल, आलू और मधुर फल इनसबको गुल्मरोगवाला त्याग करदेवे ॥ ८६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ रक्तगु[illegible]रिणाम [illegible] ॥

[illegible]बीज्यंस्नेहविरेचनम्। श[illegible]रुभार्गीक
वः ॥ कल्कः[illegible]जयेद्गुल्मंतिल[illegible]हा[illegible] [illegible]घृनभार्गीयुतोभ
त॥ योनिरक्तभवेगुल्मेनष्टपुष्पे[illegible] २७ ॥ [illegible]भारचैश्चास्रगुल्मनुत् ॥
सुररोचनिकाचूर्णशर्करामाक्षिकाः [illegible]शुगुल्मिन्यामलसञ्चक्रमेणच ॥ वि
शेषमपरञ्चाप्सुश्टणुरक्तप्रभेदनम् [illegible]क्षारतोयेनसर्पिःसिद्धंपिबेच्चसा[illegible]। यस्मिन्नच
रसक्षीरतोयसाध्यरसादिषु। सक्षारंत्र्यूषणंसर्पिःप्रपिबेदस्रगु[illegible]नी ॥ फेनोद्गारस्यनिष्प
त्तिर्मिष्टदुग्धसमाकृतेः। सएवतस्यपाकस्यकालोनेतरलक्षणः ॥ इति गुल्मनिदानचिकि
त्साधिकारः ॥ ८७ ॥

रक्तगुल्मकी चिकि[illegible] ॥

रक्तगुल्ममें स्निग्ध स्वेद देकर स्निग्ध विरेचन देना चाहिये सौंफ, करंजुआ, तज, देवदारु, भारंगी तथा पीपल इन सबको पीसकर तिलके काढ़े के साथ पीनेसे तिलके काढ़ेमें गुड, त्रिकटु, घी तथा भारंगी डालकर पीने से रक्तजगुल्म और ऋतुकाल में रुधिरका बन्द होजाना यह दोनों नष्ट होते हैं मिर्चयुक्त आमलेका रस पीनेसे गुल्मका नाश होताहै रक्तगुल्म में सुररोचनके चूर्णको शहद और घी के साथ खाय ढाकके क्षारके जलके साथ घीको पाककरके पीनेसे रक्तगुल्मका रुधिर बहजाता है जवाखार, त्रिकटु और घीको एकसाथ पीने से रक्तगुल्म नष्ट होताहै ॥ इति गुल्मनिदान चिकित्सा-धिकार समाप्त ॥ ८७ ॥

अथ प्लीहाधिकारः। तत्र प्लीह्नःशरीरावयवविशेषस्यस्वरूपमाह ॥

शोणिताज्जायतेप्लीहावामतोहृदयादधः। रक्तवाहिशिराणांसमूलंख्यातोमहर्षिभिः ८८ ॥

प्लीहाका अधिकार। शरीरके अंगविशेष प्लीहाका स्वरूप ॥

बाईंओर हृदयके नीचे रुधिरसे प्लीहा (तिल्ली) उत्पन्न होतीहै इसको रुधिरकी लेचलनेवाली शिराओंका मूल महर्षिलोग कहते हैं ॥ ८८ ॥

अथ प्लीहरोगस्यनिदानसम्प्राप्तिपूर्वकंलक्षणमाह ॥

विदाह्यभिष्यन्दिरतस्यजन्तोःप्रदुष्टमत्यर्थमसृक्कफश्च । प्लीहाभिवृद्धिंकुरुतःप्रवृद्धौ तंप्लीहसंज्ञंगदमामनन्ति ॥ वामेसपार्श्वेपरिवृद्धिमेतिविशेषतःसीदतिचातुरोऽत्र । मन्द ज्वराग्निःकफपित्तलिंगैरुपद्रुतःक्षीणबलोऽपिपाण्डुः ॥ विदाहिकुलत्थमाषसर्षपशाका दि। अभिष्यन्दिमाहिषंदध्यादिकफपित्तलिंगैरुपद्रुतइत्यर्थः ॥ प्रदुष्टमत्यर्थमसृक्कफश्चे तिसम्प्राप्तेःअसृजःपित्तस्यचसमानधर्म्मत्वात् ॥ ८९ ॥

प्लीहारोगका निदान और संप्राप्तिपूर्वक लक्षण ॥

विदाही (कुलथी तथा सरसोंका शाकआदि) तथा अभिष्यन्दी (भैंसका दहीआदि) वस्तुके सेवन करनेवाले मनुष्यके रुधिर तथा कफ अत्यन्त दूषित होकर प्लीहाको बढ़ाते हैं इसीको (तिल्ली) कहते हैं बाईं कोखिमें प्लीहा बढ़तीहै इसरोगमें शरीरका पीलापन तथा शिथिलता, अल्पज्वर, मन्दाग्नि, बलकी क्षीणता और पित्तके उपद्रव उत्पन्न होते हैं ॥ ८९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...त्तमन...ाह।

...मोभ्रमौ... ...रवम्॥ मोहोरक्तोदरत्व... ...॥९०॥

...फज... ...कत... होती है

रक्तजप्लीहा में ग्लानि, भ्र... ...पन, मोह और उदरकी रक्तता यह सब लक्षण होते हैं॥ ९०॥

अ... ...ाह॥

सज्वरःसपिपासश्चसदाहोमोहसंयुतः॥ ...लातुरःविशेषेणप्लीहापैत्तिकउच्यते॥९१॥

पित्तजप्लीहा के लक्षण॥

पित्तजप्लीहा में ज्वर, तृषा, दाह, मोह और शरीरका पीलापन यह सब लक्षण होतेहैं॥ ९१॥

अथ श्लैष्मिकलक्षणमाह॥

प्लीहामन्दव्यथास्थूलःकठिनोगौरवान्वितः॥ अरोचकेनसंयुक्तःप्लीहाकफजउच्यते९२॥

कफजप्लीहा के लक्षण॥

कफज प्लीहा. कुछ पीडायुक्त, स्थूल, कडी तथा भारी होतीहै और इसमें रोगीको अरुचि होती है९२॥

अथ वातिकमाह॥

नित्यमानद्धकोष्ठःस्यान्नित्योदावर्त्तपीडितः। वेदनाभिःपरीतश्चप्लीहावातिकउच्यते९३॥

वातजप्लीहाके लक्षण॥

वातजप्लीहामें सदैव मलका रुकना, उदावर्त्त और पीडा यह लक्षण होतेहैं॥ ९३॥

अथ तमसाध्यमाह॥

दोषत्रितयरूपाणिप्लीहासाध्येभवन्त्यपि॥ ९४॥

असाध्य प्लीहाके लक्षण॥

तीनों दोषोंके लक्षणोंसे युक्त प्लीहा असाध्य होती है॥ ९४॥

अथ शरीरावयवविशेषस्ययकृत्प्लीहस्वरूपमाह॥

अधोदक्षिणतश्चापिहृदयाद्यकृतःस्थितिः।तत्तुरञ्जकपित्तस्यस्थानंशोणितजम्मतम्९५

शरीर के अंग विशेष यकृत् प्लीहाका स्वरूप॥

दाहिने ओर हृदय के नीचे यकृत् स्थितहै और वह रञ्जकपित्त का स्थान है तथा रुधिर से उत्पन्न होती है॥ ९५॥

अथ यकृद्रोगमाह॥

प्लीहामयस्यहेत्वादिसमस्तंयकृदामये। किन्तुस्थितिस्तयोर्ज्ञेयावामदक्षिणपार्श्वयोः९६॥

यकृद् रोगका लक्षण॥

प्लीहा तथा यकृत् इनदोनों के हेतु आदिक समानहैं परन्तु भेद यही है कि प्लीहा बाईं ओर और यकृत् दाहिनी ओर होती है॥ ९६॥

अथ प्लीहाधिकारेचिकित्सामाह॥

पातव्योयुक्तितःक्षारःक्षीरेणोदधिशुक्तिजः। तथादुग्धेनपातव्याःपिप्पल्यःप्लीहशान्तये॥ पातव्योयुक्तितःक्षारःक्षीरेणोदधिशुक्तिजः। तथादुग्धेनपातव्याःपिप्पल्यःप्लीहशान्तये॥ हिंगुः अर्कपत्रंसलवणंपुटदग्धंसुचूर्णितम्। निहन्तिमस्तुनापीतंप्लीहानमतिदारुणम्॥ हिंगुः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

नि[illegible]वम् । मातुलुं[illegible]रिणाम शूल[illegible]लह[illegible]लाशक्षारतोये नापण्[illegible]ह्लीहगुलमार्तिशमनाव[illegible]जम्बीरफ[illegible] शङ्खनाभीरजः[illegible]तमवश्यमेव । [illegible]महाशूलि[illegible]समानमांशु ॥ [illegible] पुङ्खमूलकल्कस्तक्रेणालोडितः [illegible] २७ ॥ [illegible]तदाजलेप्लवते ॥ सुपक्कस हकारस्यरसः क्षौद्रसमन्वितः। पीतः [illegible]नहसंशयः॥ सुस्विन्नंशाल्मलीपुष्पं निशापर्य्युषितंनरः। राजिकाचूर्णसं[illegible]प्लीहोपशान्तये ॥ यवानिकाचित्रकृयावशूक षड्ग्रन्थिदन्तीमगधोद्भवानाम्। चूर्णंहरेत्प्लीहगदंनिपीतमुष्ण[illegible]मस्तुरसासवैर्वा ९७॥

प्लीहाकी चिकित्सा ॥

प्लीहारोगकी शान्तिके लिये समुद्रकी सीपीकी भस्म अथवा पीपल का चूर्ण दूधके साथ पीना चाहिये नोनसमेत आकके पत्तोंको पुटपाकमें जलाकर चूर्णकरके दही के तोडके साथ पीने से भयंकर प्लीहाका भी नाश होताहै. हींग, त्रिकटु, कूट, जवाखार तथा सेंधानोन इन सबके चूर्णको बिजौरा नींबू के रसकेसाथ पीनेसे प्लीहाके शूलका नाश होताहै. ढाकके क्षारके जल के द्वारा भावना दीहुई पीपलके सेवनसे प्लीहा, गुल्म तथा मन्दाग्नि का नाश होताहै. जम्भीरी नींबूके रसके साथ ३ माशे शंखनाभिका चूर्ण पीनेसे कछुए कीसी प्लीहाका नाशहोताहै. सरफोंकेकी जडको पीसकर मट्ठेमेंघोल कर पीनेसे जो प्लीहाका नाश न होय तो जानना चाहिये कि पत्थर भी जलमें तैरताहै बहुत पकेहुए आमके रसमें शहद डालकर पीनेसे निस्सन्देह प्लीहाका नाश होताहै. खूब उबाले हुए शाल्मली के फूल को रातभर रखके राईके चूर्णके साथ खानेसे प्लीहाका नाशहोताहै अजवाइन, चीता, जवाखार, पीपलामूल, दन्ती और पीपल इनके चूर्णको गरमजल, दही का तोड, मांसकारस अथवा आसवके साथ अनुपान करने से प्लीहा नष्ट होती है ॥ ९७ ॥

अथ यकृद्रोगचिकित्सामाह ॥

प्लीहोद्दिष्टाः क्रियाः सर्व्वायकृद्रोगेसमाचरेत् । कार्य्यञ्चदक्षिणेबाहौतत्रशोणितमोक्षणम् ॥ क्षारंविडङ्गंकृष्णाभ्यांपूतीकस्याम्बुनिःश्रृतम् । पिबेत्प्रातर्यथावह्नियकृत्प्लीहप्रशान्तये ॥ पूतीकःकरञ्जः इतिप्लीहयकृदधिकारः ॥ ९८ ॥

यकृत् की चिकित्सा ॥

यकृत् रोगमें संपूर्ण चिकित्सा प्लीहाके समान करनी चाहिये और दाहिने हाथकी फस्त खुलवाना चाहिये जवाखार, बायविडंग, पीपल और करंजुआ इनके काढेको अग्निके अनुसार प्रातःकाल पीने से यकृत् और प्लीहाका नाश होताहै इति प्लीहयकृदधिकार समाप्त ॥ ९८ ॥

अथ हृद्रोगाधिकारःतत्रहृद्रोगस्यविप्रकृष्टनिदानमाह ॥

अत्युष्णगुर्व्वम्लकषायतिक्तश्रमाभिघाताध्यशनप्रसंगैः । सञ्चिन्तनैर्वेगविधारणैश्च हृदामयः पञ्चविधः प्रदिष्टः ॥ प्रसंगः सततंसेवा । सञ्चिन्तनम् । अतिचिन्ता । राजभयादिकमितियावत् । हृदामयः सपञ्चविधः । वातिकः पैत्तिकः श्लैष्मिकः सन्निपातिकः कृमिजश्चेति ॥ ९९ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...के रोगों ... द्रोगके दू...

अत्यन्त उष्ण ... वस्तु, श्रम, चो... और ... रोगोंका रोकना ... कफज ... त्रिपात ... यह पांचप्रकारका हृद्रोग उत्पन्न होता ... कृमिज ... ती है अणमाह ॥

दूषयित्वारसंदोषाविगुणा ... ४० ॥ ... कुर्वन्तिहृद्रोगंतंप्रचक्षते॥विगुणाः दुष्टाःबाधांदोषभेदेननानाविधांतथा ... बलातुरवाधामितिगयादासः ॥ १०० ॥

हृद्रोगका संप्राप्तिपूर्वक लक्षण ॥

दूषित दोष हृदयमें जाकर रसको दूषित करके हृदयमें अनेक प्रकारकी पीडाको उत्पन्न करते हैं इसको हृद्रोग कहते हैं ॥ १०० ॥

अथ वातिकंहृद्रोगमाह ॥

आयम्यतेमारुतजेहृदयन्तुद्यतेतथा। निर्मथ्यतेदीर्य्यतेचस्फोट्यतेपाट्यतेऽपिवा ॥ मारुतजेहृद्रोगइतिशेषः। आयम्यतेऽव्यथयाविस्तार्य्यतेइव। तुद्यतेसूचीभिरिवविद्ध्यते निर्मथ्यतेमन्थनेनेवदीर्य्यतेकरपत्रेणद्विधाक्रियतइवस्फोट्यतेअस्त्रेणेवपाट्यतेकुठारेणेव द्विधाक्रियतइव ॥ १०१ ॥

वातजहृद्रोगके लक्षण ॥

वातजहृद्रोग में हृदय में खैंचने कीसी और सुई गडने कीसी डंडे से मथने कीसी फाडने कीसी आंतोंसे तोडने कीसी और कुठार से टुकडे २ करने कीसी पीडा होतीहै ॥ १०१ ॥

अथ पैत्तिकमाह ॥

तृष्णोष्णदाहचोषाःस्युःपैत्तिकेहृदयेक्लमः।धूमायनञ्चमूर्च्छाचस्वेदःशोषोमुखस्यच॥ उष्णशीतमात्रस्यैवशीतवाताभिलाषहेतुः किञ्चिदन्तरौष्णदाहःपार्श्वस्थेनवह्निनेवदुः खहेतुर्गात्रस्यसन्तापः। चोषःचूषणेनेवपीडा।हृदयेक्लमःहृदयाकुलत्वंग्लानिवदित्यर्थः। धूमायनंकण्ठाद्धूमनिर्गमःक्लेदःकिञ्चिद्दुर्गन्धःशटितइव ॥ १०२ ॥

पित्तजहृद्रोगका लक्षण ॥

पित्तजहृद्रोगमें तृषा, भीतर कुछ ऊष्मा, दाह, चूसने कीसी पीडा, हृदय में व्याकुलता, गले से धुआं निकलना, मूर्च्छा, स्वेद और मुखका सूखना यह सब लक्षण होते हैं ॥ १०२ ॥

अथ श्लैष्मिकमाह ॥

गौरवंकफसंस्रावोऽरुचिस्तम्भोऽग्निमार्दवम्। माधुर्य्यमपिचास्यस्यबलासावनतेहृदि ॥ बलासावततेहृदिकुपितकफव्याप्तेगौरवंहृदयस्य। स्तम्भोजडता मार्दवंजलप्लुतमिवमाधुर्यंमुखे ॥ १०३ ॥

कफजहृद्रोगके लक्षण ॥

कफजहृद्रोगमें दूषित कफ के व्याप्त होने के कारण हृदय का भारीपन, कफ निकलना, अरुचि, जडता, मन्दाग्नि और मुखका मीठापन यह लक्षण होतेहैं ॥ १०३ ॥

अथ त्रिदोषजमाह ॥

विद्यात्त्रिदोषमप्येवंसर्वलिंगहृदामयम् ॥ १०४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रिदोषजहृद्रो[illegible]रिणाम शूल [illegible]

[illegible] तीनों दोषों के मिलहुए [illegible]

[illegible]

[illegible]महीशूलि[illegible]

अत्रक्रमयोजायन्तेअस्मिन्निति॥ २७॥ [illegible] कृष्टनिदानपूर्विकां संप्राप्तिमाह ॥ त्रिदोषहेतुहृद्रोगेयो[illegible] [illegible]रगुडादींश्चग्रन्थिस्तस्योप. जायते ॥ मर्मैकदेशेसंक्लेदंरसश्चाप्यु[illegible] [illegible]क्लेदात्कृमयश्चास्यपतन्त्युपहतात्मनः ॥ मर्मैकदेशेहृदयैकदेशेसंक्लेदंशाटितत्वं रसउपगच्छति । संक्लेदात्रसस्यशाटितत्वादुपहतात्मनः । तिलाद्यहिताहारेण ॥ १०५ ॥

कृमिजहृद्रोग के दूरवाले कारण और संप्राप्ति ॥

जो दुर्बुद्धि मनुष्य त्रिदोषजहृद्रोग में तिल, दूध तथा गुड आदि वस्तुओं का सेवन करता है उसके हृदय के किसी स्थान में गांठ सी पडजाती है इसलिये भोजन का रस अन्य धातुओं में बदलने नहीं पाता और उसके बासी होजाने पर उसमें कीडे पडजाते हैं ॥ १०५ ॥

तस्यलक्षणमाह ॥

उत्क्लेदःष्ठीवनन्तोदःशूलंहृल्लासकस्तमः । अरुचिःश्यावनेत्रत्वंशोषश्चकृमिजेभवेत् ॥ उत्क्लेदःवमनमिवोपस्थितम् । शोषोयक्ष्मा ॥ १०६ ॥

कृमिजहृद्रोग के लक्षण ॥

कृमिजहृद्रोग में मतली, बहुत थूकना, सुई गडने कीसी पीडा, शूल, वमन होतीहुईसी मालूम होना, अन्धकार दीखना, अरुचि, नेत्रोंका धुमैलापन और यक्ष्मा यह लक्षण होते हैं ॥ १०६ ॥

अथ हृद्रोगस्योपद्रवानाह ॥

क्लोम्नःसादोभ्रमःशोषोज्ञेयास्तेषामुपद्रवाः । कृमिजेतुकृमीणांयेश्लैष्मिकानांहितेमताः ॥ क्लोम्नःपिपासास्थानस्यसादःशोषः । शोषोमुखस्य । तेषांहृद्रोगाणांक्रिमिजेतुहृद्रोगेश्लैष्मिकानांकृमीणाम् ॥ येउपद्रवाहृल्लासास्यश्रवणान्ताविपाकादयस्तेमताः १०७ ॥

हृद्रोग के उपद्रव ॥

क्लोम (पिपासाका स्थान) तथा मुखका सूखना भ्रम यह हृद्रोग के उपद्रव हैं कृमिजहृद्रोग में कफज कृमियों के जो मतली आदिक उपद्रव कहेगये हैं वह सब होते हैं ॥ १०७ ॥

अथ हृद्रोगस्य चिकित्सामाह ॥

घृतेनदुग्धेनगुडाम्भसावापिबन्तिचूर्णंककुभस्त्वचोये । हृद्रोगजीर्णज्वररक्तपित्तंहत्वाभवेयुश्चिरजीविनस्ते ॥ हरीतकीवचारास्नापिप्पलीनागरोद्भवम् । शटीपुष्करमूलोत्थंचूर्णंहृद्रोगनाशनम् ॥ पुटदग्धंहरिणशृङ्गंपिष्टंगव्येनसर्पिषापिबतः । हृत्पृष्ठशूलमचिरादुपैतिशान्तिंसुकष्टमपि ॥ तैलाज्यगुडविपक्वंचूर्णंगोधूमपार्थोत्थम् । पिबतिपयोभुक्सभवतिगतसकलहृदामयःपुरुषः ॥ पार्थःकोहइतिलोके ॥ गोधूमककुभचूर्णंपकमजाक्षीरग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तर्तं [illegible] १ ।

[illegible] मातुत्तमनं [illegible]

[illegible] र्भ्यामू । [illegible] हृद्रोगमुद्धतंपुंसाम् ॥ [illegible]

घृतंसर्वहृद्रामथ फज [illegible] पुष्क [illegible]

[illegible] पाकज वी [illegible] ती है [illegible]

[illegible] ४० ॥

अर्जुन वृक्षकी छालका चूर्ण, दूध, [illegible] थ पीने से हृद्रोग, जीर्णज्वर और रक्तपित्तका नाशकरके आयुकी वृद्धि होतीहै. [illegible] बलातुर [illegible] पिपल, सोंठ, कचूर और पुष्करमूल इन सबके चूर्णको खाने से हृद्रोग का नाश होताहै. हिरन के सींग को पुटपाक में जलाकर पीसकर गौके घीके साथ पीने से बहुत कठिन भी हृदय तथा पीठ की पीडा शीघ्रही नष्ट होती है गेहूं और अर्जुन वृक्षकी छाल के चूर्णको तेल, घी तथा गुड में पाक करके दूधके साथ पीने से संपूर्ण हृद्रोगोंका नाश होताहै गेहूं और अर्जुन वृक्षकी छालके चूर्णको बकरी के दूध और गौ के घीके साथ पाक करके शहद और शक्करके साथ खानेसे बहुत बढ़ाहुआ भी हृद्रोग शान्त होता है अर्जुन वृक्षके कल्क और रसके साथ पाककियाहुआ घी संपूर्ण हृद्रोगोंको नष्टकरताहै ॥ इति अर्जुनघृत ॥ १०८ ॥

घृतंबलानागबलार्जुनानांक्वाथेनकल्केनचयष्टिकायाः । सिद्धन्तुहन्याद्धृदयामयंहि सवातरक्तक्षतरक्तपित्तम् ॥ इति बलाद्यंघृतम् इति हृद्रोगनिदानचिकित्साधिकारः १०९ ॥

बला नागबला और अर्जुन के काढे के साथ मुलहठी के कल्क को डालकर पाककियाहुआ घी हृद्रोग, वातरक्त, क्षत और रक्तपित्त को नष्ट करता है इति बलादि घृत इति हृद्रोग चिकित्साधिकार समाप्त ॥ १०९ ॥

अथ मूत्रकृच्छ्राधिकारः ॥

तत्रमूत्रकृच्छ्रस्यविप्रकृष्टंनिदानमाह । व्यायामतीक्ष्णौषधरूक्षमद्यप्रसङ्गनृत्यद्रुतपृष्ठयानात् ॥ आनूपमत्स्याध्यशनादजीर्णात्स्युर्मूत्रकृच्छ्राणिनृणांतथाष्टौ । तीक्ष्णौषधंराजिकासूरणादिकयुक्तम् ॥ रूक्षेतिमद्यविशेषणम् । प्रसंगःसन्ततंसेवा ॥ नृत्यंनर्त्तनम् । निर्त्येतिद्वितीयःपाठः ॥ द्रुतपृष्ठयानात्अश्वादिनागमनात्आनूपंप्रचुरजलदेशसम्भवम स्यः अष्टौवातिकपैत्तिकश्लैष्मिकसान्निपातिकशल्यजपुरीषजशुक्रजाश्मरीजानि ११० ॥

मूत्रकृच्छ्रका अधिकार मूत्रकृच्छ्र के दूरवाले कारण ॥

व्यायाम, राई, जिमींकंद आदि, तीक्ष्ण औषध तथा रूखी मद्यका नित्य सेवन, नृत्य, घोडे आदि की सवारी, बहुत जलवाले देशकी मछली, अजीर्ण में भोजन और अजीर्ण इन सबकारणोंसे आठ प्रकार का मूत्रकृच्छ्र उत्पन्न होताहै वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, शल्यज, पुरीषज, शुक्रज और अश्मरीज यह आठ प्रकारहैं ॥ ११० ॥

अथ तस्यसंप्राप्तिपूर्वकं लक्षणमाह ॥

पृथङ्मलाःस्वैःकुपितानिदानैःसर्वेऽथवाकोपमुपेत्यवस्तौ । मूत्रस्यमार्गंपरिपीडयन्ति यदातदामूत्रयतीहकृच्छ्रात् ॥ १११ ॥

मूत्रकृच्छ्रका संप्राप्तिपूर्वक लक्षण ॥

अपने २ कारणों से वातादिक दोष अलग२ अथवा एकसाथ कुपित होकर वस्ति में जायँगे जब मूत्रद्वार को पीडित करते हैं तब बडेकष्ट से मूत्र उतरता है इसको मूत्रकृच्छ्र कहते हैं ॥ १११ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

[illegible] अथ वातज [illegible]

तीव्रा च रुग्वक्षण [illegible] तमेढ्रे [illegible] महंमू [illegible] आत्मिकाः वंक्षणो [illegible]
द्राणामभ्यन्तरालसन्धिः ॥ १। २७ ॥ [illegible]

वातजमूत्रकृच्छ्रमें वंक्षण (जंघमें सुखावे फिर उन [illegible] सन्धि) वस्ति तथा लिंगमें अत्यन्तपीडा होतीहै और वारंवार थोडा २ मूत्र [illegible] हेपर [illegible] २ ॥

अथ पैत्तिकमाह ॥

पीतंसरक्तंसरुजंसदाहंकृच्छ्रंमुहुर्मूत्रयतीहपित्तात् । कृच्छ्रमितिक्रियाविशेषणम् ॥११३॥

पित्तजमूत्रकृच्छ्रके लक्षण ॥

पित्तजमूत्रकृच्छ्र में दाह तथा पीडासहित पीला अथवा लाल वर्ण का मूत्र बहुत कष्टके साथ वारंवार आताहै ॥ ११३ ॥

अथ श्लैष्मिकमाह ॥

वस्तेःसलिंगस्यगुरुत्वशोथौमूत्रंसपिच्छंकफमूत्रकृच्छ्रे । सपिच्छम्पिच्छिलम् ॥ ११४॥

कफजमूत्रकृच्छ्रका लक्षण ॥

कफजमूत्रकृच्छ्रमें वस्ति तथा लिंग भारी तथा सूजनयुक्त होताहै और मूत्रसचिक्कण होताहै ११४॥

सान्निपातिकमाह ॥

सर्वाणिरूपाणितुसन्निपाताद्भवंतितत्कृच्छ्रतमंहिकृच्छ्रम् ॥ ११५ ॥

सन्निपातजमूत्रकृच्छ्रके लक्षण ॥

सन्निपातजमूत्रकृच्छ्रमें वातादि तीनोंदोषोंके संपूर्ण लक्षणहोतेहैं और यह अत्यन्त कष्टसाध्यहै ११५॥

अथ शल्यजमाह ॥

मूत्रवाहिषुशल्येनक्षतेष्वभिहतेषु च । मूत्रकृच्छ्रंतदाघाताज्जायतेभृशदारुणम् ॥ वातकृच्छ्रेणतुल्यानितस्यलिंगानिनिर्दिशेत् । मूत्रवाहिषुस्रोतःसुशल्येनकण्टकेनक्षनेषुमक्षतीकृतेषु । अथवा अभिहतेषुमुष्ट्यादिभिरभिहतेषुतदाघातात्मूत्रमार्गाघातात्ततकृच्छ्रं जायतेभृशदारुणंमारकम् ॥ तस्यशल्यजस्य ॥ ११६॥

शल्यजमूत्रकृच्छ्रके लक्षण ॥

कांटे आदि शल्यके द्वारा मूत्रकेलेचलनेवाले स्रोतोंके घायल और घूंसेआदिसे चुटहल होने पर अत्यन्त भयंकर मूत्रकृच्छ्र उत्पन्न होताहै इसके लक्षण वातजमूत्रकृच्छ्रकेसे होतेहैं ॥ ११६ ॥

अथ पुरीषजमाह ॥

शकृतस्तुप्रतीघाताद्वायुर्विगुणतांगतः।आध्मानंवातशूलञ्चमूत्रसंगन्धंकरोतिच११७॥

पुरीषजमूत्रकृच्छ्रके लक्षण ॥

मलके रोकनेसे वायुकुपित होकर अफरा वातशूल और मूत्रकृच्छ्रको उत्पन्न करताहै ॥ ११७॥

अथ शुक्रजमाह ॥

शुक्रदोषैरुपहतेमूत्रमार्गेविधारिते । सशुक्रंमूत्रयेत्कृच्छ्राद्वस्तिमेहनशूलवान् । उपहतेदूषिते ॥ ११८ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...मूत्रकृच्छ्रके लक्षण ॥

दोषोंसे दूषितवाय... फज ... पीड़ासहित मूत्र निकलताहै और वस्ति तथा लिंगमें पीड़ा होत... ...ती है ।

...४० ॥

अश्मरीहेतुकञ्चापि... बलातुरन्ततम् ॥ ११९ ॥

अश्मरीजमूत्रकृच्छ्रेका लक्षण ॥

पहले पथरीहोकर जो मूत्रकृच्छ्र होताहै उसको अश्मरीजमूत्रकृच्छ्र कहतेहैं ॥ ११९ ॥

सुश्रुते । शर्कराजमपिमूत्रकृच्छ्रमुक्तमत्रतुतस्यनवमसङ्ख्यानियमार्थमश्मरीशर्करयोः साम्यमाह । अश्मरीशर्कराचैवतुल्यसं...नवलक्षणे । विशेषणंशर्करायाःशृणुकीर्त्तयतोमम॥सम्भवःकारणं । पच्यमानाश्मरीपित्ताच्छोष्यमाणाचवायुना । विमुक्तकफसन्धानाक्षरंतीशर्करामता॥पित्तेनपच्यमानामूत्रशुक्रश्लेष्मसंहतिः॥प्रथमंपित्तेनइन्धनकर्म्मणापच्यमानापश्चाद्वातेनशोषिताकफेनाश्लिष्टाअश्मरीसैव । विमुक्तकफसन्धानात्त्यक्तकफाश्लेष्मासतीशर्करारूपामूत्रमार्गात्क्षरन्तीशर्करामताएतावताकिञ्चिदेवभेदः ॥ १२० ॥

सुश्रुतमें शर्कराजन्य मूत्रकृच्छ्रभी कहाहै और यहां तो उसकी नवीं संख्याके नियमकेलिये पथरी और शर्करा की समता कहते हैं पथरी और शर्करा इन दोनों के कारण और लक्षण एकप्रकारके हैं और विशेष यहहै कि मूत्र, वीर्य्य और कफ इनकीगांठ पित्तसे पाक कीगई वायु से सुखाई गई और कफसे मिलीहुई पथरी कहलातीहै और वही पथरी जब कफके बंधनसे छूटकर शर्करारूपसे मूत्र मार्गके द्वारा निकलतीहै तब शर्करा कहलातीहै यही इन दोनोंमें भेदहै ॥ १२० ॥

अथ शर्करायाउपद्रवानाह ॥

हृत्पीडावेपथुःशूलंकुक्षावग्निश्चदुर्बलः।नथाभवतिमूर्च्छाचमूत्रकृच्छ्रञ्चदारुणम् १२१॥

शर्कराके उपद्रव ॥

हृदय तथा कोखमें पीड़ा, कंप, मन्दाग्नि, मूर्च्छा और भयंकर मूत्रकृच्छ्र यह शर्कराके उपद्रवहैं १२१ ॥

अथ तस्यचिकित्सामाह ॥

अभ्यञ्जनस्नेहनिरूहवस्तिस्वेदोपनाहोत्तरवस्तिसेकान् । स्थिरादिभिर्वातहरैश्च सिद्धान्दद्याद्रसांश्चानिलमूत्रकृच्छ्रे ॥ अमृतानागरंधात्रीवाजिगन्धात्रिकण्टकैः । प्रपिबेद्वातरोगार्त्तःशूलवान्मूत्रकृच्छ्रवान् ॥ १२२ ॥

मूत्रकृच्छ्रकी चिकित्सा ॥

वातजमूत्रकृच्छ्रमें अभ्यंग, स्नेह, निरूहवस्ति, स्वेद, लेप, उत्तरवस्ति, परिषेक और शालिपर्णी आदि वातनाशक औषधियोंके काढ़ेदेनेचाहियें गिलोय, सोंठ, आमला, असगन्ध तथा गोखुरू इनसबके काढ़े के पीनेसे पीड़ासहित वातज मूत्रकृच्छ्र नष्ट होताहै ॥ १२२ ॥

पुनर्नवैरण्डशतावरीभिः...स्वरदृश्चीवबलाश्मभिद्भिः । द्विपञ्चमूलेनकुलत्थकेनयवैश्चतोयेत्क्वथितेकषाये॥ तैलंवराहर्क्षवसाघृतञ्चतैरेवकल्कैर्लवणैश्चसिद्धम् । तन्मा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रयात्र[illegible]वर्तमारुतमूत्रकृच्छ्रम्[illegible]कृच्छ्रम् ॥ १२३ ॥

पुनर्नवा, रेंडीकीजड, सतावर, [illegible] पाषाणभेद और सेंधानोन इन सबका कल्क दशमूल कुलथी [illegible] तेल शूकर तथा रीछकी चर्बी और घी इन सबको विधिपूर्व्वक पाककरके [illegible] पीने से शूलसहित वातजमूत्रकृच्छ्रका नाश होताहै इति पुनर्नवादि मिश्रक इति वातकृच्छ्र ॥ १२३ ॥

सेकावगाहाःशिशिराःप्रदेहाग्रैष्मोविधिर्वस्तिपयोविकाराः । द्राक्षाविदारीक्षुरसैर्घृतैश्चकृच्छ्रेषुपित्तप्रभवेषुकार्याः ॥ कुशःकाशःशरोदर्भइक्षुश्चेतितृणोद्भवम् । पित्तकृच्छ्रहरंपञ्चमूलंवस्तिविशोधनम् । इति तृणपञ्चमूलम् ॥ १२४ ॥

पित्तजमूत्रकृच्छ्र में शीतल सींचना, शीतल जल में स्नान, शीतल लेप, ग्रीष्मऋतुकी विधि वस्तिक्रिया, दही आदिक दूधके विकार, दाख, विदारीकन्द, ईखकारस और घी यह सब हितकारी हैं कुश, कास, सरकंडा, दर्भ और ईख इन सबकी जडके काढेको पीने से पित्तजमूत्रकृच्छ्रका नाश होताहै और मूत्राशय शुद्ध होताहै ॥ इति तृणपंचमूल ॥ १२४ ॥

शतावरीकाशकुशश्वदंष्ट्राविदारिशालीक्षुकसेरुकाणाम् । क्वाथंसुशीतंमधुशर्कराभ्यांयुक्तंपिबेत्पैत्तिकमूत्रकृच्छ्रे ॥ एर्वारुबीजंमधुकञ्चदार्व्वींपैत्तेपिबेत्तण्डुलधावनेन । दार्व्वींतथैवामलकीरसेनसमाक्षिकंपित्तकृतेतुकृच्छ्रे ॥ हरीतकीगोक्षुरराजवृक्षपाषाणभिद्धन्वयवासकानाम् । क्वाथंपिबेन्माक्षिकसंप्रयुक्तंकृच्छ्रेसदाहेसरुजंविबन्धे ॥ १२५ ॥

सतावर, कांस, कुश, गोखुरू, बिलारीकन्द, शालि धान्यकी जड, ईखकीजड और कसेरू इनके काढेको शीतल करके शहद और घी डालकर पीने से पित्तजमूत्रकृच्छ्र नष्ट होताहै ककडीके बीज, मुलहठी तथा दारुहल्दी इनका चूर्ण चावल के धोवनके साथ पीनेसे अथवा दारुहल्दी का चूर्ण तथा शहद डालकर आमलेका रस पीने से पित्तजमूत्रकृच्छ्र का नाश होताहै हड, गोखुरू, अमलतास, पाषाणभेद और जवासा इनके काढेमें शहद डालकर पीनेसे दाह पीडा तथा विबन्धसहित मूत्रकृच्छ्रका नाश होता है ॥ १२५ ॥

शतावरीकाशकुशश्वदंष्ट्राविदारिकेक्ष्वामलकेषुसिद्धम् । सर्पिःपयोवासितयाविमिश्रंकृच्छ्रेषुपित्तप्रभवेषुयोज्यम् । इति शतावरीघृतम् ॥ १२६ ॥

सतावर, कांस, कुश, गोखुरू, बिलारीकन्द, ईखकीजड तथा आमला इनके द्वारा पाककियेगये घी अथवा दूधमें शक्कर मिलाकर पीने से पित्तजमूत्रकृच्छ्र नष्ट होता है इति सतावर घृत और दुग्ध ॥ १२६ ॥

त्रिकण्टकैरण्डकुशाद्यभीरुकर्कारुकेषुस्वरसेषुसिद्धम् । सर्पिर्गुडार्द्धांशयुतंप्रयोज्यंकृच्छ्राश्मरीमूत्रविघातदोषे ॥ अयंविशेषेणपुनर्विधेयःसर्वाश्मरीणांप्रवरःप्रयोगः ॥ इति त्रिकण्टकाद्यंघृतम् इति पित्तकृच्छ्रम् ॥ १२७ ॥

गोखुरू, रेंडीकीजड, कुश, कांस, सरकंडा, ईख, दर्भ, सतावर और [illegible]कडी इनके रसोंके द्वारा घी का पाककरके आधाअंश गुड मिलावे इसके सेवनसे मूत्रकृच्छ्र, मूत्र[illegible] और सबप्रकारकी पथरी नष्ट होती हैं इति त्रिकंटकादि घृत इति पित्तकृच्छ्र ॥ १२७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...नंस्वे... ...त्रं वमनं निरूहः । तक्र... ...न्य
...प्र... ...वेक्षा वा पिब्... ...ली स्वरसेन वा... ...विनाशाय सू
क्ष्मपिष्टां गुटीं पिबेत् ... ...बीजं... मूत्रविघातहेतोः । पिबेत्तथा
तण्डुलधावनेन प्रवालचूर्णं ... ॥ ...४० ॥ ...मुस्तं गुग्गुलुं च समाक्षिकम् ।
गोक्षुरक्काथसंयुक्तं गुटिकां भक्षयेद्बुधः ... ...मूत्राघातं तथैव च । अश्मरी
प्रदरं चैव नाशयेदविकल्पतः ॥ इति कफकृच्छ्रम् ॥ १२८ ॥

कफज मूत्रकृच्छ्र में क्षार, तीक्ष्ण तथा उष्ण औषध अन्न तथा जल स्वेद जौके बनेहुये पदार्थ, वमन, निरूहवास्ति, तक्र और तीखी औषधियोंसे पाक कियेहुये तेलका मर्दन तथा पानकरना यह सब हितकारी हैं छोटी इलायचीके चूर्णकी गोली बनाकर गोमूत्र, मदिरा अथवा केलेकेरसकेसाथ पीनेसे कफज मूत्रकृच्छ्र नष्ट होताहै सिवारके बीजोंको मट्ठेके साथ पीनेसे अथवा मूंगेके चूर्णको चावलों के जलके साथ पीनेसे कफज मूत्रकृच्छ्र नष्ट होता है त्रिकटु, त्रिफला, मोथा, गूगल तथा शहद इनसब की गोली बनाकर गोखरूके काढेके साथ पीनेसे प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, पथरी और प्रदरका नाश होताहै इति कफकृच्छ्र ॥ १२८ ॥

सर्वत्रिदोषप्रभवे च वायोः स्थानानुपूर्व्या प्रसमीक्ष्य कार्यम् । त्रिभ्योऽधिके प्राग्वमनं कफे स्यात्पित्ते विरेकः पवने तु वस्तिः ॥ बृहतीधावनीपाठायष्टीमधुकलिंगकाः । पाचनीयो बृहत्यादिः कृच्छ्रदोषत्रयापहः ॥ गुडेन मिश्रितं क्षीरं कदूष्णं कामतः पिबेत् । मूत्रकृच्छ्रेषु सर्वेषु शर्करावातरोगनुत् ॥ इति त्रिदोषकृच्छ्रकम् ॥ १२९ ॥

त्रिदोषज मूत्रकृच्छ्र में पहले वायुको शान्तकरके तीनों दोषों में कहीहुई चिकित्साकरे जो तीनों दोषों में से कफ अधिकहोय तो पहले वमन जो पित्त अधिकहोय तो विरेचन और जो वायु अधिक होंय तो वस्तिक्रिया करनी चाहिये दोनों भटकटैया, पाठा, मुलहठी और इन्द्रजौ इनका काढा आम का पचानेवाला और त्रिदोषज मूत्रकृच्छ्रका नाशक होताहै कुछ गरम दूधमें गुड मिलाकर इच्छाके अनुसार पीनेसे मूत्रकृच्छ्र शर्करा और वातरोगोंका नाश होताहै इति त्रिदोषज मूत्रकृच्छ्र ॥ १२९ ॥

मद्यं पिबेद्वा ससितं ससर्पिः शृतं पयो वार्द्धसिता
मूत्रकृच्छ्रेऽभिघातोत्थे वातकृच्छ्रक्रियामता । ... अभिघातकृच्छ्रम् १३०
प्रयुक्तम् । धात्रीरसं चेक्षुरसं पिबेद्वा कृच्छ्रे सरक्ते मधुना विमिश्रम् ॥

अभिघातज मूत्रकृच्छ्र में वातज मूत्रकृच्छ्र की चिकित्सा करनी चाहिये मद्य, शक्कर सहित, घी अथवा आधों आध शक्करसहित दूध पीनेसे अभिघा... मूत्रकृच्छ्र नष्ट होताहै रक्तसहित मूत्रकृच्छ्रमें शहद मिलाकर आमले तथा ईख का रस ... ...भिघातज मूत्रकृच्छ्र ॥ १३० ॥

...एलाहिंगुयुतं क्षीरं सर्पिर्मिश्रं पिबेन्नरः ॥
लेहः शुक्रविबन्धोत्थे शिलाजतु... ...क्षिकम् । ...वृष्यैर्बृंहितधातोश्च विधेयाः प्रमदोत्तमाः । शुक्र
मूत्रदोषविशुद्ध्यर्थं शुक्रदोषहर... ...
विबन्धोत्थकृच्छ्रम् ॥ १३१ ॥

वीर्य के रुकने से हुए मूत्र... ...शहदकेसाथ शिलाजीत चाटनी चाहिये इलायची, हींग और घी मिलाकर दूध पीनेसे मू... और वीर्यका दोष नष्टहोताहै वृष्य (पुरुषार्थकरनेवाली) औषधियों के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सेवनसे ... नम स्त्रियोंकेसाथ रमणकरना ... ये इति ... १३१ ॥

स्वदचूर्ण ... हतयःस्युःपुरीषजे । ... त ...
मूत्रकृच्छ्रशकृज्जन्मपीतःशीघ्रंमहाकृच्छ्रात ... । ... १३२ ॥
पुरीषजमूत्रकृच्छ्रमें स्वदचूर्णक्रिय ... ७ ॥ ... करना चाहिये गोखरूकेकाढ़े में जवाखार मिलाकर पीनेसे शीघ्रही पुरुसुखावे फिर उन ... हीताहै इति पुरीषजमूत्रकृच्छ्र १३२ ॥

सप्तच्छदारग्वधकेंबुकैलानिम्बकेपर ... कुटजोगुडूची । साध्याजलेनेभपचेद्ययवागूंसिद्धंकषायंमधुसंयुतंवा ॥ एर्वारुबीजकल्कश्चश्लक्ष्णपिष्टोऽ... तः । धान्याम्ललवणैःपेयोमूत्रकृच्छ्रविनाशनः । त्रिकण्टकारग्वधदर्भकाशदुरालभापर्वतभेदपथ्याः । निघ्नन्तिपीतामधुनाश्मरीन्तुसंप्राप्तमृत्योरपिमूत्रकृच्छ्रम् ॥ निदग्धिकायाःस्वरसंकुडवंमधुसम्मितम् । मूत्रदोषहरंपीत्वानरःसम्पद्यतेसुखी । कषायोऽतिबलामूलसाधितोऽशेषकृच्छ्रजित् ॥ पीतञ्चत्रपुसीबीजंसतिलाज्यपयोन्वितम् । त्रिफलायाःसुपिष्टायाःकल्कंकोलसमन्वितम् । वारिणालवणीकृत्यपिबेन्मूत्ररुजापहम् । यवोरुबूकतृणपंचमूलीपाषाणभेदैःसशतावरीभिः ॥ कृच्छ्रेषुगुग्गुलवभयाविमिश्रैःकृतःकषायोगुडसंप्रयुक्तः । मूलानिकुशकाशेक्षुशराणांचेक्षुबालिका ॥ मूत्राघाताश्मरीकृच्छ्रेपंचमूलीतृणात्मिका । गुडमामलकंवृष्यंश्रमघ्नंतर्प्पणंप्रियम् । पित्तासृग्दाहशूलघ्नंमूत्रकृच्छ्रनिवारणम् । सितातुल्योयवक्षारःसर्वकृच्छ्रप्रसाधनः ॥ द्राक्षासितोपलाकल्कंकृच्छ्रघ्नंमस्तुनायुनम् । विदारीसारिवाश्रृंगीवत्सदिनीनिशा ॥ कृच्छ्रंपित्तानिलाद्धन्तिवल्लिजंपंचमूलकम् । एलाश्मभेदकशिलाजतुपिप्पलीनामेर्व्वारुबीजलवणोत्तमकुंकुमानाम् ॥ चूर्णानितण्डुलजलेलुलितानिपीत्वा प्रत्यग्रमृत्युरपिजीवतिमूत्रकृच्छ्री॥ अयोरजःसूक्ष्मपिष्टंमधुनासहयोजितम् । मूत्रकृच्छ्रंनिहन्त्याशुत्रिभिर्लेहैर्नसंशयः ॥ १३३ ॥

छितवन, अमलतास, केतकी, इलायची, नींब, करंज, कुरैया तथा गिलोय इन सब औषधियों के काढ़ेके द्वारा पाककीहुई यवागू अथवा इनके काढ़े में शहद डालकर पीने से और ककडी के बीजों को महीन पीसकर कांजी तथा नोनके साथ पीने से मूत्रकृच्छ्रका नाश होताहै गोखरू, अमलतास, कुश, कांस, जवासा, पाषाणभेद तथा हड इनके काढ़ेमें शहद डालकर पीनेसे असाध्य भी मूत्रकृच्छ्र और पथरी नष्ट होतीहै भटकटैया के १६ तोले ... में शहद डालकर पीनेसे मूत्रके रोग नष्टहोते हैं अतिबला की जडका काढ़ा सबप्रकारके मूत्र... नष्ट ... नाश करताहै तिल, घी तथा दूध के साथ खीरे के बीजों को पीने से और महीन पिसेहुये त्रि... के ... कल्कको कुछ नोन मिलाकर जलके साथ पीनेसे मूत्रके रोग नष्टहोते हैं जौ, अरण्डकी जड, तृ... ... पाषाणभेद, सतावर, गूगल तथा हड इनके काढ़ेमें गुड मिलाकर पीनेसे मूत्रकृच्छ्र का नाशहोत... ... कांस, सरकंडा, रमसर तथा ईख इनपांचों की जडके काढ़ेको पीनेसे मूत्राघात, पथरी तथा मू... का नाश होताहै गुड तथा आमले के चूर्णको खानेसे रक्तपित्त, दाह, शूल तथा मूत्रकृच्छ्र ... श्रमका नाशहोताहै और तृप्ति तथा वीर्य्य की वृद्धि होतीहै जवाखार तथा शर्करा इनदोनोंको ... मिलाकर खानेसे मूत्रकृच्छ्र का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...को ... के तोड़ के साथ खाने से मूत्र... है ...रीकन्द, ...पर... ...के सेवन से वातपित्तज... मूत्रकृच्छ्र का नाश होताहै इलायची, पाषाणभेद... बीज, ...नोन और केशर इनसबके चूर्णको चावलों के धोवन के साथ ... ...ना अच्छा होताहै लोहेकी भस्मको शहद के साथ चाटने से तीनदिन मे... ...ताहै ॥ १३३ ॥

पुनर्नवामूलतुलांदर्भमूलंशतावरीम् । बलातुरङ्गगन्धाचतृणमूलंत्रिकण्टकम् ॥ विदारिकन्दंनागाङ्गगुडूच्यतिबलास्तथा । पृथग्दशपलान्भागानपांद्रोणेविपाचयेत् ॥ तेनपादावशेषेणघृतस्याढकंपचेत् । मधुकंशृङ्गबेरञ्चद्राक्षांसैन्धवपिप्पलीम् ॥ द्विपलांशान्पृथग्दत्वायवान्याःकुडवंतथा । त्रिंशद्गुडपलान्यत्रतैलस्यैरण्डजस्यच ॥ एतदीश्वरपुत्राणांप्राग्भोजनमनिन्दितम् । राज्ञांराजसमानानांबहुस्त्रीपतयश्चये ॥ मूत्रकृच्छ्रेकटिस्रस्तेतथागाढपुरीषिणाम् । मेढ्रवंक्षणशूलेचयोनिशूलेचशस्यते ॥ यथोक्तानाञ्चगुल्मानांवातशोणितिनश्चयः । बल्यंरसायनंश्रीदंसुकुमारकुमारकम् ॥ पुनर्नवाशतेद्रोणेप्रदेयःसोऽपिचापरः । सुकुमारकपुनर्नवावलेहः । (सामान्यविधिः) मूत्राघातादिविधानमप्यत्रकार्यम् ॥ इति मूत्रकृच्छ्रनिदानचिकित्साधिकारः ॥ १३४ ॥

पुनर्नवाकी जड ४०० तोले, दशमूल, सतावर, बरियारा, असगन्ध, तृणपंचमूल, गोखुरू, शालिपर्णी, नागकेशर, गिलोय तथा अतिबला यह सब चालीस २ तोले इन सबको १०२४ तोले जल में पाककरके चौथाई बाकी रहनेपर उसमें १२८ तोले घी डालकर पाककरे फिर मुलहठी, सोंठ, दाख, सेंधानोन तथा पीपल यह सब आठ २ तोले अजवाइन १६ तोले गुड ६० तोले और रेंडीका तेल ६० तोले इनसब औषधियों को मिलाकर पाककरे इस औषधको भोजन से पहले खाना चाहिये राजा तथा राजाकेही समान धनवाले और बहुत स्त्रीवाले पुरुषोंको यह हितकारीहै मूत्रकृच्छ्र, कमरका टलजाना, मलकारुकना, लिंग, वंक्षण तथा योनिकीपीडा गुल्म तथा वातरक्त इनरोगोंका इससे नाश होताहै और यह बलकारी, श्रीवर्द्धक तथा शरीरकी कोमल करनेवाली परम रसायनहै इति सुकुमार पुनर्नवावलेह ॥ मूत्रकृच्छ्रमें मूत्राघात की भी चिकित्सा करनी चाहिये इति मूत्रकृच्छ्र निदान चिकित्साधिकार समाप्त ॥ १३४ ॥

अथ मूत्राघाताद्यधिकारः ॥

जायन्तेकुपितैर्दोषैर्मूत्राघातास्त्रयोदश । प्रायोमूत्रविघातार्द्यैर्वातकुण्डलिकादयः १३५ ॥

मूत्राघात... अधिकार ॥

मूत्र के रोकने आदि कारणों से प्र... ...दोषों के द्वारा वातकुण्डलिका आदि १३ मूत्राघात उत्पन्न होते हैं ॥ १३५ ॥

रौक्ष्याद्वेगविघाताद्वावायु... ...वेदनः । मूत्रमाविश्यचरतिविगुणःकुण्डलीकृतः ॥ मूत्रमल्पाल्पमथवासरुजं... । वातकुण्डलिकांतीव्रांव्याधिंविद्यात्सुदारुणाम् ॥ रौक्ष्यात्कायस्यवेगविघा... मूत्रादिवेगनिरोधात् आविश्यआवृत्यमूत्रमितिरौक्ष्यादिभिर्वेगविघातादिभिश्चविगु... ...कुण्डलीकृतःवातावर्त्तवस्तावेवभ्रमंस्तिष्ठति । कुण्डलीभूतोवायुःवस्तीमूत्रा...चरातिप्रधावतिआनद्धत्वाद्भ्रमंस्तिष्ठति ॥ १३६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिस ... क्षता से अथवा मलमूत्रादि वेगोंके रोकने से वा ... मूत्र को ढककर पीडासहित ... के समान मूत्राशय में घूमे ... त ... उतरे इस कष्टकारी रोगको वातकुण्डलिका क ... हो ... ॥ २७ ॥

आध्मापयन्वस्तिगुदंरुध्वावायुः ... कुर्यात्तीव्रार्तिमष्ठीलांमूत्रविण्मार्गरोधिनीम् ॥ वातःवस्तिगुदंरुध्वा अर्थात्तदन्तर्गतंमूत्रंमलञ्चनिरुध्यवस्तिंगुदञ्चआध्मापयन् आध्मानंकुर्वन् अष्ठीलाम्अष्ठीलातुल्यां ग्रन्थिं कुर्यात् चलोन्नतांचलामुन्नताञ्च ॥ १३७ ॥

अष्ठीला का लक्षण ॥

जो वायु गुदा तथा मूत्राशयमें स्थित मलमूत्रको रोककर अफरे को उत्पन्न करे और मल तथा मूत्रकी रोकनेवाली चंचल ऊंची तथा तीक्ष्ण पीडासहित अष्ठीला के समान गांठ उत्पन्न होय तो उसको अष्ठीला नाम मूत्राघात कहते हैं ॥ १३७ ॥

अथ वातवस्तिमाह ॥

वेगंविधारयेद्यस्तुमूत्रस्याकुशलोनरः । निरुणद्धिमुखंतस्य वस्तेर्वस्तिगतोऽनिलः ॥ मूत्रसंगोभवेत्तेन वस्तिकुक्षिनिपीडितः । वातवस्तिः सविज्ञेयोव्याधिःकृच्छ्रप्रसाधनः ॥ अकुशलो मूर्खःतस्यपुरुषस्य वस्तेर्मुखंनिरुणद्धियस्तिगतोवायुः तेनवायुनामूत्रासंगविघातोभवतिवस्तिकुक्षिनिपीडित इतिवस्तीकुक्षौनिपीडितःसंपीडितो वायुरितिसम्बन्धःमूत्रसंगःमूत्रावरोधः ॥ १३८ ॥

वातवस्तिका लक्षण ॥

जो मूर्ख मनुष्य मूत्रके वेगको रोकताहै उसके मूत्राशयमें स्थित वायु मूत्राशयके मुखको रोकदेतीहै इसलिये मूत्र रुकजाताहै और मूत्राशय तथा कोखमें पीडा होतीहै इसरोग को वातवस्ति मूत्राघात कहते हैं यह अत्यन्त कष्टसाध्यहै ॥ १३८ ॥

अथ मूत्रातीतमाह ॥

चिरंधारयतोमूत्रंत्वरयानप्रवर्त्तते । मेहमानस्यमन्दंवामूत्रातीतःसउच्यते ॥ मेहमानस्यमूत्रमुत्सृजतः मन्दंवाअल्पंवा ॥ १३९ ॥

मूत्रातीत ... लक्षण ॥

बहुत कालतक मूत्रके रोकने से मूत्र जल ... निकलता और जो निकलताहै तो थोडा २ निकलताहै इसको मूत्रातीत कहते हैं ॥ १३९ ॥

अथ मूत्रजठरमाह ॥

मूत्रस्यवेगेऽभिहते तदुदावर्तहेतुकः । अपान ... यःसर्वांगोवायुरुदरंपूरयेद्भृशम् ॥ नाभेरधस्तादाध्मानं जनयेत्तीव्रवेदनम् । तन्मूत्रजठरंवि ... धोवस्तिनिरोधजम् ॥ तदुदावर्त्तहेतुकइतिमूत्रवेगधारणगणितोदावर्त्तनिदानम् ... कुर्यात् । अधोवस्तिनिरोधनम् । वस्तेरधोदेशे विबन्धकारकम् ॥ १४० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मूत्रजठरका लक्षण ॥

... वायु कुपितहोकर ..को अत्यन्त फुलाती है और नाभिके नीचे अत्य... उत्पन्न करती है और मूत्राशयके नीचे विबन्ध उत्पन्न होताहै इसरोगको मूत्रजठर ... १४० ॥

अथ मूत्रोत्संगमाह ॥

वस्तौवाप्यथवानालेमणौवायुस्यदेहिनः । मूत्रंप्रवृत्तंपज्येतसरक्तंवाप्रवाहतः ॥ स्रवेच्छनैरल्पमल्पंसरुजंवाप्यनारुजम् । विगुणानिलजोव्याधिःसमूत्रोत्सङ्गसंज्ञितः ॥ नाले मेढ्रेमणौमेहनग्रन्थौसज्येतनिरुद्धंस्यात्मरक्तंप्रवाहतः कण्ठहृद्बलेनसशब्दंमूत्रपुरीषवातानामधःप्रेरणं प्रवाहणंतेनकुपितेनधातुनावस्त्यादिभेदात्मरक्तंमूत्रंस्रवेदित्यर्थः १४१॥

मूत्रोत्संगका लक्षण ॥

जिसरोगमें कुपितवायुकेद्वारा मूत्राशय लिंग अथवा लिंगकीगांठ में मूत्र रुकजाय और वेगकरनेसेपीडासहित अथवा पीडारहित वारंवार थोडा२रुधिरसहित मूत्र निकले इसरोगको मूत्रोत्संगकहतेहैं १४१॥

अथ मूत्रक्षयमाह ॥

रूक्षस्यक्लान्तदेहस्यवस्तिस्थौपित्तमारुतौ । मूत्रक्षयंसरुग्दाहंजनयेत्तांतदाक्षयम् ॥ क्लान्तदेहस्यम्लानदेहस्यतदाक्षयंमूत्रक्षयसंज्ञम् ॥ १४२ ॥

मूत्रक्षयका लक्षण ॥

रूखे अथवा म्लान शरीरवाले मनुष्यों के वात और पित्त कुपित होकर मूत्राशयमें जाकर मूत्र-... तथा पीडाको उत्पन्न करते हैं इसरोगको मूत्रक्षय कहते हैं ॥ १४२ ॥

अथ मूत्रग्रन्थिमाह ॥

अन्तर्वस्तिसुखेवृत्तःस्थिरोऽल्पःसहसाभवेत् । अश्मरीतुल्यरुग्ग्रन्थिर्मूत्रग्रन्थिःस उच्यते ॥ अन्तर्वस्तिमुखेवस्त्याभ्यन्तरे अल्पःक्षुद्रामलकप्रमाणःनन्वस्याश्मर्यासहको भेदः । उच्यते अश्मरीक्रमशःसञ्चयेत्तस्य... ...पिहसाभवेदितिभेदः ॥ अपरोभेदः अश्मर्यांपित्ताधिक्यंमन्यते अत्रतुरक्तमेव । ...उक्तंतन्त्रान्तरे । रक्तवातकफादुष्टंवस्तिद्वारेसुदारुणम् ॥ ग्रन्थिंकुर्यात्सकृच्छ्रेणसृजेन्मूत्रंनदावृतम् ॥ १४३ ॥

मूत्रग्रन्थिका लक्षण ॥

मूत्राशयके मुखके भीतर गोल स्थिर तो... ...के समान पीडाकारी जो गांठ एकाएकी उत्पन्न होती है उसको मूत्रग्रन्थि कहते हैं ... मूत्रग्रन्थि में भेद यहहै कि पथरी धीरे२ इकट्ठी होकर उत्पन्न होतीहै और मूत्रग्रन्थि ...उत्पन्न होतीहै और दूसराभेद यह है कि पथरी में पित्तअधिकहै और मूत्रग्रन्थि में रुधिर... ...कहै तन्त्रान्तर में कहा हुआहै कि वायु तथा कफके द्वारा दूषित रुधिर वस्तिके द्वारमें अति... ...भयंकर ग्रन्थिको उत्पन्न करताहै इसके द्वारा रुकाहुआ मूत्र वहुत कष्टसे निकलताहै ॥ १४३ ॥

अथ मूत्रशुक्रमाह ॥

मूत्रितस्यस्त्रियंयातो वायुनाशुक्रमुद्धृतम् । स्थानाच्च्युतंमूत्रयतःप्राक्पश्चाद्वाप्रव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

र्त्तते ॥ [illegible]षोदकप्रत[illegible]मूत्रशुक्रंतदुच्यते । [illegible]त्रितेस्यमूत्रवेगग्[illegible] त [illegible]
च्युतंपश्चाद्वायुनोद्ध[illegible]मूर्ध्वन्नीतंभस्मोद[illegible]भसे[illegible]उसद[illegible]शुक्रंत
दुच्यते ॥ १४४ ॥ मूत्रशुक्रका [illegible]

मूत्रका वेग होनेपर स्त्रीप्रसंग करनेवालेका वीर्य्य अपने [illegible]नसे गिरकर वायुके द्वारा ऊपरको चलाजाताहै फिर लघुशंकाके पहले या पीछे भस्म से मिलेहुये जलके समान नि[illegible]ताहै इसको मूत्रशुक्र कहते हैं ॥ १४४ ॥

अथोष्णवातमाह ॥

व्यायामाध्वातपैःपित्तंवस्तिंप्राप्यानिलावृतम् । वस्तिंमढ्रंगुदञ्चैवप्रदहन्स्रावयेदधः ॥ मूत्रंहारिद्रमथवासरक्तंरक्तमेववा । कृच्छ्रात्पुनःपुनर्ज्जन्तोरुष्णवातंवदन्तितम् ॥ सरक्तमीषल्लोहितम् ॥ १४५ ॥ उष्णवातका [illegible] ॥

व्यायाम मार्ग तथा धूपके सेवनसे कुपित होनेवाली वायुके द्वारा ढकाहुआ पित्त मूत्राशय में प्राप्तहोकर मूत्राशय लिंग तथा गुदामें दाहको उत्पन्न करताहै और वारंवार कष्टसहित कुछ लाल हल्दी के समान वर्ण से युक्त अथवा रक्तवर्ण मूत्र निकलताहै इसको उष्णवात कहते हैं ॥ १४५ ॥

अथ मूत्रसादमाह ॥

पित्तंकफौद्वावपिवासंहन्येतेऽनिलेनचेत् । कृच्छ्रान्मूत्रंतथापीतंरक्तंश्वेतंघनंस्रवेत् ॥ सदाहंरोचनाशंखचूर्णवर्णम्भवेच्चतत् । शुष्कंसमस्तवर्णंवामूत्रसादंवदन्तितम् ॥ संहन्येतेघनीक्रियतेशुष्कमल्पंसमस्तवर्णमुक्तसकलवर्णयुक्तम् ॥ १४६ ॥

मूत्रसाद का लक्षण ॥

जो वायुके द्वारा पित्त वा कफ अथवा दोनों गाढ़े होजायँ और कठिनतासे पीतरक्त श्वे[illegible] गाढ़ा मूत्र निकले दाहयुक्त गोरोचनके समान वर्णयुक्त शंखके चूरेकी समान सफेद अथवा थोरा और ऊपर कहेहुये सम्पूर्ण वर्णों से संयुक्त मूत्र निकले इसका मूत्रसाद कहते हैं ॥ १४६ ॥

अथ विड्विघातमाह ॥

रूक्षदुर्बलयोर्वातेनोद्वृत्तंशकृन्मूत्रानी[illegible]स्रोतोऽनुपद्येतविट्संसृष्टंनदानरः ॥ विड्गन्धंमूत्रयेत्कृच्छ्राद्विड्विघातंविनिर्द्दिशेत् [illegible] उदावर्त्तमूर्ध्वन्नीतंविड्गन्धंवावाशब्दोऽत्र योजनीयः ॥ १४७ ॥ विड्वि[illegible]का लक्षण ॥

जो रूखे तथा दुर्बल मनुष्योंका मल वायु[illegible] ऊपरको जाकर मूत्रके मार्ग में प्राप्तहोय और मलसहित अथवा मलकी दुर्गन्धि से युक्त मू[illegible] [illegible]नष्ट [illegible] साथ निकले तो उसको विड्विघात रोग कहते हैं ॥ १४७ ॥

अथ व[illegible]माह ॥

द्रुताध्वलङ्घनायामैरभिघातात्प्रपीडनात् । [illegible]यःसर्वाद्वस्तिरुद्वृत्तःस्थूलस्तिष्ठति गर्भवत् ॥ शूलस्पन्दनदाहार्तोबिन्दुंबिन्दुंस्रवत्य[illegible]डितस्तुमृजेद्धारांसंस्तम्भोद्वेष्टनार्तिमान् ॥ वस्तिकुण्डलमाहुस्तंघोरंशस्त्रविषोपमम् [illegible]वनप्रबलंप्रायोदुर्न्निवारमबुद्धिभिः ॥ तस्मिन्पित्तान्वितेदाहःशूलंमूत्रविवर्णता[illegible]णागौरवंशोथःस्निग्धंमूत्रंघनंसितम् ॥ द्रुताध्वलङ्घनंशीघ्रंमार्गेचलनमुद्वृत्तः । उत्थितःस्[illegible]दनंकिञ्चिच्चलनंघोरंमा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...शस्त्रंखड्गादितद्वच्चैर्घ्नंमारकंविषमत्रगरलस्तद्वद्... युक्... क्रमेताव
...लम्भवत्... पृथक...

...कफज...

...त कुण्डली का लक्षण ॥

बहुत जल्द २ मार्ग चलना ... चोट तथा पीडाके द्वारा मूत्राशय अपने स्थानसे ऊपर जाकर गर्भके समान स्थूल होकर स्थित होताहै और शूल फडकना तथा दाह सहित बूंद २ करके मूत्र निकलताहै और दबाने से मूत्रकी धार निकलतीहै और रोगी अंगडाई तथा स्तम्भरूप होने से पीड़ित होताहै इसरोग को वस्तिकुण्डली कहते हैं यह शस्त्र और विषके समान अत्यन्त भयंकर है इसरोगमें प्रायः वायु प्रबल होती है इसकी चिकित्सा अल्पबुद्धिवाले नहीं करसक्ते पित्तयुक्त वस्तिकुंडलरोग में दाह शूल तथा मूत्रका बदला हुआ रंग होताहै और कफयुक्त वस्तिकुंडलरोग में शरीर भारी तथा सूजन युक्त होताहै और स्निग्ध श्वेत तथा गाढ़ा मूत्र निकलताहै ॥ १४८ ॥

तस्यैवासाध्यस्य लक्षणमाह ॥

श्लेष्मरुद्धबिलोवस्तिःपित्तोदीर्णोनसिद्ध्यति । अविभ्रान्तबिलःसाध्यानचयःकुण्डलीकृतः ॥ स्याद्वस्तौकुण्डलीभूतेतृणमोहःश्वासएवच । बिलवस्तिमुखरन्ध्रंपित्तोदीर्णः पित्तेनोद्धूतःअविभ्रान्तबिलःकफेनानावृतबिलःपश्चात्कुण्डलीकृतःससाध्यः ॥ एतेनकुण्डलीभूतोऽसाध्यः (कुण्डलीभूतस्यलक्षणमाह) तृडित्यादि ॥ कुण्डलीभूतस्यायम र्थःकफेनविनावरोधात् । तत्रवातःकुण्डलाकारेणतिष्ठतीत्यर्थः ॥ १४९ ॥

वस्तिकुण्डली के असाध्य लक्षण ॥

...तकुण्डलीरोग में जो वस्तिका मुख कफसे रुकजाय अथवा वस्ति में पित्त इकट्ठा होजाय तो ...को असाध्य जानना चाहिये और जो वस्तिका मुख कफसे रुकजाय और वस्तिमें वायु चक्र के समान स्थित न होय तो साध्यहै जब वस्ति में वायु चक्रके समान स्थित होती है तब तृषा मोह और श्वास उत्पन्न होते हैं ॥ १४९ ॥

अथ मूत्राघातस्य चिकित्सामाह ॥

स्नेहस्वेदोपपन्नस्यहितंस्नेहविरेचनम् ...दुत्तरवस्तीश्चमूत्राघातेसवेदने ॥ नलकुशकाशेक्षुबलाक्वाथंप्रातःसुशी... । पिबतोनश्यतिनियतंमूत्रग्रहइत्युत्रा चकाविः ॥ गोजानाम्नोमूलंपल... कक्वथि... षितंपीतम् । क्षिप्त्वामधुचसिताञ्चप्रणुद तिमूत्रस्यसंरोधम् ॥ गोधापद्य... लंक्वथि... ...नतैलगोरसोन्मिश्रम् । पीतंनिरुद्धमचिरा द्भिनत्तिमूत्रस्यसङ्घातम् ॥ पिबे... ...थेयुक्तंवीरतरादिजे । क्वाथंसपत्रमूलस्य गोक्षुरस्यफलस्यच ॥ पिबेन्म... ...कृच्छ्ररुजापहम् । घनसारस्यचूर्णेनवस्त्रं स्याद्वविक्ताम्बुना ॥ गुणड... ...क्षिप्त्वामत्ररोधंजहातितम् ॥ १५० ॥

...मूत्राघात की चिकित्सा ॥

पीड़ा सहित मूत्राघात में ... और स्वेद देकर स्निग्ध विरेचन और उत्तरवस्ति देनी चाहिये नरकुल, कुश, कास, ईख त... ...के काढे को शीतल करके शक्कर डालकर प्रातःकाल पीनेसे ४ तोले श्वेत दूबकी जड़ के काढ़े में शहद तथा शक्कर डालकर पीने से लजालूकी जडके काढ़े में घी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तेल तथा [illegible] डालकर पीनेसे वीरतरादि गण के काढे में शिलाजीत डालकर पीने [illegible] फल सहित गोखुरू के काढे में शहद तथा शक्कर [illegible] और कपूरके [illegible] घोलके वस्त्र में लपेट उसकी बत्ती बनावे उस बत्तीको [illegible] रखे [illegible] नाश होताहै १५०॥

सदाभद्राश्मभिन्मूलंशतावर्य्याःसचित्रकम्। रोहिणी[illegible]कलाक्षौ वचाशैलत्रिकण्टकम्॥ श्लक्ष्णपिष्टःसुरापीतोमूत्राघातप्रबाधनः। पिबेद्बर्हिशि[illegible]मूलं[illegible]सा॥वस्तिमुत्तरबीजंवासर्वेषामेवदापयेत्। निदिग्धिकायाःस्वरसंपिबेद्वातातं परिश्रुतम्। जलेकुङ्कुमकल्कंवासक्षौद्रमपितंनिशि। सतैलंपाटलाभस्मक्षारंबध्वापरिश्रुतम्॥ त्रिकण्टकैरण्डशतावरीभिःसिद्धंपयोवातृणपञ्चमूले। गुडप्रगाढंसघृतंपयोवारोगेषुकृच्छ्रादिषुशस्तमेतत्॥ १५१॥

गंभारी, पाषाणभेद, सतावर, चीता, कुटकी, तालमखाना, बच, शिलाजीत तथा गोखुरू इन सब को महीन पीसकर सुराके साथ पीनेसे और मोरशिखाकी जड चावल के धोवनके साथ पीकर दूधका पथ्य करने से मूत्राघात नष्ट होताहै सब प्रकार के मूत्राघात में वस्ति और उत्तरवस्ति देनी चाहिये भटकटैया के रसको वस्त्र में छानकर पीनेसे केशर को जल में भिगोकर शहद मिलायके एक रात्रि भर रक्खे उसको प्रातःकाल पीने से और पाटलाकी भस्मके खारके जलमें तिलोंका तेल मिलाकर पीनेसे मूत्राघात नष्ट होताहै गोखुरू, अरंडकी जड तथा सतावर इनसबके द्वारा अथवा तृणपंचमूलके द्वारा पाककिये हुए दूधके पीनेसे अथवा घृतयुक्त दूधमें अधिक गुड डालकर पीनेसे मूत्रकृच्छ्रादिक रोग शान्त होते हैं॥ १५१॥

शि[illegible]क्षारान्वितंमूलंवायसीतैलकूर्चयोः। कोषकाररसैःपीतंवस्तिकुण्डलजिद्भवेत्। श्रृतशीतपयोऽन्नाशीचन्दनंतण्डुलाम्बुना। पिबेत्सशर्करंश्रेष्ठमुष्णवातेनशोणिते। शिलोद्भिदैरण्डसमास्थिरादिपुनर्नवाभीरुरसेषुसिद्धम्। तैलंश्रृतंक्षीरमथानुपानंकालेषु कृच्छ्रादिषुसंप्रयोज्यम्॥ इति शिलोद्भिदादितैलम्॥ १५२॥

जवाखार सहित किवांच तथा तैल कन्दकी [illegible] कोषकार नाम ईखके रसके साथ पीनेसे वस्तिकुण्डल रोगका नाश होताहै चन्दनको चावलों[illegible] धोवनके साथ शक्कर डालकर पीके पके हुए ठंढे दूधके साथ अन्न खानेसे रुधिर सहित उष्ण वात[illegible]का नाश होताहै पाषाणभेद, अरंडकी जड और शालिपर्णी इनके द्वारा पुनर्नवा और सतावरके [illegible] साथ पाक किये हुए तेलको दूधके साथ पीनेसे मूत्रकृच्छ्रादि रोग नष्ट होतेहैं इति शिलोद्भिदादि तैल॥ १५२॥

धान्यगोक्षुरकंक्काथंकल्कयुक्तंघृतंहितम्। [illegible]नाशनं मूत्रदोषे शुक्रदोषे चदारुणे॥ इति धान्यगोक्षुरकंघृतम्॥ १५३॥

धनियां तथा गोखुरू इनके काढे और कल्क के द्वारा प[illegible]ए घीके पीने से मूत्राघात मूत्रदोष और वीर्यदोष इन सबका नाश होताहै॥ इति धान्यगो[illegible]॥ १५३॥

अम्बष्ठापाटलाचैव वर्षाभूद्वयमेवच। विदारीकन्दका[illegible]कुशमोरठगोक्षुराः॥ पाषाणभेदोवाराही शालिमूलंशरस्तथा। भल्लातकंशिरीषं[illegible]तमेषामथाहरेत्॥ समभागानिसर्व्वाणि क्काथयित्वाविचक्षणः। पादशेषकषायेण घृतप्रस्थंविपाचयेत्॥ कल्कं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...गिरिजंमधुकंतथा । नीलोत्पलञ्चकाकोलीं बीजं... ॥ कूष्मा
...भवञ्चसमंभवेत् ... वातांनिहन्त्ययेतद् घृतंभद्रावहंस्मृतम् ॥ इति

...वातज, पित्तज, कफज ... कारणसे और शक्रज ... रीकन्द, कास, कुश, ईखकी जड, गोखुरू, पाषाणभेद, बाराही-
...कृच्छ्रमारुताम् ... मिलावां तथा सिरस की जड इन सबके चतुर्थांश काढे के साथ
... शिलाजीत, मुलहठी, नीलकमल, काकोली और खीरा, पेठा तथा ककडी के बीज इन
...बका कल्क मिलाकर विधिपूर्वक पाककरे इस घीके सेवन से उष्णवातनाम मूत्राघातका नाशहोता
है ॥ इति भद्रावहघृत ॥ १५४ ॥

विदारीवृषकोयूथीमातुलुङ्गीचभूस्तृणम् । पाषाणभेदःकस्तूरी वसुकोवसिरोऽनलः॥ ...नर्नवावचारास्ना बलाचातिबला... कशेरुविशश्रृंगाटतामलक्यःस्थिरादयः ॥ श...दर्भमूलञ्च कुशःकाशस्तथैवच । पलद्वयन्तुसंहृत्य जलद्रोणेविपाचयेत् ॥ पादशेषे ...नस्मिन् घृतप्रस्थंविपाचयेत् । शतावर्यास्तथाधात्र्याः स्वरसोघृतसम्मितः ॥ षट्प...पयाश्च कार्षिकानपराणिच । यष्ट्याङ्गंपिप्पलीद्राक्षा काश्मर्य्यंसपरूषकम् ॥ एला ...सुसंस्... कौन्ती कुंकुमंनागकेशरम् । जीवनीयानिचाष्टौच दत्त्वाचद्विगुणंपयः ॥ एततूस ...नाबुधैः । मूत्राघातेषुसर्वेषु विशेषात्पित्तजेषुच ॥ शर्कराश्म ...शूलेषु श... व । हृद्रोगेपित्तगुल्मेच वातासृक्पित्तजेषुच ॥ कासश्वासक्षतो ...कं धनुःस्त्रीभारकर्षिते । तृष्णाछर्दिमनःकम्प शोणितच्छर्दनेतथा॥ रक्तयक्ष्मण्यपस्मारे ...मादेशिरोग्रहे । योनिदोषेरजोदोषे शुक्रदोषेस्वरामये ॥ एततूस्मृतिकरंवृष्यं वाजी...रणमुत्तमम् । पुत्रदंबलवर्णाढ्यं विशेषाद्वातनाशनम् ॥ पानभोजननस्येषु नकचित्प्रतिहन्यते । विदारीघृतमित्युक्तं रसायनमनुत्तमम् । इति विदारीघृतम् ॥ १५५ ॥

बिलारीकन्द, बांसा, जूही, नींबू, भूतृण, पाषाणभेद, कस्तूरी, आक, गजपीपल, चीता, पुनर्नवा, बच, रासना, बरियारा, सहदेई, कसेरू, कमलकीडंडी, ... भुइँआमला, शालिपर्णी, सरकंडा, ईख, डाभ की जड, कुश तथा कास इन सबको आठ२ तोले ... १०२४ तोले जल में पाक करके चौथाई बाकी रहनेपर लेले फिर यह काढा ... घी ... का रस तथा आमले का रस चौंसठ २ तोले इन सबमें शक्कर २४ तोले, मुलहठी, पीपल, दाख, ... भारी, फालसा, इलायची, ज...सा, रेणुका, केशर, नागकेशर, ऋद्धि, वृद्धि, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, जीरा तथा ऋषभक तोले२भर इनसब के कल्कको डालकर १२८ तोले दूध ... में धीरे २ पाककरे इसघीके सेवनसे सबप्रकार के मूत्राघात, विशेषकरके पित्तज मूत्राघात ... री, रक्तजरोग, हृद्रोग, पित्तगुल्म, वातरक्त, पित्त-रोग, खांसी, श्वास, उरःक्षत, धनुष... से भारउठानेसे अथवा स्त्रीप्रसंगसेहुई क्षीणता, तृषा, छर्दि, हृदयका कंपना, रुधिरकी वमन ... यक्ष्मा, मिर्गी, उन्माद, शिरकेरोग, योनिदोष, रजोदोष, वीर्यदोष, स्वरभंग, वर्णका ... का नाश होताहै और यह स्मृतिकारी, वीर्यवर्द्धक, वाजीकरण, पुत्रदाता, बलकारी तथा वर्ण... करनेवाला है पान भोजन तथा नासलेनेमें इस घृतके सेवन से ऊपर कहेहुए गुण होतेहैं ... मश्रेष्ठ रसायनहै ॥ इति विदारीघृत ॥ १५५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पिष्ट्वा [illegible] केन चारनालेनपेष्यते । बद्धमूत्रंनिहन्त्याशु तथैव करभ [illegible] ॥

मूसे का, मूँगिना अथवा हथिनी के गोबर को [illegible] में पीसकर सेवन करने [illegible] नाश होताहै ॥ १५६ ॥ [illegible] स्यात् [illegible] चताक

स्त्रीणामतिप्रसंगेन शोणितंयस्यरिच्यते । मैथुनापरम [illegible] निमन्थपाषाणशिखू [illegible]

बहुत मैथुन करनेसे जिसके रुधिर निकलनेलगा होय उसे [illegible] सेवन और मुर्गेकीचर्बी तथा तेलकेद्वारा उत्तरवस्ति लेना हितहै ॥ १५७ ॥ [illegible]

ताम्रचूडवसातैलं हितञ्चोत्तरवस्तिषु । स्वगुप्ताफलमुद्रीका कृष्णेक्षुरसितारजः समांशमर्द्धभागानि क्षीरक्षौद्रघृतानिच । सर्व्वंसम्यग्विमथ्याक्षमात्रंलीढ्वापयःपिबेत् । हन्तिशुक्रक्षयंतथांश्च दोषान्बन्ध्यासुतप्रदम् । क्षौद्रार्द्धभागःकर्त्तव्यो भागःस्यात्तुर्क्षी [illegible] सर्पिषोः ॥ शर्करायाश्चचूर्णञ्च द्राक्षाचूर्णंचततसमम् । स्वयगुप्ताफलञ्चैव तथैवेक्षुर [illegible] स्यच॥पिप्पलीनांतथाचूर्णंसमभागंप्रदापयेत् । तदैकध्यंसमानीयखजेनातिविमथ्य [illegible] तस्यपाणितलंचूर्णंलिहेत्क्षीरंततःपिबेत् । एततसर्पिःप्रयुञ्जानोयोनिदोषात्प्रमच्य [illegible] इति क्षौद्रार्द्धभागंघृतम् ॥ १५८ ॥

किवांच, दाख, पीपल, ईखकी जड तथा शक्कर यह सब एक २ भाग और दूध, शहद तथा [illegible] मिलाकर भाग इनसबको एकमें मिलाकर इसमेंसे १ तोलेभर औषध खाकर दू [illegible] गुड डालकर [illegible] के दोष और बन्ध्यापनेका नाश होताहै शहद आधेभाग और दूध, घी, शक्कर, दा [illegible] च के बीज, ताल खाना तथा पीपल एक एक भाग इनसबको एक साथ खूब मिलावे इस औषध को एक तोले ख [illegible] दूध पीनेसे अथवा इन औषधियों के द्वारा पाक कियेहुए घीके सेवनसे योनि के दोष नष्ट [illegible] इति क्षौद्रार्द्धभागघृत ॥ १५८ ॥

कर्पूररजसायुक्तावस्त्रवर्तिःशनैःशनैः । मेढ्रमार्गान्तरेन्यस्तामूत्राघातंव्यपोहति ॥ धान्यगोक्षुरकःक्वाथःकल्कसिद्धंघृतंहितम् । मूत्राघातेमूत्रकृच्छ्रेशुक्रदोषेचदारुणे ॥ धान्यगोक्षुरकंघृतम् ॥ १५९ ॥

कपूरके चूर्णको वस्त्रमें लगावे फिर उस वस्त्र [illegible] बत्तीबनाकर धीरे २ लिंगमें प्रवेश करनेसे मूत्राघातका नाश होताहै धनियां तथा गोखुरू इनके [illegible] और [illegible] के द्वारा पाक कियेहुये घीके सेवन से मूत्राघात, मूत्रकृच्छ्र और भयंकर वीर्य्यदोष न [illegible] तेहैं ॥ [illegible] धान्यगोक्षुरकघृत ॥ १५९ ॥

मूत्रकृच्छ्रेश्मरीरोगेभेषजंयत्प्रकीर्तितं [illegible] तेषु कृच्छ्रेषुतत्कुर्याद्देशकालवित् ॥ इति मूत्राघाताधिकारः ॥ १६० ॥

मूत्रकृच्छ्र और पथरीमें जो औषध कहीगई हैं वह औषधि [illegible] का जाननेवाला वैद्य मूत्राघातों में भीदेवे ॥ इति मूत्राघाताधिकार ॥ १६० ॥

वातपित्तकफैस्तिस्रश्चतुर्थीशुक्रजामता । प्राय [illegible] श्रयाःसर्व्वा अश्मर्यःस्युर्यमोपमाः ॥ श्लेष्माश्रयाःश्लेष्मसमवायिकारणाः [illegible] ताशुक्रजायास्तुशुक्रस्यैव [illegible]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...जत्वात् अन्येतु शुक्राश्मर्य्यामपि कफकारणत्वमिच्छन्ति ... दश्चात्र ...मि...या चिकित्सांविना ॥ ...॥

प... धिकार ॥

...का॥ ...धसु...कोवशि... इनचारे प्रकारोंकी पथरियों में से पहली तीन पथरी कफके ...श्मरीशर्कराकृच्छ्रमारुता... समवायिकारण से उत्पन्न होतीहैं चिकित्साके विना यह ...॥ ...नाशिके ... कोई कोई वीर्य्यकी पथरीमें भी कफकोही कारण बतातेहैं ॥१६१॥

अथ संप्राप्तिमाह ॥

विशोषयेद्बस्तिगतंसशुक्रंमूत्रंसपित्तंपवनःकफंवा । यदातदाश्मर्य्युपजायतेतुक्रमेण पित्तेष्विवरोचनागोः॥पवनोवस्तिगतंसशुक्रंमूत्रंसपित्तंकफंवाशोषमुपनयेत्॥ यदातदा ...श्मरीभवतिक्रमेणक्रमशोवर्द्धमाना ... यथागोपित्तेषुरोचनेवेत्यन्वयः तस्याऽनेकदोषाश्र ...ह । अनेकदोषाश्रयाः सर्व्वाः ॥ १६२ ॥

पथरीकी संप्राप्ति ॥

...स्तिमें स्थित वीर्य्यसहित मूत्रको अथवा पित्तसहित कफको सुखातीहैं तब गौके पित्तेमें जैसे ...शुल...त्पन्न होताहै उसीप्रकार पथरी उत्पन्न होतीहै सबप्रकारकी पथरी त्रिदोषज होती हैं १६२॥

अथासां पूर्व्वलक्षणमाह ॥

वस्त्यो... शेषुपरितोऽतिरुक् । मूत्रेवस्तसगन्धत्वमूत्रकृच्छ्रज्वराऽरु... ॥ वस्तश्छगलकः ॥ १६३ ॥

पथरीका पूर्व्वरूप ॥

...थरी होनेसे पहले मूत्राशयमें अफरा, मूत्राशयके सब ओर अत्यन्त पीडा, मूत्रमें बकरेके मूत्रकीसी दुर्गन्धि, मूत्रकृच्छ्र, ज्वर और अरुचि यह सब लक्षण होतेहैं ॥ १६३ ॥

अथ सामान्यलक्षणमाह ॥

सामान्यलिंगरुग्नाभिसेवनीवस्तिमूर्द्धसु... विशीर्णधारंमूत्रंस्यात्तयामार्गनिरोधने ... तत्संक्षोभात्क्षतेसास्त्रमायासाच्चाति म॥ तद्व्यपायात्सुखंमेहेदुच्छंगोमेदकोपम... धारंसविच्छेदधारं तयाश्मर्यामार्गः मूत्र रुग्भवेत् ॥ वस्तिमूर्द्धानाभेरधो... वायुना... मूत्रमार्गादन्यत्रगमनात् सुखं मेहेत्मूत्र वाहिस्रोतः तद्व्यपायात् कदाचि... तस्तद्वर्णंतत्संक्षोभात् तस्याअश्मर्य्याः ...येत् गोमेदकोपमं गोमेदकोमणिः ... स्नं सरक्तं मेहेत् आयासात् प्रवाहनादि सञ्चारात् घर्षणेनमूत्रवहे स्रोतसि... जनितात् ॥ १६४ ॥

...सामान्यलक्षण ॥

पथरीरोग में नाभि, सींवन ... नीचे पीडा होती है पथरीके द्वारा मूत्रद्वार के रुकजाने पर धार टूट २ कर मूत्र निक... वायुके द्वारा मूत्रद्वारसे पथरीके हटजानेपर विना क्लेश निर्मल तथा कुछ रक्तवर्ण मूत्र निकल... के रगडनेसे मूत्रके लेचलनेवाले स्रोतोंके घायल होजानेपर रुधिरसहित मूत्र निकलता... करनेसे बहुत पीडा होती है ॥ १६४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वातोल्बणमाह ॥

तत्रवात्ताद्भृशञ्चार्त्तो दन्तानूखादति ... अस्ताति मेहनंनाभिं ... ति ... कणन् ॥ सानिलंमुञ्चतिशकृन्मुहुर्मेहतिबिन्दुशः । श्यावा ... रूक्षा ... मन्थपाषाणशिग्रुवरुण एटकैरिव ॥ तस्याः पूर्वेषुरूपेषु स्नेहादिक्रमइष्यते । ... गोक्षुरैः ॥ अश्मघ्न्यारग्वधफलैः क्वाथंकृत्वाविचक्षणः । ... वर्षवङ्‌ ... रः ॥ अश्मरीमूत्रकृच्छ्रघ्नं दीपनंपाचनंपरम् । हन्यात्कोष्ठाश्रितंवातं कट्यूरुगुदम् ॥ इति शुण्ठ्यादिवरुणादिकषायः ॥ १६५ ॥

अधिक वातवाली पथरीके लक्षण ॥

वातज पथरी में मनुष्य पीड़ित होकर दांतोंको रगड़ताहै कांपता है लिंग तथा नाभिको बहुत दबाताहै और मूतने के समय शक्तिसहित मल त्याग करता है और वारंवार बूंद २ पेशाब करता यह पथरी धुमैले वर्णवाली, रूखी और कांटोंसेयुक्त सी होती है वातज पथरी के पूर्वरूप ... आदिके द्वारा चिकित्सा करनी चाहिये सोंठ,अरणी,पाषाणभेद,सहजन,वरुणा,गोखुरू,गम्भारि, अमलतास इनके काढ़ेमें हींग,जवाखार तथा सेंधानोन डालकर पीने से पथरी,मूत्रकृच्छ्र ... कमर, जंघा, गुदा तथा लिंगमें स्थित वायु इनसब का नाश होताहै यह दीपन और पा... शुंठ्यादि वरुणादि कषाय ॥ १६५ ॥

एलोपकुल्यामधुकाश्मभेदकौन्तीश्वदंष्ट्रावृषकोरुबूकैः । शृतं ... रश्चाश्मरिमूत्रकृच्छ्रं ॥ इति एलादिक्काथः ॥ १६६ ॥

इलायची, पीपल, मुलहठी, पाषाणभेद, गगनधूल, गोखुरू,बांसा और रेंडी की जड इनके ... मिलाकर ... शिलाजीत डालकर पीनेसे शर्करा और पथरीसहित मूत्रकृच्छ्रका नाशहोताहै॥इति एलादिक...

वरुणस्यत्वचंश्रेष्ठांशुण्ठीगोक्षुरसंयुताम् । यवक्षारंगुडंदत्त्वाक्काथयित्वापिबेद्धितम् ॥ अश्मरीवातजांहन्तिचिरकालानुबन्धिनीम् । इति वरुणादिकषायः ॥ १६७ ॥

वरुणा की छाल के काढ़ेमें सोंठ,गोखुरू,जवाखार और गुड डालकर पीनेसे बहुत पुरानी वातज पथरी का नाश होताहै ॥ इति वरुणादि ... १६७ ...

पाषाणभेदोवसुकोवशीरोश्मन्तकस्त... । ... वरीश्वदंष्ट्राचबृहतीकण्टकारिका । कपोतवक्त्रार्तगलकाञ्चनोशीरगुंद्रकाः ... वृक्षादनी भल्लुकश्चवरुणःशाकजंफलम् ॥ यवाःकुलत्थाःकोलानिकतकस्यफलानिच ... ध्नीवापमेषांक्काथेशृतंघृतम् ॥ भिनत्तिवातसम्भूताश्मरींक्षिप्रमेवतु । इति ... घृतम् ॥ १६८ ॥

पाषाणभेद, आक, गजपीपल, अश्मंतक,सतावरि,गोखुरू ... भटकटैया,कपोतवक्का,काले फूल का पियाबांसा, कांचनवृक्ष, खस, कंकुनी,गिलोय,भल्लूक ... शाककफल,जौ,कुलथी,बेर,निर्मली और ऊषकादि गणका कल्क इनसबके काढ़े के द्वारा पा... हुआ घी शीघ्रही वातज पथरी को नाश करताहै ॥ इति पाषाणभेदादि घृत ॥ १६८ ॥

क्षारान्यवागूःपेयास्तुकषायांश्चपयांसिच।भोजनानि ... र्योऽस्मिन्वातनाशने १६९

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...पेया, क्वाथ, दूध और भोजनके पदार्थ ऊपर कहीहुई औषधियों ... ... करके वात- ... चाहियें ॥ १६९ ॥

... मन्थश्चक ... ः । मोरटेन्दीवरःसूर्यभक्तागोक्षुरुटुण्टुकाः ॥ वसुकोवशिरि ... भेदकः । गुन्द्रोनलःकुरुण्टश्चगणोवीरतरादिकः ॥ ... श्मरीशर्कराकृच्छ्रमारुता ... रोमतः । बृहद्वातेवीरतरस्तदभावेमतःशरः । इति वा ... ॥ १७० ॥

गांडर, ... णी, कास, बांदा, कुश, ईखकी जड, शतावरि, सूर्यभक्ता, गोखुरू, सोनापाठा, आक, गजपीपल, दर्भ, झिंटी, पाषाणभेद, ककुनी, नरकुल और सुनहरी इनसब औषधियों को वीरतरादि गण कहते हैं इनके द्वारा वातज पथरी, शर्करा और मूत्रकृच्छ्र का नाश होताहै इति वाताश्मरी ॥ १७० ॥

पित्तेनदह्यतेवस्तिःपच्यमानइवोष्ण ... भल्लातकास्थिसंस्थानारक्तापीतासिताश्मरी १७१

... पित्तज पथरी भिलावें के बीजके समान आकृतिवाली, लाल, पीली अथवा काली होती है और ... में मूत्राशय में दाह तथा ऊष्मा के द्वारा जलनसी मालूम होतीहै ॥ १७१ ॥

... कुशःकाशःशरोगुन्द्र उत्कटोमोरटाश्मभित् । दर्भोविदारीवाराहीशालिमूलंत्रिकण्टकः ॥ ... ः पाटलापाठापत्तूरोऽथकुरुण्टिकाः ॥ पुनर्नवाशिरीषश्चक्वथितास्तेषुसाधितम् ॥ घृतं शुसंस्र ... वरस्यच । त्रपुषैर्वारुकादीनांबीजैश्चावापितंशुभम् ॥ भिनत्ति ... प्रमेवच । बीजंबीजसारःसरोजबीजंवाइतिकुशाद्यंघृतम् १७२॥

पित्तस ... कुश, कास, सरकंडा, ... नी, तज, ईखकी जड, पाषाणभेद, दर्भ, बिलारीकन्द, बाराहीकन्द, शालिधान्य ... जड, गोखुरू, अरलू, पाटला, पाठा, पत्तूर, झिंटी, पुनर्नवा तथा सिरस इनके क्वाथके साथ घी को शि- ... त, मुलहठी, कमलगट्टे और ककडी तथा खीरेके बीज इनका कल्क डालकर विधिपूर्वक पाक करै इसके सेवनसे पित्तज पथरी का शीघ्रही नाश होताहै इति कुशादि घृत ॥ १७२ ॥

क्षारान्यवागूंपेयाश्चकषायाश्चपयांसिच । भोजनानिचकुर्वीतवर्गेऽस्मिन्पित्तनाशने १७३

क्षार, यवागू, पेया, क्वाथ, दूध और भोजन के पदार्थ बनाकर ऊपर कही हुई औषधियों के द्वारा सेवन करने से पित्तज पथरी का नाश होताहै ... ॥

शिलाजतुशिलाह्वंस्यात्पटेरो ... । मधुकःकृतहस्वत्वाद्बीजैर्बीजकमुच्यते ॥ ... वर्गत्वेनयथालाभंपरिभाषाप्रवर्त्तते ॥ इति कुर्यात्क्षीरादिकंक्वाथतस्मिन् ... पित्ताश्मरी ॥ १७४ ॥

... शिलाजीत बटेर शब्दसे गुन्द्र तथा सर्पत मधुक ... क्वाथ तथा दूध आदिके बनाने में ... का ग्रहण होताहै इस सामान्य परिभाषा के कहने से मुलहठी और बीज कहनेसे ... ... श्मरी ॥ १७४ ॥ अनुसार कार्य्य करना चाहिये ...

... तलोगुरुः । अश्मरीमहतीश्लक्ष्णामधुवर्णाथवासि वस्तिर्निस्तुद्यतइवश्लेष्म ... लेष्वेवतुभूयसा । आश्रयोपचयाल्पत्वाद्ग्रहणाहरणेसुखाः ॥ ता ॥ एताभवन्तिबाला ... नीत्युणाभिः । कुष्ठभद्राह्वमरिचचित्रकैःससुराह्वयैः । एतैःसिद्ध गणेवरुणकादौतुगुग्गुलं ...

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मजासर्पिर्लि... गणेनवा । भिनत्तिकफसुम्भूतामश्मरींक्षिप्रमेवच ॥ सह... त्रेष्टोगणःश्यामाादंकोबुधैः । इति वरुणघृतम् ॥ १७५ ॥

कफज पथरीमें.मूत्राशय भारी,शीतल तथा सुई... डासे युक्त है ... अति ... पथरी बड़ी चिकनी तथा श्वेत अथवा शहद के समान वर्णवाली होती है यह तीनों पथरी प्रायः बालकोंके होती हैं बाल्यावस्थामें मूत्राशय के बढ़नेवाले और छोटे होने के कारण पथरी सुखपूर्वक खेंची ... ग्रहण कीजासक्तीहैं वरुणादि गणके काढ़ेके साथ बकरीके घीमें गूगल ... कटु ... मोथा,मिर्च, चीता, देवदारु और ऊषकादिगण इनसबको डाल पकाकर सेवन करने से शीघ्रही कफज पथरीका नाश होताहै इति वरुणघृत ॥ १७५ ॥

वरुणार्त्तगलीशिग्रुस्तर्कारीनक्तमालकौ । मोरटारणिबिल्वाश्चबिम्बीवसुकचित्रकाः ॥ शैरेयोग्रशिरःक्षीरमजश्रृंगीशतावरी । दर्भौबृहतिका... ग्रीमुनिभिःपरिकीर्तितः ॥ वरुणादिगणोह्येषकफमेदोनिवारणः । विनिहन्तिशिरःशूलंगुल्माभ्यन्तरविद्रधीन् ॥ इति वरुणादिगणः ॥ १७६ ॥

वरुणा,झिंटी, सहजन,जयन्ती,करंजुआ, ईखकीजड, अरणी,बेल,कुंदुरू,आक, चीता,झिंटी, ... हिं... पीपल,सहजन,मेढ़ासिंगी,सतावर,दर्भ और दोनों भटकटैया इनसबको वरुणादिगण कहते हैं ... राति... द्वारा कफ मेद शिरकीपीड़ा गुल्म और भीतरकी विद्रधिका नाश होताहै इति वरुणादिगण ... मिलाकर

क्षारान्यवागूपेयांश्चकषायांश्चपयांसिच । भोजनानिचकुर्वीत ... गुड डालकर ... नाश ने इति कफाश्मरी ॥ १७७ ॥

ऊपर कहीहुई औषधियों के द्वारा क्षार यवागू पेया क्वाथ दूध और भोजन के पदार्थ बनाकर सेवन करने से कफकी पथरीका नाशहोताहै इति कफाश्मरी ॥ १७७ ॥

शुक्राश्मरीतुमहतांजायतेशुक्रधारणात् । अव्ययानामनेकार्थत्वात्तुशब्दोऽत्रावधारणो थःतेनमहतामेवनतुबालानांवक्ष्यमाणसम्प्राप्तेरसम्भवान्नतुशुक्राभावोवाच्यः शुक्रधारणार्थःबालानां वक्ष्यमाणसम्प्राप्तेरसम्भवात् नतुशुक्राभावोवाच्यः शुक्रेधारणाद्वेगामानस्य ॥ १७८ ॥

वीर्य्य की पथरी वीर्य के वेग के रोकने से बड़े ... होती है और बालकोंके नहीं होती ॥ १७८ ॥

शुक्राश्मर्याःस... प्तिमाह ॥

स्थानाच्च्युतममुक्तंहिमुष्कयोरन्तरेऽनिलः । शोषयि... पसंहृत्यशुक्रंतच्छुक्रमश्मरी ॥ अनिलःमैथुनवेगेनस्थानच्युतंशुक्रंमैथुनने... नष्ट हो... धृतंशुक्रंमुष्कयोःमेढ्रसहितयोःमेढ्रवृषणयोरन्तरइति । सुश्रुतवचनात्तेनमे... तत्रवस्तिमुखेउपसंहृत्यएकीकृत्य शोषयतितच्छुक्राश्मरीतथाभूतंशुक्रमेवाश्मरी ॥ १... यःसर्वाङ्ग...

वीर्य्य की पथरी की संप्राप्ति ...

जब कामके वेगके कारण अपने स्थानसे गिराहुआ वीर्य्य ... अंडकोशोंके मध्यमें स्थित वस्तिके मुखमें रुककर सूखजाताहै ... होकर वायुके द्वारा लिंग तथा ... पथरी उत्पन्न होतीहै १७६

१ निराताश्चोपसर्गाश्च धातवश्चेति ते त्रयः । अनेकार्थाः स्मृताः सर्वे पाठस्तेषां निद... मिति ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ तस्यालक्षणमाह ॥

...छमूत्रत्वंमुष्कश्वयथु... । तस्यामुत्पन्नमात्रायांशुक्रमेतिविलीय
ते ॥ ...स्मिन्नश्मर्यवच... । तस्यांशुक्राश्मर्याम् ॥ उत्पन्नमात्रायांय
...पि विलीयतेविलयं... ति तदाशुक्रमेतिमूत्रमार्गात्प्रवर्तते पीडितेत्ववकाशेऽ
...अवकाशेस्थानमेढ्रवृषणयोरन्तरे पीडितेप्रतिसाविली
...भवति । अव...थाभेदादश्मरीशर्करासिकताभवतीत्याह ॥ अश्मर्यैवचश
... । चकारात्सिकताच...तिशर्करासिकतयोश्चभेदोमहत्त्वाल्पत्वाभ्यांबोद्धव्यःकथ
...रीशर्कराभवतीत्याह ॥ साभिन्नमूर्तिर्वातेनशर्करेत्यभिधीयते ॥ १८० ॥

वीर्य्य ...री के लक्षण ॥

...र्य की पथरी में मूत्राशय में पीडा कष्टसहित मूत्रका निकलना और अंडकोशोंमें सूजन यह ...लक्षण होते हैं इसके उत्पन्न होतेही वीर्य्य निकलताहै और लिंग तथा अंडकोशों के मध्य में ... पथरी भीतरकी ओर चलीजाती है शर्करा और सिकता यह दोनों रोग पथरीहीकी अवस्था ...ते हैं पथरी वायुके द्वारा भिन्न होकर शर्करा और सिकता कहलाती है इनदोनों में भेद ...र्कराकी अपेक्षा सिकता कुछ पतली होती है ॥ १८० ॥

...श्मरीशर्करायाःपातमवरोधञ्चसहेतुकमाह ॥

...अणुशोवायुनाभिन्ना...तास्मिन्ननुलोमगे ॥ निरेतिसहमूत्रेणप्रतिलोमेविबुध्यते ।
...तःप्रवृत्तासासक्ताकुर्य्यादुपद्रवान् ॥ अश्मरीतस्मिन्नाश्रयेसाशर्करासक्तालग्ना
... । १८१ ॥

पथरी सहित शर्कराके गिरने और रुकनेके कारण ॥

वायु के द्वारा भिन्नहुई शर्करा तथा सिकतारूप पथरी वायुको अपने मार्ग के अनुसार होनेपर मूत्रके साथ निकलजाती है और वायु के विरुद्ध होने पर रुकके मूत्रके स्रोतों में प्राप्तहोकर अनेक प्रकार के उपद्रवों को करती है ॥ १८१ ॥

अथोपद...

दौर्बल्यंसदनंकार्श्यंकुक्षिरोगम...रुचि...पाण्डुत्वमुष्णवातञ्च तृष्णाहृत्पीडनंवमि
म् ॥ उष्णवातंमूत्राघातविशेषण...हि । १८२ ॥

...ड्डि, अरुचि, पांडु, उष्णवात नाम मूत्राघात, तृषा, दुर्बलता, शरीर की शिथिलता, कृशता, ... हृद्रोग और छर्दि यह सब उपद्रवहैं ॥ ...

अथ...रासिकतानामरिष्टमाह ॥

प्रशूननाभिवृषणंबद्धमू...तुरम् । अश्मरीक्षपयत्याशुशर्करासिकतान्विता ॥
शर्करासिकतेतिनामद्वयम...ति १८३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पथरी शर्करा और सिकता के अरिष्ट ॥

पथरी, शर्करा और सिकता रोगमें जो रोगी ... नाभि तथा अंडकोश सूज ... और पीडा होय तो वह मरजाता है ॥ १८३ ॥

अथाश्मर्य्याश्चिकित्सामा...

शुक्राश्मर्यांतुसामान्योविधिरश्मरिनाशनः । यव... गडोन्मिश्रंरसंपुष्पफलो... पिबेन्मूत्रविबन्धघ्नंशर्कराश्मरिनाशनम् । तिलापामार्गकदली... थःपेयोऽविमूत्रेणशर्कराश्मरिनाशनः। केवुकाङ्कोठकतकशाकेन्दीवरजैःफलैः... पीतमें म्बुमगुडंशर्करांपातयत्यधः । पाषाणभिद्गोक्षुरकोरुबूके द्वौकण्टकार्यौक्षुरकाङ्कमूल दध्नापिबेत्क्षीरसुपिष्टमेततूस्याद्धेदनार्थंसिकताश्मरीणाम् । यःपिबेद्रजनींसम्य... डांतुषवारिणा ॥ तस्याशुचिरगूढापियात्यस्तमेढ्रंशर्करा । पिबतःकुटजंदध्नापथ्य... स्वादतः । निपतन्त्यचिरात्तस्यनियतंमेढ्रशर्करा ॥ त्रपुसबीजंपयसापीतंवा... जंकुसुमम् । विण्मूत्रशर्करावाभवतिसुखीकतिपयैर्दिवसैः ॥ श्वदंष्ट्रावरुणःशुण्ठी क्षौद्रयुतंपिबेत् । शर्कराश्मरिशूलघ्नंमूत्रकृच्छ्रहरंपरम् ॥ कूष्माण्डकरसोहिंगुमलाकर मायुतः । वस्तीमेढ्रेमशूलघ्नंमूत्रकृच्छ्रहरंपरम् ॥ पुनर्नवायोरजनीश्वदंष्ट्राफला ... सदर्भपुष्पः । क्षीराम्रमद्येक्षुरसप्रपिष्टःपयोभवेदश्मरीशर्करे... गुड डालि... शुण्ठिगोक्षुरकैःकृतः । कषायःक्षारसंयुक्तःशर्कराश्चभिनत्यपि ... ॥ १८४ ॥

पथरी की चिकित्सा ॥

वीर्य की पथरी में सामान्य पथरी की चिकित्सा करनी चाहिये कैथे के रस में जवा... गुड छोडकर पीने से मूत्रका रुकना, पथरी और शर्करा का नाश होता है तिल, लटजीरा, ... ढाक, जौ और बेल इनसबके काढे में भेडका मूत्र डालकर पीने से शर्करा और पथरी का नाश होता है केवुक, पिस्ता, निर्मली, शाक और कमलगट्टे इनसबके चूर्ण में गुड मिलाकर गरम जल के साथ पीने से शर्करामूत्रके साथ बहजाती है पाषाणभेद, गोखुरू, अरंडकी जड, दोनों भटकटैया और तालमखाने की जड इनसब के चूर्ण को ... कर दही के साथ पीने से सिकता और पथरी का नाश होता है गुड सहित काञ्जी के स... हल्दी ... चूर्ण को पीने से बहुत पुरानी शर्करा का भी नाश होता है कुरैया के चूर्ण को दही के ... पीकर ... भोजन करने से शीघ्रही ... में स्थित शर्करा गिरपडती है खीरेके बीज अथवा नारि... के फूल ... के साथ पीनेसे थोडे दिनों में मलमूत्र से हुई शर्कराका नाश होता है गोखुरू, वरुना... के काढे में शहद डालकर पीने से शर्करा तथा पथरी का शूल और मूत्रकृच्छ्र का नाश ... रस में हींग और जवाखार डालकर पीने से मूत्राशय तथा लिंगकी पीडा और मूत्रकृच्छ्र का नाश ... है पुनर्नवा, लोहचूर्ण, हल्दी, गोखुरू, प्रियंगु और दर्भपुष्प इनसबको दूध आमका रस मद्य ... के साथ पीसकर पीनेसे पथरी और शर्करा का नाशहोताहै वरुणाकीछाल, पाषाणभेद, सोंठ ... गोखुरू इनकेकाढे में शहद और शक्कर डालकर पीनेसे शर्करा का नाश होता है ॥ १८४ ॥

पञ्चमूल्यास्तृणाख्यायास्तथागोक्षुरकस्यतु । ... फलानूभागाञ्जलद्रोणेविपा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...मूत्रावशिष्टेनघृतप्रस्थंविपाचयेत्... गुडगोक्षुरबीजञ्चकल्कं... तत्र... दापयेत् ॥ ...शर्करास्वश्मरी... तद्घृतेभाजनेचैवप्रयोज्यंसर्पिरुत्तमम् ॥ इति ...मूलाद्यंघृतम् ॥ १८५ ॥

...तृणपञ्चमूल तथा गोखुरू इन ... दश २ पललेकर १०२४ तोले जलमें पाककरके चौथाई बाकी ... इस काढेके साथ ६४ तोले घीको गुड तथा गोखुरूका कल्क ... विधिपूर्वक पाककरे ... भोजनमें इस घृतके सेवनसे मूत्र दोष शर्करा तथा प... का नाश होताहै इति तृण...मूलादि घृत ॥ १८५ ॥

त्वक्पत्रफलमूलस्यवरुणस्यत्रिकण्टकात् ॥ कषायेणपचेत्तैलंवस्तिनास्थापनेनच ॥ ...शर्कराश्मरिशूलघ्नंमूत्रकृच्छ्रात्प्रमुच्यते । इति वरुणतैलम् ॥१८६

...वरुणाकी छाल,पत्ते,फूल तथा जड और गोखुरू इन सबके काढेके साथ पाक किये हुये तेलके ... शर्करा,पथरी,शूल तथा मूत्रकृच्छ्रका नाशहोताहै इति वरुणतैल ॥ १८६ ॥

...कुशाग्निमन्थशैरीयनलदर्भेक्षुगोक्षुराः । कपोतवङ्कावसुकवशिरेन्दीवरीशराः ॥ धात... ...न्दाकाःकर्णपूराश्मभेदकाः । एषांकल्ककषायाभ्यांसिद्धंतैलंप्रयोजयेत् ॥ पानाभ्यं... ...वस्तिनोत्तरवस्तिना । शर्कराश्मरिरोगेषुमूत्रकृच्छ्रेचदारुणे ॥ प्रदरेयोनिशूले... ...गर्भप्रदंप्रोक्तंतैलमेतत्कुशादिकम् ॥ इति कुशाद्यतैलम् । शुक्राश्मरी ॥ १८७ ॥

...कुश,अरणी,झिंटी,नरकुल,दर्भ,ईख,गोखुरू, कपोतवङ्का, आक,गजपीपल,सतावरि,सर्कंडा,धवई, ...दा,सिरस और पाषाणभेद इनके कल्क और काढेके द्वारा तेलको पाककरके पान, अभ्यंग, ... और उत्तरवस्ति में सेवन करने से शर्करा, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, प्रदर,योनिशूल तथा वीर्य्य के दोष नष्टहोते हैं और बंध्याओं के पुत्र होतेहैं इति कुशादितैल इति शुक्राश्मरी ॥ १८७ ॥

नागरवरुणगोक्षुरपाषाणभित्कपोतवङ्कजःक्वाथः । गुडयवशूकविमिश्रःपीतोहन्त्यश्मरीमुग्राम् ॥ त्रिकण्टकस्यबीजानांचूर्णमाक्षिकसंयुतम् । अविक्षीरेणसप्ताहंपेयमश्मरिनाशनम् ॥ पिबेद्वरुणजंमूलंक्वाथंतत्कल्कसंयुतम् । क्वाथश्चशिग्रुमूलोत्थःकदुष्णोऽश्मरिनाशनः ॥ शृङ्गबेरयवक्षारपथ्याः... दधिमण्डोभिनत्त्युग्रामश्मरिमाशुपानतः ॥ पाषाणभेदवरुणगोक्षुरक...कपोतवङ्क...क्वाथः । गिरिजतुगुडप्रगाढःकर्कटिकात्रपुषबीजयुतः ॥ पेयोऽश्मरीमवश्यं...दीर्घसतियोगवरःशिखरिणमिवशतकोटिःशत...थेतेनयःपुमानद्यात् ॥ शाकमसितमथवान्यो... हस्तनिर्मुक्तः । श्रीकरिणीफल...एडबीजानिनागरंवरुणत्वचः ॥ एतत्क्वाथवरंप्रातःस्याद्धन्याद्रोगाश्मरीपीडाम् ... तालतालकाशेक्षुबालीसकुशोदकानि ॥ पिबेत्सितापिबेदश्मरिनाशनम् । रक्तो... क्षौद्रयुतानिखादेद्धिदारि... खानिचैव ॥ १८८ ॥

सोंठ,वरुणाकीछाल,गुखुरू,पाषाणभेद और कपोतवङ्का इनसबके काढेमें गुड और जवाखार डालकर पीनेसे भयंकर पथरीका नाश होता है । शहदयुक्त गुखुरूकेबीजों के चूर्णको भेडीकेदूधकेसाथ सातदिन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पीनेसे पथरीका नाशहोताहै वरुणाकीजडकेकाढेमें [illegible]केकल्ककोमिलाकरपीनेसे अथवा [illegible] जडके कुछ गरमकाढेके पीनेसे शीघ्रही पथरीका नाश [illegible] जवाखार, हड और [illegible] चूर्णसे युक्त दहीकामण्ड शीघ्रही पथरीको नाशकरता [illegible] पाषाणभेद, वरुणा, गुखुरू, और [illegible] सबके काढेमें शिलाजीत, गुड और खीरे, ककडीकेबीजकाचूर्ण [illegible]कर पीनेसे असाध्य [illegible] नाश होताहै श्रीकरणीकेफलोंके बीज निर्जलमट्ठेकेसाथखानेसे प[थरी]कानाशहोताहै और [illegible] खानेसेभी पथरीकी पीडाका नाश होताहै गुखुरू, रेंडीकेबीज, सोंठ और वरुणाका [illegible] को प्रातःकाल पीनेसे पथरीकानाश होताहै रक्ततृण, कमलकीडंडी, [ता]लमूली, कांस, ईख [की] जड, [illegible] वाली, कुश और सुगन्धबाला इनसबके काढेको शहद तथा शक्कर डालकर पीनेसे और बिलारी [illegible] ईख तथा खीरेके बीज खानेसे पथरीकानाश होताहै ॥ १८८ ॥

पलान्यष्टौतुकुर्वीतक्षाराणांवरुणत्वचम् । [illegible]र्द्धंयावशूकन्तुततोऽप्यर्द्धंगुडा[illegible]म्॥एकीकृत्यविमृद्यैततूखादेतूकर्षप्रमाणतः । धर्माम्बुपानतोऽवश्यंकृच्छ्राश्मरिवि[illegible]म् ॥ वरुणकभस्मपरिस्रुतसलिलंतच्चूर्णयावशूकयुतम् । क्वथनीयंतत्तावद्यावच्चूर्णत्[illegible] याति॥तदूगुडयुक्तंहन्यातूतदुदारामश्मरींघोराम् । प्लीहानंगुल्मवरंश्रोण्यांकुक्षौ[illegible] ब्राम् ॥ आमचयंवस्तिगदानूकृच्छ्रंवातजांघोराम् । वह्निसदनंसुकष्टमश्ममयी[illegible] शु ॥ इति वरुणाद्यंचूर्णम् ॥ १८९ ॥

वरुणा की छालका क्षार ३२ तोले जवाखार १६ तोले गुड ८ तो[ले] [illegible] एकमें मिलाक[र] गरम जलके साथ १ तोला रोजखाने से मूत्रकृच्छ्र और पथरी का नाश होताहै वरुणाकी छाल[के] क्षारसे टपकाया हुआ जल वरुणाकी छालका चूर्ण और जवाखार इनसबको एकसाथ पाक[र] पानी जलकर केवल चूर्णमात्र बाकी रहै तब उसमें गुड मिलाकर खाने से भयंकर पथरी, [illegible] गुल्म, नितंब तथा कोखकीपीडा, आमदोष, वस्तिकेरोग, वातज, मूत्रकृच्छ्र, मन्दाग्नि औरपत्थरकेसमान कठोर पथरी इन सबका नाश होताहै इति वरुणादि चूर्ण ॥ १८९ ॥

नोजगंधंकृमिभिर्घनंसुतरुणंस्निग्धंश[ु][illegible]नीथानजं । घस्रेपुण्यनिरीक्षितेवरुणकंस्थि त्यातुलांग्राहयेत् । संगृह्याशुचतुर्गुण[illegible]हम[illegible]पादशेषंजलं । तत्तुल्येनगुडेनवैदृढ तरेभाण्डेपचेत्तत्पुनः ॥ ज्ञात्वैवंघनतांगुडे[illegible]तेषा[illegible]कमेषांपलम् । शुण्ठ्येर्वारुकबी जगोक्षुरकणापाषाणभिच्छ्वातलाः ॥ कूष्[माण्ड][illegible]त्रपुषा[illegible]बीजकुनटीवास्तूकसौमाञ्जनैः । द्राक्षैलागिरिजाभयाकृमिहतांचूर्णीकृतान[illegible] ॥ [illegible]ध्यासीप्रतिवासरंगुडममुंयुञ्ज्यात प्रमाणंनरः। खादेत्तस्यसमस्तदोषजनित[illegible]न्तिद्रुतम्॥ इति वरुणकगुडः १९०॥

शुभनक्षत्र युक्त पवित्र दिनमें पवित्रस्थानसे कीडों से [रहित] [illegible] घनीस्निग्ध और तरुण बरुणा की छाल ४०० तोले लावे और उसको चौगुने जल में [illegible] चौथाई बाकी रहने पर छानले फिर उस काढे में उतनाही गुड मिलाकर किसी मजबूत मट्टी[के] [illegible] में पाककरे जब पाग गाढा होजाय तो सोंठ, ककडीके बीज, गोखुरू, पीपल, पाषाणभेद, [illegible] [कु]ठा, खीरा तथा बहेडेके बीज, धनियां, बथुई, सहजन, दाख, इलायची, शिलाजीत, हड और [illegible] इनसबका चार२ तोले चूर्ण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...ल इस गुडको मात्राके अनुसार ... जैसे और पथ्य भोजन करने से सब प्रकार ... नष्ट हो जाती हैं इति ... गुडक ... १६० ॥

...धूत ... विडंगसार ... शर्करा ... याव शूकम् । बीजानि कूष्माण्डकगोक्षुरा ... तैद्दरुणस्यतोये ॥ ... साध्यसर्वाश्मरिमूत्रकृच्छ्रंमूत्राभिघातञ्च समूत्रबन्धम् । ... पीडा निवज्रपातः इति कुलत्थाद्यंघृतम् ॥ १६१ ॥

...मान, बायबिडंग, शक्कर, पटुआ, जवाखार, पेठेके बीज तथा गोखुरू इन सबके द्वारा ...की छालके काढ़ेमें पाककि... हुये घीके सेवनसे दुस्साध्यपथरी, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात और मूत्रा- ... नष्ट होते हैं इति कुलत्थादि घृत ॥ १६१ ॥

...रादिपञ्चमूलीवाकषायेणपचेद्घृतम् । प्रस्थंगोक्षुरकल्केनसिद्धमद्यात्सशर्करम् ॥ ...रीमूत्रकृच्छ्रघ्नंशुक्रमार्गरुजापहम् । इति शरादिपञ्चमूलाद्यंघृतम् ॥ १६२ ॥

...ञ्चमूलके काढ़ेके साथ घीमें गोखुरूका कल्क डालकर पाककरे फिर शक्करकेसाथ इस घीको ...से पथरी मूत्रकृच्छ्र और वीर्य्य के मार्गकी पीडा नष्ट होतीहै इति शरादिपञ्चमूलादिघृत॥१६२॥

...स्यतुलांक्षुण्णां जलद्रोणेविपाचयेत् । पादशेषंपरिस्राव्यघृतप्रस्थंविपाचयेत् ॥ ...सं... बिल्वंतृणजंपञ्चमूलकम् । अमृताचाश्मभेदश्चबीजञ्चत्रपुषस्यच ॥ शतप... ...च । यूथिकायाश्चमूलानिकार्षिकानिसमावपेत् ॥ अस्य ...पिबेज्जन्तुर्द... ...यपेक्षया । जीर्णेचास्मिन्पिबेत्पूर्वंगुडंजीर्णञ्चमस्तुच ॥ अ... ...शर्कराञ्चैवमूत्रकृच्छ्रञ्चनाशयेत् । इति वरुणाद्यंघृतम् ॥ १६३ ॥

...तोले बरुणाकी छालके काढ़ेके साथ ६४ तोले घीको बरुणा, केला, बेल, तृणपंचमूल, गि- ...य, पाषाणभेद, खीरेकेबीज, बांसकीजड, तिलोंकाक्षार, ढाककाक्षार औरजूहीकीजड इनसबके तोले २ ...भर कल्क छोडकर विधिपूर्व्वक पाककरे फिर देशकालको विचार मात्राके अनुसार इसघीकेसेवनसे पथरी, शर्करा और मूत्रकृच्छ्रका नाशहोताहै इस घीके परिपाक होनेपर पहले गुड मिलाकर दहीका तो- ...ड पिये इति बरुणादि घृत ॥ १६३ ॥

सैन्धवाद्यन्तुयत्तैलमृषिभिःपरि... ...तैलद्विगुणंक्षीरंपचेद्वीरतरादिना॥ क्वाथे ...नपूर्व्वकल्केनसाधितन्तुभिषग्वरैः ... एत... ...श्रेष्ठमश्मरीणांनिवारणम् ॥ मूत्राघातेमू... ...त्रकृच्छ्रेपिच्चितेमथितेतथा । भग्ने ... ...सर्वथैवप्रशस्यते ॥ इति वीरतराद्यंतै... ...लम् ॥ १६४ ॥

सैंधवादि तैलके कल्कके द्वारा वीरत... ...साथ और द्विगुणित दूधके साथ विधिपूर्व्वक पाक किये हुये तेलके सेवनसे पथ... ...,मूत्रकृच्छ्र, पिच्चित तथा मथितव्रण भग्न और श्रम का नाश होताहै इति वीरतरादि तैल ... ॥

वीरवृक्षाश्मभेदाग्निम... ...नाकपाटलः । वृक्षादनीसहैरण्डभल्लूकोशीरपद्मकम् ॥ कुशकाशशरेक्षूणामास्फोत... ...क्षयोः । शतावरीश्वदंष्ट्राचसोत्कटाद्वयवत्सुलाः ॥ ... ...तैः कषायैःकल्कैश्चतैलंधीरोविपाचयेत् ॥ वा... कपोतवङ्काश्रीपर्णीकाश... ...मूल... ...युता । ...

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तपित्तवि[illegible]रिषु[illegible]स्तंदद्याद्विचक्षणः [illegible]श्मरिशिलघ्नंमूत्रकृच्छ्रविनाश[illegible] वीरतराद्यंतैलम् ॥ १९५ ॥

अर्जुनकी छाल,पाषाण भेद,अरणी,सोनापाठा,[illegible],गिलो[illegible] अरंडकी [illegible],भल्लू[illegible] कुश,काश,सर्पत,ईख,मोगरा,तालमखाना,सतावर,गोखुरू,[illegible]नी,बेत,कपोत,[illegible] खंभारी इनसबके कल्क तथा काढ़के द्वारा पाककिये हुए तेलके [illegible] विकार,शर्करा,पथरी,शूल और मूत्रकृच्छ्र का नाश होताहै इति वीरतरादि तैल ॥ [illegible]

पुनर्नवामृतनाभीरुसक्षारलवणत्रयैः । शटीकुष्ठवचामुस्ता[illegible]रास्नाकट्फलप[illegible] वानीह्वुषाहिंगुशताङ्गासाजमोदकैः । विडंगातिविषायष्टीपञ्चकोलकसंयुतम् ॥ [illegible] समैःकल्कैस्तैलप्रस्थंविपाचयेत् । गोमूत्रंद्विगुणंदेयंकाञ्जिकंतद्वदेवतु ॥ पुनर्नवाद्य[illegible] तैलंपानेनवस्तिना । शर्कराश्मरिशूलघ्नंमूत्रकृच्छ्रप्रमोचनम् ॥ कटयूरुवस्तिमेढ्रस्[illegible] वंक्षणसंयुतम् । कफवातामशूलघ्नमन्त्रवृद्धेश्चनाशनम् ॥ इति पुनर्नवाद्यंतैलम् ॥ [illegible]

गदापूर्णा,गिलोय,सतावर,जवाखार,सेंधानोन,कालानोन,विट्नोन,कचूर,कूट,बच,मोथा,[illegible] कायफल, पुष्करमूल, अजवाइन, हाऊबेर,हींग,सौंफ,अजमोद,बायबिडंग, अतीस, मुलहटी[illegible] कोल इनसबके चार२ माशे कल्कके द्वारा १२८ तोले गोमूत्र और १२८ तोले कांजीके स[illegible]मिलाकर तेलको पाककरके इसके द्वारा उत्तर वस्ति लेनेसे और इसके पीनेसे[illegible] अन्त्रवृद्धि,कफ वातज शूल,आमशूल और कमर,जंघा,मूत्राशय,लिंग[illegible] गुड डाल[illegible]का शूल सब नष्ट होतेहैं इति पुनर्नवादि तैल ॥ १९६ ॥

व्रध्नाधिकारनिर्दिष्टंसैन्धवाद्यमिहष्यते । सर्वथैवोपयोज्यस्तुगणोवीरतरादिक[illegible] शीतैःकषायैश्चक्षीरैश्चोत्तरवस्तिभिः । बलवन्तोनशाम्यन्तेप्रत्याख्यायसमुद्ध[illegible] यदृच्छयामूत्रमार्गमायान्त्यस्त्वन्तराश्मताः । श्रोतसापहरेच्छित्वावडिशेनाथचोद्धरेत् ॥ इत्यश्मरीरोगनिदानचिकित्साधिकारः ॥ १९७ ॥

व्रध्नरोगके अधिकारमें कहाहुआ सैंधवादि [illegible] पथरीमें हितहै पथरीरोगमें वीरतरादि गण सब प्रकारसे काममें लाना चाहिये पथरी यदि [illegible], [illegible], उपचार, काढ़ा, दूध और उत्तरवस्तिके द्वारा नहीं शान्त होतीहै उसके आराम होनेकी [illegible] छोड़[illegible] अपने आप मूत्र द्वारमें आई हुई पथरी को काटकर निकाले अथवा बडिश नाम औ[illegible] खैंचले इति अश्मरी रोग निदान चिकित्साधिकार ॥ १९७ ॥

अथ प्रमे[illegible]चिकित्सा ॥

आस्यासुखंस्वप्नसुखंदधीनिग्राम्योद[illegible]नूप[illegible]पांसि । नवान्नपानंगुडवैकृतंचप्रमेह हेतुःकफकृच्चसर्वम् ॥ मेदश्चमांसञ्चशरीरजञ्च[illegible]सवा[illegible]स्तिगतंप्रदूष्य । करोतिमेहान् समुदीर्णमुष्णैस्तानेवपित्तंपरिदूष्यचापि ॥ क्षीणेषुदोषे[illegible]धातून्संदूष्यमेहान्कुरुते ऽनिलश्च ॥ साध्याःकफोत्थादशपित्तजाःषट्याप्या[illegible]वनाच्चतुष्काः । समक्रिय त्वाद्विषमक्रियत्वान्महात्ययत्वाच्चयथाक्रमन्ते । कफ[illegible]नश्चदोषामेदोऽस्रशुक्रा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फः । मज्जा मांजःपिशितश्च प्रमेहिणांविंशतिरेव ... ॥ १९८ ॥

प्रमेहके ... पूर्व ... अधिकार ॥

... सोना, दही, ... बहुतजलवाले देशके जीवोंके मांसकारस,दूध,नवीन ... गुडके पदार्थ और कफकारी सम्पूर्ण वस्तु यह सब प्रमेह के कारण हैं दूषित कफ ... मांस और शरीर ... उत्पन्न हुए क्लेद (जल) को दूषित करके कफज प्रमेहोंको उत्पन्न ... दूषित पित्त वस्तिमें प्राप्तहुए मेद आदिको दूषित करके पित्तज प्रमेहों ... उत्पन्न करताहै दोषोंके क्षीण होजानेपर वायु धातुओं को खैंचके और दूषित करके वातज प्रमेहों उत्पन्न करती है कफसे हुए दश प्रमेह क्रियाके समहोने के कारण साध्य हैं पित्तसे हुए छः प्रमेह के विषम होनेके कारण याप्य और वातज चार प्रमेह वायुके महात्ययी (मज्जाआदि गम्भीर ...ओंका दूषित करनेवाला) होनेके कारण असाध्यहैं कफ पित्त और वायु यह तीनों दोषहैं अर्थात् ... करनेवाले हैं मेद, रक्त, वीर्य्य, जल, चरबी, लसीक (धातुविशेष) मज्जा, रस, ओज और मांस ... अर्थात् दूषित होनेवाले हैं दोषोंसे दुष्यों के दूषित होनेपर बीसप्रकारके प्रमेह होते हैं॥१९८॥

अथ प्राग्रूपमाह ।

...दादीनांमलाढ्यत्वं प्राग्रूपंपाणिपादयोः । दाहश्चिक्कणतादेहे तृट्स्वाद्वास्यञ्च जायते ॥ १९९ ॥

प्रमेहके पूर्वरूप ॥

... दिकोंका मैलापन,हाथ, पैरों में दाह, शरीर में चिकनापन, तृषा और मुखमें मधुरता ... ते हैं ॥ १९९ ॥

अथ सामान्यलक्षणमाह ॥

सामान्यंलक्षणंतेषां प्रभूताविलमूत्रता ॥ दोषदूष्याविशेषेऽपि तत्संयोगविशेषतः ॥ मूत्रवर्णादिभेदेन भेदोमेहेषुकल्प्यते ॥ २०० ॥

प्रमेहका सामान्य लक्षण ॥

सब प्रकार के प्रमेहों में गँदला मूत्र बहुत निकलताहै दोष तथा दूष्यों के तुल्य होनेपरभी उनके संयोगकी विशेषताके अनुसार मूत्रके वर्णादिकोंके ... से प्रमेहके भेदोंकी कल्पना कीजाती है २०० ॥

अच्छंबहुतरंशीतंनिर्गन्धमुदको... ...दकमेहेन किञ्चिच्चाविलपिच्छिलम् ॥ इक्षोरसमिवात्यर्थं मधुरञ्चेक्षुमेहतः ... पर्युषितं सान्द्रमेहेनमेहति ॥ सुरामेही सुरातुल्यमुपर्यच्छमधोघनम् । ... हृष्टरोमा ... पिष्टवद्बहलंसितम् ॥ शुक्राभंशुक्रमिश्रंवाशुक्रमेहीप्रमेहति । मूत्रा... ...सिक... ...गी सिकतारूपिणोमलान् ॥ शीतमेहीसु बहुशोमधुरंभृशशीतलम् । शनैः... ... मन्दंमन्दंप्रमेहति ॥ लालातन्तुयुतंमूत्रं लालामेहेनपिच्छिलम् ॥ २०१ ॥

उदक प्रमेहमें. निर्मल, बहुत ... ल, दुर्गन्धि रहित, कुछ गँदला, चिकण. जल के समान, मूत्र निकलताहै इक्षु प्रमेह में ईखके ... समान, अत्यन्त मधुर, मूत्र होताहै. सान्द्र प्रमेहमें. मूत्र रखनेसे गाढा होजाताहै सुरा प्रमेहमें. ... समान ऊपर निर्मल और नीचे गाढा मूत्र होताहै. पिष्टप्रमेह में. रोयें खडे होकर पीठीके ... और शीतल मूत्र निकलताहै शुक्र प्रमेहमें. वीर्य्य से मिला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुआ अथवा [illegible] समान मूत्र निकलताहै [illegible] प्रमेह में मूत्र [illegible] बालूके से मल निकलताहै शीत प्रमेह में. मधुर अत्यन्त [illegible] तथा बहुत मूत्र निकलताहै [illegible] वारंवार थोड़ा २ मूत्र निकलताहै और लाला प्र[illegible] तारों से युक्त निकलताहै यह दश कफज प्रमेह हैं ॥ २०१ ॥

गन्धवर्णरसस्पर्शैः क्षारेणक्षारतोयवत् । नीलमेहेन [illegible] आभं कालमेही [illegible] हारिद्रमेहीकटुकं हरिद्रासन्निभंदहत् । मिश्रंमाञ्जिष्ठमेहेन [illegible] [illegible] श्रमुष्णंसलवणं रक्ताभंरक्तमेहिनः ॥ २०२ ॥

क्षार प्रमेहमें. क्षारके जलके समान गन्ध, वर्ण, रस तथा स्पर्श से युक्त मूत्र निकलताहै [illegible] प्रमेहमें. नीलवर्ण मूत्र निकलताहै काल प्रमेह में स्याही के समान कालामूत्र निकलताहै [illegible] प्रमेह में. कटु दाह युक्त तथा हल्दी के समान वर्णवाले मूत्र निकलताहै मंजिष्ठा प्रमेह में. [illegible] गन्धसे युक्त मंजीठ के जलके समान मूत्र निकलताहै और रक्त प्रमेहमें आम की गन्धिसे युक्त, नमकीन तथा रुधिर के समान मूत्र निकलताहै यह छः पित्तज प्रमेह हैं ॥ २०२ ॥

वसामेहीवसामिश्रं वसाभंमूत्रयेन्मुहुः । मज्जाभंमज्जमिश्रंवा मज्जमेहीमुहुर्मलाकर [illegible] कषायंमधुरंरूक्षंक्षौद्रमेहंवदेद्बुधः । हस्तीमत्तइवाजस्रं मूत्रवेगविवर्जितम् ॥ [illegible] विबद्धञ्च हस्तिमेहीप्रमेहति ॥ २०३ ॥

बसा प्रमेहमें चर्बी से मिलाहुआ और चर्बी के समान वर्णयुक्त वार[illegible] निकलताहै, मज्ज प्रमेह में. मज्जासे मिलाहुआ अथवा मज्जाके समान [illegible]युक्त वारंवार मूत्र निकलताहै [illegible] प्रमेह में कषैला, मधुर तथा रूखा मूत्र निकलताहै. हस्ति[illegible] में मतवाले हाथी के समान वेगसे रहित अलसीक (धातुविशेष) युक्त कब्जसहित निरन्तर मूत्र निकलताहै यह चार [illegible] प्रमेह हैं ॥ २०३ ॥

अविपाकोऽरुचिश्छर्दिर्निद्राकासःसपीनसः । उपद्रवाःप्रजायन्तेमेहानांकफजन्मनाम् ॥ वस्तिमेहनयोस्तोदो मुष्कावदरणंज्व[illegible] । दाहस्तृष्णाम्लिकामूर्च्छाविड्भेदोपित्तजन्मनाम् ॥ वातजानामुदावर्त्तः कम्पहृद्[illegible] [illegible] शूलमुन्निद्रताशोषःश्वासःकासश्च जायते ॥ यथोक्तोपद्रवाविष्टमतिप्रस्रुतमेव[illegible] [illegible]पिडि[illegible]पीडितंगाढंप्रमेहोहन्तिमानवम् ॥ मूर्च्छाछर्दिज्वरश्वासकासवीसर्पगौरवैः । [illegible] [illegible]वैरुप[illegible]सःप्रमेहीदुःप्रतिक्रियः ॥ २०४ ॥

अन्नका न पचना, अरुचि, छर्दि, निद्राकी [illegible]ष्ट हो[illegible] [illegible] और पीनस यह कफजप्रमेहों के उपद्रव हैं मूत्राशय तथा लिंगमें पीड़ा, अंडकोशोंका [illegible] [illegible] तृषा, खट्टीडकार, मूर्च्छा और मलभेद यह पित्तज प्रमेहोंके उपद्रवहैं उदावर्त्त, कंप, हृदयमें पीड़ा[illegible] [illegible] के खानेकी इच्छा, शूल, निद्राका नाश, शोष, श्वास और खांसी यह सब वातज प्रमेहों के उ[illegible] [illegible] र कहेहुये उपद्रवों से युक्त जिस प्रमेह वालेके बहुत धातु सहित मूत्र निकलता होय और पि[illegible] [illegible]ने बहुत पीडा होय वह नहीं जीता मूर्च्छा, छर्दि, ज्वर, श्वास, खांसी, वीसर्प और शरीरका [illegible] इन सब उपद्रवों से युक्तप्रमेह वाला असाध्यहै ॥ २०४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...मान्मासिम। संविशोधयेत्...शरीरदोषांश्चनप्रमेहं ...याय:२०५

...में रजके निकल...ने से श...के सम्पूर्ण दोष निकलजाते हैं इसलिये स्त्रियों ...प्रमेहो... ॥ २०५ ॥

...हीमधुमेहिनोवा...साध्यरोगःसहिबीजदोषात् । येचापिकेचित्कुलजाविका ...चापिवदन्त्यस... ...पीन् ॥ २०६ ॥

...॥ पि... युक्त पित...पितामहादिकों के वीर्य्य के दोष से सन्तानके प्रमेह होय तो वह ...कुलके दोषसे कुष्ठआ... जो कोई रोग उत्पन्न होते हैं वह सब असाध्यहैं ॥ २०६ ॥

...र्वएवप्रमेहास्तु कालेनाप्रतिकारिणः । मधुमेहत्वमायान्ति तदासाध्याभवन्तिच ॥ ...मधुनिभो जायतेसकिलद्विधा । क्रुद्धेधातुक्षयाद्वायौदोषावृतपथेऽथवा ॥ आवृतो ...लिङ्गानिसोऽनिमित्तंप्रदर्शयन् । क्षीणःक्षीणात्क्षणात्पूर्णो भजतेकृच्छ्रसाध्यताम् ॥ ...सर्वेषुप्रायोमध्विवमेहति । सर्वेऽपिमधुमेहाख्यं माधुर्याच्चतनोरतः ॥ २०७ ॥

...र्ण प्रमेह समयपर चिकित्सा न करनेसे मधुप्रमेह होकर असाध्य होजाते हैं मधुप्रमेह में ...न मूत्र निकलताहै और यह दो प्रकारसे उत्पन्न होताहै एकतो धातुओं के क्षय होने से ...वायुके द्वारा और दूसरे अन्य दोषों से वायुके मार्गरुकने के द्वारा मधुप्रमेह होताहै वायु ...है उसमें ए...एकी दोषों के लक्षण उपस्थित होते हैं और क्षणभर क्षीण तथा ...वस्थाको प्राप्तहोकर कष्टसाध्य होजाता है शरीर के मधुर होने के ...ण सब प्रकार के प्रमेहों भि प्रायः शहदके समान मधुरमूत्र निकलताहै इसलिये सब प्रमेहों को ...कहसक्ते हैं ॥ २०७ ॥

...राविकाकच्छपिकाजालिनीवि...तालजी । मसूरिकासर्षपिका पुत्रिणीसविदारिका:॥ विद्रधिश्चेतिपिडिकाः प्रमेहोपेक्ष...सन्धिमर्म्मसुजायन्ते मांसलेषुचधामसु ॥ अ न्तोन्नताचतद्रूपा निम्नमध्याशरा...का । गौरसर्षपसंस्थाना तत्प्रमाणातुसर्षपी ॥ सदा हाकूर्मसंस्थाना ज्ञेयाकच्छपिका... ...तीव्रदाहातु मांसजालसमावृता ॥ अ तिगाढरुजाक्लेदा पृष्ठेवाप्युदरेऽपिवा... ...डिकानीला माबुधैर्विनतास्मृता ॥ मह त्यल्पचिताज्ञेया पिडिकापिचपुत्रि... ...संस्थाना विज्ञेयातुमसूरिका ॥ रक्तासि तास्फोटचिता विज्ञेयात्वलजीबुधै... ...दवद्वृत्ता कठिनाचविदारिका ॥ विद्रधे र्लक्षणैर्युक्ता ज्ञेयाविद्रधिकातुसा । ... ...मेहास्तेषामेतास्तुतन्मयाः ॥ विनाप्र मेहमप्येता जायन्तेदुष्टमेदसः । ता... ...न्ते यावद्वास्तुपरिग्रहः ॥ २०८ ॥

प्रमेहकी चिकित्सा न करनेसे श... ...कच्छपिका, जालिनी, विनता, अलजी, मसूरिका, सर्षपिका, पुत्रिणी, विदारिका और विद्रधि... ...रकी पिडिका सन्धि मर्म और मांसयुक्त स्थानों में उत्पन्न होती हैं बीचमें गहरी, किनारे... ...सकोरेकेसमान डौलवाली, पिडिकाको शराविका कहतेहैं सरसों के समान छोटी आकृतिवाली... ...को सर्षपिका कहते हैं, कछुएकेसमान आकृतिवाली, दाहयुक्त, पिडिकाको कच्छपिका कह... दाहयुक्त और मांसके जाल से ढकीहुई पिडिकाको जालिनी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कहते हैं बड़े ... वाली, नीलवर्ण, अत्यन्त पीडायुक्त और बहनेवाली, पीठ अथवा ... डिका होताहै उसको विनता कहते हैं. बड़े और ... वाली और सब ओर छोटी ... युक्त पिडिकाको पुत्रिणी कहते हैं. मसूर के स... ली को मसूरिका ... लाल अथवा श्वेत दाना पड़गयेहों उसको अलजी कहते हैं ... विदारीकन्द के सम... कठोर पिडिकाको विदारिका कहते हैं विद्रधि रोगके लक्षणों ... युक्त पिडिकाको ... जिस दोषसे प्रमेह उत्पन्न होता है उसकी पिडिका भी उ... विनाभी दूषित मेदवालेके यह पिडिका होती हैं यह पिडिका ... अच्छेप्रकार ... हैं तबतक इनके लक्षण विशेषता से नहीं मालूम होते हैं ॥ २०... ॥

गुदेहृदिशिरस्यंसेपृष्ठेमर्म्मसुचोत्थिताः। सोपद्रवादुर्बलाग्नेःपिडिकाःपरिवर्ज्ज... तृट्च्छ्वासमांसमङ्कोचमेहहिक्कामदज्वराः। विसर्पमर्म्मसंरोधाःपिडिकानामुपद्रवाः ... श्यामाककोद्रवोद्दालगोधूमाश्चणकास्तथा। ... क्यश्चकुलत्थाश्चपुराणामे... ताः॥मेहिनांतिक्तशाकानिजांगलाहरिणाण्डजाः। ... न्नविकृतिर्मुद्गाःशस्यन्तेश... काः॥ सौवीरकंसुरातक्रंतैलंक्षीरंघृतंगुडम् । ... इक्षुरसपिष्टान्नानूपमांसानि ... त॥ तत्रादितएवप्रमेहिनमुपस्निग्धमन्यतमेनत्रियङ्ग्वादिसिद्धेनतैलेनवामयि... ... विरेचयेच्च। विरेचनादनन्तरंसुरसादिकषायेणास्थापयेत् ॥ २०८ ॥

गुदा, हृदय, मस्तक, कन्धे, पीठ और मर्म स्थानों में उत्पन्न हुई ... मिलाकर ... पिडिका असाध्य होतीहै तृषा, श्वास, मांसका सुकड़ना, प्रमेह, हिचकी ... वर, विसर्प और म... का रुकना यह सब पिडिकाओं के उपद्रवहैं पुरानासामा, क... वनकोदों, गेहूं, चना, अरहड, कुल... तिक्त शाक, जंगलीजीव, हिरन तथा अंडजजीवोंके मांस, ... मे हुए पदार्थ, मूंग, शालिधान्य ... साठी यह प्रमेह वालोंको हितकारी हैं सौवीर, सुरा, तक्र, ... ल, दुग्ध, घृत, गुड, खटाई, ईख... पीठी और अधिक जलवाले देशके पशुओंका मांस यह ... प्रमेहवालोंको अहितहैं प्रमेहवालोंको प... हले प्रियंगु आदिके द्वारा सिद्ध कियेहुये तेलसे स्निग्ध करके वमन और विरेचन करावे फिर सुर... सादिकषाय से आस्थापन देवे ॥ २०९ ॥

महौषधभद्रदारुमुस्तावापेनमधु... दह्यमानंवान्यग्रोधादिकषायेणनि... स्तैलेन॥ वातोत्कटेषुमेहेषुस्नेहपानंविशि... ॥ २... ॥

सोंठ, देवदारु, मोथा तथा सेंधानोन इनके ... केद्वारा ... न्यग्रोधादिगणके काढे के द्वारा दाह युक्तप्रमेहका नाश होताहै अधिकवातवाले प्रमेह में विशेष ... के स्नेह पान कराना चाहिये ॥ २१० ॥

पारिजातजया निम्बवह्निगायत्रिणां ... ठायाःसागुरोःपीताद्वयस्यशारदस्य च॥ जलेक्षुमद्यसिकताशनैर्लवणपिष्टकान्। ... मेहानुक्रमाद्घ्नन्तिक्काथाश्चाष्टौ समाक्षिकाः॥ २११ ॥

शहद युक्त पारिजातका काढ़ा, उदक प्रमेह में जयन्तीकाका ... इक्षुप्रमेह में नींबका काढ़ा, सुरा प्रमेहमें चीताकाकाढ़ा, सिकताप्रमेहमें कत्थेकाकाढ़ा, शनैःप्रमेह में ... तथा अगरकाकाढ़ा, लवणप्रमेह में हल्दी तथा दारुहल्दीका काढ़ा, पिष्टप्रमेहमें और छितवनका ... सान्द्रप्रमेहमें देनाचाहिये २११ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कटुफलमुस्ता ... पाठाविडंगार्जुनधन्वयासाः । उभे हरिद्रे ... विडंगकन्दं
लोध्रमुस्तदीप्यकाश्च ॥ दार्वीविडंगः खदिरो धवश्च सुराह्वकुष्ठागुरुचन्दनानि । दार्व्य
ग्निमन्था त्रिफला वचा च पाठा ... तथश्वदंष्ट्रा ॥ वचाह्युशीराण्यभयागुडूचीवृषंशि
... सप्तपर्णः । पादैः ... ायाः कफमेहविघ्नैर्दशोपदिष्टा मधुसंप्रयुक्ताः ॥ २१२ ॥

... मोथा तथा ... १ पाठा, बायबिडंग, अर्जुन तथा धमासा २ हल्दी, दारुहल्दी, तगर
... ॥ ... , अर्जुन तथा अजवाइन ४ दारुहल्दी, बायबिडंग, कत्था तथा धवई ५
... ; अगर तथा चन्दन ६ दारुहल्दी, अरणी, त्रिफला तथा बच ७ पाठा, मरोरफली तथा गुखुरू
... खस, हड तथा गिलोय ... और बांसा, हड़, चीता तथा छितवन इन दशों काढों में से किसीको
... शहद डालकर पीनेसे कफज प्रमेहका नाश होताहै ॥ २१२ ॥

उशीरलोध्रार्ज्जुनचन्दनानामुशीरमुस्तामलकाभयानाम् । पटोलनिम्बामलकामृता
... मुस्ताभयामूषकवृक्षकाणाम् ॥ लोध्राम्बुकालीयकधातकीनां निम्बार्ज्जुनैलानिविशो
... लानाम् । शिरीषधान्यार्ज्जुन ... शराणां प्रियंगुपद्मोत्पलकिंशुकानाम् ॥ अश्वत्थपाठास
... नसानां टङ्कटेर्युत्पलमुस्त ... ाम् । पैत्तेषु मेहेषु दशोपदिष्टाः कषाययोगा मधुसंप्र
युक्ताः ॥ २१३ ॥

... अर्जुन तथा चन्दन १ खस, ... आमला तथा हड २ परवल, नीब, आमला तथा गिलोय ३
... मोथा, ... हो ४ लोध, ... छाल, दारुहल्दी तथा धवई ५ सोंठ, अर्जुन, इलायची,
... सिरस तथा उत्पल ... , धनियां, अर्जुन तथा नागकेशर ७ प्रियंगु, कमल, उत्पल तथा कसूम ८
... पलकी छाल, पाठा, पीलशाल तथा ... ९ दारुहल्दी, उत्पल तथा मोथा १० यह दशोंकाढे शहद
... पीनेसे पित्तज प्रमेहोंको ... करते हैं ॥ २१३ ॥

कफमेहहरक्वाथसिद्धं सर्पिः कफ ... हितम् । पित्तमेहघ्ननिर्यूहसिद्धं पित्तहरं घृतम् ॥ २१४ ॥

कफप्रमेहनाशक काढोंके द्वारा ... किया हुआ घी कफप्रमेहों में और पित्तप्रमेहनाशक काढों के
द्वारा पाक किया हुआ घी पित्तजप्रमेहों ... में हितकारी है ॥ २१४ ॥

कम्पिल्लसप्तच्छदशालजानि ... तरो ... कौटजानि । पटोलकालीयगदागुरूणि क्षौ
द्रेण लिह्यात्कफपित्तमेही ॥ २१५ ॥

कबीरा, छितवन, शाल, बहेडा, ... या, परवल, दारुहल्दी, कूट और अगर इन सबके
चूर्ण को शहदके साथ चाटने से क... प्रमेह शांत होते हैं ॥ २१५ ॥

दूर्वाकसेरूपूतीककरञ्जकह्लार ... गजलेनक्वथितं पीतं शुक्रमेहहरं परम् ॥ त्रिफ
लारग्वधद्राक्षाकषायो मधुसंयुतः ... तफेनाभप्रमेहघ्नियनंत्रणाम् ॥ अश्वत्था
चतुरंगुल्यां न्यग्रोध ... सरक्तमारमञ्जिष्ठाक्वाथः पञ्चमाक्षिकाः ॥ मधु
नात्रिफलाचूर्णमथवाऽश्म ... । लेहजंवाभयोत्थंवा लिहन्मेहनिवृत्तये ॥ कटङ्कटे
रीमधुकत्रिफलाचित्र ... सिद्धः कषायः पातव्यः प्रमेहानां विनाशनः ॥ २१६ ॥

दूब, कसेरू, करंजुआ, पा... तथा शिवार इनके काढे में शहद डालकर पीने से शुक्रप्रमेहका

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नाश होताहै, [illegible], अमलतास तथा दाख इनके काढ़ेमें शहद [illegible] से फेन होताहै, पीपलका काढ़ा संभालूका काढ़ा, [illegible] काढ़ा, त्रिफलाका काढ़ा [illegible] चन्दन तथा गँजीठका काढ़ा यह पांचों शहद युक्त [illegible] प्रमेह, [illegible] क्षारप्रमेह और मंजिष्ठाप्रमेह इन सबको नाशकरते [illegible] त्रिफलाका [illegible] चूर्ण अथवा हडका चूर्ण शहदके साथ चाटनेसे प्रमेहोंका नाश [illegible] है दारुहल्दी, [illegible] और चीता इन सबके काढ़ेके पीनेसे प्रमेहोंका नाश होताहै ॥ [illegible]

फलत्रिकंदारुनिशांविशालांमुस्तांचनिःक्राथ्यनिशांश [illegible] कम्। पिबेत् [illegible] युक्तंसर्व्वेप्रमेहेषुसमुच्छ्रितेषु ॥ इति फलत्रिकादिक्काथः ॥ [illegible] १७ ॥

त्रिफला, दारुहल्दी, इन्द्रायन, मोथा इनके काढ़ेमें हल्दीका चूर्ण तथा शहद छोडकर पीनेसे प्रमेहोंका नाश होताहै इति त्रिफलादि क्काथ ॥ २१७ ॥

गोभक्षितान्यवान्मूत्रभावितान्केवलानपि। [illegible] कोद इव नी खादेन्निम्बमुद्गरसे [illegible] भक्षयेताम्बुनामासंप्रमेहीयवपिष्टकम् ॥ मेदोघ्नाबद्धमूत्र [illegible] समः सर्व्वेषुधातुषु। [illegible] स्माद्विशिष्यन्तेप्रमेहेषुविशेषतः ॥ २१८ ॥

गौके खायेहुए जौओंको गोमूत्रमें सातदिन तक भावना [illegible] अथवा केवल जौओंको [illegible] मिलाकर गौके मठेके साथ नींबके काढ़ेके साथ या मूंगके यूषके साथ खानेसे प्रमेहका नाश होताहै [illegible] महीने भरतक जलके साथ जौकी पिट्ठीको खाय क्योंकि जौ मेदके ना[illegible] गुड डालकर [illegible] वाले और धातुओंके समकरनेवाले होतेहैं इसलिये प्रमेहमें जौ विशेष [illegible] ॥ २१८ ॥

त्रिकटुत्रिफलापाठामूलंशोभाञ्जनस्यच। विडंग[illegible]एलाहिंगुंतथाकटुकरोहिणी ॥ हस्तीकण्टकारीचहरिद्रेद्वेयवानिका। केबूकंशालपर्णी [illegible] अतिविषचित्रकौ ॥ सौ[illegible] जीरकञ्चहवुषाधान्यमेवच। एषांकर्षप्रमाणञ्चश्लक्ष्ण [illegible] चूर्णञ्चकारयेत् ॥ यवसक्तु[illegible] चनवतिर्द्विनयाधिकाम्। घृततैलमधूनाञ्चप्रत्येकचपाद्[illegible] निषट् ॥ एभिःकर्षप्रमाणञ्चप्र त्यहंमोदकंसुधीः। भक्षयेन्नाशयेदुग्रान्प्रमेहान[illegible]निदारुणान् ॥ इतित्रिकटुकाद्योमोदकः २१६

त्रिकटु, त्रिफला, पाठा, सहजनकी जड, [illegible] हींग, [illegible] दोनों भटकटैया, हल्दी, दारुहल्दी, अजवाइन, केबुक, शालिपर्णी, अतीस, चीता, काले[illegible] जीरा [illegible] हाऊबेर और धनियां इन सबके एक२ तोले चूर्ण जौके सत्तू ६२ पल घी तेल तथा शहद [illegible] २ तोले [illegible] इन सबको एकमें मिलाकर तोले २ भरके लड्डू बनावे इनके खानेसे बहुत भयंकरभी [illegible] [illegible] का नाश [illegible] होताहै इति त्रिकटुकादिमोदक२१६॥

न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थश्योनाकारग्वधा[illegible] [illegible] शुक्कपित्थंजम्बूञ्चप्रियालङ्ककुभ न्धवम् ॥ मधूकंमधुकंलोध्रंवरुणंपारिभद्र[illegible] [illegible] विषशृंगीचदन्तीचित्रकम्.ढकी ॥ करञ्जत्रिफलासक्तुभल्लातकफलानिच। एतानि [illegible] समानिसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् ॥ न्यग्रोधाद्यमिदंचूर्णमधुनासहयोजयेत्। फलत्रयर[illegible] [illegible] न्मूत्रंविशुद्ध्यति ॥ एतेन विंशतिर्मेहामूत्रकृच्छ्राणियानिच। प्रशमंयान्तियोगेन [illegible] सचजायते ॥ इति न्य ग्रोधाद्यंचूर्णम् ॥ २२० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

पीपल, ... अमलतास, पी... शाल, आम, कैथा, जामन ... अर्जुन, ... मुलहठी, लोध, वरुणा, देवदारु दारुहल्दी, काकडासिंगी, दन्ती, चीता, अरहड़, करंजुआ, ... फलों और भिलावां इन ... को समभाग लेकर सूक्ष्म चूर्ण करें इसचूर्ण को ... त्रिफला के ... काढ़ेका अनुपान करने से मूत्र शुद्ध होताहै बीसों प्रमेह तथा मूत्र- ... होताहै और पिडिका नहीं उत्पन्न होती हैं इति न्यग्रोधादि चूर्ण ॥ २२० ॥

... पीद्रेणलिह्याच्चपृथक्पृथक्समंवा । मेहानूसमस्तानपिनाश ... चतुस्वरस ... याः ॥ २२१ ॥

... त्रिफला तथा ... का चूरा इनसबको पृथक् पृथक् अथवा एकसाथ शहद के ... चाटने से सब प्रमेहोंका नाश ... -गिलोयके रस में शहद डालकर पीनेसे प्रमेहोंका नाश ... ॥२२१ ॥

... कटुत्रिफलातुल्यंगुग्गुलुञ्चस... पोक्षुरक्काथसंयुक्तंगु ... कां कारयेद्बुधः ॥ ... बलापेक्षी भक्षयेच्चानुलोमि ... । नचात्रपरिहारोऽस्तिकर्म्मकुर्य्याद्यथेप्सितम् ॥ ... वातरोगांश्चवातशोणि ... । मूत्राघातंमूत्रदोषंप्रदरञ्चाशुनाशयेत् ॥ इति ... का ॥ २२२ ॥

... त्रिफला इनके चूर्ण के समान गूगुल मिलाकर गोखुरूके काढ़ेमें भावना देकर गोली ... बल के अनुसार इस गोली को खाने से प्रमेह, वातरोग, वातरक्त, मूत्राघात, ... दोष और प्रदर ... शीघ्रही नाश होते हैं और वायु अपने मार्ग के अनुसार होजाती है ... सेवन में स्वेच्छाचारी आहार विहार करना चाहिये किसी प्रकार का विचार नहीं है इति ... टिका ॥ २२२ ॥

... डिमस्यचबीजानिक्रिमिघ्नस्य ... तण्डुलाः । रजनीचविकाजाजीनागरंत्रिफलाक ... णा ॥ त्रिकण्टकस्यचफलंयवानी ... था । वृक्षाम्लचविकालोध्रसिन्धूद्भवसमाहि ... तैः ॥ कल्कैरक्षसमैरेभिर्घृतप्रस्थं ... चयेत् । भोज्येपानेप्रदातव्यंसर्व्वर्तुषु नमात्रया ॥ वि ... प्रमेहान्विंशतिंचैवमूत्रघातन्तथ ... । ... फलंसदारुणञ्चैवहन्यादेवनसंशयः ॥ वि ... बन्धानाहशूलघ्नंकामलज्वरनाशनम् ... । ... घृतञ्चैतदश्विभ्यांपरिकीर्त्तितम् ॥ इति दाडिमाद्यंघृतम् ॥ २२३ ॥

अनारके बीज, बायबिडंग, हल्दी, ... सोंठ, त्रिफला, पीपल, गोखुरू, अजावइन, धनियां, चूका, चव्य, लोध और सेंधानोन ... तोलेभर कल्कके द्वारा विधिपूर्वक चौंसठ तोले घीको पाककरे इस घीको सब ऋतुओं में ... ार भोजन और पान करने से बीसों प्रमेह, मूत्राघात, पथरी, अत्यन्त कठिन मूत्रकृ... आनाह, शूल, कामला और ज्वरका नाश होता है इति दाडिमादि घृत ॥ २२३ ॥

श्वदंष्ट्रासकणामुस्तागुड ... पल्लवाः । दर्भांकुरास्तुगण्डीरीरोहिषस्यचपल्लवाः ॥ ... च । पिप्पलीशृंगबेरञ्चविडङ्गंमरिचानिच ॥ पाठा कालापुनर्नवाश्यामासारिवे ... । एरंडमूलंदन्तीचचित्रकंकटुरोहिणी ॥ एतानिसम कम्पिल्लकंभार्ङ्गीद्वेहरिद्रेत्रि ...

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भागाभि ... र्णानिकौम्येत् ॥ यावन्त्येतानिचूर्णानिद्वि ... यो
डालंपदकांपिबेदुष्णेनवारिणा । अर्शांस्य ... मद्यानं ... महान्तूहन्ति ... वि
ज्वरंचार्शांसिपाण्डुरोगंहलीमकम् । उद ... प्लीहानंचा ...
मूत्रपिष्टैस्तुगुटिकाःकारयेद्भिषक् । रोगेष्वेतेषुमुख्याः ... लमांसाविवर्द्धन
क्षुरकादिचूर्णगुटिका ॥ २२४ ॥

गोखुरू, पीपल, मोथा, गिलोय, कठियागूलर के पत्ते, ... गदापूरना, काला निसोथ, सारिवा, देवदारु, पीपल, सोंठ, ... रंगी, हल्दी, दारुहल्दी, भटकटैया, अरंडकीजड़, दन्ती, चीत ... भाग लेकर सूक्ष्म चूर्ण करे और सब चूर्ण की बराबर ले ... कर मद्य के साथ और मद्य न मिले तो गरम ... बवासीर, पांडुरोग, हलीमक, उदरशूल और प्लीहा ... गोमूत्र में पीसकर गोली बनाकर सेवन करने से ... मांस की वृद्धि होती है इति गोक्षुरादिचूर्णगुटिका ॥ ...

कण्टकार्य्यागुडूच्याश्चसंहृत्यशतंशतम् ...
चेत् ॥ तेनपादावशेषेणघृतप्रस्थंविपाचयेत् ...
म् ॥ काश्मर्याणांचमूलानिपूतिकस्यत्वगेव ...
अक्षमात्रांपिबेत्प्राज्ञःशालिभिःपयसाहितैः । ...
आलस्यंचान्त्रवृद्धिं च कुष्ठरोगंविशेषतः । क्ष ...
इति सिंहामृतंघृतम् ॥ २२५ ॥

चार२सौ तोले भटकटैया और गिलोय लेकर ४०९६ ... जानेपर छानले इसकाढ़ेके साथ ६४ तोले घीको त्रिकटु, ... कीजड़, करंजकीछाल और इन्द्रजौ इनसबका कल्क डाल ... को खाकर दूधभातका भोजनकरे इससे ... कुष्ठ और क्षयरोगका नाश होताहै इति सिंहामृतघृत ...

दशमूलंकरञ्जौद्वौ देवदारुहरीतकी । ...
नीपकदम्बाश्चबिल्वंभल्लातकानिच । ...
शपलान्भागानेतांस्तोयेर्म्मणेपचेत् । ...
पादावशेषेणघृतप्रस्थंपचेद्भिषक् । ...
डंगानिच ... तथा । गर्भेणानेनतसिद्धं ...
विख्यातं ... तमम् । कुष्ठप्रमेहगुल्मांश्चश्वयथु ...
विद्रधिंपिडिकाश्चयाः अपस्मारंतथोन्मादंसर्पिरेत ...
हन्याच्छतंशतम् । शतत्रयाधिकेतोयेव्युत्सर्गःक्रमते ...

लोहानांषण्णां ... यस्माच्छिलाज ... सीसायमादीनिप्रधानान्यु ... कटुकषायानुरसं ... लघुकृष्णाभंस्निग्धंनिःश ... सारगणैर्हनदो षंदिनादितः ... स्मिञ्जीर्णेतुभोजनं ... महाख्यमातंकरोगकारकं ... तुसहस्रंदश ... दंश्लीपदं ... लाजतुनिषेवेनम् ॥ नसोऽस्ति ... चनथाश्मरीम् ॥ ... जममृतोपमम् ॥ मधुरङ्क ... वामयक्षयान् ॥ तद्भावितान् ... योःप्रयोगः ॥ २३१ ॥

... चिकित्सा आगेकहेहुए योगसेकरे ... समान रस टपकताहै इसको शिला- ... आदि लेकर लोहपर्यन्त छःधातुओं ... परीक्षा करनी चाहिये लोहे से जो ... रसभी होताहै रांगा सीसा और ... होतेहैं सबप्रकारके शिलाजीतों ... तिक्त, कटु, कुछ कषैला, दस्ता- ... जो शिलाजीत हलका नीला ... होताहै सारवर्ग के काढ़े में ... प्रातःकाल बलके अनुसार ... साथ भोजनकरे इसप्रकार ... प्रमेहका नाश होताहै ... है ४०० तोले शिला-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...क्रम् । ...दापूर्णा, वरुणा, दन्ती, चीता, लाल मूद्गापूर्णा, सेंहुडा,
...त, दोनों ...तथा पीपलामूल यह सब चालीस २ तोले जौ, बेर
...औषधियों में से तिहाई २ लेकर १०२४ तोले जलमें अलग २
...मन्वितम् ...काढ़ेको छानले फिर इस सब काढ़ेके साथ ६४ तोले घीको समुद्र-
...चौंसठ २ ... पीपल, सोंठ, वायविडंग, चव्य तथा कबीला इनसबका कल्क डाल
...अनुसार इस घीके पीनेसे कुष्ठ, प्रमेह, गुल्म, सूजन, वातरक्त, प्लीहा,
...और इसीप्रका... मृगी और उन्मादका नाश होताहै इति धान्वन्तर घृत ॥ २२६ ॥
...वाली रूपामकर्वाक ...यकरसासमञ्जिष्ठैः । भल्लातकागुरुघनैःसगदानलच
...कृत्वथी और कबूतरका मांस ... हरिद्रयात्रिफला । अश्मन्तकार्जुनाभ्यांदी
...जन्तुडिकानांप्राक ... न्तथा । चेत्तैलम् । कफवातोत्थमेहे
...र्षेन्नातैर्व्यस्तमूत्रंतीक्ष्णञ्चशो ... प्रवक्ष्यते । ...
...विषम्देनक्काथं कुर्याद्दुहर्त्त ...म् । जाङ्गल्या, कूट, चीता, चन्दन, खस,
...लसार२३२ ॥ ...खानेसे स्थूल ...पीनेसे ... विजितयमद, लोध, मंजीठ और अतीस
...कोंमें पहले रुधिर निकलै ...टपाक कर ... विधिपूर्वक पाककरे कफ और
... सेवन ... यको नष्टं तंशतंतु ... अर्जुनादि घृत तैल ॥ २२७ ॥
...वनस्पतियों ... रोगोंको ... समारात ... यसाधयेत् । सिध्यतिचा
...धिक ओ ... होहिये. एला ... पीने ... नितम्यचिरात् ... तारुदग्धंलेहीभूतमवतार्यानु
...लिये लगानाचा ... दग्धादिगण चाटने ... कहते ...र्कराचिर ... युञ्ज्यान्तिइतिसारलेहः २२८ ॥
...पल्यादि गणके काढ़ेसे भो...जना... र, शर्ल ... समाक्षिप्र ... उसको पाककरे गाढ़ाहोजाने
...नोयदामूत्रमनाविलम ... भुंके । ... २ की ... तिजराकुष्ठ ... चूर्णको उसमें डाले फिर जब
...हापिडिकानिदानचिकित्साधिका ...द्वंश ... ति शिलाज ... करके रक्खे इसको मात्राके अनुसार
जब प्रमेहवालेकामूत्र निर्मल ... मूकृशत ... हभस्म ... रतेद्वहुण्ये ॥
चाहिये इति प्रमेहपिडिकानिदानचि... क्काथः ... पुष्प ... ललेर तत्कथितंतु तोये। पादस्थितेनसलिलेन
अ... व्यायामदिवास्वप्नश्लेष्मलाह ... ॥ तस्मिन्घनत्वमुपगच्छतिचूर्णितानिद
मेदसावृतमार्गत्वात्पुष्यन्त्यन्येन ... णामरिचनागदलत्वगेलाजातीयकोषककुभ
श्वासतृषामोहस्वप्नक्रथनसादनैः ... यनित्यं लेह्यंतुशुद्धममृतंपलसम्मितन्तु ।
दस्तुसर्वभूतानामुदरेहिव्यवस्थितम् ... रुधिरमेहमधुप्रमेहान् ॥ इति गोक्षुरका
स्थन ...
व्यायामरहित दिनमें सोनेवाले ... ले गोखुरूको क्वाथकरके चौथाई बाकी रहजानेपर उतारकर
अन्नकारस मधुर होजाताहै इसलि... ले शकर छोडकर पाककरे पाककेगाढ़े होजानेपर सोंठ, पीपल, मिर्च,
जानेसे अन्यधातु नहीं पुष्ट होती ... इलायची, जायफल, अर्जुन तथा खीरेकेबीज आठ २ तोले और बांसा
होजाताहै इसरोगमें क्षुद्र, श्वास ... उतारलेवे ४ तोले इस अवलेहकेखानेसेमूत्रजदाह, मूत्रकारुकना,
लता, क्षुधाकी अधिकता, पसी... री, रुधिरप्रमेह और मधुप्रमेहकानाशहोताहै इति गोक्षुरकाद्यवलेह ॥ २२९ ॥
लक्षण होते हैं सब प्राणियों ...

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

असनश्चापियत्लिङ्गशालंखदिरकन्तथा । शाल...
पीतशाल, चिरौंजी, शाल और कत्था इनसबको शाल...
मधुमेहत्वमापन्नंभिषग्भिःपरिवर्ज्जितम् । योगेन ... ॥ २३० ...
मासिशुक्रेशुचौवापिशैलाःसूर्य्यांशुतापिताः । जतुप्र...
शिलाजत्विति विख्यातंमहाव्याधिनिवारणम् । त्रपुवादि...
यत् ॥ ज्ञेयंस्वगन्धतश्चापिषड्योनिप्रथितंक्षितौ । लोहयमादीनिप्रधानान्यु...
प्रभम् ॥ तस्यलोहस्यतद्वीर्य्यरसंवापिविभर्त्तितम् । त्र...
त्तरम् ॥ यथातथाप्रयोगेऽपिश्रेष्ठेश्रेष्ठगुणाः...
म् ॥ कटुपाक्युष्णवीर्य्यंचशोषणंछेदन करने से ...
यत् ॥ गोमूत्रगन्धिनीलंवाततत्प्रधानंचचूर्णगुटिका ॥ ...
पिवेत्सारोदकेनैवइलक्ष्णपिष्टंयथाबलञ्चशतंशतम् ...
उपयुज्यतुलामेकाममृतस्यास्यजन्मतंविपाचयेत् ...
वर्णबलोपेतःशतंजीवत्यनामयः । शुक्रस्यत्वगो...
विधानेनपरिहारविधिःस्मृतः । मेहंकुष्ठयसाहितैः ...
गुल्मंपाण्डुतांविषमज्वरम् । व्यपोहतिविशेषतः । ...
रोगोयंत्रापिनननिहन्याच्छिलाजतु । श ॥ ...
लोडनेचास्यकर्त्तव्येभेषजैर्हितैः । एवं गिलोय लेकर ४०... ... मेह ॥
नाभासमम्लंवारजतप्रभम् । व्यपोह... ४ तोले घीको त्रिकटु, ...यस्तयश्चैवसेव्यामेदस्विनांसदा ॥
कुलत्थांश्चकपोतांश्चविवर्जयेत् । इ... इनसबका ... ...र्य्ययवगोधूमयोःसदा ॥ उपवा
मधुप्रमेहको प्राप्त और वैद्योंसे त्यागकि... ...र्वैः स्थौल्याद्युक्तयाविमुच्यते ॥ श्रम
ज्येष्ठ और आषाढ़में सूर्य्यकी किरणोंसे तपेहुए प... ...तरस्थौल्यंयवःश्यामाकभोजनः २३६
जीत कहते हैं यह महाव्याधियोंका नाशकरनेवाल... ...
का छः प्रकारका शिलाजीतहोताहै अपनी अपनी ... ॥
लाखके समान शिलाजीत उत्पन्न होताहै उसमें ... कोदोंका सेवन कराना चाहिये और
लोहा इनसे जो शिलाजीत उत्पन्न होताहै उसमें ... कलवाना और भोजनके परिपाक होजाने
में लोहे का शिलाजीत श्रेष्ठ गुणवालाहोताहै सब... हितहै उपवास, सुख न देनेवाली शय्या,
वर, पाकमें कटु, वीर्य्यमें उष्ण, सुखानेवाला और छेदन होत... ...र्पण के दोषोंसे हुई स्थूलताका नाश
अथवा कृष्णवर्ण स्निग्ध मृत्तिकारहित और गोमूत्र के समान ... ...र जौ तथा सामाका भोजन इनसब
भावना देकर दोषरहित शिलाजीतको पीसकर सारवर्ग के काढ़े ...
पानकरे फिर उसके परिपाकहोजाने पर जंगली पशुओंके मांसके ... ...पीतामेदोघ्नावह्निदीपनाः ॥
४०० तोले शिलाजीतका सेवनकरनेसे अनेक रोगोंके उत्पन्न करनेवाल ... ...कफमेदोऽनिलापहम् ॥ त्रिफ
शरीर, बल तथा वर्णसे युक्त होताहै और नीरोग होकर सौ वर्ष ... ...स्थौल्यनाशनः ॥ मूलं

[Torn overlapping fragment:]
...मग्नंभवेच्चैनं...
...तिमान् समेहि...
...ल्लघुकृष्णाभंस्निग्धं ... २३५ ॥
...वायु जठरमहि...
...पञ्चजाताहै और फिर...
...कष्टकारी रोग उत्पन्न...
...वायु और दावानल...
...बहुत बढ़जानेपर ...
...जीवनका नाश...
...करके शीघ्रही ...मनुष्यके ...
... २३५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...धुयु... ...कम् । ... अवस्था होनी ... शबार सेवनकरने से १००० वर्षकीअवस्था

...प्रयोगमें ... समान विधि करनीचाहिये शिलाजीतके सेवन

...मवामे... प्रमेह, कुष्ठ, मिर्गी, ... शोष, सूजन, बवासीर, गुल्म, पांडु और वि-

...समन्वितम् ... बूत्त ... कोई भी ... त्रपसको शिलाजीत न नाशकरसके बहुतकालकी

... ॥ ... पन्नगु... गुड़ ... शिलाजीतको हितकारी औषधियों में भावना

...स्कृतेघृत ॥ अतिमु... युक्त सोनामक्खी अथवा अम्लरसयुक्त चांदी

...स्यतनुपत्राणि ...नान और ... मेह, पांडु और क्षयकानाश होताहै इनसब प्र-

...कृत्वायवपल्वेनिधापा ताहै और ... शिलाजीत माक्षिकप्रयोग समाप्त ॥ २३१ ॥

...जन्तुः प्रातः प्रातर्यथ... ...टनञ्चविपक्कानांतासांपानेप्रशस्यते ॥

...र्षेन्नष्टस्याग्नेः प्रशोधनः इनसब... ...व्रणञ्चरोपणम् ॥

...विषमज्वरनाशनः । अ... शहदके साथ ... देरमें भ... भोज्यादींश्चण

...लसारादिगण के चौथाई ... खानेसे स्थूलनेसे अनेक प्रकार...

...जाने पर शुद्ध गुड़ और ... टपाक करव करनेवाले हैं

... हाग मिलसेवन ...को नष्ट कर के पकजानेपर उनको

... का नाश हो ...गोंको उत्पन्नकरेकामूत्र आदि तीक्ष्ण

...था त्रिफल... ...हका चूर्ण ... पीके नितम्ब कियाहुआ तत्र घावों के भ-

...लको विधिपूर्वक पाककरके शहद ... चाटने कहते हैं ... गादिगणके काढेसे सींचना

...स्वृद्धिका नाश होताहै ॥ २३... ...र, इली ... २३२ ॥

...धुनाचित्रकमूलंतथैवाहित... भुंक्ते ... २ की ... तदारोग्यंप्रचक्षते ॥ इति

कलाम् ॥ तस्यसलिलस्यपाना... ...दिश स्थौ... ॥ २

नाशनम् ॥ उष्णमन्नस्यम... ...भस्म ...तेराहित ... युक्त होय तो आरोग्य जानना

धिता ॥ स्थौल्यनुतस्यादग्निम... ...पारले ... धिकार ... ॥

मुस्तान्यथपञ्चपत्रैः ॥ श्रीवास... ...रसप्रायःस्नेहान्मेदोविवर्द्धने ॥

रसेनगाढमुद्वर्त्तनंस्थौल्यहरंप्रदिष्टं... ...तेतस्मादशक्तःसर्वकर्मसु ॥ क्षु

चीताको शहदकेसाथ चाटकर ... शुद्र... ...गन्धयैरल्पप्राणोऽल्पमैथुनः ॥ मे

शहदमें भिजोकर उसकेरसके पीनेसे ... ...वृद्धिःप्रायोमेदस्विनोभवेत् ॥ २३४ ॥

अथवा गरमगरम मांड पीनेसे स्थूलताका... ...ढके

बनाकर पीनेसे अथवा अरणीके रस या ... ॥

शिलाजीत, कूट, अगर, देवदारु, गुग्गुल, मोथा ... तुओं के खानेवाले मनुष्यके भोजन कियेहुए

सबकोधतूरेके रसमें पीसकर ... बटनलग... ...से मेद बढताहै और मेदकेद्वारा स्रोतोंकेढक

... लेपथ्याम... ...ताहै इसहेतुसे मनुष्य सबकार्योंमें असमर्थ

अमृतात्रुटिवेल्लवतूस... ...लेपथ्याम... ...ता, श्वासका रुकना, शरीरका शिथि-

कास्थौल्यभगन्दराञ्जयेत् ... इति अमृत... ...और मैथुनमें सामर्थ्यका कमहोना यह सब

गिलोय १ भाग, छोटी इलायची २ भाग, ...लिये प्रायः मेदवालेका पेटहोबढताहै ॥२३४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मेदसावृतमार्गत्वाद्वायुः कोष्ठे विशेष ... तस्मात्सशीघ्रं जरयत्याहारञ्चापिकाङ्क्षति ... यन्यान् ॥ एतावुपद्रवकरौ विशेषादग्निमारुतौ ... मेदस्यतीवसंवृद्धे महसैवानिलादयः । ... मेदोमांसातिवृद्धत्वाच्चलस्फिगुदरस्तनः ... स्थूलेस्युर्दुस्तराः कुष्ठाः विसर्पाः सभगन्दराः ... लाः ॥ मेदसः स्वेददौर्गन्ध्याज्जायन्ते ...

मेदके द्वारा स्रोतोंके रुकजानेसे कोष्ठमें ... है और भोजनको सुखाती है इसलिये थोड़ीही देरमें ... इसप्रकार क्षुधाके समयके विपरीत होनेसे अनेक प्रकारके ... और वायुही दोनों विशेष करके उपद्रव करनेवाले हैं ... उसी प्रकार यह दोनोंभी स्थूल मनुष्यको नष्ट कर ... कुपित होकर अनेक प्रकारके भयंकर रोगोंको उत्पन्न ... तथा मांसके बहुत बढ़जाने से जिसके नितम्ब ... प्रमाणसे अधिक होय उसको अतिस्थूल कहते हैं ... भगन्दर, ज्वर, अतीसार, प्रमेह, बवासीर, श्लीपद ... पसीने में दुर्गन्धि के होनेसे बहुत छोटे २ की ...

अथ स्थौ ...

पुराणाः शालयो मुद्गाः कुलत्थोद्दालकोद्रवाः ... त्रस्तयश्चैव सेव्या मेदस्विनां सदा ॥ धूम्रपानं तथा क्षोभो रक्तमोक्षणमेव च । जीर्णे ... यवगोधूमयोः सदा ॥ उपवासोऽसुखशय्या सत्त्वौदार्यं तमो जयः । ... रैः स्थौल्याद्युक्त्या विमुच्यते ॥ श्रम चिन्ता व्यवायाध्वक्षौद्रजागरणप्रिया ... तः स्थौल्यं यवश्यामाकभोजनः २३६

स्थूलता ...

मेदवालेको, पुराने चावल, मूंग, कुलथी ... कोदोंका सेवन कराना चाहिये और कृशताकारक वस्तु देनी चाहिये धूम्रपान, ... कलवाना और भोजनके परिपाक होजाने पर जौ तथा गेहूंके पदार्थोंका भोजन कर ... हितहै उपवास, सुख न देनेवाली शय्या, सतोगुण, उदारता और तमोगुणका ... तर्पण के दोषोंसे हुई स्थूलताका नाश होताहै श्रम, चिन्ता, मैथुन, मार्गगमन अधिक ... और जौ तथा सामाका भोजन इनसब के द्वारा अत्यन्त स्थूलताका मेद इकट्ठा होजा ...

सचव्यजीरकव्योषहिङ्गु ... जः पीतामदोघ्नावह्निदीपनाः ॥ फलत्रयं त्रिकटुकं ... फमेदोऽनिलापहम् ॥ बिडङ्ग नागरक्षार ... स्थौल्यनाशनः ॥ मूलं त्रि

[Fragments of another page lying over the text:]

अवस्था होती है १४ । प्रमेहानुहन्ति ... प्रयोगमें मिले ... प्रमेह, कुष्ठ, मिर्गी, गलग ... भवेच्चैनं ... मांसार्वुदं च ... ऐसा कोई भी ... योगेन ॥ २३० ... पिताः । जतुप्र ... तिमान् प्रमेहि ... रणम् । त्र्यूषणादि ... थितं तंक्षितौ । लोहितं ... तारमेहो ... विभक्तितम् । ॥२३५॥ ... गुणाः ...

... होई वायु जठरमेंही पि ... न पचजाताहै और फिर ... कष्टकारी रोग उत्पन्न ... वायु और दावानल ... बहुत बढ़जानेपर ... करके शीघ्रही जीवनका नाश ... र और स्तन ... मनुष्यके ... गुड ... कुष्ठ, ... ही तथा कामला यह सबरोग होते ... हैं ॥ २३५ ॥ ... २ लेकर ४०२ ... माह ॥

... घी को त्रिकटु, ... इति ... नितम्ब ... निचोकार ... पचेल्या ... कारी व ... होतनतसिद्ध ... मानयांश्चड्यर ... के काढ़े के सर्पि ... के मांसके ... उत्पन्न ... उदरमेंही मेदरहताहै इसनौ वर्षकी अवस्था हो ... दुर्ग ... य, बलका नाश उत्पन्न करनेवाल ... निद्राकी अं ...

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

[illegible]मधुयु[illegible]कम् । बिल्वादिपञ्चमूलस्यप्रयोगःक्षौद्रसंयुतः॥ अतिस्थौल्य
[illegible]तोध्रुवम [illegible]मग्निसलिलंशतपुष्पाहिंगुसंयुक्तम् ॥ पुटके
[illegible]मवामेदसः वृद्धिंक्षारंवातारिपत्रस्यहिंगुयुक्तंपिबेन्नरः मेदोवृद्धिविना
[illegible]मन्वितम् ॥ [illegible]बधुकानांपिष्टानांयवानाञ्चाथसक्तवः । सक्षौद्रत्रिफला
[illegible]पन्नगु[illegible] गुडूचीत्रिफलाक्काथस्तथालोहरजोऽन्वितः । अश्मजंमहि
[illegible]कृतेघृ॥ अतिमुक्ताद्बीजमध्यंमधुलीढंहन्त्युदरवृद्धिम् ॥ २३७॥
[illegible]स्यतनुपत्राणि[illegible]नोन और चीता इनसबके चूर्णको सत्तुओं में मिलाकर दही के
[illegible]कृत्वायवपल्लवेनिधापताहै और अग्निदीप्तहोतीहै त्रिफला तथा त्रिकटुको तेल तथा
[illegible]जन्तुःप्रातःप्रातर्यथ[illegible] मेद और वायुका नाश होता है बायबिडंग, सोंठ,
[illegible]र्षेन्नष्टस्याग्नेःप्रशोधनः इनसबका शहद के साथ खाने से अत्यन्तस्थूलताका नाश
[illegible]वा[illegible] शहदके साथ सेवन करने से पानी में शहद मिलाकर पीनेसे
[illegible]विषमज्वरनाशनः । अ[illegible] खानेसे स्थूलताका नाश होता है कबा[illegible]की पत्ती, चीता,
[illegible]लसारादिगण के चौथाई [illegible]टपाक करके सेवन करनेसे सब प्रकारके मेदका [illegible] नष्ट
[illegible] पर शुद्ध गुड़ और [illegible]सेवन करके मांड सहित भात सेहुँआ के सत्तू अथवा
[illegible]ल का चूर्ण हींग मिल[illegible] शहद युक्त त्रिफलेका काढ़ा पीनेसे अथवा गिलोय
[illegible]नेता हो[illegible]दका नाश ह[illegible] पीने से मेदका नाश होता है शिलाजीत अथवा
[illegible]था त्रिफल[illegible] बुद्[illegible]हका चूर्ण [illegible] चाटने से अथवा कुंदके बीजोंको शहदके साथ चाटने
[illegible]लकी विधिपूर्वक पाककरके शहद[illegible]
[illegible]रवृद्धिका नाश होताहै ॥ २३[illegible]
[illegible]धुनाचित्रकमूलंतथैवाहितम[illegible]नोभुंक्ते । बद्धोरुवूकमूलंमधुदिग्धंस्थाप्यतेनिशासु
कलाम् ॥ तस्यसलिलस्यपाना[illegible]वृद्धिशमंयाति । प्रातर्मधुयुतंवारिसेवितंस्थौल्य
नाशनम् ॥ उष्णमन्नस्यमण्ड[illegible]कृशतनुर्भवेत् । बदरीपत्रकल्केनपेयाकाञ्जिकसा
धिता ॥ स्थौल्यनुतस्यादग्निमन्[illegible]काथःशिलाजतु । शैलेयकुष्ठागुरुदेवदारुकौन्तीसि
मुस्तान्यथपञ्चपत्रैः ॥ श्रीवासध[illegible]रपुष्पदेवपुष्पंतथासर्वमिदंप्रपिष्य । धुत्तूरपत्रस्य
रसेनगाढमुद्वर्त्तनंस्थौल्यहरंप्रदिष्टम् ॥ २३८ ॥
चीताको शहदकेसाथ चाटकर हितक[illegible] वस्तु भोजन करनेसे अथवा अरंडकी जड़को रात्रिभर
शहदमें भिजोकर उसकेरसके पीनेसे उदरवृद्धिका नाशहोताहै प्रातःकाल शहदडालकर जलपीनेसे
अथवा गरमगरम मांड पीनेसे स्थूलताका नाशहोताहै बेरकी पत्तीके कल्क और कांजी के द्वारा पेया
बनाकर पीनेसे अथवा अरणीके रस या [illegible]के साथ शिलाजीतके सेवनसे स्थूलताका नाशहोताहै
शिलाजीत, कूट, अगर, देवदारु, गु[illegible], मोथा, पंचपल्लव, सरलवृक्ष, पिण्डशाक, ब्राह्मी और लौंग इन
सबकोधतूरेके रसमें पीसकर [illegible]बटनलगानेसे स्थूलताका नाशहोताहै ॥ २३८ ॥ क्रमवृद्धिमिदंमधुप्लुतंपिडि
अमृतात्रुटिवेल्लवत्सक[illegible]लेपथ्यामलकानिगुग्गुलुः ॥ २३९ ॥
कास्थौल्यभगन्दराञ्जयेद् [illegible]इति अमृतादिगुग्गुलुः ॥ २३९ ॥
गिलोय १ भाग, छोटी इलायची २ भाग, बायबिडंग ३ भाग, कुरैया ४ भाग, इन्द्रजौ ५ भाग, इड

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६ भाग, आमला ७ भाग और गूगल ८ भाग इनसबको शहद में मिलाकर ... सेवन ... स्थूलता और भगन्दर का नाश होता है इति अमृतादि गूगल ॥ २३९ ॥

व्योषाग्नित्रिफलामुस्तविडङ्गैर्गुग्गुलुंसमम् । खादन्सर्वाञ्जयेद्व्याधीन्मेदः श्लेष्मामवातजान् ॥ इति दशांगोगुग्गुलुः ॥ २४० ॥

त्रिकटु, चीता, त्रिफला, मोथा, बायबिडंग और गूगल इनसबको ... और आमवातजनित सबरोगोंका नाश होताहै इति दशांगगुग्गुल ॥ ...

त्र्यूषणाग्निघनवेल्लवचाभिभक्षयन्समघृतंमहिषाक्षं ... दोषजान्बलवतोऽपिविकारान् ॥ २४१ ॥

त्रिकटु, चीता, मोथा, बायबिडंग और बच इनसबको ... वात और मेदके दोषसेहुए बलवान् रोगभी शीघ्रही नष्ट हो ...

गुग्गुलुस्तालमूलीचत्रिफलाखदिरंवृषम् । त्रिवृत ... था ॥ एतद्दशपलान्भागांस्तोयेपञ्चाढकेपचेत् । ... पलद्वादशकंदेयंरुक्मलोहंसुचूर्णितम् । पुराणसर्पिषः ... समयेपात्रेसुशीतेचावतारिते । प्रस्थार्द्धंमाक्षिकं ... शिलाजतु ... लार्द्धञ्चविडंगानिपलत्रयम् । मरीचाञ्जनकृष्णाभिः ... पलञ्च ... कासीसंसूक्ष्मचूर्णीकृतंबुधैः । चूर्णंदत्त्वासुमथितंस्निग्धेभाण्डेनिधापयेत् ॥ ततःसंशुद्ध ... हस्तुभक्षयेदक्षमात्रकम् । अनुपानंपिबेत्क्षीरंजांगल ... तथा ॥ वातश्लेष्महरं ... ष्ठमेहोदरापहम् । कामलांपाण्डुरोगञ्चश्वयथुंसभग ... दरम् ॥ मूर्च्छामोहविषोन्माद ... णिविषमाणिच । स्थूलानांकर्षणंश्रेष्ठंमेदुरेपरम ... कर्षयेच्चातिमात्रेणकुक्षिंपाताल सन्निभम् । बल्यंरसायनंमेध्यंवाजीकरणमुत्तमम् ॥ ... करंपुत्रजननंबलीपलितनाशनम् । नाश्नीयात्कदलीकन्दंकाञ्जिकंकरमर्दकम् ॥ ... कारवेल्लञ्चककारादिंविवर्जयेत् । इति लोहरसायनम् ॥ २४२ ॥

गूगल, मूसली, त्रिफला, कत्था, बांसा, निसोथ, मुंडी, सोंठ, निर्गुंडी और चीता इनसबको चालीस चालीस तोले लेकर १२८० तोले जलमें पाककरे जब चौथाई बाकीरहै तब छानलेवे फिर इसकाढ़े में ४८ तोले रुक्म, लोह ६४ तोले घी बत्तीस तोले शक्कर मिलाकर तांबे के पात्र में पाककरे फिर पाकको उतारकर शीतल होजानेपर बत्तीस तोले शहद ८ तोले शिलाजीत दो दो तोले इलायची तथा दालचीनी बारह तोले, बायबिडंग और आठ आठ तोले मिर्च, रसौंत, पीपल, त्रिफला तथा हीरा, कसीस का सूक्ष्म चूर्ण मिलाकर खूबघोटे इसके उपरान्त इसको चिकने पात्रमें रखदेवे फिर विरेचनादि के द्वारा शरीर को शुद्ध करके एक तोला इस औषध को खाय और दूध तथा जंगली जीवोंके मांसके रसका अनुपान करे इसके द्वारा वात, कफ, कुष्ठ, प्रमेह, उदर, कामला, पांडुरोग, सूजन, भगन्दर, मूर्च्छा, मोह, विष, उन्माद, गरदोष, झुर्री और बालोंका पकना इनसबकानाश होताहै यह औषध मेदवालों के लिये अत्यन्त हितकारी है इसके सेवनसे कुक्षि पाताल के समान नीची होजाती है यह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...नाशक, मेधा को हित, वाजीकरण, श्रीवर्द्धक और पुत्रजनक हैं इस औषध के सेवन करने में ... कांजी, ...दा, करील और करेला आदि ककारादि वस्तुओं को त्यागकरदेवे इति लोह-

...र्ध्वनिर्यूहंचतुर्थांशावशेषितम्। परिस्रुतंततःशीतंमधुनामधुरीकृतम्॥ फा...पन्नेगुडेनाधिवमेवच। सूक्ष्मपिष्टानिचूर्णानिपिप्पल्यादेर्गणस्यच॥ एकध्य...स्कृतेघृतभाविते। पिप्पलीचूर्णमधुभिःप्रलिप्तेचान्तरेशुचौ॥ श्लक्ष्णानि...स्यतनुपत्राणिबुद्धिमान्। खदिराङ्गारतप्तानिबहुशःप्रक्षिपेद्बुधः॥ सुपिधा...ःकृत्वायवपल्वेनिधापयेत्। मासांस्त्रींश्चतुरोवापियावद्वालोहसंक्षयात्॥ ततोया...जन्तुःप्रातःप्रातर्यथा...यथायोग्यमाहारंचास्यकल्पयेत्॥एषस्थूल...र्षेन्नष्टस्याग्नेःप्रशोधनः।शो...नःकुष्ठमेहघ्नोगुल्मपाण्ड्वामयापहः॥ प्लीहोदरहरः...।विषमज्वरनाशनः। अभिष्य...दापहरणेलोहारिष्टोमहागुणः॥ इतिलोहारिष्टः२४३॥

...लसारादिगण के चौथाई ...अंश ते काढ़ेको छानकर शहद मिलाकर मीठाकरे फिर राबके ...जाने पर शुद्ध गुड़ और ...पिप्पल्यादि गणका चूर्ण मिलावे इसके उपरान्त पवित्र ...पिप्पल का चूर्ण और शहद लगाकर उसको रक्खे फिर तीक्ष्ण लोह के बारीक ...श्वेतता हो... कई बार तप्तकर उस में डाले और उस पात्र के मुखको बन्द ...में बुद्धि... तीनचारमहीने तक अथवा लोहे के गलनेतक रक्खे इसपीछे रसके ...काल अग्निबल अनुसार इसको पिये और यथायोग्य आहार करे इसके ...ग्नि, सूजन, ...प्रमेह, गुल्म, पांडु, प्लीहा, उदर, विषमज्वर और अभिष्यन्दका नाश होताहै इति लोहारिष्ट ॥ २४३ ॥

...चूर्णानित्रिफलांकटु...म्। बृहत्यौद्वेहरिद्रेचपाठामतिविषांस्थिराम्॥ ...नियवानीधान्य...कम्। सौवर्चलमजाजींचहवुषांचेतिचूर्णयेत्॥ चू...द्रभागाःस्युर्मानतः...।सक्तूनांषोडशगुणोभागसन्तर्पणंपिबेत्॥ प्रयोगात्वस्यशाम्यन्तिरोगाःसन्तर्पणोत्थ...। प्रमेहामूढवाताश्चकुष्ठान्यर्शांसिकामलाः॥ प्लीहापाण्ड्वामयःशोथोमूत्रकृच्छ्रमरोचकः। हृद्रोगाराजयक्ष्माचकासश्वासौगलग्रहः॥ कृमयोग्रहणीदोषःश्वैत्यंस्थौल्यमतीवच। जराणांदीप्यतेवह्निःस्मृतिबुद्धिश्चवर्द्धते॥ व्योषाद्यःसक्तुप्रयोगः॥ २४४॥

त्रिकटु, बायबिडंग, सहँजन, त्रिफला, कुटकी, दोनों भटकटैया, हल्दी, दारुहल्दी, पाठा, अतीस, शालिपर्णी, हींग, केबुक, अजवाइन, धनियां, चीता, कालानोन, कालाजीरा और हाऊबेर इनसबके चूर्णके सम भाग तेल घी और शहद और १६ भाग सत्तू इनसबको मिलाकर पिये इसके प्रयोगसे सन्तर्पणजनित रोग, प्रमेह, मूढवात, कुष्ठ, बवासीर, कामला, प्लीहा, पांडु, सूजन, मूत्रकृच्छ्र, अरुचि, हृद्रोग, राजयक्ष्मा, खांसी, श्वास, गलग्रह, कृमि, ग्रहणी, श्वेतकुष्ठ तथा अत्यन्त स्थूलता का नाश होताहै अग्नि दीप्ति होतीहै और स्मृति तथा बुद्धि बढ़ती है इति व्योषादि सक्तुप्रयोग ॥ २४४ ॥

त्रिफलातिविषामूर्वात्रिवृच्चित्रकवासकः। निम्बारग्वधषड्ग्रन्थाशतपर्णनिशाद्वयैः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुडूचीन्द्रासुरीकृष्णाकुष्ठसर्षपनागरैः । तैलमेभिःसमैःपक्कंसुरसादिरसप्लुतम् ॥ ... जनगण्डूषानस्यवस्तिषुयोजितम् । स्थूलतालस्यपाण्ड्वादीञ्जयेत्... इति त्रिफलाद्यंतैलम् ॥ २४५ ॥

त्रिफला, अतीस, मरोरफली, निसोथ, चीता, बांसा, नींब, अमलतास, बच, छित... कुरैया, राई, पीपल, कूट, सरसों और सोंठ इनके द्वारा सुरसादिगण ... के साथ ... किया हुआ तेल पान, मर्दन, कुल्ला, नस्य और वस्तिक्रियामें प्रयोग करने से स्थूल... पांडु आदिक कफजरोग नष्टहोते हैं इति त्रिफलादितैल ॥ २४५ ॥

चन्दनंकुङ्कुमोशीरप्रियंगुत्रुटिरोचनाः । तुरुष्क... गुरुकस्तूरीकर्पूरजातिपत्रि... जातीकङ्कोलपूगानांलवङ्गस्यफलानिच । ... लम्...तगरंप्लवम् ॥ नव... नखरुपृक्कावोलोदमनकंतथा । स्थौणेयकंचोरकञ्च शैलेयंशैलबालुकम् ॥ सरलं... अलाक्षातामलकीतथा । लामज्जकंपद्मकञ्चधातकीकुसुमानिच ॥ प्रपौण्डरीकं... रैसमांशैःशाणमात्रकैः । महासुगन्धिमित्येतत्तैलं ... साधयेत् ॥ प्रस्वेदमलदौर्... कण्डूकुष्ठहरंपरम् । अनेनाभ्यक्तगात्रस्तुवृद्धःसप्ततिकोऽपिवा ॥ युवा... वनिता... णामत्यन्तवल्लभः । सुभगोदर्शनीयश्चगच्छेत्... सदाशतम् ॥ ... ऽपिपुरुषायते । अपुत्रःपुत्रमाप्नोतिजीवेच्चशरदांशतम् । इति... तैलम् २४६ ॥

चन्दन, केशर, खस, प्रियंगु, छोटी इलायची, गोरोचन... बान, अगर, कस्तूरी, कपूर, जावित्री, जा... फल, कंकोल, सुपारी, लौंग, पठारी, जटामांसी, कूट, गगनधूल... तगर, नागरमोथा, नखी, व्याघ्रनखी... का, बोल, दौना भटोरा, चोरक, शिलाजीत, एलबालुक, सरल... छतवन, लाख, भुइँआमला, ... जड़, पद्माक, धवई के फूल, स्थलकमल और कचूर तीन ... शे इनसब औषधियोंके द्वारा ६४ तोले तेलका पाककरके सेवन करनेसे स्वेद, मल, दुर्गन्धि, खुजली ... कुष्ठका नाशहोताहै इसको शरीर में लगाने से सत्तर वर्षका बुड्ढाभी जवान के समान सुन्दर दर्शनीय वीर्य्ययुक्त स्त्रियों का अत्यन्त प्रिय और सौ स्त्रियों के साथ गमन करनेवाला होता है ... भी गर्भको धारण करती है षण्ढभी पुरुषार्थी होजाताहै और पुत्ररहित के पुत्र होताहै और ... सौ वर्षतक की आयुहोती है ॥ इति महासुगन्धि तैल ॥ २४६ ॥

अथ कार्श्याधिकारः । तत्र कार्श्यस्यनिदानमाह ॥

वातोरूक्षान्नपानानिलङ्घनंप्रमिताशनम् । क्रियातियोगःशोकश्चवेगनिद्राविनिग्रहः ॥ नित्यंरोगोरतिर्नित्यंव्यायामोभोजनाल्पता । भीतिर्धनादिचिन्ताचकार्श्यंकारणमीरितम् ॥ लंघनमुपवासःप्रमितमल्पंक्रियातियोगःवमनविरेकाद्यतिविधानंवेगनिद्राविनिग्रहः निद्रानिर्देशोविशोषाय ॥ २४७ ॥

कृशताका अधिकार कृशताका निदान ॥

वायु, रूखा अन्न तथा जल, लंघन, स्वल्प भोजन, अधिक वमनादिका प्रयोग, शोक, मलमूत्रादि वेग तथा निद्राका रोकना, सदैव रोगीहोना, नित्यमैथुन, व्यायाम, भोजन की स्वल्पता, भय और धनादि की चिन्ता यह सब कृशता के कारण हैं ॥ २४७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कृशस्यलक्षणमाह ॥

...दरग्रीवाधमनीजालसन्ततिःत्वगस्थिशेषोऽतिकृशःस्थूलपर्वानरोमतः २४८

कृशका लक्षण ॥

...॥ प... उदर तथा ग्रीवा शुष्क होयँ सब शरीरमें नसें दिखाई पड़ें चर्म तथा हड्डी सूखजायँ ...मुख स्थूल होजाय वह अत्यन्त कृशहै ॥ २४८ ॥

...स्यकेरोगाभवन्ति तानाह। प्लीहकासक्षयःश्वासगुल्मार्शांस्युदराणिच ॥ भृ... ...प्रधावन्ति ...श्चग्रहणी ...खाः ॥ २४९ ॥

...,खांसी,क्षयश्वास,गुल्म,ब...,...र्णीआदिकरोग अत्यन्त कृशमनुष्यके होते हैं २४९

...चिदन्यःकृशोऽतीवबलवान् ...स्यतेतद्वा(तत्रहेतुमाह)आधानसमयेयस्यशुक्रभागो ...काभवेत्। मेदोभागस्तुहीनः ...स्यात्सकृशोऽपिमहाबलः ॥ यस्याधानसमयेजनयि... ...स्याधिक्यंभवति। ...अथ ते...तात्तस्यकृशस्यापिबहुबलमित्यर्थः ॥ २५० ॥

...संपूर्ण कृश मनुष्यभी अत्यन्त बलवान् ...खाजाताहै इसका कारण यहहै कि जो गर्भाधानके समय ...वीर्य्य ...और मेदक... स्वल्प होताहै तब वह सन्तान कृश होनेपर भी अधिक बलआदिमें श्वेतता हो ५० ॥

...कस्यचित्स्थूलस्यमेंबलहीनत्वंलक्ष्यते (तत्रहेतुमाह) मेदसस्त्वधिकोयस्यशुक्रभागो ...भवेत्। सस्निग्धोऽपिसम्पन्... पिबलहीनोविलोक्यते। व्याख्यानंपूर्ववत् ॥ २५१ ॥

...स्थूलभी बलहीन देखेजाते ... इसका कारण यहहै कि जो गर्भाधानके समय पिताके वीर्य्य का अल्पता और मेदकी अधिकता होत... तब वह सन्तान स्थूलहोकरभी बलहीनहोती है ॥ २५१ ॥

अथ कार्श्यस्यचिकित्सामाह ॥

रूक्षान्नादिनिमित्तेतुकृशेयुक्तं ...षजम्। बृंहणंबलकृद्वृष्यंतथावाजीकरञ्चयत् ॥ पीताश्वगन्धापयसार्द्धमासंघृते... ...सुखाम्बुनावा। कृशस्यपुष्टिंवपुषोविधत्तेबालस्य शस्यस्ययथाम्बुवृष्टिः ॥ २५२ ॥

कृशता की चिकित्सा ॥

रूखे अन्न आदि के सेवनसे कृशहुए रोगी को धातुवर्द्धक बलकारी वीर्य्यवर्द्धक और वाजीकरण औषध सेवन करानी चाहिये दूध, घी, तेल अथवा उष्णजलके साथ पन्द्रह दिनतक असगन्ध पीने से जैसे जलवृष्टि के द्वारा नवीन वृक्षादि बढ़तेहैं उसीप्रकार इससे कृश मनुष्य का शरीर पुष्ट होताहै ॥ २५२ ॥

अश्वगन्धस्यकल्केनक्काथेतस्मिन्पयस्यपि। सिद्धंतैलंकृशांगानामभ्यंगादंगपुष्टिदम् ॥ इत्यश्वगन्धातैलम् ॥ २५३ ॥

असगन्ध के कल्क के द्वारा असगन्ध के क्वाथ और दूध के साथ पाककिये हुए तेलके मर्दन से कृश मनुष्यों का शरीर पुष्ट होताहै इति अश्वगन्धातैल ॥ २५३ ॥

पुष्टिकृद्बालरोगोक्तमश्वगन्धाघृतंभजेत्।वाजीकरोदितंतद्वदश्वगन्धाघृतादिकम् २५४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बालरोगों में कहाहुआ अश्वगन्धाघृत और वाजीकरण अधिकार में कहाहुआ अश्वगन्धाघृत सेवन करने से शरीर पुष्ट होताहै ॥ २५४ ॥

अथासाध्यंकार्श्यमाह ॥

स्वभावादतिकार्श्योयःस्वभावादल्पपावकः। स्वभावादबलोयश्चतस्ययन्त्सितमिति कार्श्यचिकित्सा ॥ २५५ ॥

असाध्यकृशताका लक्षण ॥

जो मनुष्य स्वभावही से, अत्यन्तकृश मन्दाग्नि और निर्बल होताहै उसकी चिकित्सा न… इति कृशताचिकित्सा ॥ २५५ ॥

वासादलरसोलेपाच्छङ्खचूर्णेनसंयुतः… बिल्व…रसोवापिगात्रदौर्गन्ध्यनाशनः… अलम्बुषाभवंचूर्णंपीतंकाञ्जिकसंयुतम्। दौर्गन्ध्यंना…यत्याशुदृष्टंमेदोभवंनृणाम्…

शंखके चूर्ण के साथ बांसेकारस अथवा बेलपत्री का …यु करने से शरीर की दुर्गन्धि न… है मुंडी के चूर्णको कांजीके साथ पीनेसे मेदसेहुई दुर्गन्धि… होताहै ॥ २५६ ॥

बिल्वशिवासमभागालेपाद्भुजमूलगन्धमपहरति । परिणतपीडिकाम… …स्थबीजंवा ॥ चिञ्चापत्रस्वरसंसंम्रक्षितकक्षादियो…तंजयति… …चिरदेहदौर्गन्ध्यम्।शिरीषलामज्जकहेमलोध्रैस्त्व…रोषसंस्वेद… …धषः। पत्राम्बुलो… भयचन्दनानिशरीरदौर्गन्ध्यहरःप्रदेहः ॥ हिलमो…तोयक्तश्चूर्णैरुदधिफेनजैः … पेनहरत्याशुदेहदौर्गन्ध्यमुत्कटम् ॥ हरीतकींतुसम्पि…गात्रमुद्वर्त्तयेन्नरः। पश्चात… प्रकुर्वीतदेहस्वेदप्रशान्तये ॥ हरीतकीलोध्रमरिष्ट…तत्वचोदाडिमवल्कलञ्च । एषो… ऽङ्गरागःकथितोऽङ्गनानांजङ्घाकषायस्तुनराधिपानाम्…गोमूत्रपिष्टंविनिहन्तिकुष्ठंवर्णो ज्ज्वलंगोपयसाचयुक्तम्। कक्षादिदौर्गन्ध्यहरंपयोऽ…स्तंवशीकृद्द्वजनीद्वयेन ॥ २५७ ॥

बेल की जड तथा हडको समभाग पीसकर अथवा क…के बीजको पीसकर लेपकरनेसे बगल गन्ध और पकीहुई फुंसियों का भी नाश होताहै इमलीके पत्तों के रसको बगल में लगानेसे दुर्गन्धि का नाशहोताहै जलीहुई हल्दीको पीसकर उबटनलगानेसे शीघ्रही देहकीदुर्गन्धिका नाशहोताहै सिरस,खस,धतूरा तथा दूध इनसबके चूर्णको शरीर में मलने से अथवा तेजपात, सुगन्धबाला, अगर, हड तथा श्वेतचन्दन इनके लेपसे शरीर की दुर्गन्धि का नाशहोताहै समुद्रफेनके चूर्णको हिलसा सागके रसके साथ लेपकरने से उत्कट दुर्गन्धि का नाशहोताहै हडको पीसकर शरीर में लेपकर स्नानकरनेसे स्वेदका नाश होता हड,लोध,नींबकीपत्ती,आमकी छाल और अनारका बक्कल इनसब को पीसकर लेपकरनेसे स्त्रियों के वर्णों की उत्तमता और राजालोगों के घोडे आदिपर चढ़ने से होने वाली जंघाओंकी विवर्णता नष्ट होतीहै गोमूत्रके साथ कूट अथवा हरितालको पीसकर लेपकरनेसे दुर्गन्धि का नाश होताहै हरताल, हल्दी और दारुहल्दी इनसबको गौके दूध में पीसकर लेपकरने से बगल आदिकी दुर्गन्धि नष्टहोतीहै ॥ २५७ ॥

बब्बूलस्यदलैःसम्यग्वारिणापरिपेषितैः। गात्रमुद्वर्त्तयेत्पश्चाद्धरीतक्यासुपिष्टया ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूयउद्वर्त्तनंकृत्वापश्चात्स्नानंसमाचरेत् ॥ प्रस्वेदान्मुच्यतेशीघ्रंततस्त्वेवंसमाचरेत् ॥ बिल्व... कारकाणां पत्रैःकपित्थस्यदलानुमिश्रैः। आनूपवत्कर्म्मविधानयोगैर्व ...गन्धहेतोः ॥ पथ्यानखीचन्दनकुष्ठसर्जैःपुनःपुनश्चागुरुशर्कराभ्याम्। ...न॥ प... हृदयापहारीविख्यातनामामलयानिलोऽयम् ॥ चण्डांशुगतिलैर्लोध्रशिरीषो ...उद्वर्त्तनंभवेद्ग्रीष्मस्वेदकर्मनिवारणम् ॥ सुरयासममभयाफलचूर्णमधुना ...यम्। स्वेदान्हत्वालभतेपुरुषोऽप्यत्यन्तसौरभ्यम् ॥ मल्लीकुसुमाभयकरि ...ध्यर्मविचाचि...दाहे। विकसितपत्रहरिद्रेपर्कटिपत्रञ्चदूर्व्वयासहितम् ॥ सम्पिष्यगा ...याद्घर्म्मविचर्चीशन... तौयोज्यंगुग्गुलोःपञ्चतिक्तकम् ॥ अशक्तो ...तिक्तंवापक्वंखादेदतन्द्रितः। इति मेदोरोगनिदानचिकित्साधिकारः ॥ २५८ ॥

...बबूलके पत्तों को जलमें पीसकर...बटन लगाने से अथवा हड़को पीसकर वारंवार शरीर में ...र स्नान करनेसे शीघ्रही ...अथ ...नाश होताहै बेल, आम, जामुन, नींबू और कैथा इनसब ...सुरपत्... और बच इनसबको पीसकर विधिपूर्वक शरीर में मलकर स्नान करने से शरीरकी गन्धि ...त्रि... कूट तथा ...इनके द्वारा अथवा अगर तथा शक्करके द्वारा धूपदेने ...ते मलयज आदिमें श्वेतता हो मनोहर सुगन्ध...जाती है सूर्य्यमुखी, तिल, लोध, सिरस, खस और नाग- ...तेशर इनसबको शरीरमें मलनेसे गरमी की ऋतुमें स्वेद नहीं निकलताहै हड़का चूर्ण और मदिरा ...से समभाग लेकर शहद के साथ चा...से स्वेदका नाशहोकर शरीरमें सुगन्धि होजाती है चमेली ...लयाद्रिको पीसकर लेपकरनेसे ...र खुजली का नाशहोताहै विचकिल के पत्ते, हल्दी, पक- ...योंके पत्ते और दूब इनसबको पीसकर शरीरमें लेपकरनेसे स्वेद और खुजलीका नाश होताहै हाथ पैरोंसे पसीना निकलनेमें पंचतिक्तगुग्गुल खाना चाहिये और जो इसको न खासके तो पंचतिक्त घृतपिये इति मेदोरोगाधिकार स... ॥ २५८ ॥

अथोदरस्यनिदानमाह ॥

रोगाःसर्वेऽपिमन्देऽग्नौसुतरामुदराणिच। अजीर्णान्मलिनैश्चान्नैश्चीयतेमलसञ्च यात् ॥ अग्नौमन्देसर्व्वेरोगाःजायन्तेकिन्तुसुतरामतिशयेनउदराणिजायन्ते। अप रानपिहेतूनाहअजीर्णात्। मलिनैश्चान्नैःअत्यन्तदोषजनकैः। मलसञ्चयात् मलानां दोषाणांपुरीषस्यचातिवृद्धेः। अत्रोदरशब्देनोदरस्थोरोगउच्यते। यतआह अर्थतोधर्म्म तस्ताभ्यांतत्समीपतयापिच। तत्साहचर्य्याच्छब्दानांवृत्तिरुक्ताचतुर्व्विधा ॥ २५९ ॥

उदरका अधिकार उदररोगका निदान ॥

मन्दाग्नि से सब रोग होतेहैं परन्तु उदर विशेष करके होताहै और अजीर्ण अत्यन्त दोषकारी वस्तुओंका सेवन और दोष तथा मलके संचय से भी उदररोग उत्पन्न होते हैं यहां उदर कहने से उदरमें स्थित रोगोंका ग्रहणहोताहै क्योंकि कहागयाहै कि अर्थसे धर्मसे इनदोनोंसे और निकटता से शब्दकी वृत्ति चारप्रकार की होतीहै ॥ २५९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ संप्राप्तिमाह ॥

रुध्वास्वेदाम्बुवाहीनिदोषाःस्रोतांसिसञ्चिताः । प्राणानपानान्संदुष्य नृणाम् ॥ २६० ॥

उदरकी संप्राप्ति ॥

इकट्ठेहुए दोष स्वेद तथा जलके लेचलनेवाले स्रोतोंको रोककरके और प्राण को दूषित करके उदररोगोंको उत्पन्न करतेहैं ॥ २६० ॥

अथ सामान्यरूपमाह ॥

आध्मानंगमनेऽशक्तिर्दौर्बल्यंदुर्बलाग्निता ... ङ्गानांसंगोवातपुरीषयोः । दाहस्तन्द्राचसर्वेषुजठरेषुभवन्तिहि ॥ २६१ ॥

उदररोगका सामान्य लक्षण ॥

सब उदररोगोंमें आध्मान चलने फिरनेमें अशक्ति, ... मन्दाग्नि, सूजन, शरीरकी शिथिलता, वायु तथा मलका रुकना, दाह और तन्द्रा यह लक्षण होतेहैं ॥ २६१ ॥

अथोदरसन्निकृष्टनिदानपूर्विकांसंख्यामाह ॥

पृथग्दोषैःसमस्तैश्चप्लीहबद्धक्षतोदकैः।सम्भवन्त्युदराण्यष्टौ ... ॥ २६२ ॥

उदररोगकी समीपवाले कारणोंसमेत संख्या ॥

वातज,पित्तज,कफज, सन्निपातज, प्लीहज, बद्धक्षत और उदक यह आठ प्रकारके उदररोग होतेहैं ॥ २६२ ॥

तत्र वातोदरस्यलक्षणमाह ॥

तत्रवातोदरेशोथःपाणिपान्नाभिकुक्षिषु। कुक्षिपार्श्वोदरकटीपृष्ठरुक्पर्वभेदनम् ॥ शुष्ककासोऽङ्गमर्दश्चगुरुतामलसंग्रहः । श्यावारुणत्वगादित्वमकस्माद्ध्रासवृद्धिमत् ॥ सतोदभेदमुदरंतदकृष्णशिराततम् । आध्मातदृतिवच्छब्दमाहतंप्रकरोतिच ॥वायुश्चात्रसरुक्शब्दोविचरेत्सर्वतोगतिः । पाणिपादित्यत्रैकवचनान्तपाच्छब्दआर्षत्वात्कुक्षिपार्श्वोदरेत्यत्रकुक्षिशब्दउदरस्यवामदक्षिणभागद्वयवाचीसर्वतोगतिःसकलकोष्ठसञ्चरन् ॥ २६३ ॥

वातोदर के लक्षण ॥

वातोदरमें हाथ,पैर, नाभि तथा कोखमें सूजन होती है कोख, पसली, उदर,कटि,पीठ तथा पोरुओंमें पीडा होतीहै सूखीखांसी, शरीरमें पीडा,भारीपन,मलकारुकना, त्वचा आदिका लाल अथवा भूसरंगहोना और उदर कभी बढाहुआ अथवा कभी घटाहुआसा मालूम होताहै उदर में सूजी गडने की सी तथा छेदने कीसी पीडा होतीहै पतली, काली,नसें व्याप्त होजातीहैं अफरा होताहै और चोट मारने से मशक कासा शब्द होताहै और इस रोग में पीडा तथा शब्दसहित वायु संपूर्ण कोष्ठ में घूमतीहै ॥ २६३ ॥

अथ पैत्तिकमाह ॥

पित्तोदरेज्वरोमूर्च्छादाहस्तृट्कटुकास्यता । भ्रमोऽतीसारःपीतत्वंत्वगादावुदरंहरित् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पीततानशिरानद्धंसस्वे... दह्यते। धूमायतेमृदुस्पर्शंक्षिप्रपाकंप्रदूयते ... कवर्णा दृति। सोष्मअन्तस्तापयुक्तम् ॥ दह्यतेबहिर्दाहयुक्तम् । धूमायतेधूममिवोद्वमति ॥ क्षिप्रपाकीक्षिप्रपाकं जलोदरंजायते। प्रदूयतेऽयथत ॥ २६४ ॥

पित्तजउदररोगके लक्षण ॥

...में ज्वर, मूर्च्छा, दाह, तृषा, मुखमें कटुता, भ्रम, अतीसार, त्वचा आदिमें पीलापन ...॥ प..., पीली तथा ताम्रवर्णवाली नसों से उदरका तनाहोना स्वेदानिकलना भीतर तथा ...कण्ठसे धुआंसा निकलना उदरका कोमल होना शीघ्रही बढ़कर जलोदर होजाना ...यह लक्षण होतेहैं ॥ २६४ ॥

अथ कफोदरमाह ॥

...मोदरेऽङ्गसदनंश्व... तन्द्रोत्क्लेशोऽरुचिःस्वापःकासःशौक्ल्यंत्वगा ... उदरंस्तिमितंस्निग्धंशुक्लरा...ततंमहत् । चिराभिवृद्धिकठिनंशीतस्पर्शंगुरुस्थि ...स्वापःस्पर्शाज्ञतागौरवमङ्गा...म् । तन्द्रानिद्राबाहुल्यम् ॥ उत्क्लेशोहल्लासः ॥ शुक्ल ...तंशुक्लशिराव्याप्तम् ॥ अथ त...

कफ उदरके लक्षण ॥

...मे शरीरकी शिथिलता, सूजन, ...न, तन्द्रा, मतली अरुचि, स्पर्शका न जानना, खांसी ...था त्वचा आदिमें श्वेतता होतीहै और उद...दा, गीलासा मालूम होनेवाला, चिकना, श्वेतनसों ...तनाहुआ, बहुत काल में बढ़नेवाला, कठि...त, शीतल स्पर्श युक्त, भारी तथा स्थिर होताहै ॥ २६५ ॥

अथ सन्निपातोदरमाह ॥

...स्त्रियोऽन्नपानंनखलोममूत्रवि... वियुक्तमसाधुवृत्ताः। यस्मैप्रयच्छन्त्यरयोगरांश्चदु ...ष्टाम्बुदूषीविषसेवनाच्च ॥ तस्याशु ...कुपिताश्चदोषाःकुप्युःसघोरंजठरन्त्रिलिंगम् । त ...च्छीतवातेभृशदुर्दिनेचविशेषत... प्रतिदह्यतेच ॥ सचातुरोमूर्च्छतिहिप्रसक्तंपाण्डुःकृशः ...शुष्यतितृष्णयाच। दूष्योदरंकीर्ति...तदेवक्लोहोदरङ्कीर्त्यतोनिबोध ॥ स्त्रियइत्यविवेकि सन्निहितजनोपलक्षणम् ताश्चस्वसौभाग्यमिच्छन्त्यः। विट्माज्जरादीनाम् ॥ आर्त्तवंर जः। अरयोवागरान्संयोगजानिविषाणि ॥ दुष्टमम्बुसविषमत्स्यतृणपर्णादियुक्तम् । दू षीविषंविषमेवाग्न्याद्युपघातेनस्वल्पप्रभावम् । यतउक्तम् जीर्णविषघ्नौषधिभिर्हतंवादा वाग्निवातातपशोषितञ्च। स्वभावतोवागुणविप्रयुक्तंविषंहिदूषीविषतामुपैति ॥ गुणवि प्रयुक्तम् । गुणवियुक्तम् ॥ तदुदरंशीतादिषुकुप्यति। तत्रदूर्वाविषस्यप्रकोपात् ॥ मूर्च्छ तिविषयोगात् । प्रसक्तंनिरन्तरम् ॥ एतदेवसन्निपातोदरम् । तन्त्रान्तरेदूष्योदरंकीर्ति तम् ॥ अथवापरस्परंदूषयन्तिदोषाएवदूष्याःतैःकृतमुदरंदूष्योदरम् ॥ २६६ ॥

सन्निपातोदरके लक्षण ॥

जिसको कोई दुष्ट स्त्री वशीकरणादिके लिये नख, रोम, मूत्र, बिल्ली आदिकी विष्ठा या आर्त्तव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अन्नपान में समुद खिलावें अथवा जिस पुरुष को शत्रु संयोगज विष दिया होवे अथवा जो पुरुष दुष्ट जल (विष मउर्ला तृण तथा ... आदिसे दूषित जल) या दूषीविष (... विषनाशक औषधियों से माराहुआ दावाग्नि वायु या धूपसे सूखाहुआ अथवा स्वभावही से हीन ...णवाले ... खाता है उसके वातादिक दोष और रुधिर शीघ्रही कुपित होकर त्रिदोषज उदररोग ... उत्पन्न ... हैं यह रोग शीतल वायु और दुर्दिन में अत्यन्त कुपित और दाहयुक्त होता है इसरोग ... न्तर मूर्च्छा शरीरका पीलापन और तृषासे कण्ठ आदिका सूखना यह लक्षण हो... तन्त्रान्तर में दुष्योदरभी कहते हैं ॥ २६६ ॥

अथ प्लीहोदरमाह ॥

वर्द्धतेप्लीहतवद्धयायहिंयात्प्लीहोदरंहितत् । तद्वामे... र्द्धतेपार्श्वेनिमित्तं ... प्रवृद्धेप्लीह्निलिङ्गानियान्युक्तानिभिषग्वरैः । प्लीहोदरे... ... सर्वाणिदेहिन... प्लीहोदरस्यैवभेदोयकृद्दाल्युदरंतथा । ... ...षकामित्याह ॥ सव्यान्यपा... कृतिप्रवृद्धेज्ञेयंयकृद्दाल्योदरन्तदेव । यकृद्दालयतिदो...र्भिनत्तीतियकृद्दाल्युदरम् ... उदरमेव ॥ २६७ ॥

प्लीहोदरके लक्षण ...

प्लीहके बढ़ने से जो उदर बढ़ता है उसको प्लीहोदर कहते हैं और यह बाईं ओर को ... ... हारोगके जो कारण कहेगये हैं वही प्लीहोदर के भी हैं और बहुत बढ़ेहुए प्लीहाके लक्षण ... में होते हैं यकृद्दाल्युदरभी प्लीहोदरका भेदमात्र है दहनी ओर यकृत् के बढ़ने से जो उदरवृ... होती है उसको यकृद्दाल्युदर कहते हैं ॥ २६७ ॥

अथ बद्धगुदमाह ॥

यस्यान्त्रमन्नैरुपलेपिभिर्वाबालाश्मभिर्वापिहितं यथावत् । सञ्चीयतेयस्यमलः ... स्यशनैःशनैःसङ्करवच्चनाड्याम् ॥ निरुद्ध्यतेयस्य गुदपुरीषन्निरेतिकृच्छ्रादपिचाल्यमल्पम् । हन्नाभिमध्येपरिवृद्धिमेतितस्योदरंबद्धगुदंवद... अन्नैरुपलेपिभिः शाकशालुकादिभिः बालाश्मभिःबालुकाभिःकर्करैर्वायथावत्तस्ययत्सम्... । मलःपुरीषंसङ्करवत्सम्मार्जनीक्षिप्ततृणधूल्यादिवत् ॥ नाड्यामन्त्रनाड्यांहन्नाभिमध्येहन्नाभ्योर्मध्ये ॥ २६८ ॥

बद्धगुदउदरके लक्षण ॥

जिसकी आंत अन्नसे शाकादिकों से अथवा बालूसे ढकजाती है उसका मल दूषित होकर बुहारा से फेंकेहुए तृण आदिकोंके समान धीरे २ आंतके भीतर संचित होता है और गुदाके द्वारमें रुका हुआ मल बहुत कष्ट से थोड़ा २ निकलता है और उसके हृदय तथा नाभिके बीचमें उदर बढ़ता है इस रोग को बद्धगुद कहते हैं ॥ २६८ ॥

अथ क्षतोदरमाह ॥

शल्यन्तथान्नोपहितंयदन्त्रंभुक्तंभिनत्यागतमन्यथावा । तस्मात्स्रुतोऽन्त्रात्सलिलप्रकाशःस्रावःस्रवेद्वैगुदतस्तुभूयः ॥ नाभेरधश्चोदरमेतिवृद्धिंनिस्तुद्यतेदाल्यतिचाति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मात्रम् । एतत्परिस्रा[illegible]दरप्रदिष्टं दकोदरंकीर्तयतोनिबोध ॥ शल्यंक[illegible]कर्करादि । अन्नोपहितंभक्षयतअन्नं भिनत्तितथा अन्यथाआगतंभोजनविनाआगतंशरादितरथापि [illegible]न्त्रंभिनत्तितत[illegible]लक्षणम् । जृम्भणमत्यशनंवायदन्त्रम्भिनत्ति ॥ यतउक्तंचरके । श [illegible]स्थास्थ कण्टकैरन्नसंयुतैः । भिद्येतान्त्रंयदाभुक्तंजृम्भयात्यशनेनचेत् । तस्मा [illegible] गुदतस्तुभूयःअन्त्रात्संस्रुत्यपुनर्गुदतःस्रवेदित्यर्थः । दाल्यतिविदार्य्यत [illegible]॥ प[illegible]सिद्धिरार्षत्वात् । एततूक्षतोदरन्तन्त्रान्तरेपरिस्राव्युदरम्प्रदिष्टम् २६९ ॥

क्षतोदरके लक्षण ॥

[illegible]कडी आदिको भोजन आदि में खाजाने से अथवा अन्य किसी प्रकार से कांटे आ-[illegible] भीतर चले[illegible] से जंभाई से या बहुत भोजन से जो आंत फटकर बहुत जल निकलकर [illegible]के द्वारा वारंवार बहता [illegible] बढ़ता है और सूजीके गड़नेकी सी तथा कटने [illegible] पीडा होती है उसको क्षतोदर कहते हैं इसी को तन्त्रान्तरमें परिस्राव्युदर कहते हैं ॥२६९ ॥

अथोदकोदरमाह ॥

[illegible]यःस्नेहपीतोऽप्यऽनुवासि[illegible]अथ ते[illegible]तोविरिक्तोऽप्यथवानिरूढः । पिबेज्जलंशीतलमा शुसंय[illegible]स्रोतांसिदूष्यन्तिहितद्वहानि ॥ स्नेहोपलिप्तेष्वथवापितेषूदकोदरम्पूर्ववदभ्युपै ति । स्निग्धम्महत्तत्परिवृत्तनाभिसमं[illegible]ततःपूर्णमिवाम्बुनाच । यथादृतिःक्षुभ्यतिकम्पते चशब्दायतेवाप्युदकोदरन्तत् ॥ स्नेहपातःपीतइत्यत्राध्यवसितादित्वात्कर्त्तरिक्तःपश्चा त्स्नेहपीतइतितत्पुनरार्षःतेनस्नेहपीतवानित्यर्थः । अनुवासितोवागृहीतानुवासितव [illegible]॥ वान्तःअत्रापिपूर्ववत्कर्त्तरि क्तः । तेनवान्तवानित्यर्थः ॥ एवंविरिक्तःविरिक्तवान् । तथानिरूढःगृहीतनिरूढवास्तिःसन्ःआशुशीतलजलम्पिबेत् ॥ तस्यतद्वहानिजलवहानि स्रोतांसिदूष्यन्ति ॥ जलवहेषुस्नेहप्राप्तेषुदुष्टेषुसत्सु । अन्नरसेउपस्नेहन्यायेनबहिर्निःसृतो दकोदरमायाति ॥ तथापिजल[illegible]अर्निःसृतेदकोदरमायातितदुदरम् परिवृत्तनाभिगम्भी रनाभिसमन्ततःजलमुपया।तिस्यततःयथादृतिःचमर्मयजलाहरणपात्रम् । क्षुभ्यतिअन्त र्जलदोलनेनसञ्चलति ॥ कम्पतेबहिःशब्दायतेकम्पमानं । सतुशब्दङ्करोति ॥ २७० ॥

जलोदर का वर्णन ॥

जो मनुष्य स्नेह पान तथा अनुवासनवस्ति (पिचकारी) ग्रहण करके अथवा वमन, विरेचन तथा निरूहवस्ति (पिचकारी) ग्रहण करके बहुत शीघ्र शीतल जल पीता है उसकी जल लेचलनेवाली नाडी दूषित तथा चिकनी होजाती हैं और पहले के समान रसके लेचलनेवाली नाडियों के बाहर अन्नका रस इकट्ठा होकर जलोदर को उत्पन्न करताहै इस रोगमें उदर स्निग्ध बडा नाभि में पीडायुक्त तथा गंभीर होता है नाभिके चारोंओर जलभराहुआसा मालूम होता है और जल से भरीहुई मशक के समान उदर में पानी हिलता डुलता है बाहर कंप होता है तथा गडगडाहट होता है ॥ २७० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ साध्यासाध्यमाह ॥

जन्मनैवोदरंसर्वम्प्रायःकृच्छ्रतमम्मतम् । बलिनस्तदजाताम्बुयत्नसाध्यंनवोत्थितम् ॥ बलिनः अजाताम्बुनवोत्थितञ्चयत्नसाध्यमित्यन्वयः । पक्षाद्बद्धगुदंतूर्ध्वंसर्वंजातोदकन्तथा ॥ प्रायोभवत्यभावायछिद्रान्त्रंचोदरंनृणाम् । शरादिनाच्छिद्र... रम् । अभावायभवति ॥ २७१ ॥

उदररोगके साध्यासाध्य लक्षण ॥

सब प्रकार के उदररोग प्रायः उत्पन्न होतेही असाध्य होते हैं. केवल बलवान... उत्पन्न हुए जलवाला नवीन उदररोग यत्नसाध्य होना है. बद्धगुदउदर पन्द्रह दि... प्रकार के जातोदक तथा क्षतोदर इससे कुछ अधिक समयमें रोगीको नष्ट करते हैं ॥ २७१ ॥

अथ जातोदकस्योदरस्य ... ॥

पयःपूर्णादृतिरिवक्षोभेशब्दकरंमृदु । अप्रव्यक्तशिराशून्यंनितान्तमुदरंमहत् ॥ स्यमास्यवैरस्यंमूत्रंबहुशकृत्स्नुतम्।जातोदकस्यलिङ्गंस्यान्मंदाग्निःपाण्डुतापिच २७२

उत्पन्नहुए जलवाले उदरके ... ।

जल के उत्पन्न होनेपर उदर चलायमान होने से जलसे भराहुई मशक के समान शब्दायमान कोमल भलकती हुई नसोंसे रहित जल से भराहुआ उदर बडा होताहै रोगीको आलस्य मुखकी विरसता,मूत्रकी अधिकता,मलका पतलापन,मन्दाग्नि और शरीरका पीलापनयह लक्षणहोतेहैं२७२

शूनाक्षंकुटिलोपस्थमुपक्लिन्नन्तनुत्वचम् । बलशोणितमांसाग्निपरिक्षीणञ्चवर्जयेत् ॥ कुटिलोपस्थम् । वक्रमेहनम् । उपक्लिन्नन्तनुत्वचम् उपरिआर्द्रातन्वीत्वग्यस्यतंउदरिणम्॥ पार्श्वभङ्गान्नविद्वेषशोफातीसारपीडितम् । विरिक्तंचाप्युदरिणंपूर्य्यमाणंविवर्ज्जयेत् ॥ विरिक्तमपिपूर्य्यमाणंपूर्य्यमाणोदरंउदरिणंविवर्ज्जयेत् ॥ २७३ ॥

नेत्रोंमें सूजन,लिंगका टेढ़ापन,पतली तथा गीलीसी त्वचा और बल,रुधिर,मांस तथा अग्निकी क्षीणता इन लक्षणों से युक्त उदरवालेको त्यागकरदेवे जिसकी पसली में पीडा, अन्न में अनिच्छा, सूजन तथा अतीसार होय और विरेचन देनेपर उदर पूर्ण बनारहै ऐसे उदरवालेको त्यागकरदेवे२७३॥

तत्रोदरस्य चिकित्सामाह ॥

एरण्डतैलंदशमूलमिश्रंगोमूत्रयुक्तंत्रिफलारसोवा । निहन्तिवातोदरशोथशूलंक्वाथःसमूत्रोदशमूलयश्च ॥ २७४ ॥

उदररोगकी चिकित्सा ॥

रेंडीके तेलमें दशमूल का चूर्ण डालकर पीने से त्रिफले के रसमें गोमूत्र डालकर पीनेसे अथवा दशमूलके काढ़ेमें दशमूल डालकर पीने से वातोदर सूजन तथा शूलका नाश होताहै ॥ २७४ ॥

कुष्ठंदन्तीयवक्षारोव्योषंत्रिलवणंवचा । अजाजीदीप्यकंहिंगुस्वर्ज्जिकाचव्यचित्रकम् ॥ शुण्ठीचोष्णाम्भसापीतावातोदररुजापहा । कुष्ठादिचूर्णम् ॥ २७५ ॥

कूट, जमालगोटाकी जड, जवाखार, त्रिकटु,तीनोंनोन,वच,कालाजीरा, अजवाइन,हींग, सज्जी,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चव्य, चीता और सोंठ इन सबके चूर्णको गरमजलके साथ पीने से वातोदरका नाश होताहै इति कुष्ठादिचूर्ण ॥ २७५ ॥

...शुनस्य... पिकांजलद्रोणेत्रिपाचयेत्। त्रिकटुत्रिफलादन्तीहिंगुसैन्धवचित्रकम् ॥ ...दे... पाकष्ठमधुशिग्रुपुनर्नवा। सौवर्च्चलंविडङ्गानिदीप्यकोगजपिप्पली ॥ एतेषांप ...ानविवृतःषट्पलानि... पिष्ट्वाकषायेणानेनतैलंमृद्वग्निनापचेत् ॥ तत्पि बतप्रातः...यथाग्निबलमात्रया। निहन्तिसकलान्रोगानुदराणिविशेषतः ॥ मूत्र ...सन्त्रवृद्धिंगुदक्रमीन। पार्श्वकुक्षिभवंशूलमामशूलमरोचकम् ॥ यकृदष्ठी ...नाहान्...नंचांगवेदनाम्। मासमात्रेणनश्यन्तिअशीतिर्वातजागदाः ॥ इति ल ...लम् ॥ २७६ ॥

...परसौ ४०० तोले लहसन को १६... जलमें ...करे फिर त्रिकटु, त्रिफला, जमालगोटेकीजड, ...पानोन, चीता, देवदारु, बच, कूठ, महुआ, सहजन, गदापूर्णा, कालानोन, बायबिडंग, अजवाइन ...गजपीपल यह सब चार २ तोले और निसोथ २४ तोले इन सब के कल्क तथा लहसन के क...के साथ मन्दाग्नि में तेलको... प्रातःकाल उठकर अग्निबल के अनुसार इसके पीने से संपूर्ण रोगोंका नाश होताहै और विशे...करके उदर, मूत्रकृच्छ्र, उदावर्त, आंतका बढ़ना, गुदा के कृमि, पसली की पीड़ा, कुक्षिशूल, आमशूल, अरुचि, यकृत, अष्ठीला, आनाह, प्लीहा तथा शरीर की पीड़ा का नाश होताहै और इसके सेवनसे महीने भर में सब वातजरोग दूर होजाते हैं इति लशुनतैल ॥ २७६ ॥

पित्तोदरेतुबलिनंपूर्वमेवविरेचयेत्। पयसाचत्रिवृत्कल्कैरुवूकस्यशृतेनच ॥ पिप्पल्यादिगणेनाढ्यंपाचितंपाययेद्घृतम् ॥ २७७ ॥

पित्तोदर में बलवान् रोगीको पहले निसोथ के चूर्णको दूधके साथ अथवा रेंडीकी जड़के काढ़ेके साथ पान कराकर विरेचन देना चाहिये और पिप्पल्यादि गणके द्वारा पाक कियाहुआ घी पिलाना चाहिये ॥ २७७ ॥

नरंपथ्यभुजंनित्यंकफोदरनिवृत्तये। नागरत्रिफलाकल्कैर्दध्यम्बुपरिपेषितैः ॥ पाचितंतैलमाज्यंवापिबेत्सर्वोदरेषुचनागरादितैलंघृतञ्च ॥ २७८ ॥

कफोदरके दूर करने के लिये नित्यही पथ्य भोजन देना चाहिये सोंठ तथा त्रिफले को दही के तोड़में पीसकर उसके साथ पाक कियेहुये घी अथवा तेल के पीनेसे सबप्रकारके उदररोग नष्ट होते हैं इति नागरादि तैल वा घृत ॥ २७८ ॥

शालिषष्टिकगोधूमयवनीवारभोजनम्। निरूहोरेचनंश्रेष्ठंसर्वेषुजठरेषुच ॥ आनूपमौदकंमांसशाकंपिष्टकृतंतिलाः। व्यायामाध्वदिवास्वप्नस्नेहपानानिवर्जयेत् ॥ तथोष्णलवणोष्णानिविदाहीनिगुरूणिच। नाद्यान्नान्निजठरेतोयपानञ्चवर्जयेत् ॥ उदराणांमलाढ्यत्वाद्बहुशःशोधनंहितम्। क्षीरमेरण्डजंतैलंपिबेन्मूत्रेणवासकृत ॥ २७९ ॥

शालिधान्य, सांठी, गेहूं, जौ तथा तिन्नी का भोजन विरेचन और निरूहवस्ति यह सब उदररोगोंमें हितकारी हैं अनूपदेशके जीवोंकामांस, जलके जीवोंकामांस, शाक, पिट्ठीकी वस्तु, व्यायाम, मार्गगमन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिनमें सोना तथा स्नेह पीना यह सब उदररोगों में त्याग कर देना चाहिये विदग्धवस्तु लवण उष्ण वस्तु विदाही तथा भारी वस्तुओं का भोजन जल और सवारी यह सब उदररोग में त्यागकरना चाहिये उदररोग में बहुतमल इकट्ठे होजाने के कारण वारंवार विरेचन देना चाहिये इसलिये साथ अथवा गोमूत्रके साथ रेंडीका तेल वारंवार पीना चाहिये ॥ २७९ ॥

वातोदरीपिबेत्तक्रंपिप्पलीलवणान्वितम् । शर्करामरिचोपेतंस्वादुपित्तोद वानीहवुषाजाजीव्योषयुक्तंकफोदरी । सन्निपातोदरीयुक्तंत्रिकटुक्षारसैन्धवम् ॥ २८० ॥

वातोदर में पीपलके चूर्ण तथा सैंधोनोन से युक्त पित्तोदरमें मिर्चके चूर्ण तथा... दर में अजवाइन, हाऊबेर, कालाजीरा तथा त्रिकुटे के चूर्णसे युक्त और सन्निपातोदर... खार तथा सैंधानोनसे युक्त मट्ठेका पानकरना चाहिये ॥ २८० ॥

यवानीहवुषाधान्यंत्रिफलाचोपकुञ्चिका... पलीमूलमजगन्धाशटीवचा ताह्वाजीरकंव्योषंस्वर्णक्षीरीचचित्रकम् । द्वौक्षारौपौष्करमूलंकुष्ठंलवणपञ्चकम् ॥ ... ञ्चसमांशानिदन्त्याभागत्रयंभवेत् । त्रिवृद्विशालाद्विगुणा... शातलास्याच्चतुर्गुणा ॥ ए... नारायणोनाम्नाचूर्णोरोगगणापहः ॥ एनंप्राप्यनिवर्तन्ते... विष्णुमिवासुराः ॥ तक्रेणोद रिभिःपेयोगुल्मिभिःबदराम्बुना ॥ आनद्धवातेसुरया वातरोगेप्रसन्नया ॥ दधिमण्डेनविड्भेदेदाडिमाम्बुभिरर्शसि । परिकर्त्तिषुवृक्षाम्लैरुष्णाम्बुभिरजीर्णके ॥ भगन्दरेपाण्डुरोगेकासेश्वासेमलग्रहे । हृद्रोगेग्रहणीरोगेकुञ्जरन्देनलेज्वरे ॥ दंष्ट्राविषेमूलविषेसगरेकृत्रिमेविषे । यथार्हंस्निग्धकोष्ठेनपेयमेतद्विरेचनम् ॥ उपकुञ्चिकाकारवीचवृहज्जीरकः संगरैलाइतिलोके । विशालाइन्द्रवारुणी ॥ शातला स्नेहुण्डइतिप्रसिद्धः । परिकर्तिः गुदेपरिकर्त्तनवत्पीडा इति नारायणचूर्णम् ॥ २८१ ॥

अजवाइन, हाऊबेर, धनियां, त्रिफला, कालाजीरा, कलौंजी, पीपलामूल, बबई, कचूर, बच, सौंफ, जीरा, त्रिकटु, मकोय, चीता, जवाखार, सज्जी, पुष्करमूल, कूट, पांचोंनोन तथा बायबिडंग यहसबबराबर जमालगोटेकीजड़ तीन भाग, निसोथ २भाग, इन्द्रायण २ भाग तथा सेहुँड ४ भाग इनसबके चूर्णको नारायण चूर्ण कहतेहैं यह चूर्ण सब रोगसमूहोंका नाशक है यह चूर्ण उदररोगमें मट्ठेके साथ गुल्ममें बेर के काढ़के साथ आनद्धवातमें सुराके साथ वातरोग में प्रसन्ना नाम मदिराके साथ मलभेद में दहीके तोडके साथ बवासीर में अनारके काढ़े के साथ परिकर्त्तिका (गुदामें कटने कीसी पीड़ा) में चूकके साथ तथा अजीर्णमें गरमजलके साथ पान करना चाहिये और भगन्दर, पांडु, खांसी, श्वास, गलग्रह, हृद्रोग, ग्रहणी, कुब्जता, मन्दाग्नि, ज्वर, काटने से उत्पन्न हुए विष, मूलविष, गरदोष तथा कृत्रिमविष इनसबमें यथायोग्य अनुपान के साथ पानकरने से श्रेष्ठ विरेचन होताहै इति नारायण चूर्ण २८१ ॥

स्नुक्क्षीरदन्तीत्रिफलाविडंगसिंहीत्रिवृच्चित्रककर्षम् । घृतंविपक्कंकुडवप्रमाणं तोयेनतस्याक्षमथार्द्धकर्षम् ॥ पीत्वोष्णमम्भोऽनुपिबेद्विरिक्तेपेयांरसंवाप्रपिबेद्विधिज्ञः । नाराचमेतज्जठरामयानां युक्तयोपयुक्तंप्रवदन्तिसन्तः ॥ इति नाराचघृतम् २८२ ॥

थूहड़का दूध, जमालगोटेकी जड़, त्रिफला, बायबिडंग, भटकटैया, निसोथ तथा चीता ये सब एक २ तोले लेकर इनके साथ पावभर घी का पाककरै फिर जलके साथ एक तोले अथवा ६ माशे इस घीको

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खाकर उष्ण जलका अनुपान करै इसके उपरान्त विरेचन होजा पर पेया अथवा मांसका रस पिये इस घृतके सेवन से उदररोगोंका नाश होताहै इति नाराचघृतं ॥ २८२ ॥

त्रायाःक[illegible]त्रायाकल्कंदध्यादिवेष्टितम् । निगिलेद्वारिणानित्यमुद[illegible]ध्याधिशा [illegible]ये [illegible]पाण्डौतिवनसूरणेतिलोके २८३ ॥

[illegible] कल्क को दही आदिमें लपेटकर जलके साथ निगलने से उदररोग नष्ट होते हैं २८३॥

पुनर्न[illegible]निशासतिक्तापटोलपथ्यापिचुमन्दमुस्ता । सनागरच्छिन्नरुहेतिसर्वैः [illegible]धिनाविधिज्ञैः ॥ गोमूत्रयुक्गुग्गुलुनाचयुक्तःपीतःप्रभातेनियतंनराणाम्। [illegible]गशोथ[illegible]पाण्डुशूलश्वासान्वितंपाण्डुगदंनिहन्तिपुनर्नवादिःक्काथः ॥ इत्युदर [illegible]दानचिकित्साधिकार[illegible]२८४ ॥

[illegible]पुनरना, दारुहल्दी, कुटकी, परवर, [illegible], नीम, [illegible] सोंठ तथा गिलोय इन सबका विधिपूर्वक [illegible] गोमूत्र और गूगल छोडकर प्रातःकाल पीनेसे सर्वाङ्गकी सूजन, उदर, खांसी, शूल, श्वास और पाण्डुरोग का नाश होताहै इति [illegible]नर्नवादि क्काथ। इति उदर रोगाधिकार समाप्त ॥ २८४ ॥

अथ शोथा[illegible] अथ तत्र शोथस्यविप्रकृष्टंनिदानमाह ॥

शुद्धामयाभक्तकृशाबलानांक्षराम्ल[illegible]तीक्ष्णोष्णगुरूपसेवा । दध्याममृच्छाकविरोधि पिष्टगरोपसृष्टान्ननिषेवणाच्च ॥ अर्शांस्यचेष्टावपुषोह्यशुद्धिर्मर्म्माभिघातोविषमाप्रसूतिः । मिथ्योपचारःप्रतिकर्म्मणाञ्चनिजस्यहेतुः श्वयथोः प्रदिष्टः ॥ शुद्धिर्वमनविरेकादिः । आमयाः पाण्डुरोगादयः । अभक्तम् अभोजनम् । आमः अपक्वोभुक्तस्यरसः । पिष्टगरोपसृष्टान्नम् पिष्टोयोगरः संयोगजंविषंतेनसंसृष्टमन्नम् वपुषोह्यशुद्धिः शोधनार्हस्यवपुषोऽशोधनम् । मर्म्मोपघातः । दोषकृतएवज्ञेयः । बाह्यहेतुकृतस्तु मर्म्मोपघात आगन्तुजशोथहेतुरेव । विषमाप्रसूतिः आमगर्भपतनादिका । प्रतिकर्म्मणांवमनादि पञ्चकर्म्मणाम् । मिथ्योपचारः असम्यक्करणम् श्वयथोः शोथस्यनिजस्य आत्मीयस्य सन्निकृष्टस्य हेतुर्घातात्यात्मकस्योक्तः २८५ ॥

सूजन का अधिकार। सूजनके दूरवाले कारण ॥

वमन विरेचनादिकेद्वारा शोधन पाण्डु आदिक रोग अथवा भोजन न करनेसे कृश और दुर्बलमनुष्यों को क्षार अम्ल तीक्ष्ण उष्ण तथा भारीवस्तुओंके सेवनसे शोथरोग होताहै अधिक दधि, मृत्तिका, शाक, विरोधी भोजन, भोजनका अपक्वरस, संयोगज विषसे मिलेहुये अन्नका सेवन, बवासीर, व्यायाम न करना शोधन के योग्य होनेपर भी विरेचनादि शोधन न करना दोषों के द्वारा मर्म्मों का अभिघात (बाहरी हेतुओं से मर्मोंका आघात आगन्तुजशोथरोगका कारणहै) कच्चे गर्भ का गिरना और वमन आदि पंचकर्म्मोंका अच्छी रीतिसे न करना ये सब शोथरोग के कारण कहेगयेहैं ॥ २८५ ॥

अथ शोथस्य संप्राप्तिपूर्वकं सामान्यलक्षणमाह ॥

रक्तपित्तकफान्वायुर्दुष्टोदुष्टान्बहिःशिराः । नीत्वारुद्धगतिस्तैर्हि कुर्यात्त्वङ्मांसाश्रयम्॥उत्सेधंसंहतंशोथं तमाहुर्निचयादतः।सगौरवंस्यादनवस्थितत्वंसोत्सेधमुष्मा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

थ...तनुत्वम् ॥ सलोम ...चविवर्णताचसामान्यलिंगश्वयथोः प्रादिष्टम् ॥ उत्सेधं उन्नत ...म् । किंविशिष्टमुत्सेधमतः पूर्वोक्तात्त्रिचयात् । रक्तपित्तकफवातेभ्यो समुदाया ... । ... घनं तमुत्सेधंशोथमाहुरित्यन्वयः । तस्यशोथस्य किं ...स्याकां... ाह । अनवस्थितत्वंस्यात् । अनियतास्थितिःस्यादित्यर्थः । चिकित्सा... निवृत्तेः । तच्चानवस्थितत्वंसगौरवं स्याद्गौरवमप्यवस्थितं स्यात् । अथच... स्यात् । उन्नतत्वमप्यनवस्थितं स्यादित्यर्थः ॥ २८६ ॥

शोथरोगका सम्प्राप्तिपूर्वक सामान्य लक्षण ॥

दूषित वायु दूषित रक्तपित्त तथा कफ को बाहर की शिराओं में लाकर और ... के द्वारा ... कर त्वचा तथा मांसका आश्रय करतीहुई घनी उँचाईको उत्प... हैं इसीको शोथ कहते हैं शोथको रक्तपित्त कफ तथा वायु के द्वारा उत्प... इस रोगमें शोथका स्थान भारी ... वस्थित (चिकित्सा के विनाभी निवृत्तहोनेवाला) उन्नत ...ण लोम हर्ष युक्त विवर्ण और ... नसों से युक्त होताहै ॥ २८६ ॥

वातिकं शोथमा...यु

चरस्तनुत्वक्पुरुषोऽरुणोऽसितःससुप्तिहर्षार्तियुतोनिमित्ततः । प्रशाम्यतिप्रोन्नमति प्रपीडितोदिवाबलीस्याच्छ्वयथुःसमीरणात् ॥ चरःसञ्चारी । प्रसुप्तिःस्पर्शाज्ञता ॥ हर्षोऽत्रझिनिझिनीरोमाञ्चोवा । आर्त्तिःपीडा ॥ एतद्युतः दिवाबलीविकृतिविषमसमवाया रब्धत्वात् । अतएवोक्तंचरकेण स्नेहोष्णवमनाद्यैस्तुयः प्रशाम्येत्सवातिकः ॥ यश्चा प्यरुणवर्णःस्याच्छोथोनक्तंप्रशाम्यति ॥ २८७ ॥

वातज शोथका वर्णन ॥

वातजशोथ में त्वचा. कठोर, रक्त अथवा कृष्णवर्णयुक, स्पर्शज्ञानसे रहित और झिनझिनाहट तथा रोमाञ्च युक्त होती है ये शोथ सञ्चारी विनाकारण के भी शान्तहोनेवाला दबानेसे गढ्ढा पडने वाला दिनमें बढ़नेवाला और रातमें घटनेवाला होताहै ॥ २८७ ॥

अथ पैत्तिकमाह ॥

मृदुःसगन्धोऽसितपीतरागवान्भ्रमज्वरस्वेदतृषामदान्वितः । यस्तूष्यतेस्पर्शसहोऽक्षिरागवान्सपित्तशोथोभृशदाहपाकवान् ॥ उष्यतेसन्तप्यते ॥ भृशदाहपाकवान्भृशं दाहोयःपाकस्तद्युक्तः ॥ २८८ ॥

पित्तजशोथके लक्षण ॥

पित्तजशोथ. कोमल, दुर्गन्धित, उष्ण, पीडायुक्त, दाह तथा पाकयुक्त और कृष्ण पीत अथवा रक्त वर्ण होताहै इसमें रोगी. भ्रम, ज्वर, स्वेद, तृषा, मद तथा रक्तवर्णवाले नेत्रोंसे युक्त होताहै ॥ २८८ ॥

अथ श्लैष्मिकमाह ॥

गुरुःस्थिरःपाण्डुररोचकान्वितःप्रसेकनिद्रावमिवह्निमान्द्यकृत् । सकृच्छ्रजन्मप्रशमो निपीडितोनचोन्नमेद्रात्रिबलीकफात्मकः ॥ २८९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कफज शोथ के लक्षण ॥

कफज शोथ भारी, स्थिर, पाण्डुवर्ण, दबाने से नहीं दबनेवाला और रात्रि में बढ़ने... में ... रोगमें ... , निद्राकी अधिकता, छर्दि, मन्दाग्नि तथा अरुचि होती है ... प्रति ... शान्ति कष्ट से होतीहै ॥ २८९ ॥

अथ द्वन्द्वजमाह ॥ ... निशोभन

निदानाकृतिसंसर्गाज्ज्ञेयःशोथोद्विदोषजः ॥ २९० ॥

द्वन्द्वज शोथ के लक्षण ॥

... के ...दान तथा लक्षणों के मिलने से द्वन्द्वज शोथ जानना चाहिये ॥ २९० ॥

अथ सान्निपातिकमाह ॥

सर्वाकृतिःसन्निपाताच्छोथ... ।व्यामिश्रलक्षणइत्युक्तेसर्वाकृतिरिति ...क्तवातजादिशोथसकललक्षणानि...मार्थम् ॥ २९१ ॥

...पातज शोथके लक्षण ॥

तीनों दोषोंके सम्पूर्ण लक्षणों ...अथ ते... से त्रिदोषज शोथ जानना चाहिये ॥ २९१ ॥

अथ ...भिघातजमाह ॥

अभिघातेनशस्त्रादिच्छेदभेदक्षतादिभिः। हिमानिलोदधानिलैर्भल्लातकपिकच्छुजैः ॥ रसैःशूकैश्चसंस्पर्शाच्छ्वयथुःस्याद्विसर्पवान्।भृशोष्मलोहिताभासःप्रायशःपित्तलक्षणः॥ छेदःखङ्गादिनाभेदःपाषाणादिना । क्षतंशरादिनातीव्रव्रणादि ॥ आदिशब्देनलगुड प्रहारादिर्गृह्यते। भल्लातजैरसैःकपिकच्छुजैःशूकैःविसर्पवान् ॥ प्रसरणशीलःपित्तलक्ष णःपैत्तिकशोथलक्षणः २९२ ॥ अभिघातज शोथके लक्षण ॥

खङ्गादि के द्वारा छेदन से पाषाणादि के द्वारा भेदसे बाणआदिके द्वारा घाव से लाठी आदि के लगने से ठंढी तथा समुद्रकी वायु के सेवन से और भिलावें के रस अथवा केवांचके लगजाने से जो शोथ होता है उसे अभिघातज कहते हैं ये शोथ फैलनेवाला अत्यन्त उष्ण रक्त वर्ण और प्रायः पित्त के लक्षणों से युक्त होता है ॥ २९२ ॥

अथ विषजमाह ॥

विषजःसविषप्राणिपरिसर्पणमूत्रणात्। दंष्ट्रादन्तनखाघातादविषप्राणिनामपि ॥ वि एमूत्रशुक्रोपहतमलवद्वस्तुसङ्करात्। विषवृक्षानिलस्पर्शाद्गरयोगावचूर्णनात् ॥ मृदुश्च लोऽवलम्बीचशीघ्रोबहुरुजाकरः। परिसर्पणाच्छरीरोपरिसञ्चरणात् ॥ दंष्ट्राद्विगुणीकृ तादन्ताबलिः। चोह्यइति ॥ दन्ताःअग्रेभवाः । अविषप्राणिनांदंष्ट्रादिविषंशोथव्यथादि करंभवतीतिविशेषः। विएमूत्रेत्यादि॥ विडाद्युपहतंमलिनञ्चयद्वस्तु । तथासङ्करःसम्मा र्ज्जनीभिःक्षिप्तोधूल्यादिःतेषांसम्पर्कात्। गरयोगावच्चूर्णनात् । गरःसंयोगजविषंतस्य योगोयस्यतेनवस्तुनाऽवधूलनात् ॥ अवलम्बीअवलम्बमानः। अयमप्यागन्तुजस्तथा पिसामान्यागन्तुजशोथचिकित्सातोऽस्यविशिष्टचिकित्साभिधानात्पृथक्पठितः २९३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श...संयुक्त प्राणीके शरीरपर ...नेसे और मूतनेसे अथवा विषरहितभी ...के दांत, नख अथवा उक्षत ... काटने से मलमूत्र तथा वीर्य लगेहुये तथा मलिन कपडे के धारण करनेसे बढनीके ... धूलिके लगने से विषवृक्ष की वायुके स्पर्श से और किसी वस्तुके ...हुए ... माह । अनवा... से विषज शोथ उत्पन्न होताहै यह शोथ कोमल फैलनेवाला लम्बा ... निवृत्तेः । ...वही उत्पन्न होनेवाला होता है ॥ २९३ ॥

स्यान यत्रस्थितादोषायत्रशोथंकुर्वन्तितदाह ॥

दोषाःश्वयथुमूर्ध्वंहिकुर्वन्त्यामाशयेस्थिताः । पित्ताशयस्थामध्ये...स्त्वधः ॥ कृत्स्नंदेहमनुप्राप्यकुर्य्युःसर्वसरस्तथा । ऊर्ध्वमुरःप्रभृत्यूर्ध्वम...मध्ये...शयमध्ये । अधःपक्वाशयादधः ॥ २९४ ॥

जिन २ स्थानों में स्थित वातादिक दोष ... उत्पन्न करते हैं उनका वर्णन ... दोष आमाशय में स्थित होकर शरीर के ऊर्ध्वभाग में पित्ताशय में स्थित होकर मध्यभाग मलाशय में स्थित होकर नीचे के भागमें और सम्पूर्ण शरीरको व्याप्त करके सम्पूर्ण शरीरमें शोथ उत्पन्न करते हैं ॥ २९४ ॥

अथोपद्रवानाह...

छर्दिस्तृष्णारुचिस्तृष्णाज्वरोऽतीसारएवचासंप...आमदौर्बल्यंशोथएतेउपद्रवाः २९५

शोथके उपद्रव ॥

छर्दि, प्यास, अरुचि, तृषा, ज्वर, अतीसार और दुर्बलता ये सात शोथके उपद्रवहैं ॥ २९५ ॥

अथ शोथासाध्यत्वमाह ॥

श्वासःपिपासाछर्दिश्चदौर्बल्यंज्वरएवच । यस्यचान्नेरुचिर्नास्तिशोथिनन्तंविवर्जयेत् ॥ २९६ ॥

असाध्य शोथ के लक्षण ॥

जिस शोथ रोगीके श्वास, तृषा, छर्दि, दुर्बलता, ज्वर और अन्नमें अरुचि हो उसको असाध्य जानना चाहिये ॥ २९६ ॥

अथ कष्टसाध्यादिकानाह ॥

योमध्यदेशेश्वयथुःकष्टःसर्वाङ्गगश्चयः । अर्द्धाङ्गेरिष्टभूतःस्याद्यश्चोर्ध्वंपरिसर्पति ॥ मध्यदेशेउरःपक्वाशयमध्ये । सर्वांगगःसकलशरीरव्यापी । सर्वांगजइतिवापाठःसन्निपातिकः । अर्द्धांगेअर्द्धनारीश्वराकारः । यश्चोर्ध्वंपरिसर्पतीतिपुरुषविषयः । तथाच । ऊर्ध्वगामीनरःपद्भ्यामधोगामीतथास्त्रियम् ॥ उभयंवस्तिसञ्जातःशोथोहन्तिनसंशयः । ऊर्ध्वगामीमुखगामीतथाचतन्त्रान्तरे । पादःप्रवृत्तःश्वयथुर्नृणांयःप्राप्नुयान्मुखमितिसनसिध्यतीतिशेषः ॥ अधोगामीपदगामी । तथाचतन्त्रान्तरे । स्त्रीणांवक्त्रात्पदंयातिवस्तिजश्चनसिध्यतीति । उभयंनरनारीञ्च । अपरञ्च । अनन्योपद्रवकृतःशोथःपादसमुत्थितः । पुरुषंहन्तिनारीन्तुमुखजोवस्तिजोद्वयम् ॥ अयमर्थःपादसमुत्थितःपादाभ्यामुत्थितोमुखगामीतियावत् । शोथःपुरुषंहन्ति । सकिंविशिष्टःअन्योपद्रवकृतःशोथादन्येव्याधयोऽतीसारग्रहण्यर्शप्रभृतयस्तेषामुपद्रवैःकृतःतदुपद्रवत्वेनजातइत्यर्थः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नअन्योपद्रवकृतः अ[illegible]न्योपद्रवकृतः । अर्थात्स्वहेतुभिरेव[illegible]तः । इयम् १ पुरु[illegible] [illegible]हन्तिसोऽप्यनन्योपद्रवकृतएव ॥ २६७ ॥

शोथके कष्ट साध्यादि लक्षण ॥

[illegible] पक्काशय के बीचमें अथवा सर्वाङ्ग में हुआ शोथ अत्यन्त कष्ट सा[illegible] [illegible] अर्द्धनारीश्वराकार से उत्पन्न होताहै अथवा जो शोथ पुरुष के मुखमें [illegible] असाध्यहै [illegible]का पैरोंसे ऊपर जानेवाला स्त्रियोंका मुखसे नीचे जानेवाला और स्त्री पुरुष [illegible] [illegible] भया शोथ असाध्यहै और भी कहागयाहै कि जो शोथ अन्य किसी रोगके उप-[illegible] अपने कारणोंसे उत्पन्न भयाहो और पुरुषके पैरोंसे उत्पन्न होकर मुखमें प्राप्तभया हो [illegible] स्त्रियोंके मुख[illegible] उत्पन्नहोकर पैरों में प्राप्तभयाहो वो असाध्यहै और वस्ति में हुआ शोथ स्त्री [illegible] दोनोंका असाध्यहै ॥ २६७ ॥

अथ शोथचिकित्सामाह ॥

शुण्ठीपुनर्नवैरण्डपञ्चमूलीशृ[illegible]जलम् । वातिकेश्वयथौशस्तंपानाहारपरिग्रहे ॥ पटोलत्रिफलारिष्टदार्व्वीक्काथः स[illegible]थ ते[illegible]। तद्वत्पित्तकृतंशोथंहन्तिश्लेष्मोद्भवंतथा ॥ मिश्रेमिश्रक्रमंकुर्य्यात्सर्वजेसर्वमेवहि । बिल्वपत्ररसंपूतंशोषणंत्रिभवेपिबेत् ॥ शोथेत्वागन्तुजेकुर्यात्सेकलेपादिशीतलम् । भल्लातकर्यांहरेच्छोथंसतिलाकृष्णमृत्तिका ॥ महिषीक्षीरसंपिष्टैर्नवनीतसमन्वितैः । तिलैर्लिप्तःशमंयातिशोथोभल्लातकोत्थितः ॥ यष्टीदुग्धतिलैर्लेपोनवनीतेनसंयुतः । शोथमारुष्करंहन्तिचूर्णैःशालदलस्यच ॥ विषजशोथचिकित्सातुविषचिकित्सायांद्रष्टव्या ॥ २६८ ॥ शोथकी चिकित्सा ॥

सोंठ, गदापूरना, एरंडकी जड और पंचमूल इनके काढेके पीनेसे अथवा इसके द्वारा पेयाआदि बनाकर सेवन करने से वातज शोथ नष्टहोताहै परवल, त्रिफला, नीम, दारुहलदी इनके काढेमें गूगल डालकर पीनेसे पित्तज और कफज शोथ नष्ट होताहै द्वन्द्वज शोथमें मिलीहुई और सन्निपातज शोथ में तीनोंदोषों की मिलीभई चिकित्सा करनी चाहिये बेलपत्रके रसको छानकर त्रिकटु का चूर्ण मिलाकर पीनेसे सन्निपातज शोथ नष्टहोताहै आगन्तुज शोथमें शीतल परिषेक (सींचना) और लेप होना चाहिये तिल तथा कालीमिट्टी को भैंस के दूध में पीसकर मक्खन मिलाकर लेप करनेसे भिलावें से भया शोथ नष्टहोताहै तिलोंको पीसकर लेप करनेसे भैंस के दूधमें पिसेभये तिल तथा मुलेठी के साथ मक्खन मिलाकर लेपकरने से अथवा सालके पत्तोंके चूर्ण के लेप करने से भिलावेंसेहुआ शोथ नष्ट होताहै विषज शोथकी चिकित्सा विषकी चिकित्सामें देखनी चाहिये २६८ ॥

अथ सामान्यचिकित्सामाह ॥

महिष्यानवनीतंवालेपाद्दुग्धतिलान्वितम् । अत्रदुग्धश्चमहिष्याएवयतआह २९९

शोथकी सामान्य चिकित्सा ॥

भैंसके दूधके साथ तिल पीसकर मक्खन मिलाकर लेप करनेसे शोथका नाश होताहै ॥ २९९ ॥

पथ्यानिशाभार्ङ्गर्चमृताग्निदार्व्वी पुनर्नवादारुमहौषधानाम् । क्काथःप्रसह्योदरपाणिपादमुखाश्रितंहन्त्यचिरेणशोथम् ॥ इति पथ्यादिक्काथः ॥ ३०० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शरीरा विषयुक्त प्राणीके शरीरपर चलनेसे और मूतनेसे अथवा विषरहितभी प्राणीके दांत, नख अथवा उन्नत ... काटने से मलमूत्र तथा वीर्य्य लगेहुये तथा मलिन कपडे के धारण करनेसे बढनीके ... धूलिके लगने से विषवृक्ष की वायुके स्पर्श से और किसी वस्तुके ... हुए ... शाह । अनवधि से विषज शोथ उत्पन्न होताहै यह शोथ कोमल फैलनेवाला लम्बा ... निवृत्तेः । ... वही उत्पन्न होनेवाला होता है ॥ २६३ ॥

स्थान यत्रस्थितादोषायत्रशोथंकुर्वन्तितदाह ॥

दोषाःश्वयथुमूर्ध्वंहिकुर्वन्त्यामाशयेस्थिताः । पित्ताशयस्थामध्ये ... स्त्वधः ॥ कृत्स्नंदेहमनुप्राप्यकुर्य्युःसर्वसरस्तथा । ऊर्ध्वमुरःप्रभृत्यूर्ध्वम ... मध्ये ... शयमध्ये । अधःपक्वाशयादधः ॥ २६४ ॥

जिन २ स्थानों में स्थित वातादिक दोष ... उत्पन्न करते हैं उनका वर्णन ... दोष आमाशय में स्थित होकर शरीर के ऊर्ध्वभाग में पित्ताशय में स्थित होकर मध्यभाग मलाशय में स्थित होकर नीचे के भागमें और सम्पूर्ण शरीरको व्याप्त करके सम्पूर्ण शरीरमें शोथ उत्पन्न करते हैं ॥ २६४ ॥

अथोपद्रवानाह ...

छर्दिस्तृष्णारुचिस्तृष्णाज्वरोऽतीसारएवचासंपर्कआमदौर्बल्यंशोथएतेउपद्रवाः २६५

शोथके उपद्रव ॥

छर्दि, प्यास, अरुचि, तृषा, ज्वर, अतीसार और दुर्बलता ये सात शोथके उपद्रवहैं ॥ २६५ ॥

अथ शोथासाध्यत्वमाह ॥

श्वासःपिपासाछर्दिश्चदौर्बल्यंज्वरएवच । यस्यचान्नेरुचिर्नास्तिशोथिनन्तंविवर्ज येत् ॥ २६६ ॥

असाध्य शोथ के लक्षण ॥

जिस शोथ रोगीके श्वास, तृषा, छर्दि, दुर्बलता, ज्वर और अन्नमें अरुचि हो उसको असाध्य जानना चाहिये ॥ २६६ ॥

अथ कष्टसाध्यादिकानाह ॥

योमध्यदेशेश्वयथुःकष्टःसर्वाङ्गगश्चयः । अर्द्धाङ्गेरिष्टभूतःस्याद्यश्चोर्ध्वंपरिसर्पति ॥ मध्यदेशेउरःपक्वाशयमध्ये । सर्वांगगःसकलशरीरव्यापी । सर्वांगजइतिवापाठःसन्नि पातिकः । अर्द्धांगेअर्द्धनारीश्वराकारः । यश्चोर्ध्वंपरिसर्पतीतिपुरुषविषयः । तथाच । ऊर्ध्वगामीनरःपद्भ्यामधोगामीतथास्त्रियम् ॥ उभयंवस्तिसञ्जातःशोथोहन्तिनसंशयः । ऊर्ध्वगामीमुखगामीतथाचतन्त्रान्तरे । पादःप्रवृत्तःश्वयथुर्नृणांयःप्राप्नुयान्मुखमितिस नसिध्यतीतिशेषः ॥ अधोगामीपदगामी । तथाचतन्त्रान्तरे । स्त्रीणांवक्त्रात्पदंयातिव स्तिजश्चनसिध्यतीति । उभयंनरनारीञ्च । अपरञ्च । अनन्योपद्रवकृतःशोथःपाद समुत्थितः । पुरुषंहन्तिनारीन्तुमुखजोवस्तिजोद्वयम् ॥ अयमर्थःपादसमुत्थितःपादा भ्यामुत्थितोमुखगामीतियावत् । शोथःपुरुषंहन्ति । सकिंविशिष्टःअन्योपद्रवकृतःशो थादन्येव्याधयोऽतीसारग्रहण्यर्शप्रभृतयस्तेषामुपद्रवैःकृतःतदुपद्रवत्वेनजातइत्यर्थः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नअन्योपद्रवकृतः अ[illegible]न्योपद्रवकृतः । अर्थात्स्वहेतुभिरेव[illegible]तः । द्वयम् १ पुरु[illegible]
[illegible]हन्तिसोऽप्ययनन्योपद्रवकृतएव ॥ २६७ ॥ [illegible] में [illegible]

शोथके कष्ट साध्यादि लक्षण ॥

[illegible] पक्वाशय के बीचमें अथवा सर्वाङ्ग में हुआ शोथ अत्यन्त कष्ट सा[illegible] [illegible]म अर्द्धनारीश्वराकार से उत्पन्न होताहै अथवा जो शोथ पुरुष के मुखमें [illegible] असाध्यहै [illegible]के पैरोंसे ऊपर जानेवाला स्त्रियोंका मुखसे नीचे जानेवाला और स्त्री पुरुष दे[illegible] [illegible]न्न भया शोथ असाध्यहै और भी कहागयाहै कि जो शोथ अन्य किसी रोगके उप[illegible] अपने कारणोंसे उत्पन्न भयाहो और पुरुषके पैरोंसे उत्पन्न होकर मुखमें प्राप्तभया [illegible] स्त्रियोंके मुख[illegible]उत्पन्नहोकर पैरों में प्राप्तभयाहो वो असाध्यहै और वस्ति में हुआ शोथ स्त्री [illegible] दोनोंका असाध्यहै ॥ २६७ ॥

अथ शोथचिकित्सामाह ॥

शुण्ठीपुनर्नवैरण्डपञ्चमूलीशृ[illegible]जलम् । वातिकेश्वयथौशस्तंपानाहारपरिग्रहे ॥ पटोलत्रिफलारिष्टदार्व्वीकाथः[illegible]स[illegible]थु[illegible]त[illegible] । तद्वत्पित्तकृतंशोथंहन्तिश्लेष्मोद्भवंतथा ॥ मिश्रमिश्रक्रमंकुर्य्यात्सर्वजेसर्वमेवहि । बिल्वपत्ररसंपूतंशोषणंत्रिभवेपिबेत् ॥ शोथेत्वागन्तुजेकुर्य्यात्सेकलेपादिशीतलम् । भल्लातक्यांहरेच्छोथंसतिलाकृष्णमृत्तिका ॥ महिषीक्षीरसंपिष्टैर्नवनीतसमन्वितैः । तिलैर्लिप्तःशमंयातिशोथोभल्लातकोत्थितः ॥ यष्टीदुग्धतिलैर्लेपोनवनीतेनसंयुतः । शोथमारुष्करंहन्तिचूर्णैःशालदलस्यच ॥ विषजशोथचिकित्सातुविषचिकित्सायांद्रष्टव्या ॥ २९८ ॥ शोथकी चिकित्सा ॥

सोंठ, गदापूरना, एरंडकी जड़ और पंचमूल इनके काढ़ेके पीनेसे अथवा इसके द्वारा पेयाआदि बनाकर सेवन करने से वातज शोथ नष्टहोताहै परवल, त्रिफला, नीम, दारुहलदी इनके काढ़ेमें गूगल डालकर पीनेसे पित्तज और कफज शोथ नष्ट होताहै द्वन्द्वज शोथमें मिलीहुई और सन्निपातज शोथ में तीनोंदोषों की मिलीभई चिकित्सा करनी चाहिये बेलपत्रके रसको छानकर त्रिकटु का चूर्ण मिलाकर पीनेसे सन्निपातज शोथ नष्टहोताहै आगन्तुज शोथमें शीतल परिषेक (सींचना) और लेप होना चाहिये तिल तथा कालीमिट्टी को भैंस के दूध में पीसकर मक्खन मिलाकर लेप करनेसे भिलावें से भया शोथ नष्टहोताहै तिलोंको पीसकर लेप करनेसे भैंस के दूधमें पिसेभये तिल तथा मुलेठी के साथ मक्खन मिलाकर लेपकरने से अथवा सालके पत्तोंके चूर्ण के लेप करने से भिलावेंसेहुआ शोथ नष्ट होताहै विषज शोथकी चिकित्सा विषकी चिकित्सामें देखनी चाहिये २९८ ॥

अथ सामान्यचिकित्सामाह ॥

महिष्यानवनीतंवालेपाद्दुग्धतिलान्वितम् । अत्रदुग्धञ्चमहिष्याएवयतआह २९९

शोथकी सामान्य चिकित्सा ॥

भैंसके दूधके साथ तिल पीसकर मक्खन मिलाकर लेप करनेसे शोथका नाश होताहै ॥ २९९ ॥

काथःप्रसह्योदरपाणिपथ्यानिशाभार्ङ्गर्यमृताग्निदार्व्वी पुनर्नवादारुमहौषधानाम् । पादमुखाश्रितंहन्त्यचिरेणशोथम् ॥ इति पथ्यादिकाथः ॥ ३०० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

थ[illegible] हल्दी, भारंगी, गिलोय, [illegible]ता, दारुहल्दी, गदापूरना, देवदारु और [illegible]ठ इनके काढ़ेके पीनेसे उ[illegible] तथा मुखकी सूजन नष्टहोती है इति [illegible]थ्यादिक्काथ ॥ ३०० ॥

[illegible] । [illegible] [illegible]द्भवंक्काथंगोमूत्रेणैवसाधितम् । वातश्लेष्मोद्भवंशोथंहन्त्य[illegible]षण[illegible] [illegible]ाह । अनर्वा[illegible]द्रुमनागरैर्वादन्तीत्रिवृत्त्र्यूषणचित्रकैर्वा । दुग्धंसुमिद्धं[illegible] निवृत्तेः ।[illegible]ोथहरंभिषग्भिः ॥ वृश्चीवश्वेतवर्षाभूः । सेकस्तथार्कवर्षाभूनिम्बक्का[illegible] स्यात् ॥ गोमूत्रेणापिकुर्व्वीतसुखोष्णेनावमेचनम् । पुनर्नवादारुशुण्ठी[illegible]र्थक स्तथा ॥ अम्लपिष्टःसुखोष्णोऽयंप्रलेपःसर्वशोथहृत् । गुडार्द्रकंवागुडना[illegible] वागुडपिप्पलींवा ॥ कर्षाभिवृद्ध्यात्रिपलप्रमाणंखादेन्नरःपक्षमथापिमा[illegible]शोथप्र[illegible]या यगलस्यरोगानूसश्वासकासारुचिपीनसा[illegible] ॥ जीर्णज्वरार्शोग्रहणीविकारानूह[illegible]त्तथान्यानूकफवातरोगानू । विश्वंगुडेनतुल्यांवृश्च[illegible]रसानुपानमभ्यस्तम् ॥ विनिह[illegible] सर्वशोथंघनवृन्दंचण्डवायुरिव ॥ ३०१ ॥

गोमूत्रमें त्रिफलाका काढ़ा करके पीनेसे कफवातजन्य [illegible]य[illegible]ोंकी सूजन नष्ट होती है सफेद गदापूरना, देवदारु तथा सोंठके द्वारा अथवा जमालगोटेकी जड़, निसोथ, त्रिकटु तथा चीतेके द्वारा विधिपूर्व्वक पाक कियेभये दूध के पीनेसे शोथका नाश होताहै गदापूरना तथा नीमके क्काथके द्वारा अथवा कुछ गरम गोमूत्रके द्वारा सींचनेसे शोथ नष्टहोताहै गदापूरना, देवदारु, सोंठ, सहजन तथा सरसों इनसबको कांजी में पीसकर कुछ गरम गरम लेप करनेसे सब प्रकारकी सूजन नष्टहोती है गुड तथा अदरक गुड तथा सोंठ गुड तथा हड़ अथवा गुड तथा पीपल एक तोले से लेकर बारह तोले तक बढ़जानेपर १५ दिन अथवा एक महीने तक खाय इसके द्वारा सूजन, प्रतिश्याय (जुकाम) गले के रोग, मुखके रोग, श्वास, खांसी, अरुचि, पीनस, जीर्णज्वर, बवासीर, ग्रहणी तथा अन्योऽन्य कफ वातजनित रोगोंका भी नाश होताहै सोंठ तथा गुड को समभाग खाकर गदापूरनाके रसका अनुपान करनेसे सब प्रकारकी सूजन नष्टहोतीहै ॥ ३०१ ॥

कणानागरजंचूर्णंसगुडंशोथनाशनम् । आमाजीर्णप्रशमनंशूलघ्नंवस्तिशोधनम् ॥ गुडात्पलत्रयंग्राह्यंश्रृंगबेरपलत्रयम् । श्रृंगबेरसमाकृष्णालोहकिट्टतिलयोःपलम् ॥ चूर्णमेतत्समुद्दिष्टंसर्वश्वयथुनाशनम् । इति गुडादिचूर्णम् ॥ ३०२ ॥

पीपल तथा सोंठ के चूर्ण को गुड के साथ खानेसे सूजन, आमाजीर्ण तथा शूलका नाश होताहै और वस्ति शुद्ध होतीहै गुड, सोंठ तथा पीपल बारह बारह तोले और मंडूररस तथा तिल चार चार तोले इन सब को चूर्ण करके मात्रानुसार खाने से सब प्रकार की सूजन नष्ट होती है इति गुडादि चूर्ण ॥ ३०२ ॥

मानकक्काथकल्काभ्यांघृतप्रस्थंविपाचयेत् । एकजंद्वन्द्वजंशोथंत्रिदोषञ्चव्यपोहति ॥ इति मानकघृतम् ॥ ३०३ ॥

मानकेचूके क्काथ तथा कल्कके द्वारा ६४ तोले घीका पाक करै इस घीके सेवन से एकदोषज द्वन्द्वज और सन्निपातज सूजन नष्ट होती है इति मानकघृत ॥ ३०३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुष्कमूल[illegible]र्षाभूः दारुरास्नामहौषधैः । पक्कमभ्यञ्जनं [illegible]लिंसशूलं श्वयथुं [illegible]
[illegible] शुष्कमूलकतैलम् इति शोथनिदानचिकित्साधिकारः ॥ ३०४ ॥ [illegible] में [illegible]
[illegible] मूली [illegible]पूरना, देवदारु, रास्ना और सोंठ इन सबके द्वारा पाक कियेभये [illegible] लगाने से
[illegible] का नाश होताहै इति शुष्कमूलकतैल इति शोथनिदानचिकित्सा [illegible] निशोभन

अथ वृद्ध्यधिकारस्तत्रवृद्धेर्निदानंसंख्यांचाह ॥

[illegible]मूत्रान्त्रैःसंवृद्धिःसप्तधागदः । मूत्रान्त्रजावप्यनिलाद्धेतुभेदस्तुकेवलः ॥ [illegible]फलकोषाभिवाहिनी । रुध्वारुद्धगतिर्वायुर्धमनीर्मुष्कगामिनी ३०५॥

वृद्धिरोग का अधिकार । वृद्धिरोग के निदान और संख्या ॥

[illegible]त, पित्त, कफ, रुधिर, मेद, मूत्र [illegible] इनके द्वारा सात प्रकार का वृद्धिरोग होताहै मूत्रज और अन्त्रज वृद्धि यद्यपि वातजनित हैं तथापि हेतु के भेद होने से अलग कही गई हैं वायु अंडकोशों में जाकर उनकी नाडियोंको रोककर स्वयं रुकके वृद्धिरोगको उत्पन्न करताहै ॥ ३०५ ॥

अथ तत्र वातिकमाह ॥

वातपूर्णदृतिस्पर्शोरूक्षोवातादहेतुरुक् । अहेतुरुक्अत्रेषदर्थेनञ् । तेनस्वल्पादपि विप्रकृष्टात्कारणात्रुक्पीडायत्रसः ॥ ३०६ ॥

वातजवृद्धिके लक्षण ॥

रूखापन स्पर्श करनेसे वायुके द्वारा भरी हुई कुप्पी के समान मालूम होना और थोडेसे कारण में पीडा का होना वातजवृद्धि के लक्षण हैं ॥ ३०६ ॥

अथ पैत्तिकमाह ॥

पक्कोदुम्बरसङ्काशःपित्ताद्दाहोष्मपाकवान् । दाहःअभ्यन्तरःऊष्माबहिस्तप्तता॥३०७॥

पित्तजवृद्धि के लक्षण ॥

पित्तजवृद्धि पके भये गूलर के समान होती है भीतर दाह तथा बाहर उष्णता से युक्त होती है और पक जाती है ॥ ३०७ ॥

अथ श्लैष्मिकमाह ॥

कफाच्छीतोगुरुःस्निग्धःकण्डूमान्कठिनोऽल्परुक् ॥ ३०८ ॥

कफजवृद्धिके लक्षण ॥

कफजवृद्धि शीतल, भारी, स्निग्ध, खुजलीसे युक्त, कठिन और थोडी पीडावाली होतीहै॥ ३०८॥

अथ रक्तजमाह ॥

कृष्णस्फोटावृतःपित्तवृद्धिलिंगश्चरक्तजः। कृष्णस्फोटावृतइतिपैत्तिकोद्भवः ॥ ३०९ ॥

रक्तजवृद्धिके लक्षण ॥

रक्तज वृद्धि काली फुनसियों से युक्त और पित्तके लक्षणवाली होती है ॥ ३०९ ॥

अथ मेदजमाह ॥

कफवन्मेदसोवृद्धिर्मृदुस्तालफलोपमः । नीलवर्त्तुलः ॥ ३१० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

थरिसा...

मेदकी वृद्धिके लक्षण ॥

उन्नत ...द्धि कफ के लक्षणों से युक्त कोमल और ताल के फल के समान नील तथा ...
...॥

अथ मूत्रजमाह ॥

...ाह । अनव...शीलस्यमूत्रजःसतुगच्छतः । अम्भोभिःपूर्णदृतिवत्क्षोभं... निवृत्तेः ...कृ्मधःकुर्यात्सञ्चलन्फलकोषयोः । सञ्चलन्फलकोषयोरधः । मूत्रकृ... स्यात् ...ठ्यथांकुर्यादित्यर्थः ॥ ३११ ॥

मूत्रज वृद्धिके लक्षण ॥

मूत्र के वेग रोकने से मूत्रज वृद्धि होती है यह चलने के समय जल... भरी भई कु... के समान क्षोभ को प्राप्त होनेवाली पीड़ा सहित ... होती है इसमें अंडकोशों के नीचे मूत्र के द्वारा पीड़ा होतीहै ॥ ३११ ॥

अथान्त्रवृद्धिमाह ॥

वातकोपिभिराहारैःशीततोयावगाहनैः । धारणेरणभाराध्वविषमांगप्रवर्त्तनैः ॥ क्षोभणैःक्षोभितोऽन्यैश्चक्षुद्रान्त्रावयवंयदा । पवनोविगुणीकृत्यस्वनिवेशादधोनयेत् ॥ कुर्याद्वंक्षणसन्धिस्थोग्रन्थ्याभंश्वयथुंतदा । धारणमुपस्थितस्यवेगस्यईरणं अनुपस्थितस्यवेगस्यप्रेरणम् ॥ विषमांगप्रवर्त्तनम् वक्रत्वेनांगमोटनम् । अन्यानिक्षोभणानि बलवद्विग्रहकठोरधनुषाकर्षणादीनितैःक्षोभितः सन्दूष्यसञ्चालितः पवनःयदायदाक्षुद्रान्त्रावयवम्विगुणीकृत्यस्वनिवेशादधोनयेत् । तदावंक्षणसन्धिस्थःसन्वंक्षणसन्धौग्रन्थिरूपंश्वयथुंकुर्यादित्यर्थः ॥ उपेक्षितायाःअन्त्रवृद्धेरवस्थामाह । उपेक्ष्यमाणस्यमरुद्विवृद्धिमाध्मानरुक्स्तम्भमतीवकुर्यात् ॥ प्रपीडितोऽन्तःस्वनवान्प्रयातिप्रध्मापयन्नेतिपुनश्चमुष्कम् । तत्राध्मानमुदरेरुग्वृद्धयोर्मुष्कयोःस्तम्भोगात्रेतद्युक्तांकुर्यादित्यर्थः ॥ भोजोऽप्याह । अन्त्रंविगुणमादायवातोनयतिवंक्षणम् ॥ वंक्षणात्तद्रुजायुक्तंफलकोषंप्रपद्यतइति ॥ समुष्कवृद्धिअन्तःउदरेप्रध्मापयत् । आगमनमार्गंनिरुद्धंकुर्वन्एति आयाति ॥ ३१२ ॥

अन्त्रजवृद्धिके लक्षण ॥

वातके कुपित करनेवाली वस्तुओंके भोजनसे, शीतल जलके मझानेसे, मूत्रादि वेगोंके धारण से, नहीं उपस्थित भये मूत्रादि वेगोंके प्रेरणसे बड़ा बोझ लेचलनेसे बहुत चलनेसे टेढ़े बेढ़े अंगोंके चलाने से बलवानके साथ युद्धसे और कठोर धनुषके खींचने आदि वायुवर्द्धक क्रियाओं से कुपित वायु क्षुद्र आंतको संकुचितकरके जब अपने स्थानसे नीचेको लेजाती है तब वंक्षणकी संधियोंमें ग्रन्थिके समान सूजन उत्पन्नहोती है इसकी उपेक्षा करनेसे बढ़ीहुई वायु पीड़ा सहित अंडकोशोंकी वृद्धि उदर में आध्मान और शरीर में स्तम्भको उत्पन्नकरती है अन्त्रवृद्धि दबाने से शब्दपूर्वक ऊपरको जाती है और फिर आगमन के मार्गको रोकी भई अंडकोशों में प्राप्त होतीहै और भोजनेभी कहाहै कि कुपित वायु आंतको विपरीतता से लेकर वंक्षण में लातीहै फिर वंक्षण से पीड़ा सहित अंडकोशों में प्राप्तहोती है ॥ ३१२ ॥

अथासाध्यमाह ॥

सकीदृक्स्यादित्याकाङ्क्षायामाह । यस्यान्त्रानयवाइलेषोमुष्कयोर्वातसञ्चयात् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अन्त्रवृद्धिर ... ऽप्यवातवृद्धिसमाकृतिः। वातवृद्धिसमा[कृ]तिरितियोऽन्त्रवृद्धि ... ऽपोवातवृद्धिसमाकृतिः ॥ ३१३ ॥

असाध्यलक्षण ॥

... अंडकोशों में वायुके इकट्ठा होनेसे आंतों के अवयव अलग अलग ... जिसका अन्त्रवृद्धि वातजवृद्धि के लक्षणों से युक्त होती है वह असाध्यहै ॥ ३१३ ॥

अथ सामीप्याद्व्रवब्रध्नमाह ॥

... ष्यन्दिगुर्वन्नशुष्कपूत्यामिषाशनात् । करोतिग्रन्थिवच्छोथंदोषोवङ्क्षणसं धिषु ॥ ज्वरशूल... सादाढ्यंतंब्रध्नंतिविनिर्दिशेत् ॥ ३१४ ॥

प्रसंगसे ... (बद) का वर्णन ॥

अत्यन्त अभिष्यन्दी भारी अन्न और शुष्क तथा दुर्गन्धितमांसकेखाने से वातादि दोष वंक्षणकी सन्धियोंमें ग्रन्थिके समान सूजन उत्पन्न करते हैं इसको ब्रध्न (बद) रोग कहतेहैं इसमें ज्वर शूल और शरीर की शिथिलता होती है ॥ ३१४ ॥

तत्र वृद्धेश्चिकित्सामाह ॥

वृद्धावत्यशनम्मार्गमुपवासंगुरूणिच। वेगाघातंपृष्ठयानंव्यायामंमैथुनंत्यजेत् ३१५ ॥

वृद्धिकी चिकित्सा ॥

वृद्धिरोगमें अत्यन्तभोजन, मार्गगमन, उपवास, भारी वस्तु, वेगोंका रोकना, घोडे आदि की सवारी, व्यायाम और स्त्रीप्रसंग इन सबका त्यागकरदे ॥ ३१५ ॥

वातवृद्धौपिबेत्स्निग्धंयथाप्राप्तंविरेचनम् । सक्षीरञ्चपिबेत्तैलंमासमेरण्डसम्भवम् ॥ गुग्गुलेरण्डजन्तैलंगोमूत्रेणपिबेन्नरः। वातवृद्धिञ्जयत्याशुचिरकालानुबन्धनीम् ३१६

वातजवृद्धिमें यथाप्राप्त स्निग्ध विरेचन का पानकरै अथवा महीने भरतक दूधकेसाथ रेंडीकातेल पिये गूगुल तथा रेंडीके तेलको गोमूत्रके साथ पीनेसे बहुत पुरानी वातजवृद्धिभी नष्टहोती है॥३१६॥

पित्तग्रन्थिक्रमेणैनंपित्तवृद्धिमुपाचरेत् । जलौकाभिर्हरेद्रक्तंवृद्धौपित्तसमुद्भवे ॥ चन्दनंमधुकंपद्मगुशीरन्नीलमुत्पलम् । क्षीरपिष्टंप्रलेपेनदाहशोथरुजापहम् ॥ ३१७ ॥

पित्तजग्रन्थिकी चिकित्सा के क्रमसे पित्तजवृद्धिकी चिकित्सा करै पित्तजवृद्धिमें जोंकों के द्वारा रुधिर निकलवाना चाहिये चन्दन, मुलेठी, पद्माख, खस तथा नील कमल इन सबको दूधमें पीसकर लेप करनेसे पित्तज दाह, सूजन तथा पीडाका नाश होताहै ॥ ३१७ ॥

त्रिकटुत्रिफलाक्काथसक्षारलवणंपिबेत् । विरेचनमिदंश्रेष्ठंकफवृद्धिविनाशनम् ॥ लेपनाःकटुतीक्ष्णोष्णस्वेदनंसूक्ष्ममेवच। परिषेकोपनाहौचसर्व्वमुष्णमिहेष्यते ॥ ३१८ ॥

त्रिकटु तथा त्रिफलाके काढे में जवाखार और सेंधानिमक मिलाकर पीनेसे कफजवृद्धि नष्ट होती है कफजवृद्धिमें परिषेक (सींचना) और उपनाह (स्वेदन) सब उष्णही हितहैं ॥ ३१८ ॥ कटु, तीक्ष्ण तथा उष्ण वस्तुओंके लेपसे और रूखे स्वेदनसे कफजवृद्धि नष्ट होतीहै

मुहुर्मुहुर्जलौकाभिःशोणितंरक्तजेहरेत् । पिबेद्विरेचनंवापिशर्कराक्षौद्रसंयुतम् ॥ शीतमालेपनंशस्तंसर्व्वम्पित्तहरन्तथा। पित्तवृद्धिक्रमंकुर्यादामेपक्केचरक्तजे ॥ ३१९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...द्धि में जोंकोंके द्वारा ... वार रुधिर निकलवाना चाहिये शक्कर तथा ... मिलाकर उन्नत ... का पीना और शीतल लेप रक्तजवृद्धिमें हितहै कच्ची तथा पकीभई रक्तजवृद्धि में ... । ... सम्पूर्ण क्रम करना चाहिये ॥ ३१९ ॥

...हि । अनर्वा... लेपयेत्सुरसादिना । शिरोविरेचनद्रव्यैः सुखोष्णैर्मूत्रसंयुतैः ३२० निवृत्तेः । ... वृद्धिमें स्वेदन देकर सुरसादि गणके द्वारा लेप करना चाहिये मिर्च ... स्यात् ... वस्तुओंको गोमूत्र में पीसकर कुछ गरम लेप करनेसे मेदजवृद्धि नष्ट होतीहै ॥ ३२० ॥

सस्वेद्यमूत्रप्रभवंवस्त्रपट्टेनवेष्टयेत् । सीवन्यापार्श्वतोऽधस्ताद्विध्येद्व्रीहिमु...

मूत्रजवृद्धि में पहले स्वेदन करके वस्त्रसे बांधनाचाहिये फिर सीवनके पास नी...का और ...मुखनाम शस्त्रके द्वारा छेदै (पानी निकलवावै) ॥ ३२१ ॥

मुष्केकोशमगच्छन्त्यामन्त्रवृद्धौविचक्षणः । ...तवृद्धिक्रमंकुर्यात्स्वेदन्तत्राग्निना हितम् ॥ व्रीहिमुखेनशस्त्रविशेषेण । अगच्छन्त्यामस्त्रन्त्याम् ॥ ३२२ ॥

अंडकोशोंमें नहीं प्राप्तहोनेवाली अंत्रवृद्धिमें चतुर वैद्य वातजवृद्धिकीसी चिकित्सा करै और इस में अग्नि द्वारा स्वेदन हितहै ॥ ३२२ ॥

तैलमेरण्डजम्पीत्वाबलासिद्धंयथोचितम् । आध्मानशूलापचितामन्त्रवृद्धिञ्जयेन्नरः ३२३

बरियारा के द्वारा विधिपूर्वक दुग्धका पाक करके रेंडीका तेल मिला पीने से आध्मान और शूलसहित अन्त्रवृद्धिका नाश होता है ॥ ३२३ ॥

रास्नायष्ट्यमृतैरण्डबलारग्वधगोक्षुरैः । पटोलेनवृषेणापिविधिनाविहितंशृतम् ॥ रुवुतैलेनसंयुक्तमन्त्रवृद्धिंव्यपोहति । इति रास्नादिक्काथः ॥ ३२४ ॥

रास्ना, मुलेठी, गिलोय, रेंडी की जड, बरियारा, गोखुरू, अमलतास, परवल, बांसा इन सब के क्काथ में रेंडी का तेल छोडकर पीनेसे अन्त्रवृद्धि नष्ट होतीहै इति रास्नादिक्काथ ॥ ३२४ ॥

गन्धर्वहस्ततैलेनक्षीरेणविहितंशृतम् । विशालामूलजंचूर्णं वृद्धिंहन्तिनसंशयः ॥ विशालाइन्द्रवारुणी वचासर्षपकल्केनप्रलेपः शोथनाशनः । शिग्रुत्वक्सर्षपैर्लेपःशोथ श्लेष्मानिलापहः ॥ ३२५ ॥

दूधके साथ रेंडीके तेल का पाक करके इन्द्रायनके जडका चूर्ण मिलाय पीनेसे निस्सन्देह वृद्धि का नाश होता है बच तथा सरसोंको एकसाथ पीसकर लेपकरने से शोथका नाश होताहै सहँजन की छाल और सरसोंको एकसाथ पीसकर लेप करनेसे शोथ कफ और वायु का नाश होताहै ॥ ३२५ ॥

शुद्धसूतंतथागन्धंमृतान्येतानियोजयेत् । लोहंरंगंतथाताम्रं कांस्यञ्चाथविशोधितम् ॥ तालकंतुत्थकञ्चापि तथाशंखवराटकम् । त्रिकटुत्रिफलाचव्यं विडंगंवृद्धदारकम् ॥ कर्चूरंमागधीमूलं पाठासहहवुषांवचाम् । एलाबीजंदेवकाष्ठं तथालवणपञ्चकम् ॥ एतानिसमभागानि चूर्णयेदथकारयेत् । कषायेणहरीतक्या वटिकांटंकसंमिताम् ॥ एकां तांवटिकांयस्तु निगिलेद्वारिणासह । अण्डवृद्धिरसाध्यापितस्यंनश्यतिसत्वरम् । इति वृद्धिबाधिकावटिका ॥ ३२६ ॥

शुद्धपारा और शुद्धगंधक की कजली में लोहभस्म, वंगभस्म, ताम्रभस्म, कांसेकी भस्म, हरतालकी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भस्म, त... ... , शंखकी भस्म, कौडीकी भस्म, त्रिकटु, ... , चव्य, बायबिडं ... कचूर, पीपरामूल, पाठा, हाऊबेर, बच, इलायची के दाने देवदारु और पांचों नोन ... में ... एक २ टंक की गोली बांधे और एक गोलीको जलके साथ निगलै इससे ... ... नष्ट होतीहैं इति वृद्धिबाधिका वटी ॥ ३२६ ॥

अथ ब्रध्नस्यचिकित्सामाह ॥

...एरण्डतैलेनसम्यक्कल्कोऽभयाभवः । कृष्णासैन्धवसंयुक्तोब्रध्नरोगहरःपरः ॥ ...कुष्ठंगोमेदबदरान्वितम् । काञ्जिकेनतुसंपिष्टंतल्लेपोब्रध्नजित्परः ॥ गोमेद प...म् । तथा...घुण्टोधन्वन्तरिः ॥ पत्रंदलाह्वयंरासंगोमेदंवसनाह्वयमिति । इति वृद्धि ब्रध्नरोगनिदानचिकित्साधिकारः ॥ ३२७ ॥

ब्रध्न की चिकित्सा ॥

हड के कल्क को रेंडी के तेल में भूनकर पीपल और सेंधोनोन के साथ खाने से ब्रध्न रोग का नाश होता है कालाजीरा, हाऊबेर, कूट, तेजपात और बेर इन सब को कांजी में पीसकर लेप करने से ब्रध्न रोग का नाश होताहै इति वृद्धि ब्रध्न रोग निदान चिकित्साऽधिकार समाप्त ॥ ३२७ ॥

अथ गलगंडगंडमालापच्यर्बुदाधिकारः । अथ गलगंडगंडमालयोसामान्यलिंगमाह ॥

निबद्धःश्वयथुर्यस्यमुष्कवल्लम्बतेगलेमहान्वायदिवाह्रस्वोगलगण्डंतमादिशेत् ॥ निबद्धःदृढःअचलोवामुष्कवत्अण्डवत्गलेइतिहनुमन्ययोरुपलक्षणम् । तथाचभोजः ॥ महान्तंशोथमल्पंवाहनुमन्यागलाश्रयम्मुष्कवल्लम्बमानन्तुगलगण्डंविनिर्दिशेत् ३२८

गलगंड, गंडमाला, अपची और अर्बुदका अधिकार गलगंड और गंडमाला के सामान्य लक्षण ॥ गले में जो बडा अथवा छोटा अंडकोश के समान कठिन लम्बमान शोथ उत्पन्न होता है उसे गलगंड कहतेहैं यहां गलशब्दसे जबडा और गलेकी पीछेकी नसकाभी ग्रहण होताहै क्योंकि भोज ने कहाहै कि जबडा गलेके पीछेकी नस और गला इनमें छोटा अथवा बडा अंडकोश के समान जो लंबमान शोथ होताहै उसे गलगंड कहते हैं ॥ ३२८ ॥

अथ सम्प्राप्तिमाह ।

वातःकफश्चापिगलेप्रदुष्टौमन्येतुसंसृत्यतथैवमेदः । कुर्वन्तिगण्डंक्रमशःस्वलिङ्गैः समाचितन्तंगलगण्डमाहुः ॥ स्वलिंगैःवातकफमेदोलक्षणैः ॥ ३२९ ॥

गलगंड की संप्राप्ति ॥

वात कफ अथवा मेद दूषित होकर गले और गलेकी पीछेकी नसमें आश्रय करके क्रमसे अपने२ लक्षणों से युक्त अंडकोश के समान शोथको उत्पन्न करते हैं इसे गलगंड कहतेहैं ॥ ३२९ ॥

अथ वातिकमाह ॥

तोदान्वितःकृष्णशिरावनद्धःश्यावारुणोवापवनात्मकस्तु । पारुष्ययुक्तश्चिरवृद्ध्यपाकोयदृच्छयापाकमियात्कदाचित् ॥ चिरवृद्ध्यपाकःचिरेणवृद्धिःअपाकश्चयस्यसः ३३०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

थ[illegible]

वातज गलगंड के लक्षण ॥

उन्नत [illegible] पीडायुक्त कालीनसोंसे व्याप्त कपिश अथवा रक्तवर्णसे युक्त तथा कठोरहोताहै बहुत [illegible] । [illegible] कतानहीं है और कभी कारणके विनाही पकभी जाताहै और रोगी के मुखमें [illegible] ाह । अन[illegible] तथा गलेका सूखना ये लक्षणहैं ॥ ३३० ॥

निवृत्तेः ।

अथ श्लैष्मिकमाह ॥

स्यात्[illegible]स्थिरःसवर्णोगुरुरुग्रकण्डूःशीतोमहांश्चापिकफात्मकस्तु । स्निग्धास्यतातस्यभवे च्चजन्तोर्गलेनशब्दंकुरुतेचनित्यम् ॥ चिराच्चवृद्धिंभजतेचिराद्वाप्रपच्यते[illegible] चित् । माधुर्य्यमास्यस्यचतस्यजन्तोर्भवेत्तथातालुगलप्रलेपः ॥ कदाचि[illegible]पच्यते [illegible] ॥ कोऽपिचि[illegible]द्धवंतिप्रलेपश्लेष्मणा ॥ ३३१ ॥

कफज गलगंडके लक्षण ॥

कफज गलगंड.स्थिर, शरीर के समान वर्णयुक्त, भारी, खुजलीयुक्त, शीतल तथा बडा होताहै देरमें बढताहै और कभी २ थोडी पीडा सहित देरमें पकताहै और रोगीका मुख मधुर तथा स्निग्ध रहता है और तालु तथा मुख कफसे लिपाहुआ सा रहताहै और गलेसे शब्द निकलताहै ॥ ३३१ ॥

अथ मेदोजमाह ॥

स्निग्धोमृदुःपाण्डुरनिष्टगन्धामेदोऽन्वितःकण्डुयुतोरुजश्च । प्रलम्बतेऽलाबुवदल्प मूलोदाहानुरूपक्षयवृद्धियुक्तः ॥ स्निग्धास्यतातस्यभवेच्चजन्तोर्गलेनशब्दंकुरुतेचनि त्यम् ॥ ३३२ ॥

मेदसेभये गलगंड के लक्षण ॥

मेद से भया गलगण्ड. स्निग्ध, कोमल, पांडुवर्ण, दुर्गन्धि युक्त, खुजली तथा पीडायुक्त तोंबी के समान छोटी जडवाला और देहके अनुसार क्षय तथा वृद्धिवाला होताहै रोगीका मुख स्निग्ध रहताहै और सदैव गलेसे शब्द होताहै ॥ ३३२ ॥

अथासाध्यमाह ॥

कृच्छ्राच्छ्वसन्तंमृदुसर्वगात्रंसंवत्सरातीतमरोचकार्त्तम् । क्षीणञ्चवैद्यो गलगण्डयु क्तम्भिन्नस्वरंनैवनरंचिकित्सेत् ॥ ३३३ ॥

असाध्य गलगंड के लक्षण ॥

जिस गलगंडवाले का श्वास कठिनतासे निकलै, अरुचि, स्वरभंग तथा क्षीणता होय और गल- गंड एक वर्षसे पुराना होय और सम्पूर्ण शरीर कोमल होय ये सब लक्षण असाध्य हैं ॥ ३३३ ॥

तत्रगलगण्डमालायांलक्षणमाह ॥

कर्कन्धुकोलामलकप्रमाणैःकक्षांसमन्यागलवंक्षणेषु । मेदःकफाभ्यांचिरमंदपाकैःस्या द्गण्डमालाबहुभिश्चगण्डैः ॥ कर्कन्धुःक्षुद्रबदरः । कोलंबृहद्बदरम् ॥ चिरमन्दपाकैःचिरे णमन्दोऽल्पःपाकोयेषान्तैः ॥ ३३४ ॥

गंडमाला के लक्षण ॥

बगलमें, कंधेमें, गले की पीछेकी नसोंमें, गलेमें अथवा गलेकी संधियोंमें छोटे बेर बडे बेर अथवा आं-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वलेके सम[illegible] उत्पन्न होतेहैं और देरमें पकते हैं इ[illegible]ग को गंडमाला [illegible] कफ और मेद से उत्पन्न होताहै ॥ ३३४ ॥ [illegible] में [illegible]

अथ गण्डमालायाएवावस्थाविशेषमपचीमाह ॥

[illegible]ते ग्रन्थयः केचिदवाप्तपाकाः स्रवन्ति नश्यन्ति भवन्ति चान्ये । कालानुबन[illegible] [illegible]चीति प्रवदन्ति केचित् ॥ ते ग्रन्थयः गण्डमालाया एव गण्डाः केचिदवाप्ति शोभन तः स्रव[illegible]केचिन्नश्यन्ति संरोहन्ति अन्ये भवंति च कालानुबन्धं चिरमादधति सा गलगण्ड[illegible] [illegible]तसैवापचीति केचिद्वदन्ति ॥ ३३५ ॥

गंडमालाके अवस्था विशेष अपचीका लक्षण ॥

गंडमाला की कोई २ ग्रन्थि पककर बहने लगतीहैं कुछ लुप्त होजातीहैं औ कुछ नई उत्पन्न होतीहैं इनमें से जो गंडमाला बहुत कालतक रहतीहै उसे अपची कहतेहैं ॥ ३३५ ॥

अपच्याः साध्यत्वादिकमाह ॥

साध्यास्मृतापीनसपार्श्वशूलकासज्वरच्छर्दियुतात्वसाध्या ॥ ३३६ ॥

अपचीका साध्यादि लक्षण ॥

उपद्रव रहित अपची. साध्य और पीनस, पसुरी की पीड़ा, खांसी, ज्वर तथा छर्दि सहित अपची असाध्य होती है ॥ ३३६ ॥

अथ ग्रन्थेर्लक्षणमाह ॥

वातादयोमांसमसृक्प्रदुष्टाःसन्दूष्यमेदश्चतथाशिराश्च । वृत्तोन्नतंविग्रथितन्तुशोथंकुर्वन्त्यतोग्रन्थिरितिप्रदिष्टः ॥ विग्रन्थितंग्रन्थिरूपमतएवग्रन्थिः। सपञ्चधावातिकः पैत्तिकःश्लेष्मिकोमेदजःशिराजश्चेति ॥ ३३७ ॥

ग्रन्थिके लक्षण ॥

दूषित वातादिक, दोषमांस, रुधिर, मेद तथा शिराओं को दूषित करके गोल तथा उन्नत ग्रन्थि के समान शोथको उत्पन्न करते हैं इस रोगका नाम ग्रन्थि है यह रोग पांच प्रकारकाहै जैसे वातज, पित्तज, कफज, मेदोज और शिराज ॥ ३३७ ॥

तेषुवातिकस्यलक्षणमाह ॥

आयम्यतेवृश्चतितुद्यतेचप्रभ्रश्यतेमन्थतिभिद्यतेच । कृष्णोमृदुर्वस्तिरिवाततश्च भिन्नःस्रवेच्चानिलजोऽस्रमच्छम् । आयम्यते आकृष्य दीर्घक्रियत इव वृश्चति आश्रयं छिन्नत्तीव ॥ प्रभ्रश्यते स्खलतीव भिद्यते विदार्यत इव । आततः विस्तारित इव ॥ मृदुः नत्वत्यन्तकठिनः । अस्रं रुधिरम् ॥ अच्छं प्रकृतम् । स्रवेदित्यर्थः ॥ ३३८ ॥

वातज ग्रन्थिके लक्षण ॥

वातज ग्रन्थिमें खींचने कीसी, छेदने कीसी, सूजीगड़ोने कीसी, गिरने कीसी, मथनेकीसी तथा फारनेकीसी पीड़ा होतीहै यह ग्रन्थि कृष्णवर्ण कोमल तथा वस्ति के समान बढ़नेवाली होतीहै और इससे स्वाभाविक रुधिर निकलताहै ॥ ३३८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

पैत्तिकमाह ॥

उन्नत ... चूष्यते चूष्यते च पापच्यते वा ज्वलतीव चापि । रक्तः सपीतोऽप्यथवापि पित्तात् ... अतीव चास्त्रम् ॥ दन्दह्यते भृशं दाहं करोति सकलशरीरे । चूष्यते ... आह । अनवाप्यते शृंगेनेव पापच्यते भृशं पाकं करोति ॥ प्रज्वलतीव अग्निरिव ज्वाला ... निवृत्तेः ग्रन्थिः । अस्रं रुधिरम् ॥ अतीवदुष्टं कृष्णतादियुक्तं मज्जायुक्तञ्च ॥ ३३९ ॥

पित्तजग्रन्थिके लक्षण ॥

पित्तज ग्रन्थि रक्त अथवा पीतवर्ण युक्त सम्पूर्ण शरीर में अत्यन्त दाह करनेवाली ... युक्त सींगीसे चूसनेके समान पीडावाली अग्निकीसी ज्वाला से युक्त और बहुत पकनेवाली होती है इसमें से अत्यन्त दूषित (कृष्णवर्णादियुक्त मज्जायुक्त) रुधिर बहता है ॥ ३३९ ॥

अथ श्लैष्मिकमाह ॥

शीतोऽविवर्णोऽल्परुजोऽतिकण्डूः पाषाणवत्संहननोपपन्नः । चिराभिवृद्धिश्च कफप्रकोपाद्भिन्नः स्रवेच्छुक्लघनञ्च पूयम् ॥ अविवर्णः प्रकृतिवर्णः पाषाणवत् संहननोपपन्नः संहततायुक्तः ॥ ३४० ॥

कफजग्रन्थिके लक्षण ॥

कफजग्रन्थि शीतल, स्वाभाविक वर्णयुक्त, पाषाणके समान, कठिन, थोडीपीडा तथा अत्यन्त खुजली युक्त होतीहै यह देरमें पकती है और इससे श्वेत और गाढा पीब निकलताहै ॥ ३४० ॥

अथ मेदोजमाह ॥

शरीरवृद्धिक्षयवृद्धिहानिः स्निग्धो महान्कण्डुयुतोऽरुजश्च । मेदः कृतो गच्छति चात्र भिन्ने पिण्याकसर्पिःप्रतिमन्तु मेदः ॥ तिलसदृशं वा मेदः गच्छति स्रवति इत्यर्थः ॥ ३४१ ॥

मेदोजग्रन्थिके लक्षण ॥

मेदोज ग्रन्थि स्निग्ध बडी खुजली तथा पीडायुक्त और शरीर के अनुसार वृद्धि तथा क्षयवाली होती है इससे तिलके समान अथवा घीके समान मेद बहता है ॥ ३४१

अथ शिराजमाह ॥

व्यायामजातैरबलस्य तैस्तैराक्षिप्य वायुश्च शिराप्रतानम् । सङ्कोच्य सम्पीड्य विशोष्य चापि ग्रन्थिं करोत्युन्नतमाशु वृत्तम् ॥ ग्रन्थिः शिराजः स तु कृच्छ्रसाध्यो भवेद्यदि स्यात्सरुजश्चलश्च । अरुक्स एवाप्यचलो महांश्च मर्म्मोत्थितश्चापि विवर्ज्जनीयः ॥ तैस्तैर्बलवद्विग्रहादिभिः । आक्षिप्य चालयित्वा । सम्पीड्य संहतीकृत्य । अरुजत्वादियुक्ता । अन्येऽपि ग्रन्थयोऽसाध्याः ॥ तथा च भोजः । पञ्चैतानरुजो ग्रन्थीन्मर्म्मजानचलांस्त्यजेत् ॥ कपोलगलमन्यासु दुश्चिकित्स्या हि सन्धिषु ॥ ३४२ ॥

शिराजग्रन्थि के लक्षण ॥

बलवान् के साथ युद्धसे अथवा अत्यन्त व्यायामसे दुर्बल मनुष्यों की कुपित भई वायु शिराओं को खींचके संकुचित शुष्क औ इकट्ठी करके शीघ्रही उन्नत और गोलग्रन्थिको उत्पन्न करतीहै इसे

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिराज ग्र... ...हत... ...न्थ जो पीडारहित स्थिर बडी ... ...स्थानमें उत्प... ...साध्य... ...पीड...रहित आदि लक्षणों से युक्त अल्प ग्रन्थि भी असाध्य होतीहै ऐसाहीं... में ... स्थिर और पीडारहित पांचों प्रकार की ग्रन्थिमर्म कपोल गला गले की पीछ... ...स्थान इनमें उत्पन्न भई होतो असाध्य है ॥ ३४२ ॥

अथार्बुदमाहतस्यसम्प्राप्तिपूर्वकंसामान्यलक्षणमाह ॥

गात्रप्रदेशेक्कचिदेवदोषाःसमुच्छ्रितामांसमसृक्प्रदूष्य । वृत्तंस्थिरंमन्दरुजंमहान्तमनल्पमूलंचिरवृद्ध्यपाकम् ॥ कुर्वन्तिमांसोच्छ्रयमत्यगाधंतदर्बुदंशास्त्रविदोवदन्ति । म... हान... ...न्थ्य... ...या चिरेणवृद्धिःपाकश्चयस्यतत्‌चिरवृद्ध्यपाकम् ॥ अपाकमितिग्रन्थेःस काशादस्यमेदोज्ञा...कम् । अत्यगाधंदृगनुप्रविष्टम् ॥ ३४३ ॥

अर्बुदरोग की सम्प्राप्ति और सामान्य लक्षण ॥

कुपित दोष रुधिर और मांसको दूषित करके शरीरके किसी स्थानमें ग्रन्थि की अपेक्षा बडे गोल स्थिर थोडी पीडा से युक्त बडी जडवाले और बहुत गहरे मांसके शोथ को उत्पन्न करते हैं इसको शास्त्रज्ञ लोग अर्बुद कहते हैं यह देर में पकता है और बढ़ता नहीं ॥ ३४३ ॥

निदानपूर्वकाणि विशिष्टानिलक्षणान्याह ॥

वातेनपित्तेनकफेनचापिरक्तेनमांसेनचमेदसाच । तज्जायतेतस्यचलक्षणानिग्रन्थेःसमानानिसदाभवन्ति । ग्रन्थेःसमानानिवातिकपैत्तिकश्लैष्मिकमेदोजानामर्बुदानांलक्षणानितुल्यानिभवन्ति ॥ ३४४ ॥

अर्बुद के निदानपूर्वक विशेष लक्षण ॥

वात,पित्त,कफ,रुधिर,मांस और मेद इन छःकारणों से छःप्रकार का अर्बुदरोग उत्पन्न होता है इनमें से वातज,पित्तज,कफज और मेदोज अर्बुदों के लक्षण वात,पित्त,कफ और मेदसे उत्पन्न भई ग्रन्थियों के समान होते हैं ॥ ३४४ ॥

अथ रक्तार्बुदमाह ॥

दोषःप्रदुष्टोरुधिरंशिराश्चसङ्कोच्यसम्पीड्यततस्त्वपाकम् । सास्रावमुन्नह्यतिमांसपिण्डंमांसांकुरैराचितमाशुवृद्धिम् ॥ स्रवत्यजस्रंरुधिरंप्रदुष्टमसाध्यमेतद्रुधिरात्मकन्तु । रक्तक्षयोपद्रवपीडितत्वात्पाण्डुर्भवेदर्बुदपीडितस्तु ॥ दोषोऽत्रपित्तंरुधिरंशिराश्चसङ्कोचयसम्पीड्यसंहतीकृत्यमांससृजोःसर्वेष्वर्बुदेषुदूष्यत्वम् ॥ रक्तजेतुविशेषतोरक्तदुष्टिः । एवंमांसार्बुदेविशेषतोमांसदुष्टिर्बोद्धव्या ॥ ततःमांसपिण्डम् उन्नह्यतिउद्गतंकरोति । अपाकम् ईषत्पाकंयथास्यादेवमितिक्रियाविशेषणम् ॥ ईषत्पाकश्चैकदेशपाकेनरक्तक्षयोपद्रवाःसुश्रुतोक्तास्तैःपीडितत्वात् । अर्बुदपीडितःरक्तार्बुदपीडितः ॥ ३४५ ॥

रक्तार्बुद के लक्षण ॥

दूषित पित्त दोष रुधिर और शिराओंको संकुचित और इकट्ठी करके कुछ पकनेवाले बहनेवाले मांस के अंकुरोंसे घिरेहुये बहुत शीघ्र बढ़नेवाले और निरन्तर दूषित रुधिरके बहनेसे युक्त मांस पिंड

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

थ... कुरत: है इसे ... कहते हैं ये असाध्य हैं इसरोग ... रोगीका उन्नत ... जाता है ॥ ३४५ ॥

अथ मांसार्बुदस्यसम्प्राप्तिमाह ॥

... । संहृत ... माह । अनर्वा... रादिभिरर्दितेऽङ्गेमांसप्रदुष्टंसमुपैतिशोथम् । अवेदनंस्निग्ध... न्य... निवृत्तेः । ...समप्रचाल्यम् ॥ मांसप्रदुष्टंवातेन । अवेदनंवेदनारहितमीषद् ... ॥ स्या... पाकपाकरहितमीषत्पाकंवा ॥ ३४६ ॥

मांसार्बुद की सम्प्राप्ति ॥

घूंसे आदि के लगने से किसी अंगके पीडित होनेपर वायुके द्वारा दूषित ... म... पी... हित अथवा स्वल्प पीडावाला स्निग्ध स्वाभाविक वर्णयुक्त नहीं पकनेवाला अथवा कुछ पकनेवाला स्थिर और पाषाणके समान शोथ उत्पन्न होताहै इसे मांसार्बुद कहते हैं ॥ ३४६ ॥

अथ निदानमाह ॥

प्रदुष्टमांसस्यनरस्यगाढमेतद्भवेन्मांसपरायणस्य । मांसाशनाभ्यासेनयःप्रदुष्टमांसस्तस्यैतद्भवतीत्यर्थः ॥ ३४७ ॥

मांसार्बुद के निदान ॥

बहुत मांस खानेवाले मनुष्यों का मांस दूषित होकर गाढ़ मासार्बुद होताहै ॥ ३४७ ॥

अथासाध्यमाह ॥

मांसार्बुदन्त्वेतदसाध्यमाहुःसाध्येष्वपीमानिविवर्ज्जयेच्च ॥ सम्प्रश्रुतंमर्म्मसुयच्चजातं स्रोतःसुवायच्चभवेदचाल्यम् ॥ साध्येष्वपिवातजादिष्वपीमानिवक्ष्यमाणानिविवर्ज्जयेच्च सम्प्रश्रुतादीनि ॥ ३४८ ॥

असाध्य लक्षण ॥

ये मांसार्बुद असाध्य हैं और साध्य वातज आदि अर्बुदोंमेंभी जो अर्बुद बहनेवाला मर्म्मस्थानों में अथवा स्रोतों में उत्पन्न हुआ और स्थिर होताहै वो असाध्यहै ॥ ३४८ ॥

अथ परमसाध्यमाह ॥

यज्जायतेऽन्यत्खलुपूर्वजातेज्ञेयंतदध्यर्बुदमर्बुदज्ञैः । यद्द्वन्द्वजातंयुगपत्क्रमाद्वाद्विर्बुदन्तच्चभवेदसाध्यम् ॥ ३४९ ॥

अन्यअसाध्य लक्षण ॥

एक अर्बुद पर जो दूसरा अर्बुद उत्पन्न होताहै उसे अध्यर्बुद कहते हैं और इकट्ठे अथवा क्रम से जो लगेहुये दो अर्बुद उत्पन्न होते हैं उनको द्व्यर्बुद कहते हैं ये दोनों असाध्य हैं ॥ ३४९ ॥

अथार्बुदानांपाकाभावेहेतुमाह ॥

नपाकमायान्तिकफाधिकत्वान्मेदोबहुत्वाच्चविशेषतस्तु । दोषस्थिरत्वाद्ग्रथनाच्च तेषांसर्वार्बुदान्येवनिसर्गतस्तु ॥ ग्रन्थनान्ग्रन्थिरूपत्वात् । नन्वपच्यांकफमेदसोराधिक्येऽपिपाकोदृश्यते ॥ तथाअत्रकथंनपाकइत्याह । निसर्गात्स्वभावात् ॥ ३५० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्बुदों के न पकने का कारण

कफ तथा ... अधिकता से दोष की स्थिरता से ग्रन्थि की कठिनता से ... में ...
...र के अर्बुद नहीं पकते हैं ॥ ३५० ... होजाने के

अथ तत्रगलगण्डस्यचिकित्सामाह ॥

...शिग्रुबीजानिशणबीजातसीयवान् । मूलकस्यचबीजानितक्रेण ... तिशोभन
तू ॥ गलगण्डोगण्डमालाग्रन्थयश्चैवदारुणाः । प्रलेपादेवनश्यन्तिविलयंयान्ति ...
... युक्तेनजलकुम्भीकभस्मना । लेपनंगलगण्डस्यचिरोत्थस्यापिशस्यते ॥
रक्ष... सर्षपः ... पराजितामूलंप्रातःपिष्ट्वापिबेन्नरः । सर्पिषानियताहारोगलगण्डप्र
शान्तये ॥ तिक्तालाबूफलेपक्केसप्ताहमुषितंजलम् । सद्यःस्याद्गलगण्डघ्नंपानात्पथ्यान्न
सेविनाम् ॥ ३५१ ॥

गलगंड की चिकित्सा ॥

सरसों, सहजनके बीज, सनकेबीज, अलसी, जौ और मूली के बीज इनसबको खट्टे मट्ठे में पीस कर लेपकरने से गलगंड, गंडमाला और दारुण ग्रन्थि का भी नाश होताहै सरसों के तेल के साथ जलकुंभी की भस्म के लेप से बहुत पुराने गलगंड का भी नाश होताहै श्वेद विष्णुक्रान्ता की जड को पीसकर घीके साथ प्रातःकाल पीकर उचित आहार करनेसे गलगंडका नाश होताहै पक्कीकडुई तौंबी में सातदिन तक रक्खे भये जल के पीने से पथ्य अन्न खानेवालों का गलगंड शीघ्र नाश को प्राप्त होताहै ॥ ३५१ ॥

तैलंपिबेद्वामृतवल्लिनिम्बहिंस्राभयावृक्षकपिप्पलीभिः । सिद्धंबलाभ्यांसहदेवदारु
णाहितायनित्यंगलगण्डरोगी ॥ वृक्षकोऽत्रतुणिः । उक्तञ्चनिघण्टौधन्वन्तरिणा ॥
तुणिस्तूणीकपीतश्चनन्दिवृक्षश्चवृक्षकइति । बलाभ्यांबलातिबलाभ्याम् ॥ अमृतादि
तैलम् ॥ ३५२ ॥

गिलोय, नींब, हिंस्रा, हड, तुन, पीपल, बरियारा, ककही और देवदारु इनके द्वारा तेलको विधि पूर्वक पाककरके पीनेसे गलगण्ड का नाश होताहै इति अमृतादि तेल ॥ ३५२ ॥

यवमुद्गपटोलादिकटुरूक्षान्नभोजनम् । वमनंरक्तमोक्षश्चगलगण्डेप्रयोजयेत् ॥ दाप
येत्प्रच्छनान्यत्रगण्डगोपालिकोद्भवः । प्रलेपस्त्वनुभूतोऽयंबहुधाबहुभिर्जनैः ॥ प्रच्छना
निपक्षनाइतिलोके । गण्डगोपालिका ॥ गण्डगुयारीतिचप्रसिद्धा । अ.घवाटिकायांशु
लभःकीटविशेषोभवति॥लवणंजलकुम्भास्तुकणाचूर्णेनसंयुतम् । प्रभातेनित्यमश्नीयाद्ग
लगण्डप्रशान्तये ॥ ३५३ ॥

जौ, मूंग, पटोलादि, कटु तथा रूखी वस्तुओं का भोजन, वमन, रुधिर निकलवाना ये सब गलगंड में हितहैं और पछने भी दिलाने चाहिये गंडगोपालिका (इसे गंडगोपारी कहते हैं और यह ग्रामकी वाटिकामेंमिलीहै)के लेपसे गलगंडका नाश होताहै यह बहुधा बहुतोंने अनुभव कियाहै सेंधानोन और जलकुंभीको पीपल के चूर्णके साथ रोज़ प्रातःकाल खाने से गलगंड नष्ट होताहै ॥ ३५३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...ण्डमालायाश्चिकित्सामाह ॥
...क्वाथःशुण्ठीचूर्णेनसंयुतः। माक्षिकाढ्यःसकृत्पीतःक्वाथोवरुणमूल...
...शुचिरकालानुबन्धिनीम् । पलमर्द्धपलञ्चापिपिष्टंतण्डु...
...पीत्वागण्डमालांव्यपोहति ॥ ३५४ ॥

गंडमाला की चिकित्सा ॥

कचनार की छाल के काढ़ेमें सोंठका चूर्ण डालकर अथवा वरुणाके काढ़ेमें ... पीने से गंडमाला का शीघ्रही नाश होताहै दो तोले अथवा चार तोले कचनार की छा... चांव... के धोवन के साथ पीसकर पीनेसे गंडमाला का नाश होताहै ॥ ३५४ ॥

काञ्चनारस्यगृह्णीयात्त्वचंपञ्चपलोन्मिताम् । नागरस्यकणायाश्चमरिचस्यपलंपलम् ॥ पथ्याविभीतधात्रीणांपलमर्द्धंपृथक्पृथक् । वरुणस्याक्षमेकञ्चपत्रकैलात्वचांपुनः टङ्कंटङ्कंसमादायसर्वाण्येकत्रचूर्णयेत् । यावच्चूर्णमिदंसर्वंतावानेवात्रगुग्गुलुः ॥ संकुट्य सर्वमेकत्रपिण्डंकृत्वाविधारयेत् । गुटिकाःशाणिकाःकृत्वाप्रभातेभक्षयेन्नरः ॥ गलगण्डं जयत्युग्रमपचीमर्बुदानिच । ग्रन्थीन्व्रणानिगुल्मांश्चकुष्ठानिचभगन्दरम् ॥ प्रदेयश्चानुपानार्थंक्वाथोमुण्डितिकाभवः । क्वाथःखदिरसारस्यक्वाथःकोष्णोभयाभवः ॥ इति काञ्चनारगुग्गुलुः ॥ ३५५ ॥

कचनारकी छाल २० तोले, सोंठ, पीपल तथा मिर्च चार२ तोले, हड, बहेडा तथा आंवला दोदो तोले, वरुणा १ तोले, तेजपात, इलायची, दालचीनी एक एक टंक इनसबको एकसाथ चूर्ण करै। फिर सब चूर्ण के बराबर गूगल मिलाकर कूटै और चार २ माशे की गोली बनावै प्रातःकाल एक गोली रोजखाय इनसे गलगंड, अपची, अर्बुद, ग्रन्थि, व्रण, गुल्म, कुष्ठ और भगन्दरका नाश होताहै इस गोली के साथ मुंडीके काढ़ेका कत्थेके काढ़ेका अथवा हडके काढ़ेका गरम २ अनुपान करना चाहिये इति कांचनार गुग्गुलु ॥ ३५५ ॥

चक्रमर्दकमूलस्य पलंकल्केविपाचयेत् । केशरागरसेतैलं कटुकंमृदुनाग्निना ॥ पादांशिकंविनिःक्षिप्य सिन्दूरमवतारयेत् । एतत्तैलंनिहन्त्याशु गण्डमालांसुदारुणाम् ॥ केशरागोभृंगराजः इति चक्रमर्दतैलम् ॥ ३५६ ॥

पुवाडकी जडका कल्क४तोले और भंगरेका रस इनकेसाथ कडुवेतेलको मन्दाग्निमें पाककरे फिर चौथाई सिन्दूर छोडकर उतारले इस तेल से शीघ्रही गंडमाला का नाश होताहै इति चक्रमर्द तेल ॥ ३५६

गुञ्जामूलफलैस्तैलंविपक्वंद्विगुणाम्भसा । हरेदभ्यंगनस्याभ्यांगण्डमालांसुदारुणाम् ॥ इति गुञ्जातैलम् ॥ ३५७ ॥

घुंघची की जड और फलोंके साथ दूना जल मिलाके पाककियेहुए तेलके शरीरमें मलनेसे और नस्य लेनेसे भयंकर गंडमाला का भी नाश होताहै इति गुञ्जा तेल ॥ ३५७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...चन्द... ...क्षा वचाकटुकरोहिणी। एत... ...में ...

...हृदुनं... तैलम् ॥ ३५८ ॥

अपची की चिकित्सा ॥

...हड, लाख, बच औ कुटकी इनके साथ पाक किये भये तेलके पीनेसे अप... ...नेशोभन सहित नाश होताहै इति चन्दनादि तैल ॥ ३५८ ॥

...मधुकं सैन्धवं देवदारु च। तैलमेभिः शृतंनस्यात् सकृच्छ्रामपचींहरेत् ॥ इति व्योषा... ...तैलम् ॥ ३५९ ॥

त्रिकटु, बायबिडंग, मुलेठी, सेंधानोन औ देवदारु इनके साथ पाककिये भये तेलकी नस्य लेनेसे कष्टसाध्य अपचीका भी नाश होताहै इति व्योषादि तैल ॥ ३५९ ॥

अथ ग्रन्थिचिकित्सामाह ॥

स्वर्जिकामूलकक्षारःशंखचूर्णसमन्वितः। एतेनविहितोलेपोहन्तिग्रन्थिन्तथाऽर्बुदम्॥ ग्रन्थिर्नयोनश्यतिभेषजेन निष्काश्यतंशस्त्रचिकित्सकेन। जात्यादिपक्केनघृतेनवैद्यो व्रणे नचान्येनचसञ्चिकित्सेत् ॥ ग्रंथिमुद्धृत्यतत्रापि व्रणोक्तंक्रममाचरेत् । शिराग्रंथिविहाग्रान्ये शेषेशस्त्रम्प्रयुज्यते ॥ अन्येआचार्य्या इति कथयन्ति ॥ ३६० ॥

ग्रन्थिकी चिकित्सा ॥

सज्जी, मूलीकाखार और शंखका चूर्ण इनसबको मिलाकर लेपकरने से ग्रन्थि औरअर्बुदरोगका नाश होताहै जो ग्रन्थि औषधि के द्वारा नष्ट न हो उसको शस्त्रके द्वारा निकलवाकर जात्यादि घृत और अन्य व्रणनाशक औषधियों से चिकित्सा करै ग्रन्थि को निकलवाकर उसमें व्रणोक्त चिकित्सा करै और अन्य आचार्य्योंका यह मतहै कि शिरा ग्रन्थिको छोडकर और ग्रन्थियोंमें शस्त्रका प्रयोगकरै ३६०॥

ग्रन्थ्यर्बुदानांनयतोविशेषः प्रदेशहेत्वाकृतिदोषदूष्यैः । अतश्चिकित्सेद्भिषगर्बुदानि विधानविद्ग्रन्थिचिकित्सितेन ॥ हरिद्रालोध्रपत्रांगगृहधूममनःशिलाः। मधुप्रगाढोलेपोऽयं मेदोऽर्बुदहरःपरः॥ मूलकस्यकृतःक्षारो हरिद्रायास्तथैवच । शंखचूर्णेनसंयुक्तो लेपःसिद्धोऽर्बुदापहः ॥ वटदुग्धकुष्ठरोमकलिप्तम्बद्धंवटस्यपत्रेण । अध्यस्थिसप्तरात्रान्महदप्युपशान्तिमर्बुदंगच्छेत् ॥ शिग्रुमूलकयोर्बीजंरक्षोघ्नंसुरसायवम् । तक्रेणाश्वरिपुंपिष्ट्वा लिम्पेदर्बुदशान्तये ॥ रक्षोघ्नंसर्षपम् । सुरसातुलसीयवंइन्द्रयवम्। अश्वरिपुमहिषी। इति गलगण्ड गण्डमालाग्रन्थ्यर्बुदनिदानचिकित्साधिकारः ३६१ ॥

ग्रन्थि औ अर्बुद इन दोनों में स्थान आकृति हेतु दोष और दूष्य इनमेंसे किसी का भी भेद नहीं है इसलिये वैद्य ग्रन्थि के चिकित्सा के समान अर्बुद की चिकित्साकरै हलदी, लोध, लालचन्दन, घर का धुवां और मैनसिल इन सबके चूर्णको शहदमें घोटकर लेप करने से मेदके अर्बुद का नाश होता है मूलीकाखार हलदीकाखार और शंखकाचूर्ण इन सबको मिलाकर लेप करनेसे अर्बुद का नाश होता है बरगद का दूध कुट और सांभरनोन इनसबका लेपकरके बरगदका पत्ता बांधनेसे सात रात के भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

थ[illegible] और [illegible]डमान [illegible] जन के बीज, मूल [illegible], [illegible] न्द्र जौ
उन्नत [illegible] से अर्बुद [illegible] होताहै इति गलगंड [illegible] अर्बु
[illegible] समाप्त ॥ ३६१ ॥

[illegible] श्लीपदाधिकारस्तत्रश्लीपदस्यविप्रकृष्टकारणमाह ॥ [illegible]
माह । अनव[illegible] भूयिष्ठाः सर्वर्त्तुषु च शीतलाः । येदेशास्तेषुजायन्तेश्लीपदानिवि[illegible] ॥
निवृत्तेः [illegible] तेइतिवचनेनान्यत्रापि श्लीपदम्भवनीतिबोध्यते ॥ ३६२ ॥
स्यात्

श्लीपद (फीलपांव) का अधिकार श्लीपदके दूरवाले कारण ॥

जिन देशों में पुरानाजल बहुत भराहै और जो देश सबऋतुओं में शीतल रहैं [illegible] विशेष [illegible] के श्लीपदरोग होतेहैं ॥ ३६२ ॥

अथ श्लीपदस्यसामान्यलक्षणमाह ॥

यः सज्वरो वंक्षणजोभृशार्तिः शोथोनृणांपादगतःक्रमेण । तत्श्लीपदंस्यात्करकर्णनेत्र शिश्नौष्ठनासास्वपिकेचिदाहुः ॥ तत्त्रिविधम् । वातिकम्पैत्तिकंश्लैष्मिकञ्चेति ॥ ३६३ ॥

श्लीपद के सामान्य लक्षण ॥

पहले ज्वर होकर अत्यन्त पीड़ासहित वंक्षण से उत्पन्न होकर क्रमसे पैरोंतक आनेवाले शोथ को श्लीपद कहतेहैं कोई कोई कहते हैं कि हाथ, कान, नेत्र, लिंग, ओष्ठ और नासिकामें भी श्लीपद होताहै श्लीपद तीन प्रकारकाहै जैसे वातज, पित्तज और कफज ॥ ३६३ ॥

तत्रतेषांक्रमेणलक्षणान्याह ॥

वातजंकृष्णरूक्षंहि स्फुटितन्तीव्रवेदनम् । अनिमित्तरुजञ्चास्य बहुशोज्वरएवच ॥ पित्तजम्पीतसङ्काशं दाहज्वरयुतंभृशम् । श्लैष्मिकन्तु भवेत्स्निग्धं तथापाण्डुरमस्थिरम् ॥ त्रीण्यप्येतानिजानीयाच्छ्लीपदानिकफात्क्षयात् । गुरुत्वञ्चमहत्त्वञ्च यस्मान्नास्तिविनाकफात् ॥ ३६४ ॥

वातजादिश्लीपदोंके लक्षण ॥

वातजश्लीपद. कृष्णवर्ण, रूखा, कटाहुआ तथा अत्यन्त पीड़ायुक्त होताहै और इसमें अत्यन्त ज्वर तथा विना कारणके पीड़ा उत्पन्न होती है पित्तजश्लीपद. पीतवर्ण और अत्यन्त दाह तथा ज्वर युक्त होता है कफजश्लीपद. श्वेत अथवा पांडु वर्ण भारी और स्थिर होताहै ये तीनों श्लीपद कफ की अधिकता से होतेहैं क्योंकि भारीपन और बड़ापन विना कफके नहीं होसक्ता है ॥ ३६४ ॥

अथासाध्यमाह ॥

वल्मीकमिवसञ्जातं कण्टकैरुपचीयते । अब्दात्मकन्महत्तत्तु वर्ज्जनीयंविशेषतः ॥ यत्श्लैष्मिकाहारविहारजातैर्जातन्तथाभूरिकफस्यपुंसः । सास्रावमत्युन्नतसर्वलिंगं सकण्डुकञ्चापिविवर्ज्जनीयम् ॥ ३६५ ॥

असाध्य श्लीपद के लक्षण ॥

जो श्लीपद बांबी के समान उत्पन्न भया कांटेकीसी ग्रन्थियों से व्याप्त सालभरका पुराना और बड़ाहो वह असाध्यहै बहुत कफवाले पुरुषके कफकारी आहार विहारके द्वारा उत्पन्नहुआ बहनेवाला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बहुत ... पूर्ण वातजादि लक्ष ...

अथ श्लीपदस्यचिकित्सा ॥

...स्वेदैरेचनैरक्तमोक्षणैः । प्रायःश्लेष्महरैरुष्णैः ... अथ ... ञ्जनदेवदारु विश्वौषधैर्मूत्रयुतैः प्रलिम्पेत् । पुनर्नवानागरस ... नवाकाञ्जिकमिश्रितेन ॥ श्लीपदमितिशेषः । धत्तूरैरण्डनिर्गुण्डी वर्षाभूशिग्रुसर्षपैः । लेपःश्ली... न्ति चिरोत्थमपिदारुणम् ॥ असाध्यमपियात्यस्तं श्लीपदञ्चिरकालजं । मूलेन ... तालमिश्रेणलेपनात् ॥ तालस्यफलरसोग्राह्यः ॥ सप्तताम्बूलपत्राणां कल्कंतप्तेनवारिणा ॥ संसृष्टंलवणोपेतं सेवितंश्लीपदंहरेत् ॥ शाखोटकल्ककक्वाथं गोमूत्रेणयुतम्पिबेत् । श्लीपदानांविनाशाय मेदोदोषनिवृत्तये ॥ रजनींगुडसंयुक्तांगोमूत्रेणपिबेन्नरः । वर्षाभूत्रिफलाचूर्णंपिप्पलीसहयोजितम् ॥ सक्षौद्रंश्लीपदंलिह्याच्चिरोत्थंश्लीपदञ्जयेत् । गन्धर्व्वतैलसिद्धंहरीतकीङ्गोऽम्बुनापिबेन्नित्यम् ॥ श्लीपदबन्धनमुक्तो भवत्यसौसप्तरात्रेण (इति गन्धर्व्वतैलम्) एरण्डतैलङ्गोऽम्बुगोमूत्रम् ॥ इति श्लीपदनिदानचिकित्साधिकारः ॥ ३६६ ॥

श्लीपद की चिकित्सा ॥

लंघन, लेप, स्वेद, विरेचन, रक्तमोक्षण और कफनाशक उष्ण औषधियों के द्वारा श्लीपद की चिकित्सा करे सरसों सहँजन, देवदारु तथा सोंठ इनको गोमूत्रमें पीसकर लेप करनेसे अथवा गदहपूरना, सोंठ तथा सरसोंको कांजीमें पीसकर लेप करनेसे श्लीपदका नाश होताहै धतूरा, रेंडीकीजड, निर्गुंडी, गदहपूरना, सहँजन तथा सरसों इन सबको पीसकर लेपकरनेसे बहुत पुराना भयंकर श्लीपद भी नष्टहोताहै सहदेयी की जडको तालके फलके रसमें पीसकर लेप करनेसे बहुत पुराना असाध्य श्लीपद भी नष्ट होताहै सेंधोनोनसहित सात पानों के कल्कको गरम जलके साथ सेवन करने से श्लीपद नष्ट होताहै सांखूकी छालके काढ़े में गोमूत्र डालकर पीने से श्लीपद औ मेद के दोषों का नाश होताहै गुडसहित हल्दी को गोमूत्र के साथ पीनेसे अथवा गदहपूरना, त्रिफला औ पीपल के चूर्ण को शहद के साथ चाटने से बहुत पुराना भी श्लीपद नष्ट होताहै रेंडी के तेलमें पाक की हुई हड को गोमूत्र के साथ पीने से सात दिन में श्लीपद का नाश होताहै इति श्लीपद निदान चिकित्साधिकार समाप्त ॥ ३६६ ॥

तत्र विद्रधेःसम्प्राप्तिपूर्व्वकंसामान्यं लक्षणमाह ॥

त्वग्रक्तमांसमेदांसिप्रदूष्यास्थिसमाश्रिताः । दोषाःशोथंशनैर्घोरञ्जनयन्त्युच्छ्रिताःभृशम् ॥ महामूलंरुजावन्तमल्पंवाप्यथवायतम् । सविद्रधिरितिरुयातोविज्ञेयःषड्विधश्चसः ॥ अस्थिसमाश्रितोदोषइतिवक्ष्यमाणशोथाद्विद्रधेर्भेदार्थम् । यतोव्रणशोथेदोषाणामस्थिसमाश्रयनियमोनास्ति ॥ व्रणशोथंदारुणम् । आयतन्दीर्घंषड्विधत्वंत्रिवृणाति यथादोषैःसमस्तैश्चक्षतेनाप्यसृजातथा । षण्णांतेषांतुल्यमेवलक्षणंसम्प्रचक्षते ३६७॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

थ... विद्रधिका अधिकार ॥
उन्नत ... विद्रधिकाके पूर्वरूपके सामान्य लक्षण ॥
... ... अस्थि, त्वचा, रुधिर, मांस औ मेदको दूषित करके क्रमसे भयंकर ...
...माह । अन्तर्वा... और गोल अथवा लंबे शोथको जो उत्पन्न करते हैं उसे विद्रधि कहते हैं ...
निवृत्तेः । ...वातज, पित्तज, कफज और सन्निपातज, क्षतज औ रक्तज ॥ ३६७ ॥
स्यात्

अथ विशिष्टानिलक्षणानि । तत्रवातिकस्यलक्षणमाह ॥

कृष्णोऽरुणोवाविषमो भृशमत्यर्थवेदनः। चिरोत्थानप्रपाकश्चविद्रधिः ... सम्भवः॥ विषमोभृशम् । क्षणमल्पःक्षणंमहान् ॥ चिरोत्थानप्रपाकःचिराद्विलम्बादुद्गतौप्रपाकौ यस्यसः ॥ ३६८॥

वातजविद्रधिके लक्षण ॥

वातजविद्रधि.कृष्ण अथवा रक्तवर्णयुक्त कभी छोटी कभी बडी अत्यन्त पीडायुक्त और बहुत कालमें उत्पन्न होनेवाली और पकनेवाली होती है ॥ ३६८ ॥

अथ पैत्तिकमाह ॥

पक्वोदुम्बरसङ्काशः श्यावोवाज्वरदाहवान् । क्षिप्रोत्थानप्रपाकश्च विद्रधिःपित्तसम्भवः ॥ ३६९ ॥

पित्तजविद्रधि के लक्षण ॥

पित्तजविद्रधि. कपिशवर्ण अत्यन्त ज्वर तथा दाहयुक्त शीघ्रही बढनेवाली तथा पकनेवाली और पके गूलर के समान होती है ॥ ३६९ ॥

अथ श्लैष्मिक माह ॥

शरावसदृशःपाण्डुःशीतःस्निग्धोऽल्पवेदनः । चिरोत्थानप्रपाकश्चविद्रधिःकफसम्भवः ॥ तनुपीतासिताश्चैषामास्रावाः क्रमशोमताः ॥ ३७० ॥

कफजविद्रधिके लक्षण ॥

कफजविद्रधि. सकोरेके समान आकृतिवाली पांडुवर्ण, शीतल, स्निग्ध,थोडी पीडा सहित और देरमें बढनेवाली तथा पकनेवाली होती है वातजविद्रधि से पतला, पित्तज से पीला और कफज से श्वेत स्राव होताहै ॥ ३७० ॥

अथ सान्निपातिकमाह ॥

नानावर्णरुजास्रावोघाटलोविषमोमहान् । विषमंपच्यतेवापिविद्रधिःसान्निपातिकः॥ नानाअनेकविधाःवर्णाःकृष्णरक्तपाण्डुरूपाः । रुजातोददाहकण्ड्वादिरूपाः ॥ स्रावाः तनुपीतासिताःयस्यसः । घाटलःघाटाकोटिःसास्यास्तीतिघाटलः ॥ अत्युच्छ्रिताग्रइत्यर्थः । विषमःनिम्नोन्नतः । विषमंपच्यतेवापिचिराचिरगम्भीरोत्तानोऽदूर्ध्वानूर्ध्वभेदेनविषमंयथःस्यात्तथापच्यते ॥ ३७१ ॥

सन्निपातजविद्रधिके लक्षण ॥

सन्निपातजविद्रधि. नाना प्रकारके कृष्णादि वर्णों से युक्त दाहादि अनेक प्रकारकी पीडावाली पीतादि अनेक स्रावों से युक्त अत्यन्त उन्नत अग्रभागवाली बडी और ऊँची नीची होती है और यह बहुत देरमें अथवा बहुत शीघ्र उँचाई से अथवा निचाई से पकती है ॥ ३७१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

[illegible]ग ६[illegible]

[illegible]घातस्याविद्रधेः[illegible]

तैस्तै[illegible]नेचापथ्यकारिणाम् । क्षतोष[illegible]दूषयेत् ॥ [illegible] में [illegible]
[illegible]श्च जायतेतस्यदेहिनः । आगन्तुर्विद्रधिर्ह्येषपित्तवि[illegible]
[illegible]काष्ठलोष्टपाषाणादिभिः । अभिहतेयथारक्तस्रावोभविष्यति ॥ तथ[illegible]
[illegible]अत्रक्षतशब्देनहतमात्रउच्यते । नाभिहतक्षतयोरुभयोरप्यूष्मावायुनातिशोभन
अभिहतेअभिघातात् क्षतेरक्तक्षयात्कुपितेनवायुनाप्रसृतःईरयेत्कोपयेत् ॥ ३७२ ॥

अभिघातजविद्रधिका सम्प्राप्तिपूर्वक लक्षण ॥

काष्ठ पाषाणादि के द्वारा लगीभई चोटमें अथवा घावमें कुपथ्य करनेवाले पुरुषों की वायु के द्वारा चलायमान घाव की ऊष्मा रुधिरसहित पित्तको दूषित करके विद्रधिको उत्पन्न करती है इसमें पित्त के लक्षण होते हैं औ रोगी ज्वर तृषा तथा दाहसेयुक्त होताहै इसे आगन्तुजविद्रधि कहते हैं ३७२ ॥

अथ रक्तजमाह ॥

कृष्णस्फोटावृतः श्यावस्तीव्रदाहरुजाज्वरः । पित्तविद्रधिलिंगस्तु रक्तविद्रधिरुच्यते ॥ ३७३ ॥

रक्तजविद्रधि के लक्षण ॥

रक्तजविद्रधि. काली फुन्सियों से युक्त, कपिशवर्णवाली, तीक्ष्ण, दाह, पीडा तथा ज्वर से युक्त औ पित्तजविद्रधि के लक्षणोंवाली होतीहै ॥ ३७३ ॥

अधिष्ठानविशेषेणलिङ्गविशेषंबोधयितुमभ्यन्तरान्विद्रधीनाह ॥

आभ्यन्तरानतस्तूर्ध्वंविद्रधीन्परिचक्षते । गुर्वसात्म्यविरुद्धान्नशुष्कशाकाम्लभोजनैः ॥ अतिव्यवायव्यायामवेगाघातविदाहिभिः । पृथक्सम्भूयवादोषाःकुपितागुल्मरूपिणम् ॥ वल्मीकवत्समुन्नद्धमन्तःकुर्वन्तिविद्रधिम् । गुदेवस्तिमुखेनाभ्यांकुक्षौवंक्षणयोस्तथा ॥ कक्षयोःप्लीह्नियकृतिहृदिवाक्लोम्निचाप्यथ । एषांलिङ्गानिजानीयाद्बाह्यविद्रधिलक्षणैः ॥ सम्भूयवामिलित्वावासमुन्नद्धंसमन्तादुन्नतम् ॥ ३७४ ॥

स्थानों की विशेषता से विशेष लक्षणों को जनाने के लिये भीतरकी विद्रधियों का वर्णन ॥

भारी,असात्म्य,विरुद्ध अन्न,शुष्क शाक,खटाई,अत्यन्त मैथुन,आमदोष,मूत्रादि वेगोंकारोकना और अत्यन्त विदाही तथा उष्ण वस्तु इनकारणोंसे वातादिकदोष अलग२ अथवा इकट्ठे कुपितहोकर उन्नत गुल्मरूपी तथा बांबीके समान आभ्यन्तर विद्रधिको उत्पन्न करते हैं ये विद्रधि गुदा वस्तिके अग्रभाग, नाभि,कुक्षि,वंक्षण,बगल,प्लीहा,यकृत, हृदय अथवा क्लोममें उत्पन्नहोती हैं इनके लक्षण बाह्यविद्रधियों के समान होते हैं ॥ ३७४ ॥ स्थानविशेषेण रूपविशेषमाह ॥

गुदेवातनिरोधस्तुवस्तौकृच्छ्राल्पमूत्रता॥नाभ्यांहिक्कातथाऽऽटोपःकुक्षौमारुतकोपनम्॥ कटिपृष्ठग्रहस्तीव्रोवंक्षणोत्थेतुविद्रधौ । कक्षयोःपार्श्वसङ्कोचःप्लीह्न्युच्छ्वासावरोधनम् ॥ सर्वाङ्गप्रग्रहस्तीव्रोहृदिकासश्चजायते । श्वासोयकृतिहिक्काचक्लोम्निपेपीयतेपयः ३७५॥

स्थानों की विशेषतासे विद्रधियों के विशेष लक्षण ॥

गुदामें विद्रधिहोनेसे वायुका रुकना, वस्तिमें होनेसे मूत्रकी अल्पता तथा कठिनतासे निकलना

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri
Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

... होनेसे ... तथा ... सिकुड़ता, प्लीहामें होनेसे श्वास ... में होने ... था खांसी यकृत्में होनेसे श्वास तथा हिचकी और क्लोममें हो ...

अथ स्रावमार्गमाह ॥

... रिजाः पक्का यान्त्यूर्ध्वमितरेत्वधः । कक्षादिजाताःयान्तिस्रवन्तिऊर्ध्वम ... वस्त्यादिजाःअधःगुदात् ॥ नाभिजस्तूभाभ्यांमार्गाभ्याम् । (तथाचहारीतः) ऊर्ध्वं प्रभिन्नेषुमुखान्नराणांप्रवर्त्ततेऽसृक्सहितोहिपूयः । अधःप्रभिन्नेषुतुपायुमार्गे ... यांप्रवृत्तिस्त्विहनाभिजेषु ॥ ३७६ ॥

बहने के मार्ग ॥

नाभिके ऊपर उत्पन्न होनेवाली विद्रधि पककर मुखसे बहतीहै नाभिके नीचे वस्ति आदि स्थानों में उत्पन्न भई विद्रधि गुदासे बहती हैं और नाभिमें उत्पन्नभई विद्रधि मुख तथा गुदा दोनोंसे बहती हैं और ऐसाही हारीतने भी कहाहै कि मनुष्यों के ऊपरके ओर विद्रधि होनेसे मुखके द्वारा पीपसहित रुधिर बहताहै नीचेके ओर विद्रधि होनेसे गुदाके द्वारा पीपसहित रुधिर बहताहै और नाभि में विद्रधि होनेसे दोनों ओरसे पीपसहित रुधिर बहताहै ॥ ३७६ ॥

अथ साध्यत्वादिकमाह ॥

अधःस्रुतेषुजीवेत्तुस्रुतेषूर्ध्वंनजीवति । हृन्नाभिवस्तिवर्ज्जेषुतेषुभिन्नेषुबाह्यतः ॥ जीवेत्कदाचित्पुरुषोनेतरेषुकदाचन । हृन्नाभिवस्तिवर्ज्जेषुप्लीहक्लोमादिजाः तेषुनथाभिन्नेषु नजीवेत् ॥ हृदादीनांमर्म्मत्वात् ॥ अतएवभोजः । असाध्योमर्म्मजोज्ञेयःपक्वोऽपक्वश्च विद्रधिः सन्निपातोत्थितोप्येवपक्वएवहिवस्तिजः । त्वग्जोनाभेरधोजश्चसाध्योयश्चसमीपजः ॥ अपक्वश्चैवपक्वश्चसाध्योनोपरिनाभितः । आध्मानंबद्धनिष्पन्दंछर्दिहिक्कातृषान्वितम् ॥ रुजाश्वाससमायुक्तंविद्रधिर्नाशयेन्नरम् ॥ ३७७ ॥

विद्रधि के साध्यादि लक्षण ॥

विद्रधियों के नीचे बहनेपर मनुष्य जीताहै और ऊपरसे बहनेपर नहीं जीताहै हृदय नाभि और वस्तिको छोड़कर प्लीहादि स्थानोंपर भी विद्रधियों के बाहरसे भिन्न होनेपर चाहे पुरुष जीजाय परन्तु हृदय आदिमें भई विद्रधि के भिन्न होनेपर मनुष्य कदापि नहीं जीताहै इसीसे भोजने कहाहै कि मर्म्म में हुई विद्रधि पकीहो या न पकीहो असाध्य होतीहै सन्निपातजविद्रधि भी असाध्य होती है वस्तिमें उत्पन्न विद्रधि पकीभई असाध्य होतीहै नाभिके नीचे उत्पन्न भई त्वचा में उत्पन्न भई और मर्म्मस्थान के समीप में भी उत्पन्न भई विद्रधि साध्यहै नाभि के ऊपर उत्पन्न हुई विद्रधि पकीभई या न पकीभई सभी असाध्यहैं आध्मान मूत्रका रुकना, छर्दि, हिचकी, तृषा, पीडा तथा श्वास इन लक्षणों से युक्त विद्रधिवाला असाध्यहै ॥ ३७७ ॥

अथ बाह्यविद्रधीनांसाध्यासाध्यत्वमाह ॥

साध्याविद्रधयःपञ्चविवर्ज्यःसान्निपातिकः । आमपक्वविदग्धत्वंतेषांज्ञेयश्चशोथवत् ॥ शोथवद्वक्ष्यमाणव्रणशोथवत् ॥ ३७८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...विद्रधियों...

वात... कफज, रक्तज और आगन्तुजविद्रधि ... में ...

...विद्रधियोंका कच्चा होना पक्काहोना औ विदग्ध होना आगे कहें जा...

...३७८ ॥ तत्र विद्रधेश्चिकित्सामाह ॥

जलौकापातनंशस्तंसर्वस्मिन्नेवविद्रधौ । रेकोमृदुर्लङ्घनञ्चस्वेदःपित्तोत्... ...तिशोभन पक्वाविद्रधौ युञ्ज्याद्व्रणशोथवदौषधम् । वातघ्नमूलकल्कैस्तुवसातैलघृतान्वितैः । खोष्णैः... ...प्रलेपःप्रयोज्योवातविद्रधौ । यवगोधूममुद्गैश्चपिष्टैराज्येनलेपयेत् ॥ विलीयते क्षणेनैवह्यपक्वस्तुविद्रधिः । पैत्तिकंविद्रधिंवैद्यःप्रदिह्यात्सर्पिषायुतैः ॥ पयस्योशीरमधुकचन्दनैर्दुग्धपेषितैः । पयस्याऽनेकार्थत्वादत्रक्षीरकाकोलीगुणाधिक्यात्तस्याअलाभेअश्वगन्धाग्राह्या ॥ ३७९ ॥

विद्रधि की चिकित्सा ॥

सब प्रकार की विद्रधि में जोंक लगवाना, मृदुविरेचन तथा लंघन हितहै और पित्तजविद्रधिको छोड़कर अन्य विद्रधियों में स्वेदन हितहै वे पकी भई विद्रधि में व्रणशोथके समान औषधि करनी चाहिये वातजविद्रधि में दशमूल के कल्क को चर्बी तेल तथा घीमें मिलाकर कुछ गरम २ बहुत सा लेप करना चाहिये जौ गेहूँ तथा मूँगको पीसकर घीके साथ लेप करनेसे शीघ्रही बे पकी विद्रधि बिलाय जाती है क्षीरकाकोली (इसके अभावमें असगंध लेनीचाहिये) खस, मुलेठी तथा लाल चंदन इनको दूध में पीसकर घीके साथ लेप करने से पित्तजविद्रधि शान्त होती है ॥ ३७९ ॥

पञ्चवल्कलकल्केनघृतमिश्रेणलेपयेत् । पिबेद्वात्रिफलाक्वाथंत्रिवृत्कल्काक्षसंयुतम् ॥ इष्टिकासिकतालोहकिट्टगोशकृतासह । मूत्रैःसुखोष्णैर्लेपेनस्वेदयेत्श्लेष्मविद्रधिम् ॥ दशमूलीकषायेणसस्नेहेनरसेनवा । शोथव्रणंवाकोष्णेनसनूनंपरिषेचयेत् ॥ पित्तविद्रधिवत्सर्वाक्रियानिरवशेषतः । विद्रध्योःकुशलःकुर्याद्रक्तागन्तुनिमित्तयोः ॥ रक्तचन्दनमञ्जिष्ठानिशामधुकगैरिकैः । क्षीरेणविद्रधौलेपोरक्तागन्तुनिमित्तके ॥ पीताह्येतेनिहन्त्याशुविद्रधिंकोष्ठसम्भवम् । कृष्णाजाजीविशालाचधामार्गवफलंतथा ॥ धामार्गवफलंकोशातकीफलम् श्वेतवर्षाभुवोमूलंमूलंवावरुणस्यच ॥ जलेनक्वथितंपीतमन्तर्विद्रधिहत्परम् ॥ ३८० ॥

पंचवल्कल के कल्क को घीमें मिलाकर लेपकरै अथवा त्रिफला के काढ़े में तोलेभर निशोथ मिलाकर पिवै ईंट, बालू, मंडूर तथा गोबर इन सबको गोमूत्र में पीसकर कुछ गरम २ लेप लगाके कफजविद्रधि में स्वेदन करना चाहिये दशमूल के काढ़ेमें अथवा मांसके रसमें घी मिलाकर पीड़ा युक्त शोथ व्रणको कुछ गरम करके सींचै रक्तजविद्रधि और आगन्तुजविद्रधि में पित्तजविद्रधि के समान चिकित्सा करनी चाहिये लालचंदन, मंजीठ, हल्दी, मुलेठी औ गेरू इन सबको दूधके साथ लेप करनेसे रक्तज औ आगन्तुजविद्रधिका नाश होताहै पीपल, कालाजीरा, इन्द्रायन औ तोरई इन सबके काढ़ेको पीनेसे अन्तर्विद्रधि का नाश होताहै श्वेत गदहपूरना अथवा वरुणा की जड़ के काढ़े को पीनेसे अन्तर्विद्रधि का नाश होताहै ॥ ३८० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

[illegible] डमा[illegible]। त्रिवृत्पटोलमू[illegible]
[illegible] व्रणानुज्ञयेत् । विद्रधीगुलम[illegible]
[illegible]हृद्रोगपित्तासृक्पृष्ठकामला । शिग्रुमूलंजलेधौतंपि[illegible]
[illegible]ह । अनव[illegible]नापीत्वाहन्त्यन्तर्विद्रधिन्नरः । शोभाञ्जनकनिर्य्यूहोहिंगुसैन्धवसंयुत
निवृत्तेः । [illegible]शीघ्रंप्रातःप्रातर्विशेषतः। इति विद्रधिनिदानचिकित्साधिकारः॥ [illegible] ॥

[illegible]त्या, त्रिफला, नीम, कुटकी तथा मुलेठी ये सब समभाग निशोथ तथा परवल की जड चार २ भाग और भूसीरहित मसूरकी दाल सबके बराबर इन सब औषधियों का काढा पीनेसे[illegible], [illegible]द्रधि, गुल्म, वीसर्प, दाह, मोह, ज्वर, तृषा, मूर्च्छा, छर्दि, हृदयके रोग, रक्तपित्त और कामला इन सबका नाश होताहै सहजन की जडको पानी में धोयकर पीसके कपडे में छानले फिर इस रसमें शहद डालकर पीने से अन्तर्विद्रधि नष्ट होतीहै सहजन के काढेमें सेंधानोन तथा हींग छोडकर प्रातःकाल पीनेसे अन्तर्विद्रधिका नाश होताहै इति विद्रधिनिदान चिकित्साऽधिकार समाप्त ॥ ३८१ ॥

अथ व्रणाधिकारस्तत्रव्रणशोथस्यसंख्याविवरण
पूर्वकंसामान्यरूपमाह ॥

पृथक्समस्तदोषोत्थारक्तजागन्तुजौतथा । व्रणशोथाःषडेतेस्युः संयुक्ताःशोथलक्षणैः शोथलक्षणैःपूर्वोक्तैः ॥ ३८२ ॥

व्रणका अधिकार व्रणशोथकी संख्या औ सामान्यलक्षण ॥

व्रणशोथ छैप्रकारका है जैसे वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, रक्तज और आगन्तुज इनके लक्षण पहले कहेभये शोथके समान होतेहैं ॥ ३८२ ॥

अथ विशिष्टंरूपमाह ॥

विषमंपच्यतेवातात्पित्तोत्थश्चाचिरञ्चिरम् । कफजःपित्तवच्छोथोरक्तागन्तुमसुद्भवौ ॥ ३८३ ॥

व्रणशोथके विशेष लक्षण ॥

वातज व्रणशोथ विषमतासे पित्तज व्रणशोथ शीघ्रही तथा कफज व्रणशोथ देरमें पकताहै रक्तज तथा आगन्तुज व्रणशोथ पित्तज शोथके समान शीघ्रही पकताहै ॥ ३८३ ॥

अथापक्वस्यव्रणशोथस्य लक्षणमाह ॥

मन्दोष्मताऽल्पशोथत्वंकाठिन्यंत्वक्सवर्णता । मन्दवेदनताचाऽपिशोथस्यामस्य लक्षणम् ॥ ३८४ ॥

वेपके भये व्रणशोथ के लक्षण ॥

थोडी ऊष्मा, थोडा शोथ, कठिनता और त्वचाका स्वाभाविक वर्ण होना यह बेपके भये व्रणशोथ के लक्षणहैं ॥ ३८४ ॥

तस्यपच्यमानस्यलक्षणमाह ॥

दह्यतेदहनेनैव क्षारेणैवप्रपच्यते । पिपीलिकागणेनैव दश्यतेच्छिद्यतेतथा ॥ भिद्यते चैवशस्त्रेण दण्डेनैवचताड्यते । पीड्यतेपाणिनैवान्तः सूचीभिरिवतुद्यते ॥ ऊषचोषौ विवर्णःस्यादंगुल्येवावपीड्यते । आसनेशयनेस्थानेशान्तिंवृश्चिकविद्धवत् ॥ नगच्छे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दातत ... स्वेदोभातिवस्तिवत् । ज्वरस्तृ ...
...तोऽ ...क्रियतइव । भिद्यतेविदार्य्यतइव ऊषादाहः । ...
...कुः । आततःत्वक्सङ्कोचरहितः । वस्तिर्मूत्राशयइव ...

पकेहुए व्रणशोथ के लक्षण ॥

व्रणशोथ जब पकने लगताहै तब जलने के समान क्षार से पकने के समान चींटियों के काटने ... समान ... के समान शस्त्र से काटने के समान लाठी से मारने के समान हाथसे दबाने के समान तथा भीतर सूजियों से भोकने के समान पीडा होती है दाह, चोष (पास रखीभई अग्निकेद्वारा मानो जलन) विवर्णता, अंगुली से दबाने के समान पीडा मांसका न सिकुडना और वस्तिके समान फूलना ये लक्षण होतेहैं रोगी बिच्छी से काटे हुए के समान बैठने में लेटने में अथवा खडेहोने में किसी प्रकार भी चैन नहीं पाताहै और ज्वर, तृषा तथा अरुचि से पीडित होताहै ॥ ३८५ ॥

अथ पक्वस्यलक्षणमाह ॥

वेदनोपशमःशोथो लोहितोऽल्पोनचोन्नतः । प्रादुर्भावोबलानाञ्च तोदःकण्डूर्मुहुर्मुहुः ॥ उपद्रवाणांप्रशमो निम्नतास्फुटनंत्वचाम् । वस्ताविवाम्बुसञ्चारः स्याच्छोथेऽङ्गुलिपीडिते ॥ पूयश्चपीडयेदेक मन्तमन्तेचपीडिते । बुभुक्षाव्रणशोथस्य भवेत्पक्वस्य लक्षणम् ॥ वेदनोपशमःदाहादिदुःखोपशमः । अल्पोलोहितइत्यन्वयः । नचोन्नतःपच्यमानापेक्षया ॥ उपद्रवाणांज्वरादीनाम् । निम्नतास्वरूपतोऽङ्गुलिपीडनाद्वाअवनतत्वम् । स्फुटनम् किञ्चिद्विदारणम् । वस्ताविवेत्यादिशोथेंगुलिपीडितेसति । अंगुलिपीडितादेशादन्येदेशेअम्बुसञ्चरःकिञ्चित्वस्तौचर्म्मपुटके । एवमन्येएकदेशेपीडितेएकमन्तमपरमन्तमापूर्य्यपीडयति ॥ ३८६ ॥

पकेहुये व्रणशोथ के लक्षण ॥

व्रणशोथ के पकजानेपर दाहादि पीडाकी शान्ति सूजनका थोडा होना रक्तवर्ण होना तथा कम उन्नत होना सिकुडोंका पडना सूजी भुकने कीसी पीडा होनी वारंवार खुजलीहोना ज्वरादि उपद्रवों की शान्ति गहरापन त्वचाका फटना शोथको अंगुली के द्वारा दबाने से जलसे भरीभई कुप्पी में जलके समान पीपका घूमना और एक स्थानमें दबाने से दूसरे स्थानमें पीपका चलाजाना ये लक्षण होतेहैं और रोगीको भूख लगती है ॥ ३८६ ॥

एकदोषारब्धेऽपिशोथेपाककालेसर्वदोषसम्बन्धमाह ॥ ऋतेऽनिलाद्रुग्विनानापित्तं पाकःकफञ्चापिविनानपूयः । तस्माद्धिसर्वेपरिपाककाले पचन्तिशोफांस्त्रिभिरेवदोषैः ॥ पचन्तिपाकंप्राप्नुवन्ति । एवशब्दोत्राप्यर्थः अव्ययानामनेकार्थत्वात् । पाकेमतान्तरमाह । कालान्तरेणाभ्युदितन्तुपित्तंकृत्वावशेवातकफौप्रसह्य । पचत्यतःशोणितमेषपाको मतःपरेषांविदुषांद्वितीयः ॥ वशेकृत्वाहीनीकृत्यशोणितंकर्म्मपूर्व्वत्रकफात्पूयोऽत्रशोणितात्पूयइतिभेदः ॥ ३८७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

थ[illegible] और [illegible]डमें [illegible] तीनों दोषोंका सम्बन्ध होताहै जैसे [illegible] क्
उन्नत [illegible] शक नहींहोता और कफके विना पीप नहीं निकलता इ[illegible]
[illegible] । [illegible] शोथों में तीनों दोषोंका सम्बन्ध होताहै अन्य विद्वानोंका [illegible]
[illegible]ाह । अनर्वा[illegible]हुआ पित्त हठपूर्वक वायु तथा कफको हीनकरके रुधिरको पकाताहै पहले म[illegible]
निवृत्तेः । [illegible]ताहै और दूसरे में रुधिर से पीप होताहै यही भेदहै ॥ ३८७ ॥

[illegible]म्भीरपाकेशोथेपाकज्ञानार्थमथलक्षणान्तरमाहसुश्रुतः ॥ कफजेषुचशोथेषुगम्भीरंपाकमेत्यसृक् । पक्वलिंगंततःस्पष्टंयतःस्याच्छोथशीतता ॥ त्वक्सावर्ण्यं[illegible]अल्परुक्त्वं घनस्पर्शत्वमश्मवत् । कफजेषुचशोथेषुगम्भीरमसृक्पाकमेति ॥ तत्रकथंपाकज्ञानमित्याह । तत्रततःकारणात्पक्वलिंगंस्पष्टम् । यतःपच्यमानावस्थान्तर्गतरागदाहव्यथाघनान्तरेशोथशीतादयोभवन्ति । घनस्पर्शत्वंस्पर्शव्यथत्वम् ॥ ३८८ ॥

सुश्रुतका कहाभया गम्भीर पाकका लक्षण ॥

कफज शोथ में रुधिरका भीतरकी ओर पाकहोताहै इसलिये उसका लक्षण स्पष्ट नहीं होता (अर्थात् मालूम नहीं होता) और उसमें शोथकी शीतलता त्वचाका स्वाभाविक होना पीडाकी अल्पता पाषाणकी समान कठोरता और स्पर्श करने से पीड़ा होना ये लक्षण होतेहैं ॥ ३८८ ॥

अनिर्हृतस्यपूयस्यदोषमाह ॥

कक्षंसमासाद्ययथैववह्निर्वातेरितःसन्दहतिप्रसह्य । तथैवपूयोह्यविनिःसृतस्तु मांसंशिरास्नायुमपीहखादेत् । कक्षंतृणवनम् ॥ ३८९ ॥

पीपके न निकलने के दोष ॥

वायुसे प्रेरणा की भई अग्नि तृणों में लगकर जैसे शीघ्रही भस्म करती है उसीप्रकार नहीं निकला हुआ पीप, मांस, शिरा तथा स्नायुको भी नष्ट करताहै ॥ ३८९ ॥

शोथस्यामपक्वलक्षणज्ञानाज्ञानेभिषजांगुणदोषावाह ॥

आमंविदह्यमानंच सम्यक्पक्वन्तुयोभिषक् । जानीयात्सभवेद्वैद्यःशेषास्तस्करवृत्तयः ॥ विदह्यमानंविपच्यमानम् । तस्करवृत्तयःयेषां तस्कराणामिवद्रव्यलाभमात्रप्रयोजनंभवति । नतुधर्म्मयशोमैत्रीलाभः ॥ यश्छिनत्त्यामसज्ञानाद्यश्चपक्वमुपेक्षते । श्वपचाविवविज्ञेयौ तावनिश्चित्यकारिणौ ॥ ३९० ॥

पकेहुये और बेपकेहुये शोथ के लक्षणों के ज्ञाता और अज्ञाता वैद्यों के गुणदोष ॥

जो वैद्य कच्चे पकेहुये और पकेहुये व्रणशोथके लक्षणोंको जानताहै वही वैद्यहै और जो नहीं जानता वह तस्कररूप (लोभी) है जो वैद्य अज्ञानसे कच्चे व्रणशोथको चीर डालताहै और पके व्रणशोथको नहीं चीरताहै ये दोनों वे समझ वैद्य चांडालके समान जानने चाहिये ॥ ३९० ॥

अथ व्रणशोथचिकित्सामाह ॥

आदौशोथहरोलेपस्ततस्तुपरिषेचनम् । विम्लापनमसृङ्मोक्षस्ततःस्यादुपनाहनम् ॥ पाचनंभेदनंपश्चात् पीडनंशोधनंतथा॥रोपणंवर्णकरणं व्रणस्यैतेक्रमाःस्मृताः ॥ क्रमःचिकित्सा । सुश्रुतेव्रणस्यषष्टिरूपकालिखिताःसंतितेसर्वेऽत्रविस्तरभयान्नलिखिताः३९१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

[illegible] में पहिले शोथघ्न लेप फिर परिषेक तरारा विम्लापन ([illegible]

[illegible] तब उससे सेंकना) रुधिर निकलवाना उपनाह (पुल[illegible]) ॥

[illegible] प्रयोग भेदन (चिरवाना) पीडन शोधन रोपण (भरना) और वर्णकरण

क्रम[illegible]रनी चाहिये सुश्रुत में साठ प्रकारके व्रण लिखेभये हैं विस्तार के भयसे[illegible] नहीं

कहेगये ॥ ३६१ ॥

तत्रादौशोथहरं लेपमाह ॥

[illegible]लितेवेश्मन्यम्भसापरिषेचनम् । क्षिप्रंप्रशमयत्यग्निमेवमालेपनंरुजः ॥ बीजपूरजटाहिंस्रा देवदारुमहौषधम् । रास्नाग्निमन्थालेपोऽयंवातशोथविनाशनः ॥ कल्कःकाञ्जिकसम्पिष्टःस्निग्धोमधुकचन्दनैः ॥ ३६२ ॥

शोथघ्न लेप ॥

जैसे जलते हुये घरमें जल सींचने से शीघ्रही अग्नि शान्त होती है उसी प्रकार, व्रणमें लेप लगानेसे पीडा शान्त होतीहै बिजौरा की जड, छड, देवदारु, सोंठ, रास्ना और अरणी इन सबका लेप लगानेसे वातजशोथ नष्ट होताहै मुलेठी और लालचन्दनको कांजी में पीसकर घी मिलाकर लेप करने से वातजव्रणशोथ नष्ट होताहै ॥ ३६२ ॥

दूर्वाचनलमूलञ्च पद्मकाष्ठञ्चकेशरम् । उशीरंबालकंपद्मं लेपोऽयंपित्तशोथहा ॥ न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थप्लक्षवेतसवल्कलैः । ससर्पिष्कैःप्रदेहःस्याच्छोथेपित्तसमुद्भवे ॥ आगन्तुजेरक्तजेचलेपएषोऽभिपूजितः ॥ ३६३ ॥

दूब, नरकुल की जड, पद्माख, नागकेसर, खस, सुगन्धबाला और कमल इन सबका लेप करनेसे अथवा बरगद, गूलर, पीपल, पकरिया और बेंत इनकी छालको पीसकर घीकेसाथ लेप करनेसे पित्तजशोथ नष्ट होताहै आगन्तुज और रक्तजव्रणशोथ में भी यही लेप हितहै ॥ ३६३ ॥

अजगन्धाजशृङ्गीच मञ्जिष्ठासरलस्तथा । एकैषिकाश्वगन्धाच लेपोऽयंश्लेष्मशोथहा ॥ (अजशृङ्गीमेढाशिङ्गी । एकैषिकाश्यामपनिरशोथ) कृष्णापुराणपिण्याकं शिग्रुत्वक्सिकताशिवा । मूत्रपिष्टःसुखोष्णोऽयंप्रलेपःश्लेष्मशोथहा ॥ ३६४ ॥

अजगंधा, मेढासींगी, मँजीठ, सरला, सतावर और असगंध इनसबका लेप करनेसे अथवा पीपल, पुरानी खली, सहँजन की छाल, बालू और हड इन सबको गोमूत्रमें पीसकर कुछ गरम २ लेप करने से कफजशोथ नष्ट होताहै ॥ ३६४ ॥

नरात्रौलेपनंदद्याद्दत्तञ्चपतितंतथा । नचपर्य्युषितंशुष्यमाणंतन्नैवधारयेत् ॥ दत्तमेवपुनर्दद्यात् । पतितंदीयमानं सद्यदङ्गात्पतितंपर्य्युषितम् । लेपनद्रव्यंकल्कीकृतंयत्पर्य्युषितम् ॥ तमसापिहितोऽप्यूष्मा रोमकूपमुखोत्थितः । विनालेपमनिर्य्याति रात्रौनालेपयेदतः ॥ रात्रावपिलेपयेत्तु विधातव्योविचक्षणैः । अपाकिशोथगम्भीरे रक्तपित्तसमुद्भवे ॥ ३९५ ॥

रातको लेप न लगावै लगायेभये लेपको फिर न लगावै लगाकर गिरेभये लेपको फिर न लगावै बासीलेप न लगावै लेपके सूखजानेपर छुडाडाले रात्रिके समय अंधकारकेद्वारा आच्छादित होनेके

थ [illegible] और [illegible]डमार्ग रोमकूपों के द्वारा बाहर निकलती है [illegible] रात्रि
उक्षत [illegible] पकेभ्यः गम्भीर और रक्तपित्तजशोथ में रात्रिको भी लेप [illegible]
दे । [illegible]

अथ परिषेचनमाह ॥

[illegible]माह । अनवा[illegible]ःसिच्यमानंशान्तिमग्निर्हिगच्छति । दोषाग्निरेवसहसा परिषेकेणश[illegible]
निवृत्तेः । यथा ॥ वातघ्नौषधनिष्क्वाथैस्तैलैर्मांसरसैर्घृतैः । उष्णैःसंसेचयेच्छोथं वातेकं
स्या[illegible]ञ्जिकेनच ॥ पित्तरक्ताभिघातोत्थं शोथंसिञ्चेत्सुशीतलैः ॥ ३९६ ॥

परिषेचनका वर्णन ॥

जैसे जलके सींचनेसे अग्नि शान्त होती है उसी प्रकार तरारेसे दोषरूपी अग्नि शान्त होती है वातघ्न औषधियोंका काढ़ा तेल मांसरस घी और कांजी इनमें से किसीको गरम करके वातजशोथ में तरारा देना चाहिये ॥ ३९६ ॥

क्षीराज्यमधुखण्डेक्षुरसैःपित्तहरैःश्रृतैः ॥ ३९७ ॥

दूध,घी, शहद ऊंखकारस और पित्तघ्न औषधियोंका काढ़ा इनमें से किसी के द्वारा पित्तज रक्तज और आगन्तुज शोथमें शीतल तरारे देने चाहिये ॥ ३९७ ॥

कफघ्नौषधनिष्क्वाथैःशीतैस्तुपरिषेचयेत् । तैलक्षाराम्बुमूत्रैश्च शोथंश्लेष्मसमुद्भवम् ॥ ३९८ ॥

कफघ्न औषधियोंका काढ़ा, तेल क्षार का पानी और गोमूत्र इनमें से किसी के द्वारा कफजव्रण शोथमें शीतल तरारे देवै ॥ ३९८

अथ विम्लापनमाह ॥

जातस्यकठिनस्यास्य कार्य्यंविम्लापनंशनैः ॥ ३९९ ॥

विम्लापनका वर्णन ॥

व्रण शोथके कठिन होनेपर धीरे २ विम्लापन करना चाहिये ॥ ३९९ ॥

अस्यशोथस्यविम्लापनस्य विधिमाह सुश्रुतः ॥

अभ्यज्यस्वेदयित्वातु वेणुनाड्याशनैःशनैः । विमर्दयेद्भिषङ्मन्दन्तलेनांगुष्ठकेन वा ॥ वेणुनाड्यावंशनलिकया स्वेदयित्वाउष्णस्वेदंकृत्वा ॥ ४०० ॥

विम्लापनकी विधि ॥

व्रणस्थानमें घी लगाकर बांसकी नलीसे उष्ण स्वेदन करके अंगूठेसे अथवा हथेलीसे धीरे धीरे मर्दन करै ॥ ४०० ॥

अथ रक्तमोक्षणमाह ॥

वेदनोपशमार्थाय तथापाकशमायच । अचिरोत्पतितेशोथे शोणितस्रावणंचरेत् ॥ (चरेत्कुर्य्यात्) एकतस्तुक्रियाःसर्वाःरक्तमोक्षणमेकतः । रक्तंहिवेदनामूलं तच्चेन्नास्ति नचास्तिरुक् ॥ विवर्णःकठिनःश्यावःव्रणश्चाल्पवेदनः । विषाणैश्चविशेषेण जलौका भिःपदैरपि ॥ शोणितस्रावणञ्चरेदित्यनेनान्वयः ॥ ४०१ ॥

रुधिर निकलवानेकी विधि ॥

थोड़े दिनसे भये शोथमें पीड़ाकी शान्ति के लिये और न पकनेके लिये रुधिर निकलवावै सम्पूर्ण चिकित्साओं से रुधिर निकलवानाही श्रेष्ठहै क्योंकि रुधिरही पीड़ाका कारणहै इससे पीड़ा भी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रुधिरक... पर न होगा विवर्ण ... कापिश ... है
... अथवा पदोंसे रुधिर निकलवावै ॥ ४०१ ॥

अथोपनाहः ॥

स्वेदस्तस्यविधिर्भेषजसाधनप्रकरणेकथितएवास्ति ॥ रुजावतांदार... नांतथैवच । शोथानांस्वेदनंकार्य्यं येचाप्येवंविधाव्रणाः ॥ शोथानांसामान्यानि ... णाःव्र...थाः । तेषामपिस्वेदनंकार्य्यम् ॥ शोथयोरुपनाहश्चदद्यादामविदग्धयोः । प्रशाम्यत्यामदग्धस्तुविदग्धःपक्कतांव्रजेत् ॥ आमविदग्धौ अपक्कपाकोन्मुखौ ॥ ४०२ ॥

उपनाह (स्वेद) की विधि तो औषध साधनप्रकरण में कहीगई है जो शोथ अत्यन्त पीडायुक्त तथा कठिनहों उनमें स्वेदन करनाचाहिये और इसी प्रकार के व्रणोंमेंभी स्वेदन करना चाहिये बेपके हुये और पकने को उन्मुख इनदोनों प्रकारके व्रणोंमें उपनाहका प्रयोग करना चाहिये क्योंकि इससे कच्चा व्रण गलजाताहै और पाकोन्मुखव्रण शीघ्रही पकजाताहै ॥ ४०२ ॥

यथा दशमूलीबलारास्नावाजिगन्धाप्रसारिणी । मूलंवातरिपोःसिन्धुर्वारिपूर्णेघटेक्षिपेत् ॥ शोभाञ्जनःकणाचापिसैन्धवंविश्वभेषजम् । शणकार्पासयोर्बीजमतसीचकुलत्थिका ॥ तिलायवाश्चसिद्धार्थःकुठेरोमूलकंमिसिः । यथाप्राप्तैरमीभिस्तुद्रव्यैरम्लेनसंयुतैः ॥ कल्कीकृतैःसुखोष्णैश्च स्वेदयेद्विधिवच्छनैः । अनेनप्रशमंयाति वातशोथोनसंशयः ॥ कुठेरःकृष्णबर्व्वरी इति दशमूल्यादिरुपनाहः ॥ ४०३ ॥

दशमूल, बरियारा, रास्ना, असगंध, प्रसारिणी, अरंडकी जड और सेंधानोन इनसबको जलसे भरेभये घडेमें छोडकर स्वेदन करना चाहिये सहँजन, पीपल, सेंधानोन, सोंठ, सनके बीज, बिनौले, अलसी, कुलथी, तिल, जौ, सरसों, कृष्ण तुलसी, मूली औ सौंफ इन सब औषधोंको जो प्राप्त होसकें लेकर कांजी में पीसके औ कुछ गरम करके धीरे २ स्वेदन करे इससे वातजशोथ शान्त होताहै इति दशमूल्यादि उपनाह ॥ ४०३ ॥

पुनर्नवादारुशुण्ठीशिग्रुःसिद्धार्थएवच । अम्लपिष्टःसुखोष्णोऽयंप्रलेपःसर्व्वशोथहा ॥ इति पुनर्नवादिः ॥ ४०४ ॥

गदहपूरना, देवदारु, सोंठ, सहँजन तथा सरसों इन सबको कांजी में पीसकर गरम करके लेपलगानेसे सबप्रकार के शोथोंका नाश होताहै इति पुनर्नवादि लेप ॥ ४०४ ॥

अथ पाचनमाह ॥

नप्रशाम्यतियःशोथःप्रलेपादिविधानतः । द्रव्याणिपाचनीयानिदद्यात्तत्रोपनाहने ४०५ ।

पाचनका वर्णन ॥

जो शोथ लेप आदिके द्वारा न शान्तहो उसमें व्रणके पकानेवाली औषधियों का उपनाह करै ॥ ४०५ ॥

अथ पाचनद्रव्याण्याह ॥

शणमूलकशिग्रूणांफलानितिलसर्षपाः । अतसीसक्तवोकिण्वमुष्णद्रव्यञ्चपाचनम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...डमध्याः । किण्वंसुराबीजम् ॥ ...यवग...
...व्रणस्यपाचनमभवति ॥ ४०६ ॥

पकानेवाली औषध ॥

...माह । अनवांथा सहँजनके फल, तिल, सरसों, अलसी, सत्तू, किण्व (गेहूं, जौ आदि जोकि श... निवृत्तेः ...थ तय्यार कियेजातेहैं) और अन्य उष्ण द्रव्य व्रणकी पकानेवाली होतीहैं ॥ ४०६ ॥

अथ भेदनमाह ॥

अन्तःपूयेष्ववक्त्रेषुतथाचोत्संगवत्स्वपि । गतिमत्सुचरोगेषुभेदनंसम्प्रयुज्यते ॥ उत्संगवत्सुकोटरवत्सु । गतिमत्सुनाडीव्रणेषुभेदनम् ॥ शस्त्रमौषधंकर्म्मच ॥ ४०७ ॥

भेदनका वर्णन ॥

जिनके भीतर पीपभरा हो जिनमें मू न भया हो जिनमें चकत्ते पड़गयेहों और नाडीव्रण (नासूर) इनका शस्त्रके द्वारा अथवा औषध के द्वारा भेदन करना चाहिये ॥ ४०७ ॥

तत्रशस्त्रसाध्यम्भेदनमाह ॥

रोगेव्यधेनसाध्येतुयथादेशंप्रमाणतः । शस्त्रंनिधायदोषांस्तुस्रावयेत्कथितंयथा ॥४०८॥

शस्त्रसाध्यभेदन ॥

शस्त्रसाध्य व्रण में शस्त्र के लगानेके स्थान का निरूपण करके प्रमाणके अनुसार भेदनकरै और कहेभये नियमके अनुसार पीप आदिको निकाले ॥ ४०८ ॥

कचिःशस्त्रनिःक्षेपापवादमाह ॥

बालवृद्धासहक्षीणभीरूणांयोषितामपि । व्रणेषुमर्म्मजातेषुभेदनन्द्रव्यलेपनम् ४०९॥

शस्त्र भेदनका निषेध ॥

बाल, वृद्ध, सुकुमार, क्षीण, डरपोंक तथा स्त्री इन सबके व्रणों में और मर्म्म में भये व्रणों में औषधियों के लेपसे भेदन करना चाहिये शस्त्रद्वारा भेदन न करना चाहिये ॥ ४०९ ॥

अथ तत्रभेदनमाह ॥

चिरबिल्वोऽग्निकोदन्तीचित्रकाहयमारकः । कपोतकाकगृध्राणांमललेपेनभेदनम् ॥ दारणमाह । क्षारद्रव्यन्तथाक्षारोदारणःपरिकीर्त्तितः ॥ क्षारद्रव्यमपामार्गादिक्षारस्वर्जिकायवक्षारादिः ॥ हस्तिदन्तोजलेपिष्टोबिन्दुमात्रप्रलेपितः । अत्यर्थकठिनेशोथेकथितोभेदनःपरः ॥ ४१० ॥

भेदन औषधि ॥

करंजुवा, भिलावां, जमालगोटेकी जड़, चीता, कनेर, कबूतर की विष्ठा, कउवेकी विष्ठा तथा गीध की विष्ठा इनमें से किसीका लेप करने से भेदन होताहै क्षारवस्तु (लटजीरा आदि) क्षार (जवाखार आदि) इनके लगानेसे भी भेदन होता है हाथीदांत को पानी में घिसकर एक बिन्दुमात्र लेप करने से अत्यन्त कठिन शोथका भी भेद होताहै ॥ ४१० ॥

अथ पीडनमाह ॥

द्रव्याणांपिच्छिलानान्तुत्वङ्मूलानिप्रपीडनम् । यवगोधूममाषाणांचूर्णानिचसमा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

णमप्रतिप्रलेपम्पीडनम्प्रति । ...
पीडनम्प्रतिपीडनंद्रव्यलेपंप्रतिपीडनंद्रव्यलेपरु...न्तम् ।...
...विनाप्रस्रवति ॥ ४११ ॥

पीडनका वर्णन ॥

चपदार औषधियों की छाल तथा जड़ और जौ गेहूं तथा उरदका आटा इनके ... पीडन (दवाइयां जिनके लगाने से पीप आपही निकल जाय) करनी चाहिये पीडन औषधियों का ... सूखने पर ... न छुडाना चाहिये और व्रणके मुखपर लेप न लगाना चाहिये क्योंकि मुखपर लेप लगाने से पीप आदि नहीं निकलताहै ॥ ४११ ॥

अथ शोधनमाह ॥

व्रणस्यतुविशुद्धस्यक्काथःशुद्धिकरःपरः । पटोलनिम्बपत्रोत्थःसर्व्वत्रैवप्रयुज्यते ॥ वातिकेदशमूलानांक्षीरिणांपैत्तिकेव्रणे । आरग्वधादेःकफजेकषायःशोधनेहितः ॥ अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षवटवेतसजंश्टतम् । व्रणशोथोपदंशानांनाशनंक्षालनात्स्मृतम् ॥ तिलसैन्धवयष्ट्याह्वनिम्बपत्रनिशायुगैः । त्रिवृद्घृतयुतैःपिष्टैःप्रलेपोव्रणशोधनः ॥ एकंवासारिवामूलंसर्व्वव्रणविशोधनम् । निम्बपत्रतिलादन्तीत्रिवृत्सैन्धवमाक्षिकम् ॥ दुष्टव्रणप्रशमनोलेपःशोधनकेशरी । शोधनश्रेष्ठः । लेपान्निम्बदलैःकल्कोव्रणशोधनरोपणः ॥ भक्षणाच्छर्द्दिमन्दाग्निपित्तश्लेष्मकृमीन्हरेत् । व्रणान्विशोधयेद्वर्त्यासूक्ष्मान्हिसन्धिमर्म्मजान् ॥ अभयात्रिवृतादन्तीलाङ्गलीमधुसैन्धवैः । निम्बपत्रघृतक्षौद्रदार्व्वीमधुकसंयुतैः ॥ वर्त्तिस्तिलानांकल्कोवाशोधयेद्रोपयेद्व्रणम् ॥ ४१२ ॥

शोधनका वर्णन ॥

परवल तथा नीमके पत्तोंका काढ़ा पीडन कियेभये व्रणका अत्यन्त शुद्धकरनेवालाहै इसका प्रयोग सब जगह करनाचाहिये वातजव्रणमें दशमूलका पित्तजव्रण में दूधवाले वृक्षोंका और कफजव्रणमें आरग्वधाऽदिगणका काढ़ा शोधनके लिये हित है पीपल, गूलर, पकरिया, बरगद तथा बेंत इनके काढ़ेके द्वारा धोनेसे व्रणशोथ और उपदंशका नाश होताहै तिल, सेंधानोन, मुलेठी, नीमके पत्ते, हल्दी, दारुहल्दी तथा निशोथ इन सबको पीसकर घीके साथ लेप करनेसे व्रण शुद्ध होताहै अथवा केवल अनन्तमूलही सम्पूर्ण व्रणोंकी शुद्ध करनेवाली है नीमकी पत्ती, तिल, जमालगोटेकी जड, निशोथ तथा सेंधानोन इन सबको शहद के साथ लेप करने से दुष्ट व्रण शुद्ध होते हैं नीम की पत्तियों को पीसकर लेपकरने से व्रण शुद्ध होता है और भरजाता है नीम की पत्तियों को पीसकर खाने से छर्दि, मन्दाग्नि, पित्त, कफ तथा कृमिका नाश होताहै नीमकी पत्तीकी बत्ती बनाकर रखने से सन्धि तथा मर्म्म में भये सूक्ष्म व्रणोंका नाश होताहै हड, निशोथ, जमालगोटेकी जड, करियारी, मुलेठी, सेंधानोन, नीमकी पत्ती, घी, शहद, दारुहल्दी तथा महुवा इनकी पत्ती अथवा तिलोंका कल्क व्रणको शुद्ध करता है और भरताहै ॥ ४१२ ॥

अथ रोपणमाह ॥

अपेतपूतिमांसानांसंस्थानामवरोहताम् । कल्कस्तुरोपणोदेयस्तिलजोमधुसंयुतः ॥ अश्वगन्धारुहालोध्रंकट्फलम्मधुयष्टिका । समंगाधातकीपुष्पंपरमंव्रणरोपणम् ॥ रुहा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

[illegible] डमापर्णीकथिता ॥ सुषवीपत्र [illegible]
[illegible] भीरव्रणरोपणम् ॥ सुषवीपत्रमगरैलापत्राबलामो [illegible]
[illegible] कुठेरकाकृष्णावर्व्वरी॥ककुभोदुम्बराश्वत्थजम्बू [illegible]
[illegible] ह । अनर्वाःक्षिप्रंसंरोहन्तिव्रणाध्रुवम् ॥ प्रियंगुधातकीपुष्पंयष्टिमधु जतूनिच । [illegible]
निवृत्तेः तांनिस्थरोपणोऽन्यवधूलनात् ॥ यवचूर्णंसमधुकंसतैलंसहसर्पिषा । दद्यादालेपन
मुष्णंदाहशूलोपशान्तये ॥ करञ्जारिष्टनिर्गुण्डीलेपोहन्याद्व्रणक्रिमीन् । लशु [illegible] थवा
लेपोहिंगुनिम्बकृतोऽथवा ॥ अरिष्टोनिम्बः । निम्बपत्रवचाहिंगुसर्पिर्लवणसर्षपैः ।
धूपनंस्याद्व्रणेरक्षःकृमिकण्डूरुजापहः ॥ येक्लेदपाकस्रुतिगन्धवन्तोव्रणाश्चिरोत्थाःस
ततश्चशोथाः । प्रयान्तितेगुग्गुलुमिश्रितेन पीतेनशान्तिन्त्रिफलाशृतेन ॥ पटोलनि
म्बासनमारधात्रीपथ्याक्षनिर्य्यूहमहर्मुखेषु । पिबेद्युतंगुग्गुलुनाविसर्पविस्फोटदुष्टव्रण
शान्तिमिच्छन् ॥ ४१३ ॥

रोपण का वर्णन ॥

दूषित मांस से रहित इसीमे नहीं बढ़ते भये और भरते भये व्रणों में शहद युक्त तिलोंका कल्क रोपण (भरना घावका) के लिये देनाचाहिये असगंध, दूब, लोध, कायफल, मुलेठी, मँजीठ औ धवई के फूल ये सब घावके अत्यन्त भरनेवाले हैं शहद युक्त निशोथ को लेप करने से सब प्रकारके व्रण पूर जाते हैं करेलीकी पत्ती, पत्तूर, बलामोटा औ कालीबवई इनका अलग २ लेप करने से गम्भीर व्रण भी भरजाताहै अर्जुन, गूलर, पीपल, जामुन और लोध इनकी छालके धूरे से निस्सन्देह व्रण बहुत शीघ्र भरजातेहैं गोंदनी, धवईके फूल, मुलेठी और लाख इनके चूर्ण के धूरेसे घाव भरजातेहैं जौका आटा औ मुलेठी इनको तेल औ घीमें मिलाकर कुछ गरमकर लेपकरनेसे व्रणका दाह और शूल नष्ट होताहै करंजुवा, नीम और निर्गुंडी को पीसकर लेपकरनेसे अथवा लहसुनके लेपसे या हींग और नीमके लेपसे व्रणके कृमियोंका नाश होताहै नीमकी पत्ती, वच, हींग, घी, नोन औ सरसों इनकी धूपसे व्रणके कृमि खुजली औ पीड़ा का नाश होताहै बहुत दिनके पुराने पचपचाये भये पकेभये तथा दुर्गन्धित पीप जिनसे बहताहो ऐसे व्रण और निरन्तर रहनेवाले शोथ त्रिफला के काढ़े में गूगल डालकर पीने से नष्ट होतेहैं परवल, नीम, विजयसार, दाड़िमी (अनार) आंवला, हड़ औ बहेड़ा इनके काढ़ेमें गूगल डालकर प्रातःकाल पीनेसे वीसर्प, विस्फोट औ दुष्ट व्रणोंका नाश होताहै ॥ ४१३ ॥

अथ सवर्णताकरणम् ।

मनःशिलासमञ्जिष्ठासलाक्षारजनीद्वयम् । प्रलेपःसघृतःक्षौद्रस्त्वचःसावर्ण्यकृत्
स्मृतः ॥ ४१४ ॥

सवर्णताकरण ॥

मैनसिल, मँजीठ, लाख, हल्दी औ दारुहल्दी इनसबको घी औ शहदमें मिलाकर लेपकरनेसे त्वचा का वर्ण स्वाभाविक होजाताहै ॥ ४१४ ॥

अथ व्रणिनोभोजनम् ॥

जीर्णशाल्योदनंस्निग्धमल्पमुष्णंद्रवान्तरम् । भुञ्जानोजांगलैर्म्मांसैःशीघ्रंव्रणमपोह
ति ॥ तण्डुलीयकजीवन्तीवास्तूकसुनिषण्णकैः । बालमूलकवार्त्ताकुपटोलैःकारवेल्लकैः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...रकैघृतभृष्टैःससैन्धवैः । अन्यैरव... ...
...दनम्भुञ्जानःशीघ्रंव्रणमपोहतीत्यन्वयः । अम्लंदधि...
...गुरूणिचान्नानिव्रणेचपरिवर्ज्जयेत् । व्रणेश्वयथुरायासा...
...तौचरुक्चदिवास्वापात्ताश्चमृत्युश्चमैथुनात् ॥ ४१५ ॥

व्रणवालों के लिये भोजन ॥

ज...ली जीवों के मांसके रस के साथ स्निग्ध, अल्प, उष्ण तथा द्रव वस्तुसहित पुराने चावलोंका भात खानेसे शीघ्रही व्रणवाला आरोग्य होताहै चौराई, जीवन्ती, बथुवा, विषखपरिया, कच्ची मूली, बैंगन, परवल, करैला इन सबको अनार आंवला और सैंधोनोन के साथ घी में भूनकर इनके साथ मूंग आदिके रसके साथ अथवा अन्य गुणकारी वस्तुओं के साथ पुराने चावलोंका भात खाने से व्रणका नाश होताहै खटाई, दही, शाक, आनूप मांस, जलके जीवोंका मांस, दूध औ भारी अन्न ये सब व्रणमें त्याग देने चाहिये व्रणमें श्रम करने से शोथ होताहै रात्रिको जागने से सूजन तथा रक्तता होतीहै दिनमें सोनेसे सूजन, रक्तता तथा पीडा होतीहै और मैथुन करने से सूजन रक्तता पीड़ा तथा मृत्यु भी होतीहै ॥ ४१५ ॥

अथागन्तुव्रणचिकित्सामाह ॥

कुद्धेसद्योव्रणेकुर्य्यादूर्ध्वंचाधश्चशोधनम् । क्रियाशीताप्रयोक्तव्यारक्तपित्तोष्मनाशिनी ॥ लङ्घनञ्चबलंज्ञात्वाभोजनञ्चास्रमोक्षणम् । घृष्टेविदलितेचैवसुतरामिष्यतेविधिः ॥ छिन्नेभिन्नेतथाविद्धेक्षतेवास्रगतिःस्रवेत् । रक्तक्षयात्तत्ररुजंकरोतिपवनोभृशम् ॥ स्नेहपानम्परिषेकंलेपन्तत्रोपनाहनम् । कुर्वन्तिस्नेहवस्तिञ्चरुजाघ्नञ्चौषधंपृथक् ॥ खड्गादिछिन्नगात्रस्यतत्कालेपूरितोव्रणः । गांगेरुकीमूलरसैःसद्यःस्याद्गतवेदनः ॥ गांगेरुकीनागबलागुलसकरीतिलोके । कषायामधुराःशीताःक्रियाःसर्व्वाःप्रयोजयेत् । सद्योव्रणानांसप्ताहात्पश्चात्पूर्व्वोक्तिमाचरेत् ॥ आमाशयस्थेरुधिरेविदध्याद्वमनन्नरः । तस्मिन्पक्वाशयस्थेतुप्रकुर्वीतविरेचनम् ॥ क्काथोवंशत्वगैरण्डश्वदंष्ट्राश्मभिदाकृतः । हिंगुसैन्धवसंयुक्तःकोष्ठस्थंस्रावयेदसृक् ॥ यवकोलकुलत्थानांनिःस्नेहेनरसेनच । भुञ्जीतान्नंयवागूंवापिबेत्सैंधवसंयुतम् ॥ ४१६ ॥

आगन्तुज व्रणकी चिकित्सा ॥

तात्कालिक व्रणके कुपित होनेपर वमन विरेचनके द्वारा शोधन और शीतल रक्त पित्त नाशक तथा ऊष्मानाशक क्रिया करनी चाहिये तात्कालिक व्रणके घृष्ट (रगड़खायाभया) और विदलित होनेपर बलका विचार करके लंघन हितकारी भोजन और रक्तमोक्षण करना चाहिये छिन्न भिन्न बिधे भये तथा क्षतमें रुधिर बहताहै इसलिये रुधिरके नाशसे वायु अत्यन्त पीडाको उत्पन्न करती है ऐसी अवस्था में स्नेह पान परिषेक लेप उपनाह स्नेह वस्ति और पीड़ानाशक अन्य औषध अलग अलग करै खड्गादि के द्वारा किसी अंगके कट जानेपर उसी समय गुलशकरी की जड़के रसको भरने से पीड़ाका नाश होताहै तात्कालिक व्रणमें मधुर क्काथ और सम्पूर्ण शीतल क्रिया करनी चाहिये तात्कालिक व्रणों के सात दिनके पुराने होजाने पर पहले कहे भये व्रणकीसी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ओं ... ंडमत्पर्णीकथिता ॥ सुषवीपत्र...
...नं भारवसरोपणम् ॥ सुषवीपत्रमगरैलापत्राबलामो...
...। ...कुठेरकाकृष्णावर्वरी॥ककुभोदुम्बराश्वत्थजम्बू...
...शाह । अनवीः क्षिप्रं संरोहन्तिव्रणाध्रुवम् ॥ प्रियंगुधातकीपुष्पंयष्टिमधुजतूनिच । ...
निवृत्तेः तांनिस्थूरोपणोऽन्यवधूलनात् ॥ यवचूर्णसमधुकंसतैलंसहसर्पिषा । दद्यादालेपन
कोष्णं दाहशूलोपशान्तये ॥ करञ्जारिष्टनिर्गुण्डीलेपोहन्याद्व्रणक्रमीन् । लशुनेनाथवा
लेपोहिंगुनिम्बकृतोऽथवा ॥ अरिष्टोनिम्बः । निम्बपत्रवचाहिंगुसर्पिर्लवणसर्षपैः ।
धूपनंस्याद्व्रणेरक्षःकृमिकण्डूरुजापहः ॥ येक्लेदपाकस्रुतिगन्धवन्तोव्रणाश्चिरोत्थाःस
तताश्चशोथाः । प्रयान्तितेगुग्गुलुमिश्रितेन पीतेनशान्तिन्त्रिफलाश्टृतेन ॥ पटोलनि
म्बासनमारधात्रीपथ्याक्षनिर्यूहमहर्मुखेषु । पिवेद्युतंगुग्गुलुनाविसर्पविस्फोटदुष्टव्रण
शान्तिमिच्छन् ॥ ४१३ ॥

रोपण का वर्णन ॥

दूषित मांस से रहित इसीमे नहीं बढते भये और भरते भये व्रणों में शहद युक्त तिलोंका कल्क रोपण (भरना घावका) के लिये देनाचाहिये असगंध, दूब, लोध, कायफल, मुलेठी, मँजीठ औ धवई के फूल ये सब घावके अत्यन्त भरनेवाले हैं शहद युक्त निशोथ को लेप करने से सब प्रकारके व्रण पूर जाते हैं करेलीकी पत्ती, पत्तूर, बलामोटा औ कालीबवई इनका अलग २ लेप करने से गम्भीर व्रण भी भरजाताहै अर्जुन, गूलर, पीपल, जामुन और लोध इनकी छालके धूरे से निस्सन्देह व्रण बहुत शीघ्र भरजातेहैं गोंदनी, धवईके फूल, मुलेठी और लाख इनके चूर्ण के धूरेसे घाव भरजातेहैं जौका आटा औ मुलेठी इनको तेल औ घीमें मिलाकर कुछ गरमकर लेपकरनेसे व्रणका दाह और शूल नष्ट होताहै करंजुवा, नीम और निर्गुंडी को पीसकर लेपकरनेसे अथवा लहसुनके लेपसे या हींग और नीमके लेपसे व्रणके कृमियोंका नाश होताहै नीमकी पत्ती, बच, हींग, घी, नोन औ सरसों इनकी धूपसे व्रणके कृमि खुजली औ पीडा का नाश होताहै बहुत दिनके पुराने पचपचाये भये पकेभये तथा दुर्गन्धित पीप जिनसे बहताहो ऐसे व्रण और निरन्तर रहनेवाले शोथ त्रिफला के काढे में गूगल डालकर पीने से नष्ट होतेहैं परवल, नीम, विजयसार, दाडिमी (अनार) आंवला, हड औ बहेडा इनके काढेमें गूगल डालकर प्रातःकाल पीनेसे वीसर्प, विस्फोट औ दुष्ट व्रणोंका नाश होताहै ॥ ४१३ ॥

अथ सवर्णताकरणम् ।

मनःशिलासमञ्जिष्ठासलाक्षारजनीद्वयम् । प्रलेपःसघृतःक्षौद्रस्त्वचःसावर्ण्यकृत्
स्मृतः ॥ ४१४ ॥

सवर्णताकरण ॥

मैनसिल, मँजीठ, लाख, हल्दी औ दारुहल्दी इनसबको घी औ शहदमें मिलाकर लेपकरनेसे त्वचा का वर्ण स्वाभाविक होजाताहै ॥ ४१४ ॥

अथ व्रणिनोभोजनम् ॥

जीर्णशाल्योदनंस्निग्धमल्पमुष्णंद्रवान्तरम् । भुञ्जानोजांगलैर्मांसैःशीघ्रंव्रणमपोह
ति ॥ तण्डुलीयकजीवन्तीवास्तूकसुनिषण्णकैः । बालमूलकवार्ताकुपटोलैःकारवेल्लकैः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...रकैर्घृतभृष्टैःससैन्धवैः। अन्यैरव...
...ओदनम्भुञ्जानःशीघ्रंव्रणमपोहतीत्यन्वयः। अम्लंदधि...
...गुरूणिचान्नानिव्रणेचपरिवर्ज्जयेत्। व्रणेश्वयथुरायासा...
...॥ तौचरुक्चदिवास्वापात्ताश्चमृत्युश्चमैथुनात्॥ ४१५॥

व्रणवालों के लिये भोजन॥

जंगली जीवों के मांसके रस के साथ स्निग्ध, अल्प, उष्ण तथा द्रव वस्तुसहित पुराने चावलोंका भात खानेसे शीघ्रही व्रणवाला आरोग्य होताहै चौराई, जीवन्ती, बथुवा, विषखपरिया, कच्ची मूली, बैंगन, परवल, करैला इन सबको अनार आंवला और सेंधोनोन के साथ घी में भूनकर इनके साथ मूंग आदिके रसके साथ अथवा अन्य गुणकारी वस्तुओं के साथ पुराने चावलोंका भात खाने से व्रणका नाश होताहै खटाई, दही, शाक, आनूप मांस, जलके जीवोंका मांस, दूध औ भारी अन्न ये सब व्रणमें त्याग देने चाहिये व्रणमें श्रम करने से शोथ होताहै रात्रिको जागने से सूजन तथा रक्तता होतीहै दिनमें सोनेसे सूजन, रक्तता तथा पीड़ा होतीहै और मैथुन करने से सूजन रक्तता पीड़ा तथा मृत्यु भी होतीहै॥ ४१५॥

अथागन्तुव्रणचिकित्सामाह॥

क्रुद्धेसद्योव्रणेकुर्य्यादूर्ध्वंचाधश्चशोधनम्। क्रियाशीताप्रयोक्तव्यारक्तपित्तोष्मनाशिनी॥ लङ्घनञ्चबलंज्ञात्वाभोजनञ्चास्रमोक्षणम्। घृष्टेविदलितेचैवसुतरामिष्यतेविधिः॥ छिन्नेभिन्नेतथाविद्धेक्षतेवास्रगतिःस्रवेत्। रक्तक्षयात्तत्ररुजःकरोतिपवनोभृशम्॥ स्नेहपानम्परीषेकंलेपन्तत्रोपनाहनम्। कुर्वन्तिस्नेहवस्तिञ्चरुजाघ्नञ्चौषधंपृथक्॥ खड्गादिछिन्नगात्रस्यतत्कालेपूरितोव्रणः। गांगेरुकीमूलरसैःसद्यःस्याद्गतवेदनः॥ गांगेरुकीनागबलागुलसकरीतिलोके। कषायामधुराःशीताःक्रियाःसर्वाःप्रयोजयेत्। सद्योव्रणानांसप्ताहात्पश्चात्पूर्वोक्तिमाचरेत्॥ आमाशयस्थेरुधिरेविदध्याद्वमनन्नरः। तस्मिन्पक्वाशयस्थेतुप्रकुर्वीतविरेचनम्॥ क्वाथोवंशत्वगैरण्डश्वदंष्ट्राश्मभिदाकृतः। हिंगुसैन्धवसंयुक्तःकोष्ठस्थंस्रावयेदसृक्॥ यवकोलकुलत्थानांनिःस्नेहेनरसेनच। भुञ्जीतान्नंयवागूंवापिबेत्सैंधवसंयुतम्॥ ४१६॥

आगन्तुज व्रणकी चिकित्सा॥

तात्कालिक व्रणके कुपित होनेपर वमन विरेचनके द्वारा शोधन और शीतल रक्त पित्त नाशक तथा ऊष्मानाशक क्रिया करनी चाहिये तात्कालिक व्रणके घृष्ट (रगड़खायाभया) और विदलित होनेपर बलका विचार करके लंघन हितकारी भोजन और रक्तमोक्षण करना चाहिये छिन्न भिन्न बिंधे भये तथा क्षतमें रुधिर बहताहै इसलिये रुधिरके नाशसे वायु अत्यन्त पीडाको उत्पन्न करती है ऐसी अवस्था में स्नेह पान परिषेक लेप उपनाह स्नेह वस्ति और पीडानाशक अन्य औषध अलग अलग करै खड्गादि के द्वारा किसी अंगके कट जानेपर उसी समय गुलशकरी की जड़के रसको भरने से पीड़ाका नाश होताहै तात्कालिक व्रणमें मधुर क्वाथ और सम्पूर्ण शीतल क्रिया करनी चाहिये तात्कालिक व्रणों के सात दिनके पुराने होजाने पर पहले कहे भये व्रणकीसी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

 ...डस्थानपर वमन औ पक्काशय में स्थित ...
... जड गोखुरू और पाषाणभेद इनके काढ़े में हींग औ स...
करे । ... रुधिर बहजाताहै जौ बेर औ कुल्थी के स्नेहरहित रसके ...
...ाह । अनवडालकर यवागूको पियै ॥ ४१६ ॥

निवृत्ते...म्बपटोलपत्रकटुकादार्व्वीनिशासारिवा । मञ्जिष्ठाभयसिक्थतुत्थमधुकै... ...बीजैःसमैः ॥ सर्पिःसिद्धमनेनसूक्ष्मवदनामर्म्माश्रिनाःस्राविणी । गम्भीराःसरुजोव्रणाःसगतिकाःशुध्यन्तिरोहन्तिच । वृद्धवैद्योपदेशेनपारम्पर्य्योपदेशतः । जा...घृतेतुसंसिद्धेक्षेप्तव्यंसिक्थकम्बुधैः इतिजात्यादिघृतम् ॥ ४१७ ॥

चँबेली, नीम, परवलके पत्ते, कुटकी, दारुहल्दी, हल्दी, गुलीसर, मजीठ, खस, मोम, तूतिया, मुलेठी, और करंजुवे के बीज इन औषधों के द्वारा पाककिये भये घीके सेवनसे छोटे मुखवाले मर्म्म में उत्पन्न भये बहतेभये गम्भीर पीडा युक्त और चलायमान व्रण शुद्धहोते हैं और नष्टहोते हैं वृद्धवैद्यों के उपदेशसे और परम्पराके अनुसार घीके पकजानेपर मोम छोडनाचाहिये इति जात्यादिघृत ॥ ४१७ ॥

जातीनिम्बपटोलानांनक्तमालस्यपल्लवाः । सिक्थकंमधुकंकुष्ठंद्वेनिशेकटुरोहिणी ॥ मञ्जिष्ठापद्मकम्पथ्यालोध्रत्वङ्नीलमुत्पलम् । सारिवातुत्थकञ्चापिनक्तमालफलन्तथा ॥ एतानिसमभागानिकल्कीकृत्यप्रयत्नतः । तिलतैलम्पचेत्सम्यग्वैद्यःपाकविचक्षणः ॥ विषव्रणेसमुत्पन्नेस्फोटकेकक्षरोगिणि । दद्रुवीसर्प्परोगेषुकीटदष्टेषुसर्व्वथा ॥ सद्यःशस्त्रप्रहारेणदग्धविद्धेषुचैवहि । नखदन्तक्षतेदेहेदुष्टमांसापकर्षणे ॥ अक्षणेनहितंतैलमिदंशोधनरोपणम् । तैलञ्जात्यादिनाम्नैतत्प्रसिद्धम्भिषगादृतम् ॥ इतिजात्यादितैलम् ४१८

चँबेली, नीम, परवल तथा करंजुवेके पत्ते, मोम, मुलेठी, कूट, हल्दी, दारुहल्दी, कुटकी, मँजीठ, कमल, हड, लोध, दालचीनी, नीलकमल, गुलीसर, तूतिया और करंजुवेका फल इनसबको समभाग लेकर इनके द्वारा विधिपूर्व्वक तिलके तेलको पकावै फिर विषव्रणमें स्फोटक में नेत्ररोग में दादमें वीसर्प्प में कीडों के काटने में शस्त्र के घावमें जलेहुये में विद्धमें (सूजी काटने आदि से) नख वा दांतसे भये घावमें औ दूषित मांसके निकालने में इस तैलका सेवन करना चाहिये इससे घाव शुद्ध होताहै औ पूरजाताहै इति जात्यादि तैल ॥ ४१८ ॥

चित्रकरसोनरामठशरपुङ्खालाङ्गलीकसिन्दूरैः । सविषैस्तथासकुष्ठैःकटुतैलंसाधुसम्पक्वम् ॥ विपरीतमल्लसञ्ज्ञन्तैलंदुष्टव्रणन्तथानाडीम् । बहुभेषजैरसाध्यामपथ्यभोक्तुश्च निस्तुदति इतिविपरीतमल्लतैलम् ॥ ४१९ ॥

चीता, लहसुन, हींग, सरफोंका, जल पीपल, सिन्दूर, विष औ कूट इनके द्वारा कडुवे तेलको पकाकर सेवन करने से अपथ्य भोजन करनेवालेका अनेक औषधों से असाध्यभी दुष्टव्रण औ नासूर नष्टहोताहै इति विपरीत मल्लतैल ॥ ४१९ ॥

अमृतापटोलमूलत्रिफलात्रिकटुकक्रिमिघ्नानाम् । समभागानांचूर्णंसर्व्वसमोगुग्गुलोर्भागः ॥ प्रतिवासरमेकैकांगुटिकाङ्खादेदिहपरिमाणाम् । जेतुंव्रणवातासृग्गुल्मोदरशोथवातरोगांश्च इतिअमृतादिगुग्गुलुः ॥ ४२० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...ल ...ई, त्रिफला, त्रिकटु और ... कर ...गूगुल मिलाकर गोली बांधै फिर मात्रा के ...र ए... में सन्धि ... उदर, सूजन औ वातरोगोंका नाश होता है इति अमृतादि...

अथाग्निदग्धस्य चिकित्सामाह ॥

कुष्टस्याग्निपुतपनङ्कार्य्यमुष्णंतथौषधम् । सम्यक्स्विन्नेशरीरेतुस्विन्नंभवतिशोभनम् ॥ प्रकृत्यासलिलंशीतंस्कन्दयत्यतिशोणितम् । तस्मात्सुखयतिह्युष्णंनतुशीतङ्कदाचन ॥ स्कन्दयति शोषयतिशीतामुष्णाश्चदुर्दग्धेक्रियांकुर्य्यात्ततःपुनः । घृतलेपप्रदेहांश्चशीतानिवास्यकारयेत् ॥ सम्यग्दग्धेतुगाक्षीरीप्लक्षचन्दनगैरिकैः । सामृतैःसर्पिषायुक्तैरालेपङ्कारयेद्भिषक् ॥ ग्राम्यानूपोदकैर्मांसैःपिष्टैरेनम्प्रलेपयेत् । अतिदग्धेविशीर्णानिमांसान्युद्धृत्यशीतलम् ॥ क्रियांकुर्य्यात्ततःपश्चाच्छालितण्डुलकण्डनैः । तिन्दुक्याश्चकषायैर्वाघृतमिश्रैःप्रलेपयेत् ॥ सर्व्वेषामग्निदग्धानामेतद्रोपणमुत्तमम् ॥ ४२१

अग्नि से जलेभये की चिकित्सा ॥

जले भये को आग में सेंकै औ उष्ण औषध करै शरीर के बहुत सन्तप्त होजाने पर स्वेद देना ही हितहै शीतल जल स्वभाव सेही रुधिर को सुखाता है इसलिये उष्ण चिकित्साही सुखकारी होतीहै और शीतल कभी भी सुखकारी नहीं होती दुर्दग्ध में शीतल तथा उष्ण क्रिया करिके घृत लेप और शीतल लेपकरे सम्यग्दग्ध में वंशलोचन, पकरिया, चन्दन, गेरू औ गिलोय इनको घीमें मिलाकर लेपकरे और जंगली पशुओं का मांस, अनूपदेशका मांस और जल के जीवों का मांस पीसकर लेपकरे अतिदग्धमें गलेहुए मांसको निकालकर शीतल क्रियाकरै और फिर चावलोंकी किनकियोंको तेंदूके काढ़ेमें अथवा घीमें मिलाकर लेपकरे इससे सब प्रकारके अग्निदग्ध भरजातेहैं॥४२१॥

सिक्थककर्द्दमजीरकमधुपथ्यासर्व्वमिश्रितंलेपात् । गव्यंघृतमपहरतिविपाकजनितंव्रणंसद्यः ॥ इति सिक्थकादिघृतम् ॥ ४२२ ॥

माम, कोई, जीरा, मुलेठी औ हड इनसबको मिलाकर इनके द्वारा पाककिये भये घृतके लेपसे जलेका घाव शीघ्रही नष्ट होताहै इति सिक्थकादिघृत ॥ ४२२ ॥

सिद्धंकषायकल्काभ्यांपटोल्याःकटुतैलकम् । दग्धव्रणरुजास्रावदाहविस्फोटनाशनम् ॥ इति पटोलादितैलम् ॥ ४२३ ॥

परवल के काढ़े तथा कल्क के द्वारा पाककिये भये कडुवे तेलके सेवनसे जलेका घाव पीडा दाह और विस्फोट का नाश होताहै इति पटोलादि तैल ॥ ४२३ ॥

वातास्रमसृतंदुष्टंसशोथंग्रथितंव्रणम् । कुर्यात्सदाहंकण्ड्वाढ्यंव्रणग्रन्थिस्तुसस्मृतः ॥ कम्पिल्लकम्बिडङ्गानित्वचन्दार्व्यास्तथैवच । पिष्ट्वातैलम्पचेत्तन्तुव्रणग्रन्थिहरम्परम् ॥ इति व्रणागन्तुव्रणाग्निदग्धनिदानचिकित्साधिकारः ॥ ४२४ ॥

दूषित वातरक्त नहीं बहनेवाले शोथयुक्त गांठके समान व्रणको उत्पन्न करतेहैं इसे व्रण ग्रंथि कहते हैं इसमें दाह और खुजली होतीहै कबीला, बायबिडंग, दालचीनी और दारुहल्दी इनसबको पीसकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

...डभाग ग्रंथिका नाश होताहै इति ... अ...

...र सन्नौत ॥ ४२४ ॥

...श अथ भग्नाधिकारस्तत्रभग्नस्यभेदमाह ॥

...। अतंतमासाद्द्विविधंहुताशकाण्डेचसन्धावपितत्रसन्धौ । उत्पिष्टविश्लिष्टवि...
तानितिर्य्यग्गतंक्षिप्तमधश्चभग्नम् ॥ अत्रभावेऽर्थेक्तप्रत्ययस्तेनभग्नंभङ्गःसचात्रवि
श्लेषोऽभिप्रेतः । तेनभग्नमात्रास्थिविश्लेषलक्षणम् । समासात्संक्षेपात् । हुताश
हे अग्निवेश ! यतश्चरके अग्निवेशस्यहुताशेतिनामान्तरमुक्तम् । काण्डेमग्धिपर्य्य
न्तेएकखण्डे । अस्थिसन्धौद्वयोरस्थ्नोःसंस्थानसन्धानेतत्रसन्धौ । उत्पिष्टादिभेदैःषट्प्र
कारकंभग्नम्भवति ॥ स्वल्पवक्तव्यत्वेनसन्धिभग्नस्यादौविवरणम् । उत्पिष्टेत्यादि
अधःअधोभग्नम् ॥ ४२५ ॥

भग्नका अधिकार भग्नके भेद ॥

हे अग्निवेश ! संक्षेप से भग्न दो प्रकार के हैं एक अस्थिभग्न, दूसरा सन्धिभग्न उनमें से सन्धिभग्न छः प्रकारकाहै जैसे उत्पिष्ट, विश्लिष्ट, विवर्त्तित, तिर्य्यग्गत, क्षिप्त और अधःक्षिप्त ॥ ४२५ ॥

सन्धिभग्नस्यसामान्यलिङ्गमाह ॥

प्रसारणाकुञ्चनवर्त्तनोग्रारुक्स्पर्शविद्वेषणमेतदुक्तम् । सामान्यतःसन्धिगतस्यलिं
गमुत्पिष्टसन्धेःश्वयथुःसमन्तात् ॥ विशेषतोरात्रिभवारुजाचविश्लिष्टकेतौचरुजाच
नित्यम् । वर्त्तनंपरिवर्त्तनम् । उत्पिष्टस्यलिंगमाह । उत्पिष्टसन्धेःउत्पिष्टःद्वाभ्यांम
स्थिभ्यांपिष्टःसन्धिर्यस्यतस्यसमन्तात्उभयभागयोःशोथोभवति । विश्लिष्टमाह । वि
श्लिष्टइत्यादि तौउभयतःशोथौरात्रिरुजाचनित्यम् । सदारुजाधिकाभवतीतिउत्पि
ष्टभेदः ॥ ४२६ ॥

सन्धि भग्नके सामान्य लक्षण ॥

सन्धिगत भग्नमें स्पर्श नहीं सहाजाताहै और फैलाने सिकोरने तथा घुमाने में अत्यन्त पीडा होती है दो हड्डियों के रगडने से जो सन्धि भग्न होताहै उसे उत्पिष्ट कहते हैं इसके चारों ओर शोथ होताहै और रात्रि में अधिक पीडा होती है विश्लिष्टनाम सन्धिभग्न में शोथ और रात्रि में अधिक पीडा होतीहै और इस में सदैव अधिक पीडाहुआ करतीहै यही उत्पिष्टसे भेदहै ॥ ४२६ ॥

विवर्त्तिततिर्य्यग्गताक्षिप्तायोगतान्याह ॥

विवर्त्तितेपार्श्वरुजश्चतीव्रास्तिर्य्यग्गतेतीव्ररुजोभवन्ति । क्षिप्तेऽतिशूलंविषमंरुज
श्चक्षिप्तेत्वधोरुग्विघटश्चसन्धेः॥ विवर्त्तितेसन्धावमुक्तेअस्थिद्वयेपरिवर्त्तितेपार्श्वरुजः।
सन्धिस्थितास्थिखण्डद्वयपार्श्वयोरुजः ॥ तिर्य्यग्गतेएकस्मिन्नस्थिनसन्धिस्थानन्त्य
क्त्वातिर्य्यग्गते। क्षिप्तेसक्थ्योरुसन्ध्योःएकस्मिन्नस्थिनपरस्मादस्थनउपरिगतेसक्थ्नोः
न्नस्थिन । अधोगतेरुक्सन्धिविघट्टनञ्च ॥ ४२७ ॥

[illegible] भाग ६७० ।

[illegible] त्यस्तात आक्षिप्त अध [illegible] के [illegible]
[illegible] छूटे दोनों हड्डियों के फिर जाने को [illegible] संदष्ट स [illegible] में सन्धि
[illegible] दोनों ओर पीड़ा होतीहै एक हड्डी के सन्धिस्थान को छ [illegible] होजाने को
[illegible] सन्धिभग्न कहते हैं इसमें अत्यन्त पीड़ा होतीहै जंघाओं की [illegible] एक हड्डी पर
दूसरी हड्डी के चढ़ जाने को क्षिप्त सन्धिभग्न कहते हैं इस में अत्यन्त शूल और विषम (कभी ज्यादह कभी कम) पीड़ा होतीहै सन्धि की हड्डियों में से एक हड्डी के नीचे चले जाने को अधः-क्षिप्त सन्धि भग्न कहते हैं इसमें पीड़ा होतीहै और सन्धि टूट जाती है ॥ ४२७ ॥

काण्ड भग्नमाह ॥

भग्नन्तुकाण्डेबहुधाप्रयातिविशेषतोनामभिरेवतुल्यम् । भग्नंकाण्डेकाण्डविषये बहुधाबहुभिःप्रकारैःप्रयाति अत्रबहुविधत्वंद्वादशविधत्वंबोद्धव्यम् । बहुविधस्यकाण्डे भग्नस्यपृथग्लक्षणंनोक्तम् किन्तुनामभिरेषतुल्यम् । कर्कटकादिनामानुरूपमेवल [illegible] बोद्धव्यम् ॥ ४२८ ॥

काण्डभग्न का वर्णन ॥

काण्डभग्न बारह प्रकारका होताहै इन के लक्षण नाम के अनुसार जानने चाहियें ॥ ४२८ ॥

तान्प्रकारानाह ॥

काण्डेत्वतःकर्कटकाश्वकर्णौविचूर्णितंपिच्चितमस्थिखल्लितम् । काण्डेषुभग्नंह्यतिपातितञ्चमज्जागतंविस्फुटितञ्चवक्रम् ॥ छिन्नन्द्विधाद्वादशधापिकाण्डे सामान्यमग्रेकिल तस्यलिङ्गम् ॥ अतःसन्धिभग्नानन्तरंकाण्डेकाण्डभग्नंतदाह । कर्कटकः । अस्थिद्वि श्लेषपूर्वकोमध्येप्रोन्नतः ॥ पार्श्वयोःस्वनतःकर्कटतुल्यरूपत्वात्कर्कटः । अश्वकर्णःअश्व कर्णवद्विपुलास्थिनिर्गमादश्वकर्णः । विचूर्णितंचूर्णितमस्थितच्चशब्दस्पर्शाभ्यांबोद्धव्य म् ॥ पिच्चितम् । नियन्त्रितंबहुशोथम् ॥ खल्लितंविश्लिष्टमस्थिनिस्रवम् । काण्डेषुभग्न म् । काण्डभग्नम् यद्यपिकर्कटकादिसर्वमेवकाण्डभग्नम् ॥ तथापीयंकाण्डभग्नसंज्ञा विशिष्टा । अत्रभग्नेभङ्गस्त्रुटिस्तेनसर्वथात्रुटितम् ॥ पृथग्भूतंत्वचिस्थितंयत्काण्डभ ग्नमतिपातितम् अशेषेणाछित्वापातितमस्थिमज्जागतम् अस्थ्यवयवयोऽस्थिमध्ये प्रवि ष्टमज्जानंगतम् ॥ विस्फुटितंस्तोकंविदीर्णम् । वक्रमस्थानत्यक्त्वाकुब्जीभूतम् ॥ छिन्नं द्विधाएकंविदीर्णंसंलग्नम् अपरंविदीर्णंद्विधाभूतंद्वादशधाचकाण्डेति कर्कटकादिकाण्डे काण्डेचभग्नंद्वादशधेत्यन्वयः । तच्चोक्तमेव ॥ ४२९ ॥

प्रकारोंकावर्णन ॥

कर्कटक, अश्वकर्ण, विचूर्णित, पिच्चित, अस्थिखल्लित, काण्डभग्न, अतिपातित, मज्जागत, विस्फुटित, वक्र छिन्नइनमेंसे छिन्न दोप्रकारकाहै एक विदीर्ण होकरभी लगाभया और दूसराविदीर्ण होकर टूटा भया बीचमें ऊंचे और किनारों में खाली हड्डियोंके टूटनेको कर्कट कहते हैं घोडेके कान के समान बहुत बाहर निकले भये हड्डियों के टूटनेको अश्वकर्ण कहतेहैं हड्डियोंके चूर्ण होजानेको विचूर्णित कहतेहैं यह स्पर्श और शब्दके द्वारा ज्ञात होता है किसी यन्त्र से हड्डी क दबजाने पर शोथ युक्त काण्डभग्न को पिच्चित कहतेहैं हड्डियोंके टूटजानेपर बहते हुये काण्डभग्नको खल्लित कहते हैं हड्डियों

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के टूटजाने [illegible] हैं [illegible] डस्मा[illegible]ादे सम्पूर्ण भग्न काण्ड [illegible] कहला[illegible]
की यह वि[illegible] विथ[illegible] टूट जातीहैं सर्वथा टूटकर हड्डीके गिरने [illegible]
काण्ड भग्नक[illegible] का टुकडा टूटकर दूसरी हड्डीकी मज्जामें घुसजाय उसे म[illegible]
भग्नकहतेहैं कुछफटभये हड्डीके टूटने को विस्फुटित काण्डभग्नकहतेहैं स्थानको छाडकर [illegible]
होजाने को वक्रकांडभग्नकहतेहैं इनका सामान्य लक्षण आगे कहैंगे॥ ४२९ ॥

अथ कर्कटादिकाण्डभग्नस्यलक्षणमाह ॥

स्रस्ताङ्गताशोथरुजातिवृद्धिस्तथाऽव्यथावृद्धिरतीवनित्यम् । सम्पीड्यमानेभवतीह शब्दःस्पर्शासहस्पन्दनतोदशूलाः ॥ सर्वास्ववस्थासुनशर्म्मलाभोभग्नस्यकाण्डेखलु चिह्नमेतत् । स्पर्शासहमितिकाण्डभग्नस्यविशेषणम् ॥ स्पन्दनंनाडीनांस्फुरणम् । शूलेनेवचव्यथा ॥ रुजासामान्यपीडासर्वास्ववस्थासुशयनादिषु ॥ ४३० ॥

कर्कटादि भग्नका लक्षण ॥

कांडभग्नमें शरीरकी शिथिलता,शोथ,अत्यन्तपीडा,दिनपरदिन पीडाका बढ़ना,दबानेसे शब्दहोना, स्पर्शकी असहनता,नाडियोंका फड़कना,सूजीगडनेकीसी पीडा,शूलगडनेकीसीपीडा और किसीप्रकार से भी चैन न पडना ये लक्षण होतेहैं ॥ ४३० ॥

अथ कष्टसाध्यमाह ॥

अल्पाशिनोऽनात्मवतोजन्तोर्वातात्मकस्यच । उपद्रवैर्वाजुष्टस्यभग्नःकृच्छ्रेणसिद्ध्यति अनात्मवतःरोगप्रतीकारेयत्नरहितस्यवातात्मकस्यवातकफस्यच वातप्रकृतेःउपद्रवैःज्वराध्मानमोहमूत्रपुरीषसंगादिभिः ॥ ४३१ ॥

भग्नके कष्टसाध्य का लक्षण ॥

थोडे खानेवाले, वातप्रकृतिवाले, रोगके प्रतीकार करने में यत्नरहित और ज्वर,आध्मान, मोह तथा मूत्रादिका न उतरना इत्यादि उपद्रवों से युक्त मनुष्य का भग्न कष्टसे साध्य होताहै ॥४३१॥

अथासाध्यमाह ॥

भिन्नंकपालंकट्यान्तुसन्धिमुक्तंतथाच्युतम् । जघनंप्रतिपिष्टञ्चवर्जयेत्तुचिकित्सकः ॥ कपालंजानुनितम्बांसंगगण्डतालुशङ्खवङ्क्षणशिरोऽस्थीनिकपालानि । तथाच्युतम् अधःक्षिप्तम् ॥ प्रतिपिष्टमुत्पिष्टम् । पुनरसाध्यमाह । असंश्लिष्टकपालञ्चललाटेचूर्णितञ्चयत् ॥ भग्नंस्तनेगुदेपृष्ठेशङ्खेमूर्द्धनिवर्जयेत् । असंश्लिष्टकपालमितिभग्नविशेषणम् ॥ स्तनेस्तनयोरन्तरे । मूर्द्धनिचूडास्थाने । अपरमसाध्यमाह । सम्यक्संहितमप्यस्थिदुर्न्यासाद्दुष्टबन्धनात् । संक्षोभाद्वापियद्गच्छेद्विक्रियान्तञ्चवर्जयेत् ॥ सम्यक्संहितमपिसम्यक्योजितमपि । अस्थिदुर्न्यासाद्दुःस्थापनात् ॥ सुन्यस्तमपिदुष्टबन्धनात् । सुबद्धमपिसंक्षोभात् ॥ अभिघातादिनासञ्चलनात् । विक्रियांगच्छेद्विकृतंभवधितद्वर्जयेत् ॥ ४३२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भग्नके असाध्यक...

...न,नितम्ब,कंधे,कपोल,ललाटकीहड्डी,ता... ...नेपरकम- ...टनेपर और जघनमें अधःक्षिप्त तथा उत्पिष्ट नाम कांड भग्न... ...गी को असा- ...चाहये औरभी कहागयाहै कि कपालकी हड्डीटूटकर न मिलनेपर ललाटमें चूर्णित नाम भग्न...नेपर और दोनों स्तनोंके बीचमें गुदामें पीठमें कपालकी हड्डियोंमें तथा मस्तकमें भग्नहोने पर रोगीको असाध्य जानना चाहिये जो टूटीभई हड्डी अच्छीप्रकारसे जोडी गई भी अच्छी रीति से न र...से अच्छे प्रकार न बांधनेसे अथवा चोट आदि लगनेके कारण चलायमान होनेसे वि- कारको प्राप्तहोतीहै वह असाध्यहै ॥ ४३२ ॥

अथास्थिविशेषेणभग्नविशेषमाह ॥

तरुणास्थीनिनम्यन्तेभिद्यन्तेनलकानितु । कपालानिविभज्यन्तेस्फुटन्तिरुचकानि च ॥ तरुणास्थीनिघ्राणकर्णाक्षिगुदेषुकोमलास्थीनिनम्यन्तेवक्रीभवन्तितेनात्रवक्रता लक्षणंभग्नंनलकानि । नलादीनिनाडीवत्सरन्ध्राण्यस्थिपञ्जराणिभिद्यन्तेऽस्थ्यन्तरा नुप्रवेशाद्विदार्य्यन्ते ॥ कपालानिजानुनितम्बांसगण्डतालुशङ्खवंक्षणशिरोऽस्थीनिवि भज्यन्ते । स्फुटन्तित्रुट्यन्तिरुचकादन्ताःस्फुटन्ति । अस्थीनिचतरुणनलककपालरु चकवलयभेदात्पञ्चविधानि ॥ तत्ररुचकानिचेतिचकाराद्वलयान्यपित्रुटन्तीतिबोद्धव्य म् । पाण्योःपार्श्वयुगेपृष्ठेवक्षोजठरपायुषु॥पादयोरपिचास्थीनिवलयानिविभाविरे४३३

अस्थियोंकी विशेषतासे भग्नोंकी विशेषता ॥

नासिका,कान,नेत्र तथा गुदाकी तरुणनामक कोमल हड्डियां टेढी होजाती हैं यही उनका भग्न होनाहै नाडियों के समान छिद्रवाली हड्डियां अन्य अस्थियों के घुसने से विदीर्ण होजातीहैं घुटने, नितम्ब,कन्धे,कपोल,तालु,कपालास्थि,वंक्षण तथा शिरकीकपालनामक हड्डी भिन्न होतीहैं और रुचक नामक दांतकी हड्डी तथा हाथ,पसली,पीठ,छाती,उदर,गुदा,पैरोंकी वलय नामकहड्डी टूटतीहैं ४३३॥

आदौभग्नंविदित्वातुसेचयेच्छीतलाम्बुना । पङ्केनालेपनङ्कार्यंबन्धनञ्चकुशान्वि तम्॥ अवनामितमुन्नह्येदुन्नतञ्चावपीडयेत् । अञ्चेदधःक्षिप्तमधोगतञ्चोपरिवर्त्तयेत् ॥ मधुकोदुम्बराश्वत्थकदम्बनिचुलत्वचः । वंशसर्ज्जार्ज्जुनानाञ्चकुशार्थमुपसंहरेत् ॥ प ठस्योपरिबध्नीयान्नगाढंशिथिलन्नच । सप्तसप्तदिनाच्छीतेघर्म्मेमुञ्चेत्त्र्यहात्त्र्यहा र ॥ मासान्तेपञ्चपञ्चाहाद्भग्नेदोषेवसेचनम् ॥ ४३४ ॥

भग्नकी चिकित्सा ॥

पहले भग्नको जानकर शीतल जलसे सींचै फिर काईसे लेपकरके कुशाके साथ बांधै दबीहुई को उभारे उभरीभई को दबावे और अधःक्षिप्त तथा अधोगत को खींचले महुवा, गूलर, पीपल, कदम्ब, बेंत,बांस,विजयसार तथा अर्जुन इनवृक्षोंकीछालबन्धनकेलियेल्यावै और कपडेसेऊपरलपेटके न बहु- त जोरसे न धीरेसे बांधै शीतकालमें सात दिनके उपरान्त और गरमीमें तीन दिनके उपरान्त बन्धन खोले यदि भग्न महीने भरका पूरा न होजाय तो उसको पांच २ दिन के बाद सींचै ॥ ४३४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आलेप ... ध्रुव ... डमास्तवतम् । शतधौतघृता ... ब्रह्म ... नम् ॥ स ... जातता आगन्तुश्वयथवः प्रशाम्यन्ति । पिष्टकलव ... काफलरसा ... आम्रातकजटाम्लीकाफलम्पत्राणिशिग्रुजम् ॥ मू ... मानस्यापिचकेम्बुकात् । सर्वैसंक्षुद्यतक्रेणकाञ्जिकेनतथैवच ॥ पाचयित्वा चरेच्छे ... पीडाप्रणश्यति । शोथश्चास्थिचशीघ्रेणसन्धानंयातिवैध्रुवम् ॥ न्यग्रोधादि कषायन्तुसु शीतम्परिषेचने । पञ्चमूलीकषायंसक्षीरन्दद्यात्सवेदने ॥ सुखोष्णमवचार्य्यंवाचक्रतैलं विजानता । अभिदाहिभिरन्नैश्चपिष्टकैःसमुपाचरेत् ॥ ग्लानिर्हिनहितातस्य सन्धिविश्ले षकारिका । मांसंमांसरसःक्षीरंसर्पिर्यूषःसतीनकः ॥ बृंहणञ्चान्नपानञ्चदेयंभग्नाय जानता गृष्टिक्षीरंससर्पिष्कंमधुरौषधसाधितम् ॥ शीतलंलाक्षयायुक्तंप्रातर्भग्नःपिबेन्नरः । सघृ तेनास्थिसंहारंलाक्षागोधूममर्जुनम् ॥ सन्धिमुक्तेऽस्थिसम्भग्नेपिबेत्क्षीरेणवापुनः । र सोनमधुलाक्षाज्यसिताकल्कंसमश्नता ॥ छिन्नभिन्नच्युतास्थीनांसन्धानमचिराद्भवेत् । चूर्णम्पुरणसंयोज्यघृतेनार्जुनलाक्षयोः ॥ भग्नःसन्धानमायातिक्षीरघृताशिना । मू लंश्रृगालविन्नायाःपीत्वामांसरसेनतु ॥ चूर्णीकृत्यत्रिसप्ताहादस्थिभग्नमरोहति । आभ चूर्णमधुयुतमस्थिभग्नस्त्र्यहम्पिबेत् ॥ पीतेचास्थिभवेत्सम्यग्वज्रसारनिभंदृढम् । अम्लीकाफलकल्कःसौवीरस्तैलमिश्रितःस्वेदात् ॥ भग्नाभिहतरुजाघ्नेरथचौषधचाति साधितश्वयथौ ॥ ४३५ ॥

मंजीठ तथा मुलेठी को पानी में पीसकर सौबार धोयेभये घी में मिलाके लेप करने से अथवा पीसे भये चावलों को सौबार धोयेभये घीमें मिलाकर लेप करने से चोट लगने से भये आगन्तुज शोथ शीघ्रही नष्ट होतेहैं चावल की पीठी सेंधानोन तथा इमलीके फल का रस इनके लेप करने से अथवा अमरेकीजड इमलीकेफल तथा पत्ते और सहँजन, गदापूरना, मानकेचू तथा केतकी की जड इन सबको कूचकर मट्ठे अथवा कांजीके साथ पाक करके लेप करनेसे पीडा तथा शोथका नाश होताहै और हड्डी जुड जातीहै पीडासहित भग्नरोगमें न्यग्रोधादिगणके शीतल काढे से दूधसहित पंचमूल के काढेसे अथवा कुछ गरम चक्र तेलसे सींचै अविदाही अन्न तथा पीठीके पदार्थ भग्नवालेको देवै इसे सन्धिभग्नज ग्लानि नष्ट होतीहै मांस,मांसरस,घी,दूध,मटरका यूष और धातुवर्द्धक अन्नपानभग्नवाले को देने चाहिये एक बार ब्याई भई गऊके दूधको मधुर औषधियों के द्वारा पाक करके शीतल हो जानेपर घी तथा लाख मिलाके भग्न रोगवाला प्रातःकाल पियै हरसिंघार,लाख,गेहूं तथा अर्जुन की छाल इनसब को घीके साथ अथवा दूध के साथ पान करने से सन्धिभग्न औ अस्थिभग्न का नाश होताहै लहसुन, शहद, लाख, घी तथा शक्कर इन सब को मिलाकर खाने से छिन्न भिन्न तथा च्युत हड्डियां शीघ्रही जुडजाती हैं अर्जुन की छाल तथा लाखके चूर्णको घी तथा गुग्गुलके साथ चाटके दूध और घीके आहार करनेवाले का भग्नरोग नष्ट होताहै पृष्टिपर्णी की जडके चूर्ण को मांस के रस के साथ पीने से तीन सप्ताह में अस्थिभग्न अच्छा होताहै बबूलकेचूर्णको शहदकेसाथ खानेसे तीनही दिन में हड्डी बज्रके समान दृढ होजातीहै इमली के फलको पीसकर तेल तथा सौवीर में मिलाके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...तोहै अथवा शोथ... पई ... स्वेद देने से ...है ॥ ४३५ ॥

...त्रिकट्वोषैःसर्व्वैरेतैःसमांशिकैः ॥ तुल्यंगुग्गुलुनायोज्य ...न्धिप्रसाध ... आभागुग्गुलुः ॥ ४३६ ॥

...,त्रिफला तथा त्रिकटु ये सब समभाग इनके बराबर गूगल मिलाके सेवन करने से भग्न अस्थि जुडजाती हैं इति आभागुग्गुल ॥ ४३६ ॥

लाक्षास्थिसंहृत्ककुभोऽश्वगन्धाचूर्णीकृतोनागबलापुरश्च । सम्भग्नमुक्तास्थिरुजन्निहन्यादंगानिकुर्यात्कुलिशोपमानि ॥ इति लाक्षाद्योगुग्गुलुः ॥ ४३७ ॥

लाख,हरसिंगार,अर्जुन, असगंध, गुलशकरी और गूगल इनसबको मिलाकर सेवन करने से टूटी भई हड्डी जुडकर वज्रके समान दृढ होजातीहैं इति लाक्षादिगुग्गुलु ॥ ४३७ ॥

रात्रौरात्रौतिलान्कृष्णान्वासयेदस्थिरेजले । दिवादिवाशोषयित्वागवांक्षीरेणभावयेत् ॥ तृतीयंसप्तरात्रन्तुभावयेन्मधुकाम्बुना । ततःक्षीरंपुनःपीताच्छुष्कान्सूक्ष्मान्विचूर्णयेत् ॥ काकोल्यादिश्वदंष्ट्राभ्याम्मञ्जिष्ठांसारिवान्तथा । कुष्टंसर्ज्जरसम्मांसींसुरदारुसचन्दनम् ॥ शतपुष्पाञ्चसञ्चूर्ण्यतिलचूर्णेनयोजयेत् । पीडनार्थंतुकर्त्तव्यंसर्व्वगन्धैःश्रृतम्पयः ॥ चतुर्गुणेनपयसातत्तैलम्पाचयेत्पुनः । यष्टीमंशुमतीपत्रंजीवन्तींतुरगन्तथा ॥ रोध्रंप्रपौण्डरीकञ्चतथाकालानुसार्य्यकम् । शैलेयंक्षीरशुक्लाञ्चअनन्तांसमधूलिकाम् ॥ पिष्ट्वाश्रृंगाटकञ्चैवप्रागुक्तान्यौषधानिच । एभिस्तद्विपचेत्तैलंशास्त्रविन्मृदुनाग्निना ॥ एतत्तैलंसदापथ्यंभग्नानांसर्व्वकर्म्मसु । आक्षेपकेपक्षघातेतालशोषेतथार्द्दिते ॥ मन्यास्तम्भेशिरोरोगेकर्णशूलेशिरोग्रहे । बाधिर्य्येतिमिरेचैवयेचस्त्रीषुक्षयंगताः ॥ पथ्यंपानेतथाभ्यंगेनस्येवस्तिषुभोजने । ग्रीवास्कन्धोरसांवृद्धिरेतेनैवप्रजायते ॥ मुखञ्चपद्मप्रतिमंसुसुगन्धिसमीरणम् । राजार्हमेतत्कर्त्तव्यंराज्ञामेवचिकित्सकैः ॥ तिलचूर्णसमन्तत्रमिलितंचूर्णमिष्यते । इति गन्धतैलम् ॥ ४३८ ॥

कालेतिलोंको वस्त्रमें बांधकर रात्रिके समय बहतेभये जलमें रक्खै और दिनमें सुखायले इस प्रकार सातदिनके अनन्तर गऊके दूधमें सातदिनतक भावनादे फिर सातदिनतक महुवेके काढे में भावनादे फिर गऊकेदूधमें भावनादेके सुखाके कूटले इसके उपरान्त काकोल्यादिगण, गोखरू, मँजीठ, गुलेसर, कूट, राल, जटामांसी, देवदारु, चन्दन तथा सौंफ इनसबके चूर्णके समान तिलोंका चूर्ण मिलाकर सम्पूर्ण सुगन्धित औषधोंकेद्वारा पाककियेभये दूधमें भिगोयके तलनिकालै फिर तेलसे चतुर्गुण दूध मिलाकर मुलेठी,शालिपर्णी, तेजपात, जीवन्ती, तगर,लोध, पुण्डरिया, पीतचन्दन,शिलाजीत, सफ़ेद भूकुम्हडा, गुलेसर, मरोडफली, सिंघाडा और पीछे कही भई औषध इनके द्वारा उस तेल को मन्दाग्नि में पकावै इस तेल के द्वारा भग्न, आक्षेपक, पक्षाघात, तालुशोष,अर्दित, मन्यास्तम्भ, शिरोरोग,कर्णशूल, हनुग्रह, बधिरता,तिमिर,नपुंसकता इन सब का नाश होता है यह पान अभ्यङ्ग नस्य वास्तिकर्म तथा भोजन में हितहै इसके सेवन से ग्रीवा, कंधे तथा छाती की वृद्धि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होतीहै मुख ... दुर्गन्धि आने लगतीहै ... वेद्या
के निमित्त ... इति ... ॥ ४३८ ॥

प्रथमेवर्ष ... मासात्सन्धिःस्थिरो भवेत् । मध्यमेद्विगुणात्कालादे ... र्णा
त्तथा ॥ नैति ... कथथा भग्नंतथायत्नेनरक्षयेत् । पक्वंहिस्यात्शिरास्नायुताद्धकृच्छ्र ...
ति ॥ पतनादभिघाताद्वास्तनभग्नंयदक्षतम् । शीतानूसेकानूप्रदेहांश्चभिषक्तत्र ...
चारयेत् ॥ सव्रणस्यतुभग्नस्यव्रणंसर्पिर्म्मधूत्तरैः । प्रतिसार्य्यकषायैश्चशेषंभग्नवदाच
रेत्॥वातव्याधिविनिर्द्दिष्टानूस्नेहांस्तत्रापियोजयेत् । लवणङ्कटुकक्षारमम्लमथ्याममैथुन
म् ॥ व्यायामञ्चनसेवेतभग्नोरूक्षान्नमेवच । भग्नसन्धिमनाविद्धमहीनांगमनुल्वणम् ॥
सुखचेष्टाप्रचारञ्चसम्यक्सन्धितमादिशेत् । इति भग्ननिदानचिकित्साधिकारः ४३९

बाला अवस्थामें भया भग्न एकमहीने में, युवावस्था में भया भग्न दो महीनेमें, वृद्धावस्थामें भया भग्न तीन महीने में जुडताहै ऐसा यत्न करै कि भग्न पकने न पावै क्योंकि शिरा और स्नायु क पक जाने पर भग्न कष्टसाध्य होजाता है गिरने से अथवा चोट लगने से जो क्षत रहित भग्न होता है उस में शीतल परिषेक और लेप करना चाहिये व्रणसहित भग्न में घी तथा शहद युक्त काथों के द्वारा व्रण को शुद्ध करके भग्न की चिकित्सा करै वातव्याधि में कहे भये स्नेहोंका भी भग्न में प्रयोग करना चाहिये भग्नवाला लवण, कटु, क्षार, अम्ल तथा रूखी वस्तु परिश्रम मैथुन और व्यायामका त्याग करदे वेधरहित न घटी भई न बढ़ी भई और सुखपूर्वक चेष्टावाली भग्न सन्धिको अच्छे प्रकारसे जुडीभई जाननाचाहिये इति भग्ननिदानचिकित्साऽधिकार समाप्त ॥ ४३९ ॥

चतुर्थो भागः ॥

अथ नाडीव्रणाधिकारः ॥

तत्र नाडीव्रणस्यसंप्राप्तिपूर्व्विकांनिरुक्तिमाह ॥

यःशोथमाममितिपक्वमुपेक्षतेऽज्ञोयोवाव्रणंप्रचुरपूयमसाधुवृत्तः । अभ्यन्तरंप्रविशति प्रविदार्य्यतस्यस्थानानिपूर्वविहितानिततःसपूयः ॥ तस्यातिमात्रगमनाद्गतिरिष्यतेतु नाडीवयद्वहतितेनमताचनाडी । उपेक्षतेतस्यशोथस्यमुखंनकारयतियोवाअयमामइति मत्वापक्वंव्रणंचोपेक्षते । शोधनैर्नशोधयतिप्रचुरपूयमितिशोथस्यव्रणस्यापिविशेषणम् । असाधुवृत्तःअहिताहारविहारः सपूयःततस्तदनन्तरम् । तस्यपूर्व्वविहितानिस्थानानि सुश्रुतोक्तानि त्वङ्मांसशिरास्नायुसन्ध्यस्थिकोष्ठमर्म्माणिप्रविदार्य्यसच्छिद्राणिकृत्वा अ भ्यन्तरंप्रविशति।तस्यपूयस्यातिमात्रगमनादभ्यन्तरेदूरप्रवेशाद्गतिरिष्यतेसर्वदास्रा वइष्यते । इतिसंप्राप्तिः । (अथ निरुक्तिः) अयंव्रणोनाडीवत्सरन्ध्रनलादिनाडीवयद्दे तोर्वहतितेननाडीमता ॥ ४४० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चतुर्थभाग ॥

नाड़ीव्रणका अधिकार ॥

नाडीव्रणकी सम्प्राप्तिपूर्वक निरुक्ति ॥

जो अज्ञान मनुष्य पके भये शोथ को कच्चा जानकर नहीं चिरवाताहै अथवा जो पके भये बहुत पीपवाले व्रणको शुद्ध नहीं करताहै और अहित आहार विहार करताहै उसका वह पीप.त्वचा,मांस, शिरा,स्नायु,सन्धि,अस्थि,कोष्ठ तथा मर्म्मस्थानको छिद्रयुक्त करता भया भीतर प्रवेश करताहै और उसके भीतर बहुत दूर तक चले जाने से सदा पीप बहा करता है छिद्रसहित नल आदि की नाडी के समान यह बहा करता है इसलिये इस को नाडिव्रण कहतेहैं ॥ ४४० ॥

अस्यादोषानुबन्धनसंख्यामाह ॥

दोषैस्त्रिभिर्भवतिसापृथगेकशश्चसंमूर्च्छितैरपिचशल्यनिमित्ततोऽन्या ॥ ४४१ ॥

नाडीव्रण की संख्या ॥

नाडीव्रण पांच प्रकार का होता है जैसे वातज, पित्तज, कफज,सन्निपातज और शल्यज ॥४४१॥

तत्र वातजांनाडीमाह ॥

तत्रानिलात्परुषसूक्ष्ममुखीसशूलाफेनानुविद्धमधिकंस्त्रवतिक्षपासु ॥ ४४२ ॥

वातज नाडीव्रण के लक्षण ॥

वातज नाडीव्रण. कर्कश, छोटे मुखवाला तथा पीडायुक्त होताहै इससे रात्रिके समय फेन सहित बहुत पीप बहता है ॥ ४४२ ॥

अथ पित्तजमाह ॥

पित्तात्तुतृड्ज्वरकरीपरिदाहयुक्तापीतंस्रवत्यधिकमुष्णमहःसुचापि ॥ ४४३ ॥

पित्तज नाडीव्रणका लक्षण ॥

पित्तज नाडिव्रण में तृषा, ज्वर तथा दाह होता है और दिन में पीला तथा उष्ण पीप बहुत निकलता है ॥ ४४३ ॥

अथ कफजमाह ॥

ज्ञेयाकफाद्बहुघनांसितपिच्छिलास्त्रंस्तब्धासकण्डुरुजारजनीप्रवृद्धा। सितपिच्छिलास्रं असंरक्तंतच्चोपलक्षणंपूयादिश्चबोद्धव्यः॥सकण्डुकरुजाकण्डूप्रधानवेदनायुक्ता ४४४॥

कफज नाडीव्रणके लक्षण ॥

कफज नाडीव्रणसे बहुत गाढा श्वेत तथा पिच्छिल पीप आदि बहताहै यह कठोर खुजली आदि पीड़ायुक्त और रात्रि में बढ़नेवाला होताहै ॥ ४४४ ॥

अथ त्रिदोषजमाह ॥

दाहज्वरश्वसनमूर्च्छनवक्त्रशोषायस्यांभवन्त्यभिहितानिचलक्षणानि। तामादिशेत्प वनपित्तकफप्रकोपाद्घोरामसुक्षयकरीमिवकालरात्रिम् ॥ कालरात्रिंयमरात्रिमिव । अ सुक्षयकरींमारिकाम् ॥ ४४५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सा... ...द्वज नाडीवृण के लक्षण ॥

सन्निपात... ...म दाह,ज्वर,श्वास,मूर्च्छा, मुख का सूखना और पहले कहे... तीनों दोषों के ... होतेहैं यह कालरात्रि के समान भयंकर और प्राणनाशक ... ॥

अथ शल्यनिमित्तान्याह ॥

नष्टंकथञ्चिदनुमार्गमुदीरितेषु स्थानेषुशल्यमचिरेणगतिङ्करोति।साफेनिलंमथितमुष्णमसृग्विमिश्रंस्रावंकरोतिसहसासरुजञ्चनित्यम् ॥ उदीरितेषुस्थानेषुत्वङ्मांसादिषु कथञ्चिन्नष्टमदृश्यमानशल्यम् ॥ किंविशिष्टमनुमार्गमतएवादृश्यमानम् । सोगतिः अचिरेणशीघ्रंस्रावंकरोति । साशल्यनिमित्तानाडी । मथितंमथितमिवस्रावंकरोतिस्रावश्चप्रसारणाकुञ्चनादौशल्यसञ्चलनेनभवति ॥ ४४६ ॥

शल्यजनाडीव्रणके लक्षण ॥

विपथगामी शल्य. त्वचा, मांस आदि में जाताभया अदृश्यरूप से स्थित होकर शीघ्रही नाडीव्रण को उत्पन्न करताहै इसे शल्यज नाडीव्रण कहतेहैं इससे सदैव फेनायुक्त मथा हुआसा उष्णरुधिर युक्त तथा पीडासहित स्रावफैलाने तथा सिकोडनेआदिमेंशल्यके चलायमान होनेसे होतेहैं ॥ ४४६ ॥

अथासाध्यांकष्टसाध्याञ्चाह ॥

नाडीत्रिदोषप्रभवानसिध्येदन्याश्चतस्रः खलुयत्नसाध्याः ॥ ४४७ ॥

नाडीव्रण असाध्य तथा यत्नसाध्य लक्षण ॥

सन्निपात नाडीव्रण असाध्य होताहै और अन्य नाडीवृण यत्नसाध्य होतेहैं ॥ ४४७ ॥

अथ नाडीव्रणस्यचिकित्सामाह ॥

तत्रानिलोत्थामुपनाह्यपूर्वमशेषतःपूयगतिंविदार्य । फलैरपामार्गभवैःसुपिष्टैःससैन्धवैःसंपरिपूर्यबन्धेत्॥प्रक्षालनेवापिसदाव्रणस्ययोज्यंमहद्यत्खलुपञ्चमूलम् ॥ ४४८ ॥

नाडीवृण की चिकित्सा ॥

वातज नाडीव्रणमें पहले उपनाह करके फिर सम्पूर्ण नाडीको विदीर्णकरै इसके उपरान्त लटजीरे के फलोंको पीसकर और सेंधानोन मिलायके व्रणमें भरदे और बांधदे और बडे पंचमूल के काढ़े से सदैव व्रणको धोवे ॥ ४४८ ॥

हिंस्रांहरिद्रांकटुकांवचाञ्चगोजिह्विकाञ्चापिसबिल्वमूलम् । संहत्यतैलंविपचेद्व्रणस्यसंशोधनंपूरणरोपणञ्च ॥ इति हिंस्राद्यंतैलम् ॥ ४४९ ॥

हिंस्रा,हल्दी,कुटकी,बच,गोभी. और बेलकीजड इनके द्वारा पाककियाभया तेल व्रणको शुद्धकरता है और भरकर पूर्ण करताहै इति हिंस्रादितैल ॥ ४४९ ॥

पित्तात्मिकांप्रागुपनाह्यधीमानुत्कारिकाभिःसपयोघृताभिः । निपात्यशस्त्रंतिलनागदन्तीमञ्जिष्ठकल्कैः परिपूरयेच्च॥प्रक्षालनेचापिहरिद्रसोमनिम्बाःप्रयोज्याःकुशलेननित्यम्। श्यामात्रिभण्डीत्रिफलासुसिद्धंहरिद्रयातिल्वकवृक्षकेण॥ घृतंसदुग्धंव्रणतर्पणेनहन्यान्नाडींकोष्ठगतापियास्या॥दितिश्यामाघृतम् ॥ ४५० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...में पहले दूध तथा ... सहित लेईकी पुलटिस लगा... द्वारा ... तिल,नाग-
...जीठ के कल्कसे व्रणको भरके बांधदे और हल्दी,मोम तै... घावको नि-
त्य ... सफेद निसोथ, त्रिफला, हल्दी, लोध तथा कुरय्या इ... द्वारा दुग्धसहित
... घीको पाककरके सेवन करनेसे कोष्ठमें भयाभी नाडीव्रण नष्ट होताहै इति श्यामाघृत ४५०॥

नाडीं कफोत्थामुपनाह्यपूर्वंकुलत्थसिद्धार्थकसक्तुबिल्वैः । मृदूकृतामेकगतिंविदित्वा निपातयेच्छस्त्रमशेषकारि ॥ दद्याद्व्रणेनिम्बतिलाग्निदन्तीसुराष्ट्रजाःसैन्धवसंप्रयुक्ताः । प्रक्षालने चापि करञ्जनिम्बजात्यर्कपीलुस्वरसाःप्रयोज्याः ॥ ४५१ ॥

कफज नाडीव्रण में पहले कुल्थी,सरसों,सत्तू तथा बेलके द्वारा पुलटिस लगाकर व्रणको कोमल करे फिर शस्त्र के द्वारा नाडीको चीरकर नीम, तिल, चीता, दन्ती, सोरठी मिट्टी तथा सेंधानोन इन सबको व्रणमें भरकेबांधे और करंजुवा,नीम,चमेली,आक तथा पीलूकेरससे घावको धोयाकरै॥४५१॥

स्वर्जिजकासिन्धुदन्त्यग्नियूथिकाजलनीलिका । खरमञ्जरिबीजेषुतैलंगोमूत्रसाधितम् ॥ दुष्टव्रणप्रशमनंकफनाडीव्रणापहम् । स्वर्जिकाद्यंतैलम् ॥ ४५२ ॥

सज्जी, सेंधानोन, दन्ती, चीता, जूही, सिवार तथा लटजीरेके बीज इनके द्वारा गोमूत्र के साथ पाक कियाभया तेल दुष्टव्रण और कफज नाडीव्रणको नष्ट करताहै इति स्वर्जिकादितैल ॥ ४५२॥

सैन्धवार्कमरिचज्वलनाख्यैर्म्मार्कवेणरजनीद्वयसिद्धम् । तैलमेतदचिरेणनिहन्याद्दूरगामपिकफानिलनाडीम् ॥ इति सैन्धवाद्यंतैलम् ॥ ४५३ ॥

सेंधानोन,आक,मिर्च,चीता,भंगरा,हल्दी तथा दारुहल्दी इनके द्वारा पाक कियाभया तेल कफज तथा वातज दूरगामी नाडीव्रणको शीघ्रही नष्ट करताहै इति सैंधवादि तैल ॥ ४५३ ॥

नाडींतुशल्यप्रभवांविदार्यनिष्कास्यशल्यंप्रविशोध्यमार्गम् । बन्धेद्व्रणंक्षौद्रघृतप्रगाढंनिम्बांस्तिलान्मोध्यवरोपयेच्च ॥ ४५४ ॥

शल्यज नाडीव्रणको चिरवाकर शल्य निकलवावै फिर घावको शुद्धकरके नीम तथा तिलोंको पीसके अधिक घी तथा शहद मिलाकर घावमें भरके बांधै ॥ ४५४ ॥

कुम्भीकखर्ज्जूरकपित्थबिल्ववनस्पतीनाञ्चशलाटुवर्गे । कृत्वाकषायंविपचेत्तुतैलमावाप्यमुस्तंसरलंप्रियंगुम् ॥ सौगन्धिकंमोचरसाहिपुष्पंलोध्राणिदत्वाखलुधातकीञ्च । एतेनशल्यप्रभवाहिनाडीरोहेद्व्रणेवासुखमाशुचैव इति कुम्भिकाद्यंतैलम् ॥ ४५५ ॥

जलकुम्भी,खजूर,कैथा,बेल और बर्गद आदिके कोमलफल इनके काढेके साथ मोथा, सरलकाष्ठ, प्रियंगु, रसौत, मोचरस, नागकेसर,लोध और धवईके फल इनके द्वारा पाक किया भया तेल शल्यजनाडीव्रणको नष्ट करताहै इति कुम्भिकादि तैल ॥ ४५५ ॥

स्नुह्यर्कदुग्धदार्व्वीणांवर्तिंकृत्वाप्रपूरयेत् । एषसर्वशरीरस्थांनाडींहन्यात्प्रयोगराट् ॥ आरग्वधनिशाकालाचूर्णाज्यक्षौद्रसंयुता । सूत्रवर्तिर्व्रणेयोज्याशोधिनीगतिनाशिनी ॥ दुष्टव्रणेयद्विहितंतुतैलंतत्सेव्यमानंवर्तीकृतंमाक्षिकसंप्रयुक्तंनाडीघ्नमुक्तंलवणोत्तमंवा । वर्तिःकृताः ... जात्यर्कसंपाककरञ्जदन्तीसिन्धूत्थसौवर्च्चलयावशूकैः । वर्तिःकृताः गतिमाशुहन्ति ॥ जात्यर्कसंपाककरञ्जदन्तीसिन्धूत्थसौवर्च्चलयावशूकैः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हन्त्यचिर... ...ष्टातुसचित्रकेण ॥ बिभीतकाम्रास्थिवट... ...ञ्जिनिबीजमि... ...राहविट्सूक्ष्ममषीप्रदेयानाडीषुतैलेनाविमिश्रयित्वा ... षीतुम्ब्याकटुतैलस्वपाचितम् । नाडीव्रणंचिरोद्भूतंजयेत्तुतैलसङ्गमात् ॥ ४५६ ॥

थूहर तथा आकका दूध और दारुहल्दी इन के द्वारा बनाई भई बत्ती रखने से सम्पूर्ण शरीर में भये नाडीव्रणको भी दूर करती है अमलतास, हल्दी तथा नील इनके चूर्ण को घी शहद तथा गोमूत्र में मिलाकर बनाई भई बत्ती के रखने से व्रण शुद्ध होताहै और पीप बहना बंद होजाताहै सेंधानोन को शहद में मिलाकर बनाई भई बत्ती नाडीव्रणको नष्ट करती है दुष्टव्रणों में कहे भये तेलोंके सेवन से पीब बहना बंद होताहै चमेली,आक,अमलतास,करंजुवा,जमालगोटे की जड, सेंधानोन,सोंचरनोन,जवाखार तथा चीता इनसबको पीसकर थूहरके दूधमें बत्ती बनावै इससे नाडीव्रणका शीघ्रही नाश होताहै बहेडा,आमकी बि..ली, बरगदकी दाढी,रेणुका तथा शङ्खाहूली के बीज इनको सूकर की महीन पीसी भई बीटमें मिलाकर तेलमें मिलावै इसके प्रयोग से नाड़ीव्रणका नाश होताहै मेढेके रोमोंका काजल तथा लौकीकेद्वारा पाककियेभये कडूतेलको रुईकेसाथ लगाने से बहुत पुराना नाड़ीव्रण भी नष्ट होताहै ॥ ४५६ ॥

कर्चूरकस्यस्वरसेकटुतैलंविपाचयेत् । सिन्दूरकल्कितंनाडीदुष्टव्रणविसर्प्पनुत् ॥ कर्चूरकरसेतैलंपुरसिन्दूरकल्कितम् । पामादुष्टव्रणंनाडीहन्यात्सर्वव्रणान्तकृत् । इति कर्चूरतैलम् ॥ ४५७ ॥

कचूरके रसके साथ सिन्दूर छोड़कर पाककियाभया कड़ूतेल.नाड़ीव्रण, दुष्टव्रण तथा विसर्पको नष्ट करताहै गूगुल तथा सिन्दूरके द्वारा कचूरके रसके साथ पाककियाभया तेल.खुजली, दुष्टव्रण, तथा नाड़ीव्रणादि सम्पूर्ण व्रणोंको नष्ट करताहै इति कचूरतैल ॥ ४५७ ॥

भल्लातकार्कमरिचैर्लवणोत्तमेनसिद्धंविडङ्गरजनीद्वयचित्रकैश्च । स्यान्मार्कवस्यचरसेननिहन्तितैलंनाडींकफानिलकृतामपचींव्रणांश्च । भल्लातकाद्यंतैलम् ॥ ४५८ ॥

भिलावां, आक,मिर्च,सेंधानोन,बायबिड़ंग,हल्दी,दारुहल्दी,चीता इनके द्वारा भंगरेके रसके साथ पाक कियाभया तेल नाड़ीव्रण, कफ तथा वातजनित अपची और अन्य व्रणोंको नष्ट करता है इति भल्लातकादि तैल ॥ ४५८ ॥

स्वर्जिकासैन्धवंदन्तीनीलीमूलंफलंतथा । मूत्रेचतुर्गुणेसिद्धंतैलंनाडीव्रणापहम् ॥ स्वर्जिकाद्यंतैलम् ॥ ४५९ ॥

सज्जी, सेंधानोन, जमालगोटेकीजड़, नीलकीजड़ तथा फल इनके द्वारा चौगुने गोमूत्रके साथ पाक कियाभया तेल नाड़ीव्रणको दूर करता है इति स्वर्जिकादि तैल ॥ ४५९ ॥

सर्व्वोव्रणक्रमःकार्य्यःशोधनारोपणादिकः ॥ ४६० ॥

नाड़ीव्रण में व्रणाऽधिकारमें कहाभया शोधन रोपणका सब क्रम करना चाहिये ॥ ४६० ॥

गुग्गुलुत्रिफलाव्योषैःसमांशैराज्ययोजितैः। अक्षप्रमाणांगुटिकांखादेदेकामतन्द्रितः॥ नाडीदुष्टव्रणंशूलमुदावर्त्तभगन्दरम् । गुल्मञ्चगुदजान्हन्यात्पक्षिराड्पन्नगानिव ॥ स त्रांगगुग्गुलुः ॥ ४६१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

... तथा त्रिकटु इन सब औषधोंको समभाग लेक... भरकी गोल ...लीके खानेसे नाडीव्रण, दुष्टव्रण, शूल, उदावर्त्त, भगन्दर, गुल्म तथा ...वासीर का नाश है ... गुग्गुलु ॥ ४६१ ॥

याद्विव्रणीयेविहितास्तुवर्त्त्यस्ताःसर्वनाडीषुभिषग्विदध्यात् ॥ ४६२॥

द्विव्रणीय अध्यायमें जो बत्ती कहीगईहै वो सम्पूर्ण नाडीव्रणोंमें भी प्रयोग करनी चाहिये४६२॥

कृशदुर्बलभीरूणांनाडीमर्म्माश्रितामपि । क्षारसूत्रेणतांछिन्द्यान्नशस्त्रेणकदाचन ॥ एषण्यागतिमन्विष्यक्षारसूत्रानुसारिणीम् । सूचींविदध्यादत्यन्तेप्रोन्नाम्याशुविनिर्हरेत् ॥ सूत्रस्यान्तंसमानीयगाढंबन्धनमाचरेत् । ततःक्षारबलंवीक्ष्यसूत्रमन्यत्प्रवेशयेत् ॥ क्षारक्तंमतिमान्वैद्योयावन्नच्छिद्यतेगतिः । भगन्दरेष्वेवविधिःकार्य्योवैद्येनजानता ॥ अर्बुदादिषुचोत्क्षिप्यमूलेसूत्रंनिधापयेत् ॥ सूचीभिर्यववक्त्राभिराचितंवासमन्ततः ॥ मूलेसूत्रेणबध्नीयाच्छिन्नेचोपचरेद्व्रणम् ॥ इति नाडीव्रणरोगनिदानचिकित्साधिकारः४६३

कृश, दुर्बलतथाभयशील मनुष्योंका नाडीव्रण और मर्ममेंभया नाडीव्रण क्षारसूत्रसे छेदनकरना चाहिये इनमें शस्त्रकाप्रयोगकदापि न करै एषणी सलाईके द्वारा व्रणकीगतिकोजानकर क्षारसूत्रमें पिरोईभई सुईकोव्रणके एक ओरसे प्रविष्टकरके दूसरी ओरसे कुछ उठाकर शीघ्रनिकाललै फिर उसी क्षारसूत्रसे गाढबन्धन करै इसके उपरांत क्षारके बलको देखकर फिर दूसरीबार क्षारसूत्रको प्रविष्टकरै जबतक छेदन न होजाय तबतक इसी प्रकार करता रहै ज्ञाता वैद्य भगन्दररोग में भी इसी प्रकार करै अर्बुदादिकों में भी खींचकर उनके मूल में क्षारसूत्र बांधे अथवा जौके समान मुखवाली सूजियों के द्वारा सब ओरसे व्याप्त करै मूलमें क्षारसूत्र बांधकर छेदन होजाने पर व्रणकी चिकित्साकरै इति नाडीव्रणनिदानचिकित्साऽधिकारसमाप्त॥ ४६३॥

अथ भगन्दरस्यपूर्वरूपसहितंस्वरूपमाह ॥

कटीकपालनिस्तोददाहकण्डूरुजादयः । भवन्तिपूर्वरूपाणिभविष्यतिभगन्दरे ॥ गुदस्यद्व्यंगुलेक्षेत्रेपार्श्वतःपिडिकार्त्तिकृत् ॥ भिन्नोभगन्दरोज्ञेयःसचपञ्चविधोभवेत् ॥ आर्त्तिकृत्पीडाकृत् । पञ्चविधः वातिकपैत्तिकश्लैष्मिकसान्निपातिकशल्यजभेदैः ॥ ४६४ ॥

भगन्दरका अधिकार भगन्दरका पूर्वरूपसहित लक्षण

भगन्दर होनेकेपहले कमरमें तथा कपालमें सूजीगडनेकीसी पीडा दाह, खुजली तथा पीडा आदि होतेहैं गुदाके एक ओर दो अंगुलकी जगहमें पीडायुक्त फटीभई पीडिका होती है उसे भगन्दर कहते हैं भगन्दर पांचप्रकार काहै जैसे वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज तथा शल्यज ॥ ४६४ ॥

अथ भगन्दरशब्दस्यनिरुक्तिमाहभोजः ॥

भगम्परिसमन्ताच्चगुदंवस्तिंततथैवच । भगवद्दारयेद्यस्मात्तस्मादेषभगन्दरः ॥ भजन्त्यनेनेतिभगोमेहनम् । भजन्त्यस्मिन्निति भगंयोनिः ॥ अत्र भगशब्देनद्वयमपिकथ्यते । भगवत्योनिवत् ॥ ४६५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भगन्दरशब्दकी निरुक्ति ॥

(भगलिंग) ... गुदा तथा वस्तिके सब ओर योनिके समान विदीर्ण करताहै ... भगन्दर कहतेहैं ॥ ४६५॥

अथ वातिकंशतपोनकसंज्ञंभगन्दरमाह ॥

कषायरूक्षैरतिकोपितोऽनिलस्त्वपानदेशेपिडिकांकरोतिया । उपेक्षणाद्यातमुपैति दारुणंरुजाचभिन्नारुणफेनवाहिनी ॥ तत्रागमोमूत्रपुरीषरेतसांव्रणैरनेकैःशतपोनकं वदेत् । दारुणमतिदारुणरुक् ॥ व्रणैरनेकैः सूक्ष्ममुखैः । शतपोनकंशतपोनकश्चा लनीतत्तुल्यम् ॥ ४६६ ॥

वातजशतपोनकनाम भगन्दरके लक्षण ॥

कषाय तथा रूखी वस्तुओंके सेवनसे अत्यन्त कुपित वायु गुदामें पिड़िकाको उत्पन्न करतीहै यह पिड़िका उपेक्षाकरनेसे अत्यन्त पीडासहित पकजाती है और इसके फटजाने पर रक्तवर्ण, फेनसहित स्राव होताहै और इससे मूत्र, मल तथा वीर्य निकलताहै इसमें शतपोनक चलनी के समान छिद्रहोते हैं इसलिये इसे शतपोनक कहतेहैं ॥ ४६६ ॥

अथ पैत्तिकमुष्ट्रग्रीवसंज्ञमाह ॥

प्रकोपणैःपित्तमतिप्रकोपितंकरोतिरक्तांपिडिकांगुदेगताम् । तदाशुपाकांहिमपूतिवा हिनींभगन्दरंचोष्ट्रशिरोधरंवदेत् ॥ आशुपाकांहिमपूतिवाहिनींशीघ्रपाकामुष्णदुर्गन्धवा हिनींच । तदाभगन्दरमुष्ट्रशिरोधरंवदेत् ॥ उष्ट्रग्रीवसंज्ञाचपिडिकागलेनवक्रतयोष्ट्रग्री वकत्वेन ॥ ४६७ ॥

पित्तजउष्ट्रग्रीवनामक भगन्दरके लक्षण ॥

पित्तकारी वस्तुओंके द्वारा अत्यन्त कुपित पित्त गुदामें रक्तवर्ण पिड़िकाको उत्पन्न करता है यह पिड़िका शीघ्र पकनेवाली होतीहै और उससे दुर्गन्धयुक्त उष्ण पीपबहताहै पिड़िकाके वक्रहोने के कारणसे इसे उष्ट्रग्रीव कहतेहैं ॥ ४६७ ॥

अथ श्लैष्मिकंपरिस्राविसंज्ञमाह ॥

कण्डूयनोघनस्रावीकठिनोमंदवेदनः । श्वेतावभासःकफजःपरिस्रावीभगन्दरः ॥ क ठिनःपिडिकावस्थायाम् । परिस्रावीनिरन्तरस्रावशीलः ॥ ४६८ ॥

कफजपरिस्राविनाम भगन्दरके लक्षण ॥

कफजभगन्दर की पिड़िका कठिन थोड़ी पीडावाली खुजलीयुक्त तथा श्वेतवर्ण होतीहै इससे घ- नापीप बहताहै यह निरन्तर बहतीहै इससे इसे परिस्रावि कहतेहैं ॥ ४६८ ॥

अथ सान्निपातिकशम्बूकावर्त्तसंज्ञमाह ॥

बहुवर्णरुजास्रावापिडिकागोस्तनोपमा ॥ शम्बूकावर्त्तगतिकःशम्बूकावर्त्तकोमतः ॥ बहुवर्णरुजास्रावाबहुशब्दोवर्णादिभिःप्रत्येकंसम्बध्यतेगतिस्रावमार्गः ॥ ४६९ ॥

सन्निपातजशम्बूकावर्त्तनामक भगन्दरके लक्षण ॥

सन्निपातज भगन्दर में गऊके थनके समान आकृतिवाली और अनेक प्रकारके वर्ण पीड़ा तथा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...होताहै इसके ...पबहनेका मार्ग घोंघेके समान होताहै ... शम्बूकावर्त्त ...है॥

अथ शल्यजमुन्मार्गिसंज्ञमाह ॥

...यग...विवर्द्धतेह्युपेक्षणात्स्युःकृमयोविदार्य्यते । प्रकु...मार्गमनेकधा मु...स्तमुन्मार्गंभगन्दरंवदेत् ॥ क्षतात्तुकण्टकादिना । नखेनकण्डूयनादिनावाऽभिघातात् ॥ गतिःस्रावःउन्मार्गिभगन्दरम् ॥ एतस्यातिर्य्यक्कृतमार्गैःपुरीषादिनिर्गमादुन्मार्गिसंज्ञम् ॥ ४७० ॥

शल्यज उन्मार्गीनाम भगन्दरके लक्षण ॥

गुदामें कांटेआदि से अथवा नखके द्वारा घाव होकर जो स्राव होताहै वह उपेक्षा करने से बढ़ जाताहै और उसमें कीडे पडजाते हैं वे कीडे मांसको विदीर्ण करके अनेक मुखवाले व्रणको उत्पन्न करते हैं इसमें तिर्छे मार्गों से मलआदि निकलताहै इससे इसको उन्मार्गी भगन्दर कहतेहैं ४७०॥

कष्टसाध्यमसाध्यञ्चाह ॥

घोराःसाधयितुंदुःखाःसर्वएवभगन्दराः । तेष्वसाध्यास्त्रिदोषोत्थःक्षतजश्चविशेषतः ॥ वातमूत्रपुरीषाणिशुक्रञ्चकृमयस्तथा । भगन्दरात्स्रवन्तस्तुनाशयन्तितमातुरम् ४७१ ॥

कष्टसाध्य और असाध्य भगन्दरके लक्षण ॥

सबप्रकारके भगन्दर भयंकर और कष्टसाध्य होते हैं इनमें से सन्निपातज तथा क्षतज भगन्दर विशेष करके असाध्य होतेहैं और जिस भगन्दर से वायु, मूत्र, मल, वीर्य्य तथा कीडे निकलते हैं वो असाध्य हैं ॥ ४७१ ॥

भगन्दरस्यचिकित्सामाह ॥

अथास्यपिडिकामेवतथायत्नादुपाचरेत् । शुध्यस्रस्रुतिसेकाद्यैर्यथापाकंनगच्छति ॥ वटपत्रेष्टकाशुण्ठीसगुडूचीपुनर्नवाः । सुपिष्टःपिडिकावस्थेलेपःशस्तोभगन्दरे ॥ पिडिकानामपक्वानामपतर्पणपूर्वकम् । कर्म्मकुर्य्याद्विरेकान्तंभिन्नानांवक्ष्यतेक्रिया ॥ एषणीपाटनक्षारवह्निदाहादिकंक्रमम् । विधायव्रणवत्कार्य्यंयथादोषंयथाक्रमम् ॥ पयःपिष्टैस्तिलारिष्टमधुकैश्चसुशीतलैः । भगन्दरेप्रशस्तोऽयंसरक्तेवेदनावति ॥ सुमनावटपत्राणिगुडूचीविश्वभेषजम् । ससैन्धवःतक्रपिष्टोलेपोहन्तिभगन्दरम् ॥ त्रिवृत्तिलानागदन्तीमाञ्जिष्ठासहसर्पिषा । उत्सादनंभवेदेतत्सैन्धवक्षौद्रसंयुताम् ॥ खदिराम्बुरतोभूत्वाकषायंत्रैफलंपिबेत् । महिषाक्षविडंगानांभगन्दरविनाशनम् ॥ शम्बूकमांसंभुञ्जीतप्रकारैर्व्यञ्जनादिभिः । अजीर्णवर्ज्जीमासेनमुच्यतेतुभगन्दरात् । न्यग्रोधादिर्गणोयस्तुहितःशोधनरोपणः॥ तैलंघृतंवातत्पक्वंभगन्दरविनाशनम् । तिलाज्योतिष्मतीकुष्ठंलाङ्गलीगिरिकर्णिका॥ शताङ्काःत्रिवृतादन्त्यःशोधनाश्चभगन्दरे । तिलाभयालोध्रमरिष्टपत्रंनिशेत्रलालोध्रमगारधूमम् ॥ भगन्दरेचाप्युपदंशजेचदुष्टव्रणेरोपणशोधनाय ॥ ४७२ ॥

भगन्दरकी चिकित्सा ॥

भगन्दरकी पिडिकामेंही शुधि रक्तमोक्षण तथा परिषेकके द्वारा ऐसी चिकित्सा करै जिससे वह पकने न पावै भगन्दरमें बरगदके पत्ते, ईंट, सोठ, गिलोय तथा गदहपूरना इनको पीसकर पिडिका-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वस्थामेंही ले[illegible] पि[illegible] के न पकनेपर पहले अपने अपतर्प्पण फिर विरेचन पथ्य[illegible] क्रियाकरै पि[illegible] पककर फटजानेपर सलाई के द्वारा अनुसन्धान छेदन क्षार और [illegible] दाहादिक क्रिया [illegible]के दोषके अनुसार क्रमपूर्वक व्रणके समान चिकित्सा करे ति[illegible] तथा मुलेठीको दूधमें पीसकर रुधिर सहित पीड़ावाले भगन्दर में शीतल लेपकरै चमेली, बर[illegible] गिलोय, सोंठ तथा सेंधानोन इनसबको मट्ठेमें पीसकर लेपकरने से भगन्दरका नाश होताहै निसोथ, तिल, नागाहुली तथा मँजीठ इनसबको घी, शहद तथा सेंधानोन मिलाकर उबटनकरै कत्थेका क्वाथ, त्रिफलाका क्वाथ अथवा गूगुल तथा बायबिडंगका क्वाथ पीनेसे भगन्दर नष्टहोताहै घोंघेकामांस, शाककी रीतिसे महीने भरतक खाय और अजीर्ण न होनेपावै तो भगन्दर नष्टहोताहै न्यग्रोधादिगण व्रणकाशुद्ध करनेवाला तथा भरनेवाला होताहै इसलिये न्यग्रोधादिगणके द्वारा पाककियेभये तेल अथवा घीके सेवनसे भगन्दर नष्ट होताहै तिल, मालकांगनी, कूट, जलपिप्पली, विष्णुक्रान्ता, सौंफ, निसोथ, जमा-लगोटेकीजड़ ये सब भगन्दरके शुद्धकरनेवालेहैं तिल, हड़, लोध, नीमकीपत्ती, हल्दी, दारुहल्दी, बरियारा, लोध और गृहधूम ये सब दुष्टव्रण भगन्दर तथा उपदंशके भरनेवाले तथा शुद्ध करनेवाले हैं॥ ४७२ ॥

स्नुह्यर्कदुग्धदार्व्वीभिर्व्वर्तिंकृत्वाविचक्षणः । भगन्दरगतिंज्ञात्वापूरयेत्ताप्रयत्नतः ॥ एषासर्व्वशरीरस्थांनाडींहन्यान्नसंशयः । त्रिफलारससंयुक्तंबिडालास्थिप्रलेपनम् ॥ भगंदरंनिहन्त्याशुदुष्टव्रणहरंपरम् । त्रिवृज्ज्योतिष्मतीदन्तीकल्कोनाडीव्रणापहः ॥ ज्योतिष्मतीलांगलकीश्यामादन्तीत्रिवृत्तिला । कुष्ठंशताह्वागोलोमीवर्गःशोधनइष्यते ॥ मधुतैलयुतोविडंगसारत्रिफलामागधिकाकणाश्चलीढाः । कृमिकुष्ठभगन्दरप्रमेहान्क्षयनाडीव्रणरोपणाभवन्ति ॥ ४७३ ॥

थूहड़ तथा आकके दूधमें दारुहल्दी के चूर्णकी बत्ती बनाकर भरने से भगन्दर और सम्पूर्ण शरीर में भयेभी नाड़ीव्रणका नाश होताहै त्रिफलाके काढ़ेमें बिल्लीकी हड्डीका चूर्ण मिलाकर लेप करने से दुष्टव्रण तथा भगन्दरका नाश होताहै निसोथ, मालकांगनी और जमालगोटेकी जड़ इनका कल्क नाड़ीव्रणको नष्ट करताहै मालकांगनी, जलपिप्पली, श्यामा, जमालगोटेकीजड़, निसोथ, तिल, कूट, सौंफ तथा सफेद दूब ये सब औषध व्रणकी शुद्ध करनेवाली हैं बायबिडंग, सार, त्रिफला, पीपल, जीरा इनको शहद और तेलमें मिलाकर चाटने से कृमि, कुष्ठ, भगन्दर, प्रमेह, क्षय और नाड़ीव्रणका नाश होताहै ॥ ४७३ ॥

चित्रकार्कौत्रिवृत्पाठेमलयूहयमारकौ । सुधांवचांलांगलकींहरितालंसुवर्चिकाम् ॥ ज्योतिष्मतीञ्चसंहृत्यतैलंधीमान्विपाचयेत् । एतद्विष्यन्दनंनामतैलंदद्याद्भगन्दरे ॥ शोधनंरोपणंचैवसवर्णकरणंतथा । इति विष्यंदनतैलम् ॥ ४७४ ॥

चीता, आक, निसोथ, पाठा, कठियागूलर, कनेर, थूहड़, बच, जलपीपल, हरताल, शोरा और मालकांगनी इनके द्वारा पाक किया भया तेल भगन्दरको शुद्ध करताहै भरताहै और त्वचाके वर्णको समान करताहै इति विष्यन्दनतैल ॥ ४७४ ॥

निशार्कक्षीरसिन्धूत्थपुराश्वहयमारकैः । सिद्धमभ्यञ्जनंतैलंभगन्दरहरंपरमितिनिशाद्यंतैलम् ॥ ४७५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आकका दूध, सेंधानोन, गूगल, कनेर और कुरय्या इनसबके द्वारा पाककिये भये तेलके [illegible]न्दरका नाश होताहै इति निशाद्यतैल ॥ ४७५ ॥

[illegible]दंतीलांगलीलवणाग्निभिः । मातुलुंगकवत्साकैः पक्वं [illegible]लंभगंदरे ॥ [illegible]रवीरादितैलम् ॥ ४७६ ॥

कनेर, हल्दी, जमालगोटेकीजड, जलपीपल, चीता, बिजौरा, नींबू और कुरय्या इनकेद्वारा पाककिया भया तेल भगन्दरको नष्टकरताहै इति करवीरादितैल ॥ ४७६ ॥

त्रिफलापुरकृष्णानांत्रिपञ्चैकांशयोजिता । गुटिकाशोथगुल्मार्शोभगन्दरवताहिता ॥ नवकार्षिकोगुग्गुलुः ॥ ४७७ ॥

त्रिफला तीनअंश, गूगल पांचअंश और पीपल एकअंश इनसबके द्वारा बनीभईगोली शोथ गुल्म बवासीर तथा भगन्दरका नाश करतीहै इति नवकार्षिकगुग्गुलु ॥ ४७७ ॥

नाड्यन्तरेव्रणान्कुर्य्याद्भिषग्भिःशतपोनके । ततस्तेष्ववरूढेषुशेषानाडीरुपाचरेत् ॥ व्याधौतत्रबहुच्छिद्रेभिषजातुविजानता । अर्द्धलाङ्गलकश्छेदः कार्य्योलाङ्गलकोऽपिवा ॥ सर्व्वतोभद्रकोवापिकार्य्योगोतीर्थकोऽपिवा । द्वाभ्यांसमाभ्यांपार्श्वाभ्यांछेदोलाङ्गलकोमंतः ॥ ह्रस्वमेकतरंयत्तुसोऽर्द्धलांगलकःस्मृतः । सेवनींवर्ज्जयित्वातुचतुर्द्दादारितेगुदे ॥ सर्वतोभद्रकंछेदमाहुश्छेदविदोजनाः । पार्श्वादागतशस्त्रेणछेदोगोतीर्थकोमतः ॥ सर्वानास्रावमार्गांस्तुदहेद्वैद्यस्तथाग्निना ॥ ४७८ ॥

शतपोनक भगन्दर में नाडीके बीचमें व्रण करै फिर व्रणोंके पूर्ण होजानेपर शेष नाडीव्रणोंकी चिकित्साकरे अनेक छिद्रवाले इसरोगमें अर्द्धलांगलक, लांगलक, सर्वतोभद्र अथवा गोतीर्थक छेद करै दोनोंओर समभागवाले छेदको लांगल कहतेहैं एक ओर छोटे छेदको अर्द्धलांगल कहते हैं सीवनको छोडकर गुदाके चारोंओर कियेगये छेदको सर्वतोभद्र कहते हैं शस्त्र लगाकर एकओर कियेगये छेदको गोतीर्थिक कहतेहैं शतपोनकमें पीप बहने के सम्पूर्ण मार्गोंको अग्निके द्वारा जलायदे ४७८ ॥

अथोष्ट्रग्रीवमेषिण्याछित्वाक्षारंनिपातयेत्।पूतिमार्गंव्यपोहार्थमग्निरत्रतुपूजितः ४७९ ॥

उष्ट्रग्रीव भगन्दरमें सलाई के द्वारा छेदनकरके क्षारडालै और दुर्गंधित मार्ग के निवारणके लिये अग्निके द्वारा दाहभी हितहै ॥ ४७९ ॥

उत्कृत्यास्रावमार्गन्तुपरिस्राविनिबुद्धिमान् । क्षारेणास्रावितगतिंदहेद्धुतवहेनवा ॥ गतिमन्विष्यशस्त्रेणछिन्द्यात्खर्जूरपत्रिकम्। चन्द्रार्द्धचन्द्रवर्गञ्चसूचीमुखमवाङ्मुखम्॥ गतिमन्विष्य... येषान्तुशस्त्रपतनाद्वेदनाअतिजायते ॥ तत्रा छित्वाग्निनादहेत्सम्यगेवंक्षारेणवापुनः । शुतैलेनोष्णेनपरिषेकःप्रशस्यते ॥ ४८० ॥

परिस्रावीनाम भगन्दरमें बहने के मार्गको काटकर क्षारके द्वारा अथवा अग्निके द्वारा दाहकरै बहने के मार्गको जानकर शस्त्रके द्वारा खर्जूरपत्रिक, चन्द्रार्ध, चन्द्रवर्ग, सूचीमुख अथवा अवाङ्मुख छेद करके अग्नि अथवा क्षारके द्वारा दाह करै जिनके शस्त्र लगनेसे बहुत पीड़ा होतीहै उनके उष्ण तेलसे परिषेक करना चाहिये ॥ ४८० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आगन्तुजभिषग्नाडीशस्त्रेणोत्कृत्ययत्नतः । जंबोष्ठेनाग्निवर्णेनतप्तया ... शल... दहेद्यथोक्तम... त्रणंसुसमाहितः । व्यायामंमैथुनंयुद्धंपृष्ठयानंगुरूणि... परिहरेदुपरूढव्रणोनरः । इति भगन्दरनिदानचिकित्साधिकारः ॥ ४८१ ॥

शल्यज भगन्दरमें वैद्य यत्नपूर्वक शस्त्रद्वाराघाव को काटकर अग्निवर्णजम्बोष्ठ से अथ... तप्त शलाकासे उसव्रणको दग्धकरै भगन्दरवाला घावके भरजाने पर सालभर तक व्यायाम मैथुन युद्ध घोड़े आदिकी सवारी और भारीवस्तुओंको त्यागै इति भगन्दरनिदानचिकित्साऽधिकार समाप्त ४८१॥

अथ उपदंशाधिकारः ॥

हस्ताभिघातान्नखदन्तघातादधावनादत्युपसेवनाद्वा । योनिप्रदोषाच्च भवन्तिशिश्ने पञ्चोपदंशाविविधापचारैः ॥ सतोदभेदस्फुरणैःसकृष्णैःस्फोटैर्व्यवस्येत्पवनोपदंशम् । पीतैर्बहुक्लेदयुतैःसदाहैःपित्तेनरक्तैःपिशितावभासैः ॥ सकण्डुरैःशोथयुतैर्महद्भिःशुक्लैर्घनैः स्रावयुतैःकफेन । नानाविधस्रावरुजोपपन्नमसाध्यमाहुस्त्रिमलोपदंशम् ॥ प्रशीर्णमांसं कृमिभिःप्रजग्धंमुष्कावशेषंपरिवर्ज्जनीयम् । सञ्जातमात्रेणकरोतिमूढःक्रियांनरोयोविषयेप्रसक्तः ॥ कालेनशोथकृमिदाहपाकैःप्रशीर्णशिश्नोम्रियतेसतेन ॥ ४८२ ॥

उपदंशका अधिकार ॥

लिंगमें हाथ नख अथवा दांतके लगनेसे लिंगके न धोनेसे बहुत रति करने और दूषित योनि में गमन करनेसे पांचप्रकारका उपदंशरोग अनेकप्रकारके अपचारों के द्वारा उत्पन्न होताहै सूजीगडनेकी सी पीड़ा फटनेकीसी पीड़ा तथा फड़कना इनलक्षणोंसे युक्त काली फुन्सी वातज उपदंशमें होतीहैं बहुतक्लेद (रुतूवत) तथा दाहयुक्त पीली फुन्सी पित्तज उपदंशमें होती हैं मांसके समान रक्तवर्ण अथवा कृष्णवर्ण फुन्सी रक्तज उपदंश में होतीहैं इसमें रुधिर बहताहै और पित्तज उपदंशके लक्षण होतेहैं खुजलीवाली शोथयुक्त बड़ी शुक्लवर्ण गाढ़े स्राववाली फुन्सी होती हैं अनेक प्रकारके स्राव तथा पीड़ा वाली फुन्सियां सन्निपातज उपदंशमें होतीहैं ये असाध्यहैं जिस उपदंशमें मांसगलगयाहो तथा मांस को कीड़े खागयेहों और केवल अंडकोश बाकी रहगयेहों वह असाध्यहै जो मूर्खपुरुष उपदंशके उत्पन्न होतेही विषयमें आसक्त होकर चिकित्सा नहीं करताहै कालपाकर उस पुरुषका शोथ कृमि तथा दाह से युक्त लिंग पककर गलजाताहै और रोगी मरजाताहै ॥ ४८२ ॥

अथ तस्यचिकित्सामाह ॥

उपदंशेषुसाध्येषुस्निग्धस्विन्नस्यदेहिनः । मेढ्रमध्येशिरांविध्येत्पातयेद्वाजलौकसः ॥ हरेदुभयतश्चापिदोषानत्यर्थमूर्च्छितान् । सद्योनिर्हृतदोषस्यरुक्शोथावुपशाम्यतः ॥ यदिवादुर्बलोजन्तुर्नवाप्राप्तंविरेचनम् । निरूहेणहरेत्तस्यदोषानत्यर्थमूर्च्छितान् ॥ पाकोरक्ष्यःप्रयत्नेनशिश्नक्षयकरोहिसः ॥ ४८३ ॥

उपदंशकी चिकित्सा ॥

साध्य उपदंश रोगमें स्नेह और स्वेदका प्रयोग करके लिंगकी शिराको छेदै अथवा जोंक लगवावै बहुत बढ़ेभये दोषोंको वमन और विरेचन के द्वारा निकालै दोषों के निकलजानेपर शीघ्रही पीड़ा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

[illegible] तहोती है जो दुर्बलताके कारण विरेचन न होसकै तो निरूहवस्तिके द्वारा बहुतबढ़े हुए [illegible] कालै और उपदंशके न पकनेकाविशेष यत्न करै क्योंकि पकनेसे लिंग [illegible] शहोताहै ४८३

[illegible] डरीकयष्ट्याह्वसरलागुरुदारुभिः। सरास्नाकुष्ठपृथ्वीकैर्वातिकेलेपसेचने॥ निचुल [illegible] डबीजानियवगोधूमसक्तवः। एतैश्चवातजैःस्निग्धैःसुखोष्णैःसंप्रलेपयेत्॥ गैरिकांजनमञ्जिष्ठामधुकोशीरपद्मकैः। सचन्दनोत्पलैःस्निग्धैःपैत्तिकंसंप्रलेपयेत्। पद्म [illegible] मृणालैश्चसमसर्जार्जुनवेतसैः। सर्पिःस्निग्धैःसमधुकैः पैत्तिकंसंप्रलेपयेत्॥ सेचयेच्चघृतक्षीरशर्करेक्षुमधूदकैः। अथवापिसुशीतेनकषायेणवटादिना॥ ४८४॥

पुंडरिया, मुलेठी, सरलकाष्ठ, अगर, देवदारु, रास्ना, कूट तथा इलायची इनके द्वारा लेप और परिषेक वातज उपदंश में करना चाहिये बेत के बीज, रेंडीके बीज, जौ, गेहूं और सत्तू इनको घीमें मिलाकर कुछ गरम लेप वातज उपदंशमें करै गेरू, रसौत, मंजीठ, मुलेठी, खस, पद्माख, चन्दन तथा उत्पल इन सबको घीमें मिलाकर पित्तज उपदंश में लेपकरै पद्माख, उत्पल कमलकीडंडी, शाल, अर्जुन, बेत और मुलेठी इनको घीमें मिलाकर पित्तज उपदंश में लेप करै घी, दूध, शर्बत, ऊखका रस और शहद का शर्बत अथवा वटादिगण के शीतल काढ़े के द्वारा पित्तज उपदंशमें तरारादेवै॥ ४८४॥

शालाजकर्णाश्वकर्णवचात्वग्भिःकफोत्थितम्। सुराविष्टाभिरुष्णाभिःसतैलाभिःप्रलेपयेत्॥ अजकर्णःशालभेदः अश्वकर्णोगजहडः। आरग्वधादिक्वाथेनपरिषेकञ्चदापयेत्॥ निम्बार्जुनाश्वत्थकदम्बशालंजम्बूवटोदुम्बरवेतसैश्च। प्रक्षालनालेपकृतानिकुर्य्याच्चूर्णंसपित्तास्रभवोपदंशे॥ त्वचोदारुहरिद्रायाःशंखनाभिरसाञ्जनम्। लाक्षागोमयनिर्यासस्तैलंक्षौद्रंघृतंपयः॥ एभिस्तुपिष्टैस्तुल्यांशैरुपदंशंप्रलेपयेत्। व्रणाश्चतेनशाम्यन्तिश्वयथुर्दाहएवच॥ ४८५॥

शाल, अजकर्ण (शालभेद) गजहड, बच और दालचीनी इनको सुरामें पीसकर तेल मिलायके कफज उपदंशमें गरमलेपकरै आरग्वधादिगण के काढ़े के द्वारा कफज उपदंश में तरारादेवै नीम, अर्जुन, पीपल, कदंब, शाल, जामुन, बर्गद, गूलर और बेत इनके द्वारा पित्तसहित रक्तज उपदंशमें लेप और तरारा देनाचाहिये दारुहल्दी की छाल, शंखकी नाभि, रसौत, लाख, गोबरकारस, तेल, घी, शहद और दूध इनके द्वारा उपदंशमें लेपकरने से व्रण शोथ और दाहका नाश होताहै॥ ४८५॥

उपदंशद्वयेशेषेप्रत्याख्यायाचरेत्क्रियाम्। एतेषामेवयायोग्यावीक्ष्यदोषबलाबलम्॥ शस्त्रेणोल्लेखयेत्क्वापिपाकमागतमाशुवै। तमपोह्यतिलैःसर्पिःक्षौद्रयुक्तैःप्रलेपयेत्॥ तथोपदंशेष्वव्रणरोहणार्थञ्चूर्णञ्चवटप्ररोहार्जुनजम्बुपथ्यालोध्रंहरिद्राचहितांप्रलेपे। व्रणप्रक्षालनंकार्य्यंमुपदंशकार्य्यंविमलाञ्जनेन॥ त्रिफलायाःकषायेणभृङ्गराजरसेनवा। कृतंप्रक्षालनंक्वाथंमेढ्रपाकेप्रप्रशान्तये॥ जयाजपाश्वमारार्कशम्पाकानान्दलैःक्रमात्। सगुग्गुलुंवात्रियोजयेत्॥ शम्पाकनिम्बत्रिफलाकिरातक्वाथंपिबेद्वाखदिरासनाभ्याम्। उपदंशेफलायुतंवासर्वोपदंशापहरःप्रयोगः॥ नीलोत्पलानिकुमुदंपद्मसौगन्धकानिच। गुण्डनंद्विषशेषुचूर्णानिप्रदेहोऽयंप्रशस्यते॥ बन्धूकदलचूर्णेनदाडिमत्वग्रजोऽथवा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्तंलेपःपूगफलेनवा ॥ सौराष्ट्रीगैरिकंतुत्थंपुष्पकासीससैन्धवम् । लोध्रं ... हरितालंमनःशिला ॥ हरेणुकैलेपितथासमंसंहृत्यचूर्णयेत् । तच्चूर्णंक्षौद्रसं... शु पूजितम् ॥ पुटदग्धंकृतंभस्महरीतालंमनःशिला ॥ उपदंशविसर्प्पाणामतद्वा... दहेत्कटाहेत्रिफलांतामसींमधुसैन्धवम् । उपदंशेप्रलेपोऽयंसद्योरोपयतिव्रणम् ... शिरी ... नवज्राक्षकोविदारेभकेशरैः । लेपनंपुरुषव्याधौजलपिष्टैःप्रशस्यते ॥ रसाञ्जनंशिरीषणपथ्ययावासमन्वितम् । सक्षौद्रंलेपनंयोज्यंसर्वाङ्गगङ्गदापहम् ॥ ४८६ ॥

बाकीदो उपदंशों में प्रत्याख्यानकरके (असाध्य कहकरके) बलाबलको देखके यथायोग्य चिकित्सा करै उपदंशके पकजानेपर शस्त्रके द्वारा पीप निकालकर तिल, घी तथा शहद का लेपलगावे बर्गद कीजटा, अर्जुन, जामुन, हड, लोध तथा हल्दी इनका लेप उपदंशमें हितहै उपदंशके घावके भरने के लिये विमलांजनका चूर्ण लगावै त्रिफलाके काढेसे अथवा भंगरेके रससे धोनेसे उपदंश नष्टहोताहै अरणी, चमेली, कनैर, आक और अमलतास इनके पत्तोंके काढेके द्वारा धोने से लिंगका पकना अच्छा होजाताहै अमलतास, नीम, त्रिफला तथा चिरायता इनके काढेके पीनेसे अथवा शाल तथा कत्थेके काढेमें गूगल और त्रिफलाका चूर्ण मिलाकर पीनेसे सबप्रकार के उपदंश नष्ट होते हैं नीलोत्पल, कोकावेली, कमल, सफेद कमल इनके चूर्णका लेप उपदंश में श्रेष्ठहै दुपहरिया के पत्तों के चूर्ण से अनारकी छालके चूर्ण से उपदंश में गुंडन (बुरकाना) श्रेष्ठहै और सुपारीका लेप उपदंश में हित है सोरठी मिट्टी, गेरू, तूतिया, पीला कसीस, सेंधानोन, लोध, रसौत, हरताल, मैनसिल, रेणुका तथा इलायची इनसब का चूर्ण शहद में मिलाकर सेवन करनेसे उपदंश नष्ट होताहै हरताल और मैनसिलको पुटपाक में भस्मकरके सेवन करने से उपदंश और वीसर्पका नाशहोताहै त्रिफला को कराहमें जलाकर शहद और सेंधानोन मिलाकर लेपकरनेसे शीघ्रही उपदंशके घावभरजाते हैं लोध, रसौत,आंवला,बहेडा, कचनार और नागकेसर इनको पानी में पीसकर उपदंशमें लेप करनीचाहिये रसौतको सिरसा अथवा हडकेसाथ शहदमें मिलाकर लेपकरनेसे सब अङ्गके रोग नष्टहोतेहैं ४८६॥

भार्ङ्गीसंभवशिखरिजमूलंभद्रश्रियःसुसम्पिष्टम् । मनसःशिलाचमधुनाशमयत्युपदंशमचिरेण॥शतधौतंप्रयत्नेनलिंगोत्थमवचूर्णयेत्॥रोगंकासीसचूर्णेनपुरुषःसुखमाप्नुयात् ॥ करवीरस्यमूलेनपरिपिष्टेनवारिणा । असाध्यापिव्रजत्यस्तंलिंगोत्थारुक्प्रलेपनात् ४८७

भारंगीकी जड, लटजीरेकी जड, चन्दन तथा मैनसिल इनसबको पीसकर शहद में मिलायके लेप करने से शीघ्रही उपदंश नष्टहोताहै सौबार धोयेभये कसीसके चूर्णको बुरकाने से उपदंश अच्छा होताहै कनैरकी जडको पानी में पीसकर लेपकरने से असाध्यलिंग की पीडाभी नष्ट होती है॥४८७॥

वरानिम्बार्जुनाश्वत्थखदिरासनवासकैः । चूर्णितैर्गुग्गुलुसमैर्वटकानक्षसम्मितान् ॥ कर्त्तव्यानाशयन्त्याशुसर्वांल्लिंङ्गसमुत्थितान् । उपदंशानसृग्दोषांस्तथादुष्टव्रणानपि वरादिगुग्गुलुः ॥ ४८८ ॥

त्रिफला, नीम, अर्जुन, पीपल, कत्था, विजयसार और बांसा इनसब के चूर्ण का समभाग गूगल मिलाकर गोले २ भरकी गोली बांधै इसकेखाने से लिंगमें भये सम्पूर्ण रोग उपदंश रक्तदोष और दुष्टव्रणों का नाशहोताहै इति वरादिगुग्गुलु ॥ ४८८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...ासनशालजम्बूवटादिभिः कल्ककषायसिद्धम् । सर्पिर्निहन्यादुपदंशदोषं सद... ...तिरागयुक्तम् । इति करञ्जाद्यंघृतम् ॥ ४८९ ॥

...जुवा, नीम, अर्जुन, शाल, जामुन तथा बर्गद आदिके काढ़े और कल्कके द्वारा पाक ... ...रयत॥ या ...सेवन करनेसे दाह पाक तथा स्रावयुक्त उपदंशको नाश करताहै इति करञ्जादिघृत...

भूनिम्बनिम्बत्रिफलापटोलकरञ्जधात्रीखदिरासनानाम् । सतोयकल्कैः... सर्वोपदंशापहरंप्रदिष्टम् ॥ इति भूनिम्बाद्यंघृतम् ॥ ४९० ॥

चिरायता, नीम, त्रिफला, परवल, करंजुवा, आमला, कत्था और विजयसार इनके कल्कके द्वारा जलके साथ पाककिया भया घी सब प्रकारके उपदंश को नष्ट करताहै इति भूनिम्बाद्यघृत ॥ ४९० ॥

घृतानियानिवक्ष्यामिकुष्ठनाडीव्रणेव्रणे । उपदंशेप्रयोज्यानिसेकाभ्यञ्जनभोजनैः ४९१॥

कुष्ठ नाडीव्रण और व्रणरोगमें जो सम्पूर्ण घृत कहेगयेहैं वो सब उपदंश में भी परिषेक अभ्यंग और भोजनके द्वारा हितहैं ॥ ४९१ ॥

आगारधूमोरजनीसुराकिट्टंचतैस्त्रिभिः । यथोत्तरैः पचेत्तैलंकण्डूशोथरुजापहम् ॥ शोधनंरोपणञ्चैवउपदंशहरंपरम् ॥ आगारधूमाद्यंतैलम् ॥ ४९२ ॥

गृहधूम एकभाग हल्दी दोभाग और सुराकिट्ट तीनभाग इनके द्वारा पाककियाभया तेल खुजली शोथ पीड़ा तथा उपदंशको नष्ट करताहै और घावको शुद्ध करके भरताहै इति आगारधूमाद्यतैल ॥ ४९२ ॥

गोजीविडंगयष्टीभिःसर्वगन्धैश्चसंयुतम् । एतत्सर्वोपदंशेषुतैलंरोपणमिष्यते ॥ इति गोजीतैलम् ॥ ४९३ ॥

गोजी, बायबिडंग, मुलेठी और सम्पूर्ण सुगन्धित वस्तु इनके द्वारा पाककिया भया तेल सम्पूर्ण उपदंश के घावोंको भरता है इति गोजीतैल ॥ ४९३ ॥

जम्बूवेतसपत्राणिधात्रीपत्रंतथैवच । नक्तमालस्यपत्राणितद्वत्पद्मोत्पलानिच ॥ एलाचातिविषाम्रास्थिमधुकञ्चप्रियंगवः । लाक्षाकालीयकंलोध्रंचन्दनंत्रिवृताञ्जया ॥ एतान्येकीकृतान्येववस्तमूत्रेणपेषयेत् । अक्षमात्रैरिमैर्द्रव्यैस्तैलप्रस्थंविपाचयेत् ॥ सर्वं व्रणहरंतैलमेतत्सिद्धंविपाचितम् । उपदंशहरंश्रेष्ठंमुनिभिःपरिकीर्तितम् ॥ जम्ब्वाद्यं तैलम् ॥ ४९४ ॥

जामुन, बेंत, आंवला तथा करंजुवा इनके पत्ते, कमल, उत्पल, इलायची, अतीस, आमकी बिजली, मुलेठी, प्रियंगु, लाख, पीतचन्दन, लोध, चन्दन तथा निसोत इन सब औषधों को तोले २ भरलेकर बकरे के मूत्रमें पीसै फिर इनके द्वारा ६४ तोले तेलको पाककरै यह तेल सम्पूर्णव्रण और उपदंश को नष्ट करता है इति जम्ब्वाद्यतैल ॥ ४९४ ॥

यस्यलिंगस्यमांसन्तुशीर्य्यतेमुष्कशेषतः । तिक्तकोशातकीलम्बाबीजंनागरसाधितम् ॥ तैलंहन्त्यविशेषेणव्रणंदुष्टमनेकधा । इति कोशातकीतैलम् ॥ ४९५ ॥

कड़ूतोरई, लौकीके बीज तथा सोंठ के द्वारा पाककिया भया तेल अनेक प्रकार दुष्ट भये व्रण को भी नष्ट करताहै इति कोशातकीतैल ॥ ४९५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सेवेन्नित्यंयवान्नंचपानीयंकौपमेवच। अर्शसांछिन्नदग्धानांक्रियाऽत्रा...
इति उपदंश...दानचिकित्साधिकारः ॥ ४९६ ॥

पूजास्पर्शवाला. जौके बनेभये पदार्थ खाय और कुवेंका जल पिये उपदंश में काटभये त... जाये
दहेतक...रु कीसी चिकित्सा करे इति उपदंशनिदानचिकित्साऽधिकार समाप्त ॥ ४९६ ॥

अथ लिंगार्शोपक्रमः ॥

अंकुरैरिवसञ्जातैरुपर्य्युपरिसंस्थितैः । क्रमेणजायतेवर्त्तिस्ताम्रचूडशिखोपमा ॥ कोशस्याभ्यन्तरेसन्धौपठ्त्रेसन्धिगतापिवा । लिंगवर्तिरितिख्याताालिङ्गार्शइति चापरे॥ सवेदनापिच्छिलाचद्दुश्चिकित्स्यात्रिदोषजा । क्षारेणप्रदहेच्छित्त्वालिङ्गवर्त्तिमशेषतः ॥ व्रणवच्चाचरेत्सम्यक्समंचूर्णमुपद्रवान् । स्वर्जिकातुत्थशैलेयमञ्जनंसरसाञ्जनम् ॥ मनःशिलालेचसमंचूर्णमांसांकुरापहम् । हरतिघृतकुमारीपत्रमावेष्टनेनग्रथनविधिविशेषांश्चर्म्मकीलांस्तृतीये ॥ अहनिगुरुतराण्यंगलब्धप्रतिष्ठान्विधिरिवविपरीतःपौरुषस्यप्रकारान् । शुभेतुचारटीमूलंवृषमूत्रेणपेषयेत् । चर्म्मकीलान्निहन्त्याशुप्रलेपात्साधनोद्भवान् । इति लिंगार्शसामुपक्रमः ॥ ४९७ ॥

लिंगार्शका उपक्रम ॥

अंडकोशों के भीतर सन्धिमें अथवा वंक्षणकी सन्धिमें एक एकके ऊपर स्थित कुक्कुटकी शिखा के समान आकृतिवाले उत्पन्नभये मांसके अंकुरोंको लिंगवर्ति अथवा लिङ्गार्शकहतेहैं यह पीड़ा सहित पिच्छिल सन्निपातसे उत्पन्नभये अत्यन्त दुःसाध्य होतेहैं लिंगार्श को बिलकुल काटकर क्षारके द्वारा जलावै फिर व्रणकेतुल्य सब चिकित्साकरै सज्जी,तूतिया,शिलाजीत,सुरमा,रसौत,मैनशिल और हरताल इनसबका चूर्ण लिंगार्शको नष्टकरताहै घीकुवारके पत्तोंके लपेटने से तीसरेदिन बहुतभारी भी चर्म्मकील नष्टहोतेहैं जैसे विपरीत भाग्यहोने से पुरुषार्थ नष्टहोतेहैं पद्माककी जडको शुभदिन बैल के मूतमें पीसकर लेप करनेसे लिंगमें भये चर्म्मकीलोंका नाशहोताहै इति लिंगार्शोपक्रम ॥४९७॥

अथ शूकदोषाधिकारः । तत्र शूकदोषस्यनिदानमाह ॥

अक्रमाच्छेफसोवृद्धिंयोऽभिवाञ्छतिमूढधीः । व्याधयस्तस्यजायन्तेदशचाष्टौचशूकजाः ॥ अक्रमात् अनुचितवृद्धिक्रमात् । अनुचिताचवृद्धिर्भूरिविकारजनकस्ययोगेन शूकजाः । शूकोजलशूकः । सविषोजलजन्तुविशेषः सतुजलमलोद्भवः । अलपडुण्डुभ इत्यादिकः । तथाशूकप्रधानोलिंगवृद्धिकरोवात्स्यायनाद्युक्तोयोगःशूकउच्यते । यथा ॥ भल्लातकास्थिजलशूकमथाब्जपत्रमन्तर्विदाह्यमतिमान्सहसैन्धवेन । एतद्विरूढवृहतीफलतोयपिष्टमालेपितंमहिषविड्विमलीकृतेऽङ्गे ॥ स्थूलंमहद्दृढतुरङ्गमलिङ्गतुल्यंशेफः करोत्यभिमतंनहिसंशयोऽत्रेत्यादि । यत्तुजलशूकरहितमश्वगन्धादितैलंतदुचितमेवलिंगवर्द्धनम् ॥ यथाश्वगन्धावरीकुष्ठमांसीसिंहीपलेन्मितम् । चतुर्गुणेनदुग्धेनतिलतैलंविपाचयेत्॥तत्तैलंमर्द्दनात्वक्षोजकर्णपालीविवर्द्धनम्। शूकदोषादशचाष्टौचभवन्ति ४९८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शूकदोषका अधिकार शूकदोषका निदान ॥

...क्रम के विना अत्यन्त विकारकारी जल शूकादि सामग्री के द्वारा लिंगकी वृद्धि चाहताहै उसके अठारह प्रकारका शूकदोषनाम रोग उत्पन्न होताहै शूक दुमुहे निर्विष सर्प्पको कहतेहैं और शूक है ... जिसमें ऐसे लिंगके बढ़ानेवाले वात्स्यायनादि के कहेभये योगको भी शूक कहतेहैं ...रेयत् ॥ लाोंके बीज जलशूक और कमलके पत्ते इन सबको बन्दकरके जलावै फिर सैंधानोन ... पकेभये भटकटैयाके फलके रसमें पीसै फिर भैंसे के गोबरसे लिंगको धोकर इसको लेपक... निस्सन्देह घोड़ेके लिंगके तुल्य स्थूल औ बड़ालिंग होजाता है और जोकि जलशूकरहित अश्वगंधादि तैल आदिक लिंगके बढ़ानेकी औषधि कहीगई है वे उचितहीहैं जैसे असगंध,सतावर,कूट,जटामांसी और भटकटैया के फल इनके द्वारा चौगुने दूधके साथ पाक कियाभया तिलोंका तेल लिंग छाती ओज और कर्णपालीको बढ़ाताहै ॥ ४६८ ॥

तेष्वादौसर्षपिकामाह ॥

गौरसर्षपसंस्थानाशूकदुर्भगहेतुका । पिडिकाश्लेष्मवाताभ्यांज्ञेयासर्षपिकातुसा॥ शूकदुर्भगहेतुकाशूकदुष्टयोनिनिमित्ताच ॥ ४९९ ॥

उनमें से सर्षपिका का लक्षण ॥

शूकके द्वारा अथवा दूषित योनिमें गमन के द्वारा श्वेत सरसों के समान कफ वात से जो पिडिका होती है उसे सर्षपिका कहतेहैं ॥ ४९९ ॥

अथाष्ठीलिकामाह ॥

कठिनाविषमैर्भुग्नैर्वायुनाष्ठीलिकाभवेत् । अष्ठीलालौहकारस्यभाण्डविशेषःनिहार इतिलोके ॥ ततःकठिनेत्यष्ठीलिकाविषमैर्भुग्नैरितिवक्ष्यमाणशूकविशेषणम् । विषमैर्ह्रस्वदीर्घैः । भुग्नैःवक्रैः ॥ ५०० ॥

अष्ठीलिका का लक्षण ॥

निहाईकेसमान कठिन,छोटी,बड़ी तथा टेढ़ी पिडिकाको अष्ठीलिका कहतेहैं यह वायुसे होतीहै ५००॥

अथ ग्रन्थितमाह ॥

शूकैर्यत्पूरितंशश्वद्ग्रथितंनामतत्कफात् । यल्लिंगंसदाशूकैःपूरितंतद्ग्रथितत्वात्तद्ग्रन्थितम् ॥ ५०१ ॥

ग्रथित का लक्षण ॥

लिंगमें शूकोंसे पूरित जो शूकदोष होताहै उसे ग्रथित कहतेहैं यह कफज होताहै ॥ ५०१ ॥

अथ कुम्भिकामाह ॥

कुम्भिकारक्तपित्तोत्थाजाम्बवास्थिनिभासिता।कुम्भिकाकुम्भीफलतुल्यत्वात् ५०२ ॥

कुंभिका का लक्षण ॥

लिंगमें रक्तपित्त से जामुन की गुठली के समान जो श्वेत पिडिका उसे कुंभिका कहते हैं ॥ ५०२ ॥

अथालजीमाह ॥

अलजीस्यात्तथायाद्दक्प्रमेहपिडिकातथा । साचरक्ताऽसितास्फोटाचिताचकथिताबुधैः । एषारक्तपित्तनिमित्ताज्ञेया ॥ ५०३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अलजी का लक्षण ॥

अलजी नामक प्रमेह पिडिका के समान लिंगमें रक्तपित्त से जो पिड़िका होती है कहते हैं इसमें लाल तथा काली फुन्सियां होती हैं ॥ ५०३ ॥

अथ मृदितमाह ॥

[illegible]पीडितंयत्तुसंरब्धंवातकोपतः । शूकदोषेजाते पीडितं सद्यत्संरब्धं सशोथं [illegible]लिंगंमृदितमुच्यते ॥ ५०४ ॥

मृदित का लक्षण ॥

शूक दोष होनेपर दबने से लिंगमें जो शोथ उत्पन्न होताहै उसे मृदित कहते हैं यह वायुके कोप से होता है ॥ ५०४ ॥

संमूढपिडिकामाह ॥

पाणिभ्यांभृशसंमूढेसंमूढपिडिकाभवेत् । शूकदोषेजातेपाणिभ्यांभृशसंमूढेपिशितेलिंगे ॥ अत्रापिवातकोपतइत्यनुवर्त्तते ॥ ५०५ ॥

सम्मूढ पिडिका का लक्षण ॥

शूकदोषके उत्पन्न होनेपर हाथों से बहुत रगडनेके कारण जो लिंग पिच्चित होजाताहै इसे सम्मूढ पिड़िका कहते हैं यह वायुके कोप से होती है ॥ ५०५ ॥

अथावमन्थमाह ॥

दीर्घाव्हाश्चपिडिकादीर्य्यतेमध्यतस्तुयाः । सोऽवमन्थःकफासृग्भ्यांवेदनारोमहर्षकृत् । दीर्घादीर्घांकुराः ॥ ५०६ ॥

अधिमंथ का लक्षण ॥

लिंगमें दीर्घ अंकुरवाली बीचमें फटीभई पीड़ा तथा रोमहर्ष युक्त जो पिड़िका होतीहै उसे अविमन्थ कहते हैं यह कफ और रुधिरसे होती है ॥ ५०६ ॥

अथ पुष्करिकामाह ॥

पिडिकापिडिकाव्याप्तापित्तशोणितसम्भवा।पद्मकर्णिकसंस्थानाज्ञेयापुष्करिकेतिसा ॥ पिडिकाव्याप्तापार्श्वतःक्षुद्रपिडिकाव्याप्ता । अतएवपद्मकर्णिकसंस्थाना ॥ ५०७ ॥

पुष्करिका का लक्षण ॥

लिंगमें किनारे पर छोटी २ पिड़िकाओं से युक्त इसीसे कमल की कली के समान आकृतिवाली जो पिड़िका होतीहै उसे पुष्करिका कहतेहैं यह पित्त और रुधिर से होती है ॥ ५०७ ॥

अथ स्पर्शहानिमाह ॥

स्पर्शहानिन्तुजनयेच्छोणितंशूकदूषितम् । अत्रस्पर्शासहत्वमेवलक्षणम् ॥ ५०८ ॥

स्पर्शहानि का लक्षण ॥

शूकके द्वारा रुधिर दोषयुक होकर लिङ्गमें जो स्पर्श न सहाजाय उसे स्पर्शहानि कहते हैं ॥ ५०८ ॥

अथोत्तमामाह ॥

मुद्गमाषोपमारक्तारक्तपित्तोद्भवाचया । एषोत्तमाख्यपिडिकाशूकाजीर्णसमुद्भवा ॥ ५०९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उत्तमाका लक्षण॥

... तेल लगानसे उत्पन्नभई रक्तवर्णवाली मूंग अथवा उर्द के समान आकृतिवाली पि-डिका उत्तमा कहते हैं यह रक्तपित्तसे होतीहै ॥ ५०९ ॥

अथ शतपोनकमाह ॥

छिद्रैरणुमुखैर्लिंगंचितंयस्यसमन्ततः । वातशोणितजोव्याधिर्विज्ञेयःशत... रयेत्॥ शतपोनकश्चालनीतत्तुल्यत्वाच्छतपोनकः ॥ ५१० ॥

शतपोनक का लक्षण ॥

छोटे छिद्रोंके द्वारा चलनी के समान लिङ्गके व्याप्त होनेको शतपोनक कहते हैं यह वात रक्तसे होतीहै ॥ ५१० ॥

अथ त्वक्पाकमाह ॥

वातपित्तकृतोज्ञेयस्त्वक्पाकोज्वरदाहकृत् ॥ ५११ ॥

त्वक्पाक का लक्षण ॥

वात पित्तके द्वारा त्वक्पाक नाम शूकदोष होताहै इसमें ज्वर और दाह होताहै ॥ ५११ ॥

अथ शोणितार्बुदमाह ॥

कृष्णैःस्फोटैःसरक्ताभिःपिडिकाभिर्निपीडितम् । लिंगंवास्तुरुजश्चोग्राज्ञेयंतच्छोणितार्बुदम् ॥ वास्तुरुजःस्फोटपिडिकाधिष्ठानवेदनाः ॥ ५१२ ॥

शोणितार्बुद का लक्षण ॥

लिङ्गमें कृष्णवर्ण फोडे और लाल पिड़िकायें जो होतीहैं उन्हें शोणितार्बुद कहतेहैं इसमें बहुत पीडा होतीहै ॥ ५१२ ॥

अथ मांसार्बुदमाह ॥

मांसदुष्टंविजानीयादर्बुदंमांससम्भवम् ॥ ५१३ ॥

मांसार्बुद का लक्षण ॥

लिंगमें मांस दूषित होकर उत्पन्न भये अर्बुदको मांसार्बुद कहते हैं ॥ ५१३ ॥

अथ मांसपाकमाह ॥

शीर्य्यन्तेयस्यमांसानियस्यसर्वाश्चवेदनाः।विद्यात्तंमांसपाकन्तुसर्वदोषकृतंभिषक् ॥ शीर्यन्तेगलन्तिसर्वाश्चवेदनाःवातपित्तकफजाः ॥ ५१४ ॥

मांसपाकका लक्षण ॥

जो लिंगका मांस गलजाय और वात पित्त तथा कफकी सम्पूर्ण पीडायेंहों तो उसे मांसपाक कहतेहैं यह तीनों दोषोंसे होताहै ॥ ५१४ ॥

अथ विद्रधिमाह ॥

विद्रधिंसन्निपातेनयथोक्तमभिनिर्दिशेत् । उक्तसन्निपातिकंविद्रधितुल्यंकथयेत् ॥ ५१५॥

विद्रधिका लक्षण ॥

कहीहुई सन्निपातज विद्रधिके समान लिंगमें भये रोगको विद्रधि कहते हैं ॥ ५१५ ॥

अथ तिलकालकानाह ॥

कृष्णानिचित्राण्यथवाशूकानिसविषाणितु । पतन्तिपातयंत्याशुमेढ्रंनिरवशेषतः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गलानिभूत्वामांसानिशीर्य्यन्तेयस्यदेहिनः । सन्निपातसमुत्थांश्चतान्विद्यात्ति कान् ॥ चित्राणिनानावर्णानि । शुक्लानिशुक्लवर्णानि । मञ्चाःक्रोशंतीतिवत् णिसविषशूकाख्यजन्तुविशेषकृतत्वात् । शीर्यन्तेगलन्ति । पूजतः ॥ ५१६ ॥ तिलकालकका लक्षण ॥

शरीर के तैलके प्रयोग से उत्पन्न भई काली सफ़ेद अथवा विचित्र वर्णवाली काले तिलों के जोड़े फुन्सियां पककर सम्पूर्ण लिंगको पकादेतीहैं और मांस कालाहोकर गलजाताहै इस सन्निपा-तसे भये रोगको तिलकालक कहते हैं ॥ ५१६ ॥

अथासाध्यमाह ॥

तेषुमांसार्बुदंयच्चमांसपाकश्चयःस्मृतःविद्रधिश्चनसिध्यन्तियेचस्युस्तिलकालकाः ५१७

असाध्य लक्षण ॥

शूकदोषों मेंसे मासार्बुद मासपाक विद्रधि और तिलकालक असाध्यहैं ॥ ५१७ ॥

अथ शूकदोषस्य चिकित्सामाह ॥

शूकदोषेषुसर्वेषुविषघ्नींकारयेत्क्रियाम् । जलौकाभिर्हरेद्रक्तंरेचनंलघुभोजयेत् ॥ गुग्गुलुंपाययेच्चापित्रिफलाक्काथसंयुतम् । क्षीरेणलेपसेकांश्चशीतेनैवहिकारयेत् ५१८ ॥

शूकदोषकी चिकित्सा ॥

सम्पूर्ण शूकदोषोंमें विषघ्न चिकित्सा करै जोंकोंके द्वारा रुधिर निकलवावे विरेचन करवावै और हलका भोजन देय त्रिफला के काढ़ेमें गूगुल डालकर पियावे और शीतल दूधके द्वारा लेप तथा परिषेक करै ॥ ५१८ ॥

दार्वीसुरसयष्ट्याह्वैर्गृहधूमनिशायुतैः । सम्पक्वंतैलमभ्यगान्मेढ्ररोगंहिनाशयेत् ॥ इति दार्वीतैलम् ॥ ५१९ ॥

दारुहल्दी,तुलसी,मुलेठी,गृहधूम और हल्दी इनके द्वारा पाक कियाभया तेल लगानेसे लिंगके रोगोंको नष्ट करताहै इति दार्वीतैल ॥ ५१९ ॥

रसांजनंसाक्ष्यमेकमेवप्रलेपमात्रेणनयेत्प्रशान्तिम् । सपूतिपूयव्रणशोथकण्डूशूलान्वितंसर्वमनंगरोगम् ॥ साक्ष्यमित्यनंगरोगस्यविशेषणम्अनंगरोगस्यनामापिदूरीकरोतीत्यर्थः । इति शूकदोषनिदानचिकित्साधिकारः ॥ ५२० ॥

केवल रसौतही लेपकरनेसे दुर्गन्धित पीप,व्रण,शोथ,खुजली तथा शूलयुक्त सबप्रकारके लिंगके रोगोंको नष्टकरताहै इति शूकदोष निदान चिकित्साऽधिकार समाप्त ॥ ५२० ॥

अथ कुष्ठाधिकारः ॥

विरोधीन्यन्नपानानिद्रवस्निग्धगुरूणिच । भजतामागतांश्छर्दिवेगांश्चान्यान्प्रतिघ्नताम् ॥ व्यायाममग्नितापञ्चाप्यतिमुक्त्वानिषेविणाम् । शीतोष्णलङ्घनाहारान्क्रमंत्यक्त्वानिषेविणाम्॥ धर्म्मश्रमभयार्तानांद्रुतंशीताम्बुसेविनाम् । अजीर्णाध्याशिनांचापिपञ्चकर्म्मापचारिणाम् ॥ नवान्नदधिमत्स्यादिलवणाम्लनिषेविणाम् । माषमूलक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...तलक्षीरगुडाशिनाम् ॥ व्यवायंचाप्यजीर्णेऽन्नेदिवानिद्रांनिषेविणाम् ॥ विप्रानूगु... ...तापापंकर्म्मचकुर्वताम् । वातादयस्त्रयोदोषास्त्वग्रक्तंमांसमम्बुच ॥ दूषयन्ति सकु... ...संग्रहः । अतःकुष्ठानिजायन्तेसप्तचैकादशैवच ॥ विरोधीन्यन्नपा नानि क्षीरमत्स्यादीनिदधिदुग्धादीनि । व्यायाममित्यादि । अतिभुक्त्वाव्या... ...॥ अग्निसन्तापम् । अग्निरूपलक्षणंसूर्य्यादिसन्तापञ्चनिषेविणामिति ॥ ... गेषष्ठीप्राप्ताद्वितीयातुमुनिवचनात् । एवमग्रेऽपिशीतोष्णंलङ्घनाहारानित्यादि... तीया ॥ अत्रक्रमंविधिंघर्मेत्यादि । घर्म्मार्त्तत्वेसतिद्रुतमविश्रम्यपानेस्नानेशीताम्बु... विनाम् । अजीर्णाध्याशिनांभुक्तेऽजीर्णेभुक्तानाम् । पञ्चकर्म्मापचारिणांपञ्चकर्म... वमनविरेकनस्यनिरूहानुवासनानितेषुकृतेषुअपचारिणाम् । नवान्नदधिमत्स्यादिआहा रादिसेविनाम् । व्यवायमित्यादि । अन्नेअजीर्णेविदग्धादिरूपेसति । व्यवायंमैथु... विणाम् । दिवानिद्रानिषेविणामितिभिन्नोहेतुः । धर्षयताम् । दोषदूष्यसंग्रहार्थमा... तादयइत्यादिशब्देनत्रिष्वपिप्रतीतेषु । त्रयइतिपदंसर्वेषुकुष्ठेषुत्रयाणामपि... ...ष्टत्वबोधनार्थम् । त्वक्रसअम्बुलसीका । अथ संख्यामाह । अतःकुष्ठानामित... अ तःपूर्व्वोक्तदोषदूष्यसमुदायात् । सप्तचैकादशचेतिसंख्याविच्छेदपाठेनसप्तानांमहाकुष्ठ त्वमेकादशानांक्षुद्रकुष्ठत्वंबोधयति ॥ ५२१ ॥

कुष्ठका अधिकार ॥

विरुद्ध अन्नपान और बहुत पतली स्निग्ध तथा भारी वस्तुओं के सेवन करनेवालों के उठे भये वमन के वेगोंको तथा अन्य वेगोंको रोकनेवालोंके बहुत भोजनकरके व्यायाम आंच तथा धूप, आदिको सेवनकरने वालों के शीत, उष्ण, लंघन तथा आहार को विधिपूर्वक सेवन न करनेवालों के धूपश्रम तथा भयसे व्याकुल होकर शीघ्रही स्नान पानके द्वारा शीतलजलको सेवन करनेवालों के अजीर्णमें भोजन करनेवालों के वमन, विरेचन, नस्य, निरूहवस्ति तथा अनुवासनवस्तिके अंतमें कुपथ्य करने वालों के नवीन अन्न, दही, मछली, लवण, खटाई, उर्द, मूली, पीठी, तिल, दूध तथा गुड़ आदिको बहुत खानेवालों के अजीर्ण में मैथुनकरनेवालों के दिनमें सोनेवालों के ब्राह्मण तथा गुरुओंका अनादर करनेवालों के और पापकरनेवालों के वातादिक तीनोंदोष एकसाथही कुपित होकर रक्त, मांस, त्वचा तथा लसीका को दूषित करके कुष्ठको उत्पन्न करतेहैं वात, पित्त, कफ, त्वचा, रुधिर, मांस और लसीका इनमें कुष्ठ अठारह प्रकार के होते हैं उनमें से सात महाकुष्ठ और ग्यारह क्षुद्रकुष्ठ होते हैं ॥ ५२१ ॥

तत्र महाकुष्ठान्याह ॥

पूर्वत्रिकंतथासिध्मततःकाकणकंतथा । पुण्डरीकर्क्षजिह्वाकेमहाकुष्ठानिसप्तच ॥ पूर्व त्रिकंकपालौदुम्बरमण्डलाख्यम् । सिध्मशब्दोऽकारान्तोनपुंसकः ॥ ननुकथंसिध्मस्य महाकुष्ठेषुगणनासुश्रुतेनक्षुद्रकुष्ठेषूक्तत्वात् । धातुप्रविष्टंसिध्मंतुस्यान्महाकुष्ठमेवच ॥ एवंविधस्यसिध्मस्य चरकेणमहाकुष्ठेषुदर्शितत्वात् । एषांमहाकुष्ठत्वञ्चशीघ्रमुत्तरोत्तर धात्ववगाहनात् । उल्बणदोषजन्यत्वाच्चिकित्साबाहुल्याच्च ॥ ५२२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महाकुष्ठोंका वर्णन ॥

कपाल, उदुम्बर, मंडल, सिध्म, काकणक, पुंडरीक और ऋक्षजिह्व ये सात महाकुष्ठ ... सन्देह होताहै कि सुश्रुतमें सिध्म क्षुद्रकुष्ठोंमें कहागयाहै इसकी गणना महाकुष्ठोंमें ... पूर्वक ... यहहै कि धातुवोंमें प्रविष्ट भया सिध्म महाकुष्ठ कहलाताहै इसप्रकार चरकने सिध्म ... महा ... दाहै और इनका महाकुष्ठत्व शीघ्रही उत्तरोत्तर धातुवों में प्रविष्ट होने से बहुत ... भये ... उत्पन्न होनेसे और चिकित्साकी बहुतायतसे होताहै ॥ ५२२ ॥

अथ क्षुद्रकुष्ठान्याह ॥

...स्मृतंपूर्वंगजचर्म्मततःस्मृतम् । ततश्चर्मदलंप्रोक्तंततश्चापिविचर्चिका ॥ ...पादिकासैवपामाकच्छूस्ततःपरम् । दद्रुविस्फोटकिटिभालसकानिचवेष्टितम् ॥ क्षुद्रकुष्ठानिचैतानिकथितानिभिषग्वरैः ॥ ननुदद्रोःकिथंक्षुद्रकुष्ठेषुगणना । सुश्रुतेनमहा ...कत्वात् ॥ उच्यतेअसितावगाढमूलाददद्रुःसुश्रुतेनमहाकुष्ठेषूक्ता । असितेतरानव ...दद्रुःक्षुद्रकुष्ठमेव ॥ एवंविधायदद्रुश्चरकेणक्षुद्रकुष्ठमेव । एवंविधायदद्रुःक्षुद्रकु ...त्वात् ॥ ५२३ ॥

क्षुद्रकुष्ठोंका वर्णन ॥

एककुष्ठ, गजचर्म्म, चर्म्मदल, विचर्चिका, विपादिका, पामा, कच्छू, दद्रु, विस्फोट, किटिभ और अलसक ये क्षुद्रकुष्ठ हैं अब यह सन्देह होताहै कि दद्रुको क्षुद्रकुष्ठों में क्यों कहा? क्योंकि इसको सुश्रुतने महाकुष्ठों में कहाहै इसका उत्तर यहहै कि सुश्रुतने काली और गहरी जड़वाली दद्रुको महाकुष्ठों में कहाहै और श्वेत तथा उथली दद्रुतो क्षुद्रही कुष्ठ है इसीलिये चरकने दद्रुको क्षुद्र कुष्ठ कहाहै ॥ ५२३॥

कुष्ठानांत्रिदोषजत्वेनैकत्वापिदोषस्योल्बणतयासप्तधात्वमाह ॥कुष्ठानिसप्तधादोषैःपृथग्द्वन्द्वैःसमागमैः । सर्वेष्वपिचत्रिदोषेषुव्यपदेशोऽधिकस्ततः॥ सर्वेष्वपित्रिदोषेषुव्यपदेशःकपालादिसंज्ञास्तेषामष्टादशरूपंयदधिकत्वंततःकुष्ठानिसप्तधाकैःदोषैःकथंभूतैः पृथग्द्वंद्वैःसमागतैःसङ्गतैःसंमिलितैरितियावत् । अस्यायमर्थः। किमपिकुष्ठंवातोल्बणंकिमपिपित्तोल्बणंकिमपिकफोल्बणंकिमपिवातश्लेष्मोल्बणं । किमपिवातपित्तोल्बणं किमपित्रिदोषोल्बणमिति ॥ ५२४ ॥

यद्यपि सम्पूर्ण कुष्ठ सन्निपातज होने के कारण एकही प्रकारके हैं तथापि दोषोंकी उल्बणतासे सात प्रकारके हैं जैसे वातोल्बण, पित्तोल्बण, कफोल्बण, वातकफोल्बण, पित्तकफोल्बण, वातपित्तोल्बण और त्रिदोषोल्बण ॥ ५२४ ॥

पूर्वरूपमाह ॥

अतिश्लक्ष्णःखरस्पर्शःस्वेदास्वेदविवर्णता॥दाहःकण्डूस्त्वचिस्वापस्तोदःकोठोन्नतिःक्रमः॥ व्रणानामधिकंशूलंशीघ्रोत्पत्तिश्चिरस्थितिः । रूढानामतिरूक्षत्वंनिमित्तेऽल्पेऽपिकोपनम् ॥ रोमहर्षोसृजःकार्ष्ण्यंकुष्ठलक्षणमग्रजम् । अतिश्लक्ष्णमतिमृदुः । अथवा घर्म्मादिप्रसंगेऽपिस्वेदाभावः । त्वचिःस्वापस्पर्शाज्ञता । शीघ्रोत्पत्तिर्व्रणानाम् ॥५२५॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुष्ठका पूर्वरूप ॥

...नके पहले त्वचा कोमल, खरखरी तथा विवर्ण होतीहै स्वेद निकलता है अथवा धूपआ-दि... स्वेद नहीं निकलताहै स्पर्शका ज्ञान नहींहोता दाह, खुजली, सूजी गडनेकीसी पी-डा, ... तथा ग्लानि होतीहै व्रणोंकी शीघ्र उत्पत्ति बहुतकाल स्थिति तथा उनमें अ...॥ होतीहै व्रणोंके अंकुर अत्यन्त रूखे तथा थोडे कारण मेंही बढ़नेवाले होतेहैं रोमांच ... धिर काला होजाता है ॥ ५२५ ॥

येनोल्बणेन यत्कुष्ठमुत्पाद्यतेतदाह ॥

वातेनकुष्ठंकापालंपित्तेनौदुम्बरंकफात् । मण्डलाख्यंविचर्चीचऋक्षाख... चर्मैककुष्ठकिटिभंसिध्मालसविपादिकाः । वातश्लेष्मोद्भवाःपित्त... पुण्डरीकंसविस्फोटपामाचर्म्मदलेतथा । सर्वैरेवोल्बणैर्दोषैराहुःकाक... र्चीचकफादित्यन्वयः पुण्डरीकंसविस्फोटंपामाचर्मदलेतथा ॥ पित्तक...

जिस दोषकी अधिकतासे जो कुष्ठ उत्पन्न होताहै उसका व...

वातकी अधिकतासे कापाल, पित्तसे उदुम्बर, कफसे मंडल तथा विचर्चिका, वातपित्त... ...हते हैं इनमें ... वातकफसे चर्म्म, एककुष्ठ, किटिभ, सिध्म, अलसक तथा विपादिका, पित्तकफसे दद्रु, शत...रु, पुण्ड-रीक, विस्फोट, पामा तथा चर्म्मदल और तीनों दोषोंकी अधिकतासे काकणककुष्ठ उत्पन्नहोताहै ५२६॥

अथ महाकुष्ठानांमध्येकपालस्य लक्षणमाह ॥

कृष्णारुणंकपालाभंयद्रूक्षंपरुषंतनु । कपालंतोदबहुलंतत्कुष्ठंविषमंस्मृतम् ॥ किञ्चित्कृष्णाःकिञ्चिदरुणाःयेकपालाःस्फुटितमृत्पात्रखण्डाःखपराइतियावत्तद्वर्णंपरुषं खरस्पर्शम् । तनुतनुत्वक्कपालंकपालसंज्ञंविषमंदुश्चिकित्स्यम् ॥ ५२७ ॥

कापाल का लक्षण ॥

कुछकाले तथा कुछलाल ठिकरों के समान वर्णवाला, रूखा, खरखरा, पतलीखालवाला और सूजीगडने कीसी बहुत पीडावाला कुष्ठ कापाल कहलाताहै यह अत्यन्त दुस्साध्यहै ॥ ५२७ ॥

औदुम्बरमाह ॥

उदुम्बरफलाभासंकुष्ठमौदुम्बरंवदेत् । रुग्दाहरागकण्डूभिःपरीतंरोमपिञ्जरम् ॥ औदुम्बरफलाकारम् ॥ ५२८ ॥

उदुम्बरका लक्षण ॥

पीडा, दाह, रक्तता तथा खुजली युक्त पीले रोमवाले और गूलरके फलके समान वर्णवाले कुष्ठ को उदुम्बर कहतेहैं ॥ ५२८ ॥

मण्डलमाह ॥

श्वेतरक्तंस्थिरंस्त्यानंस्निग्धमुत्सन्नमण्डलम् । कृच्छ्रमन्योन्यसंसक्तंकुष्ठंमण्डलमुच्यते ॥ श्वेतरक्तंकिञ्चिच्छ्वेतंकिञ्चिद्रक्तम् । स्थिरंचिकित्सांविना । अविनाशिस्त्यानं आर्द्रंस्निग्धंसस्वेदम् । उत्सन्नमण्डलमुद्गतमण्डलम् । कृच्छ्रंकष्टसाध्यम् । अन्योन्यसंसक्तंपरस्परमिलितम् ॥ ५२९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मण्डलका लक्षण ॥

कुछ श्वेत तथा रक्तवर्णवाले चिकित्साके विना नहीं जानेवाले गीले स्वेदयुक्त उठे ... और परस्पर मिलेहुये कुष्ठको मण्डल कहतेहैं यह कष्टसाध्यहै ॥ ५२९ ॥

पूजात...

अथ सिध्ममाह ॥

दहेत्... चतनुयद्रजोघृष्टंविमुञ्चति । प्रायेणोरसितत्सिध्ममलाबुकुसुमोपमम् ॥ ... श्वेतंताम्रम् । तनुतनुत्वक् । प्रायेणोरसिप्रायःशब्दादन्यत्रापिबोद्धव्यम् ॥ ५३० ॥

सिध्मका लक्षण ॥

... के समान आकृतिवाले श्वेत तथा रक्तवर्णवाले पतलीखालवाले औ प्रायःछाती ... कहतेहैं इसके रगडनेसे धूलि झड़तीहै ॥ ५३० ॥

क्षुद्रकुष्ठानि...

अथ काकणमाह ॥

...त्वात् ॥ ...वर्णमपाकंतीव्रवेदनम् । त्रिदोषलिङ्गंततकुष्ठंकाकणंनैवसिध्यति ॥ ...क्षुद्रकु... ...वर्णत्वेनमध्येकृष्णमन्तेरक्तम् । अथवामध्येरक्तंमध्यान्तेकृष्णम् । शूकदोषेवात् । त्रिदोषलिंगम् । सर्वेषांकुष्ठानांत्रिदोषजत्वेऽपिउल्बणदोषत्रयलिंगम् ॥ ५३१ ॥

काकणका लक्षण ॥

घुंघुची के समान बीचमें लाल तथा पार्श्वमें कृष्णवर्ण अथवा बीचमें काले तथा पार्श्वमें रक्तवर्णवाले अत्यन्त पीडा युक्त नहीं पकनेवाले और तीनों दोषों के लक्षणवाले कुष्ठ को काकण कहतेहैं यह असाध्यहै ॥ ५३१ ॥

अथ पुण्डरीकमाह ॥

तत्श्वेतंरक्तपर्य्यन्तंपुण्डरीकदलोपमम् । सरागञ्चैवसोत्सेधंपुण्डरीकंकफोल्बणम् ॥ पुण्डरीकदलोपमंपुण्डरीकंश्वेतकमलंतत्पत्रोपमम् । सरागञ्चैव । अतएवश्वेतंरक्तपर्य्यन्तमन्तेरक्तम् । सरागमितिअन्तेलोहित्याधिक्यबोधनार्थम् ॥ सोत्सेधमुन्नतम् ५३२ ॥

पुण्डरीकका लक्षण ॥

लालकमल के पत्तोंके समान श्वेत तथा किनारोंपर रक्तवर्णवाले और फूलेभये कुष्ठको पुण्डरीक कहतेहैं वह कफकी अधिकतासे होताहै ॥ ५३२ ॥

अथर्क्षजिह्वकमाह ॥

कर्कशंरक्तपर्य्यन्तमन्तःश्यावंसवेदनम् । यदृक्षजिह्वासंस्थानमृक्षजिह्वंतदुच्यते ॥ रक्तपर्य्यन्तमन्तेरक्तमन्तःश्यावंमध्येधूम्रवर्णम् । ऋक्षजिह्वासंस्थानम् । ऋक्षोभल्लूकस्तस्यजिह्वाकृतिः ॥ ५३३ ॥

ऋक्षजिह्वका लक्षण ॥

कठोर किनारोंपर रक्तवर्ण, मध्यमें धूम्रवर्ण, पीडायुक्त और रीछकी जिह्वा के समान आकृतिवाले कुष्ठको ऋक्षजिह्व कहतेहैं ॥ ५३३ ॥

अथ क्षुद्रकुष्ठानांमध्येएककुष्ठगजचर्म्मणोर्लक्षणमाह ॥

अस्वेदनंमहावास्तुयन्मत्स्यशकलोपमम् । तदेककुष्ठंचर्म्माख्यंबहुलंगजचर्म्मवत ॥ महावास्तुमहास्थानम् । मत्स्यशकलोपमम् अत्रशकलशब्देनलक्षणयात्वगु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

... तेनचक्राकारमभ्रकपत्रसदृशंभवति ॥ एककुष्ठमितिक्षुद्रकुष्ठेषुमुख्यत्वात् । च ... र्म्मीख्यंबहलंस्थूलंगजचर्म्मवद्रूक्षंकृष्णंच ॥ ५३४ ॥

क्षुद्र कुष्ठोंमेंसे एककुष्ठ और गजचर्म्म का लक्षण ॥

... रहित बडे चकत्तेवाले और मछलीके छिलके के समान कुष्ठको एककुष्ठ कहते हैं ... मैं मुख्यहोने से एक कुष्ठ कहलाता है स्थूल और हाथीके चर्म्म के समान रूखे तथ... वाले कुष्ठको गजचर्म्म कहतेहैं ॥ ५३४ ॥

अथ चर्म्मदलमाह ॥

रक्तंसशूलंकण्डूमत्सस्फोटंदलयत्यपि । तच्चर्म्मदलमाख्यातंस्पर्शस्या... दलयत्यपिविदारयत्यपिचर्मेतिशेषः ॥ ५३५

चर्म्मदलका लक्षण ॥

रक्तवर्ण खुजली तथा पीडा युक्त फुन्सी सहित और फटी त्वचावाले कुष... ...हते हैं इनमें हैं इसमें स्पर्श नहीं सहाजाताहै ॥ ५३५ ॥

अथ विचर्चिकामाह ॥

सकण्डूःपिडकाश्यावाबहुस्रावा । विचर्चिकापिडकाक्षुद्रपिडका । ननुक्षुद्रकुष्ठानांकथमेकादशत्वंविपादिकायाद्वादशत्वसम्भवात् । उच्यते । विचर्चिकैवपादयोर्भवतिविपादिकातेनसंख्यातिरेकः । (अतएवभोजः) दाल्यतेत्वक्वरारूक्षपाण्योर्ज्ञेयाविचर्चिका । पादेविपादिकाज्ञेयास्थानभेदादविचर्चिका ॥ दाल्यतेविदार्य्यते । केचिद्विचर्चिकातोविपादिकांभिन्नामाहुःविपादिकामाहवैपादिकंपाणिपादस्फुटनंतीव्रवेदनम् । पाणिपादस्फुटनंपाण्योःपादयोश्चस्फुटनंविदारणंयेनतत् ॥ ५३६ ॥

विचर्चिका का लक्षण ॥

धुमैले वर्णवाली खुजलीसहित बहुत बहनेवाली छोटीपिडिकाओंको विचर्चिका कहतेहैं अब यह सन्देह होताहै कि क्षुद्रकुष्ठ ग्यारह प्रकारकेहैं तो विपादिका बारहवीं होगी यहकैसे ? इसका उत्तर यह है कि,विचर्चिका के समान पैरोंमें होतीहै इसलिये संख्याका भेद नहीं है इसीसे भोज ने कहाहै हाथों में कर्कश औ रूखी त्वचाके फटने को विचर्चिका कहतेहैं और वही विचर्चिका पैरों में हो तो स्थान भेदसे विपादिका कहलाती है कोई २ विचर्चिकासे विपादिका को भिन्न कहतेहैं जैसे बहुतपीड़ा युक्त हाथ पैरोंके फटने को विपादिका कहतेहैं ॥ ५३६ ॥

अथ पामामाह ॥

सूक्ष्मावाह्याःस्रावबन्त्यःप्रदाहापामेत्युक्ताःपिडकाःकण्डुमत्यः । पिडकाःपीडयन्तीति पिडकाइतिक्षिपकादित्वान्निपात्यते ॥ ५३७ ॥

पामाका लक्षण ॥

छोटी बहनेवाली दाह तथा खुजली युक्त बहुतसी पिडिकाओंको पामा कहतेहैं ॥ ५३७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ कच्छुमाह ॥

सैवस्फोटैस्तीव्रदाहैरुपेताज्ञेयापाण्योःकच्छुरुग्रास्फिजोश्च । सैवपाम... स्फिजौप्रोथौ ॥ ५३८ ॥

कच्छूका लक्षण ॥

... और नितम्बोंमें पामाके समान अत्यन्तपीडा युक्त बडे स्फोटकों को कच्छू कहतेहैं ॥ ५३८ ॥

अथ दद्रुमाह ॥

...ण्डूरागपिडकंदद्रुमण्डलमुद्गतम्।दद्रुमण्डलरूपेणोत्पत्तितोद्गतमुच्छूनम्॥५३९ ॥

दद्रुका लक्षण ॥

...जली युक्त पिडिका सहित तथा उभरेभये चकत्तों को दद्रु कहतेहैं ॥ ५३९ ॥

अथ विस्फोटमाह ॥

...टाःश्यावारुणामांसाविस्फोटाःस्युस्तनुत्वचः ॥ ५४० ॥

विस्फोटका लक्षण ॥

...वाले और धुमैले तथा रक्तवर्ण स्फोटकों को विस्फोट कहतेहैं ॥ ५४० ॥

किटिभमाह ॥

श्यामंकिणखरस्पर्शपरुषंकिटिभंस्मृतम् । किणखरस्पर्शंकिणःशुष्कव्रणस्थानंतद्व तुकर्कशस्पर्शम् । परुषंरूक्षम् ॥ ५४१ ॥

किटिभकालक्षण ॥

सूखेभये व्रणके स्थानके समान खुरखुरे रूखे और श्यामवर्ण कुष्ठको किटिभ कहते हैं ॥ ५४१ ॥

अथालसकमाह ॥

कण्डूमद्भिःसरागैश्चगण्डैलरसकञ्चितम् । गण्डैःमहापिडकाभिःचितंवेष्टितम्॥५४२॥

अलसकका लक्षण ॥

खुजलीयुक्त रक्तवर्ण बडेस्फोटकों से व्याप्त कुष्टको अलसक कहते हैं ॥ ५४२ ॥

अथ शतारुस्तदाह ॥

रक्तश्यावंसदाहार्तिशतारुःस्याद्बहुव्रणम् ॥ ५४३ ॥

शतारुका लक्षण ॥

रक्त अथवा धुमैलेवर्णवाले दाह तथा पीडासहित और वहुतव्रणवाले कुष्ठको शतारु कहतेहैं ॥ ५४३ ॥

अथ सप्तधातुगतानांकुष्ठानांलक्षणान्याह । तत्ररसगतस्यलक्षणमाह ॥

त्वक्स्थेवैवर्ण्यमङ्गेषुकुष्ठेरौक्ष्यञ्चजायते । त्वक्स्वापोरोमहर्षश्चस्वेदस्यातिप्रवर्त्तनम् ॥ त्वक्शब्देनात्ररसउच्यते ॥ धातुप्रस्तावात्त्वक्स्थाद्यत्वक्स्वापःस्पर्शाज्ञत्वम् ॥ त्वक्स्वापइत्यादिकंकेचिद्रक्तगतस्यालिङ्गंमन्यन्ते ॥ ५४४ ॥

सप्तधातुगत कुष्टों के लक्षण रसगत कुण्ठके लक्षण ॥

कुष्टके रसगतहोने पर विवर्णता,रुक्षता,रोमांच,बहुत पसीना निकलना और स्पर्श का न मालूम होना ये लक्षण होते हैं ॥ ५४४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ रुधिरगतमाह ॥

...कण्डूश्चैवकुष्ठेशोणितसम्भवे। विपूयकःविशेषेणपूयः ॥ ५४५ ॥

रुधिरगत कुष्ठका लक्षण॥

...रक्त में स्थितहोने पर खुजली होतीहै और बहुत पीप निकलताहै॥ ५४५॥

अथ मांसगतमाह ॥

बाहुल्यंवक्त्रशोषश्चकार्कश्यंपिडकोद्गमः। तोदःस्फोटःस्थिरत्वञ्चकुष्ठेम... ते॥ बाहुल्यंकुष्ठस्यपुष्टिः॥ पिडकोद्गमःक्षुद्रपिडकोद्गमःस्फोटःबृहत्पिडका।... मसञ्चारित्वम्॥ ५४६॥ मांसगत कुष्ठका लक्षण॥

कुष्ठके मांसगत होनेपर कुष्ठकी अधिकता,मुखका सूखना,कर्कशता,छोटी फुन्सि... सूजीगड़ने कीसी पीड़ा,बड़ी पिड़िका और स्थिरता ये लक्षण होतेहैं॥ ५४६॥...

अथ मेदोगतमाह ॥

कौण्यंगतिक्षयोंगानांसम्भेदःक्षतसर्पणम्। क्षतापसारेलिंगानिपू... मेदस्थानगतेलिंगंप्रागुक्तानितथैवच। कौण्यंहस्तनाशःअंगानांस... सर्पणंक्षतप्रसरणंपूर्वोक्तानिरक्तमांसगतालिंगानि॥ ५४७॥

मेदोगत कुष्ठके लक्षण॥

कुष्ठके मेदोगत होनेपर हाथोंका गलना,चल न सकना,अंगभंग,घावोंका फैलना और पहले कहे हुये रक्त तथा मांसगत कुष्ठके लक्षण होतेहैं॥ ५४७॥

अथास्थिमज्जागतमाह ॥

नासाभंगोऽक्षिरागश्चक्षतेषुकृमिसम्भवः। स्वरोपघातःपीडाच भवेत्कुष्ठेऽस्थिमज्जगे॥ ५४८॥

अस्थिमज्जागतकुष्ठके लक्षण॥

कुष्ठके अस्थि और मज्जा में प्राप्त होनेपर नाकका बैठना नेत्रोंका लाल होना स्वरभंग पीड़ा और घावोंमें कीडे पडना ये लक्षण होतेहैं॥ ५४८॥

अथ शुक्रगतमाह ॥

दम्पत्योःकुष्ठबाहुल्याद्दुष्टशोणितशुक्रयोः। यदपत्यंतयोर्जातंज्ञेयंतदपिकुष्ठितम्॥ ननुशुद्धशोणितशुक्रयोरेवंदम्पत्योर्गर्भसम्भवः। दुष्टशोणितशुक्रयोःकथमपत्योत्पत्तिः॥ (यतआहसुश्रुतः)कामान्मिथुनसंयोगेशुद्धशोणितशुक्रजः।गर्भःसञ्जायतेनार्याःसजातो बालउच्यते॥ अथान्यच्च। वातादिदुष्टरेतसोऽपत्योत्पादनेनसमर्थाइतिउच्यते॥ गर्भोऽत्रशुद्धोबोद्धव्यः। अशुद्धगर्भोऽपिदुष्टशोणितशुक्रयोरपिभवति॥ गतकर्णान्धबधिरादीनांसम्भवात्। शोणितमार्त्तवम्॥ कुष्ठितंकुष्ठंसञ्जातमस्येतितारकादित्वादितच्। शुक्रार्त्तवगतंकुष्ठमपत्येनव्यजतइति तात्पर्यम्॥ ५४९॥

शुक्रगत कुष्ठके लक्षण॥

कुष्ठकी अधिकतासे स्त्री तथा पुरुष के रज तथा वीर्य्य के दूषित होनेपर जो सन्तति होतीहै वा कुष्ठी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हिहै अब … होताहै कि शुद्ध रज तथा वीर्य्यवालेही स्त्री पुरुषोंके गर्भ होताहै तो दूषित रज तथा वीर्य्य से सन्तति कैसे होगी ? क्योंकि सुश्रुत ने कहाहै कि कामके द्वारा शुद्ध रज तथा वीर्य्य … पुरुषोंके संयोग होनेपर गर्भ होता है यह उत्पन्न होकर बाल कहलाताहै और वातादि के द्वारा … वीर्य्यवाले सन्ततिको नहीं उत्पन्न करसकेहैं इसका उत्तर यहहै कि यहां गर्भ कहनेसे शुद्ध … पूजत … क्योंकि दूषित रज तथा वीर्यसे अशुद्ध गर्भ होताहै उससे इन्द्रियरहित अन्ध तथा बाधिरादि देहतक … यहां यह तात्पर्य है कि वीर्य्य तथा रजमें प्राप्त कुष्ठ सन्तति से जानाजाताहै ॥ ५४६ ॥

कुष्ठेषूल्वणवातादिदोषलिंगमाह ॥

… रुणंरूक्षंवातकुष्ठंसवेदनम् । पित्तात्प्रकुपितंदाहरागस्रावान्वितंमतम् ॥ … स्निग्धंसकण्डूशैत्यगौरवम् । द्विलिंगंद्वन्द्वजंकुष्ठंत्रिलिंगंसान्निपातिकम् ॥ … श्यावंवाअरुणंवा ॥ प्रकुपितंपूतिक्लेदबहुलम् । क्लेदमार्द्रता … क्षुद्रकुष्ठानि … ॥ ५५० ॥

… त्वात् ॥ उ…

कुष्ठोंमें वातादि दोषोंकी अधिकताके लक्षण ॥

… क्षुद्रकुष्ठ. खुरखुरा, धुमेला अथवा लाल रूखा और पीडासहित होताहै अधिकपित्त … ल, दाह तथा स्रावयुक्त होताहै अधिककफवाला कुष्ठ. गीला, पुष्ट, स्निग्ध, खुजली युक्त … भारीहोताहै द्वन्द्वज कुष्ठ. दोदोषोंकेलक्षणवाला और सन्निपातजकुष्ठ. तीनोंदोषोंके लक्षणवाला होताहै ॥ ५५० ॥

अथ साध्यत्वादिकमाह ॥

साध्यंत्वग्रक्तमांसस्थंवातश्लेष्माधिकञ्चयत् । मेदोगंद्वन्द्वजंजाप्यंवर्ज्यंमज्जास्थिसंश्रितम् । कृमिकृद्दाहमन्दाग्निसंयुक्तंयत्त्रिदोषजम् । वातश्लेष्माधिकश्चयत् एतेनसिध्मैककुष्ठगजचर्म्मविपादिकाकिटिभालसकानिसाध्यानि मज्जागतंशुक्रगतमप्यसाध्यम् ॥ कृमिर्वाह्योऽपिवर्ज्यइत्यन्वयः ॥ ५५१ ॥

कुष्ठके साध्यादि लक्षण ॥

त्वचा, रुधिर तथा मांसमें स्थित और वातकफाधिक, सिध्म, एककुष्ठ, गजचर्म्म, विपादिका, किटिभ, अलसक, कुष्ठसाध्यहै मेदोगत और द्वन्द्वज कुष्ठ याप्य हैं मज्जागत वीर्य्यगत और कृमि, दाह तथा मन्दाग्नियुक्त, त्रिदोषज, कुष्ठ असाध्य है ॥ ५५१ ॥

अथारिष्टमाह ॥

प्रभिन्नंप्रस्रुतांगञ्चरक्तनेत्रंहतस्वरम् । पञ्चकर्म्मगुणातीतंकुष्ठंहन्तीहकुष्ठिनम् ॥ प्रभिन्नंविदीर्णम् । हतस्वरंघर्घरस्वरम् ॥ पञ्चकर्म्मगुणातीतम् । असञ्जातवमनादिपञ्चकर्म्मगुणम् ॥ ५५२ ॥

कुष्ठ के अरिष्ट ॥

जो कुष्ठ में अंगकटगयेहों, बहतेहों, नेत्रलाल होगयेहों, स्वरभंग होगया हो और वमन आदि पंच कर्म्मकरने से कोई गुण न हो तो कुष्ठीमरताहै ॥ ५५२ ॥

अथत्वग्दुष्टिसाम्यात् कुष्ठभेदत्वाच्चात्रैवश्वित्रमाह ॥

कुष्ठैकंसम्भवंश्वित्रंकिलासंचारुणंभवेत् । निर्दिष्टमपरिस्रावित्रिधातूद्भवसंश्रयम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...सम्भवंकुष्ठेनसहसम्भवोनिदानंयस्यततं (अथ श्वित्रस्यभेदमाह) किलासश्चा... ...श्वित्रमेवरक्तमांसाश्रयात्किलासन्तरुणञ्चभवेदित्यर्थः ॥ ...नुकुष्ठस्यश्वित्रस्यको ...निर्दिष्टमपरिस्रावीतिश्वित्रमपरिस्रावि भवतिकुष्ठन्तुस्रावि अथच । ... तु...संश्रयमितिश्वित्रं ॥ त्रयोधातवोवातपित्तकफास्तेभ्यः पृथग्भूतेभ्यउद्भवो...यत् ॥ अथ त्रयोधातवोरक्तमांसमेदांसिसंश्रयोऽधिष्ठानंयस्यततत् ॥ कुष्ठन्तुसन्निप... तुगतंभवतीतिभेदः ॥ ५५३ ॥

त्वचाके दूषितहोने की समतासे और एकप्रकारके कुष्ठहोनेसे यहीं पर श्वित्रका ल... श्वित्र में कुष्ठके समान सम्पूर्ण निदान हैं श्वित्रही रुधिर और मांसके आ... किलास कहलाताहै अन्य कुष्ठ बहतेहैं श्वित्र बहता नहीं श्वित्र वातादि त... उत्पन्न होताहै और रुधिर मांस तथा मेद इन तीन धातुओंमें होताहै अन्य कु... और सर्वधातुगत होतेहैं यही श्वित्र और कुष्ठमें भेदहै ॥ ५५३ ॥

अथ दोषभेदेनलक्षणभेदान्याह ॥

वाताद्रूक्षारुणंपित्तात्ताम्रंकमलपत्रवत् । सदाहंरोमविध्वंसिकफाच्छ्वे... सकण्डूकंक्रमाद्रक्तमांसमेदःसुचादिशेत् । वर्णेनैवेदृगुभयंकुष्ठंतच्चोत्तरोत्तरम् ॥ अरुण मीषल्लोहितम् । कमलपत्रवदित्यनेनमध्येश्वेतमन्तेलोहितंबोधयति ॥ घनंपुष्टम् । क्रमाद्रक्तमांसमेदःसुचादिशेत् । (तथा च चरकः) अरुणंरक्तगेवातेताम्रंपित्तेपलङ्गते । श्वेतंश्लेष्मणिमेदस्थेश्वित्रंकुष्ठंपरापरमिति ॥ उभयंद्विविधमपिश्वित्रंवर्णेनईदृगेव । अरुणंताम्रंश्वेतञ्चदोषभेदात् ॥ द्विविधंदोषजंव्रणजंच । (तथाचभोजः) श्वित्रंतुद्विविधं विद्यादोषजंव्रणजंतथेति ॥ ५५४ ॥

दोषभेदसे श्वित्रके अलग २ लक्षण ॥

वातजश्वित्र. रूखा और कुछ रक्तवर्णहोताहै पित्तज श्वित्र. ताम्रवर्ण, कमलपत्र के समान बीच में श्वेत तथा अन्तमें लाल दाहयुक्त और रोमनाशक होताहै कफज श्वित्र. श्वेत, पुष्ट, भारी और खुजली युक्त होताहै ऊपरकहेभये वर्णोंके द्वाराक्रमसे रक्तमांस और मेदमें स्थित श्वित्र जाननाचाहिये और ऐसाही चरकने कहाहै कि वातज रक्तवर्ण श्वित्र. रक्तगत पित्तज ताम्रवर्ण श्वित्र मांसगत और कफज श्वेतवर्ण श्वित्र मेदोगत होताहै दोनोंप्रकारका श्वित्र वर्णसे इसीप्रकारका होताहै और वर्णभेद दोषों के भेदसे होताहै श्वित्र दोप्रकारकाहै दोषज और व्रणज ऐसाही भोज ने कहाहै कि श्वित्रको दोषज और व्रणजभेद से दोप्रकारका जाननाचाहिये ॥ ५५४ ॥

अथ श्वित्रंसाध्यमसाध्यञ्चाह ॥

अशुक्लरोमाबहलमसृग्युक्तमथोनवम् । अनग्निदग्धजंसाध्यंश्वित्रंवर्ज्यमतोऽन्यथा ॥ वर्जनीयांविशेषेणाकि अबहलंतनु । अन्यच्च ॥ गुह्यपाणितलोष्ठेषुजातमप्यचिरन्तनम् । वर्जनीयांविशेषेणाकि लासंसिद्धिमिच्छता ॥ गुह्यंमेहनंभगश्चतलमत्रपदतलंजातंसुश्रुतेनान्तेजातमितिसा मान्यतोनिर्दिष्टत्वात् । अप्यचिरन्तनंनवमपि ॥ ५५५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिवत्रके साध्य और असाध्य लक्षण ॥

कृष्णरोम जिसमें बहुतहों परस्पर मिला न हो अग्निके द्वारा जलनेसे न उत्पन्न भ... नवीनहो ऐसा श्वित्रसाध्यहै अन्यथा असाध्य है और भी कहाहै कि लिंग योनि हाथ पैरोंके त...वे पूजे... हुआ नवीनभी किलास असाध्यहै ॥ ५५५ ॥

... अथ कुष्ठस्यसंसर्गजत्वप्रसङ्गेनान्यानपिसंसर्गजानूरोगानाह ॥

...त्रसंस्पर्शान्निःश्वासात्सहभोजनात् (प्रसङ्गोमैथुनम्) एकशय्यासनाच्चा ...नुलेपनात् । कण्डूकुष्ठोपदंशश्चभूतोन्मदव्रणज्वरः ॥ औपसर्गिकरोगाश्च ...म् । म्रियतेयदिकुष्ठेनपुनर्जातस्यतद्भवेत् । अतोनिन्दितरोगोऽयं ... एतावताकुष्ठिनांकुष्ठंसर्वथाप्रतीकरणीयंनतूपेक्षणीयम् । (इति क्षुद्रकुष्ठानि...) ॥ ५५६ ॥

... ॥ ... संसर्गज रोगहै इससे अन्य संसर्गज रोगोंकाभी वर्णन ॥

...,साथभोजन करना, एकशय्यामें सोना, एक आसनपर बैठना और एकही ... अनुलेपनका धारण करना इनसे खुजली, कुष्ठ, उपदंश, भूतोन्माद, व्रण, ज्वर तथा ... एकमनुष्यसे दूसरे मनुष्यको होते हैं जो कुष्ठसे मृत्युहो तो दूसरे जन्म में भी कुष्ठ होताहै इसलिये यह निंद्यरोग अत्यन्त कष्टदायी है इसीसे कुष्ठका यत्नपूर्वक प्रतीकार करना चाहिये और अपेक्षा नहीं करना चाहिये इति कुष्ठनिदानाऽधिकार समाप्त ॥ ५५६ ॥

अथ कुष्ठस्यचिकित्सामाह ॥

वातोत्तरेषुसर्पिर्वमनंश्लेष्मोत्तरेषुकुष्ठेषु।पित्तोत्तरेषुलेपःसेकोरक्तस्यमोचनंश्रेष्ठम् ५५७॥

कुष्ठकी चिकित्सा ॥

अधिकवातवाले कुष्ठमें घृतप्रयोग अधिक कफवाले कुष्ठमें वमन अधिक पित्तवाले कुष्ठमें लेप परिषेक तथा रुधिर निकलवाना श्रेष्ठहै ॥ ५५७ ॥

पथ्याकरञ्जसिद्धार्थनिशावल्गुजसैन्धवैः । विडङ्गसहितैःपिष्टैर्लेपोमूत्रेणकुष्ठनुत् ॥ अवल्गुजःबकुचीतिलोके (इति पथ्यादिलेपः) ॥ ५५८ ॥

हड, करंजुआ, सरसों, हल्दी, बकुची, सेंधानोन और बायबिडंग इनको गोमूत्रमें पीसकर लेप करने से कुष्ठका नाश होताहै इतिं पथ्यादि लेप ॥ ५५८ ॥

सोमराजीभवंचूर्णंश्रृंगवेरसमन्वितम् । उद्वर्त्तनमिदंहन्तिकुष्ठमुग्रंकृतास्यदम् ॥ सोमराजीबकुचीतिलोके (इति सोमराज्युद्वर्त्तनम्) ॥ ५५९ ॥

बकुची और सोंठके चूर्णका उबटन बढ़ेभये कुष्ठको भी नष्ट करताहै इति सोमराजी उद्वर्तन ॥५५९॥

रसायनंप्रवक्ष्यामिब्रह्मणायदुदाहृतम् । मार्कण्डेयप्रभृतिभिर्यत्प्रयुक्तंमहर्षिभिः ॥ पुष्पकालेतुपुष्पाणिफलकालेफलानिच । संगृह्यापिचुमर्दस्यत्वङ्मूलानिदलानिच ॥ द्विरंशानिसमाहृत्यभागिकानिप्रकल्पयेत् । त्रिफलात्र्यूषणंब्राह्मीश्वदंष्ट्रारुष्करागनयः ॥ विडंगसारवाराहीलोहचूर्णंमृताःसमाः। निशाद्वयोवल्गुजकंव्याधिघातःसशर्करः। कुष्ठमिन्द्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यवानीहाचूर्णमेषांतुसंयुतम् । खदिरासननिम्बानांघनक्काथेनभावयेत् ॥ सप्तधांपश्चा नि... ...कर्थस्वरसेनच । स्निग्धःशुद्धतनुर्धीमान्योजयेत्तच्छुभेदिने ॥ मधुनातिक्त हविषा खदिरासनवारिणा । लेह्यमुष्णम्भसावापिकोलवृद्ध्यापलंभवेत् ॥ जीर्णेतस्मिन् समश्नीयात्स्निग्धंलघुहितञ्चयत् । विचर्चिकोदुम्बरपुण्डरीककपालदद्रूकिटिभालसकान् ॥ द्विकम् ॥ शतारुविस्फोटविसर्प्पमालाःकफप्रकोपंत्रिविधंकिलासम् । भगन्दर... वातरक्तजडान्धनाडीव्रणशीर्षरोगान् ॥ सर्वान्प्रमेहान्प्रदरांश्चसर्वान्दंष्ट्रा... षंनिहन्ति । स्थूलोदरःसिंहकृशोदरःस्यात्सुश्लिष्टसन्धिर्मधुनोपयोगात् ॥ स... दपियेदशन्तिसर्प्पादयोयान्तिविनाशमाशु । जीवेच्चिरंव्याधिजराविमुक्तः... समानकान्तिः ॥ अस्यायमर्थः ॥ निम्बस्यपुष्पफलत्वक्पत्रमूलानि... द्विगुणानिचूर्णितानिभृंगराजस्वरसेनसप्तवारान्भावयेत् ॥ त्रिफलादी... ...शु दितान्येकभागानिचूर्णितानिखदिरासननिम्बक्काथेनभावयेत् । ततः... दिनाऽवलिह्यात् ॥ इति पञ्चनिम्बकावलेहः ॥ ५६० ॥

ब्रह्मा की कहीं भई और मार्कण्डेयआदि महर्षियों से व्यवहार कीगई रसायन क... ...इते हैं इनमें नींब के पुष्पों के समय पुष्प तथा फलों के समय फल और छाल जड़ तथा पत्तियों को लाकर चूर्णकरै इसके दो भागोंको भँगरे के रसमें सात बार भावनादे फिर त्रिफला, त्रिकटु, ब्राह्मी, गोखुरू, भिलावां, चीता, बिड़ंगसार, बाराहीकन्द, लोह चूर्ण, गिलोय, हल्दी, दारुहल्दी, बकुची, अमलतास, शर्करा, कूट, इन्द्रयव और पाठा इनसबके एक भाग चूर्णको कत्थे, विजयसार और नींब के काढ़े में भावनादे फिर दोनोंको मिलाकर स्निग्ध तथा वमन आदिकेद्वारा शुद्धशरीरवाला मनुष्य शहद, तिक्त, घृत, कत्थे तथा विजयसारके काढ़े अथवा उष्ण जलके साथ इसको चाटै इसको आठ माशेसे चार तोलेतक प्रतिदिन बढ़ाताजाय औषधके पचजानेपर स्निग्ध लघु तथा पथ्य भोजन करै इसकेद्वारा विचर्चिका, उदुम्बर, पुण्डरीक, कापाल, दद्रु, किटिभ, अलसक, शतारु, बिस्फोट, वीसर्प्प, गण्डमाला, कफकाकोप, तीन प्रकारका किलास, भगन्दर, फीलपांव, वातरक्त, जड़ता, अन्ध, नाड़ी व्रण, शिरके रोग, सम्पूर्ण प्रमेह, सब प्रदर, दांतके काटेका विष तथा मूल विष इनसबका नाश होताहै शहदके साथ इसको चाटने से बहुत बढ़ेभये मेदो रोगका नाश होताहै इसके सदैव सेवनसे यदि सर्प्पादि काटें तो वे शीघ्र नष्ट होजाते हैं और रोग तथा वृद्धावस्था से छूटकर चन्द्रमा के समान कान्तिवाला होकर बहुत कालतक जीताहै इति पंच निंबकावलेह ॥ ५६० ॥

शशिलेखापञ्चपलंताद्विरिजस्यगुग्गुलोस्तुदश । ताप्यस्यपलंत्रितयंद्वेलोहस्यात्र णीकायोश्चपले ॥ त्रिफलाकरञ्जपल्लवखदिरगुडूचीत्रिवृद्दन्त्यः । मुस्ताविडंगरजनी कुटजत्वङ्निम्बवह्निसम्पाकाः ॥ एतैरचितांवटिकांमधुसंमिश्रांगिलेत्प्रातः । गोमूत्रेणचकुष्ठंनुदत्यसृग्वातमचिरेण ॥ श्वित्राणिपाण्डुरोगंविषमानुदरप्रमेहगुल्मांश्च ॥ नाशयति बलीपलितंयोगःस्वायम्भुवोनाम्ना ॥ शशिलेखासोमराजी । गिरिजस्यशिलाजतुनः । ताप्यस्यसुवर्णमाक्षिकस्य । स्रावणीकामुण्डीइतिलोके । इतिस्वायम्भुवोगुग्गुलुः ५६१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

बकुची [illegible] पल, शिलाजीत ५ पल, गूगुल १० पल, सोनामाखी ३ पल, लोह तथा मुण्डी [illegible] दो पल और त्रिफला, करंजुवा, तेजपात, कत्था, गिलोय, निशोथ, दन्ती, मोथा, बायबिडं[illegible], कुरैया, दालचीनी, नींब, चीता तथा अमलतास इन सबकी शहद में गोली बनावै और प्रातःकाल [illegible]मूत्रके साथ इनको निगलनेसे कुष्ठ, रक्तवात, सफेद कोढ़, पांडु, उदरप्रमेह, गुल्म, [illegible]लोंका [illegible]ना इन सबका नाश होताहै इति स्वायम्भुवगुग्गुलुः ॥ ५६१ ॥

[illegible]त्रिफलाव्योषमजाजीकारवीवचा। सैन्धवातिविषाकुष्ठञ्चव्यैलाचयवासकम्॥ [illegible]यजमोदा च मुस्ताचामरदारु च । यावन्त्येतानि सर्वाणि तावन्मात्रन्तुगुग्गु[illegible]कृत्यसर्प्पिषासार्द्धंगुटिकांकारयेद्भिषक् । प्रातर्भोजनकाले च खादेदग्निबलं त[illegible]कुष्ठानिक्रिमिदुष्टव्रणानिच। ग्रहण्यर्शोविकारांश्चमुखामयगलग्रहान्॥ [illegible]गुद्रकुष्ठानि[illegible]गुल्मंचापिनियच्छति । व्याधीन्कोष्ठगतांश्चापिजयेद्विष्णुरिवासुरा[illegible]त् ॥ [illegible]कोगुग्गुलुः ॥ ५६२ ॥

[illegible] त्रिकटु, जीरा, कलौंजी, बच, सेंधानोन, अतीस, कूट, चव्य, इलायची, जवासा, अजवाइन, मोथा तथा देवदारु इनसबको चूर्णकरके सबकी बराबर गूगुल मिलावे फिर गोली बनावै अग्निबलके अनुसार प्रातःकाल और भोजनके समय गोली खाय इससे अठारहै प्रकारके कुष्ठ, कृमि, दुष्टव्रण, ग्रहणी, बवासीर, मुखरोग, गलग्रह, गृध्रसी, भग्न, गुल्म और कोष्ठगत रोग इन सबका नाश होताहै इति एकविंशतिकगुग्गुलुः ॥ ५६२ ॥

वातरक्ताधिकारोक्तःपुरःकैशोरकाभिधः । कुष्ठानांवातरक्तानांनाशनंपरमौषधम् ॥ इति कैशोरगुग्गुलुः ॥ ५६३ ॥

वातरक्ताऽधिकार में कहाभया कैशोर गुग्गुलु कुष्ठ और वातरक्तोंका अत्यन्तनाशकहै ॥ ५६३ ॥

भल्लातकप्रस्थयुगं छित्त्वाद्रोणजलेक्षिपेत् ॥ प्रस्थद्वयंगुडूच्याश्च क्षुण्णंतत्राम्भसिक्षिपेत् ॥ चतुर्थांशावशेषन्तु कषायमवतारयेत् । वस्त्रपूतेकषायेण वक्ष्यमाणंविनिक्षिपेत् ॥ सरावमात्रकंसर्प्पिर्दुग्धस्याढकंतथा । सितांप्रस्थमितांदद्यात्प्रस्थार्द्धंमाक्षिकंक्षिपेत् ॥ सर्व्वाण्येकत्रभाण्डेतु पचेन्मृद्वग्निनाशनैः। सर्व्वद्रवेघनीभूते पावकादवतारयेत्॥ तत्रक्षेप्याणिचूर्णानि ब्रूमोविल्वविषामृताः । वाकुचीचाथदद्रुघ्नः पिचुमर्दोहरीतकी ॥ अक्षोधात्रीचमञ्जिष्ठा मरिचंनागरङ्कणा । यवानीसैन्धवंमुस्तं त्वगेलानागकेशरम् ॥ पर्प्पटंपत्रकंवालामुशीरंचन्दनंतथा । गोक्षुरस्यचबीजानि कर्चूरोरक्तचन्दनम् ॥ पृथक्पलार्द्धमानानां चूर्णमेषामिहक्षिपेत् । पलमात्रमिदंप्रातः समश्नीयाज्जलेनहि ॥ नाशयेदेवलेहोऽयं पथ्यान्यन्नानिखादतः । कुष्ठानिवातरक्तानि सर्व्वाण्यर्शांसिसेवितः ॥ व्यायाममातपंवह्निं मम्लंमांसंदधिस्त्रियम् । तैलाभ्यंगंतथाध्वानं नरोभल्लातकीत्यजेत् ॥ इति अमृतभल्लातकोऽवलेहः ॥ ५६४ ॥

१२८ तोला भिलावा तथा १२८ तोले गिलोय इनको कूटके सोलहसेर पानीमें काढ़ाकरै चौथियाई रहनेपर काढ़ेको उतारकर कपड़ेसे छानले फिर इस काढ़ेमें आधसेर घी, चार सेर दूध, सेरभर शक्कर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तथा आधसेर शहद मिलायके मन्दाग्नि में पाककरै फिर गाढ़ा होजानेपर अग्निसे उतारके बैठ बिष, गिलोय, बकुची, पुआड़, नींब, हड़, बहेड़ा, आंवला, मंजीठ, मिर्च, सोंठ, पीपल, अजवाइन, सेंधानोन, मोथा, दालचीनी, इलायची, नागकेसर, पित्तपापड़ा, तेजपात, नेत्रबाला, खस, चन्दन, गोखुरू, कुचला और लालचन्दन इन सबका चूर्ण दो दो तोले मिलावै फिर प्रातःकाल इस औषध को पानी के साथ चार तोले खानेसे कुष्ठ, वातरक्त और सबप्रकारकी बवासीरोंका नाश होताहै इसपर खानेवाला. व्यायाम, धूप, अग्नि, खटाई, मांस, दही, मैथुन, तैलाभ्यंग तथा मार्गगमन न करै और पथ्य भोजनकरै इति अमृतभल्लातकावलेह ॥ ५६४ ॥

निम्बगोपारुणाकट्वीत्रायन्तीत्रिफलाघनम् । पर्पटावल्गुजानन्ता वचारु... नम् । पाठाशुण्ठिशटीभार्ङ्गी वासाभूनिम्बवत्सकम् । श्यामेन्द्रवारुणीमूर्वा... नलम् ॥ हस्तिकर्णामृताद्रेकापटोलरजनीद्वयम् । कणारग्वध... लम् ॥ मंजिष्ठालांगलीरास्ना नक्तमालपुनर्नवाः । दन्तीबीजकसारश्च... कम् । अंकोटकश्चशाखोटं द्विपलांशंपृथक्पृथक् । गृह्णीयात्तानिस... पचेच्छनैः ॥ अष्टमांशावशेषन्तु कषायमवतारयेत् । विधायवाससापूतं... दृढे ॥ भल्लातकसहस्राणि छित्वातुत्र्यम्र्मणाम्भसि । पचेदष्टावशेषंतत्कषाय... त् ॥ तच्चवस्त्रेणसंशोध्य द्वौकषायौविमिश्रयेत् । गुडंशतपलंदत्वा लेहवत्तत्पचेच्छनैः ॥ भल्लातकसहस्रस्य मज्जानंतत्रनिक्षिपेत् । त्रिकटुत्रिफलामुस्तं विडंगंचित्रकंतथा ॥ सैन्धवंचन्दनंकुष्ठं दीप्यकंचपलंपृथक् । सौगन्ध्यार्थंक्षिपेत्तत्र चातुर्ज्जातंपलंपलम् ॥ महाभल्लातकोह्येष महादेवेनभाषितः । प्राणिनांहितकामेन जयेच्छीघ्रंप्रयोजितः ॥ श्वित्रमौदुम्बरंदद्रूमृक्षजिह्वन्तुकाकणम् । पुण्डरीकंसचर्म्माख्यं विस्फोटंरक्तमण्डलम् ॥ कण्डूकपालकंकुष्ठं पामानञ्चविपादिकाम् । वातरक्तंषडर्शांसि पाण्डुरोगव्रणान्क्रमीन् ॥ रक्तपित्तमुदावर्त्तं कासंश्वासंभगन्दरम् । सदाभ्यासेनपलितमामवातंसुदुस्तरम् ॥ नियन्त्रणस्तुकथितो विहाराहारमैथुने । कुरुतेपरमांकान्तिप्रदीप्तंजठरानलम् ॥ अनुपानंप्रयोक्तव्यञ्छिन्नातोयंपयोऽथवा । भोजनेतुसदात्याज्यमुष्णमम्लंविशेषतः ॥ गोपाश्वेतसावइतिलोके । अरुणाअतिविषाअवल्गुजःसोमराजीबकुची । अनन्तादुरालभा । चन्दनंश्वेतम् । भार्ङ्ग्यलाभेकण्टकारीमूलंगृह्णीयात् । श्यामा कृष्णसांइ । हस्तिकर्ण हाथिकन्द । सप्ताह्वाछतिम् । द्रेकाबकाइन । कृष्णवेतजलवेतसउच्चटाफलं श्वेतगुंजाफलम् । कुरण्टकंकटसरैआ अंकोढ़ढेला इतिलोके । शाखोटंसहोर इतिलोके । दीप्यकंयवादुनी । महाभल्लातकः ॥ ५६५ ॥

नींब, गोपा, अतीस, कुटकी, त्रायमाण, त्रिफला, मोथा, पित्तपापड़ा, बकुची, जवासा, बच, कत्था, चंदन, पाठा, सोंठ, कचूर, भारंगी (न मिलने से भटकटैया की जड़) बांसा, चिरायता, कुरैया, काला निसोथ, इन्द्रायन, मरोड़फली, वायबिड़ंग, इन्द्रजौ, चीता, मानपत्ता, गिलोय, बकायन, परवल, हल्दी, दारुहल्दी, पीपल, अमलतास, छितवन, निसोथ, जलबेत, सफेद घुंघुची, मँजीठ, करिहारी, रास्ना, करंजुवा, गदह-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...रना, दंती, ...गोटा, भांगरा, खुरंट, ढेरा तथा सहोर इनको दो दो तोले लेकर सोलहसेर पानी में धीरे२ पकावै जब आठवांहिस्सा बाकीरहै तब उतारके कपडे से छानके पुष्ट ... फिर हजार १००० भिलावोंको काटकर ४८ सेर पानीमें पकावै अष्टमांश बाकी रहनेपर उतार के छान ले और दोनों काढ़ोंको मिलाके ४०० तोले गुड़ डालकर धीरे अवलेह के तुल्य ... हजार पूजनेकी मींगी और त्रिकटु, त्रिफला, मोथा, बायबिडंग, चीता, सेंधानोन, श्वेतचन्दन, कूट तथा दहेतक... एकर२ पल और सुगन्धिके लिये दालचीनी, इलायची, तेजपात तथा नागकेसर एक२ पल ...नवजा२ महाभल्लातक अवलेह प्राणियों के हितकेलिये महादेवजी ने कहाहै इसके सेवनसे श्वित्र, ...द्रु, ऋक्षजिह्व, काकण, पुण्डरीक, गजचर्म्म, विस्फोट, रक्तमण्डल, खुजली, कापाल, पामा, ... वातरक्त, छःप्रकारकी बवासीर, पांडु, व्रण, कृमि, रक्तपित्त, उदावर्त, खांसी, श्वास, भगन्दर, ...तथा आमवात इनका नाश होताहै और कान्ति तथा जठराग्नि बढ़ती है इसके ...र तथा मैथुनका कोई निषेध नहीं है इसके साथ गुर्चके काढ़ेका अथवा दूधका ...सके सेवनमें उष्णवस्तु और खटाई कभी न खाय इति महाभल्लातक ॥ ५६५ ॥

...तिक्तावचादारुनिशामृताः । निम्बश्चैषकृतःक्काथःसर्वकुष्ठंविनाश ...तंतथाकण्डुंपामानंरक्तमण्डलम् । दद्रुंविसर्पंविस्फोटंपानाभ्यासेननाश ...ते लघुमञ्जिष्ठादिक्काथः ॥ ५६६ ॥

मँजीठ, त्रिफला, कुटकी, बच, दारुहल्दी, हड और नींब इनके काढ़ेके सेवनसे सबप्रकारके कुष्ठ, खुजली, वातरक्त, पामा, रक्तमण्डल, दाद, वीसर्प और विस्फोट का नाश होताहै इति लघु-मञ्जिष्ठादि क्काथ ॥ ५६६ ॥

मञ्जिष्ठावाकुचीचक्रमर्दश्चपिचुमर्दकः । हरीतकीहरिद्राचधात्रीवासाशतावरी ॥ बलानागबलायष्टीमधुकक्षुरकोऽपिच । पटोलस्यजलोशीरंगुडूचीरक्तचन्दनम् ॥ मञ्जिष्ठादिरयंक्काथःकुष्ठानांनाशनःपरः । वातरक्तस्यसंहर्त्ताकण्डूमण्डलनाशनः ॥ इति मध्यमञ्जिष्ठादिक्काथः ॥ ५६७ ॥

मँजीठ, बकुची, पुआड, नींब, हड, हल्दी, आंवला, बांसा, शतावरि, बरियारा, गुलशकरी, मुलेठी, गोखुरू, परवलकी बेल, खस, गुर्च, लालचन्दन इनके काढ़ेके पीनेसे कुष्ठ, वातरक्त, खुजली और चकत्तोंका नाश होताहै इति मध्यमञ्जिष्ठादि क्काथ ॥ ५६७ ॥

मञ्जिष्ठाकुटजामृताघनवचाशुण्ठीहरिद्राद्वयं क्षुद्रारिष्टपटोलतिक्तकटुकाभार्ङ्गीविडंगाग्निकम् । मूर्वादारुकलिंगभृंगमगधात्रायन्तिपाठावरी गायत्रीत्रिफलाकिरातकमहानिम्बासनारग्वधाः ॥ श्यामावल्गुजचन्दनंवरुणकंदन्तीकशाखोटकं वासापर्प्पटसारिवाप्रतिविषानन्ताविशालाजलम् । मञ्जिष्ठाप्रथमंकषायमितियःसंसेवते तस्यतुत्वग्दोषाःसुचिरेणयान्तिविलयंकुष्ठानिचाष्टादश ॥ नाशंगच्छतिवातरक्तमखिलानश्यन्तिरक्तामयाः । वीसर्पस्तत्राचिशून्यतानयनजारोगाःप्रशम्यन्तिच ॥ अरिष्टः निम्बः । कलिंगइन्द्रयवः । भृंगभेगरीया । वरीशतावरी । गायत्रीखदिरः । आसनंविजय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सारः। श्यामाप्रियंगु। चन्दनमत्ररक्तंग्राह्यम्। सारिवास... । अनन्तादुरालभा। शाल...। जलंनेत्रबाला। इति बृहन्मञ्जिष्ठादिक्काथः ॥ ५६८ ॥

मँजीठ, कुरैया, गुर्च, मोथा, बच, सोंठ, हल्दी, दारुहल्दी, भटकटैया, नींब, परवल, चिरायता, कुटक..., बायबिडंग, चीता, मरोडफली, देवदारु, इन्द्रजौ, भंगरा, पीपर, त्रायमाण... शत...री, कत्था, त्रिफला, चिरायता, बकायन, विजयसार, अमलतास, गौंदनी, बकुची, ल... वरुणा, जमालगोटे की जड, सहोरा, बांसा, पित्तपापडा, ईसरमूल, अतीस, जवासा, ... सुगन्धबाला इनके काढे के सेवनसे त्वचा के दोष, अठारह कुष्ठ, सब प्रकारका वातरक्त... रोग, वीसर्प्प, त्वचाकी शून्यता और नेत्ररोग नष्ट होते हैं इति बृहन्मञ्जिष्ठादि क्काथ ॥

मरिचंत्रिवृतामुस्तं हरितालंमनःशिला। देवदारुहरिद्रेद्वेमांसीकुष्ठं... शालाकरवीरञ्चक्षीरमर्कसमुद्भवम्। गोमयस्यरसंकुर्य्यात् प्रत्येकं... स्यार्द्धपलंदेयं तैलंप्रस्थमितंकटु। पचेच्चतुर्गुणेनीरेगोमूत्रेद्विगुणेतथा... लमभ्यंगात्कुष्ठनाशनम्। एतस्याभ्यंगतःश्वित्रं विवर्णंतत्क्षणाद्व्रजे... त्कण्डूं पामांसिध्मविचर्चिकाम्। पुण्डरीकंतथादद्रूं शून्यतांनित्यसेविनाम्। ...ते हैं इनमें मरिचादि तैलम् ॥ ५६९ ॥ ...

मिर्च, निसोथ, नागरमोथा, हरताल, मैनसिल, देवदारु, दारुहल्दी, हल्दी, जटामांसी, कूट, चन्दन लाल, इन्दौरन, कनेर, मन्दारकादूध, गोबर का रस, ये सब तोला २ भर और सींगिया दो तोले इन के द्वारा चतुर्गुण जल और द्विगुण गोमूत्र के साथ ६४ तोले कटु तेलको पाककरै इस तेलके लगाने से कुष्ठ, सफेद कोढ, विवर्णता, खुजली, पामा, सिध्म, विचर्चिका, पुंडरीक, दाद और त्वचाकी शून्यता इनका नाश होताहै इति लघुमरिचादि तैल ॥ ५६९ ॥

मरिचंत्रिवृतादन्तीक्षीरमार्कंशकृद्रसः। देवदारुहरिद्रेद्वे मांसीकुष्ठंसचंदनम् ॥ विशालाकरवीरञ्च हरितालंमनःशिला। चित्रकंलांगलीमुस्तं विडंगञ्चक्रमर्दकः ॥ शिरीषःकुटजोनिम्बःसप्तपर्णोमृतास्नुही। संपाकोनक्तमालश्चखदिरोवाकुचीवचा ॥ ज्योतिष्मतीचपलिकाविषंद्विपलिकंभवेत्। आढकंकटुतैलस्यगोमूत्रञ्चचतुर्गुणम्। मृत्पात्रेलोहपात्रेचशनैर्मृद्वग्निनापचेत्। मरिचाद्यमिदंतैलंमहन्मुनिभिरीरितम्। भिषगेतेनतैलेनप्रक्षयेत्कौष्ठिकान्व्रणान्। पामाविचर्चिकादद्रूकण्डूविस्फोटकानिच ॥ बलयःपलितंछायानीलंव्यङ्गंतथैवच। अभ्यङ्गेनप्रणश्यन्तिसौकुमार्य्यंचजायते ॥ प्रथमेवयसिस्त्रीणांयासांनस्यम्प्रदीयते। तासामपिजरांप्राप्यनस्यातांस्खलितौस्तनौ ॥ बलीवर्द्दस्तुरंगोवागजोवायुप्रपीडितः। त्रिभिरभ्यंजनैरस्यभवेन्मारुतविक्रमः ॥ ज्योतिष्मतीडडमीजीनीमालकंगुनीतिलोके। इति महामरिचाद्यंतैलम् ॥ ५७० ॥

मिर्च, निसोथ, जमालगोटेकी जड, आकका दूध, गोबरका रस, देवदारु, हल्दी, दारुहल्दी, जटामांसी, कूट, चन्दन, इन्दौरन, कनेर, हरताल, मैनसिल, चीता, करियारी, नागरमोथा, बायबिडंग, पुआड, सिरसा, कुरैया, नींब, छितवन, गुर्च, थूहड, साँवा, करंजुवा, कत्था, बकुची, बच, मालकांगनी, ये सब चार २ तोले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

... सींगिया ८ तोले इनके ... चौगुने गोमूत्र के साथ ३७६ तोले कडू तेलको मृत्तिकाके पात्र में अथवा लोहे के पात्रमें धीरे २ मन्दाग्नि में पाककरे इसके लगानेसे कुष्ठ के व्रण, ... विचर्चिका, दाद, खुजली, विस्फोट, झुर्रीवालों का पकना, झाई तथा मुहासे इनका नाश होताहै और सुकुमारता होती है जो स्त्री युवावस्थामें इस तैलका नस्य लेती हैं उनके स्तन वृद्धावस्थामें भी ... होते ... अथवा हाथी यदि वायुसे पीडित हो तो इसके तीनबार लगाने से वायुके तुल्य वेगवान ... इति महामरिचादि तैल ॥ ५७० ॥

... ताप्यशिलासूतटङ्कणाःसिन्धुसंयुता । गन्धकोद्विगुणःसूताच्छङ्कचूर्णञ्चततस ... नीराद्भिर्दिनंघृष्ट्वा त्रिंशदंशंविषंक्षिपेत् । अस्यमाषद्वयंखादेन्माहिषीघृतसंयुत ... कुचीबीजकर्षंलिह्यात्ततःपरम् । तालकेश्वरनामायंसर्वकुष्ठहरोरसः ॥ ... ॥ ५७१ ॥

... खी, मैनसिल, पारा, सोहागा तथा सेंधानोन ये सब एक एकभाग और गंधक दो भाग इन सबको जंभीरी नींबू के रसमें एकदिन खरल करके सबका तीसवां ... फिर भैंस के घीके साथ दो माशे इस रसको खाकर शहद और घीके साथ ... चीके बीज चाटै इससे सबप्रकारके कुष्ठोंका नाश होताहै इति तालकेश्वररस ॥ ५७१ ॥

रसोऽथालेस्ताम्रमयःपुरोऽग्निःशिलाजतुस्याद्विषतिन्दुकश्च । वराचतुल्यंगगनञ्चसर्वैः करञ्जबीजांश्चतुष्टयञ्च ॥ संमर्द्यसर्वंमधुनाघृतेनघृतस्यपात्रेनिहितंप्रयत्नात् । कर्षं भजत्प्रत्यहमस्यपथ्यंशाल्योदनंदुग्धमधुत्रयञ्च ॥ विशीर्णकर्णांगुलिनासिकोऽपिभवेदने नस्मरतुल्यमूर्तिः । दारापरित्यागइहप्रदिष्टोजलौदनंतत्रनिबद्धमूले ॥ ताम्रमयःमारितंपु रोगुग्गुलुः । अग्निश्चित्रकम् ॥ विषतिन्दुकःकुचिला । वरात्रिफला ॥ रसादित्रिफलांतं सर्वतुल्यम् । गगनमभ्रकम् ॥ करञ्जबीजंचपृथक्चतुर्गुणंरसात् । तत्रकुष्ठेबद्धमूलेस तिजलौदनमेवपथ्यम् ॥ इति गलितकुष्ठारिरसः ॥ ५७२ ॥

पारा, गन्धक, तांबेकी भस्म, लोहेकी भस्म, गूगुल, चीता, शिलाजीत, कुचिला, त्रिफला ये सब एक एक भाग और अभ्रक तथा करंजुवा चार चार भाग इन सबको घी और शहदमें मिलाके घीके पात्र में रक्खै इसको एक तोले रोज खाय और भात, दूध तथा शहदका पथ्यकरै इससे गले कान नासिका तथा अंगुलीवाला भी कामदेवके समान सुन्दर होजाताहै इसमें मैथुनका त्याग करना चाहिये और कुष्ठके बहुत पुराने होजानेपर भात और पानीकाही पथ्य करै इति गलितकुष्ठारिरस ॥ ५७२ ॥

अथ सिध्मस्यचिकित्सामाह ॥

कुष्ठंमूलकबीजंप्रियङ्गवःसर्षपास्तथारजनी । एतत्केशरषष्ठंनिहन्तिचिरकालजंसि ध्म ॥ इति केशरषट्कम् ॥ ५७३ ॥

सिध्मकी चिकित्सा ॥

कूट, मूली के बीज, गोंदनी, सरसों, हल्दी इनके सेवन से बहुत पुराने सिध्मका भी नाश होताहै इति केशरषट्कम् ॥ ५७३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिखरीरसेनपिष्टंमूलकबीजंप्रलेपतःसिध्म । क्षारेणवाकदल्यारजनीमिश्रेणनाशय ति ॥ दार्वीमूलकबीजानितालकंसुरदारु च।ताम्बूलपत्रंसर्वाणिकार्षिकाणिपृथक्पृथक्॥ शङ्ख... चूर्णा...संस्यात्सर्वाण्येकत्रवारिणा ॥ प्रलेपयेत्प्रलेपोऽयंसिध्मनाशनमुत्तमम्॥ इति सिध्मस्यचिकित्सा ॥ ५७४ ॥

मूली के बीजोंको लटजीरे के रसमें पीसकर लेप करनेसे अथवा केलेके खारको ... कर लेप करने से सिध्मका नाश होताहै दारुहल्दी, मूली के बीज, हरताल, देवदारु और प... एक एक तोले शंखका चूर्ण ४ माशे इन सबको पानी में मिलाकर लेप करने से सि... होताहै इति सिध्मकी चिकित्सा ॥ ५७४ ॥

अथ चर्म्मदलस्य चिकित्सामाह ॥

सलिलेचाम्रपेशीतुकिञ्चित्सैन्धवसंयुता । ताम्रपात्रेविनिर्घृष्टाले... आम्रपेशीआमचूर । सलिलेनतुशुष्काणिघृष्ट्वाधात्रीफलानिच । ... नरश्चर्म्मदलान्वितः ॥ ५७५ ॥

...इते हैं इनमें ...

चर्मदल की चिकित्सा ॥

कुछ सेंधानोन मिलाकर अमचुरको तांबेके पात्रमें पानीके साथ घिसके लेप करने से चर्मदलका नाश होताहै सूखे आंवलों को पानीके साथ हाथों से घिसनेसे चर्मदलवाला सुखपाताहै ॥ ५७५ ॥

अथ पामायाश्चिकित्सामाह ॥

जीरकस्यपलंपिष्टंसिन्दूरार्द्धपलंतथा । कटुतैलंपचेदाभ्यांसर्वपामाहरंपरम् ॥ इति जीरकाद्यंतैलम् ॥ ५७६ ॥

पामाकी चिकित्सा ॥

जीरा ४ तोले और सिंदूर २ तोले इनके द्वारा पाक कियाभया कटु तैल सब प्रकारकी पामाको नष्ट करताहै इति जीरकादि तैल ॥ ५७६ ॥

मञ्जिष्ठात्रिफलालाक्षालाङ्गलीरात्रिगन्धकैः । चूर्णितैस्तैलमादित्यपाकंपामाहरंपर म् ॥ इत्यादित्यपाकतैलम् ॥ ५७७ ॥

मँजीठ, त्रिफला, लाख, करिहारी, हल्दी, गन्धक इनके द्वारा धूपमें पाक किया भया तैल पामा को नष्ट करताहै इति आदित्यपाकतैल ॥ ५७७ ॥

सैन्धवञ्चचक्रमर्दश्चसर्षपाःपिप्पलीतथा।आरनालेनसंपिष्टाःपामाकण्डूहराःपराः५७८ ॥

सेंधानोन, चकवड़, सरसों, पीपल इनको कांजी में पीसकर लेप करनेसे पामा और खुजलीका नाश होताहै ॥ ५७८ ॥

अथ कच्छूचिकित्सामाह ॥

अर्कपत्ररसेपक्वंहरिद्राकल्कसंयुतम् । नाशयेत्सार्षपंतैलंपामाकच्छूविचर्चिकाः ॥ इत्यर्कतैलम् ॥ ५७९ ॥

कच्छूकी चिकित्सा ॥

हल्दी के कल्कके द्वारा आकके पत्तेके साथ पाक किया भया कड़ू तेल कच्छू और विचर्चिकाको नाश करताहै इति अर्कतैल ॥ ५७९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मनःशिलालङ्कासीसगन्धाश्मसिन्धुजन्मच । स्वर्णक्षीरीशिलाभेदीशुण्ठीकुष्ठञ्च मागधी । लाङ्गलीकरवीरञ्चदद्रुघ्नःक्रिमिहानलः । दन्तीनिम्बदलञ्चैभिःपृथक्कर्षमिते [illegible] ॥ कल्कीकृत्यपचेत्तैलंकटुप्रस्थद्वयोन्मितम् । अर्कस्नेहुण्डदुग्धेनप्र[illegible] [illegible] [illegible]त्रस्याढकेनापिशनैर्मृद्वग्निनापचेत् । अभ्यङ्गेनहरेदेतत्कच्छूदुःसाध्यतामपि ॥ [illegible]याकण्डूःत्वग्व्याधिरुधिरामयान् ॥ कच्छूराक्षसनामेदंतैलंहारीतभाषित [illegible]कच्छूराक्षसनामतैलम् ॥ ५८० ॥

[illegible]हरताल, कसीस, गन्धक, आंवलासार, सेंधानोन, मकोय, पाषाणभेद, सोंठ, कूट, पी-[illegible] चकवड, बायबिडंग, चीता, जमालगोटेकी जड और नींबकी पत्ती इन सबको [illegible]के कल्कके द्वारा १२८ तोले कडुवे तेलको चार २ तोले आक तथा मदारके [illegible]गोमूत्रके साथ धीरे २ पाक करै इस तेलके लगानेसे दुःसाध्य कच्छू, पामा, [illegible]रक्तदोषोंका नाश होताहै इति हारीतोक्तकच्छूराक्षसतैल ॥ ५८० ॥

[illegible]णिनक्तमालदलानिच । द्रोणपुष्पीपलाशानिसर्षपाराजिकानिशा ॥ [illegible]मुस्तंनागरंरक्तचन्दनम् । धात्रीयवानिकादारुकल्कएषप्रकल्पितः ॥ उद्वर्त्तनादयंकल्कैःकटुतैलसमन्वितः । कण्डूंपामांहरन्त्येवशीतपित्तादिकान्गदान् ॥ ५८१ ॥

अमलतासके पत्ते, करंजुवेके पत्ते, गूमेकी पत्ती, सरसों, राई, हल्दी, कुरैया, मुलेठी, मोथा, सोंठ, लालचन्दन, आंवला, अजवाइन और देवदारु इन सबके कल्कको कडुवे तेलमें मिलाकर उबटन लगानेसे खुजली, पामा और शीतपित्तादिरोगोंका नाश होताहै ॥ ५८१ ॥

अथ दद्रूचिकित्सामाह ॥

कुष्ठंक्रिमिघ्नोदद्रूघ्नोनिशासैन्धवसर्षपाः । अम्लपिष्टप्रलेपोऽयंदद्रुकुष्ठनिषूदनः ॥ दूर्वाभयासैन्धवचक्रमर्दकुठेरकाःकाञ्जिकतक्रपिष्टाः । त्रिभिःप्रलेपैरपिबद्धमूलंदद्रूञ्चकुष्ठञ्चविनाशयन्ति ॥ कुठेरकःबवचीइतिलोके ॥ गण्डिलकास्थंतृणमपिसिद्धार्थकश्चस्नुहीपत्रम् । त्रयमपिसमभागंस्याद्देषांद्विगुणस्तुदद्रुघ्नः ॥ अष्टगुणेगोतक्रेतानिप्रकृतानिसन्दध्यात् दिवसत्रितयादूर्ध्वंसम्यङ्निष्पेषयेत्तानि ॥ वन्योपलेनघृष्ट्वाचदद्रूमालेपयेत्तेन ॥ सप्ताहाल्लेपोऽयंदद्रूमचिराद्विनाशयति । इति दद्रूचिकित्सा ॥ ५८२ ॥

दद्रुकी चिकित्सा ॥

कूट, बायबिडंग, चकवड, हल्दी, सेंधानोन, सरसों इनको कांजीमें पीसकर लेप करने से दाद और कुष्ठका नाश होताहै दूब, पीपल, सेंधानोन, चकवड और बावची इनको कांजी और मट्ठेमें पीसकर तीनवार लेपकरनेसे जड पकडी भई दाद और कुष्ठका नाश होताहै गांडर, सरसों और थूहडके पत्ते ये समभाग इनका दूना चकवड इनको अठगुने गऊके मट्ठेमें भिगोवै तीनदिनके बाद पीसै बिनवे कण्डेसे खुजलायकर दादमेंलेपकरै इसलेपसे सातदिनमें दादकानाशहोताहै इतिदद्रुचिकित्सा ५८२॥

अथ श्वित्रस्यचिकित्सामाह ॥

बिभीतकत्वङ्मलयूजटानांकाथेनपीतंगुडसंयुतेन । अवल्गुजंबीजमपाकरोतिश्वित्रा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

णिकृच्छ्रसाध्यमपिपुण्डरीकम् । मलयूःकाकोदुम्बरिका । अवल्गुजंसोमराजी । कुडवप्र लगजबीजंहरितालचतुर्थभागसम्मिश्रम् मनःशिलांतोलकार्द्धगुञ्जाफलमग्निमूलञ्च ॥ मूत्रेणपिष्ट्वांपिहिंसवर्णताकारकंश्वित्रे । श्वेतंकुष्ठंव्रजत्यस्तंपक्षार्द्धेनाधिकेनवा ॥ गिरिक एर्यास्तुकृष्णायामूलेनपरिलेपितम् ॥ गिरिकर्णीनीलाअपराजिता । क्वाथःसवा... धात्रीखदिरसारयोः । शङ्खेन्दुकुन्दधवलंश्वित्रंसंसेवितोहरेत् । मथितेनपि... म्बयर्यकल्गुजम् । तैलाक्तोघर्म्मसेवीस्यात्तक्राशीश्वित्रहद्भवेत् ॥ मथितंनिज... तंदधि । तक्रञ्चतुर्थांशजलयुतंवस्त्रपूतंदधि ॥ चतुःपलंसोमराज्याःखदिरस्य... पटोलमूलंत्रिफलात्रायमाणादुरालभा ॥ कल्कार्थंकटुकञ्चापिकार्षिका... पलद्वयंकौशिकस्यशुद्धस्यात्रप्रदापयेत् ॥ सिद्धंसर्पिरिदंश्वित्रंहन्या... ष्टादशानांकुष्ठानांपरमञ्चैतदौषधम् । सोमराजीघृतंनामनिर्म्मितंब्रह्म... पकारायश्वित्रकुष्ठादिरोगिणाम्॥सोमराजीघृतम्इतिकुष्ठनिदानचि...

श्वित्रकी चिकित्सा ॥ ...इते हैं इनमें

बहेड़ेकी छाल और कठियागूलरकी जड इनके काढ़ेमें गुड डालकर बकुचीके चूर्णका ... इससे पुण्डरीक और कष्टसाध्य श्वित्रका नाश होताहै बकुची आधसेर हरताल आधपाव और मैनसिल घुंघुची तथा चीता छै २ माशे इनको गोमूत्र में पीसकर लेपकरने से शिवत्रका नाश होताहै नीली विष्णुक्रांता की जडके लेप करने से श्वेतकुष्ठ १५ अथवा कुछ अधिक दिन में नष्ट होताहै आँवले और खैरसारके काढ़ेमें बकुचीका चूर्ण मिलाकर पीने से शंख इन्दु और कुन्दके समान श्वेतभी श्वेतकुष्ठ नष्टहोताहै कठियागूलर और बकुची के चूर्ण को जलरहित मथे भये दही के साथपिये और तेल लगायके धूप में बैठे तथा चतुर्थांश जलसहित कपडे में छानेभये दहीको खाय तो शिवत्रका नाश होताहै सोलह तोले बकुची चारतोले खैरसार और तोले तोले भर परवल की जड, त्रिफला, त्रायमाणा, जवासा तथा कुटकी और आठतोले गूगुल शुद्ध इनके द्वारा पाक कियाभया घी श्वित्र और अठारह प्रकारके कुष्ठोंको नष्ट करता है इति सोमराजीघृत इति कुष्ठनिदानचिकित्साऽधिकार समाप्त ॥ ५८३ ॥

अथ शीतपित्ताधिकारः । तत्र शीतपित्तस्य विप्रकृष्टसन्निकृष्टनिदानपूर्विकां संप्राप्तिमाह ॥

शीतमारुतसम्पर्कात्प्रवृद्धौकफमारुतौ । पित्तेनसहसम्भूयबहिरन्तर्विसर्पतः ॥ पिपासाऽरुचिहृल्लासदेहसादांगगौरवम् । रक्तलोचनतातेषांपूर्व्वरूपस्यलक्षणम् ॥ शीतमारुतसम्पर्कात्पित्तेनस्वहेतुदुष्टेनसम्भूयसंगम्यबहिस्त्वचिअन्तः रुधिरादौविसर्पतः प्रसरतः ॥ ५८४ ॥

शीत पित्तका अधिकार शीतपित्तके दूरवाले और निकटवाले कारणसहित संप्राप्ति ॥
शीतल वायुके लगने से बढ़ेभये कफ और वायु अपने कारणों से दूषित पित्तके साथ मिलकर त्वचा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और रुधिर आदिकों में फैलते हैं शीतपित्त होनेके पहले तृषा, अरुचि, मतली, देह में पीडा, देहका भारीपन और नेत्रोंका लाल होना ये लक्षण होते हैं ॥ ५८४ ॥

अथ शीतपित्तस्य लक्षणमाह ॥

...दृष्टसंस्थानःशोथःसञ्जायतेबहिः । सकण्डूतोदबहुलश्छर्दिज्वरविदाहवान् ॥ ...विद्याच्छीतपित्तमिमंभिषक् ॥ ५८५ ॥

शीतपित्तका लक्षण ॥

... में खुजली तथा पीडासहित बरैयाके काटेके समान त्वचा में शोथ होताहै उसे शीत... में रोगी ज्वर, छर्दि और दाहसे पीडितहोताहै और इसमें वायु अधिक होताहै ॥५८५॥

अथोदर्दस्य लक्षणमाह ॥

...इचकण्डूमद्भिश्चमण्डलैः। शैशिरःश्लेष्मबहुलउदर्दइतिकीर्त्तितः ॥ ... ॥ उ शैशिरःशिशिरर्त्तुभवः ॥ ५८६ ॥

उदर्दका लक्षण ॥

... रक्तवर्ण और बीचमें गहरे मण्डलोंको उदर्द कहते हैं ये शिशिर ऋतुमें उत्पन्न ...इसमें कफ अधिक होताहै ॥ ५८६ ॥

अथ कोठोत्कोठयोर्लक्षणमाह ॥

असम्यग्वमनोदीर्णःपित्तश्लेष्माणनिग्रहैः । मण्डलानिसकण्डूनिरागवन्तिबहूनि च ॥ सकोठःसानुबन्धस्तुसप्राज्ञैरुत्कोठइतिकथ्यते ॥ ५८७ ॥

कोठ और उत्कोठ का लक्षण ॥

अच्छेप्रकार वमन न होनेसे बढ़े भये पित्त और श्लेष्मा के रोकने से खुजलीयुक्त रक्तवर्ण और बहुत से मण्डल होतेहैं उन्हें उत्कोठ कहते हैं और यदि येही कभी प्रकटहों और कभी अदृश्यहोयँ तो उत्कोठ कहलाताहै ॥ ५८७ ॥

अथ शीतपित्तोदर्दकोठोत्कोठचिकित्सामाह ॥

शीतपित्तेतुवमनंपटोलारिष्टवासकैः । त्रिफलापुरकृष्णाभिर्विरेकश्चप्रशस्यते ॥ अभ्यंगःकटुतैलेनसेकश्चोष्णेनवारिणा । त्रिफलांक्षौद्रसंयुक्तांखादेच्चनवकार्षिकम् ॥ नवकार्षिकोयथा। त्रिफलापुरकृष्णानांत्रिपञ्चैकांशयोजिता । गुटिकाशीतपित्तार्शोभगन्दरवतांहिता ॥ सितामधुकसंयुक्तागुडमामलकैःसह । यवानींखादयेच्चापिसव्योषक्षारसंयुताम् ॥ आर्द्रकस्यरसःपेयःपुराणगुडसंयुतः । शीतपित्तापहःश्रेष्ठोवह्निमान्द्यविनाशनः ॥ सिद्धार्थरजनीकल्कैःप्रपुन्नाटतिलैःसह । कटुतैलेनसंमिश्रमेतदुद्वर्त्तनंहितम् ॥ सगुडंदीप्यकंवस्तुखादेत्पथ्यान्नभुङ्नरः । तस्यनश्यतिसप्ताहादुदर्दःसर्वदेहजः ॥ ५८८ ॥

शीतपित्त उदर्द, कोठ और उत्कोठ की चिकित्सा ॥

शीतपित्तमें परवल, नीम और रूसा इनकेद्वारा वमन त्रिफला गूगुल और पीपल इनकेद्वारा विरेचन कडुवे तेलसे अभ्यंग (वदन में लगाना) और गरमजलसे परिषेक हितहै शहद युक्त त्रिफला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथवा नवकार्षिक गूगुल का सेवन करै नवकार्षिक गूगुल जैसे त्रिफला तीन कर्ष गूगुल पांचकर्ष और पीपल एककर्ष इनकी गोली. शीतपित्त, बवासीर और भगंदरवालों को हितहैं शक्कर, मुलेठी, गुड़, आंवला, अजवाइन, त्रिकटु और जवाखार इनका सेवन करै अदरक के रसमें पुराना गुड़ डालकर पीनेसे शीतपित्त और मन्दाग्नि का नाश होताहै सरसों, हल्दी और चकवड़ इन ...थत् ॥ तेल ... मिलाके उबटन लगाना हितहै शीतपित्तमें गुडके साथ अजवाइन खानेसे पथ्य... रनेवालोंका सब देहमें भया भी उदर्दरोग नष्ट होताहै ॥ ५८८ ॥

घृतंपीत्वामहातिक्तंशोणितंमोक्षयेत्तथा । स्निग्धस्त्रिन्नस्यसंशद्धिमादौक... त् ॥ उत्कोठेशुद्धदेहस्यकुष्ठघ्नींकारयेत्क्रियाम् । निंबस्यपत्राणिसदाघृते... णिनरःप्रयुञ्ज्यात् ॥ विस्फोटकण्डूक्रमिशीतपित्तमुदर्दकोठञ्चकफञ्च...

कोठरोगमें पहले महातिक्त घी पीकर रुधिर निकलवावै और स्निग्ध तथ... वमन विरेचनादि के द्वारा शुद्धकरे उत्कोठ में वमनादि के द्वारा शरीर के शुद्ध... चिकित्सा करे नीमकी पत्ती और आंवलोंको घीके साथ सदैव सेवन करने ... क्रमि, शीतपित्त, उदर्द, कोठ और कफका नाश होताहै ॥ ५८९ ॥ ... रहते हैं इनमें ...

आर्द्रकंप्रस्थमेकंस्याद्गोघृतंकुडवद्वयम् । गोदुग्धंप्रस्थयुगलन्तदर्द्धशर्कराभिता । पिप्पलीपिप्पलीमूलंमरिचंविश्वभेषजम् । चित्रकञ्चविडङ्गञ्चमुस्तकंनागकेशरम् ॥ त्वगेलापत्रकर्चूरंप्रत्येकंपलमात्रकम् । विधायपाकंविधिवत्खादेत्तत्पलसम्मितम् ॥ इदमार्द्रकखण्डोऽयंप्रातर्भुक्तंव्यपोहति । शीतपित्तमुदर्दञ्चकोठमुत्कोठमेवच ॥ यक्ष्माणंरक्तपित्तञ्चकासंश्वासमरोचकम् । वातगुल्ममुदावर्त्तंशोथंकण्डूक्रिमीनपि ॥ दीपयेदुदरेवह्निं बलंवीर्य्यंचवर्द्धयेत् । वपुःपुष्टिंप्रकुरुतेतस्मात्सेव्यमिदंसदा ॥ इत्यार्द्रकखण्डमितिशीतपित्तोदर्दकोठोत्कोठचिकित्सा ॥ ५९० ॥

अदरक ६४ तोला, गौका घी आधसेर, गौकादूध १२८ तोला, शक्कर ६४ तोला और पीपल, पिपलामूर, मिर्च, सोंठ, चीता, बायबिडंग, मोथा, नागकेसर, दालचीनी, इलायची, तेजपात तथा नरकचूर ये सब चार चार तोले इन सबका विधिपूर्वक पाक करके चार तोले प्रातःकाल रोजखाय इससे शीतपित्त, उदर्द, कोठ, उत्कोठ, यक्ष्मा, रक्तपित्त, खांसी, श्वास, अरुचि, बायगोला, उदावर्त, सूजन, खुजली तथा क्रमि इनका नाश होताहै उदरकी अग्नि दीप्त होतीहै बल तथा वीर्य्य बढ़ताहै और शरीर पुष्ट होताहै इसलिये इसका सदा सेवन करना चाहिये इति आर्द्रकखण्ड इति शीतपित्त उदर्द कोठ उत्कोठ की चिकित्सा समाप्त ॥ ५९० ॥

अथ विसर्पाधिकारस्तत्रविसर्पविप्रकृष्टनिदानंसंख्यांनिरुक्तिश्चाह ॥

लवणाम्लकटूष्णादिसेवनाद्दोषकोपतः । विसर्प्पःसप्तधाज्ञेयःसर्वतःपरिसर्पणात् ॥ आदिशब्दाच्चरकोक्तहरितशाकशण्डाकीप्रभृतीनांग्रहणम् ॥ सप्तधात्वंविवृणोति वातिकःपैत्तिकश्चैवकफजःसान्निपातिकः । चत्वारएतेवीसर्प्पावक्ष्यन्तेद्वन्द्वजास्त्रयः ॥ आग्नेयोवातपित्ताभ्यांग्रन्थ्याख्यःकफवातजः।यस्तुकर्दमकोघोरःसपित्तकफसम्भवः॥५९१॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विसर्पका अधिकार विसर्पका निदान संख्या और निरुक्ति ॥

नोन, खटाई, कडुवई, उष्णवस्तु और हरित शाक, शंडाकी प्रभृति के सेवन से कुपित वातादि दोषों के द्वारा सात प्रकारका विसर्परोग उत्पन्न होताहै यह रोग सब शरीरमें फैलताहै इससे इसकी ...पूजाते हैं वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, वातकफज, वातपित्तज और पित्तकफज इन भेदोंसे ...दहेतक... हैं इनमें से वातपित्तज को आग्नेय वातकफज को ग्रन्थि और पित्तकफज को ... ...नवज ॥ ५६१ ॥

अथ विसर्पदोषदूष्याणिसंग्रह्याह ॥

...कात्वङ्मांसंदूष्यंदोषास्त्रयोमलाः । विसर्पाणांसमुत्पत्तौहेतवःसप्तधातवः ॥ ...त्तकफाःदोषादूषकाइत्यर्थः । अन्यथादोषामलाइत्यत्रपुनरुक्तिदोषोल...

विसर्प के दोष और दूष्य ॥

...त्वचा तथा मांस ये दूष्यहैं और वात पित्त तथा कफ दोष अर्थात् दूषक हैं यही उत्पत्ति में कारणहैं ॥ ५६२ ॥

अथ वातिकस्यलक्षणमाह ॥

...दोषैःपरीसर्पोवातज्वरसमव्यथः । शोफस्फुरणनिस्तोदभेदायामार्तिहर्षवान् ॥ परीसर्पात्विसर्पः । वातज्वरसमव्यथःशिरोहृद्गात्रोदरशूलादियुक्तः । भेदःविदारणेनेव व्यथा । आयामःआकर्षणेनेवव्यथा ॥ ५६३ ॥

वातज विसर्प के लक्षण ॥

वातज विसर्प में शिर, हृदय, अंग तथा उदर में शूल आदिक वातज्वर के लक्षण, सूजन, अंगोंका फडकना, सूजी गडने कीसी पीडा, फाडने कीसी पीडा, खींचने कीसी पीडा और रोमहर्ष ये सब लक्षण होते हैं ॥ ५६३ ॥

अथ पैत्तिकमाह ॥

पित्ताद्द्रुतगतिःपित्तज्वरलिङ्गोऽतिलोहितः।द्रुतगतिःशीघ्रप्रसरणशीलः ॥ ५६४ ॥

पित्तजविसर्प के लक्षण ॥

पित्तजविसर्प-बहुतशीघ्रफैलनेवाला पित्तज्वरके लक्षणोंसे युक्त और बहुत रक्तवर्णवालाहोताहै॥५६४॥

अथ श्लैष्मिकमाह ॥

कफात्कण्डूयुतःस्निग्धः कफज्वरसमानरुक् ॥ ५६५ ॥

कफजविसर्प के लक्षण ॥

कफजविसर्प-खुजलीयुक्त, स्निग्ध और कफज्वरके लक्षणों से युक्त होताहै ॥ ५६५ ॥

अथ सान्निपातिकमाह ॥

सन्निपातसमुत्थश्चसर्वरूपसमन्वितः ॥ ५६६ ॥

सन्निपातज विसर्प के लक्षण ॥

सन्निपातज विसर्प में तीनों दोषों के लक्षण होते हैं ॥ ५६६ ॥

अथ वातपैत्तिकमाह ॥

वातपित्ताज्ज्वरच्छर्दिमूर्च्छातीसारतृड्भ्रमैः।अस्थिभेदोऽग्निसदनतमसारोचकैर्युतः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करोतिसर्वमंगञ्चदीप्तांगारावकीर्णवत् । यंयंदेशंविसर्पश्चविसर्पतिभवेत्ससः ॥ शीतांगारासितोनीलोरक्तोवाशूपचीयते । अग्निदग्धइवस्फोटैःशीघ्रगत्वाद्द्रुतञ्चसः ॥ मर्मानुसारीवीसर्पःस्याद्वातातिबलस्ततः । व्यथेतांगंहरेत्संज्ञांनिद्रांञ्श्वासमीरयेत् ॥ हिध्मांचसगतोऽवस्थामीदृशींलभतेनरः । क्वचिच्छर्म्मारतिग्रस्तोभूमिशय्यासन... चेष्टमानस्ततःक्लिष्टोमनोदेहसमुद्भवाम् । दुःप्रबोधोऽश्नुतेनिद्रांसोऽग्निव... ते ॥ स्फोटैःउपचीयतइत्यन्वयः । मर्म्मानुसारीउदरहृदयानुसारीहरेत्... न्वयःहिध्मांहिक्काम्ईरयेत् उपर्युपरिप्रेरयेत् । मनोदेहसमुद्भवांनिद्रांमरण... तेप्राप्नोति ॥ ५९७ ॥

वातपित्तज विसर्प के लक्षण ॥

वातपित्तज विसर्पमें ज्वर, छर्दि, मूर्च्छा, अतीसार, तृषा, भ्रम, हड्फूटन, मन्दा... अरुचि होतीहै और संपूर्ण शरीर जलतेभये अंगारोंसे आच्छादितके समान ... जिस २ स्थानमें फैलताहै वह २ स्थान काला नीला अथवा रक्तवर्ण होताहै और आगसे जले हैं इनमें के समान स्फोडकोंसे व्याप्त होताहै वायुके बलवान् होनेके कारणसे यह रोग उदर हृदय ... फैलताहै इसलिये शरीरमें पीडा संज्ञाका न होना निद्राका नाश श्वास तथा हिचकी ये सब होते हैं इसप्रकारकी अवस्थाको प्राप्त मनुष्य बेचैनहोकर भूमिशय्या तथा आसन आदिमें कहींभी सुख नहीं पाताहै फिर चेष्टा करनेसे क्लेशितभया मृत्युको प्राप्त होताहै इसे अग्निविसर्प कहते हैं ॥ ५९७ ॥

वातश्लैष्मिकंग्रन्थिविसर्पमाह ॥

कफेनरुद्धःपवनोभित्वातंबहुधाकफम् । रक्तञ्चवृद्धरक्तस्यत्वक्शिरास्नायुमांसगम् ॥ दूषयित्वातुदीर्घाणांवृत्तस्थूलखरात्मनाम् । ग्रन्थीनांकुरुतेमालांरक्तानांतीव्ररुग्ज्वराम् ॥ श्वासकासातिसारांश्चशोषहिक्कावमिभ्रमैः । मोहवैवर्ण्यमूर्च्छांगभंगाग्निसदनैर्युतः ॥ इत्ययंग्रन्थिवीसर्पोवातश्लेष्मप्रकोपजः । कफेनस्वहेतुदुष्टेन । पवनोऽपिस्वहेतुदुष्टः । तेनायंवातश्लैष्मिकः । तंकफंबहुधाभित्वारक्तंवादूषयित्वेत्यन्वयः । त्वगादिकामित्तिरक्तस्यविशेषणम् ॥ ५९८ ॥

वातकफज ग्रन्थिविसर्प के लक्षण ॥

अपने कारणसे दूषित कफके द्वारा रुकीभई अपने कारणोंसे दूषित वायुकफको अनेक प्रकारसे भिन्नकरके और अधिक रुधिरवाले मनुष्य की त्वचा, शिरा, स्नायु तथा मांस में प्राप्त रुधिरको दूषित करके दीर्घ, गोल, स्थूल, खुरखुरी, रक्तवर्ण तथा अत्यंत पीडायुक्त ग्रन्थियों की मालाको उत्पन्न करतीहै रोगी ज्वर, श्वास, खांसी, अतीसार, शोष, हिचकी, छर्दि, भ्रम, मोह, विवर्णता, मूर्च्छा, अंगभंग तथा मन्दाग्निसे युक्त होताहै इसको ग्रंथिविसर्प कहतेहैं यह वातकफ के कोपसे उत्पन्न होताहै ॥ ५९८ ॥

अथ पित्तश्लैष्मिकंकर्दमाख्यंविसर्पमाह ॥

कफपित्तज्वरस्तम्भोनिद्रातन्द्राशिरोरुजाः । अंगावसादविक्षेपप्रलापारोचकभ्रमाः ॥ मूर्च्छाग्निहानिर्भेदोऽस्थ्नांपिपासेन्द्रियगौरवम् ॥ आमोपवेशनंलेपःस्रोतसाञ्चविसर्पति ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रायेणामाशयंगृह्णन्नेकंदेशंनचातिरुक् । पीडकैरवकीर्णोऽतिपीतलोहितपाण्डरैः ॥ स्निग्धोऽसितोमेचकाभोमलिनःशोफवान्गुरुः । गम्भीरपाकःप्राज्योष्मास्पृष्टःक्लिन्नोऽवदीर्य्यते॥पङ्कवत्कृशीर्णमांसश्चस्पृष्टस्नायुशिरागणः। शवगन्धीचवीसर्पः कर्दमाख्य [illegible] ॥ सचसर्पतिएकदेशमित्यन्वयः। पीडकैःपीडाकारिभिः। अवकीर्णःव्याप्तः। [illegible] ः। मेचकःरूक्षकृष्णः। प्राज्योष्मप्रचुरोष्मा । स्पृष्टःक्लिन्नोऽवदीर्य्यते। [illegible] आर्द्रोभवतिविदीर्य्यते। पङ्कवत्कर्दमवर्णत्वक्यत्रसः। शीर्णमांसःगलितमांसः। [illegible] स्नायुशिरागणः ॥ ५९९ ॥

पित्तकफजकर्दमविसर्प्प के लक्षण ॥

[illegible] में ज्वर, स्तंभ, निद्राकी अधिकता, तंद्रा, शिरकीपीडा, अंगोंमें पीडा, अंगोंका [illegible] अरुचि, भ्रम, मूर्च्छा, मन्दाग्नि, हडफूटन, तृषा, इन्द्रियोंका भारीपन, आंवगिरना [illegible] यासा मालूमहोना ये लक्षण होतेहैं यह विसर्प प्रायः आमाशयमें उत्पन्न हो- [illegible] कसा एकस्थानमें फैलताहै इसमें बहुत पीडा नहीं होती यह अत्यन्त पीत, रक्त अ- [illegible] पिडिकाओं से व्याप्त, स्निग्ध, कृष्णवर्णी, रूक्ष, कृष्ण, मलिन तथा भारी शोथयुक्त होताहै गंभीर पाक, अत्यन्त ऊष्मायुक्त, स्पर्श करने से गीलासा मालूम होनेवाला, फटनेवाला, कीचके तुल्य वर्ण युक्त त्वचावाला होताहै मांस गल जाताहै इसीसे स्नायु तथा शिरा दिखाई पडने लगती है और मुर्देकी सी दुर्गंधि आती है इसे कर्दम कहतेहैं ॥ ५९९ ॥

अथ क्षतजञ्चविसर्पमाह ॥

बाह्यहेतोःक्षतात्क्रुद्धःसरक्तंपित्तमीरयन् । विसर्प्पमारुतःकुर्य्यात्कुलत्थसदृशैश्चितम् ॥ स्फोटैःशोथज्वररुजादाहाढ्यंश्यावशोणितम् । बाह्यहेतोःशस्त्रप्रहारव्यालदन्तनखाद्यागन्तुहेतोः ॥ श्यावशोणितंकृष्णवर्णरक्तम् ॥ ६०० ॥

क्षतज विसर्प के लक्षण ॥

शस्त्रप्रहार सर्प्पदांत तथा नख आदिकरके भये क्षतसे कुपित वायु रुधिर सहित पित्तको दूषित करतीभई कुलथीके समान स्फोटकोंसे युक्त शोथ, ज्वर, पीडा तथा दाह सहित कृष्णवर्णवाले विसर्प्प को उत्पन्न करती है ॥ ६०० ॥

अथोपद्रवानाह ॥

ज्वरातिसारौवमथुस्त्वङ्मांसदरणक्लमाः।अरोचकविपाकौचविसर्पाणामुपद्रवाः ॥ ६०१ ॥

विसर्प्पके उपद्रव ॥

अतीसार,छर्दि, त्वचा तथा मांसका फटना,ग्लानि,अरुचि और विपाक ये विसर्प्पके उपद्रवहैं ॥६०१॥

अथ साध्यत्वादिकमाह ॥

सिध्यन्तिवातकफपित्तकृताविसर्प्पाः सर्वात्मकःक्षतकृतश्चनसिद्धिमेति । पित्तात्मकोऽञ्जनवपुश्चभवेदसाध्यः कृच्छ्राश्चमर्म्मसुभवन्तिहिसर्वएव ॥ पित्तात्मकोऽञ्जन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वपुःपित्तजःसचकज्जलवर्णःसर्वएवसाध्याअपि। इति विसर्पनिदानम् ॥ [illegible] ॥

विसर्प्प के साध्यादि लक्षण ॥

वातज,पित्तज और कफजविसर्प्प साध्य होताहै सन्निपातज तथा क्षतजविसर्प्प असाध्य होताहै और यदि पित्तज विसर्प्प कृष्णवर्ण हो तो असाध्यहै मर्मस्थान में भये सम्पूर्ण विसर्प्प असाध्य होते हैं इति विसर्प्प निदान ॥ ६०२ ॥

अथ विसर्प्पचिकित्सामाह ॥

विरेकवमनालेपसेचनास्रविमोक्षणैः। उपाचरेद्यथादोषान्विसर्प्पानविदा[illegible]

विसर्प्प की चिकित्सा ॥

विरेचन,वमन,लेप,परिषेक,रक्त मोक्षण और अविदाही औषधों के द्वारा दो[illegible] [illegible]शोधन, की चिकित्सा करे ॥ ६०३ ॥

रास्नानीलोत्पलंदारुचन्दनंमधुकंबला । घृतक्षीरयुतोलेपोव[illegible]
न्दनमत्ररक्तंप्रयोज्यम् कशेरुशृंगाटकपद्मगुन्द्रैःसशैवलैःसोत्पल[illegible]
पित्तकृतेविसर्प्पेलेपोविधेयःसघृतःसुशीतः ॥ त्रिफलापद्मकोशी[illegible]
लमूलमनन्ताचलेपःश्लेष्मविसर्प्पके ॥ समंगालज्जालूःवातपित्तप्रशमन[illegible]
हितम् ॥ वातश्लेष्महरंकर्म्मग्रन्थिवीसर्प्पणेहितम्। पित्तश्लेष्मप्रशमनं हितंकर्दमसञ्ज्ञकम् ॥ त्रिदोषजेक्रियांकुर्य्याद्विसर्पेत्रितयापहाम् ॥ ६०४ ॥

रास्ना,नीलोत्पल,देवदारु,लालचंदन,मुलेठी और बरियारा इन सबको घी और दूध मिलाकर लेप करने से वातजविसर्प्प नष्टहोताहै कसेरू,सिंघाडा,पद्म,गोंदनी,सिवार,उत्पल और काई इनको घीमें मिलायके कपड़े में रखके शीतल लेप पित्तजविसर्प में करे त्रिफला,पद्माख,खस,लजालू,कनेर,नल की जड़ और सारिवा इनका लेप कफजविसर्प्प में करे वातपित्तनाशक [illegible]रते हैं इनमें अग्निविसर्प्प में वातकफ नाशक ग्रन्थिविसर्प्पमें पित्तकफनाशक कर्दमविसर्प्प में और त्रिदोषनाशक चिकित्सा सन्निपातज विसर्प्पमें करे ॥ ६०४ ॥

शिरीषयष्टीनतचन्दनैलामांसीहरिद्राद्वयकुष्ठबालैः। लेपोदशांगःसघृतःप्रयोज्योविसर्प्पकुष्ठज्वरशोथहारी ॥ नतंतगरम् चन्दनंरक्तंग्राह्यम् ॥ इति दशांगोलेपः ॥ ६०५ ॥

सिरसा,मुलेठी,तगर,लालचंदन, इलायची, जटामांसी, हल्दी, दारुहल्दी, कूट और सुगन्धबाला इनको घीमें मिलाकर लेपकरने से विसर्प्प,कुष्ठ,ज्वर तथा शोथका नाश होताहै इति दशांगलेप ६०५ ॥

परिषेकाःप्रलेपाश्चशस्यन्तेपञ्चवल्कलैः। पद्मकोशीरमधुकैःचन्दनैर्वाविसर्पणे ॥ भूनिम्बवासाकटुकापटोलीफलत्रयंचन्दननिम्बसिद्धः। विसर्पदाहज्वरशोथकण्डूविस्फोटतृष्णावमिहृत्कषायः ॥ कुष्ठेषुयानिसर्पींषिव्रणेषुविविधेषुच। विसर्पेतानियोज्यानिसेकालेपनभोजनैः ॥ ६०६ ॥

विसर्प्पमें पंचवल्कलके द्वारा अथवा पद्माख,खस,मुलेठी तथा लालचंदनके द्वारा लेप और परिषेक श्रेष्ठहै चीता, रूसा, कुटकी, परवल, त्रिफला, लालचंदन तथा नाब इनका काढ़ा विसर्प्प,दाह, ज्वर,शोथ,खुजली,विस्फोटक तृषा तथा छर्दिको नष्ट करता है जो घृत कुष्ट और नाना प्रकार के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व... में कहेगये हैं व सब विसर्प में परिषेक लेप तथा भोजनके द्वारा प्रयोग करने चाहिये ॥ ६०६॥

करञ्जसप्तच्छदलांगुलीकस्नुह्यर्कदुग्धानलभृंगराजैः। तैलंनिशामूत्रविषैर्विपक्वंविसर्प विस्फोटविचर्चिकाघ्नम् ॥ इति करञ्जतैलम् ॥ ६०७ ॥

करंजुवा,छितवन,करिहारी,थूहड़ और आककादूध,चीता,भंगरा,हल्दी,गोमूत्र तथा सिंगिया इन सबकेद्वारा पाककियाभया तैल.विसर्प्प,विस्फोट तथा विचर्चिकाको नष्ट करताहै इति करंजतैल ६...

...स्फोटमसूरिकोक्तचिकित्सयाप्याशुहरेद्विसर्पान् । सर्वान्विपक्वान्परिशोध्य ...क्रमेणोपचरेद्यथोक्तम् ॥ इति विसर्पचिकित्सा ॥ ६०८ ॥

... और मसूरिकामें कहीभई चिकित्साके द्वारा विसर्प नष्ट होताहै यदि विसर्प पकजा... व्रणमें कहीभई चिकित्साकरै इति विसर्प्पचिकित्सा ॥ ६०८ ॥

...ऽधिकारस्तत्रस्नायुरोगस्यविप्रकृष्टंसामान्यलक्षणमाह ॥

...षः शोथंकृत्वाविसर्पवत् । भित्त्वैवतंक्षतेतत्रसोष्ममांसंविशोष्यच ॥ ...पिण्डैस्तक्रसक्तुजैः । शनैःशनैःक्षताद्यातिछेदात्तत्कोपमावहे ...शान्तिःस्यात्पुनःस्थानान्तरेभवेत् । सस्नायुरितिविख्यातःक्रियोक्तात्र ...र्यदिप्रमादेनत्रुटयेतजङ्घयोरपि । सङ्कोचंखञ्जताञ्चापिछिन्नोनूनंकरोत्य सावितिस्नायुरोगनिदानम् ॥ ६०९ ॥

स्नायुरोगका अधिकार स्नायुरोगका सामान्य लक्षण ॥

शाखाओंमें कुपितदोष विसर्प्पके तुल्य शोथको उत्पन्नकरके घावको उत्पन्नकरताहै और उस घाव के मांसको सुखाकर ऊष्मासहित दोष सूत्रके समान करदेताहै वह मट्ठे तथा सत्तूके पिंडोंसे धीरे २ घावसे बाहर निकलताहै ये टूटनें से बड़ा दुःखदायी होताहै डोरेके गिरपड़ने पर शोथ शान्त होजाता है और फिर दूसरी जगह निकलताहै इसे स्नायुरोग कहतेहैं इसमें विसर्प्प कीसी चिकित्सा करै जो असावधानतासे भुजा अथवा जंघाओंमें भया सूत्र टूटजाताहै तो हाथ सिकुड़ जाते हैं और पैर खंज (लूला) होजातेहैं इति स्नायुरोगनिदान ॥ ६०९ ॥

अथ स्नायुरोगस्यचिकित्सामाह ॥

स्नेहस्वेदप्रलेपादिकर्मकुर्याद्यथोचितम् । रामठंशीततोयेनपीतंस्नायुकरोगनु स्वेदात्स्नायुकमत्युग्रंभेकःकाञ्जिकसाधितः । तद्वद्बब्बूलजंबीजंपिष्टंहन्तिप्रलेपनात् ॥ गव्यंसर्पिस्त्र्यहंपीत्वानिर्गुण्डीस्वरसंत्र्यहम् । पिबेत्स्नायुकमत्युग्रंहन्त्यवश्यंनसंश मूलंसुपठ्याहिमवारिपिष्टंपानादिदंदन्तुकरोगमुग्रम् । शान्तिंनयेत्सव्रणमाशुपुंसांगन्ध वगन्धेनघृतेनपीत्वा ॥ गन्धर्वगंधेनगंधर्वगन्धोऽस्यास्तीतिसगन्धर्वगन्धःअश्वगंधःतेन अतिविषमुस्तकभार्गीविश्वौषधपिप्पलीविभीतकयः । चूर्णमिदंतन्तुघ्नंपुंसांउष्णेनवारि णापीनम् ॥ शिग्रुमूलदलैःपिष्टैःकाञ्जिकेनससैन्धवैः । लेपनंस्नायुकव्याधेःशमनंपरमंमतम् ॥ अहिंस्रमूलकल्केनतोयपिष्टेनयत्नतः । लेपसम्बन्धनात्तन्तुर्निःसरेन्नैवसंशयः ॥ इतिस्नायुकस्यचिकित्सा ॥ ६१० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्नायु की चिकित्सा॥

स्वेद तथा प्रलेप आदि चिकित्सा स्नायुरोगमें यथायोग्य करै शीतल जलके साथ हींगके पीनेसे स्नायुरोगका नाश होताहै कांजीमें मेढककी सिद्धकरके स्वेदनकरने से स्नायुरोग का नाश होता है बबूलके बीजोंको पीसकर लेपकरनेसे स्नायुरोग नष्ट होताहै तीनदिन गऊके दूधको पीकर तीनदिन निर्गुंडी के रसको पीने से बहुत बढ़ाभी स्नायुरोग नष्ट होता है करेलेकी जड़को ठंढेपानी में पीस के पानेसे स्नायुरोग नष्ट होताहै करेलेकी जड़को असगंध घृतके साथ पीनेसे व्रणसहित स्नायुरोग नष्ट होताहै अतीस, मोथा, भारंगी, सोंठ, पीपल तथा बहेडा इनके चूर्णको गरम जलके साथ ... रोग नष्ट होताहै कांजी तथा सेंधानिमक के साथ सहँजनकी जड़को पीसकर लेप ... रोग नष्ट होताहै कुलेखाड़ा की जड़को पानीमें पीसकर लेपकरनेसे सूत्र निकल ... चिकित्सा॥ ६१०॥

अथ विस्फोटाधिकारस्तत्रविस्फोटकस्यविप्रकृष्टंनिदानपूर्विका ... कट्वम्लतीक्ष्णोष्णविदाहिरूक्षक्षारैरजीर्णाध्यशनातपैश्च। तथ ... प्यन्तिदोषाःपवनादयस्तु॥ त्वचमाश्रित्यतेरक्तंमांसास्थीनिप्रदू ... विस्फोटान्सर्वान्ज्वरपुरःसरान्॥ ऋतुदोषेणऋतुहेतुकशीतोष्णादीनाम् इते हैं इनमें पर्य्ययेणऋतूचिताहारविहारवैपरीत्येन॥ त्वचमाश्रित्यत्वचिविस्फोटान् ... ज्वरपुरःसरान्ज्वरपूर्वान्॥ ६११॥

विस्फोट का अधिकार विस्फोट के दूरवाले कारणोंसहित संप्राप्ति॥

कटु, खट्टा, तीखा, उष्ण, विदाही, रूखा तथा क्षार वस्तुओं से अजीर्ण में भोजनसे धूपसे ऋतुसंबंधी शीत उष्ण आदिके अधिक सेवन से और ऋतुओं में यथायोग्य आहार विहार न होने से कुपित वात आदि दोष रक्त मांस तथा हड्डियोंको दूषित करके त्वचामें भयंकर विस्फोटकों को उत्पन्न करते हैं इन में पहले ज्वर होताहै॥ ६११॥

अथपूर्वरूपमाह॥

अग्निदग्धाइवस्फोटाःसज्वरारक्तपित्तजाः। क्वचित्सर्वत्रवादेहेविस्फोटाइतितेस्मृताः॥ रक्तपित्तजाःएतेनसर्वेषुविस्फोटकेषुरक्तपित्तयोःप्रधानकारणत्वम्। यथाशूलेषुवा तस्यतथावातानुगतिरपिबोद्धव्या (तथाचभोजः) यदारक्तञ्चपित्तञ्चवातेनानुगतंत्वचि। अग्निदग्धनिभान्स्फोटान्कुरुतःसर्व्वदेहगान्॥ ६१२॥

विस्फोटकों का पूर्वरूप॥

रक्तपित्तसे उत्पन्न आगसे पड़ेभये फफोलेके समान देहके किसीभागमें अथवा सर्वत्र जो फफोले पड़ते हैं उन्हें विस्फोटक कहतेहैं सबप्रकारके विस्फोटकों में रक्त और पित्त प्रधान कारणहै और शूलरोग के समान वायुभी साथ रहताहै ऐसाही भोजनेभी कहाहै कि जब वायुसहित रक्त और पित्त त्वचा में आगसे पड़ेभये फफोलों के समान विस्फोटकों को संपूर्ण शरीरमें उत्पन्न करते हैं ६१२॥

अथ वातिकमाह। शिरोरुक्शूलभूयिष्ठंज्वरतृट्पर्ववेदनम्॥ सकृष्णवर्णताचेतिवा तविस्फोटलक्षणम्। शूलंतोदरूपम्॥ ६१३॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वातजविस्फोटके लक्षण ॥

वातजविस्फोटमें शिरमें पीडा, सूजीगडनेकीसी पीडा, ज्वर, तृषा, पोरोंमें हडफूटन और [illegible]ता ये लक्षण होतेहैं ॥ ६१३ ॥

अथ पैत्तिकमाह ॥

ज्वरदाहरुजापाकस्रावतृष्णासमन्वितम्। पीतलोहितवर्णंच पित्तविस्फोटलक्षणम् ॥ ६१४ ॥

पित्तजविस्फोटके लक्षण ॥

[illegible]विस्फोट में ज्वर, दाह, पीडा, पकना, बहना, तृषा और पीत तथा रक्तवर्णता ये लक्षण [illegible] ॥

अथ श्लैष्मिकमाह ॥

[illegible]कण्डूकाठिन्यपाण्डुताः । यस्मिन्नरुक्चिरात्पाकः सविस्फोटः क[illegible] ॥ ६१५ ॥

कफजविस्फोट के लक्षण ॥

[illegible]र्दि, अरुचि, जडता, खुजली, कठोरता, पीलापन, पीडाका न होना और देर में [illegible] होतेहैं ॥ ६१५ ॥

अथ कफपैत्तिकमाह ॥

कण्डूर्दाहोज्वरश्छर्दिरेतैश्चकफपैत्तिकः ॥ ६१६ ॥

कफपित्तजविस्फोट के लक्षण ॥

कफपित्तजविस्फोट में खुजली, दाह, ज्वर तथा छर्दि होती है ॥ ६१६ ॥

अथ वातपित्तमाह ॥

वातपित्तकृतोयस्तुतत्रस्यात्तीव्रवेदना ॥ ६१७ ॥

वातपित्तजविस्फोट के लक्षण ॥

वातपित्तजविस्फोट में अत्यन्त पीडा होती है ॥ ६१७ ॥

अथ वातश्लैष्मिकमाह ॥

कण्डूस्तैमित्यगुरुभिर्जानीयात्कफवातिकम् ॥ ६१८ ॥

वातकफजविस्फोट के लक्षण ॥

वातकफजविस्फोट में खुजली, गीले कपडेसे ढकाभयासा मालूम होना और भारीपन होताहै ६१८ ॥

अथ सन्निपातिकमाह ॥

मध्येनिम्नोन्नतान्तश्चकठिनःस्वल्पपाकवान् । दाहरागतृषामोहच्छर्दिमूर्च्छारुजज्वराः ॥ प्रलापोवेपथुर्मूर्च्छासोसाध्यश्चत्रिदोषजः । मोहोविपरीतंज्ञानंमूर्च्छासर्वथाज्ञानशून्यता ॥ ६१९ ॥

सन्निपातजविस्फोटके लक्षण ॥

सन्निपातजविस्फोट में फफोले बीचमें गहरे किनारों में उठेभये रक्तवर्ण कठोर तथा स्वल्प पकने वाले होतेहैं रोगी दाह, तृषा, मोह (औरका और समझना) मूर्च्छा (बिल्कुल ज्ञान न होना) छर्दि, पीडा, ज्वर, बकना, कांपना और तन्द्रा इनसे युक्त होताहै यह असाध्यहै ॥ ६१९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ रक्तजमाह ॥

वेष्टितःस्युश्चरक्तेनपैत्तिकेनचहेतुना । गुञ्जाफलसमारक्तारक्तस्रावाविदाहिनः ॥ नतेसिद्धिंसमायांतिसिद्धैर्योगशतैरपि । पैत्तिकेनहेतुनापित्तस्यहेतुनाकट्वादिनारक्तपित्तस्यतु... सिद्धैर्योगशतैरपितेसिद्धिंनसमायान्ति ॥ ६२० ॥

रक्तजविस्फोट के लक्षण ॥

रक्तजविस्फोट पित्त के कटु आदि कारणों से उत्पन्न होते हैं घुंघुची के समान रक्त... बहनेवाले और दाहयुक्त होतेहैं ये सैकडों सिद्धयोगों से भी अच्छे नहीं होते ॥ ६२० ॥

अथ विस्फोटकानाह ॥

एतेचाष्टविधाबाह्याआन्तरोऽपिभवेदयम् । तस्मिन्नन्तर्यथातीव्रा... ते ॥ यस्मिन्बहिर्गतेस्वास्थ्यंनवा...स्यबहिर्गतिः । तत्रवातिका... विजानता ॥ ६२१ ॥

विस्फोटकों का वर्णन ॥

ये आठ प्रकार के बाह्यविस्फोटक होते हैं और भीतर भी विस्फोट होतेहैं इन... कहते हैं इनमें तथा ज्वर होताहै यदि बाहर आजाताहै तो स्वस्थता होतीहै और वातज आभ्यंतरविस्फो... सुखसाध्य निकलताहै और इसमें वातजविस्फोट कीसी चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ६२१ ॥

अथोपद्रवानाह ॥

तृट्श्वासमांससंकोचदाहहिक्कामदज्वराः । विसर्पमर्म्मसंरोधास्तेषामुक्ताउपद्रवाः ॥ मांससंकोचःमांसस्यशठितत्वम् । मर्म्मसंरोधोमर्म्मव्यथा ॥ तेषांविस्फोटानांकेचिदुपद्रवाणांलक्षणान्तरंपठन्ति । हिक्काश्वासोऽरुचिस्तृष्णासांगमर्द्दोहृदिव्यथा ॥ विसर्पज्वरहृल्लासाविस्फोटानामुपद्रवाः ॥ ६२२ ॥

विस्फोट के उपद्रव ॥

तृषा,श्वास,मांसका सिकुडजाना,दाह,हिचकी,मद,ज्वर,विसर्प और मर्म्मोंमें पीडा ये विस्फोटकों के उपद्रवहैं कोई २ विस्फोटकोंके उपद्रवोंके दूसरे लक्षण कहतेहैं जैसे हिचकी, श्वास, अरुचि, तृषा शरीर तथा हृदय में पीडा, विसर्प, ज्वर और मतली ये विस्फोटों के उपद्रवहैं ॥ ६२२ ॥

अथ साध्यत्वादिकमाह ॥

एकदोषोत्थितःसाध्यःकृच्छ्रसाध्योद्विदोषजः । सर्वरूपान्वितोघोरोह्यसाध्योभूर्य्युपद्रवः ॥ इति विस्फोटनिदानम् ॥ ६२३ ॥

विस्फोट के साध्यादि लक्षण ॥

एकदोषजविस्फोट साध्य द्वन्द्वजविस्फोट कष्टसाध्य और त्रिदोषज तथा अनेक उपद्रवों से युक्त विस्फोटक असाध्य होताहै इति विस्फोटकनिदान ॥ ६२३ ॥

अथ विस्फोटकस्यचिकित्सामाह ॥

विस्फोटेलङ्घनंकार्य्यंवमनंपथ्यभोजनम् । यथादोषबलंवीक्ष्ययुक्तमुक्तंविरेचनम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

जी [illegible] ालि [illegible] मुद्गामसूर [illegible] चाढकीतथा।एतान्यन्नानिविस्फोटे हितानिमुनयोऽब्रुवन् ६२४

विस्फोटककी चिकित्सा ॥

विस्फोटक में दोष के बलको देखकर लंघन,वमन, पथ्य भोजन तथा विरेचन करना चाहिये पुराने चावल,जौ,मूंग,मसूर तथा अरहर ये अन्न विस्फोटक में हित हैं ॥ ६२४ ॥

ह्वेपञ्चमूल्योरास्नाचदार्व्युशीरंदुरालभा । गुडूचीधान्यकंमुस्ताएषांक्काथःपिबन्नरः ॥ विस्फोटान्नाशयत्याशुसमीरणनिमित्तकान् । द्राक्षाकाश्मर्य्यखर्ज्जूरपटोलारिष्टवासकैः ॥ [illegible] नवमजदुःस्पर्शैःसितायुक्तंतुपैत्तिके । भूनिम्बसवचावासात्रिफलेन्द्रजवत्सकैः ॥ [illegible] ोलाभ्यांकफजेमधुयुक्शृतम् । किराततिक्तकारिष्टयष्ट्याङ्काम्बुदवासकैः ॥ प [illegible] त्रिफलाकौटजान्वितैः ।क्कथितैर्द्वादशांगन्तुसर्वविस्फोटनाशनम् ॥ ६२५ ॥

[illegible] रास्ना,दारुहल्दी,खस,जवासा,गुर्च,धनियां और नागरमोथा इनके क्वाथके पीनेसे वातज [illegible] ही नष्ट होताहै दाख,खंभारी,खजूर,परवल,नींब,रूसा,कुटकी,खील तथा जवासा इन [illegible] ढ़े में शक्कर डालकर पित्तजविस्फोटमें पियै चिरायता,बच,रूसा, त्रिफला,इन्द्रजौ,कुरैया,नींब [illegible] इनके काढ़े को शहद डालकर कफजविस्फोट में पियै चिरायता, नींब,मुलेठी,नागर- [illegible] परवल,पित्तपापड़ा,खस,त्रिफला और इन्द्रजौ इनके काढ़े को पीनेसे सब विस्फोटोंका [illegible] इसे द्वादशांग कहतेहैं ॥ ६२५ ॥

विस्फोटव्याधिनाशायतण्डुलाम्बुप्रयोजितैः । बीजैःकुटजवृक्षस्यलेपःकार्य्योविजानता॥छिन्नापटोलभूनिम्बवासकारिष्टपर्पटैः । खदिराब्दयुतैःक्काथोहन्तिविस्फोटकज्वरम् ॥ चन्दनंनागपुष्पञ्चसारिवातण्डुलीयकम् । शिरीषवल्कलंजातीलेपःस्याद्दाहनाशनः ॥ उत्पलंचन्दनंलोध्रमुशीरंसारिवाद्वयम् । जलपिष्टेनलेपेनस्फोटदाहार्त्तिनाशनः ॥ पुत्रजीवस्यमज्जानंजलेपिष्ट्वाप्रलेपयेत् । कालस्फोटंविषस्फोटंसद्योहन्तिसवेदनम् ॥ कक्षग्रन्थिगलग्रन्थिकर्णग्रन्थिचनाशयेत् । हन्याच्चस्फोटकंताम्रंपुत्रजीवोविनाशयेत् ॥ इतिविस्फोटस्यचिकित्सा ॥ ६२६ ॥

इन्द्रजवों को चावल के धोवनमें पीसकर लेप करने से विस्फोट को नाश होताहै गिलोय,परवल,चिरायता,रूसा,नींब,पित्तपापड़ा,खैरसार और नागरमोथा इनका काढ़ा विस्फोटज्वरका नाश करता है चंदन,नागकेसर,सारिवा,चौराई,सिरसेकी छाल और चँबेली इनके लेपसे दाहका नाश होताहै उत्पल चंदन लोध खस और दोनों साईं इन सबको पानी में पीसकर लेप करनेसे स्फोटोंके दाहका नाश होता है पतजिया की मींगी को जलमें पीसकर लेप करने से काले स्फोटक,पीड़ासहित स्फोटक,कांख की गांठ, गले की गांठ, कान की गांठ और ताम्रवर्ण स्फोटकका शीघ्रही नाश होताहै इति विस्फोटचिकित्सा ॥ ६२६ ॥

अथ फिरंगाधिकारः ॥

फिरंगसंज्ञकेदेशेबाहुल्येनैवयद्भवेत् । तस्मात्फिरंगइत्युक्तोव्याधिर्व्याधिविशारदैः ६२७

फिरंगका अधिकार ॥

फिरंग देशमे यह रोग अधिकतासे होताहै इसवास्ते यह फिरंग कहलाताहै ॥ ६२७ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ विप्रकृष्टनिदानमाह ॥

गन्धरोगः फिरंगोऽयञ्जायतेदेहिनांध्रुवम् । फिरंगिनोऽगसंसर्गात्फिरंगिण्याप्रसंगतः ॥ व्याधिरागन्तुजोह्येषदोषाणामत्रसंक्रमः । भवेत्तल्लक्षयेत्तेषांलक्षणैर्भिषजांवरः ॥ फिरंगिण्यात्रसंगतइतिविशेषार्थम् ॥ ६२८ ॥

फिरंगरोगके दूरवाले कारण ॥

फिरंगरोगवालेके संसर्गसे और फिरंगिनी स्त्रीके साथ प्रसंगकरनेसे यह फिरंगनाम गंधरोग पैदाहोताहै यह आगन्तुजरोगहै इसमें पीछे से दोष मिलते हैं दोषोंके अनुसार इसके लक्षण जानने चाहिये ६२८॥

अथास्यरूपमाह ॥

फिरंगस्त्रिविधोज्ञेयोबाह्याभ्यन्तरतस्तथा । बहिरन्तर्भवश्चापितेषांलिंगानिचोच्यते ॥ तत्रबाह्यःफिरंगःस्याद्विस्फोटसदृशोऽल्परुक् । स्फुटितोव्रणवद्वैद्यःसुखसाध्योऽपिसम्मतः ॥ सन्धिष्वाभ्यन्तरःसस्यादामवातइवव्यथाम् । शोथञ्चजनयेदेषकष्टसाध्योबुधैःस्मृतः ॥ ६२९ ॥

फिरंगके लक्षण ॥

फिरंग तीन प्रकारका होताहै जैसे बाह्य आभ्यन्तर और बहिरंतर्भव इनके लक्षण कहते हैं इनमें से बाह्यफिरंग विस्फोटक समान थोडी पीडावाला फटाभया और व्रणयुक्त होताहै यह सुखसाध्य है आभ्यन्तरफिरंग संधियों में होता है और आमवात के समान पीडा तथा शोथसे युक्त होता है यह कष्टसाध्य होताहै ॥ ६२९ ॥

अथोपद्रवानाह ॥

कार्श्यंबलक्षयोनासाभंगोवह्नेश्चमन्दता। अस्थिशोषोऽस्थिवक्रत्वंफिरंगोपद्रवाअमी ६३०

फिरंगके उपद्रव ॥

कृशता, बलका नाश, नाकका बैठना, मंदाग्नि, हड्डियोंका सूखना, हड्डियों का टेढाहोना ये फिरंग के उपद्रव हैं ॥ ६३० ॥

अथ साध्यत्वादिकमाह ॥

बहिर्भवोभवेत्साध्योनवीनोनिरुपद्रवः । आभ्यन्तरस्तुकष्टेनसाध्यःस्यादयमामयः ॥ बहिरन्तर्भवोजीर्णःक्षीणस्योपद्रवैर्युतः । व्याप्तोव्याधिरसाध्योऽयमित्याहुर्मुनयःपुरा ॥ इति फिरंगनिदानम् ॥ ६३१ ॥

फिरंगके साध्यादि लक्षण ॥

नवीन तथा उपद्रवरहित बाह्यफिरंग साध्य है आभ्यन्तरफिरंग कष्टसाध्य है जीर्ण अवस्था में क्षीण मनुष्यों का उपद्रवों से युक्त और बाहर भीतर व्याप्त बहिरंतर्भवफिरंग असाध्य है इति फिरंगनिदान ॥ ६३१ ॥

अथ फिरंगस्यचिकित्सामाह ॥

लिख्य फिरंगसंज्ञकंरोगंरसःकर्पूरसंज्ञकः । अवश्यंनाशयेदेतद्रूचुःपूर्वचिकित्सकाः ॥ गोधूमचूर्णसंतेरसकर्पूरप्राशनेविधिरुत्तमः । अनेनविधिनाखादेन्मुखेशोथंनाविन्दति ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...वेदध...न्मकू...म्॥। तन्मध्येनिःक्षिपेत्सूतंचलुगुंजामितंभिषक् ॥ ततस्तु गुटिकांकुर्य्याद्यथानदृश्यतेबहिः। सूक्ष्मचूर्णैलवंगस्यतांवटीमवधूलयेत्...न्तस्पर्शोयथा नस्यात्तथातामम्भसागिलेत् । ताम्बूलंभक्षयेत्पश्चाच्छाकाम्ललवणांस्त्यजेत् ॥ श्रममातपमध्वानंविशेषात्स्त्रीनिषेवणम्। इति कर्पूररसः॥ ६३२॥

फिरंगकी चिकित्सा॥

रसकर्पूरनाम औषध खानेसे यह रोग निस्सन्देह नष्ट होताहै जिसप्रकारसे रसकर्पूरके खाने से मुखमें शोथ न हो उस विधिको लिखते हैं गेहूंके आटेकी कुप्पी बनावे उसमें चाररत्ती पारा भरके ऐसी गोली बनावै कि पारा न दिखाईदे फिर उस गोलीको लौंगके चूर्ण में लपटले फिर पानी के ...निगलजावै और दात न लगनेपावै पीछेसे पानखावै इस औषधके सेवनमें शाक,खटाई, ...धूप,मार्गगमन और विशेष करके स्त्रीप्रसंगको छोडदे इति कर्पूररस॥ ६३२॥

पारदोटङ्कमानःस्यात्खदिरष्टङ्कसंमितः। आकारकरभश्चापिग्राह्यष्टङ्कद्वयोन्मितः॥ टङ्कत्रयोन्मितंक्षौद्रंखल्वेसर्वंविनिःक्षिपेत् । संमर्द्यतस्यसर्वस्यकुर्य्यात्सप्तवटीर्भिषक्॥ सरोगीभक्षयेत्प्रातरेकैकामम्बुनावटीम्। वर्जयेदम्ललवणंफिरंगस्तस्यनश्यति॥ इति सप्तशालिवटी॥ ६३३॥

पारा तथा खैर एक २ टंक अकरकरहा २ टंक और शहद ३ टंक इन सबको खरलमें घोटकर सात गोली बनावै प्रातःकाल एक गोली पानीके साथ रोजखाय और खटाई तथा नोनको त्यागदे इससे फिरंग नष्ट होताहै इति सप्तशालिवटी॥ ६३३॥

पारदःकर्षमात्रःस्यात्तावानेवहिगन्धकः। तण्डुलाश्चाक्षमात्राःस्युरेषांकुर्य्याच्च कज्जलीम्॥ तस्याःसप्तवटीःकुर्य्यात्ताभिर्धूमंप्रयोजयेत्। दिनानिसप्ततेनस्यात्फिरंगान्तोनसंशयः॥ इति धूमप्रयोगः॥ ६३४॥

पारा,गन्धक तथा बायविडंग इनको तोले २ भर लेके कजली करै फिर उसकी सात गोली बांधै फिर एक २ गोलीका रोज धुवां सात दिनतक लिवावै इससे फिरंगरोगका निस्सन्देह नाश होताहै इति धूमप्रयोग॥ ६३४॥

पीतपुष्पबलापत्ररसैष्टङ्कमितंरसम्। हस्ताभ्यांमर्द्दयेत्तावद्यावत्सूतोनदृश्यते॥ ततः संस्वेदयेद्दस्तावेवंवासरसप्तकम्॥त्यजेल्लवणमम्लञ्चफिरंगस्तस्यनश्यति॥चूर्णयेन्निम्बपत्राणिपथ्यानिम्बाष्टमांशिकाः। धात्रीचतावतीरात्रीनिम्बषोडशभागिका॥ शाणमानमिदंचूर्णमश्नीयादम्भसासह। फिरंगंनाशयत्येवबाह्यमाभ्यन्तरंतथा॥ चोपचीनीभवंचूनशक्नोतियदाजनः। सैन्धवंसहिभुञ्जीतमधुरंपरमंहितम्॥ लवणंयदिवात्यक्तुंन्मात्रंतुगन्धकम्। तावन्मात्रस्तुखदिरस्तेषांकुर्य्यात्तुकज्जलीम्॥ पारदःकर्षमात्रःस्यात्तावजीरयुग्मंयवानिका। चन्दनद्वितयंकृष्णावांसीमांसीचपत्रकम्॥ रजनीकेशरंत्रुट्योयित्वाचनिःक्षिपेत्। ततसर्वंमधुसर्पिर्भ्यांद्विपलाभ्यांपृथक्पृथक्॥ अर्द्धकर्षमितंसर्वंचूर्णं मर्द्दयेदथतत्खादेदर्द्ध

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर्षमितंनरः । व्रणःफिरंगरोगोत्थस्तस्यावश्यंविनश्यति ॥ [illegible] प्रोऽपिपिरगा रोऽपि [illegible] स्यति [illegible] वर्णं एतद्भक्षयतःशोथोमुखस्यान्तर्नजायते॥वर्जयेदत्र लवणमेकविंशतिवासरान्॥ इति फिरंगस्यचिकित्सा ॥ ६३५ ॥

पीले फूलके बरियारेके रसमें एक टंक पारेको हाथों से मलै जब पारा न दिखाईदे तब हाथों में स्वेद [illegible] इसप्रकार सात दिन करै और नोन खटाई को छोडदेवै इससे फिरंगका नाश होताहै नींब के पत्ते ८ भाग हड तथा आंवला एक एक भाग हल्दी आधा भाग इन सबके चूर्णको जलके साथ चार माशे नित्य फांकने से भीतर तथा बाहरका फिरंग नष्ट होताहै चोबचीनी के चूर्णको शहद के साथ चार माशे खानेसे फिरंगरोग नष्ट होताहै इसके सेवनकरनेवाला लवणको त्यागदे यदि न त्याग सकै तो सेंधानोन खाय इसमें मधुर सेवन हितहै पारा, गन्धक और खैर इनको [illegible] हल्दी, नागकेसर, दोनों जीरे, अजवाइन, लालचन्दन, चन्दन, दोनों इलायची, पीपल, वंशलोचन, जटामांसी और तेजपात इन सबके आध २ तोले चूर्णको कजलीमें मिलावै फिर इन सबको दो दो तोले शहद और घीमें मिलावै इसको आधे तोले खानेसे फिरंगरोग के व्रणोंका नाश होताहै तथा अन्य पुराने महाव्रण भी नष्ट होते हैं इसके खानेवालेके मुखमें शोथ नहीं होताहै इसके सेवन करने वालेको २१ दिनतक नोन न खाना चाहिये इति फिरंगरोगचिकित्सा ॥ ६३५ ॥

अथ मसूरिकाधिकारमाह। तत्रमसूरिकायाविप्रकृष्टसन्निकृष्टनिदानपूर्विकांसंप्राप्तिमाह॥

कट्वम्ललवणक्षारविरुद्धाध्यशनाशनैः । दुष्टनिष्पावशाकाद्यैःप्रदुष्टपवनोदकैः ॥ क्रूरग्रहेक्षणाच्चापिदेशेदोषसमुद्भवाः । जनयन्तिशरीरेऽस्मिन्दुष्टरक्तेनसंगताः॥ मसूराकृतिसंस्थानाःपिडिकासामसूरिका । क्षारोयवक्षारादिः । विरुद्धाध्यशनाशनैःकट्वम्लादिविरुद्धान्नाशनैः । अथचअध्यशनाशनम् । अधिकमशनमध्यशनम् । दुष्टनिष्पावशाकाद्यैः दुष्टैर्निष्पावशाकमादिशब्दान्मध्वालुकादितैः।प्रदुष्टपवनोदकैःसविषकुसुमादिसंसर्गात्। क्रूरग्रहेक्षणाच्चापिदेशेदेशेक्रूरग्रहाराहुशनैश्चरादयस्तेषामीक्षणाद्दृष्टेः यस्मिन्देशेक्रूरग्रहदृष्टिस्तत्रापिमसूरिकोत्पत्तिरित्यर्थः । मसूराकृतिसंस्थानाःमसूरस्ययाआकृतिस्तद्वत्संस्थानमाकृतिर्यासांताः ॥ ६३६ ॥

मसूरिका का अधिकार। मसूरिकाके दूरवाले और निकटवाले कारणोंसमेत संप्राप्ति ॥

कटु,खटाई,लवण तथा क्षार भारी विरुद्धअन्न खाने से अधिकभोजनसे दूषित निष्पावशाक तथा मध्वालुक आदिके सेवनसे विष सहित पुष्पादिके संसर्ग द्वारा दूषित वायु जलके सेवनसे और देशमें क्रूरग्रहों की अशुभ दृष्टि पडनेसे वातादि तीनों दोष दूषित रुधिरके साथ मिलकर मसूर के समान आकृतिवाली पिडिकाओंको उत्पन्न करतेहैं इनको मसूरिका कहते हैं ॥ ६३६ ॥

अथ पूर्वरूपमाह ॥

तासांपूर्वंज्वरःकण्डूगात्रभंगोऽरतिभ्रमः।त्वचिशोथःसवैवर्ण्यंनेत्ररागस्तथैवच ॥६३७॥

मसूरिकाका पूर्वरूप ॥

मसूरिका होनेके पहले ज्वर,खुजली,शरीरमें पीडा,बेचैनी,भ्रम,त्वचामें शोथ, विवर्णता और नेत्रोंमें ललाई होतीहै ॥ ६३७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ वातजमाह ॥

स्फोटाःकृष्णारुणारूक्षास्तीव्रवेदनयान्विताः । कठिनाश्चिरपाकाश्च ... निलस म्भवाः ॥ सन्ध्यस्थिपर्वणांभेदःकासःकम्पोऽरतिर्भ्रमः । शोषस्ताल्वोष्ठजिह्वानांतृष्णा चारुचिसंयुताः ॥ ६३८ ॥ वातजमसूरिका के लक्षण ॥

वातजमसूरिकामें कृष्ण अथवा रक्तवर्ण रूखे अत्यंत पीडायुक्त कठोर तथा बहुत देरमें पकनेवाले स्फोटक होतेहैं रोगी.संधि,हड्डी तथा पोरोंका टूटना,खांसी,कंप,बेचैनी,श्रम,तालु,ओष्ठ तथा जीभका सूखना तृषा और अरुचि इन लक्षणों से युक्त होताहै ॥ ६३८ ॥

अथ पित्तजमाह ॥

...पीताःसिताःस्फोटाःसदाहास्तीव्रवेदनाः । भवन्त्यचिरपाकाश्चपित्तकोपसमुद्भ वाः ॥ विड्भेदश्चांगमर्दश्चदाहस्तृष्णारुचिस्तथा । मुखपाकोऽक्षिपाकश्चज्वरस्तीव्रः सुदारुणः ॥ ६३९ ॥ पित्तजमसूरिका का लक्षण ॥

पित्तजमसूरिका. रक्तपीत तथा कृष्णवर्ण दाहयुक्त तीव्र पीडावाली और शीघ्र पकनेवाली होतीहैं इनमें मलभेद,शरीरमें पीडा,दाह,तृषा,अरुचि, मुखका पकना,आंखोंका लालहोना और तीव्रज्वर ये लक्षण होते हैं ॥ ६३९ ॥

अथ रक्तजमाह ॥

रक्तजासुभवन्त्येतेविकाराःपित्तलक्षणाः ॥ ६४० ॥

रक्तजमसूरिका के लक्षण ॥

रक्तजमसूरिकामें पित्तजमसूरिका के लक्षण होते हैं ॥ ६४० ॥

अथ कफजमाह ॥

श्वेताःस्निग्धाभृशंस्थूलाःकण्डुरामन्दवेदनाः । मसूरिकाःकफोद्भूताश्चिरपाकाःप्रकी र्त्तिताः ॥ कफप्रसेकःस्तैमित्यंशिरोरुग्गात्रगौरवम् ।हृल्लासस्सारुचिर्निद्रातन्द्रालस्यसम न्विताः ॥ ६४१ ॥ कफजमसूरिका के लक्षण ॥

कफजमसूरिका. श्वेत,स्निग्ध,अत्यंतस्थूल, खुजली तथा स्वल्प पीडायुक्त और देरमें पकनेवाली होतीहैं,इनमें लारका बहना,शरीरकीआर्द्रता,शिरमें पीडा,देहका भारीपन,मतली, अरुचि,निद्रा,तन्द्रा तथा आलस्य ये लक्षण होते हैं ॥ ६४१ ॥

अथसन्निपातिकमाह ॥

नीलाश्चिपिटविस्तीर्णामध्येनिम्नामहारुजः । पूतिस्रावाश्चिरात्पाकाःप्रभूताःसर्व्व दोषजाः ॥ ६४२ ॥ सन्निपातजमसूरिका का लक्षण ॥

सन्निपातजमसूरिका. नीलवर्ण, चिपटी, फैलीभई, बीचमें दबीभई, अत्यन्त पीडायुक्त,दुर्गंधित, पीप बहनेवाली,बहुत देरमें पकनेवाली और बहुतसी होतीहैं ॥ ६४२ ॥

ताःसप्तधातुगताःप्राह । तत्ररसस्थामाह ॥

मसूरिकास्त्वचंप्राप्तास्तोयबुद्बुदसन्निभाः । स्वल्पदोषाःप्रजायन्तेभिन्नास्तोयंस्रवन्ति च ॥ त्वचंप्राप्तास्त्वच्छब्देनात्ररसउच्यतेरसाश्रयत्वात् ॥ ६४३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सप्तधातुगतमसूरिकाओं के लक्षण रक्तगत मसूरिका का लक्षण ॥

रसगतमसूरिका. पानीके बुल्लों के समान होतीहैं फटनेपर पानी बहता है और ये थोडे दोष से होतीहैं ॥ ६४३ ॥

अथ रक्तस्थामाह ॥

रक्तस्थालोहिताकाराःशीघ्रपाकास्तनुत्वचः। साध्यानात्यर्थदुष्टास्तुभिन्नारक्तंस्रवन्ति च। साध्यारक्तस्थाइत्यर्थः। नात्यर्थदुष्टास्तुअत्यर्थंदुष्टशोणिताःपुनर्नसाध्याःकिन्तुकष्टसाध्याः ॥ ६४४ ॥

रक्तगत मसूरिकाका लक्षण ॥

रक्तगतमसूरिका. रक्तवर्ण, शीघ्र पकनेवाली, पतली खालवाली और फटनेपर रुधिर बहनेवाली होतीहैं ये साध्यहैं परंतु रुधिर के अत्यंत दूषित होनेपर कष्टसाध्य होतीहैं ॥ ६४४ ॥

अथ मांसस्थामाह ॥

मांसस्थाःकठिनाःस्निग्धाश्चिरपाकास्तनुत्वचः । गात्रशूलाऽनिशंकण्डूमूर्च्छादाहतृषान्विताः ॥ ६४५ ॥

मांसगतमसूरिका के लक्षण ॥

मांसगतमसूरिका. कठिन, स्निग्ध, देरमें पकनेवाली, मोटीत्वचावाली, निरन्तर शरीरमें पीडा, खुजली, मूर्च्छा, दाह तथा पिपासा युक्त होतीहैं ॥ ६४५ ॥

अथ मेदस्थामाह ॥

मेदोजामण्डलाकाराम्मृदवःकिञ्चिदुन्नताः । घोरज्वरपरीताश्चस्थूलाःस्निग्धाःसवेदनाः ॥ संमोहाऽरतिसन्तापाःकश्चिदाभ्यांविनिस्तरेत् ॥ ६४६ ॥

मेदोगतमसूरिका के लक्षण ॥

मेदोगतमसूरिका. मंडलाकार, कोमल, कुछ उठीभई, स्थूल, चिकनी तथा पीडायुक्त होती हैं इनमें रोगी. मोह, बेचैनी, संताप तथा अत्यंत ज्वरयुक्त होताहै इनमें रोगी प्रायः नहीं बचताहै ॥ ६४६ ॥

अथास्थिमज्जागतमाह ॥

क्षुद्रागात्रसमारूक्षाश्चिपिटाःकिञ्चिदुन्नताः।मज्जोत्थाभृशसम्मोहावेदनारतिसंयुताः ॥ भ्रमरेणेवविद्धानिकुर्वन्त्यस्थीनिसर्वतः । छिन्दन्तिमर्मधामानिप्राणानाशुहरन्तिच ॥ गात्रसमाःगात्रतुल्यवर्णाःचिपिटाःचिपटाकाराः।मज्जाग्रहणेनास्थ्नोऽपिग्रहणंतदाधारत्वात् अतएवाग्रेभ्रमरेणेवविद्धानिकुर्वन्त्यस्थीनिसर्वतइतिमर्म्मधामानिमर्मस्थानानि ६४७॥

अस्थि तथा मज्जागतमसूरिका के लक्षण ॥

मज्जागत मसूरिका. छोटी, शरीर के समान वर्णवाली, रूखी, चिपटी, कुछ उठीभई होती हैं इनमें रोगी. अत्यंत मोह, पीडा तथा बेचैनी से युक्त होता है मज्जा से हड्डियोंका भी ग्रहण होता है क्योंकि मज्जा हड्डियों में ही रहती है इसही से ये मसूरिका हड्डियों को भवँर से बिंधी भई के समान सब तरफ से करती हैं और मर्मस्थानों में छेदनके तुल्य पीडा को करती हैं तथा बहुत शीघ्रही प्राणों के हरनेवाली होतीहैं ॥ ६४७ ॥

अथ शुक्रगतमाह ॥

पक्वाभाःपिडिकाःस्निग्धाःश्लक्ष्णाश्चात्यर्थवेदनाः। स्तैमित्याऽरतिसंमोहदाहोन्मादस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

म[illegible]ताः ॥ शुक्रगायांमसू[illegible]तुलक्षणानि भवन्तिहि। निर्दिष्टंकेवलंचिह्नंजीवनंनतुदृश्यते ॥ पक्काभाःपक्काकारानतुपक्काः। श्लक्ष्णाःकोमलाःनिर्दिष्टंकेवलंचिह्नं[illegible]कित्सायुक्तायतोजीवनंनदृश्यते ॥ ६४८ ॥

शुक्रगतमसूरिका के लक्षण ॥

शुक्रगतमसूरिका. पकीसी मालूम होनेवाली स्निग्ध कोमल अत्यंत पीडायुक्त होती है [illegible] में रोगी.बेचैनी,मोह,दाह,उन्मत्तता तथा शरीरका गीलापन इनसे युक्त होताहै शुक्रगतमसूरिका की चिकित्सा न करनी चाहिये क्योंकि इसमें रोगी कदापि नहीं जीताहै ॥ ६४८ ॥

सप्ताप्येनादोषहेतुंविनानभवन्तिदोषमन्तरेणरसादिदुष्टेरसम्भवादित्यतआह। दोषमिश्रा[illegible]तता द्रष्टव्यादोषलक्षणैः ॥ ६४९ ॥

दोषोंके विना कुपित भये रसादिक दुष्ट नहीं होते इसकारणसे ये सप्तधातुगत मसूरिका विनादोष के कारण भये नहीं होती तब जिस मसूरिका के साथ जो दोष कुपित हो उसके लक्षणों के द्वारा जानाजाता है ॥ ६४९ ॥

अथ चर्म्मजामाह ॥

कण्ठरोधोरुचिस्तन्द्रा प्रलापाऽरतिसंयुताः ॥ दुश्चिकित्स्याः समुद्दिष्टाः पिडिकाश्चर्म्मसंज्ञिताः ॥ ६५० ॥

चर्मजामसूरिका का लक्षण ॥

चर्मजामसूरिकामें रोगी. कंठका अवरोध, अरुचि, तंद्रा, बकना तथा बेचैनी इनसे युक्त होताहै और ये अत्यन्त कष्टसाध्य हैं ॥ ६५० ॥

अथ रोमान्तिकामाह ॥

रोमकूपोन्नतिसमारागिण्यःकफपित्तजाः।कासारोचकसंयुक्तारोमाञ्चज्वरपूर्व्विकाः६५१॥

रोमान्तिका मसूरिका का लक्षण ॥

रोमान्तिकामसूरिका. रोमकूपों के तुल्य उन्नत रक्तवर्ण इसमें रोगी खांसी तथा अरुचि से युक्त होताहै इसमें प्रथम ज्वर होताहै और यह कफ पित्त से होती हैं ॥ ६५१ ॥

अथ साध्यत्वमाह ॥

त्वग्गतारक्तगाश्चैवपित्तजाःश्लेष्मजास्तथा। श्लेष्मपित्तकृताश्चैव सुखसाध्यामसूरिकाः ॥ एताविनापिक्रिययाप्रशाम्यन्तिशरीरिणाम्। त्वग्गतारसगताः। कष्टसाध्यतमाः प्राह। वातजावातपित्तोत्था वातश्लेष्मकृताश्चयाः। कष्टसाध्याअसाध्यास्तुयत्नादेताउपाचरेत् ॥ अथासाध्याःप्राह ॥ असाध्यासन्निपातोत्थास्तासांवक्ष्यामिलक्षणम् ॥ प्रवालसदृशाः काश्चित्काश्चिज्जम्बुफलोपमाः। लोहजालसमाः काश्चिदतसीफलसन्निभाः ॥ आसांबहुविधावर्णाजायन्तेदोषभेदतः ॥ प्रवालसदृशाइत्यादि ॥ आसांप्रवालजम्बूफललोहगुटिकातसीफलसादृश्यंवर्णेन। अनुक्तवर्णग्रहणार्थमाह। आसांबहुविधावर्णेति ॥ ६५२ ॥

मसूरिका के साध्यादि लक्षण ॥

रसगत,रक्तगत, पित्तज,कफज तथा पित्तकफज सूरिका सुखसाध्य होतीहैं और ये विना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चिकित्साकेभी शान्त होजातीहैं वातज, वातपित्तज, ... कफज मसूरिका कष्टसाध्य होती हैं इससे इन... ...क करे सन्निपातज मूंगे जामुन लोहेका जाल तथा अतसीके फल के तुल्य वर्णवाली और ... नानाप्रकारके वर्णवाली मसूरिका असाध्य होतीहैं ॥ ६५२ ॥

अथापराश्चाऽसाध्याःप्राह ॥

...सोहिक्काप्रमेहश्चज्वरस्तीव्रःसुदारुणः । प्रलापारतिमूर्च्छाश्चतृष्णादाहोऽतिघूर्णता ॥ दाहस्थानेदौर्गन्ध्यइतिचपाठः । मुखेनप्रस्रवेद्रक्तंतथाघ्राणेनचक्षुषा ॥ कण्ठेघुर्घुरकंकृत्वाश्वसित्यत्यर्थदारुणम् । मसूरिकाभिभूतस्ययस्यैतानिभिषग्वरैः ॥ लक्षणानिहृश्यन्तेनदेयंतस्यभेषजम् । अतिघूर्णताअतिनिद्रा ॥ ६५३ ॥

अन्य असाध्यमसूरिकाके लक्षण ॥ जिस मसूरिकावालेके खांसी, हिचकी, प्रमेह, अत्यन्त ज्वर, प्रलाप,बेचैनी, मूर्च्छा,तृषा,दाह दुर्गंधि, अति निद्रा,मुखसे, नाकसे तथा आंखोंसे रक्तकाबहना, कंठमें घुर्घुराहटके साथ भयंकर श्वास लेना ये लक्षणहोंतो वैद्य उसको औषध न देय ॥ ६५३ ॥

अथारिष्टमाह ॥ मसूरिकाभिभूतोयोभृशंघ्राणेननिःश्वसेत् । सभृशंत्यजतिप्राणान्तृष्णावान्वायुदूषितः ॥ वायुदूषितःअपतानकादिवातव्याधिदूषितः ॥ ६५४ ॥

मसूरिकाके अरिष्ट ॥ जो मसूरिकावाला नाकसे अधिक श्वासले तृषायुक्तहो और अपतानक आदि वातरोगों से पीडित हो वो निस्सन्देह मरजाताहै ॥ ६५४ ॥

अथ मसूरिकाहेतुकंशोथविशेषमाह ॥

मसूरिकान्तेशोथःस्यात्कूर्परेमणिबन्धके । तथांसफलकेवापिदुश्चिकित्स्यःसुदारुणः ॥ दुश्चिकित्स्यःसुदारुणःदुश्चिकित्स्यःकष्टसाध्यः । दुःशब्दोऽत्रनिषेधार्थःतेनासाध्यइत्येके ॥ ६५५ ॥ मसूरिकासे भया शोथ विशेष ॥

मसूरिकाके अंतमें कोहनी,कलाई तथा कंधोंपर भया शोथ कष्टसाध्य अथवा असाध्यहै ॥ ६५५ ॥

काश्चिद्विनापियत्नेनसिध्यन्त्याशुमसूरिकाः । दुष्टाःकृच्छ्रतराःकाश्चित्काश्चित्सिद्धयन्तिवानवा ॥ काश्चिन्नैवतुसिध्यन्तिसाध्यमानाःप्रयत्नतः । इति मसूरिकानिदानम् ६५६ ॥

कोई २ मसूरिका यत्नके विनाही शीघ्र अच्छी होजातीहैं,कोई कष्टसाध्य होतीहैं, कोई अच्छीहोतीभीहैं,नहींभी होतीं और कोई २ यत्नकरनेसेभी नहीं अच्छी होती हैं इति मसूरिकानिदान ॥ ६५६ ॥

तत्रमसूरिकायाश्चिकित्सामाह ॥ मसूरिकायांकुष्ठोक्तालेपनादिक्रियाहिता । पित्तश्लेष्मविसर्पोक्ताक्रियाचात्रप्रशस्यते ॥ श्वेतचन्दनकल्कोत्थंहिलमोचीभवन्द्रवम् । पिबेन्मसूरिकारम्भेनैववाकेवलंरसम् ॥ हिलमोचिकाशाकविशेषः । हुरहुरेतिलोके । द्विपञ्चमूलरास्नाचधात्र्युशीरंदुरालभा ॥ साम्रृतधान्यकंमुस्तंजयेद्वातमसूरिकाम् ॥ ६५७ ॥

मसूरिकाकी चिकित्सा ॥

कुष्ठमें और पित्तकफजविसर्प में कहीभई लेपआदि क्रिया मसूरिकामें श्रेष्ठहै मसूरिकाके प्रारंभ में श्वेतचन्दनके कल्कके साथ हुरहुरेका रसपिये अथवा केवल हुरहुरेका रसपिये दशमूल, रासना, आंवला,खस,जवासा, गिलोय, धनियां और नागरमोथा ये सब वातमसूरिकाको नष्टकरतेहैं ६५७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मञ्जिष्ठाबहुपातृप्लक्षाशिरीषोदुम्बरत्वचः । वातजायांमसूर्य्यांतु लेपःसर्वतोहितः ॥ (बहुपाद्वटः) गुडूचीमधुकंद्राक्षामोरटंदाडिमैःसह । पाककं चिह्नेपथ्यमथंजंगुडसंयुतम् ॥ तेनकुप्यतिनोवायुःपाकंयान्तिमसूरिकाः । मोरटंरसेक्षवंमूलम् । मसूरिकासु भुञ्जीच्छालीन्मुद्गमसूरिकान् ॥ रसंमधुरमेवाद्यात्सैन्धवंचाल्पमात्रकम् ॥ ६५८ ॥

मंजीठ,बड,पकरिया,सिरसा तथा गूलर इनकी छालका लेप वातजमसूरिकामें अत्यन्त हितहै मसूरिकाओंके पकने लगने पर गिलोय, मुलेठी, दाख, ऊंखकीजड और अनार इनको गुडके साथ सेवन करनेसे वात नहीं कुपित होताहै और मसूरिका पकजाती हैं मसूरिकारोगमें शालिधान्य मूंग,मसूर [illegible]रस और थोडासा सेंधानोन खाना चाहिये ॥ ६५८ ॥

पटोलमूलंक्कथितंमोरटंस्वरसंतथा । पटोलमूलंक्कथितमित्यत्रपटोलंक्कथितञ्चैववा पाठः॥ [illegible]द्वावेवमसूर्यांतुपित्तजायांप्रयोजयेत्॥निम्बःपर्प्पटकःपाठापटोलश्चन्दनद्वयम्॥ उशीरंकटुकाधात्रीतथावासादुरालभा । एषांपानंशृतंशीतमुत्तमंशर्करान्वितम् ॥ मसूर्य्यांपित्तजायान्तुप्रयोक्तव्यंविजानता । दाहेज्वरेविसर्पेचव्रणेपित्ताधिकेऽपिच ॥ मसूर्य्या रक्तजानाशंयान्तिशोणितमोक्षणैः ॥ ६५९ ॥

पित्तजमसूरिकामें पहलेही परवलकी जड़का क्काथ और ऊंखकी जडकारस पिये नींब, पित्तपापडा, पाढ,परवल,दोनोंचन्दन, खस,कुटकी,आंवला,रूसा और जवासा इनके शीतल काढेमें शक्कर डालकर पित्तजमसूरिका, दाह, ज्वर, विसर्प तथा अधिक पित्तवाले व्रणमें पिये रक्तजमसूरिका रुधिर निकलवानेसे नष्ट होतीहै ॥ ६५९ ॥

वासामुस्तकभूनिम्बत्रिफलेन्द्रयवासकम् । पटोलारिष्टकञ्चापिक्काथयित्वासमाक्षिकम् ॥ पिबेत्तेनप्रशाम्यन्तिमसूर्य्यःकफसम्भवाः । इन्द्रइन्द्रयवःशिरीषोदुम्बरत्वग्भ्यांखदिरारिष्टजैर्दलैः ॥ कफोत्थासुमसूरीषुलेपःपित्तोत्थितासुच ॥ ६६० ॥

रूसा,मोथा,चिरायता,त्रिफला,इन्द्रजौ,जवासा,परवल,नींब इनके काढेमें शहद डालकर पीने से कफजमसूरिका नष्ट होतीहैं सिरसा तथा गूलर की छाल और खदिर तथा नींबकी पत्ती इनका लेप कफज और पित्तजमसूरिकाओं में हितहै ॥ ६६० ॥

निम्बःपर्पटकःपाठापटोलःकटुरोहिणी । चन्दने द्वेउशीरञ्चधात्रीवासादुरालभा ॥ एषनिम्बादिकःक्काथःपीतःशर्करयान्वितः । मसूरींसर्वजांहन्तिज्वरवीसर्पसंयुताम् ॥ उत्थिताप्रविशेद्याचतांपुनर्बाह्यतोनयेत् । काञ्चनारस्त्वचःक्काथस्ताप्यचूर्णावचूर्णितः ॥ तार्थंप्रशस्यते ॥ अक्ष्णोःसेकंप्रशंसन्तिगवेधुमधुकाम्बुना । मुखेकण्ठेव्रणेजातेगण्डूषाके ॥ मधुकंत्रिफलामूर्वादार्वीत्वङ्नीलमुत्पलम् । उशीरलोध्रमञ्जिष्ठाःप्रलेपाश्चयोतनेहिताः॥ नश्यन्त्यनेनदृग्जातामसूर्योनभवन्तिच । प्रलेपञ्चक्षुषोर्दद्याद्बहुवारस्यवल्कलैः॥ पञ्चवल्कलचूर्णैश्चक्लेदिनीमवधूलयेत् । भस्मनाकेचिदिच्छन्तिकेचिद्गोमयरेणुना ॥ सुषवीपत्रनिर्य्यासंहरिद्राचूर्णसंयुतम् । रोमन्तीज्वरवीसर्पव्रणानांशान्तयेपिबेत् ॥ ६६१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नींब, पित्त... ...त्र,कुटकी, दोनों चन्दन,... आंवला, ...खा तथा जवा... इन सबके काढ़ेमें शक्कर... ...ज्वर तथा विसर्पसहित सब प्रकारकी मसूरिका नष्ट होती हैं औ उठकर जो मसूरिका ... वो इससे फिर उभर आतीहै कचनार की छाल का काढ़ा, सोनामक्खी क। चूर्ण डालकर मसूरिका में हितहै आंवला और मुलेठी के काढ़ेमें शहद डालकर कुल्ला करना मुख तथा ...ठमें भये व्रणमें श्रेष्ठहै गिरढ़िया और मुलेठी के काढ़ेको नेत्रमें सींचनाचाहिये मुलेठी, त्रिफला, मरोडफली, दारुहल्दी, दालचीनी, नीलोत्पल, खस, लोध और मंजीठ इनके द्वारा लेप और चोभा हित है इससे नेत्रोंकी मसूरिका नष्ट होती हैं और नई नहीं पैदाहोतीं लसोडेकी छालका लेप नेत्रोंमें करना चहिये पंचवल्कलके चूर्ण व भस्म से अथवा गोबर से क्लेदयुक्त मसूरिकाओंमें धूरा करना चाहिये करेलेकी पत्तीके रसमें हल्दीका चूर्ण डालकर पीनेसे रोमन्तीमसूरिका, ज्वर, वीसर्प ... शान्त होते हैं ॥ ६६१ ॥

अथ मसूरिकायाभेदस्यशीतलायाअधिकारः ॥

देव्याशीतलयाक्रान्तामसूर्य्यैवहिशीतलाः। ज्वरिणेचयथाभूताधिष्ठितोविषमज्वरः॥ साचसप्तविधाख्यातातासांभेदान्प्रचक्ष्महे ॥ ६६२ ॥

मसूरिका के भेद शीतलारोग का वर्णन ॥

शीतला देवीकरके अधिष्ठित मसूरिकाही शीतलाहै रोगीको भूतके चढ़ेहुयेके समान विषमज्वर होताहै यह शीतला सात प्रकारकी हैं उनके भेद कहते हैं ॥ ६६२ ॥

ज्वरपूर्वाबृहत्स्फोटैःशीतलाबृहतीभवेत्। सप्ताहान्निसरत्येवसप्ताहात्पूर्णतांव्रजेत्॥ ततस्तृतीयेसप्ताहेशुष्यतिस्खलतिस्वयम्। तासांमध्येयदाकाचित्पाकंगत्वास्फुटेत्स्रवेत्॥ तत्रावधूलनंकुर्य्याद्वनगोमयभस्मना। निम्बसत्पत्रशाखाभिर्मक्षिकामपसारयेत्॥ जलञ्चशीतलंदद्याज्ज्वरेऽपिनतुतत्पचेत्। स्थापयेत्तंस्थलेपूतेरम्येरहसिशीतले ॥ नाशुचिःसंस्पृशेत्तन्तुनचतस्यान्तिकंव्रजेत्। बहवोभिषजोनात्रभेषजंयोजयन्तिहि ॥ केचित्प्रयोजयन्त्येवमतंतेषामथब्रुवे । येशीतलेनसलिलेनविपिष्यसम्यग्निम्बाक्षबीजसहितांरजनींपिबन्ति ॥ तेषांभवन्तिनकदाचिदपीहदेहेपीडाकराजगतिशीतलिकाविकाराः। मोचारसेनसहितंसितचन्दनेनवासारसेनमधुकंमधुकेनचाथ ॥ आदौपिबन्तिसुमनास्वरसेनमिश्रंतेनाप्नुवन्तिभुविशीतलिकाविकारान्। मोचारसेनकदलीस्तम्भजलेन मधुकेनचाथअथवामधुना ॥ आदौपूर्वरूपेज्वरागमनमात्रेसुमनास्वरसेनजातीपत्रस्वरसेन ॥ ६६३ ॥

बड़ी शीतलामें पहले ज्वर, बड़े स्फोट एकही सप्ताहमें उत्पत्ति तथा भरजाना तीसरे सप्ताहमें सूख जाना तथा गिरपड़ना ये लक्षण होते हैं यदि कोई स्फोट पककर फूट जाय और बहनेलगे तो बिनवे कंडेकी राख से धूरा करे नींबकी टहनी से मक्खियों को उड़ावै शीतल जल देवै ज्वर होने परभी उष्ण जल न देय रोगीको पवित्र मनोहर एकान्त तथा शीतल स्थान में रक्खै अशुद्ध मनुष्य उसके पास न जाय और न छुवै बहुतसे वैद्य इसमें औषध नहींदेते परन्तु कोई औषध देते हैं उनकामतकहताहूं जो लोग नींब हल्दी तथा बहेडेको शीतल जलमें पीसकर पीतेहैं उनकी देहमें शीतला के विकार कभी नहींहोते केलेके रसके साथ सफ़ेदचन्दनके साथ रूसेके रसकेसाथ शहदकेसाथ अथवा मालती के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रसभ जो पह[illegible] केवल ज्वर अ[illegible]र मुले[illegible]हैं वे पृथ्वीपर शीतला[illegible]सर्य्यां [illegible] होतेहैं ॥ ६६३

शीतलासुक्रियाकार्य्याशीतलारक्षयासह । बध्नीयान्नि[illegible]कर्के चिह्न[illegible]न्त रे ॥ कदाचिदपिनोकार्य्यमुच्छिष्टस्यप्रवेशनम् । स्फोटेष्वपिम[illegible]हेषु[illegible]करो[illegible] ॥ तेनतेशोषमायान्तिप्रपाकंनभजन्तिच । रक्षारेणूत्करःशुष्कगोमयभस्मचूर्णप्रक्षेपः ॥ चन्दनंवासकोमुस्तंगुडूचीद्राक्षयासह । एषांशीतकषायस्तुशीतलाज्वरनाशनः(शीतकषायोहिमः) जपहोमोपहारैश्चदानस्वस्त्ययनार्चनैः । विप्रगोशम्भुगौरीणांपूजनैस्तांशमंनयेत् ॥ स्तोत्रञ्चशीतलादेव्याःपठेच्छीतलयान्तिके । ब्राह्मणःश्रद्धयायुक्तस्तेनशाम्यन्ति शीतलाः[illegible]कन्द उवाच । भगवन्देवदेवेश, शीतलायास्तवंशुभम् । वक्तुमर्हस्यशेषेण, विस्फोटकभयापहम् ॥ ईश्वर उवाच । वन्देहंशीतलांदेवीं, रासभस्थांदिगम्बराम् । यामासा[illegible]निवर्त्तेत, विस्फोटकभयंमहत् ॥ शीतले ! शीतले ! चेतियोब्रूयाद्दाहपीडितः । विस्फोटकभयंघोरंक्षिप्रंतस्यप्रणश्यति । यस्त्वामुदकमध्येतु, धृत्वासंपूजयेन्नरः । विस्फोटकभयंघोरं, कुलेतस्य न जायते ॥ शीतले ! ज्वरदग्धस्य, पूतिगन्धगतस्यच । प्रणष्टचक्षुषःपुंसस्त्वामाहुर्जीवितौषधम् ॥ नमामिशीतलांदेवीं, रासभस्थांदिगम्बराम् । मार्जनीकलशोपेतांशूर्पालंकृतमस्तकाम् ॥ अस्यश्रीशीतलास्तोत्रस्यमहादेवऋषिरनुष्टुप्छन्दःशीतलादेवताशीतलोपद्रवशान्त्यर्थेजपेविनियोगः । शीतलेतनुजानूरोगान्नृणांहरसिदुस्तरान् । विस्फोटकविशीर्णानां, त्वमेकामृतवर्षिणी ॥ गलगण्डग्रहारोगा, येचान्येदारुणान्नृणाम् । त्वदनुध्यानमात्रेण, शीतले ! यान्तितेक्षयम् ॥ नमन्त्रंनौषधंकिञ्चित्पापरोगस्यविद्यते । त्वमेकाशीतले ! धात्री, नान्यांपश्यामिदेवताम् ॥ मृणालतन्तुसदृशीं, नाभिहृन्मध्यसंस्थिताम् । यस्त्वांसञ्चिन्तयेद्देवि ! तस्यमृत्युर्नजायते ॥ अष्टकंशीतलादेव्यायःपठेन्मानवःसदा । विस्फोटकभयंघोरंकुलेतस्यनजायते ॥ श्रोतव्यंपठितव्यञ्च, नरैर्भक्तिसमन्वितैः । उपसर्गविनाशाय, परंस्वस्त्ययनंमहत् ॥ शीतलाष्टकमेतद्धि,नदेयंयस्यकस्यचित् । किन्तुतस्मैप्रदातव्यं, भक्तिश्रद्धान्वितोहियः । इति काशीखण्डेशीतलाष्टकंस्तोत्रंसम्पूर्णम् ॥ ६६४ ॥

शीतलामें शीतला रक्षाकेसाथ चिकित्सा करै और घरके भीतर चारों तरफ नींबके पत्तेबांधै इसमें अपवित्रका प्रवेश कभी होना न चाहिये यदि स्फोटों में दाह होय तो बिनवे कंडेकी भस्म लगाने से वे सूखजातेहैं और पकते नहीं हैं चन्दन,रूसा,नागरमोथा,गिलोय तथा दाख इनका शीतल काढ़ा शीतलाज्वर को नष्ट करताहै जप,होम, बलिदान, दान, स्वस्त्ययन, देवतापूजन, ब्राह्मण, गऊ, महादेव, गौरी इनके पूजनसे शीतला शान्त होतीहैं श्रद्धायुक्त ब्राह्मण शीतलाके समीप शीतला स्तोत्रको पढ़ै इससे शीतला शान्तहोतीहैं अब शीतलाका स्तोत्रकहतेहैं कि श्रीमहादेवजीसे स्वामिकार्तिकजी बोले कि,हेभगवन् ! हे देवदेवेश!कल्याणदायक व सर्व विस्फोटक रोगोंकी भयकानाशक शीतलाका स्तोत्र आप कहने के लिये योग्यहैं ऐसा वचनसुन सदाशिवजी बोले कि, हे स्कन्द ! गधे पै विराजमान दिगम्बर शीतला देवी की मैं वन्दना करताहूं कि जिसको पाय बड़ी भारी विस्फोटक की भय चली–

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जा... व ... ...न ...पीडित होकर शीतले ... कहता है तो उसके घोर विस्फोटक की भय उस... ...ती है हे शीतले ! जो प्राणी तुमको जल में स्थापितकर पूजन करता है तो उसके वंशमें भयानक विस्फोटककी भयनहीं आनकर प्राप्तहोतीहै हे शीतले! जो प्राणी ज्वररोग से जलगयाहो या उसके घावों से दुर्गन्धि आतीहो या उसकी आंखें जातीरहीहों उसके जीवन की औषध तुम्हीं को कहते हैं इसलिये मैं उस दिगम्बर गधेपै सवार एक हाथमें बुहारी व दूसरे हाथमें कलश को लिये तथा सूपसे शोभित मस्तकवाली शीतला देवी को प्रणाम करताहूं इस शीतला स्तोत्र के महादेव ऋषि, शीतला देवता हैं शीतला के उपद्रव शान्त करने के लिये इस के जपका विनियोगहै—हे शीतले ! मनुष्य देह के दुस्तर रोगों को तुम्हीं हरतीहो व जो विस्फोटक रोग से मुरदे के समान फैले हुएहैं उनको अमृत की वर्षा कर जिलानेवाली हो और गलगण्ड, बालग्रह व अन्य जो प्राणियों के दारुण रोग हैं वह सब तुम्हारे ध्यानमात्रसेही क्षयको प्राप्त होजाते हैं—हे शीतले ! इस पाप रोगके ऊपर कोई मन्त्र व औषध नहीं चलती है केवल तुम्हीं एकधात्रीहो तुमसे अन्य किसी देवताको नहीं देखता हूं जो प्राणी कमलतन्तु के समान नाभि व हृदयके बीचमें बैठीहुई तुम्हारा चिन्तवन करता है उसका मरण नहीं होता है और जो प्राणी शीतलादेवी का अष्टक सदैव पढ़ता है तो उसके वंशमें भयानक विस्फोटक रोग का डर नहीं होताहै यह स्तोत्र उपसर्गों के विनाशके लिये भक्तिमान् मनुष्यों को सुनना व पढ़ना चाहिये जो कि पूजनीय होकर मंगलदायकहै—यह शीतलाष्टक जिस किसी अपात्र को नहीं देना चाहिये किन्तु जो प्राणी भक्ति व श्रद्धासंयुतहो उसके लिये प्रदान करना उचितही है—इति श्रीस्कन्दपुराणे काशीखण्डेशीतलाष्टकम् ६६४॥

शीतलायाभेदानाह॥ वातश्लेष्मसमुद्भूताकोद्रवाकोद्रवाकृतिः। तांकश्चित्प्राहपक्वेतिसातुपाकंनगच्छति ॥ जलशूकद्रमाङ्गानिसाविध्यतिविशेषतः । सप्ताहाद्द्वादशाहाद्वाशान्तियान्तिविनौषधम् ॥ यदिवाभेषजंदद्यात्खदिराष्टकनिर्मितम् । कषायंहितदादद्यात्कोद्रवायाःप्रशान्तये ॥ कोद्रवाकोदवाइतिलोके ऊष्मणातूष्मजारूपासकण्डूस्पर्शनप्रिया। नाम्नापाणिसहाख्यातासप्तहाच्छुष्यतिस्वयम् ॥ ऊष्मजारूपाषडूष्मजाराजिकाकृतिः। अभौरीइतिलोकेवदन्तितद्रूपापाणिसहापानिसहाइतिलोके ॥ ६६५ ॥

शीतला के भेद ॥ कोद्रवानाम शीतला कोदों के समान आकृतिवाली उसको कोई पकीभई कहते हैं परन्तु वे पकती नहीं और वात कफसे उत्पन्न होतीहैं जलशूकद्रवानाम शीतला अंगों को छेदतीहैं सातदिन अथवा बारह दिनमें विना औषधके शान्त होजाती हैं यदि औषध देवै तो खदिराष्टक का काढ़ा देवै और कोद्रवा में भी खदिराष्टक काढ़ादेवै पाणिसहानाम शीतला राई के समान आकृतिवाली छूनेसे सुखदेनेवाली खुजलीसहित तथा सातदिनमें सूखनेवाली होती है॥ ६६५॥

चतुर्थीसर्षपाकारापीतसर्षपवर्णिनी । नाम्नासर्षपिकाज्ञेयाऽभ्यङ्गमत्रविवर्जयेत् ॥ किश्चिदूष्मनिमित्तेनजायतेराजिकाकृतिः। एषाभवतिबालानांमुखंशुष्यति च स्वयम्॥ एषादुःखकोद्रवाइतिलोकेख्याता। कोठवज्जायतेषष्ठीलोहितोन्नतमण्डला। ज्वरपूर्वाऽथवायुक्ताज्वरस्तिष्ठेद्दिनत्रयम् ॥ एषामगधदेशेदामइतिप्रसिद्धा । स्फोटान मीलनादेषाबहु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्फोटाऽपिदृश्यते । एकस्फोटेचबहुभिर्वेष्टोद्भव्याचर्म्मजा ... गात्रे ... टीइतिलोके ॥ ६६६ ॥

चौथी सर्षपिकानाम शीतला पीले सरसोंके तुल्य वर्णवाली होतीहैं इसमें तेल न लगाना चाहिये कुछ गरमीके कारण से जो राईके समान शीतला होतीहैं वो दुःखकोद्रवा कहलाती है ये लडकोंके होतीहैं और इनका मुख आपही सूखजाता है छठी शीतला मंडलाकार कोढ़के तुल्य लाल और ऊंचेघेरेवाली और पीडायुक्त होतीहै इसमें पहले ज्वर होताहै और तीनदिन रहताहै ये मगध देशमें दामै कहलातीहै स्फोटोंके मिलने से जिसमें एक स्फोटमें बहुत स्फोट दिखाई पड़ें और वर्ण कृष्णहो उसको चर्मजानाम शीतला जानना चाहिये इसको लोकमें चमरगोटी कहतेहैं ॥ ६६६ ॥

एताःसप्तापिबोद्धव्याःशीतलादेव्यधिष्ठिताःशीतलोचितमाचारमाशुमर्वासुवाचरेत् ६६७

ये सातों शीतला शीतलादेवी करके अधिष्ठित जाननी चाहिये इन सबमें शीघ्रही शीतलामें कहा भया अर्चनादि अथवा औषधादि करै ॥ ६६७ ॥

अथैतासांसाध्यत्वादिकमाह ॥ काश्चिद्विनापियत्नेनसुखंसिद्ध्यन्तिशीतलाः । दृष्टाः कष्टतराःकाश्चित्काश्चित्सिध्यन्तिवानवा ॥ काश्चिन्नैवतुसिध्यन्तियत्नतोऽपिचिकित्सिताः । इति मसूरिकाशीतलाधिकारः ॥ ६६८ ॥

कोई शीतला विना यत्नही अच्छी होजाती हैं कोई २ कष्टसे अच्छी होतीहैं कोई २ सिद्ध होतीभी हैं नहींभी होतीं कोई २ यत्न करने सेभी नहीं अच्छी होतीहैं इति मसूरिका और शीतला का अधिकार समाप्त ॥ ६६८ ॥

अथ क्षुद्ररोगाधिकारः ॥

तत्रपलितस्यनिदानपूर्व्वकंलक्षणमाह ॥ क्रोधशोकश्रमकृतःशरीरोष्माशिरोगतः । पित्तञ्चकेशान्पचतिपलितन्तेनजायते ॥ शरीरोष्मादेहाग्निःपित्तञ्चभ्राजकाख्यंतत्रशिरोगतंक्रोधात्कुपितंपित्तंपचति । शोकेनश्रमेणचकुपितोवायुःशरीरोष्माणंशिरोनयति । एकःप्रकुपितोदोषइतरानपिकोपयेदितिवचनाद्वातपित्ताभ्यांश्लेष्माचकोपितः सएवकेशानांशौक्ल्यंकरोति । एवंत्रयोऽपिदोषाःपलितस्यहेतवःपलितंकेशस्यशुक्लता ॥ ६६९ ॥

क्षुद्ररोगोंका अधिकार पलितका निदानपूर्वक लक्षण ॥ क्रोध, शोक तथा श्रम इनसे देह सम्बन्धी अग्निभ्राजक नाम पित्त शिरमें जायकरके केशों को पकातेहैं इसहीसे बाल सफ़ेद होजातेहैं अर्थात् क्रोधसे कुपित पित्त शोक और श्रमसे कुपितवायु शरीर सम्बन्धी अग्निको शिरमें लेजाता है एक दोष कुपितहोकर अन्य दोषोंकोभी कुपित करदेताहै इसवचनसे कुपित वायु और पित्त कफको कुपितकरते हैं और वोही कफ केशोंको शुक्ल करताहै इस रीति से केशोंकी शुक्लता तीनों दोषोंसे होतीहै ॥ ६६९ ॥

पलितस्यचिकित्सामाह ॥ लोहचूर्णस्यकर्षंतुदशार्द्धं चूतमज्जतः । धात्रीफलद्वयंपथ्येद्वेतथैकंबिभीतकम् ॥ पिष्ट्वालोहमयेभाण्डेस्थापयेन्निशिवासयेत् । लेपोऽयमचिराद्धन्तिपलितंनात्रसंशयः ॥ (दशार्द्धंपञ्चकर्षाणि) काश्मर्य्यामूलमादौमहचरकुसुमंकेतकस्यापिमूलं । लौहंचूर्णंसभृङ्गंत्रिफलपलयुतंतैलमेभिःपचेद्यः ॥ कृत्वालौहस्यभाण्डेक्षितितलनिहितंस्थापयेन्मासमेकंकेशाःकाशप्रकाशाअपिमधुपनिभाअस्ययोगाद्भवन्ति॥त्रि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फ... लिक... [illegible] ...रजः । अवीमूत्रे... [illegible] ...ष्टंलेपात्कृष्णीकरंपरम् ॥ ६७० ॥

पलितकी चिकित्सा ॥

...हेका चूर्ण एकतोला, ...मकी गुठली पांचतोले, आंवलेदो, हडदो तथा बहेडा एक इनसबको पीसकर लोहेकेपात्रमें रात्रिभर रक्खै यह लेप पलितको बहुत शीघ्र नष्ट करता है खंभारीकी जड, कुं... फूल, केतकीकी जड, लोहेका चूर्ण, भँगरा तथा त्रिफला इन सबको चार २ तोले लेकर तेल में पकावै फिर लोहेके बर्तन में रखकर एकमहीने तक पृथ्वीमें गाडदेय इस तैलके लगाने से कास के ...ल्य सफेद बालभी भँवरे के तुल्य कृष्णवर्ण होजातेहैं त्रिफला, न्यवारीकेपत्ते, भँगरा तथा लोहेका चूर्ण इन सब औषधियोंको मेढीके मूत्रमें पीसकर लेपकरनेसे केश अत्यन्त कृष्ण होजाते हैं ॥ ६७० ॥

अथेन्द्रलुप्तस्यनिदानपूर्वकसम्प्राप्तिलक्षणमाह ॥

रोमकूपानुगंरक्तंपित्तेनसहमूर्च्छितम् । प्रच्यावयतिरोमाणिततःश्लेष्मासशोणितः ॥ रुणद्धिरोमकूपांस्तुततोऽन्येषामसम्भवः ॥ तदिन्द्रलुप्तखालित्यंरुज्येतिचविभावयेत् ॥ ६७१

इन्द्रलुप्तके निदानपूर्वक सम्प्राप्ति और लक्षण ॥ रोमकूपों में प्राप्त रुधिर पित्तके साथ मूर्च्छित होकर रोमोंको गिरादेता है तब रुधिर कफके साथ रोमकूपों को रोक देताहै इससे नये रोम नही उत्पन्न होते इसे इन्द्रलुप्त, खालित्य अथवा रुज्या कहते हैं ॥ ६७१ ॥

अथेन्द्रलुप्तस्यचिकित्सामाह ॥

तिक्तपटोलीपत्रस्वरसैर्घृष्टाशमंयाति । चिरकालजापिरुज्यानियतंदिवसत्रयेणापि ॥ गोक्षुरस्तिलपुष्पाणितुल्येचमधुसर्पिषी । शिरःप्रलेपितंतेनकेशैःसमुपचीयते ॥ हस्तिदन्तमषींकृत्वाछागीदुग्धंरसाञ्जनम् । लोमान्येतेनजायन्तेलेपात्पाणितलेष्वपि ॥ यष्टीन्दीवरमृद्वीकातैलाज्यक्षीरलेपनैः । इन्द्रलुप्तंशमंयातिकेशाःस्युश्चघनादृढाः ॥ जातीकरञ्जवरुणकरवीराग्निपाचितम् । तैलमभ्यञ्जनाद्धन्यादिन्द्रलुप्तनसंशयः ॥ स्नुहीपयःपयोऽर्कस्यलांगलीमार्कवोविषम् । अजामूत्रंसगोमूत्रंरक्तिकासेन्द्रवारुणी ॥ सिद्धार्थकस्तीक्ष्णगन्धासम्यगेभिर्विपाचितम् । तैलंभवतिनियमात्खालित्यव्याधिनाशनम् ॥ इति स्नुहीदुग्धादितैलम् ॥ ६७२ ॥ इन्द्रलुप्तकी चिकित्सा ॥

कडुईतोरईके स्वरसको मलनेसे बहुतपुरानीभी रुज्या तीनदिनमें नष्टहोतीहै गोखुरू तिलकेफूल शहद तथा घी समभाग इनके लेपसे केश उत्पन्न होते हैं हाथीके दांतकी राख तथा रसौत इनको बकरीके दूधमें मिलाकर लेपकरनेसे हथेलीमेंभी केशउत्पन्नहोतेहैं मुलेठी, कमल, मुनक्का, तेल, घी तथा दूध इनके लेपसे इन्द्रलुप्त नष्ट होताहै और केश घने तथा पक्केहोजाते हैं चँबेली, करंजुवा, वरना और कनेर इनऔषधोंको तेलमें पकावै इस तेलको लगानेसे इन्द्रलुप्त अवश्य नष्टहोताहै थूहरकादूध, आककादूध, करिहारी, भंगरा, सींगिया, बकरीकामूत्र, गोमूत्र, घुंघची, इन्द्रायन, पीले सरसों और बच इन औषधोंके द्वारा पाककिया भया तैल अवश्य खालित्यको नाशताहै इति स्नुहीदुग्धादितैल ॥ ६७२ ॥

अथ दारुणकस्यलक्षणमाह ॥ दारुणाकण्डुरारूक्षाकेशभूमौप्रजायते । मारुतश्लेष्मकोपेनविद्याद्दारुणकन्तुतत् ॥ दारुणाकर्कशादारुणकंलोकेरुसीतिख्यातम् ॥ ६७३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दारुणकका लक्षण ॥ जिस रोगमें ... भूमें कर्कश रूखी तथा ... कहते हैं ये वात और कफके कोपसे होताहै इसे रूसी कहते हैं ॥ ६... पाककेचिह्न

अथ दारुणकस्यचिकित्सामाह ॥ कार्योदारुणकेमूर्ध्निप्रलेपोमधुसंयुतः । पियालबीज मधुककुष्ठमाषैःससैन्धवैः ॥ आम्रबीजंतथापथ्याद्वयंस्यान्मात्रयासमम् । दुग्धेनपिष्टंतल्लेपोदारुणंहंतिदारुणम् ॥ दुग्धेनखाखसंबीजंप्रलेपाद्दारुणंहरेत् ॥ ६७४ ॥

दारुणाक की चिकित्सा ॥ चिरौंजी, मुलेठी,कूट, उरद तथा सेंधानोन इनका लेप शहदके साथ दारुणाक में करना चाहिये दोहड़ इसीके तुल्य आमकी गुठली को दूधमें मिलाकर लेपकरने से दारुणाक नष्ट होताहै दूध के साथ खसखसको लेपकरने से दारुणक नष्ट होताहै ॥ ६७४ ॥

गुञ्जाफलैःशृतंतैलंभृङ्गराजरसेनच । कण्डूदारुणहृत्कुष्ठंकपालव्याधिनाशनम् ॥ इतिगुञ्जादितैलम् ॥ ६७५ ॥

घुँघची और भँगरेके रसके द्वारा पाककिया भया तेल. खुजली, दारुणककुष्ठ और कापालकुष्ठको नष्ट करताहै इति गुञ्जादितैल ॥ ६७५ ॥

अथारूषिकालक्षणमाह ॥ अरूंषिबहुवक्त्राणिबहुक्लेदीनिमूर्द्धनि । कफासृक्कृमिकोपेनतानिविद्यादरूषिकाम् ॥ ६७६ ॥ अरूषिका का लक्षण ॥

बहुत छिद्रवाले तथा बहुत रसियानेवाले कफ रुधिर तथा कृमियोंके कोपसे शिरमें भये व्रणोंको अरूषिका कहतेहैं ॥ ६७६ ॥ अथ तस्याचिकित्सामाह ॥

नीलोत्पलस्यकिञ्जल्कोधात्रीफलसमन्वितः । यष्टीमधुकयुक्तश्चलेपाद्धन्यादरूषिकाम् ॥ ६७७ ॥

अरूषिका की चिकित्सा ॥

नीलोत्पलकी केसर आवला और मुलेठी के लेपसे अरूषिका का नाश होताहै ॥ ६७७ ॥

त्रिफलायोरजोयष्टीमार्कवोत्पलसारिवाः । सैंधवंपक्कमेतैस्तुतैलंहन्यादरूषिकाम् ॥ इति त्रिफलाद्यंतैलम् ॥ ६७८ ॥

त्रिफला,लोहचूर्ण,मुलेठी,भँगरा, उत्पल, साईं तथा सेंधानोन इनके द्वारा पाककियाभया तैल अरूषिका को नष्ट करताहै इति त्रिफलादितैल ॥ ६७८ ॥

अथेरिवेल्लिकालक्षणमाह ॥ पिडिकामुत्तमाङ्गस्थांवृत्तामुग्ररुजाज्वराम् । सर्वात्मिकां सर्वलिंगांजानीयादिरिवेल्लिकाम् ॥ ६७९ ॥ इरिवेल्लिकाका लक्षण ॥

तीनों दोषोंके लक्षणोंसे युक्त शिरमें भई ज्वर तथा अत्यन्त पीड़ायुक्त पिडिकाको इरिवेल्लिका कहते हैं यह तीनों दोषोंके कोपसे होतीहै ॥ ६७९ ॥

अथेरिवेल्लिकाचिकित्सामाह ॥ पैत्तिकस्यविसर्पस्य याचिकित्साप्रकीर्तिता । तयैव भिषगेतांश्चचिकित्सेदिरिवेल्लिकाम् ॥ ६८० ॥

इरिवेल्लिका की चिकित्सा ॥ पित्तजविसर्पकी चिकित्सा इरिवेल्लिका में भी करै ॥ ६८० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ पनसिकालक्षणमाह ॥

कर्णस्थ... पिडिकामुग्रवेदनाम् । स्थिरांपनसिकांतान्तुविद्याद्वातकफोत्थिताम् ॥ ६८१ ॥

पनसिका का लक्षण ॥

...के भीतर अत्यंत पीडा सहित और स्थिर पिडिका को पनसिका कहते हैं यह वात कफ से होती है ॥ ६८१ ॥

अथ पनसिकाचिकित्सामाह ॥

भिषक्पनसिकांपूर्वंस्वेदयेदथलेपयेत् । कल्कैर्मनःशिलाकुष्ठनिशाताल... रुभिः ॥ पक्कांविज्ञायतांभित्त्वाव्रणवत्समुपाचरेत् ॥ ६८२ ॥

पनसिकाकी चिकित्सा ॥ पनसिकामें पहले स्वेदन करके मैनसिल, कूट, हल्दी, हरिताल तथा देवदारुके द्वारा लेपकरै फिर पकजानेपर काटै और व्रण कीसी चिकित्सा करै ॥ ६८२ ॥

अथ पाषाणगर्दभस्यलक्षणमाह ॥ वातश्लेष्मसमुद्भूतःश्वयथुर्हनुसन्धिजः । स्थिरो मन्दरुजःस्निग्धोज्ञेयःपाषाणगर्दभःस्थिरःकठिनः ॥ ६८३ ॥

पाषाणगर्दभ का लक्षण ॥ जाबडोंकी संधिमें वातकफ के द्वारा उत्पन्नभये कठिन स्वल्प पीडा युक्त और स्निग्ध शोथको पाषाणगर्दभ कहते हैं ॥ ६८३ ॥

अथ पाषाणगर्दभस्य चिकित्सामाह ॥ पाषाणगर्दभंपूर्वंस्वेदयेत्कुशलोभिषक्ततः पनसिकाप्रोक्तैःकल्कैरुष्णैःप्रलेपयेत् ॥ वातश्लैष्मिकशोथघ्नैःकल्कैरन्यैश्चलेपयेत् परिपाकगतंभित्त्वाव्रणवत्तमुपाचरेत् ॥ जलौकाभिर्हृतेरक्तेसशाम्यतिविनौषधम् ॥ एतत्स्थलेषुबहुषुप्रोक्षितंलिखितंततः ॥ ६८४ ॥

पाषाणगर्दभ की चिकित्सा ॥ पाषाणगर्दभ में पहले स्वेदन करके पनसिकामें कहेभये उष्ण कल्कों के द्वारा अथवा वातकफज शोथनाशक अन्य कल्कोंके द्वारा लेपकरै पकजाने पर चीरके व्रण कीसी चिकित्साकरै यह जोंक लगानेसे औषधके विनाही शांत होजाताहै और बहुत जगह जोंक लगवानेके अनन्तर प्रोक्षण लिखाहै ॥ ६८४ ॥

अथ मुखदूषिकालक्षणमाह ॥ शाल्मलीकण्टकप्रख्याःकफमारुतरक्तजाः । जायतेपिडिकायूनांज्ञेयास्तामुखदूषिकाः ॥ प्रख्याःसदृशाःएनायूनामेवमुखेभवन्तिस्वभावात् ६८५

मुखदूषिका का लक्षण ॥

कफ, वायु तथा रुधिरके द्वारा सेमर कांटे के समान जो पिडिका युवापुरुषों के मुखमें होती हैं उनको मुखदूषिका कहते हैं ॥ ६८५ ॥

अतस्तस्यचिकित्सामाह ॥

अंगुलस्यचतुर्थांशोमुखलेपोविधीयते । मध्यमस्तुत्रिभागःस्यादुत्तमोऽर्द्धाङ्गुलोभवेत् ॥ स्थितिकालोनशुष्कत्वंतथादूषयतित्वचम् । मुखलेपमात्रा ॥ ६८६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुखदूषि... की चिकित्सा ... मुखपर ... करनेकी उत्तम ... मध्यम ... मात्रा ... अंगुल और सामान्यमात्रा चौथियाई अंगुलकीहै जबतक सूख न जाय ... चिह्न ... सूखनेपर रखनेसे त्वचाको दुष्ट करता है ये मुखलेपकी मात्रा है ॥ ६८...

लोध्रधान्यवचालेपस्तारुण्यपिडिकापहः । स्थितिकालोऽपितस्यौक्तोयावत्कल्कोन शुष्यति ॥ शुष्कस्तुसारहीनःस्यात्तथादूषयतित्वचम् । मुखलेपमाह । तद्वद्गोरोचनं ... क्तंमरिचंमुखलेपितम् ॥ सिद्धार्थकवचालोध्रसैन्धवैश्चप्रलेपनम् । वमनञ्चनिहन्त्याशुपिडिकांयौवनोद्भवाम् ॥ केवलाःपयसापिष्टास्तीक्ष्णाःशाल्मलिकण्टकाः । आलिप्तं त्र्यहमेते... वेत्पद्मोपमंमुखम् ॥ ६८७ ॥

लोध, धनियां तथा बच इनका लेप मुखदूषिकाको ... करताहै इस लेपको जबतक सूख न जाय तभीतक रक्खै क्योंकि सूखजानेपर गुण नहीं रहता और त्वचा दूषित होतीहै गोरोचन तथा मिर्चको मुखमें लेप करने से सरसों, बच, लोध तथा सेंधेनोनके लेपसे अथवा वमन करनेसे मुखदूषिकाका नाश होताहै तीक्ष्ण सेमरके कांटोंको दूधमें पीसकर तीनदिन लेप करने से मुख कमलसा होजाताहै ॥ ६८७ ॥

अथ व्यंगस्यलक्षणमाह ॥

क्रोधायमप्रकुपितोवायुःपित्तेनसंयुतः । मुखमागत्यसहसामण्डलंप्रसृजत्यतः ॥ नीरुजंतनुकंश्यावंमुखेव्यंगजमादिशेत् । व्यंगंभ्फांईइतिलोके ॥ ६८८ ॥

व्यंगका लक्षण ॥ क्रोध तथा श्रमसे कुपित वायु पित्तके साथ मुखमें आकर पीडासहित छोटे तथा धुमैले वर्णवाले मंडलोंको मुखमें उत्पन्न करतीहै इसे व्यंग (भ्फांई) कहतेहैं ॥ ६८८ ॥

अथ नीलिकामाह ॥ कृष्णमेवंगुणंवक्त्रेगात्रेवानीलिकांविदुः । एवंगुणं । नीरुजंतनुकंमण्डलम् ॥ ६८९ ॥

नीलिकाके लक्षण ॥

पीडारहित छोटे और कृष्णवर्ण जो मंडल मुख अथवा अंगोंमें होतेहैं उन्हें नीलिका कहतेहैं ६८९॥

अथ तयोश्चिकित्सामाह ॥

शिरावेधैःप्रलेपैश्चतथाभ्यंगैरुपाचरेत् । व्यङ्गञ्चनीलिकांवापिन्यच्छञ्चतिलकालकम् ॥ वटांकुरामसूराश्चप्रलेपाद्व्यङ्गनाशनम् । व्यङ्गेमंजिष्ठयालेपःप्रशस्तोमधुयुक्तयां ॥ अथवालेपनंशस्तंशशस्यरुधिरेणच । व्यंगहद्वरुणत्वक्स्यादजामूत्रेणपेषिता ॥ जातीफलस्यलेपस्तुहरेद्व्यंगञ्चनीलिकाम् । अर्कक्षीरहरिद्राभ्यांमर्दयित्वाप्रलेपनात् ॥ मुखकार्ष्ण्यंशमंयातिचिरकालोद्भवंध्रुवम् । मसूरैःक्षीरसंपिष्टैर्लिप्तमास्यंघृतान्वितैः ॥ सप्तरात्राद्भवेत्सत्यंपुण्डरीकदलोपमम् । वटस्यपाण्डुपत्राणिमालतीरक्तचन्दनम् ॥ कुष्ठंकालीयकंलोध्रमेभिर्लेपंप्रयोजयेत् । युवास्यपिडिकानांतुव्यंगानांतुविनाशनम् ॥ स्यादेतेन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...मिह... यकंकदम्बकंड... के । युवा...यपिडि...यूनामान-
॥ ८८... कारलोपः ॥ ६९० ॥

...व्यंग और नीलिकाकी चिकित्सा ॥

...नीलिका न्यच्छ और तिलकालक इनकी चिकित्सा शिरावेध (फस्त) लेप और अभ्यंगके ...कानी... बरगदके अंकुर तथा मसूर के द्वारा शहद में मिलाकर मंजीठ के द्वारा खरगोशके ...के दूध, अथवा गऊके मूत्र में पीसीभई वरुणा की छाल के द्वारा लेप करने से व्यंगका नाश ...है जांयफलके लेपसे व्यंग और नीलिकाका नाश होताहै आकके दूध औ हल्दीको मिलाकर ...करनेसे बहुत दिन से भई कृष्णता काभी नाश होताहै दूधमें पीसीभई मसूर में... मिलाकर ...खमें लेप करनेसे सातही दिनमें मुख कमल के समान होजाताहै बरगद के पीलेपत्ते, चमेली, लाल-...न्दन, कूट, कदंबक और लोध इनके लेपसे मुखदूषिका व्यंग और नीलिकाका नाश होताहै ॥ ६९० ॥

कुंकुमंचन्दनंलोध्रंपतंगंरक्तचन्दनम् । कालीयकमुशीरञ्चमंजिष्ठामधुयष्टिका ॥ पत्र कंपद्मकंपद्मंकुष्ठंगोरोचनानिशा । लाक्षादारुहरिद्राचगैरिकंनागकेसरम् ॥ पलाशकुसु ...पिप्रि... वटांकुराः । मालतीचमधूच्छिष्टंसर्षपाःसुरभिर्वचा ॥ चतुर्गुणपयःपिष्टै रेतैरक्षमितैःपृथक् । पचेन्मन्दाग्निनावैद्यस्तैलंप्रस्थद्वयोन्मितम् ॥ वदनाभ्यञ्जनादेत द्व्यंगंनीलिकयासह । तिलकंमाषकंन्यच्छंनाशयेन्मुखदूषिकाम् ॥ पद्मिनीकण्टकंचापि हरेज्जतुमणिंतथा । विदध्याद्वदनंपूर्णचन्द्रमण्डलसुन्दरम् ॥ पतंगंबकमइतिलोके । का लीयकंकदम्बकंसुरभिर्वचामहाभरी इतिलोके ॥ इति कुंकुमाद्यंतैलम् ॥ ६९१ ॥

...केसर, चन्दन, लोध, बकम, लालचन्दन, कदंबक, खस, मंजीठ, मुलेठी, तेजपात, पद्माख, कमल, कूट, ...चन, हल्दी, लाख, दारुहल्दी, गेरू, नागकेसर, ढांकके फूल, गोंदनी, बरगदके अंकुर, चमेली, मोम, स-रसों और महाभरी बच इनसबको एक२ तोले लेकर चौगुने दूधमें पीसै फिर इनके द्वारा १२८ तोले तेलको मन्दाग्निमें पाककरै इस तेलको मुखमें लगानेसे व्यंग, नीलिका, तिलक, माषक, न्यच्छ, मुख-दूषिका, पद्मकंटक और जतुमणिका नाश होताहै और मुख पूर्णचंद्रमण्डलके समान सुन्दर होजाताहै इति कुंकुमादितैल ॥ ६९१ ॥ अथ वल्मीकस्यलक्षणमाह ॥

ग्रीवांसकक्षाकरपाददेशेसन्धौगलेवात्रिभिरेवदोषैः । ग्रन्थिःसवल्मीकवदक्रियाणां जातःक्रमेणैवगतःप्रसिद्धिम् ॥ मुखैरनेकैःस्रुतितोदवद्भिर्विसर्पवत्सर्पतिचोन्नताग्रैः । व ल्मीकमाहुर्भिषजोविकारंनिष्प्रत्यनीकंचिरजंविशेषात् ॥ ग्रीवाकृकाटिकाअंसस्कन्धक क्षाबाहुमूलं । वल्मीकवदित्यनेनप्रचुरशिखरत्वमुच्चत्वमवगाढमूलत्वञ्चसूच्यतेनिष्प्रत्य नीकमुपचारायोग्यम् ॥ ६९२ ॥

वल्मीकका लक्षण ॥ गटई, कंधे, कांख, हाथ, पांव, सन्धि और गले में तीनों दोषोंके कोपसे उत्पन्न बांबीके समान ऊंची गहरी तथा अनेक अंकुरवाली चिकित्सा न करने से क्रमशः बढ़नेवाली औरउन्नत अग्रभागवाले बहनेवाले सूचीगडने कीसी पीडायुक्त, बहुत छिद्रोंसे विसर्प के समान फैलनेवाली, ग्रन्थिको बल्मीक कहते हैं और यह पुराना होजानेपर असाध्य होजाताहै ॥ ६९२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ ... यचिकि... ...नमे ...भाव... ...ल्मीवे ... ...सिध्यां ... ...तु... ...बुदोक्तेनशोधयित्वाचरोपयेत् ॥ वल्मीकतुभद्देचरस्यनातिरि... ...रक्तं ...चेह... ...जये... स-कृत्वाशो...तंमोक्षयेद्भिषक् ॥ कुलत्थकानांमूलैश्चगुडूच्याल...नेच ... ...श्चदन्तीमूलैस्तथैवच ॥ श्यामामूलैःसपललैःसक्तुमिश्रैःप्रलेपयेत् । ...रि... ...व या... ...कल्कोन ...ष्णैश्चभिषक्तमुपनाहयेत् ॥ पक्वंतद्धाविजानीयाद्गतिःसर्वायथा...मम् । ... ...छित्त्वाप्रदिह्यान्मतिमान्भिषक् ॥ संशोध्यदुष्टमांसानिक्षारेणप्रतिस... ...त् । ... ...विज्ञायरोपयेन्मतिमान्भिषक् ६९३ ॥ ...शोल्लिप्तं ...लेप ...मुः

बल्मीक की चिकित्सा ॥ बल्मीक को शस्त्र से चीर कर क्षार और अग्नि से जलावै और ... में कही भई विधि से शुद्ध करके घावको भरै मर्मस्थानमें ...हीं उत्पन्न भये और बहुत नहीं ब... ...न बल्मीकका शुद्ध करके रुधिर निकलवावै कुल्थीकीजड,गिलोय,सैंधानोन अमलतासकीजड, जम ल-गोटे की जड,नीलकीजड,मांस और सत्तू इनको घीमें मिलाकर गरम २ लेप करके बांधै बल्मीक के पकजानेपर गतिको (पीप आने का रास्ता) जानकर उसको चीरके लेपकरै दूषित मांसोंको निकल वाकर क्षारसे व्रणको शुद्धकरै व्रण ...ो शुद्ध जानकर उसको भरै ॥ ६९३ ॥

मनःशिलालभल्लातसूक्ष्मैलागुरु चन्दनैः। जातीपल्लवतर्कैश्चनिम्बतैलंविपाचयेत् ॥ वल्मीकंनाशयेत्तद्धिबहुच्छिद्रंबहुव्रणम् । पाणिपादोपरिष्टात्तुछिद्रैर्बहुभिरावृतम् ॥ वल्मीकंयत्सशोफंस्याद्वर्ज्यंतद्धिविजानता इति मनःशिलाद्यंतैलम् ॥ ६९४ ॥

मैनसिल,हरताल, भिलावां,छोटी इलायची, अगर,चन्दन, चमेली की पत्ती और इन्द्रजौ इनके द्वारा नीमके तेलकोपाककरै इससे बहुत छिद्र तथा बहुत व्रणयुक्त बल्मीक का नाश होताहै हाथ ... थवा पैरोंमें भया बहुत छिद्रयुक्त और शोथयुक्त बल्मीक असाध्यहै इति मनःशिलादितैल ॥ ६९४ ॥

अथ कक्षागन्धनाम्नोर्लक्षणमाह ॥ बाहुकक्षांसपार्श्वेषुकृष्णास्फोटांसवेदनाम् । पित्तप्रकोपसम्भूतांकक्षांतामितिनिर्दिशेत् ॥ एकान्तुताहशींदृष्ट्वापिडिकांस्फोटसन्निभाम् । त्वग्जातांपित्तकोपेनगन्धनामांप्रचक्षते ॥ ताहशींबाह्वादिषुकृष्णांसवेदनाञ्च ॥ ६९५ ॥

कक्षा और गंधनामाके लक्षण ॥ बाहु,बगल,कंधे तथा पसलियोंमें पित्तके कोपसे उत्पन्नभये पीडा सहित काले स्फोटकों को कक्षा कहते हैं स्फोटके समान पित्त के कोप से त्वचापर उत्पन्न भई कृष्ण वर्ण तथा पीडायुक्त एक पिडिका को गंधनामा कहते हैं ॥ ६९५ ॥

तयोश्चिकित्सामाह ॥

कक्षाञ्चगन्धनामाञ्चचिकित्सतिचिकित्सकः।पैत्तिकस्यविसर्पस्यक्रियायापूर्वमुक्तया ६९६

कक्षा और गंधनामा की चिकित्सा ॥

पहले कही भई पित्तजविसर्प की चिकित्सा कक्षा और गन्धनामा में करै ॥ ६९६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रि ...॥६ ...

...मिह ... तेमांसदा ...णाः । अन्तर्दाहज्वरकरा दीप्तपावकसन्निभाः ॥
... घ्नन्तिमानवम् । तामग्निरोहिणीं विद्यादसाध्यां सन्निपातकी
... त्तकफा पेक्षयाबोद्धव्यम् । घ्नन्तीत्यनुपक्रान्ताः उपक्रान्ता ...
...तम् ... रोहिण्यांश्चिकित्सयोक्तत्वात् ॥ ६९७ ॥

अग्निरोहिणी का लक्षण ॥

बगलमें मांस के फाडनेवाले अन्तर्दाह तथा ज्वरयुक्त और दीप्त अग्निके समान जो विस्फोटक ...ते हैं वो वातज होनेसे सा... दिनमें पित्तज होनेसे दश दिनमें और कफज होने से प... में मनुष्य ... मारते हैं इसरोग को अग्निरोहिंणी कहते हैं यह सन्निपातज असाध्यहै यह चिकित्सा करने से ॥ अ...साध्यहै क्योंकि चरकने इसकी चिकित्सा कही है और चिकित्सा न करने से असाध्य होती है ॥ ६९७ ॥

अथ तस्याश्चिकित्सामाह ॥

पित्तवीसर्पविधिनासाधयेदग्निरोहिणीम् । रोहिण्यांलंघनंकुर्य्याद्रक्तमोक्षणरूक्षण
म् ॥ शरीर ... चसंशुद्धिंतांतुवृद्धांपरित्यजेत् ॥ ६९८ ॥

अग्निरोहिणी की चिकित्सा ॥

पित्तज विसर्पकी विधिसे अग्निरोहिणी की चिकित्सा करै और लंघन, रक्तमोक्षण, रूक्षक्रिया तथा शरीरकी शुद्धि करनी चाहिये यदि अग्निरोहिणी बढजाय तो वैद्य उसकी चिकित्सा न करै ॥ ६९८ ॥

अथ विदारिकालक्षणमाह ॥

विदारीकन्दवद्बद्धांकक्षावंक्षणसंधिषु । रक्तांविदारिकांविद्यात्सर्वजांसर्वलक्षणाम् ॥
... पिडिकमितिविशेष्यपदमध्याहारणीयम् ॥ ६९९ ॥

विदारिका का लक्षण ॥

बगल और वंक्षण की संधियों में विदारीकंद के तुल्य, गँठीभई, रक्तवर्ण, पिडिका को विदारिका कहते हैं यह सन्निपातज होती है और सर्व के लक्षणों से युक्त होती है ॥ ६९९ ॥

अथ तस्याश्चिकित्सामाह ॥

विदारिकायांप्रथमञ्जलौकोयोजनंहितम् पाटनञ्चविपक्वायांततोव्रणविधिःस्मृतः ७००

विदारिका की चिकित्सा ॥

विदारिका में पहले जोंक लगानी चाहिये पकजाने पर चीरना चाहिये उसके पश्चात् व्रण की विधिकरै ॥ ७०० ॥

अथ चिप्पस्यलक्षणमाह ॥

नखमांसमधिष्ठायवातःपित्तञ्चदेहिनाम् । करोतिक्षयपाकौचतंव्याधिंचिप्प्यमादिशे
त् । चिप्प्यवेड़वाइतिलोके ॥ ७०१ ॥

चिप्प्यका लक्षण ॥

वात तथा पित्त देहियों के नखके मांसमें स्थित होकर क्षय तथा पाकको उत्पन्न करते हैं इस व्याधिको चिप्प्य कहते हैं इसको लोकमें बेडवा कहते हैं ॥ ७०१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

... सम्यर्ग ... जातु ...
अभि...तीतु प्रदुष्टश्चेयोनरो ... रूक्षः सितः खरः ... चिह्न ... जयत स-
: आमय ... ततः नापतः ॥ ७०२ ॥

कुनखका लक्षण ॥

चोट लगने से जो नख रूखा काला तथा खरखरा होताहै उसे दूषित ... कोन
कहते हैं ॥ ७०२ ॥

अथ तयोश्चिकित्सामाह ॥

चिप्यं ... मोक्षेण शोधनेनाप्युपाचरेत् । गतोष्माणमथै ... तु सेचयेद् ...
शस्त्रेणापियथायोग्यमुच्छिद्यस्रावयेत्ततः । व्रणोक्तेनविधानेन ... येत्तंवि ...
सेनहरिद्राया पात्रेकृत्वायसेभयाम्र। घृष्ट्वातज्जेनकल्केनलिम्पेच्चिप्यंपुनःपुनः॥ काश्मर
सप्तभिःपत्रैःकोमलैःपरिवेष्टितः॥ अंगुलीवेष्टकःपुंसांध्रुवमाशुप्रशाम्यति । श्लेष्मविद्रधि
कल्केनकुनखंसमुपाचरेत् ॥ नखकोटिप्रविष्टेनटङ्कणेनप्रशाम्यति । कुनखश्चेत्तदाशैलः
सलिलेप्लवतेऽपिच ॥ ७०३ ॥

चिप्य और कुनखकी चिकित्सा ॥

चिप्यमें रुधिर निकलवावै और शोधनकरै फिर ऊष्माके निकलजानेपर गरमजलसे सींचै यदि उचित हो तो शस्त्रसे छेदकर रुधिर निकलवावै इसके उपरांत व्रणोक्तविधि से घावको भरै लोहेके पात्रमें हल्दीके रसके साथ हड़को घिसके चिप्यमें बार २ लगावै खंभारीके कोमल सातपत्तोंको अंगुलियों में लपेटनेसे निस्संदेह शीघ्रही चिप्यका नाश होताहै कुनखमें कफजविद्रधिकीसी चिकित्सा करै सुहागेको नखमें भरनेसे कुनख अच्छा होताहै यदि न अच्छा हो तो पर्वत भी पानी में तैरे ॥ ७०३ ॥

अथ परिवर्तिकालक्षणमाह ॥

मर्दनात्पीडनाद्वापितथैवाप्यभिघाततः। मेढ्रचर्मयदावायुर्भजतेसर्वतश्चरन् ॥ तदा वातोपसृष्टंतुतच्चर्मपरिवर्त्तते।सवेदनंसदाहश्चपाकञ्चव्रजतिक्वचित् ॥ मणेरधस्तात्कोष स्तुग्रन्थिरूपेणलम्बते। मारुतागन्तुसम्भूतांविद्यात्तांपरिवर्त्तिकाम्॥ सकण्डूःकठिनाचा पिसैवश्लेष्मसमन्विता । अस्यांवातजायामपिपित्तानुबन्धोबोद्धव्योदाहपाकभावात्को षश्चर्मकोषः ॥ ७०४ ॥

परिवर्तिका का लक्षण ॥

रगड़नेसे दबाने से अथवा चोटलगने से सब ओर घूमती भई वायु जब लिंगके चर्म में प्राप्त होतीहै तब वायुसे मिलाहुआ वह चर्म पीड़ा तथा दाहयुक्त होकर उलट जाताहै तथा कभी २ पकभी जाताहै और लिंगके नीचेका चर्मकोष गांठसा लटकता है इस आगन्तुज और वातजरोगको परिवर्तिका कहते हैं इसमें दाह और पाक होनेसे वातज होने परभी पित्तका संबन्ध जाननाचाहिये कफयुक्त परिवर्तिका कठिन और खुजली युक्त होती है ॥ ७०४ ॥

अथ तस्याश्चिकित्सामाह ॥

परिवर्त्तिंघृताभ्यक्तांसुस्विन्नामुपनाहयेत् । त्रिरात्रंपञ्चरात्रञ्चवातघ्नैःशाल्वणादिभिः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

[illegible] र शोद

[illegible] और लिंगके अग्रभागको दबावे अग्रभाग [illegible] चमड म
स्वेदन [illegible] वै वातनाशक वस्तिदेवै और स्निग्धअन्न भोजनकरावै ७०५॥

अथावपाटिकालक्षणमाह ॥

[illegible] द्वच्छेत्स्त्रियंनरः । हस्ताभिघातादथवाचर्मण्यर्तिते [illegible] ॥ [illegible] अभिघाततः । यस्यावपाट्यतेचर्मतांविद्यादवपाटिकां [illegible] ॥ कर्कशारूक्ष [illegible] माकृष्णारुग [illegible] तन्पीतारक्तावादाहतृष्णासमन्विता ॥ [illegible] ष्मणाकठिना [illegible] ग्धाकण्डूमतूस्वल्पवेदना । अल्पीयसीमल्पतरंयोनिच्छिद्रंयस्याः ताम् । अवपाट्यतेविदीर्य्यते ॥ ७०६ ॥

अवपाटिकाका लक्षण ॥

[illegible] द्रवाली स्त्रीके साथ बलात्कारपूर्वक भोग [illegible] से व जोरसे हाथ लगनेके कारण चर्म उलट जानेसें रगडसे दबाने से और वीर्य्यके वेगके रोक [illegible] से जो चर्म फटजाताहै उसे अवपाटिका कहते हैं वातज अवपाटिका. कर्कश, रूखी, सूक्ष्म, कृष्णवर्ण तथा पीडायुक्त होतीहै पित्त [illegible] अवपाटिका, पीत अथवा रक्तवर्णवाली और दाह तथा तृषायुक्त होती है कफसहित अवपाटिका कठिन स्निग्ध और खुजली तथा स्वल्पपीडायुक्त होतीहै ॥ ७०६ ॥

अथ तस्याश्चिकित्सामाह ॥

स्नेहस्वेदैरिमांवैद्यश्चिकित्स्येदवपाटिकाम् ॥ ७०७ ॥

अवपाटिकाकी चिकित्सा ॥

अवपाटिका में स्वेदन और स्नेहन करना चाहिये ॥ ७०७ ॥

अथ निरुद्धप्रकशस्यलक्षणमाह ॥

वातोपसृष्टेमेढ्रेतुचर्म्मसंश्रयतेमणिम् । मणिश्चर्मोपनद्धस्तुमूत्रस्रोतोरुणद्धिच ॥ निरुद्धप्रकशेतस्मिन्मन्दधारमवेदनम् । मूत्रंप्रवर्त्ततेजन्तोर्मणिर्विव्रियतेनच ॥ निरुद्धप्रकशंविद्यात्सरुजंवातसम्भवम् । निरुद्धप्रकाशइत्यस्यस्थानेनिरुद्धप्रकशपदमार्षत्वात् ॥ ७०८ ॥

निरुद्धप्रकशका लक्षण ॥

कुपित वायु ग्रस्तलिंग होनेपर चर्म मणिमें लगजाताहै चर्म से मणिके ढकजानेपर मूत्रका द्वार रुकजाताहै द्वारके रुकजाने के कारण वेदनारहित सूक्ष्मधारा से मूत्र निकलताहै और मणि नहीं खुलता इस वातजरोगको निरुद्धप्रकश कहते हैं ॥ ७०८ ॥

अथ तस्यचिकित्सामाह ॥

निरुद्धप्रकशेनाडींलोहीमुभयतोमुखीम् । दारवींवाजतुकृतांघृताक्तांसम्प्रवेशयेत् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

[illegible] समर्थ्यां [illegible]

१६२ [illegible] तीतिप्रदुष्येयेनरो [illegible] रूक्षःसितःखरः। [illegible] चिह्न [illegible] जयेत् स-

[illegible] तःनापतः [illegible] २ ॥

कुनखका लक्षण ॥

चोट [illegible] [illegible] कोन

[illegible]

और [illegible] वसा और मज्जा [illegible]

[illegible] दिन [illegible] अनन्तर और मोटीस [illegible] होतसं

[illegible] करावै [illegible] सीवनको काटकर सद्यः क्षतकी नाईं चि [illegible] तु सेचयेद [illegible]

अथ संनिरुद्धगुदस्य लक्षण [illegible] येत्तं [illegible]

[illegible] वेग [illegible] धारणाद्वायुर्विहितो गुदं [illegible] तस्रोतः [illegible] द्वारं करोति [illegible]

मार्गस्य सौक्ष्म्यात्कृच्छ्रेण [illegible] तस्य गच्छति । संनिरुद्धगुदं [illegible] विद्यात्सु [illegible]

रम् ॥ ७१० ॥

सन्निरुद्धगुदका लक्षण ॥

वेगके रोकने से अपानवायु [illegible] प्रवाहक मार्ग को रोकताहै इसी से द्वार [illegible] ताहै और

पुरीष बड़ी कठिनतासे निकलताहै [illegible] अतिकठिन रोग सन्निरुद्धगुद कहलाताहै ॥

अथ तस्यचिकित्सामाह ॥

संनिरुद्धगुदे तैलैः सेको वातहरैर्हितः । तथानिरुद्धप्रकशक्रियाऽपिकथिताशवा ॥ ७१ [illegible]

सन्निरुद्धगुदकी चिकित्सा ॥

वातनाशक तेलोंका सेक अथवा निरुद्धप्रकशमें कहीभई चिकित्सा सन्निरुद्धगुदमें हितहै ॥ ७१ [illegible]

अथ वृषणकच्छूलक्षणमाह ॥

स्नानोत्सादनहीनस्य मलोवृषणसंस्थितः । प्रक्लिद्यते तदास्वेदात्कण्डूं जनयते तत

ततः कण्डूयनात्क्षिप्रं स्फोटः स्रावश्च जायते । प्राहुर्वृषणकण्डूं तांश्लेष्मरक्तप्रकोपजाम् ॥

उत्सादनमुद्वर्त्तनंमलः मैलइतिलोके प्रक्लिद्यते आर्द्रीभवति ॥ ७१२ ॥

वृषणकच्छूका लक्षण ॥

स्नान तथा उबटन न करनेवाले मनुष्योंका अण्डकोशों में स्थित मैल पसीने के कारण रसियाता है और खुजली पैदा होतीहै खुजलाने से आंवला पड़कर बहने लगताहै इस कफ और रुधिर के कोपसे उत्पन्न भये रोगको वृषणकंडू कहते हैं ॥ ७१२ ॥

अथ तस्यचिकित्सामाह ॥

सर्जाह्वकुष्ठसैन्धवसितसिद्धार्थैः प्रकल्पितो योगः । उद्वर्त्तनेन नियतं शमयति वृषणस्य कण्डूतिम् ॥ भिषग्वृषणकच्छ्वौ तु चिकित्स्येत्पामरोगवत् । अहिपूतननिर्दिष्टक्रियया पिचतांहरेत् ॥ ७१३ ॥

वृषणकच्छूकी चिकित्सा ॥

राल, कूट, सेंधानोन और सफेद सरसों इन औषधों के उबटन करने से अण्डकोशोंकी खुजली नष्ट होतीहै वृषणकच्छू में पामा तथा अहिपूतनमें कही भई चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ७१३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...पिक... तिमि... ॥ ... ॥ ८७५ ॥

...सीवातका लक्षण ॥

...क पीछे की नस तथा अन्य ... हैं उसे ... सूजतेहैं ॥ ८७५ ...

अहिपूतनकी चिकित्सा ॥

...दारा धायके दूधको शुद्धकरै फिर त्रिफला मुलेठी इनका लेप अहिपूतनमें...

अथ गुदभ्रंशस्य लक्षणम् ॥ ...दभ्रंशंतमादिशेत् ॥ ७१६ ॥

गुदभ्रंशका लक्षण ॥

...ते मनुष्योंकी गुदा संग्रहणी और अतीसारके कारणसे बाहर निकल आ- ...जाताहै ॥ ७१६ ॥ अथ तस्यचिकित्सामाह ॥

...नेहेनाक्तंप्रवेशयेत् । प्रविष्टंरोधयेद्यत्नाद्गव्यसच्छिद्रचर्मणा ॥
...ःखादेच्छर्करान्वितम्।एतन्निश्चित्यनिर्दिष्टंनतस्यगुदनिर्गमः ७१७

गुदभ्रंशकी चिकित्सा ॥

गुदभ्रंशमें तेल ल...कर सेंकै और भीतरको दबादे अनन्तर छिद्रवाले बैलके चर्मसे उसको रोकै चमड़ेमें छिद्र इसवास्ते ...कयाजाताहै कि मल निकलजाय और गुदा बाहर न आवै अनन्तर कोमल पद्मिनीके पत्ते शहदके साथ खाय तो निश्चयकरके उसकी कांच न निकलैगी ॥ ७१७ ॥

मूषकाणांवसाभिर्वागुदभ्रंशेप्रलेपनम् । सुस्विन्नंमूषिकामांसेनाथवास्वेदयेद्गुदम् ॥
वृक्षाम्लानलचाङ्गेरीबिल्वपाठायवाग्रजम् । तक्रेणशीलयेत्पांशुभ्रंशार्त्तोनलदीपनम् ॥
मूषिकादशमूलानिगृह्णीयादुभयंसमम् । तयोःक्वाथेनकल्केनपचेत्तैलंयथोदितम् ॥
विनश्यतितथानेनगुदशूलंभगन्दरम् ॥ इति
अभ्यङ्गात्तस्यतैलस्यगुदभ्रंशोविनश्यति ।
मूषकतैलम् ॥ ७१८ ॥

चूहोंकी चर्बीका लेप गुदभ्रंश में हितहै अथवा सुस्विन्न चूहेके मांससे गुदाको सेंकै चूका, चीता, लोनिया, बेल, पाट और जवाखार इनका चूर्ण मट्ठेके साथ सेवनकरै तो कांचवालेकी अग्नि बढ़ती

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...नामेति तु प्रदुष्टयेयानरो ... रूक्षः सितः खरः ... आम... तः नापतः ... २ ॥

कुनखका लक्षण ॥

और सूअरकी वसा और मज्जा ...

दिन के अनन्तर और मोटीस ...

... करावै ... सीवनको ...

... वेग ... धारणाद्वायुर्विहि ... सुसंरुद्धो ... महत्स्रोतसः ... मार्गस्य सौक्ष्म्यात्कृच्छ्रेण ... गच्छति । संनिरुद्धगुदं ... रम् ॥ ७१० ॥

सन्निरुद्धगुदका लक्षण ॥

वेगके रोकने से ... ग्राहक मार्ग को रोकता है इसी से द्वार ... अतिकठिन रोग सन्निरुद्धगुद कहला... ... सेकर लेपकरनेसे वीसर्प और ...

अथ तस्यचिकित्सामाह ॥

...गम्भीरामल्पशोथाञ्चसवर्णामुपरिस्थिताम् । पाद ... क्रियाऽपका ... नीम् ॥ अत्रपीडिकामितिविशेष्यपदमध्याहरणीयं ... ॥ ७२१ ॥

अनुशयीका लक्षण ॥

गम्भीर, अल्पशोथवाली, तुल्यवर्णवाली, पैरके ऊपर स्थित, भीतर पाकवाली, पिडिका ... शयी कहते हैं ॥ ७२१ ॥

अथ तस्यचिकित्सामाह ॥

हरेदनुशयींवैद्यःक्रियया श्लेष्मविद्रधेः ॥ ७२२ ॥

अनुशयीकी चिकित्सा ॥

अनुशयीमें कफजविद्रधिकीसी चिकित्साकरै ॥ ७२२ ॥

अथालसस्यलक्षणमाह ॥

क्लिन्नांगुल्यन्तरौपादौकण्डूदाहसमन्वितौ । दुष्टकर्दमसंस्पर्शादलसन्तंविभावयेत् ॥ अलसंकन्दईइतिलोके ॥ ७२३ ॥

अलस का लक्षण ॥

खराबकीचड़के लगनेसे पैरोंकी अंगुलियोंके बीचमें क्लेद दाह तथा खुजलीयुक्त जो रोग होताहै उसे अलस कहतेहैं इसे लोकमें कंदई कहतेहैं ॥ ७२३ ॥

अथ तस्यचिकित्सामाह ॥

पादौसिक्ताऽऽरनालेनलेपनंत्वलसेहितम् । पटोलकुनटीनिम्बरोचनामरिचैस्तिलैः ॥ क्षुद्रास्वरससिद्धेनकटुतैलेनलेपयेत् । ततःकासीसकुनटीतिलचूर्णैर्विचूर्णयेत् ॥ विचूर्ण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...पणउच...धा ॥
...पिक...तिभेद...
...रित... ॥ ८७५ ॥
...लेपः काय... सीवातका लक्षण ॥
...के पीछे की नस तथा अन्य...
...है उसे अन्यतोवात कहते हैं ॥ ८७५ ॥
...ढाध्युषितमाह ॥
कफ... अभि... ॥
...में उष्णताकी इच्छा, भारी...

...पपन्नौतुपादौवालेपयेत्। अथ वसामज्जाचसामान्यतश्छागादे... वा
प्रधानतः (उक्त... कौवसाज्ञेयाग्राम्यानूपौदकोद्भवा।(इतिमदनपालः)वसाशु
...प्रभवःस्नेहःस्नेहोऽस्थ्नांशुचिरेवस्यात्समज्जाकथितोबुधैः। क्षारोयवक्षारः ७२६॥

दारीकी चिकित्सा ॥

...री में तलुवोंको शुद्ध करनेवाली शिराका मोक्षण स्नेहन और स्वेदन करके शहद बकरी आदि पशुओं की वसा तथा मज्जा घी और जवाखार इनका लेप वारंवार करै यहांपर विशेषताके न कहने से वसा तथा मज्जा बकरी आदिकी ही लेनी क्योंकि मदनपालने कहा है कि मेद,मज्जा तथा वसा ये ग्राम्य और जलप्रायदेशोद्भव पशुओंकीही लेना वसा मांस से उत्पन्नभये स्नेहको कहते हैं और जो हड्डीका स्नेहहै उसे मज्जा कहते हैं ॥ ७२६ ॥

सर्ज्जाङ्कसिन्धूद्भवयोश्चूर्णंघृतमधुप्लुतम्। निर्मथ्यकटुतैलाक्तंहितंपादप्रमार्जने। मधुसिक्थकगैरिकघृतगुडमाहिषाक्षशालनिर्यासैः।गैरिकसहितैर्लेपःपादस्फुटनापहःसिद्धः॥ मधुसिक्थकंमनःप्रथमंगैरिकंशिलाजतुद्वितीयंगैरिकगेरूइतिलोकेशालनिर्यासःराल७२७॥

घी तथा शहद राल और सेंधेनोनमें मिलाकर तेलमें मिलावै इसके लेपसे दारिका नष्टहोती है मोम, शिलाजीत, घी, गुड़, गूगुल,राल और गेरू इन औषधोंका लेप बिवांईको नाशताहै ॥ ७२७॥

उन्मत्तकस्यबीजेनमानकक्षारवारिणा। विपक्कंकटुतैलन्तुहन्याद्दारींनसंशयः॥ इत्युन्मत्ततैलम् ॥ ७२८ ॥

धतूरे के बीज और मानकेचूके क्षारजल से पकायाहुआ कडुवा तेल दारीको अवश्य नष्ट करता है इति उन्मत्ततैल ॥ ७२८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...अभि... तातू प्रदुष्ट... तःखरः । ... चहन... जय... म-
: आने... ॥

कुनखका लक्षण ॥

... सुवरकी वसा और मज्जा...
...दिन ... अनन्तर और मोटीस...
...गवै ... वा सीवनको काटकर सद्यः क्षतकी नाई ...

...वारणाद्वायु...
मार्गस्यमौक्ष्म्यात्कृच... र्ते । संनिरुद्धगुदं...
रम् ॥ ७१० ॥

सन्निरुद्धगुदका लक्षण ॥

... वाहक मार्ग को रोकताहै इसी से द्वा...
...सकर ... अतिकठिन रोग सन्निरुद्धगुद कहला...

... तुल्य काले, पीडारहित, ..., नइत्यचिकित्स्यमाह ॥
... कालक कहते हैं इसे लोकमें तिल कहते हैं ॥ ७शक्रियाऽपका...

अथ मशकमाह ॥

अवेदनंस्थिरञ्चैवयत्तुगात्रेप्रदृश्यते । माषवत्कृष्णमुत्सन्नंमलिनंमशकं... स्थिरमचलम्, अवेदनंवेदनारहितं, मशकइतिलोके ॥ ७३२ ॥

मशकका लक्षण ॥

देहमें वेदनारहित, स्थिर, उठाहुआ, माषके तुल्य, काला जो चिह्नहोताहै उसे मशक कहते हैं॥७३२॥

अथ जतुमणिमाह ॥

वित्वचस्तनवःस्फोटाःसूक्ष्माग्राःश्यावपिण्डकाः। भवन्तिकफपित्ताभ्यांक्षिप्रंनाशंप्रयान्तिच ॥ सममुत्सन्नमरुजंमण्डलंकफरक्तजम् । सहजंलक्ष्मचैकेषांलक्ष्योजतुमणिश्च ग्वराः ॥ समंसमवर्णमुत्सन्नंकिञ्चिदुत्सन्नंसहजंशरीरेणसहजातम् । अरुजंत्वपरेरक्तंलक्ष्मेत्याहुर्भिषलंसजतुमणिर्लक्ष्यःलक्ष्मचैकेषामिति । एवंविधंयन्मण्डलंसजतुमणिर्लक्ष्यः... एकेषामाचार्य्याणांमतेनन्मण्डलंलक्ष्मसंज्ञञ्च लक्ष्मलशुनइतिलोके । अपरेपुनर्जतुमणिम् । लक्ष्मणोर्भेदकंलक्षणमाह । कृष्णइत्यादि ॥ ७३३ ॥

जतुमणिका लक्षण ॥

त्वचारहित, पतले, सूक्ष्म, अग्रभागवाले, धुमैले, गोल, कफ तथा पित्तसे उत्पन्न होनेवाले शीघ्रही नाशको प्राप्तहोनेवाले अथवा जन्मही से उठेभये कृष्णवर्ण, पीडारहित, गोल, कफ तथा रक्तसे उत्पन्न चिह्नोंको जतुमणि कहते हैं और आचार्य्य ये कहते हैं कि इसका नाम लक्ष्महै (लशुन) अधिककफ-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...पणउच... ...पिक... तिभे...

...॥ ८७५ ॥

...लपःकाय... ...सोवातका लक्षण...

...क पीछे की नस तथा अन्य...

...है उसे अन्यतोवात कहतेहैं ॥ ८...

...ध्युषितमाह ॥

...अभिष्... ...वृक्ष... ...तम

...न्दमें उष्ण... ...भारी... ...द्वारा बनाया भया उबट...

...र चिपचिपे आंसू... ...कमाह ॥

...कैराचित्ते... ...पाण्डुमण्डलम् । पद्मिनीकण्टकप्रख्यैस्तदाख्यं कफवा...

...म् ॥ आचितंव्याप्तंपद्मिनीकण्टकप्रख्यैःपद्मिनीनालकण्टकसदृशैस्तदाख्यंपद्मिनी...

...कनामैव ॥ ७३७ ॥

पद्मिनीकंटकका वर्णन ॥

...रोग. गोल, खुजलीयुक्त, पांडुवर्ण और पद्मिनी के कंटकोंके तुल्य, कंटकों से व्याप्त मण्डलवाला होताहै उसे पद्मिनीकंटक कहते हैं और यह कफ तथा वातसे उत्पन्न होताहै ॥ ७३७ ॥

अथ तस्यचिकित्सामाह ॥

पद्मिनीकण्टकेरोगेछर्दयेन्निम्बवारिणा। तेनैवसिद्धंसक्षौद्रंसर्पिःपातुंप्रदापयेत् ॥७३८॥

पद्मिनीकंटककी चिकित्सा ॥

पद्मिनीकंटक रोगमें नीमके पानी से वमन कराना और नीमके द्वारा सिद्ध घृत शहद के साथ पीनेको देनाचाहिये ॥ ७३८ ॥

निम्बारग्वधकल्कैर्वामुहुरुद्वर्त्तनंहितम् । चतुर्गुणेननिम्बोत्थपत्रक्काथेनगोघृतम् ॥
पचेत्ततस्तुनिम्बस्यकृतमालस्यपत्रजैः । कल्कैर्भूयःपचेत्सिद्धंतत्पिबेत्पलसंमितम् ॥
पद्मिनीकण्टकाद्रोगान्मुक्तोभवतिनान्यथा। इति निम्बादिघृतम् ॥ ७३९ ॥

नींब तथा अमलतासके कल्कसे वारंवार उबटन कराना चाहिये चौगुने नींबकी पत्ती के क्वाथ में गऊका घी पकावै अनन्तर नींब और अमलतासके पत्तों के कल्कसे पकावै फिर ४ तोले नित्यपियै इसकेविना पद्मिनीकंटकसे छुटकारा नहींहोता इति निम्बादिघृत ॥ ७३९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...खका लक्षण ॥

...को काटकर सद्यः क्षतकी नाई चि...

अथ संनिरुद्धगदस्य लक्ष...

...संनिरुद्धगुदं...

...७१० ॥

...सन्निरुद्धगुदका लक्षण ॥

...ग्राहक मार्ग को रोकताहै इसी से द्वार...

...अतिकठिन रोग सन्निरुद्धगुद कहला...

...नईयचिकित्सामाह ॥

...रामध्येस्थूलाप्रान्ते...

यवप्रख्याका लक्षण ॥

जो ... समान मध्यमें स्थूल, किनारोंपर पतली, कठिन, गुं... ...सका ... वाली, कफवातसे उत्पन्नभई पिडिकाको यवप्रख्या कहते हैं ॥ ७४२ ॥

अथान्त्रालजीमाह ॥

घनामवक्रांपिडिकामुन्नतांपरिमण्डलाम् । अन्त्रालजीमल्पपूयांतांविद्यात्कफ... जाम् ॥ घनांकठिनांपरिमण्डलांवर्त्तुलामल्पपूयाम् ॥ ७४३ ॥

अन्त्रालजीका लक्षण ॥

कठिन, सीधी, उन्नत, गोल और थोड़े पीपवाली, कफवातसे भई पिडिकाको अन्त्रालजी कहतेहैं ७४३॥

अथ तयोश्चिकित्सामाह ॥

अन्त्रालजीयवप्रख्यौपूर्वंस्वेदैरुपाचरेत् । मनःशिलादेवदारुकुष्ठकल्कैःप्रलेपयेत् ॥ पक्वांव्रणविधानेनयथोक्तेनप्रसाधयेत् ॥ ७४४ ॥

यवप्रख्या और अन्त्रालजीकी चिकित्सा ॥

अन्त्रालजी और यवप्रख्या में पहले स्वेदन करके मैनसिल, देवदारु तथा कूटका लेपलगावै और पकनेपर व्रणमें कहीभई चिकित्सा करै ॥ ७४४ ॥

अथ विवृतामाह ॥

विवृतास्यांमहादाहांपक्वोदुम्बरसन्निभाम् । विवृतामितितांविद्यात्पित्तोत्थांपरिमण्डलाम् ॥ परितःशोथवतीम् ॥ ७४५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ ८७५ ॥

...तोवातका लक्षण ॥

...क पीछे की नस तथा अन्य ...

...है उसे अन्यतोवात कहते हैं ॥ ८७५ ॥

...ध्युषितमाह ॥

कफ... अभि...

...उष्णताकी इच्छा, भारी...

...र चिपचिपे आंसू बह... ...करःपित्तात्सञ्ज्ञेयो...

...त्वेनसर्वथापाकाभावस्यायुक्तित्वात् । अ... वात

विख्यातः ॥ ७४८ ॥

जालगर्दभका लक्षण ॥

...सर्पके समान फैलनेवाला, कुछ पकनेवाला और दाह तथा ज्वरयुक्त, अल्पशोथ, जालगर्दभ होताहै ये पित्तसे होताहै और अग्निवात नामसे प्रसिद्धहै ॥ ७४८ ॥

अथ विवृतेन्द्रवृद्धागर्दभिकाजालगर्दभानां चिकित्सामाह ॥

विवृतामिन्द्रवृद्धाञ्चगर्दभींजालगर्दभम् । पैत्तिकस्यविसर्पस्यक्रिययासाधयेद्भिषक् ॥ पाकेतुरोपयेदाज्यैःपक्वैर्मधुरभेषजैः ॥ ७४९ ॥

विवृता इन्द्रवृद्धा गर्दभिका और जालगर्दभकी चिकित्सा ॥

विवृता इन्द्रवृद्धा गर्दभिका और जालगर्दभ में पित्तज विसर्प कीसी चिकित्सा करै पकनेपर मधुर औषधोंके द्वारा पाक किये घीसे भरे ॥ ७४९ ॥

अथ कच्छपिकामाह ॥

प्रथमःपञ्चवाषड्वादारुणाकच्छपोन्नता । कफानिलाभ्यांपिडिकासास्मृताकच्छपीबुधैः ॥ कच्छपोन्नतामध्येप्रान्तेनता ॥ ७५० ॥

कच्छपिका का लक्षण ॥

कछुई के समान बीचमें ऊंची तथा किनारों में खाली पहले पांच अथवा छः मिलकर उत्पन्न भई पिडिकाओं को कच्छपी कहतेहैं यह भयंकर रोग कफ वात से होताहै ॥ ७५० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...सुनखका लक्षण ॥

...को काटकर सद्यः क्षतकी नाईं चिकि...

अथ संनिरुद्धगदस्य लक्ष...

...संनिरुद्धगुदं...

...१०॥

सन्निरुद्धगुदका लक्षण ॥

...ग्राहक मार्ग को रोकताहै इसी से द्वार...
...अतिकठिन रोग सन्निरुद्धगुद कहला...
और रुधिर एकाएकी ... तस्यचिकित्सामाह ॥

अथ शर्करा...क्रियाऽपकर...

मेदोऽर्बुदविधानेनसाधयेच्छर्करार्बुद...

शर्करार्बुद का लक्षण ॥

शर्करार्बुद में मेदोज अर्बुद कीसी चिकित्सा करै ॥ ७५३ ॥

अथ सहेतुकान्सलक्षणान्कतिचिद्विकारानाह ॥

शक्तस्यचाप्यनुत्साहःकर्मण्यालस्यमुच्यते । अस्वास्थ्यंचिन्तयात्यर्थमरतिःकथ्य... बुधैः ॥ उत्क्लिश्यान्नञ्चनिर्गच्छेत्प्रसेकःष्ठीवनेरितम् । हृदयंपीड्यतेचास्यतमुत्क्लेशंविनिर्दिशेत् ॥ वक्त्रेमधुरतातन्द्राहृदयोद्वेष्टनंभ्रमः । नचान्नंरोचतेयस्मैग्लानितस्यविनिर्दिशेत् ॥ ग्लानिरोजःक्षयाद्दुःखादजीर्णाच्चश्रमोद्भवात् । उदानकोपादाहारसुस्थितत्वाच्चयद्भवेत् ॥ पवनस्योर्ध्वगमनन्तमुद्गारंप्रचक्षते । आटोपोगुडगुड्शब्दःप्रोक्तोजठरसम्भवः ॥ तमःस्थस्येवयज्ज्ञानंतत्तमःकथ्यतेबुधैः । इति क्षुद्ररोगाधिकारः ॥ ७५४ ॥

कारण तथा लक्षणोंसहित कुछ विकारोंका वर्णन ॥

कार्य में सामर्थ्य होनेपरभी उत्साह न होनेको आलस्य कहतेहैं चिन्ताके कारण शरीरकी अस्वस्थताको अरति कहतेहैं उबकाई आकर अन्न बाहर न आवै मुहँमें पानीआवै और थूकनेसे हृदय में पीड़ा हो इसे उत्क्लेश कहतेहैं मुखमें मधुरता, तन्द्रा, हृदयमें ऐंठन, भ्रम और अन्नमें अरुचि होनेको ग्लानि कहतेहैं ग्लानि, ओजका नाश, दुःख, अजीर्ण, श्रमके द्वारा उदानवायुका कोप और आहार का ठीक स्थान में पहुँचना इन कारणों से वायुके ऊर्ध्वगमन को उद्गार कहते हैं पेटके गड़गड़ाने को आ-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...पिकं तिभेदं ॥

...ॠ ॥ ८७५ ॥

...तोवातका लक्षण ॥

...क पीछे की नस तथा अन्य ...

...है उसे अन्यतोवात कहते हैं ॥ ८७५ ॥

...ष्ठाध्युषितमाह ॥

कफ च अभि...

... उष्णताकी इच्छा, भारी... ...रोऽभितापः शिर...

...र चिपचिपे आंसूबह... ...क्षण ॥

...ना, रात्रिमें ... अधिक होना, बंधन तथा स्वे... ...डाका

शान्त होना ये वात... ...पीडाके लक्षण हैं ॥ ७५६ ॥

अथ पैत्तिकमाह ॥

यस्योष्णमङ्गारचितंयथैवभवेच्छिरोदह्यतिचाक्षिनाशम् । शीतेनरात्रौचभवेत्क्षमश्च शिरोऽभितापःसतुपित्तकोपात् ॥ दह्यतीत्यार्षत्वात् ॥ ७५७ ॥

पित्तज शिरकी पीड़ाके लक्षण ॥

जलते भये अंगारों से व्याप्तके समान शिरका मालूम होना नेत्र तथा नासिकामें दाह होना और शीतलक्रिया के द्वारा तथा रात्रिमें पीड़ाका शान्त होना ये पित्तज शिरकी पीड़ाके लक्षणहैं ॥ ७५७ ॥

अथ श्लैष्मिकमाह ॥

शिरोभवेत्तस्यकफोपदिग्धंगुरुप्रतिष्टब्धमथोहिमञ्च । शूनाक्षिनासावदनञ्चयस्य शिरोभितापःसकफप्रकोपात् । कफोपदिग्धमन्तःकफलिप्तंप्रतिष्टब्धंतच्चशिरः ॥ ७५८ ॥

कफज शिरकी पीडा के लक्षण ॥

शिरका कफ से भरासा मालूम होना, भारीपन, स्तब्धता तथा शीतलता और नेत्र, नासिका तथा मखमें शोथ होना ये कफज शिरकी पीडा के लक्षणहैं ॥ ७५८ ॥

अथ सान्निपातिकमाह ॥ शिरोऽभितापेत्रितयप्रवृत्तेसर्वाणिलिङ्गानिसमुद्भवन्ति ॥ ७५९ ॥

सन्निपातज शिरकी पीडा के लक्षण ॥

सन्निपातज शिरकी पीडा में तीनों दोषों के लक्षण होते हैं ॥ ७५९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अभि [illegible] तात्प्रदुष्ट [illegible] भवतर [illegible] चिह्न [illegible] जेय [illegible] स-
: आत्मेधो [illegible] तःना [illegible]

[illegible] लक्षण ॥

[illegible] को वसा [illegible]

[illegible] काटकर सद्यः क्षतकी नाईं चिकि [illegible] तु सेच [illegible]

अथ संनिरुद्धगुदस्य लक्ष [illegible] येत्तं [illegible]

[illegible] धारणाद्वायु [illegible] हतस्रोतः [illegible]
[illegible] सौक्ष्म्यात्कृ [illegible] । संनिरुद्धगुदं [illegible]
[illegible] ७१० ॥

सन्निरुद्धगुदका लक्षण ॥

[illegible] प्रतिः [illegible] वाहक मार्ग को रोकताहै इसी से द्वार [illegible]
[illegible] सकर [illegible] अतिकठिन रोग सन्निरुद्धगुद कहला [illegible]
होती है ॥ ७६१ ॥ [illegible] स्याचिकित्सामाह ॥

[illegible] तयस्यशिरोऽतिमात्रंसं [illegible] क्रियाऽपक [illegible]
पूयं [illegible] ऽभितापःकृमिभिःसघोरः ॥ सम्भक्ष्यमाणंकृ [illegible] ः । घ्राणाच्चातच [illegible]
रेणकृमिनिर्गमोऽपिबोध्यते ॥ ७६२ ॥

कृमिज शिरकी पीडा के लक्षण ॥

शिरमें सुई गड़ने की सी तथा कीड़ों के खानेकीसी पीड़ाहोवे शिरके भीतर कीड़े चलते मालूम होवें और नासिका से पीव सहित रुधिर तथा कीड़े निकलें यह भयंकर कृमिज शिरकी पीडा के लक्षण हैं ॥ ७६२ ॥

अथ सूर्य्यावर्त्तमाह ॥

सूर्योदयंयाप्रतिमन्दमन्दमक्षिभ्रुवौरुक्समुपैतिगाढम् । विवर्द्धतेचांशुमतासहैव सूर्यापवृत्तौविनिवर्त्ततेच ॥ शीतेनशान्तिंलभतेकदाचिदुष्णेनजन्तुःसुखमाप्नुयाद्वा । स वातमकंकष्टतमंत्रिकारंसूर्य्यापवर्त्तंतमुदाहरन्ति ॥ सूर्योदयइतिलक्षीकृत्यआरभ्येतिया वत् सूर्यस्यापवृत्तौसूर्यस्याधोगतौ ॥ ७६३ ॥

सूर्य्यावर्त्त नाम शिरकी पीड़ा के लक्षण ॥

जो शिरकी पीडा सूर्य्य के उदय से लेकर धीरे २ नेत्र और भृकुटियों में सूर्यके साथही बढ़तीजाती है और सूर्य के घटने के साथ घटती है और शीतलता अथवा उष्णता आदिक किसी से भी रोगी को चैन नहीं पड़ताहै इस त्रिदोषज शिरकी पीड़ाको सूर्यावर्त्त कहते हैं यह अत्यन्त कष्टसाध्यहै ७६३ ॥

अथानन्तवातमाह ॥

दोषास्तुदुष्टास्त्रयएवमन्यांसम्पीड्यगाढंसुरुजांसुतीव्राम् । कुर्वन्तिसोऽक्षिभ्रुविश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...तिमिर... ...पटलेच ...

...र्णानि त्रि... ...कर्पूरसो... ...श्वेत ...

...पिक... ...तिभेद...

...॥ ८७५ ॥

...लेपः कार्य... ...तोवातका लक्षण ॥

...के पीछे की नस तथा अन्य ...

...है उसे अन्यतोवात कहतेहैं ॥ ८७५ ॥

...ध्युषितमाह ॥

...उष्णताकी इच्छा, भारी... ...सशोथात्त्रिरात्रात्...

...चिपचिपे आंसू...

...शंखक नाम शिरकी पीड़ा के लक्षण ॥

...पित्त रुधिर तथा वायु कुपित होकर माथेकी हड्डियों में बढ़तेहुए तीक्ष्ण पीड़ा दाह तथा रक्तवर्ण भयंकर शोथको उत्पन्न करते हैं यह शोथ विषके समान शीघ्रही शिर तथा गलेको रोककर तीन दिनमें रोगीको मारडालताहै इसे शंखक कहते हैं इसकी चिकित्सा रोगी अच्छा न होगा यह कहकर करनी चाहिये ॥ ७६५ ॥

अथार्द्धावभेदकमाह ॥

रूक्षाशनाद्ध्यशनावश्यप्राग्वातमैथुनैः। वेगसन्धारणायासव्यायामैःकुपितोऽनिलः ॥ केवलःसकफोवार्द्धंगृहीत्वाशिरसोबलीम् । मन्याभ्रूशंखकर्णाक्षिललाटार्द्धेषुवेदनाम् ॥ शस्त्राशनिनिभांकुर्य्यात्तीव्रांसोर्द्धावभेदकः । नयनंवाथवाश्रोत्रमभिवृद्धोविनाशयेत् ॥ अवश्यःअवश्यायः। आयासःअतिचलनभारोद्वहनादिःव्यायामःमल्लश्रमः ॥ शस्त्राशनिनिभांशस्त्रघातेनेववज्रपातेनेवत्रवेदनाम् ॥ ७६६ ॥

रूखी वस्तुके खाने से अजीर्ण में भोजनसे जुकामसे पूर्वी हवासे मैथुनसे मलमूत्रादि वेगोंके रोकने से बहुत चलने से भार उठाने आदि श्रमसे तथा मल्लयुद्धादि व्यायाम से कुपित वायु अकेली अथवा कफसहित शिरके अर्धभाग को ग्रहण करके गलेके पीछेकी नस, भृकुटी, माथेकीहड्डी, कान, नेत्र तथा ललाट के आधेभाग में शस्त्र अथवा वज्र लगनेकीसी तीव्र पीडाको उत्पन्न करती है इसे अर्धावभेदक कहते हैं इसके बहुत बढ़ने में नेत्र अथवा कानका नाश होताहै ॥ ७६६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अभिघातात्प्रदुष्... मवतु... चिह्न... जेथ म-

: आमेधो...तः...

...का लक्षण ॥

...टोस...

...को काटकर सद्यः क्षतकी नाईं चिकि... तु सेच...

अथ संनिरुद्धगदस्य लक्षण...

...धारणाद्वायु... ...येत्तं...

...तौक्ष्म्यात्कृ... ...हतस्रोतः...

...७७० ॥ संनिरुद्धगुदं...

...संन्निरुद्धगुदका लक्षण ॥

...ग्राहक मार्ग को रोकताहै इसी से द्वार...

...अतिकठिन रोग सन्निरुद्धगुद कहलाता...

...स्यचिकित्सामाह ॥

...पनीतस्नेहस्तुमो... ...क्रियाऽपका...

...ष्णेनाम्भसागात्रंप्रक्षा...

दद्याऽपच ॥ मुद्गमाषान्कुलत्थांश्चखादेद्वानिशिकेवे... ...कोष्णान्ससापं...

ष्णंक्षीरंपिबेत्तथा ॥ ७६८ ॥ शिरोवस्तिकी विधि ॥

जितने लम्बे चमड़ेसे शिर लिपटजाय उतना लम्बा चमड़ा शिरमें १६ अंगुल ऊंचा... नीचे उर्दके आटेसे लेपकरदेवे फिर निश्चल बैठकर गरम २ तेल उस चमड़े में भरदेवे आधे पहर अथवा पीड़ाकी शान्तिपर्यन्त रहनेदेवे इससे वातज शिरकी पीड़ा जाबड़े गले के पाछ की नस नेत्र तथा कानकी पीड़ा और शिरका कांपना नष्ट होताहै भोजनसे पहलेही शिरोवस्ति लेनी चाहिये पांच अथवा सात दिन और इच्छाहोय तो अधिक दिनभी शिरोवस्ति को लेवे इसके उपरान्त तेलको निकालकर बन्धनको खोले और शिर, ललाट, मुख, ग्रीवा और कन्धोंको मलकर कुछ गरम जलसे धोवे फिर हितकारी अन्न भोजन करे जांगलमांस, शालिधान्य, मूंग, उर्द तथा कुलथीखाय और रात्रिके समय घृत सहित कडुवे उष्ण पदार्थ तथा उष्ण दूधका सेवनकरे ॥ ७६८ ॥

पित्तात्मकेशिरोरोगेशीतानांचन्दनाम्भसा । कुमुदोत्पलपद्मानांस्पर्शाःसेव्याश्चमारु
ताः॥ सर्पिषःशतधौतस्यशिरसाधारणंहितम् । रसःश्वासकुठारोऽल्पःकर्पूरःकुंकुमंनवम् ॥
सिताचशृंगीपयःसर्वंचन्दनेनानुघर्षयेत् । तस्यनस्यंभिषग्दद्यात्पित्तजायांशिरोरुजि ॥
किन्तुमस्तकशूलेषुसर्वेष्वेवंहितंमतम् । गुडनागरकल्कस्यनस्यंमस्तकशूलनुत् ॥ रक्तजे
पित्तवत्सर्वंभोजनालेपसेचनम् । शीतोष्णयोश्चविन्यस्यविशेषोरक्तमोक्षणम् ॥ ७६९ ॥

पित्तज शिरकी पीड़ामें चन्दन के जलसे शीतल कोकाबेली उत्पन्न कमल तथा वायुका सेवन करना चाहिये सौबार धोयेहुये घृतका भी शिरमें धारण करना हितहै थोड़ासा श्वासकुठार, रसकपूर,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

[illegible] पटलेच । [illegible] श्वेत मदापुरना, हल्दी, [illegible]

[illegible] ॥ ८७५ ॥

[illegible] तोवातका लक्षण ॥

[illegible] के पीछे की नस तथा अन्य [illegible] है उसे अन्यतोवात कहते हैं ॥ [illegible]

[illegible] ध्युषितमाह ॥

[illegible] उष्णताकी इच्छा, भारी [illegible] री, बाय [illegible] र चिपचिपे आंग [illegible] साथ तिलके त [illegible] पूर [illegible] ष्ट होते हैं गिरेहुये बा [illegible] फिर निकल आते हैं ग [illegible] लकी सी दृष्टि होजाती है और भुजाओं में अधिक [illegible] है इति [illegible] बिन्दुतैल ॥ ७७१ ॥

[illegible] जेक्षयनाशायकर्त्तव्योबृंहणोविधिः । पानेनस्येचसर्पिःस्याद्वातघ्नैर्मधुरैर्घृतम् ॥ ७७२ ॥

[illegible] क्षयज शिरकी पीडामें क्षयके नाशके लिये धातुवर्द्धक क्रियाकरे पीने में तथा नासलेनेमें वातघ्न मधुर औषधियोंके द्वारा पाककियेहुये घीका सेवनकरे ॥ ७७२ ॥

कृमिजेव्योषनक्ताह्वशिग्रुबीजैश्चनावनम् । अजामूत्रयुतंनस्यंकर्त्तव्यंकृमिनुत्परम् ॥ सूर्य्यावर्तेविधातव्यंनस्यकर्मादिभेषजम् ॥ ७७३ ॥

कृमिज शिरकी पीडामें त्रिकटु, करंजुआ तथा सहँजनके बीजोंको बकरीके मूत्र में पीसकर नास ले सूर्य्यावर्त्त नाम शिरकीपीडामें नासलेनाआदि औषधकरे ॥ ७७३ ॥

कुमार्य्याःस्वरसेप्रस्थेधत्तूरस्यरसेतथा । भृंगराजस्यचरसेप्रस्थद्वयसमायुते । चतुःप्रस्थमितेक्षीरेतैलप्रस्थंविपाचयेत् । कल्कैर्मधुकह्रीवेरमञ्जिष्ठाभद्रमुस्तकैः । नखकर्पूरभृंगैलाजीवन्तीपद्मकुष्ठकैः ॥ मार्कवासकतालीससर्जनिर्यासपत्रकैः । विडंगशतपुष्पाश्वगन्धागन्धर्वहस्तकैः ॥ शोषंवटंनालिकेराभ्यांकर्षमानैर्विपाचिते । उत्तार्यवस्त्रपूतंतुशुभेभाण्डेसुधूपिते ॥ त्रिरात्रमथगुप्तञ्चधारयेद्विधिवद्भिषक् । ततस्तुतैलमभ्यंगेमूर्ध्निक्षेपेनियोजयेत् ॥ शमयेदर्दितङ्गाढंमन्यास्तम्भशिरोगदान् । तालुनासाक्षिपातन्तुशोषमूर्च्छांहलीमकम् ॥ हनुग्रहगदार्तिवाबाधिर्य्यंकर्णवेदनम् । इति कुमारीतैलम् ॥ ७७४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यः क्षतकी ना...

...निरुद्धगुदस्य...

...स्यगच्छति ।

सन्निरुद्धगुदका लक्षण ॥

...प्रातःकाल... वाहक मार्ग को रोक...

...अतिकठिन रोग सन्नि...

...कृष्णान्... चिकित्सा...

...तु सशर्करं क्षीरं नीरं ...

योः ॥ ... नासिकयापिबेदित्यन्व... ॥ सूर्यावर्त्ता... ॥

अर्द्धावभेदक नाम शिरकी पीड़ा में पहले स्निग्ध स्वेदन करके फिर विरेचन शरीरशोधन और धूमप्रयोग करके स्निग्ध तथा उष्ण भोजन करे बायबिडंग और काले तिलों को पीसकर लेप... से अथवा नास लेनेसे अर्द्धावभेदक नष्ट होताहै नासिका के द्वारा शक्कर सहित दूध, नारियल... जल,शीतलजल अथवा घी पीने से सूर्यावर्त्त और अर्धावभेदक का नाश होताहै ॥ ७७६ ॥

अनन्तवातेकर्त्तव्यःसूर्य्यावर्त्तहितोविधिः।शिरोवेधश्चकर्त्तव्योऽनन्तवातप्रशान्तये॥ आहारश्चप्रदातव्योवातपित्तविनाशनः । मधुमस्तकसंयावघृसपूपोविशेषतः ॥ संयावःपक्कान्नविशेषःपेरकियाइतिलोकेसचमधुमस्तकःमधुनोपलिप्तःघृतपूपःपूय ॥ ७७७ ॥

अनन्तवात नाम शिरकी पीड़ामें सूर्य्यावर्त्तनाशक चिकित्सा करे और फस्त लेवे इसमें वात पित्तनाशकवस्तु भोजनकेलिये देवे और शहदमें पगीहुई पिड़किया और पूये विशेषकर केखाय ७७७

पथ्याक्षधात्रीरजनीगुडूचीभूनिम्बनिम्बैःसगुडःकषायः॥ भ्रूशङ्खकर्णाक्षिशिरोऽर्द्धशूलं निहन्तिनासानिहितःक्षणेन इति पथ्यादिक्काथः ॥ ७७८ ॥

हड़,बहेड़ा,आंवला, हल्दी, गिलोय, चिरायता तथा नींब इन सबके काढ़ेमें गुड मिलाकर नासिकामें छोड़ने से भृकुटी,माथेकी हड्डी,कान,नेत्र तथा शिरके अर्धावभेदक का नाश होता है इति पथ्यादिक्काथ ॥ ७७८ ॥

दार्वीहरिद्रामञ्जिष्ठासनिम्बोशीरपद्मकम् । एतत्प्रलेपनंकुर्य्याच्छङ्खकस्यप्रशान्तये॥ शीततोयाभिषेकश्चशीतलंक्षीरसेवनम्।कल्कैश्चक्षीरवृक्षाणांशङ्खकेलेपनंहितम्॥७७९॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...पटलेच । ...

...र्णानि त्रि... कर्पूरसो... श्वेत गदापूरना, हल्दी, ...

...पिक... तिभे...

...रितः ... ॥ ८७५ ॥

...लेपः कार्य्य ... तोवातका लक्षण ॥

...के पीछे की नस तथा अन्य ...

...है उसे अन्यतोवात कहते हैं ॥ ८७५ ॥

...फलाध्युषितमाह ॥

...उष्णताकी इच्छा, भारी... र्येण ॥ ७८१ ॥

...र चिपचिपे आं... पृथ...

...णाए ॥

...अपने अपने अंगूठे ... समान दो अंगुल चौडा और ढाई अंगुल लम्ब...

...॥ ७८१ ॥

अथ नेत्रस्याङ्गान्याह ॥

...त्मश्वेतकृष्णदृष्टीनांमण्डलानितु। अनुपूर्व्वन्तुतेमध्याश्चत्वारोऽन्त्याःयथोत्तरम् ॥
...दयोदृष्टयन्ताः अनुपूर्व्वं यथापूर्व्वंमध्याश्चत्वारःकृष्णादयःयथोत्तरमन्त्याः॥७८२॥

नेत्रके अङ्ग ॥

पक्ष्म, वर्त्म, श्वेत, कृष्ण और दृष्टि यह पांच नेत्रमण्डल के अङ्ग हैं इनमें से पक्ष्मको आदि लेकर दृष्टिपर्य्यन्त पूर्वके क्रमसे मध्य और कृष्ण को आदि लेकर उत्तरोत्तर अन्त्य हैं ॥ ७८२ ॥

तत्र नेत्रमण्डलेऽष्टसप्ततिर्व्याधयोभवन्ति ताश्चाह ॥

द्वादशव्याधयोदृष्टौतत्रैवान्यौगदावुभौ । कृष्णमार्गेतुचत्वारोदशैकःशुक्लभागजाः ॥
वर्त्मन्येकोविंशतिश्चपक्ष्मजौद्वौप्रकीर्त्तितौ । नवसन्धिषुसर्व्वस्मिन्नेत्रेसप्तदशोदिताः ॥
एवंनेत्रेसमस्ताःस्युरष्टसप्ततिरामयाः। तत्रदृष्टौअन्यौचरकोक्तौसुश्रुतोक्तषट्सप्ततिसंख्ये
भ्योऽधिकौ ॥ ७८३ ॥

नेत्रमण्डल में होनेवाले अठहत्तर रोगोंका वर्णन ॥

दृष्टिमें १२ तथा चरकके कहेहुये दो अन्य कृष्णमें चार ४ श्वेतमें ११ वर्त्ममें २१ पक्ष्ममें २ सन्धियोंमें ६ और सम्पूर्ण नेत्रमें १७ इसप्रकार नेत्रमें सब मिलाकर अठहत्तर रोग होते हैं सुश्रुतमें ७६ नेत्ररोग कहे हैं यहां चरकके कहेहुये दो और मिलाकर अठहत्तर लिखेगये हैं ॥ ७८३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संनिरुद्धगुदका लक्षण ॥

वाहक मार्ग को रोक

अतिकठिन रोग सन्नि

नेत्ररोगों के सामान्यतासे निकटवाले और दूरवाले कारण ॥

धूपआदिके द्वारा सन्तापयुक्त मनुष्यके जल में स्नानकरने के कारण नेत्रके तेजके न दूरकी वस्तुके देखनेसे निद्राके विपर्य्ययसे अग्नि आदिसे धूलि तथा धूमके नेत्रमें लगने से वे रोकने से अत्यन्त वमनसे शिरका, कांजी, कुलथी तथा उर्दके अधिक सेवनसे मलमूत्रादि वेग रोकने से बहुत रोनेसे शोकज सन्तापसे शिरमें चोट लगनेसे और जल्दी चलने से ऋतुचर्य्या के विपरीत आचरणसे कामक्रोधादि दुःखों की पीड़ासे अधिक मैथुनसे आंसुओंके रोकनेसे और बहुत सूक्ष्मवस्तु देखनेसे कुपित वातादिक दोष नेत्ररोगों को उत्पन्न करते हैं ॥ ७८५ ॥

अथ संप्राप्तिमाह ॥

शिरानुसारिभिर्दोषैर्विगुणैरूर्ध्वमाश्रितैः । जायन्तेनेत्रभागेषुरोगाःपरमदारुणाः ॥ नेत्रभागेषुनेत्रस्यदृष्ट्याद्यवयवेषु ॥ ७८६ ॥

नेत्ररोगों की सम्प्राप्ति ॥

कुपित दोष शिराओंके द्वारा ऊपर जाके नेत्रके दृष्टिआदि अङ्गों में अत्यन्त भयङ्कर रोगों को उत्पन्न करते हैं ॥ ७८६ ॥

आदौदृष्टिरोगानाह तत्र नेत्रदृष्टिलक्षणम् ॥

मसूरदलमात्रांतुपञ्चभूतप्रसादजाम् । खद्योतविस्फुलिङ्गाभांसिद्धांतेजोभिरव्ययैः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...पटलेच । इति न...

...कर्पूरसो... श्वेत गदापूरना, हल्दी, ला...

...पिक...तिमे...

॥ ८७५ ॥

...तोवातका लक्षण ॥

...के पीछे की नस तथा अन्य...

है उसे अन्यतोवात कहते हैं ॥ ८७५ ॥

...लाध्युषितमाह ॥

...उष्णताकी इच्छा, भारी...

...चिपचिपे...

...पटल, ... आश्रय

...और चतुर्थ पटल अस्थिके आश्रित होताहै इन चारोंकी स्थूलता ... समान

...नेत्रके पंचमांश होतीहै ॥ ७८८ ॥

अथ तत्रप्रथमपटलगतस्यदोषस्यस्वभावमाह ॥

प्रथमेपटलेयस्यदोषोदृष्टेर्व्यवस्थितः । अव्यक्तानिस्वरूपाणिकदाचिदथपश्यति ॥

प्रथमेपटलेपूर्वाभ्यन्तरेनतुबाह्ये । दृष्टेरभ्यन्तरेदोषाःपटलेसमधिष्ठिताः ॥ एकैकमनुपद्यं तेपर्यायात्पटलान्तरमिति । विदेहवचनात् ॥ व्यवस्थितःस्थितःअव्यक्तानिईषद्व्यक्तानि । अथकदाचित्पश्यतिव्यक्तान्येवेतिशेषःदोषाल्पतया ॥ ७८९ ॥

प्रथम पटल में प्राप्त दोष का स्वभाव ॥

प्रथम पटलमें दोषके स्थित होनेपर कभी कुछ प्रकट और कभी प्रकटरूप देखताहै यहां प्रथमपटल से भीतरे चौथे पटल का बोध होताहै क्योंकि विदेहनेकहाहै कि दृष्टि के भीतरे पटल में स्थित हुए दोष इत्यादि क्रमसे एक २ पटल में प्राप्त होते हैं ॥ ७८९ ॥

अथ द्वितीयपटलगतस्याह ॥

दृष्टिर्भृशंविह्वलातिद्वितीयेपटलेगते । मक्षिकामशकान्केशान्जालकानीवपश्यति ॥

मण्डलानिपताकांश्चमरीचीन्कुण्डलानिच । परिप्लवांश्चविविधान्वर्षमभ्रन्तमांसिच ॥

समीपस्थानिदूरेचदृष्टेर्गोचरविभ्रमात् ॥ यत्न दूरस्थानिचरूपाणिमन्यतेचसमीपतः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

[illegible] ः क्षतकी ना [illegible]

[illegible] निरुद्धगुदस्य [illegible]

[illegible] गच्छति । [illegible]

सन्निरुद्धगुदका लक्षण [illegible]

[illegible] ग्राहक मार्ग को रोक [illegible]

[illegible] अतिकठिन रोग सन्नि [illegible]

[illegible] असिप्रहारात् । [illegible]

स्थेतु [illegible] घातात् ॥ ७८५ ॥ [illegible] स्थिते । पाश्वास्थतपुनर्दोष [illegible] पश्यति ॥ समन्त [illegible]
तःस्थितदो [illegible] ते । दृष्टिमध्यस्थितेदोषेमहद्धूस्वंचपश्यति ॥ दोषे [illegible]
स्थितेतिर्य [illegible] तेद्विधा । द्विधास्थितेत्रिधापश्येद् बहुधाचाऽनवस्थिते ॥ उ [illegible]
श्यतिऊर्ध्वमपियादृक्पश्यतितादृगाहसुमहान्तीत्यादिअम्बरैःवस्त्रैः अधःस्थेतुसमीप [illegible]
नपश्यनीत्यन्वयः तथाउपरिस्थितेदोषेदूरस्थंनपश्यतिसमन्ततःउपर्यधः पाश्वेषुसंकु
लानिभिन्नानिअपिरूपाणिमिश्रितानीवपश्यतिअनवस्थिते अनियतावस्थानेबहुधाबहू
निपश्येत् ॥ ७६१ ॥

तृतीय पटलगत दोषोंका स्वभाव ॥

तृतीय पटल में दोष के स्थित होनेपर ऊपर दिखाई देताहै पर नीचे दिखाई नहीं देता ऊपर की ओर बड़े २ भी पदार्थ वस्त्रके द्वारा ढकेहुए से मालूम होतेहैं कान नासिका तथा नेत्रादिक रूप विकार युक्त दिखाई देतेहैं जो बलवान् दोष कुपित होताहै उसी दोषके अनुसार संपूर्ण वस्तुओंका वर्ण दिखाई देताहै पटल के नीचे की ओर दोष के स्थित होनेपर निकट की वस्तु ऊपरकी ओर स्थित होनेपर दूरकी वस्तु तथा किनारों पर स्थित होनेपर किनारे की वस्तु नहीं दिखाई देती है दोष के सब ओर स्थित होनेपर भिन्न २ रूप मिलेहुए से दिखाई देते हैं मध्यमें दोष के स्थित होनेपर बड़ी वस्त छोटी दिखाई देतीहै दृष्टिमें दोपके तिरछे स्थित होनेपर एकवस्तु दो के समान दिखाई देतीहै दोनों ओर दोषके स्थित होनेपर एकवस्तु की तीनवस्तु दिखाई देती हैं और दोषकेस्थिर न रहनेपर एक वस्तु की बहुतसी वस्तु दिखाई देती हैं ॥ ७६१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...पटलेच । इति न...

...कर्पूरसो... श्वेत गदापूरना, हल्दी, ला...

... ॥ ८७५ ॥

...तोवातका लक्षण ॥

...के पीछे की नस तथा अन्य...

है उसे अन्यतोवात कहतेहैं ॥ ८७५ ॥

...म्लाध्युषितमाह ॥

...उष्णताकी इच्छा, भारी...

...चिपचिपे...

...न और दीप्तिमान... पदार्थ सी दीखते... इसके पुर... भी

दिखाई देते हैं इस रोगको नीलिका और काचभी कहतेहैं ॥ ...

अथ दृष्टिरोगाणांनामानिसंख्याञ्चाह ॥

दृष्ट्याश्रयाःषट्चषडेवरोगाःषड्लिंगनाशाहिभवन्तितत्र । वातेनपित्तेनकफेनसर्वैः रक्तात्परिम्लायभिधश्चषष्ठः ॥ दृष्ट्याश्रयारोगाःषट्षट्द्वादशेत्यर्थःतत्रलिंगनाशाःषट् तान्विवृणोतिवातेनेत्यादि । तथानरःपित्तविदग्धदृष्टिःकफेनवान्यस्त्वथधूमदर्शी ॥ यो ह्रस्वजात्योनकुलान्धसंज्ञोगम्भीरसंज्ञाचतथैवदृष्टिः । पित्तविदग्धदृष्ट्यादयश्चषट्एवं दृष्ट्याश्रयाद्वादशरोगास्तत्रद्वावन्यौचाहतत्रवान्यौगदौबद्धौसन्निमित्तकौ ॥ ७९३ ॥

दृष्टिगत रोगोंके नाम और संख्या ॥

दृष्टि के रोग १२ प्रकार के होतेहैं उनमें से लिंगनाश छःप्रकारके हैं जैसे वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, रक्तज और परिम्लायी अन्य छःप्रकार यहहैं जैसे पित्तविदग्धदृष्टि, कफविदग्धदृष्टि, धूमदर्शी, ह्रस्वजाड्य, नकुलान्ध्य और गंभीरक इनमें दो रोग और भी होतेहैं ॥ ७९३ ॥

तेषुवातजस्यलिंगनाशस्यलक्षणमाह ॥

वातेनखलुरूपाणिभ्रमन्तीवचपश्यति । आविलान्यरुणाभानिव्याविद्धानीवमानवः ॥ आविलानिकलुषाणिअरुणाभानिअव्यक्तलौहित्ययुक्तानि ॥ ७९४ ॥

(१) का चतुर्थेषविज्ञेयोयान्याभिपटलःस्थितः । चतुर्थपटलंप्राप्तेलिंगनाशःसउच्यते ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...क्षतकी ना...

...निरुद्धगुदस्य...

...स्यगच्छति ।

सन्निरुद्धगुदका लक्षण ॥

...ग्राहक मार्ग को रोक...

...अतिकठिन रोग सन्नि...

...थ शुक्रचिकित्सा...

...सिप्रहारात्...

...यतेऽनेनोतति...

...च्यात् ॥ ७८५ ॥ ...की अथवा दोप्रकारकी हीन अंगवाली ... अधिक अंगवाली है

है और त... ॥ ७८७ ॥ अथ रक्तजमाह ॥

पश्येद्रक्तेनरक्तानितमांसिविविधानिच । हरितान्यथकृष्णानिपीतान्यपिचमानव...

रक्तजलिंगनाशके लक्षण ॥

रक्तजलिंगनाशमें रक्त,कृष्ण,हरित तथा पीतवर्ण अनेक प्रकारके अन्धकारमें रूप दिखाईदेतेहैं॥७८८॥

अथ परिम्लायिनमाह ॥

रक्तेनमूर्च्छितंपित्तंपरिम्लायिनमाचरेत् । तेनपीतादिशःपश्येदुद्यन्तमिवभास्करम् ॥ विकीर्य्यमाणान्खद्योतैर्वृक्षांस्तेजोभिरेवहि । विकीर्य्यमाणान्व्याप्यमानान्तेजांसिअग्न्यादिभिरिव ॥ ७८९ ॥

परिम्लायी लिंगनाशके लक्षण ॥

रुधिरसहित पित्त बढ़कर परिम्लायी नाम लिंगनाशको उत्पन्न करताहै इसमें सम्पूर्ण दिशा पीतवर्ण तथा उदयहुए सूर्य्यसे दिखाईदेते हैं और वृक्ष,जुगनू अथवा अग्निआदिसे ढकेहुएसे मालूम होतेहैं ॥ ७८९ ॥ अथ वातादिजनितैर्नेत्रवर्णैरपिचषड्विधः ॥

लिंगनाशोनिगदितोवर्णोवातादिजोयथा । रागोऽरुणोमारुतजःप्रदिष्टोम्लायीतुनीलश्चतथैवपित्तात् ॥ कफात्सितःशोणितजःसरक्तःसमस्तदोषप्रभवोविचित्रः । वातादिना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...मल के पत्तेमें स्थित... बिन्दुके समान मालूम होनेवा... ...वाता-
...तीनों दोषोंके वर्ण होतेहैं रक्तजमें मूंगे तथा कमलपत्रके समा... ...सहित रक्त-
...स्थूल तथा रक्तवर्णवाले काचके समान वर्णयुक्त होताहै परिम्लायी में ... नीलवर्ण
...इसमें दोषोंके क्षय होनेपर कालान्तरमें कभी आपही दिखाई देने लगताहै इन सबमें पीड़ा
...ह तथा गौरव आदिक दोषोंके लक्षण दोषों के अनुसार होतेहैं ॥ ८०० ॥

अथ पित्तविदग्धदृष्टेर्लक्षणमाह ॥

पित्तेनदुष्टेनगतेनदृष्टिंपीताभवेद्यस्यनरस्यदृष्टिः। पीतानिरूपाणिचतेनपश्येत्सवैनरः पित्तविदग्धदृष्टिः ॥ पित्तेनगतेनदृष्टिंदृष्टावपिप्रथमद्वितीयेपटलगतेनेतिबोद्धव्यम् ॥ तेनव्याधिनातस्मिन्नेवपित्तेदृष्टौतृतीयपटलंगतेविशेषरूपमाह। प्राप्तेतृतीयंपटलंतुदोषे दिवानपश्येन्निशिवीक्षतेसः ॥ रात्रौसशीतानुगृहीतदृष्टिः पित्ताल्पभावात्सकलानिपश्येत्। दोषेऽत्रपित्ते ॥ ८०१ ॥ पित्त विदग्धदृष्टि के लक्षण ॥

दूषित पित्तके प्रथम तथा द्वितीय पटलमें प्राप्त होनेपर दृष्टि पीतवर्ण होजातीहै और संपूर्ण रूप पीतवर्ण दिखाई देतेहैं ऐसे रोगवाले मनुष्यको पित्त विदग्ध दृष्टि कहतेहैं इसी रोगमें पित्तके तृतीय पटल में प्राप्त होनेपर विशेष लक्षण को कहतेहैं पित्त के तृतीय पटल में प्राप्त होनेपर दिनको नहीं दिखाई देताहै और रात्रिको दिखाई देताहै क्योंकि रात्रिमें पित्तके स्वल्प होने के कारण दृष्टि में शीतलता होतीहै इसलिये सब पदार्थ दिखाई देतेहैं ॥ ८०१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सन्निरुद्धगुदका लक्षण ॥

... ग्राहक मार्ग को रोक ...

... अतिकठिन रोग सन्नि ...

...प्ति ॥ ८०३ ॥ अथ ह्रस्वजात्यमाह ॥

योवासरे ... कष्टैर्ताऽथरूपंमहच्चापिनिरीक्षतेऽल्पम् । रात्रौपुनर्यः प्रकृतानि ... सह्रस्वजात्योमुनिभिः प्रदिष्टः ॥ ८०४ ॥

ह्रस्वजात्य के लक्षण ॥

जो दिनमें बड़ी वस्तुओंको भी बहुत कष्टसे छोटी देखताहैं और रात्रिमें स्वाभाविक देखता है उसे ह्रस्वजात्य कहते हैं ॥ ८०४ ॥ अथ नकुलान्ध्यमाह ॥

विद्योततेयस्यनरस्यदृष्टिर्दोषाभिपन्नानकुलस्ययद्वत् । चित्राणिरूपाणिदिवाचपश्येत्सवैविकारोनकुलान्ध्यसंज्ञः ॥ ८०५ ॥

नकुलान्ध्यके लक्षण ॥

जिसकी दोषोंसे भरीहुई दृष्टि नकुल की दृष्टिकेसमान दीप्तिवाली होवे और दिनमें विचित्ररूप दिखाई देवें उस रोगको नकुलान्ध्य कहते हैं ॥ ८०५ ॥

अथ गम्भीरकमाह ॥

दृष्टिर्विरूपाश्वसनोपसृष्टासंकुच्यतेऽभ्यन्तरतःप्रयाति । रुजावगाढाचतमक्षिरोगं गम्भीरिकेतिप्रवदन्तिधीराः ॥ विरूपाविकृताश्वसनोपसृष्टावातोपहतारुजावगाढाग म्भीरवेदनान्विता ॥ ८०६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...पटलेच। इति न...

...कर्पूरस... श्वेत गदापूरना, हल्दी, ला...

...पिक...तिभे...

...॥ ८७५ ॥

...तोवातका लक्षण ॥

...के पीछे की नस तथा अन्य...

...है उसे अन्यतोवात कहतेहैं ॥ ८७५ ॥

...लाध्युषितमाह ॥

...उष्णताकी इच्छा, भारी...

...चिपचिपे...

...कारण होने...

अथानिमित्ततोलिंगनाशस्यलक्षणं

...क्षिविस्पष्टमिवावभातिवैदूर्यवर्णाविमलाचदृष्टिः । विस्पष्टंज्य...दूर्यवर्णा ...विमलानिर्मला इति दृष्टिरोगाः ॥ ८०९ ॥

अनिमित्तज लिंगनाशके लक्षण ॥

अनिमित्तज लिंगनाशमें दृष्टि. तेजयुक्त श्यामवर्ण तथा विमलहोतीहै इति दृष्टिरोग समाप्त॥८०९॥

अथ कृष्णमण्डलजारोगास्तेषांनामानिसंख्याञ्चाह ॥

यत्सव्रणंशुक्रमथाव्रणंचपाकात्ययश्चाप्यजकातथैव। चत्वारएतेनयनामयास्तुकृष्ण प्रदेशेनियताभवन्ति ॥ ८१० ॥

कृष्णमण्डलके रोग इनके नाम और संख्या ॥

सव्रणशुक्र, अव्रणशुक्र, पाकात्यय और अजका यह चाररोग कृष्णमण्डलमें होतेहैं ॥ ८१० ॥

अथ तत्रसव्रणंशुक्रलिंगमाह ॥

निमग्नरूपंतु भवेद्धिकृष्णेसूच्येवविद्धंप्रतिभातियद्वै। स्रावंस्रवेदुष्णमतीवचापितत्स व्रणंशुक्रमुदाहरन्ति ॥ निमग्नरूपमितिशुक्रविशेषणंसूच्येवविद्धमितिशुक्रस्यवर्तुलत्वं व्यथायुक्तंचबोधयति। स्रवेदित्यनेनैवस्रावोबोधितःस्रावपदंनिरन्तरंस्रावः ॥ ८११ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अभिघात ...

... क्षतक ...

... नरु ...

... ते । ...

... दगुदका लक्षण ...

... हक मार्ग को रोक ...

... अतिकठिन रोग सन्नि ...

... नात् ॥ ७८५ ॥ ... हुआ शोथ पकजाय और उससे गाढ़ा दुर्गन्धित पीप बहै उस ...

को पूयाल ... ॥ ८१४ ॥

अथोपनाहमाह ॥

ग्रन्थिर्नाल्पोदृष्टिसन्धावपाकीकण्डूप्रायोनीरुजश्चोपनाहः । नाल्पःमहानूअप ...
त्पाकीनीरुजःईषद्वेदनःअरुणंकठिनंग्रन्थिंजनयत्यल्पवेदनामितिविदेहवचनात्॥८१...

उपनाहका लक्षण ॥

दृष्टिकी सन्धिमें उत्पन्नहुई अपाकी, खुजलीयुक्त तथा पीड़ारहित बड़ीग्रन्थिको उपनाह कहते हैं यहां अपाकीका अर्थ कुछ पकनेवाली क्योंकि विदेहने कहाहै कि रक्तवर्ण कठिन तथा अल्पपीड़ा युक्त ग्रंथिको उत्पन्न करताहै ॥ ८१५ ॥

अथ स्रावाणांसम्प्राप्तिमाह ॥

गत्वासन्धीनश्रुमार्गेणदोषाःकुर्युःस्रावान्लक्षणैःस्वैरुपेतान् । तंहिस्रावंनेत्रनाडीति चैकेतस्यालिंगंकीर्तयिष्येचतुर्धा ॥ सन्धीनितिबहुवचनेनसर्वएवसन्धयोगृह्यन्ते । एके वदन्तीतिशेषः ॥ वातिकस्रावोनभवन्तिकेवलेनवातेनतदसम्भवात् ॥ ८१६ ॥

स्रावोंकी संप्राप्ति ॥

कुपित दोष अश्रुओंके मार्ग से संपूर्ण सन्धियों में जाकर अपने २ लक्षणोंसे युक्त चार प्रकारों के स्रावों को उत्पन्न करतेहैं इनको कोई २ नेत्र नाडी कहतेहैं इनके लक्षण आगे कहते हैं वातज स्राव नहीं होताहै क्योंकि केवल वात से स्राव होना असंभवहै ॥ ८१६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ ८७५ ॥

तोवातका लक्षण ॥

के पीछे की नस तथा अन्य

है उसे अन्यतोवात कहते हैं ॥ ८७५

ध्युषितमाह ॥

उष्णताकी इच्छा, भारी

रक्तजस्राव का लक्षण ॥

रक्तस्राव में सन्धि से गरम रुधिर बहुतसा बहता है ॥ ८२० ॥

अथ पर्वणीकामाह ॥

ताम्रातन्वीदाहपाकोपपन्नारक्ताज्ज्ञेयापर्वणीवृत्तशोफा । जातासंधौकृष्णशुक्लेऽलजी स्यात्तस्मिन्नेवव्याहतापूर्वलिङ्गैः॥ अलजीमाह अलजीस्यादित्यादितस्मिन्नेवकृष्णशुक्लयो रेवसन्धीभेदार्थमाह । पूर्वलिङ्गैःप्रमेहाऽधिकारलिखितैःरक्तासितास्फोटचित्रा दारुणा त्वलजीभवेदितिवचनैर्व्याहताकथिता ॥ ८२१ ॥

पर्वणीका और अलजी का लक्षण ॥

कृष्ण शुक्ल सन्धि में दाह तथा पाकयुक्त ताम्रवर्ण और गोल थोडी सूजनको पर्वणीका कहते हैं यह रक्तजहै इसी संधि में प्रमेहाधिकार में कही हुई रक्त तथा श्वेतवर्णवाली फुंसियों से व्याप्त भयंकर अलजी नाम पिडिका के समान पिडिकाको अलजी कहते हैं ॥ ८२१ ॥

अथ जन्तुग्रन्थिमाह ॥

जन्तुग्रन्थिर्वर्त्मनःपक्ष्मणश्चकण्डूंकुर्युर्जन्तवःसन्धिजाताः । नानारूपावर्त्मशुक्लान्त सन्धौगच्छन्त्यन्तर्लोचनंदूषयन्तः ॥ वर्त्मनःपक्ष्मणश्चसन्धिजाताइत्यन्वयःइतिसन्धि जारोगाः ॥ ८२२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...का लक्षण ...

... सद्यः क्षतकी ना...

अथ संनिरुद्धगुदस्य...

...वहितोगुद...

...च्छ्रेणपु...स्यगच्छति ।

सन्निरुद्धगुदका लक्षण ॥

... ग्राहक मार्ग को रोक...

... अतिकठिन रोग सन्नि...

...चिकित्साम... ॥

...तात् ॥ ७८५ ॥ ...दुशुक्लामेशुक्लतद्वर्द्धतेचिरात् ॥ ८२५ ॥

शुक्लार्मका लक्षण ॥

शुक्लभाग में कुछ श्वेतवर्ण कोमल धीरे २ होनेवाली मांसवृद्धिको शुक्लार्म कहतेहैं ॥ ८...

अथ रक्तार्ममाह ॥

पद्माभंमृदुरक्तार्मयन्मांसञ्चीयतेसिते।पद्माभंवर्णेनरक्तमित्यर्थःचीयतेउपचीयते ८२६ ॥

रक्तार्मका लक्षण ॥

शुक्लभागमें रक्तवर्ण तथा कोमल मांसके इकट्ठेहोनेको रक्तार्म कहतेहैं ॥ ८२६ ॥

अथाधिमांसार्ममाह ॥

पृथुमृद्वधिमांसार्मबहलञ्चयकृन्निभम् । पृथुविस्तीर्णंबहलंपुष्टंयकृन्निभमीषत्कृष्ण लोहितम् ॥ ८२७ ॥

अधिमांसार्मका लक्षण ॥

शुक्लभाग में विस्तीर्ण पुष्ट कोमल तथा कृष्ण और लोहितवर्ण युक्त मांसके बढ़नेको अधिमांसार्म कहतेहैं ॥ ८२७ ॥

अथ स्नाय्वर्ममाह ॥

स्थिरंप्रसारिमांसाढ्यंशुष्कंस्नाय्वर्मपञ्चमम् । स्थिरंकठिनंशुष्कंस्रावरहितम् ८२८

स्नाय्वर्मका लक्षण ॥

कठिन, फैलेहुए मांससे युक्त तथा स्रावरहित, मांसवृद्धिको स्नाय्वर्म कहतेहैं ८२८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है उसे अन्यतोवात कहते हैं ॥ ८७५ ॥

जालसञ्ज्ञः ॥ ८३ ... शिराजालका लक्षण ॥

नेत्र के श्वेतभाग में जालके समान आकृतियुक्त कठिन ... फैलनका शिराजाल कहते हैं ॥ ८३२ ॥

अथ शिरापीडिकामाह ॥

शुक्लस्थाःसितपीडिकाःशिरावृत्तायास्ताविद्याद्सितसमीपजाःशिराजाः ॥ ८३३ ॥

शिरापिडिकाका लक्षण ॥

नेत्रके शुक्लभागके समीप शिराओंसे ढकीहुई श्वेत पिडिकाओंको शिरापिडिका कहते हैं ॥ ८३३ ॥

अथ बलासग्रथितमाह ॥

कांस्याभोऽमृदुरथवारिबिन्दुकल्पो विज्ञेयोनयनसितेबलाससंज्ञः ॥ कांस्याभःश्वेत इत्यर्थः । अमृदुःकठिनःवारिबिन्दुकल्पः ॥ एतेनमनागुन्नतत्वंबोध्यतेबलाससंज्ञः । बलासग्रथितसंज्ञःक्वचिदेकदेशेनापिसमुदायावगमात् ॥ यथाभीमोभीमसेनइतिअतएव सुश्रुतेनामसंग्रहेबलासग्रथितपदंनिर्दिष्टम् । इति शुक्लभागजारोगाः ॥ ८३४ ॥

बलासग्रथितका लक्षण ॥

नेत्रके शुक्लभागमें श्वेतवर्ण कठिन जलबिन्दुके समान कुछ उन्नत मांसवृद्धिको बलासग्रथित कहते हैं इति शुक्लभागज रोग समाप्त ॥ ८३४ ॥

अथ वर्त्मजारोगाः ॥

तत्रवर्त्मनीद्वेयतआह । वर्त्मनीनयनच्छदाविति ॥ ८३५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...यः क्षतकी ...
...निरुद्धगुदस्य...
...स्यगच्छति ।

सन्निरुद्धगुदका लक्षण ॥

...ग्राहक मार्ग को रोक...
...अतिकठिन रोग सन्नि...

...र्णाभात् ॥ ७८५ ॥ ...त्संग पिडिकाका लक्षण ॥

वर्त्म के ... वाली, नोहरे ताम्रवर्णा, भीतर पीपयुक्त, अनेक छोटी २ फुंसियों से युक्त, तथा खुजली युक्त जो वर्त्ममें पिडिका होती है उसे उत्संगपिडिका कहते हैं यह नीचेके पलकमें हो... क्योंकि विदेहने कहाहै कि प्राणीकी नीचेवाली पलकमें इत्यादि यह पिडिका सन्निपातजहै ८३७॥

अथ कुम्भीकामाह ॥

वर्त्मान्तेपीडिकाध्माताभिद्यन्तेचस्रवन्तिच । कुम्भीकाबीजसदृशाःकुम्भीकाकठोरदेशेदाडिमाकारफलालतातद्बीजतुल्याः ॥ ८३८ ॥

कुंभीकाका लक्षण ॥

पलकके अन्तमें कुंभीक (अनार के समान फलवालीलताविशेष) के बीजके समान, उभरीहुई, पिडिकाफूटकर बहने लगतीहै इनको कुंभीका कहते हैं यह सन्निपातज होती हैं ॥ ८३८ ॥

अथ पोथिकामाह ॥

स्राविण्यःकण्डुरागुर्व्योरक्तसर्षपसन्निभाःरुजावत्यश्चपिडिकापोथकीइतिकीर्तिता ८३९

पोथकीका लक्षण ॥

बहनेवाली, खुजलीयुक्त, भारी, लालसरसोंके समान आकृतवाली और पीडायुक्त, पलकोंमें होनेवाली, पिडिकाको पोथकी कहते हैं ॥ ८३९ ॥ अथ वर्त्मशर्करामाह ॥

पीडिकाभिःसुसूक्ष्माभिर्घनाभिरभिसंवृता॥पीडिकायाखरास्थूलावर्त्मस्थावर्त्मशर्करा ८४०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पिडिकाको अंजनदूषिका कहते हैं ॥ ८४३ ॥

अथ बहलवर्त्माह ॥

...वर्त्मोपचीयतेयस्यपीडिकाभिःसमन्ततः । सवर्णाभिःस्थिराभिश्चविद्याद्बहलवर्त्म तत् ॥ ८४४ ॥

बहलवर्त्मका लक्षण ॥

पलकके समान वर्णवाली तथा कठिन पिडिकाओंसे पलकके घिरजानेको बहलवर्त्म कहतेहैं ८४४ ॥

अथ वर्त्मबन्धकमाह ॥

कण्डूरेणात्मतोदेनवर्त्मशोफेनमानवः । असमंछादयेदक्षियत्रासौवर्त्मबन्धकः ॥ ८४५ ॥

वर्त्मबन्धक का लक्षण ॥

खुजली तथा कुछ सुई गडनेकीसी पीड़ायुक्त पलकोंकी सूजनसे नेत्रोंकी समतासे नहीं आच्छादन होनेको वर्त्मबन्धक कहते हैं ॥ ८४५ ॥

अथ क्लिष्टवर्त्माह ॥

मृद्वल्पवेदनंताम्रंयद्वर्त्मसममेवच । अकस्माच्चस्रवेद्रक्तंक्लिष्टवर्त्मेतितद्विदुः ॥ एतत् कफजुष्टरक्तजम् ॥ ८४६ ॥

क्लिष्टवर्त्मका लक्षण ॥

कोमल, स्वल्प पीड़ायुक्त पलकें ताम्रवर्ण होकर एकाएकी रक्तवर्ण होजायँ इसे क्लिष्टवर्त्म कहत हैं यह कफ सहित रुधिरसे होताहै ॥ ८४६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...स्यगच्छति ।

सन्निरुद्धगुदका लक्ष...

...ग्राहक मार्ग को रो...

...अतिकठिन रोग स...

...नैयचिकित्स...

...॥ ७८५ ॥ ...धानपरमें वारवार चिपकजानेको ...क्लिन्नवर्त्म कहतेहैं ८५०...

...वातहतवर्त्माह ॥

विमुक्तसन्धिनिश्चेष्टंवर्त्मयस्यनिमील्यते । एतद्वातहृतंविद्यात्सरुजंयदिवारुजं ॥ विमुक्तसन्धिःस्वस्थानच्युतसन्धिः । निश्चेष्टंनिमेषोन्मेषादिरहितम् ॥ ८५१ ॥

वातहतवर्त्मका लक्षण ॥

पीड़ासहित अथवा पीड़ारहित पलकोंकी सन्धिके अलग होजाने से निमेष तथा उन्मेष (पलक का खुलना मूंदना) रहित पलकों के ढकजानेको वातहतवर्त्म कहते हैं ॥ ८५१ ॥

अथ वर्त्मार्बुदमाह ॥

वर्त्मान्तरस्थंविषमग्रन्थिभूतमवेदनम् । आचक्षीतार्बुदमितिसरक्तमविलम्बिच । विषममवर्तुलंग्रन्थिभूतंकठिनम् । अवेदनमीषद्वेदनंसरक्तमीषल्लोहितम् ॥ अवलम्बि अस्रस्तम् ॥ ८५२ ॥

वर्त्मार्बुदका लक्षण ॥

पलकोंके भीतर विषम (विनागोल) कुछ पीड़ायुक्त कुछ रक्तवर्ण और नहीं रुकीहुई ग्रन्थि सी उत्पन्नहोने को वर्त्मार्बुद कहते हैं ॥ ८५२ ॥

अथ निमेषमाह ॥

निमेषिणीःशिरावायुःप्रविष्टोवर्त्मसंशयः।संचालयतिवर्त्मानिनिमेषःसनसिध्यति ८५३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

…हैं उसे अन्यतोवात कहते हैं ॥ ८७५ ॥…

…ध्युषितमाह ॥

…तीनों दोष कुपित… …और …पानी बहै इस विषतुल्य रोगको विषवर्त्म कहते…

अथ कुञ्चनमाह ॥

…ताद्यावर्त्मसंकोचंजनयन्तिमलायदा। तदाद्रष्टुंनशक्नोतिकुंचनंनामतद्विदुः ॥ इति वर्त्मरोगाः ॥ ८५७ ॥

कुंचन का लक्षण ॥

वातादि दोष कुपित होकर जब पलकोंको संकुचित करदेते हैं तब मनुष्य देख नहीं सक्ता इस रोगको कुंचन कहते हैं इति वर्त्म रोग समाप्त ॥ ८५७ ॥

अथ पक्ष्मरोगावाह ॥

तत्रपक्ष्माण्यक्षिलोमानि तत्रत्ययोरोगयोर्नामिनी आह । पक्ष्मकोपःपक्ष्मशातो रोगौ द्वौपक्ष्मसंश्रयौ ॥ ८५८ ॥

पक्ष्मके रोग बिरूनियों के दोनों रोगोंके नाम ॥

पक्ष्मकोप और पक्ष्मशात यह दो रोग पक्ष्ममें होते हैं ॥ ८५८ ॥

अथ तत्रपक्ष्मकोपमाह ॥

प्रचालितानिवातेनपक्ष्माण्यक्षिविशन्तिहि । असितेसितभागेचमूलकोशात्पतन्त्यपि ॥ घृष्यन्त्यक्षिमुहुस्तानिसंरम्भं जनयन्तिच । पक्ष्मकोपःसविज्ञेयोव्याधिःपरमदारुणः ॥ संरम्भंशोथम् ॥ ८५९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...कःसशोथःसचशे...

...शुष्काक्षिपाकस्त्विहकीर्त्तितश्चतथान्यतोवा...

रितश्च । ...म्लाध्युषिताःशिराणामुत्पातहर्षौचसमस्तनेत्रे ॥ एवंसमस्त...

रामयादशसप्तच । तेषामिहपृथग्वक्ष्येयथावल्लक्षणान्यपि ॥ ८६२ ॥

सम्पूर्ण नेत्रोंमें होनेवाले रोग । इनके नाम और संख्या ॥

चार अभिष्यन्द, चार अधिमन्थ, शोथहीन, नेत्रपात, सशोथ, नेत्रपात, हताधिमन्थ, अनिलपर्य्यय, शुष्काक्षिपात, अन्यतोवात, अम्लाध्युषित, शिरोत्पात और शिराहर्ष यह १७ रोग सम्पूर्ण नेत्रमें होतेहैं इनके लक्षण आगे लिखते हैं ॥ ८६२ ॥

अथ तेष्वभिष्यन्दाश्चत्वारइत्याह ॥

वातात्पित्तात्कफाद्रक्तादभिष्यन्दश्चतुर्विधः । प्रायेणजायतेघोरःसर्वनेत्रभयङ्करः ८६३॥

चार अभिष्यन्दोंका वर्णन ॥

वातज, पित्तज, कफज और रक्तज यह चारप्रकारके अभिष्यन्द संपूर्ण नेत्रमें अत्यन्त पीडाकरतेहैं ८६३॥

अथ तेषुवातिकाभिष्यन्दमाह ॥

निस्तोदनस्तम्भनरोमहर्षसंघर्षपारुष्यशिरोऽभितापाः । विशुष्कभावःशिशिराश्रुताचवाताभिपन्नेनयनेभवन्ति ॥ संहर्षःकरकटीकाशिरोऽभितापःशिरसोऽथवाविशुष्कभावः दूषिकाराहित्यंवाताभिपन्नेवातेनोपह्नुते ॥ ८६४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ताम्राश्रुतालोहितनेत्रता चराज्यः समन्तादातला [illegible] न्ति [illegible] जिकोया

[illegible] निरक्ताभिपन्नेनयनेभवन्ति (अनुक्तसंग्रह [illegible]) पित्तलिङ्गा [illegible] भिष्यन्द

[illegible] नि ॥ ८६७ ॥ रक्ताभिष्यन्दके लक्षण ॥

लालआंसूबहना नेत्रोंकारक्तहोना नेत्रमें सबओर लाल २ लकीर पडना और पित्त के संपूर्ण लक्षण रक्तज अभिष्यन्द में होतेहैं ॥ ८६७ ॥

अथाधिमन्थानामभिष्यन्दजत्वमाह ॥

वृद्धैरेतैरभिष्यन्दैर्नराणामक्रियावताम् ॥ तावन्तस्त्वधिमन्थाःस्युर्नयनेतीव्रवेदना ८६८॥

अभिष्यन्दोंसे अधिमन्थों के होने का वर्णन ॥

चिकित्सा न करनेवाले मनुष्यों के बढ़ेहुये अभिष्यन्दों से अत्यन्त पीडायुक्त चार प्रकारके अधिमन्थ नेत्रोंमें उत्पन्न होते हैं ॥ ८६८ ॥

अथाधिमन्थानांलक्षणमाह ॥

उत्पाट्यतइवात्यर्थंतथानिर्मथ्यतेऽपिच । शिरसोऽर्द्धंतुतंविन्द्यादधिमन्थःस्वलक्षणैः ॥ स्वलक्षणैःयथोक्तवातादिकृताभिष्यन्दलक्षणैः अधिमन्थंविन्द्यात् । अभिष्यन्देभ्योऽधिमन्थानांभेदार्थमाह ॥ शिरसोऽर्द्धमुत्पाट्यतइवतथानिर्मथ्यतेऽपिचेति चतुर्ष्वधिमन्थेषुबोद्धव्यंशिरसोऽर्द्धवेदनाऽत्याधिप्रभावात् ॥ ८६९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सन्निरुद्धगुदका ल...

...ग्राहक मार्ग को ... नेत्रपाक...

...शोथपाकके लक्षण ॥

...मान, शोथयुक्त, नेत्रके पकनेको

कहते ... नेत्रपाक कहते हैं ...

...पाकमाह ॥

...नात् ॥ ७८५ ॥ ...कःशोषयतिप्रसह्य । रुजाभिरुग्राभिरसाध्य...

ताधिमन्थ... रोगः ॥ ... शोषयित्वानाशयति । अतएवविदेहः ॥

मित्रसंशुष्कमवसीदतिलोचनमिति ॥ ८७२ ॥

हताधिमन्थका लक्षण ॥

चिकित्सा न करनेसे वातज अधिमन्थ बलात्कारपूर्व्वक नेत्रको सुखाकर नष्ट करदेताहै इसमें बहुत पीडाहोती है यह असाध्य है ॥ ८७२ ॥ अथ वातपर्य्यायमाह ॥

वारंवारञ्चपर्येतिभ्रुवौनेत्रेचमारुतः । रुजाश्चविविधास्तीव्राःसज्ञेयोवातपर्ययः ॥ पर्येतिपर्यायेणयातिकदाचिद्भ्रुवौकदाचिन्नेत्रे ॥ ८७३ ॥

वातपर्य्यायका लक्षण ॥

कुपितवायु वारंवार कभीभृकुटियोंमें तथा कभी नेत्रोंमें क्रमसेजाकर तीव्रपीडा उत्पन्नकरताहै ८७३ ॥

अथ शुष्काक्षिपाकमाह ॥

यत्कूणितंदारुणरूक्षवर्त्मसन्दह्यतेचाविलदर्शनंयत् । सुदारुणंयत्प्रतिबोधनेचशुष्काक्षिपाकोपहतंतदक्षि ॥ कूणितंसङ्कोचितंमुद्रितमितियावत्।दारुणरूक्षवर्त्मदारुणंविकृतंरूक्षंचवर्त्मयस्यतत् ॥ इदमक्ष्णोविशेषणंसन्दह्यतेसदाहंभवति आविलदर्शनं आविलस्यअनघस्यदर्शनंयेनतत्। तत्प्रतिबोधने। उद्घाट्यसुदारुणमतिशयेनविकृतम् ८७४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...तोवातका लक्षण ॥

...क पीछे की नस तथा अन्य ...

... है उसे अन्यतोवात कहतेहैं ॥ ८७५ ॥ ... वायु जो

...म्लाध्युषितमाह ॥

...यन्तंसर्वमक्षिप्रपच्यते । सदाहशो... ॥ ८८४

...भोजनात् (तथाचसुश्रुतः) ...

बहुत खटाई खाने से बीचमें धुरे ... चसक्षमीत्क ...

...पकजाताहै उसे अम्लाध्युषित कहतेहैं ॥ ८७६ ॥ ...न्ति ... गिनतिक

अथ शिरोत्पात...

...वेदनावापिसवेदनावायस्याक्षिराज्योहिभवन्तिताम्राः । मुहुर्विरज्यन्तिचयाःसमन्ता द्व्याधिःशिरोत्पातइतिप्रदिष्टः॥अक्षिराज्यः अक्षिशिराः विरज्यन्तिविकृतवर्णाभवन्ति॥८७७

शिरोत्पात का लक्षण ॥

पीडा सहित अथवा पीडा रहित नेत्रकी शिरा ताम्रवर्ण होयँ और वारंवार विकृत वर्ण होजायँ उस रोगको शिरोत्पात कहतेहैं ॥ ८७७ ॥ अथ शिराहर्षमाह ॥

मोहाच्छिरोत्पातउपेक्षितस्तुजायेतरोगःसशिराप्रहर्षः । ताम्राक्षितास्रावयतिप्रगाढं तथानशक्नोत्यभिवीक्षितुञ्च ॥ ८७८ ॥

शिराहर्ष का लक्षण ॥

अज्ञान से शिरोत्पातकी चिकित्सा न करनेपर शिराप्रहर्ष रोग उत्पन्न होताहै इसमें नेत्र ताम्रवर्ण होतेहैं बहुत आंसू बहते हैं और देखनेकी शक्ति नहीं रहती है ॥ ८७८ ॥

अथ नेत्रस्यसमतालक्षणमाह ॥

उदीर्णवेदनंनेत्रंरागदोषैसमन्वितम् । घर्षनिस्तोदशूलाश्रुयुक्तमामान्वितंविदुः ॥ उदीर्णवेदनंउद्धटवेदनंघर्षः करकटिकाएतल्लक्षणानिधानार्थमञ्जनादिनिषेधार्थञ्चोक्तं ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...रोग में त्याज्यहैं ॥ ८७९ ॥

अथ नेत्रस्यनिरामता...

...श्रुप्रशान्तता । प्रसन्नवर्ण...

...मस्तनेत्रजारोगाः ॥ ८८० ॥

...आमरहित नेत्रका लक्षण ॥

मन्दवे... (सरम्भ ... थोडी पीडा ... आंसुओंका न निकलना और स्वच्छ वर्णता यह लक्षणहैं ...

...सिप्रहारात् । ... माह ॥

...यतेऽनेना...

...वात् ॥ ८८५ ॥ ...ताः प्रोक्षणोत्सादनलेपनादीनुपा-
प्रयुक्तान्ने ... पुत्सादनमुद्वर्त्तनम् । मलोष्मसङ्घट्टनपीडनाद्यै-
दूषयन्तेनयनानिदुष्टाः । भजेत्सदादृष्टिहितानितस्मात्दुपानदभ्यङ्गजलधावनानि ...
लन्धूल्यादि । मलादिभिःदुष्टाःताःशिराःनयनानिदूषयन्तेइत्यन्वयः ॥ चक्षुष्याःशाल...
मुद्गायवाःमांसंतुजाङ्गलम् । पक्षिमांसंविशेषेणवास्तूकंतण्डुलीयकम्॥ पटोलकर्कोटककार
वेल्लफलानिसर्पिःपरिपाचितानि । तथैववार्ताकफलंनवीनमक्ष्णोर्हितःस्वादुरथापिति
क्तः ॥ कट्वम्लगुरुतीक्ष्णोष्णमाषनिष्पावमैथुनम् । मद्यवल्लूरपिण्याकमत्स्यशाकविरू
ढजम् ॥ विदाहीन्यन्नपानानिनहितान्यक्षिरोगिणे ॥ ८८१ ॥

नेत्ररोगोंकी चिकित्सा ॥

पैरोंसे मस्तकपर्य्यन्त दो स्थूल शिरा स्थितहैं यही शिरा प्रायः परिषेक उबटन तथा लेप आदिक जो कुछ पैरोंमें कियेजातेहैं उनको नेत्रों में प्राप्त करतीहैं धूलि आदिक मल ऊष्मा रगड़ तथा दबने आदिसे दूषित शिरा नेत्रोंको दूषित करतीहैं इसलिये जूता पहरना पैरों में तैलादि मलना और पैरोंका धोना सदैव हितकारीहै शालिधान्य, मूंग, यव जांगलमांस, पक्षियों का मांस, बथुआ, चौराई, परवल, खिकसा, करेला, घीके पदार्थ, नवीन बैंगन और मधुर तथा तिक्तरस यह सब नेत्रों को हितहैं कटु तथा अम्लरस भारी, तीक्ष्ण तथा उष्ण वस्तु उर्द, लोबिया, स्त्रीप्रसंग, मद्य, शुष्कमांस, खली, मछली, शाक, अंकुरित अन्न और विदाही अन्नपान यह सब नेत्ररोगों में अहितहैं ॥ ८८१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

[illegible] तिमिरा[illegible] पटलेच । इति [illegible]

[illegible] र्णानि त्रि[illegible] कर्पूरसो[illegible] श्वेत गदापुरना, हलदी, [illegible]

[illegible] सकी विधि ॥ [illegible] सबको [illegible]

[illegible] धारा ओंसे संपूर्ण नत्रमें चार अंगु[illegible]

[illegible] तिज तथा रक्तज में रोपणलेक [illegible] और [illegible]

[illegible] लेपःकाय[illegible] हिये इसकी मात्रा आगे कहेंगे [illegible]

[illegible] तुर्भिस्तैस्तुरोपणे । तैस्त्रिभि[illegible] प्रसाद

[illegible] गुर्वक्षरोच्चार[illegible] वधैः ॥

[illegible] लेके । सेकस्तुदिवसेकार्य्योरात्रौचा[illegible] निकेगदे ॥ ८८४ ॥

[illegible] कहनेमें जितना समय लगताहै उतनी [illegible] हिये रोपण सेकमें चारसौ और लेखन सेकमें तीनसौ वाक्य [illegible] तक लगाना चुटकी बजाना अथवा गुरु अक्षर उच्चार[illegible] ताही समय हां एक वाक्य का समझना चाहि[illegible] जाने पर त्रिमें भी करे ॥ ८८४ ॥

[illegible] यथा । एरण्डदलमूलत्वक्शृतमात्रंतयोर्हित[illegible] ष्णनेत्रयो[illegible] वाताभिष्यन्द शनम् । पथ्याक्षामलखाखसवल्कलकल्केनसूक्ष्मवस्त्रेण कृत्वापोटलिकांतामहिफेनोत्थ द्रवेणयुक्ताम् ॥ निदधीतलोचनेस्यात्सर्वाभिष्यन्दसंक्षयःशीघ्रं योगोऽयमृषिभिरुक्तो जगदुपकारायकारुणिकैः ॥ भुक्तापाणितलंघृष्ट्वाचक्षुषोर्यदिदीयते । अचिरेणैवतद्वारि तिमिराणिव्यपोहति ॥ स्नानंकृष्णतिलैश्चापिचक्षुष्यमनिलापहम् । आमलैःसततंस्ना नंपरंदृष्टिबलावहम् ॥ त्रिफलायाःकषायस्तु धावनान्नेत्ररोगजित् । कवलान्मुखरोगघ्नः पानतःकामलापहः ॥ ८८५ ॥

अरंडकी जड़ पत्ती तथा छालके काढ़ेसे कुछ गरम २ नेत्रोंमें तरारा देनेसे वाताभिष्यन्दका नाश होताहै हड़, बहेड़ा, आमला और पोस्त इन सबको पीसकर सूक्ष्म वस्त्रमें पोटली बांधे फिर अफीम के पानीके साथ उस पोटरीको नेत्रोंमें लगावे इससे सब प्रकारके अभिष्यन्दों का नाश होताहै भो- जनके उपरान्त हथेलियों को घिसकर नेत्रों में लगावे हथेलियों में लगाहुआ जल शीघ्रही तिमिर को नाशकरताहै काले तिलोंको जलमें मिलाकर स्नान करनेसे नेत्रोंको हित होताहै और वायुका नाश होताहै आमलोंको जलमें मिलाकर स्नान करनेसे दृष्टि बलकी वृद्धि होती है त्रिफला के काढ़े से नेत्रोंको धोने से नेत्ररोगका नाश होताहै इसको मुखमें रखने से मुखरोग और पीने से कामला का नाश होताहै ॥ ८८५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथाश्च्योतने विधिः ॥

। आश्च्योतन की विधि ॥

आश्च्योतनक क्वाथ, दूध, स्नेह अथवा अन्य ... श्च्योतनमें ८ बूंद रोपण में ... और स्नेह में ... ये शीत ... श्च्योतन और उष्ण नेत्रमें शीतल आश्च्योतन देना निश्चय है वातज नेत्र ... तक्त तथा स्निग्ध पित्तज में मधुर तथा शीतल ... देना चाहिये सब प्रकारके आश्च्योतनों के उष्ण ... आश्च्योत ... समय तक ... में औषध धारण करनी नहीं उचितहै क्योंकि इससे अधिक ... आश्च्योतन ...

तद्यथा ... शिग्रुभिः। क्वाथआश्च्योतनेकोष्णोवाताभिष्य न्दनाशनः ... सिप्रहारतः ... वे ... यतेऽनेनो ... ॥ ८८७ ॥

आश्च्योतन ... ॥ ७८५ ॥ ... इनके काढ़े के द्वारा कुछ गरम ... को नष्ट करताहै ॥ ८८७ ॥ ... त्रिफले के काढ़ेका आश्च्योतन सब अभिष्यन्द ...

अथ पिण्डीविधिः ॥

युक्तभेषजकल्कस्यपिण्डीकवलमात्रया । वस्त्रखंडेनसंबद्धाभिष्यन्दव्रणनाशिनी स्निग्धोष्णापिण्डिकावातेपित्तेसाशीतलामता । रूक्षोष्णाश्लेष्मणिप्रोक्ताविधिरुक्ताबुधै रियम् ॥ ८८८ ॥

पिंडी की विधि ॥

पिसीहुई युक्त औषधियों की आठमाशे भरकी पिंडियाको कपड़े में रखकर बांधने से अभिष्यन्द और व्रणों का नाश होताहै वातज नेत्ररोगमें स्निग्ध तथा उष्ण पिंडी पित्तज में शीतल और कफज में रूखी तथा उष्ण पिंडी बांधनी चाहिये ॥ ८८८ ॥

तद्यथा। एरण्डपत्रमूलत्वंनिर्मितावातनाशिनी । धात्रीविरचितापित्तेशिग्रुपत्रकृता कफे॥ निम्बपत्रकृतापिण्डीपित्तश्लेष्महरीभवेत् । शुण्ठीनिम्बदलैःपिण्डीसुखोष्णास्वल्प सैंधवा ॥ धार्यानेत्रेऽनिलेकफेशोथकण्डूव्यथाहरी । त्रिफलापिण्डिकानेत्रेवातपित्तक फापहा ॥ पथ्याक्षामलखावसवल्कलकल्कोहिफेनजलयुक्तः ॥ तेनविरचितापिण्डीशम यतिसकलानभिष्यन्दान् ॥ ८८९ ॥

अरण्डकी पत्ती जड़ तथा छाल के द्वारा बनीहुई पिंडी वायुको नाश करतीहै आमलेकी पिंडी पित्त में सहँजन के पत्तोंकी पिंडी कफमें और नींबके पत्तोंकी पिंडी पित्त तथा कफमें हितहै सोंठ तथा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

[illegible] मिल [illegible] ाई हुई [illegible] गरम [illegible] ात कफ [illegible] शो

[illegible] तम [illegible] निमि [illegible] पटलेच । इति [illegible] उपन

[illegible] णानि त्रि [illegible] कर्पूरसो [illegible] श्वेत गदापूरना, हल्दी, ला [illegible]

[illegible] लेपः [illegible] ॥ [illegible] सबको [illegible]

[illegible] योक्तो यावत् [illegible]

[illegible] ॥ ८९० ॥

[illegible] लक की विधि ॥

[illegible] रोमों को छोड़कर लेप करनेको बिड़ालक कहते हैं इ [illegible] मुखके लेप [illegible] हैं जैसे चौथाई अंगुल मुखका लेप सामान्य, तिहाई अंगुल म- [illegible] होताहै यह लेप जबतक सूख न जाय तबतक रखना चाहिये क्योंकि [illegible] जाताहै और त्वचाको दूषित करताहै ॥ ८९० ॥

[illegible] था । यष्टीगैरिकसिन्धूत्थ दार्वीताक्ष्यैः [illegible] र्वनेत्राम [illegible] पहः (ताक्ष्यैरसाञ्जनम्) रसाञ्जनेन [illegible] लेपः पृथ [illegible] द्राविश्वैर्वा [illegible] ानागरगैरिकैः ॥ ८९१ ॥

मुलहठी, गेरू, सैंधानोन, दारुहल्दी तथा रसौत इ [illegible] लेप [illegible] सब नेत्ररोगोंका नाश होताहै रसौतके द्वारा [illegible] बच हल्दी [illegible] सोंठके द्वारा वा सोंठ तथा हल्दी के द्वारा नेत्रोंपर लेपकर ॥ ८९१ ॥

अथ तर्पणविधिः ॥

वातातपरजोहीने वेश्मन्युत्तानशायिनः । आधारौमाषचूर्णेन क्लिन्नेनपरिमण्डलौ ॥ स समौदृढावसन्धानौ कर्त्तव्यौनेत्रकोशयोः । पूरयेद्घृतमण्डेन विलीनेनसुखोदकैः ॥ पू र्णिषाशतधौतेन क्षीरजेनघृतेनवा । निमग्नान्यक्षिपक्ष्माणि यावत्स्युस्तावदेवहि ॥ यद्रूक्षं रयेन्मीलितेनेत्रे ततउन्मीलयेच्छनैः । भिषग्भिरेषकथितः पुराणैस्तर्पणोविधिः ॥ तिमि परिशुष्कञ्चनेत्रंकुटिलमाविलम् । शीर्णपक्ष्मशिरोत्पातकृच्छ्रोन्मीलनसंयुतम् ॥ तंने राजुर्नशुष्काद्यैरभिष्यन्दाधिमन्थकैः । शुष्काक्षिपाकशोथाभ्यां युतंपवनपर्ययैः ॥ तंने त्रंतर्पयेत्सम्यक् नेत्ररोगविशारदः ॥ ८९२ ॥

तर्पण की विधि ॥

वायु धूप तथा धूलरहित स्थानमें रोगीको उताना सुलावै फिर नेत्रमण्डलों पर उर्दके मलेहुए आटेसे सम तथा दृढ सन्धिवाले दो मण्डलाकार आधार बनावे और उन मण्डलों में गरम जलके द्वारा दिवले हुए घृतयुक्त मांड़को सौबार धोयेहुए घृतको अथवा दूधसे निकाले हुए घृतको बरौनियों के डबजाने तक नेत्रोंको बन्द करवाके भरे फिर धीरे २ नेत्र खुलवावे यह प्राचीन वैद्यों ने तर्पण की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विधि क [illegible] रूक्ष, परिशुष्क [illegible] आविल, शीतचक्षु तथा कुटिल नेत्र और [illegible] रोग [illegible] वात [illegible]

तिमि [illegible]

नेत्र [illegible] शुष्कन्न प्रभृ [illegible] क्लीन पलो

[illegible] तर्पण [illegible] व या

तर्प [illegible]

[illegible] गतर [illegible] क्षे [illegible]

[illegible] मपानेन [illegible] रेचयेत् ॥ एकाहंवात्र्य

[illegible] पिपज्ञ [illegible] तर्पणतृप्तलिंगानिनेत्रस्यै [illegible] येत् ॥ सुखस्वप्नावबोधत्व

वैशद्यंदृष्टिपाटव [illegible] निर्वृतिर्व्याधिशान्तिश्चक्रियालाघवमेवच [illegible] क्रियालाघवंनेत्रस्य

क्रियायांनिमेष [illegible] लघुताम् । गुर्वाविलमतिस्निग्धमश्रुकण्डूपदेहवत् ॥ ज्ञेयंतोद

तंनेत्रमतितर्पितम [illegible] देशेत् । अस्रावशोफरोगाढ्यमुपदेहसमाकुलम् ॥ रूक्षमस्राविप

षं नेत्रंस्याद्धीनतर्पितम् । अनयोर्दोषबाहुल्यात् प्रयत्नेनचिकित्सिते ॥ रूक्षस्निग्धोष्ण

राभ्यामनयोःस्यात्प्रतिक्रिया । अनयोःअतितर्पितहीनतर्पितयोः ॥ दु [illegible]

षुचिता [illegible] गत्यु [illegible] त्यु [illegible] रुक्षेण तर्पणंनप्रशस्यते॥ संभ्रमोऽत्रभयम् ८६३॥

[illegible] प्रहारात् [illegible] तथा [illegible] में ५०० वाक्य कफजरोगमें ६०० वाक्य

[illegible] थ तथा वातरोग में हजार वाक्य प

धूम्रपान करे ॥ ७८५ ॥ [illegible] कालेकर जो की पिट्ठीसे नेत्रोंको शुद्धकरे इसके उपरान्त

[illegible] दिन अथवा ५. दिन तक तर्पण करे तर्पण के

होजानेपर यह लक्षण होतेहैं यथा अच्छे प्रकारसे निद्रा नेत्रोंकी निर्मलता दृष्टिकी समर्थता [illegible]

नाश और पलकके खोलने मूंदने में शीघ्रता तर्पण के अधिक होजानेमें नेत्रभारी मैले अत्यन्त स्निग्ध

अश्रु तथा खुजली युक्त मैलसे भरेहुए और कर्कराहट तथा सूई गडनेकीसी पीडायुक्त होतेहैं तर्पणके

हीन होनेमें नेत्र रूखे मैले कर्कश अश्रुरहित शोथ तथा रोग युक्त और मैलसे युक्त होतेहैं अति

तर्पण और हीनतर्पण में दोषके अधिक होजाने से अतितर्पण में रूक्षक्रिया और हीनतर्पण में स्नि-

ग्धक्रिया करनी चाहिये बदरीवाले दिनमें बहुत उष्ण तथा शीतल समयमें चिन्तामें क्रोधमें और

नेत्ररोगके उपद्रवों के शान्त न होनेमें तर्पण हितकारी नहीं है ॥ ८६३ ॥

अथ पुटपाकविधिः ॥

द्वैबिल्वेस्निग्धमांसस्य परंद्रव्यपलंमतम् । द्रवस्यकुडवोन्मानं सर्वमेकत्रपेषयेत् ॥

तदेकत्रसमालोड्य पत्रैःसुपरिवेष्टितम् । पुटपाकविधानेन तत्पक्त्वातद्रसंबुधः ॥ तर्पणो

क्तेनविधिना यथावद्विनियोजयेत् । दृष्टिमध्येनिषेक्तव्यः नित्यमुक्तानशायिनः ॥ तेजांस्य

निलमाकाशमातपंभास्करस्यच । नक्षेततर्पितेनेत्रे यस्यवापुटपाकवान् ॥ ८६४ ॥

पुटपाककी विधि ॥

स्निग्ध मांस दोपल, अन्य औषध एक पल, द्रवपदार्थ ४ पल इन सबको एकमें पीसकर और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

[illegible] टिक [illegible] पुटपा[illegible]की विधिसे पत्तोंमें औषटके पुटपाक करे फिर उस रस[illegible] ऊपर कही
[illegible] ॥ ८८ [illegible] अधिक अनन्तर [illegible] ॥ [illegible] छोडे [illegible] उपर कही
[illegible] ॥ [illegible] मिकूर्णा [illegible] ॥ [illegible] तेहैं तर्पण
[illegible] दितुम [illegible] निमि [illegible] पत्त्र [illegible] पटलेच । इति न [illegible]
[illegible] त्तद [illegible] ॥ [illegible] रस चूर्णानि त्रिधा [illegible] धाने [illegible] कर्पूरसो [illegible] श्वेत गदापूरना, हल्दी, [illegible]
स्युर्यथोत्तरम् ॥ स्नेहनं [illegible] पणञ्चापलेखनंतथा ॥ [illegible] सबको [illegible]
स्नेहनंमतम् । तत्र त्रि [illegible] पृथगितितत्वटिकारसचूर्णरूपपृथ [illegible] त्यक [illegible] स्नेहनंरो
पणलेखनंचेति । कषायतिक्तरस [illegible] सस्नेहंरोपणंस्मृतम् ॥ [illegible] क्षारतिक्ताम्लरसै
लेख [illegible] पच्यते । हरेणुमात्रांकुर्वीत वटींतीक्ष्णाञ्जनेभिषक् ॥ प्रमा [illegible] द्विगुणंतु
मृदौ [illegible] । रसक्रियातूत्तमास्यात् त्रिविडंगमितामता ॥ मध्यमाद्विविडंगासा हीनात्वेक
विडंगिका [illegible] शलाकास्नेहनेचूर्णे चतस्रःप्राहुरञ्जने ॥ [illegible] पणेतासुतिस्रःस्युस्तेउभेलेखने
[illegible] ःकुड्मिताश्लक्ष्णा शलाकाष्टांगुलोन्मिता [illegible] धातुजावास्यात्कला
यपरिमण्डला । अग्रेकलायवत्परिवर्त्तुला ॥ [illegible] स्नेहनेस्मृता
ताम्रलोहाश्मसञ्जाता शलाकालेखनेमता ॥ [illegible] ताबुधैः ८९५
[illegible] चसप्तमीत्वस्य [illegible]

दोषके परिपाक होजाने पर यथायोग्य अंजन [illegible] जातीहै उसे अंजन कहतेहैं गोली रस तथा चूर्ण यह तीन प्रकारका [illegible] ताहै यह उत्तरोत्तर हीन गुणहैं अंजन शलाका अथवा अंगुलीके द्वारा लगाया जाताहै यह तीनों अंजन, स्नेहन, रोपण और लेखनभेद से तीन २ प्रकारकेहैं मधुर औषध तथा स्नेहके द्वारा बनाहुआ अंजन स्नेहन, कषाय तथा तिक्त औषधि तथा स्नेह के द्वारा बनाहुआ अंजन रोपण और तिक्त तथा खट्टी औषधि और क्षारके द्वारा बनाहुआ अंजन लेखन कहलाताहै तीक्ष्ण अंजन में हरेणु (संभालूके बीज) के समान गोली मध्यम अंजनमें १॥ हरेणु के बराबर गोली और कोमल अंजनमें २ हरेणुके समान गोली बनानी चाहिये रसक्रिया में उत्तममात्रा ३ बायबिडंगके समान मध्यममात्रा दो बायबिडंगके समान और हीनमात्रा १ बायबिडंगके समान करनी चाहिये स्नेहन चूर्णकी चार सलाई रोपण चूर्णकी ३ सलाई और लेखन चूर्णकी २ सलाई लगानी चाहिये किनारोंपर सुकडीहुई आठ अंगुलकी लम्बी चिकनी और मटरके समान गोल पत्थर अथवा धातुकी सलाई होनीचाहिये स्नेहन अंजनमें सोने अथवा चांदी की शलाका और लेखन अंजनमें तांबे लोहे अथवा पत्थरकी शलाका उचितहै रोपणअंजनमें कोमलताके कारण अंगुलीही श्रेष्ठहै ॥ ८९५ ॥

अथाञ्जनेकेवलमपिशलाकाविशेषमाह ॥

त्रिफलाभृङ्गशुण्ठीनांरसैःशुद्धश्चसर्पिषा । गोमूत्रमध्वजाक्षीरैःसिक्तोनागःप्रतापितः । तच्छलाकाहरत्येवसकलान्नेत्रजान्गदान् । दृष्टिप्रसादनीशलाका ॥ ८९६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...में केवल शलाका विशेष का वर्णन ...

त्रिफला ... अंजन ... तथा सोंठकी ... ढा, घी ... शलाका ... इनसबमें ... को टिघले ... शलाका ... त। वर्षास्वन ... वस ... लकोन ... एवं ... लेप ... दतेभी ... नुवज्ज ... अंजो ...

कृष्णमण्डल ... अमर में अंजन लगाना चाहिये हे... त तथा शिशिरऋतु में मध्याह्नके समयमें ग्रीष्म ... था शरदृऋतु में पूर्वाह्ण अथवा अपराह्णके स... य और वर्षाका... मेघरहित तथा बहुत उ... त समयमें और वसन्तमें सदै... अंजन लगानाचाहिये प्रातःकाल और सायंकालहीमें अंजन लगाना चाहिये सदैव नहीं थकेहुए रोयेहुए भीत मद्य पियेहुए नवीन ज्वर तथा अजीर्णयुक्त और मलमूत्रादिके वेगको रोकनेवाले पुरुषको अंजन नहीं हितकारी है॥ ८९७॥

अथ तत्र वटिकास्नेहनी यथा॥

पथ्याक्षधात्रीबीजानि ... णानिच। पिष्ट्वाम्बुनावटींकुर्य्यादञ्जना... सुकम्॥ नेत्रस्रावंहरत्य... ८

... प्रहा... वटी॥

हडके ... दोहरेणु ... म ३ भाग इनको पानीमें पीसकर ... ॥ ७८५ ॥ ... पीडाका नाशहोताहै॥ ८९८॥

... गी॥

रसाञ्जनंहरिद्रेद्वेमालतीनिम्बपल्लवाः। गोशकृद्रससंयुक्तावटीनक्तान्ध्यनाशिनी॥ एतस्याश्चाञ्जनेमात्राप्रोक्तासार्द्धहरेणुका॥ ८९९॥

रोपणीवटी॥

रसौंत, हल्दी, दारुहल्दी, चमेलीके फूल और नींबकी पत्ती इनसबको गोबरकेरसमें पीसकर १ हरेणुकेसमान गोली बनावे इससे रतौंधीका नाशहोताहै॥ ८९९॥

अथ लेखनी॥

शङ्खनाभिर्विभीतस्यमज्जापथ्यामनःशिला। पिप्पलीमरिचंकुष्ठंवचाचेतिसमांशकम्॥ छागक्षीरेणसंपिष्यवटींकुर्य्याद्यवोन्मिताम्। हरेणुमात्रांसंघृष्यजलेनाञ्जनमाचरेत्॥ तिमिरंमांसवृद्धिञ्चकाचंपटलमर्बुदम्। रात्र्यन्धंवार्षिकंपुष्पंवटीचन्द्रोदयाजयेत्॥ चन्द्रोदयावटी॥ ९००॥

लेखनीवटी॥

शंखकी नाभि, बहेडेकीमींगी, हड, मैनासिल, पीपल, मिर्च, कूट और बच इनसबको बकरीके दूधमें पीसकर जौकी बराबर गोली बनावे फिर १ हरेणुके समान गोली पानीमें घिसकर नेत्रमें लगावे इससे तिमिर, मांसवृद्धि, काच, पटल, अर्बुद, रतौंधी और वर्षभर का पुराना पुष्परोग नष्ट होताहै इति चन्द्रोदयावटी॥ ९००॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पला[illegible]रसैर्बहुशः परिभावितम् । करञ्जबीजंतद्वर्त्तिर्हन्ति पुष्पंविनाशये[illegible] ॥ पुष्प
[illegible] ॥ ८८ [illegible]
[illegible] २८ ॥
[illegible] ताप[illegible] मिकूर्ण[illegible] [illegible] पुष्परागको
[illegible] रीव[illegible] ॥ ३१ ॥
[illegible] तुम[illegible] [illegible] थी अथ रसक्रियास्नेह पटलेच । इति न[illegible]
[illegible] तंकर[illegible] घृष्ट[illegible] मधुनानेत्रमञ्जये[illegible] । इ[illegible] कपूरसो[illegible] श्वेत गदापुरना, हल्दी, ल[illegible] चन्[illegible]

स्नेहनी रसक्रिया ॥ [illegible] त सबको [illegible]

निर्मली को शहदमें घिसकर कुछ कपूरमिलाके अंजन लगानेसे नेत्र स्वच्छ [illegible] ९०२ ॥

अथ रोपणीमाह ॥

रस[illegible]नंस[illegible]रसोजातीपुष्पंमनः[illegible]लाः । समुद्रफेनंलवणंगैरिकं[illegible] तथा ॥ एतत् समांशंमधुनापिष्टंप्रक्लिन्नवर्त्मनि । अञ्जनंक्लेदकण्डूघ्नंपक्ष्मणाञ्चप्ररोहणम् ॥ दुग्धेनकण्डूं क्षौद्रेणनेत्रस्त्रावञ्चसर्पिषा । पुष्पंतैलेनतिमिरंकाञ्जिकेननिशान्धताम् ॥ पुनर्नवाहरत्याशु भा[illegible]रसि[illegible]यथा । बब्बूलदलनिःक्वाथोलेहीभूतस्तदञ्ज[illegible]त ॥ नेत्रस्त्रावोव्रजेच्छोषं मधुयुक्तान्नसंशयः ॥ ९०३ ॥ रोपणीरसक्रिया ॥

रसौंत, राल, चमेलीके फूल, मैनसिल, समुद्रफेन, सेंधा[illegible]को शहद के साथ पीसकर प्रक्लिन्नवर्त्मनाम रोगमें [illegible] चसमभ्मीत्व[illegible] गिरी हुई बरौनियां फिर जमआती हैं पुनर्नव[illegible]ति[illegible]के साथ नेत्रस्त्राव घीकेसाथ पुष्प तेलके साथ तिमि[illegible]क[illegible]देनेसे रतौंधीका नाशहोताहै बबूलकी पत्तीके काढेको अवलेहके समान गाढ[illegible]र शहद मिलायके अंजन लगानेसे निस्सन्देह नेत्रस्त्रावका नाश होताहै ॥ ९०३ ॥

अथ लेखनीमाह ॥

वटक्षीरेणसंयुक्तोमुख्यंकर्पूरजोरजः । क्षिप्रमञ्जनतोहन्तिकुसुमंतुद्विमासिकम् । क्षौद्राश्वलालासंघृष्टैर्मरिचैर्नेत्रमञ्जनात् । अतिनिद्राशमंयातितमःसूर्योदयादिव ॥ ९०४ ॥

लेखनीरसक्रिया ॥

कपूरके चूर्णको बरगदके दूधमें मिलाकर अंजनदेनेसे दोमहीनेका पुराना पुष्परोग शीघ्रही नष्टहोताहै शहद तथा घोडेकी लारकेसाथ मिर्चको घिसकर अंजनदेनेसे बहुत निद्राका नाश होताहै९०४

अथ चूर्णितं स्नेहनं यथा ॥

अग्नितप्तांहिसौवीरंनिषिञ्चेत्त्रिफलारसैः । सप्तवेलंतथास्तन्यैःस्त्रीणांसिक्तंविचूर्णितम् ॥ अञ्जयेत्तेननयनेप्रत्यहञ्चक्षुषोर्हितम् । सर्वानक्षिविकारांस्तुहन्यादेतन्नसंशयः ९०५ ॥

स्नेहनचूर्ण ॥

सुरमेको तपाकर त्रिफलेके रसमें और नारीके दूधमें सात२ बार बुझावे फिर उसे पीसकर अंजन लगानेसे निस्सन्देह सम्पूर्ण नेत्ररोगोंका नाश होताहै ॥ ९०५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ रोपणमाह ॥

...ठायारसकंपिष्ट्वा... मधुइनसे... म-तं
शुण्क... कड़ा,घी... अयन्नयनेते... गूले
... तथा सौंठके... चूर्ण ॥ ... कोनमखो
... शला... यों में भिजोवे फिर... चे जमेहुए चूर्णको छोडकर ... २
... पडीसा होजाय तो उसे त्रिफले के रसमें तीनबार भावना देवे फि
दशांश कपू... अंजन देनेसे संपूर्ण नेत्ररोगों का नाश होताहै ॥ ९०६ ॥

अथ लेखनमाह ॥

...शिलाकाचशङ्खचन्दनसैन्धवैः ...चूर्णितैरञ्जनंप्रोक्तंपुष्पादीन्...
नम् ॥ ९०७ ॥

लेखन चूर्ण ॥

मुरगे के अण्डे का छिलका,मैनसिल,काच,शंख,चन्दन और सेंधानोन इन सबको पीसकर अंजन लगानेसे पुष्पादि रोगोंका नाश होताहै ॥ ९०७ ॥

अथ सामान्याञ्जनानि ॥

मुक्ता... सैन्धवंचैलवालं शुण्ठीकङ्कोलकांस्यत्रपुरजानिशि लाशङ्खनाभि... जमथशिवाक्षीतकंराजवर्त्तं जातीपु ... निम्बार्जुनभद्रमुस्तंसताम्रसारंरस श्रितायेनितान्तमात्रोपाचिता... मधुनातिसूक्ष्मम् ॥ भवन्तिरोगानयना नेन। विधीयतेशान्तिरवश्यमेवमुक्तादिनानेनमहाञ्ज नेन। एलवालमेलवालकनाम्नाप्रसिद्धंकङ्कोलम् ॥ सुगन्धद्रव्यंसुगन्धकोकिलेतिप्रसिद्धा तदलाभे जातीपुष्पंग्राह्यम्। तस्याप्यलाभेलवङ्गंकांस्यंतच्चमारितंग्राह्यम् ॥ त्रिपुरङ्गंतच्च मारितंग्राह्यम्। शिलामनःशिला अभ्रमभ्रकंतच्चमारितंग्राह्यम् ॥ दक्षाण्डत्वक्। दक्षःकुक्कु टःतस्याण्डत्वक्अक्षंबिभीतकफलंक्षतजमत्रकुंकुमम् ॥ शिवाहरीतकीक्षीतकंयष्ठीमधुरा जवर्त्तंरावटीइतिलोके । पूतीकःघोराकरञ्जइतिलोकेअञ्जनंसुरमाइतिलोके ॥ भद्रमुस्तं नागरमुस्तंताम्रसारञ्च मारितंग्राह्यंरसगर्भंरसाञ्जनम्। इतिमुक्तादिमहाञ्जनम्॥ ९०८॥

सामान्य अंजन ॥

मोती,कपूर,काच,अगर,मिर्च,पीपल,सेंधानोन,एलुआ,सोंठ,कंकोल,कांसेकी भस्म,रांगकीभस्म, हल्दी,मैनसिल,शंखकी नाभि,अभ्रक,तूतिया,मुरगे के अण्डे का छिलका,बहेडा,केसर, हड, मुलहठी, रावटी,चमेली के फूल,तुलसी की नवीन मंजरी,विजयसार, करंजुआ, नींब, सुरमा,नागरमोथा,तांबे की भस्म,लोहेकी भस्म और रसौंत इनसब को एक २ माशे लेकर शहद के साथ महीन पीसे इसके अंजन लगाने से बहुत बढेहुए भी नेत्ररोगों का नाश होताहै इति मुक्तादिमहाञ्जन ॥ ९०८ ॥

कणासलवणोषणासहरसाञ्जनासाञ्जना। सरित्पतिकफःसितासितपुनर्नवासम्भवा॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रजन्य... चतुर्थपथ्याशिला । ...रिष्टदलशाव... स्फटिकशङ्खनाभीन्दवः ॥ ...सेत । ...मधुताम्र... ॥ ...पटलपुष्पनाशनात् ॥ ...स्फटि ...कर्पूर... नूतनकुसुमेनूत...पटलंच । इति न... ॥ ६०९ ॥

...सधानोन, मिर्च, रसौत, सुरमा, समुद्रफेन, मिश्री, श्वेत गदापुरना, हल्दी, ... शहद, तूतिया, हड, मैनसिल, नींबकी पत्ती, लोध, फिटकरी, शंखनाभि और ... सबको ... कर गाढे कपडे में छानलेवे और लोहे के पात्रमें तांबेकी मोंगरी से शहद मिलावे ... इसके अंजन से तिमिर और नवीन पटल तथा पुष्प का नाश होताहै इति नयनशोणांजन ॥ ६०९ ॥

हरीतकीवचाकुष्ठंपिप्पलीमरिचानिच । बिभीतकस्यमज्जाचशङ्खनाभिर्मनःशिला ॥ सर्वमेतत्समंकृत्वागव्यक्षीरेणपेषयेत् । नाशयेत्तिमिरंकण्डूपटलान्यर्बुदानिच ॥ अपिन्त्रिवार्षिकंशुक्रमासेनैकेननाशयेत् । अधिकानिचमांसानिरात्र्यावन्ध्यत्वमेवच ॥ चन्द्रोदयावर्तीपुष्पेतिमिरे ॥ ६१० ॥

हड, बच, कूट, पीपल, मिर्च, बहेडेकी मींगी, शंखनाभि और मै... इन सबको गौके दूधमें महीन ... पीसे इसके अंजन से तिमिर, खुजली, पटल, अर्बुद, तीन ... मांस और रतौंधी इन सबका १ महीने में नाश होताहै इति चन्द्रोदयावर्ती ...

रजनीनिम्बपत्राणिपिप्पली... चसमभागास्मृता ॥ अजामूत्रेणसंपिष्यछायायांशोषयेत्ततः... न्तिगोमूत्रेणतुपिष्टिकम् ॥ मधुनापटलंहन्तिनारीक्षीरेणपुष्पकम् । एष चन्द्र... तःस्वयंरुद्रेणनिर्मिता ॥ चन्द्रप्रभावर्त्तिः ॥ ६११ ॥

हल्दी, नींबकी पत्ती, पीपल, मिर्च, बायबिडंग, नागरमोथा और हड इन सबको बकरीके मूत्र में पीस कर गोली बनाके छाया में सुखावे फिर इस गोलीको पानीमें घिसकर लगाने से तिमिर गोमूत्र में लगानेसे पिष्टक शहद के साथ पटल और नारी के दूधके साथ लगाने से पुष्परोग का नाश होता है यह आप चन्द्रमाजीनें कहाहै इति चन्द्रप्रभावर्ति ॥ ६११ ॥

कणाछागयकृन्मध्येपक्वातद्रसपेषिता । अचिराद्धन्तिनक्तान्ध्यंतद्वत्सक्षौद्रमूषणम् ६१२

पीपल अथवा मिर्चको बकरी के गोबर में रखकर पकावे फिर उसे बकरी के गोबर के रस में पीस कर शहद के साथ नेत्रोंमें लगाने से रतौंधी का नाश होता है ॥ ६१२ ॥

त्रिफलायारसंप्रस्थंप्रस्थंभृङ्गरजस्यच । वृषस्यचरसंप्रस्थंशतावर्याश्चतत्समम् ॥ गुडूच्याआमलक्याश्चरसंछागीपयस्तथा । प्रस्थंप्रस्थंसमाहृत्यसर्वैरेभिर्घृतंपचेत् ॥ कल्कःकणासिताद्राक्षात्रिफलानीलमुत्पलम् । मधुकंक्षीरकाकोलीमधुपर्णीनिदिग्धिका ॥ तत्साधुसिद्धंविज्ञायशुभेभाण्डेनिधापयेत् । ऊर्ध्वपानमधःपानंमध्येपानंचशस्यते ॥ यावन्तो नेत्ररोगाःस्युस्तान्पानादपकर्षति । सुरक्तेरक्तदुष्टेचरक्तेवाविस्रुतेतथा ॥ नक्तान्ध्येतिमि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रेकाचेनीलिकापटलार्बुदे अभिष्यन्देऽधिमन्थे चपक्ष्मकोपेसुदारुणे ॥ ... रोगेषु दोषत्रयकृतेष्वपि । परंहितमिदं प्रोक्तंत्रिफलाद्यं ... तम् । भृङ्गराज ... कोल्याऽलाभेऽश्वगन्धा ... काढो, घी ... ॥ ९१३ ॥ ... तथा ... यष्टीमधुतुल्यगुणत्वात् । इति ...

त्रिफला का रस, भंगरे का रस, अडूसेका रस, सतावरका रस, गुर्चकारस, ... आमले ... का दूध इनसबको चौंसठ २ तोले लेकर इन सबके साथ पीपल, मिश्री, दाख, त्रिफला, ... मुलहठी, क्षीरकाकोली, गिलोय और भटकटैया इनसबके कल्क के द्वारा घृतको विधिपूर्वक पाक करके ... पात्रमें ... इसको भोजनसे पहले बीचमें तथा अन्त में पीनेसे दूषित रक्त, रक्तस्राव, रतौंधी, तिमिर, काच, नील, पटल, अर्बुद, अभिष्यन्द, अधिमन्थ और पक्ष्मकोप आदि संपूर्ण नेत्ररोग तथा त्रिदोषज नेत्ररोग नष्ट होते हैं इति त्रिफलादिघृत ॥ ९१३ ॥

शतमेकंहरीतक्याद्विगुणञ्चबिभीतकम् । चतुर्गुणंत्वामलकंवृषमार्कवयोः ... ॥ चतुर्गुणोदकंदत्त्वाशनैर्मृद्वग्निनापचेत् । भागंचतुर्थंसंरक्ष्यक्काथंतमवतारयेत् ॥ शर्करा मधुकंद्राक्षा ... यष्टीनिदग्धि ... काकोलीक्षीरकाकोलीत्रिफलानागकेसरम् ॥ पिप्पली चन्दनंमुस्तंत्रायमाणातथोत्पलम् । घृतप्रस्थंसमंक्षीरंकल्कैरेतैःशनैःपचेत् ॥ हन्यात्तु स तिमिरंकाचं ... तथास्रावंचकण्डूञ्चश्वयथुंचकषायताम् ॥ कलुष त्वंचनेत्रस्यबिन्दुमर्म ... नेत्राकिमुक्तेनसर्वान्नेत्रामयान्हरेत् ॥ यस्यचोपह तादृष्टिःसूर्याग्निभ्यांप्र ... भिःपरमंहितम् ॥ मार्जितंदर्पणं यद्वत्परांनिर्मलतांव्रजेत् । ... निर्मलतामियात् ॥ वारिद्रोणद्वयंचात्रवृ षमार्कवयोःपृथक् । काकोलीयुग्मं ... भेऽश्वगन्धामूलंद्विगुणंग्राह्यम् ॥ इति द्वितीयंत्रि फलाद्यंघृतम् ॥ ९१४ ॥

सौ १०० हर्र २०० बहेड़े ४०० आमले और अडूसा तथा भंगरा समभाग इन सबको चौगुने जल में मिलाकर मंदाग्नि में पाक करे चौथाई बाकी रहजाने पर काढ़े को उतार कर छान लेवे फिर काढ़ेतथा ६४तोले दूधके साथ६४तोले घीको शक्कर, मुलहठी, दाख, महुआ, भटकटैया, काकोली क्षीरकाकोली, त्रिफला, नागकेशर, पीपल, चन्दन, मोथा, त्रायमाणा और उत्पलइनके कल्ककेद्वाराधीरे २ पाककरे इस घृतके सेवन से तिमिर, काच, रतौंधी, शुक्र, स्राव, खुजली सूजन, कषायता, मलिनता, बिन्दु, अर्म तथा पटल आदिक संपूर्ण नेत्ररोग नष्ट होते हैं और सूर्य्य यथा अग्नि के देखने से बि- गड़ीहुई दृष्टि को अत्यन्त हित होताहै जिसप्रकार दर्पण धोनेसे अत्यन्त निर्मल होजाताहै उसी प्रकार इस घीके पीने से भी नेत्र निर्मल होजाते हैं इति द्वितीयत्रिफलादिघृत ॥ ९१४ ॥

वासानिशाऽमृतादार्वीरक्तचन्दनचित्रकैः ।भूनिम्बनिम्बकटुकापटोलत्रिफलाम्बुदैः॥नि शाकलिंगकुटजैःक्काथःसर्वाक्षिरोगहा । वैस्वर्य्यंपीनसंश्वासंकासंनाशयतिध्रुवम् ॥ इति वासकादिक्काथ । इति नेत्ररोगाधिकारः ॥ ९१५ ॥

अडूसा, सोंठ, गिलोय, दारुहल्दी, लालचन्दन, चीता, चिरायता, नींब, कुटकी, परवल, त्रिफला, मोथा,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

हल्दी, इन्द्रजौ [illegible]र कुरैया इन सबका काढ़ा पीने से सम्पूर्ण नेत्ररोग स्वरभंग पीनस श्वास और [illegible] का [illegible] ह नाश होता है इति वासकादिक्काथ इति नेत्ररोगाधिकार समाप्त ॥ ६१५ ॥

[illegible] २८ ॥ [illegible]ंनाम [illegible]संख्याश्चाह ॥

[illegible] ॥ [illegible] क्ष्वेडएव [illegible]कर्ण[illegible] ॥ [illegible]कण्डूकर्णगूथस्तथैवच ॥ प्रति[illegible]चतुर्ष्का विद्रधिर्द्विविधस्तथा । कर्णपाकः पूतिकर्णस्तथैवकर्णार्शश्चतुर्विधः ॥ तथार्बुदं [illegible]व [illegible]फश्चाप्य[illegible]तुर्विधः । एतेकर्णगतारोगाअष्टाविंशतिरीरिताः ॥ ६१६ ॥

कर्णरोगका अधिकार । कर्णरोगों के नाम और संख्या ॥

कर्णशूल, कर्णनाद, बधिरता, क्ष्वेड, कर्णस्राव, कर्णकंडू, कर्णगूथ, प्रतिनाह, [illegible]कर्ण [illegible] की विद्रधि, कर्णपाक, पूतिकर्ण, चारप्रकारके कर्णार्श, सात प्रकार के कर्णार्बुद और चा[illegible]के कर्णशोथ यह अट्ठाईस २८ कर्णरोग हैं [illegible]६१६ ॥

अथ तेषुकर्णशूलस्यसम्प्राप्तिपूर्वकंलक्षणमाह ॥

समीरणःश्रोत्रगतोन्यथाचरन्समन्ततःशूलमतीवकर्णयोः । करोतिदोषैश्चयथास्व[illegible]मावृतःसकर्णशूलःकथितोदुराचरः ॥ अन्यथाचरन्सम्प्र[illegible]तःप्रतिलोमञ्च[illegible]दोषैःपि[illegible]कफरक्तैःरक्तरुधिरापिरुजादिकर्तृत्वेनदोषसाम्याद्दोषत्वमत्र [illegible]यास्वंआत्मीयनिदा[illegible]तैः अथवायथास्वमिति । शूलविशेषणंदुराचरःदुरुपचार[illegible]

कर्णशूलके संप्राप्तिपूर्वक [illegible]

कानमें प्राप्त वायु उलटी चलतीहु[illegible] तथा रुधिरकेद्वारा आच्छा-दित होकर कानमें सब ओरसे अत्यन्त [illegible]तथस्तये[illegible]को कर्णशूल कहते हैं ६१७॥

अथ मूर्च्छाद्युपद्रवयो[illegible]शू[illegible]श्चाह ॥

मूर्च्छादाहोज्वरःकासःश्वासोऽथवमथुस्तथा । [illegible]पद्रवाःकर्णशूलेभवन्त्यंतेमरिष्यतः ६१८ ॥

कर्णशूलके असाध्य लक्षण ॥

मूर्च्छा, दाह, ज्वर, खासी, श्वास तथा छर्दि इन उपद्रवोंसे युक्त कर्णशूलवाला नहीं जीताहै ६१८॥

अथ कर्णनादस्यलक्षणमाह ॥

कर्णस्रोतस्थितेवातेशृणोतिविविधान्स्वनान् । भेरीमृदंगशङ्खानांकर्णनादःसउच्यते ॥ भेरीमृदंगशङ्खादीनामित्युपलक्षणंतेनभृंगादिकृतशब्दानांग्रहणम् ॥ ६१९ ॥

कर्णनादका लक्षण ॥

वायुको कानके स्रोत में स्थित होनेपर भेरी, मृदंग, शंख तथा भौंरों आदिके नाना प्रकारके शब्द सुनाईदेते हैं इसे कर्णनाद कहतेहैं ६१६ ॥ अथ बाधिर्य्यमाह ॥

यदाशब्दवहोवायुःस्रोतआवृत्यातिष्ठति।शुद्धःश्लेष्मान्वितोवापिबाधिर्य्यंतेनजायते ६२०

बधिरताका लक्षण ॥

जब शब्दकी लेचलनेवाली वायु अकेली अथवा कफसहित होकर कानके स्रोतको रोककर स्थित होतीहै तब सुनाई नहीं देता इसे बधिरता कहतेहैं ॥ ६२० ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथासाध्यबाधिर्य्यमाह ॥

बाधिर्य्यंबालवृद्धोत्थंचिरोत्थ[illegible]र्जयेत् । ९२१ ॥ [illegible]

बालक तथा वृद्धोंकी बधिरता [illegible] बधिरता [illegible] होती [illegible]

अथ क्ष्वेडमाह ॥

वायुःपित्तादिभिर्युक्तोवेणुघोषसमंस्वनम् । करोतिकर्णयोःक्ष्वेड कर्णक्ष्वेडः[illegible] [illegible]र्थेऽयनक्तिवेणुघोषसमंस्वनमितियत उक्तम् । क्ष्वेडनंवेणुघोषवदिति । ननुक [illegible]क्ष्वेडयोःकोभेदः उच्यतेकर्णनादःकेवलेनवातेनजायतेतत्रनानाशब्दांश्चशृणो [illegible]पित्तादियुक्तेनवातेनजन्यतेतत्रनियमेनवेणुघोषमेवशृणोतीतिभेदः ९२२

क्ष्वेडका लक्षण ॥

[illegible] वायु कानोंमें बंशीके समान शब्दको उत्पन्न करती है इसे कर्णक्ष्वेड कहते हैं कर्ण-[illegible] उत्पन्न होताहै तथा उसमें नानाप्रकारके शब्द होतेहैं और कर्णक्ष्वेड पित्तादियुक्त [illegible] तथा इसमें केवल बंशीहीकासा शब्द होताहै यही इन दोनोंमें भेद है ॥ ९२२ ॥

अथ कर्णस्रावमाह ॥

[illegible]शिरोऽभिघातात्[illegible]तोजलेप्रपातादथवापिविद्रधेः । स्रवेद्धिपूयंश्रवणोऽनि[illegible]लार्दितःसकर्णसंस्राव[illegible] ॥ पयइत्युपलक्षणम् । जलंरसश्चस्रवेत् श्रवणशब्दो पुंलिङ्गेऽप्यस्ति ॥ ९२३ ॥

[illegible]

[illegible] नेसे जलमें [illegible] वा विद्रधिके पकनेसे कुपित वायुके द्वारा पीडितकान से पीप जल तथा रस बहता है इसे कर्णस्राव कहते हैं ॥ ९२३ ॥

अथ कर्णकण्डूमाह ॥

मारुतःकफसंयुक्तःकर्णेकण्डूंकरोतिहि ॥ ९२४ ॥

कर्णकंडूका लक्षण ॥

कफयुक्त वायु कानमें खुजलीको उत्पन्न करती है इसे कर्णकण्डू कहते हैं ॥ ९२४ ॥

अथ कर्णगूथमाह ॥

पित्तोष्मशोषितःश्लेष्माकुरुतेकर्णगूथकम् । कर्णेगूथयतेयस्मात्सकर्णगूथोऽयाधिः ९२५

कर्णगूथका लक्षण ॥

पित्तकी ऊष्मासे सूखाहुआ कफ कानमें मैलको उत्पन्न करताहै इसे कर्णगूथ कहते हैं ॥ ९२५ ॥

अथ प्रतिनाहमाह ॥

सकर्णगूथोद्रवतांयदागतोविलायितोघ्राणमुखंप्रपद्यते । तदासकर्णप्रतिनाहसंज्ञितो भवेद्विकारःशिरसोऽर्द्धभेदकृत् ॥ घ्राणञ्चमुखञ्चघ्राणमुखमेकत्वंद्वन्द्वेशिरसोऽर्द्धभेदकृत् अर्द्धावभेदकाख्यशिरोरोगकृत् ॥ ९२६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रतिनाहका लक्षण ॥

...पतला होकर मुख तथा नासिकाके द्वारा जो निकलनेलगताहै तब इसे कर्णप्रति-
...कहते हैं इ... २६ ॥

अथ ...कृमिकर्णमाह ॥

...दातुम... न्त्यथवातुज तवःसृजन्त्यपत्यान्यथवापिमक्षिकाः । तदञ्जनत्वाच्छ्रवणो
...भिषग्भिराद्यैः कृमिकर्णकोगदः ॥ तदञ्जनत्वात्कृमिलक्षणत्वात् । श्रवणकृमि
कर्णकोप्यदोनिरुध्यतइत्यन्वयः ॥ ६२७ ॥

कृमिकर्णका लक्षण ॥

जब कान में कीडे उत्पन्न होवें अथवा मक्खियां बच्चे पैदा करें इस रोग को ...
से कृमिकर्ण कहते हैं ॥ ६२७ ॥

अथ पतंगादिषुकर्णप्रविष्टेषुलक्षणमाह ॥

पतंगाःशतपद्यश्चकर्णस्रोतःप्रविश्यहि । अरतिंव्याकुलत्वञ्चभृशं...
कर्णोनिस्तुद्यतेयस्यतथाफरफरायते । कीटेचलतिरुक्तीव्रानिस्पन्दे...
न्दःनिश्चलः ॥ ६२८ ॥

पतंगादिकोंके कानमें घुसजानेका...

कान में पतंग अथवा खनखजूरा घुसजानेसे बेचैनी, ...ने की...
पीडा और फरफराहट होती है कीडेके ...डके रुकज...
होती हैं ॥ ६२८ ॥

अथ ...

क्षताभिघातप्रभवस्तुविद्रधिर्भवेत्तथादोषकृ...
वेत्प्रतोदधूमायनदाहचोषवान् ॥ क्षतप्रभवोऽभि...
दैक्यम् । अस्रमास्रावमित्यर्थः ॥ ६२६ ॥

दोप्रकारकी कर्णविद्रधिके लक्षण ॥

घाव तथा चोट लगनेसे अथवा कुपितदोषोंके द्वारा कानमें विद्रधि होती है ... कीसी
पीडा, दाह, ताप और रक्त पीत तथा अरुणवर्ण स्राव होताहै इसे कर्णविद्रधि कहतेहैं ॥ ६२६ ॥

अथ कर्णपाकमाह ॥

कर्णपाकस्तुपित्तेनकोथविक्लेदकृद्भवेत् । कोथःपूतिभावः । विक्लेदःआर्द्रता ॥ ६३० ॥

कर्णपाकका लक्षण ॥

पित्तके द्वारा कान में दुर्गंधि और गीलापन होने को कर्णपाक कहते हैं ॥ ६३० ॥

अथ पूतिकर्णमाह ॥

कर्णविद्रधिपाकेनकर्णेवावारिपूरणात् । पूयंस्रवतियःपूतिःसज्ञेयःपूतिकर्णकः ॥ कर्ण
स्रावाद्भेदार्थमाह पूतीतिनियमेनपूतिर्यथास्यादेवंस्रवति ॥ ६३१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूतिकर्ण का लक्षण ॥

कर्णविद्रधि के पकजाने से अथवा कान में जल भरजाने से दुर्गंधित पीप ... लगती इसे पूतिकर्ण कहते हैं ॥ ६३१ ॥

अथ कर्णगतानांशोथार्बुदार्शसांलक्षणमाह।

कर्णशोथार्बुदार्शांसिजानीयादुक्तलक्षणैः।कर्णशोथाश्चचत्वारोवातपित्तकफरक्तज एवमर्शोऽपिचतुर्विधम्।अन्येषांशोथानामर्शसाञ्चार्शःसम्भवः।आधारप्रभावात्अर्बुदं ...पित्तकफरक्तमांसमेदःशिराजम्।एतेकर्णरोगाअष्टाविंशतिःसुश्रुतोक्ताः ६३२॥

कान में हुए शोथ अर्बुद और अर्श के लक्षण ।

...शोथ अर्बुद और अर्शके लक्षण इन्हीं रोगों के पहले कहेहुए लक्षणों के अनुसार ...र्णशोथ, वातज, पित्तज, कफज और रक्तज इनभेदोंसे चारप्रकारकेहैं और कर्णार्श ...प्रकार का है कर्णार्बुद, वातज, पित्तज, कफज, रक्तज, मांसज, मेदोज और ...सात प्रकारकाहै यह २८ सुश्रुत के कहे हुए कर्णरोगहोते हैं ॥ ६३२ ॥

...कर्णरोगचतुष्टयम्। वातपित्तकफसन्निपातकृतमाह ॥ ६३३ ॥

...कहे हुए वातज, पित्तज, कफज और सन्निपातज इन भेदों से चारप्रकार के कर्ण-...६३३ ॥ ... तत्रवातजमाह ॥

...तःसकर्णेरुक्...स्रावस्तनुश्चाश्रवणञ्चवातात् ॥ ६३४ ॥

... सूखना, कुछ स्राव और बधिरता ...

से पीप जल तथा रस बहता है इस कर्णस्... जमाह ॥

अथ ...तिपीतश्रवणञ्चपित्तात् ॥ ६३५ ॥

मारुतःकफसंयुक्त... र्णरोगके लक्षण ॥

...,फटना और दुर्गंधित तथा पीतवर्ण स्राव होताहै ॥ ६३५ ॥

कफयुक्त वा...

अथ कफजमाह ॥

वैश्रुत्यकण्डूस्थिरशोथशुक्लःस्निग्धास्रुतिःस्वल्परुजःकफाच्च । वैश्रुत्यमन्यथाश्रवणम् ॥ ६३६ ॥

कफजकर्णरोगके लक्षण ॥

कफज कर्णरोगमें औरका और सुनाईदेना खुजली,स्थिर,शोथ,श्वेतवर्ण,स्निग्ध,स्राव और स्वल्प पीडा यह लक्षण होते हैं ॥ ६३६ ॥ अथ सन्निपातिकमाह ॥

सर्वाणिरूपाणिचसान्निपातेस्रावश्चतत्राधिकदोषवर्णः ॥ ६३७ ॥

सन्निपातजकर्णरोगका लक्षण ॥

सन्निपातज कर्णरोगमें वातादि तीनोंदोषोंके लक्षण होतेहैं और जो दोष अधिक होताहै उसीके वर्णयुक्त स्राव होताहै ॥ ६३७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर्णपाल्याः कर्णावयवत्वात्तद्विकारमप्यत्रैवाह तत्रसनिदानपरिपोटकलक्षणमाह ॥ सौकुमार्या [illegible] महद्भिर्वातिनर्घिते । कर्णेशोथोभवेत्पाल्याः सरुजःपरिपोटवान् ॥ कृष्णा [illegible] तापः । परिपोटवानुमनाक्विदारुणवान् ॥ ६३८ ॥

[illegible] के वर्णहोने के कारण कर्णपालीके रोगोंका यहीं पर वर्णन करतेहैं ॥

परिपोटक का निदानपूर्वक लक्षण ॥

क्रम [illegible] न बढाकर एकाएकी बढाने से कोमलता के कारण कर्णपालीमें कृष्ण तथा अरुणवर्ण युक्त, कठोर, पीडायुक्त और कुछ फटाहुआ शोथ उत्पन्न होताहै इसे परिपोटक कहते हैं यह [illegible] होता है ॥ ६३८ ॥

अथोत्पातमाह ॥

गुर्वाभरणसंयोगात्ताडनाद्घर्षणादपि । शोथःपाल्यांभवेच्छ्यावोदा[illegible] तः ॥ रक्तोवारक्तपित्ताभ्यामुत्पातः [illegible]दः स्मृतः ॥ ६३९ ॥

उत्पात का लक्षण ॥

भारी आभूषण के पहरने से ताडनसे अथवा रगडने से कर्णपाली में दाह [illegible] इसके और धुमैला अथवा रक्तवर्णवाला शोथ उत्पन्न होताहै इस रोग [illegible] उत्पात [illegible] से होता है ॥ ६३९ ॥

अथोन्मन्थकमाह ॥

कर्णबलाद्वर्द्धयतःपाल्यांवायुःप्रकुप्यति । कफंसंगृ[illegible] [illegible]न्मन्थकःसकण्डूकोविकारःकफवातजः । अवेदनमी[illegible] ६४० ॥

बलपूर्वक कर्णपालि (कानकी [illegible] कठोर तथा खुजली युक्त शोथ को उत्पन्न [illegible]

अथ दुःखव[illegible]

संवर्द्धमानेदुर्विद्धेकण्डूदाहरुजान्वितः । [illegible] संवर्द्धमानेदुर्विद्धेकर्णइतिशेषः ॥ ६४१ ॥

दुःखवर्धन का लक्षण ॥

बढने के समय कानके अच्छेप्रकार न छिदनेपर खुजली, दाह, पीडा तथा [illegible] उत्पन्न होताहै इसे दुःखवर्धन कहतेहैं यह त्रिदोषज है ॥ ६४१ ॥

अथ परिलेहिनमाह ॥

कफासृक्कृमयःक्रुद्धाःसर्षपाभाविसारिणः।कुर्वन्तिपीडिकांपाल्यांकण्डूदाहसमन्विताः॥ कफासृक्कृमिसम्भूतःसविसर्पन्नितस्ततः । लिह्यात्सशष्कुलींपालींपरिलेहीचसस्मृ तः ॥ सपीडिकात्मकःपरिलेहिसंज्ञोगदःलिह्यान्निर्मांसीकुर्य्यात् ॥ ६४२ ॥

परिलेही का लक्षण ॥

कफ, रुधिर तथा कृमि कुपित होकर कर्णपालीमें सरसों के समान तथा फैलनेवाली और पीली तथा दाहयुक्त पिडिका उत्पन्न करतेहैं यह रोग संपूर्ण कान में फैलजाताहै और कर्णशष्कुली तथा पाली मांसरहित होजाती है इस रोगको परिलेही कहतेहैं ॥ ६४२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ कर्णरोगचिकित्सामाह॥

कर्णशूलेकर्णनादेबाधिर्य्येक्ष्वेडएवच। चतुर्ष्वपिच रोगेषु सामान्यं [illegible] स्ततम्॥ शृङ्गवेरंसहमधुसैन्धवंतैलमेवच। कदुष्णंकर्णयोर्धार्य्यं [illegible] लशुनार्द्रक [illegible] णांवारुण्यामूलकस्यच। कदल्याःस्वरसःश्रेष्ठःकदुष्णःकर्णपूरणे॥ [illegible] ९४३॥

कर्णरोगकी चिकित्सा॥

कर्णशूल, कर्णनाद, बधिरता और क्ष्वेडरोग की चिकित्सा सामान्य है अदरकका रस, शहद [illegible] और तेल इनसबको कुछ गरम करके कानमें भरने से पीडा का नाश होता है लहसन, अ[illegible] न, वरुणा की जड और केले के रस को कुछ गरम करके कान में भरना श्रेष्ठहै॥ ९४३॥

[illegible] तेकर्णे [illegible] म्लपिष्टान्सतैललवणान्वितान्। संनिदध्यात्सुधाकाण्डेकोष्टिके [illegible] [illegible] कल्कमात्स्विन्नंपीडयेदारसागमात्। सुखोष्णन्तद्रसंकर्णेप्रक्षिपेच्छूलशान्त [illegible] णामपीतमाज्येनलिप्तंशिखियोगतस्तम्। आपीड्यतस्य [illegible] सुखोष्ण [illegible] हिशूलम्॥ तीव्रशूलातुरेकर्णेसशब्देक्लेदवाहिनि। छागमूत्रंप्रशंस [illegible] तम्॥ [illegible] श्वेतार्कमूलेनमन्देऽग्नौविधिनाकृतम्। हरेदाशुत्रिदो [illegible] पूरणात्॥ [illegible] सैन्धवशुण्ठीभिस्तैलंसर्षपसम्भवम्। विपक्वंहरतेऽनश्य [illegible] शिरोड [illegible] त्॥ [illegible] नादेबाधिर्य्येक्ष्वेडएवच। पूरणंकटुतैलेनहितंवातघ्न [illegible] लाहितःसकर्ण [illegible] रिक्षारज [illegible] कल्केनसाधितंतैलम्। अपहरतिकर्णनादंबाधिर्य्यं [illegible]

[illegible] अथ [illegible] मारुतःकफसंयुक्तः [illegible]

[illegible] पानीसे जलमें [illegible] धान मिलाकर थूहरकी लकडी को कुरेद [illegible] कुछ गरम २ इस रसको कानमें छोडने से [illegible] ले पीप जल तथा रस बहता है इस कर्णस्राव [illegible] घी चुपडकर अग्निमें सेके फिर उनका अर्क निकालकर [illegible] होताहै अत्यन्त पीडा शब्द तथा क्लेदयुक्त कानमें सैंधा- [illegible] श्वेत आककीजडके द्वारा मन्दाग्निमें पाककियेहुए तेल को [illegible] कर्णशूल शीघ्रही नष्ट होताहै हींग, सैंधानोन और सोंठ के द्वारा पाक कियेहुए कफयुक्त वायु कानमें भरनेसे निस्सन्देह कर्णशूल नष्ट होताहै कर्णशूल, कर्णनाद, बधिरता और क्ष्वेडमें कडुआ तेल भरना और वातघ्न औषध श्रेष्ठ है लटजीरेके खारकाजल और लटजीरेका खार इनके द्वारा पाककियेहुए तेलके भरनेसे कर्णनाद और बधिरताका नाश होता है॥ ९४४॥

गवांमूत्रेणबिल्वानिपिष्ट्वातैलंविपाचयेत्। सजलञ्चसदुग्धञ्चतद्बाधिर्य्यहरंपरम्॥ क्षीरमत्रापिग्राह्यम्। इति बिल्वतैलम्॥ ९४५॥

गोमूत्रमें पीसेहुए बेलोंके द्वारा जल और दूधके साथ पाककिया हुआ तेल बधिरताका अत्यन्त नाशकहै इति बिल्वतैल॥ ९४५॥

कर्णस्रावेपूतिकर्णेतथैवकृमिकर्णके। सामान्यंकर्म्मकुर्वीतयोगान्वैशेषिकानपि॥ स्वर्जिकाचूर्णसंयुक्तंबीजपूररसंक्षिपेत्। कर्णस्रावरुजोदाहास्तेननश्यन्तिनसंशयः॥ आम्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जम्बूप्रवालानिमधुकस्यवटस्य च । एभिस्तुसाधितंतैलंपूतिकर्णगदंहरेत् ॥ जातीपत्र रसैस्तैलंविपक्वं ... । ... अनंनार्य्याःक्षीरेणक्षौद्रसंयुतम् ॥ प्रशस्यतेचि ... ॥

कर्णस्राव,पूतिकर्ण और कृमिकर्णरोगमें सामान्य अथवा विशेष चिकित्साभी करें बिजौरा नींबू के रसमें सज्जी मिलाकर कानमें भरनेसे कर्णस्राव पीड़ा तथा दाहका निस्सन्देह नाश होताहै आंब, जामन,महुआ तथा बर्गद की कोंपलके द्वारा पाक कियाहुआ तेल पूतिकर्णको नष्ट करता है चमेली की पत्तियोंके द्वारा पाक कियाहुआ तेल पूतिकर्णका नाशकहै नारीके दूधके साथ पीसे हुए द्राधिः ॥ शहद मिलाकर कानमें भरनेसे पुराने कर्णस्राव और पूतिकर्णका नाश होताहै ॥ ९४६ ॥

कुष्ठहिंगुवचादारुशताह्वाविश्वसैन्धवैः पूतिकर्णापहंतैलंवस्तमूत्रेणसा... कुष्ठादितैलम् ॥ ९४७ ॥

कूट,हींग,बच,देवदारु,सौंफ,सोंठ तथा सेंधेनोन के द्वारा बकरेके मूत्रके साथ ... पूतिकर्ण को नष्ट करता है इति कुष्ठादि तैल ॥ ९४७ ॥

शम्बूकस्यतुमांसेनकटुतैलंविपाचयेत्। तस्यपूरणमात्रेण कर्णनाड... नगन्धकशिलारंजनीभवेनमुष्टंयशकेनकटुतैलपलाष्टकंतु ... तरपत्ररसतु ... नाडींजयेच्चिरभवामपिकर्णजाताम् ॥ मुष्टिःपलम् ॥ ९४८ ...

घोंघे के मांसके द्वारा पाककियाहुआ कडुआ तेल कानमें ... को ... मैनसिल और हल्दी इनके चारतोले ... र को ३२ ... पत्तोंके रसके द्वारा पाककरे इस तेल के ... नष्ट होताहै ॥ ९४८ ॥

कृमिकर्णविनाशायकृमिघ्नींकारयेत्क्रियाम् । ... पूरणंहरितालेनगव्यमूत्रयुतेनच । धूपनेकर्णदौ... कर्णशोथानांतथाकर्णार्शसामपि । कर्णार्बुदानांकुर्वी... हान् ...

कृमिकर्ण के नाशके लिये कृमिनाशक चिकित्सा करे वार्ताक धूम और क... ...रत है गोमूत्र में हरताल मिलाकर कानमें भरनेसे कृमिकर्णका नाश होताहै पूतिकर्ण में ... की धूप देनीचाहिये कर्णशोथ कर्णार्श और कर्णार्बुदकी चिकित्सा शोथ अर्श और अर्बुदके समानकरे ॥ ९४९ ॥

अथ कर्णपालीविकाराणांचिकित्सामाह ॥

पालीसंशोषणेकुर्याद्वातकर्णरुजःक्रियाम्।स्वेदयेयत्नतस्तांशचस्विन्नांसंवर्द्धयेत्ति लैः ९५०

कर्णपाली रोगोंकी चिकित्सा ॥

कर्णपाली के सुखाने में वातज कर्णरोग की चिकित्सा करे और स्वेददेवे फिर तिलों के द्वारा बढ़ावे ॥ ९५० ॥

शतावरीवाजिगन्धापयस्यैरण्डबीजकैः । तैलंविपक्वंसक्षीरंपालींसंवर्द्धयेत्सुखम् ॥ पयस्यात्रक्षीरकाकोली । शतावरीतैलम् ॥ ९५१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सतावर,असगन्ध, क्षीरकाकोली और अरण्डके बीज इनके द्वारा दूधके साथ पाककियाहुआ तेल सुखपूर्व्वक कर्णपालीको बढ़ाताहै इति शतावरीतैल ॥ ... ॥

जीवनीयस्यकल्केनतैलंदुग्धेनपाचयेत् । ... शीतलेपैर्जलौकाभिरुत्पातंसमुपाचरेत् । हलिनीसुरसाभ्यांचगोधाकङ्कवसा... तैलश्चपक्वमभ्यंगादुन्मन्थंनाशयेद्ध्रुवम् । दुःखवर्द्धनकंसिक्ताजम्ब्वाम्रबिल्वपत्रजैः ॥ ...तैलेनसुस्निग्धंतच्चूर्णैश्चावधूलयेत् । बहुशोगोमयैस्तप्तैःस्वेदितंपरिलेहितम् ॥ ...पमालिम्पेदजामूत्रेणकल्कितैः । इति कर्णरोगाधिकारः ॥ ९५२ ॥

...के कल्क और दूधके द्वारा पाककियेहुए तेलको रुधिर निकलवाकर परिषेक में ... और जोंकोंके द्वारा उत्पातकी चिकित्साकरे करिहारी और तुलसी के कल्क के ...की चरबीके साथ पाककियेहुए तेलके लगानेसे उन्मन्थका निस्सन्देह नाश ... जामन,आम तथा बेलकेपत्तोंके क्वाथके द्वारा परिषेक करके तेल लगावे और ... तथा ...के पत्तोंके चूर्णसे अधूराकरे परिलेही में गरम गोबरके द्वारा स्वे... ...हुए कपूर... लगावे इति कर्णरोगाधिकार समाप्त ॥ ९५२ ॥

... नासारोगा...हारस्तत्रनासारोगाणांनामानिसंख्याञ्चाह ॥

...शिरोऽभि...तः प्रो...स्ततःपरम् । नासापाकोऽत्रगणितःपूयशोणितमेवच ॥ ...दीप्तिःसकर्ण...प्रतीना... नासाशोषःप्रतिश्यायाःपञ्चसप्तार्बुदानिच ॥ चत्वा... ...सायांचतुस्त्रिंशद्गदाःस्मृताः ९५३

... जलमें ... वी ... ...केनाम और संख्या ॥ ले पीप जल तथा रस बहता है इस कर्णस्... ...भ्रंशथु,दीप्ति,प्रतीनाह,परिस्राव,नासाशोष,पांचप्रकार ...र चार रक्तपित्त यह चौंतीस नासिकाके रोगहैं ॥९५३॥

अथ ...

मारुतःकफसंयुक्त...नसस्य लक्षणमाह ॥

...नासाप्रक्लेदमायातितुधूप्यतेच । नवेत्तियोगन्धरसांश्चजन्तु जुष्टंव्यवस्येत्तंपानसेन ॥ आनह्यतेश्वासशोषितकफेनबध्यते अवरुध्यतइतियावत् प्रक्लेदमार्द्रतांगच्छतीतियावत् । धूप्यतेसंताप्यतेगन्धरसान्गन्धान्सुरभीन्असुरभींश्च नवेत्तिनासायाम् आनद्धत्वंतत्रहेतुःतथारसान्मधुरादींश्चनवेत्ति । नासारोगारम्भक दोषेणरसनायाअपिदुष्टत्वात् व्यवस्येत् जानीयात्अपीनसपीनसौद्वावपिशब्दौस्तःअत्राप्यो स्तमानद्धादित्वादिवेतिसूत्रेणविकल्पेनाकारलोपात् ॥ अनुक्तसंग्रहार्थमाह तंचानिल श्लेष्मभवंविकारंब्रूयात्प्रतिश्यायसमानलिंगम् । तंविकारंपीनसंप्रतिश्यायसमानलिंगं वातश्लैष्मिकप्रतिश्यायतुल्यलक्षणम् ॥ ९५४

पीनसका लक्षण ॥

जिस रोगमें नासिका श्वास के द्वारा सूखेहुए कफसे रुकजाय सूखी गीलीहोय तथा संतापयुक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होय और गन्ध तथा रसोंका ज्ञान न रहै उस रोगको पीनस अथवा अपीनस कहतेहैं इसरोगमें वात कफज प्रतिश्याय [illegible] लक्षण होतेहैं ॥ ६५४ ॥

[illegible] पूतिनस्यमाह ॥

दो[illegible] विदग्ध[illegible]गलताल्लुमूलेसन्दूषितोयस्यसमीरणस्तु। निरेतिपूतिर्मुखनासिकाभ्यां तंपूतिनस्यंप्रवदन्तिरोगम् ॥ दोषैःपित्तकफरक्तैः अत्र रक्तस्यापिदोषत्वंदोषसाहचर्यात् विदग्धैः [illegible]ः सन्दूषितः पूतिभावंनीतः पूतिनस्यंनासायांभवोनस्यःवायुःपूतिर्नस्योयस्मिन् पूतिनस्यस्तंम् ॥ ६५५ ॥ [illegible]द्वाधिः ॥

पूतिनस्यका लक्षण ॥

दूषित पित्त कफ और रक्तके द्वारा गले और तालुकी वायु दुर्गन्धित होकर मु[illegible] से निकलती है इस रोगको पूतिनस्य क[illegible] हैं ॥ ६५५ ॥

अथ नासापाकमाह ॥

घ्राणाश्रितंपित्तमरूंषि कुर्य्याद्यस्मिन्विकारेबलवांश्चपाकः [illegible] वस्येद्विक्लेदकोथावथवापियत्र ॥ विक्लेदआर्द्रताकोथःपूति[illegible] ॥ ६५[illegible]

नासापाकका लक्षण ॥

जिसरोगमें नासिका स्थित पित्त बहुतसे व्रणोंको उत्पन्न करे [illegible] (पानी) निकले उसे नासापाक कहते हैं ॥ ६५६ ॥

दोषैर्विदग्धैरथवापिजन्तोर्लला[illegible] न्तंपूयरक्तंप्रवदन्तिरोगम् ॥ ६५७ ॥

पूयरक्तका लक्ष[illegible]

दूषित दोषोंके द्वारा अथवा माथेमें चोट लगनेके द्वा[illegible] रक्त कहते हैं ॥ ९५७ ॥

अथ क्षवथुमाह[illegible]

घ्राणाश्रितेमर्मणिसम्प्रदुष्टोयस्यानिलोनासिकयानिरेति। क[illegible] शब्दस्तंरोगमाहुःक्षवथुंगदज्ञाः॥घ्राणाश्रितेमर्मणिशृङ्गाटकेदोषजक्षवथुमाह ॥ ६५८

क्षवथुका लक्षण

नासिकामें स्थित शृंगाटक नाम मर्म में दूषित वायु नासिका के द्वारा कफके साथ अत्यन्त शब्द के साथ वारंवार निकले इसे क्षवथु (छींक) कहते हैं ॥ ६५८ ॥

अथागन्तुजंक्षवथुमाह ॥

तीक्ष्णोपयोगादतिजिघ्रतोवाभावान्कटूनर्कनिरीक्षणाद्वा। सूत्रादिभिर्वातरुणास्थिमर्मण्युद्धर्षितेऽन्यःक्षवथुर्निरेति ॥ तीक्ष्णोपयोगाद्राजिकादिभक्षणात्अर्कनिरीक्षणात्सूर्यदर्शनात् तेनकफविलयनात्तरुणास्थिनासावंशास्थिमर्मणिशृंगाटकेऽनेकत्वम् अन्यः आगन्तुजः ॥ ६५९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आगन्तुज छींक लक्षण ॥

राई आदि तीक्ष्ण तथा कटु वस्तुओं के खाने से अथवा सूंघने से सूर्य ... से अथवा सूत्रादि के द्वारा नासिका में स्थित शृंगाटक नाम मर्म के रगड़ने ... ती है ॥

अथ भ्रंशथुमाह ॥

प्रभ्रश्यते नासिकयातु यस्य सान्द्रो विदग्धो लवणः कफस्तु । प्राक्सञ्चितो मूर्द्धनि पित्ततप्तं भ्रंशथुं व्याधिमुदाहरन्ति ॥ ९६० ॥

भ्रंशथुका लक्षण ॥

... के पित्तसे तप्त होने पर गाढ़ा दूषित तथा लवण रसयुक्त पूर्वसंचित कफ नासिका से ... को भ्रंशथु कहते हैं ॥ ९६० ॥

अथ दीप्तिमाह ॥

... न्विते तु विनिःसरेद्धूमइवेह वायुः । नासा प्रदीप्तेव च यस्य जन्तोर्व्याधिं ... न्ति ॥ प्रदीप्तेव प्रज्वलितेव ॥ ९६१ ॥

दीप्तिका लक्षण ॥

... और जलती हुई सी नासिका से धुएं के समान वायु निकले इसे दीप्तिरोग ...

अथ प्रतिनाहमाह ॥

... मार्गन्त ... मुदाहरेत्तम् ॥ ९६२ ॥

... प्रतीनाह कहते हैं ॥ ९६२ ॥

... से पीप जल तथा रस बहता है इस ... माह ॥

अथ ... षः स्रवेत्स्रावमुदाहरेत्तम् ॥ ९६३ ॥

मारुतः कफसंयुक्त ... वका लक्षण ॥

... और गाढ़ा अथवा पतला दोष निकले इसे स्राव कहते हैं ९६३॥

कफयुक्त वा ...

अथ नासाशोषमाह ॥

घ्राणाश्रिते श्लेष्मणि मारुतेन पित्तेन गाढं परिशोषिते च । कृच्छ्राच्छ्वसित्यूर्ध्वमधश्च जन्तुर्यस्मिन्स नासापरिशोष उक्तः ॥ ९६४ ॥

नासाशोषका लक्षण ॥

नासिकामें स्थित कफके वायु और पित्तके द्वारा सूखजानेपर बहुत कष्टसे श्वास आवे जाय उसे नासाशोष कहते हैं ॥ ९६४ ॥

अथ प्रतिश्यायमाह ॥

तस्य निदानं द्विविधमेकं सद्योजनकं तत्प्रबलत्वेनापेक्षते, न क्रमं यदुक्तम् । नकेवलं चयं प्राप्य दोषाः कुप्यन्ति देहिनाम् ॥ अन्यदापि हि कुप्यन्ति हेतुबाहुल्यतोरणात् ॥ हेतु बाहुल्यतोरणाद्धेतूनां बाहुल्येन त्वराकरणात् अपरश्चयत्क्रमेण जनकचयादिक्रमो यथा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निदानात्सञ्चयःसञ्चयात्प्रकोपःप्रकोपात्प्रसरः प्रसरात्स्थानसंश्रयः ततोऽव्यक्तिःततो भेदइति ॥ ६६ ॥

प्रतिश्यायका वर्णन ॥

प्रतिश्याय के ... है एक सद्योजनक यह दोषों की प्रबलतासे क्रमकी अपेक्षा नहीं करता है ... लगया है कि प्राणियों के दोष केवल इकट्ठे होकरही नहीं कुपित होते किन्तु कारणों की अधिकता से शीघ्रता के कारण क्रमके विनाभी कुपित होते हैं और दूसरा चयादि क्रमसे उत्पन्न करनेवाला चयादि क्रम यहहै जैसे कारणों से दोषोंका इकट्ठा होना इकट्ठे होनेसे कोप, कोपसे फैलना, फैलने से स्थानका ग्रहणकरना, उससे फिर व्यक्तहोना और व्यक्तसे अलग २ होना ॥ ... ॥

अथ तत्रप्रतिश्यायस्यसद्योजनकनिदानपूर्विकांसंप्राप्तिमाह ॥ ... द्रोधिः ॥

सन्धारणाजीर्णरजोऽतिभाष्यक्रोधर्त्तुवैषम्यशिरोऽभितापैः । संजाग... शीतावश्यायकैर्मैथुनबाष्पसेकैः ॥ संस्त्यानदोषैःशिरसिप्रवृद्धोवायुः... तु । सन्धारणंमूत्रपुरीषधारणम् । रजोधूलिःतच्चनासाप्रविष्टंहेतुः... विपरीताचरणंशिरोऽभितापःशिरसोऽभितापोयेनधूपादिनासःअवश्याये इसक... सेकोरोदनंसंस्त्यानदोषैःशिरसिसंहतकफे ॥ ६६ ॥ ...

प्रतिश्याय के शीघ्रही उत्पन्न करनेवाले कारणों समेत सम्प्रा...

मल मूत्रादि वेगों के रोकने से अजीर्ण से नासिका में धूलि ... नेसे ब... इत्यादि ऋतुचर्या के विपरीत आचरणों से धूप आदि के द्वारा शिरके ... ने ... में सोने से शीतल जल से पालेसे ब... कफके ... वायु प्रतिश्यायको उत्पन्न करती है ॥ ...

अथ चयादिक्रम...

चयङ्गतामूर्द्धनिमारुतादयःपृथक्समस्ताः... प्रकोपनैस्ततःप्रतिश्यायकराभवन्ति ॥ ६६७ ॥ ...

प्रतिश्याय के चयादि क्रम से उत्पन्न करने... हाल...

अनेक कोपकारी आहारादि व्यवहार के सेवन से वातादि तीनों दोष ... और रुधिर शिरमें इकट्ठे होकर और कुपित होकर प्रतिश्यायको उत्पन्न करते हैं ॥ ९६७ ॥

अथ पूर्वरूपमाह ॥

क्षयप्रवृत्तिःशिरसोऽभिपूर्णतास्तम्भोऽङ्गमर्दःपरिहृष्टरोमता । उपद्रवाश्चाप्यपरेपृथग्विधान्नृणांप्रतिश्यायपुरःसराःस्मृताः ॥ शिरसोऽभिपूर्णताशिरसोभारेणेवव्याप्तिःअपरेपृथग्विधाःघ्राणधूमायनतालुविदरणनासामुखस्रावादयोविदेहोक्ताबोद्धव्याः ॥ ९६८ ॥

प्रतिश्यायके पूर्वरूप ॥

प्रतिश्याय होनेसे पहले छींक आना, शिरका भराहुआ सा मालूम होना, स्तब्धता, शरीरमें पीडा, रोमांच, नासिका से धुआं सा निकलना, तालुदाह और नासिका तथा मुख से स्रावहोना इत्यादिक लक्षण होते हैं ॥ ९६८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ वातिकस्यप्रतिश्यायस्यलक्षणमाह ॥

आनद्धापिहितानासातनुस्रावप्रसेकिनी । गलताल्वोष्ठशोषश्च निस्तोदः शङ्खयोस्तथा ॥ भवेत्स्वरोपघातश्च प्रतिश्यायेऽनिलात्मके । आ... हितानपि...ता अतएवतनुस्रावप्रसेकिनी ॥ ९६९ ॥

वातज प्रतिश्याय के लक्षण ॥

वातज प्रतिश्याय में नासिका स्तब्ध खुलीहुई तथा कुछ पतले स्रावसे युक्त होती है ... तालु ... सूखते हैं माथेकी हड्डियों में सूई गडने कीसी पीडा होती है बहुत छींकें ... हैं मुख ...ताहै और स्वरभंग होताहै ॥ ९६९ ॥

अथ पैत्तिकमाह ॥

...कः स्रावोघ्राणात्स्रवतिपैत्तिके । ...ऽतिपाण्डुः सन्तप्तोभवेदुष्णाभिपी... ...मा‍ग्निवमतीवसमानवः । सपा...क ईषत्पीतकः ॥ ९७० ॥

पित्तज प्रतिश्यायके लक्षण ॥

...उष्ण तथा कुछ पीतवर्ण स्राव होताहै रोगी कृश अत्यन्त पांडु ... जल... होताहै और नासिकासे धूमसहित अग्निसी निकलती है ९७० ॥

अथ श्लैष्मिकमाह ॥

...स्रवेद्बहुः । शुक्लावभासः शूनाक्षोभवेद्गुरुशिरानरः ॥ ...

...लताहै रोगीका वर्ण शुक्ल, नेत्र शोथयुक्त, ...से पीप जल तथा रस बहता है इस ...त्यन्त खुजलीयुक्त होतेहैं ॥ ९७१ ॥

अथ ...पातिकमाह ॥

... मारुतः कफसंयुक्त... वर्त्तते । संपक्वोवाप्यपक्वोवा सचसर्वभवः स्मृतः ...नतथापितानिज्ञेयानि त्रिदोषजत्वादयमसाध्यः (अत एवाह कफयुक्त...प्रतिश्यायः सर्वजश्चनासिद्ध्यति ॥ ९७२ ॥

सन्निपातजप्रतिश्याय के लक्षण ॥

जो प्रतिश्याय वारंवार उत्पन्न होकर अकस्मात् निवृत्त होजाय पकाहोय अथवा बेपकाहोय वह सन्निपातज है इसमें तीनों दोषों के लक्षण होते हैं यह असाध्य है इसीसे कहागयाहै कि दूषित और सन्निपातज प्रतिश्याय असाध्यहै ॥ ९७२ ॥

अथ दुष्टप्रतिश्यायलक्षणमाह ॥

प्रक्लिद्यतेमुहुर्नासापुनश्चपरिशुष्यति । पुनरानह्यतेवापिपुनर्विव्रियतेतथा ॥ निःश्वासोवापिदुर्गन्धोनरोगन्धान्नवेत्तिच । एवंदुष्टप्रतिश्यायंजानीयात्कृच्छ्रसाधनम् ॥ आनह्यतेविवद्धाभवति विव्रियते अविवद्धास्यात् क्लेदशोषविवन्धासनैककालंभवन्तिकि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

न्तुयदायदायद्वोषाधिक्यंभवतितदातदातद्दोषकृतःससबोद्धव्यःइतिनविरोधः। कृच्छ्र साधनमसाध्य ॥ ९७३ ॥

दुष्टप्रतिश्यायके लक्षण ॥

दुष्ट प्रतिश्याय में नासिका वारंवार गीलीहोती है सूखतीहै खुलतीहै अथवा रुकजातीहै दुर्गन्धित श्वास आतीहै और गन्धिका ज्ञान नहीं रहताहै यह असाध्यहै ॥ ९७३ ॥

अथ रक्तजमाह ॥

रक्तजेतुप्रतिश्यायेरक्तस्रावःप्रवर्त्तत। पित्तप्रतिश्यायकृतैर्लिङ्गैश्चापिसमन्वितः ... ताम्राक्षश्चभवेज्जन्तुरुरोघातप्रपीडितः। दुर्गन्धोच्छ्वासवक्त्रश्चगन्धानपिनवेत्ति ... घातप्रपीडितःउरोघातेनेवप्रपीडितः ॥ ९७४ ॥

रक्तजप्रतिश्यायके लक्षण ॥

रक्तजप्रतिश्यायमें नासिकासे रुधिर बहताहै नेत्र ताम्रवर्ण होतेहैं उरोघातक ... तथा मुखसे दुर्गन्धि आती है गंधका ज्ञान नहीं रहता और पित्तज प्रतिश्यायके ... इसके ...

अप्रतीकारेणकालान्तरेएवसर्वेप्रतिश्यायाअसाध्या ... याअसाध्याप्रतिकारिणः। दुष्टतांयान्तिकालेनतदासाध्य ॥ ९७५ ॥ ... इति

समयपर चिकित्सा न करनेसे संपूर्ण प्रतिश्याय कालपाकर ...

अथ प्रतिश्यायेषु कृमयोभवन्ति ...

मूर्च्छन्तिकृमयश्चात्रश्वेताःस्निग्धास्तथाणवः ... क्षणम् ॥ अत्रएषुप्रतिश्यायेषुकफ ...

प्रतिश्यायोंमें कृ ...

प्रतिश्यायों में श्वेत स्निग्ध तथा पतले कफज ... के लक्षण होतेहैं ॥ ९७६ ॥

वृद्धाःप्रतिश्यायाअपरानपिविकारान्कुर्वन्तीत्याह ... यनामयान्। शोषाग्निमान्द्यकासांश्चवृद्धाःकुर्वन्तिपीनसाः ॥ घोरा ... इति वचनेऽप्यान्ध्यग्रहणंपुनर्विशेषार्थेअघ्रत्वंनजिघ्रतीत्यघ्रस्तस्यभावोऽघ्रत्वम् ॥ ९७७ ॥

बढ़ेहुये प्रतिश्याय अन्यरोगोंकोभी उत्पन्न करतेहैं जैसे बधिरता, अन्धता, सूंघनेकीशक्तिका न रहना, घोर नेत्ररोग, शोष, मंदाग्नि और खांसी यह सबरोग बढ़ेहुये प्रतिश्यायोंसे होतेहैं ॥ ९७७ ॥

अथ चतुस्त्रिंशत्संख्यापूरणायाह ॥

अर्बुदंसप्तधाशोथाश्चत्वारोऽर्शश्चतुर्विधम्। चतुर्विधंरक्तपित्तमुक्तंघ्राणेऽपितद्विदुः ॥ अर्बुदानिसप्तवातपित्तश्लेष्मसन्निपातरक्तमांसमेदोजानिशोथाश्चत्वारो वातपित्तश्लेष्म सन्निपातजाः अर्शांसिचत्वारिवातपित्तश्लेष्मसन्निपातजानिरक्तपित्तानिचत्वारिवातपित्तश्लेष्मसन्निपातजानिएतानियथोक्तलिङ्गानिघ्राणेऽपिभवन्ति ॥ ९७८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नासिकाके चौंतीसरोगोंकी संख्याके पूर्णकरनेको कहतेहैं ॥

वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, रक्तज, मांसज तथा मेदोज [illegible]ह सात [illegible]रके अर्बुद वात, पित्त, कफ तथा सन्निपातसे हुये चारप्रकारके शोथ वात, पि[illegible] [illegible]सेहुये चार[illegible]र के अर्श और वात, पित्त, कफ तथा सन्निपातसे हुये चारप्रकारके रक्तपि[illegible] [illegible]ग और २ लक्षणोंसे युक्त नासिका में भी होतेहैं ॥ ९७८ ॥

अथ चिकित्साभेदात्पीनसस्यलक्षणमाह ॥

[illegible]शिरोगुरुत्वमरुचिर्नासास्रावस्तनुस्वरः । क्षामःष्ठीवतिचाभीक्ष्णमामपी[illegible]लक्षण [illegible]स्रावःतनुस्वरःक्ष[illegible]मइत्यन्वयः ॥ ९७९ ॥

चिकित्साके भेदसे पीनसका लक्षण ॥

[illegible]त, अरुचि, नासिकाका बहना, स्वरभं[illegible] और वारंवार थूकना यह बे पकी हुई [illegible]९ ॥

पक्वस्य पीनसस्य लक्षणमाह ॥

[illegible]स्वेषुनिमज्जति। स्वरवर्णविशुद्धिश्चपक्वपीनसलक्षणम्॥ [illegible]ङ्गैःशिरोगुरुत्वादिभिर्युक्तः पश्चात्घनःनिविडःअथवा [illegible]भवतिवर्णविशुद्धिःश्लेष्मणःप्रकृतवर्णता ॥ ९८० ॥

पक्वपीनसके लक्षण ॥

[illegible]का नासिकाके छिद्रोंमें लगना स्वर [illegible] पीनसके लक्षणहैं ॥ ९८० ॥

[illegible]माह ॥

[illegible] । मरिचंगुडेनदध्नाभुञ्जीतनरःसुखंलभते ॥ [illegible]एषांचूर्णंकषायंवादद्यादार्द्रकजैरसैः ॥ पीनस [illegible]मारुतःकफसंयुक्तः कफेकासेज्वरेश्वासेचशस्यते ॥ कलिंगहिंगुमरि [illegible]कुष्टाग्रा॥शग्रुजंतुघ्नैरवपीडःप्रशस्यते ॥ पीनसादिषु ॥ ९८१ ॥

नासिकाके रोगोंकी चिकित्सा ॥

संपूर्ण पीनस रोगोंके उत्पन्न होतेही सदैव गुड़ तथा दहीके साथ मिर्चका चूर्ण खानेसे आनन्द होताहै कायफल, पुष्करमूल, काकड़ासिंगी, त्रिकटु, जवासा और कालाजीरा इनके चूर्ण अथवा काढ़ेको अदरकके रसके साथ सेवन करनेसे पीनस, स्वरभंग, तमकश्वास, हलीमक, सन्निपातज तथा कफज खांसी, ज्वर और श्वासका नाशहोताहै इन्द्रजौ, हींग, मिर्च, लाख, तुलसी, कायफल, कूट, बच, सहँजन और बायविडंग इनसबको पीसकर नासलेनेसे पीनस आदिरोग नष्टहोतेहैं ॥ ९८१ ॥

व्योषचित्रकतालीसतिन्तिडीकाम्लवेतसम् । सचव्याजाजितुल्यांशमेलात्वक्पत्र जादिकम् ॥ व्योषादिकमिदंचूर्णंपुराणगुडमिश्रितम् । पीनसश्वासकासघ्नंरुचिस्वरक रंपरम् (व्योषादिवटी) ९८२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रिकटु, चीता, तालीस, इमली, अमलवेत, चव्य तथा कालाजीरा यह सब समभाग और इलायची तथा दाल... इनसबके चूर्ण में पुराना गुड मिलाकर खानेसे पीनस, श्वास, खांसी, ... होताहै इति व्योषादिवटी ॥ ९८२ ॥

व्याघ्रीदन्ती... वचाशिग्रुसुरसाव्योषसिन्धुजैः । सिद्धंतैलंनसिक्षिप्तंपूतिनासागदापह ... व्याघ्रीतैलम् ॥ ९८३ ॥

भटकटैया, जमालगोटे की जड, बच, सहँजन, तुलसी, त्रिकटु, सेंधानोन इनके कल्क के द्वारा पाक किये हुए तेलकी नासलेनेसे पूतिनासा नाम रोगका नाश होताहै इति व्याघ्रीतैल ॥

शिग्रुसिंहीनिकुम्भानां बीजैःसव्योषसैन्धवैः । बिल्वपत्ररसैःसिद्धं तैलंस्यात् ... नुत ... निकुम्भीदन्तीपूतिनस्यनुतनस्यात् । इति शिग्रुतैलम् ॥ ९८४ ॥

सहँजन, भटकटैया, जमालगोटे के ..., त्रिकटु और सेंधानोन इनके ... साथ पाक कियेहुए तेलकी नास लेनेसे पूतिनस्यका नाश होताहै इति ...

घृतगुग्गुलुमिश्रस्यसिक्थकस्यप्रयत्नतः । धूमंक्षयथु... शुंठीकुष्ठकणाबिल्वद्राक्षाकल्ककषायवत् । तैलंपक्कमथाज्यं ...

घी, गूगुल और मोम इनको मिलाकर यत्नपूर्वक धूम लेनेसे ... सोंठ, कूट, पीपल, बेल तथा दाखके कल्क और काढेके द्वारा पा... होताहै इति से छींकका नाश होताहै ॥ ९८५ ॥

नस्यंहितंनिम्बरसाञ्जनाभ्यां ... कान् शंसन्तिभुञ्जीतचमुद्गयूषैः । ... पथ्याः । तीक्ष्णान्धूमान्देवदार्वग्नि... भवति ...

दीप्तिरोगमें नींब तथा रसौंतके द्वारा नास और ... परिषेककरके मूंगके यूषके द्वारा भोजनकरे नासास्राव ... हितकारी नासलेवे और देवदारु तथा चीतेके द्वारा तीक्ष्ण ...

प्रतिश्यायेषुसर्वेषुगृहंवातविवर्जितम् । वस्त्रेणगुरुणा ... गसैन्धवंहिंगुगुग्गुलुःसमनःशिलाः । वचैतच्चूर्णमाघ्रातं प्रतिश्यायंविनाशयेत् ॥ घृततैलसमायुक्तंसक्तुधूमंपिबेन्नरः । सधूमःस्यात्प्रतिश्यायः कासहिक्काहरःपरः ॥ प्रतिश्याये पिबेद्धूमं सर्वगन्धसमायुतम् । चातुर्जातकचूर्णंवा घ्रेयंवाकृष्णजीरकम् ॥ कृष्णजीरकम त्रकलौञ्जी ॥ पुटपक्कंजयापत्रंतैलसैन्धवसंयुतम् । प्रतिश्यायेषुसर्वेषुशीलितंपरमौषधम् ॥ जयाविजयाभंगोतियावत् शीलितंभुक्तम् । पिप्पल्यःशीग्रुबीजानि विडंगमरिचानिच ॥ अवपीडःप्रशस्तोऽयंप्रतिश्यायनिवारणे । शिरसोऽभ्यंजनैःस्वेदैर्नस्यैर्मन्दोष्णभोजनैः ॥ वमनैर्घृतपानैश्च तान्यथास्वमुपाचरेत् ॥ ९८७ ॥

सम्पूर्ण प्रतिश्यायों में वातरहित गृह और भारी वस्त्रसे शिरका लपेटना हितहै बायबिडंग, सेंधानोन, हींग, गूगुल, मैनसिल और बच इनसबके चूर्ण के सूंघने से प्रतिश्यायका नाश होताहै घी और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तैलसे मिलेहुए सत्तुओंका धुआं पीने से प्रतिश्याय, खांसी और हिचकीका नाश हो [illegible] तिश्यायमें सब गन्धोंका धुआं पिये अथवा दालचीनी, इलायची, तेजपात तथा [illegible] या कलौंजी के चूर्णको सूंघे तेल और सेंधानोन समेत भंगको पुटपाककरके [illegible] [illegible] का नाश होताहै पीपल, सहँजने के बीज, बायबिडंग और मिर्च इनसबकी हुलास सूंघ [illegible] प्रतिश्यायका नाश होताहै शिरोभ्यंग, स्वेद, नस्य, अल्प तथा उष्ण भोजन, वमन और घृतपान इनसबके द्वारा दोषों के अनुसार चिकित्साकरे ॥ ६८७ ॥

[illegible] मिघ्नायेक्रमाःप्रोक्तास्तान्वैकृमिषुयोजयेत् । नावनानिकृमिघ्नानि भे[illegible]नि च बु [illegible] रक्तपित्तानिशोथांश्च तथार्शांस्यर्बुदानिच । नासिकायांस्युरेतेषां स्वंस्वंकुर्या तकपाक [illegible] ॥ गृहधूम[illegible]कणादारुक्षारनक्ताक्कसैन्धवैः । सिद्धंशिखरिबीजैश्च तैलंनासा [illegible] [illegible] नासा[illegible]गाधिकारः ॥ ६८८ ॥

[illegible] चिकित्सा करे और कृमि[illegible]शक हुलास तथा औषधदेवे [illegible]कपित्त, [illegible] [illegible] में होयँ तो उन्हीं के अधिकार में कहीहुई चिकित्साकरे गृहधूम, [illegible] सेंधानोन और लटजीरे के बीज इनके द्वारा पाक किया हुआ [illegible] णतासे पी [illegible] रोगाधिकार समाप्त ॥ ६८८ ॥

[illegible] [illegible]गाधिकारस्तत्रमुखस्यस्वरूपमाह ॥

[illegible] [illegible] तालुच । गलोमुखादिसकलंसप्तांगमुखमुच्यते ६८९ ॥

[illegible] [illegible] रोगोंका अधिकार सख[illegible]स्वरूप ॥

[illegible] अंगोंको मिलाकर मुखकहते हैं ॥ ६८९ ॥

[illegible] [illegible] यामाह ॥

[illegible] दन्तेष्वष्टौचजिह्वायां पञ्चस्युर्नवतालुनि ॥

[illegible] । एवंमुखामयाःसर्वेसप्तषष्टिर्मताबुधैः ॥ ६९० ॥

[illegible] रोगोंकी संख्या ॥

इस [illegible] जिह्वामें ५ तालुमें ९ कंठमें १८ और सम्पूर्ण मुखमें ३ [illegible] ६. होतेहैं ॥ ६९० ॥

अथ मुखरोगाणांनिदानान्याह ॥

आनूपपिशितक्षीरदधिमाषादिसेवनात् । मुखमध्येगदान्कुर्युःक्रुद्धादोषाःकफोत्तराः ६९१

मुखरोगों के निदान ॥

अनूपमांस, दूध, दही तथा उर्द आदि के सेवनसे कफ प्रधान तीनों दोष कुपित होकर मुखमें रोगोंको उत्पन्न करते हैं ॥ ६९१ ॥

अथ तत्र ओष्ठरोगास्तेषांनिदानपूर्विकांसंख्यामाह ॥

पृथग्दोषैःसमस्तैश्चरक्तजोमांसजस्तथा । मेदोजश्चाभिघातोत्थएवमष्टौष्ठजागदाः ६९२

ओष्ठरोगोंकी निदानपूर्वक संख्या ॥

वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, रक्तज, मांसज, मेदोज और अभिघातज यह आठ ओष्ठरोगहैं ६९२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ तत्र वातिकस्य लक्षणमाह ॥

कर्कशौपरु[illegible]ौ[illegible]ाप्तानिलवेदनौ । दालयेतेपरिपाट्येतेओष्ठौमारुतकोपतः ॥
प[illegible]रूक्षौ[illegible]त परिपाट्येतेकिञ्चिद्विदीर्णत्वचौक्रियेते ॥ ९९३ ॥

वातज ओष्ठरोगका लक्षण ॥

[illegible]युके कोपसे कर्कश, रूखे, स्तब्ध, वातज पीडायुक्त और कुछ फटीहुई त्वचावाले ओष्ठ फटा करते हैं ॥ ९९३ ॥

अथ पैत्तिकमाह ॥

चीयेते पीडिकाभिस्तु सरुजाभिः समन्ततः । सदाहपाकपिडिकौपीताभासौच[illegible]
सरुजाभिःपैत्तिकरुगन्विताभिः ॥ ९९४ ॥

पित्तज ओष्ठरोग के लक्षण ॥

पित्तके कोपसे ओठोंमें दाह, पाक, [illegible]तजपीडासहित सब ओ[illegible]
पीत होताहै ॥ ९९४ ॥

अथ श्लैष्मिकमाह ॥

सवर्णाभिस्तुचीयेतेपीडिकाभिरवेदनौ।कंडूमन्तौकफाच्छे[illegible]लावे इसके [illegible]

कफज ओष्ठरोगका लक्ष[illegible] ॥१०५१ [illegible]

कफके कोपसे ओठोंमें शरीरके समान वर्णवाली पीडारहि[illegible]ताहै इति[illegible]
लसलसापन शीतलता तथा भारीपन होताहै ॥ ९९५ ॥

अथ सन्निपातिकमाह[illegible]

सकृत्कृष्णौसकृत्पीतौसकृच्छ्वे[illegible]

सन्नि[illegible] इसे [illegible]

त्रिदोषके कोपसे ओठोंमें कभी काली कभी [illegible]

अथ रक्तजमा[illegible]

खर्जूरफलवर्णाभिःपिडिकाभिर्निपीडितौ [illegible] [illegible]शोरुहान्
मांसजमाह । मांसदुष्टौगुरूस्थूलौमांसपिण्डवदुद्[illegible]
भयतोमुखात् । जन्तवःकृमयःमूर्च्छन्तिवर्द्धन्तेमुखादुभयतःसृक[illegible]

रक्तज ओष्ठरोगके लक्षण ॥

रक्तज ओष्ठरोग में ओठोंपर खजूरके फलके वर्णकी समान पिडिका होती हैं ओठोंसे रुधिर बहताहै और उनकावर्ण रुधिरके समान होजाताहै मांस के दूषित होनेपर दोनों ओठ मांसपिण्डके समान ऊंचे भारी तथा मोटे होजाते हैं और ओठोंके किनारोंमें कीडे होजातेहैं ॥ ९९७ ॥

अथ मेदोजमाह ॥

सर्पिर्मण्डप्रतीकाशौमेदसाकण्डुरौमृदू।स्वच्छस्फटिकसङ्काशमास्रवंस्रवतोभृशम्९९८

मेदोज ओष्ठरोगके लक्षण ॥

मेदज ओष्ठरोग में ओष्ठ घी तथा मांडके समान और खुजली युक्त तथा भारी होते हैं और इनसे स्वच्छ स्फटिक के समान बहुतसा जल निकलताहै ॥ ९९८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथाभिघातजमाह ॥

क्षतजाभौविदीर्य्येतेपीड्येतेचाभिघाततः । मथितौचसम[illegible]कण्डूसमन्वितौ ॥ मथितौमृदिताविवअतएवक्षतजाभौरुधिराभाविति[illegible]

अभिघातज ओष्ठरोगके लक्षण ॥

अभिघातज ओष्ठरोगमें ओष्ठ. पीड़ायुक्त मलेहुएसे खुजली युक्त तथा रुधिर के समान [illegible] और फूटतेहैं ॥ ९९९ ॥

अथोष्ठरोगाणांचिकित्सामाह ॥

[illegible]तमूलदशनच्छदेषुरोगाःकफास्रभूयिष्ठाः । तस्मादेतेष्वसकृद्रुधिरंविस्रावये[illegible] [illegible]विधेनस्ने[illegible]धूच्छिष्टयुतेनच । वातजेऽभ्यञ्जनंकुर्य्यान्नाडीस्वेदञ्चबुद्धि[illegible] [illegible]तकपण[illegible]घृतवसामज्जारूपेण । [illegible]शिराणांवमनंविरेकंतिक्तस्यपानं [illegible]रिषेचनञ्चपित्तोपसृ[illegible]धरेषुकुर्य्यात् । शिरोविरेचनंधूम[illegible] [illegible]योक्तव्यमोष्ठकोपेकफात्मके । मेदोजेशोधितेस्विन्नेस्वे[illegible] [illegible]क्षौद्रं प्रतिसारणम् ॥ १००० ॥

[illegible] ओष्ठरोगोंकी चिकित्सा ॥

[illegible] में कफ तथा रुधिरकी अधिकता होतीहै इसलिये इनरोगोंमें [illegible] वातज ओष्ठरोगमें तेल, घी, चरबी, तथा मज्जाके साथ मोम [illegible]ध, वमन, विरेचन, तिक्तघृतपान, [illegible]रोग में रुधिर निकलवाकर शिरोवि[illegible] [illegible] में चीरकर मेद निकलवावे तथा स्वेद [illegible]से पीप जल तथा रस बहता है इस कणस्राव और शहदके द्वारा प्रतिसारण करे ॥ १००० ॥

अथ [illegible]रस्य विधिमाह ॥

[illegible] मारुतःकफसंयुक्त[illegible] । शनैर्घर्षणमंगुल्यातदुक्तंप्रतिसारणम् १००१ ॥

प्रतिसारणकी विधि ॥

चूर्ण कल्क अथवा अवलेहके द्वारा दांत, जिह्वा तथा मुखको धीरे २ अंगुलीसे रगडने को प्रतिसारण कहते हैं ॥ १००१ ॥

ओष्ठरोगेष्वशेषेषुदृष्ट्वादोषमुपाचरेत्।तेषुव्रणत्वंजातेषुव्रणवत्समुपाचरेत् १००२ ॥

सम्पूर्ण ओष्ठरोगोंमें दोषके अनुसार चिकित्साकरे और घाव होजानेपर घावकी चिकित्साकरे १००२

अथ दन्तवेष्टरोगास्तत्रदन्तवेष्टरोगाणांनामानिसङ्ख्याञ्चाह ॥

शीतादोगदितःपूर्वंदन्तपुप्पुटकस्तथा। दन्तवेष्टःसौषिरश्चमहासौषिरएवच। ततःपरिदरःप्रोक्तस्ततस्तूपकुशःस्मृतः। वैदर्भश्चततःप्रोक्तःखल्लीवर्द्धनएवच ॥ अधिमांसकनामाचदन्तनाडयश्चपञ्चच। दन्तविद्रधिरप्यत्रदन्तवेष्टेषुषोडश ॥ १००३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...हे रोग। दन्तमूलोंके रोगोंके नाम और संख्या ॥

शीताद, ... वेष्ट, सौषिर, महासौषिर, परिदर, उपकुश, वैदर्भ, खल्लिवर्द्धन, अधिमांसक, पांचप्रकारकी दन्तनाड़ी और दन्तविद्रधि यह १६ दन्तमूलके रोगहैं ॥ १००३ ॥

अथ तत्र शीतादस्यलक्षणमाह ॥

शोणितं दन्तवेष्टेभ्योयस्याकस्मात्प्रवर्त्तते। दुर्गन्धीनिसकृष्णानिप्रक्लेदीनिमृदूनि ॥ दन्तमांसानिशीर्य्यन्तेपचन्तिचपरस्परम्। शीतादोनामसव्याधिःकफशोणित... ॥ दन्तवेष्टेभ्यःदन्तवेष्टनमांसेभ्यः अकस्मात्अभिघातंविनाशी... पतन्ति... स्परंपाकोष्मणामांसानिशोणितंपचन्ति ॥ १००४ ॥

शीतादका लक्षण ॥

जिस रोगमें चोटके विना दांतोंके मांससे रुधिर निकले ... क्लेदयुक्त कोमल तथा परस्पर पाकयुक्त होकर ... से शीताद ... होताहै ॥ १००४ ॥

अथ दन्तपुप्पुटमाह ॥

दन्तयोस्त्रिषुवाप्यत्रश्वयथुर्जायतेमहान्। दन्तपुप्पुटको... ॥ १००५ ॥

दन्तपुप्पुटका लक्षण ॥

जिसरोगमें दो अथवा तीन दांतोंमें अत्यन्त शोथ उत्पन्न हो ... और रुधिरसे होताहै ॥ १००५ ॥

स्रवन्तिपूयंरुधिरंचलादन्ता... अत्रदन्तमूलानीतिकर्त्तृपदमध्याहरणीयम् ...

दन्तवेष्ट के लक्षण ॥

दांत हिलने लगें और उनसे रुधिर तथा पीप बहै इ... से उत्पन्न होताहै ॥ १००६ ॥

अथ सौषिरमाह ॥

श्वयथुर्दन्तमूलेषुरुजावान्कफवातजः।लालास्रावीकण्डुरश्चसज्ञेयःसौषिरः ॥ १००७ ॥

सौषिरका लक्षण ॥

दन्तमूलोंमें पीड़ा तथा खुजली युक्त शोथ उत्पन्न होवे और लार बहै इसरोगको सौषिर कहते हैं यह कफ और रुधिर से होताहै ॥ १००७ ॥

अथ महासौषिरमाह ॥

दन्ताश्चलन्तिवेष्टेभ्यस्तालुचाप्यवदीर्य्यते । दन्तमांसानिपच्यन्तेमुखञ्चपरिपच्यते ॥ यस्मिन्ससर्वजोव्याधिर्महासौषिरसंज्ञकः। तालुचाप्यवदीर्यतेचकाराद्दन्तवेष्टःचाप्यवदीर्यतेसप्तरात्रान्मारकश्चायम्। यतआहभोजः। महासौषिरइत्येषसप्तरात्राद्धिहन्त्यसूनिति ॥ १००८ ॥

महासौषिरका लक्षण ॥

दांत हिलने लगें तालु तथा दन्तमूल विदीर्ण होजायँ और दन्तमांस तथा मुख पकजाय इसरोग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

को महासौषिर कहते हैं यह सन्निपातज है भोजने कहाहै कि यह ... प्राणों को हर लेताहै ॥ १००८ ॥

अथ परिदरमाह ॥

दन्तमांसानिशीर्य्यन्तेयस्मिन्ष्ठीवतिचाप्यसृक् । पित्तासृक्कफजोऽयं विज्ञेयःपरिदरोहिसः ॥ १००९ ॥

परिदरका लक्षण ॥

दांतोंका मांस गलजाय और थूकमें रुधिर निकले इसरोगको परिदर कहते हैं यह ... होताहै ॥ १००९ ॥

अथोपकुशमाह ॥

...ःपाकश्चत... दन्ताश्चलन्तिच। आघट्टिताःप्रस्रवन्तिशोणितंमन्दवेदनम्। ...तकपाक... ...चजायते । यस्मिन्नुपकुशःसस्यात्पित्तरक्तसमुद्भवः ॥

उपकुशका लक्षण ॥

...क होकर दांत हिलनेलगें ...डने से रुधिर निकले और रुधिर न ...युसे ... होवे तथा ... होजाय इसरोगको उपकुश कहते हैं यह ...ष्णतासे पी...

अथ वैदर्भमाह ॥

...शिरोऽभि... ...तेमहान् । चलन्तिचरदायस्मिन्सवैदर्भोऽभिघातजः ॥ ...हितःसकर्ण... ...द्वेदनादाहपाकाः ॥ १०११ ॥

वैदर्भका लक्षण ॥

...ने लगें और पीड़ा दाह तथा पाक ... १०११ ॥

से पीप जल तथा रस बहता है इस ...माह ॥

अथ ...ः । खल्लीवर्द्धनसंज्ञोऽसौसञ्जातेरुक्प्रशाम्यति मारुतःकफसंयुक्त...

...वर्धन का लक्षण ॥

... पीड़ा सहित दांत उत्पन्न होताहै और दांत निकलआनेपर पीड़ा शान्त होजाती है ... खल्लीवर्धन कहते हैं ॥ १०१२ ॥

अथाधिमांसकमाह ॥

हानव्येपश्चिमेदन्तेमहाशोथोमहारुजः । लालास्रावीकफकृतोविज्ञेयःसोऽधिमांसकः ॥ हानव्येहनुभवेपश्चिमेदन्तेअन्त्यजे ॥ १०१३ ॥

अधिमांसक का लक्षण ॥

जाबडे के पिछले दांत में अत्यन्त शोथ तथा अत्यन्त पीड़ा होतीहै और लार बहती है इसे अधिमांसक कहते हैं यह कफसे होताहै ॥ १०१३ ॥

अथ पञ्चदन्तनाडीराह ॥

दन्तमूलगतानाड्यःपञ्चज्ञेयायथेरिताः । यथानाडीव्रणेवातपित्तकफसन्निपातांगनिमित्ताःपञ्चनाड्यःकथितास्तथात्रापीत्यर्थः ॥ १०१४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पांचदन्त नाडियोंका लक्षण ॥

...डीप्रये... ...तज, पित्तज, कफज, सन्निपातज और आगन्तुज पांच प्रकारकी नाडी कहीगई हैं दन्त... ॥ उसीप्रकार के लक्षणोंसमेत वातजआदिक नाड़ी होती हैं ॥ १०१४ ॥

अथ दन्तविद्रधिमाह ॥

...पंसमलैर्मास्रैर्बाह्यतःश्वयथुर्महान् । सदाहरुक्स्रवेद्भिन्नःपूयास्रंदन्तविद्रधिः ॥ ...सम्मलैःदन्त...गतदोषैःसास्रैःसरक्तैःहेतुभिः ॥ १०१५ ॥

दन्तविद्रधिका लक्षण ॥

दन्त...ों में स्थित दो... ...और रुधिर के द्वारा दांतों के बाहरी ओर... ...थ होजाहै और फटकर उ... पीप ... रुधिर बहताहै इसे दन्त...

अ... ...वेष्टरोगाणांचिकित्सा...

शीतादेहृतरक्तेतुतोयेनागरस... ...लावे इसके...

कासीसलोध्रकृष्णामनःशिलाप्रियंगुतेजोह्वाः ... ...जनक...

तेजोह्वातेजवल्कलइतिलोके । तैलंघृतंवावातघ्नंशीताद... १०५१ ... ...ती है

र्य्यंतरुणेरक्तमोक्षणम् । सपञ्चलवणक्षारःसक्षौद्रःप्रति... ...ताहै इनि...

स्यंस्निग्धश्चभोजनम् । विस्राविते दन्तवेष्टेव्रणन्तुप्रति... ...दैलत...

चूर्णैर्मधुयुतैः । प्रतिसारयेदंगुल... ...है इल...

ज्याःसक्षौद्रघृतशर्कराः । चलदन्त... इसे विर्देलि... ...

दन्तमूल के रोग... ...

शीताद रोगमें रुधिर निकलवाकर सोंठ सरसों ... ...तेल... ...सतान, ... पीपल, मैनसिल, गोंदी और तेजवल्कल इनके चूर्ण... भवति ... ...धर धित मांसका नाश होताहै वातघ्न तैल अथवा घी शीताद... ...रोरुहान् ... निकलवाना चाहिये पांचों नोन तथा जवाखार... शहद में मिलाकर प्रति... ...करै अ-थवा शिरोविरेचन नस्य और स्निग्धभोजन हितकारी है दन्तवेष्ट में रुधिर निकलवाकर लोध, चोक, मुलहठी और लाख इनके चूर्ण को शहद में मिलाकर अंगुली से घावों में रगड़े दूधवाले वृक्षों के काढ़े में शहद, घी तथा शक्कर मिलाकर कुल्लेकरने से हिलते हुए दांत दृढ होजाते हैं मोमलितिरी के चावने से दांत दृढ होतेहैं ॥ १०१६ ॥

भद्रमुस्ताभयाव्योषविडंगारिष्टपल्लवैः । गोमूत्रपिष्टैर्गुटिकाञ्छायांशुष्कांप्रकल्पयेत् ॥ तांनिधायमुखेसुप्याच्चलदन्तातुरोनरः । नातःपरतरंकिञ्चिच्चलदन्तस्यभेषजम् ॥ मुस्तादिवटिका ॥ १०१७ ॥

नागरमोथा, हड़, त्रिकटु, बायबिडंग और नींबकीपत्ती इन सबको गोमूत्र में पीसकर गोली बनाकर छाया में सुखावे एक गोलीको मुखमें डालकर सोनेसे दांत दृढ होजाते हैं इससे उत्तम दांतोंके हिलनेकी दूसरी औषध नहीं है इति मुस्तादिवटिका ॥ १०१७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तुलाघृतंनीलसहाचरन्तुद्रोणेम्भसासंश्रपयेद् यथावत् [illegible] गरसेतुतैलं
पचेच्छनैरर्द्धपलप्रमाणैः ॥ कल्कैरनन्ताखदिरेरिमेदजम्बा [illegible] ।
तत्तैलमाज्यञ्चघृतंमुखेनस्थैर्य्यंद्विजानांविदधातिसद्यः ॥ नीलसहा [illegible] लपुष्पकट
सरैया अनन्तादुरालभातदलाभेयवासोग्राह्यः इरिमेदोदुर्गन्धखदिरः इति सह [illegible]
तैलम् ॥ १०१८ ॥

[illegible] तोले नीलीकटसरैया को १०२४ तोले जलमें पकावे चौथाई र [illegible] पर उस क [illegible]
तकपाक [illegible], दुर्गंधित [illegible] जामन, आंब, मुलहठी और नीलोत्पल [illegible] दो दो तोले क [illegible]
[illegible] घीको मुखमें रखने से दांत दृढ होजा [illegible] इति सहचर तैल [illegible]
[illegible] जनैः । सक्षौद्रैःशस्य [illegible] डषक्षीरिणोहिताः [illegible]
[illegible] र लोध, मोथा तथा रस [illegible] चूर्णको शहद में मिला [illegible]
[illegible] कुल्ले करना हित [illegible]
[illegible] णतासे पी [illegible] संशोध्योभयतःकार्यंशि [illegible] श्चोपकुशेत
[illegible] भावयेद्भिषक् । लवणैःक्षौद्रयुक्तैश्चसव्योषैःप्रतिसारये
[illegible] निशोधयेत् । ततःक्षारंप्रयुञ्जीतक्रियासर्वांश्चशीत
[illegible] ग्नमवचारयेत् । कृमिदन्तकवच्चात्रविधिःकार्य्योविजा
[illegible] द्रैरेतैश्चूर्णैरुपाचरेत् ॥ वचाते
[illegible] स्वर्णजीवन्तीच ॥ क्षौद्रद्विती
से पीप जल तथा रस बहता है इस कणस [illegible] त्रिफलाकषायश्चात्रधावने ॥ नाडीव्रण
अथ [illegible] जायेतनाडीदन्तंतदुद्धरेत् ॥ छित्त्वामांसानिश
मारुतःकफसंयुक्त [illegible] पेक्षारेणज्वलनेनवा ॥ भिनत्त्युपेक्षितेदन्तहनु
वेदति [illegible] दुद्धरेद्भग्नमस्थिच । उद्धृतेतूत्तरेदन्तेशोणितंप्रस्र
जायते । [illegible] तूपूर्वोक्ताघोरारोगाभवन्तिहि ॥ काणःसंजायतेजन्तुरर्दितंतस्य
[illegible] मप्युत्तरंदन्तमतोनैवोद्धरेद्भिषक् ॥ धावनंजातिमदनस्वादुकण्टकखादि
रैः । कषायैरितिशेषःकषायैः ॥ १०२० ॥

परिदररोगमें शीतादरोगकीसी चिकित्साकरे और वमन विरेचन तथा शिरोविरेचन करे उप-
कुशमें भी यही रीति करनी चाहिये कठियागूलर के पत्तों के द्वारा रुधिर निकलवाकर त्रिकटु और
सैंधेनोनको शहदमें मिलाकर घावों में रगड़े वैदर्भरोगमें शस्त्रक्रिया करके दन्तमूलोंको शुद्धकरे फिर
क्षारका प्रयोग करे और संपर्ण शीतलक्रिया करे खल्लिवर्धनरोग में अधिक दांतको उखाड़कर दागे
और कृमिदन्तकरोगकीसी चिकित्साकरे अधिमांसरोग में छेदन करके बच, तेजबलकल, पाठा,
सज्जी तथा जवाखार इनके चूर्णको शहद में मिलाकर लगावे पीपलको शहद में मिलाकर मुखमें
कवल रखना अथवा परवल नींब तथा त्रिफलाके काढ़ेसे धोना इसमें हितहै दन्तनाड़ियों में नासूरों
कीसी चिकित्साकरे जो दांतके ऊपर न होय तो जिस दांतमें नाड़ीहुई होवे उसदांतकेमांसकोकाटकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दांतको ... होजाता ... अथवा अग्निके द्वारा दागे इसकी उपेक्षा करनेसे जाबडेकी हड्डी पर्य्यन्त ... सहित दांत और टूटीहड्डीको उखाडलेवे ऊपरी दांतके उखाड़नेसे बहुत तथा ... जहनस पहले कहेहुये घोर रोग उत्पन्न होते हैं मनुष्य काणा होजाता है ... न होताहै इसलिये हिलतेहुये भी ऊपरी दांतको न उखाड़े चमेली धतूरा गो- और कत्थे काढ़ेसे धोना हितहै ॥ १०२० ॥

... र्जातिम ... नकण्टकीस्वादुकण्टकैः। मञ्जिष्ठालोध्रखदिरयष्ट्याह्वैश्चापियत्कृतम्॥ ... साधितं ... न्याद्दन्तगतांगतिम् । जात्यादिचतुष्टयस्यकषायेणमञ्जि... ष्ट ... यचकषायेणतैलं ... पचेत् ॥ जातीचम्बेलीइतिलोके ... पत्रंग्राह्यम ... त्रमत्रग्राह्यं ... बिड़ीकूटैयातस्याः मूलंग्राह्यंस्व ... म् । इति जात्यादि ... म ... ०२१ ॥

चमेलीकीपत्ती, धतूरेकीप ... की, गोखुरूका पंचांग, मँह ... लावे इसके ... के काढ़ेके द्वारा पाकक्रियाहुआ ...

विद्रध्युक्तंविधियुक्तंविदध्याद्दन्तविद्रधौ। शस्त्रकर्म ... ।१०५१॥

दन्तविद्रधिमें कुशलीवैद्य विद्रधिरोगकीसी चिकित्साकरे ... ताहै इति ...

अथ दन्तरोगास्तत्रदन्तरोगाणां ना ...

दालनःकथितःपूर्वं कृमिदन्तकएवच । प्रोक्तोभ ... शैलत ... लिकात्रकथिता श्यावदन्तक ...

दांतोंकेरो ... इसे ...

दालन, कृमिदन्तक, भंजनक, दन्तहर्ष, दन्त ... संतान ... दन्तरोग हैं ॥ १०२३ ॥

अथ तत्रदाल ... भवति ...

दीर्यमाणेष्विवरुजातत्रदन्तेषुजायते। दालन ... रोरुहान् ...

दालनका लक्षण ॥

जिसरोगमें वायुके कोपसे दांतों में फटनेकीसी पीड़ा होवे उसे दालन कह ... २४ ॥

अथ कृमिदन्तकमाह ॥

कृष्णश्छिद्रश्चलस्रावी ससंरम्भोमहारुजः। अनिमित्तरुजोवातात् सज्ञेयोकृमिदन्तकः ॥ संरम्भः दन्तमूलशोथयुक्तः तत्रैवस्रावोबोद्धव्यः अनिमित्तरुजअवघट्टनादिनिमित्तंविनैवमहारुजावान् ॥ १०२५ ॥

कृमिदन्तकका लक्षण ॥

जिस रोग में वायुके कोपसे दांतों के मूल में शोथ तथा अत्यन्त पीड़ायुक्त और चोट आदि के विनाही पीड़ावाला कृष्णवर्ण छिद्र उत्पन्न होवे और उससे स्राव होवे तथा दांत हिलने लगें उसे कृमिदन्तक कहते हैं १०२५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ भञ्जनकमाह ॥

वक्त्रंवक्रंभवेद्यत्रदन्तभङ्गश्चजायते। कफवातकृतोव्याधिःस [illegible]

भञ्जनकका लक्षण ॥

दांत गिरपडें और मुख टेढ़ा होजाय इस कफ बातज रोगको भंजनक कहते [illegible] १०२६ ॥

अथ दन्तहर्षमाह ॥

शीतरूक्षप्रवाताम्लस्पर्शानामसहाद्द्विजाः । तत्रस्युर्वातपित्ताभ्यां दन्त [illegible]
[illegible] १०२७ ॥

दन्तहर्षका लक्षण ॥

[illegible] खट्टीवस्तु और वायुका स्पर्श असह्य [illegible] इस वात पित्तज [illegible]

अथ दन्तशर्करामाह ॥

[illegible] निलशोषितः । शर्क [illegible] पर्शा साज्ञेयादन्तशर्क [illegible]

[illegible] सूखकर रतके समान खुरखुरा होजाय उसे दन्तशर्करा [illegible]

अथ कपालिकामाह ॥

[illegible] लेषुच । कपालिकेतिविज्ञेया दन्तच्छिद्दन्तशर्करा ॥
[illegible] किरण्डाते [illegible] विवसमलेषदन्तेषमलसहितदन्तावयवेषुदीर्यत्सु
[illegible] तच्छितृदन्तनाशिनी १०२९

[illegible] से जलमें [illegible] से पीप जल तथा रस बहता है इस कणसह [illegible] जो दन्तशर्करा होती है उसे कपालिका कहते [illegible]

अथ [illegible] दन्तकमाह ॥

मारुतः कफसंयुक्तः [illegible]
[illegible] शेषतः । श्यावतांनीलतांवापि गदःसश्यावदन्तकः ॥ [illegible] १०३० ॥

श्यावदन्तकका लक्षण ॥

रुधिर सहित पित्तके द्वारा जलेहुये से संपूर्ण दांत धुमैले अथवा नीले होजायँ इसरोगको श्यावदन्तक कहते हैं ॥ १०३०

अथ करालमाह ॥

शनैःशनैःप्रकुरुते यत्रदन्ताश्रितोऽनिलः । करालान्विकटान्दन्तान् सकरालोनसिध्यति ॥ करालान्भयानकान् अयंसुश्रुतेनोक्तःसंग्रहकारेण ॥ १०३१ ॥

करालका लक्षण ॥

जिस रोगमें दांतोंमें स्थित वायु धीरे २ दांतोंको भयानक और विकट करती है उसे कराल कहते हैं यह असाध्य है १०३१ ॥

अथ दन्तरोगाणांचिकित्सामाह ॥

तैलंलाक्षारसंक्षीरं पृथक्प्रस्थमितंपचेत्। द्रव्यैःपलमितैरेतैःक्वाथैश्चापिचतुर्गुणैः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...पद्मकैः । चन्दनोत्पलयष्ट्याह्वैस्तत्तैलंवदनेधृतम् ॥ दा
...पालिताम् । शीतादंपूतिवक्त्रञ्च विरुचिंविरसास्यताम्
...दन्तानपिस्थिरान् । लाक्षादिकमिदंतैलंदन्तरोगेषुपूजितम् ॥
...तैलम् ...३२॥

दन्तरोगोंकी चिकित्सा ॥

...दूध ६४ तोले और लोध, कायफल, मँजीठ, कमलकी केसर, प...
...पत्र तथा मु... चार २ तोले इनसब औषधियों का काढ़ा ... सब के साथ लो...
...कल्क के द्वारा ... तोले तेलको पकावे इस तेलको मुखमें ... डाल...
...लिका, शीताद, पूतिवक्त्र, अरुचि तथा मुखकी विरसता...
...है इति लाक्षाद्य तैल ॥

...हस्रावणैःस्विन्नमबलं... ...कम् । तथावपीडैवा... ...लावे इसके...
...र्व्यादिवर्षाभूलेपैःस्निग्धैश्च...
...तीभूमिकदम्बंपञ्चाङ्गुलकण्टकारिकाक्वाथः । गण्डूष... १०५१...
मनः ॥ नीलीवायसजंघाकटुतुम्बीमलमेकैकम् । संचूर्ण्य... ...ताहे इति...
प्राहुः ॥ स्नेहानांकवलाःकोष्णाःसर्पिषस्त्रैवृतस्यच । निर्यूह...
र्दनाः ॥ त्रैवृतस्यसर्पिषःत्रिवृतापक्वस्यसर्पिषः कवलग्रहणं... ...तैलत...
स्नैहिकमेवच ॥ पेयारसयवाग्वश्च... ...
...मिलापहः ॥ अत्रदन्तहर्षे । ...
मधुयुतैस्ततस्तांप्रतिसारयेत् ॥ दन्तहर्षक्रिया... ...तैल...
कृच्छ्रतमातत्राप्येषाक्रियामता ॥ एषाक्रियादन्त... भवति...
न्नंदन्तधावनम् । तथातिकाठिनंभक्ष्यंदन्तरोगीनभक्ष... ...रोरुहान्

कृमिदन्तक रोगमें स्वेद देकर दृढ़हुए दांतों से रुधिर निकलवावे वातघ्न न... ...के कुल्ले, देवदारु आदिगण अथवा पुनर्नवा का लेप और स्निग्धभोजन इसमें हितहैं ... गरम करके दांतोंमें रखने से कृमिदन्तका नाश होताहै दोनों भटकटैया, मुंडी और अरंड इनके काढ़े में तेल डालकर कुल्ले करने से कृमिदन्तक का नाश होताहै नीली, काकजंघा और कडवी लौकी इनमें से किसी की जडके चूर्णको दांतोंमें रखने से कृमिदन्तका नाश होताहै कुछ गरम स्नेह निसोथ के द्वारा पाककिये हुए घी और वातघ्न औषधियों के काढ़े के द्वारा कवल ग्रहण करने से दन्तहर्ष रोगका नाश होताहै स्नेहों का धूम, स्नेहोंकी नस्य, पेया, मांस, रस, दूध, मलाई, घी, शिरोवस्ति और अन्य वात नाशक औषध दन्तहर्ष रोगमें हितहैं दन्त शर्करामें छिद्रोंको छोडकर दन्तमूलोंकी शर्कराको छुडालें और फिर लाखके चूर्णको शहद में मिलाकर उँगली से रगडे और दन्तहर्षकीसीही सब चिकित्सा करे कपालिका कष्टसाध्य है इसमें भी दन्तहर्ष कीसी चिकित्सा करे खट्टेफल शीतल जल रूखा अन्न दंतौन और बहुत कठिन भोजन दांतोंके रोगवाला त्यागदेवे ॥ १०३३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ जिह्वारोगास्तत्रजिह्वारोगाणां निदानं

वातजःपित्तजश्चापिकफजोलाससंज्ञकःउपजिह्विका च ग

जिह्वा के रोग। जिह्वा रोगोंके निदान नाम और

वातज, पित्तज, कफज, अलास और उपजिह्विका यह पांच रोग जिह्वाके ॥ ...२६ ॥

अथ तत्रवातजस्य लक्षणमाह ॥

जिह्वानिलेनस्फुटिताप्रसुप्ताभवेच्चशाकच्छदनप्रकाशा। स्फुटि... दन्त...

...मभिज्ञतयासप्तेव ॥ शाकच्छदनप्रकाशाशाकोमरु...

नकपात ... १०३...

वातज जिह्वारोगका लक्ष...

... विदीर्ण रसज्ञान रहित और ...भूमि में हुए वृक्ष के

... ३५ ॥ अथ पित्त...

...युसे ... दीर्घैःसरक्तैरपिकण्टकैस्... लोकेजलीइतिरुयातः

...ष्णतासे पी... लक्षण ॥

... दीर्घ तथा रक्त वर्णके कांटे पडजाते हैं इसरो... लोकमें

अथ कफजमाह ॥

...हितःसकण्... ...सा च्छेयैःशाल्मलिकण्टकाभैः। बहुत्वास्थूलामांसोच्छ्रयैः

पुलिंगेऽप्यस्ति ... कण्डाते

कफज जिह्वारोगका लक्षण ॥

... सेमरके कांटों के समान मांसके अंकुरों

शि... ...नेसे जलमें ... ॥

से पीप जल तथा रस बहता है इस कण... ...लज्ञः कफरक्तमूर्त्तिः । जिह्वांसतुस्तम्भ...

अथ ... प्रगाढःप्रकर्षेणगाढोदारुणःकफरक्तमूर्त्तिःकफर

मारुतःकफसंयुक्तः... । जिह्वास्तम्भेनवायुरप्यत्रबोद्धव्यःभृशम्पाकेन

... ...ध्यत्वंचास्य ॥ १०३८ ॥

अलास का लक्षण ॥

जिह्वा में जो अत्यन्त शोथ उत्पन्न होताहै उसे अलास कहते हैं इसके बढजाने से जिह्वास्तब्ध होजाती है और जिह्वामूल पकजाताहै यह रोग कफ तथा रुधिर से उत्पन्न होताहै और इसमें स्तब्धता से वायु तथा बहुत पकने से पित्तभी जानना चाहिये इसलिये यह सन्निपातज है और असाध्यहै ॥ १०३८ ॥

अथोपजिह्विकामाह ॥

जिह्वाग्ररूपःश्वयथुर्हिजिह्वामुन्नम्यजातःकफरक्तयोनिः । प्रसेककण्डूपरिदाहयुक्तः प्रकथ्यतेऽसावुपजिह्विकेति जिह्वाग्ररूपःजिह्वाग्राकृतिः ॥ १०३९ ॥

उपजिह्विका का लक्षण ॥

जिह्वा के नीचे स्राव, खुजली तथा दाहयुक्त और जिह्वाके अग्रभाग के समान शोथ उत्पन्न होता है इसे उपजिह्विका कहते हैं यह कफ और रुधिर से होताहै ॥ १०३९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ जिह्वारोगाणां चिकित्सामाह ॥

स्तंशोणितमोक्षणम् । गुडूचीपिप्पलीनिम्बकवलःकटुभिःसु
दुक्तप्राक्चिकित्सितम् । कण्टकेष्वनिलोत्थेषुतत्कार्य्यंभि
नैलम रेघृष्टेतु निःसृतेदुष्टशोणिते । प्रतिसारणगण्डूषनस्यञ्चमधुरंहित
त्थेषुलिखितेष्वसृजःक्षये। पिप्पल्यादिर्मधुयुतःकार्य्यस्तुप्रतिसारणे॥
यक्षारेणप्रतिसारयत् । शिरोविरेकगण्डूषधूमैश्चैनामुपाचरेत्॥ व्यो
ततप्रघर्षणम्। उपजिह्वाप्रशान्त्यर्थमेभिस्तैलञ्चपाचये

जिह्वा रोगों की चिकित्सा ॥

रोगों में रुधिर नि वाना श्रेष्ठहै गिलोय, पीपल, नींब
कुछ गरम कवल ग्रहण चाहिये वातज ओष्ठ प्रको
वातज कंटकोंमें करनी च पित्तज जिह्वा रोग में रग
औषधियों के द्वारा प्रतिसा लावे इसके
पिप्पल्यादिगण के चूर्णका और नस्य को ग्रहण
उंगली से मलै शिरविरेचन कुल्ले तथा धूम स
खर्डी कहता चीता इनसबके चूर्णको मलनेसे अथवा इनके ताहै इति
का नाश होताहै ॥ १०४० ॥

अथ तालुरोगास्तत्रतालुरोगाणांनामानि

गलशुण्डीतुण्डिकेर्य्यध्रूषः
तुपुप्पुटनामाचतालुशोषस्तथ

तालुरोगोंकी चिकित्सा

गलशुण्डी, तुंडिकेरी, अध्रूष कच्छप,तालवर्बुद,
यह नवतालु रोगहैं ॥ १०४१ ॥

अथ तत्र गलशुण्डीलक्षणमाह

श्लेष्मासृग्भ्यांतालुमूलात्प्रवृद्धोदीर्घःशोथोध्मातवस्तिप्रकाशः श्वास
कृत्तंवदन्तिव्याधिंवैद्याःकण्ठशुण्डीतिनाम्ना ॥ ध्मातवस्तिप्रकाशःवातपूरितचर्मपुटतु
ल्यः ॥ १०४२ ॥

गलशुंडीका लक्षण ॥

कफ तथा रुधिर के द्वारा तालुमूलमें लम्बा और फूलीहुई कुप्पीके समान अत्यन्त शोथ उत्पन्न
होताहै इसे गलशुंडी कहते हैं इसमें तृषा खांसी और श्वास होताहै ॥ १०४२ ॥

अथ तुण्डिकेरीमाह ॥

शोथस्थूलस्तोददाहप्रपाकीश्लेष्मासृग्भ्यांकीर्त्तितातुण्डिकेरी । तुण्डिकेरीवनकर्पा
सीफलंतत्तुल्या ॥ १०४३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तुंडिकेरीका लक्षण ॥

कफ तथा रुधिर के द्वारा सुई गडनेकीसी पीड़ा, दाह तथा पाकयुत ... फलके समान शोथ तालुमें होताहै उसे तुंडिकेरी कहते हैं ॥ ...०४३

अथाध्रूषमाह ॥

शोथस्तब्धोलोहितः शोणितोत्थोज्ञेयोऽध्रूषःसज्वरस्तीव्ररुक्च ॥ ...०२६ ॥

अध्रूषका लक्षण ॥

...धिर के द्वारा तालुमें अत्यन्त पीडायुक्त स्तब्ध तथा रक्तवर्ण शोथ उत्पन्न ... दन्त... ...में ज्वर आताहै ॥ १०४४ ॥ अथ कच्छपमाह ॥

...वेदन... ...न्मा रोगोज्ञेयःकच्छपः श्लेष्म...स्था... कूर्मोत्सन्न...

कच्छपका लक्षण ॥

... धीरे धीरे उत्पन्न होने... और कछुए के समान बीच... ...०४५ ॥

...युसे ... होताहै इसे कच्छप कह...

...णतासे पी... ...द्मकोदबुदापित्तलिंगम् । पद्माकारंपद्मकर्णिका लोकमें

...शोऽभि... ...म् ॥ १०४६ ॥

...हितःसकर्णि... ...तालवर्बुदका लक्षण ॥

...पुलिंगेऽप्या... ...किएडा... ...कर्णिका के समान, किनारोंपर दीर्घ, मांसके अंकुरों से घिरा

... ...ताहै इसे तालवर्बुद कहतेहैं १०४६॥

...नेसे जलमें ... ...से वा ...

से पीप जल तथा रस बहता है इसे कण... ...मांससङ्घातमाहुः ॥ १०४७ ॥

अथ ...तका लक्षण ॥

मारुतःकफसंयुक्तः... उठ आताहै इसे मांस संघात कहते हैं १०४७ ॥

...स ... तालुपुप्पुटमाह ॥

...कोलमात्रोकफात्मामेदोयुक्तःपुप्पुटस्तालुदेशे ॥ १०४८ ॥

तालुपुप्पुटका लक्षण ॥

कफके द्वारा तालु में पीडारहित बहुत कालतक रहने वाला, मेदो युक्त, बेरके समान, शोथ उत्पन्न होताहै इसे तालुपुप्पुट कहते हैं ॥ १०४८ ॥

अथ तालुशोषमाह ॥

शोषोत्यर्थंदीर्य्यतेचापितालुश्वासो वातात्तालुशोषोऽयमुक्तः ॥ १०४९ ॥

तालुशोषका लक्षण ॥

वायु के द्वारा तालु अत्यन्त सूखजाता है और विदीर्ण होजाताहै इसे तालुशोष कहतेहैं इस में श्वासभी होतीहै ॥ १०४९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ तालुपाकमाह ॥

[illegible] त्यर्थघोरंतालुन्येवंतालुपाकंवदन्ति ॥ १०५० ॥

तालुपाकका लक्षण ॥

[illegible] तालु बहुत पकजाताहै इसे तालुपाक कहतेहैं ॥ १०५० ॥

अथ तालुरोगाणांचिकित्सामाह ॥

[illegible] धुकणापाठाब्दैः सह । सक्षौद्रैर्भिषजाकार्य्यंगलशुण्डीप्रघर्षणम् ॥

[illegible] जीइतिलोके । अंगुष्ठांगुलिसन्देशेनाकृष्यगलशुण्डिकाम् ।

[illegible] ण्डलाग्रेणा [illegible] संस्थिताम् । मण्डलाग्रेणशस्त्रवि [illegible] अत्यादान

[illegible] तेन [illegible] । हीनच्छे [illegible] द्भवेच्छोथोलालास्रावोभ्रमस्त [illegible]

[illegible] रदः । गलशुण्डींतु [illegible] कुर्य्यात्प्राप्तमिमंक्र [illegible]

[illegible] चिनागरैः । क्षौद्रयुक्तैः [illegible] णस्ततस्तांप्रतिसार [illegible]

[illegible] कटुरोहिणीः । निःक्काथ्य [illegible]

[illegible] । एषएवविधिःकार्य्योविशेषः [illegible] वलंतत्रकारये [illegible]

[illegible] तने [illegible] स्नेहस्वेदस्तालुशोषेविधिश्चानिलनाशनः ॥ १०५१ ॥

तालुरोगोंकी चिकित्सा ॥

कूट, मिर्च, बच, सेंधानोन, पीपल, पाठा, और मोथा इनसबके चूर्ण [illegible] में रगड़े अंगूठे और तर्जनीके द्वारा गल [illegible] रक्खीहुई गलशुंडीको छेदे बहुत छिदनेसे [illegible] बहना तथा भ्रम होताहै इसलिये [illegible] इसे [illegible] पीपल, अतीस, कूट, बच, मिर्च, सोंठ और सेंधानोन [illegible] पाठा, रासना, कुटकी, और नींब इनके काढ़ेको मुखमें [illegible] तालुपुप्पुटमें यही विधि करनीचाहिये परन्तु शस्त्रकर्म [illegible] करे तालुशोषमें स्नेहस्वेद और वातनाशक चिकित्साकरे ॥ [illegible]

अथ गलरोगास्तत्रगलरोगाणांनामानिसंख्याञ्चाह [illegible]

रोहिणीपञ्चधाप्रोक्ताकण्ठशालूकएवच । अधिजिह्वश्चवलयोवलासश्चैकवृन्दकः ॥
ततोवृन्दःशतघ्नीचागिलायुःकण्ठविद्रधिः । गलौघश्चस्वरघ्नश्चमांसतानस्तथैवच ॥
विदारीकण्ठदेशेतुरोगाअष्टादशस्मृताः ॥ १०५२ ॥

गलेके रोग गलरोगोंके नाम और संख्या ॥

पांचप्रकारकी रोहिणी, कंठशालूक, अधिजिह्व, लय, बलास, एकवृन्द, वृन्द, शतघ्नी, गिलायु, कण्ठ-विद्रधि, गलौघ, स्वरघ्न, मांसतान और विदारी यह अठारहरोग गले में होतेहैं ॥ १०५२ ॥

अथ तत्रपञ्चानामपिरोहिणीनां सामान्यांसम्प्राप्तिमाह ॥

गलोपसंरोधकरै [illegible] गलेऽनिलःपित्तकफौ च मूर्च्छितौ प्रदूष्यमांसञ्चतथैवशोणितम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्तथांकुरैर्निहन्त्यसून्कण्ठाधिरियंचरोहिणी ॥ अनिलःमूर्छि[illegible]
तौपित्तंवामूर्च्छितंकफोवामूर्च्छितः । ननुत्रयोऽपिमूर्च्छित[illegible]
णत्वात् ॥ १०५३ ॥

पांचोंरोहिणीकीसामान्यसंप्राप्ति ॥ [illegible] ॥ २६ ॥

बढ़ेहुए वात पित्त कफ तथा रुधिर गलेके मांसको दूषित करके गलेके रो[illegible] को उत्पन्न करतेहैं इस रोगमें रोगी जीता नहीं है इसे रोहिणी कहते हैं ॥ [illegible] दन्त[illegible]

अथ तस्यावातजायालक्षणमाह ॥

[illegible] समन्तात्[illegible]तास्तुमांसांकुराःकण्ठनिरोधनाः[illegible] रोहिणा[illegible]
[illegible]द्रजुष्टा ॥ जिह्वासमन्तात्[illegible]याःसर्व[illegible] कफा[illegible]
[illegible]युक्ताः ॥ १०५४ ॥

वातजरोहिणीके ल[illegible]

[illegible] किनेवाले मांसके अंकुर हो[illegible] और अत्यन्त पीडा[illegible] णतासे पी[illegible]

अथ पित्तजमाह ॥

[illegible]क्षिप्र[illegible]दाहपाका तीव्रज्वरापित्तनिमित्तजाता ॥ १०[illegible]

पित्तजरोहिणीके लक्षण ॥

[illegible] होती है और शीघ्रही दाह तथा पाकयुक्त होजाती है ॥ १०५५ ॥

[illegible]वातु । स्रोतोऽत्रकंठस्रोतः १[illegible]
से पीप जल तथा रस बहता है इस कण[illegible]

[illegible]के लक्षण ॥

अथ [illegible] पकनेवाली,भारी तथा स्थिर होतीहै ॥ १०५६ ॥

मारुतःकफसंयुक्त[illegible]सन्निपातजमाह ॥

[illegible]र्वीर्यैस्त्रिदोषलिङ्गात्रिभवाभवेत्सा ॥ १०५७ ॥

सन्निपातज रोहिणीके लक्षण ॥

सन्निपातज रोहिणी तीनों दोषोंके लक्षणोंसे युक्त और गहरी पकनेवाली होतीहै यह किसी प्रकार रुकती नहीं ॥ १०५७ ॥

अथ रक्तजमाह ॥

स्फोटैश्चितापित्तसमानलिंगासाध्या प्रदिष्टारुधिरात्मिकातु ॥ १०५८ ॥

रक्तजरोहिणीके लक्षण ॥

रक्तजरोहिणी स्फोटकोंसे घिरीहुई और पित्तके समान लक्षणवाली होतीहै यह साध्यहै ॥ १०५८ ॥

रक्तहेतुरासांमारकत्वादवधिमाह ॥

सद्यस्त्रिदोषजाहन्तित्र्यहात्कफसमुद्भवा।पञ्चाहात्पित्तसम्भूतासप्ताहात्पवनोत्थिता १०५९

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...हिणी के प्राणनाश करनेकी अवधि॥
...ी, कफजरोहिणी २ दिनमें, पित्तजरोहिणी ५ दिनमें और वातजरो-
...१०५८॥ अथ कण्ठशालूकमाह॥
...भवोयोग्रन्थिर्गलेकण्ठकशूकभूतः।खरःस्थिरःशस्त्रनिपातसाध्य
...तंप्रवन्ति॥कण्टकशूकभूतःकण्टकवच्छूकवच्चवेदनाजनकः १०६०॥

कंठशालूकका लक्षण॥

...कांटे तथा शूककीसी पीडासे युक्त खुरखुरी और स्थिर बेरकी गुठलीके समान
...कंठशालूक कहतेहैं यह शस्त्रसे साध्यहै॥ १०६०॥

अथाधिजिह्वकमाह॥

...रूपःश्वयथुःकफ... जिह्वोपरिष्टादसृजैवमिश्रात्...
...त्यदागतपाकमेनम्॥ ... मिश्रादेवेत्यन्वयः॥

अधिजिह्वका लक्षण॥

...से मिलेहुए कफ के द्वारा... इसको...
...हैं यह पकनेसे असाध्य होजातीहै...

अथ वलयमाह॥

बलासएवायतमुन्नतञ्च शोथंकरोत्यन्नगतिंनिवार्य...
र्जनीयंवलयंवदन्ति॥ १०६२॥ वलयका लक्षण॥

कफके द्वारा फैलाहुआ,अत्यन्त ऊंचा...
...तेहैं यह सर्वथा असाध्यहै॥ १०६२॥ ...

अथ बलासमाह...

गलेतुशोथंकुरुतःप्रवृद्धौ श्लेष्मानिलौश्वासरुजोपपन्नम्। ... भवति...
दुर्बलाससंज्ञंभिषजोविकारम्॥ मर्मच्छिदंहृदयम्...

बलासका लक्षण॥

बढ़ेहुए कफ वात गले में श्वास तथा पीडायुक्त शोथ को उत्पन्न करतेहैं इसे बलास कहतेहैं इस में हृदय मर्म में छेदने कीसी पीडा होतीहै यह अत्यन्त दुस्तरहै॥ १०६३॥

अथैकवृन्दमाह॥

वृत्तोन्नतोऽन्तःश्वयथुःसदाहःसकण्डुरोऽपाक्यमृदुर्गुरुश्च। नाम्नैकवृन्दःपरिकीर्त्तितोऽसौ व्याधिर्बलासक्षतजप्रसूतः॥ अन्तःगलमध्ये अपाकी ईषत्पाकी अमृदुः ईषन्मृदुः १०६४॥

एकवृन्दका लक्षण॥

कफ तथा रुधिरके द्वारा गले के भीतर गोल,ऊंचा दाह तथा खुजलीयुक्त कुछ पकनेवाला, भारी और कुछ कोमल शोथ उत्पन्न होताहै इसे एकवृन्द कहते हैं॥ १०६४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ वृन्दमाह ॥

समुन्नतंवृत्तममन्ददाहंतीव्रज्वरंवृन्दमुदाहरन्ति । तच्चापि ... तोदंपवनात्मकंतु ॥ १०६५ ॥ वृन्दका लक्षण ॥

पित्त तथा रुधिर के कोपसे गले में ऊंचा गोला तथा अत्यन्त दाहयुक्त ... वृन्द कहते हैं इसमें अत्यन्त ज्वर आताहै और जो इसरोग में वायुभी होती है ... पीड़ा होती है ॥ १०६५ ॥

अथ शतघ्नीमाह ॥

वर्त्तिर्घनाकण्ठनिरोधकर्त्री चितातिमात्रंपिशितप्ररोहैः । ... ॥ घनाकठिनाअनेकरुकृवात ... तकफ ... दाह ... शतघ्नीमहती ... तत्तुल्यायतःप्राणह ...

शतघ्नी का लक्षण ॥

... कठिन कंठकी रोकनेवाली ... के अंकुरों से अत्यन्त व्याप्त ... से युक्त बत्तीसी उत्पन्न ... प्राणनाशकहै ॥ १०६६ ॥

अथ गिलायुमाह ॥

... स्थिरः स्थिरोऽल्परुक्स्यात्कफरक्तमूर्त्तिः । संलक्ष्यतेसक्तमि ... ॥ १०६७ ॥

... जलमें ... आमले की गुठली के समान ... ले पीप जल तथा रस बहता है इस ... गले में लगाहुआसा मालूम होता है यह रोग ...

अथ ... विद्रधिमाह ॥

मारुतःकफसंयुक्तः ... सन्निचयत्रसर्वाः । ससर्वदोषैर्गलविद्रधिस्तु ... ॥ १०६८ ॥

गलविद्रधि का लक्षण ॥

तीनों दोषों के कोपसे तीनोंदोषों की पीड़ाओं से युक्त संपूर्ण गले में शोथ उत्पन्न होता है इसे गलविद्रधि कहते हैं इसमें सन्निपातज विद्रधि के लक्षण होते हैं ॥ १०६८ ॥

अथ गलौघमाह ॥

शोथोमहान्यस्तुगलावरोधी तीव्रज्वरोवायुगतेर्निहन्ता । कफेनजातोरुधिरान्वितेन गलेगलौघःपरिकीर्त्तितोऽसौ ॥ वायुगतेर्निहन्ता उदानवायुगतिरोधकः ॥ १०६९ ॥

गलौघ का लक्षण ॥

रुधिरसहित कफके द्वारा कंठका रोकनेवाला और उदानवायु की गतिका रोकनेवाला शोथ उत्पन्न होताहै इसे गलौघ कहते हैं इसमें अत्यन्त ज्वर होताहै ॥ १०६९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ स्वरघ्नमाह ॥

...कं भिन्नस्वरःशुष्कंविमुक्तकण्ठः । कफोपदुष्टेष्वनिलायने ... ॥ ताम्यमानःतमःपश्यन् शुष्कविमुक्तकण्ठः शुष्कोवि ...स्थसःअस्वाधीनताभक्तंगिलितुमशक्यत्वात् अनिलायनेषुवायु ...तु ॥ १०७० ॥ स्वरघ्नका लक्षण ॥

...धकार सा दिखाई देवे बहुत श्वास होवे स्वरभंग होजाय भोजन निगला ...र्ग कफसे दूषित होजायँ इस रोगको स्वरघ्न कहते हैं ॥ १०७० ॥

अथ मांसतानमाह ॥

...युःसुक ...गलोपरोधंकुरुतेक्रमेण । समा... ...वैकृतोविकारः ॥ प्र... ...विस्तारवान्सुकष्टः...

...दोषों के कोपसे उत्पन्न ... तानका लक्षण ॥ ...ताहै इसे मांसतान कह... ...विस्तारयुक्त लंबा और ...

अथ विदारीमाह ॥

...इवयथुंसुताम्रमन्तर्गलेपूतिविशीर्णमांसम् ...नवि... ...ताहै इति ... विशेषात्सतुयेनशेते ॥ सपुरुषोयेनपार्श्वेणविशेषाद्बाहुल्यतशे... ...तीत्यर्थः ॥ १०७२ ॥ विदारीका लक्षण ॥

...पत्तके कोप से गले के भीतर दाह ... ...लेहुए मांससे युक्त शोथ उत्पन्न ... इसे विदारी ... ...ताहै उसी ओर को यह रोग होताहै ॥ १०७२ ॥

अथ मुखरोगाणांचि... ...भवति ...

रोहिणीनान्तुसाध्यानांहितंशोणितमोक्षणम् । ... ...रोरुहान् ... वातजान्तुहतेरक्तेलवणैःप्रतिसारयेत् । सुखोष्णान्स्नेहगण्डूषान्धा... ...राः ॥ विस्राव्यपित्तसम्भूतांसिताक्षौद्रप्रियंगुभिः । घर्षयेत्कवलोद्राक्षापरूषैःका...हतः ॥ आगारधूमकटुकैःकफजांप्रतिसारयेत् । आगारधूमःकोलइतिलोके कटुकानिशुण्ठीपिप्प लीमरिचानि । श्वेताविडंगदन्तीषुतैलंसिद्धंससैन्धवम् । नस्यकर्माणिदातव्यंकवलश्चक फोच्छ्रये ॥ श्वेतापराजिता पित्तवत्साधयेद्वैद्योरोहिणींपित्तसम्भवाम् । विस्राव्यकण्ठ शालकंसाधयेत्तुण्डिकेरिवत् ॥ एककालंयवान्नञ्चभुञ्जीतस्निग्धमल्पशः । उपजिह्वकवञ्चा पिसाधयेदधिजिह्वकम् ॥ एकवृन्दन्तुविस्राव्यविधिंशोधनमाचरेत् । एकवृन्दमिवप्रायो वृन्दञ्चसमुपाचरेत् ॥ गिलायुश्चापियोव्याधिस्तञ्चशस्त्रेणसाधयेत् । अमर्मस्थंसुसंपक्वंछे दयेद्गलविद्रधिम् ॥ १०७३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गलेके रोगोंकी चिकित्सा॥

साध्य रोहिणी रोगमें रक्तका निकालना, वमन, धूमपान, कुल्लेक [illegible]
रोहिणी में रुधिर निकलवाकर सेंधानोन मलै और कुछ उष्णस्नेहके [illegible]
रोहिणी में रुधिर निकलवाकर गोंदी, शक्कर तथा शहद को मलै और [illegible]
द्वारा कवल धारणकरे कफज रोहिणी में गृहधूम तथा त्रिकटु के चूर्णको मलै [illegible] ॥ १०२६ ॥
वायबिडंग, जमालगोटेकीजड़ तथा सेंधेनोनके द्वारा पाक कियेहुये तेलकी [illegible]
धारण करे इससे कफजरोहिणी नष्ट होती है पित्तज रोहिणी में पित्तरोग [illegible] दन्त [illegible]
पिप्पलूकमें तुंडिकेरी रोगकीसी चिकित्सा करे और एकबार जौका बनाहुआ [illegible]
[illegible] अधिजिह्वमें उपजिह्विकी [illegible] चिकित्साकरे एकवृन्दमें रुधिर [illegible] शोधनादि [illegible]
[illegible] चिकित्सा करे गिलायु में शस्त्रक्रिया मर्म में [illegible] हुई [illegible]

[illegible] सामान्यकण्ठरोगाणां [illegible] त्सामाह ॥

[illegible] णैर्नस्यादिकर्मभिः [illegible] चिकित्सान्तु कुर्[illegible]
[illegible] कम्। हरीतकीकषायो [illegible]
[illegible] पाठामुस्तकलिंगकाः। गोमूत्रक्वथिताः [illegible]
[illegible] त्रिकटुक [illegible] दार्वीत्वक्त्रिफलाघनम्। पाठारसाञ्जनं [illegible]
[illegible] किण्वं [illegible] गलरोगेमहौषधम्। योगाश्चैतेत्रयः प्रोक्तावातपित्त
[illegible] रसाञ्जनंदारुनिशां [illegible] कृष्णाम्। क्षौद्रेणकुर्य्याद्गुटि [illegible]
[illegible] जलमें [illegible] १०७४ [illegible]

से पीप जल तथा रस बहता है इस कण्ठ [illegible] रोगोंका [illegible] कित्सा॥

अथ [illegible] नस्यआदि कर्म के द्वारा चिकित्सा करनी चाहिये
मारुतः कफसंयुक्त [illegible] का काढ़ा अथवा शहदयुक्त हडका काढ़ा, कण्ठरोगों
[illegible] और इन्द्रजौ इनसबका गोमूत्रके द्वारा क्वाथ करके
[illegible] १०७४ [illegible] का, त्रिकटु, दारुहल्दी, दालचीनी, त्रिफला, मोथा, पाढ़, रसौंत,
दूब [illegible] दोषों के कोप [illegible] चूर्णको शहद के साथ सेवन करने से कण्ठरोगों का नाश होता है ये तीनों
योग क्रमसे वात पित्त तथा कफनाशक हैं जवाखार, तेजबल, पाढ़, रसौंत, दारुहल्दी और पीपल
इनकी शहद में गोली बांधकर मुखमें रखने से सम्पूर्ण कण्ठरोग नष्ट होते हैं॥ १०७४॥

अथ समस्तमुखरोगास्तत्रतेषांनिदानंसंख्याञ्चाह ॥

पृथग्दोषैस्त्रयोरोगाः समस्तमुखजाःस्मृताः ॥ १०७५ ॥

सम्पूर्ण मुखके रोग इनके निदान और संख्या ॥

सम्पूर्ण मुख के रोग वातज, पित्तज और कफज भेदसे तीनप्रकार के होते हैं ॥ १०७५॥

अथ तत्र वातिकस्यलक्षणमाह ॥

स्फोटैःसतोदैर्वदनंसमन्ताद्यत्राचितंसर्वसरः सवातात ॥ १०७६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वातज सर्वमुखरोग का लक्षण ॥
मुखमें सूजी गडनेकीसी पीडा सहित स्फोटक होते हैं ॥ १०७६ ॥

अथ पैत्तिकमाह ॥
कैःसपीतैर्यत्राचितश्चापिसपित्तकोपात् ॥ १०७७ ॥

पित्तज सर्वमुखरोग का लक्षण ॥
मे रक्त तथा पीतवर्ण दाहयुक्त छोटी २ फुन्सियां होती हैं ॥ १०७७ ॥

अथ श्लैष्मिकमाह ॥
...दनः कण्डु... र्गैर्यत्राचितश्चापिसवैकफेन (...) अल्पवेद...
...७८ ॥
क... सर्वमुखरोगका लक्षण ॥
र्वमुखरोगमें थोडी पीडा तथा ... युक्त शरीरके समान ...
...रोगेष्वसाध्यानाह ॥
...ोपेषवर्ज्यास्तुमांसरक्तौत्रद... इसके उ...
...दोषजानाडी । दन्तेषुचनसिध्यन्तिश्याव...
लसस्तु...ष्वर्बुदंतथा ॥ स्वरघ्नोवलयोवृन्दोबलासः... नाहै इति राति
श्चशतघ्नीरोहिणीगले ॥ असाध्याःकीर्तिताःह्येतेरोगादश...
ग्रःप्रत्याख्यायसमाचरेत् ॥ १०७८ ॥

...ठरोगोंमें मांसज, रक्तज तथा त्रिदोषज असाध्यहैं द...
षिररोग असाध्यहैं दंतरोगोंमें श्यावदंत, दालन तथा भंजन ...
तालुरोगोंमें अर्बुद असाध्यहै कंठरोगोंमें स्वरघ्न, वलय, ... तिलजिह्वा ... शतघ्नी,
और रोहिणी असाध्यहैं येउन्नीस मुखरोग असाध्यहैं वैद्यभवति ...

अथ समस्तमुखरोगाणांचिकि...रोरुहान्

वातात्सर्वसरञ्चूर्णैर्लवणैःप्रतिसारयेत् । तैलंचातहरैःसिद्धंहितंकेसरि... पित्ता
त्मकेसर्वसरेशुद्धकायस्यदेहिनः । सर्वःपित्तहरःकार्य्योविधिर्मधुरशीतलः ॥ प्रतिसारण
गण्डूषधूमसंशोधनानिच । कफात्मकेसर्वसरेक्रमेकुर्य्यात्कफापहम् ॥ मुखपाकेशिरावेधः
शिरसश्चविरेचनम् । मधुमूत्रघृतक्षीरैःशीतैश्चकवलग्रहः ॥ जातीपत्रामृताद्राक्षायास
दार्वीफलत्रिकैः । क्वाथःक्षौद्रयुतःशीतोगण्डूषोमुखपाकनुत् ॥ कार्य्यश्चबहुधानित्यंजाती
पत्रस्यचर्वणम् । कृष्णजीरककुष्ठेन्द्रयवचर्वणतस्त्र्यहात् । मुखपाकव्रणक्लेददौर्गन्ध्यमुप
शाम्यति । पटोलनिम्बजम्ब्वाम्रमालतीनवपल्लवैः॥पञ्चपल्लवजःश्रेष्ठःकषायोमुखधावने । स्व
पञ्चवल्कलजःक्वाथस्त्रिफलासम्भवोऽथवा॥ मुखपाकेप्रयोक्तव्यःसक्षौद्रोमुखधावने । स्व
रसःक्वथितोदार्व्याघनीभूतोरसक्रिया ॥ सक्षौद्रामुखरोगासृग्दोषनाडीव्रणापहा । सप्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

च्छदोशीरपटोलमुस्तहरीतकीतिक्तकरोहिणीभिः ॥ ...
त्पाकहरंमुखस्य । राजद्रुमः धनबहेराइतिलोके । तिलानील...
क्षौद्राज्यदिग्धवक्त्रस्यगण्डूषोमुखपाकनुत ॥ आस्वादिता ...
यति । त्वग्बीजपूरफलजापवनमपाच्यंवारयति ॥ हरिद्रानिम्बपल्लकी ...
म् । तैलमेभिर्विपक्तव्यंमुखपाकहरंपरम् ॥ यष्टीमधुपलमेकंत्रिंशत् ... दन्त...
प्रस्थंतद्द्विगुणपयोविधिनापक्वंतुनस्येन ॥ निशिवदनस्यस्रावंक्षण...
तम् । कचघर्षंत्वमवृइयंक्रमशोऽभ्यङ्गेनजन्तूनाम् ॥ इति मुखरोग...

समस्तमुखरोगोंकी चिकित्सा ...
... चूर्ण तथा सेंधानोन रगडे ... वातज ...
... ग्रहणकरे पित्तज ... विरेचनादिके द्वारा
... के द्वारा पित्तनाशक ... चिकित्साकरे कफज सर्वमुख...
... संशोधन इनका प्रयोग ... मुखपाकरोगमें शिरावेध ...
... करे चँबेलीकी पत्ती, गिलो...
... शहदडालकर ठंढेकुल्ले करनेसे मुखपाक न...
... चाहिये काला जीरा, कूट और इन्द्र जौ इनको ...
... दुर्गन्धिका नाश होताहै परवल, नींब, जामुन, आम तथा चँबेलीकी
... नेसे मुखपाक नष्टहोताहै अथवा त्रिफलाके काढेमें शहदडालकर धो-
... मुखरोग, रक्तदोष और नासूरका नाश ...
... नेसे जलल, मोथा, हड, पित्तपापडा, ... णी, मुलेठी, अमलतास और लालचंदन ...
से पीप जल तथा रस बहता है इसे ... तिल, नीलोत्पल, घी, शक्कर दूध और शहद इनसबको ...
... अच्छाहोताहै बिजौरे नींबूकी छालको एकबारभी चाबने से मुखको
मारुतःकफसंयुक्त ... नीमकी पत्ती, मुलेठी और नीलोत्पल इनके द्वारा पाक
... ॥ १०७६ ॥ ... मुलेठी चारतोले और नीलोत्पल १२० इनके द्वारा
दूध ... तेलको पकावै इसकी नासलेनेसे सोतेमें रालका बहना नष्टहो
जात... इसको मलनेसे दोष संघात शुष्कव्रण और कचघर्षका नाश होताहै इतिमुख
रोगाधिकार समाप्त ॥ १०८० ॥

अथ विषाधिकारः ॥

तत्रविषस्यद्वैविध्यमाह । स्थावरंजंगमञ्चैवद्विविधंविषमुच्यते । दशाधिष्ठानमाद्यंत द्वितीयंषोडशाश्रयम् ॥ १०८१ ॥

विषका अधिकार । दोप्रकारका विष ॥

स्थावर और जंगम भेदसे विष दोप्रकारका होता है उसमेंसे स्थावर विषके दश और जंगम विषके सोलह आश्रय हैं ॥ १०८१ ॥

अथ स्थावरविषस्यदशाश्रयानाह ॥

मूलंपत्रंफलंपुष्पंत्वक्क्षीरंसारमेवच । निर्यासोधातवःकन्दःस्थावरस्याश्रयादश ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...त्रविषंविषपत्रिकादि, फलविषंकर्कोटकादि, पुष्पविषंवेत्रादि, ...करम्भादीनि, क्षीरविषंस्नुह्यादि, धातुविषंहरितालादि, कन्दवि... १०८२ ॥

स्थावरविषके दशआश्रय ॥

...पुष्प, छाल, दूध, सार, गोंद, धातु और कंद ये दश स्थावर विष के आश्रयहैं—जैसे ..., पत्र विष. विषपत्रिका आदि, फलविष. कर्कोटक आदि, पुष्पविष. बेंतआदि ...नविष. करंभादि, दुग्धविष. थूहरआदि, धातुविष. हरितालआदि और कंदवि...

अथ जंगमविषस्यषोडशाश्र...

...श्वा दंष्ट्राचनख...त्रमलानिच । शुक्रंलालामुख... ...पित्तशुक्रानिदशषट्... ...श्रयाः । तद्यथा । ह... ...षाः भौमसर्पाःदंष्ट्रानख... ...व्याघ्रादयः मूत्रपुरीषवि... ...दयःलालाविषाःउच्चिटि... ...स्पर्शमूत्रपुरीष... ...षविषाःइचत्रशीर्षादयःआस्थ... ...मरादयः ॥ १०८३ ॥

जंगमविष के सोलह आश्र...

दृष्टि, निःश्वास, दाढ़, नाखून, मूत्र, मल, वीर्य, लार, आर्तव, स्पर्श... पित्त और शूक ये सोलह स्थावरविषके आश्रयहैं जैसे ... भौमसर्प, दंष्ट्रा, नखविष. व्याघ्र आदि, मूत्र तथा पुरीष ... छिपकलीआ... ...विष. उच्चटिकाआदि, लाला, स्पर्श, मूत्र, पुरीष, आर्तव, वीर्य... ...चित्रशीर्षआदि, अस्थि विष. सर्पआदि, पित्त विष. शकुलमछल...

स्थावरविषाणांसामान्यानांकार्य्यम्...

...भवति

उद्वेष्टनंमूलविषेर्मोहःप्रलपनं...

सामान्य स्थावर विषोंके कार्य मूल विषके कार्य...

मूलविषों से ऐंठन, मोह और प्रलाप होताहै ॥ १०८४ ॥

तत्रपत्रविषस्यकार्य्यमाह ॥

जृम्भणंवेपनंश्वासोनृणांपत्रविषैर्भवेत् ॥ १०८५ ॥

पत्रविषके कार्य ॥

पत्र विषोंसे जमुहाई, कंप और श्वास होते हैं ॥ १०८५ ॥

फलविषस्य कार्य्यमाह ॥

शुष्कशोथःफलविषैर्दाहोद्वेषश्चभोजने ॥ १०८६ ॥

फलविषका कार्य ॥

फलविषोंसे अंडकोशोंमें शोथ, दाह और भोजनमें द्वेष होताहै ॥ १०८६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ पुष्पविषस्यकार्य्यमाह ॥

भवेत्पुष्पविषैश्छर्दिराध्मानंमूर्च्छनंतथा ॥ १० ... ॥ १०२६ ॥

पुष्पविषका कार्य ॥

पुष्पविषोंसे छर्दि, आध्मान और मूर्च्छा होती है ॥ १०... ॥

अथ त्वक्सारनिर्य्यासकार्य्याण्याह ॥

त्वक्सारनिर्य्यासविषैरुपमुक्तैर्भवन्तिहि । आस्यदौर्गन्ध्यपारुष्य...

त... ॥ १०८८ ॥ त्वचासार तथा निर्यास विषके कार्य ॥

...मुखमें दुर्गन्धि, कर्कशता, शिरमें पी... द्वारा ... कफस्त्र होताहै १०...

अथ क्षीरविषकार्यमाह ॥

...रविषैर्विद्धे ... गुरुजि... ॥ १०८९ ॥

दूधविषके कार्य ॥

...ा, मलभेद और ...

...व, क्षेद ... तालुनि । प्रायेणकालघातीनिविषाण्येतानि ... निकालान्तरमारकाणि ॥ १०९० ॥

धातु विषके कार्य ॥

... प्रायः ये नौ विष कालान्तरमें प्राण-

... कन्दविषस्यकार्य्यमाह ॥

...त्रयोदश । सर्वाण्येतानिकुशलैर्ज्ञेयानिदशभिर्गुणैः ॥

मारुतःकफसंयुक्त... योनिहन्तितत्सर्वंगुणैश्चदशभिर्युतम् १०९१

... ॥ १०... कन्दविष के कार्य ॥

... चूर्णविष कहगयेहैं वह दश गुणोंसे युक्त होने चाहिये स्थावर, जंगम अथवा

कृत्रिमवि... गुणोंसे युक्त होनेपर शीघ्रही प्राणनाशक होताहै ॥ १०९१ ॥

अथ तान्दशगुणानाह ॥

रूक्षमुष्णंतथातीक्ष्णंसूक्ष्ममाशुव्यवायिच।विकाशिविशदञ्चैवलघुपाकिचतेदश १०९२

दश गुण ॥

रूक्ष, उष्ण, तीक्ष्ण, सूक्ष्म, आशुकारी, व्यवायी (असर होनेकेबाद पचनेवाला) विकाशी, विशद, लघु और अपाकी ये दश गुणहैं ॥ १०९२ ॥

अथ तैर्गुणैर्विषस्यकार्य्यमाह ॥

तद्रौक्ष्यात्कोपयेद्वायुमौष्ण्यात्पित्तंसशोणितम् । तैक्ष्ण्यान्मतिंमोहयतिमर्मबन्धा

ञ्छिनत्तिहि ॥ शरीरावयवान्सौक्ष्म्यात्प्रविशेद्विकरोतिच । आशुत्वादाशुतत्प्रोक्तं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शत्वात्क्षपयतिदोषान्धातून्मलानपि । अतिरिच्यतेवैश
दुर्जरंचाविपाकित्वात्तस्मात्क्लेशयतेचिरम् ॥ १०९३ ॥

दश गुणयुक्तविषके कार्य ॥

...क्षतासे वायुको उष्णतासे पित्त तथा रुधिरको कुपित करता है तीक्ष्णता से ...नोंका छेद करता है सूक्ष्मतासे अंगों में प्रवेश करके उनको विकृत करताहै ... करताहै व्यवायि गुणसे प्रकृतिको नष्ट करता है विकाशिगुणसे दोष धातु ...हैं विशदगुणसे बहुत दस्तलाताहै लाघवसे दुःसाध्य होताहै और अपा... ...कारणोंसे यह बहुत कालतक क्लेश...

अथ ...षलिप्तशस्त्रहतस्य लक्षणमाह

...कंयातियस्यक्षतंततू... पच्यतेचाप्यभीक्ष्ण...
...मांसंशीर्य्यतेयस्यचापि... ...तापौदाहमूर्च्छेचयस्...
...तान्येवकुर्य्यादमित्रैर्द... ...णेयस्यचापि...
...:बहि:स्थित:दाहोऽभ्यन्तरस्थ...

विषयुक्त शस्त्रलगनेका लक्षण

विषमें बुझाय हुये शस्त्रके लगनेसे घाव जल्दी पकताहै-घाव... ...ताहै इनि... है और काला क्लेदयुक्त तथा दुर्गंधित मांस गलकर गिरताहै और ... ताप और मूर्च्छा होतीहैं व्रणमें शत्रुओंके द्वारा विषदेनेपरभी ये...

प्रायेणराजादीनामन्नादौशत्रवोविषं ददतितेषांज्ञाना...
इंगितज्ञोमनुष्याणांवाक्चेष्टामुखवैकृतैः। जानीयाद्विष... ...
नददात्युत्तरंपृष्टोविवक्षुर्मोहमेतिच । अपार्थंबहुसंक... ...
स्फोटयेदुर्वीविलिखेत्प्रहसेदपि। वेपथुश्चास्यभवति ...
मश्चनखैःकिञ्चिच्छिनत्तिच । आलभेतासकृद्दीनः... ...शिरोरुहान् ... सुरप
द्वारैर्वीक्षतेचपुनःपुनः । वर्त्ततेविपरीतंचविषदाताविचेतनः ॥ इंगित... ...सूचकम्
आकारंमुखवैकृतंमुखवैवर्ण्यादिएभिर्लिङ्गैर्वक्ष्यमाणैः नददात्युत्तरंपृष्टः स्वायासत्कर्म्मज
नितव्यामोहात्संकीर्णम् अस्फुटंभयजनितपर्वव्यथापनोदायांगुलीःस्फोटयेत्प्रहसेत् ।
अहेतावपिध्यामःदग्धसमानवर्णःआलभेतस्पृशेतविपरीतंयथास्यादेवंवर्त्तते ॥ १०९५॥

प्रायः शत्रुगण राजालोगोंको अन्नआदिमें विष देते हैं उनके जानने के लिये लक्षण ॥

प्रायः शत्रुगण राजालोगोंको अन्नआदिमें विष देते हैं उनके जानने के लिये लक्ष- बुद्धिमान् हृदयकी बात जाननेवाला मनुष्य.वाणी,चेष्टा,मुखके विकार और आगे कहेभये लक्ष- णोंके द्वारा विष देनेवालेको जानै विषदेनेवाला मनुष्य पूंछनेसे उत्तर नहींदेता कहने की इच्छा क- रने परभी मोहित होजाताहै मूर्खकी तरह अनर्थक बहुत तथा अस्फुट वचन कहता है भयसे भई पोरोंकी पीडाको निवारण करने के लिये अंगुली चिटकावे भूमि में चिलबिलाए खिंचावै बेकारण हँसै कांपै डरकर एक २ को देखै मुख विवर्ण अथवा झुलसासा मालूम होय नखोंसे कुछ तृणआदि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तोंडे दीन होकर वारंवार कान तथा बालोंको छुवै दुर्मार्गों से भाग [illegible] देखै और ज्ञानरहित होकर उलटा बैठै ॥ १०९५ ॥

अथ जंगमविषाणांसामान्यानां कार्याण्य[illegible]

निद्रांतन्द्रांक्लमन्दाहंसम्पाकंलोमहर्षणम् ।शोथंचैवातिसारंचकुरुतेज[illegible] [illegible] १०९६ ॥

अथ सामान्य जंगमविषों के कार्य ॥

जंगमविष.निद्रा,तंद्रा,ग्लानि,दाह,पाक,रोमांच,शोथ औ अतीसार को उत्पन्न[illegible]

अथ जंगमेषुतीक्ष्णतरेषु सर्पानाह ॥

[illegible] मण्डलराजिलाः । यथाक्रं[illegible] [illegible]न्तराद्वन्[illegible]

[illegible] संख्यातास्तेऽत्रविंशतिः । [illegible]डलैर्विविधैश्चित्रा[illegible]

[illegible]ज्वलनार्कविषाःस्मृ[illegible] । स्निग्धाविविधवर्णाभि[illegible]

[illegible]र्यभान्तिराजिलास्ते[illegible] [illegible]ट् । एतेयथाक्रमंवा[illegible]

[illegible] यथाभोगिनोमण्डलि[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] जंगमविषों में सर्पोंका वर्णन ॥

[illegible] तथा राजिल सर्प कफात्मक और दोगले द्वंद्वात्मक होते हैं [illegible] और वह बीस प्रकार के होते हैं मंडली सर्प अनेक प्रकार के मं- [illegible] होते हैं यह छःप्रकारके हैं इनका विष, अग्नि और सूर्य्य से [illegible] [illegible]ताहै [illegible]नेसे और तिरछी ऊपरको चढ़ी भई तथा अनेक वर्णवाली रेखाओंसे चित्रि[illegible] [illegible]ते हैं यह छःप्रकारके बहते [illegible]९७ ॥

अथ [illegible]तिकृतदंशदेशलक्षणभेदमाह ॥

दंशोभोगि[illegible]कृष्ण[illegible]कफसंयु[illegible]कारकृत् । पीतोमण्डलिनःशोथोमृदुःपित्तविकारवान् ॥ [illegible]भवद्दंशः[illegible]श्चपिच्छिलः । पाण्डुःस्निग्धोऽतिसान्द्रासृक्सर्वश्ले[illegible]ष्मविकार[illegible] [illegible]०९८ ॥

भोगी आदि सर्पोंसे काटेभये स्थानके लक्षण ॥

भोगी सर्पके काटेका स्थान.कृष्णवर्ण और सम्पूर्ण वातके विकारोंका करनेवाला होताहै मंडली सर्पके काटेका स्थान.पीतवर्ण शोथयुक्त कोमल और पित्त के विकारों से युक्त होताहै राजिलसर्प के काटेका स्थान.स्थिर,शोथयुक्त, लसलसा, पांडुवर्ण, स्निग्ध, अतिगाढ़े रुधिरवाला और संपूर्ण कफके विकारों से युक्त होताहै ॥ १०९८ ॥

अथ देशविशेषेकालविशेषेच दष्टस्यासाध्यत्वमाह ॥

अश्वत्थदेवायतनश्मशानवल्मीकसन्ध्यासु चतुष्पथेषु । याम्येचपित्र्येपरिवर्जनीया ऋक्षेनरामर्मसुयेचदष्टाः ॥ याम्येभरण्यांपित्र्येमघायाम् । दर्वीकराणांविषमाशुहन्तिमे घानिलोष्णेद्विगुणाभवन्ति ॥ उष्णे उष्णसंयोगे ॥ १०९९ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कालविशेषमें काटे भयेके असाध्य लक्षण ॥

, बांबीमें, सायंकाल के समय और चौराहेमें काटने से सर्पों का सर्पोंका विष.मेघ,वायु तथा उष्णतासे द्विगुण होताहै भरणी होताहै और मर्मस्थान में भी काटाहुआ असाध्य होताहै ॥ १०९९ ॥

अथ दर्वीकरलक्षणमाह ॥

स्वस्तिकांकुशधारिणः । ज्ञेयादर्वीकराःसर्पाःफणिनःशीघ्रगा

दर्वीकरका लक्षण ॥

इन लक्षणों से युक्त शीघ्र चल... सर्पोंको दर्वी

अथापरेषुये... माशुमारकंभवतित

...जीर्णपित्तातपपीडितेषु ... षुबुभुक्षितेषु । ...

...षचापि ॥ शस्त्रक्षतेय... र्षोविषाभिभूतंपरिवर्जयेत्तम् ॥ जिह्म...

... कृष्णश्चरक्तःश्वयथुश्चदंशेहन्वोःस्थिरत्व...

आकर्षणात्नासावसादःनासायाःनतत्वं । कण्ठभंगःग्रीव...

हनु ह्वयस्तम्भः अपरञ्च ॥ वान्तिर्घनायस्यनिरेतिवक्त्राद्रक्तंस्र...

...ताश्चतुरश्चपश्येद्यस्यापिवैद्यःपरिवर्जनीयः ॥ यस्यदन्त...

... । उन्मत्तमत्यर्थमुपद्रुतंवाहीनस्वरंवाप्यथवाविवर्णम् ॥ ...

जह्याज्ज्वरंतत्रनकर्मकुर्य्यात् । अत्यर्थमुपद्रुतंवाज्वरातिदूषयेद्... शयेनोपद्रुतंहीन स्वरंवक्तुमक्षमंविवर्णंकृष्णवर्णंसारिष्टंनासाभंगादियुक्तं ... विषवेगः । लह रिइतिलोके। तद्वर्जितं ॥ ११०१ ॥

अन्य जिनमें विष शीघ्र मारक होताहै उनका वर्णन ॥

अजीर्ण,पित्त तथा धूपसे पीडित, बालक, वृद्ध, बुभुक्षित क्षीण, क्षत, प्रमेह तथा ..., रूक्ष,निबैल तथा गर्भिणी इनको विष असाध्य होजाताहै काटने से जिसके रुधिर न बहै जिसके लताके द्वारा मारने से चिह्न न होय और ठंढे पानी के सींचने से रोमांच न होय ऐसे विषसे पीडित की चिकित्सा न करे जिसका मुख टेढ़ा होजाय खींचने से बालभरैं नासिका भुकजाय ग्रीवा डालदेय जब जाबडेजकडजायँ और काटनेके स्थानमें कालारक्त तथा सूजन होय ऐसा विषपीडित मनुष्य असाध्यहै जिस विष पीडितको गाढा वमनहो औ नासिका, मुख, लिंग तथा गुदा आदि से रुधिर बहै और चार दांत जिसके लगे होयँ वह असाध्य है जो विष पीडित उन्मत्त होय अथवा ज्वर तथा अतीसार आदि उपद्रवों से अत्यन्त पीडितहो बोलने में असमर्थ होय कृष्णवर्ण होय नासाभंग आदि अरिष्टों से युक्त होय अथवा जिसे लहरें न आतीहों वह असाध्यहै ॥ ११०१ ॥

स्थावरंजङ्गमंचविषमेवजीर्णत्वादिभिःकारणैःदूषीविषसंज्ञांलभतेतदाह । जीर्णविष

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जौषधिदूषितंवादावाग्निवातातपशोषितंवा ॥ स्वभावत ...
ताम्नोति । जीर्णमतिपुराणंविषघ्नौषधिदूषितंविषघ्नैर्भिरो ...
... गुणविप्रहीनंस्वभावादेवदशानांगुणानांमध्येएकद्वित्र्या ...

स्थावर तथा जंगमही विष जीर्णत्व आदि कारणों से दूषीविष कहला ... ॥ १०२६ ॥
बहुतपुराना,विषघ्न,औषधोंसे हीन वीर्य कियागया, दावाग्नि, वायु तथा ...
अथवा स्वभावहीसे दशगुणों में से एक दो तीन आदि गुणोंसे रहित विष ... दन्त ...

अथ दूषीविषस्यकार्य्यमाह ॥

... र्थततत्कफान्वितंवर्षगणानुब ... नोभिन्नपरी ...
... ॥ मूर्च्छाभ्रमंगद्गदवाग्ववमिंविचेष्टमानौरति ...
... न्वितं कफेनमन्दीकृत ... ादिगुणंवर्षगणानुबन्धि ...
... ततथादूषीविष ... भिन्नपुरीषवर्णाभिन्नपुरी ...
... ॥ मूर्च्छादीनूव्याधीनूलभते ... लोकमें

... दूषीविष का कार्य ॥
... हीं मारताहै परन्तु कफके द्वारा उष्णता आदि गुण ... होने
... ष से भये दादरोगवाले के दूषी विष पीडित मनुष्य. मलभेद,
... च्छी,भ्रम,गद्गद वाणी,छर्दि और विरुद्ध चेष्टाओंकेद्वारा मूर्च्छाआदि
... ताहै ॥ ११०३

... थस्थानविशेषोत्थितेदूषीविषेलिङ्गविशेषमाह ॥

आमाशयस्थे ... पक्वाशयस्थेऽनिलपित्तरोगी । भवेत्समुद्ध्वस्तशिरोऽङ्ग ...
ट्कोविलूनपक्ष ... यथाविहंगः ... समुद्ध्वस्तशिरोऽङ्गरुट्कःसमुद्ध्वस्ताःशिरोरुहाःकेशाः
अंगरुहाणि ... ग्नियस्य ... पिलिंगंपक्वाशयस्थेदूषीविषेबोद्धव्यम् । स्थितंरसादि
ष्वथ ... न्करोतिधातुप्रभवान्विकारान् ॥ तत्रदूषीविषेयथोक्तान्सुश्रुतेव्याधिसमु
देशीयो ... ११०४ ॥

स्थान विशेष में स्थित दूषीविष के विशेष लक्षण ॥

दूषीविषके आमाशयमें स्थित होनेपर कफ वातजरोग होतेहैं पक्वाशयमें स्थित होनेपर वात तथा पित्तके रोग होते हैं और शिरके केश तथा शरीर के रोमोंके गिरनेसे पक्षहीन पक्षी कीसी आकृति होजाती है और रसादि धातुओं में स्थित होनेपर सुश्रुतके व्याधि समुद्देशीयाध्याय में कहेहुए धातुओं में होनेवाले रोग होते हैं ॥ ११०४ ॥

अथ दूषीविषस्यप्रकोपसमयमाह ॥

कोपंतुशीतानिलदुर्दिनेषुयात्याशुपूर्वंशृणुतस्यरूपम् ॥ ११०५ ॥

दूषीविषके कुपित होनेका समय ॥

शीत वायु तथा मेघोंसे युक्त दिन में दूषी विष कुपित होताहै ॥ ११०५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...युञ्जनयेत्तथान्यदानाहमन्यच्चकृमींश्च ... रांश्चबहुप्रकारान् ॥ अन्यद्दूषीविषंत ...
टादीन् ॥ ११०८ ॥ दूषीविषके भेदसे विकारोंका ...

कोई २ दूषीविष उन्माद, कोई आनाह, कोई कृमि तथा वीर्य ... कुष्ठ विसर्प तथा विस्फोटक रोगोंको उत्पन्न करता है ॥ ११०८ ॥

अथ दूषीविषस्यनिरुक्तिमाह ॥

दूषितंदेशकालान्नंदिवास्वप्नैरभीक्ष्णशः । यस्मात्सन्दूषयेद्धातूं ... स्माद्दूषीविषंस्मृतम् ॥ देशःआनूपादिःकालोदुर्द्दिनादिःअन्नंकुलत्थतिलमसूरादिधातुदूषकत्वाद्दूषीविषम् ॥ ११०९ ॥ दूषीविषकी निरुक्ति ॥

अनूप आदि देश, दुर्द्दिन आदि काल, कुलथी, तिल तथा मसूरादि अन्न और दिन ... सोना. इन कारणोंसे कुपित होकर धातुओं को वारंवार दूषित करताहै इसलिये दूषीविष ... भारीपन है ११०९॥

अथ दूषीविषस्यसाध्यत्वादिकमाह ॥

साध्यमात्मवतःसद्योजाप्यःसंवत्सरोत्थितम् । दूषी ... मसाध्यंस्यात्क्षीणस्याहितसेविनः ॥ १११० ॥ दूषीविषके साध्यादि लक्षण ॥

पथ्य करनेवाले का शीघ्रही दियाहुआ दूषीविष साध्य होताहै वर्ष दिन रहनेवाला याप्य होता है और अपथ्य करनेवाले क्षीण मनुष्य का दूषीविष असाध्य होताहै ॥ १११० ॥

कृत्रिमंविषंद्विविधमेकंसविषंदूषीविषसंज्ञमपरंविषंतदेवगरसंज्ञंतथाचकाश्यपसंहितायाम् । संयोगजश्चद्विविधंद्वितीयंविषमुच्यते । दूषीविषंतसत्रिषमविषङ्गरउच्यते ॥ संयोगजंकृत्रिमंविषंद्वितीयंस्वाभाविकंतच्चद्विविधम् ॥ ११११ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

[illegible]

ध्नौषधिदूषितंवादावाग्निवातातपशोषितंवा ॥ स्वभावतः [illegible]

ताम्नोति । जीर्णमतिपुराणंविषघ्नौषधिदूषितंविषघ्नैर्भिरो [illegible]

[illegible] गुणविप्रहीनंस्वभावादेवदशानांगुणानांमध्येएकद्वित्र्यादि [illegible]

स्थावर तथा जंगमही विष जीर्णत्व आदि कारणों से दूषीविष कहे [illegible] ॥ ११२६ ॥

बहुतपुराना, विषघ्न, औषधोंसे हीन वीर्य कियागया, दावाग्नि, वायु तथा [illegible]

अथवा स्वभावहीसे दशगुणों में से एक दो तीन आदि गुणोंसे रहित विष [illegible]

अथ दूषीविषस्यकार्य्यमाह ॥

[illegible] र्यत्तत्कफान्वितंवर्षगणानुब [illegible] भिन्नपरि [illegible]

[illegible] ॥ मूर्च्छांभ्रमंगद्गदवाग [illegible] चविचेष्टमानो [illegible]

[illegible] न्वितं कफेनमन्दीकृत [illegible] दिगुणंवर्षगणानुबन्धि [illegible]

[illegible] तथादूषीविषजदु [illegible] भिन्नपुरीषवर्णः भिन्नपुर [illegible]

[illegible]

गरविषका कार्य्य ॥

[illegible] पांडुता, कृशता, मंदाग्नि, ज्वर, मर्मों में पीड़ा, [illegible]

[illegible] धातुक्षय और अन्य नानाप्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं ॥ ११११३ ॥

[illegible] न्तुविशेषाणामुत्पत्तिंनिरुक्तिसङ्ख्याञ्चाह ॥

[illegible] तामुनेःप्रस्वेदबिन्दवः । तेभ्योजातास्तथालूताइतिख्यातास्तुषोड

श ॥ अत्रसुश्रुते । [illegible] श्वामित्रोनृपवरःकदाचिदृषिसत्तमम् । वशिष्ठंकोपयामासगत्वा [illegible]

मपदंकिल ॥ कुपि [illegible] तस्यमुनेस्तस्यललाटात्स्वेदबिन्दवः । अपतद्दर्शनादेवह्यधस्तात्तीव्र

वर्चसः ॥ लूने [illegible] महर्षेस्तुधेन्वर्थेसम्भृतेऽपिच । ततोजातास्त्विमेघोरानानारूपामहावि

षाः ॥ [illegible] ष्टौकष्टसाध्यावर्ज्यास्तावत्यएवहि । तत्रत्रिमण्डलप्रभृतयोऽष्टौकष्टसाध्याः

सौवर्णिक [illegible] योऽष्टावसाध्याः ॥ ११११४ ॥

लूता (मकड़ी) ओंकी उत्पत्ति निरुक्ति और संख्या ॥

मुनि के स्वेद बिन्दु लून (कटेहुये) तृणों में प्राप्त हुये उनसे उत्पन्न हुई लूता कहलाती हैं यह १६ प्रकारकी हैं सुश्रुत में कहाहै कि एक समय राजर्षि विश्वामित्र ने वशिष्ठजी के आश्रम में जाकर उन्हें कुपित किया कुपित हुये वशिष्ठजी के ललाट से गिरेहुये स्वेद बिन्दु गौकेलिये इकट्ठे किये गये तृणोंके ऊपर गिरे उनसे यह घोर नानाप्रकारके रूपवाली महाविषवाली मकडी उत्पन्न हुई उनमें से त्रिमंडलादिक ८ कष्टसाध्यहैं और सौवर्णिक आदिक ८ असाध्यहैं ॥ ११११४ ॥

अथ तासांसामान्यानांदंशलक्षणमाह ॥

ताभिर्दष्टेदंशकोऽश्वप्रवृत्तिःक्षतजस्यच । ज्वरोदाहोऽतिसारश्चगदाःस्युश्चत्रिदोष

जाः ॥ पिडिकाविविधाकारामण्डलानिमहान्तिच । शोथामहान्तोमृदवोरक्ताःश्यावाश्च

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...आदि प्राणनाशक ...

...यदि मकड़ियों के काटने में शोथ, श्वेत, कृष्ण, ...
दाह, ... हिचकी तथा शिरोग्रह होता है ॥ १११६ ॥

अथाखुविषलक्षणमाह ॥

आदंशाच्छोणितंपाण्डुमण्डलानिज्वरोऽरुचिः । लोमहर्ष... ...ते ॥ १११७ ॥

मूसे के विषका लक्षण ॥

...टनेके स्थानसे रुधिर निकलना, पांडु, मंडल, ज्वर, अरुचि, रोमांच औ... दाह यह लक्षण मूसे के विषके हैं ॥ १११७ ॥

अथ प्राणहरमूषकविषकार्य्यमाह ॥

मूर्च्छाङ्गशोथवैवर्ण्यक्लेदशब्दाश्रुतिर्ज्वरः । शिरोगुरुत्वंलालासृक्छर्दिश्चासाध्यमूषकात् ॥ अंगशोथोऽत्रमूषकाकारोबोद्धव्यइतितन्त्रान्तरे ॥ १११८ ॥

प्राणनाशक मूसेके विषके कार्य्य ॥

मच्छों, मूसेके समान शरीरमें शोथ, विवर्णता, क्लेद, बधिरता, ज्वर, शिरकाभारीपन और लार तथा रुधिरकी वमन यह असाध्य मूसेके विषके लक्षण हैं ॥ १११८ ॥

अथ कृकलासदष्टस्यलक्षणमाह ॥

शोथस्यकार्श्यमथवानानावर्णत्वमेवच।मोहोऽथवर्चसोभेदोदष्टस्यकृकलासकैः १११६॥

गिरगिटके काटे के लक्षण ॥

गिरगिटके काटने से कृश तथा नानावर्ण युक्त, शोथ, मोह और मलभेद होताहै ॥ १११६ ॥

अथ वृश्चिकविषस्यलक्षणमाह ॥

दहत्यग्निरिवादौतु भिनत्तीवोर्ध्वमाशुच । वृश्चिकस्यविषंयाति पश्चाद्दंशेऽवतिष्ठते ॥ ११२० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

[illegible] दूषितं वा दावाग्निवातातपशोषितं वा ॥ स्वभावत [illegible]
[illegible] र्णमतिपुराणं विषघ्नौषधिदूषितं विषघ्नैरभिरो [illegible]
[illegible] गुणविप्रहीनं स्वभावादेव दशानां गुणानां मध्ये एकद्वित्रि [illegible]

स्थावर तथा जंगमही विष जीर्णत्व आदि कारणों से दूषीविष कह [illegible] ॥ [illegible]२६ ॥
बहुत पुराना, विषघ्न, औषधोंसे हीन वीर्य कियागया, दावाग्नि, वायु तथा [illegible]
अथवा स्वभावहीसे दशगुणों में से एक दो तीन आदि गुणोंसे रहित विष [illegible] दन्त [illegible]

अथ दूषीविषस्यकार्य्यमाह ॥

[illegible] तत्कफान्वितं वर्षगणानु [illegible] भिन्नपरी [illegible]
॥ मूर्च्छाभ्रमं गद्गद्वाग् [illegible] च विचेष्टमानो रतिभ [illegible]
[illegible] त्वं कफेन मन्दीकृत [illegible] आदिगुणं वर्षगणानुबन्धि [illegible]
[illegible] तथा दूषीविषजद [illegible] भिन्नपरी [illegible]

[illegible] विशेष) के काटेके लक्षण ॥
[illegible] काटेहुए स्थानका गलना यह लक्षण कणभके को [illegible]

[illegible] उच्चिटिंगदष्टस्यलक्षणमाह ॥

[illegible] लिंगो भृशार्त्तिमान् । दष्टः शीतोदकेनैव सिक्तान्यंगानि म
न्यते ॥ [illegible] तेर कृष्णरोमा उच्चिटिंगश्चीटाकीटविशेषः ॥ ११२३ ॥

चींटेके काटनेके लक्षण ॥

चींटे के काटने से अत्यन्त रोमांच, स्तब्धता, अत्यन्त पीड़ा औ अंग शीतल जलसे सिंचेहुए मालूम होना यह लक्षण होते हैं ॥ ११२३ ॥

अथ सविषमण्डूकदष्टस्य लक्षणमाह ॥

एकदंष्ट्रार्दितः शूनः सरुजः पीतकः सतृट् । सनिद्रश्छर्दिमान् दष्टो मण्डूकैः सविषैर्भवेत् ॥
एकदंष्ट्रार्दितः स्वभावादेकयैव दंष्ट्रया दष्टो भवति ॥ ११२४ ॥

विषदार मैढकके काटनेके लक्षण ॥

विषदार मैढक प्रायः एकही दांतसे काटता है इसमें शोथ, पीड़ा, पीतवर्ण, तृषा, निद्रा और छर्दि होती है ॥ ११२४ ॥

अथ मत्स्यविषस्य कार्य्यमाह ॥

मत्स्यास्तु सविषाः कुर्युर्दाहं शोथं रुजं तथा ॥ ११२५ ॥

मछली के विषका कार्य्य ॥

विषदार मछलियों के काटने से सूजन दाह तथा पीड़ा होती है ॥ ११२५ ॥

जलौकाविषकार्यमाह ॥

कण्डूं शोथं ज्वरं मूर्च्छां सविषास्तु जलौकसः । कुर्य्युरिति शेषः ११२६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुपि
...के कुपित होनेपर भोजन के...
...मांसक्षय, हाथपैरोंमें सूजन...
...होते हैं ॥ ११०७ ॥

...थ:स्यान्मन्दवे...

मच्छरके विषका कार्य्य ॥

...काटनेसे खुजली तथा स्वल्पपीडा युक्त कुछ शो... ...नाहि इति...

अथासाध्यमशकलक्षणमाह ॥

असाध्यकीटसदृशमसाध्यंमशकक्षतम् । असाध्यकीटस... ...

...तंयत्क्षतंतत्सदृशवेदनम् ॥ ११३० ॥

असाध्य मच्छर के विषका लक्षण ॥

असाध्य मकडी आदिके काटेके समान पीडायुक्त मच्छरोंका काटाहुआ असाध्य होताहै॥ ११३०॥

अथ मक्षिकादंशलक्षणमाह ॥

सद्यःसंस्राविणीश्यावादाहमूर्च्छाज्वरान्विता । पिडिकामक्षिकादंशेतासान्तुस्थगिका सुहृत् ॥ तासामित्यादितासांसुश्रुतोक्तानांषण्णांमक्षिकाणांमध्येस्थगिकानाम्नीशीघ्रंप्राणंहरतीत्यर्थः ॥ ११३१ ॥

मक्खियों के काटेके लक्षण ॥

मक्खी के काटने में शीघ्रही बहनेवाली, धुमैली और दाह, मूर्च्छा तथा ज्वरयुक्त पिडिका होती हैं सुश्रुत की कही हुई छः प्रकारकी मक्खियों में से स्थगिका नाम मक्खी काटने से शीघ्रही प्राणों को हरती है ॥ ११३१ ॥ अथ व्याघ्रादिविषाणांकार्यमाह ॥

चतुष्पाद्भिर्द्विपाद्भिर्वानखैर्दन्तैश्चयत्कृतम् । शूयतेपच्यतेतत्तुस्रवतिज्वरयत्यपि ॥ चतुष्पाद्भिःव्याघ्रादिभिःद्विपाद्भिःवनमनुष्यादिभिःशूयतेशूनंभवति ॥ ११३२ ॥

व्याघ्रादि के विषों के कार्य्य ॥

व्याघ्रादि चौपाये और वनमनुष्यादि द्विपादोंके द्वारा नख तथा दांतोंसे कियाहुआ घाव सूजत है तथा पकताहै और ज्वर आताहै ॥ ११३२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...चाग्निवातातपशोषितंवा ॥ स्वभावत...

...जंगमतिपुराणंविषघ्नौषधिदूषितंविषघ्नै...

...प्रहीनंस्वभावादेवदशानांगुणानांमध्येएकं...

...वर तथा ... विष जीर्णत्व आदि कारणों से ... विष कहे... ॥ ११२६ ॥

बहुतपुराना ... औषधोंसे हीन वीर्य कियागया ... न, वायु तथा ...

अथवा स्वभा... ...रहित विष ... दन्त...

अथ दूषीविषस्यकार्यमाह ॥

...र्यत्तत्कफान्वितंवर्षुगणा...

... मनेत्तस्मं...

...तः सर्व...

...मेतिसे चर्य...

...रसंदद्याद...

...षधेःकुर्या... लोकमें

...विषात...

...षतः ॥ ...

...शोधनम् । पाययेद्गदंमु

...सुवर्चिका । मरिचंबालकञ्च

...वायोऽयंदूषीविषमपोहति । ध्यामकरोहिषन्तद...

...रन्देयम् ॥ कनकगैरिकमत्यन्तमारक्तंगैरिकंसोनागेरूइतिलोके ॥ ११३४ ॥

विषोंकी चिकित्सा । स्थावर विषकी चिकित्सा ॥

स्थावर विषसे पीड़ित मनुष्य को यत्नपूर्वक वमन करावे क्योंकि वमन के सिवाय और कोई इसकी चिकित्सा नहीं है विष अत्यन्त उष्ण तथा तीक्ष्ण होताहै इसलिये सम्पूर्ण विषोंमें शीतल परिषेक कहा गयाहै विष उष्णता तथा तीक्ष्णतासे पित्तको विशेष कुपित करताहै इसलिये वमनकरा-कर शीतल जल सींचना चाहिये विष खायेहुए को शीघ्रही घी तथा शहद के साथ विषघ्न औषध देवे खट्टीवस्तु भोजन करावे और मिर्चें रगड़वावे जिस २ दोष के लक्षण अधिक दिखाई देवें उसी २ दोष के विपरीत गुणवाली औषधों से चिकित्सा करे विष पीड़ितको भोजन के लिये शालिधान्य, साठी, कोदों तथा काकुन देवे और वमन, विरेचन के द्वारा ऊपर नीचे शोधन करे सिरस की जड़, छाल, पत्ते, फूल तथा बीजों को गोमूत्र में पीसकर लेप करनेसे विषका नाश होताहै दूषीविषसे पीड़ितको स्निग्धवमन तथा विरेचन देवे पीपल, रोहिष (इसके अभावमें खस) जटामांसी, लोध, इलायची, सज्जी, मिर्चें, सुगन्धवाला, बड़ी इलायची और सुनहरी गेरू इनके काढ़े में शहद डालकर पीने से दूषी विषका नाश होता है ॥ ११३४ ॥

अथ जंगमविषस्यचिकित्सामाह ॥

अभयांरोचनांकुष्ठमर्कपत्रंतथोत्पलम् । नलवेतसमूलानिगरलंसुरसान्तथा ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...के विषके लक्षण ॥
...विष पहले ...तिके समान ...तथा फाड़ने कीसी पी...
फिर ...ऐसे काटने के स्थानमें स्थित रहता है ॥ ११२० ॥

अथासाध्यस्यवृश्चिकदष्टस्यलक्ष...

...यैस्तुहृद्घ्राणरसनोपहतोनरः । मांसै...
...साध्यैर्वृश्चिकैस्तेषामेवानुवृ...
...न्वयः ॥ ११२१ ॥

...गोरोचन, ...आकपत्ते, उत्पल, ...
...र, सिंघाड़, लजालू, कमलका जीरा इनके कल्कके द्वारा...
...र अच्छे प्रकार पककर उतारकर शीतल होजानेपर घी...
...अभ्यंग, पान तथा वस्तिकर्म में व्यवहार करने से दुर्जय...
...जली, मांससाद तथा अचैन्यताका नाश होताहै इसके... ...प्रान्त चार
...दोषसे बिगडीहुई त्वचा अच्छी होताहै यह घृत... ...के पच
...का अत्यन्तनाशकहै इति मृत्युपाशच्छेदि घृत ॥...
...डी कहते हैं ...हैं इति

धत्तूरस्याशेफापेयाक्षीरेणपरिपेषिता । अङ्कोटवंशज...
...नीयुग्मपतङ्गमञ्जिष्ठानागकेशरैः । शीताम्बुपिष्टैरालेपःसद्यो...
...यकृतःकल्कोघृतसैन्धवसंयुतः । सुखोष्णोमधुनालेपोवृश्चिक... ...मामाघ्रा
...दितंसूर्यावर्त्तदलस्यतु । वृश्चिकेननरोविद्धः क्षणाद्भवतिनिर्विषः ॥ इति विषा
...धिकारः ॥ ११३६ ॥

धतूरा, सहोरा अथवा बांसकीजड़को दूधकेसाथ पीसकर पीनेसे कुत्तेके विषका नाशहोताहै हल्दी, दारुहल्दी, पतंग, मँजीठ और नागकेसर इन सबको शीतल जलमें पीसकर लेपकरने से शीघ्रही मकड़ीकाविष नाशहोताहै पिसेहुए जीरेको घी और सेंधेनोनके साथ कुछ गरमकरके शहदमें मिलाकर लेपकरने से बिच्छूका विष नष्टहोताहै सूर्य्यवर्त्त की पत्तीको मलकर सूंघने से बिच्छूका विष क्षणभर में उतरजाताहै इति विषाधिकार समाप्त ॥ ११३६ ॥

अथ स्त्रीणांप्रदरादिरोगाणामधिकारमाह । तत्रप्रदराधिकारमाह ॥

तत्रप्रदरस्यविप्रकृष्टंनिदानमाह ॥

विरुद्धमद्याध्यशनादजीर्णाद्गर्भप्रपातादतिमैथुनाच्च । यानाध्यशोकादतिकर्षणाच्चभाराभिघाताच्छयनाद्दिवाच ॥ तंश्लेष्मपित्तानिलसन्निपातैश्चतुःप्रकारंप्रदरंवदन्ति । अत्रवातपित्तयोरादौश्लेष्मणोऽभिधानंश्लैष्मिकेऽतिप्रवृत्तिबोधनार्थम् ॥ ११३७ ॥

स्त्रियों के प्रदर आदि रोगोंका अधिकार । प्रदरका अधिकार ॥

प्रदरके दूरवाले कारण ॥

विरुद्ध भोजन, मद्य, अजीर्ण में भोजन, अजीर्ण, गर्भपात, अत्यन्त मैथुन, घोडेआदिकी सवारी, मार्ग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

...समर आदिके गोंद... ...लसा, कुछ पांडुवर्ण और तिन्नी के धोवनके स...न... ...है ॥ ११३९ ॥

अथ पैत्तिकमाह ॥

सपीतनीलासितरक्तमुष्णंपित्तार्त्तियुक्तंभृशवेगिपित्तात् । सपीतनीलासितरक्तंपीत... वर्णयुक्तंपित्तार्त्तियुक्तंदाहादियुक्तम्भृशवेगिवारंवारप्रवृत्तियुक्तम् ॥ ११४० ॥

पित्तज प्रदरके लक्षण ॥

पित्तज प्रदरमें पीत, नील, कृष्ण तथा रक्तवर्णयुक्त उष्ण और पित्तकी दाहादि पीड़ायुक्त रुधिर वारंवार बहताहै ॥ ११४० ॥

अथ वातिकमाह ॥

रूक्षारुणंफेनिलमल्पमल्पंवातात्सतोदंपिशितोदकाभम् । पिशितोदकाभंमांसधावन तोयाभम् ॥ ११४१ ॥

वातज प्रदरके लक्षण ॥

वातज प्रदरमें रूखा, अरुण, सूई गड़ने कीसी पीड़ासमेत और मांसके धोवन के समान रुधिर थोड़ा २ बहताहै ॥ ११४१ ॥

अथ सन्निपातिकमाह ॥

सक्षौद्रसर्पिर्हरितालवर्णं मज्जप्रकाशंकुणपंत्रिदोषम् । तंचाप्यसाध्यंप्रवदन्तितज्ज्ञा नतत्रकुर्वीतभिषक्चिकित्साम्॥सक्षौद्रसर्पिःक्षौद्रादिवर्णसहितंकुणपंशवगन्धि ११४२ ॥

सन्निपातज प्रदर के लक्षण ॥

सन्निपातज प्रदर में शहद घी अथवा हरतालके समान वर्णयुक्त और मुर्देकीसी गन्धयुक्त मज्जा के समान रुधिर बहताहै यह असाध्यहै इसकी चिकित्सा न करनी चाहिये ॥ ११४२ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्रवन्ती ... तृष्णादाह ...

... १९४४ ॥ असाध्य प्रदरवाली स्त्रीके लक्षण ...

... र रुधिर के स्रावबाली, तृषा, दाह तथा ज्वरयुक्त, दुर्बल और ...
... ध्यहै उसकी चिकित्सा नहीं करै ॥ ११४४ ॥

अथ चिकित्सानिवृत्त्यर्थंशुद्धार्त्तवलक्ष...

... च्छिदाहार्त्तिपञ्चरात्रानुबन्धिच । नैवाति...
... ॥ ही. कहत हदाहार्त्तिअपिच्छिलमदाहमशूलम् । एतेनाति...
... र्थः पञ्चरात्रानुबन्धिप्रभूतप्रवृत्त्यात्रिरात्रानुबन्धिततोमध्य...
... रंकस्याश्चिच्चेत्स्रवतितदास्वल्पप्रवृत्त्याषोडशदिनानियावत्तद... ॥ ११४५ ॥

चिकित्सा की निवृत्ति के लिये शुद्ध आर्तवके लक्षण ...

... मासके उपरान्त दाह तथा पीडारहित अपिच्छिल न बहुत अधिक और न बहुत थोडा पांच ... रात्रतक रुधिर बहै वह शुद्धहै बहुत बहने से तीन दिन कुछ कम बहनेसे पांचदिन और बहुत कम बहने से किसी २ के १६ दिनतक बहताहै यह भी शुद्ध कहलाताहै ॥ ११४५ ॥

अथ प्रदरस्यचिकित्सामाह ॥

दध्नासौवर्चलंजाजीमधुकंनीलमुत्पलम् । पिबेत्क्षौद्रयुतंनारीवातासृग्दरशान्तये ॥ चौहारजीरायष्टीमधुनीलकमलपुष्पाण्येषांप्रत्येकं माषद्वयंसर्वमेकीकृत्यदध्नाकर्षचतु ष्टयेनपिष्ट्वातत्रमाषाष्टकंमधुक्षिप्त्वापिबेत् । मधुकंकर्षमेकन्तुकर्षैकाश्वसितांतथा । तण्डु लोदकसम्पिष्टालोहितेप्रदरेपिबेत् ॥ बलाकङ्कतिकाख्यायातस्यामूलंसुचूर्णितम् । नीत हितप्रदरेखादेच्छर्करामधुसंयुतम् ॥ शुचिस्थानेव्याघ्रनख्यामूलमुत्तरदिग्भवम् । नीत मुत्तरफाल्गुन्यांकटिबद्धंहरेदसृक् ॥ व्याघ्रनखीबघनहीइतिलोके रसाञ्जनंतण्डुलकस्य मूलंक्षौद्रान्वितंतण्डुलतोयपीतम् । असृग्दरंसर्वभवंनिहन्तिश्वासञ्चभार्ङ्गीसहनागरेण ॥ तण्डुलस्यतण्डुलीयकस्य अशोकवल्कलक्काथशृतंदुग्धंसुशीतलम् । यथाबलंपिबेत्प्रात स्तीव्रासृग्दरनाशनम् ॥ अशोकवल्कलपलंद्वात्रिंशत्पलसम्मितेनजलेन । निःक्वाथ्यशे षंरक्षत्पलाष्टकंक्वाथम् ॥ तेनक्काथेनसहक्षीरंपलाष्टकमितंविपचेत्तत्रदुग्धावशेषः कर्त्त व्यःतन्मध्येपलचतुष्टयमितंदुग्धंपेयंवह्निबलापेक्षया । कुशमूलंसमुद्धृत्यपेषयेत्तण्डुला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...वाग्निर्वात... शोषितंवा
...णमतिपुराण... षधिदू...
...विप्रहीनंस्वभाव... वदशानांगु...
...वर तथा... जीर्णत्व
बहुतपुरान... से हीन वीर्य
अथवा स्व...

...कृष्णदूर्वाविषस्यपूर्वरूपमाह ॥ ...अंगोंकी शिथिलता, रोमांच और शरीर में पीड़ा यह लक्षण ...॥ ११०६ ॥ अथ रूपमाह ॥

...में काढ़ा... रहे तब उता... जडको चाव... शहद मिल... लोकमें ...चूर्णको शक्कर... से प्रदर नष्ट ...

पलि... कथितवृषाब्दविल्वसक्षौद्रचन्दनदिनेशभवप्रसूनैः । क्वाथःकृतोमधु...
तोविनि... पीतः... सितश्वसरुजंप्रदरंनिहन्ति ॥ दार्व्यादिक्वाथः रक्तपित्ताधिकारे...
हितंकूष्माण्डखण्डकम् । इति प्रदरनिदानचिकित्साधिकारः ॥ ११४७ ॥

दारुहल्दी, रसौंत, चिरायता, अडूसा, मोथा, बेल, चन्दन और आकके फूल इनके काढ़े में शहद मिलाकर पीने से पीड़ासहित श्वेत और रक्तप्रदर का नाश होता है इति दार्व्यादि क्वाथ रक्तपित्ताधिकारमें कहाहुआ कूष्मांड खंडप्रदरमें हितहै इति प्रदरनिदान चिकित्साधिकार समाप्त ॥ ११४७ ॥

सोमरोगाधिकारः । तत्रसोमरोगस्यनिदानपूर्विकांसंप्राप्तिमाह ॥

स्त्रीणामतिप्रसंगेनशोकाच्चापिश्रमादपि । अतीसारकयोगाद्वागरयोगात्तथैवच ॥ आपःसर्वशरीरस्थाःक्षुभ्यन्तिप्रस्रवन्तिच । तस्यास्ताःप्रच्युताःस्थानान्मूत्रमार्गंव्रजन्तिहि ॥ ११४८ ॥

सोमरोगका अधिकार सोमरोगकी निदानपूर्वक संप्राप्ति ॥

बहुत मैथुन, शोक, श्रम, अतीसार के योग और गरदोषसे स्त्रियों के सम्पूर्ण शरीरमें स्थित जल क्षुभित होकर बहताहुआ मूत्रमार्गसे निकलताहै ॥ ११४८ ॥

अथ तस्यलक्षणमाह ॥

प्रसन्नाविमलाःशीतानिर्गन्धानीरुजाःसिताः । स्रवन्तिचातिमात्रन्तासांनशक्नोतिदुर्बला ॥ वेगन्धारयितुन्तासांनविन्दतिसुखंक्वचित् । शिरःशिथिलतातस्यामुखंतालुचशुष्यति ॥ मूर्च्छाजृम्भाप्रलापश्चत्वग्रूक्षाचातिमात्रतः । भक्ष्यैर्भोज्यैश्चपेयैश्चनतृप्तिंलभ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ सोमरोगस्य चिकित्सा ॥

[illegible]लीनांफलंपक्कंधात्रीफलरसंमधु । शर्करासहितंखादेत्[illegible]

[illegible]मधुकंविदारींमधुशर्करम् । पयसापाययेत्प्रातःसोम[illegible]

[illegible]वेन्मूत्रेण चेन्मुहुः । तत्रैलापत्रचूर्णेनपाययेत्[illegible]

[illegible]र्करम् । पिबेद्दिनत्रयेणैवश्वेतप्रदरनाशन[illegible]

[illegible]हंतक्रेणसंपिष्टंश्वेतप्रदरशान्तये ॥ ११[illegible]

सोमरोगकी चिकित्सा ॥

केलेका पक्काफल आमलेका रस और शहद इनको शक्कर के साथ [illegible] उर्द, मुलहठी तथा विदारीकन्द के चूर्ण को शहद और शक्कर मि[illegible] के साथ प्रातःकाल पीने से सोमरोग नष्ट होताहै जो पीडासहित मूत्रके साथ वारंवार सोम बहै [illegible] इलायची और [illegible]जपातका चूर्ण मिलाकर वारुणी मदिरा को पिलावे पिसेहुये आमले के बीजों को शहद और शक्कर मिलाकर जलके साथ पीनेसे श्वेतप्रदर नष्ट होताहै नागकेशर को मट्ठेके साथ पीसकर पिये और मट्ठा भात खाय इससे तीनदिन में श्वेतप्रदर नष्ट होताहै ॥ ११५० ॥

अथात्रैवमूत्रातिसारस्यलक्षणं चिकित्साञ्चाह ॥

सोमरोगेचिरञ्जातेयदामूत्रमतिस्रवेत् । मूत्रातिसारंतंप्राहुर्बलविध्वंसनम्परम् ॥ इतिसोमरोगमूत्रातिसाराधिकारः ॥ ११५१ ॥

मूत्रातिसारका लक्षण ॥

सोमरोग के पुराने होजानेपर जो बहुत मूत्र निकले उसे मूत्रातिसार कहतेहैं यह अत्यन्त बल-नाशकहै इति सोमरोगमूत्रातिसाराधिकार समाप्त ॥ ११५१ ॥

अथ योनिरोगाधिकारस्तत्रयोनिरोगाणांनिदानान्याह ॥

मिथ्याहारविहाराभ्यांदुष्टैर्दोषैःप्रदूषितात् । आर्त्तवाद्बीजतश्चापिदैवाद्वास्युर्भगे गदाः ॥ ११५२ ॥

योनिरोगका अधिकार । योनिरोगों के निदान ॥

विपरीत आहार विहारों के द्वारा कुपित दोषों से दूषित रजसे अथवा दैवयोग से योनि में रोग उत्पन्न होतेहैं ॥ ११५२ ॥

अथ योनिरोगाणां नामान्याह ॥

वातलायोनिजोरोगोवातदोषेणपञ्चधा ॥ उदावृत्तातथाबन्ध्याविप्लुताचपरिप्लुता ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...ाग्निर्वात... शोषितंवा ॥

...णमतिपुरा... ष्णौषधिदूषि...

...प्रहीनंस्वभाव... दशानांगुण...

...वर तथा ... ष जीर्णत्व ...

बहुतपुरान... योंसे हीन वीर्य ...

अथवा स्वभ...

...पूर्वविषस्यपूर्वरूपमाह ॥ ...

...वचिद्विश्लेषहर्षावथवाङ्गमर्दः । ...

अंगोंकी शिथिलता, रोमांच और शरीर में पीड़ा यह लक्षण

...कुष्ठदूषीविष का पूर्वरूप ॥

॥ ११०६ ॥ अथ रूपमाह ॥

...मांसक्षयं...

...चकमण्डलकोठजन्मा । ...

...विवर्णतासतृषोज्वरांगचक्रव्यर्थाभ्रघाी...

॥ ११०७ ॥

...महता, सूची...

...नित्यवेद...

...स्तोदपीडि...

...वातलायां ... लोकमें

इनके लक्ष...

...फेनायुक्त रज निकले उसे उदावर्त्ता आर्त्तवरहित योनिको बंध्या सदैव पीडायुक्त ... निकले ... मैथुन के समय अत्यन्त पीड़ायुक्त योनिको परिप्लुता और कर्कश, स्तब्ध, शूल तथा सूई गड़नेकीसी पीड़ायुक्त योनिको वातला कहतेहैं पहली चारयोनियों में भी तोद आदि वातज पीड़ा होतीहै परन्तु वातला में अधिक होतीहै ॥ ११५४ ॥

सदाहंक्षरतेरक्तंयस्याःसालोहितक्षरा । प्रस्रंसिनीस्रंसतेचक्षोभिताद्दुष्प्रजायिनी ॥ क्षोभितािमर्दितास्रंसतेस्वस्थानाच्च्यवतेदुष्प्रजायिनीदुष्टप्रजननशीला । सवातमुद्गिरे द्वीर्य्यंवामनीरजसायुतम् ॥ स्थितंहिपातयेद्गर्भंपुत्रघ्नीरक्तसंस्रवात् ॥ पुत्रशब्दोऽत्राप त्योपलक्षकः ॥ अत्यर्थंपित्तलायोनिदाहपाकज्वरान्विता । चतसृष्वपिचाद्यासुपित्तलिङ्गो च्छ्रयोभवेत् ॥ ११५५ ॥

जिस योनिसे दाहसहित रुधिर निकले उसे लोहितक्षरा मलनेसे अपने स्थानसे च्युत होनेवाली तथा दुःखसहित प्रसव करनेवाली योनिको प्रस्रंसिनी जिस योनिसे वायुसहित तथा रजसे मिला हुआ वीर्य्य निकले उसे वामनी जिस योनिमें स्थित हुआ गर्भ रुधिर के बहने से पतित होजाय उसे पुत्रघ्नी और दाह, पाक तथा ज्वरयुक्त योनिको पित्तला कहतेहैं पहली भी चार योनियों में पित्तके लक्षण होते हैं ॥ ११५५ ॥

अत्यानन्दानसन्तोषंग्राम्यधर्मेणविन्दति । कर्णिन्यांकर्णिकायोनौश्लेष्मासृग्भ्यांप्रजाय ते॥कर्णिकामांसस्यकर्णिकाकारोग्रन्थिः । मैथुनेचरणापूर्वंपुरुषादतिरिच्यते अतिरिच्यतेर जोमुञ्चतीत्यर्थःबहुशश्चातिचरणास्तयोर्बीजंनतिष्ठति ॥बहुशःवारंवारमतिरिच्यतेतयोः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नार्त्तवाऽस्तनी षण्डीखर...

...महामेढ्रग्रहीतायाबालाया अण्डिनीभवत्...

...योनिच्छिद्राया: अण्डिनीअण्डवल्लम्बमानायोनिर्भवेत्...

...तिमहायोनि:सूचीवक्त्रातिसंवृता । त्रिदोषजमाह । स...

... चतसृष्वपिचाद्यासुसर्वलिंगनिदर्शनम् ॥...

...रज न होय स्तन छोटे होंय और मैथुन के स...

षण्डी कहते हैं योनिके छोटे छिद्रवाली स्त्रीके साथ बड़े लिंगवाले...

योनिलटक आती है इसे अंडिनी कहते हैं बहुत बड़ी योनिको...

योनि को सूचीवक्त्रा कहते हैं त्रिदोषज योनिरोग में तीनों दोषों के लक्षण...

योंमें भी तीनों दोषोंके लक्षण होतेहैं ॥ ११५७ ॥

अथासाध्यांयोनिमाह ॥

पञ्चासाध्याभवन्तीहयोनय:सर्वदोषजा: । पञ्चषण्डीप्रभृतय: ॥ ११५८ ॥

असाध्य योनिके लक्षण ॥

षण्डी आदि पांचों त्रिदोषज योनि असाध्यहैं ॥ ११५८ ॥

अथ योनिकन्दस्यनिदानमाह ॥

दिवास्वप्नादतिक्रोधाद्व्यायामादतिमैथुनात् । क्षताच्चनखदन्ताद्यैर्वाताद्या:कुपिता यथा ॥ यथास्वनिदानंकुपितावाताद्या: ११५९ ॥

योनिकन्दकानिदान ॥

दिन में सोने से बहुत क्रोध से व्यायाम से बहुत मैथुनसे और नख तथा दांत आदिके लगने से अपने २ कारणों के द्वारा कुपितहुए वातादि दोष योनिकन्द को उत्पन्न करतेहैं ॥ ११५९ ॥

अथ रूपमाह ॥

पूयशोणितसङ्काशंलकुचाकृतिसन्निभम् । जनयन्तियदायोनौनाम्नाकन्द:सयोनिज: ॥ लकुचाकृतिसन्निभंलकुचाकारंगुडकमत्रविशेष्यंबोध्यम् ॥ ११६० ॥

योनिकन्दका लक्षण ॥ वातादिक दोष पीप तथा रुधिर के समान वर्णयुक्त और बडहल के समान आकृतियुक्त गोलासा योनिमें उत्पन्न करतेहैं उसे योनिकन्द कहतेहैं ॥ ११६० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

११७२।

...द्वाविद्र...तातिपशोऽि...

...। जीर्णमति...गंविषण्णौ...

...णविप्रहीनंस्व...वादेवद...

...स्थावर तथा जं...

बहुतपुरा...

अथवा स्व...

...हंशीतेनपर...सुतंजनयेद्ध्रुवम् ॥ ...एवसुराबीजं...लोकमें

...। अथवाउरि...नीमालकंगुनीइतिचअसनमासन...

...लोदुग्धेन ॥ ११६२ ॥

...योनिदोषोंकी चिकित्सा । बंध्याकी चिकित्सा ॥

...वाली स्त्रीको बंध्या कहते हैं आर्त्तवके नष्ट होनेपर स्त्री. मछली, कांजी, तिल, ... तथा दही का नित्य सेवनकरे कडवी लौकी के बीज, दन्ती, पीपल, गुड, मैनफल, सुराबीज ... जवाखार इनसबको थूहड के दूधमें मिलाकर बत्ती बनावे इसबत्ती को योनि में रखने से रज निक- ...कांगनी की पत्ती, सज्जी, बच और विजयसार इनसबको शीतल दूधमें पीसकर पीने से तीनदिन में निस्संदेह आर्त्तव उत्पन्न होताहै ॥ ११६२ ॥

अथ बन्ध्याचिकित्सामाह ॥

बलासिताढ्यामधुकंचजीवकंतथार्षभंवैगजकेशरंच।एतन्मधुक्षीरघृतैर्निपीतंबन्ध्यासुपुत्रंनियतंप्रसूते॥ अश्वगन्धाकषायेणसिद्धंदुग्धंघृतान्वितम् । ऋतुस्नातांगनाप्रातःपीत्वा गर्भंदधातिहि॥पुष्योद्धृतंलक्ष्मणायामूलंदुग्धेनकन्यया। पिष्टंपीत्वाऋतुस्नातागर्भंधत्तेन संशयः॥ कुरण्टमूलंधातक्याःकुसुमानिवटांकुराः। नीलोत्पलंपयोयुक्तमेतद्गर्भप्रदंध्रुवम् ॥ कुरण्टमूलंपीतपुष्पकटसरैया । याऽबलापिबतिपार्श्वपिप्पलंजीरकेणसहितांहिताशनी । श्वेतयाविशिखपुङ्खयायुतंसासुतंजनयतीहनान्यथा ॥ पाश्वंपिप्पलीगजहडइतिलोकेश्वेतपुष्पयाशरपुङ्ख्यासह । पत्रमेकंपलाशस्यपिष्ट्वादुग्धेनगर्भिणी । पीत्वापुत्रत्वमाप्नोति वीर्यवन्तंनसंशयः ॥ शूकरशिम्बीमूलंमध्यं वादधिफलस्यसपयस्कम् । पीत्वाथोभयलिंगीबीजंकन्यांनसूतेस्त्री ॥ शूकरशिम्बीसुअरासेवीदधिफलःकैथतस्यमज्जाभवलिंगीपत्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के नहीं

वन्ध्याकी आकृति

स्तं मधुकेन ... जीवक, ऋषभक, नागकेसर और

त ... तन्तुना दूध ... पुत्रको उत्पन्न करती है असगन्ध

... प्रातःकाल पीनेसे गर्भको धारण कर

... जड़को घीक्वारके रसके साथ पीसकर दूध

करतीहै पीली ... टसरैयाकी जड़, धवके फूल, बरगदके अंकु

... निस्सन्देह गर्भ रहताहै पारस पिप्पल (गजहड) जीरा और सफेद

... कर पीनेसे और पथ्य भोजन करने से निस्सन्देह गर्भ रहताहै ... अज-

... दूधके साथ पीसकर पीनेसे बलवान् पुत्रको उत्पन्न करती है ... लौंग इन ... मिर्च, तोले

शिवलिंगी के बीज इनसबको दूधके साथ पीनेसे स्त्रीके कन्या ... भस्म, अभ्रककी भस्म, कस्तूरी

और शिवलिंगी इनसबको आठ दिन गर्भ में पीनेसे ... मिलावे इसके उपरान्त चार

अथ गर्भप्रदभेषजकथनावसरेगर्भोजनना ... जनके पच जा

पिप्पलीविडंगटङ्कणसमचूर्णयापिबेत्पयसा । ऋतु ... है

पि ॥ आरनालपरिपेषितंत्र्यहंदाजयाकुसुमसत्तिपुटि ... युक्त तरुणस ... ताहै इति

नीसन्दधातिनहिगर्भमंगना ॥ ११६४ ॥

गर्भको न होनेदेनेवाली औषध ॥

पीपल, बायबिडंग और सुहागे के चूर्णको जो स्त्री ऋतुकाल में दूधके साथ पीतीहै ... विजयात

गर्भ नहीं रहता जाहीके फूलको आरनाल में पीसकर ऋतुसमयमें पुराने गुडके स

तीनदिन खानेसे गर्भ नहीं रहताहै ॥ ११६४ ॥

तासुयोनिषुचाद्यासुस्नेहादिक्रमइष्यते । वस्त्यभ्यंगपरीषेकप्रलेपपिचु

स्तिरत्रोत्तरवस्तिःपिचुःफाहाइतिलोके ॥ ११६५ ॥

वातज योनिरोगों में पहले स्नेहादिका क्रम करना चाहिये उत्तर वस्ति अभ्यंग प

फाहा रखना यह सब क्रमकरे ॥ ११६५ ॥

अथ क्रमेणचिकित्सामाह ॥

नतंवार्त्ताकिनीकुष्ठसैन्धवामरदारुभिः । तिलतैलंपचेन्नारीपिचुमस्यविधारयेत् ॥ वि

प्लुतायांसदायोनौव्यथातेनप्रशाम्यति । नतंतगरंवार्त्ताकिनीवरहेटा ॥ वातलांकर्कशां

स्तब्धामल्पस्पर्शांतथैवच । कुम्भीस्वेदैरुपचरेदन्तर्वेश्मनिसंवृते ॥ धारयेद्वापिचुर्योनौ

तिलतैलस्यसासदा ॥ ११६६ ॥ योनिरोगोंकी क्रमसे चिकित्सा ॥

तगर, बनभांटा, कूट, सेंधानोन और देवदारु इनके द्वारा पाक कियेहुए तिलके तेलका फाहा

रखनेसे विप्लुता योनिकी पीड़ा नष्ट होती है कर्कश स्तब्ध तथा थोड़े स्पर्शवाली वातला योनिवाली

को ढकेहुए घरमें कुम्भी स्वेद देवे अथवा सदैव तिलके तेलका फाहारक्खे ११६६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दावाग्नि तातपशोणि

। जीर्णमति णंविषघ्नौष

विप्रहीनंस्व वादेव

स्थावर कर्म ... पिप्पलीमू

बहुतप सदा ॥ सूर्यकान्ताभवंमूल

अथवा ग निर्मितैः । सगोमूत्रैःसलव

जानि ॥ दुर्गन्धांपिच्छिलांवापिचूर्णैः

॥ पञ्चकषायाःवचावासापटोलप्रियंगुनिम्बाः

॥ ११६७॥

... फाहेके, अभ्यंग और फाहेका व्यवहार करनाचाहिये और पित्तघ्न शी

व्यवहार करे प्रस्रंसिनी रोगमें घी मलकर और दूधकेद्वारा, स्वेद

... करे फिर वेशवारके द्वारा ढककर बांधदेवे सोंठ, मिर्च, पीपल, धनि

इनको ... कहते हैं योनिदाह में शक्कर मिला ... लोकमें

... चावलों के धोवनके साथ पिये योनिसे पीपल ...

... और गोमूत्र इनसबकी पिंडिका बनाकर योनि में भरे पिच्छिल

... परवल, प्रियंगु तथा नींबके चूर्णको अथवा अमलतास आदि

... ॥

... णाह्वाकुष्ठसैन्धवैः॥ वर्तिस्तुल्याप्रदेशिन्यायोनौश्लेष्मविशो

... यांप्रवेशिन्यादैर्घ्येणपरिणाहेनचकर्णिन्यांवर्त्तयोदेयाः शोधनद्रव्यनिर्मिताः

... दन्तीक्कथितोदकधारया ॥ योनिंप्रक्षालयेत्तेनतत्रकण्डूःप्रशाम्यति ॥ मु

... थ्यांजातीफलंतथा ॥ बिम्बींपूगञ्चसंचूर्ण्यवस्त्रपूतंक्षिपेद्भगे । योनिर्भवति

... वञ्चजलंततः ॥ कपिकच्छूभवंमूलंक्काथयेद्विधिनाभिषक् । योनिःसङ्कीर्णतां

... ानेनधावयेत् ॥ जीरकद्वितयंकृष्णासुषवीसुरभिर्वचा । वासकःसैन्धवश्चा

... वानिका ॥ एषांचूर्णंघृतेकिञ्चिद्भृष्ट्वाखण्डेनमोदकम् । कृत्वाखादेद्यथा

वह्नियोनिरोगाद्विमुच्यते ॥ मूषकक्काथसंसिद्धंतिलतैलंकृतोपिचुः । नाशयेद्योनिरोगां

स्तान्धृतोयोनौनसंशयः ॥ ११६८॥

पीपल, मिर्च, उड़द, सौंफ, कूट तथा सेंधानोन इनके द्वारा तर्जनी उंगली के समान मोटी तथा लम्बी बत्ती बनाकर योनिमें रखनेसे कफ शुद्ध होताहै कर्णिनीयोनि में शोधन औषधियों की बत्तीबना कर रक्खे गिलोय, त्रिफला और दन्ती इनके काढ़ेकी धारसे योनिके धोने से खुजली का नाश होताहै कत्था, हड़, जायफल, नींब तथा सुपारी इनके चूर्णको मूंगके यूषमें मिलाकर कपड़ेसे छानलेवे इस यूषको योनिमें छोड़नेसे योनि सुकड़ जातीहै और उससे जल नहीं बहता किवांचकी जड़के काढ़ेसे योनिको धोनेसे योनि सुकड़ जातीहै दोनोंजीरे, पीपल, कालीजीरी, तुलसी, बच, अडूसा, सेंधानोन, जवाखार तथा अजवाइन इनसबके चूर्णको घीकेसाथ कुछ भूनकर शक्करमिलाकर लड्डूबनावे इन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

के नहीं ... सप्र

...चौंसपुतनकी

...धुकेन... घृतक्षीरे चतुर्गुणे । ...

...तन्तुना... ॥

...सरैया, गिलोय, मकपूर्णी, सोनापाठा, ...

इनके कल्क ... द्वारा ६४ तोले घीको चौगुने दूधकेसाथ ...

...हैं इति त्रिफलाघृत ॥ ११६९ ॥

...जिष्ठामधुकंकुष्ठंत्रिफलाशर्कराबला । मेदेपयस्याकाकोल्यौमधु... ...मिर्च,
...जमोदाहरिद्रेद्वेप्रियंगुःकटुरोहिणी । उत्पलंकुमुदंद्राक्षांकाको... ...लौंग इन ... तोले
...भागैःघृतप्रस्थंविपाचयेत् । शतावरीरसंक्षी... ...की भस्म, अभ्रककी भस्म, कस्तूरी
...नित्यंवृषायते । पुत्राञ्जनयतेवीरान्मेधा... ...मिलावे इसके उपरान्त चार
...गर्भास्यात्तुपुत्रंवाजनयेन्मृतम् । अल्पायुषंवाजनयेद्या... ...इनके पचजा...
जोदोषेपरिस्रावेचशस्यते । प्रजावर्द्धनमायुष्यंसर्वग्रह... ...क्त तरुण... ...ताहै इति ...
तदश्विभ्यांपरिकीर्त्तितम् । अनुक्तंलक्ष्मणामूलंक्षिपन्त्यत्रचिकि... ...थो
...र्णायाघृतंतत्रप्रयुज्यते । आरण्यगोमयेनैववह्निज्वाला...
वेशतावरीद्विगुणादेयापयस्यात्रक्षीरकाकोली युगलाभावेअश्वगन्धाद्विगुणा...
स्थानेकेचिद्धिंगुंपठन्तिपयस्याकाकोलीत्युक्त्वापुनः काकोल्यौइतिकाको...
द्वैगुण्यार्थमेतस्यफलघृतस्यपाठोनानाविधस्तन्त्रेषु । तत्रहिंगुवच...
ण्याधिकाःजीवकर्षभयोरभावेविदारीकन्दोद्विगुणोदेयः । (इति फलघृ...
निरोगेषु ॥ ११७० ॥

मँजीठ, मुलहठी, कूट, त्रिफला, शक्कर, बरियारा, मेदा, महामेदा (इनके न मिलनेमें ... असगन्धकी जड, अजमोद, हल्दी दारु-
काकोली, क्षीरकाकोली (इनके न मिलनेमें दूनी असगन्ध) असगन्धकी जड, अजमोद, हल्दी दारु-
हल्दी, प्रियंगु, कुटकी, उत्पल, कुमुद, दाख, काकोली, क्षीरकाकोली, चन्दन तथा लालचन्दन इनके
द्वारा चौगुने जीतेहुए बछडेवाली गौके दूध और चौगुने सतावरके रसके साथ जीतेहुए बछडेवाली
एक वर्णवाली गौके घीको बिनवे कंडोंकी आंचमें पकावे इस घीको पीनेसे पुरुष नित्यही मैथुनकरने
में समर्थ होताहै और वीर बुद्धिमान् तथा सुन्दर पुत्र होते हैं जिस स्त्री का गर्भ न ठहरताहोय जो
मृतक संतान उत्पन्न करतीहो जिसकी सन्तान थोडी उमरमें मरजातीहो और जिसके कन्याही होती
होय उनकेलिये यह घी श्रेष्ठहै योनिरोग, रजोदोष तथा परिस्रावमें यह श्रेष्ठहै यहघी सन्तानकारी
आयुको हित और सम्पूर्ण ग्रहोंका नाशकहै इसमें लक्ष्मणाकी जडभी छोडनी चाहिये इसघृतमें हींग,
वष, तगर, जीवक तथा ऋषभक भी छोडनेचाहिये यह किसी २ का मतहै इति फलघृत ॥ ११७० ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दावाग्नि ... तातपशोषि

। जीर्णमति ... णंविषण्णौ

... णविप्रहीनं ...

स्थावर ...

बहुतप ... न्दकी चिकित्सा ॥

अथवा ... सौंत और कायफल इनसबके चूर्ण

... मिलाकर सींचनेसे योनिकन्दका

... रोगाणां चिकित्सामाह ॥

मुस्तम् ... घृतंजलम् । दद्याद्गर्भेप्रचलिते प्रदरेकुक्षिरुज्यपि

उदरेऽथाचलि ... स्थापनेह्रीवेरादिक्काथः ॥ ११७२ ॥

गर्भिणीके रोगोंकी चिकित्सा ॥

... तथा, मोचरस तथा इन्द्रजौ इनका का ... लितगर्भ प्रदर और उदर

... थ ॥ ११७२ ॥

... केः । शर्करामधुसंयुक्तैकषायोगर्भिणी ... ॥

... । क्वाथंकृत्वाप्रदद्याच्चगर्भिणीज्वरशान्तये ॥

... । (गर्भिण्याः) आम्रजम्बुत्वचःक्वाथैर्लेहयेल्लाजस

... कै ... नगर्भिणीग्रहणींजयेत् । ह्रीवेरारलुरक्तचन्दनबलाधान्याकव

... स्ता ... त्वविषाक्वाथंपिबेद्गर्भिणी । नानाव्याधिरुजातिसारगद

... ज्वरे ॥ योगोऽयंमुनिभिःपुरानिगदितःसूत्यामथेऽप्युत्तमः ११७३ ॥

जवासा इनसबके ..., खस, साईं, पद्माक, तथा तेजपात इनके काढेमें शहद और शक्कर डालकर अथ-

... तथा दाख इनके काढेमें शक्कर डालकर पीनेसे गर्भिणीका ज्वर नष्टहोताहै सोंठ

... ाथ पीनेसे गर्भिणीका विषमज्वर नष्टहोता है आम तथा जामनकी छाल के

... खीलोंके सत्तूखानेसे गर्भिणीका ग्रहणीरोग नष्ट होताहै सुगन्धबाला, सोनापाठा, लालच-

... धनियां, गिलोय, मोथा, खस, जवासा, पित्तपापडा तथा अतीस इनकेकाढेके पीनेसे गर्भि-

... , रक्तस्राव, अतीसार तथा नानाप्रकार के रोग नष्ट होते हैं और यह सूतिका रोगों में

भी हित है ॥ ११७३ ॥

अथ गर्भस्यस्रावपातयोर्निदानमाह ॥

ग्राम्यधर्माध्वगमनयानायासप्रपीडनैः । ज्वरोपवासोत्पतनप्रहाराजीर्णधावनैः ॥ व

मनाच्चविरेकाच्चकुन्थनाद्गर्भपातनात् । तीक्ष्णधारोष्णकटुकतिक्तरूक्षनिषेवणात् ॥ वे

गाभिघाताद्विषमादासनाच्छयनाद्भयात् । गर्भेपततिरक्तस्यसशूलंदर्शनंभवेत् ॥ गर्भ

पातनाद्गर्भपातनियमेनगर्भपातनशीलंद्रव्यम् ॥ ११७४ ॥

गर्भके स्राव और पातके निदान ॥

अत्यन्त मैथुन, मार्गगमन, सवारी, श्रम, पीडन, ज्वर, उपवास, उछलना, प्रहार, अजीर्ण, दौडना, वमन,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के नहीं होसक्ता

स्तंभ ... धुकेन ... इत्यादि । पततिस्रावणपातेन

तन्तुना ...

गर्भकेस्राव और पातका

पात होने से पहले पीड़ा सहित ...

अथस्रावपातयोरवधिमाह

... चतुर्थात्ततोमासात्प्रस्रवेद्गर्भविद्रवः । ततःस्थिरशरी...

... चतुर्थमासपर्यन्तंगर्भस्यविद्रवः शोणितरूपः ...

... नातुस्थिरशरीरस्य ... शरीरस्य ॥ ११७६ ॥

स्राव और पातकी अवधि

... रक्तरूप गर्भका स्राव होताहै और ...

... के स्थिर होजाने से गर्भका पात होताहै ११७६ ॥

अथ गर्भपातस्यदृष्टान्तंदर्शयति

गर्भोऽभिघातविषमासनपीडनाद्यैः पक्वंद्रुमादिवफलंपतति ...

फलमभिघातेनाकालेएवपततितथागर्भोऽप्यभिघात ...

गर्भपातका दृष्टान्त ॥

जिस प्रकार पक्का फल अभिघातआदि के द्वारा समयके विनाही वृक्षसे गिर पड़ता ... चोट विषमासन तथा दबनेआदिकेद्वारा गर्भभी समयके विनाही गिर पड़ताहै ॥

अथ गर्भस्रावस्यचिकित्सामाह ॥

गुर्विण्यागर्भतोरक्तंस्रवेद्यदिमुहुर्मुहुः । तन्निरोधायसादुग्धमुत्पलादिशृत ... त्पलादिगणमाह । उत्पलंनीलमारक्तंकह्लारंकुमुदंतथा ॥ श्वेताम्भोजञ्चमधु ... यंगणः । संशीलितोहरत्येवदाहंतृष्णांहृदामयम् ॥ रक्तपित्तञ्चमूर्च्छांचतथा ... कम् ॥ ११७८ ॥

गर्भस्राव की चिकित्सा ॥

जो गर्भवती के गर्भ से वारंवार रुधिर बहता होय तो उसके रोकने के लिये उत्पलादि गण के द्वारा पाककिया हुआ दूध पिये नीलोत्पल,रक्तोत्पल, कल्हार,कुमुद,श्वेतकमल और मुलहठी यह उत्पलादि गण हैं इसके सेवन से दाह,तृषा,हृदय के रोग, रक्तपित्त, मूर्च्छा, छर्दि और अरुचि का नाश होताहै ॥ ११७८ ॥

अथगर्भपातस्योपद्रवानाह ॥

प्रस्रंसमानेगर्भेस्याद्दाहःशूलञ्चपार्श्वयोः । पृष्ठरुक्प्रदरानाहौमूत्रसंगश्चजायते प्रस्रंसमानेपतति ॥ ११७९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...न्त...मिनेचोपद्रवानाह ।

...कन्दकी...पिचजायते । आमपक्वाशया...

...सौंत ...॥ ११८० ॥

...स्थानान्तर गमन में उपद्रव ॥

...मिल...माशय तथा पक्वाशयमें क्षोभ और पहले कहेहुए पार्श्व शूल...

अथतस्यचिकित्सामाह ॥

...दुदाहादिषुसमाचरेत् । कुशकाशोरुबूकानांमूलैर्गोक्षुरकस्यच ॥

...याःशूलहृत्परम् । श्वदंष्ट्रामधुकल्लितग्लानैःसिद्धंपयःपिबेत् ॥

...॥ ...अम्लानःपुष्पजालिः अयंबाणपुङ्खइतिगौडाः...

...युवानवमालिका । समंगांधातकीपुष्पंगैरिकंचरसाञ्...

...संवचूर्णयेत् । तच्चूर्णंमधुनालिह्याद्गर्भपातप्रशान्तये ॥

...कारिकिवस्टी तन्निर्मितगृहभवामृत्तिकासमंगाल...

...टकल्कंवापयसापिबेत् ॥ पक्वंवचारसोनाभ्यांहिंगुसौवर्चलान्वि...

...नुपिबेद्दुग्धगुं...वणासुखिनीभवेत् ॥ सौवर्चलंचौहाइतिलोके । तृणपञ्चक...

...पचेत्पयः ॥ तत्पयोगुर्विणीपीत्वामूत्रसंगाद्विमुच्यते । शालीक्षुकुशकाशैः

...क्रम् ॥ एषांमूलंतृषादाहपित्तासृक्मूत्रसंग्रहृत् ॥ ११८१ ॥

उपद्रवों की चिकित्सा ॥

...में स्निग्ध तथा शीतल क्रियाकरे कुश, कांस तथा अरण्डकी जड और गोखुरू ...पाककिये हुये दूध में शक्कर डालकर अथवा गोखुरू, मुलहठी, भटकटैया तथा बाणपुंख ...पककिये हुये दूध में शक्कर और शहद डालकर पीने से गर्भिणी की पीड़ा नष्ट होतीहै कुम्हार। मक्खी के घरकी मिट्टी, नवमालिका, लज्जालू, धवईकेफूल, गेरू, रसौत और राल इनमें से जितनी औषधें मिलसकें उनके चूर्ण को शहद के साथ चाटने से गर्भपात नहीं होताहै कसेरू, उत्पल तथा सिंहाडे के कल्कको दूध के साथ पिये बच तथा लहसन के द्वारा पाककिये हुए दूधमें हींग और कालानोन मिलाकर पीने से गर्भिणीका आनाह नष्ट होताहै तृणपंचमूल कल्कके द्वारा पाककिये हुए दूध के पीने से गर्भिणीका मूत्ररोध नष्ट होता है शालय धान्य, ईख, कुश, कांस तथा सपत इन पांचों को तृणपंचक कहते हैं इनकी जड तृषा, दाह, रक्त पित्त तथा मूत्ररोध को नष्ट करती है ॥ ११८१ ॥

अतःपरंमासानुमासिकंवक्ष्यामः ॥

मधुकंशाकबीजञ्चपयस्यासुरदारुच । अश्मन्तकास्तिलाःकृष्णताम्रवल्लीशतावरी ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के नहीं तैसे

तथा । घृतेनसहि

स्यालुं मधुकं ... विषये

तत्तन्तुना ...

मधुरैः । एवंगर्भेनपतति । मैशू

बीजं पयस्यात्रक्षीरकाकोलीतद

गुः अनन्ताउ ... इतिलोके । ताम्रव

लाच ॥ क्षीरिशुंगाक्षी ... पद्मचारिणीभाग

योयुताः ... तिमासं ... दीनांशुंगाः अविकाशिताः

नदुग्धे ... ः पातव्याः ... मिलिताः कर्षमिताः

क्षीरसिद्धानिदापयेद्भिषग्वरः ... कपित्थबृहतीबिल्वपटोलेक्षु

तेक्षीरेद्धात्रिसज्जलपलयुक्तेक्वाथयित्वाक्षीर ... लानिमिलिता

तापयस्यासारिवापिबेत् । अत्रापिमधुकादीनमिलित

... परिमितेनदुग्धेनालोडिनि ... बेत् ॥ क्षीरंशुण्ठीपय

सक्षीरंवाहिताशुण्ठीमधुकंसुरदारुच ॥

... शुण्ठीमधुकसुरदारूणिशीतलजलपिष्टानिदुग्ध

दुग्धंसमंगामूलकंशिवाम् । पिबेदेकादशेमासिगर्भिणीशूलशान्तये ॥ अत्रक्षी जयातद

द्यात्समंगामूलकम् । लज्जालूमूलम् ॥ सिताविदारीकाकोलीक्षीरीचैवम्

णीद्वादशेमासिपिबेच्छूलघ्नमौषधम् ॥ काकोल्यभावेऽश्वगन्धामूलंग्रा

तेगर्भस्तीव्रारुक्चोपशाम्यति ११८२॥ महीने २ की चिकित्सा ॥

मुलहठी, शाकबीज, क्षीरकाकोली तथा देवदारु १ असलौना, कालेतिल, मँजीठ ... गिलोय, क्षीरकाकोली, प्रियंगु तथा उत्पल सारिवा ३ उत्पलसारिवा, साईं, रासना, ... मुलहठी ४ दोनों भटकटैया, खंभारी, बरगदआदि दूधवाले वृक्षोंकी कोंपल तथा छाल, घी ... बच, सहँजना, गोखुरू तथा गंभारी ६ सिंघाडा, कमलकी डंडी, दाख, कसेरू, मुलहठी तथा शक्कर ७ यह सात योग क्रमसे सातों महीनोंमें शीतल जलके साथ पीसकर ४ तोले दूध मिलाकर एक तोला पीना चाहिये इनके द्वारा गर्भ नहीं गिरताहै और गर्भ शूलका नाश होताहै कैथा, भटकटैया, बेल, परवल, ईख तथा बडी भटकटैया इनसबकी जडको चारतोले लेकर ३२ तोले दूधमें १२८ तोले जलकेसाथ पाक करे जब केवल दूध बाकीरहै तब छानलेवे यह आठवें महीनेमें पिलावे मुलहठी, साईं, क्षीरकाकोली तथा उत्पल सारिवा एक तोले इनसब औषधियों को शीतल जलमें पीसकर चार तोले दूध मिला कर नवें महीने में पिलावे सोंठ तथा क्षीरकाकोली के द्वारा पूर्वोक्त रीति से पाक किये हुए दूध को अथवा सोंठ, मुलहठी तथा देवदारुको तोलेभर लेके शीतल जलमें पीसकर चार तोले दूध मिलाकर दशवें महीनेमें पीवे खिन्नी, उत्पल, लजालू की जड तथा हड इनसब को दूधके साथ शूल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

औषधि [illegible] दावाग्नि [illegible] तातपशो [illegible]

[illegible] णमर्दि [illegible] पुराणंविषमूत्रै [illegible]

[illegible] विप्रहीनं [illegible]

[illegible] नान्त [illegible] नेचोपद्रवानाह [illegible]

[illegible] कन्दकी [illegible] पि [illegible] तिदुर्गन्धमा [illegible]

[illegible] सेत ॥ [illegible] क गर्भकी चिकित्सा ॥

[illegible] को पूर्ण न करे तो बृंहण औषधियें [illegible] काठनआवतिष्ठत [illegible]

मुस्तम [illegible] मारुतार्दितम् । त्यक्तंजी [illegible] प्रशाम्यति ॥ [illegible]

उदरंयथाचलि [illegible] पुदाहा [illegible] नकृद्भवेत् । कदाचित्तत्तदा [illegible]

[illegible] नस्तदा । नैगमेयःच [illegible] थहः । [illegible] मुरुयास्याश्चिकित्सातु [illegible]

[illegible] था, [illegible] वतिलोकेनागोदराहृवयः ॥ [illegible]

[illegible] उत्पन्न होयँ [illegible] ोवभी न उदर [illegible] हुआ हो आ [illegible]

[illegible] रजकी सुखाने वाली [illegible] उदरमें आध्मानको उत्पन्न [illegible]

[illegible] आपही शान्त होजाय [illegible] ह गर्भको लेगया ऐसा लोग कह [illegible]

[illegible] पाटकलकंवापयस्य [illegible] उसे नागोदर नाम गर्भ कहतेहैं इनदोनों [illegible]

[illegible] त्सा है ॥ ११८४ ॥

अथ प्रसवमासानाह ॥

[illegible] मासिनारीगर्भंप्रसूयते । एकादशेद्वादशेवाततोऽन्यत्रविकारतः ॥११८५ ॥

[illegible] ने ॥ नवें, दशवें, ग्यारहवें अथवा बारहवें महीनेमें स्त्री गर्भको उत्पन्नकरती है इससे

[illegible] होनेपर विकार जानना चाहिये ॥ ११८५ ॥

अथ प्रसवमासमतिक्रम्यस्थायिनिगर्भेचिकित्सामाह ॥

[illegible] संकोचात्प्रसूतिसमयेऽपिया । गर्भंनजनयेन्नारीतस्याःशृणुचिकित्सितम् ॥

[illegible] धान्यमुलूखले । विषमञ्चाशनंपानंसेवेतप्रसवार्थिनी ॥ ११८६ ॥

प्रसवमासों से अधिक स्थितहोनेवाले गर्भकी चिकित्सा ॥

वायुके द्वारागर्भके संकुचित होजानेसे प्रसवके समयमें भी जो गर्भको नहीं उत्पन्नकरे वह ओखली

में धानोंको डालकर मूसलसे कूटे और विषम आहारपानकरे ॥ ११८६ ॥

अथ कालेप्रसवविलम्बेचिकित्सामाह ॥

प्रसवस्यविलम्बेतुधूपयेद्भितोभगम् । कृष्णसर्पस्यनिर्मोकैस्तथापिण्डीतकेनवा ॥

निर्मोकःसर्पकञ्चुकःपिण्डीतकःमयनफलइतिलोके । तन्तुनालांगलीमूलंबध्नीयाद्धस्त

पादयोः । सुवर्चलंविशल्यंवाधारयेदाशुसूयते । सुवर्चलासूर्यकान्ताविशल्यापाटला ॥

करंकीभूतगोमूर्द्धासूतिकाभवनोपरि । स्थापितस्तत्क्षणान्नार्याःसुखंप्रसवकारकः ॥ करंकी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

[illegible] आ, धनियां, कसेरू, मुल[illegible]

[illegible] विदारीकन्द, मूसली, असगंध, [illegible] मिर्च,

[illegible] श्वेतचंदन, रक्तचंदन [illegible] लौंग इन [illegible] तोले

[illegible] भस्म, सीसेकी भस्म, [illegible]की भस्म, अभ्रककी भस्म, कस्तूरी

[illegible] की अपनी इच्छाके [illegible] मिलावे इसके उपरान्त चार २

[illegible] के खैंचने के लिये क्रमयुक्त तरुणस[illegible]ताहै इति[illegible]

[illegible]

मूढःकस्मात[illegible]मूलश्च[illegible]

णेनततःसगर्भः संं[illegible]समुपै[illegible]जयात[illegible]

ततोमूढःरुद्धगति[illegible]गर्भेरुद्धगतिंगर्भयान्यादिषु[illegible]

निलेनविगुणेनरुद्धगतिनासगर्भःभुग्नःकुटिलीकृतः चतुर्भिःप्रकारैः[illegible]

परेतत्संख्यानिरासार्थमाह। संख्यामतीत्यउक्तांसंख्यामतिक्रम्यबहु[illegible]

निसमुपैति ॥ ११८८ ॥ मूढगर्भका निदान और संप्राप्तिपूर्वक लक्षण ॥

अपने कारणों से कुपित वायु रुकीहुई गतिवाली होकर मूढगर्भ [illegible] योनि तथा उदरमें शूलको और मूत्र रोधको उत्पन्न करताहै इसके उप[illegible]रुद्धगति[illegible] वायु के द्वारा टेढ़ाहुआ गर्भ कहीहुई संख्याको उल्लंघन करके अनेक प्रकारसे योनि में प्राप्त होताहै मूढगर्भ चार प्रकार का है और कोई २ आठ प्रकारका कहतेहैं ॥ ११८८ ॥

तत्र प्रथमतश्चतुरःप्रकारानाह ॥

संगीचयोभव संकीलकःप्रतिखुरःपरिघोऽथबीजस्तेषूर्ध्वबाहुचरणैःशिरसा च योनौ। संगीचयोभव

संकीलकःप्रतिखुरःपरिघोऽथबीजस्तेषूर्ध्वबाहुचरणैःशिरसा च योनौ। संगीचयोभव

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

[illegible] नेचोपद्रवानाह ॥

[illegible] ॥ [illegible] क गर्भकी चिकित्सा ॥

[illegible] को पूर्ण न करे तो बृंहण औषधियें [illegible]

[illegible] मारुतार्दितम् । त्यक्तं जी [illegible] नकृद्भवेत् । कदाचिच्चेत्तदा [illegible] नस्तदा । नैगमेयःबा [illegible] थहः । [illegible] भवतिलोकेनागोदरःहवयः [illegible]

[illegible] उत्पन्न होयँ [illegible] जीवभी न उत्पन्न हुआ हो [illegible] रजकी सुखाने वाली [illegible] उदरमें आधमानकी उत्पत्ति [illegible] आपही शान्त होजाय [illegible] गर्भको लोग [illegible] उस नागोदर नाम गर्भ कहते हैं इनदोनों [illegible]

[illegible] त्रोटकल्कंवापयस्यत्रीति [illegible] ॥ ११८४ ॥

अथ प्रसव [illegible] ह ॥

[illegible] मासिनारीगर्भस्य [illegible] उदरके द्वारा योनि [illegible] में अटकता है, कोई एकहाथके बाहर निकलनेपर तिरछाहोकर अटकता है, कोई [illegible] दोनों हाथोंके बाहर निकलनेपर योनिमें तिरछाहोकर अटकताहै, कोई ग्रीवाके टेढ़े होने से अधोमुख होकर योनि में अटकताहै, कोई तिरछा [illegible] रुकीहुई गतिवालाहोकर योनिमें अटकताहै यह आठप्रकारकी गर्भकी गति प्रसव [illegible]

[illegible] त्सुश्रुतस्त्वष्टौप्रकारान्तराण्याह ॥

[illegible] थासक्थिभ्यांयोनिमुखंप्रतिपद्यते १ कश्चिदाभुग्नसक्थिशरीरः स्फिग्देशेनतिर्यग्गतः २ कश्चिदाभुग्नैकसक्थिरितरेणसक्थना र नयोनिद्वारंपिधायावतिष्ठते ३ कश्चिदुदरपार्श्वपृष्ठानामन्यतमे नयोनिद्वारंपिधायावतिष्ठते ४ अन्यःपार्श्वापवृत्तशिराःकश्चिदेकेनबाहुना ५ कश्चिदाभुग्न शिराबाहुद्वयेन ६ कश्चिदाभुग्नमध्योहस्तपादशिरोभिः ७ कश्चिदेकेनसक्थनायोनिद्वारं प्रतिपद्यतेऽपरेणपायुमिति ८ ॥ ११८१ ॥

सुश्रुतमें कहेहुए अन्य आठप्रकारके मूढ़गर्भ ॥

कोई गर्भ दोनों जंघाओंके द्वारा योनिमें आकर रुकताहै, कोई जंघा तथा शरीरके टेढ़े होजानेसे तिरछा होकर नितम्बोंके द्वारा योनि में अटकताहै, कोई एकजंघाके टेढ़े होजाने से एकजंघा के द्वारा योनिमें आकर रुकताहै, कोई उदर, पार्श्व अथवा पीठ इनमेंसे किसीके द्वारा योनिको रोककर स्थितहो-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

[illegible] के नहीं [illegible]

[illegible] तथा । धृतेन सहितं [illegible]

[illegible] धान्या,धनिया,कसेरू, मुलै[illegible] अज-

[illegible] बिदारीकन्द, मूसली,असगंध, [illegible] मिर्च,

[illegible] श्वेतचंदन,रक्तचंदन [illegible] लौंग इन [illegible] तोले

[illegible] भस्म, सीसेकीभस्म [illegible] की भस्म, अभ्रककी भस्म, कस्तूरी

[illegible] की अपनी इच्छाके [illegible] मिलाके इसके उपरान्त चार [illegible]

[illegible] के खैंचने के लिये क्रमयुक्त तरुणस [illegible] ताहैं इति रति

[illegible] बीजम [illegible] थो

[illegible] र्द्धाविजयातद [illegible]

मानसागन्तुभि[illegible] पैः प्रपीडित [illegible]

तः॥ उपतापोदुःखंमानसउपतापोबन्धुधनक्षयादिनाआग[illegible]तुरुपता [illegible]

गर्भ के मरने के कारण ॥

गर्भिणीके मानसी अथवा आगन्तुज प्रहारादि दुःखोंसे वा रोगोंसे पीडितहुआ गर्भ [illegible]

अथ ।परमसाध्यगर्भिणीलक्षणमाह । [illegible] पूणादि

योनिसंवरणंसंगःकुक्षौमक्कल्लएवच । हन्युस्त्रियंमूढगर्भ [illegible]

योनिसंवरणंव्याधिविशेषः । (तथाचोक्तंतन्त्रान्तरे) वातलान्यन्नपानानिग्राम्यधर्मं प्रजागरम् ॥ अत्यर्थंसेवमानायांगर्भिण्यांयोनिमार्गगः। मातरिश्वाप्रकुपितोयोनिद्वारस्य संवृतिम् ॥ कुरुतेऊर्द्ध्वमार्गत्वात्पुनरन्तर्गतोऽनिलः । निरुणद्ध्याशयद्वारंपीडयन्गर्भसंस्थितम् ॥ निरुद्धवचनोच्छ्वासोगर्भश्चाशुविपद्यते । उच्छ्वासऊर्ध्वंहृदयान्नाशयत्य थगर्भिणी ॥ योनिसंवरणंनाममव्याधिमेनंप्रचक्षते । संगःकुक्षौगर्भस्यलग्नता अप्रवृत्ति रितियावत्कुक्षौमक्कल्लरक्तमारुतजः शूलविशेषःयद्यपिप्रसूतायामक्कल्लशूलमुक्तम् ॥ (तथापिसुश्रुते) प्रजातायाश्चेतिचकारेणाप्रसूतायाअपिमक्कल्लशूलंभवतिइतिबोद्धव्य

म् उपद्रवाःआक्षेपककासश्वासादयः ॥११९५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...मारुताद्दितम् । त्यक्तंजी... ...शाम्यति ॥

...नकृद्भवेत् । कदाचिन्नेत्तदा...

...निस्तदा । नैगमेयःबा... ...थहः ।

...भवतिलोकेनागोदराह्वयः ।

...गर्भकी चिकित्सा ॥

...को पूर्ण न करे तो बृंहण औषधियें...

...उत्पन्न होयँ ... भी न उत्पन्न हुआ हो...

...रजकी सुखाने वाली ... उदरमें आध्मानको उत्पन्न...

...आपही शान्त होजाय ... गर्भको लेगए ऐसा लोग कहें...

...उसे नागोदर नाम गर्भ कहते हैं इनदोनों...

...शृंगाटककल्कंवाप... ॥ ११८४ ॥

अथ प्रसव... ॥

...मासिनारींग...प्रसव... ...माह ॥ ... योनि में शस्त्र डालकर

...न काटे क्योंकि उसके

...न, स्वयं... से निकालले क्योंकि वह रुकनेसे शीघ्रही माताको ऐसे मारडालताहै जैसे ...तो मुहूर्त्त भरभी भीतर

...अन्न पशुको मारडालता है ॥ ११६६ ॥

अथ छेदनप्रकारमाह ॥

...सक्तंतुतद्भिषक् । सम्यग्विनिर्हरेच्छित्त्वारक्षेन्नारींप्रयत्नतः ॥

...कृत्वाधातुर्...नवारिणा । ततोऽभ्यक्तशरीरायायोनौस्नेहंविधारयेत् ॥

एवंमृद्वीभवेद्योनिस्तच्छूलंचोपशाम्यति ॥ ११६७ ॥

मूढगर्भके काटनेका प्रकार ॥

गर्भका जौन २ सा अंग योनिमें लगाहोय उस २ अंगको काटकर निकाले परन्तु योनिमें न लगने पावे इसबातपर बहुत दृष्टिकरेरहै इसप्रकार शस्त्र निकालकर योनिमें गर्भजल सींचे फिर शरीरमें तैल आदिक मर्दन करके योनिमें स्नेहभरे इसप्रकार करनेसे योनि कोमल होजाती है और उसकी पीड़ा नष्टहोजाती है ॥ ११६७ ॥ अथ प्रसूतायायोनौक्षतादेस्तु चिकित्सामाह ॥

तुम्बीपत्रंतथालोध्रंसमभागंसुपेषयेत् । तेनलेपोभगेकार्य्यःशीघ्रंस्याद्योनिरक्षता ॥

पलाशोदुम्बरफलंतिलतैलसमान्वितम् । योनौविलिप्तंमधुनागाढीकरणमुत्तमम् ॥ प्रसू

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के नहीं

सथा । धृतेनसहितं

विषयेगर्भे

प्रसवके विलम्बहोने कौ सर्पकी केंचली अथवा मैन

हड्डीको सूतिका

तिलके तेलमें मिलाकर

पानी में पीसकर

...,धनियां,कसेरू, मुल...

...बिदारीकन्द, मूसली,असगंध, ... मिर्च,

..., श्वेतचंदन, रक्तचंदन, ...लौंग इन सब... तोले

...भस्म, सीसेकीभस्म, ...हकीभस्म, अभ्रककी भस्म, कस्तूरी

...की अपनी इच्छाके ... मिलावे इसके उपरान्त चार

...जनके पच जा...

...के खैंचने के लिये क्रमयुक्त तरुणस... ताहै इति...

उंगलीमें बाले

इनके चूर्णमें कडुआ ... विजयात...

पैरोंमें लेपकरे इससे ... रपडती है दाई ... का का...

में डालकर धीरेसे अपराको निकाललेवे फिर उष्णजलसे सींचे ...

में स्नेह भरे ॥१२००॥ अथ मक्कल्लस्यनिदानसंप्राप्तिपूर्वकलक्षणमाह ॥

वनितायाःप्रसूतायाःवातोरूक्षेणवर्द्धितः । तीक्ष्णोष्णशोषितंरक्तं ... हि ॥ नाभ्यधःपार्श्वयोर्वस्तौवस्तिमूर्द्धनिचापिवा । ततश्च ... पूर्णोद दरे । भवेत्पक्वाशयाध्मानंमूत्रसङ्गश्चजायते ॥ एतद्विष... मक्क... णम् ॥ १२०१ ॥

मक्कल्ल रोगका संप्राप्तिपूर्वकलक्षण ॥

प्रसूता स्त्रीके रूखीवस्तुओंके सेवनसे बढीहुई वायु तीक्ष्ण तथा उष्णवस्तुओंके सेवनसे सूखेहुए रुधिरको रोककर नाभिकेनीचे पार्श्वओंमें वस्तिमें अथवा वस्तिके ऊपर ग्रंथिको उत्पन्न करतीहै तब नाभि वस्ति तथा उदरमें पीडा होतीहै और पक्वाशयमें आध्मान तथा मूत्ररोध होताहै इसरोगको मक्कल्ल रोग कहतेहैं॥१२०१॥ अथ मक्कल्लस्यचिकित्सामाह ॥

संचुर्णितयवक्षारंपिबेत्कोष्णेनवारिणा । सर्पिषावापिबेन्नारीमक्कल्लस्यनिवृत्तये ॥ पिप्पलीपिप्पलीमूलंमरिचंगजपिप्पली । नागरंचित्रकंचव्यंरेणुकैलाजमोदिकाम् ॥ सर्षपोहिंगुभार्ङ्गीचपाठेन्द्रयवजीरकाः । महानिम्बश्चमूर्वाचविषातिक्काविडंगकम् ॥ पिप्प

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...मन्थपुन...

...नेचोपद्रवान्...

...क गर्भकी चिकित्सा ॥

...को पूर्ण नं करे तो बृंहण औषधियें कठिनस्रावतिः...

मुस्तम... ...मारुतार्दितम् । त्यक्तंजी... ...शाम्यति ॥

...उदरंयथाचलि... ...नकृद्भवेत् । कदाचित्तत्तदाध्मा...

...नीस्तदा । नैगमेयःग्रहः । ...मुख्यास्याश्चिकित्सां

...भवतिलोकेनागोदराह्वयः...

...उत्पन्न होयँ ... जीवभी न उत्पन्न हुआ हो...

...रजकी सुखाने वाली ... उदरमें आध्मानको उत्पन्न

...आपही शान्त होजाय ... गर्भको लेगया ऐसा लोग कहते

...त्रोटकल्कंवाप्रयत्न... ... उसे नागोदर नाम गर्भ कहते हैं इनदोनो

अथ प्रसव... ॥ ११८४ ॥

...मासिनार्यां...

...आह ॥ ...नात् । सूतिकाया

...चिताचरणा... ...दिसेवनात्संक्लेशा

...शोदोषजनकमात्रंतस्मात्दारुणाःकष्टसाध्याः१२०४॥

...न ॥ वातादि सेवन अनुचित आचरणसे, दोषकारी वस्तुओं से, विषम भो-

...भोजनसे सूतिका के जो रोग होतेहैं वह कष्ट साध्यहैं ॥ १२०४ ॥

...सूतिकारोगप्रायामाह ॥ अंगमर्दोज्वरःकासःपिपासागुरुगात्रता । शोथः

...सूतिकाबाधालक्षणम् ॥ एतेऽङ्गमर्दादयःप्रायेणसूतिकायाभवन्ति सूति

कारोगत्वेनलक्ष्यन्ते ॥ १२०५ ॥ इनरोगोंका वर्णन ॥

वदनकाटूटना,ज्वर,खांसी,तृषा,शरीरका भारीपन,शोथ,शूल और अतीसार यह सूतिकाकेरोगहैं १२०५

अथ ज्वरादीनांरोगविशेषाणांनिदानविशेषमाह ॥ ज्वरातीसारशोथाश्चशूलानाह

बलक्षयाः । तन्द्राऽरुचिप्रसेकाद्यावातश्लेष्मसमुद्भवाः ॥ कृच्छ्रसाध्याहितेरोगाक्षीणमां

सबलाश्रिताः । तेसर्वेसूतिकानाम्नारोगास्तेचाप्युपद्रवाः ॥ सूतिकाभवत्वेनसूतिकाना

म्नातेरोगाः । आश्रयाश्रितयोरभेदोपचारात् तेवाप्युपद्रवाइति ॥ अतएवज्वरादयः

उक्तानांरोगाणामन्यतमंप्रधानीकृत्योपद्रवाइच ॥ १२०६ ॥

ज्वरादि विशेष रोगों के विशेष निदान ॥ ज्वर, अतीसार, शोथ, शूल, आनाह, बलक्षय, तन्द्रा,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

[illegible] धनियां, कसेरू, मुलैठी [illegible] अजवाइन [illegible]
[illegible] विदारीकन्द, मूसली, असगंध, [illegible] मिर्च,
[illegible] श्वेतचंदन, रक्तचंदन [illegible] लौंग इन [illegible] तोले
[illegible] भस्म, सीसेकीभस्म [illegible] की भस्म, अभ्रककी भस्म, कस्तूरी
[illegible] अपनी इच्छाके [illegible] मिलाके इसके उपरान्त चार २
[illegible] जनके पच जाने [illegible]
[illegible] के खैंचने के लिये क्रम युक्त तरुण [illegible] ताहै इति रति

देवदारु, बच, कूट [illegible]
भटकटैया, गोखुरू, [illegible]
शेष काढेमें सेंधानो [illegible] डालकर पिला [illegible] इससे प्रसूता [illegible]
कम्प, शिरकी पीड़ा, प्रलाप, तृषा, दाह, तन्द्रा, अतीसार, छर्दि और वात [illegible]
पूर्ण सूतिकारोग नष्ट होते हैं यह प्रसूता स्त्रीकी परम औषधहै इति देवदार्वा [illegible]

जीरकंस्थूलजीरश्चशतपुष्पाद्वयंतथा । यवानीचाजमोदाचधान्[illegible]
शुण्ठीकृष्णाकणामूलंचित्रकंहवुषापिच । बदरीफलचूर्णंचकु[illegible] चूर्णादि
पलमात्राणिगुडंपलशतंमतम् । क्षीरप्रस्थद्वयंदद्यात्सर्पिषःकुड[illegible] ॥ पञ्चे[illegible]
ऽयंप्रसूतानांप्रशान्तये । युज्यतेसूतिकारोगेयोनिरोगेज्वरेक्षये ॥ कासेश्वासेपाण्डुरोगे
काश्येवातामयेषु च । इति पञ्चजीरकपाकः ॥ १२०९ ॥

जीरा, स्थूलजीरा, सौंफ, सोया, अजवाइन, अजमोद, धनियां, मेथी, सोंठ, पीपल, पीपलामूल, चीता, हाऊबेर, बेरकाचूर्ण, कूट और कबीला इन सबको चार २ तोले लेकर चारसौ तोले गुड १२८ तोले दूध और १६ तोले घीके साथ पाककरे इस पाकको सूतिकारोगों के नाशकेलिये प्रसूता स्त्रियोंको देवे इससे योनिरोग, ज्वर, क्षय, खांसी, श्वास, कृशता, पांडुरोग और वातरोगोंका नाश होताहै इति पंचजीरकपाक ॥ १२०६ ॥

आज्यंस्यात्पलयुग्ममत्रपयसःप्रस्थद्वयंखण्डतः पञ्चाशत्पलमत्रचूर्णितमथोप्रक्षिप्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...नीन्त... नने चोपद्रवानाह...

...क गर्भकी चिकित्सा ॥

...को पूर्ण न करे तो बृंहण औषधियें...

...मारुतार्दितम् । त्यक्तंजी... ...नकृद्भवेत् । कदाचिच्चेत्तदाध्मा...

...नीस्तदा । नैगमेयःवा... भवतिलोकेनागोदरावयः ॥ ...मुख्यास्यचिकित्सा...

...उत्पन्न होयँ ... जीवभी न उत्पन्न हुआ हो ... रजकी सुखाने वाली ... उदरमें आध्मानको उत्पन्न ... आपही शान्त होजाय ... गर्भको लेगया ऐसा लोग कहते ... उसे नागोदर नाम गर्भ कहतेहैं इनदोनों ...

...॥ ११८४ ॥

अथ प्रसव... ...माह ॥

...मासिनारीगर्भप्रसवः... डेढ महीने के ... । पथ्य भोजनकरे तेल ...

...हे यह धन्वन्तरिजीका मत है प्रसूतास्त्री को उपद्रवोंसे रहित तथा ...न्यत्र अथवा फिर रजोदर्शन ...र चारमहीने के पीछे नियमोंको छुडावे ॥ १२११ ॥

अथ स्तनरोगस्यसम्प्राप्तिमाह ॥

...प्राप्यस्तनौस्त्रियाः । रक्तंमांसञ्चसन्दूष्यस्तनरोगायकल्प्य न्यः ... ताया गर्भिण्याश्चस्त्रियाःबोद्धव्यौ (अतआहसुश्रुतः) धम ...कन्यानांस्तनसंश्रिताः । दोषाविसरणास्तासांनभवन्तिस्तनामयाः ॥ दोषा विसरणाःसंवृतद्वारत्वेनदोषाणामविसरणमसञ्चारोयासुताः । तासामेवप्रसूतानांगर्भिणी नाञ्चताःपुनः । स्वभावादेवविवृताजायन्तेसंस्रवन्त्यतः ॥ १२१२ ॥

स्तनरोगोंकी संप्राप्ति ॥

कुपितदोष दुग्धसहित अथवा दुग्धरहित स्तनों में प्राप्तहोकर मांस तथा रुधिरको दूषितकरके स्तन रोगोंको दूषित करतेहैं यहां दुग्धरहित स्तनभी प्रसूता अथवा गर्भिणीही स्त्री के जानने चाहियें इसी से सुश्रुतने कहाहै कि कन्याओंके स्तनों में स्थितधमनी ढकेहुए द्वारवाली होती हैं इसकारणसे उनमें दोष नहीं फैलतेहैं इसीलिये उनके स्तनरोगभी नहीं उत्पन्न होते गर्भिणी तथा प्रसूतास्त्रियोंकी स्तनों में स्थित धमनी स्वभावहीसे खुलजाती हैं इसीकारण उनसे स्राव होताहै ॥ १२१२ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

... के नहीं ...

... तथा । धूतेनसाहितं ...

... तन्तुना ... टिविषयेगर्भे ...

... प्रसवके विलम्बहोने ... सर्पकी केंचली अथवा मैन ...

... धनियां, कसेरू, मुल ...

... बिदारीकन्द, मूसली, असगंध, ... मिर्च,

... श्वेतचंदन, रक्तचंदन ... लौंग इन ... तोले

... भस्म, सीसेकीभस्म, ... हेकीभस्म, अभ्रककी भस्म, कस्तूरी

... की अपनी इच्छाके ... मिलाके इसके उपरान्त चार ...

... के खैंचने के लिये क्रमयुक्त तरुण ... ताहै इति रति

... बुझे हुए जलके पीने ... विजयात ...

अथ बालरोगा ... ॥ बालग्रहा ...

... भ्योरक्षेद्बालंप्रयत्नतः ॥ १२१५ ॥

बालरोगाधिकार ॥ अनाचार से बालग्रह बालकों को पीड़ा देते हैं इसलिये ... पूर्व्वक बालकों की रक्षा करे ॥ १२१५ ॥

अथ बालग्रहाणांनामान्याह ॥ स्कन्दग्रहस्तुप्रथमःस्क ... पुणाद ... रेवतीचैवपूतनाचान्धपूतना ॥ पूतनाशीतपूर्वाचतथैवमुख ... गाणि प्रोक्ताबालग्रहाअमी ॥ १२१६ ॥

बालग्रहोंके नाम ॥ स्कन्दग्रह, स्कन्दापस्मार, शकुनी, रेवती, पूतना, अन्धपूतना, शीतपूतना, मुखमुंडिका और नैगमेय यह नौ बालग्रह हैं ॥ १२१६ ॥

अथ ग्रहाणामुत्पत्तिमाह ॥ नवस्कन्दादयःप्रोक्ताबालानांयेग्रहाअमी । श्रीमन्तो दिव्यवपुषोनारीपुरुषविग्रहाः ॥ एतेस्कन्दस्यरक्षार्थंकृत्तिकामाग्निशूलिभिः । सृष्टाःशर वनस्थस्यरक्षितस्यस्वतेजसा ॥ स्कन्दःसृष्टोभगवतादेवेनत्रिपुरारिणा । बिभर्त्तिचापरां संज्ञांकुमारइतिसंग्रहः ॥ (अयंहिकार्त्तिकेयादन्यः) स्कन्दापस्मारसंज्ञोयःसोऽग्निनातत् समद्युतिः । सचस्कन्दसखोनाम्नाविशाखइतिचोच्यते ॥ ग्रहाःस्त्रीविग्रहाएतेनानारूपाः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

[illegible] नेचोपद्रवान् [illegible]

[illegible] गर्भकी चिकित्सा ॥

[illegible] को पूर्ण न करे तो बृंहण औषधियें [illegible]

[illegible] मारुतार्द्दितम्। त्यक्तं जी [illegible]

[illegible] नकृद्भवेत्। कदाचित् [illegible]

[illegible] नैगमेयःबालग्रहः। [illegible] मुरुयास्या [illegible]

[illegible] उत्पन्न होयँ [illegible] जीवभी न उत्पन्न हुआ हो [illegible]

[illegible] रजकी सुखाने वाली [illegible] उदरमें आध्मानको उत्पन्न

[illegible] आपही शान्त होजाय [illegible] गर्भको लेगया ऐसा लोग कहते

[illegible] त्रोटकल्कंवा [illegible] नागोदर नाम गर्भ कहते हैं इनदोनों

[illegible] ॥ ११८४ ॥

अथ प्रसव [illegible] ग्रह ॥

[illegible] मासिनारीं [illegible]

[illegible] ज्वर [illegible] उनके समान [illegible] स्वामिकार्त्तिक न सम-

[illegible] जो नानाप्रकारके ग्रह कहेगयेहैं वह देव तथा [illegible] इसे स्कन्दसख और

[illegible] उत्पन्न हुएहैं और नैगमेयग्रहको भगवती श्रीपार्वतीजीने उत्पन्न कियाहै यह

[illegible] समान है जब स्वामिकार्त्तिक देवतालोगों के सेनापति कियेगये तब संपूर्ण ग्रह

[illegible] जी से हाथ जोड़कर बोले कि हे भगवन्! आप हमको जीविका दी-

[illegible] जी ने श्रीशिवजी से प्रार्थना की इसके उपरान्त भगवान् शिवजी

वर्त्तमान रहते हैं और पुष्ट रहतेहैं देवतालोग मनुष्य तथा तिर्यग्योनियों को ऊष्मा वर्षा शीत तथा

वायुकेद्वारा समय २ पर प्रसन्न करते हैं और मनुष्य अच्छेप्रकार यज्ञ अंजलि नमस्कार जप तथा होमों

से देवतालोगोंको प्रसन्नकरते हैं इसप्रकार सम्पूर्ण भाग बँटगये हैं कुछ बाकी नहीं हैं इसलिये तुम

लोगोंकी वृत्ति बालकोंही में शुभहोगी जिनकुलों में देवता, पितर, ब्राह्मण, साधू, गुरु तथा अतिथियों

का पूजन सत्कार नहीं होता जो कुल शौचाचारसे रहित हैं जो कुत्सित जीविकाकरतेहैं जिनके यहां

भिक्षुकों को भिक्षादान तथा बलिकर्म नहीं होताहै और जिनके घरमें कांसेके फूटेबर्त्तन रहते हैं उनके

घरमें हे बालग्रहगणो निस्सन्देह होकर बालकों की हिंसाकरो वहां तुमलोगों की जीविका समेत

पूजनहोगा इसप्रकारसे उत्पन्नहुए बालग्रह बालकोंकी हिंसाकरतेहैं बालग्रहोंसेयुक्त बालक अत्यन्त

कष्टसाध्य होतेहैं ॥ १२१७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के नहीं ...

... तिलके तेलमें मिलाकर ...

...आ, धनिया, कसेरू, मुली ...
... विदारीकन्द, मूसली, असगंध ...
..., श्वेतचंदन, रक्तचंदन ... लौंग इन ... मिर्च, ... तोले
...भस्म, सीसेकीभस्म, ... हककीभस्म, अभ्रककी भस्म, कस्तूरी
... अपनी इच्छाके ... मिलावे इसके उपरान्त चार ...
... खैंचने के लिये ... युक्त तरुण ... ताहै इति ...

...पुतः । स्रस्ताङ्ग... [illegible]
प्रचिततनुःसदाह... [illegible] ...वेदनार्त्तः । [illegible]
देहः श्यावोवामु... [illegible]
पीडितःकुमारः ॥ विट्स्राविस्वपितिनवासरेनरात्रौ विड्... [illegible]
छर्द्यार्त्तोहृषिततनुरुहःकुमारस्तृष्णालुर्भवतिचपूतनागृहीतः ॥ [illegible]
कासहिक्काच्छर्दीभिर्ज्वरसहिताभिरर्द्यमानः । दुर्वर्णःसततमथापिय... [illegible]
द्भिषगथगन्धपूतनार्त्तम् ॥ आक्रन्दत्यभिचकितंसुवेपमान... [illegible]
जयुक्तः । स्रस्ताङ्गोभृशमतिशीर्यतेचशीतात्तम्ब्रूयाद्भिषगथ... [illegible] ...तम्... [illegible]
सरुधिरपाणिपादवक्त्रोबह्वाशीकलुषशिरावृतोदरीयः । सञ्ज्ञयःशिशुरथवक्त्रमण्डिकार्त्तः
सोद्वेगोभवतिचमूत्रतुल्यगन्धिः ॥ यःफेनंवमतिविनम्यतेचमध्ये सोद्वेगोविहसतिचोर्ध्वं
वीक्ष्यमाणः । कूजेच्चप्रततमथोऽस्रसास्रगन्धिर्निःसंज्ञोभवतिसनैगमेयजुष्टः ॥ ११९ ॥

ग्रहपीडित बालकोंके विशेष लक्षण ॥

स्कन्दग्रहपीडित बालक. शिथिलांग, रुधिरके समान गंधयुक्त, दुग्धपानरहित, टेढे मुखवाला, पैरोंको पटकनेवाला, एकओर नेत्रोंको रखनेवाला, उद्विग्न नेत्रोंसे आंसू बहनेवाला, थोड़ासारोनेवाला और पुष्टतासे मुट्ठी बांधनेवाला होताहै, स्कन्दापस्मार पीड़ित बालक. कभी संज्ञासहित तथा कभी संज्ञारहित होताहै स्तब्ध होजाताहै नाचनेकेसे हाथ पैर फेंकताहै बहुतदेरमें मल मूत्रका त्यागकरता है जंभाई लेताहै और मुखसे झागोंको उगलताहै शकुनीपीड़ित बालक. शिथिलांग भयसे चकित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...नेचोपद्रवान्...

...गर्भकी चिकित्सा ॥

...को पूर्ण न करे तो बृंहण औषधियें...

...मारुतार्दितम् । त्यक्तंजी...

...ानकृद्भवेत् । कदाचिच्चेत्तदा...

...नीस्तदा । नैगमेयःबा...ग्रहः ।...

...भवतिलोकेनागोदराह्वयः ॥...

...उत्पन्न होयँ ... जीवभी न उदर बढ़ा हो...

...रजकी सुखाने वाली ... उदरमें आध्मानको उत्पन्न...

...आपही शान्त होजाय ... गर्भको लेगया ऐसा लोग कहते...

...नागोदर नाम गर्भ कहते हैं इनदोनों...

...॥ ११८४ ॥

अथ प्रसव...ह ॥

...ग्रहोंके ... दोषोंका नाश होताहै ...न, खस, ... बकरीकेरोम, मेढासिंगी, बच और शहद इन सबके द्वारा धूप ...और सम्पूर्ण ग्रहदोष नष्ट होते हैं बालग्रहोंकी शान्ति के लिये बलि, शान्ति ...हिये ॥ १२२० ॥

...कृत्वाधार्द्नेदिने । दृढस्मृतिःक्षिप्रमेधाःकुमारोबुद्धिमान्भवेत् ॥ न पिशाचानरक्षांसिनभूतानचमातरः । नभवन्तिकुमाराणांपिबतामष्टमंगलम् ॥ इत्यष्टमंगलंघृतम् ॥ १२२१ ॥

...तिप्रर्थकमथापिच । सारिवासैन्धवंचैवपिप्पलीघृतमष्टमम् ॥

बच, कूट, ब्राह्मी, सरसों, साईं, सेंधानोन और पीपल इनके द्वारा पाककियाहुआ घी मेधाको हितकारी है इसको प्रातःकाल नित्यपीने से बालक दृढस्मृति शीघ्र मेधा तथा बुद्धिमान् होताहै और पिशाच, राक्षस, भूत तथा मातृकाओंकी पीड़ा नहीं होतीहै इति अष्टमंगलघृत ॥ १२२१ ॥

अथ विशिष्टग्रहजुष्टानांचिकित्सामाह । तत्रस्कन्दग्रहजुष्टस्यचिकित्सामाह ॥

स्कन्दग्रहोपसृष्टस्यकुमारस्यप्रशान्तये । वातघ्नद्रुमपत्राणांक्काथेनपरिषेचनम् ॥ देवदारुणिरास्नायांमधुरेषुगणेषुच । सिद्धंसर्पिश्चसक्षीरंपातुमस्मैप्रदापयेत् ॥ सर्षपाःसर्पनिर्मोकोवचाकाकादनीघृतम् । उष्ट्राजाविगवांचापिरोमाण्युद्धूपनंभवेत् ॥ काकादनीश्वे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के नहीं [illegible]

[illegible] तथा। धूतेन साहैत [illegible]

[illegible] प्रसवके विलम्बहोने की [illegible] सर्पकी केंचली अथवा [illegible]

[illegible] ना, धनिया, कसेरू, मुली [illegible]

[illegible] विदारीकन्द, मूसली, सुगंध, [illegible] मिर्च,

[illegible], श्वेतचंदन, रक्तचंदन [illegible] लोंग इन [illegible] तोले

[illegible] भस्म, सीसेकीभस्म, [illegible] अभ्रककी भस्म, कस्तूरी

[illegible] अपनी इच्छाके [illegible] मिला [illegible] इसके उपरान्त चार

[illegible] के खेंचने के लिये क्रम युक्त तरुण [illegible] इति

कराकर शालिधान्य [illegible] विजयात [illegible]

देवे आगे कहेहुये ([illegible] सांचवं) इत्य [illegible]

नाशक रक्षा नित्यकर ॥ १२२२ ॥

अथ स्कन्दापस्मारजुष्टस्य चिकित्सामाह ॥

बिल्वःशिरीषोगोलोमीसुरसादिश्चयोगणः। परिषेकःप्रयोक्तव्यः [illegible] ये॥ गोलोमीश्वेतदूर्वासुरसादिगणोयथा। सुरसाश्वेतसुरसा [illegible] णाद न्धिकंभूस्तृणकोराजिकाश्वेतबर्बरी॥ कट्फलंखरपुष्पाचका [illegible] कफकोनहरःख्या निर्गुण्डीकार्णिकारउदुम्बरः॥ बलाचकाकमाचीचतथाचविषमुष्टि [illegible]। कफकोनहरःख्या निर्गुण्डीकार्णिकारउदुम्बरः॥ सुरसाकृष्णातुलसीश्वेतसुरसाश्वेततुलसीफञ्जीभार्ङ्गीफणिज्ज तःसुरसादिरयंगणः ॥ सुरसाकृष्णातुलसीश्वेतसुरसाश्वेततुलसीफञ्जीभार्ङ्गीफणिज्ज तःसुरसादिरयंगणः ॥ सुरसाकृष्णातुलसीश्वेतसुरसाश्वेततुलसीफञ्जीभार्ङ्गीफणिज्जतःसुरसादिरयंगणः ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

औषधि ... दावाग्नि ... तातपशो ... णम ... राणंविष ... विप्रहीतं ... बहुतप ... अथवा

... न्ति ... नेचोपद्रवानाह ॥ ... न्दकी ... सौत ॥ ... क गर्भकी चिकित्सा ॥ ... को पूर्ण न करे तो बृंहण औषधिये ... कठिनस्त्रावतिष्ठ

मुस्तम ... मारुतार्दितम् । त्यक्तंजी ... उदरं यथाचलि ... आनकद्भवेत् । कदाचिन्नैत्तदाध्मा ... नीनस्तदा । नैगमेयःबालग्रहः । ... मुरुयास्याश्चिकित्सा

... तथा, भवतिलोकेनागोदराह्वयः ...

... उत्पन्न होयँ ... जीवभी न उत्पन्न हुआ हो ... रजकी सुखाने वाली ... उदरमें आध्मानको उत्पन्न ... आपही शान्त होजाय ... यह गर्भको लेगया ऐसा लोग कहने ... उसे नागोदर नाम गर्भ कहतेहैं इनदोनों ... ट्रोटकलकंवा ... ॥ ११८४ ॥

अथ प्रसव ... ह ॥ ... उबटन करना चाहिये

... रण करना ... बरगदके नीचे ... देनी चाहिये जवासा, ... न, स ... निवेदन करके स्कन्दापस्मारवाले को चौराहे में स्नानकरावे और ... मांस, मदिरा, रुधिर, ... इत्यादि मंत्रको पढे ॥ १२२३ ॥

... चिकित्सामाह ॥ शकुनीग्रहजुष्टस्य कार्य्यंवैद्येनजानता । वेत ... चनम् ॥ ह्रीवेरमधुकोशीरसारिवोत्पलपद्मकैः । लोध्रप्रियं ... षत्वात् । स्कन्दग्रहोक्ताधूपाश्चहिताअत्रभवन्तिहि । प्रदिहेत्लिम्पेत्दिह्यादितिसिद्धेदिहेदितिरूपसिद्धिरा ... तम् ॥ शतावरीमृगैर्वारुनागदन्तीनिदिग्धिकाम् । स्कन्दापस्मारशमनंघृतमत्रापिपूजि येत् ॥ मृगैर्वारुबड़ीइन्द्रवारुणीनागदन्तीनागहुलीतिलोकेप्रसिद्धा । लक्ष्मणांसहदेवींचबृहतींचापिधार ल्यंहरितालंमनःशिलाम् । बलिरेषांकरञ्जेतुनिवेद्योनियतात्मना ॥ निकटेचप्रयोक्तव्यंस्ना नमस्ययथाविधि । श्वेतशिरीषगन्धाष्टगुग्गुलुसर्षपैः । तिलतण्डुलकंमा शकुनीग्रहशान्त्यर्थंप्रदेहंकारयेद्धितम् । सिद्धमभ्यञ्जनेतैलंधारणंपूर्वमेवतु । कुम्भोक्तेनविधिनास्नापयेत्तंततःपठेत् । कुर्य्याच्चविविधांपूजांशकुन्याःकुसुमैःशुभैः ॥ नि शिशुरक्षार्थंदेव्यास्तुतिः ॥ अन्तरिक्षचरादेवीसर्व्वालङ्कारभूषिता । निकुम्भःशिवस्यगणविशेषस्तेनोक्तेनविधिना । अधोमुखीसूक्ष्मतु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गन्धिकः । गृध्रोल [illegible] विजयात [illegible]

शिशोः (यवफल [illegible]) शुक्तिः सु [illegible]

गोतीर्थेरेवत्यैप्रयतात्मना (गोतीर्थेगोष्ठ) स्नानंधात्रे [illegible]

नानाशस्त्रधरादेवीचित्रमाल्यानुलेपना । चलत्कुण्डलिनीश्यामारे [illegible]

सतेयांसततंदेव्योविविधभूषणाः । लम्बाकरालाविनताः तथैवबहुपु [illegible]

नासाचतुभ्यंदेवीप्रसीदतु ॥ १२२५ ॥

रेवतीग्रहपीडितकी चिकित्सा ॥ असगंध, मेढ़ासिंगी, साईं, गदापू [illegible] तथा [illegible] गुणि-नकेक्काथ के द्वारा रेवतीग्रहपीड़ित बालकको सींचे. कूट, राल, गूगल, लामज्जक तथा हरदुआ कदंब इनकेद्वारा पाक कियाहुआ तेल लगावे धौ, सांखू, अर्जुन, सलई, तेंदू तथा काकोल्यादिगणकेद्वारा पाककियाहुआ घी बालकको पिलावे. कुलथी, शङ्खचूर्ण तथा असगंधकेद्वारा लेपकरे गिद्ध तथा उल्लूकी बीट, जौ, बांस तथा घी इनसबके द्वारा प्रातःकाल तथा सायंकाल धूपदेवे सावधानहोके श्वेतपुष्प, खील, दूध, भात तथा दही इनकी बलि रेवतीग्रहको गोशालामें देवे और धाय तथा बालक दोनोंको स्नानकराकर नानाशस्त्रधरा देवी इत्यादि मंत्रोंको पढ़े ॥ १२२५ ॥

अथ पूतनाग्रहजुष्टस्यचिकित्सामाह ॥

कपोतवङ्काइयोनाकोवरुणःपारिभद्रकः । आस्फोताचैवयोज्याःस्युर्बालानांपरिषेचने ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नान्त ... नेचोपद्रवान ...

... कि ... सदुग्धमां ...

... क गर्भकी चिकित्सा ॥

... को पूर्ण न करे तो बृंहण औषधियों ...

... मारुतार्दितम् । त्यक्तंजी ... कठिनत्वावतिष्ठ ...

... नकृद्भवेत् । कदाचिच्चेत्तदा ...

... निस्तदा । नैगमेयः ... रुग्रहः ।

... भवतिलोकेनागोदराह्वयः ... मुख्यास्याश्चिकित्सा ...

... उत्पन्न होयँ ... जीवभी न उत्पन्न हुआ हो ...

... रजको सुखाने वाली ... उदरमें आध्मानको उत्पन्न ...

... आपही शान्त होजाय ... यह गर्भको लेगया ऐसा लोग कहते ...

... उसे नागोदर नाम गर्भ कहते हैं इन ...

... श्रीटकल्कंवापुष्यं ... ॥ ११८४॥

अथ प्रसव ... माह ॥

... मासिनारीं ... , बच, हींग, कूठ, ...

... तबीता इत्यादि आगे

... न, खसन, सपु ... न्धोश्चिकित्सामाह ॥ तिक्तद्रुमाणांपत्रेषुक्काथःकार्योऽभिषेच

... यां ... । निम्बःपटोलःक्षुद्राचगुडूचीवासकस्तथा । विसर्पकुष्ठनुत्त्र्यातोग

... ॥ पिप्पलीपिप्पलीमूलंचित्रकोमधुकोमधु । शालिपर्णीबृहत्यौचघृता

... देहश्चगात्रेचाक्ष्णोश्चशीतलैः । सर्वगन्धैःकुंकुमागुरुकर्पू

... स्तुशीतलैःचन्दनकर्पूरैः ॥ नतुकस्तूरीकुंकुमागुरुभिस्तेषा

मुष्णत्वात् । पुरीषंकौक्कुटंकेशाश्चर्मसर्पभवंस्तथा ॥ जीर्णंचाभीक्ष्णशोवासोधूपनायोप

कल्पयेत् । कुक्कुटींमर्कटींबिम्बीमनन्तांचापिधारयेत् ॥ मांसमाममथापक्वंशोणितंचचतु

ष्पथे । निवेद्यमन्तश्चगृहेशिशोःस्नपनमिष्यते ॥ करालापिंगलामुण्डाकषायाम्बरसं

वृता । देवि! बालमिमंप्रीतारक्षत्वंगन्धपूतने ॥ १२२७ ॥

गन्धपूतनाग्रहपीडितकी चिकित्सा ॥

तिक्तवृक्षोंके काढेसे गन्धपूतनापीडित बालकको सींचे, नींब, पटोल, भटकटैया, गिलोय, अडूसा इन सबको पंचतिक्त कहते हैं यह विसर्प तथा कुष्ठनाशक हैं पीपल, पीपलामुल, चीता, मुलहठी, शहद, शालिपर्णी और दोनों भटकटैया इनके द्वारा पाककियाहुआ घी हितहै सर्वगन्ध (केसर, अगर, कपूर,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के नहीं

सर्वांग मुग्ध तथा । धूर्त ने साहि

प्रसवके विलम्ब होने

सर्पकी केंचली अथवा मैन

गोके हडीको सूतिका

तिलके तेलमें मिलाकर

पानी में पीसकर

स्तक धानिया, कसेरू, मुल

विदारीकन्द, मूसली, असगंध, मिर्च,

श्वेतचंदन, रक्तचंदन, लौंग इन तोले

भस्म, सीसेकी भस्म, की भस्म, अभ्रककी भस्म, कस्तूरी

अपनी इच्छाके मिलावे इसके उपरान्त चार

के खैंचने के लिये कफ-युक्त तरुणस है इति

करवावे और वारुणी

कहेहुए मंत्रको पढ़े ॥

अथ मुखमण्डिकाग्रहजुष्टस्य चिकित्सामाह ॥ क

स्तकः । कुबेराक्षीचयोज्याःस्युर्बालानांपरिषेचने ॥ तर्कारीगणिय

स्तकः श्वेतएरण्डःकुबेराक्षीपाडरिइतिलोके । स्वरसैर्भृंगवृक्षाणांत

तैलंवचांचसंयोज्यपचेदभ्यञ्जनंशिशोः । (भृंगवृक्षः भँगरा चूर्णाद्

ष्ठंसर्पिश्चोद्धूपनेहितम् ॥ वर्णकंचूर्णकंमाल्यमञ्जनंपारदंतथ

मध्येबलिंततः ॥ पायसंसपुरोडाशंतद्बल्यर्थमुपाहरेत् । मन्त्रपूताभिरद्भिश्चतत्रैवस्नप

नंहितम् ॥ जलाभिमन्त्रणमन्त्रमाह । अलंकृताकामवतीसुभगाकामरूपिणी ॥ गोष्ठ

मध्यालयायातुपातुत्वंमुखतुण्डिका ॥ १२२९ ॥

मुखमुंडिकाग्रहपीडितकी चिकित्सा ॥

मुखमुंडिकाग्रहपीड़ितकी चिकित्सा ॥

कैथा, बेल, गनियारी, अडूसा, श्वेतअरंड तथा पाढ़र इनके काथके द्वारा मुखमुंडिकापीडित बालकको सींचे भंगरेकारस, असगन्ध तथा बच इनके द्वारा पाक कियेहुए तेलको बालकके लगावे बच, राल, कूट तथा घीकी धूपदेवे चन्दन, सुगन्धित वस्तुओंके चूर्ण, माला, रसौंत, पारा तथा मैनसिल, खीर और पुरोडास इन सबकी बलि गोशालामें मुखमुंडिकाग्रहको देवे "और अलंकृता कामवती" इत्यादि आगे कहेहुए मन्त्रसे अभिमंत्रित कियेहुए जलके द्वारा बालकको वहीं स्नानकरवावे॥१२२९॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

...न्ते ... मनेचोपद्रवान्...

...क गर्भकी चिकित्सा ॥

...को पूर्ण न करे तो बृंहण औषधियें...

...मारुतार्दितम् । त्यक्तं जी... ...प्रशाम्यति ॥

...नकृद्भवेत् । कदाचिद्बीत्तदाध्मा...

...निस्तदा । नैगमेयःवा...थहः । ...मुख्यास्याचिकित्सा...

...भवतिलोकेनागोदराह्वयः ॥

...उत्पन्न होयँ ... जीवभी न उत्पन्न हुआ हो ...

...रजकी सुखाने वाली ... उदरमें आध्मानको उत्पन्न...

...आपही शान्त होजाय ... गर्भको लेगया ऐसा लोग कहते...

...ओटकल्कंवा... ॥ ११८४ ॥ ... गोदर नाम गर्भ कहते हैं इनदोनों

अथ प्रसव... ...ह ॥ ॥ १२३० ॥

...मासिनारीं... ...ह ॥ ...भौज्यैर्विषमैर्दोषलै...

...तःस्तन्यंप्रदुष्यति ॥ मिथ्याहारविहारिण्यादुष्टावातादय...

...यस्तेन जायन्तेऽव्याधयःशिशोः ॥ वातदुष्टंशिशुस्तन्यंपिबन्वातगदातु...

...रांगःस्याद्बद्धविण्मूत्रमारुतः ॥ स्विन्नोभिन्नमलोबालःकामलापित्तरोग...

...गःपित्तदुष्टंपयःपिबन् ॥ श्लेष्मदुष्टंपिबन्क्षीरंलालालूःश्लेष्म...

...शूनोवक्राक्षश्छर्दनश्शिशुः ॥ ज्वराद्याःव्याधयःसर्वे वक्ष्यन्ते महतान्तुये । बालानामपितेतद्वद्बोद्धव्याभिषगुत्तमैः ॥ बालानामेवयेरोगाभवन्तिमह तांनच । तालुकण्टकमुख्यांस्तानवधारययत्नतः ॥ १२३१ ॥

बालरोगोंके निदान और लक्षण ॥ भारी,विषम तथा दोषकारीधायके भोजनोंसे कुपितहुयेदोष दूधको दूषितकरतेहैं अनुचित आहार,विहर करनेवाली धायके कुपितहुये तीनों वातादिदोष दूधको दूषित करते हैं इसी दूधके पीने से बालकों के रोग होते हैं वातदूषित दूधके पीने से वातरोग, स्वरभंग, कृशता और मलमूत्र तथा वायुका अवरोध होताहै पित्तदूषित दूधपीने से स्वेद, मलभेद, कामला, तृषा, शरीर की उष्णता और अन्यपित्तजरोग होते हैं कफदूषित दूधके पीनेसे लारबहना, अधिक निद्रा, जड़ता, शोथ, नेत्रोंकी रक्तता, छर्दि और अन्य कफजरोग होते हैं ज्वरआदिक सम्पूर्ण रोग जो बड़ों के लिये कहेगये हैं वह बालकों के भी उसीप्रकार से होते हैं और जो रोग केवल बालकों

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

न्मालनक्षमः ॥ कुं...

कुकूणककालक्षण ...

में पीड़ा, खुजली त... ...स्राव नेत्रोंमें होत... और ललाट,

वार रगडताहै और सूर्य्यको नहीं देखसक्ता न नेत्र खोलसक्ताहै ॥ १२३४॥

अथ तुण्डीगुदपाकमाह ॥ वातेनाध्मापितानाभिःसरुजातुण्डि...

गुदपाकाख्योऽव्याधिःपित्तेनजायते ॥ १२३५ ॥

तुंडी और गुदपाकका लक्षण ॥ वायुके द्वारा फूली हुई पीड़ा सहि... ...णादि

पित्तसे जो बालकों की गुदा पकजाती है उसे गुदपाक कहते हैं ॥ १२... शकृन्मूत्रसमायुक्तेऽधौतेपानेशिशोर्भवेत् । स्विन्नेवास्नाप्यमान

अथाहिपूतनमाह ॥ शकृन्मूत्रसमायुक्तेऽधौतेपानेशिशोर्भवेत् । एकीभूतंव्रणंघोरंतं

स्यकण्डूरक्तकफोद्भवा ॥ कण्डूयनात्ततःक्षिप्रंस्फोटाःस्रावश्चजायते।

विद्यादहिपूतनम् ॥ स्विन्नेस्वेदिते ॥ १२३६ ॥

अहिपूतन का लक्षण ॥ बालकोंकी मलमूत्रयुक्त,गुदाके न धोनेसे अथवा पसीना आनेपर स्नान न करवानेसे रुधिर तथा कफके द्वारा खुजली उत्पन्न होती है फिर खुजलाने से बहतेहुए स्फोटक (फोडे) उत्पन्न होते हैं और यहसब मिलकर छत्तासा होकर एकघाव होजाताहै उसे अहिपूतन कहते हैं१२३६

अथाजगल्लीमाह ॥ स्निग्धासवर्णाग्रथितानीरुजामुद्गसन्निभा । कफवातोत्थिता

ज्ञेयाबालानामजगल्लिका ॥ ग्रथितागुम्फितेवमुद्गसान्निभामद्गाकृतिः ॥ १२३७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

[illegible] नन्ति [illegible] नेचोपद्रवानाह [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] क गर्भकी चिकित्सा ॥

[illegible] को पूर्ण न करे तो बृंहण औषधियां [illegible]

[illegible] मारुतार्दितम् । त्यक्तं जी [illegible]

[illegible] नकृद्भवेत् । कदाचिच्चेत्तदा [illegible]

[illegible] नस्तदा । नैगमेयःबा [illegible] हः । [illegible] मुख्यास्याश्चिकित्सातूभ [illegible]

[illegible] उत्पन्न होयँ [illegible] भी न उ [illegible] हुआ हो [illegible]

[illegible] रजकी सुखाने वाली [illegible] उदरमें आध्मानको उत्पन्न [illegible]

[illegible] आपही शान्त होजाय [illegible] गर्भको लेगया ऐसा लोग कहते [illegible]

[illegible] श्राटकलकंवापयस्य [illegible] उसे नागोदर नाम गर्भ कहते हैं इनदोनों

[illegible] ॥ ११८४ ॥

अथ प्रसव [illegible] ह ॥

[illegible] मासिनारीगर्भप्रसव [illegible] कष्टेचोत्पन्नेवमन

[illegible] ने ॥ [illegible] नोऽन्यत्रा [illegible] र्याच्चनात्ययादिति ।

[illegible] न, स्व [illegible] विना ॥ १२ [illegible] ॥

[illegible] चिकित्सा ॥ जो औषध पहले बडों के लिये ज्वरादि रोगों में कहीगई हैं बालकों के [illegible] दाह,वमन, विरेचन तथा फस्त आदिक तीक्ष्ण कर्मों के विना करनी चाहिये [illegible] पर रक्त आदिक भी करानी चाहिये क्योंकि सुश्रुतने कहाहै कि प्राणनाशक [illegible] तथा वमन न कराना चाहिये ॥ १२४० ॥

[illegible] व्याधयश्चते । अतस्तदेवभैषज्यंमात्रातत्रकनीयसी १२४१

बडों के जो दोष दूष्य और ज्वरादिक रोग होते हैं वही बालकोंके भी होते हैं इसलिये वही औषध भी देनी चाहिये परन्तु मात्रा बहुत थोडी देनी चाहिये ॥ १२४१ ॥

अस्यबालस्य कनीयसीमात्रामाहविश्वामित्रः ॥ विडंगफलमात्रंतुजातमात्रस्यभेषजम् । अनेनैवप्रमाणेनमासिमासिप्रवर्द्धयेत् ॥ विडंगपरिमितंभेषजंचूर्णीकृत्यकिंवाकल्कीकृत्याऽथवावलेहीकृत्यदद्यादित्यर्थःतन्त्रान्तरेत्वन्यथाभिहितम् । प्रथमेमासिबालायदेयाभैषज्यरक्तिका । अवलेह्यातुकर्त्तव्यामधुक्षीरसिताघृतैः ॥ एकैकांवर्द्धयेत्तावद्यावत्संवत्सरोभवेत् । तदूर्ध्वंमाषवृद्धिःस्याद्यावत्षोडशवत्सराः ॥ एकैकांरक्तिकांतदूर्ध्वंवर्षोपरिमाषवृद्धिःप्रतिवर्षंपञ्चगुञ्जात्मकस्यमाषस्यवृद्धिर्भवतिगुञ्जाःपञ्चाद्यमाषकइत्यमरसिंहः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...धनियो, कसेरू, मुल...

...विदारीकन्द, मूसली, असगंध, ... मिर्च,

... श्वेतचंदन, रक्तचंदन ... लौंग इन ... तोले

...भस्म, सीसेकी भस्म ... की भस्म, अभ्रककी भस्म, कस्तूरी

...की अपनी इच्छाके ... मिलाके इसके उपरान्त चार

...जनके पच जाते

...के खैंचने के लिये क्रमयुक्त तरुण... ताहै इति

लगाकर बालकको स्त...

...बालानामा...

अंगप्रत्यंगदेशेतुरुजायत्रास्यजायते। मुहुर्मुहुःस्पृश...
मीलिताक्षोमूर्द्धस्थेरोगेनोधारयेच्छिरः । वस्तिस्थेमूत्रसंगार्त्तःक्षु...
विण्मूत्रसंगवैकल्याच्छर्द्याध्मानान्त्रकूजनैः । कोष्ठेऽयाधीनूविजानी...
दनैः ॥ १२४४ ॥ नहीं बोलनेवाले बालकोंके आभ्यन्तरिक रोगों...

बालकके जिस अंगमें पीडाहोतीहै उसी अंगको वारंवार छूताहै ... पेडूमें रोग होने से बालकका मूत्र रुकजाताहै और क्षुधा तथा तृषा नहींलगती कोष्ठमें रोगहोनेसे मलमूत्र रुकजाताहै और विकलता, छर्दि, आध्मान. तथा उदर में गड़गड़ाहट होतीहै और रोने से बालकों के संपूर्ण अंग में स्थित रोग जानना चाहिये ॥ १२४४ ॥

शिरमें रोग होनेसे बालक नेत्र नहीं खोलता है और शिरको डाले रहताहै

अथात्रादौज्वरस्यचिकित्सामाह ॥

सर्वैर्निवार्य्यतेबालेस्तन्यंनैवनिवार्य्यते । मात्रयालङ्घयेद्धात्रींशिशोरेतद्धिलंघनम् ॥ भद्रमुस्ताभयानिम्बपटोलमधुकैःकृतः । क्वाथःकोष्णःशिशोरेषनिःशेषज्वरनाशनः ॥ इति सर्वज्वरेषुभद्रमुस्तादिक्वाथः ॥ १२४५ ॥

मात्रयालंघयेल्लघुभोजयेत्

---

(१) विश्वंमित्रंयस्येतिविश्वामित्रः मित्रेचर्षाविति विश्वशब्दस्यदीर्घः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...रिष्टकंदकी... गर्भकी चिकित्सा ॥

...को पूर्ण न करे तो बृंहण औषधियों...

...कुमारुतार्दितम् । त्यक्तं जीवं... नकृद्भवेत् । कदाचिद्... नैगमेयः... ग्रहः । ...भवतिलोकेनागोदराह्वयः ॥

...उत्पन्न होयँ... जीवभी न उत्पन्न हुआ हो...

...आपही शान्त होजाय... उदरमें आध्मानकी उत्पत्ति... गर्भको लेगया ऐसा लोग कहते... नागोदर नाम गर्भ कहते हैं इनदोनों...

...॥ ११८४ ॥

अथ प्रसव... ाह ॥

...सुखंतप्तेनवारिणा॥

...विडङ्गादि... १२४६ ॥

...चावल इनके चूर्ण को कुछ गरम जलके साथ बालक को आ-

...नाशक बिड़ंगादि चूर्ण ॥ १२४६ ॥

...चधातकीपद्मकेसरम् । पिष्टैरेतैर्यवागूःस्याद्रक्तातीसारनाशिनी ॥

...फूल कमलकेशरसमुदिततोला१।तण्डुलकीबूटीतोला१। जल

...कृतवाधा... साधनीया । इति रक्तातीसारेमोचरसादियवागूः १२५०॥

...लज्जालू... धौके फूल तथा कमलकी केसर यहसब १ तो० चांवल १ तो० और जल ११ तो० इन सबकी यवागू बनाकर पिलाने से बालक के रक्तातीसार का नाशहोताहै इति रक्तातीसारनाशक मोचरसादियवागू ॥ १२५० ॥

नागरातिविषामुस्तबालकेन्द्रयवैःशृतम् । कुमारंपाययेत्प्रातःसर्वातीसारनाशनम् ॥
इति सर्वातीसारेनागरादिक्वाथः ॥ १२५१ ॥

सोंठ,अतीस,मोथा,सुगन्धवाला तथा इन्द्रजौ इनके काढ़े को प्रातःकाल पिलाने से बालकों के सम्पूर्ण अतीसार नष्ट होते हैं इति सर्वातीसारनाशक नागरादि क्वाथ ॥ १२५१ ॥

लाजासयष्टीमधुकाशर्कराक्षौद्रमेवच । तण्डुलोदकयोगेनक्षिप्रंहन्तिप्रवाहिकाम् ॥
इति प्रवाहिकायाम्लाजादिचूर्णं ॥ १२५२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के नहीं

धृतेनसहितं

टविषयेगर्भे

प्रसवके विलम्बहोने कों

सर्पकी केंचली अथवा मैनफल

गोके बथका हड्डीको सूतिका गृहके

तिलके तेलमें मिलाकर

पानी में पीसकर

बांधकर कमरमें बांधदे खैंचने के लिये

धनियां, कसेरू, मुलहटी

बिदारीकन्द, मूसली, असगंध,

श्वेतचंदन, रक्तचंदन, लौंग इन

भस्म, सीसेकीभस्म, अभ्रककी भस्म, कस्तूरी

अपनी इच्छाके अनुसार मिलावे इसके उपरान्त चार

धान्यंचशर्करा ...

इतिकासश्वासयोध ...

धनियां, शक्कर और ... चावलोंका धोवन इनके ... को पिलाने ...

नाश होताहै इति कासश्वास नाशक धान्यादिपान ॥ १२५६ ॥

द्राक्षावासाभयाकृष्णाचूर्णंक्षौद्रेणसर्पिषा। लीढंश्वासंनिहन्त्याशु ...

तमकंश्वासभेदम्। इतिकासश्वासयोर्द्राक्षादिचूर्णं ॥ १२५७ ॥

दाख, अडूसा, हड तथा पीपल इनके चूर्णको शहद तथा घी के स ... चूर्णादि

तथा तमक श्वासका नाश होताहै इति कासश्वासनाशक द्राक्षादि चू ... २५७ ॥

चूर्णंकटुकरोहिण्यामधुनासहयोजयेत्। हिक्कांप्रशमयेत्क्षिप्रंछर्दिंचापिचिरोत्थिताम्॥ इतिहिक्कायांछर्द्याञ्च ॥ १२५८ ॥

कुटकी के चूर्णको शहद के साथ चटानेसे बालककी हिचकी तथा छर्दिका नाश होताहै ॥१२५८

छर्द्यांपीतंतुमेध्यन्तुस्तन्येनमधुसर्पिषा ॥ द्विवार्त्ताकीफलरसंपञ्चकोलञ्चलेहयेत्। इतिक्षीरछर्द्याम् ॥ १२५९ ॥

आम्रास्थिलाजसिन्धूत्थंसक्षौद्रंछर्दिनुद्भवेत्। द्विवार्त्ताकीवृहतीद्वयम्पञ्चकोलंयथा ॥

पिप्पलीपिप्पलीमूलंचव्यचित्रकनागरम्।

आमकी गुठली, खील, सेंधानोन इनको शहदके साथ चाटनेसे बालकोंका दूध डालना बन्द होता है दोनों भटकटैयों के फल के रसको दूध शहद तथा घीकेसाथ चटानेसे अथवा पीपल, पीपलामूल,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

११७२।

...नमन्थपून...

...न्ति... भिनेचोपद्रवान्... हे ।...

...क गर्भकी चिकित्सा ॥

...को पूर्ण न करे तो बृंहण औषधियों...

...मारुतार्दितम् । त्यक्तंजी...

...नकृद्भवेत् । कदाचित्तत्...

...नस्तदा । नैगमेयःबालग्रहः ।...

...था, नवतिलोकेनागोदराह्वयः ।...

...उत्पन्न होयँ ... जीवभी न उत्पन्नहुआ हो...

...रजकी सुखाने वाली वायु उदरमें आध्मानको उत्पन्न...

...आपही शान्त होजाय ... गर्भको लेगया ऐसा लोग कहते...

...उसे नागोदर नाम गर्भ कहते हैं इनदोनों...

...११८४ ॥

अथ प्रसव... ॥

...गांशान्तयेशिशुः ॥

...व तथा हल्दी इनके काढ़ेको पिलाने से बालकोंका क्षत,वीसर्प,विस्फोटक तथा

...१२६४ ॥

...रेन्द्रयवैःशिशोः । लेपस्तक्रेणहन्त्याशुसिध्मपामाविचर्चिका

...कृत्वाधात्रीकायाम् ॥ १२६५ ॥

गृहधूम,हल्दी,कूट,राई तथा इन्द्रजौ इनसबके लेपसे बालकोंका सिध्म (कुष्ठभेद) खुजली तथा विचर्चिका (खुजली का भेद) का नाश होताहै ॥ १२६५ ॥

सारिवातिललोध्राणांकषायोमधुकस्यच । संस्राविणिमुखेशस्तोधावनार्थंशिशोःसदा ॥ अश्वत्थत्वग्दलक्षौद्रैर्मुखपाकेप्रलेपनम्इतिमुखस्रावे ॥ १२६६ ॥

साईं,तिल,लोध तथा मुलहठी इनके काढ़े के द्वारा मुखधोने से बालकोंका लार बहना नष्टहोताहै पीपलकी छाल और पत्तों को पीसकर शहद के साथ लेप करने से बालकों का मुखपाक नष्ट होताहै ॥ १२६६ ॥

पिप्पलीत्रिफलाचूर्णंघृतक्षौद्रपरिप्लुतम् । बालोरोदितियस्तस्मैलीढंदद्यात्सुखावहम् ॥ इतिरोदने ॥ १२६७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के नहीं होसक्ती

लं सुश्रुतस्तथा । धृतेनसहित

तमन्तुनार्धा ... ष्टोविषयेगर्भे

... त्यान्तह

प्रसवके विलम्बहोने कौ ... तु ॥ ग्रह ... रागपीतम् ॥

सर्पकी कैंचली अथवा मैन ... यस्यमहतः ... पाविनी

... को सूतमें लपेटकर ... धशोरक्तचन्दन

गोके ... की हड्डीको सूतिका गहके ऊ ...

तिलके तेलमें मिलाकर योनिके ...

पानी में पीसकर रँडीके ...

... धनिया, कसेरू, मुल ...

... विदारीकन्द, मूसली, असगंध, ... मिर्च,

... श्वेतचंदन, रक्तचंदन, लौंग इन ... तोले

... भस्म, सीसेकीभस्म ... कीभस्म, अभ्रककी भस्म, कस्तूरी

... को अपनी इच्छाके ... चार मिलाके इसके उपरान्त चार

बांधकर कमरमें बांधदे खैंचने के लिये ... युक्त तरुण ... इति

के लगानेसे जलायेहु ...

अथवा चन्दनके चूर्ण ... पाक ...

गुदापाकेतुबालानांपित्तघ्नींकारयेत्क्रियाम् । रसाञ्ज ...

(अञ्जनंरसाञ्जनम्) शङ्खयष्ट्याञ्जनैश्चूर्णंशिशूनांगुदपाकनुत् । इ ...

बालकोंके गुदपाकरोगमें पित्तनाशक चिकित्साकरे और इसमें रसौंत पीना ...

हितकारीहै शंख, मुलहठी तथा रसौंत इनका चूर्ण बालकों के गुदपा ...

शङ्खसौवीरयष्ट्याह्वैर्लेपोदेयोऽहिपूतने । इत्यहिपूतने ...

अहिपूतन रोगमें शंख सुरमा तथा मुलहठीकालेप करना चाहिये ॥ १२७३ ॥

पारिगर्भिकरोगेतुपूज्यतेवह्निदीपनम् । इति पारिगर्भिके ॥ १२७४ ॥

पारिगर्भिकरोग में अग्निकी दीप्तकरनेवाली औषध हितहैं ॥ १२७४ ॥

धातकीपुष्पपिप्पल्योर्धात्रीफलरसेनवा ॥ दन्तपालींतुमधुनाचूर्णेनप्रतिसारयेत् । दन्तोत्थानभवारोगाःपीडयन्तिनबालकम् । जातेदन्तेहिशाम्यन्तियतस्तद्धेतुकागदाः ॥ इतिदन्तोद्भेदजरोगेषु ॥ १२७५ ॥

धौके फूल तथा पीपलके चूर्णको शहदकेसाथ अथवा आमलेकेरसकेसाथ उंगली से दांतोंके मांसमें रगडनेसे दांतोंके निकलनेसे होनेवालेरोग बालकको नहीं पीडित करतेहैं क्योंकि दांतोंके निकलनेपर उन्हीं के कारणसे हुयेरोग शान्तहो जाते हैं ॥ १२७५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...नन्ति ... नेचोपद्रवानाह ॥

...क गर्भकी चिकित्सा ॥

...को पूर्ण न करे तो बृंहण औषधियों...

...मारुतार्दितम् । त्यक्तं जी...

...नकृद्भवेत् । कदाचित्...

...नीस्तदा । नैगमेयः ...

...वति लोके नागोदराह्वयः ...

...उत्पन्न होयँ ... जीवभी न ... हो ...

...रजकी सुखाने वाली ... उदरमें आध्मानको उत्पन्न...

...आपही शान्त होजाय ... गर्भको लोग ऐसा लोग कहते...

...उसे नागोदर नाम गर्भ कहते हैं ...

...॥ ११८४ ॥

अथ प्रसव... ॥

...संभालूके बीज इन...

...हुआ तेल बालकों के...

...कारी हैं इतिबि... यत्र ... लाक्षादितैल इति

...॥ १२६४ ॥

...भाषानुवादे ज्वरादिव्याधि निदानचिकित्साप्रकरणं समाप्तम् ॥

इति मध्यमखंड समाप्त ॥

अथोत्तरखण्डः ॥

अथ वाजीकरणाधिकारः ॥

तत्र वाजीकरणस्य लक्षणमाह ॥

यद्द्रव्यंपुरुषंकुर्याद्वाजीवसुरतक्षमम् । तद्वाजीकरमाख्यातंमुनिभिर्भिषजांवरैः ॥१॥

अथ उत्तरखण्ड ॥

वाजीकरणाधिकार ॥

वाजीकरण का लक्षण ॥

जो द्रव्य पुरुषको मैथुन करनेमें घोड़के समान समर्थ करे उसे मुनिलोगोंने वाजीकरण कहाहै ॥१॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इति शुक्रक्षयेनत ...

जो बहुत मैथुन करता है और वाजीकरण ...

से होनेवाली नपुंसकता होती है ॥ ४ ॥

महतामेढ्ररोगेणचतुर्थीक्लीबताभवेत् ॥ ५ ॥

बहुत बडे लिंग रोगसे चौथी नपुंसकता होतीहै ॥ ५ ॥

वीर्यवाहिशिराछेदान्मेहनादुन्नतिर्भवेत् ॥ ६ ॥

वीर्य्य के लेचलनेवाली नसके कटनेसे नपुंसकता होतीहै ॥ ६ ॥

बलिनःक्षुब्धमनसोनिरोधाद्ब्रह्मचर्य्यतः । षष्ठंक्लैब्यंस्मृतं ... म् ॥ बलिनःपुष्टस्यक्षुब्धमनसःकामात्संचलतऽमनसोब्रह्मचर्यममैथुनंतस्मान्निरोधादितिशुक्रस्यक्लैब्यंभवति ॥ ७ ॥

बलवान् पुरुष काम से चलायमान मनके रोकने से नपुंसक होजाताहै यह वीर्य्य के रोकने से होनेवाली छठी नपुंसकताहै ॥ ७ ॥

जन्मप्रभृतियत्क्लैब्यंसहजंतद्धिसप्तमम् ॥ ८ ॥

जन्मसे लेकर जो नपुंसकता होतीहै उसे सहज नपुंसकता कहतेहैं यह सातवीं नपुंसकताहै ॥ ८ ॥

(१) ध्वजति–ध्वजगतौ (भ्वा. प. से). अन्तर्भावितण्यर्थोऽत्रापचायच "ध्वजः पूर्वदिशो गृहे। शिश्ने चिह्ने पताकायां खट्वाङ्गे शौण्डिकेऽपि च" इति हैमः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गौषधि ... दावाग्नि ... तातपशो ...
... णम ... पुराणंविष ...
... विप्रहीं ... स्वभ ...
... वर ...
बहुत ...
अथवा ...

... नन्ति ... नेचोपद्रवानाहू ...
... न्दकी ... सि ... धर्मा ...
... सौंत ... ॥ ... क गर्भकी चिकित्सा ॥
... मि ... को पूर्ण न करे तो बृंहण औषधियें ...
मुस्तम ... रुतार्दितम् । त्यक्तंजी ... कठिनस्त्वावतिष्ठते ...
... उदरंयथाचलि ... आनकृद्भवेत् । कदाचिच्चेत्तदाध्मा ... शाम्यति ॥ नैग ...
... नीनस्तदा । नैगमेयःबा ... थहः । ... मुख्यास्याश्चिकित्सातूभ ...
... था, भवतिलोकेनागोदराह्वयः ॥ ...
... उत्पन्न होयँ ... जीवभी न उत्पन्नहुआ हो और ...
... रजकी सुखाने वाली ... उदरमें आध्मानको उत्पन्न ...
... आपही शान्त होजाय ... गर्भको लेगया ऐसा लोग कह ...
... टकल्कंवा ... उसे नागोदर नाम गर्भ कहते हैं ...
... ॥ ११८४ ॥

अथ प्रसव ... धवाजीकराहतः॥

... मासिनारीं ... षितप्रसङ्ग ... छीबानामल्परेतसा
... न, ... विलप्रदे ॥ ... कोऽपिपुष्टदेहानांसेव्याःकालाद्यपेक्षया १२

... यौवन युक्त पुरुषोंको और बहुत स्त्री वाले पुरुषोंको वाजीकरणविधि
... की इच्छा करनेवाले स्त्रियोंका प्रेम चाहनेवाले मैथुन करने से क्षीणहुए नपुं-
... वाले पुरुषोंको वाजीकरण औषध हितकारी, बलकारी तथा प्रीतिकारी हैं यह
... विचारकरके सेवन करनाचाहिये ॥ १२ ॥

... भोजनानिविचित्राणिपानानिविविधानिच । गीतंश्रोत्राभि
रामाश्चवाचःस्पर्शसुखास्तथा ॥ कामिनीसान्द्रतिलकाकामिनीनवयौवना । गीतंश्रोत्र
मनोज्ञश्चताम्बूलंमदिरास्रजः ॥ गंधामनोज्ञारूपाणिचित्राण्युपवनानिच । मनसश्चा
प्रतीघातंवाजीकुर्वन्तिमानवम् ॥ १३ ॥

वाजीकरण औषध॥ विचित्र भोजन अनेक प्रकारके पानकरने के पदार्थ, गीत, कानों को सुखदेने
वाले वाक्य, स्पर्श सुख सुन्दर तिलक आदिकोधारणकरनेवाली, रूपवती, युवती स्त्री कानों को सुख
देनेवाले गीत ताम्बूल, मद्य, माला, मनोहर, सुगन्ध, विचित्ररूप, उपवन और मनका न रुकना यह सब
मनुष्योंके लिये वाजीकरणहैं ॥ १३ ॥

माक्षीकधातुमधुपारदलोहचूर्णं पथ्याशिलाजतुविडंगघृतानिलिह्यात् । एकाग्रविंश
तिदिनानिगदार्दितोऽपिसोशीतिकोऽपिरमयेत्प्रमदांयुवेव ॥ १४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

कुछ खटाम [illegible]

[illegible] माशे मिर्च ४ मा[illegible] १ तोले इन [illegible]

फिर कस्तूरी तथा चन्द[illegible] लिपहुये तथा अग[illegible]

सुगन्धितकरके और सबको एकमें मिलाकर र[illegible] यह रसाले [illegible]

बनाई है यह भोक्ता (खानेवाले और मैथुनकरनेवाले) को कामको बढा[illegible]

वाली स्त्रीके समान नित्यही प्रियहै ॥ १७ ॥

गोक्षुरेक्षुरबीजानिवाजिगन्धाशतावरी । मुसलीवानरीबीजंयष्टीन्[illegible]
चूर्णंदुग्धासिद्धंगठयेनाज्येनभर्जितम् । सितयामोदकंकृत्वाभक्ष[illegible]
ष्टगुणंक्षीरंघृतंचूर्णसमंस्मृतम् । सर्वतोद्विगुणंखण्डंखादेदग्नि[illegible] ॥ [illegible]राणि
भूरीणिसंगृह्यरचितोयतः।तस्माद्बहुषुयोगेषुयोगोऽयंप्रवरोमतः॥इतिरतिवर्द्धनम्॥ १८

गोखुरू, तालमखाना, असगन्ध, सतावर, मुसली, किवांचके बीज, मुलहठी, गुलसकरी, बरियारा इनसबके चूर्णको समभाग घीमें भूनकर अठगुने दूधमेंपकावे फिर दूनी शक्कर डालके लड्डूबांधे यह अत्यन्त वाजीकरणहै इनको अग्निबलके अनुसार खाय बहुतसे वाजीकरण योगोंमेंसे संग्रह करके यह योग बनायागयाहै इसलिये यह सबसे श्रेष्ठहै इति रतिवर्द्धनमोदक ॥ १८ ॥

चत्वारोऽथोमभागास्तदनुनिगदितंभागयुग्मञ्चवङ्गम भागैकंशम्भुबीजन्त्रितयम
पिम्हतंतत्समासिद्धमूली । चातुर्जातंसजातीफलमरिचकणानागरंदेवपुष्पं जाती
पत्रञ्चभागद्वितयमपिपृथक्सर्वमेकत्रचूर्णम् ॥ सर्वद्वयंशासितास्याद्घृतमधुसहितांमो

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नेचोपद्रवाना

॥ क गर्भकी चिकित्सा ॥

को पूर्ण न करे तो बृंहण औषधियें

मारुतार्दितम् । त्यक्कंजी

ानकृद्भवेत् । कदाचित्

नीनस्तदा । नैगमेयःग्रहः

भवतिलोकेनागोदराह्वयः

उत्पन्न होयँ जीवभी न

रजकी सुखाने वाली उदरमें आध्मानको उत्पन्न

आपही शान्त होजाय गर्भको लेगया ऐसा लोग

नागोदर नाम गर्भ

अथ प्रसव किंसककसेरुक शिवानरीद्राक्षासे

मासिनारींग प्रसग शृगाटकंजीरकंपृथ्वी

देष्वत्रविदारिकाथमुशलीगन्धर्वगन्धात

रस्यबीजंनवम् ॥ बीजंशाल्मलिसम्भवंकरिकणाबीजञ्च

नमत्ररक्तमपिचश्रीसंज्ञपुष्पैःसमम् ॥ सर्वञ्चेतिपृथक्पृथक्पलमितं

नतंवंगभुजंगलोहगगनंसन्मारितंस्वेच्छया । कस्तूरीघनसारचूर्णंम

चादस्यतुमोदकान्विरचयेद्बिल्वप्रमाणानथ ॥ तान्भुक्त्वाति

म्लंरसंपूर्वस्मिन्नशितेगतेपरिणतिंप्राग्भोजनाद्भक्षयेत् । नि

त्यंस्त्रीरतिवल्लभाख्यकमिमंपूगस्यपाकंभजेत् सस्याद्वीर्यविवृद्धिवृद्धमदनोवाजीवशक्तो

रतौ । दीप्ताग्निर्बलवान्बलीविरहितोहृष्टःसपुष्टःसदा वृद्धोयोऽपियुवेवसोपिरुचिरःपू

र्णेन्दुवत्सुन्दरः । वसुगुणोऽष्टगुणःअञ्जलिरर्द्धशरावःतुलार्द्धंपञ्चाशत्पलानियतःद्विःप

ञ्चाशत्पलानामभिदधतितुलांसंहिताःसुताद्याः । नागबलागुलशकरीबलाबारिआरात

स्याः मूलञ्जातिपत्रकञ्जाइपत्रीविड्वाशुंठीवीरणमुशीरंग्राह्यंवारिसुगन्धबालावारिदःमु

स्तकःवरात्रिफलावांशीवंशलोचनावरीशतावरीवानरीकपिकच्छुइक्षुरःकोकिलाक्षस्तस्य

बीजंग्राह्यंगोक्षुरस्यचबीजंमहतीमहाखर्जूरकाक्षीरिकाक्षीरीपृथ्वीकाकलौञ्जी “शालूकमे

षांकन्दःस्याद्बीजकोशोवराटिका ” मांसीजटमासिमिसिःसौंफगन्धर्वगन्धाअड्वगंधात

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के नहीं

प्रसवके निकलनेके सर्पकी केंचली अथवा

गौके हड्डीको सूतिका

तिलके तेलमें मिलाकर

तोले पानी में पीसकर रेंडीके

...धानिया, कसेरू, मुल...

...विदारीकन्द, मूसली, असगंध, ... मिर्च,

...श्वेतचंदन, रक्तचंदन ... लौंग इन सबको ... तोले

...भस्म, सीसेकी भस्म, ... अभ्रककी भस्म, कस्तूरी

...अपनी इच्छाके ... मिला इसके उपरान्त चार

...कुरियोंसे रहि... के खैंचने के लिये क्रमयुक्त तरुण... ताहै इति

एतां... पुन... बीज... थो

ऽब्धिशोषस्तथा । ... लकंतथाखस ... विजयातद

हिभवेत्कामेश्वरोमादकः ॥ इति कामेश्वर... ॥

जो इसी रतिबल्लभनाम पूगपागमें सुरा ४ माशे, धतूरेकेबीज, अकरकरा, ...

फल्ल तथा पोस्त यह सब तोले २ भर और सम्पूर्णचूर्णकी आधीभंग मिलाकर ...

मेश्वरमोदक कहतेहैं ॥ इति कामेश्वरमोदक ॥ २२ ॥

रक्तपित्ताधिकारोक्तखण्डकूष्माण्डकोमहान् । रक्तपित्तादिरोगघ्नोम... स्मृतः २२

रक्तपित्ताधिकारमें कहाहुआ कूष्माण्डखंड रक्तपित्तादिरोगनाशक ... करणहै २३ ॥

पक्काम्रस्यरसद्रोणेसितामाढकसम्मितताम् । घृतम्प्रस्थमितदद्यान्नागरस्यपलाष्टक म् ॥ मरिचंकुडवोन्मानंपिप्पलीद्विपलोन्मिता । सलिलस्याढकंदत्त्वासर्वमेकत्र कारयेत् ॥ विपचेन्मृन्मयेपात्रेदारुदर्व्याप्रचालयेत् । चूर्णान्येषांक्षिपेत्तत्रघनीभूतेऽवतारिते ॥ धान्याकञ्जीरकम्पथ्यांचित्रकंमुस्तकन्त्वचम् । बृहज्जीरकमप्यत्रग्रन्थिकन्नागकेशरम् ॥ एलाबीजंलवंगञ्चपृथग्जातींपलम्पलम् । सिद्धंशीतेप्रदद्याच्चमधुनाकुडवद्वयम् ॥ भक्षयेद्भोजनादर्वाक्पलमात्रमिदंनरः । अथवानियतानात्रमात्रांखादेद्यथानलम् ॥ मानवः सेवनादस्यवाजीवसुरतेभवेत् । समर्थोबलवान्पुष्टोनित्यंसस्यान्निरामयः ॥ ग्रहणींनाशयेदेषक्षयंश्वासमरोचकम् ॥ अम्लपित्तमहाश्वासंरक्तपित्तञ्चपाण्डुताम् ॥ बृहज्जीरकमंगरैला । इत्याम्रपाकः ॥ २४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कल्कीकृत ... चेत । अनेनाभ्यक्तगात्र... वृद्धोऽशीतिसमोऽपिसः । युवाभवतिशुक्रा
च्यः ... भः॥ बन्ध्यापिलभतेगर्भवृद्धोऽपितरुणायते ॥ अपुत्रःपुत्रमाप्नोति
... चन्दनादिमहातैलंरक्तपित्तक्षयंज्वरम् ॥ दाहम्प्रस्वेददौर्गन्ध्यंकुष्ठं
... पतंगवकमइतिलोकेकालीयकंकलम्बकटुइतिलोकेलताकस्तूरिकामु
नीशैलेयकं ... लाभेजातीपुष्पंग्राह्यंतदलाभेलवंगंग्राह्यम् । दारुसितादालची
नादितैलम् ॥ २६ ॥ ... ग्रंथिपर्णीगठिवनअशीतिसमःअशीतिवार्षिकः इति चन्द

लालचन्दन,पतंग,पीलाचन्दन,अगर,कालाअगर,देवदारु,सरलकाष्ठ,पद्माक,पंचतृण,कपूर,कस्तूरी,
वेदमुश्क,लोबान,केसर,जायफल,जावित्री,लौंग,छोटीइलायची,बड़ीइलायची,कंकोल (इसकेअभाव
में चमेली) स्पृक्का,तेजपात,नागकेशर,सुगन्धबाला,खस,जटामांसी, दालचीनी, भीमसेनीकपूर,छड़,
नागरमोथा, संभालूकेबीज, प्रियंगु, श्रीवास, गूगल, लाख,नखी,राल,धौकेफूल, ग्रंथिपर्णी,सँठिठ,तगर
तथा मोम चार चार माशे इनसब औषधियोंकेद्वारा पाककियेहुए तेलको लगानेसे अस्सीवर्षकाबुड्ढा
भी तरुण वीर्य्ययुक्त तथा स्त्रियोंका अत्यन्त प्रिय होजाताहै इसके लगानेसे बन्ध्यास्त्रीभीगर्भकोधारण
करतीहै जिसके पुत्र न होय उसके पुत्र होतेहैं सौवर्षकी अवस्था होतीहै और रक्तपित्त क्षय, ज्वर, दाह,
स्वेद,दुर्गन्धि,कुष्ठ तथा खुजलीका नाश होताहै ॥ इति चन्दनादितैल ॥ २६ ॥

दशमूलकणावह्निकपित्थश्चविभीतकम् । कट्फलम्मरिचंविश्वमूलंपिप्पलीसैन्धवम्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रक्तरोहि[illegible]क[illegible]क्षाजार्जि[illegible]द्वयम् । [illegible] [illegible]रिखरिश्रृंगीदारुपुनर्नवा ॥ [illegible] [illegible]ते [illegible] पिप्पलि[illegible]पथ्यायास्तोयेप[illegible] [illegible] ॥ स्थि [illegible] [illegible]द्विधिवत्[illegible] [illegible] [illegible]श्चाद् घृतभाण्डेनिधा[illegible]येत् लिसुद्[illegible]पा[illegible] [illegible]द्धिपरायणः ॥ एषाहरीतकी चैवधन्वन्त[illegible] [illegible] सर्वेशः ॥ श्वासकासंक्षयंपा ण्डुंहिक्[illegible] [illegible]न्यताम् ॥ यकृत्प्लीहोदरा णा[illegible] [illegible]र्णींदुर्वि[illegible]ांश्च शोषं[illegible] [illegible]धुपक्कहरीतका२७॥

दशमू[illegible] [illegible]तक, जमालगोटे जड, दाख, जीरा, [illegible] [illegible], देवदारु, गदापूर्णा, धनियां, लौंग, अमलतास, [illegible] [illegible]२ तोले और हड २५६ तोले [illegible]को १२८० तोले [illegible] [illegible]हड़ाले गुरू के उपदेश के अनुसार तीन दिनमें पा[illegible] दिनमें [illegible] [illegible]उपरान्त हडोंके सिद्ध होजाने पर सुन्दर घृतके [illegible] में शहद भरकर [illegible] [illegible]रकी कही हुई हड श्वास, खांसी, क्षय, पांडु, हिचकी, छ[illegible] मद, भ्रम, मुखर[illegible], तृषा, अरु[illegible] [illegible], यकृत, प्लीहा, उदर, बात रक्त, शिर, नेत्र तथा कानोंकी, पीडा, बद्धगुद, ग्रह[illegible], त्रिदोषज [illegible] और अन्य[illegible] [illegible]गों का नाश करती है ॥ इति मधुपक्कहरीतकी ॥ २७ ॥

बीजानिकपिकच्छवाःकुडवमितानिस्वेदयेच्छनकैः । प्रस्थेगो[illegible]वद्[illegible]तावद्या[illegible]द्गाढम् ॥ त्वग्रहितानिचकृत्वासूक्ष्मंसम्पेषयेत्तानि । पिष्टिकाय[illegible]घुवटिकाः कृत्वाग व्येपचेदाज्ये ॥ द्विगुणितशर्करापातावटिकाःसम्पक्कयालेप्याः । [illegible]कामाक्षिकमध्येम ज्जनयोग्येविरलाःस्थाप्याः ॥ पञ्चटङ्कमितास्तास्तुप्रातः[illegible] [illegible]त् । अनेनशीघ्र द्रावीयोयश्चस्यात्पतितध्वजः ॥ सोऽपिप्राप्नोतिसुरतेसामर्थ्यमतिवाजिवत् ॥ नानेनस दृशंकिञ्चिद्द्रव्यंवाजिकरंपरम् ॥ वानरीवटिका ॥ २८ ॥

१६ तोले किवांचके बीजोंको ६४ तोले दूधमें जबतक गाढ़ा न होय तबतक धीरे २ पकावे फिर किवांचके बीजोंको छीलकर महीन पीसलेवे इसके उपरान्त उस पिट्ठीके छोटे छोटे बडे बनाकर गौके घी में पकावे फिर इनबडोंको दूनी शक्कर में पागकर शहद में भिजोदेवे इनको बीस बीस माशे प्रातःकाल और सायंकाल खाने से जिसका वीर्य्य शीघ्र गिरता होय और जिसका लिंग न उठता होय वह भी घोडेके समान मैथुनमें समर्थ होताहै इसके समान और कोई वाजीकरण औषध है ॥ इति वानरी वटिका ॥ २८ ॥

आकारकरभःशुण्ठीलवंगंकुंकुमंकणा । जातीफलंजातीपुष्पंचन्दनंकार्षिकंपृथक् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चूर्णयेदहिफेनन्तुतत्रदद्यात् ... सर्वमेतत्कृतंमाषमात्रं ... ॥ शुक्र
स्तम्भक ...
वाजीकर ...
... ॥ २८ ॥
... इनर ... को एकमें मिलाकर ... इस ...
है पुरुषोंको आनन्द मिलताहै और ... धिकार समाप्तः ॥ २९ ॥

अथ रसायनाधिकारस्तत्र रसायनस्य लक्षणमाह ... व्याधिविध्वंसिवयः
स्तम्भकरंतथा । चक्षुष्यंबृंहणंवृष्यंभेषजंतद्रसायनम् ॥ ...
रसायनका अधिकार । रसायनका लक्षण ॥ जिस ... में ...
नाशहोय अवस्थास्थिरहोय ... को हितहोय और धातु तथा ...
अथ रसायनस्यफलमाह ...
कान्तिनरोविन्देद्रसायनात् ॥ ३० ॥ ... मायुःस्मृतिं ...
रसायनका फल ॥ मनुष्य रसायन औषध से दीर्घ ... य, तरुणावस्था देह तथा
इन्द्रियों में बल और कान्तिको पाताहै ॥ ३१ ॥ ... गोयोगत्रिवाहितः ३२
नाविशुद्धशरीरस्ययुक्तोरासायनोविधिः ... रसायनका सेवन करना चाहिये क्योंकि मैले
वमन विरेचनादिके द्वारा शरीरको ... ताहै ॥ ३२ ॥
वस्त्रमें मैलेपनसे ... घृतमेंके कशोद्विशः । त्रिशःसमस्तमथ
वाप्राक्पीतंस्थापयेद्वयः । मण्डूकपर्ण्याःस्वरसःप्रभातेप्रयोज्ययष्टीमधुकस्यचूर्णम् । रसो
... तुसमूलपुष्प ... कल्कःप्रयोज्यःखलुशंखपुष्प्याः ॥ आयुःप्रदान्यामयनाशनानि बला
ग्निवर्णस्वरवर्द्धनानि । मेध्यानिचैतानिरसायनानिमेध्याविशेषेणचशंखपुष्पी ॥ (मण्डूक
पर्णी ब्राह्मी) तदभावे ... ग्राह्यातस्यापि रसायनत्वात् । माक्षिकेनतुगाक्षीरीपिप्पल्या
लवणेनच । त्रिफलासितयाचापि युक्तासिद्धंरसायनम् ॥ सिन्धूत्थशर्करा शुण्ठीकणामधु
गुडैःक्रमात् । वर्षादिष्वभयाप्राश्यारसायनगुणैषिणा ॥ पुनर्नवस्यार्द्धपलंनवस्यपिष्टंपिबेद्यः
पयसार्द्धमासम् । मासत्रयंततत्रिगुणंसमंवाजीर्णोऽपिभूयःसपुनर्भवःस्यात् ॥ ३३ ॥

रसायनके उदाहरण ॥ शीतलजल, दूध, शहद तथा घी इनको अलग २ दोदो तीन तीन अथवा सबको प्रातःकाल पीनेसे अवस्था स्थिर होतीहै ब्राह्मीकारस, मुलहठीका चूर्ण, गिलोयकारस अथवा जड तथा पुष्पसहित शंखाहुलीका कल्क प्रातःकाल सेवन करनेसे आयुको देताहै रोगोंको नष्ट करताहै और बल, अग्नि, वर्ण तथा स्वरको बढ़ाताहै यह चारों रसायन हैं तथा मेधाको हितहैं परन्तु शंखाहुली विशेष करके मेधाको हितहै यहाँ ब्राह्मीके अभावमें मंजीठका ग्रहण करना चाहिये शहद युक्त वंशलोचन, सेंधव लवण युक्त पीपल अथवा शक्करायुक्त त्रिफला रसायन है रसायनके गुणको चाहनेवाला मनुष्य सेंधानोन, शक्कर, सोंठ, पीपल, शहद तथा गुड इनके साथ वर्षाआदि ऋतुओंमें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

क्रमसे हड़ोंका से न ...

या इसकी ...तिगु ... वि ॥ ११८९ ।

... मिं । ३३।३४ ... ३२७

... तिकाण्डचीसंहस्ति कर्णसहित ... नीहीं

... जरारुजामृत्यु ...

... रिविवृद्धि ...

भंगरेके ...

यक्तहोक ... पथ महोनेभरतक ... प्रकारके ... मनुष्य, बैल,

... डी, गिलोय, हस्तिकर्ण तथा ... ली इनसबको एकमें मिलाकर

... स्था रोग तथा मृत्युसे रहित होकर वीर्य बलयुक्त हो-

ताहै ... ताके समान दीप्तिमान् होता है ॥ ३४ ॥

... मि ... तैलेनसुखाम्बुना ... । धिय्येस ... पुष्टिंवपुषो विधत्ते ब

लस्य ... ॥ ३५ ॥

असग ... तेल ... कुछ ... मजलके साथ १५ दिनतक सेवनकरने से बलवीर्य तथा

शरीर ... ढताहै जैसे ... बरसनेसे नाज ॥ ३५ ॥

... गुग्गुलुम ... ज्यंपलं ... चयंव्योषफलानिपञ्च । पलानिचाष्टौत्रिफलारज

... कर्षलिहन्यात्यमरत्वमेति । इति लोहगुग्गुलुः ॥ ३६ ॥

लोहभस्म ४ तोले, गूगल १ तोले, त्रिकटु २० तोले और त्रिफला ३२ तोले इनसबकोमिलाकर १ तोले चाटनेसे मनुष्य अमरत्वको प्राप्तहोताहै ॥ इति लोह गुग्गुल ॥ ३६ ॥

नकेवलंदीर्घमिहायुरश्नुतेरसायनंयोविविधंनिषेवते । गतिःसुदे ... नर्षिसेवितांशुभांप्र

पद्यतेब्रह्मतथैवचाक्षयम् ॥ इति रसायनाधिकारः ॥ ३७ ॥

जो मनुष्य विविधरसायनोंका सेवन करताहै वह केवल दीर्घायुही नहीं होता किन्तु देवर्षियोंसे सेवन की गई शुभगति और अक्षयब्रह्मको भी प्राप्त होताहै ॥ इति रसायनाधि ... समाप्तः ॥ ३७ ॥

यावद्व्योमनिबिम्बमम्बरमणेरिन्दोश्चविद्योततेयावत्स ... सगिरयस्तिष्ठ

न्तिपृष्ठेभुवः ॥ यावच्चावनिमण्डलंफणिपतेरास्तेफणामण्डले तावत्सद्भिषजःपठन्तुप

रितोभावप्रकाशंशुभम् ॥ ग्रन्थस्यास्याध्यापकानाञ्जनानामध्येतॄणामादरंकुर्वतांच ।

श्रीशोमेशादित्यविप्रप्रसादादायुर्दीर्घंसौख्यमास्तांसदैव ॥ इत्यष्टमम्प्रकरणम् ॥ ३८ ॥

इति भावप्रकाशस्योत्तरखण्डःसमाप्तः ॥

जबतक आकाशमें सूर्य्य तथा चन्द्रमा शोभितहोकर प्रकाशवानहैं व जबतक सातोंसमुद्र तथा पर्वत पृथ्वी पर स्थितहैं और जबतक पृथ्वीमंडल शेषनागके फणपरस्थितहै तबतक सद्वैद्य लोग भावप्रकाश को पढ़ें इसग्रन्थके पढ़ानेवाले पढ़नेवाले तथा आदरकरनेवाले मनुष्योंको विष्णु, शिव, सूर्य्य तथा ब्राह्मणोंके प्रसादसे दीर्घायु तथा सौख्य सदैव प्राप्तहोवे ३८॥ इत्यष्टमंप्रकरणं ॥ इतिश्रीभावप्रका ... षानुवादेउत्तर खंडस्समाप्तः ॥

समाप्तोयंग्रन्थः ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चूर्णयेदहिफेनन्तुतत्रदद्यात् [illegible]

स्तम्भक [illegible]

वाजीकर [illegible]

प्रणम्य सच्चिदानन्दं प [illegible]

अथ [illegible]

लिकांशुभा [illegible] लायनस्य [illegible] लक्षण [illegible] ली अथवा मैन [illegible] म् ॥ सप्तपर्ण

[illegible] अमृता [illegible] शतं दशमूलीशत [illegible] मतमें लपेटकर [illegible] दध्या

[illegible] सुस्तकंनागकेसरम् [illegible] त्रेतुलाःक्षिपेत् । अजाजीषोडश [illegible]

त्रिकम् । अमृतारिष्ट [illegible] ह ॥ [illegible] कातिविषे [illegible] रकुलान्तकृत् ॥ [illegible] जल में पकाकर जब

अब अमृतारिष्ट कहते [illegible] पांचसेर गिल [illegible] व पांचसेर दशमूलगण की [illegible] छटांक

[illegible] जल रहजावे तो उसको उतार लेवे [illegible] सके ठंढे होजाने पर १५ सेर [illegible] जेवकुटकर उसी

पित्तपापड़ा व सतवन, त्रिकुटा, नागरमोथा, नागर [illegible] की, अतीस और [illegible] जो [illegible] विज्वरों को नष्ट करताहै ॥

उक्त काथके आंडमें डाल देवे फिर उसका मुख बन्दकर एकांतमें एक महीना धरारक्खे [illegible]

[illegible] मुस्तक [illegible] त्रंचतुःसंख्यापलं [illegible] द्रोणद्वयं [illegible] भाण्डे

अथ लोहासवमाह । लोहचूर्णंत्रिकटुकंत्रिफल [illegible] परम् ॥ पा [illegible] श्वयथुगुल्मानिज

क्षिपेत् ॥ चूर्णीकृत्य ततःक्षौद्रंचतुःषष्टिपलंपृथक् । [illegible] अरोचकञ्चग्रहणींहृ [illegible] गञ्चविनाशयेत्॥

विनिक्षिप्यनिदध्यान्मासमात्रकम् । [illegible] आंवला, हड़, बहेड़ा, अजवायन, बा [illegible] विडंग, नागरमोथा और

ठराण्यर्शांसिरुजम् । प्लीहामयं [illegible] शहद व पांचसेर गुड़ इन सबों को ले एक मन जल में डालकर घीके चिकने

अब लोहासव कहते हैं । [illegible] इसको जो मनुष्य पान करे तो उसकी जठराग्नि प्रबल होजावे और यह पांडु रोग,

चीते की छाल [illegible] ज्वर, खांसी, श्वास, भगन्दर, अरुचि, संग्रहणी और हृद [illegible] रोग को विनाशता है ॥

बतनेंम भर [illegible] नाहि । हिंगुलमहिफेनञ्चमुस्तकेन्द्रयवन्तथा । जातीफ [illegible] ञ्चकर्पूरंसर्वंसंमर्द्य

सोंठ, गोला, [illegible] जलेनवटि [illegible] काकार्य्याद्विगुञ्जापरिमाणतः । ज्वरातिसारिणेचैवतथातीसाररोगिणे ॥ ग्रहणी

यत्नतः ॥ [illegible]

षट्प्रकारेच रक्तातीसारनाशने ।

अब अतीसार में कपूर [illegible] हींग, अफीम, नागरमोथा, इंद्रजौ, जायफल और कपूर इन सबों को समानभाग ले जल

से पीसे फिर दो २ रत्ती प्रमाण की गोली बनावे इसको ज्वरातिसारवाले तथा अतीसारवाले रोगियों के लिये देवे और छःप्रकार

की ग्रहणी के रोग में तथा भयानक रक्तातीसार में भी देना उचितही है ॥

अथ ग्रहणीरोगेमार्कण्डेयचूर्णमाह । शुद्धंसूतंचगन्धंचाहिंगुलंटंकणंतथा । व्योषंजातीफलंचैवलवंगं तेजपत्रकम् ॥ एलाबीजंचित्रकंचमुस्तकंगजपिप्पली । नागरंसजलंचाभ्रं धातक्यतिविषातथा । शिग्रुजंशाल्मलंचैवमहिफेनंपलांशकम् । एतानिसमभागानिश्लक्ष्णचूर्णानिकारयेत् ॥ खादेदस्मात्प्रतिदिनंमाषकंसितयासह । संग्रहग्रहणींहन्ति मन्दाग्निंचविनाशयेत् ॥ धातुवृद्धिंवयोवृद्धिंबलपुष्टिंकरोत्यपि । मार्कण्डेयमिदंचूर्णंमार्कण्डेयेननिर्मितम् ॥

अब संग्रहणी रोग में मार्कण्डेय का चूर्ण कहते हैं । पारा, गन्धक, हींग, सुहागा, सोंठ, मिरच, पीपल, जायफल, लौंग, तेजपात, इलायची के बीज, चीता, नागरमोथा, गजपीपल, सोंठ, नेत्रवाला, अभ्रक, धायफूल, अतीस, सहंजन के बीज, मोचरस और अफीम इन्हों का प्रत्येक एक २ पल ले सबों का चूर्ण करै इसको खांड़के साथ प्रतिदिन एक मासे खाय तो संग्रहणी व मंदाग्नि का विनाश करे और धातुवृद्धि, अवस्थावृद्धि तथा बलको बढ़ावे यह मार्कण्डेय चूर्ण है–इस को मार्कण्डेयजीने बनायाहै ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उत्तर ... १९६१ ।

...मलं ... थ्यामरि ...
...पनं ... गोधं ...
हड़ और ...
बवासीर, ...
पिप्पलीमधु ... लवङ्ग ...

...को नेत्रकारं कृम् ... द्दिपलां शानिपञ्चकन्नद्र
उदररोग को बाग़ता है ... जो प्राणी ...
... । ... प ... १ पल ले
... पाता है तो
... कुष्ठं ... पि ... ग्रि
... नक्तेष्वृष्णमनु
... पिञ्छ ... त्रावंगुड ... तं ...

... यची तथा सैंधानोन इनसब ...
... १ ॥
... नापिचवह्निमान् । विद ...
... शर्करम् ...
... तिकार्य्यं ॥ ...
... वांता और ...
पिचका
... प्रसीदतु ॥ ग्रहः ...
... देवदेवस्यमहतः ...
... म्बरधरोरक्तचन्दन ...

... गोली को ...
... यग्रहणी और पांच ...
... तत्तगुड़ ...
... डितक ...

नफल, बच, कूट,
तेल में पकाना चाहिये
ऊरू तथा पीठ की दुर्बल
है और यह प्रायः जिस

च ॥ चत ...
तांधान्यं ...
हतिमृन्मये । क्षि ... संरुध्यत ...
बलंकोष्ठंचवह्निं ... यमात्रां ...
वह्निंसन्दीपयेत्पर ... ॥

... यंसधा ... ठीं दन्तीमोचरसंतथा ॥ पत्रयुग्ममितंसर्व्वं पात्रेम
... मात्रेनधापयेत् ॥ ... तन्न ... संज्ञात्वावर्षरस्त्राव्यरसंनपेत् ।
जयेत् ॥ ... सिनाशयेत् ... शोच । वर्चोमूत्रविबन्धघ्नं
विडङ्गस्यदशपलं मधूकुसुमस्य
... पूतगुडतुलांक्षिपेत् ॥ श्वदंष्ट्र ...

अब अभय ... रिष्ट ... हते हैं । पांहड़, ढाईसेर दाख, दशपल वायविडंग ...
चौसठि सेर जल में ... को रहजावे तब उतार ले उस पवित्र रस ...
फिर गुड़ ... निशोथ, ... दायण की जड़, चव्य, सौंफ, सोंठि, दन्ती, मोचरस ...
उकरस में मिलाय मि ... चिकने ... भर मुखबन्दकर एक महीना धरारक्खे फिर इसको ...
और अग्निको बलावत ... चारकर ... यहरस बवासीर व आठों उदररोग ...
ता है और भलीभांति ... को प्रक ... है ॥ ... को इ...
... र गुड़ को ...

अथाजीर्णरोगे ... तहरीत ... । हरीतक्याःशतंग्राह्यं तक्रैःस्विन्नंचकारय ...
त्यचूर्णानीमानिपू ... त् ॥ ... चपटुयवानीद्वयमेवच । त्रिक्षारंहिंगुदि०यं ... द्वीजंसमुद्
श्लक्ष्णचूर्णीकृतं ... चुक्राम ... वयेत् । लिम्पाकस्वरसेनापिभावयेच्छुदि ... द्वयमितंपृथक् ॥
मेकांसर्व्वाजीर्णवि ... शनम् ... जीर्णंचवह्निमान्द्यंविसूचिकाम् ... म् ॥ खादयेदभया
दविकल्पतः । ... तादिरोगांश्चनाशये

अब अजीर्णरोग में ... तहरीत ... सौ जंगी हड़ों को लेकर मट्ठे में भिगोवे फिर यत्न से उनकी गुठलियों को
निकाल डाले तदन्तर पी ... , पिपरा ... की छाल, सोंठ, मिरच, पांचोंनिमक, अजवायन, जवाखार, सज्जीखार, सु-
हागा, हींग और लौंग ... यवों का ... कर चूर्ण करै फिर इसको चूका की खटाई में भावना देकर हड़ों में भर
देवे फिर उनको तीनदि ... नींबू क र ... न्हों मेंसे एक हड़ खाय तो सब अजीर्णों व चारो अजीर्णों का विनाश करै
और मन्दाग्नि, विसूचिका, गुल्मरो ... को निस्सन्देह नाश करता है ॥

अथ मुस्तकादि ... माह । ...
तुलाचयम् ॥ धात ... षोडश ... न्द्वं चतुर्द्रोणेऽम्बुनापचेत् । पादशेषेरसेतस्मिन्नक्षिपेद्गुड
युग्ममितंक्षिप्त्वा स्त्र ... भाण्डे ... भेषजम् । मरिचंदेवपुष्पञ्चमेथींवह्निंचजीरकम् ॥ पल
मान्द्यंचविसूचीम ... दारुणा ... स्थाप्यमासमात्रंतु ततःसंस्त्रावयेद्भिषक् ॥ अजीर्णमग्नि
... हन्ति नात्रकार्य्याविचारणा ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चूर्णयेदहिफेनन्तुतत्रदद्यात [illegible]

स्तम्भक [illegible]

२३८

प्रणम्य सच्चिदानन्दं [illegible]

[illegible] मरोगेकीटमर्दरस [illegible] ॥ चूर्णयेन्मधु [illegible]

[illegible] क्रिमिरोग में कीट मर्द [illegible] तोले पारा [illegible] कुचिला और [illegible] उतार [illegible] कर खरल [illegible] साथ खाय और [illegible] का काथ पर्मोथा, नाग [illegible] क्रिमिरोग को दूर करत [illegible]

[illegible] महापिण्डतैलम् । [illegible] मृतायाः पलशतं [illegible] तथा । [illegible] पलशतं जलद्रोणेपृथक्पचेत् ॥ पादशेषंगृहीत्वाच तैलप्रस्थंपचेद्भिषक् । [illegible] दत्त्वा [illegible] मन्देनवह्निना ॥ पिण्डशालजनिर्यासासिन्धुवारपलत्रयम् । विजयाबृहतीदन्तीकंको [illegible] तांतत्र [illegible] पुनर्नवा [illegible] वह्निग्रन्थिककुष्ठा [illegible] चन्दनद्वयम् । पूतिपूतिकसिद्धार्थवाकुचीचक्रमर्द [illegible] ॥ [illegible] वच । अश्वगन्धासरलंसर्वंप्रतिकर्षमितंपचेत् ॥ एतत्तैलवरं हन्ति वातर [illegible] तंशयम् [illegible] कुष्ठमष्टादशविधं ग्रन्थिवातं [illegible] आमवातं भगन्दरगुदामयम् । ज्वरमष्ट [illegible] विधं हन्ति [illegible] नात्र संशयः ॥

अथ [illegible] तैल को कहते हैं । गिलोय, बावची और गन्धप्रसारणी इन्हों [illegible] जल [illegible] के सोलह सेर जलमें अलग पका [illegible] रह जावे तब वैद्य एकसेर कडुये तेलमें पकावे फिर चारसेर दूधको [illegible] मन्द अग्नि से पाककरे तदनन्तर शिलारस [illegible] आंवला, भांग, बड़ीकटेरी, दन्ती, कंकोल, [illegible] चीत [illegible] दारुहल्दी, चन्दन, लालचन्दन [illegible] सफेदसरसों, बावची, पमार के बीज, अडूसा, नींब की [illegible] परामूज, कूट, हल्दी, बीज, असगन्ध और सरलका [illegible] सबों का प्रत्येक एक एक तोला लेकर उक्त तेल में मिलावे यह तेल [illegible] पटोलपत्र, कौंछ के [illegible] होकर मर्दन करने से निस्सन्देह वातरक्त रोग को [illegible] नाशता है और अठारह प्रकारके कुष्ठ दारुण गठियावात, [illegible] आमवात, भगन्दर, गुदा के रोग और आठ प्रकार के ज्वरों को नष्टकरता है इसमें संशय नहीं करना चाहिये ॥

अथ प्रमेहरोगे [illegible] वृहद्वङ्गेश्वररसमाह । सूतंगन्धंमृतंलोहंमृतमभ्रं [illegible] माक्षिकम् [illegible] हेमवंगंचमुक्ताच ताप्यमेवंसमंसमम् [illegible] णींतंकृत्वाकन्यारसविमर्दितम् । गु[illegible] जाद्वयप्रमा [illegible] णवटिकांकारयेद्बुधः ॥ बृहद्वङ्गेश्वरोह्येष रक्तमूत्रंप्रशस्यते । श्वेतमूत्रंबृहन्मूत्रं कृच्छ्रं [illegible] त्रंतथैवच । [illegible] सर्वप्रकारमेहांश्चनाशयेदविकल्पतः । अग्निवृद्धिंवयोवृद्धिंकांतिवृद्धिंकरोतिच ॥ क्षयरोगंनिहन्त्या [illegible] शुकासम्पञ्चविधन्तथा ॥ कुष्ठमष्टादशविधम्पाण्डुरोगंहलीमकम् ॥ शूलंश्वासंज्वरंहिक्कांमन्दाग्निरक्[illegible] रोचकम् । क्रमेण शीघ्रतोहन्तिवृक्षमिन्द्राशनिर्यथा ॥

अथ प्रमेहरोग में वृहद्वंगेश्वरनामक रसको कहते हैं । पारा, गन्धक, लोहा, अभ्रक, सोना, वङ्ग, मोती और स्वर्णमाक्षिक इन्हों की भस्म प्रत्येक समानभाग ले सबोंको घिकुवारि के रसमें खरलकर दो रत्ती की गोली बनावे यह वृहद्वंगेश्वर नामक रसहै जो कि [illegible] रक्तमूत्र, श्वेतमूत्र, बृहन्मूत्र तथा मूत्रकृच्छ्र और सर्वप्रमेहों को निस्सन्देह नाशता है अग्निवृद्धि, वयोवृद्धि, व कान्तिवृद्धि को करता है व शीघ्रतासे क्षयरोग को नाशता है तथा पांच प्रकार का खांसी [illegible] अठारहों कुष्ठरोग, पाण्डुरोग, हलीमक, शूल, श्वास, ज्वर, हिक्का, मन्दाग्नि और अरुचिको क्रम से शीघ्रताके साथ नाशकरदेता है [illegible] जैसे कि इन्द्रका वज्र वृक्ष को नाशता है ॥

इति श्रीशक्तिधरसंगृहीत समाप्तोऽयम्परिशिष्ट भागः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उत्तर ॥१९६१॥

यची तथा सैंधानोन इनसब

द्वापिचवाह्लिमान् । विदा

शर्करम् ॥ तिकाइर्ये ॥

...ीर, अजीर्ण, ह... क्री० ५॥) पु०॥

...क्षीरोग, श्वासरोग स्वरभेद ...

...ा, दाहरोग, उन्मादरोग, ... उन्मादका, ...

...ाग, सम्पूर्ण वातव्याधि, अल्पकशोंकी चिकित्सा, ऊरुस्तम्भरोग, आमवात

...वर्त्त, आनाह रोग, गुल्मरोग, ...रोग, हृद्रोग, मूत्रकृच्छ्र... ... मूत्राघात,

...वदरोग, गलगंड, फीलपांव, विद्रधि, घाव, अग्निदग्ध, भग्नरोग, ...

... अर्थात् शीतला, फिरंगरोग, छोटे २ रोग, शिर, नेत्र, कान और मुहके

... ली.

इसकाभी जिला रोहतक मौजे वेरी ग्राम निवा...

...सर २ का भाषा में उलथा कियाहै यह ... ...खने योग्यहै

...काम निकलसक्ताहै ॥

...ा भाषा टीका सहित क्री० ॥) पु० ॥

...के मतसे ज्वर, अतीसार, संग्रहणी, बवासीर, अजीर्ण... ...ा, क्रमिरोग, पां-

...ा, स्वरभेद, अरुचि, वमन, प्यास मूर्च्छा, दाहरोग ... ...ादरोग, मृगीरोग,

...कृच्छ्र, मूत्राघात, पथरी, प्रमेह, पेटके रोग, सूजन, अंडवृद्धि, वदरोग, फीलपांव,

..., भगंदर, आतशक, शूकरोग, कुष्ठरोग, शीतला, क्षुद्ररोग, शिर, नेत्र, कान, नाक

...ोंके सब रोग और धातुपुष्ट और नपुंसकताकी अत्युत्तम चिकित्सा काढे, चूर्ण,

...इसके मूल श्लोकोंको शार्ङ्गधरजी महाराज और भाषा टीका को ... ...ने

...अवश्य दर्शनीयहै ॥

...भाषाटीका सहित क्री० २॥) पु० ॥

...ा, तिल्ली और यकृत् की चिकित्सा, पांडुरोग चिकित्सा, शोथरोग चिकि-

Nepal Sanskrit Univer...

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu